F-B
S-B

151133

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

151133

151133

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

14.5,MM-S
151133

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाग २६ सम्वत् १९६१ विक्रमी

(२६)

14.5,MM-S
151133

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
गुरुकुल ग्रन्थालय काँगड़ी.

Registered No. L.

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्तक—

...राम जिज्ञासु

...शनिवा... ...को ...ा है ...काशित हो...

...वैसाख सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० १८ अप्रैल १९१४

संख्या १
भाग २६

...पोलियन बोनापार्ट

लेखक—इन्द्रवेदी

...वीरवर नैपोलियन का नाम किस... ...ना होगा और उसका चरित कौन ... ...ा चाहेगा। चरित क्या है, हृदय ... ...करनेवाला सच्चा उपन्या... ...स है।

...लीजिये ...उपन्यास इकट्ठा ...पढ़िये, ...नक लड़ाइयों के ...चित्र भी साथ ही देखिये

...ी का मूल्य ...क के ग्राहकों से ...ल्द का मूल्य

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का ...ल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

...० बाबू गिरजाकुमार ...घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ...ली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक ...उन्होंने बंगला में "...ाकुर झी" ...क एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा ...उसके बंगाली में कई संस्करण हो ...हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी ...ाद है। अनुभव में ...नहीं, शिक्षा ...ान कहन... पुस्तक आदि ...त तक मन... का पूरा राज्य और पवित्रता ...ी हुई है ...बाकी नहीं रहा। जैसे पर ...उपन्यास ...त रहते हैं उसी प्रका... ...कियों के हा... में भी आगई। किन्तु ...किए बिन... ...हीं गया। अभी सि... ...य ॥) ...थ पैर फिर भी हिल रहे ...जा... है। कान अभी बहरे ...ए। ... एक चमत्कार सा

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप ... वर्ष ... बनाना चाहते ... पुस्तक ... को ...दि से अन्त त... ...क अवश्य पढ़ें। आज का ... उन्नति की पुकार तो बहुत ... है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करने में लाया गया है कि बंगलों में हिंसक ... राष्ट्रीय उन्नति क्या ...यों को दहलाते थे ... एक पत्ते से प्रेम वर्षा का ...रा बह रही है। जिन औषधियों को सड़ा कर मनुष्य पागल हो रहे थे, उनका सुगन्ध नाशि...

मूल्य ...

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ...	।)
विद्यार्थियों से	।)
भारत विभिन्न देशों से ...	।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक	≡) प्र० प०
तीन मास " " " "	=) "
छः " " " " "	-)॥ "
सालभर " " " "	-) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई पत्र नहीं बंट सक्ता।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम स... होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर स... ...क का नाम और बंटने की तिथि छ... च... हिये। बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता... कीजिये। ...पो... लि... ...चरित जिन्होंने पढ़ा है, उन के लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वाले को रियायती ...

Magazine ...AMPUR Distt Bijnore

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैद्यकल्पतरु

आरोग्य, आयुष्य, आनन्द और ऐश्वर्य प्राप्तिके लिये उपचारक और कुटुम्बोंके [illegible] वैद्यक सम्बन्धी सचित्र [illegible]

हिन्दी संस्करण १९१३ से प्रकाशित [illegible] है।

गुजराती सं. १८९४ से प्रकाशित [illegible] है।

सम्पादक-वैद्य जटाशंकर ली[illegible]र त्रिवेदी

अमदाबाद (गुजरात) वार्षिक मूल्य १-९-० नमूनेका अंक मुफ्त।

दी हिन्दी इङ्गलिश टीचर

यह पुस्तक ऐसी सरल है कि बिना गुरु की मदद के सिर्फ ३ मास में अङ्गरेजी लिखना पढ़ना बात चीत करना आदि आ सक्ता है दाम केवल १) डा० माफ। विशेष हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगवाकर पढ़िये।

पता:- बाबू ख्याली राम एण्डको
अलीगढ सिटी

आवश्यकता

[illegible] कुलीन कान्यकुब्ज सब असिस्टेंट [illegible] के लिये विवाहार्थ योग्य पढ़ी [illegible] कन्या की आवश्यकता है

:—शर्म्मा C/of पं०
शदत्त शर्म्मा सदरबाज़ार
छावनी. आगर-मालवा C.I.

[illegible]त वर्ष में विख्यात हाथरस के पक्के चाकू

यह स्वदेशी चाकू विलायती नामी चाकूओं से भी कहीं सुन्दर सुडौल और मजबूत हैं। चन्दन मूठ -) -)॥ =) =)॥ [illegible] ।=) लकड़ी मूठ ,॥। -) -)। -)॥ =)॥ [illegible]स्तरा ।-) ।≡) कैंची ॥) ।=) लीवर मजबूत ताले पीतल के ≡) ।) ।=) । लोहे के ।) ।=) ॥) इंच । रंगीन [illegible]) =)॥ ≡)॥ ।-) ॥ बढ़िया हींग [illegible]) सेर तथा हाथरस के मशहूर [illegible] हमारे यहां मिलते हैं।

भयँकर मार काट

नई किताबें नई बात

विकट बदलौअल १) घटना घट-टोप १॥) परिमल ॥।) भारत की प्राचीन झलक (२ भाग) १) वीरवरांगना [illegible] नूरजहां ।) सच्चा बहादुर १) कलावती [illegible] रानी पन्ना ।=) भोजपुर की ठगी ॥) [illegible] बसना सुंदरी १।) कौशल कि[illegible] हसीना उर्फ सलीमा १॥) चोर [illegible] वीर नारी जया ॥) शिवाजी [illegible] घाटी की लड़ाई =) राना [illegible] बाबर =) राजपूतों की [illegible] हरीसिंह नलवह ≡) [illegible] झांसी की रानी ॥) [illegible] लिंका ।=) नवाब [illegible] ताप की वीरता =) [illegible] सच्ची दवियां [illegible] वीर विदुषी [illegible] =) दीनानाथ [illegible] चातरी ॥ [illegible] ।=) [illegible] इतिहास १) [illegible] भील [illegible] राम [illegible] ऋतुचर [illegible] ड़ना [illegible] राम १) फुटबाल -) तैरना वा पौंजूजुत्सू या जापानी कुश्ती -) [illegible]र्ति के व्यायाम =)

पता—
माणिक कार्यालय
काशी

[illegible] हल्दी [illegible] और [illegible] बहादुरी ॥) [illegible] रहम्मीर =) [illegible] श्रीवा वीर वा- [illegible] १।) राना प्र- [illegible] महाराष्ट्रोदय -)॥ [illegible] हमारी मातायें ॥=) [illegible] ॥) भीष्म पितामह [illegible] प्रेममोहन वा चेत [illegible] कराज ।=) आनन्दी बाई [illegible] हला मंडल ॥।) मेवाड़ का [illegible] सिखों का साहस =) तां- [illegible] =)

मूर्ति व्यायाम सीरीज

[illegible] १) फुटबाल -) तैरना वा पौंजूजुत्सू या जापानी कुश्ती -) [illegible]र्ति के व्यायाम =)

पता—
माणिक कार्यालय
काशी

नया ग्रन्थ

अभी छप कर तय[illegible]

भारतवर्ष का [illegible]तिहास

प्राचीन आर्य्यों के [illegible] लेकर सं० १९७० तक की [illegible] र्णन से संकलित इस पुस्[illegible] का आद्योपान्त [illegible] भाषा और मनोरंजक [illegible] गया है कि आरम्भ [illegible] किये [illegible] को जी[illegible] भाष[illegible] में इस प्रकार [illegible] तक नहीं [illegible]

पृष्ठ संख्या [illegible] ५०० मूल्य [illegible]

धर्म [illegible]

यह उर्दू की प्रसिद्ध [illegible] धर्म का भाषानुवाद [illegible] इस पुस्तक [illegible] किया गया है [illegible] नावल के ढंग पर लिखी गई है इस [illegible] योगी सन्यासियों का भी वृत्तान्त [illegible] १)

अंग्रेजी की सीढ़ी

[illegible] नागरी तथा उर्दू पढ़ [illegible] अंग्रेजी सिखाने वाली [illegible] =)

[illegible]—ला. केदार नाथ प्रोप्राई[illegible]
आर्य्य पुस्तकालय
बज़ाजा शहर

[illegible]ल कांगड़ी के वार्षिकों [illegible]र्ष में ख़ास रियायत

[illegible] फरवरी १९१४ से ३१ मा[illegible] [illegible]न लिखित पुस्तकों [illegible] की गई है।

रामायण—जिस की [illegible] प्रसिद्ध समाचारों तथा [illegible] विद्वानों ने की है और [illegible] ही है २) से १॥।) [illegible]त-सरल [illegible]

गुरुकु[illegible] के [illegible]

१ म[illegible] तक नि[illegible] रियायत [illegible] १८ [illegible] शुद्ध [illegible] भारत के [illegible] माननीय [illegible] हाथ बिक [illegible] महा भा[illegible] जिस के प्रक[illegible] से २००) पा[illegible] हनुमान जी [illegible] उपनिषद [illegible] व्या[illegible]

Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैद्यकल्पतरु

आरोग्य, आयुष्य, आनन्द और ऐश्वर्य प्राप्तिके लिये उपचारक और कुटुम्बोंके [illegible] वैद्यक सम्बन्धी सचित्र [illegible]

हिन्दी संस्करण १९१३ से प्रकाशित होता है।

गुजराती सं. १८९४ से प्रकाशित होता है।

सम्पादक-वैद्य जटाशंकर ली[illegible]र त्रिवेदी

अमदाबाद (गुजरात) वार्षिक मूल्य १-९-० नमूनेका अंक मुफ्त।

दी हिन्दी इङ्गलिश टीचर

यह पुस्तक ऐसी सरल है कि बिना गुरु की मदद के सिर्फ ३ मास में अङ्गरेजी लिखना पढ़ना बात चीत करना आदि आ सक्ता है दाम केवल १) डा० माफ। विशेष हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगवाकर पढ़िये।

पता:- बाबू ख्याली राम एण्डको
अलीगढ सिटी

आवश्यकता

[illegible] कुलीन कान्यकुब्ज सब असिस्टेंट [illegible] के लिये विवाहार्थ योग्य पढ़ी [illegible] कन्या की आवश्यकता है

[illegible]—शर्म्मा C/of पं०
शदत्त शर्म्मा सदरबाज़ार
छावनी. आगर-मालवा C.I.

[illegible]त वर्ष में विख्यात हाथरस के पक्के चाकू

यह स्वदेशी चाकू विलायती नामी चाकूओं से भी कहीं सुन्दर सुडौल और मजबूत हैं। चन्दन मूठ -) -)॥ =) =)॥ [illegible] ।=) लकड़ी मूठ ,॥। -) -)। -)॥ =)॥ [illegible]स्तरा ।-) ।≡) कैंची ॥) ।=) लीवर मजबूत ताले पीतल के ≡) ।) ।=) [illegible] लोहे के ।) ।=) ॥) इंच। रंगीन [illegible] =) =)॥ ≡)॥ ।-) ॥ बढ़िया हींग [illegible]) सेर तथा हाथरस के मशहूर [illegible] हमारे यहां मिलते हैं।

भयँकर मार काट

नई किताबें नई बात

विकट बदलौअल १) घटना घट-टोप १॥) परिमल ॥।) भारत की प्राचीन झलक (२ भाग) १) वीरवरांगना [illegible] नूरजहां ।) सच्चा बहादुर १) कलावती [illegible] रानी पन्ना ।=) भोजपुर की ठगी ॥) [illegible] बसना सुंदरी १।) कौशल कि[illegible] हसीना उर्फ सलीमा १॥) चोर [illegible] वीर नारी जया ॥) शिवाजी [illegible] घाटी की लड़ाई =) राना [illegible] बाबर =) राजपूतों की [illegible] हरीसिंह नलवह ≡) [illegible] झांसी की रानी ॥) जय [illegible] लिंका ।=) नवाब नन्[illegible] ताप की वीरता =) [illegible] सच्ची दवियां ।[illegible] वीर विदुषी [illegible] =) दीनानाथ [illegible] चातरी ॥ [illegible] ।=) [illegible] इतिहास १) [illegible] भील [illegible] राम [illegible] ऋतुचर [illegible] ड़ना [illegible] राम १) फुटबाल -) तैरना वा पौंजूजुत्सू या जापानी कुश्ती -) [illegible]र्ति के व्यायाम =)

पता—
माणिक कार्यालय
काशी

[illegible] हल्दी [illegible] गा और [illegible] बहादुरी ॥) [illegible] रहम्मीर =) [illegible] श्रीवा वीर वा- [illegible] १।) राना प्र- [illegible] महाराष्ट्रोदय -)॥ [illegible] हमारी मातायें ॥=) [illegible] ॥) भीष्म पितामह [illegible] -) प्रेममोहन वा चेत [illegible] कराज ।=) आनन्दी बाई [illegible] हला मंडल ॥।) मेवाड़ का [illegible] सिखों का साहस =) तां-

मूर्ति व्यायाम सीरीज

[illegible] फुटबाल -) तैरना वा पौंजूजुत्सू या जापानी कुश्ती -) [illegible]र्ति के व्यायाम =)

नया [illegible]

अभी छप कर तय[illegible]

भारतवर्ष का [illegible]

प्राचीन आर्य्यों के [illegible] लेकर सं० १९७० तक की [illegible] र्णन से संकलित इस पुस्[illegible] का आद्योपान्त [illegible] भाषा और मनोरंजक [illegible] गया है कि आरम्भ [illegible] किये [illegible] ड़ने को जी [illegible] भाष[illegible] में इस प्रकार [illegible] तक नहीं [illegible]

पृष्ठ संख्या [illegible] ५०० मूल्य

धर्म नि[illegible]

यह उर्दू की प्रसिद्ध [illegible] धर्म का भाषानुवाद [illegible] पुस्तक [illegible] इस पुस्त[illegible] [illegible]य किया गया है [illegible] नावल के ढंग पर लिखी गई है इस [illegible] योगी सन्यासियों का भी वृ[illegible] [illegible]य १)

अंग्रेजी की सीढ़ी

[illegible] नागरी तथा उर्दू पढ़ [illegible] अंग्रेजी सिखाने वाली [illegible] ।=)

[illegible]—ला. केदार नाथ प्रोप्राई[illegible]
आर्य्य पुस्तकालय
बज़ाजा शहर

[illegible]ल कांगड़ी के वार्षिकों [illegible]र्ष में ख़ास रियायत

[illegible] फरवरी १९१४ से ३१ मा[illegible] [illegible]न लिखित पुस्तकों [illegible] की गई है।

रामायण—जिस की [illegible] प्रसिद्ध समाचारों तथा [illegible] विद्वानों ने की है और [illegible] ही है २) से १॥।) [illegible]त-सरल हिन्दी [illegible]

गुरुकु[illegible] के [illegible]

१ म[illegible] तक नि[illegible] रियायत [illegible] १८ [illegible] शुद्ध [illegible] भारत के [illegible] माननीय [illegible] हाथ बिक [illegible] महा भा[illegible] जिस के प्रक[illegible] से २००) पा[illegible] हनुमान जी [illegible] उपनिषद [illegible] व्या[illegible]

[illegible]ction. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म दर्शनम्

वमग्ने द्युभिस्त्वम शुशुक्षणि स्त्वम-
द्भ्य स्त्वम श्मनपरि । त्वं वनेभ्य
धमोषधीभ्य स्त्वं नृणां नृपते जायसे
चिः ॥ ऋग्वेद । मं. २ । सू० १ । मं. १ ॥

संसार की ठोकरों से पीड़ित मनुष्य
वन रूपी मार्ग का पथिक व्याकुल हो
श्रम दूर करने के लिए मार्ग के मध्य
ठहर गया है। खड़ा हो नहीं सक्ता।
ता है तो आराम नहीं, लेटता है तो
नहीं—अन्दर से ऐसी ज्वाला भभ-
भभक कर उठती है कि दम नहीं लेने
। पथिक फिर चल देता है। आंखें
रूप के अन्दर खिंची चली जाती हैं,
फिर शब्दों के दास बन रहे हैं, पग
पर फिर ठोकर लग रही है। पथिक
बड़ी ही दीन शोचनीय दशा है।
! इस नरक धाम से कैसे छुटकारा हो।
को छोड़कर ग्राम का आश्रय लिया,
को छोड़कर जङ्गल की राह ली,
तु क्या दग्ध हृदय शान्त हुआ। अ-
से दुर्गन्ध की आंधी उठ रही है जो
रही है। अन्दर शांति न मिलते
कर फिर बाहिर मुख होता है। वहां
ने से अनगिनत पथिक चले जा रहे
ाई देते हैं। कोई कांख रहा है, कोई
ड़ी के सहारे चल रहा है, कोई चिंता
निमग्न जा रहा है। चेहरे अपने से
अधिक पीले पड़े हुए देखता है। उ-
कष्ट अपने से अधिक दिखाई देता
कुछ काल के लिए शान्ति सी होती
सामूहिक दुःख भी, दुखी से दुखी
ा को एक पल के लिए तो शान्त
देता है। इसी प्रकार की शांति
थिक के अनुभव में आती है।

तमोगुण का पूरा राज्य होगया;
चिन्ह भी बाकी नहीं रहा। जैसे
गंध में मस्त रहते हैं उसी प्रका-
मस्ती पथिक में भी आगई। किन्तु
मर तो नहीं गया। अभी सि-
रहा है, हाथ पैर फिर भी हिल रहे
जान बाकी है। कान अभी बहरे
हुए। अकस्मात् एक चमत्कार सा-
ाई देता है।

सामने दिव्य शान्त मूर्ति खड़ी है। वह चन्द्र का सा शीतल तेज दग्ध हृदय को एक पल में शान्त कर देता है। पथिक उठकर चरणों पर सीस रखता है और महात्मा करुणा रस से सने हुए स्वर में कहते हैं—

"हे ज्ञान के भण्डार! सर्व प्रकाशों से तुम, वेगवान वायु से तुम, जलों से तुम, पर्वतों के शिखरों से तुम, जङ्गलों से तुम, औषधियों से तुम—हे मनुष्यों के पालक! तुम मनुष्यों में पवित्रता उत्पन्न करते हो!"

अमृत का पान करता करता पथिक गाढ़ निद्रा के आनन्द में मग्न हो जाता है। म रहित हो कर जब आंखें खोलता है ो महात्मा का कुछ पता नहीं, किन्तु ससे उसके हृदय में कुछ उदासीनत नहीं आती। महात्मा का भौतिक शरीर सामने न देखकर भी उन के आत्मा के अन्तःकरण से अनुभव करता है। वह प्रकाशमय रूप जो हृदय के अन्दर का की भट्ठी जला देते थे आँखों और अन्तःकरण के मलों को दूर कर रहे हैं। जिस सुन्दर रूप में नरक का दृश्य दीखता था उसमें अब दैवी सौन्दर्य दृष्टि गोचर होता है, क्योंकि उसमें जगन्माता का प्रकाश स्वरूप दीख रहा है। जिस शब्द की आंधी से हृदय में हलचल मचर ही थी उसमें उसी जगज्जननी का संशोधक वेग प्रतीत हो रहा है जिस रस के दासत्व में शरीर और मन को नष्ट कर बैठे थे उसकी पवित्र धारा अन्दर के सब मलों को दूर कर रही है। जो पर्वतों के शिखिर भोग के लिए उचित स्थान समझे जाकर मद्य मांस तथा व्यभिचार के प्रलोभनों में फंसा कर जीते हुए मनुष्य को मुर्दा बना रहे थे वह अब अपनी स्वच्छ शोभा से पाप कर्मों से घृणा दिलाकर अपनी स्वच्छ वायु की गोद में लोरियां दे रहे हैं। जिन जंगलों में हिंसक पशुओं के घोरनाद हृदयों को दहलाते थे उन के एक एक पत्ते से प्रेम वर्षा की धारा बह रही है। जिन औषधियों को सड़ा कर मनुष्य पागल हो रहे थे, उनका सुगन्ध नासि-

कैसा आश्चर्य जनक भेद है! था क्या और हो क्या गया? जीवन यात्रा के पथिक! अपने पथदर्शक को भूल कर तूने अपनी कैसी रक्षा करली! अभी संभलने का समय है। नहीं नहीं, संभलने का सदैव ही समय है। हम अपनी कुटिलता से कितनी वार उस प्रेम, उस पवित्रता, उस प्रकाश के स्रोत से अलग होने का प्रयत्न करते हैं। किन्तु क्या उतनी ही वार हमारे कुटिलता से खड़े किए हुए बन्ध को छिन्न भिन्न करके वह अमृत का स्रोत हमें आनन्दित नहीं करता रहा। पथिक! निराश मत हो, शुद्ध स्वरूप प्रकाश मय पिता संसार की एक २ घटना में शुद्धि का संचार कर रहे हैं। हम उन्हें कितना ही क्यों न त्यागें वे हमें कभी नहीं त्यागते। तब भय को त्याग कर उसी प्रेम भरी गोद में क्यों न चलें।

मुन्शीराम

प्रिंस विस्मार्क
का
सचित्र जीवन चरित्र
(छप रहा है)
ले० इन्द्र वेदालंकार

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े २ को कैसे पददलित किया, और फिर किन २ शक्तियों ने उस देश में जागृति की इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तार पूर्वक वर्णन है। दूसरे भाग में

साहस की मूर्ति देश भक्ति के पुतले
नीति गुरु और जर्मनी के जन्म दाता

प्रिन्स विस्मार्क का आश्चर्य कारी चरित विचित्र किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्हों ने पढ़ा है, उन के लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वाले को रियायती कीमत पर पुस्तक मिलेगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(३१)

१७ जनवरी १९०८ ई० को मैं वकालत की परीक्षा देने लाहौर की ओर फिर चला; रास्ते में गुरुदासपुर आर्य्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर उतरा। मुझे उस समाज की दशा देखकर बड़ा कष्ट हुआ। मेरी दिन पत्रिका (Diary) में लिखा है:—"सायंकाल को गुरुदासपुर—वहां के आर्य्यसमाज के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने को पहुंचा। इस समाज की दशा बहुत शोचनीय है। सब अधिकारी हैं तो धनाढ्य किन्तु सब शराबी, कबाबी और शिकारी हैं। इस लिये समाज की सेवा करने के स्थान में वे उलटे हानिकारक हो रहे हैं।"

इन्हीं शराबी कबाबी वकीलों में से सवा दो वर्ष के पश्चात् एक ने जो करतूत जालन्धर प्रान्त में की थी उसे यहां ही भुगता देना ठीक है। मैंने बड़े परिश्रम से फिल्लौर में आर्य्यसमाज की स्थापना की थी। प्रधान और मन्त्री को मद्य मांस की कुबावट से निकाल कर वैदिक धर्म के सच्चे भक्त बनाया था। हमारे मन्त्री जङ्गलात के महकमे में एक बड़े उहदेदार थे। उनके एक गुरुदासपुरी वकील मित्र (जिन लिखे आर्य्यसमाजी शराबी कबाबियों में से) होलियों में फिल्लौर आ पहुंचे और न केवल हमारे स्थानिक मन्त्री को गिरा कर किराए के समाज मन्दिर में शराब ही लुढाई प्रत्युत मन्त्री और प्रधान के मना करने और बिगड़ कर चले जाने पर भी वेश्या को बुलाकर मुंह काला किया। तीसरे दि मैं एक मुकद्दमे की पैरवी में फिर पहुंचा तो मेरे मित्र सय्यद आबिद हुसैन तहसीलदार ने सारा हाल कह सुनाया। वेश्या ने फ़ौजदारी में अर्ज़ी दी क्योंकि शराबी वकील उसे बिना कुछ दिये रात की रेल में ही भाग गये थे सय्यद साहब ने हमारे मन्त्री और प्रधान को बदनामी से बचाने के लिये अपने पास से पांच दस रुपए देकर अर्ज़ी झड़वादी। मैंने सय्यद साहब की कृपा का धन्यवाद दिया किन्तु उनसे कहा कि ऐसा करने में उन्होंने पाप किया है। उनके लिये भी मेरा यह उत्तर नया ही था, क्योंकि वे बड़े चकित से प्रतीत हुए। किन्तु मैंने क्या किया? उसी समय सायंकाल व्याख्यान देने का ढिंढोरा पिटवा दिया और वैदिकधर्म के महत्व का सन्देश उपस्थित सज्जनों को सुना कर अन्त में घोषणा देदी कि आर्य्य अधिकारियों के पतित होजाने से अब फिल्लौर में कोई आर्य्यसमाज नहीं है।

यह शायद पहिला ही अवसर था कि मैंने आर्य्यसमाजकी सेवा की बदौलत एक शत्रु खड़ा करलिया। फिल्लौर के प्रधान और मन्त्री ने अन्त को अपने किए का प्रायश्चित्त किया और मुझे मिलते रहे। किन्तु गुरुदासपुर के वकील साहब उसी दिन से मेरे विरोधी होगए। मेरे विरोधी तो हुए किन्तु आर्य्यसमाज का पिंड उन से छूटगया और अपनी पौराणिक जाति के महासामान्य लीडर बन गए। जनवरी मास के अन्तिम शनिवार को मैं अमृतसर आर्य्यसमाज के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने को गया जहां मुझे देवराज जी भी मिले, परीक्षा इतनी समीप और मुझे वार्षिकोत्सव में जाने की सूझ रही थी। इसका कारण सर्वथा मेरा आर्य्यसमाज के साथ अनुराग ही न था; विशेष कारण यह था कि पढ़ने में रुचि न थी और दिनकटी कठिन होरही थी, इस लिये दिल बहलाने के लिये अमृतसर चलागया।

६ फर्वरी को मेरी परीक्षा शुरू हुई और ११ को समाप्त होगई। प्रश्नपत्रों के उत्तर मैंने अच्छे लिखे थे और परिणाम भी अच्छा ही निकला। कुछ दिनों के पश्चात् जालन्धर समाचार पहुंचा कि मैं परीक्षा में उत्तीर्ण होगया हूं।

परीक्षा समाप्त होने के पश्चात् भी मैं एक सप्ताह लाहौर में और ठहरा। परीक्षा से प्रथम मैंने पहिला ही उपदेश लाहौर समाज की वेदी पर से दिया था, जिस को श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया था; इस लिये मुझे फिर एक उपदेश के लिये बाधित किया गया। इसके अतिरिक्त इन्हीं दिनों विशेष विज्ञापन देकर मेरा एक अङ्गरेज़ी कथाख्यान रक्खा गया जिसका विषय था:—Marriage: Its religious, moral ad Social aspect" इस व्याख्यान के विषय में मेरी दिन पत्रिका में लिखा है:—"इस व्याख्यान में मेरी आशा के अनुसार कृतकार्यता न हुई। जन संख्या केवल २००के लग भग थी।" साथ ही लिखा है—"इसी दिन अग्निहोत्री के देवसमाज का वार्षिकोत्सव प्रारम्भ हुआ १६ और १७ को मैंने अग्निहोत्री के दो व्याख्यान सुने।" मैं उन दिनों गुमनाम था, अग्निहोत्री की प्रसिद्धी अपने यौवन पर थी, उस के व्याख्यानों को छोड़कर मुझे सुनने कौन आता।

१६ फर्वरी को जालन्धर लौट कर मैंने अपने मुकद्दमे का मुकदमा किया। उन दिनों मुझे पिता से मिली हुई भूमि में एकान्त निवास के लिये मकान बनवाने और एतदर्थ उस भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने तथा उसके कुछ भाग में बाटिका लगाने की धुन लगी हुई थी। इसी के प्रबन्ध के लिये एक निर्धन सम्बन्धी को कुछ वेतन पर नियत कर रक्खा था। फर्वरी मास के अन्त में मैं उसी काम की देखभाल के लिये अपनी जन्म भूमि तलवन में चलागया।

मार्च के महीने में मैं साधारणतया अपने काम में लगा रहा। इसी मास में वकीलों और अन्य अङ्गरेज़ी पढ़े हुओं को जमा कर के मैंने एक वाग्वर्धिनी सभा (Debating Society) खुलवाई जिसका मैं ही मन्त्री नियत कियागया। यह सभा कुछ महीनों चल कर ही समाप्त होगई। इसी मास में दिल्ली के रायबहादुर मास्टर प्यारेलाल जालन्धर सरकल के इन्सपैक्टर आफ स्कूल्ज़ बनकर आए जिनके साथ मेरा बड़ा गहरा सम्बन्ध होगया। आर्यसमाज के सम्बन्ध में इस महीने एक ही घटना हुई जिस ने उसे अनपढ़ों में प्रचार के लिये एक पुरुषार्थी सेवक दिया। लु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धियाने के चिरञ्जीलाल एक बांका पहलवान था। वह आर्य समाजी होकर पंजाबी बैतुलबाज़ी किया करता था। एक दिन प्रचार कर रहा था और राहु केतु आदि की पूजा के खण्डन करता था कि एक ब्राह्मणने अपना यजमान से लाया हुआ दान सामने किया और कहा—"यदि है हिम्मत तो ले लो।" बहादुर चिरंजीव ने उपरने में बंधे चावल नकदी सब लेलिए और चलदिये। ब्राह्मण हक्का बक्का रहगया और अपना माल माँगने लगा। चिरंजीव धत्कारकर चल दिया। ब्राह्मणने पण्डित लक्ष्मीसहाय मजिस्ट्रेट के दावा दायर किया। वे ब्राह्मण थे। गवाह भी ब्राह्मण थे। चिरंजीलाल को क़ैद का दण्ड मिला। मेरे पास उसी समय आदमी भागा आया। लुधियाने की अपीलें उन दिनों जालन्धर के सेशन जज के होती थीं; मैंने अपील दायर की और चिरञ्जीलाल बरी होकर मेरे पास पहुंचगया।

मुन्शीराम

हर्ष समाचार

स्त्री शिक्षा के प्रेमियों को यह पढ़कर हर्ष होगा कि उनकी आर्य्य कन्या पाठशाला दिनों दिन उन्नति को प्राप्त हो रही है और इस समय २२० बालिकायें शिक्षा पारहीहैं, आप के इस उत्साह को देखकर उपरोक्त पाठशाला में मध्यम श्रेणियों (मिडल श्रेणियाँ) के खोलने को भी निश्चय कर दिया है ताकि साधारण शिक्षा के साथ २ धार्मिक शिक्षा भीकन्याओं को भली प्रकार प्राप्त हो सके जो स्त्री जाति का अमूल्य भूषण है और जिस से धार्मिक आत्मिक, सामाजिक तथा शारीरिक उन्नतिके साधन उपलब्ध हो सकें जिस से भावी सतानों के गृहस्थ स्वर्ग धाम बनें और स्त्री जाति का प्राचीन गौरव पुनः प्रकाशित हो आशा है आप सब सज्जन महाशय इस मनोर्थ की पूर्ति हर प्रकार सहायता प्रदान करके यश और पुण्य के भागी होंगे।

मध्यम श्रेणियों के लिये योग्य अध्यापिकायें नियत हो चुकीहैं और अप्रैल १९१४से इन कक्षाओं में कन्यायें प्रविष्ट हो सकेंगी॥

नोट—इस पाठशाला में कन्याओं से कुछ फीस नहीं लीजाती बल्कि प्रत्येक श्रेणी में पाठ्य पुस्तकें भी पाठशाला की ओर से ही मुफ्त दी जाती हैं।

भवदीय
मन्त्री आर्य्य कन्या पाठशाला
देहली (इन्द्र प्रस्थ)

गुरुकुल समाचार।

(निज संवाददाता से)

गुरुकुलमें दो विद्वानोंका आगमन

जर्मनी के डा० स्ट्रास

इस सप्ताह गुरुकुल निवासियों को दो प्रसिद्ध विद्वानों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनमें से पहिले जर्मनी के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् डा० स्ट्रास थे। डा० स्ट्रास जर्मनी की कील-यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर हैं। आप जर्मनी के विख्यात वेदान्ती पाल डायसन के शिष्य हैं और आपने जर्मन भाषामें संस्कृत और वैदिक साहित्य पर पुस्तकें लिखी हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालयने आपको जर्मनी से तीन साल के लिये बुलाया है। आज कल आप कलकत्ते तुलनात्मक शब्दशास्त्र (Comparative Philology) पर व्याख्यान देते हैं। आप बंगाल से गु० कु० का नाम सुन कर उसे देखने आए थे। डा० स्ट्रास को सारा विद्यालय और महा विद्यालय आचार्य ने दिखलाया। उसे देख कर आप बड़े प्रसन्न हुए। आपने कहा कि मैं यह देख कर बड़ा दुःखित हुआ कि भारत वर्ष में सब जगह यूनिवर्सिटियां योरपका अनुकरण मात्र करती हैं। पर आप अपने प्राचीन आदर्श को रखते हुए नए शिक्षा विज्ञान की अच्छी बातों को आवश्यकतानुसार अपने ढंग में ढाल रहे हैं। अनुकरण मात्र से कोई जाति उन्नत नहीं हो सक्ती। पुस्तकालय में आपका एक व्याख्यान हुआ। उसमें आपने दिखलाया कि हम योरुप के लोग वेदों को किस दृष्टि से देखते हैं। आप ने कहा—"जब मैं जर्मनी में संस्कृत पढ़ता था तो समझता था कि भारत वर्ष की सभ्यता का आधार ऋग्वेद है। भारत वर्ष में यह देख कर मुझे बड़ा दुःख हुआ कि भारत वासी वेदों को सर्वथा भूल गये हैं। वेदों का स्थान पुराणों ने ले लिया है। आप गुरुकुल में वैदिक साहित्यको पुनरुज्जीवित करने का यत्न कर रहे हैं, यह देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है।" फिर आपने दो तीन दृष्टान्तों से समझाया कि योरप वासियों की दृष्टि और भारत वासियों की दृष्टि में क्या भेद है। अन्त में आपने कहा कि हमारा यह दावा नहीं है कि हम वेदों के विषय में जो कुछ विचार करते हैं वे ही सत्य हैं। हम तो केवल सचाई की खोज का प्रयत्न करते हैं। वेदों के विषय में आपके जो विचार हैं, उन्हें आप प्रकट कीजिये। यदि वे हमें सत्य प्रतीत होंगे तो हम माननेको तय्यार रहेंगे।

डा० गोकुलचन्द्र नारंग

दूसरे महानुभाव जो इन दिनों गुरुकुल में आए, वे लाहौरके डा० गोकुल चन्द एम०ए० थे। प्रायः पँजाब के सभी आर्य समाजी इन के नाम से परिचित हैं। आप भारत वर्ष की दो यूनिवर्सिटियों के एम० ए० हैं। जर्मनी की एक यूनिवर्सिटी ने इन्हें पी० एच० डी० की उपाधि दी है, और इंग्लैंड में आपने बैरिस्टरी पास की है। पांच वर्ष तक आप डी० ए० वी० कालिजमें उपाध्याय भी रह चुके हैं। अब तीन वर्षों से आप लाहौर में वकालत करते हैं। ईस्टरकी छुट्टियों में आप गु० कु० देखने आए। तीन चार दिन तक रह कर आपने सारा गुरुकुल देखा। गुरुकुल के विषय में आप की जो सम्मति है उसे आपने एक व्याख्यान में प्रकट किया जो गत शनिवार को म० वि० के ब्रह्मचारियों और उपाध्यायों की उपस्थिति में हुआ। आपने व्याख्यान में कहा—"इस गुरुकुल को देखने की चिरकाल से मेरी इच्छा थी। पर कई कारणों से मेरी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। आज इस गुरुकुल रूपी तीर्थ में स्नान करके मैं अपने आपको सौभाग्य शाली समझता हूं। आज मैं अपने आपको ऐसे अनुभव कर रहा हूं, जैसे कोई मर्त्य लोक में से उठकर दैवलोक में आजावे। इस बात को मैं सच्चे हृदय से कह रहा हूं, यह अत्युक्ति नहीं है। आपका गुरुकुल उस शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध प्रोटैस्ट (प्रतिवाद) है जिसकी गोद में मैं पला हूं। उस प्रोटैस्टमें मैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बड़ी खुशी से आज आपके साथ सम्मिलित होता हूं।

"जब आप का गुरुकुल खोला गया था तो इस के विरोधी इस पर कई तरह के आक्षेप किया करते थे। मैं भी उस समय आक्षेप करने वालों में से था। हम पूछा करते थे कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी यहां से निकल कर क्या करेंगे? अब मेरी सम्मति सर्वथा बदल गई है। उस समय जिसे मैं दूषण समझता था उसे ही अबमैं आपकी संस्था का भूषण समझता हूं। आपके गुरुकुल की यही विशेषता है कि आपके स्नातक उन कामों को नहीं करेंगे जिन्हें यूनिवर्सिटी के ग्रैजुएट करते हैं। हमारी जाति बहुत गिर चुकी है, उसे अपनी गिरी दशा से ऊपर उठना है। हमारे ग्रेजुएट जिन कामों को करते हैं वे काम किसी गिरी हुई जाति को ऊपर उठाने वाले नहीं हैं। हमारी यूनिवर्सिटियां उस मैशीनरी के पुर्जे तय्यार कर रही हैं जिसका चलाना हमारे हाथ में नहीं है। पुर्ज़ा बनना भी कोई बड़ी बात है! जिस जाति के नवयुवकों की मानसिक और शारीरिक शक्तियां जातिको छोड़ कर दूसरों के काम में आवें, उस जाति के कल्याण की कोई आशा नहीं है। कालिजों से निकले हुए ग्रैजुएट वकील बनते हैं, बैरिस्टर बनते हैं और सरकारी नौकरियां भी करते हैं पर प्रश्न यह है कि उन से जाति का क्या बनता है? मैं यह नहीं कहता कि कालिजों में से जाति के सेवक नहीं निकलते, पर यह कहे बिना नहीं रुक सक्ता कि ऐसे बहुत कम निकलते हैं और जो निकलते भी हैं उनके कारण कालिज नहीं हैं। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप लोगों को ऐसे प्रलोभनों में फंसने का अवसर नहीं है। आपके वे परही काट दिए गए हैं जिनके फड़फड़ाने से आप दूसरोंके जाल में फंस सकें। आप उस बहावमें बह ही नहीं सक्ते जिनमें हमारे कालिजों के ग्रैजुएट बह जातेहैं। आपके सामने ऊंची इच्छाएं रखी जाती हैं। आप यहां से बाहिर जा कर क्या करेंगे, यह आप की शक्ति, आप की अवस्था और आप की रुचि पर निर्भर है। यह आप की इच्छा है कि आप चाहे वैदिक धर्म के प्रचारक बनें, चाहे लेखक बनें, सम्पादक बनें, चित्रकार बनें, विज्ञान वेत्ता बनें या राजनैतिक क्षेत्र में काम करें। पर जो कुछ बनें उस में आदर्श को बहुत ऊंचा रक्खें।

"हमारे देश में बुद्धि की कमी नहीं। इस गिरी हुई अवस्था में भी हम बुद्धि में औरों का सामना कर सक्ते हैं; यदि कोई चीज़ नहीं है तो वह आचार है। निर्धन होने पर भी आज कल हम लोग अय्याशी का जीवन व्यतीत करने के आदी होगये हैं। इसीलिये थोड़ासा भी कष्ट आने पर हम घबरा जाते हैं, और अपने उद्देश्य को भूल जाते हैं। आचार की दृढ़ता की इस समय बड़ी आवश्यकता है। आप इस अवस्था में जो कठोर जीवन व्यतीत कर रहे हैं, वह आप को बड़ी सहायता देगा। आप के कुल में जीवन दिखलाई देता है। हमें विश्वास है कि यहां से ही नए जीवन की लहर चलेगी जो सारे देशको पवित्र कर देगी। आप पर इस समय बड़ी उत्तरदायिता है। सारे देश की निगाह इस समय आप पर है। जिन कालिजों पर देश की बड़ी २ आशाएं थीं, वहां से भी देश को निराश होना पड़ा है। आप का गुरुकुल जाति का अन्तिम परीक्षण है। इसने देश को फिर से आशा दिलाई है। आप ने अब तक जो फल उत्पन्न किया है उन से मिलने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ है। मैं किसी विशेष की प्रशंसा नहीं करना चाहता पर उन्हें देख कर मैं इतना अवश्य कहूंगा कि आप अपने उद्देश्य में कृतकार्य्य हो रहे हैं। आप अपने आदर्शको सदा ऊंचा रखिये, अपने आचार को दृढ़ कीजिये। उच्च आदर्श और दृढ़ आचार ही इस समय हमारे देश को बचा सक्ता है।" व्याख्यान के अन्त में आचार्य ने व्याख्याता को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप जैसे अनुभवी और विद्वान महानुभावों के वाक्यों से जहां हम प्रोत्साहित होते हैं वहां हमारी उत्तरदायिता भी बढ़ जाती है और आशा प्रकट की कि आज आपके साथ इस कुलका जो प्रेमसूत्र बंधा है वह सदा स्थिर रहेगा। इस के उत्तर में व्याख्याता ने फिर किसी समय आकर सिक्ख इतिहास पर व्याख्यान देने का वचन दिया। उसी रात को उपाध्यायों की ओर से डाक्टर गोकुलचन्दजी को सभोज दिया गया।

ऋतु और स्वास्थ्य।

गुरुकुल की ऋतु इस समय साधारण है। वर्षा के कारण जो असाधारण सर्दी पड़ने लगी थी, वह धीरे२ कम हो रही है। तब भी गुरुकुल वासियों को कमरों के अन्दर सोना पड़ता है।

नए कमरे।

ब्रह्मचारियों की संख्या बढ़ जाने से वर्तमान आश्रम के कमरों से काम चलना कठिन है। बहुत दिनों से डाक्टर की शिकायत थी कि आज कल एक २ कमरे में जितने लड़के रखे जाते हैं उन से कम रखे जाने चाहियें। तभी सब का स्वास्थ्य ठीक रह सक्ता है। इसी शिकायत को दूर करने के लिये प्रथम और द्वितीय श्रेणी के लिये दो नए कमरे बन रहे हैं। ये कमरे मुख्याधिष्ठाता के बङ्गले के पास गंगा के किनारे बन रहेहैं। इन दोनों श्रेणियों का पढ़ाई के कमरे भी यहीं बनेंगे। इन कमरों के बन जाने से जहां डाक्टर की शिकायत दूर हो जायगी, वहां समीप होने से मुख्याधिष्ठाता भी छोटे ब्रह्मचारियों की देख भाल अच्छी तरह कर सकेंगे। इन दोनों कमरों में से एक का व्यय देहली की श्रीमती जानकीदेवी ने दिया है। ३ वर्ष हुए जब इस देवी ने ३६००) देने की प्रतिज्ञा की थी। उन में से ३००) पहिले आ चुका है। अब २५००) और आगए। शेष रुपयों के भी शीघ्र ही मिलने की आशा है। इनमें से १५००) में एक कमरा बनेगा। शेष रुपये में कुल अंकि जोड़ कर देहली की भावी शाखामें श्री जानकी देवी का एक तालाब बनाने का विचार है। दूसरा कमरा देहली के लाला वेणी प्रसाद जी की ओर से बन रहा है। बन चुकने पर इन दोनों कमरों पर दानियों के नाम के पत्थर लग जावेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रचारक का नया वर्ष।

इस अङ्क के साथ प्रचारक का पच्चीसवां वर्ष समाप्त होता है। वह अब छब्बीसवें वर्ष में पदार्पण करता है। नए वर्ष के आरम्भ में गत वर्ष की समालोचना करना एक साधारण रीति सी चल पड़ी है। इस अवसर पर सम्पादक लोग अपना भी बहुत यश गाया करते हैं। हम भी चाहते तो ये दोनों बातें कर सकते थे। इस वर्ष प्रचारक ने जो कुछ अपने परिवार की सहायता से किया है वह यद्यपि बहुत ही थोड़ा है तथापि देसी पत्रों की रीति को देखते हुए अपनी कीर्ति के ढोल बजाने के लिये वह बहुत पर्याप्त है। प्रायः सभी देसी पत्रों ने द० अफ्रीका की सहायता के लिये अपील की थी पर वे पत्र कितना इकट्ठा कर सके? दूसरी ओर प्रचारक ने पांच हज़ार की अपील की और वह आज तक छः हज़ार से ऊपर रुपया अपने पीड़ित भाइयों की सहायता के लिये भेजचुका है। परन्तु हम इस साधारण रीति को आज उल्लंघन करना चाहते हैं। इस वर्ष हमारे देश में जो बड़ी २ घटनाएं हुईं, हमारे देश को जिन संकटों में से गुज़रना पड़ा, उन का दोहराना निरर्थक है। इस वर्ष प्रचारक जो कुछ देश और धर्म की सेवा कर सका? उस के यश को स्वयं न लेकर हम अपने परिवार के ही अर्पण करते हैं क्योंकि उन की कृपा और सहायता के बिना हम क्या कर सकते थे? इस कथा को छोड़ कर हम प्रचारक के आगामी कार्य क्रम के विषय में एक दो बातें कहना चाहते हैं।

उद्देश्य

सद्धर्म्म-प्रचारक ने अपने साम्हने जो लक्ष्य रखा है वह सदा उस पर स्थिर रहा है और आगे भी रहेगा। वह सार्वभौम धर्म का प्रचारक है, आर्य समाज का सेवक है, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का भक्त है और देवनागरी का प्रेमी है। इस के अतिरिक्त देश में जहां कहीं विपत्ति हो, देश वासियों पर जहां कहीं संकट उपस्थित हो, वहीं अपनी तुच्छ सेवा को उपस्थित करना अपना कर्त्तव्य समझता है।

लेख

हम पहिले लम्बी प्रतिज्ञा नहीं करना चाहते पर इतना अवश्य विश्वास दिलाना चाहते हैं कि इस वर्ष हमने बड़े अच्छे लेखों का स्थिर प्रबन्ध कर लिया है। हम जानते हैं कि प्रचारक परिवार महात्मा मुंशीरामजी के लेखों को पढ़ने के लिये चातक की तरह उत्सुक रहता है। हमने उन से लेखों के लिये निवेदन किया है और उन्हों ने भी यथा शक्ति प्रति सप्ताह धर्मोपदेश देने का निश्चय कर लिया है। इस सप्ताह भी पाठक तीसरे पृष्ठपर उन का लिखा हुआ आत्मदर्शन पढ़ेंगे लगातार कई महीनों से आत्मा जी की "आप बीती जग बीती" निकल रही है। यह मनोरञ्जक लेखमाला अभी कई मासों तक बराबर निकलती रहेगी। आगे से प्रति सप्ताह एक पृष्ठ में वैदिक धर्म सिद्धान्तों की चर्चा करने का हमारा विचार है। प्रतिसप्ताह गुरुकुल समाचार निकलने का हमने निश्चित प्रबन्ध कर लिया है।

आर्थिक अवस्था

आज तक हमने अपनी आर्थिक अवस्था की कहानी कभी ग्राहकों के साम्हने नहीं रक्खी और नाहीं उस कहानी को आज सुनाने के लिये तय्यार हैं। गुरुकुल से उठाकर देहली जाने में हमें जो आर्थिक क्षति उठानी पड़ी और उठा रहे हैं उसे हमी जानते हैं। इस के कई कारण हैं। उन में से प्रधान कारण प्रचारक का अपने प्रेस का न होना है। कोई भी समाचार पत्र और विशेषतः हिन्दी के समाचार पत्र अपने प्रैस के बिना आर्थिक दृष्टिसे नहीं चल सकते। हमारा प्रचारक तो देहली में छपता है जहां केवल एक ही प्रेस है इस से हमें पत्र की छपाई बड़ी मंहगी पड़ती है। पर हमने सद्धर्म प्रचारक को सदा प्रचार का साधन समझा है; इसे कमाई का साधन न हमने कभी बनाया है और न बनाने का विचार है। हमने धर्म के संदेसे को दूर तक पहुंचाने के लिये इस के वार्षिक मूल्य को घटाने का विचार किया है। हम ३॥) की जगह वार्षिकमूल्य २॥) कर देना चाहतेथे ताकि यह बहुत लोगों के हाथ में जासके। हमें शोक है कि कई कारणों हमारी इच्छापूर्ण नहीं होसकी। तब भी हम अपने ग्राहकों को निराश नहीं करना चाहते। थोड़ी बहुत कमी करने का हमने निश्चय कर ही लिया है। अब आगे से प्रचारक साढ़े तीन की जगह ग्राहकों को

तीन रुपये में

दिया जाया करेगा। यदि हमारी आशा के अनुकूल ग्राहक संख्या बढ़ जाती तो हम प्रचारकको इससे भी सस्ता करके इसे प्रचार का अधिक साधन बना सक्के। अब प्रचारक को अधिक हाथों में पहुंचाने की एक ही रीति है। यदि कुछ ऐसे धर्म के प्रेमी निकल आवें जो अपनी ओर से एक एक रुपया देकर रियायती प्रचारक दिलवा सकें तो कई धर्म पिपासुओं की पिपासा तृप्त हो सकती है। पाठक दूसरे स्थान पर पढ़ेंगे कि म० मुखराम जी १५ ग्राहकों को ऐसे रियायती प्रचारक दिलवाने के लिये १५) भेजे दिये हैं। हमें आशा है कि इनका अनुकरण करने वाले और भी कई प्रेमी निकलेंगे।

ग्राहकों को सूचना।

इस अंकके साथ प्रचारक का पिछला वर्ष समाप्त होकर नया वर्ष आरम्भ होता है इस वर्ष का दूसरा अंक आपके पास वी. पी. भेजा जायगा। वी. पी. ३) का होगा। आशा है, आप वी. पी० छुड़वा कर हमें अनुगृहीत करेंगे।

प्रबन्धकर्त्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

८ सद्धर्म-प्रचारक ८ वैसाख शनिवार सम्वत १९७१

सद्धर्मप्रचारक

आर्य समाज का प्रचार

क्यों रुक रहा है ?

उपदेशक विभाग में संशोधन की आवश्यकता

(२)

पिछली वार के मुख्य लेख में हमने यह दिखलाने का यत्न किया था कि आर्य समाज के प्रचार रुक जाने का कारण वेद प्रचार निधि की कमी नहीं किन्तु इस का कारण वह तरीका है जो आजकल हमारे वेद प्रचार का साधन बन रहा है। हमारा वेद प्रचार केवल मौखिक है और प्रचारकों के सदा घूमते रहने से वह भी स्थायी प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सक्ता। आर्यसमाज की आरम्भिक अवस्था में ऐसे प्रचार की आवश्यकता थी और उन दिनों में इस प्रकार के प्रचार से लाभ भी हुआ। परन्तु अब प्रचार का यह तरीका सर्वथा अयोग्य सिद्ध हो रहा है। गतांक में हमने उन दो तीन हानियों का ज़िक्र किया था जो भ्रमणकारी उपदेशक विभाग के कारण हो रही हैं। व्यय की अधिकता, लाभकी न्यूनता और अयोग्य पुरुषों की-भर्ती—ये तीन दोष हमने दिखलाए थे। आज यह सभी जगह शिकायत है कि उपदेशक विभाग में योग्य पुरुष नहीं आते। हम तो यह कहते हैं कि यदि योग्य पुरुष आ भी जांय तो उसकी योग्यता के स्थिर रहने का कोई साधन नहीं है। जिस प्रचारक के बारह मास घूमने और व्याख्यान देनें में व्यतीत होते हैं उसे अपनी योग्यता बढ़ाने अथवा पुरानी योग्यता कीस्थिर रखने का क्या साधन है। उसका आधा समय तो रेलगाड़ी की भेंट होता है और बचे हुए आधे में उत्सवों की शोभा बढ़ानी होती है। तब बतलाइये, वह प्रचारक स्वाध्याय के लिये कौनसा समय निकाले। इसी लिये ऐसे प्रचारकों के व्याख्यानों में कोई नई बात नहीं रहती, उन्हें वेही पुरानी घुटी घुटाई बातें कहनी पड़ती हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि लोग वेतन भोगी उपदेशकों की अपेक्षा कभी कभी व्याख्यान देने वालों के व्याख्यानों को अधिक रुचि से सुनते हैं। सामयिक व्याख्याताओं को स्वाध्याय के लिये समय मिलता है और वे बड़े प्रयत्न से अपने व्याख्यान तय्यार करते हैं। जिधर देखिये उधर उत्सवों में ऐसे ही व्याख्याताओं की मांग आती है, उपदेशक तो केवल अनावश्यक समयों को भरने के लिये समझे जाते हैं। हम से उपदेशक महाशय रुष्ट न हों, हम इस विभाग का संशोधन चाहते हैं इसी लिये हम दोषों को दिखाने में स्पष्ट वादिता का उपयोग ले रहे हैं।

हमें स्मरण है कि एक वार एक आर्य्य समाजने उत्सव पर उपदेशक मांगे। उन तिथियों में कई उत्सव थे, गुरुकुल के उपाध्याय तथा और व्याख्याता अन्य उत्सवों के लिये नियत हो चुके थे। उस समाज के उत्सव में प्र० नि० सभा के मन्त्री ने तीन चार सभा के उपदेशक भेज दिये। उन उपदेशकों में एक दो आर्य समाज के योग्य तम और बहुत पुराने पंडित थे। उत्तर में समाज के अधिकारियों ने लिखा कि हमें उत्सव के लिये 'आदमी' चाहिये, हम इन उपदेशकों को क्या करें। अर्थात् उस समाज की दृष्टि में ये उपदेशक आदमी ही नहीं थे। हमें स्वयं कई उपदेशकों से बात चीत करनें का अवसर मिला है, वे स्वयं अपनी स्वाध्याय की कमी को अनुभव करते हैं। पर इस कमी को मिटाने का उनके पास कोई साधन नहीं है।

(५) परिवार से दूरता—उपदेशकविभाग में योग्य पुरुषों के न आने का एक और भी कारण है और वह परिवार से दूरता है। उपदेशकों को सदा ही घूमना पड़ता है। वे न तो अपने परिवार के साथ रह सक्ते हैं और नाहीं उसकी देख भाल कर सक्ते हैं। अच्छे लोगों के उपदेशक न बनने का यह बहुत बड़ा कारण है। जिन में किसी और काम करने की कुछ भी योग्यता होती है वे भ्रमणकारी उपदेशक बनना पसंद नहीं करते। पुराने समय में घूमकर उपदेश देनेका काम सन्यासी किया करतेथे जिनका न कोई सम्बन्धीथा और नाहीं उन्हें किसी परिवार की चिन्ता थी। वे निश्चिन्त होकर घूमा करते थे। पर आजकल हम सन्यासियों का काम गृहस्थियों से लेना चाहते हैं जो सर्वथा असम्भव है। इस के साथ ही हम उन्हें उनके परिवारों से अलग करके सच्चे प्रचारकों की आधी उपयोगिता कम कर देते हैं। एक आदर्श गृहस्थ व्यतीत करता हुआ प्रचारक अपनी सहचारिणी की सहायता से परिवारों में जो काम कर सक्ता है, उसे आज कल के प्रचारक कदापि नहीं कर सक्ते। यही कारण है कि इतने प्रचार के हो चुकने पर भी हमारे घरों में वही पौराणिकता विद्यमान है। टीका धारी ब्राह्मणों का प्रवेश हमारे घरों में है, परन्तु हमारे प्रचारकों का स्त्रियोंपर कुछ भी प्रभाव नहीं है।

(६) प्रचारकों के सदा घूमते रहने से और किसी एक जगह स्थिर हो कर न बैठने से एक और बड़ा दोष उत्पन्न हो रहा है जिसे सभी अनुभव कर रहे हैं। आर्य समाज के दो अंग हैं—एक प्रचार और दूसरा इसका संगठन या संस्था। इन दो भागों को ब्राह्मण और क्षत्रिय नाम से पुकार सक्ते हैं। आर्य समाज के उपदेशक और व्याख्याता इसके ब्राह्मण हैं और समाजों के प्रधान मन्त्री और अधिकारी क्षत्रियांश के प्रतिनिधि हैं क्योंकि येही समाज की संस्थाका प्रबन्ध करने वाले हैं। समाज में ब्राह्मणत्व की अपेक्षा क्षत्रियत्व की वैसे ही प्रधानता है। जो थोड़े बहुत प्रचारक हैं भी वे भी इधर उधर घूमते रहते हैं। इसका फलयह होताहै कि लोगोंके सामने आर्य्य समाज का क्षत्रिय अंग ही रहता है। नगर निवासी प्रचारकों और उपदेशकों को तो केवल उत्सव के तीन दिनों में ही देखते हैं पर प्रधान मन्त्री और प्रबन्धकर्ता शेष ३६२ दिन उनकी आंखों के सामने रहते हैं। प्रबन्ध और चुनाव की रीति में झगड़ों का उठना स्वाभाविक है। लोग समझने लगे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं कि आर्य्यसमाज धर्मसमाज नहीं किन्तु प्रबन्ध समाज है जहां अधिकारों और पदों के लिए खींचा तानी हुआ करती है। ऐसी जगह किसी धर्म पिपासु की पिपासा को तृप्त करने का कौन सा साधन है? हम इस संगठन को उजड़ना नहीं चाहते पर हम कहते हैं कि समाज के प्रधान मन्त्री और पदाधिकारियों के साथ साथ ऐसे स्थान स्थान पर ऐसे जीवनों की आवश्यकता नहीं है जो इन झगड़ों से सम्बन्ध न रखते हुए भी आर्य्य समाज के अंग हों। और लोगों में प्रेम और वा के भाव संचारित कर सकें।

लेख बढ़ गया है और इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता भी नहीं है। सभी लोग इस समय अनुभव कर रहे हैं कि समाज के प्रचार का काम बहुत ढीला पड़ रहा है। हमारी सम्मति में उसका कारण हमारे वेद प्रचार का तरीका है। जब तक हम अपने वेद प्रचार के तरीके में भारी परिवर्तन नहीं करते तब तक प्रचार का रुका हुआ काम आगे बढ़ नहीं सकता। वह परिवर्तन किस तरह का होना चाहिये, इसका वर्णन हम अगली बार करेंगे।

———

शाखा गुरुकुल मुलतान का उत्सव—मुलतान की शाखा गुरुकुल का वार्षिकोत्सव ११, १२, १३ अप्रैल को हुआ। उत्सव के विस्तृत समाचार अभी तक हमें प्राप्त नहीं हुए। एक निजू पत्र से पता लगा है कि 'उत्सव व्याख्यानों की दृष्टि से अच्छा रहा। अपील पर ३००) एकत्रित हुए। नए १३ ब्रह्मचारी प्रविष्ट हुए। उत्सव में मुलतान निवासियों के उत्साह को देखकर यही प्रतीत होता था कि वे शाखा को चलाने के लिये कटिबद्ध हैं। दान में ५० बीघे के लगभग भूमि मिली। मुलतान शहर की दो दूकानें एक दानी ने दी हैं। अन्य वर्षों की अपेक्षा हर तरह से गु० कु० को सफलता प्राप्त हुई है।" उत्सव पर गुरुकुल के नये चार स्नातक ब्र० विश्वनाथ, ब्र० यज्ञदत्त, ब्र० ब्रह्मदत्त तथा ब्र० चन्द्रमणि पधारे थे। चारोस्नातकों के व्याख्यान भी हुए ब्र० यज्ञदत्त के व्याख्यान का विषय "आर्य जाति का सर्वस्व गुरुकुल" था। यह व्याख्यान बड़ा प्रभावशाली हुआ। अपील के पीछे ब्र० ब्रह्मदत्त का संस्कृत में एक व्याख्यान हुआ।

———

१५ रियायती प्रचारक—प्रचारक के विषय में यदि हम अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं तो ग्राहकों ने भी कभी इस शिकायत का हमें अवसर नहीं दिया कि वे अपने कर्त्तव्य को नहीं समझ रहे हैं। प्रचारक के कई ऐसे प्रेमी हैं जिन्हें प्रचारक पढ़ने की बहुत लालसा रहती है परन्तु पूरा मूल्य न दे सकने के कारण प्रचारक से वंचित रह जाते हैं। ऐसे लोगों की इच्छा को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष ही प्रचारक परिवार के दानी सभासद् हाथ बढ़ाया करते हैं। इस वर्ष गुरुकुक के प्रधान अधिष्ठाता और प्रचारक के पुराने प्रेमी मा० सुखराम बोए. ने पहल की है। उन्होंने हमारे पास १५) इस लिए भेजे हैं कि हम १५ ग्राहकों को तीन की जगह दोदो रुपये में प्रचारक दे दें। जो सज्जन इस रियायत से लाभ उठाना चाहें वे शीघ्र पत्र लिखें। पहले पन्द्रह ग्राहकों को हम दो रुपये में प्रचारक देंगे।

———

गुरुकुल मंडली में प्र० नि० सभा के सभासद—दो सप्ताह हुए, हमने गुरुकुल की आर्थिक अवस्था को पुष्ट करने के लिये एक मंडली के निकलने की सम्मति दी थी जो सारे भारत वर्ष का चक्कर लगाकर धन एकत्रित करे। उसके विषय में आज प्रेरित पत्रों में म० ज्योतीराम जी का एक लेख छपा है। उनकी सम्मति है कि मंडली में महात्मा जी और गुरुकुल के उपाध्यायों की अपेक्षा प्रतिनिधि सभा के सभासदों को धन एकत्रित करने के लिए जाना चाहिये। क्योंकि महात्मा जी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है और उपाध्यायों के अधिक बाहिर रहने से पढ़ाई में हानि होगी। हम म० ज्योतीरामजी के लेख से सहमत हैं क्योंकि हम अपने अनुभव से इस बात को जानते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य के बिलकुल बिगड़ जाने पर भी यह केवल महात्मा जी की अदम्य इच्छा शक्ति ही है जिसके सहारे वे किसी न किसी तरह काम चला रहे हैं। उपाध्यायों के बाहिर रहने से जो हानि होती है, उसका संकेत पिछले सप्ताह गुरुकुल समाचारों में भी किया गया था। गत सप्ताह हमें स्वयं अपनी आंखों से यह अवस्था देखने का अवसर मिला। कई दिनों से गुरुकुल के तीन उपाध्याय बाहिर हैं। जब से यह सत्र आरम्भ हुआ है तब से ही प्रो० बालकृष्ण जी के बाहिर रहने के कारण अर्थ शास्त्र और इतिहास के विद्यार्थी तो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। इस के अतिरिक्त प्रतिनिधि सभा गुरुकुल की स्वामिनी सभा है। आचार्य और उपाध्यायवर्ग गुरुकुल की आन्तरिक दशा के उत्तरदाता हैं; गुरुकुल के लिये धन की चिन्ता गुरुकुल की स्वामिनी सभा को होनी चाहिये। पर प्रश्न यह है कि गुरुकुल से बाहिर अन्तरंग सभा के कितने सभासद हैं जिनको गुरुकुल की चिन्ता है? जो सभासद गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने के लिये दो दिन नहीं निकाल सकते वे एक दो मास का अवकाश निकाल सकेंगे, इस की हमें सम्भावना नहीं है। हमारा पिछला अनुभव इस बात का साक्षी है। इसी लिये सब कठिनाइयों का अनुभव करते हुए भी हमने मंडली में आचार्य और उपाध्यायों के नाम लिखे थे। यदि स्वामिनी सभा के सभासद मंडली के लिये तय्यार हो जावें तो कहना ही क्या है।

"कालिज का ब्रह्मचारी"—सहयोगी आर्य्य मित्र में पं० देशबदेवजी को एक लेखक ने कालिज का ब्रह्मचारी लिखा है। इसे देख कर हमें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। जहां तक हमें ज्ञान है, पं० देशबदेवजी किसी विशेष कालिज के ब्रह्मचारी नहीं हैं। वे उन पुरुषों में से हैं जिन के जीवन का मूलमन्त्र स्वावलम्बन होता है। पं० देशबदेवजी अब जिस स्थान पर पहुंचे हैं और उन्होंने जो योग्यता प्राप्त की है वह उन के अपने परिश्रम का फल है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

८ सद्धर्म-प्रचारक ८ वैसाख शनिवार सम्वत १९७१

सद्धर्मप्रचारक

आर्य समाज का प्रचार क्यों रुक रहा है ?

उपदेशक विभाग में संशोधन की आवश्यकता

(२)

पिछली वार के मुख्य लेख में हमने यह दिखलाने का यत्न किया था कि आर्य समाज के प्रचार रुक जाने का कारण वेद प्रचार निधि की कमी नहीं किन्तु इस का कारण वह तरीका है जो आजकल हमारे वेद प्रचार का साधन बन रहा है। हमारा वेद प्रचार केवल मौखिक है और प्रचारकों के सदा घूमते रहने से वह भी स्थायी प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सक्ता। आर्यसमाज की आरम्भिक अवस्था में ऐसे प्रचार की आवश्यकता थी और उन दिनों में इस प्रकार के प्रचार से लाभ भी हुआ। परन्तु अब प्रचार का यह तरीका सर्वथा अयोग्य सिद्ध हो रहा है। गतांक में हमने उन दो तीन हानियों का ज़िक्र किया था जो भ्रमणकारी उपदेशक विभाग के कारण हो रही हैं। व्यय की अधिकता, लाभकी न्यूनता और अयोग्य पुरुषों की-भर्ती—ये तीन दोष हमने दिखलाए थे। आज यह सभी जगह शिकायत है कि उपदेशक विभाग में योग्य पुरुष नहीं आते। हम तो यह कहते हैं कि यदि योग्य पुरुष आ भी जांय तो उसकी योग्यता के स्थिर रहने का कोई साधन नहीं है। जिस प्रचारक के बारह मास घूमने और व्याख्यान देनें में व्यतीत होते हैं उसे अपनी योग्यता बढ़ाने अथवा पुरानी योग्यता कीस्थिर रखने का क्या साधन है। उसका आधा समय तो रेलगाड़ी की भेंट होता है और बचे हुए आधे में उत्सवों की शोभा बढ़ानी होती है। तब बतलाइये, वह प्रचारक स्वाध्याय के लिये कौनसा समय निकाले। इसी लिये ऐसे प्रचारकों के व्याख्यानों में कोई नई बात नहीं रहती, उन्हें वेही पुरानी घुटी घुटाई बातें कहनी पड़ती हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि लोग वेतन भोगी उपदेशकों की अपेक्षा कभी कभी व्याख्यान देने वालों के व्याख्यानों को अधिक रुचि से सुनते हैं। सामयिक व्याख्याताओं को स्वाध्याय के लिये समय मिलता है और वे बड़े प्रयत्न से अपने व्याख्यान तय्यार करते हैं। जिधर देखिये उधर उत्सवों में ऐसे ही व्याख्याताओं की मांग आती है, उपदेशक तो केवल अनावश्यक समयों को भरने के लिये समझे जाते हैं। हम से उपदेशक महाशय रुष्ट न हों, हम इस विभाग का संशोधन चाहते हैं इसी लिये हम दोषों को दिखाने में स्पष्ट वादिता का उपयोग ले रहे हैं।

हमें स्मरण है कि एक वार एक आर्य्य समाजने उत्सव पर उपदेशक मांगे। उन तिथियों में कई उत्सव थे, गुरुकुल के उपाध्याय तथा और व्याख्याता अन्य उत्सवों के लिये नियत हो चुके थे। उस समाज के उत्सव में प्र० नि० सभा के मन्त्री ने तीन चार सभा के उपदेशक भेज दिये। उन उपदेशकों में एक दो आर्य समाज के योग्य तम और बहुत पुराने पंडित थे। उत्तर में समाज के अधिकारियों ने लिखा कि हमें उत्सव के लिये 'आदमी' चाहिये, हम इन उपदेशकों को क्या करें। अर्थात् उस समाज की दृष्टि में ये उपदेशक आदमी ही नहीं थे। हमें स्वयं कई उपदेशकों से बात चीत करनें का अवसर मिला है, वे स्वयं अपनी स्वाध्याय की कमी को अनुभव करते हैं। पर इस कमी को मिटाने का उनके पास कोई साधन नहीं है।

(५) परिवार से दूरता—उपदेशकविभाग में योग्य पुरुषों के न आने का एक और भी कारण है और वह परिवार से दूरता है। उपदेशकों को सदा ही घूमना पड़ता है। वे न तो अपने परिवार के साथ रह सक्ते हैं और नाहीं उसकी देख भाल कर सक्ते हैं। अच्छे लोगों के उपदेशक न बनने का यह बहुत बड़ा कारण है। जिन में किसी और काम करने की कुछ भी योग्यता होती है वे भ्रमणकारी उपदेशक बनना पसंद नहीं करते। पुराने समय में घूमकर उपदेश देनेका काम सन्यासी किया करतेथे जिनका न कोई सम्बन्धीथा और नाहीं उन्हें किसी परिवार की चिन्ता थी। वे निश्चिन्त होकर घूमा करते थे। पर आजकल हम सन्यासियों का काम गृहस्थियों से लेना चाहते हैं जो सर्वथा असम्भव है। इस के साथ ही हम उन्हें उनके परिवारों से अलग करके सच्चे प्रचारकों की आधी उपयोगिता कम कर देते हैं। एक आदर्श गृहस्थ व्यतीत करता हुआ प्रचारक अपनी सहचारिणी की सहायता से परिवारों में जो काम कर सक्ता है, उसे आज कल के प्रचारक कदापि नहीं कर सक्ते। यही कारण है कि इतने प्रचार के हो चुकने पर भी हमारे घरों में वही पौराणिकता विद्यमान है। टीका धारी ब्राह्मणों का प्रवेश हमारे घरों में है, परन्तु हमारे प्रचारकों का स्त्रियोंपर कुछ भी प्रभाव नहीं है।

(६) प्रचारकों के सदा घूमते रहने से और किसी एक जगह स्थिर हो कर न बैठने से एक और बड़ा दोष उत्पन्न हो रहा है जिसे सभी अनुभव कर रहे हैं। आर्य समाज के दो अंग हैं—एक प्रचार और दूसरा इसका संगठन या संस्था। इन दो भागों को ब्राह्मण और क्षत्रिय नाम से पुकार सक्ते हैं। आर्य समाज के उपदेशक और व्याख्याता इसके ब्राह्मण हैं और समाजों के प्रधान मन्त्री और अधिकारी क्षत्रियांश के प्रतिनिधि हैं क्योंकि येही समाज की संस्थाका प्रबन्ध करने वाले हैं। समाज में ब्राह्मणत्व की अपेक्षा क्षत्रियत्व की वैसे ही प्रधानता है। जो थोड़े बहुत प्रचारक हैं भी वे भी इधर उधर घूमते रहते हैं। इसका फलयह होताहै कि लोगोंके साम्हने आर्य्य समाज का क्षत्रिय अंग ही रहता है। नगर निवासी प्रचारकों और उपदेशकों को तो केवल उत्सव के तीन दिनों में ही देखते हैं पर प्रधान मन्त्री और प्रबन्धकर्ता शेष ३६२ दिन उनकी आंखों के साम्हने रहते हैं। प्रबन्ध और चुनाव की रीति में झगड़ों का उठना स्वाभाविक है। लोग समझने लगे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं कि आर्य्यसमाज धर्मसमाज नहीं किन्तु प्रबन्ध समाज है जहां अधिकारों और पदों के लिए खींचा तानी हुआ करती है। ऐसी जगह किसी धर्म पिपासु की पिपासा को तृप्त करने का कौन सा साधन है? हम इस संगठन को उ-चित नहीं चाहते पर हम कहते हैं कि समाज के प्रधान मन्त्री और पदाधिकारियों के साथ साथ ऐसे स्थान स्थान पर ऐसे जीवनों की आवश्यकता नहीं है जो इन झगड़ों से सम्बन्ध न रखते हुए भी आर्य्य समाज के अंग हों। और लोगों में प्रेम और वा के भाव संचारित कर सकें।

लेख बढ़ गया है और इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता भी नहीं है। सभी लोग इस समय अनुभव कर रहे हैं कि समाज के प्रचार का काम बहुत ढीला पड़ रहा है। हमारी सम्मति में उसका कारण हमारे वेद प्रचार का तरीका है। जब तक हम अपने वेद प्रचार के तरीके में भारी परिवर्तन नहीं करते तब तक प्रचार का रुका हुआ काम आगे बढ़ नहीं सकता। वह परिवर्तन किस तरह का होना चाहिये, इसका वर्णन हम अगली बार करेंगे।

———

शाखा गुरुकुल मुलतान का उत्सव—मुलतान की शाखा गुरुकुल का वार्षिकोत्सव ११, १२, १३ अप्रैल को हुआ। उत्सव के विस्तृत समाचार अभी तक हमें प्राप्त नहीं हुए। एक निजू पत्र से पता लगा है कि 'उत्सव व्याख्यानों की दृष्टि से अच्छा रहा। अपील पर ३०००) एकत्रित हुए। नए १३ ब्रह्मचारी प्रविष्ट हुए। उत्सव में मुलतान निवासियों के उत्साह को देखकर यही प्रतीत होता था कि वे शाखा को चलाने के लिये कटिबद्ध हैं। दान में ५० बीघे के लगभग भूमि मिली। मुलतान शहर की दो दूकानें एक दानी ने दी हैं। अन्य वर्षों की अपेक्षा हर तरह से गु० कु० को सफलता प्राप्त हुई है" उत्सव पर गुरुकुल के नये चार स्नातक ब्र० विश्वनाथ, ब्र० यज्ञदत्त, ब्र० ब्रह्मदत्त तथा ब्र० चन्द्रमणि पधारे थे। चारोस्नातकों के व्याख्यान भी हुए। ब्र० यज्ञदत्त के व्याख्यान का विषय "आर्य जाति का सर्वस्व गुरुकुल" था। यह व्याख्यान बड़ा प्रभावशाली हुआ। अपील के पीछे ब्र० ब्रह्मदत्त का संस्कृत में एक व्याख्यान हुआ।

———

१५ रियायती प्रचारक—प्रचारक के विषय में यदि हम अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं तो ग्राहकों ने भी कभी इस शिकायत का हमें अवसर नहीं दिया कि वे अपने कर्त्तव्य को नहीं समझ रहे हैं। प्रचारक के कई ऐसे प्रेमी हैं जिन्हें प्रचारक पढ़ने की बहुत लालसा रहती है परन्तु पूरा मूल्य न दे सकने के कारण प्रचारक से वंचित रह जाते हैं। ऐसे लोगों की इच्छा को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष ही प्रचारक परिवार के दानी सभासद् हाथ बढ़ाया करते हैं। इस वर्ष गुरुकुक के प्रधान अधिष्ठाता और प्रचारक के पुराने प्रेमी मा० सुखराम बी०ए. ने पहल की है। उन्होंने हमारे पास १५) इस लिए भेजे हैं कि हम १५ ग्राहकों को तीन की जगह दोदो रुपये में प्रचारक दे दें। जो सज्जन इस रियायत से लाभ उठाना चाहें वे शीघ्र पत्र लिखें। पहले पन्द्रह ग्राहकों को हम दो रुपये में प्रचारक देंगे।

———

गुरुकुल मंडली में प्र० नि० सभा के सभासद—दो सप्ताह हुए, हमने गुरुकुल की आर्थिक अवस्था को पुष्ट करने के लिये एक मंडली के निकलने की सम्मति दी थी जो सारे भारत वर्ष का चक्कर लगाकर धन एकत्रित करे। उसके विषय में आज प्रेरित पत्रों में म० ज्योतीराम जी का एक लेख छपा है। उनकी सम्मति है कि मंडली में महात्मा जी और गुरुकुल के उपाध्यायों की अपेक्षा प्रतिनिधि सभा के सभासदों को धन एकत्रित करने के लिए जाना चाहिये। क्योंकि महात्मा जी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है और उपाध्यायों के अधिक बाहिर रहने से पढ़ाई में हानि होगी। हम म० ज्योतीरामजी के लेख से सहमत हैं क्योंकि हम अपने अनुभव से इस बात को जानते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य के बिलकुल बिगड़ जाने पर भी यह केवल महात्मा जी की अदम्य इच्छा शक्ति ही है जिसके सहारे वे किसी न किसी तरह काम चला रहे हैं। उपाध्यायों के बाहिर रहने से जो हानि होती है, उसका संकेत पिछले सप्ताह गुरुकुल समाचारों में भी किया गया था। गत सप्ताह हमें स्वयं अपनी आंखों से यह अवस्था देखने का अवसर मिला। कई दिनों से गुरुकुल के तीन उपाध्याय बाहिर हैं। जब से यह सत्र आरम्भ हुआ है तब से ही प्रो० बालकृष्ण जी के बाहिर रहने के कारण अर्थ शास्त्र और इतिहास के विद्यार्थी तो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। इस के अतिरिक्त प्रतिनिधि सभा गुरुकुल की स्वामिनी सभा है। आचार्य और उपाध्यायवर्ग गुरुकुल की आन्तरिक दशा के उत्तरदाता हैं; गुरुकुल के लिये धन की चिन्ता गुरुकुल की स्वामिनी सभा को होनी चाहिये। पर प्रश्न यह है कि गुरुकुल से बाहिर अन्तरंग सभा के कितने सभासद हैं जिनको गुरुकुल की चिन्ता है? जो सभासद गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने के लिये दो दिन नहीं निकाल सकते वे एक दो मास का अवकाश निकाल सकेंगे, इस की हमें सम्भावना नहीं है। हमारा पिछला अनुभव इस बात का साक्षी है। इसी लिये सब कठिनाइयों का अनुभव करते हुए भी हमने मंडली में आचार्य और उपाध्यायों के नाम लिखे थे। यदि स्वामिनी सभा के सभासद मंडली के लिये तय्यार हो जावें तो कहना ही क्या है।

"कालिज का ब्रह्मचारी"—सहयोगी आर्य्य मित्र में पं० देशबदेवजी को एक लेखक ने कालिज का ब्रह्मचारी लिखा है। इसे देख कर हमें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। जहां तक हमें ज्ञान है, पं० देशबदेवजी किसी विशेष कालिज के ब्रह्मचारी नहीं हैं। वे उन पुरुषों में से हैं जिन के जीवन का मूलमन्त्र स्वावलम्बन होता है। पं० देशबदेवजी अब जिस स्थान पर पहुंचे हैं और उन्होंने जो योग्यता प्राप्त की है वह उन के अपने परिश्रम का फल है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहली की आर्य्य कन्या पाठशाला-देहली आर्य्य समाज ने (चावड़ी बाज़ारमें) एक कन्या पाठशाला खोली हुई है जो कई वर्षों से चल रही है। देहली में कई कन्या पाठशालाएँ हैं उन सब में से इस का मकान बड़ा है। इस में आने वाली कन्याओं की संख्या भी बहुत अच्छी है। अब तक यह पाठशाला छठी श्रेणी तक थी, पर नए वर्ष से पाठशाला के संचालकों ने इसे मिडिल तक कर देने का विचार कर लिया है। पाठशाला में नई अध्यापिकाएँ भी आगई हैं जो मिडिल तक कन्याओं को शिक्षा देने के लिये पर्याप्त हैं। हमें आशा है कि देहली निवासी इस पाठशाला से पूरा उपयोग लेंगे।

पं० बालमुकन्दजी की मृत्यु—यह सुन कर हमें अत्यन्त दुःख हुआ कि गत सप्ताह नजीबाबाद के पं० बालमुकन्दजी का देहान्त होगया। पं० बालमकन्दजी आर्य्य समाज के पुराने सेवक और गुरुकुल के बड़े प्रेमी थे। नजीबाबाद और उस के आस पास समाज का जो प्रचार था उस के प्रधान कारण पं०बालमुकन्दजी ही थे। लोग कहा करते थे कि पं० बालमुकन्दजी और उन के परिवार को आर्य्य समाज का रोग है। उन के परिवार को देवियें से जिन्हें मिलने का अवसर मिला है वे इस बात की साक्षी दे सक्ते हैं। उनका परिवार जहां जाता था वहीं सामाजिक भजनों और उपदेशों का स्रोत बहुत उठता था। सच मुच पं० जी के देहान्त से उनके परिवार को तो बहुत धक्का लगा ही है पर साथ ही नजीबाबाद में आर्यसमाज और गुरुकुल का एक स्तम्भ भी टूट गया है। पं० जी अपने पीछे बहुत बड़ा परिवार छोड़ चले हैं जिसका सारा भार उनपर ही था। इस दुःख में पं० जी के परिवार के साथ हम हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं।

हिन्दू मुसलमानों का मेल—पाठकों को स्मरण होगा कि ४ अप्रेल को सर जेम्स मैस्टन ने हिन्दू और मुसलमान नेताओं की एक सभा बुलाई थी जिस का उद्देश्य दोनों जातियों में मेल के उपाय सोचना था। सभा की सब कार्यवाही गुप्त रखी गई थी पर एक संवाद दाता ने स्थानीय सहयोगी "कामरेड" को इस सभा का कुछ समाचार पहुंचा दिया है। इस सभा में पांच विषयों पर विचार हुआ— (१)धार्मिक मेलों में सवारी (२) सरकारी नौकरियां (३) हिन्दी उर्दू का झगड़ा (४) लोकल बोर्ड में पृथक् निर्वाचन (५) गो हत्या। दोनोंओर से खुली खुली बातें हुईं। अन्त में महमूदाबाद के राजा की अध्यक्षता में एक सभा बनी जो दोनों जातियों में मेल उत्पन्न करने के उपायों को सोचेगी। प्रसंग वश यह भी कह देना अनुचित न होगा कि इस मेल पर कामरेड के सम्पादक मि० महम्मदअली की पहिले से ही ढ़ीटे दृष्टि है। आपकी शिकायत है कि सर जेम्स मैस्टन ने मुसलमानों के सच्चे नेताओं को सभा में नहीं बुलाया। मि० महम्मदअली भी उन "सच्चे नेताओं" में से एक थे जिन्हें न बुलाने का पाप सर जेम्स मैस्टन ने किया है।

डा० सुन्दरलाल प्रयाग विश्वविद्यालय के तीसरीबार उपाध्यक्ष नियत कियेगएहैं

जापान के परलोकगत मिकाडो की विधवा महाराणी का देहान्त होगया।

एक वोटाभिलाषिणी स्त्री ने ब्रिटिश अद्भुतालय के शीशे तोड़ डाले थे। उसपर अभियोग चला। जिस मैजिस्ट्रेट ने दोष लगाकर उसे दौरे सुपुर्द किया थी उस के मुंहपर स्त्री ने कोगज़ों का बंडल मारा।

"नेटिवटाइम"का प्रतीकार—हमारे देश में "नेटिवटाइम" या देसी समय प्रसिद्ध है। यदि आप सभा का विज्ञापन ६ बजे देंगे तो लोग सात बजे एकट्ठा होंगे। यह नियम इतना निश्चित होगया है कि सभा करने वाले लोग पहिले से ही देसी समय का मार्जन छोड़ लेते हैं। यदि साढ़े पांच का विज्ञापन हो तो समझ लीजिये कि सभा करने वाले ६ बजे सभा आरम्भ करना चाहते हैं। यदि कोई समय का मूल्य समझने वाला विज्ञापन देखकर साढ़े पांच पहुंच जावे तो उसे घंटाभर बैठे तिनके ही तोड़ने पड़ेंगे। देहली में सभी चीज़ों की उन्नति हो रही है। यहां के कई लोगों ने इस विषय में भी उन्नति करने का निश्चय कर लिया है। उन्होंने विज्ञापन ही दो तरह के बना डाले हैं। अंग्रेज़ी के विज्ञापनों में जो समय दिया जाता है, उसकी अपेक्षा उर्दू हिन्दी के विज्ञापनों में एक घंटा पहिले सभा का आरम्भ होना बतलाया जाता है। कई मास हुए, जब यहाँ द० अफ्रीका सम्बन्धी सभा हुई थी, तब ऐसा ही विज्ञापन दिया गया था। उस समय हमने समझा था कि सम्भवतः यह असावधानता का फल है। विज्ञापन दाताओं में से एक ने कहा भी ऐसा ही था और क्षमा भी माँगी थी। पर गत सप्ताह "इन्द्रप्रस्थ हिन्दू कन्या पाठशाला" के पारितोषक वितरण के विज्ञापन छपे थे, उन में भी दो तरह का समय दिया गया था। विज्ञापनों के नीचे राय बहादुर सुल्तानसिंह का नाम था। हमें उर्दू का विज्ञापन मिला। उसमें सभा का समय साढ़े पांच था। विज्ञापन के समय पर पहुंचने पर अधिकारियों के दर्शन न हुए। पूछने पर पता लगा कि अंग्रेज़ी विज्ञापनों में ६ का समय दिया गया है। जब हम ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया तो पता लगा कि यह बात जान बूझ कर की गई है। दो तरह का विज्ञापन देने पर भी उस दिन मैनेजिंग कमेटी के सभासद साढ़े ६ बजे तक न आए और सभा का कार्य सात बजे आरम्भ हुआ। एक ठठोल ने कहा कि शायद आज चार तरह का समय निश्चित किया गया है। (१) उर्दू हिन्दी वालों के लिये साढ़े पांच (२) अंग्रेजी वालों के लिये ६, (३) मैनेजिंग कमेटी के सभासदों के लिए साढ़े ६ और(४)सभा की प्रधाना श्रीमती हेली के लिये सात। हम समझते हैं कि यदि चारों तरह का समय एक ही विज्ञापन में दे दिया जाया करे तो कई सज्जनों को बहुत सुभीता हो सकता है। हमें आशा है कि आगे से हमारे निवेदन पर ध्यान दिया जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय का अद्भुत बल।

कविवर माघ ने मनुष्य जाति के इतिहास पर खूब गहरी दृष्टि डाल कर ही कहा था कि 'समय एव करोति बला बलम्' समय के घोर मेघ की बड़ी ही विचित्र गति है। नहीं कह सकते कि वह बरसता हुआ किस सौभाग्य शाली वृक्ष को हरा भरा कर देगा, और कौन से हरे भरे पौदे को आक की भांति रुंड मुंड कर देगा। इसी विचित्र गति वाले समय के वश में पृथिवी तल के रहने वाले जड़ और चेतन—सब की स्थिति है। चैत्र मास का प्रारम्भ होता है, प्रकृति देवी शुद्ध आकाश रूपी ओढ़नी ओढ़ कर और नये २ खिलते हुए फूलों का शृङ्गार करके पक्षेरुओं के सुरीले गान द्वारा मनुष्य मात्र का मन मोहने लगती है। संसार नाटक के देखने वाले सब प्राणी सामाजिकों की भांति नाटक के रङ्ग में रङ्गे जाकर 'ब्रह्मा स्वाद सहोदर' सुख का अनुभव कर। लगते हैं। जो बेचारे पक्षी सर्दी के मारे घोंसले के बाहिर मुंह निकालने की हिम्मत न करते थे, वे अब चारों ओर कूदते उड़ते और चह चहाते फिरते हैं। मानों सर्दी और धूप दोनों को सान्मुख्य के लिये ललकार रहे हैं। जो वायु हिमालय की लपेट में पड़ कर सर्दी पा हुआ लोगों को काटने के लिये भागता था, अपने मीठे २ शरीर स्पर्श से मानों किये अपराधों के लिये क्षमा मांग रहा है। यह कैसे हुआ? इतना परिवर्तन किसने कर दिया? कठोर कुहरे को नाम शेष कर देने वाला, अत्याचारी पहाड़ी वायु का मान मर्दन करने वाला और माघ मास की नादिरशाही सेनाओं को तितर बितर कर देने वाला सूरमा कौन है? प्रातःकाल सूर्य की ओर को मुंह किये हुए सूरजमुखी का फूल अपने पीले होंठ हिला कर कहता है कि वह सूरमा 'समय' है।

जड़ जगत् में समय का अप्रतिद्वन्द्वी राज्य है। कोई उस पर रोक टोक लगाने वाला नहीं है। प्रतिनिधि सभा या पार्लियामेंट की सम्मति से वह बंधा हुआ नहीं रहता। हिमालय और एल्प्स मिल कर यदि चाहें तो ग्रीष्म ऋतु के आगमन को नहीं रोक सकते, गङ्गा और नील अपने सारे जल बल से यत्न करें तो भी वैशाख में वर्षा ऋतु नहीं ला सकते। और तो क्या, यदि सातों समुद्र प्रस्ताव पास करदें, तो भी भारत जैसे अभागे देश में सामयिक दुर्भिक्ष पड़ने से नहीं रुक सकता। समय के राज दण्ड के सन्मुख रूस के ज़ार का राजदण्ड बहुत ही शिथिल और कोमल है।

जैसे जड़ संसार में समय का अप्रतिद्वन्द्वी राज्य है, उसी प्रकार चेतन जगत् में भी उस का एक सत्तात्मक शासन है। उस के प्रभाव से बचना किसी चेतन की शक्ति में भी नहीं है। जो लोग समय रूपी घोड़े की लगाम पकड़ कर पीछे चलाने का अभिमान किया करते हैं, वे बहुत भूलते हैं; क्योंकि जिसे वे समय की लगाम समझे हुए हैं, असल में वह उस की दुम है। उसे पकड़े हुए वे चुपके चुपके समय के पीछे २ चले जाते हैं। बड़े से बड़ा, और असाधारण व्यक्ति भी समय से आगे नहीं निकल सकता। जैसे आकाश मंडल में कभी कभी धूम केतु उदित होता है, और अन्य सब अन्तरिक्ष वासी देवताओं से अनूठी चाल ढाल दिखलाता है इसी प्रकार मनुष्य समाज के धूम केतु भी कभी कभी आया करते हैं, जिन्हें लोग महा पुरुष के नाम से पुकारते हैं। महापुरुष असाधारण व्यक्तियों का नाम है, उन्हें साधारण पुरुषों के नियम नहीं लगते। किन्तु क्या वे समय से आगे होते हैं? हम समझते हैं कि एक दार्शनिक के इस वचन में बहुत सचाई है कि 'महा पुरुष जहाँ अपने समय का पिता होने का दावा रखता है, वहां वह साथ ही पुत्र भी होता है।" हम तो कहेंगे कि वस्तुतः वह समय का आदर्श पुत्र होता है और अपने समय की विशेष लड़ियों को इकट्ठा करके आगामी सन्तानों के सामने एक नई विचार शृङ्खला रख जाता है। समुद्र के तल पर मोती बिछे हुए हैं, समुद्र में रहने वाले जन्तु उन से कुछ भी लाभ नहीं उठा सकते। डुबकी मारने वाला ग़ोता लगाता है, और थैली भर लाता है। क्या उसने समुद्र के तल पर जाकर नये मोती बना लिये! नहीं, उस ने नये मोती नहीं बनाये, उसने तो केवल बिखरे हुए मोतियों को इकट्ठा करलिया है। साधारण लोग इस भूतल पर जलचरों की भांति निवास करते हैं। महा पुरुष इसी समयसागर में ग़ोता लगाता है और मोतियों का ढेर संसार के सामने धर देता है। वह नई सचाइयां नहीं बनाता, वह केवल समय में बिखरी हुई सचाइयों को चुन लेता है।

किसी भी महापुरुष के चरित का आलोचन कीजिये, आप को ऊपर कहे हुए सिद्धान्त की सत्यता प्रतीत हो जायगी। बुद्ध देव एक नये सम्प्रदाय के संस्थापक थे। कहा जा सकता है कि उन्हों ने नई सचाइयां घड़कर लोगों के सामने रखीं। किन्तु इतिहास अपने अकाट्य प्रमाणों को दिखा दिखा कर इस कथन के विरुद्ध साक्षी देरहा है। यह कहना ऐतिहासिक झूठ नहीं है कि बुद्ध देव ने सांख्य दर्शन के नाम से प्रसिद्ध विचार पद्धति को एक ओर से लिया और पौराणिक सम्प्रदाय के ध्यानी लोगों के आचार शास्त्र को उस के साथ मिला कर बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव किया। बुद्धदेव ने एक नवीन दर्शन शास्त्र के साथ प्राचीन आचार पद्धति को मिलाने के सिवा कुछ नहीं किया। समय की ही मांग थी, जिसे बुद्ध देव ने पूरा किया और पूरा भी किया समय के अन्दर विद्यमान साधनों से।

जब महा पुरुषों की यह दशा है, तब साधारण पुरुषों का क्या कहना है? एक कठ पुतली तार के साथ परवश होकर नाचती है, किन्तु साधारण मनुष्यों की समय के प्रति परवशता उस से कहीं अधिक है। उन की चाल ढाल, उन के रीति रिवाज, उन के विचार और आचार सब पहले से पड़ी हुई रेखाओं के ऊपर ही ऊपर चलते हैं। उन की जीवन रूपी रेल गाड़ी समय की कड़ी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हुई पटरी पर भागती चली जाती है। एक व्यक्ति का धर्म और उस के नैतिक विचार उस के समय की जायदाद के भाग हुआ करते हैं। वह उन से ऊपर नहीं उठ सकता। यह हम नहीं कहते कि अपने लिये धर्म या विचारों के कपड़े चुनने में साधारण मनुष्य को अपनी विवेक शक्ति से काम नहीं लेना पड़ता, किन्तु इस में सन्देह नहीं कि समय रूपी भवन में चारों ओर दीवारोंपर अनेक प्रकार के सूट और अनेक प्रकार के वेष टंगे रहते हैं। मनुष्य विवेक शक्ति लगाकर उन्हीं में से किसी एक को चुन सकता है, उस भवन से बाहिर नहीं जा सक्ता। जिस का विवेक थोड़ा होगा, वह अपने सर्वथा समीप वाले कपड़े पर हाथ मारेगा, और विवेक शक्ति वाला मनुष्य दृष्टि दौड़ाकर दस बीस पग इधर उधर भी धर लेगा, किन्तु उस भवन से बाहिर जाना उसके लिये असम्भव के समान है।

इसी लिये हमने लेख के आदि में लिखा है कि माघ कविका यह कहना मनुष्य प्रकृति के गहरे अनुशीलन का फल है कि शक्ति का देने वाला या हटाने वाला समय ही है। (प्रबोध)

"कोकिल"

है यद्यपि वसन्त की शोभा,
परम सुहावन नीकी।
हे हे कोकिल! किन्तु लगै तब,
वचन सुधा बिन फीकी॥
सुरभि युक्त सहकार मञ्जरी,
पै मधुकर गुंजारै।
पर तेरे दर्शन बिन कोकिल!
सम चित चैन न धारै॥
कान्तिमयी रमणीय चन्द्रिका,
में मलया मिल धावै।
कर कर याद तुम्हारी कोकिल।
नयन नीर बरसावैं॥
भाग्यहीन भारत वासिन को,
तुम तो मत बिसरावो।
हित के वचन सुनाय सबन को,
वैर विरोध नसावो॥

श्री हरिकृष्ण यजुर्वेदी

प्रेरित

(पत्र प्रेरकों के मत का सम्पादक उत्तरदाता नहीं)

संयुक्त प्रान्त की आर्यसभाओं की सेवा में निवेदन।

मान्यवर!

आज इस बात को बताने की आवश्यकता नहीं कि जो कार्य्य किसी सुसंगठित संस्था के अन्तर्गत रहकर किये जाते हैं, उन में अनियमता का होना बहुत ही कम सम्भव होता है और जब काम नियमबद्ध होता रहता है तो फिर उसकी सफलता की बहुत कुछ आशा होने लगती है, जनता की दृष्टि में उस का गौरव समा जाता है। प्रसन्नता की बात है कि आर्य्य जगत में इस प्रकार की कतिपय सुनियन्त्रित संस्था विद्यमान हैं, जो किसी महती सभा के अधीन रहकर सब कार्य्य सुव्यवस्था पूर्वक करती हैं तथा पब्लिक से प्राप्त किये हुए धन को मितव्ययिता साथ सदुपयोग में लाना जानती हैं। इस के विरुद्ध ऐसी भी कुछेक संस्थायें हैं जो किसी नियमबद्ध संगठन के अन्दर न रह कर स्वतन्त्रता पूर्वक स्वकार्य्य साधन में संलग्न रहना अपना कर्त्तव्य समझती हैं। निदान दोनों प्रकार के उदाहरण आर्य्य जनता के सन्मुख उपस्थित हैं। कुछ ऐसी भी संस्थायें हैं जो कि धार्मिक संस्था न होने तथा आर्य्यसमाज के संगठन तथा मन्तव्य से कुछ सम्बन्ध न रखते हुए भी आर्य्यसमाज तथा आर्य्य पुरुषों के शिर आर्थिक सहायता के उपलक्ष्य पड़ती हैं। अब प्रश्न यह होता है कि इन में से कौन सी संस्थायें वास्तव में आर्य्य समाज और आर्य्य पुरुषों से सहायता पाने की अधिकारिणी हैं? इस का उत्तर उपरोक्त बातों से भली भांति मिल जाता है, और दाता लोग समझ सकते हैं कि जहां संगठन का सम्यक्रूपेण समादर है वहां उनके किये हुए दान का सदुपयोग होगा? अथवा उस जगह जहां किसी प्रकार की भी आयोजना नहीं?

हमें खेद के साथ लिखना पड़ता है कि अनेक समाज और सामाजिक पुरुष ऐसे डेपुटेशनों को भी आर्थिक सहायता कर देते हैं जिन का किसी सुनियमित सुव्यवस्थित संस्था के साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता। प्रतीत होता कि ऐसे स्वतन्त्र इन्स्टीट्यूशनों की सहायता करने से पूर्व, दाता लोग या तो उन की वास्तविकता से अनभिज्ञ होते हैं, अथवा वे जानते बूझते भी पात्रापात्र का विचार बिना किये अपनी सम्पत्ति को व्यर्थ व्यय कर देना ही ठीक समझते हैं। जो हो परन्तु संयुक्त प्रान्तीय श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा के समस्त समाजों का ध्यान इस ओर विशेष रूप से आकर्षित किया जाता है कि उन को सभा या सभास्थ समाजों द्वारा संस्थापित गुरुकुलों वा पाठशालादि की ही सहायता करनी चाहिये। अनियमित स्वतन्त्र संस्थाओं की सहायता करने से परिणाम यह होता है कि वेद प्रचार फण्ड व गुरुकुल के लिये धन की सदैव माँग बनी रहती है और अनेक प्रयत्न करने पर भी उस की पूर्ति नहीं हो पाती। अस्तु।

हमें पूर्ण आशा है कि सभास्थ समाज तथा सामाजिक पुरुष इस प्रकार की संस्थाओं को दान देने से पूर्व सभा से परामर्श कर लिया करेंगे कि अमुक डेपुटेशन व संस्था को धन देना कहां तक ठीक है। ऐसा करने से जहां सर्व साधारण के धन का सदुपयोग होगा, वहां सभा के स्थापित किये हुये कार्यों को स्थायित्व भी मिलेगा।

घासीराम
M. A. L. L. B.
प्रधान सभा,
नारायणप्रसाद
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
मदनमोहन सेठ
M. A. L. L. B
मन्त्री सभा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निवेदन

१—बोधोत्सव (शिवरात्रि) के सम्बन्ध में हमारे प्रार्थना-पत्र पर ध्यान देकर सभास्थ अनेक समाजों ने धन भेजने की कृपा की है, जिस के लियेहम उनके प्रतिकृतज्ञता प्रकट करते हैं, परन्तु साथही यह निवेदन करदेना भी उचित समझते हैं कि जिन समाजों ने अभीतक उस दिवस का दान सभा के कोष में न भेजा हो, वे अब उसे शीघ्र तर भेजने की कृपा करें। ऐसा करने से सभास्थ वेद प्रचार फण्ड को कितनी अधिक सहायता मिलेगी इसका पुनः यहां विस्तार करना पिष्टपेषणमात्र है, अस्तु।

आशा है कि आगमी दीपावली प. हमारे आर्य्यभ्राता इस आवश्यकीय बात को विस्मरण न करके, बोधोत्सव के सामान ही उष्णोत्साह से धन एकत्रित करने को कृपा करेंगे।

२—अंग्रेज़ी सत्यार्थ-प्रकाश के छपने के सम्बन्ध में हमारी जो प्रार्थना थी, प्रसन्नता की बात है कि उस पर अनेक समाजों ने अपना ध्यान देकर तदर्थ कुछ धन भी भेजने की कृपा की है। गुरुकुल काङ्गड़ी से ५० प्रतियों का नक़द मूल्य आ गया है। कलकत्तासमाज, एक हज़ार जिल्दों के लिये शीघ्रतर आज्ञा भेजने वाली है परन्तु कार्य्य की गुरुताको दृष्टि में रखते हुए, अभी इस धन को पर्य्याप्त क्या। कुछ भी नहीं कह सकते? यदि देखा जाय तो संयुक्तप्रान्तस्थ आर्य्यों की सामुदायिक शक्ति द्वारा ५०००) एकत्रित होजाना कुछ भी बड़ी बात नहीं है। केवल इस ओर थोड़ी सी प्रवृत्ति की आवश्यकता है। यदि प्रत्येक समाज एक २ पुस्तक अपने लिये और एक २ अमेरिका में बांटने के लिये ख़रीदले तो १००० किताबें सहज ही में निकल सकती हैं। इसके अतिरिक्त जो सज्जन विशेष धनवान् हैं वे चाहें तो सैकड़ों किताबें मोल लेकर वितीर्ण करा सकते हैं और इस प्रकार इस व्यय-भार से सभा को सर्वथा मुक्त करके वेद-प्रचार के सहायक बन सक्ते हैं।

अब हमको विशेष कुछ वक्तव्य नहीं; आप अपना कर्त्तव्य स्वयं समझकर उसे शीघ्र पूरा करने की कृपा करें।

ऐसी दशा में, जब कि पुस्तक प्रेस को छपने के लिये भेजी जा चुकी, धनाभाव से कितनी हानि हो सकती है, इस का निर्णय करना हम आपके ऊपर ही छोड़ते हैं।

विनीत

मदनमोहन सेठ

मन्त्री सभा

बङ्गीय साहित्यसम्मेलन।

शनिवार को बङ्गीय साहित्यसम्मेलन का कार्य १२ बजे आरम्भ हुआ। सम्मेलन चार भागों में विभक्त होगया। यथा—साहित्यिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक। साहित्यिक भाग के सभापति महामहोपाध्याय पं० यादवेश्वर तर्करत्न हुए, वैज्ञानिक के सभापति अध्यापक रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी हुए, ऐतिहासिक के बाबू अक्षय कुमार मैत्र और दार्शनिक के डाक्टर पी० के० राय सभापति हुए। सब विभागों की बैठक अलग २ हुई और लेख पढ़ेगये। सन्ध्या के छः बजे अध्यापक महलानवीस ने एक वक्तृता की और उसे मैजिक लालटेन की सहायता से समझाया।

रविवार को फिर बैठकर शुरू हुई। पहिले भिन्न भिन्न भागों के अधिवेशन पृथक् पृथक् हुए। फिर करीब डाई बजे सारे सम्मेलन का संयुक्त अधिवेशन हुआ। अस्वस्थता के कारण बाबू द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर उपस्थित न हो सके। इस लिये महामहोपाध्याय यादवेश्वर तर्करत्न ने सभापति का आसन ग्रहण किया। वादविवाद के बाद कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए। निश्चय हुआ कि, आगामी अधिवेशन बर्दवान में और उसके बाद का अधिवेशन जसोर में हो। धन्यवाद आदि के अनन्तर सम्मेलन समाप्त हुआ।

पं० अखिलानन्द की अलख लीला

धर्म पिपासाकुल उत्साही आर्य समाज कूंई (ज़िला गोरखपुर) ने अपना उत्सव किया था जिसमें और लोगों के साथ साथ कविरत्न पं० अखिलानन्द भी पधारे थे। जो लोग वहाँ गये थे वे कहते हैं कि कविरत्न जी के ऊटपटांग बातों का जलसे पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। सुनते हैं कि कविरत्न जी ने खुले शब्दों में जन्म से जाति की प्रथा का समर्थन किया और कहा कि शूद्र के तप के कारण रामचन्द्र जी के राज्य में ब्राह्मण का लड़का मरगया।

अगर ये बातें ठीक हैं तो क्या, आर्य्यसमाज के पुरोहित भी सनातनधर्म के पुरोहितों की भांति बहुत बखेड़ा फैलाना चाहते हैं? उपदेशक बुलाने के पहले आर्यसमाजों को बहुत सोच विचार लेना चाहिये। पण्डित अखिलानन्द जी को चाहिये कि इस बात की सत्यता पर प्रकाश डालें। पण्डित जी के उत्तर मिलने पर विशेष लिखा जायगा।

भजन द्विवेदी बी. ए. गजपुरी

गुरुकुल का डैपुटेशन।

सम्पादक जी, नमस्ते!

आपने गुरुकुल डैपुटेशन के विषय में जो लेख लिखा है, उस के विषय में मेरी सम्मति है कि महात्मा जी और गुरुकुल के कर्मचारियों को इतने समय के लिये गुरुकुल छोड़ना ठीक नहीं है। इस से गु० कु० की पढ़ाई में हानि होगी। यह डैपुटेशन आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के सभासदों का होना चाहिये। उस में पं० राम भजदत्त चौधरी, म० रोशनलाल बैरिस्टर, लाला केदारनाथ, म० कृष्ण आदि माननीय सभासद तथा गु० कु० के स्नातकों को होना चाहिये। यह मंडली भारतवर्ष के हर एक कोने में भ्रमण करे। इस मंडली के नीचे एक और छोटी मंडली हो, जो ग्रामों में जाकर गुरुकुल का प्रचार करते हुए गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करे। महात्माजी के स्वास्थ्य न अच्छे होने पर उन्हें लम्बी यात्रा का कष्ट देना उचित नहीं।

ज्योती राम ग्रा. २८९८

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सार्वदेशिक सभा

कार्य्यवाही अन्तरङ्ग सभा १. ३. १४

उपस्थिति

(१) महात्मा मुन्शीराम जी प्रधान (२) पं० घासीराम जी (३) डा० सुखदेवजी (४) ला० भगीरथलाल जी (५) बा० द्वारिकादास जी (६) मुन्शी नारायणप्रसाद जी।

(१) सर्वसम्मति से गताधिवेशन की कायवाही सम्पुष्ट हुई।

(२) यह सभा श्री स्वामी नित्यानन्द जी के अकाल मृत्यु पर अत्यन्त शोक प्रकट करती है तथा श्री स्वामी विश्वेश्वरा नन्द जी के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए उन से प्रार्थना करती है कि जो काम वैदिक कोष का उन्होंने स्वर्गवासी स्वामी जी के साथ प्रारम्भ किया था उस को पूरा करें।

(३) नोटिसका विषय सं० २ प्रविष्ट होकर सर्वसम्मति से निश्चिय हुआ कि श्री पं०तुलसी राम जी स्वामी से प्रार्थना की जावे कि वे स्वयमेव शुद्धि की पद्धति बनाकर पेश करें।

(४) नोटिस का वि य सं० ४ दिल्ली में एक मकान किराया लेने के सबन्ध में पेश हुआ। प्रधान सभा ने इस विषय को वापिस लेलिया

(५) नोटिस का विषय सं० ५ प्रविष्ट होकर आगामी कुम्भ मेले पर प्रचार की आवश्यकता पर विचार किया गया। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सभा की ओर से कुम्भ पर प्रचार का प्रबन्ध किया जावे—तथा इस प्रबन्ध में जो व्यय होगा उस की पूर्ति के लिये दश सहस्र धन की समाजों से अपील कीजावे-तथा इस प्रबन्ध सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य करने के लिये निम्न महाशयों की एक उपसभा निर्माणकी जावे—सम्प्रतिसभा के प्रधान तथा मन्त्री उस सभा के भी प्रधान व मन्त्री रहें—

(१) प्रधान सभा (२) मन्त्री सभा (३) पं० घासीराम जी एम० ए० (४) पं० तुलसी राम जी स्वामी (५) बा० ब्रजनाथजी बी० ए० (६) डा० सुखदेव जी वर्म्मा (७) पं० बन्शीधर जी शर्मा एम० ए० (८) राय रोशन लाल जी बैरिस्टर (९) बा० द्वारिकादास जी—

(६) नोटिस के विषय में सं० ३ के लिये निश्चय हुआ कि यह विषय विचारकोटि में रक्खा जावे—

नारायणप्रसाद
मन्त्री

सयुक्त प्रांत में अकाल।

मथुरा ज़िले में सहायता का कार्य।

(मि० वज़े की रिपोर्ट)

गत नवम्बर में खरीफ के अंशतः नष्ट हो जाने और इसके परिणाम में प्रान्त के कई ज़िलों में चारे का मूल्य बढ़ जाने पर बम्बई और गुजरात से आनेवाले बहुसंख्यक यात्रियों का ध्यान हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ मथुरा की ओर आकर्षित किया गया। दिसम्बर के आरम्भ में बम्बई के वस्त्र-व्यवसाइयों की एक सहायक कमेटी इस उद्देश्य से बनाई गई कि वह चन्दा जमा करे और गोरुओं को सहायता पहुंचाने का प्रबन्ध करे क्योंकि वर्तमान अकाल में पशुओं को विशेष रूप से कष्ट है। इस तरह एक बड़ी रकम जमा की गई और मि० रणछोड़दास वरजीवनदास ने स्वयं आकर मथुरा, गोकुल और वृन्दावन में चारे की दूकानें खुलवा दीं। बहुत सा भूसा बाहर से मंगवाया गया और वह खेती के तथा दूध देने वाले गोरुओं के गरीब या मध्यवित्त मालिकों को लागत से भी १५ या २० फीसदी कम कीमत पर दे दिया गया। अथवा इस प्रकार कहना चाहिये कि दूकानों ने खरीद की कीमत से ५ सेर अधिक भूसा एक रुपये में बेंच दिया। अर्थात् यदि खरीद की कीमत फी रुपया तीस सेर थी तो उन्हों ने गोरुओं के मालिकों की दशा की जांच करके उन्हें फी रुपया ३५ सेर भूसा खरीदने का अवसर दिया। साथ ही उन्होंने ज़िले में कई स्थानों पर नित्यप्रति सुपात्र गोशालाओं को कई मन चारा मुफ्त बांटने और उन स्थानों की गौओं को प्रातः सांय दोनों समय खिलाने का भी प्रबन्ध किया। ये दूकानें अब भी चल रही हैं और गत जनवरी से चारा बांट रही हैं। दूकानें जून के अन्त अथवा जुलाई तक जारी रहेंगी।

प्रयाग में २१ फरवरी को गैर-सरकारी अकाल-पीड़ित-रक्षिणी समिति के बन चुकने पर शीघ्र ही भारत-सेवक-समिति के एक सदस्य मि० अमृत लाल वी० ठक्कर कमेटी की ओर से सहायता का प्रबन्ध करने के लिये नियुक्त किये गये। उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र के लिए ज़िले का पूर्वीय भाग चुना, अर्थात् सदाबाद की तहसील जो 'ब्रज चौरासी' से बाहर होने के कारण पूर्व सहायता से वञ्चित थी और जहां पशुओं को बड़ा कष्ट था। जलेसर रोड स्टेशन पर एक मद्दे चारे की दूकान खोलदी गई है जो बरसात के आरम्भ तक खुली रहेगी। यह दूकान मथुरा और इटावा ज़िलों की सीमा पर स्थित है इस लिए क्रमशः दोनों ज़िलों की सदाबाद और जलेसर तहसीलों के ग्रामवासियों को उससे बड़ी सुविधा है। साथ ही मि० ठक्कर ने गांव २ घूम कर—अभी तक करीब ५० गांव देख चुके हैं—उन निःसहाय लोगों को खोजकर सहायता पहुंचाई है जो अपनी वृद्धावस्था या रोग निर्बलता के कारण अपनी जीविका के लिए काम काज करने में असमर्थ हैं और फेमीन रिलीफ कोड के नियमों के अनुसार गवर्नमेंट भी जिनकी सहायता नहीं कर सकती। बहुसंख्यक अन्धों, रोगियों, बुड्ढों, कोढ़ियों, लँगड़ों, ब्राह्मणों, चमारों, फकीरों, धोबियों आदि को बिना जाति या धर्म के ख्याल के मासिक सहायता दी गई है।

मार्च के आरम्भ में बम्बई की अन्नव्यवसायी सभा के कुछ कार्यकर्त्ता मौके पर आये और उन्होंने मद्दे चारे की कई दूकानें गोबर्द्धन, बलदेव, महाबन तथा अन्य स्थानों पर खोल दीं और साथ ही सुपात्र गोशालाओं को मुफ्त में घास बांटी और कई स्थानों की गौओं को भी खिलाया। मथुरा में निस्सहाय लोगों को धर्मार्थ भोजन भी दिया जाता है और यहां तक कि बन्दरों को भी, जिनकी संख्या नगर में बहुत अधिक है उपेक्षा नहीं की जाती। दाताओं के इच्छानुसार ही इसका प्रबन्ध हुआ है। मार्च के अन्तिम पखवारे से उक्त सभा के धन के व्यय का प्रबन्ध भारत-सेवक समिति के सदस्यों के सहयोग से किया जाता है। इस समिति के दो सदस्य उस ज़िले में काम कर रहे हैं।

एक बात पर अवश्य सर्वसाधारण और गवर्नमेंट का ध्यान दिलाना होगा। पशु कष्ट-निवारण के सम्बन्ध में गवर्नमेंट को अपनी अनुदार नीति का शीघ्र सुधार करना चाहिये। प्रान्त के पश्चिमीय भाग के सिरे पर मथुरा का ज़िला है। रेल द्वारा चारा मंगवाने के लिए महसूल की जो वर्तमान रियायती दर है उसका उपयोग मथुरा का ज़िला केवल इतना ही कर सकता है कि प्रान्त के उत्तर में सिर्फ सहारनपुर से और पूर्वीय ज़िलों से चारा मंगवा सकता है। निकटवर्ती प्रान्तों के दक्षिणीय और पश्चिमीय ज़िलों से रियायती महसूल पर चारा मंगवाया ही नहीं जा सकता। उत्तरीय और पूर्वीय ज़िलों की दशा स्वयं अच्छी नहीं है। वस्तुतः उत्तर के कुछ ज़िलों में तो मथुरा और आगरा के बराबर ही कष्ट है और इसलिए वे इन ज़िलों को चारा देने में असमर्थ हैं। भूसा बहुतायत से तो केवल पंजाब और कोटा तथा बारन के पास की भूमि में मिल सकता है, विशेषता पंजाब में जहां भूसे की कीमत करीब दो मन फी रुपया है। इन स्थानों से भूसा मंग-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाने में अलबत्ता कीमत घट जाने की संभावना है। साधारण समय में भूसा इस ज़िले के नगरों में २ लेकर ३ मन फी रुपया तक और गांवों में ३ से लेकर ४ मन फी रु० तक बिकता था। अब कीमत इतनी बढ़ गई है कि नगरों में ३० सेर और गांवों में २० से लेकर २५ सेर तक बिकता है और महीनों के बीत जाने पर भी इस असाधारण कीमत में फर्क नहीं पड़ता। अपनी साप्ताहिक अकाल-सम्बन्धी रिपोर्टों में गवर्नमेंट चारे की कीमत के अंक नहीं प्रकाशित करती है, और इस कारण लोग अंकों द्वारा कष्ट का अनुमान नहीं कर सकते। गांवों में चारे की कीमत ५०० फीसदी बढ़ गई है तथापि गवर्नमेंट पंजाब से चारा मंगवाने के लिए रियायती महसूल की दर जारी करने का विचार नहीं करती। वस्तुतः मालूम तो यह पड़ता है कि उसने निश्चय कर लिया है कि मूक पशुओं की चाहे जो दशा हो जाय किन्तु वह उनके लिये धन की सहायता न देगी। करीब ७० फी सदी मनुष्यों की जीविका कृषि पर निर्भर है और खेती का कुल काम गोरुओं द्वारा ही होता है। ऐसी दशा में क्या यह उचित है कि हमारी गवर्नमेंट, जिसकी नीति अकालपीड़ित मनुष्यों की सहायता के सम्बन्ध में बिलकुल ठीक है, इस देश के प्रधान व्यवसाय कृषि के लिये अत्यन्त आवश्यक सहस्रों मूक पशुओं के मामले में इतनी कठोर और, मुझे दुःख से कहना पड़ता है कि, भावशून्य हो?

आवश्यकता

शाखा गुरुकुल मुलतान के लिये एक एङ्गलो वर्नैकुलर मास्टर की आवश्यकता है, जो अंग्रेजी के अतिरिक्त साइन्स तथा ड्राइङ्ग आर्य्य भाषा में पढ़ा सके, दो संस्कृत अध्यापक जो यूनीवर्सिटी की कोई परीक्षा पास हो, आर्य्य को लिया जायेगा। काम अधिष्ठाता का भी करना होगा, वेतन योग्यता अनुसार दी जावेगी, काम तथा चालचलन के सार्टिफिकेट प्रार्थना पत्रों के साथ निम्नलिखित पते पर आने चाहिये

मदनलाल मंत्री
शाखा गुरुकुल मुलतान

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता--- जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

वर की आवश्यकता।

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी कन्या जिस की ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर की है, जो बुद्धिमती रूप सम्पन्न बलिष्ट घर के कार्य में दक्ष कन्या महाविद्यालय की उच्च श्रेणी तक पठित जिस में व्याख्यानदात्री शक्ति तथा जो लेखन कला में दक्ष है जो इस समय एक पाठशाला की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्या के लिए एक ऐसे वर की आवश्यकता है जो कारा हृष्टपुष्ट २० से २८ वर्ष का आर्यसमाजी तथा परदे के विरुद्ध, जो कम से कम बी० ए० ख़ानदानी जो अपना निर्वाह भली प्रकार करसके यदि अपेड़ा पांच घरा हो तो बहुत अच्छा है अन्यथा जात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा पत्रव्यवहार निम्नलिखित पते पर कीजियेगा।

केदारनाथ थापर
मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब
लाहौर

ऋषि दयानन्द वाच

श्री महात्मा मुन्शीराम, धर्मवीर पं० लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन, हमने उक्तनामकी घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिसमें मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन होते हैं। महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय दाम केवल ५॥) गारंटी ५ साल हर घड़ी के साथ में एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा।

पता:--ईस्वीज़रलैंड वाचकम्पनी
हाथरस नं० २

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का कलम (पेड़) अपने बाग़ में लगाना चाहते हैं तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मगालें।

पता— आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतोल KAMTAUL (बिहारप्रांत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

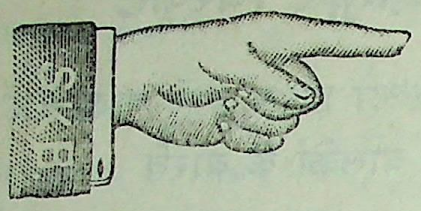

सम्वत्
१९७१ ।

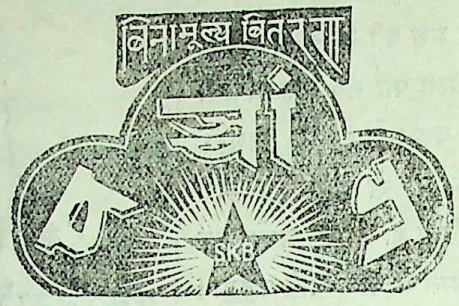

का

छपगया नये सम्वत् १९७१ का पञ्चांग बट रहा **बट रहा है**

छपगया है, सम्पूर्ण नये रूप में छपा है इस बार भी १२ **बट रहा है**
नये नये अपूर्व मनोहर चित्र दिये गये हैं ।

पिछे हताश न होना चाहें तो आज ही एक पोष्टकार्ड पर दस सज्जनों का नाम वो ठिकाना (भिन्न भिन्न स्थानों के) लिख भेजिये लौटती डाक से पंचांग बिना मूल्य और बिना डाक खर्च के घर बैठे पावेंगे ।

डा: एस के बर्मन मु: हजारीबाग डाक्ट्रीट, बंगाल। नं० ५२

इंगलिशटीचर

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेजी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुकसेलर अलीगढ़ सिटी न०४

ऐसी उपयोगी व सस्ती पुस्तकें ढूढी न मिलेंगी चौदह भाषा

बंगाली, गुजराती, मरहठी, पंजाबी, तामिल, तिलंगी, कनाडी, पश्तो, बिलोची तुरकी, ब्रह्मी, चीनी, जापानी भाषायें, सिखाने वाली पुस्तक देशाटन करने वालों और सौदागरों के बड़े काम की है इस में मुसाफिरों को जिन शब्दों से काम पड़ता है वह शब्द सब भाषाओं में बताये हैं और अनेक भाषाओं के अक्षर भी लिखे हैं मूल्य ॥) ड० =)

दुनिया की सैर

चीन, जापान, तिब्बत ब्रह्मा, लंका, स्याम, मिश्र, रूम, रूस, अमरीका, आदि सब देशों का वर्णन चित्र और नक्शे सहित मानो वहां खड़े होकर देख रहे हो वहां के अद्भुत लोकाचार और निराले कानून जिनको पढ़कर हंसी आवे मूल्य १)

पता—जसवंत सिंह बुकसेलर
अलीगढ़ U. P.

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें
हिन्दी में मौजूद हैं ।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्रव्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसर महेशचरण सिंह, एम० एस० सी० ए० बी०, ए० जी० आर० गुरु कुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये ।

—

दिल्ली का आटा मैदा

सूजी और बीकर अति उत्तम और फायदे के साथ हमारे यहां से भेजा जाता है। नमूने और भाव मंगा देखिये।

पता:-नौरङ्गराय बाबूलाल
खारीबावड़ी, दिल्ली ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रू० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूल्य मौका न चूकें

रत्न है॥ लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी बटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली ओषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पंडित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी बटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हू तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिबर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत् वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजित। विषशोथज्वर हरी मैधायुबलवबाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अकल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ और छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

प० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पो०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

री-(शुद्ध व असली) की तोला २८)

शिलाजीत-सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० की तोला

केशर-(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) की तोला १॥)

पशमीने व सावल-६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट-यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेवें।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला

अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

१०००) एकहज़ार रुपये की

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालेंदीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक इन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९८१४ ५४ चौदह जिल्दमें एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)-ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक वा दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

बाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंग्लिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी

मुरादाबाद यू. पी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१६ सद्धर्म-प्रचारक ८ वैसाख शनिवार सम्वत १९७१

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

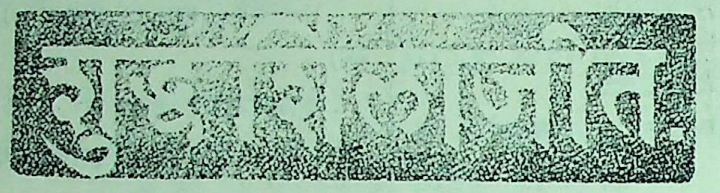

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, विक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—
पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

तार सीखने की डैमी।

हमारे कारखाने की फेन्शी और मज़बूत डैमियां ख़रीद कर कुछ ही दिनों में

तार बाबू क्यों नहीं बन जाते

यह डैमियां पीतल की हमारे कारखाने में तय्यार होती हैं जो कि बहुत ही मज़बूत और खूबसूरत नये फेशन की बनवाकर भेजी जाती हैं जिनकी आवाज़ दफ्तरों के इस्ट्रोमेंट से बहुत कुछ मिलती है

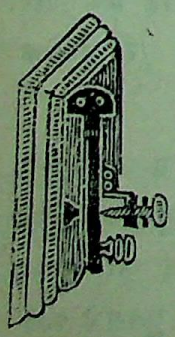

जिसके द्वारा कोशिश करने से थोड़े ही समय में तारका लेना देना सीख कर दफ्तरों में बखूबी काम कर सकते हो इस के साथ एक पुस्तक (टेली ग्राफ टीचर) जिसमें तार सम्बन्धी तमाम टेकनीकल और तार के क़ायदे बड़ी आसान रीति से समझाये हैं मुफ्त मिलेगी मूल्य १॥)

मिलने का पता—शांति संचारक कम्पनी
अलीगढ सीटी

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिश-टीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स
अलीगढ़

विज्ञापन

एक सर्वाङ्ग सुन्दर सुबोध टंढन खत्री कन्या के लिये २३ वर्ष तक के कपूर, खन्ने महरे, सेठ, बर की आवश्यकता है।

पत्र व्योहार का पताः—
बाबू नन्दलाल सिंह वर्मा
रेलवे मैनेजर आफिस
जोधपुर

अध्यापिका की आवश्यकता

एक ऐसी अध्यापिका की आवश्यकता है जो लड़कियों को एंट्रेंस परीक्षा के लिये तय्यार कर सके। संस्कृत जानने वाली हो तो और भी अच्छा है। वेतन का निश्चय पत्र व्यवहार से होगा। प्रमाण पत्रों सहित प्रार्थना पत्र नीचे लिखे पते से भेजे जाने चाहिये।

युगल किशोर
उपमन्त्री इन्द्रप्रस्थ
हिन्दु कन्या पाठशाला
देहली

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तलाश नहीं करना पडता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

कफ	अतिसार	सर्दीकाबुखार
दमा	आंवलोहू	जी मिचलाना
खांसी	संग्रहणी	बच्चोंकेहरेपीलेदस्त
हैजा	कै होना	शरीर का दर्द
शूल	पेटकादर्द	कुकरखांसी

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट सुगंधित दवा है मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ २३ वर्ष का आजमाया हुआ

दद्रुगज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जडसे खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—क्षेत्रपाल शर्मा मालिक, सुख संचारक कम्पनी मथुरा

प्रचारक के ग्राहकों से

१५ मार्च तक 'चिकित्साभन्डार, २ खंड का मूल्य २॥) के २) लिये जायगे। इस पुस्तक में वैद्यक युनानी और डाक्टरी मतानुसार रोगों की व्याख्या और अनुभूत चिकित्सा दी हुई है। हिन्दी भाषा के जानने वाले एक योग्य वैद्य जैसी रोगों की परीक्षा और चिकित्सा कर सकते हैं शीघ्र आज्ञापत्र लिखें।

चुन्नीलाल वैद्य
बच्छोवाली
लाहौर

सस्ता और मज़बूत

Telegraphic,address founders-Aligarh

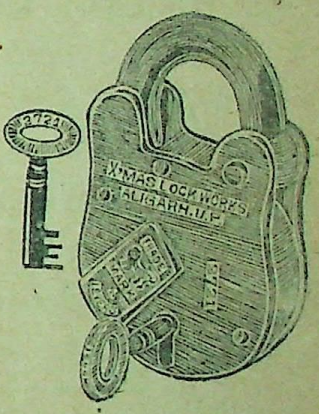

४ लीवर का ज़स्ती कलईदार लोहे का ताला इस्तेमाल करो।

मूल्य

डेढ़ इंच का ९) दरजन
दो इंच का १२) दरजन
ढाई इंच का १३॥) दरजन
तीन इंच का १६॥) दरजन

(१) १००) के खरीदार को १२॥) सैकड़ा और ५०) के को ६।) सैकड़ा और २५) के को ३=) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा कम पर नहीं।
(२ आधी दरजन से कम माल नहीं भेजा जावेगा।
(३) और किस्म के तालों के लिये सूचीपत्र मंगाइये।
(४ असली माल पर "शेर" का मार्का देख लीजिये।

दी कृसमिस लोक वर्क्स सुलतानी सराय
अलीगढ़ सिटी

बाल नहीं बांटते हैं

बाल उडान का साबुन-बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्काप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता-
शर्मनऐंड कं. सतघडामथुरा

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)
चान्द--जि० आरा

दो अध्यापिकाओं की आवश्यकता

एक लोवर प्रायमरी एक अपर प्रायमरी के लिये वेतन योग्यतानुसार १५) से २०) और २०) से ३०) रुपया तक दिया जायगा पिता पुत्री वा पति पत्नी के नाते से साथ आने वाले अध्यापक को भी लिया जायगा प्रार्थनापत्र इस पते पर आवें

लाला त्रिलोकचन्द मंत्री
आर्य्य पुत्री पाठशाला मोगा जि. फीरोज़पुर

महाशयजी

यदि हमारी दवा से खांसी शर्तिया दूर नहो तो ४ प्रतिष्ठित पुरुषों के हस्ताक्षर सहित पत्र भेज कर मूल्य वापिस लीजिये मूल्य १०० गोली १) डा० खर्च ≡)

आर्य्य, औषधालय, रूरतमगढ़
(एटा यू० पी०)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म-प्रचारक ८ वैसाख शनिवार सम्वत् १९८१

७००) रुपये इनाम।

वाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री वाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उनके श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡) ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका	।॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग	॥-)
दूसरा भाग ॥)	तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग	॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है	।)॥
वेद उपदेश पहला भाग	॥)
दूसरा भाग	॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति	।)॥
उपदेश सप्तक	।-)
प्रार्थना पुस्तक	।-)
ओंकार की उपासना	।-)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र	॥)
वेद और रामायण के उपदेश	-)
वेद और महाभारत के उपदेश	-)
वेद, मनु और गीता के उपदेश	-)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द	≡)

मनुस्मृति सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रन्थावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जमोर जिला गया।

पसंद न हों तो वापिस

हाथरस के पक्के चाकू

यह स्वदेशी चाकू अपनी सुन्दरता और मजबूती में विलायती चाकुओं से बढ़कर अच्छे और सस्ते हैं लकड़ी बेंट)॥॥ -) -) =) =)॥ ≡)॥ ।-) ।≡) चन्दनबेंट -) -)॥ =) =)॥ ≡)। ।-) ।) दो फला ।≡) ॥) बड़ी में लगाने का =) उस्तरा ।) ।=) काली और ढबलू ढलाक रोशनाई की पुड़िया) से ।) तक हर शहर में एजेन्टों की आवश्यकता है। पता—भारत हितकारी कार्य्यालय नं० १ हाथरस सिटी

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित।
CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म् ॥

Register

151133

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | १५ वैशाख सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० २५ अप्रैल १९१४ | संख्या २ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक--इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)- प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य ॥)

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इं[illegible] महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहा[illegible] करके दिखलाया गय[illegible] और राष्ट्रीय उन्नति [illegible]

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य)
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक	≡)	प्र० प०
तीन मास " " " "	=)	"
छः " " " " "	-)॥	"
सालभर " " " "	-)	"

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये प[illegible] व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रो[illegible] पत्र नहीं बट सक्ता।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाच[illegible] होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रच[illegible]रक का नाम और बंटने की तिथि छपी हो[illegible] चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ [illegible] कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक
एक तोले तक

विशेष बात चीत प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र-देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक १५ वैसाख शनिवार सम्वत् १९७१

वैद्यकल्पतरु

आरोग्य, आयुष्य, आनन्द और ऐश्वर्य प्राप्तिके लिये
[illegible] और [illegible] वैद्यक सम्बन्धी
सचित्र [illegible]
हिन्दी संस्करण १९१३ [illegible] है।
गुजराती सं. १८९४ से प्रकाशित होता है।
सम्पादक- वैद्य जटाशंकर [illegible] त्रिवेदी
[illegible]वाद (गुजरात) वार्षिक मूल्य १-९-० नमूनेका अंक मुफ्त।

दी हिन्दी इङ्गलिश टीचर

यह पुस्तक ऐसी सरल है कि बिना गुरु की मदद के सिर्फ ३ मास में अङ्गरेजी लिखना पढ़ना बात चीत करना आदि आ सक्ता है दाम केवल १) डा० माफ। विशेष हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगवाकर पढ़िये।

ता:- बाबू ख्याली राम एण्डको
अलीगढ सिटी

आवश्यकता

एक जिल्द बन्द (दफ्तरी) की आवश्यकता है यदि आर्य्य हो तो अच्छा वेतन योग्यतानुसार दी जायगी प्रार्थना पत्र:—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार
के नाम आने चाहिये।

भारत वर्ष में विख्यात हाथरस के पक्के चाकू

यह स्वदेशी चाकू विलायती नामी चाकूओं से भी कहीं सुन्दर सुडौल और मजबूत हैं। चन्दन मूठ -) -)॥ =) =)॥ ।) ।=) लकड़ी मूठ ।॥ -) -)। -)॥ =)॥ उस्तरा ।-) ।≡) कैंची ॥) ।=) लीवर मजबूत ताले पीतल के ≡) ।) ।=) । लोहे के ।) ।=) ॥) इंच। रंगीन [illegible] =) =)॥ ≡)॥ ।-) ॥ बढ़िया हींग [illegible]) १०) सेर तथा हाथरस के मशहूर [illegible]त भी हमारे यहां मिलते हैं।

भारत वस्तु प्रचारक कम्पनी
हाथरस।

भयँकर मार काट

नई किताबें नई बात

विकट बदलौअल १) घटना घट-टोप १॥) परिमल ॥।) भारत की प्राचीन झलक (२ भाग) १) वीरवरांगना ।=) नूरजहां ।) सच्चा बहादुर १) कलावती ≡) रानी पन्ना ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नील बसना सुंदरी १।) कौशल किशोर १) हसीना उर्फ सलीमा १॥) चोर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) हल्दी घाटी की लड़ाई =) राना सांगा और बाबर =) राजपूतों की बहादुरी ॥।) हरीसिंह नलवह ≡) वीरहम्मीर =) झांसी की रानी ॥) जय श्रीवा वीर बालिका ।=) नवाब नन्दनी १।) राना प्रताप की वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची दवियां ।=) हमारी मातायें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्म पितामह =) दीनानाथ ।-) प्रेममोहन वा चेत चातरी =)॥ पाकराज ।=) आनन्दी बाई ।=) भारत महिला मंडल ॥।) मेवाड़ का इतिहास १।) सिखों का साहस =) तांतिया भील =)

राम मूर्ति व्यायाम सीरीज

ऋतुचर्या १) फुटबाल -) तैरना वा पौंड़ना -) जूजुत्सू या जापानी कुश्ती -) राम मूर्ति के व्यायाम =)

पता—
माणिक कार्यालय
काशी

नया ग्रन्थ

अभी छप कर तय्यार हुआ

भारतवर्ष का इतिहास

प्राचीन आर्य्यों के प्रारम्भिक वर्णन से लेकर सं० १९७० तक की घटनाओं के बनते सकलित इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास अति सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है कि आरम्भ करके बिना समाप्त किये छोड़ने को जी न चाहेगा आर्य्य भाषा में इस प्रकार का इतिहास अब तक नहीं छपा,

पृष्ठ संख्या ५०० मूल्य १॥)

धर्म निर्णय

यह उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहकीक धर्मका भाषानुवाद है इस पुस्तक में धर्म का निर्णय किया गया है पुस्तक नावल के ढंग पर लिखी गई है इसमें कई योगी सन्यासियों का भी वृत्तान्त है मूल्य १)

अंग्रेजीकी सीढ़ी

देव नागरी तथा उर्दू पढ़े हुए को स्वयम अंग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य ॥=)

पता:—ला. केदार नाथ प्रोप्राईटर
से २६ आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
३ बज़ाजा शहर मेरठ

गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के हर्ष में ख़ास रियायत।

१ म फरवरी १९१४ से ३१ मार्च १९१४ तक निम्न लिखित पुस्तकों में ख़ास रियायत की गई है।

शुद्ध रामायण—जिस की प्रशंसा भारत के प्रसिद्ध समाचारों तथा सुयोग्य माननीय विद्वानों ने की है और हाथों हाथ बिक रही है २) से १॥।)

महा भारत—सरल हिन्दी १८ पर्व जिस के प्रकाशक को सरकार की ओर से २००) पारितोषिक मिला है ८) से ७)

हनुमान जी का जीवनचरित्र १।) से ॥।=)
उपनिषद् पं० बद्रीदत्त कृत १) से ॥।=)
व्याख्यान पञ्चक ॥।) से ॥=)
सुभाषित रत्नमाला १=) से १)

मिलने का ठिकाना:—
नागरी प्रचारणी कम्पनी लिमिटेड
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

आत्म दर्शनम्।

न विजानामि यदि वेदमस्मि निरायः सनद्धो मनसा चरामि। यदा मागन्प्रथम जा ऋतस्यादिद्वाचो अश्नुवे भागमस्याः। अवाक्पाडेतिस्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः। ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्ता१न्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम्॥ ऋग्वेद। मं०१।सू० १६४ मं० ३७।३८॥

"ठीक जैसाहूं वैसा नहीं जानता कि यह मैं हूं, (किन्तु) विचार से ठीक बंधा हुआ (जब) अन्तर्हित विचरता हूं (तब पता लगताहै कि) जब पहले प्रकाशितहुए पञ्चभूत मुझ जीवात्माको प्राप्त हुए, उसके पीछेही मैं सत्यज्ञान और (उस सत्यज्ञानको दूसरों तक पहुंचाने वाली) इस वाणीरूपी भागको प्राप्त होताहूं।"(३१)

मैं क्याहूं? यह प्रश्न सृष्टिकी आदि में जैसे आकाशमें गूंज उठा था वैसाही आज भी वायु मंडलमें भरपूर होरहाहै। सब कुछ मेरे लिए ही है, मैं सर्वोपरि हूं, मैं ही सृष्टिका स्वामी हूं, इस प्रकार की अन्धी लहरें किस हृदयके अन्दर नहीं उठ चुकीं! किन्तु क्या उस लहर में बहे जाते हुए कभी यह भी विचार कियाहै कि मैं वास्तवमें हूं क्या? जब यह विचार उत्पन्न होता है तभी तो घट की आंखों के पट खुलते हैं और मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को देखने का प्रयत्न करता है। जिस प्रकार बल से दूर झोंकी हुई लहरें सामने टक्कर लगनेपर एकदम पीछे हटकर गिर पड़ती हैं वैसे ही मनुष्यकी इस विचार रूपी लहर को एक प्रबल टक्कर लगती है। इतिहासमें प्रसिद्ध अंगल राजाकी न्याईं जब उन्मत्त होकर जल,वायु तकको शासन की धमकी देने लगता है तो इन दैवी शक्तियोंसे पटकनी खा कहीं का कहीं जा गिरता है। अब न वह ऊर्ध्वारोहण है और न वह आकाशकी सैर; अब पाताल की सुध लेने जारहा है। हैं कहां चला गया था, कहाँ तेज और कहां मैं! मिट्टी का जब हूं तो मिट्टी में ही क्यों न आनंद ढूंढूं। पंचभूतों का शरीर प्राप्त करके ही तो मैं मन और वाणीका स्वामी बना। तब यही मेरे स्वामीहैं। इनका हो रहूंगा तो आनंद मिलेगा। वह आकाशमें उड़ना अब दूर होगया। मट्टी में लथपथ होकर मट्टीही बनगया। जब भौतिक जगतको सर्वथा स्वप्नवत समझता था, जब अपने आपकोही सर्वोपरि समझताथा, तब एक प्रकारका आल्हाद तो था; तब कोई बोझ दबाकर नीचे तो नहीं धकेल रहा था। किन्तु अबतो बोझके मारे दब रहा है, उठ सक्तानहीं। जड़ का ही अपने आपको समझकर चेतनताको जवाब दे बैठा है। देखते हुए भी न देखताहै, सुनते हुए भी न सुनताहै; जीतेहुए अपने आपको मौत का धोखा दे बैठा है। भौतिक अपने आपको समझता हुआ जिधर भौतिक भोग उसको लेजातेहैं उधर ही चल देता है। अन्दर वाला अपने आपको कभी कभी समझने लगता है; उसे अपनेमें चेतनता का भ्रम सा होने लगता है; परन्तु भोगरूपी जादूकी छड़ी फिर सिरपर फिर जातीहै और वह उसीके इशारे पर उलटा सीधा होता हुआ रंग बरंगी बोलियां बोलने लगताहै। हा! मरणधर्मा शरीर के साथ मिलकर अमरकी कैसी शोचनीय दशा होगईहै! ऐसे विकट समयमें भगवती श्रुति मधुर स्वरसे कैसा शान्तिदायक उपदेश देती है! "अन्नादि भोग्य पदार्थों से उलटा सीधा होता हुआ मरण धर्म रहित जीवात्मा, मरण धर्म सहित शरीरादिके साथ एक स्थान वाला होरहा है। इन दोनोंके सनातन मिलापका ही परिणाम जाना और नाना प्रकारकी क्रिया करना है। एक (इस रहस्यको) निरंतर जानते और दूसरे नहीं जानते।"

मुर्दा क्या जान सकताहै, सजीव मनुष्यही सब कुछ जान सकता। अविद्वान् उड़ेगा तो उड़ता ही रहेगा और यदि गिरेगा तो कीचड़ में लथपथ होकर सड़ांद का कीड़ा हो जायगा, किन्तु विद्वान जानता है कि वह क्या है। वह अपने स्वरूपको पहचानता है। वह जानता है कि पंचभौतिक शरीर रूपी साधन को लेकर ही वह इस जगत में अपना उद्देश्य पूर्ण करने के लिये आया है किन्तु साथ ही यह भली प्रकार अनुभव करताहै कि वह जड़भूत नहीं है। प्रकृति के साथ जिस प्रकार परम पुरुषका मेल सनातनहै इसी प्रकार जीवात्माका संबन्ध भी प्राकृतिक जगत के साथ सदासे रहताहै। इसलिये प्रकृतिको सर्वथा भुलाकर वह अपने स्वरूप कोही भूल जाताहै। और अपने स्वरूप को भूलने का परिणाम दुःखहै। भौतिक शरीर रखते हुए जिन भूले भटकों ने इन्द्रियों को भोगोंसे सर्वथा जुदा रखा उन्होंने ठोकर खाई। रुकावट सामने आने पर जब उनकी इच्छाओंको पलटा मिला तो वे दूसरी सीमा पर पहुंच कर विषयोंके ही दास होगये। उन्होंने सर्वथा भुलादिया कि वे अमरहैं और आत्मा हैं। तभी तो भगवती श्रुति ने स्थान स्थान पर समता की अवस्था स्थिर करने काउपदेश दिया है। वेद का उपदेश सर्वकाल में स्मरण रखने योग्य है। भौतिक शरीर को भौतिक भोजनकी जितनी आवश्यकताहै उससे बढ़कर मानसिक शरीर को आत्मिक भोजन की आवश्यकता है। इसलिये हे! आत्मा के स्वामी और ज्ञान के भंडार! अपने निज रूपको हम प्रकाशहीन दीनोंके लिये प्रकाशित करो जिससे हम आपके प्रकाश रूपी दर्पणमें अपने स्वरूप को देखकर उसके वास्तविक पालन का प्रयत्न करते रहें।

शमित्योऽम्.

ग्राहकों को सूचना।

इस अंकके साथ प्रचारक का पिछला वर्ष समाप्त होकर नया वर्ष आरम्भ होता है इस वर्ष का दूसरा अंक आपके पास वी. पी. भेजा जायगा। वी. पी. ३) का होगा। आशा है, आप वी. पी० छुड़वा कर हमें अनुगृहीत करेंगे।

प्रबन्धकर्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(३२)

अप्रैल १९२८ ई० के अन्तिम सप्ताह में मैं फिर अपने ग्राम तलवन में गया। अपने पुत्र के नाम करण संस्कार को केवल अपने भाइयों के आग्रह पर रोका हुआ था। उनकी इच्छा थी कि मैं उसका नाम करण अपनी जन्म भूमी के गृह में करूं। इसलिए मैं २१ अप्रैल को तलवन पहुंचा। जालन्धर के दो आर्य भाई भी साथ गएथे और लुधियानेसे चिरंजीलाल पहुंच गया। हमारा कुलाचार यह था कि बालक को चूड़ा करण से पहिले (जो तीसरे वर्ष होता है) सिले हुए कपड़े न पहिनाए जांय। मेरे पिता से छोटे, हमारे सबसे बड़े चचा जीते थे। वह बड़े कट्टर सनातनी और बड़े क्रोधी थे। मेरे भाइयों को भय था कि कहीं वे कुछ उपद्रव न खड़ा करें, किन्तु मैंने उनको भी बुलावा भेज दिया। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ जब कुलाचार के विरुद्ध उन्हों ने अपने हाथों से बालक को सिले हुए कपड़े पहिनाए और उसका नाम हरिश्चन्द्र रक्खा। मैंने अपने जीवन में प्रायः देखा है कि यदि निरभिमान होकर सरलता से वर्ताव किया जाय और बिना दूसरों को चिढ़ाए अपने मन्तव्य पर दृढ़ता दिखाई जाय तो कट्टर से कट्टर विरोधी की दृष्टि में भी मनुष्य माननीय बन जाता है।

तलवन में इन दिनों चिरंजीलाल की बैलबाज़ी की धूम रही। जालन्धर लौटते हुए रास्तेमें नकोदर प्रचार हुआ। चिरञ्जीलाल ही हमारा सब से बड़ा विज्ञापन था। वह इस प्रकार कि मुझे उस स्थान में बैठाकर जहां मैं व्याख्यान देना चाहता, चिरञ्जीलाल बाज़ार में चला जाता। जिस दुकानदार के जंचा मूढ़ा देखता वहीं खड़े होकर अपनी सिंह गरज से एक बैत सुनाता, फिर कहता—"प्यारेया, मूढ़ा कुछ चिरलई दे तो होर बैतां सुनावां।" वहां इनकार कब था; मूढ़े पर खड़े होकर बैतों द्वारा लच्छेदार खण्डन होने लगा। जब ५० एक आदमी जमा हो गए तो चिरंजीव मोढ़ा उठाकर बीस क़दम आगे हो रहे और मूढ़े पर चढ़कर फिर स्वर अलापा। जब सौ होगये तो पचास क़दम आगे चलकर भिड़ जमाया। इसी प्रकार जन संख्या बढ़ाते बढ़ाते चार पांच सौ मेरे सामने लाकर खड़े कर दिए और अपने श्रोताओं से कहा—"हुण बिदबानां दियां गल्लां सुणो, देखो कही अमृत बर्खा हुंदी है।" लोग सबबैठगये और मेरा व्याख्यान प्रारम्भ होगया।

चिरंजीलाल कुछ दिनों तो मेरे साथ बहुत अच्छा काम करता रहा किन्तु डेरा इस्माइलख़ां क्वेटादि समाजों में उसकी ऐसी धूम मची और दो तीन बार विष मिलने पर उसकी ऐसी प्रतिष्ठा जमी कि उसने लाहौर समाज के प्रधान तक की परवा करनी छोड़दी। कई समाजों के वार्षिकोत्सवों पर समय समाप्त होने के पश्चात् प्रधान के बन्द करने पर भी लोगों के हाथ उठवाकर व्याख्यान देना और उद्दण्डता दिखानी उसने आरम्भ करदी थी। सम्वत् १९४९ में धर्मशाला पर्वत समाज के उत्सव पर उसने रायबहादुर वख़शी सोहन लाल जी प्रधानकी आज्ञा का भी भंग किया। वहां मुझे असन्तुष्ट देखकर उसने बख़शी जी से क्षमा मांगी थी, किन्तु बहुत से महाशयों ने फिर भी उसको बहुत ही निःशृङ्खल बना दिया था। इसके दूसरे वर्ष ही जब आर्य समाज में दो दल हुए कुछ काल व्यतीत होगया तो केवल दो घण्टों की दीक्षा में लाला मुलकराज भल्ला ने उसे मेरे विरुद्ध कर दिया। उस समय से वह मांस भक्षण का समर्थन करने लग गया था, किन्तु मुझे यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई थी मरने से पहले उसने बड़ा पश्चात्ताप किया और हिंसा से घृणा करते हुए ही प्राण त्याग किए। चिरंजीलाल उन दृढ़ सिपाहियों में से था जिनके बिना एक विचार का साधारण पुरुषों में फैलना असम्भव सा हो जाता है। उसकी मृत्यु के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उसकी विधवा तथा पुत्रीको बराबर निर्वाहार्थ मासिक दिया और इस प्रकार आर्य समाज के जिस दल के विचारों को मृत्यु से पहले वह फैलाता रहा उस दल ने उस के परिवार के साथ क्रियात्मक सहानुभूति दिखलाई।

जालन्धर लौटकर मैंने विकालत के काम में जहां नियम पूर्वक भाग लेना आरम्भ किया वहाँ जीवन सुधार की ओर भी अधिक ध्यान खिंच चला। प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त होकर मैं भ्रमण करने जाता था। उसी समय थोड़ा दौड़ लेता था। यह प्रातःकाल का व्यायाम था। इसमें एक घन्टा लगता। फिर स्नान करके सन्ध्या, अग्निहोत्र जिसके पश्चात् गो दुग्ध पीता और पत्रों के उत्तर देने में लग जाता। यह अभ्यास मुझे उसी समय से है कि तुच्छ से तुच्छ और व्यर्थ से व्यर्थ पत्र को काम की टोकरी से अलग न किया जावे जब तक उसका उत्तर न भेजा जावे। एक वैचित्र्य मुझ में और था जो अब तक है। जब तक मेज़ पर पड़ा नित्य का काम समाप्त न हो जाय तब तक मन प्रसन्न नहीं होता। आठ बजे समाचार पत्र भी पढ़ कर निवृत्त हो मुक़द्दमे वालों को बुलाया जाता और पौने दस बजे उनका सब काम तय्यार। मुझे दस बारह मुक़द्दमों की तय्यारी में भी इससे अधिक समय कभी नहीं लगा। फिर भोजन कर के कचहरी। कचहरी से अपना सारा काम समाप्त होते ही मैं घर को चल देता, अन्य वकीलों की तरह शिकार की प्रतीक्षा में बार रूम में न बैठा रहता। कभी कभी घर लौटने समय २ वा २॥ बजे ही होता तब ६ बजे तक शतरञ्ज चलती। हुक्का और शतरञ्ज, ये दो व्यसन अब तक मुझसे नहीं छूटे थे; और हुक्के के शान्तिप्रद धुएं का पूरा आनन्द लेने के लिए ही मैं शतरञ्ज भी खेलता। जालन्धर क्लब के प्रसिद्ध हुक्कइयों में से न होते हुए भी मेरा नम्बर कुछ बहुत नीचे न था। शतरञ्ज एक बार छोड़ भी दी थी किन्तु जब एक दिन लाहौर में आर्य समाज के दो प्रसिद्ध नेताओं को घन्टों शतरंज खेलते देखा तो घृणा का भाव दूर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हो गया और मैं उसी व्यसन में फिर फंस गया। सच है—"महाजनो येन गतस्स पंथाः" यदि सब अधेड़ और बूढ़े और जवान नेता तक समझ लें कि कोई न कोई व्यक्ति अवश्य उनका अनुकरण करेगा तब व्यसनों के फैलने की कम संभावना रहे। सम्वत् १९४१ में कई बार मुझे इन दोनों व्यसनों से, विशेषतः शतरंज से घृणा हुई। एक दिवस की दिन पत्रिका में लिखा है—"मुझे शतरंज के व्यसन से मुक्त होना चाहिए यह मेरा बहुत समय नष्ट करता है।" फिर लिखा है—"हम शतरंज खेलते रहे। समय को नष्ट करने का बुरा ढङ्ग।" आत्मा की इस जागृति का परिणाम यह हुआ कि शतरंज का खेल ४ महीनों में ही बन्द होगया और हुक्का भी विदा हुआ। हुक्का तो बीच में फिर जारी हो कर डेढ़ दो वर्ष चला था किन्तु शतरंज सदा के लिए ही चल बसी थी।

सायंकाल या तो बग्घी में लम्बी सैर को चला जाता और बीच में पहले भाई देवराज जी के यहां कोटकृष्ण चन्द्र में और फिर क्लब खुलने पर म्युनिसिपल वाटिका में टेनिस के लिए ठहरता। भोजन के पश्चात् कुछ भाई मेरे मकान पर आते जिनके साथ नित्य सायंकाल ईश्वर प्रार्थना होती। इसके पश्चात् कुछ धर्म चर्चा होकर सब लोग विदा हो जाते और मैं दस और कभी कभी ११ बजे तक पढ़ता रहता। इन दिनों ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के साथ मैं ने इङ्गलैंड के प्रसिद्ध विकासवादी लेखक हर्बर्ट स्पेन्सरके ग्रन्थ पढ़ने आरम्भ किए हुए थे।

मुन्शीराम

गुरुकुलसमाचार।

पठन पाठन

ईस्टर और वैसाखी के उत्सवों को भुगता कर गुरुकुल के प्रोफेसर गण लौट आये हैं। पढ़ाई का काम निश्चिद्र रीति से चलने लगा है। महाविद्यालय में गणित पढ़ाने वाले उपाध्याय का स्थान जो इस समय रिक्त है, उसे पूरा करने के लिये कलकत्ता विश्वविद्यालय से एक प्रतिष्ठित सज्जन आ रहे हैं। श्री पं० गोविन्द शास्त्री जी का शरीर नये जल वायु में आने के कारण कुछ शिथिल होगया था, अब वे सर्वथा नीरोग होकर पढ़ाने लगगये हैं। यह पूरी आशा है कि १९७१ का पहला सत्र ब्रह्मचारियों के पठन पाठन के लिये कल्याणकारी होगा।

वैशाखी में दर्शकों की भीड़।

वैशाखी पर हरिद्वार में बड़ा भारी मेला होता है। उस अवसर बहुत नर नारी दूर दूर के नगरों से गङ्गा स्नान के लिये आते हैं। उन में से अधिकतर ऐसे होते हैं, जिन्हें वैदिकधर्म की दीप्ति ने उजागर नहीं किया है। तथापि केवल गुरुकुल का नाम ही उन्हें गुरुकुल लाने के लिये पर्याप्त प्रेरक होता है। सैकड़ों नरनारी अपने स्नान से निवृत होकर विद्या तीर्थ को देखने के लिये पैदल यात्रा करते हैं। रास्ते के पत्थरों और धूप तथा रेत के मिले हुये अत्याचारों को सहते हुए वे गुरुकुल भूमि में आते और इस प्रशान्त स्थान में शान्ति का उपभोग करते हैं। गत दिनों में वैशाखी के कारण दर्शकों की गुरुकुल में खूब भीड़ रही।

आर्य्यसमाज कांगड़ी

कांगड़ी के आर्यसमाज का सम्बन्ध पञ्जाब की प्रतिनिधि सभासे है। होना भी ऐसा ही चाहिये, क्योंकि गुरुकुल में पञ्जाबियों की ही आबादी अधिक है। इस समाजकी ओरसे दो प्रतिनिधि तीन वर्षों से आर्यप्रतिनिधि सभा में सम्मिलित हो रहे हैं। इस समाज ने इस वर्ष से आर्यत्व का एक विशेष कार्य किया है। ऋषि दयानन्द के विचार के अनुसार आर्य पुरुषों और आर्य देवियों को एक ही आर्यसमाज रूपी देही के अङ्ग होना चाहिये। स्त्री समाज को पृथक् बनाने का उन्हें सपना भी न था। उन की सम्मति में समाज की सभासदी दोनों के लिये खुली हुई थी। किन्तु अभी तक समाज में इस सिद्धान्त के अनुकूल कार्य्य नहीं हुआ। देवियों को समाजों के सभासद होने का अधिकार नहीं दिया गया। कॉगड़ी समाज ने इस ओर पहिला पग बढ़ाते हुए देवियों को भी उसी समाज का भाग बना लिया है, जिसे अभी तक पुरुष अपनाये हुए हैं। इस समय तीन देवियों ने समाज के रजिस्टर में अपने नाम लिखाये हैं, आशा है कि इस संख्या में शीघ्र ही वृद्धि होगी।

साप्ताहिक उपदेश

हरएक विद्या पीठ के तीन भाग होते हैं। एक धर्म मन्दिर, दूसरा विद्यालय और तीसरा क्रीड़ाक्षेत्र। इन सब में से धर्ममन्दिर का पहला स्थान है, जहां पर विद्यार्थियों को आत्मिक उन्नति के साधन बताये जाते हैं। गतवर्ष श्री० आचार्य जी के गुरुकुल में स्थिरतया न रहसकने के कारण साप्ताहिक उपदेशों का क्रम प्रायः बन्द सा रहा था इस वर्ष प्रारम्भ से ही धर्म मन्दिरमें साप्ताहिक उपदेश की ज्योत जगाने का प्रबन्ध किया गया है। प्रति सप्ताह अनध्याय से पूर्व दिन आचार्यजी यज्ञशाला में गुरुकुल के समस्त ब्रह्मचारियों को धर्मोपदेश करते हैं। यह भी प्रबन्ध किया गया है कि यदि श्री आचार्य जी को किसी कारण से बाहर जाना भी पड़े तो यह क्रम न टूटे।

व्यायाम शाला

विद्यालय के समाचार तो समय २ पर प्रचारक सुनाता ही रहता है, आज व्यायाम तथा खेलों के विषय में भी कुछ कहना अनावश्यक न होगा। सबसे पहिला समाचार जो गुरुकुल प्रेमियों के लिये हर्षदायक होसकता है, यह है कि व्यायाम शाला की छत पूरी होगई है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बाग़ के एक कोने में व्यायामशाला का स्थान बनाया गया है। उस में ब्रह्मचारियों की शारीरिक उन्नति के सब साधन रखे तथा लगे रहेंगे। उस व्यायामशाला के समीप ही टीन के और लम्बे लम्बे छप्पर से बनाये जायंगे, जिन में ब्रह्मचारी ऋतुओं के प्रभावकी परवा न करते हुए बारहों महीने नैत्यिक व्यायाम कर सकें। अभी तक उन्हें अपने आश्रमों के बरामदों में व्यायाम करना पड़ता था।

खेल सिखानेवाले की आवश्यकता

व्यायाम से उतर कर स्वास्थ्य रक्षा के लिये यदि कोई साधन है, तो वह खेल है। दिन भर पढ़ाई करचुकने के पश्चात् शरीर को खोलनेके लिये, प्राणों का संचार करने के लिये और शरीर के पट्ठों को दृढ़ करने के लि शाम की खेलें आवश्यक हैं। हाकी फुटबाल कबड्डी रस्सा खींचना आदि खेलें प्रतिदिन सायंकाल क्रीड़ाक्षेत्र में होती हैं। ब्रह्मचारी अपने बल और शौक से खेलों में यथाशक्ति निपुणता पाते हैं। बिना सोचने के, केवल अपनी चतुराई से खिलाड़ी लोग जितना अच्छा खेल सक्ते हैं, हमारे ब्रह्मचारी उस में कोई कसर नहीं छोड़ते गतवार्षिकोत्सवके समय लुधियाने के आर्य स्कूलकी हाकी टीम हमारे यहां विद्यालयसे खेलने आई थी। लुधियानेके दल ने हाकी की खेल में वार्षिक पारितोषिक प्राप्त कियाथा, और यह स्कूल अपने ज़िले में पहला रहा था। खेलमें गुरुकुल कादल बराबर रहा, हारा नहीं। अभी गतमास गुरुकुल महाविद्यालय के हाकी दल के बड़े खिलाड़ी दिल्ली गये थे, औ सेण्ट-स्टीफन्स कालेज के हाकी दल से सामुख्य (मैच) हुआ। डेढ़ घन्टे की बड़ी प्रबल खेल के पश्चात् दोनों दल बराबर रहे। दिल्ली के इस दल को विलायत से आए हुए एक शिक्षक कई साल तक हाकी की खेल सिखाते रहे हैं। बिना सिखाये भी हमारा दल यदि सामना करसकता है तो शारीरिक बल, स्वाभाविक बुद्धि और उत्साह ही उसमें कारण है। यदि इन बातों के साथ खेलों के नियम पूर्वक सिखाने का भी प्रबन्ध हो सके तो ब्रह्मचारियों के मज़बूत पट्ठों के सामने खिलाड़ियों के सिरोंका झुक जाना असम्भव नहीं है। प्रश्न यह है कि खेल सिखाये कौन? हमें न यह आवश्यकता है, और न साधन हैं कि किसी बड़े भारी खिलाड़ी को विलायत या देश से ही बुला कर केवल खेल सिखाने के लिये गुरुकुल में रक्खें। हमें तो निश्चय है कि हमारा इस आवश्यकता का बतलादेना ही किसी ऐसे आर्यपुरुष को उत्साहित कर देगा जो अपने आपको खेलें सिखाने के योग्य समझता हो, हमें केवल यह आवश्यकता है कि कोई शिक्षक छः मास तक रह कर हाकी और फुटबाल की नियम पूर्वक खेल ब्रह्मचारियों को सिखलादे। छः मास की छुट्टी लेकर जो आर्य युवक इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये गुरुकुल आनेके लिए तयार हों वे मुख्याधिष्ठाता जी से पत्र व्यवहार कर सकते हैं। इन्द्र

साहित्यसंसार।

उर्दू के दैनिक पत्र

बैशाखी से उर्दू में दो दैनिक पत्रों ने जन्म लिया है। पहिला वही हमारा मित्र झंग सयाल है जो कुछ मास हुए, ज़मानत न दे सकने के कारण बन्द होगया था। अब वह १५०० की नई ज़मानत देकर दैनिक रूप में निकला है इसे निकलते एक सप्ताह होगया है। पर हम अभी तक नहीं कह सक्ते कि यह और दैनिकों के सामने चल सकेगा या नहीं। दैनिक पत्र समाचारों के लिये पढ़े जाते हैं और उन का इस में बड़ा टोटा है। इसे दैनिक रूप में निकालने की क्या आवश्यकता थी, यह भी हमारी समझ में नहीं आया। पर बांकेदयाल अपनी धुन का पक्का है, जब तक उसकी धुन है और उस के लेखोंको पढ़ने वाले लोग हैं तब तक बांकेदयाल का झंगसयाल चलेगा ही। दूसरा पत्र "दीपक" है। यह साप्ताहिक "हिन्दुस्तान" का दैनिक संस्करण है। हमें इस का केवल एक अङ्क ही देखने को मिला है। तथापि जो लोग साप्ताहिक "हिन्दुस्तान" को पढ़ते रहे हैं उन के लिये इस की विशेषताको समझ लेना कठिन नहीं है। ला० रामरखपालसिंह शैदा उर्दू के प्रसिद्ध लेखकों में से हैं। उन की लेखनी में गम्भीरता है, विचार पूर्णता है, और भाषा का लालित्य है। वेही सप्रसिद्ध "दीपक" के सम्पादक हैं और उन्हों ने दैनिक में भी अपनी लेखनी की विशेषताको खोया नहीं है। हमें आशा है कि आगे भी दीपक में यह विशेषता स्थिर रहेगी।

इन दो नए पत्रों के साथ इस समय पंजाब में हिन्दुओं के अख़बारे आम, देश, हिन्दू, दीपक, झंगसयाल पांच दैनिक निकलने लगे हैं। इन में से अख़बारे आम सब से पुराना है, पर वह बहुत बूढ़ा हो गया है, इस समय पंजाब के सार्वजनिक जीवन पर उसका कोई प्रभाव नहीं है। समय के क्रम से दूसरा स्थान "देश" का है। यद्यपि इसके पहिले हिन्दू और झंगसयाल दो चार दिन के लिए दैनिक हुए थे, पर वे नके बराबर थे। लाला दीनानाथ पंजाब की वर्तमान पत्र कला के जन्म दाता हैं। उन्होंने साप्ताहिक हिन्दुस्तान को पंजाब में शक्ति बना दिया था। उन्हीं ने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से दैनिक देश को भी चला कर दिखला दिया। यद्यपि इस समय "देश" के पीछे तीन और दैनिक निकलने लगे हैं पर जब कभी पंजाब के समाचार पत्रों का इतिहास लिखा जायगा तब दैनिक पत्र को सफल बनाकर दिखलाने का सेहरा भी लाला दीनानाथ के सिर पर ही बंधेगा। "देश" का सब से बड़ा गुण यह है कि वह नए से नए समाचार देता है। "ट्रिब्यून" की तो बात ही क्या है, कई बार "देश" नए समाचार देने में सिविल मिलिटरी गज़ट को भी मात कर देता है "हिन्दु" जब साप्ताहिक रूप में निकलता था तब वह बड़ी बुरी हालत में था। कई बार तो उसके जीवन में भी सन्देह पड़ जाता था। जब से पं० हरिलाल शर्मा ने साहस करके इसे दैनिक बना दिया है तब से इस की दशा बहुत अच्छी हो गई है। इस में देहली के राजनैतिक अभियोग का विस्तृत वृत्तान्त छपता है, जो इसका अपना संवाददाता भेजता है। लेखों में भी नई जागृति दिखलाई पड़ती है। इसके सम्पादकका यह भी कथन है कि "हिन्दू" अब तीन हज़ार के लगभग छपता है। पर पढ़ने वालों की यह कृपा कब तक बनी रहेगी, यह अभी निश्चय से नहीं कहा जा सकता। (शेष देखो पृष्ठ १४पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्मप्रचारक

आर्यसमाज का प्रचार क्यों रुक रहा है?

उपदेशक विभाग में सँशोधन की आवश्यकता

(३)

पिछले दो अङ्कों के मुख्य लेखों में हमने विस्तार से दिखलाने का यत्न किया है कि आज कल आर्य्यसमाज के प्रचार का काम जो रुक रहा है, उसके क्या कारण हैं। आर्यसमाज का प्रचार रुक रहा है, इसमें किसी को सन्देह नहीं, किन्तु अब इस में भी किसी को सन्देह न रहा होगा कि प्रचार के रुकने का कारण स्वयं उपदेशक विभाग के प्रचार का तरीका है। हम यह नहीं कहते कि इस समय जो तरीका बर्ता जा रहा है, उस से कोई लाभ नहीं हुआ और उसे एक दम छोड़ देना चाहिये। भ्रमणकारी उपदेशक विभाग से अब तक भी बहुत लाभ हुआ है और आगे भी इससे लाभ होता रहेगा परन्तु अब आवश्यकता है कि प्रचार के काम को अधिक उत्तेजित करने के लिये इस में थोड़ा परिवर्तन किया जाय। वह परिवर्तन क्या है? वह परिवर्तन घूमने वाले उपदेशकों के साथ स्थान स्थान पर स्थिर उपदेशकों का रखना है।

प्राचीन समय में हमारे देश में दो तरह के लोग धर्मोपदेश का काम किया करते थे। एक संन्यासी और दूसरे ब्राह्मण जो विद्या दान देने के अतिरिक्त लोगों की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा किया करते थे। ये ही ब्राह्मण संस्कार करवाते थे, और समय २ पर कथा आदि से लोगों को सीधे मार्ग पर लाने का यत्न करते थे। ये ब्राह्मण उसी नगर या ग्राम के रहने वाले होते थे और इनका लोगों के घरों में प्रवेश होता था। ये गृहस्थों की विपत्ति में उन की सहायता करते थे और उन्हें धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते थे। येही ब्राह्मण गुरुकुलों में प्रविष्ट कराने से पहिले बच्चों को पढ़ाया करते थे। संन्यासी महात्मा कभी कभी आकर जिन उपदेशों को दे जाया करते थे, उनके अनुसार गृहस्थों का जीवन ढालना इन ब्राह्मणों का काम होता था।

आर्यसमाज ने इस प्राचीन प्रथा को सर्वथा उलट पुलट कर दिया है। नगर नगर में घूम कर उपदेश देने का काम तो संन्यासी किया करते थे, वही काम हमने गृहस्थी उपदेशकों से लेना आरम्भ कर दिया है। सच्चे संन्यासियों को न घर बार की चिन्ता होती है और न पुत्र कलत्र पालने का फिक्र। वे निश्चिन्त होकर नगरों और ग्रामों में चक्कर लगा कर उपदेश का काम कर सक्ते हैं। हमारे उपदेशकों को चक्कर लगाते समय घर की भी चिन्ता लगी रहती है, और इसी लिये हर मास उनके छुट्टियों के लिये प्रार्थनापत्र आते रहते हैं। एक और बात है। गृहस्थ लोग जिस प्रेम से साधु संन्यासियों की सेवा शुश्रूषा करते हैं उस भक्तिसे वेतन भोगी गृहस्थ उपदेशकोंकी नहीं। इससे उपदेशकों की शिकायत रहती है कि हमारी आवभगत ठीक रीति से नहीं होती और लोगों का कहना है कि ये उपदेशक धनसंचय के पीछे लगे रहते हैं। वेतन थोड़ा और परिवार अधिक, साधारण योग्यता के उपदेशक लोभ में आभी जाते हैं। हम यह भी दिखला चुके हैं कि एक ही उपदेशक को दूर दूर स्थानों में भेजने से रेल के किराए में समाजों का रुपया बहुत ख़र्च होता है। हमारी सम्मति में अब समय आगया है कि घूम कर उपदेश देने का काम संन्यासियों के सुपुर्द किया जावे और उन के साथ नगर नगर और ग्राम ग्राममें स्थिर उपदेशक रक्खे जावें। इससे कई तरह के लाभ होंगे।

(१) व्यय की कमी—इस प्रकार में व्यय की बहुत कमी होगी। छोटे छोटे शास्त्रार्थों और उत्सवों के लिये हमें दूर दूर दौड़ धूप न करनी पड़ेगी। स्थानीय उपदेशक सब काम कर सकेगा। अभी हमें इतने उपदेशक न मिलेंगे कि हम हर नगर में स्थायी उपदेशक रख सकें। अभी ज़िलों के लिये उपदेशक रक्खे जांय और उस ज़िले के प्रचार का काम उसके आधीन हो। सदा रहने के कारण ज़िले के प्रचार की आवश्यकताओं को वह अच्छी तरह जान सकेगा। रोहतक ज़िले में इस प्रकार का परीक्षण होरहा है और वह बड़ा फलदायक सिद्ध हुआ है। इस ज़िले में पं० ब्रह्मानन्द जी प्रचार के काम के अध्यक्ष हैं। अभी भी कभी उन्हें प्रतिनिधि सभा के संचालक बाहिर भेज देते हैं पर फिर भी स्थिर रीति से एकही ज़िले में घूमने से वे यहां आश्चर्यजनक काम कर सके हैं। वे केवल आर्यसमाजियों की संख्या ही नहीं बढ़ाते, उनके साथ रहकर उनके जीवनों में परिवर्तन कर डालते हैं। उनपर लोगों की जो श्रद्धा है, वह कभी कभी दर्शन देने वाले उपदेशकोंपर नहीं हो सक्ती। यदि हम नगर नगर में ऐसे उपदेशक नहीं भेज सक्ते तो कमसे कम एक ज़िला एक एक बड़े उपदेशकके सुपुर्द किया जाना चाहिये।

साप्ताहिक अधिवेशनों में सुधार। आज कल साप्ताहिक अधिवेशनों की जो दुर्दशा होती है, उनसे हम अपरिचित नहीं हैं। पहिले तो ६ दिनों तक समाज मन्दिर में ताला लगा रहता है। फिर जब सातवें दिन ताला खुलता है तब भी क्या होता है? हवन होता है तो शुद्ध मन्त्र पढ़ने वाला कोई नहीं। एक दो भजन के पीछे सभासद एक दूसरे का मुंह ताकते हैं। मन्त्री जी कभी इसके आगे प्रार्थना करवाने के लिये हाथ जोड़ते हैं और कभी उनसे आगे समैन देने के लिये विनीत निवेदन करते हैं। इन एकमिंटी नोटिसकी प्रार्थनाओंऔर समैनोंसे वेदीकी जो मट्टी पलीद होती है उसे हम वर्णन करना नहीं चाहते। भला ऐसे ही समैनों को सुनने के लिये कौन शिक्षित पुरुष अपना समय खराब कर सक्ता है? इस विषय में ईसाइयों के गिर्जे हमें बड़ी शिक्षा दे सक्ते हैं। स्थायी उपदेशक इस कमी को अच्छी तरह पूरी कर सक्ते हैं उन के होने से ६ दिन तक मन्दिर पर ताला न डला रहेगा। प्रति दिन सायं प्रातः वहाँ कथा होगी और धर्म के पिपासुजन एकत्रित हेंगे। सातवें दिन समैनों के लिये इधर उधर न झांकना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पड़ेगा। इसके अतिरिक्त, वह संस्कार कर.एगा और लोगों के जीवनों को आर्य बनाने का यत्न करेगा।

संस्थाओं की दृढ़ता—आजकल आर्य समाज स्थानीय संस्था तो खोल लेते हैं पर उनके चलाने के साधन उनके पास नहीं रहते। रुपये हों भी तो ऐसे आदमी नहीं मिलते जो उसकी ओर पूरा ध्यान दे सकें। संस्थाओं का चलाना एक "शुग़ल" समझा जाता है। दिनभर कचहरी या दफ्तर में काम किया और सायंकाल वकील साहब पांच मिनट कन्यापाठशाला में चक्कर लगा गए और समझ लिया कि हम कन्याओं को शिक्षा दे रहे हैं। आश्चर्य है कि छोटे छोटे कामों के लिये तो दिन भर देख भाल की जाय और शिक्षा के काम के लिये पाँच मिनट ही पर्याप्त समझे जांय। स्थायी उपदेशकों को रखने से यह लाभ होगा कि वे इन संस्थाओं का अच्छी तरह निरीक्षण कर सकेंगे। वे कन्यापाठशाला की पढ़ाई देखेंगे और लड़कों के स्कूल में धर्म शिक्षा देंगे। हमने आर्यसमाजी स्कूल तो खोले हैं पर उनमें आर्यसमाज की कितनी शिक्षा होती है? ज़रा आप मिशनरी स्कूलों को देखिये? स्थायी उपदेशकों के रखने से यह कठिनाई भी दूर होजायगी।

सेवा का आदर्श—स्थायी उपदेशक अपने नगर या ज़िले में धर्मप्रचार का काम करेगा, आर्य सामाजिक संस्थाओं की देख भाल करेगा, लोगों के जीवन को आर्य्य बनाने का यत्न करेगा और सब से बढ़कर उनका सेवक बनकर लोगों के सामने सेवा का आदर्श रक्खेगा। अबतक आर्यसमाज ने उपदेशकों से केवल मौखिक प्रचार कराया है। उपदेशक भी अपना यही काम समझने लगे हैं। पर अधिक बोलने से ही क्या आज तक किसी धर्म का प्रचार हुआ है? ईसाइयों की ओर देखो। मत समझो कि बड़े बड़े गिर्जों के व्याख्यानों को सुनकर लोग ईसाई बनते हैं। शानदार गिर्जों में जाने वाले लोगों के तो विश्वास उड़ चुके हैं। ईसाई धर्म के प्रचारक न गिर्जे हैं और नाहीं बंगलों में रहने वाले पादरी। ईसाई धर्म के प्रचारक असली स्थान गांव की झोंपड़ी और कुटिया हैं जहां ईसाई सेवक बनकर लोगों को ईसा का भक्त बना रहे हैं। लोग रोगों से पीड़ित हैं और भूखसे व्याकुल हैं। ईसाई लोग उनकी मरहम पट्टी करते हैं और खाने पहिनने को रोटी कपड़ा देते हैं। उनके साथ दोचार सहानुभूति सूचक बात करके दुःख भुलाने का यत्न करते हैं। परन्तु हम व्याख्यानों की बौछाड़ से उन्हें अपने धर्म में लाना चाहते हैं। वे प्रेम और सहानुभूति के भूखे हैं हम उन्हें युक्तियों के पत्थरों से तृप्त करना चाहते हैं। क्या यह कभी सम्भव है? ईसाई लोग प्रेम का हाथ फेरते हैं और फल पाते हैं। हम इसपर शोक करते हैं पर शोक करने से क्या होता है। व्याख्यानबाज़ी के साथ२ ऐसे उपदेशक रखिये जो उन के दुख सुख में लोगों के साथ सहानुभूति करें, उनकी पीड़ा में उनकी सेवा करें, और उनकी आवश्यकताओं को सचमुच पूरा कर सकें।

अब केवल एक प्रश्न है और वह रुपयेका और ऐसे मनुष्यों का प्रश्न है जो स्थिर उपदेशक बननेके लिये तय्यार हों। रुपये के प्रश्न को हम अधिक महत्त्व नहीं देते क्योंकि काम करने वालों को रुपया मिल ही जाता है। हां, उपदेशकों का प्रश्न अवश्य है। पर हम समझते हैं कि इस प्रश्न को गुरुकुल एक आध सालमें हल कर लेगा। जो कमी है वह भी उपदेशक विद्यालय से पूरी होजायगी जो अब शीघ्र ही गुरुकुल के साथ खुलने वाला है। हमारी सम्मति में यदि इस समय भी गुज़ारे का अच्छा प्रबन्ध कर दिया जाय और उपदेशकों को मारे२ घूमना न पड़े तो कई लोग इस कामके लिये तय्यार हो सकते हैं। जब गुरुकुल के लिये स्थिर सेवक मिल सकते हैं तो प्रचारके कार्य्यके लिये क्यों न मिलेंगे? आप उन्हें वही सुभीता दीजिये और वैसा ही गुज़ारे का प्रबन्ध कीजिये। हमारी सम्मतिमें ईसाई मिशनकी तरह यदि एक ही स्थिर सेवकों का वर्ग बना दिया जावे तो कोई हर्ज नहीं। उसी में गुरुकुलको सेवक दिये जावें और उसीमें से प्रचारक बनाए जावें।

पर ये सब बातें पीछे की हैं और विचारशील मिलकर निश्चित कर सके हैं। सबसे पहिले इसबातकी ओर ध्यान खींचना आवश्यक था, वह हमने खींच दिया है। यदि हमारे कथन में कुछ भी सत्यता है तो इस बात को यहीं पड़े न रहना चाहिये। प्रतिनिधि सभा ही सारे समाजोंकी शिरोमणि है वहांतक पहुंचा कर इस विषय में मार्ग निश्चित करना चाहिये। प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन बहुत समीप है, उस समय पजाबके सब समाजोंके प्रतिनिधि एकत्रित होंगे। यदि उस अधिवेशन में कोई सभासद प्रचार सम्बन्धी प्रस्ताव को विचारार्थ उपस्थित कर और इस विषयमें स्कीम तय्यार करने के लिये एक कमेटी बनवा सके तो बड़ा उपकार हो सक्ता है। क्या कोई सभासद इस काम के लिये उद्यत न होंगे?

कांगड़ी समाज के स्त्री सभासद--

पाठक किसी दूसरे स्थानमें पढ़ेंगे कि कांगड़ी समाजने पुरुषोंके साथ स्त्रियोंको भी अपना सभासद बना लियाहै। वैदिक धर्म स्त्री पुरुष को एक ही रथके दो चक्र समझता है। जैसे दोनों चक्रों के विना रथ नहीं चलसक्ता उसी तरह स्त्री पुरुषों के परस्पर मिलकर कार्य न करनेसे संसार के कार्य अच्छी तरह नहीं चल सक्ते। स्त्री पुरुषोंके अधिक भेदको हम वैसेही अनिकारक समझते हैं और धर्म मन्दिर में तो भेद का प्रश्न उठनाही नहीं चाहिये। धर्म मंदिर स्त्री पुरुष, बाल वृद्ध, धनी और निर्धनमें कोई भेद नहीं करता। ईश्वर के सभी पुत्रहैं और सभीको उसके पूजन का अधिकारहै। मुसलमानों को छोड़कर और किसी भी जाति ने स्त्री पुरुषों के लिये अलगर धर्म मन्दिर नहीं बनवाये। जो कट्टर सनातनी पर्दे के अत्यधिक पक्षपातीहैं उनके भी मंदिरों और तीर्थों में पर्दा तोड़कर स्त्री पुरुष इकट्ठे देवार्चन करते हैं। ऋषि दयानंदने बम्बईमें जब आर्यसमाज की नींव रक्खी तब उसमें स्त्री पुरुष—दोनों को एक ही समाज को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सभासद बनाया। पर साहस न होनेके कारण प्रायः आर्यसमाजों ने इस नियम की उपेक्षा करके स्त्रियों के लिये अलग समाज बना दिये, कांगड़ी समाज ने इस दुर्बलता को तोड़कर ऋषि दयानंद के उद्देश्य और वैदिक सिद्धान्तकी पूर्ति की ओर एक पग आगे बढ़ाया है। हमारी यह सम्मति नहीं है कि स्त्री समाजों को एकदम तोड़ देना चाहिये। जो स्त्रियां अभी अशिक्षित हैं और अभी पुरुषों में बैठने से झिझकती हैं, उनके लिये अलग स्त्री समाज की आवश्यकता रहेगी पर जो स्त्रियां शिक्षित हो गई हैं—जो न केवल शिक्षित ही होगई हैं पर कई विषयों में पुरुषों को भी शिक्षा देने के योग्य हो गई हैं और देती हैं, उन्हें मुख्य समाज का सभासद न बनाना अन्याय है। हमें आशा है कि और समाजें भी इसका अनुकरण करेंगी।

—

अम्बाले में दो हिंदू गुम होगए—पंजाबी में यह पढ़कर हमें बड़ा आश्चर्य और खेद हुआ कि अम्बालेके इस्लामियां हाईस्कूल में से दो हिन्दू लड़के गुम हो गए। यह इस्लामियां स्कूल पिछले वर्ष ही अम्बाले चलाया गया था। उस समय स्कूल के संचालकों ने अनुतीर्ण लड़कों को भी भर्ती कर लिया। कई भोले भाले हिंदुओं ने अपने लड़के प्रविष्ट करवा दिये। पर कुछ ही मास के पीछे वे लड़के फिर नीचे गिरा दिए गए। पिछले एक ही वर्ष में इस स्कूल में दो हिंदू लड़के गुम हो चुके हैं। लोगों का ख़याल है कि वे लड़के मुसलमान कर लिए गए हैं। सुनते हैं कि उन लड़कों के माता पिता अपने लड़कों के गुम होने से अत्यन्त दुखित हैं। पर अब रोने धोने से क्या होता है, हिंदू माता पिता को लड़के प्रविष्ट कराने से पहिले पूरे विचार से काम लेना चाहिये।

—

निर्मल कान्तराय विलायत को—गांव के बूढ़े कभी कभी ऐसे लोगों की कथा सुनाया करते हैं जिन्हें मृत्यु के समय से पहिले यमदूत यम लोक को ले गए। पर वहां भूल पता लगने पर यम राज की आज्ञा से फिर वर्त्य लोक को भेज दिए गए। निर्मल कान्तराय के बारे में यही कथा प्रत्यक्ष हुई है। भेद इतना है कि यहां भूल पता लगने पर यमराज ने स्वयं छोड़ने की आज्ञा नहीं दी पर नार्टन नामी बलशाली विष्णु के दूत ने उसे बल पूर्वक छुड़ा लिया। नार्टन महोदय निर्मल को छुड़ा कर ही संतुष्ट नहीं हुए हैं, पर उन्हों ने उसकी भावी उन्नति को भी प्रबन्ध कर दिया है। समाचार मिला है कि निर्मल कान्तराय विलायत बारिस्टरी पास करने जायगा और उसका सारा व्यय नार्टन महोदय अपने पास से देंगे। यह भी सुना है कि गत सप्ताह कलकत्ते में एक नाटक खेला गया जिसकी सारी आय निर्मल की सहायता के लिए दी जायगी।

—

सरकार ने फ़रीदपुर का अभियोग वापिस ले लिया—पाठकों को स्मरण होगा कि फ़रीदपुर में सरकार की ओर ३६ युवकों पर डाका डाल ने का अभियोग लगाया गया था। इन में अच्छे अच्छे घरानों के कई लड़के थे इन में से आठ पहिले ही छूट चुके थे और एक सरकारी गवाह बन गया था। चार को पुलीस पकड़ न सकी थी। शेष २३ पर अभियोग चल रहा था। कई दिनों तक गवाही चलती रही अन्त में सरकार ने अभियोग उठा लिया। अभियोग उठाते हुए सरकारी वकील मि० गुप्त ने कहा कि मदारीपुर के वकील और म्युनिसिपलिटी के चेयरमैन बाबू तारा प्रसाद सेन ने अपनी गवाही में कहा था कि अभियुक्त राजेन्द्र ने डाका डालने के लिए सभा होने और कितनों के उसमें सम्मिलित रहने की बात कही थी। उसने समिति के मुखिये पूर्ण दास को बहकाकर फ़रीदपुर में गिरफ्तार कराया। पर अब वह मुकरता है और डर के मारे ३० गवाहोंने अच्छी गवाही नहीं दी। हमारे पास ऐसे प्रमाण नहीं हैं, जिन से अभियुक्तों की सज़ा हो सके, इस लिये मैंने सरकार को लिखा और उसने मामला उठा लेने की आज्ञा दी। इस लिये मैं आपसे प्रर्थना करता हूं कि २३ अभियुक्तों पर से मामला उठा लेने की आज्ञा दीजिये। मैजिस्ट्रेट ने अभियोग उठा लेने की आज्ञा दे-दी है।

—

गोरेपत्रों का क्रोध—अभी थोड़े दिनों में ही पुलीसने कई बड़े तुच्छ या सर्वथा झूठे आधार पर अभियोग चलाकर अपनी अकर्मण्यता का परिचय दिया है और सरकार को लज्जित कराया है। रावलपिंडी और सिंध में एक जासूस के कहने पर सरकार की ओर से अभियोग चलाया गया। पर पीछे से पता लगा कि उस जासूसने व्यक्तिगत द्वेष के कारण पुलीस को झूठी सूचना दी है। श्री सुरेन्द्रनाथ विसी कानपुर की मिल में एक टाइपिस्ट थे। उन्हें रासबिहारी-बोस बतला कर एक जासूस ने पकड़वा दिया। तीन दिन तक तंग करके उसे पुलीस ने छोड़ा। निर्मल के अभियोग में भी पुलिस असली अपराधी को न पकड़ सकी। अन्त में यह फरीदपुर का अभियोग है जिसे सरकार को वापिस लेना पड़ा। इस पर कलकत्ते के गोरे पत्र आग बबूला होगए हैं और बे सुर पैर की बातें करने लगे हैं। पर वे क्रोध किस पर प्रकट कर रहे हैं। यदि पुलीस निकम्मी है और अपना दामटीक रीति से नहीं कर सकती तो उसे सुधारना चाहिये न कि लोगों को कोसना चाहिये।

—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१० धर्म-प्रचारक १५ वैसाख शनिवार सम्वत १९८१

सुल्तान चन्द सरकारी गवाह के रूपमें—देहली का राज नैतिक अभियोग शिचित्र रूप धारण कर रहा है। अभियुक्तों में मा० अमीर चन्द के साथ उनका भतीजा सुल्तान चन्द भी पकड़ा हुआ है। वह सरकारी गवाह बन गया है और उसे मैजिस्ट्रेट ने क्षमा प्रदान भी कर दिया है। उसकी आयु १७ साल की है। २१ अप्रैल को उसने अपना बयान दिया। उस में उसने कहा कि मैं मा० अमीर चंद का भतीजा हूं और एक वर्ष की आयु से ही उस के साथ रहता हूं। अमीर चंद ने मुझे दत्तक बनाया है। मैं मास्टर अमीरचंद के साथ प्रेम धाम में रहा करता था। जिस दिन प्रेम धाम की तलाशी हुई, मैं वहीं था। मैं कालिज चला गया। लौटकर आया तो मैंने सुना कि एक गत्ते का बक्स तलाशी में मिला है जिस में कुछ रुई और एक गोल काग़ज़ निकले हैं। मुझे मालूम नहीं था कि मकान के भीतर कोई गत्ते का बक्स पड़ा हुआ है। मैंने यह नहीं सुना कि किस कमरे में वह बक्स निकला था। मैंने ऐसा बक्स न इस घरमें और न किसी आदमी के पास देखा था। मेरी अलमारीकी तलाशी हुई थी, उसमें तीन लिफाफे के पत्र निकले थे। ये मुझे अवधविहारी ने दिये थे और कहा था कि इन्हें पढ़ना। इनके पढ़ने से मुझे जोश आया। मैंने अमीरचंद से इसका कभी ज़िक्र नहीं किया। मैंने दीनानाथ को एक बार अपने मकान पर देखा था। मैंने जनवरी में अपने मकान पर एक बंगाली को देखा था। दीनानाथ ने अपने बयान में रासविहारी बोस का जो वर्णन किया था वह वैसा ही था। पर उसने धोती और कुर्ता पहिना हुआ था। पहिले दिन इस बंगाली के मूछ थी पर अन्तिम दिन न मूछ थी और न दाढ़ी। मैंने इसे कई बार अवधविहारी के साथ देखा पर अमीर चन्द के साथ कभी नहीं देखा। इस के पीछे सुल्तान-चन्द ने कई काग़ज़ों और अभियुक्तों को पहिचाना। बयान हो चुकने पर मा० अवध विहारी और मास्टर अमीरचन्द ने जिरह की। उस दिन पहिले से अमीरचंद ने मुंह पर रूमाल रक्खा हुआ था। जिरह के समय तो मा० अमीर चंद रोना न रोक सका। रोने की आवाज़ से सारा कमरा गूंज उठा और सारे कमरे में सन्नाटा छागया।

इन्द्रप्रस्थ हिन्दू कन्या पाठशाला—देहलीमें जितनी कन्या पाठशालाएं हैं, उनमें से प्रधान यहां की हिन्दू कन्या-पाठशाला है। गत रविवार को इसके पारितोषिक वितरणका दिनथा। पारितोषक देहलीके सर्व प्रिय चीफ़ कमिश्नर की धर्मपत्नी ने दिया। पाठशालाओं की कन्याओं ने रामायणकी चौपाइयां और भजन आदि गाए। यह इस बात का प्रमाण है कि यहांकी अध्यापिकाएं कितने प्रेमसे पढ़ाने का काम करतीहैं। प्रधानाध्यापिका की वार्षिक रिपोर्ट से पता लगा कि इस समय पाठशाला में ३०० से ऊपर लड़कियांहैं। अभीतक इस पाठशालामें मिडिल तक पढ़ाई होतीथी पर नए वर्ष से इसे एंट्रेंस तक करने का विचार कर लिया गया है। २० मई से यहां से एक हिन्दी का मासिक पत्र भी निकलेगा जिसका नाम स्त्री सहायक होगा। पाठशाला के साथ एक आश्रम भी खोल दियागयाहै। मकानका प्रबन्ध होजाने पर अधिक कन्याएँ ली जावेंगी। सदाचार, संस्कृत, पाकविधि और गायन आदि के लिये कई सोने के पदक और घड़ियां इनाममें बांटीगईं। अन्तमें श्रीमती हेली ने इस पाठशाला के साथ अपनी गहरी सहानुभूति प्रकट की। उसी समय कई सौ चन्दा भी लिखागया।

साधु सुधार का कानून—पाठक जानते हैं कि संयुक्त प्राँत की लैजिस्लेटिव कौंसिल में लाला सुखबीर सिंह ने साधु सुधार का प्रस्ताव उपस्थित किया है। लाला सुखबीर सिंह चाहते हैं कि नाबालिग़ लड़कों को साधु बनने और भीख मांगने से रोकने के लिये कानून बनाया जाय। इसी प्रस्ताव के विषय में सरकार बड़े बड़े साधुओं से सम्मतियां ले रही है। हृषीकेश के तीन चार प्रतिष्ठित साधुओं ने जो अपनी सम्मति भेजी है, उसे आज हमने अन्यत्र प्रकाशित किया है। उस उत्तर में कई बातें बहुत ध्यान देने योग्य हैं। साधु वर्ग का यह कहना बहुत ही ठीक है कि साधु बनने के कारणों पर ध्यान दिया जाना चाहिये। और बातों साथ साथ निर्धनता साधु बनने का बहुतबड़ा कारण है। वैशाख और जेठ में हरिद्वारमें साधुओं की संख्या बहुत बढ़ जाती है। उन में अधिक संख्या ऐसे साधुओं की होती है जो गर्मीमें परिश्रमसे घबरा कर गेरुए कपड़े पहिन लेते हैं और गर्मी निकलते ही फिर अपने गांव को लौट जाते हैं। पर इनके साथ ही ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो हाथ पैर चलाने की अपेक्षा संन्यासी बन कर औरों के टुकड़े तोड़ना अधिक पसंद करते हैं। उनके लिये कानून का बनना बहुत ही आवश्यक है। पुराने समय धर्म की मर्यादा ही सभय से पहिले साधु बनने से लोगों को रोकती थी। परन्तु अब जब धार्मिक बन्धन लोगोंको साधु बननेसे नहीं रोक सक्ता तब कानून का आश्रय लेना ही पड़ेगा। साधुवर्ग की यदि सम्मति अवश्य ही माननीय है कि "सच्चे" और "झूठे" साधुओंमें भेद करनेके लिये स्थान स्थान पर लोगोंकी ही पंचायत होनी चाहिये।

देशमें अकाल—१८ अप्रैल को अन्त होनेवाले सप्ताहकी अकाल की रिपोर्ट से जान पड़ताहै कि, उत्तरपूर्व भारतमें वर्षा होनेसे बहुत लाभ पहुंचा है। पर उत्तर-पश्चिम भारत में अब वर्षा की ज़रूरत नहीं हैं, वहां रबी की फसल काटी जा रही है। युक्तप्रदेश की अवस्था मे कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। वहाँ अकालके कामोंपर तथा मुफ़्त सहायता पानेवालों की संख्या १३५७३ थी। अजमेर में मुफ्त सहायता पाने वालों की संख्या १९ और मेरवाड़े में ८८ थी। राजपूतानेमें अनाज महंगाहै। मध्य भारतमें इन्दौरके हिस्सों में कष्ट बढ़रहाहै। लोग कामों पर आरहे हैं। इस समय किसानों से मालगुज़ारी नहीं ली जायगी। वहाँ अकाली काम करने तथा मुफ्त सहायता पानेवालोंकी संख्या १४९२ थी।

मध्यप्रदेश में मुफ्त सहायता पाने वालों की संख्या ५८६ थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साधु सुधार कानून

हृषीकेश के साधुओं की रूदाद

पाठकों को मालूम है कि माननीय सुखवीरसिंहने कौंसिलमें साधुसुधार कानून पेश किया है, उसके विषय में हृषीकेश के मुख्य साधुओंसे कुछ प्रश्न पूंछे गए थे। हम उन प्रश्नों को उत्तर सहित छापते हैं। (सम्पादक)

प्रश्न।

१-अगर आपको ऐसी मिसालें मालूम हुईहैं तो (क) वह कितनी मिसालें हैं जिनमें छोटे नाबालिग़ बच्चों को उनके मां बाप ने भिखारियों के तौर पर परवरिश किये जानेके वास्ते पेशकर भिखारी और फ़क़ीर और साधु बच्चों को उनके मां बापकी रज़ामंदी के बग़ैर या मर्ज़ीके ख़िलाफ़ इस ग़रज़ से बहकाकर लेगये कि उनको भिखारियों के तौर पर परवरिश करें॥

२-अगर यह मान लिया जाय कि जिन रवाजों का ऊपर ज़िक्र किया गया है वह जारी हैं और अगर होसके तो उनको बंद करदेना चाहिये तो क्या आपकी राय में क़ानून के जो हुक्म आजकल जारी हैं यानी मजमूआ ताज़ीरात हिन्दकी दफ़ा ३५६ और उसके बाद का दफ़ाएं और संयुक्तदेश के म्यूनिसिपलिटियों के ऐक्ट सन् १९०० ई० की दफ़ा १७३, वह इन ख़राब रवाजों के रोकने के लिये काफ़ी हैं॥

३-अगर सवाल नं०२ की आपको जवाब यह हो कि जो हुक्म आजकल जारी हैं, वह काफ़ी नहीहैं तो क्या आपकी यह रायहै कि इस मुआमले के मुतल्लिक़ नया क़ानून किस किस्म का बनाया जाय।

(क) कौन कौनसे काम (१) मां या बाप के या (२) बच्चे के या (३) ऐसे साधु या भिखारियों के जिसके पास बच्चा तहक़ीक़ात में हो सज़ा के क़ाबिल क़रार देने चाहियें। मसलन अगर कोई मां या बाप अपने बच्चेको किसी साधु के हवाले करदे या कोईबच्चा भीख मांगता हुआ पाया जाय या कोईसाधु बच्चेको भीख मांगनेकी ग़रज़ से भेजे या अपने साथ लेजाय तो क्या मां बाप पर या बच्चे पर या साधु पर जुर्म लगाना चाहिये॥

(ख) इस क़िस्मके जुर्मों के मुतल्लिक़ नाबालिग़ बच्चों को उमर की क्या हद मुक़र्रर करनी चाहिये॥

(ग) ऐसे जुर्म पुलिसको दस्त अन्दाज़ीके क़ाबिल करार देने चाहियें या नहीं॥

(घ) नाबालिग़ भिखारियों के मुतल्लिक़ जुर्मों की समाअत किन अदालतों को करनी चाहिये॥

(ङ) ऐसे जुर्मों की तहक़ीक़ात और तजवीज़ मुक़दमात मुतल्लिक़ कौन सा ज़ाब्ता कार्रवाई वर्तना चाहिये॥

(च) जो नाबालिग़ बच्चे अकेले या किसी और आदमीके साथ किसी सड़क पर या आम जगहमें भीख मांगते हुए या भीखके लिये गिड़गिड़ाते हुए पाये जांय उनके मुतल्लिक़ क्या कार्रवाई की जानी चाहिये।

(छ) क्या उन लोगों की निस्बत जो नाबालिग़ बच्चोंको भीखदें उस (नये) कानूनमें कोई हुक्म होना चाहिये जो तजवीज़ किया जाय।

(ज) क्या आप अदालतों और पुलिसके सिवा कोई और ऐसा ज़रिया बता सकते हैं जिस से ऊपर लिखे हुए रवाजों का पता लगाने और उनके बन्द करने में काम लेने से फायदा हो सकता है।

(झ) क्या इस बात के लिये कि (नये कानूनसे) असली और सच्चे साधु और फक़ीरों को तकलीफ़ न पहुँचने पाय और वह दिक़ न किये जांय कोई कोई तदबीरें बता सकते हैं।

४-क्या आपके ज़िलेमें कोई यतीमख़ाना या यतीमों के लिये कारीगरी सिखलाने का कोई स्कूल है। अगर कोई यतीमखाना या ऐसा कोई स्कूल है तो उसमें कितने बच्चों की गंजाइशहै और उसकी आमदन के ज़रिये क्या हैं।

५-(क) क्या आपको कोई मन्दिर या मठ वग़ैरः में बच्चे भेंट कर देने यानी ख़िदमत के लिये दे डालनेके रवाज का कुछ हाल मालूमहै।

(ख) अगर आपको इस रवाज का कुछ हाल मालूम है तो क्या आप इसका कुछ हाल बतला सकते हैं कि जो बच्चे (ख़ास कर लड़कियां) इस तौर पर भेंट दी जाती हैं उनकी आखिर में क्या हालत (गति) होती है।

(ग) क्या आपकी राय में (यह भेंट देने का) रवाज बन्द कर देना चाहिये।

(घ) अगर आपको यह राय हो तो क्या आप इसकी निस्बत कुछ राय दे सकते हैं कि इस रवाज के बन्द करने का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या होगा।

६-क्या आप उन बातोंकी मुतल्लिक़ जिनकी बाबत यह सवाल है मगर जिनका इन बातों में ज़िक्र नहीं है कोई और सवाल दे सकते हैं।

१०-अगर कोई ऐसा नया कानून जारी किया जाय कि जिसमें यह हुक्म हो कि नाबालिगों को भीख या नाबालिगोंको भीख मांगने के लिये किसीको देदेना सज़ाके क़ाबिल जुर्म है तो क्या आपकी रायमें इसका क़रीनाहै कि कुछ ज्यादा लोग इसकी बाबत सख्त एतराज़ करेंगे।

११-क्या आपकी राय में यह बुरे रवाज जिनका ऊपर ज़िक्र किया गयाहै मुसलमानों में भी जारी हैं।

उत्तर।

१-श्रीमान् सकल गुणनिधान हमारे परमप्यारे लेजिसलेटिव कौंसिल मेम्बर कमेटी से शुभ आर्शीवाद के पश्चात् हम अपनी नेक नियत से निवेदन करते हैं और साथ२ उन आनरेबल मेम्बरोंको (जिन्होंने अपनी नेक नियतसे खास जाती मतलब को न देखकर सिर्फ एक अपना फर्ज समझकर अपने मुल्क और अपनी कौमकी बेहतरीके लिये अपना कीमती वक्त खर्च किया) हम सच्चे दिल से धन्यवाद देते हैं।

मेम्बर साहबान! आपके परामर्श का नतीजा जनाब लेजिसलेटिव कौंसिल सेक्रटरी बहादर की मेहरबानी से बन्द लिफ़ाफों में चंद सवालों के परचे के साथ १ चिट्ठी और नाना प्रकार की ताईदोंके साथ दूसरा१वह रैज़ोल्यूशन (जिसको हमारे आनरेबल लाला सुखबीरसिंह ने भिक्षु समाजकी उचित व्यवस्था के लिये एक बड़ी भारी हमदर्दी के साथ कौंसिल में पेश किया) हमारे पास आये। तब हमने उसे शुरू से लेकर आख़िर तक पढ़ा। ये तो हमको मालूम हुआ कि हमारे आनरेबल मेम्बरों का यह मतलब है कि उन लोगों की (जिन्हों का ज़िक्र इस रैज़ोल्यूशन और इसकी ताईदों में बड़ी घृणा के साथ किया है) उचित व्यवस्था और अपने मुल्ककी भलाई के लिये यह कार्रवाई काफ़ी है।

लेकिन मेम्बर साहबान! हमारी राय में तो आपका मतलब मज़कूर तभी सिद्ध होता जब आप और हम झूठी शिकायतोंको छोड़कर अपने सच्चे दिल से नाम के साधु बनने के कारणों का हटाना ही अपना परम कर्तव्य समझें। नहीं तो चाहे जितना प्रयत्न करें सफल न होगा क्योंकि कारणों की मौजूदगी में कार्य्यों का बन्द होना सुगम नहीं है बल्कि दिनों दिन ख़राबियां बढ़ती जांयगी और ज़्यादहतर अंदेशा इस बात काहै कि शायद लोग आपके इस असली मतलब को न समझकर मुल्कपर कोई ख़राब असर डालें इसलिये आपसे निवेदन है कि जो नामके साधु बननेके कारण हैं और जिन्होंके हटाने से कोई एतराज़ भी नहीं कर सके और आपका मतलब भी सिद्ध होसके और जिन्होंके हटानेकी निहायत ज़रूरतहै उन कारणों को भली प्रकार जानकर उनके हटानेका प्रयत्न किया जाय तो अवश्यही सफल होगा इसलिये उन कारणोंमें से कुछ ऐसे कारण लिखकर आपकी भेंट किये जाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२) धर्मकी मर्यादा का टूटना नामके साधु बनने का प्रथम कारण है क्योंकि हिन्दुस्तान में धर्म की मर्यादासे ही उचित भिक्षा के मांगने का रिवाज सदासे चला आताहै इस बातसे रैज़ोल्यूशन को पेश करने वाला आनरेबल मेम्बरभी इन्कार नहीं करेगा क्योंकि वह अपने धर्म की मर्यादाको मानकर आदमी की ज़िंदगी की पच्चीस२ वर्षकी चार मंज़िलोंमेंसेप्रथम मंजिल (जिसमें आदमी सच्चा ब्रह्मचारी होकर इतर भाषा निरपेक्ष वेद वेदाङ्ग इतिहास पुराण धर्मशास्त्रादि महाविद्याओं का अभ्यास करता था जिससे वह आगे की मंज़िलोंमें सच्चा गृहस्थ या सच्चा तपस्वी या वैराग्य होनेपर सच्चा साधु बनता था) और चतुर्थ-मंज़िल (जिस से रूहानी तरक्की और नेक पाक शिक्षा से लोकोपकार होता था) में सिवाय भिक्षा वृति के दूसरा जीवन का ज़रिया न्याय से न बतला सकेगा—। प्रथम मंज़िल को खतम करके फिर आगे की मंज़िलों में यथाधिकार जाना यह धर्म की मर्यादा है इसका व्यवस्थायक राज दंड और जाति दंड थे। आजकल इन दोनों दण्डों का अभाव होने से धर्म की मर्य्यादा टूट गई है इस के टूटने से ही नाम के ब्रह्मचारी नाम के गृहस्थ, नाम के तपस्वी और नाम के साधु बनकर नाना प्रकार की शिकायतों के शिकार हो रहे हैं। जब किसी की भिक्षा मांगने की मर्ज़ी होती है तो वह भिक्षा मांगने के चाहे अयोग्य भी हो तो भी भिक्षा मांगने की रिवाज पर भरोसा करके साधु नाम की आड़ में गुज़ारा करता ही रहता है, इस से सिद्ध हुआ कि धर्म की मर्यादा का टूटना नाम के साधु बनने का प्रथम कारण है।

(२) दूसरा इसका कारण इस देश की दुर्दशा है जिस के अन्दर बहुत से नाम के साधु बननेके कारणहैं। अगर इस देशकी इसकदरदुर्दशा न होती तोआज साधुनामबदनाम और उसकी ५२ लाख तादाद भी न होती, यद्यपि हम किसी बात के साबित करने या तमाम सवालों के जवाब देने के लिये हर्गिज़ उपस्थित नहीं हैं तथापि जो बात आम तौर पर सुनने में आती हैं उन में से कुछ बातें लिखकर सवाल नं० ६ के लिहाज़ से सवाल नं० ९ के बारे में कुछ अर्ज़ करते हैं।

लोगों से सुना जाता है कि लाखों ही लोग भूख के मारे इस देश से अफ्रीका आदि विदेशों में चले गये और लाखों ही लोग आरकाटी लोगों के धोखे में आकर बड़ी तकलीफ़ के साथ जमइका चीनीडाड आदि विदेशों को आबाद करते हैं और लाखों ही भूख के मारे गुज़ारे के लालच से अपनी कौम को छोड़ कर ग़ैर कौमों में शामिल होते हैं और हज़ारों ही लोग उचित शिक्षा के न होने से कसूरवार होकर कारागारों में वास करते हैं। अब क्या कोई कह सक्ता है कि आमदनी की कमी और खर्च की अधिकता इस दुर्दशा से हजारों ही आदमी क़र्ज़से पीड़ित हो कर आख़िर में अपना सर्वस्व निलाम करके या ऐसे ही नाम के साधु नहीं बनते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि अपने लायक रोज़गार के न मिलने से भी हजारों ही आदमी नाम के साधु नहीं बनते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि सैंकड़ों ही आदमी अफ़ीम के सट्टे में धोखा खाकर नामके साधु नहीं बनते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि सैंकड़ों ही जुआ बाज़ी में हारकर नाम के साधु नहीं बनते, फिर क्या कोई कह सक्ता है कि चोर डाकु खुनी और बड़े कसूर वाले लोग और उनकी तहकीकात करने वाले पुलिस लोग भी मौकेर पर साधु भेष का अनुकरण नहीं करते?

फिर क्या कोई कहसक्ता है कि सैकड़ों ही लोग पंचायतों के सिलसिले के टूटने पर वैर विरोध के कारण वक्त अदालतों में जाकर वहां ही अपना खाली हाथ करके नाम के साधु नहीं बनते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि भांग तमाखू अफीम सिगार सिगरिट कोकीन गाँजा चर्स चन्डू आदि दुर्व्यसनों के वशीभूत होकर नाम के साधु नहीं बनते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि शराब कबाब और अय्याश की लज्ज़तों में सैंकड़ों ही आदमी कलालों कसाईयों और कसबियों के मनोरथ पूरा करने में ही निर्धन होकर नाम के साधु नहीं बनते?

फिर क्या कोई कहसक्ता है कि सैंकड़ों ही चालाक लोगों ने सीधे साधे लोगों का गुज़ारा छीनकर उनको भीख माँगने लायक नहीं बना दिये?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि गरीबों के लड़के फीस कापी किताब कपड़ा बूट दवात कलम आदि सामान के न जुड़ने से स्कूलों में वक्त की तालीम न मिलने से भी साधु नहीं बनते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि माँ बाप बहुत से रूपये लेकर लड़कियों की शादी करते हैं इस कारण बहुत से ग़रीबों के लड़कों की शादी के न होने से भी बहुत से लड़के साधु नहीं बनते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि धर्मादों की दुर्दशा होने से धर्म कार्य्यों के लिये जगह २ ताजे बन्दे का होना प्रजा के निर्धनता का कारण नहीं है?

फिर क्या कोई कह सकता है कि हज़ारों ही भूखे सकुटम्ब मुसलमान जिन्होंकी कर्तूत पांच टांगों वाली गाय और महादेव का नादिया इस नाम की पुस्तक में ज़ाहर है) जोगी का भेख धार कर नाम के साधुओंमें शामिल नहीं है?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि हज़ारों ही गृहस्थ भूख के मारे बड़वा भाटड़ा इन नामों से प्रसिद्ध होकर सब किस्मके फ़क़ीरों का भेष धार कर ५२ लाखमें शामिल नहीं हैं?

फिर क्या कोई कहसक्ता है कि हज़ारों ही लड़के लड़कियां (जिन्होंके मां बाप किसी मुसीबतके मारे कहां हैं पता नहीं) यतीमों के तौर पर भीख मांगते नहीं फिरते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि हज़ारों ही भूखे गृहस्थ अपने पेटके फिकर में कुछ लेकर या ऐसे ही अपने लड़कों को साधु, फ़क़ीर, भिखारियों के हवाले नहीं करते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि हज़ारों ही गृहस्थ भूख के मारे ५२ लाख में न शामिल हो कर के भी खास २ शहरों कस्बों और तीर्थों में भीख मांगते नहीं फिरते?

फिर क्या कोई कह सक्ता है कि खेती की पैदायश विदेशों में जाने से तमाम ज़मीन के आबाद होने पर भी सुकाल में भी कहत के तौर पर मारे भूखके लाखों ही नामके साधु नहीं बनते?

प्रायः घी दूधकी कमी और बैलोंकी कमीने यहां तक आदमियोंको कमज़ोर बेकार और निर्धन कर दिया कि वे सिवाय भीख मांगनेके दूसरे कामके लायक भी न रहे। यह एक बड़ा भारी रोंमांच कारी दृश्य है जिस से वह हिन्दुस्तान (जिस में मवेशी की हत्या का नाम निशान भी न था) आज अपनी बदनसीबी से असली सूरत को छिपा कर एक बड़े भारी बूचड़ खाने की सूरत में अपना गुज़ारा करता है। अतएव बेकसूर बे जबान देश विदेशों के जीवन की जान परोपकारी मवेशियों को चरने के लिये तो क्या, खड़े रहने के लिये भी जगह नहीं देता। इस सूरत में गुज़रे वाले लोग भी मवेशियों को नहीं रख सक्ते फिर ग़रीबों की तो क्या बात है। वे तो अपने पेट के फिकर में ही सब कुछ भूल गये इस लिये एक दम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बेचना शुरू किया और कस्लाबोंने खरीद २ कर बड़ी बेरहमी के साथ जगह २ मारना शुरू किया इसका नतीजा यह हुआ कि जो घी दूध दही मक्खन और मट्ठा बे क़ीमत मिलते थे वे आज न होने जैसे हो गये और हल कूंये और गाड़ी चलाने के लिये बैल भी आगे से चौगुनी क़ीमत पर भी मुशकिल से ही मिलते हैं। इस से किसानों के सिरपर हरवक्त करज़ा बना ही रहता है और मवेशियों को खाद के न होने से ज़मीन निहायत कमज़ोर हो गई है। खेतों में मवेशियों की शुद्ध खादके बदले प्रायः मैला डाला जाता है इसकी पैदायश खा कर इन्सान नाना प्रकार के रोगों के भी शिकार हो रहे हैं। बस कहनेका मतलब यह है कि मवेशियों की दुर्दशा से ही तमाम देश कमज़ोर बेकार और निर्धन हो कर उस दुर्दशाको प्राप्त हुआ जिस से लाखों ही आदमी नाम के साधु बन कर भीख मांगने लगे जिन्हों की उचित व्यवस्था के शोचने के लिये आप साहिबान मुकर्रर हुए हैं। अब इन पूर्वोक्त कारणों को न मान कर क्या कोई भीख माँगने वालों की ५२ लाख तादाद पूरी कर सक्ता है।

इस से सिद्ध हुआ कि नाना प्रकार की देशकी दुर्दशा हो नामके साधु बनने का दूसरा कारण है।

मेम्बर साहेबान! अगर यह हमारा कहना सच्च है तो जब तक आप नामके साधु बननेके असली कारणों को न हटा देंगे तब तक देशकी सुदशा और धर्मकी मर्यादाका कायम होना नामुमकिन है, अतएव अब वह प्रयत्न अवश्य होना चाहिये जिस से नाम के साधु बनने के असली कारण रफा होवें। उसके बाद पूरी उम्मेद है। कि लड़कों के देने लेने भगने भगाने और भीख मांगने मंगाने की शिकायतें आप से आप दूर हो जावेंगी। अब उन कारणों के हटाने के लिये आप साहेबानों की कोशिश और मान्य सरकार गवर्नमेण्ट की बड़ी भारी मेहरबानी की ज़रूरत है। जब वह चाहेगी कि मेरी प्राणप्यारी भारतीय प्रजा धन धान्य सम्पन्न और धार्मिक होवे तब वह उन उचित कानूनोंको जारी करके अमल में लावेगी जिन्हींसे देश की दुर्दशा दूर होकर सुदशा होवे और टूटी हुई धर्म की मर्यादा का पुनः स्थापन होवे। जैसे सती होने की रस्म को तोड़ने के लिये सरकार ने कानून जारी किया, वैसे ही आप साहेबानों की कोशिश से टूटी हुई ब्रह्मचर्य की रस्म के पुनः स्थान के लिये कानून जारी होना चाहिये जिस से नाम के आश्रमों की शिकायत रफा होवे और सच्चे सब आश्रमों की जड़ सच्चा ब्रह्मचर्याश्रम जारी होवे फिर उस दशा में २५ वर्ष के अन्दर न कोई मां बाप अपने लड़के को फकीरों के हवाले करेगा और न कोई फकीर भी किसी के लड़के को भगा कर भीख मंगावेगा, तब तो अवश्यही सब कोई विना तकलीफ के सच्चा ब्रह्मचारी सच्चा गृहस्थ सच्चा तपस्वी और सच्चा साधु बन कर मान्य सरकार का शुक्रिया अदा करेंगे। फिर कोई किसी की शिकायत का शिकार न होगा। इस तदबीर से किसी को भी तकलीफ न पहुँचने पाएगी और न कोई दिक किया जायगा। इस से सिवाय फायदे के किसी का कोई तरह का नुकसान भी नहीं देखपड़ता,

यह सवाल नम्बर (६) के लिहाज़ से सवाल न० (९) के बारेमें अर्ज हुई। अब सिवाय इसके दूसरी कोई तदबीर नहीं मालूम होती जिससे इस मुआमले में दखल देने पर भी असली और सच्चे साधुओं और फक़ीरों को तकलीफ न पहुंचने पाये और वे दिक न किये जांय क्योंकि "यह सच्चा है" और "यह नकली है" इस तरह की छान बीन होनी कठिन है और इस का नतीजा भी सिवाय तकलीफ के कुछ विशेष लाभदायक नहीं देख पड़ता है।

अब सवाल नं० (८) (ग) (घ) के बारे में हमारी राय है कि लड़कियों का भेटदेना या बेचना जहाँ तक मालूम हो सके उचित सज़ा के ज़रियेसे बन्द करादेना चाहिये और उन्हींकी उचित रीति से शादी होनी चाहिये। इसका पूरा सबूत मुअतबर पंचायत में पहुँचना चाहिये अतएव इस तरह के कामों के लिये जगह पंचायतों का नियत होना भी आवश्यक है जिन्हों में जातीय दण्ड के नियत होने से जावेजा खान पान पहिरान आदमी खर्च दान सन्मान आदि व्यवहारों की मर्यादा अटूट बनी रहे। यह हम ने अपनी राय ज़ाहिर की। और उन साहेबानों की जो वह राय (कि नाबालिग बच्चे बजरिये कानून के साधु बनने से बन्द किये जांय) अगर पास किया जाय तो उस में इतना अवश्य ही शामिल किया जाय (कि उन नाबालिग़ बच्चों को सिवाय मां बाप या अपनी कौम की रज़ामन्दी के गैर कौमें हरगिज न ले सकेंगी) क्योंकि प्रायः यह शिकायत सुनने में आती है कि नाबालिग लड़के लड़कियोंको बहकाकर या और किसी तरीके से ग़ैर कौमें हज़म करती हैं। इस बारे में आप साहेबानोंको विशेष ध्यान देनाचाहिये। अब जो कुछ हमने कहिनाथा सो कह चुके आगे जो परमेश्वर को मंजूर होगा सो होगा क्योंकि वही सबकी बुद्धियों का प्रेरक है और वही सबका कर्त्ता भर्त्ता हर्त्ता और गति है। यह हमारा निश्चय है। इति शुभमस्तु

स्वामी धनराजगिरि जी के स्थानापन्न स्वामी गोविन्दानन्द गिरि काशीपुरी, पूर्णानन्दगिरि कैलाश, स्वामी कल्याणदेव, स्वामी मङ्गलनाथ मोनी की रेती। हृषीकेश।

प्रेरित

देहली के छात्रों को कष्ट

श्रीमन्मान्यवर, सद्धर्मप्रचारक सम्पादक महोदय जी नमस्ते, सनिवय निवेदन है कि आप इस हमारे तुच्छ लेख को अपने अमूल्य पत्र में स्थान देके हमें उपकृत कीजियेगा और भावी फल को सिद्ध कर अपने निर्मल यशको दिगन्त गत कीजियेगा।

न जाने दिल्ली प्रान्तीय परीक्षार्थी जनोंने क्या अपराध किया है, जोकि उन का भाग्योदय ही नहीं होता। देखिये जहां कभी सैण्टर का नाम निशान भी नहीं था उस मुलतान के विद्यार्थियों का भाग्य, जाने उन्होंने प्रार्थना की या न की पर वहां कृपालु रजिष्ट्रार जी ने सैण्टर की आज्ञा देदी है। पर देहली में पहिले शर्ती परीक्षा होती भी थी यहां के विद्यार्थी भी ६० तथा ७० के करीब होजाते हैं इन विचारों का ला हौर तक का खर्चा भी पुष्कल होता है वहां इनका खाने आदि का प्रबन्ध भी अच्छा नहीं हो सकता क्योंकि वह इनके लिये पूरा विदश है। यहां तो इन के सम्बन्धी आदि बहुत से हैं इतने विद्यार्थियों में से इतने स्वल्प विद्यार्थियोंकेपास होनेका कारण ही यह है कि यह वहां परीक्षा समय में रुग्ण होजाते हैं। रुग्ण होने से समर्थ विद्यार्थी भी प्रश्नोत्तर देने से व्याकुल होजाते हैं और बहुत से अच्छीर योग्यता वाले भी विद्यार्थी निर्धनता के कारण खर्चे से भयभीत होते हुए परीक्षा से हताश होजाते हैं इत्यादि कई एक बातें हैं पर विद्वानों को संकेत ही काफी होता है और फौर्म में दिल्ली सैण्टर लिखकर भी यहां नहीं होता यह तो बहुत ही अद्भुत है। इस देहली सैण्टर को देखकर कईदीन विद्यार्थी भी परीक्षा के लिये तयार हुए थे पर फिर लाहौर की बात सुनकर उदासीन बैठे हैं। इस लिये सिण्डीकेट सभा को या श्रीमान् रजिष्ट्रार साहिबजी को इ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इधर पूर्ण कृपा भरी हुई दृष्टि से देखना चाहिये कि यह कितना बड़ा कल्याण कारी उपकार है यह देहली हिसार नारनौल, भिवानी वाकल रोहतक आदि नाना नगरों के परीक्षा वृन्द की प्रार्थना है। अनुक्रम व्यूहति पण्डितोजनः

द० शिवनाथ शर्म्मा
अध्यापक नार्मिलस्कूल देहली

वृन्दावन में विचित्र घटना

ता० १३ को यहां बड़े ज़ोर से आंधी आई पश्चात् ओले गिरे और पानी बरसा। यहां तो छोटे २ ही ओले गिरे परन्तु पास के गांवों में सेर२ भरके ओलेगिरे बहुतसी गायभैंड़े व अन्य पशु मरगये कई आदमियों के चोट आई।

हाल ही में यहांपर एक अजीब घटना होगई अकस्मात् दो यात्री अपनी २ पत्नी सहित वृन्दावन में राधाकृष्ण के दर्शनार्थ आये। दोनों महाशय कायस्थ थे जिन में एक पीलीभीत के और दूसरे देहली के एक ही धर्मशाला में दोनों ने विश्राम लिया। धर्मशाला के अध्यक्ष ने एक कमरा उन्हें टिकने को दिया।

यू० पी० और पंजाब का पर्दा तो प्रसिद्ध ही है। खैर दोनों पुरुष एक तरफ़ सोए और दोनों स्त्रियां एक तरफ। दूसरे दिन रात्रिको ४ बजे के करीब दोनों पुरुष जगे और चलनेकी तयारी करने लगे। परन्तु स्त्रियां दोनों न जगीं थीं सिर्फ पीलीभीत वाले महाशय की धर्मपत्नी जागी थी। बोलता तो स्त्रियों से कोई थाहीनहीं चूंकि परदा था। अस्तु अन्धेरा होने के कारण शकल पहचानी न जा सकी। पीलीभीत वाले महाशय तो यह कह कर फिर सोगये कि I shall not go today और देहली वाले महाशय चल दिये।

साथ में पीलीभीत वाले महाशय की धर्मपत्नी जी भी बग़ैर कुछ सोचे समझे पानदान उठाकर घूंघट काढ़ कर उन के पीछे होली। स्टेशन पर पहुंच बाबू साहिब ने देहली की टिकट ले उन्हें ज़नाने डिब्बे में बिठादिया। स्टेशन देहली पर उतरते वक्त जब उन्हें महाशय ने गाड़ी से उतारा और जब एक दूसरे ने आपस में देखा तो बड़े शरमिन्दा हुए। इधर ये पीलीभीत वाले महाशय सुबह उठने पर बड़े चक्कर में पड़े। ढूंढते ढांढते फिरे तब तक दिल्ली वाले महाशय बारह बजे के करीब उनकी पत्नी को लेकर आगये। जिस वक्त चारों जने मिले वह दृश्य बड़ा ही अजीब था।

आपका
चन्द्रेश्वर

कानपुर में गिरफ्तारी— सुरेन्द्रनाथ बिमी दिल्ली की इम्पीरियल टूबैको कम्पनी में नौकर था। कुछ दिन हुए वह दिल्ली से कानपुर चला आया और वहाँ एलगिन मिल्स में नौकर होगया। कहते हैं, गत ८ अप्रेल को वह पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट के आफिस के एक बङ्गाली कर्म्मचारी से मिला। उसी दिन सन्ध्या को शहर कोतवाल ने उस के नाम और पेशे के बारे में पूछताछ की। सुरेन्द्र ने कहा कि मैं एलगिन मिल्स में नौकर हूं; पहले दिल्ली में था। पर पुलिस ने इस पर विश्वास नहीं किया और दिल्ली षड्यन्त्र वाले मामले का नामी अभियुक्त रासबिहारी बोस समझकर उसे थाम लेगयी। पाठक जानते हैं, रासबिहारी भागा हुआ। और इस की गिरफ्तारी के लिये सरकार की ओर से ५०००) के पुरस्कार की घोषणा हुई है। कोतवाली से सब कोई पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट के बङ्गले पर पहुंचे और बाद सुरेन्द्र के मकान की तलाशी ली गई। पर फंसानेवाली कोई चीज नहीं मिली। उलटे उस के समर्थन में एलगिन कम्पनी की दो चिट्ठियाँ मिलीं जिन में उस के नौकरी मिलने की बात थी। तलाशी के बाद सुरेन्द्र रात भर कोतवाली में रखे गये। बहुत अनुसन्धान होने पर दूसरे दिन दो बजे वह छोड़ा गया। इस प्रकार वह दो दिन हवालात में रखा गया। कहते हैं, यह उस बङ्गाली की ही करतूत थी जिस से सुरेन्द्र मिला था। उस ने इनाम पाने के लालच से ऐसा किया।

इस अवसर पर हम पंजाब के पत्रों के विषय में एक दो बातें कहे बिना नहीं रह सक्ते हैं। पंजाब में लोगों को पत्र पढ़ने से प्रेम हो गया है, और पत्रों की संख्या भी पर्याप्त हो गई है। पर उर्दू के पत्रों में दो बड़े दोष हैं जो दो चार दिन पत्रों के पढ़ने से ही प्रकट हो जाते हैं। एक पत्रों के पारस्परिक झगड़े और दूसरा पत्रों की मात्रा से बढ़ कर अहंयन्यता। दूसरे देशों के पत्र दलों में विभक्त होते हैं सही पर वह दल बड़ी सिद्धान्तों पर आश्रित रहती है। इंग्लैंडमें उदार और सनातनी दल के पत्र अवश्य एक दूसरे पर वाक्य बाणों की वर्षा करते हैं पर उदार दल के सभी पत्र विशेष सिद्धान्तों के पोषक होते हैं। हमारे देश के अंग्रेज़ी पत्र भी एंग्लो-इंडियन और भारतीय—इन दो दलों में बटे हुए हैं। भारतीय पत्र एंग्लो इण्डियन पत्रों की समालोचना करते हैं पर आपस में बहुत ही कम उलझते हैं। पर उर्दू पत्रोंमें यह बात नहीं है। वहां नित्य ही झपटा झपटी हुआ करती है। और सब से बुरी बात यह है कि वह झपटा झपटी वैय्यक्तिक द्वेष के कारण हुआ करती है। इसका फल यह हुआ कि इतने पत्रों के होते हुए भी पंजाब में कोई आन्दोलन सफल नहीं होता। सार्वजनिक प्रश्नों पर सब पत्र जुदा जुदा सुर अलापते हैं किसी प्रश्न पर भी दो पत्रों की सम्मति नहीं मिलती। पंजाब के सार्वजनिक जीवन में अधिक झगड़ाछूत का कारण भी यही पत्रों की झपटा झपटी है। इस दोष को दूर करने का अवश्य कोई यत्न होना चाहिये।

उर्दू पत्रोंका दूसरा दोष उनका अहंकार है। इसी को अंग्रेज़ी में Egoism कहते हैं। प्रत्येक पत्र सम्पादक अपनी व्यक्ति बहुत ऊंची अपनी और व्यक्तिगत सम्मति को बड़ी मूल्यवती समझता है। इसी लिये पंजाब में "मैं" का रोग बड़ा चल गया है। इंग्लैंड में स्टैड जैसे और भारतवर्ष में मलावारी जैसे अपनी सम्मतियों को "मैं" शब्द से प्रकट करते थे पर उर्दू में छोटे से छोटा सम्पादक भी "मैं" के बिना अपनी सम्मति प्रकट कहीं करता। उर्दू पत्रों के सिर पर सम्पादकोंके नाम लिखने की रीति भी खूब चल रही है। विलायत के "टाइम्स" का सबसे बड़ा गुण यह है कि उसके सम्पादक का नाम बहुत ही कम लोग जानते हैं। परन्तु उर्दू पत्रों में लम्बे चौड़े साइन बोर्ड के बिना सम्पादकों को चैन नहीं आती। कई लोग तो किसी प्रसिद्ध पर्चे के सम्पादकीय विभाग में होने की अपेक्षा अठपेजी अखबार के "एडिटर वमालिक" होना अधिक पसंद करते हैं। और भाषाओं के समाचार पत्र वर्ष के आरम्भ में एक बार अपने गीत गाते हैं पर उर्दू के पत्र प्रति दिन अपने भक्तों के प्रशंसावाद और आशीर्वाद छापते हैं। हम जानते हैं कि पत्रों की बाल्यवस्था में इन दोषों का होना स्वाभाविक है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर अब समय आगया है कि पंजाब के प्रतिष्ठितपत्र इन दोषों को दूर करने का उपाय सोचे और स्वयं छोटों के लीए आदर्श बनें।

चित्र की दूसरी ओर भी देखिये।

यह हमारा दौर्भाग्य है कि उर्दू पत्रों के स्वागत के साथ हमें दो तीन हिन्दी पत्रों से विदायगी लेनी पड़ती है। केवल एक प्रान्त में ही उर्दू के पांच दैनिक हैं पर जो हिन्दी भारत व्यापिनी होने का अभिमान रखती है उस में कितने दैनिक हैं? लौट पौट कर दृष्टि "भारतमित्र" पर ही जा पड़ती है। दैनिक भारतमित्र इस समय बहुत अच्छा सम्पादित होता है। इस में प्रतिदिन के तार होते हैं, स्थान स्थान के सम्वाद होते हैं, सम्पादकीय टिप्पणियां होती हैं और प्रति दिन एक मुख्य लेख होता है जिसके जोड़ के राजनैतिक लेख उर्दू पत्रों में बहुत ही कम देखने में आते हैं। पर जहां उर्दू के दैनिक चार चार हजार छपते हैं वहां हमें यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ है कि अभी भारतमित्र की ग्राहक सख्या दो हज़ार तक भी नहीं पहुंची। कानपुर से एक दैनिक कानपुर गजट निकला था पर हमने शोक से सुना कि उसकी अर्थी निकलने वाली है या निकल चुकी है। इस में कोई सन्देह नहीं कि कानपुर गजटका सम्पादन भी बहुत ही रद्दी था तथापि युक्तप्रान्त में एक भी दैनिक का न होना हिन्दी भाषा भाषियों के लिए बड़ी लज्जा की बात है।

लखनऊ का नागरी प्रचारक भी इस अंक के साथ अन्तिम नमस्ते कर चला है। यह पर्चा आकार में बहुत छोटा था, इस के लेख भी छोटे होते थे और प्रायःसब लेख जुदे जुदे नामों से एक दो लेखकों के ही लिखे प्रतीत होते थे पर उन लेखों में बल था और नवीनता थी। कम से कम हम सदा इस पत्र के लेखों को बड़ी रूचि से पढ़ते थे। सम्पादक का कहना है कि पत्र चलाने में बहुत आर्थिक क्षति देख कर बन्द कर दिया गया है।

गुरुकुल सम्बन्धी आवश्यक निवेदन।

(१) निश्चय किया गया था कि यदि १६ बालकों के लिये प्रार्थना पत्र आजावें तो आरम्भक श्रेणी खोलदी जावे। अब तक ऐसे ५ ही प्रार्थना पत्र पहुंचे हैं, इस लिए प्रारम्भक श्रेणी इस वर्ष खोलने का विचार छोड़ दिया गया है। जिन महाशयों ने प्रार्थना पत्र भेजे थे वे कुछ और उचित प्रबन्ध करलें।

(२) गुरुकुल की शाखाओं के लिए अध्यापकों की आवश्यकता रहती है। गणित, आंलेख्य तथा संस्कृत के अध्यापक प्रार्थना पत्र भेजें।

(३) गुरुकुल विद्यालय काङ्गड़ी के लिए संस्कृत साहित्य के योग्य अध्यापक की आवश्यकता है। वेतन ३५) रु० मासिक से आरम्भ होकर ८ वर्ष में ५० तक पहुंच सकता है।

मुंशीराम मुख्याधिष्ठाता

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का कलम (पेड़) अपने बाग़ में लगाना चाहते हैं तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मगालें।

पता– आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतोल KAMTAUL(विहार)

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता--- जल्दी हज़म होने वाला–
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार के प्रोफैसर साठेजी M. A. कृत

सचित्र।

विकासवाद (डार्विन की थियरी) की पुस्तक हिन्दी भाषा में छपकर तैयार है।

भाषा अत्यन्त सरल और मधुर पृष्ठ संख्या २०×२७१ साईज़ बड़ा चित्र २९

मूल्य केवल २)

श्रीयुत **प्रो० विनयकुमार सरकार एम. ए.** लिखते हैं:—**बी. ए. और एफ. ए. के विद्यार्थियों को यह पुस्तक टेक्स्ट बुक** (Text Book) **के तौर पर पढ़ना चाहिये** पुस्तक की लेखन शैली बहुत अच्छी है और–सायन्स से परिचित मनुष्य भी इसे **बड़े** प्रेम से पढ़ते हैं।

श्री **साहित्याचार्य पं० रामावतार पांड्ये एम. ए०** लिखते हैं:—इस पुस्तक से हिंदी भाषा की आदरणीय वृद्धि हुई है। हिन्दी के प्रत्येक अभिमानी को इससे सन्तोष होगा। पुस्तक की कीमत बहुत नहीं है।"

मैनेजर, सद्धर्म प्रचारक प्रेस, देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिना मूल्य बंट रहा है।

सम्वत् १९७१ का सम्पूर्ण नये रूपमें छपा है। १२ हाफटोन चित्र हैं; यदि पिछे हताश न होना चाहें तो आजही एक पोष्टकार्ड पर दस सज्जनों का नाम वो ठिकाना (भिन्न भिन्न स्थानोंके) लिख भेजिये लौटती डाकसे पञ्चाङ्ग घर बैठे पावेंगे।

चर्म रोगकी दवा।

सब तरहके चमड़ेके रोग--जैसे खाज, खुजली, छाजन, अपरस आदिक इससे मिट जाते हैं। कोढ़से बिगड़े हुये चमड़ेमें भी यह अच्छा गुण दिखाती है, चमड़ेके रोगोंके प्रायः शरीरके खूनमें भी दोष आ जाता है। इस हालतमें केवल तेलके लगानेसे पूरा फायदा नहीं मिलता। इस लिये साथ तेल लगानेके खून साफ करने की दवा आईओडाईजड सालसा भी पीना चाहिये और जुलाबकी गोलियोंसे पेट साफ रखना चाहिये।

मोल--॥) आठ आने शीशी।

डाः मः १ से २ शीशी तक।-) पांच आने।

जुलाबकी गोली।

कब्जीयतमें जुलाब लेना अच्छा है। रातको दो गोली खाकर सोओ; दूसरे दिन सवेरे दस्त साफ होगा पेटमें गरमी व मरोड़ कुछ नहीं होगी। यथा नियम स्नान और खाने पीनेमें कोई बाधा नहीं होगी।

ये गोलियां कलमें बनती हैं, इसलिये हर एक गोली वजन वो आकारके समान है और चमकती है खाने में स्वाद नहीं है।

[हरएक गृहस्थको १ डिः ले रखना चाहिये]

मोल--१६ गोलियोंकी डिः।-) पांच आने। १ से ६ डिः तक डाः मः।-) आने।

डाः एस. के. बर्मन ५, हरीशचंद्र दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नं० ५३

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और वात चीत करना वखूबी सीखलो मू० १) वड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

ऐसी उपयोगी व सस्ती पुस्तकें ढूढी न मिलैंगी चौदह भाषा

बंगाली, गुज़राती, मरहठी, पंजाबी, तामिल, तिलंगी, कनाडी, पश्तो, विलोची तुरकी, ब्रह्मी, चीनी, जापानी भाषायें, सिखाने वाली पुस्तक देशाटन करने वालों और सौदागरों के बड़े काम की है इस में मुसाफिरो को जिन शब्दों से काम पड़ता है वह शब्द सब भाषाओं में बताये हैं और अनेक भाषाओं के अक्षर भी लिखे हैं मूल्य ॥) ड० =)

दुनिया की सैर

चीन, जापान, तिब्बत ब्रह्मा, लंका, स्याम, मिश्र, रूम, रूस, अमरीका, आदि सब देशों का वर्णन चित्र और नक्शे सहित मानो वहां खड़े होकर देख रहे हो वहां के अद्भुत लोकाचार और निराले कानून जिनको पढ़कर हंसी आवे पूल्य १)

पता-जसवंत सिंह बुकसेलर

अलीगढ़ U. P.

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्र व्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसर महेशचरण सिंह, एम० एस० सी० ए० वी०, ए० जी० आर० गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

दिल्ली का आटा मैदा

सूजी और चोकर अति उत्तम और फायदे के साथ हमारे यहां से भेजा जाता है। नमूने और भाव मंगा देखिये।

पताः नौरङ्गराय बाबूलाल खारीबावड़ी, दिल्ली।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूल्य रत्न है॥ मौका नचूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली ओषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पंडित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हू तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-डठौली से श्रीमान् मुन्शिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रशंसा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्॥ वर्यां स्मृतिप्रदाकुष्ठपांडुमेहास्तक सजित्। विषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इस को वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ और छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी-(शुद्ध व असली) की तोला २८) रु०

शिलाजीत-सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० की तोला

केशर-(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) की तोला १॥)

पशमीने व सावल-६ गज×१$\frac{1}{2}$ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट-यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू० पी० हिमालया

१०००) एकहज़ार रुपये को

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालेंदीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक इन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९८१४ पृष्ठ चौदह जिल्दमें एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)-ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक वा दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

वाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंगलिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी

मुरादाबाद यू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—
पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

तार सीखने की डैमी।

हमारे कारखाने की फेन्शी और मज़बूत डैमियां ख़रीद कर कुछ ही दिनों में

तार बाबू क्यों नहीं बन जाते

यह डैमियां पीतल की हमारे कारखाने में तय्यार होती हैं जो कि बहुत ही मज़बूत और खूबसूरत नये फेशन की बनवाकर भेजी जाती हैं जिनकी आवाज़ दफ्तरों के इस्ट्रोमेंट से बहुत कुछ मिलती है

जिसके द्वारा कोशिश करने से थोड़े ही समय में तारका लेना देना सीख कर दफ्तरों में बखूबी काम कर सकते हो इस के साथ एक पुस्तक (टेली ग्राफ टीचर) जिसमें तार सम्बन्धी तमाम टेकनीकल और तार के क़ायदे बड़ी आसान रीति से समझाये हैं मुफ्त मिलेगी मूल्य १॥)

मिलने का पता—शांति संचारक कम्पनी
अलीगढ सीटी

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुभूत विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिश-टीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स
अलीगढ़

विज्ञापन

एक सर्वाङ्ग सुन्दर सुबोध टंढन खत्री कन्या के लिये २३ वर्ष तक के कपूर, खन्ने महरे, सेठ, बर की आवश्यकता है।

पत्र व्योहार का पता:—
बाबू नन्दलाल सिंह वर्मा
रेलवे मैनेजर आफिस
जोधपुर

ऋषि दयानन्द वाच

श्री महात्मा मुन्शीराम, धर्मवीर पं० लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन, हमने उक्त नामकी घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिसमें मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन होते हैं। महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय दाम केवल५॥) गारंटी ५ साल हर घड़ी के साथ में एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा।

पता:—दीस्वीज़रलैंडवाचकम्पनी
हाथरस नं० २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानी की आवश्यकता

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधास्थि' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तलाश नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

सुधास्थि

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सरकार से रजिष्टर्ड किया हुआ

कैसे अतिसार हैजा आंवदोष खूनी पेचिश

सर्दीकाबुखार जी मिचलाना चक्कीकेसेरीलेडस्त शरीर का दर्द ठंडकरखांसी

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट औषधि है मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्टर्ड किया हुआ

सुधास्थि

बिना किसी तरह का तकलीफ या जलन के बाद को गड़बड़ खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) क.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलैंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—क्षत्रपाल शर्मा मालिक, सुख संचारक कम्पनी मथुरा

प्रचारक के ग्राहकों से

१५ मार्च तक 'चिकित्साभण्डार, २ ंड का मूल्य २॥) के २) लिये जायंगे। ब पुस्तक में वैद्यक युनानी और डा- टरी मतानुसार रोगों की व्याख्या और पूरी चिकित्सा दी हुई है। हिन्दी षा के जानने वाले एक योग्य वैद्य सी रोगों की परीक्षा और चिकित्सा र सकते हैं शीघ्र आज्ञापत्र लिखें।

धुन्नीलाल वैद्य
बच्छोवाली
लाहौर

सुनैनीसाबुन

बाल उडाने का साबुन—बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्काप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता—
नएंड कं. सतघडामथुरा

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (म)
चान्द--जि० आरा

सस्ता और मज़बूत
Telegraphic,address
founders Aligarh

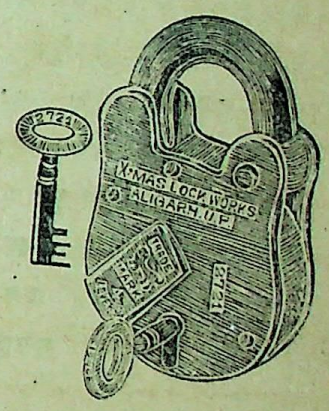

४ लोवर का ज़रतो कलईदार लोहे का ताला इस्तेमाल करो।

मूल्य
डेढ़ इंच का ९) दरजन
दो इंच का १२) दरजन
ढाई इंच का १३॥) दरजन
तीन इंच का १६॥) दरजन

(१) १००) के खरीदार को १२) सैकड़ा और ५०) के को ६।) सैकड़ा और २५) के को ३=) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा कम पर नहीं।
(२ आधी दरजन से कम माल नहीं भेजा जावेगा।
(३) और किस्म के तालों के लिये सूचीपत्र मंगाइये।
(४ असली माल पर "शेर" का मार्का देख लीजिये।

दी क्रिसमिस लोक वर्क्स सुलतानी सराय
अलीगढ़ सिटी

दो अध्यापिकाओं की आवश्यकता

एक लोवर प्राइमरी एक अपर प्राइमरी के लिये वेतन योग्यतानुसार १५) से २०) और २०) से ३०) रुपया तक दिया जायगा पिता पुत्री वा पति पत्नी के नाते से साथ आने वाले अध्यापक को भी लिया जायगा प्रार्थनापत्र इस पते पर आवें

लाला त्रिलोकचन्द मंत्री
आर्य्य पुत्री पाठशाला मोगा जि. फीरोज़पुर

महाशयजो

यदि हमारी दवा से खांसी शर्तिया दूर नहो तो ४ प्रतिष्ठित पुरुषों के हस्ताक्षर सहित पत्र भेज कर मूल्य वापिस लीजिये मूल्य१०० गोली १)डा० खर्च ≡)

आर्य्य, औषधालय, रूरतमगढ
(एटा यू० पी०)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) रूपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रूपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡)
ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २)
बृहदारण्य २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥।)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥-)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥-)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश संग्रह ।-)
प्रार्थना पुस्तक ।-)
ओंकार की उपासना ।-)

२००) रूपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥-) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य सजिल्द ३) योग दर्शन ॥।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।-)
वेद और महाभारत के उपदेश ।-)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रन्थावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

यह नाम का ही नहीं बल्कि असल सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी ने का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैं संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बव सीर, कब्ज, और भूख की कमी में ला पहुंचता है, खांसी दमा गठिया अं अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दाय है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उ कारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का वि कार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी सु सुलेमानी रहता है, कीमत ५

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जाओर जिला ग

पसंद न हों तो वापिस

हाथरस के पक्के चाकू

यह स्वदेशी चाकू अपनी सुन्दरता और मजबूती में विलायती चाकुओं से बढ़कर अच्छे और सस्ते हैं लकड़ी बेंट)॥। -) -)। =) =)॥ ≡)॥ ।-) चन्दनबेट -) -)॥ =) =)॥ ≡)। ।-) दो फला ।≡) ॥) घड़ी में लगा =) उस्तरा ।) ।=) काली और व्या ऊलाक रोशनाई की पुड़िया)। से तक हर शहर में एजेन्टों की आव कता है। पता—भारत हितका कार्य्यालय नं० ७ हाथरस सि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by eGangotri

ओ३म ॥

Registered No L. 807.

151133

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२२ वैसाख सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० २ मई १९१४

संख्या ३
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक--इन्द्रवेदालङ्कार

बीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=) - प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर की " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस [illegible]स, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, [illegible]दि देशों के इतिहास की आ[illegible] दिखलाया गया है कि व[illegible] और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक	≡)	प्र० ५०
तीन मास " " " "	=)	"
छः " " " " "	-)॥	"
सालभर " " " "	-)	"

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

कोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे विना प्रचारक में कोई कोड़-पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) कोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । कोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये । बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये ।

साधारण कोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष बात चीत प्रबन्धकर्ता से कीजिये ।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैद्यकल्पतरु

आरोग्य, आयुष्य, आनन्द और ऐश्वर्यकी प्राप्तिके लिये उपचारक और कुटुम्बोंमें अत्यन्त आवश्यकीय वैद्यक सम्बन्धी सचित्र मासिक पत्र।

हिन्दी संस्करण १९१३ से प्रकाशित होता है।
गुजराती सं. १८९४ से प्रकाशित होता है।

सम्पादक-वैद्य जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी,
अमदावाद(गुजरात) वार्षिक मूल्य १-९-० नमूनेका अंक मुफ्त।

हारमोनियम

अर्थात् विना गुरु के बाजा सिखाने वाला टीचर, यदि आप थोड़े ही समय में सरगम व गाना सहित हारमोनियम बजाना सीखने के इच्छुक हैं तो सुन्दर जिल्द बंधी हुई पुस्तक के दोनों भाग मंगाइये मूल्य ।-) डा० =) पीतल के ओ३म् व नमस्ते फ्री दर्जन ।।।) डा० म० अलग

पता: बाबू ख्यालीराम एण्डको
अलीगढ़ सिटी.

आवश्यकता

एक जिल्द बन्द (दफ़्तरी) की आवश्यकता है यदि आर्य्य हो तो अच्छा है वेतन योग्यतानुसार दी जायगी प्रार्थना पत्र:—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार
के नाम आने चाहिये।

भारतवर्ष में विख्यात

हाथरस के पक्के चाकू।

यह स्वदेशी चाकू विलायती नामी चाकूओं से भी कहीं सुन्दर सुडौल और मज़बूत हैं। चन्दन मूठ -) -)॥ =) =)॥ ≡) ।) ।=) लकड़ी मूठ ,॥। -) -)। -)॥ =)॥ ≡)॥ उस्तरा ।-) ।≡) कैंची ॥) ।=) लीवर दार मजबूत ताले पीतल के ≡) ।) ।=) इंच। लोहे के ।) ।=) ॥) इंच। रंगीन गमछे =) =)॥ ≡)॥ ।-) ॥ बढ़िया हींग ६) ८) १०) सेर

भारत वस्तु प्रचारक कम्पनी
हाथरस।

नई सूचना

यद्यपि हमें शुद्ध रामायण की प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यह जगत् प्रिय होचुकी है। इसकी संशोधित घटनाओं ने जो इस में प्राचीन ग्रन्थों के प्रमाणों सहित लिखी गई हैं बड़े २ विद्वानों तथा भारत वर्ष के प्रसिद्ध समाचारपत्रों से प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं, परन्तु हम आपको सूचना देते हैं कि:-

पंजाब के डायरेक्टर साहिब बहादुर पबलिक इन्स्ट्रक्शण ने इस पुस्तक को स्कूलों की लायब्रेरियों तथा छात्रों के परितोषक (इनाम) के लिये स्वीकार कर के अपनी सम्मति प्रकाश की है। जो अपने सर्कुलर नं० ७ तारीख ९ फ़र्वरी १९०४ में लिखते हैं:-

शुद्धरामायण (कृत पं० संतराम प्रकाशित नागरी प्रचारिणी कम्पनी लाहौर) असल रामायण का हिन्दी भाषा में संक्षेप है! जो लोग मूल ग्रंथ से लाभ नहीं उठा सकते उनके लिये अत्योपयोगी है। पुस्तक की आकृति भी सुन्दर है मूल्य २)

मिलने का ठिकाना
नागरी प्रचारिणी कम्पनी लिमिटेड
लाहौर

आवश्यकता।

आर्य्य प्रतिनिधिसभा पंजाब को कुछ योग्य उपदेशकों की आवश्यकता है। जो विद्वान् होने के अतिरिक्त पूरे सदाचारी आर्य्य सिद्धान्तों से वाक़िफ हों। और बक्तृता शक्ती अच्छी रखते हों। इसी प्रकार योग्य आर्य्य भजनीकों की भी आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त शाखा गुरुकुल मुलतान और शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के लिये भी एक २ योग्य उपदेशक और एक २ योग्य भजनीक की आवश्यकता है जो उपरोक्त शाखा गुरुकुलों के नजदीक इलाकों में वैदिकधर्म के प्रचार करने के अतिरिक्त गुरुकुलों के लिए धन एकत्र करने का भी काम कर सकें। जो भाई अपने आप को जिस काम के योग्य समझते हों। इसके लिए शीघ्र अपनी दरख्वास्तें निम्न पते पर भेज दें॥

ला० केदारनाथजी मंत्री
आर्य्यप्रतिनिधिसभा पंजाब लाहौर

नया ग्रन्थ

अभी छप कर तय्यार हुआ

भारतवर्ष का इतिहास

प्राचीन आर्य्यों के प्रारम्भिक वर्णन से लेकर सं० १९७० तक की घटनाओं के वर्णनसे संकलित इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास अति सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है कि आरम्भ करके बिना समाप्त किये छोड़ने को जी न चाहेगा, आर्य्य भाषा में इस प्रकार का इतिहास अब तक नहीं छपा,

पृष्ठ संख्या ५०० मूल्य १॥)

धर्म निर्णय

यह उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्मका भाषानुवाद है इस पुस्तक में धर्म का निर्णय किया गया है पुस्तक नावल के ढंग पर लिखी गई है इसमें कई योगी सन्यासियों का भी वृतान्त है मूल्य १)

अंग्रेजीकी सीढ़ी

देव नागरी तथा उर्दू पढ़े हुए को स्वयम अंग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य ॥=)

पता:—ला.केदार नाथ प्रोप्राईटर
से २६ आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
३ बज़ाज़ा शहर मेरठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(४) डायरेक्टरी के छापने के क्रम प्रभृति विषयों में सम्मति लेने के लिये आयुर्वेदीय महा मण्डल व कुछ सज्जनों से पत्र व्यवहार किया जा रहा है। यदि कोई सज्जन हमें इस विषय में अधिक सूचना देना चाहें तो हम से पत्र व्यवहार करें।

मुझे आशा है कि आयुर्वेदीय विद्वान व अन्य सज्जन प्रार्थनाओं पर ध्यान देकर यथोचित सहायता करने की कृपा करेंगे; जिससे यह आवश्यक कार्य आगामी सम्मेलन तक कुछ अंश में पूर्ण होजाय।

वैद्य जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी
हिन्दी वैद्यकल्पतरु कार्य्यालय
अहमदाबाद

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का फलदार (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हैं तो अभी ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मगालें।

पता- आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतोल KAMTAUL (बिहारप्रान्त)

दिल्ली का आटा मैदा

सूजी और बीकर अति उत्तम और फायदे के साथ हमारे यहां से भेजा जाता है। नमूने और भाव मंगा देखिये।

पता:-नीरङ्गराय बाबूलाल
खारीबावली दिल्ली।

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार के प्रोफेसर साठेजी M. A. कृत

सचित्र—विकासवाद

(डार्विन की थियरी) की पुस्तक हिन्दी भाषा में छपकर तैयार है।

भाषा अत्यन्त सरल और मधुर पृष्ठ संख्या २०×२७१ साईज़ बड़ा चित्र २९

मूल्य केवल २)

श्रीयुत प्रो० विनयकुमार सरकार एम. ए. लिखते हैं:—बी. ए. और एफ. ए. के विद्यार्थियों को यह पुस्तक टेक्स्ट बुक (Text Book) के तौर पर पढ़ना चाहिये पुस्तक की लेखन शैली बहुत अच्छी है और—साइन्स से अपरिचित मनुष्य भी इसे बड़े प्रेम से पढ़ते हैं।

श्री साहित्याचार्य पं० रामावतार पांड्ये एम. ए० लिखते हैं:—इस पुस्तक से हिंदी भाषा की आदरणीय वृद्धि हुई है। हिन्दी के प्रत्येक अभिमानी को इससे सन्तोष होगा। पुस्तक की कीमत बहुत नहीं है।"

मैनेजर, सद्धर्म प्रचारक प्रेस, देहली

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

खस्ता--- जल्दी हज़म होने वाला-
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० दाम =)]

थोकमाल लेने वालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

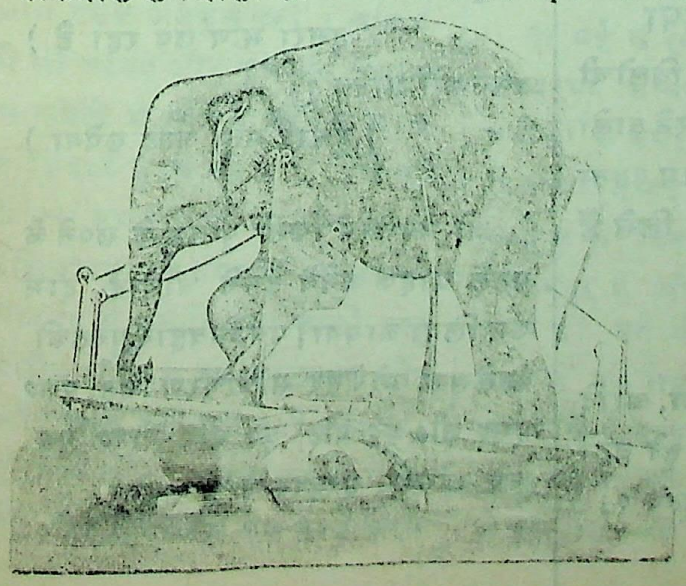

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलोअल ।) घटनाघटाटोप १।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) व्याज नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सती देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) श्रीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) कुटवाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता- माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बट रहा है।

इस बारका पंचांग देखने योग्य है, आज ही एक़पोष्ट कार्ड पर दस सज्जनों का नाम वो ठिकाना (भिन्न भिन्न स्थानों के) लिख भेजिये लौटती डाक से घर बैठे पावेंगे। बट जाने पर हताश होना पड़ेगा।

सेनीलाईन--यह खुशबूदार बिना स्वाद को दबा एक बूटी से बनी है. खून बन्द करने में यह एक ही अक्सीर दवा है।

नाक से खून जाता हो, तो थोड़ासा यह अर्क सूंघ लेने से उसी वक्त बन्द होता है।

मसूड़ों से बहता हो, तो बराबर का गर्म पानी इस अर्क में मिला कर रोज कुल्लीकरो। इससे मसूड़े शख्त होते हैं और खून बन्द हो जाता है। मुंह के रस्ते या खखार के साथ खून जाता हो, तो दवा के पीने से बन्द होता है।

स्त्री के प्रदर रोग में या हमल की हालत में खून जाता हो तो जल्द इस दवाका इस्तैमाल करना चाहिये।

खूनी बवासीर—में यह विशेष उपकारी है। इस रोग में गुदा की सिरा सब कमजोर पड़ जाती है, या उसमें जखम होता है, जिस से बराबर खून बहता है। इस दवा के खाने के और पिचकारी से गुदा में देने से सिरासब पुष्ट होती है और बहुतोंका रोग जड़ से मिट जाता है। मील १।) शीशी पिचकारी काँचकी ।) डा० म० ॥) आने

डा: एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नं० ५४

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) वड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

ऐसी उपयोगी व सस्ती पुस्तकें ढूढी न मिलैंगी चौदह भाषा

बंगाली, गुज़राती, मरहठी, पंजाबी, तामिल, तिलंगी, कनाडी, पश्तो, विलोची तुरकी, ब्रह्मी, चीनी, जापानी भाषायें, सिखाने वाली पुस्तक देशाटन करने वालों और सौदागरों के बड़े काम की है इस में मुसाफिरो को जिन शब्दों से काम पड़ता है वह शब्द सब भाषाओं में बताये हैं और अनेक भाषाओं के अक्षर भी लिखे हैं मूल्य ॥) ड० =)

दुनिया की सैर

चीन, जापान, तिब्बत ब्रह्मा, लंका, स्याम, मिश्र, रूम, रूस, अमरीका, आदि सब देशों का वर्णन चित्र और नक्शे सहित मानो वहां खड़े होकर देख रहे हो वहां के अद्भुत लोकाचार और निराले कानून जिनको पढ़कर हंसी आवे पूल्य १)

पता—जसवंत सिंह बुकसेलर

अलीगढ़ U. P.

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्र व्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसर महेशचरण सिंह, एम० एस० सी० ए० वी०, ए० जी० आर० गुरु कुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(३३)

राजनैतिक आन्दोलन के साथ सम्बन्ध

ज्येष्ठ १९४५ में पहले पहल मेरा सम्बन्ध नैशनल पुलिटिकल काङ्ग्रेस के साथ हुआ। प्रयाग के पायोनियर और लाहौर के ट्रीब्यून का मैं बहुत पुराना ग्राहक हूं इस लिए नैशनल काङ्ग्रेस के विषय में सब कुछ पढ़ता रहता था, किन्तु इस वर्ष पहले पहल पंजाब में यह विचार हुआ कि काङ्ग्रेस की कमेटियां प्रत्येक ज़िले में बनाई जावें। हमारे मित्र काली बाबू जालन्धर और होशियारपुर का ठेका ले कर हमारे पास पहुंचे। उन्होंने इसे भाजीवाला मामला बना लिया था। हमारे गाढ़े समय में वे आड़े आए थे अर्थात जालन्धर आर्यसमाजके द्वितीय वार्षिकोत्सव पर, जब सबने आने से इनकार कर दिया था, तो बाहर के येही अकेले व्याख्याता थे; इसलिए अब अपने पुलिटिकल मिशनमें हमसे सहायता मांगना उन्होंने अपना अधिकार समझा। १८ मई १८८८ को दिनकी बम्बई मेल से काली बाबू जालन्धर पहुचे। मेरी डायरी में लिखा है—"काली पुलिटिकल उद्देश लेकर यहाँ आया है; वह यहां एक काङ्ग्रेस कुमेटी स्थापन करना चाहता है। अपने साथ बांटने के लिए कुछ पेम्फलट भी लाया है। काली विचित्र आदमी है इसके कामका ठीक मैदान यही राजनैतिक-आन्दोलन प्रतीत होता है। धर्म सम्बन्धी काम उसके अनुकूल नहीं। बालकरामजी भी आगए और हम सब नेशनल काङ्ग्रेस कुमेटी के स्थापन करने के साधनों पर विचार करते रहे। .... एक बजे रात के एक आदमी आया और काली को होशियारपुर ले गया।" १९ मई को होशियारपुर में कुमेटी बना काली बाबू २० (आदित्यवार) को जालन्धर लौट आए और आर्य मन्दिरमें उपदेश दिया। उसी दिनसे मैं और बालकरामजी कालीबाबू को उनके मिशनमें कृत कार्य करने की चिन्तामें लगे। २१ सोमवार को काली बाबू ने फिर समाज मन्दिर में व्याख्यान दिया। फिर तो उनकी सहायता में सिर तोड़ प्रयत्न हुआ और एक बड़े आदमी की नई कोठी में २४ मई महाराणी विक्टोरिया के जन्म दिवस पर एक बड़ी सभा बैठी। और जगहों में तो रईस लोग काङ्ग्रेस का नाम सुन कर कानों पर हाथ रखते थे, किन्तु लाला बालकराम के प्रेरे हुए जालन्धर के आनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल कमिश्नर, ज़मीन्दार, सेठ साहूकार सभी काङ्ग्रेस कुमेटीकी बुनियाद डालने के लिए इकट्ठे हो गए। काङ्ग्रेस के उद्देशों के साथ सहानुभूतिका प्रस्ताव ख़ान बहादुर फ़ज़ल करीम ख़ां साहब वाइस प्रेसिडेन्ट म्युनिसिपलिटीने पेश किया जिसका समर्थन सनातनधर्मसभा के प्रधान लाला हरभजरायजी आनरेरी मजिस्ट्रेटने किया। इसी प्रकार वकीलादिकों को अलग रख कर बालकरामजी ने रईसों से ही सारा काम कराया। मैंने दूसरे दिन ही इस अधिवेशन की रिपोर्ट लिख कर ट्रीब्यून के लिए भेजी जो मुख्य लेखके स्थान में छपी और सारे पंजाब में जालन्धर के जलसे की धूम मचगई। किन्तु जिस मकानमें दिन को हमारा जलसा हुआ था उसके विषय में मेरी डायरी में लिखा है—"रात को उस मकानके अन्दर शराबियों में ख़ूब जूत पैज़ार हुई। वाह! काङ्ग्रेसकी मीटिङ्ग का कैसा शुभ परिणाम निकला!" इस से पता लगेगा कि उस समय भी राजनीति को धर्म के प्रभाव से अलग करना मैं अधर्म समझता था।

३१ मई सं १८८८ के ट्रीब्यून में काङ्ग्रेस सम्बन्धी सम्मेलन का हाल छपा। वकीलों के कमरे में धूम मचगई। उन दिनों सर सय्यद अहमद का व्यवस्थापत्र काङ्ग्रेस के विरुद्ध निकल चुका था। जालन्धर में भी एक अलीगढ़ पार्टी खड़ी हो गई थी जिस के मुख्य नेता वहां के एक नए मुंडे हुए वकील थे। इन के बाप दादा ने कभी गो मांस का स्पर्श भी नहीं किया था, किन्तु अलीगढ़ के पक्षपात का पहला परिणाम यह हुआ कि इन्होंने गो मांस खाया। किन्तु सृष्टि नियम भी विचित्र है; गो मांस खाते ही इन के हृदय से शूल उठा और उनके घर वालोंने भी उस शूलको पापका फल बतलाया। अस्तु। अलीगढ़ पार्टी को काङ्ग्रेस पार्टीवालोंने ख़ूब छेड़ना शुरू किया; परिणाम यह हुआ कि अलीगढ़ियों ने सब मुसलमान सभ्यों को, दो के अतिरिक्त काङ्ग्रेस के पक्ष से जुदा कर लिया। दो पक्षपात हीन मुसलमान भाई जिनकी ओर मैंने इशारा किया है श्रीमान ख़्वाजा शाहमहम्मद साहेब वकील और श्रीमान पीरदार खां साहब मुख्तार थे। ये दोनों सदैव मेरे मित्र रहे और इनके लिए मेरे मनमें बड़ा ही आदर का भाव था।

इस वर्ष (१८८८ई०) काङ्ग्रेसका वार्षिक अधिवेशन प्रयाग में होने वाला था। वहां के लाट महोदय सर आकलेन्ड कालविन ने विरोध भी किया था और उस पर काङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी मिस्टर ह्यूम ने उनको लताड़ भी खूब बतलाई थी। उस विरोध को दूर करने के लिए पंजाब में बम्बई के महाशय अली महम्मद भीमजी भेजे गए थे। उनका पहला व्याख्यान शायद सेप्टेम्बर में हुआ था जब मैं जालन्धर में उपस्थित न था। उस समय अलीगढ़ पार्टी ने बड़ा विघ्न डालने का प्रयत्न किया। बाज़ार की उस तिमुहानी पर जहां इस समय शराब वाले की दूकान है-महाशय भीम जी का व्याख्यान होने वाला था। पास ही "फ़ख़रे क़ौम" मुन्सिफ़ फ़ख़रुद्दीन साहबका मकान था। आप ने काफ़ी वालों की मजलिस की ठानली। एक ओर लोग व्याख्यान सुनने को जमा और दूसरी ओर साथ ही सारङ्गी, तबला, ताउस और रागियों के गले फाड़ने का शोर शराब।,—भला व्याख्यान क्या होता। इस पर जब मुसलमान रईसों को लानत मलामत की गई तो सूबेदार मेजर ग़ुलाम हुसैन साहेबने बालक रामजी द्वारा महाशय भीमजी को फिर बुला भेजा। एक बड़े मैदानमें उनका व्याख्यान ठहराया गया। मैंने ही अधिवेशनका सारा प्रबन्ध किया था

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहले तो डेढ़ हज़ार से अधिक पुरुष इकट्ठे हुए जिनमें ५० के लगभग मुसलमान सज्जन थे किंतु फिर श्रोताओंने उठना आरम्भ कर दिया और अन्तमें ७०० के लग भग जन संख्या रह गई। इसका भी एक विशेष कारण था जिसका वर्णन पाठकों के लिए बड़ा मनोरञ्जक होगा। जालन्धर में लिखित विज्ञापनों के अतिरिक्त हमलोग जलसों की सूचना डौंडी द्वारा भी दिया करते थे। डौंडी पीटने वाले को "अली महम्मद" और लेकचर आदि शब्द सब भूल गए और उसने मनघड़न्त हांक लगानी शुरू कर दी—"ढप ! ढप !! ढप !!! बोल, ख़लक ख़ुदादी, मुल्क मलका दा, हुकुम कैंपणी बहादुरदा ! होर आर्यादो लश्कर भी आगया। ठीक चार बजे लाला सालग राम दी मण्डी विच पण्डित भीमसैन दा समाज होवेगा ! सब लोग हाजर हो जाओ।"

इस हांकको सुन कर बूढ़े टेढ़ी कमर को लठियाका सहारा देकर चल दिए। "चलो, बड़े स्वामी का चेला पंडित भीमसैन आया है। बड़ा उत्तम धर्मोपदेश होगा। यह दुर्लभ समय फिर कब आवेगा।" इसी प्रकार की किंवदन्ती करते सैंकड़ों सनातनी पहुंच गए किन्तु जब लम्बे चोग़े और ख़ोजों वाली पगड़ी धारण किए महाशय अलीमहम्मद के मुंह से अङ्गेजी रिपोर्टों के हवाले निकलने आरम्भ हुए तो इन बूढ़ों की आंखें खुलीं और शनैः शनैः काङ्ग्रेस और राजनीति से अनभिज्ञ सब पक्षी उड़न्छू हो गए। मुन्शीराम

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़ तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री

भावन लाहोरी टोला-बनारस सिटी

"अनुराग"

(गल्प)

एक सवेरे कावेरी ने अपनी बूढ़ी मां से कहा- मां ! इस शिवकुमार को किसी जगह पढ़ने को भेज दो, इस की यह अमूल्य अवस्था वृथा ही खेल कूद में बीत रही है। मां बोली--बेटी ! हम लोगों के पास इतना धन कहां है कि लड़के को किसी शहर में पढ़ने के लिये भेज सकें। जो इतना ही धन हो तो पहले तेरा ही विवाह करूं पीछे और कुछ हो। हाय ! मेरे पास धन होवै और मैं अपनी १६ १७ वर्ष की बेटी को क्वांरी रक्खूं। इतना कहते २ बुढ़िया की आंखों से कई आंसू गिर पड़े और उदास होकर पृथ्वी पर बैठ गई। सरल हृदया कावेरी इस दशा को देख न सकी। वह अपने घर के काम में लग गई। कुछ देर पीछे इकाइक किसी ने उसके कंधे पर हाथ रक्खा। वह घबड़ा कर पीछे को देखने लगी तो बालक शिवकुमार हंसता हुआ दीख पड़ा। "बहन एक बात कहनी है तुम बाहिर चलो" यह कह कर शिवकुमार अपनी बूढी मा के पास बाहिर भाग गया। कावेरी भी अपने गृह कार्य को अधूरा ही छोड़ कर बाहिर आई। उस ने देखा, बुढ़िया माता के पास एक ओर शिवकुमार और दूसरी ओर उसका साथी रामशरण बैठा है। शिवकुमार ने कहा- बहन ! रामशरण तुम से कुछ कहना चाहताहै। कावेरी ने कहा- हां ! कहो मैं सुनती हूं। रामशरण बोला- बहन ! यहां चार, पांच, दिन से एक सज्जन आकर ठहरे हैं और कुछ दिन यहीं रहना चाहते हैं, उन के पास यहां के बालक पढ़ने जाया करते हैं। सुना है, वे बड़े प्रेम से पढ़ाते हैं। यदि तुम कहो तो हम दोनों भी पढ़ने जाया करें। कावेरी बोली—हां ! हां ! हम को स्वीकार है। रामशरण फिर बोला— एकबात और यह है कि पिता जी नेतो मुझे पढ़ने जाने की आज्ञा देदी है किन्तु माता यह कहती हैं कि किसी अनजान परदेशी के पास मैं अपने लड़के को नहीं भेजूंगी। सुना है आज कल लोग लड़कों को धोखा देकर लेजाते हैं और कहीं दूर जाकर बेच आते हैं। सो यदि आप माता को समझाके हमको पढ़ने भेजने पर राज़ी करलें तो बड़ी कृपा हो। कावेरीने कहा—भाई तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हारी माता को समझा दूंगी कलसे शिवकुमार और तुम पढ़ने जाया करो। शिवकुमार अबतक तो चुप था परन्तु अब चुप नहीं रहागया और कावेरी से बोला--बहन ! आज एक काम और करो, पण्डितजी के चाल चलन की बात किसीसे और पूछलो तब हम जाया करेंगे। बूढ़ी मां बोली-हां ! हां ! बेटा ठीक कहता है कावेरी ! मैंने भी सुना है कि सेठ की बगीची में कोई अच्छा सज्जन आदमी आकर ठहरा है उसके विषय में आज तुम अपनी सहेली रामासे पूछना। कावेरी बोली--अच्छा मा ! पूछूंगी।

यह आपस की बातें यहीं समाप्त होगई। सब कोई अपने अपने काम में लगगये।

रामा इस गांव के एक धनाढ्य सेठ की लड़की और कावेरीकी एक मात्र सहेली थी। और दिनकी भांति आजभी रामा साँझ के समय अपनी सखी कावेरी से मिलने आई।

कुछ देर इधर उधर की बातें होतीं रहीं। इसके पीछे कावेरी और रामा में ऐसी बातें हुईं:—

कावेरी—रामा ! क्या तुम्हारी बगीची पर आजकल कहीं के पण्डित आकर ठहरे हैं।

रामा—नहीं, पण्डित तो कोई नहीं ठहरे हैं। हां ! एक नवयुवक कोई एक सप्ताह से वहां ठहरे हुए हैं। कुछ दिन और भी रहना चाहते हैं। गांवके लड़के भी उनके पास पढ़ने जाया करते हैं। पिछले रविवारको उनका एक व्याख्यान भी "सुधार" विषय पर हुवा था, बहुतसे आदमी पहुंचे थे। उसदिन से तो पढ़ने वाले लड़के भी बहुत आने लगे हैं।

कावेरी—हमारा विचार है कि शिवकुमार को कल से रामशरणके साथ पढ़ने भेजा करें।

रामा—हां, हां ! बड़ी प्रसन्नता की बात है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्मप्रचारक

गुरुकुल के विषय में

मिस्टर रैम्से मैक्डानल्ड की सम्मति।

(विलायत के डेली क्रानिकल के लेख का भावार्थ)

जिन्होंने भारत वर्ष में राजविद्रोह की कहानियां सुन रखी हैं, उन्होंने गुरुकुल का नाम अवश्य सुना होगा। इस विद्यालय में आर्यों के बालक शिक्षा पाते हैं। आर्यों के विचारों और भावों का यह ज्वलन्त प्रादुर्भाव है, और बढ़ने के लिये चेष्टा करने वाली इस धार्मिक सभा के सम्बन्ध में जितनी आशङ्कादि लोग उठाते हैं, वे सब इस विद्यालय के इर्द गिर्द इकट्ठी हो गई हैं। इसी लिये सरकार इस पर तिर्छी दृष्टि डाल चुकी है, पुलिस ने इस पर काग़ज़ काले किये हैं और बहुत से ऐंग्लोइण्डियनों ने इस की निन्दा की है। मुझे ज्ञात करने पर प्रतीत हुआ कि किसी सप्ताह के अन्त में एक रात सफ़र करके दिल्ली से गुरुकुल पहुंच सकता हूं। एक रात मैं उस गाड़ी में बैठ गया जो दिल्ली से हरिद्वार को जाती है, और जिसकी चाल कई रोकों के साथ शायद एक मील प्रतिघंटा होगी।

दूसरे दिन प्रातः काल ही मैं हरिद्वार पहुंच गया। इसी स्थान पर भागीरथी हिमालय की गोद छोड़ कर मैदान में यात्रा शुरू करती है। स्टेशन धर्मार्थी और स्नानार्थी यात्रियों से भरा हुआ था। जङ्गलों से ढंपे हुए पर्वत ऊपर से हमें देख रहे थे, और जब हम पैदल चलने लगे तो इङ्गलैंड के वासन्तिक के समान सुहावना पवन हमें थपेड़े मार रहा था। जब हम नदी के किनारे पर पहुंचे तो उत्तर दिशा का विशाल दृश्य हमारे सामने आगया। छोटी २ शिबालक की पहाड़ियां, गिर्जा के समान ऊपर को उठने वाले हिमालय शिखरों के सामने वन्दना कर रही थीं। नदी का प्रत्येक बुलबुला, पर्वत की प्रत्येक झाड़ी और हिम की प्रत्येक स्थली सूर्य के चमकीले प्रकाश से दमक रही थी।

किनारे के पत्थरों पर तमेड़ धरी हुई थी। उस पर बैठ कर हम गङ्गा में जल दिये और एक आँख की झपक में मध्य धारा की सवारी करने लगे। गहरे पानी में हम धीरे धीरे यात्रा करने लगे, इतने में हमारे नीचे का जल ज़ोर से भागने लगा, तमेड़ उछलने और उछलांगे लगाने लगी, पानी हम पर छींटे मारने लगा, और हमारी हलकीसी तमेड़ बड़े वेग से नीचे को भागने लगी ताकि गहरे जल पर शान्ति प्राप्त करे, किन्तु क्षण भर में फिर वही दौड़ धूप प्रारम्भ हो गई। गङ्गा अपने बोझे को चक्कर देती हुई, बल पूर्वक फेंकती हुई और थपेड़े लगाती हुई नीचे को लिये जाती थी। किनारों पर हमें देख कर बन्दर कूदते और चीख़ते थे, जङ्गल के नन्हे नन्हे प्राणी झाड़ियों में से हमारी ओर झांकते और फिर वहीं छुप जाते थे। रेतीले किनारे पर हम उतरे और एक तपे हुए कच्चे रास्ते से जङ्गल में पहुंचे। पहाड़ों का पीलाघास हम से बहुत ऊंचा होने से हमारे पैरों की रक्षा न कर सकता था, ठंडी वायु ने हमारा साथ न दिया, सूर्य हमें सताने लगा, अन्त को हम एक सीधे लम्बे रास्ते पर पहुंचे जिस पर थोड़ी बहुत छाया थी, बहुत दूर हमें ऊंचे खम्बे पर लगा हुआ एक झंडा दिखाई दे रहा था—हम गुरुकुल को देख रहे थे।

मुन्शीराम जी

१९०१-०२ में, जालन्धर में विकालत करते करते, संसार से थक कर, और विकालत के टेढ़े रास्तों और भाग्यों से ऊब कर जब मुन्शीराम जी ने अविश्वास को छोड़ा और अपना जीवन स्वामी दयानन्द के उद्देश्यों को पूरा करने के अर्पण किया। तब शांति और सेवा करने की इच्छा से प्रेरित होकर वे इस जङ्गल में पहुंचे। आर्यसमाज विचार कर रहा था कि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को काम में लाया जाय। मुन्शीराम जी ने जब अपने लड़कों को स्कूल में पढ़ने भेजा और उन्हें अंग्रेज़ी में सब विषय पढ़ते हुए देखा तो उन के दिल में भाव पैदा हुआ कि पढ़ाने की यह रीति बहुत दूषित है, इस विषय पर एक रिपोर्ट उन्हों ने तय्यार की। आर्यसमाज ने उसे उचित समझकर इस नई संस्था का सूत्रपात आप को निश्चित किया। यद्यपि आप को शिक्षा के विषय में अनुभव न थे, तथापि आपके पास भाव अवश्य थे।

विद्यालय कहां बनाया जाय? भक्तों ने कहा कि 'मनुष्यों से दूर' क्यों कि यह विद्यालय सरकारी महाविद्यालय नहीं बनाया जाना था, जिस में अच्छे भारतवासियों को निकम्मे अंग्रेज़ बनाया जाय, और उनके दिलों में से अपनी प्राचीन सभ्यता के लिये आदर और श्रद्धा के वनस्पतियों को उखाड़ कर उनके स्थान में केवल घास फूस बो दिया जाय। विचार यह था कि जो विद्यार्थी गुरुकुल को जाय, उसे भारतीय विद्याभण्डार की शिक्षा दी जाय, सारी शिक्षा का माध्यम उसकी अपनी मातृभाषा हो, उसके विचारों को रंग देने के लिये संस्कृत को प्राचीन भाषा के ढङ्ग पर पढ़ाया जाय, वैदिकधर्म के प्रभावों में उसे रहना पड़े, पाठविधि में पश्चिम की विद्यायें भी हों किन्तु उन्हें गौण स्थान प्राप्त हो। जब पाठविधि में से गुज़र जाँय तब विद्यार्थी धार्मिक पुस्तकों में निपुण होकर, दयानन्द के धर्म को दिल में रखते हुए धर्म फैलाने का काम करें। उनकी आजीविका सरकारी नौकरी से या विकालतद्वारा राजनियमों को तोड़ मरोड़ कर न हो, किन्तु आयुर्वेद, कृषि, अध्यापकता आदि कार्यों से हो, जिनका प्रजा के साथ सीधा सम्बन्ध हो। इस लिये यह निश्चय किया गया था, कि विद्यालय को नगरों की धूम धाम से दूर और संसार के धुएं से बचा कर बनाया जाय। यह विद्यालय जहां एक ओर सर्वसाधारण के लिये विद्यालय हो, वहां साथ ही धर्मशिक्षा का स्थान भी हो। इस लिये मुन्शीराम जी ने जङ्गल की शरण ली। एक ज़मीन्दारने जो सदा रोगी और सन्तान रहित था, और जिसकी धर्मपत्नी धर्म परायण थी, एक गाँव दान देदिया। इस के जङ्गलों में चीते चक्कर लगाते थे, और बरसात में मस्त हाथी पहाड़ों के पेड़ों को कुचलते हुए इस के मैदान में आपहुंचते थे। किन्तु गाँवपर गङ्गा का घेरा था, इस लिये यह कर लिया गया, और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर मुन्शीराम जी ने धर्म यज्ञ प्रारम्भ किया।

गुरुकुल

गुरुकुल तक पहुचने के लिये एक सुंदर बाग़ मे से गुज़रना पड़ता है जिस के मार्ग गुलाब और चम्पा के फूलों से सुगन्धित हैं। क्रीडाक्षेत्र गुरुकुलके मकानों के चारों ओर हैं और रहने के स्थान बीच में बने हुए हैं। घुसने के लिये जो मार्ग बना हुआ है, उसके ऊपर ओ३म् की ध्वजा फहरा रही है। इस समय ३०० विद्यार्थी वहां पर शिक्षा पा रहे हैं। (इसके आगे गुरुकुल की दिनचर्या का वर्णन है)

सरकारी आदमियों के लिये गुरुकुल की बातें बिलकुल पेचदार हैं। पढ़ाने वालों में अंग्रेज़ों का नाम नहीं, पढ़ाने में अंग्रेज़ी द्वारा शिक्षा नहीं दी जाती, पञ्जाब विश्वविद्यालय द्वारा अंग्रेज़ी साहित्य की पढ़ाई में रखी हुई पुस्तकों से भी यहां उपयोग नहीं लिया जाता, सरकारी विश्वविद्यालय की परीक्षा के लिये किसी विद्यार्थी को नहीं भेजाजाता; गुरुकुल महाविद्यालय अपनी ही उपाधियां प्रदान करता है। वस्तुतः यह तो पता बतलाना है। आश्चर्य से घबराये हुए सरकारी अधिकारी के मुंहसे पहली यही बात निकलेगी कि 'यह तो राजद्रोही' है। किन्तु गुरुकुलके विषयमें यह अन्तिम राय नहीं हो सकती। १८३५ में मैकालेने भारत की शिक्षाके विषयमें अपनी राय लिखी थी, तब से आज तक भारतवर्ष में शिक्षा के लिये जो यत्न किये गयेहैं, उनमें यह विद्यालय सब से अधिक गौरव युक्त यत्न है। मैकालेकी सम्मति के परिणामों से भारतवर्ष में प्रायः सब लोग असन्तुष्ट हैं, किन्तु उस असन्तोष को सिवा गुरुकुल के चलाने वालों के और किसीने कार्य में परिणत नहीं किया।

प्रभावोत्पादक स्वागत

एक विशाल, गौरवयुक्त मूर्ति, बड़ी राजकीय शानके साथ हमारे स्वागतके लिये आगे आती है। नये समयका चित्रकार इस मूर्ति से ईसा का चित्र खींचने के लिये नमूना ले सकता है, और मध्य कालीन ढर्रे का चित्र कार सेंटपीटर के चित्र के लिये—हां यह मूर्ति उस मछुआरे की मूर्ति से अधिक ऊंची और अधिक राजकीय है। महात्माजी हमारा स्वागत करते हैं और उनके अबरक के बने हुए (ओ३म्) शब्द से युक्त कुटीर में हम प्रवेश करते हैं। मेरे अपने कमरे में उन्होंने एक मेज़ को शुद्ध श्वेत कपड़े से ढक कर उस पर लाल फूलों के दो सुहावने गुलदस्ते रख दिये थे। किसी अतिथिको इस से अधिक आराम देने वाला कमरा न मिला होगा। एक नौकर हमारे हाथों पर पानी डालता है और हम अपने जूते उतार कर उस कमरे में जाते हैं जहां हमारे लिये भोजन रखा हुआ है। महात्माजी ईश्वरोपासना करते हैं और हम अपने सिर झुका लेते हैं। मैंने कई भोजन कालिक उपासनायें सुनी हैं, किन्तु इसके समान कभी नहीं सुनी। महात्माजी का भरा हुआ सुरीला स्वर, संस्कृत के शब्दोंका ठीक उच्चारण करता हुआ, उपासना को सर्वाङ्ग सम्पूर्ण संगीत में परिवर्तित कर देता है।

भोजन के पीछे हम विद्यालयका भ्रमण करते हैं। सब जगह नियम और प्रसन्नता दिखलाई देती है। चमकीली चलवल आँखों वाले छोटे २ ब्रह्मचारी, गम्भीर मुखों वाले बड़े ब्रह्मचारी श्रेणियोंके कमरों में मिट्टीके नमूने बना रहे हैं, पाठोंका इकट्ठे अभ्यास कर रहे हैं, श्लोक तथा मन्त्र गारहे हैं, अध्यापकों के भाषण सुन रहे हैं—क्यों कि गुरुकुल में भाषण द्वारा अधिक शिक्षा दी जाती है। पढ़ाई समाप्त होते ही सब विद्यार्थी क्रीड़ा क्षेत्रको प्रसन्नता भरी दौड़ लगाते हैं और अपने आचार्य के पास से गुज़रते हुए उसके पैरों में झुक कर और हाथ जोड़ कर प्रणाम करते हैं।

सायंकाल की सर्दी में हम जङ्गल में भ्रमणार्थ जाते हैं। उस समय महात्माजी हमें अपने दिल के भाव बतलाते हैं। पश्चिम सूर्यास्तकी ज्योति को धारण करता है, ऊपर तक आया हुआ आधा चांद रजतोपम चमक में परिवर्तन हो जाता है। ज्यों २ रात्रिकी वायु धीमी पड़ती जाती है त्यों २ घास शीतल होता जाता है, हम सब सर्दी को अनुभव करने लगते हैं। गुरुकुल पर अंधेरा छा जाता है। किन्तु बीच में बने हुए आश्रम के द्वारों से अग्निकी ज्वालायें दिखाई दे रही हैं। सारा आश्रम मन्त्रोंकी ध्वनि से गूंज रहा है। घास पर बिछे हुए आसनों पर बुद्धदेवकी मूर्तियों की तरह बैठे हुए छोटे २ ब्रह्मचारी मन्त्र बोलरहे हैं। न वे हिलते हैं और न हमारी परवा करते हैं। उन्हों ने हवन समाप्त कर लिया है और अपने सन्ध्या में निमग्न हैं।

फिर हम अपने हाथ आगे बढ़ाते हैं और नौकर पानी डालता है। जूते उतार कर हम सायंकाल का भोजन करने के लिये खुली वायु में आसनों पर बैठ जाते हैं। पत्थरों में शक्तिदायक ध्वनी करती हुई गङ्गा हमारे सामने से बह रही है। ऊंचे और गुच्छे दार घास की चोटियां चांदनी में लटक रही हैं और जङ्गल ऐसे चमक रहा है मानों उसपर ओस पड़ी हो। दूर से आते हुए सूने भयावने शब्द हमें प्रेतों और मरे हुए आत्माओं का स्मरण दिलाते हैं। मानों, स्वप्न में किसी का कथन सुन रहा हू कि 'हमारी केवल यह इच्छा है कि हम शान्ति से परमात्मा की उपासना करें, क्या यह राजद्रोह है?'

—

उपदेशक महा विद्यालय

पाठकों को स्मरण होगा कि पिछले वर्ष सद्धर्मप्रचारक में यह प्रस्ताव किया गया था कि गुरुकुल विश्वविद्यालय में एक उपदेशक महाविद्यालय खोला जाय जिसका काम उपदेशक तय्यार करना हो। गुरुकुल में से अभी जो स्नातक बनकर निकलते हैं, उनकी संख्या बहुत थोड़ी है और योग्य उपदेशकों की मांग बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त जो लोग आयुकी अधिकता या और कारणों से गुरुकुल की नियमितपाठविधि में से नहीं गुज़र सके पर उपदेशक बनकर वे अपने धर्म की सेवा करना चाहते हैं उनकी उचित शिक्षा का कोई भी स्थान नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक दो बार उपदेशक पाठशालाएं खोलने का प्रयत्न किया गया पर अध्यापकों की कमी और ठीक प्रबन्ध न होने से वे प्रयत्न निष्फल हुए। अब गुरुकुल में वे सब सामान इकट्ठे होगए हैं जो पूर्ण उपदेशक बनाने के लिये आवश्यक हैं। अपने धर्मशास्त्रों की पढ़ाई के साथ २ ईसाई, बौद्ध, और प्राचीन धर्मों के पढ़ाने का भी वहां अच्छा प्रबन्ध हो सक्ता है। अरबी और फारसी पढ़ाने के लिये एक मौलवी का प्रबन्ध किया जा रहा है। एक सच्चे धर्मोपदेशक के लिये इन सब बातों के पढ़ने की कितनी आवश्यकता हैं, यह कहना निष्फल है। इसके बिना जो हानियां हो रही हैं, उन्हें हम अपनी आंखों से देखते हैं। आश्चर्य है कि छोटे से छोटे काम के लिये शिक्षा की आवश्यकता समझी जाती है, पर उपदेशक बनने के लिये किसी भी आवश्यकता नहीं समझी जाती। इन्हीं कारणों से प्रेरित होकर प्रचारक ने गतवर्ष इस महाविद्यालय का प्रस्ताव किया था और इस के लिये धन की अपील की थी और कुछ रुपया एकत्रित भी हुआ था। प्रतिनिधि सभा ने इस प्रस्ताव को एक वर्ष तक खटाई में डाल रक्खा इसीलिये उस समय अधिक रुपया एकत्रित न होसका था। यह देखकर हमें हर्ष हुआ है कि अन्त में सभा ने इस महाविद्यालय का खोलना स्वीकार कर लिया है और उपाध्यक्ष रामदेव जी के कथनानुसार जून मास से वह खुल भी जायगा। हमारा प्रस्ताव था कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ साथ इस विद्यालय में बाहिर के सदाचारी विद्यार्थी भी भर्ती किए जांय। हर्ष की बात है कि सभाने इस प्रस्ताव को भी स्वीकार कर लिया है। कुछ विद्यार्थियों को गुरुकुल की ओर से छात्रवृत्तियां दी जावेंगी और शेष १५) मासिक देने पर पढ़ सकेंगे। यदि कोई आर्यसमाज अपने लिये एक उपदेशक तय्यार कराना चाहे तो १५) मासिक देकर करा सक्ता है। आर्य समाजों के लिये यह बहुत ही अच्छा अवसर है। पांच वर्ष तक १८०) वार्षिक देकर सदा के लिये अपना एक उपदेशक तय्यार करालेना कोई महंगा सौदा नहीं है। हमें आशा है कि बड़ी बड़ी आर्यसमाजें इस अमूल्य अवसर को हाथ से न खोवेंगी। जो विद्यार्थी अपने व्यय पर पढ़ना चाहें वे भी १५) मासिक देकर पढ़ सक्ते हैं। सब प्रार्थनापत्र सुख्याधिष्ठाता के नाम जाने चाहिये।

प्रचार पर विचार करने के लिये समिति— गत सप्ताह हमने प्रस्ताव किया था कि आर्यसमाज के प्रचार विभाग पर विचार करने के लिये एक समिति बिठाई जाय जो पिछले अनुभव को सामने रखकर भावी मार्ग का निश्चय करे। गत अंक में ही हम इसकी आवश्यकता दिखला चुके हैं, अब उस पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। इस समिति में प्रतिनिधिसभा के ऐसे सभासद होने चाहियें जिनका आर्य्यसमाज के प्रचार के साथ सम्बंध रहा है। वर्तमान उपदेशकों के दो तीन प्रतिनिधि इस में अवश्य होने चाहियें क्योंकि प्रचार की कठिनाइयों को उन से बढ़ कर कोई नहीं बतला सक्ता। हमारी सम्मति में श्री स्वामी सत्यानन्द जी से बढ़ कर इस समिति का योग्य सभापति मिलना कठिन है। यह समिति जिनअन्य सज्जनों से सम्मति लेना उचित समझे, उन की भी सम्मति ले। हम समझते हैं कि इस प्रकार की समिति बहुत लाभदायक सिद्ध होसक्ती है।

बंगाल में आत्म घात—बंगाल को भारतवर्ष का फ्रांस कहा जाता है। जैसे फ्रांसके लोग बुद्धि, में नएनए भावों के प्रचारित करने में, और साहित्य में सारे योरप के अगुआ समझे जाते हैं वैसे ही भारतवर्ष में भी बंगाली बुद्धि में सब प्रान्तों में बढ़े चढ़े हैं। फ्रांसके देशके लोग बड़े उत्तेजना शील होते हैं, वे छोटी छोटी बात पर उत्तेजित हो उठते हैं। फ्रांस में छोटी सी बात पर अपनी या दूसरे की हत्या कर डालना कोई बात ही नहीं है। फ्रांस में सब देशों से अधिक आत्मघात होते हैं। इस विषय में भी बंगाल फ्रांस से पीछे नहीं है। बंगाल में भी फ्रांस की तरह छोटी छोटी बात पर मट्टी के तेलसे कपड़ों को आग लगा लेना बड़ी बात नहीं समझी जाती। अभी आठ दस दिनों में पांच ६ लड़कियां आग लगाकर जलमरी हैं; एक दो के सती होने के भी समाचार आये हैं। हम नहीं जानते कि बंगाली इसे किस दृष्टिसे देखतेहैं पर हम इन आत्मघातों में आत्मिक निर्बलता के अतिरिक्त कुछ नहीं देखते। ज़रा से दुःख आने पर उसे न सहन करना और आत्मघात कर डालना यदि आत्मिक निर्बलता का चिन्ह नहीं तो क्याहै। एक तो बंगाली स्वभावतःही उत्तेजनाशील हैं, उसपर वहां के समाचार पत्र इन घटनाओं को बढ़ाकर जिन लच्छेदार शब्दों में वर्णन करते हैं वह मस्तिष्क को उत्तेजित करने में और भी सहायक होता है। हमारी सम्मति में अब बंगाल के विचारशील नेताओं को शीघ्र ही इस प्रवृत्ति को रोकने का यत्न करना चाहिये।

फ़ीजी टापू में शिवलिंग किसने तोड़ा—कुछ समय हुआ, पत्रों में यह समाचार छप गया था कि फ़ीजी टापू में दो आर्यसमाजियों ने शिवलिंग तोड़ डाला। उसी समय बम्बई प्रतिनिधिसभाके मन्त्री डा० देसाई ने फ़ीजी का तार मंगवा कर उसका प्रतिवाद छपवा दिया था। अब उसका पूरा वृत्तान्त आ गया है जिसके देखने से पता लगता है कि यह केवल आर्यसमाज को बदनाम करनेके लिये कुछ लोगोंकी शरारत थी। मध्यप्रदेश का आर्य्यसेवक लिखता है कि "ताः १९वीं अप्रेल क. आर्य प्रकाश से विदित हुआ कि आफ्रीका में एक हिन्दी पत्र के अधिपति चतुर्भुज जगजीवन भट्ट ने बम्बई आर्य प्र० स० के उपदेशक कवि महाराणी शंकर पर शिवकी मूर्ति तोड़ने के लिये लोगों से जोश फैलाने की तथा गुरुकुल के नाम से पैसे लूटने की ख़बर अपने पत्र में प्रगट की थी। इस पर कविजी ने उस पत्र के अधिपति पर अदालत में अभियोग चलाया, अभियोग एक मास तक चलता रहा। मेजिस्ट्रेट ने उस पत्र के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अधिपति पर दो हज़ार रुपये दंड किये। यदि रुपया न दे तो छः मास तक जेल भेजा जाय। यह भी लिखा है कि जिस लड़के ने शिव की मूर्ति तोड़ दी उसको वहां के महाजन ने बहुत दबाया और उस से कहा कि तू ऐसा कहदे कि कवीजीने मुझे मूर्ति तोड़ने के लिये कहा था परन्तु लड़के ने ऐसा नहीं किया, जो कुछ सत्य था, वही कह दिया। जो मूर्ति तोड़ी गई थी, वह भी अपूज्य और कोई ऐसे ही स्थान पर पड़ी हुई थी। एक मात्र आर्य समाजियों की विशेष निन्दा करने के लिये ही यह तूफ़ान मचाया गया था। इस बात से इतना ही मालूम होता है कि लड़के ने खेल में यह मूर्ति तोड़ने का कार्य किया होगा, और आर्य-समाजियों की प्रतिष्ठा पर पानी फिराने के लिये यह युक्ति रची गई, परन्तु परमात्मा न्यायकारी है इस लिये न्याय सब को मिल ही गया।"

—

गुरुकुलकी जय—"आज के पत्र में हम ने किसी दूसरे स्थान पर वह व्याख्यान लिखा है जो डाक्टर गोकुल चन्द जी एम. ए. बैरिस्टर ने गुरुकुल में दिया था और जो संक्षिप्त है किन्तु बड़ा सारगर्भित तथा मनोरंजक है। इस व्याख्यान का वह भाग विशेष कर उल्लेख करने योग्य है जिस में उन्होंने बतलाया है कि "एक समय था जब मैं भी गुरुकुल के विरोधियों को तथा आक्षेप करने वालों में से था किन्तु अब मैं गुरुकुल के विरोधियों की पंगति से निकलकर इस के पक्षवालों की पंगति में आखड़ा हुआ हूं" सचमुच गुरुकुल में यह बड़ा जादू है कि जो लोग कलतक इस के विरोधी थे वह आज इस के मित्र बन रहे हैं और मित्रों का प्रेम दिन दिन बढ़रहा है। इस समय गुरुकुल एक आशा की किरण है जो देश के नेताओं तथा देश-भक्तों को नज़र आरही है। इस प्रकाश को उन्नति देना तथा इस से लाभ उठाना हम सबका कर्त्तव्य है। आओ मिल कर कहें कि "गुरुकुल की जय"

(देश)

नौमि भारतम्

(पं० श्रीधर पाठक कृत आर्य गीता से)

(१)

सुख धाम, अति अभिराम-गुन निधि,
नौमि नित प्रिय भारतम्
सुठि सकल-जग-संसेव्य सुभ थल,
सकल-जग-सेवा-रतम्
सुचि सुजल, सुफल, सुसस्य-संकुल,
सकल-भुवि-अभि-वदितम्
नित नवल-सु-ऋतु-सुदृश्य सुठि छवि-
अवलि-अवनि-अनंदितम्
धृत-प्रकृति-सरस-समृद्धि-सर्वस,
सर्व-सुख-परि पूरितम्
कृत-अखिल-जग-परितोख,
द्रुत-दुख-दोख-दुरित-सुदूरितम्
श्रम रहित यत्न बिनैव-अवगत
रत्नगर्भ-वसुन्धरम्
भुवि विभव-सुभ-सुन्दर्भ-सुन्दर,
नौमि भुवन-धुरन्धरम्
बहु विधिन रम्य-रसाल उपवन
वीथि-जाल-सु-सोभितम्
नद, झील, ह्रद, सर, सरित, निर्झर
सहृद-हृदय-प्रलोभितम् (५)
श्रुति-मधुर-सुर संगीत सुख प्रद
कुंज-द्रुम-गिरि कन्दरम्
तप-पुंज-संत-समाज-संगम
ज्ञान-घन-गुन-मन्दिरम्

(२)

हिम-सैल सुभ्र सुभाल भ्राजत,
दिव्य-मौलि-प्रभालयम्
सित अभ्र-जाल बिसाल राजत
राज-छत्र-छटामयम्
मिलि गंग-धार-कलिन्द-नन्दिनि,
द्वन्द्व-हार-हृदर्पितम्
जुग-जानु-मूल-दुकूल मंजुल,
सिंधु कूल-प्रसर्पितम्
फल-भार-नम्र प्रफुल्ल कानन,
रत्न-रासि-प्रभासितम्
अति मंजु आप-कलाप निर्मल-
कीर्त्ति-पुंज-प्रकासितम्
रवि-चंद-चौरँ-नछत्र-मंडित
व्योम-मंडप-छादितम्
भव-भूप भारत-रूप जय जय,
नौमि विश्व-अराधितम् (१०)

(३)

घन-ग्रसित कबहुं अकास चहुं दिसि
दिवस निसि-तमसा वृतम्
तिमि कबहुं चंद-उजास-उज्जल,
रजनि-दिन समता कृतम्
कृसि-विभव-विहित हिमन्तमहि छबि
स्वर्ग सुन्दरता धृतम्
पुनि कठिन सिसिर तुमार पतझर,
प्रकृति सुठि-तनुता हृतम्
नव मकुल-वलित वसन्त-वैभव
भरित भुवि तदनन्तरम्
पुनि ग्रीष्म गुन वेषम्य-क्रमि ऋतु-
चरित-नौमि निरन्तरम्

(४)

कहुं आप-पुंज-प्रपात-खण्डित
सैल—कानन-प्रान्तरम्
कहुं मञ्जु गान बिहंग अलिकुल-
गुंजमान बनान्तरम्
कहुं कुल्य-नीर-निपात-मर्मर-
झिल्लि-भीर झणत्कृतम्
कहुं केलि-कुंज—ललाम-कोमल-
कंठ-काम-क्वणत्कृतम् (१५)
कहुं व्योम चुम्बि जलौघ संगत,
सैल शृंगसमुन्नतम्
कहुं सस्य-शालि समूह-संवृत
भूमि-निम्नतमन्नतम्
कहुं देवदारु सुब्रातवृत,
सुठि पर्वतालि-तटस्थली
कहुं साल-ताल-तमाल-तत
सुविसाल वन सोभा भली
कहुं रम्यतीर द्रुमावलि-बिम्बित
स्वच्छनीर सरोवरम्
कल राजहंस कलोल निर्मित
ऊर्मि-माल-मनोहरम्
कहुं सस्य-शून्य, नितान्त निर्जल,
शुष्क-प्रान्त-मरुस्थलम्
कहुं अन्न-पूर्ण प्रसस्य उर्वर
उर्विश्यामल-शाद्वलम्
कहुं चन्दनाक्त सुमन्द-शीतल-
सञ्चलन्मलयानिलम्
कहुं अंसुमालि-प्रचंड आतप-
ताप-सञ्चरितानलम् (२०)
बहु धन्य-नाम सुतीर्थ-आश्रम
पुन्यधाम पवित्रितम्-
सुभ वृत्ति-सत्य-विचार-विस्तृति-
व्यक्त चारु-चरित्रितम्

(शेष आगे)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल विश्वविद्यालय में उपदेशक महाविद्यालय बनने की तय्यारी

३०००० रुपये की स्थिर राशि की आवश्यकता।

भारतवर्ष में और भारतवर्ष के बाहर लोगों की जो धर्म की पिपासा है उसके बुझाने की सामग्री हमारे पास नहीं है। दूर और निकट सभी स्थानों के पत्र आ रहे हैं। मद्रास में आर्य्य समाज बन के और बहुत सा काम करके टूट गया है। क्यों? केवल इस लिये कि धर्म की ज्योति को प्रज्वलित रखने के लिये मद्रास के आर्य्य भाइयों के बार २ निवेदन पर भी आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब कोई उपदेशक नहीं भेज सकी। सभा भी क्या करे, इस योग्यता के उपदेशक ही उसके पास नहीं। बाकी रहे गुरुकुल विश्वविद्यालय के उपाध्यायगण, उनके पास पढ़ाई का कार्य्य ही पर्य्याप्त से अधिक है। इस लिये वे बहुत समय धर्मप्रचार के काम में नहीं दे सक्ते। गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करना भी उन्हीं के ज़िम्मे है। ब्रिटिश गायना से एक हृदय विदारक पत्र आया है कि सहस्रों की संख्या में हिन्दू लोग क्रिस्तान हो रहे हैं। लेखक महाशय लिखते हैं, कि जितनी मेरी योग्यता है, उसके अनुसार मैं कार्य्य करता हूं, किन्तु किसी योग्य उपदेशक की आवश्यकता है। दूर के इलाक़ों को छोड़ दीजिये। समझा जाता है कि पंजाब और संयुक्त प्रांत में आर्य्य धर्म का बड़ा प्रचार है और इन दो प्रान्तोंमें हिन्दुओं का क्रिस्तान होना बन्द हो गया है। किन्तु क्या यह सच है? इंगलिस्तान के प्रसिद्ध मासिक पत्र Ninteenth Century and After में एक लेख छपा है जिससे ज्ञात होता है कि संयुक्त प्रान्त के सात ज़िलों में थोड़े मासों में ही-

डेढ़लाख

तक ईसाई बन चुके हैं और बहुत शीघ्र—

पच्चीस लाख

और बनने वाले हैं। यह सब के सब अभागी आर्य्यजाति के सुपुत्रहैं। यही नहीं समझना चाहिये कि केवल अछूत जातियों के लोग ही ईसाई होते जाते हैं, ईसाई पादरियों ने अपनी कार्य्य प्रणाली बदल ली है। अब वे कहते हैं कि बाइबल में जो बुद्धि विरुद्ध बातें हैं उनको तो हम भी नहीं मानते। किन्तु Sermon on the mount में जो उच्च धार्मिक शिक्षा मिलती है वह किसी अन्य धर्म में नहीं पाई जाती। संयुक्त प्रान्त के एक बड़े ज़िले की आर्य्यसमाज के मन्त्री का पत्र आया है कि वहां के पादरी ने इस प्रकार की बातें बनाकर सुशिक्षित हिन्दुओं पर भी अपना सिक्का बिठलाया हुआ है। बंगाल में तो वैदिक धर्मप्रचार नाम मात्र भी नहीं है। इस लिये आर्य्यसमाज ने देशदेशान्तरों में तो क्या, यदि भारतवर्ष में भी जीवित रहना है तो यह अत्यावश्यक है कि इसके पास ऐसे उपदेशक हों जो न केवल अपने धर्म ग्रन्थों को ही जानते हों, किन्तु जिन्हों ने अन्य मतों की पुस्तकों को उनकी वास्तविक भाषा में पढ़ा हो और जो आर्य्यभाषा के अतिरिक्त न्यून से न्यून एक और देशी भाषा जानतेहों और जो अरबी, फारसी, पाली और अंग्रेजी में से एक भाषा कम से कम बहुत अच्छे प्रकार जानते हों। सार्वदेशिक आर्य्यप्रतिनिधिसभा ने ऐसा एक महाविद्यालय स्थापित करने का प्रयत्न किया था, किन्तु धन के अभाव से वह इस कार्य्य में कृतकार्य्य न हो सकी। अब यह विचार किया गया है कि ऐसा महाविद्यालय यदि कहीं चल सक्ता है तो वह गुरुकुल विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में ही चल सक्ता है, गुरुकुल विश्वविद्यालय का पुस्तकालय जितना बड़ा है, उतना बड़ा पुस्तकालय आर्य्यसामाजिक जगतमें और कोई नहीं है और यह पुस्तकालय दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। उसके उपाध्यायगण में से कतिपय ऐसे हैं, जिन्हों ने कई वर्ष प्राचीन और नवीन मतों के साहित्य के अवलोकन में लगाये हैं। वह नये विद्यालय में सम्प्रदायों के बिषयमें तुलनात्मक व्याख्यान देने को उपस्थित हैं। इसके स्टाफपर बंगाली, मद्रासी, सिन्धी, उर्दू फारसी आदि जानने वाले आर्य्यसज्जन उपस्थित हैं। इस लिये इन भाषाओंके पढ़ानेके लिये कोई नये शिक्षक रखने न पड़ेंगे। आर्य ग्रन्थ औरसंस्कृत भाषा उपदेशक महाविद्यालय के विद्यार्थी गुरुकुल के विद्यार्थियों के साथ पढ़ सकते हैं। इस महाविद्यालय की स्कीम जो श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने स्वीकार कर ली है, नीचे छापी जाती है। यह महाविद्यालय प्रथम आषाढ़ १९७१, तदनुसार १४ जून १९१४ को खुल जावेगा। गुरुकुल के अधिकारियों और आर्य्यप्रतिनिधि सभा ने तो अपना कर्तव्य पालन कर दिया, अब आर्य्य पबलिक को अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये। एक साल में एक विद्यार्थी का खर्च १५) रु० मासिक के हिसाब से १८० रुपये है। जिनसमाजों और सज्जनों ने उपदेशक तय्यार करवाने की प्रतिज्ञा की हुई है, वह कम से कम दो साल का खर्च अर्थात् ३६०) रु० गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता के नाम भेज दें। जो विद्यार्थी अपने ख़र्च पर पढ़ना चाहें उनको अपने प्रार्थनापत्र गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता के पास पहिली जून तक भेज देने चाहियें। वे स्मरण रखें कि गुरुकुल की नाईं गुरुकुलीय उपदेशक महाविद्यालय के विद्यार्थी भी अपने पास धन न रख सकेंगे। १५) रु० मासिक के हिसाबसे उन को गुरुकुल के कार्य्यालय में अपना शुल्क दाखिल करवाना होगा। १० विद्यार्थियों को गुरुकुल की ओर से छात्रवृत्तियाँ मिलेंगी इस के लिये एक वर्ष में १६००) रु० की आवश्यकता होगी। यह धन पुरुषार्थी आर्य्यपुरुषों को बहुत शीघ्र एकत्रित करके १५ मई तक गुरुकुल में पहुंचा देना चाहिये। हरसाल दस छात्रवृत्तियां मिल सकें इसके लिये ३००० रुपये की आवश्यकता है। यह धन भी यदि इसी वर्ष एकत्रित हो जावे तो फिर उपदेशक महाविद्यालय की स्थिरता सन्देह रहित हो जावेगी। श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के अतिरिक्त जो आर्य्यप्रतिनिधि सभाएं अपने लिये अपने खर्च पर उपदेशक तय्यार करवाना चाहें, वे भी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता से पत्रव्यवहार करें।

रामदेव
उपाध्यक्ष गुरुकुल विश्वविद्यालय

ला० लभ्भूराम जी का उद्योग

ला० लभ्भू राम नैयड लुध्याना निवासीने जो गुरुकुल के लिये ५०००) रु० एकत्रित करने का प्रण किया था उन्हों ने इस जलसे पर अपने पुरुषार्थ से बजाय पांच के सवा पांच हजार रु० पूरा करके गुरुकुल को प्रेम का सुबूत दिया है इस खुशी में मैं उन को एक पदक देना स्वीकार करता हूं विशेष कर इस लिये भी कि उन्हों ने उन पुरुषों से धन एकत्रित किया जिनकी कुछ भी आशा नथी॥

आपका सदा ही धर्म सेवक
पं० नौरङ्ग राय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल विश्वविद्यालय

के अन्तर्गत

उपदेशक महाविद्यालय

की पाठ विधि

उक्त महाविद्यालय की दो कक्षाएं होंगी। प्रथम कक्षा की पढ़ाई ६ वर्ष के लिए होगी, और मध्यम की चार वर्ष के लिए।

प्रथम कक्षा में गुरुकुलमहाविद्यालय अथवा कक्षाओं के वे विद्यार्थी आचार्य्य की आज्ञा से सम्मिलित हो सकेंगे जिन्होंने अष्टम श्रेणी तक शिक्षा पाई हो, और मध्यम कक्षा में आचार्य्य की आज्ञानुसार वे ब्रह्मचारी सम्मिलित हो सकें जिन्हा ने दशम श्रेणी की समाप्ति तक शिक्षा प्राप्त की हो।

प्रथम कक्षा।

प्रथम वर्ष।

विषय	पुस्तक	सप्ताह में अंतर
संस्कृत व्याकरण	महर्षि दयानन्द कृत वेदांग प्रकाश	६
संस्कृत साहित्य	(१) रघुवंश के चुने हुए सर्ग (२) मुद्राराक्षस	६
संस्कृत सम्भाषण और वाक्यरचना वक्तृत्वशिक्षा धर्म्म शिक्षा	... ...	६
भाषा	(१) सत्यार्थ प्रकाश १म से ४समुल्लास तक (२) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	६
	(१) फार्सी (उर्दू) सहित (२) पाली (३) बंगाली (४) आर्य्य भाषा इन में से कोई एक भाषा	६
English		६
इतिहास	भारतवर्ष का इतिहास	४
पदार्थविद्या		६
दर्शन	न्याय दर्शन	६
गान	(ऐच्छिक)	२

द्वितीय वर्ष

संस्कृत व्याकरण	महर्षि दयानन्द कृत वेदांग-प्रकाश समाप्त	६
संस्कृत साहित्य	(१) किरात और माघ (चुने हुए सर्ग) (२) वेणी संहार	६
संस्कृत सम्भाषण प्रबन्ध रचना, वक्तृत्व शिक्षा धर्म शिक्षा	... ...	...६
भाषा	(१) सत्यार्थ प्रकाश (पूर्वार्ध समाप्त) (२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका (समाप्त)	६
	(१) फार्सी (उर्दू सहित) (२) पाली (३) बंगाली (४) आर्य्य भाषा इन चारों में से कोई एक	६
English		६
इतिहास	भारतवर्ष का इतिहास	६
पदार्थ विद्या		६
दर्शन	वैशेषिक	६
गान	(ऐच्छिक)	२

प्रथम कक्षा का तृतीय वर्ष

और

मध्यम कक्षा का प्रथम वर्ष

संस्कृत साहित्य	(१) कादम्बरी (चुने हुए भाग) (२) किरात और माघ (चुने हुए भाग)	६
संस्कृत सम्भाषण प्रबन्ध रचना वक्तृत्व शिक्षा		६
धर्म्म शिक्षा	(१) पुराण की शिक्षा पर व्याख्यान (२) पार्सी धर्म्मपर व्याख्यान (३) संस्कार विधि (क्रियात्मक शिक्षा) (४) मनुस्मृति (अर्थ) प्रकाश ११ वां-समुल्लास	११
Jurisprudence and law		
भाषा	(१) फार्सी (उर्दू सहित) (२) पाली (३) बंगाली (४) आर्य्य भाषा इन में से कोई एक	२
उपनिषद् तथा दर्शन	प्रथम कक्षा के लिए ईश, केन, कठ, योग और सांख्यदर्शन मध्यम कक्षा के लिए मुण्डक, माण्डूक्य, और उत्तरमीमांसा	१
English.		
अन्य भाषा	फार्सी, अर्बी, पाली के विशेष कोर्स	६
भजन और श्लोक	... ...	६
इतिहास	इंग्लैण्ड	२ ३

प्रथम कक्षा का चतुर्थ वर्ष

और

मध्यम कक्षा का द्वितीय वर्ष

संस्कृत साहित्य	(१) कादम्बरी (चुने हुए भाग) (२) उत्तर राम चरित्र	६
संस्कृत सम्भाषण तथा प्रबंध रचना वक्तृत्व शिक्षा धर्म्म शिक्षा	... ...	६
	(१) बौद्धधर्म तथा जैनधर्म पर व्याख्यान (२) संस्कार विधि (३) रोमन, यूनानी और Druid मतों पर व्याख्यान (४) मनुस्मृति (समाप्त) सत्यार्थप्रकाश १२ वां समुल्लास	१२ २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Jurisprudence and law.		
भाषा	(१) फार्सी (२) पाली (३) बंगाली (४) आर्य्य भाषा इन चारों में से कोई एक	२
गान	(ऐच्छिक)	२
दर्शन तथा उपनिषद्	प्रथम कक्षा मुण्डक, माण्डूक्य तथा उत्तर मीमांसा मध्यम कक्षा ऐतरेय, तैतरेय छान्दोग्य तथा उत्तरमीमांसा	६
English		६
अन्य भाषा	फार्सी, अर्बी, पाली का विशेष कोर्स	६
इतिहास	रोम और ग्रीस का इतिहास...	३

प्रथम कक्षा का ५म वर्ष
तथा
मध्यम कक्षा का ३ य वर्ष

संस्कृत साहित्य	रामायण तथा महाभारत समालोचना दृष्टि से	५
संस्कृत संभाषण तथा प्रबन्ध रचना वक्तृत्व शिक्षा	... ...	६
धर्म्म शिक्षा	(१) क्रिश्चियन मत की शिक्षा पर व्याख्यान — सत्यार्थ प्रकाश १३ वां समुल्लास (२) संस्कार विधि (३) Taosim and Confuciasim तथा egyptian मतों पर व्याख्यान	१२
Jurisprudence and law		२
इतिहास	बौद्ध धर्म्म का इतिहास	३
English		६
दर्शन तथा उपनिषदादि	प्रथम कक्षा ऐतरेय छान्दोग्य और उत्तर मीमांसा मध्यम कक्षा वृहदारण्यक श्वेताश्वतर तथा ऐतरेय ब्राह्मण	६
	ऋग्वेद (१म) मंडल) यजुर्वेद (१म २य ३१ तथा ४० वां अध्याय)	१२
गान	(ऐच्छिक)	२
अन्य भाषा	फार्सी पाली तथा अर्बी का विशेष कोर्स	६

प्रथम कक्षाका ६ष्ठ वर्ष
और
मध्यम कक्षा का ४ र्थ वर्ष।

साहित्य	संस्कृत साहित्य का इतिहास	५
संस्कृत संभाषण संस्कृत प्रबन्ध रचना वक्तृत्व शिक्षा	... ...	६
धर्मशिक्षा	(१) मुसलमानी धर्म पर विशेष व्याख्यान — सत्यार्थ प्रकाश का १४ वां समुल्लास (२) संस्कार विधि Chaldean और Babylonian आदि पर व्याख्यान	१२
Jurisprudence and law.		२
English.		६
दर्शन तथा उपनिषद्	प्रथम कक्षा वृहदारण्यक, श्वेताश्वतर तथा ऐतरेय ब्राह्मण मध्यम कक्षा शतपथ (चुने हुए तीन काण्ड)	६
	यजुर्वेद	६
गान	(ऐच्छिक)	६
इतिहास	इस्लाम तथा ईसाई मतों का इतिहास	३
अन्य भाषा	फार्सी, अर्बी, पाली तथा अंग्रेज़ी का विशेष कोर्स	६

विशेष सूचना

(१) इन दोनों कक्षाओं की परीक्षा के वेही नियम होंगे जो स्नातक परीक्षा के हैं। प्रथम कक्षा के विद्यार्थियों को ६ वर्ष तक सदाचार पूर्वक गुरुकुल में व्यतीत कर समस्त परीक्षाओं को पास करने पर द्वितीय विभाग का प्रमाण पत्र मिलेगा। और मध्यम कक्षा के विद्यार्थियों को चार वर्ष सदाचार पूर्वक गुरुकुल में व्यतीत कर समस्त परीक्षाओं को पास करने पर प्रथम विभाग का प्रमाण पत्र दिया जायगा।

(२) दोनों प्रकारके उत्तीर्ण विद्यार्थी अपने नाम के पीछे "सिद्धान्तालङ्कार" की उपाधि लगा सकेंगे।

(३) गुरुकुलके ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त प्रथम कक्षा में वे विद्यार्थी भी दाखिल हो सकेंगे जो Entrance वा प्राज्ञ परीक्षोत्तीर्ण हों और मध्य विभाग कक्षा में वे विद्यार्थी भी सम्मिलित हो सकेंगे जो F. A. वा विशारद परीक्षोत्तीर्ण हों वा उतनी योग्यता रखते हों, यदिः—

(क) उनकी आयु १८ और २५ वर्ष के बीच में हो।

(ख) अविवाहित हों।

(ग) Entrance तथा F. A. की योग्यता वालों की दूसरी भाषा संस्कृत रही हो। और प्राज्ञ तथा विशारद की योग्यता वाले Middle Standard वा entrance तक की योग्यता अंग्रेजी में रखते हों। और

(घ) गुरुकुल के नियमों को यथावत् पालन करने की प्रतिज्ञा करें ऐसे विद्यार्थियोंको तभी प्रविष्ट किया जायेगा यदि उनके प्रशंसा पत्रों द्वारा वा अन्य प्रकार से गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता को निश्चय हो जाय कि वे सदाचारी हैं।

(४) सर्व विषयों के उपनियम गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता बना कर काम चलायगा। और जब तक उन उपनियमों पर अन्तरङ्ग सभा में विचार न हो लेगा तब तक उन्हीं उपनियमों के अनुसार कार्य्यवाही होगी।

(५) यदि कोई आर्य्य प्रतिनिधि सभा वा आर्य्यसमाज छात्र वृत्ति जो १५) मासिक से कम न हो इस शर्त पर कि विद्यार्थी उत्तीर्ण हो कर कम से कम, उस वेतन पर जो गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत करे पांच वर्ष पर्यंत उक्त संस्था की आज्ञानुसार वैदिकधर्म्मका प्रचार करेगा तो वह छात्रवृत्ति स्वीकार की जायगी।

(६) प्रथम दो वर्षों तक उपरोक्त पाठविधिम आवश्यकतानुसार परिवर्तन करनेका अधिकार गुरुकुलके मुख्याधिष्ठाताको दिया जावे।

मुन्शीराम
मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डींग की चिट्ठी

यहां सदा की भांति चार दिन से मुसलमानों का जलसा होता रहा। दिल्ली एवं मेरठ के दो तीन मौलवी आये थे। मौलवी महाशयों ने इसलाम धर्म की आड़ में आर्य्यसमाज और हिन्दुओं पर खूब बाढें झोंकीं। वेद, शास्त्र, और पुराण सभी की निन्दा पेट भर के की। कुरान को अपौरुषेय सिद्ध करने के लिये आकाश पाताल मिलाये। दुराचारी यवन बादशाहों के दुराचार छिपाने को तवारीखों पर हरताल फेरने की पूर्ण परिश्रम किया। हिन्दू धर्म की फ़िज़ूल खर्चियों की आलोचना कर इसलाम धर्म को "कम खर्च वाला नशीन,, बताने में भी कोई बात उठा न रक्खी। सनातन धर्मियों को आर्य्यसमाज के विरुद्ध उभारने का पूरा प्रयत्न करने पर भी सफलता प्राप्त नकी। धर्म की दुहाई देकर दूसरे धर्मों का खण्डन करने में बड़ी बहादुरी दिखलाई।

उधर आर्य्यसमाज में भी रात्रि को भरतपुर समाज के उपदेशक पं० ललिताप्रसादजी के व्याख्यान खूब ही धूम धाम से होते थे। मौलवी महाशय जो २ आक्षेप आर्य्यसमाज, या हिन्दू धर्म पर करते थे पण्डितजी उनकाही खण्डन बड़ी योग्यता से युक्तिपूर्वक करते थे। बिचारे मौलवियों की दिनभर की मिहनत को धूल में मिला देते थे। फल यह हुवा कि अबकी बार जलसे में दो, चार, मनुष्यों के सिवाय कोई भी हिन्दू नहीं गया और न किसी पर उनका मोहिनी मंत्र ही चला हां! इसके विरुद्ध ललिताप्रसादजी के व्याख्यान में हिन्दू एवं जैनी किसी ने भी जाने में परहेज़ नहीं किया यहां तक कि सनातन धर्म के मुख्य २ उपदेशक भी बड़े आनन्द से व्याख्यान सुनने पधारे थे।

परन्तु बड़े दुख से कहना पड़ता है कि यह इसलामी जलसा हिन्दुओं के उसही पवित्र "रामलीला के मैदान,, में हुवा था जिसमें एकवार आर्य्यसमाज का उत्सव होने की अफ़वाह सुनकर ही हिन्दू मरने मारने को तय्यार होगये थे और अन्ततः उत्सव में विघ्न डाल एक महान कार्य्य का नाश कर दिया था। परन्तु उसी मैदान में दो साल से इसलामी जलसा सानन्द मनाया गया और हिन्दुओं ने चूं तक नहीं की। शोक!!!

पर हां! अब के रङ्ग ढङ्ग देखकर जान पड़ता है कि यदि इस प्रकार मुसलमानों के जलसे होते हैं और इसी भांति समाज कर्त्तव्य पालन करता रहा तो कुछही दिन में हमारे हिन्दू भाई जान जाएं गे कि समाज हमारी हानि करने वाला वैरी नहीं प्रत्युतः हमारी बढ़ती चाहने वाला सच्चा मित्र है। हमारे जन, धन, और धर्म की रक्षा करने वाला हमें नींद से जगा चोरों के हत्या चार से बचाने वाला चौकीदार है। परमेश्वर करे वहदिन शीघ्र ही आवे।

हिन्दू धर्म का हितैषी
दैवी प्रकाश
डींग (भरतपुर)

'भ्रम निवारण"

१८ अप्रेल सन् १९१४ ई० के सद्धर्म्म प्रचारक में गजपुरी जी ने मेरे विषय में दूसरों के कथन से बिना स्वयं देखे सुने जो भ्रमात्मक बात छपादी है वह असत्य है। मैंने-सत्यार्थ प्रकाश-मनु-महाभारत के प्रमाणों से गुण कर्म स्वभावानुसार-न केवल ब्राह्मणों का किंतु चारों वर्णों का ही विभाग प्रति पादन किया था-जैसा कि मैं मानता हूं-एक सामान्य पुरुष ने जिसका कि मैं नाम नहीं जानता-मेरे विरुद्ध कुछ चर्चा की थी-संभवतः है कि उसी के साक्षात् या-परम्परा कथन से यह भ्रम गजपुरी जी को हुआ आप मेरे इस लेख को प्रकाशित कर संशयात्माओं का संशय दूर कीजिये जिस से वह आयंदे को मेरे विषय में संदिहान न रहें।

वृंदावन के सनाढ्य महामंडल में भी-मैंने सनाढ्य शब्द का तपस्वी और विद्वान् यह अर्थ करके बतलाया था कि जो सनाढ्य अर्थात् विद्वान् तपस्वी नहीं वह ब्राह्मण नहीं हो सकता-इस पर जन्माभिमानी किसी ब्राह्मण ब्रुनको बुरा लगा होगा-उसने मेरा आशय न समझ कर-अस्तव्यस्त लिखा-वही आपने भी अन्यत्र छपा उद्धृत कर दिया-आप या और कोई जब तक स्वयं मुझ से ज्ञात न कर लेवें-तब तक विद्वेषियों के लेखाधार पर-किसी बात को प्रकाशित करने में शीघ्रता न किया करें।

आपका मित्र
अखिलानन्द-कविरत्न

भारत वर्षीय वैद्यक डायरेक्टरी

आवश्यक सूचनायें।

(१) प्रथम की हुई प्रार्थना को पढ़ कर बहुत से सज्जनों ने फार्म मंगवाये थे, उनमें से बहुत से फार्म भर कर आगये हैं; इसलिये डायरैक्टरी छापने का कार्य शीघ्र हा प्रारंभ करना चाहते हैं; जिन सज्जनों ने अभी तक फार्म नहीं मंगवाये व मंगाने के पश्चात भर कर भेजने की कृपा नहीं की, वे अब शीघ्र ही कृपा करें।

(२) इस डायरेक्टरी में वैद्यों के नामों के उपरांत वैद्यक संबंधी सार्वजनिक संस्थाओं का विवरण भी छापा जायगा इस लिये समस्त आयुर्वेदीय संस्थाओं के सञ्चालकों से निवेदन है कि वे अपनी २ संस्थाओं का विवरण भेजने की कृपा करें।

(३) इस डायरेक्टरी में वैद्यक संबंधी मुद्रित अमुद्रित ग्रथों की सम्पूर्ण सूची दी जायगी जिससे पुस्तक प्रकाशकों से और विद्वान वैद्यों से प्रार्थना है कि पुस्तकों के विवरण लिखने के फार्म जो हमारे यहां छपे हुएहैं उन्हे मंगा कर व भरा कर शीघ्र वापिस भेज दें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय मौका नचूकें

रत्न है॥ लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है रुपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

टिका बुद्धिबर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव,विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
र्षां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजित।विषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अकल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ और छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी-(शुद्ध व असली) की तोला २८) रु०

शिलाजीत-सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० की तोला

केशर-(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) की तोला १॥)

पशमीने व सावल-६ गज×१¼ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट-यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अलमोड़ा यू० पी० हिमालया

१०००) एकहज़ार रुपये की

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालेंदीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक इन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९८१४ पृष्ठ चौदह जिल्दमें एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)-ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक वा दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

वाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंगलिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद यू. पी.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलजीत

शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, क्षुगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—
पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

तार सीखने की डैमी।

हमारे कारखाने की फेन्शी और मज़बूत डैमियां ख़रीद कर कुछ ही दिनों में

तार बाबू क्यों नहीं बन जाते

यह डैमियां पीतल की हमारे कारखाने में तय्यार होती हैं जो कि बहुत ही मज़बूत और खूबसूरत नये फेशन की बनवाकर भेजी जाती हैं जिनकी आवाज़ दफ्तरों के इस्ट्रोमेंट से बहुत कुछ मिलती है

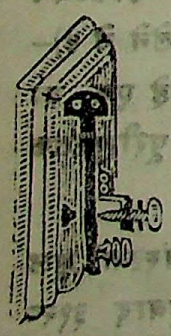

जिसके द्वारा कोशिश करने से थोड़े ही समय में तारका लेना देना सीख कर दफ्तरों में बखूबी काम कर सकते हो इस के साथ एक पुस्तक (टेली ग्राफ टीचर) जिसमें तार सम्बन्धी तमाम टेकनीकल और तार के क़ायदे बड़ी आसान रीति से समझाये हैं मुफ्त मिलेगी मूल्य १॥)

मिलने का पता--शांति संचारक कम्पनी
अलीगढ सीटी

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिश-टीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स
अलीगढ़

विज्ञापन

एक सर्वाङ्ग सुन्दर सुबोध टंडन खत्री कन्या के लिये २३ वर्ष तक के कपूर, खन्ने महरे, सेठ, बर की आवश्यकता है।

पत्र व्योहार का पताः-
बाबू नन्दलाल सिंह वर्मा
रेलवे मैनेजर आफिस
जोधपुर

ऋषि दयानन्द वाच

श्री महात्मा मुन्शीराम, धर्मवीर पं० लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन, हमने उक्तनामकी घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिसमें मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन होते हैं। महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय दाम केवल५॥) गारंटी ५ साल हर घड़ी के साथ में एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा।

पताः--दीस्वीज़रलैंडवाचकम्पनी
हाथरस नं० २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कावेरी—रामशरण की माता उसे पढ़ने भेजने में कुछ बाधा करती हैं। चलो थोड़ी देर उनके यहां चलके उन्हें समझा देवैं।

रामा—जाने पुरानी स्त्रियोंकी कैसी समझ है।

दोनों सखियां अपने घरसे चलकर पास वाले रामशरण के घर जा पहुंची।

(२)

दूसरे दिनसे शिवकुमार अपने साथी रामशरणके साथ पढ़नेजानेलगा। "हिन्दी की साधारण पुस्तकों को समझ के पढ़ लेना" इतना तोवह अपनी बहन कावेरीसे पढ़चुकाथा। आज अध्यापकने उसे संस्कृत व्याकरण प्रारम्भ कराया। शिवकुमार को अपने सब छात्रों में तेज़ देखकर वह उसे और भी प्रेमसे पढ़ानेलगे। एकदिन मा ने शिवकुमार से पूछा-शिवकुमार! तुम्हारे पण्डित कहां के रहने वाले हैं। शिवकुमार बोला यह तो मैंने नहीं पूछा। हां! उनका नाम तो गिरिजाकान्त है उम्र कोई २१—२२ वर्षकी होगी। अनुमान से तो किसी शहर के रहने वाले मालूम होते हैं। मुझपर बड़ा प्रेम रखते हैं। माता बोली—अच्छा उन्हें कलके लिये निमन्त्रण दे आना। इसके उत्तर में "बहुत अच्छा" कहकर शिवकुमार पढ़ने चलागया। दूसरे दिन मध्याह्न समय शिवकुमारके साथ एक सज्जन नवयुवक ने कावेरी के गृह में प्रवेश किया। नवयुवक गिरिजाकान्त ने देखा। घर सर्वत्रसे स्वच्छ है शान्ति विराज रही है। शिवकुमार की बुढ़िया माताने कोमल वचन से उनका स्वागत किया। उसके सद्व्यवहार को देखकर पंडित गिरिजाकान्त मनही मन बड़े प्रसन्न हुए। अध्यापक और विद्यार्थी दोनों साथही भोजन करने बैठे। सलज्जा सुन्दरी कावेरी परसने लगी। इस सज्जन सुशील नवयुवक को देखकर बुढ़िया के आनन्द का ठिकाना नहीं था। आज उसका सूना घर इस सुन्दर युवक के पदार्पण से जगमगा उठा था। युवक की मधुर वाणी आज बुढ़िया को परम सुख दे रही थी। इकाएक बुढ़िया के मनमें किसी विचार ने पैदा होकर [illegible]ली मचादी। वह भोजन [illegible] है। शिवकुमार ने यह श्लोक पढ़ा:-

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्।
उदार चरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

बुढ़िया ने अब इस विषय के और प्रश्न करके युवक के हृदय को दुखाना उचित न जाना। और बातों का ढंग बदल कर उसके चित्तको प्रसन्न करने लगी।

अनुमान दो घंटे पीछे पण्डित गिरिजाकुमार बगीची को पधारे। छात्रों के पढ़ाने में आज उनका मन नहीं लगा। उनकी उदासी का कारण शिवकुमार ने वार २ पूछा पर उन्होंने कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर पीछे पण्डितजी ने शिवकुमार से पूछा-महेश्वर! तुमने हिन्दी भाषा लिखना पढ़ना किनसे सीखा। शिवकुमार बोला-जी! कावेरी बहन के पास सीखा था हमारे नवयुवक गिरिजाकान्त अपने प्रिय छात्र शिवकुमार को अब "महेश्वर" नाम से पुकारते थे।

(३)

माता ने अपनी दुलारी बेटी को अभी तक किसी दिन उदास और विकल नहीं देखा था। आजकल कावेरी को उदास देखकर उसके हृदय में एक प्रकार की शङ्का पैदा हुई। जिस समय शिवकुमार पढ़ के आता, और अपना पाठ बहिन को सुनाता, उस समय कावेरी का कमल मुख अपूर्व-उज्ज्वल ज्योतिसे छा-जाता। थोड़ीदेर बाद फिर वही विकलता की कालिमा मुख मण्डल को घेर लेती। जिस समय मा बेटी दोनों पास बैठती तब माता अपने होनहार पुत्र शिवकुमार की बड़ाई बेटी के मुख से सुनकर फूली अग न समाती। एक दिन जब शिवकुमार पढ़ने जाने लगा तब बूढी मा ने कहा-बेटा! अपने पण्डितजी से कहना कि महाराज! आज मा ने आप को याद किया है।

सांझ को जब शिवकुमार पढ़ के घर लौटा तब उसी के साथ पण्डितजी भी बुढ़िया माता के दर्शन को पधारे: उनको देखकर बुढ़िया बड़ी प्रसन्न हुई और आनन्द गद् गद् होकर उनको अपनी कोमल बाणी से प्रसन्न करने लगी। आज पण्डितजी ने अपनी दृष्टि चारों ओर दौड़ाई परन्तु उन्हें कावेरी दिखाई न पड़ी। उन्हों ने धीरे से एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दीर्घनिश्वास छोड़ा, और निराश से होगये। बुढ़िया से मिल के पण्डित गिरिजा कान्त बड़े प्रसन्न हुए और अधिक विलम्ब हुवा जान अपने स्थान को जाने की आज्ञा मांगने लगे। बुढ़िया बोली—पण्डितजी तुम्हें जाने की आज्ञा देते हुए मेरा हृदय काँपताहै। ईश्वर जाने, आप में इतना स्नेह होगया है कि नित्य प्रति आपकी याद आया करती है। मैं चाहती हूं, आप इसी मकान में ऊपर के खण्ड में अथवा नीचे जहां आप अच्छा जानें, रहा करें। इस बात से मेरे लिये बड़ा आनन्द होगा। थोड़ी देर सोच विचार के पण्डित महाशय ने कहा:—अच्छा! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, मैं कल से आपही के समीप आके रहूंगा। यह कह के युवक गिरिजा कान्त बिदाहुए।

दूसरे दिन से पण्डित गिरिजा कान्त इसी मकान में रहने लगे। अब शिवकुमार के पढ़ने में और भी सुविधाहुई। बूढ़ी मा को असीम आनन्द हुवा और कावेरी के कमल मुख की म्लानता भी दिन २ कम होने लगी।

जो बुढ़िया का मकान शून्य प्राय एवं डरावना दीखा करताथा आजकल उसमें चहुंओर आनन्द ही आनन्द छाया रहता है। सांझ सवेरे पण्डितजी सेठ की बगीची पर अपने छात्रोंको पढ़ाने जाया करते हैं और कावेरी उनके कहने से पड़ोसिया की बालिकाओं को अपने घर पर पढ़ाया करती हैं।

(४)

पण्डित गिरिजाकान्त महोदय को अपनी पूजनीया वृद्धामाता के मकान में रहते हुए दो मास बीत चुके हैं। इसी बीच में सब गृहवासियों के साथ उनका घनिष्ट प्रेम होगया है। कावेरी उनकी मनोहर मूर्ति को अपने परम पवित्र हृदय हर्म्य में स्थापित करके बड़ी श्रद्धा के साथ प्रेम पीयूष से पूजा किया करती है।

पण्डितजी भी उस घर को अपने घर और शिवकुमार को अपना महेश्वर कहकर पुकारते हैं। मनोहर मुख पर मन्दस्मित की झलक देख कर आजकल उनके हार्दिक आनन्द का भली भांति अनुमान किया जा सक्ता है।

इन्ही दिनों एक दिन अचानक बूढ़ी माता को ज्वर आगया। अकस्मात् उनके आनन्द सुधार को काली घटा ने घेर लिया। गिरिजाकान्त ने पासके शहर से एक वैद्य को बुलाके उनका उपचार कराया परन्तु दो सप्ताह बीत चुकने पर भी रोग शान्त होने में नहीं आया। पण्डितजी रातदिन रोगी की शय्या के पास बैठे रहते, उसको यथा समय औषधि पिलाते, और निरालम्बा कावेरी एवं भोले भाले शिवकुमार को सान्त्वना देतेथे एक दिन पण्डितजी ने कावेरी से कहा:—कावेरी! आज मैं पास के शहर जाके किसी अच्छे वैद्य को लाता हूं। मुझे बीमारी बढ़ती मालूम देती है। तुम घबड़ानो नहीं। मैं बहुत शीघ्र आऊंगा।

कावेरी की कमल कलिका जैसी आंखोंमें आंसू भर आये, उसने काँपते स्वर से कहा:—जाइये, परन्तु शीघ्र लौटना। देखिये, आप के सिवा हमारा सहायक इस संकट समय में कोई नहीं है।

पण्डितजी के शहर गये कोई २॥ घंटा होगया। उनके बिन रोगी के पास अकेली बैठे आज कावेरी का मन नहीं लगा। उसने शिवकुमार को रामा के बुलाने के लिये भेजा। थोड़ी देर में रामा भी आगई। शिवकुमार उदास होके उनके पास बैठगया। उसने कहा:—

"बहन! पण्डितजी कब आयेंगे।

कावेरी ने आंसू भरी आंखोंसे रामा की ओर देखा। उन दोनों को घबड़ाया जान रामा उन्हें समझाने लगी।

इसी समय रोग जर्जरा बुढ़िया के मुंह से आज अकस्मात् ये शब्द निकले:—"पण्डितजी को बुलाओ"

कावेरी ने कहा:—वैद्यको लेने शहर गये हैं अभी आते होंगे। थोड़ी देर पीछे रोगी ने जल मांगा। कावेरी ने जल पिलाया। शिवकुमार शय्या के पास बैठकर पूछने लगा—मा! तबियत कैसी है। बुढ़िया ने अपना हाथ उसके शिर पर रक्खा और आंखों में आंसू भर के कहा—बेटा! पण्डितजी को बुलाओ। इतना कह बुढिया ने आंखें बन्द करलीं।

इससे थोड़ी देर पीछे पण्डितजी भी आपहुंचे। कावेरी ने माता के चेत करने का और जल पीने का वृत्तान्त कहा। अबकी वार पण्डितजी ने "मां" करके बुढिया को पुकारा। बुढ़िया की आंखें खुल गईं। उसने अपने पास पण्डितजी को देखा। मुंह से ये शब्द निकले:—

पण्डितजी! ईश्वर तुम्हें प्रसन्न रक्खे फिर आँखें बन्द होगईं। पण्डित जी ने कहा—मां! एक अच्छा वैद्य साथ लाया हूं। उसकी चिकित्सा से तुम अच्छी हो जावोगी। घबड़ाने की कोई बात नहीं है। बुढ़ियाने अधखुली आंखोंसे-पण्डित जीकी ओर देखके कहा:—अब वैद्य का क्या होगा।

सब अधीर हो उठे, सबकी आंखोंसे आंसू झरने लगे। थोड़ी देर पीछे बुढ़िया ने फिर आंखें खोलीं, सबको अपने पास बुलाया। आंखों में आंसू भरके अपनी प्यारी पुत्री कावेरीका एक हाथ पण्डित जी के हाथ में दिया, उनका दूसरा हाथ शिवकुमार के शिर पर रख दिया और धीमे स्वरसे कहा—पुत्र, कावेरीको धर्मपत्नी अंगीकार करो.....अब....जीवन भर....इन दोनों....के....तुमही सहायक हो....मेरी कामना ..... बस इतना ही कहने पायी, आगे न बोल सकी। कण्ठ रुकगया। और उसका प्राण पखेरू सदा के लिये देह पिञ्जर को छोड़गया।

* * * * * * * * *

पंडित गिरिजाकान्त, कावेरी, और शिवकुमार तीनोंको अपनी बुढ़िया माता की याद बहुत दिनतक आती रही। कुछ दिन पीछे पंडित जी ने अपनी बुढ़िया माताकी आज्ञानुसार कावेरीकी हार्दिक "प्रेमाभिलाषा" को फलवती किया। और दोनोंही शिवकुमार पर अधिकाधिक प्रेम करते रहे।

अपनी प्राणाधिका सहेलीको योग्य पति प्राप्त हुवा जान रामाको अकथनीय आनंद प्राप्त हुवा।

पण्डित गिरिजाकुमार भी सबको सदा प्रसन्न रखते रहे। परन्तु जबतक जिये, अपनी बुढ़िया माके प्रेमको कभी न भूले।

श्रीहरिकृष्ण यजुर्वेदी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानी की आवश्यकता है

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधारिष्टु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तलाश नहीं करना पडता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधारिष्टु

सरकार से रजिष्टी किया हुआ

कफ	अतिसार
दमा	आंवलोहू संग्रहणी
खांसी	के होना
हैजा	पेटकादर्द
शूल	कुकरखांसी

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट सुगंधित दवा है मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्टी किया हुआ २३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुखसंचारक

विना किसी तरह की तकलीफ या जलन के बाद को जडसे खोने वाली दवा है कीमत ।) इजन २।) ई.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—श्रीव्रपाल शर्मा मालिक,

सुख संचारक कम्पनी मथुरा

प्रचारक के ग्राहकों से

१५ मार्च तक 'चिकित्साभन्डार, २ खंड का मूल्य २॥) के २) लिये जायंगे। इस पुस्तक में वैद्यक युनानी और डाक्टरी मतानुसार रोगों की व्याख्या और अनुभूत चिकित्सा दी हुई है। हिन्दी भाषा के जानने वाले एक योग्य वैद्य जैसी रोगों की परीक्षा और चिकित्सा कर सकते हैं शीघ्र आज्ञापत्र लिखें।

चुन्नीलाल वैद्य
बच्छोवाली
लाहौर

बढ़ते नहीं बाढ़ते हैं

बाल उडान का साबुन—विना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लैने से १ स्टाप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता—

शर्मनऐंड कं. सतघडामथुरा

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)
चान्द--जि० आरा

सस्ता और मज़बूत

Telegraphic,address
founders Aligarh

४ लीवर का ज़स्तो कलईदार
लोहे का ताला इस्तेमाल करो।

मूल्य
डेढ़ इंच का ९) दरजन
दो इंच का १२) दरजन
ढाई इंच का १३॥) दरजन
तीन इंच का १६॥) दरजन

(१) १००) के खरीदार को १२॥) सैकड़ा और ५०) के को ६।) सैकड़ा और २५) के को ३=) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा कम पर नहीं।
(२ आधी दरजन से कम माल नहीं भेजा जावेगा।
(३) और किस्म के तालों के लिये सूचीपत्र मंगाइये।
(४ असली माल पर "शेर" का मार्का देख लीजिये।

दी क्रसमिस लोक वर्क्स सुलतानी सराय
अलीगढ़ सिटी

नोटिस

आर्य्य कन्या पाठशाला लायलपुर के लिये एक मिडिल पास अथवा फैल को अध्यापिका के लिये आवश्यकता है सीने पिरोने सोई के काम आदि भोजन इत्यादि में निपुण होवे वेतन योग्यता अनुसार दिया जावेगा प्रार्थना पत्र और सार्टीफिकट शीघ्र इस पते पर आवे।

गुरुदत्ता राम प्लीडर
प्रधान आ० स० लायलपुर

महाशयजी

यदि हमारी दवा से खांसी शर्तिया दूर नहो तो ४ प्रतिष्ठित पुरुषों के हस्ताक्षर सहित पत्र भेज कर मूल्य वापिस लीजिये मूल्य१०० गोली १)डा० खर्च =)

आर्य्य, औषधालय, रूस्तमगढ
(एटा यू० पी०)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ़ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बडी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।) मुंडक और माण्डूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡) ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥-)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश संग्रह ।-)
प्रार्थना पुस्तक ।-)
ओंकार की उपासना ।-)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।-)
वेद और महाभारत के उपदेश ।-)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।-)
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रन्थावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

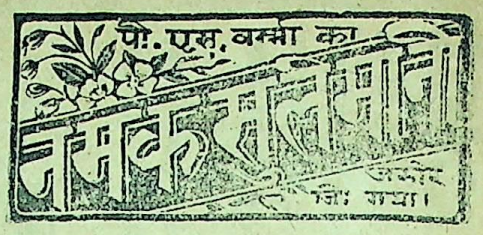

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द अर्श बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया

——

पसंद न हों तो वापिस

हाथरस के पक्के चाकू

यह स्वदेशी चाकू अपनी सुन्दरता और मजबूती में विलायती चाकुओं से बढ़कर अच्छे और सस्ते हैं लकड़ी बेंट)॥। -) -)। =) =)॥ ≡)॥ ।-) ।≡) चन्दनबेट -) -)॥ =) =)॥ ≡)। ।-) ।!) दो फला ।≡) ॥) घड़ी में लगाने का =) उस्तरा ।) ।=) काली और ठयलू-ठलाक रोशनाई फी पुड़िया)। से ।) तक हर शहर में एजेन्टों की आवश्यकता है। पता—भारत हितकारी कार्य्यालय नं० ७
हाथरस सिटी

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के ब्रह्मचर्य-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No L. 807.

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | २९ वैसाख सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० ९ मई १९१४ | संख्या ४ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक--इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक- इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)- प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में " ठाकुर की " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है ।आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल [illegible]न्नति की पुकार तो बहुत [illegible] पर राष्ट्र और उन्नति क्या [illegible] बहुत थोड़े लोग जानते हैं । [illegible] में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक		॥) प्र० पं०
तीन मास	" " " "	=) "
छः	" " " " "	-)॥ "
सालभर	" " " "	-) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे विना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सका ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये । बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये ।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष बात चीत प्रबन्धकर्ता से कीजिये ।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र-देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का कलम (पेड़) अपने बाग़ में लगाना चाहते हैं तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मगालें।

पता— आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतोल KAMTAUL (बिहारप्रान्त

महा भारत ।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़ तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वप्न की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री
धावन लाहौरी टोला बनारससिटी

हारमोनियम

अर्थात् बिना गुरु के बाजा सिखाने वाला टीचर, यदि आप थोड़ेही समय में सरगम व गाना सहित हारमोनियम बजाना सीखने के इच्छुक हैं तो सुन्दर जिल्द बंधी हुई पुस्तक के दोनों भाग मंगाइये मूल्य ।-)डा०=) पीतलके ओ३म् व नमस्ते फ़ी दर्जन।।।) ड० म० अलग

पता:—बाबूख्यालीराम एण्डको
अलीगढ़ सिटी.

भारतवर्ष में विख्यात

हाथरस के पक्के चाकू ।

यह स्वदेशी चाकू विलायती नामी चाकूओं से भी कहीं सुन्दर सुडौल और मज़बूत हैं। चन्दन मूठ -) -)॥ =) =)॥ ≡) ।) ।=) लकड़ी मूठ ,॥। -) -)। -)॥ =)॥ ≡)॥ उस्तरा ।-) ।≡) कैंची ॥) ।=) लीवर दार मजबूत तासे पीतल के ≡) ।) ।=) इंच । लोहे के ।) ।=) ॥) इंच । रंगीन गमछे =) =)॥ ≡)॥ ।-) ॥ बढ़िया हींग ६) ८) १०) सेर

भारत वस्तु प्रचारक कम्पनी
हाथरस ।

दिल्ली का आटा मैदा

सूजी और चोकर अति उत्तम और फायदे के साथ हमारे यहां से भेजा जाता है। नमूने और भाव मंगा देखिये।

पता: नौरङ्गराय बाबूलाल
खारीबावली, दिल्ली ।

नई सूचना

यद्यपि हमें शुद्ध रामायण की प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यह जगत् प्रिय हो चुकी है । इसकी संशोधित घटनाओं ने जो इस में प्राचीन ग्रन्थों के प्रमाणों सहित लिखीगई हैं बड़े २ विद्वानों तथा भारत वर्ष के प्रसिद्ध समाचारपत्रों से प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं, परन्तु हम आपको सूचना देते हैं कि:-

पंजाब के डायरेक्टर साहिब बहादुर पब्लिक इन्स्ट्रक्शन ने इस पुस्तक को स्कूलों की लाइब्रेरियों तथा छात्रों के पारितोषक (इनाम) के लिये स्वीकार कर के अपनी सम्मति प्रकाश की है । जो अपने सर्कुलर नं० ७ तारीख ८ फ़रवरी १९१४ में लिखते हैं:-

शुद्धरामायण (कृत पं० संतराम प्रकाशित नागरी प्रचारिणी कम्पनी लाहौर) असल रामायण का हिन्दी भाषा में संक्षेप है। जो लोग मूल ग्रंथ से लाभ नहीं उठा सकते उनके लिये अत्योपयोगी है। पुस्तक की आकृति भी सुन्दर है मूल्य २)

मिलने का ठिकाना
नागरी प्रचारिणी कम्पनी लिमिटेड
लाहौर

आवश्यकता ।

आर्य्य प्रतिनिधिसभा पंजाब को कुछ योग्य उपदेशकों की आवश्यकता है। जो विद्वान् होने के अतिरिक्त पूरे सदाचारी आर्य्य सिद्धान्तों से वाक़िफ़ हों। और बक्तृता शक्ती अच्छी रखते हों। इसी प्रकार योग्य आर्य्य भजनीकों की भी आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त शाखा गुरुकुल मुलतान और शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के लिये भी एक २ योग्य उपदेशक और एक २ योग्य भजनीक की आवश्यकता है जो उपरोक्त शाखा गुरुकुलों के नज़दीक इलाकों में वैदिकधर्म के प्रचार करने के अतिरिक्त गुरुकुलों के लिए धन एकत्र करने का भी काम कर सकें। जो भाई अपने आप को जिस काम के योग्य समझते हों। इसके लिए शीघ्र अपनी दरख़्वास्तें निम्न पते पर भेज दें॥

ला० केदारनाथजी मंत्री
आर्य्यप्रतिनिधिसभा पंजाब लाहौर

नया ग्रन्थ

अभी छप कर तय्यार हुआ

भारतवर्ष का इतिहास

प्राचीन आर्य्यों के प्रारम्भिक वर्णन से लेकर सं० १९७० तक की घटनाओं के वर्ण नसे संकलित इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास अति सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है कि आरम्भ करके बिना समाप्त किये छोड़ने को जी न चाहेगा, आर्य्य भाषा में इस प्रकार का इतिहास अब तक नहीं छपा,

पृष्ठ संख्या ५०० मूल्य

धर्म निर्णय

यह उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्मका भाषानुवाद है इस पुस्तक में धर्म का निर्णय किया गया है पुस्तक नावल के ढंग पर लिखी गई है इसमें कई योगी सन्यासियों का भी वृत्तान्त है मूल्य १)

अंग्रेजीकी सीढ़ी

देव नागरी तथा उर्दू पढ़े हुए को स्वयम अंग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य ॥=)

पता:—ला. केदार नाथ प्रोप्राईटर
से २६ आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
३ बज़ाजा शहर मेरठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(३४)

कांग्रस के साथ अपना सम्बन्ध जतलाकर उसकी एक वर्ष की कहानी एक स्थान में ही समाप्त करना उचित समझ कर बीच की आवश्यक घटनाएं मैं छोड़ गया था। अब उनको क्रमशः लेता हूं।

मेरी डायरी से पता लगता है कि मई मास (१८८८) में ही मैंने वर्ण व्यवस्था पर एक लघु पुस्तक लिखनी आरम्भ करदी थी। १ जून की डायरी में लिखा है—"पै फ्लेट का थोड़ा सा भाग ही लिखा था कि आंधी चल पड़ी और काम बन्द करना पड़ा" यह वही लघु पुस्तक है जो पहले पहल मैंने उर्दू में छपवाकर मुद्रित की थी।

३ जून सं० १८८८ का दिन विशेष स्मरण के योग्य है। जो बड़ा मकान मैंने आर्य्य प्रतिनिधिसभा पंजाबको सेवा में अर्पण कर दिया है और जिसे बेच कर सभा ने २७ सहस्र मुद्रा गुरुकुल के स्थिर कोष में जमा कर दिए हैं, उसकी आधार शिला उसी दिन रक्खी गईथी। जिस भूमी पर अब वह मकान बना हुआहै वह मेरे श्वसुर श्रीराय शालिग्राम तथा उनके अन्य जातीय भाइयों की शामलात थी। सब ने प्रसन्नतापूर्वक हिब्बानामा लिखकर वह ६ कनाल का टुकड़ा मुझे दे दिया और स्वयम् खड़े होकर बुनियादें खुदवादीं। मेरे मकान की बुनियाद पड़ने से पहले सड़क की दूसरी ओर इसी भूमी के सामने समाज मन्दिर का कच्चा आङ्गन घिर चुका था तब अपने नैत्यिक कामों का अङ्ग मैंने यह भी बना लिया कि नित्य सायंकाल को अपनी नई इमारत का काम देखकर ही समाज मन्दिर में प्रवेश करता। सायंकाल की सन्ध्या भी प्रायः समाज मन्दिर में होती और नित्य नए भगवें-पोश साधुओं से भेंट होती। भारतवर्ष के आधे से अधिक साधू जालन्धर के सोडल आदि स्थानों में घूमने आते हैं। आर्य्य समाजमें सायंकाल की इसी ज्ञान-चर्चा ने मुझे भारतवर्षके आधे से अधिक साधुओं से परिचित करा दिया था।

एक दिन जून मास में नास्तिक रोड़े साधुओं का गुरु मुकदमा लेकर आया। उसकी हंसी उसी प्रकार की थी जैसी इङ्गलिस्तान के प्रधान कवि मिलटन ने खुदा के विपक्षीकी उपमा में लिखी है। अश्रद्धा की स्वयं मूर्त्ति होने के साथ ही यह मेलाराम किसी भी बुराईमें कम नहीं प्रतीत होता था। इसको मिलने के पश्चात् ही मुझे रोड़े साधुओं के आचरणों का अधिक हाल मालूम हुआ।

सं० १८८८ ई० की ग्रीष्म ऋतु में ही आर्य्य धर्म प्रचार के लिये हमारे कपूर्थला राजधानी पर धावे आरम्भ हुए। पहली बार ३० जून को, जब मैं आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिवेशन के लिए लाहौर जाने की तय्यारी कर रहा था, कपूर्थले से एक आर्य्य भाई व्याख्यानका निमन्त्रण मुझे देने आए। मैं लाहौर के स्थान में उन्हीं के साथ चल दिया और कपूरथले पहुंच कर चिरञ्जीलाल को बाज़ार में भेज दिया जहां उसने अपनी खड़ी बोली की बैतों द्वारा हलचल मचादी। चिरंजीव की बैतुलबाज़ी ने ही विज्ञापन का काम दिया जो दूसरी प्रातः (आदित्यवार) को व्याख्यान के लिए था।

दूसरे दिन (आदित्यवार) को प्रातःकाल ४ बजे से ही वर्षाका आरम्भ हुआ। मेरी डायरीमें लिखा है—"भाई देवराज मूसलाधार वर्षा में भीगते हुए ६॥बजे पहुंचे। कैसा महत् आत्मसमर्पण! ८ बजे के पश्चात् कुछ बादल उड़े। देवराज ने बड़ी जन उपस्थिति में नई सराय के स्थान में व्याख्यान दिया। मैंने मूर्त्ति पूजा विषय पर मास्टर पोल्होमल के साथ शास्त्रार्थ किया। ला० धूमामल की बग्घी में हम जालन्धर लौटे। जालन्धर समाज मन्दिर में मैंने ईश्वरोपासना के पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश की कथा की। फिर सुना कि लाहौर के अग्निहोत्री का शिष्य रामजवायामल आया है। कुछ आर्य्यभाइयों को लेकर उसे सुनने गया। यद्यपि उसका गुरु हमें गालियां देना ही अपना धर्म समझता है तथापि वह हमारा भाई है। जब हम पहुंचे, एक भी श्रोता न था। हमारे जाने पर रामजवाया ने ईश्वर-प्रार्थना की और हमीं लोगों को व्याख्यान सुनाया" मालूम होता है कि इस समय के देवगुरु भगवान् ने, जो उस समय परम गुरु की उपासना का ढोंग भी रचता था, आर्य्यसमाजको मसालेदार गालियां देनी आरम्भ कर दी थीं।

कपूर्थले में वैदिकधर्म प्रचार के बड़े भारी विरोधी रियासत के इकाउंटैंट जनरल मिश्र अछरूमल थे। ये महाशय वैसे सदाचारी थे किन्तु कट्टर सनातनी होनेके कारण आर्य्यसमाज के पूरे शत्रु थे। इनके मकान की दीवार पर यदि आर्य्यसमाज के अधिवेशन का विज्ञापन कोई लगाने जाते तो उसे मार कर भगा देते; यदि कभी आंख बचाकर लगा ही आता तो सारी दीवार को पानी से धुला डालते। २ अगस्त को एक आर्य्य भाई की माता के देहान्त पर मैं उसका अन्त्येष्टि संस्कार कराने फिर कपूर्थले गया। दीवान मिश्र अछरूमल ने फिर बड़ा विरोध किया। किन्तु श्मशान भूमी में मृतक की अर्थी के साथ चार पांच सौ के अनुमान से नरनारी पहुंच गए। इन पर संस्कार का बड़ा धार्मिक प्रभाव पड़ा और अन्तिम ईश्वर प्रार्थना तथा उपदेश को सुनकर कईयोंने वैदिकधर्म ग्रहण किया। इस वार दीवान अछरूमल ने कहला भेजा—"अब के तो मौत के कारण छोड़ दी फिर आवेंगे तो कैद करादूंगा।" इसी चैलेन्ज को स्वीकार करके मैं कई बार फिर कपूर्थले गया किन्तु दीवान साहेब की धमकी कार्य में कभी भी परिणत न हुई।

जुलाई के महीने में ही मेरे सब से ज्येष्ठ भ्राता का एक मुकद्दमा था। एक मुसलमान ने उन पर मस्जिद का कुछ स्थान अपने तबेले में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मिला लेनेका झूठा अभियोग चलाया। जब तवेला बन रहा था तो मुसलमान ने धमकी दी कि यदि उसको २००) न दिये गए तो वह धार्मिक भावों पर आक्रमण करने के दोष में दावा कर देगा। भाई-साहेब ने मेरी सम्मति पूछी। मैंने उन्हें कहा कि झूठे की धमकी की परवाह न कर के सत्य पर आरूढ़ रहना चाहिए। मेरी इस सम्मति का फल यह हुआ कि बेचारे दो तीन महीनों अभियोग में घसीटे फिरे। मैंने कानूनी पैरवी तो की किन्तु जब सनातनी ब्राह्मण मजिस्ट्रेट को मुसलमान ने धमकी दी कि वह उनपर हिन्दू का पक्षपात करने का दोष आरोपण करेगा तो मजिस्ट्रेट ने बिना सबूत के ही ३०) जुर्माना करदिया। डिविज़नल जज के यहां यही सिद्ध हुआ कि दावा झूठा है और वह भूमि भी भाईसाहेब ही के कब्जे में रही। किन्तु मुझे उन दिनों बड़ा मानसिक कष्ट रहा। मेरी डायरी से पता लगता है कि जून और जुलाई के महीनों में चित्त बड़ा अशान्त रहा, किन्तु २८ जुलाई को जब लाहौर गया तो उस बड़े नगर से अशान्ति के स्थान में शान्ति लाया। मेरी डायरीमें लिखा है—"पण्डित गुरुदत्त को मिला। मुक्ति विषय में उनके साथ बहुत बातचीत हुई। सर्व मुख्य नियमोंमें उनकी मेरे विचारोंके साथ सहमति है। दूसरे दिन आदित्यवार को लाहौर आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में सम्मिलित हुआ। उपस्थिति ३०० से अधिक थी। वहाँ से लाला सांई दास के मकान पर, पण्डित गुरुदत्त सहित गया, जहां सामाजिक नियमों पर परस्पर विचार होता रहा। प्यारे गुरुदत्त को मिलकर मुझे नया धार्मिक बल मिलता है।"

(मुंशीराम)

विदेशी ग्राहकोंको सूचना

विदेशी ग्राहकों की सेवा में निवेदन है कि उनका वर्ष समाप्त हो गया है अतः कृपा पूर्वक अपना मूल्य भेजदें। वहां वी०पी० नहीं जा सक्ता।

प्रबन्धकर्ता

—

श्रीमती गांधी की वीरता और जेल का प्रभाव

पाठकों को स्मरण होगा कि द० अफ़रीका के निःशस्त्र आन्दोलन में वहां की स्त्रियों ने बड़ी वीरता दिखलाई थी, उनमें श्रीमती गांधी सब की मुखिया थी। उनके विषय में मि० एंड्रूज़ माडर्न रिव्यू में लिखते हैं—

फोनैक्स में मैंने पहिली वार श्रीमती गांधी के दर्शन किए। श्रीमती गाँधी स्वयं निःशस्त्र आन्दोलन की आग में से गुज़री हैं और उन्हों ने सब से अधिक कष्ट सहे हैं। उन्हें एक २ करके अपने बच्चों को छोड़ना पड़ा और अन्त में अपने पति को भी जेल की यातना भोगते देखना पड़ा। उनका कष्ट यहीं भी समाप्त न हुआ अन्त में उन्हें कोमलांगी और मृदुहृदय नारियों को साथ लेकर स्वयं भी जेल की बड़ी यातना भोगनी पड़ी। मैंने उन्हें एक एक करके जेल से निकलते देखा है। उन सब में से श्रीमती गांधी को सबसे अधिक कष्ट उठाना पड़ा। साधारण समय में भी उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता और फलों को छोड़कर वे कुछ नहीं खा सक्तीं। जेल में यद्यपि वे वहां का भोजन न खा सक्तीं थीं तथापि डाक्टरने फल देने से इन्कार कर दिया। इससे वे बड़ी निर्बल होगईं और जब वे जेल से बाहिर आईं तब बुढ़ापे और क्षीणता के चिन्ह स्पष्ट दीखते थे। जेल से छूटकर भी उनका स्वास्थ्य सुधरा नहीं है।

जब मैं और श्रीयुत गांधी, प्रिटोरिया में मि० स्मट्स से झगड़े का निबटारा कर रहे थे तब श्री मती गांधी के स्वास्थ के बिषय में बड़े भयावने तार आने लगे। श्री युत गांधी बड़े चिन्तित थे तथापि अपनी जाति के लाभ को देखकर अपने काम पर डटे रहे। अन्त में मि० पोलक का तार आया कि श्री मती गांधी अपने पति को बुलाती हैं। एक सच्ची हिन्दू धर्मपत्नी का इस से क्या तात्पर्य है, यह मैं भलीभांति समझ गया। मैं श्रीयुत गांधी से कुछ न कहकर सीधा स्मट्स के पास चलागया और उसे यह समाचार सुनाया। उस समाचार से मि० स्मट्स का भी दिल हिलगया और उस समय उसने मानवी सहानुभूति का प्रमाण दिया। उस समय मज़दूरों की हड़ताल वाला मामला चल रहा था, उसने उसे एक ओर रखदिया और स्वयं जाकर मि० गांधी से मिला और शीघ्रता से शर्तों को निश्चित करडाला। जब हम फोनैक्स लौटे तब श्रीमती गांधी अपने पति की देखभाल में शीघ्र अच्छी होने लगीं और केपटौन में हमारे साथ आईं, जब मैं द० अफ्रीका से चला तो श्रीमती गांधी जहाज़ तक मुझे चढ़ाने आईं और उन्हों ने मेरे लिये प्रार्थना की। मेरी द० अफ्रीका की सारी यात्रा का यह एक ऐसा दृश्य है जो मुझे कभी न भूलेगा। अन्तिम समय जहाज़ पर से जाते समय उन्हों ने मुझे ये शब्द कहे—"हम सबको बड़ा शोक है; तुम्हारे जानेपर हमें बड़ा दुःख है; हमारा स्नेह तुम्हारे साथ है"

स्नेहमयी वीर हिन्दू माता! आपने विदेश में मेरी आपत्ति के समय जो स्नेह दिखलाया है, उसने मुझे भारत माता के साथ और अधिक बाँध दिया है। मैं अब अपनी मातृभूमि के प्रति उस स्नेहको कार्यमें परिणत करना चाहता हूं। आपकी प्रेममयी सहानुभूति और अगाध करुणा की छाया मेरे हृदय पर से कभी न मिटेगी। आपके स्नेह को प्राप्त करके मेरा जीवन और भी अधिक सम्पन्न श्रेष्ठ, और पवित्र होगया है।

सूचना

इस वर्ष का दूसरा अंक वी० पी० भेजा जाना चाहिये था। पर उसके समाप्त हो जाने के कारण कई ग्राहकों को पुराने अंक वी०पी० चले गए हैं। उन को सूचना दी जाती है कि वह अंक केवल वी० पी० के लिये ही था, ग्राहक वे नए वर्ष से ही समझे जावेंगे। उनके पास इस वर्ष का दूसरा अंक भी पहुंचा होगा। यदि किसी के पास न पहुंचा हो तो लिख कर मंगवा लें।

प्रबन्धकर्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य संसार

हिन्दीमें विश्वकोष

अंग्रेजी में "इन्साइक्लोपीडिया" नामक एक बृहत्कोष है, कहने में तो यह कोष है, पर वस्तुतः इसे ज्ञान का भंडार कहना चाहिये। इस विश्वकोषमें संस्कृत के पुराने कोषों की तरह केवल पर्याय वाची शब्द देकर ही बस नहीं किया गया पर प्रत्येक विषय पर सभी ज्ञातव्य बातों का समावेश किया गया है। यदि "भारत" का शब्द है तो उस पर "देशविशेषः" या व्युत्पत्ति लिखकर ही बस नहीं की गई, भारत वर्ष का भूगोल, इतिहास और उसके वर्तमान शासन आदि के विषय में सभी बातें लिखी गई हैं। पुरुषों के नाम आने पर जीवन चरित लिखे गए हैं और वैज्ञानिक नामों पर उस उस विज्ञानका विवरण दिया गया है। प्रत्येक विषय पर उस उस विषय के प्रौढ़ ज्ञाताओं से निबन्ध लिखवाए जाते हैं, इस लिये "इन्साइक्लोपीडिया" की प्रत्येक विषय पर सम्मतियां प्रामाणिक समझी जाती हैं।

बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत नगेन्द्रनाथ वसु ने अंग्रेज़ी इन्साइक्लोपीडिया के ढंग पर बंगला में विश्वकोष बनाया है। इस ग्रंथको बनाने में २७ वर्ष लगे। दो वर्ष हुए, यह विश्वकोष समाप्त हो गया। इसी उपलक्ष्य में बंगीय साहित्य परिषद् ने वसु महाशय को प्राच्य विद्या महार्णव की उपाधि दी थी। हिन्दी का सौभाग्य समझना चाहिये कि बंगला विश्वकोष को समाप्त करके अब वसु महाशय हिन्दी में विश्वकोष बनाने के लिये प्रवृत्त हुए हैं।

इस विषय में जो उन्होंने आरम्भिक निवेदन छपवाया है उसमें वे लिखते हैं

"अंगरेजी भाषा में जैसा 'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' नामक बृहद्ग्रंथ है, वंगभाषा में 'विश्वकोष' है। विश्वकोष के समान प्रकाण्ड ग्रंथ भारतीय किसी भाषामें नहीं है। २७ वर्ष के अविश्रान्त परिश्रम और धुरन्धर विद्वानोंकी सहायता से यह ग्रंथ सम्पूर्ण हुआ है। इस में प्रायः ७ लाख रुपये व्यय हुए। जिन्होंने कभी 'ब्रिटैनिका' का अवलोकन किया है वा उसकी उत्कृष्टताके सम्बन्धमें सुना है, उनसे इस विश्वकोषके सम्बन्धमें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। दोनों का विषय एक ही है। 'ब्रिटैनिका' में संसार के सभी ज्ञातव्य विषय लिपिबद्ध होनेपरभी भारतसम्बन्धी बहुतसे विषय, वैदिकयुगसे आधुनिक युग तक के विषय-विशेष करके उसमें नहीं हैं। इसलिये यह भारतके लिये उतना उपयोगी नहीं हो सकता जितना विलायतके लिये। परन्तु इस बङ्गला विश्वकोषमें भारतवर्ष के सभी जानने योग्य विषय सन्निविष्ट हैं। प्रत्येक विषय अनुसन्धानपूर्व्वक सप्रमाण लिखा गया है। अंग्रेज़ी 'ब्रिटैनिका' के आकारके २२ खण्डों में (Volumes) यह बृहद्ग्रंथ समाप्त हुआ है। इसकी देशी और विदेशी विद्वानों तथा समाचारपत्रों ने एक स्वरसे सराहना की है और इसे बङ्गभाषा का एक बहुमूल्य रत्न माना है।

'विश्वकोष' को सम्पूर्ण हुए आज प्रायः दो वर्ष हो गये। इसकी चर्चा हिन्दी संसार में भी हुई। एक वर्ष से अधिक हुआ, कितने ही हिन्दीसाहित्यानुरागी सज्जनों ने हमसे अनुरोध किया कि, इसका हिन्दीमें संस्करण भी अवश्य प्रकाशित होना चाहिये। उनका कथन है कि, हिन्दीमें ऐसे महाकोषकी बड़ी आवश्यकता है। इसके प्रकाशित होनेसे हिन्दीभाषियों का बहुत उपकार होगा।

जिस हिन्दी भाषाका प्रचार और विस्तार भारतवर्षमें उत्तरोत्तर बढ़रहाहै जिसे राष्ट्रभाषा बनानेका उद्योगहोरहाहै-ईश्वर करे यह प्रयास सफल हो, उस भाषा में—भारतकी भावी राष्ट्रभाषामें—ऐसे ग्रंथ का न होना बड़े दुःख और लज्जाका विषय है। यद्यपि बहुत दिनोंसे हमारी प्रबल इच्छा थी कि, हम 'हिन्दी विश्वकोष' के प्रकाशनमें हाथ लगावें, पर कई कारणोंसे हमारी यह इच्छा सफल नहीं हुई—हम हिन्दी रसिकों की आज्ञा का पालन नहीं करसके। परन्तु अब बार२ हिन्दी-प्रेमियोंसे अनुरुद्ध होनेपर; हमने इस बहु परिश्रम और विपुल व्ययसाध्य कार्यमें हाथ लगानेका निश्चय कियाहै।

इस हिन्दी विश्वकोषके प्रकाशनमें भी वही सात लाख रुपये व्यय होंगे। कितनेही सज्जन ऐसा अनुमान कर सकते हैं कि, हिन्दी विश्वकोष बंगला विश्वकोष का भाषान्तरमात्र होगा, पर यह बात नहीं है। इसमें संदेह नहीं कि, ऐसा करने से व्यय अवश्यही कम होता, पर परिणाम यह होता कि, हिन्दी—साहित्य तथा नवीन तत्त्वों के सम्बन्धके बहुतसे विषय छूटजाते। क्योंकि बंगलाके समान हिन्दी का भी विराट् साहित्य है। उस विशाल साहित्यको मथकर नये ढंगसे महाकोष की रचना करनी होगी। इसके अतिरिक्त बंगला विश्वकोषके सम्पूर्ण होने में २७ वर्ष लगेथे। यदि यह कहाजाय कि, इन सत्ताईस वर्षोंमें वैज्ञानिक और ऐतिहासिक जगत का कायापलट होगया तो इसमेंभी अत्युक्ति न होगी। आजसे दश वर्ष पहिले विद्वानों ने जिसे वैज्ञानिक वा ऐतिहासिक सत्य निश्चय कियाथा, आज नवीन अनुसन्धान और गवेषणा से वह भ्रान्त सिद्ध हुआ है। इसलिये हमलोगों को सर्व्वसम्मत वैज्ञानिक और ऐतिहासिक सिद्धान्तों को लेना पड़ेगा—बिलकुल नवीन प्रणालीसे विषयोंकी योजना करनी पड़ेगी। सारांश यह कि—हिन्दी विश्वकोष स्वतन्त्र रूपसे लिखा जायगा। इसमें बहुतसे नवीन विषयों की योजना के साथ साथ वैज्ञानिक, ऐतिहासिक शोध सम्बन्धी नवीन तत्त्व प्रकाशित किये जायंगे। इस लिये यह बंगला विश्वकोषका भाषान्तर नहीं, किन्तु हिन्दी संस्करण कहा जा सकता है।"

इस हिन्दी विश्वकोष का पहिलाखंड जो नमूने के तौर पर छपा है, वह हमें मिलाहै, उसे देखकर हम कह सक्ते हैं कि अंग्रेजी और बंगलासे यह विश्वकोष किसी भी प्रकार कम न होगा। इस ३२ पृष्ठ के खंड में "अ" से लेकर "अकाल" तक अक्षर हैं। इसमें "अकबर" शब्द पर जो ऐतिहासिक निबन्ध लिखा गया है वह बड़ाही महत्त्वपूर्णहै। यह विश्वकोष सचित्र होगा, पहिलेखंड में अकबर का चित्र दियागया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसमें सन्देह नहीं कि यह विश्वकोष हिन्दी के गौरव का कारण होगा पर साथ ही व्यय भी बहुत अधिक होगा। हिन्दी विश्वकोष के प्रकाशक इस व्यय को दान मांगकर पूरा करना नहीं चाहते पर वे दो हज़ार ग्राहक मांगते हैं। यह कोष प्रतिमास डिमाई चारपेजी दो खंड, अर्थात् ६४ पृष्ठों में सचित्र प्रकाशित होगा प्रतिखंड का मूल्य ।=) होगा; अग्रिम ४) देनेसे १२ खंड मिलसकेंगे। छपाई लिखाई की उत्तमता और परिश्रमको देखकर यह मूल्य कुछभी नहींहै। हमें पूर्ण आशा है कि हिन्दी भाषाभाषी हिन्दीविश्वकोषके ग्राहक बनकर प्रकाशकोंका उत्साह बढ़ावेंगे और एक उपयोगी काम की पूर्ति में सहायता देकर यश के भागी बनेंगे।

गुरुकुल समाचार

गङ्गा

गङ्गा का जल प्रतिदिन बढ़ रहा है। धाराओं पर जो पुल बने हुए हैं, वे दिन रात डांवाडोल होरहे हैं। ठेकेदार के मल्लाह रस्सा खोलने के लिये तय्यार बैठे रहते हैं। थोड़े ही दिनों में गङ्गा पर किश्ती और तमेड़ चलने लगेगी। गर्मियों और बरसात के लिये अनाज का प्रबन्ध होरहा है। गेहूं और दाल आदि की पर्याप्त राशी अभी लेली गई है, ताकि फिर पीछे कठिनता न हो।

औषधालय समाचार

नेमोनिया के तीनों रोगी अब भले चंगे होकर अपने पठन पाठनमें लगरहे हैं। उत्सव का एक फल शेष है, आशा है उससे भी शीघ्र ही छुटकारा हो जायगा। गत दो वर्षों में भी किसी न किसी रीति पर ख़सरा इन्हीं दिनों में आजाता रहा है। इस समय दो ब्रह्मचारियों को उसके साथ होने वाला ज्वर है। शेष राज़ी हैं। ख़सरे के सब रोगियों को आश्रम से दूर के टिनशैडों में रखा गया है, जिस में बीमारी फैलने न पावे।

गर्मी और उसके प्रभाव

वर्ष के इतने पूर्व भाग में ऐसी प्रखर गर्मी किसीने सोचा ही हुआ करती है। मई आधा नहीं हुआ, और गर्मी इतनी बढ़गई है, कि आषाढ़ याद आगया है। दोपहर के समय तो कोई कार्य करना भी कठिन साही प्रतीत होता है दरवाज़ा और खिड़कियां बन्द रखने से पसीना चूता है और खोलने से गर्म वायुका सामना होता है। एक ओर नुकीले पत्थर हैं तो दूसरी ओर कंटीली झाड़ियां। ऐसी अवस्था में दोपहर या सायंकाल के समय पठन पाठन असम्भव समझ कर विद्यालय और महाविद्यालय की पढ़ाई प्रातःकाल ही समाप्त करदी जाती है। सायंकाल के समय की खेलें भी रोकदी गई हैं। अब खेलों के स्थान में गङ्गा जल में तैरने का व्यायाम होता है। आजकल के लिये भूमिकी खेल से जल की खेल बहुत उत्तम होती है, क्योंकि जहां एक ओर वह शारीरिक व्यायाम का कार्य देती है, वहां साथ ही आनन्ददायक भी होती है।

सँस्कृत सम्भाषण

गर्मी के कारण रात की पढ़ाई भी रोकदी गई है। उसके स्थान में अब संस्कृत सम्भाषण में विशेष ध्यान दिया जाता है। भोजनके उपरान्त विद्यालय के ब्रह्मचारी विश्राम भी करते हैं और साथ २ अपनी भाषण शक्ति को भी बढ़ाते हैं। महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने इस कार्य का भार अपने ऊपर लिया है। महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों से इस समय विद्यालय की पढ़ाई में भी बहुत सहायता मिलरही है। जो एकता परस्पर साहाय्यका शुद्ध भाव इस समय गुरुकुल के सब अवयवों में चलरहा है, यदि वह सदा स्थिर रहे, तो निःसन्देह गुरुकुल अब से भी कई गुण अधिक उन्नति कर सकता है। ईश्वर की कृपा और भविष्यत् में विश्वास रखने वालों के लिये ऐसे समयों में "यदि" शब्द का लगाना अस्वाभाविक सा प्रतीत होगा, यह केवल मानुषिकनिर्बलता ही है जो हमें अविश्वास या शङ्का के भंवर में लुभाया करती है। गुरुकुल विश्वविद्यालयका भविष्य अपने पुत्रों–विद्यालंकारों और वेदालंकारों के ऊपर ही आश्रित है। उन्हीं के कन्धों पर इसका भार है, उन्हीं के उत्साह और प्रेम पर उसकी स्थिति हो सकती है। पूरी आशा रखनीचाहिये कि वे सब अपने कर्तव्य को समझेंगे और जहां वे जन्म देने वाली माता भारत भूमि की सेवा में अपने आप को अर्पण करेंगे, वहां साथ ही विद्या और आचार के देने वाली गुरुकुल माता के चरणों में अपने सिरों की बलि देने में भी आगा पीछा न करेंगे।

विस्तृत वैदिक पाठविधि

इस वर्ष एकादश श्रेणी के ब्र० विद्यासागर ने विस्तृत वैदिक पाठ विधि के अनुसार पढ़ना आरम्भ किया है। इस ब्रह्मचारी ने साथ ही नवीन न्याय की गुण गुण परीक्षा के लिये उसका निजी तौरपर पढ़ना भी आरम्भ किया है। यह आवश्यक भी है। विद्याके सुन्दर उद्यान में करीर और खैर के जो पेड़ उग आये हैं, उन के पास पहुंचे विना उद्यान को उनसे रहित नहीं किया जा सकता। इसलिये आर्य समाज को ऐसे विद्वानों की बहुत आवश्यकता है जो अपने धर्म तथा सम्प्रदाय के सब हथियारों से सज्जित होने के साथ २ प्रतिपक्षियों के विचारों से भी अनभिज्ञ न हों।

उपदेशक महाविद्यालय

उपदेशक महाविद्यालय के स्थापित होने में अब सन्देह नहीं रहा। गत सप्ताह प्रचारक के पाठक महाविद्यालय की पाठविधि और उसके सम्बन्ध की और बातें भी जान चुके हैं। १६ जून को महाविद्यालय का उद्घाटन होगा। उस से पहले २ जो आर्यसमाज या जो महानुभाव किन्हीं छात्रों को पढ़ाना चाहें वे पत्र व्यवहार करके सब कुछ तय करलें उसके पीछे वर्ष भर फिर नये विद्यार्थी न लिये जायंगे। गुरुकुल विश्वविद्यालय को इस भागकी बड़ी भारी आवश्यकता है, और लोग इसे अनुभव भी कर रहे हैं। अच्छे और प्रेमी उपदेशकों का अभाव इस समय आर्यसमाज के कार्य में बाधारूप होरहा है। जो आर्य पुरुष इस अभाव को अनुभव करते हैं, उनके जागने का यही समय है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नौमि भारतम्

(पं० श्रीधर पाठक कृत आर्य गीता से)
(गतांक से आगे)
(५)

मनु आदि नृपति नृवर्य जनु-थल,
विनय-नय-अनुसासितम्
बल-वीर्य-बुद्धि विकास-बर्द्धित
आर्यकुल अधिवासितम्
अति उच्च-भाव-प्रभाव प्रकटित-
प्रेम-मुनि-मन प्रेयसम्
सत-धर्म-पर्म-पवित्र थल, सत-
कर्म कृत-जग-श्रेयसम्
सुभ-सिल्प-काव्य-कलादि कौसल-
पृथिवि-प्रथम-प्रकल्पितम्
नर जन्म जग उद्देश्य प्रकटित
प्रथम परम प्रगल्भितम्
अति अनघ-चरित, अनन्य,अनुपम,
अतुल,अमर-अदूषनम्
इति अन्य अन्य अगन्य-गुन-गुन-
धन्य धरनि विभूषिनम् २५
नित पुन्य दर्सन हेतु पुनिपुनि
भुवन-त्रय-अभिलासितम्
अति धन्य लहि निज जन्म श्रीधर-
हृदय-प्रेम-प्रकासितम् २६

विज्ञापन

प्रिंस विस्मार्क
का
सचित्र जीवनचरित
(छप रहा है)
ले० इन्द्र वेदालंकार

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े २ को कैसे पददलित किया, और फिर किन २ शक्तियों ने उस देश में जागृति की, इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तार पूर्वक वर्णन है। दूसरे भाग में साहस की मूर्ति देश भक्ति के पुतले नीति के गुरु और जर्मनी के जन्म दाता प्रिन्स विस्मार्क का आश्चर्य कारी चरित चित्रित किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्हों ने पढ़ा है,उन के लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वालों को रियायती कीमत पर पुस्तक मिलेगी।

सद्धर्म्म प्रचारक

लाहौरमें सेक्रडहार्ट नामक रोमन कैथोलक ईसाइयों का एक स्कूल है। उसमें कुछ प्रतिष्ठित हिन्दुओंकी लड़कियां पढ़ती हैं। उनमें ब्रह्मसमाजी, आर्यसमाजी, सनातनी सभी तरहके लोगहैं। ईसाईधर्म की महिमा प्रतिदिन सुनते सुनते उनमें से कुछ लड़कियां ईसाई होनेको तय्यार होगई थीं पर पहिले पता लगजाने से वे ईसाई होने से बचगईं।

इस समाचार ने पंजाब में बड़ी हलचल मचादी। इस समाचार को लेकर कई तरह की टीका टिप्पणियां होरही हैं। कोई उन माता पिताओं को दोष देते हैं जो अपनी लड़कियों को ईसाई स्कूलोंमें पढ़ने भेजते हैं। उधर माता पिता का कहना है कि हमारे साथ स्कूलके संचालकों ने विश्वासघात किया है। हमें यह वचन दियागया था कि इस पाठशालामें लौकिक शिक्षाके अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा न दीजायगी। उधर संचालकों का कथन है कि हमने विशेष रीतिसे कोई धार्मिक शिक्षा नहींदी। यह केवल हमारे निःस्वार्थ जीवनों का प्रभाव है कि कुछ लड़कियां ईसाई होनेको तय्यार होगईहैं। हम यह कहे विना नहीं रहसक्ते कि किसीके धार्मिक विश्वासों को बदल सकनेके लिये जीवन प्रभावसे अधिक प्रयत्न की आवश्यकता है। दूसरी ओर माता पिताभी सर्वथा निर्दोष नहीं कहे जासक्ते। उन्हें समझ रखना चाहिये था कि एक ऐसे विद्यालय में, जिसका सम्बन्ध विशेष सम्प्रदायके साथ हो। उस धर्मका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहसक्ता। विषेष सम्प्रदायके साथ सम्बन्ध के कारण वहां का वायु मंडल ही ऐसा होजाता है कि उस प्रभाव से बचे रहना या बचाए रखना कठिन है।

उधर कई लोगों ने इस घटना को स्त्री शिक्षा के विरोध का ही साधन बना लिया है। हम नहीं समझ सकते कि इस घटना का यह परिणाम कैसे हो सक्ता है। इस घटना का साधारण शिक्षा के प्रश्न के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। जो लोग अपने लड़के लड़कियों को ईसाई स्कूलों में शिक्षा देते हैं, उन्हें यह घटना शिक्षा दे सक्ती है, पर इस से बढ़ कर इसके सहारे स्त्री शिक्षा के प्रश्न पर ही आघात करना मूर्खता है। कई लोगों का कथन है कि शिक्षित होजाने से स्त्रियां न घर का काम काम करेंगी और न पति के कहने के अनुसार ही चलेंगी। यह युक्ति ठीक वही है जो अमरीका के दास प्रथा के पक्षपाती दासों के विषय में दिया करते थे। उनका कथन था कि दासों को पढ़ा लिखा देने से वे हाथ का काम अच्छी तरह न कर सकेंगे और नाहीं वे हमारे कहने के अनुसार चलेंगे। इस में सन्देह नहीं कि शिक्षित होजाने से मज़दूर लोग अब उन अत्याचारों को सहन नहीं करते जिन्हें उनके मालिक करने के आदी हो गए थे। पर मनुष्य समाज को इससे जो लाभ हुआ है उसे कौन छिपा सक्ता है। क्या अनगिने मालिकों की स्वार्थ सिद्धि के लिये अब कोई दास प्रथा का पोषण करेगा? स्त्री शिक्षा के विषय में भी यही बात है। शिक्षित होजाने से स्त्रियां चुप चाप पुरुषों के अत्याचारों को सहन न करेंगी, इसमें सन्देह नहीं। पर उस से मनुष्य समाज को जो समूहरूपेण लाभ होगा, उसे कोई छिपा नहीं सकता।

हमें यह देख कर हर्ष हुआ है कि पंजाब के विचार शील लोगों ने ऐसी निरर्थक बातों में समय न गंवा कर इस विषय पर क्रियात्मक रीति से विचार प्रारम्भ किया है। ईसाई प्रभाव से बचाने का सब से अच्छा प्रकार यही है कि कन्याओं को ऐसी पाठशालाओं में भेजा जावे जहां उन्हें और विद्याओं के साथ साथ अपने धर्म की शिक्षा दी जावे। पंजाब के सौभाग्य से उसे कन्या महाविद्यालय के रूप में एक ऐसा विद्यालय मिला हुआ है जिसमें स्त्री शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध है और जो कमी है वह थोड़े परिश्रम से ही पूरी की जासकती है। हमें आशा है कि कन्या महाविद्यालय के संचालक इस अवसर से पूरा लाभ उठाने का यत्न करेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीयुत गांधी का वीर पुत्र—श्रीयुत गांधी और गांधी की धर्म पत्नी ने जिस वीरता से जेल के कष्ट सहे हैं, वह किसी से छिपा नहीं है। आज हमने किसी दूसरे स्थान में इस का ज़िक्र किया है। पर यह बहुत कम लोगों को मालूम है कि उनका पुत्र भी माता पिता के अनुरूप है। द० आफ्रीका से लौट कर दो मई को मि० एंड्रूज़ गुरुकुल गए थे। वहां उन्हों ने एक व्याख्यान में गांधी के पुत्र की धीरता और साहस का वर्णन किया। मि० एंड्रूज़ ने कहा कि द० अफ्रिका में अपने देश के लिये कई युवक भी कैद हुए थे जिनकी आयु १६ से २० तक थी। उन में श्रीयुत गांधी के पुत्र मणिलाल थे। कैद से छूटने पर गांधी ने मणिलाल को मेरे सुपुर्द कर दिया और कहा कि इसे अपना पुत्र समझो। वह मेरे साथ रहा और मेरे सब काम करता रहा। वह प्रातःकाल आकर मुझे प्रणाम करता, और मेरे बिछौने को झाड़कर बिछाता था। बार बार मना करने पर भी वह सदा ऐसा करता रहा। मैं नहीं कह सक्ता कि उसका मेरे साथ ऐसा प्रेम क्यों होगया। मणिलाल जब जेल में था तो वह और उसके साथी कुली कहाते थे और वहां उन्हें गन्दे बर्तनों में खाना दिया जाता था और हाथकी अंजली से पानी पीना पड़ता था। वे सब जेल के अध्यक्ष के पास गए और शिकायत की। उन्होंने कहा कि हमसे अच्छा बर्ताव किया जाना चाहिये नहीं तो हम चीफ़ मैजिसट्रेट से शिकायत करेंगे। मणिलाल ने कहा कि यदि हमारी सुनवाई न हुई तो हम चीफ मजिस्ट्रेट से अपील करेंगे यदि वहां भी दाल न गली तो चीफमिन्स्टर से फरयाद करेंगे। सुपरेन्टन्डेन्ट जेलने कहा कि मुझे यहां पूरा अधिकार है। मणिलाल ने कहा बहुत अच्छा। हम यहां उपवास करेंगे और जब तक जेल के नियमानुसार हम से वर्ताव न होगा हम भोजन नहीं करेंगे। जब मैं साहेब सुप्रेन्टन्डेन्ट से मिलने गया तो वह वहां नहीं था मैंने चीफवार्डर को मिलने का यत्न किया मेरे साथ एक और भारतवासी था। हमारे साथ बहुत बुरा सलूक किया जो उनको नहीं करना चाहिये था। परन्तु मैंने ऐसे सलूक को भी अपने हिन्दुस्तानी भाइयों के लिये सहन किया। मैंने चीफ़ वार्डर से पूछा कि क्या मैं कैदियों से मिल सकता हूं। उसने नमें उत्तर दिया फिर मैंने पूछा कि क्या मैं आप को कोई संदेशा कह सकता हूं। उत्तर मिला नहीं फिर मैंने विशेष बल देकर कहा कि यदि इन में से कोई मनुष्य उपवास करने से मरगया तो तुमको अपराधी ठहराने के लिये सब से प्रथम साक्षी मैं दूंगा। यह उपवास एक दो दिन नहीं चार पांच दिन तक ज़ारी रहा। इस उपवास की दशा में इन छः कैदियों को बाहर कड़ी धूप में पत्थर कूटने का काम करना पड़ता था। पांचवे वा छठे दिन साहेब सुपरेन्टन्डेन्ट को होश आई और इसने इन छः युवकों को बुलाया और प्रतिज्ञा की कि अब तुम्हारे साथ अच्छा सलूक किया जायगा; अब तुम जाओ और भोजन करो। मणिलाल ने उत्तर दिया कि यह प्रतिज्ञा यदि इन छःसौ हिन्दुस्तानी कैदियोंके लिये करें जो इस समय जेल में हैं तब हम भोजन करेंगे। सुपरेन्टन्डेन्ट ने प्रतिज्ञा की कि सब हिन्दुस्तानी कैदियों के साथ अच्छा सलूक किया जायगा इस के पश्चात् अच्छा सलूक होता रहा हम सब को इसी प्रकार दृढ़ता से काम करना चाहिये जिस प्रकार मणिलाल तथा उसके दूसरे साथियों ने किया। हमको ईश्वर पर भरोसा करना चाहिये और केवल ईश्वर पर ही। मैं प्रसन्नता पूर्वक श्रीमान् मोहन दास गांधी का संदेशा आप को सुनाने आया हूं। उन्होंने कहा है कि ब्रह्मचारियों को कहदेना कि इस के हृदय में तुम्हारे इस प्रीति के कार्य्य की बड़ी भारी प्रतिष्ठा है जो उन्हों ने बाहर जा कर कुलियों का काम करके दिखाई है और मेरे हृदय में इस के लिये प्रतिष्ठा तथा भक्ति दिन प्रति दिन बढ़ रही है। हमको हर समय परमात्मा पर भरोसा रखना चाहिये और हमको सच्चे दिल से अपनी प्रार्थना में इसकी याद करनी चाहिये। इसी पर भरोसा करो जैसा कि मिस्टर गांधी कहा करते थे कि इसीपर भरोसा करने से सब कुछ मिल सकता है।"

द० अफ्रीकासे गुरुकुलके ब्रह्मचारियों को संदेशा—पाठकों को स्मरण होगा कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने घी दूध छोड़कर और मज़दूरी करके द० अफ्रीका निवासी भाइयों की सहायता की थी। इसके प्रत्युत्तर में श्रीयुत गांधीके विद्यालय के विद्यार्थियों ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को पत्र भेजा है जिसमें उन्होंने लिखा है कि "हम लोग आपका उपकार मानते हैं कि आपने हमारे लिये दुःख उठाकर, हमें सहायता भेजी है। हमने मि० पियर्सन और मि० एंड्रूज़ से प्रशंसा सुनी है कि आपने घी दूध छोड़कर हमारी सहायता की है" हिन्दी प्रेमियों को यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि यह पत्र हिन्दी में भेजा गया है। श्रीयुत गांधी ने फ़ौनैक्स में एक स्कूल खोला हुआ है और उसमें और विषयों के साथ हिन्दी का पढ़ना प्रत्येक विद्यार्थीके लिये आवश्यक रक्खा है।

प्रतापगढ़की रानी का देहांत—यह सुनकर किस देश प्रेमीको दुःख न होगा कि गत २६ अप्रैलको प्रतापगढ़ की रानी का देहान्त होगया। प्रतापगढ़ की रानी उन स्त्रियोंमें से थी जिन्हें सचमुच सुशिक्षिता कहा जा सकता है। वे अंग्रेज़ी अच्छी तरह जानतीं थीं और हिन्दी में कविता करतीथीं। वे अपने पतिके साथ विलायत भी हो आईथीं और महाराणी इलैग्ज़ैन्ड्रा के साथ उनका पत्र व्यवहार था। स्त्री शिक्षा और स्त्री सुधार की वे बड़ी पक्षपातिनीथीं। अपने कस्बेमें उन्होंने एक कन्याओं की पाठशाला और अस्पताल चला रक्खा था। वे गुरुकुलसे बड़ा प्रेम रखतीथीं। उनकी इच्छा एक कन्या गुरुकुल खोलने की भी थी। दो वर्ष हुए, उन्होंने महात्मा मुंशीराम जी से ऐसी इच्छा प्रकट की थी। गत तीन चार वर्षों से उनका स्वास्थ अच्छा न रहता था। यदि परमात्मा उन्हें अच्छा स्वास्थ देता तो अवश्यही वे अपनी इच्छा को कार्य में परिणत कर जातीं। वे मृत्युसे पहिले अपनी सारी सम्पत्ति सार्वजनिक संस्थाओं को बांटगई हैं। और संस्थाओं के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साथ वे प्रतिवर्ष ६००) गुरुकुल को देने के लिये लिखगई हैं ।

सरकारी सहायता का परिणाम— मि० गोडले पंजाब शिक्षाविभाग के अध्यक्ष हैं। १ मई को उन्होंने इस्लामिया कालिज के विद्यार्थियों को पारितोषिक बांटा था। उस समय उन्हों ने जो वक्तृतादी उसमें एक बड़े महत्त्व की बात कही। उन्होंने कहा कि "कई लोगों का विचार है कि जातीय विद्यालयों में सरकारी सहायता लेलेने से, उसपर जाति का बहुत ही थोड़ा अधिकार रह जाता है और विद्यालय के अधिकारी स्वयं कोई काम नहीं कर सक्ते। पर यह विचार भ्रम मूलक है। सरकारी सहायता लेने में ऐसा कोई डर नहीं है। सरकार यह अवश्यही देखती है कि उस के दिए हुए धन का दुरुपयोग न किया जाय पर इससे अधिक हस्ताक्षेप करने की या जाति के अधिकार को कम करने की सरकार की सर्वथा इच्छा नहीं है।" अबतक का विद्यालयों का अनुभव सर्वथा इसके विरुद्ध है पर यदि अब सरकार इसी नीति का अवलम्बन करे तो अच्छी बात है।

आश्रमों पर सरकारी लगाम— भारतवर्ष में जब कभी एक आध राजनैतिक अभियोग चलता है तो हमारे कृपालु गोरे पत्र अराजकता की दुहाई देकर दर्जनों प्रतीकार सुझाने लगते हैं। कभी वे कानून को कठोर करने की सलाह देते हैं और कभी वे शिक्षा को ज़ंजीरों से जकड़ने का सुर अलापते हैं। देहली का राजनैतिक अभियोग भी कैसे ख़ाली जासक्ता था। इस अभियोग को लक्ष्य में रखकर इंगलिशमैन ने अपने उपजाऊ दिमाग़ से एक नया उपाय ढूंढ निकाला है। उसका कथन है कि भारतवर्ष में जो धर्म व आश्रम हैं उनको सरकारी निरीक्षण के नीचे रखना चाहिये क्योंकि इन्हीं में अराजकता की शिक्षा दीजाती है। लेखक ने बड़ी कृपा पूर्वक हरिद्वार के गुरुकुल और रवीन्द्र के शान्ति निकेतन को इस क्षेत्र से बाहिर कर दिया है पर साथ ही सम्मति दी है कि इन विद्यालयों के संचालकों को स्वयंही सरकारी देख भाल करवा लेनी चाहिये ताकि उनपर कोई सन्देह न रह सके। इंगलिश मैन का यह प्रस्ताव जितनाही भ्रम मूलक है उतनाही शरारत से पूर्ण है। अब तक जितने राजनैतिक अभियोग हुए हैं उनमें और विशेषतः देहली के अभियोग में सरकारी गवाह दीनानाथ तक ने किसी ऐसे आश्रम का वर्णन नहीं किया जहाँ अराजकता की शिक्षा दीगई थी। यदि सरकारी गवाह की साक्षी को स्वीकार भी कर लिया जावे तो भी कहना पड़ेगा कि राज विद्रोह की सारी शिक्षा उन्हीं स्कूलों और कालिजों में दी जाती है जो सरकार के निरीक्षण में ही नहीं, किन्तु पूरी तरह से सरकार के अधीन हैं। सरकारी गवाह के अनुसार अवधविहारी ने जब लारन्स गार्डन में बम रक्खा था उस समय वह सरकारी ट्रेनिंग कालिज में पढ़ता था। यदि सरकारी निरीक्षण अपने विद्यालयों में राज विद्रोह के प्रसार को नहीं रोक सक्ता तो क्या प्रमाण है कि वह निरीक्षण आश्रमों और स्वाधीन विद्यालयों में राजविद्रोह को (यदि वहां राज विद्रोह को मान भी लिया जावे) रोक सकेगा। हम समझते हैं कि इंगलिशमैन के इस बेहूदा प्रस्ताव के साथ सरकार वही व्यवहार करेगी जिस का यह अधिकारी है।

एक और बाला की हत्या— लोगों का विचार था कि कुमारी स्नेहलता की मृत्यु बंगाल के हिन्दुओं की आंखें खोल देगी और दहेज प्रथा के दूर होने में अब देर न लगेगी पर स्नेहलता की अनुयायिनी कई कन्याएं हो चुकी हैं और अभीतक जागृती के कुछ चिन्ह दिखलाई नहीं देते। दो चार दिन में एक आध घटना सुनने में आही जाती है। अन्तिम घटना ढाका से आई है। शुभा बोला १५ वर्ष की ब्राह्मण की एक लड़की थी। अभी दो मास हुए, उसका विवाह हुआ था। कन्या की विधवा माता ने अपनी लड़की के विवाह पर सभी कुछ ख़र्च कर दिया था। द्विरागमन के समय लड़की के पति और उसके भाई ने ५००) और मांगे। लड़की के पति का भाई आनरेरी मैजिस्ट्रेट है। लड़की के ससुराल से चिट्ठी आई कि यदि २००) न दिए जावेंगे तो द्विरागमन न होगा और लड़की अपने पतिके पास न जासकेगी। परन्तु लड़कीकी माता बड़ी निर्धन थी और सब कुछ विवाह पर ख़र्च कर चुकी थी। वह २००) न दे सक्ती थी। लड़की ने स्वयं अपनी माता को चिट्ठी लिखी कि यदि २००) न दिए गए तो मेरा जीवन नष्ट होजायगा। शुभा बाला ने अन्तिम पत्र लिखते हुए लिखा था कि रुपये न देने से मेरे पति के घर में मेरा जीवन दुःख दायी होगया है। शुभाबाला के पति ने स्वयं भी रुपये मांगने के लिये चिट्ठी लिखी। इस सब कष्ट से व्याकुल होकर शुभाबाला ने अपने कपड़ों पर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगा ली। हम नहीं जानते कि इस विषैली प्रथा को उड़ाने के लिये अभी कितने और बलिदानों की आवश्यकता पड़ेगी।

रास विहारी बोस नहीं पकड़ा गया— पाठकों को स्मरण होगा कि देहली के राजनैतिक अभियोग में रास विहारी बोस प्रधान अपराधी कहा जाता है पर पुलीस उसे अभी पकड़ नहीं सकी है। कुछ दिन हुए समाचार आया था कि रावलपिंडी की पुलीस ने मेले में एक फ़कीर को पकड़ा है जिसपर रासविहारी बोस होने का सन्देह किया जाता है। फ़कीर से प्रश्न करने पर उसने अपने आप को नाभे का बतलाया और अपने गुरु का नाम भी लिया, उसे पुलीस ने हवालात में रक्खा। अब समाचार आया है कि पुलीस इस गिरिफ्तारी को कुछ अधिक महत्त्व नहीं देती क्योंकि फ़कीर का हुलिया रासविहारी के साथ नहीं मिलता। नहीं जानते, अभी कितने निरपराधी पुरुषोंको पुलिस रासविहारी के सन्देह में हवालात की सैर करावेगी।

गोखले का स्वास्थ्य— हमारे पाठकों को यह सुनकर हर्ष होगा कि देश भक्त गोपाल कृष्ण गोखले का स्वास्थ्य अब पहिले से अच्छा है परन्तु बहु मूत्र रोग के चिन्ह फिर से दीख पड़ने के कारण वे ३० अप्रैल को बिचौ नगर में बने नये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं। वहां उन्हें पहिले भी तीन वार अधिक लाभ हो चुका है। वे २० मई को लौटेंगे। ——

काबुलियों का अत्याचार—कलकत्ता नगर में और उसके आसपास काबलियों की गड़ बड़ ने अंधेर मचा रखा है, प्रजा की शान्ति को नष्ट करने वाली अनेक घटनाएं प्रायः होती रहती हैं। पुलिस के होते हुए भी वे अपने ऋणी पर अत्याचार करते हैं। काबली गुप्त रीति से अफीम और कोकेनका व्यापार भी करते हैं और कुछ लोग नगर के बदमाशोंके साथ मिलगए हैं। गत सप्ताह एक हिन्दू कन्या ने आत्म हत्या करली कारण यह कि उस के पति का काबली ऋण दाताओं ने निरन्तर अपमान किया था यह अवस्था काबलियों को फिर से लाठियां मिलजाने और उनकी गिरफ्तारी में न्यूनता होने के कारण है। आशा है सरकार शीघ्र सुप्रबन्ध करेगी।

——

रेव० ऐंड्रूज़—रेवरेण्ड एन्ड्रूज़ ने सेन्ट स्टीफ़न्स कालज देहली में विलायत से लौट कर अपना कार्य्य आरम्भ कर दिया है। कहा जाता है कि आप जून मास में बोलपुर वाले महर्षि रावेन्द्र नाथ टागोर के विद्यालय में कार्य्य करेंगे, परन्तु आप मिशन कालेज देहली से सर्वथा सम्बन्ध नहीं छोड़ेंगे। बोलपुर विद्यालय की दीर्घ अनध्याय के दिनों में मिशन कालज में अङ्गरेज़ी तथा इतिहास पढ़ाएंगे और वेतन कुछ न लेंगे।

—

सामाजिक समाचार

वार्षिकोत्सव

कासगंज आर्यकुमार सभा २४, २५, २६, जून १९१४ई०

आर्यसमाज पठान कोट २,३,४ जून १९१४ई०

——

तिथि परिवर्तन—आर्यसमाज अमृत्सर के वार्षिकोत्सव की तिथि अनेक कारणों से २४, २५, २६ अप्रैल के स्थान में १५, १६, १७ मई नियत की गई है।

——

भटिण्डा आर्यसमाज में शुद्धि।

२२ अप्रल को भटिण्डा आर्यसमाज ने एक मुसलमान को सपरिवार शुद्ध किया, पुरुष का नाम धर्मसिंह और स्त्री का नाम ईश्वरदेवी तथा बालिका का नाम रामदेवी और बालक का नाम नरसिंहदेव रक्खागया, यह समाज पहिले भी अनेक शुद्धियां कर चुकी है और आशा है आगे भी अपना कर्त्तव्य पालन करती रहेगी।

कल्यान दास

मन्त्री आर्यसमाज भटिंडा

——

आर्यसमाज कल्यान वाला—तहसील हाफिज़ाबादका वार्षिकोत्सव ४,५,६,अप्रैल तदनुसार २२, २३, २४, चैत्र १९७१ वि० को बड़ी निर्विघ्नता के साथ समाप्त हुआ। अनेक विद्वान लोग पधारे थे, श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी की अपील पर वेद प्रचार आदि फन्डों के लिये सवा दो सौ २२५ रु० एकत्रित हुए, वर्ण व्यवस्था और स्त्रियों के अधिकार पर शास्त्रार्थ हुआ। दूसरी ओर से पं० गनपत पाधाजी थे और आर्यसमाजकी ओर से पं० भोज राज जी। दोनों विषयोंमें आर्यसमाज की जय हुई। पं० नंदलाल भजनीक पं० मथुरा प्रसाद भजनीक भी उपस्थित थे जिनसे बड़ी शोभा रही।

——

आर्यसमाज गुरुदासपुर—गुरुकुल पार्टीका पंचम वार्षिकोत्सव २४ अप्रैल से २७ अप्रेल तक मनाया गया। नगरकीर्तन २४ का ५ बजे शामके शुरू होकर ६ भजन मंडलियोंके साथ ११ बजे तक होता रहा २५ तथा २६ को श्री० स्वामी सत्यानन्दजी, पं० पं० चन्द्रभानु जी, पं० हरदयाल जी, पं० भोजराज जी, पं० सातवलेकर जी तथा महाशय जगदीश मित्रजी के मनोहर उपदेश और लैक्चर हुये। स्वामी सत्यानंदजीकी अपीलपर २१००) जमा हुवा २६ की रात्रि को ठाकुर प्रवीनसिंहजी तथा महाशय दुलीचंदजीके भजनोंने खूब आनन्द दिया। २७की रात्रीको श्री०स्वामी सत्यानन्दजी का एक प्रभावशाली उपदेश प्रेम और भक्ती पर हुआ॥

बालमुकन्द मंत्री

आर्यसमाज

——

श्रीयुत परम माननीय महोदय! श्रीमानकी सेवामें यह निवेदनहै कि आगामी ९-१०-११ मई को वेदरत्न विद्यालय मुस्तफ़ापुर दानापुर का तृतीय वार्षिकोत्सव होगा, उसमें (प्रथम दिन संस्कृत द्वारा तथा द्वितीय दिन आर्यभाषा द्वारा) बड़ी समारोहके साथ सम्मेलन होगा, उपर्युक्त समय आर्यसमाज तथा अन्यमतावलम्बी बड़े२ प्रसिद्ध विद्वान पधारेंगे, और विविध विषयोंपर शास्त्रार्थ तथा व्याख्यान होंगे, उसमें नीचे लिखित विषयों पर जिनके उत्तमोत्तम निबन्ध होंगे उनमें प्रथम रोप्यपदक तथा द्वितीय को कुछ पुस्तकें पुरस्कार मिलेंगी, अतः सर्वसाधारण मनुष्यको ऐसे अवसर पर चूकना नहीं चाहिये।

विषय

(१) भारतवर्ष के प्राचीन ब्रह्मचारी? (२) संस्कृत पठन पाठन में परिवर्तन? (३) विद्या की महत्ता? (४) आत्मविश्वास का सुधार? (५) सतत ईश्वर हैं रमते नहीं? की समस्या पूर्ति?

भवदीय

हरिनारायण शर्मा मंत्री

——

दो आर्य्य सज्जनों की मृत्यु

दानापुर आर्य्यसमाज से समाचार आयाहै कि श्रीमान् बाबू गुलाबचन्द्र रईस तथा श्रीमान् बाबू भोलानाथजी का देहान्त होगया, उक्त दोनों महाशय देश तथा धर्म के बड़े हितैषी थे। बाबू गुलाबचन्द्रजी वेदरत्न विद्यालय मुस्तफ़ापुर की कार्य्यकारिणीके प्रधान भी रहेथे, दोनों महाशयों की निष्काम सेवा ने आपको सर्वप्रिय बनादिया था, आपके वियोग से पीड़ित होकर दानापुरकी आर्य्यसमाज ने रायसाहब बाबू जनकधारीलाल जी के सभापतित्वमें २१ अप्रैलको एक सभा की श्री बा० गुलाबचन्द्रजीने एंग्लो संस्कृत स्कूल का बड़ा अच्छा प्रबन्ध किया था, स्वर्गवासी श्रीमान् भोलानाथजी उक्त समाजके मन्त्री थे तथा पीछे से भी बहुत काम करते रहे थे। सभामें प्रार्थना हुई कि परमात्मा उक्त दोनों महाशयों की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीय ग्रन्थमाला ।

वर्तमान शताब्दी में कौन सा ऐसा अभागा भारतपुत्र है जिस के हृदय में देश सेवा की—अपने देश को उन्नत करने की—लहर न उठरही हो। यदि कोई ऐसा मनुष्य है तो हम उसे भारत का सच्चा पुत्र नहीं समझते। पर भारतवासियों में से कितने ऐसे हैं जो सच्ची देश सेवा—सच्ची राष्ट्रोन्नति—के उपायों को जानते हों। अधकचरे व्याख्याताओं और उपदेशकों के भाषणों में इधर उधर से उड़ती हुई एक आध बात सुन लेना और बात है, और राष्ट्र की उन्नति के यथार्थ तत्वों को समझना दूसरी बात है।

इस अनभिज्ञता के लिये हम आपको दोष नहीं देते क्योंकि आप के पास वे साधन ही नहीं हैं जिनसे राष्ट्रीयता और राष्ट्रोन्नति के तत्त्व जाने जा सकते हैं। इन बातों का इतिहास के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है। जो देश या राष्ट्र गिर कर फिर उठे हैं उनका इतिहास ही हमें बतला सकता है कि हम किन उपायों से अपने राष्ट्र को उन्नत कर सकते हैं। जो राष्ट्र उन्नत हैं उनकी अपनी अपनी भाषाओं में इतिहास पर सैकड़ों ग्रंथ पाए जाते हैं। उन्हीं के प्रभाव से उन देशों के लोगों ने राष्ट्रीयता के सच्चे तत्व को समझा है। पर हमारी भाषामें ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वथा अभाव है।

उसी अभाव की पूर्ति के लिये यह राष्ट्रीयग्रन्थमाला आरम्भ की गई है। पहिले हमारी इच्छाथी कि हम सारे देशों का विस्तृत इतिहास प्रकाशित करें। पर कई कारणों से वह विचार अभी छोड़ना पड़ा। न तो अभी हमारी भाषा में ऐसे लेखक ही उत्पन्न हुए हैं जो दूसरे देश के विद्वानों की तरह एक एक देश के इतिहास में अपने जीवन को खपा दें और नाहीं अभी ऐसे पाठक उत्पन्न हुए हैं जो रुपया ख़र्चा कर के उनकी पुस्तकों को पढ़ें। इस माला में हमने ऐसे ऐतिहासिक निबन्धों को प्रकाशित करने का विचार कियाहै जो राष्ट्रीयता और राष्ट्रोन्नति के भिन्न भिन्न अंगों पर प्रकाश डालें। इस ग्रन्थमाला का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। कभी यह आपको पराधीन देशों के स्वाधीन होने की कहानी सुनावेगी; कभी देश भक्तों के चरितों को आपकी भेंट करेगी और कभी राष्ट्रीय गीतों के संग्रह से आपके हृदयों में देशभक्ति का संचार करेगी। इस ग्रन्थमाला का प्रत्येक ग्रन्थ अपने आप में परिपूर्ण होगा, और अलग अलग बिकेगा। पर जो लोग इस माला के स्थायी ग्राहक होजावेंगे उन्हें इस ग्रन्थमाला के सब ग्रन्थ तीन चौथाई कीमत पर मिलेंगे। ग्रन्थमाला के स्थाई ग्राहक होने के लिये अगाऊ क़ीमत देने की आवश्यकता नहीं, आप केवल आठ आने हमारे पास जमा करवादीजिये। वे आठ आने हमारे पास आप की अमानत पड़े रहेंगे। ज्यों २ ग्रन्थ तय्यार होते जावेंगे त्यों २ हम आपके पास वी० पी० भेजते जावेंगे। ये आठ आने सदा हमारे पास अमानत रहेंगे, जब आप माला के ग्राहक न रहना चाहेंगे, तभी हम आप को ये आठ आने वापिस करदेंगे।

१. राष्ट्रों की उन्नति—इस माला का पहिला निबन्ध आप के हाथों में दिया जाता है। यह निबन्ध श्रीयुत इन्द्र का लिखा हुआ है जिसे उन्होंने गुरुकुल की साहित्य-परिषत् में पढ़ा था। निबन्ध क्या है, सारे संसार के इतिहास का सार है। फ्रांस, जर्मनी, इटली, अमरीका महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहासों पर एक दृष्टि डाल कर इस में दिखलाया गया है कि राष्ट्रीयता की और राष्ट्र उन्नति क्या चीज़ है। यदि आप अपने राष्ट्र की उन्नति करना चाहते हैं तो इस निबन्ध को एक बार अवश्य ही ध्यानपूर्वक पढ़िये।

निम्नलिखित ग्रन्थ तय्यार होरहे हैं। जो शीघ्र ही छपेंगे—

२. महाराष्ट्र का उदय—ले० पं० श्रीपाद दामोदरसातवलेकर। जिस समय सारा भारतवर्ष मुग़लों की ग़ुलामी की ज़ञ्जीरों में जकड़ा हुआ था उस समय महाराष्ट्र में शिवाजी ने अत्याचारी औरङ्गज़ेब के दांत खट्टे करके उन ज़ञ्जीरों को तोड़ डाला और हमारे देश को स्वाधीनता और राष्ट्रीयता की शिक्षा दी। इसी समय शिवा जी ने हिन्दू साम्राज्य की नींव डाली। इतिहास में यह समय "महाराष्ट्र का उदय" कहाता है। इसी उदयकालीन महाराष्ट्र का इस में वर्णन है। इस ग्रन्थ के लेखक स्वयं एक महाराष्ट्र हैं, जिन्होंने बीसियों अलभ्य मराठी ग्रन्थों को पढ़ कर इस ग्रन्थ को लिखा है। इस ग्रन्थ में बड़ी अच्छी तरह उन कारणों का वर्णन किया गया है जिन से महाराष्ट्र जाति का उदय हुआ था। पुस्तक शिक्षाप्रद होने के साथ साथ मनोरंजक ऐतिहासिक घटनाओं से पूर्ण है। जिन लोगों को पं० सातवलेकर जी के लेख पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है उन से अधिक प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं।

३. अमरीका के सिरमौर—ले० बाबू जगन्नाथदास खन्ना बी०एस० सी (अमरीका) अमरीका वह देशहै जिसने परम्परागत राजा बनाने की रीति को हटाकर, प्रजाद्वारा चुने हुए प्रतिनिधि को राजा बनाने की प्रथा को स्वीकार करके वैदिक सिद्धान्त की स्थापना की है। उसी अमरीका राज्य के आज तक जितने प्रधान (जिन्हें अमरीका का राजा कहना चाहिये) होचुके हैं उन के जीवन चरित इस ग्रन्थ में दियेगये हैं। अमरीका के सभी प्रधान प्रायः नीच कुलों में उत्पन्न हुए थे और फिर धीरे धीरे उन्नति करके अमरीका के सर्वोच्चपद तक पहुंचेथे। अमरीका को स्वाधीन करने वाला और उसका सब से पहिला प्रधान वाशिंगटन एक किसान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था; अब्राहमलिंकौन किसान का काम करता था, गारफ़ील्ड एक बड़े निर्धन बढ़ई का पुत्र था। ये सब वीर पुरुष अपने अध्यवसाय और योग्यता से इतने बड़े देश के शासक बने थे। इस ग्रन्थ के लेखक बाबू जगन्नाथ दास खन्ना स्वयं कई वर्षों तक अमरीका में रहचुके हैं, और उन्हों ने कई स्थानों का आंखों देखा वर्णन लिखा है। इस पुस्तक को पढ़कर हमारी जाति के हतोत्साह बालक और युवक बड़ी शिक्षा ले सकते हैं। इस पुस्तक की हज़ारों कापियां सर्व साधारण में बांटी जानी चाहियें।

इस ग्रन्थमाला के लिये और पुस्तकें भी तय्यार की जारही हैं, जो जो तय्यार होती जावेंगी उन की सूचना हमसमय २ पर देते रहेंगे। आप शीघ्र ही इस ग्रन्थमाला के स्वयं ग्राहक बनिये और अपने मित्रों को बनाइये।

प्रेरित

(सम्पादक प्रेरितपत्रों के मत का उत्तरदाता नहीं है)

'दुर्भिक्ष और ईसाईयोंका उपद्रव'

बुन्देलखंड प्रांतकी अकालसे जैसी शोचनीय दशा है वह समाचार पत्रों के पढ़ने वालों से कुछ छिपी नहीं है। कौन एसा सहृदय पाठक होगा जिसका हृदय भूख से तड़फते हुए नन्हे नन्हे बच्चों को देख कर द्रवित न हो। मुख से व्याकुल हो कर माता पिता इतने कठोर हो गये हैं, कि अपने प्राणों से प्यारे छोटे छोटे बच्चे जिन को उन्होंने सहस्रों कष्ट सह कर पाला है पापी पेटके आधीन हो कर अपनी वर्षों की मेहनतों को सहर्ष ईसाईयों के हवाले कर देते हैं।

यह ईसाई जो कि पहिले यहां के बड़े बड़े शहरों में प्रचार किया करते थे जिस में इन को नाम मात्र की ही सफलता प्राप्त होती थी ऐसा सुअवसर काहे को छोड़ने वाले थे टिड्डी दल के समान छोटे छोटे गांवों में उमड़ पड़े और भूख प्यास से दुखित लोगों को बहका कर फुसला कर अपने जालमें फंसाने लगे। आज कल यह दशा है कि छोटे से छोटा भी कोई गांव नहीं है जहां पर इनके एक या दो दूत उपस्थित न हों। कई जगह यह सुना गया है कि ये लोग हिन्दू ब्राह्मणों की शकल में गांव में रहते हैं और गांव वालों के बच्चों के कोमल हृदयों पर ईसाई धर्मकी छाप लगाना शुरू करते हैं। गांव वाले इन को ब्राह्मण समझ कर इन के काम में किसी तरह की बाधा नहीं पहुंचाते वरन् मदद करने लगते हैं। इस तरह से बहुत से अनाथ बालक इन के पंजों में पड़ जाते हैं।

अभी हाल में एक मनुष्य जो कि चरखारी रियासत का रहने वाला है अपनी एक १३ या १४ वर्ष की कन्या के साथ दतिया से नोगाँव आ रहा था। रास्ते में वह हरपालपुर स्टेशन पर उतरा जहां से नोगाँव सिर्फ १६ मील रह जाता है और तांगे या बैल गाड़ी पर जाना होता है। यह बिचारा तांगा न मिलने के कारण गांव की एक धर्म शाला में ठहर गया जो कि मिशन हाऊस के बिलकुल ही सामने है। यहां पर ईसाईयों के दूतोंने उसको देखा और फसाने की जो में ठान कर उस के पास पहुंचे। वहां उसे नाना तरह की बातें दे कर अपने यहां ले गये। वह बिचारा बुड्ढा जो कि भूक और प्यास से व्याकुल हो रहा था इनका ज़ाहिरा अच्छा बर्ताव देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और बहुत तरहसे धन्यवाद देने लगा परन्तु उस आफ़त के मारे बिचारे को यहकहां ख़बर थी कि यह स्वांग उस की प्राणों से प्यारी पुत्री को उस से अलग करने के लिये रचा गया है। बाज़ार से भोजन मंगा कर उसको और उसकी लड़की को बड़े सत्कार के साथ खिलाया। सफ़रके थके होने के कारण भोजन करते ही नींद ने बुड्ढे को आ-घेरा। येह सब लोग इसी ताक में बैठे ही थे फिर क्या, बन आई। फौरन एक स्त्री आ कर उस बिचारी लड़की को लालच देकर वहां से उड़ा ले गई। जब सवेरे बुड्ढा सो कर उठा और उसने लड़की को पास न देख कर उसके बारे में दर्याफ्त करना शुरू किया दर्या-फ्त करने पर मालूम हुआ कि लड़की उस को नहीं मिल सकती, वह ईसाई होने को तैयार है इस पर वह बहुत रोया पीटा लेकिन उन निर्द-यीके हृदय में इतनी दया कहां बुड्ढा फौरन धक्के देकर वहां से निकाला गया। दूसरे दिन वह फिर उनके पास गया और उन से केवल उसको दिखला देने की प्रार्थना की। पहिले तो वे राज़ी न हुए परन्तु बुड्ढे के बहुत रोने से और पीटने से लड़की को दिखला दिया लेकिन ज्यों ही लड़की कुछ बातें करना चाहती थी त्योंही वह वहाँ से हटा दीगई तीसरे दिन नोगांव से जोकि इनका हेडक्वारटर है एक लेडी मिश-नरी आई और उसको तांगे पर बिठा कर नो-गांव ले गई। बुड्ढा भी दुखित हो कर उस के पीछे २ बैलगाड़ी पर यहां आया। यहां पर वह तीन चार दिन तक लड़की के पाने की आशा से मिशनरी हाऊस में पड़ा रहा। वहां पर उन्हों ने उसे भी फाँसने की कोशिश की जब वह ईसाई होने पर राज़ी न हुआ तब वहां से उस को निकाल दिया। उस लड़की ने बुड्ढे के पास दो पत्र भी भेजे हैं जिन में वह उस से अलग होने का बड़ा दुःख प्रगट करती है और चाहती है कि जिस तरह से हो उसके पास आ जावे।

बुड्ढे की अपनी लड़की के वियोग से बहुत बुरी दशा हो गई है, वह रात दिन रोया करता है यह उसकी केवल एक मात्र पुत्री थी। उस के पास इतना धन भी नहीं है कि इस मामले को कोर्ट तक लेजा सके, इस से पाठक अच्छी तरह समझ सकते हैं कि यहां पर ईसा-ईयोंका अत्याचार कितना बढ़ रहा है। धर्म वीरों से प्रार्थना है कि इस ओर ध्यान दें और इस अनीति के दमन करने में यथा शक्ति सहायता दें नहीं तो एक दिन वह होगा कि प्रान्त में इस हीन जातियों में से एक भी आर्य हिन्दू ढूढ़ना मुश्किल हो जावेगा। ध्यान देनेकी बात है कि जो लोग आपको अपना कहनेमें आज कल गौरव समझते हैं कुछ दिनों में आप से इतने जुदा हो जावेंगे कि अपने आपको भारतीय कहने में भी तिरस्कार समझेंगे।

केदारनाथ
अग्रवाल

सूचना

पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागत-कारिणी समिति का द्वितीय अधिवेशन गत ता० २९ मार्च १९१४ रविवार को सायंकाल के ४॥ बजे से खत्री पाठशाला लखनऊ के पुराने भवन में पं०शिवनाथजी सम्पादक "आनन्द" के सभा-पतित्व में हुआ, जिसमें लगभग ५० सदस्य उप-स्थित थे। इस दिन निम्न लिखित कार्य हुआ।

(१) बा० बनारसीलाल आर्य्य का का० का० समिति से पृथक होने के लिये पत्र सभा में उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(२) अधिक सम्मति से निश्चय हुआ कि निम्न लिखित ५ सज्जन का० का० समिति के सदस्यों में बढ़ाये जांय। १ पं० हीरानन्दजी शा-स्त्री एम० ए०, २ बा० विश्वनाथ वर्म्मा, ६ बा० मुरलीधर टण्डन, ४ पं० कृष्णबिहारी मिश्र बी० ए०, ४ पं० शिवबिहारीलाल वाजपेयी।

(३) विशेष विवाद के अनन्तर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अधिक सम्मति से निश्चय किया गया कि बाहर से आये हुए प्रतिनिधियों को भोजन दिया जाय तथा निम्न लिखित बजट स्वीकार हो:—

२०००) भोजन सत्कार इत्यादि। ५७५) छपाई विवरण, फार्म इत्यादि। २५०) प्रदर्शनी। २५०) मण्डप, कुर्सी, शामियाना और कनात इत्यादि। २४०) एक वैतनिक लेखक २०) मासिक पर एक वर्ष तक। ७२) एक चपड़ासी ६) मासिक पर एक वर्ष के लिये। २००) किराया गाड़ी व इक्का। २००) किराया ४०० चार पाइयों का। १७३) स्टेशनरी। १५० कुली तथा नौकर। १५०) पोस्टेज और तार। १००) रोशनी। ४०) बैज और फूल। ४४००) कुल योग।

(४) बा० श्यामसुन्दरदास बी० ए० के०का० का-समिति के सभापति के पद को अस्वीकार करने पर सर्व सम्मति से निश्चय किया गया कि, वह उक्त समिति के सदस्य होकर सभा की सहायता अवश्य करते रहें।

(५) अधिक सम्मति से निश्चय हुआ कि, बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए० के स्थान में पं० गणेशविहारी मिश्र सभापति तथा पं गणेशविहारी मिश्र के स्थान में पं०क्षमापति नियत हों।

(६) सर्व सम्मति से निश्चय किया गया कि, सदस्य अथवा पदाधिकारी के का० का० समिति से पृथक होने पर समिति उसके स्थान में किसी अन्य सज्जन को नियत कर ले।

(७) सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ कि इस समितिकी सम्मति में सम्मेलन का अधिवेशन मि० मार्गशीर्ष शुक्ला—९-१० और ११ तद्नुसार ता० २६—२७—और २८ नवेम्बर को मोहर्रम की छुट्टियों में होना उचित है और इस की सूचना सम्मेलन की स्थायी समिति के विचारार्थ भेजी जानी योग्य है।

(८) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि, सम्मेलन-स्थायी समिति को लिखाजाय कि डेलीगेशन फी के २) के स्थान में ३) किये जांय और प्रतिनिधियों को कार्य्य विवरण तथा लेखावली बिना मूल्य मिला करे।

(९) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि इस वर्ष जो प्रतिनिधि डेलीगेशन फी के २) के साथ १) अधिक दें उन्हें कार्य्य विवरण और लेखावली की एक एक प्रति दी जाय।

(१०) डाक्टर पुरषोत्तमदास ककड़ आयव्यय परीक्षक के पद पर नियुक्त हुए। सभापती को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गोपाल लाल
मंत्री
स्वागत कारिणी समिति।

संस्कृत साहित्य सम्मेलन

इस उन्नतिके युगमें जबकि सब देशों, जातियों, और समाजों के शिक्षित पुरुष, अपनी भाषा, अपने समाज, और अपने देशकी उन्नतिमें दत्तचित्त हैं, तब संस्कृत के विद्वानों की वही घोर निद्रा, वही उपेक्षा किस विचारशील विद्वान् के चित्तको कष्ट नहीं पहुंचाती। आज इस दारुण दशा में भी सब प्रान्तों में उत्तमोत्तम संस्कृत के विद्वान् हैं, संस्कृत विद्या की चर्चा भी सर्वत्र चलतीहै, किन्तु अभीतक देशकालानुसार कार्यपरता के कुछ भी लक्षण इस भाषा के प्रेमियों में दिखाई नहां देते। उसही केवल प्राचीन शैलीसे कुछ शिष्यों को पढ़ादेनेके अतिरिक्त विद्वान् लोग और कोई कार्य दृष्टिके सामने नहीं देखते। इसही देशकालकी अत्यंत उपेक्षासे जहां अन्यान्य भाषाएं दिनदूनी उन्नति कररहीहैं—वही शोकहै कि सब भाषाओंकी आदि जननी "संस्कृत भाषा" क्रमशः अवनति की ओरही जारही है। अवश्यही संस्कृत के विद्वान् इसे "काल दोष" या 'ईश्वरेच्छा' कहकर टाल देतेहैं—किन्तु यह घोर अन्यायहै। जब ईश्वरने हमें भी कुछ करने की शक्ति दी है, अपना कर्त्तव्यपालन करना—उसही जगन्नियन्ता की आज्ञा है—और अन्यान्य सांसारिक कार्यों में हम केवल ईश्वरेच्छा के भरोसे पर बैठे भी नहीं रहते तब केवल 'मातृभाषा' की सेवा के समयही इस प्रकारके आलस्यको क्यों आश्रय दियाजाय। अतः यही युक्तियुक्त होसकताहै कि जो कुछ हुवा सो हुवा, अब हम लोग संस्कृतानुरागीभी अपनी 'मातृभाषा' की सेवा के लिये कमर कसकर उठें। और यथाशक्ति पूर्ण उद्योग कर इसे फिर उन्नति के शिखर पर बहुंचावें।

इन्हीं सब बातोंका विचार कर गतवर्ष ज्येष्ठ मास में 'श्रीहरिद्वार ऋषिकुल' के वार्षिकोत्सव पर एकत्रित विद्वत्समितिने "महामहोपाध्याय पूज्यपाद श्री शिवकुमार शास्त्री" जी के सभापतित्वमें एक "संस्कृत साहित्य सम्मेलन" करना निश्चित किया था। भारतवर्ष के सब प्रान्तों के प्रसिद्ध प्रायः १५० विद्वान्—इस सम्मेलन के स्थायी सभा बनाये गयेहैं—जिनको पूर्व सूचना दी जाचुकी है। विद्वन्मुकुटमणि "श्रीशिवकुमार शास्त्री" जी ही स्थायी सभापति, और पञ्चाम्बुभूषण—विद्यासागर "श्रीबुलाकी राम शास्त्री" जी स्थायी मन्त्री मानेगयेहैं। नियम और उद्देश्य भी स्थायी सभ्यों के समीप भेजे जा चुके। अब इस सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन श्रीहरिद्वारमें ही "ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रम" के वार्षिकोत्सवके साथ ज्येष्ठ शु० ८ भौमवार १९७१ वि०, ता० ५ जून १९१४ से आरंभ कर ३ दिन पर्यन्त होना निश्चित हुवा है। इस अवसर पर १५ गम्भीर विषयों पर सुप्रसिद्ध विद्वानोंसे जो निबन्ध लिखाये गये हैं, वह पढ़े जांयगे। और "संस्कृत भाषा" की उन्नतिके लिये अनेक प्रकारके उचित प्रस्ताव स्वीकृत होंगे। भारतवर्ष मात्रके सुप्रसिद्ध विद्वान्—व संस्कृतानुरागी रईस, राजा, महाराजा आदि सम्मेलनमें सम्मिलित होनेको निमंत्रित किये जारहेहैं। किन्तु सब प्रान्तोंके विद्वानों का यथोचित परिज्ञान होना हमजैसे एक देशीय मनुष्योंके लिये असंभव प्रायहै, अतः इस निमन्त्रण कार्य में बहुत कुछ त्रुटि होना संभवहै। उन सब त्रुटियों की प्रथम से ही क्षमा प्रार्थना करते हुवे हम समाचार पत्रों द्वारा सब संस्कृतके विद्वान् व संस्कृतानुरागी सज्जनोंको इस 'संस्कृत भाषा' की सेवारूप महायज्ञमें निमन्त्रित करतेहैं। और पूर्ण आशा करतेहैं कि हमारे देशकी सर्वस्वभूत और आजभी सब देशोंमें मान्यदृष्टिसे देखीजाती हुई वृद्धा श्वेतकेशी माताकी सेवाके कामको सब कामों से आवश्यक समझते हुए सब जाति, मत संप्रदायों के भारतीय भ्रातागण द्रव्य व्यय और परिश्रमको सानन्द सहन करते हुए इस सम्मेलन में सम्मिलित होकर परस्परके प्रेमसूत्रमें बद्धहोंगे। हम २० कोटि आर्य हिन्दुओं के होते हुए यदि "संस्कृत साहित्य सम्मेलन" अपने योग्य समारोहसे न हुवा तो इससे अधिक लज्जा की बात हम लोगों के लिये और कुछ नहीं होसकती। आशा है आप लोग इस प्रकार का कलङ्क अपने शिरपर न आने देंगे। जो२ सज्जन इस सम्मेलन में सम्मिलित हों—वे अपने आगमन के समय आदि की सूचना प्रथम से ही निम्नलिखित पते पर भेजदेवें जिससे "स्वागतकारिणी समिति" आपके लिये स्थान आदिका प्रबन्ध प्रस्तुत रक्खे।

आपका दर्शनेच्छु—

गिरिधरशर्म्मा चतुर्वेदी
मन्त्री स्वागतकारिणी समिति
प्रधानाध्यापक ऋषिकुल (हरिद्वार)

(परीक्षितगढ़के एक पुरोहित को करतूत)

रंगीलाल ब्राह्मण साकिन परीक्षितगढ़ पुरोहित जो कि एक मुद्दत से ग्राम नानपुर डा० किठौर जि० मेरठ में जाया आया करता था और उसकी वहाँ पर पुरोहताई भी थी एक बैश अग्रवाल अपने यजमान के लड़के की पत्नी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को जिसकी आयु १६ साल के करीब है एक ब्रह्मणी और एक अन्य पुरुष से साज़िश करके यह कहकर भगा लाया कि तुझको तेरी मौसी के यहां किसी बहाने से पहुंचा देंगे। अपने मकान परीक्षतगढ में लाकर कई दिन तक देवी के मन्दिर एक अलग कोठरी में बन्द करके रक्खा। उसके घरवालों ने पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी और बेचारे ढूंढते हुये परीक्षतगढ भी आये थे परन्तु कुछ पता नहीं चला था—दैव योग्य से छटे सातवें दिन चैत सुदी सप्तमी का उसी मन्दिर में मेला था उसने उसको एक कोठरी में बन्द करके ताला लगा दिया और भोजन भी उसदिन पूजा की बहु आय के कारण और मेले वालों के ख्याल से ताला खोलने में संकोच हुआ। वह स्त्री कोठरी के भीतर भूख प्यास के मारे व्याकुल थी और चिल्लाती थी मगर उस समय मन्दिर के हाते में स्त्रियां गीत गा रही थीं। उस बेचारी की आवाज़ कोई नहीं सुनता था, अन्त को ९ बजे रात्रि के करीब कुछ स्त्रियों ने उसकी आवाज़ सुनी और कहा कि इस कोठे में कोई देवी है जो बोल रही है। उस से कहा-तुम कौन हो ? क्या देवी हो? और क्या चाहती हो—उसने अन्दर से कहा कि मैं भूख प्यास के मारे व्याकुल हूं मुझे पानी की ज़रूरत है। मैं देवी नहीं हूँ, मैं नानपुर की बनेनी हूँ और मैं बहुत अरसे से भूख प्यास के मारे व्याकुल हो रही हूं इसलिये अधिक नहीं बोलसकती मुझे पानी दो। रफता २ बातचीत एक पुलिसमैन के कान तक पहुँची। उसने फौरन थाने में ख़बर की और पुलिस ने आकर उसका ताला खोला। देखातो एक जवान औरत भूखके मारे व्याकुल और पानी के कारण बेताब है। उसको निकालकर थाने में ले गये पानी पिलाया कुछ देर बाद होश आया तब उसने सारा हाल कह सुनाया। पुलिस ने मुकुदमा चालान कर दिया मुक़दमा ज़ेर तजवीज़ है जो कुछ हुक्म होगा उससे बाद को सूचना दी जावेगी—हा शोक यह आज ब्राह्मण देवता और पुरोहतों का हाल है हिन्दूजाती को ऐसे नाममात्र के ब्राह्मणों और पुरोहतों से अपनी संतानों की खास रक्षा करनी चाहिये।

जोतीप्रसाद उप प्रधान
आर्य्यसमाज परीक्षितगढ
जिला मेरठ

शिकोहाबाद की एक रण्डी को दो वर्ष की जेल

मैं डेढ़ साल से यहां अपनी बीमारी का इलाज करा रहा हूँ। अर्सा १½ मास का हुआ मैं कार्य्यवश सुबह की गाड़ी से मैनपुरी गया। वहां एक दूकान के पास सड़क पर बहुत से आदमियों की भीड़ देख मैं भी पास गया तो देखा कि शिकोहाबाद की जानकी रंडी और एक बुढ़िया औरत से (जो कौम की मल्लाह थी) झगड़ा हो रहा है। वह बुढ़िया अपनी लड़की को जिसकी उम्र लगभग १२ साल के होगी पकड़े अपनी ओर खींचती और रंडी से कहती कि तू मेरी लड़की को शिकोहाबाद से क्यों भगालाई। मैं तेरे साथ रखकर उसको रंडी बना कर उस का ईमान नहीं बिगाड़ना चाहती। और रंडी कहती थी तू मुझे कलक्टर साहब के यहां लिखा लेने दे, मैं तुझको भी रोटी कपड़ा दूंगी और उसी लड़की को खींचती थी। परंतु बुढ़िया राज़ी न थी और वह रंडी उसका पीछा न छोड़ती थी। यहां तक कि बहुत से लोग रंडी को समझाते थे कि तू ज़बरदस्ती न कर और लड़की को उसकी मां को दे दें। इसी बीच में पुलिस के कांस्टेबिल आ कर उन सब को पकड़ कर कोतवाली में ले गये। भला फिर क्या था, कोतवाल साहब ने उन सब के बयान लिये और बाकायदा मुक़दमा क़ायम कर उस रंडी को हवालात में बंद करने का हुक्म दिया। मैनपुरी व शिकोहाबाद से तहक़ीक़ात कर तारीख़ पर सबूत पेश किया-मेरे भी इज़हार हुये-जो कुछ मैंने देखा, सुनाथा बयान किया—सबूत ख़तम होने पर अदालत ने उस रंडी को फर्द जुर्म सुनादिया और ता०८ अप्रल सफ़ाई के वास्ते नियत की। जिस तारीख़ को शिकोहाबाद के रहने वाले कई हिन्दू भाइयों ने रंडी की तरफ़ से झूठी गवाही दी। अंत में न्यायप्रिय धर्मात्मा डिप्टी साहब ने सफाई को खूब विचार कर जानकी रंडी को दो सालकी जेल का हुक्म दिया।

मित्रों आप को मालूम है कि ये रंडियां प्रतिवर्ष हिन्दू क़ौम की कितनी औरतों तथा लड़कियों और आप के भाईयों को अपने जाल में फांसकर आपको नष्ट कर रही हैं इतने पर भी हमारे हिन्दू भाई इन दुष्टाओं को अपना पूज्य समझ कर अपने यहां मांगलीक कार्य्यों में बुलाकर दक्षिणा देते हैं (आजकल विवाह तो बिना रंडियों के होते ही नहीं यही हमारे भोले भाले हिन्दू भाई समझ रहे हैं) और हर तरह की सेवा करने को उद्यत रहते हैं। इसी मामले में हमारे यहां के कई एक बड़े कहलाने वाले आदमियों ने रंडी के बचाने के लिये शिर तोड़कर कोशिश की। झूठी गवाहियां दिलाईं। क्या ऐसी व्यभिचारिणी दुष्ट औरतें देशको रसातल पहुंचाने वाली, धर्म की जड़पर कुल्हाड़ी चलाने वाली नहीं हैं जिन्हे मदद देना सांपों को दूध पिलाना नहीं तो क्या है। अब वेही बड़े आदमी पन के पुछल्लेदार आदमी मुकदमें की अपील कराने के उद्योग में हैं। यहांतक अपने हाथ अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने की नौ समझी करके भी शरमिन्दा नहीं होते।

सज्जनसिंह वर्म्मा
शिकोहाबाद—मैनपुरी

छपगई ! छपगई !! छपगई !!!

स्वर्गीय जीवन

यह पुस्तक अमरीका के प्रसिद्ध विद्वान् राल्फवाल्डो ट्राइन की प्रसिद्ध पुस्तक In Tume with the Infinite, का भाषानुवाद है इसमें शान्ति प्राप्ति का मार्ग, समृद्धिशाली होने का नियम, साधू महात्मा जगदुद्धारक बननेका मार्ग, सब धर्मों का मुख्य तत्त्व, भली प्रकार दर्शायाहै। भाषा सरल और बम्बईके एक प्रसिद्ध यन्त्रालय में बड़े सुन्दर टाइप में छपी है। पहिले इसका मूल्य १।) रक्खा था किन्तु यह विचार कर कि सर्व साधारण को लाभ पहुँचे अब ॥।) करदिया है। डाकव्यय अलग।

मिलने का पता—
प्रेमी, पुस्तक भन्डार, देहली

'वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर कीहै, जो बुद्धिमती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदातृ शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो कवारा हृष्ट पुष्ट २५ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थाप्पर
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा
पंजाब लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इंगलिशटीचर ।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता--- जल्दी हज़म होने वाला-
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

आवश्यकता

एक अध्यापिका जो एन्ट्रैंस पास ट्रेण्ड हो या विशारद पास हो मुलतान आर्य्य पुत्री पाठशाला अन्दर बोहिर दरवाजा के लिये ज़रूरत है तनख्वाह ४०- से ५०- रुपये तक योग्यतानुसार दी जावेगी। आर्य्य धर्म्म से हितैषिता प्रकट करने वाली को विशेषता दी-जावेगी। प्रमाणपत्रों सहित प्रार्थना पत्र १५ मई सन् १९१४ तक आ जाने चाहियें। श्रीमान् लाला तोला राम जी मैनेजर आर्य्य पुत्री पाठशाला मुलतान के पते पर पत्र आना चाहिये।

मैनेजर
आर्य्य पुत्री पाठशाला
मुलतान

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० का =)]
थोकमाल लेने वालों को अच्छा क शन दिया जायगा

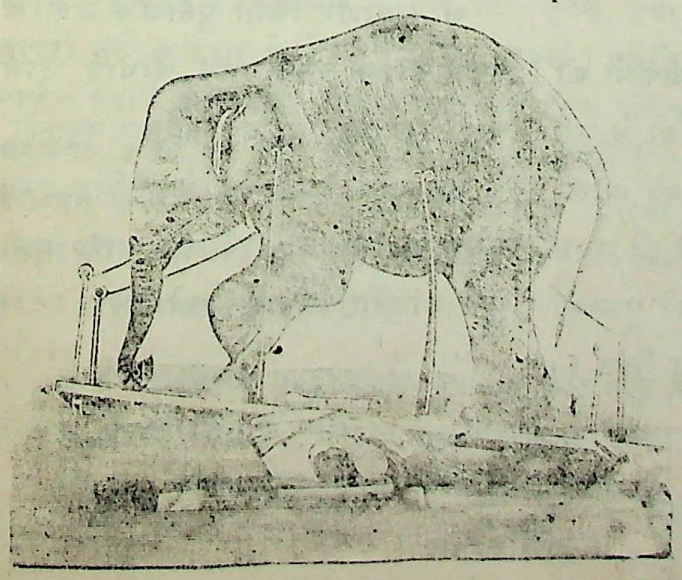

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ।।।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीर-जयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्वत् १९७१ का पञ्चाङ्ग

बंट रहा है; १२ नये नये चित्र दिये गये हैं। पिछे हताश न होना चाहें तो आज ही एक पोष्ट कार्ड पर दस सज्ज. का नाम वो ठिकाना (भिन्न भिन्न स्थानोंके) लिख भेजिये लौटती डाक से घर ५ पावेंगे।

अजीर्ण वो अजीर्णके दस्तकी दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा बिकारसे अजीर्ण रोग होता है; जिससे यह लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट भारी जान पडना, पेट में वायु होना. जी मिचलना खट्टे वा व्यर्थ डकार आना, छातीमें जलन होना, मुंहमें पानी भर आना, पेटमें थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त का ग्लानि, आलस्य आदिक जबतक खाना हजम की थैलीमें रहता है और पाचन किया कठिनता से होती रहती है, यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अतड़ियोंमें उत्तर जाता है, तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फलता है, वो दस्तकी चेष्टा होती है, दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है, कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे दस्त हो जाता है, दस्त होने से शरीर क्षीण होता है।

पन्द्रह रोज के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल—१।) एक रुपया चार आने। डाः मः १ से ४ शीशी तक ।-) पांच आने।

डा. एस. के. बर्मन ५, हरचन्द दत्त लेन, कलकत्ता।

नं० ५५

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानून दर्पण।

इस एकही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिनसे हर मनुष्यको काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाब्ता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शिहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तलाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बातर पर वकील मुख्त्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इङ्गलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार बगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्याकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १।)

मिलने का पता—

शान्ती संचारक कम्पनी

मीयाँगंज अलीगढ़ सिटी

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३।)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्र व्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसर महेशचरण सिंह, एम० एस० सी० ए० बी०, ए० जी० आर० गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ 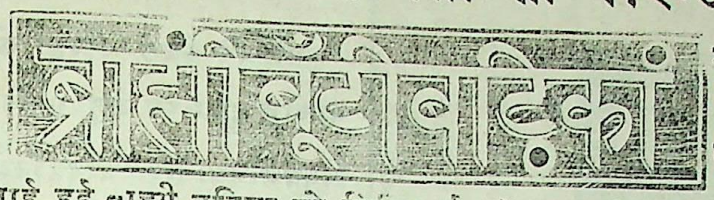 मौका नचूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-डटोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजित। विषशोथज्वर हरी मैंधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अकल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ और छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी-(शुद्ध व असली) की तोला २८) रु०

शिलाजीत-सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० की तोला

केशर-(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) की तोला १॥)

पशमीने व सावल-६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट-यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अलमोड़ा यू० पी० हिमालया

१०००) एकहज़ार रुपये की

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालें-दीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक इन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९८१४ ५४ चौदह जिल्दमें एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)-ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक वा दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

बाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंग्लिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद यू. पी.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजात

शुद्धशिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।=)
१०	४।)	।=)
२०	८)	।=)
४०	१५।।)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

प० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

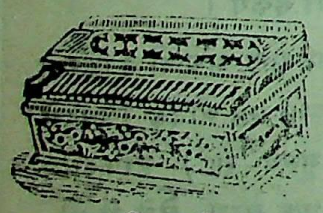

इस पुस्तक में कई प्रकार की ग़ज़ल, क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है। इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।=) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है।

बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो।

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिश-टीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

ऋषि दयानन्द वाच

श्री महात्मा मुन्शीराम, धर्मवीर पं० लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन, हमने उक्तनामकी घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिसमें मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन होते हैं। महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय दाम केवल५॥) गारंटी ५ साल हर घड़ी के साथ में एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा।

पताः—दीस्वीज़रलैंड वाचकम्पनी

हाथरस नं ०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता है

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सब संसारके कंपनी मजराका बनाया 'सिद्धौषधि' पास हो तो फिर शोच का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने से कोई अनुपान लगाना नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

सरकार से रजिष्टरी किया हुआ

२४ वर्ष का आजमाया हुआ

कैसे ही अतिसार खांसी हैजा शूल

खांसी पेचिश के होना पेटदर्द

ह्रदयादि रोगों की स्वार्थिद्ध औषधि हवा

मूल्य ॥) आना

सर्दीकाबुखार जी मिचलाना

वमनोकेहरीलेदस्त शरीर का दर्द

ज्वरकांपनी

लिखो पूर्णपता कोपेपर छपी

कंपनी मजराका बनाया

प्रचारक के ग्राहकों से

१५ मार्च तक 'चिकित्साभन्डार, २ खंड का मूल्य २॥) के २) लिये जायंगे। इस पुस्तक में वैद्यक बुनावी और डाक्टरी मतानुसार रोगों की व्याख्या और अनुभूत चिकित्सा दी हुई है। हिन्दी भाषा के जानने वाले एक योग्य वैद्य जैसी रोगों की परीक्षा और चिकित्सा र सकते हैं शीघ्र आज्ञापत्र लिखें।

चुन्नीलाल वैद्य
बच्छोवाली
लाहौर

बर्मन नंबर वन है

बाल उडान का साबुन-बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लैने से १ राक्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता-

शर्मनऐंड कं. सतघडामथुरा

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)
चान्द--जि० आरा

सस्ता और मज़बूत

Telegraphic,address
founders Aligarh

४ लीवर का ज़स्ती कलईदार लोहे का ताला इस्तेमाल करो।

मूल्य

डेढ़ इंच का ९) दरजन
दो इंच का १२) दरजन
ढाई इंच का १३॥) दरजन
तीन इंच का १६॥) दरजन

(१) १००) के खरीदार को १२॥) सैकड़ा और ५०) के को १३) सैकड़ा और २५) के को ३=) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा कम पर नहीं।
(२ आधी दरजन से कम माल नहीं भेजा जावेगा।
(३) और किस्म के तालों के लिये सूचीपत्र मंगाइये।
(४ असली माल पर "शेर" का मार्का देख लीजिये।

दी कृसमिस लोक वर्क्स सुलतानी सराय
अलीगढ़ सिटी

नोटिस

आर्य्य कन्या पाठशाला लायलपुर के लिये एक शिक्षित पास अथवा फेल की अध्यापिका के लिये आवश्यकता है सीने पिरोने कोई के काम आदि भोजन इत्यादि में निपुण होवे तन योग्यता अनुसार दिया जावेगा प्रार्थना पत्र और सार्टीफिकट शीघ्र इस पते पर आवे।

गुरुदत्ता राम प्लीडर
प्रधान आ० स० लायलपुर

महाशयजो

यदि हमारी दवा से लाभ शर्तिया दूर नहो तो४ प्रतिष्ठित पुरुषों के हस्ताक्षर सहित पत्र भेज कर मूल्य वापिस लीजिये मूल्य१०० गोली १)डा० खर्च ≡)

आर्य्य, औषधालय, करतमगढ़
(एटा यू० पी०)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्नमेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्नमेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषद् भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।≡)
ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह पुस्तकों की लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ।)॥
दूसरा भाग ≡)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ≡)
उपदेश मण्डक ।)
प्रार्थना पुस्तक ।)
ओंकार की उपासना ।)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्नमेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।)
वेद और महाभारत के उपदेश ।)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रन्थावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार ।) आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी ।) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५।

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया

—

एजन्टों की आवश्यकता

हाथरस के पक्के चाकू ल० बेंट)॥। -) -)। ≡) ≡)॥ ≡)॥। चं०, बेंट -) -)॥ ≡) ≡)॥ ≡)॥ ।-) घडी का ≡) उस्तरा ।) ।=) पता:

पता—भारतहितकारी
कार्य्यालय नं० ७
हाथरस सिटी

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म् ॥

R gis tered No L. 807.

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

७ ज्येष्ठ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० १६ मई १९१४

संख्या ५
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक--इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)- प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है ।आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।
एक मास तक ।=) प्र० पं०
तीन मास " " " " -) "
छः " " " " -॥) "
सालभर " " " " -) "
अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

कोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई कोड़पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) कोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। कोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये ।

साधारण कोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष बात चीत प्रबन्धकर्ता से कीजिये ।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र-देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का कलम (पेड़) अपने बाग़ में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मगालें।

पता– आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतोल KAMTAUL (बिहारप्रान्त

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़ तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री
धावन लाहौरी टोला बनारससिटी

हारमोनियम

अर्थात् बिना गुरु के बाजा सिखाने वाला टीचर, यदि आप थोड़ेही समय में सरगम व गाना सहित हारमोनियम बजाना सीखने के इच्छुक हैं तो सुन्दर जिल्द बंधी हुई पुस्तक के दोनों भाग मंगाइये मूल्य ।-)डा०=) पीतलके ओ३म् व नमस्ते फ़ी दर्जन।।।) डा० म० अलग

पता:–बाबूख्यालीराम एण्डको
अलीगढ़ सिटी.

भारतवर्ष में विख्यात

हाथरस के पक्के चाकू।

यह स्वदेशी चाकू विलायती नामी चाकूओं से भी कहीं सुन्दर सुडौल और मज़बूत हैं। चन्दन मूठ -) -)॥ =) =)॥ ≡) ।) ।=) लकड़ी मूठ ,॥। -) -)। -)॥ =,॥ ≡)॥ उस्तरा ।-) ।≡) कैंची ॥) ।=) लीवर दार मजबूत ताले पीतल के ≡) ।) ।=) इंच। लोहे के ।) ।=) ॥) इंच। रंगीन गमछे =) =)॥ ≡)॥ ।-) ॥ बढ़िया हींग ६) ८) १०) सेर

भारत वस्तु प्रचारक कम्पनी
हाथरस।

दिल्ली का आटा मैदा

सूजी और चोकर अति उत्तम और फायदे के साथ हमारे यहां से भेजा जाता है। नमूने और भाव मंगा देखिये

पता:–नौरङ्गराय बाबूलाल
खारीबावली, दिल्ली।

नई सूचना

यद्यपि हमें शुद्ध रामायण की प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यह जगत् प्रिय हो चुकी है। इसकी संशोधित घटनाओं ने जो इस में प्राचीन ग्रन्थों के प्रमाणों सहित लिखीगई हैं बड़े २ विद्वानों तथा भारत वर्ष के प्रसिद्ध समाचारपत्रों से प्रशंसा पत्र प्राप्त किये हैं, परन्तु हम आपको सूचना देते हैं कि:-

पंजाब के डायरेक्टर साहिब बहादुर पबलिक इन्स्ट्रक्शन ने इस पुस्तक को स्कूलों की लायब्रेरियों तथा छात्रों के पारितोषक (इनाम) के लिये स्वीकार कर के अपनी सम्मति प्रकाश की है। जो अपने सर्कुलर नं० १ तारीख ९ फ़रवरी १९१४ में लिखते हैं:-

शुद्धरामायण (कृत पं० संतराम प्रकाशित नागरी प्रचारिणी कम्पनी लाहौर) असल रामायण का हिन्दी भाषा में संक्षेप है! जो लोग मूल ग्रंथ से लाभ नहीं उठा सकते उनके लिये अत्योपयोगी है। पुस्तक की आकृति भी सुन्दर है मूल्य २)

मिलने का ठिकाना
नागरी प्रचारिणी कम्पनी लिमिटेड
लाहौर

बूँटीसे पारेकी निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे की शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधू ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

घर बैठे गँगाजल

यदि आप अपने घर बैठे ही हरिद्वार के हंसोदक शुद्ध गंगाजल को प्राप्त करना चाहें तो हमें लिखें एक कनस्टर नील धाराके बीस सेर जलकी न्योछावर १) है मार्ग व्यय मंगाने वालों के जुम्मे होगा।

पता:
मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कँपनी
हरद्वार।

नया ग्रन्थ

अभी छप कर तय्यार हुआ

भारतवर्ष का इतिहास

प्राचीन आर्य्यों के प्रारम्भिक वर्णन से लेकर सं० १९७० तक की घटनाओं के वर्णनसे संकलित इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास अति सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है कि आरम्भ करके बिना समाप्त किये छोड़ने को जी न चाहेगा, आर्य्य भाषा में इस प्रकार का इतिहास अब तक नहीं छपा,

पृष्ठ संख्या ५०० मूल्य १॥)

धर्म निर्णय

यह उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्मका भाषानुवाद है इस पुस्तक में धर्म का निर्णय किया गया है पुस्तक नावल के ढंग पर लिखी गई है इसमें कई योगी सन्यासियों का भी वृत्तान्त है मूल्य १)

अंग्रेजीकी सीढ़ी

देव नागरी तथा उर्दू पढ़े हुए को स्वयम अंग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य ॥=)

पता:–ला. केदार नाथ प्रोप्राईटर
से २६ ३ आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार बज़ाजा शहर मेरठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीय निबन्ध माला

२०० स्थायी ग्राहकों की

आवश्यकता

शीघ्र ग्राहक बनिये

देश और जातीय उन्नति आजकल सभी करना चाहते हैं, पर उस के उपाय बहुत ही थोड़े लोग जानते हैं। यदि आप जातीय उन्नति के प्रेमी हैं और देशोन्नति के सच्चे उपाय जानना चाहते हैं तो शीघ्र ही इस निबन्धमाला के स्थायी ग्राहक बनिये। इस निबन्ध माला में प्रसिद्ध विद्वानों के निबन्ध प्रकाशित होंगे। यह निबन्धमाला कभी आपको गिरे हुए देशों के उठने की कहानी सुनायेगी, कभी जाति के सेवकों के चरित्र पढ़ायगी, देशभक्तिपूर्ण कविता से आप के हृदय को उत्तेजित करेगी और कभी वीर कथाओं से आपका मनोरञ्जन करेगी।

आठ आना भेज देने से आप स्थायी ग्राहक बन सकते हैं। निबन्ध माला का प्रत्येक ग्रन्थ अपने आप में परिपूर्ण होगा। ज्यों २ निबन्ध छपते जावेंगे हम आपको वी०पी० भेजते जावेंगे। ये आठ आने हमारे पास अमानत रहेंगे। जब आप ग्राहक न रहना चाहेंगे तब आप को ये आठ आने लौटा दिए जावेंगे। स्थायी ग्राहक बनने पर माला का प्रत्येक अंक लेना होगा, यदि आप कोई वी.पी. लौटा देंगे तो वी. पी. व्यय आठ आने में से निकाल लिया जायगा।

माला का पहिला निबन्ध तय्यार है जिसका नाम

राष्ट्रों की उन्नति

है। निबन्ध क्या है, सारे संसार के इतिहास का सार।

मूल्य ।)

स्थायी ग्राहकों से ≡)

महाराष्ट्र का उदय (छपरहा है)

ले० प्रो श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

अमरिका के सिरमौर—अमरीका के प्रधानों का चरित ले० बा० जगन्नाथ-खन्ना बी. एससी. (अमरीका)

(तय्यार हो रहा है)

संसार की गति।

विहार की राजधानी का व्यय—विहार की सरकार ने विहार की राजधानी के व्यय का चिट्ठा जो भारतमन्त्री के पास भेजा था वह स्वीकार हो गया है। उससे पता लगता है कि विहार प्रान्त की राजधानी पर एक करोड़ पांच लाख रुपया खर्च होगा। जब प्रान्तिक राजधानी का यह हाल है तब भारतीय राजधानी पर जो कुछ भी व्यय हो वह कम है।

—=

"इंग्लिश मैन" का प्रकोप—हम यह समाचार पाठकों को सुना चुके हैं कि नैशनल कांग्रस के कुछ नेताओं की मंडली विलायत गई है। भारत मन्त्री की इंडिया कौंसिल का जो सुधार होने वाला है उसके विषय में कांग्रस का मत प्रकट करना इस मंडली का प्रधान उद्देश्य है। भारतमन्त्री लार्ड क्रू ने इस मंडली के मत को सुनने के लिये बुला भी लिया है। इस पर कलकत्ते का "इंग्लिशमैन" आग बबूला होगया है। उसका कहना है कि लार्डहार्डिंग ने कलकत्ते में कांग्रेस मंडली का स्वागत करके पहिलेसे ही कांग्रेस वालोंका साहस बढ़ा दिया है, अब लार्ड क्रू मंडली का मत सुन कर महा अनर्थ करने लगे हैं।

—

ये जाति के शत्रु हैं।—पाठक किसी दूसरी जगह आर्य जाति की मृत्यु पत्री पढ़ेंगे जिसे प्रो० बालकृष्ण जी ने जन संख्या की रिपोर्ट से तय्यार किया है। उसमें उन्होंने अकाट्य प्रमाणों से सिद्ध करने का यत्न किया है कि गत दस वर्षों में जहां ईसाइयों और मुसलमानों की संख्या में लाखों की बढ़ती हुई है वहाँ हिन्दु लाखों की संख्या में घट गए हैं। अन्त में उन्होंने हिन्दु जाति से इस घटती के कारणों पर विचार करने के लिए निवेदन किया है। पर क्या प्रोफ़ेसर महोदय जानते हैं कि उनकी तय्यार की हुई मृत्यु पत्री को पढ़ कर हिन्दु धर्म की दुहाई देने वाले कई महानुभाव दुःखित होने की जगह प्रसन्न होंगे। यदि वे न जानते हों तो कृपया "वैंकटेश्वर समाचार" का पिछला अंक पढ़लें। हिन्दुओं की संख्या प्रति दिन घट रही है इसे वैंकटेश्वर स्वीकार करता है, पर वह इसे जातीय संकट न समझ कर हिन्दु धर्म की विशेषता समझता है। उसका कथन है कि "हमारी आज की बड़ी यह संख्या घट कर यदि किसी दिन दश या पांच पर ही आ लगने का असम्भव सम्भव हो तो हम दुखी नहीं होंगे।" सहयोगी जिसे असम्भव समझता है वह असम्भव नहीं है क्योंकि यदि घटती की मात्रा यही रही तो फिर डेढ़ सौ बरस में दस पांच तक ही नहीं पर हमारी जाति की संख्या शून्य तक पहुंच जायगी। उस दिन शायद हमारे सहयोगी के कार्यालय में हर्ष के मारे दीपमाला होगी।

जिस जाति की बागडोर ऐसे पुरुषों के हाथ में हो, उसका भगवान ही सहायक है। यदि वर्तमान हिन्दु धर्म की यही विशेषता है तो उसे दूर से प्रणाम करना होगा। जो धर्म किसी जाति को जीना और उन्नति करना नहीं सिखा सकता वह धर्म नहीं, अधर्म है। जिस से अभ्युदय और निःश्रेयस प्राप्त हो, जो इस लोक में ऐश्वर्य और पर लोक में मुक्ति दिलाने वाला हो, हमारे प्राचीन शास्त्रकारों ने उसे ही धर्म कहाहै। आजकल हमारे अन्दर धर्म के नाम से जो आचार व्यवहार प्रचलित हैं, वे यदि हमारे जातीय अभ्युदय में बाधक हो रहे हैं, तो स्वीकार करना पड़ेगा कि प्राचीन शास्त्रकारों के अनुसार भी उन में अवश्य ही कुछभयंकर दोष आघुसे हैं जिनको एकदम निकाल डालना समाज के नेताओं का कर्तव्य है। जो ऐसा न करके, उलटा लोगों को अफ़ीम खिला कर, बनावटी नींद सुलाना चाहते हैं उन्हें हम जाति के शत्रु समझते हैं।

—

साहिब छुरी कांटा भूल गये—कांग्रस की जो मंडली अभी विलायत को गई है उसमें विहार की ओर से श्रीयुत सच्चिदानन्द सिंह गए हैं। उन्हों ने रास्ते में से ही अपनी यात्रा का वृत्तान्त लिखना आरम्भ किया है। उसमें उन्हों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने दो तीन बड़ी मजेदार बातें लिखी हैं। हमारे देश में छुरी कांटा साहिबी का चूड़ान्त चिन्ह समझा जाता है। जब कोई हिन्दुस्थानी पूरा साहिब बनना चाहताहै तो वह भोजनके समय छुरी कांटा खटकाने लगता है। श्रीयुत सच्चिदानन्द लिखते हैं कि जहाज़ पर जो अंग्रेज़ भारतवर्ष से लौट रहे थे वे अपनी सारी साहिबी और छुरी कांटा भूलकर आमों को और गुठलियों तक ऐसे ही चूसते थे जैसे हमारे गलियों के लड़के चूसा करते हैं। मुग़ल हमें विदेश से जीतने आए पर हमने उनके आचार व्यवहार में इतना परिवर्तन कर डाला कि वे जीतने की जगह स्वयं जीते गए। कई लोग समझते हैं कि अंग्रेजों के साथ अधिक मेलजोल न होने से उनपर हमारे आचार व्यवहार का प्रभाव नहीं पड़ता। पर ऊपर की घटना बतलाती है कि अंग्रेज़ भी हमारे देश में आकर साहिबी सभ्यता के चिन्ह छुरी काँटे को भूल जाते हैं।

—

गौन और साड़ी—श्रीयुत सच्चिदानन्द सिन्हा ने दूसरी बात गौन और साड़ी के विषय में लिखी है। वे कहते हैं कि "मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि हमारे देश की कुछ स्त्रियों ने विदेशी आचार व्यवहार को ग्रहण करलिया है; कई स्त्रियों ने साड़ी को छोड़कर गौन तक पहिन ली है। मैं समझता हूं कि कोई भी हिन्दुस्तानी स्त्री विलायती कपड़ों में न अच्छी लगती है और न लग सक्ती है; हिन्दुस्तानी साड़ी से बढ़कर स्त्रियों के लिये संसारमें कोई भी सुन्दर वेश नहीं हो सकता।" बड़ोदे के महाराज और महाराणी भी इसी जहाज़पर विलायत जारहे हैं। "जब महाराणी बनारस और अहमदाबाद की सुनहरी रेशमी साड़ी पहिन कर आती हैं तो समुद्र की देवता को भी मात करती हैं। इसी जहाज़ पर एक दूसरी महिला है जिसे मैंने गत वर्ष शिमले में देखा था। वहां वह हिन्दुस्तानी वेशमें बड़ी भव्य लगती थी, पर यहां गौन पहिन कर वह अपने लड़के की टहलनी लगतीहै।" लेखक का यह कथन अक्षरशः सत्य है। गौन हिन्दुस्थानी स्त्रियों को तो क्या, विलायती स्त्रियों के शरीर पर भी अच्छा नहीं लगता। जिन विलायती स्त्रियों को साड़ी देखने का अवसर मिला है, वे स्वयं गौन की अपेक्षा साड़ी को अच्छा समझती हैं। पिछले वर्ष मुझे मसूरीमें कुछ हिन्दुस्तानी लड़कियों से मिलने का अवसर मिला जो वहांके "वुडस्टाक" कालिज में पढ़तीथीं। यह अंग्रेज़ लड़कियों का कालिज है। वहां जो हिन्दुस्थानी लड़कियां जाती हैं वे दूसरों की देखादेखी गौन पहन लेतीहैं। उन्हें स्वयं अंग्रेज़ लड़कियां देखकर हंसती हैं। जिन हिन्दुस्थानी लड़कियों ने साड़ी पहिनना नहीं छोड़ा, उनका कथन था कि अंग्रेज़ लड़कियां साड़ी को बहुत पसंद करती हैं और रात के समय हमसे लेकर स्वयं पहिनती हैं।

—

विज्ञान कल्प तरु—हमारी भाषा में विज्ञान की चर्चा बहुत ही कम है। रसायन और भौतिकी की जो दो चार प्रवेशिकाऐं निकली हैं वह विज्ञान चर्चा नहीं कहाती। विज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। उनका ज्ञान आजकल हर तरह की उन्नति के लिये आवश्यक है। हमें यह देखकर हर्ष हुआ है कि मेरठ के बा० मुख़्त्यार सिंह वकील विज्ञान का एक बड़ा कोष प्रकाशित करने लगे हैं जिसमें सभी विज्ञानों के विषय में मोटी मोटी बातों का समावेश होगा। इसे वे क्रमशः प्रकाशित करेंगे। उसका पहिला भाग हमारे सामने है। इसमें अंग्रेज़ी के वैज्ञानिक शब्दों को अकारादि क्रमसे लेकर उनके हिन्दी में अर्थ दिए गए हैं और साथही संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। जहां Acitic Acid शब्द आया है वहां इसका अर्थ "सिरके का तेज़ाब" करके सिरके के निकालने की विधि और उसके उपयोग के विषय में विस्तार पूर्वक लिखागयाहै। बबूल और खैर शब्दों पर इन वृक्षों के लगाने की विधि और इनका व्यवसाय सम्बन्धी उपयोग दिखला दियागया है। "ऐसिटिलीन गैस" के नीचे गैस की रोशनीके बनाने की विधि, उसका आंखों पर प्रभाव और उपयोग अच्छी तरह से दिखलाया गया है। पिछले सप्ताह हम हिन्दी विश्वकोष के विषय में लिखचुके हैं। इन दोनों कोषों के तय्यारहो चुकने पर ये हमारे साहित्य के लिये बड़े गौरव का कारण होंगे। हमारा अनुरोध है कि पाठक इन दोनों कोषों के अवश्य स्थायी ग्राहक बनें। विज्ञान कल्प तरु क्रमशः प्रकाशित होगा। इसका प्रत्येक अंक सौ पृष्ठों का होगा। जिसका मूल्य स्थायी ग्राहकों से आठ आने और सर्व साधारण से॥) होगा। पत्र व्यवहार मैनेजर विज्ञान कल्पतरु कार्यालय, जनरल पबलिशिंगकम्पनी मेरठ से करना चाहिये। पिछले सप्ताह हम हिन्दी विश्वकोष का पता देना भूल गए थे। उसका पता विश्वकोष आफिस, बाग बाज़ार, २०कान्त पुकर लेन कलकत्ता है।

—

अफ्रीका में हिन्दी प्रचारिणी सभा—अफ्रीकामें यद्यपि सभी प्रान्तोंके हिन्दुस्थानी रहतेहैं, पर अधिक संख्या उन्हीं की है जो हिन्दी समझ सक्तेहैं। तामिल लोगों को छोड़कर सभी अफ्रीका वासी हिन्दुस्तानी हिन्दी समझ सक्तेहैं वहां भारतवासियों की सभा में प्रायः हिन्दी में ही व्याख्यान होते हैं, मद्रासियों के लिये उसका अनुवाद करदिया जाता है। मि० एंड्रूज़ने मुझे बतलाया था कि जब वे भारतवासियों के सामने व्याख्यान देते थे। तब उन्हें हिन्दी में ही बोलना पड़ता था क्योंकि श्रोताओं की अधिक संख्या हिन्दी ही समझ सक्ती है। हर्ष का विषय है कि हिन्दी का और भी अधिक प्रचार करने के लिये द० अफ़्रीका में हिन्दी प्रचारिणी सभा स्थापित होगई है। इसकी स्थापना गत २२ मार्च को "ट्रांसवाल के सुप्रसिद्धक नगर जरमिस्टनके एशियाटिक बाज़ार में हुई थी। इस के सभापति लालबहादुर सिंह और मन्त्री श्रीयुत भवानी दयाल हैं। इसी के सम्बन्ध में एक हिन्दी पुस्तकालय, हिन्दी रात्रि पाठशाला, और हिन्दी फुटबाल क्लब भी खोली गई है। सभा के लिये शीघ्र ही एक हिंदी भवन बनाने का भी विचार है। सभा के मन्त्री श्रीयुत भवानी दयाल बड़े उत्साही सज्जन हैं जिन्होंने द० अफरीका की हड़ताल के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय बड़ा काम किया था। उन्हीं के परिश्रम से द० अफरीका से प्रकाशित होने वाले "इन्डियनओपीनियन" का एक पृष्ट हिन्दी में भी निकलने लगा है जिसे वे ही सम्पादित करते हैं। हमें पूरी आशा है कि ऐसे उत्साही सज्जन के मन्त्रित्व में यह सभा बड़ी उन्नति करेगी। मन्त्री महाशय सम्पादकों और ग्रन्थ-कर्त्ताओं से निवेदन करते हैं कि वे सभा को पत्र और ग्रन्थ बिना मूल्य प्रदान करें। मन्त्री का पता, सैक्रटरी हिन्दीप्रचारिणी सभा P. o. Bor 374, Germiston, Transval South Africa है।

—

बम्बई की आग किसने लगाई?—इस वर्ष बम्बई के कारख़ानों पर अग्नि का बड़ा प्रकोप रहा है। अब तक ४० कारख़ानों में आग लग चुकी है। जो लोग भारतवर्ष के ईंट और पत्थरों तक में राजद्रोह को ढूंढ़ते हैं उन्हें इस अग्नि लीला में भी राजद्रोह की गन्ध आईथी। रीज़ साहिब ने उस समय पार्लीमेंट में ऐसी ही बात कही थी। हमने उसी समय लिखा था कि यह साहब के बिगड़े हुए दिमाग़ की कल्पना है। बम्बई सरकार ने आग लगने के कारणों पर विचार करने के लियेएक कमेटी बिठाई है। उस के सामने जो गवाहियां होरही हैं वे हमारे मत को ही पुष्ट करती हैं। उस दिन कमेटी के सामने गवाही देते हुए फायर ब्राइगेड के अध्यक्ष मि० ग्रीनप ने कहा कि यह आग स्वाभाविक कारणों से ही लगी है इसे किसी ने लगाया नहीं है। कई स्थानों में ताप मान बढ़ जाने से भी आग लग सकती है। अब "रीज़ साहब" क्या कहते हैं?

—

इंगलैंड में बहिष्कार—इगलैंड में जो भारतवासी बिद्यार्थी रहते हैं, उनकी देख भाल के लिये भारतीय सरकार ने छात्र विभाग स्थापित किया है। सरकार कहती है कि यह विभाग विद्यार्थियों की सहायता के लिये स्थापित किया गया है पर भारतीय छात्र इसे अपने लिये अपमान जनक समझते हैं। इसी लिये वे इसे नापसन्द करते हैं। गत ८ मई को लंडनवासी हिन्दुस्थानी विद्यार्थियों ने मिलकर एक विशाल सभा की जिसमें उन्होंने निश्चय किया कि यह विभाग हमारी उन्नति के लिये बड़ा हानिकारक है; इसे शीघ्र ही उड़ा देना चाहिये। सभापति का आसन श्रीयुत मेहता ने ग्रहण किया। उन्होंने अपने भाषण में इस विभाग के बहिष्कार की सम्मति दी। उन्होंने कहाकि "यहां के विश्वविद्यालयों में अब तो गोरे काले का भेद होते है। उस से हमें शिक्षा में बड़े कष्ट होते हैं। भारतीय सरकार उस भेद को तो हटवा नहीं सकती, हमारी देखभाल के लिये बड़ी चिन्तित होरही है। यदि वह सचमुच हमारी सहायता करना चाहती है तो उस भेद भाव को दूर कराने का यत्न करे। सरकार ने एक नई आतिथ्य समिति बनादी है; हम उसके आतिथ्य और कृपादृष्टि को लेकर क्या करें, जब हमें यहाँ पढ़ने का सुभीता ही नहीं है। सरकार इस छात्रविभाग से हमारी अयोग्यता और हीनता सिद्ध करना चाहती है।"

—

हम निरपराधी हैं—राजा बाज़ार बाम्ब अभियोगमें आरम्भिक गवाहियां समाप्त हो चुकीहैं। गवाहीके अन्त में अभियुक्तों ने अपने बयान में अपने आप को निर्दोषी बताया। अमृतलाल ने अपने बयान में कहा कि मेरे घर में से जो लोहे के कील और टीनके डिब्बे आदि मिले हैं उनका प्रयोजन बम्ब बनाना न था। न मेरे पास बम्ब हैं और न मैं बनाना जानता हूं। मैं बर्फ़ के कारख़ाने में काम करता था, और बाईसिकलोंकी मरम्मत करके कुछ और कमाया करताथा। मैं कारख़ाने में एसिटिलीन गैस के विभाग में काम करता था। बा० जोगेन्द्रनाथदत्त ने ही मुझे एक नए तरह के सस्ते लैम्प बनाने की बिधी बताई थी। उन्हीं के लिये मैं टीन के डिब्बे आदि लाया था। दीनेशचन्द्रदासने कहाकि बर्दवानकी बाढ़ के समय अमृतलालके साथ मेरा परिचय हुआ था। मैं एक दिन उसके मित्र की परिचर्या करने गया था। वहां जोगेन्द्रदत्त आया था। मेरा कोट कीली पर टंगा था। मैं नहीं जानता कि उसमें साईफ़र लिस्ट कैसे आगई। सारदाचरण गुह तीसरा अभियुक्तहै। उसने कहा कि मेरे घर वाले मेरी स्त्री के साथ अच्छा व्यवहार न करते थे इस लिये मैं घर बार छोड़ कर बनारस योग सीखने जारहा था। मैं कलकत्ते में आकर बीमार होगया। मैं वहां अच्छी जगह न मिलने से शशांक के पास गया था। मेरी गांव की पंचायत के प्रधान की मेरे साथ दुश्मनी थी इसलिये उसने मुझे पुलिस के हवाले करवादिया है। चौथे अभियुक्त कालपद घोष ने कहा कि मैं निरपराधी हूं। मैं कभी बम्ब बनाने के लिये किसी कुमन्त्रणा में सम्मिलित नहीं हुआ। शशांक के सिवा मैं किसी अभियुक्त को नहीं जानता। मैं उसके पास वाले घर में रहता था, इसी लिये उसे जानता हूं। मैंने "लिबर्टी"के पर्चे कभी नहीं छापे। मैंने अपने पकड़े जाने से पहिले उन्हें कभी देखा भी नहीं। अपने मकान वाली के लड़के बरोद के साथ मैं एक दिन जा रहा था। उसने मुझे कुछ पर्चे दिए। मैं ने बिना देखे उन्हें जेब में डाल लिया। बरोद के जातेही मुझे पकड़ा गया। पकड़े जाने पर मैंने काग़ज़ों को फैंकने का कोई यत्न नहीं किया। ऐसा पता लगता था कि पुलिस के दारोगे को इन काग़ज़ों का पता था क्योंकि उसने पकड़तेही मेरी जेबों में हाथ डाला।

—

भारतवर्ष में बायस्कोप—बायस्कोप में चलती फिरती तसवीरें दिखलाई जाती हैं। इसका विलायत में बड़ा प्रचार है। इससे मनोरञ्जन और शिक्षा—दोनों का काम लिया जाता है। सारे संसार के समाचार, लड़ाइयां, दूसरे देशों के आचार व्यवहार, नगरों के दृश्य, पुराने समय के खंडरात आदि इन तसवीरों के सहारे घर बैठे ही दिखा दिये जाते हैं। इन्हीं तसवीरों के सहारे प्रायः ऐसी कहानियों का अभिनय भी दिखाया जाता है जो बड़ा शिक्षाप्रद होता है। अब इन कम्पनियों का हमारे देशके बड़े बड़े नगरों में भी प्रचार होगया है पर बायस्कोप की सब तसवीरें विलायत से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बनकर आती हैं। इनमें वहीं के दृश्य और वहीं की घटनाएँ होती हैं। इस लिये वे हमारे लिये उतनी शिक्षाप्रद नहीं होसक्तीं। हमारे देश के साधारण लोग इन तसवीरोंको देखने तो जातेहैं पर वे न इनसे शिक्षा लेसक्तेहैं औरन इन्हें समझ ही सक्ते हैं। मैं कई बार बायस्कोप देखने के समय चौथे दर्जे में बैठा हूं। वहां बैठकर, तसवीरों के विषय में सर्व साधारणकी टीका टिप्पणी सुनकर हँसी भी आती है और रोना भी। वे लड़की को माँ और मां को पत्नी समझते हैं और फिर अंग्रेज़ों के आचार व्यवहार के विषय में मनमाने परिणाम निकालते हैं। हर्ष की बात है कि कलकत्ते की ऐल-फिंस्टन बायस्कोप कम्पनी ने इस देश के चित्रों की फिल्में बनाने का काम हाथ में लिया है। यदि यह काम कोई देसी कम्पनी लेती तो और भी अच्छा होता।

—

पुरोहितों की परीक्षा—छोटे से छोटा काम करने के लिये शिक्षा और परीक्षा की आवश्यकता समझी जाती है पर पुरोहितों और उपदेशकों का काम ऐसा सुलभ समझा जाता है कि वह किसी तरह की भी शिक्षा दीक्षा के बिना ही चलता है। बड़ौदे की कानून सभा में एक मसौदा पेश हुआहै जिसके अनुसार सब पुरोहितोंको इस विषयकी परीक्षा देनी होगी। कहतेहैं कि कई लोगों ने इसका बड़ा विरोध किया है। हम समझतेहैं कि कुछ एक स्वार्थी लोगों के विरोध की पर्वा न करके कानून सभा ऐसे उपयोगी मसौदे को अवश्य ही स्वीकृत करके कानून बना देगी।

—

लाहौर में "बिजली"- बरसात में जैसे घास फूस की एकदम वृद्धि होजाती है वैसे ही आज कल पञ्जाब में—और विशेषतया लाहौर में, दैनिक पत्रों की बढ़ती होरही है। थोड़े ही दिनों में लाहौर के तीन साप्ताहिक पत्रों ने अपने दैनिक संस्करण निकालने आरम्भ कर दिये हैं। अब एक नए पत्र ने इन से भी बढ़ कर हाथ मारने का विचार किया है। गत सप्ताह लाहौर में "बिजली" निकली है जो प्रातः और सायं-दिन में दो बार चमकती है। हम इसके निकलने पर पंजाबियों के साहस का अभिनन्दन करते हैं और बिजली का स्वागत करते हैं।

—

विद्यार्थी—पं० रामजी लाल शर्मा इंडियन प्रैस से अलग होकर एक बर्ष से अपना हिन्दी प्रैस चला रहे हैं। इस बर्ष उन्होंने वहां से "विद्यार्थी" नामक मासिक पत्र निकाला है। यह पत्र विद्यार्थियों के लिये निकाला गया है और उन्हीं के काम के इस में लेख हैं। लेख सभी अच्छे हैं। आरम्भ में मालवीय जी का चित्र और चरित्र है। इस पत्र के उपहार रूप में "उपदेश मञ्जरी" नामक पुस्तक भी दी गई है। इसमें भक्ति, नीरोगता, व्यायाम, मितव्यय आदि २६ बालकोपयोगी बिषयों पर छोटे छोटे उपदेश हैं पत्र की लिखाई छपाई सब अच्छी है। वार्षिक मूल्य २) है।

देहली का अभियोग

अभियुक्त दौरा सुपुर्द

एक सप्ताह का अवकाश

२१ ता० को सैशन कोर्ट

देहली में मि० कनोली विशेष मैजिस्ट्रैट की कचहरी में जो अभियोग चल रहा है उस का फ़ैसला सुनाया जाने के लिये १२ मई निश्चित हुई थी, तदनुसार ठीक समय पर सारे अभियुक्त और उनके वकील उपस्थित होगए। सरकारी वकील ला० मूलचन्द ने अदालत को सम्मति दी कि सब अपराधियों को सेशन सुपुर्द कर दिया जाय और पीछे से रामलाल के विरुद्ध विशेष शहादत प्रस्तुत करने की आज्ञा हो जाय। उक्त लाला साहब ने यह भी कहा कि इस्तगासे का विचार इस विशेष शहादत के लिये अदालत में साक्षी प्रस्तुत करने का नहीं है, किन्तु यह केवल उन पत्रों में से-जो अर्जुनलाल सेठी के अभियोग से सम्बन्ध रखते हैं कुछ शहादतें पढ़कर सुनाना चाहते हैं।

इसके पश्चात् साढ़े तीन बजे मैजिस्ट्रैट ने अपना फ़ैसला सुनाकर रामलाल के अतिरिक्त सारे अभियुक्तों को सेशन सुपुर्द कर दिया और लिखा कि मैं रामलाल के विषय में कोई फैसला नहीं देता, शेष सब अपराधियों पर जिनकी सूची निम्न लिखित है भारतीय कानून की धारा ३०२ तथा १२० ब लगाता हूं।

अमीर चन्द, वसन्त कुमार बिसवास, अवध बिहारी, बालमुकन्द, चरन दास, मन्नूलाल ख़शीराम, बलराज और हनुमन्त सहाय पर बग़ावत का अपराध लगाकर इन्हें ३०२ तथा १२० ब.धारा के अनुसार सेशन सुपुर्द करता हूं।

अभियुक्त बसन्त कुमार तथा अवध बिहारी पर लारन्स हाल लाहौर में १९१३ ई० में राम पदार्थ चपरासी की हत्या करने का अपराध लगा कर उन को सेशन सुपुर्द किया गया, अमीर चन्द और अवध बिहारी को बम की टोपियां अपने पास रखने का अपराध लगाकर सेशन सुपुर्द किया गया, बसन्त कुमार और बालमुकन्द पर दो बम अपने पास रखने का अपराध लगाया गया, अवध बिहारी और अमीर चन्द पर धारा १२४ अ के अनुसार 'लिबर्टी' के परचे अपने पास रखने और भारतमें ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जोश फैलाने का अपराध लगाया गया। ला० मूलचन्द की प्रार्थना २०८ धाराके अनुसार स्वीकार की गई परन्तु सब अपराधियों को जो सेशन सपुर्द किये गए हैं २१९ धारा के अनुसार अदालत में उपस्थित होना चाहिये।

अभियुक्तों के साक्षी

ला० गिरिधारी लाल वकील ने प्रार्थना की कि सफ़ाई के साक्षियों की सूची प्रस्तुत करने के लिये कुछ दिनों का अवकाश मिलना चाहिये इसके विरुद्ध मि० मूल चन्द ने २११ धारा के अनुसार कहा कि सूची तो उसी समय प्रस्तुत करनी चाहिये नहीं तो यह अभियोग सेशन सपुर्द नहीं किया जा सकता। बलराज, खुशी राम, और बाल मुकन्द की ओर से अदालत में कोई वकील उपस्थित नहीं था इस लिये अदालत ने उन से कहा कि वे अपने साक्षियों की सूची उपस्थित करें, और यह ज्ञात करके कि वे उस समय कोई सूची उपस्थित नहीं कर सकते थे, अपनी राय से कार्य्य करते हुए उन को गवाहों की सूची उपस्थित करने के लिये एक सप्ताह का अवकाश दिया।

रामलाल की शहादत

रामलाल के विषय में विशेष शहादत सुनने के लिये १६ मई की तारीख़ निश्चित हुई है

सैशन कोर्ट में अभियोग

इस मास की २१ ता० से इस अभियोग का विचार सैशन कोर्ट में आरम्भ होगा। अभी तक सैशन जज का नाम प्रकट नहीं हुआ है।

—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

उपदेशक महाविद्यालय

दस नई छात्र वृत्तियां

एक भारी दान

उपदेशक महाविद्यालय खुलने के समाचार ने आर्य जगत् में उचित उत्साह उत्पन्न कर दिया है। अच्छे उपदेशक ही किसी धर्म के प्राण रूप होते हैं, और फिर आर्य समाज को तो उनकी इस समय विशेष आवश्यकता है। कुछ एक गत वर्षों में हमारा प्रचार का काम कितना ढीला पड़ गया है, यह वे लोग ही ठीक प्रकार से अनुभव कर सकते हैं, जिन्हें इस प्रकार के कामों के साथ कुछ भी सहानुभूति है। आगे पग बढ़ाना तो एक ओर रहा, हमने तो उलटा पीछे को जाना प्रारम्भ कर दिया है। उन्नति का रुक जाना स्वयं एक भयावना दृश्य है, और भविष्यत में आशा की रेखा को बुझा देता है। किन्तु जहां अवनति हो—वहां तो भगवान ही सहायक है!

प्रचार की शिथिलता

आर्य समाज की प्रचारक सेना शिथिल पड़ गई है, किन्तु उसके प्रतिद्वन्दी अपनी सुसज्जित सेनाओं को बढ़ाते चले आरहे हैं। वैदिक धर्म के सिंहनाद की ध्वनि ढीली पड़ रही है, यद्यपि ईसाई और मुसलमानों का शब्द कलकत्ते के महलों में, लन्दन के प्रासादों में, और साथ ही भङ्गी और चमारों की कुटियाओं में सुनाई पड़ रहा है। धर्म नाटक के अभिनय में विष्कम्भक सा आया प्रतीत होता है, जिसमें मुख्य पात्र पर्दे के पीछे चले जांय और गौणपात्र आकर अभिनय करें। पत्रों में जब नये ईसाइयों और नये मुसलमानों का वृत्तान्त पढ़ने में आता है, उस समय रोमाञ्च हो आता है। आर्य जाति के सहस्त्रों बच्चे अन्य धर्मों और भिन्न सभ्यता की गोद में कुर्बान हो रहे हैं, उन्हें आर्य सभ्यता के अमृत पिलाने की आवश्यकता है किन्तु कोई पिलाने वाला नहीं, बेचारे निराश हो कर अपने भाई बन्धुओं से विमुख होने के लिये बाधित हो जाते हैं।

आर्य जाति की मृत्युपत्री

१९११ में समाप्त होने वाले दस वर्षों की ही बात ले लीजिये। आर्यसमाज के सभासदों की संख्या शायद इन वर्षों के अन्दर दुगनी हुई होगी। इसपर हम लोगों ने प्रसन्नता प्रकट की। किन्तु लज्जा से सिर नीचा होजाता है जब हमें ज्ञात होता है कि इन्हीं वर्षों में ईसाइयों ने किसी २ स्थान पर सौ गुनी और कहीं २ इससे भी अधिक उन्नति की है। हमारे पाठक अन्यत्र कहीं प्रो० बालकृष्ण जी की बनाई हुई आर्य जाति की मृत्यु पत्री पढ़ेंगे। उससे यदि उनकी आँखों में आँसू न भर आवें तो आश्चर्य होगा।

इस सारे दारुण दृश्य को हटाने का क्या उपाय है?

प्रचार की आवश्यकता

वैदिक धर्म का प्रचार ही इस रोग की महौषधि है। आर्य सन्तान के रुधिर में आर्य भाव को फिर से जगाना ही इस आते हुए मृत्यु राक्षस को भगाने का एक मात्र मन्त्र है। उमड़ती हुई प्रतिद्वन्द्वी सेना के प्रवाह को रोकने के लिये यदि कोई राम बाण है तो वह दयानन्द का संदेसा है। प्रचार की बड़ी भारी आवश्यकता है, और प्रचार अच्छे, शिक्षित, पण्डित और धर्म के लिये मर मिटने वाले प्रचारकों विना असम्भव है। आर्य समाजों में उपदेशकों की मांग है, किन्तु उनकी मांग पूरी कैसे हो? इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये ही उपदेशक महाविद्यालय की नींव रखी गई है। दो सप्ताह हुए श्री उपाध्यक्ष रामदेव जी ने उसका सारा कार्य क्रम प्रचारक द्वारा प्रकाशित किया था। उसे पढ़कर आर्य जनता में खूब उत्साह उत्पन्न हुआ है। वैसे तो अनेक आर्यभाइयों ने अनेक प्रकारों से सहायता देने का वचन दिया है किन्तु सब से बड़ी सहायता गुरुकुल के प्रसिद्ध प्रेमी कलकत्ते के सेठ जय नारायण रामचन्द और वहीं के सेठ बलदेव दास जी की है, जिन्हों ने एक पत्र द्वारा सूचितकिया है कि वे उपदेशक महाविद्यालय के लिये

प्रतिमास १५०)

दिया करेंगे, जिस से एक दम दसविद्यार्थी विना शुल्क के शिक्षा पा सकेंगे। सेठों का गुरुकुल और धर्म के साथ प्रेम देख कर किस आर्य पुत्रका चित्त प्रसन्न नहीं होता, क्योंकि वस्तुतः इस समय पौराणिक अन्धकार के महा ख़ज़ान्ची यदि कोई हैं तो हमारे देश के धनी लोग ही हैं। उन में धर्म और जाति रक्षा के विचारों का प्रवेश अन्धकार के किले में छेद होने के समान है।

एक बहुमूल्य आशीर्वाद

जिन सज्जनों या समाजों ने छात्र वृत्तियां देने का वचन दिया था, वे छात्र वृत्तियां भेज रहे हैं, जिन्हों ने और किसी प्रकार से सहायता देने की इच्छा प्रकट की थी उनकी भी दक्षिणायें आ रही हैं, किन्तु इन सब से अधिक मूल्य वान् मैं उस आशीर्वाद को समझता हूं जो एक बूढ़े किन्तु उत्साही, रोग द्वारा पछाड़े हुए किन्तु हृदय से बहादुर आर्य बुजुर्ग से प्राप्त हुआ है। पं० विष्णुलाल एम० ए० आर्यसमाज के पुराने सेवक हैं, उन जैसे श्रद्धालु सज्जन बहुत थोड़े मिलेंगे। कोई ऐसा शुभ काम नहीं है, जिस के साथ आपकी सहानुभूति न हो कोई ऐसी अच्छी संस्था नहीं, जिसके लिये आपने अपनी थैली न खोली हो। गत तीन वर्षों से आप को अर्धाङ्ग ने आ दबाया है, पहले कई महीनों तक तो आप हिलने जुलने में भी अशक्त रहे किन्तु अब ईश्वर की कृपा से आप अच्छे हैं। श्री महात्मा जी को एक पत्र आपने भेजा है जिसमें उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना पर हर्ष प्रकट करते हुए इस शुभ कार्य के लिये आशीर्वाद दिया है। सब सहायताओं की अपेक्षा हम इस आशीर्वाद का सब से अधिक मूल्य समझते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्साह की आवश्यकता

ये सब घटनायें इस बात की सूचनायें हैं कि आर्य पुरुषों के अन्दर उपदेशक महाविद्यालय के लिये उत्साह है। दस छात्रवृत्तियां तो कलकत्ते के सेठों की ओर से आ चुकी हैं, एक छात्रवृत्ति गुरुकुलके अनन्यप्रेमी ला० लब्भूराम नय्यड़ देंगे। दो समाजों ने भी छात्रवृत्तियां देने की प्रतिज्ञा की हुई है। शेष ७ छात्रवृत्तियों की और आवश्यकता है। जो समाजें अपने उपदेशक तय्यार करवाना चाहें शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

विद्यार्थियों की आवश्यकता

छात्रवृत्तियां तो कुछ प्राप्त होगई हैं, और कुछ प्राप्त हो जाएंगी। किन्तु अब बड़ी आवश्यकता विद्यार्थियों की है। जो विद्यार्थी उपदेशक महाविद्यालय में शिक्षा पाना चाहें, उन्हें शीघ्रही प्रार्थना पत्र भेजने चाहियें। इन्द्र

सचित्र

विकासवाद

(डार्विन की थ्यूरी)

गुरुकुल कांगड़ी के प्रोफेसर

साठे एम० ए० कृत

विकासवाद सारे विज्ञान का आधार है। योरप के बड़े बड़े फ़िलासफ़रों ने इस वाद के पता लगाने में अपना सारा जीवन दे दिया है। प्रत्येक पुरुषको इस वाद से जानकारी प्राप्त करनी चाहिये। जो व्याख्यानों में हर्बर्ट स्पेन्सर और डार्विन का नाम लेकर खंडन मंडन किया करते हैं, उनके भी बड़े काम की चीज़ है। इस पुस्तक में

२९ चित्र

हैं। भाषा बड़ी मधुर और सरल है।

प्रसिद्ध विद्वानों और पत्रोंने प्रशंसा की है।

इतनी बड़ी सचित्र पुस्तक

मूल्य केवल २)

मैनेजर सद्धर्म प्रचारकपत्र, देहली

लाला हरदयाल

ज़मानत पर

कैनडा में ७५ हज़ार चंदा।

लगभग डेढ़ मास पहिले रायटर के अमरीकावासी संवाददाता ने सारे देश में यह समाचार फैला दिया था कि कैलिफ़ोर्नियां की रियासत ने लाला हरदयाल को पकड़ लिया है और उसे देश निकाला देने का विचार कर रही है। संवाददाता ने बड़ी चतुराई से इस घटना का सम्बन्ध देहली के अभियोग के साथ जोड़ा था और यह आशा प्रकट की थी कि अमरीका की रियासत लाला हरदयाल को अंग्रेज़ी सरकार के हाथ सौंप देगी। इसके विषय में आगे क्या हो रहा है, यह जानने के लिए भारतवासी बहुत ही उत्सुक थे। पर रायटर गिरिफ्तारी का समाचार देकर ही चुप होगया। इसके आगे उसने कुछ भी बतलाने का कष्ट न उठाया। इस सप्ताह अमरीका से "हिन्दुस्तानी" समाचार पत्र आया है। उसमें एक तार छपी है जो कैलिफोर्निया से "हिन्दुस्तानी" के सम्पादक को मिली थी। उससे पता लगता है कि "अंग्रेज़ी सरकार की प्रेरणा और अमरीका राज्यकी आज्ञा से सानफ्रांसिसको के प्रवास विभाग ने २५ मार्चको बर्कले में लाला हरदयाल को पकड़ लिया। लाला हरदयाल हवालात नहीं भेजे गये किन्तु इतना कहकर छोड़ दिये गए कि कल अपने आप कचहरी में उपस्थित होजाना। इस समय स्पष्ट रूप से लाला हरदयाल पर दो दोष लगाए गए हैं एक तो यह कि वह भारतवर्षमें अंग्रेजी राज्य का विरोधी है और "ग़दर" नामी पत्र से वहां क्रांति उत्पन्न करना चाहता है और दूसरा यह कि वह गुप्त रीति से न्यूयार्क में घुस आया है। अमरीका के शासक ला० हरदयाल के साथ बड़ा अच्छा बर्ताव कर रहे हैं और उन्हें अपनी सफ़ाई का सब तरह से अवसर दे रहे हैं। इस समय यह बात विचाराधीन है और अन्तिम निर्णय तक ला० हरदयाल एक हज़ार डालर की ज़मानत पर छूटे हुए हैं अपनी पुष्टि में लाला हरदयाल व्याख्यान दे रहे हैं जिन्हें सुनने के लिए अमरीका वासियों की बहुत संख्या आती है। ला० हरदयाल के अमरीकावासी मित्र और भक्तयत्न कर रहे हैं कि ला० हरदयाल को देश निकाला न दिया जा सके।"

ला० हरदयाल पर गुप्तरीति से न्यूयार्क में घुस आने का जो दूसरा दोष लगाया गया है उसके विषय में उनका कथन है कि "मैं फ्रांस से चलकर १० फर्वरी १९११ को अमरीका में पहुंचा। मैंने इस देश में प्रविष्ट होने के लिए किसी छल कपट से काम नहीं लिया और नाहीं मैंने अपने उद्देश्य को स्पष्ट रीति से बतलाने में संकोच किया। मैं अमरीका में रुपया कमाने नहीं आया। मैं यहाँ अपने देश वासियों को शिक्षित और संगठित करने आया हूं।"

ला० हरदयाल की सहायता के लिये कैनडा में खूब रुपया इकट्ठा हो रहा है। ला० हरदयाल के पकड़े जाने का समाचार फैलते ही कैनडा में एक सभा हुई जिस में ७५ हज़ार रुपया इकट्ठा हुआ।

देहली में बाल विधवा का विवाह—तिथि वैशाख शुक्ला ११ बुधवार ता ६।५।१४ को रात्री के ८॥ बजे दिल्ली के नामी रईस श्रीमान लाला हीरालाल जी मुरारीलाल जी के मकान में एक बाल विधवा का विवाह संस्कार आरम्भ हुआ पुत्री श्रीमान पण्डित भगवन्त किशोर जी की थी जो कि नौ वर्ष की आयु में विधवा होगई थी अब आयु अन्दाज २० वर्ष की है। वर श्रीमान् पंडित कंदनलाल जी डाक्टर देहरादून से बहुत से प्रतिष्ठित सज्जनों के साथ पधारे थे वर की आयु तीस वर्ष की अन्दाज है। संस्कार श्रीमान् पंडित विद्यानन्द जी एवं श्रीमान् पंडित गंगादत्त जी ने कराया वर ने कई संस्थाओं को ४०) का दान किया यहां के प्रतिष्ठित सज्जन भी बहुत पधारे थे श्रीमान् पंडित भगवन्त किशोर जी ने प्रबन्ध बहुत उत्तमता से कराया उपस्थित सज्जनों का सत्कार बहुत प्रेम के साथ किया विवाह संस्कार आनन्द से होगया।

केदारनाथ गोएनका उपमन्त्री आर्यसमाज

चावड़ी बाज़ार दिल्ली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती

(३५)

सं० १९८८ का सेप्टेम्बर मास मैंने अपने ग्राम तलवन में व्यतीत किया। नैत्यिक सत्सङ्ग के अतिरिक्त मैंने एक कन्या पाठशाला भी खुलवादी किन्तु अध्यापिका की अयोग्यताके कारण जालन्धर लौटते हुए उसे बन्द करना पड़ा। अपने कुटुम्ब में बहुत से सामाजिक संशोधनों का भी प्रयत्न किया। अच्छे कामों के लिए जहां एक कौड़ी देने का भी किसी को अभ्यास न था वहां सामूहिक शक्ति से काम करना और उसके लिए धन व्यय करना भी मैंने यथा शक्ति अपनी पुरानी बिरादरी वालों को सिखाया। मास के अन्तिम अर्द्ध भाग में एक अताई का नुसख़ा लेकर मैंने यूनानी जुलाब लिया जिसने मुझे बहुत निर्बल करदिया। उसी अवस्था में १ अक्टूबर को मैं तलवन से चलदिया। कुछ बल प्राप्त करने पर इसी मासमें एक नए काम की बुनियाद डालीगई जिसने मेरे चिरकाल के विचार को क्रिया में परिणत किया। जिस संस्था का नाम इस समय

कन्या महाविद्यालय जालन्धर

है उसके संस्थापन की कथा बहुत ही साधारण किन्तु शिक्षाप्रद है। जिस समय का मैं वृत्तान्त लिखरहाहूं उस समय जालंधर में एक पहाड़ी वृद्धा स्त्री रहतीथी, जिसे "माईलाड़ी" कहकर लोग पुकारते थे। जो कुछ भी अक्षराभ्यास हिन्दी का हिन्दी महिलाओं को था वह इसी माई की कृपा का परिणाम था। मेरी धर्मपत्नीमा ने भी इसी माई से कुछ पढ़ा था। इस माई को कुछ विशेष लालच देकर ईसाइयों ने अपनी पुत्री पाठशाला में रखलिया था। यह अपनी शिष्या स्त्रियों की लड़कियों को लिहाज़ मुलाहज़े के दबाव से ईसाई पुत्री पाठशालामें लेजाया करती थी। इसी प्रकार मेरी पुत्री वेदकुमारी को भी उन्हीं की पाठशाला में बैठाया गया था। १९ अक्टूबर १८८८ की डायरी में लिखा है—"कचहरी से लौटकर जब अंदर गया तो वेदकुमारी दौड़ी आई और जो भजन पाठशाला से सीखकर आई थी सुनाने लगी—"इकबार ईसाईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा राम रसिया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया," इत्यादि—मैं बड़ा चौकन्ना हुआ। तब पूछने पर पता लगा कि आर्यजाति की पुत्रियों कोअपने शास्त्रों की निन्दा करनी भी सिखाई जाती है। निश्चय कियाहै कि अपनी पुत्री पाठशाला अवश्य खोलनी चाहिए।"

दूसरे दिन मैं मिस्टर ट्रोवर्ड साहेब सेशन्जजज को मिलने गया। वे महाशय बड़े उदार निकले। उनके साथ जो बात चीत हुई उसमें भी उनकी ओर से यही सम्मति मिली कि आर्यजाति को अपने पैरों पर खड़ा होना सीखना चाहिये। फिर तीसरे दिन आदित्यवार था। आर्यसमाजके साप्ताहिक अधिवेशन में रायबहादुर बख्शी सोहनलाल प्लीडर भी सम्मिलित थे। हम दोनों इकट्ठे घर को लौटे। मैंने बख्शीजी से आर्यपुत्री पाठशाला की बात छेड़ी, वे पहले ही तय्यार मिले क्योंकि उनको भी पता लगचुका था कि उनकी लड़की को क्यापढ़ाया जाता है। फिर क्या था, मैंने उसी रात बैठकर अंग्रेज़ी में एक अपील लिखी और दूसरे दिन से ही चंदा लिखाना शुरू होगया। मेरी डायरी से पता लगता है कि अक्तूबरके अन्ततक मैं बराबर चन्दा इकट्ठा करता रहा। ३ नवम्बर को ऋषि दयानन्द का मृत्यु दिवस था। मैंने उसीदिन प्रातः काल अपने घर में वृहत् हवन कराया। ४० महाशय उपस्थित थे। वहां कन्यापाठशालाके लिए फिर अपीलकी गई। रात को समाज मन्दिर में ऋषि दयानंद के जीवन पर मैंने ही व्याख्यान दिया। इन्हीं दिनों एक दूसरे बड़े लाभ की बुनियाद डालने का विचार उपस्थित हुआ। धर्म सेवा के लिए जहाँ अंदर से उत्साह उत्पन्न होने लगा वहां साथही साधनभी प्राप्त होने लगे। इन्हीं दिनों में से एक दिन राज मज़दूरों को साप्ताहिक वेतन बांटना था; पास फूटी कौड़ी न थी। बड़ी चिन्ता में था कि तीसरे पहर तक १३०) की आमदनी होगई। मेरी डायरी में लिखा है—"मनुष्य को कभी निराश न होना चाहिये; परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रखना चाहिये।" मुझे इन दिनों अपने विचार सर्व साधारण तक पहुंचाने के लिए किसी साधन की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। आवश्यकता प्रतीत होते ही परमात्मा ने मार्ग दर्शा दिया और ऋषि उत्सव के दूसरे दिन ही

सद्धर्म प्रचारक

साप्ताहिक उर्दू पत्र के निकालने का विचार होने लगा। दूसरे ही दिन पच्चीस पच्चीस रुपयों के सोलह हिस्सों के हिस्से दार पैदा हो गए और सचमुच प्रेस का सामान क्रय करने की सूझने लगी। सभी हिस्सेदार आये थे। इन में (१) श्रीमान रामकृष्णजी वर्तमान प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (२) श्रीमान देवराज जी प्रधान कन्या महाविद्यालय (३) श्रीमान शालिग्राम जी भन्डारी गुरुकुल इत्यादि सभी पुराने जालन्धरी आर्य सम्मिलित थे। इस समय से चैत्र सम्बत १९४६ के अन्त तक सब प्रबन्ध होता रहा और १ वैसाख १९४७ को प्रचारक का पहला अङ्क निकला। कन्या महा विद्यालय तथा सद्धर्म प्रचरक के सम्बन्ध में यों तो जहां कहीं प्रकरण आवेगा लिखूंगा ही किन्तु प्रचारक की पूरी कहानी कभी फिर सर्व साधारण की भेंट धरूंगा। इन्हीं दिनों शिक्षा सम्बन्धी समिति के प्रधान सरचार्लस एचीसन महोदय अपनी कमीशन का काम समाप्त करके जालन्धर में अपने सम्बन्धी मेकवर्थ यङ्ग कमिश्नर को मिलने आए थे, जो सर मैकवर्थ यङ्ग बन कर पीछे पंजाब के लाट साहब बने थे। जालन्धर के रईस आग्रह पूर्वक मुझे भी साथ ले गए। उस मिलाप का हाल मेरी डायरी में लिखा है। रईस लोग तो समाप्ति प्रशंसायुक्त अल्पुक्तियों पर ही करना चाहते थे परन्तु मैंने स्कूलों और कालिजों में फीस बढ़ाने का विषय छेड़ दिया। सरचार्लस ने मुझे रोकने के लिये कहा—"मैंतो फ़ीस बढ़ाने का पक्षपाती हूं, जब गवनमैंन्ट अपनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रजा के भोजन का प्रबन्ध नहीं करती तो शिक्षा का प्रबन्ध करना उस के लिए किसी युक्ति से भी सिद्ध नहीं हो सक ता।" मैंने उत्तर में कहा— "मनुष्य स्वभावतः भोजन का सामान एकत्र करने को बाधित होते हैं किन्तु छोटे बच्चों की तरह वे अभी शिक्षा के लाभों से परिचित नहीं। इस लिए दयालू माता को न्याई गवर्मेन्ट को शिक्षा के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहिए।" मेरी डायरी में लिखा है कि सरचार्लस ने इस पर विषय को बदल दिया और नगर के समाचार पूछ कर सब को विदा किया। इन दिनों मालूम होता है कि अपने नित्य कर्मों में नियम बद्ध होने के कारण मेरी मानसिक दशा अच्छी रहने लगी थी। समाज के साप्ताहिक जलसों में उपदेशादि के अतिरिक्त घर पर कई सज्जनों को सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थ भी मैं पढ़ाता था; कन्या पाठशाला के लिए आन्दोलन के अतिरिक्त आर्य पत्रिका के लिए लेख भी भेजा करता था और रात को शयन से पहले मेरे मकान पर आर्य भाई हरिकीर्तन के लिए भी जमा होते थे। यह अवस्था थी जब लाहौर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव निकट आ पहुंचा।

(मुन्शीराम)

शाहाबाद का उत्सव—पं० रघुनन्दन लाल नागर जी मन्त्री आर्यसमाज शाहाबाद (ज़िला करनाल) लिखते हैं कि उक्त समाज का अधिवेशन २, ३, ४, मई को बड़ी निर्विघ्नता के साथ समाप्त हुआ, डिप्टीकमिश्नर साहब कप्तान पुलिस ने जो सहायता दी उस के लिये कार्य्यकर्त्ता लोग उक्त महोदयों के बड़े कृतज्ञ हैं। ४ स्त्री पुरुषों की शुद्धि हुई और १८॥) वेद प्रचार आदि के लिये एकत्रित हुए।

आवश्यकता

गुरुकुल कांगड़ी के चिकित्सालय के लिये एक ऐसे होशियार कम्पौंडर तथा ड्रेसर की आवश्यकता है-जो सदाचारी हो और गुरुकुल सेवा का इच्छुक हो-वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा—

प्रार्थना पत्र प्रशंसा पत्रों सहित निम्नलिखित पते पर आना चाहिये—

मुन्शीराम
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी पोस्ट शामपुर जिला-बिजनोर

आर्य्य जाति की मृत्यु पत्रि

आर्य्य जनता से अपील

(प्रो० बालकृष्ण एम. ए. द्वारा लिखित)

एक दो व्याख्यानों में आर्य जनता के सामने मैं प्रकट कर चुका हूं कि पंजाब में हिन्दुओं की प्रति वर्ष कमी हो रही है, किन्तु अन्य धर्मावलम्बियों की दिन दुगनी और रात चौगुनी उन्नति होती गई है। सैन्सस रिपोर्ट के अध्ययन से कई विचित्र परिणाम हिन्दु जाति के सम्बन्ध में निकलते हैं जिन में से सब से बड़ा यही है कि कन्या कुमारी से लेकर काश्मीर प्रदेश तक निरन्तर हिन्दु जाति का क्षय हो रहा है, कि पंजाब तक ही आर्य्य जाति की मृत्यु परिमित नहीं बल्कि यमराज ने अपना विकराल गाल खूब खोला हुआ है। विचित्र तो यह है कि संसार की सब जातियां संख्या में खूब बढ़ती जाती हैं, उनके धर्म की वृद्धि हो रही है किन्तु एक आर्य्य जाति ही ऐसी है जिस की क्रमशः अवनति हो रही है!

२. इसी विषय पर अङ्कों द्वारा इस लेख में प्रकाश डाला जाता है ताकि जन संख्या की महिमा का अपूर्व भाव हमारे पाठकों के हृदय पर अङ्कित होजावे। आप जानते हैं कि भारत में तीन प्रधान धर्मों का वास है। हिन्दू, मुसलमान और किरानी। हमारा यह उद्देश है कि १८८१ से आप को इन धर्मों की वृद्धि और अवनति का ठीक २ ज्ञान देवें ताकि हमारे आर्य्य भाई और आर्य देवियां अपने धर्म की अवस्था से परिचित हो कर धर्म की वृद्धि करें।

तीन धर्मों की वृद्धि

	१८८१	१८९१	वृद्धिप्रतिश.
हिन्दू	१८७९३७४५०	२०११३१७२७	१०.५
मुसलमान	५०३२१५८५	५७३२११६४	१४.४
किरानी	१८६२६३४	२८४३४०	२२.४

उक्त दस सालों में भारत के तीन प्रधान धर्मों की वृद्धि का चित्र आप के सामने रखा गया है इस से आपको हिन्दू धर्म को हविश का ज्ञान होसकता है क्योंकि हिन्दू तो १०½ प्रतिशतक बढ़े अर्थात् १०० हिन्दुओं के स्थान पर ११०½ हिन्दू १० वर्षों में हुए किन्तु मुसलमानों और किरानियों की खूब वृद्धि हुई १०० मुसलमनों के स्थान पर ११४½ मुसलमान और १०० किरानियों के स्थान पर १२२½ किरानी १८९१ में होगये। स्पष्ट है कि हिन्दू नर नारी आगे बढ़ने की दौड़ में पीछे रहगये हैं। किरानियों और मुसलमानों ने बाज़ी जीत ली है।

	१८९१	१९०१	वृद्धिप्रतिश०
हिन्दू	२०११३१७२७	२०७१४७०२६	०
मुसलमान	५७३२११६४	६२४५८०७७	८.९
किरानी	२२८४३८०	२९२३२४१	२७.९

संसार में देखा जाता है कि यदि कोई एक वार हारता है तो दूसरी वार अपने शत्रु को पछाड़ने के लिये तन मन धन से यत्न करता है और प्रायः वह कामयाब होता है। हिन्दुओं, मुसलमानों और किरानियों में धर्म का मुकाबिला है। हम एक दूसरे के शत्रु तो नहीं क्योंकि एक देश के निवासी हैं किन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि यह देश आर्य्यवर्त आर्यों की जन्म भूमि है। पुरातन आर्यों की सभ्यता की रक्षक हिन्दू आर्य हैं मुसलमान तथा किरानी इस सभ्यता के प्रेमी नहीं इस लिये आर्यधर्म की रक्षा तथाप्रचार करना आवश्यक है अतः तीन धर्मों के फैलाने में सर्वमुख्य है जिस से मुसलमानों और किरानियों ने हिन्दूओं को पछाड़ डाला है परन्तु आशा हो सकती थी कि अगले १० वर्षों में आर्य बाज़ी जीत सकेंगे ऐसा नहीं हुआ वल्कि आर्यों ने अपनी यहांतक दुरावस्था की कि एक कदम भी आगे न बढ़े दुरावस्था के दल २ में ऐसे फस गये कि दश सालतक उस से निकलना न मिला लेकिन इसी समय में किरानियों ने खूब दौड़ लगाई और मुसलमान भी चलते रहे। देखिये!

१८९१ से १९०१ तक हिन्दू ०शून्य बढ़े किन्तु १०० मुसलमान १०९ और १०० किरानी १२ बनगये! माताओं और भ्राताओं हिन्दूओं की दुर्गति की यह दशा क्या हृदय विदारक नहीं? यदि राम, लक्ष्मण, कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, हरिश्चन्द्र, गौतम, कनाद, पतञ्जली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदि की सन्तान बढ़ने से रुक जावेगी तो उन का नाम लेवा और पानी देवा कौन रहेगा ? उनकी दैवी भाषा के पढ़ने वाले कहां होंगे ? वेदों की पवित्र पुस्तकें कौन मानेगा ? हिन्दुओं की सभ्यता का चिन्ह कहां दिखाई देगा ? ज्ञात नहीं कि हिन्दू किस नींद में सोये हुये हैं ? हाय ! राक्षसी कुरीतियों ने हिन्दुओं की लहलहाती खेती को सुखा दिया है किन्तु हिन्दुओं की आह तक नहीं निकली । बस यही मुरदा दिली की निशानियां हैं यमराज की गोद में जाने को यही प्रमाण हैं । खैर ! १९०१ से १९११ तक की वृद्धि का चित्र अपने सामने लाइये इस समय भी आशा हो सक्ती थी कि दूसरी जातियों को दौड़ते देख कर आर्यों में उत्साह और साहस पैदा होगा । दल दल से निकल कर पग उठाने का यत्न अवश्य किया गया किन्तु किरानियों और मुसलमानों का मुकाबिला करना कठिन था ।

	१९०१	१९११	वृद्धप्रतिश.
हिन्दू	२०७१४७०२६	२१७५८६९२०	५
मुसलमान	६२४५८०७७	६६६२३४१२	६.६
किरानी	२९२३२४१	३८७६२०	३२६

१०० किरानियों के स्थान पर १३३½ किरानी और १०० मुसलमानों के स्थान पर १०६½ मुसलमान होगये किन्तु हिन्दू भी १०० के स्थान पर १०५ हुए इस प्रकार तीसरीवार भी सौभाग्य ने साथ न दिया दौड़ में सब से पीछे ही रहे ।

ऊपर जो कुछ कहा गया है उस से किरानियों की वृद्धि का पूरा अनुमान नहीं लग सकता । १९०१ से १९११ तक के दस वर्षों में भिन्न प्रान्तों में किरानियों की वृद्धि यूं हुई हैं:-

पंजाब साथी हुआ है

पंजाब	२००	प्रतिशतक
मध्यप्रदेश....	१६९.३	"
हैदराबाद....	१३६	
काश्मीर....	१३१	"
सिकम....	१११	"
आसाम....	८५	"
युक्तप्रान्त....	७४½	"
बिहार....	५६	"
मद्रास....	१६	"

अब तक लोगों का ख़्याल था कि मद्रास में किरानियों की खूब वृद्धि हो रही है किन्तु अन्य प्रान्तों में उन का प्रभाव न होने के बराबर है पंजाबी बहुत फूला करते थे कि हमारी पवित्र आर्य भूमि में किरानी धर्म का वास नहीं हो सकता । ऊपर की गणनाओं से ज्ञात हो गया होगा कि पंजाब में किरानी धर्म की दिन दुगनी और रात चौगुनी उन्नति हो रही है कि भारतवर्ष के किसी इलाके में पंजाब के बराबर गिरावट नहीं हुई क्या आर्य समाज के काम का यही फल पंजाब में हुआ है कि अपनी आँखों के सामने ही दस वर्षों में १३३१६० पंजाबी पुरुष ईसाई धर्म की गोद में सौंप दिये हैं ? क्या यही वैदिक धर्म का प्रचार हो रहा है कि पंजाब में जहाँ २ आर्य्य समाज का ज़ोर है वहीं २ ईसाइयत का खूब प्रचार हुआ है ? सोए हुए हिन्दुओं वा आर्यों को पूरा २ ज्ञान लेने से तो शायद घृणा ही है किन्तु यहां पर उनके सामने यही गणनाओं का ठीक ज्ञान रखा जाता है । पञ्जाब में ही दस सालों में ईसाई यूं बढ़े हैं--

आर्य समाज की शिथिलता

और पंजाब में ईसाइयों की वृद्धि ।

स्यालकोट में	३६६८१
लायलपुर में	२३३५१
गुरुदासपुर में	१८८९४
लाहौर में	१४४८५
शाहपुर में	८५२५
गुजरांवाला में	१३४६७

क्या इन इलाकों में इतने आर्य्य भी बढ़े हैं ? यदि नहीं तो आर्य्य समाज क्या काम करता है? साप्ताहिक अधिवेशनों में प्रार्थना कर देने से वैदिक धर्म नहीं फैल सकता नहीं घर में प्रधान पदों के लिये लड़ने से--यह तो पसीना और खून एक कर देने से-पूरा आत्मत्याग करने-अपने तईं ईसाईयों के समान स्वाहा कर देने से हो सकता था । भक्ति, श्रद्धा, प्रेम, परमार्थ, निःस्वार्थ, आत्म समर्पण से ही प्रचार हो सकता है किन्तु शोक है कि ईसाइयों के से यह गुण हम में विद्यमान नहीं इस कारण यह बुरे परिणाम दिखाई दे रहे हैं । परमात्मा उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी आप सहायता करते हैं-हमने परस्पर के लड़ाई झगड़ों में अपना उद्देश गवां दिया है किन्तु ईसाई धर्म प्रचारकों ने तन-मन-धन से यत्न किया है और उसका फल आशा से अधिक मिला है-हे आर्य-सज्जनों ! ज़रा ध्यान से नीचे के ब्यौरे में किरानी धर्म के प्रचार को देखिये ।

१८८१ से १९११ तक ईसाइयों की वृद्धि

आसाम में	८३८½	प्रतिशतक
बड़ोदा रजवाड़ा	८३४	"
पंजाब	६१२	
मध्यप्रदेश	४५७	"
बिहार-उड़ीसा	३७९½	"
हैद्राबाद	२९९	"
युक्तप्रान्त	२७७	"
राजपूतानाएजंसी	२२९	"
बंगाल	७९½	"
मद्रास	७०	"
बम्बै	६९	"

इस प्रकार प्रतीत हुआ कि पिछले ३० वर्षों में आसाम, बड़ोदा और पंजाब में वीर, उत्साही, आत्मत्यागी ईसाई काम करने में तत्पर हो रहे हैं और उन्होंने आर्यों के दुर्ग पंजाब में ऐसा आक्रमण किया है कि उसकी दीवारों को तोड़ कर अंदर घुस गये हैं । यह तो हुई किरानियों की उन्नति किन्तु हिन्दुओं की स्थिति कहाँ है । हमारे विचार में तो वे रसातल में गिर गये हैं । भारत के हर एक प्रान्त में उनकी अनुपातक संख्या कम हो रही है और समय शीघ्र आने वाला है जब यदि यही कारण उपस्थित रहे तो आर्यवर्त्त से आर्यों का नामो निशान मिट जावेगा ।

आर्य्य जाति की मौत का चित्र

१०००० निवासियों में प्रति हिन्दुओं की संख्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रान्त	१८८१	१९११	कितने वर्षों में मौत होगी?
बंगाल	४८५५	४४८०	३३२
पश्चिम उ०सी०प्रांत	७०८	५४६	१०१
पंजाब	४१३०	३२९७	११९
आसाम	६२७३	५४१८	१९०
कूर्ग	९११३	७९३९	२०३
मद्रास	९१४१	८८८९	१०५८
अजमेर मेरवाड़	८१६२	७७५०	५६४
बिहार	८४३०	८२२३	११९१
युक्तप्रांत	८६२७	८५०४	२०७४
भारतवर्ष	७४३२	६९३१	५६४

ऐ आर्य जाति यह तेरी मृत्यु पत्री है !!

इसे ही अब तू देखाकर। अपने पंडितों से जन्म पत्रियां बनवाकर क्या करेगी? पञ्जाब, आसाम और बंगाल के आर्य्य तो खूब सोए ही हुए हैं-शायद उन्हें यह पता ही नहीं कि यमलोक के राज में पहुंचने का समय उनके लिये बहुत निकट आचुका है-यदि पता होगा तो ऐसे शान्तिमय राज में जब हर एक जाति और व्यक्ति को अपने सुधार का पूरा अवसर है क्यों वे अपनी कुरीतियों को हटा कर जीवित होने का यत्न न करते। ख़ैर! अब भी यदि चितावनी हो जावे और मौत से बचने का विचार हृदय में वास करे तो सम्भव हो सकता है कि आर्य जाति मृत्यु के पाश से निकल जावे। परमात्मा करें कि उनके आर्य पुत्र अपने कर्तव्यों को समझें और इस सुवर्णमय अवसर से पूरा लाभ उठाकर अपने जीवन को रक्षित रखें।।

अकाल और चारा।

गवर्नमेंट से प्रार्थना।

संयुक्तप्रान्तीय गैर-सरकारी अकालपीड़ित-रक्षिणी सभा की कार्यकारिणी कमेटी के सभापति डा० सतीशचन्द्र बनर्जी ने इस आशय का एक प्रार्थनापत्र प्रान्तीय गवर्नमेंट की सेवा में भेजा है:-

सब लोग जानते हैं कि समस्त संयुक्त प्रान्त में इस समय चारे का भयानक अकाल है। इसी कारण गवर्नमेंट ने उस चारे के रेलवे महसूल को घटा दिया है जो मध्यप्रदेश के ५ स्थानों से और संयुक्तप्रान्त के किसी भी स्थान से प्रान्त के अकाल पीड़ित स्थानों तक पहुंचाया जायगा। लोग इस रियायत के बड़े कृतज्ञ हैं किन्तु कष्ट के विस्तार और भीषणता पर ध्यान देते हुए कहना पड़ेगा कि यह काफ़ी नहीं है। यह असम्भव है कि गवर्नमेंट भूखों मरते जानवरों की मृत्यु को एकदम रोक दे मगर माँग के मुताबिक चारा मुहैया कर देना सहज ही सम्भव है। इसका सब से अच्छा उपाय वही है जो १९११-१२ के गुजरात वाले अकाल में बम्बई गवर्नमेंट द्वारा काम में लाया गया था, अर्थात देश में जहां कहीं चारा मिल सके वहां से वह रियायती महसूल पर मँगवाया जा सके। सम्भव है कि इस रियायत का समस्त लाभ सर्वसाधारण को न पहुंचे और कुछ व्यापारी लोग भी बीच में, सार्व जनिक कोष से, फायदा उठाने की चेष्टा करें। मगर इस को रोकना असम्भव है। यह भी आपत्तिजनक होगा कि गवर्नमेंट स्वयं बाहर के स्थानों से चारा खरीदने और मंगाने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेले। इसलिए यही उचित है कि आमतौर से रियायत कर दी जाय। इससे लाभ बहुत अधिक होगा और हानी बहुत ही थोड़ी जिन प्रान्तों में चारे की बहुतायत है वहां से उसे मँगाकर हम लोग अपनी आवश्यकता पूरी कर सकेंगे और वर्तमान असाधारण मूल्य को भी घटा सकेंगे।

यदि गवर्नमेंट उपर्युक्त प्रस्ताव को मानने के लिए राज़ी न होतो हम सादर एक दूसरी सलाह दिया चाहते हैं जिससे गवर्नमेंट का तो खर्च बिलकुल न बढ़ेगा किन्तु सर्वसाधारण को बड़ी सहायता मिल सकेगी। प्रचलित नियमों के अनुसार चारों प्रान्त के एक सिरे से दूसरे सिरे तक रियायती महसूल पर ढोया जा सकता है अर्थात् सहारनपुर से झाँसी तक और गोरखपुर और बलिया से मथुरा तक यह ५०० मील से अधिक का फासला है। अब यदि वर्तमान प्रान्तीय मर्यादा के स्थान में फासले की मर्यादा नियत की जाय, अर्थात् प्रत्येक अकालपीड़ित स्थान के लोगों को यह अधिकार दिया जाय कि वे, एक नियत फासले के भीतर के किसी स्थान से—चाहे वह स्थान संयुक्तप्रान्त के अन्दर हो या बाहर—रियायती महसूल पर चारा मँगवा सकें।

गवर्नमेंट इस समय रियायती महसूल की मद में जितना खर्च करने को तैयार है उससे १) भी अधिक इस प्रबन्ध से नहीं होगा किन्तु लोगों को चारा मँगवाने के लिये स्थान मिलने के कारण बड़ी सुविधा हो जायगी। महसूल के मामले में इस बार रेलवे कम्पनियों ने अपनी ओर से कोई रियायत नहीं की है और महसूल में जो कमी होती है उसे गवर्नमेंट ही को पूरा करना पड़ता है। इससे गवर्नमेंट पर बहुत बोझ पड़ता है और इस कारण वह अधिक रियायत करने के लिए तैयार नहीं है। १९०७-०८ और १९११-१२ में रेलवे कम्पनियों ने अकालपीड़ित स्थानों को जाने वाले चारे पर मामूली से आधा महसूल कर दिया था और कोई कारण नहीं मालूम होता कि वे क्यों न इसबार भी उसी रीति का अवलम्बन करें; और इस प्रकार उस हानि का एक अंश स्वयं भी सहें जो इस समय गवर्नमेंटको सहनी पड़तीहै। रेलवे कंपनियों के साथ गवर्नमेंट बहुत कुछ रियायत किया करती है और यह उचित है कि उन कम्पनियों पर ऐसा दबाव डाला जाय जिससे वे अकालपीड़ित स्थानों के लिए चारे का महसूल आधा कर दें। जिन रेलवे की मालिक और प्रबन्धकर्त्री गवर्मेंट ही है उनमें वह यदि चाहे तो स्वयं रियायती महसूल जारी कर सकती है। इससे यद्यपि रेलवों की आमदनी कुछ घट जायगी मगर उनकी आर्थिक दशा पर इसका कोई बड़ा असर नहीं पड़ेगा।

अन्त में हम एक दोषयुक्त नियम पर गवर्नमेंट का ध्यान दिलाना चाहते हैं। यद्यपि प्रान्त के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान को चारा रियायती महसूल पर भेजा जा सकता है किन्तु जो चारा सीधा (प्रान्त के) बाहर से आता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उस पर उतने फासले के लिए भी रियायत नहीं की जाती जितने पर हो कर वह प्रान्त के भीतर गुजरता है। इस भेदभाव का कोई कारण नहीं मालुम पड़ता। व्यवस्थापक कौंसिलों में इस विषय के एक प्रश्न का बड़ा ही असन्तोषजनक उत्तर दिया गया। गवर्नमेंट से निवेदन है कि वह फिर इस प्रश्न पर बिचार करे और वह छोटी सी रियायत मंजूर करे।

मेरी कमेटी को आशा है कि गवर्नमेंट इन प्रस्तावों पर अच्छी तरह बिचार करेगी। न केवल सहस्रों पशुओं के प्राणों ही को बचाने के लिए वरन् उनको रखने वाले मनुष्यों के हितार्थ भी वर्तमान नीति को अधिक उदार बनाने की बड़ी ही आवश्यकता है मवेशी रखने वाले लोग प्रायः निर्धन हैं और यदि उन के मवेशियों का नाश हो जायगा तो अकाल के खतम होने पर वे भी किसी योग्य न रह जायंगे। यदि प्रान्तीय गवर्नमेंट समझती हो कि पहिले प्रस्ताव को मानने में जो अधिक व्यय होगा उसको वह सहन नहीं कर सकती तो उसे निसङ्कोच होकर भारत सरकार से सहायता के लिए निवेदन करना चाहिये। हमें विश्वास है कि प्रान्तीय गवर्नमेंट भारत सरकार से जो कुछ सहायता मांगेगी उसे वह देगी।

S. G. VAZE
For Secretary
U. P. Famine Relief Committee

प्रेरित।

(प्रेरित पत्रों के मत का सम्पादक उत्तर दाता नहीं)

अदालतों में हिन्दी

क्षत्रिय उपकारिणी महासभा का जो १७ वां वार्षिकोत्सव आगरे में गत दिसम्बर मास में हुआ था उस में यह एक प्रस्ताव पास किया गया था कि "सरकार से सबिनय प्रार्थना है कि वह कृपा कर के ज़ाब्ता फ़ौजदारी की ४५७ धारा के अनुसार मजिस्ट्रेटों को मातृभाषा हिन्दी में गवाहों के बयान, बिचार (Judgment), अभियुक्तों के बयान आदि लिखने का अधिकार प्रदान करे, जैसा कि बंगाल बिहार में किया जा चुका है, क्योंकि क्षत्रिय आनरेरी मजिस्ट्रेटों में अधिकतर ऐसे हैं जो केवल हिन्दी भाषा ही जानते हैं।" यह प्रस्ताव यथा समय अपनी प्रान्तिक गवर्नमेंट की सेवा में प्रेषित किया गया था। अति हर्ष की बात है हमारे प्रजाप्रिय श्रीमान् प्रान्तिक लाट महोदय ने उर्दू न जानने वाले आनरेरी मजिस्ट्रेटों को नागरी या कैथी अक्षरों में काम करने की आज्ञा प्रदान कर नागरी जानने वाले आनरेरी मजिस्ट्रेटों व हिन्दी-प्रेमियों को विशेष उपकृत किया है।

जो उत्तर प्राप्त हुआ वह नीचे हिन्दी-भाषा अनुवाद सहित प्रकाशित है:—

"In reply I am to request that the Mahasabha may be informed that as the majority of court records in the United Provinces are maintained in the Persian script there is in the opinion of the Lieutenant Governor an advantage in adopting that script wherever possible."

"An honorary Magistrate who does not know that script may however use Nagri or Kaithi."

"महासभा के प्रस्ताव के उत्तर में सूचना दी जाती है कि अधिकतर अदालतों के काग़ज़ात संयुक्त प्रान्त में फ़ारसी लिपि में रक्खे जाते हैं इस लिये लाट साहब की राय में सुभीता इसी में है कि इसी लिपि में यथा साध्य कार्रवाई की जाय। जो आनरेरी मजिस्ट्रेट इस लिपि को नहीं जानते हैं वे नागरी या कैथी लिपि का भी व्यवहार कर सकते हैं।"

ठाकुर ध्यानपाल सिंह
ज्वाइण्ट सेक्रेटरी क्षत्रिय उपकारिणी महासभा।

अंग्रेज़ी सत्यार्थ प्रकाश

आजकल कालिज और स्कूलों में ग्रीष्म ऋतु के कारण अनध्याय होरहे हैं जिससे प्रोफेसर, मास्टर और विद्यार्थीगण अवकाश प्राप्त कर रहे हैं ऐसी दशा में हम बड़ी लालसा और आशासेप्रार्थनाकरतेहैं किसमस्तआर्य्यउपाध्याय अध्यापक विद्यार्थीगण अपने इस अमूल्य समय को सभा की सेवा के लिये प्रदान करें। आजकल अंग्रेज़ी सत्यार्थप्रकाश को अमेरिका भेजने के लिये छपाने का उद्योग कियाजारहाहै। पुस्तक छपने भेजदी गई ५००० प्रतियोंकी छपाई ६०००) से अधिक होगी इस धन के संग्रहार्थ प्रयत्न करने के लिये प्रार्थना की जाती है जो सज्जन इस कार्य्य में अपने अमूल्य समय को प्रदान कर सत्यार्थप्रकाश के लिये चन्दा इकट्ठा करना चाहें वे अपने नाम धाम आदि इस कार्य्यालय को लिख भेजनेकी कृपाकरें और चन्दा इकट्ठा करना आरम्भ करदें जितना धन संग्रह होताजाय उसे यहां भेजते जावें आशा है कि हमारे वयो वृद्ध महानुभाव! प्यारे नवयुवक इसओर ध्यान प्रदान करेंगे।

मदनमोहन सेठ
मन्त्री सभा

म० विष्णुलाल जी का स्वास्थ्य

मैं अलीगढ़ में सात महीने सबजज रहा, उसमें से तीन महीने बहुत शान्ति से गुज़रे। इसके बाद मैं मसूरी गया और लौटते वक्त दमे की बीमारी शुरू होगई और चार महीने मुबतला रहा। मैं छुट्टी लेकर डाक्टर श्याममनोहर लाल एसिस्टेन्ट सरजन (हज़रत गंज लखनऊ) के साथ लखनऊ आया। एक रोज़ वहां अच्छी तरह रहा। १६ फरवरी सन् १९१२ई० को ११ बजे कुल्ला करते वक्त सुबह को सीधे हाथ पर फालिज गिरा और बाक़ी जिस्म बिल्कुल दुरुस्त रहा। मेरी कुछ समझ में नहीं आया कि क्या बात है। मैं खाना बांए हाथ से खाता रहा यह ख्याल नहीं था कि मुझे यह बीमारी है। डाक्टर साहब की कुछ समझ में नहीं आया। उस रोज शाम को डाक्टर उहदेदार रिटायर्ड सिविल सर्जन को बुला कर नब्ज दिखलाई उन्होंने कहा कि तुमको बीमारी है और चलने फिरने को मना किया लेकिन मैं खूब चला और ख्याल किया कि टहलने से नुक़सान नहीं है। बतारीख १८ फरवरी १९१२ ई को सुबह पाखाना होने के बाद मुझको दूसरा दौरा हुआ जिसमें सीधा अंग सब जाता रहा और मेरी जबान से सिर्फ "सब जज" निकला और फिर ज़बान बन्द हो गई। डाक्टर साहब ने एक तार पं० बंशीधर को दिया वे दूसरे रोज सुबह मेरे पास आगए। एक तार अलीगढ़ को मेरे मकान को गया लेकिन वे कुछ न समझे और उन्होंने जवाब दिया कि आपको कैसी तबीयत है। तब पंडित जी ने दूसरा तार दिया कि मैं यहाँ आगया हूं और कुछ घबराने की बात नहीं है तब ये सब लोग घबड़ा कर लखनऊ गए उसके बाद मुझे एक महीने तक पाख़ाना पिचकारी के ज़ोर से आया। एक महीने के बाद मैं देहरादून गया। लखनऊ में दो रोज़ से दस्त नहीं हुआ वहाँ एक दिन बड़ी शिद्दत से पेटमें दर्द उठा तब डाक्टर श्रीराम को दिखलाया। उनका एक दिन और एक रात इलाज किया तब डाक्टर केपटेन मिलचन का इलाज किया और उन्होंने दवा दी, उससे पाखाना आया और डेढ़ महीने उसका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इलाज किया और दो महीने बिजली लगवाई और उसके बाद पंद्रह रोज़ वहां रहा और पांच महीने के बाद बरेली आगया। बरेली में हरेक हकीम की दवा की और फिर मैं अजमेर गया दो महीने वहां रहा। वहाँ एक दौरा हुआ जिसकी बेहोशी आधा घंटा रही और फिर वैसी ही तबीयत होगई लौटते वक्त अलीगढ़ के स्टेशन पर वैसा ही दौरा हुआ और फिर बरेली में भी तीन दौरे वैसे ही हुए। फिर मैं देहरादून गया और एक महीने के बाद बरेली आगया। यह एक अजीब बात है कि पहले साल हरेक पंद्रहवें दिन बहुत फायदः मालूम होता था और दूसरे साल में हरेक दसवे रोज फ़ायदः मालूम होता है। इन सब जगहों में बिहारीलाल मुलाज़िम मेरे साथ रहा।

अब फायदा तो बहुत है, देखिये कितने दिन में ज़बान इत्यादि खुले, ईश्वर मालिक है उसको बारंबार धन्यवाद है।

विष्णुलाल एम० ए०

गुरुकुल के दान की आय

बार्षिकोत्सव के सम्बन्ध में दान की आय चैत्र में भी होती रही। अनुमान यह है कि चैत्र के अन्त तक बार्षिकोत्सव की आय ५२,०००) के लगभग होगी। इसमें से स्थिर कोष कार्यों के लिए धन निकाल कर केवल ३०,०००) महानिधि में जमा हुए जो बजट के काम आ सकेंगे और बजट में बहुत खींच करने पर भी कमी रहेगी ७०,०००) की। सो ३० सहस्र तो आगए ४० सहस्र महानिधि में और आने चाहिएं।

प्रथम वैशाख से १५ वैशाख १९७१ तक पन्द्रह दिन में निम्न लिखित आय हुई।—

५००)	स्थिरकोष में गुप्त दान
५३)	गोशालार्थ
१४४।-)॥।	मिष्टार्थनिधि में
२५)	अछूत बालक की पढ़ाई में-
५)	म० मुंशीराम स्मारक
८)	भिक्षानिधि (पुस्तकालय)
५)	भण्डार-
७०७॥।≡)।	महानिधि में।

सो ऊपर लिखित धन में से ७०७॥।≡)। ही इस वर्ष के बजट का बोझ हलका करने में लग सकेंगे।

मुन्शीराम

स्वामी नित्यानन्द जी का जीवन चरित्र

मेरे पास अनेक महानुभाव प्रतिष्ठित विद्वानों, रईसों, सर्दारों, और आर्यसमाज के सभ्य प्रेमियों के अनेक पत्र आ चुके हैं जिसमें वह सब विद्वान् प्रबल अनुरोध कर रहे हैं कि मैं पूज्यवर परम पदारूढ़ उक्त श्रीस्वामी जी का जीवन चरित्र तय्यार कराऊं, इस जीवन चरित्र तयार होने से आर्यसमाज का गौरव निस्सन्देह बढ़ेगा इसलिये मैंने निश्चय कर लिया है कि इस काम को शीघ्र आरम्भ कर दिया जावे अतएव सर्व आर्य समाज के सभासदों, उपदेशकों, पंडितों पदाधिकारियों, और प्रतिष्ठित सज्जन विद्वानों से निवेदन करता हूँ कि वह निम्न लिखित विषयों सम्बन्धी जो कुछ सूचना वह भेज सक्ते हों कृपा करके अत्यन्त शीघ्र अर्थात् १५ दिन के अन्दर मेरे पास शिमला भेजने की कृपा करें ताकि जहाँ धन्यवाद पूर्वक उनके शुभनाम जीवन चरित्र में प्रकाशित किये जांय वहां स्वामीजी का जीवन चरित्र अति शीघ्र तयार हो सके। प्रश्न यह हैं:—

(१) आपकी समाज की स्वामी जी ने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों आदि द्वारा जो २ सेवा की हो वह तिथि मास तथा सम्बत का नाम देकर उसका संक्षिप्त वृताँन्त लिखें।

(२) जिन २ समाचार पत्रों में उनके सम्बन्ध में अथवा काम के सम्बन्ध में जो लेख निकले हों वह आर्यसमाज के मंत्री द्वारा भिजवाने का यत्न करें।

(३) जिन २प्रतिष्ठित पुरुषों पर उनके व्याख्यानों का विशेष प्रभाव पड़ा हो उनके शुभ नाम लिखें।

(४) इसके अतिरिक्त जहां कहीं उन्होंने नये समाज स्थापित किये हों, कुमार सभा आदि में व्याख्यान दिये हों अथवा कोई ऐसी बात जो आप उनके जीवन चरित्र में छपनीयोग्य समझते हों उसको भी लिख भेजें।

निवेदक

विश्वेश्वरानन्द शान्त कुटि शिमला

वेदरत्न विद्यालय

मान्यवर सम्पादकजी, नमस्ते!

कृपा कर मेरे नीचे लिखे पत्र को अपने सद्धर्मप्रचारक में स्थान देकर मुझपर अनुग्रह करें। कितने ही लोग मुझ से वेदरत्न विद्यालय के विषय में पूछने आते हैं, सबों के उत्तर देना कठिन होजाता है, इस के अतिरिक्त मुझे भी अपनी स्थिति साफ करदेना उचित जान पड़ता है। लोगों का भ्रम भी जाता रहेगा।

श्री सामयिक प्रधान जी की सेवा में

वेदरत्न विद्यालय-मुस्तफापुर-दानापुर-खगौल

बांकीपुर ता० ४ मई १९१४

मान्यवर जी, नमस्ते!

आगामी साधारण अधिवेशन में कदाचित पदाधिकारियों का निर्वाचन न भी हो अतएव मैं पूर्व ही आप को सूचना देना चाहता हूं कि मैं निम्नलिखित कारणों से विद्यालय के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना नहीं चाहता हूँ कृपया मेरा नाम स्थाई सभासदों की सूची से उठादें, और साथ ही में उपप्रधान पद से भी हटना चाहता हूं।

(१) विद्यालय का संगठन प्रथमतः आर्यसंस्थाओं की रीति पर हुआ था और मेरी पूर्ण रूपसे सहानुभूति थी, अध्यापक गण आर्य पुरुष थे परन्तु अब पण्डित शिवशङ्कर शर्म्मा तथा पण्डित तीर्थराज शर्म्मा प्रभृति विद्वानों के चले जाने से सम्प्रति विद्यालय में कतिपय पौराणिक जन रहगये हैं वैदिक शिक्षा का प्रबन्ध न होने से विद्यालय आदर्श च्युत होगया है।

(२) विद्यालय सभा के मन्त्री ने ठीक रीति से कार्य सम्पादन न कर अपने कुव्यवहारों से विद्यालय की प्रतिष्ठा को गिरा दिया है। उनकी चेष्टा ऐसी रहती है जिससे सामाजिक जगत को लाभ पहुंचने के बदले हानि की सम्भावना होती है।

ऐसी संस्था का साथ देना ठीक प्रतीत नहीं होता। आप कृपया इस पत्र को सभा के सदस्यों को सुनादें और यथोचित कार्यवाही करें।

भवदीय—

लक्ष्मीपति

बांकीपुर

बहादुरगढ़ का उत्सव

आर्य्यसमाज बहादुरगढ ज़ि० रोहतक का उत्सव ता. १-२-३ मई १४ को समाप्त होगया। इसमें बड़े २ विद्वान उपदेशक और प्रसिद्ध २ भजनीक तायदाद में २० के पधारे थे और उपदेशिका श्रीमती इन्द्रकुमारी जी भी पधारी थीं। ता. २ मई को सनातन धर्मियों से शास्त्रार्थ हुवा हिन्दुओंकी ओर से पं० लक्ष्मी नारायणजी शास्त्री देहली वाले थे। कोतवाल साहब मुसलमान थे इसी कारण मुसलमान लोग झगड़ा करना चाहते थे। प्रबन्धकर्ताओं के सुप्रबन्ध और आर्य्यों की शान्ति व परमेश्वर की कृपा से न कर सके और धन्यवाद के पश्चात् उत्सव समाप्त हुवा। श्री स्वामी सर्वदानन्दजी की अपील पर २२४) रु. प्राप्त हुए।

श्रीराम मंत्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इंगलिशटीचर ।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता--- जल्दी हज़म होने वाला-
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

आवश्यकता

एक अध्यापिका जो एन्ट्रैंस पास ट्रेण्ड हो या विशारद पास हो मुलतान आर्य्य पुत्री पाठशाला अन्दर बोहिर दरवाजा के लिये ज़रूरत है तनख्वाह ४०- से ५०- रुपये तक योग्यतानुसार दी जावेगी। आर्य्य धर्म्म से हितैषिता प्रकट करने वाली को विशेषता दी-जावेगी। प्रमाणपत्रों सहित प्रार्थना पत्र १५ मई सन् १९१४ तक आ जाने चाहियें। श्रीमान् लाला तोला राम जी मैनेजर आर्य्य पुत्री पाठशाला मुलतान के पते पर पत्र आना चाहेये।

मैनेजर
आर्य्यपुत्री पाठशाला
मुलतान

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० छा=)]
थोकमाल लेने वालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

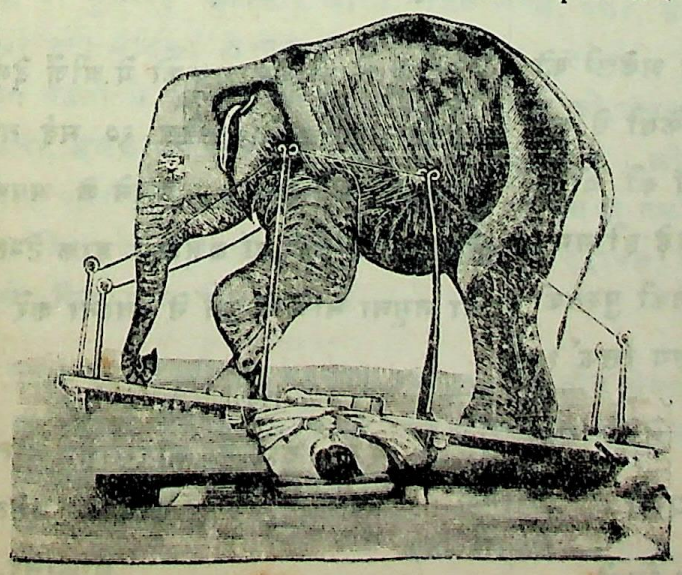

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता-- माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थोड़ोसी प्रतियाँ रह गई हैं। आज नहीं तो फिर कभी नहीं।

पञ्चाङ्गका शेष विज्ञापन—यदि पिछे हताश न होना चाहें तो आज ही दस सज्जनोंका नाम वो ठिकाना (भिन्न भिन्न स्थानोंके) एक पोष्ट कार्ड पर लिख भेजिये लौटती डांकसे पावेंगे।

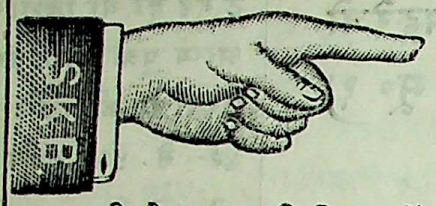

कान बहनेकी दवा।

कान बहना याने कान पककर कानके भीतरमें पीप बहना नया अथवा पुरानेके लिये यह दवा विशेष उपकारी है। इन चिकित्सामें कानको भीतरसे धोकर उसमें दवा डालनी पड़ती है; इसलिये पिचकारी भी दरकार रहती है। मोल—।) चार आने शीशी। पिचकारी कांचकी ।) चार आने। डाः मः ।-) पांच आने २ शीशी तक ।=) छः आने।

दाँत दर्दकी दवा।

लगाते ही दर्द मिटाती है। रोनेसे हंसाती है॥

एक महीन वो मजबूत तिनका व सींक पर जरा रूई लपेट कर इस दवामें डुबाके ठीक दर्दका जगह लगाने ही से झट दर्द बन्द हो जायेगा। मोल—।) चार आने शीशी, डाः मः १ से ४ शीशी तक ।-) पांच आने।

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

नं० ५६

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानून दर्पण।

इस एकही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिनसे हर मनुष्यको काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाबता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तल्लाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुखत्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इङ्गलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार वगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोल-चालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्याकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १)

मिलने का पता—

शान्ती संचारक कम्पनी

मीयाँगंज अलीगढ़ सिटी

गल्लेकी ख़रीद व टैन्डर की ज़रूरत

हमको साल हालकी फ़सल रब्बी की पैदावार के नये गल्ले के खरीदने की इस भाँति ज़रूरत है:—

चणा	४६००	मण
जव	१२००	,,
जई	१२००	,,
गेहूं	७००	,,

जिस किसी महाशयको ये चीजें देनी हों वो कृपा करके तारीख २० मई तक खुद हाज़िर आकर मए नमूने के अपना टैन्डर पेश करें वा बज़रिये डाक टेन्डर का नमूना नीचे के पते से रवाना करें।

HEERA LALL

दारोग़ा कारखाना जात

बीकानेर स्टेट

बीकानेर,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूटी वटिका** मौका नचूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिबर्द्धिन्द्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्षां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजित। विषशोथज्वर हरी मैधायुवलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ और छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न।

अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—(शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

१०००) एकहज़ार रुपये की

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालें-दीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक इन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९८१४ पृष्ठ चौदह जिल्दमें एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)—ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक वा दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

वाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंग्लिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद यू. पी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

इस पुस्तक में कई प्रकार की ग़ज़ल, क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≡)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्रव्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसर महेशचरण सिंह, एम० एस० सी० ए० वी०, ए० जी० आर० गुरु कुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

ऋषि दयानन्द वाच

श्री महात्मा मुन्शीराम, धर्मवीर पं० लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन, हमने उक्तनामकी घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है। जिसमें मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन होते हैं। महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय दाम केवल ५॥) गारंटी ५ साल हर घड़ी के साथ में एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा।

पता:—दीस्वीज़रलैंड वाचकम्पनी

हाथरस नं० २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तलाश नहीं करना पडता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

कफ	अतिसार	सर्दीकाबुखार
दमा	आंवलोहू	जी मिचलाना
खांसी	संग्रहणी	बच्चोंकेहरेपीलेदस्त
हैजा	कै होना	शरीर का दर्द
शूल	पेटकादर्द	कुकरखांसी

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट सुगंधित दवा है मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ २३ वर्ष का आजमाया हुआ

दद्रुगज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जडसे खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—क्षेत्रपाल शर्मा मालिक, सुख संचारक कम्पनी मथुरा

'वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर कीहै, जो बुद्धिमती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदातृ शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो क्वारा हृष्ट पुष्ट २५ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थाप्पर
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा
पंज.ब लाहौर

सस्ता और मज़बूत

Telegraphic,address founders Aligarh

४ लीवर का ज़स्ती कलईदार लोहे का ताला इस्तेमाल करो।

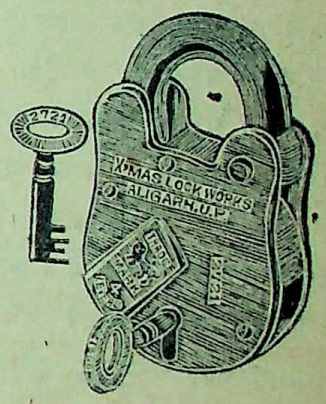

मूल्य
डेढ़ इंच का ९) दरजन
दो इंच का १२) दरजन
ढाई इंच का १३॥) दरजन
तीन इंच का १६॥) दरजन

(१) १००) के खरीदार को १२॥) सैकड़ा और ५०) के को ६।) सैकडा और २५) के को ३=) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा कम पर नहीं।
(२ आधी दरजन से कम माल नहीं भेजा जावेगा।
(३) और किस्म के तालों के लिये सूचीपत्र मंगाइये।
(४ असली माल पर शेर„ का मार्का देख लीजिये।

दी कृसमिस लोक वर्क्स सुलतानी सराय
अलीगढ़ सिटी।

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडान का साबुन-बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लैने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता-
शर्मनऐंड कं.सतघडामथुरा

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)
चान्द--जि० आरा

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तौ खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≡) आने।

आर्य्य, औषधालय, रूस्तमगढ़
(एटा यू० पी०)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उनके श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बडी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और| मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मणक ।)
प्रार्थना पुस्तक ।)
ओंकार की उपासना ।)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।)
वेद और महाभारत के उपदेश ।)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)॥
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द =)

मनुस्मृति सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रन्थावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

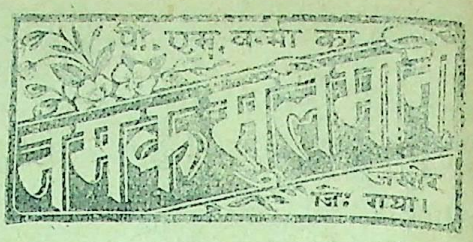

यह नाम का ही नहीं बल्कि अस्ली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया

एजन्टोंकी आवश्यकता

हाथरस के पक्के चाकू ल० बेंट)॥॥ -) -)। =) =)॥ =)॥॥ चं०, बेंट -) -)॥ =) =)॥ =)॥ -) घडी का =) उस्तरा) ।=) पता:

पता—भारतहितकारी
कार्य्यालय नं० ७
हाथरस सिटी

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म् ॥

Rgis tered No L. 807-

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

१४ ज्येष्ठ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० २३ मई १९१४

संख्या ६
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक--इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)- प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिस में ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।-)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।)
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक ≡) प्र० पं०
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

कोड़ पत्र की बटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई कोड़पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) कोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । कोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये । बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये ।

साधारण कोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष बात चीत प्रबन्धकर्ता से कीजिये ।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र-देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का कलम (पेड़) अपने बाग़ में लगाना चाहते हैं तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मगालें।

पता– आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतौल KAMTAUL(बिहारप्रान्त

महा भारत ।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़ तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री
घावन लाहौरी टोला-बनारससिटी

हारमोनियम शिक्षक

अर्थात् बिना गुरु के बाजा सिखाने वाला टीचर, यदि आप थोड़ेही समय में सरगम व गाना सहित हारमोनियम बजाना सीखने के इच्छुक हैं तो सुन्दर जिल्द बंधी हुई पुस्तक की दोनों भाग मंगाइये मूल्य ।)डा० =) पीतलके ओ३म् व नमस्ते फ़ी दर्जन।।।) डा० म० अलग

पता:–बाबूख्यालीराम एण्डको
अलीगढ़ सिटी.

भारतवर्ष में विख्यात

हाथरस के पक्के चाकू ।

यह स्वदेशी चाकू विलायती नामी चाकूओं से भी कहीं सुन्दर सुडौल और मज़बूत हैं। चन्दन मूठ -) -)॥ =) =)॥ ≡) ।) ।=) लकड़ी मूठ ,॥। -) -)। -)॥ =)॥ ≡)॥ उस्तरा ।-) ।≡) कैंची ॥) ।=) लीवर दार मजबूत नाले पीतल के ≡) ।) ।=) इंच । लोहे के ।) ।=) ॥) इंच । रंगीन गमछे =) =)॥ ≡)॥ ।-) ॥ बढ़िया हींग ।) ८) १०) सेर

भारत वस्तु प्रचारक कम्पनी
हाथरस ।

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवा सीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का बिकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५।

मिलने का पता:–

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया

बूँटीसे पारेको निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे को शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और सादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधू ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

घर बैठे गँगाजल

यदि आप अपने घर बैठे ही हरिद्वार के हंसोदक शुद्ध गंगाजल को प्राप्त करना चाहें तो हमें लिखें एक कनस्टर नील धाराके बोस सेर जलकी न्योछावर १) है भार्ग व्यय मंगाने वालों के जुम्मे होगा।

पता:
मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कँपनी
हरद्वार ।

दिल्ली का आटा मैदा

सूजी और बोकर अति उत्तम और फायदे के साथ हमारे यहां से भेजा जाता है। नमूने और भाव मंगा देखिये

पता:–नौरङ्गराय बाबूलाल
खारीबावली. दिल्ली।

नया ग्रन्थ

अभी छप कर तय्यार हुआ

भारतवर्ष का इतिहास

प्राचीन आर्य्यों के प्रारम्भिक वर्णन से लेकर सं० १९७० तक की घटनाओं के वर्ष वार संकलित इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास अति सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है कि आरम्भ करके बिना समाप्त किये छोड़ने को जी न चाहेगा, आर्य भाषा में इस प्रकार का इतिहास अब तक नहीं छपा,

पृष्ठ संख्या ५०० मूल्य १॥)

धर्म निर्णय

यह उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्मका भाषानुवाद है इस पुस्तक में धर्म का निर्णय किया गया है पुस्तक नावल के ढंग पर लिखी गई है इसमें कई योगी सन्यासियों का भी वृत्तान्त है मूल्य १)

अंग्रेजीकी सीढ़ी

देव नागरी तथा उर्दू पढ़े हुए को स्वयम अंग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य ॥=)

पता:–डा.केदार नाथ प्रोप्राईटर
से ५६ आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
३ अजाजा शहर मेरठ

आवश्यकता ।

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ठट्ठा सिंध के लिये एक योग्य अधिष्ठात्री की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा पत्र व्योहार निम्नलिखित पते पर करें।

नरसिंहलाल
प्रबन्धकर्त्ता
कन्या ब्रह्मचर्याश्रम, ठट्ठा,(सिन्ध)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीय निबन्ध माला

२०० स्थायी ग्राहकों की आवश्यकता

शीघ्र ग्राहक बनिये

देश और जातीय उन्नति आज कल सभी करना चाहते हैं, पर उस के उपाय बहुत ही थोड़े लोग जानते हैं। यदि आप जातीय उन्नति के प्रेमी हैं और देशोन्नति के सच्चे उपाय जानना चाहते हैं तो शीघ्र ही इस निबन्धमाला के स्थायी ग्राहक बनिये। इस निबन्ध माला में प्रसिद्ध विद्वानों के निबन्ध प्रकाशित होंगे। यह निबन्ध माला कभी आपको गिरे हुए देशों के उठने की कहानी सुनायेगी, कभी जाति के सेवकों के चरित्र पढ़ायगी, कभी देशभक्ति पूर्ण कविताओं से आप के हृदय को उत्तेजित करेगी और कभी वीर कथाओं से आपका मनोरञ्जन करेगी।

आठ आना भेज देने से आप स्थायी ग्राहक बन सकते हैं। निबन्ध माला का प्रत्येक ग्रन्थ अपने आप में परिपूर्ण होगा। ज्यों २ निबन्ध छपते जावेंगे हम आपको वी०पी० भेजते जावेंगे। ये आठ आने हमारे पास अमानत रहेंगे। जब आप ग्राहक न रहना चाहेंगे तब आप को ये आठ आने लौटा दिए जावेंगे। स्थायी ग्राहक बनने पर माला का प्रत्येक अंक लेना होगा, यदि आप कोई वी. पी. लौटा देंगे तो वी. पी. व्यय आठ आने में से निकाल लिया जायगा।

माला का पहिला निबन्ध तय्यार है जिसका नाम

राष्ट्रों की उन्नति

है। निबन्ध क्या है, सारे संसार के इतिहास का सार।

मूल्य ।)

स्थायी ग्राहकों से ≡)

महाराष्ट्र का उदय (छपरहा है)

ले० श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

अमरीका के सिरमौर—अमरीका के प्रधानों का चरित। ले० बा० जगन्नाथ खन्ना | बी. एससी.। (अमरीका)

(तय्यार हो रहा है)

अद्भुत संसार

सम्राट् का व्यय—जार्ज पञ्चमके घरका वार्षिक व्यय२५लाख अस्सी हज़ार रुपये है।

बूढ़े बूढ़ी का व्याह—अमरीका में एक बूढ़े का बूढ़ी के साथ विवाह हुआ है। बूढ़े वर की आयु ९७ वर्ष की, और बूढ़ी की अवस्था १०७ वर्ष की है। वर बधू दोनों अमरीका के पुराने निवासियों में से हैं। इन की मित्रता उससमय हुई थी जब अमरीका में दास प्रथा विद्यमान थी।

इंग्लैंड में अखबार—सारे ब्रिटिश राज में २२३ दैनिक, २६४३ साप्ताहिक, और १४८२ मासिक पत्र प्रकाशित होते हैं इंग्लैंड में १७८ दैनिक, १३६५ साप्ताहिक, वेलज़ में ८ दैनिक २३ साप्ताहिक, और आयर्लैन्ड में १९ दैनिक और २७० साप्ताहिक प्रकाशित होते हैं। अकेले लन्डन नगर में ४७ दैनिक और २९४ साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होते हैं।

बालकन युद्ध का व्यय—लालची जातियां सदा अपनी आय या भूमि बढ़ाने के लिये खून खराबी किया करती हैं, पर क्या उन्होंने कभी सोचा है कि उस युद्ध का उन्हें क्या मूल्य देना पड़ता है? बालकन युद्ध को समाप्त हुए अभी थोड़े ही दिन हुए हैं। उस में बलगेरिया भी लड़ा था। युद्ध में बलगेरिया का ७५०,०००,००० पचहत्तर क्रोड़ रुपया खर्च हुआ है और उसे रुमेनियां को जो भूमि देनी पड़ी है, उसकी कीमत ९७ क्रोड़ कूती गई है। बलगेरिया की जन संख्या का १६ वां भाग युद्ध में मारा गया है। इस गिनती को देखकर जातियां युद्ध के लाभ और हानि की तुलना कर सकती हैं।

पनामा प्रदर्शिनी—१९१५ में अमरीका में एक विशाल प्रदर्शनी होगी जिसका नाम पनामा प्रदर्शनी है। यह प्रदर्शनी २० फर्वरी १९१५ से खुलेगी और चार दिसम्बर १९१५ को बंद होगी। वहां भारत, बर्मा, और सीलोन की कारीगरी दिखलाने के लिये एक विशेष स्थान बनेगा। इस के विषय टामस कुक एंड सञ्ज के दफ्तर से पूछा जा सका है। उसके दफ्तर बम्बई, कलकत्ता देहली, रंगून और कोलम्बोमें हैं।

नवीन समाचार

दौरा सुपुर्द—देहली पर्यन्त में राम लाल के विषय में जो नई गवाही हुई है उसे पाठक दूसरी जगह पढ़ेंगे। मैजिस्ट्रेट ने सारी गवाही सुनकर उसे भी दौरा सुपुर्द कर दिया है।

कलकत्ते में तलाशी और गिरिफ्तारी—नबीनगर की डकैती के सम्बन्ध में कलकत्ते के भेदिया पुलिस के अध्यक्ष ने गत रविवार को सात मकानों की तलाशी ली। जिन के घरों की तलाशी हुई, उनमें एक डिप्टी मैजिस्ट्रेट एक ज़मींदार औ कई भद्र पुरुष हैं। एक घर में से पुराने टूटे हुए दो भाले निकले। एक घर से दो बन्दूकें मिलीं जो मारवन बू की बताई जाती हैं जिन्हें बन्दूक रखने का अधिकार है। एक घर से कुछ राज द्रोही पर्चे मिले। इसी सम्बन्ध में पुलीस ने पांच आदमियों को गिरिफ्तार किया जिनके नाम ये हैं—अनुकूल चन्द्र मुकर्जी, कालिपाद बोस बी०ए०, शैलेन्द्रसेन, सुरेशचन्द्र, खगेन्द्र दास। इन की ज़मानत के प्रार्थना पत्र अस्वीकृत हुए, ये सब हवालात में हैं।

जायदाद ज़ब्त—देहली के मैजिस्ट्रेट मि० कौनली की आज्ञानुसार रासविहारी बोस की सब जायदाद, जो देहली देहरादून या चन्द्र नगर के अंग्रेजी सेविंग बैंकमें पाई जाय, ज़ब्त कर ली गई है।

बम्बई में फिर आग—१९ ता० की रात को दानबंदर के पास बागो वाले के गुदाम में आग लग गई। चार लाख की रूई जल गई।

पूना में सभोज—पूना में जो समाज सुधार सम्मेलन हो रहा है, उसकी समाप्ति पर एक बड़ा सभोज हुआ जिसमें लग भग तीन सौ प्रतिनिधियों ने मिल कर एक पंक्ति में भोजन किया। इस सभोज में सभी जातियों के लोग थे।

हड़ताल की आशंका—इंग्लैन्ड के रेलवे कर्मचारियों ने एक प्रस्ताव पास किया है जिस के अनुसार वे सप्ताह में ४८ घंटे काम और मजदूरी में ५ शिलिंग की साप्ताहिक वृद्धि चाहते हैं। रेलवे यूनियन ने निश्चय किया है कि यदि यह बात स्वीकार न की जायगी तो हम हड़ताल करेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S... Foundation USA

संसार की गति

पुरानी हड्डियों में नई जान—पुरानी हड्डियों में नई जान डालना धन्वन्तरि के लिये भी कठिन है, पर जब से बूढ़े "अल्मोड़ा अख़बार" की बागडोर एक नए सम्पादक के हाथ में आई है, तबसे उस में नये रुधिर का संचार हो गया है। "अल्मोड़ा अखबार" हिन्दी में सब से पुराना समाचारपत्र है, पर पिछले वर्षों में उसकी बड़ी दुर्गति होगई थी। कभी कभी तो महीनों तक उसके दर्शन ही नहीं होते थे। "अख़बार" के वर्त्तमान सम्पादक ने उसका आकार बढ़ा दिया है, लेखों और समाचारों की दृष्टि से उसे पढ़ने योग्य बना दिया है। देशहित और निर्भीकता वर्त्तमान सम्पादक का मूल मन्त्र है। जहां कहीं लोगों पर अन्याय होरहा हो—फिर वह चाहे अपने समाज की ओर से हो या सरकार की ओर से उसे यह पत्र निडर होकर प्रकट करता है। इस लिये कई अदूरदर्शी लोगों की दृष्टि में यह कांटेसा खटक रहा है भले बुरे सभी तरह के साधनों से वे इस की आवाज़ को दबाने का प्रयत्न कररहे हैं। हमें पूरी आशा है कि "अल्मोड़ा अख़बार" ने कूर्म्माचल प्रान्त में नई जागृति करने का जो पवित्र काम आरम्भ किया है, उस में ये अदूरदर्शी लोग कुछ भी बाधा न डाल सकेंगे।

बूढ़े पति को धतूरा—दीनापुर के दौरा जज ने अभी एक १५ वर्ष की कन्या को अपने बूढ़े पति के भोजन में विष मिलाने के अपराध में पांच वर्ष की कड़ी जेल दी है। लतीफ़ी बीबी १५ वर्ष की एक कन्या है जो ५१ वर्ष के बूढ़े के गले में बांधी गई। कन्या के पिता के साथ बूढ़े पति की अन बन होगई, और उसका दण्ड बेचारी कन्या को भुगतना पड़ा। कन्या को अपने बूढ़े पति के हाथों कई बार मार और बुरा व्यवहार सहना पड़ा इस नित्य की मार पीट से तंग आकर लतीफ़ी ने अपने पति से छुटकारा पाने की ठान ली। एक दिन लतीफ़ी का पति अज़ीबुल्ला जब बाहिर से लौटा तो लतीफ़ी ने उस के खाने में धतूरा मिला कर उस को देदिया। उस के खाते ही वह अचेत होगया। डाक्टर ने आकर बड़ी कठिनता से उस के पेट से धतूरा निकाला और उसे सचेत किया। इसी अपराध पर लतीफ़ी को पांच वर्ष की कड़ी जेल मिली है।

अपराधी कौन है?—ऊपर जिस अभियोग का हमने ज़िक्र किया है वह विचार के लिये जूरी के साम्हने रक्खा गया था। विचार के पीछे जब जूरी से सम्मति मांगी गई तो एक बड़ी मज़ेदार बात हुई। लतीफ़ी ने छोटी और बड़ी कचहरियों में अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, और यह बात जूरी जानती थी। तब भी सम्मति पूछने पर एक जूरी मैन ने उसे निरपराध बताया। जज के पूछने पर जूरीमैन ने माना कि लतीफ़ी ने अपने पति को विष दी है तब भी वह निरपराध है। कहते हैं कि जजने इसे परस्पर विरोधी उत्तर समझा और इस पर बड़ी हँसी हुई। इसका कारण जूरीमैन की गंवारी बुद्धि समझीगई क्योंकि वह एक गांव का रहने वाला था। पर हमें निश्चय है कि इस विषय में कई लोग चतुर जज की अपेक्षा गँवार जूरीमैन के साथ सहमत होने के लिये तयार होंगे। शायद वह गंवार मनुष्यों के बनाये हुए कानूनी वाग्जाल से अपरिचित था इसी लिये स्वाभाविक कानून की जड़ तक पहुंच सका। एक ५१ वर्ष के बूढ़े को क्या अधिकार है कि वह पहिले एक १५ वर्ष की कन्या से विवाह कर के उस के जीवन को दुःखमय बनावे मारपीट और बुरे व्यवहार से लड़की का दिमाग़ पागल करदे और फिर न्याय कराने के लिये कचहरी में भागा जावे?

बंगाली के भाग जागे—एक दिन एक बड़े प्रतिष्ठित बंगाली लेखक से मिलने पर, उसने कहा था कि बंगभाषा की इतनी उन्नति का बहुत बड़ा कारण कलकत्ताविश्वविद्यालय की पाठविधि में उसका प्रवेश है। यदि यह भाषा विश्वविद्यालय में बंगाली छात्रों को न पढ़ाई जाती तो उस में इतने लेखक कभी उत्पन्न न हो सक्ते। अब तक बी० ए० तक की श्रेणियों में बंगाली पढ़ाई जाती है। अब बंगाली उसे एम०ए० तक पहुंचाने का यत्न कर रहे हैं। उस दिन हवड़ा साहित्य सम्मिलिनी के विशेष अधिवेशन में भाषण करते हुए कलकत्ता विश्वविद्यालय के नए उपाध्यक्ष डा० सर्वाधिकारी ने कहा कि बँगाल के गवर्नर बँगभाषा और बंग साहित्य के प्रेमी हैं। इस लिये आशा करनी चाहिये कि शीघ्र ही यह भाषा एम० ए० तक की पाठविधि में सम्मिलित की जायगी। जब गवर्नर बङ्गसाहित्य के प्रेमी हैं और विश्वविद्यालय के उपाध्यक्ष उस के लिये प्रयत्न करने वाले हैं तो एकदिन अवश्य ही बंग भाषा को यह सौभाग्य मिलेगा। हमें भी इस समय संयुक्त प्रान्त में ऐसे गवर्नर मिले हैं जो कहा जाता है कि हिन्दी से प्रेम करते हैं। पर इस प्रान्त में डा० सर्वाधिकारी के पल्ले के उपाध्यक्ष कहां हैं जो हिन्दी के लिये प्रयत्न करें? इसी लिये तुलसी और सूर की भाषा अभी तक एफ़० ए० तक भी कठिनता से पहुंचने पाई है।

स्वदेशी बायस्कोप—पिछली बार बायस्कोप पर एक नोट लिखते हुए हमने शोक प्रकट किया था कि अभी तक किसी भारत वासी ने भारत के लिये उपयोगी तसवीरों का बनाना आरम्भ नहीं किया है। हमें सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि एक मरहट्टे सज्जन ने यह काम आरम्भ कर दिया है। उनका नाम श्री युत फड़के है। श्री युत फड़के चलती फिरती तसवीरों के बनाने की कला सीखने विलायत गए थे। वहां से इस कला को सीख कर वे लौट आए और उन्हों ने अपना कारख़ाना नासिक में खोल दिया है। वे इस समय सत्य हरिश्चन्द्र, नल दमयन्ती, सावित्री आदि प्राचीन कथाओं की फ़िल्में तय्यार कर रहे हैं। सत्य हरिश्चन्द्र की फ़िल्म [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी हो चुकी है, और वह बम्बई में दिखलाई जा रही है। लोगों ने उसे बहुत पसंद किया है।

पंजाब में मुसलमानों का दैनिक—हिन्दू मुसलमानों भेद का जैसा विकट रूप पंजाब में है, वैसा और किसी प्रान्त में नहीं है। जहां हिन्दू मुसलमानों की सभी चीज़ें अलग हैं तो मुसलमानों का एक अलग दैनिक क्यों न होना चाहिये। लाहौर से उर्दू में मुसलमानों के तीन दैनिक पत्र निकलते हैं, पर अंग्रेज़ी में कोई भी दैनिक पत्र नहीं है। "आबज़र्वर" पहिले तो साप्ताहिक है और फिर वह किसी काम लेने लायक नहीं है। पंजाब के कुछ मुसलमान नेताओं के नाम से एक चिट्ठी प्रकाशित हुई है जिसमें दैनिक की आवश्यकता दिखलाई गई है। चिट्ठी पर नवाब जुल्फ अली खां, आनरेबल शफी, डा० इकबाल जैसे नेताओं के नाम हैं। पंजाब अंग्रेज़ी पत्रों के लिये उपजाऊ भूमी नहीं है। जहां उर्दू का एक दैनिक चार हज़ार बिकता है, वहां पुराना "ट्रिब्यून" तेरह चौदह सौ से अधिक नहीं छपता। देखना चाहिये कि इस एकदेशी पत्र के आगे में क्या लिखा है।

क्या कुरान पर्दा सिखाता है? पर्दे की कठोरता मुसलमान जातियों में सब से अधिक है और यह उनके धर्म का एक आवश्यक अंग समझा जाने लगा है। पर यह बहुत कम लोगों को मालूम है कि कुरान में पर्दे की कहीं आज्ञा नहीं है। एक मुसलमान सज्जन ने अप्रैल के "हिन्दुस्तान रिव्यू" में लेख लिखा है उसमें उन्होंने इसी बात को सिद्ध किया है। लेखक का कथन है कि कुरान में कहीं भी स्त्रियों को पर्दे में बंद करने का आदेश नहीं है; वस्तुतः यह पर्दे की चाल महम्मद के मरने के तीन सौ वर्ष पीछे चली थी। मुसलमानों में पर्दा कुरान की किसी आज्ञा के आधार पर नहीं चला पर इसका कारण फारस वालों के साथ सम्पर्क और अनुचरों का स्त्री विषयक ईर्षा और अभिमान है। महम्मद के पहिले अरबी लोग आधे जंगली थे, उनकी स्त्रियों को सभ्य बनाने के लिये महम्मद ने कपड़ों आदि में परिवर्तन करने का आदेश दिया था, पर स्त्रियों को पर्दे में बन्द करने को नहीं कहा। महम्मद के अपने परिवार की स्त्रियां कभी पर्दे में बन्द नहीं रहीं, पैगम्बर की लड़की फातीमा खलीफों के विवाद में सदा योग दिया करती थी। उसकी पोती जैनाब अपने भतीजे को बचाने स्वयं अत्याचारी यजीद के दरबार में गई थी और उसका सामना किया था। जो मुसलमान इस समय अपनी स्त्रियों को पर्दे में बन्द रखते हैं लेखक की सम्मति में वे पैगम्बर के आदेश से बहुत दूर जा रहे हैं।

बम्ब केस में पुलीस का हाथ—गत सप्ताह हम पाठकों को समाचार सुना चुके हैं कि राम बाज़ार बम्ब केस में जितने अभियुक्त पकड़े हुए हैं, उनका बयान हो चुका है और उन्होंने अपने आपको बयान में निरपराध बताया है। इस सप्ताह अभियोग पर दोनों ओरके वकीलों का विवाद हुआ है। अभियुक्तों के वकील की ओर से कहागया है कि यह सारा मामला पुलीस और उसके जासूसों का खड़ा किया हुआ है। एक डकैती के मामले में पुलीस प्रधान अभियुक्त शशांक को फंसाना चाहती थी। इसके लिये बहुत देर से तय्यारियां होरही थीं। पुलीस ने तब तक तलाशी नहीं ली जबतक कागज़ शशांक के घरमें रख न दिये गए। यह काम योगेन्द्र द्वारा करवाया गया। योगेन्द्र शशांकके घरके ऊपर रहता था। उसने बड़े आग्रह पूर्वक शशांक के साथ मित्रता गाँठी और शशांक को स्वयं नए तरह के बैम्ब बनाने को सलाहदी। यह स्मरण रखने योग्य बात है कि तलाशी होने के कुछ घंटे पहिले ही योगेन्द्र घर छोड़कर चलागया। यह बड़े आश्चर्य की बात कि घर में रहने वाले सभी पकड़ लिये गए पर योगेन्द्र को किसीने हाथ न लगाया। योगेन्द्र का कथन है कि नीचे ठक ठक होनेसे उसने घर छोड़दिया था पर उसने घरके मालिक या किसी और से इसकी शिकायत नहीं की। वकील ने आगे चलकर कहा कि देहली, मौलवी बाज़ार, और लाहौर में बम्ब फेंके गए जिससे कई पुलीस अफसरियों और बड़े अफसरों की हत्या हुई। हमारे देशका पुलीस विभाग इतना दुखियार है कि वह एक भी अपराधी को पकड़ नहीं सका। अपनी अयोग्यता के छिपानेके लिये कुछ करना ही चाहिये। इसी लिये निर्दोषी भले आदमियों को पकड़ पकड़ कर कचहरी में घसीटा जा रहा है। जिस बम्ब को तय्यार करने के लिये सौदों का इकट्ठा किया जाना बतलाया जाता है, उसके विषयमें इस समय दो थ्यूरियां हैं। जज और जूरी को दोनों पर विचार करलेना चाहिये। यदि टीन के डिब्बे आदि बम्ब बनाने के लिये इकट्ठे नहीं किए गए तब अकेले काग़ज़ कुछ भी सिद्ध नहीं कर सके।

मालवीयजी से निराशा—यदि "बैंकटेश्वर समाचार" की बातों पर विश्वास किया जाय तो कहना पड़ेगा कि इस समय भारतवर्ष में "अचानक धर्म विप्लव उपस्थित हुआ है"। जो सज्जन सनातन धर्म के स्तंभ समझे जाते थे वे भी "वैंकटेश्वर" की सभा को धिक्कार में छोड़कर धीरे धीरे अपने विचार पलट रहे हैं। कुछ दिन हुए, "अभ्युदय" ने अछूत जातियोंके उद्धार की बात कहकर सनातन धर्म पर कुठाराघात किया था, आज स्वयं पंडित मदनमोहन मालवीय भी विचल गए हैं अबतक तीन करोड़ के अनुसार १२ वर्ष से नीचे की लड़कों के साथ सहवास दंडनीय समझा जाता है। सरकार इस अवधि को १२ से १४ वर्ष तक ले जाने का उपयोगी कानून बनाना चाहती है। इस बात का मसौदा इस समय सिलक्ट कमेटी के सामने है। सिलक्ट कमेटी के मेंबर श्रीयुत विजय राघवाचार्य, [illegible] नाथ बनर्जी, और श्रीयुत [illegible] थे। इनमें से केवल "बैंकटेश्वर" का [illegible] मदनमोहन मालवीयजी पर ही भरोसा था पर मालवीयजी इतने मूर्ख नहीं निकले

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जितना बेंकटेश्वर समझता था; उन्होंने भी इस उपयोगी बिल का विरोध नहीं किया। अब हमारा सहयोगी उनसे भी निराश होगयाहै और अब उसने अकेले ही धर्म की 'दुहाई' देने का निश्चय कर लिया है।

छिः ! छिः !!—ऊपर हमने उस मसौदे का ज़िक्र किया है जिस ने सरकार कन्या सहवास की अवधि को १२ वर्ष से १४ वर्ष लेजाना चाहती है। इस मसौदे की उपयोगिता पर कुछभी लिखना अनावश्यक है। चरक सुश्रुत आदि वैद्यक शास्त्रों में सन्तानोत्पत्ति के लिये कम से कम १६ वर्ष की आयु बताई गई है; हम बड़े प्रसन्न होते यदि सरकार इसी अवधि को स्वीकार कर लेती पर इस समय यदि १४ वर्ष का कानून भी बन जाय तब भी कई ऐसी कन्याएं बच सकती हैं जो कोमल अवस्था में ही कामियों के हाथ पड़ कर अपने प्राण तक खो बैठती हैं। पर बेंकटेश्वर की समझ बिलकुल उलटी है। उसकी सम्मति में बारह वर्ष से भी पहिले कन्या के सहवास का समय है। वह कहता है कि "कहीं बारह वर्ष से पूर्व यदि स्त्री ऋतुमती होजाय तो उसके पतिका सहवास न करना पाप जनक है।', छिः छिः। सुनते हैं आज कल बेंकटेश्वर का सम्पादन एक बूढ़े सम्पादक करते हैं। क्या वे अपने बच्चों को यही शिक्षा देना चाहते हैं। जो वृद्ध सम्पादक विधवा विवाह पर नाक भौं चढ़ाते हुए ब्रह्मचर्य्य का उपदेश देते नहीं थकते, क्या बच्चों के लिये उनका यही ब्रह्मचर्य्योपदेश है? क्या वे नहीं जानते कि रजोदर्शन का आरम्भ होना और बात है और सहवास योग्य परिपक्व अवस्था का होना दूसरी बात है? आज कल जो सनातनी पर मरा के वश होकर छोटी आयु में विवाह कर डालते हैं वेही अपने दोष को धोने के लिये कहा करते हैं कि हिन्दुओं के सामाजिक बंधन इतने कड़े हैं कि विवाह होजाने से बहुत पीछे सहवास का समय आता है। पर आज हम वृद्ध सम्पादक से यह क्या बात सुनते हैं? क्या वे बारह वर्ष की लड़कियों के सन्तानों से भावी भारतवर्ष बनाना चाहते हैं? और आश्चर्य्य यह है कि ऐसी भद्दी बात के लिये भी धर्म शास्त्र की दुहाई दी जाती है। भगवान ऐसे धर्माचार्यों से हमारी जाति की रक्षा करे।

स्वराज्य का झगड़ा-आयर्लैन्ड के स्वराज्य बिल ने आयर्लैन्ड की बड़ी भयानक स्थिति करदी है। सारे देश ने सेना का रूप धारण कर लिया है। अब तक अलस्टर वाले ही स्वय सेवकों को कवायद कराते थे और लोगों को बन्दूकें बाँटते थे। अब राष्ट्रीय दल ने भी स्वयं सेवकों का दल संगठित करलिया है। स्वराज्य का पक्षपाती दल राष्ट्रीय दल कहाता है। इंगलैन्ड के उदार और सनातनी दलों ने मिल कर अलस्टर के झगड़े के निप्टारे का विचार किया था। आयर्लैन्ड का राष्ट्रीय दल इससे बेतरह भड़क उठा है। वह कहता है कि यदि अलस्टर वालों से डर कर स्वराज्य बिल में कुछ भी फेर फार किया गया तो हम भी दल बल सहित राजधानी में पहुंच जावेंगे। उस दिन २००००० राष्ट्रीय दल के स्वयं सेवकों की कवायद हुई और उन्हें बन्दूकें और बारूद बाँटा गया।

भारतवर्ष में पशु हत्या—पशुरक्षा के प्रसिद्ध पक्षपाती श्रीयुत लाभ शंकर लक्ष्मीदास ने मुक्ति फौज के अध्यक्ष को एक पत्र भेजा है जिस में उन्होंने मुक्ति फौज के प्रचारकों से आग्रह किया है कि वे स्वयं निरामिष भोजी रहें और देशी ईसाइयों को निरामिषभोजी रहने का उपदेश दें। उसी पत्र में उन्हों ने लिखा है कि १९१२ में केवल बम्बई, मद्रास और कलकत्ता—इन तीन नगरों में ही नीचे लिखी पशुहत्या हुई है।

भेड़ बकरी	५,२१५,४३८
गो	१११,८७२
बछड़े	११,०२४
सूअर	२,८१०

जब तीन नगरों में इतनी पशुहत्या हुई है तो सारे भारत वर्ष में तो न जाने कितनी हत्या हुई होगी।

सरहद पर डाकू—भंगी खेड़ का प्रसिद्ध डाकू शेख हुसैन नामी कुछ काल से बड़ा ऊधम कर रहा था। उसके पकड़ने के लिये १०००) रु० का पारितोषिक नियत किया गया था। वह अब दर्रे में पकड़ा गया है। थोड़े दिन हुए उसने दो पुरुषों की हत्या की और एक युवती को ले भागा। एक दिन थककर दर्रे में हथियारों सहित आकर एक बूढ़े से रोटी मांगने लगा। बूढ़े ने डाकू को रोटी दी और उस को खाते देख चुपके से अपने पुत्र की सहायता ले झट उसकी मुश्कें कसलीं। बूढ़े के कुछ चोट आई है। डाकू थाने में है।

स्त्रियोंने मकान जलादिया—इंगलेंड की सम्मति मांगने वाली स्त्रियों ने बरमिंघम में कई मकानों को आग लगा दी। ये स्थान जलकर राख होगए।

धर्मपाल के विरुद्ध प्रस्ताव—गुरुकुल पार्टी की आर्य्यसमाज के मन्त्री म० तुलसीरामजी लिखते हैं कि १० मई को निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ:—

"लाला लछमन दासजी ने प्रस्ताव किया कि धर्मपाल की "ज्ञान प्रकाश" नामी पुस्तक में जो आर्य्यसमाज के स्थापक पर गन्दे और असभ्यता से गिरे हुए आक्षेप किये गये हैं यह आर्य्य समाज उनके विषयमें शोक प्रकाशित करती है।" मा० हर प्रसाद जी ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया और सर्व सम्मति से पास हुआ।

तुलसीराम पर ४००) जुर्माना।

गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता श्रीयुत नंदलालकी मान हानि करनेके कारण तुलसीराम एम० ए० पर जालंधर में जो अभियोग चलरहा था, उसका फ़ैसला होगया। मैजिस्ट्रेट ने तुलसीराम एम०ए० पर ४००) और प्रकाशक को १००) रुपया जुर्माना किया। मैजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में गुरुकुल और ला० नन्दलालजी को सर्वथा निर्दोषी बताया। पूरा फ़ैसला अगलीवार देंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

सावधान !

गुरुकुल पर भयंकर आंधी

इस वर्ष गुरुकुल के उत्सव पर व्याख्यान देते हुए महात्मा मुन्शीराम जी ने एक भविष्य वाणी की थी। उन्होंने कहा था कि इस समय अन्दर और बाहिर की शान्ति को देखकर हम निश्चिन्त होगए हैं। पर यह शान्ति आने वाली भयंकर आँधी की सूचना दे रही है जो गुरुकुल रूपी कल्प वृक्ष को जड़ से उखाड़ने का यत्न करेगी। हमारे गुरुकुल को देखने इस समय सभी तरह के दर्शक आते हैं, और हमारी शिक्षा प्रणाली पर मोहित हो जाते हैं। पिछले दो तीन वर्षों से इन दर्शकों में विदेशी विद्वानों की संख्या खूब बढ़ रही है। जिन विदेशियों की सभ्यता, उनका धर्म, उनका रहन सहन, और उनकी शिक्षा प्रणाली हमसे सर्वथा भिन्न है, उन्हें भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के साम्हने सिर झुकाना पड़ा है। गुरुकुल प्राचीन सभ्यता का केन्द्र है और भारतवासियों के अपने परिश्रम का फल है। गुरुकुल के साम्हने सिर झुकाना हमारे और हमारी सभ्यता के साम्हने सिर झुकाना है। जब अपनी श्रेष्ठता के गर्व में चूर विलायती सभ्यता को पता लगेगा कि भारतवर्ष में एक ऐसा कोना है जहां मेरा आधिपत्य स्वीकार नहीं किया जाता; यही नहीं किन्तु मेरे चेले भी वहां जाकर मुझसे बिचल जाते हैं तब उसके हृदय में ईर्षा की आग धधक उठेगी। विलायती सभ्यता का अभिमान रखने वाले लोग इस प्रयत्न को अपनी आंखों से देख न सकेंगे, वे इसे हर तरह से नष्ट भ्रष्ट करने का यत्न करेंगे। इस वर्ष अपील करते हुए महात्मा जी ने जो बात कही थी, उसका कुछ ऐसा ही तात्पर्य था। उस समय कई लोग महात्मा जी के तात्पर्य को समझ न सके थे और कई समझ कर भी इसे काल्पनिक ही कहते थे। पर अभी इस भविष्य वाणी को किए तीन मास भी नहीं गुज़रे कि उस आंधी का पहिला रूप दिखलाई देने लगा है, विदेशी सभ्यता के एजंटों ने अभी से गुरुकुल को जड़ से उखाड़ने का यत्न आरम्भ कर दिया है।

जैसे "राली ब्रदर" ने भारतवर्ष के नगर २ और ग्राम ग्राम में अपने एजंट छोड़ रक्खे हैं जो भारतवर्ष का अनाज जहाज़ों में लाद कर बाहिर भेजते हैं, वैसे ही बड़े बड़े नगरों में विलायती सभ्यता के एजंट भी रहते हैं जिनका काम हर एक विलायती चीज़ की डुगडुगी पीटना और लोगों को उसके जाल में फंसाना है। जब से गुरुकुल स्थापित हुआ है, तभी से इन एजंटों की इस पर टेढ़ी दृष्टि है। पिछले दो तीन वर्षों से तो यह इनकी आंखों में कांटे की तरह खटक रहा है। गुरुकुल को कुचलने के लिये ये एजँट नई नई विधियां निकाला करते हैं। पहिले पहिल इन्होंने गुरुकुल को हँसी ठट्ठे में उड़ाना चाहा; फिर इन्हें गुरुकुल में राज विद्रोह की गन्ध आने लगी। पर ये दोनों वार ख़ाली गए। अब इन एजँटों ने गुरुकुल को कुचलने के लिये टेढ़ी चाल का आश्रय लिया है। अब ये एजँट गुरुकुल को सरकारी शिकंजे पर चढ़ाकर उसे पीस डालना चाहते हैं। विलायती सभ्यता के इन एजन्टों का गुरु घंटाल कलकत्ते की चौरंगी में रहता है, जिसका नाम "इँगलिशमैन" है। उसने अभी एक लेख लिखकर गुरुकुल के विषय में ऐसा ही प्रस्ताव किया है। लेख बहुत लम्बा है और उसमें वेदान्त फिलासफ़ी और तन्त्रों के विषय में बड़ी पँडिताई छाँटी गई है। पर सारे लेख का तात्पर्य यही है कि आज कल ऐसे आश्रम उत्पन्न होगए हैं जिनमें धर्म की आड़ में राज विद्रोह सिखाया जाता है। आरा और देहली का अभियोग इसके लिये साक्षी रूप में दिया गया है। ये आश्रम स्वतन्त्र हैं, इसलिये "इँगलिशमैन" की सलाह है कि इन सब स्वतन्त्र आश्रमों को सरकारी देख भाल के नीचे रखना चाहिये।

दो सप्ताह हुए हमने "आश्रमों पर सरकारी लगाम" नोट लिखकर इस स्थापना की निस्सारता सिद्ध करदी थी। हमने कहा था कि यदि देहली और आरे के सरकारी गवाहों की गवाही को सच भी मान लिया जावे तो भी बम का बनाया जाना उन कालिजों में ही सिद्ध होता है सरकार जिनका पूरी तौर से निरीक्षण करती है। पर हमें आज इस बात से अधिक प्रयोजन नहीं क्योंकि इँगलिशमैन गुरुकुल को उन आश्रमों में से नहीं समझता जिनमें राजविद्रोह सिखलाया जाता है। "इंग्लिशमैन" ने इस वार बड़ी कृपा पूर्वक गुरुकुल को राज विद्रोह के दोष से बरी कर दिया है। गुरुकुल को सरकारी देखभाल के नीचे रखने के लिये वह दूसरी युक्ति देता है। इस वार वह सीधा वार न करके, मित्र के रूप में मीठी छुरी चलाना चाहता है। वह कहता है कि इस समय भारत वर्ष में शिक्षा के दो स्रोत बह रहे हैं। एक वह स्रोत है जिसे सरकार ने बहाया है और जो स्कूल और कालिजों के नाम से प्रसिद्ध है। दूसरे स्रोत से उसका मतलब गुरुकुल से है जो प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनरुज्जीवित करना अपना उद्देश्य बताता है। अपने स्कूल और कालिजों के परिणाम को सरकार देख सकती है पर गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की क्या विशेषता है, उसमें विद्यार्थियों का आचार कैसा बनता है, इसे न सरकार जाँच ही सकती है और न इस प्रणाली से लाभ ही उठा सकती है। इस जांच के लिये और जांच से लाभ उठाने के लिये गुरुकुल को सरकारी देख भाल के नीचे लाना आवश्यक है। यह युक्ति देकर "इंग्लिशमैन" ने आशा प्रकट की है कि सरकार की सहायता करने के लिये गुरुकुल के संचालक स्वयं ही गुरुकुल को सरकारी निरीक्षण के अधीन करदेंगे।

यही मीठी छुरी है, यही टेढ़ी चाल है जिसकी ओर हम आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहते हैं। इंग्लिशमैन ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से लाभ उठाने की दुहाई दी है पर ताड़ने वाले ताड़ गए हैं कि उसे किस बात की चिन्ता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वस्तुतः उसे अपने स्कूल और कालिजों की चिन्ता है। ये स्कूल और कालिज विदेशी सभ्यता के विलास मन्दिर हैं। इन्हीं स्कूल और कालिजों में हमारे बालक अपनी भाषा, अपने वेश, अपने धर्म्म और अपने आचार व्यवहार से घृणा करना सीखते हैं; इन्हीं मन्दिरों में वे अपने प्राचीन जातीयगौरव को भूलकर सदा के लिये दूसरों के गुलाम बनजाते हैं, इन्हीं के सहारे इस जादूगरनी ने हमारे शिक्षित लोगों को अपने फंदे में फाँस रक्खा था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने इस जादू को तोड़ डाला है। उसने दिखलादिया है कि हमारा साहित्य विशाल है, हमारी भाषा योग्य है, शिक्षा की हमारी प्राचीन प्रणाली कृतकारिणी है; हमें अपने बालकों को शिक्षित करने के लिये दूसरों के सामने सिर झुकाने की आवश्यकता नहीं। इस ने सिद्ध करदिया है कि यदि हमें विज्ञान विदेश से सीखना पड़ता है तो विदेशियों को भी धर्म और आचार में हम बहुत कुछ सिखा सक्ते हैं। इस तरह हमारे देश में विदेशी सभ्यता का जो निष्कंटक राज्य चल रहा था, उसमें गुरुकुल कंटक सिद्ध हुआ है, वह इस कंटक को सहन कैसे कर सकती है। इसी लिए उसके एजन्ट इस कंटक को जड़ से उखाड़ने की सिर तोड़ कोशिश कर रहे हैं। उसका सब से अच्छा उपाय उन्हों ने सरकारी निरीक्षण निकाला है। जो लोग सरकारी निरीक्षण के लिये नियत होंगे वे "इंग्लिशमैन" के भाई बन्द ही होंगे, इंग्लिशमैन" उनकी नब्ज़ को जानता है। वे सरकारी निरीक्षक सब से पहिले बच्चों की बिल बिलाहट कहकर वेद, उपनिषदों और दर्शनों पर हाथ साफ़ करेंगे, "मृत भाषा" कह कर संस्कृत का गला घूटेंगे; गंवारी बोली कह कर हिन्दी को धत्ता बतावेंगे; और काल्पनिक कह कर भारत वर्ष के इतिहास को देशनिकाला देंगे। इसी से "इंग्लिशमैन" का सारा काम सिद्ध हो जायगा; विलायती सभ्यता के राज्य का कांटा निकल जायगा। "इंग्लिशमैन" चाहे कितनी ही चिकनी चुपड़ी बातें क्यों न करे, हम जानते हैं कि उसका यही आशय है, और इस में सँदेह नहीं कि अपने आशय को सिद्ध करने का उसने सब से अच्छा उपाय निकाला है। गुरुकुल की सफलता के कारण जिन्हें नीचा देखना पड़ा है, उन्हीं के हाथ में गुरुकुल का गला देदेने से बढ़कर उसके मारने का और कौनसा अच्छा उपाय हो सक्ता है।

सावधान आर्यसँतान, सावधान! तुम्हारे धर्म और सभ्यता विरोधियों का यह अन्तिम वार है, इसके मार में न आजाना। हम यह नहीं कहते कि अभी कोई सँकट उपस्थित है। धर्म के विषय में ब्रिटिश सरकार की नीति उदासीन है; उसका प्रण है कि वह किसी विशेष धर्म या सभ्यता का पक्षपात न करेगी। हमें लार्ड हार्डिञ्ज़ की बुद्धिमता पर और न्याय प्रियता पर भी पूरा भरोसा है। वे स्वयँ इन छुट भइयों की कर्तूतों से परिचित हैं। एक वार पहिले इन्हीं छुट भइयों के फेर में आकर भारतीय सरकार ने आर्य समाज पर राजविद्रोह का सँदेह किया था, पर अन्त में उसे अपनी नीति बदलनी पड़ी थी। हमें पूरा निश्चय है कि अब भारतीय सरकार इन के उकसाने से कोई ऐसा मूर्खता का काम न करेगी। यदि वह सचमुच गुरुकुल को फलने फूलने देना चाहती है और उसके परिणामों से लाभ उठाना चाहती है तो उसके हाथ पैर न जकड़ कर उसे स्वतन्त्रता से काम करने देगी।

विकासवाद

या

इवोल्यूशन थ्यूरी

प्रो० वि० ग० साठे एम० ए० गुरुकुल कांगड़ी कृत

विकासवाद सारे विज्ञान का आधार है। आजकल विकासवाद से अनभिज्ञ रहना अनपढ़ होने का चिन्ह समझा जाता है। तो लीजिये, यह पुस्तक पढ़िये। पत्रों और विद्वानों ने मुक्त कंठ से इस पुस्तक की प्रशंसा की है इस में ३६ हाफ़टोन चित्र हैं। मूल्य केवल २)

प्रबन्धकर्ता
सद्धर्म प्रचारक पत्र, देहली

वीर गांधी का आत्म-गौरव।

द० अफ़्रीका में भारतवासियों के साथ जो अन्याययुक्त व्यवहार होता है, उस का प्रतिवाद करने के लिये भारतवासियों ने विकट आन्दोलन किया था। उस आन्दोलन में जिन भारतवासी कुलियों ने हिस्सालिया उन पर पुलीस ने अत्याचार किया; कई भारतवासियों की जानें तक चली गईं। चारों ओर से दबाए जाकर द० अफ़्रीका की यूनियन सरकार ने इन अत्याचारों और भारतवासियों के कष्टों की खोज करने के लिये कमीशन बिठाया। उस कमीशन के तीन सभ्यर्थ, वे तीनों यूनियन सरकार द्वारा निश्चित हुए थे। वहां के भारतवासियों ने आग्रह पूर्वक निवेदन किया कि इस कमीशन में कम से कम एक भारतवासी या भारतवासियों द्वारा निर्वाचित अंग्रेज़ होना चाहिये, अन्यथा इस कमीशन को हम स्वीकार न करेंगे। यूनियन सरकार ने इस निवेदन की कुछ भी पर्वा न की, उधर भारतवासी भी अपने प्रण पर पक्के रहे; उन्हों ने कमीशन के वार वार कहने पर भी उस के सामने गवाही देने से इन्कार किया।

भारतवासियों के इस प्रण को लेकर उस समय दूसरों का तो कहना ही क्या है, कई अपनों ने भी तिरछु टिप्पणी की थी। कई लोगों का मत था कि गांधी ने कमीशन के सामने गवाही न देकर अपने दुःखों को प्रकट करने का एक बहुत अच्छा अवसर खो दिया है। यहां के गोरेपत्रों ने तो गांधी को तरह तरह की बातें सुनाई थीं। इस बात को दो मास हो गए। अब उस कमीशन की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, उस पर टीका करते हुए फिर गोरे पत्रों ने गांधी और भारतवासियों को बदनाम करने का अवसर ढूंढ निकाला है। एक गोरे पत्र ने यह कहने तक की भी नीचता की है कि भारतवासियों के पास पुलीस के अत्याचार का प्रमाण न था, इसी लिये उन्हों ने गवाही नहीं दी थी। इसी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का प्रतिवाद करने के लिए मि० एंड्रूज ने एक चिट्ठी छपवाई है।

चिट्ठी में वे कहते हैं कि द० अफ्रीका के भारतवासियों के सामने रुपये पैसे या लाभ हानि का प्रश्न न था; उनके सामने जातीय गौरव का प्रश्न था। द० अफ्रीका में जो हजारों भारतवासी जेल में गए हैं उनका मुख्य उद्देश्य उस भूमि में अपने जातीय नाम का गौरवान्वित करना और अपने अधिकारों को स्थिर रखना था। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज द० अफ्रीका में भारत का नाम अधिक गौरव से लिया जाता है। कमीशन के सामने गवाही देने से शायद थोड़ा बहुत लाभ हो जाता, पर जातीय मान कैसे कायम रहता? द० अफ्रीका की खानों में काम करने वालों ने एक हड़ताल की थी उस हड़ताल के कारणों पर विचार करने के लिए जब कमीशन बैठा तब उसमें हड़तालियों का प्रतिनिधि लिया गया। उसके पीछे रेलवे वालों की एक हड़ताल होने वाली थी। उसके कारणों को मिटाने के लिये रेलवे कमीशन बैठा। उसमें रेलवे कर्मचारियों का एक प्रतिनिधि लिया गया। तीसरा कमीशन भारतवासियों के कष्टों पर विचार करने के लिये बैठा। भारतवासियों ने आन्दोलन करते समय बलात्कार या धक्कामुक्की से कभी काम नहीं लिया। जब द० अफ्रीका में मजदूरों की साधारण हड़ताल हुई थी, उस समय यदि गांधी चाहता तो मजदूरों का साथ देकर सरकार को कठिनाईयों को बढ़ा देता। मजदूरों की ओर से उसे कई तरह के प्रलोभन भी दिए गए थे। पर उसने सरकार के साथ राजपूती सज्जनता का व्यवहार किया; मजदूरों की हड़ताल समाप्त होने तक भारतवासी चुप रहे। पर उनके साथ यूनियन सरकार ने क्या व्यवहार किया? उनके बार बार कहने पर भी उनका कोई प्रतिनिधि कमीशन में न लिया गया। क्या ऐसे कमीशन के सामने गवाही देना आत्म गौरव और जातीय मान को घटाने वाला न होता? इसी बात का विचार करके गांधी ने कमीशन के सामने गवाही देना स्वीकार न किया था। इस में गांधी ने कौन सी भूल की?

देहली का अभियोग।

२१ ता० को दौरा जज मि० हैरिसन के सामने देहली का राजनैतिक अभियोग आरंभ होगया। जज ने सब से पहिले जूरी का निश्चय किया। नवाब उमराव मिर्ज़ा, राय साहिब नाथूराम, बाबू बशीरुद्दीन हसन, इन तीन नागरिकों की जूरी बनी। अभियुक्तों को क्रमशः नाम सुनाए गए-(१) बसन्तकुमार विस्वास (२) अवध बिहारी (३) अमीर चन्द (४) बालमुकन्द (५) बलराज (६) हनुमन्त सहाय (७) मन्नूलाल (८) चरणदास (९) रघुवर शर्मा (१०) खुशीराम (११) रामलाल बनाम छोटेलाल। आगे कचहरी में इन्हीं नम्बरों से ये अभियुक्त बुलाए जावेंगे। सरकार की ओर से रास अलस्टन और ब्राडवे थे। अमीरचन्द, बालमुकन्द और खुशीराम की ओरसे मि० रघुनाथ सहाय; बलराज की ओरसे ला० काशीराम, लखपतराय और दीवानचन्द; मन्नूलाल की ओरसे ला० गिरधारीलाल; हनुमन्त सहाय की ओर से मि० खुर्शेद अली और शिव नारायण, चरण दास की ओर से धानराज शाह; विस्वास की ओर से मि० एस. एन बोस और रघुबीर शर्मा की ओरसे मि० जुगलकिशोर वकील हैं।

दोष

सरकारी वकील के कहने पर अलग अलग ११ दोषोंको हटाकर सबपर हत्या का निम्न लिखित दोष लगाया गया—'तुम ग्यारह अभियुक्तों ने १९१० और १९१४ के बीच में लाहौर, देहली तथा और स्थानों में दीनानाथ, मुस्तान चन्द, रास बिहारी बोस, हरदयाल आदि के साथ मिलकर हत्याके लिये षड़यन्त्र रचा (भारतीय दंड विधान ३०२ धारा) और वह हत्या १७ मई १९१३ को लाहौर में की जो अपराध भा० द० विधान की १२० व और ३०२ धाराके अनुसार दंडनीय है।"

जज के पूछने पर सबने अपने आपको निर्दोषी बताया। अभियुक्तों के वकीलों के कहने पर अभियोग सोमवार तक मुलतवी किया गया।

कुछ आप बीती कुछ जग बीती

लाहौर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

(३६)

लाहौर का वार्षिकोत्सव उन दिनों हम लोगों के लिए वही आकर्षण रखता था जो हरद्वार का कुम्भ पौराणिकों के लिए अबतक रखता है। हम लोग लाहौर आर्य समाज मन्दिर को एक तीर्थ स्थान समझते थे और बड़ी श्रद्धा से वहां के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने के लिए यात्रा किया करते। २३ नवम्बर को नगर कीर्तन था। उस दिन रात को हम सब अपने घरों से चलकर रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। ट्रेन दो बजे प्रातः चलती थी। हम दस ग्यारह आर्य भाई पहले तीसरे दर्जे के मुसाफ़िर खाने में गए। भाई देवराज ने आंखें बन्द कर लीं और वेद मन्त्र का उच्चारण करके परमेश्वर की स्तुति के श्रुत बल तथा ज्ञान के लिए प्रार्थना की। आंख खोलते ही पता लगा कि उन संख्या अच्छी खासी होगई है मैंने पौन घन्टे तक धर्म्मोपदेश दिया और दो बजे की ट्रेन से लाहौर को चल दिए। सारा प्रातःकाल भजनों में बिताया। जिस स्टेशन पर रेल पहुंचती। स्टेशन पर हमारे भजनों को सुनने चुपचाप सब खड़े हो जाते। सन्ध्या से रास्ते में ही निवृत्त होकर ७ बजे सवेरे लाहौर पहुंचे। उन दिनों लाहौर में ट्रेम चलती थी। एक ट्रेम भर कर भजन गाते हुए उतारे के स्थान पर पहुंचे। वहां से लाहौर के बाज़ारों में भजन गाते हुए समाज मन्दिर में पहुंचे।

इस उत्सव में ही मास्टर दुर्गा प्रसाद जी का १६ संस्कारों पर व्याख्यान सुनकर मेरा प्रेम उन के साथ अधिक हो गया था किन्तु सबसे बढ़कर पण्डित गुरुदत्त का व्याख्यान था जिसके विषय में मेरी डायरी में लिखा है—"इस व्याख्यान को क्या उपमा दूं? ऋषि दयानन्द के उपदेशों के पश्चात् यही एक व्याख्यान सुनने में आया है।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह उत्सव इस लिए भी स्मरणीय रहेगा कि मैंने पहले पहल पं० गुरुदत्त के व्याख्यान के पश्चात् २५ नवम्बर १८८८ के ११ बजे से हुक्का पीना छोड़ दिया था। २६ की डायरी में लिखा है कि सारादिन तमाखू नहीं पिया। २७ नवम्बर को लिखा है—"तमाखू छोड़ने से बड़ा लाभ होगा। अभी पता लगता है कि बहुत सी सुस्ती दूर हो गई।" इस के कुछ दिन पीछे भूख अधिक लगने का लेख है। लाहौर से लौटकर मैं अपने ग्राम तलवन में गया। इन दिनों ही सांसारिक ऐश्वर्य तथा सांसारिक मान के सञ्चय करने का विचार यद्यपि शिथिल हो चुका था किन्तु पर्याप्त धन इकट्ठा करके मानसिक जीवन व्यतीत करने के विचार दृढ़ हो रहे थे। इसी लिए जहां जालन्धर वाले मकान के नक़शों में उपासनालय के साथ साथ पुस्तकालय के बड़े कमरे की बुनियाद रक्खी गई थी वहां विचार के लिए एकान्त निवासार्थ अपनी ग्राम से दूर भूमी पर वाटिका तथा आश्रम बनाने का काम भी हो रहा था। इसी के लिए मैं जब अवकाश पाता अपनी जन्म भूमी में चला जाता। तीन दिवस जन्म भूमी में धर्म प्रचार कर तथा नई वाटिका की हरयावल देख कर जालन्धर लौट आया।

इस वर्ष जालन्धर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव भी बड़ी धूम धाम से हुआ केवल धूम धाम ही न थी, जालन्धर निवासियों की काया पलट हो गई। उत्सव से पहले एक तो मैंने विविध स्थानों में विशेष धर्म सम्बन्धी व्याख्यान दिए। फिर पण्डित लेखराम जी आर्य पथिक से प्रचार कराया। इन दिनों जालन्धर के पौराणिक पण्डित भी ऐसे काबू चढ़े कि एक विशेष अधिवेशन में पण्डित देवी चन्द्र न्यायाचार्य तथा वृद्ध पण्डितरामदत्त तक बालविवाह का खण्डन कर गए। फिर प्रातः काल के नगर कीर्तन का बड़ा प्रभाव पड़ा।

ब्राह्म मुहूर्त में हरि कीर्तन

जब कभी मैं नवयुवक आर्य समाजियों से पुराने समय—अर्थात सम्वत १९८तक—की धर्म तथा सदाचारमें श्रद्धा का वर्णन करता हूं तो उनके मुख पर अविश्वास के से चिन्ह दिखाई पड़ते हैं और कोई कोई तो स्पष्ट कह देते हैं कि उस समय सब ढकी ढकाई बात थी इस लिये वह पुराना समय स्वर्गीय ज्ञात होता है। किन्तु मेरा अनुभव यही है कि जिस समय का मैं वर्णन कर रहा हूं उस समय कम से कम जालन्धरी आर्यों में श्रद्धा की मात्रा बहुत बढ़ी हुई थी। यह स्वयं सिद्ध सचाई है कि जिस समय आराम लेकर सब इन्द्रियां ढीली पड़ी होती हैं उस समय (ब्राह्म मुहूर्त में) मनुष्य के आत्मा पर, बुराई वा भलाई, दोनों का प्रभाव प्रबल पड़ता है। इसी सचाई को अपना पथदर्शक मान कर कुछ जालन्धरी आर्य हाथों में एकतारा ले चार बजे प्रातः घर से निकलते और आत्मा को शक्तिदायक अलाप के साथ वैराग, श्रद्धा, भक्ति और ईश्वर स्तुति के भजन गाना आरम्भ करते थे। हमारे काम का ढङ्ग यह था कि एक महल्ले या गली के बीच खड़े होकर एक भजन पूरा करते और एकतारा पर स्वर छेड़ते आगे चलदेते। जहांतक मुझे याद है पांच वर्षों तक हमलोग अपने वार्षिकोत्सव से डेढ़ दो महीने पहले ऐसाही अमल करते थे कई बार हमारे साथ लाहौर ब्राह्म समाज के प्रसिद्ध सभासद लाला काशीराम तथा बाबू अविनाशचन्द्र मजुमदार भी लाहौर से आकर कुछ दिनों सम्मिलित हुआ करतेथे। प्रातःकाल के हरि कीर्त्तन के समय कभी कभी विचित्र घटनाएं होतीं। कभी किसी माता को कहते सुनता—"बेचारा बड़ा भला फ़कीर है; केवल भजन गाता है, मांगता कुछ नहीं" और फिर जब दर्वाज़ा खोल कर उसके निकलते २ मैं चलदेता तो आवाज़ आती—"ये भाई खैर लैजा!" किन्तु जब मैं लौटकर भीख के लिये आंचल फैलाता तो देवी को विस्मित देख कर बतला देता कि मैं आर्यसमाज का भिक्षु हूं और इसलिए फेरी डालता हूं कि नर नारी आत्मशक्ति के लिए आर्य मन्दिर में एकत्र हों। कई देवियां तो हमें भिखमङ्गे समझ करही अनाज, पैसा, दुअन्नी, चवन्नी आंचल में डाल जातीं। मुझे याद है कि एक सवेरे की भीख की कमाई १७) से कुछ बढ़ कर मैंने उत्सव निधि में ही दी थी। वे दिन कैसे स्वच्छ और सुन्दर थे और उन्होंने मेरे आत्मा की उन्नति में क्या किया, इसे स्मरण कर के कभी २ हृदय मुग्ध हो जाता है और मुझे पश्चात्ताप होताहै कि ऐसी शान्तिदायक सेवा से पृथक होकर क्यों पत्थरों से टकराने का कठिन काम पकड़ लिया।

शायद यह प्रातःकाल का नगर कीर्तन बहुत वर्षों तक चलता किन्तु जब कुछ विरोधियों ने ढोलक गले में डाल कर प्रातः रास लीला और आर्यसमाज को गालियों के भजन गाने आरम्भ किए और पंजाबी वाग् व्यवहार के अनुसार हरि कर्तन के स्थान में "धम्मड़ पत्सा" मचवया तो जालन्धर आर्यसमाज के धर्म प्रचार का एक बड़ा अङ्ग शिथिल होगया।

मुंशीराम

मुफ्त मुफ्त मुफ्त

राष्ट्रों की उन्नति

५० प्रतियां मुफ़्त

एक सज्जन "राष्ट्रों की उन्नति" की ५० प्रतियां उन सज्जनों को विना मूल्य देना चाहते हैं जो ३० जून तक सद्धर्म प्रचारक के ग्राहक बनें। यदि आप एक प्रति बिना मूल्य लेना चाहते हैं। तो ३० जून से पहिले ग्राहक बन जाइये। मनी आर्डर या वी० पी० द्वारा पत्र का मूल्य आजाने पर आपको राष्ट्रों की उन्नति की एक प्रति भेज दी जावेगी।

प्रबन्धकर्ता
सद्धर्म प्रचारक पत्र।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुसलमानी देश और गोमाँस भक्षण

गो मांस रोगों का घर है।

एक अफ़ग़ान की साक्षी।

[अफ़ग़ानिस्तान के "सुराजुल अख़्बार" नामक फ़ारसी पत्र में एक अफ़ग़ान मुसाफ़िर ने चिट्ठी प्रकाशित की है। गो हत्या और गो मांस भक्षण विषयक हिन्दुस्तान से बाहिर मुसलमानों का क्या मत है यह उस मुसाफ़िर के पत्र से पाठक भली प्रकार जान सकते हैं। इस लिए उस पत्र का सारांश आप के पास अनुवाद करके भेजताहूं। कृपया आप अपने अमूल्य पत्र में इसे स्थान देकर कृतार्थ करें।

लाहौर
अनारकली

भवदीय
वार्ताहर]

"सुराज-उल-अख़बार" के
मुसाफ़िर का पत्र--

मैं एक ग़रीब अफ़ग़ान मुसाफ़िर हूं। और आज नौ वर्षों से अरब आदि प्रांतों में भ्रमण कर रहा हूं। चार वर्ष तक एशिया माइनर के मध्यवर्ती प्रसिद्ध शहर दमश्क में निवास करता था। इस अन्तर में सारे शहर में केवल एक ही गो मांस विक्रो की दुकान मेरी दृष्टि में आई जो वहां के "सौख बेल" नामक बाज़ार में हैं। इस दूकान के ग्राहक प्रायः यहूदी और क्रिश्चियन लोग हैं। शाम (एशियाटिक तुर्किस्तान) का कोई मुसलमान इस दूकान पर से नाहीं गोमांस खरीदता है और नाहीं कोई खाता है। मुख्य मुसलमानी राष्ट्रों के राजधानी के शहर इस्तांबूल, अनातूल आदि शहरों में भी मैंने भ्रमण किया है, पता लगाने पर मालूम हुआ कि वहां पर भी गो मांस भक्षक क्रिश्चियन और यहूदी ही हैं। जो कुछ थोड़े मुसलमान आंग्लानुकरणेच्छु हैं उन्हीं की प्रवृत्ति गोमांस भक्षण की ओर दीखती है।

मिश्र देश में अत्यंत महत्व का और ऐतिहासिक शहर केरो नामक है जहां बारह लाख की बस्ती है यहां पर गोमाँस की चार पाँच दूकाने हैं उनके भी खरीदार यहूदी और क्रिश्चियन ही हैं। मैंने अपने इस प्रवास में किसी भी मुसलमान को पाव भर गो मांस खरीदते भी नहीं देखा। अफ़ग़ानिस्तान में गोमांसभक्षक लोग हैं परन्तु इस श्रेणी को बिलकुल कनिष्ठ श्रेणी में गिना जाता है। मैं यद्यपि ईरान नहीं गया। परन्तु उनके सकुमार प्रकृति का विचार करने से उनकी प्रवृत्ति गोमांस भक्षण की ओर होगी ऐसा संभव नहीं। एशिया तुर्किस्तान (बुखार आदि) शहरों में भी गोवध नहीं होता। वहीं यूरोपस्थ बालकश शहर देखा। वहां सब भक्ष पदार्थों में गोमांस सर्वोत्तम माना जाता है, और प्रत्येक कसाई की दूकान में एक आध मारी हुई गौ या बैल लटकते हुए दीखते हैं। अफ़ग़ानिस्तान के वर्तमान बादशाह जिस समय हिंदुस्तान में आये थे और दिल्ली में उन्होंने ईद के दिन गौ की जगह बकरी की बली देनेके लिये अपने जाति भाइयों को आग्रह और प्रेम पूर्वक उपदेश किया था, उस समय पत्रोंमें उनकी सर्वत्र प्रशंसा हुई थी। उस समय से मैं इस विषय में अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से तलाश कर रहा हूं और अनुभव से पता लगा है कि मुसलमानी राष्ट्रों में खुदमुसलमानों में गोमांस भक्षण का प्रचार नहीं है। इस विषय में बहुत से विद्वानों और बुद्धिमानों से मैंने वाद विवाद भी किया है। एक समय एक विद्वान तत्वज्ञानीने ऐसा उत्तर दिया कि, 'गोमांस रोग है। गोघृत औषधीहै, गो दुग्ध आयुष्य वर्धकहै। इस पर मैंने कहा कि हिंदुस्तान में गोवध और गोमांस भक्षण धर्म विहितहै, ऐसा वहां के मुसलमान क्यों मानतेहैं?" उन्होंने कहा कि हिंदु मुसलमानों का वैमनस्य ही इसका कारण है; इसमें धर्म का कोई संम्बध नहीं। प्राचीन हिंदु पंडित और मुहमदी मुल्ला-इनकी प्रवृत्ति एक दूसरे का दोष निकालकर दूसरे पक्षको दुखाने की होती थी। वर्तमान में जिनसे परस्पर द्वेषउत्पन्न हो ऐसे घातक कृत्य न करने का मुसलमानी राष्ट्रों का उद्देश हैं। अफ़ग़ानिस्तान बादशाह के कथन का भी यही बीज है। महम्मदी धर्म का जन्म स्थान अरबस्तान हैं। इस लिये वहां की गूढ़ बातें अरबस्तान निवासी मुसलमान को ही पता हो सकती हैं। जब से मैं समझने लगाहूं तब से जो कुछ मैंने देखा और सुनाहै उससे गोमांस रोग कारक है और महम्मदी धर्मानुसार उत्तम मनुष्य उसको स्पर्श नहीं करता ऐसा मेरा निश्चय हुआहै। हिंदुस्तान में भी मैंने कुछ दिन निवास किया है। वहां का मेरा ऐसा अनुभव है कि मुसलमान रोगी को हकीम सदा गो मांस न खाने का उपदेश करते हैं, और दवाई के लिये गोरस और गो दुग्ध बतलाते हैं। पूर्वी देशों में खेती का काम गो वत्सों (बैलों) से ही होता है और बहुत से लोग गोरस पसंद करते हैं इस लिये पूर्वीय मुसलमान गौ को पालते हैं। गोमांसभक्षण की अपेक्षा यह लाभ ज्यादा होने से कोई भी मुसलमान बैलों का मालक उपयुक्त जानवरों को नहीं मारता। गाय, बैल, ऊंट इत्यादि खाद्य पशू अशक्त मरणोन्मुख होने पर उसको हलालकर मार के खाने का आचार मुसलमानों में है. तो आप कल्पना करिये कि जो वैद्यशास्त्र मांस मात्रके भक्षण को अयोग्य प्रतिपादन करता है वह निर्बल रुग्ण गोमांस को कब तक पसंद कर सकता है? परन्तु कितने दुःख की बात है कि हम मुसलमान शराब पीने, वेश्या गमन करने और परस्पर द्वेष करने में अपनी सर्व शक्ती खर्च कर रहे हैं! एक साधारण गौ की बाबत जिसकी जड़ में दूसरे के अंतः करण को दुःख देने के सिवाय दूसरा कोई हेतु नहीं, इस प्रकार के बली प्रति देकर हम अपने देश बंधुओं में द्वेष फैलाने को प्रवृत्त हो रहे हैं, और परस्पर के अंतः करणों में द्वेष का बीज बो रहे हैं अब कर युगल जोड़ कर परमेश्वर के पास यही प्रार्थना है कि इस प्रकार का विघ्न कर्तव्यदक्ष धर्म संरक्षक हमारा अफ़गानिस्तान का बादशाह हमारे पर राज्य करे और हमारा मार्ग दर्शक

एक अफ़ग़ान मुसाफ़िर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य संसार ।

समाज—श्रीयुत रवीन्द्रनाथ कृत बंगला पुस्तक से अनुवादित। मूल्य ॥) हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मंडली खंडवा (सी. पी.) व प्रयाग (यू. पी.) से प्राप्य।

हिन्दूसमाज इस समय दो दलों में विभक्तहै। एक वह दल है जो इसके संगठन, रीति नीति, रहन सहन, यहांतक कि वेशभाषा को भी निन्दित और एक दम त्याज्य समझता है और इसका सिलसिलेवार परिवर्तन करना चाहता है। इसे हम समाज विध्वंसक दल कहते हैं। दूसरा वह दल जो हिन्दूसमाज की सभी बातों का अन्ध पक्षपाती है और पुरानी लकीर से एक इंच इधर उधर जाने को घोर नास्तिकता समझताहै। ऐसे खेंचातान के समय में एक तीसरे दल की बहुत ही आवश्यकता है जो गम्भीर और निष्पक्षपात वृत्ति से अपनी सामाजिक दशापर विचार करे, उसके गुणों को गुण और दोषों को दोष कहे। रवीन्द्रनाथ की इस "समाज" नामक पुस्तक से इसी आवश्यक्ता की पूर्ति होतीहै। इस पुस्तक में कुल मिलाकर आठ निबन्धहैं जिनमें हिन्दूसमाज के संगठन, रीति नीति और वेशभूषा पर बड़ी गंभीरता पूर्वक विचार कियागया है। रवीन्द्रनाथ न तो विलायती समाज को आदर्श मानकर उसी के अनुसार हिन्दूसमाज को ढालना चाहते और नाहीं वे अंध परंपरा के पक्षपाती हैं। "प्राच्य और प्रतीच्य" नामक निबन्ध में बड़ी खूबी से उन्होंने इस बात को स्पष्ट करके दिखला दिया है। सच्चे न्यायाधीश की तरह रवीन्द्रने हिन्दूसमाज के गुण दोष को परखा है। हमारी सम्मति में प्रत्येक देशहितैषी को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। पुस्तक की कागज़ छपाई बहुत अच्छी है। इस ग्रंथको प्रकाशित करके मंडली ने हिन्दी प्रेमियों का बड़ा उपकार किया है।

हिन्दी कोविद रत्नमाला—दूसराभाग श्यामसुन्दर दास बी. ए द्वारा संकलित। मूल्य १॥)। इंडियन प्रेस प्रयाग से प्राप्य।

हिन्दी कोविद रत्नमाला के पहिले भाग को प्रकाशित हुए कई वर्ष व्यतीत होगए। उसमें हिन्दी के चालीस प्रसिद्ध लेखकों और सहायकों के जीवन चरित थे। हिन्दीमें उस ग्रन्थका आदर हुआ, इसीलिये अब दूसरा भाग देखनेको मिला। इसमें पं०महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं० रामावतार शर्मा साहित्याचार्य्य, पं० माधवराव सप्रे, बा० देवीप्रसाद, महात्मा मुन्शीराम, पं० शुकदेव बिहारी मिश्र आदि हिन्दीके प्रसिद्ध लेखकों के चित्र और चरित्र हैं। चरित्र यद्यपि संक्षिप्तहैं तथापि उनसे लेखकोंके विषय में बहुत सा ज्ञान प्राप्त होजाता है। कई समालोचकों को इस ग्रंथ की उपयोगिता में सन्देह है परन्तु यदि ग्रन्थ के संग्रहीताके बताए हुए उद्देश्यको दृष्टि में रक्खा जाय तो अवश्य इसपुस्तक की उपयोगिता स्वीकरनी पड़ेगी। इस ग्रंथका उद्देश्य न तो लेखकों की विस्तृत जीवनी लिखना है और नाहीं उनके ग्रंथों की समालोचना करना है। इस ग्रंथ से हिन्दी लेखकों के घर बैठे आप दर्शन कर सक्ते हैं और उनका संक्षिप्त वृत्तान्त जान सक्ते हैं। यह पुस्तक इस काम को बहुत अच्छी तरह पूरा करती है। विशेषतया सम्पादकोंके तो बड़े काम की चीज़ है जिन्हें समय समय पर लेखकों के चरित और चित्र प्रकाशित करने पड़तेहैं। इंडियन प्रेस की छपी पुस्तक की लिखाई छपाई के विषय में कुछ कहने को आवश्यकता नहीं है।

शालोपयोगी भारतवर्ष—श्रीयुत गोविन्द सखाराम सर देसाई बी. ए, कृत मराठी पुस्तकका हिन्दी अनुवाद। मूल्य १) शेठ दामोदर दास सांवलाराम एंड कंपनी, इन्दु प्रकाश प्रेस, ठाकुर द्वार, बम्बई से प्राप्य।

श्रीयुत गोविन्द सखाराम सर देसाई मराठी के बड़े प्रसिद्ध इतिहास लेखक हैं। उन्होंने मराठी में एक बड़ा भारतवर्ष का इतिहास लिखा है। उसके एक भाग के एक खंड के एक अंश को हिन्दी ग्रंथ प्रसारक मंडलीने ३०० पृष्ठकी पुस्तक में प्रकाशित किया है, इसी से पुस्तक के महत्त्व का पता लग सक्ता है। उन्हींसर देसाई महोदय ने पाठशालाओं में पढ़ाने के लिये भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास भी प्रकाशित किया है, उसका नाम "शालोपयोग भारतवर्ष" है। इस ग्रन्थको बम्बई सरकार ने पसंद किया है और यह ग्रंथ बम्बई प्रान्त की पाठशालाओं में पढ़ाया जाताहै। उसी का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें वैदिक कालसे लेकर अंग्रेज़ी राज्य काल तक भारतवर्ष का सारा संक्षिप्त इतिहास है। इतिहास प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर तय्यार कियागया है। विशेषतया मुग़ल रियासत और मराठा रियासत का इतिहास बहुत अच्छा है। आदि में भारतवर्ष के विषयमें भौगोलिक ज्ञान, प्राचीन भारतवर्ष का नकशा, प्रसिद्ध घटनाओं के सन आदि देकर विद्यार्थियों के लिये इतिहास को सुगम करने का प्रयत्न किया गया है। इस सब परिश्रम पर भी हम इसे निष्पक्ष इतिहास नहीं कह सक्ते क्योंकि इसके पृष्ठों से सरकारी दबाव की गन्ध आती है। प्रकाशक के अपने कथनानुसार ही इस पुस्तक पर बम्बई सरकार के शिक्षा विभागने रंग चढ़ाया है और इसे सरकारी पाठशालाओंके लिये तय्यार कियाहै। इसी सरकारी रंग के कारण स्वाधीन इतिहास लेखकों की दृष्टि में इसकी कीमत आधी रहगई है। स्वभावतः यह रंग अंग्रेज़ी काल पर बहुत चढ़ा है। कम्पनीके जिन अत्याचारोंके विषयमें अंग्रेज़ ऐतिहासिकों तकने बड़े कठोर शब्दों का प्रयोग किया है, उन्हें कोमल करने का यत्न कियागया है। वाइसरायों के विषय में सम्मतियां भी सरकारी ही दीगई हैं। "हेस्टिंग्ज़ अन्त में निर्दोषी ठहरा" और लार्डकर्ज़न "विद्वान् लेखक और उत्तम वक्ता था तथा तेज़ होशियार और मेहनती था" "बंगाल इलाके का विस्तार बहुत बड़ा होजाने से जब सरकारी काम में अड़चन पड़ने लगी तब उसे दूर करने के लिये उसने उसके दो भाग किये उसे बंगभंग कहते हैं।" बस बंग भंग की कथा इतनेमें समाप्त होगई। इसके अतिरिक्त, अंग्रेज़ी काल में हमारे देश में जो धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक, और साहित्य सम्बन्धी हलचल उत्पन्न हुई है उसका और उसके नेताओंका इसमें ज़िक्र तक नहींहैं। इन्हीं कारणोंसे हम इसे एक देशी इतिहास कहते हैं। यदि इस इतिहास को इस दोष से बचाया जा सक्ता तो सचमुच ही यह बड़े काम की चीज़ होती।

गुरुकुल की आय

१६ से ३१ वैशाख तक

भिक्षार्थ	११।=)॥
भंडार	१९२॥)
गोशाला	८२)
अछूत जातियों के बालक के लिये	५)
स्वर्णपदक	२०)
विविध	३९॥=)॥
उपदेशक महाविद्यालय	११८)
आयुर्वेद महाविद्यालय	१०७)
महानिधि	३३९८) ॥
सर्वयोग	३९६॥=)।$\frac{1}{2}$

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्षीय आर्य्यकुमार परिषद

भारतवर्षीय आर्य्यकुमार परिषद का पंचम सम्मेलन इस वर्ष राजस्थान की वीर भूमि के केन्द्र अजमेर नगर में होना निश्चित हुआ है। जेठ वदी ६ सं ७० वि० को उसकी स्वागत कारिणी समिति के अधिकारी निम्न-लिखित सज्जन चुने गये हैं।

पं० रामचन्द्र जी इन्जीनीयर, प्रधान

महाशय सूरजकिरण जी शारदा,
एम० म० एल एल बी, उपप्रधान

प्रोफेसर घीसूलाल जी एम० ए०
एल, एल० बी० मंत्री

महाशय चाँद किरण जी शारदा,
बी० ए० एल, एल बी० उपमंत्री

सब आर्य कुमार सभाओं, मित्र सभाओं तथा विद्यार्थी सभाओं की सेवा में निवेदन है कि वे कृपा कर अपने प्रतिनिधि चुनलें। तथा जो जो विषय सम्मेलन में प्रविष्ट करना चाहें उनकी सूची भेज दें तथा सम्मेलन के प्रधान के लिये भी अपनी २ सम्मतियां प्रदान करें तथा वादविवाद का विषय इस वर्ष आप रखना चाहें वह भी लिखें।

चांदकिरण शारदा

सूचना

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में उपसभा आर्यपुरुषों को ज्ञात होगा कि कई एक वर्षों से उपसभा प्रचार का कार्य करा रही है। जिस के आधीन कई एक योग्य उपदेशक तथा भजनीक हैं। अब उस सभा का कार्यालय पानीपत से करनाल होता हुआ शाखा में पहुँच गया है। इस समय तीन उपदेशक तथा तीन ही भजन-मण्डलियां है। अतः आर्यपुरुषों को सूचना दी जाती है कि जिन को उत्सवों व संस्कारों अथवा प्रचारार्थ उपदेशकों व भजनीकों की आवश्यक्ता हो वे श्री० ला० भगीरथलाल जी मन्त्री गु० कु० सहायक सभा से पत्र व्यवहार करें। आर्य पुरुष यह ध्यान में रखें कि यह प्रचार अब गु-रुकुल की ओर से है अतः आशा की जाती है कि कार्य में योग देकर हमें कृतार्थ और उत्सा-हित करेंगे और धन द्वारा स्वयं वा अन्यों से सहायता दिलाकर इस शाखा को दृढ़ बनाने का पूरा प्रयत्न करेंगे।

आपका
विष्णुमित्र प्रबन्धकर्त्ता

उपयुक्त उपदेश।

ता. १०-५-१४ के भारतमित्र में उपरोक्त शी-र्षक लेखमें पं० दीनदयालु जी के उस व्याख्यान का वर्णन है जो मारवाड़ी एसोसियेशन में दिया था। उस के एक स्थल में लिखा है कि पण्डित जी ने विवाह के महत्वपूर्ण और जटिल विषय में हृदयग्राही भाषा में नेताओंको उपदेश दिया। आप ने कहा कि बाल विवाह और वृद्ध विवाह समाज के अत्यन्त घातक हैं। लड़की का आठ वर्ष से और लड़केका १६ वर्ष से पहिले विवाह न होना चाहिये। अस्तुः हम श्री पं० दीनद-दयालु जी से और सम्पादक भारतमित्र से न-म्रता पूर्वक पूछते हैं कि क्या आठ वर्ष के उप-रान्त लड़की युवती होजाती है? और सवा आठ वर्ष की लड़कीका विवाह क्या बाल विवाह नहीं कहलाता? पण्डित जीके उपरोक्त कथन से तो यही तात्पर्य्य निकलता है कि लड़की का विवाह नौ वर्ष से लेकर सौ वर्ष तक उप-युक्त ही है, क्योंकि पण्डित जी ने यह खोलकर नहीं बतलाया कि अमुक अवस्था का विवाह उत्तम और अमुक का मध्यम तथा अमुक का निकृष्ट है और न कुछ इस विषय में शास्त्रीय प्र-माण ही दिया तथा प्रमाण की ज़रूरत ही नहीं थी क्योंकि भारतमित्र के कथनानुसार यह उपदेश एसोसियेशन के चुने हुए सभ्य और मारवाड़ी समाज के नवनेताओं को दिया गया था, सो वे लोग स्वयं प्रमाण जानते हैं।

हमको मारवाड़ी समाज के नैतिक दशा पर तो दुःख है ही, परन्तु अधिक शोक इस बात पर हुआ है कि भारतमित्र सरीखा प्रतिष्ठित पत्र भी उपरोक्त उपदेश को उपयुक्त ही बताता है; तब श्रोताओं का तो दोष ही क्याहै वे तो ताली बजाकर जय बोलना जानते हैं। पर आश्चर्य इस बात का है कि पण्डित जी सरीखे चतुर वक्ताओं के कानों तक भी अभी बालविधवाओं का हाहाकार नहीं पहुँचा। हम इस बात को स्वीकार करते हैं, कि मारवाड़ी समाज में द्वेषाग्नि को शान्त करने की, पण्डित जी से भारतमित्र ने प्रेरणा की थी क्योंकि पांच वर्ष पहिले पण्डित जी कलकत्ते आये थे, तब एक महीने तक आर्यसमाजियों को जातिच्युत करने की ब्राह्मणों से प्रतिज्ञा कराई थी परन्तु इस बार पण्डितजी ने कहा कि सनातनधर्म का यह अर्थ नहीं है कि अन्य धर्मावलम्बियों से द्वेष किया जावे।

इस परिवर्त्तन का चाहे कोईगुप्त कारण हो, चाहे भारतमित्र की प्रेरणा हो परन्तु मारवाडी समाज में इतना पूछने वाला कोई नहीं कि आप चार वर्ष पहिले ब्राह्मणों को प्रतिज्ञा करा कर मारवाड़ी समाज में द्वेषाग्नि धधका गये थे और इस वक्त शांति का उपदेश देते हो। इसका कारण क्या? हम भी मारवाड़ी हैं, इस लिये रूबरू न पूछ कर समाचार पत्रों की शरण लेतेहैं

एक मारवाड़ी

संक्षिप्त समाचार

लाहौर का मैडिकल कालेज—लाहोर के मैडीकल कालेज की हड़ताल के पश्चात् चार विद्यार्थियों को छोड़ कर सबको क्षमा करदिया गया था। उन चार विद्यार्थियों ने भी क्षमा के लिये प्रार्थना की थी। उसके उत्तर में पंजाब के लाट साहब ने उनको सूचना दी है कि उनकी क्षमा के लिये कोई कारण नहीं दीखता।

धर्म्म प्रचारक—जम्मू रियासत के मीरपुर ग्राम के निवासी और उस रियासत के सेटिलमेन्ट विभाग के एक नौकर बाबा जैराम सिंह सीधी नामी सिक्ख धर्म के प्रचारक जो एक मास हुआ पिशावर की ओर सिख धर्म प्रचार के लिये गए थे सरहद के बदमाशों ने पकड़ लिया है। सरहदि-योंने उन से १००००) रु० मांगे हैं। पकड़े हुए पुरुषों के सम्बन्धी पिशावर की ओर उन्हें छुड़ाने गए हैं।

आत्म हत्या—८ मई की रात्रि को चक-बाल जिला जेहलम का एक युवक मुलतान से लाहौर आने वाली गाड़ी में बिना टिकट सफ़र कर रहा था। चलती गाड़ी में टिकट देखने वाला आगया और उससे टिकट मांगा। युवक के पास टिकट नहीं था। इस बात से उसे इतनी लज्जा आई कि वह टट्टी में जाकर चलती रेल में से कूदपड़ा और उसी समय वहां मर गया।

देहली के राजद्रोह का अभियोग—देहली के स्थिर डिप्टी कमिश्नर मिस्टर एम. एच. हरीसन देहली के अभियोग को सुनने के लिये सेशन जज नियत हुए हैं। मि. बी कनौली जो अबतक अभियोग सुन रहे थे, उनकी जगह डिप्टी कनिश्नर का काम करें गे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहली में लेडी डाक्टर—सरकार ने देहली म्युनुसिपल कमैटी को प्रेरणा की है वह भी कलकत्ते बम्बई की तरह लेडी डाक्टर रक्खें।

परीक्षण के तौर पर आरम्भ में दो स्त्री डाक्टर नियत कीजावेंगी। वे डाक्टर प्रसव तथा और बिमारियों के समय जनाने में जाकर स्त्रीयों की सहायता किया करेंगी।

महामण्डल के नए मंत्री—कलकत्ता हाईकोर्ट के भूत पूर्व जज बाबू शारदा चरण मित्र भारत धर्म महा मंडल के मंत्री नियत हुए हैं।

श्रीयुत गोखले का स्वास्थ्य—मिस्टर गोखले लन्दन से विची को चले गए वहां वे अपना इलाज करायें गे। उन्हें पहिले भी कई बार वहां लाभ हो चुका है उनके मित्रों की सम्मति है कुछ काल तक पूरा विश्राम लेना चाहिये। मिस्टर गोखले समझते हैं कि विची में कुछ सप्ताह तक रह कर पबलिक सर्विस कमीशन का कार्य्य फिर से कर सकें गे। परन्तु सन्देह है कि इस बैठक में शायद ऐसा न हो सके।

अधिकार याचक स्त्रियों की नई करतूत—बिलायतकी अधिकार याचक स्त्रियोंने लोगों को तंग करने का एक नया ढंग रचाया है। वे न्यायालयों में जाकर खूब चिल्लाती हैं। उनके शोर के मारे अधिकारियों के लिये कार्य्य करना कठिन हो रहा है।

उर्दू कवि "हाली" का स्वास्थ्य—राजा अलताफहुसैन हाली उर्दू के प्रसिद्ध कवि हैं। वे अब बूढे होगए हैं और पानीपत में रहते हैं बात भी कठिनता से करते हैं आजकल उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है निर्बलता के कारण मल मूत्र त्याग शय्या पर ही करना पड़ता है।

देहली में राज द्रोह का अभियोग

डाके से स्वराज्य

छोटेलाल दौरा सुपुर्द

मि० कनौली की अदालत में जो अभियोग हो रहा है उसमें छोटेलाल के अतिरिक्त सारे अभियुक्त दौरा स्पुर्द कर दिये गए थे। छोटेलाल आरा की हत्या के अभियोग से सम्बन्ध करने के अभिप्राय से और साक्षियां हुई ... को ११ बजे कार्य्यवाही आरम्भ हुई ...चन्द (जिसको सरकारी साक्षी होने की ... पर आरा की हत्या के अभियोग में क्षमा किया गया है) का पहिला बयान था उसने कहा कि उसने अर्जुनलाल सेठी को मैसोर रियासत में १९१० में पहली बार देखा था। जहां वह धर्म पर व्याख्यान दिया करता था। बड़ौदे में तीन चार मास रहकर मैं जयपुर में अर्जुनलाल के बोर्डिंग हाऊस में गया और वहां ढाई वर्ष रहा इस बोर्डिंग के विषय में मैंने समाचार पत्रमें पढ़ा था पर मेरा पिता भेजने को राजी न था मैं अपनी इच्छा से वहाँ गया था मानकचन्द ने यह भी कहा कि मैं वहाँ विष्णुदत्त से मिला। वह बनारस का एक पण्डित है वह थोड़े दिन बोर्डिंग में रहा था उसने दो व्याख्यान दिये थे (विष्णुदत्त को अभियुक्तों में पहचाना) प्रबन्धकर्त्ता की आज्ञा बिना आश्रम में कोई नहीं आसकता था। अर्जुनलाल उसका प्रबन्ध कर्त्ता था। व्याख्यान के पश्चात् कमरे के बाहर आकर विष्णुदत्तने हम से अनेक विषयों पर वार्तालाप किया और कहा कि हमें स्वराज्य प्राप्त करना चाहिये और कि यहडकैती मारने से ही हो सकती है!

डाका मारा

इसी शिक्षा से प्रभावित होकर हमने नीवज [जि० शाहबाद] में एक महन्त के घर डाका मारा। मैं मोतीचन्द, जोरावरसिंह जयचन्द इस डकेती में सम्मिलित थे। एक महन्त और उसके चेले की हत्या की परन्तु माल कुछ हाथ न लगा इसी विषय का अभियोग अब आरा में चल रहा है और मैं इस अभियोग में पकड़ा गया था।

अमीरचँद तथा छोटेलाल से परिचय

आगे चल कर उस ने कहा कि मैं अमीरचंद को जानता हुँ मैंने उसको गतवर्ष विद्यालय में देखा था। वह निरीक्षण के लिये वहां आया था मैं छोटे लाल को जानता हुँ वह जयपुर का निवासी है।

(दोनों को पहिचाना)"

इसके पश्चात् वकीलों ने कुछ प्रश्न किये जिनके उत्तर में उसने कहा अर्जुनलाल का स्कूल जैनी स्कूल था जिसका नाम श्री वर्द्धवान जैनों स्कूल था उस में दस बारह अध्यापक थे, छोटेलाल विद्यालय में प्रवेशार्थ आता था मैं अपना कुछ व्यय घर से मंगाता था। कुछ बोर्डिंग से मिलता था। श्यौनरायण—साक्षी ने कहा कि मैं हिन्दी का अध्यापक हूं और अर्जुनलाल को जानता हूं मैंने विद्यालय में मास्टर अमीर चन्द को भी गत वर्ष देखा था। छोटेलाल को भी आश्रम में रहते देखा था। बातों में मैंने सुना था कि आरा की हत्या मानक चन्द, मोती चन्द, बालचन्द ने की थी। इन्दोर में अर्जुनलाल ने एक स्कूल खोला था उसमें मुझे नियत किया था।

कुछ और साक्षियों के बयान के पश्चात् चार बजे कार्य्यवाही समाप्त हुई। सोमवार को हुक्म सुना कर अभियुक्त को दौरा सुपुर्द कर दिया। लाला रघुनाथ सहाय ने प्रार्थना की कि वह पत्रादि देखने की आज्ञा दीजाय जो बालमुकन्द बलराज और अन्य लोगों के मकान की तलाशी में प्राप्त हुए थे परन्तु न्यायालय में प्रस्तुत नहीं किये गए, अदालतने यह प्रार्थना स्वीकार की और-मि०—पैट्री ने आदित्यवार सोमवारको दिखाने स्वीकार किये।

---

६०० भारतवासी कैनेडा (अमरीका) को एक जापानी जहाज़ जिसको भारतवासी 'गुरु नानक स्टीमर' नाम से पुकारते हैं ६००) भारत पुत्रों को लेकर कनेडा जा रहा है। 'वायना प्रेस' नामी पत्र का प्रतिनिधि इस जहाज़ के नेता सरदार गुरुदत्त सिंह से मिला था, उसने सरदार साहब के विषय में कुछ मनोरंजक बातें छापी हैं। वह लिखता है 'सरदार साहब बड़े कृपालु दीख पड़ते हैं, आपकी यह यात्रा इस आशा पर निर्भर है कि कैनेडा का द्वार भारत बासियों के लिये खुलेगा, सरदार साहब कहते हैं कि यह यात्रा मेरा एक परीक्षण है। मैं वृटिश सरकार का उसकी सारी प्रजा के विषय में न्याय जाँचना चाहता हूं। १४ नवम्बर को एक जज ने कैनेडा में एक फ़ैसला में लिखा है कि वर्तमान क़ानून की दृष्टि से सारी वृटिश प्रजा के लिये इस देश का द्वार खुला रहना चाहिये, इससे कानून में कठोरताएं की जा रही हैं और भारत बासियों को वहां रहने से रोका जा रहा है। हम देखेंगे कि कानून हमें प्रवेश करने देता है वा नहीं, यदि हमें प्रवेश करने की आज्ञा मिल गई तो वृटिश सरकार के न्याय पर हमारा भरोसा हो जायगा, नहीं तो भारत लौट कर हम अपनी सरकार के सन्मुख निवेदन करेंगे। फिर वहां जो कुछ होगा इसके विषय में कुछ निश्चय नहीं कहा जा सकता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जासूस लड़की को दंड—आस्ट्रिया देशकी एक लड़की जर्मनी देश में पकड़ी गई है। उसको फ्रांस देश के लिये युद्ध कार्य्य के नक़शे चुरालाने के अपराध में २॥ वर्ष की कैद हुई। लड़की बर्लिन में पकड़ी गई थी। यूरोप की लड़कियां भी 'ग़ज़ब ढाती हैं'।

—

भूल संशोधन—कासगंज (१प) की आर्य्यकुमार सभाके मन्त्री महाशय हीरालाल जी सूचित करते हैं पिछली वार उनकी सभा के वार्षिकोत्सव की तिथि अशुद्ध छपगई, वह कहतेहैं कि उन तिथियों में शुद्धि सभा का वार्षिकोत्सव हुआ था।

—

गुरुकुल वृन्दावन में पक्की सड़क—गुरुकुल वृन्दावन पक्की सड़क से मील सवामील की दूरि पर बना हुआ है गुरुकुल के लिये सामान आदि ले जाने में बड़ा कष्ट होता है इस को निवारण करने के लिये बा० घासीराम जी मु० नारायण प्रसाद जी और सेठ सदर मोहनजी ने अपील प्रकाशित की है अनुमान ३०००) रु० व्यय होगा आर्य्यपुरुषों को इस अवश्यक कार्य्य में अवश्य सहायता करनी चाहिये।

—

तिथि परिवर्तन—हाथरस समाज के मन्त्री महाशय सूचित करते हैं कि उक्त समाज का वार्षिकोत्सव २९, ३०, ३१ मई को होना निश्चित हुआ था परन्तु गर्मी और प्लेग के कारण तिथि परिवर्तन करनी पड़ीं, जो तिथि नियत होंगी उनसे सूचना दी जायगी।

—

नैनीताल के अध्यापकों में असंतोष शिक्षा विभाग के डिपुटी इंसपेकटर साहब के विषय में नैनीताल के अध्यापकों में बड़ा असन्तोष फैल रहा है। कहते हैं कि इंसपैकटर साहब विद्यार्थियों के सामने अध्यापकों का अपमान करते और उन्हें गालियाँ देते हैं लड़कों पर इस का बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। आशा है डिप्टी कमिश्नर शीघ्र इस ओर ध्यान देंगे और अवस्था का ठीक२ पता लगा कर यथोचित प्रबन्ध करेंगे।

—

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग२ साफ़ २प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द बाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषद् भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।≡)
ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २)
बृहदारण्य २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश संग्रह ।=)
प्रार्थना पुस्तक ।=)
ओंकार की उपासना ।=)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।=)
वेद और महाभारत के उपदेश ।=)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।=)
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रन्थावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दर्द ।

पेनहोलर, दर्द दूर करनेवाली दवा ।

अन्दरके दर्द—अम्लशूल पेचिस वो पेटकी मरोड़ इस दवासे दूर होती है ।

बाहरी दर्द—मोच वा चोटसे गठिया के कारण संधि वा गाँठोंमें, वायु वा सर्दी से कमर, कुल्हा पंजर, गर्दन आदि स्थानों कुढ़ल वा ऐंठनसे चाहे जैसा दर्द हो पेन होलरकी मालिश से मिटता है । दाँत वो मसूड़ोंके दर्दमें भी यह तत्काल गुण करती है ।

मोल१शीशी ॥।) बारह आने । डा:म: व पै: ।-)

दर्द ।

शिर दर्द वो बाई की दवा ।

दर्द पलमें पहाड़ हो जाता है । यह इस को पलमें पानी कर देती है ॥ चमक लहर अङ्गमें दर्द हो मिट जावेगा आधे वा सारे शिरमें कैसाही दर्द होता हो इस दवासे हट जायगा दवाके सेवन से तत्काल ही मेहन पावेंगे ।

१२ टिकियाकी एक शीशी मोल ।=) छे आने । डा: म: १से६ तक ।-) पाँच आने ।

सब जगह हमारे एजेन्ट और दवा फरौशों के पास मिलेंगा अथवा—

डा: एस के बनर्जी ... कलकत्ता

नं० ५७

एजेंट:—बाबुराम जैनी कुंचा सेठ दिल्ली ।

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानून दर्पण ।

इस एकही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिनसे हर मनुष्यको काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, आपता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्मदी, तल्लाक, हथियार, ट्रेडमाक, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुख्त्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े । मूल्य सिर्फ १) रुपया

इंगलिश टीचर ।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार वगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्याकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो । मूल्य सिर्फ १)

मिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

—

एजन्टोंकी आवश्यकता

हाथरस के असली पक्के चाकू पसंद नहीं तो वापिस विलायती चाकुओं से अच्छे सस्ते और मज़बूत हैं ल० बेंट)॥। -) -)। =) =)॥ ≡)॥ च० बेंट -) -)॥ =) =)॥ ≡)॥ -) घड़ी का =) उस्तरा ।=) पता:

पता—भारतहितकारी कार्यालय नं० ७ हाथरस सिटी ।

क्या आपने हिंदी का नया साप्ताहिक पत्र "प्रताप" देखा है ?

"प्रताप" राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक, प्रश्नों पर स्वतन्त्रता और निर्भीकता से अपनी सम्मति प्रकट करता है । उसका आकार रायल क्वाटों १६ पेज और वार्षिक मूल्य २॥) रु है ।

यदि आपने "प्रताप" न देखा हो तो कृपया एक प्रति नमूने की मंगाकर देखिए।

सभी हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रों ने उसकी प्रशंसा की है ।

मेनेजर 'प्रताप' कानपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छपगई ! छपगई !! छपगई !!!

स्वर्गीय जीवन

यह पुस्तक अमरीका के प्रसिद्ध विद्वान् राल्फवाल्डो ट्राइन की प्रसिद्ध पुस्तक In Tune with the Infinite, का भाषानुवाद है इसमें शान्ति प्राप्ति का मार्ग, समृद्धिशाली होने का नियम, साधू महात्मा जगदुद्धारक बननेका मार्ग, सब धर्मों का मुख्य तत्त्व, भली प्रकार दर्शायाहै। भाषा सरल और बम्बईके एक प्रसिद्ध यन्त्रालय में बड़े सुन्दर टाइप में छपी है। पहिले इसका मूल्य १।) रक्खा था किन्तु यह विचार कर कि सर्व साधारण को लाभ पहुँचे अब ॥।) करदिया है। डाकव्यय अलग। मिलने का पता-

प्रेमी, पुस्तक भन्डार, देहली

आवश्यकता

एक अध्यापिका जो एन्ट्रेस पास ट्रेण्ड हो या विशारद पास हो मुलतान आर्य्य पुत्री पाठशाला अन्दर बोहिर दरवाजा के लिये ज़रूरत है तनख्वाह ४०- से ५०- रुपये तक योग्यतानुसार दी जावेगी। आर्य्य धर्म्म से हितैषिता प्रकट करने वाली को विशेषता दी-जावेगी। प्रमाणपत्रों सहित प्रार्थना पत्र १५ मई सन् १९१४ तक आ जाने चाहियें। श्रीमान् लाला तोला राम जी मैनेजर आर्य्य पुत्री पाठशाला मुलतान के पते पर पत्र आना चाहिये।

मैनेजर-आर्य्य पुत्री पाठशाला
मुलतान

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता--- जल्दी हज़म होने वाला-
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० दा =)]

थोकमाल लेने वालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

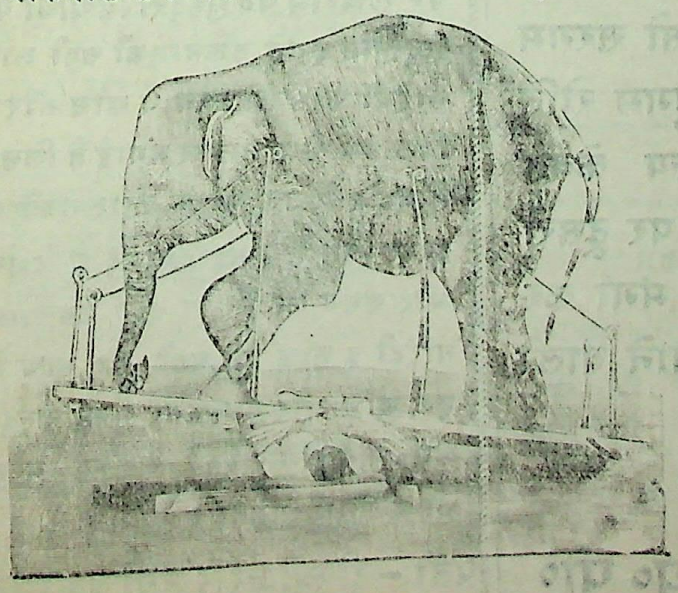

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपन्ना।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ।।।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीर-जयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता = ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता- माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, विक्षिप्तता: रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४)	।-)
२०	८)	।-)
५०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

हारमोनियम शिक्षक

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

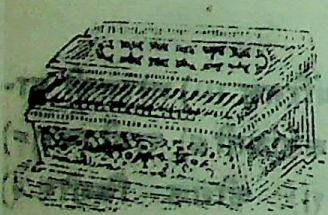

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल, क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च =) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≡)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १) कानूनदर्पण ५७ कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्र व्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसर महेशचरण सिंह, एम० एस० सी० ए० वी०, ए० जी० आर० गुरुकुल कांगडी, हरद्वार से कीजिये।

ऋषि दयानन्द वाच

श्री महात्मा मुन्शीराम, धर्मवीर पं० लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन, हमने उक्तनामकी घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिसमें मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन होते हैं। महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय दाम केवल ५॥।) गारंटी ५ साल हर घड़ी के साथ में एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा।

पता:—दीस्वीज़रलैंडवाचकम्पनी

हाथरस नं० २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता है

जैसा अब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचार कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तलाश नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

सुधासिंधु

१२ वर्ष का आजमाया हुआ

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

कफ	अतिसार	सर्दीकाबुखार	
दमा	आंवसेऊ	जी मिचलाना	
खांसी	संग्रहणी	बच्चोंकेहरेपीलेदस्त	
हैजा	के होना	शरीर का दर्द	
शूल	पेटकादर्द	कुकरखांसी	

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट सुगंधित दवा

मूल्य ॥) आना

सरकार सरजिष्ट्री किया हुआ २५ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के हर को ग्राहक होने वाली दवा है कीमत ।) इजन २)

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित व कलेक्टर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—श्रीनाथ मेडीसिन

मुख से

'वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ अधर की है, जो बुद्धिमती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदातृ शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो कुवारा हृष्ट पुष्ट २१ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थापर

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब लाहौर

सस्ता और मज़बूत

Telegraphic,address founders Aligarh

४ लीवर का ज़स्ती कलईदार लोहे का ताला इस्तेमाल करो।

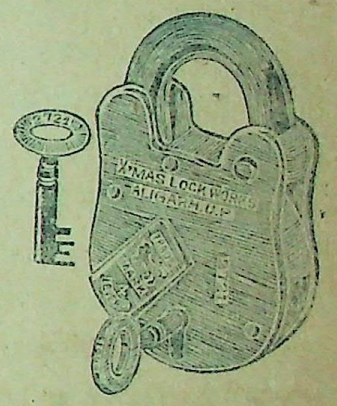

मूल्य

डेढ़ इंच का ९) दरजन

दो इंच का १२) दरजन

ढाई इंच का १३॥) दरजन

तीन इंच का १६॥) दरजन

(१) १००) के खरीदार को १२॥) सैकड़ा और ५०) के को ६।) सैकड़ा और २५) के को ३=) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा कम पर नहीं।

(२ आधी दरजन से कम माल नहीं भेजा जावेगा।

(३) और किस्म के तालों के लिये सूचीपत्र मंगाइये।

(४ असली माल पर शेर, का मार्का देख लीजिये।

दी कृसमिस लोक वर्क्स सुलतानी सराय

अलीगढ़ सिटी।

बर्तन तो बाद्दे है

बाल उडान का साबुन-बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिस्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता-

शॉर्मनऐंड कं.सतघडामथुरा

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (ब)

चान्द कि० सरा०

महाशयजो

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य व.पिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ २) डा० खर्च ≡) आने।

आर्य्य, औषधालय, रूरतमगढ

(एटा यू० पी०)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

हिमाल इनाम सत्यता की गारन्टी।

ब्राह्मी बूटी बटिका

मौका नचूकें लाभ उठायें

...ई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो ...विङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दें दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्राह्मी बूंटी वटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजित। विषशोथज्वर हरी मैधायुवलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है. तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इस को वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ ... ...बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पो०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—(शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधि से शुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

१०००) एकहज़ार रुपये की

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालें दीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक इन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९८१४ पृष्ठ चौदह जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)—ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक वा दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

वाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंग्लिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद यू. पो

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से मेट रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म-प्रचारक ... दहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आश्म ॥

Rgis tered No L. 807.

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२१ ज्येष्ठ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० ३० मई १९१४

संख्या ७
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य	१॥)
प्रचारक के ग्राहकों से	१।)
सजिल्द का मूल्य	१॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

———

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य ॥)

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक	=) प्र०	०
तीन मास " " " "	=)	"
छः " " " " "	-)॥	"
सालभर " " " "	-)	"

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सक्ता।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक	१२
एक तोले तक	१५

विशेष बात चीत प्रबन्धकर्ता से कीजिये।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का कलम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हैं तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मगोलें।

पता– आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतौल KAMTAUL (बिहारप्रान्त

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।)' टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री
घावन लाहौरी टोला-बनारससिटी

हारमोनियम शिक्षक

अर्थात् विना गुरु के बाजा सिखाने वाला टीचर, यदि आप थोड़ेही समय में सरगम व गाना सहित हारमोनियम बजाना सीखने के इच्छुक हैं तो सुन्दर जिल्द बंधी हुई पुस्तक के दोनों भाग मंगाइये मूल्य ।)डा० =) पीतलके ओ३म् व नमस्ते फ़ी दर्जन।।।) डा० म० अलग

पता:–बाबूख्यालीराम एण्डको
अलीगढ़ सिटी.

भारतवर्ष में विख्यात

हाथरस के पक्के चाकू।

यह स्वदेशी चाकू विलायती नामी चाकूओं से भी कहीं सुन्दर सुडौल और मजबूत हैं। चन्दन मूठ -) -)॥ =) =)॥ ।) ।=) लकड़ी मूठ ,॥। -) -)। -)॥ =)॥ ॥ उस्तरा ।-) ।≡) कैंची ॥) ।=) लीवर र मजबूत ताले पीतल के ≡) ।) ।=) च । लोहे के ।) ।=) ॥) इंच । रंगीन ठे -) =)॥ ≡)॥ ।-) ॥ बढ़िया हींग ८) १०) सेर

भारत वस्तु प्रचारक कम्पनी
हाथरस।

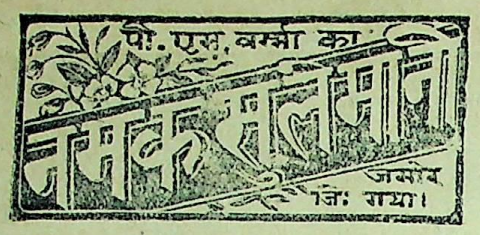

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवा सीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक येशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:–

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जालोर जिला गया

बूँटीसे पारेको निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे की शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधू ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनीं मंगावें।

घर बैठे गँगाजल

यदि आप अपने घर बेठे ही हरिद्वार के हंसोदक शुद्ध गंगाजल को प्राप्त करना चाहें तो हमें लिखें एक कनस्टर नील धाराके बोस सेर जलकी न्योछावर १) है मार्ग व्यय मंगाने वालों के जुम्मे होगा।

पता:
मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कँपनी
हरद्वार।

दिल्ली का आटा मैदा

सूजी और बोकर अति उत्तम और कायदे के साथ हमारे यहां से भेजा जाता है। नमूने और भाव मंगा देखिये।

पता:–नौरङ्गराय बाबूलाल
खारीबावली, दिल्ली।

एजन्टोंकी आवश्यकता

हाथरस के असली पक्के चाकू पसंद नहीं तो वापिस विलायती चाकुओं से अच्छे सस्ते और मज़बूत हैं ल० बेंट)॥। -) -)। =) =)॥ ≡)॥। चं० बेंट -) -)॥ =) =)॥ ≡)॥ -) घडी का =) उस्तरा ।=) पता:

पता–भारतहितकारी कार्यालय न० ७
हाथरस सिटी।

क्या आपने हिंदी का नया साप्ताहिक पत्र "प्रताप" देखा है?

"प्रताप" राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक, प्रश्नों पर स्वतन्त्रता और निर्भीकता से अपनी सम्मति प्रकट करता है। उसका आकार रायल क्वार्टो १६ पेज और वार्षिक मूल्य २॥) रु है।

यदि आपने "प्रताप" न देखा हो तो कृपया एक प्रति नमूने की मंगाकर देखिए।

सभी हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रों ने उसकी प्रशंसा की है।

मेनेजर 'प्रताप' कानपुर

आवश्यकता।

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ठट्ठा सिंध के लिये एक योग्य अधिष्ठाता की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा पत्र व्योहार निम्नलिखित पते पर करें।

नरसिंहलाल
प्रबन्धकर्त्ता
कन्या ब्रह्मचर्याश्रम, ठट्ठा,(सिन्ध)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवीन समाचार

बम्ब केस के अभियुक्त निर्दोष—पाठकों को याद होगा कि कई महीनों से शशांक शेखर, चन्द्रशेखर आदि कई अभियुक्तों पर सरकार के विरुद्ध षड़यन्त्र रचने के दोष में अभियोग चल रहा था। यह राजबाज़ार बम्ब केस के नाम से प्रसिद्ध है। यह अभियोग समाप्त होगया है। बाबू प्रताप चन्द्र चौधरी और बाबू बसन्त कुमार चक्रवर्ती इस अभियोग के असेसर थे। इन दोनों ने अभियोग सुनकर अपनी लिखित सम्मति देदी है। उसमें उन्होंने कहा है कि सब अभियुक्त निर्दोषी हैं, इन्हें छोड़देना चाहिये। जज ने अभी अपना फैसला नहीं सुनाया।

बीबी बसंती की जीत—पाठकों को स्मरण होगा कि मद्रास के नारायणिया ने अपने लड़के को रोक रखने पर बीवी बसन्ती पर अभियोग चलाया था। मद्रास हाईकोर्ट ने नारायणिया के पक्ष में फैसला देते हुए आज्ञा दी थी कि नारायणिया के दोनों लड़के उसे वापिस मिलने चाहिये। बीवी बसन्ती ने इसकी अपील प्रिवीकौंसिल में की थी। वहां बीवी बसन्ती जीतगई। प्रिवीकौंन्सिल ने कहा कि लड़कों की सहमति के बिना मद्रास हाईकोर्ट की आज्ञा की पालना नहीं की जासकती और उन लड़कों की सहमति नहीं है। पिता इंग्लैंड की हाईकोर्ट में गार्डियनशिप का अभियोग चला सकता है।

मिस्टर गोखलेका स्वास्थ्य—पाठक यह सुनकर बड़े प्रसन्न होंगे कि मि० गोखले विची से लौट आये हैं और उनका स्वास्थ्य अब आगे से बहुत अच्छा होगया है।

आयर्लैंड का स्वराज्य बिल—हाउस आव कामन्स में आयर्लैंड के स्वराज्य बिल के तीसरे वार पढ़े जाने का प्रस्ताव स्वीकृत होगया है। दूसरी वार २२ जून को यह बिल पढ़ा जायगा।

बम्बई में आग—२६ मई को रात के २ बजे बम्बई में फिर एक भयानक आग लगी। ग्रान्ड बिल्डिंग के साम्हने अहमद भाई हबी भाई का एक बड़ा रूई गोदाम है, उसी में यह आग लगी है। इस गोदाम में १२ हज़ार रूई के गट्ठे हैं। ये गट्ठे इंडियन काटन कम्पनी के थे। इन गट्ठों में से कुछ भी नहीं बचा है।

पूर्वीय भाषाओं के लिये व्यय—जर्मनी पूर्वीय भाषाओं को पढ़ाने के लिये १० हज़ार पौंड व्यय करता है। फ्रांस ८ हज़ार पौंड, रूस ८ हज़ार पौंड, इटली ४ हज़ार पौंड व्यय करता है।

दो लड़कों को पकड़ा—बम्बईमें "ब्रिटन" नामक एक अखबार है उसे बेचने वाले दो लड़कों को पुलीस ने पकड़ कर चालान कर दिया। उनपर दोष यह लगाया कि वे वेयरवैदर सड़क पर पर्चा वेच रहेथे जहां बेचनेकी मनाही है। "ब्रिटिन" के स्वामी ने शिकायत की कि मेरा पत्र बेचने वालों को पुलीस बड़ा तंग करती है। मैजिस्ट्रेट ने लड़कों को छोड़ दिया है।

देहली का षड़ यंत्र

अदालत में चखमचख

मि० दास अंग्रेज़ी नहीं जानते

२६ ता० को सरकारी वकील ने जहांतक अपनी वक्तृता की थी, उसके आगे आरम्भ की उसदिन वकील ने "लिबर्टी" पर्चे के बारे में अधिक कहा। उसने कहा कि दीनानाथ के वचनानुसार इन पर्चों का अवधविहारी और अमीरचन्द द्वारा बांटा जाना सिद्ध है। वे पर्चे राज द्रोह से भरे हैं। इनमें कांग्रस वालों और मि० गोखले आदि की हंसी उड़ाई है और अरविन्द घोष और विपिन चन्द्रपाल को सच्चा देश भक्त बताया गया है इस पर्चे में बम्ब फैंकने वालों को "हीरो" और परमात्मा का काम करने वाले कहा गया है। देशकी उन्नति के लिये मरना आवश्यक बताया गया है अमीरचन्द के हाथ का लिखा हुआ एक पर्चा मिला है जिसमें अंग्रेज़ों को ठग और डाकू बताकर इनको निकालने के उपाय बताए हैं। वे उपाय क्रान्ति और सब विदेशियों की हत्या है

हरदयाल का उपदेश

इसके बाद सरकारी वकीलने हरदयाल के पत्रों में से कुछ उद्धरण पढ़े जो हनुमन्त सहाय को भेजे गए थे। हरदयाल अपने सब चेलों को सन्यासी बनकर कामकरनेका उपदेश करताहै।

योग और गीता

सरकारी वकील ने योग पर्चों के विषय में कहा कि लोगों को भड़काने के लिये योग और गीता का सहारा लिया गया है। वस्तुतः गीता और योग में कोई ऐसी बात नहीं मिलती जो राज द्रोह सिखाती हो। षड् यन्त्रियों ने इन दोनों को तोड़ मरोड़ कर अपने मतलब का बनाया है योग का नाम लेनेसेषड्यन्त्रियों का यह आशयथा कि बम्ब फैंकने वाले अपने आप को धर्म का काम करने वाले समझने लगें।

गवाह की मृत्यु

लंच के पीछे सरकारी वकील मि० एलस्टन ने कहाकि सरकारी गवाह दीनानाथको पकड़कर ख़ान बहादुर रहीम तुल्ला के सुपुर्द किया गया था। यह बड़े शोक की बात है कि ख़ान बहादुर की मृत्यु हो गई है। नहीं तो उनकी गवाही हमारे बड़े काम की चीज़ होती। चरण दास के विषय में कहा कि उसका अपराध स्वीकार स्वभाविक प्रतीत होता है। उसकी गवाही रासविहारी बोस और बसन्त कुमार का सम्बंध जतलाती है। सुल्तान चन्द की गवाहा पर वकील ने बडा ज़ोर दिया और कहा कि उससे देहली के अभियुक्तों का लाहौर से सम्बन्धपता लगाता है। हरदयाल के "गदर" में से कई उद्धरण पढ़कर सुनाए गए।

प्रार्थना अस्वीकृत।

मि० सेन कलकत्ते के बैरिस्टर हैं जो अभी राज बाज़ार बम्ब केस करके आएहैं। वे बसन्त कुमार के वकील हैं उन्होंने कहा किहमअभियोग लाहौर से उठवाकर यहीं लाना चाहते हैं और षडयन्त्र से पहिले हत्या के दोष का फैसिला कराना चाहते हैं। यह बात हम चीफ़कोर्ट से कहेंगे इसलिये ३ दिनतक यह अभियोग मुल्तवी किया जाना चाहिये। मैजिस्ट्रेट ने यह प्राथना अस्वीकृत की।

मि० दास की प्रार्थना।

बलराज की ओर से कलकत्ते क प्रसिद्ध बारिस्टर मि० दास आए हैं। उन्होंने मैजिस्ट्रेट से कहा कि आपको इन अभियुक्तों के मुकद्दमे सुनने का अधिकार ही नहींहै। मि० दास का कथन थाकिइनअभियुक्तों परसरकारी अफ़सरों की हत्या करने के लिये षडयन्त्र रचने का दोष लगाया गया है। पर सारे समूह की हत्या की इच्छा का दोष लग नहीं सकता, किसी विशेष व्यक्ति का नाम होना चाहिये जिसे मारने की इनकी इच्छा थी। यह प्रार्थना अस्वीकृत हुई।

कहते हैं कि जब मि० दास बैठने लगे तो उन्होंने कहा कि सरकारी वकील ने झूठी बात कही है। अदालत ने इसे नाराज़न्द किया। मि० दास ने अन्त में कहा कि मेरा यह मतलब नहीं था। इसपर जज ने कहा कि यदि आप पूरी तरहसे अंग्रेज़ी नहीं जानते तबभी इस अदालत में मैं ऐसी बातें न सुनूंगा।

२६ और २७ को मि० मार्टन की गवाही हुई। यह वही गवाही है जो पहिले मैजिस्टेट के साम्हने हो चुकी थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति।

सहयोगी से सहानुभूति—संस्कृत के एक कवि ने कहा है—"मैं एक दुःख रूपी सागर के पार पहुंचने नहीं पाता कि दूसरा सामने आखड़ा होता है।" हमारे सहयोगी "वैंटेकश्वर" का भी आजकल यही हाल है। पिछले सप्ताह सहयोगी मालवीयजी से निराश होकर शोकाश्रु बहा चुका है, इस सप्ताह उसे एक और दुख समाचार प्रकट करना पड़ा है—"केसरी" के सम्पादक श्रीयुत नृसिंह चिन्तमणि केलकर "वैंकटेश्वर" के सनातनी दल को छोड़कर सुधारक दल में जा मिले हैं, अभी पूने में जो सुधार परिषद हुई थी, उसमें उन्होंने सुधारकों जैसे विचार प्रकट किए थे। इस पर सहयोगी को अत्यन्त दुःख हुआ! हमें इस दुःख में अपने सहयोगी के साथ पूरी सहानुभूति है।

"गुरुनानक स्टीमर"—जो भारत वासी "गुरुनानक" स्टीमर में कैनड़ा जा रहे हैं उनके विषय में हमने दूसरे स्थान में एक लेख लिखा है। उससे पाठकों को विदित होगा कि यह स्टीमर विक्टोरिया बन्दरगाह से स्वास्थ्य का पर्वाना लेकर वैंकोवार जा रहा है। भारतवासियों ने उसी जगह स्टीमर लगाने का निश्चय किया है। पर कैनड़ा के हिन्दुस्तानियों की इच्छा है कि स्टीमर वैंकोवार के पच्छिमी किनारे पर लगाया जावे, क्योंकि वहां इमिग्रेशन अफ़सरों की देख भाल नहीं है। यही बात सुझाने के लिये कैनड़ा के हिन्दुस्तानी एक तेज़ किश्ती लेकर स्टीमर की ओर चल दिए हैं।

कैनड़ा में खलबली—हम यह ऊपर लिख चुके हैं कि गुरु नानक स्टीमर किसी विघ्न बाधा के बिना विक्टोरिया बन्दर से निकल वैंकोवार की ओर चलपड़ा है। इस समाचार ने कैनड़ा के गोरेवासियों में खल बली डाल दी है। सरकार की ओर से इमिग्रेशन अफ़सरों को आज्ञा मिली है कि वे स्टीमर के किसी भी यात्री को उतरने न दे। अफ़सरों ने चारों ओर बड़ा पहिरा लगा दिया है। विक्टोरिया का एक पत्र कहता है कि "हमें कैनडा में ऐसे लोगों को आने देना बिलकुल पसंद नहीं है जिन के रहन सहन का ढंग हम से बहुत ही सस्ता है। ऐसे लोगों का रहना हमारे लिये ही नहीं किन्तु सारे साम्राज्य के लिये भयप्रद है।" वही पत्र आगे कहता है कि यदि अंग्रेज़ों के हाथ से भारत वर्ष के निकल जाने का भी डर हो। तब भी हम हिन्दुस्तानियों के लिये कैनडा का द्वार खोल नहीं सकते। जो लोग अपने स्वार्थ वश सारे ब्रिटिश साम्राज्य को नष्ट भ्रष्ट करने में भी संकोच नहीं करते उनसे हमें कुछ वक्तव्य नहीं है। परन्तु भारतवासी ब्रिटिश सरकार से यह पूछने का अधिकार रखते हैं कि वह इस उत्तर को कैसा समझती है। यदि कल भारतवासी कैनडा का अनुकरण करते हुए यह कहें कि "हमें ऐसे लोगों का अपने देश में रखना पसंद नहीं जिनके रहन सहन को देखकर हमारे कई भाइयों का रहन सहन भी बहुत महंगा हो रहा है, तो क्या वह इसका अनुमोदन करेगी?"

सुधारकों के दल में भारतमित्र—कई सप्ताह हुए, भारतमित्र ने सुधारकों को एक लम्बा चौड़ा उपदेश देते हुए कहा था कि सुधारकों का आन्दोलन ही समाज सुधार में बाधक है; यदि सुधारक कुछ समय के लिये चुप होजांय तो सुधार का पथ बड़ा सुलभ होजाय। उस समय कई लोगों ने इस बात को बुरा माना था। पर पिछले सप्ताहमें सहयोगीने स्वयं दो प्रबल लेख लिखकर हिन्दू विवाह में आयु सम्बन्धी सुधार की आवश्यकता दिखलाई है। यदि उस समय और सुधारकों को चुप कराके सहयोगी को स्वयं सुधारविषयक आन्दोलन करने की इच्छा थी तो इसमें बुरी मनाने की कोई बात नहीं है। पं० दीनदयाल जी ने पिछले सप्ताह विशुद्धानन्द विद्यालय में एक व्याख्यान दिया जिसमें कन्याके लिये १२ वां वर्ष विवाह योग्य समय बतलाया। सहयोगी भारतमित्र ने इसका हृदय से अनुमोदन किया है। हमारे प्राचीन धर्म शास्त्र और वैद्यकशास्त्र कन्या के विवाह के लिये १६ वां वर्ष सबसे छोटी अवधि बताते हैं, जिस दिन सहयोगी इसका समर्थन करने लगेगा, उसदिन सचमुचही सुधारकों को इस विषयमें कुछ भी कहने का अवसर न रहेगा।

देहली में अंग्रेज़ी का दैनिक-देहली राजधानी तो बनगई पर यहाँ प्रजा की सम्मति प्रकाशित करने वाला एक भी अच्छा दैनिक पत्र नहीं है। "मार्निंड पोस्ट" को हम दैनिक पत्रों में नहीं गिनते। एक तो यह कट्टर गोरा है, और पत्र को दृष्टि से वह कई साप्ताहिकों से भी गयागुज़रा है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि लाहोर की "खोखला कम्पनी" देहली से एक अंग्रेज़ी दैनिक निकालने का विचार कर रहे हैं। इसका नाम 'इण्डियन डेली मेल' होगा। 'यह पत्र अढ़ाई लाख की पूंजी से आरम्भ किया जायगा। भारतीय प्रजा के अधिकारों की रक्षा करना इस का उद्देश्य होगा। सहयोगी 'देश' का कथन है कि इसी ढङ्ग का एक उर्दू और हिन्दी पत्र भी देहली से निकलना चाहिये। हम भी इस बात को हृदय से चाहते हैं पर साथ ही कहे बिना नहीं रह सकते कि अच्छे हिन्दी उर्दू दैनिक पत्रों का निकलना अंग्रेज़ी पत्रों पर अवलम्बित है। क्योंकि हिन्दी उर्दू के स्वाधीन दैनिकों का चलना अभी असम्भव सा प्रतीत होता है।

अफ्रीका में हिन्दुस्तानी स्त्रियों का अपमान—द० अफ्रीका में भारतवासियों को जो कष्ट है, उनकी खोज के लिये एक कमीशन नियत हुई और उसने अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करदी। उस रिपोर्ट में कमीशन ने भारतवासियों के बताए हुए कष्टों की सत्यता को स्वीकार किया था और उन्हें दूर करने के लिये यूनियन सरकार से अनुरोध किया था। हमें समझाया जाता था और हम समझते थे कि अब शायद द० अफ्रीका में भारतवासियों के साथ अच्छा व्यवहार होगा। परन्तु रिपोर्ट प्रकाशित होने से पीछे जो घटनाएं हुई हैं उनसे प्रतीत होता है कि यूनियन सरकार की नीति में कुछ भी परिवर्तन नहीं आया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहली में राजद्रोह

सैशन कोर्ट में अभियोग

कलकत्ते का बैरिस्टर सेन

२५ मई को प्रातः ७ बजे से पहिले ही पुलिस के जमघट आने आरम्भ होगये स्थान २ पर पहरे लगा दिये गए। अन्दर जाने की बड़ी रोक टोक थी। कलकत्ते के प्रसिद्ध बैरिस्टर मि० एम० के० सेन अभियुक्त नं० १ बसन्त कुमार विश्वास की ओर से आये थे। खुशीराम की ओर से ला० सलामतराय वकील जालन्धर से आये थे। इसकी ओर से ला० रघुनाथ सहाय भी पहिले से ही काम कर रहे हैं। ७। बजे तक अभियुक्तों की ओर से निम्न लिखित वकील उपस्थित होगये। ला० रघुनाथ सहाय वकील। आनरेबल ला० काशीराम। ला० गिरधारीलाल। मि० रअफअली। ला० सलामतराय। मि० जुगलकिशोर। मि० के० एस सेन मि० एस एन बोस, मि० घनराज शाह बैरिस्टर। असेसर मि० बशीर उद्दीनहसन, राय साहब नाथूराम। जमराव मिर्जा आई और अदालत में बैठे थे।

अभियुक्त लाये गए

७ बजकर १० मिनट पर सारे अभियुक्त बन्द गाड़ियों में हथकड़ी लगाय हुए आये और बाईं ओर कटहरे में बेंचों पर एक सिपाही के साथ पृथक् २ बिठाये गये। न्यायालय भरा हुआ था।

इस्तगासे की ओर से निम्न लिखित कर्त्ता धर्त्ता थे। मि० रास आलस्टन सरकारी वकील। दिल्ली पुलिस के स्पेशल सुप० मि० पेट्री। मि० डानल्ड सुप० पुलिस सी आई डी के इन्सपैक्टर राय साहब ला० बृजलाल। पुलिस के डि० सुप० सरदार साहब सुक्खासिंह। बाबू महपत राय सी० आ० डी०

कार्य वाही।

ला० रघुनाथ सहाय ने सरकारी साजिश की छान बीन करने से पहिले इस्तगासे की छान बीन करने की प्रार्थना की जो मिसल के साथ लगाई गई। मि० सेन ने कई और कानूनी प्रश्न करने के पश्चात् चीफ कोर्ट अभियोग ले जाने के लिये इस अदालत में मुकद्दमा बन्द करने को कहा। अदालत ने कहा नियम पूर्वक प्रार्थना करो। इसके पश्चात् मि० आलसटन ने अभियुक्तों के अपराध में कुछ शब्द परिवर्तन की सम्मति दी। फिर निम्न लिखित शब्द अपराध के विषय में नियत हुए।

"तुमने १० अक्तूबर १९१० ई तथा मार्च १९१४ के बीच में लाहौर और अन्य स्थानों में जो ब्रिटिश भारत सरकार के नीचे हैं एक दूसरे से मिलकर और अन्य पुरुषों के साथ तथा दीनानाथ सुलतान चन्द, रास बिहारी, हरदियाल अर्जुनलाल सेठी, हरिराम सेठी और अन्य कई पुरुषोंके साथ जिनके नाम ज्ञात नहीं हुए मनुष्य हत्या करने की साजिश की। अतः तुम अपराध युक्त साजिश के दोषी हो जो मनुष्य हत्या करने का प्रचार किया करती थी। और इस साजिश के कारण मई १९१३ को लाहौर में एक पुरुष राम पदार्थ की हत्या हुई। अतः तुम उस अपराध के दोषी हो जिसका दण्ड भारत के कानून पुस्तक में १२० तथा ३०२ धारा के अनुसार नियत है अथवा जो $\frac{३०२}{१०९}$ धारा के अनुसार दण्डनीय है।

सरकारी वकील का बयान।

मि० अलसटन के कथन का तात्पर्य यह है। अभियुक्तों ने मिलकर मनुष्य हत्या तथा शासकों को डराने के अभिप्रायसे साजिश का परिणाम यह हुआ कि मई १९१३ ई० लाहौर के लारन्सहाल में राम पदार्थ चपड़ासी की हत्या हुई शहादतों से सिद्ध कर देने पर जज साहब तथा जूरी का कर्त्तव्य होगा कि अभियुक्तों अपराधी तथा दण्डनीय निश्चय करें।

साजिश किसे कहते हैं।

मि० आलसटन सरकारी वकील ने कलकत्ता हाईकोर्ट के १९१३ वाले अभियोग की याद दिलाते हुए मि० जसटिस मुकरजी का फैसला प्रस्तुत किया इसमें साजिश के लक्षण लिखे गये थे। जिसमें केवल कार्य्य वा हत्या करने वालेको ही नहीं किन्तु उत्साह वा सहमति देनेवाले को भी अपराधी ठहराया गया है। साजिशके सिद्ध करने की साधारण रीति यह है कि हस्त लिखित पत्र तथा हस्ताक्षर आदि उपस्थित किये जाएं जो अभियुक्तों के घरसे निकले और उनकी अपनी लिखी हुई हों। यही हम करके दिखायेंगे।

दीनानाथ का कथन।

सरकारी वकील ने यह भी कहा कि दीनानाथ इस साजिश का एक सभासद था। उसने कहा है कि मैंने हरदयाल का एक व्याख्यान सुनकर निश्चय किया कि इनकी सुसाइटी में शामिल होजाऊं। व्याख्यान पालिटिक्स था। मैंने हरदयालसे पत्र व्यवहार किया। इस प्रकार से मुझे अमीरचन्दसे परिचय हुआ। इस समय हरदयाल भारत में था। अब यह केलिफोरनियामें है और सरकारके विरुद्ध लोगोंको भड़काता फिरता है! हरदयाल ने मुझे लिखा था। कि अमीरचन्द से मिलो। अमीरचन्द ने रास बिहारी से पत्र द्वारा परिचय कराया। मैं उससे लाहौरमें मिला था। फिर पत्र व्यवहार रहा। दूसरी बार नाभा हाऊसमें वह दीनानाथको मिला। रासबिहारीने दीनानाथ से कहा था कि तुम्हें और तुम्हारे मित्रोंको द्रोहका प्रचार करना चाहिये। रास बिहारी ने मुझे नाभा हाऊस में बलराज से भी मिलवाया।

इसके पश्चात् वकील साहब साजिश करने वालों का लक्षण बताया उन्होंने कहा कि वह लोग सुसायटी से बिलकुल पृथक रहते हैं।

अन्य अपराधियों से सम्बन्ध।

इसके पश्चात् सरकारी वकील ने दीनानाथ का अवध बिहारी और बाल मुकन्द से मिलना सिद्ध किया और कहा कि रास बिहारी बोस १९१२ के अक्तूबर में लाहौर गया और इस दो मास के अन्दर दिल्ली में बम फैंका गया। इस समय अवधबिहारी लाहौर में विद्यार्थी था। और बलराज द्वारा बालमुकन्द जोधपुर के एजन्ट का अध्यापक नियत होकर गया था। दीनानाथ ने कहा है कि रासबिहारी बंगाल से दो बम लाया था। इससे पूर्व ६ मास तक बसन्तकुमार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को अपने पास डेरादून में हरिदास नाम से रखा फिर लाहौर भेज दिया। लाहौर में वह बलराज द्वारा नौकर होगया। यह दोनों बम पहिले उसके पास रहे परन्तु किसी कारण पुलिसके भयसे उसने दीनानाथको दे दिये। उसने खिड़कीकी छतपर रखदिये। परंतु फिर अपने पिता के भयसे यह बम बालमुकंद को देदिये। यह भी कहा गया है कि यह बम फिर दिल्ली पहुंचाय गये परन्तु इस विषय का कोई प्रमाण नहीं।

लोरेन्स हाल का बम।

दीनानाथ ने कहा है कि यह बम रखने वाला बसंत कुमारहै। बाईसिकल दीनानाथ की थी। यह सिद्ध है कि दीनानाथ के पास बाईसिकल था। बाईसिकल बसन्तकुमार के पास औषधालय पहुंचाया गया। इस विषय का प्रमाण भी है कि बसन्तकुमार उस काल तक दुकान में अनुपस्थित रहा।

दिल्ली का बम।

बसन्त कुमार ने उस समय लाहौर स्टेशन पर दीनानाथ के प्रश्न के उत्तर में कहा कि लौटकर बताऊंगा कि कहां जाता हूं। परंतु घटनाके पश्चात आधी जनवरी तक वह लाहौर न आया। दीनानाथ दिल्ली गया तो अवधविहारी ने उस घटना का स्थान दिखोया और कहा कि पुलिस वाले इसको कभी भी नहीं ढूंढ सकते।

अवधविहारी विस्मित होगया।

जब दीनानाथ ने दिल्ली की घटना का वर्णन किया तो अवध बिहारी विस्मित होगया था। परन्तु अभियुक्त का नाम जानकर उसने शान्ति से कहा यह हमारे पुरुषों में से नहींहै। परन्तु दिल्ली बमके विषयमें हमारे पास पर्याप्त प्रमाण नहींहै अतः हम उसको इससे सम्मिलित नहीं करते।

चरणदास से परिचय।

फिर सरकारी वकील ने चरन्दास से रासबिहारी का परिचय दिखाया। कहा कि बनारससे लखनऊ आते समय उनका परिचय हुआ। इसके साथ कुछ पोलिटिकल बात हुई।

मि० गार्डन की हत्या करेंगे।

रास बिहारी ने गार्डन की हत्या का विचार प्रगट किया था क्योंकि वह उन से बहुत तंग था। उनका पता चाहा परन्तु पता नहीं लगा।

संयुक्त प्रांत के लाट साहब को हत्या का विचार।

इस विषय का भी एक प्रमाण है कि अभियुक्तों ने एक मुसलमान युवक को प्रेरणा की थी कि वह यह काम करे पर लाट साहब विलायत चले गये अतः यह काम न हुआ।

रघुवर शर्म्मा से परिचय

रास बिहारी कहा करता था कि एक पण्डित भी है और वह यहीं था इसके पास से एक लेख निकला है जिससे प्रगट होता है कि वह गीता को हत्या करने तथा बम प्रचार के उपयोग में लाना चाहता था।

सरकारी वकील ने यह भी कहा कि इस सारे अभियोग को पुलिस की बनावट बताना भूल है। क्योंकि पुलिस ३ वर्ष से ऐसी साज़िश नहीं कर सकती। अमीरचन्द के घर की तलाशी से जो चीज़ें निकली हैं और दीना नाथ के कथन पर शान्ति से विचार करके अभियुक्तों का दोषी वा निर्दोषी होना सोचना चाहिये।

इसके पश्चात् सरकारी वकील ने बस्त लिखित पत्रों में से कुछ भाग पढ़कर सुनाये जिनसे अभियुक्तों की नियत का पता चलता है। इनमें कई पुस्तकें "गदर" "तलवार" आदि इस नाम से हैं जो पहिले ही अपराधी लोगों की लिखी हुई हैं। करजन वाटली के हत्यारे मदनलाल धींगड़ा की प्रशंसा पाई गई। अरविन्दो घोष के लेख मिले।

पाश्चात्य लोगों को संखिया दे दो

सरकारी वकील ने एक लेख पेश किया जिसमें यूरोपियनों को संखिया देने की सम्मति दीगई थी, एक रिसाले में रंडियों को लूट लेने की प्रेरणा थी। बंगाल की भांति डकैती की प्रेरणा की। ८ बजे से १ बजे तक सरकारी वकील की वक्तृता होती रही पौने दस बजे आध घण्टे का अवकाश मिला था।

अभियुक्तों के संबंधी

बसन्त कुमार का भाई तथा मन्नु लाल और खुशीराम के पिता अन्दर और बाहर उपस्थित थे। सरकारी वकील का कथन दूसरे दिन फिर होगा।

ओ३म्।

वैश्य यङ्ग मैन्स ऐसोसिएशन मेरठ की प्रबन्धकारिणी सभा का अपने आगामी सतरहवें वार्षिकोत्सव पर, जो सम्राट ज्यार्ज पञ्चम के वर्ष गाँठोपलक्ष में २२ जून सन् १९१४ को होना निश्चित हुवा है, दो स्वर्ण पदक निम्न लिखित विषय पर सर्वोत्तम लेख लिखने के लिये देने का विचार है—एक उन महाशय को जो हिन्दी में सर्वोत्तम लेख लिखें और एक उनको जो इङ्गलिश में सर्वोत्तम लेख लिखें। इसके अतिरिक्त नीचे लिखे नियमों का पालन होगा:—

(१) प्रत्येक हिन्दू युवक जिसकी आयु २५ वर्ष अथवा उससे न्यून हो इसके लिये स्पर्द्धा कर सकता है।

(२) लेख में लेखक महाशय को अपने वास्तविक विचार प्रकट करने चाहिये और लेख किसी की सहायता बिना स्वयम् लिखना चाहिये।

(३) जाँचने वाली कमेटी निर्णय करते समय स्वयं भाव और शब्द रचना दोनों पर विचार करेगी।

(४) जांचने वाली कमेटी में

१ श्रीमान् ला० ज्वालाप्रसादजी एग्ज़ीक्यूटिव इंजीनियर मेरठ; २ श्रीमान् ला० खुशीराम जी एम० ए० ऐल० ऐल० बी० रईस, मेरठ; श्रीमान् ला० सीताराम जी एम० ए० ऐल० बी० रईस मेरठ, सम्मिलित हैं।

(५) समस्त लेख मन्त्री वैश्य यङ्ग मैन्स ऐसोसिएशन मेरठ के पास अधिक से अधिक १० जून १९१४ तक पहुँच जाने चाहिये।

(६) यदि कोई भी लेख उचित श्रेणी का न हुवा तो ऐसोसिएशन को पारितोषिक देने का अधिकार न होगा।

(७) कोई लेख लौटाया न जायगा।

(८) ऐसोसिएशन को अधिकार होगा कि प्राप्त हुए लेखों में से किसी एक अथवा अधिक को प्रकाशित कर सके।

लेख का विषय

'चरित्र उसके मूल तत्व तथा उसकी जांच,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवश्यक सूचना।

महात्मा मुंशीराम जी सद्धर्मप्रचारक का सम्पादकत्व चिरकाल से छोड़ चुके हैं, तब भी कई सज्जन पत्र के विषय में उन्हें चिट्ठियां लिख देते हैं। उनको सूचना के लिए प्रकाशित किया जाता है कि "प्रचारक" के प्रबन्ध, उसकी नीति और लेखों का मैंही उत्तरदाता हूं। इस विषय में महात्मा जी को कष्ट न देकर मुझ से ही पत्रव्यवहार करना चाहिये।

हरिश्चंद्र
स्वामी व सम्पादक
सद्धर्मप्रचारक

सद्धर्म प्रचारक

आर्यसमाज में ब्राह्मण।

(१)

जहां एक ओर आर्यसमाज में ऐसे लोगों की बहुतायत बतलाई जाती है, जो परस्पर लड़ाई के लिये अवसर ताकते रहते हैं, वहाँ दूसरी ओर ऐसे लोग भी बहुत उत्पन्न हो गये हैं, जिनको छुईमुई से उपमा दें तो अनुचित न होगा। ज़रासी गर्मी और थोड़े से स्पर्श से भी उनके मन की पत्तियां मुर्झा जाती हैं। एक समाचार पत्र में ज़रासा भी गर्म शब्द निकला कि ऐसे सज्जनों को लड़ाई की बू आने लग जाती है। चारों ओर भागियो दौड़ियो का शोर मच जाता है, मानों आर्यसमाज रूपी महाभवन को छतें धक धक करके जल रही हों। सदा लड़ाई की ताक में रहने वालों को यदि हम दोषी कहें, तो पत्ते के हिलने पर सांप का शोर मचाने वालों को महा दोषी कहना पड़ेगा। बिना विवाद के, बिना गर्मी के न आज तक कहीं जीवन रहा और न रहेगा। अशान्ति जीवन का सर्वस्व न हो, किन्तु उसका एक प्रधान अङ्ग अवश्य है।

संयुक्त प्रान्तों के आर्यसमाजों में इस समय 'जाति या कर्म से ब्राह्मण' के विषय को लेकर खूब विवाद चल रहा है। एक ब्राह्मण सम्प्रदाय है जो शिकायत करता है कि बाबू सम्प्रदाय, जिसमें खत्री और बनिये बहुत हैं, ब्राह्मणों की निन्दा करता है, और उनकी जट्टी जायदाद को छीनना चाहता है। दूसरी ओर एक सुधारकमंडल है, जो ऋषि दयानन्द के वाक्यों का आधार लेकर कहता है कि किसी व्यक्ति को किसी ख़ास कुल में उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण खत्री या वैश्य नहीं कहा जासकता। जो जैसे कर्म करता है, वह वैसा ही वर्ण पाता है, यही वैदिक धर्म का सिद्धांत है। इन्हीं दो पक्षों के समर्थकों में इस समय विवाद चल रहा है। हम प्रसन्न हैं कि यह प्रश्न संयुक्त प्रान्त की आर्यसमाजों के सामने बलपूर्वक आगया है। ऋषि दयानन्द के जीवन के प्रधान उद्देश्यों में से एक यह भी था कि वे जन्मकृत वर्ण व्यवस्था की नाशक बेड़ियों को टुकड़े २ करके भारतवर्ष को सामाजिक कारागार से छुड़ादें। यह शोक की बात है कि इस आर्यसिद्धान्त को डंके की चोट सुनाने वाले, और इसी विषय को लेकर सनातनियों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारने वाले आर्यसमाज में जन्मानुसार वर्णव्यवस्था मानने वाले पुरुषों का अभाव नहीं। व्याख्यानों में सत्य काम और विश्वामित्र की कहानियाँ सुना कर तालियां पिटवाने वाले पंडित भी अपनी मित्र मण्डली में मुनितुल्य पं० गुरुदत्त को लाला गुरुदत्त कहते हुए नहीं लजाते। इस गुप्तरोग, और रहस्य मन्त्रणा का फूटना आवश्यक है। संयुक्त प्रान्त में इस प्रश्न को उठा हुआ देखकर इसी लिए चित्त अल्हादित होता है। ऐसे आवश्यक प्रश्न के छिड़ने पर भी कई 'छुईमुई' के समान चित्त वाले सज्जन लड़ाई, लड़ाई का ढिंढोरा पीटने लगे हैं, क्या यह आश्चर्य नहीं है? वे तटस्थ लोग जो आर्यसमाज के, और विशेषतया संयुक्त प्रान्त के आर्यसमाज की सामाजिक व्यवस्था को जानते हैं इस विषय में सहमत हैं कि वर्णव्यवस्था के प्रश्न को लेकर एक बार महाभारत संग्राम का होना आवश्यक है इस के बिना शताब्दियों से कसी हुई जाति-भेद की ज़ंजीरें टूट नहीं सकतीं। जिस महाभारत की इतनी प्रतीक्षा और सम्भावना है उसका भीष्म पर्व लड़ा जा चुका है। लगभग चार वर्ष पूर्व पं० केशवदेव शास्त्री जी के ब्रह्म भोज ने जो जो विवाद उठाए थे, और जिन २ दलों से ब्राह्मण मण्डली ने या उनके पक्षपातियों ने सत्यार्थप्रकाश के अनुसार गुण कर्म व्यवस्था मानने वालों को नास्तिक या पतित सिद्ध करना चाहा था, वह किसे स्मरण नहीं। अब चार वर्ष बीते फिर दूसरा पर्व प्राप्त हुआ है। यह सामाजिक महाभारत अब लड़ा जायगा असली महाभारत से कम वीरता इस संग्राम में लड़ने के लिये नहीं चाहिये, भेद केवल इतना होगा कि जहाँ वह महाभारत दुःखान्त था, यह सामाजिक महाभारत सुखान्त होगा। उसने भारत को ग़ारत किया, यह उसके पुनः समुद्धार का हेतु होगा। वर्तमान विवाद उस युद्ध का एक सवां अंश भी नहीं। ब्रह्मभोज के ऊपर जो विवाद उठगया था, उस के मूल में बहुत से अशुद्ध समाचार थे। इसी प्रकार इस बार का झगड़ा भी 'गेहूं के दाने पर दङ्गल' के समान है। कई मास पहले आर्यपत्रिका के ऋषि अङ्क में बाबू घासीरामजी ने एक लेख भेजा था, उसमें उन नामधारी ब्राह्मणों पर कुछ आक्षेप था। जिन्हें ऋषि दयानन्दने पोप नाम से पुकारा है, और जिनकी पोल खोल ने के लिये उन्हें सत्यार्थप्रकाश के ग्यारवें समुल्लास का बड़ा भाग देना पड़ा। ऐसे जन्म के सिद्ध ब्राह्मणों पर आक्षेप हुआ देखकर न जाने क्यों संयुक्त प्रान्त के कई एक ब्राह्मण कुलोत्पन्न लेखक भड़क उठे, और लगे पं० घासीरामजी को उलटी सीधी सुनाने। हमें बहुत सोचने परभी यह समझ नहीं आता कि यु० प्रा० की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पण्डित मण्डली के भड़क उठने का कारण क्या था? उन्हें पं० घासीरामजी का छिलगा क्यों लगा? पं० घासीरामजी ने जन्म के नामधारी पोपों ब्राह्मणों के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा, यह ठीक है। अब हमारा प्रश्न यह है कि जो लोग पं० घासीरामजी को गालियां देरहे हैं वे जन्म से वर्ण व्यवस्था मानते हैं, या कर्म से? यदि वे जन्म से वर्णव्यवस्था मानते हैं तो उनका क्रोध ठीक क्योंकि पं० घासीरामजी के किये हुए आक्षेप जहाँ पोप मण्डली पर पड़ते हैं वहां साथही आर्यसमाज में रहने वाली ब्राह्मण मण्डली पर भी पड़ सकते हैं। ऐसी अवस्था में उनका दोष ठीक है, किन्तु वेदों का अटल सिद्धान्त और ऋषि दयानन्द का जन्मभर का परिश्रम, उनकी ओर पीठ मोड़े लेता है। आर्यसमाज ऐसा सिद्धान्त रखने वालों को अपना नहीं—, परन्तु समझता है।

किन्तु यदि ब्राह्मण मण्डली के उक्त लेखक वर्णव्यवस्था को गुण कर्मानुसार मानते हैं तो आपे से बाहिर होने की आवश्यकता नहीं है पं० घासीराम के आक्षेपों का उद्देश्य नामधारी जन्म के ब्राह्मण थे, जिनकी पोल खोलने में ऋषी दयानन्द ने भी कमी नहीं की। ऐसी अवस्था में इतना रोना धोनाक्यों? आर्यसमाज गुणकर्मानुसार ही वर्णव्यवस्था मानता है, जन्मानुसार नहीं। मुनिवर गुरुदत्त जी जन्म के ब्राह्मण न थे किन्तु उन्हें ब्राह्मण वर्ण से विभूषित करने में आर्यसमाज गौरव अनुभव करता है। पं० लेखराम जी इसी लिये ब्राह्मण नहीं थे, कि उन्होंने किसी विशेष कुल में जन्म लिया था, किन्तु इसलिये थे कि उन में ब्राह्मण के गुण और कर्म पाए जाते थे। पं० तुलसी राम स्वामी को हम ब्राह्मण कहते हैं, क्योंकि वद्या के विस्तार में, और धर्म के प्रचार में, उन के जीवन का एक बड़ा भाग व्यतीत होरहा है। उन्हें हम जन्म के कारण ब्राह्मण नहीं कहते पं० घासीरामजी जन्म से ब्राह्मण नहीं हैं, किन्तु उनके आचरणों में तथा व्यवहार में ब्राह्मणत्व का जो अंश पाया जाता है उसी के कारण उन्हें ब्राह्मण कहना अनुचित नहीं है। ऐसी अवस्था में यु० प्रा० की पण्डित मण्डली को, एक अनार्य सिद्धांत पर आक्षेप होते देख कर दुःखित न होना चाहिये।

अँग्रेज़ी की एक महाविरे के अनुसार पं० घासीराम जी ने एक टोपी तय्यार की थी, जिसे वे नामधारी ब्राह्मणों के सिर पर धरना चाहते थे। संयुक्तप्रान्त के आर्यसमाज की ब्राह्मण मण्डली के कई एक सभासद् न जाने क्यों अपने २ सिरों को नाप कर टोपी को वहां रखने की तय्यारी करने लगे।

आर्यसमाज के पण्डितों का इस आदर करते हैं उन की ही सहायता से समाज ने धर्मयुद्ध में विजय पाया है। किसी आर्यसमाजी का उन के लिये कृतज्ञ न होना, कृतघ्नता के समान है। किन्तु पोप मण्डली के साथ अपने लाभालाभ को मिला देने वाले महाशय, उस पण्डित मण्डली को भी अपमानित करने का हेतु होते हैं, हमें यही शोक है।

ब्रिटिशसाम्राज्य और भारतवासी

इस पिछली वार पाठकों को यह समाचार सुनाचुके हैं कि भाई गुरुदित्त सिंह अपने तीनसौ साथियों समेत "गुरु नानक स्टीमर" में कैनाडा जा रहे हैं। अमरीका में कैनाडा नामक एक अँग्रेज़ों की वस्ती है, जो ब्रिटिश साम्राज्य का एक अङ्ग समझी जाती है। उस में सैकड़ों भारतवासी रोज़गार करने गए हैं। उन में सिक्खों की संख्या अधिक है। उसी कैनाडा की सरकार अब एशिया वासियों को कैनाडा से निकालने का प्रबन्ध कर रही है। वे कैनाडा में भारत वासियों के न आने देने का कानूनभी बनाना चाहते हैं। भाई गुरुदित्तसिंह उसी कानून का बल परखने जारहे हैं। यह एक जापानी कम्पनी का जहाज़ है जिसे भाई गुरुदित्तसिंह ने किराए पर लिया है। यह जहाज़ हांगकांग से चला था। ब्रिटिश कोलम्बिया कैनाडा का एक भाग है। उस के विक्टोरिया नामकबन्दर पर स्वास्थ्य का परवाना लेना होता है, वह परवाना इस जहाज़ को मिलगया है। भाई गुरुदित्तसिंह ने वैंकोवार उतरने का विचार किया है, यह अङ्क जब आप के हाथ में पहुंचेगा उस समय तक यह जहाज़ वैंकोवार जा लगेगा।

इन देश भक्त यात्रियों के नेता भाई गुरदित सिंह ने स्पष्ट रीति से कहा है कि "हम भारतवासी ब्रिटिश साम्राज्य की प्रजा हैं। इसी कारण साम्राज्य के प्रत्येक कोने में आने जाने की हमें पूरी आज्ञा होनी चाहिये। कैनडा ब्रिटिश साम्राज्य का अंग होते हुए भी जो हमें आने से रोकना चाहता है, वह उसका नितान्त अन्याय्य है। कैनडा ने हमें रोकने के लिये जो अन्याय्य कानून बनाया है उसीका बल परखने हम यहाँ आए हैं यदि कैनाडा की सरकार ने हमें अपने बस्ती में न घुसने दिया तो हम तुमुल आन्दोलन करेंगे।"

हम भी कहते हैं कि यदि भारतवासियों को कैनडा में घुसने से रोका गया तो भारतवर्ष में घोर आन्दोलन होगा। यह बात हमीं नहीं कहते, पर जो हमारे विरोधी हैं वे भी इस बात को समझ रहे हैं। कलकत्ते के "इंगलिशमैन" ने सदा भारतवासियों के प्रतिकूल बात कहने की शपथ खाई है, पर इस समय वह भी कहता है कि कैनडा वाली घटना पर इतना घोर आन्दोलन होगा जो द० अफ्रीका के आन्दोलन को भी मात कर देगा। सचमुच बस्तियों में जाने या न जाने का प्रश्न भारतवासियों के लिये जीने मरने का प्रश्न है। भारतवासी अपना पुराना धन, पुराना वैभव और पुराना बल-सभी कुछ खो बैठे हैं, अब प्रश्न यह है कि क्या वे अपना नाम भी खोने को तैय्यार हैं या नहीं। दैव ने भारतवर्ष का सम्बन्ध अंग्रेज़ों के साथ जोड़ा है, वह ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना है। हम जानते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्य की दूसरी बस्तियों के साथ भारतवर्ष की कोई तुलना नहीं है। दूसरी बस्तियां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने अन्तरीय प्रबन्ध में स्वाधीन हैं, भारतवर्ष को हरबात में इंग्लेंड का मुंह ताकना पड़ता है। पर भारतवर्ष के बड़े बड़े शासकों और स्वयं सम्राट ने भारतवर्ष को साम्राज्य का अंग और उज्वल अंग कहा है। अपने देश के प्रबन्ध में अधिक अधिकार न होने पर भी यही बात थी जिसने आज तक भारतवासियों को शांत कर रक्खा था। पर यदि भारतवासियों को निश्चय होगया कि हम साम्राज्य के अंग नहीं पर उसके गुलाम हैं तो साम्राज्य के लिये बड़ा भयंकर समय उपस्थित होगा। हमें विश्वास है जिस अंग्रेज़ जाति के जिन नीतिज्ञों ने इतने विशाल साम्राज्य को स्थापित करने की बुद्धि दिखलाई उनकी सन्तान इसे स्थिर रखने में पूरी नीतिज्ञता का उपयोग लेगी; और अस्तियों को सीधे मार्ग पर लाकर भारतवासियों के हृदय में सन्देह होने का कोई अवसर न देगी।

राष्ट्रों की उन्नति

५० प्रतियां मुफ़्त

एक सज्जन "राष्ट्रों की उन्नति" की ५० प्रतियां उन सज्जनों को बिना मूल्य देना चाहते हैं जो ३० जून तक सद्धर्म प्रचारक के ग्राहक बनें। यदि आप एक प्रति बिना मूल्य लेना चाहते हैं। तो ३० जून से पहिले ग्राहक बन जाइये। मनीआर्डर या वी० पी० द्वारा पत्र का मूल्य आजाने पर आपको राष्ट्रों की उन्नति की एक प्रति भेज दी जावेगी।

प्रबन्धकर्ता
सद्धर्म प्रचारक पत्र।

जार्ज वाशिङ्गटन

अमरीका का स्वाधीन कर्ता

(श्रीमान् जन्नगाथ खन्ना बी. एससी. अमरीका)

जार्ज वशिङ्गटन वार्जनिया नामक रियासत के Bridges Creek ब्रिजेस क्रीक स्थान में सन् १७३२ की तारीख़ २२ फरवरी को पैदा हुये, थे। इनके वंश का पद अंग्रेज़ी इतिहास में बहुत बड़ा है क्योंकि इन के पूर्वजों अपनी जन्म भूमि इङ्गलैन्ड की सेवा में रण भूमि में अथवा बड़े २ ओहदे पर अच्छे नाम पैदा किये थे यह छः बच्चों में से अपने माता पिता के सब से बड़े पुत्र थे, इनके पिता का देहान्त सन १७४३ में होगया था, इससे इनकी माता और इनके विद्योपार्जन का प्रबन्ध इनके बड़े भाई लारेन्सने कियाथा। और यह लारेन्स के साथ पोटोमक नदी के किनारे पर लारेन्स की बड़ी जिमींदारी में रहते थे। लारेन्स ने इस जिमींदारी का नाम माउन्टवर्नन अपने शुभ चिन्तक अडमिरेल वर्नन के नाम पर रक्खा था माउन्ट वर्नन आज संसार के देश भक्तों का तीर्थ स्थान बन गया है क्योंकि इसी स्थान पर वाशिङ्गटन का पवित्र शरीर गड़ा हुआ संसार को दिखला रहा है कि परोपकारी वास्तव में नहीं मरता चाहे उसका शरीर मुर्दा क्यों न हो। जब मैं इस देश भक्तके शिवमन्दिर में दाखिल हुआ, मेरे हृदयमें जिन जिन पवित्र विचारों का संचार हुआ इसे वहां जाने वाले ही समझ सकते हैं। यह स्थान वाशिङ्गटन नगर से थोड़ी दूर नदी के दूसरी तरफ़ बड़े रमणीय स्थान में बना हुआ है और प्रत्येक भारत वासी यात्री को चाहिये कि इस पवित्र स्थान के दर्शन अवश्य करे।

बालकपन मेंजार्ज गणित और नापजोख में बड़े निपुण थे। अधिक वय होने पर ये सर्वे करने के काम पर नियुक्त होगये थे और १७५२ में अपने भाई लारेन्स के मरने के बाद उनकी तमाम जिमींदारी के अधिकारी होगये।

इस समय अमरीका के इस भाग में अंग्रेज़ और फ्रांसीसी दोनोंअपने २ अधिकार जमाने का प्रयत्न कर रहे थे, दोनों जातियां अपने २ स्वत्व जमाने के लिये लड़रहीथी, दूसरी ओर अमरीका के आदि निवासी रैड इण्डियन अलग ही युद्ध की तैयारी कर रहे थे, इसलिये अंग्रेज़ों ने वाशिङ्गटन को इस बात के लिये नियत किया कि वह फ्रेन्च और आदि निवासियों के बीच जा उनकी मन्शा का पता लगावे और मिसीसिपी और ओहायो के नदी के तट की पृथिवी को नाप ले आवें। १९५३ की ११ दिसम्बर को वह यात्रा तय कर एरी नामक झील के किनारे पहुंचे और फिर इन घोर सर्दी के दिनों ही में वापस हो पड़े और तमाम कष्टों को सहते हुए पिट्सबर्ग के नज़दीक अलीगनी नदी को पार कर विलियसबर्ग में डेरा डाला। इसी स्थान के निकट इनसे एक विधवा सुन्दरी श्रीमती मार्था कर्टिस से परिचय होगया और उसके साथ विवाह कर उसके मकान पर कई महीने विश्राम करते रहें, फिर स्त्री पुरुष माउन्ट वर्नन को लौट आए।

१७५५ में इङ्गलैन्ड ने जेनरल ब्रैडक के मातहत में एक एक फ़ौज डूकेन नामक किले को फ्रेन्चसे छीन लेने को भेजी वाशिङ्गटन को जेनरल ने अपना मन्त्री बनाया पर इस युद्ध में अंग्रेजों का बिल्कुल ध्वंस होगया और जेनेरल ब्रेडक भी इसी युद्धमें मारागया, अन्तिम क्रिया के लिये वाशिङ्गटन को दुआ पढ़नी पड़ी थी। इस हार के बाद अंग्रेज़ों की एक और भी फौज भेजी गई और इस के सिपह सालार वाशिङ्गटन बनाये गये और इनकी युद्ध कुशलता के कारण फ्रेंच लोगों के हाथ से किला अंग्रेजों को मिल गया।

इस के बाद ऐसी घटनायें हुई जिन्हों ने देशके इतिहास को नये सिरे से बना दिया। अंग्रेज़ों का देश में आने वाली वस्तुओं पर कड़ा महसूल लगाना और अमरीका निवासीयों को जहाज़ पर से चाय को समुद्र में गिरा देना, स्वतन्त्रता की घोषणा देश भक्तों की ओर से निकलना और अंग्रेज़ों से युद्ध होना, ये सब घटनाये इतिहास जानने वालों को पूरे तौर पर मालूम है, युद्ध छूटने पर वाशिङ्गटन देश की फौजों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिर पर विपद बादल बने और देश शत्रु अंग्रेज़ों के विरुद्ध थोड़े से पुराने हथियारों से लैस हुये सिपाहियों को ले छः वर्ष तक ऐसा घमासान युद्ध किया कि अंग्रेजों को देश छोड़ भागने के अतिरिक्त और कुछ न सूझा। एक २ युद्ध के वृत्तान्त अच्छी तरह पढ़ने योग्य हैं परन्तु स्थान के अभाव से इस छोटीसी पुस्तक में सब लिखना बिलकुल असम्भव है। देश की राजधानी वाशिङ्गटन नगर की प्रधान इमारत कैपिटोल में इन युद्ध की घटनाओं के चित्र खूब दिखाये गये हैं। इन्हें देख शक्ति और प्रेम से रोमान्च होजाते हैं। इसी इमारत में वाशिङ्गटन और उसके १०८ सहायक नवयुवकों की पोशाक रक्खी हुई है और उन पर उन का मूल मन्त्र Conquer or die "विजय अथवा मृत्यु" गड़े हुये लगे हैं। पाठक, संसार में वेही कुछ काम कर सकते हैं जिनके जीवन मंत्र विजय व मृत्यु हो।

अंग्रेजों के जेनेरल कार्नवालिस जब वाशिङ्गटन से हार मान देश को छोड़ भाग गये तब इन महात्मा के आगे बड़ा कठिन प्रश्न देश की स्थिति का उपस्थित हुआ। प्रथम इन्होंने राज्य चलाने के लिये नियम Constitution बनाये और उन्हीं नियम के अनुसार चुनाव हुआ और सर्व सम्मति से वाशिङ्गटन देश के प्रथम प्रधान चुने गये। देश के राज्य कार्य के लिये पहिले २ इन्हों ने न्यूयार्क नगर में १७८९ तारीख ३० अप्रेल को सभा की और देश की वर्तमान और भविष्य स्थिति के लिये कार्य करने लगे। योग्य मन्त्रियों की सहायता से इन्हों ने मुद्रा Currency स्थापित की, युद्ध का कर्ज़ अदा किया और विदेशों से संधि की फिर तमाम देश में न्यायालय स्थापित किये, फ़ौजें नियत की; पुलिस तयार कराई और देश के सामुद्रिक किनारों के बचाव के लिये जंगी जहाज़ बनवाये।

इसके बाद देश की राजधानी कहाँ और कैसी हो, इस पर भार भी देश ने वाशिंगटन पर डाला। इन्होंने पोटोमैक नदी के किनारे बड़ा रमणीय स्थान स्थिर किया जिसका देश ने अपने सच्चे भक्त के आदर के लिये वाशिंगटन नाम रक्खा। क्या संसार में वाशिंगटन नगर से भी कोई साफ़ और खुला हुवा नगर दूसरा हो सकता है?

इस प्रकार देश को विदेशी अत्याचारियों से मुक्त कर देश की स्थिति कर और उसके भविष्य का प्रबन्ध कर यह ईश्वरीय दूत इस असार संसार से १७९९ तारीख १४ दिसम्बर को कूंच करगया। इनकी कब्र माउन्ट वर्नन में जिस स्थान पर इन्होंने अपने उम्र का बहुत हिस्सा व्यतीत किया था वहीं बनाई गई और वह स्थान जहां इन्होंने जीवन व्यतीत किया और जहां ये मरे, अब भविष्य मनुष्य संतान के लिये देवस्थान होगया है जहां संसार के तमाम देशों से प्रत्येक वर्ष हज़ारों मनुष्य आकर पूजा करतेहैं।

वाशिंगटन की यादगारी में देश में किसी स्थान पर जाइये, कुछ न कुछ ज़रूर पाइयेगा; नगर, गांव, कस्बा, रियासत, पर्वत, पहाड़ी, नदी, झील, बाग, पुस्तकालय, स्कूल, युनिवर्सिटी, जहाज इत्यादि सभी वस्तुओं को इस देश भक्त का नाम दिया हुआ है।

वाशिंगटन के जीवन कालमें ही इन की यादगारी के लिए राजधानी में नदी के तट पर एक बड़ी ऊंची लाट बन वाई गई थी। लेखक को भी पारखाल इस लाट की ५५५ फीट ऊंची चोटी पर बिजली के हिंडोले द्वारा जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस का बाहरी काम संगमर्मर का है और भीतर पत्थर और भीतर बाहर बिजली की रोशनी से उज्वल होता है। इस लाट के नीचे नीव डालने वाले महाशय की वक्तृता खोदी हुई है। पाठकों के लिये थोड़ा सा उसका हिस्से का अनुवाद यहां दिये देता हूं:—

"मैं उस यादगार की नींव डाल रहा हूं जो काफी तौर पर तमाम अमरीका निवासियों को कृतज्ञता का अपने देश के प्रसिद्ध रक्षक की ओर प्रकट करेगा। आसमान तक इसे ऊंचा बना दो, पर वह उनकी तत्व की ऊंचाई से ऊंचा नहीं हो सकता। इसकी नींव ठोस और अटूट चट्टान पर क्यों न डाली जाय किन्तु कोई उन के नाम से अधिक इसे अमर नहीं करसकता—यह चाहे बिल्कुल श्वेत अमूल्य पेरिपन संगमरमर का ही क्यों न बनाया जाय परन्तु यह उन की जीवन की शुद्धता से अधिक शुद्ध नहीं बन सकता। प्राचीन और आधुनिक शिल्पकला का कितना पांडित्य इसके बनाने में खर्च क्यों न किया जावे परन्तु उनकी चालचलन की सिधाई से अधिक यह सुन्दर नहीं बन सकता।"

माउन्ट वर्नन में जहां इस देश भक्त का मृत्यु शरीर गढ़ा हुआ है नदी के पार एक रमणीय स्थान है। मैंने अपनी यात्रा में इस स्थान के दर्शन करने को परम स्थान दे रक्खा था, इस लिये लगभग दो बजे मध्यान्ह मैं ट्राम्बे पर सवार हो गया। नदी के पार होते ही इस ज़ोर से आँधी आई और उसके साथ पानी आया कि ट्राम्बे एकदम से रुकगई सड़क के बांये दाँये के बड़े बड़े दरख्त वायु के झोंकों से गिरने लगे। जुलाई का महीना था, इस लिये गर्मी कुछ २ पड़ती थी, किन्तु आज इस समय मुर्गी के अन्डे के बराबर ओले के टुकड़े दना दन गिर गिर कर ट्राम गाड़ी के शीशों को तोड़ने लगे। इसके साथ पानी भीतर आने लगा। कीमती वस्त्रों से सुसज्जित युवतियां चीख मार इधर से उधर भागने लगीं थोड़ी देर इस तरह तूफान के बाद मालूम हुआ कि आगे का रास्ता गिरे हुए दरख्तों से बन्द होगया था। इसलिये ट्राम्बे लौट आई और मैंने अपने किराये के पैसे वापस कर उस रात को एक होटल में बिता दूसरे दिन सवेरे फिर निश्चित स्थान पर पहुंचा।

वाशिङ्गटन का निवास गृह लकड़ी का बना हुआ और बाहर से ऐसा रंगा हुआ है कि मालुम पड़ता है जैसे पत्थर काहो चारों तरफ मकान के सुहावना बाग है जिस के वृक्ष यूरप के नरेशों ने अपने हाथ से वाशिङ्गटन के प्रतिष्ठा में यात्रा के समय लगाये हुए हैं। मकान बड़ा सादा और सुंदरा है इस के सादापन के विषय में प्रसिद्ध लेखक एडवर्ड एवरेट लिखता है:—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कभी गाभिन होती हैं। नम्बर चित्र अनुसार ी जुदाकर आठ आने करवाते हैं। बिना सठ बड़ी एकस्थानमें गौओंको भी कसा- ना दूधका कारबार ंका जन्म गौ हत्या

हीं ग्वालोंका दूध और लोंके सहायक साथी ीसा देश वासियोंसे अथवा मुसलमानोंके दागर आप लोगोंसे गौ बछड़ोंकी हत्या ोंकी गौहत्या आपसे वाय रहे हैं। आप भेज बध करवाते हैं। ाथ बेचना बन्द करो र देशका भला चाहते ारा कसाई प्रभृतिके ापसे मुक्त करो नहीं में १२ आना गौ हिन्दू थ गौ नहीं बेचना ो सकता है जब ग्राम गौ चाहती है अच्छा तो मालिकको मुफ्तमें वषय है कि अपने पूर्व गुजारीके लालचसे हो तो गोचर भूमि का द्वार बन्द हो गया

र है वहां इन गरीब रते हैं कि कलकत्तेके पर अपने गौ बछड़े है लेकिन कोई मनसे ला स्थापितकी गई ज हाईकोर्ट कलकत्ता ो निमित्त कलकत्तेसे है जो कि कलकत्तेसे ा जमीन लेनी होगी अच्छे घासोंके बीज के करने होंगे ग्वाले करीब २० लाख गौ

बछड़े ग्वालोंने बध कराया होगा और करवा रहे हैं। यह बड़ा भारी कलकत्तेमें गौ बधका श्रोता बह रहा है देश भरकी गौ दूध लेकर कलकत्तेमें आती हैं और कसाइयोंके हाथोंमें पड़कर बध होती हैं इस विषयके अनेक हिन्दी, अङ्गरेजी और उर्दूके लेख विज्ञापन छपे हुए तय्यार हैं जो महाशय सच्चे मनसे इसका प्रचार करना चाहें वे मंगाय लें बिना मूल्य भेजा जायगा।

श्रीमान् औनरेबुल मिष्टर डबल्यू, आर, गोरले साहेब बहादुर प्राईभेट सेक्रेटरी श्रीमान् लौर्ड कारमाईकल बहादुर गवर्नर औफ बंगालने श्रीकृष्ण गौशाला ललुआ तथा कलकत्तेके बंगाली हिन्दू ग्वालोंके घरोंमें गौ पीड़न देख तथा हमारे आन्तरिक अभिप्रायको समझ उन्होंने जो उदारता पूर्व्वक अपनी आशा भरी सम्मति लिख दी है वह आप लोगोंके अवलोकनार्थ प्रकाशित की जाती है आशा है कि आप लोग ध्यान पूर्व्वक उसे पढ़ेंगे।

श्रीमान् औनरेबुल मिष्टर डवल्यू, आर, गोरले साहेब बहादुरकी सम्मतिः—

लगभग २ वर्ष पहले मैं हासानन्द वर्म्माके साथ लिलुआ आया था, जिन्होंने कलकत्तेके पड़ोसमें एक बड़ी गौशाला स्थापन करनेके लिये अपनी राय मुझे अच्छी प्रकार बतलाई थी कि जहां पर कलकत्तेके ग्वाले लोग अपने पशुओंके वर्त्तमानके दुःखदाई गौहालोंसे उनको यहां पर ले आकर रखनेके लिये उत्साहित होंगे। रुपया जमा करने तथा जमीन खरीद करनेमें कुछ समय व्यतीत हुए। परन्तु एक वर्ष हुआ है कि यहांके प्रथम गौशालेका कार्य्य आरम्भ हो गया।

आज फिर मैं हासानन्द वर्म्माके साथ लिलुआ आया और गौहाल देखा कि जिसमें ६० गौ, कई एक सांड़ बछड़े बास कर रहे हैं। गौहाल हवादार है और उसमें काफ़ी जगह है, छत सुन्दर टीनोंसे छाई हुई है और पशुओंके रहनेके लिये पक्की ईंटोंसे बनी हुई गच्चकी फर्श है, चरनी साफ और सुभीतेसे खाने योग्य है। पशुओंको उनके पुराने दुःखदाई गौहालोंसे यहां पर ले आनेसे उनको इस प्रकार सुखी देखकर एक आश्चर्य्य जनक व्यवस्था मालूम हो रही है। देखकर मुझे मालूम हुआ कि यहां पर पशुओंके पालन पोषणका प्रबन्ध बहुत ही अच्छा है और उनकी शरीर हृष्ट पुष्ट तथा साफ सुथरी है। इन पशुओंकोइनके पुराने कष्ट भवनमें ऐसी सुखदाई व्यवस्था प्राप्त होना बिलकुल असम्भव था।

उक्त गौहालमें १७५ गौ तथा उनकी सन्तानोंके रहनेकी जगह है और इसी प्रकार एक दूसरा गौहाल बन रहा है। दो ग्वाले अपनी गौ यहां रखके कार्य्य आरम्भ किये हैं। कलकत्तेके दुसरे ग्वालोंके जैसे कि बागबाजार गुवाबागान वालोंके गौहालोंकी हालत उनके पशुओंके लिये अति दुःखदाई, गंदी तथा अनेक प्रकारके क्लेश देनेवाली हैं परन्तु ज्योंही उन लोगोंको उनके तथा उनके पशुओंके यहां मुफ्त रहनेका तथा लिलुआसे हवड़ा थोड़े किरायेमें आने जानेका लाभ मालूम हो जायगा त्योंही इस प्रकारके आराम पानेवाली जगहके वास्ते इतनी भीड़ हो जायगी कि हासानन्द वर्म्मा तथा श्रीकृष्ण गौशाला कमेटी देने नहीं सकेगी। अब मैं आशा करता हूं कि कलकत्तेके ग्वाले लोग यहां पर बहुत जल्दी आयेंगे और आने पर आशा है कि पशुओंको कलकत्तेके आस पास रखनेकी ज्यादा तजबीज करनी पड़ैगी क्योंकि उस वक्त कलकत्तेके बहुतसे पशु लिलुयेमें रखे जायंगे और उपर्युक्त उपायके करनेमें म्युनिसिपल कारपोरेशनके सख्तीसे ग्वालोंके साथ बर्त्ताव करके यहां पर ले आनेसे श्रीकृष्ण गौशाला कमेटीका उनको यहांका लाभ समझा बुझाके ले आना बहुत ही अच्छा होगा। यहां आनेसे ग्वालोंका बहुत ही लाभ है और उन लोगोंको जब यहांका लाभ समझमें आजायगा तो स्वयम् अपने ही इच्छासे यहां पर आयेंगे।

हासानन्द वर्म्मा तथा श्रीकृष्ण गोशाला कमेटी कि जिसके सभापति मेरे मित्र श्रीमान् डाक्टर कैलाशचन्द्र बोस राय बहादुर सी० आई० ई० हैं इन लोगोंको कलकत्तेके पशुओंके कार्य्यमें पूर्ण यश पानेकी मैं इच्छा करता हूं।

ता० १२ फेब्रुवरी १९११। } डवल्यू, आर, गोरले.

आनरेबुल डवल्यू, आर, गोरले, साहिब बहादुरके लिखने पर हम कुछ नहीं लिखना और बोलना चाहते हैं कारण उन श्रीमानोंने हमारे हृदयका अभिप्राय अच्छी प्रकार समझ लिखा है। आप लोगोंका कर्तव्य और धर्म्म है कि दो तीन बार इसे अच्छी प्रकार बांचें। जब तक ठीक न समझो।

निवेदक,

हासानन्द वर्म्मा

मन्त्री—श्रीकृष्ण गौशाला सभा बड़ाबाजार, कलकत्ता।

० एल० प्रेस १।२ मछूआबाजार ष्ट्रीट कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"सद्धर्म प्रचारकके आजकी संख्याका अधिक पत्र"

हिन्दू गले कटावत गौ बछड़नके कलकत्तेके हिन्दुओंकी गौहत्याका चित्र।

१ नं० चित्र।

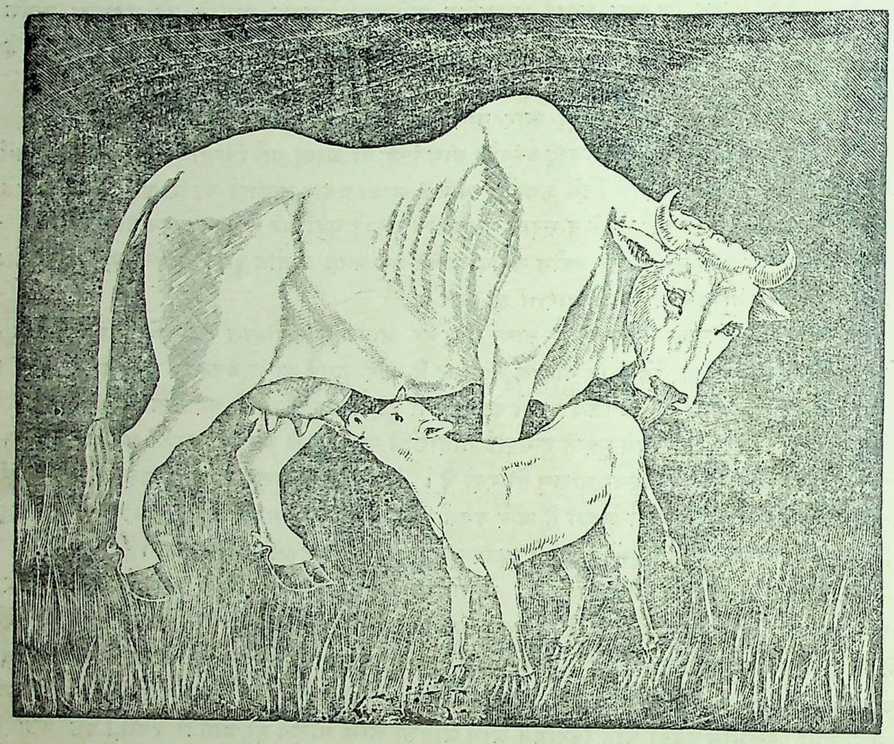

कसाई लोग भी अपने घरकी गौओंके ऐसे ऐसे बालक बछड़े बछड़ी जुदाकर बध नहीं करते। दुख है कलकत्तेके हिन्दुओंके दूधके पीछे पीछे हिन्दू ग्वाले ऐसे ऐसे बालक बछड़े गौओंके दूधके नीचेसे जुदाकर कसाइयोंको बेच बध करवाते हैं। हाय! कोई भी मनसे नहीं सुनता।

२ नं० चित्र

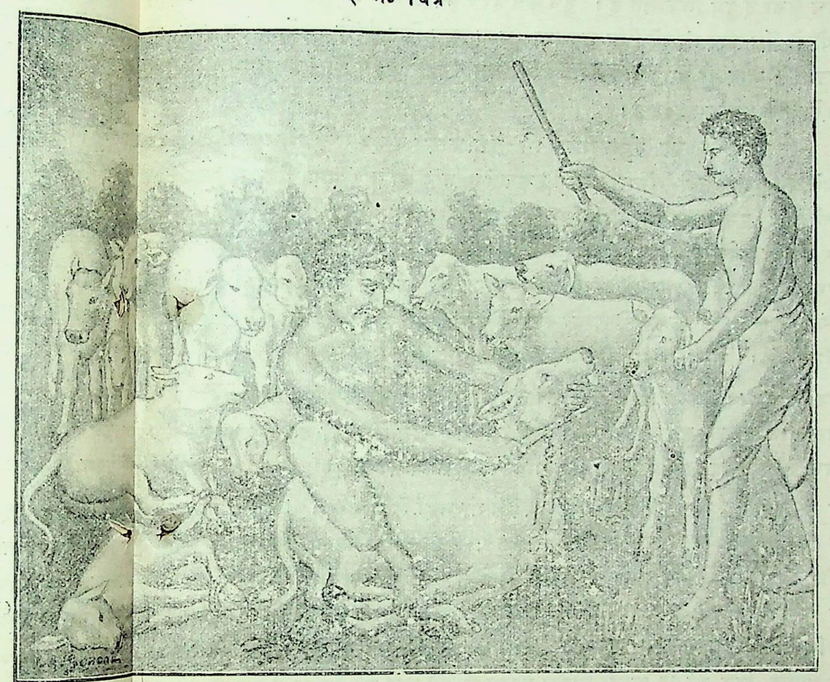

ऐसे ऐसे बछड़े बछड़ी कसाइयोंको बेच बेच बधकरवाय कलकत्तेके हिन्दू जर मूलसे गो जातीको नष्ट करवा रहे हैं। लाखों ऐसे ऐसे गो बालक हिन्दू ग्वालोंने कसाइयोंको बेच बेच बध करवाये और बध करवायरहे हैं। क्या इस प्रकारके बछड़ोंके बधसे देशकी कम हानि है? नहीं नहीं अपार हानि है इस हानिको कोई भी पूरा करने वाला जगतमें नहीं है भविष्यमें भारत सन्तानोंको खेतीके लिये बैल नहीं मिलेंगे और लड़के बिना दूध घी के भूखे मरेंगे।

३ नं० चित्र।

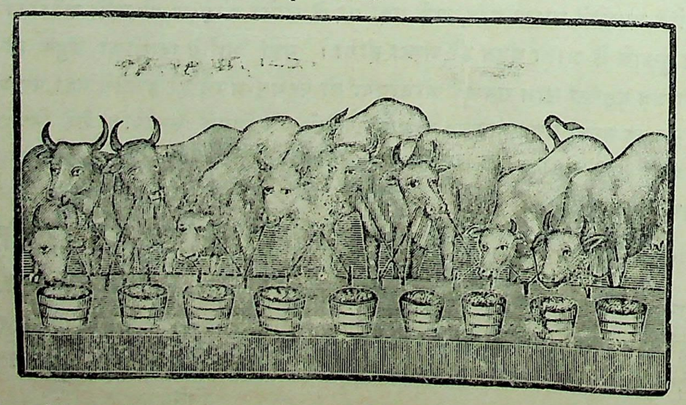

जबतक ग्वालोंको दूधसे लाभ होगा तबतक गरीब गौ दिन रात चित्र अनुसार ग्वालोंके घरोंमें बान्धी रहेंगी। पाठक सोचें ऐसी हालतमें गरीब गौ किस प्रकार बैठ सकती होंगी। पाठक सोचे कैसे उठते बैठते अपने आयुके शेष दिन काटती होंगी इन खूंटोंसे ये उस दिन खुलेंगी जिस दिन ग्वाले कसाइयोंको बेचेंगे कसाई उसी दिन इन्हें खरीद कर बधकर इनका जीवन शेष करेंगे।

४ नं० चित्र।

क्या हिन्दू जाति इस प्रकार गौ बछड़े बछड़ी कसाइयोंके हाथ बेच बेच कर बध करवानेसे आप लोगों लाज नहीं आती? आप अपने पूर्व पुरुषोंका स्मरण तो करो, वे किस आदरकी दृष्टिसे गौकोदेखते थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

र्तमान समय की नीति के अनुसार स
ा कार्य अग्रसर करने में सुविधा ह
राजकीय प्रतिष्ठा लोक मान्यता, अन्वे
, विलक्षणप्रतिभा, आदि सब गुणों
में अत्यावश्यक है। शङ्का थी कि
सभापति प्रथम वार ही सम्मेलन
उकेगा या नहीं किन्तु ईश्वर की कृ
त वर्ष सौभाग्य से विद्वन्मूर्धन्य पूज्य
महोपाध्याय श्री शिवकुमार शा
ापतित्व में इस सम्मेलन का सूत्रपा
ही प्रकार बड़े सौभाग्य से प्रथम स
सभापति पद पर ही १ पूर्वोक्ति सब
न्ध महाशय प्रतिष्ठित होंगे। बंग
द्ध कलकत्ता संस्कृत कालेज के प्रिंसिप
धन्य महा महोपाध्याय डाक्टर अ
द्र विद्याभूषण महाशय इस वार स
हित्यसम्मेलन के सभापति पद को अलंक
ाप के सम्बन्ध में कुछ भी कहना सू
न दिखाने के समान है सम्मेलन क
धारण सफलता से संस्कृतानुरा
दत होना चाहिये। अनेक सुप्रसिद्ध
निबन्ध लिखने की स्वीकृति के पत्र मि
ु निबन्ध आभी चुके हैं आशा है
य भी अपने २ निबन्ध शीघ्र भेजें
त सज्जनों की आगमन की सूच
किन्तु इनकी संख्या अभी अल्प है
हित्य सम्मेलन में आने वाले प्रति
संख्या बहुत अधिक होनी चाहिये य
कदापि सन्देह न करना चाहिये
ान एक देशीय है सब धर्म, जाति
ाओं के कई सौ विद्वान व संस्कृता
ो निमन्त्रण पत्र भेजे जा चुके हैं कि
निवेदन कर चुका हूँ कि सबका ज्ञा
सब के पास पत्र पहुँचाना असम्भव
सब विद्वानों को इस सम्मेलन में स
ोने के लिये उत्साहित होना चाहि
: के लिये मैं शतशः क्षमा प्रार्थी हूं मा
ानों व संस्कृतानुरागी सज्जनों! य
समय है। इस समय भी आपने उ
ई और सम्मेलन यथोचित् सफल
सका तो लोक में संस्कृतानुराग क
इति श्री समझिये पहिले ही वि
ता का बहुत कुछ कलङ्क लग चुका
या आलस्य छोड़कर उठिये। अप
छोड़कर सम्मेलन में सम्मिलित हो
आराध्य संस्कृत भाषा की सेवा
न छोड़िये। श्री गंगा स्नान क

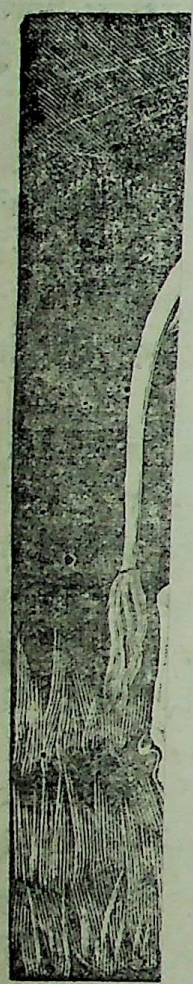

कसाई ल
दुख है वल
नीचेसे जुादक

जबतक
बान्धी रहें
उठते बैठते
कसाइयोंको

कलकत्तेके दुष्ट राक्षस वङ्गाली हिन्दू ग्वालोंके घरोंमें न कभी गौ व्याती हैं न व
वो दुष्ट राक्षश कलकत्तेके हाट बाजारोंसे देसावरोंसे आई हुई थोरे दिनकी व्याई एक
गौ बछड़े खरीद कर अपने अपने घरोंमें ले जातेही उनके छोटे छोटे बालक बछड़े बछड़
रुपये दोमें मांस माटीके दाममें कसाइओंको बेच दो नं० के चित्र अनुसार बध
बाछे बाछीकी गौओंको तीन नम्बरके चित्र अनुसार कुछ मास दिन रात आठ पहर चौ
बांध फूका दे दूध निकालते हैं। दूध कम होने पर लाभ न होनेसे थोड़ा दूध देती हुई
इयोंको बेंच चार नंबरके चित्र अनुसार बध करवाय फिर दूसरी गायें खरीद कर अप
चलाते हैं और गौ बछड़े कसाइओंको बेंच बध करवाते रहते हैं। इसी प्रकार ग्वालो
करते करते समाप्त होता है।

ग्वालोंके इस गौहत्याका भी मूल कारण गौचर भूमीका अभाव है। इन्ह
दूधसे बने पदार्थ दही, खोवा, मलाई कलकत्तेके हिन्दू ब्राह्मण खाय गौहत्या पापमें ग्वा
बनते हैं। इस स्थानमें पंजाब, सिन्ध, राजपुताना, प्रयाग, काशी आदि बङ्गाल, ओड़
हम नम्रता पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि आप लोग कलकत्तेके गौओंके सौदागरों हिन्दू
हाथ गौओंका बेचना अपने अपने ग्राम नगर जिले प्रान्तमें बन्द करो। यही सौ
गौओंको खरीद कर कलकत्ते लाय ग्वालोंके हाथ बेचते हैं तब तो ग्वाले चित्र अनुसार
करवाते हैं। आप लोग सौदागरोंके हाथ गौ बेचना बन्द करो तो कलकत्तेके ग्वाल
बन्द हो जाय। आप लोग ही मानों कलकत्तेमें गौओंको भेज भेज कर गौहत्या कर
लोग मानों प्रधान इस गौहत्याके भागी हैं कारण आप लोग ही उनको कलकत्ते भेज
आप लोग यदि इन गरीब अबोल गौमाताओंको कलकत्तेके मुसलमान सौदागरोंके ह
तो जबरदस्ती कोई आप लोगोंके घरोंसे तो नहीं ले जायगा। जो हो अपना औ
हो तो पूर्व्वकाल अनुसार गोचर भूमी ग्राम ग्राम छोड़नेका प्रवन्ध कर, जाति दण्ड द्व
हाथ गौओंका बेचना बन्दकर कलकत्ते वालोंके साथ साथ अपनेको भी इस गौहत्या
तो बुरी हालतमें मर कर घोर नरकको जाओगे। आप सोचो आज भी भारतवर्ष
जातिके हाथमें हैं अगर हिन्दू जाति आज दिन प्रतिज्ञा कर लेवे कि कसाई प्रभृतिके हा
तो आज दिन ही १२ आना गोवध भारत भूमिसे बन्द हो सकता है यह काम तब ह
ग्राम नगर नगर गौओंके चराने निमित्त पूर्वके अनुसार गोचर भूमि छोड़ी जाय।
घाससे परिपूर्ण भूमि, जङ्गल, पहाड़, अगर गौओंको अच्छा घासका जङ्गल मिले
दूधका लोटा पिलायेंगी और घी मक्खन खिलायेंगी बड़े दुःख और सन्तापका
पुरुषोंकी दान की हुई पूर्वकालकी गोचर भूमि आज कलके भू स्वामियोंने थोड़ी माल
खेतोंमें मिला लिया है। अगर देशका और अपनी प्यारी सन्तानोंका मङ्गल चाहते
छोड़नेका प्रवन्ध कर गोपालनका द्वार खोलो गोचर भूमिके उठ जानेसे ही गोपालन
है और गौहत्याका मार्ग खुल गया है।

नोट—कलकत्ता इतना बड़ा नगर है कि जहां मनुष्योंको जगह मिलना कठिन
अनाथ अबोल प्राणियोंको जगह कहां मिले आज १२ वर्षसे हम इस विषयकी चेष्टा क
ग्वालोंको शहरसे बाहर गौओंके रहने चरनेका प्रबन्ध कर दिया जाय तो ग्वाले वहां
रखें चरावें और कसाइयोंके हाथ न बेचें यह काम बखूबी आसानीके साथ हो सक्ता
नहीं सुनता इस कार्य्यको पूरा करनेके निमित्त श्रीकृष्ण गौशाला नामकी एक गौशा
है इस वख्त उसके सभापति श्रीमान् औनरेबिल मिष्टर जष्टिस शारदाचरण मित्र लेट ज
हैं इस समय सभाके हाथ १००० बीघा जमीन ग्वालोंकी ठाठ गौओंके रहने चरने
१४ कोसकी दूरी पर है और करीब १०० बीघा जमीन कलकत्तेके बगलमें ललुआ ग्राममें
३ माइलकी दूरी पर ई० आई आर० रेलवेका स्टेशन है ललुयेमें बारह चौदह सौ बीघ
गौओंके रहनेके लिये घर बनवाने होंगे और पानीके लिये तालाब कुवें खुदवाने होंगे
ला ग्वालोंको घासकी खेती करनी सिखानी होगी और अनेक प्रकारके काम इस विषय
प्रति वर्ष करीब एक लाख गौ बछड़े कसाइयोंको बेच बध करवाते हैं। २० वर्षमें व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"इस मकान की नीची छत कोई ऐसी ऊंची और चमकीली नहीं है कि जिस पर प्रातःकाल तथा सन्ध्या की किरणें पड़ती हों, परन्तु एकत्र अमरीका निवासियों के प्रेय और कृतज्ञता की ज्योति इस पर सदैव पड़ा करती है। इस छोटे छत के नीचे से वह सच्चा, स्वार्थ रहित वीर और न्याई वीर जाया करता था जिसे अपने देश की भलाई के अतिरिक्त और कोई ख्याल नहीं रहता था और जब उसका कार्य समाप्त होजाता तब वह इसी छत के नीचे आजाता था, यहीं वह भली सादगी से रहता था और यहीं वह गौरव और शान्ति के सहित तरगया। जब तक यह छत कायम है तब तक अमरीका को कृतज्ञ अन्तिम सन्तान तक इस स्थान की देवस्थान की तरह यात्रा किया करेंगे और यदि यह कदाचित गिर पड़ी तब वाशिङ्गटन की यात्रा किया करेंगे तब वाशिङ्गटन की याद और नाम इस स्थान का गौरव देती रहेगी।"

यह मकान वैसा सजा हुआ है जैसा वाशिङ्गटन के समय में था। इस की शय्या पर बिस्तरे वही पड़े हुये हैं जो इन्होंने बर्ते थे इनका पुस्तकालय, भोजनालय बैठक इत्यादि २ कमरे इन्हीं के दिनों के सजे सजाये लगे हुये हैं। एक कमरे में तीन तलवारें लटक रही हैं जिन पर लैटिन भाषा में लिखा हुआ है "वही काम करो जो ठीक हो और किसी मनुष्य से मत डरो" इन्हीं तलवारों के पास इनका एक वसीयतनामा लिखा हुआ रक्खा हुआ है, जिस पर लिखा है:—

"प्रत्येक मेरे भतीजों को मैं एक एक तलवार देता हूं। यदि मरते समय मेरे कब्जे में हों और जिन्हें वह एक उसी सिलसिले में चुनलें जैसे उनके नाम दियेगये हैं, ये तलवारें इस आज्ञा के साथ दी जाती हैं कि वे कभी भी खून बहाने के कार्य में न खोली जांय इसे छोड़ कर कि ऐसा मौका आत्म रक्षा में हो अथवा अपने देश और उसके स्वत्व की रक्षा करने में हो और यदि इस अन्तिम कार्य का अवसर आपड़े तब उन्हें नंगी खोले रक्खें और उसे छोड़ने से यह अधिक पसन्द करें कि उन्हें हाथ में लिये रण भूमि में काम आवें।"

इसी प्रकार वाशिंगटन की कब्र भी बहुत सादी ईंटों की बनी हुई है। कब्र के ऊपर संगमरमर के एक टुकड़े पर लिखा हुआ है "इस के अन्दर जेनरल जार्ज वाशिंगटन की मृत्यु शरीर रक्खी हुई है" इन्हीं की कब्र के पास इनकी स्त्री मार्था की कब्र और और इनके चालीस रिश्तेदारों की कब्र है।

ऐ वाशिंगटन! तू मरा नहीं है परन्तु तू ने अपने जीवन को अमर करदिया है। तू संसार के मनुष्यों को अमर होने का मन्त्र बता गया है। तू संसार की दुखी जातियों को बतला रहा है कि अत्याचारियों से छुटकारा किस प्रकार मिलता है और स्वराज्य की स्थापना कैसे होती है।

अपने प्रधानत्व के पद के त्यागने के समय जो अन्तिम सम्मति इन्होंने अपने देशवासियों को दी है वह पढ़ने योग्य है।

प्राप्त

(सम्पादक प्राप्त लेखों के मत का उत्तर दाता नहीं है)

संस्कृत साहित्य सम्मेलन

ज्येष्ठ-शु-८ भौमवार सं० १९७१ ता० २ जून १९१४ से आरम्भ कर ३ दिन पर्यन्त श्री हरिद्वार में ऋषिकुल के वार्षिकोत्सव के साथ सकल भारतवर्षीय विद्वानों का संस्कृत साहित्य सम्मेलन बड़े समारोह के साथ होगा यह पूर्व पाठकों से निवेदन किया जा चुका है आज इस सम्मेलन के सम्बन्ध में और बड़े आनन्द का वृतान्त संस्कृतानुरागी सज्जनों को सुनाया जाता है। जबकि सर्वमान्य भाषा के असाधारण सम्मेलन का कार्य उठाया गया तो अनेक विद्वानों की सम्मति थी और वस्तुतः इस बात की बड़ी आवश्यकता थी कि प्रथम वार ही सम्मेलन का सभापति कोई असाधारण प्रतिष्ठित व्यक्ति हो। जो संस्कृत भाषा की उत्तम विद्वता के साथ राज भाषा की पूर्ण अभिज्ञता रखता हो-जिस से कि वर्त्तमान समय की नीति के अनुसार सम्मेलन का कार्य अग्रसर करने में सुविधा हो साथ ही राजकीय प्रतिष्ठा लोक मान्यता, अन्वेषण शक्ति, विलक्षणप्रतिभा, आदि सब गुणों का होना उसमें अत्यावश्यक है। शङ्का थी कि इस प्रकार का सभापति प्रथम वार ही सम्मेलन को पास हो सकेगा या नहीं किन्तु ईश्वर की कृपा से जैसे गत वर्ष सौभाग्य से विद्वन्मूर्धन्य पूज्यपाद महामहोपाध्याय श्री शिवकुमार शास्त्री जी के सभापतित्व में इस सम्मेलन का सूत्रपात हुआ इस ही प्रकार बड़े सौभाग्य से प्रथम सम्मेलन के सभापति पद पर ही १ पूर्वोक्ति सर्व गुण सम्बन्ध महाशय प्रतिष्ठित होंगे। बंग देश के सुप्रसिद्ध कलकत्ता संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल स्वनाम धन्य महा महोपाध्याय डाक्टर श्री सतीशचन्द्र विद्याभूषण महाशय इस वार संस्कृत साहित्यसम्मेलन के सभापति पद को अलंकृत करेंगे आप के सम्बन्ध में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है सम्मेलन की इस असाधारण सफलता से संस्कृतानुरागियों को आनन्दित होना चाहिये। अनेक सुप्रसिद्ध विद्वानों को निबन्ध लिखने की स्वीकृति के पत्र मिल चुके हैं कुछ निबन्ध आभी चुके हैं आशा है कि शेष महाशय भी अपने २ निबन्ध शीघ्र भेजेंगे इन प्रतिष्ठित सज्जनों की आगमन की सूचना मिली है किन्तु इनकी संख्या अभी अल्प है संस्कृत साहित्य सम्मेलन में आने वाले प्रतिनिधियों की संख्या बहुत अधिक होनी चाहिये यह किसी को कदापि सन्देह न करना चाहिये कि यह सम्मेलन एक देशीय है सब धर्म, जाति देश, सम्प्रदायों के कई सौ विद्वान व संस्कृतानुरागियों को निमन्त्रण पत्र भेजे जा चुके हैं किंतु मैं पूर्व ही निवेदन कर चुका हूँ कि सबका ज्ञान होना और सब के पास पत्र पहुँचाना असम्भव है अतः स्वयं सब विद्वानों को इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये उत्साहित होना चाहिये अपनी त्रुटि के लिये मैं शतशः क्षमा प्रार्थी हूं माननीय विद्वानों व संस्कृतानुरागी सज्जनों! यह परीक्षा का समय है। इस समय भी आपने उपेक्षा दिखाई और सम्मेलन यथोचित् सफलता न प्राप्त कर सका तो लोक में संस्कृतानुराग की कीर्त्ति की इति श्री समझिये पहिले ही विद्वानों पर उपेक्षा का बहुत कुछ कलङ्क लग चुका है अब तो कृपया आलस्य छोड़कर उठिये। अपने सब काम छोड़कर सम्मेलन में सम्मिलित होइये। अपने आराध्य संस्कृत भाषा की सेवा के अवसर को न छोड़िये। श्री गंगा स्नान के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ाम और ऋषिकुल का महोत्सव दर्शन भी ाथ ही आनुसंगिक प्राप्त होगा। श्री हरिद्वार समय भी बड़ा उत्तम है फिर सब जाति धर्म श के सम्प्रदायों के विद्वानों से प्रार्थना है कि पने आगमन की सूचना शीघ्र भेजें।

दर्शनाभिलाषी—
गिरिधर शर्म्मा चतुर्वेदी
मन्त्री स्वागत कारिणि समिति

मन्दिर में नाच

बाराबंकी में नागेश्वरनाथ महादेव जी का क बहुत मशहूर मन्दिर है। यहां बहुत दूर २ यात्री आया करते हैं। इसी से मिला हुआ क महावीर जी का स्थान है, यहां हर साल ड़े मङ्गल के दिन एक बहुत बड़ा मेला हुआ ता है दिन में लोग महावीर जी के दर्शन क- ते हैं, और चढ़ावा चढ़ाते हैं रात को सनातन र्म सभा बराबंकी की तरफ से, हर साल च, रहस, व आतशबाजी इत्यादि, में बहुत रुपया फूका जाता है। आज दो साल से ार्य्य कुमार सभा बाराबंकी की तरफ से श- में बहुत अच्छा प्रचार हूआ करता है, और ास पास के देहातों में भी व्याख्यान हुआ ते हैं। भाग्यवश इस प्रचार का असर यह ा, कि सनातन धर्म सभा में इस साल मङ्ग- के दिन कुछ लोग नाच कराने के विरुद्ध हो ए। अन्त में सभा से यह निश्चित किया गया नाच न हो। लेकिन हमें शोक के साथ कह- पड़ता है, कि इतने पर भी हमारे शहर के क रईस ने अपने ख़र्च से रण्डी का नाच क- या परमात्मा ऐसे पुरुषों की बुद्धि को जल्दी ार, नहीं तो, हिन्दू जाति की नाव ज़रा सी में डूब जावेगी। खैर—जो कुछ हुआ सो ा। हम लोग ७ बजे सवेरे से वहां पर मौजू- थे और टूकटस बेच रहे थे। ३ बजे से हमारे ान व व्याख्यान शुरू होगए म० कृष्ण गोपा- जी ने ५ व्याख्यान दिये उसी समय कुछ ई- ई लोग वहां आ पहुंचे, और आगमन के रुद्ध व्याख्यान देने लगे फिर क्या था, हम ग भी उनके पत्रे खोलने लगे, और बाइबिल बिलबिला डाला। अन्त में उन बेचारों को फत के मारे भागना ही पड़ा, इसका इतना र पड़ा कि "सनातन धर्मी लोग" हमको ी इज्जत से अपने प्लेट फार्म पर ले गये वहां हम लोगों के भजन वा व्याख्यान ७॥ बजे ९ बजे तक बड़े ज़ोर व शोर से होते रहे। ं पर दो व्याख्यान हुये एक व्याख्यान म० कृष्ण गोपाल जी ने दिया, दूसरा व्याख्यान एक अन्य महाशय जी ने दिया। इन दोनों व्याख्यानों का ऐसा अच्छा असर हुआ कि बहुत से लोग नाच देखने के बजाय घर को लौट गए।

इस मेले में दो बातें ध्यान देने योग्य थीं। (१) यह मेला सैकड़ों वर्षों से लगता है लेकिन आज तक कभी इस मेले में हवन् नहीं हुआ था यह आर्य कुमार सभा ही के प्रचार का कारण था, कि अब की साल, इस मेले में "सनातन धर्मियों" ने हवन कराया।

(२) हम लोगों के पहले एक "सनातन धर्मी" पंडित ने अपने प्लेट फार्म पर व्याख्यान दिया व्याख्यान के पहले भजन गाए गए, वे सब आर्यसमाजी ही थे, और मूर्त्ति पूजाइ- त्यादि की उनमें बू भी न थी।

एक आर्य कुमार

सूचना

सर्व सज्जन महाशयों की सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि जो महाशय वायु सेवनार्थ म- सूरी आना चाहें वे कृपा करके नोट कर लेवें कि मकान आदि का प्रबन्ध १५ दिन पहले मन्त्री आर्य समाज द्वारा कर लिया करें ताकि उनको यहां पर आने से कष्ट न उठाना पड़े। गत वर्ष एक महाशय को महा कष्ट उठाना पड़ा था यहां पर एक धर्मशाला सिक्खों की है और एक मन्दिर हिन्दुओं का है जिसमें लोग ठहरते हैं। आर्य समाज की भी एक धर्मशाला है और वह हर श्रेणी के लोगों के ठहरने के योग्य है हमा- रे आर्य समाजी भाई ज्यादा तर उसी के भरो- से पर बिला सूचना दिये चले आते हैं। धर्मशा- ला में जगह बहुत काफी है और किसी यात्री को धर्मशाला में रहने से वंचित न होना पड़े अगर धर्मशाला के नियमों के अनुसार यात्री ठहरे और ठहराये जावें गत वर्ष से कई कमरे जो ठहरने योग्य हैं, किराये पर दो २ मास के लिये दे दिये जाते हैं जिससे यात्रियों को कष्ट उठाना पड़ता है गत वर्ष की शिकायतों में से एक मास्टर मुखराम जी अध्यापक गुरुकुल कां- गडी को थी जिन्होंने धर्मशाला के भरोसे बिला किसी प्रबन्ध को किये हुए जाकर जगह मांगी जिस पर उनको जवाब दिया गया कि इस समय कोई जगह धर्मशाला में नहीं है। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि कई कमरे किराये पर एक २ दो २ मास को दे दिये हैं तब उन्होंने कहा हम तो धर्मशाला में ठहरेंगे आप कोई जगह कर दीजिये प्रबन्ध करता जी को इस पर रीडि- ग रूम देना पड़ा—और मास्टर जी को कष्ट उ- ठाकर रीडिंग रूम में रहना पड़ा। आर्यसमाज की धर्मशाला धर्मशाला के नियमोंपर स्थिर नहीं है। इसलिये मंसूरी के यात्रियों को अपना प्रबन्ध प्रथम से अवश्य करा लेना चाहिये।

निवेदक
महादेव प्रसाद
मंसूरी

सार्वदेशिक सभा।

कुम्भ प्रचारार्थ सभा की कार्यवाही

उपस्थिति।

(१) महात्मा मुन्शीराम प्रधान
(२) ला० द्वारिकादास
(३) नारायण प्रसाद मन्त्री

(१) उपदेशों के निवास तथा भोजन प्रचार, तथा औषधालय आदि के लिये जो स्थान भी प्रधान सभा ने निश्चित किये थे वे देखे तथा स्वीकार किये गये—

(२) व्यय के स्वीकृत बजटके अन्तर विवरण इस प्रकार स्वीकार किये गये—

(क) रहाइश के लिये छप्पर तथा डेरे आदि के प्रबन्ध में	२०००)
(ख) उपदेशकों भजनीकों तथा डाक्टरों के मार्ग व्ययार्थ	१०००)
(ग) उपदेशकों, आदि का भोजन व्यय	१२००)
(घ) औषधालय का व्यय	५००)
(१) औषधि	१००)
(२) भोजन आदि व्यय	१५०)
(३) सेवकों का व्यय ४ डोली १६ कहार	१००)
(४) विविध व्यय	१५०)
(ङ) मोटोज़ बोर्डस आदि विविध व्यय	३००)
(च) विज्ञापन व्यय	१५००)
टूकटों की तैय्यारी आदि में	३०००)
	४५००)
(छ) प्रबन्ध व्यय	५००)
सहायक प्रबन्धकर्ता का वेतन	३००)
विविध व्यय	२००)
योग	१००००)

(३) निश्चय हुवा कि महात्मा मुन्शीराम इस सभा की ओर से प्रचार कार्य्य सम्पादनार्थ प्रबन्धकर्ता नियत किये जावें तथा उन्हीं को सुपुर्द दश सहस्र धन संग्रह का कार्य्य भी किया जावे।

नारायणप्रसाद मन्त्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छपगई ! छपगई !! छपगई !!!

स्वर्गीय जीवन

यह पुस्तक अमरीका के प्रसिद्ध विद्वान् राल्फवाल्डो ट्राइन की प्रसिद्ध पुस्तक In Tune with the Infinite, का भाषानुवाद है इसमें शान्ति प्राप्ति का मार्ग, समृद्धिशाली होने का नियम, साधू महात्मा जगदुद्धारक बननेका मार्ग, सब धर्मों का मुख्य तत्त्व, भली प्रकार दर्शायाहै। भाषा सरल और बम्बईके एक प्रसिद्ध यन्त्रालय में बड़े सुन्दर टाइप में छपी है । पहिले इसका मूल्य १।) रक्खा था किन्तु यह विचार कर कि सर्व साधारण को लाभ पहुँचे अब ।।।) करदिया है । डाकव्यय अलग । मिलने का पता–

प्रेमी, पुस्तक भन्डार, देहली

आवश्यकता

एक अध्यापिका जो एन्ट्रैस पास ट्रेण्ड हो या विशारद पास हो मुलतान आर्य्य पुत्री पाठशाला अन्दर बोहिर दरवाजा के लिये ज़रूरत है तनख्वाह ४०– से ५०– रुपये तक योग्यतानुसार दी जावेगी । आर्य्य धर्म्म से हितैषिता प्रकट करने वाली को विशेषता दी-जावेगी । प्रमाणपत्रों सहित प्रार्थना पत्र १५ मई सन् १९१४ तक आ जाने चाहियें। श्रीमान् लाला तोला राम जी मैनेजर आर्य्य पुत्री पाठशाला मुलतान के पते पर पत्र आना चाहिये ।

मैनेजर-आर्य्य पुत्री पाठशाला

मुलतान

इंगलिशटीचर ।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त ।

बाबू राजाराम बुकसेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता–– जल्दी हज़म होने वाला–

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये ।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली ।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० छा =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

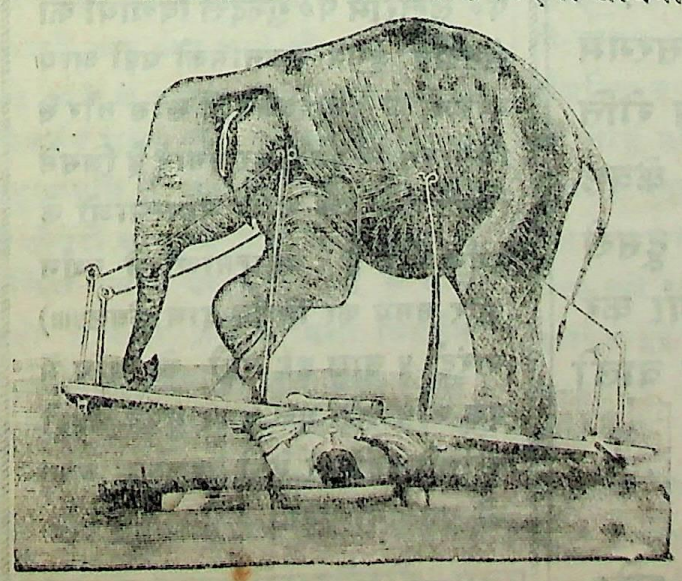

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरबीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीर-जयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय –)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल –)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता– माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0..Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

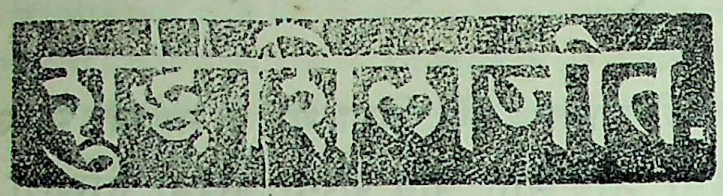

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२)	।=)
१०	४)	।=)
२०	८)	।=)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनाँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

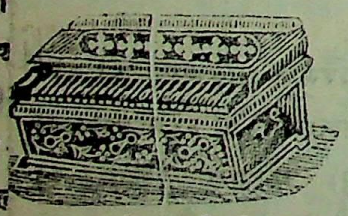

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल, क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।=) रक्खा है डाक ख़र्च =) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० =)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्र व्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसर महेशचरण सिंह, एम० एस० बी० ए० बी०, ए० जी० आर० गुरु कुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

ऋषि दयानन्द वाच

श्री महात्मा मुन्शीराम, धर्मवीर पं० लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन, हमने उक्तनामकी घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिसमें मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन होते हैं। महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय दाम केवल ५॥।) गारंटी ५ साल हर घड़ी के साथ में एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा।

पताः—दीखीज़रलैंडवाचकम्पनी

हाथरस नं० २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। कहीं तो आगे से भी बढ़कर कड़ाई हो रही है। कमीशन ने ४५) जो कर उठा देने की सलाह दी है पर अभी कई मज़दूरों को पुराना कर न देने के अपराध में कड़ा दंड दिया गया है। इस से भी बढ़कर एक और घटना हुई है जिससे भारतवासियों को बड़ा दुःख पहुंचा है। अभी कुछ दिन हुए, एक भारतवासी मजदूर अपनी स्त्री को साथ लेकर ट्रांसवाल में गया। भारतवासी जाता हुआ अपने ज़िले के मैजिस्ट्रेट से इस बात का प्रमाण पत्र लेगया था कि वह स्त्री उस की विवाहिता पत्नी है। द० अफ्रीका के इमिग्रेशन विभाग के अफसर केवल उस प्रमाण पत्र से सन्तुष्ट न हुए, उन्होंने उससे उसकी पत्नी की तसवीर मांगी और कहा कि उस तसवीर को भेज कर मैजिस्ट्रेट से पूछेंगे कि क्या यह वही स्त्री है जिसे प्रमाण पत्र दिया गया है। किसी भारतवासी से उसकी पत्नी का चित्र मांगना उसका घोर अपमान करना है पर जिस का कोई रखवाला न हो उसे सभी अपमान सहने पड़ते हैं।

पार्लीमंट में ऊधम—उस दिन पार्लिमेंट में आयर्लेंड के स्वराज्य का मसौदा तीसरी बार पढ़ा जाने को था पर स्वराज्य के विरोधियों ने इतना गुलगपाड़ा किया कि पार्लिमंट विसर्जित करनी पड़ी। पार्लिमंट में हर एक बिल तीन बार पढ़ा जाता है और तीसरी बार स्वीकृत होने पर रईसों की सभा में भेजा जाता है। "स्वराज्य बिल" दो बार पढ़ा जा चुका है और २१ मई को तीसरी बार पढ़ा जाने को था। बिल पढ़े जाने के पहिले विरोधियों ने सभा विसर्जन करने का प्रस्ताव किया पर बहुसम्मति से वह गिर गया और बिल के तीसरी बार पढ़े जाने का प्रस्ताव उपस्थित हुआ। सनापनी दल के सभासदों ने चारों ओर से "सभा विसर्जन" "सभा विसर्जन" का शोर मचा दिया। पार्लिमंट के सभापति को स्पीकर कहते हैं, उसके बार बार समझाने पर भी यह शोर बंद न हुआ। उसने सनातनी दल के नेता बोनरला से अपने अनुयायियों को शान्त करने की सहायता मांगी पर वह भी प्राप्त न हुई। तब हार कर अगले दिन के लिये सभा विसर्जित करनी पड़ी। यह उस पार्लिमंट की बात है जिसे सारे संसार में सभ्य कहा जाता है।

संस्कृत साहित्य सम्मेलन—किसी दूसरे स्थान में हमने संस्कृत साहित्य सम्मेलन का निमन्त्रण पत्र प्रकाशित किया है जिसे सम्मेलन स्वागत कारिणी के मन्त्री और ऋषिकुल के प्रधानाध्यापक पं० गिरधर शर्मा ने भेजा है। कई वर्षों से ऋषिकुल के वार्षिकोत्सव के साथ एक विद्वत्सभा हुआ करती थी। पिछले वर्ष और भाषाओं के सम्मेलनों की तरह संस्कृत के सम्मेलन की आवश्यकता समझ कर विद्वत्सभा को संस्कृत साहित्यसम्मेलन में परिणत कर दिया गया और पिछले वर्ष ही पं० शिवकुमार शास्त्री के सभापतित्व में उसका पहिला अधिवेशन हुआ। इस वर्ष भी उसका दूसरा अधिवेशन ऋषिकुल में होगा, पं० गिरधरशर्मा जी ने यह भी सूचना दी है कि अभी दो तीन वर्ष "प्रबन्ध के सुभीते" के लिये यह सम्मेलन ऋषिकुल में ही होगा। इस बात पर कुछ समय से भारतमित्र में चर्चा चल रही है। संस्कृत में "शारदा" एक मासिक पत्रिका निकलती है। उसके सम्पादक पं० चन्द्रशेखर शर्मा ने ऋषिकुल वालों के इस काम पर आक्षेप किया है। उसका कथन है कि यदि सचमुच ही इस सम्मेलन को ऋषिकुल के उत्सव का पुछल्ला न बना कर सार्वजनिक बनाना है तो और सम्मेलनों की तरह प्रतिवर्ष इस के अधिवेशन भी भिन्न २ नगरों में होने चाहिये। ऋषिकुल एक साम्प्रदायिक संस्था है, उसके साथ लगे रहने से सम्मेलन भी साम्प्रदायिक ही समझा जायगा। हम पं० चन्द्रशेखर शास्त्री की सम्मति से सहमत हैं। यदि सम्मेलन के संचालक इसे साम्प्रदायिक झगड़ों से अलग रखकर सभी संस्कृत प्रेमियों का प्रेमपात्र बनाना चाहते हैं तो उन्हें सम्मेलन को ऋषिकुल के साथ ही बांधे रखना चाहिये। जब तक यह सम्मेलन ऋषिकुल के उत्सव का पुछल्ला है तब तक हज़ार यत्न करने पर भी दूसरे सम्प्रदाय और जाति के संस्कृत प्रेमियों के मिलने की आशा नहीं है। हमारी सम्मति में इस सम्मेलन का अगला अधिवेशन किसी और स्थान में होना चाहिये और वहीं इसके नियम भी निश्चित होने चाहिये। इस बार सम्मेलन के सभापति कलकत्ते के श्रीयुत सतीशचन्द्र विद्याभूषण होंगे ऐसे उदार और विद्वान सभापति से हमें पूरी आशा है कि वे सम्मेलन की आगामिनी स्थिरता का कोई अच्छा मार्ग निश्चित कर जावेंगे।

विहार में संस्कृत विद्यालय—विहार को बङ्गाल से अलग होकर नया प्रान्त बने अभी थोड़े ही दिन हुए हैं पर उन्नति के मार्ग पर वह बड़ी शीघ्रता से डग बढ़ा रहा है। अलग होते ही विहार को कानून सभा और प्रबन्ध सभा मिली; शीघ्र ही वहां विश्व विद्यालय बनेगा और उस के साथ संस्कृत उन्नति के लिये संस्कृत परिषद् होगी। संस्कृत शिक्षा का विचार करने के लिये जो कमेटी नियत कीगई थी, उसने इस विषय में अपनी सम्मति प्रकट करदी है। कमेटी ने विहार और उड़ीसा के लिये एक संस्कृत परिषद् बनाने की सलाह दी है जिसके दो भाग होंगे। एक संस्कृत सभा और दूसरी संस्कृत समिति। संस्कृत सभा के २०० सभ्य होंगे। यह सभा पण्डितों को इकट्ठा करके संस्कृत शिक्षा और तद्विषयक खोज पर विचार किया करेगी। संस्कृत समिति का काम संस्कृत की परीक्षा लेना और पारितोषिक तथा छात्र वृत्तियां देना होगा। चार सहायकों सहित एक संस्कृतशिक्षानिरीक्षक नियत होगा। मुज़फ़्फ़रपुर और पुरी में संस्कृत के दो महाविद्यालय होंगे। कमेटी ने संस्कृत की पुरानी पुस्तकों की खोज के लिये २००० वार्षिक देने की भी सम्मति दी है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस में आश्चर्य क्या है ?—संजीवनी दासी के मामले पर कई लोगों को आश्चर्य हुआ है, पर हमें किसी आश्चर्य का कारण प्रतीत नहीं होता। सञ्जीवनी दासी कलकत्ते की रहने वाली एक पर्दानशीन महिला थी। छोटी अदालत की आज्ञानुसार एक योरोपियन बेलिफ, जिसका नाम मैरिडिथ था सञ्जीवनी दासी को उस के घर से निकालने आया। सञ्जीवनी दासी का कथन है कि गोरे कर्मचारी ने शराब पी रक्खी थी और नशे में उसने मुझे बाहर घसीटा और मुझे बूट से ठोकर दी। मेरिडिथ पर अभियोग चला। छोटी अदालत ने उसे छोड़ दिया; हाई कोर्ट में अपील करने पर प्रैज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के पास अभियोग गया। अभियोग में यह बात प्रमाणित करदी गई कि अभियुक्त ने सञ्जीवनी को घसीटा और ठोकर लगाई। अभियुक्त की ओर से इतना ही कहागया कि सञ्जीवनी गिर पड़ी थी, उसे मैंने बूट से उठाना चाहा था। शायद हाथ से सञ्जीवनी दासीको उठाने में अभियुक्त गोरे को अपने हाथ के अपवित्र होने की आशंका थी। इन सब बातों को देखकर मैजिस्ट्रेट ने अभियुक्त पर केवल ५० रुपया जुर्माना किया। वह भी इतना भारीसमझा गया कि अभियुक्त को ५० रुपये भरने के लिये एक सप्ताह का अवकाश दियागया। अब हम पूछते हैं कि इसमें आश्चर्य्य की कौनसी बात है। यह सच है कि संजीवनी दासी एक पर्दानशीन महिला थी और उसे बाहिर घसीट करऔरबूट की ठोकर मारकर मैरिडिथ ने घोर अपमान किया था; पर संजीवनी दासी हिन्दुस्तान की रहने वाली थी और ठोकर मारने वाला गोरा था। क्या किसी गोरे की ठोकर से काले का अपमान होसक्ता है ? ऐसी घटनाओं को प्रतिदिन सुनते सुनते अब हम आश्चर्य्य करना भूलगएहैं।

महाशय से मियां धर्मपाल—पिछले दो तीन वर्षों में धर्मपाल ने अपना इतना घृणित रूप प्रकट किया था कि हमने उसका ज़िक्र करके कभी अपनी लेखनी को कलंकित करना नहीं चाहा। एक समय था जब धर्मपाल की आर्यसमाज में प्रतिष्ठा थी, उस समय वह अपने लेखों द्वारा आर्यसमाज में विष फैला सकता था। उस समय प्रचारक ने उसके विषैले प्रभाव को दूर करने के लिये पूरा प्रयत्न किया था। परन्तु जबसे आर्यसमाजियों ने इस बहरूपिये के असली रूप को समझ लिया तब से हमें भी कुछ लिखने की आवश्यकता प्रतीत न हुई। इस अवसर में उसने कई रंग बदले। कभी वह नैशनलिस्ट बना, कभी सिक्खों के दल में सम्मिलित हुआ, और कभी आर्यसमाज की एक मनघड़न्त पार्टी का लीडर बना। अब वह अपने आपको स्पष्ट रीति से मुसलमान कहता है। उसने लुधियान से "अलमुसलिम" नामी पत्र के निकलने की घोषणा दी है जिसमें वह आर्य समाजियों को मुक्ति के लिये मुसलमान बनने की प्रेरणा करताहै। हमें इस टकापंथी दुराचारीसे कोई प्रयोजन नहीं पर हम सरकार से पूछना चाहते हैं कि क्या वह अब भी मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट में से तीसरी पार्टी की चर्चा को निकाल डालने का न्याय न दिखलाएगी।

तिलक महाराज की रिहाई—मुम्बई से साँझ वर्तमान नाम का एक समाचार पत्र निकलता है उसने हाल ही में एक समाचार सुनाया है जिसे सारे देश में उत्सुकता के साथ सुना गया है सहयोगी लिखता है कि आगामि जून तिलक महाराज ६ वर्ष की काट कर मांडले जेल से रहा होंगे। १८९७ ई० में जब तिलक महाराज को कारागार में रहना पड़ा उन्होंने अपना समय व्यर्थ न खोकर वेदों के विषय में एक अद्वितीय पुस्तक लिखी थी। कुछ दिन हुए सुना था कि इस वार आपने गीता का भाष्य किया है। आपने कोई न कोई और भी उपयोगी पुस्तक बनाई होगी। किन ही कारणों से ही सारा देश बड़े औत्सुक्य से आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

एक और बंगाली लड़की का आत्म घात—यह सुनकर कि बंगाली लड़कियों में आत्म घात की प्रथा बढ़ती जाती है किसका हृदय विदीर्ण न होगा। अभी एक और हृदय वेधक आत्म घात की सूचना मिली है। घटना इस प्रकार है सरजू वाला एक प्रतिष्ठित वैद्य कील. ड़की थी। दो मास हुए जी. एन. राय चौधरी के इकलौते बेटे को सैयद पुर में ब्याही गई थी। चौधरी महाशय सैयदपुर में स्टेशन पर सुपरिन्टेन्डेंट हैं। इन के सारे कुटुम्ब को चेचक निकल आई थी जिससे और तो सब अच्छे होगए इस लड़की के पति का देहान्त होगया, ६ दिन पीछे सारे ग्राम के लोग यह सुनकर चकित होगए कि लड़की ने अपने सारे बदन पर कपड़े लपेट तेल डाल दियासलाई दिखा दी है उसको बचाने का यत्न किया गया गया परन्तु व्यर्थ था अगले दिन छ बजे लड़की का देहान्त होगया। स्त्रियों की यह अवस्था बड़ी शोचनीय है। परमात्मा ही रक्षा करने वाले हैं।

साठ वर्ष के बूढ़े का विवाह—कृष्णगढ़ से सूचना मिली है कि वहां के एक ६० वर्ष के बूढ़े प्रोफेसर रक्खल राज विसवास एम. ए. ने बाबू रत्नलाल सरकार की कन्या श्रीमती निर्मल बाला दासी से विवाह किया बरात में बड़े २ सुशिक्षित वकील बैरिस्टर लगभग २००० के मौजूद थे। रक्खल बाबू के पहली स्त्री से एक लड़का और तीन लड़कियां हैं। आपने १६०००) रु नकद और १५०००) रु० के प्रामेसरी नोट कन्या के नाम किये।

देहली में शोक—आज ता० २९ मई को देहली के सारे स्कूल कालेज अचानक बंद हैं कारण यह कि राय बहादुर श्रीमान् मा० प्यारे लाल साहब का देहांत होगया। आप आयु और शरीर से वृद्ध परन्तु भावों में युवा थे। चिरकाल तक पंजाब में स्कूल इन्स्पेक्टर रहे। आपका विस्तृत परिवार है। आप पेन्शन पाते थे। क्षत्री जाति बल्कि सारी दिल्ली के विद्या प्रधान पुरुष माने जाते थे। आपकी संक्षिप्त जीवनी अगली बार दी जावेगी।

मंदिर में अत्याचार—सुना जाता है कि सायंकाल को आरती होचुकी थी एक १६ वर्ष की लड़की ने मन्दिर में जाकर पुजारी से चरणामृत माँगा पुजारी ने मंदिर में उसके साथ अत्याचार किया लड़की चिल्लाई उसकी मा दौड़ी आई और पुजारीकी चोटी पकड़ बाहर खींच कर जूते बे शुमार मारे सुना जाता है ये दोनों मा बेटी बेवा हैं और पुजारी की मा से दोस्ती है क्या अब भी हिंदू भाई नहीं चेतेंगे। (प्रेम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतीय युवकों में उसके उत्पादन के कार्य योग्य परामर्श, और विशेष कर प्रेम, सत्य, पहरावा, पथ्य, द्रव्य और स्वास्थ का उसपर प्रभाव।

नन्दराम वैश्य बी. ए. आनरेरी मंत्री
वैश्य यङ्ग मैन्स ऐसोसिएशन, मेरठ

ओ३म्

सत्यार्थप्रकाश परीक्षा

१—इस परीक्षा का नाम सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा होगा

२—यह परीक्षा प्रतिवर्ष ऋषि उत्सव अर्थात् दीपावली पर हुआ करेगी, और इस परीक्षा में देवियाँ भी सम्मिलित हो सकेंगी

३—साधारण रूप से परीक्षा का स्थान "गुरुकुल वृन्दावन" होगा परन्तु आस पास के कम से कम १० विद्यार्थियों के निवेदन करने पर परीक्षा का केन्द्र उनकी सुविधा के अनुसार नियत किया जा सकेगा।

४—परीक्षा समस्त "सत्यार्थप्रकाश" और "वैदिक वैजन्ती" इन दो पुस्तकों में होगी

५—प्रत्येक परीक्षा दाता को उत्तीर्ण होने के लिये न्यूनात न्यून एक तिहाई परीक्षांक प्राप्त करने होंगे

६—जो विद्यार्थी सर्वोच्च रहेगा उसे श्रीमती आ०प्र० नि० सभा की ओर से सम्मानार्थ प्रमाण पत्र के अतिरिक्त रजत पदक प्रदान किया जाया करेगा।

७—परीक्षा सम्बन्धी व्ययों के निवारणार्थ प्रत्येक विद्यार्थी को २) परीक्षा शुल्क नीचे छपे फ़ार्म के साथ कृष्ण जन्माष्टमी तक भेज देना होगा।

८—परीक्षा के निर्दिष्ट और सुविधेय स्थान की सूचना प्रत्येक विद्यार्थी को सभा के मंत्री द्वारा १५ दिवस पूर्व मिल जाया करेगी।

९—परीक्षा के दो पर्चे होंगे

१ समस्त सत्यार्थ प्रकाश १२५ अङ्क
२ सभा और समाजों का संगठन तथा श्री मती सभा के निश्चयादि १०० अङ्क

१०—इन के अतिरिक्त २५ अङ्क सुन्दर और शुद्ध लेख के वास्ते दिये जाया करेंगे।

११—परीक्षा परिणाम सभा के मुख पत्र (organ) "आर्य्य मित्र" में प्रकाशित हुआ करेंगे

१२—जो विद्यार्थी ६० प्रति सैकड़ा व इस से अधिक परीक्षा प्राप्त करेंगे वे प्रथम और ५० करने पर द्वितीय तथा इस से कम होने पर तृतीय कोटि में रक्खे जावेंगे।

मदनमोहन, मंत्री बुलंदशहर

---

७००) रूपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ़ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रूपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिदेंषभाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡)
ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥)
गीता हमें क्या सिखलाती है ॥)
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ॥)
उपदेश मञ्जक ॥)
प्रार्थना पुस्तक ॥)
ओंकार की उपासना ॥)

२००) रूपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रूपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ॥)
वेद और महाभारत के उपदेश ॥)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ॥)
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गर्मी में गृहस्थको दो चीज अवश्य रखना चाहिये।

असल अर्क कपूर (गौमुखी)

हैजे की अनमोल दवा! कहीं हैजा फैला होवे तो रोज २-४ बून्द अर्क कपूर खाने से फिर हैजा होने का डर न होगा।

हैजा शुरू होते ही अर्क कपूर पिलाने से यह अपना गुण दिखलाता है; दस्त वो के थोड़े ही देर में बन्द होती है, ऐंठन मिट जाती है, हाथ वो पैरों में गर्मी आती है और रोगी को नींद पड़ जाती है।

वख्त पर हैजे से बचाने वाली दवा असल अर्क कपूर ही है। शुरू होते ही यह अर्क दिया जावे तो सौ में नब्बे आदमी बचते हैं।

मोल।) आने शीशी। डाः मः १से४ शी।-) आने

अर्क पूदीना (सब्ज)

विलायती पूदीने की हरी पत्तियों से यह अर्क बना है।

इसका रंग पत्ती ऐसा हरा है। और खुशबू भी ताजी पत्तियों की ऐसी है। यह अर्क डाः बर्मन की सम्मति से विलायत के एक प्रसिद्ध दवा फरोशने बनाया है।

बादीके लिये यह विशेष लाभकारी दवा है। पेट फूलना डकार आना पेट में दर्द अजीर्ण जी मिचलना, भूख का कम होना आदि बादीके लक्षण इससे शीघ्र ही मिटते हैं

मोल १ शीशी ॥) आने डाः मः।-) पांच आ०

सब जगह हमारे एजेन्ट और दवा फरोशों के पास मिलेंगी अथवा—

डाः एस. के. बर्मन ५, ६, नारायण दत्त श्रेष्ठ, कलकत्ता।

नं० ५८

एजेंटः—बाबुराम जैनी कूँचा सेठ दिल्ली।

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानून दर्पण।

इस एकही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिनसे हर मनुष्यको पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाबता दीवानी, व फौजदारी, सियाद समाअत आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, रहमोइब्दी, तम्बाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल लासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बातर पर वकील मुखत्यारों को खुशामद व पया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को ढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार बगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ छने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय मिडिल पास लयाकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १)

कमिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

विकासवाद

या

इवोल्यूशन थ्यूरी

प्रो० वि० ग० साठे एम० ए० गुरुकुल काँगड़ी

कृत

विकासवाद सारे विज्ञान का आधार है। आजकल विकासवाद से अनभिज्ञ रहना अनपढ़ होने का चिन्ह समझा जाता है। तो लीजिये, ये पुस्तक पढ़िये। पत्रों और विद्वानों ने मुक्त कंठ से इस पुस्तक की प्रशंसा की है इस में २६ हाफ़टोन चित्र हैं। मूल्य केवल २)

प्रबन्धकर्ता

सद्धर्म प्रचारक पत्र, देहली

आवश्यकता।

एक कुमार आर्य अग्रवाल वैश्य उम्र २० साल के विवाह के लिये जो इन्टरैन्स किलास में पढ़ता है एक लिखी पढ़ी आर्य कन्या अग्रवाल वैश्य उम्र १३ वर्ष के विवाह के वास्ते १ योग्य आर्य्यवर की जरूरत है गोत्र दोनों का शैगल है।

ब्रज भूषण लाल मैनेजर

आर्य्यकन्या पाठशाला अमरोहा

जिला मुरादाबाद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तलाश नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

कफ	अतिसार	सर्दीकाबुखार
दमा	आंवलोहू	जी मिचलाना
खांसी	संग्रहणी	बच्चोंकेहरेपीलेदस्त
हैजा	के होना	शरीर का दर्द
शूल	पेटकादर्द	कुकरखांसी

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट सुगंधित दवा है मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ २३ वर्ष का आजमाया हुआ

दद्रुगज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—श्रीनाथ शर्मा मालिक, सुख संचारक कम्पनी मथुरा

'वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर कीहै, जो बुद्धिमती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदातृ शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो क्वारा हृष्ट पुष्ट २५ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थाप्पर

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब लाहौर

सस्ता और मज़बूत

Telegraphic,address founders Aligarh

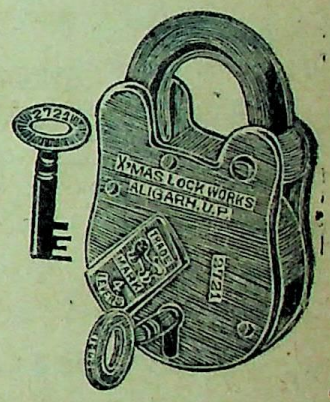

४ लीवर का ज़स्ती कलईदार लोहे का ताला इस्तेमाल करो।

मूल्य

डेढ़ इंच का ९) दरजन

दो इंच का १२) दरजन

ढाई इंच का १३॥) दरजन

तीन इंच का १६॥) दरजन

(१) १००) के खरीदार को १२।।) सैकड़ा और ५०) के को ६।) सैकड़ा और २५) के को ३=) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा कम पर नहीं।

(२ आधी दरजन से कम माल नहीं भेजा जावेगा।

(३) और किस्म के तालों के लिये सूचीपत्र मंगाइये।

(४ असली माल पर शेर, का मार्का देख लीजिये।

दी कृसमिस लोक वर्क्स सुलतानी सराय

अलीगढ़ सिटी।

बचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ान का साबुन-बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता-

शर्मनऐंड कं. सतघड़ामथुरा

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द जि० आरा

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≡) आने।

आर्य्य, औषधालय, रूस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूल्य रत्न है॥ **ब्राह्मीबूटीबटिका** मौका नचूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी बटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी बटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है रुपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी बाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिबर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजित। विषशोथज्वर हरी मैधायुबलवबाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ और छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—(शुद्ध व असली) की तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० की तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) की तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें स्वस्थ व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेवें।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

१०००) एकहज़ार रुपये की

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालेंदीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक इन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९१४ पृष्ठ चौदह जिल्दमें एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)- ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

वाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंगलिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद यू. पी

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के गुरुकुल-प्रचारक पुस्तकालय हरद्वार में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

अस्मिन्

Rgisetered No L. 807.

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२८ ज्येष्ठ सं० १९७१ वि० | दयानन्दाब्द ३१ | ता० ६ जून १९१४

संख्या ८
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)– प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य ॥) पुस्तकालय

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक ≡) प्र० ,
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सक्ता।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़पत्र आध तोले तक २)
एक तोले तक १५)

विशेष बात चीत प्रबन्धकर्ता से कीजिये।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र–देहली,

गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी
डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री
धावन लाहौरी टोला-बनारससिटी

हारमोनियम शिक्षक

अर्थात् विना गुरु के बाजा सिखाने वाला टीचर, यदि आप थोड़ेही समय में सरगम व गाना सहित हारमोनियम बजाना सीखने के इच्छुक हैं तो सुन्दर जिल्द बंधी हुई पुस्तक के दोनों भाग मंगाइये मूल्य।)डा० =) पीतलके ओ३म् व नमस्ते फ़ी दर्जन।।।) डा० म० अलग

पताः—बाबूख्यालीराम एण्डको
अलीगढ़ सिटी.

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च =) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़
(१२५ यू० पी०)

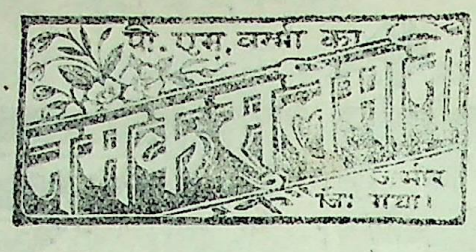

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का बिकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५

मिलने का पताः—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया

बूँटीसे पारेकी निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे की शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधू ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनीं मंगावें।

घर बैठे गँगाजल

यदि आप अपने घर बैठे ही हरिद्वार के हंसोदक शुद्ध गंगाजल को प्राप्त करना चाहें तो हमें लिखें एक कनस्टर नील धाराके बीस सेर जलकी न्योछावर १) है मार्ग व्यय मंगाने वालों के जुम्मे होगा।

पताः
मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कँपनी
हरद्वार।

पुष्टराज चूर्ण।

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है। मूल्य २॥) डिब्बी डा: म: माफ।

पता—बी.एल.बूबनाएण्डको०
दिल्ली नं० ३

एजन्टोंकीआवश्यकता

हाथरस के असली पक्के चाकू पसंद नहीं तो वापिस विलायती चाकुओं से अच्छे सस्ते और मज़बूत हैं ल० बेंट ।।।। -) -)। =) =)।। ≡)।।। चं० बेंट -) -)।। =) =)।। ≡)।। -) घडी का =) उस्तरा ।=) पताः

पता—भारतहितकारी कार्याललय न०७
हाथरस सिटी।

क्या आपने हिंदी का नया साप्ताहिक पत्र "प्रताप" देखा है?

"प्रताप" राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक, प्रश्नों पर स्वतन्त्रता और निर्भीकता से अपनी सम्मति प्रकट करता है। उसका आकार रायल क्वाटों १६ पेज और वार्षिक मूल्य २॥) रु है।

यदि आपने "प्रताप" न देखा हो तो कृपया एक प्रति नमूने की मंगाकर देखिए।

सभी हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रों ने उसकी प्रशंसा की है।

मेनेजर 'प्रताप' कानपुर

आवश्यकता।

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ठट्ठासिंध के लिये एक योग्य अधिष्ठात्री की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा पत्र व्योहार निम्नलिखित पते पर करें।

नरसिंहलाल
प्रबन्धकर्त्ता
कन्या ब्रह्मचर्याश्रम, ठट्ठा, (सिन्ध)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जेबी पान दान

यह पान दान नये ढंग पर बनवाये हैं समस्त पान दान पीतल का सुंदर जिले दार है इसमें १५-२० पान अच्छी तरह रक्खे जा सकते हैं चूना कत्था सुपारी पान चारों चीज़ अलहदे २ रक्खी रहती हैं चाहे जहां जाइये जेब से निकाल कर ताज़ी पान लगाकर आनन्द से खाइये एक बार मंगा कर तो देखिये आपके मित्र छीनते हैं या नहीं मूल्य १।) डाः मः ।)

१२ वर्ष की गारन्टी का फैशने विल, पक्का सरौता

यह सरौता फौलाद आदि मज़बूत जात के लोहे से बिना जोड़ का बना हुआ है सुपारी की तो बात ही क्या यदि किसी धातु को भी काटोगे तो मुंह न मोड़ेगा शौकीन व कदरदान स्त्री पुरुषों को एक बार मंगाकर परीक्षा ज़रूर करनी चाहिये मूल्य ।≡) डाः मः चार तक ।)

तार सीखने की डैमी

सुंदर मज़बूत नये फिशन की जिसकी आवाज़ दफ्तरों की आवाज़ से मिलती जुलती है मूल्य १।) डाः मः ।=)

बिजली का तावीज़

यानि बच्चों के गले में डालने का लाकिट, जगत्प्रसिद्ध चीज है मूल्य ॥।) डांक. ।)

बिना ताली का ताला

हर्फों के मिलाने से लगता खुलता है मूल्य ॥।) डांक. ।)

इनके सिवाय अलीगढ़ के लोहे व पीतल के ताले मुहर चपरास साबुन के सांचे वगैरह समान भी उचित मूल्य में हमारे यहां मिल सकता है।

पता—दी इण्डिन ट्रेडिङ्ग कम्पनी नं० १
अलीगढ़ सीटी

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उनके श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥।)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिदेंष भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡)
ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।-)
प्रार्थना पुस्तक -)
ओंकार की उपासना -)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश -)
वेद और महाभारत के उपदेश -)
वेद, मनु और गीता के उपदेश -)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द वाच

मूल्य केवल

५॥)

रुपया

गारन्टी ५ साल

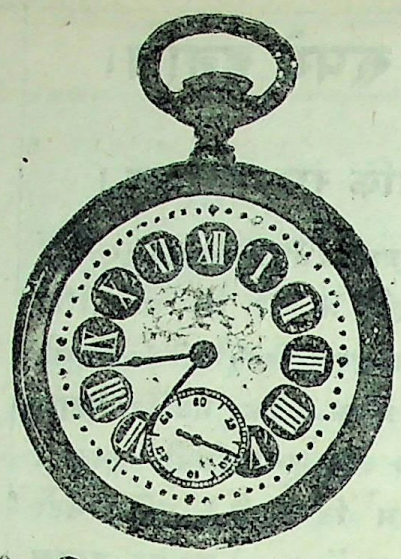

श्री महात्मा मुंशीराम धर्मवीर पंडित लेखराम, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन हमने उक्त नाम की घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलात से बनवाकर मगाई है जिस में मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय, हर घड़ी ढ बाद में एक बार और एक मिनट मुफ्त जल्दी की जिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछतावो हड़ेगा—

इस के अलावे हमारे यहाँ हर तरह की घड़ियां बहुत सस्ते दामों पर मिलती हैं सिस्टम रासकोप मूल्य ३) रुपे रेलवेरेगूलेटर मूल्य ४) रुपये, बाजा बजाने वाली टायम पीस मूल्य ४॥) रुपये—

पता—दी स्वाज़रलैंड, वाच कम्पनी हाथरस नँ० ४

(२४५)

हाथरस के नये फैशन के कमानीदार पक्के चाकू व लीवर ताले

एजेंटों की आवश्यकता

यह स्वदेशी चाकू विलायती चाकुओं से सुन्दर और सस्ते हैं

चन्दन का मूठ कमानी दार

॥=) |≡) =) ।)

लकड़ी मूठ कमानी दार

॥) |=) ।) ≡) ॥=)

जर्मनी फैशन चन्दन |=) लकड़ी ।) स्याह मूंठ |=) ।) चन्दन मूठ सादा |=)) ≡) =)) ॥=) लकड़ी मूठ सादा |=) ।) ≡) =)। =)) ॥ हाथीदांत कमानीदार ॥=) ॥) ≡) =) दो फला ॥) चन्दन दोफला ॥=) ।) शिकारी छुरी १) ॥) पीतल मूठ चाकू ॥। |=) नये फैशन लोहे व पीतल के खरौंते ॥) ॥=) ॥) |=) पवित्र सुगन्धित बढ़िया हींग १०) ८) ६) रुपये सेर देशी सून के रंगीन धारी गमदे |=) ।) ≡) =)

पता-स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

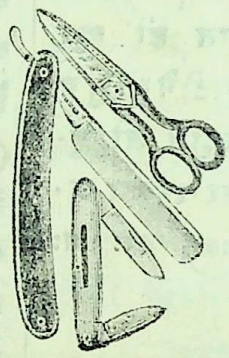

दूसरी चाबी से न खुलने वाले लीवर दार ये हैवत ताले मूल्य

॥) ॥) =) इञ्च सादा |=) ।) इञ्च पीतल लीवरदार १) ॥) ॥) इञ्च सादा |=) ।) ≡) इञ्च विलायती फैशन के देशी उस्तरे ।) |=)) बाल काटने की कैंची १) ॥) कपड़ा काटने की मज़बूत कैंची ॥) ॥=) ॥)

(२४५)

अद्भुत ताक़त की दवा

यह उन्हीं लोगों के लिये बनाई गई है जो सब प्रकार से निराश हो बैठेहों शरीर की निर्बलता सर दुखना आंखों में अन्धेरा आना जवानों में बुढ़ापे की दशा का होना लड़कपन कुक्रियाओं से उत्पन्न अनेक रोगों की यह अव्यर्थ दवा है। इस के सेवन से शरीर निरोग और सुदृढ होकर चहरे पर रौनक आती है यह अद्भुत दवा जादू का सा काम करके दिखलाती है। मूल्य ४० गोलियों की शिशी का ८) डाक व्यय माफ़

प्रदर हर गोलियाँ

बेचारी स्त्रियां इस रोग को चुपचाप सहन करके शरीर को गला लेती हैं उन का गुलाब जैसा रंग बात की बात में पीला पड़ जाता है शरीर में दर्द पैदा होजाता है मासिक धर्म ठीक समय पर नहीं होता एवम् कृपयुत होता है ऐसी दुखिया अवलाओं के हेतु ही "प्रदरहर" तयार की गई है इस के सेवन से उपरोक्त सब रोग नष्ट होते हैं और शरीर सब प्रकार के सुख भोगने योग्य बनजाता है मूल्य ४० गोलियों का ॥) डाक व्यय माफ

दाद की दवा

प्रशंसा करना व्यर्थ है एक बार मंगाकर नये पुराने चाहे जैसे दाद को जड़ से खोदो मूल्य की शिशी |=)

खाज की दवा

इस दुखदाई रोग से छुटी जाना है तो इस दवा को बिना विलम्ब सेवन करो मूल्य ॥)

हिंग्वाष्टक चूर्ण

पेट के अनेक रोगों को शान्त करता है भूख बढ़ाता है एवम् पाचन करता है। मूल्य ॥)

तीनों का डाकव्यय अलग

मिलने का पता:—स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

(२४५)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्षमा याचना।

इस वार पाठक देखेंगे कि पृष्ठ संख्या भी कम है और विषयों में भी कमी है। "संसार की गति" और समाचारों का सर्वथा अभाव ही है। इसका कारण आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन है। इस वर्ष गढ़ी ससाना ने अपना प्रतिनिधि बना कर मुझे सभा में जाने की आज्ञा दी। इस आज्ञा का मैं उल्लंघन न कर सका और मुझे सभा के अधिवेशन में जाना पड़ा। बहुत ढूंढ़ने पर भी अभी तक कोई योग्य उपसम्पादक नहीं मिला है जिस पर प्रचारक का भार एक सप्ताह के लिए डाला जासके। आदि से अन्त तक सारे पत्र का सम्पादन मुझे ही करना पड़ता है। इस त्रुटि को दूर करने का यत्न किया जा रहा है। पर इस वार सभा के अधिवेशन में सम्मिलित होने से पृष्ठ संख्या में कमी आगई है। यदि पूरे पृष्ठ दिये जाते तो प्रचारक देरी से निकलता और सभा के समाचार आपके पास शीघ्र न आसकते, जिनके पढ़ने के लिए आप उत्सुक थे, इस लिये समाचारों को शीघ्र पहुंचाने के लिये १६ पृष्ठ ही भेजे जाते हैं, अगले सप्ताह चार पृष्ठों की कमी पूरी कर दी जायगी।

सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन बड़े महत्व की चीज़ है। इसी समय वर्ष भर में एक बार सारे पंजाब की समाजों के प्रतिनिधियों को एकत्रित होने का अवसर मिलता है, इसी समय वे अपनी सभा के अधिकाकारियों का चुनाव करते हैं जिनके हाथ में वर्ष भर सभा की बागडोर रहती है, इसी समय वे अपनी प्रधान संस्थाओं की रिपोर्टें सुनते हैं, उनकी आय व्यय की पड़ताल करते हैं और उनकी बढ़ती हुई आवश्यकताओं पर विचार करते हैं। सभा के अधिकारियों का चुनाव प्रति वर्ष होता है पर समाजों के प्रतिनिधियों का चुनाव तीसरे वर्ष होता है। १९१० की समाप्ति के साथ तीन वर्षों के पहिले प्रतिनिधियों की अवधि समाप्त होगई थी। इस वर्ष नए प्रतिनिधियों का चुनाव था, इस लिये इस वर्ष का वार्षिक अधिवेशन और भी महत्व का था।

लाहौर समाज का झगड़ा।

सभा का अधिवेशन ३०, ३१ मई १९१४ को सभा के कार्यालय में हुआ। अधिवेशन का समय १० बजे से दिया गया था। परन्तु प्रातःकाल अंतरंग सभा में अधिक देरी होजाने के कारण प्रतिनिधि सभा १२ बजे से पहिले आरम्भ न हो सकी। अधिवेशन का कमरा ११ बजे से ही भरने लगा। नया चुनाव होने के कारण कई पुराने प्रतिनिधियों का अदर्शन और कई नए प्रतिनिधियों के दर्शन हुए। जो प्रतिनिधि इस वर्ष सभा में नहीं आसके उन में से पं० रामभजदत्त चौधरी डा० परमानन्द, ला० शिवदयाल एम० ए० ला० बद्रीदास, ला० कर्मचन्द आदि सज्जन विशेष ध्यान देने योग्य हैं। पिछले दो सज्जनों का सभा में न भेजे जाने का कारण केवल समाजों का आलस्य ही प्रतीत होता है। गत वर्ष ला० बद्रीदास एम. ए. गोजरा के और ला० कर्मचन्द बी. ए. टोबाटेकसिंह के प्रतिनिधि थे। इस वर्ष गोजरा के प्रतिनिधि रोशनलाल हैं और टोबाटेकसिंह का कोई प्रतिनिधि नहीं है। हमें आशा है कि शीघ्र ही कोई समाज इन दोनों सज्जनों को प्रतिनिधि बनाकर भेजेंगे। पहिले तीन सज्जन पिछले वर्ष लाहौर समाज के प्रतिनिधि थे। येही तीन सज्जन नहीं किन्तु इस वर्ष लाहौर समाज का एक भी प्रतिनिधि आ नहीं सका है। जो लाहौर के पांच सज्जन प्रतिनिधि सभा में गए हैं वे बाहिर की समाजों के प्रतिनिधि हैं। इस का कारण लाहौर समाज का वह झगड़ा जो गत कई महीनों से सारे आर्यसमाज की बदनामी का कारण बन रहा है। एक अधिवेशन में लाहौर समाज ने १३ प्रतिनिधि चुने थे। इस चुनाव को एक दल नियमानुकूल और दूसरा नियम विरुद्ध समझता है। इसी झगड़े के कारण समाज के प्रधान तथा मन्त्री ने फार्मों पर हस्ताक्षर नहीं किए। सभा के अधिवेशन के पहिले क्षण तक इस झगड़े को सुलझाने का प्रयत्न किया गया पर वह सब निरर्थक गया। लाहौर समाज की ओर से यह प्रार्थना भी की गई थी कि हमारे प्रतिनिधियों के चुनाव तक सभा का अधिवेशन मुल्तवी रहे। इस प्रार्थना को करने के लिए स्वयं पं० रामभजदत्त चौधरी आए थे। पर सभा ने इस प्रार्थना को अस्वीकार किया। बाहिर की समाजों के कई प्रतिनिधियों ने स्पष्ट रीति से कहा कि जो लाहौर सारे आर्यसमाज की बदनामी का कारण हो रही है उसे अपने झगड़ों का फल मिलना चाहिये। लाहौर की समाज प्रतिनिधि सभा नहीं है कि उसके लिए बाहिर के आए हुए प्रतिनिधि बैरंग लौट जांय। इसका कुछ और परिणाम हो या न हो, लाहौर समाज के सभासदों ने यह अवश्य ही समझ लिया होगा कि बाहिर की समाजें उनके झगड़ों को किस दृष्टि से देखती हैं।

प्रतिनिधि

३० मई तक ६९ समाजों ने ८१ प्रतिनिधि भेजे। पंजाब में समाजों और उनके सभासदों को देखकर कहना पड़ता है कि यह संख्या बहुत ही थोड़ी है। पिछले चुनाव की अपेक्षा प्रतिनिधियों की संख्या में एक की वृद्धि हुई है पर साथ ही स्मरण रखना चाहिये कि १९११ में प्रतिनिधि भेजने वाली समाजों की संख्या ६८ थी। इस वर्ष यद्यपि प्रतिनिधि भेजने वाली चार समाजें बढ़ गई हैं पर प्रतिनिधि एक ही बढ़ा है। १९१३ में प्रतिनिधियों की संख्या १०७ और प्रतिनिधि भेजने वाली समाजों की संख्या ८१ थी। अर्थात् अभी तक १२ समाजों ने अपने प्रति निधि भेजने की पर्वा नहीं की। इस वर्ष प्रतिनिधियों की संख्या थोड़ी होने के कारण आशा थी कि दो तिहाई कोरम हो सकेगा और कई आ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वश्यक प्रस्ताव जो कोरम न होने के कारण कई वर्षों से रुके पड़े हैं, प्रस्तुत किए जा सकेंगे, परन्तु खेद है कि ८७ प्रतिनिधियों में से ५४ से अधिक उपस्थित न हुए। समाजों और प्रतिनिधियों की इस उदासीनता को देख कर आश्चर्य और खेद दोनों होते हैं। इस वर्ष नए प्रतिनिधियों में ला० अछूराम बीए० एल एल० बी०, पं० निहाल चन्द (रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर) पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार, ब्र० इन्द्र वेदालंकार आदि के नाम थे।

अधिकारियों का चुनाव

अधिकारियों और अन्तरंगसभा के सभ्यों का निम्न लिखित चुनाव हुआः—प्रधान—ला० रामकृष्ण वकील; उप प्रधान—राय रोशनलाल बैरिस्टर, ला० केदारनाथ थापर, राय मक्खन लाल; मन्त्री—म० कृष्ण सम्पादक "प्रकाश" कोषाध्यक्ष—पं० विश्वम्भर नाथ वकील पुस्तकालयाध्यक्ष—पं० विष्णुदत्त वकील सोगा। अन्तरंग सभा के सभासदः—७ अधिकारी, (८) महात्मा मुन्शीरामः—(९) ला० उमराव सिंहः (१०) पंडित रामदेव (११) पं० निहाल छन्द (१२) प्रो० बालकृष्ण एम० ए (१३) पं० गंगा राम (शिमला) (१४) पं० जगन्नाथ निरुक्त रत्न (१५) डा० सत्यपाल बी० ए० एम० बी०:—(१६) पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकारः—(१७) ब्र० इन्द्र वेदालंकारः—(१८) ला० काशीराम लाहौर (१९) म० धर्मचन्द्र बी० ए० एल० एल बी० (२०) म० वज़ीरचन्द्र बी० ए० एलएल० बी० (२१) ला० गंगा राम बीए एलएल० बी० स्यालकोट। अधिकारियों में इस वर्ष सब से बड़ा परिवर्तन मन्त्री का है इस वर्ष म० कृष्ण ला० केदार नाथ जी की जगह मन्त्री हुए हैं। ला० केदारनाथ थापर ने बड़े वर्षों तक लगातार मन्त्री रहकर सभा की बड़ी सेवा की है। वे उन पुराने आर्य समाजियों में से हैं जिन्होंने महा० मुन्शीरामजी के साथ प्रतिनिधि सभा की नींव डाली थी। तभी से वे सभा के अनन्य सेवकों में से रहे हैं उनके हाथों में रहकर सभा ने बहुत उन्नति की है। कई वर्षों के लगातार मन्त्रित्व के पीछे और कार्यों में अधिक व्यापृत नहोने के कारण उन्होंने अब इस पद को छोड़ दिया है। उनके स्थान में म० कृष्ण प्रतिनिधि सभा के मन्त्री हुए हैं। यदि इस समय आर्य समाज के विशाल क्षेत्र पर निष्पक्षपात दृष्टि डाली जाय तो युवक सन्तति में से म० कृष्ण से बढ़कर मन्त्री पद के योग्य सज्जन मिलना कठिन था। म० कृष्ण गत दस बारह वर्षों से आर्य समाज की जो सेवा कर रहे हैं वे किसी से छिपी नहीं हैं। म० कृष्ण आर्य समाज के सच्चे हित चिन्तक हैं, और लाहौर में रहने के कारण सभा के प्रत्येक कल और पुर्ज़े से परिचित हैं। यह काम उनके लिये कोई नया भी नहीं है। म० कृष्ण कई वर्षों तक सभा के सहायक मन्त्री रह चुके हैं; पिछले दो वर्षों से तो वस्तुतः म० कृष्ण ही मन्त्री का कार्य करते हैं, इस बात को स्वयं ला० केदारनाथ जी ने सभा में कहा था। सभा के मन्त्री के लिये समाजों से परिचित होना अत्यन्त आवश्यक है और म० कृष्ण समाजों के उत्सवों में जाने के कारण परिचित हो चुके हैं। म० कृष्ण एक विशेष दल के नेता समझे जाते हैं जो "प्रकाश पार्टी" के नाम से विख्यात हो रही है। इसी लिये कई लोगों की इस चुनाव के औचित्य पर सन्देह है। पर हमें म० कृष्ण की योग्यता और बुद्धिमत्ता पर पूरा भरोसा है। हमें निश्चय है कि ऐसी उत्तरदायिता के स्थान में आकर सभा के नए मन्त्री दल बन्दी से (यदि कोई दल बन्दी है) ऊपर उठेंगे और सभा को आगे से भी अधिक प्रतिष्ठित बलशाली और कर्मशील बनाने का यत्न करेंगे।

वर्ष का बजट

इस समय प्रतिनिधि सभा का जो से वार्षिक अधिवेशन होता है, उसका सब बड़ा उद्देश्य वार्षिक आयव्यय पर विचार करना है। वेद प्रचार और गुरुकुल के बजट ही प्रधान हैं। ३० मई को अधिकारियों के चुनाव होने पर वेद प्रचार का बजट उपस्थित हुआ। वर्ष भर में वेद प्रचार के लिये २४०२६) व्यय करना स्वीकृत हुआ। इसमें ९०००) उपदेशकों का वेतन और ३५००) मार्ग व्यय है। सभा ने इस वर्ष २०००) विदेश प्रचार के लिये स्वीकृत किए हैं। इन २३६५१) के अतिरिक्त २७०००) सभा के कार्यालय बनवाने में लगाया जायगा। लेखराम निधि में कुछ अधिक कहने योग्य बात नहीं है। आर्य मुसाफ़िर पत्र कई वर्षों से घाटे पर चल रहा था। इस वर्ष इसे उड़ा देने या रखने पर विचार हुआ। सभा ने इसे लाहौर में लाकर अधिक उन्नत करने का विचार कर लिया है। इस वर्ष भी पं० विष्णुदत्त ही इसके अधिष्ठाता नियत हुए हैं। ३१ मई को गुरुकुल का बजट पेश हुआ और प्रातःकाल का सारा समय उसी के विचार में व्यय हुआ। इस वर्ष गुरुकुल के लिये १३३४६०) का व्यय स्वीकृत हुआ। इसमें उपदेशक महाविद्यालय का व्यय ५०२०) नया है। वैदिक मैगज़ीन को उन्नत करने के लिये १०००) का घाटा स्वीकृत किया गया है। वैदिक मैगज़ीन इस समय अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों में वैदिक धर्म और गुरुकुल के महत्त्व को फैलाने का सबसे अच्छा साधन है। इसमें यदि कुछ घाटा भी डालना पड़े तो उसमें संकोच करने की आवश्यकता नहीं है। यह देखकर हम बड़े प्रसन्न हुए हैं कि अंग्रेज़ी के साथ साथ देसी चिकित्सा का भी गुरुकुल में प्रबन्ध होगया है; सभा ने उसके लिये १८००) स्वीकृत किया है। इस बात पर विचार करते हुए सभा में सबसे बड़ा प्रश्न जो उपस्थित हुआ वह गु० कु० के बजट की पूर्ति है। गत वर्ष ही स्थिर कोष में से १२०००) निकलवाना पड़ा था। इस वर्ष उत्सव की आय ५२ हज़ार के लगभग थी उसमें से ३१ हज़ार स्थिर कोष के लिये है। शेष ३८ हज़ार ही चलते व्यय में ख़र्च हो सकता है। यदि इसमें पिछले वर्ष का १२ हज़ार मिला दिया जाय तो केवल वर्तमान वर्ष के लिये ही ५० हज़ार रुपया इकट्ठा होना चाहिये। अगले वर्ष के बजट के लिये उत्सव पर इससे अतिरिक्त धन आना चाहिये। इतने धन की राशि कहां से आवे और कौन लावे। हम जानते हैं कि धन के आने की कमी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं है, लेने वालों की कमी है। कई सप्ताह हुए, हमने एक विशाल मंडली के घूमने का प्रस्ताव किया था। वही प्रस्ताव सभा में उपस्थित हुआ। इसके विषय में प्रतिनिधियों की उदासीनता को देखकर हमें अत्यन्त निराश होना पड़ा। मंडली की आवश्यकता को सभी अनुभव करते थे पर उसके लिये अपना अधिक समय देने को कोई भी तय्यार न था। इतनी बड़ी संख्या में बालिकों की यह प्रवृत्ति अत्यन्त शोक दायक है। जिस वीर महात्मा ने गुरुकुल रूपी पौदे को अपने गाढ़े पसीने से सींचा है, अत्यन्त निर्बल और अस्वस्थ होते हुए भी रुपया एकत्रित करने का भार भी उसी को सौंपा गया। जो लोग महात्मा मुन्शीराम जी को कभी कभी देखते हैं वे नहीं जानते कि उनके स्वास्थ की आज कल क्या दशा है। हर्निय रोग उन्हें कई वर्षों से है, इस वर्ष उन्हें एक नये रोग ने आघेरा है जिसे हैमिक्रेनिया या आधे सिर का दर्द कहते हैं। पहिले यह देर में होता था पर पिछले सप्ताहों से इसके आक्रमण शीघ्र शीघ्र होने लगे हैं। इसके साथ बवासीर का भी दौरा शुरू होगया है जो तीन वर्षों से बन्द था। अभी कुछ दिन हुए एक गोड़ में गठिया का दर्द भी होगया था। इस दशा को देख कर हमारा हृदय काँपता है। डाक्टरों ने महात्मा जी को पूरा विश्राम लेने की सलाह दी थी। वे इस वर्ष सभा से विश्राम के लिये छुट्टी लेने के लिये गए थे। सभा ने उन्हें दो वर्ष का अवकाश दिया है पर उन दो वर्षों में धन एकत्रित करने की आज्ञा दी है। इस समय आर्य जनता का जो कर्त्तव्य है, उस पर हम किसी और सप्ताह लिखेंगे। महात्मा जी की जगह प्रो० रामदेव जी गुरुकुल के स्थानापन्न मुख्याधिष्ठाता और आचार्य नियत हुए हैं।

गुरुदत्त भवन

अगला विषय गुरुदत्त भवन था। इस पर बड़ा विवाद हुआ। बात यह है कि गुरुदत्त भवन के लिये जिस चन्दे की आशा थी वह प्राप्त नहीं हुआ पर भवन की दीवारें खड़ी करदी गईं। अन्तरङ्ग सभा ने साधारण सभा की स्वीकृति के बिना ७०००) खर्च कर दिये। अन्तरंग सभा इस खर्च को स्वीकृत कराना चाहती थी। सभा ने इसे स्वीकृत कर लिया है पर साथ ही इस नियम विरुद्ध कार्य वाही पर शोक प्रकट किया है। यह विषय बहुत लम्बा है। इसकी रिपोर्ट अगली बार देने का प्रयत्न करेंगे।

आर्यसमाज में ब्राह्मण।

(२)

पानी के स्त्रोत प्रायः अपना स्थान छोड़ते रहते हैं। आज जहां पानी की धारा बहती है, कल वहां रेतीला किनारा होसकता है, और कुछही दिन बाद सम्भव है, उस स्थान पर लता और वनस्पति शोभायमान हो रहे हों। पानी के स्थान में परिवर्तन होजाता है, किन्तु क्या भूमि पर उसका प्रभाव भी दूर होजाता है? जहां एक बार नदी का प्रभाव बह जाता है, वहां रेत पत्थर और पहाड़ी मिट्टी के ऐसे चिन्ह रहजाते हैं, जो झटपट दूर नहीं होते। वर्षों क्या, शताब्दियों पीछेतक भूमि उन चिन्हों को धारण किये रहती है। पानी के स्रोत की तरह मनुष्यों की सम्मतियां भी शीघ्र ही बदल सकती हैं। कभी २ एक पुस्तक का लिखाजाना, या एक बड़ी घटना का होजाना ही समाजों की सम्मतियां पलट देता है। किन्तु जैसे पानी का प्रवाह अपने पीछे बहुत से स्मारक छोड़ जाता है, वैसेही हर एक प्रकार की सम्मतियां नष्ट होती हुई अपनी यादगारें छोड़ जाती हैं। वे यादगारें क्षणिक नहीं होतीं। उनका जीवन सदियों तक रह सकता है। पहले तो पुरानी सम्मतियों का बदलना ही कठिन कार्य है। और फिर उनके प्रभावों को धोना तो और भी कठिन है।

आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने वेदों की जीवन्त शिक्षा के आधार पर बतलाया था कि वर्णव्यवस्था गुण कर्मानुसार होती है, जन्मानुसार नहीं। एक उच्च ब्राह्मण वंश में उत्पन्न होकर भी यदि कोई व्यक्ति धन के लोभ से कर्तव्याकर्तव्य का विचार न रक्खे, आचरणों की ठीक प्रकार रक्षा न करे, अथवा किसी अन्य प्रकार से धर्मच्युत होजाय तो वह ब्राह्मणत्व से गिर जाता है। एक चाण्डाल के कुल में उत्पन्न होकर भी यदि कोई व्यक्ति त्यागी, विद्याव्यसनी और उदार हो तो वह ब्राह्मणत्व तक पहुंच सकता है। यह सिद्धान्त था जिसका ऋषि दयानन्द प्रचार करते थे। उनके उपदेशानुसार आर्यसमाज के साथ सम्बन्ध रखने वालों की भी यही सम्मति होगई। समाज ने डङ्के की चोट इस सिद्धान्त को सुनाना प्रारम्भ किया।

सम्मतियां तो बदलगईं, अब रही उनके स्मारकों की बात। हिन्दू समाज में से ही आर्यसमाजियों की बड़ी संख्या निकली है। सदियों से जन्मानुसार कठोर वर्ण व्यवस्था के बन्धनों में बंधेहुए लोगों की सम्मतियां तो शीघ्रही पलट सकती थीं, किन्तु इसके चिन्ह उतना शीघ्र दूर न हो सकते थे। अभ्यास, बन्धु बान्धवों का भय, और आलस्य ये ऐसी बुरी आदतें हैं कि वे व्यक्ति की सारी स्वच्छन्द चाल को रोकदेती हैं। उन्हीं के कारण आर्यसमाज भी जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था को छोड़ नहीं सका। उसके अन्दर भी वही छूत छात और, ज़ात पांत घुस आई जिसके तोड़ने के लिये ऋषि ने अपना वाग्वज्र प्रयुक्त किया था। कई स्थानोंपर खान पान में अबतक चूल्हे का झमेला है, और लकीरें खिंचती हैं; विवाह शादी में अबतक वही सनाढ्य सारस्वत का टंटा है, और वैसी ही संकुचित प्रथा है। ये सब कुरीतियां उन्हीं अवैदिक सम्मतियों की स्मारिका हैं, जिन्हें समाज मूल से उखाड़ना चाहता है।

पञ्जाब इस विषय में अन्य प्रान्तों से आगे बढ़ाहुआ है। वहांपर कई ऐतिहासिक कारणों से पहले भी जाति बन्धन में वैसी कठोरता न थी जैसी अन्य प्रान्तों में है। अन्दर अन्दर की तो भगवान ही जानता है, किन्तु यह हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि पंजाब के जन्मानुसार नामधारी ब्राह्मणों में यह साहस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं है कि वे अन्य लोगों की उन्नति में बाधा डालें, या अपने जन्मानुसार अधिकारों की डुगडुगी बजावें। किन्तु अन्य प्रान्तों में और विशेषतया संयुक्त प्रान्त में ऐसे सज्जनों की कमी नहीं है जो एक ही वाक्य में अपने आप को आर्यसमाजी भी कहजाते हैं, और जन्मानुसार वर्णव्यवस्था का मण्डन भी करजाते हैं। यदि कभी वे लोग जो कर्म और गुण के कारण उन नामधारी ब्राह्मणों से चाहे सौ दर्जे अच्छेहों, किन्तु सनाढ्य सारस्वत या किसी और ऐसे ही प्रमाण पत्र के साथ लिये हुए न हों, आगे बढ़ना चाहते हैं, तो यह ब्राह्मण सम्प्रदाय रूढि का पोथा शस्त्र उठा कर उन पर वार करने के लिये भागता है। पहला आश्चर्य यह है कि ऐसे लोगों का आर्यसमाज में सम्भव है, और दूसरा आश्चर्य यह है कि समाज की साधारण प्रजा ऐसे लोगोंकी कार्यवाहियों को सहन करलेती है।

हमें एक मज़ेदार बातचीत कभी नहीं भूलेगी। अपनेआप को आर्यसमाज का धुरन्धर पण्डित समझने वाले, और आप को मुख्य नेता न मानने के कारण आर्य-पब्लिक को मूर्ख और अज्ञान की उपाधि प्रदान करने वाले एक ब्राह्मणत्वाभिमानी महाशय, जिनकी संस्कृत योग्यता प्रसिद्ध है, एक और आर्य समाजी सज्जन से बातचीत कर रहे थे। सुनने वालों में आर्यसमाज के कई सेवक शामिल थे। आर्यसमाजी सज्जन ने पूछा कि पण्डित जी! सुनते हैं आप जन्मानुसार वर्णव्यवस्था मानते हैं, गुण कर्मानुसार नहीं; क्या यह सच है? पण्डितजी नीति में भी कदम रखते हैं, आपने उत्तर दिया-अजी, लोग तो यूंही बहुत सी गप्पें उड़ा-दिया करते हैं। किन्तु आर्य सज्जन भी उनमें से न थे, जो 'महाराज जी' के कथन को सिर झुका कर मान लेते। उन्होंने कहा कि 'क्यों पण्डितजी! आप की राय में मुनिवर गुरुदत्त ब्राह्मण थे या नहीं?, पण्डितजी सीधे प्रश्न से कुछ घबराये किन्तु नीति देवी ने फिर सहारा दिया। आपका उत्तर था कि 'गुरुदत्तजी पण्डितजी अवश्य थे, ब्राह्मण थे या नहीं, यह कहना कुछ कठिन सा है। हम उनके साथ रहे होते तो कह सकते।' फिर पण्डितजी टाल गये। नीति ने थोड़ी देर काम चलादिया। आर्य सज्जन ने बहुत बार पूछा, बहुत तरह से पूछा किन्तु उत्तर वही मिला, जो ऊपर दियागया है। अन्त में आर्यसज्जन ने एक ऐसे जन्म के ब्राह्मण का नाम लेकर, जो दिन में शायद ही एकबार भी सन्ध्या न करता हो और कई लोगों के सामने कहचुका है कि वेदों में कहीं सन्ध्या का विधान नहीं मिलता पूछा कि क्यों आप उन्हें ब्राह्मण मानते हैं? उत्तर मिला 'हां'। और प्रश्न की आवश्यकता न समझ कर आर्यसज्जन चुप हो रहे। जो बात चीत हुई थी उस के शब्द शायद वे न हों, जो ऊपर लिखे गये हैं, किन्तु भावादि यही था। एक सन्ध्या के करने में भी नियम न रखने वाले महाशय 'पक्के ब्राह्मण' और मुनिवर गुरुदत्त, जिनकी बुद्धि के महत्व की यदि कहीं तुलना थी तो उनके त्याग के महत्व से थी, 'शायद ब्राह्मण थे'। संयुक्त प्रान्त के नगर नगर में ऐसी सम्मतियां रखने वाले सज्जन मिलेंगे।

इस दृश्य को देखकर किस दृढ़ आर्य पुरुष का कलेजा नहीं कांपता? कौनसा ऋषि दयानन्द का शिष्य है जिस के हृदय में क्षोभ उत्पन्न नहीं होता? जो आर्यसमाज संसार भर में भ्रातृभाव को लेकर जन्मकृत ऊच नीच को उड़ाना चाहता है उस के घर में ही ऐसा संकुचित ऊंच नीच देख कर कौन निराश न होगा? किन्तु निराशा की बात नहीं है। जन्म से ब्राह्मणत्व के मानने वालों की संख्या बहुत थोड़ी है। जो ऐसा मानने वाले हैं वे भी धीरे २ अपनी भूल देखने लगेंगे। किसी तीव्रता या कठोरता की आवश्यकता नहीं। सच्चे आर्यों का एक पंक्ति बाँधकर सीधे आर्यमार्ग पर चले जाना ही ऐसा मानने वालों के थोथे शास्त्र गिरादेने में पर्याप्त होगा।

विद्याविनोद

बालकों में भाषा काविकास

(ले० डा० लक्ष्मीपति)
L. R. C. P. S.

प्रत्येक मनुष्य अपने भावों को भाषा द्वारा ही दूसरे केप्रति प्रकाशित करता है। भाषा का व्यवहार उसके लिये स्वाभाविक है। गूंगे तक भी एक प्रकारकी भाषा से ही कार्य सिद्ध करते हैं, क्योंकि हम देखते हैं कि वे लोग संकेत तथा शारीरिक चेष्टा (Signs and gesture) से अपने अन्तस्थ भावों को जानतेहैं। जन्मावस्था में यह भाषा व्यवहार की शक्तिका प्रादुर्भाव पूर्ण रूप से नहीं होता है। यह शनैः २ विकसित होती है और बुद्धि को प्राप्त होती है। कण्ठ अङ्ग विशेष की जैसी २ प्रौढता बढ़ती है और साधारण मानसिक प्रभावों की प्रचुरता होती है तदनुसार ही वाचन शक्ति का भी उत्कर्ष होता है। भाषा का विकास और भी कतिपय देश तथा कालसम्बन्धी सांसर्गिक प्रणोदनों (Environmental Stimuli) पर निर्भर है॥

बालकों में किसी भाषा विशेष बोलने की शक्ति दाय रूप से नहीं वर्त्तमान है। यह नहीं समझना चाहिये कि आर्य-भाषा बोलना यहां के लोगों के लिये स्वाभाविक है, वैसे ही फ्रेन्च (French) बोलना फ्रांसीसियों के लिए स्वाभाविक वस्तुतः भाषा का व्यवहार तो रीति नीति और संसर्ग से परिपक्व होता है। यदि अंग्रेज़ के बालक को शैशवावस्था सेही किसी फ्रांसीसी परिवार में रक्खा जावे जहां केवल फ्रेंच भाषा बोली जाती हो तो बालक फ्रेंच ही बोलने लगजायगा और वही उसकी मातृभाषा होजायगी। अंग्रेजी को वह विदेशी (Foreign) भाषा मानने लगेगा। इसी प्रकार कितने ही लोग एक प्रान्त छोड़कर दूसरे प्रान्त में बस गये हैं उनके बालक वहाँही की भाषा बोलते हैं। हां, इतना विभेद है कि वे माता पिता की निज की भाषा को भी व्यवहार में लाते हैं। कोई भी बालक हो, उसे जिस रीति पर हम सिखायेंगे वा पढ़ायेंगे, वह वैसे ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अभ्यास कर लिखना पढ़ना जायगा। इसलिए माता पिता तथा आचार्य को चाहिये कि बालकों को आरम्भ से ही ठीक रीति पर शिक्षा देवें।

भाषा विचार की दूती है। जितने विचार मनुष्य के भीतर उत्पन्न होते हैं उन्हें भाषा द्वाराही मनुष्य बाहर दूर २ पहुंचाता है। जो कुछ मानसिक सङ्कल्प वा विकल्प होते हैं उन सभों का आधार रूप भाषा ही है। भाषा समाजिक परम्परा (Social heridity) का ठीक माध्यम है। मौखिक भाषा द्वाराही हम लोग देश (Space) को अति क्रम करते हैं क्योंकि बोल कर ही अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचा कर मर्मों के विभेदों को हटाकर विचार प्रणाली का पथ सुगम कर सकते हैं। परन्तु इससे बढ़कर लिपिबद्ध भाषा द्वारा तो देश और काल (Space and time) कोभी अतिक्रम करने में हम लोग समर्थ होते हैं। आज लिखित भाषा काही प्रताप है कि हम लोग बड़े २ ऋषि मुनियों के उच्चतम विचारों का उनके ग्रन्थों द्वारा आनन्द लेते हैं। पूर्व काल में कहीं इसका प्रचार नहीं होता तो समाज की दशा बड़ी शोचनीय हो जाती। क्योंकि सामाजिक स्थिति और सभ्यता के प्रसार के लिये यह अत्यावश्यक प्रतीत होता है कि लिखित भाषा का निरन्तर अभ्यास तथा उपयोग लोगों में बनारहे। जीवन का आनन्द ही इस के बिना फीका पड़ जाता है और उसका निर्वाह भारसम प्रतीत होने लगता है।

बालकों में भाषा के विकास के सम्बन्ध में तीन बातों पर विचार करना है।

[१] विषय यह है कि किस प्रकार बालक मातृभाषा को समझने में यत्नवान होता है और तत्पश्चात् उसके प्रयोग में उद्यत होता है।

(२, द्वितीय विषय यह है कि किस विधि बालक प्रथम २ पढ़ना सीखता है किस प्रकार वह लिखे और छपे शब्दों तथा चिन्हों को समझने में उत्कण्ठित होता है।

(३) तृतीय विषय यह है कि कब बालक लिपि लेखन सीखता है और शुद्ध शुद्धि का विचार करते हुए अपनी भाषा में स्वमन्तव्यों को प्रगट करना चाहता है।

(क्रमशः)

गुरुकुल समाचार।

ऋतु

गर्मी खूब पड़ रही है। गर्म वायुओं की भी कमी नहीं है। दोपहर के समय घर के अन्दर बैठकर भी कार्य करना कठिन होता है। यह तो सारे उत्तरीय भारत में दशा है, इस में गुरुकुल की कोई खासियत नहीं। यदि कोई विशेषता है तो यह है कि सारा उत्तरीय भारत नदी के किनारे बसा हुआ नहीं और फिर वह नदी भी गङ्गा? न उसे शिवालक की तराई में ही निवास करने का सौभाग्य प्राप्त है। उत्तरीय वायु चलने से रात का पिछला भाग ठण्डा हो जाता है। हिमालय की कन्दराओं में से आती हुई वायु को गङ्गा की कल्लोलतरङ्गें जलरूपी भोजन देकर सन्तुष्ट करदेती हैं। वही वायु फैल कर गुरुकुल की रात को सुख दायिनी बनादेती है। दिन में कैसी ही तपाने वाली गर्मी हो रात की नींद में विघ्न नहीं पड़ता। हां, कभी कभी आँधी आकर सुख निद्रा में विघ्न डालदेती है किन्तु यहसब कुछ अब देर तक नहीं चलसकता। समाचार लिखते समय, लेखक दक्षिण पूर्व की सामुद्रिक वायु का आनन्द लूट रहा है और साथ ही साथ मन ही मन विचार रहा है कि यही वायु गर्मी के इस आपात का नाश करेगा। वर्षा की तयारियां हो रही हैं। सम्भव है, जिस समय पाठक गण इन समाचारों को पढ़ रहे हों, उस समय यही दक्षिण पूर्व की वायु काले काले बादल के टुकड़ों को उड़ाये हुये उनके घरों के ऊपर पानी बरसाता हुआ भाग जारहा हो। किंतु यह कल्पना मात्र है। प्राकृतिक रहस्य द्वार केवल ईश्वर के लिये ही खुला है।

पठन पाठन

पठन पाठन नियमपूर्वक चल रहा है। गर्मी के कारण पढ़ाई का समय प्रातः काल का ही कर दिया गया है। मध्यान्ह तथा सायंकाल ब्रह्मचारी अपने आश्रमों में ही बिताते हैं। गर्मी के कारण पढ़ाई में कोई विशेष न्यूनता नहीं आई।

खेलें बन्द।

सायंकाल की लू तथा गर्मी से ब्रह्मचारियों को बचाने के लिये चिकित्सक की अनुमति के अनुसार, खेलें बन्द करदी गई हैं। उनके स्थान पर जलव्यायाम होता है। सायंकाल लगभग एक घण्टा ब्रह्मचारियों को गङ्गा में तैरने के लिये दिया जाता है, उस से व्यायाम भी होता है और शान्ति भी प्राप्त होती है: प्रातःकाल स्नान से पूर्व नियम पूर्वक व्यायाम और दौड़ना आदि होजातेहैं।

सभायें

विद्यालय और महाविद्यालय की सभायें खूब अच्छी तरह होरही हैं। साहित्यपरिषद् के अधिवेशन हर पन्दरह वें दिन होते रहते हैं। विगत अधिवेशन में प्रो० बालकृष्ण जी ने मरती हुई आर्य जाति के जीवन के दिन गिन कर दिखाये थे, और विद्यार्थियों को देश तथा जाति की भाविनी-दशा से परिचय कराने का यत्न किया था। महाविद्यालय की संस्कृतसभा 'संस्कृतोत्साहिनी' के अधिवेशन भी होते रहते हैं। विद्यालय में इस समय दो सभायें हैं—एक साहित्यसंजीवनी और दूसरी साहित्यसंवर्धिनी। दोनों बड़े उत्साह से अपना कार्य कर रही हैं। इन सभाओं के अतिरिक्त महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने "वाग्वर्धिनी" नाम की एक सभा स्थापित की है जिस में हिन्दी में ही वाद विवाद होते हैं। इस सभाने गत वर्ष ब्रह्मचारियों की भाषण शक्ति को बहुत लाभ पहुंचाया है। इन सभाओं की ओर से

तीन मासिक पत्र

भी निकलते हैं, जिन के सम्पादक लेखक और सब कुछ ब्रह्मचारी ही हैं। ब्रह्मचारी ही लेख लिखते हैं, उन्हीं में से एक, जो सम्पादक के नाम से पुकारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं है कि वे अन्य लोगों की उन्नति में बाधा डालें, या अपने जन्मानुसार अधिकारों की डुगडुगी बजावें। किन्तु अन्य प्रान्तों में और विशेषतया संयुक्त प्रान्त में ऐसे सज्जनों की कमी नहीं है जो एक ही वाक्य में अपने आप को आर्यसमाजी भी कहजाते हैं, और जन्मानुसार वर्णव्यवस्था का मण्डन भी करजाते हैं। यदि कभी वे लोग जो कर्म और गुण के कारण उन नामधारी ब्राह्मणों से चाहे सौ दर्जे अच्छेहों, किन्तु सनाढ्य सारस्वत या किसी और ऐसे ही प्रमाण पत्र के साथ लिये हुए न हों, आगे बढ़ना चाहते हैं, तो यह ब्राह्मण सम्प्रदाय रूढि का पोथा शस्त्र उठा कर उन पर वार करने के लिये भागता है। पहला आश्चर्य यह है कि ऐसे लोगों का आर्यसमाज में सम्भव है, और दूसरा आश्चर्य यह है कि समाज की साधारण प्रजा ऐसे लोगोंकी कार्यवाहियों को सहन करलेती है।

हमें एक मज़ेदार बातचीत कभी नहीं भूलेगी। अपनेआप को आर्यसमाज का धुरन्धर पण्डित समझने वाले, और आप को मुख्य नेता न मानने के कारण आर्य-पब्लिक को मूर्ख और अज्ञान की उपाधि प्रदान करने वाले एक ब्राह्मणत्वाभिमानी महाशय, जिनकी संस्कृत योग्यता प्रसिद्ध है, एक और आर्य समाजी सज्जन से बातचीत कर रहे थे। सुनने वालों में आर्यसमाज के कई सेवक शामिल थे। आर्यसमाजी सज्जन ने पूछा कि पण्डित जी! सुनते हैं आप जन्मानुसार वर्णव्यवस्था मानते हैं, गुण कर्मानुसार नहीं; क्या यह सच है? पण्डितजी नीति में भी कदम रखते हैं, आपने उत्तर दिया-अजी, लोग तो यूंही बहुत सी गप्पें उड़ा-दिया करते हैं। किन्तु आर्य सज्जन भी उनमें से न थे, जो 'महाराज जी' के कथन को सिर झुका कर मान लेते। उन्होंने कहा कि 'क्यों पण्डितजी! आप की राय में मुनिवर गुरुदत्त ब्राह्मण थे या नहीं?, पण्डितजी सीधे प्रश्न से कुछ घबराये किन्तु नीति देवी ने फिर सहारा दिया। आपका उत्तर था कि 'गुरुदत्तजी पण्डितजी अवश्य थे, ब्राह्मण थे या नहीं, यह कहना कुछ कठिन सा है। हम उनके साथ रहे होते तो कह सकते।' फिर पण्डितजी टाल गये। नीति ने थोड़ी देर काम चलादिया। आर्य सज्जन ने बहुत बार पूछा, बहुत तरह से पूछा किन्तु उत्तर वही मिला, जो ऊपर दियागया है। अन्त में आर्यसज्जन ने एक ऐसे जन्म के ब्राह्मण का नाम लेकर, जो दिन में शायद ही एकबार भी सन्ध्या न करता हो और कई लोगों के सामने कहचुका है कि वेदों में कहीं सन्ध्या का विधान नहीं मिलता पूछा कि क्यों आप उन्हें ब्राह्मण मानते हैं? उत्तर मिला 'हां'। और प्रश्न की आवश्यकता न समझ कर आर्यसज्जन चुप हो रहे। जो बात चीत हुई थी उस के शब्द शायद वे न हों, जो ऊपर लिखे गये हैं, किन्तु भावादि यही था। एक सन्ध्या के करने में भी नियम न रखने वाले महाशय 'पक्के ब्राह्मण' और मुनिवर गुरुदत्त, जिनकी बुद्धि के महत्व की यदि कहीं तुलना थी तो उनके त्याग के महत्व से थी, 'शायद ब्राह्मण थे'। संयुक्त प्रान्त के नगर नगर में ऐसी सम्मतियां रखने वाले सज्जन मिलेंगे।

इस दृश्य को देखकर किस दृढ़ आर्य पुरुष का कलेजा नहीं कांपता? कौनसा ऋषि दयानन्द का शिष्य है जिस के हृदय में क्षोभ उत्पन्न नहीं होता? जो आर्यसमाज संसार भर में भ्रातृभाव को लेकर जन्मकृत ऊंच नीच को उड़ाना चाहता है उस के घर में ही ऐसा संकुचित ऊंच नीच देख कर कौन निराश न होगा? किन्तु निराशा की बात नहीं है। जन्म से ब्राह्मणत्व के मानने वालों की संख्या बहुत थोड़ी है। जो ऐसा मानने वाले हैं वे भी धीरे २ अपनी भूल देखने लगेंगे। किसी तीव्रता या कठोरता की आवश्यकता नहीं। सच्चे आर्यों का एक पंक्ति बाँधकर सीधे आर्यमार्ग पर चले जाना ही ऐसा मानने वालों के थोथे शास्त्र गिरादेने में पर्याप्त होगा।

विद्याविनोद

बालकों में भाषा काविकास

(ले० डा० लक्ष्मीपति)
L. R. C. P. S.

प्रत्येक मनुष्य अपने भावों को भाषा द्वारा ही दूसरे केप्रति प्रकाशित करता है। भाषा का व्यवहार उसके लिये स्वाभाविक है। गूंगे तक भी एक प्रकारकी भाषा से ही कार्य सिद्ध करते हैं, क्योंकि हम देखते हैं कि वे लोग संकेत तथा शारीरिक चेष्टा (Signs and gesture) से अपने अन्तस्थ भावों को जानतेहैं। जन्मावस्था में यह भाषा व्यवहार की शक्तिका प्रादुर्भाव पूर्ण रूप से नहीं होता है। यह शनैः २ विकसित होती है और वृद्धि को प्राप्त होती है। कण्ठ अङ्ग विशेष की जैसी २ प्रौढता बढ़ती है और साधारण मानसिक प्रभावों की प्रचुरता होती है तदनुसार ही वाचन शक्ति का भी उत्कर्ष होता है। भाषा का विकास और भी कतिपय देश तथा कालसम्बन्धी सांसर्गिक प्रणोदनों (Environmental Stimuli) पर निर्भर है॥

बालकों में किसी भाषा विशेष बोलने की शक्ति दाय रूप से नहीं वर्त्तमान है। यह नहीं समझना चाहिये कि आर्य-भाषा बोलना यहां के लोगों के लिये स्वाभाविक है, वैसे ही फ्रैन्च (French) बोलना फ्रांसीसियों के लिए स्वाभाविक वस्तुतः भाषा का व्यवहार तो रीति नीति और संसर्ग से परिपक्व होता है। यदि अंग्रेज़ के बालक को शैशवावस्था सेही किसी फ्राँसीसी परिवार में रक्खा जावे जहां केवल फ्रेंच भाषा बोली जाती हो तो बालक फ्रेंच ही बोलने लगजायगा और वही उसकी मातृभाषा होजायगी। अंग्रेजी को वह विदेशी (Foreign) भाषा मानने लगेगा। इसी प्रकार कितने ही लोग एक प्रान्त छोड़कर दूसरे प्रान्त में बस गये हैं उनके बालक वहाँही की भाषा बोलते हैं। हां, इतना विभेद है कि वे माता पिता की निज की भाषा को भी व्यवहार में लाते हैं। कोई भी बालक हो, उसे जिस रीति पर हम सिखायेंगे या पढ़ायेंगे, वह वैसे ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अभ्यास कर लिखना पढ़ना जायगा । इसलिए माता पिता तथा आचार्य को चाहिये कि बालकों को आरम्भ से ही ठीक रीति पर शिक्षा देवें ।

भाषा विचार की दूती है । जितने विचार मनुष्य के भीतर उत्पन्न होते हैं उन्हें भाषा द्वाराही मनुष्य बाहर दूर २ पहुंचाता है । जो कुछ मानसिक सङ्कल्प वा विकल्प होते हैं उन सभों का आधार रूप भाषा ही है । भाषा सामाजिक परम्परा (Social heridity) का ठीक माध्यम है । मौखिक भाषा द्वाराही हम लोग देश (Space) को अतिक्रम करते हैं क्योंकि बोल कर ही अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचा कर मनों के विभेदों को हटाकर विचार प्रणाली का पथ सुगम कर सकते हैं । परन्तु इससे बढ़कर लिखित भाषा द्वारा तो देश और काल (Space and time) कोभी अतिक्रम करने में हम लोग समर्थ होते हैं । आज लिखित भाषा काही प्रताप है कि हम लोग बड़े २ ऋषि मुनियों के उच्चतम विचारों का उनके ग्रन्थों द्वारा आनन्द लेते हैं । पूर्व काल में कहीं इसका प्रचार नहीं होता तो समाज की दशा बड़ी शोचनीय हो जाती । क्योंकि सामाजिक स्थिति और सभ्यता के प्रसार के लिये यह अत्यावश्यक प्रतीत होता है कि लिखित भाषा का निरन्तर अभ्यास तथा उपयोग लोगों में बनारहे । जीवन का आनन्द ही इस के बिना फीका पड़ जाता है और उसका निर्वाह भारसम प्रतीत होने लगता है ।

बालकों में भाषा के विकास के सम्बन्ध में तीन बातों पर विचार करना है ।

[१] विषय यह है कि किस प्रकार बालक मातृभाषा को समझने में यत्नवान होता है और तत्पश्चात् उसके प्रयोग में उद्यत होता है ।

(२) द्वितीय विषय यह है कि किस विधि बालक प्रथम २ पढ़ना सीखता है किस प्रकार वह लिखे और छपे शब्दों तथा चिन्हों को समझने में उत्कण्ठित होता है ।

(३) तृतीय विषय यह है कि कब बालक लिपि लेखन सीखता है और शुद्ध शुद्धि का विचार करते हुए अपनी भाषा में स्वमन्तव्यों को प्रगट करना चाहता है ।

(क्रमशः)

गुरुकुल समाचार ।

ऋतु

गर्मी खूब पड़ रही है । गर्म वायुओं की भी कमी नहीं है । दोपहर के समय घर के अन्दर बैठकर भी कार्य करना कठिन होता है । यह तो सारे उत्तरीय भारत में दशा है, इस में गुरुकुल की कोई खासियत नहीं । यदि कोई विशेषता है तो यह है कि सारा उत्तरीय भारत नदी के किनारे बसा हुआ नहीं और फिर वह नदी भी गङ्गा ? न उसे शिवालक की तराई में ही निवास करने का सौभाग्य प्राप्त है । उत्तरीय वायु चलने से रात का पिछला भाग ठण्डा हो जाता है । हिमालय की कन्दराओं में से आती हुई वायु को गङ्गा की कल्लोलतरङ्गें जलरूपी भोजन देकर सन्तुष्ट करदेती हैं । वही वायु फैल कर गुरुकुल की रात को सुख दायिनी बनादेती है । दिन में कैसी ही तपाने वाली गर्मी हो रात की नींद में विघ्न नहीं पड़ता । हां, कभी कभी आँधी आकर सुख निद्रा में विघ्न डालदेती है किन्तु यहसब कुछ अब देर तक नहीं चलसकता । समाचार लिखते समय, लेखक दक्षिण पूर्व की सामुद्रिक वायु का आनन्द लूट रहा है और साथ ही साथ मन ही मन विचार रहा है कि यही वायु गर्मी के इस आपात का नाश करेगा । वर्षा की तयारियां हो रही हैं । सम्भव है, जिस समय पाठक गण इन समाचारों को पढ़ रहे हों, उस समय यही दक्षिण पूर्व की वायु काले काले बादल के टुकड़ों को उड़ाये हुये उनके घरों के ऊपर पानी बरसाता हुआ भागा जारहा हो । किन्तु यह कल्पना मात्र है । प्राकृतिक रहस्य द्वार केवल ईश्वर के लिये ही खुला है ।

पठन पाठन

गर्मी के कारण पढ़ाई का समय प्रातः काल का ही कर दिया गया है । मध्यान्ह तथा सायंकाल ब्रह्मचारी अपने आश्रमों में ही बिताते हैं । गर्मी के कारण पढ़ाई में कोई विशेष न्यूनता नहीं आई ।

खेलें बन्द ।

सायंकाल की लू तथा गर्मी से ब्रह्मचारियों को बचाने के लिये चिकित्सक की अनुमति के अनुसार, खेलें बन्द करदी गई हैं । उनके स्थान पर जलव्यायाम होता है । सायंकाल लगभग एक घण्टा ब्रह्मचारियों को गङ्गा में तैरने के लिये दिया जाता है, उस से व्यायाम भी होता है और शान्ति भी प्राप्त होती है । प्रातःकाल स्नान से पूर्व नियम पूर्वक व्यायाम और दौड़ना आदि होजातेहैं ।

सभायें

विद्यालय और महाविद्यालय की सभायें खूब अच्छी तरह होरही हैं । साहित्यपरिषद् के अधिवेशन हर पन्द्रह वें दिन होते रहते हैं । विगत अधिवेशन में प्रो० बालकृष्ण जी ने मरती हुई आर्य जाति के जीवन के दिन गिन कर दिखाये थे, और विद्यार्थियों को देश तथा जाति की भाविनी दशा से परिचय कराने का यत्न किया था । महाविद्यालय की संस्कृतसभा 'संस्कृतोत्साहिनी' के अधिवेशन भी होते रहते हैं । विद्यालय में इस समय दो सभायें हैं—एक साहित्यसंजीवनी और दूसरी साहित्यसंवर्धिनी । दोनों बड़े उत्साह से अपना कार्य कर रही हैं । इन सभाओं के अतिरिक्त महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने "वाग्वर्धिनी" नाम की एक सभा स्थापित की है जिस में हिन्दी में ही वाद विवाद होते हैं । इस सभाने गत वर्ष ब्रह्मचारियों की भाषण शक्ति को बहुत लाभ पहुंचाया है । इन सभाओं की ओर से

तीन मासिक पत्र

भी निकलते हैं, जिन के सम्पादक लेखक और सब कुछ ब्रह्मचारी ही हैं । ब्रह्मचारी ही लेख लिखते हैं, उन्हीं में से एक जो सम्पादक के नाम से पुकारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

जाता है, उन्हें ठीक ठाक करके लिख देता है, और एक मासिक पत्र के आकार में बनादेता है। पत्रिकाओं में ब्रह्मचारियों की ही हाथ से बनाई हुई तस्वीरें भी दी जाती हैं। एक पत्रिका की एक ही प्रति तय्यार की जाती है और वह वाचनालय की मेज़ पर धर दी जाती है। सब लोग उसे देख सकते हैं। हम नीचे उन पत्रिकाओं के नाम देते हैं।

'प्रभा'–संस्कृतोत्साहिनी की ओरसे

'चन्द्रिका'–साहित्यसंजीवनी की ओरसे

'राजहंस'–वाग्वर्धिनी की ओर से।

पढ़ाई का निरीक्षण

नया कार्य करने के लिये सलाह की बड़ी भारी आवश्यकता रहती है। गुरुकुल की च्युति का पुनरुद्धार करने के लिये भी योग्य तथा हितैषी लोगों की सहायता की बड़ी आवश्यकता है। साथ ही यह भी विचार किया गया है कि अत्यन्त कर्त्तव्य परायण मनुष्य भी समय समय पर आलस्य कर सकता है। इस लिये गुरुकुल महाविद्यालय की पढ़ाई का निरीक्षण करने के लिये बाहर के कई सज्जनों को नियत किया गया है, जो वर्ष के किसी भाग में गुरुकुल आकर अपने अपने विषय की पढ़ाई का हाल देखें, और उन्नति या सुधार के विषय में सलाह दें। जिन सज्जनों ने बड़ी कृपा से निरीक्षण स्वीकार कर लिया है, उन के नाम हम नीचे देते हैं। जिन विषयों के निरीक्षकों के नाम नहीं हैं, समझना चाहिये कि उन विद्वानों के साथ पत्र व्यवहार होरहा है।

संस्कृत साहित्य– श्री० पं० रामावतार शर्मा साहित्याचार्य एम० ए०

वनस्पति शास्त्र–प्रो० विनय कुमार सरकार एम० ए०

रसायनशास्त्र-प्रो०हरमतराय एम०ए०

इतिहास—प्रो० राधाकुमुद मुकुर्जी एम० ए०

अंग्रेज़ी—मिस्टर एफ० सी० एंड्रूज़ एम० ए०

गुरुकुल की आय

गुरुकुल कोष में गत सप्ताह (१ से १७ ज्येष्ठ १९७१ तक) के अन्दर दान की कुल आय ५३४९=) हुई जिस में से महाशय दिल सुखराय जी पाखल निवासी का दान विशेष वर्णन करने योग्य है। इन्हों ने स्वयम् ५००) देने की इच्छा प्रकट की और उस में ३००) रोक भेज दिये। शेष २००) भी दो मास के अन्दर भेजने की प्रतिज्ञा की है। इस धन से एक छोटी श्रेणी को पढ़ाई का कमरा बन रहा है। तय्यार हो जाने पर ३००) से अधिक जितना व्यय होगा भेजदेंगे।

इस दान का ब्यौरा इस प्रकार है। ३००) इमारत निधि में–५) विद्यालय भन्डार के लिये–३५-) विद्यार्थ निधि में और शेष २०७-) महानिधि में। वर्ष भर के बजट को पूरा करने के लिये अभी अनुमान ३७५००) की महानिधि में कमी है

प्राप्त

'प्राप्त लेखों के मतका सम्पादक उत्तरदातानहीं'

गुरुकुल में हिन्दी प्रोफेसरों का अभाव

१४ ज्येष्ट के प्रचारक में "बङ्गाली के भाग्य जागे" शीर्षक नोट में इस प्रान्त के यूनिवर्सिटी में बी० ए० क्लास तक हिन्दी न होने पर खेद प्रकट किया गया है। हम भी इस से सहमत हैं और यह बात मानते हैं कि एक योग्य उपाध्यक्ष के न होने से ही हिन्दी की यह दशा है।

जब हमने यह नोट पढ़ा तो हम को इस सालके Vedic Magazine के गुरुकुलाङ्क याद पड़ा। जहां तक हमको याद है उस में जो महा विद्यालय के प्रोफेसरों का चित्र दिया गया है उस में हिन्दी का कोई प्रोफेसर नहीं है। गुरुकुल में भी हिन्दी साहित्य के ध्यान से केवल अधिकारी परीक्षा Entrance Examination तक पढ़ाई जाती है और स्नातक परीक्षा के लिये हिन्दी का कोई कोर्स नहीं है। ऐसा ही आधुनिक स्कूलों में भी है, ऊपर केदर्जों में हिन्दी का कोर्स नहीं है। हम यह मानते हैं कि हिन्दी के ज्ञान के ध्यान से गुरुकुल के विद्यार्थी हम लोगों से अच्छे होंगे, परन्तु जो ज्ञान अंग्रेजी का एक अंग्रेज को बी० ए० एम० ए० तक उस के साहित्य को अध्ययन करने में होगा वह हमारे गुरुकुल के विद्यार्थियों को होना दुष्कर है। गुरुकुल से हिन्दी के कुछ ऐसे विद्वान निकलने चाहिये जो मालें, वर्डस्वर्थ, शेली, बर्क, एडीसन के मुकाबिले के हों। किसी साहित्य में विना ऐसे विद्वानों के हुए वह साहित्य कहलाने योग्य नहीं है। इतिहास विज्ञान, आदि ग्रन्थ मौलिक रीति से भले ही लिखे जांय परन्तु जब तक ऐसे ग्रन्थ न बनेंगे जिस में भाषा लालित्यहो तबतक राष्ट्र भाषा का काम अधूरा रहेगा।

इस समय भाषा के विचार से हिन्दी की ओर दृष्टि केवल बाबू श्यामसुन्दरदास और मिश्रबन्धुओं का गया है परन्तु इस की कमी पूरी तभी होगी जब गुरुकुल के विद्यार्थी इसको स्नातक परीक्षा के लिये तीन विषयों में से एक यह भी लेकर अध्ययन करेंगे—गुरुकुल में हिन्दी के प्रोफेसरों के अभाव से गुरुकुल परएक भारी कलङ्क रह जाता है जिस को गुरुकुल अधिकारियों को शीघ्र मेटना चाहिये।

अब हमारा श्रीमहात्मा जी से अनुरोध है कि वे इस बात पर ध्यान देंगे और गुरुकुल में आगामी सेशन में एक योग्य हिन्दी प्रोफेसर का प्रबन्ध करदेंगे।

"गुप्त"

अनीश्वरवादी और आर्य कुमार सभा

श्रीमान् सम्पादक जी नमस्ते!

आप की सेवा में श्री प्रधान भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद के पत्र की एक प्रति अन्तरङ्ग सभा आर्यकुमार सभा सहारनपुर के प्रस्ताव सं० १ ता० २३-५१-४ के अनुसार भेज कर प्रार्थना करता हूं कि अपने पत्रके कालमों में इस को जगह दे दीजिये। इस पत्र को प्रकाशित करने का अभिप्राय यह है कि प्रायः यह भ्रम पब्लिक में पड़ा हुआ है कि जो नियम परिषद ने आर्यकुमार सभाओं के लिये बनाया है उन के अनुसार यह आवश्यक नहींकि आर्यकुमार सभाओं का एक सभासद वेद और ईश्वर का आवश्यकीय मानने वाला हो। इस पत्र से यह भ्रम दूर हो जावेगा और अकसर आर्य्य समाजों और कुमार सभाओं के तालुकात अच्छे हो जावेंगे।

सेवक
जयन्तीप्रसाद
मंत्री आर्यकुमार सभा
सहारनपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

पत्रकी प्रति

ओ३म्

मेरठ

१८-५-१४

मान्यवर मन्त्री जी नमस्ते !

आप के पत्र १२-५-१४ के उत्तर में निवेदन है कि आर्यकुमार परिषद की नियमावली को मान कर अवश्य हीएक पुरुष आर्यकुमार सभा का सभासद हो सकता है। आर्य कुमार सभाओं का उद्देश्य ही आर्य समाज के लिये सभासद तय्यार करना है। मेरी सम्मति में कोई भी ईश्वर व वेदों को न मानने वाला आर्यकुमार सभा का सभासद नहीं रह सकता,सहायक भला ही रहे। यह मेरी सम्मति ज़ाती है और मैं नियमों का यही अभिप्राय समझता हूं।

भवदीय.

वासीराम मेरठ

औनसैन समाचार।

आजकल डेहरी औनसोन में पहाड़ के होने से बहुत लूक और गर्मी गिरती है। जिस कारण से एक सप्ताह के मध्य में ३ या ४ लड़के मरचुके हैं। इस रोग की कोई दवाई नहीं लड़के खेलते ही खेलते कहते हैं 'मां माथा दुखता है, बस ! आधे घण्टे के बाद वे इस संसार तथा अपनी प्यारी मां के गोद को सर्वदा के लिये छोड़ कर मर्त्य लोक से बिछुर जाते हैं।

पटने के ज़िले में पुलिस का अत्याचार।

आगे बड़हीआ कोल नामक ग्राम के उद्यान में पुन पुन थाना के एक रामबिलासिंह नामक कौन्सटेबिल तीन चौकीदार के साथ गया और आम तोड़ने लगा। जब पांच सात आम तोड़ चुका तब रखवारा ने मना किया जिस पर रखवाला बेचारा गालियां की वर्षा से भीज गया और गाली देने से मना करने पर बिचारे को बहुत मार मारी गई। हम अब आशा करते हैं कि इस बियय में शीघ्र ही पुलिस अफसर अनुसंधान करेंगे।

नशे में खून

पटने ज़िले के एक सकरइया नामक ग्राम में एक सातवर्ष के बच्चे को कड़ा और बाला के लोभ से एक कहारी ने जो उस के बाप के पास जा कर ताड़ी पिया करती थी मारडाला। पहिले वह अपने घर मेंलेगई और उसेकिरासीन के तेल में भिगाकर और आग लगाकर हसुआ से काट डाला। और तीन दिन तक उस लाश को घर में रक्खे रहा। लड़की वाला इधर उधर बहुत ढूढता रहा पर कुछ पता न चला। चौथे दिन घर से निकाल कर बस्ती के नज़दीक वाले काँटे में फेंक दिया उस ग्राम में उसी दिन चोरी हुई थी जिस के तहकीकात में पुलिस आई हुई थी। भाग्यवश एक आदमी ने लाशको फेंकते हुए देख लिया था और तुरन्त ही गिरफ्तार करवादिया। उस में एक आठ और एक नौ वर्ष का बच्चा तथा मारने वाली और बाबुलाल महतो मुदाले ठहराये गये। कहाजाता है कि बाबुलाल यह तोदेखते थे। अभी मुकदमा पुलिस में है।

स्त्री का बयान

वह कहती है कि हम ने अपने हाथ से कड़े और बाले के लोभ से इसे मारा यह दोनों लड़को भी इस में सम्मलित था और बाबूलाल महतो आदमी देखते थे। लेकिन जिसका लड़का मारा गया वह बाबुलाल महतो को निर्दोष बताता है

अनाथों की सहायता

समस्त आर्य्यजाति देश हितैषियों की सेवा में निवेदन है कि प्रान्त बान्दा व संयुक्त प्रान्त (यूपी) के अन्य प्रान्तों में अकाल बड़े वेग से प्रतीत हो रहा है इस कारण से बहुत से आर्य्य-जाति के अनाथ बालक व बालिकाएँ भूखोंके कारण आर्य्य जाति की गोद से निकल कर अन्य जातियों की गोद में जारहे हैं। इसलिये सर्व साधारण सभ्य जनों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि आप इन अनाथ बालक व बालिकाओं का भूखों के कारण से आर्य्य जाति की गोद से न निकलने दें। इस का सहल यत्न यह है कि जिस स्थान पर आप को अनाथ बच्चे मिलें उसी समय आप उन को सेठ लक्ष्मी चन्द रईस देहरादून के अनाथालय में शीघ्रही भिजवा दें यदि भिजवानेवाले महाशय अनाथों का मार्गव्य (खर्च) न उठासकें तो उनको यह व्ययय (खर्च) भी अनाथालय की ओर से दिया जावेगा।

आर्य्य जाति का शुभचिन्तक

मैनेजर अनाथालय

लक्ष्मीचन्द रईस देहरादून

छात्र समिति

स्टूडन्टस कलचर एसोसियेशन

इस नाम की एक समिति कुछ छात्रों ने स्थापित की है जिस के मुख्य उद्देश्य ये हैं

(१) आपस में भ्रातृ भाव तथा सहयोग का ज्ञान उत्पन्न करना

(२) उन विषयों का मनन करना जो समिति समय २ पर बतावे

(३) आर्तों को सहायता देना

(४) मन व हृदय को शिक्षित व संस्कृत बनाना अर्थात् उच्च विचारों से वेष्टित करना। यह समिति उन सज्जनों व महिलाओं को जो निम्न लिखित विषयों पर उत्तम निबन्ध लिखेंगे रौप्य पदक पुरस्कार में देगी ! सब निबन्ध जनरल सेक्रेटरी के पास १८जून वा उससे पहिले पहुँच जाने चाहिये निबन्ध वापिस न किये जायेंगे।

विषय

(१) विद्यार्थी जीवन का आदर्श
Ideal of Studend life

(२) अपने आदर्श कवि का जीवन
ife of our ideal poet

शुकदेव पांडेजनरल सेक्रेटरी

विश्वभवन अलमो डायू० पी०

राष्ट्रीय निबन्ध माला

यह निबन्ध माला हिन्दी साहित्य में एक अपूर्व चीज़ है। इसमें बड़े बड़े विद्वानों के निबन्ध प्रकाशित होंगे जो पुस्तका कार छपेंगे, माला का पहिला निबन्ध तय्यार है जिसका नाम

राष्ट्रों की उन्नति

है निबन्ध क्या है, सारे संसार के इतिहास का सार है। यह निबन्ध इतना उपयोगी समझा गया है कि कई लोगों ने इसकी पचास पचास कापियां लेकर मुफ्त बांटी है। मूल्य ।)

२. राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र—ले० इन्द्र वेदालंकार। पहिले निबन्ध का यह उत्तर भाग है। (छप रहा है)

३. महाराष्ट्र का उदय ले० श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर (तय्यार हो रही है)

४. अमरीका के सिर मौर—ले० बाबू जगन्नाथ खन्ना बी एस० सी अमरीका

(तय्यार हो रहा है)

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

घाव का मलहम।

यह मलहम सब तरह के घाव में फायदा करता है। घाव के कीड़े इससे मरजाते हैं, बदबू मिटती है, घाव साफ होकर जल्द अंकूर भरता है और नया चमड़ा पैदा होकर घाव आराम होजाता है, सामान्य से लेकर सड़े गले घाव तक में यह समान गुण दिखलाता है।

मोल एक औंस डिब्बिया ।-) पांच आने। घाव धोने की टिकिया =) दो आने डाः मः व पैः १ से ३ तक ।-) पांच आने।

क्लोरोडिन।

यह अंग्रेजों की प्रसिद्ध घरेलू दवा है। वाई दर्द शूल चाहे किसी कारणसे हो इस दवासे सेहत होती है। दस्त, आंवके दस्त पेचिश, मरोड़, पेट दर्द वो ऐंठनके लिये क्लोरोडिन अति गुण कारी है। डाक्टर बर्म्मनने इङ्गलैण्डके एक नामी औषधालय से बनवाई है; जो कि पेटेंटे वो अधिक मूल्यके क्लोरोडिनके सम्पूर्ण समान है और दाममें सस्ती है। इसलिये ग्राहकगण व्यर्थ अधिक मूल्य में पेटेन्ट क्लोरोडिन न लेकर इसे खरीदें।

मोल ।=) छः आने शीशी दर्जन ४) रुपया डाः मः अलग लिया जायेगा।

डाः एस. के. बर्म्मन ५, ६, नारायण दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नं० ६०

एजेन्टः—बाबूराम जैनी कूचासेठ दिल्ली

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानून दर्पण।

इस एकही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिनसे हर मनुष्यको काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाबता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तल्लाक, हथियार, ट्रेडमकि, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुखत्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार बगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोल-चालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्याकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १)

मिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

विकासवाद

या

इवोल्यूशन थ्यूरी

प्रो० वि० ग० साठे एम० ए० गुरुकुल काँगड़ी

कृत

विकासवाद सारे विज्ञान का आधार है। आजकल विकासवाद से अनभिज्ञ रहना अनपढ़ होने का चिन्ह समझा जाता है। तो लीजिये, ये पुस्तक पढ़िये। पत्रों और विद्वानों ने मुक्त कंठ से इस पुस्तक की प्रशंसा की है इस में ३ हाफ़टोन चित्र हैं। मूल्य केवल २)

प्रबन्धकर्ता

सद्धर्म प्रचारक पत्र, देहली

आवश्यकता।

एक कुमार आर्य अग्रवाल वैश्य उम्र २० साल के विवाह के लिये जो इन्टरेन्स किलास में पढ़ता है एक लिखी पढ़ी आर्य कन्या अग्रवाल वैश्य उम्र १३ वर्ष के विवाह के वास्ते १ योग्य आर्य्यवर की जरूरत है गोत्र दोनों का शैगल है।

ब्रज भूषण लाल मैनेजर

आर्य्यकन्या पाठशाला अमरोहा

जिला मुरादाबाद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक कोक, सामुद्रिक योग मन्त्र, ज्योतिष शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्र व्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसरम हेशचरण सिंह, बी०, ए० एम० एस० सी० ए० जी० आर० गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) वड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० दा =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपन्ना।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ।।।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटवाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि **दुनिया भर में शुद्ध** शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक **दूसरी दवा नहीं है।** हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त **चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत** जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, **श्वास, खाँसी, विशेषतः** रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के **ऊपर इसका सेवन** किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा **सेवन विधि** का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२)	।=)
१०	४)	।=)
२०	८)	।=)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

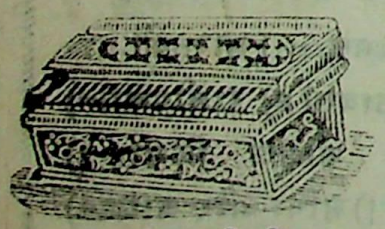

इस पुस्तक में कई प्रकार की ग़ज़ल, क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।=) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≠)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पो०

दद्रु नाशक साबुन

मंगाकर लगाइये नया पुराना दाद बात की बात में नाश हो जायगा। तारीफ यह है कि दाद के कष्ट को एक दिन में ही फायदा पहुंचता है बहुतेरे प्रशंसा पत्र मिल चुके हैं तीन टिकियों के बड़े बक्स का मूल्य ॥) बारह आना एक टिकिया) चार आना डाक महसूल पूरे बक्स तक ।) चार आना प्रेम महाविद्यालय की प्रदर्शनी में इनाम पाया हुआ"

चँद्रमुखी साबुन

इस महा सुगन्धित साबुन के लगाने से मुख की मलीनता मुहाँसा झाईं छीप आदि दूर होकर मुख चन्द्रमा के समान सुशोभित होने लगता है ३ टिकिया का बक्स का मूल्य ॥) डाः मः ।)

बाल उड़ाने का अद्भुत साबुन

इसके लगाने से ५ मिनट बाद बाल उड़ जाते हैं स्थान सुंदर कोमल और चिकना हो जाता है किसी तरह की तकलीफ नहीं होती मूल्य की टिकिया ।) डाक महसूल पूरे बक्स का ।)

पता— दद्रु नाशक साबुन आफिस नं० १

अलीगढ़ सिटी(

२४६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता ।
ऐसा जब होता है तब झखर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे समयपर में सब संसारके कंपनी प्रसूताका बनाया 'सूर्यासिंधु' पास हो तो फिर मौत का घर नहीं रहता ।
इसके सेवन करने से कोई अनुपान लगाना नहीं करना पड़ता सब रोगोंके केवल पानी ही के साथ पीये से अपना गुण दिखाता है ।
मूल्य १ शीशी का ।)
डाक खर्च का ।)
सर्वसाधारण के लाभार्थ रजिष्ट्री किया हुआ
कफ, दमा, खांसी, श्वास
अतिसार आंवसहित संग्रहणी के लिये
सर्दीकाबुखार जी मिचलाना वमनोंकेहरणीलेकर
हारीर का दर्द ऊंकारखांसी
हरेकाति रोगों की स्वादिष्ट शीशी दवा
मूल्य ॥) आना
जिस किसी रोग के लक्षणों का जलन के साथ जो अनेक बार पाखी देखा हो (कोमल ॥) मूल्य ॥)
इसकी सेवन से सर्वांगसुंदरी सहित सर्वांग सुंदरी
मिलने का पता—धन्वन्तरि दवाखाना, माटीफ,
सेठ संचारक कम्पनी मथुरा

'वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर कीहै, जो सुढ़िगती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदात्र शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो कवारा हृष्ट पुष्ट २५ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थापर
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा
पंजाब लाहौर

एजन्ट चाहियें ।
नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये ।
एच० एच० शर्म्मा (स)
चान्द--जि० आरा

हज़ार २ धन्यवाद है

उस दया निधि परमात्मन् का जिसकी कृपा से "अमृतधारा" ने थोड़े काल में इतनी प्रसिद्धि पाई है, कि "अमृतधारा बिलडिंगस्" के भीतर एक खास डाकखाना "अमृतधारा डाकखाना" नामी खोला गया है, अमृतधारा कारखाना के पास से जो सड़क ग्वालमण्डी को निकाली गई उसका नाम "अमृतधारा रोड़" रक्खा गया है, कार्य्यालय अमृतधारा की औषधियों के सम्बन्ध में पदक मिले, प्रशंसा पत्र मिले, और चारों ओर से "अमृतधारा" २ की ही पुकार है। कार्य्यालय अमृतधारा को अपनी बढ़ती हुई आवश्यकता को पूर्ण करने के वास्ते एक और बड़े मकान की आवश्यकता हुई, जो भी ईश्वर की कृपा से अति सुन्दर तय्यार हुआ है। इस—

अमृतधारा भवन के खुलने की रीति

श्रीमान् मिस्टर ऐफ़ डबल्यू कनवे साहब सी. आई. ऐस. डिपटी कमिश्नर लाहौर के हाथों ९ मई १९१४ को शहर लाहौर वरन् पञ्जाब के भी प्रायः प्रतिष्ठितों के बड़े जलसे के भीतर पूर्ण हुई

जिस में आनरेबल राय बहादुर सर डाक्टर परतूल चन्द्र सी. आई. ई. भूतपूर्व जज चीफ़कोर्ट पंजाब और खान बहादुर आनरेबल मियां महम्मद शफी बेरिस्टर ऐट-ला की देशी चिकित्सा के विषय में उच्च वक्तृताएं हुई ॥

इस अद्वितीय हर्ष के प्रकाश में,

और अपने हज़ारों ग्राहकों को भी खुशी में सम्मिलित करने के वास्ते, प्रकाशित किया जाता है कि १७ मई १९१४ से २४ जोलाई १९१४ तक अमृतधारा व कारखाना की अन्य औषधियाँ व पुस्तकें ¼ मूल्य पर मिलेंगी,

अर्थात् प्रति रुपया ।) की रियायत होगी ॥

नोट—जलसे का वृत्तान्त जिन्होंने न पढ़ा हो इस से मंगवालें ॥

सूचीपत्र जिसके पास न हो शीघ्र मंगावें, एक पैसे का कार्ड सूचीपत्र के वास्ते लिखने से सब पहुंच जावेगी ॥ इस हिसाब से प्रसिद्धौषधि अमृतधारा की बड़ी शीशी २॥) के स्थान में १॥=) में, और नमूना की छोटी शीशी ॥) के स्थान में ।=) में मिलेगी, जिन श्रीमानों को किसी कारण से अद्यावधि आज़माने का अवसर नहीं हुआ उनके वास्ते अच्छा अवसर है ॥

कारखाना अमृतधारा की रियायत न्यामत होती है लाभ उठाइये ॥

पत्र या तार के वास्ते केवल [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri Uniersity Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूटी बटिका** मौका नचूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी बटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी बटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्राह्मी बूंटी बाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजित। विषशोथज्वर हरी मैधायुबलवबाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ और छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न।

अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी-(शुद्ध व असली) की तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रमलाल शाह गगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालय

१०००) एकहज़ार रुपये की

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालें दीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक उन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९८१४ पृष्ठ चौदह जिल्दमें एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)— ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक वा दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

वाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंग्लिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद यू. पी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

... के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय ... में सहित व प्रकाशित

No. 11
DELHI

No L. 807

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

३१ ज्येष्ठ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० १३ जून १९१४

संख्या ९
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने ना सुना होगा और उसका चरित कौन न पाढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिस ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्[illegible] हैं । उन्होंने बंगला में [illegible] नामक एक शिक्षा दायक उ[illegible] है । उसके बंगाली में कई [illegible] चुके हैं । उसी उपन्यास [illegible] अनुवाद है । इसे उपन्या[illegible] की खान कहना चाहिये । [illegible] अन्त तक मनोरञ्जकता [illegible] भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्र की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना [illegible] पुस्तक कोआदि से [illegible] ध्यान [illegible] श्य पढ़िये । [illegible] पुकार [illegible] राष्ट्र [illegible] ग [illegible] नी, [illegible] उपयोगी है । सम्पादक पं[illegible] रामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० के इतिहा[illegible] ला [illegible] वार्षिक मूल्य ३) लाया गय[illegible]

राष्ट्रीय [illegible] पता—मैनेजर [illegible] लाहौर

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक	=) प्र०	
तीन मास " " " "	=)	"
छः " " " " "	-)॥	"
सालभर " " " "	-)	"

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहा[illegible] [illegible]कर्त्ता से कीजिये ।

[illegible] बंटाई

(१) [illegible] प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र [illegible] बंट[illegible]

(२) क्रोड़[illegible] [illegible]धा कालम समाचा[illegible] एक योग्य अ[illegible] सिरे पर सद्धर्मप्रचा[illegible] है वेतन योग्यता[illegible] की तिथि छपी होनी [illegible] व्योहार निम्नलि[illegible] [illegible]बन्ध कर्तासे पूछ कर

[illegible]ध तोले तक १२)
१५)

कन्या ब्रह्मचर्याश्र[illegible] से कीजिये ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डाक्तर एस, के, बर्म्मन की प्रसिद्ध पेटेंट दवाएं।
नकली बर्मन और उनके झूठेविज्ञापन से बचो

खून बिगड़ने के कारण अक्सर गर्मी में फोड़े, फुन्सी, रग मैला वो क्षीणता आदिक रोग उपजते हैं, इस हालत को मिटाने के लिये हमारा—

आईओडाइजेड् सालसा

खून साफ करने की दवा सेवन करो।
मोल ॥) शीशी डाः मः ।=) छः आने।

असल पिपरमिण्टका तेल आजकल बाजार में मिलना कठिन है, सब तारपिन का तेल मिला कर एक की तीन शीशी बना कर बेच रहे हैं, यदि असल तेल सेवन करना हो तो हमारे यहां का एमेरिका का पिपरमिण्ट का तेल एक बार परीक्षा करो।
मोल ॥=) दस आने डाः मः ।-) आने।

सब जगह हमारे एजेण्ट और दवा फरोशों के पास मिलेगी अथवा—

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

एजेन्टः—बाबूराम जैनी कूचासेठ दिल्ली

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानूनदर्पण।

एक ही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिन से हर मनुष्य को काम पड़ता है जैसे ताजीरातहिन्द, जाब्ता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तल्लाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुखत्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार वगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम [illegible] हैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्या[illegible] की पुस्तकों से मुकाबिला करो [illegible] रु० डाक व्यय ३) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय [illegible] एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट [illegible] य सिर्फ १) [illegible] सेवन विधि साथ भेजेंगे।

मिलनेका प[illegible] [illegible]ढ़ सिटी

दवा मिलने का पताः—

किशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

आवश्यक्ता

वैदिक कन्यापाठशाला जहांगीराबाद के लिये एक अध्यापिका की आवश्यक्ता है जो प्रथम कक्षा से चतुर्थ कक्षा तक पढ़ा सके। जिसका चाल चलन यो[illegible] हो आर्य्य हो तथा कुछ सीना, भोज[illegible] बनाना इत्यादि भी सिखासके। प्रार्थनापत्र निम्न पते पर आनी चाहियें वेतन योग्यतानुसार दी जायगी।

दिलाराम मुनीम
जहांगीराबाद (बुलन्दशहर)

आवश्यकता।

एक कुमार आर्य अग्रवाल वैश्य [illegible] २० साल के विवाह के लिये जो इन्टरै[illegible] किलास में पढ़ता है एक लिखी पढ़ी आ[illegible] अग्रवाल कन्या की और एक लिखी प[illegible] आर्य कन्या अग्रवाल वैश्य उम्र १३ [illegible] के विवाह के वास्ते १ योग्य आर्य्यव[illegible] जरूरत है गोत्र दोनों का शैगल है।

ब्रज भूषण लाल मैनेजर
आर्य्यकन्या पाठशाला अमरोहा
जिला मुरादाबा[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द बाला ५॥।)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिदेंषभाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥।)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ५-)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।-)
प्रार्थना पुस्तक -)
ओंकार की उपासना -)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश -)
वेद और महाभारत के उपदेश -)
वेद, मनु और गीता के उपदेश -)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द =)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगों को दूर कर के थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है। मूल्य २॥) डिब्बी डा: म: माफ।

पता.—वी.एल.बूबनाएण्डको०
दिल्ली नं० ३

एजन्टोंकीआवश्यकता

हाथरस के असली पक्के चाकू पसंद नहीं तो वापिस विलायती चाकुओं से अच्छे सस्ते और मज़बूत हैं ल० बेंट ।॥। -) -)। =) =)॥ ≡)॥। चं० बेंट -) -)॥ =) =)॥ ≡)॥ -) घडी का =) उस्तरा ।=) पता:
पता—भारतहितकारी कार्यालय नं० १
हाथरस सिटी।

क्या आपने हिंदी का नया साप्ताहिक पत्र

प्रताप

देखा है?

"प्रताप" राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक, प्रश्नों पर स्वतन्त्रता और निर्भीकता से अपनी सम्मति प्रकट करता है। उसका आकार रायल क्वार्टो १६ पेज और वार्षिक मूल्य २॥) रु है।

यदि आपने "प्रताप" न देखा हो तो कृपया एक प्रति नमूने को मंगाकर देखिए।

सभी हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रों ने उसकी प्रशंसा की है।

मेनेजर 'प्रताप' कानपुर

आवश्यकता।

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ठट्ठासिंध के लिये एक योग्य अधिष्ठात्री की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा पत्र व्योहार निम्नलिखित पते पर करें।

नरसिंहलाल
प्रबन्धकर्त्ता
कन्या ब्रह्मचर्याश्रम, ठट्ठा, (सिन्ध)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द वाच

मूल्य केवल

५॥)

रुपया

गारन्टी ५ साल

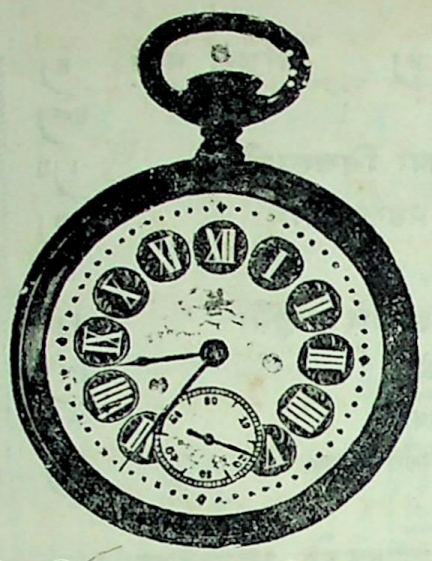

श्री महात्मा मुंशीराम, धर्मवीर पँडित लेखराम, पँ० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन हमने उक्त नाम की घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौरसे विलायत से बनवाकर मगाई हैं जिस में मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय, हर घड़ी के साथ में एक कांच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा—

इस के अलावे हमारे यहाँ हर तरह की घड़ियां बहुत सस्ते दामों पर मिलती हैं सिस्टम राशकोप मूल्य ३) रुपे, लवेरैग्यूलेटर मूल्य ४) रुपये, बाजा बजाने वाली टायम पीस मूल्य ४॥) रुपये—

पता दी स्वीज़रलैंड, वाच कम्पनी हाथरस नँ० ४

(२४५)

हाथरस के नये फैशन के कमानीदार पक्के चाकू व लीवर ताले

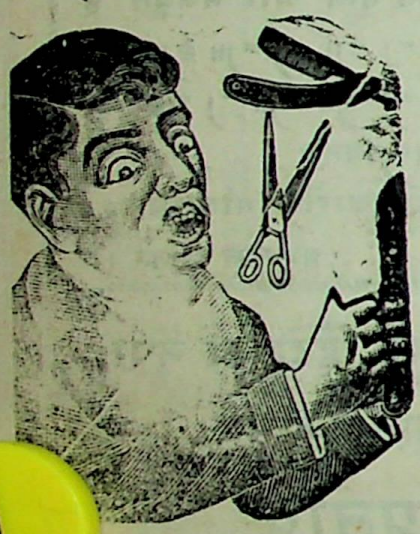

एजेंटों की आवश्यकता

यह स्वदेशी चाकू विलायती चाकुओं से सुन्दर और सस्ते हैं।

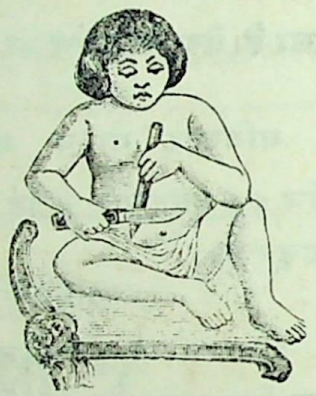

चन्दन की मूंठ कमानी दार

॥-) ।=) ।-) ।)

लकड़ी मूठ कमानी दार

॥) ।=) ।) ≡) ॥=)

जर्मनी फैशन चन्दन ।=) लकड़ी ।) स्याह मूंठ ।=) ।) चन्दन मूठ सादा ।=) ।) ≡) =) ॥-) लकड़ीमूठ सादा ।-) ।) ≡)-)। -)) ॥। हाथीदांत कमानीदार ॥=) ॥) ≡) =) दो फला ॥) चन्दन दोफला ॥=) ॥) शिकारी छुरी १) ॥) पीतल मूठ चाकू ॥) ।=) नये फैशन लोहे व पीतल के खरौते ॥) ॥=) ॥) ।=) पवित्र सुगन्धित बढ़िया हींग १०) ८) ६) रुपये सेर देशी सूत रंगीन धारी गमदे ।=) ।) ≡) =)

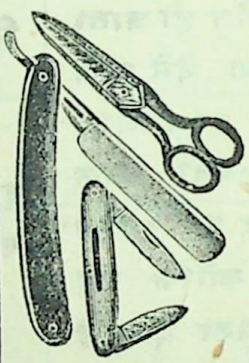

दूसरी चावी से न खुलने वाले लीवर दार लोहे के ताले मूल्य

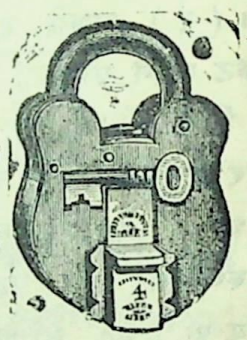

॥) ॥) =) इञ्च सादा ।-) ।) इञ्च पीतल लीवरदार १) ॥) ॥) इञ्च सादा ।=) ।) ≡) इञ्च विलायती फैशन के देशी उस्तरे ॥) ।=) ।) बाल काटने की कैंची १) ॥) कपड़ा काटने की मज़बूत कैंची ॥) ॥=) ॥)

पता-स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

(२४५)

अद्भुत ताक़त की दवा

यह उन्हीं लोगों के लिये बनाई गई है जो सब प्रकार से निराश हो बैठेहों शरीर की निर्बलता सर दुखना आंखों में अन्धेरा आना जवानी में बुढ़ापे की दशा का होना लड़कपन कुक्रियाओं से उत्पन्न अनेक रोगों की यह अव्यर्थ दवा है। इस के सेवन से शरीर निरोग और सुदृढ़ होकर चेहरे पर रौनक आती है यह अद्भुत दवा जादू का सा काम करके दिखलाती है। मूल्य ४० गोलियों की डिब्बी का २) डाक व्यय माफ़

प्रदर हर गोलियाँ

बेचारी स्त्रियां इस रोग को चुपचाप सहन करके शरीर को गला लेती हैं उन का गुलाब जैसा रंग बात की बात में पीला पड़ जाता है शरीर में दर्द पैदा होजाता है मासिक धर्म ठीक समय पर नहीं होता एवम् कष्टयुत होता है ऐसी दुखिया अबलाओं के हेतु ही "प्रदरहर" तयार की गई है इस के सेवन से उपरोक्त सब रोग नष्ट होते हैं और शरीर सब प्रकार के सुख भोगने योग्य बनजाता है मूल्य ४० गोलियों का २॥) डाकव्यय माफ

दाद की दवा

प्रशंसा करना व्यर्थ है एक बार मंगाकर नये पुराने चाहे जैसे दाद को जड़ से खोदो मूल्य फी डिब्बी ।=)

खाज की दवा

इस दुखदाई रोग से छुट्टी पाना है तो इसदवाकोबिना बिलम्ब सेवनकरोमूल्य ॥)

हिंग्वाष्टक चूर्ण

पेट के अनेक रोगों को शान्त करता है भूख बढ़ाता है एवम् पाचन करता है। मूल्य ॥)

तीनों का डाकव्यय अलग

मिलने का पता:—स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

(२४५)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहली में राजद्रोह का अभियोग।

सेशन कोर्ट में सरकारी वकील की वक्तृता समाप्त होने पर सरकार के साक्षी दीनानाथ की बयान आरम्भ हुई। कई दिनों तक इसके बयान के पश्चात् अभियुक्तों के वकीलों ने दीनानाथ के कथन को काटने के अभिप्राय से इस से अनेक प्रश्न किये। जिसमें कुछ स्थानों में दीनानाथ के कई बार कथन में भेद पायागया। तत्पश्चात् सरकार की ओर से अन्य साक्षियों का बयान अभी तक हो रहा है।

८ जून को कार्यवाही

ला० रघुनाथ सहाय ने दीना नाथ से दो एक प्रश्नों के पश्चात अमीरचन्द्र तथा अवध बिहारी के मकानों के चित्रकार ने अपने खेंचे हुए चित्रों को ठीक बतलाया। इसके अनन्तर पुलिस की ओर से मि० पेट्री साहब की बयान आरम्भ हुई जिसका भावार्थ निम्न लिखित है। मैं १४ दिसम्बर १९१२ ई० से देहली में एडीशनल पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट हूं। मेरा काम वायसराय के बम का पता लगाना है। गत ४ फरवरी को कलकत्ते के जाइन्ट मैजिस्ट्रेट मि० बैशजे देहली में ७ मकानों की तलाशी लेने के वारन्ट भेजे इनमें से एक मकान मा० अमीरचन्द्र का था। मा० अमीरचन्द्र से पता लगा कि अवध बिहारी अब दूसरे मकान में रहने लगा है। फिर अमीरचन्द के मकान के ऊपर गये और स्त्रियों को ऊपर के एक कमरे में बिठा दिया। अमीरचन्द्र की इच्छा पर मेरे निरीक्षण में ऐसा हुआ। उस समय कई लड़के भी थे। बड़ा लड़का सुलतान चन्द था। सुलतानचंद को अमीरचन्द्र से इशारे करते देख मैंने उसे स्त्रियों के पास जाने से रोक दिया। इसको अब क्षमा कर दियागया है। इतने में पु० सु० मि० हेडू भी आगये। मैंने ऊपर के कमरे मुहर लगाकर बन्द कर दिये थे। मि० हेडू पास ही एक और मकान की तलाशी के लिये गये थे परन्तु वह मकान बन्द था अतः उस पर पहरा लगा दिया गया था।

मैं उसी समय डि० कमिश्नर मि० बीडन के पास मोटर में गया और प्रेस एक्ट के अनुसार अवधबिहारी का वारन्ट लिखवा लाया। अमीरचन्द के साथ अवध बिहारी के मकान पर गया। यह मकान अमीरचन्द के मकान प्रेम धाम से ३०० के लगभग दूर था' अमीर चन्द के मकान पर उसके पीछे उसकी ओर सुलतानचन्द निरीक्षक रहा।

अपने मकान पर अवध बिहारी उपस्थित था। अमीरचन्द के पुकारने पर नीचे आगया। अमीरचन्द लौट गया। लगभग १० मिनट अमीरचंद अपनेमकान से अनुपस्थित रहा होगा। तलाशी के गवाहों के आने तक अवध बिहारी को अपने पास खड़ा रखा। रामलाल वहीं पर था। बिस्तरे से पता लगता था कि वह वहीं सोया था। अवध बिहारी ने उसको अपना मित्र बत लाया। जो वस्तुएं उसके घर से निकलीं उनकी सूचि मैंने स्वयम बनाई थी और मेरे तथा साथियों के उस पर हस्ताक्षर हैं।

जिस समय यह लेख प्रस्तुत किये गये मि० बोस ने कहा कि इन लेखों का अभियोग से कुछ सम्बन्ध नहीं है। यह महाशय रामलाल तथा बसन्तकुमार की ओर से वकील हैं। अपने कथन के सिद्ध करने के लिये आपने जो युक्ति दी उस का उत्तर सरकारी वकील मि० आलस्टन ने दिया। इस पर मि० बोस ने कानून पुस्तक दिखाई परन्तु अदालत ने आपका आक्षेप अस्वीकार किया कई और लेख दिखाने पर मि० बोस ने कहा इन सब के विषय में मेरा वही प्रश्न नोट कर लिया जावे, मि० पेट्री ने फिर कई लेखों को दिखाकर यह दिखाने का यत्न किया कि सुलतानचन्द और अवधबिहारी का गहरा सम्बन्ध था।

इसी प्रकार अन्य कई लेख और पुस्तकों के विषय में प्रश्नोत्तर होते रहे।

दिल्ली बम तथा लाहौर बम के टुकड़े अदालत में उपस्थित हुए। और अभियुक्तों के वकीलों की एक प्रार्थना अस्वीकार हुई। वह प्रार्थना यह थी कि दीनानाथ का वह कथन जो उसने खान बहादुर रहमत उल्ला के सन्मुख किया हमें दिया जावे।

इसके पश्चात् मि० पेट्री ने कई अन्य पुस्तकों को जो अवध बिहारी के घर से निकलीं थी पहचाना और एक ट्रंक देखकर कहा कि अवध बिहारी के घर से निकला था और उसने अपने एक दोस्त का बतलाया था। चाबी न होने से उसे तोड़ा गया उसके अंदर से कपड़े और पत्र निकले। उनसे विदित हुआ कि यह ट्रंक राश बिहारी का है। मैंने अवध बिहारी और रामलाल को गिरफ्तार कर लिया और उनको कोतवाली भेज कर अमीरचंद के घर पर लौट आया। अमीरचंद ने मुझे एक लिखित लिख कर दिया कि सुलतान चंद को स्कूल जाने दिया जावे। यह आज्ञा दे दी और अमीरचंद के घर की तलाशी आरम्भ की। उसी समय एक बंडल में से तीन परचे "लिबर्टी" के निकले फिर एक कापी उर्दू की मिली जिसमें कविताएं थीं। एक कविता "भारत माता की फरयाद" नामी थी। इस कविता के प्रचार के दोष में गणेशीलाल खरता को १९०९ में सरकार से क्षमा मांगनी पड़ी थी। उसको क्षमाकर दिया गया था। एक दूसरे कमरे में एक टाईप किया हुआ लेख मिला इस का शीर्षक यह था 'अब राम हिन्दोस्तान को आता है'। इस लेख के साथ नारायण स्वामी का एक पत्र भी था इसके पश्चात मि० पेट्री ने कहा कि एक और कमरे में गये तो अमीर चन्द्र ने कहा कि इस में मेरा और अवध बिहारी का सामान है परन्तु कुंजी दोनों में से किसी ने न दी। ताला तोड़ने पर इस कमरे में एक बकस मिला इसको अवधबिहारी ने अपना बताया और पुलिस के निरीक्षण में ताली ले आया। इस में साधारण वस्तुएं थीं। दूसरा बकस खोला जिस में अमीर चन्द ने अपने पिता के वस्त्र बताये। एक टायप राईटर निकला। वह यहां पर है इसके पश्चात् ब्रजलाल ने एक काग़ज़ का बक्स मुझे दिखाया यह बक्स अदालत

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri Foundation

में उपस्थित किया गया। इस के अन्दर एक टीन का बक्स है एक कागज़ की बम की टोपी है। इस के चारों ओर रूई लपेटी हुई थी इस पर पीले से धब्बे पड़े थे। यह सब कुछ 'अमृत बाज़ार पत्रिका' में लपेटा हुआ था। शीशी में श्वेत रंग की बहने वाली वस्तु है। रासायनिक परीक्षक का कथन है कि बम की टोपी में झक से उड़ जाने वाला मसाला है और रूई पर पिक्रिक एसिड के धब्बे हैं। बोतल में पेट्रोल है। इस के पश्चात् मि० पेट्रो ने कुछ राज द्रोह सम्बन्धी लिफ़ाफों का ज़िक्र करते हुए 'लिबरटी' के छपने की तिथियों के विषय में कुछ कहा। अर्जुन लाल सेठी का सम्बन्ध दिखाया।

९ जून को क्या हुआ

अभियुक्तों के वकीलों ने फिर कुछ प्रश्न किये जिन पर कुछ तर्क होती रही इस के अनन्तर स्वीकार हुआ कि खां साहब रहमत उल्ला को दिया हुआ दीनानाथ का लाहौर वाला बयान शहादत में सम्मिलित न हो। दीनानाथ देहली से चला गया है ऐसा प्रतीत होता है क्योंकि वह अदालत में दिखाई नहीं दिया। उस पर जिरह समाप्त हो चुकी है।

१० जून

सरकारी वकील ने पैट्री की जिरह होने से पहिले मा० अमीर चन्द के घर "प्रेम धाम" को स्वयं जाकर देख आने की सलाह दी? उस सलाह पर जज, वकील असेसर प्रेम धाम को देखने प्रातः काल ७ आए। अभियुक्तों में केवल अमीर चन्द साथ था। जिस कमरे में से बम्ब की टोपियां मिली थीं, उस में घुसने पर जज ने छोटे छोटे आले थे। एक आले में आठ इंच के लग भग बड़ा छेद था। अमीर चन्द का कथन था कि बम्ब की टोपियों का बक्स इस छेद के ऐन नीचे से मिला था। इंस्पैक्टर ब्रज लाल वहीं था, उसने कहा कि बम्ब का बक्स इस छेद से कई गज दूरी पर से मुझे मिला था। जज ने छेद को देख कर कहा कि इस पर नए पलस्तर के चिन्ह दिखलाई देते हैं। मि० पैट्री ने भी कमरे में घुसते ही कहा कि यह छेद तलाशी के समय यहां नहीं थी। पर मा० अमीर चन्द ने कहा कि यह छेद पहले से था (अभियुक्तों के वकील रघुनाथ सहाय ने कहा कि यह नोट कर लिया जावे कि सरकारी वकील की सलाह पर ही मौका देखा गया है।

संसार की गति

देहली की पुलीस और महर्षि दयानन्द को गालियां—हम पाठकों का ध्यान उस लेख की ओर खींचना चाहते हैं जो "पुलिस के द्वार पर अन्धेर" शीर्षक से और जगह मुद्रित हुआ है। गत सप्ताह में यहाँ जो घटनाएं हुई हैं, उन्हें देख कर कहना पड़ता है कि सच मुच ही यह केवल पुलिस के द्वार पर ही नहीं, किन्तु पुलिस का भी अन्धेर है। इस लेख के साथ मिलाकर यदि आप उस व्याख्यान को पढ़ेंगे जो पं० रामचन्द्र जी ने ७ जून को फव्वारे पर दिया था और जो इसी अङ्क में १७ वें पृष्ट पर प्रकाशित हुआ है तो पुलिस की इस अंधेरी पर और भी आश्चर्य होगा जिस फव्वारे पर प्रति दिन धर्म प्रचार होता है वह कोतवाली के ऐन सामने है। उस फव्वारे पर कई दिनों से लगातार ऋषि दयानन्द को गालियां दी जांय और हिन्दु धर्म का अपमान किया जाय पर पुलिस कोई नोटिस न ले. यह बड़े आश्चर्य की बात है। पं० रामचन्द्र जी के व्याख्यान से पता लगता है कि २३ मई को उन्हों ने एक मुसलमान हवलदार से अब्दुल कबीर और सुभान अली की शिकायत भी की थी, पर उस का फल कुछ न हुवा। क्योंकि उसके दो सप्ताह पीछे तक गालियों की बौछाड़ जारी रही। पुलिस के डिप्टी सुपरिंटेंडेन्ट एक मुसलमान सज्जन हैं जिनका नाम मि० अब्दुल्ला खां है। उन के पास पं० रामचन्द्र जी के रिपोर्ट करने पर जो फल हुआ, उस से आर्य्यसमाजियों के साथ कहाँ तक न्याय हुआ है, इसे पाठक स्वयं विचार कर सक्ते हैं। हम बड़ी नम्रता पूर्वक डिप्टी कमिश्नर साहब का ध्यान इस सारी घटना की ओर आकर्षित करते हैं। हमें सब से बड़ी शिकायत यह है कि आर्य्यसमाजियों की ओर पुलिस अपना कर्त्तव्य पालन नहीं करती। नहीं तो हमें बतलाया जाय कि इतने दिनों तक खुफ़िया पुलीस ने गालियों की बात डिप्टी सुपरिंटेंडंट साहब के पास क्यों नहीं पहुंचाई और यदि पहुंचाई तो क्यों उन्हों ने उसका कुछ प्रतीकार नहीं किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि देहली की पुलिस ऊपर से नीचे तक प्रायः मुसलमानों से भरी है पर आर्य्यसमाजियों के साथ अन्याय होने का यह कोई कारण न होना चाहिये। हम स्पष्टतया बतला देना चाहते हैं कि इस घटना ने आर्य्यसमाजियों के हृदय को अत्यन्त चोट पहुंचाई है और वे पुलीस की कार्रवाई से और भी अधिक दुःखित हुए हैं। हमें पूरी आशा है कि डिप्टी कमिश्नर साहब इस मामले को अपने हाथ में लेंगे और आर्य्यसमाजियों के साथ पूरा न्याय करेंगे।

"प्रकाश" और संयुक्त प्रान्त का विदेश प्रचार—किसी और स्थान में हम ने वह चिट्ठी प्रकाशित करते हैं जो संयुक्त प्रान्त की प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से सहयोगी "प्रकाश" के लेखों के उत्तर में हमें प्राप्त हुई है। संयुक्त प्रान्त की प्रतिनिधि सभा अंग्रेजी सत्यार्थ-प्रकाश की ५००० कपियां छपवा कर अमरीका में पं० केशवदेवजी की सहायता के लिये भेजना चाहती है। सहयोगी "प्रकाश" ने एक लेख में इसकी उपयोगिता पर विचार करते हुए लिखा था कि इससे व्यय अधिक होगा और लाभ कम। यहां पुस्तक अच्छी न छप सकेगी और यहां से अमरीका भेजने में व्यय अधिक होगा, इसके साथ ही, पहिले पहिल ही भिन्नधर्मी लोगों से आशा करना कि वे इतनी बड़ी पुस्तक को पढ़ने का कष्ट उठावेंगे उचित प्रतीत नहींहोता, सत्यार्थप्रकाश की अपेक्षा और छोटी २ पुस्तकों का भेजा जाना अधिक उपयुक्त होगा। सहयोगी प्रकाश के लेख का यही सारांश था। सभा की चिट्ठी में इन्हीं बातों का उत्तर देने का यत्न किया गया है। हम इस विषय में स्वयं बहुत कुछ लिखना चाहते थे परन्तु आर्य्यमित्र के नये अङ्क को देखकर हमने उस विचार को अभी रहित कर दिया है। हमें पहिले से ही डर था कि इससे पंजाब और यू० पी० का झगड़ा बनाया जायगा और आर्य मित्र के लेख को देखकर हमारा वह डर सच निकला है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत की एक लिपी—कई लोग समझा करते हैं कि सचाई किसी परिश्रम बिना अपने आप संसार में विजय प्राप्त कर लेती है। उसके लिये हाथ पैर हिलाने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग हिन्दी को राष्ट्र भाषा और देवनागरी को राष्ट्र लिपि बनाना चाहते हैं वे भी इसी मत पर आचरण करते हैं। वे समझते हैं कि हमारी भाषा और लिपि में राष्ट्रीय होने की योग्यता होने के कारण ही लोग उसके सामने सिर झुका देंगे, इस विषय में हमें अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं है। वे नहीं देखते कि हमारे विरोधी किस परिश्रम से कार्य्य कर रहे हैं। कई पादरी रोमन लिपि को भारत की एक लिपि बनाने के लिये वर्षों से सिर तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं। चाहे अभीतक उन्हें सफलता प्राप्त न हुई हो, पर यदि वे लगातार परिश्रम करते रहें और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें तो असम्भव नहीं कि एक दिन हमारी सब आशा महीं में मिल जाय। इस में सबसे बड़े भय की बात यह है कि कई सरकारी अफ़सर भी अपने स्वार्थ के कारण इसी मत का पक्ष लेते हैं। इस समय हमें दृढ़ता और परिश्रम से कार्य्य करने की आवश्यकता है। कई वर्ष हुए, बा० शारदाचरण मित्र ने एक लिपि विस्तार परिशद को संगठित करके यह आन्दोलन उठाया था पर न जाने किन कारणों से मन्द पड़गया है। उन्होंने "देवनागर" नामक पत्र भी निकाला था जिसमें कई भाषाएं देवनागरी लिपि में लिखी जाती थीं। पर सुनते हैं कि आर्थिक क्षति के कारण मित्र बाबू ने इसे बंद करदिया। हमारी सम्मति में यह कार्य्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन को अपने हाथ में लेना चाहिये हिन्दी साहित्यसम्मेलन की एक स्थिर समिति बनजानी चाहिये जिसका काम देवनागरी को सर्व प्रिय बनाना और उसके विस्तार के लिये उद्योग करना हो। हम सम्मेलन को देवनागर के ढंग का पत्र निकालने की सम्मति देंगे। आर्थिक दृष्टि से चाहे इस कार्य्य में कुछ हानि होगी पर देवनागरी की सुगमता समझाने का इस से बढ़कर और कोई उपाय नहीं होसक्ता।

भारतवासियों की आय—सरस्वती का मई मास का अङ्क बड़े ही महत्व पूर्ण और पठनीय विषयों से सुसज्जित निकलाहै। उसमें अमरीकाप्रवासी श्रीयुत विष्णुदास कोछड़का "उद्योग धंन्धों की शिक्षा की ज़रूरत" नाम का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसे प्रत्येक भारतवासी को बड़े ध्यान से पढ़ना चाहिये। उसमें कई देशों की तुलनात्मक आय लिखी गई है जिसे हम नीचे देते हैं—

संयुक्त राज्य की फ़ी आदमी वार्षिक आय		६६०)
ग्रेट ब्रिटन	,,	५४०)
फ्रांस	,,	४६८)
जर्मनी	,,	३९२)
बैलजियम	,,	४२०)
हालैंड	,,	३३०)
नार्वे	,,	३००)
आस्ट्रेलिया	,,	२५०)
इटली	,,	२४०)
स्पेन	,,	२४०)
हिन्दुस्थान	,,	१५)

इस ब्योरे से प्रतीत होगा कि हिन्दुस्थान के एक आदमी की वार्षिक आय की औसत १५ अर्थात् प्रतिदिन ३ पैसे से भी कम के लगभग है। इसपर टिपणी करना निरर्थक है।

हमारी शक्ति का व्यर्थ नाश—इसी मास की ५ तारीख को मैसूर के आर्थिक सम्मेलन में रियासत के दीवान श्रीयुत विश्वासवर्य ने एक बड़ा महत्त्वपूर्ण भाषण किया। उसमें आपने बतलाया कि "भारतवासियों के जीवन में कई तरह का व्यर्थ नाश हो रहा है जिस से बचने का यत्न करना चाहिये। हम अपने साधनों और अवसरों—दोनों का नाश कररहे हैं। हमारा देश कृषि प्रधान है, यहां के किसान वर्ष में केवल छः सात महीने ही काम कर सक्ते हैं, इस से बहुत सी शक्ति व्यर्थ जारही है। १००में से ९४ अनपढ़ होने के कारण भोलेभारे देश का बहुत बड़ा भाग अनुपयोगी हो रहाहै। सभ्य देशों में आजकल जिन साधनों से कामलियाजाता है, नहीं उन से परिचय प्राप्त करते हैं और नाहीं उनके अनुभव और कौशल से लाभ उठाते हैं, इसलिये भी हमारी बहुत सी शक्तियां व्यर्थ जारही हैं। कारोबार और व्यापार में ठीक आदर्श को सामने न रखने और सभ्यता की साधारण बातों से भी अनभिज्ञ होने के कारण भी व्यर्थ नाश हो रहा है। हमारी मानसिक शक्तियाँ ज़ातपात के झगड़ों और बिरादरी की धड़े बन्दियों में नष्ट होरही हैं। ज़मीन में गाड़ रखने के कारण हमारे उस धन की शक्ति व्यर्थ जारही है जिसे उपजाऊ २ चीजों में लगना चाहिये। यद्यपि हम धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं तो भी स्वास्थ्य के प्रारम्भिक नियमों से अनभिज्ञ होने के कारण और शरीर की ओर कुछभी ध्यान न देने के कारण हमारे स्वास्थ्य का नाश होरहा है। हमारा सब से बड़ा व्यर्थ नाश वह है जो परस्पर एकता, प्रेम सहानुभूति, और जातीय आपत्ति में समदृष्टि के अभाव के कारण होरहा है। इस सर्वतोगामी व्यर्थ नाश से बचने का भारतवासियों को प्रयत्न करना चाहिये।"

नकली "महाभारत"—यदि देहली के प्रबन्ध की बागडोर एक दिन के लिये मेरे हाथ में दी जाय और अपने मन के अनुसार प्रबन्ध करने की स्वच्छन्दता हो तो सबसे पहिला काम जो करूं वह महाभारत नाटक का अभिनय बन्द करना है जो आजकल रामा थियेटर में खेला जारहा है। पिछले वर्ष देहली नगर में काऊसजी की कम्पनी को महाभारत के नाटक खेलने पर आर्थिक दृष्टि से बड़ी सफलता हुई। उसे देख कर अब कई कम्पनियाँ महाभारत खेलने लगी हैं। अभी कुछदिन हुए, राजपूताना की कम्पनी ने महाभारत खेला था। अब इंडियन शेक्सपीरियन कम्पनी महाभारत खेलरही है। विशेषता यह है कि इसने अक्षर २ उसी महाभारत को खेलना आरम्भ किया है जिसे काऊसजी की कम्पनी खेलती है। हमें निश्चय है कि महाभारत खेलकर इस कम्पनी को अपने दुस्साहस पर अवश्य ही पश्चात्ताप हुआ होगा। पिछले वर्ष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में उपस्थित किया गया। इस के अन्दर एक टीन का बक्स है एक कागज़ की बम की टोपी है। इस के चारों ओर रूई लपेटी हुई थी इस पर पीले से धब्बे पड़े थे। यह सब कुछ 'अमृत बाज़ार पत्रिका' में लपेटा हुआ था। शीशी में श्वेत रंग की बहने वाली वस्तु है। रासायनिक परीक्षक का कथन है कि बम की टोपी में भक से उड़ जाने वाला मसाला है और रूई पर पिक्रिक एसिड के धब्बे हैं। बोतल में पेट्रोल है। इस के पश्चात् मि० पेट्री ने कुछ राज द्रोह सम्बन्धी लिफ़ाफों का ज़िक्र करते हुए 'लिबरटी' के छपने की तिथियों के विषय में कुछ कहा। अर्जुन लाल सेठी का सम्बन्ध दिखाया।

९ जून को क्या हुआ

अभियुक्तों के वकीलों ने फिर कुछ प्रश्न किये जिन पर कुछ तर्क होती रही इस के अनन्तर स्वीकार हुआ कि खां साहब रहमत उल्ला को दिया हुआ दीनानाथ का लाहौर वाला बयान शहादत में सम्मिलित न हो। दीनानाथ देहली से चला गया है ऐसा प्रतीत होता है क्योंकि वह अदालत में दिखाई नहीं दिया। उस पर जिरह समाप्त हो चुकी है।

१० जून

सरकारी वकील ने पैट्री की जिरह होने से पहिले मा० अमीर चन्द के घर "प्रेम धाम" को स्वयं जाकर देख आने की सलाह दी? उस सलाह पर जज, वकील असेसर प्रेम धाम को देखने प्रातः काल ७ आए। अभियुक्तों में केवल अमीर चन्द साथ था। जिस कमरे में से बम्ब की टोपियां मिली थीं, उस में घुसने पर जज ने छोटे छोटे आले थे। एक आले में आठ इंच के लग भग बड़ा छेद था। अमीर चन्द का कथन था कि बम्ब की टोपियों का बक्स इस छेद के ऐन नीचे से मिला था। इंस्पैक्टर ब्रज लाल वहीं था, उसने कहा कि बम्ब का बक्स इस छेद से कई गज दूरी पर से मुझे मिला था। जज ने छेद को देख कर कहा कि इस पर नए पलस्तर के चिन्ह दिखलाई देते हैं। मि० पैट्री ने भी कमरे में घुसते ही कहा कि यह छेद तलाशी के समय यहां नहीं थी। पर मा० अमीर चन्द ने कहा कि यह छेद पहले से था (अभियुक्तों के वकील रघुनाथ सहाय ने कहा कि यह नोट कर लिया जावे कि सरकारी वकील की सलाह पर ही मौका देखा गया है।

संसार की गति

देहली की पुलीसऔर महर्षि दयानन्द को गालियां—हम पाठकों का ध्यान उस लेख की ओर खींचना चाहते हैं जो "पुलिस के द्वार पर अन्धेर" शीर्षक से और जगह मुद्रित हुआ है। गत सप्ताह में यहाँ जो घटनाएं हुई हैं, उन्हें देख कर कहना पड़ता है कि सच मुच ही यह केवल पुलिस के द्वार पर ही नहीं, किन्तु पुलिस का भी अन्धेर है। इस लेख के साथ मिलाकर यदि आप उस व्याख्यान को पढ़ेंगे जो पं० रामचन्द्र जी ने ७ जून को फव्वारे पर दिया था और जो इसी अङ्क में १७ वें पृष्ट पर प्रकाशित हुआ है तो पुलिस की इस अंधेरी पर और भी आश्चर्य होगा जिस फव्वारे पर प्रति दिन धर्म प्रचार होता है वह कोतवाली के ऐन सामने है। उस फव्वारे पर कई दिनों से लगातार ऋषि दयानन्द को गालियां दी जांय और हिन्दु धर्म का अपमान किया जाय पर पुलिस कोई नोटिस न ले. यह बड़े आश्चर्य की बात है। पं० रामचन्द्र जी के व्याख्यान से पता लगता है कि २३ मई को उन्हों ने एक मुसलमान हवलदार से अब्दुल कबीर और सुभान अली की शिकायत भी की थी, पर उस का फल कुछ न हुवा। क्योंकि उसके दो सप्ताह पीछे तक गालियों की बौछाड़ जारी रही। पुलिस के डिप्टी सुपरिंटेंडेन्ट एक मुसलमान सज्जन हैं जिनका नाम मि० अब्दुल्ला खां है। उन के पास पं० रामचन्द्र जी के रिपोर्ट करने पर जो फल हुआ, उस से आर्य्यसमाजियों के साथ कहाँ तक न्याय हुआ है, इसे पाठक स्वयं विचार कर सक्ते हैं। हम बड़ी नम्रता पूर्वक डिप्टी कमिश्नर साहब का ध्यान इस सारी घटना की ओर आकर्षित करते हैं। हमें सब से बड़ी शिकायत यह है कि आर्य्यसमाजियों की ओर पुलिस अपना कर्त्तव्य पालन नहीं करती। नहीं तो हमें बतलाया जाय कि इतने दिनों तक खुफ़िया पुलीस ने गालियों की बात डिप्टी सुपरिंटेंडेंट साहब के पास क्यों नहीं पहुंचाई, और यदि पहुंचाई तो क्यों उन्हों ने उसका कुछ प्रतीकार नहीं किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि देहली की पुलिस ऊपर से नीचे तक प्रायः मुसलमानों से भरी है पर आर्य्यसमाजियों के साथ अन्याय होने का यह कोई कारण न होना चाहिये। हम स्पष्टतया बतला देना चाहते हैं कि इस घटना ने आर्य्यसमाजियों के हृदय को अत्यन्त चोट पहुंचाई है और वे पुलीस की कार्रवाई से और भी अधिक दुःखित हुए हैं। हमें पूरी आशा है कि डिप्टी कमिश्नर साहब इस मामले को अपने हाथ में लेंगे और आर्य्यसमाजियों के साथ पूरा न्याय करेंगे।

"प्रकाश" और संयुक्त प्रान्त का विदेश प्रचार—किसी और स्थान में हम ने वह चिट्ठी प्रकाशित करते हैं जो संयुक्त प्रान्त की प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से सहयोगी "प्रकाश" के लेखों के उत्तर में हमें प्राप्त हुई है। संयुक्त प्रान्त की प्रतिनिधि सभा अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश की ५००० कपियां छपवा कर अमरीका में पं० केशवदेवजी की सहायता के लिये भेजना चाहती है। सहयोगी "प्रकाश" ने एक लेख में इसकी उपयोगिता पर विचार करते हुए लिखा था कि इससे व्यय अधिक होगा और लाभ कम। यहां पुस्तक अच्छी न छप सकेगी और यहां से अमरीका भेजने में व्यय अधिक होगा, इसके साथ ही, पहिले पहिल ही भिन्नधर्मी लोगों से आशा करना कि वे इतनी बड़ी पुस्तक को पढ़ने का कष्ट उठावेंगे उचित प्रतीत नहींहोता, सत्यार्थप्रकाश की अपेक्षा और छोटी २ पुस्तकों का भेजा जाना अधिक उपयुक्त होगा। सहयोगी प्रकाश के लेख का यही सारांश था। सभा की चिट्ठी में इन्हीं बातों का उत्तर देने का यत्न किया गया है। हम इस विषय में स्वयं बहुत कुछ लिखना चाहते थे परन्तु आर्य्यमित्र के नये अङ्क को देखकर हमने उस विचार को अभी रहित कर दिया है। हमें पहिले से ही डर था कि इसे पंजाब औरयू० पी० का झगड़ा बनाया जायगा और आर्य मित्र के लेख को देखकर हमारा वह डर सच निकला है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत की एक लिपी—कई लोग समझा करते हैं कि सचाई किसी परिश्रम के बिना अपने आप संसार में विजय प्राप्त कर लेती है। उसके लिये हाथ पैर हिलाने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग हिन्दी को राष्ट्र भाषा और देवनागरी को राष्ट्र लिपि बनाना चाहते हैं वे भी इसी मत पर आचरण करते हैं। वे समझते हैं कि हमारी भाषा और लिपि में राष्ट्रीय होने की योग्यता होने के कारण ही लोग उसके सामने सिर झुका देंगे, इस विषय में हमें अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं है। वे नहीं देखते कि हमारे विरोधी किस परिश्रम से कार्य्य कर रहेहैं। कई पादरी रोमन लिपि को भारत की एक लिपि बनाने के लिये वर्षों से सिर तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं। चाहे अभीतक उन्हें सफलता प्राप्त न हुई हो, पर यदि वे लगातार परिश्रम करते रहें और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें तो असम्भव नहीं कि एक दिन हमारी सब आशा मट्टी में मिल जाय। इस में सबसे बड़े भय की बात यह है कि कई सरकारी अफ़सर भी अपने स्वार्थ के कारण इसी मत का पक्ष लेते हैं। इस समय हमें दृढ़ता और परिश्रम से कार्य्य करने की आवश्यकता हैं। कई वर्ष हुए, बा० शारदाचरण मित्र ने एक लिपि विस्तार परिशद् को संगठित करके यह आन्दोलन उठाया था पर न जाने वह किन कारणों से मन्द पड़गया है। उन्होंने "देवनागर" नामक पत्र भी निकाला था जिसमें कई भाषाएं देवनागरी लिपि में लिखी जाती थीं। पर सुनते हैं कि आर्थिक क्षति के कारण मित्र बाबू ने इसे बंद करदिया। हमारी सम्मति में यह कार्य्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन को अपने हाथ में लेना चाहिये हिन्दी साहित्यसम्मेलन की एक स्थिर समिति बनजानी चाहिये जिसका काम देवनागरी को सर्व प्रिय बनाना ओर उसके विस्तार के लिये उद्योग करना हो। हम सम्मेलन को देवनागर के ढंग का पत्र निकालने की सम्मति देंगे। आर्थिक दृष्टि से चाहे इस कार्य्य में कुछ हानि होगी पर देवनागरी की सुगमता समझाने का इस से बढ़कर और कोई उपाय नहीं होसक्ता।

भारतवासियों की आय—सरस्वती का गई मास का अङ्क बड़े ही महत्व पूर्ण और पठनीय विषयों से सुसज्जित निकलाहै। उसमें अमरीकाप्रवासी श्रीयुत विष्णुदास कोलड़का "उद्योग धंन्धों की शिक्षा की ज़रूरत" नाम का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसे प्रत्येक भारतवासी को बड़े ध्यान से पढ़ना चाहिये। उसमें कई देशों की तुलनात्मक आय लिखी गई है जिसे हम नीचे देते हैं—

संयुक्त राज्य की फ़ी आदमी वार्षिक आय		६६०)
ग्रेट ब्रिटन	,,	५४०)
फ्रांस	,,	४६८)
जर्मनी	,,	३९२)
बैलजियम	,,	४२०)
हालैंड	,,	३३०)
नार्वे	,,	३००)
आस्ट्रेलिया	,,	२५०)
इटली	,,	२४०)
स्पेन	,,	२४०)
हिन्दुस्थान	,,	१५)

इस ब्योरे से प्रतीत होगा कि हिन्दुस्थान के एक आदमी की वार्षिक आय की औसत १५ अर्थात् प्रतिदिन ३ पैसे से भी कम के लगभग है। इसपर टिपणी करना निरर्थक है।

हमारी शक्ति का व्यर्थ नाश—इसी मास की ५ तारीख को मैसूर के आर्थिक सम्मेलन में रियासत के दीवान श्रीयुत विश्वासवर्य ने एक बड़ा महत्त्वपूर्ण भाषण किया। उसमें आपने बतलाया कि "भारतवासियों के जीवन में कई तरह का व्यर्थ नाश हो रहा है जिस से बचने का यत्न करना चाहिये। हम अपने साधनों और अवसरों—दोनों का नाश कररहे हैं। हमारा देश कृषि प्रधान है, यहां के किसान वर्ष में केवल छः सात महीने ही काम कर सक्ते हैं, इस से बहुत सी शक्ति व्यर्थ जारही है। १००में से ९४ अनपढ़ होने के कारण भीहमारे देश का बहुत बड़ा भाग अनुपयोगी हो रहाहै। सभ्य देशों में आजकल जिन साधनों से काम लियाजाता है, नाँही उन से परिचय प्राप्त करते हैं और नाहीं उनके अनुभव और कौशल से लाभ उठाते हैं, इसलिये भी हमारी बहुत सी शक्तियां व्यर्थ जारही हैं। कारोबार और व्यापार में ठीक आदर्श को सामने न रखने और सभ्यता की साधारण बातों से भी अनभिज्ञ होने के कारण भी व्यर्थ नाश हो रहा है। हमारी मानसिक शक्तियाँ ज़ातपात के झगड़ों और बिरादरी की घड़े बन्दियों में नष्ट होरही हैं। ज़मीन में गाड़ रखने के कारण हमारे उस धन की शक्ति व्यर्थ जारही है जिसे उपजाऊ २ चीजों में लगना चाहिये। यद्यपि हम धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं तो भी स्वास्थ्य के प्रारम्भिक नियमों से अनभिज्ञ होने के कारण और शरीर की ओर कुछभी ध्यान न देने के कारण हमारे स्वास्थ्य का नाश होरहा है। हमारा सब से बड़ा व्यर्थ नाश वह है जो परस्पर एकता, प्रेम सहानुभूति, और जातीय आपत्ति में समदृष्टि के अभाव के कारण होरहा है। इस सर्वतो गामी व्यर्थ नाश से बचने का भारतवासियों को प्रयत्न करना चाहिये।"

नकली "महाभारत"—यदि देहली के प्रबन्ध की बागडोर एक दिन के लिये मेरे हाथ में दी जाय और अपने मन के अनुसार प्रबन्ध करने की स्वच्छन्दता हो तो सबसे पहिला काम जो करूं वह महाभारत नाटक का अभिनय बन्द करना है जो आजकल रामा थियेटर में खेला जारहा है। पिछले वर्ष देहली नगर में काऊसजी की कम्पनी को महाभारत के नाटक खेलने पर आर्थिक दृष्टि से बड़ी सफलता हुई। उसे देख कर अब कई कम्पनियाँ महाभारत खेलने लगी हैं। अभी कुछदिन हुए, राजपूताना की कम्पनी ने महाभारत खेला था। अब इंडियन शेक्सपीरियन कम्पनी महाभारत खेलरही है। विशेषता यह है कि इसने अक्षर २ उसी महाभारत को खेलना आरम्भ किया है जिसे काऊसजी की कम्पनी खेलती है। हमें निश्चय है कि महाभारत खेलकर इस कम्पनी को अपने दुस्साहस पर अवश्य ही पश्चाताप हुआ होगा। पिछले वर्ष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की कम्पनी ने महाभारत के नाम में एक आकर्षण शक्ति पैदा करदी है, उसने खिचेहुए लोगों की गत सोमवार को इतनी उपस्थिति होगई थी कि जितनी देखने का इस कम्पनी के पात्रों को कभी सौभाग्य प्राप्त न हुआ होगा। पर जो लोग पहिला महाभारत देख चुके थे वे वहां से बड़े निराश लौटे हैं। इस टिप्पणी का लेखक तो नाटकघर में एक घंटे से अधिक न बैठ सका था। न पर्दे थे, न अनुकूल पात्र थे और नाहीं उचित अभिनय था। पात्रों में अधिक मुसलमान थे, वे हिन्दी और संस्कृत के शब्दों को अजीब तरह बिगाड़ते थे। ऐसा कौनसा देहली निवासी है जिसने गतवर्ष द्रोपदी चीरहरण पर आंसू न बहाए होंगे। पर इस कम्पनी के चीरहरण पर हंसी रोके न रुकती थी। इस कम्पनी का कृष्ण बाजारी रासलीला के कन्हैया से अच्छा अभिनय नहीं कर सक्ता। "कापी राइट" के कानून की तरह क्या कोई ऐसा कानून नहीं बन सक्ता जो नकली महाभारत के अभिनय को रोकसके?

द० अफ्रीका के भारत वासी—द० अफ्रीका में भारतवासियों की कुछ शिकायतों को दूर करने के लिये जनरल स्मट्स ने जो मसौदा उपस्थित किया है, वह आठ जून को यूनियन महासभा में दूसरी बार पढ़ागया। जनरल स्मट्स ने कहा कि कमीशन ने जिन २ शिकायतों को हटाने की सलाह दी है उनमें से कुछ कानून द्वारा और कुछ प्रबन्ध द्वारा हटाई जावेगी। जो शिकायतें कानून द्वारा हट सक्ती हैं उन्हीं का इस मसौदे में ज़िक्र है। जो भारतवासी भारतवर्ष लौटना चाहें वे इस मसौदे के कानून बनजाने पर बिना किरायादिए लौट सकेंगे मुसलमान अभी विवाह सम्बन्धी कानून से प्रसन्न नहीं हुए पर उन्हें सन्तुष्ट करने के लिए मारेशस टापू में प्रचलित रीति को देख कर कानून बनाया जायगा जनरल स्मट्स ने आशा की थी कि नेटाल के प्रतिनिधि अवश्य ही इस कानून बनाने में सहायता देंगे। पर नेटाल के प्रतिनिधियों ने एक न सुनी और मनमानी वक्तृताएं कीं। किसी ने कहा यह मसौदा निर्बलता का चिन्ह है कि और किसी ने इस कानून के बनजाने पर सारे अफ्रीका के भारत वासियों द्वारा भरजाने की आशंका प्रकट की। अन्त में जनरल बोथा ने कहा कि हमारी अपनी इच्छा से भारतवासी कुली यहाँ लाए गए हैं और उनकी शिकायतों को दूर करना हमारा कर्त्तव्य है। सम्मतियां लेने पर ६-१ इस बिल के पक्ष में और २४ विपक्ष में थे इस लिये बहुसम्मति से बिल पास होगया। आशा है कि तीसरी बार स्वीकृत होकर शीघ्र ही यह कानून बन जायगा।

कलकत्ते के मारवाड़ियों को बधाई—गत ९ जून को कलकत्ते के विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के नए भवन के खोले जाने का जो कोई भी समाचार पढ़ेगा वह कलकत्ते के मारवाड़ियों को बधाई दिए बिना नहीं रह सक्ता। १९०१ में यह विद्यालय थोड़े से विद्यार्थियों के साथ आरम्भ हुआ था, और आज १२ वर्ष में जो इस की उन्नति हुई है वह वहां के मारवाड़ियों की उदारता स्वावलम्ब और शिक्षा प्रेम का परिणाम है। यह विद्यालय पहिले एक छोटे से मकान में था, अब कई लाख रुपया लगा कर विद्यालय ने अपना भवन बनालिया है, उसको कलकत्ते के गवर्नर ने अपने हाथों से खोला है। भवन खोलते समय गवर्नर ने जो भाषण किया उसे पढ़कर किसी भी मारवाड़ी का हृदय उत्साहित हुए बिना नहीं रहसक्ता। गवर्नर ने कहा कि यह देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है कि आप लोगों ने अपने बच्चों के लिये शिक्षा की आवश्यकता को समझ लिया है। यह सच है कि मारवाड़ी बच्चा माता की गोदमें ही गणित और व्यापार विद्या सीखने लगता है पर यह आपको अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि लड़कों को किसी भी ऐसे शस्त्र देने में संकोच न करना चाहिये जो आगे चलकर जीवन संग्राम में काम आ सकें। और जीवन संग्राम के लिये विद्या एक बड़ा भारी शस्त्र है इस से कोई इन्कार नहीं कर सक्ता। आप का यह विद्यालय इस का प्रमाण है कि आपने इस बात को समझ लिया है। अभीतक आप का विद्यालय एन्ट्रेंस तक पढ़ाता है, मुझे पूर्ण आशा है कि एक दिन इसी विद्यालय में से आपके विद्यार्थी कालिज परीक्षा दिया करेंगे। लार्ड कर्माइकेल ने अन्त में कहा कि इस विद्यालय के साथ मारवाड़ी जाति के उदय में एक नया युग आरम्भ होता है। लोगों की शिकायत है कि व्यापार में उन्नत होते हुए भी मारवाड़ी जातीय जीवन में भाग नहीं लेते। मुझे पूरी आशा है कि वह दिन शीघ्र ही आने वाला है जब लोगोंकी यह शिकायत दूर हो जायगी।

दीनानाथ और गुरुकुल पार्टी—देहली अभियोग का सरकारी गवाह दीनानाथ अपना सम्बन्ध आर्य समाज की गुरुकुल पार्टी से बताता है। अपनी गवाही में गुरुकुल के विषय में उसने कहा—"मेरी सम्मतियाँ आर्य समाज की गुरुकुल पार्टी से मिलती हैं। गुरुकुल पार्टी मेरे अराजकतावादी विचारों से अपरिचित थी। यदि वे उन्हें जान पातीं तो अवश्य ही मेरे उलटे विचारों को सुधारने का यत्न करतीं। मैं यह नहीं कह सकता कि मेरे विचारों को जान कर वे मुझे पार्टी से निकालने का यत्न करते या नहीं"

क्या कैनाड़ा में भारतवासी भूखे मरेंगे—हम यह समाचार पाठकों को सुना चुके हैं कि "श्री गुरु नानक" जहाज़ ६०० भारतवासियों समेत वैंकोवार पहुंच चुका है पर कैनाड़ा के शासक यात्रियों को उतरने नहीं देते। भाई गुरुदित सिंह का कथन है कि कैनाड़ा का कोई ऐसा कानून नहीं जो हमें उतरने से रोक सके क्योंकि हमने लगातार यात्रा की शर्त को पूरा कर दिया है। भारतवासियों का कथन है कि हमें यदि स्थिर रीति से नहीं तो थोड़े समय के लिए ही उतरने दिया जाय, हम अदालत में जाकर इसका निर्णय करवा लेंगे। पर वैंकोवार के अफसर इस पर राज़ी नहीं हैं। वे केवल उतने ही भारतवासियों को आने की आज्ञा देते हैं जिनके सम्बन्धी कैनड़ा में पहिले से बसते हैं। भारतवासियों ने इसे अस्वीकार किया है। वे कहते हैंकि यदि हम उतरेंगे तो सब इकट्ठे ही उतरेंगे। अब समाचार आया है कि ज़हाज़ पर के भारतवासियों ने खाना पीना छोड़दिया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

वैदिक धर्म को सर्वप्रिय बनाओ।

(१)

(ले० श्री ब्र० इन्द्र वेदालंकार)

आज हम आर्य्य जनता के सम्मुख एक ऐसे प्रश्न पर विचार उपस्थित किया चाहते हैं जो यद्यपि वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज के लिये अत्यावश्यक है, तथापि उस पर अभी तक विचार नहीं हुआ। प्रश्न बहुत आवश्यक है और निष्पक्षपात दृष्टि से आन्दोलन की अपेक्षा करता है। केवल रूढ़ विचारों पर दृढ़ रहने वाले और पानी की तह में जाकर मोतियों की खोज से कतराने वाले सज्जन शायद इस विचार को पसन्द न करें, और इसे अनावश्यक समझें। किन्तु इस से प्रश्न का महत्त्व कम नहीं होता।

प्रश्न यह है कि वैदिक धर्म को जन साधारण में किस प्रकार फैलाया जावे। पढ़े लिखे और विचार शील लोगों को समझा बुझा कर वैदिक धर्म के अनुयायी बना लेना सहज है, उस के लिये किसी चतुरता की आवश्यक्ता नहीं। अर्धशिक्षित और विचारहीन पुरुषों को तो भगवान ही बना सकता है, उन्हें किसी ठीक रास्ते पर लाना साधारण मनुष्यों के हाथ में नहीं। कवि ने कहा है कि:—

'अधकचरा समझे नहीं,
गुरु विरंचि जो होय'।

शेष रहे मूर्ख अनपढ़ लोग। उन्हें धर्म की शिक्षा देना, और सच्चे रास्ते पर लाना जहां परम और आवश्यक कर्तव्य है, वहां वह सहल भी है। पण्डित को सत्य पर लाना कठिन नहीं किन्तु संसार में पण्डितों की संख्या है कितनी? हज़ार में एक भी ज्ञानी कहाने के योग्य नहीं होता, अर्ध ज्ञानियों पर यत्न अवश्य करना चाहिये, किन्तु वहां अधिक फल की आशा नहीं रखनी चाहिये। वह क्षेत्र जिस का विस्तार बहुत बड़ा है और पड़ा हुआ बीज जिस में नष्ट नहीं होता, जनता या जनसाधारण का समूह है।

विदुर महाराज का उपदेश है

दरिद्रान्भर कौन्तेय
मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।
व्याधितस्यौषधम्पथ्यं
नीरुजस्य किमौषधैः।

हे युधिष्ठिर! तू सदा दरिद्रों का पेट भरने का यत्न किया कर, जो स्वयं मालदार और शक्त हैं उन्हें दान देने से क्या लाभ है? जो रोगी है औषधि उसी को मिलनी चाहिये, नीरोग मनुष्य को औषधि देने वाला वैद्य बुद्धिमान् नहीं कहाता। जो पहले ही ज्ञानी है, या कम से कम अपने कर्तव्याकर्तव्य की योग्यता रखते हैं उन के ऊपर मग़ज़ पच्ची करना और अपनी सारी शक्तियों को गवांना या तो दिये को दिया दिखाने के समान व्यर्थ होता है और या जान बूझ कर आँख बन्द कर लेने वाले को बत्ती दिखाने के समान मूर्खता का चिन्ह होता है। जिन्हें ज्ञान नहीं, विद्या नहीं, और जिन्हें कर्तव्याकर्तव्य के पहिचानने की शक्ती नहीं, उन्हीं पर विशेष परिश्रम होना चाहिये, वेही प्रयत्न के पात्र हैं।

जो धर्म केवल पढ़े लिखों में रहता है, उसे पाठशाला का धर्म कहते हैं। पाठशाला के धर्म धर्म नहीं होते, उनकी दर्शन शास्त्र में गणना है। धर्म वह है जो घर का धर्म हो। घर के धर्म ही स्थायी रहते हैं, वे ही फलते और फूलते हैं।

जो धर्म जनसाधारण के घरों में फैल जाता है, उसकी जड़ें पाताल में घुस जाती हैं। जब किसी धर्म पर कोई आपत्ति आती है, बड़ी धोती और बड़ी पोथी वाले व्याख्याता महाशय नौ दो ग्यारह हो जाते हैं, यदि कोई सामना करता है और धर्म की लाज रखता है तो वे सर्व साधारण ही हुआ करते हैं। वे केवल इशारा चाहते हैं केवल मार्ग दर्शन चाहते हैं, पाठशाला का धर्म उस फूस में लगी हुई आग के समान है जिसकी चमक और भड़क बड़ी तेज़ होती है किन्तु एक ही वायु का झोंका आता है और न जाने फूस और आग कहां बिलीन हो जाते हैं। क्षणभर में वायु आग को बढ़ा कर फूस को राख कर देती है। किन्तु घर का धर्म जंगल से लगी हुई अग्नि के सदृश होता है। वह ज्यों २ वायु का झोंका थपेड़े मारता है, त्यों २ आग की ज्वालायें ऊपर और ऊपर को उठती जाती हैं, पानी डालो तो घी का काम देता है। क्षेत्र के उपजाऊ होने से, और उपदेश के सच्चे पात्र होने से सर्व साधारण ही धर्म प्रचार को या और किसी प्रकार का भी प्रकाश फैलाने वालों के उचित उद्देश्य होते हैं।

वैदिक धर्म को केवल पाठशाला का धर्म कहना ठीक नहीं तथापि आर्य्यसमाज ने उसे पूरा पूरा घर का धर्म बनाने में विशेष यत्न नहीं किया। साधारणतया ग्रामों और विशेषतया नीच जातियों में आर्य समाज जो कार्य कर रहा है, उस से कोई आँख नहीं मूंद सकता किन्तु अभी उपवन के फूलने में बहुत देर है, अभी तक आर्य्यसमाज वैदिक धर्म को सर्व साधारण का धर्म नहीं बना सका। इसके लिये विशेष यत्न होना चाहिये। यदि हम इस यत्न में शिथिल रहे और वैदिक धर्म की जड़ें पाताल में न घुस गईं तो हमारा भविष्य अन्धकार से घिरा हुआ है। हम परमात्मा के परीक्षा भवन में सदा दोषी रहेंगे।

इसलिये हम इस लेख माला में आर्य समाज को सर्व प्रिय बनाने के साधनों पर विचार करेंगे। उन में से कुछ एक हम यहां सूचित कर देते हैं:—

(१) वैदिक धर्म को लोक भाषा में कर देना। सर्व साधारण के लिये लोक भाषा में ही सरल धर्म पुस्तकें प्रकाशित करना, तथा अनपढ़ और अक्षर मात्र जानने वालों के तथा पढ़े लिखों के भी हित के लिये सुबोध साहित्य उत्पन्न करना।

(२) सन्ध्या आदि नैत्यिक कर्मों को लोक भाषा में ही प्रचार करना। ऐसे धर्म के आवश्यक कार्यों में भाषा का बन्धन न डालना। सन्ध्यादि को लोक भाषा में करने के और भी अनेक फल हैं।

(३) ऐसे प्रचारकों का होना जो पढ़े लिखों की गालियों और शाबाशों को घृणा की दृष्टि से देखते हुए असली प्रचार को ही लक्ष में रखें।

ऐसे अन्य भी अनेक साधनों पर इस लेखमाला में विचार होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवासियों की आयु पत्री।

आर्य जनता से अपील।

(श्री प्रो० बालकृष्ण एम. ए. द्वारा लिखित)

एक पूर्व अङ्क में मैं दिखा चुका हूं कि गत ३० वर्षों से इस आर्य्यावर्त्त में आर्य्यों की प्रतिशतक संख्या निरन्तर कम होती जा रही है अर्थात् यदि वे कारण जो आर्य्यों की प्रतिशतक अनुपात को कम कर रहे हैं बने रहे, तो क्रमशः ह्रास होने से आर्य्यावर्त्त में आर्य का ही लोप हो जायगा अन्य धर्मावलम्बी लोग उसका स्थान ले लेंगे। मुझे आशा है कि पाठकों ने उस पर विचार किया होगा और सम्भवतः इस दुरावस्था के कारणों को भी ढूंढने का यत्न किया होगा। आज मैं पाठकवृन्द के सामने भारतवासियों की आयु पत्री तथा अन्य सभ्यदेशों की आयुपुत्रियां रखकर प्रकट करना चाहता हूं कि भारत में ऐसी राक्षसीय रीति रिवाज, कुरीतियाँ, अनाचार, अज्ञान, दारिद्रय आदि ने बसेरा किया हुआ है कि उन के कारण भारतवासियों को शीघ्र ही मृत्यु लोक में प्रवासित होना पड़ता है। संसार के किसी देश में ऐसी न्यूनतम आयु नहीं जैसी कि पुण्यभूमि आर्य्यावर्त्त में है। इस के कारण पर फिर कभी प्रकाश डाला जावेगा किन्तु इस लेख में भिन्न २ जातियों की आयु पत्रियां ही भेंट की जाती हैं।

आओ! हम देखें कि भिन्न २ देशों में जब पुत्री वा पुत्री का जन्म होता है तो उस प्राण प्यारे को जीने की आशा, कितनी आयु तक भिन्न २ देशों में की जाती है?

जन्म पर जीवनाशा की पत्री

देश	पुत्र	पुत्री
न्यूज़ीलैंण्ड	५४. ४	५७.३
स्वीडन	५०. ९	५३. ६
नारवे	५०. ४	५४. १
डैन्मार्क	५०. २	५३. २
हौलैण्ड	४६. २	४९. ०
फ़्रांस	४५. ७	४९. १
बैल्जियम्	४५. ३	४८. ८
स्काट लैण्ड	४४. ७	४७. ४
इंगलैण्ड	४४. १	४७. ८
इटली	४२. ८	४३. १
प्रशिया	४२. १	४५. ८

इस प्रकार हम देखते हैं कि अधिकतम आयु न्यूज़ीलैण्ड में है और प्रशिया में पुत्रों के लिये ४२. १ और इटली में पुत्रियों के लिये ४३. १ वर्षों की जीवनाशा है किन्तु प्रश्न तो यह है कि जिसे पुण्यभूमि आर्य्यावर्त्त कहा जाता है, जो हमारा पितृ देश और मातृ भूमि है, जिस में जन्म लेना सौभाग्य समझा जाता था, जिस के निवासी किसी समय में जगद्गुरू थे उस में जन्म लेने वाले पुत्र पुत्रियों की आयु की आशा कहां तक होती है?

हमारा विचार है कि पाठकगण अवश्य मेव आशा कर रहे होंगे कि इस आर्य्य देश में जहां सहस्रों ऋषियों का वास था, जहाँ ब्रह्मचर्य्य, योगाभ्यास, धार्मिकजीवन और शुद्धता आदि पर असाधारण बल दिया गया है अवश्य मेव आयु दीर्घ होगी। कम से कम योरुप के देशों से आयु की कमी न होनी चाहिये। परन्तु पाठक गण! यह सब ख्याली पुलाव पकाना होगा, वस्तुतः ऐसी घटना नहीं दीख पड़ती, प्रत्युत जो दशा दृष्टिगोचर होती है वह अतीव शोक जनक, विस्मिति दायक तथा हृदय विदारक है, वह इस पुण्यभूमि को पाप भूमि और आर्य्यावर्त्त को अनार्य्यावर्त्त ब्रह्मचारियों, योगाभ्यासियों, सदाचारियों सबलों के स्थान पर भोगियों दुराचारियों और दुर्बलों का निवास—स्थान बताती है। क्योंकि जन्म लेने वाले पुत्रों के जीने की आशा तो यहां २३.६ है और पुत्रियों के जीने की आशा २४ वर्ष है। इस प्रकार जहाँ योरुपीय देशों में न्यूनतम आयु ४३ हैं, वहां भारत में केवल २४ हैं। सूत्रवत् यह सिद्धान्त कहा जासकता है कि धर्म्मपरायण जातियों की दीर्घायु और अधर्म परायण जातियों की अल्पायु होती है। तो क्या भारत में अधर्म्मी लोगों का जन्म होता है? पाठक वृन्द! क्षमा करिये, मुझे तो ऐसा ही प्रतीत होता है क्योंकि बहुत ही विचित्र घटना है कि जिन बालकों का जन्म योरुपीय देशों में हो वहां मध्यम तौर पर उनकी जीवनाशा ४५ वर्ष होती है किन्तु भारत में जन्म लेने वाले बालकों की जीवनाशा २४ है इतना घोर अन्तर क्यों है? यदि यह पूर्व कृत कुकर्म्मों और इस जन्म की मृत्युवर्धक घटनाओं का फल नहीं तो क्या है। अब बताइये कि इन २४ वर्षों में क्या ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास किया जावेगा? क्या मृत्यु के अकाल भय के कारण ब्रह्मचर्य्य को तिलाञ्जली देकर गृहस्थ के झूठे सुख को अल्प आयु में लेने के लिए लोग तय्यार न होंगे? क्या इस कारण आश्रमों की संस्था पर पानी न फिरना चाहिये था? बस, स्पष्ट है कि भारतीय सद्जीवनों के गुज़ारने वाले नहीं हैं। पाठकगण। अब अपने देश निवासियों की अल्पायु की दूसरी अतीव बलवती साक्षी लीजिये। हम देखना चाहते हैं कि यदि आज १०० बालक भिन्न २ देशों में जन्म लेवें तो उनमें से ५० किस आयु तकमर जावेंगे—अर्थात् अपने और अपने माता पिताओं के पापों, रोगों और कुकर्मों के फलों से १०० में से ५० बालक यमलोक में प्रवासित होजावें और ५० इस लोक में रहें यह घटना आज से कितने वर्ष पश्चात् होगी? स्पष्ट है कि जिस देश के १०० में से ५० बालक अल्पायु में ही मरजावें, उस देश में स्वजीवन रक्षा का प्रबंध अतीव न्यून होगा, उसमें मृत्युवर्द्धक रोगों, कुकर्मों और पापाचरणों की वृद्धि होगी, कि वहां प्राणयात्रा के समान कम होंगे, वहां दरिद्रता राक्षसी का वास होगा, परन्तु इस के विपरीत जिस देश में दीर्घायू में ५० बालक परलोक गमन करें उस देश में स्वजीवनरक्षा उत्तम होगी, धन, अर्थ, सम्पत्ति, पवित्रता की अधिकता होगी। भोजन सामग्री के प्राप्त होने की सुगमता होगी, रोगों की कमी होगी, सुरीतियों का वास होगा और माता पिता वा जाति सब बालकों के दीर्घायु करने का सामान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उन्नत किए होगी। अब निम्न लिखित चित्र को ध्यान पूर्वक अध्ययन कीजिए तो आपको भारत की वास्तविक दशा का ज्ञान होगा।

१०० बालकों में से ५० बालक रह जाने का समय

देश	पुत्र	पुत्रियां
स्वीडन	६२ वर्षों में	६५ वर्षों में
नार्वे	६०	६५
डेन्मार्क	६१	६५
हालेण्ड	५७	६१
बेलजियम	५५	६०
फ्रांस	५४	५९
इंगलेण्ड	५३	५८
इटली	५३	५३
प्रशिया	४९	५६
आस्ट्रियाहंगरी	३९	५१
भारत (१९०१)	१२	१३

पाठक वृन्द आप जानते ही हैं कि जीवन एक यात्रा है, यह यात्रा सुगम और कठिन हो सकती है यदि यात्रा के मार्ग में घातक सिंह व्याघ्र, रक्त प्रिय पशु हिंसक दरिद्र सस्त हाथी, सर्प बिच्छु आदि हों और सारे मार्ग पर कांटों की अधिकता हो। जल का अभाव हो, भोजन सामग्री की न्यूनता हो ऋतु ज्वर से भरे, प्लेग से पूरित, गहन वनों में से हमारा रास्ता गुज़रता हो तो स्पष्टही है कि ज्यूं २ हम अपने वतन से दूर दूर जावेंगे त्यूं २ हमारे साथी कम होते जाएंगे। यदि यह यात्रा सौ मीलों की हो तो सम्भव है कि १२ मीलों की दूरी पर ही हमारे साथी आधे हो जावें और यदि इसके विपरीत सुगम यात्रा हो तो ५० मीलों वा इस से भी बढ़कर ६५ मीलों की दूरी पर हमारे साथी आधे रह जांय। अन्ततः ६५ मीलों पश्चात् हृष्ट पुष्ट ५० नर नारी आगे बढ़ें। जीवन यात्रा पर इस अलंकार को घटाइए। भारत में उत्पन्न होने वाले बालकों की यात्रा में ऐसे भयानक संकट हैं कि वे केवल १२ या १३ मील ही सफ़र करते हैं कि जब उनके आधे साथी भिन्न भिन्न रोगों का शिकार हो कर मर चुके होते हैं। ये ५० नर नारी अन्यों की अकाल मृत्यु से भय भीत और निराश हो कर कठिनता से कदम उठाते हुए आगे बढ़ते हैं कि उन के साथी शीघ्र शीघ्र उन से बिछुड़ जाते हैं। परन्तु युरोप वासियों के पुरुषों की गति देखिये कि वे लोग ५९ से ६५ वर्षों तक पहुंच कर आधे होते हैं और फिर उन में से भी शनैः २ मरते हैं—इस प्रकार वे सुख, चैन मंगल हर्ष और आनन्द से संसार यात्रा करते हैं।

भारत की भयानक दशा का अनुमान एक और तरह से लगाइए।

स्वीडन और भारत का मुकाबला

	४५ वर्ष	५५	६५	७५	८५
स्वीडन	६४५	५७०	४५६	२७३	६७
भारत	२५२	१६३	८६	२६	२

अर्थात् ४५ वें वर्ष में एक हज़ार पुरुषों में से स्वीडन में ६४५ और भारत में केवल २५२ रहते हैं। १०० में से ¾ बालक जीवन यात्रा के संकटों से मर चुके होते हैं और जो शेष रहते हैं उन की भी शीघ्र मृत्यु होती है। ८५ वर्ष की आयु में भारत में केवल दो पुरुष १००० में से जीवित रहते हैं। किन्तु स्वीडन में ६७ और नार्वे में ८५ और वहाँ स्त्रियां ८५ तथा ११८ जीवित होती हैं जबकी भारत में दो वृद्ध देवियाँ दीख पड़ती हैं। स्पष्ट है कि भारतियों में जिन्दा रहने की शक्ति का अभाव है उनके शरीरों में भयानक रोगों ने वास किया है जो उनकी जीवन शक्ति को अल्प कर रहे हैं। इस से भी विचित्र घटना यह है कि अन्य देशों में सभ्यता की उन्नति से आयु दीर्घ हो रही है मनुष्य को अमृत बनाने का यत्न किया जा रहा है किन्तु भारत में उलटी गंगा बहती है। महाशय ब्रैब ने अपने नए गणना कोष (New Dictionary of Statistics) में १९०१ सन् में भारतीयों के आधे होने का समय १२ और १३ वर्ष बताया है किन्तु १९११ में आधे होने का समय और भी कम हो गया है। भारत और उसकी कई प्रान्तों के बारे में भारत की गणना रिपोर्ट (Census Report) 1911 Part I. Pages 177—189) में निम्न लिखित अङ्क दिए हैं।

१०० बालक ५० किस आयु में रह जाते हैं?

	पुरुष	स्त्री
भारत	१०	१२
बंगाल	८	८½
पंजाब	९	०
यु० प्रा०	८½	९
बम्बई	१०	११¾
मद्रास	१४½	१९½
बर्मा	२९	३१

अर्थात् उत्तरीय भारत वर्ष में सिन्धु से ब्रह्म देश और हिमालय से विन्ध्याचल तक जो विशेष तौरपर आर्यों की भूमि समझी जाती है उस में ३ वर्षों में ही ५० बालक यमराज की भेंट हो जाते हैं और जिन देशों में आर्यों का कम वास है जैसे बम्बई, मद्रास और बर्मा—वहां १०, १४½, २९ वर्षों में पुरुष आधे होते हैं। क्या इसका यही अर्थत्व है, क्या यही श्रेष्ठता, सदाचार। पवित्रता—धर्मानुराग, शारीरिक बल और ब्रह्मचर्य है कि सब जातियों के मुकाबले में भारतीय आर्य अधम हो गए हैं? यदि गुण कर्म स्वभाव से आर्य कहना उचित होतो हम तो अनार्य और अधम हैं। जिनको हम किसी समय अनार्य। दस्यु म्लेच्छ यवन अधम कहा करते थे वे हम से अधिक दीर्घ आयुवाले हैं।

१० वर्ष में उन्नति की अपेक्षा हम ने अवनति की है क्यों कि १९०१ में १२ और १३ वर्षों में हमारे पुत्र और पुत्रियों आधी रहतीथीं, किन्तु १९११ में १० और १२ वर्षों से ही हमारे कोमलाङ्गों, प्राण-प्यारों, जिगर के टुकड़ों, नरक धाम से हमें बचाने वालों में से आधों को निर्दयी क्रूर यमराज विकरालगाल में दबालेता है। पाठक वृन्द! इन गणनाओं से शिक्षा लीजिए। स्वजीवनों को सुधारने का यत्न कीजिए। अपनी कुरीतियों को हटाइए। धनोत्पत्ति के साधनों को बढ़ाइए-राक्षसी निर्धनता के दल दल से बाहर निकालने का यत्न कीजिए तभी कल्याण होगा, तभी आर्यों का नामो निशान बच सकेगा, नहीं तो इन दो लेखों में जो घनटाएं दिखाई हैं—उनके परिणामों को रोकना असम्भव होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुलिस के द्वार पर अन्धेर

स्वामी दयानन्द को मुसलमानों की गालियाँ

"सत्यार्थप्रकाश को जलाया जावे"

डिप्टी कमिश्नर ध्यान दें

देहली सार्वजनिक जीवन में भारत के सभी अन्य नगरों से पीछे पड़ा है, परन्तु कुछ धर्मावलम्बी अपना कार्य दृढ़ता से कर रहे हैं। देहली में ईसाइयों आर्य समाजियों और मुसलमानों का धर्मप्रचार बाज़ारों में भी होता है। कुछ दिनों से एक निर्पक्ष सनातनधर्मी पंडित भी आने लगे हैं। देहली में ऐसे दो स्थान हैं जहां पर खड़े होकर धार्मिक व्याख्यान दिए जासकते हैं। ये दोनों स्थान चांदनी चौक में है एक तो घंटा घर के नीचे है। दूसरा बिलकुल कोतवाली के सन्मुख रामाथियेटर के पास फव्वारे पर है। प्रायः दो ढाईसाल हुए, कुछ गड़ बड़ के पश्चात् सरकार की ओर से प्रत्येक धर्म के प्रचार के लिये सप्ताह में दिन नियत होगये थे। इस प्रकार दो अढ़ाई साल तक भली प्रकार काम चलता रहा। गत दिसम्बर मास में अबदुल कबीर नामी एक मुसलमान मुसलमानों की ओर से व्याख्यान देनेलगा। इस के व्याख्यानों में गालियों की भर मार होती थी। इस बात की रिपोर्ट पं० रामचन्द्र जी ने (जो आर्य समाज की ओर से व्याख्यान दिया करते थे) डिप्टी कमिश्नर के पास की। रिपोर्ट का परिणाम यह हुआ कि २५ दिसम्बर को सब व्याख्याताओं को सूचना मिली कि कोई धर्म प्रचारक दूसरे धर्म या उसके आचार्य्य पर आक्षेप न करके केवल अपने २ मत का प्रचार किया करें। इस पर अबदुलकबीर ने ३ मास तक व्याख्यान देना बन्द रक्खा। तीन मास तक बड़ी शान्ति से सब धर्मों के प्रचारक प्रचार करते रहे। अबदुलकबीर ने फिर आकर फव्वारे पर वही गाली गलौज आरम्भ किया है।

यह अबदुलकबीर जन्म का मुसलमान और पठान है। यह उन्हीं टकापन्थियों में से है जो रोटी के लिये भिन्न भिन्न धर्म मन्दिरों की सैर किया करते हैं। कुछ समय हुआ, यह मेरठ में शुद्ध होकर आर्यसमाजी बना था और इस ने अपना नाम धर्मवीर रखवाया था। यह मालूम होता है कि रोटी बेटी के लिये समाज में प्रविष्ट हुआ था पर आर्य समाजी अब आपसे अधिक सचेत होगये हैं। वे अब ऐसे टकापन्थियों की वैसी पूछताछ नहीं करते। इसीसे निराश होकर अबदुलकबीर मुसलमान बन गया है और स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज को गालियां देकर अपना पेट भरता है। पहिले यह हिदायत उल्इसलामका नौकर था। पर सुनते हैं कि इस की गालियों से घबरा कर उसने भी इसे अलग करदिया है। कुछ दिन हुवे इस ने बहादुर गढ़ के उत्सव पर जाकर मुसलमानों को उकसाना चाहा था, पर वहां नीचा देखना पड़ा। उसी गुबार को यह देहली में निकाल रहा है।

यह काम इसने २३ मई से शुरू कर रक्खा है। हर सप्ताह ही फव्वारे पर व्याख्यान में अश्लील और असभ्य गालियां स्वामीजी को दिया करता है। पर ४ और ५ जून को तो इसने हद करदी। इन गालियों को सुन यद्यपि आर्य्यसमाजियों का खून उबलरहा है तथापि वे शान्त हैं। ५ जून को सुना है सनातन धर्मी पण्डित का दिन था परन्तु अबदुलकबीर समय से पहिले ही आकर खड़ा हो गया और लगा स्वामी जी को गालियां सुनाने। उसकी गालियों में से कुछ नमूने के लिये नीचे दी जाती हैं—

अब्दुलकबीर ने कहा कि स्वामी दयानन्द स्वार्थी और लुटेरा था क्योंकि उसने मुंशी इन्द्रमन के लिये १५००) रुपया इकट्ठा किया और मांगने पर ६००) दिया दयानन्द व्यभिचारी था, उसने रमा बाई को कलकत्ते से बुलाया और अन्तमें दयानन्द आतशक के फोड़ों से मराथा।

फिर गवर्मेंट और हिन्दुओं को भड़काते हुए कहा—"मैं कहता हूं कि जब तक सत्यार्थ प्रकाश को जला न दिया जायगा तब तक गवर्मेंट तबाही से कभी न बचेगी। दयानन्द ने लोगों को राजद्रोह और बम का गोला बनाना सिखाया। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, क्या वैष्णव, क्या सिख, सबको यत्न करना चाहिये कि जब तक सत्यार्थ प्रकाश को जलवा न दें तब तक चैन नलें"

"स्वामी दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य में गो हत्या का विधान कियाहै और दयानन्द ने हिन्दुओं केपूज्य गुरुओं और पुजारियों पर झूठेदोष लगायेहैं" इस व्याख्यानको आर्यसमाजके प्रचारकपं०रामचन्द्र सुन रहे थे। उन्होंने अब्दुल कबीर से कहा कि स्वामी जी का नाम सभ्यता से लो, इस पर उसने गाली निकाल कर कहा कि "दयानन्द झूठा उसका बाप झूठा" जब उसको गाली बकने से रोका गया तो उसने पं० रामचन्द्र जी को कहा—"चुप रह, ओ बेइमान, यहां से चला जा, नहीं तो तुझे भी ठीक कर दूंगा"

सकते हैं कि वह पुरुष उस समय कहां तक तुला हुआ था, आर्य समाजी सिर फुटव्वल नहीं हैं। इतने होने पर पं० रामचन्द्र जी कोतवाली में चले गये। कोतवाली से एक मुसलमान सिपाही मौलाना को बुलाने भेजा गया। परन्तु उसने कहाकि "ख़तम करने से पहिले नहीं आ सक्ता" इस पर सिख दारोगा साहब बाहर आगये और व्याख्यान सुनने लगे। अब मौलाना साहब ने अपनी चाल बदली। सिक्खों को आर्यों के विरुद्ध भड़काने लगे। समाप्ति पर मौलाना साहब दारोगा साहब के साथ कोतवाली में गये। कोतवाली में अब्दुल कबीर ने दारोगा साहब के साम्हने सब बातें स्वीकार कीं। उस पर दारोगा साहब रामचंद जी से कहने लगे कि तुम्हारे विषय में भी हमारे पास शिकायत आई है अतः हम दोनों का व्याख्यान बंद करेंगे पं० रामचन्द्र ने कहा कि मैंने कभीकिसीआचार्यका नाम निरादर से नहीं लिया, हज़रत मुहम्मद साहब को रसूल अल्लाह और हज़रत ईसा को खुदावंद ईसा कह कर पुकारता हूं। मेरा व्याख्यान क्यों बन्द किया जायगा।

इतने में ईसाइयों के प्रचारक अहमद मसीह साहब आगये। पं० रामचन्द्र ने दारोगा साहब से कहाकि यह दोनों से अलगहैं इन से पूछ लीजिये।

पूछने पर अहमदमसीह साहब ने कहा कि "हां मैं मानता हूं कि पं० रामचन्द्र कभीकिसीमतके आचार्य का नाम अनादर से नहीं लेते।"

इस पर दारोगा साहब ने अब्दुलकबीर को यही कह कर छोड़ दिया कि कल से तुम्हारे साथ एक आदमी जायगा और यदि आगेसे तुम गाली दोगे तुम्हारा बन्दोबस्त किया जायगा॥

दारोगा साहब के ऊपरोक्त फैंसले पर हमें इस समय कुछ कहना नहीं है परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि पुलिस के द्वार पर एक मास से यह अन्धेर हो रहा है और फिर विना पं० रामचन्द की रिपोर्ट के पुलिस कानों में उंगलियां दिए बैठी रही। आर्यसमाज के प्रचार के दिन दर्जनों खुफिया पुलिस छड़ी और नोट बुक लिये फव्वारे पर घूमा करती है, क्या मुसलमानों के दिन वे छुट्टी मनाया करते हैं?

आर्य्यसमाजियों में इस समय बड़ा जोश फैल रहा है। यदि इसका कोई बुरा परिणाम उत्पन्न हुआ तो उसका उत्तर दाता कौन होगा। हम डिप्टी कमिश्नर साहब से निवेदन करते हैं कि वे इस ओर शीघ्रही ध्यान दें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त

(प्राप्त लेखों के मत का सम्पादक उत्तर दाता नहीं)

चलती गाड़ी में रोड़ा

लाहौर से निकलने वाले 'प्रकाश' नामक एक उर्दू अखबार ने अपने २४ मई १४ के अङ्क में ५ वें सफ़े पर "अमरीका में वैदिक धर्म का डंका कब बजेगा" शीर्षक लेख लिखा है। उसमें प्रकाश ने संयुक्त प्रान्त की आर्य्य प्रतिनिधि सभा के-इंग्रेज़ी सत्यार्थप्रकाश छपाकर अमरीका श्री. पं. केशवदेवजी शास्त्री के पास भेजने के विरुद्ध आवाज़ उठाई है।

'प्रकाश' अपने लम्बे चौड़े लेख का सार खींचते हुये लिखता है कि-'सबसे पहले मालूम होना चाहिये कि पं० केशवदेवजी इस काम के लिये अपना जीवन अर्पण करते हुये कुछ साल अमरीका या यूरुप में बसर करने को तय्यार हैं" न मालूम 'प्रकाश' 'जीवन का समर्पण' किसे समझता है ? इसकी परिभाषा उसे करदेनी चाहिये थी। जो सज्जन बिना किसी स्वार्थ के स्वयम् वैदिक धर्म के पवित्र भावों से प्रेरित होकर विदेश गया हो, और वहां विधर्मियों की सैकड़ों झिड़की व फटकार सहकर भी अपने उद्देश्य से विचलित न हुआ हो; जो रात दिन वैदिक धर्म का संदेशा सुनाने में ही दत्तचित्त रहना अपना कर्तव्य समझता हो, उसके आत्म समर्पण में सन्देह करना भूलकी बात है। शास्त्री-जी महाराज के पत्रों से स्पष्ट प्रकट है कि वे अमरीका में कम से कम अभी दो वर्ष और ठहरेंगे। वहां विविध धार्मिक विषयों पर व्याख्यान देते हैं। ग्रन्थ लिखरहे हैं। पत्र निकालने के विचार में हैं, लोगों के विरोध की कुछ भी चिन्ता नहीं करते। फिर हम नहीं समझते कि आत्म- समर्पण की कौनसी बात शेष रहजाती है। आश्चर्य तो यह है कि इतना होने पर भी लोग यही समझते हैं कि शास्त्रीजी वहां धर्म्म प्रचार की आड़ लेकर डाक्टरी पढ़ने गये हैं।

कई वर्ष हुए जब श्रीमान् डाक्टर चिरंजीव भारद्वाज ने अपने अनुवादित इंग्रेज़ी सत्यार्थ-प्रकाश को दूसरीवार छपाकर प्रकाशित करने के लिये इस सभा को कृपाकर आज्ञा प्रदान की थी। परन्तु उस समय छपाने का निश्चय होने पर भी धनाभाव के कारण सभा इस कार्य को न कर सकी। अब इधर अमरीका में वैदिक धर्म विधायक पुस्तकों की आवश्यकता देखकर श्री. शास्त्रीजी के आदेशानुसार 'सत्यार्थप्रकाश' की ५००० प्रतियां छपाने के लिये सर्व साधारण से अपील की है। प्रसन्नता की बात है कि सभा की इस अपील को आर्यजनता ने बहरे कानों नहीं सुना। प्रत्युत उसके लिये चारों ओर से धन आना प्रारम्भ होगया है।

यदि विचार कर देखा जाय तो आर्य्यसमाज के पुस्तकालय में वेदादि सत्य शास्त्रों को छोड़-कर 'सत्यार्थप्रकाश' ही एक ऐसा ग्रन्थ है, जो देश विदेश सर्वत्र परमोपयोगी सिद्ध होसकता है। वह एक योगी की लेखनी से लिखागया है। उसमें प्रायः भारतीय समस्त मत मतान्तरों पर दृष्टि पात किया गया है। इसाई और मुसल-मानी मतों के लिये तो एक २ समुल्लास अलग प्रदान किया है। बहुत से लोगों की सम्मति में, इस ग्रन्थ रत्न का अमरीका भेजना ठीक नहीं जंचता। वे कहते हैं कि यदि 'सत्यार्थप्रकाश' ही वहां भेजना है तो उसका ईसाई मत सम्बन्धी चैप्टर (अध्याय) पृथक छपाकर भेजदेना चाहिये। और ग्रन्थ की क्या आवश्यकता है। क्योंकि ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में भारतीय मतोंकी पोल खोली गई है जो विदेश में हास्य का हेतु होगी। परन्तु नहीं; महर्षि दयानन्द सरस्वती का कदापि यह अभिप्राय नहीं था कि भारतवर्ष की धार्मिक निर्बलतायें विदेशियों तक न पहुंचें। जहां उन्होंने वैदिक धर्म की अतुलित महत्ता वर्णन करने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी, वहां मिथ्या मत पंथ रूपी ढोल की पोल खोलने में भी टालम टोल नहीं की। 'सत्यार्थप्रकाश' में कहां लिखा है कि यह ग्रन्थ विदेश में भेजने के लिये नहीं रचागया। अथवा जब वह विदेशियों के हाथ में दिया जाय तो उसका वह भाग छिपा लेना चाहिये, जिसमें भारतीय मतों की निर्बलता दिखाई गई है। प्यारे पाठको ! स्वामीजी महाराज के विचार बड़े उदार थे। उनके समक्ष "वसु-धैव कुटुम्बकम्" का पाठ सदैव उपस्थित रहता था वे वसुधा भर की कामना से सब काम किया करते थे। तभी तो उन्होंने बताया कि "संसार का उपकार करना आर्य्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है"। उन्हें इस बात की कदापि चिन्ता न थी कि "सत्यार्थप्रकाश" में हमारे देश की धार्मिक निर्बलताओं का उल्लेख देख २ कर लोग हंसेंगे। वे इस बात को भलीभांतिजानते थे कि जो बात हास्यास्पद है उस पर दूसरे लोग अवश्य खिल्ली उड़ावेंगे। कल्पना कीजिये कि 'सत्यार्थ-प्रकाश' को अमरीका भेजने का विचार शिथिल करके उसके स्थान में कोई और ग्रन्थ भेजा जाय तो क्या वहां के लोग भारतवर्ष की मत सम्बन्धी पोलों का पता न लगा पावेंगे ? अव-श्य लगा पावेंगे और उन्हें तो अब भी पता है।

इसी सम्बन्ध में एक बात यह भी कही जाती है कि 'सत्यार्थप्रकाश' का पूर्वार्द्ध भी विशेष कर भारतवासियों के लिये ही लिखा गया है, अतः उसको भी अमरीका भेजने की आवश्य-कता नहीं। खूब !! यदि वेद और शास्त्र भी भारत वासियों के लिये ही हैं जो उक्त ग्रन्थ के पूर्व भाग को यहां के लिये ही मानने में हमें कोई आपत्ती नहीं। क्योंकि उस भाग में सब बातों पर वेद शास्त्र और स्मृतियों के आधार पर ही लिखीं गई हैं। 'सत्यार्थप्रकाश' में वैदिक शिक्षा का गौरव और आर्य्य धर्म का महत्व जिस स्थल पर वर्णित है वह तो रहा भारत-वासियों के लिये, और एकादश द्वादश, व त्रयो-दश समुल्लास यहां के मतों की निर्बलता व मुसलमानी मज़हब की मनो भावना से भरे पड़े हैं। अब रहगया ईसाई मत का खंडन: सो स्वपक्ष मंडन के बिना निरे खंडन से काम न चलेगा। फिर ऐसी दशा में फ़रमाइये कि भारत से भिन्न देशों के सन्मुख कौनसे ग्रन्थ उपस्थित किये जावें; जिन से वैदिक धर्म का गौरव जाना जाय।

बहुत से लोग यहभी कहते हैं कि अजी ! इतने बड़े 'सत्यार्थप्रकाश' के पोथे को वहां कौन पढ़ेगा? कोई छोटा सा ट्रैक्ट होना चाहिये था। हम समझते हैं कि ऐसे लोग 'सत्यार्थप्रकाश' में स्वयम् श्रद्धा नहीं रखते। जिस तरह वे टकौअल ट्रैक्टों के अतिरिक्त किसी बड़े ग्रन्थ को नहीं पढ़ते, वैसे ही दूसरों को भी समझते हैं। उन्हें जानना चाहिये कि विदेशी लोग बड़े विद्या-व्यसनी और गुण-ग्राहक होते हैं। वे एक २ प्रा-कृतिक बात जानने के लिये, उसकी अन्वेषणा में सारा जीवन अर्पण कर देते हैं। तब यह समझ में नहीं आता कि वे परम शान्तिदायक आध्या-त्मिक विषय पर मनन न करेंगे। अभी थोड़े ही दिनों की बात है कि स्वर्गीय श्री स्वामी वि-वेकानन्द जी तथा श्री स्वामी रामतीर्थ जी के तनिक से उद्योग के कारण ही बहुत से अमरीका निवासी उनके अविचल अनुगामी बन गये। बहुत पीछे क्यों जाइये। अभी हाल ही में रूस के प्रसिद्ध विद्वान काउन्ट टाल स्टांय को आर्य समाज की ओर से 'सत्यार्थप्रकाश' की एक कापी भेंट की गई थी; जिसका इतना प्रभाव हुआ कि उन्हा ने वैदिक धर्म के महत्वपर स्व-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चित कई निवन्धों को वैदिक मेगज़ीन में प्रकाश र्थ भेजा। कौन्ट महाशय से आर्य समाज को ड़ी २ आशाएं बंधी थीं; परन्तु खेद है कि उन ा शरीर इसके कुछ काल पश्चात् ही पञ्चत्व ो प्राप्त हो गया।

अस्तु; लोगों की बात मानकर किसी छोटी स्तक को वहां भेजा भी जावे तो उसकी सु-ाग्यता पूर्वक रचना करने तथा छपाने आदि साल सवा साल लग जायगा। उधर सात ाठ महीने बाद आगामी फ़रवरी मास में 'प-ामा प्रादर्शिनी' आरम्भ होने वाली है। ली-ाये, जिसके लिये सारा उद्योग था वह वृथा या। तब तक धार्मिक महा सभा हो भी चु-गी, परन्तु पुस्तक कम्पोज़ीटरों की टेबिल पर ा टकटकी लगाये बिल बिलाती रहेगी। और दि उस समय तक वह तय्यार हो भी गई तो त् द्वारा किसी एक विषय के सम्बन्ध ही में कचित् ज्ञानोपलब्धि हो सकेगी।

'प्रकाश' ने सत्यार्थ प्रकाश के छपाने पर ा प्रकाश डाला है। बात तो उसने सभा के ाभ की बताने का उद्योग किया है, परन्तु वह ाक नहीं बैठी। 'प्रकाश' ने सस्ती सुन्दर छ-ाई तथा किराये की बचत के विचार से ग्रन्थ ो अमरीका छपाने की सम्मति दी है परन्तु सने यह नहीं सोचा कि प्रथम तो ५००० प्र-ायों के छपाने में यहां के प्रेसों की अपेक्षा वहां ाशेष लाभ न होगा दूसरे उस जगह प्रूफ़ सं-ाधनादि कार्यों को कौन करेगा? क्योंकि शास्त्री ो महाराज को तो अपने प्रचार के काम से ा अवकाश नहीं। प्रेस पर उसे छोड़ते हैं तो से अर्थ का अनर्थ होता है। फिर पुस्तक छप-ाने में सभा को सब से बड़ी सुविधा जो भा-त वर्ष में है वह यह है यहां के एक सुप्र-द्ध प्रेस ने छपाई का धन एक दम न लेकर पया अंशतः लेलेने का वचन दे दिया है। स्तक बेंच खोंच कर पीछे से उसका शेष धन ुका दिया जाय तो भी कोई हानि नहीं। ये ात भला अमरीका के प्रेसों में कहां हो सकती ी? उन के लिये तो सब रुपयों का प्रबंध प-ले ही कर देना पड़ता।

अब 'प्रकाश' के किराये की बात शेष रह ाती है वह कहता है कि अमरीका पुस्तकें भे-ाने में किराया अधिक लगेगा। यह बात ठीक । परन्तु सभा का यह भी तो विचार है कि 'सत्यार्थप्रकाश' की जितनी प्रतियां छपें उनमें से कुछ पुस्तकें स्वदेशीय विश्वविद्यालय के उ-त्तीर्ण छात्रों की भेंट की जांय, तथा कुछ विविध प्रतिनिधि सभाओं व अन्य ग्राहक गण के हाथ वेचदी जावें। जिस से छपाई के धन में यदि कुछ कमी रह जावे (जिसकी कि बहुत संभा-वना है) तो उसकी पूर्त्ति इस प्रकार कर दी जावे। यदि किराये के भय से 'सत्यार्थप्रकाश' अमरीका छपाया जाय तो प्रतिनिधि सभा का उक्त विचार फली भूत नहीं होसकता। क्योंकि वहां से पुस्तक छपने पर तब उन्हें यहां मंगाना, किराया देना; वेचना आदि कार्य कष्ट साध्य होने के अतिरिक्त विशेष लाभ का भी नहीं है! 'प्रकाश' की यह सम्मति—कि सत्यार्थ प्रकाश के स्थान में ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका छपाई जावे—बहुत ठीक है। इस ग्रन्थ का भी इंग्रेज़ी अनुवाद श्री बा० घासीराम जी ऐम० ए० ऐल ऐल० बी; प्रधान सभा ने कर दिया है। अब वे उसपर पुनः दृष्टि पात (Revision) कर रहे हैं। इस किताब के प्रकाशित होने में विशेष विलम्ब की संभावना नहीं क्योंकि सम्भल के रईस श्री साहू नन्द राम जी ने इसके छपाने के निमित ८०० नक़द प्रदान किये हैं। यदि अम-रीका में आर्य्य धर्म की ओर लोगों की रुचि बढ़ी और यहां की आर्य्य जनता का उत्साह कम न हुआ तो भूमिका को भी वहां भेजना कठिन कार्य न होगा।

आशा है कि जिन सज्जनों ने 'प्रकाश' के इस भ्रमात्मक लेख को देखा है, वे हमारी इस प्रार्थना को पढ़कर अपना भ्रम दूर कर लेंगे। और बड़े उत्साह के साथ इंग्रेज़ी सत्यार्थप्रकाश के लिये धन भेजने व भिजवाने का कार्य जारी रक्खेंगे। जिस से छपाई का कार्य शीघ्र समाप्त होकर, ग्रन्थ अमरीका पहुंच सके; और वहां के निवासियों के हृदयों में वैदिक धर्म्म की महत्ता भली भांति अपना प्रभाव जमा लेवे।

सेवक विनीत
हरिशंकर शर्म्मा
उपमन्त्री
प्रतिनिधि सभा
यू० पी०

निर्बल सेवक

श्री मान् सम्पादक जी महोदय

नमस्कार!

मैं 'निर्बल—सेवक नाम" का एक साप्ताहिक पत्र देहरादून से निकाल रहा हूँ। मैं आशा करता हूं कि वह जून मास में अवश्य निकल जायगा। क्यों कि आजकल हमारे पत्रों का कुछ ऐसा तरीका चल गया है कि हिन्दी वाले कभी हिन्दी को संस्कृत बनाते हैं और उर्दू वाले उर्दू पत्रों को फ़ारसी का गिलाफ़ चढ़ाने में कसर नहीं छोड़ते, इस लिये हम आप के इस पत्र को एक ऐसी भाषा में निकालना चाहते हैं जो हिन्दी भी हो और उर्दू भी कहलाई जा सके और इस लिये कि हमारे हिन्दी जानने वाले और उर्दू दां भाई सभी इस पत्र से फायदा उठा सकें हम इसको हिन्दी में भी छापेंगे और उर्दू में भी शाया करेंगे। पत्र की नीति तो उसके नाम से ही विदित होती है। यह पत्र निर्बलों का सेवक मात्र होगा। आज कल हमारे बहुत से पत्र ह-मारी तरह तरह से सहायता कर रहे हैं किन्तु वे हमारे ग़रीब कृषकों को अक्सर भूल जाते हैं फिर हमारे निर्बल अछूत और अबला स्त्री की ओर से भी कोई उनके अधिकारों को ज़ाहिर करने वाला पत्र नहीं है इसी लिये इस पत्र की विशेष आवश्यकता प्रतीत हुई। और इसी लिये इस पत्र को निकाल रहा हूँ। आशा है आप जैसे महानुभाव इस 'निर्बल सेवक' की बांह पक-ड़ेंगे। इस की सूचना यदि आप अपने पत्र में दे दें तो बड़ी कृपा होगी। आशा है कि इस कष्ट देने के लिये आप क्षमा करेंगे।

भवदीय
महेन्द्रप्रताप
प्रकाशक "निर्बल—सेवक"
देहरादून

अनाथालय में डिप्टी कमिश्नर

श्री मान्यवर संपादक जी,

नमस्ते,

निवेदन है कि मि० आई सी लाल (Mr, I. c. Lal डिप्टी कमिश्नर बहादुर मुज़फ़रगढ़ डिस्ट्रिक्ट २३-५-१९१४ को प्रातःकाल ८ बजे अ-नाथालय में पधारे और अनाथालय के बच्चों के दस्तकारी काम लकड़ी आदि को देखा और सब श्रेणियों को नियम तथा क्रम बद्ध देखकर अति प्रसन्न हुए। और ७) इन बच्चों को मिष्टा-न्न के वास्ते प्रदान किये। व सम्मति पुस्तक में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निम्न लिखित सम्मति लिख गए हैं। कृपा कर-के इस को अपने पत्र में स्थान देकर कृतार्थ करें—

"मैंने इस अनाथालय को अब ही प्रातःकाल ८ बजे पहिली बार देखा और मैं आशा करता हूं कि मेरा यह अन्तिम निरीक्षण नहीं होगा। ३६ बालक दर्ज रजिस्टर हैं और ३१ उपस्थित हैं। आश्रम के सब कमरे शुद्ध पवित्र और खुले हैं। वायु खुले तौर पर आ जा सकती है और आस पास का स्थान बड़ा सुन्दर तथा रमणीक है। मैं संमति पुस्तक के पहिले नोटों को पढ़कर अति प्रसन्न हुआहूँ कि यह इन्स्टीट्यूशन प्रत्येक प्रकार से उन्नति कर रहा है। लड़कों को दस्तकारी सिखलाई जाती है, विशेष कर लकड़ा का काम और उनका काम प्रशंसनीय है। मैंने हिन्दी में कुछ गान भी सुने। जिन्होंने इस शुभ कार्य को अपने हाथ में लिया हुआ है उन का काम प्रशंसनीय है"

रामचन्द्र प्रबन्धकर्त्ता
अनाथालय मुज़फ़रगढ़

आवश्यकता है

कुछ ऐसे सेवा भाव रखने वाले दस्तकुशल नवयुवकों की आवश्यकता है जो छोटी २ और देश की नित्य की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली दस्तकारी भले प्रकार जानते हों, जो थोड़े २ धन से आरम्भ की जा सकें और जिन से स्वयम् दस्तकार सादगी का स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करते हुए दूसरे नवयुवकों को भी सादगी का स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने के योग्य बना सकें अर्थात् घड़ी साज़ी, कारपेन्टरी, लोहारी का काम, फोटू ग्राफ, बटन, पेनसिल, सियाही आदि बनाना, रबर स्टाम्प बनाना आदि २। ऐसे ही नवयुवक पत्र व्यवहार करने का कष्ट उठावें जिनके हृदय में देश के प्रति, जाति के प्रति और निस्सहायों के प्रति कुछ दर्द हो।

द्वारिका प्रसाद सेवक
c/oडाक्टर ओङ्कार प्रसादजी
पारसी मुहल्ला इन्दौर

कलकत्ता में गौ कान्फरेंस

मेरे बहुत से हिन्दुस्तानी भाई जानते हैं कि जबलपुर के एक पारसी सज्जन मिस्टर के. एस. जस्सावाला दो वर्ष से अधिक हुए, अपनी जन्म भूमि को छोड़कर भारत से गो वध हटाने के लिये लण्डन गए हुए हैं। धैर्य, दृढ़ता और प्रम से इस महान कार्य्य में सफलता प्राप्त करने के लिये अनेक यत्न कर रहे हैं। किन्तु शोक है! कि इस देश के लोग, विशेष करके पिञ्जरापोल गोशाला और गौरक्षणी सभाओं के कार्यकरता उस कर्म्मवीर के साथ सहानुभूति दिखाने और सहायता देने में असमर्थ बन बैठे हैं। यदि यूरोप के किसी देश का कोई सज्जन ऐसा पवित्र काम करने के लिये विदेश गया होता तो आप देखते कितनी उसको मदद मिली होती। अपना स्वार्थ छोड़कर गौ माता के लिये हज़ारों कोस समुद्र पार जाकर परिश्रम करना साधारण बात नहीं है, और फिर उस धर्मात्मा की प्रतिज्ञा है कि "जब तक भारत से गोवध न हटेगा, जस्सावाला अपने देश और जन्मभूमि का मुंह न देखेगा चाहे इस पवित्र काम को करते करते वहीं शरीर से प्राण क्यों न निकल जावें।" उसकी इस प्रतिज्ञा का फल अवश्य सफल होगा

इस देश में ब्राह्मण कानफरेन्स हो, क्षत्रिय और वैश्यादि अनेक कानफरेंस प्रतिवर्ष हों: कांगरेस में बड़ी बड़ी स्पीच हों, लम्बे चौड़े प्रस्ताव पास हों, किन्तु हाय! गौहित विचार और गोवध हटाने के लिये आज तक भारत में कोई भी गो कानफरेन्स न हो! जहाँ भारत के पिञ्जरापोल और गोशालाओं के सभापति और मन्त्री एक बार तो मिलकर बैठें और मिलकर इस महान कष्ट को हटाने का विचार करें!

कलकत्ता म्युनिसिपेलटी ने कुछ दिन हुए, एक प्रस्ताव पास किया था कि नौ जवान गाय के वध करने पर बूचड़ों को ।) की जगह १०) प्रति गाय रुकावटी टैक्स देना होगा किन्तु खेद है किसी कारण से शीघ्र ही कुछ समय के लिये यह प्रस्ताव बन्द कर दिया गया। इसके प्रतिवाद में कलकत्ता की सभाओं की तरफ से शान्ति पूर्वक एक विराट सभा होनी चाहती थी: किन्तु आज तक कोई भी सभा न हुई। यों ही वृथा कई दंगे फसाद तो होते हैं; मेरे कई भाई जेल का कष्ट अपनी भूल से उठाते हैं, किन्तु जब कभी शान्ति से काम करने का समय आता है तो पिञ्जरापोलल और गोशाला वाले मुंह पर पट्टी बांध लेते हैं। जब हम सब शान्ति और राजभक्ति से अपना सच्चा दुःख अपनी सरकार के कानों में पहुँचा नहीं सकते तो फिर गोवध कैसे हटेगा।

मेरे भाइयो, गोवंश अब लुप्त होने लगा हमारे छोटे छोटे लाखों बच्चे प्रतिवर्ष दूध के अभाव से कुसमय मृत्यु का शिकार हो रहे हैं, अबसमयआगया कि आपस जन मिलकरविचार करें कि यह गोवंश कैसे स्वरक्षित हो, फिर भारत में दूध की धारा कैसे बहे और गोचर भूमि ग्राम ग्राम में कैसे मुफ्त छोड़ी जावे। यही तो मिस्टर जस्सावाला लण्डन से पुकार पुकार कर कह रहे हैं।

मेरा यही विनय है कि एक गौ कानफरेन्स इस देश में ज़रूर होनी चाहिये और ऐसी कानफरेन्स पहले कलकत्ता में ही हो, जहाँ हिन्दुस्तान भरके पिञ्जरापोल, गोशाला तथा गौरक्षणी सभाओं के प्रतिनिधि एकत्र हो विचार करें कि किन सद उपायों से गौवध हटे और ग्राम ग्राम में मुफ्त गोचर भूमि मिले। और यह गौकानफरेन्स कलकत्ता में अगले दिसम्बर मास में बड़े दिन की छुट्टियों में होनी चाहिये, जबकि यहां समय बहुत अच्छा होता है। इस कानफरेन्स से हमें बहुत लाभ होगा और परस्पर मिलकर हमारे विचारों का शुभ फल अवश्य होगा।

नोट—मिस्टर के, एस. जस्सावाला को सहायता भेजने का पता—"मैसर्स टामस कुक एण्ड सन लडगेट सर्कस—लण्डन, ई, सी, ।

भोलानाथ शर्म्मा
मन्त्री हिन्दू सभा कलकत्ता

भूल संशोधन

निवेदन है कि समाचार पत्रों में पहिले प्रस्ताव के अनुसार यह छप गया है कि १८ से २५ वर्ष का आयु के छात्र उपदेशक महाविद्यालय में प्रविष्ट किये जायेंगे-परन्तु उपदेशक महाविद्यालय की ५ नवम्बर की सूचना में यह नियम है कि वे छात्र ही प्रविष्ट हो सकेंगे: जिनकी आयु २० से अधिक न हो अतः निवेदन है कि कृपया इसे अपने समाचार पत्र में प्रकाशित कर दें--सद्धर्म प्रचारक के गत अंक में १० छात्र वृत्तियाँ देने वाले सेठ जयनारायण रामचन्द्र पोदार जी के नाम के साथ दूसरे सेठ जी का नाम अशुद्ध छप गया था कृपया अब निम्न प्रकार शुद्ध करलें-"सेठ बलदेव दास जुगलकिशोर"

भवदीय
वीरवर
मुख्याधिष्ठातार्थ

वेदरत्न विद्यालय

गत सप्ताह के प्रचारक में विद्यालय के विषय में श्रीमान् डाक्टर लक्ष्मीपति जी का एक लेख छपा था जिसमें उन्हा ने विद्यालयों की आ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चित दर्शच्युत" समझते हुए उससे अस्तीफा दी है। र्थ ं ठीक उसकी प्रति लिपि विद्यालय के कार्यालय ड़ी : में भी आई थी। वह पत्र विद्यालय के गत वा- ा श र्षिकोत्सव की सभा के साधारण अधिवेशन श्री- ो प्रा मान् राय साहब जनकधारी लाल जी, प्रधान आ० प्र० नि० सभा बंगाल विहार, के प्रधानत्व अ में, प्रविष्टकियागया। (प्रायःएक वर्षसे उक्त डा- स्तक टरसाहब विद्यालयसे कुछ ऐसाहीवर्त्तावरख- ाग्यत ते हैं जिसको सभी उपस्थित सभासद गण जा- साल नते हैं) सर्व सम्मतिसे उनकी अस्तीफा स्वी- ाठ म कृत कीगई। उक्त डाक्टर साहबने विद्या- ामा ः लय को "आदर्श च्युत होने कारण पं० ये, ि शिवशंकर शर्म्मा जी तथा श्री० पं० तीर्थ- या। राज शर्म्मा जी का वहां से चला जाना बतलाया गी, ए है। इसके विषय में उक्त डाक्टर साहब की सेवा ा टक में निवेदन है:—इस समय दौर्भाग्य वश आर्य दि उ सामाजिक जगत व्यर्थ वाद विवाद तथा कलह त् द्वा से परि पूर्ण हो रहा है। अतः व्यर्थ वितण्डा चित को छोड़ कुछ अच्छे कार्य में यदि वह मूल्यसमय लगाया जाय तो अत्युत्तम हो। 'प्र सामाजिक जगत में कौन ऐसा पुरुष है जो ो प्रक "वेदरत्न-विद्यालय" से परिचित नहीं है? यह ाभ कं विद्यालय वेदाचार्य पं० शिवशंकर जी शर्म्मा ाक नः काव्य तीर्थ के कर कमलों से खोला गया है। ाई तथ अतः उक्त पंडित जी वर्ष भर में न्यून से न्यून ो अम एक वार अवश्य आते हैं और कुछ समय तक सने य यहां ठहर कर ब्रह्मचारियों को सामान्य आव- यों के श्यकीय शिक्षा देते तथा इसकी त्रुटियों को सु- ाशेष त धारते हुए संचालकों को अपनी अनुभूत बातों ोधनार्ा से सचेत करते हैं। इस समय भी पण्डित जी ो महा काङ्गड़ी गुरुकुल से रुग्न हो यहां आये और प- ा अवश रम प्रसिद्ध वैद्यराज श्री० पं० रामावतार शर्मा से अर्थ जी से चिकित्सा करवाते रहे और विद्यालय ाने में वन्द होने पर घर चले गये।

त वर्ष

द्ध प्रे

पया ३

स्तक व

का दि

ात भल

ी ? उन

ले ही

अब

ाती है

ाने में वि

। परन्तु

बिहार के दो अनाथालयों में लगभग ३५ अ- नाथ हैं। उनको प्रबन्ध में कितनी कठिनाइयां होती हैं, यह प्रबन्धकर्ताओं ही का मालूम होगा बिहार प्रांत की आर्य्य सन्सथाओं की ओर ऐसे आर्थिक सहायता कीदृष्टिमें रखते हुए कौन कह सकता है कि विद्यालय, जो अभी ५० ब्रह्मचारि- यों को भोजनादि के प्रबन्धनार्थ केवल ६) रु० मासिक लेकर सर्व प्रकार की शिक्षा दे रहा है, प्रतिष्ठा से गिरा हुआ है? पवलिक इसको स्वयं विचारें। जिस समय प्रत्यक प्रान्त के गुरुकुल में प्रान्तीयत्व का भाव बड़ेजोर से काम कररहा था, जिस समय विहारप्रांत केविद्यार्थी गुरुकुल में प्रविष्ट होने के लिये वहां जाते थे पर दौर्भा- ग्यवश निराश हो फिर आते थे। जिस समय परम पदारूढ़ श्री १०८ स्वामी दयानन्द भगवान् के गुरुकुल शिक्षा प्रणाली रूपी उद्देश्य को पूरा करने के लिये विहार, जहां ३०, ३५ वर्ष से प्रचार हो रहा था, सर्वथा असमर्थ था—ऐसे समय में जिस पुरुष ने अपने मासिक १००) तथा इस से भी अधिक के आय को छोड़ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से शिक्षा देने के लिये कार्य क्षेत्र में अप- ना पांव रखा है उसको स्वार्थ परायण कह देना ज़बरदस्ती के सिवाय और कुछ नहीं है, श्री पं० हरिनारायण शर्म्मा जी ही ऐसे थे, जो इस वि- द्यालय" को जन्म देने में अग्रसर हुए थे और आज तक उस के मंत्री हो जिस निःस्वार्थता से कार्य कर रहेहैं सबके ऊपर प्रकट है। अहर्निश मानो विद्यालयोन्नति की चिन्ता ही में वे डूबे र- हते हैं। यदि इसी का नाम "कुव्यवहार" हो तो मैं समझता हूँ कि सर्व सज्जनों को ऐसा ही कु- व्यवहार करना धर्म है। उक्त डाक्टर साहब क्यों अस्तीफा देते हैं। इसका कारण उन्हें स्वयं मालूम है। (उस का उल्लेख यहां करना उचित नहीं है।

विद्यालय की आयु केवल तीन वर्ष की है तथा इस वर्ष चतुर्थ श्रेणी खुली है। अतः पण्डित जी जैसे विद्वान् के लिये यहां कोई कार्य्य न था विद्यालय की आर्थिक अवस्था यथेष्ट से अधिक न होने के कारण पण्डित जी को धन भी न दिया गया जिस से वे यहां ठहर कर अपना स्वतन्त्र पुस्तक लिख सकते। पण्डित जी शीघ्र ही अजमेर जाने वाले हैं। आप यहीं होकर जा- यंगे अभी १५ दिन हुए कि पण्डित जीने अपने लेखक पं० नरायण दत्त जी को यहाँ भेज वि- द्यालय की एक बड़ी आवश्यकता पूरी की है— आवश्यकता सदाचारी सामाजिक संरक्षक की थी। पण्डितजी को विद्यालय से कितना प्रेम है उपरोक्त बात से पूर्णतया स्पष्ट है। ऐसी अ- वस्था में कोई कैसे कह सकता है कि पण्डित जी रुष्ट हो विद्यालय से चले गये हैं? ऐसा कहना मानो उदासीन हो बुद्धि से काम लेना है श्री० पं० तीर्थराज शर्म्मा भी विद्यालय को आ- दर्शच्युत समझ यहां से नहीं गये हैं प्रत्युत आपने अपने यहां एक औषधालय तथा एक पाठशाला खोल रखी है और उन्हीं द्वारा संसार का उपकार करना चाहते हैं, विद्यालय से पण्डित जी का जो प्रेम था, उस में तनिक भी ह्रास नहीं हुआ है क्योंकि आप गत उत्सव में सम्मिलित हो विद्यालय के लिये बहुत कुछ कर गयेहैं। ऐसी स्थिति में कैसे कहा जा सक ता है कि पण्डित जी की सहानुभूति विद्या- लय से नहीं है? जो महाशय चाहें उक्त दोनों महानु भावों से इस के विषय में पत्र व्यवहार कर सकते हैं। विहार प्रान्त के प्रायः सभी गण्य मान्य पुरुष विद्यालय सभा के मेम्बर हैं, तब कब सम्भव है कि इन महानुभावों की देख भाल में विद्यालय "आदर्शच्युत हो।"—ऐसा बतलाना मानो इन अनुभवी विद्वानों की कार्य्य दक्षता पर छिपे २ दोषा रोपण करना है। विद्यालय में विद्यार्थियों के प्रवेशार्थ जो आवेदन पत्र आते हैं; उनकी संख्या स्पष्ट रूप से सूचि- त कर रही है कि विद्यालय के प्रति सर्व साधा- रण का कितना प्रेम तथा कैसे भाव हैं। कोई कितना ही विरोध क्यों न करे विद्यालय अपने कर्त्तव्य में उठा हुआ है और रहेगा, क्योंकि उस को ईश्वर पर पूर्ण विश्वास है और वह "कर्मण्ये वाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन" के सिद्धान्त। यह सुन प्रत्येक आर्य्य पुरुष को बडा दुःख होगा कि किन्हीं महात्माओं (!!) ने श्री पं० अखिलानन्द शास्त्री आदि कतिपय उपदेश कों के यहां पत्र तथा तार भेज दिये थे कि आप न आवें उत्सव की निश्चित तिथियां बढ़ा दी गई हैं जिस के कारण वे नहीं आसके। शोक! ऐसा विरोध। विद्यालय सम्बन्धी नाना प्रकार के प्रश्न मुद्रित करवा (जिस में प्रकाशक तथा प्रेस तक का नाम भी नहीं दिया गया था) सभी विद्यालय के सहायकों के पास भेजे गये थे, विरोध का यही अन्त न था ठीक अपील के मोके पर एक भद्र आर्य्य (!!) पुरुष छिपकर विद्यालय विरुद्ध नोटिस बटवा रहे थे। देखे जाने पर बन्द करवा दिया गया और बटवाने वाले महाशय अपना सा मुंह ले वहां से चलते हुए परन्तु ईश्वर की जहां कृपा होती है वहां किसी प्रकार की भी शक्ति काम नहीं करती अतएव ऐसी अवस्था में १३०००) नक़द तथा १३०००) के लगभग ही प्र- तिज्ञायें हुई इसके अतिरिक्त और भी ऐसी अनु- चित कार्य वाही हुई है जिसको लिखना मैंउचित नहीं समझता "प्रचारक" जैसे प्रसिद्ध सामाजि- क पत्र में विद्यालय के ऊपर झूठ मूठ का आ- क्षेप लगाया गया है। अतएव मैंने उसके प्रति- वाद में लेखनी उठाई है अन्यथा नहीं उठाता क्योंकि किसी का प्रतिवाद कहने मात्र की अपे- क्षा कार्यसे करना अत्यन्त अच्छा है।

निवेदक

नौमीलाल देव वैद्य

नदपुरा पो० सांई [पटना]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

मुसलमानों की गालियां

और

पुलिस की उपेक्षा

डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट से मुलाकात

पाठकों ने पहिले पृष्ट पर पढ़ा होगा कि आज कल देहली में कुछ मुसलमान मौलवी किस तरह ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को गालियां दे रहे हैं और किस तरह पुलीस उनकी उपेक्षा कर रही है। इसी विषय पर पं० रामचन्द्र जी ने ७ जून को फ़ंवारे पर व्याख्यान दिया जिसमें उन्हों ने क्रमशः सारी घटनाओं का वर्णन किया। उसी व्याख्यान का सारांश हम नीचे देते हैं।

पं० रामचन्द्र जी ने कहा:—

महाशयो, आप जानते हैं, आज मैं किस विषय पर व्याख्यान देने लगा हूं। गत एक मास से मुसलमानों की ओर से जो ज्यादती हो रही है उसी को मैं आज आपको सुनाना चाहता हूं ताकि सर्वसाधारण स्वयं न्याय कर सकें। ऋषिदयानन्द को गालियां देने का सिलसिला मुसलमानों ने ७ मई से आरम्भ किया था। ७ मई को मौलवी सुभान अली ने इसी फ़ंवारे पर एक नज़्म पढ़ी जिसमें कहा गया था कि "आर्य समाजी अपनी माँ के साथ ज़िना करते हैं। दिन को मां कहते हैं और रात को लुतफे शौहरी लूटते हैं।" यह बात मनुस्मृति के श्लोक के आधार पर कही गई थी जिस में मातृगामी के लिये कड़ा दण्ड बताया गया है। इसी से आप मौ० सुभान अली की ईमानदारी समझ सकते हैं। यदि भारती सरकार का कानून व्यभिचारी के लिये दंड लिखता है तो क्या इस से समझा जयगा कि हमारी सरकार व्यभिचारी की आज्ञा देती है? यह नज़्म इतनी पसंद की गई कि वहीं बैठे हुए मौ० कुतबुद्दीन ने इसे एक बार और पढ़वाया। इसी नज़्म की शिकायत करने मैं दारोग़ा साहब के पास गया। सुबह और शाम दोनों समय बहुत देर तक बैठा रहा पर वे नहीं मिले। ९ मई को सुभानअली ने वही नज़्म फिर दोहराई जिसमें आर्यसमाजियों को मा के साथ ज़िना करने वाला कहागया था। १४ मई को इसी फ़ंवारे पर मुसलमानों की ओर से एक और नज़्म पढ़ी-गई जिसमें कहागया कि "गौ अपने मुंह से कहरही है कि मैं कुर्बान होने के लिये ही पैदा हुई हूं।" २३ मई से अब्दुलकबीर ने व्याख्यान में ऋषि दयानन्द को बेईमान और मूर्ख कहा। उसी रात को मैं फिर दारोग़ा साहब से मिलने गया। दुर्भाग्यवश वे उस दिन भी न मिले पर हवालदार सय्यदअहमद मिलगए। उनसे मैंने गालियों की शिकायत की। उन्हों ने उत्तर में कहा—"इन्शा अल्ला, ख़ातिर ख़ाह इन्तिज़ाम होजायगा" हम नहीं जानते कि वह "ख़ातिर ख़ाह इन्तिजाम क्या हुआ" हां हम यह जानते हैं कि २८ मई को फिर अब्दुलकबीर ने गालियांदी। उस दिन उसने कहा कि यदि 'दयानन्द कुत्ते और गधे की योनि से भी निकल कर आजावे तब भी वह उर्दू नहीं पढ़ सक्ता और कुरान नहीं समझ सक्ता।" ४ और ५ जून को अब्दुलकबीर ने वेही गालियां दीं जिन्हें आप सद्धर्मप्रचारक के परिशिष्ट में पढ़चुके हैं। उसमें जो गालियां रहगई हैं, उन्हें मैं और सुनादेता हूं। ४ जून को उसने कहा कि मैं ५ जून को सिद्ध करूंगा कि दयानन्द आज कल कुत्ते गधे और बिल्ली की योनि में है"। "दयानन्द ३०२ धारा का मुजरिम है क्योंकि उसने आदमी का मारना लिखा है" यह बात ऋग्वेद के उस मन्त्र के आधार पर कही गई थी जो राजप्रकरण में है और जिसमें राजा के लिये लड़ाई में मारना आदि लिखा है। ५ जून को जो आर्य्यसमाजी फ़ंवारे पर व्याख्यान सुनरहेथे वे बड़े जोश में आरहे थे। मुझे डर था कि कहीं ये भड़क न उठें पर उन्हें मैंबहुत शान्त करता रहा और अन्त में इसी लिये कोतवाली में रिपोर्ट करने चलागया; कोतवाली में दारोगा हमीदुद्दीन मिले और थोड़ी देर में ख़ान बहादर अब्दुल्ला खां डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट भी आगए। वहीं अबदुलकबीर को भी बुलाया। डी. एस. पी. के सामने उसने सब गालियों को स्वीकार किया जो उसने स्वामी दयानन्द को दीथीं। एक डिटैक्टिव ने जिसका नाम शायद नन्दलाल है—इन गालियों की तसदीक की। डी. एस. पी. के पूछने पर नन्दलाल ने कहा कि अब्दुलकबीर ने ये बात कही हैं—"दयानन्द रंडीबाज़ था, वह कलकत्ते से बाई को बुलवाया करताथा, और आतशक के फोड़ों से मरा। वह बेईमान और झूठा था।" यही नहीं, अब्दुलकबीर ने कोतवाली में भी कहा कि मैं इन बातों को अब भी कहता हूं और फिर भी कहूंगा इन बातों को सुन कर खां० अब्दुल्लाखां ने कहा कि जहां ये दोनों (अर्थात् रामचन्द्र और अब्दुलकबीर) जाते हैं वहीं झगड़ा होता है। ये दोनों बहादुरगढ़ गए, वहां भी झगड़ा हुआ।" मैंने उसी समय कहा कि मैं बहादुरगढ़ नहीं गया यह आप का भ्रम है। फिर उन्होंने रिपोर्ट लिखवाते हुए कहा कि जब तक रिपोर्ट का उत्तर ऊपर से न आजाय तब तक मेरे और अबदुलकबीर, दोनों के व्याख्यान बन्द करदिये जांयं। मैंने पूछा कि क्या गालियाँ देने से रोकने के कारण मेरा व्याख्यान बन्द किया जाता है। उन्होंने कहा कि "हमें तुम्हारी भी शिकायत आई है कि तुम कभी कड़े शब्द बोलते हो। यह बात हमें अहमद मसीह से भी पता लगी है" मेरे भाग्य, उसी समय मौ० अहमदमसीह भी वहीं आनिकले। उन से पूछा गया। उन्होंने कहा कि मैंने एक दिन व्याख्यान में यह कहा था कि जो कोई रसूल को केवल महम्मद साहब कहता है वह भी उस की पूरी इज़्ज़त नहीं करता यह मैंने अपना ख्याल बतलाया था, मेरा यह मतलब पं०रामचन्द्र जी से नहीं था येतो कभी भी किसी पैगम्बर का नाम बेइज़्ज़ती से नहीं लेते। यह सुन कर डी० एस० पी० साहब ने अबदुलकबीर से कहा कि "हम तुम्हारे साथ एक आदमी रखदेते हैं, यदि आगे से तुम गाली दोगे तो तुम्हारे साथ सख्त कानूनी की कारंवाई की जायगी।"

अब मुझे डिप्टी साहब से दो तीन शिकायतें करनी हैं। मुझे उन से पहिली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ायत यह है कि उन्हों ने बहादुर
र्थ जाकर झगड़ा करने का झूठा दोष
ड़ी लगाया? अबदुलकबीर बहादुरगढ़
ा श पर मैं वहां गया ही नहीं। उसी
ो प्रा मेरा अहमद मसीह के साथ देहली
स्त्रार्थ था। दूसरी मेरी शिकायत
है कि उन्होंने उलटी रिपोर्ट पर मुझे
बरों का बेइज़्ज़ती से नाम लेने
ा कहा। यह मेरा सौभाग्य था कि
समय मौ०अहमदमसीह वहां आ-
ो और उन्हों ने इस बात का खंडन
दिया। मैं यहाँ चैलंज करता हूं कि
मुझे सिद्ध करदे कि मैंने पिछले दो
में किसी पैग़म्बर के लिये एक भी
ज़ती का शब्द कहा हो। आपको
होगा कि मैंने कुछ दिन हुए यहीं
व्याख्यान दिया था कि गालियों
ोई धर्म नहीं बढ़ सकता। मेरा यह
ान्त है और मैं इसी सिद्धान्त पर
ता हूं। तीसरी मेरी सब से बड़ी
ी प्रकायत यह है कि खुफ़िया पुलिस न
ाभ वमुसलमानों की दी हुई गालियों की
क नोर्ट ऊपर पहुंचाती है और ना
ई त अफसर इन रिपोर्टों के जानने का
ो अ करते हैं। मौ० सुभान अली ने १
सने से लेकर वह नज़्म कई वार पढ़ी
यों वे मे आर्यों को मातृगामी कहा हुआ
शेष डिप्टीसुपरिन्टइन्ट साहब को इतना
धना पता नहीं था कि सुभानअली कौन है।
ो मह और हमारी शिकायत करने पर फल
अव निकला। अबदुलकबीर को आगे
से अ गालियां न देने की हिदायत की
ने में । और जो अब तक गालियां दीगईं
त वर्ष का क्या हुआ? आप लोगों कोश्री राम
द्ध प्रे घटना न भूली होगी। ११ जुलाई
पया को श्रीराम नामी एक पंजाबी
स्तक ३ घंटा घर पर थोड़ी सी बात
का हि ने पर मुसलमान उसे मारने को
ात भा उत हो गए थे। वह डा० ईश्वरदास की
ी? ले ही दुकान्सरी में जा छिपा इसलिये उसकी
न बच गई। रिपोर्ट करने पर श्रीराम
अब तवाली में बुलाया गया। कई दिन
ाती है हालात में रहा और फिर देहली से
ने में कल जाने की उसे आज्ञा हुई। पर
। पर मुसलमान खुले बाज़ार खड़ा होकर
दिन तक ऋषि दयानन्द को अश्लील
से अश्लील गालियां देता है और गा-
लियां देना स्वीकार करता है तब भी
कुछ कार्रवाही नहीं होती। रिपोर्ट क-
रने पर भी मामूली सी हिदायत होती है
क्या आर्य समाजियों के हृदय में ऋषि
दयानन्द का मान नहीं है? यदि आर्य
समाजी परमात्मा के पीछे किसी का
मान करते हैं तो वे ऋषि हैं और आर्य-
समाजी स्वामी दयानन्द को ऋषि मानते
हैं? क्या हमारी बात इसी लिये नहीं
सुनी जाती कि हम मुसलमानों की त-
रह सिर फोड़ने को तय्यार नहीं होजाते?
पुलिस के दारोग़ा और डिप्टी सुपिरि-
टेण्डेन्ट और अधिकतर कर्म चारी मुसल-
मान हैं। जब श्रीराम ने एक भी वाक्य
अपने मुंह से निकाला था तो उसने पु-
लिस के अफसरों को वैसी ही चोट पहुंचाई
थी जैसी सर्व साधारण मुसलमानों की।
इस लिये श्रीराम को दंण्ड दिया गया।
पर शायद पुलिस के मुसलमान अफसर
यह अनुभव नहीं कर सक्ते कि आर्य-
समाजियों के हृदयों पर कितनी चोट
लगती है।

पुलिस को यह भी समझ रखना चा-
हिये कि अब्दुल कबीर छोटी सी हिदा-
यत से मानने वाला नहीं। परसों उस
को हिदायत मिली और कल ही उसने
जो व्याख्यान दिया उसमें मुहम्मद सा-
हब के जीवन के साथ श्रीरामचन्द, महा-
राज कृष्ण, ऋषि दयानन्द और हज़रत म
सीहके जीवनों की तुलना करके महम्मद
साहब की श्रेष्ठता बतलाई गई थी। मैं
कहता हूं कि वह उन गालियों की प-
हिली सीढ़ी है जो ४ और ५ जून को
दी गई हैं। क्या यह हम को मजबूर क-
रना नहीं है कि हम भी महम्मद साहब
की ज़िन्दगी के साथ ऋषि दयानन्द का
मुकाबला करके ऋषि की श्रेष्ठता सिद्ध
करें। पर मैं जानता हूं कि यह काम झ-
गड़ा उत्पन्न करेगा इसलिये न मैंने कभी
ऐसा लैकचर पहिले दिया है और न
आगे दूंगा।

मैं अपने भाई आर्य समाजियों को
बहुत शान्त करने का यत्न करता हूं।
पर पुलिस के अफसरों को समझ रखना
चाहिये कि यदि ऐसे लैक्चरों का सि-
लसिला जारी रहा तो उन के उबलते
हुए खून को काबू में रखना मेरे
लिये भी कठिन हो जायगा। कई आर्य-
समाजी तो मुझे स्पष्ट कहते हैं कि तु-
म्हारी शान्ति शान्ति का ही फल है कि
हमें बराबर गालियां मिल रही हैं और
फिर भी कोई प्रतीकार नहीं होता।
तब भी मेरा उन से यही निवेदन है कि
हमारा काम गालियां देना नहीं, किन्तु
गालियां सहना है। यदि निचले अफ़सर
पक्षपात के कारण हमारी बात न सुनें
तो हमें बड़े अफसरों के पास जाकर प्रा-
र्थना करना चाहिये। वे हमारी प्रार्थना
पर अवश्य ही ध्यान देंगे और हमारे
साथ न्याय करेंगे।

संक्षिप्त समाचार

राज्य में उद्योग की सहायता—
भारत के देसी राजाओं में केवल एक
बड़ौदा नरेश ही ऐसे हैं जो अपनी
प्रजा की हर तरह सहायता करने की
चेष्टा करते रहते हैं। हाल में आप ने
१५००००) रु० की उन्नति के लिये स्वीकृत
किए हैं। इन रुपयों से व्यवसाय और
कारीगरी करने वालों को कम व्याज
पर ऋण दिया जायगा।

भारत के एक गायनाचार्य की
मृत्यु—कलकत्ते के राजा सुरेन्द्र मोहन
ठाकुर गत ५ जून शुक्रवार को परलोक
सिधारे। आप को अमरीका से गायना-
चार्य्य की उपाधि मिली थी। आयु ७४
वर्ष की थी। आप संस्कृत के गान में
सब से प्रवीण माने जाते थे। आपने
वैज्ञानिक रीति द्वारा हिन्दू गायन को
पहले पहल सिखाया। उन को ज्ञान
विद्या में प्रवीणता के कारण ही उन्हें
सरकार ने "सर" की उपाधि दी थी।

मुम्बई में फिर आग-५जूनको फ्री रोड पर
एकदुमंज़िला मकान जल गया। पानी के
एंजिन से बुझाने का बड़ा यत्न किया गया
परन्तु कुछ फल न हुआ। इस मकान के
समुन्ख एक रुई का गोदाम था जिस में
३५०० रुई के गट्ठे थे। वे सब के सब जल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गये। वे गट्टे भारत रुई की कम्पनी के थे और मडुमेएड के उत्तरदातृत्व में थे। मकान की दो छतें गिर गईं। इनके साथ ही पश्चिम की दीवारें भी पीछे के एक और गोदाम पर गिर पड़ीं। इस में अनाज बन्द था और यहां पर कई पुरुष कार्य्य कर रहे थे। छत इनके ऊपर गिर पड़ी। ७ मजदूरों के न्यूनाधिक चोट आई है। पानी के एंजन वाले तथा पुलिस वालों ने भागकर दबे हुओं को निकाला तथा उन को अस्पताल भेज दिया, एक आदमी का पता नहीं लगा। लगभग ३०००० की हानि हुई अग्नि का कारण अभी तक पता नहीं लगा।

राज बज़ार बम्ब केस—अलीपुर में कुछ आदमी बम्ब बनाने के अपराध में पकड़े गये थे। कुछ दिन पीछे छः अभियुक्तों के अतिरिक्त सब को छोड़ दिया गया था। कई मास तक केस चलता रहा; सब घटना सुन कर दोनों असेसरों ने अभियुक्तों के छोड़ देने की राय दी पर जज ने वह सम्मति स्वीकार नहीं की। उन में से एक को छोड़ कर पांच को कड़ा दण्ड दिया है। खगेन्द्रनाथ चौधरी छूटा है। अमृतलाल हाज़रा को भक से उड़ जाने वाला मसाला रखने के अपराध में १५ साल का काला पानी, दीनाश चन्द्रसेन, चन्द्रशेखर दी, सरोदा चरण गुहा तथा काली पादा घोष को १० साल तक काला पानी भेजने की आज्ञा दी है। जज साहब का फैसला प्रायः २०० पृष्टों में समाप्त हुआ है।

सम्पादक चाबुक से पीटे गए।

३ जून को लन्दन की सूचना है कि डोर गैलरी में एक मताभिलाषिणी युवती ने दो चित्रों को नष्ट कर दिया और पहरे वाले को घायल कर दिया तीन स्त्रियों ने जेल के डाक्टर को चाबुक से मारा। दो स्त्रियों ने दो पत्रों के सम्पादकों को खूब पीटा बेलफास्ट में एक मकान जला दिया। अभीतक केवल तीन पकड़ी गई हैं।

राज भवन में चिन्ता।

मताभिलाषिणी स्त्रियों की मुख्या हैं। श्रीमती पैंखु रिस्टने एक मकान लिया है जो बकिंघम महल के ऐन सामने है यह भारत सम्राट के रहने का महल है।

पुलिस बड़ी चिन्ता में है। और महल में फौज बढ़ादी गई है। सम्राट ने रोटनरो में प्रातःकाल सैर करना छोड़दिया है।

बंगाल में एक और कन्या की आत्म हत्या—बंगाल प्रान्त से एक और आत्म हत्या का समाचार आया है। भबरनो दासी नाम की एक बंगाली लड़की ने गत बुद्धवार को आत्म हत्या करली। लड़की के विवाह को एक वर्ष हुआ था आयु १४ वर्ष की थी। अपने मकान के एक कमरे में घरवालों ने उसे जलते हुए देखा और सहायता को दौड़े। उसको अचेतावस्था में मेडिकल कालेज के हस्पताल में लेगये परन्तु वह मरगई। लड़की का भवानीचरनदास के साथ विवाह हुआ था यह महाशय जोरासंको के थाने के पास काशी घोष लेन में रहते थे।

लाहौर का स्वास्थ्य—पंजाब के नगरों में लाहौर का बहुत ऊंचा स्थान है। कई बातों से लोग लाहौर जाने के उत्सुक रहते हैं परन्तु यह जानकर किसे कष्ट न होगा कि लाहौर का स्वास्थ्य बड़ा ही बुरा है। वैसे तो भारत के सभी नगरों में स्वच्छता के न होने से रोग घर किये रहते हैं परन्तु डाक्टर नेवल साहब की बनाई हुई चतुर्थ वार्षिक रिपोर्ट से पता लगता है कि लाहौर क्षय रोग का घर है। अधिक मृत्यु १५ वर्ष से कम आयु वाले बच्चों की होती है। गत वर्ष क्षय रोग से ६३० मृत्यु हुईं। यह रोग मुसलमानों में और विशेषतया उनकी स्त्रियों में अधिक फैला हुआ है। स्वास्थ्य रक्षा के भूत पूर्व अधिकारी डा० नेवल साहब लेडी डाक्टर के रखने पर बड़ा बल देते हैं। यह समझा जाता है कि नई नहर की प्रथा इस रोग की जड़रूप है। डा० नेवल साहब ने कार्य्य के लिये कई समुचित प्रस्ताव किये हैं।

बंक बन्द होगया—पंजाब मरचेन्ट बंक की करांची वाली शाखा ने अपने द्वार बन्द करदिये परन्तु तार द्वारा पता लगा कि कार्य्य के न होने के कारण ऐसा हुआ है। सब का पूरा २ धन लौटा दिया गया है।

घरेलू झगड़े से एक युवती की आत्म हत्या—रनुका बालादासी एक बड़े प्रतिष्ठित घर की स्त्री थी, आयु प्रायः २४ वर्ष की थी इस का बिवाह ब्रजेन्द्रनाथ के साथ हुआ था। नीलमनी मित्र की गली में रहती थी। गत ब्रहस्पती वार को घरके झगड़े के कारण आंगन में जा कपड़ों में तेल डाल मर गई। उस समय रात के तीन बजे थे। घर वालों ने उसके बचाने का बड़ा यत्न किया परन्तु वह बच न सकी। भारत की देवियों की यह अवस्था देखकर किस देश हितैषी का दिल न पिघलेगा।

संस्कृत और अरबी के लिये छात्र वृति—भारत सरकार ने १९१४ के साल में वैज्ञानिक रीतिसे यूरोप में संस्कृत तथा अरबी पढ़ने के लिये मि० सदरुद्दीन (पंजाब तथा युक्त प्रान्त की ओर चुनेहुए) तथा मि० प्रसन्नकुमार आचार्य (बंगाली) को दो छात्र वृतियां देनी स्वीकार की है।

नया दैनिक—कलकत्ते से एक नया हिन्दी-दैनिकपत्र निकलने वाला है। इसका नाम 'कलकत्ता समाचार' होगा और इसके सम्पादक पं० द्वारका प्रसादजी चतुर्वेदी होंगे। इस पत्र के संचालकों से हमारी प्रार्थना है कि वे एक अच्छी पूंजी से पत्र निकालें जिसमें फिर उसके शीघ्र ही बन्द होने का भय न रहे। यदि यह सम्भव नहीं तो उन्हें उचित है कि वे कलकत्ते से निकलने वाले 'दैनिक भारत मित्र' की ही सहायता करें और नया पत्र निकालने के बिचार को त्यागदें। (आनन्द)

मातृभाषा में शिक्षा-प्राप्ति का महत्व।

मदरास के लार्ड बिशप (सब से बड़े पादरी), डाक्टर हेनरी हूाइटहेड, की राय है कि इस देश के स्कूलों ही में नहीं, कालेजों में भी, मातृभाषा ही के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहारे सब तरह की शिक्षा देना उचित है। उनकी सम्मति के कुछ अंश का मतलब सरस्वती की किसी पिछली संख्या में दिया जा चुका है। अब उन्होंने इस विषय में एक लेख मद्रास के हिन्दू-नामक पत्र में प्रकाशित कराया है। उसका आशय यह है:—

अँगरेज़ी भाषा में शिक्षा देने से अनेक हानियाँ हैं। उससे विद्यार्थियों के दिमाग़ पर बेजा बोझ पड़ता है। उससे अधिकाँश विद्यार्थियों की वह शक्ति, जिस की प्रेरणा से नये नये विचार सूझ पड़ते हैं, बिलकुल ही मारी जाती है। स्वतन्त्र विचारों का बीज ही उनके हृदय में नष्ट हो जाता है। फिर, जो कुछ वे अँगरेज़ी के द्वारा सीखते हैं उसे अच्छी तरह समझ हीनहीं सकते। स्कूलों के अध्यापक स्वयं ही अँगरेज़ी में पारङ्गत नहीं होते। इस कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में बाधा पड़ती है। अँगरेजी में शिक्षा प्राप्त करने से अँगरेज़ी जानने वाले लोगों का दल अँगरेज़ी न जानने वालों से पृथक् होता जाता है। दोनों दलों में सहानुभूति और एकजीवता कम होती जाती है। जातीयता को इस से बड़ा धक्कापहुंचता है। अँगरेज़ी के कारण ही देशी भाषाओं की उन्नति नहीं होती। सुशिक्षित लोग अँगरेज़ी ही में अपने मनोभाव प्रकट करते हैं। फल यह होता है कि उनके उच्च भावों और विचारों से अँगरेज़ी न जानने वाले वंचित रह जाते हैं। इससे बढ़ कर क्या हानि हो सकती है? अधिकांश भारतवासी अंगरेज़ी नहीं जोनते। वे सारे के सारे शिक्षितों की शिक्षा और विद्या से दमड़ी भर भी लाभ नहीं उठा सकते!

शिकायत इस बात की है कि देशी भाषाओं की शिक्षा दी कैसे जाय, आवश्यक पुस्तकें तो हैं ही नहीं। विज्ञान के पारिभाषिक शब्द भी नहीं हैं। भाषायें भी कोड़ियों हैं। किस किस में शिक्षा दी जाय? इन सब एतराज़ों में कुछ भी सार नहीं। आप यहां की भाषाओं में शिक्षा देना आरम्भ कीजिए; छः ही महीने में पाठ्य पुस्तकों के ढेर लग जायंगे। बाइबल का तर्जुमा भारत की सभी भाषाओं में हो गया है। उसके लिए पारिभाषिक शब्द कहां से आया? भाषायें अनेक अवश्य हैं, पर कुछ अधिक ख़र्च करने से यह कठिनता भी दूर हो सकती है। कितनी ही भाषायें परस्पर बहुत कुछ मिलती जुलती हैं। तब तक प्रधान प्रधान भाषाओं के द्वारा ही शिक्षा देने का काम आरम्भ कीजिए। जिस लड़के की भाषा तामील है वह अँग्रेज़ी की अपेक्षा तिलेगू भाषा में अधिक सरलता से शिक्षा प्राप्त कर सकता है। हां, राजनैतिक दृष्टि से अंग्रेज़ी पढ़ने की आवश्यकता पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। पर हम यह कहां कहते हैं कि अंगरेज़ी की पढ़ाई बन्द कर दी जाय। नहीं, अंग्रेज़ी खूब पढ़ाई जाय। पर उसकी शिक्षा भाषा की हैसियत से दी जाय—मातृ-भाषा की प्रधानता रहे, अंग्रेज़ी की गौणता। सारे उपयोगी विषय और विज्ञान मातृ भाषा में सिखाये जायं। अंग्रेजी सिर्फ इस उद्देश से पढ़ाई जाय जिसमें पढ़ने वाले उसमें आसानी से बात चीत कर सकें उसमें अपने मन के भाव व्यक्त कर सकें और उसे अच्छी तरह समझ लें। मातृ भाषा में और सब विषयों की शिक्षा देने से अंग्रेज़ी भाषा सीखने में तो और भी सुभीता होगा। इस क्रम के स्वीकार से बड़े लाभ होंगे। मूर्खता कम हो जायगी। अधिकांश भारतवासी पश्चिम देशों की विद्या और विज्ञान से परिचित हो जायंगे। देशी भाषाओं के साहित्य की वृद्धि होगी। पारस्परिक सहानुभूति बढ़ जायगी। विद्यार्थियों के दिमाग़ पर बोझ कम पड़ेगा। उनकी तन्दुरुस्ती न बिगड़ेगी। थोड़े ही समय में वे बहुत बातें सीख सकेंगे।

बिशप महोदय के कथन का सारांश इतना ही है। आपका कथन अक्षरशः सच है। यही बात सरस्वती की गत संख्याओं के कई लेखों और नोटों में भी कही जा चुकी हैं। कोई देश अपनी भाषा की उन्नति किये बिना उन्नति नहीं हो सकता। अभागा भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है जहां के निवासी अंगरेज़ी का अल्प ज्ञान प्राप्त करके ही अपने को बृहस्पति समझने लगते हैं। और प्रान्तों की हम नहीं कहते, हमारे प्रान्त में तो सिर्फ संस्कृत और हिन्दी जानना मूर्खता और अज्ञता की सनद समझी जाती हैं कुछ लोग तो ऐसे भी हैं जो अपनी मातृ भाषा हिन्दी में लिखने और बात चीत करने वालों से घृणा तक करते हैं। उन्हें वे मनुष्य ही नहीं समझते। वे बोलेंगे तो अंग्रेजी, लिखेंगे तो अंगरेजी, पढ़ेंगे तो अंगरेजी। हिन्दी का कोई शब्द मुंह से निकल जाने पर शब्द लोग अपने आप से भी मन ही मनमें घृणा करते होंगे। ये अपनी भाषा भूल जाने की कोशिश करते हैं। जब कभी लाचार होकर बोलते भी हैं तब उसके उच्चारण की जान बूझ कर वह दुर्दशा करते हैं कि सुनकर दुःख होता है। अंगरेज तो अपनी भाषा बोलने पर गर्व करते हैं और हम उसे भूल जाने पर? यह सब वर्तमान शिक्षा पद्धति की अस्वाभाविता ही का फल है। अतएव उसके संस्कार की बड़ी आवश्यकता है।

(सरस्वती)

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

(१) ब्रह्मचारी सब आनन्द प्रसन्न हैं ईश्वर कृपया किसी प्रकार का कष्ट नहीं। ऋतु (मौसम) भी अच्छा है। गर्मी की अधिकता बढ़ते २ पूर्व २० ज्येष्ट २ जून को उष्णता मापक यन्त्र का पारा १०४ डिगरी पर था, ३ जून को कुछ वर्षा हो जाने से आज ७ जून को ८२ डिगरी पर पारा है बादल अभी तक निरंतर बने हुए हैं आशा है वर्षा और भी हो।

(२) नया कूप जो कि म० ब्रजमोहन जी देहली निवासी की ओर से बन रहा है आशा है आषाढ़ मास के अन्त तक तैय्यार हो जाय। इसी कूप के समीप ब्रह्मचारियों के स्नान के लिये एक स्नानालय बनाने का विचार है जिसके लिये १०००) रु० की आवश्यकता है आशा है आर्य्य पुरुष दानी महाशयों को प्रेरणा कर इस आवश्यकता को पूरी कर देंगे और स्वयं यश के भागी बनेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, सृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, बिशिष्टतः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनाँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

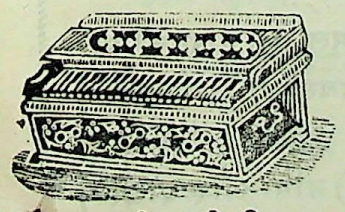

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल, क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≠)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पो०

—

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५·

मिलने का पताः—

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी

जसोर जिला गया

——

बूँटीसे पारेकी निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे को शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्म्मज्ञाता अनेक वैद्य साधू ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनीं मंगावें।

घर बैठे गँगाजल

यदि आप अपने घर बैठे ही हरिद्वार के हंसोदक शुद्ध गंगाजल को प्राप्त करना चाहें तो हमें लिखें एक कनस्टर नील धाराकेबीस सेर जलकी न्योछावर १) है मार्ग व्यय मंगाने वालों के जुम्मे होगा।

पता:

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कँपनी

हरद्वार।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रसिक सज्जनों

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥) मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स अलीगढ़

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्र व्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसर रामहेशचरण सिंह, बी०, ए० एम० एस० सी० ए० जी० आर० गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुकसेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० छा =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

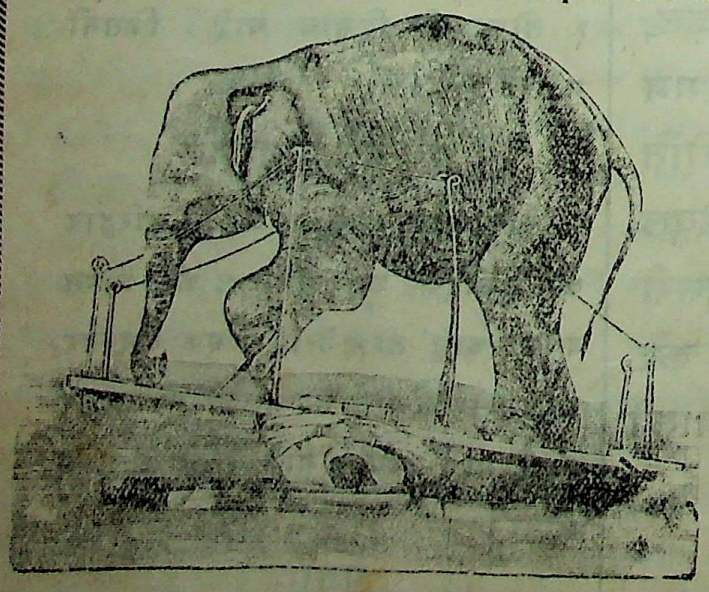

प्रचारक के ग्राहकों को ए कपास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ।॥) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता ।

जैसा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. वैसे अवसर में सुधा संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता ।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान वगैरह नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने के अपना गुण दिखाता है.

सुधासिंधु

१२ वर्ष का आजमाया हुआ

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

कफ	अतिसार	सर्दीबुखार	
दमा	आंवलोहू	जी मिचलाना	
खांसी	संग्रहणी	वस्तीकेहरीपेडूदस्त	
तिल्ली	के होना	शरीर का दर्द	
शूल	पेटकादर्द	ऊकरलांसी	

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट शुर्णित दवा

फी मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ १२ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के साथ ही अदसे खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) ह.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—क्षेत्रपाल शर्मा मालिक,

सुध संचारक कम्पनी मथुरा

'वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर कीहै, जो बुद्धिमती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदात्र शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो कुमारा हृष्ट पुष्ट २५ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थाप्पर

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब लाहौर

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ २) डा० खर्च ≡) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

हारमोनियम शिक्षक

अर्थात् बिना गुरु के बाजा सिखाने वाला टीचर, यदि आप थोड़ेही समय में सरगम व गाना सहित हारमोनियम बजाना सीखने के इच्छुक हैं तो सुन्दर जिल्द बंधी हुई पुस्तक के दोनों भाग मंगाइये मूल्य ।)डा० ≈) पीतलके ओ३म् व नमस्ते फ्री दर्जन।।।) डा० म० अलग

पता:—बाबूख्यालीराम एण्डको

अलीगढ़ सिटी.

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (इ)

चान्द--जि० आरा

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का कलम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासि पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० जो असाढ़तक इसके ग्राहक होंगे सनव संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहा मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने क भङ्ग मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

आवश्यकता।

हमें एक संस्कृत अध्यापक जो अष्टा ध्यायी, महाभाष्य अङ्गोंपाङ्ग सहित पढ़ा सकता हो दृढ़ आर्य्य हो समय पर शास्त्रार्थ भी कर सके और १ अंग्रेज़ शिक्षक जो ग्रेज्युट या अन्डर ग्रेज्युट हो जो संस्था के प्रबन्ध का कार्य भी उत्त मता से कर सके आवश्यकता है। जो महाशय आना चाहें वे प्रार्थना पत्र किसी प्रतिष्ठित आर्य्य पुरुष के प्रशंसा पत्र सहित निम्नलिखित पते से भेजें वेतन का निश्चय पत्र द्वारा करलें वेतन ३०) से ६०) रुपया मासिक तक दी जायगी।

बिहारीलाल

मंत्री गुरुकुल विद्यालय

होशंगाबाद सी. पी.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूटी बटिका** मौका नचूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो रकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव ण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी गत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभु-यालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक ास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी ाप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद वन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही ाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर मझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन ी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी न्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि ा नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को न्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी टिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब ो बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी मारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले ीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री ामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक ुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ी प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

टिका बुद्धिवर्द्धिन्द्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
ां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजि त विषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ा-ी है। कुष्ठपांडु दवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ाह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ाक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का ड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक लवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और ायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थि-ों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ ौर छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी-(शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसे शुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

१०००) एकहज़ार रुपये की

जेबी घड़ियां, किताबें और नक़दी हमारी महाभारत और वाल्मीकीय रामायण के ग्राहकों को जो इस साल में मँगालें-दीजावेंगी, महाभारत के ग्राहकों को एक जेबी घड़ी और रामायण के ग्राहकों को १।) की किताबें मिलेंगी, दोनों पुस्तकों के ग्राहक इन वस्तुओं के अतिरिक्त नक़दी भी पा सकेंगे।

महाभारत संस्कृत मूल अंग्रेज़ी व हिन्दी अनुवाद सहित ९८१४ पृष्ठ चौदह जिल्दमें एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाकव्यय सहित दो जिल्द एक साथ लेने से ५)—ग्राहकों को अधिकार है चाहे एक वा दो जिल्द हर महीना लें वा पूरी पुस्तक एक साथ मंगावें।

वाल्मीकीय रामायण संस्कृत मूल तथा इंग्लिश हिन्दी अनुवाद ३१२८ पृष्ठ चार जिल्द में एक जिल्द का मूल्य २॥-) डाक व्यय सहित पूरी पुस्तक १०)

पता. रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद यू. पी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय दहली में मुद्रित व प्रकाशित

ered No L. 807.

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु सम्पादक—हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | ७ आषाढ़ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० २० जून १९१४ | संख्या १० भाग २६

LAHORE 23 JUN 14

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १)
बजिल्द का मूल्य १॥)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)- प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकु[र] नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास है। उसके बंगाली में कई संस्क[रण] चुके हैं। उसी उपन्यास का यह अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं की खान कहना चाहिये। पुस्त[क] के अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अमरीका, इंगलंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ।

एक मास तक ... ...

डाक्तर बर्म्मन की पेटेंट दवाएं ३० वर्ष से प्रसिद्ध हैं

बिमारी रोकने से आराम करना अच्छा है।

फसली बुखार वो तिल्ली की दवा।

यदि सब दवा सेवन करके हताश हुवे हों तो इसकी भी एक वार जांच करें। यह दवा घर २ प्रसिद्ध है। मोल छोटी शीशी ॥) बड़ी ।॥=) आने डाः मः।-) और ।=)

घेघे की दवा।

घेघा सख्त और बहुत बड़ा बड़ावा बहुत दिनों का होजाने से आराम नहीं होता परन्तु थोड़े दिनका वो नरम रहते इस की दवा लगाकर करने से आराम होता है। डाक्तर बर्म्मन की दवा ऐसे घेघे को आराम करने का दवा रखती है। दवा १ वा २ महीने तक सेवन करना चाहिये। परन्तु खर्च से मान्य ही है। दवा एक खाने की दूसरी लगाने की मिलती है और वह दो सप्ताह तक सेवन योग्य है।

मोल खाने की दवा का॥।) आने लगाने की दवा ।) आने, पैः डाः मः।-) आने।

सब जगह हमारे एजेण्ट और दवा फरोशों के पास मिलेगी अथवा—

डाः एस के बर्म्मन ५ ई. नारायण दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

एजेन्टः—बाबूराम जैनी कूचासेठ दिल्ली

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानूनदर्पण।

एक ही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिन से हर मनुष्य को काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाब्ता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तल्लाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुख्त्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय [illegible] सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार वगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझाये हैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्याकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १)

मिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

महात्म मुंशीराम जी!

विज्ञान कल्पतरु के विषय में लिखते हैं:—मैं इस पुस्तक माला को आर्य भाषा भाषी आर्य जनता के लिये बहुत उपयोगी समझता हूं। मेरी सम्मति में यदि प्रत्येक आर्य्यसमाज इस की एक एक प्रति खरीदना स्वीकार करले तो ऐसा समयोपयोगी ग्रन्थ छप कर स्वदेश को बहुत लाभ पहुंचा सक्ता है। यदि मेरे पास धन होता तो मैं आपका हाथ बटाने का कुछ प्रयत्न करता अब केवल आपकी कृतकार्यता के लिए केवल मङ्गल इच्छा ही प्रकट कर सकता हूं। विज्ञान कल्पतरु में प्रत्येक वस्तु के बनाने की क्रियायें धन कमाने के अनेक ढंग, विज्ञान (साईन्स) सम्बन्धी तथा वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक बात का पूरा पूरा वर्णन चित्रों सहित किया गया है। ग्रन्थ बड़ा होने से १८० पृष्ठ मासिक में छपता है और स्थाई ग्राहकों को ॥) प्रति अंक डाकव्यय सहित दिया जाता है अन्यों को प्रति अङ्क ॥।) में

मैनेजर जनरल पबलिशिंग कम्पनी मेरठ

Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

राष्ट्रीय निबन्ध माला

यह निबन्ध माला हिन्दी साहित्य में एक अपूर्व चीज़ है। इसमें बड़े बड़े विद्वानों के निबन्ध प्रकाशित होंगे जो पुस्तकाकार छपेंगे, माला का पहिला निबन्ध तय्यार है जिसका नाम

राष्ट्रों की उन्नति

है। निबन्ध क्या है, सारे संसार के इतिहास का सार है। यह निबन्ध इतना उपयोगी समझा गया है कि कई लोगों ने इसकी पचास पचास कापियां लेकर स्वयं बाँटी हैं। मूल्य ।)

२. राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र–ले० इन्द्र वेदालंकार। पहिले निबन्ध का यह उत्तर भाग है। (छप रहा है)

३. महाराष्ट्र का उदय–ले० श्री श्री पाद दामोदर सातवलेकर (तय्यार हो रहा है)

४. अमरीका के सिर मौर–ले० बाबू जगन्नाथ खन्ना बी एस० सी (अमरीका) (तय्यार हो रहा है)

विकासवाद

या

इवोल्यूशन थ्यूरी

प्रो० वि० ग० साठे एम० ए० गुरुकुल कांगड़ी कृत

विकासवाद सारे विज्ञान का आधार है। आज कल विकासवाद से अनभिज्ञ रहना अनपढ़ होने का चिन्ह समझा जाता है। तो लीजिये ये पुस्तक पढ़िये। पत्रों और विद्वानों ने मुक्त कंठ से इस पुस्तक की प्रशंसा की है इसमें ३३ हाफ़टोन चित्र हैं। मूल्य केवल २)

प्रबन्धकर्ता

सद्धर्म प्रचारक पत्र, देहली

संसार की गति

गुरुकुल में फुटबाल—गुरुकुल से एक संवाददाता लिखता है—गत आदित्य वार के दिन दिल्ली के सेण्ट स्टीफ़न्स कालेज का पाद कन्दुक (फुटबाल) खेलने वाला दल गुरुकुल आया। यह उस कालेज के खिलाड़ियों की हिसाब चुकती थी; क्योंकि हमारा हाकी दल दिल्ली जाकर खेल आया था। गर्मी के दिन हैं, तो भी आने वालों को विशेष क्लेश नहीं है, क्योंकि पुल टूटे हुए हैं और यात्रियों को तमेड़ पर बैठाकर गङ्गा की बहार उड़ाने का अवसर मिलता है। दल आगया, हमारे ब्रह्मचारियों ने गङ्गा तट पर ही उनका स्वागत किया। दल का हरिद्वार के स्टेशन पर स्वागत करने के लिये हमारी स्वागत कारिणी सभा के निश्चित बाह्य मन्त्री म० विश्वजित जी पहुंचे हुए थे। उन्होंने गङ्गा तट पर हंसते हंसते दल का साथ छोड़ा और ब्रह्मचारियों ने अपने अतिथियों का भार लिया। एक दिन आराम करते हुए और गङ्गा स्नान करते हुए काट कर दूसरे दिन प्रातःकाल दिल्ली दल खेलने के लिये तय्यार होगया। सोमवार के दिन प्रातःकाल ७ बजे से खेल शुरू हुई। विद्यालय और महाविद्यालय के ब्रह्मचारी चारों ओर बैठे हुए खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ा रहे थे। उपाध्याय लोग कुर्सियों पर बैठे हुए थे और क्रीड़ा क्षेत्र, खिलाड़ी समूह और न जाने किस किस वस्तु की समीक्षा में लगे हुए थे। सीटी बजी और खेल शुरू हुई, अभी पाँच मिनट भी न गुज़रे थे कि सीटी बजी, देखो तो पता लगा कि गुरुकुल दल पर एक गोल होगया। गेंद बीच में आई, खेल फिर शुरू हुई। अभी दस मिनट न बीते होंगे कि सीटी फिर बजी। देखा तो पता लगा कि गुरुकुल दल एक और गोल हारा। आज हमारी पार्टी खेल नहीं रही? क्या कारण है? गर्मी बहुत है, और ब्रह्मचारियों के पैर नंगे हैं। नहीं जी, यह ठीक नहीं सिर तो दूसरे खिलाड़ियों के भी नंगे हैं अहो! हमारे दल के अच्छे अच्छे खिलाड़ी तो खेले ही नहीं। इसीलिये हार हो रही है। बड़ी ग़लती हुई, अच्छा अपनी अशुद्धि पर पछताना क्या है? चार बड़े बड़े खिलाड़ी खेल ही नहीं रहे जीत क्या ख़ाक होगी। इतने में फिर सीटी बजी, आँख उठाई तो देखा कि गुरुकुल दल ने एक गोल कर दिया। चलो, कुछ तो काम बना। शायद कुछ इज़्ज़त रह जाय। लोगों की आशा बंधने लगी पर पूरी नहीं। खिलाड़ी फिर स्थानों पर खड़े होगये। पांच मिनट ही खेल हुई होगी कि फिर सीटी बजी, अबके गुरुकुल दल ने दूसरा गोल भी उतार दिया। एक ने कहा, धूप तो बड़ी है पर हमारे ब्रह्मचारी खूब खेल रहे हैं। दूसरे ने कहा, ब्रह्मचारियों को धूप में घूमने की आदत है, इसीलिये ठीक खेल रहे हैं। तीसरे ने कहा "हमारा दल खेलता तो अच्छा है, नये खिलाड़ी भी अच्छा ही खेलते हैं।" दस मिनट का आराम हुआ और खेल फिर शुरू हुई। सात मिनट की खेल में ही गेंद एक खिलाड़ी से दूसरे के पास होता हुआ गोल के अन्दर चला गया। वाह वाह, ये तो बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं। ब्रह्मचारी बड़े धैर्य से खेल रहे हैं। धूप भी हमारे पक्ष में है, दिल्ली के खिलाड़ी धूप नहीं सह सकते। यह नया दल बड़ा अच्छा तैयार होगया है।

कुछ समय बाकी था। वह भी बीत गया। खेल समाप्त हुई और विजयी गुरुकुल ने अपने अतिथियों का फलादि द्वारा फिर सन्मान किया। लोग न जाने क्या क्या सोचते हुए घरों को गये किन्तु लेखक के दिल में यही विचार घूमता रहा कि "जिसे हम लोग अपनी निश्चित सम्मति कहते हैं वह केवल क्षण भर के बाह्य प्रभावों का प्रादुर्भाव है। लोकमत क्षण २ में बदल रहा है, उस पर ही जो लोग आश्रय रखते हैं, वे पत्ते की नौका पर तैरना चाहते हैं।"

उपदेशक महाविद्यालय खुल गया—गत वर्ष हमने "प्रचारक" में दो तीन प्रबल लेख लिख कर गुरुकुल के साथ उपदेशक महाविद्यालय खोलने का प्रस्ताव किया था और धन के लिये अपील

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by

डाक्तर बर्म्मन की पेटेंट दवाएं ३० वर्ष से प्रसिद्ध हैं

बिमारी रोकने से आराम करना अच्छा है।

फसली बुखार वो तिल्ली की दवा।

यदि सब दवा सेवन करके हताश हुवे हों तो इसकी भी एक वार जांच करें। यह दवा घर २ प्रसिद्ध है। मोल छोटी शीशी ॥) बड़ी ।॥=) आने डाः मः।-) और ।=)

घेघे की दवा।

घेघा सख्त और बहुत बड़ा बड़ावा बहुत दिनों का होजाने से आराम नहीं होता परन्तु थोड़े दिनका वो नरम रहते इस की दवा लगाकर करने से आराम होता है। डाक्तर बर्म्मन की दवा ऐसे घेघे को आराम करने का दवा रखती है। दवा १ वा २ महीने तक सेवन करना चाहिये। परन्तु खर्च से मान्य ही है। दवा एक खाने की दूसरी लगाने की मिलती है और वह दो सप्ताह तक सेवन योग्य है।

मोल खाने की दवा का॥।) आने लगाने की दवा ।) आने, पैः डाः मः।-) आने।

सब जगह हमारे एजेण्ट और दवा फरोशों के पास मिलेगी अथवा—

डाः एस. के. बर्म्मन ५, ६ नारायण दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

एजेन्टः—बाबूराम जैनी कूचासेठ दिल्ली

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानूनदर्पण।

एक ही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिन से हर मनुष्य को काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाब्ता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तल्लाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुख्त्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय [illegible] सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार वगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझाये हैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्याकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १)

मिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

महात्म मुंशीराम जी!

विज्ञान कल्पतरु के विषय में लिखते हैं:—मैं इस पुस्तक माला को आर्य भाषा भाषी आर्य जनता के लिये बहुत उपयोगी समझता हूं। मेरी सम्मति में यदि प्रत्येक आर्य्यसमाज इस की एक एक प्रति खरीदना स्वीकार करले तो ऐसा समयोपयोगी ग्रन्थ छप कर स्वदेश को बहुत लाभ पहुंचा सक्ता है। यदि मेरे पास धन होता तो मैं आपका हाथ बटाने का कुछ प्रयत्न करता अब केवल आपकी कृतकार्यता के लिए केवल मङ्गल इच्छा ही प्रकट कर सकता हूं। विज्ञान कल्पतरु में प्रत्येक वस्तु के बनाने की क्रियायें धन कमाने के अनेक ढंग, विज्ञान (साईन्स) सम्बन्धी तथा वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक बात का पूरा पूरा वर्णन चित्रों सहित किया गया है। ग्रन्थ बड़ा होने से १८० पृष्ठ मासिक में छपता है और स्थाई ग्राहकों को ॥) प्रति अंक डाकव्यय सहित दिया जाता है अन्यों को प्रति अङ्क ॥।) में

मैनेजर जनरल पबलिशिंग कम्पनी मेरठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीय निबन्ध माला

यह निबन्ध माला हिन्दी साहित्य में एक अपूर्व चीज़ है। इसमें बड़े बड़े विद्वानों के निबन्ध प्रकाशित होंगे जो पुस्तकाकार छपेंगे, माला का पहिला निबन्ध तय्यार है जिसका नाम

राष्ट्रों की उन्नति

है। निबन्ध क्या है, सारे संसार के इतिहास का सार है। यह निबन्ध इ-सलिये उपयोगी समझा गया है कि कई लोगों ने इसकी पचास पचास कापियां लोकमत बाँटी हैं। मूल्य ।)

२. राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र–ले० इन्द्र विद्यालंकार। पहिले निबन्ध का यह उत्तर भाग है। (छप रहा है)

३. महाराष्ट्र का उदय–ले० श्री श्री पाद दामोदर सातवलेकर (तय्यार हो रहा है)

४. अमरीका के सिर मौर–ले० बाबू जगन्नाथ खन्ना बी एस० सी (अमरीका)

(तय्यार हो रहा है)

विकासवाद

या

इवोल्यूशन थ्यूरी

बी० वि० ग० साठे एम० ए० गुरुकुल कांगड़ी कृत

विकासवाद सारे विज्ञान का आधार है। आज कल विकासवाद से अनभिज्ञ रहना अनपढ़ होने का चिन्ह समझा जाता है। तो लीजिये ये पुस्तक पढ़िये। पत्रों और विद्वानों ने मुक्त कंठ से इस पुस्तक की प्रशंसा की है इसमें ३३ हाफटोन चित्र हैं। मूल्य केवल २)

प्रबन्धकर्ता

सद्धर्म प्रचारक पत्र, देहली

संसार की गति

गुरुकुल में फ़ुटबाल—गुरुकुल से एक संवाददाता लिखता है—गत आदित्य वार के दिन दिल्ली के सेण्ट स्टीफ़न्स कालेज का पाद कन्दुक (फ़ुटबाल) खेलने वाला दल गुरुकुल आया। यह उस कालेज के खिलाड़ियों की हिसाब चुकती थी; क्योंकि हमारा हाकी दल दिल्ली जाकर खेल आया था। गर्मी के दिन हैं, तो भी आने वालों को विशेष क्लेश नहीं है, क्योंकि पुल टूटे हुए हैं और यात्रियों को तमेड़ पर बैठाकर गङ्गा की बहार उड़ाने का अवसर मिलता है। दल आगया, हमारे ब्रह्मचारियों ने गङ्गा तट पर ही उनका स्वागत किया। दल का हरिद्वार के स्टेशन पर स्वागत करने के लिये हमारी स्वागत कारिणी सभा के निश्चित बाह्य मन्त्री म० विश्वजित जी पहुंचे हुए थे। उन्होंने गङ्गा तट पर हंसते हंसते दल का साथ छोड़ा और ब्रह्मचारियों ने अपने अतिथियों का भार लिया। एक दिन आराम करते हुए और गङ्गा स्नान करते हुए काट कर दूसरे दिन प्रातःकाल दिल्ली दल खेलने के लिये तय्यार होगया। सोमवार के दिन प्रातःकाल ७ बजे से खेल शुरू हुई। विद्यालय और महाविद्यालय के ब्रह्मचारी चारों ओर बैठे हुए खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ा रहे थे। उपाध्याय लोग कुर्सियों पर बैठे हुए थे और क्रीड़ा क्षेत्र, खिलाड़ी समूह और न जाने किस किस वस्तु की समीक्षा में लगे हुए थे। सीटी बजी और खेल शुरू हुई, अभी पाँच मिनट भी न गुज़रे थे कि सीटी बजी, देखो तो पता लगा कि गुरुकुल दल पर एक गोल होगया। गेंद बीच में आई, खेल फिर शुरू हुई। अभी दस मिनट न बीते होंगे कि सीटी फिर बजी। देखा तो पता लगा कि गुरुकुल दल एक और गोल हारा। आज हमारी पार्टी खेल नहीं रही? क्या कारण है? गर्मी बहुत है, और ब्रह्मचारियों के पैर नंगे हैं। नहीं जी, यह ठीक नहीं सिर तो दूसरे खिलाड़ियों के भी नंगे हैं अहो। हमारे दल के अच्छे अच्छे खिलाड़ी तो खेले ही नहीं। इसीलिये हार हो रही है। बड़ी ग़लती हुई, अच्छा अपनी अशुद्धि पर पछताना क्या है? चार बड़े बड़े खिलाड़ी खेल ही नहीं रहे जीत क्या ख़ाक होगी। इतने में फिर सीटी बजी, आँख उठाई तो देखा कि गुरुकुल दल ने एक गोल कर दिया। चलो, कुछ तो काम बना। शायद कुछ इज़्ज़त रह जाय। लोगों की आशा बंधने लगी पर पूरी नहीं। खिलाड़ी फिर स्थानों पर खड़े होगये। पांच मिनट ही खेल हुई होगी कि फिर सीटी बजी, अबके गुरुकुल दल ने दूसरा गोल भी उतार दिया। एक ने कहा, धूप तो बड़ी है पर हमारे ब्रह्मचारी खूब खेल रहे हैं। दूसरे ने कहा, ब्रह्मचारियों को धूप में घूमने की आदत है, इसीलिये ठीक खेल रहे हैं। तीसरे ने कहा "हमारा दल खेलता तो अच्छा है, नये खिलाड़ी भी अच्छा ही खेलते हैं।" दस मिनट का आराम हुआ और खेल फिर शुरू हुई। सात मिनट की खेल में ही गेंद एक खिलाड़ी से दूसरे के पास होता हुआ गोल के अन्दर चला गया। वाह वाह, ये तो बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं। ब्रह्मचारी बड़े धैर्य से खेल रहे हैं। धूप भी हमारे पक्ष में है, दिल्ली के खिलाड़ी धूप नहीं सह सकते। यह नया दल बड़ा अच्छा तैयार होगया है।

कुछ समय बाकी था। वह भी बीत गया। खेल समाप्त हुई और विजयी गुरुकुल ने अपने अतिथियों का फलादि द्वारा फिर सन्मान किया। लोग न जाने क्या क्या सोचते हुए घरों को गये किन्तु लेखक के दिल में यही विचार घूमता रहा कि "जिसे हम लोग अपनी निश्चित सम्मति कहते हैं वह केवल क्षण भर के बाह्य प्रभावों का प्रादुर्भाव है। लोकमत क्षण २ में बदल रहा है, उस पर ही जो लोग आश्रय रखते हैं, वे पत्ते की नौका पर तैरना चाहते हैं।"

उपदेशक महाविद्यालय खुल गया—गत वर्ष हमने "प्रचारक" में दो तीन प्रबल लेख लिख कर गुरुकुल के साथ उपदेशक महाविद्यालय खोलने का प्रस्ताव किया था और धन के लिये अपील

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की थी। हमारा प्रस्ताव गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता जी को पसंद आया और उन्होंने इस विषय की स्कीम बनाकर प्रतिनिधि सभा में भेज दी। वहाँ यह प्रस्ताव बहुत दिनों तक पड़ा रहा, परन्तु अन्त में वह स्वीकृत होगया। "प्रचारक परिवार" को यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि १५ जून से वह उपदेशक महाविद्यालय खुल गया है और उसका कार्य आरम्भ हो गया है। छात्र वृत्तियां तो पहले ही पर्याप्त आ चुकी थीं, केवल विद्यार्थियों की आवश्यकता थी। वह आवश्यकता भी पूरी होगई है। हमें यह सुनकर और भी प्रसन्नता हुई कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने इस नई स्कीम को बहुत पसंद किया है और वे अधिक संख्या में उपदेशक महाविद्यालय में भर्ती होगये हैं। प्रचारक के किए हुए एक प्रस्ताव के कार्य में परिणत होने पर, हम प्रचारक परिवार को बधाई देते हैं।

शिकागो में आर्य्यन पब्लिशिंग सोसाईटी—पं० केशवदेव शास्त्री अमरीका से लिखते हैं—

भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों के अनेक उत्साही आर्य्य पुरुषों ने अपने पत्र व्यवहार से मेरे उत्साह को बढ़ाया और सहायता करने की इच्छा प्रगट की है। मैंने इन मित्रों को अपने निज पत्रों द्वारा विश्वास दिलाया है कि वे मेरे लिये किसी प्रकार की चिन्ता न करें। हां, यदि वे वैदिक धर्म के पोषणार्थ पुस्तकों तथा धनादि की सहायता कर सकें तो मैं अनुगृहीत हूंगा। मैं जानता हूं कि भिन्न २ स्थानों पर धन इकट्ठा करने की चेष्टा की जा रही है। इधर हम लोगों ने भी आर्यन पब्लिशिङ्ग सोसायटी शिकागो की संस्थापना कर दी है। मेरे पास अमेरिका के भिन्न २ प्रान्तों से नितान्त पुस्तकों की मांग आरही है। इसके अतिरिक्त आगामी वर्ष की पानामा प्रदर्शिनी के निमित्त अभी से पुस्तकों को प्रस्तुत करने तथा कराने की आवश्यकता है, अतएव जहाँ इस कतिपय आर्य पुरुषों ने इस सोसायटी की नींव रख दी है वहां हमें यह भी पूरा विश्वास है कि यह समाचार सैकड़ों नहीं किन्तु सहस्रों आर्य पुरुषों के हृदय में उत्साह तथा प्रसन्नता के भावों को उत्पन्न करेगा। पुस्तकों के छपवाने का यहां प्रबन्ध किया गया है। इसके अतिरिक्त जो पुस्तकें भारतवर्ष से आवेंगी उनके रखने बेचने, बांटने तथा बंटवाने का कार्य यही सोसाइटी करेगी। इसके तीन उद्देश्य होंगे। (१) वेदों की पवित्र शिक्षा का प्रचार करना (२) भारतवर्ष के दार्शनिक तथा धार्मिक विचारों को सर्व साधारण तक पहुंचाना। (३) भारतवर्ष और भारतवासियों के सम्बन्ध में ठीक २ परिज्ञान को सर्व साधारण में फैलाना

बहुत से आर्य सज्जन उत्सुक हैं कि मैं उन्हें यह समाचार शीघ्र भेजूं कि इस देश में आर्य समाज का कार्य्य आरम्भ होगया है। आर्य समाज तो कुछ काल से खुल चुका होता किन्तु कुछ बाधाएं ऐसी हैं कि जिनके कारण हमने जान बूझ कर कार्य को रोक रखा है। कई एक नर नारी आर्य्य समाज के विचारों से पूर्ण तया सहमत हैं, मैं उन की नामावली प्रस्तुत कर रहा हूं और आशा है कि शीघ्र ही एक सभा खुलेगी जो इस प्रांत की सैन्ट्रल बाडी का काम देगी। इस नगरी तथा अन्य स्थानों के सज्जन अभी इस सभा के सदस्य होंगे। इनके उत्साह तथा उद्योग से और भारतवर्ष के आर्य पुरुषों की उत्कण्ठा तथा अन्यान्य उत्साह को अनुभव करते हुए यह सोसायटी खोली गई है। आशा है कि शीघ्र ही यह Incorporated हो जावेगी और आगामी वर्ष में इसके कार्यालय शिकागो तथा सान फ्रांसिस्को इन दो नगरों में जारी रहेंगे। भारतवर्ष की छपवाई और जिल्द बन्दी यहां के कार्य की अपेक्षा बहुत हलकी होती है। यहां के लोग उसे पसन्द भी नहीं करते। इसके अतिरिक्त रेल तथा जहाज़ का व्यय और उस पर १५ फ़ी सदी इस देश में पुस्तकों के मूल्यादि पर चुङ्गी देनी पड़ती है इसलिये वह यहाँ आकर मंहगी पड़तीं और प्रायः मार्ग में खराब हो जाती हैं। इस हेतु से भी यहां की आवश्यकतानुसार यहां ही पुस्तकों को छपवाना अभीष्ट है। इस सिलसिले की कुल पुस्तकें लिखी तयार हैं जो शीघ्र ही छपनी आरम्भ हो जावेंगी।

विनीत

केशवदेव शास्त्री"

हिन्दी में नए सहयोगी—यह देख कर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि हिन्दी पत्र संसार में भी नई स्फूर्तिका संचार हुआ है। उस के फल में कई सहयोगी दैनिक होनेकी सूचना देतेहैंऔर कई साप्ताहिक तथा मासिक नव जन्म ग्रहण किया चाहते हैं। "भारत मित्र" कहता है कि वेंकटेश्वर समाचार शीघ्र ही दैनिक रूप धारण करेगा। हमारे लिये इस से बढ़कर और कोई प्रसन्नता की बात नहीं हो सकती। "वेंकटेश्वर" के स्वामी धनी हैं, वे उसे उत्कृष्ट दैनिक बनाने का सामर्थ्य रखते हैं। कलकत्ते से भी एक और शीघ्र ही दूसरा दैनिक निकलने वाला है जिस के लिये सनातन धर्मी सम्पादक की खोज हो रही है। हम नहीं कह सके कि इस में सनातन धर्म का ही व्याख्यान हुआ करेगा या इस में समाचार भी हुआ करेंगे। कानपुर से एक नए आर्य्य समाजी साप्ताहिक के प्रकाशित करने की तय्यारियां सुनी जा रही हैं। हमारे छपरा के संवाद दाता ने छपरे से "निशंक" नामक एक आर्य्य समाजी पत्र के शीघ्र ही निकलने का समाचार भेजा है। बुलन्द शहर की नागरी प्रचारणी सभा के मन्त्री श्री बाबू राम शर्मा लिखते हैं कि ५०० ग्राहक हो जाने पर बुलंद शहर से "साहित्य सरोज" नामक मासिक पत्र निकालने का विचार है। उसके सम्पादन का भार "हिन्दी भाषा के एक परम प्रसिद्ध सुलेखक महोदय ने अपने ऊपर लेने की कृपा की है।" इसका वार्षिक मूल्य १) होगा। हमें पूरी आशा है कि इन सह योगियों के दर्शन शीघ्र ही होंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लाहौर से हिन्दी का साप्ताहिक—उर्दू के बहाव में बहते हुए लाहौर में एक भी हिन्दी पत्र का न होना हिन्दी प्रेमियों को बड़ा खटका करता था। हिन्दी प्रेमी यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे कि यह खटक शीघ्र ही दूर होने वाली है। और हमारे लिये यह और भी प्रसन्नता की बात है कि इस को दूर करने का साहस गुरुकुल के नव स्नातक श्री युत यज्ञदत्त विद्या लंकार ने किया है। हमने अपने भाई के इस काम को साहस कहा है क्योंकि जिस पंजाब में उर्दू का जाल चारों ओर फैल चुका है, उसी प्रान्त के केन्द्र में हिन्दी का झण्डा गाड़ना कुछ कम साहस का काम नहीं है। पत्र साप्ताहिक होगा और उसका नाम "प्रभात" होगा। जो लोग पं० यज्ञ दत्त जी के इतिहास तथा सम्पत्ति शास्त्र विषयक गम्भीर ज्ञान, उदार विचार और जातीय प्रेम से परिचित हैं उन्हें यह कहने की आवश्यकता नहीं कि "प्रभात" का सम्पादन किस प्रकार का होगा। "प्रभात" का डिक्लेरेशन स्वीकृत हो चुका है और यह और भी प्रसन्नता की बात है कि यह डिक्लेरेशन ज़मानत के बिना स्वीकार हुआ है। १ जुलाई तक पहिले अङ्क के निकलने की आशा है। आशा है कि पंजाब में इस नवजात "प्रभात" को पूरा आदर मिलेगा।

——

आर्य्य कन्या पाठशाला (चावड़ी)—हमें यह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है कि देहली की आर्य्य कन्या पाठशाला दिन प्रति दिन उन्नति कर रही है। इस समय नई अध्यापिकाओं के आने से पढ़ाई का काम अच्छी तरह चल रहा है। कुछ दिन हुए इंस्पैक्टर ने आकर पाठशाला का निरीक्षण किया था। निरीक्षण करके उन्हों ने सम्मति पुस्तक में लिखा—"मैंने ७ अप्रैल को आर्य कन्या पाठशाला का निरीक्षण किया और पांचवीं और तीसरी श्रेणी की परीक्षा ली। मैं ने पाठ शाला को आगे से अधिक उन्नत और सब श्रेणियों को अपने काम में निपुण पाया। एक अच्छी अध्यापिका के आजाने से पाठशाला का काम बहुत संतोष जनक हो गया है पाठशाला को अब सरकारी सहायता मिलने लगी है। इस पाठशाला को उत्तम बनाने का पूरा यत्न किया जा रहा है। पाठशाला के अवैतनिक मन्त्री पाठ विधि आदि से अच्छी तरह परिचित हैं। मुझे इस पाठशाला से बड़ी आशाएं हैं"। मिडल और अपर प्राइमरी को मिला कर १४ छात्र वृत्तियां इस पाठ शाला की छात्राओं को मिली हैं।। छात्र वृत्तियों के अतिरिक्त सरकार ने ११७९, रुपयों की विशेष सहायता इस वर्ष देना स्वीकृत की है।

——

मांस भोजियों और शाक भोजियों की तुलना—हम सब बातें युक्तियाँ और पुस्तक के प्रमाणों के सहारे सिद्ध करना चाहते हैं पर योरप वाले उन्हीं बातों को निरीक्षण और परीक्षण से सिद्ध कर डालते हैं। मांस खंडन में हम श्लोकों का सहारा लेते हैं पर योरप वालों ने शाकाहारी और मांसहारियों की तुलना कर के शाकाहार की श्रेष्टता सिद्ध करदी है। अभी कुछ दिन हुए येल में ४९ पुरुषों को लेकर उन से बैठक और कई प्रकार के व्यायाम आदि करवाए गए। परिक्षण में पता लगा कि मांसाहारियों में दो तीन से अधिक ५०० बैठकों तक न पहुंच सके पर शाकाहारियों में कई १८०० और २४०० तक बैठकें कर गए। जो लोग केवल मांसाहार को ही बल और सहन शक्ति का कारण मानते थे अब उनकी क्या सम्मति है?

——

तिलक महाराज छूट गये

सुना जाता था कि तिलक महाराज २२ जुलाई को छूटेंगे पर १६ जून की रात को वे छोड़ दिये गये पूने में उनके सम्बन्धियों तक को इस बात की ख़बर न थी। रात के बारह बजे मोटर पर वे स्टेशन से घर पहुंचा दिये गये। झुंड के झुंड लोग उन्हें देखने जारहे हैं। कहा जाता है कि उन का स्वास्थ्य साधारणतया अच्छा है।

देहली में राज द्रोह का अभियोग

१० जून को मा० अमीरचन्द के गृह के निरीक्षण के पश्चात् ८½ बजे सेशन जज बहादुर ने अदालती कार्य्यवाही आरम्भ की। उक्त स्थान के निरीक्षण से जज साहब ने अपने किये हुए नोट सुनाये। आपने कहा कि जिस कमरे में बम की टोपियाँ निकली बताई जाती हैं उस में जो एक आठ इंच का एक छेद है इस छेद में नया पलास्तर हुआ है।

जिस समय जजसाहब अमीरचन्द के घर पर थे बम वाले कमरे में घुसते ही पट्टी साहब ने कहा कि यह छेद पहिले न था परन्तु अमीरचन्द ने कहा कि बम वाला बक्स ठीक इस छेद के नीचे मिला था। ला० ब्रजलाल ने कहा मैंने इसको नीचे कोने में पाया था। अभियुक्त के वकील ला० रघुनाथ सहाय ने अदालत से कहा कि नोट करलिया जाय कि जज साहब ने मकान का निरीक्षण सरकारी वकील के कहने पर किया है। इस के अनन्तर मि० पट्टी पर अभियुक्तों के प्रश्न होते रहे

११ जून की कार्य्यवाही

मि० पट्टी ने अपना कल का दिया हुआ बयान पढ़ा और उसमें कुछ संशोधन किये। फिर कल की भांति अभियुक्तों के वकीलों ने मि० पट्टी से प्रश्न करने आरम्भ किये जिन के उत्तर में उन्होंने कहा पहिले मैं और ब्रजलाल इन्सपेक्टर बड़ी देखभाल से मकान में घुसे और हमारी तलाशी अमीरचन्द ने ली। कुछ स्त्रियां मकान में थीं जिन्हें एक कमरे में कर दिया। सुलतान चन्द को अमीर चन्द से कानाफूसी करते देख उसको स्त्रियों के पास जाने से रोकदिया। हमारे सारे साथियों की तलाशी ली गई थी।

मैं हनुमन्त सहाय को पहिले से ढूंढ़ रहा था परन्तु उसे न पासका था मैंने उसकी तलाश छोड़दी थी परन्तु मि० रटेड के तार पर उस को फिर तलाश किया। हनुमन्त सहाय के पकड़ने का कोई वारन्ट नहीं था और न उसके गृह की तलाशी का।

मि० पट्टीने कहा—अमीर चन्दके घर में जब मुझे बमकी टोपी मिली मैं उससे सर्वथा अपरिचित था। अदालत ने मि० पट्टी से पूछा कि क्या उनको यादहै कि बम वालेकमरे में वह छेद था वा नहीं। मि० पट्टी ने कहा मुझे पूरा निश्चय है कि फरवरी मास में तलाशी केसमय छेद नहीं था।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अदालत के और पूछने पर कहा कि मुझे नये प्लास्तर से छेद नया बनाया प्रतीत होता है।

सरकारी वकील मि० ब्राड वेने पूछा कि १६ फरवरी से पहिले भी किसी ने कहा था कि बम वाला बक्स वहाँ रखा है। इसके उत्तर में मि० पट्टी ने कहा नहीं. ला० ब्रजलाल अमीर चन्द के घर की तलाशी और उसकी सूची बनाने के लिये उत्तर दाता थे।

वकील ने प्रश्न किया कि जब सुलतान चन्द ने अपने बयान में यह कहा था कि उस कमरे में चार पार एक छेद है तब मि० पट्टी ने शंका क्यों नहीं की मि० पट्टी ने उत्तर दिया मुझे याद नहीं कि सुलतान चन्द ने यह कहा हो। और प्रश्नों के उत्तर में कहा कि सुलतान चन्द ने कहा है कि उसका पिता रलचन्द जेल में कई वार उससे मिला है। अदालत ने पूछा कि क्या और अभियुक्तों को यह बात पता थी कि सुलतानचन्द को क्षमा मिलने वाली है। मि० पट्टी ने उत्तर दिया कि जिस दिन उसे क्षमा मिली उस दिन से उसे अभियुक्तों से पृथक कर लिया था।

इस के अनन्तर मि० हेडू की गवाही हुई। और आप से प्रश्न हुए तो आपने कहा मुझे पूरा निश्चय है कि कमरे में कोई छेद न था। मि० हेडू ने कहा वह १६ फरवरी से पहिले अमीर चन्द का घर न जान्ते थे परन्तु यह याद नहीं कि उनको कौन पुरुष उनके घर पर लेगया था। मि० हेडू ने कहा कि अमीर चन्द का नाम सी० आई० डी० के रजिस्ट्रों में कुछ दिन १० नम्बर वालों में भी रहा। यह भी कहा कि कैम्ब्रेज मिशन के पादरी अमीर चन्द का बड़ा आदर करते थे। अवध विहारी और अमीर चन्द पोलीटिकल सन्दिग्ध थे।

इस केपश्चात् म० ब्रजलाल की गवाही हुई आपने कसम खाई कि छेद कमरे में न था और मुझे बम वाला बक्स दूर वाले कोने में पाया था। छेद अब बनाया गया है।

१२ जून की कार्य्यवाही

मि० हेडू से प्रश्न हुए। ला० रघुनाथ सहाय ने वकील के प्रश्न पर कहा कि मैं जानता हूं कि अमीर चन्द पोलीटिकल विचारों का आदमी था और वह अपने विचार वालों से प्रायः मिलता रहता था मैं नहीं जानता कि वह आतिथ्यकारी है वा नहीं। उसका नाम पुलिस में १० नम्बर वालों में था।

अपने घर की तलाशी के समय अमीर चन्द १५ मिनट तक बाहर चले गये थे उस के विषय में मि० हेडू ने कहा।

अमीर चन्द १५ मिनट तक बाहर चला गया मुझे याद नहीं कि इस समय मैं ऊपर रहा या नहीं। सुलतान चन्द अपने पिता के स्थान पर उसकी अनुपस्थिति में चौकसी कर रहा था परन्तु यह पता नहीं वह कहां था। मैं १६ तथा २८ फरवरी के बीच में मकान में इस दृष्टि से कभी नहीं गया कि उस कमरे में छेद होने वा न होने को देखूं। मुझे कभी सूराख होने का स्वप्न भी नहीं आया। मकान के मध्य भाग में मैं घूमा हूँ उसमें मैंने किसी कमरे में कोई न छेद ही देखा। मैंने अमीर चन्द पर राजद्रोह सम्बन्धी साहित्य के प्रचार का सन्देह किया था और अन्य पुरुष भी उस के साथ थे।

मि० शिवनरायण वकील के प्रश्न पर कहा कि जिस समय कमरों को मुहर लगाने का काम हो रहा था मैं अमीर चन्द से एक चारपाई पर बैठा हुआ बात कर रहा था।

बीच में अमीर चन्द ने नोट करने के लिये कागज पेन्सिल मांगी जो उसे मिल गई।

मि हेडू ने कहा अमीर चन्द के घर में मेरी कभी तलाशी नहीं हुई। मुझे याद नहीं कि मैं उसके घर सदा अकेला जाता था वा सिपाहियों के साथ। मैं नहीं जानता कि अमीर चन्द उदार विचारों का बनया है। परन्तु हिन्दू सुधार में भाग लेता है।

इस के पश्चात् म० ब्रजलाल पर प्रश्न हुए आपने बम की टोपी वाली सारी बात कह सुनाई और कमरे में छेद होने की क़सम खाई। मैंने इन सारी वस्तुओं के विषय में अमीरचन्द से पूछा उस ने कहा मैं नहीं जानता कि कहां से यह यहां आगई।

इस के पश्चात् ब्रजलाल इन्सपेक्टर ने तलाशी की और घटनाएं वर्णन कीं।

१३ जून

ब्रजलाल इन्सपेक्टर पर प्रश्न होते रहे। आपने कहा अमीर चन्द पोलीटिकल सन्दिग्ध था अर्थात् वह सरकार के सम्बन्ध में पोलिटिकल बातों में भाग लिया करता था। वकील ने पूछा तुम्हारा पुलिटिकल मामलों से क्या अभिप्राय है। ला० ब्रजलाल कहा ने वह पुरुष जो सरकार की ओर से अच्छा विचार नहीं रखते। अमीर चन्द के विषय में सूचना मिली थी कि गुप्तरीति से सरकार के विरुद्ध प्रचार करता है। इस के पश्चात् ला० ब्रजलाल ने नेशनलिस्ट लोगों का लक्षण किया, फिर आपने कहा दरबार में मैं दिल्ली में था। उस के पश्चात् चलागया था। परन्तु बम की घटना वाले दिन फिर दिल्ली में ड्यूटी पर था। मलका का बाग़ मेरे हाते में था।

मि० शिवनारायण ने पूछा कि दिल्ली बम की घटना के पता लगानेकाकार्य्य आपको करना था। उत्तर मिला मैं स्वभावतः ही उसके पता लगाने की चिन्ता में था। मि० शिवनारायण वकील ने पूछा कि आप बड़ा चिन्ता से उसका पता लगाते होंगे। उत्तर मिला नहीं कुछ विशेष नहीं। वकील ने पूछा कि यदि मैं सरकार के फौज़ पर धन अधिक व्यय करने पर आक्षेप करूं आप मुझे नेशनलिस्ट वा कांग्रेस वाला अथवा पुलिटिकल, क्या मानेंगे ? उत्तर मिला मैं आपको कांग्रेसमेन कहूंगा प्रश्न—और यदि फौजपर इतना रुपया व्यय न करके शिक्षा पर अधिक व्यय करवाना चाहूं तो? उत्तर। उसी श्रेणी में। इस के पश्चात् अवध विहारी के विषय में प्रश्न के उत्तर में कहा कि मैं नवम्बर १९१२ में वा उससे पहिले उसके यहां होने की कसम नहीं खासकता। और न मैं अवधविहारी के पुलिटिकल विचारों से निजू रूप से परिचित हूँ।

ला० शिवनारायण के और प्रश्नों के उत्तर में कहा कि मैंने हनुमन्त सहाय के घर के ऊपरी भाग में से कुछ पुस्तकें ली थीं यह पुस्तकें संदिग्ध न थीं परन्तु इनसे पता लगता था कि इनका स्वामी फ्रेंच भाषा पढ़ता है।

१५ जून

१४ जून को आदित्यवार था १५ जून को ब्रजलाल से फिर मि० शिव नरायण वकील ने प्रश्न आरम्भ किये। प्रश्न। हनुमन्त सहाय के घर की तलाशी के समय उस को साथ क्यों नहीं लिया। उत्तर। यह मुझे ख्याल नहीं आया। तीसरे दिन हनुमन्त सहाय ने मुझ से शिकायत की थी कि मेरी एक धोती गुम हो गई है।

ला० ब्रजलाल ने और प्रश्नों के उत्तर कहा कि जिस मकान पर से बम फैंका गया वह मेरे हाते में नहीं था। कमरे के छेद के विषय मेरे से पहली अदालत में कोई प्रश्न नहीं हुआ।

उपदेशक महा विद्यालय !

विषयक

सूचना।

उपदेशक महा विद्यालय में जितने ब्रह्मचारी आवश्यक थे, उतने आ चुके हैं। उनमें से अधिक संख्या गुरुकुल के ही ब्रह्मचारियों की है। अब कोई और सज्जन प्रार्थना पत्र न भेजें। पूरा प्रबन्ध हो गया है। अब जो पार्थना पत्र आवेंगे वे अगले वर्ष के लिये समझे जायंगे।

इन्द्र
गुरुकुल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

आर्य सभ्यता का मूल वेद

"भारत" के लेखक की भूल

इस समय सभ्यता और आर्य शब्द का प्रयोग इतना अधिक होगया है कि लोगों को इनके वास्तविक अर्थ समझने की इच्छा नहीं रही। जो शब्द बिना किसी यत्न के ही मुंह से निकलजाता है, उसपर सोच बिचार कौन करता है? सभ्यता शब्द मनुष्य समाज की चाल-ढाल रीति रिवाज और आचार बिचार के समूह का कहने वाला है। किन्तु हम इस शब्द को साधारण शिष्टता के अर्थों में भी व्यवहार में लेआते हैं। आर्य शब्द इस समय कई प्रकार के अर्थों को कहता है। साधारणतया आर्य नाम श्रेष्ठ का है। जाति के साथ जब आर्य शब्द लगता है तब भी दो अर्थों को देता है। पृथिवी पर फैली हुई जातियों के मुख्य हिस्सों में से एक हिस्सा आर्य जाति कहाती है, जिसमें योरुप एशिया तथा अमरीका के निवासियों की बहुत बड़ी राशि आजाती है। साथ ही आर्य जाति शब्द इस समय हिन्दू जाति के अर्थों में भी व्यवहृत होता है। आर्य भाषा ने इन अर्थों में आर्य जाति शब्द को अपना लिया है 'आर्यसमाज' में आया हुआ आर्य शब्द यद्यपि श्रेष्ठ पुरुष को कहता है तथापि सम्बन्ध बश एक विशेष प्रकार के धर्म और संशोधन वाले बिचारों को मानने के लिये ही इसका प्रयोग ठीक समझा जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्य शब्द श्रेष्ठ, जाति विशेष, हिन्दू और एक प्रकार के धार्मिक विचार रखने वालों के लिये प्रयुक्त होता है। जब हम 'आर्य सभ्यता' शब्द का प्रयोग करते हैं तब आर्य शब्द से वे सब भिन्न २ अर्थ उपस्थित होते हैं। जिन लोगों को शब्द का गौरव ठीक २ ज्ञात नहीं है, वे इस शब्द के अर्थों में बहुत भूल सकते हैं। एक विशेष प्रकार की सभ्यता, जिसके अंश भारतवर्ष योरप या अमरीका आदि देशों के निवासियों में पाये जाते हैं, आर्यसभ्यता के नाम से पुकारी जाती हैं। इन अर्थों में इस शब्द का प्रयोग प्रायः होता है। जिसे अन्य शब्दों में हिन्दू सभ्यता कहा जाता है, उसके कहने के लिये भी आर्य सभ्यता शब्द का प्रयोग होता है। इसी प्रकार इन से भी अधिक संकुचित अर्थों में भी इस शब्द का व्यवहार होतारहा है। किन्तु प्रश्न यह है कि इस शब्द का असली अर्थ क्या है?

यह मानी हुई बात है कि पृथ्वी तल पर जितनी सभ्यतायें हमें इस समय दिखलाई देती हैं, उन सब की मूल भूत सभ्यता वह है जिसे हम वैदिक सभ्यता के नाम से पुकार सकते हैं। सब धर्म, सब समाजिक संगठन और सब रीति रिवाज जो इस समय सभ्य देशों में पाये जाते हैं, उनके ढूंढने के लिये हमें उस समय में जाना पड़ता है, जब आर्य जाति एक स्थान पर निवास करती थी। आर्य लोग पृथ्वी के भिन्न २ भागों में निवास न करते थे, और एकत्र रहते थे। उस समय आर्य जाति की जो सभ्यता थी, वही इस समय सभ्यताओं का मूल है। वही वैदिक सभ्यता थी, उसी का नाम आर्य सभ्यता है। वह सभ्यता केवल वेदों पर अवलम्बित थी, हमारे सामने उस समय की सारी अवस्था का चित्र पट खुल जाता है जब हम उसके बनाने वाले वेदों का अनुशीलन करते हैं। उसी सभ्यता को प्राचीन आर्य सभ्यता के नाम से पुकारा जाता है।

वैदिक सभ्यता को जब हम सब नयी सभ्यताओं का मूल मान लेते हैं, तब हमें पता लग जाता है कि एक भूव्यापी जातिविशेषकी सभ्यता को आर्य सभ्यता क्यों कहते हैं? उस सभ्यता का मूल वैदिक सभ्यता है इसी लिये। साथ ही हम से यह भी छिपा नहीं रहता कि हिन्दू सभ्यता को कोई लोग आर्य सभ्यता के नाम से क्यों पुकारते हैं? वैदिक सभ्यता का बिगड़ा हुआ किन्तु समीपतमरूप ही हिन्दू सभ्यता में ही मिल सकता है इन कारणों से आर्य सभ्यता का शब्द अनेक स्थानों में व्यवहार पारहा है किन्तु इसका असली शुद्धरूप वही है जिसका दूसरा नाम वैदिक सभ्यता है।

वैदिक सभ्यता या प्राचीन आर्य सभ्यताका आधार वेद है, यह सिद्ध करने के लिये किसी विशेष युक्ति की आवश्यकता अब नहीं रही। और साथ ही यह कहना भी अधिक प्रमाण की अपेक्षा नहीं करता कि यदि वैदिक सभ्यता या प्राचीन सभ्यता का पुनरुद्धार करना होतो वेदों की शिक्षा को फैलाना चाहिये। वेदों के अर्थ लोगों तक पहुंचाने का यत्न करना चाहिये और डोलती हुई वेद रूपी नौका का पतवार सम्हालना चाहिये। इसके बिना प्राचीन आर्य सभ्यता का पुनरुद्धार असम्भव है। आर्यसमाज वैदिक सभ्यता को आदर्श सभ्यता मानता है और समझता है कि सारे संसार की भलाई इसी में है कि वेदों का फिर प्रचार हो और व्यक्तियों और समाजों के जीवन वैदिक सभ्यता के ढांचे पर ढलसकें। तब क्या प्राचीन सभ्यता का उद्धार करना प्रत्येक आर्य समाजी का—नहीं नहीं प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य नहीं है।

जालन्धर के साप्ताहिक पत्र "भारत" में म० अच्छूराम बी० ए० एल० एल० बी० महाशय "समाज की गति" शीर्षक देकर एक लेख लिखरहे हैं, जिसका पिछला लेख इसी विषय पर था कि वेदों का हिन्दू जाति से क्या सम्बन्ध है। इस लेख में लेखक महाशय ने आदि में यह प्रतिपादन किया है कि आर्यसमाज वेदों को ईश्वर कृत मानता है, और मनुष्य मात्र का हित वेदों से ही सम्भावित है। यह आवश्यक स्थापना करने के अनन्तर लेखक महाशय शोक प्रकट करते हैं कि "मगर कुछ ऊपर से कहीं कहीं समाज में इस ख्याल का इज़हार भी मिलता है कि वे इस लिये माननीय हैं क्योंकि इनके ज़रिये से ही हम हिन्दुओं को एक कौमियत झण्डे के तले ला सकते हैं। "इस अशुद्ध और हानिकारक बिचार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

आदि स्रोत श्री० लाला लाजपतराय
ी को बताते हुए लेखक महोदय लिखते
"आर्यसमाज जालन्धर के गुज़िश्ता
ालाना जल्से के मौक़े पर वेदालङ्कार
ीयुत पं इन्द्रवन्द्रजी ने अपने लैक्चर में
र्भाषा था कि जिस तरह मुसलमानी
भ्यता का केन्द्र कुरान, और क्रिश्चियन
भ्यता का केन्द्र बाईबल है, इसी तरह
ाचीन सभ्यता का केन्द्र वेद है। कोई
भ्यता बग़ैर एक केन्द्र के नहीं रह
कती। इसलिये यदि प्राचीन आर्य
भ्यता को जीवित करना मतलूब है तो
दों पर विश्वास होना चाहिये।" यह
ीक है। जो कुछ हम ऊपर इस विषय
र लिख आये हैं उससे स्पष्ट है कि
ाचीन आर्य सभ्यता या वैदिक सभ्यता
ा मूल वेद ही है। उस सभ्यता का
द्धार वेदों का उद्धार सेही हो सकता
। इसलिये यहां तक तो म० अच्छरूराम
ी का लिखना भी ठीक है-और व्या-
ख्यान का उद्धरण भी ठीक है। किन्तु
ब ज़रा आगे चलिये। थोड़ी दूरी पर
ाकर आप लिखते हैं—

"हम सिर्फ यह कहते हैं कि इन महानुभावों के ख्याल के मुताबिक अगर किसी और वजह से नहीं तो कम अज़ कम इस वजह से तो ज़रूर वेदों पर विश्वास करना चाहिये कि वह हिन्दुओं का एक कौम बनाने का ज़रिया है या प्राचीन आर्य सभ्यता को पुनः जीवित करने का साधन है।" यह स्मरण रखना चाहिये कि इन महानुभावों में जालन्धर के व्याख्यान देनेवाले वक्ता भी शामिल किए गए हैं। परमात्मा और वेदों के नाम पर-जिनको म० अच्छरूरामजी भी अपना पूज्य मानते हैं-हम पूछते हैं कि व्र० इन्द्रजी कौन से वाक्य का अर्थ है कि हिन्दूजाति को एक करने के लिये वेदों का प्रचार करना चाहिये। इतना ही नहीं लेखक महाशय साथ "यदि और किसी लिये नहीं तो" की गाड़ी भी बीच में ही खेंच लाते हैं। लड़के एक युक्ति देकर न्याय की हंसी उड़ाया करते हैं कि पृथ्वी गोल है क्योंकि इस जगह एक ईंट पड़ी है। लड़के समझते हैं कि पृथ्वी पर ईंट पड़ी होने और उसके गोल होने में कोई सम्बन्ध नहीं। हमारी राय में ये दो बातें अपेक्षया बहुत सम्बन्ध रखने वाली दिखलाई देने लगें और लड़के इस उदाहरण को देना छोड़ दें यदि यह उपर्युक्त उदाहरण उन्हें मिल जाय। एक ही श्वास में लेखक महाशय ने दो बातें कहीं हैं। वेदों पर विश्वास हिन्दू जाति को एक करने के लिये लाना चाहिये, और प्राचीन आर्य्य सभ्यता का पुनरुद्धार वेदों पर विश्वास लाने से ही हो सकता है। ये दोनों बातें एक ही हैं, यह मान लेना लेखक महाशय के सिवा शायद और किसी के लिये सम्भव नहीं है। प्राचीन "आर्य्य सभ्यता" शब्द का अर्थ "हिन्दू जाति" करना, और फिर पुनरुद्धार और एक करने को एकही समझ बतलाना हम नहीं जानते कि किस तर्क शास्त्र के अनुकूल हो सकता है।

हमें यह समझ में नहीं आता कि लेखक महाशय ने ऐसे उलटे आधार पर अपना परिणाम भवन क्यों खड़ा किया? क्या यह आवश्यक था कि वेदों के उद्धार को हिन्दू जाति की भलाई का हेतु समझने वालों को रगड़ने के लिये एक ऐसे व्यक्ति की सम्मति भी बीच में लायी जाय जिसकी सम्मतियों के विषय में ला० अच्छरूरामजी को बहुत थोड़ा ज्ञान है, और जिसके विषयमें "भारत" समय समय पर ऐसी ही कई निराधार बातें कहने का गौरव प्राप्त किया करता है।

ऋषि दयानन्द को गालियां
और
आर्य्य समाज में विशाल सभा

मुसलमानों की ओर से फव्वारे पर ऋषि दयानन्द को गत मास से जो गालियां दी जा रही हैं और आर्य्य समाजी प्रचारकों, के साथ पुलिस का जो व्यवहार है, उस पर रोष प्रकट करने के लिये १३ जून को आर्य समाज मन्दिर (चावड़ी बाज़ार) में विशाल सभा हुई उस दिन की सभा को देखकर उदासीन से उदासीन पुरुष को भी मानना पड़ा कि सचमुच ही अब्दुल कबीर के काम ने आर्य समाजियों के हृदय पर गहरी चोट पहुंचाई है। देहली व्यापार प्रधान नगर है, यहां के व्यापारी और दुकानदार ७ बजे से पहले दूकान पर से कभी उठते नहीं। इसीलिये यहां अच्छे से अच्छा व्याख्याता भी ७ बजे से पहिले अपना व्याख्यान देने का साहस नहीं करता। इस पर गर्मी की ऋतु और आर्य्य समाजका मन्दिर चारों ओर से बन्द। और देहली का "देशी समय" प्रसिद्ध है। सभा का समय ६ बजे दिया गया था। पर सभा बुलाने वालों को यह देखकर आश्चर्य और हर्ष दोनों हुए कि ६ बजे समाज मन्दिर का विशाल भवन भर चुका था और लोग ऊपर की गैलरी पर चढ़ रहे थे। साढ़े ६ बजते बजते गैलरी और तिमंज़ली छत सहित समाज मन्दिर मनुष्यों से खचा खच भर गया। और सैंकड़ों लोगों को स्थान के न होने से दरवाज़े के बाहिर से ही लौटना पड़ा। जो लोग यहां बरसों से रहते हैं उनका कथन है कि आर्य्य समाज मन्दिर में कभी भी इतने लोगों की उपस्थिति नहीं देखी गई। सभा में आर्य समाजी, सनातनी, जैनी आदि सभी लोग उपस्थित थे। ठीक समय पर कार्य्य प्रारम्भ हुआ। सभापति का आसन आर्य्य समाज के बूढ़े सेवक म० बख़तावर सिंह ने ग्रहण किया।

पहिला प्रस्ताव

(क) देहली निवासी हिन्दु और आर्य समाजियों की सभा उन असभ्य हृदय वेधक और भड़काने वाली गालियों के विषय में अपना रोष प्रकट करती है जो मुसलमान प्रचारक अब्दुल कबीर ने कोतवाली के सामने फव्वारे पर ४ और ५ जून को परम पूज्य श्री १०८ महर्षि दयानन्द को निकाली हैं और जिनसे प्रत्येक आर्य्य समाजी और हिंदू के हृदय को गहरी चोट पहुंची है और सरकार से प्रार्थना करती है कि वह शीघ्र ही इसका नोटिस ले और भविष्यत में ऐसे काम को रोकने का प्रयत्न करे।

(ख) यह सभा नम्रता पूर्वक सरकार का ध्यान उस नज़्म की ओर आकर्षित करती है जो मौ० सुभानअली ने फव्वारे पर ७ मई को पढ़ीथी और जि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म सम्राट् की हिन्दू प्रजा के हृदयको आघात पहुंचाने के लिये गो माता के विषय में बड़े अनुचित शब्दों का प्रयोग किया गया था।

इस प्रस्ताव को पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार ने उपस्थित करते हुए कहा:—

सज्जनों, आपको बतलाने की आवश्यकता नहीं कि आज की सभा क्यों बुलाई गई है क्योंकि हजारों लोगों का इस गर्मी में यहां इकट्ठा होना इस बात का प्रमाण है कि आप लोगों को उस घटना ने गहरी चोट पहुंचाई है जिस विषय में आज यह सभा है। मुसलमानों के एक प्रचारक ने फवारे पर ऋषि दयानन्द को जो गालियां दी हैं उन्हें दोहरा कर मैं अपनी जिह्वा को कलंकित नहीं करना चाहता। और नाहीं यह सभा उन गन्दी गालियों का जवाब देने के लिये बुलाई गई है। संसार में यदि कोई जाती है जिसने दूसरी जाति और धर्म के महापुरुषों का आदर करने में परम सीमा करदी है तो वह हिन्दू जाति है। इस जाति का सदा से यह सिद्धान्त रहा है कि जहाँ कहीं भी सचाई और श्रेष्ठता हो वहीं वह मान करने योग्य है। क्या हमारी जाति को इसी उदारता का फल मिल रहा है कि हमारे बुजुर्गों और पूज्य आचार्यों को खुले बाज़ार गालियां मिल रही हैं और हमारे धर्म का निरादर किया जा रहा है। हम दूसरे समुदायों के माननीय पुरुषों का मान अवश्य करते हैं पर इस का यह अर्थ नहीं है कि हमें अपने ऋषियों और आचार्यों में भक्ति नहीं है। शायद हमारी जाति की उदारता को लोगों ने निर्बलता समझ लिया है। पर आज से उनकी आँखें खुल जानी चाहियें और उन्हें समझ रखना चाहिये कि यदि हम दूसरों का मान करेंगे तो अपने पूज्यों का भी साथ ही मान करवाएंगे। पहिले ही प्रस्ताव का दूसरा भाग उस नज़्म की ओर इशारा करता है जिसमें मौ० सुभानअली ने कहा था कि "गौ अपने मुंह से कह रही है कि मैं यहाँ कुर्बान होने को आई हूं। हिन्दू लोग उसे बचाने का यत्न क्यों कर रहे हैं। 'हिन्दुओं' के सैंकड़ों मत और सम्प्रदाय होते हुए भी यदि कोई ऐसी बात है जिस पर सब सहमत हैं वह गोरक्षा है, वे गो माता को पूज्य समझते हैं। उसी के विषय में ऐसे वाक्यों को कह कर सम्राट की हिन्दू प्रजा के हृदय परचोट पहुंचानेका किसीको अधिकार नहीं। मैं एक बार फिर कहता हूं कि हम आज दोनों मुसलमान प्रचारकों के बक वास का उत्तर देने के लिए इकट्ठे नहीं हुए हैं। क्योंकि बकवास और गालियों का हमारे पास कुछ उत्तर नहीं है। और मैं तो यदि जन्म भर भी गालियों की डिक्शनरी रटा करूं तब भी बेहूदगी और असभ्यतामें अब्दुलकबीर का मुक़ाबला कर सकूं, इस की मुझे आशा नहीं। हम आज इस धब्बे को धोने के लिए इकट्ठे हुए हैं जो गत मास की पुलिस की कार्रवाई से ब्रिटिश राज्य के प्रतिष्ठित नाम पर आसक्ते हैं। सब धर्मों को एक दृष्टि से देखना भारतीय राज्य का मुख्य सिद्धान्त है। देहली की पुलिस में प्रायः मुसलमान हैं, और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि पुलीस ने इस घटना में आर्य्य समाज के साथ पूरा न्याय युक्त व्यवहार नहीं किया है। आर्य समाजी प्रचारकों के विरुद्ध भ्रमात्मक रिपोर्टें पहुंचाई गई हैं और मुसलमानों की गालियों की रिपोर्ट पहुंची तक नहीं हैं। इसी बात की शिकायत डिप्टी कमिश्नर तक पहुंचाने के लिये हम यहां इकट्ठे हुए हैं। हमें पूरी आशा है कि वे हमारी प्रार्थना पर पूरा ध्यान देंगे और हिंदू प्रजा के साथ पूरा न्याय करेंगे। इसका अनुमोदन श्रीयुत सुन्दरसिंह बी० ए० बी० टी० और समर्थन पं० सन्तराम वैद्य शास्त्री तथा चौधरी शंकरसिंह जी ने किया। यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

दूसरा प्रस्ताव

म० यमुनादास दूसरे प्रस्ताव को लेकर खड़े हुए। आपने ढाई वर्ष से उक्त स्थान में मुसलमान प्रचारकों का इतिहास अपनी और पं० रामचन्द्र जी की नोट बुकों से पढ़कर सुनाया और विविध अवसरों की आवश्यक घटनाओं का वर्णन करते हुए निम्न लिखित दूसरा प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रस्ताव—इस सभा को अत्यन्त शोक है कि ७ मई से ५ जून तक लगातार ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म को कोतवाली के सामने मुसलमानों द्वारा गालियां दिए जाने पर भी पुलिस ने कोई नोटिस नलिया और आर्य्य समाज के प्रचारक पं० रामचन्द्र के ध्यान दिलाने पर, उनकी सहायता करने की जगह पुलीस ने ऐसा व्यवहार किया जो अत्यन्त असंतोष जनक है।

आपने कहा कि देहली में आज कल प्रायः सब के सब मुसलमान हैं। पुलीस से हमारा अभिप्राय ख़ुफ़िया पुलिस से है क्योंकि यदि रिपोर्ट ठीक पहुंचती तो उच्चाधिकारियों से इस प्रकार का बरतावा होने की आशा नहीं थी।

इस प्रस्ताव का अनुमोदन एक गम्भीर वक्तृता के साथ पं० जानकी नाथ जी ने किया। वैद्यराज प० चतुर्सेन जी ने इसका अनुमोदन करते हुए कहा कि सरकार हमारे पिता के समान है और पुलिस को उसने हमारी रक्षा के लिये नियत किया है। यदि हमको पुलिस से कोई कष्ट है तो हमको पिता से स्पष्ट कह देना चाहिये कि हमें यह कष्ट है इस को दूर करो, सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव भी पास हुआ।

तीसरा प्रस्ताव बाबू द्वारिकादास जी ने पेश किया।

तीसरा प्रस्ताव

यह सभा आशा करती है कि शांति प्रिय और मुसलमान तथा हिंदुओं में पारस्परिक प्रेम चाहने वाले मुसलमान नेता और मुसलमान अंजुमनें अब्दुल कबीर के इस काम को घृणा की दृष्टि से देखेंगी और आगे से आर्य्य धर्म के सिद्धान्तों और आचार्यों के विषय में असभ्य और हिन्दुओं के दिल दुखाने वाले शब्दों के प्रयोग को बन्द करने का यत्न करेंगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आपने कहा कि गत वर्ष कानपुर वाली बात ताज़ी थी राम लीला के अवसर पर मुसलमानों ने हिन्दुओं से मिलाप का प्रयत्न किया। यह कोई नई बात नहीं थी। मैं देहली में ९ वर्ष से रहता हूं; मेरा अनुभव है कि जब कभी मुसलमानों पर कोई आपत्ति आती है उनकी ओर से सदा इसी प्रकार का प्रयत्न होता है परन्तु जहां वह आपत्ति गई और फिर वही दिल तोड़ने वाला व्यवहार वे हमारे साथ करने लगते हैं। तो भी यह कहना अशुद्धि है कि मुसलमानों में शान्ति प्रिय आदमी नहीं हैं ऐसे सज्जनों के लिए ही यह प्रस्ताव है।

इसका अनुमोदन म० भोलानाथ जी ने किया और सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ।

अन्त में सभापति ने प्रस्ताव किया कि ऊपर लिखित सारे प्रस्ताव चीफ़ कमिश्नर साहब डि० कमिश्नर साहब और समाचार पत्रों को भेजे जावें और यह सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ।

साहित्य संसार।

मिश्र बन्धु विनोद—पंडित गणेश विहारी मिश्र, पंडित श्याम विहारी मिश्र और पंडित शुकदेव विहारी मिश्र लिखित यह ग्रंथ अभी थोड़े ही दिन हुए प्रकाशित हुआ है। उस में हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा कवि कीर्तन है। इस ग्रंथ को मिश्र बन्धुओं ने कई वर्षों के निरंतर परिश्रम से लिख कर उपस्थित किया है। ग्रंथ उत्तम, आदरणीय और उपादेय है और हम सहर्ष इस बात को स्वीकार करते हैं कि इसने हमारी भाषा का बहुत उपकार किया है। इस ग्रंथ के पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि हिन्दी साहित्य का कितना विस्तार है और इस में कैसे कैसे कवि रत्न तथा ग्रंथ रत्न हो गए हैं। यह ग्रंथ तीन भागों में प्रकाशित होगा, जिस का पहला भाग अभी छपा है। इस में १०२ पृष्ट की भूमिका, ७ अध्यायों तथा १०३ पृष्टों में हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, और प्रारम्भ से लेकर सम्वत् १९८० तक विस्तृत विवरण है। भूमिका में ग्रन्थ कारों, ग्रन्थोत्पत्ति, काव्य आदि का वर्णन है। मिश्र बन्धुओं ने हिंदी साहित्य का इतिहास आठ कालों में बांटा है अर्थात् (१) पूर्व प्रारम्भिक हिंदी-६५० से १२८६ ई० तक (२) उत्तर प्रारम्भिक हिन्दी-१२८६ से १३८७ ई० तक (३) पूर्व माध्यमिक हिन्दी-१३८७ से १५०३ ई० तक (४) पौढ़ माध्यमिक हिंदी १५०३ से १६२३ ई० तक, (५) पूर्वालंकृत हिंदी-१६२३ से १७३३ ई० तक (६) उत्तरालंकृत हिन्दी- १७७३ से १८३२ ई० तक, (७) परिवर्तन काल-१८३२ से १८६८ ई० तक (८) वर्तमान काल १८६८ ई० से अब तक! इस काल विभाग के अतिरिक्त और भी कालों की भरमार है जैसे तुलसी काल, सौर काल, सेनापति काल, विहारी काल, भूषण काल, दास काल, सूदन काल, देव काल, रामचन्द्र काल, बेनी प्रवीन काल, पद्माकर काल इत्यादि कहां तक गिनावें। हमारी समझ में यह काल विभाग बहुत विस्तृत किया गया है और इतिहास की दृष्टि से सर्वमान्य नहीं हो सकता। लेखकों ने भूमिका में अपना वर्णन १८ पृष्टों में किया है जो आवश्यक नहीं जान पड़ता। लेखक कैसे विद्वान हैं इस के लिये उनका यही ग्रंन्थ काफ़ी प्रमाण था। इस के लिये विशेष रूप से कुछ लिखना व्यर्थ था। तीनों मिश्रबन्धुओं के लिये १८ पृष्ट लिखे गए हैं तो प्रत्येक के बारे में ६, ६ पृष्ट आते हैं पर सूर दास का विवरण ५, तुलसी दास का ६ और केशवदास का ४ पृष्टों में दिया गया है। ग्रंथ कर्तागण हमें क्षमा करेंगे पर हमें उनका अपने को इस प्रकार प्रधानता देना नहीं रुचता। इसी प्रकार ग्रंथ का नाम भी कुछ अच्छा नहीं हुआ। उस में अपने पन की बू आती है। यद्यपि लेखक महाशयों ने इन दोनों बातों में अपने पक्ष का समर्थन किया है पर उनके प्रमाण हमें पुष्ट नहीं जान पड़ते। कवियों की समालोचना लेखक महाशयों ने अपने तौर पर अच्छी की है पर उनका शब्दों के रूप में उच्छृंखलता का पक्षपाती होना हिन्दी के हित में बाधा डालने वाला होगा। अस्तु इन बातों में मत भेद रहते हुए भी हम इस ग्रंथ की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। इस में हिन्दी साहित्य के इतिहास की सामग्री का अच्छा समादेश हो गया है और इस से हमारी मातृ भाषा का असीम उपकार हुआ है। हम मिश्र बन्धुओं का अनेक साधु वाद करते हुए ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि वे इसी प्रकार हिंदी की सेवा करने में सदा दत्तचित्त रहें। यह ग्रंथ प्रयाग और खांडवा की हिन्दी ग्रंथ प्रसारक समिति द्वारा प्रकाशित हुआ है और इस का मूल्य १॥) रु० रक्खा गया है।

आर्य्य समाज में अर्धसाप्ताहिक और दैनिक समाचार पत्र

"आर्य समाज के वर्त्तमान सामयिक पत्रों पर एक दृष्टि और एक उच्च कोटिके हिन्दी मासिक पत्र की आवश्यकता" इस विषय पर १ जून १४ के 'आर्य्य मित्र' में एक लेख प्रकाशित किया गया था। जैसा कि उस में कहा गया है यदि वैदिक प्रेस अजमेर के अधिकारी वर्ग चाहें तो इस असाधारण अभाव को सुविधा से दूर कर सकते हैं। आर्य समाज में यह ही एक प्रेस है जो थोड़े व्यय और सुप्रबन्ध से आदर्श लिखाई, छपाई का प्रेस हो सकता है। क्या आर्य्य विचार शील इस अभाव को शीघ्र ही दूर करने का प्रयत्न करेंगे?

आर्य्य समाज में जिस प्रकार कि एक उच्च कोटिके हिन्दी मासिक पत्र की आवश्यकता है, इसी प्रकार हिन्दी भाषा में कम से कम एक आर्य साप्ताहिक और एक दैनिक पत्र की भी अत्यन्त आवश्यकता है।

सभ्य उन्नति शील देशों और जातियों में प्रेस की ताक़त बहुत बड़ी ताक़त समझी जाती है। निस्संदेह प्रेस बहुत बड़ी ताक़त है। प्रेस की ताक़त क्या नहीं कर सकती है? आर्य समाज के विज्ञ विचारशीलों को इस बात के बताने की आवश्यकता नहीं है।

आर्य्य समाज के प्रेस की दशा बड़ी शोचनीय है, प्रथम तो कुछ है ही नहीं और जो हैं भी वे सभ्य संसार में आ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दर की दृष्टि से नहीं देखी जाती है, कारण प्रत्यक्ष है। हमारे समाचार पत्रों की नीति बड़ी ही संकुचित है, उनके विचार बड़े ही संकीर्ण हैं। आपस के व्यर्थ के झगड़ों में ही अपनी दैवी शक्तियों का दुरुपयोग करना उन्हें खूब आता है उथले पन का तो वह अगार हैं, गम्भीर विचारों के आर्य्य समाजी और आर्य्य समाज से भिन्न शिक्षित आर्य्य समाजी पत्रों के प्रति अच्छी सम्मति नहीं रखते हैं। यह बड़ी लज्जा और दुख की बात है कि हमारे प्रेस की दशा इतनी गिरी हुई है कि उसकी कोई गिन्ती ही नहीं है। 'आर्य्य विचार शील प्रेस की दशा सुधारने की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते हैं यह और भी दुख का दृश्य है। वेद तीर्थ नरदेव शास्त्री जी और स्वनाम धन्य ला० लाजपतराय जी आदि कई महानुभावों ने कई बार आर्य्य प्रेस की शोचनीय दशा की ओर ध्यान दिलाया, किन्तु किसी ने कुछ विचारा ही नहीं, यह भी प्रेस की बुरी दशा का ही परिणाम है। बहुत से अत्यन्त आवश्यक उपयोगी आन्दोलन प्रेस की बुरी दशा के कारण ही नहीं हो सकते हैं-उनके लिए वर्तमान हमारे आर्यवृत धारी पत्रों को अवकाश ही नहीं है। ताज़ा प्रमाण ही लीजिए। पिछले दिनों "आर्य गज़ट" ने आर्य्य समाज के कानसटीटयूशन पर आर्य समाज के कई प्रसिद्ध बिचार शीलों के विचार पूर्ण लेख प्रकाशित किये थे, "प्रकाश" ने "आर्य्य समाज में जट्टा जहद की कमी और मग़रब में वैदिक धर्म्म का प्रचार कब होगा" आदि कई विचार पूर्ण लेख मालाएँ प्रकाशित कीं, "सद्धर्म प्रचारक" ने आर्य्यों के उपदेश विभाग में संशोधन आदि विषयों पर लेख मालाएँ लिखीं "आर्य्य मित्र" में सार्व देशिक प्रचार आदि कई आवश्यक विषयों पर लेख लिखे गए; बतलाइये इन सबके लिये आर्य्य समाज में क्या आन्दोलन हुआ? इस आन्दोलन न होने का कारण भी प्रेस की शोचनीय दशा के सिवाय और कुछ नहीं है, कोई भी पत्र किसी भी अत्यन्त आवश्यक विषय पर चाहे कुछ लिखे, हमारे पत्रों की संकीर्ण उदारता कभी आज्ञा नहीं देती है कि उस पर दूसरे पत्र भी सम्मति प्रगट कर के सच्चा आन्दोलन करें, अनुकूल न सही प्रतिकूल ही सम्मति अगर करें तो भी कुछ आन्दोलन तो हो, जिस से किसी निश्चित परिणाम पर आर्य्य बन्धु पहुंच सकें। अधिकांश में तो कई उपयोगी लेखों का एक ही दो पत्र पढ़ने वाले पाठकों को पता नहीं होता है, क्योंकि एक सम्मति न होने के कारण एक दूसरे पत्र की सम्मति के उल्लेख करने तक की उदारता हमारे पत्रों में नहीं है। कलह उत्पादक विषयों का उल्लेख ही नहीं किन्तु राई का पहाड़ बना देने को ये सहर्ष हर समय उधार खाए बैठे रहते हैं। पं० घासी राम जी के लेख पर व्यर्थ का विवाद ताज़ा प्रमाण है। ऐसे २ लेख प्रकाशित करके आर्य जन साधारण का मज़ाक़ ही बिगाड़ डाला गया है। समय ज़ोर के साथ मज़बूर कर रहा है कि यदि हमें अपना जीवन स्थाई बनाना है और यदि हम समय की तेज़ दौड में दोड़ना चाहते हैं, तो हमें जितनी शीघ्र सम्भव हो सके अपने प्रेस की ताक़त को मज़बूत करना चाहिऐ। आर्य्य समाज के वर्त्तमान लगभग सब सामयिक पत्रों पर एक दृष्टि "आर्य्य मित्र" के १ जून वाले अङ्क में डाली जा चुकी है। आज केवल हिन्दी के चारों साप्ताहिक पत्रोंके प्रति कुछ निवेदन करना है और आर्य्य साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रों के अभाव को दूर करने की प्रार्थना करनी है। क्या मैं आशा करूं कि मेरे तुच्छ निवेदन पर तनिक भी ध्यान दिया जायगा?

१—"सद्धर्म प्रचारक" आज दिन यह पत्र समयानुकूल बहुत अच्छी योग्यता के साथ सम्पादन किया जा रहा है। थोड़े ही समय में जो उन्नति इस की हुई है वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। "स० प्र०" की उदार नीति की आज कल सब प्रशंसा करते हैं, आर्य्य समाज से उतर हिन्दी संसार के पत्रों में भी इस का आसन ऊचा है। यह ही समय है कि यह पत्र आदर्श की ओर पग बढ़ावे। देहली जैसा उपयुक्त स्थान और सद्धर्म प्रचारक जैसा प्रेस तथा उत्साही, उदार, विश्वासी ग्राहक मण्डल और श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालङ्कार जैसे योग्य विद्वान स्वामी तथा सम्पादक को पाकर भी यदि "सद्धर्म-प्रचारक" उन्नति नहीं करेगा तो और समय ही कौनसा आयगा? देहली में एक सर्व हितैषी हिन्दी दैनिक पत्र की आवश्यकता बड़ी उत्सुकता के साथ अनुभव-प्रगट की जारही है। इस समय तो 'सद्धर्म प्रचारक' पर ही सब की दृष्टि लग रही है कि वह ही इस अभाव को दूर करेगा। सेठ राम गोपाल जी और पं० अनन्त राम जी प्रेस की अवश्य उन्नति करना स्वीकार कर लेंगे यदि "सद्धर्म प्रचारक" अपना अर्ध साप्ताहिक और दैनिक संस्करण निकालना स्वीकार करले।

"सद्धर्म प्रचारक" के अर्ध साप्ताहिक और दैनिक दोनों रूप में प्रकाशित होने लगने से आर्य समाज का एक बहुत बड़ा अभाव समुचित रीति से दूर हो जायगा और दहली में एक हिन्दी के अच्छे सार्वजनिक दैनिक का अभाव समुचित रीति से दूर होना संभव है।

"सद्धर्मप्रचारक" हर प्रकार से अर्ध साप्ताहिक और दैनिक होने के योग्य है। श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार और "सद्धर्मप्रचारक" के ग्राहक गण क्या इस प्रस्ताव पर विचार कर के इसे कार्य्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न करेंगे?

२—"आर्य मित्र" ने श्री सर्वदानन्द जी के हाथों में जो आशातीत उन्नति की है वह "भारतोदय" और भारत सुदशा प्रवर्तक" के लिए अनुकरणीय है। यदि कुछ भी सुविधा और स्वतन्त्रता सम्पादक को दी जाय और अधिक व्यय किया जाय तो "आर्य मित्र" अभी बहुत उन्नति कर सकता है, अभी उस में उन्नति की बहुत कुछ गुञ्जायश है। प्रतिनिधि सभा यू० पी० ज्ञात नहीं क्यों इस ओर उदारता से ध्यान नहीं देती है। पिछले दिनों "आर्य मित्र" को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल वृन्दावन ले जाने का प्रस्ताव किया गया था, अब तो वह विचार खटाई में पड़ गया मालूम होता है; जब तक स्वयम् प्रतिनिधि सभा उदारता पूर्वक व्यय करना स्वीकार नहीं करेगी तब तक ग्राहकों से किसी प्रकार की आशा करना व्यर्थ है। सभा स्वयम प्रेस और पत्र को गुरुकुल लेजावे उदारता के साथ १०, १५ हज़ार रुपया व्यय करके प्रेस और पत्र को उन्नति कर दे फिर देखिए कि ग्राहक क्या नहीं करते हैं। केवल ग्राहकों के उत्साह न दिखाने से गुरुकुल ले जाने या उन्नति देने का विचार छोड़ देना उचित नहीं है। प्रेस की उन्नति से स्वयम् सभा को असाधारण लाभ होगा ही। साथ ही सामाजिक क्षेत्र में एक अच्छा प्रेस हो जायगा। व्यवसाय की दृष्टि से भी तो यह लाभदायक काम है, फिर भी ज्ञात नहीं सभा क्यों उदारता से प्रेस पर धन व्यय नहीं करती है। वर्त्तमान स्थिति का "आर्य भास्कर" जैसा प्रेस आज कल स्थाई नहीं हो सकता है। यदि प्रतिनिधि सभा चाहे तो अर्ध साप्ताहिक क्या दैनिक रूप से भी वह "आर्य मित्र" को प्रकाशित कर सकती है। दैनिक अभी नहीं तो कम से कम अर्द्ध साप्ताहिक तो अवश्य ही प्रकाशित करने का सुप्रबन्ध सभी को शीघ्र ही करना आवश्यक है। क्या आशा की जाय कि अधिकारी गण इस निवेदन पर ध्यान देने की उदारता दिखावेंगे?

३—"भारत सुदशा प्रवर्त्तक"। आश्चर्य है कि इस के स्वामी और सम्पादक महोदय अपने सामने "सद्धर्म्म प्रचारक" और "आर्य मित्र" को देखते हुए भी उन्नति नहीं करते हैं। इस पत्र का सम्पादन विचित्र लापरवाही के साथ होता है। न सम्पादकीय टिप्पणियों का स्थान नियत है न समाचारों का। पत्र प्रेरकों के लेख कहीं छापे जाते और सार सूचनाएं कहीं। नियमानुसार सम्पादन पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया जाता है, इस विषय में "आर्य मित्र" अनुकरणीय है!

शान्ति प्रेस के स्वामी और अधिकारी उत्साही हैं उनको तनिक ध्यान के साथ प्रेस और पत्र की दशा का विचार रखना चाहिये; थोड़ी सी उन्नति से यदि वे चाहें तो "भारत सुदशा प्रवर्तक" को अर्द्ध साप्ताहिक प्रकाशित कर सकते हैं। किन्तु बीसों वर्षों में जब मासिक से साप्ताहिक किया है तो अर्ध साप्ताहिक करने के लिऐ भी शायद कम से कम ५० वर्ष लगेंगे। यदि अर्ध साप्ताहिक या दैनिक करने का अभी समय नहीं आया है तो कृपया तनिक कष्ट सहन करके साप्ताहिक को नियमानुसार सम्पादन कराकर प्रकाशित किया कीजिये।

४—"भारतोदय" को साप्ताहिक हुए अभी बहुत थोड़ा ही समय हुआ है। इस पत्रके संबन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है, क्यों कि इस के प्रकाशक और सम्पादक आदि सब "स्वयं ही सर्व गुण सम्पन्न" हैं। चाहे वे ध्यान न दें, किन्तु बिना कुछ निवेदन किये नहीं रहा जाता है। महाविद्यालय ज्वालापुर के द्वारा यदि उस उच्चकोटि के मासिक पत्र के अभाव को पूर्ण किया जाता जिसका कि उल्लेख १ जून के "आर्यमित्र" के लेख में किया गया है तो अति उचित होता। म० वि० की विद्वत मण्डली उस के हर प्रकार से योग्य और समर्थ है। ऐसी प्रार्थना इस अबोध की ओर से की भी गई थी, किन्तु यह महानुभाव ऐसी प्रार्थनाओं पर ध्यान देना कुछ आवश्यक ही नहीं समझते हैं। अस्तु अब जब कि "भारतोदय" साप्ताहिक कर ही दिया गया है, तो विद्वत मण्डली से भी यह नम्र निवेदन है कि यदि उचित समझें तो "भारतोदय" को जातपांत से सर्वथा पृथक रख कर उन्नति की ओर जाने दें। यदि अर्ध साप्ताहिक या दैनिक प्रकाशित करने का समय नहीं है तो कम से कम साप्ताहिक को तो अपटूडेट बनादें ताकि वह आर्य समाज का सच्चे शब्दों में "अद्वितीय" माननीय पत्र बन जावे। सब से प्रथम आकार वृद्धि आवश्यक है "आर्यमित्र" के आकार के ८ पृष्ठ बारीक टाइप में सफेद काग़ज पर प्रकाशित होने चाहिए। अन्य सब बातों में भी उन्नति का पूरा मैदान है यदि आप उधर ध्यान दें।

सूचित किया गया है कि आ० प्र० नि० सभा राजस्थान से एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करने का प्रबन्ध कर रही है। अच्छा होता यदि सभा वैदिक प्रेस के अधिकारियों से मिलकर एक उच्चकोटि के हिन्दी मासिक पत्र का अत्यन्त अभाव दूर करती और यह कुछ विशेष कष्ट साध्य बात भी नहीं थी, किन्तु जब कि सभा साप्ताहिक पृथक पत्र निकालने का निश्चय ही कर चुकी है तो आशा है कि सभा वर्त्तमान अपने पत्रों की दशा के अनुभव से पूरा लाभ उठा कर ही कार्य करेगी। रद्दी पत्र प्रकाशित करके नित्य ग्राहकों की कमी कीशिकायत करते रहने से न प्रकाशित करना ही अच्छा है। वर्त्तमान समय में पत्रों का मुकाबिला सख़्त है, बिना सुप्रबन्ध किये यों ही पत्र प्रकाशित करने लग जाना सर्वथा अनुचित है। कोंच के "सत्य प्रकाश" जैसे पत्रों से क्या उपकार होना सम्भव था? सम्पादक अनुभवी, विद्वान, अपटूडेट जानकारी रखता हो, साथ लिखाई, छपाई, काग़ज़ आदि भी सब अच्छा होना परम आवश्यक है। आशा है कि उक्त सभा ने इन सब बातों पर भले प्रकार विचार अवश्य कर लिया होगा।

गत वर्ष जब कि पं० ललिताप्रसादजी अग्नि होत्री परोपकारिणी सभा के सुधारार्थ १००) मासिक पाते थे, तब उक्त अग्नि होत्रीजी ने जो स्कीम बनाई थी इसमें परोपकारी नामक एक दैनिक प्रकाशित करने की भी बात थी, किन्तु सभा कभी अपनी गाढ़ निद्रा से जागेगी इस बात की तो किसी को आशा नहीं है। "सार्व देशिक सभा" को अपने 'सार्व देशिक' कामों से ही अवकाश नहीं हैं, फिर ऐसी दशा में "सद्धर्म प्रचारक" और "आर्य्य मित्र" से ही आशा है। हम दोनों उक्त पत्रों के स्वामियों से सविनय सानुरोध और साग्रह प्रार्थना करते हैं कि वे अपने २ पत्रों को अर्ध साप्ताहिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और दैनिक प्रकाशित करने का जितनी शीघ्र सम्भव हो सके अवश्य प्रबन्ध करें। ग्राहकों से पहले ही कुछ आशा करना व्यर्थ है। आप महोदय प्रथम ईश्वर पर विश्वास रखकर दृढ़ता पूर्वक कार्य्यारम्भ करदें। आर्य्य जन साधारण स्वयम यथा योग्य हर प्रकार की सहायता अवश्य देगी। यदि और किसी प्रकार सम्भव न हो तो शेअर्स संग्रह करके लिमिटेड कम्पनी के द्वारा कार्य्यारम्भ कीजिये।

अर्ध साप्ताहिक का मूल्य ४) और दैनिक का १०) रखना पर्याप्त होगा, वर्तमान "आर्य्य मित्र" के आकार के कम से कम ८ पृष्ठ दैनिक "भारत मित्र" जैसे बारीक टाईप में चिकने सफेद काग़ज़ पर प्रकाशित करना उचित होगा। पत्रों की नीति वर्तमान "सद्धर्म प्रचारक की सर्व मान्य है। ऐसे अर्ध साप्ताहिक और दैनिक पत्रों के आर्य्य समाजी और आर्यसमाजियों से भिन्न एक २ हज़ार ग्राहक होजाना कुछ विशेष कठिन नहीं है।

क्या आशा की जा सकती है कि इस निवेदन पर समर्थ विचारशील ध्यान देकर इसके श्री गणेश करने का यश लाभ करेंगे?

वैदिक धर्म्म का सेवक
द० प० खं०

हरियाना समाज का वार्षिकोत्सव—आ० स० हरियाना का वा० उत्सव भ्र० १०, ११ श्रावण सं० ७१ तदानुसार २५; २६ जुलाई शनिवार तथा रविवार को होगा, नगर कीर्तन ६ शुक्रवार श्रावण को होगा। इस अवसर पर महात्मा संन्यासियों उपदेशकों तथा प्रसिद्ध व्याख्यान दाताओं के पधारने की पूर्ण आशा है! भगवती पुत्री पाठशाला हरियाना का उत्सव पारितोषिक वितरण ११ श्रावणरविवार को होगा। स्त्री समाज का वा० उत्सव ११ श्रावण को होगा जिस में विदुषी स्त्रियों के व्याख्यान होंगे।

"श्री० स्वामी विद्यानन्द जी का व्याख्यान स्वर्ग क्या है" पर २५ज्येष्ठ साप्ताहिक अधिवेशन में प्रभावशाली हुआ सेग से नगर मुक्त होचुका है

गुज्जरमल उपमन्त्री
आ० स० हरियाना

प्राप्त

(प्रेरित पत्रों का सम्पादक उत्तर दाता नहीं)

डिपो वालों की धोखे बाज़ी

और

फौजी से पुकार

मेरी दुकान पर जुनायचा (स्टेट अलवर) का एक मुनीम रहता है उसी ग्राम का एक ब्राह्मण आयु लगभग १५ वर्ष नाम कनहया लाल कुली डिपो वालों के धोखे में आकर सन् १९११ ई० में बृटिश गायाना में चला गया परन्तु उस के गृह वालों को ज्ञात न हुआ। जब उसका वहां से पत्र आया तो सारा हाल विदितहुआ। उसने अपने को बहुत दुःखी लिखा है जिस कारण यहां से चन्दा करके उसको बुलाने के लिये ५२२) रु० श्रीमान् बा० देवी बख़्श जी सर्राफ के द्वारा भर दिये हैं जिसकी आने की आशा सितम्बर तक है मैं उसकी चिट्ठी प्रकाशित करता हूं:—

चिट्ठी की नकल

"सिद्ध श्री दिल्ली शुभ स्थान ये सेठ जी हरद्वारीमल जी जोग लिखी उमरा सेती कन्हैया लाल की आशीर्वाद बांचना। बने मन सेती हम लोग इस मुल्क में बहुत दुखी हैं हमारा कुछ दुख वर्णन नहीं जाता है। आदमी को मार देता है जब उसको काला पानी होता है। और हम को बिगर सज़ा के काला पानी देखना पड़ा और सेठ जी तुम लोग नहीं बुलाओगे तो हम इस मुल्क में मर जायंगे। ऐसा यह मुल्क नहीं है कि इस मुल्क से आ सकता है और रात दिन मोरी खुदवाता है और खाने लायक चांवल दाल मिलता है सो सेठ जी उसी को खाकर गुज़र करते हैं और आटा दर्शन को न मिलता है और हमारा यही कहना है कि हम तुम्हारी कपिला गाय हैं हमको छुटाय लो, इस जाल में से और निकाल लो, नहीं सेठजी हमारा बहुत बुरा हाल होगा। हम इस मुल्क में मर जायंगे मैं मुम्बई गया वहाँ रामनारायण ढावे वाले के पास रहा फिर हम कलकत्ते में आए और चार महीने कलकत्ते में रहे। कहीं रोज़गार न लगा। पास कुछ रुपया नहीं, फिर हम वहां से मैं दिल्ली चला, पैदलका बिचार करके रास्ते में बाग़मान सड़क है। उस जगह हमको भरती कर लिया, पर हमको न मालूम था कि वह नगर कैसा है। सो सेठ जी तुम मुझको छुटालो, इस मुल्क से मैं तुम्हारा बार बार जस गाऊंगा और परमात्मा तुम्हारा स्वर्ग वास करेगा। सेठजी तुम इस मुल्क से बुला लोगे तो हमको तुमने जीवन दान दिया क्योंकि इस मौत के घर म से निकालो। मैं बार बार कहता हूँ कि तुम्हारी कपिला गाय हूँ मुझ को इस मुल्क से निकाल लो। मैं तुम्हारा तावेदार हूं क्योंकि इस मुल्क में बड़ा भारी दुख पाता हूँ और मेरे से दुख अपना कुछ लिखा नहीं जाता है बड़ी ही मुसीबत में पड़ा हूँ तुम्हारा राम भला करेगा, तुम हमको इस मुल्क से निकाल लो।"

उसकी अपनी माता के नाम चिट्ठी

"औरमां से दोनों से पांवा धोबच्चनो आगे मैं अपना तो दुख भूल गया और तुम्हारी तरफ़ का और भाभी (भाभी विधव है) की तरफ का बड़ा भारी फिकर है और जब से मकान के बारे की सुनी है मुकदमा की, जब सेती बड़ा भारी दुख हो रहा है सो अच्छा हम तो गौ नेक ब्राह्मण हैं सो माता हमको कोई सतावेगा जिस को परमात्मा जड़ से खो देगा, क्योंकि जैसी मुसीबत आज दिन पड़ रही है जैसी राजा नल पर पड़ी थी जिसी हम पर पड़ रही है। सो रामदयाल ने हमको सताया है (रामदयाल वह पुरुष है जिस ने इसका भाई होते हुए इसकी सम्पत्ति छीनने का यत्न किया है जिसकी सूचना उसको मिलने से उसने यह लिखा के० ना०), उसको परमात्मा निरवंस कर देगो। और अच्छा जो कोई जैसी करे करने दो तुम अपने सबर रखो। सबर का फल मीठा है और मेरे बुलाने की चिन्ता राखियो और माता मेरा शरीर का दुख कहा लिखूं मुझ से अपना दुख का हाल लिखा नहीं जाता है चिट्ठी लिखता जाता है और रोता जाता हूँ अपना दुख के परमात्मा तुम्हारा दर्शन देंगे जब दुख सुनाया जावेगा और मैं अपना ज़िला लिखवाया था सो सब ठीक २ लिख दिया है सो इस पते से हमारी पूछना और कलकत्ते आफिस में यहो पता है सो इस पते से पूछ कर रुपये लगें जितने भर देना जल्दी से और मैं जल्दी आजाऊंगा और हम आज दिन कलकत्ते के आफिस में चिट्ठी गेरी है सो हमने अपना जिला लिखवा दिया है और तुम कलकत्ते से खबर लेना यह पता लिखवाया है जिला झब्बलपुर मुहल्ला गाँजीपुरा थाना तहसील खास डाकखाना खास और हमारी उमर १५ वर्ष की नाम कन्हैया सिंह बाप का नाम गंगासिंह जात छत्री चिल बावां गोड़े क नीचे चोट लगी हुई। बावां हाथ में नश्तर तीन हैं।

सेठजी को दूसरा पत्र

सिद्ध श्री दिल्ली डुमरा टापू से कन्हैयालाल की आशीर्वाद बांचना सेठ जी हरद्वारीमल तु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

म्हारो बार २ परमेश्वर भला करें तुम हमको जीवन दान दिया। हमको ऐसा बचाया कि जैसे कसाई के हाथ गौ पड़ जाय है (उसको यह लिख दिया गया था कि रुपये भर दिये जायंगे सो वापसी की आशा पर यह पत्र लिख रहाहै, के०ना०) जैसे हम लोग यहां पर गोरे लोगों के हाथ पड़ रहे हैं सोई सेठ जी तुमने हमको गाय की माफिक छुटाया है सो हम तो यही बार २ परमात्मा से मांगते हैं कि तुम्हारा आस औलाद बहुत खुशी से रहे। परमात्मा बार २ भला करे और सेठ जी हम यहां बड़ा दुख पाते हैं जैसे मुल्क में साढ़ के महीने में बैल जोता जाता है जैसे हम लोगों पर से करवाता है और एक गोरा और एक दरवाहा हमारे ऊपर रहता है सो सवेरे ४ बजे उठाकर ले जाता है और रात के छः बजे छोड़ेहै। सारा दिन मट्टी खुदवाता है सो सेठ जी इस मुल्क में बड़ा भारी दुख है। जो कोई काम न करे उसको जेल करवाता है।"

ये जो पत्र प्रकाशित किए गए हैं, मैंने पत्र सम्पादक जो को प्रमाण के लिये दे दिये हैं। उसके पत्र और भी बहुत से आये हैं परन्तु वह मेरे पास नहीं। इस कारण प्रकाशित नहीं कर सका।

केदारनाथ गोएनका—देहली

संगठन

जिस जाति वा देश का संगठन ठीक २ नहीं होता उस में सदा उपद्रवहुआ करते हैं। यदि एक परिवार में कोई मुखिया न रहे और प्रत्येक पुरुष अपने को मुखिया समझे तो क्या उस परिवार में सुख रहसकता है? ठीक यही दशा किसी सभा या सोसाइटी की होसकती है। यदि सभा किसी प्रस्ताव को पास करे और सदस्यों की सर्व सम्मति से या बहुसम्मति से वह पास होजावे फिर कोई सदस्य उस प्रस्ताव का विरोधी बनकर सभा को हानि पहुंचावे तो हम कह सकते हैं कि वह पुरुष संगठन नहीं जानता और सभा के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं करता। पाश्चात्य देशों में जब कभी राष्ट्रीय बातों में ऐसे प्रश्न उपस्थित हो जाते हैं तो उसी समय तक ये झगड़े चलते हैं जब तक कि सभा से कुछ निर्णय न हो लेवे जहाँ निर्णय हुआ फिर उस के सामने मस्तिष्क झुका देते हैं। देव की कृपा है कि इस प्रकार के राष्ट्रीय प्रश्नों का निपटारा हमें नहीं करना पड़ता। हमारे आधीन इस प्रकार झगड़े कभी २ धार्मिक प्रबन्ध विषयों में पड़ा करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्यसमाज का दसवां नियम बना कर इन झगड़ों का सदैव के लिये निपटारा कर दिया है फिर नहीं मालूम कि आर्यसमाज के अन्दर इन बातों पर क्यों विवाद चलता है। श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभाओं का संगठन इतनी उत्तम रीति से प्रचलित है कि आर्य समाज का कार्य निर्विवाद चलता रहे किन्तु जब हम देखते हैं कि जब श्रीमती सभा के ऊपर कुछ लोग निर्मूल आक्षेप करते हैं या उस के प्रस्तावों की पर्वाह न कर के अपनी इच्छानुसार कार्य्य करते हैं तो क्या ऐसे भद्र पुरुष महर्षि की आज्ञा का उलंघन नहीं कर रहे। जब श्रीमती सभा ने अपने प्रान्त में एक गुरुकुल खोलदिया है तो क्या हमारा यह कर्त्तव्य है कि उस गुरुकुल को न चला कर अपनी २ इच्छानुकूल बहुतसे गुरुकुल खोलबैठें? जिसका परिणाम यह हो कि आर्य पुरुषों की श्रद्धा इतनी कम होजाय कि किसी प्रचारकको देखतेही यह भय हो कि अब टैक्स वसूलकरने फिर आफत आई?

यदि कोई महाशय अपने निज कर्त्तव्यसे विद्यालय चलाना चाहें तब तो कोई हर्ज नहीं किन्तु पबलिक की सहायता पर प्राइवेट संस्था खोलदेना संगठन के विरुद्ध है। इस कारण हमारीसम्मति से सब आर्य पुरुषों को संगठन पर विचार कर श्रीमती सभा (जो कि महर्षि की वसियत के अनुसार है) के आधीन रह कार्य करना चाहिये। एकही गुरुकुलको इतना मज़बूत बनाया जाय जिस में अधिक से अधिक ब्रह्मचारी पढ़सकें। जगह २ गुरुकुल खोल मिली हुई शक्ति को छिन्न भिन्न न कर एक ही गुरुकुल को पुष्ट बना उस में अधिक ब्रह्मचारी भर्ती करना अधिक अच्छा है।

हमें ऐसे कई महाशयों की दशा से परिचय है जो अपने स्वार्थवश ऐसी संस्थाओं को खोल कुछ काम लेते हैं किन्तु उन के प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं। यदि स्वार्थ को छोड़ सर्व साधारण का धन वे लोग हरण न करें तो बड़ा ही उपकार हो सकता है।

दीनानाथ शर्म्मा

मन्त्री आर्यसमाज

(अलीपुर खेड़ा)

संक्षिप्त समाचार

यूरोप में एक भारत पुत्र का सम्मान—भारत शिक्षा विभाग के सुप्रतिष्ठित पं प्रभुदत्त शास्त्री आई० ई० एस को जनेवा तथा फ्लोरेन्स के विश्व विद्यालयों की ओर से व्याख्यान देने के लिये निमन्त्रित किया गया है। आप कलकत्ते के प्रेसीडेन्सी कालिज में फिलासफ़ी के सीनियर प्रोफेसर हैं। आप उक्त विश्वविद्यालयों में वेदान्त विषय पर फ्रैन्च तथा इटेलियन भाषा में व्याख्यान देंगे।

लाहौर के मेडिकल कालेजकाझगड़ा—कुछ दिन हुए लाहौर के मेडिकल कालिज के विद्यार्थीयोंने प्रौफेसरोंकेव्यवहार सेअसन्तुष्ट होकर कालेज आना छोड़ दिया था परन्तु सन्तोष दिलाने से फिर कालेज में आने लगे। कुछ विद्यार्थीयों को दण्ड मिला था उस के लिये बड़ा यत्न होता रहा; अन्त में एक कमीशनबिठाई गई अब सरकारने घोषणा प्रकाशित की है कि कमीशन ने अपनी बड़ी लम्बी चौड़ा रिपोर्ट उपस्थित की है और उस पर सिविला हौस्पिटल केजनरलइसन्पेक्टर यूनिवर्सिटी तथा कालेज के अधिकारीलोग विचार कररहेहैं।

एक और बंगाली कन्या की आहुति—अविद्या के नाश का प्रयत्न करने के स्थान पर इसकी वृद्धि करते रहते हैं। इस प्रान्त से आज कल दहेज प्रथा के कारण प्रति दिन देवियों की आहुतियां सुनने में आती हैं। कलकत्ते से १३ जून का तार प्रकाशित करता है कि बा० हरिदास देवगढ़ में एक वृद्ध परन्तु प्रतिष्ठित वकील हैं आप कितने ही दिन से अपनी पुत्री विवाह की चिन्ता में लगे हुएथे। अन्त को लाहौर कालेज के एक छात्रके संरक्षक ने छात्र से विवाह होना स्वीकार किया। यह विद्यार्थी किसी प्रकार भी दहेज़ लेने को बिलकुल तयार नथा परन्तु उस के संरक्षक महोदय ने ६०००) रु० मांगे, वकील साहब ४०००) रु देने को तय्यार थे। परन्तु संरक्षक महोदय को यह स्वीकार न हुआ और १४ वर्ष की कुमारी देवी की हत्या का भार अपनी गर्दन परलिया। कन्याने आत्महत्याद्वारा अपने पिता को सारी चिन्ताओं से छुड़ादिया।

नया साप्ताहिक—कानपुर में एक नये साप्ताहिक पत्र निकाले जाने की तय्यारियां हो रही हैं जिस का नाम धर्मवीर होगा। यह पत्र आर्यसमाजी होगा इस में वैदिक विज्ञान, कुरान समीक्षा; बाइबिल समीक्षा, विविध सिद्धान्त समीक्षा, सामाजिक सुधार, सम्पति शास्त्र, और स्वास्थ्य रक्षा आदि विषयों पर लेख होंगे पत्र के स्वामी म० रामबलीसिंह, रेल बाज़ार कानपुर हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥।)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिदेंषभाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡) ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥।)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।-)
प्रार्थना पुस्तक -)
ओंकार की उपासना -)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश -)
वेद और महाभारत के उपदेश -)
वेद, मनु और गीता के उपदेश -)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता — मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धी समस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है। मूल्य २॥) डिब्बी डाः मः माफ।

पता—बी.एल.बूबनाएण्ड को०
दिल्ली नं० ३

हाथरस के पक्के चाकू

पसन्द न हों तो वापिस

ल० मूठ ॥) ।=) ।) ≡।) -) -))॥। चन्दन मूव ॥-) ।≡) ।-) ।) ≡) =)॥ =) -) उस्तरा ।) ।=) सरौंता ।-) ॥) कैंची ।=) ॥) ॥=) पवित्र हींग -) सेर अगोंछा =) से ॥) तक। बालनाशक साबुन ।) बक्स।

पतः—भारत हितकारी आफिस,
हाथरस

क्या आपने हिंदी का नया साप्ताहिक पत्र

प्रताप

देखा है?

"प्रताप" राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक, प्रश्नों पर स्वतन्त्रता और निर्भीकता से अपनी सम्मति प्रकट करता है। उसका आकार रायल क्वाटों १६ पेज और वार्षिक मूल्य २॥) रु है।

यदि आपने "प्रताप" न देखा हो तो कृपया एक प्रति नमूने की मंगाकर देखिए।

सभी हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रों ने उसकी प्रशंसा की है।

मैनेजर 'प्रताप' कानपुर

आवश्यकता।

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ठट्ठासिंध के लिये एक योग्य अधिष्ठात्री की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा पत्र व्योहार निम्नलिखित पते पर करें।

नरसिंहलाल
प्रबन्धकर्त्ता
कन्या ब्रह्मचर्याश्रम, ठट्ठा, (सिन्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खरे, विक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—
पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफरा खट्टी या घूसं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, आदी का दर्द बवा सीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का बिकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५

मिलने का पताः—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जालोर मिला गया

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनाँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

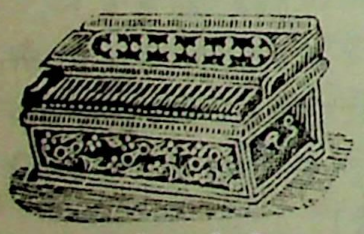

इस पुस्तक में कई प्रकार की ग़ज़ल, क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≠)

पता—बाबू जसवन्त सिंह
बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

बूंटि से पारे की निखालिश भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे को शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पता:
मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी
हरद्वार।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द वाच

मूल्य केवल

५॥)

रुपया

गारन्टी ५ साल

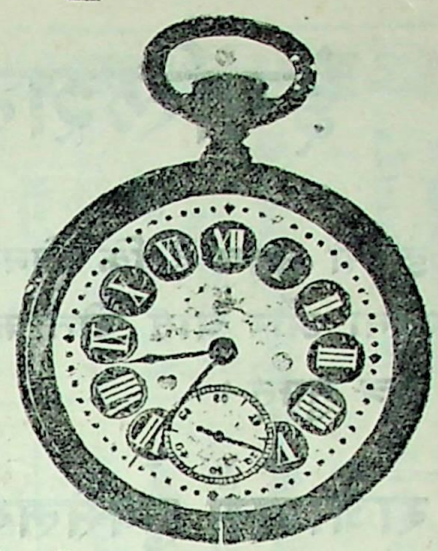

श्री महात्मा मुंशीराम, धर्मवीर पँडित लेखराम, पँ० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन हमने उक्त नाम की घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौरसे विलायत से बनवाकर मगाई हैं जिस में मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय, हर घड़ी के साथ में एक कांच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा—

इस के अलावे हमारे यहाँ हर तरह की घड़ियां बहुत सस्ते दामों परमिलती हैं सिस्टम रासकोप मूल्य ३) रुपे, रेलवेरैगूलेटर मूल्य ४) रुपये, बाजा बजाने वाली टायम पीस मूल्य ४॥) रुपये—

पता—दी स्वोज़रलैंड, वाच कम्पनी हाथरस नँ० ४

(२४५)

हाथरस के नये फैशन के कमानीदार पक्के चाकू व लीवर ताले

एजेंटों की आवश्यकता

यह स्वदेशी चाकू विलायती चाकुओं से सुन्दर और सस्ते हैं।

चन्दन की मूंठ कमानी दार

॥=) |≡) |=) ।)

लकड़ी मूठ कमानी दार

॥) |=) ।) ≡) =)

जर्मनी फैशन चन्दन ।=) लकड़ी ।) स्याह मूंठ |=) ।) चन्दन मूठ सादा।=) ।) ≡)=)॥=) लकड़ीमूठ सादा।=) ।) ≡) =)॥ =))॥ हाथीदांत कमानीदार ॥=) ॥) ≡)=) दो फला ॥) चन्दन दोफला ॥=) ॥) शिकारी छुरी १) ॥) पीतल मूंठ चाकू ॥) ।=) नये फैशन लोहे व पीतल के सरौंते ॥) ॥=) ॥) ।=) पवित्र सुगन्धित बढ़िया हींग १०) ८) ६) रुपये सेर देशी मूत के रंगीन धारीदार गमदे |=)) ≡) =)

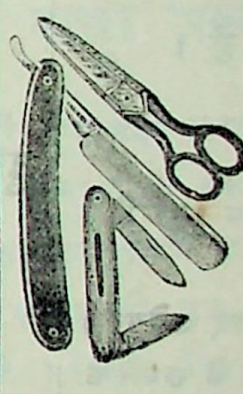

दूसरी चावी से न खुलने वाले लीवर दार लोहेके ताले मूल्य

॥) ॥) |=) इञ्च सादा |=)) इञ्च पीतल लीवरदार १) ॥) ॥) इञ्च सादा ।=) ।) ≡) इञ्च विलायती फैशन के देशी उस्तरे ॥) ।=) ।) बाल काटने की कैंची १) ॥) कपड़ा काटने की मज़बूत कैंची ॥) ॥=) ॥)

पता-स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

(२४५)

अद्भुत ताक़त की दवा

यह उन्हीं लोगों के लिये बनाई गई है जो सब प्रकार से निराश हो बैठेहों शरीर की निर्बलता सर दुखना आंखों में अन्धेरा आना जवानी में बुढ़ापे की दशा का होना लड़कपन की कुक्रियाओं से उत्पन्न अनेक रोगों की यह अव्यर्थ दवा है। इस के सेवन से शरीर निरोग और सुदृढ़ होकर चेहरे पर रौनक आती है यह अद्भुत दवा जादू का सा काम करके दिखलाती है। मूल्य ४० गोलियों की डिब्बी का २) डाक व्यय माफ़

प्रदर हर गोलियाँ

बेचारी स्त्रियां इस रोग को चुपचाप सहन करके शरीर को गला लेती हैं उन का गुलाब जैसा रंग बात की बात में पीला पड़ जाता है शरीर में दर्द पैदा होजाता है मासिक धर्म ठीक समय पर नहीं होता एवम् कष्टयुत होता है ऐसी दुखिया अबलाओं के हेतु ही "प्रदरहर" तयार की गई है इस के सेवन से उपरोक्त सब रोग नष्ट होते हैं और शरीरसब प्रकार के सुख भोगने योग्य बनजाता है मूल्य ४० गोलियों का २॥) डाकव्यय माफ

दाद की दवा

प्रशंसा करना व्यर्थ है एक बार मंगाकर नये पुरानें चाहे जैसे दाद को जड़ से खोदो मूल्य फी डिब्बी ।=)

खाज की दवा)

इस दुखदाई रोग से छुट्टी पाना है तो इसदवाकोबिना बिलम्ब सेवन करोमूल्य ॥)

हिंग्वाष्टक चूर्ण

पेट के अनेक रोगों को शान्त करता है भूख बढ़ाता है एवम् पाचन करता है मूल्य ॥)

तीनों का डाकव्यय अलग

मिलने का पता:—स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

(२४५)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रसिक सज्जनों

डीजिये केवल आपही के लिये १४ तीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का र्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" हर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, ज्योतिष, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, वेदप, कानून, छन्द, गान, रसायन दुनिया दे विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दूसरी वा है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों चीन, जरूरत हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर शिलाजीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥) मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स श्वास, ऊपर इ— सेवन कि अलीगढ़

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें
हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)
पुत शास्त्र १, २ भाग
(दूसरा भाग छप रहा है)
स्पति शास्त्र १)
(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के डे ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम लिया जायगा। पत्र व्यवहार कों के लेखक, प्रोफेसरम हेशचरण सिंह, , ए० एम० एस० बी० ए० ज़ी० आर० दोनेकुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुकसेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० दा =)]

माल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

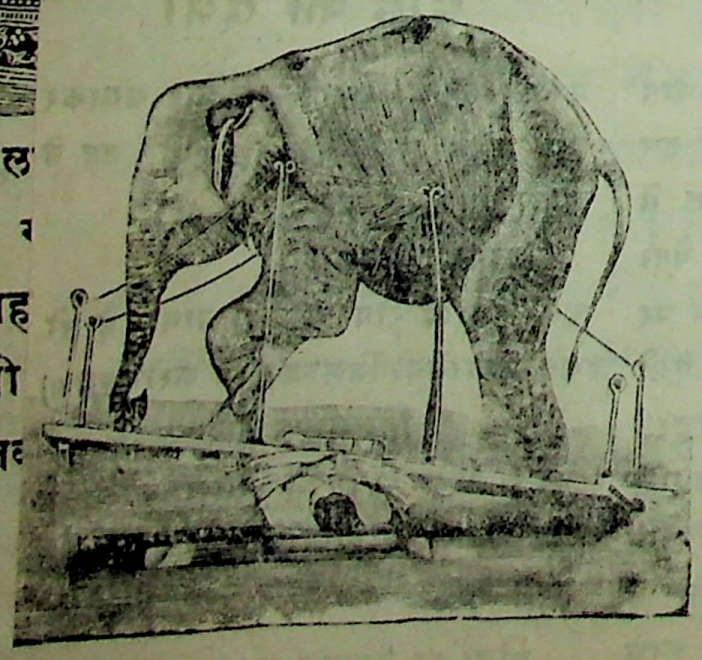

बतल
।-) र
जगह
देखो
पुस्तक

प्रचारक के ग्राहकों को ए कमास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तकाश नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

कफ	अतिसार
दमा	आंवलोहू
खांसी	संग्रहणी
हैजा	कै होना
शूल	पेटकादर्द

सर्दीकाबुखार
जी मिचलाना
बच्चोंकेहरेपीलेदस्त
शरीर का दर्द
कुकरखांसी

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट सुगंधित दवा है मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ २३ वर्ष का आजमाया हुआ

दद्रुगजकेसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के हाथ को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—क्षेत्रपाल शर्मा मालिक,
सुख संचारक कम्पनी मथुरा

वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर कीहै, जो बुद्धिमती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदातृ शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो क्वारा हृष्ट पुष्ट २५ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थाप्पर

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब लाहौर

एजन्ट चाहिये।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द--जि० आरा

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≡) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

हारमोनियम शिक्षक

अर्थात् विना गुरु के बाजा सिखाने वाला टीचर, यदि आप थोड़ेही समय में सरगम व गाना सहित हारमोनियम बजाना सीखने के इच्छुक हैं तो सुन्दर जिल्द बंधी हुई पुस्तक के दोनों भाग मंगाइये मूल्य ।)डा० ≡) पीतलके ओ३म् व नमस्ते फ़ी दर्जन।।।) डा० म० अलग

पताः—बाबूख्यालीराम एण्डको

अलीगढ़ सिटी.

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतौल Kamtaul बिहार प्रान्त

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़ तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

आवश्यकता।

एक अध्यापक जो शास्त्री या मध्यमपरीक्षा पास हो व्याख्यान शक्ति भी हो और और दूसरा जो इन्ट्रन्स पास हो सदाचारी हो और कम आयु का नहीं इन की हमें आवश्यकता है। यह दोनों सज्जन आर्य्य हों।

पतः-रामस्वरूप मन्त्री जार्ज एङ्गलो

वैदिक विशनवी स्कूल नगीना

(बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूटी वटिका** मौका नचूके लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पण्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्राह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्द्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलवनाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, वहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न।

अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—(शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधि से शुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ान का साबुन—बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर बड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता—
शर्मनऐंड कं. सतघड़ामथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) मा० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय दहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अ३म ॥

Registered No L. 807.

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

१४ आषाढ़ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० २७ जून १९१४

संख्या ११
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिस में ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक	=) प्र०	
तीन मास " " " "	=)	"
छः " " " " "	-)॥	"
सालभर " " " "	-)	"

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—देहली,

गृहस्थ मात्र को रखना चाहिये।

परीक्षा के लिए डाक्तर बर्म्मन की बनाई छै प्रसिद्ध दवाइओं का बक्स मोल १॥) डेढ़ रुपया डाः मः ।) चार आना।

बक्स में नीचे लिखी हुई छै दवाईयां रहती हैं।

(१) अर्क कपूर—हैजा वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।
(२) दमेकी की दवा—तत्काल "दम" को दबाती है।
(३) कोला टानिका—हर एक के लिए बल बढ़ाने की दवा है।
(४) धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण।
(५) जुलाब की गोली—सहज में पेट साफ करती है।
(६) अर्क पूदीना (सब्ज)—अजीर्ण पेट दर्द वो वादी की दवा।

इस से थोड़े खर्च में डाक्तर बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाइयों का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों को थोड़े ही में बहूत भला हो सकती है; इस लिये गृहस्थों के लिये यह अनमोल है।

सब जगह हमारे एजेण्ट और दवा फरोशों के पास मिलेगी अथवा—

डाः एस. के. बर्म्मन ५, ६, तारावंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

एजेन्टः—बाबूराम जैनी कूचासेठ दिल्ली

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानूनदर्पण।

एक ही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिन से हर मनुष्य को काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाब्ता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तल्लाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुख्त्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार बगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्याकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १)

मिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

—

महात्म मुंशीराम जी!

विज्ञान कल्पतरु के विषय में लिखते हैं:—मैं इस पुस्तक माला को आर्य भाषा भाषी आर्य जनता के लिये बहुत उपयोगी समझता हूं। मेरी सम्मति में यदि प्रत्येक आर्य्यसमाज इस की एक एक प्रति खरीदना स्वीकार करले तो ऐसा समयोपयोगी ग्रन्थ छप कर स्वदेश को बहुत लाभ पहुंचा सक्ता है। यदि मेरे पास धन होता तो मैं आपका हाथ बटाने का कुछ प्रयत्न करता अब केवल आपकी कृतकार्यता के लिए केवल मङ्गल इच्छा ही प्रकट कर सकता हूं। विज्ञान कल्पतरु में प्रत्येक वस्तु के बनाने की कृयायें धन कमाने के अनेक ढंग, विज्ञान (साईन्स) सम्बन्धी तथा वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक बात का पूरा पूरा वर्णन चित्रों सहित किया गया है। ग्रन्थ बड़ा होने से १०० पृष्ठ मासिक में छपता है और स्थाई ग्राहकों को ॥) प्रति अंक डाकव्यय सहित दिया जाता है अन्यों को प्रति अङ्क ॥।) में

मैनेजर जनरल पबलिशिंग कम्पनी मेरठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहली में राजद्रोह का अभियोग।

ला० ब्रह्मानन्द की गवाही

यह महाशय कपड़े के दफ्तर में दल्लाल हैं।

गवाह ने कहा कि मि० पट्टी के प्रश्न पर अवधविहारी ने लिबरटी के परचों से अपरिचय दिखाया

ला० रघुनाथ सहाय वकील के प्रश्नों के उत्तरमें ब्रह्मानन्दने कहा मैं ब्रजलाल इन्सपेक्टर के घर के पास रहता हूँ और जान्ता हूं कि वह वहां एक साल से रहते हैं। मैं उनको जब से जानता हूं जब वह क़ाज़ी के हौज़ वाले थाने में थे, मैंने उनको दरबार से देखा है। मैं उनको ८ वा १० साल से जब कि वह दस्सों के महल्ले में रहते थे जान्ता हूँ। मैं इन्सपेक्टर हामिद उद्दीन को भी आठ साल से जानता हूँ। मुझे पता नही कि यह बक्स ब्रजलाल या किसी और ने खोला था। रघुनाथ सहाय वकील के प्रश्न पर ब्रह्मानन्द ने कहा कि मैंने कमरे में कोई छेद नहीं देखा था यह असम्भव था कि वहां पर छेद देख कर मैं भूलजाता न मैं ने कोई आला टूटा देखा और न कोई नई मरम्मत। मेरी आय १०) से ५०) तक है। आय का कोई टैक्स नहीं दिया गत मास मुझे कुछ आय नहीं हुई तलाशी का गवाह इससे पहले कभी नहीं बना था मोहम्मद-इन्सपेक्टर को उसकी विद्यार्थी अवस्था से जानता हुँ। गिरधारी लाल वकील के उत्तर में कहा कि जब मुझे तलाशी का गवाह बनने को बुलाया मैं ने कुछ आपत्ति नहीं की। उन दिनों मुझे कुछ कार्य न थी। अमीरचंद के घर की तलाशी में इतना समय लगाने से मेरी बड़ी हानि हुई। इन्सपक्टर ब्रजलाल अकेले उस कमरे में गये जिसमें बम की टोपी निकली और ट्रंक आदि बाहर लाये। उनके उठाने में किसी ने उनकी सहायता नहीं की। मैं ने गत्ते का बक्स देखा परन्तु बोतल पर ध्यान न पड़ा।

१६ जून

गुलाब राय की गवाही

१६ जून को गुलाबराय का बयान हुआ। यह ७० वर्ष का बूढ़ा है और एक वकील का मुंशी है। यह प्रश्नों का उत्तर देते हुए प्रायः अंग की बंग की शंग होकने लगता था। इस पर जज साहब ने इसे जुरमाने की धमकी दी तब इसने ब्रह्मानन्द की भांति तलाशी की सारी बातें दोहराई। इसकी आंखें कमजोर थीं इस पर प्रश्न हुआ परन्तु इस बात पर कि इसको दूर से कुछ नहीं देखना पड़ा शान्ति हो गई। गवाह ने बोतल को पहचाना और उस पर अपने हस्ताक्षर बताए। उसने कहा कि एक टाइप रायटर और कुछ कारबन पेपर उस कमरे में पाये गये थे। गवाह ने कहा कि मि० पट्टी ने अमीरचन्द से इन सब वस्तुओं के विषय में पूछा परन्तु अमीरचन्दने इनसे सर्वथा अपरिचय प्रकट किया। मैं कनह्या लाल मुख़्तार का मुंशी हूं। चाहें मैं उनके पास जाऊं वा न परन्तु मुझे ५) रु० मासिक मिल जाते हैं। मैं अपने भतीजे बैरिस्टर और अपने पुत्र से कोई सहायता नहीं लेता।

इतने में चरणदास ने अपनी जायदाद आदि को गिरवी रखने की आज्ञा मांगी इस पर एक दो प्रश्न हुए फिर अभियुक्तों के वकीलों ने गुलाब राय पर प्रश्न करने आरम्भ किये। गुलाब राय ने कहा मुझे याद नहीं कि कौन्सी वस्तु कौन्से कमरे वा सन्दूक में से निकली थी। मैं खुर-शीदअली को ग़दर के समयसे जानता हूं और उसके बेटे मुमताज़ अली को उसके उत्पत्ति दिनसे। मैं कटरा मशरूमें (जहाँ अमीर चन्द का मकान है) कभी नहीं गया अमीरचन्द के घरसे पाव मीलकी दूरि पर रहता हूं। मुझे याद नहीं कि मैंने मुमताज़ अली से यह कहा था कि मैं अंग्रेजी लिख पढ़ नहीं सकता।

ला० रघुनाथ सहाय वकील के प्रश्न के उत्तर में कहा मुझे याद नहीं कि गत्ते के बक्स वाले कमरे की दीवार में कोई छेद था वा नहीं।

हनुमन्त सहाय अभियुक्त के बैरिस्टर मि० रऊफ़ अली के प्रश्न पर कहा कि मैंने गत्ते का बक्स कमरे में देखा था जो टूटा हुआ और खुला हुआ था। मैंने गत्ते का बक्स ट्रंकों के हटाये जाने पर देखा था वह ट्रंकों के पीछे छुपा हुआ था।

१७ जून

आज लफ्टेन्ट करनल मुस्पत विलयम की गवाही हुई आप बमादि वस्तुओं के जाँचने वाले हैं आपने दिल्ली तथा लाहौर वाले बम और अन्य कई बमों को एक जैसा बताते हुए बम के विषय में अनेक बातें कहीं कि इस प्रकार का होता है उस प्रकार का होता है इस रीति से चलाया जाता है। इसके पश्चात् मेजर टुरनर का भी कुछ इसी प्रकार का बयान हुआ। इसके अनन्तर, अभियुक्त अवध-विहारी के घर की तलाशी के गवाह देवामल का बयान हुआ जो इस दिन समय पूरा न होने से पूरा न होसका।

१८ जून

मि० रघुनाथ सहाय ने देवासिंह से प्रश्न किये उसने कहा कि जब में अवध बिहारी के घर से चला मि० पट्टी वहां पर थे। मैंने उसका घर पहिले कभी न देखा था। तलाशी के दूसरे साक्षी सर-फ़राज़ अली को मैं नहीं जानता।

फिर सरफ़राज़ अली की गवाही हुई यह महाशय अवध बिहारी के घर की तलाशी के दूसरे साक्षी हैं।

आपने उत्तर में कहा, मैं पहिले नौकर था अब खाली हूं। मैं दूसरे गवाह का नाम नहीं जानता। मैं देहली में नहीं रहता बादली से आया हूं। यह गांव दिल्ली से कुछ मील दूर पर है। पहिले १५) रु० मासिक का नौकर था। मुझे मालूम नहीं कि अवध बिहारी को जो वारन्ट दिखाया था वह किस मतलब का था।

इसके पश्चात् जवाहर लाल सब इन्स-पेक्टर की गवाही हुई आपने कहा मुझे मि० पट्टी ने १६ फरवरी को मनु लाल को तलाशी लेने की आज्ञा दी, मैंने देवीसिंह, घासीराम तथा रामप्रसाद को गवाही के तौर पर अपने साथ लिया तीन सिपाही मेरे साथ थे: जब हम उसके घर पर पहुंचे वह घर पर न था। हमने मकान में मनुलाल वाले हिस्से में मुहरें लगादीं। अगले दिन मनुलाल घर पर मिला।

फिर सारी तलाशी का हाल सुनाया और गिरधारीलाल वकील के उत्तर में कहा कि मुझे लिबर्टी के परचे के विषय में तलाशी लेने की आज्ञा मिली थी। वारन्ट अंग्रेजी में था।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज चरणदास को अपनी जायदाद आदि गिरवी करने की आज्ञा मिल गई।

वकील ने फिर जवाहरलाल सब इन्सपैक्टर से दिल्ली नगर के अन्य प्रतिष्ठित निवासियों के विषय में प्रश्न किये। इस पर जज साहब ने कहा इस के लिये दिल्ली की डायरेक्टरी देख लो। वकील ने कहा कि इस के पूछने से उसका यह अभिप्राय है कि कई अन्य प्रतिष्ठित पुरुष तलाशी की गवाही के लिये बुलाये जा सकते थे परन्तु नहीं बुलाये गये!

इस के पश्चात् मनुलाल के घर की तलाशी का गवाह घासीराम बुलाया गया। यह ३८ वर्ष का एक बनिया है और दूकान करता है। इसने गवाही दी और कहा मैं निकलने वाली वस्तुओं पर हस्ताक्षर करता जाता था। मैं रघुवर दयाल का १५ मासिक पर नौकर हूं। पहिले कभी तलाशी का गवाह नहीं हुवा था:—

१२ जून

देवी सिंह एक ब्राह्मण नौकर मनुलाल के घर की तलाशी का दूसरा गवाह है उसकी गवाही हुई। उसने कहा मैं अंग्रेजी और उर्दू नहीं जानता मैं हिन्दी जानता हूं। कचहरी से बाहर जाकर खूब प्रकाश में उसने कुछ पुस्तकों पर अपने हस्ताक्षर पहचाने। उसने कहा जब ऊपर के मकान की तलाशी हुई। मैं ऊपर नहीं गया नीचे ही रहा था। हेड कांस्टेबिल बिशन दत्त और इन्सपैक्टर ऊपर गये थे। १७ फरवरी को हेड कांस्टेबिल और अन्य सिपाहीयों की तलाशी नहीं ली गई।

अदालत के प्रश्न पर कहा कि तीसरी वा चौथी अप्रैल को मेरे पास एक सिपाही आया। इन्सपैक्टर ने मुझे एक लिफाफे पर हस्ताक्षर करने को कहा परन्तु मैंने इन्कार करदिया और कहा ऐसा करना अधर्म है। यह वही लिफाफा है जो मुझे कोतवाली में हस्ताक्षर करने को दिया गया था। मैं नहीं जानता कि अब मनुलाल कहां रहता है। हवेली जुगलकिशोर को एक साल हुआ छोड़ दिया था।

इस के पश्चात हामिदउद्दीन इन्सपैक्टर की गवाही हुई। मि० हैडू द्वारा राधामोहन के घर की तलाशी का हाल कह सुनाया और राधा मोहन का काग़ज़ बाहर फैकना भी वर्णन किया—कहा कि जब मैंने लिफ़ाफा पकड़ाया वह इतना भरा हुआ नहीं था उसमें और काग़ज़ थे।

रघुवर दयाल महाशय, राधा मोहन के घर की तलाशी के गवाह हैं। आपने प्रश्नों के उत्तर में कहा कि तीन साल हुए उसका दिवाला निकला था उसको ६५००) का ऋण देना था अमीरचन्द का १०००) रुपया देना था। अब घासी राम तलाशी के दूसरे गवाह के नीचे काम करता है एक समय उसका नौकर था।

२० जून

अभियुक्त हनुमन्त सहाय के घर की तलाशी के साक्षी छब्बू लाल की गवाही हुई। आपने तलाशी का सारा हाल कह सुनाया और ला० शिवनारायण वकील के प्रश्न के उत्तर में कहा कि हनुमन्त सहायके घरके कमरों में वायु प्रकाशादि के लिये दीवारों में रौशनदान बने हुए हैं उनमें लोहे के सीखचे लगे हुए हैं उनमें से प्रायः दो इन्च मोटी किताब अन्दर को बड़ी सुलभता से फेंकी जा सकती है।

सिगेट बेचने वाले मनुलाल की गवाही हुई यह भी हनुमन्त सहाय के घर की तलाशी का साक्षी है। गवाह ने कहा मैं बाज़ारों में सिगेट बेचता हूं मेरी दुकान नहीं है। एक सिपाही ने मुझे गली में घूमते हुए बुलाया था ऊपर के दरवाजे खुले हुए थे पहिले ऊपर की ही तलाशी हुई।

सब इन्सपैक्टर गंगा सिंह की गवाही हुई। आप ने कहा कि मुझे ११ मार्च को मि० पट्टी ने हनुमन्त सहाय के घर में "दि प्रिन्स" नामी पुस्तक के विषय में तलाशी लेने भेजा था। मैंने अपने साथ मुरारीलाल और रामचन्द को साक्षी रूप से ले लिया। नीचे के ताले लगे हुए थे उसकी स्त्री ऊपर रहती थी। नीचे के मकान में एक अलमारी में "दि प्रिन्स" पुस्तक मिलगई। मैं स्वयम् कमरेमें गयाथा।

मि० शिवनारायण वकील ने कहा कि यह पुस्तक गवाह का अपने पाकट में ले जाकर वहां छोड़ देना सम्भव है। जज ने कहा यह कहना अनुचित है।

मुरारीलाल गवाह ने कहा कि मैंने सब इन्सपेक्टर की तलाशी ले ली थी फिर उसने अपना कोट एक ओर रख दिया। मैं बाहर से सब इन्सपक्टरको देख सकताथा कि वह कमरेमें क्या कररहाहै।

रामचन्द गवाह ने भी इसी प्रकार का बयान दिया और कहा जब इन्सपेक्टर साहब कमरे में गये मैं और मुरारी लाल आंगन में बैठे हुए उनकी चौकसी कर रहे थे।

लछमन दास की गवाही हुई उसने कहा एक साल हुआ गनेशीलाल खस्ता की तलाशी का मैं गवाह था। फिर गणपति राय की गवाही हुई। इस गवाह पर कोई प्रश्न नहीं हुए। तदनन्तर बेनी प्रसाद डाकिये की गवाही हुई जिसने मनुलाल के पते पर एक रजिस्ट्री देने को कहा मास्टर मुत्सद्दीलाल ने हनुमन्त सहाय के अपने पुत्र के विषय के कुछ पत्रों की गवाही दी। फिर रामचन्द्र गवाह का बयान हुआ इसने कहा गनेशीलाल खस्ता अमीरचंद का किराये दार है वह श्रीराम की सम्पति का प्रबन्ध करता है और वह मकान उस सम्पत्ति का एक भाग है। उस मकान में आकाश प्रेस था।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना विना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति

तिलक महाराज का पूनेमें स्वागत—६ वर्ष के कारागार के पीछे तिलक महाराज के छूट जाने पर आज सारा देश एक कोने से दूसरे कोने तक आनन्द से विह्वल हो रहा है। हजारों भारतवासी उनका दर्शन करने और उनकी चरणरज को सिर पर धरने पूना जा रहे हैं। जिस दिन तिलक महाराज घर पहुंचे, उस दिन प्रातः काल से ही उनके घर के द्वार पर लोगों की भीड़ जम गई। पर थके होने के कारण वे दर्शन न देसके दर्शन का समय सायंकाल पाँच बजे निश्चित किया गया। सायंकाल को इतनी भीड़ थी कि उन्हें अपने द्वार से बाहिर निकलना कठिन हो गया। उनके देखते ही "तिलक महाराज की जय" से सारा आकाश गूंज उठा। प्रत्येक पुरुष स्वयं जाकर उनके चरण छूना चाहता था। दर्शक लोग कहते हैं कि उनका स्वास्थ्य देखने में अच्छा है और वे प्रत्येक बात का उत्तर मुसकरा कर देते थे।

तिलक महाराज का भावी कार्य क्रम - तिलक महाराज के छूटने पर आनन्द मनाने के लिये महाराष्ट्र में स्थान स्थान पर सभाएं होरही हैं। गत बुधवार को नागपुर में एक विशाल सभा हुई जिस में लोगों ने सरकार का धन्यवाद किया और तिलक महाराज की दीर्घायु के लिये परमात्मा से प्रार्थना की। आदित्यवार को पूने में एक विशाल सभा हुई जिसमें दो तीन हज़ार के लगभग लोग एकत्रित थे। उसमें स्वयं तिलक महाराज पधारे थे। सभा में भाषण करते हुए उन्हों ने कहा कि "मैं ने अभी अपना भावी कार्य क्रम निश्चत नहीं किया है। अभी मैं यह निश्चय से नहीं कह सकता कि मैं जर्मनी जाऊंगा या नहीं। पिछले ६ वर्षों में मेरे जीवन पर जो घटा आई है उस पर बिचार करके मैं निश्चय करूंगा कि आगे अब मुझे क्या करना चाहिये।" सुनते हैं कि लाज महाराज के अभियोग की अपील करने के लिये श्री युत तिलक शीघ्र ही इंग्लैंड जाने वाले हैं।

करांची में महात्मा जी को अभिनन्दन पत्र—करांची से एक संवाद दाता लिखता है—"कुछ दिनों से अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिये महात्मा मुन्शीराम जी करांची आये हुए थे। करांची निवासी पंजाबियों ने १८ जून की सायंकाल को फल भोज से उनका सत्कार किया। यह फल भोज प्रिन्स गार्डन में सायंकाल ७ बजे हुआ। उस फल भोज में नगर के तीन सौ के लग भग प्रतिष्ठित हिन्दू व मुसलमान सज्जन सम्मिलित थे। सारा बाग़ झंडों और झंडियों से सुसज्जित था। सब उपस्थित सज्जन ऐसे धर्मात्मा परोपकारी के दर्शन करके अत्यन्त प्रसन्न हुए। फल भोज से पहिले महात्मा मुन्शी राम जी को एक अभिनन्दन पत्र दिया गया जिसकी प्रति अलग भेजता हूं। अभिनन्दन के उत्तर में आपने एक संक्षिप्त सा भाषण किया। उस में आपने कहा कि भारत वर्ष के और प्रान्तों की अपेक्षा भारत वर्ष में एक विशेषता है। पंजाब में प्रान्तिक भाव सब प्रान्तों से कम है। पंजाबियों के हृदय संकीर्ण प्रान्तिक भावों से संकुचित नहीं होते। यदि पंजाबी संकीर्ण हृदय वाले होते तो आज वह गुरुकुल, जिसकी बुनियाद पंजाबियों के पुरुषार्थ से पड़ी है सब प्रान्तों के लड़कों को अपनी गोद में न रख सकता। उसी पंजाबी उदारता का प्रताप है कि आज गुरुकुल में सभी प्रान्तों के लड़के विद्या व्रत का पालन कर रहे हैं। मैं इसे पंजाबियों का गौरव समझता हूं। मैं ने आज तक इस गौरव को स्थिर रखा है और आगे भी स्थिर रखने का यत्न करूंगा। भाषण हो चुकने पर उपस्थित सज्जनों का ताज़ा फल, मिठाई, और बर्फ आदि से सत्कार, किया गया। अभिनन्दन एक चांदी की तश्तरी में दिया गया था।"

निर्बल सेवक—कुछ दिन हुए, हमने यह समाचार दिया था कि देहरादून से राजा महेन्द्र प्रताप एक पत्र प्रकाशित करने वाले हैं जिसका नाम निर्बल सेवक होगा। उसी निर्बल सेवक का पहिला अंक हमें प्राप्त हुआ है। पहिले अंक में एक पृष्ठ समाचार हैं और शेष पृष्ठों में निर्बल सेवक की भावी नीति का उल्लेख है। सम्पादक का कथन है कि निर्बल सेवक अपने नाम के अनुसार निर्बलों के अधिकारों की रक्षा करने वाला होगा विशेषतया यह पत्र किसानों और स्त्रियों का पक्ष करेगा। राजा साहब का स्वयं किसानों के साथ बहुत सम्बन्ध है। किसानों के साथ जो अत्याचार होते हैं उनका वर्णन करने वाला राजा साहब से बढ़कर मिलना कठिन है। राजा साहब विद्वान् हैं और उनके हृदय में निर्बलों के लिये विशेष प्रेम है। हमें पूरी आशा है कि इनकी सम्पादकता में यह पत्र सचमुच ही निर्बलों का सहायक होगा। इसका वार्षिक मूल्य २) है और "निर्बल सहायक" कार्यालय, देहरादून से मिल सक्ता है।

सरकारी गवाह पर आक्रमण—कलकत्ते का २० जून का तार एक दुर्घटना सुनाता है। ढाका के राजद्रोह के अभियोग में नरेन्द्र नाथ सेन सरकारी गवाह बन गया था। तभी से राजद्रोही उसके प्राण घात का यत्न कर रहे थे। नरेन्द्रनाथ इनसे बचने के लिये घटा गंग चला गया था परन्तु इन्हों ने वहाँ भी इसका पीछा नहीं छोड़ा। १९ जून को सायंकाल को उस पर गोली चली। वह उस समय सत्येन्द्र नाथ सेन के साथ एक बाईसिकल की दूकान से निकल कर सदर घाट की सड़क पर डाकखाने के पास जा रहा था। नरेन्द्र ने अपने पीछे किसी के आने का शब्द सुना और पीछा मुड़कर एक आदमी को अपने ऊपर गोली चलाने के लिये उद्यत पाया। वह पीछे हट गया और उसका साथी सत्येन्द्र मारा गया। यह दाल घाट का रहने वाला स्थानिक चुंगी विभाग में उम्मेदवार था नरेन्द्र एक मिठाई वाले की दुकान में छुप गया। दूसरी गोली चली परन्तु वह फिर भी बच गया और गोली दुकान में लगी। सड़क के आदमी बड़े घबरा गये थे और हत्यारों को पकड़ न सके। परन्तु सुना है तीन आदमी उत्तर की ओर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भागते हुए देखे गये थे। नरेन्द्र ने पुलीस को कुछ पुरुषों के नाम बताये हैं जिन पर उसे हत्या के विषय में सन्देह है। पुलिस बड़े यत्न से ढूंढ रही है। नरेन्द्रकी हत्या का यह दूसरा यत्न है।

मौलवी साहब का फिर मुंह बन्द—कलकत्ते के मौलवी लियाकत हुसैन स्वदेशी के सुप्रसिद्ध प्रचारक हैं। अनेकानेक कारणों से आपको यथावसर सरकार की ओर से व्याख्यान न देने की आज्ञा मिल जाती है। अपने बढ़े हुए उत्साह के कारण कई बार आप दंड भी पा चुके हैं। अब अन्तिम बार आपको छः मास चुप रहने की आज्ञा मिली थी। यह अवधी ३ जून को समाप्त होने वाली थी और आशा थी कि आप एक बार फिर स्वतन्त्रता पूर्वक व्याख्यान देने का आनन्द पावेंगे परन्तु १७ जून को पुलिस के डि० कमिश्नर ने स्वयम् आप के घर पर आकर एक आज्ञा पत्र दिया जिसके अनुसार आपको एक वर्ष तक फिर मुंह सीना पड़ेगा। देखिये, एक वर्ष पीछे कितने दिन ज़बान को लगाम देने की आज्ञा मिलती है।

ग़दर दी गूंज—१० जून को शिमले में सरकार की ओर से विशेष गज़ट निकला है। इसमें समुद्र या पृथिवी द्वारा वृटिश भारत में "गदर दी गूंज" नामक पुस्तक लाने को रोका गया है। यह पुस्तक सान फ्रनसिसको (अमरीका) के युगान्तर आश्रम में छपी है।

नाभा राज्य में सर प्रतूलचन्द्र चटरजी—सरप्रतूलचन्द्र चटरजी नाभा राज्य में दीवान नियत हुए हैं। आप पंजाब में ही कार्य्य करते २ बूढ़े हुए हैं। आपकी विद्या और अनुभव निस्सन्देह इसी योग्य था, इस पर टिप्पणी निरर्थक है परन्तु सन्देह इस बात का है कि आपकी वृद्धावस्था इस कार्य में बाधक तो नहोगी।

वोटाभिलाषिणी स्त्रियों का डिपुटेशन—अभी हाल में वोटाभिलाषिणी स्त्रियों का दल इंग्लैन्ड के प्रधान मन्त्री मि० एस्क्विथ की सेवा में उपस्थित हुआ था। मि० एस्क्विथ ने डेपुटेशन का स्वागत करते हुए कहा—"यदि स्त्रियां अपनी बुरी करतूतों को छोड़दें तो उनको भी पुरुषों की भांति सम्मति का अधिकार मिलजायगा। और यद्यपि इन दंगों को दबाना आवश्यक है तथापि स्वतन्त्रता पूर्वक व्याख्यान देने की प्रणाली को हम रोकना नहीं चाहते।"

"फिरंगी का फरेब"—फिरंगी का फरेब" नामक टैक्ट को संयुक्त प्रान्त के छोटे लाट ने ज़प्त कर लिया है। यह पुस्तक उर्दू में लिखी गई है। इसमें ऐसे शब्द हैं जो भारत सरकार के प्रति घृणा उत्पन्न करते हैं।

वायु यान पर आपत्ति—२० जून को कोप्टरटिंग नामी एक बेलून ६०० फुट की ऊचाई पर जाकर फट गया। उसमें एक कप्तान चार लेफटेन्ट, एक समुद्र विभाग का अफसर, एक इंजिनियर और दो सिपाही थे। वे सब मरगए। यह बेलून के ओनिगस्वर्ग की ओर वायु में फोटो लेने के लिये चढ़ा था। आध घंटे पीछे एक और व्योमयान ने उसका पीछा किया। व्योमयान ने उसके चारों ओर चक्कर लगाया और उसमें एक छेद कर दिया जिससे बेलून में आग लग गई।

आयुर्वेदोन्नति—देहली नवीनायुर्वेदीय कालेज के अध्यक्ष डा० बी० के० मित्र लिखतेहैं:—आज कल देश के भिन्न २ प्रान्तों में इसके लिये यत्न हो रहा है। कलकत्ता, बनारस, जयपुर, मदरास, दिल्ली, लाहोर आदि शहरों में आयुर्वेद के विद्यालय स्थापित हुए हैं। इनके अतिरिक्त आयुर्वेद महामण्डल आदि कितनी ही समितियाँ इस की उन्नति के लिये कटिवद्ध हुई हैं। तथापि पाठ्य क्रम के विषय में इन सब में मतान्तर है। लेखक ने इस विषय में दिल्ली के नवीनायुर्वेदीय कालिज के लिये देश के प्रसिद्ध २ आयुर्वेदज्ञ पण्डितों से पत्र व्यवहार किया है। और इस परिणाम को पहुंचा है—कि अधिक विद्वज्जन सम्पूर्ण आयुर्वेदीय शिक्षा के निमित्त इस के लुप्त उपांगों को डाक्टरी से लेलेने की सम्मति प्रदान करते हैं। कविराज गणनाथ सेन महोदय ने शरीर का १ भाग डाक्टरी मतानुसार सम्पूर्ण किया है। और पेथालोजी अर्थात् रोग विज्ञान ग्रन्थ की पाण्डुलिपि अभी समाप्त नहीं हुई है। मदरास निवासी पं० डी० गोपाला चार्लू महोदय ने अपने अपने आयुर्वेदीय कालिज में "फिज़िक्स, केमिस्ट्री, अनोटमी, फिज़ियालोजी, मेटीरिया मेडिका, मेडीफरी आदि जारी किया है" इस से यह प्रतीत होता है कि दिल्ली के आयुर्वेदीय कालिज ने ही डाक्टरी उपांगों की आवश्यकता अनुभव की है—परन्तु अब प्रश्न यह है कि इन उपांगों की शिक्षा देने के लिये कौन पन्थावलम्बन करे। इस लिये विनीत लेखक सब विद्वज्जनों की सेवा में निवेदन करता है कि, डाकटरी शास्त्र पर छोटी २ पुस्तकें अभी से लिख कर छपवानी चाहियें। परन्तु इस में इतना व्यय होगा कि कोई भी संस्था अपने आप उठा न सकेगी। अतः लेखक का यह प्रस्ताव है कि यदि सब आयुर्वेदीय संस्थाएं मिलकर इस कार्य के सम्पादन में अग्रसर हों तो यह अति शीघ्र सम्पूर्ण हो सकता है लेखक की सम्मति यह है कि, भिन्न २ संस्थाएं किसी एक प्राकृतिक भाषा में यथा हिन्दी द्वारा एक २ विषय पर एक पाठ्योप योगी पुस्तक तैय्यार करावें। जिस के ५०० छपने में पांच छः सौ रुपया व्यय होगा। परन्तु देहली, गुरुकुल कांगड़ी, पीलीभीत, लाहौर डी० ए० वी० कालिज आदि की संस्थाएं १ वर्ष के अंदर एक २ पुस्तक तैयार करा लें। और आपस में असली मूल्य पर बांट लें तो इन सब संस्थाओं को १ ही वर्ष के उद्योग में और थोड़ी सी मुद्रा के व्यय से बहुत दिनों के लिये डाक्टरी पुस्तकों की आवश्यक्ता न रहेगी। दिल्ली के नवीनायुर्वेदीय कालिज ने मेटीरिया मेडिका अर्थात्—द्रव्यगुण का पूर्वांश फारमेसी, अर्थात् औषध प्रक्रिया तैयार करना प्रारम्भ किया है। यदि और संस्थाए इसी रीति से डाक्टरी विषयों के अन्य २ भागों को लिखवाकर मुद्रित कर सकें तो सब आयुर्वेदीय संस्था को तथा देश को इस से लाभ होसक्ता है। मैं आशा करता हूं कि जो महोदय आयुर्वेद में अनुराग रखते हैं, वह इस विषय पर अपना मत प्रकाश करके विनीत लेखक को विदित करेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीय निबन्ध माला

यह निबन्ध माला हिन्दी साहित्य में एक अपूर्व चीज़ है। इसमें बड़े बड़े विद्वानों के निबन्ध प्रकाशित होंगे जो पुस्तकाकार छपेंगे, माला का पहिला निबन्ध तय्यार है जिसका नाम

राष्ट्रों की उन्नति

है। निबन्ध क्या है, सारे संसार के इतिहास का सार है। यह निबन्ध इतना उपयोगी समझा गया है कि कई लोगों ने इसकी पचास पचास कापियां लेकर मुफ्त बाँटी हैं। मूल्य ।)

२. राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र–ले० इन्द्र वेदालंकार। पहिले निबन्ध का यह उत्तर भाग है। (छप रहा है)

३. महाराष्ट्र का उदय–ले० श्री श्री पाद दामोदर सातवलेकर (तय्यार हो रहा है)

४. अमरीका के सिर मौर–ले० बाबू जगन्नाथ खन्ना बी एस० सी (अमरीका) (तय्यार हो रहा है)

विकासवाद

या

इवोल्यूशन थ्यूरी

प्रो० वि० ग० साठे एम० ए० गुरुकुल कांगड़ी कृत

विकासवाद सारे विज्ञान का आधार है। आज कल विकासवाद से अनभिज्ञ रहना अनपढ़ होने का चिन्ह समझा जाता है। तो लीजिये ये पुस्तक पढ़िये। पत्रों और विद्वानों ने मुक्त कंठ से इस पुस्तक की प्रशंसा की है। इसमें ३३ हाफ़टोन चित्र हैं मूल्य केवल २)

प्रबन्धकर्ता

सद्धर्म्म प्रचारक पत्र, देहली

सद्धर्म्म प्रचारक

वैदिक धर्म को सर्व प्रिय बनाओ।

(ले० इन्द्रवेदालंकार)

(२)

सर्व साधारण में किसी धर्म का प्रचार हो, इस के लिये आवश्यक है कि वह उनकी समझ में आ सके। यदि कोई बात लोगों की समझ में नहीं आती, तो उस की दो में से एक ही गति होगी। या तो वह पोथी वाले पण्डितों के ही मुखों में रहेगी, और प्रजा के हृदय में प्रविष्ट न हो सकेगी। अथवा सर्व साधारण की कल्पना शक्ति उसे घसीट घसीट कर ऐसे स्थान पर ले जायगी, जहाँ वह अच्छी तरह दीखने लगे। उस के लिये अपने ऊंचे स्थान पर रहना भी और फिर लोगों द्वारा गृहीत भी होना ये दो परस्पर विरुद्ध बातें हैं। दृष्टान्त के लिये आप देवता-वाद को ले लीजिये। लोगों के सामने आप एक परमात्मा का विचार रखिये और उन्हें बतलाइये कि वह एक है, वह महान् है, उनके पूरा पूरा समझ में न आयगा। फिर आप उन्हें बतलाइये कि वह हम सब का पिता है। सर्व साधारण एक स्वर पुकार उठेंगे कि 'महाराजठीक है–समझ में आगया' परमात्मा को हम उस के दिव्य-स्थान से खेंच निचले लौकिक पिता के स्थान पर ले आये तो लोगों की समझ में आगया।

परमात्मा की अनेक शक्तियाँ हैं। किसी ज्ञानी ने लिखा कि वह परमात्मा अनेक शक्तियों वाला है, उसके इन्द्र वरुण आदि सैंकड़ों नाम हैं। एक परमात्मा को समझना लोगों के लिये सहल था किन्तु उसकी सैंकड़ों शक्तियों का समझना उनकी बुद्धि की दौड़ से बाहर है। शक्तियों के सम्बन्ध में कठिन और सूक्ष्म विचार उन्हें भूल जायंगे और इन्द्र वरुण आदि अनेक नामों को अपनी बुद्धि की पहुंच तक लाने के लिये वे शरीर धारी देवताओं की कल्पना कर लेंगे। विकासवाद के वर्तमान रूप को ही अन्तिम प्रमाण मानने वाले, और आज कल की मनुष्य सृष्टि को ही स्वर्गीय समाज समझने वाले पुरुष शायद कहेंगे कि यह विचार ठीक नहीं, क्यों कि एकेश्वरवाद पीछे होता है और शरीर धारी देवताओं में विश्वास मनुष्यों की पूर्व और अशिक्षित दशाओं का परिणाम है। किन्तु जिन्हों ने मनुष्य समाज के इतिहास के पृष्ठ निष्पक्षपात रीति से देखे हैं उन्हें ज्ञात है कि उठना और गिरना दोनों ही मनुष्य समाज की स्वाभाविक दशायें हैं। यह स्पष्ट एक चक्र है, जिसका एक भाग जो आज ऊपरको जाता है कलको नीचे आरहा होगा।

सारांश यह कि ऊंचे और मौलिक विचार यदि लोगों के सामने बहुत ही सुगम रीति से न रखे जांय, तो दो में से एक परिणाम होगा। या तो उन विचारों और सिद्धान्तों का प्रचार न होगा और या सर्वसाधारण उसे मोड़ तोड़कर ऐसे रूप में ले आयंगे, जिस से वह उन के बुद्धिरूपी कोष्ट में बिना किसी रुकावट के घुस सके।

धार्मिक इतिहास की तहें खोदें तो हम इसी परिणाम पर पहुंचते हैं। जब संस्कृत लोगों की भाषा थी, उसका ऊपर से लेकर नीचे तक सबको ज्ञान था उस समय ब्राह्मणों या उपनिषदों के कहे हुए धर्म ठीकरीति से पाले जाते थे। जो भाषा अपनी मातृभाषा या कम से कम मानसिक भाषा न हो, उसका तात्पर्य ठीक ठीक समझ में नहीं आसकता। मानसिक भाषा वह भाषा है जिस में हम विचार करते हैं, और बोलते हैं। वह भाषा जिस में हम बोलते तो हैं किन्तु विचार नहीं करते, जिव्हा की भाषा कहाती है। जब संस्कृत जिव्हा की भाषा रह गई, लोगों ने उपनिषदों के धर्म को या तो भुला दिया और या उसके ऐसे अर्थ किये, जो उपनिषत्कारों ने सपने में भी न सोचे होंगे। लोगों ने उन्हें सुबोध बनाने के लिये बिल्कुल पलट डाला।

इधर बौद्ध धर्म पर दृष्टि डालिये। जितना शीघ्र बुद्ध देव के धर्म ने उन्नति की थी, इतना शीघ्र शायद ही किसी और धर्म ने उन्नति की हो। इस का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारण क्या था ? कारण यही था कि बुद्ध देव ने किसी पुरानी भाषा का आश्रय न लेकर धर्म का प्रचार लोक भाषा में किया। और फिर उसने अपने सिद्धान्तों को कैसा सरल बनाया। पीछे से बौद्ध धर्म ने जो रूप पकड़ा, उसके लिये बुद्ध देव उत्तर दाता नहीं हैं, किन्तु अपने समय में बुद्ध देव का धर्म बहुत ही सरल था। लम्बे चौड़े पेचीदा आध्यात्मिक झगड़ों से उसका कोई सम्बन्ध न था। वह एक आचार शास्त्र का प्रचार करता था, जिसे बैलों को हांक कर पेट भरने वाला मज़दूर भी समझ सकता है। सिद्धान्तों की सरलता, और उस पर फिर लोक भाषा—यदि बौद्ध धर्मका विस्तार भी आश्चर्य है, तो आश्चर्य क्या नहीं ?

जिन धर्मों का फैलाव हुआ है, वे लोक भाषाओं में ही प्रचारित होते रहे हैं। शङ्करकानवीन वेदान्त केवल दर्शन रहा, जबतक उसका प्रचार लोक भाषा में न हुआ। वह काशी के पण्डितों की तकियों में बन्द रहा जबतक लोकभाषा के लेखकोंने उसे सर्व प्रिय नहीं बनाया। आज नवीन वेदान्त भी अपना नाम धर्मों में लिखाने लगा है। सिख धर्म के प्रचार का भी यही कारण था। विचार सरल हों तो ऐसे—और लोक भाषा का उचित प्रयोग हो तो ऐसा। गुरु नानक ने जैसी जाति में प्रचार किया, उस जाति के अनुकूल ही भाषा का उपयोग किया। साथ ही उन्हों ने अपने सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को भी पेचीदा नहीं बनाया।

ऋषि दयानन्द का आर्य भाषा में सत्यार्थप्रकाश लिखना, और वेदों का भाष्य करना यह सूचित करता है कि वे इस बात को स्वीकार करते थे। दूर दर्शी ऋषि ने देख लिया था कि लोग उसी बात को मानते हैं, जो उन्हें समझ में आजाय। उसका विचार था कि वह पुरातन वैदिक धर्म को सरल लोक भाषा में कर डाले वह लोक भाषाके प्रयोग को आवश्यक समझता था। इस सिद्धान्त को समाज की दशा पर हम आगे जाकर घटाएंगे, यहां हम एक और निवेदन किया चाहते हैं। वैदिक धर्म उतना ही सरल है जितने सरल और धर्म होसक्ते हैं। ईश्वर, और वेद, इन दो के सिवाय और कोई वस्तु वैदिक धर्म में माननीय नहीं। हमारा आचार शास्त्र बहुत ही सरल है—उसमें कोई पेच नहीं। व्यक्ति गत धर्म के १० लक्षण आश्रम व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था—इन तीन शीर्षकों के नीचे हमारे सब कर्तव्य कर्म आजाते हैं। ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म का ऐसा ही सरल स्वरूप हमारे सान्हने रखा था। यदि ऋषि के कार्य में थोड़ी बहुत सफलता हुई है, तो उस के दो ही कारण हैं। प्रथम कारण ऋषि द्वारा प्रकाशित किये हुए वैदिक धर्म की सरलता संक्षिप्तता और सुगमता है और दूसरा कारण प्रचार के लिये लोक भाषा का प्रयोग है। ये दो कारण ऋषि को जीवन में सहायक हुए थे अबतक आर्य समाज का जो कुछ काम हुआ है, उसमें इनका बड़ा भारी भाग है, और आगे की उन्नति भी इन्हीं कारणों पर आश्रित है।

मद्रासमें वैदिक चूड़ाकर्मसंस्कार

३१ मई को नं० ७० चैना बज़ार रोड़ मद्रास के निवासी श्रीमान् माणक जी० बो० शर्मा जी के द्वितीय पुत्रका चूड़ाकर्म बेंगलूर आर्य समाज के मन्त्री शेषगिरि शर्मा ने विधिवत् कराया, इस शुभ अवसर पर आपके इष्ट मित्रों सजातियों आर्य बान्धवों को यज्ञान्न परम सुशोभित था माणक जी ने सब को भोजन से सत्कार किया और सामाजिक संस्थाओं को दान दिया:—

शेषगिरि शर्मा मन्त्री आर्यसमाज
बेंगलूर—छावनी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

समस्त हिन्दी प्रेमियों से सविनय प्रार्थना है कि सम्मेलन सम्बन्धी पत्र व्यवहार करते समय केवल "मंत्री, स्वागतकारिणी समिति, पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, चौक लखनऊ" के पते से ही पत्र भेजा करें।

किसी व्यक्ति विशेष के नाम से पत्र न भेजें। भवदीय गोपाबलाव

बालकों में भाषा का विकास।

(ले० डा० लक्ष्मीपति एल. एम. एस.)

बहुधा लोक में भाषा के कार्य को विचारों तथा रक्षों का व्यक्त करना मात्र माना गया है। परन्तु इसके अतिरिक्त एक कार्य्य और है। हम लोग दूसरों के प्रति भाषा द्वारा केवल अपने भावों का प्रकाश नहीं करते हैं प्रत्युत उनमें साथ ही कार्य करने की उत्तेजना को जगाते भी हैं। जैसे—जब हम यह कहते हैं कि "पंखा खेंचो" तो यहां हम सुनने वाले में किसी प्रकार का विचार नहीं उत्पन्न करते हैं। उसे कार्य करने के लिए प्रस्तुत करते हैं क्योंकि आदेश पाते ही वह कार्य्यारम्भ कर देता है। इसी प्रकार जब किसी ने कहा कि तुम अमुक कार्य्य करो तो हम उस कार्य्य में शीघ्र ही संलग्न हो जाते हैं। पश्चात् यह सब कार्य्य स्वाधीन गतिक(Automatic) हो जाते हैं। बालकों में भी प्रथम विचार शक्ति की प्रौढ़ता नहीं होती है वे तो स्वभावतः अनुकरण शील (Imitative) होते हैं। प्रायः उनकी भाषा मनुष्यों के स्वाभाविक विहारों (NaturalCries) से ही विकसित होती है। जैसे दीर्घ निश्वास (Groan) सर्प निश्वास (Hiss) गर्जन (Grunt) निनाद (Shout) इत्यादि है। विकास का प्रथम पद यह है जबकि ये सब ध्वनिओं का अन्तक्षेपण (Interjection) आह ओह ऊह ना आदि में परिवर्त्तन होता है। पश्चात् इन निपातों (Interjections) में जब विभिन्न स्वर समूह (Tones) का मेल होता है और जब ये क्रमशः सिद्ध अवस्थित होजाते हैं तब अन्त में शब्द स्पष्ट और व्यक्त उच्चारण योग्य हो जाता है।

भाषा समझने की शक्ति उसके प्रयोग करने में सामर्थ्य से पूर्व ही किसी जाति में अथवा व्यक्ति में उद्भासित होती है। यदि इस बात की सत्यता का निश्चय करना हो तो किसी बालक में उसके जीवन के पहले तीन वर्षों में भाषा के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विकास को सावधानता से देखिये। सब से सुगम रीति यह है कि आप उस बच्चे के साथ निवास करें, और जिन २ शब्दों का प्रयोग वह बालक करे उनकी एक सूची बनालें। इससे यह पता लग जायगा कि अमुक शब्द को प्रथम अमुक तिथि को बालक प्रयोग में लाया। इसी रीति से यदि हम विवेचनाओं का निदर्शन बनालें तो हमें ज्ञात हो जायगा कि किस प्रकार बालक की शक्ति भाषा बोलने में उत्तरोत्तर बढ़ती है।

साधारणतः सब ही बालक प्रथम आठ मासों में एक प्रकार की भाषा विषयक पूर्वावस्था (pre-linguistic stage) प्रदर्शित करते हैं। प्रथम मास में तो बालकों के क्रंदन का अर्थ तक साफ २ प्रतीत नहीं होता है। कभी २ माता को ही अर्थ ज्ञात हो जाता है कि बालक दुःख से पीड़ित हो रो रहा है अथवा भूख से व्याकुल है। किन्तु अन्य पुरुषों को बालक के रोने से कोई विशेष बात का पता नहीं चलता है। स्वरों में 'आ' तथा "क" का उच्चारण बालक सहज में करता है। उसी प्रकार "म, प और द" को भी बालक सुगमता से बोलने लगता है। इन व्यञ्जनों और स्वरों के मेल से छोटे २ शब्द जैसे मामा, दादा, पापा इत्यादि बन जाते हैं और बालक इन शब्दों को सहज में ही बिना प्रयास के बोलने लग जाता है। "मा-मा" शब्द माता के अर्थ से लिया गया है। सारी सृष्टि में इस शब्द को बालक बड़े मधुर ध्वनि से उच्चारण करते हैं और माताएं बड़े प्रेम से सुनती हैं और आह्लादित होती हैं।

बालकों का प्राथमिक प्रति वचन (response) शब्दों के प्रति नहीं होता क्योंकि वे उनके अर्थों को नहीं जानते हैं। वे तो भिन्न २ शारीरिक चेष्टाओं (gestures) लयों (intonations) वदन विकृतियों (grimaces) तथामुग्धाभिनयों (Pantomimes) द्वारा माता के तथा दूसरों के भावों को जानकर ही अपनी चेष्टाओं द्वारा प्रत्युत्तर देते हैं। यदि मा अपने बालक को प्रसन्न वदन हो शान्त मूर्ति धारण कर कहे कि "बेटा तुम बड़े खोटे लड़के हो" तो बालक उसकी मुग्ध मयी मुख माधुरी को देखकर, शब्दों के यथार्थ भाव को न जानते हुए, मुदित हो खिलखिलाती हुई हंसी से ही उत्तर देगा। परन्तु उसी ही बालक को यदि कर्कश शब्दों द्वारा कैसी ही अच्छी बात कही जावे तो वह डर कर रुदन करने लगता है।

यह सम्भव सा प्रतीत होता है कि प्रथम २ शब्दों को बालक नहीं सुनता है और यदि कुछ उसे सुनाई देता है सो किंचित अपूर्ण मात्र ही। आप जिस प्रकार विदेशी भाषा को सुनकर विषय ग्रहण करते हैं उसी प्रकार बालक भी अनुभव करता है। उसे एक प्रकार का गुंजित अस्पष्ट संभ्रम (Buzzing confusion) स्पष्ट प्रतीत होता है। पुनः शनैः २ कितने ही अभ्यासों के पश्चात् शब्द व्यक्त और स्पष्ट जान पड़ते हैं। तो यह कई एक आलोचकों का मत है कि हम लोग अपनी मातृ भाषा में किसी भाषण को सुनते समय सारे शब्दों को कर्ण कुहर में स्पष्टरूप से श्रवण नहीं करते हैं। बहुत से शब्द तो यों ही अस्पष्ट और दूषित प्रतीत होते हैं, परन्तु अपनी विद्या तथा पूर्वानुभावों से अर्थ निकाल ही लेते हैं।

भाषा के व्यवहार में तो बहुत स्थलों पर अर्थ का समावेश शारीरिक चेष्टाओं तथा लयों पर ही निर्भर होता है। बालक तो इन्हें सदा ही प्रयोग करते हैं। यथा "मा" कहने से "मा मुझे दूध पिलादेवा "मा मुझे गोद लेले" दोनों ही भाव निकल सकते हैं। भावों का निकलना तो उनके उच्चारण विधि पर स्थित है।

भाषा का विशेष सम्बन्ध तो मन से मनतक भावों का पहुंचाना ही है, कारण साधारणतः और सभी स्थलों में भाषासे हम वाक्य का ग्रहण करते हैं। जब किसी से अपने भावों को दूसरों के प्रति बतलाना होता है हम वाक्यों का ही शरण लेते हैं। प्रायः यह भी देखा गया है कि कभी २ वाक्य के बदले हम एक शब्द मात्र के ही प्रयोग से अपना भाव जनाते हैं। भाजा देना हो तो वहां नौकर से "छाता" कह देना पर्य्याप्त है क्योंकि "छाता" शब्द से उसे यह भाव प्रतीत होताहै कि "मेरा छाता लेआवो"। बालक इसी प्रकार शैशवावस्था में शब्दों को बोल कर उनका प्रयोग सीखता है। जितने शब्द माता पिता तथा अन्य सम्बन्धियों द्वारा उसके सन्मुख बोले जाते हैं वह उन्हें उसी भाँति बोलना अनुकरण करता है। प्रथम तो बालक नाम अथवा विशेष्य (nouns) का ही प्रयोग सीखता है। जब डेढ़ वर्ष का हो जाता है तब विशेषण पदों (Adjectives) की ओर उसका ध्यान जाता है। खाद्य पदार्थों के साथ वह ऐसे शब्द जोड़ने लगता है जैसे कि गर्म, ठंडा, मीठा अच्छा इत्यादि इसके पश्चात् जब कुछ अधिक वयस हो जाता है तो वह क्रिया विशेषण अथवा अव्यय (Adverb) का प्रयोग भी सीखने लगता है। यहां वहां कहां इत्यादि शब्दों का बोलना सीखता है। इसके उपरान्त उपसर्ग (proposition) और संयोग (Conjunction) की ओर उसकी गति होती है। शनैः २ बालक स्पष्ट बोलने लग जाता है॥

(क्रमशः)

॥ सूचना ॥

श्रीनगर आर्य्य समाज का वार्षिक उत्सव २१ अगस्त से २४ अगस्त तक।

६ भाद्रपद से ९ भाद्र पद १९७१ को सब आर्य समाजों के मन्त्री महाशयों की सेवा में निवेदन है कि वह कृपया सभासदों को सूचना देदेवें कि यदि कोई महाशय गरमी के अवकाशों में श्रीनगर आने की इच्छा रखते हों तो कृपा करके इन तिथियों पर जरूर पधार हमें कृतार्थ करें। इस मास में श्रीनगर में बड़ी रौनक होती है और वायू और जल से वनार्थ भी यह मास अति उत्तम होताहै

भवदीय

शिवनाथ मन्त्री आर्यसमाज

अमीराकदल श्रीनगर

कश्मीर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य संसार

अर्थ शास्त्र प्रथम भाग—गुरुकुल कांगड़ी के अर्थ शास्त्रोपाध्याय प्रो० ह बालकृष्ण एम० ए ने अर्थ शास्त्र पर ऐसा उत्तम और ज्ञानदायक ग्रन्थ लिखना आरम्भ करके निःसन्देह उत्साह और साहस का भाव दिखलाया है। आज कल वैसे तो सभी विद्याएं उन्नति कर रही हैं, किन्तु अर्थ शास्त्र को एक विशेष गौरव मिल रहा है, जो अन्य शास्त्रों के भाग्य में नहीं है। कारण यह है कि प्रतिदिन लोगों और राष्ट्रों के जीवन सामाजिक होते जाते हैं। भारत वर्ष में अभी बहुत पढ़े लिखे लोगों को छोड़ कर और कोई इस शास्त्र का नाम भी नहीं जानता। देश की आर्थिक दशा को जानना सामाजिक संसार में घुसने के लिये प्रथम सीढ़ी है। ऐसे आवश्यक विषय पर पुस्तकों का अभाव हिन्दी के भण्डार को बहुत संकुचित कर रहा है। प्रो० बालकृष्ण जी इस उपयोगी विषय पर एक उत्तम पुस्तक लिखना चाहते हैं जो शायद तीन या चार भागों में समाप्त होगी। यह उनका प्रथम भाग है, और इस में अर्थ शास्त्र के चार खण्डों में से प्रथम उत्पत्ति विषयक खण्ड की व्याख्या है। पुस्तक के लेखक अपने विषय के पण्डित हैं, विषय का प्रतिपादन पाण्डित्य के अनुसार ही हुआ है। यद्यपि लेखक ने अर्थशास्त्र का विषय विभाग कुशलता से रक्खा है और कई नये शास्त्रों के समान उपयोग स्थान नहीं दिया तथापि अन्य विचार में नये से नये मार्ग का अवलम्बन किया है। सिद्धान्तों को समझाने के लिये बीच बीच में देशों की आर्थिक व्यवस्था की गणनाएं खूब दी गई हैं। दी हुई गणनाओं में अधिक संख्या भारतवर्ष के सम्बन्ध में ही हैं। भारतवर्ष में वर्षा की मात्रा, उत्पत्ति का भारत में क्षेत्र, इंग्लैंड और भारत में खनिज पदार्थ, भारत में शिक्षा की उन्नति, भारत में पेशों का विभाग—इत्यादि विषयों को बताने के लिये तालिकाएं दीगई हैं, जिन्हें ग्रन्थकर्त्ता ने ब्यौरे के नाम से पुकारा है। इन ब्यौरों से पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़गई है। यद्यपि कहीं २ ये ब्यौरे आवश्यकता से भी अधिक दिये गये हैं, और ऐसा प्रतीत होता है कि मानो ब्यौरे के लिये ही ब्यौरा दिया गया हो, तथापि उनसे पुस्तक की उपयोगिता में न्यूनता नहीं आई। हां, पुस्तक का आकार उन के कारण थोड़ा बहुत अवश्य बढ़गया है।

पुस्तक अर्थ शास्त्र के विद्यार्थियों के लिये तो उपयोगी है ही, साधारण जनता को भी इससे बहुत लाभ होसकता है। उनको भी इस ग्रन्थ के पढ़ने से देश की आर्थिक दशा का बहुत कुछ परिज्ञान होसकता है। पुस्तक की भाषा भाव प्रकाशित करने के लिये खासी अच्छी है। कहीं २ अस्पष्टता रहगई है, जो अगले संस्करण में दूर होसकेगी। छपाई काग़ज़ आदि उत्तम हैं।

पुस्तक उपादेय है, और प्रत्येक भारतवासी के पुस्तकालय में होनी चाहिये। भाषा को सुगम बनाने की ओर और भावों को सुबोध करने में लेखक ने विशेष यत्न किया है। हां एक छोटा सा निवेदन हम लेखक महाशय से अवश्य करेंगे।

यह पुस्तक यह समझ कर लिखी गई है कि इस के पढ़ने वाला (१) अर्थ-शास्त्र के साधारण सिद्धान्तों को पहिले से जानता है और (२) साथ ही उसे पढ़ाने वाला और समझाने वाला कोई उपाध्याय भी सब के पास विद्यमान है। नहीं तो ५ वें पृष्ठ पर राष्ट्रीय अर्थशास्त्र की व्याख्या में जो सत्रह बातें बतलाई गई हैं, वे शास्त्र के नये विद्यार्थी के लिये सुगम नहीं हैं। वहां पर यदि ज़रा सा समझाया भी गया होता तो साधारण पाठकों के लिये ठीक रहता। किन्तु शायद लेखक महाशय ने यह विचार किया है कि साधारण पाठक उस पुस्तक को एक बार पढ़ कर यदि फिर दुबारा आवृत्ति करेगा तो उस के लिये वे सब बातें सहल होजायेंगी। लेखक की इस आशा से हम भी सहमत हैं। पुस्तक विशेषतया गुरुकुल महाविद्यालय में अर्थ शास्त्र पढ़ने वालों के लिए लिखी गई है, साधारण पाठकों को उसकी पुनरावृत्ति भी करलेनी चाहिये।

ग्रन्थ कर्त्ता ने बीच बीच में मनोरञ्जकता के लिये कुछ अशास्त्रीय विषय भी प्रविष्ट करदिया है। दृष्टान्त के लिये ४५ पृष्ठ पर धन प्रशंसा और ५२१ पृष्ठ पर साहस प्रशंसा को ले सकते हैं। शास्त्रीयता के पक्षपाती इसे बुरा कहेंगे। हमारी सम्मति में भी शास्त्रीय दृष्टि से ऐसे प्रशंसा या निन्दापरक लोकोक्तियोंके अनुवाद देने उचित नहीं हैं, किन्तु मनोरञ्जकता के लिये वे लाभदायक हैं। जिस भाषा में अभी अर्थ-शास्त्र की पुस्तकें ही नहीं हैं, और जिस भाषा के जानने वाले ऐसी पुस्तकों को पढ़ते ही नहीं, उस भाषा में मनोरञ्जकता का उत्पन्न करना स्वयं एक आवश्यक गुण है।

सारांश यह कि पुस्तक ज्ञान गुण उपयोगी और उपादेय है। मूल्य १॥) बहुत थोड़ा है। पुस्तक भण्डार गुरुकुल या भारत लिटरेचर कम्पनी लाहौर से मिल सकती है।

चिदानन्द चौबे का चिट्ठा—पंडित रूपनारायण पाण्डेय का किया हुआ बंकिम कृत "कमलाकान्तेर दफ़्तर" का हिन्दी अनुवाद। हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग, गिरगांव, बम्बई से प्राप्य। मूल्य ॥≡)

बम्बई के हिन्दी ग्रन्थरत्नकार कार्य्यालय ने अच्छी अच्छी पुस्तकों से साहित्य भंडार के भरने का शुभ प्रयत्न आरम्भ किया है। यह कार्य्यालय अधिकतर अनुवाद ही प्रकाशित करता है पर अबतक जिन पुस्तकों का अनुवाद प्रकाशित हुआ है वे पुस्तकें बड़ी उपयोगी और साहित्य की शोभा बढ़ाने वाली हैं। अबतक इस कार्य्यालय से पांच पुस्तकें निकल चुकी हैं। अन्तिम पुस्तक "चौबे का चिट्ठा" हमें समालोचना के लिये प्राप्त हुआ है। यह चिट्ठा बंग साहित्य के प्रौढ़ लेखक बंकिम के एक ग्रन्थ का अनुवाद है। इस ग्रन्थ में लेखक ने चिदानन्द चौबे का रूप धारण करके भिन्न भिन्न विषयों पर अपने आन्तरिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाव प्रकट किए हैं। भावों का विषय क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। ईश्वर प्रकृति, मृत्यु, जैसे जटिल विषयों से लेकर भारतवर्ष की राजनीति, अदालतों की जिरह आदि हलके विषयों तक की मनोरंजक व्याख्या इस ग्रन्थ में की गई है। यह व्याख्या गद्य में की गई है पर वस्तुतः यह एक तरह का गम्भीर हास्य रस पूर्ण काव्य है। "चांदनी में" और "वसन्त का कोकिल" नामक निबन्ध गद्य कविता के उत्कृष्ट नमूने हैं। बंकिम उपन्यास लेखक था, कवि था, दार्शनिक था, और विनोद पूर्ण लेखों में भी सिद्धहस्त था। इस ग्रन्थ में बंकिम अपने सभी रूपों में प्रकट हुआ है। बंकिम बाबू ने भारतवर्ष की वर्तमान अवस्था के विषय में कई मार्केकी बातें कहीं हैं। यदि जगह होती तो हम कई वाक्यों को उद्धृत करते। स्थानाभाव से हम केवल एकही पैरा उद्धृत करतेहैं जिसमें एक भौंरा सच्चिदानन्द चौबेको भारत वासियों की अकर्मण्यता पर धिक्कार बताता है। भौंरा कहता है—

'तुम से सच कहताहूं तुम्हारी जाति को भन भनाहट मुझे भी अच्छी नहीं लगती मैं एक साधारण कीड़ा हूं मैं भी केवल भन भन नहीं करता। हम लोग मधु संग्रह करते हैं और जत्था बांधते हैं। तुमलोग न मधु संग्रह करना जानते हो, न जत्था बाँधना जानते हो; जानते हो केवल भन भन करना। तुमको कोई काम करने का सलीका नहीं, केवल रोना औरतों की तरह दिनरात भन भन कर सकते हो। ज़रा बक बक करना और लिखना पढ़ना कम करके काम में मन लगाओ—तभी तुम्हारी श्री वृद्धि होसक्ती है। मधु संग्रह करना सीखो, मधुकर (मक्खी) की तरह एका कर के जत्था जोड़ना सीखो। तुम्हारी जीभ और कलम से तो हमारा डंक ही अच्छा है। तुम्हारे वाक्यों से, या कलम से कोई डरता नहीं परन्तु देखो हमारे डंक से सब लोग घबराते हैं। स्वर्ग में इन्द्र का वज्र है पृथ्वी पर अँगरेज़ों को तोप है और आकाश मार्ग में हमारा डंक है। अस्तु प्रयोजन इतना है कि मधु संग्रह करो और काम में मन लगाओ। अगर देखो कि जीभ और खुजली के मारे काम में मन लगता ही नहीं तो जीभ काट कर काम में हाथ लगाओ—अवश्य काम में मन लगेगा।

इस ग्रन्थमाला के जो स्थायी ग्राहक होते हैं उन्हें सब पुस्तकें तीन चौथाई मूल्य पर मिलती हैं। स्थायी ग्राहकों को केवल पेशगी आठ आने देनें पड़ते हैं। हमें यह सुनकर शोक हुआ कि ऐसी उपयोगी ग्रन्थमाला के भी अभी पर्याप्त ग्राहक नहीं हुए हैं। हमें आशा है कि हिन्दी हितैषी इस माला के ग्राहक बन कर संचालकों को प्रोत्साहित करेंगे।

विधवाविवाह सहायक पुस्तक।

इस पुस्तक में पुनर्विवाह के सबूत में वेद शास्त्रों के बड़े बड़े प्रमाण विधवाओं के दुःख और उनकी अफ़सोसनाक हालत काल देश में विधवाओं की तादाद विधवाओं के हितैषी और सहायक राजा महाराजा और देश के बड़े बड़े मशहूर नामी विद्वानों का हाल विधवाओं का घर से निकल निकल कर बे धर्म होना लाखों बालहत्या और गर्भपात के मुकदमें मथुरा, काशी प्रयाग इत्यादि स्थानों और मन्दिरों में व्यभिचार और बहुत कुछ हाल और कुछ विधवा सहायक भजन दर्ज हैं निवेदन है के सौ पचास पुस्तकें मंगाकर धर्मार्थ बाँटकर विधवाओं का दुःख दूर कीजिये दाम २) सैकड़ा महसूल सहित ॥) से कम वी० पी० नहीं भेजेंगे।

जो विधवा तकलीफ में हो चाहे वह गर्भवती हो सभा में आसकती है सभा की कोशिश से कई विधवाओं के धर्मकी रक्षा हुई है सभा का उद्देश्य विधवाओं को धर्म से पतित होने से बचाना उसकी सहायता करना इत्यादि।

मंत्री विधवा विवाह
सहायक व स्त्रीसुधार सभा झाँसी

प्राप्त

(सम्पादक प्रति मतों का उत्तर दाता नहीं)

सद्धर्म्मप्रचारक के ३१ ७येष्ठ सं १९७१ के अङ्क में एक लेख वेदरत्न विद्यालय पर नौमीलाल देव वैद्य की लेखनी द्वारा प्रकाशित हुआ है। उसमें मेरे पूर्व प्रकाशित पत्र की आपने समालोचना की है। मैंने तो केवल अपने पत्र में आप से प्रार्थना कर अपने पत्र की प्रति लिपि मात्र सद्धर्म पत्र में छपवाई थी जिसमें सर्वसाधारण को मेरी स्थिति ज्ञात होजावे। उस पत्र में केवल उल्लेख मात्र था कि क्यों अपना सम्बन्ध विद्यालय से छुड़ाना चाहता था। परन्तु वैद्यजी को और ही सूझी, किसी चक्कर में आकर आपने बहुत सी असंगत और विवेक शून्य बातें लिख मारी हैं। मैं कहां तक ऐसे पुरुषों को उत्तर देता रहूंगा। मेरे पास अवकाश नहीं है। तथापि यहांपर उचित समझताहूं कि दो चार बातों का उल्लेख करदूं।

(१) सद्धर्म्मप्रचारक में मेरे उस पत्र की प्रति लिपि छपी थी जो मैंने श्री सामयिक प्रधानजी—वेदरत्न विद्यालय की सेवा में भेजी थी। कोई विद्यालय सम्बन्धी लेख नहीं छपवाया था। उसमें मैंने निवेदन किया था कि मेरा नाम उपप्रधान पद तथा स्थायी सभासदों की सूची से हटादिया जावे। सभा ने प्रार्थना को स्वीकार कर वैसा ही किया और मेरे पास विज्ञप्ति भी पहुंच गई। बात वहां की वहां ही रह गई।

(२) वैद्य जी लिखते हैं कि "उक्त डाक्टर साहब ने विद्यालय को आदर्श च्युत होने का कारण पं० शिवशंकर शर्म्मा जी तथा श्री०पं तीर्थराज शर्म्माजी का वहाँ से चलाजाना बतलाया है।" यदि मेरे पूर्व प्रकाशित पत्र को ध्यान पूर्वक देखा जाय तो वहाँ प्रथम कारण यह लिखा मिलेगा "विद्यालय का संगठन प्रथमतः आर्य्य संस्थाओं की रीति पर हुआ था और मेरी पूर्णरूप से सहानुभूति थी, अध्यापक गण आर्य्य पुरुष थे, परन्तु अब पंडित शिवशंकर शर्म्मा तथा पंडित तीर्थराज शर्म्मा प्रभृति विद्वानों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के चलेजाने से सम्प्रति विद्यालय में कतिपय पौराणिक जन रह गये हैं। वैदिक शिक्षा का प्रबन्ध न होने से विद्यालय आदर्शच्युत होगया है।" आदर्शच्युत होने का कारण मैंने आर्य्य अध्यापकों का न रहना तथा वैदिक शिक्षा का प्रबन्ध न होना साफ बतलाया है न कि दो पंडितों का चलाजाना। सत्यके साथ असत्य मिलानेकी चाल लोगों में पाई जाती है। मुझे बड़ा शोक है कि नौमीलाल देव वैद्य ने भी इसी प्रथा को अवलम्बन कर अपनी लेखनी को कलुषित किया है। जब किसी संस्था को वा पाठशाला को ठीक आर्य्य रीति न ति पर चलायंगे तथा उसमें आर्य्य अध्यापक रखेंगे तभी तो वैदिक शिक्षा का प्रबन्ध होसकेगा। पौराणिक जन कदापि बालकों को आर्य पद्धति पर शिक्षा प्रदान नहीं कर सकते। मेरे पत्र में यह कहीं पर लिखा नहीं पाया जाता कि पंडित गण रुष्ट होकर चले गये।

श्री पं० हरिनारायण शर्म्मा जी की योग्यता के विषय में वैद्यजी ने जो कुछ कहा है, उस पर आलोचना करना व्यर्थ है। उन्हें और कहीं १००) वेतन तथा १०) ही मासिक मिल सकें अथवा विद्यालय सभा उनको उनके परिश्रम के बदले पुरस्कार रूप क्यों नहीं कुछ देती इन सब बातों से कुछ प्रयोजन नहीं है।

मैंने तो विद्यालय से सम्बन्ध छोड़ने का कारण स्पष्ट शब्दों में बतला ही दिया है तिस पर यह लिखना कि "उक्त डाक्टर साहब क्यों अस्तीफ़ा देते हैं। इसका कारण उन्हें स्वयं मालूम है। (उसका उल्लेख यहाँ करना उचित नहीं है") केवल अपनी मोटी बुद्धि का परिचय देना मात्र है वा धृष्टता है।

मुझेतो बिहार प्रान्त की एक कहावत इस स्थल पर स्मरण आती है। वह यह है "बैल न कूदे कूदे तंगी" इसी लोकोक्ति को नौमीलाल देव वैद्य ने चरितार्थ कर दिखलाया है। विद्यालय के प्रधान तथा मन्त्री मेरे पत्र को पाकर मेरी प्रार्थना स्वीकार कर सभा की अनुमती लेकर उसका नियमानुकूल उत्तर दे कार्यवाही समाप्त करते हैं परन्तु आपकी सूझी कुछ और है।

ऐसे सामान्य तथा विवेकहीन पुरुषों को मैं दूरसे ही नमस्ते करता हूं और ऐसे लेखों का उत्तर मैं नहीं दूंगा। यदि विद्यालय के प्रधान वा मंत्री मुझसे कुछ पूछेंगे तो उन्हें उत्तर दिया जायगा।

तीसरे कालम में अनर्गल बातें भरी हुई हैं। उन से मेरा कुछ सम्बन्ध नहीं है। उसके लिए लेखक उत्तर दाता है।

लक्ष्मी पति

सरस्वती को भूल का संशोधन

गत मई की सरस्वती में एक लेख विविध विषय में डरते २ सम्पादक जी ने "डाक्टर हर्मनजैकोबी और "जैन साहित्य" पर प्रकाशित कर डाला है। उस लेख में सम्पादक जी लिखते हैं:—"डाक्टर जैकोबी आज ४० वर्षों से जैनों के ग्रंथ साहित्य का अवलोकन और मनन कर रहे हैं। इस विषय में उनकी बड़ी ख्याति है। उन्होंने अजमेर में एक व्याख्यान दिया। उसमें आपने कह दिया कि जैनों के अङ्गों और उपाङ्गों में मूर्त्ति पूजा नहीं। उसका प्रचार पीछे से हुआ है इस पर जैनों ने बड़ा आक्रोश किया..... डाक्टर साहिब जब जोधपुर पहुँचे तब उन्हें मूर्ति पूजा विधायक प्रमाण जैनों के प्राचीन ग्रंथों में लिखे दिखाये। उनको आपने मान लिया और अपने पूर्व मत का संशोधन कर डाला" सम्पादकजी के ये शब्द "जैनों ने बड़ा आक्रोश किया" लिखना अनुचित है। क्या हमारे सुयोग्य सम्पादक जी को यह नहीं मालूम है कि जो सनातन जैन सम्प्रदाय 'श्री साधु मार्गी जैन या स्थानक वासी जैन नाम से भारतवर्ष में विख्यात हैं उसके अनुयायी मूर्ति पूजक नहीं हैं वरन इस विषय पर रात दिन चर्चा हुआ करती है और जब रात दिन चर्चा हुआ करती तो हम कैसे मानें कि इस ने भी आक्रोश किया तो सर्व जैन समाज के लिये आक्रोश ही सर्वथा मिथ्या है। आगे चलकर सम्पादक जी ने लिखा है कि जोधपुर में उनको मूर्तिपूजा विधायक प्रमाण जैनों के ग्रंथों में दिखाये गये उनको आपने मान लिया और अपने पूर्व मत का संशोधन कर डाला। यह लेख ऐसा मालूम होता है कि सम्पादक जी ने पक्ष पात से लिखा है (जैसा कि एक समय बाबू कालीदास माणिक का लेख "मर्यादा" में प्रकाशित हुआ था उसमें उन्होंने सनातन जैन साधुओं को कलंक लगाये थे कि किसी के कहने में आकर या पक्षपात से और जब जवाब "सरस्वती" और "मर्यादा" में प्रकाशित होने को भेजा तो दोनोंने ही प्रकाशित नहीं किया लेकिन यह बात सार्वजनिक पत्रों के लिये अयोग्य है) क्योंकि जिस को आप ४० वर्षों से जैनों के ग्रंथ साहित्य का अवलोकन या मनन करने वाले लिखते हैं और जो जैन दर्शन दिवाकर हैं क्या वह किसी पक्षपाती की २-४ मिनट की वार्तालाप में आकर अपने ४० वर्षों के अनुभव और विचारों पर पानी फेर सकता है। इसको पाठक ही स्वयं विचारें मुझे लिखते अति खेद होता है कि डाक्टर साहिब ने तो कहा था कि जैनों के अङ्गों और उपाङ्गों में मूर्ति पूजा नहीं है। जो उन्हें ग्रंथों में मूर्ति पूजा विधायक प्रमाण दिखाये गये क्योंकि अङ्गों और ग्रंथों में तो इतना अन्तर है जितना कि वेद और कुरान में। "सरस्वती" के लेख से प्रगट होता है कि मूर्ति पूजकों ने ही अपने मन को समझाने के निमित्त अङ्गों के बजाय अन्य ग्रंथों के प्रमाण देकर अपनी पोल को ढकना चाहते हैं जैसा कि यह प्रायः किया करते हैं—

पद्मसिंह जैन

आगरा

मसूरी की धर्मशाला के विषय में भ्रम

सर्व सज्जन महाशयों की सेवा में कष्ट निवारणार्थ निवेदन है कि जो सूचना सद्धर्मप्रचारक ३१ मई १९१४ में महाशय महादेव प्रसाद जी मंसूरी के नाम से छपी है उसमें क्या और कहाँ तक सचाई है सो तो या महादेव प्रसाद महोदय को ज्ञात होगा या उस मित्र वर्ग को जिसके वह MouthPiece हैं। धर्मशाला कमेटी अथवा उसके अधिकारियों तक तो न कोई शिकायत ही पहुंची है और नाहीं वे इस घोषणा में इससे अधिक कुछ सार समझते हैं कि अग्रिम सूचना की आवश्यकता केवल उसी दशा में है जब कोई महाशय अवधि से अधिक ठहरना चाहें या उनके साथ अधिक संख्या में मनुष्य हों। जो महाशय एक दो चार की संख्या में यहां आते हैं और धर्मशाला के नियमानुसार निश्चित अवधि तक ठहरना चाहते हैं उनके लिये पहिले से सूचना देने की कोई आवश्यकता नहीं है। हां यदि कोई सूचना दे दें तो उनकी कृपा। धर्मशाला मैनेजिङ्ग कमेटी के आधीन नियमानुसार चल रहाहै। प्रत्येक यात्री को नियमों के पालन करने से ज़रा सा भी कष्ट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होने की संभावना नहीं होती है। महाशय महा देव प्रसाद जी का धर्मशाला से कोई सम्बन्ध नहीं है तो भी हम उन्हें उनकी कृपा को धन्यवाद देते हैं। जो पत्र व्यवहार हो वह प्रथम तो सूचना धर्मशाला के विषय में पण्डित हरनारायण जी मैनेजर आर्य्य समाज धर्मशाला मंसूरी के नाम से आनी चाहिये अन्यथा श्रीमान् पण्डित केवलराम जी मंत्री आर्य समाज को लिखा जावे नहीं तो सम्भव है कि किन्हीं को उनके पत्र का उत्तर न मिले।

निवेदक

ज्योतिः स्वरूप

प्रधान आर्य समाज

मंसूरी

उन्नाव में हिन्दुओं पर अत्याचार

"मुरादाबाद ज़िला उन्नाव में इस प्रकार अत्याचारपांच सात बरस से लगातार हो रहे हैं कि वहां के हिन्दुओं को आपत्तियों पर आपत्तियां झेलनी पड़ी और पड़ रही हैं। इस कस्बे में बरातें लूट लेना डाका पड़ जाना तो यहां के लिये कोई नई बात नहीं और अनेक प्रकार के प्रबन्ड आक्रमणों से यहां के सारे हिन्दू भाग गये और भागे जाते हैं तीस बरस के भीतर सैकड़ों की संख्या में मकान मारे जुल्मों के खाली हो गये। रहे सहे एक आध भी अग्नियों के द्वारा जलाये जा रहे हैं। हज़ारों रुपया लागत के मकानों को फूकना शुरू हो गया है। कई बार हाकिमों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया परन्तु मुसलमानों को उत्तेजना से संतोष जनक उत्तर न मिला और भविष्यत के निमित्त कोई उपाय न सोचा गया और न इस पर विचार किया गया कि यह कस्बा क्यों उजाड़ा जाता है। यहां के हिन्दुओं ने बड़ी २ दुर्घटना सहन कीं जब सब तरह से निर्बल हो गये तब कोई कानपुर, कोई लखनऊ, या अन्य स्थानों पर जहाँ जिसका ठिकाना लगा भाग गये। हजारों रुपयों की लागतों के मकान बाग वगैरह मारे दहशत के सब तितिर बितिर होगये। तिस पर भी इस कस्बे के उजड़ जाने की कोई तकलीफ पर हमारे हाकिमों तथा यहां के अगुवाओं ने तनिक भी विचार नहीं किया अब हम आशा करते हैं कि हमारे नेताओं का ध्यान इस ओर अवश्य होगा।

एक पीड़ित

स्त्रियों की समाजें

प्राचीन ऋषियों के सिद्धान्तों के अनुसार स्त्रियों का धर्म पति से जुदा नहीं है मनु महाराज स्त्री को संध्या अग्नि होत्र जुदा करने की कोई आवश्यकता नहीं समझते, क्योंकि स्त्री पुरुष पति पत्नी दोनों मिलकर गृहस्थाश्रम कहलाता है यज्ञादि कर्मों में पति पत्नी साथ बैठ कर यज्ञ कार्य्य करते हैं, संभव है कि नित्य कर्मों के करने में स्त्री को गृह के अन्य कार्यों से अवकाश न मिले इस लिये पुरुष अकेला ही नित्य कार्य करता है, इस दशा में यदि स्त्री गृह कार्य छोड़ कर नित्य कर्म में प्रवृत हो तो गृह कार्यों के बिगड़ने से सारा गृहस्थाश्रम हो बिगड़े, इसी कारण मनु महाराज ने कहा है कि पुरुष जो नित्य कर्म करेगा उसका आधा फल स्त्री को प्राप्त होगा। कुछ समय हुआ स्त्री जाति का ध्यान परमात्मा की ओर झुकाने तथा उनमें विद्या का प्रचार करने को स्त्री समाजें आर्य समाज के सभ्यों की ओर से खोली गई थीं और इसका आरम्भ मेरठ के एक महाशय की स्त्री की ओर से हुआ था, किसी कार्य के आरम्भ होने के पश्चात् उसमें बुराइयों का पैदा होना स्वाभाविक ही है, इसी प्रकार पहले स्त्री समाजों में भजन और कुछ धर्म सम्बन्धी पुस्तकों का पाठ होता था, धीरे २ स्त्रियों ने पुरुषों की तरह सभी कार्य अपनी स्त्री समाज में करने आरम्भ कर दिये, चाहे वेद मन्त्रों का उच्चारण शुद्ध हो वा अशुद्ध, चाहे कोई पढ़ी हो चाहे अन पढी, होता यजमान ब्रह्मा आदि अपने में से चुन कर यज्ञ करने आरम्भ कर दिये, हमको बड़ा शोक है कि स्त्रियों को पुरुषों से अलग, स्वतन्त्रता पूर्वक यज्ञ करने, होता आदि स्त्रियों को बनाने का प्रमाण इनको किसने, कहाँ से ढूंढ कर बताया, हम समस्त भारत वर्ष और विशेष कर आर्य समाज के विद्वानों से निवेदन करते हैं कि प्राचीन मर्यादा को तोड़ने का प्रमाण जिस स्मृति धर्म, शास्त्र, गृह्यसूत्रादि से उनको ऐसा पुरुषों से अलग स्त्रियों के यज्ञ करने मिला हो वह बतलाये नहीं तो आर्य गण इन स्त्री समाजों को बन्द करके जो कुछ स्त्रियों को करना, कहना, बोलना हो तो पुरुषों की सभाओं में हो; हो सके तो पुरुषों के साथ बैठकर नहीं तो परदा करके उसके अन्दर से परन्तु पुरुषों के समाज में ही करें, बोलें, जैसे पूर्व काल से होता आया है, यह स्त्रियों की स्वतन्त्रता आगे को पाश्चात्य स्त्रियों की स्वतन्त्रता का रूप ग्रहण करके हानि करेगी, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है! इति शम्.

"सत्य"

वेद प्रचार और सत्यार्थप्रकाश

हम लोगों की यह हार्दिक इच्छा है कि सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेज़ी अनुवाद हो। अब उसे परमात्मा की कृपा से कोई रोक भी नहीं सकता। हिन्दू धर्म की समालोचना निकालने के पश्चात् यदि अनुवाद होता तो और भी अच्छा होता इस में संदेह नहीं, क्योंकि ऐसा न करना अपने घर में ही फूट करना है। जब स० प्र० द्वारा हिन्दू धर्म की बुराइयां अमेरिका आदि स्थानों में जावेंगी तो यह कभी संभव नहीं कि हिन्दू धर्म के नेता बैठे चुप चाप देखा करें। वे भी वहाँ कुछ न कुछ अपने धर्म के समर्थन में भेजगे और इस तरह से होगी केवल आपसकी फूट और कुछ रही अस्तु, हमें आज इसपर विचार नहीं करना है। हम आज पाठकों का ध्यान किसी और ओर ले जाना चाहते हैं और वह है सरस्वती के आत्मा परमात्मा सम्बन्धी लेख लेखक हैं श्री युत डाक्टर राम नरायण लाल मिश्र एल० एम० एस० विटिश गयाना। हम आज पाठकों का ध्यान केवल परमात्मा शीर्षक लेख की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। इस में यह सिद्ध करने की चेष्टा की गई है कि ईथर (Ether) ही परमात्मा है। यह लेख दिसम्बर की सरस्वती में प्रकाशित हुआ है। अभी तक इसका कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया गया। कुछ महाशयों ने लिखा है सही पर डाक्टर साहब उसे शायद कलम तोड़ लेख लिख देना ही कहेंगे! अतः आर्य्य समाज के विद्वानों को योग्य है कि वे इसकी विद्वत्ता पूर्ण उत्तर दें क्योंकि आ० स० का कार्य्य ही यही है। खेद का विषय है कि कितने ही पुरुषों के हृदय में इन लेखों ने अनेकानेक शंकायें उत्पन्न कर दी हैं जो बिना विद्वत्ता पूर्ण उत्तर के मिट नहीं सकतीं। क्या कोई आर्य्य विद्वान् इस ओर ध्यान देंगे।

प्रार्थी ज० प्र० व० स० झांसी

तीन पदक

हिन्दी लेखकों के उत्साह वर्द्धनाथ काशी नागरी प्रचारणी सभा की ओर से प्रति वर्ष हिन्दी में सर्वोत्तम लेखों के लिये सोने और चाँदी के लेख दिए जाते हैं। इस वर्ष इन पाठकों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं:—

छन्नूलाल मैमोरियल (स्वर्ण) मेडल
ग्रामों की सफाई तन्दुरुस्ती

राधा कृष्ण दास (रजत) पदक
विश्व विद्यालयों में हिन्दी की शिक्षा

रेड़िये (रजत) पदक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हवाई जहाज़

हिन्दी के सब प्रेमी इनमें से किसी विषय पर अपना लेख ३१ दिसम्बर १९१४ तक नीचे लिखे पते पर सभा में भेज सकते हैं। लेख सरल हिन्दी भाषा में होना चाहिये और उसका विस्तार १६००० अक्षरों से कम न होना चाहिये प्रत्येक लेख पर लेखक का पूरा नाम, अन्तिम परीक्षा जो पास की हो, अन्तिम परीक्षा के पास करने का सन् आधुनिक कार्य और पूरा पता भी रहना चाहिये।

मन्त्री

नागरी प्रचारणी सभा बनारस सिटी

——

अभिनन्दनपत्र

जो करांची निवासी पंजाबियों ने महात्मा मुन्शीराम जी को दिया।

सेवा में श्रीमान् पूज्यपाद महात्मा मुन्शीराम जो जिज्ञासु, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल, कांगड़ा।

श्री परम पूज्यवर महात्मा जा!

परिवर्त्तनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।

हम सब करांची नगरस्थ पंजाब प्रवासी अपने आन्तरिक भावों को बड़े कृतज्ञता तथा प्रफुल्लता के साथ प्रकट करते हैं कि आपने हमारे तुच्छ निमंत्रण को स्वीकार कर हमें यह शुभावसर दान दे कृतार्थ किया है।

विशेषतः हमारी जन्मभूमि पंचनद और साधारणतः समस्त भारतवर्ष आप की धर्म्मवीरता, निर्भयता, आत्मत्याग, दूरदर्शिता, वक्तृता, कार्य्य परायणता, सरलता तथा श्रेष्ठता के लिये अत्यन्त गर्वित है, आपके समस्त कार्यों में जो आप लगभग २० वर्ष से कर रहे हैं उपरोक्त सद्गुण विद्युत् के सदृश चमक रहे हैं।

आप का शुभ नाम हमारे गृहों में प्रातःस्मरणीय है और जब तक इस विस्तृत पृथ्वी स्थल पर भारतवर्षका चिन्ह मात्र भी रहेगा तबतक आपका शुभ नाम हम और हमारे भावी सन्तान के हृदय पर चिरस्थायी रूप में अङ्कित रहेगा, क्यों न रहे, जब कि आपने अपने अमूल्य जीवन को एक सर्व्वोच्च कार्य्य के लिये अर्पण कर और नागरिक आनन्द व प्रमोद तथा सांसारिक विषयों पर लात मार एक परम पवित्र वन में जो गंगा पतित पावनी परम सुहावनी के तट पर विराजमान है, जा विराजे और अपने पुरुषार्थ से और महान् कष्टों को सहन करते हुए एक वृहत् गुरुकुल की स्थापना की जो हमारे प्राचीन सभ्यता का एक बड़ा आदर्श, गौरव तथा मनु भगवान् के आज्ञानुकूल हैः-

सर्व्वेषा मेव दानानां विशिष्यते।
वार्यन्न गो मही वासस्तिल काञ्चन सर्पिषाम्।

अब वह गुरुकुल रूपी वृक्ष अनेक प्रहारों तथा आक्रमणों से गुज़रता हुआ हराभरा दीख रहा है, जिस में से सुन्दर २ और मनोहर २ फल भी निकलने आरंभ हो गये हैं, जिसे देखकर सारा भारतवर्ष और अन्य देशवासी भी चकित हो रहे हैं, मानो वह एक अद्भुतालय है जहां से भारतवर्ष का जर्जर सूर्य्य घनघोर घटाओं को छिन्न भिन्न करता हुआ शनैः २ अपने प्रकाश का दर्शन दे हमें मुग्ध कर रहा है। देश तथा जाति सुधारका साधन केवल एक मात्र गुरुकुल ही को लोगों ने अनुभव कर लगभग २० गुरुकुल, ऋषिकुल तथा ब्रह्मचर्य्याश्रमादि थोड़े ही काल के भीतर स्थापित कर दिये। यह सब आप ही के पुरुषार्थ तथा आत्मत्याग का फल है।

श्रीमान्जी! वह पंजाबस्थ हिन्दू जाति जो किसीस मय अपने धर्मवीर ता तथा उदारतादि में समता नहीं रखती थी जिस ने गुरु गोबिंदसिंह तथा धर्म्मवीर हक़ीकतराय ऐसे सुवीरों को उत्पन्न किया था, जिसके सुयश तथा सुकीर्त्ति की ध्वजा सारे भूमंडल में लहराती थी वह हिन्दू जाति समय के फेर से महा अंधकारमय कूप में गिरकर चकनाचूर हो रही थी, सारा शरीर व्रणसे आच्छादित हो गया था, रोग असाध्य सा प्रतीत होता था, प्रलाप, मोह तन्द्रादि युवावस्था को प्राप्त होगये थे, जो मानो मृत्यु के आगमन के चिन्ह थे, उस संकटमय समय में आप ऐसे धर्म्मवीर महानुभावों का आविर्भाव हमारे परमपुनीत पंचनद भूमि पर हुआ जिन्हों ने अपने अथक व कठिन परिश्रम से हिन्दू जाति को उस अंध कूप से निकाला और सुरक्षितस्थान में रखकर उस अमृतमय औषधि का पान कराया जो उन्हें परम पूज्य श्री १०८ योगिराज श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से प्राप्त हुई थी और जिसे पान करते ही रोग असाध्यता की कोटि से निकल कष्ट साध्यता की कोटि में आ गया और उस कष्ट साध्यता को भी जड़ मूल से विध्वंस करने के लिये आप ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित कर दिया। अब आपके उद्योग तथा प्रताप से हम सचेत होगये हैं और अपने खोये हुये वैभवों की पुनर्प्राप्ति के लिये प्रयत्न भी करना आरंभ कर दिये हैं।

हे श्रीमान् सद्गुण सम्पन्न! आप की प्रसंसा हम लोग कहां तक करें, आप के निरभिमानता का प्रमाण इस से और अधिक क्या हो सक्ता है कि आप अनेक सद्गुणों को धारण करते हुए भी आपने अपने शुभ नाम के पीछे एक लघु पदवी केवल "जिज्ञासु" की रख ली है। यह आप की सरलता तथा निरभिमानता सूचक व्यवहार हम लोगों के लिये बड़ा शिक्षा जनक है किन्तु जब कि हम स्वामी दयानन्द को "आर्य्यसमाज का जन्मदाता" अर्थात् "The Father of the Arya Samaj" कहते हैं तो हम लोग आप को भी "आर्य समाज का त्वष्टा" The Builder of the Arya Samaj" कहने में किञ्चित् मात्र का भी संकोच नहीं करते।

हे परोपकारी श्रीमान् जी! आप का सारा गुण हम वर्णन करने में असमर्थ हैं। अब यही विनयपूर्व्वक प्रार्थना करके अपने अभिनन्दनपत्र को समाप्त कर देते हैं कि आप कृपया हमें आशीर्वाद देवें कि हम ईश्वरभक्त, स्वदेशभक्त, और राजभक्त बने रहें। ॥ इत्योम् ॥

आप के आशीर्वादाभिलाषी,
यशवन्तराय एम. ए.
मोतीलाल सबर्वाल.
लक्ष्मणदास.
जगन्नाथ
प्रतिनिधि कराँची नगरस्थ पंजाब प्रवासी
करांची नगर
ता. १७ जून १९१४.

स्वामी
नित्यानन्दजी
की जीवनी

छप गई। शीघ्र मंगाइये मूल्य ≡) है। दो से कम का वी० पी० नहीं भेजा जाता।

काश्यप पुस्तकालय
आगरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिदेंषभाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡)
ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।-)
प्रार्थना पुस्तक ।-)
ओंकार की उपासना ।-)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।)
वेद और महाभारत के उपदेश ।)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालें समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है। मूल्य २॥) डिब्बी डाः मः माफ।

पता—बी.एल.बूबनाएण्डको०
दिल्ली नं० ३

हाथरस के पक्के चाकू

पसन्द न हों तो वापिस

ल० मूठ ॥) ।=) ।) ≡)। -) -)))॥ चन्दन मूठ ॥-) ।≡) ।-) ।) ≡) =)॥ =) -) उस्तरा ।) ।=) सरौंता ।-)॥) कैंची ।=) ॥) ॥=) पवित्र होंग ८) सेर अगोंछा =) से ॥) तक। बालनाशक साबुन ।) बक्स।

पतः—भारत हितकारी आफिस,
हाथरस

क्या आपने हिंदी का नया साप्ताहिक पत्र

प्रताप

देखा है?

"प्रताप" राजनैतिक, सोमाजिक और आर्थिक, प्रश्नों पर स्वतन्त्रता और निर्भीकता से अपनी सम्मति प्रकट करता है। उसका आकार रायल क्वार्टो १६ पेज और वार्षिक मूल्य २॥) रु है।

यदि आपने "प्रताप" न देखा हो तो कृपया एक प्रति नमूने की मंगाकर देखिए।

सभी हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रों ने उसकी प्रशंसा की है।

मेनेजर 'प्रताप' कानपुर

आवश्यकता।

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ठट्ठा सिंध के लिये एक योग्य अधिष्ठात्री की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा पत्र व्योहार निम्नलिखित पते पर करें।

नरसिंहलाल
प्रबन्धकर्त्ता
कन्या ब्रह्मचर्याश्रम, ठट्ठा, (सिन्ध)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

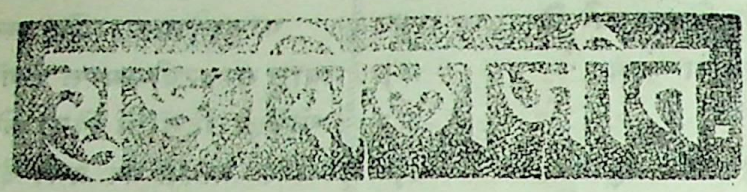

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक स्वर **मति होकर** यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफ़रीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, विशेषतः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५।।)	॥)
८०	३०)	।।।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनाँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

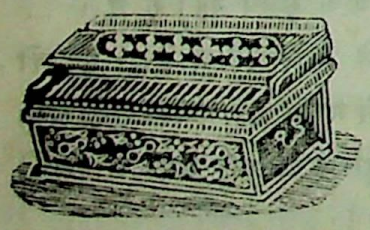

इस पुस्तक में कई प्रकार की ग़ज़ल, क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≠)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

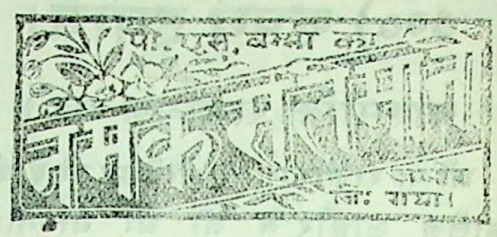

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफरा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ७

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी

आबोर जिला गया

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे की शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पता:

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी

हरद्वार।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द वाच

मूल्य केवल

५॥)

रुपया

गारन्टी ५ साल

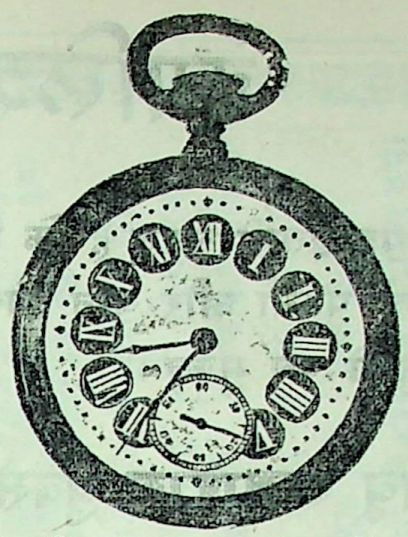

श्री महात्मा मुंशीराम, धर्मवीर पँडित लेखराम, पँ० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन हमने उक्त नाम की घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौरसे विलायत से बनवाकर मगाई हैं जिस में मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन और समयका निर्णय हर घड़ी के साथ में एक कांच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा—

इस के अलावे हमारे यहाँ हर तरह की घड़ियां बहुत सस्ते दामों मिलती हैं सिस्टम रासकोप मूल्य ३) रुपे, रेलवेरैग्यूलेटर मूल्य ४) रुपये, बाजा बजाने वाली टायम पीस मूल्य ४॥) थे—

पता—दी स्वीज़रलैंड, वाच कम्पनी हाथरस नँ० ४

(२४५)

हाथरस के नये फैशन के कमानीदार पक्के चाकू व लीवर ताले

एजेंटों को आवश्यकता

यह स्वदेशी चाकू विलायती चाकुओं से सुन्दर और सस्ते हैं।

चन्दन की मूंठ कमानी दार

॥-) ।≡) ।-) ।)

लकड़ी मूठ कमानी दार

॥) ।-) ।) ≡) =)

जर्मनी फैशन चन्दन ।-) लकड़ी ।) स्याह मूंठ ।=) ।) चन्दन मूठ सादा ।=) ।) ≡) =) ॥-) लकड़ीमूठ सादा ।-) ।) ≡) -) ।-) ।-) ॥। हाथीदांत कमानीदार ॥=) ॥) ≡) =) दो फला ॥) चन्दन दोफला ॥=) ॥) शिकारी छुरी १) ॥) पीतल मूठ चाकू ।-) नये फैशन लोहे व पीतल के सरौते ॥) ॥=) ॥) ।=) पवित्र सुगन्धित बढ़िया हींग १०) ८) ६) रुपये सेर देशी सूत के रंगीन धारीदार गमदे ।=) ।) ≡) =)

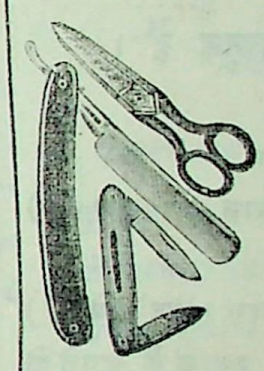

दूसरी चाबी से न खुलने वाले लीवर दार लोहे के ताले मूल्य

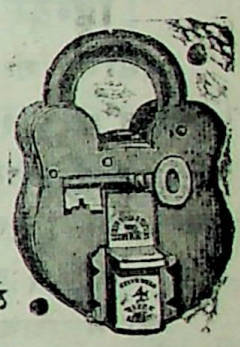

॥) ॥) ।=) इञ्च सादा ।-) ।) इञ्च पीतल लीवरदार १) ॥) ॥) इञ्च सादा ।=) ।) ≡) इञ्च विलायती फैशन के देशी उस्तरे ॥) ।=) ।) बाल काटने की कैंची १) ॥) कपड़ा काटने की मज़बूत कैंची ॥) ॥=) ॥)

(२४५)

पता-स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

अद्भुत ताक़त की दवा

यह उन्हीं लोगों के लिये बनाई गई है जो सब प्रकार से निराश हो बैठेहों शरीर की निर्बलता सर दुखना आंखों में अन्धेरा आना जवानी में बुढ़ापे की दशा का होना लड़कपन की कुक्रियाओं से उत्पन्न अनेक रोगों की यह अव्यर्थ दवा है। इस के सेवन से शरीर निरोग और सुदृढ होकर चेहरे पर रौनक आती है यह अद्भुत जादू का सा काम करके दिखलाती है। मूल्य ४० गोलियों की डिब्बी का २) डाके व्यय माफ़

प्रदर हर गोलियाँ

बेचारी स्त्रियां इस रोग को चुपचाप सहन करके शरीर को गला लेती हैं उन का गुलाब जैसा रंग बात की बात में पीला पड़ जाता है शरीर में दर्द पैदा होजाता है मासिक धर्म ठीक समय पर नहीं होता एवम् कष्टयुत होता है ऐसी दुखिया अवलाओं के हेतु ही "प्रदरहर" तयार की गई है इस के सेवन से उपरोक्त सब रोग नष्ट होते हैं और शरीरसब प्रकार के सुख भोगने योग्य बनजाता है मूल्य ४० गोलियों का २॥) डाकव्यय माफ

दाद की दवा

प्रशंसा करना व्यर्थ है एक वार मंगाकर नये पुराने चाहे जैसे दाद को जड़ से खोदो मूल्य की डिब्बी ।=)

खाज की दवा)

इस दुखदाई रोग से छुट्टी पाना है तो इसदवाकोबिना बिलम्ब सेवन करोमूल्य ॥)

हिंग्वाष्टक चूर्ण

पेट के अनेक रोगों को शान्त करता है भूख बढ़ाता है एवम् पाचन करता है। मूल्य ॥)

तीनों का डाकव्यय अलग

मिलने का पता:—स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

(२४५)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चौदह विद्या निधान

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

विज्ञापन

निम्नलिखित पुस्तकें हिन्दी में मौजूद हैं।

रसायन शास्त्र ३॥)

विद्युत शास्त्र १, २ भाग

(दूसरा भाग छप रहा है)

वनस्पति शास्त्र १)

(दूसरा भाग जल्द छपेगा)

जो महाशय किसी पुस्तक के छपने के पहले ग्राहक बनेंगे उनसे चौथाई दाम कम लिया जायगा। पत्र व्यवहार पुस्तकों के लेखक, प्रोफेसरम हेशचरण सिंह, बी०, ए० एम० एस० बी० ए० जी० आर० गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार से कीजिये।

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० दा =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

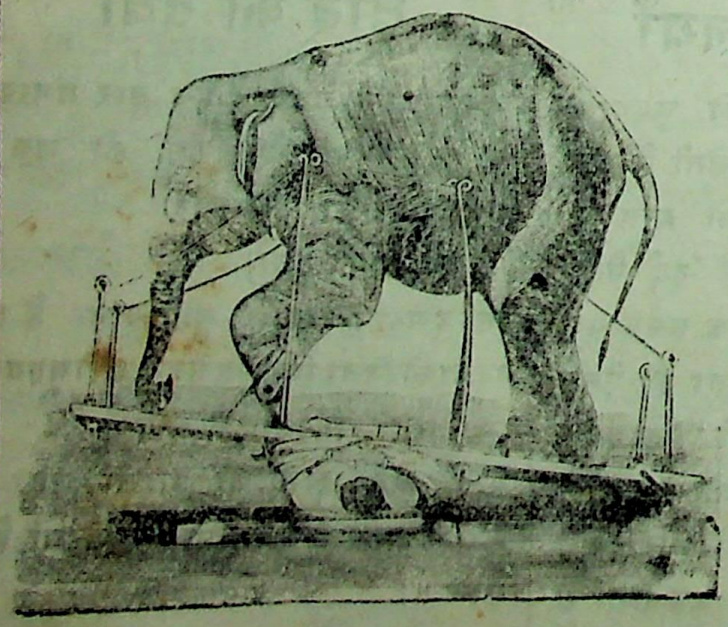

प्रचारक के ग्राहकों को ए कमास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) राजीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) वीर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीर जयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) श्रीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तलाश नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

कफ	अतिसार
दमा	आंवलोहू
खांसी	संग्रहणी
हैजा	के होना
शूल	पेटकादर्द

सर्दीकाबुखार
जी मिचलाना
बच्चोंकेहरेपीलेदस्त
शरीर का दर्द
कुकरखांसी

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट सुगंधित दवा है मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ २३ वर्ष का आजमाया हुआ

दद्रुगज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—क्षेत्रपाल शर्मा मालिक, सुख संचारक कम्पनी मथुरा

'वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर कीहै, जो बुद्धिमती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदातृ शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो क्वारा हृष्ट पुष्ट २५ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थाप्पर

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब लाहौर

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द--जि० आरा

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तौ खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≡) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

रबर टाइप प्रेस

इस प्रेस में अक्षर अंग्रेज़ी रहते हैं छापने की स्याही कम्पोज करने की स्टीक, स्पेस, हेंडब्लाक, चिमटा वगैरह सब सामान इस के साथ रहता है घर में दफ्तर में दौरे में काम देता है मुन्शी दुकानदार शौकीनों के काम का है चाहे जिस वक्त जेब में से निकाल कर छाप सक्ते हैं। मूल्य १॥) डा: ।)

पता:—भारत हितैषी—कम्पनी, अलीगढ़ सिटी

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

आवश्यकता।

एक अध्यापक जो शास्त्री या मध्यमपरीक्षा पास हो व्याख्यान शक्ति भी हो और और दूसरा जो इन्ट्रन्स पास हो सदाचारी हो और कम आयु का नहीं इन की हमें आवश्यकता है। यह दोनों सज्जन आर्य्य हों।

पत:-रामस्वरूप मन्त्री जार्ज एङ्गलो

वैदिक विशनवी स्कूल नगीना

(बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूल्य रत्न है॥ **ब्राह्मीबूटीवटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप का धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्तरत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—हठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत् वर्षां स्मृतिप्रदा कुष्ठपांडुमेहारतक सर्जितविषशोथज्वर हरी मेधायुबलवर्द्धिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, वहम, दिल का धड़कना, हृत्कापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंडा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और वायन विद्यार्थी प्रोफेसरों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ।) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी (शुद्ध व असली) की तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० की तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) की तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेवें।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अलमोड़ा यू० पी० हिमालया

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ाने का साबुन—बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत की बक्स।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिस्म कीमर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता—

हॉर्मनऐंड कं. सतघडानथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) मा० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के गुरुकुल-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ ओ३म् ॥

Registered No L. 807

धर्म्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२१ आषाढ़ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ९१] ता० ४ जुलाई १९१४

संख्या १२
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला अच्छा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
बजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक कोआदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक ... ...

डाक्टर वर्म्मन की कठिन रोगों की सहज दवाएँ

बच्चे, लड़के वो प्रसुति की पुष्टई हुई।

लाल शरब

पाचनशक्ति बढ़ाकर खाना हजम कराता है

लाल शरबत

लाल रंग वो पीने में मीठा होता है। मोल ।।।) शीशी डा० म० ।) आने। ३ शीशी २) डा० म० ।।=) आने।

स्त्री रोग की दवा

सब प्रकार के रोग को दवा दुर्लभ गर्भाशय को शुद्ध व पुष्ट करती है। मासिक धर्म का ऋतु के विकार आदि मिटतेहैं

स्त्रीरोग की दवा

मोल १।) डा० म० ।-) आने।

सब जगह हमारे एजेण्ट और दवा फरोशों के पास मिलेगी अथवा—

डा० एस० के० बर्म्मन ५, हे० नारायण दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

एजेन्ट बाबूराम जैनी कूचा सेठ दिल्ली।

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानूनदर्पण।

एक ही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिन से हर मनुष्य को काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाब्ता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तम्बाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुखत्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखानेवाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार बगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोल-चालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास ल्याकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १)

मिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

महात्म मुंशीराम जी!

विज्ञान कल्पतरु के विषय में लिखते हैं:—मैं इस पुस्तक माला को आर्य भाषा भाषी आर्य जनता के लिये बहुत उपयोगी समझता हूं। मेरी सम्मति में यदि प्रत्येक आर्य्यसमाज इस की एक एक प्रति खरीदना स्वीकार करले तो ऐसा समयोपयोगी ग्रन्थ छप कर स्वदेश को बहुत-लाभ पहुंचा सक्ता है। यदि मेरे पास धन होता तो मैं आपका हाथ बटाने का कुछ प्रयत्न करता अब केवल आपकी कृतकार्यता के लिए केवल मङ्गल इच्छा ही प्रकट कर सकता हूं। विज्ञान कल्पतरु में प्रत्येक वस्तु के बनाने की क्रियायें धन कमाने के अनेक ढंग, विज्ञान (साईन्स) सम्बन्धी तथा वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक बात का पूरा पूरा वर्णन चित्रों सहित किया गया है। ग्रन्थ बड़ा होने से १०० पृष्ट मासिक में छपता है और स्थाई ग्राहकों को ॥) प्रति अंक डाकव्यय सहित दिया जाता है अन्यों को प्रति अङ्क ।।।) में

मैनेजर जनरल पब्लिशिंग कम्पनी मेरठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहली में राज द्रोह का अभियोग

तीन दिन की छुट्टी रही और २४ जून को इस प्रकार कार्य्यवाही हुई। सब से पूर्व मि० स्टेड को गवाही के लिये बुलाया गया। आप गुप्तचर विभाग के डि० इन्स्पैकटर जनरल के पहिले सहायक हैं। आप ने कहा मैं गत फरवरी मास में लाहौर में था। मैंने १७ फरवरी को दीनानाथ के घर की तलाशी की आज्ञा दी। मैंने ख़ान बहादुर रहमतउल्ला को आज्ञा दी थी। इन का देहान्त हो गया, उस समय यह अभियोग पहली अदालत में हो रहा था और रहमतउल्ला की गवाही होने नहीं पाई थी। मि० पट्टी के साइफ़र तार पर मैंने तलाशी की आज्ञा दी थी। तलाशी दूसरे दिन हुई। मैं दीनानाथ के घर पर गया उस समय तलाशी हो रही थी। दीनानाथ को पकड़ लिया। उस समय मुझे राशबिहारी की तलाश थी। मुझे विश्वसनीय रीति से पता चला था कि २० फरवरी को राशविहारी लाहौर में आया हुआ था। मैंने गत नवम्बर में लाहौर स्टेशन पर एक पार्सल के विषय में पूछताछ की। २३ फरवरी को इस पार्सल की रसीद देखी। मैं एक इम्पायर टाइप रायटर को भी ढूंढ़ रहा था। यह दीनानाथ के कथन के अनुसार था।

मि० बोस ने इस स्थान पर प्रश्न किया कि यह नहीं कहना चाहिये क्योंकि साइप रायटर कभी नहीं मिला। अदालत ने इस प्रश्न को नोट कर लिया। मि० स्टेड ने कहा कि चरणदास के घर की तलाशी से राशविहारी के हस्ताक्षरों वाला एक चिट्ठी पत्री का बंडल मेरे पास आया। लिबर्टी के सुवर्ण नम्बर तथा साइफ़र कोड भी थे और १२ फरवरी का एक तार भी था। जब दीनानाथ ने लाहौर के डिपुटी कमिश्नर मि० टोलिन्टन के सन्मुख अपना बयान दिया मैं वहां पर था। ११ बजे कथन आरम्भ हुआ और दीनानाथ ७ बजे तक बयान देता रहा। मेरे सामने मि० टोलिन्टन ने बयान अंग्रेजी में पढ़ा और इसको पूरी तरह लिखा गया। उस सारे समय खानबहादुर रहमतउल्ला भी वहां थे। दीनानाथ उर्दू में बोला था। इस के पश्चात् बसन्त कुमार के विषय में कुछ कहा और फिर विश्राम के पश्चात् म० बोस ने कहा कि दीना नाथ के कथन पर जो कुछ मि० स्टेड ने किया उसको कहना ठीक नहीं इस पर एक दो प्रश्नोतरों के पश्चात् ला० रघुनाथ सहाय ने कहा कि यदि कथन में यह बातें काट दी जायें कि मैं ने दीना नाथ से ऐसा २ सुना तो हम सन्तुष्ट हो जायेंगे। यह अदालत ने स्वीकार कर लिया।

वकीलों के उत्तर में मि० स्टेड ने कहा जिस समय मैं ने दीनानाथ को लाहौर की अदालत में पेश किया मेरा अनुमान था कि वह लाहौर वाले बम के विषय में ही कहेगा।

२५ जून

एक असेसर के प्रश्न के उत्तर में मि० स्टेड ने कहा अपराध अन्वेषण विभाग के सारे तार फाड़ दिये जाते हैं कि कहीं क्लर्क उनको न देख लें। चरन्दास के घर से जो साइफर कोड निकला वह पुलिस के साइफर कोड से नहीं मिलता था। गत दिसम्बर मास में दीनानाथ का गर्म दल वालों में होना ज्ञात था मि० स्टेड का और बयान हुआ और फिर सरदार सुक्खा सिंह की गवाही हुई। आप पुलिस के सब इन्सपैक्टर हैं, और चरण दास की तलाशी आप ही ने ली थी। तलाशी का सारा हाल कह कर आप ने कपूर्थले के छापे ख़ाने में अपनी यात्रा का वर्णन किया। चरण दास के विषय में कहा कि तलाशी की सूची मेरे हाथ में थी। २१ फरवरी को उसने अपना बयान दिया। मुझे याद नहीं उस समय थाने में कौन २ थे।

इस के पश्चात् लाहौर के पापुलर दवाख़ाने के हिस्सेदार लाला अमरनाथ की गवाही हुई। आपने बसन्तकुमार की नौकरी का हाल कहते हुए कहा कि दीना नाथ उसके पास आया जाया करता था। बसन्त कुमार २१ दिसम्बर १९१२ से १५ जनवरी १९१३ तक औषधालय में अनुपस्थित रहा।

२६ जून

आज ला० अमरनाथ पर प्रश्न होते रहे। इनकी कल गवाही हुई थी। प्रश्नों के उत्तर में कहा कि मैंने बसन्त को बाइसिकल ले जाते हुए देखा है उसको उसपर चढ़ते हुए कभी नहीं देखा। मेरे से पुलिस ने पूछा था कि मुझे पता है कि बसन्तकुमार राजद्रोही था और १७ मई को बम फैंका है। मैंने कहा कि मैं बम फैकने के विषय में कुछ नहीं जानता। फिर इन्सपैक्टर ने मुझसे पूछा कि क्या दीना नाथ का बाइसिकल के विषय में कथन ठीक है? मैं ने उत्तर दिया मुझे बाइसिकल के विषय में कुछ याद नहीं। यह बात कोतवाली में हुई थी। वहाँ पर दीनानाथ भी था। उसने मुझे याद दिलाया तो मेरे बाइसिकल वाली बात याद आगई।

इस के पश्चात पापुलर औषधालय के दूसरे स्वामी ला० ठाकुर दास की गवाही हुई। आपने भी ला० अमरनाथ की भांति सारा हाल कह सुनाया और कहा मैं दीनानाथ के पिता ला० गज्जूमल को जानता हूं।

२७ जून

ला० रघुनाथ सहाय वकील ने ला० ठाकुरदास पर प्रश्न किये। इसके पश्चात् ला० गिरधारी लाल की गवाही हुई। यह महाशय ३४ वर्ष के ब्राह्मण हैं। होश्यारपुर के मेडिकल कालिज के स्वामी हैं। डी० ए० वी० स्कूल में एक वार आश्रम के अधिष्ठाता थे फिर हिन्दू अनाथालय के प्रबन्धकर्त्ता नियत हो गये थे आप ने बलराज बाल मुकन्द और बसन्तकुमार को पहचाना। बसन्त कुमार को नौकर कराने की कथा सुनाते हुए आपने कहा मुझे पुलिसने बल दिया कि मैं लाहौरकी अदालतमें अपने बयान में बलराजका नाम अवश्यलूं कि बलराज, बसन्तकुमार को नौकर करवाना चाहता था। जज साहब ने गिरधारीलाल को ख़ूब चेताकर पूछा कि निचली अदालत में बलराज का नाम लिया था वा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं ? उसने कहा मैं ने नहीं लिया। अगले प्रश्न पर कहा कि बालमुकन्द ने मुझ से बलराज का नाम नहीं लिया। मुझे लाहौर मैजिस्ट्रेट के सन्मुख बलराज का नाम लेने के लिये बाधित किया गया था। कुछ प्रश्नों के उत्तर में सरकारी वकील ने गिरधारीलाल के पहिले बयान से भिन्नता पाकर अदालत से उसका पहिला ही बयान लिखलेने की प्रार्थना की। यह अदालत ने स्वीकार किया, उसको पहिला बयान पढ़ा गया उस पर गिरधारीलाल ने हस्ताक्षर किये। इसके पश्चात् ला० रघुनाथसहाय वकील ने कुछ प्रश्न किये। उत्तर में उसने कहा। मैं प्रायः चार दिन तक कोतवाली में रहा। कुछ और प्रश्नोतरों के पश्चात् अदालत ने गिरधारीलाल पर प्रश्नों के उत्तर न देने के अपराध में २०) रुपये जुरमाना कर दिया।

२९ जून

कल आदित्यवार की छुट्टी थी आज ला० मूलराज की गवाही हुई। यह महाशय जालन्धर में विकटोरिया हाई-स्कूल के हेडमास्टर हैं अवधविहारी के साथ सैन्ट्रल ट्रेनिंग कालेज लाहौर में पढ़ते थे। आपने कहा कि बोर्डिंग हाउस में अवधविहारी का कमरा ऐसा था कि दूसरे स्थान से कमरे की सारी बात चीत सुनी जा सकती थी। वकील के उत्तर में कहा कि मैं ने १९१३ फरवरी वा मार्च में दीनानाथ और अवधविहारी को इकट्ठे देखा है। मैं दीनानाथ को १९१२ के प्रायः सेप्तम्बर मास से जानता हूं। मैं आर्य्यकुमार सभा का मन्त्री था और वह सहायक मन्त्री। मुझे पता नहीं कि दीनानाथ कालेज के अन्य विद्यार्थियों के पास आता था वा नहीं।

ला० प्रभूदयाल की गवाही देने के लिये बुलाया गया। यह महाशय कभी रामजस हाई स्कूल में अध्यापक रह चुके हैं और ट्रेनिंग कालेज में अवधविहारी के साथ थे। आपने कहा मैंने दीनानाथ को समाज में और अवधविहारी के साथ कालेज में देखा है। मैं अमीरचन्द को पहचानता हूं मैंने उसको देहली और लाहौर में सभाओं में देखा है। मैंने दीनानाथ को आर्य्य कुमार सभा में बड़े उत्साह से भाग लेते देखा है। मैंने अमीरचन्द को अवधविहारी के साथ कालेज में भी देखा है। जब मैं रामजस हाई स्कूल में नौकर था अमीरचन्द वहां नहीं था। दीनानाथ और लड़कों के पास भी आता था। १९१३ के मई मास में कई लड़के सायंकाल को पढ़ने जाया करते थे। कभी २ मेरे साथ अवधविहारी जाता था। मेरे ठीक याद नहीं कि मैंने दीनानाथ को बोर्डिंग में कब देखा। मैं नहीं कह सकता कि अवधविहारी राज नीति की बातें किया करता था। मेरे से कभी उसने ऐसी बातें नहीं कीं। मेरा कमरा अवधविहारी के कमरे से लगा हुआ था। मैं नहीं कहता कि कालेज के आश्रम में एकान्त नहीं थी।

ला० बरकतराम की गवाही हुई। आप दीनानाथ के घर के सान्हने रहते हैं और उसकी तलाशी के साक्षी हैं। वकील के उत्तर में कहा मैंने दीनानाथ को इन अभियुक्तों में से कभी किसी के साथ नहीं देखा। यही बात अगले गवाह ला० जगन्नाथ ने कही।

ला० देवीदास सब इन्सपैक्टर को दीनानाथ की गवाही का हाल कहने को बुलाया गया। इसके पश्चात् खानसाहब अहमदखां की गवाही हुई। आप इन्सपैक्टर पुलिस हैं खुशीराम के घर की तलाशी आप ने खां बहादुर रहमतउल्ला के साथ ली थी। बलराज के घर की तलाशी भी आपने लीथी। ५ मार्च को रघुवर शर्मा के घरकी तलाशी लीथी इस घर में एक टीनके बक्स में कुछ पत्रादि पकड़े गये थे यह बक्स ज़मीन के अन्दर गाड़ा हुआ था। मैं ने रघुवर शर्मा को उसके घर पर न पाया वह राय मूलराज रिटायर्ड जज के घरपर था।

तदनन्तर कुछ प्रश्नों के विषय में जज ने पूछा कि इन से क्या अभिप्राय था। उत्तर में वकील ने कहा कि उसका अभिप्राय यह था कि यह दिखावे कि बलराज के पिता ला० हन्सराज से वैर के कारण बलराज को पकड़ा गया है।

३० जून

ला० हन्सराज के घर की तलाशी के गवाह मज अली बख़श की गवाही हुई। इस के पश्चात अबदुल रज़ाक दरजी की गवाही हुई। इस ने वकील के प्रश्नों के उत्तर में कहा कि तलाशी तीन दिन तक होती रही तीसरे दिन मैंने और सब गवाहों ने तलाशी की सूची पर हस्ताक्षर किये।

खुशीराम के घर की तलाशी के गवाह शाहदीन की गवाही हुई। इसने कहा कि जब हम सब ऊपर गये तो खुशीराम खानबहादुर रहमतउल्ला के साथ था। मैं १९ फरवरी को उपस्थित न था सो उसदिन के विषय में कुछ नहीं कहसकता सबसे ऊपर के मकान में केवल एक ही कमरा है उस में एक रोशन्दान और खिड़की है। मेरा मकान खुशीराम से ५० गज की दूरी पर है। फजलदीन की भी इसी सम्बन्ध में गवाही हुई विद्यार्थी सेरातीराम की भी गवाही हुई इस के पास खुशीराम के सन्दूकों की तालियां थीं। ७ मार्च को जालिन्धर से लौट कर कोतवाली में इस ने सन्दूक खोला उस में खुशीराम के घर की तलाशी के काग़ज़ और पुस्तकें थी फिर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगे हुए देखी जब पुलिस ने खुशीराम के कमरे में वे काग़ज़ पकड़े थे। प्रश्नों के उत्तर में कहा मेरे से खुशीराम ने कभी राजनीति की बात नहीं कीं मैंने उसके साथ कभी किसी बंगाली को रहते नहीं देखा।

इस के पश्चात कर्मचन्द विद्यार्थी की इसी प्रकार गवाही हुई। और सेन्ट्रल ट्रेनिंग कालेज के विद्यार्थी भीकमसिंह ने भी गवाही दी।

वर्षा—वर्षा की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही है। आषाढ मास का अन्त है श्रावण मास में वर्षा होने की आशा की जाती है। संयुक्त प्रान्त में काल पड़ कर चुका है वर्षा के न होने से बड़ी हानि होगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति

सत्यार्थ प्रकाश और विदेश प्रचार—८ वें पृष्ठ पर हमने पं० पूर्णानन्द जी का लिखा हुआ "विदेशप्रचार" नामक लेख प्रकाशित किया है। पं० पूर्णानन्दजी आर्य समाज के उन उपदेशकों में से हैं जिन्हों ने आर्य समाज की वर्षों तक प्रेम से सेवा की है और कर रहे हैं। विदेश में "सत्यार्थ प्रकाश" की उपयोगिता के विषय में उनकी सम्मति बड़े ध्यान से पढ़ने योग्य है। उनकी सम्मति हैं कि सत्यार्थप्रकाश भारत वर्ष की विशेष अवस्थाओं को दृष्टि में रख कर लिखा गया था इस लिये वह एक देशी है, वैदिक धर्म के प्रचार के लिये विदेश में उस अधिक भाग का भेजा जाना सर्वथा अनुपयोगी है। हम पं० जी की इस सम्मति से सहमत हैं। इस विषय में अपने विचारों को अगले सप्ताह विस्तृत रीति से प्रकट करने का यत्न करेंगे।

—

बा० गंगा प्रसाद वर्मा की मृत्यु—मुन्शी गंगा प्रसाद वर्मा की असामयिक मृत्यु का समाचार सुनकर किस देश हितैषी का हृदय विदीर्ण न होता होगा। हमने उनकी मृत्यु को असामयिक कहा है क्योंकि यदि कोई मृत्यु असामयिक हो सकती है तो वह मृत्यु मुन्शी गंगा प्रसाद वर्मा की है। गत मास की २२ जून को वे लखनऊ से नैनीताल गए थे, उसके पहिले किसी को यह स्वप्न में भी विचार नहीं था कि इतना शीघ्र उनके वियोग का दुःख हमारी जाति को सहना पड़ेगा। बा० गंगा प्रसाद हृष्ट पुष्ट आदमी थे और नियम पूर्वक रहने से उनका स्वास्थ्य बहुत ही कम बिगड़ता था। कहते हैं कि कई वर्षों से बा० गंगा प्रसाद वर्मा को कभी जाड़े का ज्वर भी नहीं आया था। २२ जून को वे नैनीताल गए। उसी दिन ठंडे पानी से स्नान कर लेने से उन्हें ज्वर आगया। उस ज्वर ने निमोनिया का रूप धारण किया। उसी निमोनिया से २३ जून को उनका देहान्त होगया। इस समाचार को सुनकर संयुक्त प्रान्त ही नहीं किन्तु सारा देश शोक सागर में निमग्न हो गया है। वे उन देश के नेताओं में से थे जिन्हों ने सच्चे दिल से देश की सेवा को अपना धर्म बना लिया है। संयुक्त प्रान्त के वे माने हुए नैतिक नेता थे। वे एकबार प्रान्तिक नैतिक सम्मेलन के, एक बार औद्योगिक सम्मेलन के और एक बार सुधार परिषद के सभापति रह चुके थे। वे २१ वर्ष से लखनऊ म्युनिसिपल बोर्ड के सभ्य थे और कई वर्षों तक उप सभापति थे। इस अवसर में उन्हों ने अपने नगर के लिये जो काम किया उसे लखनऊ कभी भी भूल नहीं सक्ता। वे समझते थे कि म्युनिसिपल बोर्ड में रहकर नगरों की स्वास्थ्य सम्बन्धी दशा को उत्तम करने से बढ़ कर और कोई देश सेवा नहीं हो सकती। इसी लिये लैकचर झाड़ने का कार्य और लोगों के लिये छोड़कर स्वयं चुप चाप नगर सेवा में अपना समय अधिक लगाते थे और उन्हें उस विषय का इतना अधिक ज्ञान था जितना दो चार को छोड़कर शायद ही किसी को हो। यदि लखनऊ इस समय उद्यानों का नगर कहाता है, यदि वह नगर स्वास्थ्य की दृष्टि से सारे प्रान्त में आगे बढ़ रहा है तो उसका सारा यश बा० गंगा प्रसाद को है। उनकी मृत्यु से देश में से एक चुप चाप देश सेवा करने वाला सज्जन उठ गया है। प्रयाग के डा० सप्रू ने प्रस्ताव किया है कि ऐसे देश हितैषी का स्मारक बनाना अत्यन्त आवश्यक है। हमें पूरी आशा है कि यह प्रस्ताव शीघ्र ही कार्य में परिणत होगा।

—

तिलक महाराजका कार्यक्षेत्र में पदार्पण—जब से तिलक महाराज मुक्त होकर पूना आये हैं, तभी से पत्र सम्पादकों ने उन्हें भावी जीवन के लिये अपनी अपनी शुभ सम्मति देने की कृपा आरम्भ कर दी है। गोरे पत्र सलाह दे रहे हैं कि लो० मा० तिलक को जर्मनी आदि देशों में जाकर पुस्तक का काम करना चाहिये क्योंकि जिन अवस्थाओं में वे नैतिक काम करते थे वे अवस्थाएं अब सर्वथा परिवर्तित हो गई हैं, उधर कॉंग्रस के पक्षपाती तिलक को कांग्रस के साथ मिलकर काम करने की सलाह दे रहे हैं। पर हम समझते हैं कि तिलक महाराज ने न आजतक किसी और की सम्मति से काम किया है और न आशा है कि वे आगे करेंगे। वे उसी पथ का अनुसरण करेंगे जिसे वे अपनी सम्मति में देश के लिये उपयोगी समझेंगे।

—

म० रौनकराम पर अभियोग—हमने यह बड़े आश्चर्य और खेद से सुना कि पटियाला की रियासत ने म० रौनक राम आर्य पर "खलसा पन्थ की हकीकत" नामी ग्रन्थ लिखने के कारण अभियोग चलाया है। इस पुस्तक को निकले एक वर्ष हो गया। अब खालसा अख़बारों के शोर मचाने पर पटियाला के महाराज को यह सूझी है कि रौनकराम ने यह पुस्तक लिखकर दो जातियों में विद्वेष फैलाने का यत्न किया है। पटियाले के नौजवान महाराज जिस प्रकार के कर्मचारियों से घिरे हुए हैं उनकी बुद्धि को देख कर हमें करुणा आती है। इन्हीं कर्मचारियों की बहकावट से आर्यों के विरुद्ध अभियोग चलाकर, पहिले यह रियासत बदनाम होचुकी है और यह नया मुकदमा और भी कलंक का कारण होगा। एक दृष्टि से हम इस अभियोग के चलने से प्रसन्न हैं। क्योंकि यह मुकदमा आर्यसमाज को इस बात के दिखला देने का अवसर देगा कि सिक्खों के गन्दे से गन्दे आक्रमणों का उत्तर आर्यसमाज ने किस धीरता के साथ दिया है। हमें यह देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि पंजाब प्रतिनिधि सभा म० रौनकराम की सहायता का प्रबन्ध कर रही है। पर हम यह कह देना चाहते हैं कि हम इस अभियोग को तमाशे से अधिक मूल्य नहीं देते। रियासतों की सिक्खा शाही प्रसिद्ध है औ पटियाला रियासत की तो आर्यसमाज पर विशेष कृपा है। कानूनी सहायता और आर्थिक सहायता देकर म० रौनकराम की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है उसके लिये आर्य्यसमाजों को अभी धन एकत्रित करने लगजाना चाहिये पर साथ ही यदि इस सारे तमाशे का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकराम को कड़े जेल की आज्ञा हो (जिसकी हमें इस रियासत से पूरी आशा है) तो उसके लिये भी हमें तय्यार रहना चाहिये।

लाहौर के डी० ए० वी० स्कूल की सफलता—हम विद्यालय के अधिकारी गणों को इस आश्चर्य जनक सफलता पर बधाई देते हैं। इस विद्यालय की ओर इस वर्ष एंट्रेन्स परीक्षा में १३९ छात्र बैठे थे जिस में से ९२ पास होगए १६ विचाराधीन हैं। इतनी बड़ी संख्या पंजाब भर में किसी विद्यालय की नहीं है। ३४ विद्यार्थी प्रथम भाग में उत्तीर्ण हुए। विज्ञान पढ़ने वालों में कल्यानदास ने ५९० नम्बर लिये। इसी प्रकार तीन और विद्यार्थियों ने आज तक के पिछले नम्बरों के खाते को मात करदिया। आर्टस फ़ेकलटी में भी ऐसा ही परिणाम रहा। अध्यापकों का कार्य्य निसन्देह सराहनीय है। विज्ञानमें सौ में से सौ पास हुए, संस्कृत भाषा में १०० में से ९७ आंगल भाषा में १०० में से ९७ गणित में सौ में से ९२।

लार्ड हार्डिंग के समय की वृद्धि—प्रजा प्रिय लार्ड हार्डिंग के कार्य का समय प्रायः सवा वर्ष का और बाकी है परन्तु भारत में चारों ओर से ऐसे सर्व प्रिय लाट साहब की अवधि बढ़ाये जाने की इच्छा प्रगट की जा रही है। आपने भारत में कई एक नये कार्य आरम्भ किये हैं। यदि आपकी अवधि २ वर्ष के लिये और बढ़ा दी जावे तो वह कार्य अधूरे न रहेंगे और किसी न किसी अवधि तक आप स्वयम उनका मीठा परिणाम देख सकेंगे। हमारी भी हार्दिक इच्छा है कि आप दो वर्ष और भारत को अपने शुभ चरित्रों से कृतार्थ करते रहें।

नये वायसराय—सुना है कि अगली वार लार्ड किचनर भारत के वायसराय होकर आयेंगे। आप एक वार कई साल तक भारतीय सेना के अध्यक्ष रहे हैं। उन दिनों लार्ड करजन भारत में वायसराय थे और आपकी उनसे अनबन रहती थी। पहिले सुना गया था कि अगली वार राज्य कुल का कोई पुरुष भारत के वायसराय नियत होंगे, यदि ऐसा हो तो भारत प्रजा को अधिक सन्तोष होगा।

पंजाब विश्वविद्यालय में कुछ परिवर्तन की आवश्यकता—९ जून को लाहौर के ब्रडला हाल में एक महती सभा हुई जिसमें अनेक अत्यावश्यक प्रश्नों पर विचार हुआ जिसमें कुछ ये हैं। (१) परीक्षाएं मार्च में हुआ करें (२) जो विद्यार्थी एक विषय में फेल हो उनकी तीन महीने पीछे वा अगले वर्ष उसी विषय की परीक्षा हो जिसमें वह फेल हुए हों (३) परीक्षा के पत्रों के बहुत कठिन वा सरल होने के निमित्त कुछ पुरुष नियत किये जावें।

ऊपर लिखित परिवर्तन निःसन्देह बड़े आवश्यक हैं और अधिकारियों को इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये। और इसी वर्ष से इसका प्रारम्भ हो जाना चाहिये। इस प्रकार विद्यार्थियों को न तो गर्मी में मरना पड़ेगा और एक वर्ष का परिश्रम वृथा नष्ट न जाया करेगा।

युवराज को हत्या।

२८ जून को साराजिवो में आष्ट्रिया के युवराज और उनकी पत्नी की हत्या हो गई।

युवराज फ्रान्सिस फर्डिनैण्ड की हत्या करने का दो बार प्रयत्न किया गया। आप टउन हाल में जा रहे थे जब एक कम्पोजिटर ने बम फेंका, पर उनकी गाड़ी निकल जाने से उनके दो अनुचर तथा और छः आदमी घायल हुए। आप सीधे टाउन हाल चले गये। बाद आप बाहर गस्त लगाने लगे। उसी समय स्कूल के एक लड़के ने ब्राउनिंग तमंचे से दो गोलियां चलाईं। आप और आपकी पत्नी के गहरी चोट आई। आप लोग कीनक लाये गये पर थोड़ी देर में प्राण पखेरू निकल गये।

अपराधी लोग पकड़े गये। उन्हें लोगों ने खूब मारा पीटा। आष्ट्रिया के शाह कलसे ईश्न में हैं। आप बहुत दुःखित हैं और तुरत राजधानी वियेना लौट जाने की तैयारी कर रहे हैं।

हत्यास्थल से कुछ दूर एक बम मिला है जो बस का नहीं है। विश्वास किया जाता है कि, इससे यही मालूम होता है कि, पहले दो प्रयत्न कहीं विफल हो जायं इसलिये तीसरे प्रयत्न का भी बन्दोबस्त कर रखा गया था।

कहा जाता है कि, जब युवराज और उनकी पत्नी के बोसनिया जाने की सूचना पहले पहल प्रकाशित हुई तो बोसनिया में सर्विया के अधिकार बढ़ाने का आन्दोलन आरम्भ हुआ। लोगों ने उन्हें बहुत समझाने की चेष्टा की कि, आप मत जाइये पर युवराज ने एक न सुनी यद्यपि उनकी पत्नी अनिच्छुक रही।

हत्यारा एक सर्वियन विद्यार्थी है। नाम ग्रिज्जिह है। पूछताछ करने पर उसने कहा कि, राष्ट्रीय उद्देश्य से बहुत दिनों से कुछ पुरुषों की हत्या करने की मेरी इच्छा रही। मेरा कोई साथी नहीं है। कम्पोजीटर गैब्रिनोविक ने कहा कि, बेलग्रेड के कुछ अराजकबादियों से मुझे बम मिला था। मैं उनके नाम नहीं जानता। इसने भी अस्वीकार किया कि, मेरा कोई साथी है।

नये युवराज का नाम आर्चड्यूक चार्ल्स फ्रांसिस जोसेफ है। ये परलोक गत राजकुमार के भतीजे हैं। अपराध के कारण आस्ट्रिया और सर्विया की शत्रुता बढ़ जाने की सम्भावना है।

आरकाटी गिरफ्तार।

गत रविवार को हवड़ा स्टेशन पर महादेव तथा दो और आरकाटी गिरफ्तार किये गये। ये बङ्गाल नागपुर रेलवे की ट्रेन से आये थे। इनके साथ बीस मनुष्य थे। अभियुक्त इन्हें आसाम में चाय बगीचे में भेजने की इच्छा से लाये थे। सन्देह होनेपर गवर्नमेण्ट रेलवे पुलिस ने अभियुक्तों से पूछताछ की। अन्त को पता लगा कि, वे उक्त बीस मनुष्यों को बहका कर लाये हैं। अभियुक्तों का विचार होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

वैदिक धर्मको सर्व प्रिय बनाओ।

(३)

(ले० श्री इन्द्र वेदालंकार)

अपने पूर्व लेख में हम दिखा आये हैं कि ऋषि दयानन्द का उद्योग इसी लिये सफल हुआ, क्योंकि उन्हों ने लोक भाषा को वह सिंहासन दिया जिस पर उसका वस्तुतः अधिकार है। जिस विचार को सर्व प्रिय या बहु प्रिय बनाना हो, उसे जहां तक हो सके सरल और सुलभ बनाना चाहिये। साधारण मनुष्य कभी उस सौन्दर्य को पसन्द नहीं करते, जिस को जानने के लिये सूक्ष्मदर्शक यन्त्र का उपयोग करना पड़े। चित्रकारका वह चित्र सर्वसाधारण में पसन्द नहीं किया जा सकता, जिसकी छवि को मनोगत करने के लिये घन्टा भर तक चित्रकार का व्याख्यान सुनना पड़े। ऐसे चित्र को देख कर सम्भव है अज्ञ लोग कह दें कि 'वाह वाह, क्या कहना है, किन्तु यह आशा नहीं हो सकती कि वे उन के दिलों पर आसन जमा सकेंगे। सर्व साधारण स्थूल सुन्दर और सुघड़ वस्तु के देखने में ही आनन्द ले सकते हैं। जो लोग यह चाहें कि सर्वसाधारण उनकी बात को सुनें, उन्हें इस प्रकृतिकी शिक्षा को सदा हृदय में रखना चाहिये।

आर्य समाजने इस मार्ग का अवलम्बन करके कार्य किया है इस लिये उसके सिद्धान्त बहु प्रिय दिखाई देते हैं, किन्तु हमारी सम्मति में उसे अभी बहुत कुछ करना है। अभी तक आर्य समाज ने जिस प्रकारका कार्य किया है उसे देखते हुए तो हमें यह कहना पड़ता है कि उसके अपने सिद्धान्त बहु प्रिय भी नहीं हुए। जो लोग आर्य समाज के स्तम्भ स्वरूप हैं उन में से भी एक चौथाई समाज के सारे सिद्धान्तों का परिज्ञान नहीं रखते। परिज्ञान भी रखते हैं तो उस में प्रेम नहीं रखते।

शायद ऊपर का कथन पाठकों को एक प्रत्यक्ष विरुद्ध स्थापना के समान प्रतीत होगा। आर्यसमाज के काम को कौन नहीं देखता समाज के धुरन्धर उपदेशकों के व्याख्यानों को जनता जिस प्रेम से सुनती है, उसे कौन नहीं जानता। समाजों के वार्षिकोत्सवों पर विद्युत् की जो लहर सभा मण्डप में चक्कर लगाती है उसे किसकी आँखें नहीं देखतीं? देश के कोने २ में समाज का भेरीरव सुनाई दे रहा है, उस से कौन इन्कारी हो सकता है? यह सब ठीक है, समाज के प्राणों के प्यासे शत्रु भी यह सब स्वीकार करते हैं। जिस प्रकार, समाज ने भारत के नगर २ में पुराने मिथ्या भ्रमों और कुरीतियों का ढेर लगाकर उस में आग लगादी है, और दूर २ समुद्रों के पार उसकी चमकीली ज्वालाओं की छवि चमका दी है, उसे देखकर संसार आश्चर्यित और भयभीत भी हो रहा है। किन्तु फिर भी हम कहे बिना नहीं रह सकते कि समाज के सिद्धान्त बहु प्रिय होते दीखते हैं, वस्तुतः हो नहीं रहे। आर्य समाज ने अपने सारे स्वार्थ त्याग, परिश्रम, और वीरभाव से जितना काम किया है, उसका तीन चौथाई अन्य धर्मों या सम्प्रदायों के सिद्धान्तों को अप्रिय बनाने में व्यय हुआ है और एक चौथाई अपने सिद्धान्तों को प्रिय बनाने में। आर्य समाज ने निःसन्देह कीकर खैर और कंटीली झाड़ियों के घने जङ्गल को उखाड़ दिया है किन्तु उसके स्थान में सुहावनी वाटिका भी बनादी है यह अभी सब कोई नहीं मान सकता।

खण्डन में आर्यसमाज को ऐसी असाधारण कृत कार्यता हुई है और मण्डन में नहीं, इस का क्या कारण है? पहले लेखों में कही हुई बात ही इस का कारण है। आर्यसमाज ने दूसरे सम्प्रदायोंके खण्डन में उस भाषा का आश्रयण लिया है, जिसे लोग समझ सकते हैं। कभी आप समाज की वेदी पर से दूसरे मतों के विरोध में व्याख्यान सुनिये। वक्ता महाशय की भाषा बहुत सुगम तो क्या कभी कभी बिल्कुल ग्राम्य होती है। सुनने वाले अनायास ही उसे समझ लेते हैं यदि पुराणों का खण्डन हो रहा है तो आर्य भाषा या पंजाबी के शब्दों की बहुतायत होगी; यदि मुसल्मानों के धर्म का खण्डन हो रहा है और श्रोताओं में मुसल्मान बहुत हैं तो बोलने वाला उर्दू और फारसी शब्दों का खूब सन्निवेश करेगा, यदि ईसाइयोंकी पोल खुल रही है तो उन की ही भाषा में वक्ता का अभिप्राय प्रकट होगा। किन्तु यदि वक्ता अपने सिद्धान्तों का मण्डन करने खड़ा होगा तो वही संस्कृत भरी आर्य भाषा लोगों के कानों पर प्यारे किन्तु अज्ञेय प्रभाव को उत्पन्न करेगी। हम ने बड़े अच्छे अच्छे ऐसे पण्डितों के, जिनके खण्डन परक व्याख्यानों पर सुनने वाले हर्ष ध्वनि का ताँता बांध देते हैं, ईश्वर सिद्धि और वेदों के प्रमाणत्व पर व्याख्यान सुने हैं। यदि हम यह कहें कि उस समय श्रोताओं का आधा भाग ऊंघ रहा था तो हमें आशा है कि कोई व्याख्याता महाशय नाराज़ नहोंगे क्योंकि यह सच है। लोगों की खण्डन सुननेकी स्वाभाविक प्रवृत्ति भी इसमें कारण हो सकती है, किन्तु वक्ता महाशय की भाषा भी सुलाने में जादू का असर करती है। मण्डन में सरल भाषा का कैसे प्रयोग किया जाय, यह हम लोग नहीं जानते। इसी लिये यद्यपि अपने तर्क और भाषा केज़ोर से हम ने अन्य मतों तथा सम्प्रदायों के सिद्धान्तों को अप्रिय बना दिया है, तथापि अपने सिद्धान्तों को प्रिय बनाने में अभी हम कृतकार्य नहीं हुए।

सच्चे आर्य धर्म के सत्स्वरूप को जनता में प्रकाशित करना और उसे सर्व प्रिय बनाना ही आर्य समाज का उद्देश है। खण्डन साधन मात्र है। उसी को उद्देश्य बना लेना गुलाब की जड़ को सींचने और फूलों को उजड़ने देने के समान है। हमारा धर्म अभी लोगों के अंध खुले ताले में बन्द पड़ा है। ब्रह्म यज्ञ अर्थात् प्रातः सायंका सन्ध्या एक आर्य का पहला कर्तव्य है। किन्तु कितने आर्य हैं जो सन्ध्या के अर्थ जानते हैं। ग्रामों और नगरों के साधारण निवासियों को जाने दीजिये, पढ़े लिखे लोग भी सन्ध्या के समय मन्त्र पढ़ते हुए क्या विचार करते हैं? उनका दिल क्या लग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सकता है जब वे मन्त्रों को समझ ही नहीं सकते? यदि कहीं किसी पंडित की सहायता से मन्त्रों के अर्थ जान भी लिये तो सन्ध्या करते हुए मन्त्र पढ़कर उसके अर्थ करने में एक ओर मंत्र का गौरव मरा जाता है, और दूसरी ओर अर्थका। हम आर्य लोग शब्द को ईश्वर मानते नहीं हैं। ब्रह्मयज्ञ का अभिप्राय मन्त्रों का पठन मात्र नहीं। उनके अर्थों पर विचार है। तब तो सर्वसाधारण को, जिन्हें वेद की कठिन और भावपूर्ण भाषा तो क्या-साधारण संस्कृत भाषा के शब्दों और देव नागरी के अक्षरों का परिज्ञान भी नहीं है, संस्कृत में सन्ध्या के मन्त्र याद कराके परमात्मा के ध्यान से वञ्चित रखने की जगह उन्हें उन की भाषा में सन्ध्या के मन्त्रों का भावार्थ मात्र स्मरण कराना चाहिये, ताकि वे अपने ईश्वर का कुछ ध्यान भी कर सकें। इसी प्रकार नित्य कर्मों का सिखलाना है। जीवन-चर्या सिखलाने के लिये आप सर्वसाधारण को जितने ही अधिक सूत्र और श्लोकों के प्रमाण देदेकर समझायंगे, त्यों त्यों वे गड़ बड़ में पड़ते जायंगे। साथ ही इधर उधर के श्लोक आदि सुनाकर लोगों को केवल संस्कृत वाक्य को प्रमाण मानलेने की आदत डाल देने से इसी प्रकार के और श्लोक कहने वाले पौराणिक आदिकों के लिये भी हम खेत साफ़ कर देते हैं। उन्हें अपने कार्य में सहायता देते हैं। सर्वसाधारण को यदि उन्हीं की भाषा में केवल वेद मंत्रों की सहायतासे उनके धर्माधर्मों का ज्ञान कराया जाय और वैदिक धर्म का गौरव समझाया जाय तो फिर उस के सर्व प्रिय बनने में विलम्ब न लगे। आर्यसमाज के उत्साह और परिश्रम को देखकर संसार डाह कर रहा है फिर उस के सिद्धान्तों के फैलने में देरी क्यों लगनी चाहिये।

अगले लेख में हम इसी सम्बन्ध में एक और निवेदन करके इस लेख को समाप्त करेंगे।

विदेश प्रचार

आर्य्यसमाज का धर्म, वैदिक धर्म सार्व भौम है इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं। यदि कुछ हो भी तो अन्य बातों को छोड़ कर उस के नियमों के अवलोकन से दूर हो जाता है जहां पर ऋषि ने मनुष्य मात्र का विचार सामने रख कर यह यत्न किया है कि आचार सम्बन्धी आदर्श पूरा होजाय अर्थात् व्यक्तिगत लाभ और संस्थागत रुचियां सर्वथा ही एक होजायं और घाटा किसी एक को भी न हो। ऐसे धर्म की उत्तमता में क्या सन्देह होसक्ता है, क्योंकि वह उत्तमता उत्तमता नहीं जो सार्वभौमता के विचार में अपना स्वत्व और अस्तित्व न रख सके। जब यह अवस्था है तो हम आचार सम्बन्धी एक पाप कर रहे होंगे यदि हम किसी एक मनुष्य समुदाय तक अपनी शक्तियां उस धर्म के प्रसार के लिये संकुचित कर देंगे। यदि एक बीज हमारे हाथ में सौभाग्य से आगया है तो उच्च अर्थ शास्त्र हमें बताता है कि हम उस स्थान पर इसे बोएं जहां कि यह मनुष्यमात्र का अधिक से अधिक कल्याण करे। इतनी भूमिका के पश्चात् हम अपने अभिप्राय को स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि अमेरिका एक उपर्युक्त गुण वाला स्थान है और कि वहां पर अधिक से अधिक और अविभक्त उत्साह से काम करने की आवश्यक्ता है। सौभाग्य से हमें एक वीर मिलगया है जिसमें आवश्यक उत्साह है। अब प्रश्न यह है कि हम यहां बैठे हुओं का इस काम के सम्बन्ध में क्या कर्त्तव्य है। कई ओर से यह प्रस्ताव उठाया गया है कि सब से पहले हमें 'सत्यार्थप्रकाश' की जो स्वामीजी की जीवन कृति कही जा सक्ती है ५००० प्रतियां भेज देनी चाहिये, परन्तु हमारा विनीत निवेदन यह है कि पूर्व इस के कि हम सत्यार्थप्रकाश-जिसके भेजने की पं० केशवदेवजी ने स्वयं ही मनाई करदी है। या किसी भी अन्य पुस्तक को भेजने से पूर्व निष्पक्ष यह विचार करलें कि उस पुस्तक के बनाने में कारण और प्रेरक कौनसी अवस्थाएं थीं और वर्त्तमान अवसर पर और अमेरिका देश में वह अवस्थाएं हैं भी या नहीं, दूसरी बात जो विचारणीय है वह यह है कि निर्ध आर्य्य पबलिक की गाढ़ी कमाई में से आए हुए चन्दे की एक २ कौड़ी का उत्तम प्रयोग हो नहीं तो हमारे यहां की संस्थाएं ही कौन सी कम या माला माल हैं, इन दोनों पहलुओं पर विचार करते हुए हम इस सिद्धान्त पर पहुंचे हैं कि परमेश्वर के १०० नाम, जन्म पत्र, शोक पत्र के झगड़े, पाठ्य पुस्तकों का विवरण, दर्शनों का परस्पर अविरोध, तथा अन्य सहस्रों भारतवर्ष के साथ विशेष सम्बन्ध रखने वाली बातों की संक्षिप्त व्यवस्था अमेरिका वालों के लिये कोई अर्थ ही नहीं रखते। ये सब बातें आर्य्य जाति के जीवन में उस समय की मंज़िल में आवश्यक थीं जिसने सत्यार्थ-प्रकाश को जन्म दिया, परन्तु आज उन में से कई बातों की भारतवर्ष के ही विद्यार्थियों, शिक्षित पुरुषों और अन्य भिन्न २ कोटियों के मनुष्यों के लिये अनिवार्य्य नहीं रहीं। उदाहरणतया मेरी सम्मति में विद्यार्थियों के लिये खंडन के ४ समुल्लासों के पाठ की आवश्यक्ता नहीं, पुनः अमेरिका वालों के लिये, तो कहानी ही क्या है। इस लिये मेरी तो तुच्छ सम्मति यह है कि हरएक विषय पर जिसका सत्यार्थ-प्रकाश में उल्लेख होने के अतिरिक्त अमेरिका में उपयोगी हो सत्यार्थप्रकाश के आधार पर एक नई पुस्तक अंग्रेजी में लिखी जाय जिस में मौलिक सिद्धान्तों पर पूरी सूचनाएं दी हुई हों। इस के लिये प्रान्तिक झगड़े के उठाने के निमित्त मुझे शोक है कि मुफ्त में उठाया गया है। मेरा यह प्रस्ताव है कि दोनों प्रान्तों के कुछ महानुभावों से प्रार्थना की जाय कि वे परस्पर सहायता, श्रम विभाग और साहचर्य के नियमों पर काम करते हुए इस अत्यन्तावश्यक कार्य्य को सम्पादन करके अपनी और अपने २ प्रान्तों के वास्तविक गौरव और यश को दिगन्त विश्रुत करें।

भवदीय

पूर्णानन्द उपदेशक

आ० प्र० सभा पंजाब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युवकों का मार्ग।

(ले० श्रीयुत शरच्चन्द्र भट्टाचार्य एम० ए०
प्रिंसिन्पल हिन्दू कालेज)

२० वर्ष व्यतीत हुए, मेरी अवस्था जब १७ वर्ष की थी, मैं बङ्गाल की एक छात्र मण्डली का साधारण सभ्य था, यही प्रश्न उत्थापित हुआ जो कि हम आज इस सभा में प्रस्तावित कररहे हैं। युवकों के लिये उचित सत्पथ क्या है? २० वर्ष में हम तो बहुत ही परिवर्तित होगये हैं--देश और काल के प्रभाव से, और नैतिक और राष्ट्रीय निवर्तन से हमारी प्रकृति का भी अत्यन्त परिवर्तन होगया है। परन्तु प्रश्न जैसा का वैसा ही बना है। सत्पथ क्या है? बहु युग युगान्तर व्यतीत होजावेंगे, प्रश्न यही बना रहेगा। महाभारत में बक रूपी धर्म ने महाराजा युधिष्ठिर से यही प्रश्न किया था—कः पन्था? सत्पथ क्या है? महाराजा ने उसका क्या उत्तर दिया था? :—

वेदा विभिन्ना. श्रुतयो विभिन्ना
नाऽसौमुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।
धर्म्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्
महाजनो येन गतः स पन्थाः॥

वेदविधि, श्रुति, मुनियों के मत सब न्यारे न्यारे हैं। धर्मतत्व बड़ा निगूढ़ है, (इस अवस्था में) महात्माओं ने जो पथ अवलम्बन किया है हमारे लिये वही सत्पथ है।

महात्माओं ने हमारे लिये, हमारे बर्ताव के लिये जोजो उपदेश लिपिगत कर रखे हैं उनका सम्पूर्ण विश्लेषण असम्भव है। सम्भव हुआ भी तो हमारे क्षुद्र बुद्धि के आयत्त न होंगे। इस लिये हम आज उन में से दो चार अत्यन्त आवश्यक और विशेष सम्प्रदायों के अविरोधी बातें चुन कर आपकी सेवा में उपस्थित करते हैं—परमात्मा इष्ट दान करें।

भूमिका स्वरूप एक बात कहनी चाहिये कि जो उपदेश वैदिक युग में कार्य कारी था, आज उस से उपकार उठाने के लिये हमको उसका कुछ परिवर्तन करना पड़ेगा। अन्धे बन कर एक ही रीति वा एक ही न्याय के अनुसार कार्य करना मूर्खता है। जो नियम दो सहस्र वर्ष पहिले देश काल पात्र के लिये अच्छा था उसी नियम को यदि आज हम पदानुपद अनुसरण करें, तो सम्भव है कि वह एक दिन का अच्छा नियम आज हमारी हानि करेगा। इस का उदाहरण हम आगे देते हैं। जैसा व्यक्तिगत, वैसा ही सामाजिक विवर्तन (Evolutin) अवश्यम्भावी है। इस विवर्तन के अनुयायी नियमादि का प्रवर्तन और परिवर्तन करना साधु है। नचेत् समाज विवर्त्तित होकर आगे बढ़ जावेगा, और हमको उसका पदाघात सहकर धूलिकणाओं की एक छोटी कणिका बन रहना पड़ेगा। हंस जैसा क्षीर और जल के मिश्रण से विशुद्ध क्षीर ही को विश्लेषित करलेता है, अपनी बुद्धि की सहायता से हमको भी उसी रीति अशुद्ध को छोड़ विशुद्ध नियमों का पालन करना उचित है।

इस कार्य के लिये हमारे चन्द सहायक हैं। परमात्मा ने हमको निःसहाय संसार युद्ध में नहीं भेजा है। युद्ध में जय को प्राप्त करने की इच्छा, तथा हिताहित बोध (Conscience), कर्म्मेन्द्रिय अन्तरिन्द्रिय इत्यादि अनेक मित्र सेना हमारे सहायक उपस्थित हैं। हम उन को अपने काम में लावें या न लावें इसका दायित्व केवल हमारे ऊपर ही है। अपने कर्म्म की दुष्टता से यदि हम विपत्ति में फंस पड़ें तो दोषी कौन होगा कोई सुखी कहेंगे हमारा दौर्भाग्य! अर्थात् सर्व दोष उस अनन्त मङ्गलाधार परमात्मा के नाम पर ही आरोप करेंगे ऐसे पापिष्ट कहीं सफल होसकते हैं? धीर और स्थिर बुद्धि से कोई काम करने की रीति वा उपाय, उचित वा अनुचित नियमों को भली भाँति समझ कर यदि हम उस कार्य में लिप्त हों, परमात्मा अवश्य सुफल देवेगा।

प्रथम और सर्वोत्तम पथ है सत्यता (Sincerity, Truthfulness) रामायण, महाभारत आदि इतिहासों से हमको यह बड़ा भारी उपदेश प्राप्त होता है कि जब कोई महापुरुष किसी कार्य में सफल हुआ तो उस सफलता के मूल में सत्यता निश्चय है, मिथ्या से दूर रहो—मिथ्या बड़ा धूर्त प्रबंचक है। मन में दृढ़ भित्ती जमावो कि हम कभी असत्य न बोलेंगे। यह एक उत्तम योगसाधना है—सर्व साधनों से उत्कृष्ट है। इस के लिये हमें न बन पधारना पड़ता है, और न संसार छोड़ना पड़ता है। परन्तु सत्य साधना वह योग साधना है जिस से हमको वैसा ही फल प्राप्त होता न हो सकता है जैसा कि महा योगीसत सहस्र व्यापी कुम्भकसे पाता है। क्या सहज अनायाससाध्य उपाय परमात्मा ने हमको दिया है! प्रत्येक कार्य में, प्रत्येक वाक्य में, प्रत्येक चिन्ता में हम सत्य ही सत्य को रक्खें और असत्य को दूर करें। यदि सत्य कथन अप्रिय हो, निःशब्द रहें। प्रति कार्य में सोचें कि भला कुछ मिथ्या तो नहीं आ पड़ी? सम्भव है कि कदाचित हम कुछ नुकसान उठाना पड़ेगा। क्या चिन्ता जीवन क्या केवल लाभ के लिये है? दो चार ठोकर खाते हुए यदि हमको अमृत प्राप्ति होने का पन्था मिले तो उन ठोकरों को पथ परिचायक (रास्ता बताने वाले) समझना चाहिये। हमारे पश्चात् जो आने वाले हैं वे इन ठोकरों से बच चलेंगे। मन की बड़ी साधना यह है कि असत्य से बचें। धर्म चतुष्पद माना गया है, तपः शौच, दया, दान चार पांव हैं परतु इस धर्म की प्रतिष्ठा सत्य में ही है।

अब यह एक प्रश्न आता है कि सत्य और असत्यका विचार कैसे हो? परमात्मा ने हमारे अन्तर्वर्ती एक ऐसा इन्द्रिय दिया है जिस से हमको इस प्रश्न का सदुत्तर मिल सकता है।

मन को पूछो—सदुत्तर मिल जावेगा। साधु का मन असत्य से स्वतः बक्र होता है—स्वतः उसको आघात लगता है। मन को कोमल करो। कोमल धरती में जब स्वल्प वर्षा जल एकत्रित होता है तो उसी जल के आधार होने के कारण वह स्थान क्रमशः गंभीर हो जाता है। इसी रीति से जब सत्यता आकर मन को आधार कर लेती है, तो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उस मन में उत्तरोत्तर अधिक गंभीरता उत्पन्न होती है । अन्त में एक ऐसी अवस्था आन पड़ती है कि असत्यरूपी अंगार निकट आते ही निर्व्याप्त होजाता है । सत्य ही सत्य से मन भरा रहता है। जब सत्य का प्रभाव तुम पर पूरा आजावेगा जब मिथ्या को तुम दूर से पहिचान कर उससे स्वयं सुदूर रहोगे तब किसी वस्तु का अभाव नहीं रहेगा ।

दूसरा पन्थ है निःस्वार्थता का। अपने को कर्म्मफल से हटाते रहो। इसका यह अर्थ नहीं कि एक दम कर्म्म से हटो तुम्हारा कर्तव्य जो है सो तो करना ही चाहिये परन्तु उससे फलका बहुत भरोसा न रखो। स्वार्थता और सत्यता कभी एकत्र नहीं रह सकतीं। यथा शक्ति परोपकार करो, निर्म्मल आनन्द लाभ करोगे ।

दान को हम धर्म्म के चार पावों का एक पांव जानते हैं। दान महाधर्म्म है, इस में कुछ शक नहीं है । आज कल पाश्चात्य सभ्यता के अनुसार हम को पात्र भेद से दान करना उचित है। Political Economist कहते हैं कि दानसे अर्थ का व्यर्थ व्यय होता है, उससे कुछ प्रतिफल नहीं मिलता, अतएव दान करना उचित नहीं। ऐसा बचन सुनते हुए हमारे मन में क्या अनुभूत होती ? क्या धर्म्म भी पात्रापात्र की अपेक्षा रखता है ? नहीं नहीं। जो हमारे सन्मुख आकर एक पैसे की आकांक्षा प्रकाश करे और हाथ बढ़ावे, क्या वह उसने बहुत ही नीच अवस्था में नहीं डाला है ? क्या वह अपात्र है ? अभाव ने उसे जिस अवस्था में डाला है, क्या हम अपने तईं उस अवस्था को स्वीकार करलेंगे ? उस को कुछ दान करना व्यर्थ नहीं है ।

एक जाति के तथा कथित Philosopher दार्शनिक हैं जो कहते हैं कि लंगड़े लूले, दरिद्र कुष्टी को दान नहीं देना चाहिये– क्यों ? उत्तर– जो महा पाप से अपने ऊपर परमेश्वर का कोप और विचार उठा लिया है, जो कि ईश्वर के हाथ पाप की शक्ति भुगत रहा है उस पर दया करनी मानो भगवदाज्ञा के विरोधी होना है। जिसको परमेश्वर पापि समझ कर सज़ा देते हैं उसको सज़ा मिलना ही उचित है। अतएव दान इस क्षेत्र में पाप कार्य है। इन बुद्धिमानों ने मान लिया कि ईश्वर सज़ा दे रहा है और हमारे दान से असन्तुष्ट होगा क्या सूधा विचार है। ईश्वर ने मारा तो तुम भी मारो और उस पर दया करो तो तुम ईश्वर के विरोधी होगे ! भला इन्हें ईश्वर की इच्छा कैसे मालूम हुई?

परोपकार केवल दान में ही नहीं परन्तु अनेक प्रकार से हो सकता है। दिवस के अन्त में हमें बहुत समय मिलता है, जिस को कि हम वायु सेवन और बन्धु बान्धवों के मेल मिलाप में व्यतीत करते हैं। यदि उस में से थोड़ा समय, एक भी ग़रीब लड़के को विद्या दान करें तो, हमारे पड़ोसी दुर्भाग्य बालकों को पढ़ावें तो कितनी अज्ञानता दूर हो ! सदा ध्यान रक्खो, विद्या धन केवल जाति विशेष का एकायत्त धन नहीं है। सूर्य्य चन्द्र सब पर समान किरण वितरण करते हैं; मलयानिल सब को समान सुख देता है। सबके प्राण का समान अधार जल वायु है। क्षत्रपति महाराज से लेकर नीच कीट तक सब की उत्पति, स्थिति, बुद्धि, सुख दुख एक ही नियम के आधीन हैं। भूख प्यास से सब समान जलते हैं। सब परमात्मा के प्यारे। बुद्धि ईश्वर ने सब जाति के मनुष्यों को दी है; तुम विद्या क्यों न देवोगे ? भेद बुद्धि से अन्धे मत बनो-सबको अपने बराबर देखो-सत्पन्था स्वतः प्रकाश होगा।

काम, क्रोध, लोभ आदि कई शत्रु हमारे शरीर में सदा वास करते हैं। मन की दृढ़ता से उन को दमन करो। क्रोध की आग से तो हम पहिले जलेंगे, उस की शिखा दूसरे पर पहुंचे या न पहुंचे ! यही रीति सब रिपुओं की है। पूरी तौर एक को दमन कर सको, जहां तक बन पड़े उतना ही अच्छा है। महाशिक्षक श्रीकृष्ण जी कहते हैं "स्वल्पमप्यस्य धर्मस्यत्रायते महतो भयात"। विपत्ति के समय परमात्मा का स्मरण करो। (शेष आगे)

गुरुकुल समाचार

हमारे स्नातक

गुरुकुल के प्रेमी यह अवश्य चाहते होंगे कि उन्हें कभी २ गुरुकुल के पुराने स्नातकों के समाचार भी सुनाये जाते रहा करें। गुरुकुल वृक्ष की जो लोग रक्षा चाहते हैं—वे फलों के लिये, नकि रक्षा के लिये। उन फलों का संवाद सुन रहना हितैषियों के लिये बड़ी रोचकता का हेतु होगा। हमारे भाई ब्र० विश्वनाथ विद्यालंकार, जो इस वर्ष के स्नातकों में से प्रथम थे गुरुकुल में आगये हैं और पूर्वीय दर्शन और रसायन शास्त्र की पढ़ाई में सहायता दे रहे हैं। ब्र० भारद्वाज विद्यालंकार आयुर्वेद की शिक्षा पाने के लिये कलकत्ते गये हुए हैं। वहां आप ने नेशनल मेडीकल कालेज में शिक्षा का आरम्भ कर दिया है।। ब्र० चन्द्र मणि विद्यालंकार ने इस वर्ष प्रतिष्ठित स्नातक की पदवी प्राप्त की थी। आपका विचार दो वर्ष और गुरुकुल में रह कर विद्या वाचस्पति बनने का है। इसी बीच में शाखा गुरुकुल मुलतान पर एक आपत्ति-उपस्थित हुई। वहां जिस जमींदार ने गुरुकुल के लिये स्थान दिया था उसका दिल विपरीत हो गया। शाखा को उठा कर दूसरी जगह लेजाना पड़ा, जिससे उसका जीवन भी सन्देह में पड़गया था। ऐसी अवस्था में मुलतान के सज्जनों ने गुरुकुल से एक ऐसा मुख्याधिष्ठाता मांगा जो पठन पाठन और आरम्भ आदि के सब कामों को गुरुकुल की रीत पर चला सके। गुरुकुल के आचार्य ने चारों ओर देखकर ब्र० चन्द्र मणिजी से कहा, और आपने भी अपनी कुल भक्ति दिखाते हुए आज्ञा को शिरो धार्य किया। आप इस समय शाखा के मुख्याधिष्ठाता पद पर कार्य कर रहे हैं। परमात्माने चाहा तो आप अपनी इस कुल सेवा में पूरी कृत कार्यता लाभ करेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"प्रभात"

हमारे भाई स्नातक यज्ञदत्त विद्यालंकार लाहौर से 'प्रभात' नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकालने वाले हैं। यह समाचार जब पाठकों के पास पहुंचेगा, तो शायद 'प्रभात' निकल चुका होगा। यह 'प्रभात' देश, जाति, धर्म और कुल के लिये सेवक का काम करेगा। अपने भाई की गम्भीरता और पाण्डित्य को जानते हुए हम कह सकते हैं कि यह नया सेवक एक योग्य और सभ्य सेवक होगा।

पं० ब्रह्मदत्तजी विद्यालंकार आर्यसमाजों में भ्रमण करके धर्मोपदेश करते रहते हैं। आपकी भाषण शक्ति ने पंजाब की कई समाजों को आनन्दित किया है।

श्री आचार्यजी

महात्मा जी कुछ महीनों का विश्राम लेने के लिये करांची की ओर गये थे। वहां की जलवायु भी उनके बहुत अनुकूल नहीं निकली। जिन रोगों को दूर करने के लिये आप करांची गये थे, वहाँ जाकर वे और भी बढ़ गये। इस रुग्णावस्था में भी आप के चार पांच व्याख्यान वहां हुए अब आप स्वास्थ्य की ढूंढ में कैटे गये हैं। कैटे की जलवायु महात्माजी के लिये एक वार पहले स्वास्थ्य सिद्ध कर हो चुकी है। अबके भी आशा है, ऐसा ही सिद्ध होगा। सब सज्जनों से निवेदन है कि वे महात्माजी को आराम देने में सहायता दें और चिन्ता पैदा करने वाले या प्रयोजन रहित ख़त पत्र द्वारा तङ्ग न करें।

खेलों के नियम

गुरुकुल महा विद्यालय में खेलों के प्रबन्ध के लिये जो नियम बने हैं, उन्हें हम गुरुकुल प्रेमियों के अवलोकनार्थ यहां देते हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय क्रीड़ा के नियम।

१. महाविद्यालय समिति क्रीड़ा के प्रबन्ध के लिये एक क्रीड़ाध्यक्ष निश्चित किया करेगी।

उपस्थिति।

२. गुरुकुल महाविद्यालय के सब ब्रह्मचारियों को प्रति दिन नियत समय पर क्रीड़ा क्षेत्रमें उपस्थित होना आवश्यक है केवल निम्नलिखित अवस्थाओं में ही कोई ब्रह्मचारी क्रीड़ाक्षेत्र में उपस्थित होने से मुक्त किया जा सकेगा।

(क) मुख्याधिष्ठाता की विशेष आज्ञा होने पर।

(ख) रोगी होने पर। रोगी के प्रार्थना पत्र के ऊपर गुरुकुल के किसी चिकित्सक के प्रमाणाक्षर होने चाहियें।

(ग) क्रीड़ाध्यक्ष की अनुमति पर।

खिलाड़ियों की सभा।

३. महाविद्यालय के सब खेलने वाले ब्रह्मचारियों की एक सभा होगी जो हर सत्र के आरम्भ में क्रीड़ा समिति तथा मुखियाओं के चुनाव के लिये हुआ करेगी।

क्रीड़ा समिति।

४. क्रीड़ाध्यक्ष की सहायता के लिये एक बनाई जायगी, जिसका प्रधान क्रीड़ाध्यक्ष समझा जायगा।

५. क्रीड़ाध्यक्ष इस समिति की सम्मति निम्नलिखित विषयों पर अवश्य लिया करेगा:—

(क) विशेष उत्सवों की क्रीड़ा का प्रबन्ध।

(ख) बाहर के सान्मुख्यों के लिये दलों का चुनाव करना।

(ग) खेलों के दिन आदि निश्चित करना।

(घ) और जिन विषयों पर क्रीड़ाध्यक्ष उचित समझे।

सत्रारम्भ की सभा या समिति के सब प्रस्तावों का अन्तिम निश्चय क्रीड़ाध्यक्ष की राय पर ही होगा।

६. इस समिति के चार चुने हुए सभासद् होंगे, जिनका चुनाव खेलने वाले ब्रह्मचारियों के सत्रारम्भ में होनेवाली सभा में हुआ करेगा। खेलों के मुखिया इस समिति के स्वाधिकार से सभासद् होंगे।

७. इस समिति का एक मन्त्री भी सत्रारम्भ की सभा में ही चुन लिया जायगा, जिसका कार्य खेल के सब प्रबन्ध सम्बन्धी कार्यों में क्रीड़ाध्यक्ष को सहायता देना, तथा समिति के अधिवेशनों को बुलाना और उसकी कार्यवाही को स्थिर रखना होगा।

मुखिया।

८. खेलों के मुखियाओं का चुनाव हर एक सत्र के लिये, महाविद्यालय के खेलने वाले ब्रह्मचारियों की सत्रारम्भमें होनेवाली सभा में हुआ करेगा।

मुखिया के अधिकार तथा कर्तव्य।

९. मुखियाके निम्न लिखित अधिकार तथा कर्तव्य होंगे।

(क) खेल के समय अपनी खेल का प्रबन्ध करना।

(ख) बाहिर के खिलाड़ी दलोंके साथ जय पराजय का उत्तरदाता होना।

(ग) क्रीड़ा क्षेत्र में, हर एक खिलाड़ी को अपनी खेल के मुखिया की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज्ञा अवश्य माननी होगी। जो खिलाड़ी ऐसा न करेगा, मुखिया उसे उस दिन की खेल से बाहिर कर सकता है। इस से अधिक दण्ड का अधिकार क्रीड़ाध्यक्ष को ही है।

उपमुखिया।

१०. मुखिया के अभावमें कार्य सम्पादित करने के लिये हर एक खेल के लिये एक २ उप मुखिया भी सत्रारम्भ की क्रीड़ा सभा में ही चुन लिया जाया करेगा।

मुख्य दल।

११. हर एक खेलका मुख्यदल सत्रभर के लिये सत्रके आरम्भ में ही चुन लिया जायगा। उसे वह क्रीड़ा समिति चुनेगी, जो उस सत्रके लिये निश्चित हुई है। दूसरे सत्र के प्रारम्भ से पूर्व जो २ सान्मुख्य बाहिर के दलों से होंगे, उनमें वे दल ही खेला करेंगे। उस समितिको यह भी अधिकार है कि वह मुख्य दल के खिलाड़ियों को आवश्यकता पड़ने पर सत्र के मध्य में भी बदल सके।

खेल में अथवा तंग समय में किसी खिलाड़ी के अशक्त हो जाने पर क्रीड़ाध्यक्ष उस के स्थान में नया खिलाड़ी रख सकता है।

पदच्युति।

१२. किसी अनुचित व्यवहार, अशक्ति या त्याग पत्रके उपस्थित होने पर क्रीड़ाध्यक्ष मुखिया खिलाड़ियों को हटाकर दूसरों को उनके स्थान में नियुक्त कर सकता है। यदि वह चाहे तो क्रीड़ा समिति से इन विषयों में सम्मति भी ले सकता है।

प्राप्त

सम्पदक प्राप्त लेखों के मतका उत्तरदाता नहीं

रामलीला जुगसना जिला मथुरा

माह जून में देहाती मदर्सों की छुट्टी होने के कारण लड़के धूप और दुपहरी की लूओं में बाहर बाग बगीचों इत्यादि में खेलने निकल जाते थे इसी समय में १ लड़के को खेल के तौर पर रामलीला करने की सूझी दो साल हुए तब उसने कुछ पैसों का आपस के लड़कों में चंदा कर यह काम प्रारम्भ किया-लोगों ने इस अवसर को पाकर और लड़कों को दुपहरी में इधर उधर फिरने से रोकने के वास्ते सुअवसर देखकर और कुछ ने तमाशा होने के सबब इस में सहायता दी और लीला को कराया पार साल भी एक महाशय ने यह समझकर कि यह लड़के अपना अमूल्य समय यों ही दुपहरी में खेतों में डोल कर नष्ट न करने पावें और यह समझकर कि इन लोगों को इन्हीं के ग्रन्थों में से स्त्री शिक्षा इत्यादि अच्छी बात बतलाने का अच्छा सुअवसर है इस काम को प्रारम्भ कराया-यह तो दुनिया के साधारण मनुष्यों का परम कर्तव्य ही है कि चाहे उन्हीं के धर्म की बात हो और चाहे कैसी ही अच्छी हो पर वे इसके विरोधी अवश्य ही होते हैं कहने को वे बड़े आचारी और धर्म धुरंधर पर समय पड़े तो चूं चूं-और यदि कहीं ऐसे काम को किसी अंग्रेजी मदर्से के पढ़े हुये ने छुआ तो मानों कि भेड़ों के बीच भेड़िया आगया और सब उस पर ले लाठी पिल पड़े चाहे वह दो एक को खा ही जाय और लाठी वाले देखते रहें खैर इस साल भी वह महाशय तो अपना आशय पूरा न होते देख हट गए पर और राम भक्तों ने उसे करने की ठान हीली-बस फिर क्या था बड़े जोर से काम होने लगा नित नये तमाशे दीखने लगे दर्शकों की संख्या प्रति दिन बढ़ने लगी बड़ी धूम के साथ गाने बजाने और नाचने में लोग प्रवृत हुये-ज्यों ज्यों सुरूप और दूसरे कर्मचारी नाचते कूदते त्योंही त्यों लीलाशोभाको प्राप्त होती थी और यदि किसी कारण किसी दिन कथा अधिक होती तो लीला लोगों को न सुठियाती (यानी) गावों की स्त्रियों का तो क्या कहना मनुष्य ही कुछ नहीं पढ़े होते उनके वास्ते तो रामायण की भाषा और उसका भाष्य एक अत्यन्त ही दुशवार चीज है न वे उसे समझ सक्ते थे और न समझने के वास्ते वे आते थे उन्हें तो खेल कूद ही प्रिय था यहां तक कि एक दिन लीला समाप्ति होने से कुछ ही समय पहिले इधर तो बारांगना नाचने को आई उधर १ बावा जी महाशय ने जो उस दिन कहीं से आ गये थे भजन शुरू कर दिया बस फिर क्या था महाशय के इस भजन ने मानों कि फूस में आग लगा दी-सब लोग एक साथ व्यग्र हो उठे और तरह २ के आक्षेप इस पर करने लगे समय की तंगी उन्हें घबड़ा कर और भी चिंतित करने लगी वह अपनी हार्दिक इच्छा को पूर्ण होते न देख और भी घबड़ा उठे और उस महाशय पर अपनी कठिन घृणित शब्दों की तलवार से प्रहार करने लगे-वह भी बस फौलादही का तो था फौलाद चाहे झड़ जाय पर मुड़े नहीं कोई भी क्यों न बके रंग में मस्त हाथी की तरह चूर गाते ही रहे-उक्त महाशयका यह दुष्ट (!) आचरण कि ऐसे मनोहर नाच में विघ्न देखकर लोग सब उठ खड़े हुए और चारों तर्फ से यह सिंह नाद सुनाई पड़ा-पकड़ो-मारो-निकालो-यह दुष्ट है यह समय नहीं देखता-यह पाखंडी भिखारी है-गरीब राम भक्त इन हजार आदमियों में भला क्या कहता यह समझ कर कि क्लेश न हो कुछ बुरबुराता हुआ रवाना हुआ—

हमारी इन सज्जनों से यह प्रार्थना है कि यदि वे अच्छा न कर सकें तो बुरा तो न करें क्या भारत को गारत करना ही वे अपना परम धर्म समझते हैं यदि वे किसी बात के दोष और गुण नहीं जानते तो उसे करने को उत्तेजित क्यों होते हैं पर लोगों में यही विचार हो तो आज भारतवर्ष की यह दीन दशा क्यों हो-हाय स्वारथ-तू एक पेट की खातिर हज़ारों का मूड़ कटादेता है राम चरित्र हो तो इस वास्ते कि मनुष्य इस से कुछ शिक्षालें पर हाय पेट उससे यह अशिक्षा तो अवश्य ही ले लेते हैं-प्रथम तो यह कि गांव के मनुष्य अशिक्षित होने के कारण कुछ समझते ही नहीं शायद १०० में दस कुछ कभी कोई बात पकड़ लेते हो तौ वह अपना प्यारा समय खेल में ही नष्ट करते हैं-दूसरे यह ठीक भी मान लिया जाय तो क्या इस कर्म कल्पना का कि 'हो इहे वही जो राम रचि राखा' पारा "विधि के अंक टारे नहिं टरें" कुछ अच्छा प्रभाव पड़ता है वह मनुष्य जाति को सिवाय सुस्त और काहिल बनाने के और कुछ भी लाभ नहीं पहुंचाता-भारतवर्ष की अवनति के बहुत से कारणों में से एक यह भी प्रबल कारण अवनतिका है सहस्रों मनुष्य तकदीर के भरोसे ही हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहते हैं और तनिक भी परीश्रम नहीं करते वे कहते हैं जो कुछ कराता है परमाआत्मा—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तीसरे यहकि रामायण में कई जगह स्त्री को अति अधम कहा है क्या यह कथन स्वामी तुलसी दास जी का मनुष्य जाति की कोई भलाई करता है-इसका लोगों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है मनुष्य स्त्रियों के ऊपर अत्याचार करते हैं उन्हें शूद्र समझ कर वे बहुत सताते हैं और हिन्दुओं के घर में एक यही क्लेश का मुख्य कारण है—

यही हमारी माता है कि इनसे हमारा चरित्र बनता है यही हमारे उपकार और जीवन का मुख्य कारण है यदि इन्हीं को हम अधम कहें तो क्या हम अधम नहीं हैं।

लछमन प्रसाद गुप्त

"सिंगापुर में आर्यसमाज"

आज हम उस परमात्मा को धन्यवाद देते हैं कि जिस की कृपा से हम लोगों को इस छोटे से द्वीप सिंगापुर में वैदिक धर्म प्रचार के लिये आर्य्य समाज स्थापित करने की शक्ति मिली है। इस समाज की आवश्यकता यहां पर बड़ी भारी थी, यदि समाज के मेम्बर्स अपने तन मन से सत्यधर्म प्रचार के लिये कुछ २ सहायता देंगे तो आशा है कि थोड़े ही दिनों में अविद्या की काली घटा, जो यहां पर बरसों से छा रही है और जिसके हटाने के लिये आज तक कुछ भी किसी ने किसी तरह की कोशिश न की, विद्या के प्रकाश से फट जायगी, और वैदिक सूर्य के प्रकाश को हर एक भाई, हिन्दुस्थानी और विदेशी अपने मन के किवाड़ को खोल के अन्दर आने देंगे और हमारे सनातन ऋषियों और मुनियों के राह पर चलके हर एक तरह का लाभ उठावेंगे और अपने लोक परलोक सुधारेंगे,

उक्त समाज की पहिली सभा अर्थात् Opening Night ता: ३ जून १९१४ रोज राजेश्वर पंचम जार्ज के जन्मोत्सव के दिन हुई, सभा में ज्यादा करके मदरासी भाई थे जो अंग्रेजी लिखे पढ़े हैं हवन होने के बाद पंडित गंगाराम शर्मा ने सभापति के स्थान को ग्रहण किया और प्रोग्राम शुरू हुआ पं० कमला प्रसाद चौबे का व्याख्यान "हिंदू" विषय पर बहुत ही मनोरंजक हुआ बाबू छोटासिंह वर्मा ने अंग्रेजी व्याख्यान वर्ण व्यवस्था पर दिया इस व्याख्यान का असर श्रोता गणों पर अच्छा पड़ा। पं० देवकीनन्दन चौबे ने ईश्वर स्तुति करके समाप्त किया।

पं० मंगला प्रसाद चौबे
उप मन्त्री
यंग मन्ज आर्य समाज
सिंगापुर

कन्या महाविद्यालय जालंधर

कन्या महाविद्यालय जालन्धर का जन्मोत्सव पिछले सोमवार १ आषाढ़ को नवीन मंदिर में बड़े समारोह से मनाया गया, इस वर्ष विद्यालय की भूत पूर्व छात्राएं इसमें सम्मिलित होने के लिये करांची, आगरा, मेरठ इत्यादि दूर २ स्थानों से पधारी थीं। प्रातः ५ बजे आश्रम, भवन तथा अनाथालय के निवासियों ने मिल कर पहिले १ घंटे तक गायत्री मंत्र का दत्त चित्त होकर जप किया, और विद्यालय माता के लिये शुभ कामनाओं की एक विशेष प्रार्थना की मंडली की भूत पूर्व छात्रायें, सीनियर (Senior) वर्तमान छात्रायें और अन्य प्रतिष्ठित स्त्रियें सभासदों का वृहदधिवेशन ७ बजेसे ११ बजे तक हुआ। आगामी वर्ष के लिये श्री पंडिता सावित्री देवी जी आचार्या प्रधाना, कुमारी सावित्री देवी जी पुत्री राय जादा भक्तराम जो उप प्रधाना, कुमारी मनोरमा देवी जी दशम श्रेणी मंत्रिणी, कुमारी सावित्री दशम श्रेणी नियत हुईं।

सायंकाल

सायंकाल का कार्य ५॥ बजे उत्तम २ भजनों से आरम्भ हुआ। कुमारी द्रोपदी देवी जी स्नातिका ने एक अत्युत्तम निबन्ध "हम कैसे उन्नति कर सकी हैं" पढ़ा। जिसको कि श्रोता गणों ने बहुत पसंद किया। कुमारी शन्नो देवी जी नवम् और दुर्गेश्वरी जी अष्टम ने भी विद्यालय के उपकारों और उसकी आवश्यकताओं पर एक २ निबन्ध पढ़े, दोनों निबन्ध इन देवियों की अवस्था को दृष्टि गोचर रखते हुए बहुत परिश्रम और योग्यता से लिखे हुए थे। अन्त में श्री० पूज्य माता सुभद्रा बाई जी आनरेरी सुपरिन्टैन्डैन्ट ने कुछ शब्दों में छात्राओं की ओर शुभ कामनाओं की इच्छा प्रगट की।

श्री. आचार्य्य जी का आशीर्वाद

श्री देवराज जी स्थानापन्न आचार्य ने पंडिता सावित्री देवी जीकी आज्ञा का पालन करते हुए छात्राओं को आशीर्वाद देते हुए कहा "देवियो ? तुम केवल अपनी ही लज्जा नहीं हो प्रत्युत अपने परिवार समाज और देश की लज्जा हो। इस लज्जा को पालन करना और स्थिर रखना तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है। और यह तुम्हारे बस की बात है। इसका साधन नियम का पालन करना है। तुम्हें स्मरण रखना चाहिये कि संसार की लज्जा की डोर तुम्हारे हाथ में है। तुम्हारा प्रभाव सारे संसार पर पड़ता है। इसलिये मैं तुम्हें पुनः कहता हूं कि सदा नियमों का पालन करो। ताकि तुम अपने परिवार, देश तथा जगत का मुख समुज्वल करने वाली बनो। मेरी बार बार ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम्हारे हाथों के लगाये हुए वृक्षों का पत्ता २ डाली २ शाखा प्रति शाखा तुम्हें आशीर्वाद देने वाले हों। यहां का वायु मंडल न केवल तुम्हारे मुंह को शुद्ध करने वाला हो, प्रत्युत तुम्हारे आत्मा को भी शुद्ध पवित्र करने वाला हो तुम्हें विद्यालय से पृथक होते हुए भी यही आशीर्वाद दिया जाता है। और अब भी मैं कहता हूँ कि तुम फूलो फलो और बढ़ो। तत्पश्चात् आरत होकर उपस्थित स्त्री पुरुषों का फलों इत्यादि से सत्कार किया गया और हमारे योग्य प्रधान श्री दीवान बद्री दास जी M. A. ने श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती महाराज के जीवन का कुछ वृतान्त जादू के लैम्प Magic-Lantern द्वारा उपस्थित छात्राओं के सामने वर्णन किया। इस तरह यह उत्सव निर्विघ्न समाप्त हुआ।

हिंदी साहित्य सम्मेलन

पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के आसन के लिये सम्मेलन की नियमावली के १९ वीं धारा के अनुसार मि० भाद्र कृ० ७ सं० १९७१ ता० १३ अगस्त सन् १९७४ को समिति की एक बैठक सम्मेलन कार्यालय में सन्ध्या के ५ बजे होगी।

भवदीय
लक्ष्मी नारायण नागर
मंत्री

शोकजनक मृत्यु—हम को यह लिखते बड़ाखेद होता है कि सेठ हरमुखराय जी प्रपुत्र यानी लाला छोटे लाल जी के पुत्र ला० राम नारायण जी २० वर्ष की आयु में इस संसार को छोड़ कर परलोक सिधारे आपने कोई सन्तान न छोड़ी लेकिन मृत्यु समय पर आपने ५०००० पचास हज़ार रुपये का दान हिन्दू अनाथालय हाथरस में बनवाने के लिये दिया इस रुपये के सूद से अनाथालय का कार्य होता रहेगा इससे आपका नाम चिरस्थाई रहेगा परमात्मा इन की आत्मा को शान्ति दे।

(कृष्णप्रसाद डाक्टर)
हाथरस

स्वामी नित्यानन्द जी की मृत्यु पर प्रस्ताव—पंजाब प्रति निधि सभा ने अपने वार्षिक अधिवेशन में निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत किया—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निश्चय हुआ कि यह सभा श्री स्वामी नित्यानन्द जी सरस्वती के परलोक गमन पर अत्यन्त शोक प्रकट करती है उक्त श्री स्वामीजी का वजूद वैदिक धर्म के लिये निहायत गनीमत था उन की आत्मा विद्या और वैदिक धर्म के लिये उनका हित और उत्साह निहायत प्रशंसनीयथा उनके परलोक गमन से जो कमी वाके हुई है सभा महसूस करती है कि उस की पूर्ति होना कठिन है। इस शोक में यह सभा श्री स्वामी जी विशेश्वरानन्द जी सरस्वती के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है।

लड़का लापता—एक लड़का जिस की उमर लगभग १४ या १५ वर्ष की है ता० १६ सन् १४ के श्याम से घर से ग़ायब है उस का नाम भवानी शरण है और वह सीवान हाईस्कूल में पढ़ता था और गर्मी की छुट्टियों में घर आया था अभी तक अविवाहित है आर्यसिद्धान्त को मानता है। कई महीने से संस्कृत पढ़ने की तरफ अधिक ध्यान रखता था और श्री१०८ स्वामी दयानन्द का हर बात में अनुकरण करना चाहता था उसकी गुरुकुल आदि ऐसे जगहों में जाने की अधिक सम्भावना है उस के पास एक रेपर और एक धोती कि जो पहने हुएहै कुछ नहीं है जिन महाशयों को उसका पता लगे सूचना देने की कृपा करें उस की माता बहुत व्याकुल है उस का हुलिया निम्नलिखित है।

कद मामूली; रङ्ग गन्दुमी, पेशानी चौड़ी मुंह पर वरे के दाग़, होंठ मोटी, बातकरते समय दांत दिखपड़ते हैं आँखें बड़ी और सुर्ख हैं दोनों पैरों में घाव के चिन्ह हैं जूता नहीं पहिनता है घर पर जिमिदारी का कारबार है ज़ात का कोली है।

आपका कृपाभिलाषी

सरयूप्रसाद

मु० सिकठिया पो० औ० पीपरा सारण (छपरा)

तिलक महाराज की आत्म कहानी

तिलक महाराज ने अपनी जेल की कहानी जो ज्ञान प्रकाश के संवाद दाता को कही है, उसका मर्म यह है "बम्बई हाईकोर्ट के जज दावरने जैसे ही मुझे छः वर्ष-निर्व्वासन का दण्ड दिया, वैसे ही मैं एक मोटर की सवारी द्वारा बम्बई-हाईकोर्ट से बम्बई नगर के महालक्ष्मी रेल-ष्टेशन पहुँचाया गया। वहां मुझे अहमदाबाद पहुंचाने के लिये एक स्पेशल ट्रेन खड़ी थी। अहमदाबाद में कुछ दिनोंतक रखा जाने के बाद मैं सन् १९०८ ई० को १२ वीं सितम्बर को अहमदाबाद से मन्दालय की ओर भेजा गया। उस समय तक मुझ से साधारण कैद का दण्ड पाने वाले अपराधियों जैसा नहीं; कठोर कैद का दण्ड पाने वाले अपराधियों जैसा व्यवहार किया गया। फिर भी हतकड़ी बेड़ा से मेरी रक्षा की गई। प्रथम दश दिनों तक अहमदाबाद जेल में मुझपर कड़ा पहरा रखा गया। यहाँ मुझसे कोई काम नहीं लिया गया सही; किन्तु भोजन बड़ा ही वाहियात दिया गया। इसके फल से मैं दुबला हो गया; मेरी देहका कोई पांच सेर वज़न घट गया इसके उपरान्त डाक्टर के अनुरोध से मुझे कुछ दूध और घी मिलने लगा। मेरे मन्दालय पहुंचने पर मुझे अपने दण्ड का हाल सुनाया गया। मन्दालय के जिस मकान में मैं रखा गया, वह दो मञ्जिला था। उसकी चार कोठरियां मेरे व्यवहार के लिये मुझे दी गईं। असल में यह मकान युरोपीयकैदियों के लियें बनवाया गया था। इसी लिये इसकी चारों ओर पक्की दीवार न बनवा लकड़ी के तखतों का एक इहाता बनवा दिया गया था। मेरी कोठरी और मेरे मकान के इहाते का द्वार रात्रि के समय बन्द करा दिया जाता था। मेरे साथ एक ब्राह्मण कैदी मन्दालय भेजा गया था! यही मेरा भोजन बनाया करता था। मेरे मन्दालय पहुंचने के एक मास के उपरान्त इस कैदी का बन्धन काल समाप्त हो गया इस के उपरान्त बम्बई के यरोदा जेल का कुकरणी नामक एक कैदी मेरी रसोई बनाने के लिये नियुक्त किया गया। यरोदा जेल में यह कैदी काल कोठरी में बन्द रखा जाता था। मेरे स्वास्थय का यह हाल है, कि गत सन् १९०८ ई० की २३ वीं सितम्बर को मैं मन्दालय पहुंचा प्रथम दो वर्ष तक मेरा स्वास्था सन्तोष जनक था। इसके उपरान्त मैं बहुमूत्र रोग द्वारा आक्रान्त हुआ। डाक्टर गदरे ने मुझ से कहा था, कि बहु मूत्र रोग में यवका आहार उपयोगी होता है। इसी विचार से मैंने अपने जेल के अधिकारियों से कहा, कि मुझे यवान्न दिया जाये, और कोई अन्न मेरे लिये उपयोगी न होगा मेरी यह बात सुन सरकार ने पूने के डाक्टर गदरे से इस विषय में परामर्श किया। इसके उपरान्त मुझे परीक्षा रूप से पन्द्रह दिनों तक यवान्न दिया गया। इस से मेरा बहुमूत्र रोग बहुत कुछ प्रथमित हुआ। यह देख मुझे और कुछ समय तक यह अन्न दिया गया।

"अकस्मात बैठे रहने से मेरा जी उकता गया। इस पर जेल के कर्म्म चारियों से मैंने कोई काम माँगा। उन्होंने मुझ से कहा, कि तुम कोई भी काम करने न पाओगे। इसपर मैंने कहा, कि मुझे पढ़ने के लिये पुस्तक चाहिये। बहुत दिनों के बाद यानी दूसरे वर्ष के फरवरी मास में पढ़ने के लिये मुझे कुछ पुस्तकें दी गईं इस जेलके कर्म्मचारी मेरे प्रति सदय थे, मुझसे प्रथम श्रेणी के कैदी जैसा व्यवहार करते थे। जिस समय मैं पकड़ा गया था, उस समय मेरे पास केवल दश रुपये नकद थे। मन्दालय से पूने के अपने एक सम्बन्धी के नाम तार भेज मैंने एक सौ रुपये नकद मंगवाए और इस से आवश्यक बस्तर, वस्त्र आदि खरीदे। जब मेरे पास कोई समाचार पत्र आता न था। जेल के अफसरों ने मेरी समाचार पत्र मंगाने की प्रार्थना अस्वीकार करदी। समाचार पत्रों को न पढ़ने के कारण मुझे यह जान न पड़ा, कि गत छः वर्ष में जगत् में क्या हुआ। मन्दालय जेल के कैदियों के छुटकारा आदि पाने से या उन की कैद का समय घटने से मुझे भारत सम्राट सप्तम एडवर्ड के मरने, वर्त्तमान सम्राट पञ्चम जार्ज महोदय के सिंहासनारूढ होने तथा उनके दिल्ली आ दरबार करने का समाचार प्राप्त हुआ। वर्ष में चार बार मेरे सम्बन्धी मेरे पास पूने जा मुझसे भेंट करने पाते थे। सिवा इसके मास में एक बार मैं अपने सम्बन्धियों को पत्र लिखने और उनका आया पत्र पढ़ने पाता था। इन पत्रों में और कोई बात नहीं, केवल पारिवारिक बातें लिखी रहती थीं। बहिर्गत जगत से मेरा इतना ही सम्बन्ध था। पूना आने के बाद मुझे यह समाचार मिला है, कि मेरे पत्र केशरी से सरकार ने पांच हजार रुपये नकद जमानत ली है।

"जेलमें मैंने विद्या सम्बन्धी कितने ही कार्य्य किये हैं। गत सन १८९३ई० में 'ओरियन' नाम्नी जो पुस्तक मैंने लिखी थी, आधुनिक सिद्धान्तों के अनुसार उसका संशोधन किया गया है। आधा संशोधन हो गया, आधा बाकी है। संशोधन हो जाने पर इस पुस्तक का नाम होगा,—'वैदिक क्रानालोजी।' मैंने अपनी 'आर्कटिक होम इन दी वेदाज' के भी संशोधन के मसाले संग्रह कर लिये हैं। कोई एक मास में इसका संशोधन कार्य्य समाप्त हो जावेगा। सिवा इसके मराठी भाषा के पाठकों के लिये 'गीता-रहस्य' नाम्नी एक पुस्तक लिख रहा हूं। कोई तीन सौ पृष्ठों की इस पुस्तक की भूमिका होगी। सिवा इसके मैंने और भी कितनी ही पुस्तकों के लिखने का विचार किया है। अपने जेल के समय का कुछ भाग मैं जर्म्मन, फ्रान्सीसी तथा पाली भाषा अध्यन में व्यय किया करता था,

"मेरे युरोप जाने के सम्बन्ध में अभीतक कोई बात स्थिर नहीं हुई है। ताई महाराज के मुकद्दमे और 'आर्कटिक होम इन दी वेदाज' के सम्बंध में मैं युरोप जाया चाहता हूं। इस पुस्तक के सम्बंध में विलायत में के भूतत्त्वविदांसे मुझे साहाय्य मिल सकता है। प्रयोजन होनेपर मैं जर्म्मनी भी जा सकता हूँ। किन्तु यह सब बात मेरा स्वास्थ्य ठीक रहने ही से हो सकती है"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निरुत्तर करने का साधन

मनुष्य प्रायः हर देश में विपक्षियों को निरुत्तर करने के निमित्त उसके व्यक्तिगत दोषों को ढूंढ़ने और उन पर दोषारोपण करने की चेष्टा किया करते हैं। अमेरिका के पादरियों की ६ मास व्यतीत होजाने पर भी मुझ पर कृपा दृष्टी हो रही है। यहां के साधारण पत्रों को तो जाने दें, न्यूयार्क के अति विख्यात christion Herald नामी पत्र के १५ अप्रिल की संख्या में Bishop Warue on Dr. Shastri नामी शीर्षक से एक लम्बा लेख निकला है। कदाचित भारत वर्ष के सामाजिक पत्रों तक इसकी घोषणा न पहुंची हो, इस लिये हम संक्षेपतः उस लेख का आशय उल्लेख करते हैं। अमेरिका भर के पादरियों में जब खूब आन्दोलन हुआ तब उन्होंने भारत वर्ष के लखनऊ नगर के एक Bishop, Trank, W. Warue महोदय की सेवा में एक पत्र लिखा कि बनारस से डा० शास्त्री के आचार व्यवहार का पता निकलवाकर भेजिये। पादरी महोदय ने आपके मित्रों की चाल को जाने कैसा समझा, पर खूब छान करके "क्रश्चियन हेरलड" समाचार पत्र के सम्पादक के पास जो पत्र लिखा है उस में दो बातों पर ध्यान डाला है एक तो मुझ पर और दूसरे मेरे विचारों का खंडन किया है। लखनऊ का विषप काशी पर भी अधिकार रखता है, और उस के सहायक पादरी काशी में भी रहते हैं। नव'जीवन के पाठकों को विशेषतया और आर्य्य पुरुषों को साधारण तब इन पादरियों की भेजी हुई रिपोर्ट को पढ़कर हंसी और प्रसन्नता होगी बिशप महोदय लिखते हैं—

I sent both your letter and the one you enclosed to one of the best known citizens of Benares, and asked to him to let me know about the Doctor's career in Benares. I have received a reply saying "I have never heard of Dr. Keshava Shastri and have inquired and have not found any one who does."

"मैंने आपका पत्र तथा वह पत्र जो बनारस के एक अति सुप्रसिद्ध पुरुष के नाम भेजा था ये दोनों बनारस भेजे और वहाँ से दर्याफ्त किया कि डाक्टर शास्त्री के आचारणों संबन्धी समाचार क्या हैं मुझे उत्तर मिला है कि मैंने कभी भी डाक्टर शास्त्री का बनारस में नाम नहीं सुना और लोगों से भी पूछा है मगर कोई भी उसे नहीं जानता—

The Doctor who is posing in America as a great doctor from Benares (India) is to this extent unknown in the city from which he claims to come.

यह डाक्टर जो अमेरिका में एक प्रसिद्ध (काशी बनारस) का डाक्टर प्रसिद्ध हो रहा है उसे इस शहर में तो कोई जानता ही नहीं, तिस पर वह कहता है कि मैं बनारस से आया हूं। लीजिये! पाठक ईसाई पादरियों को प्रबल मैशीन ने यह सिद्ध कर दिया कि यह व्यक्ति जो ईसाइयों पर आक्षेप करता है यह झूठा है और भारत वर्ष में तो उसे उस नगरी में भी कोई नहीं जानता जहां से वह आने का दावा करता है क्रश्चियन हेरलड लाखों की संख्या में छपता सुना तिस पर अन्य पादरियों को ईसाईयों में इस लेख को उल्लेख करने का अवसर मिल गया है। मुझ पर यह ईसाइयों का एक और वार हुआ है मैं तो समझता हूं कि यह भी खाली गया है। मेरी इस में कौन सी हानि होगी और मेरे विचारों में क्या त्रुटि सिद्ध हुई। इस के अतिरिक्त यदि मान भी लिया जावे कि मैं एक तुच्छ सा सेवक और अप्रसिद्ध सी व्यक्ति था और यहां आकर मैं ने अपने आप को सुप्रसिद्ध व्यक्ति बतलाया और ईसाइयों के मुह आया तो इस के यह अर्थ तो नहीं कि जो कुछ मैं ने कहा है वह मिथ्या है। अस्तु इसके दो भाव निकलते हैं।

एक तो यह कि ईसाइयों को ऐसा जादू लगा कि ९ मास के अन्दर २ काशी के सभी मनुष्य मुझे भूल गये। साधारण मनुष्य ही नहीं किन्तु The best known citizen of Benares का मेरे बनारस में रहने का कुछ भी पता और रिपोर्ट भेजने वाला सज्जन काशी का सुविख्यात citizen है यदि रिपोर्टर कोई पादरी है तो पादरी वहां के सारे ही मुझे ज्ञात हैं और यदि कोई छावनी में रहने वाला कोई अंगरेज लिखता है कि काशी में कोई मनुष्य केशव देव शास्त्री को नहीं जानता तब मुझे विश्वास कर लेना चाहिये कि अवश्य ही इस विषय का अनुसन्धान चपरासियों या अन्य किसी ऐसी ही श्रेणी के मनुष्यों से किया गया होगा। इस के विषय में तो बनारस के citizen कि मैं वहाँ से ही अमेरिका में आया अथवा बनारस में मेरी कोई या कभी स्थिति थी अथवा नहीं। दूसरा भाव जो ईसाइयों के लेख से निकलता है ईसाईयों के कथन की पुष्टि करता है कि पादरियों की जन संख्या से मिलने मिलाने का अवसर ही नहीं मिलता बनारस का पादरी या ईसाई हो, काशी नगरी के Best citizen हो और रिपोर्टर कि न मैंने कभी केशवदेव शास्त्री का नाम सुना और न किसी बनारस निवासी को उस का पता है अस्तु पादरियों को अभी बहुत थोड़ा भेद मिला है, देखें उनके चतुर रिपोर्टर और क्या २ और किन गुप्त बातों को प्रकाशित कर मेरे कार्य में बाधा डालते हैं।

(२)

बिशप महोदय ने अपने लेख के इस पक्ष पर बड़ा बल दिया है और अपने धर्मावलम्बियों को एक विचित्र सम्मति भी दी है आप लिखते हैं—

Missioneries who are driving the Gospel plowshare through customs traditions, prejudices and faleshoods that have hardened through the centuries like other reformers are apt to be misrepresented by those opposed to their efforts and they assume that their friends and supportors understand that.

मिशनरी लोग जो अञ्जीलरूपी फल को चलाकर भारतवर्ष के लोगों के रिस्मोरिवाज साम्प्रदायिक विचारों दुराग्रहों और मिथ्या जीवन को जो शताब्दियों से कठिन बन रहा है निर्मल कर रहे हैं उन्हें अन्य सुधारकों के तुल्य अवश्य अपवादित किया जायेगा और वह जो उनके विरोधी हैं उन पर दोषारोपण करेंगे परन्तु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनके मित्र और सहायता करने वाले इसे भलीभाँति जानते हैं।

It should however be under stood that as long as American audiences pay large sums for the previlage of listening to lectuters by strangers from India of whom they know nothing, except what the lecturors claim for themselves so long will the missionaries be misrepresented. That of lecturing will go on so long kind there is money in it for lecture, for the English educated Indian is usually a talker and to deliver such lectures in Amrica is an easy way to make money

यह जान लेना चाहिये कि जब तक अमेरिका के लोग भारतवर्ष के अज्ञात पुरुषों के व्याख्यानों को सुनने के लिये धनव्यय करेंगे वह नितान्त मिशन के विरुद्ध बोलेंगे। इस प्रकारके व्याख्यान उसी समय तक होते रहेंगे जब तक इन को रुपया मिलता है। कारण यह कि अंग्रेजी पढ़े लिखे हिन्दुस्तानी बहुत अच्छे वाग्मी होते हैं। बेचारे लखनऊ के विषपको ज्ञात नहीं कि मैं रुपया नहीं लेता और विना रुपये दिये यहां व्याख्यान देता हूं। किन्तु आगे चलकर लखनऊ के विषप महोदय ने अमेरिका के लोगों को भड़काने की एक अद्भुत चाल चली है। वह भी पाठक पढ़िये और ईसाइयों की उच्चैस्तम अधिकार प्राप्त सज्जनों के भावों की पड़ताल कीजिये।

केशवदेव शास्त्री शिकागो (शेष फिर)

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है। मूल्य २॥) डिब्बी डाः मः माफ।

पता.—बी.एल.बूबनाएण्डको०

दिल्ली नं० ३

आवश्यकता।

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ठट्ठा सिंध के लिये एक योग्य अधिष्ठात्री की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा पत्र व्योहार निम्नलिखित पते पर करें।

नरसिंहलाल प्रबन्धकर्त्ता

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम, ठट्ठा, (सिन्ध)

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उस के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡)
ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा प्रणाली ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।-)
प्रार्थना पुस्तक ।-)
ओंकार की उपासना ।-)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।)
वेद और महाभारत के उपदेश ।)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवाले। समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर

आर्ष ग्रन्थावली

लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर **निर्बलता** नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, बिशिष्टताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

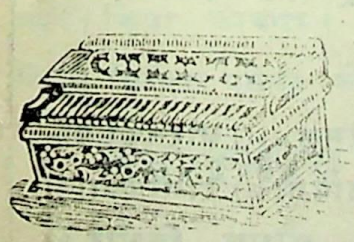

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≈) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूँय १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≈)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवा सीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पताः—

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी

आमोर जिला मेरठ

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे की शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पताः

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी

हरद्वार।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चौदह विद्या निधान

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डेमी तारशिलक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

इंगलिशटीचर ।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

हाथरस के पक्के चाकू

पसन्द न हों तो वापिस

ल० मूठ ॥) ।=) ।) ≡) ⁻) ।⁻))॥ चन्दन मूठ ॥⁻) ।≡) ।⁻) ।) ≡) =)॥ =) ⁻) उस्तरा ।) ।=) खरौंता ।⁻)॥) कैंची ।=) ॥) ॥=) पवित्र होंग ८) सेर अगोंछा =) से ॥) तक। बालनाशक साबुन ।) बक्स।

पतः—भारत हितकारी आफिस,

हाथरस

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० छा =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

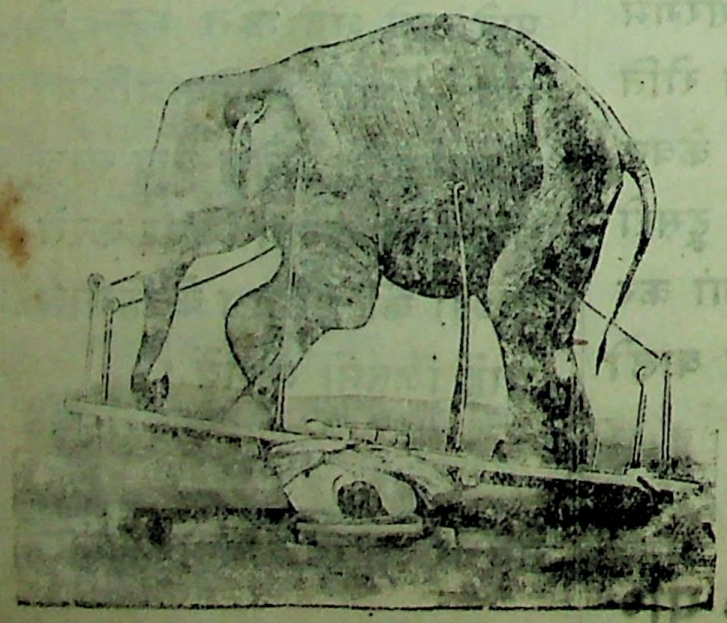

प्रचारक के ग्राहकों को ए कमास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ।॥) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय ⁻)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएँ ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल ⁻)॥ पाकेट ।=) राममूर्ति का व्यायाम ⁻)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता है

जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाते हैं जब नहीं होता तब नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुधा संसार की एक पुस्तक मंगाकर अपनी मनुराक्षा बनाना 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान लगाव नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने में अपना गुण दिखाता है.

सुधासिंधु

मूल्य १) आना

डाक खर्च ।)

सरकार के रजिष्टरी किया हुआ २२ वर्ष का आयुर्वेदिक औषधालय

२२ वर्ष का आजमाया हुआ

कफ	अतिसार
दमा	आंवसहित संग्रहणी
खांसी	के दर्द
जैसा	पेटकादर्द
शूल	कुकरखांसी

इत्यादि रोगों की खातिर मंगाकर देखिये

सर्दीकाबुखार की सिंचलाना

बच्चोंकेपेटकादर्द

शरीर का दर्द

सुधासिंधु

मिलने का पता—सुधासिंधु फार्मेसी, हरिद्वार

इस संस्था के प्रबन्धकर्ता सहित सब सदस्य ही सब दवा बनाते हैं

'वर की आवश्यकता'

एक ब्रह्मचारिणी सदाचारिणी आर्य कन्या जिसकी ठीक आयु इस समय १८ वर्ष से कुछ ऊपर कीहै, जो बुद्धिमती रूप गुण सम्पन्न, बलिष्ट, घर के कार्यमें दक्ष, जिसमें व्याख्यानदात्र शक्ति तथा जो एक मासिक पत्रिका की सम्पादिका है, जो इस समय एक हाई स्कूल की सहायक मुख्याध्यापिका है, ऐसी सुयोग्य कन्याके लिये एक ऐसे वरकी आवश्यकता है जो कवारा हृष्ट पुष्ट २५ से २८ वर्ष का आर्यसमाजी, सदाचारी तथा परदेके विरुद्ध, देशभक्त, तथा स्त्री शिक्षा का हितैषी हो जो न्यून से न्यून बी० ए० और अपना निर्वाह भली प्रकार कर सके। ज़ात पात का कोई विचार नहीं किया जायगा। पत्र व्यवहार निम्न लिखित पतेपर कीजियेगा।

केदारनाथ थापर

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब लाहौर

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (ब)

चान्द--जि० आर०

महाशयजो

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ॥) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

रबर टाइप प्रेस

इस प्रेस में अक्षर अंग्रेज़ी रहते हैं छापने की स्याही कम्पोज करने की स्टीक, स्पेस, हैंडब्लाक, चिमटा वगैरह सब सामान इस के साथ रहता है घर में दफ्तर में दौरे में काम देता है मुन्शी दुकानदार शौकीनों के काम का है चाहे जिस वक्त जेब में से निकाल कर छाप सक्ते हैं। मूल्य १॥) डाः ।)

पताः—भारत हितैषी—कम्पनी, अलीगढ़ सिटी

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का कलम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य नर्सरी

डा० कमलोल Kamtaul बिहार प्रान्त

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो अषाढ़तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्थपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

एक गायक की आवश्यकता

गुरुकुल के उपदेशक महाविद्यालय के लिये एक गायक की आवश्यकता है जो वीण, हारमोनियम, सितार आदि सब बाजों की शिक्षा देसके। वेतन २०) तथा २५) के अन्दर २योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रार्थी शीघ्र ही अपने प्रार्थना पत्र निम्न लिखित पते पर भेजें। अन्य पुरुष के प्रार्थना पर विशेष ध्यान दिया जायगा।

स्थानापन्नाचार्य

गुरुकुल काँगड़ी

पो० औ० शमपुर ज़ि० बिजनौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

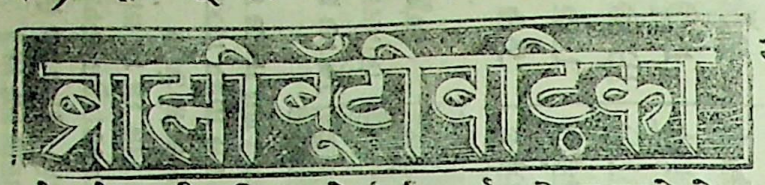

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूटी वटिका** मौका नचूकें लाभ उायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये- डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी। हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्राह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
पर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलवबाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु दवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, वहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

औरमूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी-(शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत-सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर-(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल-६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट-यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडान का साबुन-बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आगे १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम कीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता-
शर्मनऐंड कं. सतघडामथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) मा० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय दहलीमें मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No L. 807.

धर्म्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक— मुन्शीराम जिज्ञासु सम्पादक—हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२८ आषाढ़ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० ११ जुलाई १९१४

संख्या १३ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक--इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
बजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)- प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिस से ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक ॥) प्र० ०
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सका ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये ।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र-देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्क पूदीना अर्क पूदीना

गृहस्थ मात्र को घर में रखना चाहिये ।

अर्कपूदीना विलायती पूदीने की हरी पत्तियां से यह अर्क बनाहै इसका रंग पत्ती के रंग के ऐसा हरा है । और खुशबू भी ताजी पत्तियों की ऐसी है । यह अर्क डाक्टर वर्म्मन की सम्मति से विलायत के एक प्रसिद्ध दवा फरोशने बनायाहै

अर्कपूदीना बादी के लिये यह विशेष लाभकारी दवा है । पेट फूलना- डकार आना पेट में दर्द अजीर्ण जी मिचली भूख कम होना आदि बादी के लक्षण इससे शीघ्र ही मिटतेहैं।

बच्चों के लिये ऐसी दूसरी दवा नहीं है । गोदी के बच्चों के लिये १ से २ बूंद जरा से पानी वा दूध में मिला के पिलाना चाहिये ।

अर्कपूदीना बड़ों के लिये १० से ३० बूंद आधे छटाक पानी में मिला के देना । मोल ॥) शीशी डा० स० ।-)

दवा सब जगह हमारे एजेन्ट और दवा फरोशों के पास बिकती है ।

डा: एस. के. वर्मन ५, ६, तारचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता। नं०५

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानूनदर्पण ।

एक ही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिन से हर मनुष्य को काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाब्ता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तलाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बातर पर वकील मुख्त्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े। मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर ।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेजी लिखने वाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेजी बोलना चिट्ठी लिखना तार वगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोल-चालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास लयाकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो। मूल्य सिर्फ १)

मिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगोंको दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है । मूल्य २॥) डिब्बी डा: म: माफ ।

पता.—बी.एल.बूबनाएण्डको०
दिल्ली नं० ३

आवश्यकता ।

कन्या ब्रह्मचर्याश्रम ठट्टासिंध के लिये एक योग्य अधिष्ठात्री की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा पत्र व्योहार निम्नलिखित पते पर करें ।

नरसिंहलाल प्रबन्धकर्त्ता
कन्या ब्रह्मचर्याश्रम, ठट्टा (सिन्ध)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(३१)

जालन्धर आर्य्यसमाजका तीसरा वार्षिकोत्सव।

मेरे लिये सदा स्मरणीय रहेगा। पहला कारण तो यह है कि उसी उत्सव पर सब से पहले नगरकीर्त्तन की शक्ति मैं ने अनुभव की। लाहौर आर्य्यसमाज के उत्सव के पश्चात् जहां पहले सन्यासी स्वामी स्वात्मानन्द जी आर्य्यसमाज को मिले वहां श्री स्वामी अच्युतानन्दजी पण्डित गुरुदत्त की विद्वता और उनके धर्मभाव के काबू चढ़कर अपनी बड़ी मण्डली को छोड़ (जिस के वह महन्त थे) शुद्ध वैदिक धर्म की शरण में आचुके थे। इन सब स्वामियों को साथ लेकर लगभग ४० आर्यभाइयों सहित २५ दिसम्बर १८८५ के मध्यान्होत्तर पंडित गुरुदत्त जी रेल पर से उतरे। स्वर्गीय श्री लाला सांईदास तथा श्रीमः हंसराज जो भी इनके साथ ही उतरे थे किन्तु वे रातकी रेल में ही अजमेर चले गये। उन्हें परोपकारिणी सभा के प्रबन्ध में पूरा भाग लेने की लगन थी और गुरुदत्त को वैदिक धर्म के प्रचार की। मुझे उन दिनों पता ही न था कि धार्मिकसमाज में भी राज नीति के लिये स्थान हो सक्ता है और इस लिए अजमेर से पत्र पर पत्र प्राप्त करके भी मैं जालन्धर आर्य-समाज के वार्षिकोत्सव की तय्यारी में लगा रहा।

नगरकीर्तन क्या था, सारे नगर निवासियों के लिए प्रेम और शान्ति का सन्देश था। बाजे के साथ ओ३म् का झन्डा लिए जालंधर के एक प्रसिद्ध रईस, उनके पीछे पण्डित गुरुदत्त सन्यासी मंडल सहित वेद मन्त्रों की अमृत वर्षा करते जा रहे हैं, और उस साधु मंडल के पीछे गृहस्थों के कई दल हरि यश गायन करते हुए जा रहे हैं। आं! आँ!, ऊं! ऊं! का अलाप बलाप कुछ नहीं और नहीं बांह हिलाने से काम, किन्तु नगर निवासियों पर प्रभाव ऐसा कि सारे बाज़ारों में शान्ति का राज दिखाई देता था।

दूसरी स्मरणीय बात उतारे के स्थान में पहुंच कर सब भाइयों का संध्या करना था जिस के पश्चात् सब ने इकट्ठे हवन किया। फिर स्वामी स्वात्मानन्द जी ने सन्ध्या की विधि और उस के लाभों पर व्याख्यान दिया और बहुत रात जाते तक आर्य भाई सन्यासी महात्माओं तथा पंडित गुरुदत्त जी से धर्म विषयक निर्णय करते रहे।

सन्यासियों को सन्ध्या अग्निहोत्र में सम्मिलित होते देखकर मुझे सन्देह सा हुआ था। मैं ने पंडित गुरुदत्तजी से अपनी शङ्का प्रकट की। पंडित गुरुदत्त जी ने कहा कि जो सन्यासी महात्मा योगी हैं और सांसारिक वासनाओं से सर्वथा मुक्त अल्पाहारी तथा उच्च कोटि के साधन सम्पन्न हैं उन के लिए इन बन्धनों से सर्वथा मुक्ति का विधान है। किन्तु जो महात्मा दिन रात गृहस्थों की सेवा में लगे हुए सब प्रकार के भोजन छादन में फन्से हुए हैं उन्हें दो काल सन्ध्या यथा अग्नि होत्र करना ही उचित है। इसी समय उन्होंने श्वेता श्वतरोपनिषत् का निम्न लिखित प्रमाण भी बोला था—

लघुत्वमारोग्यम लोलुपत्वं वर्ण प्रसादं स्वर सौष्ठवंच। गन्धः शुभो मूत्रपुरीष-मल्पं योगप्रवृत्तिं प्रथमाँ वदन्ति॥

शायद यही कारण है कि पं० गुरुदत्त के सत्सङ्गमें रहे हुए सर्व सन्यासी महात्मा दोनों काल सन्ध्या करते हैं जिस अवस्था में उन से कम साधनों वाले अन्य सन्ध्या करने में अपना अपमान समझते हैं।

तीसरी विशेषता यह थी कि इस उत्सव ने सर्वसाधारण को निश्चय करा दिया कि आर्यों में वेद शास्त्र के जानने वाले प्रगल्भ विद्वान विद्यमान हैं। २६ दिसम्बर १८८८ के प्रातःकाल स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती जी म राज का धर्मोपदेश संस्कृत भाषा हुआ। इस व्याख्यान के लिए पौ णिक पंडितों को निमन्त्रण पत्र अपने हाथ से लिख कर भेजे थे। स्व जी ने नवीन वेदान्त का खण्डन क जब वैदिक मत की स्थापना की तो पौराणिक पंडित, जिसके हाथमें स्वामीजी का ही पुराना उपनि भाष्य था, बोला ?—"इसमें क्या लि है और अब क्या अनर्थ कर रहे स्वामी जी ने उत्तर दिया—"यह तो मेरा ही ग्रन्थ है, अब आँखें खु पर मैंने ही उसका संशोधन किया। पौराणिक पंडित चुप होगया। तीन पहर प्रश्नोत्तर (शङ्का समाधान) समय था। पहले जालन्धर के प्रसि वेदान्ती मौनीजी को लोगों ने वेदी सामने कुर्सी पर शास्त्रार्थ के लिये बै दिया। आर्य्यसमाज की वेदी पर पंडित गुरुदत्त जी आ विराजे। मौ जी को प्रश्न की आज्ञा हुई। किन्तु तो थे मौनी जी, फिर से मौन साध बैठे रहे। कुछ भी न बोले। तब उ संकेत किया गया कि कुर्सी से भी आजाय, जिससे दूसरों को शङ्का सम धान का समय मिला। परन्तु मौनी ऐसे जमे कि जड़ भक्त बनगए। त उन्हें स्पष्ट कह कर नीचे बैठाया गया इसी समय किसी ने नियोग और विध विवाह पर प्रश्न किए। स्वामी स्वात्म नन्द जी ने बड़ा उत्तम समाधान कि बाल विधवा के विवाह को पंडित गु दत्तजी ने ऐसी प्रबल युक्तियों और प्रम णों से सिद्ध किया कि करतार (जिला जालन्धर) के एक प्रसि साहूकार ने उसी समय अपनी ब विधवा पुत्री के विवाह कर देने का संकल्प धारण किया। भाई देवराज के पिता राय शालिग्राम जी भी उ समय से बाल विधवा विवाह के पक्ष ती हुए थे।

जालन्धर आर्य्यसमाज का यह वा कोत्सव मेरे लिए बहुतसी नई भर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ा था, जिनका वर्णन करने से पहले र्षोत्सव का वृत्तान्त समाप्त करने आवश्यकता है । २७ दिसम्बर के : स्वामी प्रकाशानन्द का व्याख्यान कर कई पुरुषों ने तमाकू पीना छोड़ ा । मैं तमाकू तो पहले ही छोड़ ा था, स्वामी प्रकाशानन्द के ख्यान पर अपने सब हुक्के, फर्शी लेयानादि न्योछावर कर दिए । कौन नता था कि तमाकू छुड़वाने वाले ाशानन्द जी किसी दिन मांस के ारक बनेंगे और फिर समय के फेर से : माँस का खण्डन करेंगे ।

सायंकाल पंडित गुरुदत्त का व्या- ान था । जालंधर में उनकी धूम थी । बीची साहेब, स्पेन्सर साहेब वकील र कुछ अन्य अंग्रेज़ सुनने आये थे । डित जी बड़ी गम्भीर भूमिका बाँधरहे । पंडित जी की भूमिका सर्वसाधारण मपढ़ों के लिए शुष्क सी प्रतीत होती , किन्तु सरवाल्टर स्काट के नावलों न्याईं जो भद्र पुरुष आध घन्टे (उनके लिए नीरस) भूमिका का सहन र लेते उनको फिर पौन घन्टे तक र्ग के झकोलों का आनन्द आता । मैं सी काम के लिये उठा और प्रबन्ध क और महाशय के सुपुर्द हुआ । ोगों ने उन्हें तङ्ग किया कि पं० गुरु- त्त का कुछ समय बाबू बेचाराम जी कर अन्तिम अपील उनसे कराईजावे । थाना पत्र समापती ने लिखकर दिया- आप के पश्चात् बाबू बेचारामजी पील करेंगे" संस्था के दास गुरुदत्त ने ांच मिनिट में ही व्याख्यान समाप्त रके सब को आश्चर्य में डाल दिया ।

मुन्शीराम

हर्ष समाचार ।

गुरुकुल के प्रेमियों को यह सुनकर प्रस- ता होगी कि श्रीयुत ला० नन्दलाल के विरुद्ध तुलसीराम मिश्र ने जो अपील की थी, वह खारिज हो गई है। इस तरह ला० नन्दलालजी ने दोनों अदालतों में मुक- दमा जीतकर अपने चरित्र की निष्कलं- कता प्रमाणित कर दी है ।

देहली में राजद्रोह का अभियोग ।

१ जुलाई

१०० गवाह अभियुक्तों ने अपनी ओर के बनाये हैं। आज भी खेमसिंह पर प्रश्न होते रहे । इस के पश्चात् सन्तु नामी एक ब्राह्मण लड़के की साक्षी हुई । तद- नन्तर पंजाब सरकार के मुद्रण निरीक्षक मि० टीटाइसन की गवाही हुई । आपने कहा, मैं कपूर्थले के प्रेस में गया हूं मेरी सम्मति में लिबर्टी का परचा वहीं छपा है ।

२ जुलाई

सरकारी वकील ने पुलिस के सुपरि- न्डेन्ट मि० विलसर से प्रश्न किये । उन्हों ने कहा—मैंने ८० मील चलकर २२ फरवरी को बालमुकन्द के घर की तलाशी ली वह घर पर नहीं था । एक दिन बाल- मुकन्द की बहन ने (जो एक अध्यापि काथी) तलाशी में सहायता दी थी । मैं सारे पत्रों आदि को चकवाल के थाने में ले गया था यह छः मील की दूरी पर है । मैंने सुपरिन्टेन्डेन्ट की मौखिक आज्ञा पर यह काम किया था। मुझे किसी विशेष पुस्तक वा लेख आदि की प्रेरणा नहीं थी । मुझे यह कहा गया था कि बालमुकन्द को लाहौर के बम वाले विषय में लेना है । मुझे बम के विषय के कुछ पत्र वा वस्तु पकड़ने की आशा थी। इस के पश्चात मूलराज का बयान हुआ । इसने कहा—मेरे पिता और बालमुकन्द के दादा—का कुछ मार पीट का झगड़ा था पीछे से समझौता होगया था। बाल- मुकन्द ने कुछ दिया था । इतने में बाल- मुकन्द ने खड़े होकर कहा "मैंने कुछ नहीं दिया" इस पर मूलराज ने कहा—मुझे ठीक याद नहीं कि कुछ दिया था वा नहीं।

रामभजकी गवाही हुई। इसने अफीम के नशे में पहली बार कुछ अण्ड बण्ड कह दिया था। फिर क्षमा मांगी थी । इस बार सरकारी वकील ने पूछा कितुमने अफीम खाई है। उसने उत्तर दिया खाई है ।

इस साक्षी के पश्चात इकरामुलहक इन्सपेक्टर की साक्षी हुई । उसने कहा- मुझे तलाशी की कोई हस्त लिखित आज्ञा नहीं मिली थी। हरीराम और गुरूदयाल- सिंह के पकड़ने का कोई वारन्ट नहीं था ।

३ वा ४ जुलाई को भी कुछ साधारण कार्य्यवाही होती रही । ५ जुलाई का आदित्यवार था ।

६ जुलाई

ला० रघुनाथसहायने लाहौर से छपने वाले "Observer" पत्र के उप सम्पादक पर प्रश्नकिये जिनके उत्तर में कहा कि हनुमन्तसहाय ने मेरे सामने अपनी गुप्त सभाओं की रचना लिखी थी परन्तु पीछे से फाड़ दी थी। मेरी सम्मति कांग्रेस और मुसलम लीग से नहीं मिलती। मैं बृटिश सरकार को अत्युपयोगी समझता हूं ।

४ जुलाई को कार्य्यवाही की समाप्ति पर ला० हंसराज (भूत पूर्व प्रिन्सपल डी० ए० वी० कालेज) के तार पर जज साहब ने बलराज अभियुक्त को अपनी माता से मिलने के लिये लाहौर भेजना स्वीकार कर लिया था । उसकी माता मृत्यु शय्या पर पड़ी है । परन्तु पुलिस वालों ने उसको लाहौर ले जाने का उत्तर दायित्व अपने ऊपर न लिया अत: बलराज अपनी माता से मिलने के लिये लाहौर न जा सका ।

अवतार का ढोंग—जगद्विजयी नैपो- लियन कहा करता था कि इस संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है, मनुष्य जो चाहे सो कर सकता है परन्तु देवी ब- सन्ती ने पुरुषों से बढ़कर स्त्रियों का बल दिखाया है। आप की वक्तृता शक्ति से मृ- त्यु लोक होगी किन्तु परलोक भी आप के वश में हो गया है । आप अपनी शक्ति से चाहे जिस देवता को परलोक से लाकर चाहे जिस मनुष्य के शरीर में बन्द कर सकती हैं । पहिले आपने कहा था कि मद्रास निवासी बालक कृष्ण मूर्ति के शरीर में लार्ड मैत्रेय तथा क्राइस्ट का अवतार होगा । कुछ दिन हुए आप ने लिखा है कि विरोधियों के कारण शायद क्राइस्ट का प्रादुर्भाव किसी और शरीर में हो । उसका कथन है कि यह शरीर पेरिस में शिक्षा पा रहा है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति।

म० रौनकराम की सहायता—आर्य डिफैन्स कमेटी के मंत्री लिखते हैं-

कुछ काल से तत्खालसा पत्रों तथा पमफलटों में आर्य्य समाज और उस के प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पर अनुचित और असभ्य हमले हो रहे थे। म० रौनकराम जी मंत्री आर्य्यसमाज भदौड़ रियासत पटियाला है। सितम्बर सन् १९१३ में एक किताब "खालसा पन्थ की हकीकत" या सिखमत में परस्पर विरोध इन के और म० विश्वम्भरदत्त जी के नाम पर प्रकाशित की गई। तत्खालसा पत्रोंने इस के विरुद्ध ज़ोर से लिखना आरम्भ किया और सिंह सभाओं ने शोर मचाया। जिसका परिणाम यह हुआ कि रियासत पटियाला में म० रौनकराम को गिरफ्तार करके पुलीस हवालात में दिया गया। कहा जाता है कि यह गिरफ्तारी धारा १२३ अ० ताजीरात हिन्द के अनुसार हुई है। महात्मा मुन्शीराम जी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी और ला० रामकृष्ण जी प्रधान आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रेरणा और ला० हँसराज जी प्रधान दयानन्द ऐङ्गलो वैदिक कालिज सुसायटी और दूसरे प्रतिष्ठित आर्य्यों की सलाह से आर्य्यसमाज डिफेन्स कमेटी ने निश्चय किया है कि म० रौनकराम के बरखिलाफ मुकद्दमे की सहायता की जावे और जहां तक हो सके इस को न्याय प्राप्त करने में सहायता दीजाय। तत्खालसा सिक्खों ने इस मुकद्दमे को मज़हबी शक्ल देकर आर्य्यसमाज का बदनाम करने का जरिया बनाया है अस्तु। इस मुकद्दमे की पैरवी के लिये फीस वकला इत्यादि पर बहुत खर्च होगा। इसलिये यह विचार है कि कम से कम पांच हज़ार रुपया शीघ्र ही जमा किया जाये और इसमें सफलता तब होसकती है जब आर्य्यसमाज के सभासद तथा सहायक पूरी सहायता करें इस मुकद्दमे में प्रश्न यह होगा कि रिआया को कहाँ तक मज़हबी स्वतन्त्रता प्राप्त है। प्रत्येक सज्जन पुरुष से प्रार्थना है कि वह सत्य, न्याय, और स्वतन्त्रता की सहायता करे। ऐसी विपत्ति के समय अपनी सहायता आप करना सब का धर्म है। रुपये की बड़ी आवश्यकता है अस्तु जहाँ तक शीघ्र हो आर्य्यसमाजें अपने कर्त्तव्य का पालन करें। जो चन्दा एकत्रित हो वह नीचे लेखक के नाम आना चाहिये।

रलाराम
मंत्री आर्य्यसमाज डिफेन्स कमेटी
रेलवे रोड लाहौर

(नोट) आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने भी अपने ५ जुलाई सं १४ के अधिवेशन में यह निश्चित किया है कि डिफेन्स कमेटी ही इस मुकद्दमें की पैरवी करे और इसके सम्बन्ध में उचित कार्य्यवाही करे। कुल रुपया उपरोक्त पते पर आना चाहिये।

महात्मा हंसराज जी की धर्म पत्नी की मृत्यु—डी. ए. वी. कालिज की स्थापना के समय म० हंसराज जी ने आर्थिक भोग को लात मारकर जातीय सेवा का कठिन व्रत धारण किया था उस व्रत के निवाहने में उनकी अपनी आचार दृढ़ता के साथ उनकी धर्म पत्नी का योग भी बड़ा सहायक था। उन के व्रत में सहायता देने वाली वही देवी आज इस भूमंडल पर नहीं है। सुनते हैं कि ला० हंसराज जी की धर्म पत्नी श्रीमती ठाकुर देवी को कुछ समय से संग्रहणी रोग था। जब से उनका इकलौता प्यारा पुत्र बलराज पकड़ा गया तब से उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया था। कुछ दिनों से उनके बचने की आशा बहुत ही कम रह गई थी। इस दशा में भी शायद अपने पुत्र के दर्शन की आशा उन्हें जीवित रख रही थी परन्तु देहली पुलीस के ज़िम्मेवारी लेने से इन्कार करने पर माता की आशा टूट गई और आशा धागे के टूटते ही शरीर के साथ प्राण का सम्बन्ध भी टूट गया ७ तारीख के प्रातःकाल बलराज की माता का देहान्त होगया। महात्मा हंसराज जी की धर्म पत्नीकी आयु का समाचार किसी समय भी दुःख जनक होता पर इस समय विशेष अवस्था के कारण वह दुःख शतगुण हो गया है। परमात्मा ने माता के हृदय में पुत्र प्रेम की लालसा सब से बलवती उत्पन्न की है। हमें शोक यह है कि माता की—और एक मरणासन्न माता की—उसी लालसा का बड़ी निर्दयता से तिरस्कार किया गया है। सैशन्स जज के बलराज को अपनी माता से मिलने की आज्ञा देदेने पर भी पुलिस ने इन्कार करके कौनसी बुद्धिमत्ता का काम किया है। हमारी दृढ़ सम्मति है कि बलराज को लाहौर लेजाने में उससे अधिक ख़तरा न था जितना प्रतिदिन जेल से कचहरी तक अभियुक्तों को लेजाने में होता है। ला० हंसराज जी ने बलराज को हथकड़ी सहित माता को मिलाना भी स्वीकार करलिया था। फिर न जाने किस काल्पनिक संकट से डर कर पुलिस ने एक मरती हुई माता की अन्तिम इच्छा में बाधा डाली है। आगे ही हमारे देश में पुलिस अप्रिय हो रही है और हम कहे बिना नहीं रह सक्ते कि पुलिस का यह अन्तिम काम लोगों को चिर काल तक न भूल सकेगा। हम नहीं जानते कि इस आपत्ती में हम म० हंसराज जी के साथ किनशब्दों में सहानुभूति प्रकट करें। जिस परमपिता ने उन्हें आज तक देश सेवा के कठिन व्रत को पालने में सहायता की है, वही इस आपत्ति के समय उनको बल देगा।

"पाटलिपुत्र" का स्वागत—बंगाल से अलग होकर स्वतन्त्र प्रान्त बनते ही विहारमें चारों ओर नई स्फूर्तिके चिन्ह दिख लाई देने लगे हैं। बाँकीपुर से नए सहयोगी "पाटलिपुत्र" का जन्म भी उसी स्फूर्ति का एक चिन्ह है। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि इस पत्र के सम्पादन का भार श्रीयुत काशी प्रसाद जायसवाल जैसे विद्वान् पुरुष ने लिया है। श्रीयुत काशी प्रसाद हिंदी के बहुत पुराने सेवक हैं। इधर जब से आप विलायत गए थे तब से हिंदी में आपके बहुत कम लेख देखने में आए। हमने समझा था कि आप भी शायद और विलायत यात्रियों की तरह अपनी मातृ भाषा को भूल बैठे हैं। पर हम नहीं जानते थे कि वे अब तक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिंदी को किसी उच्च सेवा के लिये अपने आपको तय्यार कर रहे थे। पाटलिपुत्र के दो अंक हमें प्राप्त हुए हैं। उन्हें देखकर कहना पड़ता है कि यह सहयोगी यदि ऐसा ही चलता रहा तो हिंदी के बड़े गौरव का कारण होगा। दोनों अंकों में कलकत्ते के प्रसिद्ध विद्वान् म० हरप्रसाद शास्त्री के दो गवेषणा पूर्ण स्वमूलक लेख हैं। टिप्पणियों और समाचारों का संग्रह भी बहुत अच्छा है। विशेषतया दूसरे अंक की टिप्पणियां बहुत मज़ेदार हैं। इसका काग़ज़ और छपाई बहुत अच्छी है। २) में बाँकीपुर से मिल सक्ता है।

कैनडा में हिन्दुस्तानियों का भाग्य निर्णय—कैनडा में जो हिन्दुस्तानी "गुरु नानक स्टीमर" लेकर अपनी "ब्रिटिश नागरिकता" परखने गये थे उनके भाग्य का फ़ैसला हो गया। कैनडा के सरकारी अफ़सरों ने हिन्दुस्तानियों को आनेसे पहिलेही रोक दिया था, अब अदालत ने भी अफ़सरोंके पक्षका समर्थन किया है। अदालत ने कहा है कि कैनडा सरकार जिस किसी व्यक्ति को चाहे अपने देश में आने से रोक सक्ती है। इसी नियम के अनुसार अब हिन्दुस्थानी ब्रिटिश साम्राज्य में रहते हुए भी उसके एक अंग में घुसने न पावेंगे। हम इस निर्णय से प्रसन्न हैं क्योंकि यह निर्णय भारत वासियों की अपनी स्थिति के बारे में आँखें खोल देगा। अदालत का कहना है कि कैनडा को अपने शासन में पूरी स्वतन्त्रता है। पर प्रश्न यह है कि क्या भारत वर्ष को किसी काम में स्वतन्त्रता नहीं है। हम समझते हैं कि हमारी सरकार इस समय "जैसे को तैसे का" शस्त्र पकड़ेगी और हमें अन्य जातियों की दृष्टि में अधिक न गिरावेगी।

अभियोग का व्यय—कुछ दिन हुए कलकत्ते में एक गोरे प्यादे मेरेडिथ पर सुंजीवनी दासी नाम की एक हिन्दू देवी को धक्का देकर गिराने तथा घसीटने और ठोकर मारने का अभियोग चलाया उस में उसको ५०) रु० जुर्माना करके छोड़ दिया गया था। गत २ जूलाई को बङ्गाल की व्यवस्थापक सभा में प्रश्न होने पर इस अभियोग के विषय में मि० कमिङ्गन ने सरकार की ओर से कहा कि ४२००) रु० खर्च हुए। १ मास तथा १९ दिन अभियोग चला। इसी प्रकार वकील बारिस्टरों की संख्या भी बताई। किसी भारतीय महिला के गोरे हाथों द्वारा अपमान के प्रतिकार में इस से अधिक और क्या दण्ड की आशा हो सकती थी। परन्तु प्रश्न यह है कि इतना रुपया व्यय करने से क्या लाभ हुआ। गोरे देवता तो ५०) रु० जुरमाना में ही छूट गये पर ४२०००) रु० के व्यय किस पर पड़ा यह सब जानते ही हैं।

एक और बंगाली अबलाकी आत्माहुति—भारत के अन्य सभी प्रान्तों में बंगाल अधिक उन्नत माना जाता है परन्तु वहाँ पर देवियों की यह दुर्दशा देख बंगाल की गिरावट प्रगट होती है। क्या इस प्रान्त के नेता इस ओर विशेष ध्यान की आवश्यकता नहीं समझते ? एक और १५ वर्ष की युवती ने आत्महत्या का भार बंगाल पर डाला। इसका नाम था प्रफुल्लकुमारी दासी। एक वर्ष हुआ इसका विवाह अवनीकुमार दासके साथ हुआ था, अपने पतीके साथ रहती थी। एक दिन इस ने अपनी साड़ी को तेल में भिगो कर दियासलाई लगा दी। उस समय उसकी सास बाहर गई हुई थी आकर देखा तो प्रफुल्ल को मरे हुये पाया।

—o—

एक और बंक बन्द—मुलतान का मुहम्मददुन बंक बन्द हो गया। इसका मुख्य कार्य्यालय लाहौर में था वह भी बन्द हो गया।

—o—

पुलिसके अफसर पर गोली—२९ जून की रात को मागरा के कुंजमोहनदत्त के घर में डाका पड़ा है इस समाचार को सुनकर सब इन्सपेकटर मानस० के० बनरजी तथा तारकनाथ घोष मकान पर गये और द्वार खटखटाया। सुना है, उस के भाई वाराधरनदत्त ने डाकुओं के धोके में रिवालवर से तारक नाथ घोष पर गोली चला दी। मानस बाबू के थोड़ी बहुत चोट आई, पुलिस ने बारी धरन को पकड़ लिया और उसकी शीघ्रता के कारण अभियोग चलाया जायगा।

विधवा की हत्या—मुरादाबादमें एक पुरुष अपने पुत्र की विधवा को गालियां दिया करता था। और उस को उस की माता के पास भी न भेजता था। विधवा की आयु १७ वर्ष की थी अतः उसके भाई की प्रार्थना पर उसको ढूंढकर न्यायालय में प्रस्तुत करने के लिये आज्ञा दी गई। पुलिस वाला विधवा के ससुर के घर पहुंचा और परदे का पूरा प्रबन्ध करने की प्रतिज्ञा की। थोड़ी देर पीछे विधवा का ससुर घर में गया और अन्दर से कुंडी लगाकर छुरी से लड़की को काट डाला बाहर वालों ने घर में से स्त्री के रोने पीटने का शब्द सुना। फिर वह घर से बाहर निकला और उसके भाईको मारने का यत्न किया परन्तु वह बचगया। वह फिर से घरमें गया और लड़की पर दूसरी वार प्रहार करना चाहा परन्तु पुलिस वालों ने पकड़ लिया। लड़की ४ घण्टे के पीछे रात को ८ बजे हस्पताल में मर गई। लड़की ने मरते समय कहा कि उसकी सास ने हत्यारे से दूसरी बार कहा था। कि अभी बहू मरी नहीं है। अभियोग चल रहा है।

चिटागंग की हत्या का अभियोग—पाठकों को स्मरण होगा कि कुछ दिन हुए चटागंग में नगेन्द्र नाथ सरकारी गवाह पर गोली चली थी परन्तु भाग्य वश वह बच गया और सत्येन्द्र नामी पुरुष मारा गया। अब नोगेन्द्र के कथनानुसार पुलिस ने दो पुरुषों को पकड़ने के लिये २०००) रु० पारितोषिक नियत किया है। उनका नाम आदित्यदत्त तथा गलती कान्ता कोष है।

भट्ट जी के नेत्र—यह सुनकर किस हिन्दी प्रेमी को शोक न होगा कि श्री० पं० बालकृष्ण भट्टजी के दोनों नेत्र नष्ट हो गये हैं। इन दिनों आपको शय्या ग्रहण करनी पड़ी। परमात्मा आपको शीघ्र नीरोग करे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म पूचारक

भारतवासियों की आयु पत्री

क्या भारतवर्ष उन्नति कर रहा है ?

(ले० प्रो० बालकृष्ण एम० ए०)

३१ ज्येष्ठ के अंक में ये बातें दिखाई गई थीं कि अन्य देशों के मुकाबले में भारतवासियों की आयु बहुत कम है, कि सन्तान के जन्म पर जो जीवन की आशाएं देश देशान्तरों में की जाती हैं वे भारत के मुकाबले में बहुत ही उच्च हैं और इन से यह परिणाम निकाला गया था कि भारतवर्ष में धर्म तथा अर्थ की न्यूनता के कारण अल्पायु है। इस लेख में जन्म के अतिरिक्त भिन्न आयुवों पर शेष जीवन की आशाओं का ब्यौरा दिया जावेगा और वह गत तीस वर्षों की उन्नति व अवनति की ओर भी ध्यान दिलावेगा। यह बात निर्विवाद है कि जिस देश के निवासियों की जीवनाशा उत्तरोत्तर अधिक होरही है वह देश उन्नति कर रहा होगा किन्तु जिस देश में जीवनाशा उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दियों में भी कम हो रही हो उस देश का राम ही रक्षक है। वह शीघ्र ही रसातल के अगाध गढ़े में गिरने के योग्य होरहा होगा।

प्रथम ब्यौरे में भारतवर्ष तथा इंगलैंड की गत ३० वर्षों की जीवनाशाओं की तालिकाओं को सावधानी से पढ़िये, तब देखिये कि भारत की उन्नति के क्या क्या परिणाम निकलते हैं।

भारत तथा इंगलैंड में पुरुषों की जीवनाशाएं—

१८८१-१९११.

आयु	भारत			इंगलैंड		
	१८८१	१९०१	१९११	१८९०	१९०१	१९११
०	२४.६	२३.६	२२.६	४३.७	४४.१	४६.०
१०	३५.५	३४.७	३३.४	४९.०	४९.७	५२ ४
२०	२९.२	२८.६	२७.५	४०.३	४१.०	४३.७
३०	२३.७	२२.९	२२.५	३२.५	३३.१	३५.३
४०	१८.८	१७.९	१८.०	२५.४	२५.७	२७.३
५०	१४.३	१३.६	१४.०	१८.२	१८.९	१९.९
६०	१०.१	९.५	१०.०	१२.९	१२.९	१३.४
७०	६.५	५.८	६.२	८.०	८.०	८.३
८०	३.७	३.१	३.०	४.५	४.४	४.६
९०	१.७	१.२	१.१५	२.४	२.३	२.४

परिणाम—उक्त ब्यौरे से निम्न लिखित परिणाम स्पष्ट है कि:—(i) भारतवर्ष में पुत्र के उत्पन्न होने पर उसकी जीवन आशा अंग्रेज़ पुत्रों से आधी होती है।

(ii) १८८१ से १९११ तक भारत में सब आयुवों पर ही जीवनाशा निरन्तर कम होती गई है जहां १८८१ में जन्म पर १४.६ वर्षों की जीवनाशा थी वहां १९११ में २२.६ रहगयी, किसी आयु पर भी यह जीवनाशा नहीं बढ़ी, हां, १९०१ के मुकाबले में १९११ में ५०, ६०, ७० वर्षों की आयुवों पर नाममात्र ६ की वृद्धि अवश्य हुई। दीर्घायु होना जब एक देश की उन्नति के माप की एक बलवती कसौटी हो तो स्पष्ट है कि भारतवर्ष के लोग अवनत होरहे हैं जब आयु से धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष की प्राप्ति के साधन प्राप्त हो सकते हों, और भारतवासियों की आयु कम हो रही हो, तो धर्म अर्थ काम मोक्ष के साधन भी अवश्यमेव कम होरहे होंगे अर्थात् लोग निर्धनी, दुराचारी, व्यभिचारी रोगी भोगी अधर्मी निर्बल होरहे होंगे।

(iii) किन्तु उन्नति शील इंगलैंड की दशा देखिये कि उसमें लोगों की आयु कैसे उत्तरोत्तर बढ़ती आई है, ३० वर्षों का बिचार करते हुए किसी आयु पर भी जीवनाशा कम नहीं हुई बल्कि वृद्धि की मात्रा बड़ी प्रशंसनीय रही है। इसी साक्षी से यह परिणाम निकल सकता है कि उसमें धर्म तथा अर्थ की वृद्धि होतीगई है। इंगलैंड में धन की वृद्धि तो निम्न ब्यौरे से स्पष्ट है यहाँ बताया गया है कि हरएक निवासी के हिस्से में निम्न तौर पर धनराशी बढ़ती गई है।

इङ्गलैन्ड तथा भारत के धन का मुकाबला

१६७९	ईस्वी में	४२	पाउन्ड
१६९०	,, ...	५८	,,
१८१२	,, ...	१८०	,,
१८८५	,, ...	३१५	,,
१९१०	,, ...	३८०	,,

(लेखक का अर्थशास्त्र, ५१२ पृष्ठ)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जहां इंगलैन्ड में प्रति निवासी के हिस्से में ३८० मोहरें जातीय सम्पत्ति की आती हैं वहां भारत में धन की इतनी कमी है कि हरएक भारती के भाग में केवल १० पाउन्ड आते हैं अर्थात एक अंग्रेज़ के मुकाबले में हमारे पास अढ़तीसवां हिस्सा धन है! अतः हमारी आयु भी बहुत अल्प है। धन की वृद्धि के साथ २ इंगलैन्ड में अवश्यमेव धर्म की वृद्धि हुई है, दीर्घ आयु, विपुल धन, उच्च धार्मिक जीवन साथ साथ जाते हैं किन्तु अल्पायु, निर्धनता, अधर्म एक दूसरे के सहचर हैं। भारत में उनका अधिक वास है।

भारत तथा इंगलैंड में स्त्रियों की जीवनाशाएं

१८८१-१९११

आयु	भारत			इंगलड		
	१८८१	१९०१	१९११	१८८१	१९०१	१९११
०	२५. ५	२३. ९	२३.३	४७. २	५ ९	५०. ०
१०	३४. ४	३३. ८	३३.७	५१. १	५२. ०	५ . ०
२०	२९. ३	२८. ६	२८.०	४२. ४	४३. ५	४६. ४
३०	२४. ७	२३. ८	२३.०	३४. ८	३५. ४	३७. ८
४०	२०. २	१८. १२	१८. ५	२७. ६	२७. ८	२९. ७
५०	१५. ६	१४. ५	१४.३	२०. ५	२०.	२१. ९
६०	१०. ९	१०. ०	१०.१	१४. १	१४. १	१४. ८
७०	६. ८	६. ०	६. २	८. ७	८. ७	९. १
८०	३. ८	३. १	३. ०	५. ०	४. ८	५. १
९०	१. ८	१. ६	१. १	२. ७	२. ७	२. ६

भारत वर्ष में स्त्रियों की आयु पुरुषों की अपेक्षा से अधिक है वही अवस्था इंगलैंड में है। किन्तु कैसी विचित्र दशा है कि १९११ में पुत्री के जन्म पर उस की जीवन आशा २३.३ वर्ष थी जब कि १८९१ में २५. ५ वर्ष थी-अर्थात् २० वर्षों में हमारी पुत्रियों की आयु २.२ वर्षों की कमी हो गई है! इंगलैंड में जहां पहिले ही जीवन की दीर्घ आशाएं हैं वहाँ गत २० वर्षों में २.८ वर्ष की जीवनाशा बढ़ गयी है! पंजाब प्रान्त की दशा अतीव शोक प्रद है-वस्तुतः उस शोक के प्रकट करने में लेखनी अशक्त है। देखिये कि २० वर्षों में ही जीवनाशा में कैसा घोर अन्तर पड़ गया है। बाम्बे की दशा कुछ कम शोक जनक है।

पंजाब और बाम्बे में जीवनाशा की बहुत कमी

१८९१ से १९११ तक

जीवनाशा में भेद

आयु	पंजाब	बाम्बे
०	५.३५	३.६०
१०	६.६९	४.००
२०	५.६४	४.४४
३०	४.०	३.३५
४०	२.६७	१.७१
५०	१.४१	.२७
६०	.७८	.३५
७०	१.०७	.५०
८०	१.३७	.०८
९०	१.१३	.२४

इस प्रकार सब आयुवों पर पुरुषों की जीवन आशाओं में पंजाब प्रान्त में निःसन्देह बहुत कमी हुई है। २० वर्षों में होउत्पन्न बालकों की जीवनाशा में ३० ३५ वर्षों की कमी का होना क्या कोई साधारण बात है? पञ्जाब हर प्रकार से नीचे जाता हुआ प्रतीत होता है। बाम्बे प्रान्त में तीन आयुवों पर अधिकता हुई है किन्तु साधारण तौर पर उस में भी अवनति हुई है। जब अन्य देश दिन दुगनी और रात चौगुनी उन्नति कर रहे हैं, वहां भारतवर्ष और उस में पंजाब तथा बाम्बे के प्रान्त ख़ास तौर पर पीछे जा रहे हैं। धर्म, अर्थ काम मोक्ष का एक ही साधन आयु उन में क्रमशः अल्प हो जाती है। आयु की निर्बलता और न्यूनता पर धर्म और अर्थ रूपी कार्य भी अल्प हो रहे होंगे! हम अपने पूर्व लेख में भी कह चुके हैं कि उत्तरीय भारतीय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में जहां विशेष तौर पर आर्यों का वास है, ९ वर्षों में ही ५० प्रतिशतक उत्पन्न बालक मरजाते हैं किन्तु बाम्बे मद्रास और बर्मा में १०, १४॥, २९ वर्षों में ५० प्रतिशतक उत्पन्न बालक परलोक सिधारते हैं। पंजाब में विशेष तौर पर आर्यों का वास है किन्तु वहां ही बालकों की अधिक मृत्यु और आयु की अल्पता दीख पड़ती है, वहां ईसाइयों का अधिक बल हो रहा है वहां ही मुसलमानों के बढ़ने की मात्रा बड़ी तेज़ है, विद्वानों को यह भय है कि ११९ वर्षों में वहां आर्यों का नामोनिशान भी मिट जायगा मुझे हैरानी होती है कि भारतीय आर्य मरते हुए भी अपनी श्रेष्ठता की डींगें मारने में तत्पर रहते हैं उन्हें इतना भी पता नहीं कि हबशियों से भी उन की आयु बहुत कम है। १८८० में हबशियों की जीवनाशा संयुक्त प्रान्त अमेरिका में यूं थी:—

हबशियों की आयु हम से अधिक है

आयु	हबशी पुरुष	सफेद अमरीकन
०	३२. २	४४. ७
१०	४०. १	४८. ५
२०	३३. ८	४०. ४
३०	२७. ९	३३. ५
४०	२१. ७	२६. ७
५०	१६. ३	२०. ०
६०	११. ३	१४. १
७०	२७. ८	१०. १
८०	६. ३	७. ४

क्या अब आपको पता लगा कि सफेद अमरीकनों और हबशियों की आयुवों में कैसा महदन्तर है किन्तु हम पंजाबी वही सारे भारतवासी हबशियों से अल्पायु हैं? पाठकवृन्द! क्या अब भी नहीं सोचोगे कि किन कारणों से आप की यह दुर्गति हो रही है? किन कारणों से भारत में सब देशों की अपेक्षा जीवनाशा कम है? यहां तक कि हबशी भी हम से अधिक ज़िन्दा रहते हैं। आर्य्यत्व के झूठे अभिमान को छोड़ कर अपनी दशा सुधारने में विशेष यत्न करना चाहिये। हिन्दू सभाएं भी प्रस्तावों के पास करने के अतिरिक्त क्या कर रही हैं? बहुत सी आर्य्यसमाजें भी प्रचार के काम में शिथिल पड़ी हुई हैं और शोक है कि हिन्दुओं के देशीय नेता भी ऐसे नहीं हैं जिन में सर्वसाधारण का पूर्ण विश्वास हो, जो जाति के पूरे प्रेम पात्र हों ताकि उन के सद् बचनों पर जाति अमल कर सके। अतः इस भवसागर में हिन्दू जाति की यात्रा एक ऐसी नौका के समान है जिस के पास न कोई दिग्दर्शन है और न जिस के चलाने वाले मल्लाह हैं और सब से बड़ी विचित्र बात यह है कि नौका पर सवार यात्री भी सोये हुए हैं। उन्हें अपनी दुर्दशा का कोई ज्ञान नहीं अतः ज्यूं २ समय व्यतीत हो रहा है त्यों २ किश्ती की विचित्र दशा हो रही है! बस परमात्मा ही इस जति के रक्षक हैं!!

बालकृष्ण

निरुत्तर करने का साधन

(गतांक का शेष)

It would he the "shoe on other foot" if such American audiences could hear what such lecturers say about them and chrishtianity and christian civilization in America when they return to India.

किन्तु अमरिका के लोगों की आंखें उस समय खुलें और इस वेदना को तब अनुभव करें जब उन्हें ज्ञात हो कि ऐसे व्याख्यान देने वाले अपने देश में लौटकर उनके सम्बन्ध में ईसाई धर्म के सम्बन्ध में तथा अमरीका के ईसाइयों की सभ्यता के सम्बन्ध में कैसे कथन करते हैं।

लखनऊ के विषय बारल महोदय को वहां के आर्यसज्जन ही मेरे सम्बन्ध में सूचित कर सक्के हैं किन्तु उन्हें इतना तो मैं अभी बतला दूं कि जो कुछ मैं लौट कर कहूंगा वह अब भी कहता हूं। मैंने ईसाई मात्र को शास्त्रार्थ करने का चैलेञ्ज दिया परन्तु कोई ईसाई पादरी शास्त्रार्थ करने को उद्यत नहीं होता ईसाईयों का भारतवासियों को बपतस्मा देना धर्म के हेतु नहीं, यह एक नैतिक चाल है और इसी को यथा तथ्य रूप में करने के लिये मैंने आवाज़ उठाई है। आर्य्य समाज ने हिन्दुस्तान के लोगों को चिता दिया है एक तुच्छ सेवक की हैसियतमें इस देशके सभ्य विचारवान पक्षपात रहित और उदार सज्जनों कोमैं सचेत करने की चेष्टा करूंगा।

केशवदेव शास्त्री शिकागो (अमेरिका)

प्राप्त

(प्रेरित पत्रों का सम्पादक उत्तरदाता नहीं)

वेङ्कटेश्वर का भाई वीरभारत।

विचारों में दोनों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। भेद केवल रूप रंग में है। वेङ्कटेश्वर का बाहरी आकारप्रकार अच्छा है पर वीरभारत का आकार प्रकार सब हिन्दी पत्रों से निकम्मा है। विचारों का तो कहना ही क्या है। यह दोनों ही सत्तू नोन बांधकर सुधार के पीछे पड़े हैं। सुधार का विपरीति अर्थ करके लोगों को भ्रम में डालते हैं। कोई भी अच्छा काम होय उसमें बाधा डाले बिना न रहेंगे। लाला लाजपतराय जी अछूतों का उद्धार करते हैं वेङ्कटेश्वर की आत्मा भभक उठती है। अभ्युदय उसका पक्ष करता है सम्पादक निराश होकर रोने लगते हैं। भारतमित्र बाल्य विवाह का विरोध करता है वेङ्कटेश्वर की आखों के सामने अंधेरा छाजाता है। उसकी अनोखी समझ में स्त्रियों को पढ़ाना लिखाना उन्हें बिल्कुल बिगाड़ देना है। कुशल इतनी ही है कि लोग उसकी बातों पर चलते नहीं। नहीं तो वह अवश्य ही लोगों को कई सौ वर्ष पीछे लेजाकर पटक देता। लोक मान्य तिलक के बिलायत जाने की खबर उस ने जब से सुनी है उसके पेट में बिल्लियाँ कूदने लगी हैं। अब लोकमान्य पर उसकी श्रद्धा नहीं रहेगी क्योंकि वे बिलायत जा रहे हैं। क्या अच्छा होता यदि लोक मान्यवर एक बार वेङ्कटेश्वर सम्पादक से सलाह लेकर बिलायत जाते।

वीरभारत की सुनिये। अभ्युदय प्रयागमें एक विधवाश्रम खोलना चाहता है यह सुनकर वीरभारत की छाती फटी जाती है। और उस पर वह अपनी बेतुकी तान उड़ाता है। कुछ सज्जन साधू सन्यासियों को शिक्षित करना चाहते हैं वीरभारत उन्हें गर्म पानी पीकर कोसता है। वह साधुओं को निरक्षर भट्टाचार्य्य रखना चाहता है। परमात्मा ही जाने वह मूर्ख साधुओं से क्या काम लेना चाहता है।

दोनों पत्रों के सम्पादक अपनी समझ में विद्वान् दुनियां से परे हैं। और भी इन में अनगिनत गुण हैं। पर बीरभारत में एक खास गुण है कि जिस विषय को वह उठाता है उस के प्रतिपादन में उसे चाहे जितनी झूठी गप्प उठानी पड़े वह उसमें बहता नेक भी नहीं सकुचाता। निसंकोच होकर आकाश पाताल के कुलाबे मिलाता रहता है। उसके आषाढ़ बदी १५ के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अङ्क में विलायत यात्री शीर्षक एक लेख निकला है। यह मारवाड़ी समाज के उज्ज्वलरत्न श्रीयुत कालीप्रसाद जी खेतान एम० ए० बी० एल० बार-ऐट-ला-की विलायत यात्रा के सम्बन्ध में है। इस में उस ने अपनी झुठाई का नमूना दिखाते खूब अनाप शनाप बातें लिखी हैं। वह कहता है कि मारवाड़ी समाज के नेताओं के बारम्बार मना करने पर भी बा० कालीप्रसाद समाज की अवहेलना करके विलायत चले गये। पर उसकी इस बात में सत्य का अंश कुछ भी नहीं है। मुझे ठीक मालूम है कि बा० कालीप्रसाद जी ने जब कलकत्ते से गौरव के साथ एम० ए० और बी० एल० की परीक्षायें पासकी थीं तब भारतमित्र आदि पत्रों तथा कुछ और सज्जनों ने उन्हें विलायत जाकर बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने की सलाह दी थी। तदनुसार वे कलकत्ते के प्रतिष्ठित सज्जनों की अनुमति लेकर विलायत गये थे। हां, कलकत्ते के कुछ ब्राह्मणों ने अवश्य खूब ऊधम मचा करके अपनी नीचता का परिचय दिया था। और जान पड़ता है आज भी वीरभारत उन्हीं ब्राह्मणों का पक्ष लेकर धर्म्म की ओट में श्रीयुत कालीप्रसाद जी के विरुद्ध लोगों को करना चाहता है। हम देखते हैं वीरभारत सदा से ब्राह्मणों का अन्ध पक्ष लेता आया है और आजभी वही कर रहा है। पर मारवाड़ी अब उसकी नीति को समझ गये हैं। अब मारवाड़ी उसके जाल में नहीं फसेंगे। आशा है कलकत्ते का मारवाड़ी समुदाय ब्राह्मणों के धोखे में नहीं फंसेगा और सादर श्रीयुक्त कालीप्रसाद जी का स्वागत करने की तय्यारियां करेगा। मुझे बा० कालीप्रसाद से बहुत बार मिलने का अवसर मिलता है। उनके विचार बहुत उच्च हैं। उनके द्वारा देश तथा मारवाड़ी समाज का बड़ा उपकार होने की आशा है। यदि ऐसे नवयुवकों की समाज ने सादर अभ्यर्थना न की तो उसकी शक्ति बहुत कमज़ोर हो जायगी। मारवाड़ी समाज का उपकार मारवाड़ी युवकों से होगा, चिलमचट्टू, रसोइये ब्राह्मणों से नहीं। वीर भारत या उसके साथी ब्राह्मण किसी का आकर्ष सहन नहीं कर सकते। दूसरे की उन्नति देखकर उनका जी जलता है। अंग्रेज़ी पढ़ने वाले युवकों पर उनका बड़ा आक्रोश है। वे अपनी तरह सब को अज्ञान के गढ़े में डाल रखना चाहते हैं। वे देखते हैं कि अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग हम मूर्खों की क़दर नहीं करेंगे इसी से वे अंग्रेज़ी का विरोध करते और उससे घबराते हैं। वीरभारत कहता है कि यही परीक्षा का समय है। इसी बार परीक्षा हो जायगी कि मारवाड़ी समाज में कुछ दम है या नहीं। हम भी उसी के शब्दों में कहते हैं। अवश्य ही इस बार मारवाड़ियों की परीक्षा हो-जायगी कि इन्हों ने सुधार में कहां तक पैर बढ़ाया है और उन में कितना दम है।

भारत या कलकत्ते की ब्राह्मण सभाओं को सचेत करना व्यर्थ है। उसे स्मरण रखना चाहिये कि वह दिन गये जब वह कलेवा करती थी। न अब ब्राह्मणों में समाज शासन की योग्यता है और न कोई उनका शासन मानने को तय्यार है। अपने घर बैठे वे चाहे जितना रोला मचाया करें। दूसरों का सुधार और शासन तो टेढ़ी खीर है उनके अपने घर में ही हज़ारों बुराइयां घुसी पड़ी हैं, कृपया पहिले उन्हां का सुधार और शासन करें तो बहुत अच्छा हो।

यहाँ हम इतना और कह देना चाहते हैं कि देश के भिन्न २ भागों में सहस्रों मारवाड़ी नवयुवक श्रीयुक्त काली प्रसाद जी का स्वागत करने को तय्यार हैं, ब्राह्मणों की सामर्थ्य नहीं कि उन्हें हम लोगों से पृथक् करदें।

महावीरप्रसाद

भ्रमोच्छेदन

आज कल मेरे पास अनेक पत्र ऐसे आरहे हैं जिन से कि बड़ा भ्रम फैला हुआ जान पड़ता है। इसलिये आवश्यक है कि मैं इस भ्रम का निराकरण समाचार पत्रों द्वारा करदूं ताकि आर्य समाज भविष्य में आने वाले लाञ्छन से बच जाय। इसके लिये बा० रामचन्द्र जी वर्मा देहलीस्थ के प्रश्नों का उत्तर दे देना ही पर्याप्त जान पड़ता है।

प्रश्न १—महाशयशान्ति स्वरूप (भूत पूर्व मौलवी मुहम्मद अली कुरैशी) ने जो कार्य आरम्भ किया है उसमें आप सम्मिलित हैं या नहीं?

उत्तर—म० शान्तिस्वरूप जी के कार्यों में हम लोग सम्मिलित नहीं है।

प्रश्न २—आप को उनकी ओर से निश्चय है या नहीं कि वे कार्य ठीक २ करेंगे जिससे कि आर्यों को हानि न हो।

उत्तर—हमको निश्चय है कि यदि आर्य समाज ने इनके कामों का नोटिस न लिया तो आर्य समाज को बड़ी हानि पहुँचेगी। भला सोचने की बात है कि जिस मनुष्य ने आर्य समाज क्या है यह भी अभी नहीं जाना वह यदि आर्य संसार में पैर रखते ही किसी काम को आरम्भ करदे तो उसे कहां तक ठीक से कर सकता है। ऐसे पुरुषों को पहिले आर्यसमाज में रहकर दस पाँच वर्ष विद्याध्ययन करते हुए आर्य समाज के सिद्धान्तों का मनन करना चाहिए, परन्तु पैर रखते ही आचार्य बनने की इच्छा इनके आन्तरिक भावों को प्रदर्शित करने के लिये सुपर्याप्त है।

प्रश्न ३—प्रकाशनारायण जी चंदा इकट्ठा करने भेजा गया है उसमें आपकी सम्मति थी या नहीं।

उत्तर—प्रकाश नारायण, प्रकाशचन्द्र आदि के भेजने में हमारी कोई सम्मति नहीं थी और न ली गई।

प्रश्न ४—शुद्ध शुदाओं का जो उत्सव होने वाला है वह आपकी राय से होता है व नहीं।

उत्तर—इस विषय में शांति स्वरूप जी ने हम से राय ली ही नहीं और न वे लेना चाहते हैं क्यों कि आप स्वतंत्र कार्य करना चाहते हैं।

विशेष निवेदन

महाशय शान्ति स्वरूप जी के कार्य से और आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनका कथन है कि वे आर्य समोज या किसी संस्था के आधीन रह कर कार्य करना नहीं चाहते क्योंकि आर्यसमाज या शुद्धि सभा आदि अन्य संस्थाएं अछूत व शुद्ध शुदाओं को अपना नहीं सक्तीं अतः वे अपना स्वतंत्र कार्य खोलेंगे। इतने पर भी यदि कहीं ऐसा प्रकट किया हो तो बड़े शोक का स्थान है। आगे के लिये सूचना दी जाती है कि कोई सज्जन इनको कम से कम आर्य समाज रेल बाज़ार से सम्बद्ध न समझे। ये बिलकुल स्वतन्त्र हैं और स्वतन्त्र रहना चाहते हैं जो महाशय इनको चन्दा दें सो देख भाल करदें। और उनके निमित्त पर भी विचार करलें।

भवदीय
पुत्तीलाल बाजपेयी
मन्त्री आर्य समाज
रेल बाज़ार कानपुर

नजीबाबाद का उत्सव

कार्य वाही उत्सव आर्य कुमार सभा नजीबाबाद २९-३० जून। आर्य समाज के जलसे के बाद आर्य कुमार सभा का जलसा बतारीख २९ जून सन् १४ ई० से आरम्भ हुआ। प्रातःकाल हवन व भजन होने के पश्चात् प्रोफेसर बालकृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्ण जी एम० ए० गुरुकुल का विवाह सम्बन्धी विषय पर एक मनोहर व्याख्यान हुआ। सायंकाल को पं० बसन्तलालजी उपदेशक प्रतिनिधि सभा का एक उत्तम व्याख्यान हुआ-उसके बाद विद्यार्थी धर्मवीर जी का जो कि विद्यालय मुसाफिर आगरा में पढ़ते हैं एक प्रभावशाली व्याख्यान मजहबी तहकीक़ात पर हुआ। इसके बाद ६ बजे से ७॥ बजे तक शहर से बाहर लड़कों का देशी खेल (भाग, रस्सा खेंचना इत्यादि) हुआ रात को श्री स्वामी सर्वदानन्द जी का एक आलिमाना लेकचर ईश्वर विषय पर हुआ अगले रोज़ बतारीख़ ३० जून सन् १४ ई० को शंका समाधान का समय था प्रातः काल से ही हर एक मजहब के लोग आकर जमा होगए। आज एक उपनयन संस्कार था-देरी होने के कारण ठीक ७॥ बजे शंका समाधान की कार्यवाही आरम्भ हुई समय १०। बजे का था आवश्यकता पड़ने पर और भी बढ़ाया जासक्ता था प्रथम मौलवी अकबरशाह खाँ साहब ने खड़े होकर मौलवी एहसानउल्ला खाँ साहब का परिचय कराया और कहा कि इन्हों ने देवबन्द इसलामियां कालिज की उच्च शिक्षा प्राप्त की है और यह कुछ शंका करनी चाहते हैं, इस के बाद मौ० एहसानउल्ला खां साहब ने खड़े होकर प्रश्न किया कि " प्रकृति व जीव के अनादि होने का सबूत दिया जावे" इस पर आर्यकुमार सभा की ओर से विद्यार्थी धर्मवीर जी ने जिनकी अवस्था २० वर्ष से अधिक न होगी निहायत अदब से उत्तर दिया कि "चूंकि ईश्वर मालिक है यह आप भी मानते हैं मालिक बिना मिलकियत के नहीं रह सकता मालिक के लिये मिलकियत का होना आवश्यक है और आपके कुरान शरीफ़ से भी कहीं यह साबित नहीं होता कि परमात्मा ने जीव व प्रकृति को जदीद बनाया बल्कि हर जगह अनादि होने का सबूत मिलता है जिसके बहुत से हवाले दिये गए और कहा कि आप कुरान शरीफ़ से एक ही आयत ऐसी दिखला दीजिये जहा लिखा हो कि ईश्वर ने जदीद प्रकृति व जीव बनाए। इस पर कई दफा दोनों ओर से तक़रीरें हुईं बाद में मौलवी साहब ने एक आयत कुरान शरीफ की पेशकी और कहा कि इसमें खुदा को खालिक कहा है इस पर विद्यार्थी जी ने कहा कि इसी बात पर हमारा आपका फैसला है कुरान शरीफ मेरे पास है मैं अभी मगाता हूँ उसमें देख लीजिए कि शब्द "खालिक" कुरान शरीफ़ में किस मायनों में आया है। कुरान शरीफ़ में कई जगह इन्सान के लिये भी खालिक का शब्द आया है। कुरान शरीफ आने को ही था कि बजाय मौ० एहसानउल्ला खां साहब के मौ० अकबरशाह खां ने बड़े क्रोध में खड़े होकर लोगों को भड़काने के लिये खामुखाह कहा कि हमको गालियां दी जाती हैं, हमको बुरा भला कहा जाता है, और हम इस मसले पर कुछ भी कहना नहीं चाहते हैं। इस पर प्रधान जी साहब ने कहा कि आप ऐसी बात क्यों कहते हैं न आपको कोई गाली दी गई है, न किसी ने बुरा भला कहा है आप तक़रीर आरम्भ कराइये क्योंकि अभी समय बहुत शेष है-इतने ही में एक वृद्ध मुसलमान जिनकी अवस्था लगभग ६०-७० वर्ष के होगी बड़े क्रोध में खड़े हुए और बड़ा गुल शोर मचा डाला हट जाओ-हट जाओ पंडित जी यहां तो आओ नीचे उतर इत्यादि बड़ा बुरी २ गालियां विद्यार्थी जी को दीं और दीगर सो सवासो मुसलमान जो साथ में थे खड़े हो गए और कुछ Platform प्लेट फार्म की ओर जाने लगे-सेवकों Volianter व दीगर हाजरीन उत्सव ने बड़ी मुश्किल से उन लोगों को रोका। हम मौ० एहसानउल्ला खां साहब का धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने हमारे इन्तज़ाम में ख़राबी नहीं आने दी और उन अपने आदमियों को प्लेटफार्म की ओर जाने से रोका और जलसे के बाहर लेगये इस समय का जलसा भजन व उपदेश के साथ ख़तम हुआ-संध्या के समय पूजनीय श्री स्वा० सर्वदानन्द जी महाराज का एक प्रभावशाली व्याख्यान हुआ-इसके बाद विद्यार्थी धर्मवीर जी का व्याख्यान हुआ जिसमें उन्होंने निहायत उम्दा तौर से साबित किया कि "आर्य समाज किसी मजहब का शत्रु नहीं है" जो लोग उसको अपनो शत्रु समझते हैं वे गलती करते हैं। इसके बाद मु० लक्ष्मीनारायण जो प्रधान जलसे ने आर्य कुमार सभा की ओर से पुस्तकालय की आवश्यकता दिखला कर अपील की और जिसमें दस रुपए १०) की पुस्तकें स्वयं देने का वायदा किया और जनाब पेशकार साहब नजाबाबाद ने जो कि एक उदार चित्त इसाई हैं चार रुपए ४) नकद पुस्तकों के लिए दिए और लगभग २०) बीस रुपये की पुस्तकों का वायदा और सज्जनों ने किया। रात्रि में उन लड़कों को जो कल खेल में अच्छे थे ३५ लड़कों को पुस्तकें पारितोषिक में दी गइ जिनमें दो चमार के लड़के भी सम्मिलित थे। तहसीली स्कूल के उन लड़कों में से चार लड़कों को जिन्होंने ब्रह्मचर्य व आय भाषा पर अच्छे लेख लिखे थे बाल सत्याथ प्रकाश व भिन्न २ विद्वानों के जीवन चरि पुरस्कार में दिए गए कुछ लड़कों को संध्या व गई। इसके बाद अपनी प्यारी न्यायशीला वर्मेन्ट को (जिसके राज्य में उत्सव में लोगों विघ्न गेरने पर भी कोई विघ्न न पड़ सका धन्यवाद दिया गया।

आरती व जगत् पिताजगदीश्वर की प्र थना करते हुए उत्सव निर्विघ्न समाप्त हुआ।

बनारसीलाल मन्त्री

नजीबाबाद

मिर्ज़ापुर-उपर वध

भगवान अंशुमाली के घोर किरणों से संतप्तजनों के सांत्वनार्थ पर्जन्य देव का शुभागमन होगया है। निदान कालिक प्रचंड वायु से दुखित प्राणियों को प्रावृट की स्वच्छ वायु आनन्द वर्द्धिनी चलरही है। इस वर्ष यहाँ विस्फोटक (सीतला) रोग का महान प्रकोप था, सैकड़ों प्राणी इस दुष्ट रोग के आक्रमणसे पंचत्व को प्राप्त हुए हैं। अब भी यदा कदा इस का दौरा होता है। जगदीश्वर रक्षा करें।

इस समय सरकार को ओर से मालगुज़ारी तथा तकावी वसूल की जारही है जिस कारण प्रजा वर्ग में आहि २ का एक विशेष कोलाहल मचाहुआ है। आज दो वर्ष से किसी भी फ़सिल के पूरे फायदे किसानों को नहीं मिले हैं। उनके घरों में जो गल्ला अब शेष है वह कुनबे के पालन तक कोभी पर्याप्त नहीं है, बीज बैल की चिन्ता अनिवार्य रूप से आक्रमण कर रही है। बिना सरकार की मदद कृषकों का कृषी में सक्षम होना कठिन है। फिर ऐसे समय में मालगुजारी तक़ावी का वसूल किया जाना किस भांति उचित प्रतीत होसकता है। हम यह नहीं कहते कि तक़ावी मालगुज़ारी वसूल ही नहीं होगी किन्तु थाली लोटे बिकवाकर वसूल करने से यहां के किसानों की स्थिति अत्यन्त रोमहर्षण होजायगी हम आशा करते हैं कि हमारे दयालू कलेक्टर मि० टैम्बिल का ध्यान इस ओर अकृष्ट होग जिससे प्रजाओं का दुख दूर कर अमित यश के भाजन बनेंगे किम्बहुना।

शिवप्रसाद मिश्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वार्षिकोत्सव और शिल्प प्रदर्शिनी

श्री प्रेम महाविद्यालय

वृन्दावन

विदित होकि

श्री प्रेम महा विद्यालय का वार्षिकोत्सव ता: ५ व ६ अगस्त सन् १९१४ को होगा। और उसके साथ ही प्रदर्शिनी अर्थात् नुमायश भी होगी जो १ अगस्त से ६ अगस्त तक खुली रहेगी।

श्री वृन्दावन का प्रसिद्ध झूलन का मेला भी इन्हीं दिनों में होता है अतः शिल्प विद्यानुरागी तथा देशहितैषी सज्जनों से प्रार्थना है कि उक्त अवसर को अपने शुभागमन से सुशोभित करें। और शिल्प कार्य अर्थात् अपने देश की कारीगरी का अवलोकन व्याख्यानों का श्रवण और झूलन का आनन्द लाभ करें।

अवैतनिक मंत्री

श्री प्रेम महाविद्यालय

काशी का कन्या गुरुकुल

आज मैं ता० १३-४-१४ अपने एक मित्र म० देवकीनन्दनलाल जी के साथ कन्या गुरुकुल काशी के अवलोकनार्थ प्रातःकाल ८ बजे के समीप पहुंचा, कन्या गुरुकुल का मकान जिस स्थान पर है उसके समीप वेश्या के सफरदायी रहते हैं इस कारण यह महाल भी भ्रष्ट है, गु० कु० का मकान अवश्य बहुत साफ है वेद मंत्रों तथा अच्छे २ उपदेशों से संग्रह-को अलङ्कृत अच्छी तरह किया गया है जिस समय मुझे पं० इन्द्रदत्त जी शर्म्मा अन्दर लेगये, कन्यायें सन्ध्या कर रहीं थीं, और उसके पश्चात् हवन किया, हवन सामग्री और घृत नाम मात्र को थी, याने अधेले पैसे का था और पांच सात चुटकी सामग्री; उच्चारण बहुत ही शुद्ध है कन्यायों को जो शिक्षा दी गई है अष्टाध्यायी इत्यादि की वह पं० इन्द्रदत्त जी की कृपा है, बिना इतना दिखलाये दूसरों पर प्रभाव नहीं पड़ सकता, हिसाब, भूगोल; की शिक्षा बिलकुल नहीं है अध्यापिका जो दो रक्खी गई हैं वह मेरे विचार में स्वयं पढ़ाने के योग्य नहीं हैं और न दो की आवश्यकता है, क्योंकि अवस्था बड़ी शोचनीय है, शरीर से बड़ी दुबली पतली हड्डी २ निकली हुई हैं वस्त्र बहुत ही मैले रात के सोने के बिस्तरे भी पर्याप्त नहीं हैं कन्यायें प्रसन्न बहुत नहीं रहती चेहरे पर उदासी छाई हुई है भय के मारे कांपती हैं जिससे प्रतीत होता है कि उनके साथ प्रेम का वर्ताव नहीं होता किन्तु ताड़न को वर्ताव शिक्षा के समय विशेष होता है, दिनचर्य्या के अनुसार इनको न दूध न जलपान मिलता है किन्तु भोजन तक पूर्ण प्राप्त नहीं होता यही मुख्य कारण है कि वे क्लेशित हैं, व्यय का रजिस्टर जो देखा उसमें दिसम्बर तक का हिसाब लिखा था, पाँच मास का हिसाब आपने कहा, कि पाकेटबुक से लिखना बाकी है, उचित तो यह है कि जो यहां प्रबन्धकर्त्ता रहे वह रोज लिखले पाकेटबुक में तो सफर का हिसाब हो सकता है, पाँच मास का हिसाब एकदम से न लिखा रहना यह बहुत ही अनुचित है इस समय आठ कन्यायें गुरुकुल में हैं, दो कन्यायें केवल एक दो मास से आई हैं मैं केवल तीन मास के व्यय पर सर्व साधारण का ध्यान दिलाना चाहता हूं जो केवल ६ कन्यायों के समय व्यय हुआ अक्टूबर से दिसम्बर तक जो व्यय तीन मास में हुआ वह इस प्रकार क्रम से है। आटा ६) ३) ४) क्रम से चावल ८) ३) ४) और दाल ३) २) २) घृत तीन रुपये का हर मास में व्यय हुआ, अब पाठकगण स्वयं विचार करलें कि इतना व्यय भोजन मध्य में काफी है एक छटांक घी ६ कन्यायों में जिसमें छौंकन हवन दोनों समय का शामिल है एक गोशवारा जो मुझे प्राप्त हुआ है वह जुलाई से दिसम्बर तक का है उसमें व्यय भंडार पर अधिक दिखलाया गया है कार्यालय का व्यय हर मास में आय अनुसार बढ़ता गया है मैं नहीं समझ सकता कि व्यय पर क्यों नहीं सभासदों ने ध्यान दिया सर्वसाधारण का धन अनुचित व्यय करना उचित नहीं, गोशवारा की नकल जो चाहे मंगा ले इस संस्था के संचालक पं० इन्द्रदत्त जी शर्म्मा और श्रीमती गायत्री देवी जी हैं, देवी जी का व्याख्यान बड़ा प्रभावशाली होता है इस कारण लोग समाजों में बड़े आग्रह से बुलाते हैं। पं० इन्द्रदत्त जी शर्म्मा जबलपुर में बनिता आश्रम और मिस-मारेजोम की चाल खेल चुके हैं और लखनऊ में विधवा आश्रम भी स्थापित किया था जिस की सहायता पं० गोकर्णनाथ जी वकील करते थे पर पीछे इनके चाल और विचार देख कर वह अलहदा होगये, काशी में जिस समय इसका विज्ञापन दिया उसी समय इसके विरुद्ध नवजीवन में लिख दिया गया था और यही मुख्य कारण है कि काशी आ० स० से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है; निरीक्षण बुक में अनेक लोगों ने खेद प्रकट किया है श्रीमान् पं० रामनारायण जी मिश्र बी. ए. बा० गौरीशङ्करप्रसाद जी बी. ए. पं० कृष्णचन्द्र जी और श्रीमती गयादेवीजी अध्यापिकाने अढ़ाई दिन खूब अच्छी तरह देख कर लिखा है मैं अवश्य ही सत्य मानता हूँ श्रीमान पं० तुलसीराम जी और पं० ललिताप्रसाद जी अग्निहोत्री ने पूर्ण तौर से निरीक्षण नहीं किया उनको बाहरी आडम्बर दिखलाया गया है पर नहीं कुछ त्रुटियां उन्हों ने भी दिखलायी हैं कन्या गुरुकुल का चलाना खेल बाड़ नहीं है लड़कों का गुरुकुल चलाना कठिन होजाता है और न कि कन्यायों का यहां सद्धर्मप्रचारक ने भी लिखा था, पं० इन्द्रदत्त जी कभी किसी से सुमित्रा देवी को और कभी किसी से गायत्री देवी को अधिष्ठात्री कहते हैं, गयादेवी जी से कहा गया था कि कोई अधिष्ठात्री नहीं है मैं गुरुकुल का विरोधी नहीं हूँ पर प्रबन्धकर्त्ता योग्य पुरुष होना चाहिये और अधिष्ठात्री शुद्ध आचरण की तब कन्यायों का संस्कार उत्तम हो सकता है मेरी आर्य्य पुरुषों से प्रार्थना है कि वह मेरे लेख पर ध्यान देकर विचारेंगे और निरीक्षण कर अपनी सम्मति देंगे मैं कन्यायों के संचालकों से निवेदन करता हुं कि वह एक दफे अपने गृह पर कन्या को बुला कर सब हाल प्रेमपूर्वक उनसे अनुसन्धान करें मैं इसे कन्या गु० कु० कहने को कदापि तय्यार नहीं हूं और न मेरा कुछ किसी से द्वेषभाव है यह तो व्यापार का मार्ग है इसी को मैं विरोधी हूं।

सेवक राधारमण गुप्त

मंत्री आ० स० काशी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आयुर्वेद महामंडल का द्वितीय अधिवेशन।

ज्येष्ट शुक्ल १३ के अधिवेशन में निम्न कार्यवाही स्वीकृत हुई।

(१) बम्बई सरकार ने पूना में और विहार सरकार ने बांकीपुर मुज़फ्फरपुर और पुरी में जो संस्कृत कालेज खोलने का विचार किया है, उस के लिये उन्हें धन्यवाद दिया जाय और मेमोरियल भेजकर अन्यान्य शास्त्रों के समान विधिवत् शस्त्रच्छेद आदि सहित आयुर्वेद की पढ़ाई भी नियत करने की प्रार्थना की जाय।

(२) बम्बई सरकार आसव और अरिष्टों को मदिरा की श्रेणी में परिणत कर उन में लैसंस लगाना चाहती है। यह कार्य आयुर्वेद महा मण्डल की दृष्टि में अयोग्य है। क्योंकि इस से वैद्य मात्र को चिकित्सा कार्य में बहुत अड़चन और असुविधाओं से सामना करना पड़ेगा। आसव-अरिष्टों में यद्यपि कुछ आलकोहल रहता है, तथापि उनके पीने से नतो नशा होता है और न उन्हें पीने वाला उन्मत्त हो सकता है, इस के सिवाय आसव-अरिष्ट केवल रोगी के रोगका निवारण करने के लिये दियेजाते हैं, इस लिये वे मदिराकी श्रेणी में नहीं आ सकते अतः "आयुर्वेद महा मण्डल का" निवेदन है कि बम्बई सरकार इस विचार को परित्याग कर दे। मन्त्री को अधिकार दिया गया कि वह हरएक प्रान्त के सभासदों की एक उपसमिति गठन कर मेमोरियल भेजे। समाचार पत्र और सर्वसाधारण में भी इसके लिये आन्दोलन होना आवश्यक है।

(३) आयुर्वेद विद्या पीठ की परीक्षाएं सम्मेलन के पूर्व ही होजायँ और सम्मेलन परीक्षा फल सुनाकर प्रमाणपत्र दे दिया जाया करे। इस वर्षकी परीक्षा कार्तिक शुक्ल पक्ष अथवा मार्गशीर्ष के प्रथम सप्ताह में हो।

(४) पहले का प्रकाशित हुआ परीक्षा फल स्वीकृत हुआ।

(५) सरकारी मन्त्रीका वेतन मकान भाड़ा बन्दकर २५) मासिक किया गया।

(६) द्रव्यकी कमी के कारण मण्डल मासिक पत्र नहीं निकाल सकता, हां उसकी रिपोर्ट और कार्यवाही की सूचना प्रकाशित करने के लिये एक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित किया जा सकता है किन्तु उस में २००) या तीन सौ रुपये से अधिक वार्षिक व्यय न हो। मन्त्री इस कार्यका प्रबन्ध कर पत्र प्रकाशित करना आरम्भ कर सकते हैं।

(७) आयुर्वेदविद्यापीठके परीक्षार्थी जिन विषयों में अनुत्तीर्ण हों उन्हीं विषयों में आगामी वर्ष परीक्षा दें किंतु जिन विषयों में सैकड़ा ५० से कम नम्बर उन्हों ने पाये हों उन में फिर परीक्षा देनी पड़ेगी।

(८) यदि हिसाब जाँचने के लिये पण्डित ठाकुरदत्त शर्मा न आ सकें तो एक बार सरकारी मन्त्री स्वयं जाकर हिसाब जंचवा लावें और दूसरी बारके लिये पं० ठाकुरदत्त जी से प्रार्थना की जाय कि कलकत्ता सम्मेलन के समय वहां दो तीन दिन पहले पहुंच जावें जिस से उसके पहले महीने तक का हिसाब भी जंच जावे।

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल मन्त्री

— —

साहित्य सम्मेलन की ओर से इस वर्षकी परीक्षा।

साहित्य सम्मेलन के गत वार्षिक अधिवेशन के सोलहवें मन्तव्य के अनुसार स्थायी-समिति ने परीक्षा-समिति की सम्मतियों पर पूरा विचार करके परीक्षा के नियम स्थिर कर दिये हैं जो सम्मेलन पत्रिका में शीघ्र प्रकाशित होंगे। स्थायी समिति ने यह भी निश्चय किया है कि हिन्दी की प्रथमा परीक्षा इसी वर्ष मार्गशीर्ष में ली जाय और इस परीक्षा के प्रबन्ध के लिये एक परीक्षा समिति भी इस वर्ष के लिये संगठित की है। परीक्षा में सम्मिलित होनेवाले महाशयों की सूचना के लिये इस पत्र द्वारा आवश्यक बातें प्रकाशित की जाती हैं।

समय।

मार्ग शीर्ष कृष्णा प्रतिपदा बुधवार (सं० १९७१) को ठीक दस बजे दिन को परीक्षा आरम्भ होगी और मार्ग शीर्ष कृष्ण चतुर्थी शनिवार को साढ़े चार बजे समाप्त हो जायगी। प्रतिदिन दो प्रश्नपत्र दिये जांयगे, पहला ३ घंटे का, १० से १ बजे तक का और दूसरा ढाई घंटे का, २ से साढ़े चार बजे तक का हुआ करेगा।

स्थान।

यह प्रथमा परीक्षा इन स्थानों मेंली जायगी—आगरा, आरा, इलाहाबाद कलकत्ता, जबलपुर, दिल्ली और ग्वालियर इन स्थानों में स्थान-विशेष की सूचना प्रत्येक परीक्षार्थी को रसीद के साथ दी जायगी।

प्रश्नपत्रों का और अङ्क प्राप्ति का विवरण।

इस परीक्षा में कुल आठ प्रश्न पत्र होंगे। प्रत्येक के पूर्णाङ्क १०० होंगे। प्रत्येक में ३३ अंक पाने वाला उत्तीर्ण समझा जायगा। सब पर्चों के अंक मिला कर ५० या अधिक प्रति सैकड़ा पानेवाले प्रथम श्रेणी में, ६० या अधिक प्रति सैकड़ा पाने वाले द्वितीय श्रेणी में और ३३ या अधिक प्रति सैकड़ा पाने वाले तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण समझे जायंगे। प्रत्येक पत्रके विषय और पाठ्य ग्रंथ इस प्रकार होंगे—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सेवा में सम्पादक जी

श्रीमन् नमस्ते !

निवेदन है कि कृपया निम्न लिखित को पत्र में स्थान देकर कृतार्थकीजिये ।

धोखे और बदनामी से बचो

ठाकुरदास नामी एक पुरुष ने अपनी स्त्री आत्मा देवी को ही अपने निर्वाह का साधन बना रक्खा है । जो स्त्री को नौकर रखे वह ठाकुर दास को भी अवश्य रखे । पानीपत की आर्यसमाज ने दोनों को नौकर रख लिया था । आत्मा देवी को पुत्री पाठशाला में अध्यापिका नियत किया, और ठाकुरदास को भी नौकर रखलिया । ठाकुरदास अपने को कट्टर आर्य कहता है । परन्तु वह गुरुकुल और कन्यापाठशाला का विरोधी सिद्ध हुआ और उन के विरुद्ध विष फैलाता हुआ पाया गया । श्रीमती आत्मा देवी जी तो पुत्री पाठशाला में अध्यापन का कार्य्य परिश्रम से करती हैं परन्तु बाकी सारे प्रबन्ध को तोड़ने को कटिबद्ध रहती हैं । इस के अतिरिक्त एक काम उन्होंने ऐसा किया है जिस के कारण आर्यसमाज पानीपत की बड़ी बदनामी हो रही है एक पानीपत निवासी विधवा को उसके संरक्षकों और विद्यालय के प्रबन्धकर्त्ताओं को सूचना दिये विना ही अपने साथ ले गईं । इससे सर्व साधारण में आर्य समाज की बदनामी हो रही है कि आर्य समाज की पाठशाला में विधवाओं को रखना मान हानि करना है । यह विधवा आत्मा देवी के नीचे अध्यापिका का कार्य करती थी । ठाकुरदास अपनी स्त्री और विधवा को विना किसी सूचना के ले गया जिस से दूसरे ही दिन पाठशाला बन्द होगई अतः आर्य्य सज्जनों को सूचित करते हैं कि आत्मा देवी जी को नौकर न रखें नहीं तो बड़ी बदनामी होगी, यदि उस को नौकर रखना ही हो तो लेख बद्ध कर लेना उचित है ।

आपकादास

क्षेमचन्द्र प्रधान आर्य्य समाज

पानीपत

२ । ६ १४

प्रश्न पत्र	विषय	पाठ्य ग्रन्थ
१—पठित पद्य जिसमें पिंगल के भी प्रश्न होंगे ।	पठित पद्यों के भावार्थादि के अतिरिक्त पठित छन्दों के नाम, लक्षण, यतिज्ञान, गणभेद, छन्दः प्रभा कर (भानु,) छन्दोर्णव (दास) या और किसी पिंगल ग्रथ के अनुसार ।	१--हम्मीर हठ [चन्द्रशेखर कवि] नागरी प्रचारणी सभा काशीमें प्राप्य ।
२—पठित पद्य जिस में विशेषतः अलंकार विषयक प्रश्न होंगे ।	पठित पद्यों के भावार्थादि के अतिरिक्त उपमा, प्रतीप, रूपक, उप्रेक्षा, अति शयोक्ति, व्याज, और साधारण अनुप्रास और इन के साधारण रूप का ज्ञान इन में किसी ग्रन्थ के अनुसार-भाषा भूषण, वा अलंकार प्रकाश (सेठ कन्हैयालाल पोद्दार रचित, बेंकटेश्वर) वा शिवराज भूषण वा पद्मा भरण ।	२-सत्य हरिश्चंद्र नाटक [हरिश्चन्द्र]
३—पठित पद्य जिस में विशेषतः व्याकरण और अलंकार के भी प्रश्न होंगे ।	अलंकार उपर्य्युक्त व्याकरण में भाषा भास्कर अथवा अन्य कोई व्याकरण ग्रन्थ ।	३- ऊजड़ गाम [पं० श्रीधर पाठक] कवि से प्राप्य लूकरगंज प्रयाग ।
४—अपठित गद्य और पद्य जिस में अलंकार और व्याकरण के भी प्रश्न होंगे ।	अलंकार और व्याकरण उपर्य्युक्त	१ राम चरित्र मानस [राम जन्म से अयोध्याकाण्ड के अन्त तक] वा विनय पत्रिका पूर्ण ।
५ लेख जो परीक्षार्थी को दिये हुए विषयों में किसी पर लिखना होगा ।	यदि परीक्षार्थी चाहे तो दिये हुए विषयों पर पद्य लेख भी लिख सकता है किन्तु गद्य लिखना आवश्यक होगा ।	२-शिक्षा लावनी [भूषण] ना० प्र० सभा काशी से प्राप्य ।
६-- भारत का इतिहास		१-सौ अजान और एक सुजान [पं० बालकृष्ण भट्ट लिखित और पं० महादेवभट्ट अहियापुर प्रयाग से प्राप्य]
७--भूगोल साधारण एवं प्राकृतिक ।	(१) भौगोलिक शब्दों की परिभाषा भारत वर्ष के मुख्य नगर, प्रदेश, पहाड़, नदी, झील, बन्दर समुद्र तीर्थ आरोग्यस्थान और	२ हिन्दी अखबार बालमुकन्द गुप्त लिखित [गुप्त निबन्धावली, भारतमित्र कार्य्यालय कलकत्ते से प्राप्य] ।
		पं० हरि मंगल मिश्र एम० ए० लिखित भारत का इतिहास खड्ग विलास प्रेस बांकीपुर से प्राप्य ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रश्नपत्र	विषय	पाठ्य ग्रन्थ
	देशी रजवाड़ों की साधारण जानकारी तथा राजकीय व्यवस्था का साधारण ज्ञान।	
	एशिया के मुख्य नगरों, पहाड़ों नदियों झीलों, समुद्रों और द्वीपों का स्थूल विवरण और उन की विशेषता।	
	हिल चक्रवर्ती लिखित भूगोल प्रथम और द्वितीय भाग अथवा अन्य किसी भूगोल ग्रन्थ से। [कमिश्नरियों के ज़िलों के रहने की आवश्यकता न होगी।]	
	(२) पृथ्वी का सूर्य्य मंडल से सम्बन्ध, ग्रहण देशान्तर रेखा, अक्षांश रेखा, ऋतुओं का परिवर्त्तन, मेघ, वर्षा कुहरा, ओस और उपल वर्षा का विवरण और उन के कारण, समुद्र की धाराएं ज्वार भाटा।	
	पं० लक्ष्मीशंकर रचित प्राकृतिक भूगोल तीसरा भाग वा अन्य किसी प्राकृतिक भूगोल के ग्रन्थ से।	
८. आरम्भिक विज्ञान और स्वास्थ्य रक्षा।	आरम्भिक विज्ञान, विज्ञान प्रवेशिका से और स्वास्थ्यरक्षा (१) उस पुस्तक से जो बर्ने-क्यूलर फैनल में पढ़ाई जाती है वा (२) पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल रचित भारत में मंदाग्नि से (ग्रन्थकार दारागंज प्रयाग से प्राप्य) अथवा (३) अन्य किसी ग्रंथ से।	विज्ञान प्रवेशिका (मंत्री विज्ञान, परिषत् प्रयाग से प्राप्य)

परीक्षा में कौन सम्मिलित हो सकेगा ?

सभी देश, जाति और अवस्था के परीक्षार्थी, सम्मेलन के छपे आवेदनपत्र को भर कर, २)-(दो रुपये) शुल्क (फीस) सहित सम्मेलन के प्रधान मन्त्री के पास भेजने पर परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। इस वर्ष आश्विन कृष्णा प्रतिपद शनिवार तक जिन के आवेदनपत्र ठीक भरे हुए शुल्क सहित आजायँगे वेही महाशय इस वर्ष की प्रथमा परीक्षा में सम्मिलित हो सकेंगे। आवेदन पत्र के छपे हुए फार्म, "मंत्री साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग" से मिल सकते हैं।

इस वर्ष के परीक्षार्थियों के लिये उपर्युक्त सूचना पर्य्याप्त होगी। परीक्षा की नियमावली एवं प्रकाशित करने योग्य उपनियम सर्वसाधारण की सूचनार्थ सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित किये जायँगे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
कार्य्यालय प्रयाग
मि० आषाढ़, शुक्ल अष्टमी
बुधवार सम्वत् १९७१

निवेदक
पुरुषोत्तमदास टंडन प्रधान मन्त्री

पत्रों की सैर।

नई बिरादरी

इस देश में सर्वदा नई नई ज़ातें पैदा होती आई हैं। मग, हूण, आभीर आदि अनेक उदाहरण हैं। अभी हाल में काश्मीर के महाराज ने लदाख के कुछ लोगों को बढ़ई बनवा दिया। अब अंगरेज़ी राज्य में एक नई जाति बन रही है इसे मोटर-बिरादरी कहना चाहिए कलकत्ते के बहुतेरे ब्रिटेन द्वीपी ब्राह्मण अर्थात् बैरिस्टर चाहते हैं कि चूंकि उनके लड़के मोटर गाड़ी में चढ़ते हैं वे ट्राम गाड़ी में सवार होने वाले बच्चों के साथ न हिलें मिलें। उनके लिए अलग स्कूल बनना चाहिए। यहां से पढ़कर निकलने वालों की एक नई बिरादरी होगी। इस मोटर बिरादरी का दावा होगा कि देश उन्हीं का है, वे ही यहां राज करें। उनके कपड़े लत्ते से यह व्यक्त होगा कि वे नेटिव हैं, क्योंकि हैरो और ईटन की नकल होगी। ज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुसलमानो का राज था, हिन्दू घर से बाहर निकलने के पहले कपड़े पहन नौकर से पूछते, 'भई देखना कहीं से यह तो नहीं जान पड़ता कि काफिर हूं।' अब मोटर विरादरी के पिता गण इस फेर में हैं कि कहीं वे नेटिव न भासित हों। पर इस आशा में सफल होते न देखकर, अब बच्चों में नया गुल खिलाना सोचा गया है। बीज आम खट्टे सहा, पर उनकी डाल पर कलम तो बैठ सकता है। पर आम नकली और निकम्मा निकलेगा। मां पिलंगनी, बाप पिलंग जिनके लड़के रंग विरंगे की कहावत पूरी होगी। (पाटलिपुत्र)

बड़े लाट की अवधि

बड़े लाट को अवधि वृद्धि की संभावना दूर मालूम होती है। पायोनियर और टाइमस् ने भी जो लाट साहब के गुणों के भक्त दबी ज़बान से दबाकर विरोध किया। फिर लिबरल दल इंगलैंड में दिन दिन निर्बल होता देख पड़ता है, यदि इस वर्ष में गवर्नमेंट उस के हाथ से छिन गई तो लाट साहब की अवधि बढ़ाने वाले ही न रहेंगे। कन्सर्वेटिव सम्प्रदाय अपने आदमियों को जगह देगा। लाट साहब के जाने पर दिल्ली की नई कीली ढीली रह जाने का बड़ा डर है। बिहार की सुधारों में भी बाधा पड़ने की जोखिम है। देखिए क्या होता है? (पाटलीपुत्र)

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे की शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पता:

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी

हरद्वार।

७००) रूपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रूपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश ॥) केन ॥) कठ ।) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला साग ॥)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।)
प्रार्थना पुस्तक ।)
ओंकार की उपासना ।)

२००) रूपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत १) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।)
वेद और महाभारत के उपदेश ।)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)॥
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ॥)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवाले समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर

आर्ष ग्रन्थावली

लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, विक्षिप्तता: रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५।।।	॥)
८०	३०)	≡)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

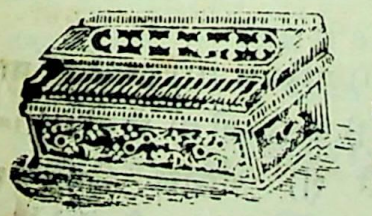

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≠)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

वेदों पर अमूल्य निबन्ध।

(१) वेदों का अनादित्व—इसमें बड़ी खोज के साथ यह दिखाया गया है। कि वेद अनादि हैं इसके लेखक गोवर्धनदास बी० ए० मुख्याध्यापक गुरकुल हैं दाम ।-)

(२) रोग जन्तु शास्त्र—यह निबन्ध पं० सातवलेकर जी का है आप वेदों के अपूर्व विद्वान हैं आपने इसमें दिखाया है कि वेदोँ में (Germtheory) रोगजन्तु शास्त्र भी है दाम -)॥

(३) वेदोँ से आयुर्वेद का क्रम विकाश यह निबन्ध श्री भिसगाचार्य निवारणचन्द्र भट्टाचार्य जी का है। इस में आपने दिखायाहै कि किस प्रकार वेदों से ही आयुर्वेद निकला है। =)

(४) भारतीय शिक्षादर्श:—यह निबंध पं० घनश्यामसिंह गुप्त बी० ए० एल एल० बी का है इसमें आपने भारत के स्कूलोँ तथा कालिजों के दोष बताते हुए सच्ची शिक्षा की प्राप्ति के उपाय बताये हैं। निबन्ध घरों में रखने लायक है दाम ≡॥)

मांस मीमांसा—यह निबन्ध स्नातक ब्रह्मदत्तजी का है। इसमें दिखाया है कि मांस खाना बुरा है और संसारकी प्राय: सारी प्राचीन जातियां मांस खाने को बुरी नज़र से देखती रही हैं। यह निबन्ध ऐतिहासिक तथा रोचक है। ≡)

पुस्तकें कमीशन पर मिल सकती हैं जिन्हें चाहियें वह चिट्ठी पत्री करलें।

पता

मन्त्री साहित्यपरिषद

गुरुकुल हरिद्वार

पोष्ट, श्यामपुर

जिला बिजनौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चौदह विद्या निधान

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

हाथरस के पक्के चाकू

पसन्द न हों तो वापिस

ल० मूठ ॥) ।=) ।) ≡) -) ।-))॥ चन्दन मूठ ॥-) ।≡) ।-) ।) ≡) =)॥ =) -) उस्तरा ।) ।=) सरौंता ।-)॥) कैंची ।=) ॥) ॥=) पवित्र होंग ८) सेर अगोंछा =) से ॥) तक। बालनाशक साबुन ।) बक्स।

पतः—भारत हितकारी आफिस,

हाथरस

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि बिना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र सुफ़्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

[दूसरी बार २००० दा =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

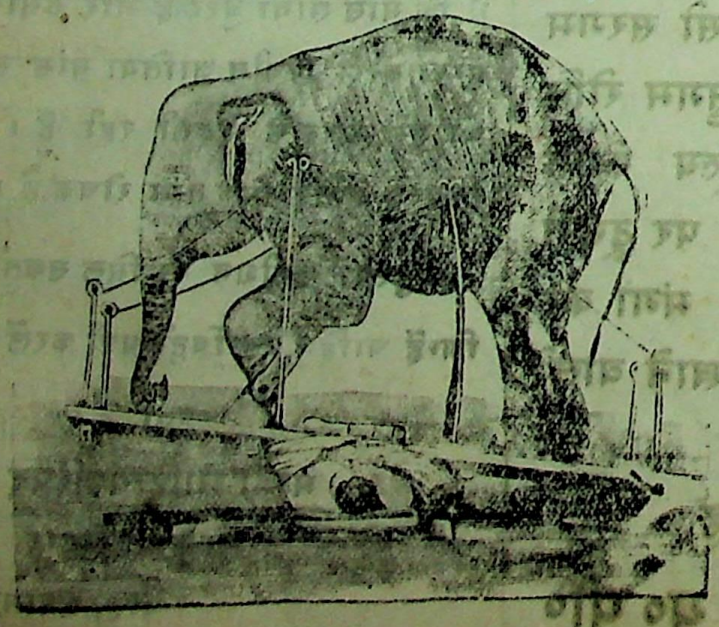

प्रचारक के ग्राहकों को ए कसास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर ।=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब सन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का राज्य =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकरा ज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता है

जैसा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाते हैं परन्तु जब कभी समय नहीं मिलता. पैसे अथवा समय संभाव नहीं होता. ऐसे अवसर में ब्रह्म संभारक कंपनी मथुराका बनाया 'छुआसिड' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान वगैरा नहीं करना पड़ता तब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने में अपना गुण दिखाता है.

छुआसिड

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सरकार में रजिष्ट्री किया हुआ

कफ़	अतिसार
दमा	आंवसहित
खांसी	संग्रहणी
हैजा	पेटकादर्द
शूल	इत्यादि रोगों की रामबाण दवा

मूल्य ॥) आना

दूधमलैया

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दो अदद खाने वाली दवा है कीमत ।) दर्जन २।) रु.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—श्रेष्ठपाल शर्मा मालिक,

सुख संचारक कम्पनी मथुरा

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का बिकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी

जामोर जिला गया।

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द--जि० भार।

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ लोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ।) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

रबर टाइप प्रेस

इस प्रेस में अक्षर अंग्रेज़ी रहते हैं छापने की स्याही कम्पोज करने की स्टीक, स्पेस, हेंडब्लाक, चिमटा वगैरह सब सामान इस के साथ रहता है घर में दफ्तर में दौरे में काम देता है मुन्शी दुकानदार शौकीनों के काम का है चाहे जिस वक्त जेब में से निकाल कर छाप सक्ते हैं। मूल्य १॥) डा: ।)

पता:—भारत हितैषी—कम्पनी,

अलीगढ़ सिटी

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीच इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य नर्सरी

डा० कमालपुर [illegible] बिहार प्रान्त

महा भारत।

हिन्दी भाषा महा भारत सचित्र मासिक पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मू० २) जो असाढ़ तक इसके ग्राहक होंगे उनको संसार स्वपन की एक पुस्तक उपहार मिलेगी ।) टिकट भेज कर नमूने का अङ्क मंगा देखिये पता—

राम भेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

एक गायक की आवश्यकता

गुरुकुल के उपदेशक महाविद्यालय के लिये एक गायक की आवश्यकता है जो वीण, हारमोनियम, सितार आदि सब बाजों की शिक्षा देसके। वेतन २०) तथा २५) के अन्दर २ योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रार्थी शीघ्र ही अपने प्रार्थना पत्र निम्न लिखित पते पर भेजें। आर्य पुरुष के प्रार्थना पर विशेष ध्यान दिया जायगा।

स्थानापन्नाचार्य

गुरुकुल काँगड़ी

पो० औ० शामपुर जि० बिजनौर

CC-0.Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पण्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देन लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप का धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये- डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णसर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी। हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्राह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्षां स्मृतिप्रदाकुष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मेधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु श्वासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, वहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

औरमूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी- (शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधि से शुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ान का साबुन—बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर बड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता—
शर्मनऐंड कं. सतघड़ामथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) मा० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय दहलीमें मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No L. 807.

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

३ श्रावण सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० १८ जुलाई १९१४

संख्या १४ भाग २६

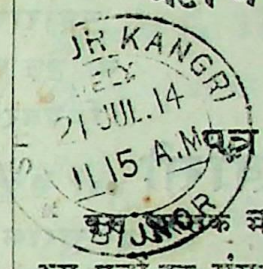

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)

प्रचारक के ग्राहकों से १।)

सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिसमें ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक ≈) प्र० •

तीन मास " " " " ≈) "

छः " " " " " -)॥ "

सालभर " " " " -) "

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

([illegible] पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ [illegible] [illegible]क्ता ।

[illegible] में आधा काल [illegible] समाचार [illegible] [illegible]ड़पत्र के सिरे [illegible] [illegible]ार बंटने की [illegible] चाहिये [illegible] की तिथि प्र[illegible] कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये ।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खाँसी को कभी थोड़ी न समझना ।

खांसी थोड़ी ही में इसको खो देना चाहिये, इस को कभी ठहरने **खाँसी**
वा बढ़ने न देना । उपाय भी सहज ही है--डाक्टर बर्म्मन की खांसी की दवा एक शीशी घर में डाल रक्खे । यह दवा चाहे कैसी खाँसी वो कफ की बिमारी होवे उसको आराम करती है ।

खाँसी इसमें ये विशेष गुण हैं **खांसी**

(१) सर्दी को पचाना, (२) खाँसी की दबाना, कफ की पतला करना, (५ कफ को निकालना, (५) सुस्ती का रोकना । मोल छोटी शीशी (१६ खुराक) ॥) पैः व डाः मः ।-) दो शीशी ॥) ।

खाँसी इस दवा पर महाराज साहब की सम्मति । **खाँसी**

महाराजा दलगञ्जन सिंह देव बहादुर फुपडटरी चीफ अफ पटना ऐट बोलांगिर जिला सम्बलपुर से लिखते हैं—
प्रियवर ! आपकी भेजी हुई खांसी की दवा के लिये कृतज्ञ हूं ।

खाँसी दवा से हमारी खांसी बिलकुल जाती रही । मैने इसके कुल सात **खांसी**
ही खुराक पीये, अधिक पीने की दरकार न रही । खांसी मुझे कई महीने से सता रही थी; इस लिये पुनः आपको धन्यवाद देता हूं ।

दवा सब जगह हमारे एजेन्ट और दवा फ़रोशों के पास बिकती है।

डाः एस, के, बर्मन ५, हरतारचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता। नं०६६

चालीस क़ानूनों का खुलासा

क़ानूनदर्पण ।

एक ही ग्रंथ में चालीस प्रकारके कानूनों का खुलासा जिन से हर मनुष्य को काम पड़ताहै जैसे ताजीरातहिन्द, जाब्ता दीवानी, व फौजदारी, मियाद समाअत व आबकारी, लगान मालगुज़ारी, कोर्टफीस, रजिस्ट्री, स्टाम्प, शहादत, धर्मशास्त्र, शरहमोहम्दी, तम्बाक, हथियार, ट्रेडमार्क, कम्पनी आदि चालीस कानूनोंका सरल खुलासा जिनको हरमनुष्य समझ सके बात२ पर वकील मुखत्यारों को खुशामद व रुपया न ठगाना पड़े । मूल्य सिर्फ १।) रुपया

इंगलिश टीचर ।

बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंग्रेज़ी सिखाने वाली पुस्तक इस अकेली को पढ़कर अंग्रेज़ी बोलना चिट्ठी लिखना तार बगैरा सब कुछ सीखलो किसी से कुछ पूंछने की जरूरत नहीं—इसमें सब महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचालके फिकरे और शब्दोंके अर्थ ऐसे सुगम तरीके से समझायेहैं कि थोड़े ही समय में मिडिल पास लयाकत अवश्य होजाय—मंगाकर देखो दूसरी इस ढंगकी पुस्तकों से मुकाबिला करो सबसे अच्छी हो तो रक्खो वर्ना वापिस करदो । मूल्य सिर्फ १)

मिलनेका पता—शान्ती संचारक कम्पनी मीयांगँज अलीगढ़ सिटी

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा,ताजा और ताकत वर बना देता है । मूल्य २॥) डिब्बी डाः मः माफ ।

पता.—बी.एल.बूबनाएण्डको०
दिल्ली नं०

पीतल के बिरूच

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य ।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन ॥।) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन वाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये ।

पता:—भारत हितैषी—कम्पनी,
अलीगढ़ सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खुजली, लिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५।।)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

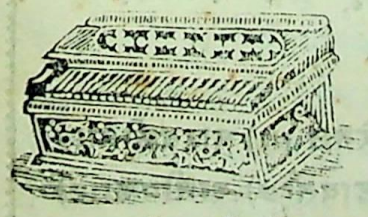

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≈) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूँय १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≈)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

वेदों पर अमूल्य निबन्ध।

(१) वेदों का अनादित्व—इसमें बड़ी खोज के साथ यह दिखाया गया है। कि वेद अनादि हैं इसके लेखक गोवर्धनदास बी० ए० मुख्याध्यापक गुरकुल हैं दाम ।-)

(२) रोग जन्तु शास्त्र—यह निबन्ध पं० सातवलेकर जी का है आप वेदों के अपूर्व विद्वान हैं आपने इसमें दिखाया है कि वेदों में (Germtheory) रोगजन्तु शास्त्र भी है दाम -)॥

(३) वेदों से आयुर्वेद का क्रम विकाश यह निबन्ध श्री भिसगाचार्य निवारणचन्द्र भट्टाचार्य जी का है। इस में आपने दिखायाहै कि किस प्रकार वेदों से ही आयुर्वेद निकला है। =)

(४) भारतीय शिक्षादर्शः—यह निबंध पं० घनश्यामसिंह गुप्त बी० ए० एल एल० बी का है इसमें आपने भारत के स्कूलों तथा कालिजों के दोष बताते हुए सच्ची शिक्षा की प्राप्ति के उपाय बताये हैं। निबन्ध घरों में रखने लायक है दाम ≡॥)

मांस मीमांसा—यह निबन्ध स्नातक ब्रह्मदत्तजी का है। इसमें दिखाया है कि मांस खाना बुरा है और संसारकी प्रायः सारी प्राचीन जातियां मांस खाने को बुरी नज़र से देखती रही हैं। यह निबन्ध ऐतिहासिक तथा रोचक है। ≡)

पुस्तकें कमीशन पर मिल सकती हैं जिन्हें चाहियें वह चिट्ठी पत्री करलें।

पता

मन्त्री साहित्यपरिषद

गुरुकुल हरिद्वार

पोष्ट, श्यामपुर

जिला बिजनौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चौदह विद्या निधान

लीजिये केवल आपही के लिये १४ प्राचीन दुष्प्राप्य अनुपम विद्या रत्नों का अपूर्वभाण्डागार "चौदहविद्या निधान" छपकर प्रकाशित होगया इसमें वैद्यक, कोक, सामुद्रिक, योग, मन्त्र, ज्योतिष, शिल्प, कानून, छन्द, गान, रसायन आदि विद्याओं के समुद्र को घड़े में भर दिया है मूल्य १।) कानूनदर्पण ५० कानूनों का सरल हिन्दी खुलासा १।) इङ्गलिशटीचर १) पीतल की डैमी तारशिक्षक सहित १॥)

मंगाने का पता—विश्वम्भर ब्रादर्स

अलीगढ़

हाथरस के पक्के चाकू

पसन्द न हों तो वापिस

ल० मूठ ॥) ।=) ।) ≡) -) ।-))॥। चन्द-न मूठ ॥-) ।≡) ।-) ।) ≡) =)॥ =) -) उस्तरा ।) ।=) सरौंता ।-)॥) कैंची ।=) ॥) ॥=) पवित्र होंग ८) सेर अगोंछा =) से ॥) तक। बालनाशक साबुन ।) बक्स।

पतः—भारत हितकारी आफिस,

हाथरस

इंगालिशटीचर ।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) वड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दा =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

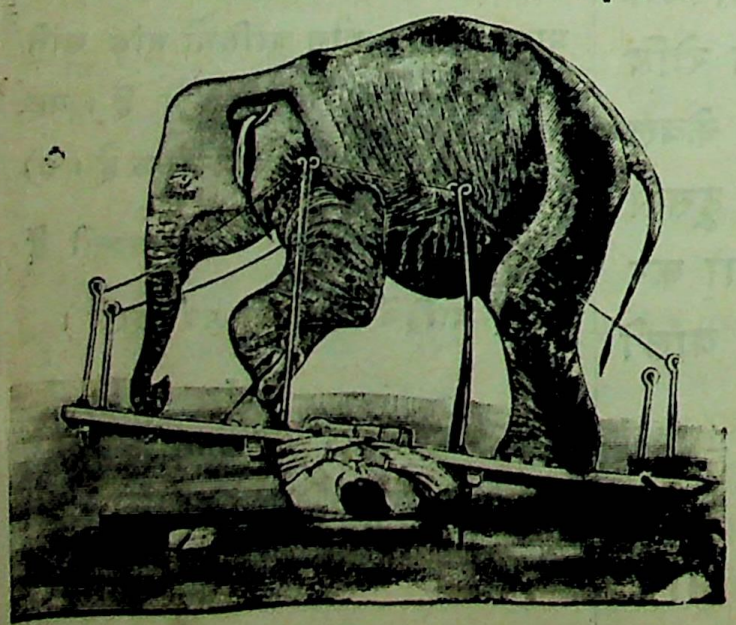

प्रचारक के ग्राहकों को ए कमास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

खालसापन्थ के लीडरों से मेरा प्रेम सहित निवेदन।

(म० मुन्शीराम जी द्वारा लिखित)

जिनको तंग आए हुए आर्यसमाजी और हिन्दू जाति के सम्पादक ताने से ततखालसा के नाम से पुकारते हैं मैं उन्हें ख़ालसा पन्थ का संशोधक मण्डल समझता हूं और इस लिये इस निवेदन में उन्हें इसी नामसे पुकारता हूं। मैं आर्यसमाज और ख़ालसा पन्थ का उद्देश्य एक ही समझता हूं। गौण बातों में मत भेद रहना मानुषी गुण है। परन्तु जिस केवल ओंकार के फैलाये भ्रमात्मक विश्वास रहित धर्म का प्रचार खालसा संशोधक मंडल करना चाहता है उसी ओ३म् निज नाम धारी पारब्रह्म की पूजा और भक्ति का संचार आर्यसमाज अपना कर्त्तव्य समझता है। फिर इन दोनों समाजों में परस्पर झगड़ा कितना शोक जनक और जाति के लिये हानिकारक होगा, इसके बतलाने की आवश्यकता नहीं। जिस समय भाई जवाहर सिंह के स्वामी दयानन्द पर राक्षसी आक्रमणों से तंग आकर महता राधाकृष्ण ने ग्रन्थी फोबिया नामी जवाबी ट्रैक्ट में श्री गुरु नानक देव पर आक्षेप किये थे उस समय उसके विरुद्ध पहिली आवाज़ मेरे अखबार सद्धर्म्मप्रचारक में ही उठाई थी। जब खालसा संशोधक मंडलने पहिले पहिल हिन्दू कहलाने से इन्कार किया था तब उनके अनुमोदन में आर्य समाज के अन्दर पहिले पहिल मेरा कलम ही उठाथा। मैं सदा से खालसा पन्थके गुरु महाराजों को वैदिक धर्म के रक्षक समझ कर उनका मान करता रहा और अगर कोई बेसमझ हिन्दू या आर्य्य समाजी विरोधी आक्रमणों के उत्तर में उनके पवित्र जीवनों पर कोई आक्षेप कर देता है तो मैं उसे बुरा समझता हूं। १९०९ के दिसम्बर में जब मैं अपने आर्य भाइयों की सहायता में पटियाला गया हुआ था तो कचहरी के अहाते में श्री महाराजा साहेब के एक नौजवान खालसा अहलकार ने तीन बार भाई कर्त्तारसिंह "लासानी फिलासफर" का विज्ञापन मुझे दिया जिसमें हमारे समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द जी महाराज से लेकर मेरी व्यक्ति तक पर बड़े गन्दे आक्रमण किये गये थे। दो बार तो मैं चुप हो रहा परन्तु तीसरीबार यह कहने पर "कि कुछ तो जवाबदो" मैंने कहा—प्यारे अज़ीज़ तू वे समझ है तुझे नहीं मालूम कि इस हरकत से तू अपने स्वामी को कितनी हानि पहुंचा रहा है और इसके सामने वह विज्ञापन फाड़ डाला। इसके पीछे शायद पाँच या छः बार बड़े गन्दे आक्रमण से भरपूर ट्रैक्ट मेरे नाम खालसा संशोधक दल के नौजवानों की ओर से विशेष पंक्तियों पर चिन्ह लगाकर भेजे गये। हर एक ट्रैक्ट के साथ विशेष पत्र होता था। उन पत्रों की भाषा अकथनीय थी इनमें से एक (जो औरों से नर्म था) का विषय स्मरण से देता हूं। उसमें लिखा था—"इस ट्रैक्टको आरंभ से अन्त तक पढ़जा और यदि दयानन्दी नियोग ने तेरी बुद्धि सर्वथा भ्रष्ट नहीं करदी तो पास बहती गंगा में डूब मर" मैं अपने पत्र लेखकों के लिये चिन्ह लगी हुई पंक्ति पढ़कर पत्र और ट्रैक्ट दोनों जला दिया करता था। मैं अपने विचार शील अनुभवी और वृद्ध खालसा भाइयों से पूछता हूं क्या अपने पन्थके नौजवानों को सदाचारी बनाने का यही मार्ग है। इस समय रौनकरामके मामले ने आग को बहुत ही भड़का दिया है। आर्य्यसमाज और मुझपर यह दोष लगाया जाता है कि रौनक राम की सहायता की जाती है। रौनकरामकी सहायता करना तो आर्य्यसमाज का साधारण धार्म्मिक कर्त्तव्य है। जब अपने आप खालसा संशोधक मंडलके इस मामले को अदालत में लेगये हैं। तो फिर विचाराधीन विषय पर सम्मति देते हुए क्या वे अभियुक्त के साथ अन्याय नहीं कर रहे। यदि खालसा पन्थ के लीडर इस पुस्तक को नियम पूर्वक आर्य्यनेताओं के पास भेजकर शिकायत करते तो इनका अधिकार था कि किसी अनुचित लेख की ओर ध्यानदिला कर उनसे उत्तर मांगते किन्तु इस समय तो आर्य्यसमाज के नेताओं का भी अधिकार नहीं है कि विचाराधीन पुस्तक के विषय में सम्मति दें। रौनकराम हवालात में है। कहाजाता है कि भदोड़ में सिंहसभा का उत्सव रचागया है और रौनकरामकोधमकी दी जारही है कि हवालात में भी उसको मारडाला जायगा। मेरी सम्मति में यह कोई अभिमान की बात न होगी। क्षात्र धर्म्म के अवतार श्री गुरुगोविन्द सिंह जी ने अपने चेलों को बलिदान की शिक्षादी थी न कि गले काटने की। गुरू साहबने अपने सच्चे शिष्य का एक ही धर्म्म बतलाया है—

जो तुम सिख मम सच्चे आरज।
सीस देहू धर्म्म के कारज॥

उसने यह नहीं कहा—"सीस लेहु धर्म्म के कारज" इस अर्थों में तो सिरकाटने वाले खालसों की अपेक्षा रौनकराम श्री गुरूगोविन्दसिंह जी का सच्चा सेवक सिद्ध होगा। अब मैं अपने विशेष निवेदन की ओर आताहूं। जिस पन्थमें वर्त्तमान महाराजा नाभा से न्यायाधीश प्रजा पालक देशभक्त शासक सम्मिलित हैं जिस पन्थ में भाई तख्तसिंह से परोपकारी, त्यागी, मनुष्य सेवक विद्यमान हैं और जिस दीवान खालसा में सरदार योगेन्द्रसिंह से उच्च आचार विचार वाले निर्पक्ष विद्वान् उपस्थित हैं उस पन्थ की आन के विचार से यह उचित नहीं कि खुदसर नौजवान जो चाहें सो करें और नाहीं आर्य्यसमाजिक पत्रोंको यह उचित है कि भद्रपुरुषों को भी जिन लेखों से दुख पहुंचे उनको किसी प्रलोभन में भी पड़कर मुतरिद करें। रौनकरामके मुकद्दमे को चाहे मुल्तवी कराके उसे अपनी माता और धर्म्मपत्नी की तसल्ली करने दीजिये, चाहें मुकद्दमे को इसी तरह चलने दीजिये और आर्य्यसमाज डिफैन्स कमेटी को इस की पैरवी करने दीजिये। किन्तु परमेश्वर को ही अपना सच्चा पिता समझते हुए क्या खालसा दीवान और आर्य्य समाज का कर्त्तव्य नहीं कि न केवल इस द्वेषकी दहकती हुई आग को इस समय ही दबादेवें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रत्युत भविष्य के लिये इसके स्थान में पारस्परिक प्रेमकी शीतल लहर से द्वेषाग्नि की जड़ही कोटदें और यह कोई कठिन काम नहीं। मैं नहीं जानता कि खालसा पन्थ के किस बुद्धकेसाथ पत्र व्यवहार करनेसे मेरा प्रयोजन सिद्धहोगा अन्यथा मैं पत्रोंमें इस प्रश्नको न लाता। मैं (आर्य्यसमाज के नेता के रूप में नहीं परन्तु एक सेवक के रूप में)अपने खालसा भाइयों को विश्वास दिलाता हूं कि यदि पांच सात आर्य सामाजिक नेता और इतने ही सिक्ख लीडर इकट्ठे होकर दोनों ओर से प्रकाशित दिल को दुखाने वाले ट्रेक्टों को इकट्ठा कराके इनकी जांच कर डालें और सर्वसम्मति से उचित या अनुचित की व्यवस्था दें तो आर्य्यसमाज में इस व्यवस्था के मान कराने की उत्तर दायिता मैं लेता हूं।

आर्य्यसमाज की ओर से (१) श्रीमान ला० राम कृष्णजी प्रधान श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब (२) श्रीमान ला० रोशनलालजी बी. ए. उपप्रधान सभा (३) श्रीमान महात्मा हंसराजजी बी. ए. प्रधान दयानन्द कालिज कमेटी (४) श्रीमान रायबहादुर आनरेबुल बख्शी सोहनलाल जी एडवोकेट (५) श्रीमान राय ठाकुरदत्त साहेब रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज (६) श्रीमानलाला देवराजजी आचार्य और मुख्याधिष्ठाता कन्या महा विद्यालय जालन्धर और सातवें कोई और सज्जन नियत हो सकते हैं। यदि इस तरह खालसा दीवान से भी कोई लीडर नहीं परन्तु कोई मुफस्सा सेवक (जो बड़े से बड़े सांसारिक अपमान को भी सहने के लिये उद्यत हों) मेरे साथ पत्र व्यवहार करें तो बहुत शीघ्र द्वेष की आग, जो इस समय आर्य्य समाज और खालसा पन्थ दोनों के हृदयों को दग्ध कर रही है शान्तहो सकती है। खालसा पन्थ और समाज की प्रस्तावित कमेटी अपना प्रयत्न ट्रेक्टों की पड़ताल तक ही परिमित न रक्खें परन्तु सभ्यविवाद और समालोचना की आज्ञादेते हुए आगे के लिये भी कोई ऐसी व्यवस्थापक सभा नियत करदें जिसके निर्णय की दोनों ओर के लेखों के औचित्य और अनौचित्य के विषय में माननीय समझाजाया करे। हर एक सभाके लिये जिसमें दो भिन्न समुदायों के प्रतिनिधि इकट्ठे हों किसी निर्पक्ष सभपति की आवश्यकता होती है ऐसा निर्पक्ष सभापती यद्यपि पहिले ही अधिवेशन के समय चुना जायगा तथापि मैं अपनी ओरसे प्रसिद्ध लेखक और पटियाला रियासत के भूत पूर्व होम मैम्बर श्रीमान् सरदार योगेन्द्रसिंहजी का प्रस्ताव करता हूं।

सम्भव है मेरी भूल से इस लेख में कुछ ऐसे शब्द आगये हों जो किसी भाई को असह्य हों। यदि मुझे सूचित किया जायगा तो ठीक पता लगने पर स्वयं क्षमा मांगलूंगा। मेरी भूलका (जो जान बूझ कर नहीं की गई) यह परिणाम न होना चाहिये कि एक लाभदायक प्रस्ताव का आरम्भ में ही गला घोंट दिया जाय। मैं रोगी होने के कारण वायु परिवर्त्तन के लिये क्वेटा आया हूं अगस्त के अन्त तक यहीं रहूंगा। इस विषय में पत्र व्यवहार मन्त्री आर्य्य समाज क्वेटा (बिलोचिस्तान) के द्वारा सुझ से की जिये।

शाखा गुरुकुल मुलतान समाचार

कई प्रकार की विघ्न बाधायों के पश्चात् परमात्मा की कृपा से अब शाखा गुरुकुल मुलतान का कार्य फिर भली प्रकार चल पड़ा है यद्यपि एक दानी जिमींदार ने शाखा को बहुत कुछ हानि पहुंचाने की कृपा की तथापि जिस कार्य में परमात्मा का हाथ होता है उस में मानुषिक शक्ति सर्वथा क्षीण होजाती है। मुलतान निवासियों के उत्साह तथा लाला परमानन्द जी वकील की उदारता से शाखा अभी तक स्थिर है। लाला परमानन्द जी जैसे उदार तथा सरल हृदय के मनुष्य कमही पाये जाते हैं। उन्होंने शाखा के लिये हजूरी बागवाली अपनी दोनों कोठियें उस समय तक के लिये दान देदी हैं जब तक कि शाखा का कोई अन्य स्थिर स्थान न बन जावे। और समय २ पर अन्य सहायता भी देते रहते हैं। इसके लिये हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते। एक कोठी में विद्यालय लगता है और दूसरी में आश्रम रक्खा गया है। इस समय यहां सात श्रेणियें जिसमें ९३ ब्रह्मचारी हैं और आशा है कि अगले वर्ष सप्तम श्रेणी के प्रायः सर्व ब्रह्मचारी नवम श्रेणी में प्रविष्ट होजावें।

पढ़ाई अब नियम पूर्वक प्रारम्भ होगई है। पं० सदानन्द जी एक काशी के योग्य पंडित आगये हैं, इनके विचार भी बहुत कुछ आर्य समाज के साथ मिलते हैं, व्याकरणाचार्य का प्रथम खण्ड पास किया हुआ है और द्वितीय खंड की तय्यारी कररहे हैं। सर्व अध्यापकों की संख्या आठ है। गर्मी बहुत अधिक होने से विद्यालय प्रातः काल एक समय ही लगता है। मुलतान जैसे मरुस्थल की प्रसिद्ध गर्मी पड़ने पर भी इस मास में केवल तीन ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त अन्य सब का एक सेर के लगभग भार बढ़ा है। कभी २ एक आध को अत्यन्त गर्मी के कारण साधारण ज्वर हो जाता है परन्तु वह दूसरे दिन ही अध्ययन तथा खेल कूद में लग जाता है।

दर्शकों की संख्या भी प्रति दिन बढ़ती जाती है और शाखा को देखकर बड़े संतुष्ट जाते हैं। उनमें से रोहतक के सिविल सर्जन डा० उमराव राजालाल जी की सम्मति का साराँश यह है कि ब्रह्मचारियों की शारीरिक तथा मानसिक शिक्षा के साथ २ सर्व प्रबन्ध बड़ा संतोष प्रद है, ब्रह्मचारियों का स्वास्थ वैसा ही है जैसा कि आशा की जा सकती है, मैंने जो कुछ विद्यालय तथा आश्रम में देखा है उससे मैं बड़ाही प्रसन्न हूं।

चन्द्र मणि विद्यालंकार

भ्रम संशोधन।

कुछ पत्रों की कृपा से यह भ्रमात्मक समाचार जनता में फैल गया है कि सद्धर्म प्रचारक कानपुर के "प्रताप" में सम्मिलित हो जायगा सर्व साधारण की सूचना के लिये प्रकाशित किया जाता है कि यह समाचार सर्वथा भ्रमात्मक है।

सम्पादक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(३८)

पण्डित गुरुदत्त का गुरुत्व

बेचाराम बाबू के हाथ पैर मारने और भाषा की बेजोड़ घड़न्त पर कुछ जोशीले आर्य समाजी तो प्रसन्न हुए किन्तु जितने अङ्गरेज़ और अन्य सुशिक्षित पुरुष आए थे वे उठकर चले गए। उन अङ्गरेज भद्र पुरुषों ने पीछे मुझ से शिकायत की कि ऐसी विशाल भूमिका के पश्चात् न जाने कैसा सार गर्भित व्याख्यान होना था जिससे उनको वञ्चित रक्खा गया।

२६ दिसम्बर की रात को पण्डित गुरुदत्त जी का व्याख्यान अङ्गरेज़ी में हुआ था जिसमें उन्होंने सिद्ध किया था कि "संसार का भावी धर्मवैदिक धर्म ही होगा"। इस व्याख्यान को सुनने दूर दूर से भाई आए थे। ऐबटाबाद से सर्दार रूपसिंह आए थे। जालन्धर से छोटे नगर में ५०० अङ्गरेज़ी जानने वालों का इकट्ठा होना पण्डित गुरुदत्त की प्रसिद्धी का ही प्रभाव था। इसी व्याख्यान से पहले एक भाई ने पूछा था "पण्डित जी! कनवोकेशन हाल में तो आप ने एम० ए का गाउन नहीं पहिना था, यहां आप इसे दिन रात लिए फिरते हैं" उत्तर मिला-- "यह हमारा सब से उत्तम दीक्षान्त मण्डप है। यहां जो कुछ भी अच्छा सामान हो साथ लाना चाहिए" पण्डित गुरुदत्त ने सारे कपड़े ज़ीन के पहने हुए थे। इसी रात मैंने, जो कोट ओवर कोटादि से लदा हुआ था प्रेम से अपना धुस्सा पण्डित जी को हाथ पैर ढकने के लिए दिया। पण्डित जी ने मेरा हाथ मेरी पाकट से निकाल कर अपने हाथ में लिया और पूछा-- "आप के हाथ गरम हैं वा मेरे" मैं विस्मित हो गया। मेरे हाथों की अपेक्षा पण्डित जी के खुले हाथ अधिक गरम थे।

२८ दिसम्बर की प्रातः काल ही सब स्वामियों को देवराज जी अपने यहाँ ले गए किन्तु पण्डित गुरुदत्त जी लाला बालक राम को साथ ले मेरे यहाँ पहुंचे वहां से दुग्ध पान करके एक बड़ा चक्कर काटते हुए हम तीनों लाला देवराज के मकान को चल दिये। बालकराम जी को प्रश्नों द्वारा दूसरों की सम्मतियां जानने का बहुत अभ्यास था। बहुत से अन्य प्रश्नों के पश्चात् आप ने पूछा- "पण्डित जी! नैशनल कांग्रेसके बारे में आपकी क्या राय है?" पण्डित जी चलते चलते खड़े हो गए और बोले- "नैशनल काग्रेस के बारे में मेरी क्या राय है! अच्छा, एक बड़े मैदान में लकड़ियों का ढेर लगाइए, बड़ा ढेर लगाइए, और उसमें आग लगा दीजिए। उस ढेर के चारों ओर ऊंचे मीनारों पर पानी के नलके लगा दीजिए। फिर एक ओर तो भड़की हुई आग में इन्धन डालते जाइए और दूसरी ओर पानी के नलकों से सीधी धारा उस ज्वाला पर छोड़ते जाइए। यह है नैशनल कांग्रेस जिसका उद्देश्य Constitutional agitation है।" लाला बालक राम ने दूसरा प्रश्न न पूछा और हम सब लाला देवराज की हवेली में पहुंच गए।

उसी दिन राय रामदयालु जी इञ्जिनियर ने दूसरे दिन के लिए भी पण्डितजी को उनके साथियों सहित भोजन का निमन्त्रण दिया और प्रार्थना की कि पण्डित जी का एक व्याख्यान अवश्य कराया जावे क्योंकि पहला व्याख्यान अधूरा छूटने से शिक्षित दल की शान्ति नहीं हुई। पण्डित जी ने उत्तर में कहा "मुझे कोई नई बात सुनाने के लिये सूझी नहीं फिर कैसे कह सक्ता हूं कि व्याख्यान दूंगा या नहीं"। इङ्गलेण्ड के प्रसिद्ध वक्ता जानब्राइट (John Bright) की न्याईं पण्डित गुरुदत्त बिना आवश्यकता और अनुभव के बोला नहीं करते थे।

अस्तु! देवराज जी के यहाँ सब ने इकट्ठे भोजन किया और फिर विविध विषयों पर बात चीत होती रही। मध्याह्नोत्तर मैं और बालकराम जी धर्म सभा के जलसे में, जो जुआख़ाने के मैदान में हो रहा था, जाने के लिए तैय्यार हुए। पण्डित गुरुदत्त जी ने भी चलने की इच्छा प्रकट की। शायद बालकरामजी ने उन्हें मना कर के कहा- "पंडित जी, व्याख्यानों की रिपोर्ट हम आपको देंगे। आप हमारे शिरोमणि लीडर हैं आप को हम नहीं लेजाएंगे"। पंडित जी का उत्तर घड़ा घड़ाया था, सान्यासी स्वामियों की ओर सङ्केत कर के बोले- "गद्दी पर इन सब को बैठने दो, मुझे तो आप सुनने में ही आनन्द आयगा।" और हमारे साथ होलिए। दशोपनिषद् का गुटका हाथ में था। जलसे में पहुंचे, एक ओर खड़े होगए। एक पंडित मूर्त्ति पूजा का मंडन कर रहे थे, कुछ देर तक सुनने के पश्चात् पंडित जी ने कहा- "लीजिए, अब जन साधारण के लिए सन्देश सूझ गया, अब आप का जी चाहे तो नोटिस देदीजिए।" मेरे इशारा करते ही उसी जनसमुदाय में से २५ आर्य भाई इकट्ठे होगए। सब को कह दिया कि सभा बिसर्जन होते ही निकलने वालों को पंडित जी के व्याख्यान की सूचना देते जांय। सभा बिसर्जन हुई और काम शुरू हो गया। हम लोग तो दूसरी ओर से समाज मन्दिर को चले और जन समुदाय ने सीधा आर्य मंदिर का रास्ता लिया। हमारे पहुंचते पहुंचते चार पांच सौ आदमी इकट्ठे होगए। एक भजन समाप्त होने पर आंख उठाई तो दो सहस्र की भीड़ भाड़ दिखाई दी। राय शालिग्राम, वज़ीर कर्मसिंह मंडी वाले, पंडित बिन्दुलाल म्युनिसिपल कमिश्नरादि नगर के बड़े बड़े प्रतिष्ठित सभ्य कुर्सियों, बेञ्च पर शोभायमान थे। पंडित गुरुदत्त ने शनैः शनै भूमिका उठा कर परमात्मा का निरूपण आरम्भ की और फिर आत्मा के साथ उस के सम्बन्ध का चित्र खींच निराकार पूजन के मंडन में ही मूर्ति पूजा का खण्डन कर दिया। फिर जब जनता के लिए प्रेम के भाव से प्रेरित होकर उन्होंने कहा- "मुझे बड़ा कष्ट होता है, मेरा हृदय बिदीर्ण हो जाता है जब मैं देखता हूं कि मेरे पिता के ही पुत्र, मेरे भाई चेतन के पुत्र होते हुए, जड़ का पूजन करते हैं।" तो उस समय लोगों के दिल भर आए। वज़ीर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्मसिंह की पूजा के साथ एक मन से कम बोझ की मूर्तियां न होंगी जिन का वह नित्य पूजन करते थे। उन्होंने राय शालिग्राम से कहा–"कल से मैं मूर्ति पूजा कदापि न करूंगा।"

पंडित जी के पश्चात औरों के भी व्याख्यान हुए, स्वामी प्रकाशानन्द ने हंसाते हंसाते लोगों को लोट पोट कर दिया, किन्तु पंडित गुरुदत्त के व्याख्यान का अन्त तक बड़ा प्रभाव रहा। इस प्रभाव का सारांश वह था जो अकस्मात धर्म सभा के एक स्तम्भ, पंडित विन्द लाल के मुंह से आर्य समाज मन्दिर के बाहिर निकला था। पंडित जविन्दलाल ने अपने साथियों से कहा– "अजज मूर्त्तिपूजादी बो काटे होगई।" सचमुच जैसे उस्ताद के ढील देने पर अनाड़ी के हाथ की तुक्कल कटकर नाक की सीध पर चलदेती है वैसे ही उपस्थित सज्जनों के मनों से मूर्त्ति पूजा पलायन करगई।

मुंशीराम

——

राजपथ।

(रवीन्द्र के "विचित्र प्रबन्ध" से प्रचारक के लिये अनुवादित)

मैं राज पथ हूं। मुझे एक मुहूर्त के लिए भी विश्राम नहीं। इतना भी विश्राम नहीं कि मैं अपनी कठिन शुष्क शय्या के ऊपर एक तिनका सबज़ घास का भी जमने दूं; इतना भी विश्राम नहीं कि मेरे किनारे एक छोटासा नीलवर्ण बन का फूल भी फूट सके! कह कुच्छ भी नहीं सकता परन्तु अन्ध भावसे अनुभव सब कुच्छ कर रहा हूं। रात दिन पद शब्द, केवल पद शब्द।

पृथ्वी की कोई कथा मैं सम्पूर्ण श्रवण नहीं कर पाता। आज सैंकड़ों वर्षों से मैं लोगों की कितनी हंसी, कितने गाने, कितनी बातें, सुन रहा हूं; किन्तु केवल क्षण मात्रके लिए ही सुन पाता हूं। बाकी सुनने के लिए जिस समय कान उठाता हूं, उस समय देखता हूं, कहने वाला है-ही नहीं।

समाप्ति या स्थायित्व शायद कहीं हो, परन्तु मैं तो देख नहीं रहा। एक चरण चिन्ह भी तो मुझपर अधिक समय तक नहीं रहता। कितने ही चिन्ह पड़ते हैं और नूतन पद आ कर पहिले पद चिन्हों को मिटा जाते हैं।

मैं किसी का लक्ष्य नहीं, सब का उपाय मात्र हूं। मैं किसी का घर नहीं, मैं सब को घर लिए जारहा हूं। जिनके घर दूर हैं वे मुझे ही कोसते हैं, मैं जो परम धैर्य से उनको उनके घरके द्वार तक पहुंचा देता हूं उस के लिए भी मैं किसी से कृतज्ञता नहीं पाता। गृह पहुंच कर विराम, गृह जाकर आनन्द, गृह में सुख सम्मेलन होता है, परन्तु मुझ पर तो केवल श्रान्ति का भार, केवल अनिच्छा कृत प्रेम, केवल विच्छेद है।

छोटे छोटे पाँव रखते हुए जब मुझ पर से चलते हैं तब मैं पथिक को बहुत कठिन प्रतीत होता हूं, ऐसा जान पड़ता है कि उनके पाँव बजते हैं। इच्छा होती है, कुसुम दल के सदृश कोमल होता! राधिकाने कहा था—

"जहाँ जहाँ अरुण, चरण चलि जाता।
तहां तहां धरणि होइए माझू गाता?"

अरुण चरण इस कठोर धरणी पर चलें कैसे! किन्तु यदि नहीं चलते तो क्या कभी भी कहीं एकाध श्यामल तृण न उगता!

बहुत दिन हुए, इसी तरह कोई एक बालिका अपने दो कोमल चरणों को लिए प्रतिदिन अपरान्हवेला बहुत दूरसे आती—छोटे छोटे नूपुर झुन झुन करके उसके पांवों में बजते जाते। जहाँ पर उस बट वृक्ष की बाँई ओर से होती हुई मेरी एक शाखा गांवकी ओर गई है, वहाँ वह श्रान्तदेह से वृक्ष के नीचे चुप बैठी रहती। एक और मनुष्य दिन का काम समाप्त करके अन्य मनस्क उसी समय वहां से गाँव की ओर जाता, उसके जाने पर बालिका भी थकी हुई जिस मार्ग से आई थी उसी ओर लौट जाती। एक दिन फाल्गुन मास के शेष में अपराण्ह समय जब आम का खिला हुआ बौर पवन से झड़ झड़ कर गिर रहा था–उस समय वह एक जन जो नित्य आया करताथा नहीं आया। उस दिन बड़ी रात तक आसरा देखती हुई बालिका घर चली गई। जैसे बीच बीच में वृक्षों पर से सूखे पत्ते झड़ झड़ पड़ते थे उसी प्रकार कभी कभी एक दो बून्द आंसू मेरी नीरस तप्त धूलि पर गिर कर उसी में मिलजाते थे। फिर दूसरे दिन शामको बालिका उसी समय पर उस वृक्षके नीचे आकर खड़ी हो गई, परन्तु उस दिन भी वह जन नहीं आया। रात को वह फिर धीरे धीरे घरकी ओर चली। थोड़ी दूर जाकर वह फिर न चल सकी। मेरे ऊपर, धूलिके ऊपर छटा पटा कर गिरपड़ी। दोनों बाहुओं से मुख छिपाकर फूट फूट कर रोने लगी! बात क्या है! आज इस निर्जन रात्रि के समय मेरी छाती पर भी क्या कोई आश्रय लेने आया है।

ऐसे ही कितने पद शब्द नीरव हो गए, मैं क्या सब को याद रख सकता हूं! मुझे क्या एक क्षण के लिए भी शोक करने का अवकाश है?

ओह! क्या प्रखर धूप है! एक २ बार निश्वास निश्वास छोडते हुए तप्त धूलि, सुनील आकाश को धूसरित करती हुई उड़ रही है। धनी दरिद्र सुखी दुःखी, जरा, यौवन, हंसी, रोना, जन्म, मृत्यु सब ही मुझ परसे एक ही निश्वास में धूलि के स्रोत की तरह उड़ते जारहे हैं। पथ को हँसी भी नहीं है, रोना भी नहीं है, पर ही अतीत के लिए शोक, वर्तमान के लिए चिन्तन और भविष्यत के लिए आशा का मार्ग देखने का स्थान है। पथ तो सैंकड़ों सहस्रों प्रति वर्तमान नूतन अभ्यागतों के लिए ही व्यस्त है। ऐसे स्थान में निजके पद गौरव पर विश्वास करके अत्यन्त अभिमान के साथ कौन पांव रखे। निज के चिर-चरण चिन्ह रह जाने का क्यों कर वृथा प्रयास कर रहे हो? मैं तो कुछ भी रहने न दूंगा। रोना भी नहीं, हंसी भी नहीं। "मैं" ही सदा से हूं और "मैं" ही बराबर रहूंगा।

ज्ञानीलाल

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्त।

(प्राप्त लेखों का सम्पादक उत्तरदाता नहीं)

आर्य्य समाज की वेदी।

प्रचारक के पाठक भूले नहीं होंगे कि कुछमास पहिले "आर्य्यसमाजका प्रचार" शीर्षक देकर सम्पादक महोदयने लेख निकाले थे जिनमें योग्य सम्पादकने हम समझते हैं निहायत ईमानदारी से इस विषय पर सार्वजनिक सम्मति जताने की कोशिश की थी, परन्तु लेखकों और वाग्मियो वाली अत्युक्ति से काम लेते हुए आर्य्य समाज के वर्तमान कई निः-स्वार्थ उपदेशकों के ऊपर कृपा भी उन में की गई थी यह सर्व्वथा भुलादिया गया था कि कइयों ने बीस २ वर्षों तक इस चर्च की निरन्तर सेवा की, कई पं० रामरत्न सरीखे भद्रपुरुष सेवा कर रहे हैं जिनमें आचार के उत्तम गुणपाए जाते हैं और जिनके बिना कई जिलों की समाजों के उत्सव ही नहीं होते, इसी प्रकार हम समझते हैं कि जहां बार २ किसी को भाड़े का टट्टू समझ कर उसके साथ व्य-बहार करना उपदेशक के अन्दर अपने कार्य्य के लिये प्रेम उत्पन्न नहीं करसक्ता वहां यह सोसाइटी और उसके आचार आदर्श को नीचा कर देता है, कहने को तो हम चिल्ला २ कर प्लेटफार्म पर कह देते हैं कि विश्वास सब व्यवहार की चाबी है परन्तु प्रश्न यह है कि हम लोगों को कितना विश्वासपात्र बनाते हैं क्या यह शिक्षाका एक मोटा नियम नहीं कि किसी बालक को बिश्वास पात्र बनाओ तो वह उसके योग्य बनने का यत्न करेगा ओर एक दिन उसके योग बन भी जायगा, हमतो कहते हैं कि किसी ऐसे मनुष्य को जिसे हम छोटा समझते हैं यदि हम कुर्सी देदें और शेष कुर्सियों पर बड़े २ प्रतिष्ठित और सभ्य सज्जन बिठाएं तो परीक्षण से यह बात सिद्ध हो जायगी कि वह छोटा आदमी अपनी किसी दिन कमियों को दूर करके सभ्य समाज में कुर्सी पर बैठने योग्य बन जायगा, यहाँ पर हमें शेर के बच्चे की कथा स्मरण आती है जो गीदड़ों के अ-न्दर रहता था और उनके साथ हिल मिल कर अपनी व्यक्ति (identity) खो-बैठाथा, यदि कराने पर फिर वह शेर का बच्चा बनगया, हैमर्टन साहिब लिखते हैं कि निर्धन मनुष्यों के बालकों को यह भी घाटा रहा है कि वह अपने पिता की सोसाइटी से भी नीचे की सो-साइटी में जाने पर बाधित होजाते हैं और उनकी मानसिक दृष्टि बहुत संकु-चित होजाती है उद्देश्य तुच्छ होजाते हैं, यहां तक कि यह ठीक है कि एक धनी के लड़के को जो सुविधाएँ ३५ वर्ष की आयु में प्राप्त हैं वह निर्धन के लड़के को ७० वर्ष की अवस्था तक भी नहीं प्राप्त होती, यह स्पष्ट रीति से अवस-रवाद की एक युक्ति (plea) है, पं० मदनमोहन मालवीय के शब्दों में भार-तवासियों को अवसर देदो फिर देखो कि वह क्या कुछ नहीं कर दिखाते? मुश्किल तो यह है कि यहां श्रमविभाग कुछ है नहीं प्रत्येक मनुष्य से प्रत्येक कार्य्य की आशा की जाती है, विशेषज्ञ(specialist) कोई बनने नहीं पाता हमारे उत्तम कक्षा के बुद्धिमान् अनेक बेडियों में पाओं धरने पर बाधित होने के कारण कहीं भी चमक नहीं सक्के नहीं वह अपने कर्य्य में पक्की भूमि (terra firma) प्राप्त किये हुए या (at home) दृष्टि गोचर होते हैं जहाँ अवसर दिया गया वहां बड़े अच्छे परिणाम निकले, जहाँ द्वार खोले गये वहां अन्यों को खट खटाने का साहस भी किया गया और यह खट खटाना जारी रहा जब तक कि द्वार खोलने वालों ने द्वार खोलने से कोरा इनकार न कर दिया और इस प्रकार से खट ख-टाना व्यर्थ न हो गया, दृष्टान्तों के लिये कोई अधिक बुद्धि के ऊपर बोझ डालने की आवश्यकता नहीं, नैदिन्सनके शब्दों में क्या बर्क से उतर कर अंग्रेजी भाषा का वाग्मी इसी भूमिका एक लाल नहीं? रामभूर्ती कहां का है, सारे यूरोप को कुश्तियों में जीतने वाला गामा पहलवान कहां का था, बोस और पीसीरे कहां के हैं, मिस्टर गोखले जैसा राजनीतिज्ञ इङ्गिलस्तान में कहाँ है? रणजीत जैसा कन्दुक क्रीड़ा का खेलने वाला उत्पन्न करने का अभिमान किस देश को है? महाराज बड़ौदा और मैसूर जैसे वेदार-मग़ज़ और अप्टूडेट राजे कहां के हैं? मिष्टर माला बारी कौन था। हम कहते हैं कि आज यह गिरा हुआ देश भी शतशः ऐसे दृष्टान्त उपस्थित कर सकता है जिन में अवसर दिये जाने पर उसने वैसाही अच्छा काम करदिखाया हो जैसा किसी और अधिक भाग्य शाली ने। निर्बल बङ्गाली जिन के विषय में कहा जाता था कि यह ही वह देश है जिसमें पुरुष स्त्रीयां हैं जब पाद-कन्दुक की एक मंडली बना कर विला-यत में जाते हैं तो कितना नाम पाते हैं पराङ्गपे क्या हैं क्या अवसर वाद के एक मूर्त्तिमान उदाहरण नहीं? रामतीर्थ विवेकानन्द और सत्य बालादेवी अमे-रिका में कितना नाम पाआए? आज प्रोफेसर प्रभुदत्त को जर्मनी आदि देशों से ब्रह्मविद्या के उपदेश केलिये निमन्त्रण।

मनु के श्लोक ॥

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वंस्वंचरित शिक्षेरन्पृथिव्यांसर्वमानवाः

हां शिक्षेरन् पद ही यह बताता है कि भारत वर्ष और भारतीयों का यह मिशन है कि समय २ पर दूसरे देशों के सन्तापों को दूर करें (कितना बड़ा न्याय है?) की आवृत्ति नहीं तो क्या है? डाक्टर गङ्गानाथ झा से डाक्टर थीबो क्यों पढ़ रहे हैं? अमरीका में आज हरदयाल को मजदूर लोग क्यों बीसवीं सदी का ईसा मान रहे हैं? गुरुदत्त और मनोहरलाल कौन हैं? भंडार करने क्या कम जौहर दिखाए हैं? रावे-न्द्रनाथ टेगरे को हम क्यों भूलजाते हैं? क्या यह सब अवसरों को करश्मे नहीं? हम समझते हैं कि पाठकगण भली भांति समझगये होंगे कि यदि आनरेरियों का भूत mamia समाजोंके सिरपर सवार न होता तो यही उपदेशक खालिस सोना बनाए जासकते थे। पं० दौलतराम मास्टर आत्माराम पं० लेखराम और मास्टर वज़ीरचन्द की अमूल्य सेवाओं से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कौन इनकार कर सकता है ? बात यह थी। उन दिनों यह भाव कि उपदेशक हमारे नौकर हैं नहीं था, उपदेशक बड़े प्रेम से काम करते थे। उनको लगन थी, उत्साह था। आज भी हमारा यह दावा है कि जितना उपयोगी काम अपने तरीके पर 'खास के "नौकर" उपदेशक कर रहे हैं उतना मेज़ें पीटने वाले सिद्धान्तों से अनभिज्ञ, या उनपर विश्वास न रखने वाले और उनमें से कई २ फ़ीसे रखनेवाले कभी नहीं करसकते। धन्य है उस भक्तराम की दृढ़ता, जिसने मारें खाकर और अन्य कई प्रकार की आपत्तियाँ सहन करके वशिष्ठों में काम किया। सहनशीलता के अंश में यह पं० लेखराम के नाम से कुछ कम नहीं। कठिनाई तो यह है कि समाजें वैदिक धर्म्म को चर्चा नहीं समझतीं जिसमें अन्य चर्चा हिन्दुओं के मन्दिरों मुसलमानों की मजिस्दों और धर्म्मशालाओं की नाईं एक आदमी प्रति सप्ताह उपदेश करता रह सकता है। समाजों ने लोगोंके दिलों में कर्णव्यसन डालदिला है और पब्लिक मज़ाक बिगाड़ दिया है। जब तक किसी बड़े या नये आदमी का नाम प्रोग्राम में न हो तबतक जलसा फीका समझा जाता है। तारों पर तारें खड़कती हैं यहांतक कि जिन सज्जनों का प्लेटफार्म पर चढ़ना श्रीमती सभा ने निषिद्ध करार दियाहुआ होता है उन्हें भी बुलालिया जाता है। सच पूछो तो समाजों के अन्दर जाकर पता लगता है कि उन्होंने आवश्यकता से अधिक व्याख्याताओं का प्रबन्ध किया होता है जिसके कारण कईयों के व्याख्यान रह भी जाते हैं। अब एक नई भेड़ चाल और आडम्बर चला है। स्त्रियों को पुरुषों के प्लेटफार्मों पर केवल हूहालेने के वास्ते खड़ा करदिया जाता है। हम समझते हैं कि इस में एक पाप भी है जिस से बचने की आवश्यकता है। वह यह है कि हमारे श्रोतागण नीच भावोंसे बहुत ऊपर नहीं हैं। व्याख्याता की आवाज, रूपरंग इङ्गित और धारा प्रवाह यह प्रायः अधिक देखेजाते हैं और उसके कथन का सार कम, हमारा विचार है कि इस अवस्था में अपनी पूजनीय स्त्रियों बहिनों माताओं और कन्या पाठशालाओं की कन्याओं को प्लेटफार्म पर खड़ा करने की रीति एक दम बन्द करदेनी चाहिये। साधारणतया देवियां हमारे साथ धर्म्म यज्ञ में सम्मिलित हों, देवी चार श्रेणियां पढ़जाती हैं उसका विद्वान उपदेशकोंकी अपेक्षा अधिक अधिकार समझाजाता है कि वह घंटाभर बोले चाहे उसके अंदर सार वही पुराना राग हो कि "हम मरगई लुटगई" इत्यादि या अधिक से अधिक किसी संस्था विशेष के लियेइस विलाप के आधार पर अपील हो, हाथ पीछे पसारना चाहिये पहले लोगों की आत्मिक क्षुधा की निवृत्ति की आवश्यकताहै। परन्तु हम यह समझे बैठे हैं कि जिस स्थान से कुछ रुपया हाथ न लगे वहां प्रचारनिर्थरक है। हा, धनकी डाह धर्म्म कार्य्यों में भी बनियापन commercialism !

इसी प्रकार का एक और स्वांग कुछ दिन पहले ज़ोरोंपर था, कोई मुसलमान, ईसाई या अंग्रेज भूला भटका हाथ लग गया, बस फिर क्या है, सिरपर उठा लिया गया। कहने को तो लोग कहदेते हैं कि आर्य्य समाज एक शिक्षितों का दल है परंतु हम कह सकते हैं कि और नहीं तो इस अंश में अवश्य ही अर्य्यसमाज सभ्यलोगों की हंसी का पात्र बनती होगी। हमारे विरोधियों के इस कथन में अवश्य कुछ न कुछ सचाई है कि धर्म्मपाल इतने दिन महात्मा और विद्वान् वेदभाष्यकार माना जाकर केवल नाम बदलने पर मूर्ख नहीं कहा जासकता। आवश्यकता यह है कि उन्हें जिज्ञासु बनाया जाता फिर पीछे अपनी योग्यता से वह परिव्राजक या सन्यासी क्या, परिव्राज काचार्य्य बन जाता तो हमें कुछ वक्तव्य न होता और आर्य्यसमाज का गौरव रहता।

हम यह कहरहे थे कि समाज को चर्च अभी समझाही नहीं गया। समाजों के अन्दर गंदा पड़ा रहता है, बच्चे खेलते हैं, परिवार ठहरते हैं। कहीं २ अखाड़े बने होते हैं। कारण यह कि उनके मालिक और धर्म्म मन्दिरों की नाईं उपदेशक नहीं प्रत्युत गृहस्थी समझे जाते हैं। ज़रा कोई हिंदुओं सिक्खों और मुसलमानों के पूजा स्थानों में जूता तो लेजाकर देखले परन्तु हमारे यहां सब तरह की अनाप शनाप कार्य्यवाहियां होती हैं।

इस प्रकार हमें तो यह प्रतीत होता है कि उपदेशकों के अधिकार बहुत कम हैं उत्तर दायित्व अधिक, दूसरी ओर आनरेरी चाहे कुछ कहलें, कोई बुरा नहीं मानता। कई तो इतने आग्रही होते हैं कि समाजें उन्हें अगले वर्षों में बुलाने के लिये कानों पर हाथ धरती हैं। आज हमें आज्ञा हुई कि कराँची जाओ। रेल में न सोया हुई, न स्नान हुआ, न भली प्रकार भोजन हुआ। वहां पहुंचे, सारादिन लोगों का मेला लगारहा कोई एकान्त कमरा न मिला, न कोई पुस्तकालय है। उत्सवोंमें सारादिन न बैठें तो समाजें एकओर नाराज़ होतीहै यह धमकी अवैदिक संस्कारोंके कराने से इनकार करने पर भी हमें दीजाती है। कई नौकरी की धमकी भी दिखाती हैं और आनरेरी व्याख्याता दूसरी ओर नाक चढ़ाते हैं "न जाय रफ्तन न पाए मान्दन"। फिर हमें कहा जाता है कि तुम तय्यार होकर नहीं बोलते। रात्रि को १० बजे उत्सव समाप्त हुआ, ११ बजे भोजन मिला, अनियम से सोए और अनियम से उठे। फिर लोगोंकी समालोचना होती है "देखोजी, कैसे दरिद्री उपदेशक हैं। प्रातःकाल उठने का कोई नियम नहीं। उपदेश क्या ख़ाक इनका प्रभाव डालेगा"। दूसरेदिन हुकम आया कि शिमले पहुंचो। ऐसा रट्टी उत्सवों का तरीका है। आनरेरी महाशय इस अंश में भी हमसे अच्छे रहते हैं कि उन्हें एकान्त बैठने उठने का स्थान तो मिल-जाता है।

हैडक्वार्टर में जाते हैं तो वहां मुंहछिपानेको स्थान नहीं। न हमारा पारिवारिकजीवन लाने का कोई उपाय है। यदि लाहौर में कुछ क्वार्टर हमलोगों के इकट्ठे बनवादिये जाँय तो कितना लाभ हो! यदि इनसब बातों पर विचार कियाजाय तो पता लगे कि उपदेशक लोग किन कठिनाईयों में काम करते हैं। हमारा यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दावा है कि यह इनही लोगों का काम है और लोग इस लाइन में आकर देखें तो आंखें खुलजाँए। इसलिये तो गुरुकुल के स्नातक भी इधर आने से डरते हैं यद्यपि आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के छपेहुए चिट्ठीके काग़ज़ों में हम पढ़ते हैं कि सभा के १ म उद्देश्य की पूर्ति इस प्रकार की जा रही है कि वेद वेदाङ्गों की प्राचीन रीति से शिक्षा देने और वैदिक धर्म्म के उपदेशक तय्यार करने के लिये १९५९ से गुरुकुल नामक विद्यालय हरद्वार के निकट खोला हुआ है। ईश्वर करे कि आज जो स्कीम १९७१ में उपदेशक महाविद्यालय खोलने की सूझी है उस में कृत कार्यता हो, परन्तु हम इतना कहे बिना नहीं रह सक्ते कि वहां के लोगों को हमारी अपेक्षा अधिक कठिनाइयों का सामना करना होगा क्योंकि हम तो इस संसार में रहे और परिचय और अनुभव प्राप्त करते गये। यह हमें उन सज्जनों के ऊपर सौभाग्य प्राप्त है। इन्हीं आशाओं को लेकर डी० ए० वी कालिज खोला गया था। उसके लिये जो अपीलें की गई थीं वह आज तक गुरुकुल के लिये महात्मा मुंशीराम जी के मुंह से नहीं निकलीं परन्तु परिणाम क्या हुआ?

उपदेशक क्लास पृथक बन गई और उस का वह बुरा हाल किया गया और किया जाता रहा है कि तोबह ही भली। आज वह भी अपना वेद प्रचार फंड मजबूत करने की चिन्ता में हैं, कहा जाता था कि डी. ए. वी. कालिज के विद्यार्थी जब निकलेंगे तो गौतम और कणाद अर्थात महर्षि दयानन्द के भी गुरु होने के कारण वह और उपदेशकों की आवश्यकता नहीं रहने देंगे, आज हमारी समाजें भी यही समझे बैठी हैं कि जब गुरुकुल के ब्रह्मचारी निकलेंगे बेड़ा पार हो जायगा हमें हाथ पांवों हिलाने की आवश्यकता नहीं। वे शायद यह नहीं समझतीं कि गुरुकुल अधिक से अधिक प्राचीन और नवीन अच्छे आदर्शों का मिश्रण करके चलाया जा रहा है और यह एक आदर्श विद्यालय है जिसमें ब्रह्मचर्य को बहुत उच्च स्थान दिया जाता है।

दूसरी ओर एक और मुश्किल है, वह यह कि समाजों के अन्दर पहले तो वैतनिक उपदेशकों के लिये अश्रद्धा पैदा करदी जाती है और फिर उस अश्रद्धा को उपदेशकों के विरुद्ध एक युक्ति बना लिया जाता है, जो मुख्याध्यापक अपने अध्यापकों की अपने विद्यार्थियों के सामने निन्दा करता रहे उसके अध्यापक कितने रोज़ टिकेंगे और जितने दिन टिकेंगे किस सन्मान के साथ टिकेंगे? क्या उनके विद्यार्थी उनसे कभी सन्तुष्ट होंगे? क्या यह मनोवैज्ञानिक सच्ची घटना नहीं कि इच्छा शक्ति एक बड़ी भारी शक्ति है और यदि हम या कोई और महाशय बल पूर्वक विरोध करें तो हिप्नोटिस्ट और मेस्मरिजम वाले की सारी शक्ति हमें उसके विचारों को नहीं बना सक्ती। क्या बीज के फल रूप में परिणत होने के लिये उपजाऊ और उचित भूमि की आवश्यकता नहीं हुआ करती? प्रत्येक बात के ग्रहण करने के लिये मन की तैयारी Receptive mind बहुत आवश्यक है। इसी वास्ते श्रद्धा की शास्त्रों में बड़ी गुंजाइश रक्खी गई है।

"श्रद्धया सत्यमाप्यते"
"श्रद्धावान् लभेत ज्ञानम्"

इत्यादि वेद और गीता के प्रमाण बड़े ज़ोरदार शब्दों से श्रद्धा की अपेक्षा का प्रतिपादन करते हैं। इसके अभाव में स्वाभाविक है कि हमारे उपदेशक चाहे कितने भी विद्वान् हों वे लोगों को सन्तुष्ट न कर सकेंगे, एक अध्यापक का यहां दृष्टान्त हमें स्मरण आता है। एक बार एक अध्यापक, जो विद्यार्थियों में बड़ी प्रतिष्ठा पा चुका था कहीं बाहर जाते समय अपने स्थानापन्न की योग्यता का परिचय दे कर विद्यार्थियों से पूछने लगा कि तुम मेरी अपेक्षा अब तो इन से अधिक सन्तुष्ट रहोगे? विद्यार्थी ने निषेध कर दिया। तब अध्यापक ने यह शब्द कहे जो स्मरण रखने योग्य हैं "यदि तुम ज़िद्द कर बैठो तो मैं भी तुम्हें अपनी सारी शक्ति से नहीं समझा सकता, नाहीं उस अवस्थामें कोई अन्य सांसारिक शक्ति तुम्हें यह सन्तोष दे सकेगी"। बात भी ठीक है।

क्रमशः
पूर्णानन्द उपदेशक

काम की आवश्यकता और एक निवेदन

आज कल मुझे कुछ दिनों से कांगड़ा प्रान्त के पर्वतों में पर्यटन करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। इस लिये मैं चाहता हूं कि इस प्रान्त की आन्तरिक दशा आप के सामने रक्खूं।

यहाँ पर विद्या का प्रचार नहीं है अधिक संख्या उन मनुष्यों की है जिन्होंने कि कभी विद्या शब्द को भी नहीं सुना। हिन्दुओं की बस्तियें ही सब स्थानों पर दिखाई देती हैं मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं की अपेक्षा कुछ भी नहीं देवी दुर्गा के मंदिर प्रत्येकग्राँम २ में हैं पौराणिक भावों से संगठित हुए २ मनुष्य स्त्रियां बालकादि दुर्गा देवी के बाल चढ़ाने के अनन्तर मांस को खाते हैं। वैष्णव सम्प्रदाय यहां पर बहुत कम हैं। मद्य पान में भी किसी प्रकार का दोष नहीं गिना जाता। सब लड़कों के बाल्य अवस्था में विवाह कर दिये जाते हैं अतः इन पूर्वपत्नियों की शारीरिक अवस्था बहुत चिन्तनीय है। लड़ाई से भागते हैं और सर्वथा भील ही प्रतीत होते हैं। कई विवाह तो यहां इस प्रकार के किये जाते हैं कि देख कर हृदय काँप उठता है, कि क्या गुड्डी-गुड्डा का बिवाह है कि लड़के का। छै २ महीनें के बालक बालिकाएं इस स्थान पर विवाहित किये जाते हैं। लड़के की और लड़कियों को बेचने का रिवाज भी यहां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर बहुत अधिक है। कई स्थानों पर तो ४०) और ५०) रुपयों पर भी लड़कियां बेची जाती हैं। कई उत्तर जातीय मनुष्य जिनका विवाह कहीं और नहीं होता तो इस ओर आकर लड़की को खरीद विवाह कर उसे अपने धर्म में परिणत कर लेते हैं।

कुल्लु आदि कई स्थानों पर ईसाई लोग उन सुन्दरी स्वरूप वती बालकाओं को लिये हुए अन्य प्रान्तों में भेजते चले जाते हैं। बहुत सारे इस प्रकार के हैं जिन्हें कुछ भी अपने धर्म की बाबत पता नहीं होता और कुछ थोड़े से लोभ से ईसाई मत को स्वीकार कर लेते हैं। हे आर्य्य जाति के संरक्षकों! अपने वैदिक धर्म को सब संसार पर फैलाने की आशाओं को रखने वालो! नवयुवको क्या तुम्हारा धर्म नहीं कि तुम अपनी सुख सामग्री को त्याग इन पर्वतों में आकर उन अज्ञानी और धर्म से अपरिचित मनुष्यों को वास्तविक धर्म का सच्चा कार्य दिखाते हुए अन्य मतों में न फंसने को वैदिक धर्म की शरण में लावें। यदि आप कुछ कुल्लु से आगे चले जावें तो यहां तक अज्ञान है। एक यदि कोई कन्या अथवा स्त्री अपने पति से भिन्न रूपि और के साथ कुसंग कर लेती है तो उसे कोई लज्जा स्पद काम नहीं। हा! धर्म के हितैषीयो! क्या तुम्हारा कर्त्तव्य नहीं कि उन्हें इस पाप वृत्ति से छुड़ा कर धर्म की ओर लगावें. विशेषतः मेरा संकेत उन नवयुवकों की ओर है जो विद्यालय महाविद्यालयों में पढ़ते हुए अवकाश के दिनों में घरों को छोड़ पर्वतों पर भ्रमण करने के लिये जाते हैं। वे विद्यार्थी जन अपना भ्रमण करते हुए भी वैदिक सिद्धान्त का प्रचार कर सकते हैं प्रत्युत इस से बढ़कर यह और ही हृदय वृदारक बात होगी कि वे लोग भी कई स्थानों पर स्वयं कुसंग में पड़ जाते हैं। क्या यह उनके लिये लज्जा नहीं कि प्रकाश में रहते हुए भी प्रकाश की अपेक्षा अन्धेर का प्रचार करें। आपको स्मर्ण हो कि यदि इन्हीं स्थानों पर पचास साठ वर्ष पर्यन्त यही अवस्था रही तो यह सब आर्य संतान ईसाई अथवा मुसलमान हो जावेगी। विधवाओं की संख्या मेरी सम्मति में यहां और प्रान्तों की अपेक्षा कम नहीं है किन्तु दिन प्रति दिन बढ़ती चली जाती है। भिन्न मतावलम्बी उन नवयुवतियों को भगाकर चले जा रहे हैं। परन्तु आप लोग तो इस प्रकार आलस्य की चादर ओढ़े सोये पड़े हैं कि आपको कुछ विदित ही नहीं कि संसार में हो क्या रहा है। ज़रा घरों से बाहिर निकलो, कुछ उन प्रान्तों में आकर काम करो। यहां कार्य्य क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। कूप मण्डूकता के त्यागने का अवसर आ पहुंचा है। आर्य्यसमाज का प्रचार यहां बड़ी सुगमता से होसक्ता है। कई भद्र पुरुषों की कृपा और पुरुषार्थ से यहांपर कई स्थानों में समाजें खुली हुई हैं परन्तु उपदेशकों और प्रचारकों के न आने से वहां के कार्य कर्त्ता भी शिथिल हो जाते हैं और आगे नहीं चल सक्ते। हम आजकल यहां कई दिनों से पर्यटन कर रहे हैं साथ साथ प्रचार भी करते हैं तो पता लगता है कि लोग वास्तविकधर्म के पिपासू हैं। वैदिकज्ञान के लिये उत्सुक हैं और यदि उन्हें उत्तेजनादी जावे तो कार्य करने के लिये भी प्रवृत्त हैं। अतः सब समाजों से और सामाजिक मनुष्यों से और उन्हें पुरुषों की कि जो अपनीजाति और धर्म की रक्षा करना चाहते हैं प्रार्थना है कि एक वर्ष में कुछ महीनें इधर इन प्रान्तों में भी लगायें कि जिससे यहां के शुद्ध जल वायु से उनकी शारीरिक अवस्था भी अच्छी होगी और साथ ही वैदिकमत का प्रचार भी होजायगा। आशा है कि समाजिक वृन्द मेरी इस आवेदना की ओर ध्यान देता हुआ यहाँ आकर अवश्य कार्य करेगा।

रामगोपाल शास्त्री

उपाध्याय

सुजानपुर ज़ि० कांगड़ा

——

ज़रा इधर भी ध्यान दीजिये

देशहितैषी सज्जनों! यह तो आप को ज्ञात ही होगा कि इस समय भारत वर्ष के कई एक स्थानों में घोर दुष्काल पड़ा हुवा है और हिंदू (आर्य्य) जाति की कितनी भारी क्षति हो रही है। इस कराल काल के समय में पेट की ज्वाला को बुझाने के लिये आर्य्य जाति के सहस्रों बालक अपने पवित्र पैतृक वैदिक धर्म से च्युत हो रहे हैं। ऐसे समय में क्या हमारा कर्तव्य नहीं है कि अपने बच्चों के प्राणों की रक्षा करें और उन्हें विधर्मी होनेसे बचावें। आप कोयहतो विदित ही है कि यह अनाथालय ऐसे अनाथ बच्चों को जिनकी आयु १२ वर्ष से न्यून है सदैव शरण देने को तय्यार है यहां पर न सिर्फ उन का पालन पोषण ही किया जाता है वरन योग्य अनाथों को गुरु कुल प्रणाली के अनुसार संस्कृत की शिक्षा तथा अंग्रेजी, गणित आदि स्कूलों की तालीम भी दी जाती है। और खाती तथा दर्ज़ी का काम भी सिखाया जाता है। अत एव जहाँ आप इस अनाथालय को समय समय पर रुपया और वस्त्रादि से सहायता देते रहे हैं। वहां साथ में यह भी आवश्यक है कि आप अन्वेषण करके अनाथ बालक और बालिकाओं को भेजने तथा भिजवाने का भी पूर्णप्रयत्न करें जिस से कि हमारे अनाथ बच्चों की रक्षा हो और आप को धर्म्म लाभ हो।

अनाथों को भेजने निमित्त मार्ग व्ययादि मंगवाने के लिये मुझ से पत्र व्यवहार करें।

अनाथों का सेवक—

मन्त्री श्री मद्दयानन्द अनाथालय

अजमेर

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युवकों का मार्ग

विगतांक से आगे

उस दयाधार करुणाधाम से मानसिक दृढ़ता और धी शक्ति को प्राप्त होने की प्रार्थना करो-शान्ति पावोगे। एकान्त और सत्य मय प्राण की प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती। बच्चा आधार के लिये व्याकुल होकर जब हाथ बढ़ाता है तब क्या मां उसे उंगलियों का अवलम्बन नहीं देती? रिपुगण को धीरे धीरे दमन करो, सत्पथ स्वयं प्राप्त होगा।

तृतीय पन्था पितृपूजा। मित्रगणो जबतक तुम्हारे ऊपर दृष्टि रखने वाले माता पिता जीते जी आनन्द हैं तबतक तो तुम पर्वत के अन्तराल में हो। संसार का ताप तुम्हें कुछ नहीं कह सक्ता ईश्वर साक्षात् नहीं है परन्तु उनके स्थान पर अपने माता पिता को देखना चाहिये। "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरी यसी"। महामुनि हारीत जी कहते हैं "उपाध्यायानां दशाचार्य्य आचार्य्यानां शतं पिता! सहस्त्रन्तु पितृसा माता गौरवेणातिरिच्यते।" माता पिता पर भक्ति प्रदर्शन मानो ईश्वर का पूजन है।। "पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व्व देवताः' माता पिता सन्तुष्ट रहें तो सर्व्व विषय में मंगल होता है। किसी कार्य्य में व्यापृत होने के पहले [illegible] जी का अभिमत लेना चाहिये। उनसे कुछ गोपन करना महा पाप है। मैं जब किसी विपत्ति में फंस जाता हूं तो यह चिन्ता करता हूं कि यदि पिता जी जीवित रहते तो क्या उपदेश देते? अन्तर बोल देता है। प्रथम प्रथम तो बहुत ही कष्ट होता था, अबतो हम उन्हें जाग्रत देखते हैं। समय रहते तुम उनकी सेवा में मग्न रहो। परमात्मा करेगा तो तुम्हारी अवस्था में तुम्हारे पुत्र भी तुम्हारी सेवा करेंगे।

चतुर्थ पन्था देश, जाति और समाज की सेवा। बहुतेरे तथाकथित पण्डित कहेंगे कि युवकों से समाज जाति और देश से क्या सम्बन्ध है-वे अपने काम करें-Politics में मन न दें-बुजुर्गों के लिये देश पर्य्याप्त है। यह बात ठीक नहीं है। आज के युवकगण को कल समाज का धन्धा उठाना पड़ेगा-आजका युवक कल प्रौढ़ गृहस्थ होगा-समाज तो उन्हीं को लिये हुये बनेगा तब युवकों से समाज का संबन्ध क्यों नहीं है? मेरे ख्याल में बहुत कुछ संबन्ध है। यदि प्रत्येक युवक अपनी रीतिको दुरुस्त रखे तो समाज का संस्कार स्वयं ही हो जावेगा। सत्यता परोपकार, निःस्वार्थ, विद्या आदि जो कुछ सत्य था हम बता चुके हैं उनकी समष्टि ही समाज संस्कार है। देश तथा देशवासीओं की भी कुछ चिन्ता करनी चाहिये। परन्तु इस बात में एक महा उपदेश सदा ध्यान रखो-

Begin in smoke & end infire; do not give airs. धीरे धीरे, शनैः शनैः तथा दृढ़निश्चयता से काम करो। भू भान् परमात्मा की सहायता से यदि तुम्हारा कार्य्य उत्तम हो तो वह तुम्हें स्वतः उच्च करदेगा। अपने शरीर से मन को देश की तरफ़ फेरो तो यही देखो तो कोटि कोटि तुम्हारे देशवासी पूरा अन्न नहीं पाते हैं। देखो-दरिद्रता राक्षसी क्या भीषण मुख व्यादान कर कोटि कोटि नर नारी को ग्रास कर रही है! इस दारिद्र्य का क्या कारण है? मूर्खता अज्ञान। हाय हाय। हमारे भाई सब अन्धे बने सूख रहे हैं। जहां तक हो सके इस राक्षसी को मारने की चेष्टा करनी उचित है। दरिद्रता की जननी जनक मूर्खता और अज्ञानान्धकार को दूर करने की चेष्टा करो। गरीब बच्चों को पढ़ावो। अस्पृश्य को गोद में लेओ, क्योंकि वह हमारा भाई है उन को सिखावो कि वे भी मनुष्य हैं-तुम्हारे भाई हैं-उनको सिखावो कि उनका अभाव क्या है। जब हमारे देशवासी भाई सब अपने पैर पर खड़े होने की इच्छा प्रकाश करेंगे, तब ही यह भीषण दरिद्रता दूर हो सकती है।

आगे रही अपनी जाती। सदा ध्यान रखो कि हम हिन्दू हैं—हमारे पूर्व्व पुरुष हिन्दू थे। आज हम जैसे भिकमंगे-परपदानुलेही दीखते हैं ऐसे हम पहिले नहीं थे न अभी हैं Rome, Greece, Egypt Europe, आदि सभ्यताभिमानी राष्ट्रों को हमारे धनागार ही से रत्न का एकर टुकड़ा मिला था जिस की पुण्य और पवित्र ज्योतिः से आज वे सब चमक रहे हैं। जो पाखण्ड हिन्दू को पतित जाति कहता है वह घने मोहान्धकार में मग्न है। ब्रह्मचर्य्य को शीघ्र समाप्त न करो। एक बार चले जाने से फिर नहीं मिलेगा-सिर पटकते रहोगे। यदि तुम्हारे पिता माता या भाई बन्धु तुम्हारी अवस्था पूरी होने के पहिले तुम्हारा ब्रह्मचर्य्य शेष करना चाहें-यदि तुम्हारा विवाह संस्कार करना चाहें-दृढ़ता से उनको समझावो। उचित समय आने पर विवाह करो।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता-वैद्यराज धर्म्मदेव कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटो से मृतक पारे को शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पता:

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी हरद्वार।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेम ! प्रेम !! प्रेम !!!

हिन्दी भाषा में विद्या विषय का

एक मात्र साप्ताहिक पत्र

यह सर्वाङ्ग सुन्दर साप्ताहिक पत्र भी प्रेम महा विद्यालय वृन्दावन जिला मथुरा से प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित होता है। यह पत्र अनेक देशों के नवीन आविष्कार इन्जिनीयरिङ्ग, साइन्स कृषी विद्या, बनविद्या, शिल्पविधि, औद्यौगिकविद्या, तथा विविध विषय और नवीन नवीन समाचारों से परिपूरित रहता है यह पत्र विद्यार्थी व्यापारी कृषक कारखाने वाले, शिल्पकार और सर्वसाधारण के पढ़ने के लिए ही नहीं वरन उनको उक्त विषयों में शिक्षा देकर लाभ पहुंचाने के लिये बहु मूल्य रत्न है इतने पर भी मूल्य केवल २) वार्षिक है नमूना मुफ्त मंगा कर देख लीजिये।

मैनेजर प्रेम–वृन्दावन

सूचना

सर्व सज्जनों सेमेरी प्रार्थना है—कि मेरे बड़े पुत्र भागीरथ से कोई देन लेन व्योहार न करे इसका चाल चलन ठीक नहीं यदि कोई देन लेन का व्योहार उस से करेगा तो मैं जिम्मेवार नहीं हूं। मैं ने उस को घर से बाहर करदिया है।

रामनरायण तिवाड़ी

पीपाड़ निवासी

आवश्यकता।

बड़ौदा की अन्त्यज संस्कृत पाठशाला के लिये ता० १, ८-१४ से एक ऐसे संस्कृतज्ञ तथा हिंदी जानने वाले अध्यापक की आवश्यकता है जो अन्त्यज विद्यार्थियों को सप्रेम संस्कृत भाषा का शिक्षण दे सके वेतन २५) मासिक दिया जायेगा। प्रार्थीगण अपना प्रार्थना पत्र वय, योग्यतादि प्रदर्शक प्रमाण पत्रों की नकल सहित निम्नाङ्कित पते से ता० १५-७-१४ तक भेजें।

पता–करेली बाग — अन्त्यज बोर्डिंगहाऊस बड़ोदा

श्रीराम शर्म्मा
अध्यापक ग०संस्कृत पाठशाला बड़ौदा

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=) ऐतरेय =) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)

उपनिषदों का थिसिस पहला भाग ॥)

दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)

चौथा भाग ॥=)

गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥

वेद उपदेश पहला भाग ॥)

दूसरा भाग ॥)

आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥

उपदेश मञ्जरी ।-)

प्रार्थना पुस्तक ।-)

ओंकार की उपासना ।-)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥) वेद और रामायण के उपदेश ।) वेद और महाभारत के उपदेश ।) वेद, मनु और गीता के उपदेश ।) सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द =)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका, भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। १)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर

आर्ष ग्रन्थावली

लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से सावधानीकी आवश्यकता ।

हैजा जब होता है तब डाक्टर वैद्यको बुलाने का भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तकाह नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

२३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ

कफ	अतिसार
दमा	आंवलोहू
खांसी	संग्रहणी
हैजा	के होना
शूल	पेटकादर्द

सर्दीकाबुखार
जी मिचलाना
बच्चोंकेहरेपीलेदस्त
शरीर का दर्द
कुकरखांसी

इत्यादि रोगों की स्वादिष्ट सुगंधित दवा है मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ २३ वर्ष का आजमाया हुआ

दद्रुगजकेसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—क्षेत्रपाल शर्मा मालिक, सुख संचारक कम्पनी मथुरा

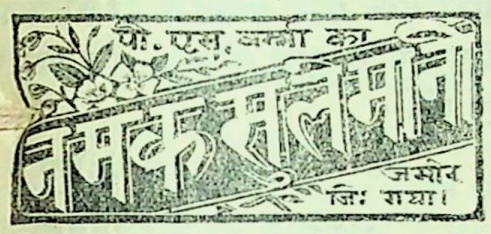

पी. एस. वर्म्मा का

नमक सुलेमानी

जमोर जि: गया।

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का बिकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी

जामोर जिला गया

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द--जि० आरा

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तौ खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≡) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल्य २) इस ग्रन्थ में कौरवों पांडव की लड़ाई तिती धर्म्म चारों वरणों के धर्म्म वर्णन हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४१० पृष्ठ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पास पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनिये फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

शास्त्री पास की आवश्यकता।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र को एक शास्त्री पास आर्य्य की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार ३०) तक दिया जायगा। प्रार्थना पत्र वही भेजें जो पाठनके अतिरिक्त अधिष्ठाता का काम भी करने को उद्यत हों।

प्रबन्धकर्त्ता

शाखा गुरुकुल कुरूक्षेत्र

पो० थानेसर

जि० करनाल

एक गायक की आवश्यकता

गुरुकुल के उपदेशक महाविद्यालय के लिये एक गायक की आवश्यकता है जो वीण, हारमोनियम, सितार आदि सब बाजों की शिक्षा देसके। वेतन २०) तथा २५) के अन्दर २ योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रार्थी शीघ्र ही अपने प्रार्थना पत्र निम्न लिखित पते पर भेजें। आर्य पुरुष के प्रार्थना पर विशेष ध्यान दिया जायगा।

स्थानापन्नाचार्य

गुरुकुल काँगड़ी

पो० औ० शामपुर ज़ि० बिजनौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूंटी बटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी बटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी बटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप का धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी बाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुवलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

औरमूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—(शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसे शुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ान का साबुन—बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम कीवर बड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता—

शर्मनऐंड कं. सतघडामथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) मा० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय दहलीमें मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म् ॥

Registered No L. 807

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | १० श्रावण सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ९१] ता० २५ जुलाई १९१४ | संख्या १५ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिस में ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक =) प्र० .
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

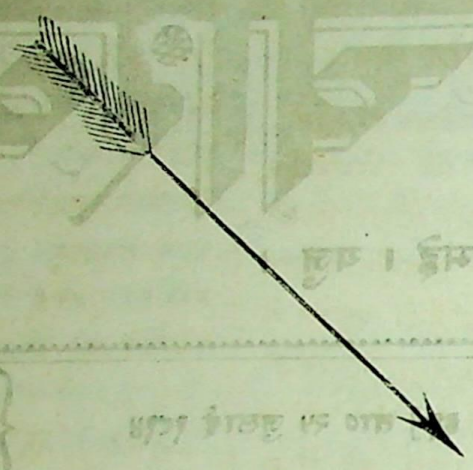

कलकत्ते के नामी डाक्टर बर्म्मन की वही प्रसिद्ध—

दादकी मलहम

मोल ।) चार आना;
डा: म: १ से ६ तक ।-)
१२ तक ।=) आने ।

जब सब दवा लगाकर थक गये हों, तो इसकी जांच करें। आशा है कि निष्फल नहीं होगी!

दादकी मलहम
दादकी मलहम
दादकी मलहम

दवा सब जगह हमारे एजेन्ट और दवा फ़रोशों के पास बिकती है।

डा: एस, के, बर्मन १, इ, तारावद दत्त श्रीट, कलकत्ता। नं०६७

महात्मा मुंशीराम जी!

विज्ञान कल्पतरु के विषय में लिखते हैं:—मैं इस पुस्तक माला को आर्यभाषा भाषी आर्य जनता के लिये बहुत उपयोगी समझता हूं। मेरी सम्मति में यदि प्रत्येक आर्य्यसमाज इस की एक एक प्रति खरीदना स्वीकार करले तो ऐसा समयोपयोगी ग्रन्थ छप कर स्वदेश को बहुत लाभ पहुंचा सकता है। यदि मेरे पास धन होता तो मैं आपका हाथ बटाने का कुछ प्रयत्न करता अब केवल आपकी कृतकार्यता के लिये केवल मङ्गल इच्छा ही प्रकट कर सकता हूं। विज्ञान कल्पतरु में प्रत्येक वस्तु के बनाने में की क्रियायें धन कमाने के अनेक ढंग, विज्ञान (साईन्स) सम्बन्धी तथा वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक बात का पूरा पूरा वर्णन चित्रों सहित किया गया है। ग्रन्थ बड़ा होने में १०० पृष्ट मासिक में छपता है और स्थाई ग्राहकों को ॥) प्रति अंक डाक व्यय सहित दिया जाता है अन्यों को प्रति अङ्क ।॥) में

मैनेजर जनरल पबलिशिंग कंपनी मेरठ

आवश्यकता।

एक शरीफ खानदान अगर वाल कन्या के लिये ऐसा बर की आवश्यकता है जिस की आयु २२ वर्ष से २८ वर्ष के भीतर हो। ग्रेजुयट हो अथवा बी. ए. में पढ़ता हो कम से कम १००) मासिक आमदनी हो या जायदाद रखता हो। कन्या भाषा लिख पढ़ सकती है हिसाबादि तथा सीना पिरोना गृह के कार्य्य में निपुण है आयु १६ वर्ष की है। पत्र व्योहार का पता।

सेठ मिट्ठनलाल अलबेलसिंह
ठेकेदारान क्रीद स्टेट

आवश्यकता।

एक बाल विधवा कन्या की आवश्यकता है जो पढ़ी लिखी घर के काम में निपुण हो आयु १५ से २० वर्ष के भीतर हो। बर उत्तम खानदान अगरवाल तामल गोत्र का है सरकारी नौकर ७०) मासिक मिलते हैं। पत्र व्योहार इस पते पर करना चाहिये।

P. द्वारा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म प्रचारक देहली

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है। मूल्य २॥) डिब्बी डा: म: माफ।

पता.—बी.एल. बूबनाएण्डको०
दिल्ली नं० ३

पीतल के बिल्ला

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन ॥।) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन जाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

पता:—भारत हितैषी—कम्पनी,
अलीगढ़ सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेम ! प्रेम !! प्रेम !!!

हिन्दी भाषा में विद्या विषय का

एक मात्र साप्ताहिक पत्र

यह सर्वाङ्ग सुन्दर साप्ताहिक पत्र भी प्रेम महा विद्यालय वृन्दावन जिला मथुरा से प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित होता है। यह पत्र अनेक देशों के नवीन आविष्कार इन्जिनीयरिङ्ग, साइन्स कृषी विद्या, वनविद्या, शिल्पविधि, औद्यौगिकविद्या, तथा विविध विषय और नवीन नवीन समाचारों से परिपूरित रहता है यह पत्र विद्यार्थी व्यापारी कृषक कारखाने वाले, शिल्पकार और सर्वसाधारण के पढ़ने के लिए ही नहीं वरन उनको उक्त विषयों में शिक्षा देकर लाभ पहुंचाने के लिये बहु मूल्य रत्न है इतने पर भी मूल्य केवल २) वार्षिक है नमूना मुफ्त मंगा कर देख लीजिय।

मैनेजर प्रेम-वृन्दावन

बिना मूल्य ! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री

अलीगढ़ सिटी. यू. पो.

आवश्यकता।

बड़ौदा की अन्त्यज संस्कृत पाठशाला के लिले ता० १,८ १४ से एक ऐसे संस्कृतज्ञ तथा हिन्दी जानने वाले अध्यापक की आवश्यकता है जो अन्त्यज विद्यार्थियों को सप्रेम संस्कृत भाषा का शिक्षक दे सके वेतन २५) मासिक दिया जायेगा। प्रार्थीगण अपना प्रार्थना पत्र व योग्यतादि प्रदर्शक प्रमाण पत्रों की नक़ल सहित निम्नलिखित पते से भेजें।

पता—करेली बाग { श्रीराम शर्म्मा
अन्त्यज बोर्डिंगहाऊस { अध्यापक ग० संस्कृत
बड़ोदा { पाठशाला बड़ौदा

७००) रूपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ़ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रूपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश संग्रह ।)
प्रार्थना पुस्तक ।)
ओंकार की उपासना ।)

२००) रूपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण।

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।)
वेद और महाभारत के उपदेश ।)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द =)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर

आर्ष ग्रन्थावली

लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे की शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पता:

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी

हरद्वार।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव

कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि बिना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुकसेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दा =)]

बीकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

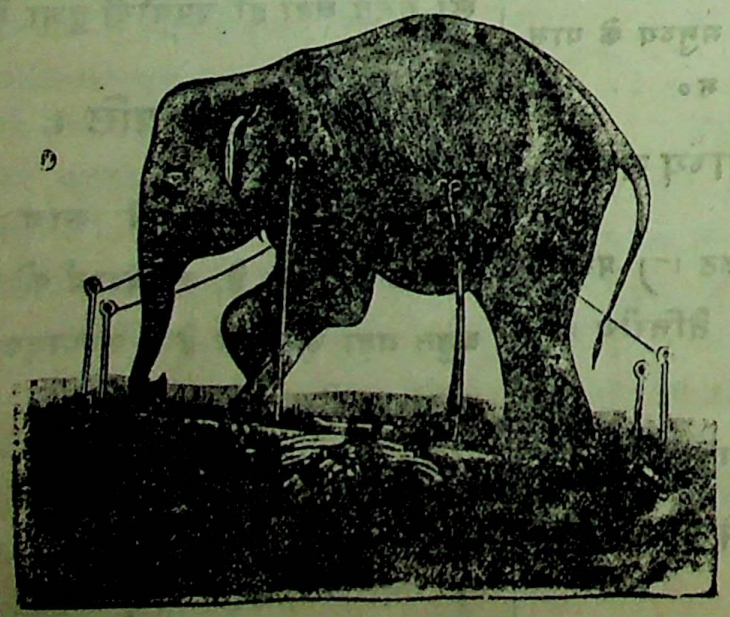

प्रचारक के ग्राहकों को ए कमास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।=) परिमल ।।=) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) घोर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताये ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकरात्र ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विजय

स्वदेश स्वधर्म स्वभाषा

का पक्षपाती

नया साप्ताहिक नया

सम्पादक—हरिश्चन्द्र

विद्यालंकार

यह साप्ताहिक पत्र विजयदशमी से निकलेगा। इसका प्रधान उद्देश्य राष्ट्रीयता के भावों का प्रचारित करना और भारतकी चौमुखी उन्नति के साधनों का समर्थन करना होगा। काम से पहिले प्रशंसा करना अच्छा नहीं तब भी इतना कहदेना चाहते हैं कि यह बिलकुल नए ढंग का पत्र होगा। शीघ्र ग्राहक बनिये क्यों कि इसका उपहार भी दिया जावेगा।

मूल्य २॥)

मैनेजर, "विजय"

देहली

शोक! शोक!! शोक!!!

श्रीमती लेडी हार्डिंज की अकाल मृत्यु।

(१)

हा! कुछ न पूंछो जो व्यथा,
दारुण- दुसह- शिर पर पड़ी।
कैसे रहैं-क्योंकर सहैं—
किहि विधि कहैं-दुख इस घड़ी।
हे कारुणिक! क्या दुःख ही,
देना तुम्हारा काम है?
हम विपद पर पावैं विपद,
करुणा इसी का नाम है?

(२)

क्या कुछ पुरातन कर्म्म से,
दुखिया बना यह देश है?
अथवा तुम्हारी अन कृपा का,
प्रभो! कुछ लवलेश है।
जो इस तरह पर बज्रपात,
कराल कालहिं जचैगा।
तुम ही विचारो भला यों,
भारत विचारा बचैगा॥

(३)

अप्रमेय-अनन्त शक्ति—
सदैव करुणाऽगार हो।
संसार के स्वामी, निरन्तर,
दया के आधार हो॥
नित दीनबन्धु कहैं तुम्हैं,
सब दीन जन प्रत्यक्ष में।
पद पद विपद देना—
यही क्या दया उनके पक्ष में

(४)

श्रीयुत महोदय लार्ड की,
दुख दशा नहिं भूली उन्हें।
उस विपद पर यह क्लेश देकर,
नाथ! दी शूली उन्हें॥
श्रीमती लेडी हार्डिंज,
उठायकर जो चाल की।
बस हम कहैंगे खुले मुंह,
अन्यायता विकराल की।

(५)

श्रीमती की शुभ आत्मा को,
शान्ति दो भगवन् भले।
हम भारतीयों के हृदय का,
शोच कुछ कम हो चले॥
श्रीयुत महोदय हार्डिंज,
कृपालु कुछ धीरज गहैं।
कुछ श्रान्त हो विश्रान्त हो
कुछ शान्तता सत्वर लहैं।

कात्यायनीदत्त 'त्रिवेदी'

कुछ आप बीती कुछ जगबीती।

(३९)

पंडित गुरुदत्त चौमुखी चलतेथे।

२८ दिसम्बर की रात को मैं भ्राता देवराज जी के यहां ही सोया था। २९ को प्रातःकाल स्नान सन्ध्या बन्दनादि से निवृत्त होकर पं० गुरुदत्त जी को उनके नियत स्थान में न पाया; पूछने पर पता लगा कि पण्डित जी दो बजे से ही स्नान करके एकान्त स्थान में किवाड़े बन्द करके अपनी योग क्रिया में निमग्न हैं। ८ बजे जब किवाड़ खुले तो मुझ से एकान्त में बात चीत हुई। मैंने पण्डित जी से पूछा तो पता लगा कि जब तक एकांत में न्योली कर्म न करलें तब तक वे अपना अभ्यास नहीं कर सक्के। मैंने निवेदन किया कि यदि पूरा अभ्यास जारी रखते हुए बढ़ाना है तब तो उन्हें व्याख्यान लेखादि का कार्य्य बन्द कर देना चाहिये और यदि यह काम जारी रखना है तो अभ्यास को साधारण अवस्थामें लौटा कर कुछ काल वहीं स्थित करना चाहिये। पण्डितजी मेरे साथ सहमत होते हुए बोले—"मुंशी राम जी, जानता मैं भी सब कुछ हूं किन्तु एक ओर तो अभ्यास का आनन्द नहीं छोड़ा जाता और दूसरी ओर जब सज्जन पुरुष आ घेरते हैं तो उन्हें कोरा जवाब देना मेरी शक्ति से बाहिर हो जाता है।" मैं इस सरल उक्ति का क्या उत्तर दे सक्ता था, किन्तु अब तक भी कभी कभी रातको एक सर्द आह दिलसे निकलती है और हृदय पुकार उठता है "हा, गुरुदत्त के मूर्ख मित्रो तथा अंधे श्रद्धालु भक्तो! यदि तुम जानते कि अपने पूज्य पण्डितजी को दोदो बजे रात तक पठन पाठन और शङ्का समाधानके लिए जगाकर तुम उन्हें मौत के मुंह में दे रहे हो तो तुम्हें कितना अनुताप होता!,, किन्तु इस में भी शायद परम पिता की ओर से हमारे लिए शिक्षा थी जिसे यदि हम समझते तो कृतार्थ हो जाते।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२९ दिसम्बर के सवेरे की दो घटनाएं मुझे याद हैं। भ्राता देवराज के कचहरी वाले कमरे में तीनों खिड़कियों वाले ऊंचे चबूतरे पर स्वामी सन्यासी मण्डल बैठा हुआ है और उस बड़े दालान की एक ओर एक चार पाई पर पण्डित गुरुदत्त जी लेटे हुए हैं। उनका एक चेला (पण्डित राम भजदत्त) चारपाई की पाटी पकड़े नीचे बैठा है। गुरु शिष्य में कुछ गोष्ठी हो रही है अकस्मात् मेरा बुलावा होता है "मुंशीरामजी इधर आइये" मेरा टहलना बन्द हो जाता है। चारपाई पर टेक कर बैठ जाता हूं-"कहिए क्या आज्ञा है?"। पण्डित जी ने प्रश्न पूछा-"सच कहिये, क्या एक आदमी विकालत करता हुआ Conscientious (पुण्यात्मा) रह सक्ता है?" मेरे उत्तर में एक पल की देर न थी-'मेरा अनुभव यह है कि नहीं रह सक्ता"। इस पर पण्डित जी ने अपने शिष्य से कहा-"देखो, जिनका तुम ने दृष्टान्त दिया था जब वे भी मानते हैं कि एक धार्मिक मनुष्य के लिए यह पेशा ठीक नहीं तो तुम मुख्तारी का ख्याल क्यों नहीं छोड़ देते। तुम स्वयम शिक्षण लेकर कहीं शिक्षक बनो, इस प्रकार तुम सैकड़ों युवकों को सदाचारी बना सकोगे।" पण्डित राम भजदत्त ने अपने गुरू की आज्ञा को शिरो धार्य समझ कर शिर झुका दिया और उसी समय से मुझे उस युवक के साथ विशेष प्रेम हो गया। प्यारे गुरुदत्त, यदि तुम्हें अकाल मृत्यु का ग्रास न बनना पड़ता तो न जाने वीर राम भजदत्त, सांसारिक प्रलोभनों से सुरक्षित, किस उच्च पद को प्राप्त होता और शायद आज तुम्हारी अनिर्वचनीय आन्तरिक आत्मा पर कटिबद्ध जिज्ञासु का हाथ ब्रह्मचर्य्य के पुनरुद्धार में बटाता। किन्तु —

होवत वही जो राम रच राखा॥

एक दूसरी घटना दूसरा रङ्ग लिये हुए थी जिसका वर्णन गुरुदत्त की सत्य प्रियता तथा निर्भयता का परिचय देगी। यह वही व्यसनथा जिस का अनुकरण करते हुए मैंने भी बीसियों शत्रु बना लिए हैं। सियालकोट ग्राम (श्री महात्मा हंसराज जी की जन्म भूमी) के श्री लाला ठाकुर दास रईस धर्म सभा के जलसे पर आए हुए थे। वे हमारे स्वामियों के दर्शनार्थ आए। भ्राता देवराज जी ने उन पर काम करना आरम्भ किया—"देखिए लालाजी, देवी को जगत् माता कहते और फिर उसके स्थान पर बकरे भैंसे काटते हैं। क्या यही सनातन धर्म है? इत्यादि" लाला ठाकुरदास जी बूढ़े अनुभवी पुरुष थे, बात को टाल गए। कुछ देर के पश्चात् भी देवराज जी से पूछा —"भला जी, हमारे यहां के चिरञ्जीव हंस राज जी तो आप में बड़े माननीय हैं" देवराज जी को और क्या चाहिए था, फिर अलाप शुरू कर दिया—"हंसराज जी तो महात्मा हैं। हम सब में शिरोमणी हैं। भला बतलाइये कि सनातन धर्म सभा में उनके त्याग का कोई मुकाबला करने वाला है। लाला जी! सनातन धर्म हमारा है; वह नहीं जिसे आप समझते हैं।" लाला ठाकुर दास जी बड़ी सरलता से बोले —"हमारे चिरंजीव हंसराजजी मांस खाते हैं, फिर जो आचरण आपका एक शिरोमणि महात्मा करता हो वह पाप कैसे हो सक्ता है।" बस फिर क्या था, दो तीन पलों के लिए तो सन्नाटा छा गया। फिर भी स्वामी अच्युतानन्द जी ने पं० गुरुदत्त जी को सम्बोधन करके पूछा कि ऐसे घोर आक्षेप का खंडन क्यों नहीं करते। पण्डित जी ने उत्तर दिया—"पांच दिन हुए, तब तो खाते थे, अब छोड़ दिया हो तो मुझे ज्ञात नहीं" यह उत्तर अपने अन्दर कितना साहस रखता था, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं; यद्यपि ऐसे उत्तरों ने पण्डित गुरुदत्त के शत्रुओं की संख्या बहुत बढ़ा दी थी और अन्त को वह दिन आया कि जिस दयानन्द कालिज की कृतकार्यता के लिए गुरुदत्त ने किसी से कम परिश्रम नहीं किया था उसके निर्माण कर्त्ताओं में से उनका नाम ही उड़ा दिया गया।

लाला ठाकुर दास बजबाड़ी के कथन ने मुझे बहुत विस्मित किया। मेरे स्वप्न में भी, उस समय तक नहीं आसकता था कि एक मनुष्य आर्य समाज का सभा सद होता हुआ भी मांसाहारी हो सक्ता है। श्री महात्मा हंसराज जी के आत्म त्याग के कारण उनके लिए तो वही श्रद्धा मेरे मनमें स्थिर रही किन्तु मांस भक्षण के विषय की आज्ञा ने लाहौरी आर्य लीडरों पर से मेरी श्रद्धा कम करदी।

उसी शाम को धर्म सभा के जलसे में पण्डित गुरुदत्त जी फिर गए। दीवान रामजस C. S. I. कपूर्थले वाले भी सुशोभित थे। वे उठकर आए और पं० गुरुदत्त जी को हम लोगों सहित अन्दर ले गए। दीवान जी ने एक लम्बी वक्तृता में पण्डित जी से पूछा कि जब दोनों सभा का माननीय धर्म पुस्तक एक है तो क्या मेल असम्भव है। पण्डित जी ने उत्तर दिया कि असम्भव तो नहीं है किन्तु यदि आप आज रात को मेरा व्याख्यान सुनें और कल मुझे अपना आशय प्रकट करने के लिए दो तीन घण्टे दें तो बहुत कुछ हो सकेगा। श्री दीवान जी ने प्रतिज्ञा की कि ऐसा ही करेंगे किन्तु जब आर्य मन्दिर के पास वग्घी पहुंची तो उसके खड़े होते हुए मिश्र अछरू मल जी ने दीवान जी के गोड़े पकड़ लिए और कहा—"यदि अब भी तुम उस आर्य का व्याख्यान सुनने जाओगे तो तुम्हें ब्रह्महत्या का पाप लगेगा" दीवान भी मजबूर होकर चले गए और पण्डित गुरुदत्तादि ने अपने अन्तिम व्याख्यान दिए।

आर्य समाज ने सनातन सभा को शास्त्रार्थ का निमन्त्रण दिया हुआ था जिसका कोई उत्तर न आया। किन्तु जब ३० दिसम्बर को श्री पण्डित गुरुदत्त जी चले गए तो धर्म सभा का आदमी उत्तर लेकर आया। उभय पक्ष नियम तै करने को इकट्ठे हुए जिस में यह निश्चय हुआ कि श्री दीवान राम जस जी और श्री राय शालिगराम अपने लिए धर्मा धर्म का निर्णय करना चाहते हैं। दोनों सभाएं अपना मन्तव्य लिखकर उन के पास भेजदें। इस प्रकार नगर के शिरोमणियों ने शास्त्रार्थ की बला को टाल दिया। (मुंशीराम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

अमरीका में
काला गोरा

(ले० बाबू जगन्नाथ खन्ना B. S. C. E. E. Pittsburgh)

जब प्रथम २ अमेरिका का पता यूरोप वालों को लगा और ये लोग अपने देश में सताये जाने पर और जीविका प्राप्त करने का ठीक २ अवसर न मिलने पर अपना देश छोड़ अमेरिका जा वसने लगे तो इन्हें इस बात की आवश्यकता हुई कि खेती इत्यादि करने में इनकी सहायता करने को इन्हें कोई नीची जाती के दास मिलें। इस लिये जहाज़ वालों ने नोकर देने का ठेका ले लिया और अमरीका से निग्रो अथवा हबशी जाती की स्त्री और पुरुषों को बल पूर्वक पकड़ जहाज पर बिठा अमेरिका में ले जाते और इन्हें वहाँ के युरोप से आकर वसे हुये किसानों के हाथ बेच देतेथे।

इस प्रकार ये निर्दोष हबशी स्त्री पुरुष अपने जन्म स्थान से पकड़कर एक अत्यन्त ठंडे देश में लाकर डाले गये। थोड़े दिनों में इनकी संख्या अमेरिका के संयुक्त राज में बहुत बढ़ गयी बाजारों में इनका पूरा २ सौदा होता था। ये किसान के उसी प्रकार धन थे जिस प्रकार बैल और घोड़े हुआ करते हैं, प्रत्येक हबशी गुलाम की कीमत कभी दो हज़ार और तीन हजार रुपये तक पहुंच जाती थी जिस गौरांग किसान के पास एक सौ गुलाम होते वह धनी समझा जाता था।

इन गुलामों से बैल और घोड़े की तरह काम भी खूब लिया जाता था-इनका गौराङ्ग मालिक इनके सिर पर चाबुक लिये खड़ा रहता और इन से खूब दिन रात काम लिया करता था। इस प्रकार मनुष्य के मनुष्य पर अत्याचार इस नये देश में खूब बढ़ने लगे। इस देश की नींव तो स्वतंत्रता के आधार पर डाली गई थी किन्तु अत्याचार से भागे हुवे स्वतन्त्रता के इच्छुक स्वयम दूसरों पर अत्याचार कर स्वतन्त्रता के जड़ में कुल्हाड़ी मारने की कोशिश करने लगे।

देश के दूरदर्शी स्वतन्त्रता प्रेमियों ने जब देखा कि देश में अत्याचार का राज्य बढ़ता जा रहा है और मनुष्य मनुष्य को इस प्रकार सता रहा है, तो उन्होंने विचार किया कि किसी राज्य की पक्की स्थापना और देश का कल्याण इस प्रकार कभी नहीं हुआ करता। यदि आज गोरे काले पर जुल्म करते हैं तो कल परस्पर भी जुल्म करने लगेंगे क्योंकि जुल्म ज़ालिम की आत्मा को कड़ा बना देता है और फिर वह अपने और पराये की सुधि नहीं रखता। इस लिये प्रसिद्ध देश भक्त प्रधान लिंकन ने १८७६ में स्वतन्त्रता की सूचक घोषणा निकाली- इस पर गुलामों के मालिकों और स्वतन्त्रता के प्रेमियों के बीच जो महायुद्ध हुआ उसे इतिहास वेत्ता अच्छी तरह जानते हैं। स्वतन्त्रता को स्थापित करने और अत्याचार को हटाने के लिये किस प्रकार भाई भाई से लड़कर खून की नदी बही इसका वृत्तान्त पढ़ रोमान्च हो जाते हैं—अन्त में स्वतन्त्रता की जय हुई और उस समय से देश के तमाम हबशी गुलाम स्वतन्त्र कर दिये गये। इस स्वतन्त्रता प्राप्त किये हुये गुलामों को जमीन दी गई कि जिससे वे स्वयम अपनी ओर से खेती कर अपने और देश के धन की वृद्धि करें। ये स्वाभाविक किसान थे, इस कारण थोड़े काल में इन्हों ने बड़ी उन्नति की; माला माल हो गये। आज इनकी आबादी संयुक्त राज्य में प्रायः दो करोड़ है और अब ये बड़े धनी, विद्वान्, व्यापारी तथा बड़े २ किसान हैं इस समय इनमें अपने आत्म गौरव का भी अच्छा संचार है।

यहसब होने पर भी ये गुलाम जाति की सन्तान हैं। अभी इन्हें स्वतन्त्र हुए बहुत कम समय हुआ है गोरे मालिकों और काले गुलामों की सन्तान में इस कारण अभी सम भाव उत्पन्नता असम्भव सा मालूम होता है- देश के उत्तर में जहाँ एक भी गुलाम नहीं था इनकी स्थिति अच्छी है किन्तु दक्षिण में इनके साथ सामाजिक व्योहार ठीक नहीं है। किन्तु तब भी इन्हें राजनैतिक हक पूरे मिले हुए हैं और यह अपने आप में बड़ी अच्छी दशा में पाये जावेंगे।

सर्द देश में बहुत समय से रहने के कारण और गोरे लोगों की सहबास से ये काले हबशी भी किसी कदर गोरे हो गये हैं। यहां तक कि अनेक हबशी ऐसे मिलेंगे जिनका रंग अधिकांश भारतवासियों का सा होगया है और कहीं २ भारत वासियों से भी ये गोरे मिलते हैं। इसी कारण से अमेरिका के निवासी हम हिन्दुस्तानियों को भी हबशी समझ हमारे साथ सामाजिक व्यवहार अनुचित कर बैठते हैं। किन्तु यह बात मालुम हो जाने पर कि हम हिन्दू भारतवासी वे हमारा आदर करने लगते हैं।

अमेरिका में अपनी शिक्षा समाप्त कर पारसाल जून मास में मैं अपने देश को लौट रहा था। इस बीच में अमेरिका के प्रधान नगरों को देखना ज़रूरी था एक दिन ठीक सवेरे मैं देश की राजधानी वाशिङ्गटन नगर के विशाल स्टेशन पर रेल द्वारा आ उतरा। कई दिनों की यात्रा से थक गया था, इञ्जिन के धुवें से चेहरा काला हो रहा था, डाढ़ी के बाल भी बढ़ गये थे। इस बड़े नगर का रेलवेस्टेशन भी बड़ा है, खूब आलीशान और मनोहर बना हुआ है। इसी स्टेशन में एक बढ़िया हज्जाम की दूकान भी है और उसके बग़ल में हांथ मुंह धोने तथा शौच आदि क्रिया से निवृत होने के स्थान भी हैं और पास ही जूते पर स्याही लगाने वाले कई बालक भी कुर्सियाँ लगाये वा और सब सामान लिये बैठे थे। मैं शौचादि कर्मों से निवृत हो, जूते साफ़ करा हजामत की दूकान में घुसा। दूकान अभी थोड़ी देर हुई खुली थी, कुछ सफाई भी हो रही थी। इस लिये एक हट्टे कट्टे गोरे ने मुझ से कहा "क्या चाहते हो ?" मैंने उत्तर दिया "मैं अपनी डाढ़ी के बाल साफ़ कराना चाहता हूं"। इस पर उसने लापरवाही से कहा 'अभी बहुत सवेरा है हम दूकान साफ़ कर रहे हैं"। मैंने कहा "अच्छा मैं ठहरा रहूंगा जब तक कि तुम तैयार न हो"। यह कह कर मैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक पैंचदार कुर्सी पर बैठ गया और अपने हैंड बेग को एक ओर रख दिया इतने में एक दूसरा आया और मुझ से कहने लगा "सुनिये साहिब। आप क्यों यहाँ बैठे हो, स्टेशन के बाहर सामने हज्जाम की दुकान है, आप जावें और साफ़ करालें"। मैंने कहा "नहीं, मैं बाहर तो नहीं जाऊंगा, मुझे यहीं बाल साफ़ कराने हैं।" मैं समझ गया कि मुझे हबशी समझ इतना टाल कर रहे हैं। वाशिङ्गटन नगर देश के दक्षिण और उत्तर भागों की सरहद पर बसा हुआ है, नगर में बहने वाली पोटोमक नामक नदी के उत्तर के भाग को उत्तर और दक्षिण को दक्षिण कहते हैं। उत्तर में काले और गोरे में ऐसा कोई प्रत्यक्ष रूप से भेद नहीं मालुम होता, किन्तु नदी को पार करते ही भेद साफ़ २ नज़र आने लगता है ट्राम्वे गाड़ी में दो गाड़ी जुदी २ मिलेंगी, एक पर लिखा रहता है "गोरों के लिये" दूसरी पर 'कालोंकेलिये"। इस की दशा और शक्ल भी काली और गोरी होती है। एक तो गन्दी गाड़ी बिना गद्दों की तिपाई दार होती है और दूसरी साफ, सुथरी, मखमली गद्दों से सजी हुई होती है, इसी प्रकार स्थान २ पर भेद मालुम पड़ता है। नदी के उत्तर में खास वाशिङ्गटन नगर में यह बात कदाचित नहीं है, तौ भी दक्षिण का कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है। बस, इसी से ये हज्जाम मुझे हबशी समझ मेरे साथ अनुचित बर्ताव करने पर तैयार थे। किन्तु मैं इसकी दवा जानता था और उस दवा की जरूरत पड़ने पर लगाने के लिये मैं तैयार था इसलिये जब तीसरे हज्जामने आगे बढ़ कर कहा, "सुनिये, आप यहाँ से चले जांय, हम लोग हबशी लोगों के बाल साफ नहीं करते" मैंने उसे ऐसा तमाचा मारा कि उसका चेहरा उल्टा हो गया और वह दूर जा खड़ा हुआ इसके साथ ही मैं गुस्से में हो चिल्लाने लगा कि एक विदेशी के साथ स्वतन्त्र देश की राजधानी में ऐसा अत्याचार और अनुचित व्यवहार इत्यादि २। बहुत से लोग इकट्ठे हो गये, पुलिस भी आगई। हज्जामों के सर्दार ने आ मेरे कन्धे पर हाथ रख बड़े प्रेम और नम्रता पूर्वक मुझे कुर्सी पर बिठा शान्त किया और पुलिसको समझा बुझा कर हटाया। फिर स्वयम साबुन और ब्रुश ले मेरी दाढ़ी और गालों पर धीरेर मलने लगा। मैं भी शान्त हो चुप हो गया, थोड़ी देर बाद पूछता है "क्यों महाशय, आप तो इटली के रहने वाले बाशिंदे मालुम पड़ते हैं" मैंने कहा, "नहीं मैं भारत बासी हिन्दू हूं" उसने कहा "ठीक है आप हबशी कदापि नहीं हो सकते क्योंकि हबशी को जब हम कुछ कहते हैं तब वह हमें कुछ न कह बर्दास्त कर लेता है। आप क्षमा करें, हमने गलती की" इस प्रकार खूब अच्छी तरह दाढ़ी साफ करा वहाँ से चलता बना।

बस, हबशी न होने का एक ही सबूत है अर्थात जब आप के साथ अनुचित बर्ताव हो तब आप उसका यथोचित उत्तर देदें क्योंकि बलहीन गुलाम जाति के हबशी ऐसा न कर इसे सहसे आये हैं और यदि आप भी सहलें तो आप भी हबशी समझे जावेंगे। इसके अतिरिक्त शक्ति बड़ी चीज है। उसके सामने अनुचित व्यवहार नहीं होने पाता।

जगन्नाथ खन्ना

प्राप्त

(प्राप्त मतों का सम्पादक उत्तरदाता नहीं)

"वेदप्रकाश के नाम खुली चिट्ठी"

आज मैंने ४ जून सन् १९१४ का वेद प्रकाश पढ़ा जिसके अन्त में "अमेरिका में केशवदेव शास्त्री" इस हेडिङ्ग का एक लेख है। जिसमें लेखक महाशय ने अपना नाम नहीं दिया। लेखक ने अपने लेख में इस बात को बतलाया है कि श्रद्धास्पद भिषगाचार्य्य पंडित केशवदेव शास्त्री में इतनी योग्यता नहीं है कि वह अमेरिका में वैदिकधर्म का प्रचार करसकें। और बहुत से व्यक्तिगत कटाक्षों को करते हुए अपनी संकीर्णता का परिचय दिया है। अस्तु, मैं श्रीमान पं० तुलसीराम जी से पूछता हूं कि क्या वेदप्रकाश का यही उद्देश्य है कि वह इस प्रकार के लेखों को छपाकर अपनी संकीर्णताका परिचय दें। स्मरण रहें यदि वेद प्रकाश की यही कुटिल नीति रही तो वह दिन बहुत ही समीप है। जब कि इस पत्र की प्रतिष्ठा लोगों की दृष्टि से गिरजायगी और गिररही है। प्रथम मैं लेखक महाशय से यह पूछता हूं कि क्या कभी आपने दरियाफ्त भी किया था कि १० वर्ष पूर्व शास्त्री परीक्षा में कौन २ ग्रंथ थे, अब क्या हैं। पँजाब यूनीवर्सिटी से यदि आपने दरियाफ्त किया होता तो आप कभी न लिखते कि पहिले शास्त्री परीक्षा सुगम थी, अब कठिन होगई है। दूसरा यह है कि वह अंग्रज़ी में ईन्ट्रेन्स तक पढ़े हैं और अंग्रेज़ी उनकी सामान्य है। इसका उत्तर केवल इतना ही है कि आप पं० केशवदेव शास्त्री के व्याख्यानों को पढ़ें जो उन्हों ने अमेरिका में दिये हैं। तीसरा कि क्या कोई U. P. प्रतिनिधि की तरफ से कोई केशवी सहायक फण्ड खुला हुवा है तो आज तक कितना रुपया पहुंचाया गया अमेरिका में उन के पास। चतुर्थ कि वह धनाभाव से अमेरिका में नहीं जासके थे परन्तु उनकी इच्छा बहुत दिनों से थी। परन्तु मैं पूछता हूं कि क्या इधर किसी सभा ने उनको मदद की थी कि जिसके ज़रिये वह आज अमेरिका में हैं। यदि नहीं तो आपने फिर क्यों लिखा। स्मरण रहे इस बात को मैं दृढ़ता से कह सकता हूं कि वैदिक धर्म्म का प्रचार अमेरिका ऐसे सभ्य देश में वही कर सकता है जिस के जीवन में वही भाव पाया जावे जिसका वह प्रचार करता है। नकि "परोप देशे पांडित्यँ" के ठेकेदार

कृष्णचन्द्र शर्म्मा आर्य्य
काशी

अमरीका के लिये पुस्तक

पंडित केशवदेव शास्त्री के अमेरिका प्रवास के कारण इस समय सामाजिक जगत में यह हलचल हो रही है कि वहां शास्त्री जी को प्रचार में सुविधा हो इसलिये यहां से किन सिद्धान्तों की पुस्तकें भेजी जावें—

समाज में सत्यार्थ प्रकाश के अतिरिक्त एक भी ऐसी पुस्तक नहीं है जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पढ़ी लिखी प्रजा के सामने रखी जा सके अतः कुछ लोगों ने सत्यार्थप्रकाश की अनेक कापियां अंग्रेजी भाषा में वहां भेजने का प्रस्ताव किया है-किन्तु अनुभवी लोगों ने सलाह दी कि सत्यार्थप्रकाश ज्यों का त्यों वहां के लिये ज़रूरी नहीं है क्योंकि शैव, शाक्त, दादूपन्थ, कबीर पन्थ, नानक पन्थ, भागवत आदि के खण्डन से वहां क्या करना है-हां कोई दूसरी पुस्तक जो वहां के लिये ज़रूरी और अनुकूल हो अवश्य भेजी जावे। अबतक यह असमञ्जस जारी होरहा है। वहां क्या भेजा जावे, निर्णय नहीं हुआ। इस विषय में मुझे एक बात याद आई है जो विचारार्थ उपस्थित करता हूं।

बात कोई नई नहीं हैं। वही पुरानी जिसे सबने विचारा है क्योंकि हजार विचार करने पर भी बात वही निकलती है कि पूरा सत्यार्थप्रकाश नहीं पर उसका सार अर्थात जिन जिन हिस्सों में सिद्धान्तों पर बहस की गई है वे हिस्से अनुवाद करके ज़रूर भेजे जाँय। और भाष्य भूमिका तथा गुरुदत्त के लेख और फीटनहैड आफ़ रिलीजिन के उपयोगी हिस्से शामिल करके एक पुस्तक करदी जाय पुस्तक का क्रम स्वामीजी के स्वमन्तव्या मन्तव्य से मिलता हुआ रक्खा जाय जिसमें 'मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य' संस्कार, वर्णाश्रम, ईश्वर जीव प्रकृति, पुनर्जन्म, मोक्षसे पुनरावृति, और वेद ईश्वरीय ज्ञान है आदि बातें बड़ी सावधानी के साथ को. रीति से आजांय। इसके अतिरिक्त वेदों में खूबी की बातें कौन २ सी हैं वह दर्ज की जांय इस प्रकरण में निम्न बातें अवश्य रहैं:—

(१) वेद मनुष्यमात्र को विद्या पढ़ाने का उपदेश करते हैं।

(२) वेद मनुष्यमात्र को आर्थिक दशा में समभाव रखने का उपदेश करते हैं।

(३) गुण कर्म से मनुष्य समाज के चार विभाग करके उत्तम मध्यम आदि श्रेणियाँ बनाते और इसी के अनुसार एक दूसरे का मानकरना।

(४) वेद शहरों, बड़े २ यन्त्रों के विरोधी हैं क्योंकि इन से स्वभाविक जीवन में बाधा आती है।

(५) वेद नेशनलिटी अर्थात् जातीयता का विरोधी है:—

(६) वेद सब प्राणियों की रक्षा की हिदायत करते हैं।

(७) वेद पशुओं को प्रजापति और वनस्पति को पशुपति कहते हैं और यज्ञ इन दोनों का जीवन है अतः ये तीनों वैदिक सम्पत्ति हैं।

(८) वेदों में मनुष्य के गर्भस्थ होने से लेकर वेद पर्य्यन्त जो जो मनुष्य के लिये आवश्यक ज्ञान है वह सब है, हाँ वे रेल और तार पेड़ों आदि के विरोधी हैं, क्योंकि ऐसे यन्त्र मनुष्यों के संहार और अश्वादि प्राणियों के कर्मक्षेत्र को रोकने वाले होते हैं, इत्यादि बातों जो सृष्टि नियम के अनुकूल हों बनाना चाहिये।

किन्तु सबसे पहिले "विकासवाद" के आवरण को हटाना चाहिये। जबतक वह न हटाया जाय और यह अच्छी तरह से न बताया जाय के मनुष्य का बाप बन्दर नहीं था तब तक पार लौकिक विषय कोई नहीं सुनेगा, रहे लौकिक सो ने आपसे इस विषय में अधिक कुशल हैं अतः वहां पुस्तक भेजना व्यर्थ होगा।

हमको विवश होकर कहना पड़ता है कि विदेश भेजने योग्य पुस्तक बनाने में शीघ्रता न करो, सोच समझ कर पुस्तक तय्यार करो।

जियालाल बर्म्मा

अहमदाबाद

फीजी में अद्भुत विवाह

मुकाम बीलोगा जिला लबोक में

जग पती ब्राह्मण के लड़का और मथुरासिंह की लड़कीसे विवाह हुआ। विवाह होजाने के बाद मथुरासिंह अपनी लड़की दूसरे पास कर दिया। जगपती को मालूम हुआ इन्होंने जा कर कोर्ट में दाखिल हो अपना हाल कहा। मेजिस्ट्रेट ने कहा कि जाओ आपस में फैसला करलो। उसने आकर भले मनुष्यों को बटोर कर इनसाफ कराया। पंचोंने कहा कि लड़की को पती के घर जाने दो मथुरासिंह ने कहा कि जो मुझको ४००) रुपये देगा उसी के पास लड़की करदूंगा।महाशय यहाँ पर ऐसे ही विवाह होता है।

पम सेवक सिंह

उपेसा जी० लौतोका फ़ीजी

बहराइच में शुद्धी।

१२ जौलाई सन् १९१४ ई० को एक बङ्गाली कायस्थ का लड़का। जिसको ईसाई लोग कलकत्ता से बहका कर भगा लाये थे और १७ मई सन् १९१४ ई० को दरगाह सैयद सालार के मेला पर आर्यों को चिढ़ाने की ग़रज से बपतिसमा दिया था, "क्योंकि १७ मई को दो ईसाइयों की शुद्धियां हुई थीं,, बड़ी धूम से शुद्धी हुई सदहा आदमियों ने बड़ीखुशीके साथ उसके हाथ से जलेबी खाई उसका ईसाई नाम यूहन्ना था शुद्धि के बाद उसका पुराना नाम भगवती नाथ घोष रक्खा गया बहराइच के तमाम हिन्दू खुश हैं, इसके अलावा समाज ने कन्या पाठशाला व रीडिंग रूम खोला है जिस से मुकामी पबलिक खूब लाभ उठाती है।।

कुमार सभा के मन्त्री महाशय राम भरोस जी का उत्साह क़ाबिल तारीफ़ है।

श्यामबिहारीलाल उपमन्त्री

आर्य्यसमाज बहराइच

अनाथालय

आर्य्यसमाज अनाथालय फिरोज़पुर ३५ वर्षों से आर्य्य जाति के उन बालक बालिकाओं की रक्षा करता आरहा है कि जिनके माता पिता भाग्यवश अकालों व महामारी रोगों के आक्रमणों को न सह कर अपने तड़फते बच्चों को छोड संसार से हटगये हैं, इस अनाथालय रूपी माता के बाहुबल से सैंकड़ों नहीं सहस्रों बालक पर धर्म्मावलम्बियों के हाथों में पड़ने से बचगये हैं, भारत के कोने २ से बालक यहां आते हैं

देश तथा अनाथ हितैषी जन ही अपने कर्त्तव्यानुसार इन अनाथ बालकों के पालन पोषणार्थ सर्व प्रकार की सहायता देते हैं। प्रबंध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्तृ सभा जहाँ इनका खान पान का प्रबन्ध करती है वहाँ पठन पाठन भी भली प्रकार हो रहा है, दो स्कूल बालिकाओं व बालकों के लिए उपस्थित हैं जहाँ शिक्षा प्रबन्ध के अतिरिक्त उन्हें सांसारिक घटनाओं से सूचित रखने के लिए वाचनालयभी खोल रक्खाहै, हम उन पूज्य सम्पादक महोदयों के अति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपार दया से विद्या दान के महत्व को अनुभव कर हमारे अनाथ वाचनालय के लिए अपने बहुमूल्य समाचार पत्र दिए हैं।

भारतमित्र, सद्धर्मप्रचारक आर्य्यमित्र, मर्यादा पांचाल पंडितादि कई पत्र दान में आते हैं, जहां हम इनके अनुग्रहीत हो आगामी सहायता के लिए भी प्रार्थी हैं वहां अन्य सम्पादकाचार्यों से भी प्रार्थना करते हैं कि वे भी इस अनाथ वाचनालय की ओर ध्यान देवें ॥

बलराम शर्म्मा मुख्याधिष्ठातार्थ,
अनाथालय फ़िरोजपुर

सावधान

सर्व साधारण विशेष कर बिहार बंगाल के सामाजिक पुरुषों को विदित हो कि एक नवीन वेदान्ती साधु जिसका नाम सच्चिदानन्द दक्षिण प्रान्त का अपने को सामाजिक प्रचारक कहने वाला (परन्तु न संस्कृत व भाषा शुद्ध बोल लिखसकता न सामाजिक सिद्धान्तों को जानता मानता है) कृष्णवर्ण चन्दिपाल देखने में शान्तशील परन्तु क्रोधी द्वेषी, झूठा हठी, अनाचारी और पेटार्थी है। मुंगेर के समाजमें अनेक मास रहकर तथा तीनमास तक स्थानिक आर्य्य अनाथालय के अनाथों का भाग राटी भात खाकर उलटा उक्त अनाथालय की झूठी २ निन्दा दूसरे २ पुरुषों का नाम देकर समाचार पत्रों में छपायीथा और यहा के सामाजिक पुरुषों में अग्न वन लगादिया था। कलकत्ता के सहकारी मन्त्री के पत्र ३।६।१४ अन्तरंग अनाथालय के ३।६।१४में उपरोक्त दोष सिद्ध होने पर समाज से ता० ४।७।१४ को निकाल दिया गया। अतः आप लोग इस भद्र वेषी सन्यासी से सावधान रहें। यह यत्र तत्र कुम्भ प्रचारार्थ मार्ग व्यय तथा पुस्तकार्थ द्रव्यादि मांगे तो किसी प्रकार की सहायता न करेंगो क्योंकि कुम्भ प्रचारार्थ श्रीमान् महात्मा मुन्शीराम जी के आधीनस्थ सार्व देशिक सभा की ओर से सुरीत्या प्रबन्ध हो रहा है॥

आर्य्य अनाथालय
मुंगेर
९—७—१४

समाज हितैषी
कार्तिक प्रसाद
एल० एम० एस०

प्रत्यु

श्रीमान् मान्यवर सम्पादक जी नमस्ते

ला० खेमचन्द्र जी प्रधान आर्य्यसमाज पानीपत के उत्तर में जिसने मेरी व मेरी धर्म पत्नी आत्मादेवी के विषय में १२ जौलाई यानी आज के सतधर्मप्रचारक में शाया किया निम्नलिखित लेख लिख कर शाया करें।

" पाप का घड़ा भरकर डूबता है जैसा प्रधान इत्यादि ने किया फल मिला " मुझे खुशी प्राप्त हुई कि मेरे भाई ला० खेमचन्द्र जी ने मुझे पानीपत समाजके नाम धारी आर्य्य ओहदेदारों का कच्चा चिठा जतलाने का मोका दिया। मुझे ला० खेमचन्द्र ने गुरुकुल प्रणाली का द्वेषी ठहराया है मगर उस की पुष्टी में कोई दृष्टान्त नहीं दिया केवल सर्व साधारण को मेरे बरखिलाफ उकसाने के लिये यह शब्द लिखाए हैं।

(२) मुझे आर्य्यपुत्री पाठशालां का बाधक बतलाया इस के विषय में मन्त्री आर्य्यसमाज पानीपत का लेख प्रकाश में मेरी धर्म पत्नी की कारगुजारी के विषय में शाया हो चुका है और जो प्रेम मेरी धर्म पत्नी का पुत्री पठशाला से था उसका केवल एक मात्र यही प्रमाण है कि पानीपत कन्याओं के पत्र जो मेरी धर्मपत्नी के नाम आरहे हैं उनमें पानीपतके समाजअधिकारियों को कोसा जारहा है क्यों कि नहीं इनका मेरी और मेरी धर्म पत्नी के प्रति अनुचित व्योहार होता और न हमें अपनी प्यारी पुत्रीयों से पृथक होना पड़ता।

(३) भला हम तो पानीपत से चलेआये क्या ला० खेमचन्द्र बतला सकते हैं कि पं० भानुदत्त पं० द्वारकादत्त, पं० शिवशर्मा, पं० रामचन्द्र इत्यादि क्यों यकलखत और एक दिन ही त्यागपत्र देकर चले आये।

(४) आर्य्यसमाज के प्रधान के लिये झूठ बोलना शायद कोई पाप नहीं समझा जाता वरना ला० साहिब यह न लिखते कि मेरी धर्म पत्नी बिला त्याग पत्र दिये चली आई। त्याग पत्र तो उसी दिन दियागया था जिस दिन आर्य्य नहीं २ बलके महा पोप सभा के अधिकारियों ने अपनी प्रतिज्ञा भंग की मुझे और मेरी धर्म पत्नी आत्मा देवी जी को कैथल आर्य्य पाठशाला से बुलाकर ३०) मासिक पर और ईवेट टियुशनों के इक़रार पर और ५ मास के बाद १५) कर दिये मैं गरीब बाल बच्चे वाला आदमी १५) में किस तरह निरवाह करता मैं उसी दिन से दूसरी जगह तलाश में था चलने से १५ दिन पहले त्याग पत्र दे चुका था और ज़बानी सब से कह चुका था कि मैं जाने वाला हूं। फिर जिस दिन पानी पत से चला। चाज देनेके लिए हरेक अधिकारी के पास गया परन्तु किसी ने चार्ज नहीं लिया और न अध्यापकों की वेतन दी सो मजबूरन कुफ्ल लगाकर चला आया हूँ।

(५) आर्य्य कन्या पाठशाला के प्रबन्ध कर्ता हिन्दू ख्यालात के हैं जिनसे मेरा इखतलाफ रहताथा। ताहम अपने निरवाह और केवल पाठशाला को कायम रखने के लिए मेरी धर्मपत्नी ने एक दो ड्यूटी का प्रबन्ध कर लिया था परन्तु मेनेजर इत्यादि ने बहुत दिक किया। समय पाठशाला का अति गर्मी में दो वक्त रख दिया, अधिक कार्य्य से डियुटी छोड़नी पड़ी।

(६) इन्हीं महात्मा पुरुषों के कारण आर्य्य उप सभा के २४६) की रक़म ला पता है जिस की बाबत ला० नरसिंह दास व ला० साकुम्भरी दास इनको बार २ लिख चुके हैं बदनामी के ही कारण उप सभा का दफतर यहां से उठा दिया

(७) सफीदों के चन्द प्रतिष्ठित आर्य्य पुरुष एक विधवा को पुनर्विवाह कराने के लिये पानीपत लाये मगर पानीपत के अधिकारियों ने विधवा को यहाँ से उड़ा दिया और रजिस्टर में झूंठी कारगुजारी दरज की—

(८) प्रधान महाशय और मंत्री भूतने अपने पिता व चाची का मृतक संस्कार पौराणिक रीती से कराया इसी कारण इन्की और समाज की पानीपत में बदनामी हो रही है। रहा सहा उन्होंने पाठशाला को उखेड़ कर बेड़ा ग़रक किया ऐसी लायक अध्यापिका का मिलना मुश्किल है मगर उन्हों ने उसे भी तंग किया खैर ईश्वर मालिक है।

(९) जिस बिधवा का जिकर ला० साहिब ने किया है वह स्वतन्त्र है। ३२ वर्ष की है अपनी भलाई बुराई की खुद मालिक है। उसका कोई पानीपत में संरक्षक नहीं सदहा विधवा इसाई हो रही है सिरफ ऐसे लोगों के दुख से यह बिधवा अपनी इच्छा से मेरी धर्म पत्नी के साथ आई और पानीपत की निसबत आनंद में है।

(१०) दोनों अध्यापिकाओं का वेतन प्रधान शीघ्र भेज दें प्रधान जी मुझे सर्व साधारण में बदनाम करना चाहते हैं और कुछ नहीं। यह चंद शब्द मैं अपने डिफेन्स में लिख रहा हूं बाकी हालात वशरत ज़रूरत फिर ज़ाहर करूंगा।

आपका शुभचिंतक
ठाकुर दास आर्य्य मारफत
मंत्री आर्य्य समाज मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भ्रमोच्छेदन

मुसाफ़िर आगरा ता० ३।७।१४ के अंक में आर्य पुरुष होशियार रहें इसहेडिंग के लेख को पढ़कर मैं महान आश्चर्य को प्राप्त हुआ। वृत्त यह है कि शान्ति स्वरूप (साधिक मुहम्मद अली) एक बार मेरे पास भी आए और आकर कहा कि मैं शुद्ध शुदाओं का एक उत्सव करने वाला हूं, आप मुझे १ प्रमाण पत्र दें। इस पर मैंने उन से प्रश्न किया कि आपने किसी से सलाह भी ली है या नहीं तथा इस कार्य में कोई योग्य सज्जन व समाज संस्था आपके साथ है यानहीं। उत्तर में शान्ति स्वरूप जीने प्रकट किया कि रेल बाज़ार समाज हमारे कार्य्य से सहमत हैं तथा पं० ब्रज मोहन का तत्रस्थ प्रधान व पं० मुरलीधर शर्मा उप प्रधान आदि इस के सहायक व प्रबन्धक हैं। यह सुनकर इनके लाए हुए पांच पत्रों पर मैंने अपने हस्ताक्षर कर दिये इन में लिखा था कि इनका कार्य उत्तम है आर्य जनता सहायतादें परन्तु मुसाफिर के नोट को पढ़ कर व रेल बाज़ार आर्य समाज के अधिकारियों से मिलने पर बहुत सी अनुचित बातें इनके विषय में विदित हुईं और यह भी विदित हुआ कि इनका उपरोक्त कथन सर्वथा मिथ्या था। मुझे शोक है कि शान्ति स्वरूप जी ने चन्दा प्राप्त करने के निमित्त और मेरे हस्ताक्षर प्राप्त करने के लिए ऐसी निन्दित प्रणाली का अवलम्बन किया अतः आर्य पुरुष सावधान रहें। उसकी पुष्टि करते हुए मैं अपने हस्ताक्षरों को वापस लेता हूं।

वैद्य पं० काशी नाथ शर्मा
मंत्री आर्य समाज चौक कानपुर

रियासती अन्धेर और म० रौनक राम का मामला।

नकल, प्रस्ताव जनरल सभा आर्य्य समाज देहली ता: १२ जुलाई सन् १४

(१) आर्य्य समाज देहली अपने भाई म० रौनकराम जी शाद खालसा पन्थ की हकीकत के रचयिता की रयासत पटियाला की ओर से बिल्कुल अनियम और क़ानून के विरुद्ध गिरफ्तारी तथा पुलिस की बेजा सख्ती पर बड़ा शोक प्रकट करता है और इस कार्य्यको सिक्ख रियासत की ओरसे आर्य्य समाज की धार्मिक स्वतन्त्रता में बेजा दस्तअन्दाज़ी समझता है।

(२) यह समाज म० रौनकरामकी दुखिया माता तथा धर्म्मपत्नी से इस दुख में (जो कि उन को महाशय शाद की बेजा गरिफ़्तारी और नन्हे बच्चे की मृत्यु से हुआ है) अत्यन्त सहानुभूति प्रगट करताहै और उनको विश्वास दिलाता है कि इस दुखमें सारा आर्य्य संसार उनके साथ सम्मिलित है।

(३) यह समाज श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा आर्य्य डेफेन्स कमेटी की सेवा में निवेदन करता है किवह म० शाद की सहायता का अति शीघ्र उचितप्रबन्ध करें। और आर्य्य समाज के प्रसिद्ध माननीय सज्जनों का एक डेप्यूटेशन श्री महाराजा साहब बहादुर पटियाला की सेवा में लेजाकर सही और असली घटना की बिनापर रियासत को इस बेजा दस्तअन्दाज़ी से दस्तबरदा होने की प्रार्थना। करें।

(४) यह समाज श्री सरकार बाला हुज़ूर महाराजा साहेब बहादुर पटियाला से निवेदन करता है कि मास्टर रौनकराम व लाला विश्वम्भरदयाल का मामला रियासत के पोलीटिकल प्रबन्ध से कोई सम्बन्धनहां रखता बल्कियह खालिस धार्मिक मामला तत्व खालसा तथा आर्य्य समाज के बीच में है। अस्तु सिक्ख रियासत पटियाला अपनी नाज़ुक और अहम ज़िम्मेवारी को ध्यान में रखकर इस मुकद्दमे में दस्त बरदार हो जावे। यदि तत्व खालसा साहबान् आवश्यक समझें तो इस मामला को किसी अदालत इंग्रेजी में ले जा सकते हैं। जिसके फैसले से फरीकैन सन्तुष्ट हो सकते हैं।

(५) यह आय समाज अपने माननीय आली जनाब हुज़ूर नवाब गवर्नर जनरल बहादुर हिन्द तथा हुज़ूर नवाब लफटेन्ट गवर्नर बहादुर पंजाब की सेवा में सविनय प्रार्थना करता है कि महाशय विश्वम्भर दयाल वाला मुकद्दमा दर असलदोनों मज़हबी जमाअत तत्व खालसा साहबान् और आर्य समाजियों के बीच में है। जिनकी विशेषतया आबादी सरकार इंग्रेजी के इलाके में है। और चूंकि सिक्ख रियासत पटियाला के तमाम सरकारी महकमों में तत्व खालसा विशेष है। रियासत मज़कूर में इस मुकद्दमा के चलने से राज बरतानिया की सारी आर्य प्रजा की धार्मिक स्वतन्त्रता को अत्यन्त हानि पहुँचने की सम्भावना है। इस कारण बाराह खावन्दो इस मुकद्दमा को पंजाब में मुन्तकिल फरमाकर तमाम आर्य प्रजा को कृतज्ञ करें।

(६) यह सब प्रस्तावों की एक, एक प्रति आली जनाब हुज़ूर वायसराय बहादुर व हुज़ूर लफटेन्ट गवर्नर साहेब बहादुर पंजाब व श्री हुज़ूर महाराजा साहेब बहादुर पटियाला व हुज़ूर रज़ीडेन्ट साहेब बहादुर पटियाला व सद्धर्म प्रचारक-आर्य मित्र, भारत मित्र, प्रकाश, देश, दीपक, झंग सियाल, हिंदू आर्य गजट, मुसाफिर आगरा, आर्य पत्रिका, ट्रिब्युन, पंजाबी लीडर, में प्रकाशनार्थ भेजी जावे।

जम्मू

(१) आर्य समाज जम्मू म० रौनकराम जी की गिरफ्तारी पर शोक प्रकट करती है और पटियाला पुलीस की बेजा सख्ती और निर्दयता के सलूक पर नाराज़गी प्रकट करतीं है।

(२) यह सभा म० रौनकराम के साथ सहानुभूति प्रगट करती है कि उनकी इस दुर्घटना के अवसर पर उनके छः मास के बालक की मृत्यु होगई।

(३) यह सभा महाराजा साहेब बहादुर पटियाला से प्रार्थना करती है कि म० रौनकराम के साथ न्याय का सलूक किया जावे और कानून जो धार्मिक स्वतंत्रता उनको प्राप्त है दीजिये।

(४) यह सभा श्रीमान् रज़ीडंट साहेब बहादुर पटियाला दरबार से प्रार्थी है कि यह मुकद्दमा एक मजहबी सूरत में है इसलिये यह मुकद्दमा इंग्रेजी राज्य में तबदील किया जावे।

(५) एक एक कापी इन प्रस्ताओं की आर्य डैफंस कमेटी, व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अखबार प्रकाश, आर्य गज़ट, तथा सद्धर्म प्रचारक में भेजी जावे।

आगरा

गत १२ जोलाई को सायंकाल के समय आर्य समाज आगरा छावनी में एक असाधारण जलसा किया गया जिसमें आर्य पुरुषों के सिवा बहुत से हिंदू भाई भी शामिल थे। साधारण कार्यवाही के पश्चात् श्री पं० तारादत्त बी ए-एल-एल-बी वकील हाईकोर्ट ने मास्टर रोनकरामजी के दुखों का हाल बतलाते हुए एक अत्यन्त हृदय बेधक छोटी सी तकरीर की आपने बतलाया कि उक्त मास्टर साहब आर्य समाज के बहुत पुराने सेवक हैं सन् १९०९

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में जब पटियाला केस चला था आपने बहुत प्रेम के साथ आर्य समाज की सेवा की थी सिखों ने आर्य समाज के प्रवर्तक श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ऐसे अखण्ड ब्रह्मचारी को "व्यभिचारके प्रचारक" आदि कीउपाधियां दीं और बहुत सी हृदय वेधक शब्दों में पुस्तक रची और स्वामी जी के विषय बहुत कटर और मलीन शब्दों का प्रयोग किया इस पर भी आर्य भ्राताओंने बहुत सज्जनता के साथ उनके भ्रष्ट आक्रमणों को सहन किया परंतु जब इस आर्य सेवकने अत्यन्त सभ्यता के साथ खालसा पन्थ की हकीमत को प्रगट किया तो बेचारे को पटियाला सिख रयासत ने गिरफ्तार करके जेल में बेड़ दिया जहां वह इस समय अनेक प्रकार के दुख सहन करते हुए सड़ रहे हैं-इसलिये उनकी मदद प्रत्येक आर्य पुरुषों को करनी चाहिये क्यों कि यह समस्त आर्य समाज का कार्य है इसके पश्चात् निम्नलिखित पृस्ताव पास हुये।

१—यह समाज गवर्नमेन्ट पंजाब की सेवा में प्रार्थना करती है कि वह इस अभियोग को रियासत पटियाला से शीघ्र ही बृटिश इलाकेमें बदल दें क्योंकि इस अभियोग में सिख ही मुद्दई और सिख ही मुनसिफ हैं-जिस से न्याय की कदापि आशा नहीं की जा सकती।

२—यह समाज मास्टर रोनकराम जी की वृद्ध माता और उनकी धम पत्नी आदि से अत्यन्त हमदर्दी प्रगट करती है-इसके बाद एक प्रार्ती के साथ जलसा समाप्त हुआ जलसे में उपस्थित जन बहुत जोश और गर्म की दशा में थे।

एक कापी रेजूलेशन की लाट साहब पंजाब की सेवा में अंग्रेजी की भेजी गई—

उप मंत्री आर्य समाज आगरा छावनी

———

अमृतसर

Resolved:

1. That the members and symathisers of the Amritsar Arya Samaj nd other Aryas have learnt with great orrow and regret the news of the legal and unwarranatble arrest of Master Raunaq Ram Shad and Mahahe Bishambar Dutta authors of Khalsa Panth ki Haqiqat" and exress their deep and heartfelt sympahy with them.

2. That this meeting protests gainst the outrageous and cruel treatent to which the gentlemen referred oare subjected by the Police of Patiala and most respectfully begs to draw the attention of his highness Shri Hazur the Maharaja Sahib of Patiala.

3. That in view of the agitation which the news of this official high handedness and an uncalled for interference with the rights, prsvileges and religious liberties of His Majesty's Hindu and Arya Samaj subjects has caused among the Arya Samaj Public, the members of the Amritsar Arya Samaj beg most respectfully to urge on His Excellency the Governor-General & Viceroy of India, His Honor the Lieutenant Governor of the Punjab and the His Highness the Maharaja of Patiala in the cause of justice and fair play the necessity of their ordering the trial in British territories if any specific charge can be made against the accused.

4. That the Arya Samaj Defence Committee, Lahore be requested to take immediate steps to defend master Raunaq Ram and Mahashay Bishambar Dutt and the Arya Samj Amritsar to issue appeals for liberal contributions to the Arya Defence Committee Fund to strengthen the hands of the Defence Committee.

5. That a copy of the above resolutions be submitted to:--

(*a*) His Excellency the Viceroy and Governor General of India.

(*b*) His Honor the Lieutenant-Governor of the Punjab and its dependencies.

(*c*) His Highness Shri Hazur Maharaja Sahib of Patiala.

(*d*) The Politícal Agent of Phulkian States.

(*e*) The Arya Samaj Defence Committee Lahore

(*f*) Shrimati Arya Pritinidhi Sabha Punjab.

(*g*) Press. ie. Parkash, Satyadharam Parcharak, Desh, Tribune Punjabee, Leader, Civil & Millitary Gazette, Advocate, *P*ioneer, Englishman, Times of India Bombay, Morning *P*ost Delhi and other leading Urdu, Hindi and English *P*apers.

JAGAN NATH *President.* SAHIB DYAL *Secretary.*

———

सक्खर

६ जुलाई को रात के ६ बजे आर्य समाज का एक जनरल अधिवेशन हुआ जिसमें म० लज्जाराम ने ५ जुलाई वाला प्रकाश पढ़कर सुनाया जिसमें म० रौनकराम आदि पर पटियाला राज्य की तरफ से मुकद्दमा का वृतांत था-इस को पढ़कर सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ—

(क) आर्य समाज सक्खर इस मुकद्दमें पर जो पटियाला राज्य की ओर से आर्य लेखकों पर हुआ है शोक प्रगट करती है और आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना करती है के वह कृपा करक एक Deputation लाट महोदय की सेबा में ले जा कर यत्न करे कि यह मुकद्दमा पटियाला राज्य से ब्रिटश राज्य में होना चाहिये क्योंकि पटियाला राज्य सिक्खों का है जहां पर न अच्छे विद्वान और योग्य वकील तथा जज मिल सकते हैं और न यहां पर पूरे इंसाफ की सम्भावना है और न इस राज्यका आर्य समाजिक पुरूषों के साथ सम्बन्ध ठीक रहा है।

(ख) Defence Committee से प्राथना की जाय के वह Defence fund में से एक रकम इस मुकद्दमे के व्यय के लिये शीघ्र पास करे और एक योग्य बैरिस्टर को इस केस के लिये नियत करे—

(ग) क्यूंकि यह मुकद्दमा सिक्खों की तरफ से प्रथम हुआ है इसलिए उनके उन लेखकों पर जिन्हों ने Arya Samaj के बरखिलाफ गंदे २ पुस्तक छुपाया है और जहां पर हमारे पूजनीय महर्षि आदि को बुरे २ और कमीने शब्दों से याद किया है एक केसब्रिटिश राज्य में किया जाय—

(घ) श्री म० रौनकराम आदि की ज़मानत का शीघ्र प्रबन्ध किया जाय--

(ङ) प्रति समाज के प्रति सभासदों व सहायकों से न्यून से न्यून एक रुपया इस मुकद्दमे में अवश्य लियाजाय। यदि कोई अधिक देवें तो उनकी कृपा (च) इन प्रस्तावों की नकल श्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और सद्धर्म्म प्रचारक हिंदूस्थान-प्रकाश व देश आदि पत्रों में भेजा जाय--

प्रस्ताव (ङ) के अनुसार सभासदोंव सहायकों से हमने रुपया एकत्रित करना आरम्भ कर दिया है और एकत्रित होने पर श्री मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा में भेजा जायगा—

भवदीय—, लज्जाराम वर्म्मा
उप मंत्री आर्य्य समाज सक्खर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करांची

श्रीमान् सम्पादक जी सद्धर्म प्रचारक नमस्ते कृपा करके निम्न लिखित अपने अमूल्य पत्र में छपा दीजिये।

आर्य कुमार सभा को ता० २१ (करांची) की साप्ताहिक प्रभा में जो २८ हाड़ १९११ को हुई निम्न लिखित प्रस्ताव सर्व समति से पास हुये

(१) यह सभा पटियाला पोलीस की महाशय रौनक राम पर बेजा सखती और बेरहमाना सलूक पर शोक प्रकाशित करती है।

(२) यह सभा म० रौनक राम के ६ मास के पुत्र की शोक जनक मृत्यु पर जोकि म०रौनक राम जी की गैरहाज़री (अनुपस्थिती) में हुई अति शोक प्रगट करती है। और इस दुःख में म० रौनक राम जी के साथ सहानुभूती प्रगट करती है।

(३) यह सभा महाराजा पटयाला से प्रार्थना करती है कि म० रौनक राम को कम से कम ज़मानत पर छोड़ दें।

(४) उक्त प्रस्तावों की नकल निम्न लिखित पत्रों को भेजा जावे। ट्रिब्यून, पंजाबी, प्रकाश, देश, भंगसयार, हिन्दुस्तान, सद्धर्म प्रचारक आदि

केसरदास
मंत्री आर्य कुमार सभा
किमारी (करांची)

मेरठ

(१) सब सम्मति से निश्चित हुआ कि इस समाज को समाचार पत्रों द्वारा जो हालात विदित हुवे हैं उनसे ज्ञात होता है कि रियासत पटियाले में जो अभियोग महाशय रौनकराम जी के विरुद्ध चल रहा है उसमें रियासत की पुलिस की ओर से महाशय जी के साथ अनियमता का व्यवहार हो रहा है और उन को वृथा कष्ट दिया जा रहा है। इस प्रकार के अत्याचारों से समस्त आर्य समाजियों के हृदय अत्यन्त दुःखित हुए हैं इसलिये यह समाज आशा करता है कि श्री महाराजा साहिब पटियाला शीघ्र इन अत्याचारों को बन्द करने की आज्ञा प्रदान करेंगे।

(२) सर्व सम्मति से विदित हुआ कि इस समाज को अत्यन्त आश्चर्य है कि यद्यपि खालसा पन्थ की हकीकत को छपे हुवे एक वर्ष हो चुका है और यह पुस्तक केवल आत्मरक्षा में सिक्खों की लिखी हुई दिल दुखाने वाली कई अश्लील व गन्दी पुस्तकों के प्रत्युत्तर में लिखी गई है और उस में कोई बात आक्षेप के योग्य नहीं है तथापि सिक्खों की लिखी हुई किसी पुस्तक का नोटिस भी नलेकर केवल महाशय रौनकराम जी पर ही अब अभियोग चलाया गया है।

(३) सर्व सम्मति से निश्चित हुआ कि १५)रु इस समाजकी ओरसे श्री०आ०प्र० सभा संयुक्त प्रान्त की रक्षानिधि में महा० रौनकराम जी की सहायतार्थ भेजे जावें और उपरोक्त सभा से प्रार्थना की जावे कि वह अपनी रक्षानिधि में से धन भेजकर महाशय जी की सहायता करें।

(४) उपरोक्त निश्चयों को समाचार पत्रों में प्रकाशित कराया जावे।

अजमेर

(१)" देश " लाहौर से बरनाला में श्री रौनकराम जी की गिरफ्तारी के वृत्त को जानकर यह सभा अत्यन्त दुखित हुई है और पटियाला नरेससे नम्रता पूर्वक तार द्वारा प्रार्थना करती हैं कि रौनकरमा जी को शीघ्र मुक्त किया जावे।

(२) इस सभा की सम्मति में "खालसा पन्थ की हकीकत " नामक पुस्तक एक धर्म सम्बन्धी खोज की पुस्तक है जो पूर्ण सभ्यता के साथ लिखी हुई है और उसमें कोई शब्द वाक्य या अध्याय आक्षेप जनक नहीं है, नाहीं किसी पन्थानुयाई को उसमें आक्षेप करने की आवश्यकता है।

(३) यह सभा पूर्ण बल के साथ " सार्वदेशिक सभा" " पंजाब प्रतिनिधि सभा " तथा " आर्य डिफेन्स कमिटी" से प्रार्थना करती है कि श्री रौनक राम जी की सहायता का समुचित प्रबन्ध बिना विलम्ब के करे,

(४)उपरोक्त प्रस्तावों की प्रति लिपि समाचार पत्रों में भेजी जावें।

रावलपिंडी

Resolved:

1. That the members and sympathisers of the Rawalpindi Arya Samaj have learnt with great sorrow and regret the news of the illegal and unwarrantable arrest of Master Raunaq Ram Shad, author of "Khalsa Dharma ki Haqiqat" an inoffensive honorary preacher and writer of the Arya Samaj, and the outrageous and ignominous treatment to which he is subjected by Patiala State police authorities and express their deep and heartfelt sympathy with him.

2. That in view of the agitation which the news of this official high handedness and an uncalled for intereference with the rights. privileges and religious liberties of His Majesty's Hindu and Arya subjects has caused among the Arya Samaj public, the members of the Rawalpindi Arya Samaj beg most respectfully to urge on His Excellency the Governor-General and Viceroy of India and the Government of His Highness the Maharaja of Patiala, In the cause of justice and fair play, the necessity of their making a proper and searching enquiry into the matter ordering an immediate regular trial if any specific charge can be laid at the door of the accused.

3. That the Arya Samaj Defence Commitee, Lahore, be requested to take immediate steps to defend Master Raunaq Ram and issue appeals for liberal contributions to the Arya Defence Committee Fund and otherwise safeguard the interests of the Arya Samaj so dear to the heart of Aryan public.

4. That a copy of the above resolutions be submitted to:--

(*a*) His Excellency the Viceroy and Governor General of India.

(*b*) His Honor the Lieut. Governor of Punjab and its dependencies.

(*c*) His Highness Shri Hazoor Maharaja Sahib of Patiala.

(*d*) The Resident Patiala State.

(*e*) The Arya Samaj Defence Committee Lahore.

(*f*) Shrimati Arya Pritinidhi Sabha Punjab.

(*g*) Press.

WAZIR CHAND
B. .A, LL. B.
Vice-President, Arya Samaj
Rawalpindi.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, विक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५।।)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनाँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

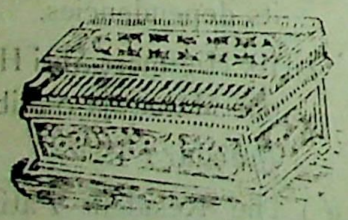

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≈) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≈)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

वेदों पर अमूल्य निबन्ध।

(१) वेदों का अनादित्व—इसमें बड़ी खोज के साथ यह दिखाया गया है। कि वेद अनादि हैं इसके लेखक गो. वर्धनदास बी० ए० मुख्याध्यापक गुरकुल हैं दाम ।-)

(२) रोग जन्तु शास्त्र—यह निबन्ध पं० सातवलेकर जी का है आप वेदों के अपूर्व विद्वान हैं आपने इसमें दिखाया है कि वेदों में (Germtheory) रो गजन्तु शास्त्र भी है दाम -)॥

(३) वेदों से आयुर्वेद का क्रम विकाश यह निबन्ध श्री भिषगाचार्य निवारणचन्द्र भट्टाचार्य जी का है। इस में आपने दिखायाहै कि किस प्रकार वेदों से ही आयुर्वेद निकला है। ≈)

(४) भारतीय शिक्षादर्शः—यह निबन्ध पं० घनश्यामसिंह गुप्त बी० ए० एल एल० बी का है इसमें आपने भारत के स्कूलों तथा कालिजों के दोष बताते हुए सच्ची शिक्षा की प्राप्ति के उपाय बताये हैं। निबन्ध घरों में रखने लायक है दाम ≡॥)

मांस मीमांसा—यह निबन्ध स्नातक ब्रह्मदत्तजी का है। इसमें दिखाया है कि मांस खाना बुरा है और संसार की प्रायः सारी प्राचीन जातियां मांस खाने को बुरी नज़र से देखती रही हैं। यह निबन्ध ऐतिहासिक तथा रोचक है। ≡)

पुस्तकें कमीशन पर मिल सकती हैं जिन्हें चाहियें वह चिट्ठी पत्री करलें।

पता

मन्त्री साहित्यपरिषद

गुरुकुल हरिद्वार

पोष्ट, श्यामपुर

जिला बिजनौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले से साबधानीकी आवश्यकता है

हैजा जब होता है सब शरीर बैचैनी हुआ करती है साथ ही दस्त और कै भी समय नहीं मिलता. ऐसे अवसर में इस संचारक कंपनी मथुराका बनाया 'सुधासिंधु' पास हो तो फिर मौत का डर नहीं रहता।

इसके सेवन करने में कोई अनुपान तकाश नहीं करना पड़ता सब रोगों में केवल पानी ही के साथ पीने से अपना गुण दिखाता है.

१३ वर्ष का आजमाया हुआ

सुधासिंधु

सरकार से रजिष्टरी किया हुआ

कफ | अतिसार | सर्दीकाबुखार
दमा | आंवलोहू | जी मिचलाना
खांसी | संग्रहणी | वग्वोंकेहरपोलेदस्त
हैजा | के होना | शरीर का दर्द
शूल | पेटकादर्द | ठुकरांसी

इत्यादि रोगों की स्वाधिष्ठ सुगंधित दवा

मूल्य ॥) आना

सरकार से रजिष्टरी किया हुआ २३ वर्ष का आजमाया हुआ

दद्रुगजकेसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के एक दो अरसे तोने वाली दवा है कीमत ।) इंजन २।) रु.

हमारी दवा के प्रशंसापत्रों सहित सचित्र सूचीपत्र कलेंडर मंगाने से सबको मुफ्त मिलेगा

मिलने का पता—क्षेत्रपाल शर्मा मालिक,
सुख संचारक कम्पनी मथुरा

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफरा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आम हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादी का दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का बिदूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी

जालोर जिला गया

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द--जि० आरा

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ॥) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल्य २) इस ग्रन्थ में कौरवों पांडव की लड़ाई तिती धर्म्म चारों वरणों के धर्म्म वर्णन हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४१० पृष्ठ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पास पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनिये फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

शास्त्री पास की आवश्यकता।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र को एक शास्त्री पास आर्य्य की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार ३०) तक दिया जायगा। प्रार्थना पत्र वही भेजें जो पाठनके अतिरिक्त अधिष्ठाता का काम भी करने को उद्यत हों।

प्रबन्धकर्त्ता

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र

पो० थानेसर

जि० करनाल

प्रो० प्रो० बालकृष्ण, एम. ए.

की रचित अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये जी पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखने वालों से $\frac{1}{4}$ कीमत ली जावेगी।

अर्थ शास्त्र १॥)

भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)

अग्नि होत्र व्याख्या ।)

आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है) ।)

क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं? ।=)

आत्म—सुधार ,, ।=)

वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज प्रणाली छप रही है। ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है।। **ब्राह्मी बूंटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पण्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी। हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्द्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी ॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ॥) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी (शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ाने का साबुन—बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता—
शर्मनऐंड कं. सतघड़ामथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) मा० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय दहलीमें मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म् ॥ Registered No L. 807.

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

१७ श्रावण सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ९१] ता० १ अगस्त १९१४

संख्या १६
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिस से ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों का उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।) पुस्तकालय

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ।
एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र० •
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "
अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई
(१) पहिले देने बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सक्ता।
(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये
साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एकतोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र देहली गुरुकुल काँगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अच्छी सलाह ।

जाड़ा का बुखार, पारी का बुखार २।३ मौताज ही में बन्द होता है ।

३० वर्ष से सारे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध है और सब जगह बिकती है । अधिक प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं है । देखिये इस दवा से यह हड्डी का ठाडर कैसा पुष्ट होगया है

या द र खो

फसली बुखार वो तिल्ली की दवा

मोल बड़ी शीशी ॥।=)
छोटी शीशी ॥)
डाः ।=) और ।-) आने

दवा सब जगह हमारे एजेन्ट और दवा फ़रोशों के पास बिकती है।

डा: एस. के. बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नं० ६:

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी–(शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत–सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधि से शुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर–(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल–६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट–यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे ।

पता–प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालय।

आवश्यकता ।

एक शरीफ़ ख़ानदान अगर वाल कन्या के लिये ऐसे बर की आवश्यकता है जिस की आयु २२ वर्ष से २८ वर्ष के भीतर हो । ग्रेजुयट हो अथवा बी. ए. में पढ़ता हो कम से कम १००) मासिक आमदनी हो या जायदाद रखता हो । कन्या भाषा लिख पढ़ सकती है हिसाबादि तथा सीना पिरोना ग्रह के कार्य्य में निपुण है आयु १६ वर्ष की है । पत्र व्योहार का पता ।

सेठ मिट्ठनलाल अलबेलसिंह
ठेकेदारान झींद स्टेट

आवश्यकता ।

एक बाल विधवा कन्या की आवश्यकता है जो पढ़ी लिखी घर के काम में निपुण हो आयु १५ से २० वर्ष के भीतर हो । बर उत्तम खानदान अगरवाल तामल गोत्र का है सरकारी नौकर ७०) मासिक मिलते हैं । पत्र व्यौहार इस पते पर करना चाहिये ।

P. द्वारा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म प्रचारक देहली

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धी समस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है । मूल्य २॥) डिब्बी डाः मः माफ ।

पता:–बी.एल. बूबनाएण्ड को०
दिल्ली नं० ३

पीतल के बिरूच

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य ।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन ॥।) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन वाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये ।

पता:–भारत हितैषी–कम्पनी,
अलीगढ़ सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विजय

नया साप्ताहिक नया

सम्पादक—श्रीयुत हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

विजयदशमी से निकलेगा

शीघ्र ग्राहक बनिये

क्योंकि इसके सम्पादक के ओजस्वी लेख और चटकीली टिप्पणियां प्रसिद्ध हैं।

क्योंकि इसमें प्रति सप्ताह हिन्दी साहित्य की समीक्षा रहा करेगी।

क्योंकि इसमें महात्मा मुंशीराम, प्रो० बालकृष्ण एम. ए., प्रो. महेशचरणसिंह एम. एससी. (अमरीका) ब्र० इन्द्र वेदालंकार, पं० विनायक गणेश साठे एम० ए०, श्रीयुत जगन्नाथ खन्ना बी. एससी. (अमरीका) आदि प्रसिद्ध विद्वानों के लेख प्रकाशित होंगे।

क्योंकि इसमें प्रति सप्ताह मराठा **केसरी** के नोटों और लेखों का अनुवाद रहेगा।

क्योंकि इस द्वारा देश के सभी भाषाओं के मुख्य पत्रों की सम्मतियां आपको जानने को मिलेंगी।

क्योंकि इसमें देश और विदेश के सभी मनोरंजक समाचारों का संग्रह छपा करेगा।

और क्योंकि

इसमें पंच और कारटून देने का प्रबन्ध किया जायगा।

शीघ्र ग्राहक बनिये

मूल्य २॥)

मैनेजर, "विजय" देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दी का रत्न उठगया

पं० बालकृष्ण भट्ट की मृत्यु

हिन्दी साहित्य के स्तम्भ, सच्चे पद प्रदर्शक, सचाई के आदर्श और जननी जन्म भूमि और आर्य भाषा के सच्चे सेवक पंडित बालकृष्ण भट्ट का नश्वर शरीर इस समय संसार में विद्यमान नहीं है। भट्ट जी की ५४ वर्ष की निश्वार्थ समाज, जाति और साहित्य सेवा ने उनके वियोग से हिन्दी संसार को कातर कर दिया है। आह, क्यों न आज साहित्य सेवी चार २ आंसू बहावें जब कि सब नींद में सो रहे थे उस समय अन्धकार को विदीर्ण करते हुए भट्ट जी ने हिन्दी के प्रदीप से आलोक फैलाया था। जिस समय आज कल कीसी संस्कृत बहुत और परिष्कृत हिन्दी न समझ सकते थे तब भट्ट जी ने गँवार मसले और आल्हा, कड़खों से सर्व साधारण को जगाया था। भट्ट जी ने उस समय काम किया था जब समाज ही उनका शत्रु था। जब उन्हें हजारों असुविधाएं और कठिनाइएं थीं, जब उनका कोई सहायक न था, जब थोड़े से काम से उनका चित्र छाप के और जीवन चरित्र लिख के उन्हें कोई शाबासी देने वाला न था, उस समय केवल अपने पांवों पर खड़े हो के परमात्मा के आधार पर भट्ट जी ने समाज सेवा का बड़ा भारी काम अपने सिर पर लिया था और आज वह भारत का परम दैदीप्यमान रत्न अपना कर्तव्य पूरा करके भारत के दुर्भाग्य रूपी पश्चिमाकाश में केवल ललाई छोड़ गया। भट्ट जी निर्लोभी थे, सत्यवादी थे और अपने प्रण के पक्के थे। उन्होंने ३२ वर्ष तक 'हिन्दी प्रदीप' निकाल के जो हिन्दी साहित्य की सेवा की उस के लिए वर्तमान समय का एक २ हिन्दी लेखक सदा के लिए उनका ऋणी रहेगा! स्पष्ट वादिता के ही कारण उन्हें 'हिन्दी प्रदीप' बन्द करना पड़ा, प्रयाग की कायस्थ पाठशाला से अध्यापकी छोड़नी पड़ी किन्तु भट्टजी सच्चे जीवन व्रती थे उन्होंने साहित्य सेवा से मुँह न मोड़ा मृत्युकाल तक साहित्य सेवा से विरक्त न हुए, इस समय भट्ट जी काशी में रह के 'हिन्दी कोष' का सम्पादन करते थे, कभी २ हमें उनके लेखादि देखने का भी सौभाग्य मिल जाता था भट्ट जी की अवस्था वृद्धावस्था के कारण इस योग्य न रही थी कि वे कुछ कार्य करते, किन्तु उनका साहित्य प्रेम इतना विशेष था कि मृत्यु से आठ दिन पूर्व तक वे लेखन कार्य में निमग्न थे रुग्णावस्था में भी उन्होंने अपने मिलने आने वालों से अपनी इच्छा पढ़ने लिखने की ही प्रकट की। भट्टजी का वह प्रदीप निर्वाण होगया ये अमर धाम में अत्यन्त शान्ति को भोग रहे हैं परमात्मा उनकी पवित्र आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके पुत्र व परिवार को इस दुःख में धैर्य देवें। हमारी भट्टजी के परिवार से पूर्ण सहानुभूति है, किन्तु हमें इतना विशेष खेद है कि साहित्य सम्मेलन के सभापति एक बार भी न बना सके।

गत मंगलवार को तीसरे पहर भट्टजी की अन्त्येष्टि क्रिया हुई। प्रायः १००० के लगभग मनुष्य अर्थी के साथ गये। अर्थी के साथ जाने वालों में पं० मदनमोहन मालवीय जी तथा बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन भी थे। अन्त्येष्टि क्रिया बड़ी अच्छी तरह से हुई।

हमें अत्यन्त शोक है कि हिन्दी के आदि कार्यकर्ता भट्ट जी चल बसे और हम हिन्दी साहित्यसम्मेलन का सभापति बना कर उन का यथोचित मान भी न कर सके। इस समय भट्टजी का स्मारक बनाकर हम अवश्य ही भट्ट जी का मान करेंगे। हमें पूरी आशा है कि हिन्दी के समाचारपत्र इस विषय पर आन्दोलन न करेंगे।

संसार की गति

क्या पटियाले में पंडित रौनक राम के साथ न्याय होगा?

कभी नहीं, एक और प्रमाण

इस में कोई सन्देह नहीं कि अपनी ही जाति के दो कार्यक्षम अंगों में कलह होते देख प्रत्येक जाति हितैषी का हृदय दुखित होता है। यह दुःख आर्य समाजियों को किसी से कम नहीं है। इसलिये ततखालसों द्वारा निरन्तर सताए जाने पर भी और सिक्ख रियासत पटियाला में म० रौनकराम को हवालात में भिजवा कर सिक्खों द्वारा पहिला वार किए जाने पर भी, जब म० मुंशीराम जी ने सुलह का प्रस्ताव किया, तब आर्य समाजियों ने जाति हितचिन्ता को ही सामने रखकर उस प्रस्ताव का हर्ष से अनुमोदन किया। पर उस प्रस्ताव के साथ ततखालसों ने क्या वर्ताव किया? उस प्रस्ताव को किए अब दो सप्ताह बीत गए हैं पर ततखालसे वैसे ही दिल जलाने वाले लेख लिखते जारहे हैं और म० रौनकराम को उसी हवालात में सड़ाया जारहा है। इससे पता लगता है कि ततखालसा भाई किसी नशे में चूर होकर लड़ाई में ही अपनी भलाई समझते हैं। हम उन्हें बतलाना चाहते हैं कि यदि वे इसी मार्ग काअवलम्बन करना चाहते हैं तो आर्य समाजी भी किसी की गीदड़ भभकियों से डरने वाले नहीं हैं। आर्य समाजी सुलह चाहते हैं परन्तु जो शत्रु द्वारा वार करने पर अपनी रक्षा नहीं कर सक्ता वह सुलह करने के योग्य नहीं। यदि ततखालसा भाई अदालत में ही जाना चाहते हैं तो आर्य समाजी भी वहीं निपटारे के लिये तय्यार हैं। पाठकों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कों ने यह सुन लिया होगा कि पटियाले के महाराज ने अब अभियोग चलने की आज्ञा देदी है। यह अभियोग बर्नाले में मौलवी फ़ज़लिमतीन की अदालत में चलेगा। इस समय धन और वकील इन दो चीज़ों की बड़ी आवश्यकता है। इस समय प्रत्येक आर्य्यसमाज का कर्त्तव्य है कि म० रौनकराम की सहायता के लिये यथा शक्ति धन इकट्ठा करके आर्य प्रति निधि सभा पंजाब के कार्यालय में भेज दें ताकि जितने जितने धन की आवश्यकता होती जाय उतना २ धन आर्य डिफ़ैन्स कमेटी को दिया जाय। दूसरी आवश्यकता वकीलों की है। हम समझते हैं कि आर्यसमाज के मुख्य वकील इस समय मुकदमें की पैरवी करने को तय्यार होंगे। पर साथ ही हम यह फिर कहना चाहते हैं कि आर्य्यसमाजियों को मिलकर यत्न करना चाहिये कि यह मुकदमा पटियाले से बाहिर अंग्रेज़ी राज में चलाया जाय क्योंकि हमें उस रियासत में न्याय होने की कोई आशा नहीं है। अबकी वार हम और भी बल से कहते हैं क्योंकि इस का अभी हमें नया प्रमाण मिला है। आर्य समाज को पटियाला रियासत का पुराना अनुभव बहुत काफ़ी है और अभी रौनकराम के बिषय में जो रियासत से घोषणा पत्र निकला है उसने उन के पुराने अनुभवको और भी पक्का कर दिया है। पटियाला दरबार ने यह घोषणा पत्र रौनक राम के मामले में रियासत को निर्लेप और निष्पक्षपात प्रकट करने के लिये प्रकाशित किया है, पर उसीके अक्षरों उनके पक्षपात का प्रभाव विद्यमान है। उसमें दर्बार कहता है कि "यह मुकदमा सारे आर्यसमाज के विरुद्ध नहीं पर दो व्यक्तियों के विरुद्ध चलाया गया है जिन्हों ने एक पुस्तक में नितान्त अश्लील और भड़काने वाली बातें कहकर सिक्खों के धार्मिक भावों को आघात पहुँचाया है। सिक्ख रियासत होने के कारण नहीं, पर अपराधी के पटियाला निवासी होने के कारण यह मुकदमा चलाया गया है। यदि और कोई रियासत का निवासी भी किसी धर्म के बारे में ऐसा लिखेगा तो उसके साथ भी यही बर्ताव किया जायगा"। लाहौर के "ट्रिब्यून' ने इसे एक अर्थ में संतोषजनक कहा है पर हमें दूसरे अर्थों में संतोष जनक कहते हैं क्योंकि आर्य समाजियों को इससे संतोष हो गया है कि इस रियासत में उनके साथ किसी न्याय की आशा नहीं है। पाठक उन शब्दों को पढ़ने की कृपा करें जिन्हें हमने मोटा कर दिया है। दर्बार की घोषणा में म० रौनक राम के लेख को "नितान्त अश्लील और भड़काने वाला" कहा गया है। क्या यह सिद्ध नहीं करता कि पटियाला महाराज ने पहिले से फ़ैसिला कर रखा है? क्या दर्बार के इस फ़ैसले के विरुद्ध चलने का उस नाज़िम को साहस होगा जिसके सामने मुकदमा चलेगा? इस दशा में इस मुकदमें की एक तमाशेसे बढ़कर कोई कीमत क्याहो सक्ती है? इस समय प्रत्येक आर्य समाज को प्रस्तावों द्वारा बल पूर्वक अपना असंतोष प्रकट कर देना चाहिये और साथ ही पंजाब सरकार से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह हस्ताक्षेप करके रियासत से बाहिर मुकदमा भेज देने की आज्ञा दे दे।

———

सद्धर्म प्रचारक और प्रताप—सहयोगी भारतमित्रने किसी "विश्वस्तसूत्र के आधार पर" प्रचारक के प्रताप में विलीन होजाने का भ्रमात्मक समाचार फैलाया था, उस का हम पिछली वार खंडन कर चुके हैं। हमें अत्यन्त दुःख है कि किसी उसी ढंग के "विश्वस्त सूत्र" के आधार पर फिर सहयोगी ने श्रीयुत हरिश्चन्द्र विद्यालंकार के विषय में निर्मूल समाचार लिखकर लोगों को भ्रम में डाला है। सहयोगीके "विश्वस्त सूत्र" ने कानपुर से समाचार दिया है कि श्रीयुत हरिश्चन्द्र सद्धर्म प्रचारक से निकलकर प्रताप में जाने वाले हैं। भारत मित्र से बढ़कर विश्वस्तसूत्र से हमें पता लगा है कि श्रीयुत हरिश्चन्द्र ने "प्रताप" के सम्पादकीय विभाग में सम्मिलित होने का न कभी विचार किया है और न वे कभी इस काम के लिये कानपुर गए हैं। गत सप्ताह कानपुरकी Students Relegious Association ने उन्हें अपने वार्षिकोत्सव में व्याख्यान देने के लिये अवश्य निमन्त्रित किया था पर वह "प्रताप" के सम्पादकीय विभाग में सम्मिलित होना नहीं कहा जासक्ता।

—०-०—

"प्रभात"—जिस "प्रभात" का हम कई सप्ताह पहिले समाचार दे चुके हैं, वह निकल आया। अब तक उसके तीन अंक हमारे देखने में आये हैं! कहना नहीं होगा कि वे अंक सर्वथा आशाके अनुकूल निकलेहैं। सम्पादकने "प्रभात" का उद्देश भारतवर्ष के लोगों को एक जातीयता की शृंखला में बाँधना बताया है। उद्देश्य जितना प्रशंसनीय है, लेखों का ढंग भी उतनाही सराहनीय है। पिछले अंकों में सहयोगी ने प्रवासी भारतवासियों के विषय में बहुत ही अच्छे लिखे हैं। टिप्पणियों और समाचारों की भी कमी नहीं है। आज तक पंजाब में हिन्दी पत्रचलाने के जितने उद्योग हुए हैं उनमें अधिक सफलता प्राप्त हुई। हमें पूरी आशा है कि पं०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का अदम्य उत्साह इस प्रयत्न को अवश्य ही सफल बनाने में कृतकार्य होगा। यह सुन कर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि "प्रभात" के ग्राहक बड़ी शीघ्र गति से बढ़ रहे हैं। प्रत्येक हिन्दी हितैषी को "प्रभात" का ग्राहक बनकर, पंजाब में हिन्दी की उन्नति के कार्य को दृढ़ करने में सहाता देनी चाहिये। "प्रभात" का वार्षिक मूल्य २॥) है और मैनेजर "प्रभात" लाहौर से मिल सक्ता है।

—००—

मारवाड़ियों में समुद्र यात्रा—इस वर्ष जो सज्जन विलायत से बारिस्टरी पास करके स्वदेश लौटे हैं, उन में श्रीयुत कालीप्रसाद जी खेतान का नाम विशेष रीति से लेने योग्य है। आप मारवाड़ी हैं, और मारवाड़ियों में आपका घराना अच्छा प्रतिष्ठित है। आप के पिता जयपुर रियासत में एक बड़े ऊँचे पद पर अधिष्ठित हैं। कई लोगों का विश्वास है कि मारवाड़ी व्यवसाय ही करना जानते हैं, विद्या बुद्धि में वे आगे नहीं बढ़ सक्ते। आपने उनलोगों के विश्वास को एक दम निर्मूल कर दिया है। आप जब स्वदेश में ही थे तभी से आप ने एम० ए० तक सब परीक्षाओं में प्रथम रह कर अपनी मेधा का परिचय देना आरम्भ कर दिया था यहां की परीक्षा समाप्त करके आप विलायत बारिस्टरी पास करने गए। आप पहिले ही मारवाड़ी थे जो समुद्रयात्रा के नके लिये तय्यार हुए थ। इसलिये कई अदूर दर्शी लोगों ने धर्म का नाम लेकर खूब कोलाहल मचाया। पर समझदार मारवाड़ी आपके साथ थे, आप किसी भी विरोध की पर्वा न करके विलायत चले गए। वहां भी आपने खूब नाम पाया। अब बारिस्टरी पास करके आप स्वदेश लौटे हैं। बम्बई पहुंचने पर वहां के मारवाड़ियों ने बड़े उत्साह से आप का स्वागत किया। उन के स्वागत के लिये देहली तक से कई सज्जन बम्बई गए थे। देहली की 'मारवाड़ी ऐसोसियेशन' की ओर से आप को अभिनन्दन पत्र भी दियागया। अब बम्बई से आप कलकत्ते जाएगे। हमें आशा है कि वहाँ के मारवाड़ी सज्जन भी अपनी जाति का नाम उज्ज्वल करने वाले युवक का प्रेम और उत्साह से स्वागत करेंगे। इसी सम्बन्ध में हमने सुना है कि कलकत्ते के कुछ नासमझ लोग खेतान महोदय को जाति बहिष्कृत करने के लिये उकसा रहे हैं। कलकत्ते के धर्म कर्म के ठेकेदार एक अखबारने घबराकर अभी से गालियों का ताँता बांध दिया है। इस अकेले "गाली बीर" से संतुष्ट न होकर कई लोगोंने एक नए दैनिक को जन्म देने का विचार किया है। हमे आशा है कि इन कुछ नासमझ अदूर दर्शी लोगों की सम्मति पर मारवाड़ियों जैसी क्रियाकुशल जाति एक रत्न काल को खोने का साहस न करेगी।

गालियों से रोज़ी—एक कविने अपने शत्रुओं को लक्ष्य करके कहा है कि यदि मुझे गालियां देनेसे ही मेरे विरोधियों की रोज़ी चलती है तो मुझे उसमें बाधा डालने की इच्छा नहीं है। हमारे एक "प्रियवर" द्वारा सम्पादित साप्ताहिक को देख कर हमारे मुख से भी यही बात निकलती है। बहुत दिनों हमने कभी उस पत्र के दर्शन न किए थे। अब बड़े अनुरोध से सम्पादक ने उस के दर्शन कराए हैं। उस के दो तीन अंक देखने से पता लगता है कि वह पत्र हमें कोस कर ही अपनी रोटियां चलारहा है। उलट फेर कर उसमें सब जगह हमारा ही ज़िक्र रहता है। कई लोग उस के लेखों पर नाराज़ होकर उत्तर देने के लिये हम से अनुरोध कर रहे हैं। हमारा निवेदन है कि न तो हम अपने 'प्रियवर' की तरह गालियां देने में प्रवीण हैं और नाहीं हम उनकी रोज़ी में बाधा डालना चाहते हैं।

———

अफ्रीका में वैदिक धर्म का प्रचार—अफ्रीका से एक सज्जन ने कई समाचार पत्रों के उद्धरण भेजे हैं जिन से पता लगता है कि स्वामी मंगलानन्द पुरीजी आज कल वहां वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। अफ्रीका में जो भारत वासी यहां से जाकर बसे हैं वे अपने धर्म से नितान्त अनभिज्ञ रहते हैं इस लिये उन में धर्म के प्रचार का काम बड़ा ही मंगल हैं। इस के लिये स्वामीजी की जितनी प्रशंसा कीजाय थोड़ी है। पर साथ ही हमारा स्वामीजी से निवेदन है कि वे धर्म प्रचार के साथ पारस्परिक कलह और झगड़ा न फैलने दें। यह बात हम इस लिये कह रहे हैं कि निजू तौर पर हमें इस प्रकार के समाचार मिले हैं। एक दो पत्रों में अफ्रीका सम्बन्धी जो चिट्ठियां छपी हैं उन से हमारी आशंका और दृढ़ हो गई है। जिस देश में साम्प्रदायिक झगड़ों को छोड़ कर भारत वासियों ने एक शृंखला में बंधकर काम करना सीखा है, वह अफ्रीका है। उस जगह साम्प्रदायिक पक्षपात को बढ़ाना हम अपराध ही नहीं, पाप समझते हैं। कुछ वर्ष हुए, स्वामी शंकरानन्दने अफ्रीका में जाकर हिन्दुओं को साम्प्रदायिक पक्षपात के आधार पर ही प्रातःस्मरणीय गांधी के विरुद्ध भड़काना आरम्भ किया था। अफ्रीका के गोरे पत्रोंने उस समय स्वामी शंकरानन्द की बड़ी प्रशंसा की थी और उसे "हिज़ होलिनस" की उपाधि दे कर भारतके हिन्दुओं का नेता बताया था। परमात्माकी कृपा हुई कि स्वामी शंकरानन्द की पोल शीघ्र ही खुलगई और वह अपने मनोरथ में सफल न हुआ। हमें पूरी आशा है कि स्वामीजी हमारे निवेदन पर ध्यान देंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

गुलाम विश्वविद्यालय नहीं चाहिये।

जब से हिन्दू विश्वविद्यालय का पुतला खड़ा करके उस के संचालकों ने उस के गले में सरकारी चार्टर की फाँसी लगाने का प्रस्ताव उठाया तभी से हम उस का बिरोध करते चले आये हैं। शिक्षा का उद्देश बालकों और युवकों के सर्वांगीण बिकास में सहायता देना है। हमारा विश्वास है कि सरकारी बंधनों से जकड़ी हुई शिक्षा पद्धति कभी भी अपने इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर सक्ती। इस समय भारतवर्ष में जितनी यूनिवर्सिटियां हैं वे सरकार की गुलाम हैं। सरकारी नौकर तय्यार करने के लिये इन यूनिवर्सिटियों की सृष्टि हुई थी और यही काम ये यूनिवर्सिटियां अब तक कर रही हैं। इन की शिक्षा पद्धति, परीक्षा पद्धति और पाठविधि बालकों के मानसिक विकास में सहायक होने की जगह बाधक होती हैं। इन यूनिवर्सिटियों में विदेशी साहित्य की प्रधानता के कारण ये जातीय सभ्यता और जातीय साहित्य को पुष्ट करने में सर्वथा असमर्थ हैं। इस के अतिरिक्त इन यूनिवर्सिटियों की मालिक सरकार है और वह शिक्षा के साथ साथ इन्हें राजनैतिक तुला पर भी तोलती है। सरकार सदा इन यूनिवर्सिटियों को "विशुद्ध शिक्षा के वायु मंडल" में पालने की घोषणा दिया करती है परन्तु पिछले कुछ वर्षों के अनुभव ने बतला दिया है कि सरकार का इस "विशुद्ध वायु मंडल" से क्या अभिप्राय है।

इसी प्रकार के कारणों से, सच्ची शिक्षा के प्रेमियों का इन सरकारी यूनिवर्सिटियों पर विश्वास नहीं रहा है और वे अपने बालकों की शिक्षा के लिये ऐसी संस्था चाहते हैं जिसमें उनके मानसिक, शारीरिक और आत्मिक विकास की पूरी स्वाधीनता हो। हिन्दू विश्वविद्यालय की स्कीम प्रकाशित होने पर लोगों ने समझा था कि हमारी चिरकाल की इच्छा इस विद्यालय से पूरी होगी इसी लिये उन्हों ने इस के लिये अत्यन्त उत्साह दिखाया। इसी लिये हिन्दू विश्वविद्यालय के लिये जब चार्टर लेने का प्रस्ताव उठा तभी हमने उसका बल पूर्वकविरोध किया था क्योंकि हम चार्टर लेने को अपने हाथों विश्वविद्यालय की जड़ पर कुल्हाड़ी चलाना समझते थे। हम जानते थे कि सरकार हिन्दू विश्वविद्यालयके हाथ पैर बांधे विना उसे चार्टर न देगी, इस लिये तरह तरह के आश्वासन दिए जाने पर भी हम कभी अपने आप को चार्टर के पक्ष में न कर सके।

चार्टर का विरोध करते समय हमें हठी, दुराग्रही और एक महान जातीय काम में बाधा डालने वाला कहा गया, पर हमने कभी इसकी पर्वा नहीं की, क्योंकि हमें निश्चय था कि एक दिन अवश्य ही जाति के नेताओं की आंखें खुलेंगी। और आज आंख खुलने का दिन उपस्थित होगया है। सरकार ने उन शर्तों को प्रकाशित करदिया है जिन को मान लेने पर वह हिन्दू विश्वविद्यालय को चार्टर देगी। वे शर्तें उस पत्र में दीगई हैं जो पत्र भारत सरकार के शिक्षा सदस्य सरहार कोर्ट बटलर ने दर्भंगा महाराज को भेजा है। उस पत्र को हमने अन्यत्र प्रकाशित किया है।

सरहार कोर्ट बटलर के पत्र को साधारण दृष्टि से पढ़जाने पर भी प्रत्येक पाठक इस परिणाम पर पहुंचे बिना नहीं रह सक्ता कि सरकार नए विश्वविद्यालय को एक ऐसे कालिज से अधिक महत्व नहीं देना चाहती जिसका छोटे से छोटा पुर्ज़ा सरकारी अफ़सरों के चलाए चलेगा। हिन्दूजनता अपनी संस्था को भारतीय संस्था बनाना चाहती थी पर काशी तक उसकी सीमा बांधकर सरकार ने उसे सर्वथा प्रांतिक बनादिया है। यदि पहिले इस विषय में किसी को संदेह था तो अब यू० पी० के लाट को विश्वविद्यालय का चान्सलर प्रस्तावित करके उस संदेह को सर्वथा मिटा दिया है। कौन नहीं जानता कि जिस विश्वविद्यालय का चान्सलर एक प्रान्त का लाट होगा उस के लिये न सारी भारतीय जनता का उत्साह होगा और नाहीं दूसरे प्रांतों के माननीय नेता और विशेषतः राजे महाराजे उसमें सम्मिलित होना पसंद करेंगे।

प्रत्येक शिक्षापीठ की सफलता तीन बातों पर निर्भर है (१) पाठविधि बनाना (२) शिक्षकों का नियत करना (३) और परीक्षा लेना। इन तीन ही कार्य्यों में सरकार ने चान्सलर को पूरे अधिकार देकर विश्वद्यिालय को सर्वथा नपुंसक बनाने मे कोई कसर उठा नहीं रक्खी। चान्सलर की सम्मति के बिना न पाठविधि में कोई पुस्तक रक्खी जायगी, न कोई अध्यापक नियत किया जासकेगा, परीक्षकों का नियत करना भी चान्सलर के हाथ में होगा। हमें आश्चर्य्य है कि ऐसे सर्वाधिकारी चान्सलर के रहते सैनेट, सिंडिकेट और गवर्नरों का काम "जीहजूर" कहने के अतिरिक्त और क्या होगा?

एकबात और है। हिन्दू जाति लाँखों रुपया लगा कर इलाहाबाद यूनिवर्सिटि की प्रतिसूर्ति खड़ा करना नहीं चाहते। अवश्य ही वर्तमान सरकारी यूनिवर्सिटीयों में वह कोई कमी पाते हैं और इसी कमी को पूरा करने के लिये वे नई संस्था बनाना चाहते हैं। क्या एक सरकारी यूनीवर्सिटी के चान्सलर के हाथ में इसी नई संस्था की सारी बागडोर देकर वह कमी पूरी हो सकती है? समझ रखना चाहिये कि सरकार और सरकारी अफ़सर कभी अपनी शिक्षा प्रणाली को दूषित नहीं समझ सक्ते। और अपनी शिक्षा प्रणाली को निर्दोष समझने वाले मनुष्य को, एक ऐसी संस्था का सर्वाधिकारी मुखिया बनाना, जो उस के दोषों को दूर करने के लिये बनाई गई है। उस की उन्नति में कहां तक सहायक हो सकता है।

आप चाहे इन शर्तों को किसी दृष्टि से भी देखें, इनका परिणाम हिन्दू विश्व-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विद्यालय को निर्जीव चीज़ बना देने के अतिरिक्त, और कोई परिणाम नहीं हो सक्ता। इनमें कई शर्तें तो ऐसी हैं जो सरकारी यूनिवर्सिटियों से भी बढ़कर हिन्दू विश्वविद्यालयको गुलाम बना देंगी। हमें यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दू जाति कभी भी अपने पैसे देकर अपने गले में गुलामी का पट्टा बाँधना पसंद न करेगी। हम प्रसन्न हैं कि इन शर्तों के प्रकाशित होने पर चारों ओर से यही प्रति ध्वनि सुनाई देरही है कि इन शर्तों को मानकर विश्वविद्यालय बनाने की हमें कोई आवश्यकता नहीं। किसी और स्थान पर हमने देश के नेताओं और प्रमुख पत्रों की सम्मतियाँ प्रकाशित की हैं। उनसे हिन्दू जाति की आन्तरिक इच्छा का प्रकाश होता है। डा० रासबिहारी घोष और पं० विशन नारायण धर जैसे शान्त प्रकृति नेता और "लीडर" और "अभ्युदय" जैसे नर्मपत्र भी इन शर्तों को मान कर विश्वविद्यालय को बनाने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं। हमें पूरी आशा है कि हिन्दू विश्वविद्यालय के संचालक ऐसी स्पष्ट सम्मति का निरादर कभी न करेंगे।

विकासवाद।

या

इवोल्यूशन थ्यूरी

प्रो० वि० ग० साठे एम० ए० गुरुकुल काँगड़ी

कृत

विकासवाद सारे विज्ञान का आधार है। आज कल विकासवाद से अनभिज्ञ रहना अनपढ़ होने का चिन्ह समझा जाता है। तो लीजिये ये पुस्तक पढ़िये। पत्रों और विद्वानों ने मुक्तकंठ से इस पुस्तक की प्रशंसा की है इसमें ३३ हाफ़-टोन चित्र हैं। मूल्य केवल २)

प्रबन्धकर्त्ता

सद्धर्मप्रचारक पत्र, देहली

मेरा भावी समय विभाग

निजू पत्र व्यवहार में कई प्रकार की कल्पनायें देखकर मुझे आवश्यक प्रतीत होता है कि अपना भावी समय विभाग (जहां तक निश्चय हुआ है) प्रकट करदूं।

शारीरिक स्वास्थ्य।

के विषय में केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है कि शिर पीड़ा से मुक्त हूं, विशेषतः जब से औषध सेवन सर्वथा छोड़ दी है तब से आमाशय आदि सब ठीक हैं। यदि अति उद्यम के प्रलोभन में फिर न फंसा तो शरीर रूपी यन्त्र कुछ काल और चलता ही रहेगा। केवल घुटने में दर्द है जो उतना अधिक नहीं। एक विशेष तेल की मालिश होती है जिस से न भी आराम हुआ तो भी कार्य में विघ्न नहीं पड़ेगा।

मेरे भाइयों को याद होगा कि गुरुकुल की स्वामिनी सभा के आदेशानुसार मुझे स्वास्थ्य ठीक करने के लिये कुछ समय देकर दो वर्षों का शेष समय

गुरुकुल की आर्थिक दशा के सुधार

में लगाना है। वह कार्य मैं अभी आरम्भ कर देता किन्तु केटे के आर्य भाइयों की सेवा अपना पहला कर्तव्य समझता हूं—कारण यह कि केटे के जलवायु ने मेरे स्वास्थ्य सुधार में इतना भाग नहीं लिया, जितना लाभ यहां के प्रेम मय व्यवहार ने पहुंचाया है। इस लिए ३१ अगस्त १९१४ तक यहां रह, केटा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव को समाप्त कराके फिर यहाँ से हिलूंगा। फिर मार्ग में कुछ कार्य करते हुए सितम्बर के प्रथम सप्ताह में शिमले पहुंचने का विचार है। शिमले शायद १८ सितम्बर तक रहूंगा, और फिर रास्ते में बहुत से काम करते हुए विजया दशमी के उत्सव पर गुरुकुल पहुंचूंगा, जहां अक्तूबर के अन्त तक मेरी स्थिति रहेगी। आर्थिक सहायता का आर्यसन्तान मात्र से याचक हूं। प्रथम तो गत वर्ष के बजट की आय में १२,०००) की कमी रही, द्वितीय वर्त्तमान वर्ष के बजट का आय भाग ठीक करने के लिए ३८,०००) की और आवश्यकता है। यह ५०,०००) तो अस्थिर कोष के लिए मुझे जमा करना है।

फिर सभा की यह सम्मति (चिरकाल पश्चात्) हुई है कि गुरुकुल के लिए स्थिर कोष चाहिए जिससे प्रति वर्ष के भिक्षमंगापन का झगड़ा दूर होजाय और गुरुकुल विश्वविद्यालय के चिरस्थाई होने का एक साधन पूरा हो। इस विषय में विस्तार पूर्वक निवेदन तो समाचार पत्रों द्वारा आगे प्रकाशित करूंगा, इस स्थान में केवल इतना जतलाना है कि—

स्थिर कोष में १५ लाख जमा करना

भी मेरा कर्त्तव्य हो गया।

इस सारे धन को जमा करने के लिए मुझे केवल दो वर्ष मिले हैं जिन में से दो मास व्यतीत भी हो चुके हैं। मैं तो तीन मास और केटा, शिमला तथा गुरुकुल में व्यतीत करके भिक्षा के लिए निकलूंगा ही और ग्राम ग्राम और नगर २ में अलख जगाऊंगा ही, किन्तु यदि गुरुकुल के प्रेमी अभी से काम में लगजांय तो कृतकार्यता में बहुत सुगमता हो सक्ती है।

श्रीमास्टर लक्ष्मण रामनगरी

को मैंने लिखा है कि वे अम्बाला और शिमला—दोनों ज़िलों में जाकर दानियों को दान के लिए तय्यार करें और प्रतिज्ञाएँ लिखवायें। इन दोनों प्रान्तों के भाई उनको सहायता दें। मैं उक्त मास्टर जी सहित शिमले से लौटता इन स्थानों में ठहर कर भिक्षा वसूल करूंगा।

मैं ने निश्चय यह किया है कि ५००) और उस से ऊपर जितनी रक़में प्राप्त हों वे स्थिर कोष में जमा की जावें और इस से नीचे जितनी रक़में मिलें उन्हें अस्थिर कोष में जमा करके वर्तमान व्यय को चलाया जावे।

जो भाई इस समय ही दान देने का संकल्प करें वे क्यों न अगस्त के अन्त तक केटे मेरे पास धन भेज देवें और उसके पश्चात् मेरा विशेष नाम देकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल भेजते जावें। इससे काम बहुत हलका हो जावेगा।

विशेष निवेदन

आर्य समाजों तथा गुरुकुल के प्रेमियों से यह है कि जहां कहीं भी वे मुझे बुलाने से गुरुकुल के कोष की स्थिरता में लाभ होने की सम्भावना समझें मुझसे वहां पहुंचने के विषय में पत्र व्यवहार करके तिथि निश्चय करलें। ऐसा करने से एक ही समय, एक ही प्रान्त में चक्कर लगाने से व्यय भी कम होगा और लाभ अधिक। मेरे साथ दिल्ली के पंडित निहालचन्द जी भूत पूर्व डिपुटी कलेक्टर ने जाने की प्रतिज्ञा की है। किन्तु एक ऐसे सज्जन के साथ होने की बड़ी आवश्यकता है जो आर्य्य भाषा तथा अंङ्गरेज़ी द्वारा पत्र व्यवहार में मुझे सहायता दे। मेरे पास कुछ है नहीं जो उनकी भेंट कर सकूं, गुरुकुल कोष में कुछ है नहीं कि वेतन पर योग्य महाशय रक्खे जा सकें, मैं ऐसी योग्यता नहीं रखता कि मेरा प्राइवेट सेक्रेटरी बनना कोई गौरव समझे, इसलिए गुरुकुल के पवित्र नाम पर हो अपील कर सकता हूं कि यदि कोई महाशय अपने व्यय पर गुरुकुल की सेवार्थ मेरे साथ चलने को तैयार हों तो मेरा हाथ बटाएं, नहीं तो वर्त्तमान शारीरिक दशा में मुझ से जो कुछ हो सकेगा वह तो करूंगा ही।

सेवक

मुंशीराम जिज्ञासु

छात्रों की आवश्यकता।

नवीन आयुर्वैदिक कालिज देहली का पाठ आरम्भ १५ सितम्बर से होगा।

अध्यक्ष—बी० के मित्र

एल० एम० एस०

कुछ आप बीती कुछ जग बीती

(४०)

पंडित गुरुदत्त की अपूर्व तर्कनाशक्ति

मैं लिख चुका हूं कि राय रामदयालु के यहां २९ दिसम्बर को हम सब का निमन्त्रण था। श्रद्धा पूर्वक भोजन कराने के पश्चात् राय रामदयालु जी ने पंडित गुरुदत्त जी से कहा "मेरा परमात्मा की हस्ती पर विश्वास नहीं! आप का मस्तिष्क (Intellect) कैसे इस dogma (हेतु रहित सिद्धान्त,) को स्वीकार करता है।" पंडित जी जमकर बैठ गए और राय साहब पर कुछ प्रश्न आरम्भ कर दिए। राय साहब स्वयम पदार्थ विद्या के अच्छे विद्वान थे इस लिए उन्हें बात चीत में बड़ा आनन्द आया, किन्तु पंडित जी की सब युक्तियों का लक्ष जीवात्मा के अस्तित्व को सिद्ध करना था। एक प्रश्न मुझे याद है। पंडित जी ने यह कहा कि मनुष्य की प्राकृतिक बनावट में वे सब तत्व विद्यमान होते हैं जिन्हें पश्चिमीय पदार्थ वेत्ताओं ने element माना है। पूछा कि जब मरने के पश्चात् भी वे सब elements मनुष्य की बनावट में विद्यमान रहते हैं तो फिर शरीर से अलग कोई आत्मा सिद्ध होता है वा नहीं, जिस के अन्दर होते हुए शरीर और इन्द्रियादि सर्व प्रकार की चेष्टाएं करती हैं और जिस के निकल जाने पर सब चेष्टाएं बन्द हो जाती हैं।" राय साहब ने इस पर उत्तर दिया "किन्तु मौत के समय उनकी समप्रमाणता (Proportion) में भेद आजाता है" पंडित जी ने कहा– "होगा क्या, यह कुछ अनुमान का विषय नहीं। देखिये अमुक अमुक विद्वानों ने परीक्षण किया है कि मरने के पश्चात् कुछ क्षणों तक सब elements पहली सम्प्रमाणता में विद्यमान रहती हैं।" इसका उत्तर जब कुछ बनते न आया तो राय साहब ने घबरा कर कहा— "इससे तो फिर जीवात्मा की हस्तीही सिद्ध होगी। मैं ने तो परमात्मा की हस्ती का सबूत मांगा था।" पंडित जी ने मुसकिरा कर उत्तर दिया— "महाशय! जब जीवात्मा सिद्ध नही होगा तो परमात्मा की सिद्धि कैसे होगी?" उसके पश्चात् पंडित जी ने पूछा—"कहिए, जीवात्माके अस्तित्व में कुछ सन्देह रहा।" उत्तर मिला कि जीवात्मा तो सिद्ध ही प्रतीत होता है, अब पुनः बिचार के पश्चात् फिर कभी प्रश्न करूंगा।

पंडित गुरुदत्त के सत्सङ्गसे इस बार मुझे बड़ा लाभ हुआ। जहाँ मैं ने एक अपूर्व नया मित्र बनाकर धर्म प्रचार में नया उत्साह प्राप्त किया वहां पण्डित गुरुदत्त के मेरे विषय में सन्देह दूर हुए और उनको मेरे साथ बहुत प्रीति होगई। पण्डित गुरुदत्त को न जाने किन्होंने यह विश्वास दिलाया था कि जालन्धर वालों की मेरे कारण ब्राह्मोसिप्रिट है। शायद इस लिए कि हम जालन्धरियोंका वैय्यक्तिक प्रेम कुछ ब्राह्म समाजी भाइयों के साथ था और वे हमारे उत्सवों के सङ्कीर्तन में सम्मिलित हुआ करते थे। पण्डित गुरुदत्त जी ने अपनी भूल मान कर जो दो शब्द कहे थे। उन्हों ने हम दोनों को सदैव के लिये एक ग्रन्थी में बाँध दिया। पण्डित जी ने कहा— "यदि मैं यहां न आता तो शायद सदैव के लिए एक सहकारी को खो बैठता"

जालन्धर आर्य्यसमाज के इसी वार्षिकोत्सव पर मैं ने उपन्यास पठन (novel reading) को सदा के लिए नमस्ते कह दी थी। उससे पहले एक वर्ष से मैं इस दुर्व्यसन को त्यागने का प्रयत्न कर रहा था किन्तु कृतकार्यता न होती थी शतरंज की तरह इसने भी बहुत समय व्यर्थ ख़राब कर रक्खा था। परमेश्वर की दया से इस के पश्चात् दोनों ने पिंड छोड़ दिया।

इस वार्षिकोत्सव पर बहुत नए सभासद आर्य्यसमाज को मिले। पण्डित छज्जू राम जी वकील इसी समय आर्य्य समाज में प्रविष्ट हुए थे। वे चार पांच महीनों के पश्चात् ही आर्य्य समाज से अलग हो गए किन्तु उनके बिछोड़े ने भी आर्य्यसमाज जालन्धर के गौरव का प्रमाण दिया। पँडित छज्जूराम और सर्व सिद्धान्तों में तो आर्य्यसमाज के साथ सहमत थे परन्तु वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने में उन्हें कुछ सँकोच था। उनका त्याग पत्र १० वैशाख, १९४६ वि० के सद्धर्म्मप्रचारक में छपा है। उसे शिक्षा प्रद होने के कारण मैं उसका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुवाद यहां देता हूं—"आप मेरा नाम आर्य्यसमाज के मेम्बरों के रजिस्टर से ख़ारिज करदीजिए। सँक्षिप्त कारण इस प्रार्थना पत्र के यह हैं कि मैं तीसरे नियम पर पूरे तौर पर विश्वास नहीं रखता और मैं यह नहीं चाहता कि जबतक मेरा पूरा विश्वास नहो अपने आप को भी आक्षेपों का लक्ष बनाऊं और समाज की सुकीर्त्ति का साधन होने के स्थान में उलटा प्रभाव डालूं। मैं यह भी प्रकट करना चाहता हूं कि यद्यपि एक नियम पर मेरा विश्वास पक्का नहीं है परन्तु मैं बहुत से अन्य विषयों में आर्य्यसमाज के सभासदों के साथ सहानुभुति रखता हूं और रखता रहूंगा।" कैसा स्वर्णीय समय था जब इस प्रकार सचाई का राज्य था! और कहाँ आज का समय कि दुराचारी और आपापन्थी आदमी भी मुंह छिपा कर समाज से पृथक होने के स्थान में अपना जत्था खड़ा कर के समाज में दन्दनाते और उल्टे कोतवाल को डांटने वाले चोर के सदृश समाज को कलङ्कित करते रहते हैं।

उन दिनों, एक बिगड़ा हुआ युवक रईस मिलखीराम भी सभासद बना। मैं तो उसे कोरा जवाब देनेलगा था किन्तु मेरे मित्र बालकरामजी ने समझाया कि जब कुछ दैवी प्रेरणा हुई है तब तो सभासद बनता है, शायद सुधरजावे। शोंक कि पहले सुधार की आशा दिलाकर इस भाई के आचार फिर बहुत गिरगए और उसे एक अन्य पतित आर्यसमाजी के साथ आर्य्यसमाज से पृथक करना पड़ा।

इसी समय मेरे दो बड़ेभाई और कुछ अन्य सम्बन्धी आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए जिसके कारण मुझे वैदिक सिद्धान्तों पर चलने में अधिक सुगमता होगई।

एक अन्तिम लाभ इस उत्सव का एक जैन साधु का आर्य धर्म में प्रवेश था। पूजमोनीरिख (पूज्य मुनि ऋषि) नकोदर में रहता था। मेरे दो व्याख्यान सुन उसकी रुचि वैदिक धर्म की ओर हुई। अपने दल में ही शास्त्रार्थ करके जालन्धर आगया। २८ दिसम्बर को २ बजे दिनके उसका प्रवेश सँस्कार करके नाम ब्रह्मचारी ऋषि रक्खा गया।

इस प्रकार यह वार्षिकोत्सव, मेरे लिए अनगिनित आशीर्वाद की वर्षा करके, समाप्त हुआ। (मुन्शीराम)

हिन्दू विश्वविद्यालय

सरकारी चार्टर की महँगी कीमत

सरकार की गलघोट शर्तें

सरकार की ओर से हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रधान दर्भंगा महाराज को निम्नलिखित पत्र मिला है जिसमें उन शर्तों का वर्णन है जिनके मानलेने पर सरकारी चार्टर मिलसकेगा। इसी पत्र में सरकार ने सँगठन सम्बन्धी कई और बातों पर भी अपना मत प्रकट किया है। उसका अनुवाद जो भारत मित्र ने किया है, उसे हम नीचे प्रकाशित करतेहैं:-

नीमसरकारी न० २०२—शिक्षा।

शिमला, १८ जुलाई, १९१३

प्रिय महाराज बहादुर,

कृपा कर मेरा वह पत्र देखिये जो मैंने २ री जून सन् १९१३ ई० को शिमले से आपको भेजा था और जिसका नं० "११७—शिक्षा" है। उस पत्र में मैंने इस बात पर खेद प्रकट किया था कि, इस समय मैं आपको वे शर्त्तें नहीं बता सकता जिनके आधारपर नियमावली बनायी जाय, क्योंकि अभीतक भारत सरकार उसपर विचार ही कर रही है और बाद भारत सचिव से अनुमति लेनी भी आवश्यक है; पर साथ ही यह सुनकर कि, आप कार्य्य शीघ्र करने के लिये उत्सुक हैं मैंने आपकी वे शर्त्तें बता दी थीं जो भारत सरकार के मत से आवश्यक थीं—मैंने सोचा था कि इनके जानने से आपको कार्य्य करने में सुबिधा होगी। वे शर्त्तें ये हैं:—

(१) विश्वविद्यालय के लिये उपयुक्तस्थान का प्रबन्ध हो जाना चाहिये।

(२) सेंट्रल हिन्दू कालिज युनिवर्सिटि को मिल जाना चाहिये।

(३) २० लाख रुपयोंका संग्रह हो जाना चाहिये। अवश्य ही इसमें उस सम्पत्तिका मुख्य,भाग जो विश्वविद्यालय को मिल गया हो, तथा जितनी रक़म की वार्षिक सहायता का वचन मिला हो वह जिस रक़म का सूद हो सकती है वह रक़म भी इस ५० लाख में ही गिनी जा सकती है, यदि सम्पत्ति युनिवर्सिटी कमेटी के अधिकार में आगयी हो और वार्षिक सहायता की लिखा पढ़ी पक्की हो गयी हो।

(४) युनिवर्सिटी की नियमावली उसी तरह बनायी जाय जिस तरह सरकार बनाने को कहे।

(५) एक कमेटी नियुक्त की जाय जो इस बात की जांच करके रिपोर्ट करे कि, सेंट्रल हिन्दू कालिज साश्रम शिक्षक विश्वविद्यालय बनाये जाने योग्य हैं वा नहीं।

मुझे समाचार मिला है कि, १, २, और तीन शर्त्तों के सम्बन्ध में बहुत कुछ काम किया जा चुका है और ५ वीं के विषय में चाहे जब कार्य्यारम्भ किया जा सकता है। ४थी के सम्बन्ध में आज मैं महत्त्व की और कई बातें कहना चाहता हूं।

पहले से ही हमलोग जानते हैं कि, प्रधान प्रधान विषयों में और विशेषतः सरकार के सम्बन्ध के विषय में हिन्दू ओर मुसलमान युनिवर्सिटीयाँ एक सी ही होंगी। आप जानते हैं कि, अलीगढ़ की मुसलमान युनिवर्सिटी के सम्बन्ध में जो शर्त्तें की गयीं थीं उन्हें मुसलमान युनिवर्सिटी कमेटी ने नहीं माना है सरकार के सम्बन्ध के विषय में मुसलमान युनिवर्सिटी कमेटी का मूल प्रस्ताव यह था कि, चान्सलर वाइसराय हों और उन्हें देखभाल करने तथा समयपर कार्य्य में हस्तक्षेप करनेका भी अधिकार दिया जाय। पर सरकार ने यह निश्चय किया कि, ऐसा हो नहीं सकता। हम लोगों ने युनिवर्सिटी को यह अधिकार दिया था कि, वह कोर्ट के द्वारा अपना चान्सलर चुन ले पर निरीक्षण और हस्तक्षेप करने का अधिकार भारत सरकार को (Governor General in Council) होगा। इस प्रस्ताव पर उस समय बहुत टीका टिप्पणियां हुई। इस लिये झगड़े का निपटारा करने की इच्छा से भारत सरकार और भारत सचिव ने सब विषयों पर फिरसे अच्छी तरह विचार किया। वे स्वीकार करते हैं कि, भारत सरकार अव्यक्तिगत संस्था है और युनिवर्सिटीयों से बहुत दूर होने के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारण वह उतनी देख भाल नहीं कर सकती जितनी नयी संस्था की देख भाल करने की आवश्यकता है। सब बातों पर तथा टीका टिप्पणियों पर पूर्ण विचार करके भारत सरकार और भारत सचिवने निश्चय किया है कि, युक्त प्रदेश के छोटे लाट उस युनिवर्सिटी के चांसेलर हों, यही सबसे उत्तम व्यवस्था होगी। आपको परामर्श देने और देख भाल तथा हस्तक्षेप करने के भी कुछ अधिकार दिये जायगे। हिन्दू युनिवर्सिटी को यद्यपि बनारस से बाहर के कालेजों से सम्बद्ध करने का अधिकार न होगा, तो भी वह पूर्व निश्चित नियमानुसार भारत भर के विद्यार्थी ले सकेगी और इस दृष्टि से सार्व्वदेशिक संस्था ही होगी। छोटे लाट के चांसेलर होने में एक लाभ यह भी है कि, आप इलाहाबाद युनिवर्सिटी के भी चांसेलर हैं, इस लिये इन दोनों युनिवर्सिटियों का कार्य्य जिस में परस्पर सम्बन्ध हो तथा दोनों में साहचर्य्य बढ़े, इस का भी वे प्रबन्ध कर सकेंगे। इस के अतिरिक्त, भारत सरकार आजकल अधिकार विभाजन की जिस नीतिका अवलम्बन कर रही है, यह प्रबन्ध उस के भी अनुकूल होगा।

(१) निरीक्षण का साधारण अधिकार और यह परामर्श देने की शक्ति कि, अमुक काम किया जाय, अमुक अध्यापक नियुक्त किये जांय और अमुक निकाले जायँ, तथा यदि आवश्यक हो तो इसके अनुसार कार्य्य कराने का अधिकार।

(२) शिक्षा उच्च कोटि की दी जाती है वा नहीं, तथा और कई बातों की जाँच करने के लिये निरीक्षण का अधिकार।

(३) इस जांच से यदि आवश्यक जान पड़े तो विशेष अवसरों पर, युनिवर्सिटी के परीक्षक नियुक्त करना और उनसे रिपोर्ट माँगना।

(४) हर साल का हिसाब देखना।

(५) वाइस—चान्सेलर और प्रावोस्ट की नियुक्ति स्वीकार करना।

(६) उपनियम और उनमें होने वाले परवर्ती परिवर्त्तन स्वीकार करना।

(७) स्थानीय कालेजों का युनिवर्सिटी में मिलाया जाना स्वीकार करना।

(८) सेनेट के लिये पांच मेम्बर नियुक्त करना। और

(९) नये विषय सिखाये जाने का प्रस्ताव स्वीकार करना और यह नियम बना देना कि, इस समय तक युनिवर्सिटी अपना कार्य इससे अधिक न बढ़ावे।

इनमें कई अधिकार ऐसे हैं, जो आप की कमिटी ही देना चाहती है। दूसरे अधिकार ऐसे हैं जो विशेष अवसर के लिये दिये जाते हैं पर जिन का उपयोग कभी नहीं किया जा सकता है अथवा एकाध बार किया जा सकता है। इसका मूलतत्त्व यह है कि, सरकार यूनिवर्सिटी के साथ काम कर सके और उसकी अच्छी तरह सहायता कर सके तथा उसकी आर्थिक अवस्था सन्तोषजनक रख सके, इसी भावी भारतीय नागरी को तथा पिता और अभिभावकों का कल्याण है। इस सम्बन्ध में सरकार, विद्यार्थी और पिता का स्वार्थ अवश्य ही एक है।

आप जानते ही हैं कि, बनारस से बाहर के कालेज सम्बद्ध करने के सम्बन्ध में जो पहले निश्चय किया गया था उसमें परिवर्त्तन नहीं हो सकता। हम लोग उसी समय जानते थे कि, इस से लोग कुछ निराश होंगे। पर मैं यह कहना चाहता हूं कि, युनिवर्सिटी कमिटियों को पहले ही इसकी सूचना दी गयी थी और बाद निश्चय किया गया था। सन् १९११ को २३ वीं सितम्बर को शिमले में मुसलमान युनिवर्सिटी की कान्सट्यूशन कमेटी का एक अधिवेशन हुआ था और उसी में मैंने कमेटी से कह दिया था कि, सम्बद्ध करने का यह प्रश्न शीघ्र ही उपस्थित हो सकता है। जाति विशेष सम्बन्धी विश्वविद्यालय स्थापित होने पर, विशेषकर उनके वर्त्तमान प्रादेशिक सीमा भङ्ग करने पर बहुत टीका टिप्पणी हो चुकी है, अली-गढ़ में युनिवर्सिटी बनाने का प्रधा औचित्य यही बताया कि, यह शिक्ष विश्व विद्यालय होगी, परीक्षक नहीं औ विद्यार्थियों में अलीगढ़ का भाव आ जायगा जो दूसरी जगह नहीं प्रा हो सकता है उसी महीने की २७ वीं क उसका जो अधिवेशन हुआ था उस मैंने इस ओर फिर ध्यान दिलाया दिल्ली के टाऊन हाल में सन् १९११ क ४ थी दिसंबर को मैंने हिन्दू युनिवर्सि टी के सहायकों से भी स्पष्ट कह दिय था कि, बाहरके कालेज सम्मिलित क रने में बड़ी बड़ी कठिनाइयां हैं। ये बातें कहने का कारण यह हैं कि, इस संबन्ध में लोगों में भ्रांत धारणाएं फैल गयी हैं।

सहायकों को सन्तुष्ट करने के लिये यह निश्चय किया गया है कि, युनिवर्सिटी का नाम "बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी" होगा। इसमें प्रवेश करने के लिये धार्मिक परीक्षा की आवश्यकता न होगी और हिन्दुओं के सिवा अन्य धर्मों के युवक भी इसमें पढ़ सकेंगे। हिन्दू धर्मशास्त्र का पठन और तदनुसार कार्य करना केवल हिन्दू के लिये ही अनिवार्य्य होगा। यह साश्रम और शिक्षक युनिवर्सिटी होगी।

ऊपर लिखी शर्तें मानने से पूरी संगठन-नियमावली बनाई जायगी। आशा है, आपकी कमेटी समझ जायगी कि, सरकार और युनिवर्सिटी के हित के लिये ही ये नियम बनाये गये हैं, क्योंकि सरकार का घनिष्ठ सम्बन्ध आवश्यक है। यद्यपि सहायक लोग जितना चाहते हैं उतना यह नहीं है तो भी प्रारम्भ में जिन्हें बहुतेरे असम्भव समझते थे और १९०२ के युनिवर्सिटी कमिशन ने जिन्हें अस्वीकृत किय था, ऐसी बातें इसमें हैं।

यदि कमेटी ये शर्तें मान ले, तो संगठन के नियम बताये जा सकते हैं २६ वीं जुलाई को सर जेम्स मेस्टन इलाहाबाद में रहेंगे और हम लोगों के साथ इन विषयों पर विचार भी करेंगे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत सचिव की स्वीकृति के लिये नियमावली और बिल का खसरा उनके पास भेजना होगा स्कीम तैयार हो जाने पर युनिवर्सिटी को अच्छी आर्थिक सहायता देकर भारत सरकार अपनी सहानुभूति सहर्ष प्रकट करेगी। भारत सचिव, भारतसरकार और प्रादेशिक सरकार का एक ही उद्देश्य है, वह यह कि, इस नवीन कार्य में आप की कमेटी सहायता दे जिसमें वह सफलता प्राप्त करे और भारत में उत्तम शिक्षा का प्रचार हो।

भवदीय

हारकोर्ट बटलर।

हिन्दूविश्वविद्यालय।

सरकारी पत्र पर सहयोगियों की सम्मति।

"ऐसी यूनिवर्सिटी हमें नहीं चाहिये"

"दानी अपना रुपया वापिस ले लें"

—o—

हिन्दू विश्वविद्यालय के विषय में सरकार का पत्र हमने पहिले पृष्ठ पर प्रकाशित किया उसे पढ़ कर सभी देशवासी हताश हुऐ हैं। सभी पत्र इन शर्तों की कड़ी समालोचना कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कई प्रधान संचालकों ने इन शर्तों को मानने में अपनी असम्मति बताई है। कई दानियों ने कहा है कि यदि येही शर्तें रहीं तो हम अपना रुपया वापिस ले लेंगे।

मिसिज़ बैसेंट लिखती हैं—हिन्दू विश्वविद्यालय सरकारी यूनिवर्सिटी के साथ जोड़ दी जायगी और फिर इसके बनाने का प्रयोजन ही जाता रहेगा। इस के सिवा यदि हम इन शर्तों को मान लें तो हम नहीं जानते कि संगठन बनाने के समय हमारे हाथ कितने जकड़े जावेंगे। उस समय से पहिले ही इन शर्तों को हमें अस्वीकार करदेना चाहिये। कम से कम मैं सैंट्रल हिन्दू कालिज जैसी स्वाधीन संस्था को छोटे लाट द्वारा शासित होने के लिये नहीं देती। क्योंकि मैं इसे सर्वसधारण के प्रति विश्वासघात और एक काम के वास्ते रुपया लेकर ऐसे दूसरे काम में लगाना समझती हूँ जिस के लिये दानी कभी रुपया न देते। मैंने इसे विश्वास घात समझ कर ही तार दे दिया है कि मैं सहमत नहीं होसक्ती।

बंगाल के प्रसिद्धनेता और दानी **श्रीयुत रासविहारी घोष**(जिन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय को एक लाख रुपये दिए हैं) ने अमृत बाज़ार पत्रिका के उन वाक्यों के साथ पूरी सहानुभूति दिखलाई है जिस में इन शर्तों पर युनिवर्सिटी को न मानने का प्रस्ताव किया है। वे कहते हैं कि यदि उन्हें पता होता कि जिस विशाल संस्था के लिये उन्होंने तथा उनके देश वासी हिन्दुओंने इतना परिश्रम किया है वह इस तरह जकड़ी जायगी तो एक पैसा दान न देते। यह भी अफ़वाह है कि वे अपना दान वापिस लेलेंगे।

यू. पी के मेधावी नेता **पं० बिशन नारायण धर** जातीय विश्वविद्यालय की जगह सरकार द्वारा जकड़ी हुई यूनिवर्सीटी स्वीकार करने में असमर्थ हैं।

दैनिक **भारत मित्र** लिखता है—यदि इन्हीं शर्तों पर विश्व विद्यालय स्थापन हुआ तो नाम मात्र के लिये वह ग़ैर संस्कारों पर सरकारी से भी गया बीता होगा। सरकार को बेदामों एक गुलामखाना मिल जायगा। युक्त प्रदेशके लाट सहाब बैठे २ हुक्म चलावगे और दरभंगा महाराज, डाक्टर सुन्दरलाल और माननीय मालवीयजी को 'जी हजूर' कहते बीतेगा। हम नहीं चाहते कि इन सज्जनों की ऐसी दुर्गती हो।.....अब हमारी समझ में भारत सरकार को कष्ट न देना चाहिये और जो रुपये विश्वविद्यालय के लिये एकत्र हुए हैं, दाताओं की सम्मति से उन्हें प्राथमिक शिक्षा के प्रचार में लगाना चाहिये। यही सर्वोत्तम मार्ग है। यदि इसके अनुसार काम किया जायगा तो हिन्दू जाति का बड़ा उपकार होगा।

प्रयाग का **अभ्युदय** लिखता है—जो शर्तें बटलर साहबने लगाई हैं उन की समालोचना पूर्ण रीतिसे हम फिर करेंगे किन्तु इतना तो तुरन्त ही कहना आवश्यक जान पड़ता है कि हिन्दू जाति इन शर्तों पर विश्वविद्यालय स्थापित करना कदापि स्वीकार नहीं करेगी।

लाहौर का प्रधान देसी पत्र "देश" लिखता है—एक वाक्य में यह कहना चाहिये कि जिस यूनिवर्सिटी का नाम हिन्दू यूनिवर्सिटी होगा, इस के कर्ता धर्ता तो यू. पी. केलाट होंगे पर उस के चलाने के लिये रुपया और दिमाग़ हिन्दू जाति को लगाना पड़ेगा। हमारी समझ में ऐसी यूनिवर्सिटी को दूर से नमस्कार है। जो रुपया हिन्दू विश्वविद्यालय के लिये संचय होचुका है उसका सदुपयोग हमारे विचार में यह है कि बनारस में या किसी और जगह एक कला कौशल सम्बन्धी विशाल विद्यालय हिन्दू जाति के युवकों के लिये खोलाजाय और हिन्दू यूनिवर्सिटी का पागलपन हिन्दू सिर से निकाल दिया जाय।

बंगाल के प्रधान पत्र **बंगाली** ने बड़े कड़े शब्दों में सरहार काट बटलर के पत्र की समालोचना की है। वह कहता है कि हिन्दू विश्व विद्यालय के संचालकों को यह सोचने का अवसर है कि इस काम को जारी रखने से अब कोई लाभ भी है या नहीं। शिक्षासदस्य के पत्र को पढ़ कर हमारी सम्मति हुई है कि हिन्दू यूनिवर्सिटि सरकारी यूनिवर्सिटि और प्रान्तिक सरकार के हाथ में होगी और इसे अपने मार्ग पर चलते हुए कोई विशेषता उत्पन्न करने नहीं जायगा। जिन लोगों ने हिन्दू विश्वविद्यालय के ही लिये बड़े परीश्रम से धन इकट्ठा किया है, देश को उनका मान करना चाहिये परन्तु हम पूछते हैं कि ऐसी संस्थापर ५० लाख या १ क्रोड़ रुपया खर्च करने से क्या लाभ होगा जिसमें सरकारी यूनिवर्सिटियों से कोई विशेषता न होगी और न जिसे स्वाधीन रूप से चलकर विशेषता पैदा करने दी जायगी।

—o—

कलकत्ते का **अमृतबाजार पत्रिका** ऐसी शर्तों पर विश्व विद्यालय बनाने के सर्वथा विरुद्ध है। उसने डा० रासविहारीघोष को अपना चन्दा हिन्दूविश्वविद्यालय से निकालकर कलकत्ते के विज्ञान कालिज में लगाने की सलाह दी।

लाहौर का **ट्रिब्यून** कहता है कि सरकार इस मानने से पहिले विश्व विद्यालय के संचालकों को सर्व साधारण और दानियों की सम्मति लेना आवश्यक है। सरकार की शर्तें न केवल कड़ी ही हैं परन्तु उनसे भारतीय नेताओं पर सरकार का अविश्वास भी प्रमाणित होता है। इसके साथ मुसलमान यूनिवर्सिटी के संचालकों की सम्मति भी आवश्यक है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रयाग के "लीडर" ने दो लम्बे मुख्य लेख लिखकर सरकार के पत्र की समालोचना की है। वह कहता है कि सरकारी पत्र से लोगों को बड़ी निराशता हुई है। जब तक कुछशर्तों में सुधार नहो और कुछ शर्तें सर्वथा उड़ा न दीजांय तब तक हिन्दू यूनिवर्सिटी वह कभी नहीं बन सकती जिस के लिये लोगों ने इतना उत्साह दिखाया था। सरकारी शर्तों से हिन्दू यूनिवर्सिटी को उतनी भी स्वाधीनता न रहेगी जितनी इस समय उस सैंट्रल हिन्दू कालिज को है जिसके आधार पर यह यूनिवर्सिटी बनने लगी है। लोगों के अन्दर एक बात के लिये इतनी आशा और उत्साह उत्पन्न करके फिर उसे बुझाने का यत्न करना बड़ा भयानक है। "लीडर" आशा करता है कि सरकार ऐसी मूर्खता न करके अपनी शर्तों पर पुनर्विचार करेगी।

प्राप्त

(प्रेषित पत्रोंके मतका सम्पादक उत्तरदाता नहीं)

कुरुक्षेत्र में सूर्य्य ग्रहण

और

वैदिक धर्म का प्रचार

इस आर्य्य (हिन्दू) जाति में कौन ऐसा कठोर हृदय पुरुष है जिसका कुरुक्षेत्र की घटना का स्मरण करते ही हृदय न दहल जाता हो-यह वही-भूमि है जिसमें प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी भीष्मपितामह तथा सत्यवादी युधिष्ठिर भीम और अर्जुन जैसे बली लुप्तहो चुके हैं यह वही क्षेत्र है जिसमें हमारे पूर्वजों का रुधिर शोषण हुआ है। यह वही देश है जो वेदानुयायी पुरुषों को अपने में लीन कर अवैदिक तथा अधर्मी पुरुषों के उत्थान का [illegible] लाने वाला है ऐ आर्य्य पुरुषो यदि आप इस भूमि का अवलोकन करना चाहते हैं वा सुमार्ग से दूर हटे हुए असंख्यात जीवों को उसी वैदिक मार्ग पर ला स्वयं धर्म संचय करना चाहते हैं। एक वार इस अवसर पर अवश्य पधारें और यथा शक्ति उन पुरुषों को सहायता दें जिन्हों ने इस अवसर पर वैदिक धर्म के प्रचार के कार्य्य का भार उठाया है। आर्य्य पुरुषों को यह तो ज्ञात ही होगा कि २१ अगस्त ६ भाद्रपद को सूर्य्य ग्रहण है कई लाख नर नारी स्नान के लिये यहां एकत्रित होते हैं। जिसमें प्रायः सभी देशोंके पुरुष आतेहैं उस समय--

प्रचारक का प्रबन्ध

शाखा गुरुकुल की ओरसेकिया गया है। आये हुए सज्जनों के उतारने के लिए स्थान तथा भोजनादिका और प्रचार के लिये भूमि-खेमें-छौलदारियों का सब प्रबन्ध कर लियागया है अब आवश्यकता है तो केवल यह है

कि (१) योग्य आर्य्य साधु तथा उपदेशक व-भजनीक यहां आकर स्वयं अपने कर्तव्य का पालन करें।

(२) योग्य ४ डाकटर ऐसे चाहियें जो मेले में चक्कर लगा व- औषधालय में बैठ रोगी पुरुषों की चिकित्सा करें

(३) एक चिकित्सिका Lady Doctor आर्य्या चाहिये जो स्त्रियों के लिये दवाई देने का पृथक प्रबन्ध करसके

(४) आठ सेवक तथा दो सेविका इस लिये चाहिये जो रोगी स्त्री व पुरुषों की सेवा में सहायता दें।

(५) १५ ऐसे दृढ़व्रत धारी पुरुषों की आवश्यकता है जो मेले में चक्कर लगा शाखा गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करें।

पधारने का संकल्प करने वाले महा पुरुषों को उचित है कि निश्चयात्मक सूचना अभी से दे छोडें ताकि हम निश्चिन्त हो नियत तिथि पर उनके आने की प्रतीक्षा करें।

विष्णुमित्र

आयुर्वेद की उन्नति।

दिल्ली के आयुर्वेदीय यूनानी तिब्बी कालिज में प्रबन्ध कर्त्ता बहुत विचार के अनन्तर इस सिद्धान्त पर पहुंचे हैं. कि शास्त्रीय आयुर्वेद शिक्षा के साथ नवीन अर्थात् डाक्टरी उपांगों का जानना अत्यावश्यकीय है। अपरंच हिन्दी वा प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में शिक्षा देना वैद्यक शास्त्र के लिये हानि कारक नहीं है, अतः उन्हों ने पाठ्य प्रणाली के विषय में यह स्थिर किया है कि, स्कूल विभाग में जिसका पाठ्य काल ४ वर्ष है, पाठ संस्कृत वा विकल्प से हिन्दी भाषा में भी होगा। परन्तु संस्कृतज्ञ छात्रों को पदवी अधिक होगी।

कालिज विभाग में शास्त्रीय ग्रन्थादि केवल संस्कृत भाषा द्वारा पढाए जाएंगे। और इसका पाठ्य काल ५ वर्ष होगा। निम्न लिखित उपाधियाँ परीक्षोत्तीर्ण छात्रों को दी जाएंगी।

दो वर्ष के अनन्तर "उपवैद्य" की उपाधी मिलेगी। इस में स्वतन्त्र चिकित्सा करने की आज्ञा नहीं मिलेगी।

चार वर्ष के पश्चात् स्कूल विभाग की उपाधी "भिषग्" होगी, परंतु संस्कृतज्ञ छात्रों को "भिषग् वर" की उपाधी दी जायगी।

पांच वर्ष के अनन्तर कालिज विभाग में केवल संस्कृतज्ञ छात्रों को "भिषग् शास्त्री" की उपाधी मिलेगी। इस के अनंतर भी "पोस्ट ग्रेजुएट" कोर्स का प्रबंध रहेगा। जिस में एक, एक वर्ष में "कार्य चिकित्सा" शाख चिकित्सा तथा द्रव्य गुण विद्या की विशेष शिक्षा दी जायगी। इन की उपाधियां यथाक्रम, यह होंगी-"भिषगाचार्य", "शल्य चिकित्सक्" द्रव्य गुण विशारद"। तीनों उपाधियों के प्राप्त करने से "आयुर्वेदाचार्य" की उपाधी मिलेगी। अतः सम्पूर्णायुर्वेद शिक्षा के लिये ८ वर्ष की आवश्यक्ता है। यह कालिज अपने छात्रों को १, २, वा ३ वर्ष के अन्दर "वैद्यराज वैद्यरत्न, आयुर्वेदकुल "भूषण" आदि बड़ी २ उपाधियों से भूषित करके आयुर्वेद की अवनति नहीं करना चाहता जो विद्यार्थी कि ४ पांच वर्ष तक गुरु मुखसे आयुर्वेदाध्ययन नहीं करता, वह केवल "शतमारी' वा "सहस्रमारी" उपाधी प्राप्त करने योग्य है। अतः यावतीय आयुर्वेद संस्थाओं से प्रार्थना है कि वह ४ वर्ष से कम स्वतन्त्र काम करने का आज्ञा पत्र न दें। नहीं तो १ दिन इस प्रकार उपाधी वितरण पर गवर्मेंट की दृष्टि पड़ेगी, और आयुर्वेदोन्नति में हानि कारक होगी।

विनीत

अध्यक्ष डाक्टर वी. के. मित्र

देहली

घूंघट का दोष

"गत सप्ताह नसीराबाद में एक कल्पित खेल हुवा था। एक वैश्य ने अपनी स्त्री से कहा 'खबरदार' तमाशा देखने मत आना' उसने तमाशे में स्त्रियों की तरफ अपनी नज़र दौड़ाई तो एक स्त्री उसकी स्त्री के जैसे कपड़े पहने हुए और घूंघट काढ़े हुए दिखाई दी, वह गुस्से में उसके पास गया और उसे मारने लगा। जब उसने देखा कि वह दूसरी स्त्री है तो पश्चाताप किया और हाथ जोड़कर क्षमा मांगी। तमाशा स्त्री पुरुषों को आचरण बिगाड़ने वाला था इससे उसने अपनी स्त्रीको मना किया था पर खेद है कि खेल को बुरा जानते हुए भी बहुत से पुरुषों ने अपनी औरतों के लिये सब,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

=धज के बैठाने का बंदोबस्त किया। ऐसे मूर्खों को परमात्मा कब बुद्धि देगा॥

विद्यार्थी हरसुखराय नागोरी
नसीराबाद

इनाम

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने २४०) का पारितोषिक उस लेखक को देना स्वीकार किया है जो संवत् १९७१ में वैदिक धर्म पर आर्य्य भाषा (हिन्दी) में सब से उत्तम पुस्तक लिखे और प्रकाशित करे। ऐसे ग्रन्थ कर्त्ताओं को जो इस पारितोषिक के मुकाबलामें सम्मिलित होना चाहें अपने २ पुस्तक की दो प्रतियां सभा के दफतर में १-५-१५ तक भेज देनी चाहिये। इस मुकाबला में किसी प्रान्त की भेद नहीं॥

भवदीय

कृष्ण मंत्री सभा

मात्राओं का स्थानान्तर

हिन्दी मात्राओं के स्थानान्तर और रूपान्तर करने का आजकल बांदा में एक नया विचार पैदा हुवा है। और वह इस वास्ते कि नवीन मात्राओं में जहांतक बिचारा गया है किसी प्रकार का द्वेष नहीं आता, बल्कि फायदा और आसानी ज्यादा दिखाई देती है (१) नवीन मात्राओं का प्रयोग करने से कागज बहुत कम लगता है (२) समय की भी कुछ बचत होती है (३) नवीन मात्रा लिखने में आसान मालूम देती है (४) किसी पंक्ति में ऊपर नीचे मात्राओं की टाँगें न फैलने के कारण से हर एक पंक्ति बिलकुल बराबर और एकही सतर पर बहुत ही खूबसूरत दिखाई देती है। मात्रा इतनी सहज और निर्दोष बनाई गई है कि हरएक जन अपने कागज और समय को बचत के वास्ते सिर्फ एक घंटे में सीख कर हमेशा के लिये फ़ायदा उठा सकेगा अभी इन मात्राओं पर बिचार करने के लिये पुनः एक बिचार सभा शीघ्र होने वाली है।

पं० भगवत प्रसाद उपदेशक
बांदा

देहली समाचार

देहली मियुनिसिपलटी की नई आज्ञा— देहली की मियुनिसिपलटी ने पंजाब मियुनिसिपल एक्ट ३ सन् १९११ धारा १४२के अनुसार आज्ञा पत्र निकाला है कि हैज़ा, ताऊन, चेचक, खसरा, गलेका रोग, दिक, लाल बुखार आदि के रोगीयों को सिविलसर्जन या असिस्टन्ट सर्जन, हेल्थ आफिसर या असिस्टन्ट हेल्थ आफिसर की आज्ञानुसार पहाड़ गंज के हस्पताल में जाना होगा जो इस के हीनिमित है। जो इन की आज्ञा का भंग करेगा वह मियुनिसिपल एक्ट धारा १४२क अनुसार अपराधी समझा जायगा और इस पर अपराध साबित होने पर ५०) तक दंड दिया जा सकता है। म्युनिसिपल की इस आज्ञा से कुछ लोगों में अशांति के चिन्ह दिखलाई देतेहैं कारण कि अधिक जन संख्या ऐसी निकलेगी जो अपने पुत्र पुत्रियों को हस्पताल में नहीं भेजना चाहती और उस को अपना अपमान समझती है।

देहली में ट्राम की शिकायतें— देहली में आज कल ट्राम गाड़ी के संबंध में कई प्रकार की शिकायतें सुनने में आरही हैं जिन में मुख्य यह हैं कि ट्राम चलाने वाले गाड़ी को स्टेशन पर भी प्रायः रोकते नहीं किन्तु धीमी करदेते हैं और कि बड़े २ बाज़ारों में जहां पर लोगों की भीड़ रहती है बहुत दोड़ाकर चलाते हैं। यदि कोई रास्ते में बैठना चाहता है तो भी खडी नहीं करते इत्यादि। इन्हीं कारणों से देखा जाता है कि कभी कोई मनुष्य कुचल गया कभी गाय कुचल गई कभी कुत्ताकुचल कर मरगया। यह शिकायत तो ट्राम चलाने वालों के संबंध में हैं किंतु दूसरी ओर ट्राम चलाने वाले यह कहते सुनाई देते हैं कि हम क्या करें, हमें जितनी देरमें चक्कर लगाने की आज्ञा है हम उसे पूरी किया चाहें अन्यथा हमपर सख्ती होती है।

कई बार पत्रों में इस के संबंध में लिखा जाचुका है किंतु हमें ज्ञात होता है कि ट्राम के आफ़िसर तथा म्युनिसिपलटी कुछ ध्यान नहीं देती अन्यथा शिकायतें नहीं हो सकती। हमें आशा है कि अब भी म्युनिसिपलटी तथा ट्राम के अधिकारी इस ओर ध्यान देकर इन शिकायतों को दूर करने का यत्न करेंगे।

देहली में तीजों का मेला। देहली में तीजों का मेला झंडेवाले कुवां पर होता है यह स्थान एक रमणीक पहाड़ी पर स्थिर है। यहां पर देवी तथा शिवजी इत्यादि कई देवताओं का मंदिर है और कुछ विद्यार्थी संस्कृत विद्या का अध्ययन भी किया करते हैं। इस स्थान पर वर्ष में कई मेले होते हैं। सुना जाता है कि पहिले प्रत्येक मेलेपर यहां पर वेश्या का नाच भी होता था परंतु गत वर्ष कई सज्जनों के अनुरोध करने पर इस के प्रबंधकर्ता म० रामजीदास बज़ाज ने यह प्रतिज्ञा की थी कि भविष्यमें इस स्थान पर वेश्या का नाच न हुआ करेगा। इस प्रतिज्ञा का अनुकरण करते हुए इस वर्ष पवन परोक्षा के मेले पर वेश्याका नाच नहीं हुआ था। किंतु तीजों के मेले में जो २५ जुलाई को हुआ उस में वेश्या का नाच कराया गया और यह वेश्या का नृत्य उसी पवित्र वेदी पर किया गया जहां पर बैठ कर ब्रह्मचारी वेदों का पाठ किया करते हैं। (प्रेमी)

रौनकराम का मामला

गोला गोकर्णनाथ ज़िला खीरी

आज ता० २०-७-१४ को इस समाज के साधारण साप्ताहिक अधिवेशन पर महाशय रौनकराम, व महाशय विश्वम्भर दत्त की पटियाला रियासत में, "खालसा पन्थ की हकीकत" पुस्तक रचने के अपराध में गिरफ्तार किये जाने का समाचार प्रकाश व आर्य्यमित्रादि नामक पत्रों में पढ़ागया और सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये गये।

हम लोग महशय रौनकराम व महाशय विश्वम्भरदत्त की गिरफ्तारी पर शोक प्रकट करते हैं। और महाराज साहब पटियाला व गवर्नमेन्ट पञ्जाब व हिन्द से प्रार्थना करते हैं कि महाशय रौनकराम व महाशय विश्वम्भर दत्त को किसी निर्पक्ष अदालत के समक्ष विचारार्थ पेश किया जाय या कृपा करके उनको छोड़दिया जाय। और इसकी एक २ कापी श्रीमान् महाराजा साहिब पटियाला, गवर्नमेन्ट पंजाब व हिन्द की सेवा में और अंग्रेजी तथा उर्दू समाचार पत्रों को छापने के अर्थ भेजदी जाय।

कसूर

आर्यसमाज कसूर ने अपने खास जलसे में निम्नलिखित रेजोल्यूशन पास किये।

(१) आर्यसमाज कसूर का यह खास जलसा लेडी हारडिंज साहिबा की वेवक्त मौत पर अफ़सोस ज़ाहर करता है। और जनाब वाइसराय साहिब के साथ उनके इस रंज में दिली हम दरदी का इज़हार करता है।

२. ला० हंसराजजी की धर्म्मपत्नी श्रीमती ठाकर देवी जी की मृत्यु पर अत्यंत शोक प्रकट करती है। और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह मृतक की आत्मा को और उनके परिवार को शान्ति प्रदान करें।

३. आर्यसमाज कसूर मास्टर रौनकराम व महाशय बिश्वम्भरदत्तजी की गिरफ्तारी पर इज़हार नाराज़गी करती है। और श्री महाराजा पटियाला से प्रार्थना करती है कि वह इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय में शीघ्र ध्यान देकर म० रौनकराम जी के साथ इन्साफ का वरताव करके उनकी तकलीफों को दूर करें।

४. समाज म० रौनकराम जी के पुत्र की मृत्यु पर जो कि उनकी गैरहाज़री में हुई इज़हार अफ़सोस करता है। और उनके परिवार से हमदर्दी करती है।

५. म० रौनकराम के वारे में समाज की ओर से फिहरिस्त चंदा खोली गई है। और रुपया डिफेंस कमेटी को भेजा जावेगा।

—

नाहन

(१) म० हीरालाल जी मंत्री ने प्रस्ताव किया और महाशय दीवानचन्द्र जी कोषाध्यक्ष ने अनुमोदन किया कि इस समय पटियाला राज्य में महाशय रौनकराम जी तथा म० विश्वम्भर दत्त जी के ऊपर "ख़ालसा पंथ की हकीकत" नामक पुस्तक के विषय में जो न्याय विरुद्ध कार्य्यवाही होकर कठोर और अनुचित वर्त्ताव हो रहा है उसपर यह समाज अत्यन्त शोक प्रकट करती है और इस धर्मकार्य्य में जो उक्त दोनों महाशयों को कष्ट हो रहा है उसपर उनके साथ पूर्ण सहानुभूति प्रकट करती है।

(२) महाशय रामानंद जी ने प्रस्ताव किया और कुंवर बहादुरसिंह जी प्रधान ने अनुमोदन किया कि प्रस्ताव सं० १ की प्रतिलिपि सद्धर्म प्रचारक, भारत सुदशाप्रवर्त्तक, प्रकाश, देश, और दीपक समाचार पत्रों में भेजकर छापने की प्रार्थना की जाय।

(३) महाशय हीरालालजी ने प्रस्ताव किया और मुजफ्फरगढ़ के महाशय रामचंद्रजी उपप्रधान ने अनुमोदन किया कि "ख़ालसा पंथ की हक़ीकत" नामक पुस्तक की कुछ कापियां इस समाज में मंगाई जाकर वितीर्ण की जावें जिस से कि सर्व साधारण पर सत्या सत्य प्रकट हो जावे। और यह कि इस प्रस्ताव को भी प्रतिलिपि उपर्य्युक्त समाचार पत्रों में छपने के लिए भेजी जावे।

हीरालाल मंत्री
आर्य्य समाज
नाहन

—

मुज़फ्फरगढ़

रियासत पटियाला ने जो अभियोग म० रौनक राम जी पर सिखों के पुस्तकों के उत्तर में एक पुस्तक लिखने के कारण चलाया है– और उक्त म० को कारागार में भेज दिया है यह केवल सिख रियासत ने सिखाशाही की है–जिसका शोक है–महराजा जी पटियाला से प्रार्थना है कि जिस प्रकार पहिले अभियोग में आपने न्याय किया था अब भी अपने राजधर्म्म को समझिये। श्री० लाटसाहिब बहादुर को इस ओर विशेष ध्यान देकर रियासती गड़बड़ तथा नियम विरुद्ध बात का पूर्णतया प्रबंध कर अपनी आर्य्य प्रजा का धन्यवाद लेना चाहिये इस अवसर पर आर्य्य समाजों तथा आर्य्य जनता को तन मन धन से उक्त सत्य वक्ता महां० की सहायता करनी चाहिये और आर्य्य डिफेंस कमेटी को भी अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिये।

लेखराम मंत्री

—

मेरठ छावनी

Resolved that:—

(1) The officials and members of the Arya Debating club, Meerut Cantonment, assembled in a public meeting, express their indignation and abhorrence at the great trouble given to mahashey Rounak Ram of Patiala Police officers as reported in the papers for an alleged contempt of the Sikh Religion and respect fully request the Maharaja of Patiala to intervene and do justice to Mahashey Rounak Ram, and to give him a fair and legal trial.

(2) The Club further most respectfully requests His Honor the Lieutenant Governor of the Punjab to kindly order an independent enquiry to be held in the matter, for it is a second time that the Arya Samajists are being put to trouble in thisSikh State.

(3) A copy of the above resolutions be sent to His Excellency the Viceroy & Governor General of India, Lieutenant Governor of the punjab, Maharaja Saheb of Patiala, Political Agent of Patiala State, and the Tribune, Leader & other papers.

—

क्वेटा

अन्तरङ्ग सभाआर्य्य समाज क्वेटा ने अपने १ जुलाई के अधिवेशन में निम्न प्रस्ताव पास किये।

(१) देश लाहौर ता० २६जून सं०१४ मास्टर रौनक राम की गिरफ्तारी के विषय उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि महाशय रौनक राम जी ने सिक्खों की ओर से ट्रेक्टनियोगादि कई एक अत्यन्त असभ्य तथा दिल दुखाने वाली पुस्तकों के उत्तर में आर्य्य समाज की रक्षा के लिये खालसा पंथ की हकीकत नामक पुस्तक लिखी थी जिसको छपे हुए अनुमानिक १ वर्ष होगया है। आर्य्य समाज क्वेटा आर्य्य डिफेन्स कमेटी लाहौर की सेवा में बल पूर्वक प्रार्थना करती है कि वह कृपा करके शीघ्र इस मामले को हाथ में लेकर वकील इत्यादि नियत करें और मास्टर रौनक राम की सहायता का पूर्ण प्रबन्ध करें क्योंकि यह आर्य्य समाज का मुशतरका काम है।

(२) निश्चय हुआ कि उपरोक्त प्रस्ताव की एक कापी सेवा में श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा लाहौर सूचनार्थ तथा एक एक कापी, प्रकाश, देश, आर्य्यगज़ट और सद्धर्म्म प्रचारक को प्रकाशनार्थ भेजी जावे।

ठाकुरदास शर्मा
मन्त्री आर्य समाज क्वेटा

—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समाचार

"नागरी लिपि पुस्तक"– हमें यह सुन कर हर्ष हुआ कि श्रीयुत गौरी शङ्कर भट्ट की नागरी लिपि पुस्तक का ५ वां और ६ ठा भाग गुरुकुलीय पाठ्य पुस्तक समिति के २७–३–७१ के अधिवेशन में स्वीकृत किया गया। ५ वां भाग पञ्चम और षष्ठ श्रेणी के लिए तथा ६ ठा भाग सप्तम श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए निश्चित हुआ है। ये दोनों पुस्तकें मध्य-प्रदेश के डाइरेक्टर साहब ने भी स्वीकार की हैं।

"खंडेलवाल हितैषी"–कचहरी घाट आगरा से लाला राधावल्लभ जी वकील शीघ्र ही एक खण्डेलवाल जातीय मासिक पत्र निकालने वाले हैं। वार्षिक मूल्य १) रु० है। सरकार से आज्ञा मिल गई है। जातिहितैषियों को ग्राहक बनना चाहिए।

ब्रह्मा में नया समाज— ब्रह्मा के ऐनाज्राव नामक स्थान में गत जून मास की १४ तारीख को एक आर्यसमाज की स्थापना होगई। सभा के कार्यकर्ता इस प्रकार हैं—सभापति श्रीमान् राना साहब बैजनाथ सिंह जी, उप सभापति बाबू प्रयाग सिंह जी, मन्त्री बाबू अमरेश सिंह जी, उपमन्त्री और पुस्तकाध्यक्ष लाला हेमलाल जी, कोषाध्यक्ष बा० श्रीराम जी, उपदेशक पंडित अयोध्या प्रसादजी शर्मा व पंडित रघुनन्दनप्रसाद जी शर्मा।

सभा स्थापना—श्रीयुत ब्रह्मचारी चन्द्रमणि जी के उद्योग से गुरुकुल मुलतान में आर्यसमाज स्थापन होगई। अधिकारी इस प्रकार चुने गये,—प्रधान श्री पं० चन्द्रमणिजी, उप प्रधान पं० रलारामजी, मन्त्री मास्टर ज्ञानचन्द्रजी, उप मन्त्री मास्टर गोपालदासजी। लग भग १६ सहायक भी बन चुके हैं।

भारतीय साहित्य दर्पण:—दारागंज, प्रयाग से पं० सिद्धिनाथ दीक्षित सूचित करते हैं कि वेउक्त नाम की एक बड़ी पुस्तक लिखने वाले हैं। पुस्तक हिन्दी साहित्यकी डायरी होगी। इस में ग्रन्थकारों, पुस्तक विक्रेताओं, पुस्तकालयों समाचार पत्रों और देशी कारबारों का पूर्ण परिचय रहेगा। दीक्षित जी का विचार प्रशंसनीय है, ग्रन्थकारों लेखकों, पत्र प्रकाशकों सभाओं और पुस्तकालयों के संचालकों को अपने २ काम की सूचना भेज के दीक्षितजी की सहायता करना आवश्यक है।

आर्य निबन्ध माला:—उर्दू प्रधान पंजाब प्रदेश के मुख्य शहर अमृतसर में मातृ भाषा हिंदी का "आर्य निबंध भण्डार अमृतसर" नामक एक पुस्तकालय स्थापित हो चुका है। इस भंडार से अब एक "आर्य निबन्ध माला" नामक मासिक पुस्तक शीघ्र ही निकलने वाली है। मासिक मूल्य १) रु० होगा। उर्दू के स्थान में अपनी मातृ भाषा हिंदी द्वारा वैदिक साहित्य का प्रचार चाहने वाले भाइयों को ग्राहक होना चाहिए।

आर्य मित्र सभा—भरतपुर का वार्षिकोत्सव आगामी २७ २९ तथा ३० अगस्त को बड़े समारोह से होगा। विद्वान उदेशकों व भजन मंडलियों के आने की सूचना है। सब भाइयों को पधार के उत्सव की संवर्द्धना तथा लाभ उठाना चाहिए।

आर्य कुमारसभा सहारनपुर—का वार्षिकोत्सव आगामी अक्टूबर की ता० १७, १८ और १९ को आर्य समाज मंदिर सहारनपुर में बड़े धूम धाम से होगा। पहिले दिन सन्ध्या को नगर कीर्तन होगा आर्य बन्धुओं को सम्मिलित होने के लिए तैयारी करनी चाहिए।

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा को अधिक बिक्री देखकर हमारी कासा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दुसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शुल, संगृहणी, अतिसार, पेट का दर्द, जी मचलाना, कमर का दर्द रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है, कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता–सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादीका दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:–

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी

जामीर जिला गया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेम ! प्रेम !! प्रेम !!!

हिन्दी भाषा में विद्या विषय का

एक मात्र साप्ताहिक पत्र

यह सर्वाङ्ग सुन्दर साप्ताहिक पत्र भी प्रेम महा विद्यालय वृन्दावन जिला मथुरा से प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित होता है। यह पत्र अनेक देशों के नवीन आविष्कार इन्जिनीयरिङ्ग, साइन्स कृषी विद्या, बनविद्या, शिल्पविद्या, औद्यौगिकविद्या, तथा विविध विषय और नवीन नवीन समाचारों से परिपूरित रहता है यह पत्र विद्यार्थी व्यापारी कृषक कारखाने वाले, शिल्पकार और सर्वसाधारण के पढ़ने के लिए ही नहीं वरन उनको उक्त विषयों में शिक्षा देकर लाभ पहुंचाने के लिये बहु मूल्य रत्न है इतने पर भी मूल्य केवल २) वार्षिक है नमूना मुफ्त मंगाकर देख लीजिये।

मैनेजर प्रेम—वृन्दावन

बिना मूल्य ! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री

अलीगढ़ सिटी. यू. पो.

श्री० प्रो० बालकृष्ण, एम. ए.

की रचित अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये जो पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखाने वालों से $\frac{1}{4}$ कीमत ली जावेगी।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है)।)
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं ? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज प्रणाली छप रही है। ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द बाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश संग्रह ।=)
प्रार्थना पुस्तक ।=)
ओंकार की उपासना ।=)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।)
वेद और महाभारत के उपदेश ।)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)॥
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ।)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालें समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर

आर्ष ग्रन्थावली

लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे की शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पताः

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी

हरद्वार।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव

कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) वड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुकसेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० छाप =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

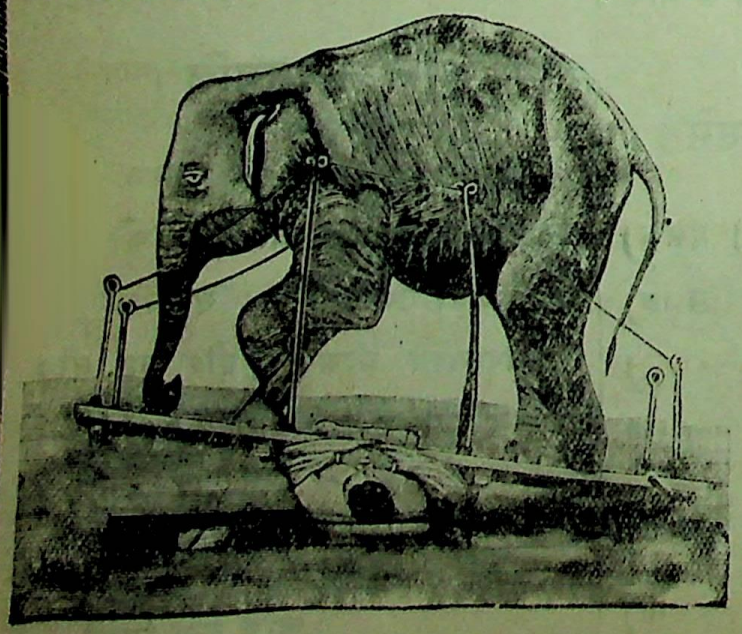

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, विक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

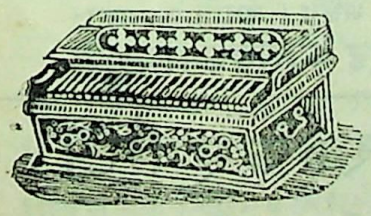

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च -) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० -)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का कलम (पेड) अपने बा में लगाना चाहतेहों तो आज ही ए कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रा

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल २) इस ग्रन्थ में कौरवों पांडव की लड़ा नीती, धर्म्म चारों वरणों के धर्म्म वर्ण हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४८० पृ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पा पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनि फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दवा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (ड)

चान्द--जि० जारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है।। **ब्राह्मी बूटी बटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगतविख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप का धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये- डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी ॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पँ० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

महात्मा मुंशीराम जी !

विज्ञान कल्पतरु के विषय में लिखते हैं:—मैं इस पुस्तक माला को आर्यभाषा भाषी आर्य जनता के लिये बहुत उपयोगी समझता हूं। मेरी सम्मति में यदि प्रत्येक आर्य्यसमाज इस की एक एक प्रति खरीदना स्वीकार करले तो ऐसा समयोपयोगी ग्रन्थ छप कर स्वदेश को बहुत लाभ पहुंचा सकता है। यदि मेरे पास धन होता तो मैं आपका हाथ बटाने का कुज प्रयत्न करता अब केवल आप की कृतकार्यता के लिये मङ्गल इच्छा ही प्रकट कर सकता हूं। विज्ञान कल्पतरु में प्रत्येक वस्तु के बनाने की कृयायें धन कमाने के अनेक ढंग, विज्ञान (साईन्स) सम्बन्धी तथा वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक बात का पूरा पूरा वर्णन चित्रों सहित किया गया है। ग्रन्थ बड़ा होने में १०० पृष्ठ मासिक में छपता है और स्थाई ग्राहकों को ॥) प्रति अंक डाक व्यय सहित दिया जाता है अन्यों को प्रति अङ्क ।॥) में

मैनेजर जनरल पबलिशिंग कंपनी मेरठ

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ान का साबुन-बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता-

शर्मनऐंड कं. सतघड़ामथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय दहलीमें मुद्रित व प्रकाशित

Registered No. 807.

सद्धर्म प्रचारक

[illegible]

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | २४ श्रावण सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ६१] ता० ८ अगस्त १९१४ | संख्या १७ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य	१॥)
प्रचारक के ग्राहकों से	१।)
सजिल्द का मूल्य	१॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक [illegible] कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिस ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सारे गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।

मानदल

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता औ[illegible] से भरी हुई है। आप हमारे इस उपन्यास को अपनी [illegible] लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फांस [illegible]

[illegible] राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ!

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक	=)	प्र०
तीन मास " " " "	=)	"
छः " " " " "	-)॥	"
सालभर " " " "	-)	"

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ नहीं बंट सक्ता।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारकानाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक	१२)
एकतोले तक	१५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

या दरखो

फसली बुखार वो तिल्ली की दवा

मोल बड़ी शीशी ॥।=)
छोटी शीशी ॥)
डाः ।=) और ।-) आने

अच्छी सलाह।

जाड़ा का बुखार, पारी का बुखार २।३ मौताज ही में बन्द होता है।

३० वर्ष से सारे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध है और सब जगह बिकती है। अधिक प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं है। देखिये इस दवा से यह हड्डी का ठाडर कैसा पुष्ट होगया है

दवा सब जगह हमारे एजेन्ट और दवा फ़रोशों के पास बिकती है।

डा: एस. के. बर्मन [illegible] स्ट्रीट, कलकत्ता। ६८

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी–(शुद्ध व असली) फी तोला २८) रु०

शिलाजीत–सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर–(शुद्ध काश्मीर की जाफराज) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल–६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट–यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेवे।

पता–प्रेमलाल शाह गंगोला
जसमोड़ा यू० पी० हिमालया

आवश्यकता।

एक शरीफ़ ख़ानदान अगर वाल कन्या के लिये ऐसे वर की आवश्यकता है जिस की आयु २२ वर्ष से २८ वर्ष के भीतर हो। ग्रेजुयट हो अथवा बी. ए. में पढ़ता हो कम से कम १००) मासिक आमदनी हो या जायदाद रखता हो। कन्या भाषा लिख पढ़ सकती है हिसाबादि तथा सीना पिरोना ग्रह के कार्य्य में निपुण है आयु १६ वर्ष की है। पत्र व्योहार का पता।

सेठ मिट्ठनलाल अलबेलसिंह
ठेकेदारान फ्रींद स्टेट

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और रुन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता–रामचन्द्र वैद्य शास्त्री
अलीगढ़ सिटी. यू. पी.

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है। मूल्य २॥) डिब्बी डाः मः माफ।

पता:–बो.एल. बूबनाएण्डको०
दिल्ली नं० ३

पीतल के बिरूच

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन॥) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन जाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

पता:–भारत हितैषी–कम्पनी,
अलीगढ़ सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारुणिक-पितृ-प्रार्थना।

(१)

बस अब कही जाती नहीं,
अपनी कहानी आपसे।
सब से पतित हम हो चुके,
बरबाद अपने पापसे॥
बहु बांधि मनसूबे नये,
हम सोचते जाते मता।
पर कर सकेंगे काम कब,
इस का नहीं कुछ भी पता।

(२)

हम यह करें ऐसा करें,
बह चिंतना दिन रात है।
पर हाय अब कैसा करें,
लगती न कोई घात है॥
मन में उठी लहरें सभी,
हा लीन ये हो जायंगी।
कुछ लख नहीं पड़ता प्रभो!
क्या दीनता दिखलायंगी॥

(३)

हम में पराक्रम कुछ नहीं,
तुव भक्ति से भी हीन हैं।
असहाय हैं अरु दीन हैं,
अघ ओघ ही में लीन हैं॥
कुछ भी न करते बन पड़े,
यद्यपि अयोग्य कुमूत हैं।
सारा जगत है जानता,
तो भी तुम्हारे पूत हैं॥

(४)

खोदिबा सर्वस्व अपना,
पड़ अविद्या जाल में।
अब भोगते हैं फल, उसी का
बेहाल से इस हाल में॥
पर दीन बन्धु दयालु हैं,
वे सुधि न छोड़ेंगे कभी।
इन यातनाओं को हटाकर,
मुंह न मोड़ेंगे कभी॥

(५)

अपने भरोसे आप ही,
उठ काम सब करने लगें।
जम जाय जीमें एकता
कुछ भाग भारत के जगें॥
सब बन्धु अपने एक हैं
यह भावना भाती रहै।
सब को मिलायेंगे गले,
यह याद भी आती रहै॥

(६)

वह अभ्युदय हमको मिले,
जैसा कि पहिले प्राप्त था।
वह रक्त नस नस में बसे,
जो पूर्वजों में व्याप्त था॥
उत्साह की बढ़ती बढ़ै,
कारज अधूरे ना रहें॥
बस यही अभिलाष है,
पूरा करें जो कुछ कहें,

कात्यायनीदत्त त्रिवेदी

आत्मिक दृश्य

"आत्म दर्शी प्रसीदति"

संसार में सब से आवश्यक आत्मिक दृश्य अपने आत्मा का दृश्य है। हमारे अपने आत्मा हमारे लिये सबसे अधिक अन्धेरी गुफाओं के समान हैं। उनके विषय में हम कुछ नहीं जानते। औरों की समालोचना करना सहज है, दूसरे के कपड़े पर लगे हुए ज़रा से काले चिन्ह को देखकर हंसलेना कठिन नहीं है, किन्तु अपना दोष किसे दीखता है? जिन्हें दीखता है, वे बहुत विरले और धन्य पुरुष होते हैं। एक लेखक का वाक्य है कि मनुष्य की आत्मा के लिये गुप्ततम रहस्य दूसरे मनुष्य की आत्मा ही है। वह वाक्य केवल एक अंश में सत्य है। दूसरे मनुष्य के आत्मा की अपेक्षा भी गुप्ततर रहस्य मनुष्य की अपनी आत्मा है। तभी तो कहा है कि—

"नरः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति"
"आत्मनो विल्वमात्राणी पश्यन्नपि नपश्यति"

मनुष्य दूसरे व्यक्तियों के सरसों के दाने के समान दोषों को भी बड़े बनाकर देखता है, किन्तु अपने बिल्वफल जितने बड़े दोषों को भी सर्षप समान समझता है, और देखता हुआ भी नहीं देखता। "देखता हुआ भी नहीं देखता" यह कहने में कवि ने मनुष्य पर थोड़ा सा अधिक दोष डाल दिया है, क्योंकि वस्तुतः सौ में से ४० स्थानों पर अपने दोषों को देखता ही नहीं।

× × × ×

मनुष्य अपने स्वरूप को क्यों नहीं देख सकता? इसका कारण ढूंढना कठिन नहीं है। मनुष्य चाहता है कि सब को जाने और सब की आलोचना करे। दूसरों के विषय में जब तक वह थोड़ा बहुत परिश्रम न करे उसे कुछ ज्ञान नहीं हो सकता। अपनी इच्छा पूरी करने के लिये वह परिणाम करता है, और कुछ न कुछ सच झूठ जान ही लेता है। वह अपने जानने की भी इच्छा रखता है किन्तु वह अपने आप को अपने इतना समीप समझता है कि उसके जानने के लिये किसी प्रकार के यत्न की आवश्यकता उसे प्रतीत नहीं होती। वह सदा यह समझ कर सन्तुष्ट रहता है कि मुझे अपने विषय में सब कुछ ज्ञात है। यह मिथ्या विश्वास ही उसे अंधेरे में रखने का हेतु होता है। यदि उसे यह ज्ञात होजाय कि अपना आत्मा भी मनुष्य के लिये वैसी ही गहरी समस्या है, जैसी दूसरे का आत्मा तो फिर कभी वह अपने विषय में इतना अज्ञान न रहे। धर्म ग्रन्थों में आत्मदर्शी सबसे बड़ा योगी कहा है।

× × × × ×

दोनों समय सन्ध्या का करना दो कारणों से आवश्यक है। प्रातः सायं ज्ञान और शान्ति के भण्डार अपने स्वामी को मिलाने का अवसर पाना उनमें से पहला है। उसका दूसरा कारण अपने आपको और अपनी अवस्था को पहचानने का समय पाना है। जो व्यक्ति केवल आँखें बन्द करके बैठना ही सन्ध्या समझता है, वह अभी अंधेरे में है, और जो केवल मन्त्र पढ़ने में ही सन्ध्या की समाप्ति समझता है, वह उससे भी अधिक अँधेरे में है। सन्ध्या का वास्तविक प्रयोजन आंखों का बन्द करना या मंत्र पढ़ना नहीं है, बल्कि परमात्मा का ध्यान करते हुए अपने स्वरूप और अपनी दशा को देखने का यत्न करना है। जिस व्यक्ति ने इन कामों को न करके केवल संध्या के मन्त्रों का जाप कर लिया, उसने संसार को भी धोखा दिया, और परमात्मा के साथ अपनेआप को भी धोखा दिया। दोनों समय अपनी अवस्था पर विचार करके, उसे उत्तमोत्तम बनाने के साधनों का सोचना और अपने जीवनों पर घटाना, यही सन्ध्या के दो प्रधान उद्देश्यों में से एक है। जो इसे नहीं करता, वह किसी प्रकार की उन्नति की आशा नहीं कर सकता। इसी लिये स्मृतिकार ने कहा है—

योऽन्यथा सन्नमात्मान मन्यथा प्रति पद्यते।
किन्तेन नकृतम्पाप म्मूढेनात्मापहारिणा।

जो मनुष्य अपने अन्यथा रहते हुए आत्मा को अन्यथा समझता है, आत्मा का अपहार करने वाले उस मूर्ख मनुष्य ने कौन सा पाप नहीं किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति।

रौनक राम और आर्यसमाज

ढ़ता और सहनशीलता-ये दो ही हैं, जो मिलकर शहादत के नाम से रे जाते हैं। जो लोग धर्म पर बलि ते हैं, उनकी यह दो ही विशेषताएं ी हैं। ऋषि दयानन्द के जीवन का र्यसमाज को क्रियात्मक यही उपदेश कि अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहो। र यदि उस दृढ़ता के लिये सांसारि- ुख और ऐश्वर्य तो क्या शारीरिक को भी अर्पण करना पड़े तो सहन । ऋषि दयानन्द ने अपने जी- से यह दिखा दिया था कि वे सहन ने को धर्म समझते हैं, आक्रमण करने नहीं। जहाँ तक सत्य और झूठ में ेक करने का प्रश्न है, आर्य समाज ी किसी से नहीं डरता, और ऋषि के ण चिन्हों पर चलता हुआ निर्भी- होकर अपने सिद्धान्तों के अन्य सि- ों को गौरव स्थापित करता है। इस वह कभी टल नहीं सकता, क्योंकि ापना दिन से ही वह विचारों की तन्त्रता का पक्षपाती रहा है। अपनी मति प्रकाशित करने को हर एक को धिकार है। इसके बिना मनुष्य सृष्टि ी उन्नति और सुधार के मार्ग पर नहीं ा सकती।

आर्य्यसमाज विचारों की स्वतन्त्रता केवल अपने लिये ही नहीं मानता, रों के लिये भी फैलाता है। धर्म षयक वाद विवाद में आज तक आर्य्य- ाज के किसी भी सभासद् ने पुलिस कचहरी के हथियारों का आश्रय नहीं या। और अपने से विरुद्ध सिद्धान्त र- ने वालों का मुंह सांसारिक शक्तियों का ासरा लेकर कभी बन्द करना नहीं चाहा षि दयानन्द के हार्दिक भाव और क्रि- ात्मक शिक्षा को आर्यसमाज इतनी देर क निबाह सका, इसके लिये उस का क एक सभासद् और सहायक अभि- ान कर सकता है। वह धन्य आर्य- माज के वास्तविक दुर्भाग्य का दिन गा, जिस दिन बलिदान के सब सिद्धा- न्तों को भूल कर आर्य समाजी लोग कचहरी और पुलिस की सहायता से अपने से भिन्न मत वालों के मुंह बन्द किया करेंगे। दृढ़ता और सहन शक्ति और दूसरे शब्दों में बलिदान — ही एक मात्र ऐसा विमान है, जिस पर चढ़ा रह कर आर्यसमाज सदा ऊंचा सिर रख सकता है।

आज सारा आर्यसमाज पटियाला रियासत को कोस रहा है क्योंकि उसने दो वार निरपराधी आर्यसमाजियों को कष्ट देना चाहा है। हमारी सम्मति में पटियाला रियासत को कोसना बहुत अधिक उचित नहीं है। हमतो भारत वर्ष के और सब प्रान्तों से पटियाले को ही अपने लिये अधिक धन्य समझते हैं। वह स्थान पटियाला ही है, जिसने ऋषि दयानन्द के शिष्यों को दो वार यह अवसर दिया कि वे दिखा सकें, कि अभी तक आर्यसमाज में से ऋषि की शिक्षाओं का सर्व नाश नहीं हो- गया। वह स्थान पटियाला ही है, जिसने इस समय और पहले भी संसार के सामने यह रख दिया कि आर्य्य- समाज में दो दल हैं तो कोई चिन्ता नहीं विपत्ति और चिन्ता के समय वे सब एक हो सकते हैं। क्या इन दो सेवाओं के लिये पटियाला स्टेट हम लोगों के धन्यवाद का पात्र नहीं है।

म० रौनकराम और म० विश्वम्भर- दत्त के साथ पटियाले में व्यवहार किया गया है, वह हम बीसवीं शताब्दि, से उठाकर चार पांच सौ वर्ष पीछे के समय में ले जाते हैं। गत दो शताब्दियों में भारत में यदि कहीं इस प्रकार की अ- न्धाधुन्ध का दृष्टान्त पाया जाता है तो वह शिखाशाही में ही है। बिना वारन्ट दो भले मानसों को गिरिफ्तार करना, बिना कारण बताये उन्हें हवालात में रखना, उन्हें धमकाना भूकों मारना और तंग करना, फिर वकील से उन्हें मिलने तक न देना ये सब कार्यवाहियां भारतवर्ष के परे भी सरहद्दी प्रान्त को छोड़कर अन्यथा कम मिलेंगी। अने- क प्रकार के अत्याचार हुए, सर्व साधा- रण ने उन्हें सुनलिया परन्तु चुप हो रहे उन्होंने कहा पटियाला के महाराजा साहिब को अभी इन घटनाओं का पता नहीं लग रहा इसी लिये यह सब अन- र्थ हो रहा है। किन्तु अब वह भी सन्देह दूर हो गया। महाराजा साहिब की ओर से एक घोषणा निकली है, जिस द्वारा बताया गया है कि म० रौनकराम आदि का मुक़दमा शीघ्र ही चलाया जायगा। हम नहीं कहते कि हमें रिया- सत में न्याय की आशा नहीं, किन्तु यह याद करने से नहीं रुक सकते कि रियासतों के न्यायाधीशों पर रियासती प्रभाव बहुत अधिक पड़ जाया करते हैं। तो भी अभियोग प्रारम्भ होने से हम प्रसन्न हैं इसलिये नहीं कि अब दूध का दूध और पानी का पानी हो जायगा, प्रत्युत इस लिये कि संसार को पता लग जायगा कि पटियाला रियासत की सरकार ने किस आधार पर ऐसी हल चल पैदा क- रने वाली ज़बर्दस्ती की है।

लाहौर से डिफेन्स कमेटी ने कैदियों की अवस्था का ठीक परिज्ञान करने के लिये पं० देवदत्त आयुर्वेदाचार्य को बनोले भेजा था। पं० देवदत्त जी का कथन है कि अपने पहले किये हुए अत्याचारों की राशिको पर्याप्त न समझ कर वहाँ की पुलिस ने उन्हें कोतवाली में धकेलदिया और उन्हें उलटा गिराकर पीठ और चू- तड़ों पर जूतों से मारा, और चालान करदेने की धमकी से बाहिर निकाल दिया। पटियाला स्टेट की सिखाशाही का यह एक और नमूना है।

इस झगड़े में प्राय:सब सिक्ख समा- चार पत्रों ने भाग लिया है, उनमें से एक बड़ी राशि पटियाला स्टेट के इस अमानुषीय व्यवहार के पक्ष में है। हमें पटियाला स्टेट के कर्मचारियों की बेहूदगियों से उतना दुःख और आश्चर्य नहीं हुआ, जितना सिख समाचार पत्रों को उसका पक्ष समर्थन करते देखकर हुआ है। जहां पंजाब की सिक्ख रियास- तों के कर्मचारियों से कम से कम उनकी बड़ी संख्या से कोई व्यक्ति विद्या या समय की अधिक आशा नहीं करता वहां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रों के सम्पादकों के विषय में यह आशा की जाती है कि वे साक्षर होंगे संसार के प्रवाह को जानते होंगे, और पत्र सम्पादन के 'विचार प्रकाशन की स्वाधीनता' नामक पहले सिद्धान्त को अवश्य पहिचानते होंगे। जो बात अश्लील नहीं, सभ्यता से पतित नहीं, और केवल लेखक की राय का प्रकाश है, उसे दबाना विचार की स्वाधीनता को और उसके प्रकाशन की स्वाधीनता को दबाना है। यदि म० रौनकराम एक आर्य न भी होते तो भी हम इसी आधार पर उन्हें निर्दोषी ठहरा कर पटियाला रियासत के व्यवहार को अनुचित समझते। और फिर उस पर जो जो ज़बर्दस्तियां हुई हैं, उन्होंने तवे पर स्याही मलदी है।

अब प्रश्न यह है कि आर्यसमाजियों का इस समय क्या कर्तव्य है? हमें हर्ष है कि जो उनका कर्तव्य है, वह आर्य समाजों ने पहले से ही समझ लिया है, और तदनुकूल व्यवहार भी किया है। उन्होंने विपद्ग्रस्तों की सहायतार्थ धन भेजा है। प्रस्ताव पास किये हैं और सब से बढ़कर आत्मिक बल दिखाया है, जो जेलमें पड़े हुए विचार स्वातन्त्र्य के शहीदों को उत्साहित करेगा। किन्तु यदि इस समय हमारे किये सब यत्न निष्फल भी जांय तो पर्वा नहीं। यदि कैद में पड़े हुए दोनों आर्य पुरुषों को न्याय न मिले तो भी चिन्ता नहीं हमें निरुत्साहित न होना चाहिये और अपनी सारी उपलभ्य उपदेशक सेना को लेकर पटियाला रियासत पर ऐसा धार्मिक धावा मारना चाहिये कि या तो दो आर्य पुरुषों के साथ पाँच सात और सामाजिक पण्डित भी जेलकी हवा खाँय, या रियासत वालों की समझ में आजाय कि दूसरी ओर भी डरपोक नहीं हैं, प्रत्युत जस जस सुरसा बदन बढ़ावा तस तस"

एक अभागी विधवा:—इण्डियन सोशियलरिफार्मर ने एक समाचार प्रकाशित किया है। जो हिन्दू जाति की सोचनीय दशा का एक चित्र हमारे सामने खेंच देता है। समाचार बम्बई का है। एक ११ साल की कन्या का विवाह एक १७ साल के बालक के साथ हुआ। वह बालक वहां के एक कालेज की एफ. ए. क्लास में पढ़ता था। विवाह के समय बालक सब प्रकार से स्वस्थ प्रतीत होता था। दूसरे दिन उस पर प्लेग का आक्रमण हुआ, और तीसरे दिन वह मरगया। कन्या और बालक सारस्वत ब्राह्मण थे। कन्या के पिता ने एक बड़े पंडितजी से व्यवस्था मांगी कि कन्या को विधवा मान लियाजाय या नहीं? पण्डितजी की व्यवस्था के अनुसार कन्या विधवा ठहराई गई, और जिस बेचारी की अभी खेलने कूदने और पढ़ने की अवस्था थी, उसे सोगिन बना कर घर में बिठा दिया गया। क्या हमारे देश की यह दशा बहुत ही सोचनीय नहीं है? क्या वह एक दिन की बधू जन्मभर के लिये दुखिया नहीं करदी गई? यदि उत्तर हां में हो तो इस सारे पाप का भागी कौन है?

रंग का बड़प्पन:—लन्दन की केम्बर आफ कामर्स में व्याख्यान देते हुए एक जर्मनी निवासी धनी यहूदी ने निम्नलिखित वाक्य कहे थे "तीन साल हुए जब मुझे रायल आफरीकन सोसाइटी का अतिथि बनने का सन्मान प्राप्त हुआ था। उस प्रसिद्ध सभा के सब सभासद इस में सहमत थे कि रँगदार जातियों के साथ व्यवहार करने में सब गोरी जातियोँ को एक होना चाहिये, और कि उन जातियों का गौरव रँग के ही दबाव पर है, और कि यदि एक भी गोरी जाति के दबाव में भेद आयगा तो सब गोरी जातियों को उससे हानि पहुंच सकती है।" क्या यह रंगदार जातियों के विरुद्ध गोरी जातियों की गुप्तमन्त्रणा की घोषणाँ नहीं, और उसपर भी आनन्द यह है कि वह घोषणा सारी दुनिया के सामने? क्या ये गोरे रँग वाले अभिमानी मनुष्य शरीरधारी प्राणी यह समझते हैं कि इनकी इन गुप्त मन्त्रणाओँ को कोई नहीं सुनता? अगर और कोई भी नहीं सुनता तो हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि वह जो सँसार का स्वामी है जिसने सबको बनाया है, और सब का पालन करता है, वह इनकी इन गुप्त मन्त्रणाओँ को सुनरहा है उस न्यायकारी और निर्बल विपत्ति हारी का कालदंड गुप्त मन्त्रणा करने वालोँ के सिर पर सदा तय्यार रहता है। इस सँसार में न्याय और सत्य का साथ छोड़ कर जो जाति चलती है, उसकी क्षणिक चमक शीघ्र ही लुप्त होजाती है, और जब पापों के भार से भरी हुई उसकी नौका भंवर में पड़ती है, तब न सफेद चमड़ा ही चप्पू का काम देसक्ता है और न भूमि के पश्चिम भाग में रहना। उस भगवान के सामने गोरे और काले रंग बराबर हैं—उसके दरबार में केवल हृदय के गोरेपन का आदर है।

कुतुब की लाठ किनकी है:—प्रयाग के हिन्दुस्थान रिव्यू में लाहौर के ला० कालेजके प्रिन्सिपल म० कंवरसेन एम० ए० ने दिल्ली के समीप बनी हुई कुतुबकी लाठ के ऊपर दो विद्वतापूर्ण लेख लिखे हैं। उन लेखों में उन्होंने इस विषय की खोज की है कि इस लाठ के पिता कौन हैं? लेखक अनेक युक्तियों के पीछे इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि यह लाठ मुसलमानों की बनाई हुई नहीं है। उनसे पहले हिन्दू राजाओं ने ही उसे बनवाया था। कई वर्ष हुए वैदिक-मेगजीन में लिखते हुए श्री महात्मा मुन्शीरामजी ने भी यही परिणाम निकाला था कि कुतुबमीनार बनाई हिन्दुओं ने थी और पीछे से नीली तैमत पहना कर और कुरान की आयतों से उसे सजाकर मुसलमान बनाया गया है। एक निष्पक्षपात दर्शक मीनार पर लिखी हुई आयतों को देखकर मुक्त कंठ हो कह उठेगा कि ये पीछे से लगाई गई हैं, मीनार का अंग नहीं है।

आर्यसमाज और पाश्चात्य प्रभाव—जुलाई के हिन्दोस्थान रिव्यू में म० प्रथमनाथ बी० एस० सी० ने हिन्दू धर्म पर पाश्चात्य प्रभावों का वर्णन करतेहुए लिखा है। कि भारत वर्ष में दोही ऐसी संस्थायें हैं, जो अपने ऊपर पाश्चात्य प्रभावोँ का चिन्ह रखती हैं। वे दोनों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्राह्मसमाज और आर्य्यसमाज हैं। लेखक महाशय के सारे लेख का जो सारांश है, उससे हमें यहाँ कोई प्रयोजन नहीं। इस कथन का हम बड़े बल से विरोध करना चाहते हैं, कि आर्य्यसमाज के उद्भव में किसी पाश्चात्य प्रभाव का भी हाथ है। यह कथन घटनाओं के तथा सचाई के सर्वथा विपरीत है। ऋषि दयानन्द ने किन २ गुरुओं से शिक्षा ग्रहण की, और किन २ से तत्वज्ञान उपलब्ध किया, यह कहना कठिन है, किन्तु इतना हम निश्चित रीति से कह सकते हैं कि उन गुरुओं में से ऐसा कोई न था जो पश्चिम की ज्योति ऋषि में डालता। सारी ज्योति, जिसका उसने प्रकाश किया, पूर्वीय थी। उसमें किसी प्रकार की भी मिलावट न थी। आज आर्यसमाज यदि कभी २ पाश्चात्य प्रभावों के चिन्ह दिखादेता है तो वह उसकी निर्बलता के चिन्ह हैं-और कुछ नहीं। आर्यसमाज पश्चिम के प्रभावों को लेने और पचाने के लिये पैदा नहीं हुआ, बल्कि उनके बुरे प्रभावों को दूर करने के लिये उत्पन्न हुआ है। जो सचाई है, वह पश्चिम की मिलकियत नहीं है, वह सबकी है। उसका ग्रहण हम सचाई समझ कर करते हैं नकि पश्चिम द्वारा स्वीकृत होने से।

मिस्टर गोखले को उपाधि और चार्टर—बांकी पुर का एक सहयोगी लिखता है कि सम्राट् के पिछले जन्म दिनपर सरकारने मि० गोखले को के० सी० आई० ई० की उपाधि से विभूषित करना चाहा था। मि० गोखले ने बड़ी नम्रता से इस सम्मान को अस्वीकृत किया। इस से हमें कोई आश्चर्य नहीं हुआ। हमें आश्चर्य इसी में है कि मि०गोखले जैसा निःस्वार्थ सेवा करने वाला मनुष्य सी० आई० ई० भी कैसे बन गया। भारतीय प्रजा जिस मि० गोखले को सब सरकारी उपाधियों से ऊपर समझती हैं, वे यदि उपाधि लेते आश्चर्य इसी में होता। मि० गोखले को प्रचारक इसी लिये राजनीतिक सन्यासी के नाम से पुकारता है। आपके इस उदारता पूर्ण कार्य से यदि हमारे हिन्दू-विश्वविद्यालय के संचालकों की कार्यवाही की तुलना की जाय, तो कवि का यह वचन स्पष्टतया समझ आजाता है कि "विचित्र रूपाः खलुचित्तवृत्तयः" मि० गोखले पर सरकारी सम्मान पुष्प वर्षा की भाँती पड़ता है. और वे नीचे से सिर सरका लेते हैं, और दूसरी ओर सरकार विश्वविद्यालय के संचालकों को महीनों तक क्या वर्षों तक धैर्य का पाठ पढ़ाती है, उन्हें ड्यो ढ़ियों में बैठा कर प्रतीक्षा करवाती है, और फिर उनमें चार्टर की ऐसी शर्तें पेश करती है, जिनके स्वीकार करने की अपेक्षा विश्वविद्यालय का विचार छोड़देना अच्छा है, और संचालकों को भी साफ इन्कार करते लज्जा आती है। मनुष्य जाति भी किन २ रास्तों से चलना प्रसन्द करती है?

कांग्रेस के सभापति—प्रचारक की सम्मति भारतवर्ष की सहस्रों प्रजाओं के हार्दिक भाव का प्रकाश मात्र है, जब वह कहता है कि कांग्रेस के इस अधिवेशन के सभापति महात्मा गांधी को बनाना चाहिये। यदि कांग्रेस स्वार्थ शून्य देशभक्ति को उत्पन्न करने के लिये प्रचरित की गई है, यदि वह सारे देश के पूज्यदेव को अपना भी पूज्यदेव बनाकर अपने आप को देशका सच्चा प्रतिनिधि सिद्ध करना चाहती है, और यदि वह समाज सेवा के साथ मिले हुए व्यक्तिगत गौरव को कुछ भी मान की दृष्टि से देखती है तो मि० गान्धी से योग्यतर सभापति उसे मिलना कठिन है। हमें आश्चर्य है कि अभी तक किसी प्रान्त की कांग्रेस कमेटी ने मि० गान्धी का प्रस्ताव नहीं किया। केवल एक साल भारत और कांग्रेस का राग अलापने के प्रतिफल में श्रीमती एनी बेसेंट का प्रस्ताव होगया, किन्तु मि० गान्धी का प्रस्ताव नहीं हुआ, यह देख कर किसे विस्मय न होगा? वैसे तो हमारे देश में बड़े २ योग्य व्यक्ति पड़े हैं जो काँग्रेस के मुख्यासन को सुशोभित कर सकते हैं, किन्तु इस वर्ष का नायक गान्धी ही है। उस की उपेक्षा कर जानी भारत वर्ष के कृतज्ञता भाव पर बहुत भारी धब्बा लगाने वाली होगी।

एक राज भक्त सभा—आगरे के जमीन्दारों ने मिलकर एक आगरा ज़मीन्दार सभा स्थापित की है, जिस के कई उद्देश्यों में से मुख्यदो ये हैं (१) यह सभा सरकार को राज विद्रोह के दबाने में सहायता किया करेगी। (२) जब पूछी जायगी तो सरकार को उचित सलाह भी दिया करेगी। हमारी सम्मति में इन दोनों उद्देश्यों से किसी सभाका बनाना अपनी ख़ैर ख्वाही दिखाने की कामना से सरकार का अपमान करना है। क्या सरकार स्वयं राज विद्रोह को निर्मूल करने की शक्ति नहीं रखती? और फिर क्या सरकार अब ऐसी दयायोग्य दशा में जा पहुंची है कि उसे भारतवर्ष की ज़मींदार सभाओं से सलाह लेने की ज़रूरत पड़ा करेगी?

पशुओं पर अत्याचार—कहते हैं कि इंग्लैण्ड की भारतीय समिति से भारत सरकार से आज कल इस विषय में पत्र व्यवहार हो रहा है कि इस देश में पशुओं पर जो क्रूरताएं होती हैं, उन्हें रोका जाय। इससे उत्तम विचार इससे अधिक धार्मिक विचार-और कौनसा होगा? भूत दया धर्मों में मुख्यधर्म है। भारतसरकार उस दिन करोड़ों वाणी रहित पशुओं के हार्दिक धन्यवादों को पायगी, जिस दिन वह उन पर होती हुई क्रूरता का निवारण करेगी। गधों घोड़ों और बैलों पर उनके चलाने वाले जो २ अत्याचार करते हैं, उनके देखने वाला आंखों में लहू के आंसुओं को नहीं रोक सकता। और पशुओं पर सब से बड़ा अत्याचार तो उनकी हत्या है। क्या ही अच्छा हो यदि सरकार कम से कम गौ जैसी लाभदायक और भोले भाले जन्तु की हत्या भारत वर्ष में रोक दे! कम से कम सेनाओं के निमित्त के लिये मारी जाने वाली गौओं की रक्षा करना तो सरकार के हाथों में है उसमें तो किसी व्यक्ति के धार्मिक विचारों का भी दलन नहीं होता, फिर वहीं से प्रारम्भ क्यों न किया जाय? परमात्मा भारत सरकार के उपर्युक्त प्रस्ताव को दिन रात परिपक्व करे, यही हमारी प्रार्थना है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्मप्रचारक

गुरुकुल विश्वविद्यालय (कांगडी) की सहायता भारत निवासी मात्र का धर्म है।

(महात्मा मुनशीराम जी द्वारा लिखित)

गुरुकुल क्या है और उसकी विशेषताएं क्या हैं, इन के बतलाने की आज आवश्यकता नहीं। गुरु शिष्य के गाढ़ सम्बन्ध को पुनः दृढ़ करने द्वारा प्रजाके चरित्र संगठन का यदि कोई शक्तिशाली साधन संसार भर में है तो यही गुरुकुल है। भारत वर्ष की वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली तो उस के चलाने वालों के मुखों से ही अपराधिनी सिद्ध हो रही है, और भारतीय गवर्नमेन्ट का भविष्य में केवल ऐसे विश्वविद्यालय स्थापन करने का दृढ़ संकल्प कि—जहां विद्यार्थी पठन-सत्रोंमें निरन्तर निवास करें, भारतीय वर्त्तमान शिक्षा प्रणालीका क्रियात्मक खन्डन है। परन्तु भारत विभिन्न, आज कलके बढ़े चढ़ेहुए, सभ्य देशोंमेंभी अभी तक ब्रह्मचर्य की रक्षाका पूरा प्रबन्ध नहीं। वहाँके Public Schools (लोक प्रचलित विद्यालय) और Residential University (अन्ते वासिन् विश्वविद्यालय) भी गुरु शिष्य का वह सम्बन्ध दृढ़ नहीं कर सक्ते जो कि विद्यार्थी के अन्दर सदाचार के लिए अतुल अनुराग उत्पन्न कर सके। जब युरोप तथा अमेरिका के विश्वविद्यालय, जिन में शिक्षक अपनी जाति के [illegible] विद्वान होते हैं, विद्यार्थी को शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक उन्नति [illegible] पहुंचाने में असमर्थ हैं तो [illegible] करणमें जो नए विश्वविद्यालय [illegible] हैं (जिनमें अधिकतः विदेशी [illegible] होने आवश्यक होंगे, जिन के हाथों में ही शिक्षा की मूल बागडोर हो गी) उन से भारत सन्तान के वास्तविक चरित्र सुधार की क्या आशा हो सक्ती है?

केवल इतनी विशेषता ही इस शिक्षणालय का गौरव स्थापन करने के लिए पर्याप्त थी किन्तु गुरुकुल तो अन्य कई दृष्टियों से भी भारत वर्ष में एक निराली संस्था है।

(१) यह निर्विवाद सचाई है कि आर्य जाति के पतित होने के मुख्य कारणों में से एक बाल विवाह है। गत एक शताब्दी के सब उच्च कोटी के सुधारकों ने इस कुरीति को दूर करने का प्रयत्न किया किन्तु उनको मनोवाँछित कृत कार्यता न हुई। गुरुकुल ने इस कुरीति की जड़ पर ही कुल्हाड़ा रखदिया। इस शिक्षा प्रणालीने वायु मण्डल ही ऐसा उत्पन्न कर दिया है जिस में बाल विवाह रूपी राज रोग का बीज ही विकसित नहीं हो सक्ता। एक बार गुरुकुल में बालक को प्रविष्ट करके माता पिता बालक की २५ वर्षों की आयु तक उस के विवाह के विचार के प्रलोभन से ही मुक्त होजाते हैं और जब गुरुकुल के वायु मंडल से दृढ़ सङ्कल्प होकर ब्रह्मचारी निकलता है तो उस को सहज में कोई प्रलोभन डिगा भी नहीं सक्ता।

(२) फिर वैदिक स्वाभाविक वर्ण व्यवस्था का सिंहासन जब से कुरीतियों के सभापति, जातियों को पतित करने वाले अस्वाभाविक जातिबन्धन ने दबालिया तब से आर्य जाति के अधःपतन की सीमा न रही। इसी अनुदार जातिबन्धन की निष्ठुरता से तङ्ग आकर आर्य जाति के सहस्रों रत्नों ने अपने प्राचीन धर्म और अपने सम्बन्धियों से किनारा करके अपनी जाति को निर्बलकर दिया और सहस्रों को नास्तिक पन के अन्ध कूप में धकेल दिया। इसी पापी पिशाच के अत्याचारों ने कोटियों आर्य सन्तानों के साथ कुत्ते और गर्दभ से भी बढ़ कर नीच व्यवहार कराया। गुरुकुल के वायु मन्डल में पक्षपात तथा प्राणियों से घृणाका विचार उत्पन्न ही नहीं होसक्ता और इस लिए आज कलकी अछूत जातियों का कठिन का कठिन प्रश्न आप से आप हल हुआ पड़ा है।

किन्तु गुरुकुल इस से बढ़ कर कुछ काम कर रहा है। वर्णाश्रम धर्मके लुप्त होने से भारत वर्ष में भी पश्चिम के भयंकर Socialism सोशलिज्म की लहर उठने लगी है। जहां जाग्रत जातियोंने [illegible] का कुछ कुछ मुकाबिला किया, वहां श्रेष्ठ आर्यावर्त से गिरकर हिन्दुस्थान बना हुआ यह देश इस की एक चोट सहन करने की भी शक्ति नहीं रखता। सारे भारतवर्ष में गुरुकुल ही एक ऐसा स्थान है जहां वर्णाश्रम धर्म की स्वाभाविक बुनियाद डाली जाती है और संसार में फैली हुई असमानता के विनाश से, गुण कर्मानुसार मनुष्यों के अधिकार स्थापन करने का प्रयत्न हो रहा है।

(३) इस समय बड़ी भारी शिकायत अपने देश में यह सुनाई देती है कि नव शिक्षित युवक स्वच्छन्द हो कर, बड़े बूढों के सम्मानसे मुंह मोड़, पुराने परिवार प्रेम को पांवतले रौंद रहे हैं। गुरुकुल से यह आशा तो कीगई थी कि **स्वच्छन्दता के स्थान में विनय शील तथा पितृसम्मान का संचार यह शिक्षणालय ब्रह्मचारियों के मनों में कर देगा।** किन्तु यह शंका कीजाती थी कि, माता पिता तथा परिवार के लिए स्वाभाविक प्रेम, १५ वा १६ वर्षों तक अलग रहने के कारण, ब्रह्मचारियों के दिलों से दूर तो न हो जायगा। किन्तु जो ब्रह्मचारी गत वर्ष ही शिक्षा समाप्ति के पश्चात् विद्यास्नातक होकर गुरुकुल से बाहर गए हैं, उनके व्यवहार ने सिद्ध कर दिया है कि गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली द्वारा **पारिवारिक प्रेम का भाव अधिकतः दृढ़ होता है** और यह आशा रखना चाहिए कि जो प्रेम १५ वर्षों तक इकट्ठा होता रहेगा उसका प्रादुर्भाव अधिक काल तक परिवारों में शांति और आनन्द का राजस्थापन किए रहेगा।

(४) शिक्षाका माध्यम सर्व सभ्य देशों में मातृ भाषा को समझा गया है। यह सौभाग्य इसी देश के लिए सुरक्षित था कि शिक्षाका माध्यम एक विदेशी भाषा (इङ्गलिश) को बनाया जावे। मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने से जो लाभ हो सके हैं उन को इस विश्वविद्यालयने स्पष्टरीति से सिद्ध कर दिया है। यहाँ इस बात का अभ्यासक्रम प्रमाण दिखाया गया है कि भौतिकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रसायन, वनस्पति, सम्पत्ति आदि सर्व शास्त्रों की उच्चसे उच्च शिक्षा मातृभाषा द्वारा दी जासक्ती है। जो लोग आर्य भाषा में ग्रन्थों के अभाव को मातृभाषा के माध्यम न बनाने के लिए एक बहाना पेश किया करते हैं उनको यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल का उपाध्याय मंडल इस कमी को क्रमशः पूरा कर रहा है।

हिन्दू विश्वविद्यालय कीपाठविधि प्रथम मुद्रित करते हुए श्रीमान् आनरेबल पंडित मदनमोहन मालवीयजी ने हिन्दी को शिक्षाका माध्यम रखने का विचार प्रकट किया था, किन्तु जब से उन्होंने भी अपनी भावी युनिवर्सिटी के लिए शिक्षाका माध्यम अंग्रेजी को मान लिया तब से यह निश्शंक होकर कहा जा सक्ता है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय ही ऐसा शिक्षालय है जहां सब शिक्षा मातृभाषा द्वारा दी जाती है।

(५) भारत निवासियों पर विदेशियों की ओर से यह लाञ्छन लगाया जाता है कि उनके अन्दर मौलिक अन्वेषण Original Research की योग्यता नहीं है। यद्यपि डाक्टर जगदीशचन्द्र बोसादि ने आश्चर्य जनक मौलिक विज्ञान का प्रकाश करके जतला दिया है कि भारत निवासियों की मानसिक शक्ति किसी भी सभ्यजाति से कम नहीं है तथापि विदेशी भाषा द्वारा ज्ञान उपलब्धि का यह आवश्यक परिणाम था कि इस प्रकार शिक्षा पाने वालोंके मस्तिष्क किसीभी मौलिकविचार के योग्य न रहें। गुरुकुल महाविद्यालय की द्वितीय वर्षीय कक्षा के दो विद्यार्थियों ने संयुक्त प्रान्त के उदार लाट महोदय श्रीमान् सरजेम्स मेस्टन के सामने वनस्पति शास्त्र सम्बन्धी दो नए परीक्षण दिखलाकर सिद्ध करदिया कि यदि भारतवर्ष में मौलिक अन्वेषण (original Research) का काम, विनाबड़े आडम्बरों के कहीं होसकता है तो गुरुकुल विश्वविद्यालय में।

(६) भारत वर्ष के राजकीय शिक्षणालयों की परीक्षा विधि के विरुद्ध समस्त सभ्य संसार एक-स्वर होकर दृढ़ सम्मति प्रकाशितकर रहा है। पढ़ाने वाले अन्य हैं और परीक्षा लेने वाले अन्य-जो विद्यार्थियों से सर्वथा अपरिचित हैं,-परिणाम यह होता है कि जहाँ अच्छे सुबोध विद्यार्थी अनुत्तीर्ण होते हैं वहां अयोग्य विद्यार्थी रटरटा कर पास होजाते हैं। क़िस्मत का कड़छा यहीं चलता है।

एक विदेशी विद्वान ने सच कहा था कि भारतवर्ष में प्रोफेसर विद्यार्थियों की उन्नति के लिये नहीं हैं प्रत्युत विद्यार्थी प्रोफेसरों की उन्नति के साधन हैं।

गुरुकुल ही ऐसी शिक्षा सम्बन्धी संस्था है जहां अध्यापक ही परीक्षक होते हैं और जहां परीक्षा को सत्रों में बांटकर विद्यार्थीयों को बोझ के तले दबने से बचाया जाता है।

(७) सादा जीवन और उच्चविचार के मेल के लिए इस समय सभ्य-जगत व्याकुल होरहा है। वर्तमान विद्यार्थी-जीवन अपने देश में बहुत ही महँगा पड़रहा है। जो समय शरीर को बिना ढकनों के छोड़कर उसे दृढ़ करने का है उस आयु को कृत्रिम आवश्यक्ताओं की पूर्ति में व्यतीत करना पड़ता है। यही कारण है कि राजकीय विद्यालयों तथा महा-विद्यालयों में व्यायाम तथा खेलों का बहु मूल्य प्रबन्ध करने पर भी विद्यार्थियों के स्वास्थ, गृहस्थ में प्रवेश करने से पहले ही, नष्ट होजाते हैं। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने लड्डू-तोड़ बूट पहिनने वाले विद्यार्थियों के साथ क्रिकेट (Cricket) फुटबाल (foot ball) तथा हाकी (hockey) के सान्मुख्य में स्थित होकर दिखादिया है कि सादा जीवन व्यतीत करने वाले एकान्त सेवी पुरुषों से बढ़कर सहन शक्ति किसी व्यक्ति में भी नहीं आसकती।

अपनी जाति के शारीरिक स्वास्थ्य को ठीक करने तथा उसके बालकों को पुरुषार्थी बनाने का यदि कहीं पर्याप्त साधन है तो वह गुरुकुल ही है।

(८) सबसे बढ़कर आवश्यकता इस समय स्वदेश में परस्पर के राग द्वेष को दूर करने की है। गुरुकुल के ब्रह्मचारी किसी पक्षपात में पलते ही नहीं और इसलिए किसी मत के अनुयायी भी वहां क्यों न जायं, इन ब्रह्मचारियों के व्यवहार से प्रसन्न होकर ही आते हैं। यहाँ किसी मत के अनुयायी या किसी जाति के पुत्र के लिए भी रुकावट नहीं है; सबके लिए एकसाद्वार खुला हुआ है।

(९) सबसे बढ़कर विशेषता इस शिक्षणालय में यह है कि मत मतान्तरों के झगड़ों को छोड़कर शुद्ध आत्मिक शिक्षा वाणी तथा कर्म द्वारा देने का प्रयत्न किया जाता है, जिसका वर्णन लेखनी द्वारा करना कठिन है। जो महानुभाव इस शिक्षणालय में कुछ समय आकर रहे हैं उन्हों ने बिना बतलाए ही अनुभव किया है कि इस शिक्षणालय में एक विचित्र प्रकार का वायुमंडल उत्पन्न होगया है, जिसका दृष्टान्त भारतवर्ष की किसी अन्य संस्था में पाया नहीं जाता।

ऊपर कथित विशेषताओं का प्रभाव विना प्रयास ही विचारशील अनुभवी दर्शकों के ऊपर पड़ता रहा है। पंडित विश्वनारायण दर और स्वर्गवासी बाबू गङ्गाप्रसाद वर्मा से देश भक्तों ने इस संस्था को जाति के आत्मविश्वास का एक अद्वितीय परीक्षण बतलाया, महम्मदी और अहमदी दोनों फ़िर्क़ों के मुसलमान नेताओं ने इस शिक्षणालय को मुसलमानों के लिए अनुकरणीय जतलाया, फ्रान्स देशान्तर्गत पेरिस विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध प्रोफेसर पाल कार्न्यूल (Paul Cornul) ने एक ओर और प्रसिद्ध सम्पत्ति शास्त्रज्ञ लँडन के सम्पत्ति शास्त्र महा-विद्यालय के आचार्य (Principal) तथा मेम्बर बृटिश पार्लिमेन्ट मिस्टर सिडनी बेब (Mr. Sydney Webb) ने दूसरी ओर इसे भारतवर्ष के अन्य विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की उन्नति के लिए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक आदर्श रूप में देखा। लार्ड इस्लिङ्गटन (Lord Islington) से इङ्गलेन्ड के कुलीन एक ओर और मिस्टर रामज़े मेकडानल्ड (Mr. Ramsay Macdonald) से स्वात्मावलम्बी मज़दूरों के नेता दूसरी ओर इस शिक्षणालय पर मोहित होकर गए, और अँतमें सँयुक्त प्राँत के न्यायपरायण धार्मिक शासक श्रीमान सरजेम्स मैस्टन (Sjr James Meston) महोदय ने इस संस्थाके ब्रह्मचारियों के शरीरों और मनों की प्रशंसा कर उन्हें धार्मिक आज्ञा पालक तथा राजभक्त बतला और अध्यापकों को आत्मत्यागी तपस्वी का पद प्रदान करकेऔर अपनीदूसरी यात्रामें इसे अपना आदर्श विश्वविद्यालय बतलाकर उसका क्रियात्मक प्रमाण निज की आर्थिक सहायता से दिया। किन्तु गुरुकुल भूमि के अँदर दो मास तक निरँतर निवास करके अमरीका के प्रसिद्ध शिक्षा प्रेमी मिस्टर मायरन फेल्पस ने सबसे बढ़कर इस शिक्षणालय के अँतरी उद्देश्य को समझा था। और इसलिए उन्हों ने यह सम्मति दीथी कि-"इस शिक्षणालय के वायु मंडल में कुछ काल रह कर कोई मनुष्य भी पूर्ण विश्वास अनुभव किए बिना नहीं रह सकता कि जो मनुष्य यहां शिक्षा पारहे हैं वे यथार्थ योग्यता सम्पन्न तथा सरल हृदय बनकर निकलें गे जिनके कार्यों से उनके स्वदेशियों तथा मनुष्य मात्र की उन्नति होगी। मेरे आलोचन से मुझे देर से यह निश्चय कराया है कि जहां तक मानवी बुद्धि समझ सक्ती है, भारतवर्ष में उस वीरता सम्पन्न उच्च आचार के विकास की आशा, जोही केवल इस देश के भूत गौरव के सदृश इस का भविष्य बना सकें, केवल उस प्रकार की शिक्षा से हो सक्ता है जो कि सब से बढ़कर इसी शिक्षणालय में दी जा सक्ती है।"

मिस्टर मायरन फ़ेल्पस ने गुरुकुल का विस्तृत वर्णन करके ज़ोर उद्धृत सम्मति दी थी और लिखा था—"इस संस्था की अवस्था स्थिर नहीं है। सिवाय इस के कि दो लाख से लगभग मकानों पर लगा है, एक लाख की भूमि है और एक लाख सूद पर चढ़ा हुआ है, इस का कोई स्थिरकोष नहीं है और यह प्रति वर्ष वर्तमान चन्दों और दानों से काम चलाता रहा है। अब तक चन्दों की सहायता उदारता से दी गई है किन्तु इस प्रकार की सहायता स्पष्टतया असन्तोषजनक है। गुरुकुल के लिये एक करोड़ का स्थिर कोष चाहिये"

इन शब्दों को लिखे हुए तीन वर्ष व्यतीत होगए और दशा जहाँ की तहां है। जो एक लाख की भूमी बहावलपुर में मिली थी वह दानी के पुत्र के मुकद्दमा करने पर छिन गई। गुरुकुल की इमारत, बाहर की भूमी तथा मकान मिलाकर, दो लाख के अवश्य होंगे किन्तु स्थिर कोष में केवल १, ३४,०००) ही और बढ़ा है। तीन वर्षों में गुरुकुल जगत-विख्यात होगया है, इसके स्नातकों ने बाहर निकलकर इस के गौरव का क्रियात्मक प्रमाण दिया है, किन्तु फिर भी इसकी

आर्थिक दशा शोचनीय

क्यों रही? उत्तर इसका हिन्दू युनिवर्सिटी की गत प्रबल लहर से मिलता है। गवर्नमेन्ट से चार्टर मिलेगा, स्वदेश को आत्मावलम्बन का समय मिलेगा, स्वराज्य भोग की क्रियात्मक शिक्षा भी मिलेगी और सरकारी नौकरियों से भी हमारी सन्तान वांछित न रहेगी; फिर बेचारे गुरुकुल को कौन पूछता था, जहां के स्नातकोंको सरकारी नौकरी मिलने की कोई आशा नहीं हो सक्ती थी।

किन्तु वह सुहावना स्वप्न अब कहां है! गवर्नमेंट के उत्तर ने आर्य (हिंदू) जाति के नेताओं को झटका देकर जगा दिया है। आंखें मलकर चारों ओर देखते हैं—यह क्या दृश्य है। देवी श्रीमती बेसेन्ट हिंदू जाति के भाव को प्रकट कर रही हैं जब वे लिखती हैं—"हम भारतीय जातीयता को, अपने अँग्रेजी शासकों के लिए धन्यवाद की वेदी पर, बलिदान करने को तय्यार नहीं हैं ... ... यह सँस्था स्वतन्त्र होनी चाहिये ... ... इसको [illegible] परीक्षण तथा नए पथ-निर्माण करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। हम राज भक्ति तथा साधुभाव से काम करेंगे, किन्तु हमारे लिए सर्वथा स्वतन्त्रता से काम करना भी आवश्यक होगा ... ..." संयुक्त प्रान्त के लाट साहेब के विश्वविद्यालय पर असीम प्रस्तावित राज्य का ज़िक्र करके देवी बेसेन्ट पूछती हैं—"एक अँग्रेज़ को विचारना चाहिये कि ईटन (Eton) और हेरो (Harrow) आक्सफोर्ड और केम्ब्रिज क्या होजाँय यदि उनका सारा प्रबन्ध जर्मन देश निवासियों (Germans) के आधीन हो, क्या वे आङ्गल वीरता तथा आङ्गल भक्ति की धात्रियां रह सकेंगी? क्या अँग्रेज लड़के जर्मन इतिहास और जर्मन वीरों के चरित्रों, अर्थात् ब्लूचर (Blucher) और बिस्मारक (Bismarck) की जीवनियों पर पलकर वह अंग्रेज़ बन सकेंगे जो अंग्रेज़ी झन्डे को सँसारके सब प्रान्तोंमें ले जा सकें?"

आशा रखनी चाहिए कि देवीबेसेन्ट अब अपनी उस भूल को मानकर—जो उन्हों ने आर्य भाषाके स्थान में अङ्गेजी को माध्यम बनवाने में की थी—उस स्वतँत्र युनिवर्सिटी में, जिस की बुनियाद वे आर्य जाति से रखवाना चाहती हैं, उस में मातृ भाषा को ही शिक्षा का माध्यम नियत करायेंगी।

अन्त में देवी लिखती हैं—"तब हम को क्या करना चाहिए। गवर्नमेंट के प्रस्ताव को अस्वीकार करके अपनी स्कीम स्वयम चलानी चाहिए। हमें अपनी पाठ विधि बनानी चाहिए, अपने ही आदमी नियत करने चाहिये और अपनी ही शक्ति पर भरोसा रखना चाहिये। यह सम्भव है कि हमारे प्रमाण पत्र पहले पहल सरकारी नौकरी और उच्च पेशों के लिए न माने जायं। ऐसा ही सही। क्या भारत में पर्याप्त राष्ट्रीयता नहीं है कि इस क्षणिक कठिनाई का सामना कर सकें? गवर्नमेंट उच्च योग्यता के आदमी चाहती है और उसे मिलने चाहिए। और यदि हम उत्तम से उत्तम लड़के काबू कर लें तो वह समय दूर न होगा जब गवर्नमेंट को हमारे हाथों से उन्हें (उन लड़कों को)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वीकार करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त हम अपने विद्यार्थियों में से चुने हुओं को अपने स्नातक बनाकर वृटिश युनिवर्सिटियों में डिग्रियां लेने के लिए भेज सक्ते हैं ... .,,

ऊपर के उद्धृत लेखों में से देवी बेसेन्ट और हिन्दू युनिवर्सिटी के नाम उड़ा दिए जायँ तो आर्य सामाजिक समाचार पत्रों के पाठक यह समझलेंगे कि शायद बारह तेरह वर्षों का गुरुकुल सम्बन्धी कोई पुराना लेख, सद्धर्मप्रचारक में से नक़ल किया गया है। यही तो गुरुकुल के चलाने वाले पहले से कहते और लिखते रहे हैं। जिस परिणाम पर गुरुकुल के चालक, बिना अपना समय नष्ट किये और जन साधारण की आशाओं को आकाश पर चढ़ा कर बिना उसे फिर से भूमी में पटकाए, पहुंचे थे, उस परिणाम पर हिंदू विश्वविद्यालय के चालक लक्षों की आशाओं का नाश करके पहुंचे हैं। अब हिंदू युनिवर्सिटी कमेटी तो इस विचार में लगी कि गवर्नमेंट को क्या उत्तर दिया जाय और देश के मस्तिष्क वाले पुरुषों के तिरस्कार का हौसला न पड़े गवर्नमेंट के सामने कुछ और प्रार्थना पत्र पेश करे। क्या हिंदू यूनिवर्सिटी के चालक इस अन्तर में एक और परीक्षण नहीं कर सक्ते। अपने जमा किए धनमें से केवल १६ लाख रुपया गुरुकुल को देदेवें। फिर देखें कि चार पांच वर्षों में ही किस प्रकार के उत्तम परिणाम निकलते हैं।

किन्तु यह होना कठिन है। कहां हिंदू युनिवर्सिटी के श्रीमान चालक और कहाँ गुरुकुल के साधारण प्रबंधकर्त्ता। जब हिंदू युनिवर्सिटी की अकृतकार्यता पर असन्तोष प्रकट करते हुए भी कोई लेखक गुरुकुल का नाम तक नहीं लेता और जमा किए हुए रुपये को बांटते भी हैं तो उन्हीं कालिजोंमें जो परतन्त्रता के शिकँजों में कसे हुए हैं तो कब आशा हो सक्ती है कि मेरी इस प्रार्थना पर कोई ध्यान भी देगा। इस लिये मेरी प्रार्थना आर्य जाति मात्र के-

स्वतन्त्रशिक्षा प्रेमियों से

है। महाशय मायरन फैल्प्सने इस विश्वविद्यालय के लिये एक करोड़ के स्थिर कोष की आवश्यकता बतलाई थी। उस समय से अब गुरुकुल के सेवक, अपने निर्धन देश का ध्यान रखते हुए, व्यय को कम करने के ढँग ही सोचते रहे हैं। मकानों पर जो आठ दस लाख व्यय करने का विचार था उसे सर्वथा परित्याग कर दिया है। जो इमारतें बन चुकी हैं वे पर्याप्त हैं और आगे के लिए भी सस्ती इमारतें ही बनाने का सङ्कल्प है। ईँट चूने पर अधिक व्यय करना धन नष्ट करना है। ब्रह्मचारियों के अन्दर उच्च भाव उत्पन्न होने के कारण वार्षिक व्यय में भी अब कमी की गई है। किन्तु आई चलाई से कब तक काम चलेगा। यदि आर्य जनता को विशेष कर तथा भारत निवासी मात्र को साधारणतः गुरुकुलकी भावी कृतकार्यताओं पर विश्वास है तो उन से निवेदन है कि

गुरुकुल विश्वविद्यालय को स्थिर कीजिये।

प्रत्येक वर्ष गुरुकुल के बजट में ७५,०००) के लगभग भीख माँगकर जबतक डालना पड़ेगा तबतक इस की स्थिरता में सन्देह ही बनारहेगा। इस समय गुरुकुलकी स्वामिनी सभा के पास स्थिर कोष में २, ३५,०००) लगभग शेष धन जमा है यदि १५ लाख रुपया एक दम और जमा होजाय और सूद की आय ४॥) सैंकड़ा प्रति वर्ष के हिसाब से गिनें तो वार्षिक सूद ७५,०००) से कुछ अधिक वसूल हो सकेगा, जिस से गुरुकुल विश्वविद्यालय के वर्तमान स्थानीय सर्व अँगों का काम निर्विघ्न चलता रहेगा। उस अवस्था में सँस्था के विस्तार में बड़ी सुगमता हो जायगी और फिर आयुर्वेदिक, कृषि तथा व्यापार सम्बँधी महा विद्यालय सहजमें ही स्थापित हो सकेंगे। इन १५ लाख रुपयों के जमा होनेका बड़ा सुगम ढँग यह है कि-

(१) एक सौ ऐसे भद्र पुरुष खड़े हो जांय जो पांच पांच सहस्र रुपया एकदम देदें। इस प्रकार पहिला पांच लाख जमा हो जायगा और उसकी आय से १०० विद्यार्थी बिना कुल शुल्क दिए सदा के लिये विद्योपार्जन करते रहेंगे। इस रजिस्टर को देखने से विदित होगा कि १४ विद्यार्थियों के सर्वथा बिना शुल्क और ४ के थोड़ा भाग लेकर पढ़ने का प्रबन्ध इस समय भी विद्यमान है, यद्यपि चलती आमदनी पर निर्भर करके प्रति सैंकड़ा १५ ब्रह्मचारियों को इस समय भी बिना शुल्क पढ़ाया जाता है। इस प्रकार विश्वविद्यालय प्राचीन आदर्श को पुनर्जीवित करने में और भी अधिक कृतकार्य हो सकेगा।

(३) पांच सौ ऐसे भद्र पुरुष निकल आवें जो एक सहस्र एक दम देदें। इस प्रकार दूसरा पांच लाख जमा हो जायगा।

(३) एक सहस्र ऐसे गृहस्थधनी आगे हों जो पांच पांच सौ एक दम देदें इस प्रकार तीसरा पाँच लाख भी जमा होकर १५ लाख इकट्ठा होजायगा।

इस के साथ एक विचार और भी है। गुरुकुल में पाठन का काम यदि अधिकतः गुरुकुल के स्नातकों के हाथ में हो तो ब्रह्मचारियोंके चरित्र सँगठनका काम बड़ी उत्तमता से हो सकेगा। इस लिये यदि दस उदार सज्जन दस दस सहस्र मुद्रा एक दम देकर विदेश शिक्षा के लिये दस छात्र वृत्तियाँ नियत कर दें तो योग्य स्नातकों को विदेश भेजकर सर्व विषयों के एक एक उच्च कोटि के उपाध्याय शीघ्र तय्यार हो सकेंगे।

यह आप जानते ही हैं कि बिनागुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के प्रचलित हुए भारतवर्ष का और उस के साथ ही संसार का उद्धार कठिन है, और अन्य दसों छोटे बड़े गुरुकुलों की कृत कार्यता भी इसी विश्व-विद्यालय की स्थिरता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर निर्भर है इस लिये अति श्रेष्ठ

विद्यादान

के लिए उदारता से हाथ बढ़ाइये और इस वृहत यज्ञकी पुर्त्ति में मेरी सहायता कीजिये। परमेश्वर आपका कल्याण करेंगे।

निवेदक

मुन्शीराम जिज्ञासु।

—०—

विशेष निवेदन।

मैं तो अवश्य नवम्बरमास में भिक्षा के लिये निकलूंगा ही किन्तु यदि आप अभी से परिश्रम करके धन भेजना आरम्भ कर दें तो मुझे गुरुकुल से बहुत काल तक अलग न रहना पड़ेगा जिसका परिणाम अच्छा ही होगा।

आर्य पुरुषों पर जैसा ही अधिक अधिकार है वैसा ही अधिक निवेदन प्रेम पूर्वक करता हूं। जिन के पास ५००) की जायदाद है उन्हें क्या ५००) निकालना कठिन है, जिन के १००००) की सम्पत्ति है १०००) देना उन्हें नहीं अखर सक्ता। यदि कुछ आर्य वीर इस से भी बढ़ कर साहस दिखाएं और अपनी जोड़ी हुई सम्पत्ति का चतुर्थांश गुरुकुल को देकर फिर उसकी पूर्त्ति में लगजांय तब फिर गुरुकुल सेवकों की सब चिन्ताएं दूर हो सक्ती हैं. बाहर से भी रुपया अधिक आए तो अच्छा है, किन्तु जो शान्ति तथा आनन्द अपनी वस्तुको अपने हाथों और अपने पुरुषार्थ से निर्माण करने से प्राप्त होते हैं वह पड़ोसी के कन्धे पर चढ़ कर स्वर्ग प्राप्ति से भी नहीं होते।

शमित्यो ३ म्॥

मुन्शीराम जिज्ञासु

——

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(४१)

कृत कार्यता का मद

जालन्धर आर्य समाज के तृतीय वार्षिकोत्सव की कृतकार्यता ने मुझे ऐसा उन्मत्त कर दिया कि कुछ दिनों तक सर्व आर्य समाजिक कामों से उदासीनता मैंने अपना अधिकार समझ लिया। उन दिनों मेरे आत्मा का क्या आदर्श था, इस के जतलाने के लिए मैं अपनी डायरी का अनुवाद देता हूं— अनुवाद इस लिए कि उस समय तक कालिजीय शिक्षा का प्रभाव दूर नहीं हुआ था और मैं अंङ्गरेज़ी में ही डायरी रखने का अभ्यासी था।

"ओ३म्—अब सं० १८८९ का आरम्भ है। पहले महीने (जनवरी) के २५ दिनों तक मैं ने वास्तव में कुछ नहीं किया— कुछ भी नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे समाज ने जो कृत कार्यता इस उत्सव में प्राप्त की है उस ने मेरी शक्तियों को सर्वथा शिथिल कर दिया। इस वर्ष हमारे समाज पर परम पिता परमात्मा की बड़ी कृपा हुई है। उस की अनुग्रह के आधिक्य ने मुझे विवशकर दिया। यह आश्चर्यकी बात है कि हम से पापियों का स्थापन किया हुआ समाज उन्नत होरहा है किन्तु जब सोचता हूं कि उसी परम पिता का सच्चा गृह है तो आश्चर्य दूर हो जाता है। हे प्रभु, मुझे सर्व प्रकार की पापनाओं से बचाइए; मुझे सत्य की ओर ले चलिए और मुझे वह मेधा प्रदान कीजिए जिस की खोज में प्राचीन ऋषि कई जीवन अर्पण कर देते थे! हां, सच मुच उत्सव की कृत कार्यता ने मुझे शिथिल कर दिया था जिस से मैं ने आज सायंकाल ही मुक्ति उपलब्ध की है।"

अब पहले २५ दिनों का वृत्तान्त यथा स्मृति लिखता हूं क्योंकि १जनवरी से नैत्तिक वृत्तान्त पंञ्जिका में नहीं लिखा।

विकालत के काम के विचार से जबसे कि मैंने कार्यारम्भ किया है यह मास बहुत ही असन्तोषजनक था क्योंकि मैं अपने आश्रित मुक़द्दमे वालों की पू सहायता न कर सका। ५ जनव को भाई सीता राम जी के मुक़द्दमे व पैरवी के लिए फिल्लौर गया। १५ ज वरी तक केवल एक बार समाज मन्दि में धर्मोपदेश दिया। ११ जनवरी लोहड़ी की छुट्टी थी। उस दिन महाश रामचन्द्र के लड़के का नाम करण सँस्क कराने होशियार पुर गया। जालन्धर इक्के में तीन बजे प्रातः चला मुझे बतलाया गया था कि होशय पुर की सड़क पर डाके पड़ते हैं। डा बड़े साहसिक बतलाए जाते थे। वकील का इन डाकुओं ने इक्का खड़ा के लूट लिया और डांट कर कहा—" कपड़े उतार दो।" वकील बेचारे ने कुछ उन के हवाले कर के केवल पाजा कुरता शरीर पर रक्खा। उन डाकुओ से एक ठठोल ने बढ़ कर पूछा— "वर्क साहेब, कुरता पाजामा रख लेना कि क़ानून में लिखा है?"

मैं ने इन जन श्रुतियों पर कुछ ध्यान न दे कर ब्रह्मचारी ऋषि सं होशयारपुर को प्रस्थान किया। मैं प तकिया लगाए बैठा था और मेरे सा ब्रह्मचारी था। शहर की सीमा से बा आध मील पर एक चोर ने चलते में पीछे बन्धी हुई सुतली काट कर त पर हाथ डाला। स्पर्श सा अनुभव क ही मैं ने पीछे हाथ डाला और दू हाथ में डंडा लेलिया। चोर जो इक्के साथ लटका जा रहा था एक तकिया कर कूद गया। इक्का ज़बरदस्ती रु करा कर जब इक्के वाले से चोर को ढं का प्रस्ताव किया तो उस ने चाबुक ल कर घोड़े को हवा कर दिया। ७॥ बजे होशयार पुर पहुंच कर मुंसिफ़ चन्दूल बी०ए० के यहां उतरा। महाशय राम ने संस्कार की तिथी बदल रक्खी थ उस शाम को वैदिक धर्म की सार्वभौमि ता पर एक व्याख्यान दिया। दू दिन प्रातः लाला गूजरमल भा (जैनी) का नया मन्दिर देखा। जो जैन मूर्तियों का पुजारी था किसी ने ब्राह्मण बतलाया। जब पू पर यही निश्चय हुआ तो मैंने उ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स आचरण पर आश्चर्य किया। बाम्ह
वता बोले— "यजमान! मैं तो १०)
ासिक पाता हूं, मूर्तियों का बताई वि-
य के अनुसार पूजन कर देता हूं।
से तो देखिए (एक पास बैठे ब्राह्मण
ी ओर सङ्केत कर के) यह
१५) मासिक ले कर
नियों के तीर्थङ्करों की प्रशंसा में चौ-
ले बनाता है।" मैंने अपने आप में
इ व्यवस्था देने की शक्ति न रखकर
दोनों में से कौन अधिक उस्ताद है,
की राहली। उस शाम को फिर वै-
क वर्णव्यवस्थापर व्याख्यान देकर
१३ जनवरी को आदित्यवार के दिन
लन्धर चला आया।

१५ जनवरी को अपने बड़े भाई महा-
र मूलराजजी से मिलने तलवन गया,
महल पहुंच कर इक्का टूट गया, इस
ए उस रात नूरमहल ठहरकर ही धर्म
ार किया। १६ को प्रातःकाल टहलता
ा तलवन पहुंच गया। वहां ५ दिनों
बड़े भाइयों की हसायता
लिए ठहरना पड़ा। इन पाँच
ों प्रातः सायं सन्ध्या अग्निहोत्र के
ात् खूब भजन कीर्तन तथा उपदेश
ा रहा। मेरा परिवार उत्सव के पश्चा-
लवन चला गया था। परिवार स-
। २१ जनवरी को अपनी बरेली कार्ट
बजे प्रातः चलकर ७ बजे जालन्धर
वा। "मुश्कन घोड़ी बड़ी तेज़ है। २घन्टे
७ मील, जिसमें से १२ मील कच्चा
ा था। बड़ी जबरदस्त मंजल घोड़ीने
ी। फिर कैसी सीधी, किन कोरट से
ते हुए खेल में जो पुत्री वेद कुमारी
ागें हाथ में लेलीं तो पांच मील
इस का ध्यान ही न आया। हरिश
बढ़ रहा है" २२ को जालन्धर रह
२३ को फगवाड़ा बिरादरी की एक
त में शामिल होने गया। वहाँ से
ी शाम को जालन्धर लौट आया।
ाड़े में केवल एक ही नया सभा
बना सका।

सके पश्चात २५ जनवरी का वृत्तान्त
से ज्यों का त्यों इस स्थान में
हूं।

"शुक्रवार २५ जनवरी—प्रातः उठकर कल का बचा पायोनियर अखबार पढ़ा। फिर स्नान सन्ध्यादि से निवृत्त होकर कुछ बहुत ही आवश्यक पत्र लिखे। १० बजे कचहरी गया और न्यायाधीशों की कृपा से १ बजे कार्य समाप्त करके समाज मन्दिर में गया। वहां अलाबल-पुर ग्राम का एक पत्र मिला। व्याख्यान के लिए निमन्त्रण था। उत्तर भेजदिया कि दूसरे दिन आऊंगा। इमारत बन रही है। एक घन्टा समाज का काम किया। तब देवराज जी आकर मुझे अपने यहां ले गये। वहां वज़ीर कर्मसिंह जी (जिन्हों ने मूर्तिपूजा छोड़ दी थी) के साथ बड़ी उत्तम चाय पी। फिर कम्पनीबाग़ में गया और सरदार प्रताप सिंह (अहलूवालिया C. S. I.) और राजकुमार मियां जन्मेजय के साथ टेनिस की तीन बाज़ियां खेलीं। छ बजे घर लौटा। सन्ध्या के पश्चात् सुस्ती को झाड़ डालने का प्रण किया। फिर भोजन के पश्चात् ९ बजे तक पढ़ता रहा"॥

(क्रमशः)

मुन्शीराम

आर्यसमाज की वेदी।

(ले० श्रीयुत पं० पूर्णानन्द उपदेशक, आ० प्रति० सभा पंजाब)

१४ वीं संख्या से आगे

जब हम उन कठिनाईयों का वर्णन कर रहे हैं जो उपदेशकों को उत्तम व्याख्याता बननेनहीं देतीऔर जिनके कारण ही उपदेशकों से अधिक कई समाजों की मांग है तब हमें उस मुबारिक परिवर्तन का भी विचार करना आवश्यक होजाता है जो उन के व्याख्यानों की टोन में आ चुका है। यह एक सच्चाई है कि आज कल लोग खंडन मंडन बहुत नहीं सुनते। इसके अनुकूल ही उपदेशकों ने भी कुल्हाड़ा चलाना छोड़ दिया है। दूसरा अच्छा परिवर्तन आर्य्यसमाज के अन्तरीय झगड़ों का उपदेशकों के व्याख्यानों में अभाव है। यह स्मरण रखना चाहिये कि हम ने इस लेख माला में उपदेशकशब्द का प्रयोग बहुधा आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं के वैतनिक उपदेशकों के लिये किया है। हमें वह समय याद है जब हमें पार्टियों का सङ्घ बनाया जाता था और हम स्वयँ भी सार्वजनिक रुचि का ध्यान रखते हुए बनने पर बाधित होते थे। परन्तु आज अवस्था बहुत कुछ बदल चुकी है। इस में सन्देह नहीं कि ऐसे भी कदाचित दो एक महाशय निकल आयँगे जो न केवल अपनी वेतन देने वाली सभा से विरुद्ध सँस्थाओं को कोसते हों अपितु स्वयं सभा के शत्रु हों, परन्तु हमें अच्छी प्रकार ज्ञात है कि व्याख्यानों में कभी भी इन संस्थाओँ के विरुद्ध खुले तौर पर प्रचार नहीं किया जाता। लोग चाहे उन्हें मोम की नाक या कठपुतली कहें। चाहे यह क्यों न समझा जाय कि आत्मा का हनन है या सभा उनकी आत्माओं पर अनुचित दबाव डालती है परन्तु हम कहेंगे कि यह सब अशुद्ध है। यदि यह ठीक है कि किसी भी सिद्धान्तावली के प्रचार के लिये प्रचारक सँस्था को चर्च बनाने की आवश्यक्ता है तो हम कहेंगे कि उस चर्च को ऐसे आदमियों की अपेक्षा दिखानी चाहिये जो पार्टियों के झगड़ों से ऊपर हों या ऊपर रहने पर बाधित किये जा सकें। दूसरी ओर ज़रूरत यह है कि इन महानुभावों के अन्दर अपने चर्च के लिये कट मरने का भाव हो। वह सोएँ तो इस लिये कि उन्हें अगले दिन अधिक सेवा कर सकने के वास्ते विश्राम चाहिये, बैठें तो अपने सिद्धान्तों के प्रसार के उपाय सोचनेके लिये, खाएँ तो शारीरिक योग्यता स्थिर रखने के अभिप्राय से; सार यह कि उन की प्रत्येक चेष्टा अपने समाज के लिये उपयोगी हो, वे अपनी अनन्य लगावट इस कार्य्य में लगावें, वे समझें कि ईश्वर ने उन्हें केवल यही काम करने के लिये बनाया है और इसी के लिये शक्तियां दी हैं। यह सब ठीक है, परन्तु यह मनोयोग तभी सम्भव है जब उपदेशकों पर सभा विश्वास करे। यहां पर हम अन्य प्रस्तावों को अगले अङ्कों के लिये छोड़ते हुए दो एक प्रस्ताव कर देते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं। प्रथम यह कि सभा के अन्दर उपदेशकों की किसी प्रकार आवाज़ होना चाहिये ताकि जिन लोगों ने असली काम करना है वे अपनी कठिनाइयों को प्रस्तुत कर सकें और अपने दुखड़े रो सकें। दूसरी यह कि उपदेशकों की उसी प्रकार श्रेणियां होनी चाहियें जैसी गुरुकुल में अध्यापकों, उपाध्यायों और महोपाध्यायों की हैं। यह सब गुरुकुल के विषय में अधिक विचार का परिणाम हैं। हम यह नहीं चाहते कि उपदेशकों में पारस्परिक मुकाबिला करके संघर्षण उत्पन्न करें और नाहीं हमें नीच ऊंच का विचार इष्ट है, हमारा केवल यह अभिप्राय है कि वे अवसर ही घटा दिये जांए जिन में इस प्रकार के संघर्ष की संभावना रहती है। हम कहते हैं कि उपदेशकों का तीन चार प्रकार से विभाग हो जाना चाहिये और प्रत्येक विभाग के कर्तव्य और अधिकार निश्चित कर देने चाहियें। उदाहरणतया हम अपने अभिप्राय को यूं स्पष्ट कर देते हैं कि विशेष २ समाजें तत् तत् उपदेशकों के लिए नियत कर दी जांय, इसमें थोड़ी सी कुर्बानी समाजों को करनी पड़ेगी। वह यह कि प्रतिवर्ष नये आदमी मँगवानेका रोग दूर करना होगा। लाभ इससे ये होंगे (१) समाज किसी समय एक घर्ष समझा जाने लगेगा (२) उपदेशकों को ज्ञात रहेगा कि हमारे कार्य का परिणाम वर्ष भर में यह हुआ (३) उपदेशकों को अपने जीवन में आकर्षण लाने की आवश्यकता पड़ेगी और दूसरी ओर समाजों के सभासदों को ज्ञात रहेगा कि हमारा कोई वर्ष भर में हिसाब लेने वाला और काम खींचने वाला है, इस लाभ पर जितना बल दिया जाय थोड़ा है। यदि एकेश्वरवादियोंकी यहयुक्ति ठीक है कि एकेश्वरवाद में ही यह लाभ रहता है कि मनुष्य अपने पापों का स्वीकार कर सक्ता और पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त के द्वारा अपने जीवन को सुधार सकता है और यदि यह भी ठीक है जैसा कि साधारण मनुष्यों की शिकायत है कि क्रियों के ऊपर पादरियों का बड़ा स्वत्व है जिस का रहस्य यही पश्चाताप है जो किसी पिता, किसी भाई और किसी मित्रके सन्मुख करने का आत्मिक बल न रखती हुई वह पादरियों के सामने बेधड़क कर सक्ती हैं तो कोई कारण नहीं कि इस लाभ को छोड़जाय (४) उपदेशकों का गार्हस्थ्य जीवन लोगों के सामने रहेगा और वे इस प्रकार अधिक स्थायी और वास्तविक कार्य्य लोगों में करसकेंगे क्योंकि समान अवस्थाओं वालों की एक बरादरी होती है और यह बरादरी सैंकड़ों उपदेशों की अपेक्षा अधिक बलवती होती है। इसी नियम पर हम कहा करते हैं कि विद्यार्थियों के अन्दर विद्यार्थी, नवयुवकों के अन्दर नवयुवक और ग्रेज्युएटों के अन्दर ग्रेज्यूएट ही उचित रीति से कार्य्य करसक्ते हैं। इसी नियम पर स्टोक्स सरीखे ईसाई पादरी—जिनके अनुभव से हमें लाभ उठाना चाहिये और जिन के अनुकरण करने में हमें कोई संकोच नहीं होना चाहिये—पहाड़ियों में ही विवाहादि संबन्ध करके एक स्थान पर बैठ जाते हैं, इसी नियम पर हार्ले आदि लाहौर में अपने खोले हुए बोर्डिंग के सुपरिंटेंडन्ट होते हुए यूनिवर्सिटी की खेलों के सेक्रेटरी बनजाते हैं और इसी नियम पर डाक्टर यूइंग यूनीवर्सिटी के बाईस चैंसलर बनकर अपने चर्च को सर्व प्रिय बनाना संभव देखते हैं। गृहस्थ की प्रत्येक तफसील और कठिनाई में क्रियात्मक उपदेश और उस से उद्धार ऐसे काम हैं जो मनुष्य को मनुष्य का अक्रीत दास बनाता है, अतः हम बलपूर्वक इस युक्ति को प्रस्तुत करतेहैं और निवेदन करते हैं कि उपदेशकों को उपदेशके इस क्रियात्मक साधन से वंचितन रक्खा जाय, इसी में वह सेवा भी आजाती है जो मनुष्य किसी की रोग में कर सक्ता है और जो आजीवन किसी भी उपदेश के प्रभाव को स्थिर रख सक्ती है। (४) चौथा लाभ यह होगा कि सभा को ज्ञात होता रहेगा कि अमुक उपदेशक ने इतना काम किया (५) उपदेशक सभा को सूचना देसकेगा और वह सूचना लोकल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हालातके मली भांति गवेषणा पूर्वकहोगी कि अमुक स्थान के अमुक आदमी यूं वैदिक धर्म्मी बनाए जा सक्ते हैं। आज कल जो प्रणाली प्रचलित है उसके अनुसार उपदेशकों को अपनी डायरी में यह तो लिखना पड़ता है कि अमुक स्थान पर ऐसी या वैसी अवस्था है परन्तु यह सूचना ऊपर २ की होती है और कई बार अशुद्ध निकलती है जिस की बिना पर कई बार हानी भी हो जाती है और इस सबका आधार वही अल्पज्ञता है जो स्वल्प निवास का फल होना चाहिये, (६) छठा बड़ा लाभ यह होगा कि शास्त्रार्थ रुक जायगा। आज यह किस से छिपा है कि शास्त्रार्थ या धर्म्म चर्चा शस्त्रार्थ और अधर्म्म चर्चा रह गये हैं। वही बटेर बाज़ी, वही पहलवान, वही अखाड़ा और वही दाव पेच। यह एक सचाई है जो हमें इतने परिभ्रमण के आधार पर प्रकट करने में आज कोई संकोच नहीं। क्या नये और विद्वान पौराणिक, क्या मुसलमान और क्या ऐंड्रूज़ सरीखे ईसाई, सब इस ढकोसले को बुरा समझते हैं और आर्य्य समाज की उपयोगिता को बुरा स्वीकार करते हैं, बल्कि उसका लोहा मानते हैं। अब हमारी समझ में शास्त्रार्थ का ज़माना रहा नहीं है, परन्तु यदि कोई ऐसा अवसर आ भी पड़ेगा तो लोकल उपदेशक विरोधी के हथ कण्डों का पूरा ज्ञान रखने के कारण सभा के किसी अन्य उपदेशक की अपेक्षा—जिसे ऐसे अवसरों पर प्रायः करांची से शिमले धकेला जाता है—अधिक अच्छा प्रबंध कर सकेगा। साधारण अवस्थाओं में वह लोकल और अड़ौसी पड़ौसी ज़िले के आदमियों से मिलता जुलता रहकर शास्त्रार्थ की संख्या को कम कर सकेगा और ऐसे उपाय करेगा जिनसे परस्पर प्रेम और प्रीति बढ़ें।

(७) प्रत्येक उपदेशक अपने कार्य्य का पूरा स्वामी होगा। वह यदि उचित समझेगा तो अपने आधीन कुछ उपदेशक रख सकेगा और इस बात का प्रबन्ध करेगा कि सोई हुई समाजें जागें। जो समाज प्रतिनिधि सभाओं से इस कारण

संबँध नहीं रखतीं कि उन्हें यह भी ज्ञात नहीं कि प्रतिनिधि के फार्मों को कैसे भरें; उन को यथोचित सम्मति दे कर इस योग्य बना सकेगा कि वह सभा में अपनी आवाज़ रक्खें, इस समय ग्रामों में तो यह अवस्था है कि बड़े पण्डित जी को प्रदर्शिनी के लिये कुर्सी पर बिठा दिया जाता है और उपदेशादि उन्हीं के पसन्द किये जाते हैं जिन को हम उन स्थानों पर अविरक्त साम्राज्य और अधिकार देना चाहते हैं। आवश्यकता यह है कि ऐसे सज्जनों को डाक्टर बनने दिया जाय (८) आठवां लाभ यह है कि सब काम निभ सकेगा। वर्तमान तरीके पर तो यह अवस्था है कि एक वर्ष के लिये राय शिवसिंह या एक ला० बख्शी राम उठते हैं और वह सभा को तारों पर तारे दे कर और अपना सारा प्रभाव सभाके ऊपर प्रयुक्त करके सब उत्तम व्याख्याता इकट्ठे कर लेते हैं। कहीं महात्मा मुंशी रामजी आ रहे हैं, कहीं स्वामी सत्यानन्द जी पधारे हुए हैं, कहीं मास्टर रामदेव जी मंगवाए हुए हैं। सार यह कि जिन का उपदेश सुनने समझने की बटाला या दीनानगर की पब्लिक को (बेअदबी मुआफ) बुद्धि नहीं, उन सब को डूहा लेने के लिये बुलाकर धारा प्रवाह व्याख्यान सुनने का पब्लिक को व्यसन डाल देते हैं। आगामी वर्ष यदि इन में से कोई सज्जन नहीं पधार सका तो उत्सव फीका, चन्दा कम, सभा पर रोष, वेद प्रचार फण्ड के ऊपर अत्याचार ये सब परिणाम निकलते हैं, जो बात उपदेशकों या व्याख्याताओं के विषय में कही जा चुकी हैं वही भजनीकों के संबंध में उसी बल से कही जा सक्ती हैं, प्रत्येक उत्सव पर म० गिरधारी लाल और म० अमीर चन्द्र म० मंगूराम और ठाकुर प्रवीण सिंह चाहिये। एक समय आर्य्य समाज के इतिहास में वह था जब प्रत्येक आर्य्य समाज की एक २ भजन मण्डली होती थी और एक समाज के उत्सव पर उस ज़िले की सब भजन मण्डलियां पहुंच जाती थीं। सभा की ओर से वल म० अमीरचन्द या चौधरी नवलसिंह और उस से भी पीछे ठाकुर प्रवीणसिंहादि सज्जन अकेले अकेले रहा करते थे। परन्तु आज प्रत्येक उपदेशक के पीछे एक भजनीक रखने की आवश्यकता पड़ती है। यह रोग यहां तक बढ़ा है कि साधारण साप्ताहिकाधिवेशनों में भी प्रोफैशनल रागियों की ओर ही उँगली उठती है और मुंह फिरते हैं। मालूम नहीं होता कि भक्ति के भजनों के गानेमें कौनसी विद्वता या प्रोफेशनल अनुभव की आवश्यकता है। कल की बात है कि महात्मा मुंशीराम और ला० राम कृष्ण की भजन मण्डली जालंधर आर्य्य समाज के नगर कीर्त्तन में बराबर भाग लिया करती थी और यह भी एक सचाई है कि आर्य्य समाज की भजन पुस्तकों में कई भजन महात्मा मुंशीराम के बनाए हुए हैं। यदि हम भूल नहीं करते तो "प्रभुजी कर देओ अमृतवारी" भजन ख़ास महात्मा जी का बनाया हुआ है। क्या कोई कह सकता है कि यह भजन आज कल के भजनीकों के भजनों की अपेक्षा किसी अँश में कम है। बात यह है कि इनके बनाने वालों में प्रेम था, धर्म्म के लिये उत्साह था। कौन कह सकता है कि पं० लेखराम जी जब समाज की सेवा में अवतीर्ण हुए थे तो उन में वह योग्यता थी जो उनके मृत्यु समय पर थी। इसी प्रकार आज भी जिन समाजों की भजन मण्डलियाँ हैं वहां के साधुराम और कन्हैयालाल, मँगूराम और विष्णुदत्त जैसे भक्त वहप्रभाव डालते हैं कि लाहौर में प्रति वर्ष उनके पुराने भजन सुनते सुनते भी पब्लिक नहीं थकती। समझ में नहीं आता कि हम लोग सिक्खों का अनुकरण क्यों नहीं करते, वे लोग छोटा बड़ा, राजा और रँक बूढ़ा और बच्चा, पुरुष और स्त्री सब मिलकर गाते हैं और उसका परिणाम यह है कि सिक्खों में सब से अधिक रागी हैं। हमारे यहां जो बालक १५ वर्ष की आयु तक भजन गाता रहता है वह कालिज में पहुंचते ही ऐसे सँकोच और मिथ्या लज्जा के अन्दर पड़ जाता है कि अपने घर में भी गाने का नाम भी नहीं सुना। परन्तु जब कालिज का नाटक हो तो सब से पहले अपना नाम पात्रों में लिखाता है। कारण यह है कि धर्म्म का काम करने में लोग बेहूदा शरम अनुभव करते हैं। डाक्टर चिरँजीव के उस प्रस्ताबके साथ-जो उन्होंने लाहौर आर्य्य समाजमें पास कराया था हम पूर्ण तया सहमत हैं कि एकविशेष अवस्था से कमके बालकों को उसी नियम पर खड़ा नहीं होने देना चाहिये जो हमने अपनी पूजनीय बहनों, लड़कियों और माताओं के विषय में निर्द्धारित किया था। इस प्रकार हमने काफ़ी विशद कर दिया है कि यह भी एक लाभ रहेगा कि प्रति वर्ष उत्सवों का कार्य निभ जाया करेगा और साथ ही उन फीसदार आनरेरियों के नखरे भी न उठाने पड़ेंगे जो हमारे और विशेष करके युक्त प्रान्तियों के गले का हार बन रहे हैं। आज भी असली तौर पर अवस्था यही है। लाहौर आर्यसभाज के उत्सव को लेलीजिये। अनुभव ने बताया है कि ब्रह्मचारी मुनीश्वरानन्द को छोड़कर जितने नये व्याख्याता आते रहे हैं वे सफल नहीं हुए। अब एक प्रकार से प्रोग्राम स्थिर सा होगया है।

यहाँ पर हम एक और क्रियात्मक उपाय बताना आवश्यक समझते हैं। यदि सँभव हो तो ऐसा कर दिया जाय कि ज़िले भर के समाजों के उत्सव इकट्ठे रख दिये जाया करें, ताकि सभा का इतना मार्ग व्यय बच जाया करे और अपेक्षित स्थिरता लाकर उपदेशकों के व्याख्यानों में रस और भाव आने दिये जांय। यदि यह अभी न हो सके तो वार्षिकोत्सव भुगताने के लिये यथा सम्भव आनरेरी महाशय कर दिये जाँय जिन में सौभाग्य से हमें कई सन्यासी भी मिले हुए हैं और उन के साथ उपदेश के लिये एक २ उपदेशक भेज दिया जाय परन्तु शेष कार्य के लिये निर्विवाद रीति से उपदेशक महाशय छोड़ दिये जांय।

हम जब अद्यैतनिक व्याख्याता महाशयों के विषय में कुछ कड़वा निवेदन करते हैं तो हमें श्रीमान् वज़ीरचन्द्र जी सरीखे भक्त क्षमा करें, हमारा सँकेत उन की ओर नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

इस प्रकार हमने यत्न किया है कि उन दोषों के परिहार के उपाय बताएं जो संभवतया उपदेशकों की श्रेणियाँ बनाते हुए आसक्ते हैं, हम ऊपर कह चुके हैं कि समाजों को ज़रा त्याग करना पड़ेगा, उसके लिये भी हम कहते हैं कि यह परिवर्त्तन अदृश्य रीति से शनैः शनैः किया जाय। परीक्षणार्थ एक वर्ष जिस उपदेशक को अब तक साधारण समझा जाता है उसे अन्य 'अच्छे' उपदेशकों के साथ बुलालिया जाय, हम कहते हैं कि यह परीक्षण बड़ा सफल होगा, इसका प्रमाण हमारे पास है, जिस समय पं० प्रयागदत्त अवस्थी को लाहौर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव को अपील के लिये वेदी पर खड़ा किया गया था उस समय किसको ज्ञात न था कि वे ऐसा अच्छा बोल सक्ते हैं। इसी प्रकार स्वामी मुनीश्वरानन्द जी और ला० बख्शीराम के दृष्टान्त भी उत्साह जनक हैं, उपस्थिति की संख्या और योग्यता के अनुसार बोलने वाले के दिल में तदनुकूल भाषण शक्ति की सञ्चार हो जाता है।

इस प्रविभाग का आधार सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा के परिणामों पर रक्खा जासकता था जो किसी जमाने में सभा लिया करती थी, उस में डिविज़न नियत किये जा सक्ते थे और तदनुकूल अधिकार और वेतन दिये जा सक्ते थे, अब भी कुछ वैसा ही प्रबंध किया जा सक्ता है।

संक्षिप्त समालोचना।

१— वीर क्षत्राणी,— इसके लेखक हैं हिन्दी के सुकवि और सम्पादक लाला भगवान दीन जी। प्रकाशक हैं बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त, आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स बनारस। पुस्तक बड़े आकार के सौ पृष्ठों में समाप्त हुई, है और प्रकाशक के पास से बारह आने में मिल सकती है।

पुस्तकमें बारह प्रसिद्ध वीर क्षत्राणियों का चरित्र कविता बद्ध किया गया है। कविता सरस और बीर रस से भरी हुई है; सरल भी इतनी है कि स्त्रियें भी आसानी से समझ सकती हैं। प्रत्येक गृहस्थ को अपनी बहिनों और कन्याओं को मंगा के देने योग्य पुस्तक है। कहीं२ बड़े ज़ोर के पद्य हैं, जैसे:—

"क्षत्रानी अगर क्रोध से निज जोश में आजय। कुल धर्म अगर उसके ज़रा जी में समाजाय॥ बीरत्व का मद उसकी तनिक आंख में छा जाय। हथियार हो कुछ हाथ में, रण भूमि भी पा जाय॥ फिर कौन है संसार में जो उसको मनावै। बिन प्राणदिये उसका नशा शान्त करावै॥

—०—

२—सागर साम्राज्य,—यह 'रत्नाकर' नामक मासिक पुस्तक का पहिला अङ्क है। डबल क्राउन आकार के ११२ पृष्ठों का यह एक अङ्क "मैनेजर रत्नाकर, १२५ हरीसन रोड, कलकत्ता" से पांच आने में मिलता है और वार्षिक मूल्य इसका है २) रु०।

यह पूरी पुस्तक का पहिला भाग है। लेखक 'एक हिन्दी सेवक' हैं। यह विचित्र यात्रा का एक वैज्ञानिक उपन्यास है। जहां तक हम जानते हैं अभी तक हिन्दी वैज्ञानिक उपन्यासों की संख्या तीन या चार से अधिक नहीं है। अतः हिन्दी में ऐसे उपन्यासों के लिखे जाने की बहुत ही आवश्यकता थी, हर्ष है कि 'रत्नाकर' के संचालक ऐसी २ अनेक आवश्यकताओं को सस्ते दामों में पूरी करने के लिए अग्रसर हुए हैं, आशा है कि हिन्दी साहित्य की उन्नति चाहने वाले बन्धु रत्नाकर के ग्राहक बन के संचालक महाशय का उत्साह बढ़ावेंगे।

इस अङ्क की भाषा सीधी और लेखन शैली प्रशस्त है। इसे पढ़ने से बहुत सी समुद्रीय बातों का ज्ञान होता है।

३—छत्रपति शिवाजी—अनुवादक पं० ज्वालादत्त शर्मा और प्रकाशक शङ्करदत्त शर्मा, वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद; मूल्य ॥) आने पृष्ठ संख्या डबल क्राउन सोलह पेजी आकार के १४२ है।

मूल पुस्तक स्वनाम धन्य लाला लाजपतराय की लिखी हुई है। पुस्तक का विषय है छत्रपति महाराज शिवाजी का जीवन चरित्र, चरित्र बहुत मार्मिकता से लिखा गया है और जहां तक हो सका है सत्यान्वेषण की कोशिश अधिक की गई है। पुस्तक के प्रारम्भ में [illegible] पृष्ठ की भूमिका लिखी गई है वह इतिहास की दृष्टि से बहुत ही महत्व की है। इस के अनुवादक शर्मा महाशय से हमें यही कहना है कि उनकी भाषा प्रायः निर्दोष नहीं है, व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धिएं बहुत रहती हैं। भविष्य में इस दोष का न रहना ही ठीक है।

४—धनी होने का उपाय—अर्थ शास्त्र सम्बन्धी यह छोटी सी पुस्तक बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त की लिखी हुई है। अंग्रेज़ी में इस पुस्तक के दो संस्करण बिक चुके इसी लिए लेखकने हिन्दी पाठकों को भी धनी होने का उपाय बताने की कृपा की। पुस्तक बुरी नहीं है; जिन्हें इच्छा हो लेखक से "आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स, बनारस" से दो आने में मंगालेवें।

५—विदूषक—इस नाम के लेख लखनऊ से प्रकाशित होने वाले नागरी प्रचारक में एक साल पहले आया करते थे। उन्हीं लेखों को अब पुस्तक रूप में परिणत किया गया है। इस के लेखक एक शर्मा महाशय हैं और ।=) आ० में नागरी प्रचारक कार्यालय से मिलती है। पुस्तक हास्य, व्यङ्ग और मनोरंजक है तथा कई स्थानों पर मर्म की शिक्षा भी देती है। जिन्हें संग्रह करने की आवश्यकता होवे मंगा लेवें।

६—भारत रहस्य—यह गोस्वामी राधा मोहन शर्मा लिखित नाटक या नाटक की रिश्ते दार पुस्तक है। भारत के धार्मिक दुख से दुखी हो के भारत माता बहुत सी देवियों, सिद्धियें और महात्माओं के साथ बैकुण्ठ धाम में जाके परमात्मा की प्रार्थना करती है, प्रार्थना पर प्रसन्न हो के परमात्मा फरमाते हैं कि "मेरे नियम निश्चित हैं जो जैसा करेगा उसे वैसा फल मिलेगा तुम चिन्ता मत करो।' नारद का काशी में घूम के पंडा लीला देखना कुछ मनोरंञ्जक है। जिन की इच्छा हो वे ।-) आने में ९३ पृष्ठ की पुस्तक लेखक से चित्ती खाना, आगरा से मंगवालेवें

७—सामान्यनीति काव्य—काशी के ग्रन्थ प्रकाशक समिति हिन्दी के अच्छे २ ग्रन्थ प्रकाशित कर रही है। पं० हरदीन त्रिपाठी की लिखी यह छोटीसी काव्य पुस्तक भी इस समिति की प्रकाशित की हुई है। पुस्तक एक सौ आठ कुण्डलियों में समाप्त हुई है। अनेक विषयों पर कविता उपदेश प्रद हुई है और सामान्य रीति से कवित्व गुणकी भी रक्षा हुई है पर कहीं २ लेखक का हृदय संकीर्ण होगया है-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

"दीन कहै इसलाम इसाई आदि न होवै।
खोवा चहै जो जाति दयानन्दी बनि खोवै॥"

फिर भी पुस्तक अच्छी है। तीन आने में उक्त समिति से ही मिल सकेगी।

८-कर्णाटक-जैन-कवि—इस के लेखक और प्रकाशक पं० नाथूराम प्रेमी, गिरगांव, बम्बई हैं। और उन्हीं से आध आने में मिलती है। यह अब से कोई डेढ़ साल पहिले "जैन हितैषी" नामक मासिक पत्र में क्रमशः प्रकाशित हुई हैं, इस में ७५ उन जैन कवियों का परिचय समय आदि दिया है जिन्होंने कर्णाटिकी भाषा में जैन साहित्य के ग्रन्थ लिखे हैं प्रेमीजी का यह उद्योग प्रशंसनीय है और ऐतिहासिक दृष्टि से यह पुस्तक महत्व की है।

९-भ्रमण नारद—यह मूल पुस्तक पाली भाषा में किसी बौद्ध भिक्षुक की लिखी हुई है, उस से अंग्रेज़ी में अनुवाद हुआ और अंग्रज़ी से गुजराती में किया गया तथा गुजराती के आधार पर पं० नाथूराम प्रेमी ने एक गल्प बना के "जैन हितैषी" में प्रकाशित कराई; अब यह न्यारी पुस्तकाकार प्रकाशित कराई गई है और लेखक महाशय से हीरा बाग, बम्बई के पते पर बिना मूल्य मिलती है। इस की कथा दया प्रेम उत्पन्न करती है। देखने योग्य है।

१०—खुंगी की उम्मेदवारी—नाटक के रूप में छोटा सा प्रहसन है। लेखक को सफलता हुई है। देखने योग्य है। श्रीयुत पंडित बदरीनाथ भट्ट जी ने अंग्रेज़ी में बी. ए. पास हो के हिन्दी में पुस्तक लिखी है इस लिए वे और भी धन्यवाद के पात्र हैं। रामभूषण प्रेस, आगरे से तीन आने में मिलेगी।

११-शिवाजी का आत्मदर्शन—मूल पुस्तक मराठी भाषा की है जिसका अनुवाद पं० काशीराम शर्म्मा ने किया है। अनुवाद की भाषा सरल और बोधगम्य है। इस में उपन्यास रूप से यवन शाहज़ादी रोशनआरा का अपार प्रेम और महाराष्ट्र केसरी शिवाजी की सच्चरित्रता का अच्छा वर्णन है। लेखक को अच्छी सफलता हुई है। पुस्तक पढ़ने योग्य है। के० पी० प्रेस, फर्रुखाबाद से साढ़े तीन आने में मिलेगी।

१२-कलियुग की कुलदेवी—मूलचन्द किसनदास कापड़िया, सम्पादक "दिगम्बर जैन सूरत" का लिखा हुआ एक वेश्या निषेध पर निबन्ध है। लेखक गुजराती होने के कारण भाषा बहुत नष्ट होगई है। उन्हीं से विना मूल्य मिल सकेगी।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

स्वास्थ्य

(१) स्वास्थ्य सब ब्रह्मचारियों का अत्युत्तम है। इस मास में दो ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त किसी ब्रह्मचारी को रोग व रोगी गृह का सेवन करना नहीं पड़ा- नियमानुसार सब पठन में लगे हुए हैं। इस वर्ष ग्रीष्म ऋतु में निरंतर अधिक गर्मी के न होने से विद्यालय के समय बदलने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। आशा है अब आवश्यकता पड़ेगी भी नहीं क्योंकि एक मास के सत्रान्तावकाश के बाद कुछ शरद ऋतु का ही प्रादुर्भाव हो जायगा।

प्रचार

(२) यह तो आर्य्यपुरुषों को ज्ञात ही है कि इस समय शाखा गुरुकुल में उपसभा का कार्य्यालय है उप सभा के उपदेशक तथा भजनीक निरंतर गुरुकुल सहायतार्थ धन एकत्र करने के लिये और प्रचार के लिये नियमानुसार निरंतर भ्रमण कर रहे हैं। हम ला० नौवतराय जी का हृदय से धन्यवाद करते हैं जिन्ह ने उपदेशकों के साथ गु. कु. सहायतार्थ धन एकत्रित करने के लिये अपना अमूल्य समय दिया है। हम आशा करते हैं कि आर्य्य पुरुष जिस जगह उक्त महाशय पहुँचें उनकी यथा शक्ति सहायता करेंगे। अबतक उनके द्वारा जो धन एकत्र हुआ है उसका ब्यौरा आगामी समाचार में देंगे।

गोशाला

(३) इस समय गोशाला बड़ी उतमता से चल रही है ब्रह्मचारियों के लिये काफी दूध मिल जाता है-आवश्यकता केवल एक अच्छे साँड की है आशा है कोई महाशय इस त्रुटि को दूर करेंगे।

संरक्षकों से चार निवेदन

(४) १-जिन संरक्षकों ने संरक्षक गृह का रुपया नहीं भेजा शीघ्र भेजदें। २-जिनके नाम तीन मास से अधिक शुल्क है वह शीघ्र रुपया भेज दें, और आगे से प्रति मास भेज दिया करें तो अच्छा हो जिससे व्यर्थ पत्र व्यवहार में समय और धन नष्ट न हुआ करे। ३-यदि कुछ संरक्षक ग्रहण के मेले पर गु. कु. के लिये धन एकत्र करने का व्रत धारण करें तो बड़ा ही उत्तम हो। (४) पत्र व्यवहार सर्वदा प्रबन्धकर्त्ता शाखा गुरुकुल इस पते से ही होना चाहिये किसी विशेष व्यक्ति के नाम से नहीं।

विष्णुमित्र

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा को अधिक बिक्री देखकर हमारी का सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दुसरा मोल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २५ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शुल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, जी मचलाना, कमर का दर्द रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है

कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गी० प्रो० बालकृष्ण, एम. ए.

रचित अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये
पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके
ी नाम लिखाने वालों से ¼ कीमत ली
वेंगी।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है)।)
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं ? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की
प्रणाली छप रही है। ॥)

तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली
ीमानी नमक है इससे बदहजमी पेट
अफ़रा खट्टी या घूएं की डकार का
ना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा
ाहणी, अतिसार, आदीका दर्द बवा
ज, और भूख की कमी में लाभ
ाता है, खांसी दमा गठिया और
धिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक
बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उप-
ी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का बि-
र दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १)
बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक
ीमानी रहता है, कीमत ५)

चलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी

जालोर जिला गया

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ़ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बडी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी =)
प्रार्थना पुस्तक =)
ओंकार की उपासना =)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नयदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश =)
वेद और महाभारत के उपदेश =)
वेद, मनु और गीता के उपदेश =)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भावो टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालें। समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे को शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पता:

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी

हरद्वार।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव

कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुकसेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

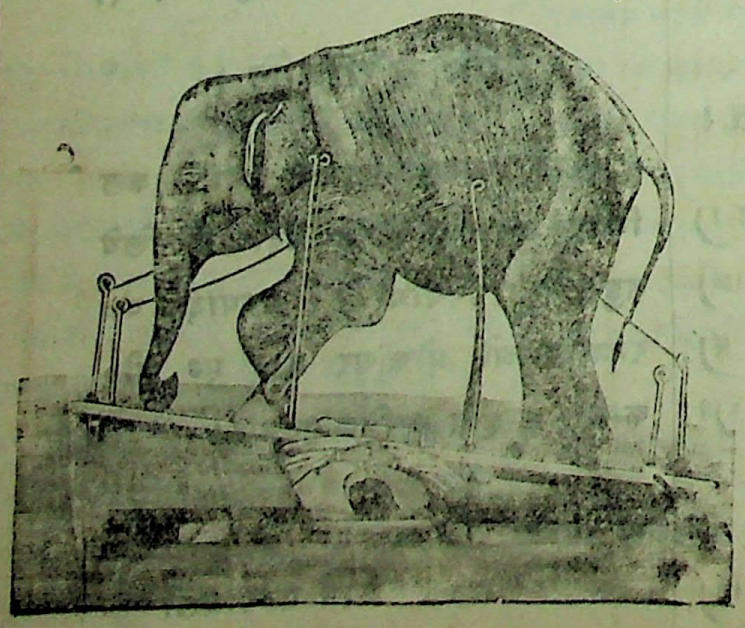

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ।॥) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताऐं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, विक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	५)
८०	१०)	॥)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

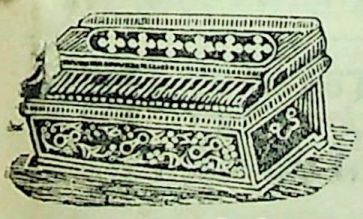

इस पुस्तक में कई प्रकार को गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च -) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० -)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पो०

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेंड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल्य २) इस ग्रन्थ में कौरवों पांडव की लड़ाई नीती, धर्म्म चारों वरणों के धर्म्म वर्णन हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४८० पृष्ठ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पास पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनिये फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २४ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द--जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूल्य रत्न है।। **ब्राह्मी बूटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दूंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सम्दयाषता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वेदिक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्तरत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णदत्त भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई इस सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रशंसा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽऽशु संस्मरेत्॥ वर्यां स्मृतिप्रदाकुष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मेधायुबलवर्धाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, वहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंडा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और-गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

महात्मा मुंशीराम जी!

विज्ञान कल्पतरु के विषय में लिखते हैं:—मैं इस पुस्तक माला को आर्य्य तथा भावी आर्य्य जनता के लिये बहुत उपयोगी समझता हूं। मेरी सम्मति में यदि प्रत्येक आर्य्यसमाज इस की एक एक प्रति खरीदना स्वीकार करले तो ऐसा उपयोगी ग्रन्थ छप कर स्वदेश को बहुत लाभ पहुंचा सकता है। यदि मेरे पास धन होता तो मैं आपका हाथ बटाने का कुछ प्रयत्न करता अब केवल आप की कृतकार्यता के लिये मङ्गल इच्छा ही प्रकट कर सकता हूं। विज्ञान कल्पतरु में प्रत्येक वस्तु के बनाने की क्रियायें धन कमाने के अनेक ढंग, विज्ञान (साईन्स) सम्बन्धी तथा वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक बात का पूरा वर्णन चित्रों सहित किया गया है। ग्रन्थ बड़ा होने में ९०० पृष्ट मासिक में छपता है और रजाई ग्राहकों को ॥) प्रति अंक डाक व्यय सहित दिया जाता है अन्यों को प्रति अङ्क ।॥) में

मैनेजर जनरल पब्लिशिंग कंपनी मेरठ

बाल तेजी बढ़ते हैं

बाल उड़ाने का साबुन—जिस किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत की बजाय ।) आधे १२ बजे एकसाथ डेमे से १ एस्कोप सिहत ऊपर बही खाते में बुक्त भेजेंगे। मंगाने का पता—

अर्मनचेंड कं. सतघडामथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(६) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फ़र्राश, खाना गली रुमोसान देहली

पं० नन्दराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० नन्दराम के सहायक प्रचारक यन्त्रालय दरीबे में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

3697. Editor Gurukul

ओ३म् ॥ Registered NoL. 807.

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | ३१ श्रावण सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ६१] ता० १५ अगस्त १९१४ | संख्या १८ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १)
सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर मी " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहि[illegible]ति से अन्त तक मनोरञ्जन से भरी हुई है । आप [illegible]पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ॥) प्र० ०
तीन मास " " " " -) "
छः " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की छटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सका ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर लिखा कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक
एकतोले तक

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से करें ।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र-देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटो से मृतक पारे को शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब चाहें जितनी मंगावें।

पता:

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी

हरद्वार।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव

कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) वड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुक्सेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—— जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

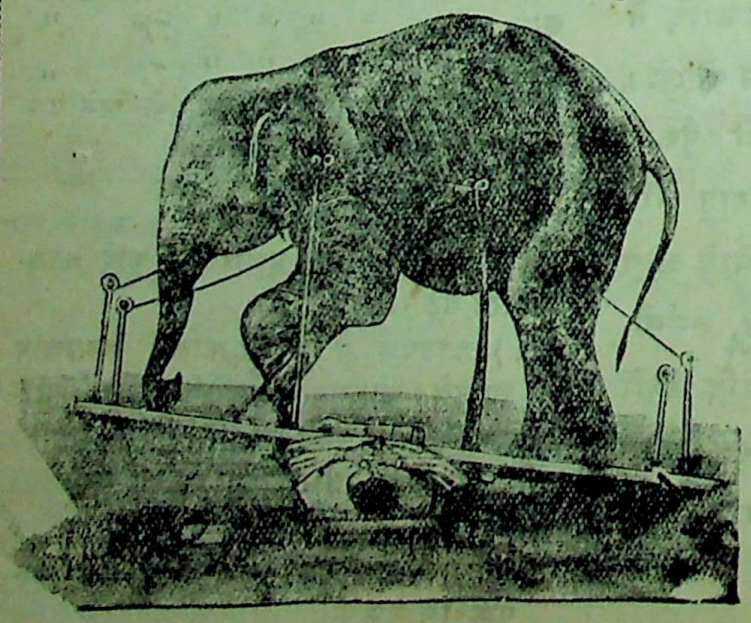

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपन्ना।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर-) राजपूतों की बहादुरी ।।।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्तपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटवाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्मिकदृश्य ।

प्रातःकाल का समय था । चारों ओर हलका हलका मेघ छाया हुवा था वायु बहुत धीमी थी, किन्तु हृदय की कोंपल को हरा भरा कर देने वाली थी, सामने कागज रख कर और हाथ में लेखनी लेकर लेखक बैठ गया और 'आत्मिक दृश्य" शीर्षक देकर सोचने लगा कि क्या लिखें । कमरे की चिक उठी और एक सज्जन अन्दर पधारे । बात चीत होने-लगी लेखनी नीचे रख दी गई और कागज उसकी प्रतीक्षा करने लगा । वे सज्जन बात चीत करके बाहिर हुए, और लेखक ने फिर लेखनी संभाली । अभी विचारों की शृङ्खला जुड़ने न पाई थी कि एक और मिलने वाले आ विराजे । विचार का प्रवाह जहां से चला था वहीं रह गया, और बहुत देर तक लेखक के हाथ फिर कागज़ पर निश्चेष्ट पड़े रहे । अंत में जाकर निर्पाक्षिक हुआ । अकेले होकर लेखक ने विचारना प्रारम्भ किया कि क्या लिखाजाय । बहुत सोचा । कई विचार शृङ्खलाओं को पकड़ कर चलना शुरू किया । एक छूटी, दूसरी रात्रि में टूट गई तीसरी ने भी देर तक सहारा न दिया ।

तब सोचा कि इस प्रकार कोई विचार नहीं सूझेगा । चलो बाहिर के दृश्यों से कोई ज्ञान माँगें शायद वहां से कुछ स्फूर्ति मिले । स्फूर्ति पाने की इच्छा से घर के एक दरवाजे से बाहिर मुंह निकाला, देखा प्रकृति अपने अपूर्व सौन्दर्य को दिखा रही है । गङ्गा की वेगवाली धारायें हिमालय का संदेसा समुद्र तक पहुचाने के लिये वेग से भागी जा रही हैं । तट पर हरी हरी घास सिर ऊपर को उठाकर अपने उपकारी बादलों को झाँक रही है । दृश्य बड़ा सुन्दर था, चाहा कि इस दृश्य से कुछ स्फूर्ति मिले, किन्तु आंखों ने प्रतिभा को सहायता न दी । सारा सौन्दर्य स्वयं ही रख लिया, दिमाग पर उसका प्रभाव न होने दिया निराश होकर उधर से दृष्टि थोड़ी और दूसरी ओर उठाई । सोचा कि इधर से कोई न कोई स्फूर्ति अवश्य मिलेगी । विशाल क्रीड़ा क्षेत्र में कुछ ब्रह्मचारी इधर उधर खेल रहे थे, उन की पीली पीली धोतियां हरे हरे घास के क्षेत्रपर ऐसे प्रतीत होती थी, जैसे काश्मीर के किसी हरे पहाड़ पर पीली चंबेली के वनस्पति फूले हुए हों । उन के आगे गुरुकुलोद्यान के ऊंचे २ वृक्ष और सुहावने फूल एक दूसरे को छिपाने पर तत्पर थे । वृक्ष फूलों के कामको छिपा रहे थे और फूल वृक्षों की शोभाको छिपा रहे थे । सब दृश्य देखे, किन्तु प्रतिभा में फिर भी स्फूर्ति उत्पन्न न हुई । दिमाग फिर भी वैसा का वैसा कूड़ ही रहा । तङ्ग थक कर लेखक अन्दर आ बैठा और कारण सोचने लगा । विशाल प्रकृति, सुन्दर दृश्य सब के सब मिल कर प्रतिभा में जागृति क्यों पैदा नहीं कर सके । ऐसा क्या दोष दिमाग में घुस आया जिस से वह बाहिर के प्रभाव लेने के योग्य ही न रहा !

जब तक वृत्तियां बाहिर रहीं, ऐसी ही घुड़ दौड जारी रही । बुद्धिको आँखों की सहायता से उसे जित करना चाहा, वह न हुई । रूपने कोई सहायता न दी । यत्न किया, किन्तु निष्फल हुआ । उस निष्फलता ने वृत्तियों को अन्तर मुख कर दिया । वृत्तियों के अन्तर्मुख होते ही शिकायत दूर हो गई । प्रतिभा में जो जड़ता आगई थी, वह भाग गई । प्रतीत होने लगा, कि लेखक का मन सोच सकता है, उस में स्फूर्ति पैदा हो सकती है । उत्पन्न होने वाली स्फूर्ति पहला ज्ञान जो मन में उत्पन्न किया वह यह था कि जब चित्त की वृत्तियाँ स्थिर नहीं हैं तब बाहिर के साधनों से किसी प्रकार की आत्मिक जागृति चाहना भूल है । बाह्य साधन उसी मनुष्य के लिये हित कारक हो सकते हैं, जो अपने अन्दर घुसना जानता है । वास्तविक स्फूर्ति आत्मा से ही मिल सकती है, बाह्य गुणतो केवल उसके सहायक हो सकते हैं ।

जो लोग समझते हैं कि मन की वृत्तियों को स्थिर करने के लिये, और योग के साधन करने के लिये घर से निकल कर बाहिर भाग जाना, और परिवार के बन्धनों को तोड़ देना अवश्यक, वे इस सिद्धांत को भूल जाते हैं, कि बन्धन आत्मा में है, वस्तुओं में नहीं । आत्मा को त्यागी रखो. संसारिक ऐश्वर्य का भोग भी त्याग के समान हो जायगा । आत्मा को बाँधे रखो, जङ्गल में अकेली कुटिया भी रंग महल से अधिक फंसाने वाली हो सकती है, किसी ने कहा है—

वने ऽपिदोषाः प्रभवन्तिरागिणां ।
गृहेऽपि पञ्चेन्द्रिय निग्रहस्तपः ॥

जिन के हृदय में राग है, वे जङ्गल में भी दोषों से घिर सकते हैं, और जो हृदय से त्यागी हैं, वे घर में भी योग साधनों को कर सकते हैं । अन्तरात्मा सब कुछ है, उसी में जागृति या सपना रहता है । उस को शुद्ध रखा जाय तो फिर कोई बाह्य कारण हमें दूषित नहीं कर सकता । साथ ही आत्मा को बीयाबान में अकेला छोड़कर मन कितना ही इधर उधर भाग फिरे, उसे सुख शांति या जागृति प्राप्त नहीं हो सकती । जागृति अन्दर से ही प्राप्त हो सकती है । वही शांति का सच्चा धाम है ।

संसार की गति ।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी

आज कल श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज श्रीनगर में कथा कर रहे हैं । श्री स्वामी जी की कथायें आर्य्य समाज में सब प्रसिद्धि प्राप्त करती जाती हैं । लोग श्री स्वामी जी के मनोहारी और उपदेशप्रद भाषणों से बहुत आत्मिक भोजन प्राप्त करते हैं ।

हिंदू सभा और सिखों का झगड़ा

पंजाब हिन्दू सभा के मंत्री ने सरकयूलर जारी किये हैं जिन में पटियाले में विपत्ति ग्रस्त आर्य्य समाजियों के झगड़े को तय करने के लिये एक पञ्चायत का प्रस्ताव किया है । हिन्दू सभा का प्रस्ताव यह है कि आपस में झगड़ा तय करने के लिये हिन्दू जाति के मुखियाओं की एक कान्फरेंस बनाई जाय,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ो दोनों पक्षों को सुन कर यथा योग्य सला देदे। प्रस्ताव बड़ा उत्तम है। म इस में कोई दोष नहीं समझते किन्तु मारे सिख भाइयों ने श्री महात्मा शीराम जी के पत्र के साथ जो सुलूक किया है, वह उत्साह जनक नहीं है वह किसी प्रकारकी आशाओं को बढ़ाता नहीं है। इस समय सिख लोग आपे से बाहिर हैं। पटियाले में अपनी रयासत समझ कर उनकी हिम्मतें बहुत बढ़ी हुई हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है कि हिन्दू सभा के मन्त्री अपने कार्य्य में सफल यत्न हो जांय।

कांग्रेस के सभापति

कांग्रेस के सभापति के लिये प्रान्तीय कांग्रेसकमेटियां अपने अपने प्रस्ताव भेज रही हैं। इस बात को देखकर भारत की निष्प्राणिता प्रतीत होती है किसी भी प्रान्त की कमेटी ने मि० गान्धी का नाम प्रस्तुत नहीं किया, संयुक्त प्रांत और मद्रास ने ला० लाजपतराय जी का नाम पेश किया है। बम्बई की ओर से बा० भूपेन्द्र नाथ बसु प्रस्तुत किये गये हैं। उपर्युक्त दोनो महाशय इस पद के सर्वथा योग्य हैं, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु यह कहने में इन दोनों सज्जनो में से किसी का भी अपमान नहीं होता कि जातीय महा सभा यदि महा सभा बनना चाहती है तो इस वर्ष उस के लिये आवश्यक है कि मि० गान्धी सभापति हों।

श्रीमती वसन्ती देवी।

श्रीमती एनी बसेण्ट से अब किसीको भी शिकायत नहीं रही पिछले मुकद्दमे में उन्हों ने भारत के राष्ट्रीयदल के साथ को जो कुछ सुनाई थीं, उन का उन्हों ने काफी प्रतिविधान कर दिया है। अब उन्हों ने भारत वर्ष के हित के लिये मन वाणी और कर्म से यत्न करना प्रारम्भ किया है। पिछले दिनों जब आप इंग्लैण्ड में थीं तब आपने भारत वासियों के पक्ष समर्थन के लिये विलायत के मुख्य मुख्य समाचार पत्रों में लेख लिखे थे, अब आप केनये २ प्रयत्न भी अनथक हैं। कामन वील के नये नये (Commen weal) नाम का साप्ताहिक पत्र, जिस की सम्पादिका श्री मती ही हैं, थोड़े ही दिनों में अपने ढंग के समाचार पत्रों में प्रथम हो गया है। इस पत्र की राज नीतिक सम्मतियाँ सर्वथा वही हैं जो भारत की जातीय महा सभा की हैं। कांग्रेस के विचारों को बहुत अच्छी प्रकार श्री मती वसन्ती अपने पत्र द्वारा प्रकाशित करती हैं। यह पत्र अभी लड़का ही है, कि आपने एक नया दैनिक पत्र संभाल लिया है। मद्रास का मद्रास स्टैण्डर्ड पत्र बड़ा पुराना और प्रसिद्ध पत्र है। अब उसका स्वामित्व आपने ले लिया है किन्तु बुढ़ापे में भी नये जोश से भरी हुई इस आत्मा को पत्र का बूढ़ा नाम पसन्द नहीं आया। इस लिये मद्रास स्टैण्डर्ड को नया नाम करण कर के 'न्यू इण्डिया' बना दिया गया है, यह पत्र श्री मती एनी बेसेण्ट के पक्ष को पोषण करने वाला होगा। श्री मती एनी बेसेण्ट का पक्ष आज कल वही जो भारत की शिक्षित प्रजा का पक्ष है— इस लिये मद्रास स्टैण्डर्ड को यह नया नाम और नई नीति शुभ हो वह स्थिर हो और फूले फले।

---

२५०) वार्षिक दान

लाहौर के विक्टोरिया डायमण्ड जुबिली टैक्निकल इन्सिट्यूट को महा राजा कपूर्थला ने २५०) वार्षिक देना स्वीकिया। यही सन्तोष है कि कुछ नहीं से थोड़ा कुछ अच्छा है।

निकम्मी संस्थायें

सह योगी आर्य मित्र के एक पत्र प्रेरक महाशय लिखते हैं, कि आर्यसमाज में कई निकम्मी संस्थायें तोड़ देना चाहिये! युक्ति यह है कि वे सभायें कोई कार्य नहीं कर रहीं। वे निकम्मी हैं उनमें से दो एक ऐसी संस्थायें हैं, जिन के लिये संस्था शब्द का प्रयोग करना शब्द की हतक करना है। हां शेष संस्थाओं के विषय में यह प्रश्न अवश्य है कि वे क्या कर रही हैं, और क्या उनकी प्रयोजन हीन सत्ता की अपेक्षा आदर सहित नाश अच्छा नहीं है? परोपकारिणी सभा का नम्बर ऐसी संस्थाओं में से पहला गिना गया है। पीछे जाकर भारत शुद्धि सभा और वृहत्सभा का भी नाम है। बीच में लेखक महोदय ने सार्व देशिक सभा को भी घसीटा है। उपर्युक्त सभाओं या संस्थाओं की अकर्मण्यता को कौन शोचनीय नहीं समझता? उसपर किसको शोक नहीं होता? आर्य पुरुषों का यह कर्तव्य है कि वे आर्य समाज के साथ सम्बन्ध रखने वाली सब संस्थाओं को जागती हुई अवस्था में रखें, उन्हें पब्लिक का रुपया बग़ल में दबा कर सोने न दें। यह ठीक है। किन्तु हम लेखक महाशय से इतना निवेदन किये बिना नहीं रह सक्ते कि उन्हें संस्थाओं का नाम गिनाने में ज़रा उचितानुचित का ध्यान रखना चाहिये था। परोपकारिणी सभा वह सभा है जो ऋषि दयानन्द ने अपने कर कमलों से स्थापित की है और सार्व देशिक सभा आर्य मात्र की मुख्य सभा है। वह हमारे संगठन की अन्तिम लड़ी है। उसके बनने से हमारा संगठन पूर्णता को प्राप्त हुआ है। इन सँस्थाओं के साथ समाज के संगठन की कोई परवा न करने वाले, और 'कर्म वीर' व्यक्तियों की दिली इच्छायें पूर्ण करने के लिए बनाने वाली सभा संस्थाओं का नाम लेना बतलाता है कि द. प. स. महोदय संगठन के साथ सम्बन्ध रखने वाली और न रखने वाली सभाओं में कोई भेद नहीं करते। यदि करते हैं तो क्या उनके मुख से कभी सपने में भी यह शब्द निकलता कि परोपकारिणी और सार्व देशिक सभा की गिनती अन्य स्वच्छन्द सँस्थाओं के साथ होना चाहिये। हमें यह कभी स्वप्न में भी न सोचना चाहिये कि ऋषि दयानन्द के स्थापित किए हुए कल्प वृक्ष को कोई भी अङ्गी भूत शाखा कर जाय हमें यत्न करना चाहिये कि सब संस्थायें जियें और और फूलें फलें, भगवान करे कि समाज रूपी शरीर का कोई भी अवयव कटने न पावे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय पर ऐक्य यह कहाता है ?

बहुत बढा हुआ व्यक्तिवाद भारतवर्ष की बीमारी है। सब की सत्ता इतनी भिन्न और प्रबल है कि कोई मनुष्य भी एक दूसरे की सत्ता में अपने आप को मिलाना नहीं चाहता इसी को जातीयता या राष्ट्रीयता का अभाव कहते हैं, परस्पर विरोध इसी का नाम है। तभी तो फूटको भारत का विशेष मेवा कहा जाता है। भारतवासी लड़ना खूब जानते हैं। कसर केवल इतनी है कि परस्पर मिलना नहीं जानते। योरप की जातियों के घरेलू झगड़े होते हैं, और भारत की अपेक्षा अधिक जोश से लड़े जाते हैं। विप्लव और हत्या तो साधारण बातें हैं। किन्तु एक गुण उनमें है जब सारी जातियां राष्ट्र पर इकट्ठा आक्रमण हो तब उनके आपसे सब भेद भूलजाते हैं। इस पर पहला दृष्टान्त आस्ट्रिया हंगरी का परस्पर मिलकर शत्रु से लड़ना है। हंगरी, आस्ट्रिया का जीता हुआ देश है। उसके असली निवासी कईवार आस्ट्रिया के चुंगल से निकलने का यत्न करचुके हैं। हंगरी और आष्ट्रिया परस्पर बड़े मित्र नहीं हैं। किन्तु अब रूस के साथ युद्ध छिड़ने पर दोनों देशों के निवासी एक होगए हैं। वे परस्पर हाथ मिला कर शत्रु के वार को रोकने के लिए तय्यार हैं। दूसरा दृष्टान्त आयर्लैन्ड और इंग्लैन्ड का है। आयर्लैन्ड में होमरूल के प्रश्न पर दो दल होगए हैं। एक वह दल जो आयर्लैन्ड के लिये अपनी सभा का राज्य चाहता है और दूसरे अलस्टर के निवासी अपने आप को बचाना चाहते हैं। इस झगड़े में पड़ कर दोनों दलों ने एक २ लाख के लग भग स्वयं सेवकों की सेना तय्यार कर लीं थीं। दोनों दल एक दूसरे के रुधिर के प्यासे थे। जर्मनी के साथ युद्ध छिड़ते ही वे सब एक होगये हैं। एक ही सेनापति के नीचे और कन्धे से कन्धे मिला कर सब स्वयं सेवक जर्मनी की जान लेने को तय्यार हैं। पांडवोंका कथन था कि

परस्पर विरोधे हि वयं पंच शतंच ते।
परैः सह विरोधेतु वयं पंच शतंच वै।

घरके युद्ध में पांडव पाँच थे और कौरव सौ थे किन्तु किसी बाहिर वाले से विरोध होने पर व पाँच और एकसौ मिलकर १०५ थे। भारत वर्ष को इसी शिक्षा की आवश्यकता है। जो जातियां उन्नत दशा में हैं और आगे भी उन्नति करती हैं वे शान्ति के समय परस्पर विरोधों को पहाड़ बना लेती हैं और जातीय आपत्ति के समय उन्हें एक राई के समान समझने लगती हैं, किन्तु हम भारत वासी जातीय आपत्ति के समय अपनी दृष्ट्रियों को सूक्ष्म दर्शक यन्त्र बनाकर परस्पर विरोधों के परमाणुओं को हिमालय बना लेते हैं। न जाने भगवान हमारे इस जातीय पाप को कब दूर करने की कृपा करेंगे।

युद्ध के परिणामों के लिये उत्तर दाता कौन है ?

जिस भयङ्कर युद्ध के सपने देख देख कर योरप के विचारक चौंक उठते थे, वह आगया। योरपका महाभारत आ पहुंचा युद्ध के अन्तिम परिणाम क्या होंगे—यह चित्स्वरूप की अनन्त बुद्धि में ही विदित है, किन्तु इतना हर एक देखने वाला देख सकता है कि इस महा संग्रामरूपी भयङ्कर ज्वाला में लाखों नरदेहधारी निरपराध प्राणी भस्मी भूत होंगे, करोड़ों रुपये जो यदि निर्धनों की सहायता में दिये जाते तो सफल होते, रुधिर की नदियों में बह जायंगे। संसार के व्यापार की हड्डियाँ चूर हो जायेंगी, पृथ्वी का तल और समुद्र का जल प्रजा के बहु मूल्य रुधिर से आप्लावित होगा। इतने भयंकर नाश के लिये उत्तर दाता कौन होगा ? उत्तर में भिन्न २ ओर उंगलियाँ उठ जायंगी। कोई सर्विया की ओर उंगली उठायगा तो दूसरा आष्ट्रिया का निर्देश करदेगा। तीसरा रूस या इंगलैण्ड पर दोष मढ़ेगा तो चौथा जर्मनी की मूर्खता और साहसिकता को उत्तरदाता ठहरायगा। किन्तु हमें ये सब उत्तर अपूर्ण प्रतीत होते हैं। इस सर्व नाश के लिये न एक देश कारण है और न दूसरा देश। हमारी सम्मति में तो इस दोष के भागी सारे देश हैं, क्योंकि सभी का इस में हाथ है। कोई योरप का देश नहीं जो इस युद्ध के लिये उत्तर दाता नहीं है, सब युद्ध के लिये तय्यार थे और

'अनित्यानि शरीराणि-
वैभव नैव शाश्वतम् ॥

की पुकार मचाने वाले विडाल से अधिक शांति प्रिय नहीं थे। वे केवल अवसर ताक रहे थे कि कब एक दूसरे पर झपटें। पश्चिमीय सभ्यता ही इस भयंकर जनहत्या के लिये उत्तर देने वाली हैं, कोई विशेष देश नहीं। रणचण्डीके लिये मन्थरा का काम करने वाली ऐ पश्चिमीय सभ्यता ! आज तेरा विजय नाद सारे संसार को भयाक्रांत कर रहा है, और तेरे बढ़ते हुए घोड़ों की टाप दिग्दिगन्त व्याप्त हो रही है। क्या सचमुच तेरा यह महाभारत ही है ?

जर्मनी की साहसिकता।

जर्मनी ने इस युद्ध में वह साहसिकता दिखाई है जो एक साधारण देखने वाले को पागल पन के समान प्रतीत होती है। फ्रांस शत्रु रूस शत्रु इंगलैण्ड शत्रु और बैल्जियम शत्रु। उधर जापान इंग्लैंड की सहायता के लिये हर-क्षण तय्यार बैठा है। अमेरिका यद्यपि उदासीन हैं। तथापि उसकी जाति उसे इंग्लैंड से ही मिलाती है। जर्मनी का साथी केवल एक आस्ट्रिया है, जो योरप की जवान जातियों में बूढ़े बाबा के समान पड़ा खांस रहा है इस समय तो जर्मनी को कोई नया नैपोलियन ही बचा सकता है, नहीं तो उसका कुचला जाना निश्चित सा प्रतीत होता है। उसके लिए जर्मनी सिवाय अपने शासकों की बुद्धिमत्ता के और किसी को धन्यवाद नहीं दे सकता। किन्तु नैपोलियन कब और कहां निकल आते हैं, यह कोई नहीं जानता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योरप का महाभारत
जर्मनी की हार

फ्रांस का विजय
लक्सम्बर्ग को जर्मनी छोड़ गया
जर्मनी पर रूस की जीत
जर्मनी और ब्रिटिश की समुद्र में मुठ भेड़
भारतवासियों की राज भक्ति

युद्ध की जो चिनगारी सर्विया और आस्ट्रि-या के रगड़ से उत्पन्न हुई थी, उसने बढ़कर सारे योरप को धधका दिया है। इस समय रूस, इंग्लैंड, फ्रांस और बैल्जियम एक ओर हैं और जर्मनी, आस्ट्रिया दूसरी ओर। पुरानी संधि के अनुसार इटली को जर्मनी आस्ट्रिया के साथ होना चाहिये था, पर वह अभी तक उदा-सीन है। जर्मनी ने उसे लिख भेजा है कि या तो युद्ध में हमारी ओर से लड़ो, नहीं तो तुम्हें भी शत्रु पक्ष में समझ कर घेर लिया जायगा। आस्ट्रिया को तो सर्विया ने ही नहीं छोड़ा है। शेष सब शत्रुओं से जर्मनी को ही भिड़ना पड़ा है।

जर्मनी की हार फ्रांस से

जर्मनी और फ्रांस के युद्ध में अन्तिम समा-चारों से फ्रांस का विजय और जर्मनी के परा-जय का पता लगा है। यह लड़ाई अलसेक नामी प्रांत पर हुई थी जो आज से ४४ वर्ष पहले ज-र्मनी ने फ्रांस से छीना था। फ्रांस ने जर्मनी की सेना को मार भगाया और ४४ वर्ष से छिने हुए प्रांत पर अधिकार जमा लिया। इस जीत पर फ्रांस निवासी बड़े प्रसन्न हो रहे हैं। वे कहते हैं कि १८७० में जर्मनी ने हम पर जो अत्याचा-र किया था, उस का आज बदला मिल गया।

बैल्जियम में जर्मनी।

बैल्जियम देश इस युद्ध में उदासीन था। जर्मनी ने उसके देश में से गुजर कर फ्रान्स पर आक्रमण करना चाहा। बैल्जियम ने उदासीन होने के कारण मार्ग देने से इन्कार करदिया। इसीसे उन दोनों में भी युद्ध छिड़गया। यह युद्ध लीज में होरहा है। जर्मन फोजों ने लीज को काबू करलिया है परन्तु लीज का किला उनके हाथ नहीं आया है। बैल्जियम बड़ी वीरता से लड़ रहे हैं।

रूस और जर्मनी।

लिबर्टी पर रूस और जर्मनी की सेनाएं भिड़गई हैं। उस युद्ध में रूसियों को बड़ी हानी उठानी पड़ी। कोनिगस्वर्ग के पास १२ जहाजों का जर्मनी बेड़ा लड़ाई के लिये तय्यार होरहा है। अन्तिम तार कहता है कि दो दिनों के रूस के साथ युद्ध में जर्मनी के १०० आदमी मारेगए।

जर्मनी और इंग्लैन्ड।

जर्मनी और इंग्लैन्ड की लड़ाई सामुद्रिक होगी इस विषय में कई तरह के अफवाहें उड़ रही हैं पहिले रायटर का तार आया था कि जर्मनी के १६ जहाज डूब गए हैं। पर पीछे से यह समा-चार गप्प निकली। इंग्लैन्ड में मि० चर्चिल ने कहा कि अभीतक कोई अच्छी सामुद्रिक लड़ाई नहीं हुई और न कोई विजय ही हुई है। केवल जर्मनी के दो जहाज डूबे हैं। १२ का तार कहता है कि जर्मनी के एक जलवर्ती सब में राईन ने ब्रिटिश बेड़े पर आक्रमण किया पर उस से ब्रि-टिश बेड़े को कोई हानी नहीं पहुँची।

इंग्लैन्ड में जर्मनी के जासूस।

यह अफ़वाह है कि इंग्लैन्ड में जर्मनी के कई जासूस पुलों को उड़ाने और पीने के पानी में विष मिलाने में लगे हुए हैं। कई जर्मन पकड़ कर हवालात में देदिये गए हैं।

आस्ट्रिया और फ्रांस में युद्ध

अब तक आस्ट्रिया और फ्रान्स में युद्ध नहीं छिड़ा था। फ्रांस की सीमा पर आस्ट्रिया की फौजें इकट्ठी करते देख कर फ्रांस ने कारण पूछा। यथोचित उत्तर न दे सकने पर फ्रांस और अस्ट्रिया में युद्ध छिड़ गया है। दोनों के राज दूत अपने अपने देशों को चल दिये हैं।

भारत की राज भक्ति

युद्ध के प्रारम्भ होतेही भारत वासियों ने अपनी राज भक्ति का पूरा परिचय दिया है सरकार के साथ अपने प्रबन्ध सम्बन्धी मत भेद और शिकायतों के रहते भी सबने एक स्वर से इस युद्ध में इग्लेंड का साथ देने का उत्साह दिखाया है। प्रायः सभी रिआसतों के राजाओं ने अपनी रिआसतों में से सारा सामान सरकार की सहायता के लिये देने की सूचना दी है। लोगों ने प्रार्थना पत्र भेजे हैं कि हमें भी फौज में भर्ती किया जाय, लाला लाजपतरायं, सर कृष्ण गुप्त, रतनटाट, जस्टिस अब्दुर्रहीम आदि महानु भावों ने सम्राट की सेवा में एक अभिनन्दन पत्र भेज कर अपनी राज भक्ति का परिचय दिया है। बा. विपिन चन्द्रपाल ने एक व्याख्यान में कहा है कि इस युद्ध में हमें ब्रिटिश साम्राज्य की पूरी सहायता करनी चाहिये क्योंकि इसीके विजय में हमारी भलाई है। भारत वर्ष में लाहौर कलकत्ता बम्बई आदि नगरों में राज भक्ति प्रकाशित करने के लिये सभायें हो रही हैं' उन के उत्तर में वायसराय ने धन्यवाद भेजा और लिखा है कि सब संसार को यह समझ रखना चाहिये कि भारत वासी पूरे राज भक्त हैं।

बाजार चढ़ गया

युद्ध के कारण बाजार का भाव बहुत चढ़ गया है प्रायः विदेश से आने वाली चीजों की कीमत दुगनी होगई है। दियासलाईकी डिबिया दोदो पैसे को बिकने लगी है। काग़ज़ के भाव बढ़ जाने से दैनिक अख़बार अपनी कीमत बढ़ाने की फ़िक्र में हैं। बम्बई के दूकानदारों ने चीजों का भाव इतना बढ़ा दिया कि सरकार को आज्ञा प्रकाशित करनी पड़ी है कि जीव-नोपयोगी वस्तुओंको निश्चित कीमत सेअधिक पर न बेचा जाय। इन कीमतों का निश्चय बम्बई के नागरिकों की एक कमेटी करेगी।

भारत में जर्मन

भारत वर्ष में जितने जर्मनी वासी हैं उनको सरकारकी ओर से सूचना दी गई है कि युद्ध के अन्त तक वे प्रति दिन दो पहर को पुलिस कमिश्नर के पास जाकर हाज़री दिया करें। जितने विदेशी भारतवर्ष में रहते हैं, उन्हें चाहिये कि अपनी जाति का पक्का चिन्ह अप-ने पास रक्खें।

अंग्रेजी बस्तियों की राजभक्ति

अंग्रेजी उपनिवेश इस समय पूरे उत्साह से सहायता देने के लिये तय्यार हो रहे हैं। आ-स्ट्रेलिया ने २० हज़ार आदमी फौज के लिये दिये हैं। कनाडा की स्त्रियां युद्ध में सेवि-का बनकर जाने को तय्यार हुई हैं उनके लिये एक विशेष जहाज तय्यार हो रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

आर्य्यसमाज और सिक्ख

आर्य समाज इस समय एक विचित्र अवस्था में है। वह अकेला है, और उसके शत्रु बहुत से हैं। आर्य समाज की उठाई हुई मशाल ने जिन लोगों या मतमतान्तरों के छिद्र दिखला दिये हैं वे सब उसके जानी दुश्मन हो रहे हैं। अज्ञानी रोगी, फोड़े में चीरा देने वाले उत्तम चिकित्सक को अपना शत्रु और अपकारी समझता है। आर्य समाज के विषय में भारत वर्ष के मतमतान्तरों के चित्त में भी ऐसे ही भाव हैं। ऐसी अनेक शक्तियां हैं, जो आर्य समाज को कुचलनेमें ही अपनी भलाई समझती हैं। वह शत्रुओं से घिरा हुआ है, एक साहस है जो उसे बचा सकता है। साहस के बिना और उसका कोई सहारा नहीं और भगवान के बिना उसका कोई रक्षक नहीं। यह भगवान की ही कृपा है कि साहस ने कभी आर्य समाज का साथ नहीं छोड़ा। इस समय आर्यसमाजियों पर जो बिपत्ति आई है, उस में भी साहस छोड़ने की कोई बात भी नहीं। सारी आर्य जाति और सारे भारत वर्ष ने देख लिया है कि ज्यादती किस ओर से है? पहले तो जो कुछ म० रौनकराम ने लिखा है, वही ऐसा कठोर नहीं कि किसी राजनियम के पंजे में आसके। उसमें एक घटना का वर्णन करके केवल उसपर सम्मति दी गई है, और वह सम्मति भी आर्य समाज की दृष्टि में सर्वथा उचित है और जिसके विषय में दी गई है, उसके चरित पर कोई बुरा कटाक्ष नहीं डालती।

यह सम्भव है और बहुत सम्भव है कि पटियाले के बिपत्ति ग्रस्त आर्य समाजियों के साथ पूरा न्याय न हो। मुकद्दमे की जो सूरत बनाई जा रही है, उससे कोई लम्बीचौड़ी आशा भी नहीं होती। महाराजा साहिब की ओर से घोषणा पत्र समाज को शान्त करने के लिये और समाचार पत्रों के शोर को चुप कराने के लिये निकाला गया है, उसमें ही विवाद ग्रस्त पुस्तकों पर राय देदी गई है। पहले एक मुसलमान न्यायाधीश के सामने अभियोग जाने को था। वैसे तो रियासतमें, और फिर वह भी पटियाले में, महाराजा साहिब की सम्मति के निश्चित होते हुए न्यायाधीश की जाति या प्रख्याति कोई भेद नहीं डालती, किन्तु तो भी न्यायाधीश मुसलमान होने से न्याय का एक अवसर था, सिख न्यायाधीश बनाकर उसपर भी पानी फेर दिया गया है। इस लिये न्याय की अधिक आशा रखते इस मुकद्दमे की पैरवी करना व्यर्थ है। मुकद्दमे की पैरवी आर्य समाज इसलिये कर भी नहीं रहा कि वह कचहरी में जीत जाय। मानुषिक कचहरीमें जीतने या हारने की उसको अभिलाषा नहीं है और परवा भी नहीं है। वह तो केवल अपने कर्तव्यका पालन करना चाहताहै और सारे संसार के सामने सचाई और बिचार स्वातन्त्र्यके पक्षको पुष्ट करना चाहता है। उसे पूरी आशा है कि वह अपनी इस आशा को फलीभूत कर सकेगा। वह संसार को दिखादेगा, कि सत्य पर कौन है, और ज्यादती किस की ओर से है?

हमारे खालसा भाई इस समय बड़े जोश में हैं। ज्यों ज्यों योरप का युद्ध जोश मार रहा हैत्यों त्यों खालसा भाई भी गर्म हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानों योरप के युद्ध का समाचार उनके दिलों में अपनी वीरता का स्मरण कराता है या उनके मन में वह विचार बढ़ाया जाता है कि इस युद्ध के भड़कने के साथ ही इनकी आवश्यकता बढ़ जायगी जिससे भारत सरकार उन्हें प्रसन्न करने के लिये आर्यों को कुचलने पर तत्पर हो जायगी। ये केवल हमारी कल्पनाएं हैं। किन्तु यदि कल्पनाओं में कुछ भी सच है तो हम अपने खालसा भाइयों को बतादेना चाहते हैं कि वे भूल में हैं। भारत सरकार की नींवें ऐसी कच्ची नहीं कि वे किसी भी छोटे या बड़े निमित्त से न्याय का उल्लंघन होने दें। हमें निश्चय है कि जहां तक अंग्रेज़ी सरकार के बस की बात होगी वहां तक न्याय की हत्या नहीं होने पावेगी, और ऐसा यत्न होगा जिसमें भविष्यत में रियासतों को भी न्याय का उल्लंघन करके शिकाशाही चलाने के लिये अधिक उत्कंठा न रहे।

सिक्ख समाचार पत्र शोर मचारहे हैं और सरकार से निवेदन कर रहे हैं कि वह आर्यों को दंड देने में सहायता करे। सुनते हैं कि लाहौर और अमृतसर के कई प्रतिष्ठित सर्दारों ने मिलकर सरकार से कहा है कि इस समय यदि आर्यों को दंड न दिया, तो गर्दनें कट जायंगी। हमारी समझ में नहीं आता कि सर्दार भाइयों को यह हिम्मत कैसे पड़ी? भारत वर्ष में ब्रिटिश सरकार ने धार्मिक विचार करने की और बिचारों को प्रकाशित करने की स्वतन्त्रता दी हुई है। जब तक सीमा का उल्लंघन नहीं होता, हर एक व्यक्ति किसी भी सिद्धान्त या व्यक्ति के विषय में राय देने को स्वतन्त्र है। भारत सरकार इस सिद्धान्त को मानती है, और क्रिया में लाती है। तभी तो वह सभ्य सरकार कहलाने के योग्य है। जिस राज्य में विचार तथा लेख की स्वाधीनता नहीं, उसके साथ सभ्य शब्द का लगाना उसका दुष्प्रयोग करना है। भारत सरकार सभ्य इसी लिये कहाती है क्यों कि वह सिद्धान्त में सब को धार्मिक स्वाधीनता देती है, और क्रिया में भी उसे लाती है।

सरकार इस का क्रियात्मक प्रमाण दे चुकी है। ग्रन्थ साहिब का इंग्लिश अनुवाद छपा है, जिसके छपाने वाली ब्रिटिश सरकार है। पुस्तक पर लिखा है "Printed by order of the secretary of state for India in council" "भारत मन्त्री की आज्ञानुसार वह अनुवाद छपाया गया है"। अनुवाद के करने वाले डाक्टर अर्नेस्टट्रम्प हैं, और आपने अनुवाद के साथ एक लम्बी भूमिका भी लिखी है। हमनहीं कहते कि इस अनुवाद या भूमिका के लिये भारत सरकार की जवाबदेही है, हमारा अभिप्राय केवल यह दिखाने से है कि कम से कम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सरकार उस पुस्तक के लेखको नियम विरुद्ध नहीं समझती। हम नीचे उस पुस्तक से कुछ उदाहरण देतेहैं और फिर अपने खालसा भाइयो से पूछते हैं कि क्या म० रौनकरामकी पुस्तकमें इससेभी अधिक कठोर लिखा गया है और, साथ ही हम उन्हें यहभी बतलायेंगे कि उनका सत्यार्थ प्रकाश को जलादेने का प्रस्ताव भी कैसा भद्दा है, क्योंकि म० ट्रम्प जैसे विदेशी विद्वानों ने भी गुरुओं और ग्रन्थ साहिब पर वैसी ही, बल्कि उससे भी बुरी राय लगाई है जैसी ऋषि दयानन्द ने। उनके लेखों को फिर भारत सरकार ने ही छपवाया भी है।

(१) गुरु अङ्गद साहिब भाई बाला को गुरु भाई की बातें सुनाते हुए एक कहानी कहते हैं, जिसे मि० ट्रम्पने एक जन्म साखी से उद्धृत किया है। उस कहानी का तात्पर्य यह है कि गुरु नानक जी ने एक दिन गुरू अङ्गद की लड़की को देखा। देखकर आपने अङ्गद से कहा कि "पुत्र अङ्गद! अपनी पुत्रीको सजाकर मेरे पास ले आ" अंगद लेगया। गुरू जी ने कहा 'पुत्र! जा तू बाहिर बैठ" अंगद बाहिर बैठ गया। इतने में गुरू जी की चारपाई की चूल टूट गई भाई अंगद गुरू सेवा के लिये अन्दर आया और चूलको थामकर बैठा रहा। हमें इस कहानी में कोई कलङ्क की बात दिखाई नहीं देती, किन्तु मि० ट्रम्प इस के नीचे नोट देता है कि "यह कहानी जो नानक के अगद के साथ गाढ़ प्रेम के कारण पर पर्याप्त प्रकाश डालती है" लाहौर की लिखित कापीमें स्वभावतः छोड़ दी गई है, क्योंकि यह नानक के चरित्रके लिये बहुत ही कलङ्क लगाने वाली है"

(२) गुरु अंगद साहिब के बनाये ग्रन्थ साहिब के भागके विषय में आप लिखते हैं-"अंगद के थोड़े से श्लोक जो ग्रंथ में हैं नानक के शब्दों की भद्दी पुनरावृत्ति मात्र, और अत्यन्त ओछे हैं।"

(३) ग्रन्थ साहिब के विषय में पांचवें परिच्छेद के प्रारम्भ में आपने ये शब्द लिखे हैं— 'ग्रन्थ साहिब विषय की दृष्टि से अगर आकार का ध्यान करते हुए वर्तमान पुस्तकों में सब से अधिक ओछा और फीका ग्रन्थ है" किन्तु साथ ही बतायाहै कि वह पुरानी हिंदी भाषा का अच्छा भण्डार है।

(४) एक स्थान पर टिप्पणी में आप लिखते हैं— 'नानक की आदत है कि वह विना किसी प्रकार के बुद्धि पूर्वक सम्बन्ध देखने के एक विचार से दूसरे विचार पर लुढ़क जाता है, (पृ०७)

(५) गुरू अर्जुनदेव की कविता के नीचे टिप्पणी देते हुए मि० ट्रम्प लिखते हैं—

'अर्जुन की कविता ऐसे ही अत्याचारों से भरी पड़ी है। वह पद्यके अन्त में प्रायः शब्दों को ऐसा बिगाड़ता है, कि उनका समझना ही कठिन होता है'

ये हमने थोड़ेसे उदाहरण दिये हैं, जब आवश्यकता होगी, तब और भी दिये जा सकते हैं; ये उदाहरण सिद्ध करते हैं कि सिख गुरुओं के विषय में और लोगों की भी ऐसी सम्मतियां हैं और ब्रिटिश सरकार जैसी उत्तर दातृत्व रखनेवाली संस्थायें उन्हें छपाती हैं। ऐसी अवस्था में आर्य समाज पर दण्डपाणि होना सिक्ख भाइयों की भूल है।

क्या हमें यूरप यही सिखायेगा ?

योरप को अभिमान है कि वह संसार का गुरु है। भारत वर्ष की क्या-सारे पूर्व की उसके सामने सत्ता ही क्या है? योरप की विद्या बढ़ी चढ़ी है, उस का बल अपार है उस की सभ्यता सूर्य और चांद को छू रही है। ऐसी महती सभ्यता के सामने छोटे और पराधीन देशों की गिनती? जो सभ्यता के स्वामी हैं, उनके दरबार में अर्धसभ्यों को कौन पूछता है? योरप के लेखक हमें यही बतलाते हैं कि योरप गुरु है वह सब भूमि खण्डों को शिक्षित करने के लिये और उनका उद्धार करने के लिये ही जीवन धारण करता है।

गत दो चार सप्ताहों की घटनाओं ने हमारे चित्त में कई प्रकार के प्रश्न उठा दिये हैं। योरप का महा भारत शुरू होगया है। इस युद्ध के प्रारम्भ की कथा बड़ी मनोरंजक है। हमारे उ उस से बहुत कुछ परिचित हैं। उस ने हमारे हृदय में अनेक विचार उ किये हैं। योरप के लेखक प्रायः हैं कि पूर्व में 'राजनीति' झूठ और बाज़ी का दूसरा नाम है। उन लो में सत्य का नाम नहीं, प्रतिज्ञा प वे जानते ही नहीं, सत्यका ठेका पश्चिम आया है। जब परमात्मा ग्यों में सत्य बाँटने लगे थे, तो नील में योरप ने ही सब से बड़ी बोली थी। योरप के लेखकों का ऐसा विचार प्रतीत होता है।

जब योरप हमारा गुरू है, तब हर एक कार्य को देखते रहना, उस की परख करते रहना आवश्यक

योरप के इस समय के महा की घटनायें हमारे सामने हैं। उ नये नये समाचार हमें स्मरण हैं। समयमें ध्यान आताहै कि योरप हम गुरू है योरपीयन लोग यही कहते तब हम योरप से कुछ सीख लें। न फिर ऐसी विशेष घटनाओं का उपस्थित हो या न हों। अपने पाठ के साथ मिलकर हम विचार करते कि अपने गुरुओं से क्या क्या सीख चाहिये?

इस युद्ध के मूल में आस्ट्रिया के वराज जार्जड्यूक फ्रांसिस फार्डीनैण्ड हत्या थी, जो हुई यद्यपि आस्ट्रिया साम्राज्य के अन्दर थी, तथापि गया था कि सर्विया का उ में है। सर्विया के राज्य में आस्ट्रिया राज्य करने वाले राजवंश के वि षड्यन्त्र होते थे, सर्विया की सर उन्हें जानती थी, उन से सहानुभू करती थी। आस्ट्रिया के युवराज हत्या में सर्विया के कई राज कर्मचारि यों का भी सहयोग कहा जाता है अपने गुरू योरप से क्या हम यह ग देश लें कि अपने समीप के देश में ग करने वाले राजवंशों के विरुद्ध प्रजा सहायता देनी चाहिये या उन्हें उस हित करना चाहिये? क्या योरप इस सत्य न्याय और नय का उप करता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस घटना चक्र द्वारा हमारे गुरू योरप हमें दूसरी क्या शिक्षा देते हैं? युवराज की हत्या के लिये सर्विया का उत्तरदातृत्व थोड़ा बहुत अवश्य था। उत्तरदातृत्व को मानकर आस्ट्रिया ने सर्विया को धमकी दी—धमकी क्या दी, उससे उत्तर मांगा किंतु उत्तर माँगना एक बहाना मात्र था। जो शर्तें अस्ट्रिया ने सर्विया के सामने पेश कीं वे ऐसी थीं जिनका मानना सर्विया के लिये अपमान—मृत्यु के समान था और न मानना युद्ध मृत्यु के समान था। कोई भी आत्मसम्मानी देश आस्ट्रियाकी शर्तों को और वह भी इतना शीघ्र नमान सकता था। यह जानते हुए भी आस्ट्रिया की शर्तें पेश करना एक बहाना था और कुछ नहीं। एक निर्बल देशसे सीधी तरह उत्तर न मांगना और शर्तें इस लिये पेश करना कि स्वीकृत नहों—और फिर उसी देश के सिरपर दोष थोपकर युद्ध की आघोषणा कर देना—यह दूसरी लड़ी है, जो सारे घटना चक्रको बनाती है! क्या हम इसे अपने परम गुरु योरूपकी शिक्षा मान कर सिर पर धरें? क्या अपनेशिष्य के प्रति गुरु जी का यही उपदेश है?।

आगे चलिये। आस्ट्रिया ने सर्विया पर धावा किया, रूसने उधर से धमकाना आरम्भ किया। वहक्यों? केवल इस लिये कि सर्विया और रूसके राजा एक ही स्लैव जाति के हैं। इस नाते के होते हुए रूस यह कैसे सहन कर सकता है कि टयूटन लोग स्लैव लोगोंको पराजित करदें। सभ्यता के मार्ग पर कुलाँचे मार २ कर चलने वाला योरप जाति बन्धन के वशीभूत होकर लाखों नरबलियां देने को उद्यत हो जाता है। रूस का युद्ध में आ कूदना हमें यही बताता है। क्या पुण्यपरायणसभ्य योरप का हमें यही देश है?

आस्ट्रिया का जर्मनी मित्र है। रूस ने आस्ट्रिया से युद्ध ठाना है तब जर्मनी की सीमा पर सेनायें एकत्र करना भी उसके लिये ज़रूरी है। जर्मनी उत्तर माँगता है तो कोई उत्तर नहीं मिलता। जर्मनी रूस से कहता है कि तुम आराम से बैठो आस्ट्रिया और सर्विया आपस में भिड़ लेंगे—तुम्हें इससे क्या? किन्तु रूस नहीं सुनता—वह लड़ाई पर तुला हुआ है। इधर से इंग्लैंड के पत्र रूस को शह दे रहे हैं कि हां, तुम लड़ोगे तो हम तुम्हारे साथ हैं। इसी हिम्मत पर रूस जर्मनी पर धावा कर देता है। फ्रांस के सभापति अपनी सेनाओं को रूस की सहायता के लिये क्यों तय्यार कर रहे हैं। इसमें कारण केवल एक है। प्रयाग के अंगो अखबार पायोनियर के शब्दों में अब समय है जबकि बढ़ते हुए जर्मनी देश की शक्तिको तोड़ा जा सकता है। न जाने फिर यह अवसर कभी मिलेगा या नहीं। युद्धका कारण केवल यहहै कि जर्मनी को निर्बल करना है। यह योरप के नीति शास्त्र का एक बड़ा भारी सिद्धान्तहै। क्या योरप हमें यही सत्यशिक्षा—यही नीति शिक्षा देना चाहता है। कोई अपना कारण नहीं, जर्मनो ने रूस का कुछ बिगाड़ा नहीं, फिर उस से युद्ध केवल इस लिये कि उसे कुचलना है। क्या इस शिक्षा के देने के लिये ही योरप हमारा गुरू है।

किन्तु जर्मनी ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। वह भी शिक्षा देने के लिये तय्यार है। जर्मनी फ्रांस पर धावा करेगा—उसके लिये मार्ग आवश्यक हैं लकसम्बर्ग का किला सारी योरपियन शक्तियोंकी सलाह से उदासीन बना दिया गया है—उस पर किसी बड़ी शक्ति का अधिकार नहीं। जर्मनी फ्रांस पर धावा करने के लिये लकसम्बर्ग को मुट्ठी में करना आवश्यक समझता है और करलेता है। दूसरा मार्ग बेलियम में से होकर जाता है। उस ओर फ्रांस की फ़ौजें कम हैं इस लिये जर्मनी उधर से अवश्य जाना चाहता है। बैलिजयम का राजा शोर मचाता है और कहता है कि हमारे स्वतन्त्र देश में से जाने का किसी को अधिकार नहीं है। किन्तु जर्मनी के दरबार में सुनाई नहीं होती। दूसरे देश और दूसरी जाति के अधिकारों को पाँव तले रौंदता हुआ जर्मनी बैलजियम में घुस जाता है। क्या इससे बढ़कर भी कोई अनर्थ हो सकता है। क्या हमारा गुरू योरप हमें दूसरी जाति के अधिकारों का इतना ही आदर करना सिखाता है। हम अर्धसभ्य भारत वासियों का तो दूसरी जाति के अधिकारों का इस प्रकार का दलन बड़े से बड़ा राजनीतिक पाप दिखाई देता है।

ये शिक्षायें हैं जो योरप हमारे सामने क्रिया द्वारा लाकर रख रहा है। यदि ऐसी शिक्षा देने वाले अपने आप को गुरू कहें, तो फिर डाकू के मुख से वेदान्त का उपदेश क्यों ठीक नहीं।

मि० एंड्रूज़ का त्याग पत्र।

पाठक जानते हैं कि देहली के प्रसिद्ध पादरी मि० एंड्रूज़ देहली के मिशन कालिज को छोड़ कर रवीन्द्र के शान्ति निकेतन में पढ़ाने का काम कर रहे हैं। अब "ट्रिब्यून" ने समाचार दिया है कि मि० एंड्रूज़ ने चर्च के पादरी पने से भी त्याग पत्र देदिया है क्योंकि उन कई सिद्धान्तों को नहीं मानते जिन्हें मानना एक पादरी के लिये आवश्यक है। भारतीय धर्मों के अनुशीलन के कारण चिरकाल से मि० एंड्रूज़ के धार्मिक विचारों में परिवर्तन आरहा था। रवीन्द्र के सहवास और उनके ग्रन्थों के अध्ययन से वह परिवर्तन और भी दृढ़ हो गया था। मि एंड्रूज़ का विचार कई महीनों से त्याग पत्र देने का था पर ईसाई चर्च के मुख्य पादरी के बार २ आग्रह पर वे अबतक चर्च से अपना सम्बन्ध न तोड़ सके थे। इस त्याग पत्र देने में मि० एंड्रूज़ ने जो आध्यात्मिक बल दिखलाया है उसके लिये हम उन्हें बधाई देते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(४२)

धर्म प्रचार की लगन।

२६ जनवरी को अन्तिम शनिवार था। अन्तिम शनिवार को पंजाब के न्यायालयों में छुट्टी होती है, इस लिए उस दिन वकील भी स्वतन्त्र होते हैं। मैंने उस दिन का प्रथम भाग तो अपने मकान की इमारत की निगरानी और समाज मन्दिरके साथ मिलाने को, जो नई भूमि ली थी उस के निशान लगवाने में व्यतीत की और भोजन के पश्चात् अपनी वेगनट गाड़ी में (जिस का नाम लोगोंने "कुनवा घसीटन" रक्खा हुआ था क्योंकि ११ सवारी और बारहवें साईस को इस गाड़ी में बैठ कर मेरी मुश्कन घोड़ी आराम से २५ मील लेजाती थी) जालन्धर आर्य समाज के अन्य सभासदों सहित अलावलपुर को चल दिया। तीन बजे हम सब अलावलपुर पहुंचे। लोग प्रतीक्षा में बैठे थे, ३॥ बजे आर्य्य समाज के नियमों पर व्याख्यान आरंभ होगया। १॥ घंटे तक मैंने आर्य्य समाजका उद्देश्य समझाया, जिस के पश्चात् शङ्का समाधान के लिए समय दिया गया। बहुत से प्रश्न हुए जिनको प्रेम पूर्वक उत्तर देकर उसी शाम को ७॥ बजे जालंधर लौट आया।

इस के तीसरे दिन (२८ जनवरी) की डायरी में लिखा है—"गौरीशङ्कर आज आया, जिस से व त चीत करने पर पता लगा कि लसाड़ा ग्राम में हमारे काम के लिए बड़ा मैदान है। बहुत से प्रतिष्ठित ग्राम निवासी हमारे सिद्धान्तों के साथ सहानुभूति रखते हैं। गृहस्थ मुझे अपने अन्तरात्मा की आवाज़ सुनने से रोकता है नहीं तो कितना काम हो सक्ता। फिर भी जो कुछ कर सक्ता हूं उसके लिए परमात्मा को धन्यवाद है।"

इन दिनों अहर्निश वैदिक धर्म को फैलाने की ही धुन लगी रहती थी। २९ जनवरी को दिन रात वर्षा होती रही। कचहरी के काम के अतिरिक्त शेष समय मैंने नए ब्रह्मचारी मुनि ऋषिको दिया। उसे ब्रह्मचर्य के नियम समझा कर उस से प्रतिज्ञा ली कि वह विवाह के समय बराबर उन्हीं के अनुकूल चलता रहेगा। इस ब्रह्मचारीने जैनधर्म सम्बन्धी अपनी सब पुस्तकें आर्य्य समाज जालंधर को भेट कर दी थीं और जब आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की रजिस्टरी होकर लाहौर में वैदिक पुस्तकालय खोला गया उस समय वे सब हस्त लिखित पुस्तकें उस पुस्तकालय में रखदी गईं। मुझे ज्ञात नहीं कि उन स्मरणीय पुस्तकों की अब क्या दशा है।

ब्रह्मचारी से निवट कर मैंने कई भद्र पुरुषों को सन्ध्या की विधि समझाई। इस प्रकार का समय विभाग नित्य ही रहता था। ३० जनवरी को प्रातः काल ही अजमेर से एक पत्र मिला जिस में लिखा था कि पौराणिकों ने जालन्धर शहर आर्य्य समाज के वार्षिकोत्सव के विषय में बहुत कुछ असत्य अपवाद फैलाया है। मैं उसी समय लाहौर आर्य्य पत्रिका के लिए उत्सव का हाल लिखने बैठ गया। फिर कचहरी में जो भी समय खाली मिलता रहा उसमें यही काम जारी रहा और मुझे चैन न आया जब तक कि उस लेखको समाप्त करके चार बजे डाक में न डाल दिया।

पौराणिक मण्डल में नई जान।

इन्हीं दिनों पौराणिक मंडल में नई जान डालने के लिए पंडित दीनदयालु तथा अन्य पौराणिक पंडितों ने लाहोर पर हमला कर दिया था। मुकाबिले के व्याख्यान आर्य्य समाज मन्दिर में भी होने लगे जिन का बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ता रहा। वह सारा हाल उसी समय आर्य्य पत्रिका में निकलता रहा था जिस से आर्य्य समाज के इतिहास का भावी ग्रन्थ कर्ता सहायता लेसक्ता है। मुझे यहाँ केवल इतना ही भाग उस कहानी का वर्णन करना है जिसका मेरे साथ सम्बन्ध है।

१ फरवरी १८९९ के दिन जालन्धर में गप्प उड़ी कि सनातन धर्म महामंडल का लाहौर में बड़ा विजय हुआ है। आर्य समाज के व्याख्यान बन्द कर दिए गए हैं। जब अपने सभासदों के लाए हुए इस समाचार पर मुझे विश्वास न आया तो दूसरे दिन वे एक जालन्धर के अनपढ़ ब्राह्मण को ले आए जिसने आंखों देखी साक्षी इस प्रकार दी—"कमिश्नर साहब ने आर्यों ते सनातनी पंडितां नूं बुला के शास्त्रार्थ कराया। खलकत बेशुमार सी। मैं बी सब कुछ देखदा ते सुणदा सी। दुहाँ पासियाँ दी गल्लां सुण के कमिश्नर साहिब ने आख्या कि आर्य समाज मंजूर नहीं, हमानूं सनातन धर्म मंजूर है।" इस बे तुकी हांक को सुनकर मुझे तो हंसी छूटी किन्तु हमारे सभासद मेरे पीछे ही लगे रहे। तब उसी रात की रेल में मैं लाहौर चला गया। वहां का हाल मेरी ३ फरवरी की वृत्तान्त पत्रिका में इस प्रकार लिखा है—

"७॥ बजे समाज मन्दिर में पहुंचा। वहां चिरञ्जीव भी था। वहां पता लगा कि जो किंवदन्तियां फैलाई गई थीं और जो कुछ 'कोहनूर" में निकला था वह सब गप्प है। उसी समय सनातन मंडल के उत्तर में बाबू मुन्नालाल और स्वामी स्वात्मा नन्द जी के व्याख्यान हुए। तब एक बड़े विद्वान सन्यासी पंडित स्वामी महानन्द जी ने अपनी सेवा आर्यसमाज के अर्पण की। स्वामीजी के बहुत साधु शिष्य हैं और उन की विद्या की पंडित गुरुदत्त जी ने स्वयम् मुझ से प्रशंसा की। उस समय २० अन्य महाशयों ने समाज में प्रवेश के लिये प्रार्थना पत्र दिए। यह भी सुनाया गया कि ३५ नए सभासद पहले प्रविष्ट हो चुके हैं। उस समय उत्साह की लहर चल रही थी। सभा ११ बजे विसर्जन हुई।

"भोजन के पश्चात् मैं भी लाला साईंदास जी के यहां गया। वहाँ स्वामीगण लाला हंसराज, लाला मुलकराज और चिरंजी भी थे। अन्यआवश्यक कार्य हो जाने के पश्चात् मैंने यह विषय उपस्थित किया कि लकीर के फकीर बनते हुए आर्य्यसमाजियों को पुरानी संकुचित जातियों में विवाह सम्ब-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्ध परिमित नहीं रखने चाहिये प्रत्युत गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था को व्यवहार में लाना चाहिए। लाला साईं दास जी ने उस समय मुझे परम अत्याचारी (extreme radical) की उपाधि दी। वहाँ से पंडित गुरुदत्त के पास गया। वे मुझे पंडित सभा में ले गए जहाँ पं० दीनदयाल के मुख से मूर्त्तिपूजा का विचित्र मण्डन सुना। फिर ८॥ बजे की ट्रेन से जालन्धर लौटा"॥

इन दिनों आर्य भाइयों को पता लग गया कि मैं धर्म में राज़ीनामें का सर्वथा विरोधी हूं। इस का एक और उदाहरण मैं अपनी डायरी से उद्धृत करता हूं।

"५ फरवरी १८८९ मंगल। बसन्त का दिन है। प्रातः सन्ध्या अग्निहोत्र करके अन्य सभासदों को साथ लेता हुआ समाज मन्दिर में पहुंचा। प्रथम भजन हुए फिर सामूहिक हवन किया गया इस समय वेद मन्त्रों का पाठ वास्तव में अत्युत्तम तथा प्रभावशाली था। फिर १॥ बजे तक भजन होकर प्रीति भोजन का आरम्भ हुआ। सब भाइयों ने मिलकर सह भोज किया जिस से २ बजे निवृत्त हुए। इस के पश्चात् ४ बजे तक अन्तरङ्ग सभा होती रही। अत्यन्तावश्यक विषय इस अधिवेशन में एक राम गोपाल नामी पुरुष की शुद्धी का था, जो कुछ काल से मुसलमान होगया था अँतरँग सभा ने बड़ी निर्बलता दिखाई और उसे स्वयम् शुद्ध करने के स्थान में अमृतसर भेज दिया।"

यहाँ जतलाने की आवश्यकता है कि अमृतसर आर्य समाज एक नत्थूराम पंडित को फाँसे हुए था जो स्वयम् दक्षिणा लेकर पतित को हरिद्वार भेज देते थे और वहां के पँडे को ५।) दिलवा गोबर मल कर स्नान कराने के पश्चात शुद्धी पत्र दे देते थे जिस पर अमृतसर के आर्य्य समाजी की बूब्बेशाहवाली मोहर लगजाती थी। कहाँ वह समय और कहाँ आज। जब कि आर्य्य समाज में जन्म का ईसाई मुसलमानादि भी बेखटके सम्मिलित हो सक्ता है॥

आगामी कुम्भ पर वेद प्रचार और आर्य पुरुषों का कर्तव्य।

(महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा लिखित)

आर्य वर्त्तीय सार्वदेशिक आर्या प्रतिनिधि सभा ने अपने अन्तरंग अधिवेशन में यह निश्चय किया था कि आगामी कुम्भ पर जो प्रथम वैशाख १९७२ को होगा वैदिक धर्म का प्रचार बड़े परिमाण से किया जावे। सभा के विचार में रहने का विशेष स्थान बनवाने, आर्य्य सामाजिक साहित्य के बांटने, उपदेशकों के मार्ग व्यय तथा आतिथ्यादि में दश सहस्र १०,०००) मुद्रा की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस लिए इस धन को आर्य पुरुषों से विशेष अपील करके इकट्ठा करना नियत हुआ और प्रचारके प्रबन्ध के लिए नौ सभासदों की एक उपसभा नियत हुई जिसमें सर्व प्रान्तों के सज्जन सम्मिलित किए गए। उपसभा का पहला अधिवेशन हरद्वार पर गुरुकुल वाटिका के स्थान में रक्खा गया जहाँ केवल कोरम मात्र की उपस्थिति हुई। उपसभा ने सर्व स्थानों को देखकर उचित स्थान प्रचार के लिए नियत कर दिया और साथ ही रुपया इकट्ठा करने तथा मकान ठीक कराने और विज्ञापन, लघु पुस्तकादि की छपाई का सब काम मेरे अकेले के सुपुर्द किया।

ऊपर की सर्व कार्यवाही का वृत्तान्त समाचार पत्रों में छप चुका है। इस के पश्चात गुरुकुल के काम का अधिक बोझ मुझ पर आ पड़ा और मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया। मुझे स्वास्थ्य सुधार के लिए बाहर आनापड़ा और मैं ने समाचार पत्रों द्वारा सूचना देदी कि इस प्रचार की सहायता के लिए सारा धन मुंशी नारायण प्रसाद जी मन्त्री सभा के पास वृन्दावन में भेजा जाय। मैं समझता था कि धन जमा हो रहा होगा और इस लिए जब कुछ स्वास्थ्य ठीक हुआ तो मैं ने आवश्यक छपाने योग्य साहित्य की पड़ताल शुरू की और साथ ही विज्ञापनादि बनाने आरम्भ किए। फिर स्थान से बनाने के लिए छप्परों आदि का मसाला जमा करने को हरद्वार लिखने वाला ही था कि मन्त्री जी के पत्र से यह शोक जनक समाचार विदित हुआ कि अब तक इस कोष में केवल ५०) ही जमा हुए हैं और वह ५०) भी श्रीमान पण्डित वंशीधर एम० ए० वकील उपप्रधान सभा ने अजमेर से उस समय भेजे थे जब वे उप सभा के प्रथम अधिवेशन में सम्मिलित नहीं हो सके थे। इस रकम के सिवाय कुछ दिन हुए इस समय तक एक कौड़ी भी और सभा के मन्त्री जी के पास नहीं आई।

कुम्भ के साथ आर्य्य प्रचार का सम्बन्ध बहुत पुराना है। विविध प्रांतों से यहां लाखों नरनारी एकत्र होते हैं जिन्हें वैदिक धर्म का संदेसा बड़ी सुगमता से सुनाया जा सक्ता है। साधुओं का भी अच्छा जमाव इस समय होता है और यदि प्रयत्न किया जाय तो प्रचार के कार्य्य के लिए अच्छे साधु भी तय्यार किए जा सक्ते हैं। यही कारण था कि १९२४ और १९३६ के कुम्भों पर ऋषिवर श्री दयानन्द सरस्वती महाराज ने बड़े धड़ल्ले से प्रचार किया था। इन्हीं कारणों से प्रेरित होकर सम्वत् १९४८ तथा १९६० के कुम्भों पर संयुक्त प्रान्त और पंजाब की आर्य प्रति निधि सभाओं ने उसी स्थान को किराए पर लेकर सम्मिलित प्रचार कराया था जो अब गुरुकुल ने खरीद लिया है और जिस पर अब आर्य्य समाजका अपना स्वत्व है।

इस वर्ष सामूहिक शक्ति से कुम्भप्रचार के लिए विशेष यत्न की आवश्यक्ता है। सनातन धर्ममहामण्डल की ओर से सर्व भारत भूषणों को इकट्ठे करके आर्य जाति सम्बन्धी कई कठिन प्रश्नों पर विचार करने की घोषणा निकल चुकी है, जिस में आनरेबल श्री पण्डित मदनमोहन मालवीय जी प्रधान भाग लेंगे। श्री मालवीय जी का मण्डल के इसकार्य के साथ सम्बन्ध विश्वास दिलाता है कि इस वर्ष सनातन धर्म सभा का आर्य समाज के साथ बड़ा प्रेम युक्त व्यवहार रहेगा। उस प्रेम का उत्तर आर्य्य समाज की ओर से अधिक प्रेम के साथ दिया जाना चाहिऐ। जहां आर्य्यसमाज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के सिद्धान्तों का बड़े बल और बड़ी योग्यता से प्रचार होना चाहिये वहाँ इस बात का ध्यान रहना चाहिये कि उपस्थित सज्जनों के दिल दुखाने वाला कथन न होने पावे। कुम्भ पर बीसियों आपापन्थी नाम के आर्य्य समाजी अपना मतलब सिद्ध करने आवेंगे। उन के कामों का उत्तरदातृत्व सारे आर्य्य समाज पर पड़ सक्ता है। इस से अतिरिक्त अभी से छोटे मोटे स्वच्छन्द जत्थे कुम्भ प्रचार के नाम से धन एकत्र करने का प्रयत्न कर रहे हैं और यदि उन्हों ने अपना डेरा डंडा अलग जमाया और आर्य्य समाज को बदनाम कराने वाली कोई कार्यवाही कर गुज़रे तो बड़ा बेढब मामला हो जायगा। अपने पौराणिक भाईयों के लिये एक ओर ओर, सामयिक गवर्नमेन्ट के लिये दूसरी ओर हमारे कई प्रकार के कर्त्तव्य हैं जिनका विचार ऐसे स्वच्छन्द पुरुषों वा जत्थों के दिलों में रहना कठिन है। इस के सिवाय यह भी आवश्यक है कि जो नरनारी धर्मोपदेश सुनने आवें वे आर्य्य समाज के मन्तव्य तथा कर्तव्य के विषय में एक ही प्रकार के विचार लेकर लौटें।

यह सब तभी सम्भव हो सक्ता है जब कि आर्यसमाज की सामूहिक शक्ति एक ही केन्द्र में काम करे। एकदूसरे पर कटाक्ष के अन्य बहुत अवसर हैं; जिन का बिना कटाक्ष किये निर्वाह नहीं हो सक्ता वे अन्य समयों के लिये उन कटाक्षों को सुरक्षित रक्खें। किन्तु इस समय सब आर्य्य भाई मिल कर एक ही झंडे के नीचे काम करेंगे तो बड़ा आनन्द होगा। सर्व उपदेशक, सर्व भजनीक, सर्व आर्यनेता सार्व देशिक सभा के अतिथि बनकर ही आवें और आर्य जाति तक एक स्वर होकर अपना संदेश पहुंचावें।

अगस्त के अन्त तक मैं क्वेटा आर्य समाज मन्दिर में हूं। सितम्बर मास की २१ वा २२ तारीख तक शिमले रहूंगा। तत्पश्चात् सवा डेढ़ मास गुरुकुल में व्यतीत होगा। उसी सवा या डेढ़ मास में कुछ बहुत सा प्रबन्ध करके काम चला देना है। यदि सितम्बर के अंत तक दस सहस्र रुपयों का बड़ा भाग जमा हो जाय तो मैं सब काम चला कर गुरुकुल के लिये धन एकत्र करने निकलूंगा और फिर गुरुकुल के आगामी वार्षिक उत्सव के पश्चात् गुरुकुल वाटिका में ही आसन जमाकर वहाँ से प्रचार की समाप्ति पर ही आसन उठाऊंगा। अब प्रश्न यह है कि कुम्भ प्रचार निधि के लिए

धन किस प्रकार जमा हो?

आर्य प्रति निधि सभाओं के बजट बन चुके और वैशाख १९७२ से पहले कइयों के अधिवेशन भी नहीं सकेंगे। आर्य समाजों में भ्रमण कर के धन एकत्र करने का समय नहीं है। बड़ी सुगम विधि कुम्भ प्रचार के लिए कोष पूर्ण करने की यह है कि सम्पत्ति शाली श्रीमान आर्य भाई स्वयम् अपने भाग का दान मेरे नाम से गुरुकुल काङ्गड़ी के पते पर (शामपुर पोस्ट आफ़िस, ज़िला बिजनौर) भेजदें और मनीआर्डर कूपन वा पत्र में स्पष्ट लिखदें कि वह धन कुम्भ प्रचार निधि में जमा किया जावे। मैं ने उस शीर्षक से एक हिसाब गुरुकुल के खातों में खुलवा दिया है।

मुझे कार्य बहुत है और लेखक भी मेरे पास कोई नहीं। ऐसी अवस्था में जो महाशय दान दे सक्ते हैं उनके नाम जुदे जुदे निवेदन पत्र भेज नहीं सक्ता हूं। इस लिए इस लेख द्वारा ही उनसे विनय पूर्वक प्रार्थना करता हूं कि मेरे निवेदन को स्वीकार करके मेरे लेखानुसार धन भेजने लगजावें, और जो धृष्टता मैं ने उनके नाम समाचार पत्रों में प्रकाशित करने से की है उसके लिए मुझे क्षमा करें।

सार्व देशिक सभा के सभा सदों का कर्तव्य सब से पहले है कि वे अपनी सभा के प्रस्ताव के पालन में सहायता दें। श्री पण्डित वंशीधर जी ने इस विषय में मार्ग भी दिखा दिया है सभा के ३० सभासद हैं, उनमें से यदि २० भी पचास पचास रुपया भेजदें तो २०००) जमा हो सक्ता है। इनमें से ठाकुर गोविन्द सिंह जी, पण्डित निहाल चन्द्र जी बाबू द्वारिकादास जी, प्रधान, रामकृष्ण जी, प्रधान पण्डित घासी राम जी इत्यादि यदि थोड़ी उदारता और दिखलाएं तो एक एक सौ भेजना भी उनके लिए कुछ बात नहीं है। फिर प्रधान आर्य्य समाजों के लिए ५०) प्रति समाज तथा मध्यम कोटि के समाजों के लिये २५) रु० प्रति समाज अपने वार्षिक चन्दे के कोष से भेजदेना कुछ कठिन नहीं। मुझे आशा है कि यदि यह लेख भी श्री सेठ जय नारायण जी पढ़ेंगे तो न केवल स्वयम् १००) मुद्रा भेजदेंगे प्रत्युत और श्रीमानों को भी इतना ही भेजने की प्रेरणा करेंगे। मुझे शोक है कि इस समय हमारे श्रद्धा सम्पन्न भाई लाला टेकचन्द्र जी बीमार हैं, नहीं तो वे बहुत कुछ पुरुषार्थ करदेते। क्या यदि कोई भाई मेरा लेख श्री लाला हरीराम जी को मरी पर्वत पर सुनादे तो उसी दम वहां से १००) का मनीआर्डर गुरुकुल को न चलदेगा। पेशावर में राय रलाराम जी तथा डाक्टर काशीराम जी आदि सज्जन प्रेरणा करते ही पचास पचास भेज सक्ते हैं। जालन्धर में भी लाला देवराज जी का अपने परिवार से जमा करके और श्री लाला बद्रीदास एम० ए० का अकेले ही एक एक सौ रुपया भेज देना कुछ भी कठिन नहीं है। लुधियाने से जहां खज़ानची श्री शिवप्रसाद जी १००) और उमरावसिंह जी को ५०) भेजने चाहिए वहां लाला लछमूराम नय्यड़ के लिए सौ दोसौ जमा करके भेजदेना तो बांएं हाथ का कर्तव्य ही है। अमृतसर से भी पण्डित जगन्नाथ निरुक्त रत्न जी से १००) दूर ही हैं किन्तु श्रद्धा सम्पन्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री राधा कृष्ण जी तथा डाक्टर सत्य-पाल तथा डाक्टर राम रक्खा जी भी सहायता में कुछ सङ्कोच न करेंगे। कहां तक लिखता जाऊं, मुलतान में श्री मदन जी तथा श्री कृष्ण जी, मुज़फ्फरगढ़ में पण्डित गङ्गाराम जी तथा पंजाब के अन्य नगरों में बीसियों महानुभाव इस रकम को पूरा कर सक्ते हैं।

संयुक्त प्रान्त में सभा के सभासदों के अतिरिक्त अन्य महाशयों को यदि वहीं की सभा के मंत्री बाबू मदनमोहन जी प्रेरित करें तो कईश्रीमान सौ सौ रुपया भेजकर एक दम सहायता कर सक्ते हैं। क्या कानपुर के सेठ राम गोपाल जी यदि ध्यानदें तो कुछ कमसहायता मिलसक्ती है। मुम्बई, बङ्गाल, बिहार, मद्धप्रदेश, राजपूताना सभी स्थानों में आर्य्य सामाजिक श्रीमान होंगे। यदि वे कृपा करें तो न केवल आगामी कुम्भ पर वैदिक धर्म का प्रचार ही कृतकार्य्यता से हो सकेगा प्रत्युत सार्वदेशिक सभाको भी दृढ़ता मिलेगी। सार्वदेशिक सभा इस समय भी वह काम कर रही है और करसक्ती है जो जुदा पुरुषार्थ लगाकर सब छ प्रतिनिधियाँ नहीं करसक्तीं, जिन के प्रतिनिधि इस सभा में सम्मिलित हैं। मैं आशा रखता हूं कि इस महासभा को सहायता देकर आर्य्य पुरुष एक ऐसा अवसर उत्पन्न करदेंगे जब आर्य्य समाज की वर्तमान दशा पर, हरद्वार में जमा होकर कई प्रकार के उच्च विचार हो सकें।

निवेदक, मुंशीराम
प्रधान आर्यवर्ती सार्व देशिक
आ० प्र० सभा

स्वास्थ्य रक्षा।

पावस की ऋतु चर्य्या.

बरसात में नीरोग रहने के साधन

(ले० डाक्टर लक्ष्मीपति L. R. C. P.)

प्रकृति नियमानुसार प्रखर ग्रीष्म के उपरान्त भारत वर्ष में वर्षा काल का आविर्भाव होता है। यहाँ पावस प्रायः तीन मास तक रहता है। यों तो किसी किसी प्रान्त में आषाढ़, श्रावण, भाद्र तथा आश्विन् चारों मासों में खूब वर्षा होती है। अन्य विदेशी देशों में ऐसा क्रम नहीं देखा जाता है। इङ्गलैण्ड तथा अन्य यूरोपीय देशो में बारहों मास कुछ न कुछ वर्षा होती ही रहती है। इस के विपरीत रेगिस्तानों में जैसे अरब देशमें तथा सहारा में नाम मात्र की भी वर्षा नहीं होती।

पावस प्रमोद का समय है। वर्षा होने से मन में एक प्रकार का आल्हाद का उद्भास होता है। उद्भिजों में तो मानों प्राण का संचार होने लगता है। जो घास तथा अन्य पौदे प्रखर सूर्य्य रश्मियों से तापित हो प्रायः मृतवत सूखे जारहे थे वे पावस ऋतु में जल प्राप्त कर फिर हरे भरे दीखते हैं। प्रकृति भी सुन्दर माधुरी रूप धारण करती है। संसारिक पशु पक्षी गण सब के सब इस ऋतु में मुदित होते हैं।

पहिले पहिल जब पानी बरसता है तब आकाश मंडल के कितने ही प्रकार के धूल दूषित बाष्प तथा अन्य रोगोत्पादक कृमि जलकण प्रहार से आकाशस्थ वायु से पृथक होकर भूमि पर आगिरते हैं और जल प्रवाह में मिलकर इतस्ततः भूमिस्थ द्रव्यों में लीन होजाते हैं। वायु विशुद्ध होजाता है। और आकाश स्वच्छ दीखने लगता है। ऐसे समय में अकाश मंडल में ओज़ोन Ozone भी पाया जाता है। यह एक प्रकार का आक्सीजन Oxygen अम्लजन अथवा प्राण प्रद वायु का रुपान्तर मात्र है। इसे हम ठोस तथा तेज अम्लजन कह सकते हैं।

वायु।

शुद्ध वायु में यह ओज़ोन तथा पाया जाता है। ग्रामों में समुद्र निकटस्थ स्थलों के वायु में परिमाण अधिक होता है। उत्पत्ति वायु में विद्युत का विसर्ग पर ही निर्भरहै। यह ओज़ोन स्वकर है और वायु को भी विमल बनत

जल।

यह तो सिद्ध बात है कि व उपरांत वायु विशुद्ध होजाता है। पानी बिगड़ जाता है। वर्षा क अधिक पानी बरसने से नदी नाले भर जाते हैं। पृथ्वी पर जो जल है उसका अधिकांश तो बह कर में मिल जाता है। पानी जब बह तब उस के साथ राह के अनेक संग होजाती हैं। कई एक तो घु पानी में एक रस होजाती हैं, परन्तु से पदार्थ जो घुल नहीं सकते वे पानी के साथ मिल कर प्रवाहित रहते हैं। उपरोक्त कारणों से बरसात में नदी नालों का जल मैला जाता है। गदला पानी व्यवहार में लाया जा सकता। कुछ थोड़ा सा ज़मीन में पैवस्त हो जाता है। और कर कूओं में जा मिलता है। इसी कूओं का जल भी कुछ मलीन जाता है। अत एव बरसात के मनुष्य को चाहिये कि पानी साफ पीवें। स्वच्छ पानी का व्यवहार करने से बहुत सी बीमारियां आ हैं। गदला पानी साफ करने का तरीका यह है कि "निर्मली" को कर उसमें मिलादे। थोड़ी देर ब मैल नीचे घड़े के पेंदे में बैठ जा उपर का पानी तब दूसरे बरतन जा सकता है। यदि पानी कोऔट कर ठंढा कर लिया जावे तो जल हो जाता है। और ऐसे जलका ठ करने वाला मनुष्य अपना स्वास्थ्य रख सकता है। पानी गरम करने स्थ वायु का वहिष्कार हो जा इस कारण गरम किए हुए जलके कुछ भेद होजाता है। पानी का तथा उसकी शीतलता जाती र परन्तु यह गौण गुण है। अभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने पर गरम किया हुआ जल भी तृप्ति
के लि प्रतीत होने लगता है।
यता
बात भोजन
स्थिर अन्नादि का सेवन जैसा और ऋतुओं
कथन किया जाता है वैसा ही करना
आप हिए। केवल यही ध्यान रहे कि
पना ता तथा रीत्यानुसार भोजन बनाया
के वे। हमारे देश में वर्षा काल में कई
समा प्रकार के फल मिलते हैं।
रिक्त ते आम, कटहल, नाशपाती,
कुम्भ ार अनानास इत्यादि। इन फलोंको
का य व्यवहार में लाना स्वास्थ्य के लिये
अपना लाभ दायक है। आम स्वादु है,
आध्य है, गरम है और पुष्टि कारक है।
कोई विहार प्रान्त क्या सबही स्थानों में
मामल्धिक तर होता है। फलों में प्राकृतिक
भाई क (Natural salts) विद्यमान हैं।
यिक फलों से आमाशय में रस तैयार
मारे ा है और रक्त में जा मिलता है
विचा रक्त इन्हीं निमकों द्वारा खारा
दिलों ka line) बनता है। कतिपयकाय
प्राय सम्बन्धी कार्य्यों (Physiological
री य ions) के लिए इन निमकों का रक्त
प्राज विद्यमान रहना अत्यावश्यक है जैसे
में एक धारणा के लिए अन्न, जल और
या आवश्यक हैं वैसेही कतिपय प्रकार
जब निमकों का रक्तस्थ होकर रक्त नाड़ी
एक ा प्रत्येक अङ्गों और अवयवों में
कटाह हित होना आवश्यक है। अतएव
का फ ों का सेवन सर्व्वथा श्रेयस्कर है।
रक्ता में निमक के अतिरिक्त चीनी,
शों क और अन्य कई उपयोगी पदार्थ होते
सब ो कहाजाता है कि मनुष्य के जीवन
के नी हार्थ सबकुछ फलों में विद्यमान है।
होगा जनश्रुति के आधार पर तथा
सर्व निक विचार पर कुछ लोग इङ्गलैन्ड
अति फलभोजी (Fruitarians) हो गये
जाति ऐसे लोग केवल ताज़े तथा सूखे
प्रकुंचों को खाकर ही जीवन निर्वाह करते
अ मुझे तो ऐसे महात्माओं का दर्शन
माउ ो का सौभाग्य प्राप्त होचुका है और
की २ क्त कण्ठ से इन लोगों के शारी-
रत्पन्न पुष्टता तथा मानसिक प्रचुरता की
ीत ा करता हूं। कहने का सारांश
के ए है कि यदि समय २ पर पके फल
मनुष्य को मिलजावें और वह उनका नियम पूर्व्वक व्यवहार करे तो स्वास्थ्य बनाए रखने का और कोई सुगम तर पथ नहीं है। परन्तु लोग नियम पूर्वक फलों का सेवन नहीं करते इस कारण दुःख झेलते हैं। बहुधा लोग ककड़ी ख़रबूज़ा आदि फलों को शुद्ध जल से धोए बिना खालेते हैं कभी २ अधिक पके अथवा गलेहुए फल खालेते हैं। परिणाम यह होता है कि उन्हें कालरा अथवा अतिसार रोग पकड़लेता है। मनुष्य को चाहिये कि ऋतु में पाए जाने वाले फलों को खूब जांचकर और साफ़ कर परिमित सेवन किया-करे। भोजन के साथ अथवा भोजन से एक घन्टे उपरान्त फलों का सेवन करना चाहिए। ऐसा करने से निस्संदेह लाभ होगा और स्वास्थ्य ठीक बना रहेगा।

वस्त्र

पानी बरसने तथा प्रबल प्रचंड वायु बहने से वर्षाकाल में कुछ ठंढा सा प्रतीत होने लगता है। ऐसी अवस्था में शरीर की रक्षा करना परमावश्यक हो-जाता है। बहुधा लोग ग्रीष्म ऋतु के असह्य ताप के उपरान्त वर्षा जन्य शीत का आनन्द उठाने लगते हैं और उचित वस्त्रों के सेवन में विलम्ब कर-देते हैं। उन्हैं सचमुच अपने देह के लिए क्या करना है कुछ ज्ञात ही नहीं है। मौसमी बुखारों का आक्रमण इन्हीं अव्यवस्थित पुरुषों पर होता है। मनुष्य को चाहिए कि अपने शरीर को वस्त्रों से ढके ताकि ठंड असर न कर सके। रात को मच्छर भी काटते हैं। इसलिए अत्यावश्यक है कि उनसे बचने के लिए चादर ओढ़लेना चाहिये अथवा मुसहरी का व्यवहार किया जावे। बरसात में फलालैन (Flanells) कपड़े का व्यवहार बड़ा लाभकारी है। यह पसीने को सोखलेता है और शरीर को बाहरी शीतल वायु से बचाता है। अन्तस्थ प्राण शक्ति (Vital force) की स्थिति होती है। विशेष कर बच्चे तथा बूढों के शरीर को अवश्यमेव ढका रखना चाहिए। यह खूब ध्यान में रखना चाहिए कि भीगे हुए कपड़े पहन-ने से कतिपय बीमारियाँ होजाती हैं जिनका प्रभाव पीछे शरीर पर बड़ा प्रबल होता है। और अन्त में मनुष्य को उनसे बड़ा दुःख होता है। इसलिए पानी से बचने का सदा ध्यानरहे और यदि पानी में भीग भी जाय तो यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि शीघ्र ही कपड़ों को बदल लें।

शयन

बरसात के दिनों ज़मीन भी सर्द हो जाती है। इस कारण ज़मीन पर सोना नहीं चाहिए। सात आठ घन्टे शरीर ठंडे जमीन से लगे रहने के कारण बहुत प्रकार की शीतजन्य व्याधियाँ होने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त बर-सात में सांप बिच्छू का भी भय रहता है क्योंकि इन दिनों इन जीवों का उद्भव भी अधिकतर होता है। पानी उनके बिलों में समा जाता है और वे दूसरा ठौर ढूंढ़ते २ हम लोगों के मकानों में आश्रय लेते हैं। अतएव सोने बैठने के लिए, चौकी चारपाई आदि का व्यव-हार करना लाभदायक होगा।

बरसाती रोग

यदि मनुष्य उपरोक्त बातों पर ध्यान रखते हुए जीवन काल बिताने का यत्न करे तो सम्भव है कि यह सुख से अपने दिन काट ले। परन्तु लोक में देखा जाता है कि हज़ार परिश्रम और साव-धानी करने पर भी कहीं भूल रह जाने से मनुष्य को कष्ट भोगना ही पड़ता है। यदि सुख ही सुख वा दुःख ही दुःख किसी को सदा हो तो कदाचित् उसका जीवन भार सम प्रतीत होने लगे। प्र-कृति में मनुष्य के पीछे सुख के बाद दुख और दुःख के बाद सुख लगा ही रहता है। और यह संगत भी है कि मनुष्य को सुख दुःख का अनुभव भी सापक्ष (Comparitive) हुआ करे। शरीर के साथ रोगों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। बर-सात में कई प्रकार के रोग हुआ करते हैं उनमें से कुछ एक का उल्लेख करदेना उचित जान पड़ता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१) मलेरिया अथवा जाड़ा बुखार-यह रोग प्रायः सभी स्थानों सभी मनुष्यों में पाया जाता है। डाक्टरों की सम्मति है कि यह रोग मच्छर से उत्पादित होता है। जब मच्छर को मच्छर काटते हैं तब वे अपने दांत द्वारा मनुष्य के रक्त में मलेरिया के कृमियों को उगल देते हैं जो कि रक्त प्रवाह में बह कर ये कृमि खाद्य पदार्थों का उपभोग करते हुए अपनी वंश वृद्धि में तत्पर हो जाते हैं। लाखों की तायदाद में शीघ्र ही रक्त जन्म ग्रहण कर लेते हैं और लोहित कणदेहों (Red Corpuseles) पर आक्रमण करते हैं। इस कारण मनुष्य को ठंड और तत्पश्चात ज्वर हो जाता है जब तक ये कृमि रक्त में विद्यमान रहते हैं तब तक यही लीला रहती है। जब इनका बल बढ़ना है तब ज्वर खूब वेग से चढ़ जाता है, और जब ये थक जाते हैं अथवा इनका प्राणान्त हो जाता है तब ज्वर उतर जाता है और मनुष्य को चैन मिलती है। जब तक इनको किसी औषधि द्वारा मारा नहीं जावे तब तक मनुष्य ज्वर पीड़ा से मुक्त नहीं होता। मलेरिया का एक मात्र औषधि क्यूनाईन (Quinine) है। इसके सेवन करने से ये कृमि मर जाते हैं और रोगी पीड़ा मुक्त हो जाता है। देशी चिरायता भी बड़ा लाभ कारी है। प्रत्येक पुरुष को चाहिए कि चिरायता का क्वाथ वर्षात के दिनों में सेवन किया करे मच्छरों से बचने के लिए मुसहरी का व्यवहार करना चाहिए।

(२) अनपच, कब्ज़ियत तथा मन्दाग्नि।

यह विषम भोजन करने से होता है। जैसे अधपका अन्न वा कच्चा फल खाना इत्यादि। कभी २ रात्रि में अधिक जागने से भी यह रोग हो जाता है। अजवायन का चूर्ण अथवा पानीके सेवन से शीघ्र ही मनुष्य आरोग्य हो जाता है।

(३) कालरा भी विषम भोज्य तथा पेय पदार्थों के सेवन से होता है। अर्क कपूर का सेवन प्राथमिक अवस्था में बड़ा लाभ कारी है। परन्तु इस रोग में विलम्ब नहीं करना चाहिए क्योंकि शीघ्र ही रोगी की अवस्था बदलती है। अतएव जहां तक होसके, शीघ्र किसी योग्य चतुर डाक्टर वा वैद्य की चिकित्सा करानी चाहिए।

(४) बरसाती फुन्सी—व्रण

बच्चों को यह बहुत सताता है। शिर में प्रायः छोटी २ फुन्सी निकल पड़ती हैं और शनै २ उनमें पीप जमा हो जाता है। शिर को तथा जिस स्थान में फुन्सी हो उसे गरम पानी से साफ कर सुखा कर सफेदा (Oxide of Zinc) गन्धक (Sulphur) और यूक्लिपटस का तेल (Oil of Eucalyptuts) को गरी के तेल (Oil of cocoanut) में मिलाकर मलहम बनाकर लगाना चाहिए। इस से शीघ्र ही फुन्सियां मौल जाती हैं और जख्म को आराम हो जाता है।

(५) दस्त वा आंव (Diarihoca & Dysentery) बरसात में ये भी मनुष्य को दुख देते हैं। देर से हज़म होने वाले अन्नको छोड़ देना चाहिए। केवल चावल के साथ केले का रस खाना चाहिए बिस्मथ कार्ब (Bismuth Corb) दस ग्रेन के साथ पीपरमेन्ट का तेल २ बून्द डाल कर दिन में चार दफे खाना चाहिए। दो तीन दिनमें रोग मुक्त हो जाना सम्भव है।

दक्षिण आफ्रिकाको चिट्ठी।

श्रीयुत सम्पादकजी नमस्ते!

दक्षिण आफ्रीका के संयुक्त पार्लिमेन्ट में भारतीय हड़ताल के सम्बन्ध में विचार हो रहा है। भारतियों के दुख दूर करने के लिये इन्डियन रीलीफ़ बिल पार्लमेन्ट में पेश है इस बिल पर वाद विवाद हो रहा है। डीबेट में यह बिल प्रथमवार पास हो गया, दूसरी बांचन में ६० सदस्यों ने इस बिलके अनुकूल सम्मति दी और केवल १३ सदस्योंने इसका विरोध किया। बहु सम्मति से यह बिल दूसरीवार भी डिबटमें पास होगया। अब यह बिल सिनेट में गया है वहां भी प्रथमवार पास हो जाने की खबर मिली है। इस बिल को पूर्णतः पास हो जाने पर सत्याग्रहके महान संग्राम में भारतियों को विजय समझना चाहिये।

महात्मा एन्ड रूज़से आपक पाठक परिचित होंगे। यह दक्षिण अफ्रिका के भ्रमण कर विलायत को गये थे, वहांसे भारत को चले गये। इन्होंने प्रिटोरिया नगरमें व्याख्यान देते हुए कहा था कि महात्मा मुन्शीराम से हमने प्राचीन ऋषियों के आदर्श जीवन का शिक्षा ग्रहण किया है और गुरुकुल भारत के गौरव स्वरूप है। इसमें प्राचीन प्रणाली के अनुसार उच्चशिक्षा दी जाती है। केपटोन में व्याख्यान देते समय आपने कवि सम्राट बाबू रवीन्द्रनाथ ठाकुर की खूबही प्रशंसा की। इसके समर्थन में लॉर्ड रलेडस्टनने कहा कि औपनिवेशिक गोरों को इस व्याख्यान से शिक्षा ग्रहण करना चाहिये। उनको यह भ्रमपूर्ण विचार त्याग देना चाहिये कि भारत दक्षिण अफ्रिका के लिये मजूर भेजने वाला एक देश है। वास्तव में भारत एक ऐसा शिरोमणि देश है कि जहाँ पर रवीन्द्र बाबू के समान महापुरुष और कवीन्द्र उत्पन्न हुए हैं। महात्मा एन्डरूज़के व्याख्यान से यहां के गोरों को भारत के गौरव का पतालगा है। सुनते हैं कि महात्मा एन्डरूज़ अब शांति निकेतन में स्थायी रूप से निवास करेंगे।

गत रविवार को सत्याग्रही कुमारी वायकमका विवाह संस्कार मि०चेटियार से हो गया। विवाह संस्कार पौराणिक मतके अनुसार हुआ। कन्या कीअवस्था १७ वर्ष और वरकी अवस्था ३६ वर्षके लगभग है। यह कुमारी सत्याग्रहके घोर संग्राम में ३ मास, सपरिश्रम कारागार का दण्ड भुगत चुकी है और अगरेजी भाषा में पूरा पूरा ज्ञान रखती है। माननीय गोखले जब जोहान्सबर्ग में पधारे थे तो ट्रांसवाल इन्डियन विमन्स एसोसियेशन के ओर से इसी कुमारी ने मान पत्र पढ़ा था। ऐसी सुशीला, शिक्षिता और विदुषी कन्या का एक ऐसे अयोग्य वरसे सम्बन्ध जोड़ दिया गया है जिससे प्रत्येक देश सेवक को दुख होता है। वररामः अंगरेज़ी एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अक्षर भी नहीं जानते हैं। थोड़ा सा टामिल पढ़ लिख सकते हैं। खुद कन्याने इस अनमेल विवाह का विरोध किया था पर मां बाप ने उसके करुणा आवाज़ पर ध्यान न दिया। देखें इस अनमेल विवाहका अन्तिम परिणाम क्या होता है?

लोक मान्य गान्धी इस समय केपटौन गये हैं। उचित सलाह देने के लिये जनरल स्मटसने इनको बुलाया है। श्री मती गान्धी पीनीक्समें हैं। तीन मास के सख्त जेल भोगने से उनका शरीर एकदम कमज़ोर हो गया है। इस समय श्रीमती जी का स्वास्थ्य कुछ उत्तम है। परमात्मा इन्हें दीर्घायूकरे, यही आन्तरिक कामना है। महात्मा गान्धी इस समय मजूरी की पोशाक पहिनते हैं केवल एक धोती एक कुरता और एक झोरी रखते हैं।

इस समय यहांपर शीतकी अधिकता है, ऐसी ठंडी पड़ती है कि रात के समय घुटना मुंहसे बात करने लगताहै। कभी कभी हवाकी प्रबलता रहती है उससमय मनुष्यों का प्रभु प्रभु करते समय कटता है। ट्रांस वाल जाड़े के लिये प्रसिद्ध है। बड़े आदमी आज कल यहां से केपटेन अथवा नेटालको चलेगयेहैं। क्यों कि उक्त दोनों देश समुद्र तटपर होने से कुछ गर्म्म रहते हैं।

भवानीदयाल

जर्मिस्टन-ट्रान्सवाल

ताः १ जुलाई सन् १९१४ ईस्वी

भजनों का सर्वोपरि आनन्द

यदि आप सचमुच ही लेनाचाहते हैं तो हमारे यहां से हारमोनियम अवश्य ही मगाइये।

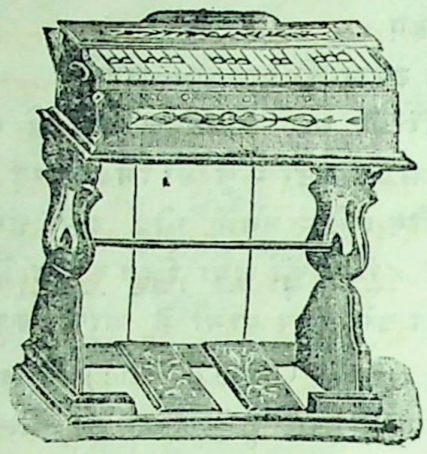

आर्डरके साथ चौथाई रु०प्रथम भेजिये।

सुख से सोइये।

आजकल मच्छर तथा खटमलों के कारण सोने में बड़ी तकलीफ होती है इस दुख से बचने के लिये हमने बड़ी सुन्दर मसहरी बनाया है मसहरी मंगाकर सुख की नींद सोइये मूल्य २।) ३) ४) ५) से १० तक।

असली हारमोनियम।

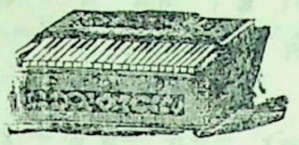

देखनेमें बहुत सुंदर टिकनेमें बड़े मजबूत बजनेमें ऐसे सुरीले हैं कि जिनका स्वर सुनते ही प्राण प्रसन्न हो जाते हैं अच्छेपन की गारन्टी देंगे सिंगलरीड ३ स्टाप १३) १५) १८) २०) डबलरीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ४५) तक पैर से बजाने वाले भी मिलेंगे दाम ८०) १००) १२५) स्टेशन का नाम लिखकर

फेन्सी न्यू रिष्टवाच।

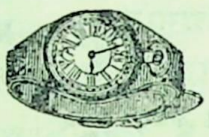

असली निकेल केस छोटा साइज अति उत्तम ठीक समय रक्षक मजबूत हात में बांधने का विलायती चमड़ा समेत मूल्य १नं० ५) २ नं० ४।) ३ नं० ३॥) असली चांदी ६) डा० ख०।) छः पैसे के टिकट भेजकर "इटालियन भाग्यपरीक्षा" नाम की पुस्तक मुफ्त मंगाइये।

दुकानदारों को माल बहुत किफायतसे भेजा जाता है।

G. M. SHARMA & Co.
Post Box No 288 CALCUTTA

जी० एम० शर्मा एन्ड को०
पोष्ट बक्स नं० २८८ कलकत्ता

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी का सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दुसरा माल देंगे, परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, जी मचलाना, कमर का दर्द रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री० प्रो० बालकृष्ण, एम. ए.

की रचित अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये
जी पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके
लिये नाम लिखाने वालों से $\frac{1}{4}$ कीमत ली
जावेगी ।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है)।)
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं ? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की
राज प्रणाली छप रही है । ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, आदीका दर्द अवा खोर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया

७००) रुपये इनाम।

वाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री वाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बडी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ।=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।-)
प्रार्थना पुस्तक -)
ओंकार की उपासना -)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश -)
वेद और महाभारत के उपदेश -)
वेद, मनु और गीता के उपदेश -)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द =)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवाले समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाराजा की राय।

महाराजा दलगञ्जनसिंह देव बहादुर फुयडटरी चीफ अफ पटना ष्टेट बोलांगिर जिला सम्बलपुरसे लिखते हैं—

प्रियवर! आपकी भेजी हुइ खांसी की दवा के लिये कृतज्ञ हूं। इस दवा से हमारी खाँसी बिलकुल जाती रही। मैंने इसके कुल सात ही खुराक पीये अधिक पीने की दरकार न रही, खाँसी मुझे कई महीने से सताती रहती थी; इस लिये पुनः आपको धन्यवाद देताहूं।

कफ वो खाँसी की दवा

मोल—बड़ी शीशी १) छोटी शीशी ॥)
डा० म० ।=) वो ।-) आने

दवा सब जगह बिकती हैं

महाराज कुमार की राय।

महाराज कुमार एकदेश्वरसिंह, शङ्करपुरा वोलांगिर से लिखते हैं।

यह दूसरा मौका है, आपकी दाद की मलहम ने जादूसा असर दिखाया, जिससे मैंने हर वक्त की तकलीफ से नजात पाई; मैं आपका दिल से मशकूर हूं।

दाद की मलहम।

मोल ।) चार आने डिबिया १ से ६
डा० म० ।-) १२ डिबिया तक ।=)

नकली दवा से सावधान!

नं० ६९ डाः एस. के. तर्फेन ॥ ६, [illegible] ष्ट्रीट, कलकत्ता।

एजन्ट बाबूराम जैनी एन्ड कंपनी बड़ा दरीबा दिल्ली

हिमालय, तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—(शुद्ध व असली) फी तोला १८) रु०

शिलाजीत—सूर्य्य की गर्मी में जड़ी बूटी के प्रयोग से शास्त्रविधिसेशुद्ध किया हुआ २) रु० फी तोला

केशर—(शुद्ध काश्मीर की जाफरान) फी तोला १॥)

पशमीने व सावल—६ गज×१½ गज २०) रु० से २८) रु० तक

नोट—यदि ऊपर लिखे मुताबिक हमारी चीजें सत्य व शुद्ध न हों तो ग्राहक लोग हम से पूरी कीमत और २५) रु० दंड लेंवे।

पता—प्रेमलाल शाह गंगोला
अल्मोड़ा यू० पी० हिमालया

आवश्यकता।

एक शरीफ़ ख़ानदान अगर वाल कन्या के लिये ऐसे बर की आवश्यकता है जिस की आयु २२ वर्ष से २८ वर्ष के भीतर हो। ग्रेजुयट हो अथवा बी. ए. में पढ़ता हो कम से कम १००) मासिक आमदनी हो या जायदाद रखता हो। कन्या भाषा लिख पढ़ सकती है हिसाबादि तथा सीना पिरोना ग्रह के कार्य्य में निपुण है आयु १६ वर्ष की है। पत्र व्योहार का पता।

सेठ मिट्ठनलाल अलबेलसिंह
ठेकेदारान झींद स्टेट

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री
अलीगढ़ सिटी. यू. पो.

पुष्टराज चूर्ण

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, आदि धातु सम्बन्धीसमस्त रोगों को दूर करके थोड़ेही दिनों में रोगी को मोटा, ताजा और ताकत वर बना देता है। मूल्य २॥) डिब्बी डाः मः माफ।

पता—बी.एल. बूबनाएण्डको
दिल्ली नं० ३

पीतल के बिरूच

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन ॥।) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन वाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

पताः—भारत हितैषी—कम्पनी,
अलीगढ़ सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

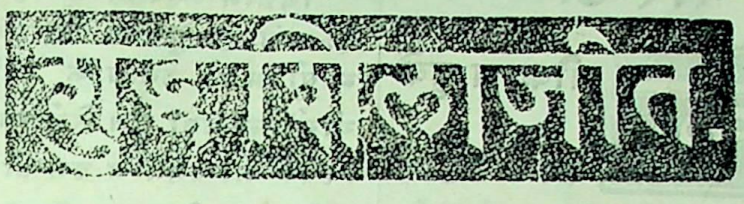

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, सृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनाँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

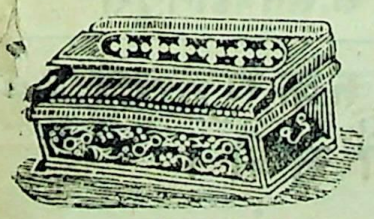

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≠)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल्य २) इस ग्रन्थ में कौरवों पांडव की लड़ाई नीती, धर्म्म चारों वरणों के धर्म्म वर्णन हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४८० पृष्ठ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पास पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनिये फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाईरी टोला-बनारससिटी

महाशयजो

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≠) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (ब)

चान्द--जि० बारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है।। **ब्राह्मी बूँटी बटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्तरत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये- इटोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी। हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी ॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु दवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

महात्मा मुंशीराम जी !

विज्ञान कल्पतरु के विषय में लिखते हैं:—मैं इस पुस्तक माला को आर्यभाषा भाषी आर्य जनता के लिये बहुत उपयोगी समझता हूं। मेरी सम्मति में यदि प्रत्येक आर्य्यसमाज इस की एक एक प्रति खरीदना स्वीकार करले तो ऐसा समयोपयोगी ग्रन्थ छप कर स्वदेश को बहुत लाभ पहुंचा सकता है। यदि मेरे पास धन होता तो मैं आपका हाथ बटाने का कुछ प्रयत्न करता अब केवल आप की कृतकार्यता के लिये मङ्गल इच्छा ही प्रकट कर सकता हूं। विज्ञान कल्पतरु में प्रत्येक वस्तु के बनाने की कृयायें धन कमाने के अनेक ढंग, विज्ञान (साईन्स) सम्बन्धी तथा वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रत्येक बात का पूरा पूरा वर्णन चित्रों सहित किया गया है। ग्रन्थ बड़ा होने में १०० पृष्ट मासिक में छपता है और स्थाई ग्राहकों को ॥) प्रति अंक डाक व्यय सहित दिया जाता है अन्यों को प्रति अङ्क ।॥) में

मैनेजर जनरल पबलिशिंग कंपनी मेरठ

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ान का साबुन-बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने १२ बक्स एकसाथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीचर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे। मंगाने का पता-

शर्मनऐंड कं. सतघड़ामथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(६) म० हीरालाल c/o म० भगवानदा जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान दे

प० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल प० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय दहलीमें मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

3697. Editor Library Gurukul

ओ३म् ॥ Registered No. L. 807.

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | ७ भाद्रपद सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० २२ अगस्त १९१४ | संख्या १९ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १)
बजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है ।आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक कोआदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है — राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है बड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ।
एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र० ०
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "
अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

कोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई कोड़-पत्र नहीं बंट सका।

(२) कोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। कोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक कानाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये

साधारण कोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से करें।

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र-देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बूंटि से पारे की निखालिस भस्म

केवल जड़ी बूंटी से मृतक पारे को शुद्ध श्वेत भस्म के रसायन और खादिक प्रक्रिया के मर्मज्ञाता अनेक वैद्य साधु ब्रह्मचारी इच्छा किया करते हैं २५) की १ तोला के हिसाब. चाहें जितनी मंगावें।

पता:

मैनेजर आयुर्वेद प्रचारक कंपनी

हरद्वार।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव

कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

इंगलिशटीचर।

यह इतनी सहल है कि विना गुरु ३ महीना में अङ्गरेज़ी लिखना पढ़ना और बात चीत करना बखूबी सीखलो मू० १) बड़ासूची पत्र मुफ्त।

बाबू राजाराम बुकसेलर, अलीगढ़ सिटी नं० ४

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

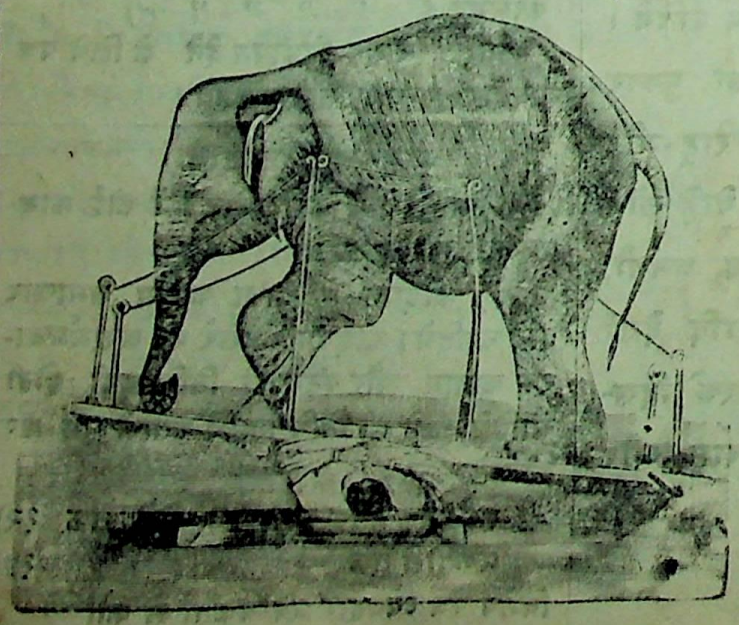

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) घोर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योरप में महाभारत

जापान का जर्मनी को अन्तिम सन्देसा।

पोलेंड को स्वराज्य मिल गया।

फ्राँस की जीत।

फ्रांस में अंग्रेज़ी सेना पहुंच गई।

लोज के किले अभी सुरक्षित हैं।

ता० १४ अगस्त के तार से पता लगा कि मुख्य रणभूमि में सन्नाटा छाया हुआ है। वहां से लड़ाई के समाचार बहुत कम आते हैं। लीज अभी तक ज्यों का त्यों बना है, अभी तक उसका कुछ नहीं बिगड़ा है पाँच दिन लड़ने के बाद वोसजेस पर फ्रान्स का अधिकार हुआ है। जर्मनों ने फ्रांस पर बड़ी ज़ोर से चढ़ाई की किन्तु फ्रांस ने उन्हें हटा दिया। बेलजियम ने फ्रांस से कहा है कि वह २००० जर्मन कैदियों को अपने पास रक्खे। फरासीसियों ने ओरेन की लड़ाई में आर्टलरी फौज की एक बैटरी, तीन मशीन तोपें और बारूद गोलों की गाड़ियां छीन लीं।

लीज पर जर्मनों का आक्रमण

म्यूज़ नदी के बांई ओर जर्मन लोग लीज के किलों पर जी तोड़ कर हमला कर रहे हैं।

दो विमान सवार मारे गये।

बैलजियम के बारूद गोलों से डीस्थान में दो हवाई विमानों के सवार मारे गये। और तीसरे के बहुत चोट लग गई,

बेलजियम में युद्ध का स्थल छोटा है और उस के पास ही उस की राजधानी ब्रूशल्स है इसी लिये समाचार इस समय आने बन्द हैं।

आस्ट्रिया का जहाज़ डूब गया।

बैरनगोश नाम का आस्ट्रियन लायड़ जहाज अड्रियाटिक समुद्र में डूब गया। ५५० आदमियों का पता नहीं है। कारण विदित नहीं हुआ।

सर्विया और आस्ट्रिया।

सर्विया के लीज नगर से यह संवाद आया है कि सरकारी तौर पर यह ख़बर निकली है कि वृहस्पतिवार को चार लाख आस्ट्रियो ने सर्विया की सीमा पर रात को धोखे से आक्रमण किया और बड़े भारी युद्ध के बाद वे पीछे हटा दिये गये। इस युद्ध में बड़ी भारी हानि हुई। किन्तु शत्रु लोग (आस्ट्रिया वाले) साव नदी को पार करने में समर्थ हुए और उन्हों ने शाबाज़ लीन लिया। बड़े खून खच्चर के बाद वे ड्रिना नदी को भी पार कर गये। सरवियन लोग एक बड़ी लड़ाई के लिये अपनी शक्तियों को एकत्र कर रहे हैं। यह लड़ाई १५ तारीख को होने की आशा थी।

जर्मन जहाजों पर तुर्की अफ़सर

सरकारी संवाद भवन से ख़बर निकली है कि इसमें सन्देह नहीं कि 'गावेन" और "ब्रेसल" नाम के दो जङ्गी जर्मन जहाज़ों पर तुर्की अफसर और मल्लाह काम करेंगे। इससे विदित होता है कि टर्की ने इन जहाज़ों को खरीदलियाहै।

जर्मन फ़ौज भगा दी गई

पैरिस से सर्कारी तौर पर खबर निकली है कि सरेको पहाड़ी से फरासीसियों ने जर्मन फौज को सारवर्ग को वापस भगा दिया। इस के पहले उन में घोर युद्ध हुआ। जर्मनी की बड़ी हानि हुई और फरासीसियों ने बहुत से जर्मन लोगों को कैद कर लिया।

बैलजियम की दशा।

बैलजियम की राजधानी ब्रुसेल्स से आज तार आया है कि-"शनिवार की रात से यहां की साधारण अवस्था में कुछ भी परिवर्त्तन नहीं हुआ। अवस्था ज्यों की त्यों है। जर्मन लोग हमारे सामने दृढ़ता पूर्वक खड़े होते नहीं दिखाई देते। हमारी सेना से उनका प्रत्यक्ष सामना कहीं नहीं हुआ और सामन्यतः थोड़े दिनों के लिये शान्ति ही दिखाई पड़ती है।

जर्मनी को हार फ्रांस से।

पेरिस, १७ अगस्त। सरकारी तौर पर यह प्रकाशित हुआ कि घुड़सवार सेना के दो भागों और पैदल और फायर करने वाली सेना के कुछ दस्तों को लेकर जर्मन ने डिमैएट पर चढ़ाई कर दी थी। फ्रेंच घुड़सवारों ने उन्हें हटा दिया। वे तितर बितर होकर म्यूज़ के दहने किनारे पर भाग गये।

"सिरे स्थान के बाहर फ्राँस ने सेना हटा दी। अपर अलसेरा में फ्रांस की अवस्था बहुत अच्छी है बोसजेस का निम्न भाग हमारे अधिकार में हैं।"

जर्मनी और फ्रांस में किस का तोप खाना बढ़िया है।

शिमला १४ अगस्त। कल जो वह संवाद आया कि युद्ध की वर्तमान अवस्था में हमें बहुत समाचारों की आशा नहीं करनी चाहिये वह ठीक ही निकला। आज के तारों में जर्मन और फरासीसियों की कारवाइयों के सम्बन्ध में यह समाचार आया है कि जर्मन वालों के आक्रमणों का फरासीसियों ने बड़ी वीरता से प्रतिरोध किया किन्तु इस के अतिरिक्त कई असगत समाचार भी आये हैं। जर्मनों की परम्परागत चालाकियों के अनुरूप बेलजियम में जर्मनी ने सम्भवतः बगल ही से भारी युद्ध किया और मुख्यतः दक्षिण की ओर बढ़ते रहे। कल हमने सुना कि फरांसीसियों की घुड़सवार सेना, अब तक उस का जितना काम पड़ा है अपने को जर्मन घुड़सवार सेना से उत्तम काम दिखा रही है। आज हमें खबर मिली है कि फरांसीसियों की आर्टलरी (बारूद गोले वाली) सेना भी जर्मनी से उत्तम है। और हमारा कहना बहुत दिनों से विश्वास था कि फरांस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की आर्टलरी भी अच्छी है किन्तु लड़ाई के ठीक पहले पेरिस के चैम्बर में फरेंच सेना का जो निराशा पूर्ण वर्णन किया गया उससे उस विश्वास में कमी आगई थी

जापान और जर्मनी।

जापान का अन्तिम सँदेसा।

जापान की राजधानी टोकियो से १७ अगस्त के तार में यह संवाद आया है कि जापान ने जर्मनी को यह अन्तिम संदेसा भेज दिया है कि सुदूर पूर्व (एशिया) में अंग्रेज़ों की सन्धि के अनुसार उपद्रव रोकने के लिये जापान जर्मनी को परामर्श देता है कि वह जापान और चीन के समुद्रों से अपने जंगी जहाज़ों को लौटा ले या उन्हें निश्शस्त्र कर दे और कियाचौ जापान को दे दे कि वह इसे चीन को दे दे।,,

जापान ने इसका उत्तर २३ अगस्त के दुपहर तक माँगा है। अगर उसकी सलाह नहीं मानी गई, तो जापान उचित कारवाई करेगा।

१५०० जर्मन क़ैदी।

वोसजेस स्थान में १५ और १६ तारीख को जो युद्ध हुआ उस में फराँसीसियों ने १५०० जर्मनों को क़ैद किया और कितनी ही बड़ी तोपें छीनीं।

फ्रेंच लोग आगे बढ़ रहे हैं

लंडन १० अगस्त। फ्रेंच सेना बराबर अल्सेस लारेन की सीमा पर बढ़ती चली जा रही है। स्ट्रैसबर्ग की ओर यह विशेष वेग से बढ़ रही है।

फ्रेंचों ने कई बड़ी बड़ी तोपें, मैदान की तोपें, और उन्हें ले जाने की गाड़ियां, जिनमें मोटरें भी हैं, पकड़ ली हैं।

दिनान्त में विजय प्राप्त करने बाद फ्रेंचों ने म्यूज़ नदी के दाहिने किनारे पर एक जर्मन आक्रमण व्यर्थ किया।

(नोट स्ट्रैसबर्ग फ्रांस की सीमा पर जर्मनी के अल्सेस लारेन नामक प्रदेश का एक नगर है और डिनाएट फ्रेंच सीमापर बेलजियम का एक नगर है)।

जर्मन सेना हतोत्साह।

पेरिस, १७ अगस्त। अग्रगामिनी फ्रेंच सेना लौंगवे जिले से खबर देती है कि जर्मन छावनी में सिपाही हतोत्साह दिखायी देते हैं। जिन जर्मन रिज़र्विस्टों को हम लोगों ने पकड़ लिया है उनका कहना है कि युद्ध असम्भव है क्योंकि जर्मनी के कई प्रधान नगरों ने युद्ध का विरोध किया है और कहीं कहीं बलवे भी हो गये हैं। इसके अलावा जर्मन सैनिकों को उचित और आवश्यक भोजन नहीं मिल रहा है।

(नोट—लौंगवे फ्रांस का एक ज़िला है।)

जर्मनों का अत्याचार।

फ्रांस के सीमान्त ग्रामों से पेरिस में जर्मनी के अत्याचारों की बहुत सी अफवाहें आरही हैं। ग्रामीणों का कहना है कि, जर्मन लोग उन घरों में आग लगा रहा है जिनमें स्त्रियों ने शरण ली है, घायल फ्रेंच सैनिकों का कतल कर रहे हैं,

कैसर मेंज गये।

लण्डन, १७ अगस्त। बर्न का तार आया है कि, सम्राट् और कैसर अपने हेड क्वार्टर्स स्टाफ के साथ बर्लिन छोड़ मेंज चले गये।

(मेंज—दक्षिण जर्मनी में राइन नदी के किनारे एक प्रसिद्ध नगर है और बर्न भी ओलडेनबर्ग के निकट जर्मनी का एक मामूली स्थान है।)

आस्ट्रिया में रूसी पलटन

रूसी सेना वग और स्टिर नदियों के चढ़ाव के पास आस्ट्रिया में घुस गयी।

(वग एक छोटी सी नदी है जो आस्ट्रिया के गैलिशिया प्रदेश से निकल रूसी पोलैण्ड होकर बहती हुई रूस की विस्चुला नामक एक बड़ी नदी से जा मिलती है। स्टिर गैलिशिया प्रदेश की एक साधारण नदी है।)

जर्मनी में रूसी सेना।

रूसियों ने थोर्न और ग्रौडेंज पर आक्रमण किया है।

जर्मन लोग सीमा पर के पाँच आर्मी कोरों की सहायता के लिये अपने अग्रगामी रिज़र्व सैनिक शीघ्रता से भेज रहे हैं।

(थोर्न पश्चिमी प्रशिया प्रदेश में विसचुला नदी के किनारे व्यापार की मंडी है और ओडेंज पश्चिमी प्रशिया की सीमा पर एक शहर है)

आयरिश स्वेच्छा सेवक।

मेरी बरो में व्याख्यान देते समय मि० रेडमंड ने कहा है कि, आयर्लैंडके वालंटियर विदेशी शत्रुओं से अपने देश की रक्षा कर लेंगे। आयर्लैंड के हर एक हिस्से से मुझे इसका दृढ़ विश्वास दिलाया गया है। सरकार बहुत से वालण्टियरों को हथियार देगी और कवायद सिखावेगी।

ऐड्रियाटिक में फ्रेंच बेड़े।

लण्डन, १७ अगस्त। प्रेस ब्यूरो कहता है कि फ्रेंच बेड़े ने कैटारोतक ऐड्रियाटिक समुद्र (शत्रुके जहाजोंसे) साफ कर दिया और ऐस्पर्न ढंग का एक आस्ट्रियन क्रूजर डुबा दिया।

(नोट—एड्रियाटिक समुद्र तटपर आस्ट्रिया के डालमेशिया प्रदेश में कैटारो बन्दर है, जिस पर कई दिन पहले मांटिनीग्रन गोले बरसाते थे)।

जर्मनों ने ले लिया

रूटर का संवाद दाता नैरोबी से तार देता है कि, १०० जर्मनोंने टैवेटापर अधिकार जमा लिया

(नोट—नैरोबी अंग्रेजों के पूर्वी अफ्रिका उपनिवेशका नगर है। टैवेटा भी इसी उप निवेशका नगर है।,

बड़ी लड़ाई की ख़बर।

शाहबाज में एक बड़ी लड़ाई होरही है। सचियनों के जीत की अफवाहें तो हैं, पर सरकारी खबर नहीं मिल सकती

लड़ाई चलेगी।

कलंबो १७ अगस्त। "सीलोन टाइमस" के लण्डन संवाददाता ने तार दिया है:—"लार्ड किचनर के सैनिक प्रबन्ध के सम्बन्ध में "टाइमस" के सैनिक संवाद दाता ने एक लेख प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया है जिसमें वह कहता है कि, जर्मनी के पास बहुत विभव है। इस लिये बहुत सम्भव है कि, लड़ाई अधिक दिनों तक चलेगी। यही कारण है कि लार्ड किचनर ने दूसरी सेना संग्रह करने का प्रस्ताव किया है। स्थायी सेना को बाहर भेजने की आवश्यकता हो सकती है। उसी समय नयी सेना स्थायी सेना की जगह कार्य्य करेगी।"

"जो सैनिक विदेश भेजे जाने के लिये इकट्ठे किये जाते हैं वे टेरटोरियल सेना से भिन्न है। टेरिटोरियल सेना भी पूर्ण रूप से शिक्षित होने पर बाहर जा सकती है"

एकहिन्दुस्तानी महाराज पकड़े गये

आष्ट्रिया का मेरियन बाद जहाज १ अगस्त को बम्बईसे ट्रीस्ट और वेनिस के लिये रवाना हुआ। ट्रीस्ट आष्ट्रिया का और वेनिस इटालीका बन्दर है। इस जहाजपर अनेक यूरोपियन और हिन्दुस्तानी सज्जनों के सिवा बुन्देलखण्ड की पन्ना रियासत के महाराज भी थे। आष्ट्रियाहंगरी से इंगलैंडका युद्ध छिड़ने बाद यह जहाज अंग्रेजों ने पकड़ लिया और वे इसे मित्र देशके सैयद बन्दर में ले गये। अंग्रेज लोग इस बन्दर को पोर्टसेड कहते हैं। आष्ट्रियन लायड कम्पनी के एजेंट ने सूचना दी दी है कि, यहां पहुंचने पर मुसाफिरोंसे कहा गया कि, तुम लंडन जाने वाले वारिकशायर जहाज पर चले जाओ। कुछ तो चले गये और कुछ लोगों ने राजनीतिक अवस्था देख जाने का विचार त्याग दिया। इसी कम्पनी का फ्रेंच फडिनैंड जहाज अदन में पकड़ा गया है। यह ४ अगस्त को बम्बई से रवाना हुआ था, इस पर कुछ मुसाफिर और बहुत माल था। माल भेजने वालों से कहा गया है कि, तुम अङ्गरेज सरकार की शरण लो।

मंहगी

दरभंगे में खाद्य पदार्थों की दर बढ़ गई है। सुनते हैं, म्युनिसिपैलिटी इसके रोकने का उपाय करने वाली है

युद्ध के कारण लाहौर में खाद्य आदि वस्तुओं की दर में जो गड़बड़ हुई थी-वह अब नहीं रही। दर बढ़ने का अब कोई लक्षण नहीं है।

भारत का अस्पताली जहाज।

पाठक जानते हैं कि, भारत के कई नरेशों ने युद्ध में भेजने के लिये सरकार को एक अस्पताली जहाज देने की इच्छा प्रगट की थी, अब इस स्कीम में श्रीमान् काश्मीर नरेश, जयपुर महाराज, बरतानी के राजा और रतलाम के राजा भी सम्मिलित हुए हैं। नरसिंहगढ़ के राजा ने इस कार्य लिये धन देना चाहा है। भारत सरकार ने रजवाड़ों की यह सहायता धन्यवाद पूर्वक स्वीकार कर ली है। यह निश्चय हुआ है कि, पांच हजार टन का एक जहाज भारत में लिया जाय और उसमें सब आवश्यक साधनों की व्यवस्था की जाय सन्दुर (मद्रास) के राजा ने सरकार को लिखा है कि मैं और मेरे राज्य का विभव सरकार के काम के लिये प्रस्तुत ति है।

सेना की भेंट।

कुछ लोगों ने अंगरेजी जल और स्थल सेना को पाट और गनी भेट करने का प्रस्ताव किया था। उनका कहना था कि ये दोनों चीजें सेना के बहुत काम आवेंगी, पर सरकार अभी इस सम्बन्ध में कोई कारवाई नहीं करेगी।

साहाय्य भाँडार।

मद्रास के कितने ही लोगों ने युद्ध में अंगरेजी पलटनों की सहायता करनेकी गवर्नर साहब से इच्छा प्रगट की है। सुनते हैं, इस पर गवर्नर वहां एक फण्ड खोलने वाले हैं। इस का धन युद्ध में अंगरेजी पलटनों के काम में लगाया जायगा।

सेना को चाय की भेंट।

सीलोन में ऐसा प्रस्ताव हुआ है कि इंगलैंड को डेढ़ करोड़ पौंड चाय भेंट की जाय। इस विचार के कार्य्य में परिणत होने की पूरी सम्भावना है। रणक्षेत्र में जो अंगरेज, फ्रेंच और बेलजियन पलटनें हैं, उन में भी चाय बांटने को दी जायगी।

अंग्रेजों की सेना फ्रांस में

कलके समाचारों में सब से प्रधान यह समाचार था कि अंग्रेजों की जो सेना इमदादी फौज की सूरत में फ्रांस और बिलजियम को सहायता के लिये जाने वाली थी वह फ्राँस में दाखिल होगई वह जहाजों में सवार होकर सादिल फ्रांस पर बोलों में उतरी और वहां से युद्धक्षेत्र की ओर रवाना होगई। किन्तु यह ज्ञात नहीं हुआ कि वह किस रास्ते से रवाना हुई है। तो भी यह प्रसन्नता का स्थान है कि यह सेना निहायत चुपके से रवाना होकर फ्रांस पहुंच गई और युद्धक्षेत्र में ठीक समय पर इस महान युद्ध के आरम्भ होने से पहिले ही जा पहुंची है। इस सेना में एक लाख ६६ हजार जवान हैं इसमें रिसाले, पैदल, पलटन, इंजिनीयर फौज तोपखाने सम्मिलित हैं यह सब सेना केवल बरतानिया से ली गई है इसमें बरतानिया से बाहिर की बृटिश सेना सम्मिलित नहीं है इसके युद्धक्षेत्र में प्रथम ही पहुंच जाने का इस महान युद्ध पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा और फ्रांस व बिलजियम की सेना को इस से पूरी सहायता मिल सकेगी।

उत्तर समुद्र में कई छोटी २ लड़ाइयां

सरकारी समाचार है कि—१८ तारीख को इंग्रेजी गश्ती बेड़े और किश्तियों को जर्मन के जासूसी जहाजों से कई छोटी २ लड़ाइयाँ हुईं दोनों ओर को हानि का कोई पता नहीं। उत्तर समुद्र के पूर्वीय हिस्से में अजीब चहल पहल है।

फ्रांसकी गैर फ्रांसीसी सेना को युद्धक्षेत्र में सफलता

फ्रांस के अफरीकी इलाका अलजरिया की शीघ्र २ फैर करने वाली सेना ने स्थल की लड़ाई में अच्छी सफलता प्राप्त की है तर कोल फिरकें की सेना ने जर्मन मोरचों पर पहुंच कर संगीनों की मार से जर्मन सिपाहियों को विजय कर लिया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बैलजियम ने जर्मन हवाई जहाज़ गोला बारी से गिरा लिया

बैलजियम ने इन्ट्वीवेक में जर्मनी के एक हवाई जहाज को गोला बारी करके नीचे गिरा लिया। इसमें जर्मन सेना का जो अफ़िसर था उसकी दोनों टांगें टूट गईं फिर भी उसने पिस्तौल निकाल कर बैलजियम पर फैर करने का यत्न किया इसके पास से सैना के सम्बन्ध में वकफियत निकली है।

तूतीया कोई अहम स्थान नहीं।

ब्रटिश पूर्वीय अफ्रीका में तूतीया जिस पर जर्मनी वालों ने कब्जा कर लिया है राजनैतिक ख्याल से कोई अहम स्थान नहीं इस इलाके की सरहद की वहां के देसी सिपाही भली प्रकार रक्षा कर रहे हैं और वहां के असली निवासियों में कोई शोर नहीं पाया जाता।

इटली अंग्रेजों के विरुद्ध नहीं लड़ेगा।

वज़ीर खारजिया इटली ने अस्ट्रिया और जर्मनी के सफीरों को सूचना दी है कि संधि के शब्द तथा भाव इटली की उदासीनता के विरुद्ध नहीं हैं। इटली चूंकि इतिहास और रवायात के ज़रिये इंगलिस्तान से बंधा हुआ है इस कारण वह इंगलिस्तान के विरुद्ध कदापि अस्त्र न उठावेगा।

इंग्लैंड में नई सैना को भरती।

ब्रतानिया की नई सेना में ५० सहस्त्र मनुष्य भरती हो चुके हैं। इनकी कवायद परेट के मुताल्लक बारकों तथा मैदानों में हलचल मची रहती है। इस फ़ौज में तीन सप्ताह के अन्त में अनुमानिक दस सहस्त्र के भीतर मनुष्य भरती हुए थे।

एशिया और अफ्रीका में विद्रोह करने का यत्न

ओ खबार स्टेन्डर्ड का सम्वाददाता लिखता है कि जर्मनी ने अपने आदमी मिस्रहिन्दोस्तान, वस्ती ऐशिया, अलजेरिया और मराकश इस लिये भेजे हैं कि वहां बग़ावत करादें। यह भी यत्न किया जायगा कि मज़दूरों से हंगामें करायें जायें। दक्षिण अफरीका के मजदूरों का एक लीडर युद्ध आरम्भ होने के समय से बरलम में उपस्थित है।

जर्मन सेना की भारी हानि।

जर्मन सेना ने नदी म्युज को दुबारा पार करने का यत्न दीनाण्ट के स्थान पर किया किन्तु फरांसीसी तोप ख़ाने ने इसे सख्त हानि पहुंचाकर पीछे हटा दिया।

जर्मन सेना के लिये मार्ग देने की प्रार्थना।

जर्मनी बेलजियम से कई बार प्रार्थना कर चुका है कि वह इस की सैना को जाने का रास्ता दे दे। अब तक जर्मनी का जो मुक़ाबला बिलजियम ने किया है इस से जर्मनी नाराज़ नहीं हुआ यदि बिलजियम जर्मन सैनाओं को गुज़रने का रास्ता दे दे तो वह विश्वास दिलाता है कि युद्ध के पश्चात बिलजियम सल्तनत सुरक्षित रहेगी। शाह बिलजियम ने यह प्रार्थना अस्वीकार कर दी है। जर्मनी नेयोरुप के और देशों से भी इसी प्रकार की प्रार्थना की है जिस में इसे सफलता प्राप्त नहीं हुई अब जर्मनी को यह दिक्कत पेश आई है कि १७ दिन से इस की सैनायें आगे बढ़ने से रुकी हुई हैं

जर्मन सेना तबाह कर दी गई

फ्रांस के सेना पति का तार है कि फरांसीसी सैनाओं के वादिस वसजीस के ज्यादः तरहिस्से पर अधिकार कर लिया है। अलशीस की पहाड़ी के ढलवां हिस्से पर सार बर्ग के दक्षिण में जर्मन सेना ने मोर्चे बना लिये और तोप ख़ाना जमा लिया।

किन्तु १७ अगस्त को तीसरे पहर इस सेना को फ्रांसीसी सेना ने प्रायः नष्ट करदिया और फ्रांसीसी रिसाला ने इसका पीछा किया। गत कई दिनों में प्रत्येक मार्की में इस के तोपखाने ने जर्मन सेना को हानि ही पहुंचाई है।

रूसी सेना ने जर्मनी के पांच स्थानों पर अधिकार कर लिया

रूसी सेनाओं ने जर्मन राज्य में पाँच स्थानों पर पूर्ण सफलता के साथ साथ अधिकार कर लिया और सैकड़ों जर्मनों को भी कैद कर लिया।

दो जर्मन जहाज़ों की गिरफ्तारी।

पेरिस में भारत की सेना के एक अफसर ने दो जर्मन जहाज गिरफ्तार कर लिये हैं जो अदन में रुके हुए थे।

एक जर्मन को फ़ौजी कायदा तोड़ने में सजा

एक जर्मन जो जर्मन जहाज में कर्मचारी था जिसे कलकत्ता में जप्त किया गया था फौजी कायदा तोड़ने तथा मद्यपान कर उपद्रव मचाने के अभियोग में एक सप्ताह के लिये कैद किया गया।

एकसौ दस जर्मन और आस्ट्रियन जहाज़ गिरफ्तार।

लंदन की खबर है कि अबतक एकसौ दस जहाज जर्मनों और आस्ट्रिया के बृटिश सरकार ने गिरफ्तार किये।

लीज के दुर्ग अबतक सुरक्षित

सरकारी समाचार है कि लीज के दुर्ग अबतक सुरक्षित हैं यद्यपि यह गर्म खबर है कि लीज के दुर्गों को जर्मन सेना ने विजय कर लिया।

जर्मन जहाज़ की गोलावारी फ्रांन्स के शहर पर

एक जर्मन व्योमयान ने जिसपर फ्रांसीसी झंडा था शहर लविमबाइल पर गोले बर्षाए हानि अधिक नहीं हुई।

टर्की की उदासीनता

टर्की ने इंग्लैंड को फिर यह विश्वास दिलाया है कि वह पूर्णतया उदासीन रहेगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक

क्या धर्म युग होचुका ?

'धर्म का युग होचुका' धर्म प्रचारकों के दिन होचुके, वे शब्द हैं जो हम चारों ओर से सुनते हैं । जिसे धर्म के नाम से पुकारा जाता है, वह भूतकाल की वस्तु समझी जाती है । संसार को धार्मिक अवस्था से निकला हुआ माना जाता है । हमें नये लेखक बतलाते हैं, कि अब व्यापार का युग है । आर्थिक लहर ही अब समाजरूपी किनारों को बनाती या बिगाड़ती है । जाति की आर्थिक दशा ही भूमण्डल में उसकी स्थिति निश्चित करती है । अब धर्म का स्थान गौण होगया है । धर्म का वह कल्पवृक्ष, जो सहस्रों राहियों को छाया देता था, अब रुन्ड मुन्ड होगया है । धर्म की कल्पधेनु अब बांझ होगई है, जिस से न सन्तान की आशा है न दूध की ।

इस ऊंचे नाद के साथ एक और नाद भी मिला हुआ पाया जाता है । हमें बतलाया जाता है कि धर्म की आवश्यकता भी नहीं । अच्छे कामों के करने के लिये अब धर्म की अपेक्षा बढ़िया प्रेरक और भी होगये हैं । अब जातियों और राष्ट्रों में उन्नति, मेल या झगड़े धर्म को सामने रखकर नहीं होते, व्यक्तियां भी अब धर्म को पथदर्शक मान कर काम नहीं करती । लौकिक हित को दृष्टि में रखकर ही व्यक्तियां अपने जीवनों को बनाती हैं । इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध इतिहास दर्शनज्ञ लैकी महाशय जो इसी अभिप्राय का प्रतिपादन करने के लिये एक बड़ी पोथी लिखमारी है । उस पुस्तक में योरप में हेतुवाद की उन्नति का इतिहास बतलाया गया है । लैकी महाशय की राय है कि गत १९ शताब्दियों से भी अधिक समय का इतिहास संसार को निरन्तर धर्म वाद से हेतुवाद की ओर ही ले जा रहा है । यह कार्य, राजनीति और व्यापार—इन सब विभागों में अब हेतुवाद ही जातियों और व्यक्तियों के भाग्यों का निश्चय करता है । इस समय का धर्म 'लोक हित' या 'हेतुवाद' समझा जाता है ।

इस नए धर्म को अच्छा और पुराने धर्म की अपेक्षा अधिक सुदृश्य बनाने के लिये हमें बतलाया जाता है कि जहां पुराने धर्म में मनुष्य जाति टुकड़ों में बाँटने की प्रवृत्ति थी वहां नया धर्म--व्यापार और हेतुवाद का धर्म- मनुष्य जाति को मिलता है, उसे एक करता है । व्यापार और लौकिक का हित मेलकी आकांक्षा करता है । ऐसे धर्म स्थानीय नये धर्म को पाकर फिर भला कौन पिछले धर्मों पर जाता है ।

ये सब बात सुनते सुनते हमारे कान थकगये हैं । और पुस्तकों में वह सब कुछ पढ़ते पढ़ते हमारी आँखें श्रान्त होगई हैं । जो लोग अपनी ज्ञान रूपी आंखों से तह के नीचे देखसकते थे, और जिनके कान फैली हुई कृत्रिम निःस्तब्धता के बीच में दूर से सुनाई देते हुए घोर नाद को सुन सकते थे, वे जानते थे, यह धर्म रहित सभ्यता, यह हेतुवाद का अभिप्राय रखने वाली सभ्यता, यह रुपये और पैसे को जीवन का उद्देश्य समझने वाली सभ्यता अनर्थों से भरी हुई है । इसकी पीठ के पीछे, वह तूफ़ान उठरहा है, जो इसे वेग से उड़ाकर लेजायगा । वे दूर दर्शी ऋषि और मुनि लोग, जिन का शरीर यद्यपि व्यापारी योरप में था, किन्तु आत्मा ऊंचे हिमालय की उच्चतम चोटियों का विहार कर रही थी, देख रहे थे, कि इस पश्चिमीय सभ्यता का भावी परिणाम भयावना है । ऊपर से दीखती हुई शान्ति की तह के नीचे भयानक गर्मी वाली लहरें मार रही हैं । वे जानते थे कि यह रुपये पैसे की सभ्यता स्थिर न रहेगी । संसार को फिर सोचना पड़ेगा कि क्या सूखे हेतुवाद की सभ्यता हमारे लिये शान्ति का हेतु होसकती है ? यदि पुराने धर्म पर भी झगड़े हुए, यदि उससे मनुष्य जाति की शान्ति स्थिर नहीं रही, तो क्या उस धर्म के वास्तविक स्वरूप को लाने से उसके दोषों को दूर करने से उसकी हानियां हट सकती हैं या उसके छोड़देने से । हम यहां किसी विशेष मत या सम्प्रदाय को धर्म के नाम से नहीं पुकारते, बल्कि साधारणतया धार्मिक भाव को उस नाम से कहते हैं । धार्मिक भाव को छोड़देने से कभी स्थायी शान्ति नहीं होसकती । व्यापार और हेतुवाद कभी अटूट कल्याण नहीं देसकते ।

आज सारे योरपीय जंगल में आग धधक रही है । जहां जहां भी योरप की शक्तियों के पांव गये हैं वहां २ शस्त्रों का झणत्कार और अस्त्रों की घोर ध्वनि सुनाई देती है । हम नहीं कहते कि यह ही सभ्यता का अन्त है । हम नहीं कहते कि योरप में हेतुवाद या लोकहित के विचार से शान्ति की आशा रखने वालेइस युद्ध से अपनी भूल देखलेंगे, किन्तु हम इतना अवश्य कहेंगे कि यह महा संग्राम उस प्रकार की सभ्यता को बड़ा भारी धक्का पहुंचा गया । भारतवर्ष का महाभारत किस बात का सूचक था ? जब कोई जाति धन और मान के अभिमान में मस्त होकर और लक्ष्मी की मदिरा का पान करके धर्म को तिलांजलि देने के लिये तय्यार होजाती है, तब दैवी कारण आकर उसके अन्दर एक ऐसी चिनगारी छोड़ देते हैं, जो धर्म जल से रहित होजाने के कारण सूखेहुए जंगल को अग्निमय करदेती है । योरप का महाभारत भी सूखे हुए सभ्यताभिमानियों को चेतावनी देने के लिये ही आया है । आज व्यापार से अनन्त शान्ति की आशा रखने वाले कहां हैं ? आज धर्म को ही युद्ध का कारण बतलाने वाले लेखक किधर भगगये ? आज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कांन्फ्रेंस से सतयुग को लाने की पुकार मचाने वालों का वेग क्यों रुकगया? वे हमें उत्तर दें कि क्या इस योरप के महाभारत से अधिक भयानक, अधिक व्यापी, और परिणाम में घोर युद्ध धर्मों के कारण हुआ है। क्या बड़े से बड़े धार्मिक अत्याचारी ने कभी इस युद्ध में मारे जाने वाले व्यक्तियों की राशी से दशाँश क्या शतांश भी राशि की हत्या की है? इस समय दोनों पक्षों के लड़ाकुओं की संख्या लगभग एक करोड़ दस लाख है क्या किसी धर्मार्थ युद्ध में इस से अधिक व्यक्ति लड़े हैं?

फिर हम सब के अन्त में यह प्रश्न पूछते हैं, कि क्या कोई भी बुद्धिमान पुरुष इस भयानक युद्ध का कारण सिवाय इसके बतला सकता है, कि योरप के देश एक दूसरे की बढ़ती से जलते हैं, और एक दूसरे से लड़ने को तय्यार हैं। आस्ट्रिया सर्विया पर आक्रमण, और जर्मनी का बैल्जियम में जाना क्या किसी भी सभ्य शास्त्र में अनुमोदित हो सकता है?

ऐ, धर्म के प्रचारको! ये सब प्रश्न आप से भी पूछते हैं, और यह भी जिज्ञासा करते हैं कि क्या इस अशाँन्त संसार में आप के लिये काम का क्षेत्र कम होगया? इन सब प्रश्नों का उत्तर आपलोग ही दे सकते हैं।

पटियाले के नवीन समाचार।

१९ श्रावण को बर्नाले में मुकदमा पेश होने वाला था। ८ श्रावण १९७१ के दिन ख़ान बहादुर फ़ज़ल मतीन की कचहरी में पुलीस सुपरिंडेन्ट सर्दार हजूरासिंह ने इस्तासा पेश किया। उस में बतलाया गया है कि मास्टर रौनकराम की पुस्तक में सिक्ख गुरुओं के लिये अपमान जनक और दो सम्प्रदायों में परस्पर झगड़े पैदा करने वाले आक्षेप हैं। विशेष विचित्रता यह थी कि दोनों अभियुक्तों में से कोई भी न्यायालयमें पेश नहीं किया गया था। यह व्यवहार पटियाले के सिवा और किस जगह हो सक्ता है?

कुछ आप बीती कुछ जग बीती

धर्मपरायणता का पहला दृश्य

२७ जनवरी को आदित्यवार था। उस दिन के वृत्तान्त में अपने साप्ताहिक अधिवेशन में सम्मिलित होने का हाल लिखते हुए मैंने लिखा था—"देवराज ने "सत्य" पर बड़ा उत्तम और शिक्षाप्रद-व्याख्यान दिया। आज के व्याख्यान में कुछ विशेष बल था।" मुझे स्मरण है कि उन दिनों देवराज जी पर धर्म का एक विशेष रङ्ग चढ़ा हुआ था। शायद यह व्याख्यान किसी आने वाली घटना की भूमि का रूप था।

फिर ६ फरवरी के वृत्तान्त में लिखा है—"हरिश कोट में बीमार है। मैं उसे देखने ५ बजे गया। वहां देवराज से मिला। हम दोनों में पतितों की शुद्धी विषय पर वादानुवाद हुआ। मेरा पक्ष यह था कि आर्य्यसमाज को स्वयम् शुद्ध करके ऐसे लोगों को अपने समाज में सम्मिलित कर लेना चाहिए। देवराज का मत था कि इस समय समाज की निर्बलता के कारण हमें इस काम में हस्ताक्षेप नहीं करना चाहिए। यह विवाद बिना किसी परिणाम पर पहुंचे ही बन्द होगया।" यह भी उस दृश्य की शृङ्खला में एक लड़ी है जिसका वर्णन मैं करने लगा हूं, क्योंकि उसकी समाप्ति पर इस विषय में देवराज से बढ़कर मेरा और कोई सहायक न था।

७ फ़र्वरी को वृहस्पति वार था। कचहरी में मुझे काम करते दो बज चुके थे जब देवराज जी के बड़े भाई लाला बालकराम मुझे मिले। वह राजा पुंच्छ (प्रान्त जम्मू) के विवाहोत्सव से लौट कर आए थे। मैं अपने शेष मुकदमों को दूसेरे दिन के लिए रखवा कर उनके साथ घर आया। रास्ते में विवाह सम्बन्धी गप्पें चलती रहीं। घर पहुंचा तो नन्दलाल (वर्तमान सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल) सहित देवराज जी उपस्थित मिले। लाo बालकराम यह कह कर चलेगए "अब तुम लोगों की वही बिनौले की कहानी आरम्भ होगी, मैं जाता हूं।"

लाo बालकराम के बाहर जाते ही देवराज जी ने मेरे हाथ में एक पत्र दिया। वह पत्र उनके पिता जी ने उनके नाम लिखा था। उसका सारांश यह था कि देवराज और मुंशीराम के व्याख्यानों के कारण उनकी बहुत आर्थिक हानि और बदनामी होरही है। यदि ये व्याख्यान बन्द न होंगे तो वे देवराज को घर से निकाल देने के लिए बाधित होंगे। अन्तिम शब्द ये थे कि मुन्शीराम को चुप कराना तो उनकी शक्ति से बाहर है "लेकिन तुमने अगर यही कसब इख्तयार करना है तो ब्रह्मा वगैरह की तरफ़ चलेजाओ, हमारे खानदान की पुरानी इज्ज़त में बट्टा न लगाओ॥ फिर बातचीत शुरूहुई। देवराज जी ने कहा कि वह पिता जी का पूरा मान करते हुए भी धर्म के व्याख्यान देने से नहीं रहेंगे। मेरे वृत्तान्त में इसके पश्चात् लिखा है—"धन्य हो वीर सहनशील देवराज, यही सच्चा आर्यत्व है।"

यहां एक बात स्पष्ट करने की आवश्यकता है। धर्मप्रचारक का काम हम दोनों ने आपस में बाँट रक्खा था। यद्यपि देवराज जी कभी २ ग्रामों में भी प्रचार कर आते थे, तथापि ग्रामों में प्रचार का कर्तव्य मेरा था। इसी प्रकार यद्यपि कभी कभी मैं भी प्रचार करता था, किन्तु शहर में आर्य धर्म की धूम मचाए रखने का बोझ देवराज जी ने अपने कन्धे पर लिया हुआ था। इसलिए राय शालिग्राम जी को शहर के रईस मित्र बहुत लज्जा किया करते थे।

देवराज जी को उनके घर पर छोड़ कर अपनी इमारत देखता और कम्पनी बाग़ में टेनिस खेलता हुआ मैं घर लौट आया। वहां पहुंच कर अपने प्यारे भाई भक्तराम का प्रेम पत्र लन्डन से आया हुआ कुछ इङ्गलिश समाचार पत्रों सहित मिला, जिसपर मैं यह निश्चय करके सोया कि देवराज के साथ मिलकर इकट्ठे अंग्रेज़ी पत्र पढ़ेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किन्तु यह किसको मालूम था कि उस समय क्या होरहा है। धार्मिक उत्साह में मस्त देवराज ने घर का सारा हिसाब लिख कर रखदिया। किसी आसामी से सौ से अधिक रुपए वसूल हुए थे, उससे कुछ अधिक इनके निज के रुपए सेविङ्ग बैङ्क में थे। रुपया निकलवाने के फ़ार्म पर हस्ताक्षर करके पासबुक भी वहीं रखदी और केवल आवश्यक कपड़े तथा बिस्तर लेकर रेलको चलदिए। वहां दो तीन आर्य्य भाई, नगर प्रचार में उनके नित्य के चेले मिले। उनके द्वारा मुझे सन्देश भिजवाया—"अपना धर्म नहीं त्याग सक्ता, मैं बाहर जाता हूं। धर्मप्रचार वैसे ही जारी रहे; यह तुम्हारा कर्त्तव्य है। प्यारे भाई! अब जाता हूं, जीता रहा तो परमेश्वर एक दूसरे को फिर मिलायेंगे।"

यह सन्देश मुझे दूसरी शाम को पहुंचा। प्रातः काल ८॥ बजे तो ला० बालकराम ने आकर बतलाया कि देवराज लुप्त हैं। उन दिनों शायद मेरठ में कोई उत्सव था। मैंने उसी समय तार घर पहुंचकर तार समाचार दिया और रेल पर कुछ पूछा पाछो करके कोर्ट पहुंचा। माताजी की अवस्था असह्य थी। उनको अपार दुःख था। मैंने उन्हें शान्त करने का बहुत कुछ प्रयत्न किया। उसके पश्चात् वृत्तान्त में से अनुवाद देता हूं।

कचहरी का काम समाप्त करके समाज मन्दिर में गया। वहां से कुछ वेदमन्त्र कटे हुए तथा विज्ञापन एक लड़के के द्वारा अलाबलपुर भेजे और बहुत सा समाज का काम किया। अब देवराज नहीं हैं, मंत्री का काम भी सब मुझे ही भुगतना पड़ेगा। देवराज के वियोग को समाज बहुत अनुभव करेगा समाज मन्दिर में उपस्थित सभासदों ने सन्ध्या करने के पश्चात् मिलकर भजन कीर्तन किए। जब ६ बजे के पश्चात् अपने घर लौटा तो भाई हीरासिंह और मास्टर सन्तराम बी० ए० आदि बहुत से सभासद, भोजन के पश्चात् आए। सब देवराज के वियोग को अनुभव करते थे। सचमुच समाज की सारी कला को चलाने वाला देवराज ही था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अपना तेज सारे सभासदों में फूंकगया है। ला० रूड़ामल ने एक नया सन्देश दिया। देवराज ने चलते हुए उन्हें कहा—"मैं धर्म की ख़ातिर पत्नी, पुत्र, और पुत्री से सदा के लिए बिछुड़ कर चला हूं। किन्तु इसका मुझे कुछ शोक नहीं है। शोक है तो मुझे यह कि जिस समाज का पौदा मैं ने अपने हाथोंसे लगाया, उसे छोड़कर चला हूं।" इस सन्देश को सुनकर सब सभासदों के नेत्र भर आए।

धर्म प्रचारक में असाधारण उत्साह

दूसरे दिन सनीचर था। ४ बजे तक कचहरी का काम करके ब्रह्मचारी ऋषि को कुछ सभासदों सहित साथ लेकर अलाबलपुर पहुंचा। पहुंचते ही नवीन वेदान्त के खण्डन में १। घण्टे तक व्याख्यान दिया। इसके पश्चात् सन्ध्या भोजनादि के पश्चात् जब भजन हुए तो एक विद्वान् पंडित मध्यादास सभासद बना, उसी समय ९ अन्य पुरुषों ने सभासद होने के लिए प्रार्थना पत्र दिए। ९ बजे सोने की तय्यारी करने लगे थे जब एक नवीन वेदन्ती आपहुंचा जिस के साथ १२॥ बजे तक रात शास्त्रार्थ होता रहा। अदित्यवार को प्रातः वृहत हवन करा तथा हवन के लोगों पर व्याख्यान दे और एक दूसरे नवीन वेदान्ती से शास्त्रार्थ कर के ३ बजे जालन्धर लौट-आया। उस सायंकाल के अधिवेशन में मैंने "अमर जीवन" पर उपदेश दिया" यह दो दिनों का वृतान्त केवल नमूने के लिये दिया है जिससे पता लगेगा कि आर्य्यसमाज जालन्धर के सभासद देवराज के पिताजी को दिखाना चाहते थे कि धर्म को अग्नि दबाए से नहीं दबा करती प्रत्युत अधिक तेज के साथ फूट निकलती है।

मुन्शीराम

भारत शिक्षा पर टिप्पणियां

शिक्षा उन्नति का मूल है। आज तक ऐसी किसी जाति ने उन्नति नहीं की, जिस में शिक्षा का बहुत प्रचार न हो। जब हम पुराने भारतवर्ष की महिमा गाते हैं, तो हम से यही पूछा जाता है कि उस समय शिक्षा का प्रचार कैसा था? क्या उस समय हर एक व्यक्ति पढ़ लिख सकता था? यदि नहीं तो फिर उस समय की जातीय उन्नति पर हम कैसे विश्वास करें? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि उस समय भारतवर्ष में शिक्षा मुफ्त थी, विना किसी प्रकार के शुल्क के थी। विद्या के बेचने वाले को अधम समझा जाता था। शिक्षा मुफ्त थी, और लगभग आवश्यक थी Constitutional theory of Hindu law नामकी नई पुस्तक के लेखक म० त्रिवेदी लिखते हैं:—'उस समय हमारी जाति में हर एक वर्ण के लिये शिक्षा मुफ्त और निःशुल्क थी।" किन्तु आप कहेंगे कि इसमें प्रमाण क्या? प्रमाण भी सुनिये।

आवश्यक और मुफ्त शिक्षा

हमारे धर्म शास्त्रों में कहे हुए सामाजिक नियम बतलाते हैं कि शिक्षा हर एक द्विजाति के लिये आवश्यक थी। मनु ने ब्राह्मणों के पहले धर्म 'अध्यापन' और 'अध्ययन' कहे हैं (मनु। १। ८८) क्षत्रिय के धर्मों में और वैश्य के धर्मों में भी अध्ययन आवश्यक है। (मनु। १। ८९, ९०) याज्ञवल्क्यस्मृति के पांचवें अध्याय का ११८ वाँश्लोक निम्न लिखित हैं।

'इज्याध्ययनदानानि वैश्यस्य क्षत्रियस्य च
'प्रतिग्रहोऽधिको विप्रे याजनाध्यापने तथा'

वैश्य और क्षत्रिय के लिये यज्ञ करना, विद्या प्राप्ति करना और देना ये तीन धर्म हैं, और ब्राह्मण के लिये प्रतिग्रह, याजन, और पढ़ाना येभी धर्म हैं। इसी प्रकार सूत्रों भी से प्रतीत होता है कि 'अध्ययन' अर्थात् विद्या प्राप्ति ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य के लिये आवश्यक धर्म था। यह वर्णधर्म था, जो टल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं सक्ता था । वर्ण धर्म का पालन कराने वाला राजा था, यह उसका कर्त्तव्य था कि वह सब वर्णों की सन्तानों को शिक्षा दिलावे । शेष रहे शूद्र, जो किसी कारण से विद्या प्राप्ति नहीं कर सकते थे, वेही शूद्र कहाते थे । कर्मानुसार वर्णव्यस्था का यही तात्पर्य है । प्रश्न एक ही रह जाता है । फिर पढ़ाने वालों का गुज़ारा किस प्रकार होता था? वे अपनी वृत्ति कैसे करते थे ? जो विश्वविद्यालय प्रजा या राज्य की ओर से चलाये जाते थे, उनमें उपाध्याय लोग वेतन पाते थे । वेतन लेकर पढ़ाने वाले अध्यापकका नाम 'उपाध्याय' था । (मनु । २ । १४१) किन्तु सारी प्रजा उन विद्यालयों में पढ़ने न जाती थी । प्रत्येक ब्राह्मण, जो अध्यापन का कार्य करता था स्वयं एक विद्यालय था । हर एक स्नातक ब्राह्मण विद्यार्थियों को एकत्र करके पढ़ाता था । ऐसे पढ़ाने वाले स्नातकों तथा श्रोतियों को गुज़ारा राज्य से मिलता था । उन्हें विद्यार्थियों से वेतन न मांगना पड़ता था (मनु । ७ । ८२, ८३) इसी लिये वस्तुतः सारी जाति की शिक्षा मुफ्त थी । इस आवश्यक और मुफ्त शिक्षा के कारण ही पुराने भारत वर्ष का गौरव था । इस समय भारतवर्ष को जिस वस्तु की आवश्यकता है, वह सर्वसाधारण की शिक्षा है ।

भारत की वर्त्तमान दशा

भारत वासियों की वर्त्तमान अवस्था के जानने के लिये इतना परिज्ञान ही पर्याप्त है कि इस समय हमारे यहां १०० में ९४.१ व्यक्ति अशिक्षित हैं केवल ६ ऐसे हैं जो लिख पढ़ सकते हैं । इंग्लेण्ड और जर्मनी जापान और फ्रांसका नाम लेते लेते हम नहीं थकते, किन्तु इन सब स्थानों में एक विशेष अवधि के लिये शिक्षा आवश्यक और मुफ्त है । भारत में दोनों बातों से एक भी नहीं । न तो भारत की मूर्ख प्रजा को पढ़ने के लिये प्रेरणा ही है, और न साधन ही है ।

शिक्षा का व्यय क्या होता है

प्रश्न होता है कि यदि भारतवर्ष की प्रजा शिक्षित नहीं होती है तो हरसाल जो लाखों रुपया धन भारत के बजट में पास किया जाता है, वह क्या होता है, और कहाँ जाता है ? पहिले तो भारत की आबादी के लिहाज़ से वह व्यय कुछ भी नहीं । अमरीकन सरकार अपनी प्रजा में से प्रत्येक व्यक्ति की उच्च शिक्षा पर १० आना व्यय करती है, और भररतवर्ष की सरकार केवल एक पैसा । अमरीकन सरकार प्रारम्भिक शिक्षा के लिये प्रति व्यक्ति ८ शिलिङ्ग के लग भग व्यय करती है, तो भारतीय सरकार केवल साढ़े तीन (३½) शिलिंग । इस से हम स्पष्टतया देख सकते हैं कि भारतीय सरकार भारत वासियों की शिक्षा पर कितना व्यय करती है? किन्तु जो व्यय होता है वह भी तो शिक्षा में नहीं जाता । व्यय अध्यापकों पर, पुस्तकों पर या निर्धन विद्यार्थियों की मुफ्त शिक्षा देने पर नहीं होता, बल्कि मकानों पर होता है । जिस बड़े नगर में देखिये, स्कूल की इमारत खड़ी हो रही है जो लखपतियों के मकानों को भी मात करने वाली है । ३०० लड़के और डेढ़ लाख रुपये की लागत का महल । यह बालकों की शिक्षा नहीं, राज महाराजों की शिक्षा है । यह शिक्षा का बजट नहीं, ईंट पत्थर के लिये बजट है । बजट शिक्षा पर होना चाहिये । उस से निर्धनों को सहायता मिलनी चाहिये । महल और अटारियों में दी हुई शिक्षा उत्तम नहीं होती । शिक्षा वही फैलती है, जिसके ऊपर अनन्त आकाश हों । जिस शिक्षा को दीवारों से संकुचित किया गया हो, वे भला क्या फैल सकती हैं ?

अमेरिका का अनुभव

हमारा ऊपर का कथन नई रोशनी के सज्जन पसन्द न करेंगे । वे कहेंगे, वृक्षों के नीचे शिक्षा देने वाले गुरु लोग गये, ओर उनके साथ उनका जंगली समय भी गया । अब तो दीवारों से घिर कर ही शिक्षा अपना चमत्कार दिखलाती है । उनके साम्हने हम अमेरिका के एक शिक्षा विज्ञ का अनुभव रखते हैं, जो बहुत कुछ सन्तोषदायक होगा । डाक्टर रोच वहां के एक अनुभवी शिक्षा विज्ञ हैं । उन्होंने एक खुली ताकियों का विद्यालय खोला है । उस में चाहे सर्दी हो, चाहे गर्मी, उसकी ताकियां खुली रहती हैं । सर्दी में विद्यार्थियों को कपड़े अधिक पहिनाये जाते हैं, घरों को अंगीठियों से सेका जाता है, किन्तु हवा नहीं रोकी जाती । परिणाम यह कि वहां के लड़के और विद्यालयों के लड़कों की अपेक्षा बहुत अधिक स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट होते हैं इसी लिये वे पढ़ाई अच्छी कर सकते हैं । यह अनुभव खुली वायु में शिक्षा देने के लाभ स्पष्ट कर देता है । पुराने ब्राह्मण और वानप्रस्थी नदी के किनारे पर महल न खड़े करते थे, वे वृक्षों के नीचे ही भारत सन्तान को शिक्षा देते थे । खुले आकाश मण्डप के नीचे दी हुई शिला उन के चित्त को अधिक विस्तृत करदेती थी, आत्मा को अधिक स्वाधीन बनादेती थी । और शरीर की बे रौक टोक उन्नति का हेतु होती थी । इस समय सरकार यदि लौट कर रुपया व्यय करने की जगह शिक्षा को सस्ती करदे, तो बहुत अच्छा है ।

हिन्दी के समाचार पत्र

(१)

यदि हम उर्दू और हिन्दी के समाचार पत्रों की तुलना करते हैं तो हमें बड़ा भेद प्रतीत होता है । दोनों भाषाओं के समाचार पत्र अपनी २ उन्नति की भिन्न भिन्न अवधियों पर हैं । दोनों की अवस्थायें पृथक हैं । दोनों भाषाओं के समाचार पत्रों में से किसी एक समूह को उभयथा अधम कहना बहुत कठिन है, किन्तु उनमें भिन्नता अवश्य है । दोनों एक दशा में नहीं हैं । दोनों की उन्नति के मार्ग भी एकसे नहीं हैं । इस लेख में हम इसी विषय पर कुछ विचार करना चाहते हैं । दोनों की अव-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्थाओं में भेद बतलाते हुए हम चाहते हैं कि उनके कारणों पर भी कुछ विचार करें।

सब से प्रथम हम उनकी संख्या को लेते हैं। इस समय यदि सारे भारतवर्ष में निकलने वाले समाचार पत्रों में से दोनों भाषाओं के पत्रों को चुनें तो हमें गिनती में उर्दू की ही अधिकता प्रतीत होगी। उर्दू के समाचार पत्रों की संख्या बहुत अधिक है। इसके दो कारण हैं। आर्य भाषा यद्यपि सारे भारतवर्ष में समझी जाती है, और उसकी लिपि भी बहुत अधिक स्थानों में पढ़ी जा सकती है, तो भी उसमें निकलने वाले पत्रों की संख्या कम है। इसका कारण यह है कि आर्यभाषा यद्यपि सब प्रांतों में फैली हुई है, तो भी वह उनकी अपनी भाषा नहीं बनी। बङ्गाल में आर्यभाषा के समझने वाले बहुत हैं। खास कलएत्ते से आर्यभाषा के कई बड़े २ समाचार पत्र निकलते हैं, किन्तु वहां पर ऐसे आदमी बहुत थोड़े हैं जो आर्यभाषा को अपना कहें। मारवाड़ी या इधर से गये हुए सज्जनों में ही आर्य भाषा के पत्र प्रचार पाते हैं। किन्तु उनकी संख्या है कितनी? फिर उन मारवाड़ियों तथा देसियों में से बहुत अधिक संख्या ऐसी हैं; जो बङ्गाल की भाषा को ही ले लेती है, वहीं की भाषा में बातचीत करना प्रारम्भ कर देती है। ऐसे लोगों का काम बङ्गाली भाषा से चल जाता है, और क्योंकि बङ्गाली आर्य भाषा की अपेक्षा समृद्ध और धनिक भाषा है इस लिये उनका प्रयोजन और शोक भी उन्हें बङ्गाली की ओर ही खेंच ले जाता है। आर्य भाषा में उनकी नम्रता कम हो जाती है। भिन्न प्रान्त में गये हुए हिन्दी भाषा भाषी अपनी निज मातृ भाषा से विदाई ले लेते हैं। स्थानी का स्थान आदेश ले लेता है।

इसी प्रकार बम्बई प्रान्त की अवस्था है। मद्रास प्रान्त में तो भाषा के लिये कोई क्षेत्र ही नहीं। अवशेष रहे, मध्य प्रदेश, बिहार, युक्त प्रान्त, और पंजाब इनमें से मध्य प्रदेश, बिहार और युक्त प्रांत को ही आर्य भाषा का घर कह सकते हैं। वहीं पर उसकी स्वाभाविक स्थिति है, वहीं पर आर्यभाषा को लोग अपनाते हैं। पंजाब में बेचारी हिन्दी की विचित्रदशा है। वह पंजाब को पराया नहीं समझना चाहती, बारंबार उसे अपना समझकर प्रवेश करती है। किन्तु पंजाब भी तुला हुआ है, कि उस बेचारी को नहीं आने देना। आर्य भाषा ने पंजाब में कई बार स्थान पाया है और निराश होकर, और बाहिर निकाली जाकर उसे अपमानित होना पड़ा है। किन्तु आर्य भाषा भी ग़ज़ब के उत्साह वाली है। उसकी भी हिम्मत नहीं टूटती। बार बार धावा व्यर्थ जाता है, और वह फिर भी धनुष बाण कस कर तय्यार रहती है। यह सब कुछ होते हुए यह कहना असम्भव है कि पंजाब में आर्य भाषा का स्वाभाविक निवास है। वहां वह परदेसिन की तरह रहती है।

केवल तीन प्रान्त हैं, जिन मेंआर्यभाषा कुछ समृद्धि पा सकती है। किन्तु उनमें से मध्य प्रान्त में और संयुक्त प्रान्त में उसकी एक एक प्रतिद्वन्द्विनी भाषा विद्यमान है। मध्य प्रान्त में मराठी भाषा का आधा राज्य भुलाया नहीं जा सकता। महाराष्ट्र भाषा वहां आर्यभाषा को निबोध नहीं रहने देती। नागपुर आदि में आर्य भाषा को प्रधान भाषा कहना, केवल एक अलंकृत वाक्य का अत्युक्ति युक्त प्रयोग करना है। संयुक्त प्रान्त में उर्दू अपने अधिकारों की घोषणा देने में अग्रसर है। न केवल मुसलमान और न केवल कायस्थ अपितु अन्य हिन्दू लोग और आर्याभिमानी भी उर्दू की सेवा में निरत रहकर जन्म बिताने में कोई अनौचित्य नहीं समझते। कानपुर, लखनऊ आदि शहरों में यदि आर्य भाषा का कुछ प्रचार है, तो हम कह सकते हैं कि उर्दू उनकी ईंट और चूने में मिली हुई है। हिन्दी वहां पर अतिथि के समान प्रतीत होती है। इन प्रान्तों में भी हिन्दी की स्थिति प्रति पक्ष रहित नहीं है। जैसे बङ्गाल का सारा प्रान्त बंगली को, अपनी भाषा मानता है, जैसे महा राष्ट्र का सारा प्रान्त एक ही है मराठी के सन्मुख सिर नवाता है, इस प्रकार कोई भी प्रान्त केवल आर्यभाषा को अपना नहीं मानता। बिहार भी बंगला का निर्वासन नहीं कर सका बंगला भाषा बिहार के अनेक स्थानों में खूब बोली और समझी जाती है।

ऐसी अवस्था में यदि आर्य भाषा के समाचार पत्रों की संख्या न्यून हो तो आश्चर्य ही क्या है? जब उसे कोई प्रान्त सर्वथा अपना बनाता ही नहीं, तब उसमें संसार की अवस्थिति जानने की इच्छा रखने वाले अन्य भाषाओं जितने कैसे हो सकते है? आर्य भाषा में समाचार पत्रों की संख्या कम होने का साधारण कारण यही है।

पटियाले की सिखाशाही पर एक सिख की राय

रौनक पर तबाही

और

दर्बार पटयाला की सिक्खाशाही

अब जब कि एक निष्पक्ष और धार्मिक पुरुष की बनाई हुई पुस्तक (अर्थात् खालसा पंथ की हकीकत) पर इतना तूफान बेतमीज़ी और दरयाय तास्सुब मौज जन हो रहा है हर एक निष्पक्ष पुरुष को महाशय रौनकराम तथा महाशय विशम्भरदत्त से सहातुभूति का वास्तविक परिचय देना चाहिये और चंदा इकट्ठा करके उनके डिफेन्स (Defence) के लिये रुपया जमा करना चाहिये। मैं बहैसियत एक सिक्ख और अपनी धार्मिक पुस्तकों से जानकारी रखने के कारण बड़े उच्च स्वर से कहता हूं कि पुस्तक रचियता ने "खालसा पंथ की हकीकत" में जो कुछ भी लिखा है ठीक लिखा है और उसका आधार नेक नियती पर है परन्तु इस के विरुद्ध अपने उस लिटरेचर (साहित्य) पर जो आर्य्यसमाज के विरुद्ध विषय उगलने में जगद् विख्यात हो चुका है साधारण तथा दृष्टि पात करता हूं, तो यह देख कर बड़ा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आश्चर्य्य होता है कि किस तरह हमारे अदूरदर्शी तथा पक्षपाती भाइयों ने अपने ट्रैक्टों में असत्य झूठ और मुंहफट लेखों से काम लेते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती को बदनाम करने का पाशविक तथा भ्रष्ट प्रयत्न किया है।

हमारा ऐसा गंदा और मुंह फट साहित्य होते हुए भी आर्य्य समाज के दो लेखकों पर फर्द जुर्म लगाना और शोर मचाना साफ साबित करता है कि हम बहस मुबाहिसे में आर्य समाज की ज़बरदस्त शक्ति के सामने अपना सिर नीचा कर चुके हैं, और कि महारा आख़री ज़रिया निजात ओछे हथियारों पर उतर कर अदालत की शरण लेना ही रहगया है, रियासत पटयाला की तंग दिली पर सिवाय आश्चर्य की अंगुली मुंह में देने के और क्या हो सक्ता है। ख़ैर अब मैं अपने भाइयों से विनय पूर्वक निवेन करता हूं कि अगर अपने कुछ भी पुरुषत्व है तो आर्य्यसमाज से खुले मैदान में आकर इनफजूल झगडों का निर्णय कर लें।

अपने भाइयों के संकुचित
हृदयों का शाकी
राजिन्द्रसिंह सोंढ़ी
क्लर्ककेनाल झाडुंडरी वर्क्स
रुड़की।

—

पटियाले के विपद्ग्रस्त।

निरपराधी रौनकराम—आर्य्य समाज निधौलीकलां ज़िला एटा आज सा० ९ ८ १४ इस समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में महाशय रौनकराम व महाशय विश्वम्भरदत्त की गिरफदारी पर शोक प्रकट करते हैं और इस बात में हमारे लाट महोदय नम्र पूर्वक पटियाला नरेश को सम्मति दें कि राज का काम न्याय करना है इस से सम्प्रदाय झगड़े में पड़कर अन्याय न करना चाहिये नियमों में और महजबी बातोंको बहुत फरक होता है। अतः महाराजा साहब पटियाले नरेश व गवर्मेन्ट पंजाब व हिन्द से सविनय प्रार्थना है कि महाशय रौनकराम व महाशय विश्वम्भरदत्तको मुक्तकरदें और महाशयरौनकराम व विश्वम्भरदत्त के साथ सहानभूति प्रकट करती है।

भवदीय
रामलाल गुप्त
मन्त्री

---

[२]

(१) सर्व सम्मति से निश्चय हुआः—

आर्य्य समाज लखीमपुर, महाशय रौनकराम व महाशय विश्वम्भरदत्त के ऊपर जो अनुचित अत्याचार पटियाला दरबार की ओर से हो रहे हैं, उन पर नाराज़गी प्रकट करती है और उन की इस विपत्ति में उन से सहानुभूति प्रकट करती है।

(२) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ किः-

"आर्य्य समाज लखीमपुर की सम्मति जो एलान पटियाला राज्य की ओर से निकला है उसका अर्थ यह है कि पटियाला राज्यने उनका फैसला कर दिया है, ऐसी दशा में इस समाज की सम्मति है कि उपरोक्त महाशयों के साथ पटियाला दरबार से न्याय होना असम्भव है'

(३) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ किः-

आर्य समाज लखीमपुर श्रीमान् लार्ड हार्डिंज महोदय से प्रार्थना करता है कि श्रीमान् इस विषय में हस्तक्षेप करें और वे पटियाला दरबार को हिदायत करें कि इन महाशयों का मुकदमा अंग्रेज़ी राज्य में किसी अंग्रेज़ जज के सन्मुख उपस्थित किया जाय। क्यों कि पटियाला दरबार इन महाशयों के विषय में अपनी सम्मति देचुका है और यह आशा नहीं है कि इस एलान के रहते हुए पटियाला राज्य का कोई कर्म्मचारी न्याय कर सके"।

(४) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ किः-

"आर्य्य समाज लखीमपुर श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त से प्रार्थना करती है कि यह सार्वदेशिक सभा से इस विषय में लिखा पढ़ी करें"।

(५) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ किः-

"एक कापी इस प्रस्तावों की इस प्रकार भेजी जावें।

प्रस्ताव नं० २ से ४ तक प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त डिफेंस कमेटी लाहौर रेजीडेंट पटियाला राज्य, अभियुक्तों के सम्बन्धी, यू० पी० और पंजाब प्रेस और प्रस्ताव नं० (३) की नकल अंग्रेज़ी अनुवाद प्राइवेटसेक्रेटरी हिज एक्स लैंसी को।

(३)

आर्य्यसमाज भवारणा जि० काँगड़ा ४ ८-१४ को इस समाज के खास अधिवेशन में महाशय रौनकराम व महाशय विश्वम्भरदत्त की पटियाला रियासत में खालसा पंथ की हकीक़त पुस्तक रचने के अपराध में गिरफतार किये जाने का समाचार प्रचारक वा आर्य्यमित्र व वेंकटेश्वर में पढ़ कर इस समाज में सर्व सम्मति से निम्न लिखित चन्दा हुआ

रामशरणदास मन्त्री	२॥)
चौधरी मोती प्रधान	१)
सरदार करपालसिंह उपप्रधान (यह महाशय सिख हैं)	॥)
पं० मोहनलाल	=)
लाला सुन्दरदास	=)

कुल ४।) चार रुपया चार आने देकर पटियाला रियासत की सिखाँशाही पर अफसोस किया और चन्दा महात्मा मुन्शीराम जी क्वेटा के नाम पर भेज दिया गया। सत्ये नास्ति भयंक्वचित आखिर सत्यकी जय होगी।

सेवक
रामशरणदास आर्य
मन्त्री आर्य्य समाज बागरना

आर्य समाज बहादरगढ़

(१) मा० रौनकराम जी शाद व मा० विश्मवरदत्त जी के साथ जो वेजा सख़ी रयासत पटयाला की तरफ से की जा रही है उस पर यह समाज रंज अफसोस करती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२) श्री दरबार पटियाला से नम्रता पूर्वक प्रार्थी है कि वह मा० रौनकराम जी व विशम्भर दत्त के साथ न्याय करें।

(३) अपनी मान्य गवरमैन्ट पंजाब व श्री लाट महोदय से निवेदन करती है कि वह ऐसे मामले में खास तवज्जह से दख़ल देवें क्योंकि रियासत पटियाला में तत खालसा असर जोरी पर है कि वहां के अहलकार मुलज़मान के इन्साफ कर ने में हाज़िर होंगे इसलिये यह मामला किसी सरकार विर्टिश इंगलिश गवर मेन्ट के हाथ में आना चाहिये।

(४) म० रौनकराम जी के पुत्र की असमय मृत्यु पर समाज को अत्यन्त शोक है।

(५) इस कारर्वाई की नकल मुख्य मुख्य आर्य्य पत्र को दी जावे और एक तार श्रीमान् लफ्टैंट गवर्नर पंजाब व श्री लाट महोदय व श्री दरबार पटियाला को भेजा जावे।

(६) फैरिस्त चंदा खोलकर धन एकत्रित किया जावे।

आपका
श्रीराम मन्त्री आर्य समाज बहादरगढ़
ज़िला रोहतक

(४)

२६ जोलाई सन् १४ ई० को मुक़ाम मुज़फ्फरनगर आर्य समाज मंदिर में ज़िले की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने एक विशेष अधिवेशन में सम्मिलित होकर निम्न लिखित प्रस्ताव पास किये।

(१) इस ज़िले के समस्त आर्य्यसमाजियों को उन दुक्खों को सुनकर जो महाशय रौनकराम तथा महाशय विशम्भरदत्त जी को पटियाला पुलिस की असावधानी से मिल रहे हैं बड़ा कष्ट हुआ है—

(२) यह सभा उक्त महाशय रौनकराम जी की दुखया माता तथा महाशय विशम्भर दत्त जी के सम्बन्धियों को विश्वास दिलाती है कि इस ज़िले की समस्त आर्य्य समाजों को उनके साथ पूर्ण सहानुभूति है।

(३) श्री० आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त की रक्षा निधि में २६॥=)॥ भेजे जावें और उपरोक्त सभा से प्रार्थना की जावे कि वह इस समय महाशय रौनक राम तथा महाशय विशम्भरदत्त जी का कष्ट अति शीघ्र दूर करने का भरसक यत्न करे।

(४) उपरोक्त प्रस्तावों को समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजा जावे।

भवदीय
सुंदरलाल मंत्री वेद प्रचार
सभा ज़िला मुज़फ्फर नगर

आर्य्य समाज

धार्मिक मेला—दानापुर आर्य समाज का ३७ वां वार्षिकोत्सव अगामी आश्विन शुक्ल ५-६-७ सम्वत् १९७१ वि०,-२४-२५-२६ सितम्बर १९१४ स्व० वृहस्पति, शुक्र तथा शनिवार को होना निश्चित हुआ है। प्रथम दिवस यज्ञ तथा नगरकीर्तन, द्वितीय तथा तृतीय दिवस प्रसिद्ध २ साधु सन्यासी और विद्वानों के व्याख्यान होंगे।

महिलाओं के लिये डेरे और परदे का प्रबन्ध किया गया है।

आने वाले सज्जन एक कार्ड द्वारा सूचना देंगे तो कोई कष्ट न होगा।

कृपाभिलाषी
भार्गव प्रसाद
मंत्री

शोक

आज तारीख १७-७-१४ को हमारी स्त्री समाज की सब सभासदायें और अजमेर नगर के भद्र पुरुषों के घरों की सब महिला गण आर्य्य समाज भवन में एकत्रित हो परम उदार हृदया दयावन्ती प्रजा प्रिया भारतवर्ष की भारत नारियों की परम हितैषिणी श्रीमती लेडी हार्डिंज महोदया की असमय मृत्यु पर अत्यन्त शोक प्रकाशित करती हैं और श्रीमती जी के स्वामी श्रीमान लार्ड हार्डिंज महोदय के इस दुःख के समय में अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती हैं और ईश्वर से प्रार्थना है कि वे श्रीमती जी की आत्मा को सदगति और श्रीमान् लार्ड महोदय को धैर्य प्रदान करें।

इस प्रस्ताव के अनुसार श्रीमान् लार्ड हार्डिंज महोदय की सेवा में एक तार भेजा जाय और सब की प्रतिलिपि यहाँ के कमिश्नर साहब बहादुर की सेवा में ज्ञानार्थ और समाचार पत्रों में प्रकाशित करने के लिये भेजी जावें।

गुलाबदेवी
प्र० आ० स्त्री स० अजमेर
धर्म पत्नी बाबू मथुरा प्रसाद जी

आज हम आर्य स्त्रीसमाज अजमेर की सब सभासदायें अर्य्य समाज भवन में ता १७-७-१४ जुलाई को एकत्रित हो कर श्रीमान् महात्मा हंसराज जी भूतपूर्व प्रिंसिपिल दयानन्द ऐंगलो वैदिक कालेज लाहौर की सुयोग्य धर्म पत्नी श्रीमती ठाकुर देवी जी के देहान्त हो जाने से शोक प्रकट करती हैं।

श्रीमती ठाकुर देवी जी का स्वर्ग वास ता० ७ जुलाई सन् १९१४ को हुआ श्रीमती ठाकुर देवी जीं की धर्म में बड़ी रुचि थी आप आर्य्य स्त्री समाज अनारकली लाहौर की प्रधानां थीं और वहां की पुत्री पाठशाल में भी विशेष काम करतीं थीं इन्हों ने अपने पति श्रीमान् महात्मा जी के आर्थिक भोगों को लात मारने और संसार सेवा का कठिन व्रत धारण करने पर बड़ा साहस दिखाया था और इन्हीं के सबब से महात्मा जी आज तक उस व्रत को पालन कर रहे हैं। ऐसी सुयोग्य बहन के आज इस संसार में नहीं रहने से हम आर्य्य स्त्री समाज की समस्त सभासदाओं को असीम दुःख प्राप्त हुआ है परन्तु क्या किया जाय। काल की कराल गति है हम सब बहिनें श्रीमान् महात्मा जी के साथ सहानुभूति प्रकाशित करती हैं और परमात्मा से प्रार्थना करती हैं कि मृतक आत्मा को सद्गति और उनके कुटम्बियों को धैर्य्य प्रदान करें।

निश्चय हुआ कि उपरोक्त प्रस्ताव की नकल श्रीमान् महात्मा हंसराज की सेवा में भेजी जावे और मुख्य २ आर्य्य सामाजिक समाचार पत्रों में छपाई जावे।

गुलाब देवी
प्रधान आर्य्य स्त्री समाज, अजमेर
धर्म पत्नी बाबू मथुरा प्रसादजी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार।

ब्रह्मचारियों की अवकाश यात्रा

ब्रह्मचारियों के दीर्घावकाश १ भाद्रपद और तदनुकूल १६ अगस्त के दिन प्रारम्भ होंगे। महाविद्यालय के ब्रह्मचारी इस वर्ष गङ्गोत्तरी की यात्रा करेंगे। मार्ग का सारा प्रबन्ध कर लिया गया है। ऋषिकेश के नाथ जी ने अपनी धर्मशालायें ब्रह्मचारियों के लिये दी हैं। यदि वर्षा ने कोई रुकावट न डाली, तो अवकाश के प्रारम्भ में ही यात्रा प्रारम्भ हो जायगी। यदि उधर की यात्रा नहो सकी तो किसी ऐतिहासिक स्थान में भेजने का विचार है।

गुरुकुल का बन्द।

इस बार सारे देश में असाधारण वर्षा हो रही है। पहाड़ों में भी मेघराज ने खूब शर बर्षा की है। उस शर वर्षा से विद्ध हुए हुए पहाड़ों के टुकड़े और मिट्टी के किनारे पानी के प्रवाह में मिलकर भारत की भूमि को उपजाऊ करते हुए अपनी समुद्र यात्रा कर रहे हैं। गङ्गा का पानी अब के खूब बढ़ा हैऔर मिट्टी भी बहुत लाया है। गुरुकुल से ऊपर के कई जंगलों को भी काट गया है। गुरुकुल भूमि का रक्षक गुरुकुल बन्द उस सारे प्रवाह का सामहना कर रहा है। बन्द के आगे एक टक्कर बनी हुई थी, बढ़ी हुई गंगा उसे तोड़कर लेगईहै, किन्तु इस से बन्द की स्थिरता में कोई न्यूनता नहीं आई। जल और पत्थर की लड़ाई जारी है पूरी आशा है कि बिजयी पत्थर ही रहेगा।

संजीवनी का जन्म दिन।

गुरुकुल की अनेक सभाओं में से एक साहित्य संजीवनी है, जिस में प्रधानतया विद्यालय की ऊपर की श्रेणियों के ब्रह्मचारी भाग लेते हैं। जन्माष्टमी के दिन उस सभा ने अपना जन्मोत्सव मनाया। प्रातःकाल ६-३० से परिषद्भवन में ईश्वर स्तुति के साथ यह उत्सव प्रारम्भ हुआ उत्सव की विशेषता यह थी कि इस में गुरुकुल के सब स्नातकों को निमंत्रित किया गया था। दोस्नातक कारण विशेष से नहीं आ सके। पांच स्नातकों ने इस उत्सव में भाग लिया। सभापति का आसन पं० यज्ञदत्त विद्यालंकार ने सुशोभित किया था। शेष सब स्नातकों ने थोड़ा बहुत कथन किया। उत्सव की सफलता के लिये संजीवनी के सभासदों का पुरुषार्थ ही हेतु भूत है। यह सभा तीन सालों से अपना कार्य कर रही है। ब्रह्मचारियों की भाषण तथा लेख शक्ति को बढ़ाने में इसने बहुत सफलता प्राप्त की है।

'गुरुकुल में दैनिक।'

गुरुकुल में दीर्घावकाश प्रारम्भ होगये हैं। अवकाश के दिनों में मानसिक शक्तियों को नियम पूर्वक विकास से छुट्टी मिलजाती है। इस लिये ब्रह्मचारियों ने कई और भी मानसिक उन्नति के साधन निकाल छोड़े हैं। सभाओं के साथ २ समाचार पत्र भी उन साधनों की गिनती में आ जाते हैं। इस समय गुरुकुल में ब्रम्हचारियों द्वारा तीन मासिकपत्र सम्पादित होते हैं। अब नये नये लेखकों की संख्या इतनी बढ़ती जाती है कि उन मासिक पत्रों में गुंजाइश नहीं रही। इस लिये अवकाश के दिनों के लिये ब्रह्मचारियों ने दैनिकपत्र निकालने का विचार किया है। दशमश्रेणि के छात्रों की ओर से एक 'दशम का दैनिक' कुछ दिनों से निकल रहा था। अब उसके साथ ही साथ एक 'गुरुकुल दैनिक' भी ब्रह्मचारियों द्वारा ही सम्पादित हुआकरेगा। इस पत्रको गत एकमास तक उपा०इन्द्र वेदालंकार सम्पादितकरते रहे हैं। यह पत्र प्रति दिन सायंकाल ४ बजे लिखा जाकर गुरुकुल के पुस्तकालय में रखा जाता है।

उत्सव के लिये पण्डाल।

गुरुकुलोत्सव के यात्रियों को दीक्षान्त संस्कार देखने में तथा अन्य व्याख्यानादि सुनने में भी जो कष्ट होता था, उस की निवृति के लिये पण्डाल का नया प्रबन्ध किया गया था। इतनी बड़ी जनता के लिये समतल भूमि का पंडाल कभी उचित नहीं हो सकता। इस लिये उसे नतोदर करके चारों ओर मिट्टी का ऊंचा और घेरा गोल बना दिया गया है। इस से सब देखने वाले बड़ी सहूलियत से देख सकेंगे। यह भी विचार है कि उस की पक्की छत बनादी जाय, जिसमें वर्षा आदि का भी दुःख न रहे। जितना रुपया सम्भव था, व्यय हो चुका है। अब आगे छत डालने तथा पक्की बाड़ लगाने के लिये लगभग एक हज़ार रुपये की और आवश्यकता होगी। यदि इस समय महीने के अन्दर २ ही गुरुकुल के प्रेमी इतना धन एकत्र करदें, तो सदा के लिये चिन्ता जाती रहेगी। इस से हर साल की बनवाई उतर वाई का परिश्रम भी बच जायगा, और दर्शकों को आराम भी बहुत होगा। यह राशि कोई बड़ी नहीं है। एकएक समाज उत्सव के चार दिनों के लिये जब तीन तीन चार चार सौ रुपया लगाकर पक्के मकान बनवा लेता है, तब सारी जनता के आराम के लिये एक सहस्र रुपये क्या वस्तु है? हमें आशा है कि इस आवश्यकता के लिये हमें फिर से प्रार्थना न करनी पड़ेगी।

शाखा गुरुकुल मुलतान

२ भाद्रपद को हमें मुलतान के शाखा गुरुकुल के देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ नगर से दूर, सिविल लाईन से आगे और हरे हरे खेतों के मध्य में इस गुरुकुल की कोठियाँ दिखाई दे रही हैं। ये दोनों कोठियां म० परमानन्दजी वकील मुलतान ने गुरुकुल को दी हुई हैं। कोठियों के चारों ओर बड़ा सुन्दर उद्यान है, जिसकी छाया का आनन्द समय २ पर ब्रह्मचारी खूब उठा सकते हैं। सारा प्रबन्ध नियमानुसार और शुद्ध है। पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार के आने से इस शाखा में बड़ा लाभ हुआ है। आप ने सारे प्रबन्ध को मुख्य गुरुकुल के अनुसार कर दिया है। ब्रह्मचारियों की सेहत बहुत अच्छी है। बहुत थोड़े बीमार देखने में आये।

संस्कृत की पढ़ाई का प्रबन्ध बहुत अच्छा है। विज्ञान आदि में अभी तक न्यूनता थी, विद्यालंकार जी के आने से उसका भी प्रबन्ध हो रहा है। मास के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रारम्भ से अवकाश आरम्भ हो गये हैं। मुख्याधिष्ठाताजी का विचार है कि वे ब्रह्मचारियों को डेराग़ाज़ीख़ां भ्रमणार्थ ले जायेंगे।

प्रो० बालकृष्ण जी कलकत्ते में

कलकत्ते में गुरुकुल के प्रो० बालकृष्णजी ने खूब वैदिक धर्म का प्रचार किया। आप के कई व्याख्यान हुए। एक व्याख्यान में न्याय पति चौधरी ने सभापति का आसन सुशोभित किया। दूसरे व्याख्यान का विषय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली था। उस में सभापति का आसन कलकत्ता विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर डाक्टर सर्वाधिकारी सुशोभित करने वाले थे अभी तक और समाचार नहीं आया। एक तीसरे व्याख्यान में राय बहादुर चूनीलाल बोस सभापति होने वाले थे। सर्व सज्जन पर बड़ा उत्तम प्रभाव होने की सम्भावना है।

देहली समाचार।

लार्ड हार्डिंग मेमोरियल फन्ड

हुजूर वाइसराय लार्ड हार्डिङ्ग बहादुर का स्मारक बनाने के लिये विचार करने को ता० १३—८—१४ को सांयकाल ५बजे देहली के टौनहाल में एक सभा हुई देहली के सभी प्रतिष्ठित रईस इसमें उपस्थित थे। सभापति का आसन मिस्टर हेली चीफ़ कमिश्नर देहली प्रान्त ने ग्रहण किया। कई महाशयों के व्याख्यान हुए जिनका आशय यह था कि ऐसे सर्व प्रिय तथा प्रजा के शुभ चिन्तक लार्ड महोदय का स्मारक अवश्य बनना चाहिये। यह भी कहा गया कि हुजूर वायसराय बहादुर ने अपने शुभ नाम पर स्मारक स्थापित करना स्वीकार भी कर लिया है और यह सम्मति दी है कि एक पुस्तकालय स्थापित किया जाय। हमारे वायसराय का प्रजा प्रेम इसी से भली भान्ति विदित होता है, कि पुस्तकालय जैसा उत्तम स्मारक स्थापित करने के लिये उन्होंने अपनी सम्मति दी। जिससे विशेष कर देहली की प्रजा में विद्या का संचार होगा। इन वक्तृताओं के पश्चात् सभापति महोदय ने एक सूक्ष्म किन्तु गम्भीर आशय की वक्तृतादी तत्पश्चात् धन एकत्रित होना आरम्भ हुआ। उस समय कई सहस्र नकद तथा वादा मिलाकर चन्दा लिखा गया और निश्चय किया गया कि देहली में एक विशाल पुस्तकालय पब्लिक के लिये स्थापित किया जाये।

देहली में विराट सभा।

ता० १६-८-१४ को सायंकाल ५ बजे टौनहाल में देहली निवासियों की एक विराट सभा हुई। सभापति का आसन राय बहादुर ला० शिवप्रसाद सी. आई. ई. ने ग्रहण किया था। प्रथम हकीम अजमलखाँ ने सभा का उद्देश्य बत लाया कि यह सभा बृटिश सरकार की इस युद्ध में यथा योग्य सहायता करने तथा सरकार से सहानुभूति और राजभक्ति प्रकट करने के हेतु बुलाई गई है। तत्पश्चात् मि० मुहम्मद अली एम० ए० सम्पादक कामरेड तथा हमदर्द ने निम्न प्रस्ताव उपस्थित किया।

"देहली निवासियों की यह सभा सरकार बरतानिया के इस चिन्ता के समय में सम्राट तथा उनकी गवर्नमेन्ट की सेवा में अपनी हार्दिक राजभक्ति और सहानुभूति प्रकट करना कर्तव्य समझती है तथा सरकार को निश्चय दिलाती है कि वह यथाशक्ति प्रत्येक सेवा को करने के लिये जो गवर्नमेन्ट उनसे लेना चाहे हरसमय कटिबद्ध हैं"

इस प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये राजा गुलामहुसेन उप सम्पादक कामरेड खड़े हुये किन्तु आपने वक्तृता इंग्रेजी में आरम्भ की इस कारण उपस्थित गणों ने कोलाहल मचादिया कि वक्तृता भाषा में देनी चाहिये। वे महाशय बैठगये। और राय केदारनाथ एम०ए० भूत पूर्व डिस्ट्रिक्ट जजने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए एक प्रभावशाली तथा ओजस्विनी वक्तृता दी।

इस प्रस्ताव का विशेष अनुमोदन रायसाहब वज़ीरसिंह बी० ए० एल० एल० बी० वकील ने किया और सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। सभापति महोदय ने निम्न प्रस्ताव उपस्थित किया।

"सभा आवश्यक समझती है कि प्रिन्स आफवेल्ज़ के सहायता फन्ड में सम्मिलित होने के लिये देहली निवासियों से अपील की जाय"।

हाज़िल मुल्क हकीम अजमलखाँ ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया और डाक्टर मुख्तार अहमद अनसारी ने विशेष अनुमोदन करतेहुए कहा कि जिस प्रकार मैं इटली तथा तुरकी के युद्ध में घायलों की सहायतार्थ गया था अब भी कटिबद्ध हूं और जो पचास घायलों की सेवा के लिये मेरे पास सामग्री (औषधिकम्मल इत्यादि) उपस्थित हैं मैं सहर्ष इस युद्ध के घायलों के लिये देने को तय्यार हूं और भी यथा शक्ति इसमें सहायता करना अपना परम कर्तव्य समझता हूं।

एक प्रस्ताव भी उपस्थित किया गया कि देहली निवासियों को भी युद्ध के लिये वालियन्टर बनना चाहिये, और इनकी एक सूची बनाई जावे और जो सज्जन इसमें नाम लिखाना चाहें, लिखावें। एक महाशय ने धन की सहायता के विषय में यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि भारतवर्ष के प्रत्येक मनुष्य को अपनी एक मास की आय इस फन्ड में देना चाहिये। इन प्रस्तावों के विषय में विचार करने तथा उचित कार्य्यवाही के लिये एक सब कमेटी नियत की गई।

अन्त में कई कवितायें पढ़ी गईं जिनमें म० महाराजबहादुर जी "बर्क" की कविता को उपस्थित जनों ने विशेष आदर की दृष्टि से देखा और हियर, हियर तथा तालियों से विशाल भवन गूंज गया।

यह भी निश्चय हुआ कि इस कार्य्यवाहीकी एक प्रति श्रीवायसराय महोदय की सेवा में तथा समाचार पत्रों में भेजी जाय।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक प्रस्ताव इस विषय का भी उपस्थित किया गया कि भारतवर्ष में जितने धार्मिक सम्प्रदाय हैं सबको अपने २ मन्दिरों और मसजिदों में तथा गिरजाघर इत्यादि में परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिये कि ब्रिटिश साम्राज्य की विजय हो । इस का परचा दो बादशाह तथा ब्रिटिश सरकार के मचाम के चियरज़ दिये गये । और सभा विसर्जन हुई ।

(प्रेमी)

आर्य्यकुमार सम्मेलन

बड़े हर्ष का स्थान है कि हमारे अजमेर के उत्साही कुमारों ने आगामी सम्मेलन के लिये बड़ी धूम धाम से तैयारियां आरम्भ करदी हैं स्वागत कारिणी सभा बनगई है जिसके सदस्य आर्यसमाज के कई एक प्रतिष्ठित पुरुष हैं स्वागत कारिणी सभा की बनावट से यह कहा जा सकता है कि इस वर्ष सम्मेलन बड़े समारोह से होगा प्रत्येक आर्य कुमार सभा को सम्मेलन में प्रतिनिधि भेजने का प्रयत्न करना चाहिये । कुमारों का तो केवल एक ही सम्मेलन होता है और बात तो जब है कि यह सम्मेलन सबसे बढ़ चढ़कर हो इसके अतिरिक्त इस वर्ष सम्मेलन में एक अत्यावश्यक विषय पर बिचार किया जायगा । जिसमें सब कुमार सभाओं की सम्मति मिलनी बड़ी जरूरी है इस वर्ष परिषद के संगठन पर बिचार किया जायगा । जो नियम परिषद् में स्वीकार कियेगये थे वह केवल एक वर्ष के लिए स्वीकार हुए थे और पिछले वर्ष समयाभाव से उनपर बिचारन होसका । मैं आशा करता हूं कि आर्य्यकुमार सभाएँ परिषद के नियमों पर बिचार कर अपनी सम्मति से मुझे शीघ्र सूचित करेंगी । यह विषय जितना गम्भीर है उस पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं परिषद के संगठन निश्चय होने पर ही सब कार्य निर्भर है सम्मेलन को रोचक बनाने के लिये अजमेर के कुमारों ने बड़ा प्रयत्न किया है कुमार सभाओं में परस्पर डिबेट (Debate) के अतिरिक्त जो हर वर्ष सम्मेलन पर हुआ करता है स्वागतकारिणी सभा ने निश्चय किया है कि आर्य्यकुमारों के कर्तव्य विषयक लेख लिखे जावें । जो कुमार सबसे अच्छा लेख भेजेगा उसको एक रजत पदक भेट दिया जायगा—यह मुकाबला Competition केवल परिषद से सम्मिलित कुमार सभाओं के सदस्यों के लिये है और प्रत्येक लेख कुमार सभा द्वारा आना चाहिये । स्वागत कारिणी सभा ने निश्चय किया है कि इस वर्ष सम्मेलन पर निम्नलिखित खेल भी रक्खे जावें जिनके लिए पारितोषिक भी दिया जावेगा ।

(१) दौड़ (Races)

(२) कूद फांद (Jumps)

(३) रस्सा खेंचना (Tug of war)

(४) पैरकी गेंद (Football)

इस सब से प्रतीत होगा कि हमारे अजमेर के उत्साही कुमार सम्मेलन की सफलता के लिये कैसा सिरतोड़ यत्न कर रहे हैं और मैं आशा करता हूं कि बड़ी तादाद में प्रतिनिधि अजमेर पहुचेंगे । जिन कुमार सभाओं को कोई विशेष प्रस्ताव विचारार्थ सम्मेलन पर भेजना हो वह कृपया अगस्त मास के अन्त तक इस कार्यालय में भेज दें ।

निवेदन

पिछला वर्ष समाप्त होनेवाला है और आगामी सम्मेलन पर गतवर्ष की रिपोर्ट पढ़ी जायगी । मैं आपकी सेवा में सविनय प्रार्थना करता हूं कि अपनी सभा का संक्षिप्त वृत्तान्त शीघ्र भेजने की कृपा करें यह वृत्तान्त अगस्त मास के अन्त तक आजाना चाहिये । अब तक बहुत सीकुमार सभाओं ने चन्दे का दशांश तथा वार्षिकोत्सवके चन्दे का पंचमांश नहीं भेजा । मैं सविनय प्रार्थना करूंगा कि वह धन भेजने की शीघ्र कृपा करें क्योंकि धन के बिना कैसे काम चल सकता है । क्या मैं आशा करूं कि आप इस ओर शीघ्र ध्यान देने की कृपा करेंगे ।

भवदीय सेवकः—

अलखमुरारी

बी० ए० एल० एल० बी०,

महामन्त्री भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्

सहारनपुर

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे, परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २५ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफ्त मिलेगा ।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

संगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री प्रो० बालकृष्ण एम०ए०

की रचित

अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये

जो पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखाने वालों से ½ कीमत ली जावेगी ।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है) ।)
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं ? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज प्रणाली छप रही है । ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार।

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, आदीका दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक वेशाख के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया

७००) रूपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ़ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रूपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश संग्रह ।=)
प्रार्थना पुस्तक ।=)
ओंकार की उपासना ।=)

२००) रूपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।=)
वेद और महाभारत के उपदेश ।=)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)॥
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ।=)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालें समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देखिये ! यह हड्डीका ठाठर कैसा पुष्ट हो गया है ।

यह वही तस्वीर है जिसे गत ३० वर्षसे सारे हिन्दुस्तानमें डा० वर्म्मनकी "फसली बुखार वो तिल्ली की दवा" का विज्ञापन है।

बाबू राजकिशोर नारायणसिंह जमीन्दार, मु० कामगारपुर पो० जपला, जिला—पलाम् से लिखते हैं। मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि हमारे भाई और एक पांच वर्ष के भतीजे को तीन महीने से बुखार आता था। कई एक हकीम, वैद्य और बिज्ञापनी दवाएं इस्तेमाल की गईं; परन्तु आराम न हुआ, वक्ति और बढ़ता ही गया। भाग्य वश अकोढ़ी के पोष्टमास्टर बाबू बालकेश्वर सिंह से मुलाकात हुई और उनके द्वारा आपकी दवाओं की तारीफ सुनी तब मैंने आपकी बुखार की दवा और छै दवावाला नमूने का बक्स मगाया। दो दो दवा खानेके पहिले मौताजके पिलाते ही बुखार का आना बन्दहो गया। धन्य है दवा खाने के बाद आपकी दवा क्या अमूल्य रत्न है।

मोल—बड़ी शीशी ॥≡) छोटी शीशी ॥) डा० म० ।=) और ।-)

दवा सब जगह बिकती हैं। नकली दवा से सावधान !

नं० ६९

डा० एस० के० [illegible] कलकत्ता

एजन्ट, बाबूराम जैनी एन्ड कंपनी बड़ा दरीबा दिल्ली

भजनों का सर्वोपरि आनन्द

यदि आप सचमुच ही लेनाचाहते हैं तो हमारे यहां से हारमोनियम अवश्य ही मंगाइये।

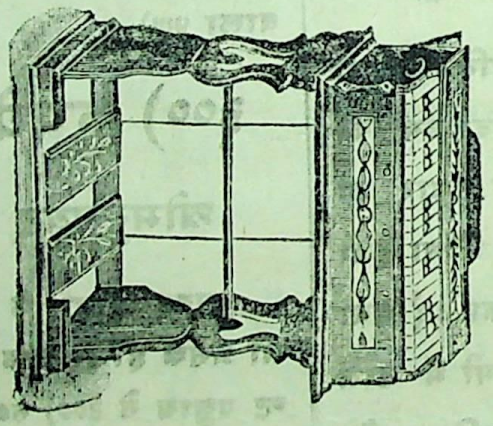

असली हारमोनियम।

देखनेमें बहुत सुन्दर टिकनेमें बड़े मजबूत बजनेमें ऐसे सुरीले हैं कि जिनका स्वर सुनते ही प्राण प्रसन्न हो जाते हैं अच्छेपन की गारन्टी देंगे मिंगलरीड ३ स्टाप १३) १५) १८ २०) डबलरीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ४५) तक पैर से बजाने वाले भी मिलेंगे दाम ८०) १००) १२५) स्टेशन का नाम लिखकर आर्डरके साथ चौथाई रु० प्रथम भेजिये।

सुख से सोइये।

आजकल मच्छर तथा खटमलों के कारण सोने में बड़ी तकलीफ होती है इस दुख से बचने के लिये हमने बड़ी सुन्दर मसहरी बनाया है मसहरी मंगाकर सुख की नींद सोइये मूल्य २।) ३) ४) ५) से १०) तक।

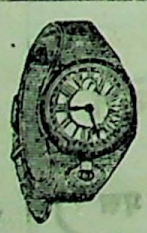

फेन्सी न्यू रिष्टवाच।

असली निकेलके से छोटा साइज अति उत्तम ठीक समय रक्षक मजबूत हाथ में बांधने की विलायती चमड़ा समेत मूल्य १न० ५) २ नं० ४।) ३ नं० ३॥) असली चांदी ६) डा० म० ।) छः पैसे के टिकट भेजकर "इटालियन भाग्यपरीक्षा" नाम की पुस्तक मुफ्त मंगाइये।

दुकानदारों को माल बहुत किफायत से भेजा जाता है।

G. M. SHARMA & Co.
Post Box No 288 CALCUTTA

जी० एम० शर्मा एन्ड को०
पोष्ट बक्स नं० २८८ कलकत्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, कृमी, पीला पड़जाना, श्वास, खर्रे, विक्षिप्तताः स्त्रीविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१४॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

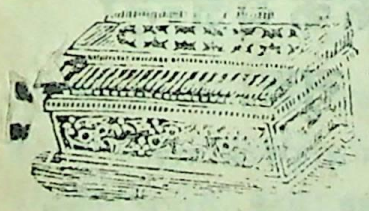

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≈) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≈)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का कलम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल्य २) इस ग्रन्थ में कौरवों पांडव की लड़ाई नीती, धर्म्म चारों वरणों के धर्म्म वर्णन हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४८० पृष्ठ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पास पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनिये फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजो

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नही तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≈) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहिये।

सियम और सूचीपत्र तथा मनुष्यके २४ दवा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (ब)

चान्द-जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूंटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः स्वादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिक्ष। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

पीतल के बिरूच

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन ॥) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन वाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

पताः—भारत हितैषी—कम्पनी, अलीगढ़ सिटी

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री अलीगढ़ सिटी. यू. पी.

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुर

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) रामसिंह एन्ड ब्रादर्स रेलवे स्टेशन इन्दौर।

(३) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(४) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(५) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(६) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म् ॥

Registered No L. 80

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

१४ भाद्रपद सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० २९ अगस्त १९१४

संख्या २०
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य	१॥)
प्रचारक के ग्राहकों से	१।)
सजिल्द का मूल्य	१॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या [illegible] है, यह बहुत थोड़े लोग जानते [illegible] में फ्रांस, जर्मनी, अमरी[illegible] आदि देशों के इतिहा[illegible] करके दिखलाया गया [illegible] वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक	प्रति	पंक्ति	प्रति	अंक	=)	प्र०
तीन मास	"	"	"	"	=)	"
छः "	"	"	"	"	-)॥	"
सालभर	"	"	"	"	-)	"

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक	१२)
एक तोले तक	१५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उस्तरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल U.P.

आवश्यकता।

एक बी०ए० जिसकी योग्यता इंग्रेज़ी में अच्छी हो। एक एफ० ए० और एक इन्ट्रेस पास हैड पण्डित की शहरघाटी हाई इङ्गलिश स्कूल के लिये है। प्रार्थना पत्र शीघ्र भेजें।

कृष्णलाल (किसुनलाल)
ज़मींदार शहरघाटी
जिला गया

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

विज्ञापन।

श्रीमती मनोरमादेवी धर्मपत्नी पं० उमादयालु मिश्र डिप्टी पोस्टमास्टर आजमगढ़ एक भजनों का पुस्तक ऐसा बनाना चाहती हैं। जिसमें प्रत्येक संस्कार तथा अवसर के अच्छे २ गीत हों। भजन रचियता महाशयों से प्रार्थना है कि कम से कम पाँच २ गीत उपर्युक्त उद्देश्य पूर्त्यर्थ बनाकर देवी जीकी सेवा में भेजें जिन महाशयों के भजन सब से उत्तम तथा बहु संख्या में होंगे उन्हें देवी जीकी ओर से एक स्वर्ण पदक दिया जायगा जिसका मूल्य देवीजीने इस सभा में भेज दिया है पदक पाने का कौन अधिकारी है इसका निर्णय सार्वदेशिक सभा तथा कतिपय आर्य्यप्रतिनिधिसभाओं के प्रधान तथा मंत्री करेंगे।

नारायणप्रसाद
मन्त्री
सार्वदेशिक सभा

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

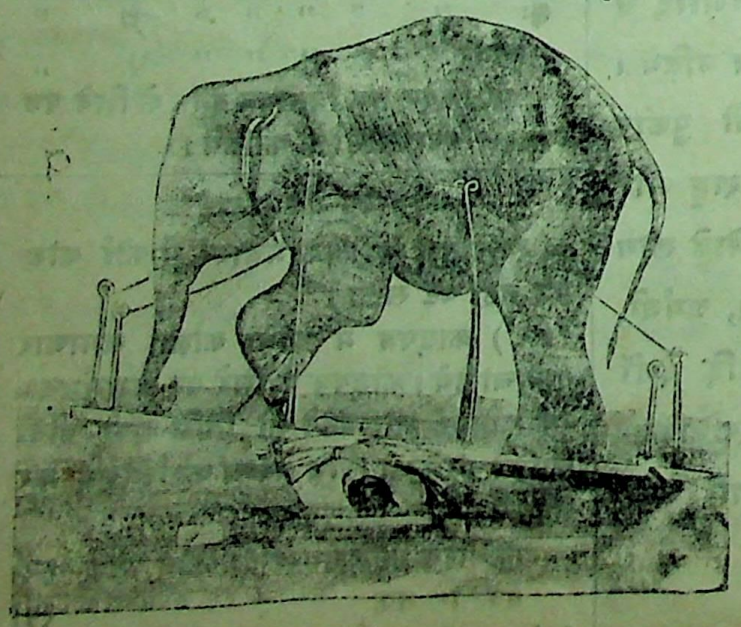

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूल संशोधन।

सद्धर्म्म प्रचारक का सम्पादक अपने दयालुओं को एकबार ही यह सूचना दे देना चाहता है कि उसे दिल्ली में रहने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है। जहां से प्रचारक पत्र प्रकाशित होता है वहाँ न रहने से कई अशुद्धियां हो जाती हैं। दृष्टान्त के लिये ३१ श्रावण के अङ्क को ले लिये। इस अङ्क में बड़ी भारी भूल हो गई है। पृष्ठ आठ पर विस्टर ट्रम्प के लेख पर नोट देते हुए २९ वीं पंक्ति में हम ने लिखना चाहा था कि 'हमें इस कहानी में कोई प्रमाणिक बात दिखलाई नहीं देती' वहां पर भूल से लिखा गया कि 'हमें इस कहानी में कोई कलंक की बात दिखलाई नहीं देती' और निकटवर्ती न होने से वही छप गया। हमारा तात्पर्य्य तो यह था कि जब तक मूल जन्म साखियों में इस कहानी को देख न लिया जाय, तब तक हम इस कथा को नहीं मान सकते छप गया कुछ और ही। पाठकगण उस का यही पाठ समझें।

प्रचारक के ग्राहक बढ़ानेवाले को

चाँदी का पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइण्ट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ा देंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आप के प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

संसार की गति।

युद्धाग्नि का वेग।

मनुष्य जाति के हितैषियों के चित्त विपत्ति को देखकर कम्पित हो रहे हैं। जिस शीघ्रता से यह विपत्ति बढ़ रही है, उसे देखकर उनकी कम्पकपी और भी कई गुनी होजाती है। हमारे पाठक घटना चक्र की शीघ्रता का कुछ अनुमान लगा सकें, इस लिये हम इस युद्ध के प्रारम्भ से २१ अगस्त तक की घटनाओं की एक तिथि पत्री देते हैं, जिस से ज्ञात हो जायगा कि इस भयङ्कर युद्धाग्नि की ज्वालाऐं किस वेग से फैली हैं।

२९ जून आस्ट्रिया के युवराज आर्च-ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेण्ड का स्त्री सहित सराजेवो में बध!

आस्ट्रिया हंगरी में सर्विया के विरुद्ध जोश।

२४ जुलाई—आस्ट्रिया की ओर से सर्विया को अन्तिम वचन कि या तो वह आस्ट्रिया की शर्तों को पूरा करे या युद्ध होगा उत्तर २४ घण्टों में मांगा गया था।

२६ जुलाई—सर्विया का उत्तर, जिस में आस्ट्रिया की सारी शर्तें न मानी गईं थीं।

२८ जुलाई—आस्ट्रिया, सर्विया के साथ युद्ध की घोषणा देता है।

२९ जुलाई—आस्ट्रिया की सीमा पर रूस की सेनायें।

३० जुलाई—बल्ग्रेड पर गोलाबारी।

३१ जुलाई—जर्मनी में मार्शलला।

१ अगस्त—इटली द्वारा उदासीनता की घोषणा। जर्मनी रूस के साथ युद्ध की घोषणा देता है।

२ अगस्त—जर्मनी का लक्सम्बर्ग पर कब्जा जर्मनी की ओर से फ्रांस पर धावा। जर्मनी पर रूस का धावा।

३ अगस्त—बेलजियम का प्रश्न। फ्रांस को खतरा।

४ अगस्त—जर्मनी का बेलजियम पर धावा ब्रीज पर अधिकार।

५ अगस्त—इंग्लैंड जर्मनी के साथ युद्ध की घोषणा देता है। लार्डकिचनर युद्ध सचिव बनाये जाते हैं। लार्ड मौर्ले, बर्नस आदिका कैबीनट से त्याग पत्र।

७ अगस्त—रूस आस्ट्रियाहंगरी के साथ युद्ध की घोषणा देता है।

८ अगस्त—फ्रांस एलसेस का एक भाग लेलेता है।

१० अगस्त—आस्ट्रिया और फ्रांस में युद्ध की घोषणा।

१२ अगस्त—आस्ट्रिया और इंग्लैंड में युद्ध की घोषणा।

१५ अगस्त—रूस पोलैण्ड को अपनी अधीनता में स्वतन्त्र शासन की आशा दिलाता है।

१७ अगस्त—जापान का जर्मनी को अन्तिम वचन कि या तो अपने जहाज़ों को पूर्व के समुद्रों से लेजाओ, या उचित उपाय किये जायंगे। जर्मनी के सङ्कट का युद्ध स्थल को रवाना होना। जर्मनी के युवराज के घायल होने का समाचार। इंग्लैन्ड की सहायक सेना का फ्रांस में पहुंच जाना।

१८ अगस्त—लीज के किलों के जर्मनीके हाथमें आजाने का समाचार।

२० अगस्त—जर्मनी की सेनायें ब्रसल्स में बिना किसी रुकावट के घुस जाती हैं।

ऊपर की घटनायें हमारे सामने बायस्कोप का सा युद्ध चित्र रख देती हैं। २८ जुलाई को पहले युद्ध की घोषणा होती है. फिर दूसरे तीसरे दिन एक एक नये युद्ध की घोषणा होती जाती है। १२ अगस्त को आपस में लड़ने वाले देशों की संख्या ६ तक पहुंच जाती है। ४ अगस्त को जर्मनी की सेनायें बेलजियम पर धावा करती हैं, और २० अगस्त को उस की राजधानी में घुस जाती हैं। यदि युद्धाग्नि का यही वेग है कि अगले दो चार मास न जाने क्या क्या चमत्कार दिखावें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महायुद्ध और व्यापार

व्यापार का इस महा युद्ध में बड़ा भाग है। यदि हम इस युद्ध को व्यापार जन्य कहें तो अशुद्ध न होगा। जातियां जातीय धन बढ़ाने के लिये आपस में युद्ध कर रही हैं और करोड़ों रुपयों का सत्यानाश कर रही हैं। इन युद्धों में जो धन सम्पत्ति का क्षय होगा, उस का अनुमान लगाना कठिन है। मनुष्य मारे जायंगे, उन की कीमत तो अर्बों से भी नहीं लगाई जा सकती। उस के अतिरिक्त इतने दिनों तक अनुत्पादक परिश्रम करने वाले सिपाहियों को भोजन मिलेगा, युद्ध के सामानों का अपरिमेय व्यय होना, और फिर करोड़ रुपये लगा कर बनाये हुए बड़े जहाजों के डूबने से जितना धन समुद्र को अगाधतह में विलीन होगा, उस का अन्त हो नहीं यह सारा धन क्यों व्यय हो रहा? उत्तर मिलता है कि व्यापार द्वारा धन की वृद्धि के लिये। क्या इस से बढ़कर भी परस्पर विरोध की कोई बात हो सकती है? इस लिये जहां तक व्यापार द्वारा धन की वृद्धि उद्देश्य है, वहां तक हमें युद्ध अपने उद्देश्य को काटने वाला दीखता है। युद्ध के और जो जो कारण कहे जाते हैं, उन पर विवाद का यह समय नहीं है। उनका ठीक निर्णय आज से १० वर्ष पीछे होगा। इस समय तो हम केवल इस भयंकर जन संहार पर खून के आंसू बरसा सकते हैं।

— —

युद्ध और भारत व्यापार।

इस महा युद्ध से भारत के व्यापार पर भी बहुत हत्यारा प्रभाव पड़ रहा है यह कुछ समय के लिये है, यह ठीक है, किन्तु इस समय की व्यापार की शिथिलता अपना प्रभाव छोड़े बिना न जायगी। यदि भारतवासी इस युद्ध की बुराई में से कोई भलाई निकालना चाहें तो एक ही तरह है। इस युद्ध के कारण भारतवर्ष में विदेश से वस्तुओं का आना बन्द होगया है यह समय है जब कि हम स्वदेशी को उत्साहित करसकते हैं। इंग्लैण्ड में इसके लिये परिश्रम हो रहा है कि जो वस्तुए अभीतक जर्मनी से आती थीं, उन्हें घर पर ही बनाया जाय फ्रांस में भी ऐसा ही परिश्रम होरहा है। ऐसे समय में भारत वासियों को भी अपने हित के लिये यत्न करना चाहिये। "जहां तक होसके" का अब प्रश्न ही नहीं रहना चाहिये। एक ओर खरीदने वालों को स्वदेशी वस्तु खरीदनी चाहिये—चाहिये क्या हमारी रायमें तो थोड़े दिनों में खरीदनी पड़ेंगी। दूसरी ओर बनाने वालों के लिये भी अच्छा अवसर है। और देशों से आने वाली वस्तुओं के साथ सम्हना न रहा। यदि भारतीय कारीगरी ने यह अवसर भी अपने लिये लाभदायक न बनाया तो फिर उसकी उन्नति की आशा कैसे होसकती है।

— —

युद्ध समाचारों का शासन

युद्ध के अनुचित समाचार न छपसकें प्रजा में असामयिक असंतोष न फैल सके, इसके लिये ऐसे अवसरों पर हर-एक सरकार उनका शासन करती है। समाचार पत्रों में कोई समाचार नहीं छपने पाता जो सरकार की छलनी में से छनकर न आया हो। यह नीति बहुत कुछ आवश्यक सी प्रतीत होती है। भारतवर्ष में इस समय कोई भी बाहिर का भेजा हुआ समाचार नहीं छप सकता। वह सरकार के निश्चय किये हुए शासन विभाग से होकर आता है। जहां इस रीति के कई स्पष्ट लाभ हैं, वहां कई हानियां भी हैं। वह हानियां भी ऐसी नहीं हैं जिनकी उपेक्षा की जासके। पूरे समाचारों का जनता तक न पहुंचना एक प्रकार का लौकिक दृष्टि से उपयोगी असत्य है। यह वैसाही असत्य है, जैसा रोगी के भाग्हने कभी कभी डाक्टर को बोलना पड़ता है। जैसे उस असत्य से कभी कभी हानि हो जाती है, वैसे ही इस असत्य से भी हानि की सम्भावना है। जब तक रोगी डाक्टर को सच्चा समझे, उसके कथन पर पूरा विश्वास करे, डाक्टर का प्रयोजन सिद्ध होता जाता है। किन्तु जहाँ रोगी को यह पता लगजाय कि उसके साथ चालाकी होरही है, उसकी चिन्ता और भी अधिक बढ़ जाती है। वह दिन रात चिन्तित होने लगता है हरएक बात में उसे सन्देह सा होने लगता है। इसी प्रकार जबतक प्रजा यह समझे कि जो समाचार उसे मिलरहे हैं, ठीक हैं, फिर चाहे वे कितने ही काटे छांटे हुए हों, तबतक काम ठीक चला जाता है। किन्तु जिस समय यह मिथ्या विश्वास दूर हुआ वहाँ बड़ी विचित्र अवस्था हो जाती है। ऐसे समय में लोग विजय के समाचारों में से पराजय की बू लेने लगते हैं, और जहां शत्रु के संहार का समाचार हो, वहां मित्रता की कहानियाँ घड़ने लगते हैं। अब प्रजा को समझा दिया जाता है कि युद्ध शान्त है, कोई लड़ाई नहीं होरही तब लोग उसमें एक पक्ष के पराजय की कथा सिचोड़ते हैं। यह एक गहरा प्रश्न है कि संसार में अपनी वास्तविक अच्छी या बुरी दशा को जान लेने में अधिक खतरा है, या किसी भी समाचार को विश्वास योग्य न समझते हुए अविश्वास असन्तोष और अरक्षा की दशा में रहने में। इसका निर्णय शासक लोग ही करसकते हैं जिनका हित अहित इसपर अवलम्बित है। हमें तो पहली बात की अपेक्षा दूसरी में अधिक खतरा दीखता है।

— —

पोप का देहान्त।

रोमन कैथोलिक संसार में एक समाचार ने सनसनी का राज्य करदिया है कि पोप का देहान्त होगया। पोप ईसाईयों के एक सम्प्रदाय का मुख्य आचार्य है जिसका स्थान रोम है। वही उस सम्प्रदाय का मुखिया, गुरू और रक्षक समझा जाता है। कहते हैं कि पोप ने मरने से पूर्व योरप में उठते हुए युद्ध की प्रलयङ्कर ज्वालाओं के बुझाने का बहुत यत्न किया था, किन्तु कृत कार्यता न हुई। यह अकृत कार्यता ही उसकी मृत्यु का कारण हुई। कहते हैं कि मरते हुए उसने यह शब्द कहे थे कि यदि पहले दिन होते तो पोप का एक शब्द ही इस युद्ध को बन्द करादेता, किन्तु अब यह असम्भव है। एक परलोक वासी व्यक्ति के जाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

विवाद करना अनुचित होता है नहीं तो यह पूछलेना अप्रासङ्गिक न होता कि इतिहास में पोप ने जितने युद्ध रुकवाये थे, उनकी संख्या अधिक थी या उन युद्धों की, जो उनकी ही आज्ञा से किये गये। अस्तु इस विवाद को छोड़ कर हम रोमन कैथोलिक संसार के साथ एक उच्च व्यक्ति के परलोक वास पर दुःख और शोक प्रकट करते हैं।

पोलैन्ड की स्वाधीनता।

पोलैन्ड योरप का पुराना शिकार है इसकी सीमायें रूस आस्ट्रिया और जर्मनी से मिली हैं। आजकल यह देश नाम मात्र है। इसके तीन टुकड़े करदिये गये हैं, जो रूस आस्ट्रिया और जर्मनी के कब्ज़े में है। भारतवर्ष की भांती पोलैंड का भी भूतकाल बड़ा महान् है उसका इतिहास पढ़ने वाले आश्चर्य से चकचिंत होजाते हैं जब वे उसकी प्राचीन और वर्तमान दशा की तुलना करते हैं। पोलैन्ड वह देश है जिसने योरप की मुसल्मानी बाढ़ से रक्षा की थी। पोलैन्ड के राजा के हाथ से राजतिलक लेकर किसी दिन जर्मनी के राजा अपने को धन्य समझा करते थे। भाग्यों ने उस पोलैन्ड को इतने गौरव युक्त स्थान से उठाकर भूमि पर पटकदिया है। पोलैन्ड की हृदय वेधक कहानी हम अपने पाठकों को आज नहीं सुनाते हमारा विचार है कि तीन चार लेख लिखकर हम उस का करुणा जनक इतिहास प्रचारक के पाठको तक पहुंचायें। संक्षेप से पोलैन्ड के पतन का इतिहास, योरप की स्वधर्मयुक्त नीति का ज्वलन्त दृष्टान्त है। पोलैन्ड भारत वर्ष के साथ मिलकर कह सकता है कि—

'जाकी शरण गहत, सोई मारत'

पोलैण्ड ने जिस पर विश्वास किया, उसी ने उसे धोखा दिया। उस के वीर सपूतों ने जिस के लिये अपना लहू बहाया, उसी ने उसके शरीर पर तलवार का वार किया। नैपोलियन की सेना के वीरतम सिपाही पोलैण्ड के सूरमे ही थे। उस ने पोल लोगों को कितनी आशायें दिलाईं और फिर कैसा धोखा दिया यह इतिहास में स्पष्ट है। रूस ने पोलैंड पर कैसा अत्याचार किया, और लगभग एक लाख निवासियों कोहत्या करके किस प्रकार पोलैंड को वीर शून्य किया, यह किस इतिहास के विद्यार्थी से छिपा है। सब के अन्त में जर्मनी ने उस के धर्म और भाषा का नाश करने के लिये जो जो अत्याचार किये, वे अभी चलते इतिहास के भाग हैं। आज रूस के सेनापति ने सारे पोलैंड को रूस के नीचे स्वतन्त्रता प्रदान की है। पोलैण्ड का जो भाग रूस के नीचे है, वह तो है ही, रूस की इस घोषणा का अर्थ यह है कि उस ने जर्मनी और आस्ट्रिया के पोलैन्ड को भी अपने अधीन ले लिया है। यह स्वाधीनता दान युद्ध की एक चाल ही है, या पोलैन्ड को इस से कोई लाभ भी होगा, इस में अभी बड़ा सन्देह है। यदि इस का अर्थ केवल स्वामी का परिवर्त्तन है, तब पुराना अनुभव रखने वाले पोल लोग किसी प्रकार की प्रसन्नता नहीं मनायगे, किन्तु यदि इस से कुछ अधिक लाभ की सम्भावना होतो हम भी पोलैण्ड वासियों को बधाई दे सकते हैं।

श्री स्वामी अच्युतानन्द जी

हम से बहुत महाशय पत्र द्वारा पूछते हैं कि स्वामी अच्युता नन्द जी महाराज कहां हैं? सबकी सेवा में निवेदन है कि श्री स्वामी जी आज कल स्थायी रूप से जेहलम नगर में रहा करते हैं। इस महीने २३, २५ को आप उत्सव फिरोज़पुर आये हुए थे, जो स्वामी जी से जो कुछ पत्र व्यवहार करना चाहें, उसी पते से कर सकते हैं।

बस अब और नहीं

धर्मप्रचारक के गत अंको में दो एक आर्य्य समाजों के आपस के झगड़ों ने स्थान पालिया था। हमें शोक है कि हमने उन पत्रों को प्रचारक में क्यों स्थान दिया। किन्तु यदि जो कुछ छपा है वह भी न छपता तो अच्छा होता। अब वे पत्र छप चुके हैं, और उनकी पक्ष या प्रति पक्ष में और पत्र आ रहे हैं। हम सूचना देना चाहते हैं कि आगे से इस सम्बन्ध में कोई भी लेख प्रचारक में प्रकाशित न होगा। कोई महाशय इस सम्बन्ध में और लेख न भेजें।

आर्य्य त्यौहारों की विधियां

मं० नथमल तिवारी अजमेर से लिखते हैं कि श्रावण के उत्सव की शास्त्रानुकूल विधि अब तक प्रकाशित नहीं हुई, शीघ्र ही होनी चाहिये। अन्य आर्य्य उत्सवों की सम्पूर्ण विधियां भी निश्चित रीति से ज्ञात नहीं हैं। जो उत्सव आर्य समाजों में मनाये जाते हैं, उनमें सिवा हवन और प्रार्थना के और कोई विधि निश्चित नहीं है। कहीं पर किसी उत्सव में कथा होती है, तो कहीं व्याख्यान होता है। किसी जगह सभा के साथ ही उत्सव की समाप्ति की जाती है तो कहीं खेलें होती है, और कई तरह के अन्य आनन्द भी मनाये जाते हैं। उत्सवों की यह अनिश्चितावस्था बहुत वर्षों से विचाराधीन हो रही है, किन्तु कोई निर्णय नहीं होता आर्य्य प्रतिनिधि सभा में भी इस सम्बन्ध में कई बार प्रश्नोत्तर हो चुके हैं, गुरुकुल में इसके लिये यत्न भी किया गया था, किन्तु अभी तक कोई फल नहीं निकला। कारण इसका यही है कि किसी भी सभा ने इस कार्य्य को क्रियात्मक रीति से हाथ में नहीं लिया। केवल पत्र व्यवहार प्रस्ताव भेज देने से यह कार्य्य नहीं हो सकता। इसके लिये कोई संगठित यत्न होना चाहिये। आर्य्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा गुरुकुल के पण्डितों की सहायता से इस कार्य को शीघ्र ही सम्पादित कर सकती है। केवल रोत्यनुसार यत्न करने की आवश्यकता है।

आर्य कुमार सम्मेलन

भारत वर्षीय आर्य्य कुमार सम्मेलन के महा मन्त्री महाशय के पत्र से ज्ञात होता है कि सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के लिये अजमेर में खूब तय्यारियां हो रही हैं। अबके सम्मेलन के साथ कूद फांद दौड़ पाद कन्दुक आदि खेलें भी होंगी। अजमेर वालों का उत्साह प्रशंसनीय है। महा मन्त्री जी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साथ ही यह भी सूचित करते हैं कि इस वर्ष परिषद तथा सम्मेलन के नियमों पर पुनर्विचार होगा। हमारी सम्मति में यह बार बार का पुनर्विचार सूचित करता है, कि आर्यसमाज का युवक मण्डल किसी योग्य नेता से विहीन है। जो आर्य्य-समाज के मुखिया हैं, वे शायद परिषद के कार्य में प्रेम या रुचि नहीं रखते और जो परिषद या सम्मेलन में भाग लेते हैं, उन का बड़ा हिस्सा समाज के हिताहित को पूरी तौर पर नहीं सोच सकता। नहीं तो हमें ज्ञात नहीं होता कि क्यों बारबार विचार होने पर परिषद और सम्मेलन के नियम निर्धारित नहीं होते। इस समय इस सम्मेलन की जो अवस्था है, और इसके नियमों की जैसी रचना है, उस के रहते यह कभी आर्य्य समाज मात्र को ग्राह्य नहीं हो सकता। आर्य्यसमाज और परिषद में परस्पर अविश्वास दूर नहीं हो सकता, जब तक परिषद और सम्मेलन को आर्यसमाज के वर्तमान संगठन के नीचे न लाया जाय। पिछले वर्ष दिल्ली में यत्न किया गया था कि नियमों में उचित परिवर्तन हो सके, किन्तु कई एक कारणों ने, जिन में से प्रान्तिक भाव प्रधान था, कोई ठीक संगठन न बनने दिया। हमें आशा है कि सम्मेलन के संचालक इस वर्ष अपने उद्देश्य में सफल यत्न होंगे।

अभी तक ज्ञात नहीं हुआ कि इस अधिवेशन में प्रधान कौन हैंगे? हमारी सम्मति में श्री पं० घासीरामजी से ही प्रार्थना करनी चाहिये कि वे इस पद को सुशोभित करें। इस समय उन से योग्यतर व्यक्ति इस पद के लिये पाना कठिन है।

पटियाले के समाचार

कठोरताओं की लड़ी।

८ अगस्त—को पुलिस ने अभियोग प्रारम्भ कर दिया है, और नियम पूर्वक इस्तगासा दायर कर दिया। किन्तु म० रौनकराम को अदालत में नहीं लाया गया। अदालत में म० रौनकराम का लाया जाना आवश्यक था।

१६ अगस्त—श्रीयुत रौशनलाल जी बैरिस्टर पटला जो इस मुकद्दमे की पैरवी के लिये बोलन गये हुए हैं, सूचना देते हैं कि उन की ओर के और वकील १९ अगस्त को बर्नाले न पहुंच सकते थे, इसलिये उन्हों ने प्रार्थना की थी कि मुकद्दमे की पहली पेशी २२ तारीख को हो यह प्रार्थना अस्वीकृत हुई।

यह विचित्र समाचार सुन कर सबको आश्चर्य होगा कि कोई बाहिर का वकील पटियाले की रियासत में मुकद्दमा करने नहीं जा सकता, जो पहले कचहरी में ५०) दाखिल न करे। यह फ़ीस (?) प्रार्थना के साथ ही देनी पड़ती है। फिर आगे २०) पहली पेशी के और १०) हर अगली पेशी के देने पड़ते हैं।

१९ अगस्त—इसदिन मुकद्दमे की पहली पेशी थी। आर्य समाज की ओर से राय रौशनलाल बैरिस्टर तो स्थायी रूप से इस मुकद्दमे की पैरवी करेंगे। उन की सहायता के लिये लाहौर से ला० धर्मचन्द और लुधियाने से ला० धनीराम जी भी पहुंचेंगे। बीच बीच में आवश्यक समयों पर जालन्धर के बैरिस्टर रायज़ादा भक्तराम जी भी पहुंचते रहेंगे। कहते हैं बर्नाले में आर्य समाजी वकीलों के रहने के लिये किराये पर भी मकान नहीं मिलता। सब सज्जन आर्य्य समाज मंदिर में ही ठहरेंगे। क्या यह अनर्थ नहीं है।

देहली के डा० हरिशंकर

हमें यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि देहली सरकारी हस्पताल के डा० पं० हरिशंकर ने अपनी योग्यता और सद् व्यवहार के कारण अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त करली है आप आगरे के रहने वाले हैं और आपने लाहौर के मैडिकल कालिज में शिक्षा पाई है। आपने हिसार के ज़िले में दो वर्ष तक डेंग ड्यूटी पर काम किया। वहां बड़ी योग्यता से काम करने के उपलक्ष्य में आपको लाहौर मैडिकल कालिज में सीनियर हौस सर्जन का स्थान मिला। वहीं आंखों के इलाज में भी आपकी अच्छी ख्याति हुई। अब आप देहली के सरकारी हस्पताल में असिस्टंट सर्जन हैं। चीर फाड़ के काम में और विशेषतः आंख, कान, नाक आदि की बीमारियों के इलाज में आप विशेष निपुण हैं। आंखों का इलाज कराने मुरादाबाद और बरेली तक के लोग इन के पास आते हैं। हमें आशा है कि देहली निवासी आपकी योग्यता से पूरा लाभ उठावेंगे।

गोयन और ब्रलस्यू जहाज़ भागगये

इंडियन डेली न्यूज़ को तार मिला है कि टर्की के गोयन और ब्रलस्यू जहाज़ जो दरह दानीपाल में थे उस वक्त भागगये जबकि हमारे जहाज़ फ्रांसीसी आरमी को २ की बाखरद'री की रक्षा कररहे थे जो अफ्रीका से आरही है।

जर्मन सेना का पराजय

जर्मन सेनाएं फ्रांस की सेनाओं द्वारा पराजित होकर बाढ़ाई अलसीत में उत्तर और पूरब की ओर बड़ी घबराहट के साथ पीछे हट रही हैं। जर्मन की इस में अधिक हानि हुई और फ्रांस के हाथ बहुत सा जर्मन जंगी सामान लगा। सूचि खाडी में फ्रांसीसी सेनाएं आगे बढ़ रही हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आशा की झलक ।

आर्य्यसमाज की अवस्था पर कितने भी कटाक्ष क्यों न किये जांय और आर्य्य पुरुषों को कैसा भी अयोग्य क्यों न समझा जाय फिर भी यदि किसी भारतीय समाज में वास्तविक जीवन है तो वह आर्य्यसमाज ही है, और यदि किन्हीं पुरुषों में आत्मसमर्पण का अधिक भाव है तो वह आर्य्यसामाजिक पुरुष ही है जब मैं ने गुरुकुल के स्थिर कोश की बुनियाद रखकर साथ ही ५० सहस्र रुपया अस्थिर कोष के लिये मांगे थे तो सब मित्रों ने सिर हिलाया और स्पष्ट कहा कि जब पटियाले के अत्याचारों से अपने भाइयों की रक्षा के लिये धन एकत्र करने में आर्य भाई निमग्न हैं तो तुम्हारी दूसरी पुकारों को कौन सुनेगा । फिर उसके पश्चात् जब कुम्भ प्रचार के लिये मैं ने अपील की तो लोगों ने समझ लिया कि मैं बुद्धि को जवाब ही दे बैठा हूं । और सब से बढ़कर जब अगस्त के अन्त तक बैठे रहने की प्रतिज्ञा करने के पश्चात् मुझे फिर लाहौर से तार आने पर भागना पड़ा तब मुझे भी अपने मस्तक के स्वास्थ्य पर कुछ सन्देह सा हो गया । परन्तु १९ अगस्त कटे लौटते ही ऐसी घटनाएं सामने आईं जिन से

परमात्मा पर पूर्ण विश्वास

फिर से दृढ़ हो गया । पहले तो सिमले पहुंचते ही एक भाई ने ५००) रोक थैली में पेश किए । इस रक़म को गुप्त दान में ही लिखा गया है । दानी की अवस्था यह है कि ४०००) रुपये तो उन के पीपरुख बैङ्क में मारे जा चुके हैं, यही उनकी एक पूंजी थी । फिर उनका परिवार इतना कि उस के पालन पोषण में आय का बड़ा भाग व्यय हो जाता है। मैं अनुमान करता हूं कि बैङ्क में रुपया गंवाने के पश्चात् यही एक धन उन्हों ने जमा किया होगा जो गुरुकुल के स्थिर कोष के अर्पण कर दिया । कटे के दो सज्जनों ने पांच सौ देने की प्रतिज्ञा की है जो सप्ताह में ही पूरी हो जायगी । श्री राधा कृष्ण जी गुरुकुल के अनन्य भक्त हैं । आप ने १००) भेजा है, इस में से ५०) गुरुकुल के अस्थिर कोष में ५१,००० पूरे करने के लिये हैं और ५०) कुम्भ प्रचार के लिए । इन रक़मों के साथ ही ५०) श्रीमान पण्डित माधवप्रसाद तिवारी जी से गुरुकुल अस्थिर कोष की सहायतार्थ मनीआर्डर द्वारा प्राप्त हुए ।

ऊपर कथित दान आवश्यकता की अपेक्षा समुद्र में एक लोटा पानी के तुल्य है किन्तु इस से यह स्पष्ट विदित होता है कि आर्य्य पुरुष अपने कर्त्तव्य को समझते हैं और उस के पालन के लिये सदा पुरुषार्थ करते रहते हैं । मैं प्रथम समय विभाग के अनुसार ४ वा ५ सितम्बर तक शिमले पहुंच जाऊंगा । इस लेख को पढ़ने के पश्चात् जो धन भेजना हो मेरे नाम सीधा गुरुकुल के पते से भेजें । शिमले अधिक ठहरने का विचार नहीं है, वहां से शीघ्र ही गुरुकुल भूमी में विजय दशमी का उत्सव मनाने के लिये गुरुकुल पहुंचूंगा ।

मुंशीराम

कलकत्ता समाचार ।

जिस दैनिक "कलकत्ता समाचार" के निकलने की बहुत दिनों से धूमधाम थी, वह निकल आया । इसे निकलते एक सप्ताह भी हो गया है । चौड़ाई में इस का आकार भारत मित्र से कुछ बड़ा है और काग़ज़ बहुत बांढ़िया है टाइप नये होने के कारण छपाई बहुत साफ है । मूल्य इस का भी वार्षिक १०) और एक प्रति का पैसा है । हम चाहते थे कि नवजवानसहयोगी के काग़ज़ और छपाई की भांति हम उस के सम्पादन की भी प्रशंसा कर सकते । एक सप्ताह के पर्चों को देखकर कहना पड़ता है कि एक दैनिकपत्र का सम्पादन जैसा होना चाहिये वैसा इस का नहीं है । नाहीं दैनिक भारत मित्र की तरह इस के मुख्य लेख गम्भीर हैं और नाहीं टिप्पणियां ज्ञानपूर्ण हैं एक आध को छोड़कर सभी मुख्य लेख दस वर्ष पुराने साप्ताहिक पत्रों के योग्य हैं । हम यह बात इस पत्र के साथ विचारों में भेद होने के कारण नहीं कहते । प्रायः सभी धार्म्मिक और सामाजिक बातों में मत भेद रहते हुए भी हम आजकल "बंकटेश्वर समाचार" को बड़े आनन्द से पढ़ते हैं । समान विचार वाले "बंकटेश्वर" तक को भी यह कमी खटकी है । हमें आशा है कि "समाचार" के संचालक इस कमी को पूरा करके इसे सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने का यत्न करेंगे ॥

सद्धर्मप्रचारक

अपना कर्त्तव्य समझो

गुरुकुल का स्थायी कोष

संसार में प्रसिद्धि या ख्याति एक भयानक वस्तु है । जहां प्रसिद्धि पानेवाले व्यक्ति या समाज की उत्तर दातृता प्रति दिन बढ़ती जाती है, वहां उसी प्रसिद्धि के कारण यह बहुत सम्भव है कि उसे पाने वाला अपने कर्त्तव्य को भूलता जाय । उस के दिल पर से अपनी उत्तर दातृता के भाव और भी कम होते जांय। संसार में प्रसिद्धि अन्दर की आंखों को प्रायः अन्धा करदेती है । जब कोई आदमी तसवीर उतरवा रहा हो, या अपनी अच्छी फोटू देख रहा हो, उसे यह स्मरण करने का अवसर नहीं मिलता कि बाहिर के वेष के नीचे उसके पास क्या है ? कपड़ों के नीचे, और ऊपर के चमड़े के नीचे क्या धरा है ? मनुष्य या समाज की ख्याति उसका सुधारा हुआ, और सजाया हुआ, फोटू ही है । इस लिये अख्याति के मार्ग पर चलनेवाले व्यक्ति या समाज को सदा सावधान रहना चाहिये । ऐसा यत्न करना चाहिये जिस में अन्दर की आंखें बन्द न हों और अपनी वास्तविक दशा भूल न जाय ।

गुरुकुल विश्वविद्यालय ऐसी ही शंकाक्रान्त दशा में से गुज़र रहा है । नये सूर्योदय के साथ उस की ख्याति का घेरा बढ़ता हुआ दिखाई देता है, प्रत्येक वसन्त ऋतु उस के श्रद्धालुओं प्रेमियों और सहानुभूमि रखने वालों की संख्या को बढ़ा हुआ पाती है, प्रतिदिन संसार की दृष्टि उसकी ओर को खिंचती जाती है । अपने पराये और उदासीन—सब के सब उसकी अद्भुतता को एक स्वर होकर मानते हैं । वे व्यक्ति भी, जो इसे केवल एक परीक्षण समझते हैं, इस के अनूठा परीक्षण होने में सन्देह नहीं करते । क्या भारत वर्ष के, क्या विदेश के यात्री, जो गुरुकुल को देखजाते हैं, उस पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिखते हुए अपनी लेखनी में कवितादेवी का अवतार पाते हैं । ऐसी दशा है, जिस में गुरुकुल विश्वविद्यालय विद्यमान है। यह अवस्था किसी भी स्वतन्त्र विश्वविद्यालय के लिये ईर्ष्या के उपजाने वाली है। बहुत सम्भव है कि इस विश्वविद्यालय के चलाने वाले बहु परिकरों के दिलों से वह उत्तरदातृता का भार उठजाय जो वस्तुतः प्रतिदिन बढ़ना चाहिये। प्रसिद्धि का यह मद इतना प्रबल हो सकता है, कि वह संचालकों को कर्तव्य भुला देने का हेतु हो जाय। ऐसे समय हितैषियों का कर्तव्य है कि वे गुरुकुल के संचालकों के कर्तव्य को स्मरण कराने में सहायता देते रहें। वे केवल प्रशंसा करके या उस से उत्पन्न ईर्ष्या का भाव प्रकाशित करके ही शान्त न हो रहें बल्कि अपने गुरुकुल की उत्तरदातृताओं को समझें, और उसके अनुकूल व्यवहार करने का प्रयत्न करें।

गुरुकुल की बढ़ती हुई ख्याति के विस्तार को देखकर जब हम ज़रा और गहरा जाते हैं, तब हमें एक बात विशेष चिन्ता उत्पन्न करने वाली दिखाई देती है। जिस संस्था का ऊपर का विस्तार ऐसा विशाल है, उसका भार उठाने वाली नींवें बड़ी कमज़ोर हैं। गुरुकुल के योग्य उपाध्याय गण और ब्रह्मचारी वस्तुतः अशौवस्तिक वृत्ति से रहने वाले हैं। गुरुकुल का स्थिर कोष कुछ भी नहीं है । जो धन प्रति वर्ष आता है वही खाया जाता है। दैव न करे, यदि किसी वर्ष कठोर दुर्भिक्ष हो जाय, या आर्यजनता को किसी और धार्मिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये विशेष परिश्रम करना पड़े तो गुरुकुल का चलना सर्वथा असम्भव हो जाय । गुरुकुल के कार्य कर्ताओं के दिलों में सदा एक अस्थिरता की घबराहट का बने रहना, कार्य में बड़ा विघ्न कारी होता है। जब तक गुरुकुल का स्थिर कोष कम से कम १० लाखतक न पहुंच जाय, इसकी बढ़ी हुई ख्यातिका ढाला जाल मूल रहित ही होगा।

गुरुकुल की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये उसके संस्थापक महात्मा मुंशी राम जी ने अपनी प्रभाव शालिनी अभ्यर्थना प्रकाशित की है। गुरुकुल की आवश्यकताओं को महात्मा जी की अपेक्षा अधिक उत्तमता से जानने वाला और कौन है? उन्हीं ने बड़ी स्पष्टता से प्रचारक के एक विगत अङ्क में गुरुकुल की आवश्यकताओं और स्थिर कोष के लाभों का उल्लेख कर दिया है। एक कर्तव्य पहिचानने वाले समाज को जगाने के लिये वह लेख पर्याप्त होना चाहिये। प्रख्याति का मद यदि गुरुकुल के भक्तों को अचेत नहीं कर चुका है तो वे समझ सकेंगे। कि गुरुकुल का आधार अभी कितना कच्चा है गुरुकुल की उत्तम स्थिति, उसका विद्या शाली उपाध्याय मण्डल, और उसकी अनूपम ख्याति भागती हुई बिजली की दमक के समान ही होंगे, यदि हम उनके आधार में स्थिर कोष को नहीं रखते। हम महात्मा जी के शब्दों की अपेक्षा अधिक प्रबल शब्दों में आर्य जनता से गुरुकुल के स्थिर कोष के लिये अभ्यर्थना नहीं कर सकते । यह हमारी शक्ति से बाहिर है। हम तो केवल गुरुकुल प्रेमियों का ध्यान महात्मा जी के लेख की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। हम तो उन्हें केवल यह बताना चाहते हैं कि यदि अभी तक महात्मा जी की प्रबल अभ्यर्थना ने उनकी आँखें नहीं खोलीं तो उन्हें यह समझ लेना चाहिये कि गुरुकुल की प्रसिद्धि ने उनकी आन्तरिक चक्षुएं बन्द कर दी हैं।

महात्मा जी का आशापूर्ण लेख हमारे पाठकों ने पढ़ा है। इस से पता लगता है कि आर्य जनता अपना कर्तव्य समझती है, वह जीती जागती है, और उसकी आंखें बन्द नहीं हैं। इस समय भारत वर्ष भी चञ्चलदशा में है। योरप में धधकती हुई प्रचण्ड युद्धाग्नि का ताप भारत के पुराने मकानों पर भी पड़ रहा है। यहां भी हमारी कुछ अनिश्चित सी अवस्था है। शायद गुरुकुल के कई सन्देह शील प्रेमी कहें कि गुरुकुल के लिये स्थिर कोष जमा करने का यह उचित समय नहीं है किन्तु हमारी सम्मति है कि यही समय इस शुभ कार्य के लिये अत्युपयोगी है। इस समय की अस्थिरता हो हमारे मन पर गुरुकुल के स्थिर करने के विचारों का पक्का प्रभाव डाल सकती है। इस समय आर्य समाज के अनथक अर्थी की अभ्यर्थना का शब्द यदि आर्य पुरुषों को जगा कर कर्तव्य परायण न करा सका, तो फिर कभी भी नहीं करा सकेगा।

गुरुकुल के भक्तो! क्या आप चाहते हैं कि गुरुकुल के संस्थापक महात्मा को कभी इस भागदौड़ से छुटकारा न मिले? क्या आप की इच्छा है वे कभी शान्ति से बैठकर जीवन के अन्तिम भाग को स्वास्थ्य और विचारमें न बिता सकें? यदि आपकी ऐसी इच्छा नहीं है तो उनकी अभ्यर्थना को सुनो और गुरुकुल का स्थिर कोष इन दो सालों में भर दो। तभी यह सम्भव है कि वे शान्ति पूर्वक बैठ कर अपने परिश्रम को फलीभूत होता हुआ देखें, और आत्मिक शान्ति का उपभोग कर सकें।

महायुद्ध और भारतवष।

योरप में जो युद्ध ज्वाला भड़की है, उसे इस समय महाभारत के नाम से पुकारा जा रहा है। महा भारत शब्द अपने साथ बड़ी भयंकर स्मृतियाँ लाता है। सूर्य के लिये सब से अधिक दुःख दायक स्मृतियाँ हो सकती हैं तो सायं काल की। भारतवर्ष भी महा भारत संग्राम को लम्बी दुखभरी आह के साथ स्मरण करता है । महा भारत ने भारतवर्ष का लहलहाता हुआ उद्यान उजाड़ दिया उसके विद्याधन ऐश्वर्य सब का सत्यानास कर दिया। थोड़े में यदि हम कहना चाहें तो महा भारत ने भारतीय सभ्यता को जड़ मूल से हिला दिया था। जब योरप के महा युद्ध को महा भारत के नाम से पुकारा जाता है, तब वे स्मृतियां साथ ही आजाती हैं। क्या यह युद्ध सचमुच योरप का महा भारत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होगा ? क्या यह भयानक संग्राम सचमुच पाश्चात्य सभ्यता को चकनाचूर कर देगा ? क्या सचमुच पृथ्वी की वर्तमान स्वामी जातियाँ नाम शेष हो जायंगी। इन विचारों की हलकी झलक भी चित्त को चंचल कराने वाली है। भगवान करे, ऐसा न हो। किन्तु यदि यह सचमुच महाभारत है तो ऐसे परिणामों का आंखों के सामने घूमना स्वाभाविक है। किन्तु क्या यह युद्ध सचमुच महा भारत के समान है ?

जब हम युद्ध में लगी हुई सेनाओं की बड़ी संख्या पर दृष्टि डालते हैं, तब महाभारत की १८ अक्षौहिणी सेना छोटी जँचने लगती है। जब हमें वायु और समुद्र में भागने वाले हथियारे जहाजों का विचार आता है, तब महाभारत की राक्षसी माया भूल जाती है। जब हमें याद आता है कि इस युद्ध में भूमी का कोना कोना सना हुआ है, इंग्लैंड जर्मनी, रूस, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, सर्विया, और बैल्जियम इस समय गुत्थम गुत्था हो गये हैं, टर्की बल्गेरिया, जापान और इटली लड़ाई के किनारे पर खड़े हैं, हालैंड में युद्ध की दशा की घोषणा हो चुकी है, मांटीनेग्रो जैसी छोटी रियासतों की गिनती ही नहीं है, जो देश इस समय उदासीन प्रतीत होते हैं, वे अपनी इस अवस्था को कब तक स्थिर रख सकेंगे, यह नहीं कह सकते। क्या महा भारत के महा युद्ध में लड़ने वाली सेनायें इतनों से अधिक देशों से आई थीं ? भयंकर तोपें, नये नये प्रकार की शीघ्र प्रहारिणी बन्दूकें महाभारत के अस्त्रशास्त्रों को भुला रही हैं। क्या फिर भी इस में कोई सन्देह है कि वर्तमान युद्ध योरप का महा भारत है ?

इस में कौन सन्देह कर सकता है कि यह युद्ध आज की स्वामिनी जातियों को बहुत निर्बल कर देगा। इस में भी सन्देह नहीं कि इसकी समाप्ति पर भूमण्डल का भूगोल बिलकुल बदल जायगा, उस में बहुत से परिवर्तन आयंगे। इतना तो निश्चित है। वह निर्बलता कितनी होगी। और वे परिवर्तन क्या रूपधारण करेंगे, ये प्रश्न भविष्यत की धुन्ध में छिपे हुए हैं। इनका उत्तर देना, या उत्तर देने का यत्न करना भी इस समय सम्भव नहीं है। न हमें इस समय उनके उत्तर देने की आवश्यकता है। जो भगवान के हाथ में है, जो अवश्य होने वाला है, उसके लिये कल्पना शक्ति का भगाना व्यर्थ सा प्रतीत होता है। हम जिस प्रश्न पर विचार करना चाहते हैं वह यह है कि इस महाभारत में भारतवर्ष का क्या भाग होना चाहिये ?

भारतवर्ष एक महाभारत को भुगता चुका है, और दूसरे महाभारत को भुगताने की शक्ति नहीं रखता। एक महा भारत ने इसे आकाश पर से भूमि पर पटक दिया है, यदि दूसरे महा भारत का भी यह क्रीड़ाक्षेत्र हो तो सिवाय भूगर्भ के और स्थान उसके लिये नहीं है। हमारे भाग्यों से भारतवर्ष इस समय है भी ऐसी अवस्था में कि वह स्वतन्त्र रूप से इस महाभारत में भाग ले भी नहीं सकता। जिस साम्राज्य का भारतवर्ष अङ्ग है, उसे इस महाभारत में पड़ना पड़ा, इसका सारे साम्राज्य वासियों को दुःख है। यदि ब्रिटिश साम्राज्य को इस संघट में न घुसना पड़ता तो उसे जुदा रहते हुए अपनी उन्नति करने का अवसर मिलता है। किन्तु भाग्य की पुस्तक में यही लिखा था कि वह भी युद्धाग्नि में कूदे। भारतवर्ष जिस साम्राज्य का भाग है, वह महाभारत में एक पक्ष का मुखिया है। ऐसी अवस्था में भारतवर्ष का इस युद्ध में क्या भाग होगा ?

भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्य का भाग है, इस लिये उसे समूह रूपेण उस ओर से लड़ाई में भाग देना पड़ेगा। उसके लिये इंग्लैंड को सहायता देना आवश्यक है। किन्तु भारतवासी इस समय कैसी सहायता दे सकते हैं ? भारतवर्ष की वास्तविक शारीरिक सहायता इंग्लैंड को मिल नहीं सकती, क्योंकि अब भारतवासी शस्त्र के नाम से डरते हैं। सरकार तनख्वाहदार सिपाहियों को अवश्य युद्ध में लेजा सकती है, किन्तु यह कौन नहीं जानता कि जो सेना केवल आदत या पेशे के कारण लड़ती है, उसका केवल शरीर लड़ता है किन्तु जो सेना देश या जाति के लिये लड़ती है, उसका शरीर और आत्मा दोनों लड़ते हैं। शरीर और आत्मा से लड़ने वाली योरपियन सेनाओं के बीच में केवल शरीर से लड़ने वाली भारतीय सेनायें कुछ काम कर सकेंगी, इस में हमें सन्देह है। हां, यदि आज भारतीय जनता के हाथों में शस्त्र होते, और यदि वह ब्रिटिश साम्राज्य के लिये लड़ने पर कटि बद्ध हो जाते, तो क्या कोई भी देश उसके सामने ठहर सकता था ? क्या रूस के एक करोड़ योद्धा भारत की राष्ट्रीय सेना के सामने तुच्छ न होती। हम भारतवासी अब इतने धनी नहीं हैं, कि कोई विशेष आर्थिक सहायता दे सकें। तो भी भारतवर्ष पर्याप्त धन दे रहा है और हमें आशा करनी चाहिये कि अगले साल भूखों मरने का खतरा इस सहायता दान से बढ़ जायगा। तब हम लोग इस महाभारत में क्या भाग दे सकते हैं ? हम पुण्य वँश वासी जो एक महाभारत के बाद आता है हैं, नहीं चाहते कि संसार का बाल्य गौ-महाभारत हो। बस, हम कहा जा सकता कर परमात्मा से यही प्रार्थना पुरुषार्थी भारत-हैं कि यह महाभारत यहीं बड़ी नौका-ही समाप्त हो और इंग्लैण्ड समाट्रा आदि तिब्बतों को वह बुद्धि प्राप्त हो उनमें भारत इस महान् साम्राज्य को घर दक्षिण के आपत्ति में से निकालते समय ज्वाला को बुझाने में सहायता की, वह आशा है कि परमात्मा हमारे नेत्रों तथा सुनेंगे।

संगत में रामायण।

आज सायंकाल संगम थियेटर में देहली हिन्दुयुवक "जनकसुता" नामक नाटक खेलेंगे जिस की आय लार्ड हार्डिंगमैमोरियल फंड के लिये दी जायगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(४४)

धर्म का अपूर्व विजय।

मेरठ तार देने के पश्चात् मैं राय शालिग्रामजी से बिल्कुल न मिला। सोमवार ११ फेब्रुअरी को एक मुकद्दमेके लिए मुझे फिल्लौर जाना पड़ा। वहां से ८॥ बजे लौट कर भोजन करते हुए मुझे राय साहब का बुलावा आया। तार का उत्तर आया था कि देवराज कलकत्ते चले गए। एक ओर तो देवराज जी के एक सम्बन्धी लाला गुरदित्तामल को कलकत्ते के लिए रात की ट्रेन में बैठाया गया और दूसरी ओर वहां राय रलाराम को तार दिया गया कि देवराज को अटकालें। यह राय रलाराम जालन्धर में पले थे और कलकत्ते में Examiner of accounts थे।

इसके पश्चात् बराबर तार बाज़ी चिन्ता रही जिनसे कभी आशा की झलगहरा चलती और कभी फिर निराशा व चिन्ता। संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि देती है। कर देवराज जी समाज विस्तार ऐस उठाने वाली है। वहां वे रंगून गुरुकुल के योग्य उपाक राय रलाराम ब्रह्मचारी वस्तुतः और ज़बरदस्ती उनको रहने वाले हैं। गुए ले आए। फंसे हुए कुछ भी नहीं है तो आए किन्तु अपने आत्मा है वही खाचार पर दृढ़ रहे। जब करे, यदि किसी तार दिखाया तो उत्तर जाय, या आर्यजनता जी की आज्ञा का धार्मिक आवश्यक रहा था। रात को विशेष परिश्रम सोगए। रायसाहेब के का न में रात को अन्दर से ताला पड़ जाता था, इसलिए वे निश्चिन्त सोगए किन्तु देवराज को तो चिन्ता ही और थी। चारबजे उठकर दर्बान को आज्ञा दी कि ताला खोलदे। दर्बान को क्या पता कि जिनका इतना सत्कार हुआ वह कैदी है। उसने समझा कि बाबू प्रातः सैर को चले हैं, झट द्वार खोलदिया। गली में कुछ दूर चलकर पगड़ी बग़ल में दबा कर देवराज जी समाज मन्दिर की ओर सर्पट भागे। उस समय विचित्र दृश्य होगा। आश्चर्य यही है कि किसी पहरे वाले ने सन्दिग्ध समझ कर आप की गर्दन नहीं नापी। टिकट जेब में था और सामान समाज मन्दिर में। यह भी भाग्य शीलता की ही बात थी कि पहली रात राय रलाराम जी सामान उठवा लेजाना भूलगए। देवराज जी ने समाज मन्दिर में पहुंचते ही सामान उठवाया और जहाज़ में पहुंच गए। पहला तार तो राय रलाराम ने दिया कि देवराज को रोकलिया है किन्तु दूसरी तार कलकत्ता समाज के मन्त्री की आई जिसमें लिखा था कि देवराज जी रंगून को प्रस्थान करगए। फिर लम्बी तार दी गई। कलकत्ते से चला हुआ जहाज़ डायमन्ड बन्दर (Diamond Harbour) में डाकलेने के लिए ठहरता है पिता जी का दूसरा तार लेकर राय रलाराम डाक के साथ जहाज़ पर पहुंचे और देवराज जी को उतार लाए। यह दूसरा तार असल में देवराज जी के तार के उत्तर में था। देवराज जी ने जहाज़ पर चढ़ने से पहले तार दिया—"पिताजी की आज्ञा पालन करने के लिए रंगून जारहा हूं।" पिता जी ने ब्रह्मा आदि जाने को लिखा तो आज्ञा पालक पुत्र और किसी ओर क्यों जाता। देवराज की तार का उत्तर पिताजी ने यह दिलवाया—"हमारी आज्ञा पालन तुमने की, हम तुमसे प्रसन्न हैं। अब हमारी ही आज्ञा है कि लौट आओ।" यही अन्तिम तार दिखाकर राय रलाराम देवदाज जी को लौटा लाए। तब मैंने फिर तार दिया कि लौटआना चाहिए, जिसके उत्तर में देवराज जी ने १५ फर्वरी को अन्तिम तार दिया—'पिताजी की आज्ञा नुसार लाला गुरदित्तामल के साथ आ रहा हूं।"

किन्तु क्या देवराज जी सीधे लौट आए। झलाऐसा क्यों करते। जब सैर का अवसर मिल गया। गुरदित्तामलजी के पास चार पाँच सौ रुपए बन्धवा कर भेजे गए थे और पिता जी ने उनको कहदिया था कि यदि लड़का सैर करना चाहे तो सैर कराते लाना। पहिले तो हमारे विजयी भाई ने कलकत्ते की सैर की और आदि ब्रह्म समाज के नेता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के दर्शन किए और उनसे आत्मिक बल लाभ किया। फिर रास्ते में काशी लखनऊ मथुरा आदि स्थानों में आर्य भाइयों से मिलते हुए २३ फर्वरी सं० १९८१ ई० को प्रातः काल चार बजे की गाड़ी में जालन्धर पहुंचगए। उसी गाड़ी से मैं गुजरां वाला आर्यसमाज के उत्सव पर जारहा था इसलिए अपने भाई से केवल ५ मिनिट के लिए ही मिल सका।

देवराज जी के इस अपूर्व साहस का परिणाम यह हुआ कि धर्म के कार्यों में उनके रास्ते की रुकावटें दूर होगईं। पिताजी की दृष्टि में उनका गौरव बढ़गया और वे बेधड़क काम करने लग गए।

इस अन्तर में अन्तरंग सभा के अन्दर शुद्धि विषयक आन्दोलन मैंने जारी रक्खा और बहुत से सभासदों को अपनी सम्मति के अनुकूल करलिया किन्तु देवराज जी के लौटने पर मामला ही स्पष्ट होगया क्योंकि वे अब "समय के न आने" के टकोसले से मुक्त हो चुके थे। इन दिनों मेरा अधिक समय नगर के अन्दर प्रचार करने में लगता था क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि कोई भाई भी देवराज जी की अनुपस्थिति को अनुभव करे। प्रेस और समाचार पत्र चलाने के विचार ने मेरा पत्र व्यवहार भी बढ़ा दिया था, किन्तु इन सब बढ़े हुए कामों के साथ एक ओर तो मैंने भूमिका लिख कर एक भजन पुस्तक का आरम्भ करदिया और दूसरी ओर हर्बर्ट स्पेन्सर की पुस्तकों के साथ ऋषि दयानन्दकृत वेदभाष्य का स्वाध्याय भी आरम्भ करदिया।

उधर यह सबकुछ होरहा था और उधर अपने ग्राम रुलदन से ग्राम से दो मील दूर अपनी भूमि में लगवाने के लिए फलों के वृक्ष भेज रहा था क्योंकि इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय यही विचार था कि एकान्त में धन के लिए वहाँ एक छोटासा बङ्गला बनाया जावे।

इन सब कामों के अतिरिक्त अपनी प्रस्तावित पुत्री पाठशाला को भी नहीं भूला था, क्योंकि २१ फर्वरी को रायबहादुर मास्टर प्यारेल ल इन्सपैक्टर आफ स्कूलज़ को मिलकर उसके विषय में बात चीत की थी।

(मुन्शीराम)

भारतवर्ष के इतिहास पर

एक अनोखी पुस्तक

ज्यों ज्यों भूमि को खोदा जाता है, ज्यों ज्यों ऐतिहासिक लोग भूत काल की तहों को खोदते हैं त्यों त्यों भारतवर्ष अपने अपूर्व गौरव को प्रकाशित करता जाता है। आज से सौ वर्ष पूर्व भारतवर्ष का इतिहास क्या समझा जाता था? लोग महमूद ग़ज़नवी के हमले की कहानी को भारत के इतिहास की पहली मनोरञ्जक कहानी समझते थे किन्तु आज अवस्था क्या है? इतिहास की खोज ने हमें बतला दिया है कि महमूद के धावों से पहले भारतीय इतिहास के पुस्तकालय भरे जा सकते हैं। परिश्रमी इतिहासज्ञों ने धैर्य और अध्यवसाय से खोज करके ऐसे परिणाम निकाले हैं कि उन्हें देख सुन कर संसार आश्चर्यित होरहा है।

जिस पहलू को लेकर विचार होता है जीवन के जिस भाग को लक्षमें रख कर खोज की जाती है, वही पहलू और वही भाग चमकीला दिखाई देता है। खोज करने वालों ने भारतवर्ष के दर्शन महा सागर में मग्न किया है और ऐसे ऐसे बांकी छवि वाले रत्न पाये हैं कि उन की उपमा संसार पट पर पाना कठिन है। विचारशील इतिहास लेखकों ने भारत के राजनीतिक विजयों पर पड़ी हुई मट्टी खोदी, तो तेजस्वी पराक्रमों की खानें निकल आईं। विद्या, धन, पराक्रम किसी भी मानुषिक लाभ में भारत अन्य देशों से पीछे नहीं रहा। जिन पुण्यात्माओं ने कीड़ों के खाये हुए पुस्तकालयों की खाक छान छान कर पुरानी पुस्तकें निकालीं, या सुदूरवती पहाड़ों और मैदानों में पत्थरों को उठा उठा कर शिला लेख ढूंढ़े, उन का जितना धन्यवाद किया जाय कम है। ऐसे ही पुण्यात्माओं में से प्रोफैसर राधाकुमुदमुकुर्जी हैं, जिन की नई प्रसिद्ध पुस्तक के विषय में ही हम दो चार शब्द कहना चाहते हैं। इस नई पुस्तक का नाम है „ भारतवर्ष के जहाज़ी और जलीय व्यापारसम्बन्धी कार्यों का इतिहास" । इस में ग्रन्थकर्ता ने अतिप्राचीन वैदिक समय से ले कर अंग्रेज़ी राज्य तक भारतवर्ष का जो जहाज़ी बल या व्यापार रहा उस का क्रमवद्ध वर्णन किया है। यह वर्णन कोई शेखचिल्ली की कहानी के आधार पर नहीं है। इधर उधर से इकट्ठे किये हुए पाँच चार पाश्चात्य विद्वानों को साक्षी से भी काम सीधा नहीं किया गया। एक सच्चे इतिहास लेखक का जो कर्तव्य है, ग्रन्थ लेखक ने उसे खूब निबाहा है, कोई बात बिना प्रमाण नहीं कही। प्रमाण पहले दिये हैं और परिणाम पीछे निकाले हैं। एक अंग्रेज़ी कम्पनी ने इसे छापा है और सारे पंडित संसार ने मिलकर इस की प्रशंसा की है।

हमें यहां उन सब प्रमाणों से तात्पर्य नहीं, जो ग्रन्थकर्ता ने उद्धृत किये हैं। उनकी संख्या बहुत बड़ी है। वेद, सूत्रग्रंथ रामायण, महाभारत, पुराण, नवीन काव्यस्मृतियां और नीति शास्त्र आदि सब प्रकारकी साहित्यकी शाखाओंके प्रमाण उद्धृत करके विदेशीय साक्षियों पुराने सिक्कों तथा चित्रों से उन्हें पुष्ट किया है। किसी स्थान पर अंगुली उठाने का अवसर नहीं छोड़ा।

पुस्तक के साधारण परिणाम को हम अपने पाठकों के सन्मुख रखते हैं। ग्रन्थ कर्ता ने बहुत अच्छी प्रकार दिखलाया है कि मौर्य राजाओं से पूर्व ही भारतवर्ष का जहाज़ी बल और सामुद्रिक व्यापार खूब यौवन प्राप्त कर चुका था। दूर दूर के देशों के साथ उसका व्यापार होता था। उस समय का कोई ऐसा सभ्य देश न था, जो भारत से भेजी हुई वस्तुओं से लाभ न उठाता हो। चारों ओर उस के व्यापारी पोत घूमते थे और भारतीय सभ्यता को फैलाने के साधन होते थे! मौर्य समय में भारत में आर्य्य साम्राज्य ने बल पकड़ा, साथ ही साथ अन्य देशों में उसका गौरव भी बढ़ने लगा। सामुद्रिक व्यापार को भी खूब प्रोत्साहना मिली। दूर दूर तक भारत की विजय पताका ने समुद्र के नीले जल पर अपनी सुन्दर बाहुयें फैला दीं। जो जहाज़ पहले जीतने या व्यापार करने के काम आते थे, महाराजा अशोक मौर्य के समय में वे धर्म प्रचार के काम भी आने लगे। आस पास के क्या, दूर दूर के देशों में भी भारत के जहाज़ गौतम बुद्ध का शान्ति दायक सन्देशा पहुंचाने लगे। आगे आने वाले कुशान आदि वंशों का रोम के साथ सम्बन्ध और उनके सिक्कों पर जहाज़ों के चिन्ह उस समय के सामुद्रिक व्यापार की दशा को खूब प्रकाशित करते हैं।

आगे उत्तरीय भारत में गुप्त वँश और राजा हर्ष वर्धन का समय आता है है जो भारत के व्यापार तथा बाह्य गौरवके लिये स्वर्णीय समय कहा जा सकता है। इसी समय में कई पुरुषार्थी भारतवासियों के समूहों ने बड़ी बड़ी नौकाओं पर चढ़कर जावा समात्रा आदि द्वीपों की यात्रा की, और उनमें भारत की बस्तियां बसाईं। इधर दक्षिण के चोल आदि वंशों के राजाओं के समय में सामुद्रिक व्यापारने जो उन्नति की, वह भी आश्चर्य जनक है। मुसलमानों तथा अंग्रेज़ी समय का सामुद्रिक व्यापार या बल का इतिहास हमारे लिये कुछ रुचिकारक नहीं है इसलिये हम यहां उसका देना आवश्यक नहीं समझते।

ऐसी उपयोगी और पांडित्य पूर्ण पुस्तक लिखने के कारण प्रो० राधा कुमुद मुकुर्जी सारी भारतीय जनता के धन्यवाद पात्र हैं। हर एक सच्चे भारतवासी को इस पुस्तक का पाठ करना चाहिये, और यह भी यत्न होना चाहिए कि इस का अनुवाद सब भारत की भाषाओं में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जाय। आर्य्य भाषा में तो जितना शीघ्र इसका अनुवाद हो जाय अच्छा है क्या कोई भाषा प्रेमी इस आवश्यक कार्य्य के लिये तय्यार न होंगे ?

——

"सद्धर्म्म प्रताप रहस्य"

(यह पत्र भारतमित्र को भेजा गया है)

श्री सम्पादक महोदय,

मुझे "भारत मित्र" के १८ अगस्त के उस लेख को पढ़कर अत्यन्त खेद हुआ जिस में आपने संवाददाता के आधार पर सद्धर्म और प्रताप के मिलने की कहानी लिखी है। आपने उस में सिद्ध करना चाहा है कि "मेरी कानपुर में रहने की प्रबल इच्छा थी, मैं ने प्रताप के सम्पादक पं० गणेशशंकर विद्यार्थी से सहायता मांगी और उन्हों ने कृपा पूर्वक सहायता देनी स्वीकार कर ली परन्तु अन्त में आर्य्यसमाजियों के फटकार के कारण मैं फिसल पड़ा।" परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप के संवाददाता ने अपनी कहानी पर मिथ्योक्तियों और अत्युक्तियों का खूब ही रंग चढ़ाया है। इस विषय में जो बात चीत या जो घटनाए हुई थीं उनको प्रकाशित करने में मैं असमर्थ हूं क्योंकि वे सर्वथा प्राइवेट (निजू) थीं। दूसरे पक्ष की सम्मति के बिना निजू बात चीत को सार्वजनिक बनाना मैं विश्वासघात समझता हूं। साथ ही इस कहानी को यथार्थ रूप में रखते समय मुझे कुछ ऐसी बातें कहनी पड़ेंगी और कुछ ऐसे नाम लेने पड़ेंगे जिन से परस्पर अधिक वैमनस्य उत्पन्न होने की सम्भावना है। हमारे देश में यथार्थ सेवा करने वाले आगे ही बहुत थोड़े हैं और उन थोड़ों में भी वैमनस्य उत्पन्न करने को मैं अपराध ही नहीं, पाप समझता हूं। मैं जानता हूं कि इस तरह चुप रहने से मैं एक बड़ी ग़लत फहमी का शिकार बनता हूं परन्तु विश्वासघात करने और देश सेवकों में वैमनस्य उत्पन्न कराने की अपेक्षा ग़लत फ़हमी का शिकार बनना कहीं अधिक अच्छा है।

आपका—

हरिश्चन्द्र

आर्य्यसमाज

वार्षिकोत्सव।

"सर्व साधारण की सेवा में प्रार्थना है कि आर्य्यसमाज हरदोई का ३० वां वार्षिकोत्सव ता० २१। २८। २९ सितम्बर १९१४ ई० तातील विजय दशमी को होना निश्चय हुआ है बाहर से पधारे हुए महात्माओं के व्याख्यान तथा भजन होंगे और उत्सव के साथ २ एक कानफरेन्स "नीच जातियों के उद्धार तथा सुधार; के लिये होगी। आशा है कि सन्यासी, महात्मा, और उपदेशक पधार कर कृतार्थ करेंगे॥

भवदीय—

लालताप्रसाद वर्मा समाज

हरदोई

प्रचार।

मटिंडू—ज़िला रोहतक में दयानन्द गुरु दीक्षा का मेला वैशाख उतरते पूर्णमासी को प्रत्येक वर्ष भरा करेगा ग्राम से मील भर दूर बङ्गल वाले कुए पर भरा करेगा ये मेला दो दिन भरा जायगा भोजन का प्रबन्ध गुरुकुल के उत्सव की तरह होगा। हलवाइयों की दूकानें होंगी और ढाबे वाले। उपदेशकों व भजनीकों का प्रबन्ध आर्य समाज मटिंडू करेगी इस मेले में ऐसे ढङ्ग से प्रचार होगा कि प्रत्येक मतावलबियों को लाभ पहुंचेगा। मटिंडू सांपला स्टेशन से ८ मील है सड़क पक्की है रोहने तक। रोहने से मटिंडू आध मील दूरी पर है सर्व आर्य भाइयों को योग्य है कि श्री १०८ दयानन्द सरस्वती जी के महत्व को बढ़ाने के लिये अवश्य मेले में आकर वैदिक धर्म का प्रचार सुनें।

सदानन्द उपदेशक

आर्य्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब लाहौर

नवीन समाज स्थापना

जिला बहराइच अन्तरगत कैसरगंज तहसील व उसके गिर्द के मोज़ों में पहिले से कुछ आर्यगण उपस्थित थे परन्तु उनकी कोई नियम बद्ध समाज न थी अक्तूबर महीने से (जमलार्जनपुर) में समाज की साप्ताहिक बैठक आरम्भ होगई। उसका फल यह हुआ कि समाज का मन्दिर बनना आरम्भ होगया ता० २६ जौलाई सन १९१४ ई० को उस का प्रवेश संस्कार हुआ और आर्यगण नियम बद्ध समाज बनानें के लिये उत्सुक हुए। कुल १२ सभासद व ९ सहायक निर्वाचित हुए। सर्व सम्मति से निम्न लिखित अधिकारी चुने गये

(१) बाबू गुरुप्रसाद दीवान प्रधान
(२) पं० रामप्रताप मिश्र उपप्रधान
(३) म० देवकली प्रसाद मन्त्री
(४) गयाप्रसाद उप मन्त्री
(५) ला० मिश्रीलाल जी कोषाध्यक्ष
(६) मु० रामआश्रयलाल पुस्तकाध्यक्ष। म० भगवान दीन व म० गोविन्दप्रसाद व० म० अयोध्याप्रसाद प्रतिष्ठित सभासद निश्चित हुये।

मन्दिर जिसकी लागत १२५) है बहुत जल्द सभा के नाम रजिस्टरी करा दी जाइगी।

गयाप्रसाद उपमन्त्री कैसरगंज

(जमलार्जुनपुर) ज़ि० बहराइच

(अवध)

पटियाले में अत्याचार।

सिनावा (ज़िला मुज़फ्फरगढ़) के आर्य समाज ने अपने २३ जुलाई के अधिवेशन में पटियाले के विपत्तिग्रस्त आर्यसमाजियों के साथ सहानूभूति प्रकाशित करते हुए पटियाला रियासत के कर्मचारियों की नियम विरुद्ध कार्यवाही पर शोक प्रकाशित किया।

हरयाने में उत्सव।

आर्यसमाज हरयाने का वार्षिकोत्सव २३, २४ जुलाई को हुआ। बड़े २ विद्वान पधारे हुए थे। श्री पं० पूर्णानन्द जी की अपील पर ४००) एकत्र हुए। वहां के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निवासी पं० तुलसीराम जी ने अपनी सारी जायदाद, जो लग भग ५ हज़ार रुपये की होगी समाज को दान देदी। श्री ला० देवराज जी ने भगवती पुत्री पाठशाला की कन्याओं को पारितोषिक वितरण किया।

पटियाले में अत्याचार

मुर्तिजापुर आर्य समाज ने अपने ८-५-१४ के अधिवेशन में उपर्युक्त प्रस्ताव पास करके म० रौनक राम व म० विश्वंभर दत्त जी के दुःख के वास्ते दुःख प्रगट किया। निम्न लिखित प्रस्ताव भी पास किये—

(१) महाराज पटियाला सिख हैं इस से यहाँ मुकदमा पटियाला रियासत में न होना चाहिये कारण कि यह मुकदमा सिक्ख पंथ से सम्बन्ध रखता है।

(२) महाराजा पटियाला अपने प्रथम ही घोषणा पत्र से प्रगट कर चुके हैं कि महाशय रौनकराम व म० विश्वम्भरदत्त जी दोनों सिक्ख पंथ के द्वेषी हैं इससे न्याय कोर्ट न्याय कैसे करेंगी कारण बरनाला महाशय महाराजा के घोषणा पत्र के बरखिलाफ और न्याय पंथ पकड़ के आपने नौकरी पर कायम रह सक्ते हैं कदापि ऐसा होना नहीं, और बरनाला कोर्ट को महाराजा के घोषणा पत्र का अनुकरण करना ही होगा।

(३) आर्य्यसमाज सरकार पंजाब से प्रार्थी है कि इस मुकदमें के वास्ते महाराजा पटियाला से मुकदमा अपने हाथ में लेकर न्याय प्रगट किया करें, और धार्मिक प्रजा को कितनी स्वतंत्रता है यह न्याय कर दिखला देवे ताकि पंथियों के पक्षपात भरे पक्ष कभी न चलें।

रियासत मैहर में वैदिक धर्म का प्रचार।

धार्मिक जगत में यह समाचार बड़े हर्ष के साथ सुना जायगा कि रियासत मैहर में सन्ध्या प्रचारणी सभा स्थापित हो गई है और इस समय तक उसके १९ सभासद् हो गये हैं। सभा की ओर से सन्ध्या पुस्तकें तथा वैदिक धर्म्म सम्बन्धी अन्य ट्रैक्स् धर्मार्थ बांटे जाते हैं। तारीख २६ जुलाई को बङ्गाली कायस्थ श्रीयुत सदानन्द जी रिलीविङ्ग स्टेशन मास्टर ई० आई० आर० का यज्ञोपवीत बड़े समारोह के साथ हुआ। संस्कारों के महत्व पर श्री बलदेव जी ने एक अत्युत्तम प्रभाव शाली व्याख्यान दिया उक्त बङ्गाली महाशय की उपस्थित सज्जनों का सत्कार पान इलायची तथा मिष्टान्न से किया गया। समस्त रियासत में इस संस्कार द्वारा जाग्रत हो गई है और लोगों के हृदयों में वैदिक धर्म्म का गौरव स्थापित हो चला है।

तारीख २९ जुलाई को श्रीमान् पं० सूर्य्यदत्त जी शर्म्मा अधिष्ठाता गुरुकुल होशङ्गाबाद मध्य प्रदेश तथा सम्पादक आर्य्य ज्ञानोदय का शुभागमन हुआ, और ता० ३० जौलाई को सत्य सनातन धर्म्म के विषय पर एक मनोहर और प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। यह व्याख्यान श्री बलदेव जी स्टेशन मास्टर के प्रबन्ध द्वारा स्टेशन पर हुआ था।

दूसरे दिन फिर शर्म्मा जी का व्याख्यान स्टेट आफिसर्स क्लब मैहर में हुआ यह व्याख्यान शिक्षा विषय पर था शर्म्मा जी ने शिक्षा का आदर्श पेश करते हुये जिस उत्तमता के साथ गुरुकुल शिक्षा, प्रणाली का महत्व स्थापित किया था उससे प्राचीन आर्य्यों का गौरव लोगों के समक्ष दर्श गया और हरएक पं०जी की योग्यता की प्रशंसा करने लगा

इस के पश्चात् श्री डयलू० वी० सर० दिसाई दीवान साहब महोदय (जो इस सभा के सभापति के आसन को सुशोभित करते थे) करतल ध्वनि में अपने आसन से उठे और एक गम्भीर और महत्व पूर्ण व्याख्यान दिया आपने शर्म्माजी का बल पूर्व्वक समर्थन करते हुये स्कूलों तथा कालिजों के शिक्षा पद्धति में धार्मिक शिक्षा को अति आवश्यकीय और उपयोगी प्रकाशित किया।

इस के पश्चात् मंत्री क्लब तथा पुरवासियों की ओर से एक दूसरे को धन्यवाद देकर करतल ध्वनि में सभा विसर्जन हुई।

हम अपने माननीय मंत्री क्लबको इस उत्सव की सफलयता पर बधाई देते हैं और सभापति श्रीमान् दीवान साहब महोदय की उदारता, योग्यता, धर्मपरायणता, सुजनता आदि सद्गुणों की प्रशंसा करते हुये कोटिशः धन्यवाद और बधाई देते हैं और परमात्मा से श्रीमान् के चिरायु होने और उत्तरोत्तर उच्च पद पर पहुंचने की प्रार्थना करते हैं।

वैदिक धर्म का सेवक
मन्त्री
सन्ध्या प्रचारिणी सभा
मैहर

——

श्री मान्यवरसंपादक जी

कृपा करके निम्न लिखित नोटिस को अपने अखबार में स्थान देकर कृतार्थ करें।

अनाथालय मुज़फ़रगढ़

एक मास का काल व्यतीत हुआ कि एक बालक जिसका नाम कन्हैया लाल है रँग काला है कोट अद्दू रेलवे स्टेशन पर बिना टिकट पकड़ा गया, आर्य्य समाज कोट अद्दू ने इस बालक को अनाथालय मु० गढ़ में भेज दिया है। इस से हालत पूछने पर पता लगा कि इस के माता पिता जीवित हैं, इसको पिता ने स्कूल में न जाने के कारण मारा था इस वास्ते यह लड़का घर से भाग आया है। अपने आपको वह पं० राम नारायण रेवाड़ी निवासी का पुत्र बतलाता है परन्तु अपने घर का पता नहीं बतला सकता कि वह किस महल्ला में है वह यह भी कहता है कि मेरा पिता सरकारी नौकर है परन्तु यह नहीं बतला सकता कि किस महकमे में नौकर है। इस वास्ते यदि किसी व्यक्ति को उस राम नारायण का पता हो तो उनको सूचना दे देवें कि वह अपने बालक को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ले जावें और उनके पता से हमें भी सूचना देवें। भवदीय

रामचन्द्र

प्रबंधकर्ता अनाथालय मु० गढ़

——

सेवा में माननीय सम्पादक जी सद्धर्म्म प्रचारक

नमस्ते

निम्न लिखित अपने पत्र में प्रकाशित करके कृतार्थ करें।

(१) अन्तरङ्ग सभा आर्य्य समाज लाहौर बच्छोवाली तिथी ६-८-१४ इस बात पर अत्यन्त शोक प्रकट करती है कि आर्य्य समाज के दो भद्र पुरुष म० रौनक राम तथा म० विशम्भर दत्त जी जो कि वे ज़ावता तौर पर रियासत पटियाला में गत दो मास से कारागार में डाले गये हैं उनको पटियाला पोलीस की ओर से अत्यन्त कष्ट दिये जा रहे हैं तथा इस समय तक उनपर कोई अभियोग नहीं चलाया गया।

(२) जो Press Communique इन पीड़ितों के बारे में पटियाला दरबार की ओर से प्रकाशित किया गया है इस सभा ने उसको अत्यन्त शोक के साथ पढ़ा है क्योंकि अभियोग के अभी ज़ेर समायत होने की अवस्था में पटियाला दरबार को कदापि उचित नथा कि इस प्रकार की एक तरफा मति का प्रकाश करता जिस से पीड़ितों को आय प्राप्ति में हानि की संभावना है।

(३) यह सभा पीड़ितों तथा उनके सम्बन्धियों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रगट करती है तथा उनको विश्वास दिलाती है कि आर्य्य जनता इस दुःख में हर प्रकार उनके साथ है।

(४) इन प्रस्तावों की प्रति भी जनाब वाइसराय साहिब लाट साहिब पंजाब महाराजा पटियाला पोलीटिकल एजन्ट फुलकयां आर्य्य प्र० निधि सभा पंजाब तथा आर्य्य डीफंस कमेटी और प्रेस को भेजी जावें

(५) अभि युक्तों की सहायतार्थ आर्य्य जनता से अपील की जावे

महर सिंह

१४। ८। १४

मन्त्री आर्य्य समाज

बच्छोवाली लाहौर

नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुल वृन्दावन में इस वर्ष २० नवीन ब्रह्मचारी प्रविष्ट होंगे प्रार्थना पत्र भेजने की अवधि कार्त्तिक मासान्त तक है नवीन ब्रह्मचारियों के प्रविष्ट कराने के इच्छुक महाशयों को अपने प्रार्थना पत्र अवधि के भीतर भेज देने चाहिये अवधि से बाहर आये हुये प्रार्थना पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा—प्रार्थना पत्र तथा नियमावली निम्न पते से मगावें

मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल वृन्दाबन

बृहद् हिन्दी प्रदर्शनी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागत कारिणी समिति ने एक बृहद् हिन्दी प्रदर्शनी करनी निश्चय की है। इस में हस्त लिखित पुस्तकें, चित्र द्वारा लिखित पुस्तकें सुन्दर अक्षरों और चित्रों से अलङ्कृत पुस्तकें, प्राचीन शिला लेख ताम्र पत्र सिक्के, मुद्रे तथा छापे, दिखाए जाएंगे। इस से हिन्दी को कितना लाभ होगा तथा तद्विषयक ज्ञान की कितनी वृद्धि होगी यह विज्ञ पाठक स्वयं ही विचार लेंगे। पर इस प्रदर्शनी को सर्वाङ्ग सफल करने के लिये यह आवश्यक है कि जहां २ उपरोक्त सामग्री हो उसकी सूचना समिति के कार्यालय में शीघ्र ही आ जाय। अतः सर्व साधारण से सविनय प्रार्थना है कि, वे कृपा करके जिन सज्जनों के पास उपरोक्त वस्तुएं हों उनके नाम तथा पते से और यदि सम्भव हो तो उन वस्तुओं के नाम से भी।

मंत्री,—स्वागतकारिणी समिति पञ्चम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रदर्शनी विभाग

चौक—लखनऊ को सूचित करें। उन के आने जाने का व्यय तथा सुरक्षित रखने का प्रबन्ध समिति करेगी।

देहली समाचार।

देहली के व्यापार पर युद्ध का प्रभाव।

वैसे तो भारतवर्ष के सभी व्यापार पर कुछ न कुछ युद्ध का प्रभाव अवश्य पड़ा है दियासलाई इत्यादि विदेशी वस्तुएं सभी महगी होगई हैं। किन्तु कपड़े के व्यापार पर जो प्रभाव पड़ रहा है उसको हम यहां पर बतलाना चाहते हैं। देहली के व्यापारियों और विलायत के व्योपारियों में यह नियम है कि विलायत के व्यापारी निश्चित तिथि से १ मास पश्चात तक माल भेज सकते हैं परन्तु यह नियम किसी अचानक विपत्ति के आपड़ने के समय का है अन्यथा निश्चित तिथि पर माल विलायत से भेज दिया जाता है। इस वर्ष युद्ध के कारण विलायत के व्यापारियों ने सरकार द्वारा यह प्रार्थना की है कि १मास के स्थान पर इस वर्ष माल दो मास की देरी से भेजा जायगा। जिस प्रकार कलकत्ता में "चेम्बर आफ़ कामर्स" के नाम से व्यापारियों की सभा है इसी भान्ति देहली में हिन्दुस्तानी मरकन्टाईल एसोसीऐशन के नाम से व्यापारियों की सभा है। विलायत के व्यपारियों की प्रेरणा से साहेब चीफ कमिश्नर देहली ने इस सभा को सूचना दी है कि माल भेजने की अवधि एक मास के स्थान पर दो मास कर दी जावे। इस पर "ऐसोसी ऐशन" की ओर से एक डिपुटेशन साहेब चीफ कमिश्नर की सेवा में गया और इस नियम का विरोध किया। किन्तु यदि कलकत्ता तथा बम्बई के व्यापारियों ने इसे स्वीकार कर लिया तो देहली को भी स्वीकार करना ही पड़ेगा। इसका परिणाम यह होगा कि जाड़े का कपड़ा दो मास की देरी से भारतवर्ष में आवेगा और उस समय तक जाड़ा व्यतीत भी हो चलेगा। इस से व्यापारियों का माल पड़ा रहेगा, और सर्व साधारण को कपड़े का कष्ट उठाना पड़ेगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक अनुकरणीय दान

देहली के सेठ लक्ष्मी नारायणजी ने ७००) आर्य्यसमाज देहली की समाज मन्दिर में वेदी बनवाने के लिये दान किया है। इस रुपये से समाज में एक सुन्दर वेदी बनादी जायगी। इस के अतिरिक्त श्री सेठ जी ने १२००) रुपया कन्या महाविद्यालय को प्रदान किया है सेठजी का यह उत्साह सराहनीय है।

रामलीला में गो मांस।

देहलीके कतिपय सज्जन यह शिकायत करते हैं कि यहां पर रामलीला जैसे मेले पर गोमांस का कबाब आदि देखा जाता है जो रामलीला जैसे पवित्र मेले के लिये कदापि उचित नहीं है। यदि यह बात सत्य है तो अवश्य महा अधर्म है और हम देहली की रामलीला के अधिकारियों से यह प्रार्थना किये बिना नहीं रह सकते कि आगामी रामलीला में इस का अवश्य अनुसन्धान किया जावे।

हिन्दी समाचार देहली।

हमें यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आर्टप्रिन्टिङ्ग वर्कस देहली के अध्यक्ष महाशय विजय दशमी से एक हिन्दी का साप्ताहिक पत्र निकालने का विचार कर रहे हैं। डिक्लेरेशन स्वीकार हो चुका है। पत्र का नाम "हिन्दी समाचार" निश्चय हुआ है।

आर्य्यों तथा ईसाइयों में शास्त्रार्थ।

देहली में काज़ी के हौज़ के गिरजा घर में आर्य्यों तथा ईसाईयों से विविध विषयों पर हर शुक्रवार को सायंकाल शास्त्रार्थ हुआ करता है। सभापति एक योरुपियन पादरी महाशय हुआ करते हैं। शास्त्रार्थ बड़ी शान्ति पूर्वक होता है और सैकड़ों हिन्दू, मुसलमान इत्यादि शास्त्रार्थ में आते तथा अपने धार्मिक विचारों को विस्तृत करते हैं।

योरप में महाभारत

जर्मनी का बैल्जियम पर पूरा अधिकार

नामूर पर गोला बारी

जापान और जर्मनी में युद्ध

आस्ट्रिया का पराजय

रूस की जीत

बैल्जियम और जर्मनी

अब यह निश्चित रीति से प्रकाशित होगया है कि जर्मनी ने बैल्जियम पर पूरा अधिकार जमा लिया है। बैल्जियम की राजधानी ब्रसल्स में जर्मनी का राज्य है, वहां से उठकर बैल्जियम के राजा उत्तरीय सीमा पर अनुवर्प चले गए हैं। ब्रसल्स में जर्मनी ने युद्ध का कर लगा दिया है जमनी की फौजें ब्रसल्स से आगे बढ़कर घैंट और ओस्टंड तक पहुंच गई हैं। औस्टैंड बैल्जियम की सामुद्रिक सीमा पर है। केवल लीज और नामूर के किले अभी वैसे ही डटे कहे जाते हैं। २१ की खबर है कि जर्मनी ने नैमूर के किले पर भी गोला बारी शुरू करदी है।

फ्रांस की ओर

जर्मनी आडिनार्डो के रास्ते से फ्राँस की ओर बढ़ रही है।

भावी युद्ध

पहिले अनुमान किया जाता था कि जर्मनी और फ्रांस की बड़ी मुठ भेड़ फ्रांस की सीमा पर होगी पर बैल्जियम की बाधा से अब वह लड़ाई सम्भवतः नामूर पर ही हो।

रूस और जर्मनी

इस सप्ताह रूस के साथ जर्मनी का जो युद्ध हुआ उसमें रूस विजयी रहा। पूर्वीय प्रशिया में रूस ने जर्मनी को मार भगाया। जर्मनी की फौजें लिक को छोड़कर चली आई हैं और अंगरप नदी को पार करने का यत्न कर रही हैं। जोहन्सबर्ग, और ल्सबर्ग और विलनबर्ग तीन गांव प्रशिया की उत्तरी सीमा पर हैं। खबर है कि रूसियों ने लेलिये हैं।

सर्विया की जीत।

छोटे होते हुए भी सर्विया ने युद्ध में आस्ट्रिया के खूब ही दांत खट्टे किये हैं। आस्ट्रिया ने ड्रिना में पूरे पराजय को स्वयं माना है। शबाज़ आस्ट्रिया और सर्विया का सीमा पर सर्विया का नगर है। वहां से आस्ट्रिया की फौजों को भगाकर सर्विया ने अपना सारा देश शत्रु से खाली कर लिया है। इस युद्ध में सर्विया ने ४५६० कैदी ५३ तोपें, और बहुत बारूद पाया है। अब सर्विया सेवनदी को पार करके हंग्री को घेरने की तय्यारी कर रहा है। आस्ट्रिया वालों का कथन है कि रूस के साथ युद्ध करने के लिये हमने अपनी फौजों को पीछे बुला लिया है। इस समय सर्विया का ध्यान न करके हम रूस के साथ लड़ेंगे।

जापान और जर्मनी में युद्ध।

जापान ने संतोष जनक उत्तर न पाने पर जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करदी है। कि आओ चाओ पर जापानी तोपों की गोला बारी आरम्भ हो गई है।

वर्तमान स्थिति।

प्रेस यूरो ने आघोषित किया है कि याद रखना चाहिये कि सब समाचार हमारी ओर से ही आ रहे हैं। शत्रु के जो थोड़े से समाचार आते हैं उनसे पता लगता है कि शत्रु ने पूर्व और पश्चिममें विजय पायाहै। पर फ्रांस असलेस में अच्छा विजय पा रहा है। पूर्व में रूसी फौजें पैर जमा रही हैं। पर भावी युद्ध को ध्यान में रखकर ये बहुत ही छोटी लड़ाइयां हैं। सामरिक दृष्टि से अपने पक्ष की स्थिति बहुत अच्छी है

इटली में रणोत्साह

इटली और आस्ट्रिया में खिचाव बढ़ता जाताहै, आस्ट्रियाने इटलीपर एड्रियाटिक समुद्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में मित्रत्रय (रूस, इंग्लैंड, फ्रांस) को जहाज़ी सुभीता देने का दोष लगाया है, इटली में मित्र त्रय के साथ मिलकर आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध करने का जोश भड़क रहा है

टर्की सुरक्षित है

फ्रांस और इंग्लैंड ने टर्की को विश्वास दिया है कि हमारी तुम्हें छेड़ने की कोई इच्छा नहीं है, रूस ने भी ऐसा ही वचन दिया है

सच्ची ख़बरों को कमी।

कलकत्ते के इंडियन डेली न्यूज़ की शिकायत है कि सच्ची वस्तुतः ख़बरों के न आने से लोगों में तरह तरह की अफ़वाहें फैल रही हैं।

जर्मनी में हिन्दुस्थानी विद्यार्थी

जर्मनी में जो हिन्दुस्थानी विद्यार्थी हैं, उनकी सहायता के लिये ब्रिटिश सरकार पूरा प्रबन्ध कररही है। भारत मन्त्री ने ३०००) रुपये उनकी सहायता के लिये स्वीकार किए हैं और जर्मनी में अमरीका के राजदूत को हिन्दुस्थानियों की सहायता करने के लिये लिखा है॥

अङ्ग्रेज़ी जहाज़ डूबे।

हयोड़ और सिटी आव विचस्टर नामी दो अंग्रेज़ी जहाज जर्मनों ने पकड़ कर डुबादिए

फ्रांसीसी जासूस की लकड़ी में आवश्यक काग़ज़ात

वार्लन से समाचार आया है कि डोसल डोरफ के निकट फ्रोक्स फील्ड में एक लड़का जो लकड़ी टाँग लगाये हुये था फ्रांस का जासूस होने की शुबह में पकड़ लिया गया। तलाशी होने पर उसकी लकड़ी टांग में से आवश्यक फौज़ी काग़ज़ात और पैदल सेना की बन्दूकों में काम आने वाली गोलियां मिलीं जो कि उसने वारकों में से चुराई थीं। परन्तु इसका पक्का समाचार अभी तक ठीक नहीं मालूम हुआ। फ्रांस की सरकारी ख़बर है कि लीज़ के किले अबतक जर्मन सेनाओं का सामना कर रहे हैं। ब्रूसेल्स की खबर है कि २० अगस्त तक लीज के दुर्ग सामना कर रहे थे।

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार के प्रोफैसर साठे जी M. A. कृत

सचित्र।

विकासवाद (डार्विन की थियरी) की पुस्तक हिन्दी भाषा में छपकर तैयार है।

भाषा अत्यन्त सरल और मधुर पृष्ठ संख्या २०×२७१ साईज़ बड़ा चित्र २९

मूल्य केवल २)

श्रीयुत प्रो० विनयकुमार सरकार एम. ए. लिखते हैं:—बी. ए. और एफ. ए. के विद्यार्थियों को यह पुस्तक टेक्स्ट बुक (Text Book) के तौर पर पढ़ना चाहिये पुस्तक की लेखन शैली बहुत अच्छी है और—सायन्स से परिचित मनुष्य भी इसे बड़े प्रेम से पढ़ते हैं।

श्री साहित्याचार्य पं० रामावतार पांडये एम० ए० लिखते हैं:—इस पुस्तक से हिंदी भाषा की आदरणीय वृद्धि हुई है। हिन्दी के प्रत्येक अभिमानी को इससे सन्तोष होगा। पुस्तक की कीमत बहुत नहीं है।"

मैनेजर, सद्धर्म्म प्रचारक पत्र, देहली

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवा का सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही ज़िद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देने की स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफ्त मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़ से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री प्रो० बालकृष्ण एम० ए०

की रचित

अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये

जो पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखाने वालों से ¼ कीमत ली जावेगी।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है))
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं ? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज प्रणाली छप रही है। ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार।

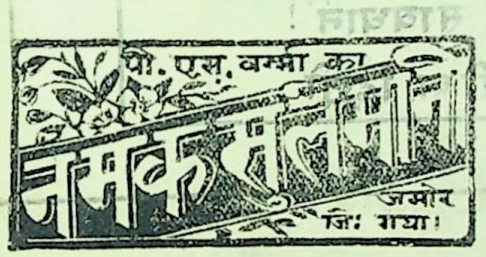

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना है जो संग्रहणी, अतिसार, बादीका दर्द बवासीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया।

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उनके श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥।)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुण्डक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥।)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।-)
प्रार्थना पुस्तक -)
ओंकार की उपासना -)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश -)
वेद और महाभारत के उपदेश -)
वेद, मनु और गीता के उपदेश -)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द =)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालें समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता - मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अजीर्ण वो अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचाने वाले रसों के घटने बढ़ने वा बिकार से अजीर्ण रोग होता है; जिससे यह लक्षण हुआ करते हैं। खाने के बाद पेट भारी जान पड़ना, पेटमें वायु होना, जी मिचलाना खट्टे वा व्यर्थ डकार आना, छाती में जलन होना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक जब तक खाना हजम की थैलीमें रहता है और पाचन क्रिया कठिनता से होती रहती है। जब यह अनपचा खाना अड़तियों में उतर जाता है, तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है, वो दस्त की चेष्टा होती है, दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है, कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। ये सब हालतें कभी कम कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है अन्त को असाध्य हो जाता है।

खाना हजम कराने वो अजीर्णके दोषोंको मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया के ऐसी बनी हुई है। पन्द्रह रोज के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १) एक रुपया चार आने। डाक म० १ से ४ शीशी तक ।-) पांच आने।

डा: एस.के वर्म्मन।
५, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट।
कलकत्ता।

न० ८१

दवा सब जगह बिकती हैं। नकली दवा से सावधान!

एजन्ट, बाबूराम जैनी एन्ड कंपनी बड़ा दरीबा दिल्ली

भजनों का सर्वोपरि आनन्द

यदि आप सचमुच ही लेना चाहते हैं तो हमारे यहां से हारमोनियम अवश्य ही मंगाइये।

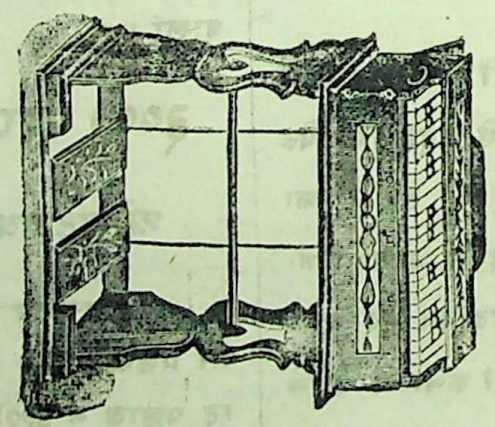

असली हारमोनियम।

देखनेमें बहुत सुन्दर टिकनेमें बड़े मजबूत बजनेमें ऐसे सुरीले हैं कि जिनका स्वर सुनते ही प्राण प्रसन्न हो जाते हैं अच्छेपन की गारन्टी देंगे मिंगलरीड ३ स्टाप १३) १५) १८ २०) डबलरीड ५ स्टाप ३० ३३) ४०) ४५) तक पैर से बजाने वाले भी मिलेंगे दाम ८०) १००) १२५) स्टेशन का नाम लिखकर आर्डरके साथ चौथाई रु० प्रथम भेजिये।

सुख से सोइये।

आजकल मच्छर तथा खटमलों के कारण सोने में बड़ी तकलीफ होती है इस दुख से बचने के लिये हमने बड़ी सुन्दर मसहरी बनाया है मसहरी मंगाकर सुख की नींद सोइये मूल्य २।) ३) ४) ५) से १-) तक।

फेन्सी न्यू रिष्टवाच।

असली निकेल केस छोटा साइज अति उत्तम ठीक समय रक्षक मजबूत हाथ में बांधने का बिलायती चमड़ा समेत मूल्य १ न० ५) २ नं० ४।) ३ नं० ३॥) असली चांदी ६) डा० म० ।) छः पैसे के टिकट भेजकर "इटालियन भाग्यपरीक्षा" नाम की पुस्तक मुफ्त मंगाइये।

दुकानदारों को माल बहुत किफायत से भेजा जाता है।

G. M. SHARMA & Co.
Post Box No 288 CALCUTTA

जी० एम० शर्मा एन्ड को०
पोष्ट बक्स नं० २८८ कलकत्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

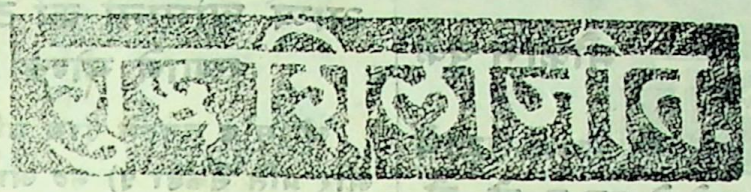

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, विशेषतः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

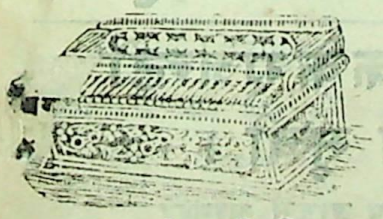

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने को सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ▰) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ▰)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पो०

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य ननर्सरी

डाक कमतौल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल्य २) इस ग्रन्थ में कौरवां पांडव की लड़ाई नीती, धर्म्म चारों वरणां के धर्म्म वर्णन हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४८० पृष्ठ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पास पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनिये फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला बनारससिटी

महाशयजो

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ▰) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २४ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द--जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है।। **ब्राह्मी बूँटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगतविख्यात जगत प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्राह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽशु संस्मरेत्
वर्षां स्मृतिप्रदाकष्टपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलबवाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूंटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, वहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ॥) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

पीतल के बिरूच

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन॥।) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन वाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

पताः—भारत हितैषी—कम्पनी, अलीगढ़ सिटी

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री अलीगढ़ सिटी. यू. पी.

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No L. 807.

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | २१ भाद्रपद स० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ९१] ता० ५ सितम्बर १९१४ | संख्या २१ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य	१।।)
प्रचारक के ग्राहकों से	१।)
सजिल्द का मूल्य	१।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत आनते हैं। इस पुस्तक में फ्र अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र के इतिहास की आलोचना लाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ।) प्र० ०
तीन मास " " " " -) "
छः " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़पत्र की बंटाई

१)पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ नहीं बंट सका।

२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार से चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि-प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर दीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक पो० देहली,

CC-0. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवश्यकता है ।

आर्य्य पुत्री पाठशाला के लिये एक अध्यापिका की आवश्यकता है जो पांचवीं श्रेणी तक प्रत्येक विषय पढ़ाने की योग्यता रखती हो तथा सीने और काढनेके काम से भी परिचित हो । यदि हारमोनियम बजाना तथा उपदेश का काम भी कर सकती हो तो उस पर विशेष ध्यान दिया जायगा । वेतन योग्यतानुसार १५) से २०) मासिक तक दी जावेगी और कार्य्य उत्तम होने पर प्रति वर्ष वेतन वृद्धि की जायगी । प्रार्थनापत्र प्रशंसा पत्रों सहित १५-९-१४ तक आने चाहियें । यदि कोई बात पूछनी हो तो पत्र व्योहार करें ।

ला० किसुनदयाल मन्त्री
आर्य्यसमाज नौशहरा पनवां अमृतसर

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र ।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है । मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)
नमूना बिना मूल्य ।
पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

विज्ञापन ।

श्रीमती मनोरमादेवी धर्मपत्नी पं० उमादयालु मिश्र डिपटी पोस्टमास्टर अजमगढ़ एक भजनों का पुस्तक ऐसा बनाना चाहती हैं । जिसमें प्रत्येक संस्कार तथा अवसर के अच्छे २ गीत हों । भजन रचियता महाशयों से प्रार्थना है कि कम से कम पाँच २ गीत उपर्युक्त उद्देश्य पूर्त्यर्थ बनाकर देवी जीकी सेवा में भेजें जिन महाशयों के भजन सब से उत्तम तथा बहु संख्या में होंगे उन्हें देवी जीकी ओर से एक स्वर्ण पदक दिया जायगा जिसका मूल्य देवीजीने इस सभा में भेज दिया है पदक पाने का कौन अधिकारी है इसका निर्णय सार्वदेशिक सभा तथा कतिपय आर्य्यप्रतिनिधिसभाओं के प्रधान तथा मंत्री करेंगे ।

नारायणप्रसाद
मन्त्री
सार्वदेशिक सभा

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये ।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली ।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० छाप =)]
थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

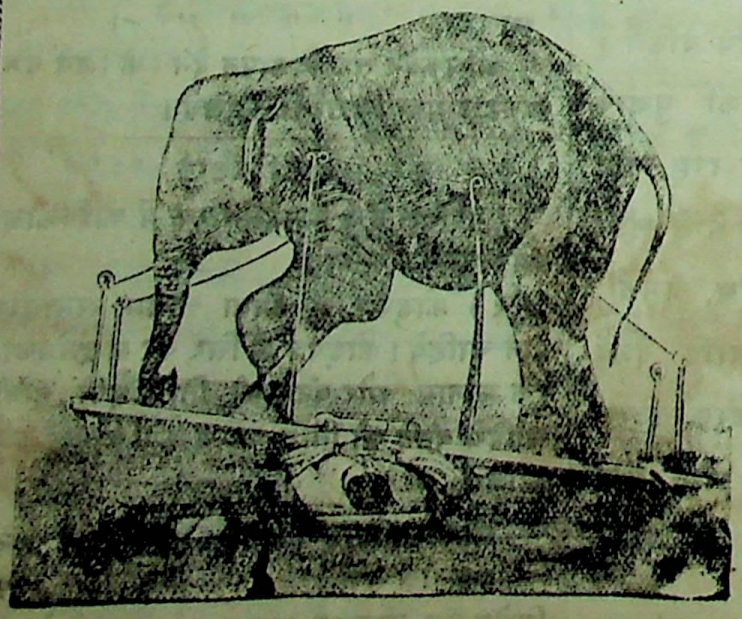

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ।।।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक का निवेदन

प्रचारक परिवार के लिये नया समाचार यह है कि गत तीन सप्ताहों से सद्धर्मप्रचारक के सम्पादन का भार मेरे ऊपर है । श्री० पं० हरिश्चन्द्रजी विद्यालंकार आगामी विजयादशमी से आर्य भाषा साहित्य में एकनया रत्न प्रकाशित करने वाले हैं । ऐसी अवस्थामें गुरुकुल में रहकर और वहां की सेवा करते हुए मैं प्रचारक का भी सम्पादन करूंगा । सम्पादक भिन्न होगा, किन्तु पत्र वही रहेगा, पत्रकी नीति वही पुरानी रहेगी, पत्र का मूल मन्त्र भी वही रहेगा जो आज से २४ वर्ष पहले था । वह मूल मन्त्र है ।

' सत्यमेव जयते नानृतम्,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदन्न धीराः'

'सीस जाय पर धर्म न जाई'

प्रचारक परिवार अवने युवक किन्तु फिर भी पुराने सेवक की सेवा से अपरिचित नहीं है । सम्पादक को पूरी आशा है कि आर्य जनता और हिन्दी संसार की जैसी कृपा प्रचारक पर आज से एक वर्ष पूर्वतक की अब भी वैसी ही रहेगी सम्पादक भी सेवा में कोई कसर न रक्खेगा। ऐसा प्रबन्ध किया गया है जिससे पत्र में नए नए समाचार भी प्रकाशित हों । दिल्ली में इसके लिये बहुत उत्तम प्रबन्ध होगया है । प्रचारक के प्रेमी निश्शङ्क रहें, और सेवक की सेवा की प्रतीक्षा करें ।

इन्द्र
सम्पादक

संसार की गति

भारतीय सेनायें योरप को

यह सुनकर सारे भारत वासी प्रसन्न होरहे हैं, कि भारतवर्ष से बहुत सी सेनायें योरपियन युद्ध में भाग लेने के लिये जारही हैं । भारतवर्ष जिस साम्राज्य का भाग है, उसकी रक्षा में भाग लेना उसका कर्तव्य है । जब इंग्लैन्ड लड़रहा है, तब भारतवर्ष भी लड़ेगा । वह कृतघ्न न होगा । इसमें किसे सन्देह है कि यदि इस समय इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञ भारतवर्ष की याद भुलादेते और भारतीय सेना को यह अवसर न देते कि वह भी साम्राज्य के प्रति अपने कर्तव्य को पालन करे, तो बड़ी निराशा होती। भारत की शेष प्रजा से शारीरिक सहायता नहीं ली जाती और उन्हें लड़ने को अवसर नहीं दिया जाता, इसीसे थोड़ी बहुत उदासी छा रही है । भारत की सरकार को चाहिये कि वह प्रजा की इस इच्छा को इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञों तक पहुचादें । साम्राज्य की बागडोर जिनके हाथ में है, उन्हें चाहिये कि वे उसे एक धागे में परोने का यत्न करें । एक से दूसरे को नीचा न समझा जाय । किन्तु खैर, भारतीय सेना का जाना भी अच्छा है । जब युद्ध चलना ही है, और संसार की कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती, तब भारत की सेना का उसमें भाग लेना उचित ही प्रतीत होता है । हम अन्त हृदय से भारतीय भइयों को आशीर्वाद देते हैं, उनकी मङ्गल कामना करते हैं । परमात्मा से हमारी प्रार्थना है कि वह भारतीय सिपाहीयों को ऐसी शक्ति दे जिससे वे योरपियन सिपाहियों के बीच में अपना गौरव स्थापित करसकें और संसार को दिखा सकें, कि वीरता का सम्बन्ध किसी विशेष रंग के साथ नहीं है, और कि पुराने आर्य्यों का रुधिर अभी ठंडा नहीं पड़गया ।

महात्मा मुंशीरामजी का स्वास्थ्य

'हमारे मन कुछ और है, ईश्वर के मन और" महात्माजीने विचार कियाथा कि क्वेटे में तीन महीने तक बैठकर स्वास्थ्य बनायेंगे । थोड़े दिन रहने के पीछे दिल्ली बड़ यत्न के युद्ध में गवाही देने के लिये जानापड़ा, वहां से लौटकर फिर आये । अभी क्वेटा में १५ दिन भी आराम न मिला था कि एक सामाजिक कार्य के लिये लाहौरको भागना पड़ा । लाहौरने स्वास्थ्य की सारी कमाई नष्ट करदी । कोई १० दिन बाहिर रह कर आप फिर क्वेटे आये । अबके ऋतु में ही कुछ परिवर्तन होगया । वह अनुकूलता नहीं रही । इस समय स्वास्थ्य का वही हाल है, जो क्वेटा आने के समय था । इस लिये अब महात्माजी ने निश्चय किया है, कि शिमले आदि जाना छोड़ कर सीधे गुरुकुल पहुंचेंगे, और जबतक सम्भव न होगा, वहीं आराम करेंगे । जब प्रोग्राम में कोई परिवर्तन होगा, तब सूचना दी जायगी ।

सभ्यता और जङ्गलीपन

सभ्यता और जंगलीपन में क्या भेद है ? मनुष्यता का आदर सभ्यता कहाती है । जो जाति मनुष्यता का आदर नहीं करना जानती, वह विद्या धन और मान के होते हुए भी असभ्य ही है । योरप सारा सभ्य है, किन्तु हम एशिया वासी उनकी सभ्यता का नाम सभ्यता कैसे रखें ? जर्मनी ने बेचारे निरपराधी बैलजियम पर धावा किया, उसके नगरों से वसूली की, उसके धन को अपने काबूकिया किन्तु इतने पर भी शान्ती नहीं हुई । अब समाचार आया है कि किसी बात से नाराज़ होकर जर्मन फ़ौजने बैल्जियमका लोवेन नामक नगर जलादिया । पुराना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गिर्जा, पुराना कालेज और पुराने सब मकानात जलाकर राख करदिये। इसके अतिरिक्त और भी न जाने कितने अत्याचार इस युद्ध में होरहे हैं। फ्रांस की सरकार की शिकायत है कि जर्मनी की सेनायें जङ्गलीपन से काम लेती है। उधर साथ ही यह भी घोषणा है कि आगेसे फ्रांस जर्मनीके जिन सिपाहियोंको कैदी बनायगा, उन्हें केवल इतना ही आराम होगा जिसमें वे जीसकें। दूसरी ओर रूस की सेनायें जर्मनी में बढ़ती आरही हैं। जर्मनी की शिकायत है कि रूस के सिपाही बड़ी सख्ती से काम लेते हैं। इन सारी शिकायतोंमें सच झूठ जुदा जुदा करना अभी कठिन है, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि शिकायतों का स्थान अवश्य है। सभ्यता ने अभी संसार को कुछ नहीं सिखाया। सिखाया है तो यह कि नाम सदा परमात्मा का लेना, और काम सदा वह करना जो जी में आवे। परमात्मा सभ्यतासे बचावे।

लोक मान्य तिलक और युद्ध

लोक मान्य तिलक जबसे कैद से छूट कर आये हैं, पुलिस की मक्खियों ने उनके चारों ओर अपना छत्ता बनालिया है। कोई पुरुष उनसे मिलने जाय तो उसका नाम लिखलिया जाता है। मि० तिलक बिना अङ्ग रक्षक पुलिस के कहीं जाने नहीं पाते। नं० ५० के चोर की तरह पुलिस उनके पीछे पीछे भागी फिरती है। ऐसी अवस्थामें मि०तिलककी उदारता की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है, क्योंकि गणपति उत्सव पर व्याख्यान देते हुए आपने लोगों को इस युद्ध में इंग्लैण्ड की सहायता देने की प्रेरणा थी। आपने कहा कि सारी भारतीय प्रजा का कर्तव्य है कि वह सरकार को सहायता करे।। एक ओर पुलिस के संकुचित विचार और दूसरी ओर मि० तिलक की उदारता, दोनों में परस्पर भेद स्पष्ट हैं।

श्री पँ० पूर्णानँद जी के लेख

कई सप्ताहों से हमारे पाठक पं० पूर्णानन्द जी के लेखों को पढ़ रहे होंगे। पण्डित जी का पुराना अनुभव, और युवक जोश उन लेखों के उपयोगी होने में प्रमाण हैं। जिस समय आर्य समाज अपनी शैशव में था, पण्डित जी तब से उसमें कार्य कर रहे हैं। आपकी दी हुई कई सम्मतियां बहुत मूल्य वाली हैं। बीच बीच में अधिकांश ऐसी शिक्षाओं का है, जो आर्य्य समाज की मानी हुई हैं, और जिन्हें हम सत्यार्थ-प्रकाश में भी पा सकते हैं। उनमें कोई नवीनता नहीं है, नवीनता है पण्डित जी के अपने अनुभवों के समावेश में। हमें पूरी आशा है कि आर्य्य सज्जन और आर्य-समाजें इन लेखों को ध्यान से पढ़कर शिक्षा ग्रहण करेंगे, साथ ही पंडित जी से हमारी प्रार्थना यह है कि वे जहां तक हो सके लेखों में नई नई बातों या नई सलाहें ही लिखा करे। साधारण बातों के विस्तार से असली बातें छुप जाती हैं, और पहले से ही विदित बातें अधिक विस्तृत हो जाती हैं।

दिल्ली का षड़यन्त्र मुकद्दमा

१ सितम्बर के दिन दिल्ली षड़यन्त्र वाले मुकद्दमे में सरकारी वकील मि० ब्राडवे का अन्तिम भाषण हुआ। पीछे से जज महाशय ने असेसरों को मुकद्दमा समझाया। असेसरों ने विचार के अनन्तर निम्नलिखित फैसला दिया।

षड़यन्त्र के विषय में मि० उमराव मिर्ज़ा ने कहा कि दीनानाथ ने जैसे षड़यन्त्र की बात कही है वह वस्तुतः ठीक थी, और उसका उद्देश्य हत्या द्वारा भारत से वृटिश राज्य को उठादेना था। लाहौर की हत्या में इसी उद्देश्य से कार्य किया गया था। हनवन्त सहाय, मन्नूलाल, और रघुवर शर्म्मा के सिवा सब षड़यन्त्र के हिस्सेदार थे।

मि० विशीरुद्दीन ने उपर्युक्त फैसले से सहमति प्रकट की।

राय नत्थूमल उमराव मिर्ज़ा से पहली बात पर सहमत थे। उनकी राय थी कि बलराज, हनवन्त सहाय, मनुलाल रघुवर शर्म्मा और रामलाल को षड़यन्त्र का पता न था। वसन्तकुमार अमीरचन्द, अवधबिहारी, बालमुकुन्द चरणदास, और खुशीराम षड़यन्त्र के भागी थे। उनकी राय की चरण राम और खुशीराम पर दया दिखाई जानी चाहिये, क्योंकि वे नहीं जानते थे कि वे कितना अपराध कर रहे हैं।

उड़ाने वाली वस्तु रखने के मुकद्दमे के विषय में मि० उमराव मिर्ज़ा ने कहा कि बम की टोपी मा० अमीरचन्द के घर प्रेम धाम में पाई गई थी और अमीरचन्द ने सबकुछ जानते हुए उसे बुरे प्रयोजन से अपने घर में रक्खा। अवधबिहारी ने अपराध में सहायता दी।

मि० विशीरुद्दीन अवधबिहारी के विषय को छोड़कर अन्यत्र सहमत थे।

राय नत्थूराम उमराव मिर्ज़ा से सहमत थे।

जज ने कहा कि वे ५ सितम्बर को फैसला सुनायंगे।

आवश्यकता।

'विजय' पत्र के लिये सम्पादकीय विभाग में किसी ऐसे पुरुष की आवश्यकता है जो इंग्रेज़ी से भाषा में अनुवाद करने के अतिरिक्त प्रूफ़रीडरी का काम अच्छी तरह से कर सके। गुजराती, बंगाली, मराठी, भाषा के किसी एक में के जानकार को पहिला अवसर दिया जायगा। वेतन ३०) से ३५) मासिक तक दिया जायगा।

प्रबन्धकर्ता

विजय,

देहली।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योरप में महाभारत

जर्मनी की क्रूरता

नामूर के किले ले लिये

रूस ने ४००० आस्ट्रियन कैद किये

उनकी १३ तोपें छीन लीं।

जर्मनों की क्रूरता।

लोवेन में लोगों के बार बार मना करने पर भी जर्मनों ने सब पुरुषों को कैद कर लिया है और सब स्त्रियों को रेल में बैठा कर न मालूम कहां भेज दिया। इसके बाद उन्हों ने सारा शहर जला डाला। इसमें एक बहुत ही सुन्दर गिरजा घर, युनिवर्सिटी और पुस्तकालय था। बेलजियमका विद्या पीठ ४५ हजार मनुष्यों का निवास स्थान, यह नगर आज केवल भस्म का ढेर रह गया है।

अत्याचार करना नीति है।

अब धीरे धीरे इस बात के प्रमाण मिल रहे हैं कि, शत्रु देश के अधिवासियों पर अत्याचार करना जर्मनों की सैनिक नीतिका एक अङ्ग है। जर्मन सैना जिस प्रदेश में अग्रसर होती है यहां अत्याचार अधिक होता है और जहां जर्मनी का अधिकार जम जाता है, बहां अत्याचार बहुत ही कम होता है इस बात से भी इस नीतिका पता चलता है।

अत्या चार गोपन

पेरिस में सरकारी प्रेस ब्यूरो ने प्रकाशित किया है कि, जर्मन अत्याचारों की कहानियां प्रकाश करना बहुत ही अनुचित है। क्योंकि, इससे उस प्रदेश के लोगों में भागा भाग होने लगती है जिधर जर्मन सेना अग्रसर होती है। और जरमनों की तो यह नीति ही है कि, भगोड़े सड़कों पर जमा होकर फ्रेंच सेना के मार्ग में विघ्न उपस्थित करें।

भयङ्कर साहस।

कल ब्रिटिश बेड़े का जरमन जहाजों पर आक्रमण करना भयङ्कर साहस का काम कहा जाता है। क्योंकि जहां समुद्र सुरंगो से भरा था और उसका पता सिर्फ जर्मनों को ही था।

हानी स्वीकार।

कोपेन हेजेन, ३० अगस्त। जर्मन स्वीकार करते हैं कि, ब्रिटिश के जहाजों ने "मेज" "कीज़न" और "एरियानी" नामक क्रूजर और "वी १८७" विनाशक जहाज़ डुबा दिया विनाशक बेड़े का कमांडर मारा गया।

समुद्री युद्ध के कैदी।

जो सैनिक समुद्री युद्ध में जर्मनो से लड़े थे, वे हारविच में वापिस आ गये हैं। लोगों ने उनके पहुंचने पर हर्ष ध्वनि की। वे कहते हैं कि, कुहासे के सबब दूरका सूझता नहीं था, इसी से जर्मन जहाज़ हमारे जाल में फंसे। आठ घण्टे लड़ाई होती रही।

हेलिगो लैण्ड के समुद्री युद्ध में पकड़े हुए जरमन कैदी भी हारविच पहुंच गये हैं। उनके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया जाता है, इससे वे भी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। वे कहते हैं कि, ब्रिटिश तोपों का निशाना बहुत ही ठीक हुआ करता था और गोले भयङ्कर वेग से गिरते थे। जमन लड़ाऊ जहाजों पर के अधिकांश जर्मन मर गये।

बोरों से शिक्षा

युद्ध क्षेत्र से एक एजेण्ट लिखता है कि शत्रु की गोलियों से आत्म रक्षा करना हमने बोरों से सीखा। जब जरमन दल बांध कर आते थे, तब तो हमारे गोले उनके लगते ही थे। पर जब वे फैल जाते थे, तब हमारे अफ़सर अपने निशाने बाजों से कह देते थे कि तुम अपनी खुशी से चाहे जिसे निशाना बनाओ। यह भी हमने भाई बोर से सीखा।

नहीं जानते शत्रु कौन है?

हमारे सिपाहियों से जरमन कैदियों ने कहा कि, हम तो यह जानते नहीं थे कि, हम लोग अङ्गरेजों से लड़ रहे हैं। हमारे अफसरों ने कहा था कि, शत्रु रूसी हैं।

रूस और आष्ट्रिया

लबलिन में घमासान लड़ाई हो रही है। कीलस में जो आस्ट्रियन सेना इकट्ठी हुई थी वह जल्दी जल्दी विस्चुला नदी पार कर अपने भाइयों के सहायतार्थ लेम वग जा रही है। पोडनाजो में रूसियों ने शत्रु के तीन हजार सिपाही मारे तथा जी लोटाय लिया और टोमा क्रेफ में उन्हा ने १५ वेहगेरियन डिवीजन को हराया।

रूसी समस्त सीमा पर आक्रमण कर रहे हैं। लेम्बर्ग में रूसियों को विशेष सफलता प्राप्त हुई है। वहां उन्होंने चार हज़ार आस्ट्रियनों को कैद कर लिया है और १३ तोपें छीन ली हैं।

कटारोपर गोले।

फ्रेञ्च, ब्रिटिश और माण्टिनीग्र सेनाओं ने मिलकर कटारोपर गोले बरसाये। छ घण्टो में दो किले ज़मीनदोस्त हुए। चरसो टापू से एक आस्ट्रियन बेड़े ने निकल कर हमला करना चाहा था, पर भाग गया।

सँयुक्त जल सेना।

प्रेस ब्यूरो कहता है कि, भूमध्यसागर में ब्रिटिश और फ्रेञ्च जल सेनाओं के ऐडमिरल, बूडा ला पेरियर बनाये गये हैं। ब्रिटिश जलसेना के ऐडमिरल सर ए० बकले भूमध्य सागर से इङ्गलैण्ड चले गये। जरमन क्रूजर "गावेन" और "ब्रेसला" के सम्बन्ध में सर मिलने ने जो काररवाई की थी उस पर जल सेनाविभाग में विचार किया गया और वह मंजूर की गयी।

टूरनाई की लड़ाई

टूरनाई में ब्रिटिश पैदल फौज के सात हज़ार जवान, जिन के पास दो तोपें भी थीं, सहायता की अपेक्षा कर रहे थे। इन पर पांच हजार जर्मन घुड़सवारों नेहमला किया। कई घण्टा तक अंग्रेजों ने दुश्मनों को पास नहीं पटकने दिया और उन के बहुत सिपाही मारे। पर अन्त में बचे हुए कोई तीन सौ अङ्गरेज़ सिपाही, जिन में अधिकाँश घायल थे, बड़े ढङ्ग से कंब्राई चले गये।

कोनिग्सबर्ग घिर गया।

सरकारी तौर पर प्रकाशित हुआ है कि, कोनिग्सबर्ग घिर गया है थार्न और ग्राउण्डेज किलों के तोपख़ाने भी पूर्वी प्रशिया की लड़ाई में शामिल हुए हैं।

एटबर्ग ३० अगस्त—सरकारी तौर पर प्रकाशित हुई कि जरमन सेना धीरे २ हबाई जा रही है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मदद पहुंचा रहे हैं ।

ऐरटवप प्रदेश में यह प्रकार विशेष दिखाई दे रहा है, लिम्बर्ग का एक भाग खाली भी हो गया है । कल रात को जर्मन सैनिकों की १६० ट्रेनें दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर गयीं। इन में एक आर्मीकोर और पूरा सामान था। कहते हैं, रूस का आगे बढ़ना ही इसका कारण है। ब्रूशल्स में भी जर्मनों की संख्या बहुत कम है।

जेपलिन का अन्त ।

रूसी पोलैण्ड के लावा नगर पर एक जेपलिन हवाई जहाज़ ने गोले बरसाये थे। रूसी सेना ने उसे गोला मारकर गिराया, और आठ आदमी पकड़े गये । जल्दी वार करने वाली दो तोपें और कुछ बारूद भी रूसियों के हाथ लगी।

दोनों थक गये ।

पेरिस में एक कम्यूनिक निकला है कि. सोमी और बीसजेस सीमा पर कल कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ । मालूम होता है, जर्मन सेना की गति मन्द हो गयी है। इसका कारण दोनों सेनाओं की विशेषतः जर्मनी की, भयंकर हानि हुई है।

नामूर के किले ले लिये ।

एक बेलजियन अफसर ने प्रेसब्यूरो को खबर दी है कि, नामूर के किले जरमनों का आक्रमण नहीं सह सकते थे जिन के पास ११ इंचीं हाविटजर तोपों की ३० बेटरियां थीं।

चथे बेलजियम डिवीज़न ने नगर की रक्षा की और उसके हारने के पहले बेलजियमों की मैशीन तोपों ने जरमनों का भयंकर लोकक्षय किया। जरमन लोग तीन तीन (पांतों को) व्यूहों को चौरकर आक्रमण करते और पूरा निशाना मारते थे।

समुद्री लड़ाई का व्यौरा ।

कीपेनहेजेन, ३० अगस्त । समुद्री लड़ाई के बारे में जर्मनों का कहना है कि, ब्रिटिश और जरमन जहाज़ अलग होकर जी होमकर लड़े। छोटे जरमन क्रूजर पश्चिम की ओर गये कई बड़े क्रूजरों से उन की भिड़न्त होगई। "लायन" श्रेणी के दो क्रूजरों से जो गोले चले, वे "एरियडनी" क्रजर के लगे और वह अच्छी लड़ाई के बाद डूबा। उस के २५० आदमियों में बहुतेरे बचा लिये गये। नाशक जहाज़ "वी १८७,, पर एक छोटे क्रूज़र और १० नाशक जहाजों ने गोले बरसाये और वह अन्त समय तक गोले दागता हुआ डूबा।

जलसेना सचिव का लड़का गिरफ्तार ।

(जर्मन क्रूज़र) मेज़के जो बिना घायल हुए अफसर लीथ में उतरे हैं उन में जरमन जल सेना सचिव ऐडमिरल वान टिरपिज का लड़का भी है।

चार दिन की लड़ाई ।

लण्डन, ३० अगस्त । युद्ध क्षेत्र पर अभेद्य अन्धकार का पर्दा पड़ा हुआ है। अवस्था क्या है इस के लक्षण बताने वाला एक शब्द तक नहीं आता है सब ओर से मांज और कैम्ब्रेकी लड़ाइयों में ब्रिटिश सिपाहियों के वीरता पूर्वक प्रतिरोध की प्रशंसा सुनी जाती है । ब्रिटि सेना के भी इतिहास में इस से बढ़कर वी । और योग्यता का उदाहरण नहीं मिलता । भविष्यत में चाहे जो हो, पर यह मानी हुई बात है कि, भयंकर हानि सहकर भी उन्होंने मित्रों का बांया भाग नष्ट होने से बचा लिया । तो भी बहुत कम अनुमान करने पर भी जरमनों को बहुत अधिक हानि हुई।

लार्ड किचनर सूचित करते हैं कि, २३ से २६ अगस्त तक अंग्रेजों के ५ । ६ हजार जवान खेत रहे। जरमनों के अत्यन्त अधिक सैनिक काम आये।

लार्ड किचनर का वक्तव्य ।

चार दिन की जो लड़ाई २३ अगस्त को प्रारम्भ हुई थी उस में ब्रिटिश पलटनों ने जो काम किया इस विषय में प्रेस व्यूरोने लार्ड किचनर का वक्तव्य प्रकाशित किया है। इस बीच में मित्र सेनायें जर्मनों का प्रतिरोध करने और उन की गति रोकने तथा रक्षा के अन्य स्थानों में चली जाने में लगी थीं।

रविवार को मांज में लड़ाई प्रारम्भ हुई।

जरमनों ने बड़ी दृढ़ता से (एक बार) भीतर तक आक्रमण किया और फिर उसे दुहराया, पर ब्रिटिश सेना के अग्रभाग ने उसे पूरी तरह रोक लिया। सोमवार को जरमनों ने बहुत से सैनिकों सहित इस का बड़ा प्रयत्न किया कि, ब्रिटिश पलटनों को राजी खुशी पीछे न हट जाने दें और उन्हें मावेजकों किले बन्दी के अन्दर खदेड़ दें। पर यह निष्फल हुआ।

दोनों दिनों हमारी अपेक्षा शत्रु के बहुत सिपाही मरे।

यद्यपि दो पहले दिनों को तरह नहीं, तथापि लगातार लड़ती हुई ब्रिटिश सेना २५ ने तारीख को हटना शुरू किया। २५ तारीख को रात को ब्रिटिश सेना कैम्ब्रेस लीचेटो और ले-डीसीज़ तक स्थान पर जम गई।

विचार था कि, २६ तारीख के सवेरे हटना शुरू करे, पर पांच जर्मन आर्मीकोरों ने आक्रमण कर दिया और लड़ाई ऐसी भयंकर हुई कि, तीसरे पहर तक हटाना असम्भव हो गया। यह लड़ाई संगीन और जी पर खेलकर हुई, अत्यन्त भयङ्कर अग्नि वर्षा होने पर भी सैनिकों ने बड़ी उत्तमता से अपना उद्धार कर लिया।

२६ तारीख से अंग्रेज लोग तंग नहीं किये गये और अपनी शक्तिशाली वीरता की थकावट के बाद उन्हों ने आराम कर लिया वे अब दूसरी बड़ी लड़ाई के लिये निभय चित्र से तैय्यार हैं

फ्रेंच सेना ने एक आक्रमण सहा और २८ तारीख को उस ने आक्रमण कारियों को मार भगाया,

ब्रिग्रेडयर जेनरल सर किलिप चेटओडकी अध्यक्षता में ब्रिटिश कवेलरी ब्रिग्रेड जरमन रिसाले से अच्छी तरह लड़ा ।

युद्ध कौशल की दृष्टि से हमारा और हमारे मित्रों की अवस्था ऐसी हैं कि, हमारी एक निश्चित हुई कि, शत्र बोल गया, पर अंग्रेज और फ्राँच सेनाओं का लगातार प्रतिकार शत्रु को सब से अच्छी पलटनों को देर तक उलझाये रखने का एक मात्र वही परिणाम होगा। पलटनों में पीछे हटने में जो दृढ़ता और चतुरता दिखाई है लाड किचनर उसकी प्रशंसा करते हैं। जर्मन लोग अपनी सेना के बहुत अधिक सिपाहियों की घनी पातें बांध अंगरेज़ी सेना पर छाया मारने को बार बार आगे बढ़े।

२६ तारीख की लड़ाई में ब्रिटिश पलटनों ने भयङ्कर आक्रमण कारियों का दृढ़ और अच्छा परिरोध किया और प्रलयकारी गोली की मार से बिना अपनी बन्दूकें खोए बड़े अच्छे ढङ्ग से अपना उद्धार किया। जिनके घोड़े मर गये थे या बतरह घायल हुए थे, उन की बन्दूकें छूट गई। मैदान को पार कर जर्मनोंने जो आक्रमण किया उस में उनकी बहुत अधिक हानि हुई घनी पाँत बाँधने के कारण उनकी जितनी अधिक हानि हुई उससे हमारी हानि की तुलना नहीं हो सकती। उदाहरण के के लिये २६ ता० को अर्देले लेड़ी सीज़ में ही एक जर्मनपैदल ब्रिग्रेड के सिपाही आगे पीछे बिना स्थान छोड़े एक तङ्ग सड़क में जा रहे थे। हमारी मैशीन तोपों को यह निशाने मिलगया और उन्होंने अगला हिस्सा साफ कर दिया। भयङ्कर आतङ्क उपस्थित हो गया। अनुमान है कि इसी एक सड़क में ८६ सौ घायल और मुर्दा जर्मन पड़े थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्मप्रचारक

आर्यों पर सिखों का धावा

आर्य पत्रों से प्रार्थना

भारत वासियों की वीरता विचित्र सीमा तक पहुंच गई है। कोई दिन था जब वीरता साहस धैर्य और हिम्मत का नाम था, किन्तु आज भारतवासियों की वीरता ज़ोर से गाली देने में, सुलवातें सुनाने में, और पुलिस और रियासती कचहरी का आश्रय लेने में रह गई है। भारतवर्ष की वीरता पर यह अजब टीका है, जिसे देखकर अपनी दशा पर दुःख हुए बिना नहीं रहता। हमारे सिक्ख सूरमा जो कभी अपने धर्म और आर्य जाति की रक्षा के लिये रणक्षेत्र में निडर होकर लड़ने में बहादुर थे आज समाचार पत्रों और वेदियों पर से आर्यसमाजों को और उस के संस्थापक को गालियां देने और रियासती कचहरीमें जानेको ही वीरताका चिन्ह समझते हैं। हमें सिक्ख भाइयों की गालियां ऐसी बुरी नहीं लगतीं, जैसा उन की वीरताका रूपपरिवर्तन जी दुखाता है क्योंकि अन्त को वे भी तो हमारे ही भाई हैं। सिक्खों के गुरु साहिबान हमारी जाति के भी बड़े आदमी थे। उन के अनुयाई यदि अपने पुराने सब सम्बन्धों को तोड़ कर नई ही ढाई चावल की खिचड़ी पकाना चाहते हैं, उसे देखते हुए तो हम तो उन्हें छोड़ नहीं सकते। अपने भाइयों के अच्छे गुणों को बिगड़ते हुए देख कर किसे दुःख नहीं होता।

चने के दाने पर दंगा

उस समय हमारे सिक्ख भाइयों की नये फैशनकी बीरता जिस बात पर भड़की है, उसे देखते हुए हमें यही कहना पड़ता है कि यह चने के दाने पर दंगे के समान है। मा० रौनकराम और मा० बिशम्भर दत्त की लिखी हुई "ख़ालसा पन्थ की हक़ीक़त" नाम की पुस्तक पर इतना तूफ़ान मचाना हमारे सिंह सूरमाओं में अपेक्षा बुद्धि का प्रमाण नहीं है। यह पुस्तक ऐसी सभ्यता और शिष्टता से लिखी गई है, कि यदि किसी पुस्तक पर होना ही था तो यह अन्तिम होनी चाहिये थी। किन्तु हमारे सिख भाइयों की वीरता इसी पुस्तकपर उबल पड़ी है रियासत में इस पर मुक़दमा चलाया गया है।

मुक़दमे से क्या लाभ होगा ?

रियासत में मा० रौनकराम और उन के साथी पर जो २ नियम विरुद्ध कठोरतायें की गई हैं, उन की हम केवल शिकायत कर सकते हैं, क्योंकि उन पर किसी का वस नहीं। रियासती रीति में जो बजा है, वही और सभ्य संसार में बेजा है ? इस लिये जहां नीतिशास्त्र में ही भेद हो, वहां और क्या उपाय हो सकता है ? जो कुछ हो चुका, वह तो हो ही चुका। अब अन्त में १९ तारीख को मुक़दमा प्रारम्भ हो गया। इस में भी मा० रौनक रामकी ओर से उपस्थित होने वाले वकीलों पर अधिक फीस लगा कर जो कठिनाई न्याय के रास्ते में डाली गई है, वह आर्यसमाज को सहन ही करनी पड़ेगी। तो भी मुक़दमा प्रारम्भ हो गया, इतना शुक्र है। अब हमारे सिक्ख भाइयों को शान्त हो जाना चाहिये क्योंकि जो उन का उद्देश्य था, वह सिद्ध हो गया है। उन्हें विश्वास रखना चाहिये कि एक सिक्ख रियासतमें उन के साथ अन्याय न होगा। अब और अधिक वीरता न दिखा कर मुक़दमे की घटनाओं को धैर्यसे देखना चाहिये। सिक्खों को इस मुक़दमे से किसी हानि की संभावनानहीं, फिर अब जोशसे क्या लाभ है? हम भी अब इस अभियोग के प्रारम्भ हो जानेको अच्छाही समझते हैं। किस प्रकार का न्याय होगा, सत्य सत्य में किस ढङ्ग का भेद किया जायगा, इस प्रकार के प्रश्नों का तो सन्तोष दायक उत्तर हमारे पास नहीं है, और ना हीं हम इस समय उन की आवश्यकता समझते हैं। हम लोग मा० रौनकराम और उनके साथी के लिये मुकदमा इस लिये नहीं लड़ रहे कि उन्हें कैद के बन्धनों से छुड़वायें, क्योंकि ऐसी आशा करना एक तुच्छ आशा करना है। आर्यसमाज दो व्यक्तियों के लिये इस अभियोग में भाग नहीं ले रहा, बल्कि एक सिद्धान्त के लिये भाग ले रहा है। आर्य समाज संसार को दिखाना चाहता है कि दूसरों के बुजुर्गों पर कलङ्क लगाने का अपराधी वह है या ख़ालसा वीर ? वह जानता के सामने स्पष्ट करदेना चाहता हैकि साम्प्रदायिक विवादमें पड़कर शिष्ट और सभ्यता की सीमा का वह उल्लंघन करता है या अपने आपको उस का विपक्षी समझने वाले ? इस अभियोग में आर्यसमाज यही स्पष्ट कर दिखाना चाहता है। हमें पूरी आशा है कि वह अपनी अभिलाषा में कृतकार्य्य होगा।

रियासत का हमें एक और भी धन्यवाद करना चाहिये। सरकारी पक्षने आर्य समाज के मुख्य पुरुषों को अपने गवाह बनाकर बुलाया है। गत पेशी में महात्मा मुन्शीराम जी आदि समाज के मुखियाओंको बतौर गवाहके बुलवाया गया था। इस से समाज का बहुत सा व्यय बच जायगा, और जो कार्य उन्हें स्वयं करना पड़ा वह सरकारी यत्न से ही हो जायगा। निराश होने का कोई कारण नहीं दीखता, भगवान सहायक होंगे तो सब ठीक हो जायगा।

मुकद्दमें में लग जाना चाहिये।

कोई नहीं कह सकता कि इस विषय में आर्य समाज ने ज़रा सी भी शिथिलता दिखाई है। एक शब्द होकर भारतवर्ष भर की आर्य जनता ने मा० रौनकराम के साथ सहानुभूति का प्रकाश करते हुए रियासत की कार्यवाही पर शोक प्रकाशित किया है। धनके लिये अभ्यर्थना की गई तो आर्यसमाजियों के सदा खुले हुए बटुओं में से धन बह निकला। इस समय आर्य समाज डिफेन्स कमेटी पर्याप्त धन के साथ इस अभियोग में प्रवृत्त हो रही है। आपस के झगड़ों को भुलाकर आर्य समाज ने इस धार्मिक रक्षा के प्रश्न पर एक मत किया है फिर किस की सामर्थ्य है कि इस समय शिथिलता शब्द का उच्चारण करे। किन्तु अब हम एक निवेदन करना चाहते हैं। भूमिका समाप्त होगई। उद्योग पर्व की घटनायें भूतकाल में मिल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गई। अब हमें सारे यत्न से अभियोग में लगजाना चाहिये। अब हमारे पास समय नहीं होना चाहिये कि हम समाचार पत्रों में इस झगड़े पर कालम काले करें। इस झगड़े में समाचार पत्रों के युद्ध का समय होचुका। अब आवश्यक है कि आर्य समाचार पत्र अपनी स्वाभाविक दशा में आजाँय और इस मुकद्मे के सम्बन्ध में केवल इतना ही काम करें कि आर्य जनता तक बनाले के नयेसे नये समाचार विस्तार पूर्वक पहुंचा दियाकरें। ऐसा न होने से इस समय हमारे सामने जो असली प्रश्न है वह छुप जायगा। अब इसी समय समाचर पत्रों में खालसा भाइयों की पोल खोलने के लिये उचित अवसर नहीं रहा, अब तो बनाले की कचहरी में वह काम होगा। सारा ध्यान अब उसी ओर लग जाना चाहिये। समाचार पत्रों के सम्पादकों से हमारी विनीत प्रार्थना है कि वे अब अपनेपत्रों के कालमों को बनाला न बनावें, क्यों कि ऐसा करने से आर्यसमाजी लोग असली बनाले में होती हुई घटनाओं को भूल जायगे।

हम पर भी दोष न आये

हमें अब समाचार पत्रों में इस विवाद की समाप्ति करनी चाहिये, इसका एक और भी कारण है। आर्यसमाज समय समय पर अन्य मतों का खण्डन करता ही रहता है। इस समय विशेष तया परिश्रम करके, समय देकर, और अपने पत्रों के अमूल्य समय देकर खालसा भाइयों की सेवा करना यह प्रकट करेगा कि हम उन के आक्षेपों और उनकी ज्यादतियों से चिढ़ गये हैं। आर्यसमाज को हाथी की शानदार चाल से चलना चाहिये, चिढ़ना न चाहिये। हमारे धर्मसागर में विक्षोभ न होना चाहिये धर्म के लिये हमारे दो भाई कष्ट भोग रहे हैं, हमारे कुछ भूलेहुए भाइयों ने अनुचित आक्षेप किये हैं, इन बातों से हम अपने स्वाभाविक कार्य क्रम को क्यों छोड़ें? यह भी याद रखना चाहिये कि ऐसे जोश के समय में लेखनी की बागडोर छूट जाने का भय रहता है इस से हमारा यह तात्पर्य नहीं कि हमारे किसी प्रतिष्ठित सहयोगी ने विवाद में सीमा का उल्लंघन किया है, किन्तु यह असम्भव नहीं है। ऐसा अवसर ही न आने देना चाहिये। जरा शान्ति होजाने पर सम्भव है कि थोड़े से यत्न से भी हम अपने खालसा भाइयों की आंखें भली प्रकार खोल सकें। यदि हम भी अपनी शान्ति को हाथ से छूट जाने देंगे तो हमारा कोई विरोधी कह सकता है कि 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे'

हमारा कर्त्तव्य

हमारा कर्त्तव्य इस समय यह होना चाहिये कि हम आर्य जनता को इस मुकद्मे के समाचारों से पूर्णतया विदित रखें, और शेष सारा यत्न अभियोग की सहायता देने में लगायें। यह सम्भव है, हमारी शान्ति और चुपको सिख लोग निर्बलता के नाम से पुकारने लगें, किन्तु फिर भी यदि हमारी शान्ति न टूटेगा तो संसार समझ जायगा कि आर्य समाज निर्बलता से शान्त नहीं हुआ, बल्कि अपनी शक्ति का अनुभव कर के शान्त हुआ है। हमारी अपने सहयोगियों से यही प्रार्थना है, कि हमारी आशा व्यर्थ न जाय।

---

(२)

आर्यभाषा के समाचार पत्र

आर्यभाषाके समाचार पत्रों की संख्या के विषय में हम अपने पहले लेख में लिख चुके हैं। इस लेख में हम एक और विशेषता पर दृष्टिडालना चाहते हैं। प्रत्येक भाषा भिन्न २ अवस्थाओं में होती है, और उनके समाचार पत्र भी भिन्न २ अवस्था में ही होते हैं। किसी भाषा के समाचार पत्र मासिक युग में होते हैं, किसी के साप्ताहिक युग में और किसी के दैनिक युग में। बहुत बढ़े हुए देशों की अवस्था से हमें यहां अभिप्राय नहीं क्योंकि उन में तीनों युग साथ रह सकते हैं वहां पर केवल नगरों का भेद होसकता है। किसी नगर से मासिक पत्र अधिक निकलते हैं किसी से दैनिक। किसी किसी देश की खासियत तो बिलकुल स्पष्ट होजाती है अमरीका को दैनिक पत्रों का देश कहना अत्युक्ति नहीं है। फिर एक एक पत्र के इतने पढ़ने वाले भी और किसी देश में नहीं मिल सकते। छोटी से छोटी सामाजिक स्थिति रखने वाला व्यक्ति भी वहां पर दैनिक का ग्राहक होता है।

ये युग समय के साथ ही परिवर्तन करते रहते हैं। एक ही देश का एक ही प्रान्त अवस्थाओं के भेद से भिन्न २ युगों में से गुज़रता रहता है। आज से ७ वर्ष पूर्व बङ्गाल निःसन्देह दैनिक युग में से गुज़र रहा था। कई नये २ दैनिक निकल आये थे। अंग्रेज़ी के दैनिकों की सहायत के लिये बङ्गलाके दैनिक आगये थे। एक बङ्ग विच्छेद की हलचल ने प्राँत को दैनिकों से भर दिया था। राजनीतिक आन्दोलन के प्रबल प्रवाह के रुकते ही वह युग समाप्त हो गया। सरकार के ज़बर्दस्त हाथने भी उसकी समाप्ति में सहायता दी। इस समय जहां तक हमें ज्ञात है बंगला में निकलने वाले दैनिक पत्रों की संख्या ३ या ४ से अधिक नहीं होगी, इतनी भी हो तो आश्चर्य है। इस समय बंगला में मासिक तथा साप्ताहिक युग का मेल है।

महाराष्ट्रों के स्वभाव की स्थिरता प्रसिद्ध है। मराठी भाषा के युग में भी इसी लिये शीघ्र शीघ्र परिवर्तन नहीं होते। जब सारा भारतवर्ष आन्दोलन से काँप रहा था, उस समय महाराष्ट्र प्रान्त ने सारे देश का साथ अवश्य दिया, उसके समाचार पत्रों की संख्या में वृद्धि अवश्य आई थी, किन्तु इतनी नहीं कि उसका युग बदल जाय। एक दो दैनिक निकले थे, किन्तु साप्ताहिक पत्रों की ही संख्या विशेषतया बढ़ी थी। आज भी बम्बई प्रान्त विशेषतया साप्ताहिक युग में ही, जिससे उसके स्वभाव की स्थिरता और मध्यता प्रकट होती है, क्योंकि साप्ताहिक एक प्रकार से दैनिक और मासिक का मध्य है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इधर उर्दू पर दृष्टि डालिये। उर्दू में अच्छे मासिक पत्रों की इतनी न्यूनता है, कि यदि केवल एक इसी बात पर दृष्टि डालें तो उर्दू का प्रयोग करने वालों के जोश पर विचित्र भाष्य हो जाता है, किन्तु जब आगे बढ़कर साप्ताहिक पत्रों पर दृष्टि डालते हैं, तो वह विचित्र भाष्य जोश से हटकर योग्यता पर चला जाता है। उर्दू भाषा में बँगला मराठी तथा आर्य्य भाषा के भी श्रेष्ठ मासिक पत्रों के पाये का एक भी मासिक पत्र नहीं है। किन्तु साप्ताहिक पत्रों के सम्पादन में या उनके ग्राहकों की संख्या में एक बंगला को छोड़कर वह और किसी से भी पीछे नहीं है। फिर दैनिकों का तो कहना ही क्या है। उर्दू भाषा में जितने दैनिक पत्र एक लाहौर से निकलते हैं इतने शायद बंगला मराठी और हिंदी में मिलाकर न निकलते हों। हिन्दी में तो इस समय केवल एक दैनिक निकलता है, बंगला में निकलने वाले दैनिकों की संख्या दो या तीन होगी, मराठी में निकलने वाले दैनिक भी बहुत संख्या नहीं रखते। उर्दू के जिन दैनिकों के डिक्लेरेशन की प्रार्थना इस समय तक स्वीकृत नहीं हुई। उन्हें छोड़ दें तो भी हमारी स्मृति में इस समय लगभग आठ दैनिक आते हैं जो केवल लाहौर से निकलते हैं। भारत की अन्य भाषाओं पर दृष्टि डालते हुए हम कह सकते हैं कि उर्दू इस समय दैनिक युग में से बीत रही है। इसका कारण स्पष्ट है। महाराष्ट्र वासी जैसे मध्य स्वभाव के प्रसिद्ध हैं, पंजाबी इसी प्रकार जोशीले स्वभाव के लिये ख्याति पा चुके हैं। बंगालियों के साथ उनका अन्तर यह है कि पंजाबियों का जोश स्थायी होता है। उर्दू भाषा को अभी तक पंजाब ने अपनाया हुआ है, इस लिये उसमें दैनिकों की संख्या की अधिकता है, और वह वैसी अस्थिर नहीं जैसी बंगला के दैनिकों की थी।

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(४५)

सद्धर्म्म प्रचारक का जन्म

जालन्धर आर्य समाज के तीसरे वार्षिकोत्सव से पहले ही समाज के बढ़ते काम को देखकर अपना एक प्रेस खोल कर समाचार पत्र चलाने का विचार हो रहा था। उन दिनों जालन्धर और होशियारपुर के आर्य समाजियों का भाई चारा का सम्बन्ध था, इस लिये महाशय रामचन्द्र भी हमारे विचार के साथ सहमत थे। उन्होंने मुझे लिखा कि यदि आर्य समाज की ओर से समाचार पत्र चलने के लिये कोई कम्पनी बनाई जावे तो एक हिस्सा वह भी लेंगे इस पर मैंने दो हिस्से स्वयम् लेकर कुल १६ हिस्से पचीस पचीस रुपये के स्थिर किए। श्री लाला रामकृष्ण (वर्त्तमान प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) जालन्धर में वकालत करने आ चुके थे। और स्थानीय समाज के उप प्रधान नियत हो चुके थे-वे भी हिस्सेदार हुए। लाला देवराज और लाला शालिग्राम वैश्य, (प्रसिद्ध भण्डारी गुरुकुल) कपूर्थले के लाला शरणामल इत्यादि ने भी हिस्से लिये।

प्रयत्न तो पहले से ही हो रहा था, किन्तु जब लाला देवराज जी चले गए तब सभासदों को अधिक जोश आया। १४ फरवरी सं० १९९९ को हिस्से दारों की एक बैठक हुई। कपूर्थले से लाला गोविन्द सहाय को बुलाया हुआ था; इन्हीं के द्वारा प्रैसादिका सौदा हो रहा था। उसी शाम को सब कुछ निश्चय होकर गोविन्द सहाय जी को ५०) रुपये दिए गए, लिथो के प्रेस और पत्थरों की साई देकर सब सामान शीघ्र जालन्धर पहुंचादें।

निश्चय यह हुआ कि प्रेस का नाम सद्धर्म्म प्रचारक रक्खा जाय, और प्रथम वैशाख, सम्वत् १९४६ विक्रमी से सद्धर्म्म प्रचारक नामी डेमी छोटे आठ पृष्ठों का एक उर्दू साप्ताहिक पत्र निकालना शुरू किया जाय। लाला देवराज और मैं दोनों सम्पादक नियत हुए। कचहरीमें प्रकाशन पत्र(Declaration)देने का काम मेरे सपुर्द हुआ, इस लिए मैं ही मैनेजर नियत हुआ।

अख़बार की नीति के विषय में बड़ा झगड़ा पड़ा करता है। उसका फैसला यह हुआ कि सारी नीति का निर्भर सम्पादकों पर रक्खा जावे। उसमें कोई भी हिस्सेदार हस्ताक्षेप न करे। यह सब बातें तै करके १६ फरवरीको मैंने यन्त्रालय तथा पत्र की नीति आदि के विषय में एक लेख लिखा। प्रैसादि के आने पर वही पहला छपाई का नमूना था जो हमने सर्व साधारण के आगे रक्खा था। मैंने उस लेख की ढूंढ बहुत की किन्तु कहीं से भी वह नहीं मिला। इसमें सन्देह नहीं कि प्रचारक के पहले अङ्क में ही एडिटोरियल में श्री देवराज जी ने और मुख्य लेख में जिसका शीर्षक था "सद्धर्मप्रचारक"। मैंने प्रचारककी भविष्य नीति और उसके उद्देश्य लिखदिए थे परन्तु पहले विज्ञापन मे कुछ अधिक स्पष्ट शब्द होंगे क्यों कि जब मार्च के अन्त वा अप्रैल के आरम्भ में विज्ञापन मेरे साथ फीरोज़पुर के जलसे पर बाँटने गया तो उसे पढ़ते ही श्री. लाला सोंईदास जी ने जालन्धरियों को फिर Extreme radical party की उपाधि दीथी।

जब से प्रेस का खोलना निश्चत हो गया तब से ही मैंने स्वाध्याय की ओर अधिक ध्यान आरम्भ कर दिया। रात को तो डेढ़ वा दो घन्टे पश्चिमी विद्वानों के ग्रन्थ पढ़ता। उन दिनों हरबर्ट स्पेन्सर के ग्रन्थों के अतिरिक्त Draper's Conflict between religion and Science Bain's Education as a Science, Guizot History of Civilizaton, Lyal's Asiatic Studies आदिक तथा इन्हीं प्रकारकी अन्य बीस से अधिक पुस्तकें छः मास में पढ़ी दूसरी ओर प्रातःकाल डेढ़ घंटे तक सत्यार्थ प्रकाश और वेदभाष्य का स्वाध्याय होता। पहली पढ़ी हुई लघु कौमुदी की भी पुनरावृत्ति आरम्भ हुई यही कारण था कि जब सं० १९८५ पश्चात पहली बार श्री लाला लाजपत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राय जी ने मेरा व्याख्यान फीरोज़पुर आर्य्यसमाज के जलसे पर सुना तो पूछा था—"यह इतनी संस्कृत में उन्नति कब की।"

जिस सद्धर्म्मप्रचारक ने निरन्तर २५ वर्ष तक सर्वसाधारण की सेवा की है और ऐसा यश और सत्कार प्राप्त किया है जो इससे दश गुणी संख्या में छपने वाले समाचार पत्रों को भी नसीब नहीं हुआ उसके यन्त्रालय का प्रारम्भिक चित्र बड़ा मनोरंजक है। मेरे मकान की पश्चमीय सीमा पर दो १४+१६ फीट के कमरे एक दूसरे से ५० फीट की दूरी पर बन चुके थे। उनमें से एक में तो प्रेस गाड़ागया जो १ मार्च को पत्थरों सहित पहुंच गया था। पत्थर शायद चार थे, चारों टूटे हुए। यह प्रेस मियां निज़ामुद्दीन से ख़रीदा था, उन्हीं को कातिब (कापी नवीस) के स्थान में रक्खागया। सौदा कराने वाले लाला गोविन्दसहाय के मित्र लाला बस्तीराम यन्त्रालय के लेखक (मुहरिर) नियत हुए और पहला टुकड़ा जो यन्त्रालय ने छापा वह इन दोनों मित्रों की संयुक्त कविता थी जिसका नाम था "कलियुगी सुधरों की करतूत" इस की टेक थी—

"पांचों ऐब शरई उबक्के
सुधरे फकर कहाते हैं"

और पूर्ति का वाक्यथा—"बस्तीराम गोविन्दसहाय मिल ईशर (ईश्वर) के गुण गाते हैं।" इसी खड़ी बोली की कविता को प्रसिद्ध चिरंजी लाल बैतल बाज़ ने अपना बना लिया था।

इस ग्रन्थ के पश्चात् हमारे समाज के पुराने वृद्ध सभासद ला० रलाराम चड्ढा जी के भजन छपे जिनके लिए ढूंढने से जब कोई नाम न मिला तो ग्रन्थ कर्त्ता की ओर से पुस्तक का नाम करण कियागया—"ओ३म् रलाराम के भजन," पहले अङ्क से ही वेदमन्त्र की व्याख्या करने तथा मुख्य लेख लिखने का काम मैंने संभाला और सम्पादकीय टिप्पणियाँ देनी और जीवन चरित्र लिखना देवराज जी के ज़िम्मे लगा। समाचार मैं चुना करता था किन्तु नगर निवासियों के साथ अधिक सम्बन्ध होने के कारण स्थानीय समाचार श्री देवराज जी ही दिया करते थे। कुछ काल के पश्चात जब वर्तमान सामाजिक नीति पर टिप्पणी देने की आवश्यकता हुई तो पहले एकदो धार्मिक नोटों के पश्चात सम्पदिकीय टिप्पणियां भी मेरी ही लेखनी से निकलने लगीं।

प्रेस जब दो सालों से अधिक तक घाटे पर चला और १५) प्रति हिस्सा बढ़ा कर वसूल करने पर भी घाटा ही रहा, और श्रीराम कृष्णजी से व्यवहार निपुण महाशय को प्रबन्ध का कार्य्य देने पर भी कोई सूरत यन्त्रालय चलने की दिखाई न दी तो सब हिस्सों का रुपया मैंने देदिया और प्रेस का स्वतंत्र स्वामी बनगया। यह बात मैं भूला नहीं कि कुछ हिस्सेदारों ने अपने हिस्से के रुपए मुझसे वापिस नहीं लिए।

प्रचारक का आर्य सामाजिक जगत पर क्या प्रभाव रहा, इसने वैदिक धर्म की क्या सेवा की, सदाचार के फैलाने में इसने क्या भाग लिया और समाचार पत्रों की लेखन शैली के संशोधन का इसने कितना काम किया—इसका इतिहास कोई सद्धर्म्मप्रचारक के ही ऐसे प्रेमी लिखसकते हैं जिन्होंने पहले पर्चे से अबतक सब अङ्क सुरक्षित रक्खे हुए हैं।

मुंशीराम

विज्ञापन देने का अमूल्य अवसर

यदि आप अपने व्यापारको भारत वर्षमें फैलाना चाहते हैं। तो विजय दशमी से निकलने वाले 'विजय, पत्र में अपना विज्ञापन दें। क्योंकि इसकी मांग बहुत आ रही है जिससे आशा की जाती है कि पहिला ही अङ्क इसका तीन हजार के लगभग छपेगा। आरम्भ से ३ मास तक विज्ञापन देने वालों से -) लाइन प्रति अङ्क लिया जायगा। पश्चात नियमानुसार छपाई लीजायगी शीघ्रता करें क्योंकि समय कम रहगयाहै

प्रबन्धकर्त्ता
'विजय,
देहली

आर्य्यसमाज का प्रचार

(लेखक श्रीयुत मन्नन द्विवेदी गजपुरी)

इस लेख के आरम्भ में मैं यह कहदेना मुनासिब समझता हूं कि मैं उन लोगों में से हूं जिन्होंने आर्य्यसमाज के नक्द धर्म के लिये उसके रजिस्टर में नाम लिखाये हैं। मेरा विश्वास है कि ज्यादेतर नौजवान इस वजह से आर्य्यसमाजी हैं कि आर्यसमाज ने अनाथालय खोलकर लावारिसों की परवरिश की, अस्पताल खोलकर बीमारों को चंगा किया है, कालेज खोलकर हमको ऊंचे पदों पर चढ़ाया है और गुरुकुल खोलकर हमको ब्रह्मचोरी बनाया है जिससे हम संसार का उपकार करसकें, नकि इस कारणसे कि मरने के बाद हमको नवीन पद प्राप्त होगा। मालूम नहीं, मरने पर क्या होगा।

ऐसी दशा में मुनासिब है कि आर्यसमाज का अधिकतर रुपया शिक्षा प्रचार में लगाया जाय, न कि उपदेशकों में। बीसवीं शताब्दी में जब कि दुनियां के एक से एक बड़े मज़हब अखाड़े में उतरे हुए हैं, विजयके लिये बड़े कोशिश की ज़रूरत है। हमको यहभी सोचना पड़ेगा कि दुनियां अब पुराने दिनों के लिये हरएक तरफ ढलने के लिये तय्यार नहीं है। बहुत सोच समझ कर और हमारे कामों को खूब देखकर लोग हमारे यहां आवेंगे।

आप खुद आर्यसमाज के इतिहास को देखलीजिये। शुरू में आर्यसमाज को हिन्दु नास्तिक कहते थे, मुसलमान लड़ाके शैतान और ईसाई और सर्कारी पुलिस बाग़ी मानती थी। लेकिन आर्यसमाज के नक्द धर्म को देखकर अब सब लोगों ने अपने विचार बदलदिये हैं।

अब वह समय आगया है कि आर्य समाज के लीडर महात्मा मुंशीराम जी का व्याख्यान काशी के सनातन धर्मियों ने कराया था। अब वह समय आगया है कि श्रीमान् वाइसराय साहब और युक्त प्रान्त के छोटे लाट गुरुकुल में पधारते हैं और छोटे लाट अपने पाकेट के पैसे आर्यसमाज को देते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पादरी एडूज गुरुकुल का गुण गाते नहीं थकते हैं और पादरी मेलबर्न गुरुकुल पर मुग्ध हैं।

इसीसे कहते हैं कि आर्यसमाजका ख़ास मिशन दुनियाँ का दुख दूर करने के लिये, जगत् की अविद्या मिटाने के लिये कुछ काम कर दिखाना है न कि बहस मुबाहसे में लड़ मरना। ऐसी दशा में आप कहेंगे कि आर्यसमाज में उपदेशकों की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी डाक्टर और टीचरों की। लेकिन कहना यह है कि आर्य्यसमाज का कार्य्य एक जगह महदूद नहीं है। हमारा उद्देश्य है कि समग्र संसार में आर्य शिक्षा का प्रचार हो। सारी दुनियां में गुरुकुल और डी० ए० वी० कालेज खुलें। यह तो दूर की बात है। लेकिन कम से कम जम्बूद्वीप में नहीं तो भारत खंड में आर्यसमाज की शिक्षा प्राणाली का गांव गांव प्रचार होना चाहिये।

हमारा स्वप्न है कि जहां जहां गवर्मेन्ट की ग्रीष्म राजधानियाँ हैं वहां वहां या उनके समीप में सब जगह हमारे गु. कु. होने चाहिये। परमात्मा के प्रतिनिध राज राजेश्वर जहां संसार के बिघ्न बाधाओं से हमारी रक्षा करैंगे, हमारे धन और जन की रक्षा करैंगे, वहां परमात्मा का आध्यात्मिक और धार्मिक प्रतिनिधि गुरुकुल दुनिया के किसी भी भोग और बिलास के लिये हमारे धर्म पथ से विचलित न होने देगा जिस दिल्ली में श्रीमान् वाइस राय का निवास स्थान रहेगा वहीं आर्य विश्वविद्यालय का केन्द्र होगा, लाहौर, प्रयाग, कलकत्ता, मदरास, इत्यादि छोटे लाट के निवास स्थानों में हमारे प्रथम श्रेणी के सुसज्जित डी० ए० वी० कालेज रहैंगे।

कमिश्नरी के स्थानोंमें हमारे साधारण कालेज रहैंगे और जिलों में हमारे आदर्श डी० ए०वी० स्कूल होंगे। तहसीलों में हमारे मिडिल डी. ए. वी. स्कूल और क़स्बों में हमारे वरनाक्यूलर डी. ए. वी. स्कूल और छोटे २ गांवों में भी हमारे फ्री प्राईमरी स्कूल होंगे। इसी तरह अस्पताल भी करने होंगे।

ऐसी दशा में कितने करोड़ रुपये के खर्च की स्कीम हमारे सामने है। अगर आर्यसमाज संसारसे दुख को निकालकर सुखको अविद्याको निकालकर विद्या को निर्बलता को निकालकर, बल को अंधकारको निकाल कर प्रकाश को फैलाना चाहता है तो अवश्य करोड़ों नहीं अरबों रुपयों की जरूरत होगी, लेकिन अगर वेदों को अपौरुषेय सिद्ध करने में ही हमको अपनी सारी शक्ति लगानी है तबतो आठ दस रुपये में झगड़े तकरार की किताबें और दो चार घड़ी के अबे तबे काफ़ी होंगे।

इस में सन्देह नहीं कि हमारे अधिकांश भाई पहले ही उद्देश्य को आर्य्य समाज का उद्देश्य मानैंगे।

अब प्रश्न यह होता है कि इतना रुपया आवेगा कहां से। आर्य्य समाज की संख्या अभी कुछ लाख ही है। जिस देश में प्रत्येक मनुष्य की आमदनी दो रुपया मासिक से भी कम है वहां प्रत्येक आर्य्य समाजी से आप १) रुपया वार्षिक से अधिक की आशा नहीं कर सकते हैं आर्यों के धर्म प्रेम पर बिश्वास करके यह प्रबल आशा है कि कष्ट उठा करके भी प्रत्येक आर्य्य अपने धर्म के लिये १) रुपया साल का दान कर सकता है। लेकिन आज कल के खर्च के ज़माने में कुछ ही लाख रुपयों में क्या होगा? क्या हमारे कुछ लाख हमारे तीन सर्वोत्तम संस्थाओं, गुरुकुल काँगड़ी डी० ए० वी० कालेज लाहौर और कन्या महाविद्यालय जालंधर में नहीं लगजाते हैं?।

इन से भी बढ़कर आवश्यक गुरुकुल स्कूल कालेज हास्पिटल और अनाथालयों के लिये रुपये कहां से आवैंगे? इतने रुपये हमारे पास कहां हैं कि दुष्काल में गाँव गाँव सहायता पहुंचाकर हम एक भी बच्चे की चोटी न कटने दें एक भी संतान को अहिन्दू स्कूल और कालेज में न जाना पड़े!

गावों में भटकते हुए दुखियों को विलपते विधवाओं को कलपते, अनाथों को तलफते, इसाइयोंको उपटते, अछूतों को सिसकते देखकर तबियत घबरा जाती है आखों के सामने अंधेरा हो जाता है। हाय रुपया! हाय रुपया।

लेकिन इतना रुपया आवे कहां से! हम कई लाख आर्य्य समाजियों के रक्त बेचने से भी तो इतने रुपये नहीं मिलैंगे। फिर क्या हम औरों से भीख मांगें। बाइबिल का ख़ंडन करते हुए क्या हम ईसाइयों से चंदे मांगें, कुरान की धज्जियां उड़ाकर मुसलमानों से याचना करैं, पुराण का खंडन, मूर्तिपूजा का खंडन, गंगा का खंडन। जमुना का खंडन, काशी का खंडन। और सब कुछ खंडन करके भी हम अपने सनातनी भाइयों के सामने भिक्षां देहि करें।

हम जिस को पत्थर मानते हैं सनातनी भाई उसको सर्वात्मा, सर्वशक्तिमान सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी, अखिल, अगोचर, अनंत, सर्वसच्चिदानन्द विश्वनाथ जानते हैं। किसी के ऐसे इष्टदेव की निन्दा करके भी हम उस के यहां भीख मांगने जायं तो क्या बिना मार खाये वापस आ सकते है। श्रद्धेय स्वामी परमानन्द जी एक रोज़ काशी के एकक्षेत्र में भोजन भिक्षा के लिये गये। भोजन तो नहीं मिला किन्तु गालियां इतनी मिलीं कि स्वामी जी की अक्ल ठीक हो गई।

फिर क्या तरकीब की जाय! क्या तदबीर सोची जाय! किस उपाय से धन इकट्ठा किया जाय!

मेरे विचार में आत्म गौरव और स्वावलम्बन हमारे लिये सिर्फ एक रास्ता छोड़ता है। अगर हम करोड़ों रुपये इकट्ठा करना चाहते हैं तो हमको चाहिये कि अपनी संख्या करोड़ों तक बढ़ावैं। कितने दुख की बात है कि जिस देश में विदेश दूरदेश रेगिस्तान का धर्म ८ करोड़ लोगों में फैल जाय वहाँ आर्य्य समाजियों की संख्या ५ लाख भी न हो। यह आर्य्य समाज के लिये कितनी लज्जा की बात है?

आर्य्यसमाज के प्रचार में जो सुविधायें हैं उनकी याद करके और भी लज्जा आती है। आर्य्यसमाज हिन्दू धर्म के अतिरिक्त कोई नया धर्म नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्या आर्य्य और सनातनी दोनों वेदों को अपना प्राण धन नहीं मानते हैं? क्या दोनों परमपिता को अलख, अगोचर, अनन्त, सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान्, सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी नहीं कहते हैं?

क्या दोनों षड्दर्शन, पटशास्त्र, मनु बाल्मीकि और महाभारत को नहीं मानते हैं?

क्या दोनों दिलीप, रघु, वसिष्ठ, भरद्वाज को सन्तानें नहीं हैं? क्या दोनों राम और कृष्ण के गुण नहीं गाते हैं? क्या दोनों गो माता के भक्त नहीं हैं? क्या दोनों पंचयज्ञ षोडष संस्कारों को नहीं मानते हैं? फिर आर्य्य समाज नई बात क्या सिखलाता है? आर्य्य समाज अपने बूढ़े भाई में कुछ जवानी का जोश भरता है, आर्य्यसमाज बुद्धि से काम लेना सिखलाता है, आर्य्य समाज देश काल के अनुसार चलना सिखलाता है।

इसी से कहते हैं कि अभी तक आर्य समाज की उन्नति लज्जास्पद है।

मुसलमान तो ८ करोड़ भाइयों को-ऋषि सन्तानों को गोरक्षक से गोभक्षक बनादें, चोटी कटाकर दाढ़ी रखा दें और उनसे ८० लाख से अधिक रुपये लेकर टर्की भेज दें और हम ५ लाख भाइयों को भी अपनी अधिकाँश पुरानी बातें रखते हुए बुद्धि से काम लेना न सिखला सके।

इसका कारण यही है कि आर्य्य समाज में प्रचार की पूरी कोशिश नहीं हुई। मेरा पूर्ण विश्वास है कि अगर सत्य और धर्म का सन्देशा और महर्षि दयानन्द का मिशन फैलाया जाय तो गांव गांव घर घर में नमस्ते सुन पड़ेगा।

प्रचार की स्कीम बनाना मेरे ऐसे रंगरूट का काम नहीं है। लेकिन इस सम्बन्ध में दो चार बातें निवेदन करना आवश्यक है। यह स्कीम प्रतिनिधि सभा की स्कीम होगी। प्रत्येक आर्य्यसमाज अपनी जवाब देही समझते हुए तन मन धन से प्रचार का काम करें लेकिन प्रतिनिधि सभा के उपर्युक्त फन्ड से भी इस की सहायता की जाय।

स्कीम को बहुत बड़े स्केल पर न तैयार किया जाय क्योंकि ऐसा करने से वास्तविक काम होने की आशा कम रहैगी। उदाहरण के लिये युक्त प्रांत को ले लीजिये।

मेरे विचार में १० लाख रुपये में मुक्त प्रान्त की प्रचार स्कीम काम करने लगैगी। इसमें से ५ लाख रुपये में प्रतिनिधि सभा का कोई कारख़ाना और उसके साथ में एक एक साधारण स्कूल और अनाथालय रहैंगे।

ऐसे कारख़ाने की बड़ी ज़रूरत है। जब अनाथ बच्चे मिलते हैं, जब ईसाई और मुसलमान शुद्ध किये जाते हैं तो पहला प्रश्न यह पेश होता है कि उनकी आजीविका के लिये क्या उपाय किया जाय। यह कारख़ाना कुछ के अंश में इस अभाव की पूर्ति करेगा। खास हालत में जब और प्रबंध न हो सकैगा तभी लोग इस कारखाने में भेजे जायँगे बाकी ५ लाख की सूद आठ आना सैकड़ा माहवार के हिसाब से २५००) माहवार हुआ। इसमें २५) मासिक पर १०० उपदेश रक्खे जाँय। इन में से एक एक जिला के लिये एक के हिसाब से ५२ उपदेशक तो यों होगये। आवश्यकता पड़ने पर खास जगहों में एक से अधिक उपदेशक भेजे जांय। बलिया, गोरखपुर, आजमगढ़ आदि जिलों में अभी बिल्कुल प्रचार नहीं है। ऐसे स्थानों में चार चार पांच पाँच उपदेशक कुछ दिनों के लिये रक्खेजांय। इन उपदेशकों का काम होगा कि वे जिले के अन्दर घूम घूम कर प्रचार करें और जगह जगह समाजें स्थापित करावें। अब सवाल यह उठता है कि यह रुपया एकत्रित कैसे होगा। मेरे विचार में अगर हमारे समाचार पत्र अपील करके चन्दे के लिये अपने कालम खोलदें, प्रत्येक आर्य्यसमाज अपने मेम्बरों से अपील करै तो इतने रुपये मिलने कुछ कठिन नहीं है।

मुसलमानी पत्रों ने टर्की युद्ध के लिये जो काम किये हैं वे चन्दा वसूल करने के लिये हमारे उदाहरण हैं। मोटा हिसाब लगाने से १० लाख में एक ज़िले के लिये २० हज़ार होता है। अगर इसमें से आधा रुपया समाचार पत्रों के अपील और प्रतिनिधि सभा के अपील से वसूल होजाय तो प्रत्येक जिला को सिर्फ १० हजार रुपया देना पड़ेगा क्या १००) देने वाले १०० धर्म प्रेमी एक जिले में नहीं होंगे। मेरा विचार है कि १०० का औसत जरूर पड़जायगा। अगर इतना रुपया जल्द न मिले तब भी हमको हताश नहीं होना चाहिये। थोड़े से भी हम काम कर सक्ते हैं।

जब तक अधिक नहीं होता है तब तक एक २ जिला के लिये एक एक उपदेशक होना आवश्यक है। इसके लिये प्रत्येक जिला को २५) मासिक भर का रुपया इकट्ठा करना पड़ेगा।

५०००) से २५) माहवार सूद मिलैगा।

अगर ज़िला भर के आर्य्यसमाज, आर्य्यसमाजी मिलकर ५०००) न देसकें तो हमारे व्यर्थ बकवाद से क्या फायदा? अगर हम इतना भी नहीं कर सकते हैं तो हमारा चुपचाप बैठकर प्राणायाम करना ही अच्छा है।

लकिन आर्य्यों के बंश जैसे ऋषि दयानन्द के अनुयायियों से हम इस तरह निराश नहीं होसकते हैं जो लोग डी० ए० वी० कालेज लाहौर और कांगड़ी के ऐसा गुरुकुल चलारहे हैं उनसे निराशा कैसी?

आशा है कि हमारा लिखना अरण्य रोदन न होगा।

मन्नन द्विवेदी गजपुरी।

आवश्यकता।

'विजय, के लिये प्रत्येक नगर में एजन्टों की आवश्यकता है. कमीशन अच्छा दिया जायगा। जिनको एजन्सी लेना हो शीघ्र प्रबन्धकर्त्तासे पत्र व्योहार करें।

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

ओ३म् ॥

आर्य्यसमाज की वेदी

(४)

साप्ताहिक अधिवेशन

(लेखक–पं० पूर्णानन्द जी)

साप्ताहिकाधिवेशनों के संबन्ध में पहली बात तो हमें वक्तव्य यह है कि आवश्यक नहीं कि प्रत्येक समाज का साप्ताहिक अधिवेशन रविवार को हुआ करे । ग्रामों के आर्यसमाजों से हमारी प्रार्थना है कि इस अंश में ईसाई गिर्जों का अनुकरण न करें । नगरों में डिपटी कमिश्नर आदि प्रायः अंग्रेज होते हैं इसलिये गवर्न्मेंट को रविवार के दिन अवश्य छुट्टी करनीपड़ती है और इस बात का प्रभाव सारे विभागों पर जिन में शिक्षित आर्यसमाजी भिन्न २ स्थितियों में काम करते हैं पड़कर रविवार के दिन ही साप्ताहिक अधिवेशन रखनेके लिये आर्य्यों को बाधित करदेता है, परन्तु आप के यहां ऐसी कोई बात नहीं । इसी प्रकार आप शनि और रवि के दिन नगरों के आर्यसमाजों की वार्षिकोत्सव के लिये जोड़दिया करें । दूसरी प्रार्थना हम यह करनी चाहते हैं कि कृपया परिवार सहित सब पधारा करें । आप के अड़ोस पड़ोस में यदि कोई ईसाई परिवार होतो उससे शिक्षा लेकर आप रविवार के दिन २ घन्टे अवश्य समाज के अर्पण करना अपना धर्म्म समझें, यह बड़ी बुरी बात है और आपके संकुचित हृदय की साक्षी है यदि आप अधिकारियों से रुष्ट होकर समाज में आना जाना भी बन्द करदें यहां पर हमें एक ईसाई महोशय का अपने मत परिवर्तन का प्रतिपादित कारण याद आता है, उसने कहा था कि हिन्दू रहते हुए मेरे लिये अपने इष्टदेव की पूजा और अपने धर्म्म भाईयों और विशेष करके अपनी धर्म्म बहिनों की बराबरी का आनन्द लेने का सौभाग्य कभी प्राप्त नहीं होता था परन्तु ईसाई होते ही मेरा प्रीति क्षेत्र बहुत बढ़गया और अब मैं अपने पीछे एक महती शक्ति देखता हूं जिसका विचार करके साधारण दुःख तो कोसों दूर भागते हैं पाठकगण! विचारिये कितना मार्ग हमें जाना है अब वही ईसाई परिवार प्रति रविवार सब काम काज छोड़ कर अपने चर्च में जाता है । चाहे उसके अन्दर उपदेश वही दिये जाते हैं जो सहस्रों वर्ष पहले दिये जते थे उस परिवार की नियम परायणता को देख कर हमें कई बार लज्जा आती रही है, क्यों न हम माताओं, भगिनियोंऔर कन्याओं को अपने साथ लाएं । कहा जाता है कि अभी समय नहीं आया परन्तु हमारी विनीत प्रार्थना है कि मनुष्य भी समय को बनाया करता है यदि समय मनुष्य को बनाता है तो, हमारी देवियां हिन्दू मन्दिरों जैसे दूषित स्थानों पर जाएं तो भला से, तालाबों, नदियों और कूओं आदि पर नंगी नहाएं तो समय कुछ नहीं कहता परन्तु यदि आप की सहधर्म्म चारिणी बनाई जाएं तो आप जनापवाद से डरते हैं, स्मरण रक्खो कि पाणिनि मुनि के अनुसार वह यज्ञ यज्ञ नहीं जिस में पत्नी अपने पती के साथ न बैठे, इस अंश में लाहौर आर्य्यसमाज ने बड़ा अच्छा पग उठाया है, यद्यपि गति बड़ी मन्द रही है, और एक तटस्थ परन्तु सुशिक्षित सज्जन इस बात पर हैरान रह सक्ते हैं कि हम स्त्रियों की पूजा की डींग मारने वाले और उनकी शिक्षा का प्रचार करने वाले क्यों उनको पर्दे के अन्दर घर की चार दीवारी में बन्द कर के जाएं और यदि बस चले तो बाहर से ताला लगा कर जाएं । क्यों जी यदि मुहल्ले के अन्दर लुच्चा से लुच्चा सब्जी फ़रोश आजाए तो उसके हस्तादि अङ्गों से खोंस खांस कर भी हमारी देवियां वस्तुएँ ले लें, परन्तु यदि सभ्य समाज के अन्दर उन्हें ले जाने का अवसर आवे तो दो गज़ लम्बा घूंघट निकलवाएं । हां जी नाक जो कटती है, हमारे युक्त प्रांत वाले भाई तो किसी आर्य्य को अपने यहां इसी मारे भोजन भी नहीं कराते कि स्त्रियों को छिपने का स्थान कहां मिलेगा, पाठक ! यदि तुम चाहते हो कि पर्दे के द्वारा दोषों पर भी पर्दा न पड़ा रहे तो मनुष्य समाज के आचार की रक्षा इसी में है कि व्यर्थ की लज्जा हटा दो और गृहस्थियों का परस्पर मिलना साधारण बात हो जाने दो, । हां शास्त्रोक्त लज्जा रूपी भूषण उन्हें पहनाओ " भूषण दूषण और " हमारे ही देश में महा राष्ट्र और गुजरात काठियावाड़ के अन्दर पर्दा नाम को भी नहीं है और वहां व्यभिचार भी कम है । हां एक बात हम अवश्य कहेंगे कि स्त्रियां कभी मोर न बन कर जाया करें । साधारण श्वेत और शुद्ध कपड़े पहिन कर समाज में आया करें, इस से उन्हें समाज के अन्दर बैठना उठना आ जायगा और उनके बच्चे सदा सभ्य बन जाएँगे, इस के बिना अवस्था यह है कि पुरुष चाहे कुछ हो स्त्रियाँ पोपिनी बनी रहती हैं और यदि कुछ विचारों के अन्दर परिवर्तन आता भी है तो वह सामाजिकता से रहित होने के कारण अंग्रेजी बोतलों में देसी शराब की नाईं प्रतीत होने लगता है । अर्द्ध सामाजिक रीतियां बड़ी भयानक होती हैं और हम बच्चों के हार शृङ्गार के सख़्त विरोधी हैं । हम कहते हैं कि जिन बच्चेंको कोट, पतलून, कालर नकटाई, बूट, गुलूबन्द और मोर के पत्रों वाली टोपियों की शकलों के साथ पाला गया हो वह यदि कालिजों और स्कूलों के अन्दर फिजूल खर्च बन जाएं और थियेटर देखने के अभ्यस्थ बनकर अपने आचार को खो–बैठें तो उन का क्या दोष है? ऐसे पुरुष रूप में स्त्रियों की इस समय देश को आवश्यकता नहीं, देश के प्रत्येक निवासी की दैनिक आय ॥।) है इस चाहे उन्हें कुछ बना लो, अवतो ज़रूरत है तपस्वियों की जो एक साबून की टिकिया उठाने के लिये नौकर को साथ जाने वालों के स्थान में अमेरिकन लोगों की तरह कुलियों के बिना काम चला सकें, भक्त कबीर कहते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पगड़ी बांधे पेच संवारे तेल मले अंगन में
कहत कबीर सुनो भाई साधो वह क्या

लड़ेंगे रन में।

हमें एक बार एक यज्ञोपवीत संस्कार में सम्मिलित होने का अवसर मिला, जब संस्कार हो चुका तो गुरु ने बालक को सत्यार्थ प्रकाश में लिखे प्रमाण जूता और छत्री के धारण के निषेध का उपदेश दिया, हमें हंसी आ गई। हमने सोचा कि यह लखपति का लड़का जो अनेक लाड़ चावों में पला है कब बिना जूते के चलने लगा है और कब केश रंजन तेल का चढाया हुआ भूत अपने सिर से उतार सकेगा। पाठक गण! ऋषि के साथ मखौल मत करो जो बातें तुम नहीं कर सक्ते उनकी प्रतिज्ञा न करो और न कराओ, तुम क्यों गरीब आदमियो के मार्ग में कांटे बोते हो दूसरों का महल देख कर अपनी झौंपड़ी जलाने पर उन्हें बाधित करते हो, यही तो शूल है जो मूर्खता, गोल्डस्मिथ के शब्दों में, अभिमान को अदा करती है। ब्रह्मचर्य्य काल की समाप्ति पर्य्यन्त राजा और रंक को एक ही अवस्था में छोड़े रक्खो, वैसे भी हम समझते हैं जैसा कि हम ऊपर सँकेत कर आए हैं कि शौकीनी और शृङ्गार में पाप की और एक सूक्ष्म परन्तु प्रबल मानसिक स्फुरण विद्यमान रहता हैं जो सदाचार के वास्ते हलाहल बिष का काम देता है। इस विषय पर बिस्तार पूर्वक हम ब्रह्मचर्य्य की रक्षा के उपायों वाले लेख में निवेदन करेंगे (पाठक गण हमें प्रसङ्ग के अवहेलन के लिये क्षमा करें हमारे समाज के अन्दर दोष अनेक हैं जिन्हें देख कर हमारा चित्त भर आता है और उनके उद्धरण के उपाय जब तक हम निरूपित नहीं कर लेते हमें शान्ति नहीं होती, इस अंश में हम यदि प्रसंग भंग के अपराधी भी हैं तो हम अच्छे २ लोगों के संग में हैं जिम में से एक निरुक्तकार भगवान् व्यास हैं और दूसरे भगवान् पतञ्जलि हैं जो अपने महाभाष्य में लिखते हैं कि न चे दानी मा कार्य्या सूत्राणि कृत्वा निवर्त्तन्ते)।

तो हम ने निवेदन किया कि साधारण स्वच्छ कपड़े पहना कर अपने सारे परिवार को समाज मन्दिर में लाया करें। यदि इतना करना असम्भव प्रतीत हो तो पारिवारिकोपासनाएं आरम्भ कर दें उभयथा हमें उस तमाशे को तो कुछ समझ नहीं आती कि आर्य्यसमाज जुदा हों और आर्य्यासमाज पृथक हों। स्वामी जी जैसा देशकालज्ञ तो इस पार्थक्य के लिये कोई विधान नहीं कर गया हम तो यही समझते हैं कि आर्य्यसमाकी सभासद स्त्रियां भी हो सक्ती हैं। जब यह कहा जाता है कि मनुष्य मर्त्य धर्म्मा है तो क्या स्त्रियां उस कोटि से बाहिर रह जाती हैं इसी प्रकार स्त्रियाँ भी आर्य्य बन सक्ती हैं। इस दृष्टि से गुरुकुल कांगड़ी आर्य्यसमाज का एक कार्य्य बड़ा प्रशंसनीय और अनुकरणीय है, कि उन्हों ने वहां की स्त्रियों को सचमुच अर्द्धाङ्गिनी समझकर धर्म्मयज्ञ में अपने साथ रक्खा है। स्त्री समाज के पृथक् उत्सवों के उस सूरत में कोई अर्थ नहीं रहते। इसी प्रकार हमारी तो सम्मति यह भी है कि अच्छे आचार व्यवहारों वाले कोई भी महाशय जो हमारे सिद्धान्तों के साथ प्रेम रखते हैं बिना किसी रसम के हमारे अन्दर आ सक्ते हैं।

इस प्रकार अधिवेशन के दिन सब गृहस्थ स्त्री पुरुष, युवा, वृद्ध घर से चल पड़ें और यदि सम्भव हो तो मार्ग में नगर कीर्तन होता जाय जैसा कि पहले पं० गुरुदत्त जी आदि के समय हुआ करता था, उसका हम उपाय बता चुके हैं और वह यह कि हम सिक्खों से इकट्ठे मिलकर गाना सीखें, और इस समय भी जय २ पिता परम आनन्ददाता' प्रायः सब को आता है उसे गाते हुए और लोगों को समाज का निमन्त्रण देते हुए मन्दिर में पहुंचे। इस में कोई मानहानि नहीं कि किसी को बुलाकर हम समाज में ले जावें, स्मरण रहे कि कई ऐसे पुरुष होते हैं जो अकेले आने का अभ्यास नहीं रखते परन्तु यदि कोई उन को लाने वाला हो तो वह आजाते हैं, इस प्रकार हर एक सभासद अपना कर्त्तव्य समझते कि वह प्रति सप्ताह एक नया आदमी समाज के अन्दर लावे, हमारी स्मृति यदि धोखा नहीं देती तो हमें याद पड़ता है कि मुलतान आर्य्य समाज के सभासद किसी समय प्रातःकाल नगर कीर्त्तन करके और आटा प्राप्त करके समाज लगाया करते थे और शायद यह नगर कीर्त्तन और आटा तो नित्य हुआ करते थे, हम यहां पर समाज के समय के विषय में भी स्पष्ट अपनी सम्मति दे देना चाहते हैं। साधारण अवस्थाओं में हम समाजों का समय प्रातःकाल ही अच्छा समझते हैं क्योंकि वह बड़ा शान्त समय होता है,

समाज मन्दिर में पहुंचकर सब से प्रथम ईश्वर भक्ति के भजन होने चाहिये उस के लिये यथा शक्ति थियेट्रीकल तर्जों के भजनों का परिहार करके पुराने पक्के अमींचन्द, नवलसिंह और केवल के भजन जो भैरों और आसा राग में हों गाने चाहियें। फिर हवन हों उस समय तक सब आर्य्य भाई आजाने चाहिये और चर्च का द्वारबन्द हो जाय हवन को वैसी ही आवश्यक कार्य्य वाही समझना चाहिये जैसे उपासना अथवा उपदेश। उस में सब सम्मिलित हों मन्त्र सब के शनै. २ कण्ठ करा दिये जायं। विशेष करके बालकों को इस यज्ञ में अवश्य बिठाया जाय क्योंकि बालकों को यह कार्य रुचिकर प्रतीत हो सकता है, अन्तिम आहुति पर सब के हाथ में थोड़ी २ सामग्री रख दीजाय और वह खड़े होकर यज्ञ को समाप्त करें और उसका शेष खाएं। फिर भजन हो इतने तक भैरवी का समय हो जाता है, यदि हो सके तो नगर का कोई सदाचारी रागी जो आर्य्य समाज का सभासद न होता हुआ आर्यसमाज के साथ सहानुभूति रखता हो बुला लिया जाय। इसी प्रकार किसी हारमोनियम बजाने वाले की सेवा लेलीजाय परन्तु हम हारमोनियम की अपेक्षा तबला, सारंगी, ताऊस, ढोलक या सत्तार की सिफ़ारिश करेंगे। एक दो भजनों के अनन्तर किसी सभासद महाशय की ओर से पूर्वक निश्चयानुसार आर्याभि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विनय में से एक प्रार्थना हो जिसे वह रट लाया हो, तदनन्तर एक भैरवी और एक आध आसावरी या पहाड़ी राग में भजन हों फिर किसी सभासद महाशय को जो सदाचारी हो और स्वाध्याय करने वाला हो पूर्व्व निश्चयानुसार उपदेश हो, व्याख्या किसी वेद मंत्र की या किसी अन्य आर्य ग्रन्थों में से होनी चाहिये जिस के साथ अपने सप्ताह भर के अनुभव और नोट वह महाशय प्रस्तुत कर दे। समाप्ति पर कोई ताली आदि न बजाई जाएं, एक आध भजन और आरती और आवश्यक विज्ञप्तियों के साथ उत्सव विसर्ज्जन किया जाय साप्ताहिकाधिवेशनों में यथा सम्भव व्याख्यान के स्थान पर कथा हुआ करे, इतनी कार्यवाही को कभी किसी संस्कार के लिये संक्षिप्त न किया जाय मृतक संस्कार के वास्ते यह नियम तोड़ा जा सक्ता है।

पूर्णानन्द उ० भा० सभा० पञ्जाब

——

साहित्यसंवाद।

विद्योदय।

खानपुर जिला कानपुर में एक विद्योदय नाम की सभा स्थापित हुई है, जिसकी ओर से इसी नाम का एक मासिक पत्र निकलेगा, जिसमें संस्कृत और आर्य भाषा के लेख और कवितायें होंगे। वहीं पर एक विद्योदय पाठशाला भी चलाई जायगी। पत्रकी आमदनी उसी पाठशाला में लगाई जायगी।

प्रभाकर

यह मासिक पत्र बड़गों ढकवाह गोरखपुरा से निकलने वाला है। प्रबन्धकर्त्ताजीके शब्दों में, विद्य, धर्म, कर्म समाज इतिहास विज्ञान उपन्यास शिल्प, काव्य, कला, कृषी, वानिज्य, व्यापार व्यवसाय, उचित उन्नति, उद्योग को उपाय, न्याय नीति नाटक स्वजाति मांहि प्रेम प्रीति एकता प्रचार —इसी प्रकार और भी जितने अच्छे उद्देश्य होसकते हैं, वे सब इसमें हुआ करेंगे। विज्ञापन की भाषा से यदि इस पत्र के भावदि की कल्पना करें तो अभी उन्नति के लिये बहुत गुंजायश है।

सर्व हितैशी हिन्दी पुस्तकालय

जुगसना (मथुरा) में यह पुस्तकालय पांच वर्ष हुए खोला गया था। इसके संस्थापक म० ललिमन प्रसाद गुप्त ने हमारे पास इसकी संस्थापना की विस्तृत कहानी लिखकर भेजी है। कहानी यह बताने के लिये उपयोगी है कि एक व्यक्तिके चित्त में और वे एक व्यक्ति इस सभा के सम्बन्धमें लेखक महाशयके परिचित प्रतीत होते हैं—उत्पन्न हुआ अच्छा भाव भी क्या क्या शुभ फल लासकता है। पुस्तकालय के उद्देश्य उत्तम हैं। मातृ भाषा की उन्नति, विद्या प्रचार, समाज संशोधन और प्रेम बढ़ाना—इनसे अच्छे और क्या उद्देश्य होसकते हैं। समाचारों से यह भी ज्ञात होता है कि यह पुस्तकालय अच्छा काम कर रहा है।

सम्मेलन के सभापति

सम्मेलन की स्वागत कारिणी ने अपने २६ जुलाई के अधिवेशन में निम्नलिखित सज्जनों के नाम सभापति होने के लिये पेशकिये हैं।

१ श्रीयुत पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी
२ " " गौरीशंकर हीराचन्द जी ओझा
३ " " राधाचरण गोस्वामी
४ " डा० सुन्दरलाल।
५ " पं० रामावतार शर्म्मा

अभीतक इनमें से कोई चुनाव नहीं हुआ।

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार के प्रोफैसर साठे जी M. A. कृत सचित्र।

विकासवाद (डार्विन की थियोरी) की पुस्तक हिन्दी भाषा में छपकर तैयार है।

भाषा अत्यन्त सरल और मधुर पृष्ठ संख्या २०×२७१ साईज़ बड़ा चित्र २९

मूल्य केवल २)

श्रीयुत **प्रो० विनयकुमार सरकार एम. ए.** लिखते हैं:—**बी. ए. और एफ ए. के विद्यार्थियों को यह पुस्तक टेक्स्ट बुक (Text Book) के तौर पर पढ़ना चाहिये** पुस्तक की लेखन शैली बहुत अच्छी है और—सायन्स से परिचित मनुष्य भी इसे बड़े प्रेम से पढ़ते हैं।

श्री **साहित्याचार्य पं० रामावतार पांडये एम० ए०** लिखते हैं:—इस पुस्तकसे हिंदी भाषा की आदरणीय वृद्धि हुई है। हिन्दी के प्रत्येक अभिमानी को इससे सन्तोष होगा। पुस्तक की कीमत बहुत नहीं है।"

मैनेजर, सद्धर्म्म प्रचारक पत्र, देहली

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विजय

नया साप्ताहिक नया

सम्पादक--श्रीयुत हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

विजयदशमी से निकलेगा

शीघ्र ग्राहक बनिये

क्योंकि इसके संपादक के ओजस्वी लेख और चटकीली टिप्पणियां प्रसिद्ध हैं।

क्योंकि इसमें प्रति सप्ताह हिन्दी साहित्य की समीक्षा रहा करेगी।

क्योंकि इसमें महात्मा मुंशीराम, प्रो० बालकृष्ण एम. ए., प्रो० महेशचरणसिंह एम. एससी. (अमरीका) ब्र० इन्द्र वेदालंकार, पं० विनायक गणेश साठे एम० ए० श्रीयुत जगन्नाथ खन्ना बी० एससी० (अमरीका) आदि प्रसिद्ध विद्वानों के लेख प्रकाशित होंगे।

क्योंकि इस द्वारा देश के सभी भाषाओँ के मुख्य पत्रोँ को सम्मतियां आपको जानने को मिलेंगी।

क्योंकि इसमें देश और विदेश के सभी मनोरँजक समाचारों का सँग्रह छपा करेगा।

और क्योंकि

इसमें पँच और कारटून देने का प्रबन्ध किया जायगा।

शीघ्र ग्राहक बनिये

मूल्य २॥)

मैनेजर, "विजय" देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्यो पान्त इतिहास सरल भाषा और मनो-रंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषा नुवाद २)

धर्म निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहकीक धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहिये पतासाफहो।

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाजार
बाजाजा शहर मेरठ

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफ़रा खट्टी या धूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, बादीका दर्द बवा सीर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उप-कारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का वि-कार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जसोर जिला गया

७००) रूपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर मिशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥।)

३००) रूपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।)
मुण्डक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।=)
प्रार्थना पुस्तक =)
ओंकार की उपासना =)

२००) रूपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश ।)
वेद और महाभारत के उपदेश ।)
वेद, मनु और गीता के उपदेश ।)॥
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ॥)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवा लें। समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है।

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज क निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लि बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक प राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जब सब दवा खाकर निराश हो गये हों तो

पुराने मेलेरिया बुखार की गोलियाँ।

इन गोलियाँ में नाम मात्र भी कुइनैन नहीं है। वास्तव में जहां बार बार कुइनैन व कुइनैन मिली हुई दवाएँ खाने पर भी बुखार नहीं छोड़ता अथवा पुराना हो गया हो तो ये गोलियां ऐसी हालत के ही लिये बनी हैं। जाडा, बुखार पुराना पड़ जाने पर पारी से न आकर दिन रात थोड़ा बहुत बना रहता है। शरीर का खून पतला पड़ने से रङ्ग फीका व मैला हो जाता है। थोड़े ही श्रमसे कलेजा कांपता है, स्वास फुलता है, भूख घट जाती है, पिलही वो यकृत के बढ़ने से पेट निकल आता है, कभी कभी मुंह व पैरों में सूजन आ जाती है और जिन्दगी व्यर्थ जान पड़ती है, ऐसी हालत में भी यह गोलियां गुण देती हैं।

एक गोली सुबह दुपहर वो शाम को थोड़े ठंडे पानी के साथ निगल जाना।

मोल—२४ गोलियों की डिबिया ॥) आठ आने। डा० म० १से६डिबिया तक ।-) पाँच आने।

दवा सब जगह बिकती हैं। नकली दवा से सावधान!

नं० ३२

डा: एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

एजन्ट, बाबूराम जैनी एन्ड कंपनी बड़ा दरीबा दिल्ली

श्री प्रो० बालकृष्ण एम०ए०

की रचित

अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये

जो पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखाने वालों से ¼ कीमत ली जावेगी।

अर्थ शास्त्र १॥)

भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)

अग्नि होत्र व्याख्या ।)

आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है) ।)

क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं? ।=)

आत्म—सुधार ,, ।=)

वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज प्रणाली छप रही है। ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

उस्तरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

जर हिमालय कम्पनी कंखल U.P.

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, के करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत की. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खाँसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

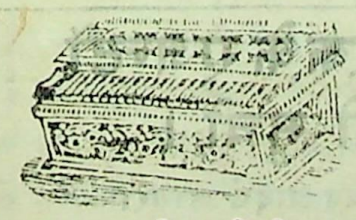

इस पुस्तक में कई प्रकार को गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसो सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≠)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य नर्नसरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल्य २) इस ग्रन्थ में कौरवों पांडव की लड़ाई नीती, धर्म्म चारों वरणों के धर्म्म वर्णन हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४८० पृष्ठ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पास पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनिये फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजो

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≠) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (ब)

चान्द--जि० आर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूल्य रत्न है।। **ब्राह्मी बूटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगतविख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-इटोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रशंसा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको यह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिबर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहारतक सर्जितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलवर्धाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, वहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और-गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ॥) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय आध
छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट फिरा।
अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

पीतल के बिरूच

आर्य्य स्त्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन॥) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन वाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

पताः—भारत हितैषी—कम्पनी,
अलीगढ़ सिटी

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री
अलीगढ़ सिटी. यू. पी.

बाल उड़ाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ९ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप आदर्श आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फर्राश, खाना गली समोसान देहली

पं० अमरनाथ के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अमरनाथ के धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No. L. 807

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | २८ भाद्रपद सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ९१] ता० १२ सितम्बर १९१४ | संख्या २२ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर की" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत लोग जानते हैं। इस पुस्तक में अमरीका, इंग्लैंड, [illegible] के इतिहास को लाया गया है कि वस्तुतः [illegible] राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ।
एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ॥) प्र० ०
तीन मास " " " " -) "
छः " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "
अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई
(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सक्ता।
(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार [illegible] चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक कानाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एकतोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता—प्रबन्धकर्तासद्धर्म प्रचारक पत्र-देहली,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवश्यकता ।

१) व्याकरण और साहित्य पढ़ाने के लिये छ. योग्य पंडितों की आवश्यकता है जो शास्त्री हों या शास्त्री के बराबर योग्यता रखते हों। वेतन २५) से ३०) मासिक होगा।

(२) एक ग्रेजुएट सीनियर ट्रेड अंग्रेज़ी में अधिक योग्यता हो वेतन ७०) मासिक ।

(३) एक जूनियर ट्रेन्ड टीचर वेतन ३०) से ४०) तक सब निरामिशभोजी हों और आयु में तीस वर्ष से कम नहों कम से कम डेढ वर्ष तक काम करना होगा । आर्य्य समाजियों की ओर विशेष ध्यान दिया जायगा । सब प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों सहित निम्न पते पर आने चाहिये ।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी
पो० श्यामपुर काँगड़ी
जि० बिजनौर

जयाजी प्रताप ।

हिन्दी भाषा में एक ऐसे पत्र की बहुत बड़ी जरूरत थी जिसमें कृषि, विज्ञान और कला कौशल सम्बन्धी विषयों पर उपयोगी सर्व साधारण के समझने योग्य, सुन्दर सुन्दर लेख प्रकाशित हों। अलावा इसके साधारण लोगों के मनोरंजक योग्य कविता, जीवनचरित्र शिक्षा प्रद कहानियाँ और देश देशान्तर के समाचार भी प्रकाशित हुआ करें । स्त्री शिक्षा की उन्नति के लिये भी समय समय पर अच्छे लेख छपा करें । इस अभाव को जयाजी प्रताप ने पूरा किया है । २ वर्ष से बराबर इसी नियम पर यह पत्र निकल रहा है । हिन्दी के सारे समाचार पत्रों ने इस पत्र की सम्पादन शैली और लेखों की प्रशंसा की है । जयाजी प्रतापके हर अंकमें १२ पृष्ठ हिन्दी और ५ पेज अंग्रेजी के पढ़ने योग्य लेख होते हैं । जो लोग अंग्रेजी समाचारपत्र तो पढ़ना चाहते हैं परन्तु अधिक मूल्य होने के कारण उन्हें खरीद नहीं सकते वे केवल ३) साल सब डाक महसूल देकर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं को लाभ उठा सकते हैं । हर अंकमें एक दो सुन्दर हाफटोन चित्र भी रहते हैं । इतने कम दामों में ऐसा सुन्दर कोई पत्र हिन्दी भाषा में नहीं निकलता ।

मैनेजर
जयाजी प्रताप
ग्वालियर

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये ।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली ।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० छाप =)]
थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

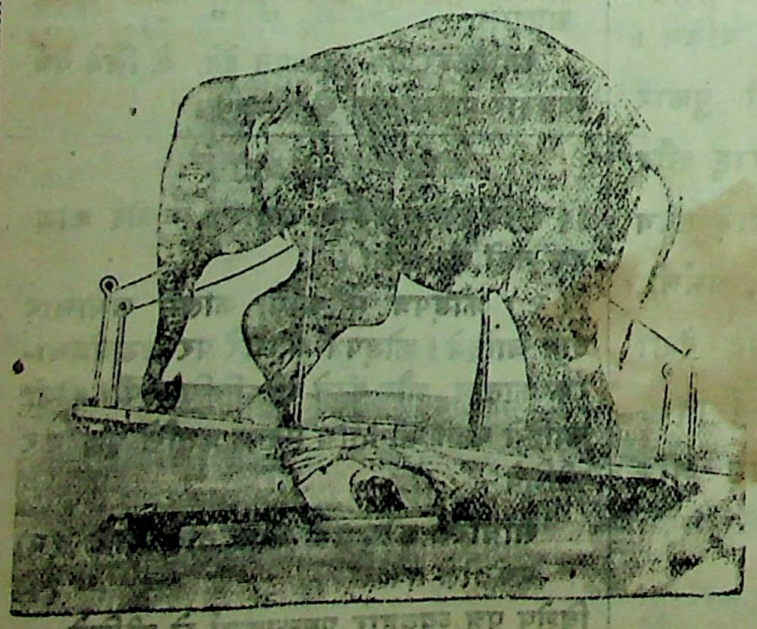

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) घोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर =) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति।

शान्ति, शान्ति, शान्ति,

अमरीका की राजधानी से निकलने वाले एक जर्मन पत्र ने लिखा है कि अब समय आगया है कि यह महा युद्ध शान्त किया जाय और सब देश अपनी तलवार म्यान में डाल दें। हमारी तो सम्मति है कि यह युद्ध आरम्भ में ही बन्द हो सकता था, और होना चाहिये था। यह संसार का दुर्भाग्य था कि योरुप के राजनीतिज्ञ उठती हुई समस्या को हल न कर सके। बड़े बुरे मुहूर्त में आस्ट्रिया के राजकुमार का बध हुआ था उस एक बध ने जहाँ योरप में युद्ध की आग भड़का दी है, वहां आस्ट्रियन साम्राज्य की जड़ों को ज़ोर से हिला दिया है। गलीशिया में रूस के विजयों ने आस्ट्रिया का सारा दबदबा उड़ादिया है। प्रतीत होता है कि आस्ट्रिया अपने को बहुत भूला हुआ था। जो जंगल में आग लगाता है, उसे देख लेना चाहिये कि कहीं अपने कपड़ों में ही मिट्टी का तेल तो नहीं लगा हुआ। जिस की अपनी खिड़की में शीशेलगे हुए हैं, उसे दूसरे पर पत्थर बरसाने की चाल न चलानी चाहिये। आस्ट्रिया अपने काँच के शरीर को लोहे का समझ बैठा था। सर्विया ने उसे ऐसा ठोका कि भाग कर घर की शरण लेनी पड़ी। वहां से खेंच कर सारी सेनायें रूस में पहुंचाईं, किन्तु वहां और भी अधिक पछाड़ मिली, ऐसे समय में आस्ट्रिया के लिये उचित यही है कि वह शान्ति करले। रूस जो कुछ ले चुका, उसे भावी युद्ध के लिये शिक्षामानकर युद्ध से किनारा कर ले। युवराज के बध का सर्विया से जो बदला लेना था वह लिया जा चुका। अब शांति में ही शरण है॥

जर्मनी के लिये शान्ति

अभी तक युद्ध जहां तक बढ़ा है, जर्मनी ने उस में अच्छी तय्यारी दिखाई है। सेनाओं पर गत ४५ वर्षों में जो बड़ी भारी धन राशि व्यय हो चुकी है, उसका उचित उत्तर जर्मनी दे चुका है किन्तु साथ ही साथ इस से इन्कार नहीं हो सकता, कि जर्मन सेना की हानि बहुत अधिक हो रही है। आक्रमणकारी को अपने मनुष्यों की बहुत हत्या करानी पड़ती है। कई लाख जर्मन अब तक धराशायी हो चुके होंगे। सारे संसार के साथ लड़कर जर्मनी को यदि विजय मिलेगा तो बहुत महंगा, और यदि पराजय मिलेगा तो सर्वनाश साथ आयगा। जितना कुछ जर्मनी कर चुका है, उसने उस की पर्याप्त युद्ध प्रतिष्ठा बिठा दी है। इस समय सन्धि होने में जर्मनी को कोई हानि नहीं लाभ ही है। जो अतिगर्व करता है, उसका नाश निश्चित है। जर्मनी यदि इस दौर्भाग्य से बचना चाहे, उसे सन्धि और शांति के लिये यत्न करना चाहिये।

मित्रो को शांति से लाभ।

युद्ध के समाचारों को मोटी दृष्टि से पढ़ें तो प्रतीत होता है कि अभी तक जर्मनी जीत रहा है। किन्तु जो लोग युद्ध नीति में निपुण हैं, वे ऐसी सम्मति नहीं रखसकते। समाचार पत्रों को सरकार से जो समाचार मिलते हैं, उन के द्वारा इस अशुद्ध सम्मति की निर्बलता खूब प्रकाशित कर दी जाती है। जर्मनी ज्यों २ बढ़ रहा है, उसकी स्थिति भय युक्त होती जाती है। वह ऐसी जगह में घिरता जाता है, जहां से निकलना उस के लिये कठिन हो जायगा। उन्हीं सरकारी समाचारों से यह भी प्रतीत होता है कि जर्मनी के गोलन्दाज बहुत निपुण नहीं हैं। उनकी गोलियाँ निशाने पर नहीं लगती। जर्मनी ने लोवेन के जलाने और डिनान्ट को उड़ाने में जो क्रूरता दिखाई, उस ने उसे संसार में काफ़ी बदनाम कर दिया है। इस से किसे इन्कार है कि धार्मिक बिजय ही सब से ऊपर है। फिर उन्हीं समाचारों में यह भी बतलाया गया है कि बीरता और चातुर्य में फ्रांस और इंग्लैण्ड के सिपाही जर्मनी से उत्तम सिद्ध हुए हैं। ऐसी अवस्था में इतिहास के पृष्ठों में जर्मनी के विजय की कहानी नहीं गाई जायगी। यह विश्वास रखते हुए मित्रों को भी शान्ति से लाभ ही है हानि नहीं। तब इस समय भी शाँति क्यों नहीं की जाय? क्या संसार में ऐसा कोई नहीं, जो इस युद्ध को शाँति करा सके? ऐ शाँति के उपासक धर्माचार्यो! आपके धर्म ग्रन्थ कहां गये? आप की दया की कथायें कहाँ गईं? युद्ध कभी लाभदायक नहीं हो सकता। फिर बेचारे भारत को तो युद्ध से कोई भी लाभ नहीं दीखता है। भगवान से हमारी तो बारंबार यही प्रार्थना है कि वह इंग्लैण्ड और जर्मनी के राजनीतिज्ञों को सुमति दे, जिस से शांति की बात सोचने के लिये तैयार हो सकें।

युद्ध का व्यय और भारत वर्ष

गत मंगलवार को लेजिस्लेटिव काम्सिल का जो अधिवेशन हुआ था, उसमें युद्ध की सहायता के लिये धन देने का प्रस्ताव किया गया। सभा में निश्चय हुआ कि भारत वर्ष की ओर से कुछ धन भेजा जाय। यह धन उस धन से अतिरिक्त हो, जो हार्डिंज रिलीफ़ फन्ड द्वारा जा रहा है। यह प्रस्ताव साम्राज्य के साथ भारत का सम्बन्ध दृढ़ करने में अवश्य सहायक होगा। हमारी अपनी सम्मति है कि युद्ध की सहायता के लिये भारत से धन जाने का एक ही मार्ग होना चाहिये। भारत वर्ष इतना धनिक नहीं है कि कई रास्तों से धन भेज सके। इस प्रस्ताव की उपास्थिति में अन्य मार्गों का विचार करना निष्प्रयोजन सा है। यह ठीक है कि इन फण्डों के उद्देश्य भिन्न भिन्न होंगे, किन्तु अंतिम फल तो एक ही है। जाने की जगह भी एक ही है। ऐसी अवस्था में धन जाने का एक ही मार्ग होना चाहिये, अनेक नहीं।

ख़ालसापन्थ की हकीक़त की जब्ती

ख़ालसा पन्थ की हकीकत वह पुस्तक है जिस पर पटियाले में अभियोग चल रहा है। वह अभियोग चल ही रहा था कि पञ्जाब गवर्नमेण्ट ने इस की ज़ब्ती की घोषणा देदी है। जब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुस्तक पर मुकदमा चल ही रहा था, और उस के गुण अवगुण का निश्चय होने वाला ही था तो फिर इस जल्दी से सरकार ने क्या लाभ सोचा है, यह हम नहीं कह सकते। उस मुकदमें को दृष्टि में न रक्खें तो भी इस पुस्तक का जब्त किया जाना उचित नहीं प्रतीत होता। पुस्तक को छपे आज एक वर्ष से अधिक होगया है। आज उस की बिक्री रोकना और पिछली छपाई को अनुचित ठहराना युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता। इस पुस्तक पर सिक्खों ने खूब शोर मचाया। पटियाला रियासत में मुकद्दमा चला था तब तक सरकार ने पुस्तक को अनुचित नहीं ठहराया था आर्य्यसमाज डिफैन्स कमेटी ने इस पुस्तक को निर्दोष करार देकर उस के कारण कष्ट में पड़े हुओं की सहायता के लिये यत्न प्रारम्भ किया, और प्रायः आर्य्य समाज भर ने अपनी सम्मति प्रकाशित करदी उस समय इस प्रकार की आज्ञा प्रचारित करके सरकार ने क्या लाभ समझा है, यह भी हम नहीं कह सकते? सरकार ने इस पर अवश्य ध्यान लिया होगा कि आर्य्य समाज इस जब्ती से सन्तुष्ट नहीं हो सकता। भारत सरकार के लिये आर्य्य-समाजी वैसी ही प्रजा है, जैसे सिक्ख। उस के लिये आर्यसमाजों की सन्तुष्टता वैसी ही मूल्य वाली हो सकती है, जैसी कि सिक्खों की सन्तुष्टता। ऐसी अवस्था में अवश्य असन्तोष होगा। बड़े बड़े निष्पक्षपात विचारकों ने इस पुस्तक को देखकर यह राय दी है, कि इस में सिक्ख गुरुओं पर किसी प्रकार का भी गर्हणीय आक्षेप नहीं है। यदि कोई खालसा पत्र अपना और प्रयोजन सिद्ध करने के लिये व्यर्थ का तूफान उठादें तो सरकार को उस से प्रभावित नहीं होना चाहिये। हम समझते हैं कि सारा आर्य समाज एकमत होकर प्रस्तावों द्वारा सरकार से प्रार्थना करेगा कि वह अपने निश्चय पर पुनर्विचार करें जिस में किसी विशेष धर्म वा सामाजिके साथ अनुचित कठोरता न हो जाय।

योरप में महाभारत

मित्रों की जीत

वायसराय का पुत्र आरोग्य हो रहा है।

फ्रांस की जीत।

रूस में गेलिशिया।

पेरिस पर धावा

युद्ध विशारदों की राय निराशाजनक नहीं है। उनका कथन है कि जर्मनों ने पेरिस पर बढ़ने का अच्छा प्रबन्ध किया है किन्तु यह अधिकतर दिखौवा ही है। पेरिस पहुंचने पर उनको मित्र राज्यों की अखण्डित सेना का सामना करना पड़ेगा। सन् १८७० में ऐसा नहीं था मित्र राज्यों की सेना को मजबूत किलेबन्दी के दो चक्रों की सहायता रहेगी। कहा जाता है कि मित्र राज्यों की सेना को हराये बिना समस्त पेरिस नहीं घेरा जा सकता। गत दिवसों में युद्ध देखने वाले कहते हैं कि जर्मन सेना अपने आक्रमण में वह जोश नहीं दिखाती।

फ्रांस की स्थिति।

समाचार विभाग का कथन है कि फ्रांस में युद्ध की रङ्गभूमि की स्थिति में कुछ फरक नहीं पड़ा है। मित्र राज्यों का स्थान सुरक्षित रखा जा रहा है। लक्षणों से मालूम होता है कि जर्मन सेना पूर्व और दक्षिण पूर्व में कुछ परिचालना कर रही है।

फ्रांस की गवर्नमेंट।

फ्राँस की गवर्नमेंट बोर्दो में कुशल पूर्वक जमगई है। यहाँ वेङ्क आफ फ्रांस का सोने का जखीरा पहुंच गया है।

पेरिस की ओर जर्मनों का धावा सुन कर चैंटिली से लोगों ने भागना आरम्भ कर दिया। इनमें से बहुतेरे घुड़ दौड़ के अस्तबलों से सम्बन्ध रखने वाले अङ्गरेज थे। एक ट्रेनर (घोड़े को दौड़ना सिखाने वाला) को अङ्गरेज सैनिकों ने भागने की सलाह दी। इधर वह घोड़ों को लेकर गाँव के एक रास्ते से निकला और उधर दूसरे रास्ते से जर्मन सैनिक गाँव में आ पहुंचे।

पेरिस में शान्ति

यद्यपि पेरिस में कुछ घबड़ाहट नहीं थी तथापि युद्ध स्थल के नये समाचारों से यह जानकर कि पेरिस पर जर्मनों का दबाव घट रहा है, कुछ विश्वासदायक असर हुआ है।

जर्मनों की चाल।

सरकारी फ्रेंच कम्यूनिक में लिखा है कि ज्ञात होता है, हमारे बाम भाग में शत्रु पेरिस की परवा न कर हमारे पार्श्व से अपना पार्श्व बढ़ाने की चेष्टा में हैं। उन्हों ने लाफेर्टी, सोर्जीरे पहुंच कर रोम्स को पार किया वे, आरगोनरिज के पश्चिम किनारे पर जा रहे हैं। उनकी चाल पेश नहीं आई।

जर्मनों की चाल व्यर्थ

पेरिस में सरकारी तौर पर प्रकाश हुआ है कि वाम भाग में घेरने की जर्मनों की चेष्टा पूरी तौर से रोकदी गई मालुम होती है।

बेलजियम पर आक्रमण।

जर्मनों ने मेलिन्स पर दो घण्टों तक गोले बरसाये। सौभाग्य से प्रसिद्ध चित्र एंटवर्प भेजदिये गये थे। इस लिये उन की रक्षा होगई। गिरजे का बहुत सा हिस्सा नष्ट होगया।

ब्रसल्स से एक बड़ी सेना एंटवर्प और औस्टैंड का सम्बन्ध तोड़ने के लिये टर्मोण्डी की ओर भेजी गई। बेलजियम वालों ने मेलिन्स के दक्षिण-पश्चिम में सब 'खालें' तोड़ दीं जिससे तमाम जिला जलमय होगया। जर्मन सेना स्तम्भित होगई परन्तु बहादुरी के साथ तोपें बचाने के लिये जल में खड़ी रही है। एंटवर्प के किलों से बरसते हुए गोलों से उनका बहुत नुकसान हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जर्मन हवाई जहाज डूबा।

हारविच से ६० मील दूर एक ब्रिटिश सबमेरीन को एक जर्मन हवाई जहाज तैरता हुआ मिला। उड़ने वाले और उसके मिस्त्री को पकड़ लिया गया और जहाज डुबोदिया गया। जर्मन हारविच में पहुंचा दिये गये।

आस्ट्रिया की दुर्दशा

गेलशिया में आस्ट्रिया का सेना बल बिलकुल नष्ट होगया। लेम्बर्ग के पूर्व और लबलिनके दक्षिण दोनों दिशाओं में उनकी बहुत दुर्दशा हुई है। इन दोनो युद्धों में सब मिल कर ७७००० आदमी कैद किये गये। रूस की सेना अब अस्ट्रियन सेना को एक अर्धचक्र में घेर रही है और धीरे २ घेरा छोटा छोटा कर रही है। अस्ट्रिया की सेना को मदद की आशा नहीं है। क्योंकि उस की दक्षिण सेना को सर्विया ने नष्ट कर दिया है और बचे हुओं को वहां से हटाने से सर्विया का रास्ता बुडापेस्ट तक, खुलजायगा। इस के अतिरिक्त रूस के बर्लिन तक बढ़ने तक का रास्ता साफ होजायगा।

हार स्वीकार।

वायना से सरकारी खरीतों में स्वीकार किया है कि दस दिनों के युद्ध के उपरान्त रूसी सेना में अस्ट्रियनसेना को पूरी तरह से हरा दिया और दो सेनापति मारे गये। जर्मनवाले अस्ट्रिया की सहायता पर पहुंचे परन्तु तब तक फैसला होचुका था।

नयाप्रदेश

रूस ने जीते हुए अस्ट्रियन राज्य का एक नया प्रदेश बनाया है।

विद्रोह

लन्दन ४ थी सितम्बर

समाचार मिला है कि वायना में दो जेच पलटनों ने विद्रोह किया किन्तु इनमें से बहुतेरे सर्व साधारण के सामने गोली से मार दिये गये हैं।

समाचारों की कमी

सर्वसाधारण में युद्ध के समाचार प्रकाश करने के विषय में टाइम्स ने एक लेख में बहुत शिकायत की है। उस का कथन है कि युद्ध में सर्वसाधारण का उत्साह बढ़ाना चाहिये किन्तु गवर्नमेन्ट की कार्य्यप्रणाली से लोगों का उत्साह ठण्डा पड़ जाता है। हमारे समुद्र पार के राज्यों का उचित समाचार अवश्य मिलने चाहिये क्योंकि उनपर बहुत कुछ निर्भर है।

जापान की सहाता।

जापान की पार्लीमेण्ट में परराष्ट्र सचिव ने कहा कि जापान स्वेच्छा से ग्रेट ब्रिटेन की सहायता कर रहा है। जिस से पूर्व में सदा के लिये शान्ति रह सके। कियाचाउमें जर्मनी की युद्ध की तयारियां और जहाजों के कारण शान्ति में आशंका हो रही थी।

जापान को चालें

टाइम्स को पेकिङ्ग से तार मिला है कि वृहस्पतिवार को कियाचाउ की सीमा के बाहर लसेचो में दो हजार जापानी उतारे गये हैं।

मित्र राज्यों की सफलता।

सेंट क्विंटेन में फ्रान्स और ब्रिटिन सेना की सफलता के समाचार का गवर्नमेण्ट ने समर्थन किया है। जर्मनों २० मिलोमीटर (११॥ मील) तक भगादिया गया और बहुत हानि पहुचाई गई। टाइम्स में लिखा समाचार है कि बोलन गवर्नर को खबर मिली है कि जेनरल जोफरे जर्मन सेना की लाइन को घुमाने में सफल हुए हैं और ब्रिटिश सेना जर्मनों के पार्श्व से अपने पार्श्व को बढ़ाने में समर्थ हुई हैं।

आस्ट्रिया की दुर्दशा

वायना से रोम में आये हुए खरीतों से मालूम होता है कि गौलिसिया में अस्ट्रिया की समस्त सेना भगा दी गई है सब आशा एक जर्मन सेना पर निर्भर है जिस ने उत्तर पूर्व सीमा पर सब रेलों में भीड़ मचा रक्खी है। अस्ट्रियन सैनिक अफसरों ने जर्मनों से १४ इंच होवाइजर तोपें गैलीसिया में भेजने के लिये अनुरोध किया है।

रूस की सेना बढ़ रही है

यहां सूचना दीगई है कि पूर्व प्रशिया में रूस की सेना की हार का वृत्तान्त जर्मन सरकारी विवरण में बहुत बढ़ा दिये गये हैं। माजोर झीलों के रास्ते से रूस का घुड़सवार पलटन बढ़ रही है। नेस्टर के निकट अस्त्रों से रक्षित एक जर्मनट्रेन कुछ कारवाई कर रहीहै

रूस वालोंके प्रति जर्मनों के अत्याचारों की सूची सरकार के द्वारा प्रकाशित हुई है। इस में जर्मनों के व्यवहार की तुलना 'मध्य समय' के कामों से की गई है।

लनदन ६ठी सितम्बर

रूस वालों ने लेम्बर्ग स्टेशन में प्रवेश कर युद्ध के सामान डाइनामाइट पेट्रोल और औषधियों के सामान से से भरी हुई गाड़ियाँ पाई।

सेन्सरशिप का विरोध।

"टाइम्स" अपने एक लेख में युद्धकी खबरों की शिकायत करता हुआ लिखता है कि जब कि सर्वसाधारण के लिये यह आवश्यक है कि वे युद्ध में दिलचस्पी लें, गवर्नमेंटकी चाल का असर यह होता है कि उनका जोश ठँडा पड़ जाता है। पत्र ने यह भी लिखा है कि यह बहुत आवश्यक है कि समुद्र पार के हमारे राष्ट्रों को, जिन पर बहुत कुछ निर्भर है, जहां तक उचित हो सब बातें बतलाई जायँ।

टर्की और रोमानियां।

अभी बुखारेस्ट में ग्रीस के कहने सुनने से एक सभा हुई थी। कहा जाता है कि ग्रीस के प्रतिनिधि से टर्की के प्रतिनिधि ने कुछ धमकी देकर बात की इस पर रोमानिया ने टर्की के सुल्तान को सावधान किया है और कहा है कि यदि उसके मन में कुछ कर देखने की है तो टर्की को बुरा फल भोगना पड़ेगा।

फ्रांस में युद्ध।

जर्मन फ्रेंच किले छोड़ रहे हैं:—

एक फ्रेंच सरकारी विज्ञप्ति से विदित होता है कि जर्मन पेरिस की ओर बढ़कर मित्रों की सेना पर घूम कर पहुंचा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

-ह · · ·

सद्धर्मप्रचारक

सरकार से निवेदन ।

(देहली में पुलीसका व्यवहार)

इस समय योरोपीय युद्ध के कारण हमारी सरकार विशेष चिन्ता ग्रस्त है। जब से ब्रिटिश जाति ने साम्राज्य स्थापित किया है तब से कभी भी ऐसे भयानक युद्धका अवसर उपस्थित नहीं हुआ है। इस समय प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य है कि वह सरकार को सहायता दे और जहाँ तक हो सके उसकी आन्तरीय चिन्ताओं को कम करने का प्रयत्न करे। इस कार्य में शिक्षित भारतवासी विशेष रीति से सहायता दे सक्ते हैं। युद्ध के समाचारों से सर्व साधारण में जो असन्तोष फैल रहा है उसे शाँत करना शिक्षित भारत वासियों के ही हाथ में है। और हमें यह कहते सन्तोष होता है कि शिक्षित भारतवासी अपने कर्त्तव्य को अच्छी तरह पालन कर रहे हैं। वे इस समय एक स्वर से सरकार का पक्ष समर्थन कर रहे हैं और अपनी शक्ति से बढ़कर चन्दा दे रहे हैं। उन्हों ने युद्ध की समाप्ति तक विवाद ग्रस्त राजनीतिक आन्दोलन को भी मुल्तवी रखने की घोषणा देदी है।

इस के साथ ही दूसरी ओर सरकार का भी कर्त्तव्य है कि अपने निचले कर्मकर्मचारियों को आज्ञा दे दे कि जहां तक उनसे हो सके वे भी कोई ऐसा काम न करें जिस से किसी भी राज भक्त समुदाय में असन्तोष फैले या उस के हृदय को दुःख पहुंचे। हम नहीं चाहते कि इस समय किसी शिकायत को बढ़ाकर हम सरकार को चिन्ता बढ़ाने के कारण बनें पर देहली में गुरुकुल मण्डली के साथ जो पुलीस का व्यवहार हुआ है उसे हम उच्च अधिकारियों तक पहुंचाए बिना नहीं रह सक्ते। पाठक किसी और जगह गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की देहली यात्रा का वृत्तान्त पढ़ेंगे।

६ सितम्बर को गुरुकुल के ब्रह्मचारी प्रो० इन्द्र जी के साथ देहली पहुंचे। वे ७ ता० को कुतुब देखने महरोली चले गए। वे प्रातः काल ४ बजे ही चल पड़े थे क्यों कि उन्हें ११ मील पैदल चलना था। ८ को वे लौट आए। इन दो तीन दिनों में प्रचारक के कार्यालय को पुलीस ने अपना घर ही बना लिया। दो ही दिनों में कई बार पुलीस के दूत पूछने आये कि "प्रो० इन्द्रजीत कहां हैं?" उन्हें पं० हरिश्चन्द्र जीने महरौली जाना और आना बतला दिया। पर शायद उन्हें इस पर सन्तोष नहीं हुआ, ८ ता० की सायंकाल को सी० आई० डी० का एक दूत ब्रह्मचारियों के साथ कई घंटों तक रहा और उन से आगरे आदि जाने का सब हाल फिर पूछ गया। हम ने समझा कि अब छुटकारा हुआ। पर ९ की प्रातःकाल को ही फिर पुलीस का आदमी उपस्थित हो गया और नोट बुक खोलकर "आप का नाम बाप का नाम" पूछने लगा। "आप कहां से आए हैं, गुरुकुल कहां है. कल आप ने किस के घर रोटी खाई, आज कहाँ भोजन करेंगे?" इन प्रश्नों के पूछे जाने पर हमें आश्चर्य हुआ तथापि हमने उत्तर दे दिया।

हम सरकार से पूछना चाहते हैं कि प्रजा को सन्तुष्ट रखने का क्या यही तरीका है। हम यह नहीं कहते कि पुलीस नगर में आने जाने वालों की और दूसरों के पानी पीने और भोजन करने की खबर न रक्खे पर प्रत्येक भद्र पुरुष यह आशा रखता है कि इन ख़बरों की सँग्रह करने में उन्हें तँग न किया जाय हमें विश्वास है कि उच्च अधिकारियों की कभी भी यह इच्छा नहीं है। पर दुःख यह है कि सर्व साधारण का प्रतिदिन काम उच्च अधिकारियों से नहीं, पर निचले कर्मचारियों से पड़ता है और उन्हीं के व्यवहार का सर्व साधारण पर प्रभाव पड़ता है। हमें सब से बड़ा दुःख यह है कि यह व्यवहार उन विद्यार्थियों के सामने किया गया जिन के हृदय पर इस समय का पड़ा हुआ असर बड़ी आयु में कठिनता से दूर होता है।

हमें आशा है कि हमारा यह निवेदन किसी उच्च अधिकारी के कानों तक पहुंचेगा और पुलीस को ऐसी हिदायत होगी कि वह निरर्थक असंतोष फैलाने का कारण न बने।

युद्ध और भारतका व्यापार

हमारे देश में स्वदेशी का विशेष प्रचार उस समय हुआ था जिस समय १९०६ में बंग भंग के कारण राज नैतिक हल चल मची थी। कई लोगों की सम्मति में तो स्वदेशी की उत्पत्ति का ही वह समय है। जब तक राज नैतिक हल चल का आवेश रहा तब तक स्वदेशी का भी अच्छा ज़ोर रहा। थोड़े समय में ही हमारे देश में कई तरह के कल कारख़ाने खुले और लोगों में स्वदेशी चीज़ें ख़रीदने की रुचि हुई। पर ज्यों ज्यों वह हल चल ठंडी पड़ती गई त्यों त्यों स्वदेशी का प्रवेश घटता गया। हम यह नहीं कहते कि १९०६ की हल चल का कुछ परिणाम बचा ही नहीं पर इतना अवश्य कहेंगे कि स्वदेशी की वह उन्नति नहीं हुई जो होनी चाहिये थी। जोश के ठंडा हो जाने से कई नए खुले हुए शक्कर और दिया सलाई के कारख़ाने बंद होगए। कपड़े के व्यापार की अवश्य कुछ उन्नति हुई पर उसे भी यथेष्ट नहीं कहा जा सक्ता।

युद्ध के कारण अब यह दूसरा समय उपस्थित हुआ है जब हम स्वदेशी की कुछ उन्नति कर सक्ते हैं। राजनैतिक हल चल के समय से इस समय में एक लाभ है और एक हानी है। लाभ तो यह है कि इस समय किसी विशेष जोश की आवश्यकता नहीं है। विश्व व्यापी युद्ध के कारण विदेश से आने वाली चीज़ों का मार्ग बंद हो गया है। जर्मनी और आस्ट्रिया हमारे देश के साथ बहुत व्यापार करता था। भारत वर्ष निर्धन देश है उसे सस्ती चीज़ों की बहुत ज़रूरत रहती है। उस ज़रूरत को जर्मनी पूरा करता था। लाखों रुपयों का सस्ता बिसाती माल जर्मनी से आता था। सस्ता काग़ज़ जर्मनी और आस्ट्रिया भेजता था। वह सब माल आना बंद हो गया है। भारत वर्ष इस समय उन चीज़ों को तय्यार करने के लिये बाधित है। लाखों रुपयों का जो विदेश से कपड़ा आता था उस का भी आना निश्चित नहीं है। इस समय स्वदेशी और बायकाट के लिये जोश की आवश्यकता नहीं है पर इस समय स्वदेशी व्यापार को उन्नत करने के लिये हम बाधित हैं। उसके बिना हमारा गुज़ारा ही नहीं हो सक्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस समय सभी विदेशी चीजों की कीमत बढ़ रही है। जो दिया सलाई पैसे की तीन आती थी वही अब पैसे पैसे को आती है। बीस पच्चीस दिनों के युद्ध में ही यह हाल है। बड़े बड़े समर प्रवीणों की सम्मति है कि यह युद्ध तीन साल तक भी चल सक्ता है। इतने दिनों में हमारी क्या दशा होगी इसका अनुमान करना भी कठिन है।

ऐसे अच्छे अवसर को हाथ से न जाने देना चाहिये। इस समय चारों ओर यह आवाज़ आ रही है कि युद्ध तक राजनैतिक अन्दोलन बंद कर दिया जाय। सरकार की चिन्ताओं को देख कर यह बात उचित भी जान पड़ती है। इस समय को स्वदेशी व्यापार की उन्नति में लगाना चाहिये। यह बात सच है कि इस समय नए कारख़ानों का अधिक संख्या में खुलना असम्भव है। हमारे यहां सब मैशीनरी बाहिर से आती है और बाहिर से माल का आना अनिश्चित है। तथापि पुराने कारख़ानों को उत्तेजना देने से वे ही अच्छा माल तय्यार कर सक्ते हैं। खरीदारों की उदासीनता से जो कारख़ाने बंद हो गए थे उनका पुनरुद्धार किया जा सक्ता है।

इसके साथ ही साथ एक और बात की भी आवश्यकता है। आज कल हमारे देश में जो चीज़ें तय्यार होती हैं उनका और उनके मिलने का पता बहुत कम लोगों को है। स्थान स्थान पर प्रदर्शनी करके उनकी ओर लोगों को आकर्षित करना भी अत्यन्त आवश्यक है। कलकत्ते के कुछ उत्साही नेताओं ने इस समय स्वदेशी बाज़ार लगाकर बहुत उपकार का काम किया है जिस का अनुकरण और नगरों को भी करना चाहिये

इस समय गवर्मेंट का भी कर्त्तव्य है कि वह स्वदेशी व्यापार को उत्तेजना दे। इंग्लैंड की सरकार ने अपने देश की कारीगरी को उन्नत करने के लिये प्रयत्न आरम्भ कर दिया है। भारतीय सरकार को भी उसका अनुकरण करना चाहिये। इस समय सब से बड़ा काम उन चीज़ों की सूची बनाना है जिन्हें हम अपने ही देश में तय्यार कर सक्ते हैं व्यापार के लिये सुभीता देकर भी सरकार स्वदेशी की सहायता कर सक्ती है। हमें पूरी आशा है कि इस समय सरकार दूसरे देशों से पीछे न रहेगी।

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(४६)

सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय खुलने के दिनों आलस्य का नाम नहीं था। पहले तो नित्य किसी न किसी की शङ्काओं का समाधान करता। फिर कोई ऐसी सभा (आर्य्यसमाजिक वा अन्य) न थी जिसकी बैठकों में सम्मिलित न होता। सायं प्रातः के स्वाध्यायका वर्णन कर ही चुका हूं। और इन कामों के साथ ही एक बाल विधवा के विवाह की भी चिन्ता थी, उस के लिये भी यत्न होता। ६ मार्च की डायरी में लिखा है—"कचहरी से लौटकर देवराज जी के यहांगया और उन्हें ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का एक कठिन स्थल समझाया। वहां से लौटतीवार एक घन्टा समाज मन्दिर में ठहरा जहां परमात्मा और जीवात्मा के स्वरूप भेद पर दो भाइयों को उपदेश दिया। फिर ब्रह्मचारी मुनि ऋषि को आध घन्टे पढ़ाकर पण्डित सभा की जलसे में गया। वहां व्याख्यानों में वेद की महिमा का ही वर्णन था, कोई पन्थाई झगड़ा न था। जालन्धर आर्य समाज के निर्पक्षभाव का प्रभाव पौराणिकों पर भी पड़ रहा है। धर्म सभा मन्दिर से अपने निवासस्थान को गया जहां मेरी सन्ध्या में पंडित बुड्ढामल नूरमहल के बड़े साहूकार सम्मिलित हुए। यह वृद्ध महाशय ऐसे प्रभावित हुए कि अग्नि होत्र में भी भाग लिया और चलते हुए ५०) हमारी भावी पुत्री पाठशाला को दान दे गये। सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय के पश्चात् मैं ९॥ बजे सोने की तय्यारी कर रहा था कि मेरे बुलाऐ हुए रलाराम अपील नवीस टान्डा से पधारे और उन्हों ने बैसाखीराम साहूकार को बालविधवा पुत्री से मेरे समझाने पर विवाह करना स्वीकार किया"। इन्हीं दिनो १४ मार्च को अलावलपुर वाले आर्य भाइयों ने फिर धर्मोपदेश के लिए निमन्त्रण दिया। लाला तेलूमल काशी राम गणेशदास खैराती राम तथा साधोराम सहित मैं उसीदिन ५॥ बजे शाम को अलावलपुर पहुंचा। उस दिन मेरे पहुंचने की आशा कम थी इस लिए केवल २० मनुष्य इकट्ठे थे जिन्हें उपदेश देकर ग्राम से बाहर आर्य भाइयों सहित सन्ध्या की रात को ग्राम में हलचल मच गई। हिन्दू बिरादरी ने एक सभा करके निश्चय किया कि जो व्यक्ति दूसरे दिन मेरा व्याख्यान सुनने जाय उसे २५) बिरादरी का दण्ड देना पड़े। यदि दण्ड न भरे तो उसका हुक्का पानी बन्द कर दिया जाय। प्रातःकाल कृष्णानन्द स्वामी तथा ब्रह्मचारी मुनि ऋषि भी लाला ठाकुरदास के साथ पहुंच गए। हवन के पश्चात् जब स्वामी कृष्णानन्द खड़े हुए तो ५० से अधिक जन उपस्थिति नथी। रातकी सभाका प्रत्यक्ष प्रभाव प्रतीत होता था। स्वामीने धर्म्म पर कुछ कहा फिर मैंने ईश्वर पूजा पर एक घन्टे तक व्याख्यान दिया। जब श्रोताओं ने बाजार में जाकर व्याख्यानों की प्रशंसा की और साथ ही लाला तेलूमल तथा लाला काशीराम ने जब लोगों का भ्रम दूर किया तो हमें आग्रह पूर्वक ठहराया गया और मध्यान्होत्तरके समय तीन चार सौ की उपस्थिति में मैंने वेदों के महत्व तथा वैदिक वर्ण व्यावस्था पर व्याख्यान दिया जिस के पश्चात् कुछ नए सभासद भी बने।

इसी के दूसरे दिन होली की छुट्टी थी। समाज मन्दिरमें हवनादिके पश्चात् सह भोज हुआ। कपूरथंले के लाला धूमामल भी सम्मिलित थे। उपदेशकों का अभाव अनुभव करके इस समय निश्चय हुआ कि जालन्धर आर्यसमाज की ओर से एक उपदेश पाठशाला खोली जावे। मैं तो पहले ही ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्द तथा ब्रह्मचारी मुनि ऋषि को पढ़ाया करता था, मैं ने भी इस भावी उपदेशक विद्यालय का एक अवैतनिक अध्यापक बनना स्वीकार किया। यह उपदेशक विद्यालय कुछ दिनों ही चल कर बन्द हो गया।

इस स्थान में ही मैं ब्रह्मचारी मुनी ऋषि तथा स्वामी कृष्णानन्दको सदा के लिये विदा कर देता हूं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मचारी मुनि ऋषि आदमी तो अच्छा था किन्तु बुद्धि उसकी कुछ तीक्ष्ण न थी, कई परिचित पुरुष तो उसे नमदा बुद्धि ही समझते थे। पीछे पता लगा कि वह हाजीपुर (जिला हुशियारपुर) का रहनेवाला ब्राह्मण कुलोत्पन्न युवक है। मैंने उसे उस के घर भेज दिया जहां से कुछ काल तक वह मुझ से पत्र व्यवहार करता रहा। अपने घरमें उसका नाम क्या हुआ यह मुझे अब स्मरण नहीं रहा किन्तु हाजीपुर के महन्त के पत्रों से विदित होता रहा कि आर्य्यसमाज के साथ उसका प्रेम बना रहा था। हाजीपुर के महन्त भी उसी के कारण आर्य समाज से प्रेम करने लग गये।

स्वामी कृष्णानन्द एक दुबला, गोरा, चलता पुर्ज़ा युवक था। अपनी विद्वत्ता की उसने लाला ठाकुरदास से बहुत डींगे हांकी थीं, इसी लिये वह उसे अलाबलपुर लाये थे, किन्तु व्याख्यान में वही "आहार निद्रा भय मैथुनंच" और "विद्या ददातिविनियं" वाले श्लोक थे अलाबलपुर से जालन्धर लाकर मैंने उनको अपने पास रक्खा था किन्तु उन के व्याख्यान समय के एक अनुचित व्यवहार ने उन्हें मुझ से सदा के लिए जुदाकर दिया। मैं एक वार अपने ग्राम तलवन को दो दिनों के लिए गया और स्वामी कृष्णानन्द को नकोदर छोड़ गया। मेरे पीछे उनका एक व्याख्यान आर्य पुरुषों में हुआ जिन्हों ने अपना आदमी समझकर उन की बहुत सी बेहूदगियों का कुछ ख़याल न किया। जिस दिन मैं तलवन से लौट रहा था उस दिन नकोदर उपनगर से बाहर हस्पताल के पास स्वामी का व्याख्यान रचा गया। स्वामी ने मूर्त्ति पूजा का खण्डन करते हुए मुंह और हाथों से ऐसे भाव विलास किए कि उपस्थित पांच छः सौ श्रोतागण सब भड़क उठे। उपस्थित पुरुषों में से कई एक व्याख्याता को मारने पर तुले हुए थे जब मेरी मण्डली उसी स्थान पर पहुंच गई। मैं उसी समय व्याख्यान के लिये खड़ा हो गया और न केवल पौराणिकों तक को शान्त करने में कृत कार्य हुआ बल्कि चार नए सभा सद भी बनाए और स्वामी कृष्णानन्दको साथले जालंधर चला गया और वहां से उन्हें अपने प्रान्त में प्रचार के अयोग्य समझ कर सदा के लिए विदा कर दिया।

इन से पहले स्वामी ईश्वरानन्द से भी सदा के लिए पृथक्ता की थी। आप को बस्ती दर्वेश में प्रचार को भेजा। आप पौराणिकों के साथ सुलह सफ़ाइ कर आए—" हम तुम्हारे तुम हमारे, वेद भी तुम्हारे और पुराण हमारे" इत्यादि वाक्यों से आर्य्यों को विस्मित किया। जब मेरे सामने आपकी शिकायत हुई तो बोले—" कल फिर मेरा व्याख्यान रक्खो; ऐसी गोला बारी करूंगा कि पौराणिक चीख़ उठें। मैंने तो सुना था कि जालन्धर वाले किसी से बिगाड़ा नहीं करते। " उत्तर मिला कि जालन्धर वाले न गोला बारी करते हैं और नहीं किसी को प्रसन्न करने के लिए अपने मन्तव्यों को जवाब देते हैं, और स्वामी जी को सदा के लिए बिदा किया गया।

अनधिकारियों के सन्यास में प्रवेश से इस से बढ़कर भी हानियां उठानी पड़ी हैं। अभी तक भी आर्य समाज में वही प्रणाली चली आती है और इस लिए आर्य समाज ने भी लाखों मुफ़्त खोरे भगवे पोशों में दस बीस की वृद्धि करदी है। अब भी यदि चेतें और आश्रम से आश्रम में प्रवेश करते हुए योग्य पुरुष सन्यासलें और श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, श्री स्वामी सर्वदा नन्द जी प्रभृति महात्माओं की शरण में आकर धर्म प्रचार का काम करें तो इस समय भी काया पलट हो सक्ती है।

(मुंशीराम)

आर्य्यसमाज की वेदी

(५)

विशेषाधिवेशन

पिछले अङ्क में हम ने कुछ साप्ताहिकाधिवेशनों के विषय में समाजों से निवेदन किये थे, आज हम अन्य अधिवेशनों पर लेखनी उठाना चाहते हैं। हमारा विचार है कि साप्ताहिकाधिवेशनों में आर्य्य प्रतिनिधि सभा के या किसी और सभा के उपदेशकों का व्याख्यान या उपदेश के साथ यथा संभवकम संबन्ध होना चाहिये, ऐसे अवसरों पर उपदेशक महाशय केवल श्रोता बनें क्योंकि मनुष्य जीवन में प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी समय दूसरों से सुन सक्ता और सुन कर लाभ उठा सक्ता है चाहे वह स्वयं कितनाही विद्वान् क्यों न हो, शैक्सपियरादिकों ने तो मनुष्यों को पत्थरों से उपदेश लेते हुए दिखाया है और बातभी ठीकहै 'भिन्नरुचिर्हि लोकः' जब प्रत्येक मनुष्य की रुचि दूसरों से भिन्न है तो वह प्रत्येक बात या घटना को अपनी रुचि और अनुभव के अनुसार पेश कर सक्ता है, इसी वास्ते कहा है कि गुणशत्रुओं और पापियों से भी ले लेने चाहिये

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः
आस्वाद्य तोयाः प्रभवन्तिनद्यः
समुद्र मासाद्य भवन्त्य पेयाः

इसी उदारता से काम लेते हुए हमारे आचार्य्य ने काशी में एक बालक के कहने पर अपनी अशुद्धि भरी सभा में स्वीकार कर ली थी, ब्रह्मचारी ब्रुक्स एक बात बड़ी ठीक कहा करते थे। वे कहते थे कि जो बालक अपना नाम मुझे बता देता है वह मेरे ज्ञान में वृद्धि करता है और उस का मुझे कृतज्ञ होना चाहिये। ऐसी ही कृतज्ञता के अनुभव या प्रकाश का अवसर हम उपदेशकों को भी दिलाना चाहते हैं। अधिकतोधिक वह यह करें कि साप्ताहके व्याख्याता को कुछ नोट अथवा उचित हिदायतें करदें, और सप्ताह भर वह पठन-पाठन का जाल फैलाए रक्खें, सप्ताह के अन्दर हम चाहते हैं कि यदि कोई उपदेशक निकटहों तो साधारणाधिवेशन के दिन को छोड़

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक दिन उस का व्यख्यान हो जांय जिस में वह महाशय व्यर्थ की कहानियां और शब्द जाल से बचता हुआ कुछ ठोस और क्रियात्मक उपदेश दे, यह उपदेश उस के सारे सप्ताह की तय्यारी और स्वाध्याय का परिणाम हो। एक तीसरा दिन नगर के किसी ग़ैर आर्यसमाजी विद्वानों के समर्पित हो जिस से समाज के किसी सिद्धान्त की पुष्टि यदि वह कर सक्ता हो कराई जाय। इसी प्रकार एक घण्टा और सप्ताह में सभासद महाशय दिया करें, उस में नगर या ग्राम के किसी प्रसिद्ध रागी को बुलाकर कुछ रात्रि के समय हरिकीर्त्तन हो और वह भजन चुन लिये जांय जिन को साप्ताहिकाधिवेशन वाले दिन गाना हो। इस चुनाव के साथ ही उनका अभ्यास कर लिया जाय, हम पहले कहचुके हैं कि व्यर्थ की लज्जा और संकोच या अभिमान से काम नहीं चलेगा, ये सब बातें कई समाजों में किसी न किसी समय होचुकी हैं और यह असम्भव नहीं।अन्तिम बात मव्वरकतराय थापर की उपस्थिति के कारण कई दिनों तक बड़ी रौनक से लाहौर आर्यसमाज में होती रही थी। यहां पर हम कुछ रागियों के 'नख़रे' की शिकायत के विषय में मामला साफ़ करदेना चाहते हैं। हम जानते हैं और हमारा अनुभव है कि सत्यता किसी एक ओर नहीं, अपितु बीची बीच रहती है। जहाँ भजनीकों का साज़ अवश्य चाहिये जिस में से तबला अनिवार्य्य और सुख प्राप्य होता है वहाँ उन्हें व्यर्थ की उलझनों में समाजों को नहीं डालना चाहिये। व्याख्यान या और कोई कार्य्यवाही होने के पूर्व या पश्चात जिस समय वह भजनों की आवश्यक्ता जाते होते हैं तत्काल और तदनुकूल ही वह भजन आरम्भ करदिया करें जिस का चुनाव और अभ्यास पहले से हो चुका हो। इतने तक कि तबलेका आटा आदि सब पहले आचुकना चाहिये और ठोका ठाकी आदि भी हो चुकनी चाहिये। स्मरण रहेकि वर्त्तमान जीवन के संग्राममें किसीके पास व्यर्थ खोनेके लिये या विघ्न पेषण देखने के लिये समय नहीं है एक और अधिवेशन हम नियत रीति से सप्ताह में रखवाना चाहते हैं। उसे चाहे आर्य्य समाजें अपने अन्तरङ्ग सभाओं के अधिवेशनों का भाग समझें चाहें और किसी प्रकार समझें। वह यह कि प्रत्येक सभासद अपने भाइयों के सामने यह बताये कि उसने सप्ताह भर में कितनी उन्नति की है, कितना उसने स्वाध्याय किया? कितनी बार उसने सन्ध्या की? कब २ अग्निहोत्र किया इत्यादि। शेष काम जैसे सेवक सभायें और परिचारक सभाएं अन्तरङ्ग सभाओं द्वारा बनाई उप सभाएं करें। इस प्रकार हमने यत्न किया है कि समाज मन्दिरों को साप्ताह के किसी दिन भी ताला लगा हुआ कोई न देखे। यह कार्य्य रात्रि के समय प्रायः सब खाली होते हैं। यदि परिवारिक पास नाएं हो सकें तो सब से अच्छा। अन्यथा परस्परर सिद्धान्तों की चर्चा भी होनी चाहिये, शेष अधिवेशन वह होंगे जिन में कोई त्यौहार माना जायगा। त्यौहारों में भी कई ऋतुओं के विचार से होंगे, कई वर्णाश्रमों की दृष्टि और और कई सार्वजनिक। कदाचित् इन सब में प्रातः विधियां समान होंगी जैसे अग्निहोत्र, भजन व्याख्यान और प्रीति भोजन। कहीं २ थोड़ा २ अन्तर होजाय हमारी सम्मति में निम्नखित कुछ त्यौहार प्रत्येक आर्य्य को प्रीति और श्रद्धापूर्वकम मने चाहिये। इन त्यौहारों मेंभी अवश्य आर्य्यपरिवार सम्मिलित होने चाहियें और विशेष विशेष अधिवेशनों में समाका नियत किया हुआ दान भी होना चाहिये, इस दिन को साप्ताहिक अधिवेशनों में यथाशक्ति स्मरण रखना चाहिये, यह एक तुच्छ सी रकम 'जने २ की लाकड़ी एक जने का बोझ' के नियम पर एकत्रित होकर बहुतेरी होजाती है और वेद प्रचार फंड की आय का एक प्रबल अंग बन जाती है।

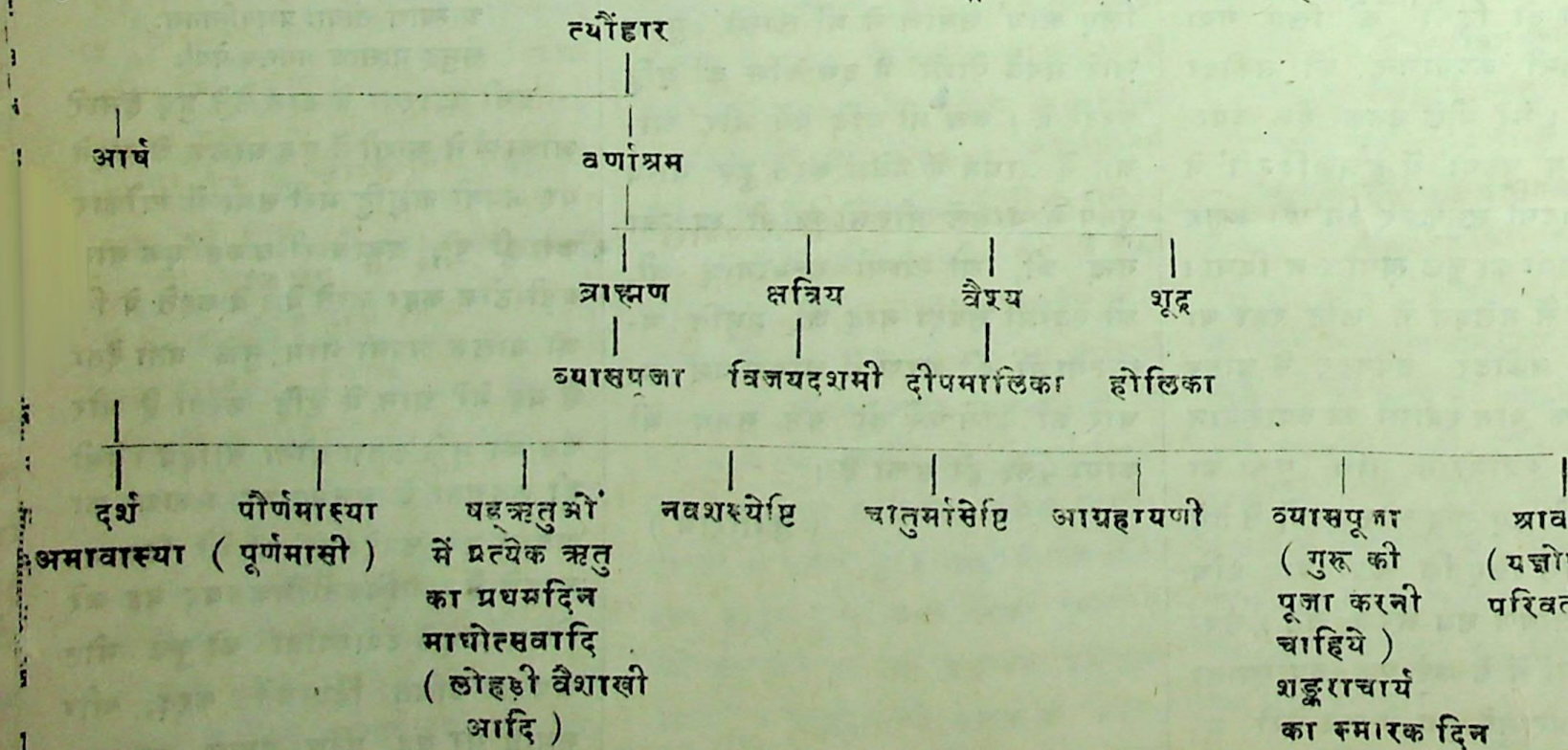

जातीय त्यौहार—:रामनवमी, जन्माष्टमी, नागपंचमी (पतंजलि) दयानन्दबोधोत्सव, दयानन्द मृत्यु दिवस, पं० गुरुदत्तकी बी और पं० लेखराम जी की बर्षी

इन में से कई में ।) प्रति मनुष्य जैसा सभा ने नियत किया हुआ है वैसा दान भी होना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इन सब के अतिरिक्त वह अधिवेशन है जो किन्हीं विशेष प्रस्तावों के स्वीकार कराने के लिये किये जांएं इन में वह भी उत्तम शामिल हैं जो राजभक्ति के उच्च भाव से प्रेरित हो कर हमें शास्त्र की मर्य्यादानुसार करने चाहिये। स्मरण रहे कि अराजकता सब आपत्तियों का सदैव मूल रहती है और जो भी मनुष्य समुदाय हमें इस सभ्यता और धर्म्म के शत्रु से छुड़ाए उसके हम ऋणी हैं और हमारा कर्त्तव्य है कि देश की क्षात्र शक्ति के, चाहे जो भी हो, सुख दुःख में हम शरीक हों, राजारक्षण और रञ्जन के करण प्रजाओं का पिता है।

स पिता पितरस्तासां केवलं जन्म हेतवः॥

हां, यह सब कुछ तभी हो सक्ता है जब समाज मन्दिर किसी संस्था का स्थान न बना हुआ हो। कन्या पाठशालाओं को यथा शक्ति शीघ्र ही समाज मन्दिरों से पृथक् स्थान ले देने चाहिये। यदि समाज के अन्दर शक्ति हो तब तो वह चपड़ासी रख ही लगी नहीं तो किसी अन्य अविवाहित या मृत पत्नीक निर्धन आर्य्य भाई को सिक्ख धर्म्मशालाओं वाले ग्रन्थियों की नाईं टिका देना चाहिये और वह महाशय यथेष्ट रीति से ग्रंथियों की तरह आचरण भी करे, केवल ध्यान यह रखना चाहिए कि ऐसे महाशय के नौकर समझ कर नहीं अपितु भाई समझ कर काम लिया जाय कभी २ उपेक्षा दृष्टि भी आवश्यक हो जाती है. यही महाशय किसी दिन सब आर्य्य परिवारों से आटा आदि ले आया करे और कुछ ऐलाउंस देकर उसी से चंदा भी एकत्र कराया जाय।

इस प्रकार सब सभासद अपस में समय और श्रम बांट कर काम करते जांय, सभा के अन्दर दशाँश भेज कर अपने प्रतिनिधि वहाँ पहुंचाएं जो आप की और आप के स्थान की सब अवस्थाओं और कठिनाइयों को प्रस्तुत कर सकें, उस को यदि आवश्यकता देखें तो मासिक व्यय समाजें अपनी ओर से दें। इर्द गिर्द की समाजों के उत्सवों को भी यथा संभव भुगताएं. फिर एक महान यज्ञ शेष रह जायगा जिस को सूत्र रूप से हम पिछले लेखों में उपस्थित कर चुके हैं तथापि हम इतना बढ़ाना चाहते हैं कि वार्षिकाधिवेशनों की कार्य्यवाहियां कुछ संक्षिप्त कर दी जाया करें और आडम्बर कम कर दिया जाय, इनका स्थान कान्फ्रेंसों और सादगी को दे दिया जाय, सादगी से हमारा अभिप्राय समझने में कोई कठिनाई न हो इसलिये हम बताए देते हैं कि जिस व्यय से डरती हुई लाहौर आर्य्य समाज लोगों को भोजन संबन्धी शिकायतों का पिशुन बनाती है उसे कम कर के सर्वत्र विधवा और वृद्ध स्त्रियों के हाथ का साधारण परन्तु प्रेम मय भोजन कई स्थानों पर बनवा लिया जाया करे, इस काम के अध्यक्ष वह होने चाहिये जो समाज के विश्वासपात्र, व्याख्यानों से तृप्त कर्म्मवीर और सेवा भाव वाले सज्जन हों, कार्य्यवाही के भागों में हमारा विचार है कि एक अत्यावश्यक परिवर्तन यह करना चाहिये कि सायङ्काल को भी अवश्य हवन हो और सन्ध्या हो या इन दोनों के लिये पर्य्याप्त समय खाली छोड़ देना चाहिये, क्यों कि हम जिन बातों का मुख से प्रचार करते हैं उनके करने वाले कर्म्मकाण्डियों के मार्ग में कोई कठिनाई न हो। हमें वह समय याद आता है जब जालंधर के प० श्रीपति प्रातःकाल सब के यहां हवन कराकर वार्षिकोत्सव की वेदी पर पधारा करते थे। यह परिवर्तन अन्तरङ्ग सभाओं की बैठकों और प्रतिनिधि सभाओं के साधारण अथवा अन्तरङ्गों के अधिवेशनों में भी अवश्य ले आना चाहिये। नगर कीर्त्तन के सम्बन्ध में हम बहुत कुछ निवेदन कर चुके हैं कि अमुक अवस्था से कम के बालक कभी लोगों को भजनोपदेश देने के लिये न खड़े किये जाएं। जहां तक हो सके पक्के रागों और तालों के भजन अच्छी स्वर और भक्ति के साथ गाने चाहिये और यह सब अभ्यस्त हों, खरडन के भजन कम हों। पुराने अमीचन्द, नवलसिंह, केवल कबीर, विश्वासी आदि के गानों को प्रोत्साहन करना चाहिये परन्तु कम, पगडाल से चलते समय, संध्या के समय और रात्रि को १० बजे जब नगर कीर्त्तन को सदैव समाप्त करें शांति और ईश्वर भक्ति के भजन हों, समय का भी कुछ ध्यान रख कर भजनीक महाशयों को गाना चाहिये, ताकिविद्योन्नति के समय में आर्य्यसमाजी किसी के उपहास पात्र न बनें। इस कला का भी हम ही ने उद्धार करना है, अन्य मत मतान्तरों ने इस कला को बड़े गन्दे हाथों में बुरे कामों के लिये देदिया है, हमने ही इसका अच्छे कामों में प्रयोग करना है, इस अंश में पण्डित विष्णु दिगम्बर का सारा कार्य और उद्यम सराहनीय है। बड़े शोक की बात होगी यदि अच्छे गाने वाले महाशयों को कृष्ण की माखन-लीला गाने के लिये छोड़ दिया गया था आर्य्य संगीत के उत्तम व्यायाम नृत्य को वेश्याओं के समर्पित रक्खा गया और यह होगा यदि इन कलाओं के जानने वालों का हम सत्कार न करते हुए बेसुरी और बे तुकी अलापते और हाकते गये, मनु ने कहा है।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च व्यतिक्रमः
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्षं मरणं जगा

सब से पहली मंडली वेदमन्त्रों का सस्वर गान करने वालों की होनी चाहिये, इस अंश में भी गुरुकुल काङ्गड़ी एक उत्तम काम कररहा है क्यों कि उस के बहुत से विद्यार्थी साम वेद गान सीखते हैं और जो एक बार भी उस तपो भूमि में हो आए हैं वे जानते हैं कि कैसा मधुर और शुद्ध उच्चारण उन ब्रह्मचारियों का होता है। एक दो बातें और कह कर हम लेख को समाप्त करते हैं। पहली बात तो यह कि व्याख्याता जो भी बुलाए जांय उनको बड़ी देर पहल सूचना होजानी चाहिये, यह तभी होसक्ता है जब जिलेवार उत्सव हुआ करें, वह इस ही प्रकार श्रोतृगण के समय का सदुपयोग करसक्ता है। व्याख्याता महाशय मन्त्री समाज से वहां के हालात भी व्याख्यान से पूर्व्व पूछ रक्खें और उन हालात को सोच के अन्दर अपने कथन को ढालदें, दूसरी बात अश्लील [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार के लिये होनी चाहिये और यथा संभव अपील के पीछे कोई कार्य्यवाही नहीं होनी चाहिये, स्थानिक और प्रान्तिक संस्थाओं के झगड़े का हम एक हल तजबीज़ करना चाहते हैं और वह यह कि प्रान्तिक संस्थाओं वेदप्रचारादि के लिये प्रायः आर्यसमाजियों की जेबें अधिक ख़ाली होनी चाहियें, स्थानिकों के लिये वह धन के स्थान पर तन मन और समय दें, परन्तु रहने अवश्य स्थानिक संस्थाओं को भी देना चाहिये। हमने अनुभवी आर्य्यों से इस विषय में बात चीत करके इतने निवेदन का साहस किया है। हां स्थानिक संस्थाओं का प्रधान आर्थिक बोझ उस २ जगह के ग़ैर आर्यसमाजियों पर पड़ना चाहिये, उनकी कमेटियां भी यदि कुछ स्वतंत्र करदी जांय तो कोई हर्ज नहीं, म्यूनिसिपल कमेटियों से सहायता लेने में भी हम ऐसी संस्थाओं के लिये कोई अधिक हानि की सम्भावना नहीं देखते। विशेष करके कन्या पाठशालाओं के काम में और प्रायः समाजें कर भी ऐसा ही रही हैं।

अपील के पीछे कोई कार्यवाही यदि हो भी तो उस पर अपील का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये, अर्थात् रुपयों के सुनाने के लिये व्याख्यान में विघ्न नहीं डालना चाहिये जैसा कि प्रायः होता है या जैसा अबकी बार ऋषिकुल के उत्सव में होता रहा, स्त्री समाजों के उत्सव तो हमने पिछले लेख में उड़ा ही दिये हैं। इसी प्रकार शास्त्रार्थों के भूत को भी शिर से शनैः २ उतार देना चाहिये, यह संक्षिप्त विधि और संशोधन हम अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार समाजों के सब अधिवेशनों के विषय में प्रस्तुत करसके हैं अनुग्राहक पाठक भूल चूक क्षमा करें।

देहली समाचार

लक्ष्मी कन्या पाठशाला देहली

का

पांचवां वार्षिकोत्सव

देहली में जहाँ अभी बहुत कुछ सामाजिक सुधार की आवश्यक्ता है वहां हमें यह देख कर प्रसन्नता होती है कि स्त्री शिक्षा पर अधिक बल दिया जारहा है। इस समय आर्यसमाजी तथा सनातनी, जैन इत्यादि हिन्दुओं की १ दरजन के लगभग पुत्री पाठशाला ऐं हैं। जिनमें कई हजार पुत्रियाँ शिक्षा पा रही हैं। गत १,२,३, सितम्बर सं० १४ को लक्ष्मी कन्या पाठशाला कूचाचेलान का पंचम वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम से हुआ। व्याख्यान दाताओं में श्रीमती ठाकुर देवी जी तथा श्रीमती सुभद्रा देवी जी और पं० बालचन्द्र शास्त्री श्री० पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार इत्यादि सज्जन उत्सव में पधारे थे। भजन मंडली भी थी। डिप्टी कमिश्नर देहली ने ता० २ सितम्बर को अपने कर कमलों से पुत्रियों को इनाम बांटा। इस अवसर पर जो वार्षिक वृत्तान्त पाठशाला कमेटी के प्रधान श्री० पं० निहालचंदजी ने सुनाया उसका सारांश भिन्न प्रकार है। यह पुत्री पाठशाला १८ जुलाई सं० १९०९ को स्थापित हुई थी। इसके धन्यभाग हैं कि प्रति वर्ष साहेब डिप्टी कमिश्नर बहादुर ही पुत्रियों को इनाम बांटते हैं। गत वर्ष कुल १११ कन्यायें थी इस वर्ष इससे बढकर १३८ कन्यायें हैं। जालन्धर कन्या महाविद्यालय की पाठ प्रणाली अनुसार पढाई होती है। समय २ पर आवश्यक्तानुसार इसमें परिवर्त्तन भी होता रहता है। लड़कियों को, भूगोल, [illegible] हसाबादि के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा विशेष दीजाती है गत वर्ष दो परिक्षायें हुई। प्रथम परीक्षा स० सुन्दरसिंह जी बी० ए० बी० टी० हेडमास्टर रामजस हाई स्कूल देहली ने ली और दूसरी वार्षिक परीक्षा श्रीमती सुभद्रा देवी धर्मपत्नी श्री० पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार ने ली। इन दोनों ने पुत्रियों की पढ़ाई इत्यादि में बड़ी उत्तम सम्मती दी है। पाठशाला के पास २० सहस्र के लगभग जायदाद है। और दो सहस्र ऋण देना है। गत वर्ष पाठशाला को २०५६॥-)॥ आय हुई और २५३२॥-) व्यय हुआ इस वर्ष देहली के प्रतिष्ठित व्यौपारियों ने)। फी बिलटी पाठशाला को देने का बचन दिया है ऐसे सज्जनों की संख्या लगभग ४०के है। अपील पर ३१०) चन्दा एकत्रित हुआ। अन्त में ब्रिटिश सरकार की वर्तमान युद्ध में विजय के लिये परमात्मा से प्रार्थना की गई।

हिन्दू कालिज देहली।

हिन्दू कालिज देहली का पुनरुद्धार श्री० राय ठाकुरदत्तजी तथा राय केदारनाथ जी इत्यादि महानुभावों ने बड़ा पुरुषार्थ करके ५०) हजार रुपया एकत्रित करके किया था। इस रुपये में से कालिज का व्यय अबतक चलतारहा किन्तु आय न होने के कारण अब कालिज की दशा अत्यन्त शोचनीय होरही है। कितने शोक का स्थान है कि कालिज के अधिकारियों ने युनीवर्सिटी से प्रार्थना की थी कि बी० ए० क्लास खोलने की आज्ञा दीजावे इस पर युनिवर्सिटी ने यह नियम लगादिया कि ३१ अगस्त १४ तक यदि पचास हजार रुपया कालिज के फन्ड में दिखला दो तो बी० ए० क्लास खोलने की आज्ञा दीजायेगी। किन्तु यह अवधी समाप्त भी होगई और कालिज फन्ड में पचास हजार न जमा होसका। राय केदारनाथ जी ने यहांतक प्रयत्न किया कि यह रुपया कई महाशय मिलकर ऋण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देदें परन्तु तो भी सफलता प्राप्त न हुई। कालिज में बी. ए. की कक्षा न होने के कारण बड़ी क्षति हो रही है। लड़के जा जा कर मिशन कालिज में भरती हो रहे हैं। यदि कुछ दिनों इसकी यही दशा रही तो हमें संदेह है कि कहीं कालिज से हाथ ही न धोना पड़े। इस समय भारतवर्ष में डी. ए. वी कालिज को छोड़ कर केवल दो हिन्दू कालिज हैं। विशेषतया देहली निवासियों के लिये यही एक कालिज है। दूसरा सेन्ट स्टीफन्स कालिज ईसाइयों का है। देहली निवासियें को शीघ्र सचेत होकर इस कालिज को एक आदर्श कालिज बना देना चाहिये और इसके तन, मन, धन, से सहायता करनी चाहिये?

जनक सुता ड्रामा

जनक सुता ड्रामा म० कृष्णवीर जी भूतपूर्व मन्त्री हिन्दू युवक सभा देहली के परिश्रम का फल है। यह ड्रामा पुस्तकाकार प्रकाशित हो गया है। इस समय तक दो बार देहली में खेला भी जा चुका है जिसमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई है और लोगों ने बहुत पसन्द किया है। प्रथमबार संगम थियेटर में खेला गया जिसमें छः सौ के लगभग आय हुई जो लार्ड हार्डिङ्ग मेमोरियल फण्ड को दी गई थी। दूसरी बार यह ड्रामा रामा थियेटर हाल में खेला गया। इस बार इसके प्रबन्धकर्त्ताओं को अवसर बहुतही कम मिला तो भी ५००) के लगभग आय हुई। यह रुपया हिन्दू कालिज देहली को दिया गया। हम इसके रचयिता तथा इन दोनों खेलों के कार्य्यकर्त्ताओं को धन्यवाद देते हैं।

सट्टे का बुरापरिणाम

देहली राजधानी बनगई और अब इस में नाना प्रकार के सुधार होने आरम्भ होगये हैं। परन्तु इस समय जो जो कुरीतियां देहली में फैली हुई हैं वह किसी भी दूसरे कुरीतियों के केन्द्र से कम नहीं। वेश्याओं का बाज़ार यहां गर्म है, तो सड़कों पर मदिरा की दुकानों की कमी नहीं। इसी प्रकार सट्टे का बाज़ार भी गर्म है। अभी थोड़े दिन हुए कि सट्टे के एक कटरा में सुना है कि सट्टेवाज़ लोगों ने झगड़ा उत्पन्न करदिया था। कहते हैं कि इनको इस बात का भ्रम हो गया था कि सट्टा अशुद्ध कर दिया गया। तब पता लगा कि जो बतलाया गया है वह वास्तव में ठीक है तब वह लोग शान्त हुए। इस सट्टेसे जो जो बुराइयां होरही हैं उन का न लिखना ही ठीक है। कई नगरों में इस कुप्रथा के दूर करने की चेष्टा हो रही हैं किन्तु हमारी देहली से नहीं मालूम कब इस का काला मुंह किया जायगा।

एक लड़की की हत्या

सुनते हैं कि कुछ दिन हुये किसी दुष्ट हत्यारे ने एक लड़की का गला काट कर देहली के लाल कुँवा बाज़ार के इन्दारा के समीप डाल गया था। कहते हैं लड़की की अवस्था मास डेढ़ मास की होगी। अब अनुसंधान हो रहा है। ऐसे ही दुष्ट कर्मों ने भारत को ग़ारत करके मिट्टी में मिला दिया।

हिंदी समाचार—देहली के जिस "हिन्दी समाचार" के निकलने का समाचार हम पहिले दे चुके हैं, वह निकल आया। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य हिन्दी बिहीन पंजाब में हिन्दी भाषा का प्रचार करना है। यह उद्देश्य बहुत ही उच्च है और हमें आशा है कि हमारा सहयोगी अपने उद्देश्य में सफलहोगा इस के अतिरिक्त इस पत्र में सामाजिक और सार्वजनिक विषय सम्बन्धी लेख भी रहेंगे। पहिले दो अङ्क में साहित्य संसार के नाम से नये पुराने सभी सहयोगियों की समालोचना की गई है। पहिले अंक से एक बहुत मनोहर कथा आरम्भ की गई है। युद्ध के ताज़े समाचारों का भी समावेश है। हम सहयोगी का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि हिंदी प्रेमी सज्जन प्रकाशक का उत्साह बढ़ावेंगे। पृष्ठ छोटे आकार के १२ हैं। पहिला अंक चिकने काग़ज़ पर छपा है। वार्षिक मूल्य २॥)

——

डिप्टी कमिश्नर की बदली—देली के स्थायी डिप्टी कमिश्नर मेजर गाडन छुट्टीसे वापिस आगये हैं। ७ ता० को मि० कनौली ने मेजर बीडन को चा० देदिया

——

भूल संशोधन—गत सप्ताह देहली के मुकदमे का वृत्तान्त लपते हुए एक भूल हो गई। इस मुकदमे का फैसला जज साहब ५ अक्तूबर को सुनावेंगे, पर पत्र में उस की जगह ५ सितम्बर छपगया।

गु० कु० के ब्रह्मचारियों की यात्रा गुरुकुल में अध्याय होने के कारण म० विद्यालय के ब्रह्मचारी सरस्वती यात्रा के लिये निकले हैं। पहिले उन्हें गंगोत्तरी लेजाने का विचार था, पर सहायक मुख्याधिष्ठाता जी के अस्वस्थ हो जाने से वह विचार छोड़ना पड़ा। अब वे देहली और आगरा के ऐतिहासिक स्थानदेखेंगे, ६ता०को सारी मंडलीदेहली पहुंची। सद्धर्म्म प्रचारक कार्यालय में ही उन के ठहरने का प्रबन्ध किया गया था, उस के साथ प्रो० इन्द्र तथा प्रो० चौधरी है। ६ को उन्हों ने नई देहली और सैक्रेटेरियट आदि देखे। ७ की प्रातःकाल को सब ब्रह्मचारी पैदल कुतुब चले गये वहां बा० द्वारिकादास जी ने भोजन आदि का सब प्रबन्ध कराया था। एक रात महरौली में रहकर ८ को पैदल देहली लौट आए। १० को देहली के सब स्थान ऐतिहासिक स्थान देखकर सारी मंडली थानेसर चली गई है।

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जर्मनों का अत्याचार

१ ली अगस्त को लोएरेच स्टेशन पर एक फ्रेंच ने फ्रांस की जय ध्वनि, की। इस पर दो जर्मन सैनिकों ने उसे पकड़ कर अफसरों के सामने पेश किया। उसे एक दीवाल के सामने खड़ा कर चार से. निकों को उस पर गोलियां चलाने की आज्ञा दे दी गई। इस हत्याकाण्ड को देख कर तीन नवयुवक फरासीसियों ने आपत्ति प्रकट की इस लिये उनकी भी यही दशा हुई। कुछ देर बाद एक अन्य फरासीसी गोली से मार दिया गया क्योंकि उसने इन सिपाहियों को 'हत्यारे' और 'कायर' बतलाया था।

दो इटालियनों पर कुछ जर्मन सैनिक सवार हो गये। इस पर इन्होंने अ-सन्नता प्रकट की। इस लिये वे मार दिये गये।

रूस

रूस के साम्राज्य में वर्षों से बड़ी अ-शान्ति रहती है। पार्लीमेंट (डूमा) में कितने ही दल हैं। डूमा और गवर्मेण्ट में कई बार टानाटानी हो जाती। इस युद्ध के आरम्भ होते ही सब अशान्ति मिट गई और सब दल एक हो गये। जार ने सब दूतों को अपने महल में नि-मंत्रित किया था। उन्होंने अपने भाषण में कहा है कि जर्मनी और आस्ट्रिया ने रूस के विरुद्ध घोषणा की है। देश का उत्साह और राज भक्ति देखकर ज्ञात होता है कि हम अपने उद्देश्य में सफल होंगे। मैं अपनी जान देने को तैयार हूं हम अपने देश के गौरव ही की नहीं किन्तु अपने उन भाइयों की भी रक्षा करते हैं, जिनसे हमारा रक्त और धर्म का सम्बन्ध है। मुझे विश्वास है कि इस परीक्षा के समय प्रत्येक मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन करेगा। इसके उपरान्त उन्हों ने कुछ ऊंचे स्वर से कहा "रूस के देश का ईश्वर महत् है"। (यह एक रूसी कहावत है) इस पर उपस्थित लोगों ने खूब उत्साह प्रकट किया और 'जार चिरजीवी हो, गान आरम्भ किया।

आवश्यकता।

'विजय' के लिये प्रत्येक नगर में एजन्टों की आवश्य-कता है। कमीशन अच्छा दिया जायगा। जिनको एजन्सी लेना हो शीघ्र प्रबन्धकर्त्ता से पत्र व्योहार करें।

प्रबन्धकर्त्ता
'विजय'
देहली।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निक-लना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)
नमूना बिना मूल्य।
पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

आवश्यकता।

'विजय' पत्र के लिये सम्पाद-कीय बिभाग में किसी ऐसे पुरुष की आवश्यकता है जो इंग्रेज़ी से भाषा में अनुवाद करने के अतिरिक्त प्रूफ़रीडरी का काम अच्छी तरह से कर सके। गुज-राती, बंगाली, मराठी, भाषा के किसी एक में के जानकार को पहिला अवसर दिया जा-यगा। वेतन ३०) से ३५) मासिक तक दिया जायगा।

प्रबन्धकर्त्ता
विजय,
देहली।

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार के प्रोफैसर साठे जी M. A. कृत
सचित्र।

विकासवाद (डार्विन की थियोरी) की पुस्तक हिन्दी भाषा में छपकर तैयार है।
भाषा अत्यन्त सरल और मधुर पृष्ठ संख्या २०×२७१ साईज़ बड़ा चित्र २९
मूल्य केवल २)

श्रीयुत **प्रो० विनयकुमार सरकार एम. ए.** लिखते हैं:—**बी. ए. और एफ ए. के विद्यार्थियों को यह पुस्तक टेक्स्ट बुक** (Text Book) **के तौर पर पढ़ना चाहिये** पुस्तक की लेखन शैली बहुत अच्छी है और—सायन्स से परिचित मनुष्य भी इसे बड़े प्रेम से पढ़ते हैं।

श्री **साहित्याचार्य पं० रामावतार पांडये एम० ए०** लिखते हैं:—इस पुस्तक से हिंदी भाषा की आदरणीय वृद्धि हुई है। हिन्दी के प्रत्येक अभिमानी को इससे सन्तोष होगा। पुस्तक की कीमत बहुत नहीं है।"

मैनेजर, सद्धर्म्म प्रचारक पत्र, देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विजय

नया साप्ताहिक नया

सम्पादक—श्रीयुत हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

विजयदशमी से निकलेगा

शीघ्र ग्राहक बनिये

क्योंकि इसके संपादक के ओजस्वी लेख और चटकीली टिप्पणियां प्रसिद्ध हैं।

क्योंकि इसमें प्रति सप्ताह हिन्दी साहित्य की समीक्षा रहा करेगी।

क्योंकि इसमें महात्मा मुंशीराम, प्रो० बालकृष्ण एम. ए., प्रो० महेशचरणसिंह एम. एससी. (अमरीका) ब्र० इन्द्र वेदालंकार, पं० विनायक गणेश साठे एम० ए० श्रीयुत जगन्नाथ खन्ना बी० एससी० (अमरीका) आदि प्रसिद्ध विद्वानों के लेख प्रकाशित होंगे।

क्योंकि इस द्वारा देश के सभी भाषाओं के मुख्य पत्रों की सम्मतियां आपको जानने को मिलेंगी।

क्योंकि इसमें देश और विदेश के सभी मनोरँजक समाचारों का सँग्रह छपा करेगा।

और क्योंकि

इसमें पँच और कारटून देने का प्रबन्ध किया जायगा।

शीघ्र ग्राहक बनिये

मूल्य २॥)

मैनेजर, "विजय" देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द वाच

मूल्य केवल

५॥)

रूपया

गारन्टी ५ साल

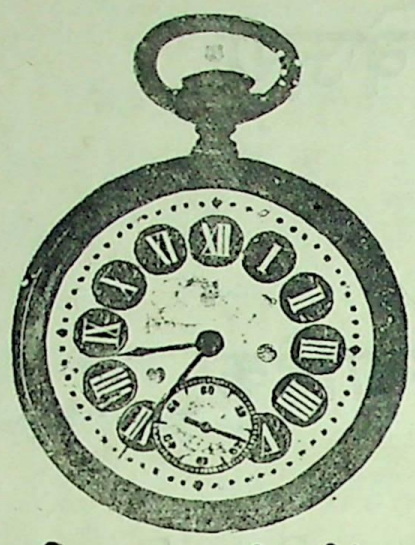

श्री महात्मा मुंशीराम धर्मवीर पंडित लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का संदर्शन हमने उक्त नाम की घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिस में मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय, हर घड़ी के साथ एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वतु को पछताना पड़ेगा।

इसके अलावे हमारे यहां हर तरह की घड़ियां बहुत सस्ते दामों पर मिलती हैं सिस्टम राखकोप मूल्य ३) रुपये रेलवे-रैग्यूलेटर मूल्य ४) रुपये, बाजा बजाने वाली टायम पीस मूल्य ४॥) रुपे।

मगाने का पता—दीस्वोज़रलैंड वाच कम्पनी हाथरस नं० ४ (२४५)

हाथरस के नये फैशन के कमानीदार पक्के चाकू व लोवर ताले

एजेंटों की आवश्यकता

यह स्वदेशी चाकू विलायती चाकुओं से सुन्दर और सस्ते हैं।

चन्दन की मूठ कमानीदार ॥=) ।≡) ।=) ।) लकड़ी मूठ कमानी दार जर्मन फैशन चन्दन ।=) लकड़ी ।) स्याह मूठ ।=)) चन्दनमूठसादा =)≡)=)-)॥-)लकड़ीमूठ सादा -)) ≡) -) ॥-))॥ हांथीदांत कमानीदार ॥=) ॥) ≡) =) दोफला ॥) चन्दन दोफला ॥=) ॥) शिकारी छुरी १) ॥) पीतल मूठ चाकू ॥) =) नये फैशन लोहे व पीतल के सरौते ॥) ॥=) ॥) ।=) पवित्र सुगन्धित बढ़िया हींग १०) ८) ६) रुपये सेर देशी सूत के रंगीन धारी गमदे ।=) ।) ≡) =)

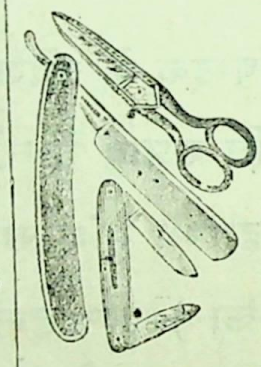

दूसरी चाबी से न खुलने वाली लीवर दार लोहे के ताले मूल्य

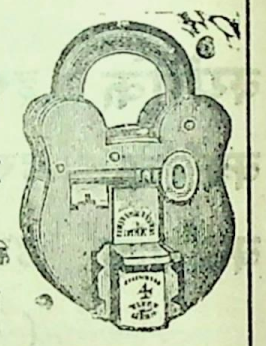

॥)॥)=) इञ्चहाका ।-) ।) इञ्च पीतल लीवरदार१) ॥)॥)इंचसादा।=) सादा।=)) ≡) इंच विलायती फैशन के देशी उस्तारे ।) ।=) ।) बाल काटने की कैंची १) ॥।) कपड़ा काटने की मज़बूत कैंची ॥)॥=)॥)

अद्भुत ताक़त की दवा

यह उन्हीं लोगों के लिये बनाई गई है जो सब प्रकार से निराश हो बैठे हो शरीर की निर्बलता हर दुखना आखों में अन्धेरा आना जवानी में बुढ़ापे की दशा का होना लड़कपन कुकियाओं से उत्पन्न अनेक रोगों की यह अव्यर्थ दवा है। इस के सेवन करने से शरीर निरोग और सुदृढ़ होकर चहरेपर रौनक आती है यह अद्भुत दवा जादू का सा काम करके दिखलाती है। मूल्य ४० गोलियों की डिब्बी का २) डाक व्यय माफ

प्रदर हर गोलिलाँ

बेचारी स्त्रियां इस रोग को चुपचाप सहन करके शरीर को गलो लेती हैं उन का गुलाब जैसा रङ्ग बात की बात में पीला पड़े जाता शरीरमें दर्द पैदा होजाता है मासिक धर्म ठीक समय पर नहीं होता एवम् कपतु होता है ऐसी दुखिया अबला के हेतु ही "प्रदरहर" तयार की गई है इस के सेवन से उपरोक्त सब रोग नष्ट होते हैं और शरीर सब प्रकार के सुख भोगने योग्य बन जाता है मूल्य ४०गोलियोंका २॥) डाकव्ययमाफ

दाद की दवा

प्रशंसा करना व्यर्थ है एक बार मंगा कर नये पुराने चाहे जैसे दाद को जड़ से खोदो मूल्य फी डिब्बी ।=)

खाज की दवा

इस दुखदाई रोग से छुटी पाना है तो इस दवा को बिना बिलम्ब सेवन करो

हिंग्वाष्टक चूर्ण

पेट के अनेक रोगो को शान्त करता है भूख बढ़ाता है एवम पाचन करता है। मूल्ये ॥)

तीनों का डाक व्यय अलग

मिलने का पता—स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १ (२४५)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्यो पान्त इतिहास सरल भाषा और मनो-रंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषा नुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहकीक धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहिये पतासाफहो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाजार
बाजाजा शहर मेरठ

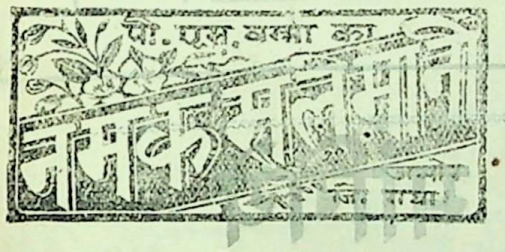

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफरा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, आदीका दर्द तथा शोर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचाता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा

कारखाना नमक सुलेमानी
जागोर जिला जया

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उस के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग२ साफ२ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर विशाल दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द बाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश -) केन -) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता ईश्वर क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।)
प्रार्थना पुस्तक ।)
ओंकार की उपासना ।)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश -)
वेद और महाभारत के उपदेश -)
वेद, मनु और गीता के उपदेश -)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ॥)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भावो टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धोखे में न आना।

हमारे वो हमारी दवायों के नाम की नकल कई एक आदमी कलकत्ते में पेटेन्ट दवायों का विज्ञापन दे रहे हैं! इससे सावधान!

पाँच कोन कृष्ण सितारा

रजिष्ट्री किया ट्रेडमार्क

हमारी बनाई हुई दवायों के लेवल तथा खोलियों पर अङ्गरेजी में हमारा नाम और रजिष्ट्री किया हुआ ट्रेडमार्क (निशान) कृष्ण सितारा छपा रहता है। दवा खरीदते समय देख लेना।

विशेष हाल के लिये बड़ा सूचीपत्र आज ही कार्ड लिखकर मंगवाइये लौटती डाक से आप की सेवामें पहुंच जायेगा

नं० ८२

डाः एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

(आगामी संख्या के विज्ञापन को देखिये)

एजन्ट, बाबूराम जैनी एन्ड कंपनी बड़ा दरीबा दिल्ली

श्री प्रो० बालकृष्ण एम० ए०

की रचित

अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये

जो पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखाने वालों से १/४ कीमत ली जावेगी।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है) ।)
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज प्रणाली छप रही है। ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

उस्तरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल U.P.

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा मोल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त के करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफ्त मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

धराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, विशिष्टतः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

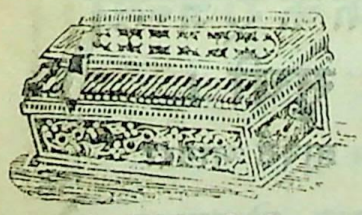

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने की सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च ≠) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० ≠)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य ननर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रा०१

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक आरम्भ हो गई वार्षिक मूल्य २) इस ग्रन्थ में कौरवों पांडव की लड़ाई नीती, धर्म्म चारों वरणों के धर्म्म वर्णन हुये हैं। ४० पृष्ठ का एक खण्ड ४८० पृष्ठ के १२ खण्ड एक वर्ष में ग्राहकों के पास पहुंचते हैं महीने में एक खण्ड एक खण्ड का मु० ।) शीघ्रता कीजिये ग्राहक बनिये फिर ऐसा मौका न मिलेगा।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजो

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≠) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (व)

चान्द--जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है।। **ब्राह्मी बूँटी बटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये-डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु श्वासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

पीतल के बिरूच

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों लगाने योग्य।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम पते की मुहर २) डा० अलग—मुह बन वाने वालों को एक रुपया भेजना चाहिये।

पताः—भारत हितैषी—कम्पनी, अलीगढ़ सिटी

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री अलीगढ़ सिटी. यू. पी.

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली

पं० अनन्तराम के प्रबन्धसे सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

४ कुआर सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० १९ सितम्बर १९१४

संख्या २३
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

KANGRI DELHI 22 SEP. 14 11.15 A.M. BIJNOR

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अव[illegible] दिये । आज कल राष्ट्र औ[illegible]ार तो बहुत सुनाई दे[illegible]र उन्नति क्या चीज़ है, य[illegible] जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाइ ।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र० •
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्मप्रचारक पत्र—देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवश्यकता ।

(१) व्याकरण और साहित्य पढ़ाने के लिये छ. योग्य पंडितों की आवश्यकता है जो शास्त्री हों या शास्त्री के बराबर योग्यता रखते हों। वेतन २५) से ३०) मासिक होगा।

(२) एक ग्रेजुएट सीनियर ट्रेन्ड अंग्रेज़ी में अधिक योग्यता हो वेतन ७०) मासिक ।

(३) एक जूनियर ट्रेन्ड टीचर वेतन ३०) से ४०) तक सब निरामिशभोजी हों और आयु में तीस वर्ष से कम नहों कम से कम डेढ वर्ष तक काम करना होगा । आर्य्य समाजियों की ओर विशेष ध्यान दिया जायगा । सब प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों सहित निम्न पते पर आने चाहिये।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी
पो० श्यामपुर काँगड़ी
जि० बिजनौर

जयाजी प्रताप ।

हिन्दी भाषा में एक ऐसे पत्र की बहुत बड़ी जरूरत थी जिसमें कवि, विज्ञान और कला कौशल सम्बन्धी विषयों पर उपयोगी सर्व साधारण के समझने योग्य, सुन्दर सुन्दर लेख प्रकाशित हों। अलावा इसके साधारण लोगों के मनोरंजक योग्य कविता, जीवनचरित्र शिक्षा प्रद कहानियाँ और देश देशान्तर के समाचार भी प्रकाशित हुआ करें। स्त्री शिक्षा की उन्नति के लिये भी समय समय पर अच्छे लेख छपा करें। इस अभाव को जयाजी प्रताप ने पूरा किया है। २ बर्ष से बराबर इसी नियम पर यह पत्र निकल रहा है। हिन्दी के सारे समाचार पत्रों ने इस पत्र की सम्पादन शैली और लेखों की प्रशंसा की है। जयाजी प्रतापके हर अंकमें १२ पृष्ठ हिन्दी और ५ पेज अंग्रेजी के पढ़ने योग्य लेख होते हैं। जो लोग अंग्रेजी समाचारपत्र तो पढ़ना चाहते हैं परन्तु अधिक मूल्य होने के कारण उन्हें खरीद नहीं सकते वे केवल ३) साल सब डाक महसूल देकर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का लाभ उठा सकते हैं। हर अंकमें एक दो सुन्दर हाफटोन चित्र भी रहते हैं। इतने कम दामोंमें ऐसा सुन्दर कोई पत्र हिन्दी भाषा में नहीं निकलता ।

मैनेजर
जयाजी प्रताप
ग्वालियर

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये ।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली ।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० छाप =)]

योकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

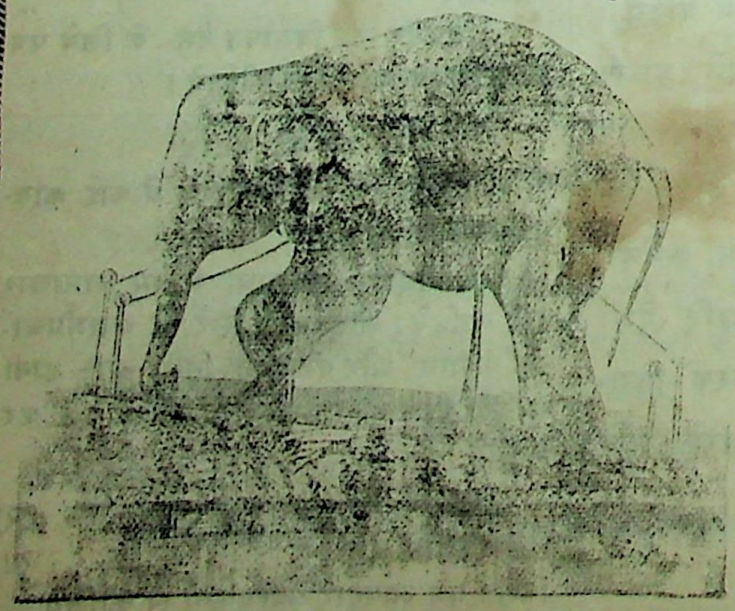

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलोअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर =) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताये ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां ।) वैदिक विवादर्श १) तांतिया भील =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सार्व देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सभा को विशेष स्थिरता प्राप्त हुई । दिल्ली के रजिस्टार के यहाँ सभा ी राज नियमा नुसार रजिस्टरी हो ई है। इस सभा का धन तथा अन्य म्पत्ति उसी प्रकार सुरक्षित हो गई है सी अन्य रजिस्टर्ड संस्थाओं की। ब आर्य पुरुषों का उपरोक्त सभा को ढ़ करने का अधिक प्रयत्न करना चाहिए

सभा का वार्षिक अधिवेशन भी अब ोने को ही है। पंजाब और संयुक्त ान्त की सभाओं ने नया निर्वाचन भा सदों का कर लिया। श्री मन्त्री ी अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओं को भी नये निर्वाचन के लिये लिखा है मुझे आशा है कि फिरसे आर्यप्रतिनिधि सभाएं जाग उठेंगी और नए निर्वाचनमें ोसे सभासद चुनेंगी जो सभाके अधिवेशनों में अवश्य सम्मिलित हुआ करेंगे।

कुम्भ प्रचार के लिए धन आना आ-रम्भ हो गया है। निम्न लिखित धन मेरे गुरुकुल पहुंचने के पश्चात प्राप्त हुआ है— १००) श्री सेठ जयनारायण राम चन्द्र पोद्दार कलकत्ता, ५०) श्री म. राधा कृष्ण जी अमृतसर, २) आर्य कुमार सभा क्वेटो, १०) श्री सर्दार ज्वाहर सिंह ी राम जी साहूकार, ५०) श्री पण्डित ब्रजनाथ बी.ए. वकील मुरादाबाद, १००) श्री लाला द्वारिका दास जी दिल्ली नि-वासी सभासद सार्व देशिक सभा, १००) श्री पण्डित निहालचन्द्र जी प्रधान आर्य समाज दिल्ली तथा सभा सद सार्व देशिक सभा।

सभा के सर्व सभासदों तथा आर्य समाजों के मन्त्री महाशयों से निवेदन है कि अपने अपने भाग का दान शीघ्र भेज दें, जिस से लघु पुस्तकों की छपाई तथा अन्य कार्य अभी से आरम्भ हो जाय।

सन्यासी महात्माओं तथा आर्यों पदेशकों की सेवा में निवेदन है कि अभी से ऐसा समय विभाग बना लें जिस से वे प्रचारार्थ गुरुकुलकी मायापुर वाटिका में, मार्च १९१५ के अन्तिम सप्ताह अर्थात १० चैत्र, १९७१ तक अवश्य पहुंच कर अपने उपदेशों से नर नारी को लाभ पहुंचाना आरम्भ कर दें। उस समय पर सर्व प्रकार के स्वयं सेवकों की भी आवश्यकता होगी अत एव आर्य डाक्टर तथा अन्य महाशय भी अभी से छुट्टी लेने का प्रबन्ध कर छोड़ें जिससे मांग आने पर वे सुगमता से इस बड़े धर्म कार्य में सम्मिलित हो सकें। राजकीय डाक्टरों के लड़ाई युद्ध पर जाने से यदि निज का काम करने वाले डाक्टर तय्यार हों तो बड़ी सुगमता होगी।

मुंशीराम प्रधान,
सार्व देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
स्थान गुरुकुल विश्वविद्यालय
२ आश्विन १९७१

आवश्यक सूचना।

पिछले सप्ताह लेखक की भूल से पते की कई चिटें ज्यादा कट गई थीं जिसके कारण यह सम्भव है कि कई महाशयों के पास दो दो कापियां प्रचारक की पहुंची हों। निवेदन है कि जिन सज्जनों के पास प्रचारक न पहुंचा हो कृपया सूचित करके दूसरी कापी कार्य्यलय से मंगवालें।

प्रबन्ध कर्त्ता

——

देहली समाचार।

देहली के व्यापारियों की दशा

देहली कलकत्तादि की भान्ति कई व्योपारों रियों की मन्डी है। विशेष कर कपड़े की मन्डी सब से बड़ी है। कपड़े का बाज़ार इस समय बिलकुल ढीला पड़ा हुआ है। दिन भर लोग हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहते हैं। विलायत से माल भी अधिक देर से आने की सम्भावना है। अनाज के व्योपारियों ने भी भाव बढ़ाना आरम्भ कर दिया है जो गेहूं पहले १० अथवा १०॥ सेर बिकता था अब ९ सेर हो गया है। सुनते हैं कि अनाज के व्योपारियों को साहेब डिप्टी कमिश्नर देहली ने बुला कर सम-झाया बुझाया है। देखिये इस युद्ध के कारण क्या २ विपत्तियां मनुष्यों को झेलनी पड़ती हैं।

वैद्यक पाठशाला देहली

देहली के पुरुषार्थी सज्जन स्वर्गीय सेठप्र-सादी लाल जी ने वैद्यक पाठशाला और आयु-र्वेदिक औषधालय तथा पुस्तकालयादि स्थापि-त किया था। उन्हीं के विशेष परिश्रम से सेठ जी के पुत्र सेठ सांवलदास जी उद्यत हुए हैं। इस विद्यालय में लोयर प्रायमरी तक स्कूलों की शिक्षा और संस्कृत का व्याकरणादि भी पढ़ाया जाता है। वैद्यक की शिक्षा प्रधान रक्खी गई है और इस को प्रयाग को आयुर्वे-दिक युनिवर्सिटी से मिला देने का इस के कार्य्य कर्त्ताओं का विचार हो रहा है। विद्या-र्थियों से कोई फीस नहीं ली जाती और योग्य विद्यार्थियों को छात्र वृतियां दी जाती हैं। यु नि वर्सिटी से परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों की डिप-लोमा मिला करेगा।

औषधालय में पवित्र आयुर्वेद औषधि द्वारा प्रत्येक रोग की चिकित्सा होती है। मूल्य किसी से कुछ नहीं लिया जाता यदि किसी की इच्छा बिना मूल्य औषधि लेने की नहा तो वह जो चाहे औषधालय के दान पात्र में डाल सकता है।

पुस्तकालय में, धार्मिक, सामाजिक, सार्व-जनिक कई समाचार पत्र आया करते हैं और कुछ पुस्तकें भी हैं।

अन्त में हम श्रीपं० चतुरसेनजी आयुर्वेदो पाध्याय वैद्य विशारद को जो बड़े सज्जन पुरुष हैं बधाई देते हैं क्योंकि वे इस के अध्यक्ष नियु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त हुए हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप की अध्यक्षता में विद्यालय आवश्य कुछ कर दिखलावेगा।

इम्पोरियल इन्डियन रिलीफ फँड

यह फंड देहली में नियमानुसार स्थापित हो चुका है। इस के आनरेरी सिकेटरी रैवरेन्ड पादरी टामसन साहेब नियत हुये हैं। चन्दा के अतिरिक्त इस फन्ड में सब से पहिले 'अम्पायर पिकचर पैलेस,, जो आज कल नहर सआदतखां के थियेटर हाल में खेल दिखला रहा है उस ने अपनी एक दिन की आमदनी इस में दी है। अब ज्ञात हुआ है कि १८ सितम्बर को फर्राशखाना में एक बड़ा विशाल दंगल होगा। यह देहली के प्रसिद्ध मुसलमान रईस हकीम अजमलखां की अध्यक्षता में होगा और इस दिन की कुल आमदनी इसी फन्ड की भेंट की जावेगी। इस के पश्चात यह दंगल मोहर्रम के दिनों तक प्रति शुक्रवार को हुआ करेगा। और उसकी आमदनी में से -) फी रुपया इस फंड में दिया जाया करेगा।

भारत फिलासफर देहली।

"भारत फ़िलासफर" यह इंग्लिश भाषा का नवीन मासिक पत्र है। पाहले इस के संचालकों ने इसे काशी से निकालने की घोषणा की थी किन्तु अब यह सुन कर हमें अत्यन्त हर्ष हुआ कि यह देहली से निकला करेगा। इजरटनरोड पर इस के कार्य्यालय का स्थान लिया गया है।

सनातन धर्म प्रचारक विद्यालय देहली।

हमें यह जान कर अत्यन्त आनंद हुआ कि श्री सनातन धर्म शिव सभा सब्ज़ी मण्डी देहली ने एक सनातनप्रचारकनामक विद्यालय स्थापित किया है इस में मातृ भाषा के अतिरिक्त सनातन धर्म की शिक्षा पूर्ण रूप से देने का यत्न किया जा रहा है। इस के साथ ही एक सनातन धर्म प्रचारक पुस्तकालय भी स्थापित किया गया है। देहली जैसे स्थान में जहां पर उर्दू का विशेष दौर दौरा है भावी भाषा के प्रचार के यह चिन्ह देखकर प्रतीत होता है कि अब हिन्दीभाषा की ओर यहाँ के निवासियों की रुचि दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। परमात्मा करे कि इसमें दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो।

योरप में महाभारत

जर्मन पीछेहट रहे हैं

३०००० जर्मन कैद किये गये और कई सौ तोपें छिन गईं।

बंगाल की खाड़ी में जर्मन जहाज़।

स्थिति।

हमारे वाम भाग में शत्रु पीछे हटे जारहे हैं और आमींस छोड़कर पूर्व की ओर चले गये हैं। (आमींस पेरिस से ८१ मील उत्तर में है। जर्मन हटकर विसले नदी के उत्तर चलेगये हैं। इन्ही ने रीम्स से दक्षिण पूर्व मार्ने नदी को रक्षा नहीं की।

मध्य भाग में रेबिनी और ब्रेडेंट ले रोय पर हमारा अधिकार हो गया है। मूर्थे नदी पर जर्मन सेंट डाई और लूनेविल छोड़ कर हट रहे हैं। हमें रोएन लेटोपी, वेकाटेट, रेमरविले और मेज की तरफ नोमेनी तथा पोटं-ए मूसों की आवश्यक रेलवे बायंटस पर अधिकार कर लिया है।

जनरल जोफर का आदेश।

जनरल जोफर ने सेना के प्रति आदेश पत्र में लिखा है:—"हमारे प्रबल वेग को रोकने के लिये जर्मनों ने कितनी चेष्टा यथा आयोजन किया था इसका पता ज्यों २ हमारी सेना बढती है त्यों त्यों मालूम होता है। तुम लोग अपनी मातृ-भूमि के उपयुक्त हो। छः दिन में हमारी सेना १०० किलो मीटर्स (६२ मील बढ़ी है।

भोसजेस में युद्ध।

भोसजेस में ग्वेभविलर में घोर युद्ध हुआ है। जिसमें कितनी ही बार सङ्गीनों के आक्रमण और बदले के आक्रमण हुए हैं।

नैंसी में युद्ध।

डीजोन से 'टाइम्स' को तार है जिसमें लिखा है कि दस दिन युद्ध के पश्चात् जर्मन सेना ने प्रदेश छोड़ दिया है। जर्मन स्वयं उपस्थित थे। नैंसी में २००० लूनेविले में १००० जर्मन मारे गये।

हवास एजेंसी की रिपोर्ट

रविवार को निम्न लिखित मिला:—

सरकारी कम्यूनीक में पेरिस की लाइन के युद्ध का विवरण है। नदी पर युद्ध हमारे लिये बहुत अ हुआ है क्योंकि जर्मन दक्षिण तथा भाग पीछे हटरहा है। हमारे द भाग की स्थिति में कुछ परिवर्त्तन हुआ है। भोसजेस और नैंसीमें गत दिनों में स्थिति पूर्णतया बदलगई हमने जर्मनों के अग्रसर होने को (वे अपनी विजय समझते थे) रोक नहीं दिया है किन्तु अब वे लोग स्थानों में पीछे हट रहे हैं। उनके भाग ने वाज और मार्ने नदी के बीच हटने की चाल आरम्भ की है। भाग में और दक्षिण पार्श्व में उ विट्रीला फ्रौंस्वा का परित्याग है।

आर्गोनीरिज में उनकी सेना ने दबना आरम्भ किया और उत्तर ओर हटरही है। लोटेन में हमने सफलता पायी है। सेंट डाई को त्याग किया है। जनरल मोनोरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जनरल डूवेल को ग्रेंड क्रास आफ दी लीजन आफ आनर और जनरल फोच को ग्रेंड आफिसर आफ दी लीजन आफ आनर द्वारा सम्मानित किया गया है।

वाम भाग में जर्मन हट रहे हैं और आपीस को खाली कर पूर्व की ओर जा रहे हैं। रीम्स के दक्षिण पूर्व में उन्होंने मार्ने नदी की रक्षा नहीं की। मध्य भाग में विट्रीलाफ्रौंस्वा हमारे अधिकार में है। दक्षिण आर्गोनी उनके अधिकार में है। हमारे दक्षिण पार्श्व में वे हट रहे हैं। हमने रेओन, वेंकाटेट, लूनेविले, नोमेनी और पोर्ट-ए-मूसोन पर अधिकार कर लिया है।

वार्लिन में उदासीनता।

'डेली क्रानिकल' को जेनेवी से तार मिला है जिसमें लिखा है कि समाचारों को रोकने का प्रबन्ध होने पर भी जर्मनी में हार के समाचार फूट रहे हैं। बर्लिन निष्पन्द हो गया और म्यूनिक में दँगों की आशंका है

संधि न होगी।

युद्ध के स्थायित्व की आलोचना करते हुए फ्रेञ्च संवाद पत्र एक मत होकर लिखते हैं—जब तक जर्मन सैनिक प्रियता की जड़ और शाखाएं नष्ट न हो जांयगी तबतक संधि नहीं होगी

भूखे जर्मन।

पेरिस के अस्पतालों में डाक्टरों ने देखा है कि जर्मन दुर्बोध्य लक्षणों से मर रहे हैं और लाश की परीक्षा से उनके पेटों में कच्ची चुकन्दर मिली हैं जिसमें अभी तक मिट्टी लगी हुई है। भूख मरतों ने इसे ही खाकर सन्तोष किया था।

भीषण दृश्य।

पेरिस में एक घायल ब्रिटिश ड्रेगून ने कोम्पीन के निकट पहरा देते समय देखे हुए भीषण दृश्यों का वर्णन किया है। एक समय उसने एक मोटरकार में तीन पुरुष और एक औरत की लाशें पायीं। मीटर गोलियों से चलनी होगई थी। लाशों की अंगुलियों से अंगूठियां निकाल ली गई थीं।

क्या इटली भी लड़ेगा?

इटली सोशियालिस्ट यूनियन ने एक मन्तव्य स्वीकार किया है जिसमें लिखा है कि अस्ट्रियन तथा जर्मन इम्पीरियलिज्म द्वारा प्रथम युद्धारम्भ और आस्ट्रियन तथा जर्मन के बल शाली सोशियालिस्ट दलों की युद्धको रोकनेमें अशक्तता ही इसयुद्धके कारण हैं।युद्ध आरम्भ करने वालोंको पददलित करना ही इटली की उदासीनता का उद्देश्य है क्योंकि उनकी विजय होने से योरप उन्नतिविरोधी सैनिकप्रियता से संकटापन्न हो जायगा।

लोगों का मत।

प्रतिदिन इटली में मित्र राज्यों का पक्ष समर्थन करने के लिये जलसे, सभा आदि होते रहते हैं।

वायना पर संकट।

समाचार मिला है कि रूस की सेना वायना की ओर अग्रसर हो रही हैं।

रूस में प्रसन्नता।

अस्ट्रिया की हार से रूसी समाचार पत्र बड़ी प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं और कहते हैं कि अस्ट्रिया की बादशाहत अब लड़खड़ा रही है।

वायसराय का तार।

श्रीमान् वायसराय को १४ सितम्बर का निम्न लिखित तार मिला है:—

पोलैंड में अस्ट्रियन सेना ओपोले क्रासनोस्टोव और लामोरेट्जी तक चली गयी थी। लेम्बर्ग के पूर्ववाली सेना दहनी ओर इसकी रक्षा करती थी। इस सेना को, १ ली सितम्बर को रूस ने अच्छी तरह हटा दिया। इससे स्पष्ट होगया कि अस्ट्रिया वाले अपने दृढ़ प्रतिरोध को अधिक दिन तक स्थायी नहीं रख सकेंगे। टोमासेव पर, १० वीं सितम्बर को अधिकार कर लेने से सम्भव होगया कि रूस वाले उनका व्यूह भेद कर सकेंगे।

आज एक बड़ी विजय की सूचना मिली है। ३०००० कैदी पकड़े गये और कई सौ तोपें छीन ली गई हैं।

जर्मनों की क्षति

नौ सेना विभाग ने सूचना दी है कि हर्वटशोहे में जर्मनों के अन्दाज़न २० से ३० अफ़सर और सैनिक मरे और सेनापति सहित जर्मन अफ़सर को १५ नान कमिशन्ड अफ़सर और ५६ देशी पुलिस के सिपाही पकड़े गये।

अमेरिका के पत्रों का मत।

युद्ध की आलोचना में अमेरिका के पत्र अब कुछ स्पष्टवादिता दिखा रहे हैं। न्यूयार्क वर्ल्ड ने एक प्रबल लेख में जर्मनों की सैनिक प्रियता की बिना की है और जब तक सैनिक प्रियता रूपी पिशाच कानाश न होगा तब तक योरप ही क्यों, जर्मनो के अधिवासी भी छुटकारा नहीं पावेंगे।

समाचार पत्र कहते हैं कि इस युद्ध से सभ्यता को सैनिक स्वेच्छाचारिता से छुटकारा मिलना चाहिये नहीं तो इतना कष्ट और इतनी खून ख़राबी व्यर्थ है।

जर्मन ऋण

न्यूयार्क के बैंकर्स एक मत होकर कहते हैं कि जर्मनी को अपने प्रस्तावित ऋण का कोई भी अंश अमेरिका से नहीं मिलेगा।

बढ़ाव जारी है।

आज मध्यान्ह काल में एक कम्युनिक जो पैरिस में प्रकाशित हुआ, कहता है कि हमारी बाईं ओर शत्रुओं ने एसनी नदी के तट पर कम्पेन और सोईसन्स के मध्य मोरचे बना रक्खे थे परन्तु वहां से भागने के लिये वे विवश किये गये। एमिएन्स से जर्म्मन हठ कर पिरान्नी और सेण्ठ क्वेनटीन की ओर चले गये हैं, जर्म्मन रीम्स के पीछे भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपनी रक्षा कर रहे थे पर वे वहां नहीं ठहर सके।

अरगानी में जो रिपुदल था वह वहां से हटकर बेलनूई और ट्रिजनकोर्ट के जंगलों में चला गया। नानसी और वासगिज के मध्य जो फ्रेंच राज्य है वह अब शत्रुओं से एक दम खाली हो गया है।

कई बँधुये हुए

सरकारी समाचार समिति प्रकाशित करती है कि बहुत से जर्म्मन बँधुए बनाये गये हैं। जर्म्मन राजकुमार की सेना पीछे हटाई गई है और अपना हेडक्वार्टर्स सेंट माइल से हटाकर मारट फाकन की ओर आप ले गये हैं।

बेलजियनों के प्रति बम्बई का दान

बम्बई प्रेसिडेन्सी ने अपनी युद्ध निधि में से ढाई हजार पौण्ड अर्थात् साढ़े सैंतीस हज़ार रुपये बेलजियनों को दिया है। बेलजियनों की बहादुरी के उपलक्ष्य में यह रकम उन्हें दी गई है।

एसनी नदी पर युद्ध

राष्ट्र सचिव के यहां से एक तार श्रीमान् वायसराय के पास आज पहुंचा है जिस में लिखा है कि नरसों शत्रुओं ने हमारी सेना से एसनी नदी पार होने के लिये खूब गड़बड़ मचाया। परन्तु सूर्य्यास्त से पहले ही अंगरेजी सेना ने नदी पार होने वाले घाट पर अपना पूरा २ अधिकार कर लिया। फ्रेंच सेनाओं को भी शत्रुओं के साथ ऐसी ही कठिनाइयाँ उठानी पड़ी थीं। बहुत से जर्म्मन हम लोगों के हाँथ आये। फ्रेंच हेड क्वार्टरों से समाचार आये हैं कि जर्म्मन राजकुमार की सेना पीछे हटाई गई है।

जार्म्मन धावा

बङ्गाल की खाड़ी में पांच जहाज डुबाये गये

मांझी बचा लिये गये।

बंगाल गवर्नमेण्ट ने गत मंगलवार को निम्न कम्यूनीक प्रकाशित किया-कल-कत्ते में यह समाचार प्राप्त हुआ है कि जर्म्मन लाइटक्रूजर "एमडेन" ने बंगाल की खाड़ी में धावा मारा है। इस धावा में उसने जहाजों को बहुत कुछ हानि पहुंचाई है। गत १० और १४ सितम्बर के मध्य "एमडेन" ने निम्न पांच जहाजों के मांझियों को हटाकर जहाजों को डुबोदिया है। डूबाये गये पाँच जहाज ये हैं:—

(१) बन्दव
(२) लोवाट
(३) कल्लिन
(४) डिपलोमाट
(५) ट्राबाक

गत १२ सितम्बर को "कलिंगा" जहाज को भी किसी जर्म्मन जहाज ने पकड़ लिया था। "कलिङ्गा" पर संयुक्त राज्य (अमेरिका) के लिये बहुतसा माल लदा हुआ था। गत सोमवार को पकड़े गये जहाजों के सब मांझी "कलिंगा" जहाज पर चढ़ा दिये गये थे और वे सागरद्वीप पहुंचे हैं। आशा है कि आज ही कल में वे कलकत्ते कुशल पूर्वक पहुंच जायँगे। "एमडन" जहाज एक छोटासा क्रूजर है पर शस्त्रों से सुसज्जित है कलकत्ता आने का साहस वह कदापि नहीं कर सकता और न किसी वृटिश क्रूजरका वह सामना ही कर सकता है। वृटिश क्रूजर उसे ढूंढ़ रहे हैं। मित्रों के कई जंगी जहाज कुछ दिनों से मलक्का स्ट्रेट की ओर उसका पता लगा रहे हैं। मालूम पड़ता है कि "एमडन" दक्षिन महासागर में भाग निकालने का उद्योग कर रहा है।

एस० एस० "डिपलोमाट" हैरिसन स्टीमरवाला ७५०० टन का एक नूतन जहाज था। इसके लोकल एजंटस् मेसर्स होरी मिशर एण्ड को है। गत ११ सितम्बर को यह जहाज ३७०० सन्दूक चाय और कुछ टाट लेकर कलकत्ते से विलायत के लिये रवाना हुआ था।

एस. एस. "बन्दव" मेसर्स जास, नरसी के जहाजों में से एकथा और यह सरकारी कामों के लिये सनद किया हुआ था। यह जहाज कोई पाँच हज़ार टन का था।

एस० एस० "किलिन" और एस० एस० "टाबाक" दोनों कोयला ढोने वाले जहाज थे और समुद्र तटों पर इन से काम लिया जाता था।

एस० एस० "कलिङ्गा" को कलकत्ता बन्दर छोड़े हुये अभी कुछ ही दिन हुये हैं, इस जहाज़ पर संयुक्त राज्य के लिये टाट लदा हुआ है।

पूर्व्वी प्रुसिया में रूसी सेनायें

जर्म्मनी पर युद्ध का प्रभाव।

यहां का एक कम्युनिक कहता है कि पूर्वी प्रुसिया में हमारी सेनाओं ने अभी धावा मारना बन्द कर दिया है क्योंकि गलिशिया में पूरा सैन्य बल एकत्र किया जा रहा है इस से यहाँ सेनायें धावा करने के लिये अभी पर्य्याप्त नहीं रक्खी गई हैं।

जर्म्मन समाचार "बोरा अर्ट्स" कहता है कि यह युद्ध यदि विशेष काल तक जारी रहा तो न मालूम कितने प्रकार की विपत्तियां लोगों को भोगनी पड़ेंगी। लाखों मनुष्यों का बेकार होना उन्हें सता रहा है।

न्यूयार्क में जर्मन लाइनर

"सिविलऐण्ड मिलिटरी गज़ट" के पास लन्दन से चला हुआ १२ सितम्बर का एक विशेष तार पहुंचा है जिसमें कहा गया है कि संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूनार्क नगर में यह बात फैलगई है कि जितने जर्मन लाइनर [जहाज़] इस समय अमरीका में हैं उन्हें अपनी सरकार से आज्ञा पाकर अटलाण्टिक महासागर में टक्कर खाने का पूरा भय है और वे यदि अमेरिका में ही विशेष काल तक रक्खे जायेंगे तो महाजनों के हाथ छीने जाने का भी भय उनके लिए है।

—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्मप्रचारक

भारत की भक्ति।

इंग्लैंड के समाचार पत्र भारत वर्ष की राजभक्ति को देख कर आश्चर्यित हो रहे हैं। युद्ध के समय इंग्लैंड के साथ भारत वर्ष ने भी अपना शस्त्र उठाया है, इस से टाइम्स और अन्य समाचार पत्र विस्मित से हो गये हैं। मानों वे यह समझे बैठे थे कि भारतवर्ष में विद्रोह की आग लगी हुई है, घर घर में ब्रिटिश राज्य को उड़ाने के लिये बड़े यन्त्र रचे जारहे हैं। वे समझे बैठे थे कि जिस दिन इंग्लैंड पर कोई आपत्ति आई उस दिन भारतवासी एक शब्द होकर उठ खड़े होंगे, और स्वराज्य की घोषणा दे देंगे। प्रतीत होता है कि इंग्लैंड के समाचार पत्रों ने भारत भूमि के ज़र्रे ज़र्रे में राजविद्रोह की फोटू देख ली थी। अब ऐसा न होता देख कर उनकी आंखें खुल गई हैं। वे आश्चर्य्य में पड़ कर लिख रहे हैं कि 'अहो' भारत वर्ष में राजभक्ति कहां से आई। भारत वर्ष ने तो राजभक्ति का पानी बरसा कर इंग्लैंड को तरा बोर कर दिया है।

उधर कनाड़ा और अन्यब्रिटिश राजके स्वयं शासन करने वाले भाग भी इसी आश्चर्य का प्रकाश कर रहे हैं। वे स्वयं राजभक्ति का प्रकाश कर रहे हैं किन्तु भारत की राजभक्ति उनके लिये अचम्भा हो रही है। भारतवर्ष ने सेना दी है, धन दिया है, सहानुभूति दी है और सब से बढ़ कर आत्मिक भरोसा दिया है। भारतवर्ष के रयासती राजा अपने सैन्य, अपने सैन्यबल। धन बल और शरीर से भी सहायता देने को तय्यार हैं। कई राजा और युवराज युद्ध में जायंगे भी। वे दृश्य और किसी भी अधीन देश ने नहीं दिखाये। इसी पर संसार आश्चर्य कर रहा है।

लोग विचार रहे हैं कि इस राजभक्ति के असाधारण उद्गार का कारण क्या है? कोई इसका कुछ कारण सोचता है और कोई कुछ। हमारी सम्मति में इसका एक बहुत ही सरल कारण है। वह कारण यह है कि भारतवासी कृतघ्न नहीं हैं। भारतवासी ब्रिटिश सरकार के उपकारों को भूले नहीं हैं। ब्रिटिश सरकार ने भारतवर्ष को शान्ति दी है और मध्यम कालीन समय से निकाल कर वर्तमान युग में ला उतारा है। जिस समय यह देश टुकड़े टुकड़े होकर तूफानी आकाश का दृश्य दिखला रहा था, उस समय ब्रिटिश सरकार ने यहां पैर रखे। ब्रिटिश व्यापारियों ने उस समय जिन मार्गों का अवलम्बन किया, वे सत्य की परख से ठीक थे या नहीं; उस समय के लड़ने वालों के उद्देश्यों के अन्दर उच्चता का कहां तक सन्निवेश था, ये प्रश्न है, जिन्हें हम यहां छोड़ देते हैं। उनके विषय में इतिहास अपनी राय दे चुका है। किन्तु हमारा तात्पर्य यह है कि अंग्रेज़ों के भारत में आने का फल घरेलू शान्ति की दृष्टि से बहुत उत्तम हुआ। हम इस योग्य हो गये कि अपनी धार्मिक सामाजिक तथा साहित्यिक उन्नति कर सकें।

इन्हीं सब बातों को भारतवासी अनुभव कर चुके हैं, और करते हैं। इसी लिये इस समय भारत प्रजा के ऊपरले भाग ने राजभक्ति का अनुपम दृश्य दिखलाया है। भारतवासी इस बात को जानते हैं। हम चाहते हैं कि ब्रिटिश सरकार भी इस बात को स्मरण रखे। हमारी इच्छा है कि हमारे शासक लोग इस बात को सदा स्मरण रखें कि भारतीय प्रजा राजभक्त है अवश्य, किन्तु निष्कारण नहीं। उनकी राजभक्ति में कारण है। ब्रिटिश सरकार ने जो जो उत्तम कार्य भारतवर्ष में किये हैं, उनके कारण ही हम राजभक्त हैं। जब तक वह कारण बना रहेगा, जब तक इंग्लैंड अपने सभ्यतावर्धक कार्य में लगा रहेगा, तब तक भारतीय प्रजा उसके उपकार मनायेगी, अन्यथा नहीं।

दूसरी राजनीतिक आन्दोलन के बारे में भी ऐसा ही समझ रखना चाहिये। भारतवर्ष में जो राजकीय हल चल है, या जो कुछ असन्तोष है, उसे निष्कारण समझना, वा केवल पागलपन का फल समझना भी बड़ी भारी अशुद्धि है। यह नहीं समझना चाहिये कि भारतीय प्रजा का कुछ भाग केवल ऋतु से प्रभावित होकर राजनीतिक हल चल में लग जाता है। उस में भी कारण हैं। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय प्रजा से शस्त्र छीन लिये हैं, उन्हें कई वचन देकर पूर्ण नहीं किये, कई सुधार जिन्हें नवीन उन्नत जातियां आवश्यक समझती हैं भारतवर्ष में नहीं किये जाते। कांग्रेस उन सुधारों के लिये चिल्लाती हैं, किन्तु उसकी नहीं सुनी जाती। ऐसे ही कारणों से भारतीय प्रजा कभी कभी असन्तोष प्रकाशित कर बैठती है। उसे पागलपन न समझना चाहिये। सन्तोष असन्तोष, भक्ति और अशान्ति ये दोनों जातियों में विना कारण के नहीं आती। ब्रिटिश सरकार ने जो भलाई भारत के साथ की है, वह भूल नहीं सकती, इस लिये भारतीय प्रजा राजभक्त रहेगा, किन्तु साथ ही इंग्लैंड को स्मरण रखना चाहिये कि भक्ति और असन्तोष के भी कारण हैं। भक्ति के कारणों को बढ़ाने और असन्तोष के कारणों को घटाने में ही उनका भला है, इसी में साम्राज्य की स्थिरता है।

गेहूं की खेती।

हिन्दी उर्दू दोनों भाषाओं में यह एक अपूर्व पुस्तक है। जिसमें बतलाया गया है कि किसान अपनी साधारण भूमि में दुगनी तिगुनी पैदावार कैसे कर सकता है। यु० पी० गवर्नमेन्ट के कृषि विभाग ने इस पुस्तक को बहुत उपयोगी बतलाया है। आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक हिन्दी, या, उर्दू, भाषा में नहीं निकली। मूल्य प्रत्येक भाषा की पुस्तक का १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल माफ।

रामप्रसाद—सब जज

उज्जैन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ। जग बीती

(४७)

कन्या गुरुकुल की धुन।

सद्धर्म्म प्रचारक के दूसरे अङ्क से ही मैं ने एक लेख माला का प्रारम्भ कर दिया था जिसका शीर्षकथा—"अधूरा इन्साफ़ (न्याय)" इस लेख माला में मैं ने स्त्रियों को सुशिक्षिता होने का पुरुषों के साथ सम अधिकार जतलाते हुए लिखा था —"स्त्री को आत्मिक विद्या का वैसा ही अधिकार है जैसा पुरुष को.....इस लिए जिस प्रकार पुत्रों को पवित्र वेद की आज्ञानुसार पहले छोटी आयु में माता पिता का अधिकार है कि शिक्षादें और जब यज्ञोपवीत संस्कार हो जावे तो तत्काल ही लड़का गुरुकुल में भेजा जाना चाहिये वैसे ही लड़कियों के साथ बर्ताव होना चाहिए" उस समय में दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालिज को ही पुत्रों के लिए गुरुकुल समझता था, इस लिए कन्या गुरुकुल को स्थापित करने के लिए फीरोज़पुर की पुत्री पाठशाला को उन्नत करने का प्रस्ताव मैं ने पेश किया था। उन्हीं दिनों कटक निवासी लाला धनपतराय ने मेरे लेख पढ़ कर अपनी पुत्री भगवानदेवी का स्वयम्बर रचने का नोटिस दिया था और फीरोज़ पुर की पुत्री पाठशाला के साथ आश्रम खोलने का विचार भी उठा था। आन्दोलन तो इन विषयों पर बहुत हुआ किन्तु जहां कुमारी भगवान देवी के स्वयम्बर का शोर मच कर अन्त को एक ब्राह्मण देवता की कृपा से कुमारी जी का विवाह एक सन्तान रखने वाले धनाढ्य के साथ हो गया वहां फीरोज़पुर का प्रस्तावित आश्रम कन्या गुरुकुल का आभासमात्र भी न बन सका।

सत्यार्थ प्रकाश की कथा

जहां धर्म प्रचार के लिए इन दिनों मैं बाहर जाया करता था वहां अपनी जाति की प्राचीन कथा विधि को पुनर्जीवित करने का विचार भी मेरे अन्दर काम करने लगा। २४ मई सं० १८८९ से सूदों के चौक में सत्यार्थप्रकाश की कथा का आरम्भ किया गया। जब पहले दिन कथक्कड़ बन कर मैं आसन पर बैठा और कथा शुरु की तो केवल २५ वा २० आर्य भाई ही मेरे सामने बैठे हुए थे। बाज़ार का घोगान बड़ा था। इस लिए दूकानें दूर दूर थीं। दूकानदार दूकानों पर हुक्के गुड़ गुड़ाते रहे और हमारी दरी पर न आए। किंतु जब मैं ने ऊंचे स्वर से वेद मन्त्रों को पढ़ कर उन की व्याख्या पंजाबी बोली में आरम्भ की तो शनैःशनैः गुड़ गुड़ी हाथ में लिए बहुत से लाला जी मेरे समीप आ बैठे। दूसरे दिन उपस्थिति १०० घी और चार दिनों के पीछे दो अढ़ाई सौ तक पहुंच गई। लोग बड़ी श्रद्धा से हमारी धर्म कहानी सुनने लगे और हुक्का आदि का उस स्थान में लाना बन्द कर दिया। इस प्रकार एक मास से अधिक समयतक कथा की शृङ्खला चल कर बन्द हो गई। मुझे एक कार्य विशेष के लिये अपने ग्राम में जाना पड़ा। पीछे पण्डित श्रीपतिजी को व्यास की गद्दी पर बैठाया गया। पण्डित जी ने अभी आरम्भ प्रार्थना ही कराई कि आंधी आगई और सब श्रोतागण उठ खड़े हुए। बस फिर लौटने पर मेरे बहुत से यत्न करने पर भी कुछ न बन सका। वर्षाऋतु भी आ गई थी जिसके कारण बाहर बैठना कठिन होगया था।

एक आर्य्य वीर परीक्षा में

जिस चौक सूदाँ में कथा होती थी वहीं जालन्धर धर्म सभा के मन्त्री की दूकानें थीं। उन की दूकान लाला शालिग्राम आर्य (वर्तमान प्रसिद्ध गुरुकुल भन्डारी) के भाईयों के पास किराए पर थी। धर्मसभा के मन्त्री का नाम था लाला वसंत राय; उन्हों ने भंडारी जी के भाईयों से कहा कि यदि वे अपने भाई को आर्य समाज से अलग न करा लेंगे तो उन से दूकान छीन ली जायगी। भाईयों ने मिन्नतें कीं, समझाया कि आर्य समाज में जाना छोड़ देवे परन्तु बहादुर शालिग्राम ने एक न सुनी। घरछोड़ कर समाज मन्दिर में डेरा लगाया परन्तु फिर भी निर्दयी धर्म समाजी ने दूकान ख़ाली करा ही ली। तब भाई फिर शालिग्राम को घर ले गये। धर्म समाजी ने तो समझा था कि जब अपनी पीठ की दूकान से अलग होंगे तो इन का अनाज न बिकेगा और ये सब भूखों मरेंगे। परन्तु मारने वाले से रक्षा करने वाला अधिक बलवान होता है। उस समय न बिकी हुई गेहूं कुछ दिनों के पश्चात बड़े मंहगे भाव बिकी और शालिग्राम के भाइयों को दुगना लाभ हुआ जिससे उनकी श्रद्धा भी आर्य समाज में बढ़ गई।

जिन दिनों भंडारी जी घर छोड़ कर आर्य्य समाज मंदिर में आ टिके थे उन्हीं दिनों से इन के अन्दर देव नागरी अक्षरों और संस्कृत भाषा को जानने का अनुराग अधिक उत्पन्न हुआ। मुझ से आर्य सिद्धान्तों के विषय में वे ऐसे प्रश्न किया करते जिनसे मुझे अपनी डायरी में यह लिखना पड़ा कि इन्हें व्याख्यान दाता बनने का बड़ा चाव है और संस्कृत का शौक ऐसा दृढ़ हुआ कि इन्हों ने शायद उस समय में, बीच बीच में छोड़ कर शायद बीस बार संस्कृत व्याकरण को पुनः पुनः आरम्भ किया होगा।

श्री पूर्णानंद जी का प्रवेश

भी आर्य्य समाज में उन्हीं दिनों हुआ। किस प्रकार अपने देश चिन्य से लड़कपन में ही ये निकले, किस प्रकार साधु वेश में ये विद्या प्राप्ति का प्रयत्न करते रहे और अन्त को किस प्रकार ये जालन्धर पहुंच कर वहां के प्रसिद्ध नैय्यायिक पण्डित देवीचन्द्र जी से विद्या अध्ययन करने लगे-ये सब प्रश्न हैं जिनका उत्तर पण्डित पूर्णानन्द जी ही दे सकते हैं। मैं केवल इतना ही जानता हूं कि जब आर्य्य समाज जालन्धर शहर का शायद पहला वार्षिकोत्सव मनाया जाना था तब मैंने एक युवक साधु को दीवारों पर लगे वेद मँत्रादि की अशुद्धियों पर कटाक्ष करते देखा। पूछने पर पता लगा कि इस युवक साधु का नाम "टीकमानन्द" है। जालन्धर की पढ़ाई से असन्तुष्ट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होकर इस युवक साधु ने काशी का रास्ता लिया। वहां सन् १८८९ ई. के मई मास के आरम्भ में आर्य समाज के उपदेशक स्वामी रामानन्द जी का व्याख्यान "कोर्माइकल लाइब्रेरी हाल" में सुनकर साधु टीकमानन्द ने वैदिक धर्म को ग्रहण किया। इससे पहले कई साधु आर्य समाज में सम्मिलित हुए थे परन्तु किसी ने भी आर्य्य ग्रन्थों के अधिक पठन पाठन में रुचि प्रकट नहीं की थी। इस नए साधु ने मत परिवर्तन करते ही स्वामी रामानन्द से प्रार्थना की कि वे उस की पढ़ाई का प्रबन्ध करदें। स्वामी रामानन्द ने टीकमानन्द को पूर्णानन्द तो बना दिया किन्तु उनके आर्य्य ग्रन्थ पढ़ने का काशी में प्रबन्ध न करा सके। तब आर्य्य समाजों में उपदेशक विद्यालय खोलने का आन्दोलन करते हुए दोनों सन्यासी महोदय मई मास के अन्त में जालन्धर पहुंचे और २१ मई के सायंकाल दोनों के व्याख्यान आर्य्य समाज मन्दिर में हुए। यह था आरम्भ उस "उपदेशक क्लास" का जिसने लाहौर नगर के आर्य्य समाज के दो दल बनाने में पहला भाग लिया।

(मुन्शीराम)

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको

चाँदी के पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

(पं० पूर्णानन्दजी द्वारा लिखित)

आर्यों की दिन चर्य्या

पूर्व इसके कि विषय पर हम कुछ लिखें, यह समझ लेना चाहिये कि ईश्वर ने सूर्या चन्द्रमसौधाता यथा पूर्वम कल्पयत्। इस मंत्र में अपने नियम पालन का स्मरण करा कर क्रियात्मक उपदेश दिया है कि सब लोग नियम से रहें, आर्य्यों के तो जीवन का यह सचमुच गुरु मंत्र होना चाहिये, प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक सूर्य्य और चन्द्रमा कीसी नियम पूर्वकता यदि हम धारण कर लें तो हम में उनका तेज, तथा, उत्साह, और शीतलता और शान्ति आसक्ते हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं कि इन नक्षत्रों का अनियम भी नियमित होता है और विद्वान् लोग करोड़ों वर्ष बता सका करते हैं कि अमुक समय पर उपराग होगा, अधिक अनियम प्रायः भूकम्पों के विषय में समझा जाता है परन्तु हम कहेंगे कि यह भूगर्भ विद्या की अल्पज्ञता का परिणाम है, अनियम और अपवाद है जो नियम रूपी उत्सर्ग को सिद्ध करते हैं, ऋत और सत्य वरुण स्वरूप ईश्वर के निजू गुण हैं, वरुण नियमों के भङ्ग करने वाले को बड़ा कठोर दण्ड देता है, कुदरत के नियम अटूट हैं, वह किसी से रियायत नहीं करती। ईसाई और मुसलमान कितनी ही मुहम्मद और ईसा की शक्ति को व्यवधायक क्यों न मानें, विज्ञान और वैदिक धर्म कदापि यह स्वीकार नहीं करते नाहीं प्रकृति किसी को गणना में लाती है, लाटों वाली देवी भूकम्प में अपने मन्दिर को भी नहीं बचा सकी, मनुष्यों को अमर बनाने के दावे दार हरकी पौड़ी और भीम गोडे वाली गंगा अपने पूजा स्थान को छोड़कर १९१० की बाढ़ में कर्दम शेष रह गयी। हाँ शिवरात्रि के चूहे ने शिव की मूर्त्ति पर अठखेलियां करके ऋषि के हृदय में सुस्पष्ट कर दिया कि पाषाण पाषाण ही है, मनुष्य भूल जाते हैं परन्तु न ईश्वर भूलता है और न उषा "न दिशो मिनाति" न सोने का आकाश वाला झूला (हिरण्य प्रेङ्ख=सूर्य्य ऋग्वेद) और न रात्रि (भो-की आगात.....अनुव्रतं सवितुर्दैव्यस्य—ऋग्वेद) इस वास्ते जाओ नदियों के तट पर चढ़ो पहाड़ों की चोटियों पर, उपदेश ग्रहण करो पत्थरों से" पुरुरवा और उर्वशी का प्रातःकाल जीवित रूपक तो देखो, मत पर्वा करो कि वहां पर्दे हैं या नहीं, शायद ड्राप्सीन भी वहां न होते हों।

ये सब सामग्रियां तब उपयुक्त होती हैं जब हमारे अभिनय का सामान और कौतुकोत्पादक चीज़ें परिमित हों परन्तु वहां क्या ठिकाना है? ज़रा बादलों को तो देखो, परन्तु प्रकृति के सौन्दर्य्यको नग्नमुख होकर देखने से पूर्व्व तुम स्वयं बन में शौच दातन व्यायाम और स्नान से निवृत्त हो जाओ, मत आए दिन की भङ्गियों की स्ट्राईक के लक्ष्य बनो, डाक्टरों की व्यर्थ फ़ीस बन्द करो, अपनी म्यूनिसिपेलिटी को स्वास्थ्य रक्षा के लिये बहुत व्यय न करने दो, क्योंकि यह धन विद्या के प्रसार में काम देगा, अधिक करो तो पालतू सूअर रखवाओ, यह भङ्गियों की आवश्यकता को बहुत कम करदेंगे, ब्राह्मणों वाला स्नान मत करो। नाहीं नित्य प्रति साबुन तेल का व्यर्थ खर्च करो, तैर सक्ते हो तो खूब तैरो, फिर अपने जीवन की उन्नति सम्पादन करने के लिये अपना अध्ययन करो, पापों से हटने की प्रतिज्ञा से पूर्व्व शांति, बल और पवित्रता की प्रार्थना हो जिनका भौतिक भाग तुम जल से ले चुके हो। कृपा करके जैसा हम पहले एक लेख में लिख चुके हैं स्वार्थी न बनते हुये सारे परिवार को साथ ले जाओ, वहीं अग्निहोत्र करो, उसके पीछे कुछ पारिवारिक पाठ 'होमिली' करो और देखो कि जिन बातों को तुम कल इस समय अपने मस्तक में डाल गये थे वह हृदयाङ्कित हुईं या नहीं, किसी बात को हृदयाङ्कित कर लेना या दूसरे शब्दों में धारण करलेना ही धर्म्म है, परन्तु कई ऐसी बातें होती हैं जिनको हम मस्तक में डाल लेते हैं और फिर भी वह हमारे हार्दिकभावों का भाग नहीं बनतीं, बड़े२ विद्वान् धार्म्मिक क्यों नहीं बनते? कारण यही हैं, बड़े २ वैज्ञानिक भूतों से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डरते रहते हैं, नियम यही है, मनुष्य का स्वभाव एक अद्भुतालय है 'कस्तद्वेद-यदद्भुतम्, हां यह स्वभाव मिल सक्ते हैं। यदि आर्य्यों की परस्पर एक ही सी जीवनचर्या हो, तब दिमाग़ के अन्दर समता और सरलता का संचार हो सकेगा, इसी अवस्था में हम कहते हैं वह भेद और भ्रम मिट जाएंगे जो प्रत्येक समाज का शाप बने हुए हैं, इकट्ठी सन्ध्या में भी अपूर्व आनन्द आता है। गुरुद्वारों के गीतों में तटस्थों के भी सिर घूमने लग जाते हैं।

प्राकृतिक दृश्यों से लौट कर ब्राह्म मुहुर्त्त में सोचे हुए अर्थ और काम की प्राप्ति के उपाय भूत प्रोग्राम के अनुसार काम में निर्द्वन्द्व होकर लग जावो, दूकान और व्यापार का समय नियत हो, इस नियति से पूर्व्व ग्राहकों को एक दो दिन कष्ट होगा, फिर उनका अभ्यास पड़ जायगा और आप की ईमानदारी उन्हें खींच लाएगी, यहां हमें कुछ वक्तव्य है। प्रायः शिकायत सुनने में आती है कि हमारे आर्य दूकानदार अत्याचार करते हैं। इस सम्बन्ध में हम तो यही समझते हैं कि यहां भी मध्यम ही नियम है परन्तु फिर भी हम कहेंगे कि सचाई बीच में ही क्यों रहे दोनों के यहां क्यों न रहे, कम से कम आर्य्यों की दूकानों पर उतार-चढ़ाव नहीं होना चाहिये, यह भारतवर्ष का कलंक है, आर्य्य समाज के इतिहास में पहले आर्य सत्यपरायणता के लिये प्रसिद्ध होते थे, जीवन का संग्राम इसमें सन्देह नहीं बढ़ गया है, परन्तु ज़रूरत यह है कि हम नये २ उपाय धन प्राप्ति के प्रयोग करें। और उधर अपनी आवश्यकताओं को कम रक्खें, दो एक काम तो हम तजवीज़ किये देते हैं।

प्रत्येक नगर में इस समय अच्छी गोशालाओं के खोलने की आवश्यकता है, यह डेयरियां पब्लिक के धन से कोआपरेटिव स्टोर्स की विधि पर बनें। एक बड़ी कम्पनी इन सब गोशालाओं की प्रबन्धकर्त्री हो। वह गोशालाओं की सफाई, बछड़ों के धर्मानुकूल भाग और गौओं की पुष्टि की उत्तरदात्री हो, सेवकों को भी वृत्ति अच्छी मिलनी चाहिये।

दूसरा काम यह है कि प्रत्येक बड़े रेलवे स्टेशन पर एक आर्य्य होटल हो।

कई नगरों में हमें यन्त्रालयों की भी गुंजाइश दीखती है, एक चौथा काम हमें और कई अन्य सज्जनों को यह सूझता है कि तेल निकालने की कलाओं की देश को बड़ी आवश्यकता है।

इस प्रकार ७ या ८ घन्टे काम करके घर लौट आवें, यदि धर्म पत्नी भी कोई कार्य्य करे तो कोई हर्ज नहीं। भोजन के विषय में हम निवेदन करना छोड़ आये हैं, हम समझते हैं कि आर्य्यों का भोजन बड़ा सादा होना चाहिये, आध सेर आटा, छटांक घी, पाओ भर भाजी थोड़े से चावल, सेर भर दूध, कुछ फल और शेष जल कुल साढ़े तीन सेर भोजन दिन में होना चाहिये, समय के वास्ते गुरुकुल का अनुकरण किया जा सकता है, ७ बजे प्रातः आध सेर दूध, दस बजे दोपहर भोजन, ३ बजे सायं पुनः दूध और ७ बजे सायं पुनः भोजन, यह कहने की तो आवश्यकता नहीं कि माँस मदिरा का सेवन नहीं होना चाहिये, हां प्याज़ और लहसन ब्रह्मचारीगण सर्वथा न खाएं परन्तु गृहस्थी लोग चातुर्मास में खाएं तो बुरा नहीं। सर्व्वथापि शौच, स्नान, संध्या, अग्निहोत्र से निवृत्त हो कर रात्रि के समय भोजन करके कुछ घूमने चले जाए। क्योंकि वैद्यक के ग्रन्थों में जहां भोजन के अन्त में लस्सी का पीना उपयोगी बतलाया है वहां रात्रि के भोजन के पश्चात् १०० पग जाना भी लिखा है, पानादि खाने की रीति व्यसन में परिवर्तित हो जाती है और अधिक सेवन पर दान्त निर्बल कर देती है, दोपहर को भोजन के पश्चात् विश्राम और रात्रि को खड़ाओं पर न्यून तो न्यून १०० पग जाना पथ्य है।

परन्तु सब से मुख्य बात नियम है, इस अंश में हमें अंग्रेजों का अनुकरण करना चाहिये, हमारा आचार्य ऋषि भी समय का बड़ा ध्यान रक्खा करता था, एक बार गाड़ी के देरसे मिलने की आशा पर वह भाग कर अपनी प्रतिज्ञा पर पहुंच गया था, दोपहर के दस बजे और अतिथियों को साथ लेकर भोजन आरम्भ करदें। पकाने वाली गृहिणी स्वयं हो, अतिथियों के लिये विशेष समारोह और आडम्बर या प्रदर्शिनी करने की ज़रूरत नहीं क्योंकि ऐसा करने वाले लोग एक प्रकार के अवैतनिक किराएदार होते हैं, अतिथि के निवास काल की निस्बत में उनकी श्रद्धा कम होती जाती है, और अन्त में कोरा जवाब दे दिया जाता है। कमी की यह गति नगरों की बड़ाई के विचार से भी होती है, "रोटी भी तय्यार है और गाड़ी भी तय्यार है' या दिल्ली वालों वाली 'आप तो रोटी खा ही आए होंगे, आप भला हमारी रूखी सूखी रोटी काहे को खाने लगे' भोजन का निरूपण करके हम छादन बताना चाहते हैं, हमारी सम्मति में समय आगया है कि प्रथम तो समग्र देश निवासी, अन्यथा आर्य्य पुरुष तो अवश्य कोई जातीय वेष रक्खें, कम से कम यज्ञों और उत्सवों में उस वेष में आना चाहिये। अब भी अंत्येष्टि संस्कार में सम्मिलित होने वालों के पास प्रातः रेशमी धोतियां होती हैं, महाराजा बड़ौदा ने अपने राज्य में एक वेष नियत किया हुआ है, वह इतनी संक्षिप्त में कि हम उसे अपना बना सक्ते हैं, एक कुर्ता जिस को सूती बटन लगे हों एक सादा पाजामा, एक सादा ≡) गज़ कपड़े का कोट, एक सादी पगड़ी और एक ऐसी जूती जो हाथ लगाए बिना खुल सके, यह है वहाँ का सारा वेष जिसमें राजा से लेकर रंक तक दरबार में आते हैं हमारे 'प्राचीन आर्य्य' भी पंडित गुरुदत्त के समय तक प्रायः यही धारण करते रहे, आभूषणों की आवश्यकता इस पाप प्राय और दुर्भिक्ष बहुल समय में हम न बच्चों के लिये समझते हैं न स्त्रियों के लिये।

इस प्रकार ९ बजे रात्रि तक सब पुरुष स्त्री भोजन और भ्रमण करके बैठ जाएं और प्रत्येक मनुष्य अपनी दिनचर्य्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिखनी आरम्भ करदें, इस दिन चर्य्या से क्या लाभ लेना चाहिये यह हम पहले निर्दिष्ट कर चुके हैं, फिर ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना करके शयन करो बिस्तरा भी संक्षिप्त हो, अधिक नर्म होने पर आलस्य आता है।

तीन बातों का और ध्यान रखना चाहियेः – क्षमा करने और भूलने को सर्व्वदा तय्यार रहें, मनुष्य को गंवाते ही न चले जांय अपितु अपने सङ्ग में लाकर अपनी आकर्षण शक्ति का प्रयोग उस पर करें, परन्तु रहें अपने पड़ोसियों और मित्रों के साथ बेतकल्लुफ अर्थात् आहार और व्यवहार में लज्जा छोड़ दें।

दूसरी बात जो प्रायः कलह का कारण रहती है वह पुत्र और पिता का संबन्ध है। इस में केवल हमें इतना ही बक्तव्य है कि १६ वर्ष से ऊपर आयु वाला बालक मनु और अन्य शास्त्रों के अनुसार आप का मित्र हो जाना चाहिये।

तीसरी बात जो हम कहना चाहते हैं उसका बीज हम डाल चुके हैं, हमारा अभिप्राय यह है कि पापी को पास से पृथक् रख कर करुणा दृष्टि से देखने का स्वभाव डालना चाहिये, यह नहीं कि ईसाईयों के परलोक की नाईं जो एक बार गिर गया उसे उठने का अवसर न हो, स्मरण रहे कि दण्ड वही भयावह होता है जो पाप के अनुरूप हो, इंग्लैंन्ड का मध्य कालीनइतिहास हमारे कथन की पुष्टि करता है। जो भी दण्ड धारि शक्ति चाहे वह राजा के रूप में हो और चाहे बिरादरी या समाज के आश्रय हो ऊपर के नियम का उल्लंघन करती है वह सोसाइटी में पाप फैलाती है, दो ही मार्ग पापियों के लिये तब खुले होते हैं। एक ओर अभेद्य कपट और दूसरी ओर हताशता और धृष्टता। पहली अवस्था में लोग ऊपर से मोमिन बने रहते हैं चाहे अन्दर से कुछ भी हों, दूसरे शब्दों में नास्तिक— कपटी को दियानत दार सरल नास्तिक मात्र की अपेक्षा कम बुरी दृष्टि से देखा जाता है, और यह सोसाइटी का कल्पित बल्कि मिथ्या भेद है। जिस समाज में कपटी व्यक्ति दन दनाते फिरें जब कि दूसरों को धत्कारा जाय उस समाज का ईश्वर ही रक्षक है, हम फिर वह श्लोक दोहराते हैंः—

अपूज्या यत्र पूज्यंते पूज्य पूजा व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते, दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥

इसी प्रकार हताशता और धृष्टता भी दण्ड के भय को कम करदेती है, इसी वास्ते नियम ऐसे बनाए जाते हैं जो निभ सकें, नहीं तो प्राणों को हथेली पर रख कर मनुष्य क्या कुछ नहीं कर बैठते? यह सिद्धान्त कि दण्ड शिक्षा जनक होना चाहिये विद्वानों के वास्ते तो ठीक है परन्तु साधारण लोगों के लिये—जिस कोटि में आधुनिक हम सब आर्य्यसमाजी आजाते हैं—ठीक नहीं, और चर्च को तो कभी भी किसी मनुष्य से घृणा नहीं होनी चाहिये, फाँसी पर लटकते हुए चोर और जेलख़ाने के अन्दर सड़ते जार के वास्ते इंजील का वैसे ही उपदेश खुला है जैसा किसी अच्छे से अच्छे पुरुष के लिये, पापकारी जातियों के अन्दर मुक्ति फौज़ वाले और अन्य पादरी इतना काम करते हैं जितना शायद ही किसी के अन्दर, इसी प्रकार हम अपने चर्च से किसी भी मनुष्य को निकालने का अधिकार नहीं रखते। हां यदि हमारी कोई आर्य्य बिरादरी हो तो उसके प्रवेश के लिये एक आवश्यक शर्त यह लगादी जा सक्ती है कि केवल सदाचारी सज्जन ही उसके सभासद हों, इस वास्ते हमारी दृष्टि में आर्यसमाज का मेम्बर तो कोई भी संसार का मनुष्य जो हमारे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हो बन सक्ता है, सभासदी के लिये कुछ शर्तें लगाई जा सक्ती हैं जिन में से एक सदाचार है क्यों कि दुराचार एक संक्रामक रोग है, और यदि हम विचार पूर्वक देखें तो पता लग सक्ता है कि हम हैं ही कौन किसी को अपने चर्च से निकाल ने वाले अथवा किसी की शुद्धि करने वाले? हमें यह एकाधिकार किसने दिया है? क्या हमारे अपने अन्दर दोष नहीं हैं? किसी विद्वान ने कहा है कि यदि किसी प्रकार अपने मन का चित्र लेना संभव हो तो ज्ञात होसक्ता है कि हम कितने गन्दे हैं। उस अवस्था में हमारे पास शायद ही कोई बैठना स्वीकार करे, यदि हमारे और किसी अन्त 'पतित' भाई के अन्दर भेद है तो वह शायद सापेक्षक प्रकार—भेद है, कौन जानता है कि स्थूल पाप अधिक भयङ्कर या त्रास जनक हैं अथवा अन्तरीय सूक्ष्म पापों की निवृत्ति अधिक आवश्यक है, और फिर सोसाईटियों और सभायों के अपने २ स्थापित किये हुए आचारादर्श होते हैं। इन सब बातों के ऊपर बिचार करने से पता लगता है कि पापी को पाप से पृथक रख कर देखने में ही जगत की व्यवस्था है, नहीं तो

न वसन्त्येकत्र सर्व्वे गुणाः
प्रायेण सामग्र्य विधौ गुणानां पराङ्मुखी
विश्वसृजः प्रवृत्तिः॥

नियम वह होने चाहियें जो निभ सकें हम कई अर्य्यसमाज के बिचारकों के अप्रकट विचार को प्रकट कर देते हैं कि ईश्वर के वास्ते तुम दम्भ मत फैलाओ हम पहले एक अङ्क में लिख चुके हैं कि स्वामी दयानन्द के साथ उपहास नहीं करना चाहिये। यदि हम यज्ञो पवीत धारण कराते समय जानते हैं कि अनेक लाड़ चाव से पाले हुए, बालों वाले टोपी, गुलूबन्द, कालर, नकटाई, केशर रंजन तेल और प्रीयर्स साबून, कोट पतलून, जुराबों और फुल बूटों के चित्र के साथ पोषण किये हुए बालक को फ़लालैन की कमीज़ और बूट के बिना नमोनिया हो जाने का डर है। यदि हम उस बालक को अपने कंधे से कभी नहीं उतारा, जब वह रोय तो हमने लाड़ किया, जब वह अपराध करके बाहिर पिटकर सोया तो हमने पीटने वाले को बिना कारण का अनुसन्धान किये दण्ड दिया तो क्षमा कीजिये उसका यज्ञो पवीत मत कराओ, हम कहते हैं कि यज्ञोपवीत के अधिकारी केवल वे बालक जिनको जापान के बालकों की नाईं उनके माता पिता जन्म कर छोड़ दें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताकि वे अपने पाओं पर शीघ्र ही खड़े होना सीखें और वे बालक जिन के अन्दर विद्या भ्यास की शक्ति है, हम उस भेड़चाल को सर्व्वथा शास्त्र की रीति से विनिन्द्य समझते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को बिना देखे ही और बिना उनकी विद्या का प्रबंध किये ही अन्धा धुन्ध यज्ञो पवीत देते चले जाँएं, इस अंश में हम डाक्टर चिरंजीव के उत्तर को सर्व्वथा प्रशंस्य समझते हैं, हमारा विचार है कि आर्य्य समाज का सभासद बनाने से पूर्व्व प्रत्येक महाशय की चाहे वह हिन्दू घराने से आया हो और चाहे और कहीं से, शुद्धि होनी चाहिये। जब हम संस्कारों की महिमा को मानते हैं तब हमें ऐसा करने में कोई सङ्कोच नहीं होना चाहिये।

हम कह रहे थे कि जिन बातों को हम निभा नहीं सक्ते उनकी प्रतिज्ञा केवल उपहास जनक है, इस वास्ते हम प्रस्ताव किये देते हैं यद्यपि वह पहले पहल कुछ अनोखा और विरोधीसा प्रतीत हो कि अपने धर्म्म की प्रतिष्ठा केवल ७ बातों पर अवलम्बित कर ना चाहिये :- १ ईश्वर में विश्वास वेदों में विश्वास ३ पुनर्जन्म ४ साधारण-या अपने भूत पर, ऋषियों मुनियों, नकी बनी स्मृतियों और अन्त में स्वामी यानन्द के आचार्य्यत्व पर विश्वास ५, आर्य्य समाज की उपयोगिता पर विश्वास , ईश्वर जीव और प्रकृति इस पर विश्वास ७, सँस्कारों की उपयोगिता पर विश्वास और प्रायः यह आजकल अलि-खत सा समझौता हुआ ही हुआ है,

जहांगीर बादशाह की माता के प लिए और समाज शास्त्रों के नियम विद्धारण के पश्चात हम इच्छा शक्ति प्र-र्शक पुस्तकों की उपस्थिति में यह ताने की ज़रूरत नहीं समझते कि स्कारों को मनुष्य के गुणाधान या पवापनयन में कितना भाग होता है या ह कि उनके बिना समाजें और संस्थाएं हां तक जीवित रहा करती हैं। यदि ठीक है कि बालकों का उठना ना और अन्य व्यवहार उनको कु-ता का अच्छा परिचायक हुआ करता है और कि उसकी साधारण से साधारण चेष्टा उस की सभ्यता को दि-खाने में समर्थ है तो हम कहेंगे कि स-मान प्रसव बच्चे रूप गाडियां जन्म से शूद्र भावा पन्न होती हुई भी एक दूसरे से केवल सस्कारों के बल से अन्तर डाल जाती हैं, यह कहना अशुद्ध है कि संस्कारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, पांच और चार २ वर्ष के बच्चे चोर देखे जाते हैं दूसरी ओर ३ वर्ष का मास्टर मदन रागियों को मात कर देता है हमारे शास्त्र कारों ने सजातीय प्रत्यय प्रवाह को हर एक कार्य्य की नींव बत-लाया है और यह उपदेश दिया है कि सदैव उत्तम २ कार्य्य हीने चाहिये, यही संस्कारों का रहस्य है, बकरियों के पास रक्खे हुए गुंग महल के बच्चे केवल "मैं मैं" ही करना सीखे, इस वास्ते हम कहते हैं और प्रत्येक धर्म्म के अन्दर जो चर्च बन जाय आवश्यक होता है कि कुछ रस्में, रिवाज और संस्कार हों इनको सार्वजनिक बनाने के लिये सो-साइटी के लिये अग्रगण कम खर्च की नीति का अवलम्बन करते रहें, आजकल हमारे यज्ञोपवीत और विवाह बहुत फु-ज़ूल खर्ची के अवसर बन गये हैं, इसी वास्ते वैश्य बालक प्रायः अनुपनीत रहते हैं और 'चारुबाला' जैसी अनेक देवियां अमूल्य जीवनों को समाप्त कर के हमारे माथे पर कलङ्क का टीका लगा जाती हैं। और शेष जो जीवित रहती हैं वह रात्रिन्दिव ठण्डी आहों से हमें भस्मी भूत करती रहती हैं। १६संस्कारों में हमारे वर्णों का प्रविभाग संस्कार भी आजाता है, हमें शोक है कि हमारे संस्कृत से शून्य भाई अपने साथ 'पण्डित' की पौराणिक काल से चले आने वाली दुम लगाना बन्द नहीं कर सक्ते। क्यों न जब तक विशेष वर्ण दान का प्रबन्ध नहीं होता वह सब महाशय कहलाएं, क्या यह कोई छोटा शब्द है, नहीं हमारे युक्त प्रान्त वाले भाई छूत छात और चौके चूल्हे के बखेड़े को अभी तक छोड़ सके हैं, और जात्य भिमान तो उनके अन्दर कूट २ कर भरा हुआ है। यहां तक कि वे लोग किसी जन्म से ब्राह्मणेतर का व्याख्यान नहीं सुन सक्ते नाहीं उस को यज्ञ में बैठने देते हैं। शोक है ऐसी व्यवस्था पर! क्या लाभ है आर्य्य समाज के अन्दर आने का यदि हम इतना भी त्याग न कर सकें! ईश्वर! हमारी स्वार्थ बुद्धि को हटाओ, अगले लेख में हम आर्य्य प्रतिनिधि सभा और उपदेशकों के परस्पर अधिकारों और कर्त्तव्यों पर बहस करके अपने धैर्य्य धारी पाठकों से सदा के लिये छुट्टी लेंगे,

---

निमंत्रण पत्र ॥

श्रीमन्महाशय जी! नमस्ते,

सेवा में निवेदन है कि भारतवर्षीय आर्य्यकुमारपरिषद् का पंचम सम्मेलन आश्विन शुक्ला ७, ८, ९ शनि, रवि तथा सोमवार तदनुसार ता० २६, २७, २८ सितम्बर सन् १९१४ ई० को बड़ी धूमधाम से होगा। इन्हीं तिथियों में श्रीमती आर्य्य विद्यार्थीसभा का प्रथम वार्षिकोत्सव भी होगा। इस महोत्सव पर भिन्न २ नगरों तथा प्रान्तों के नवयुवक तथा विद्वान् सम्मिलित होंगे। आग-न्तुक प्रतिनिधियों का (College education versus Gurukul education) कालेज अथवा गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली पर एक बहुत ही मनोरंजक वाद विवाद होगा। श्रीमान् महात्मा हंसराज जी बी० ए०, प्रधान डी० ए० वी० कालेज कमेटी सम्मेलन के सभापति चुने गये हैं। इस वर्ष स्वागतकारिणी सभा ने एक रजतपदक उस आर्य्यकुमार को देना निश्चित किया है जो "आर्य्यकुमारों के कर्त्तव्य" इस विषय पर २४ सितम्बर के पहिले २ सब से अच्छा लेख फुलस्केप साइज़ के १० पृष्ठों में लिखकर भेजेगा। इस सम्मेलन के साथ २ खेल कूद भी होंगे। फुटबाल, रस्सा खेंचना, कूद फांद करना, दौड़ना इत्यादि के खेल होंगे। प्रत्येक आर्य्यकुमारसभा, मित्र सभा, बाल सभा, विद्यार्थी सभा, यंगमन्स आर्य्य समाज इत्यादि का मुख्य कर्त्तव्य है कि वे डिबेट (वादविवाद) व खेल कूद में सहर्ष भाग लें। सर्व प्रतिनिधियों के ठहरने तथा भोजन का प्रबन्ध आर्य्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समाज भवन के सरगंज में किया गया है। स्टेशन पर स्वयं सेवक आगन्तुक प्रतिनिधियों का स्वागत करने के लिये उपस्थित रहेंगे। प्रत्येक आर्य्यकुमारसभा से आग्रह पूर्वक निवेदन है कि वह अपने प्रतिनिधि चुनकर उनके आगमन की तिथि से हमें शीघ्र सूचित करने की कृपा करें। आपको यह विदित ही होगा कि वर्त्तमान में ऐसे मनुष्यों का अभाव नहीं कि जो आर्य्यकुमार सभाओं की आवश्यकता तथा उनके द्वारा कुछ उत्तम कार्य्य होने में बहुत संदेह रखते हैं। शुष्क वाद-विवाद में न पड़कर प्रत्येक आर्य्यकुमार-सभा का वह कर्त्तव्य है कि व्यावहारिक रीति से उनके भय को भ्रममूलक सिद्ध करदें। यह कार्य्य सम्मेलन को विशेष रूप से सफल करने में योग देने से हो सक्ता है। इस कारण दृढ़ आशा है कि आप स्वयं पधारें तथा अपने नवयुवक मित्रों को बहुसंख्या में अपने साथ लाकर भ्रमात्मक जगत् को अपनी जीती जागती शक्ति का परिचय करादेंगे। अलमति-विस्तरेण बुद्धिमद्वर्य्येषु ॥

आपका दर्शनाभिलाषी

घीसूलाल एम०ए० एल-एल-बी,

मंत्री-स्वागत कारिणीसभा, अजमेर.

---

* नोट—यहां यह निवेदन करना अनुचित न होगा कि अजमेर नगर एक प्रख्यात ऐतिहासिक स्थान तथा राजस्थान का केन्द्र है।

ओ३म्.

भारतवर्षीय आर्य्यकुमार परिषद् के पंचम सम्मेलन तथा आर्य्य विद्यार्थीसभा अजमेर के प्रथम वार्षिकोत्सव का कार्य क्रम।

तारीख २६-२७-२८ सितम्बर १९१४

(ता० २६ शनिवार)

प्रातःकाल.		मध्यान्ह.	सायंकाल.	
७	से ८	हवन तथा भजन	२ से ४ सब्जेक्ट कमेटी (Subject Committee.)	७ से ७॥ भजन
८	से ९	सभापति का स्वागत	४॥ से ६॥ खेल कूद.	७॥ से ७॥। प्रार्थना
९	से ९॥	भजन		७॥। से ८। भजन
९॥	से १०॥	स्वागतकारिणी के सभापति का भाषण.		८। से १० सभापति का भाषण
१०॥	से ११	सभापति का निर्वाचन		१० के बाद भजन.

(ता० २७ रविवार)

प्रातःकाल.		मध्यान्ह.	सायंकाल.	
७	से ७॥	हवन	२ से ४ परिषद् की कार्य्यवाही	७॥ से ८ भजन प्रार्थना
७॥	से ८	भजन	४ से ६॥ खेल कूद	८ से ९ व्याख्यान
८	से ११	बाद विवाद (कालेज अथवा गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली पर डिबेट होगा)		९ से ९॥ भजन
				९॥ से १०॥ व्याख्यान
				१०॥ के बाद भजन.

(ता० २८ सोमवार)

प्रातःकाल.		मध्यान्ह.	सायंकाल.	
७	से ७॥	हवन	पारितोषिक वितरण.	६॥ से ८ प्रीति भोजन
७॥	से ८	भजन		८ से ९ भजन
८	से ११	परिषद् की कार्य्यवाही.		९ से १० सभापति जी का भाषण व व्याख्यान.

नोट—आवश्यकतानुसार कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।

घीसूलाल, एम० ए० एल-एल० बी०, मन्त्री.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवश्यकता ।

विजय' के लिये प्रत्येक नगर में एजन्टों की आवश्यकता है। कमीशन अच्छा दिया जायगा। जिनको एजन्सी लेना हो शीघ्र प्रबन्धकर्त्ता से पत्र व्योहार करें।

प्रबन्धकर्त्ता
'विजय'
देहली।

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

आवश्यकता ।

'विजय' पत्र के लिये सम्पादकीय विभाग में किसी ऐसे पुरुष की आवश्यकता है जो इंग्रेज़ी से भाषा में अनुवाद करने के अतिरिक्त प्रूफ़रीडरी का काम अच्छी तरह से कर सके। गुजराती, बंगाली, मराठी, भाषा के किसी एक में के जानकार को पहिला अवसर दिया जायगा। वेतन ३०) से ३५) मासिक तक दिया जायगा।

प्रबन्धकर्त्ता
विजय,
देहली।

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार के प्रोफैसर साठे जी M. A. कृत सचित्र ।

विकासवाद (डार्विन की थियोरी) की पुस्तक हिन्दी भाषा में छपकर तैयार है। **भाषा अत्यन्त सरल और मधुर** पृष्ठ संख्या २०×२७१ साईज़ बड़ा चित्र २९ मूल्य केवल २)

श्रीयुत **प्रो० विनयकुमार सरकार एम. ए.** लिखते हैं:—**बी. ए. और एफ ए. के विद्यार्थियों को यह पुस्तक टेक्स्ट बुक** (Text Book) **के तौर पर पढ़ना चाहिये** पुस्तक की लेखन शैली बहुत अच्छी है और—सायन्स से परिचित मनुष्य भी इसे बड़े प्रेम से पढ़ते हैं।

श्री **साहित्याचार्य पं० रामावतार पांडये एम० ए०** लिखते हैं:—इस पुस्तक से हिन्दी भाषा की आदरणीय वृद्धि हुई है। हिन्दी के प्रत्येक अभिमानी को इससे सन्तोष होगा। इतनी सस्ती की कीमत बहुत नहीं है।"

मैनेजर, सद्धर्म्म प्रचारक पत्र, देहली

आर्यसमाजके समाचार

भावी उत्सव ।

(१) आर्यमित्र सभा आगरे का वार्षिकोत्सव ता० ३१ अक्तूबर तथा १-२ नवम्बर को होगा।

(२) आर्यसमाज बरेली। १९ तथा २० अक्तूबर। १७ को आर्यकुमार सभा का उत्सव होगा। १८ को नगर कीर्तन।

(३) बांकीपुर आर्य समाज। १९-२०-२१ सितम्बर। स्वामी मुनीश्वरानन्द, स्वामी ओङ्कारसच्चिदानन्द तथा स्वामी सर्वदानन्द आदि महानुभावों के उपदेश होंगे।

(४) आर्यसमाज मुरादाबाद का वार्षिकोत्सव दिवाली पड़वा और दूज तदनुसार १९, २०, तथा २१ अक्तूबर को होगा।

(५) आर्यसमाज बुलन्दशहर का वार्षिकोत्सव ९, १०, ११, तथा १२ अक्तूबर को होगा। १० की रात को एक आर्य कान्फ्रेंस होगी जिसमें बिचार किया जायगा कि इस जिले में वैदिक धर्म का प्रचार कैसे हो।

(६) आर्यसमाज ब्यावर का उत्सव ३-४ तथा ५ अक्तूबर को होगा।

(७) आर्यसमाज उदयपुर मेवाड़ का वार्षिकोत्सव १०, ११, तथा १२ अक्तूबर को होगा।

(८) आर्यसमाज कोट छुदा जि० डेरागाजीखां २५, २६, २७ सितम्बर।

(९) आर्यसमाज भोगा। ३० अक्तूबर।

निम्न लिखित समाजों ने मा० रौनकराम तथा म० विश्वम्भर दत्त के साथ सहानुभूति के प्रस्ताव पास किये हैं।

आर्यसमाज सीतापुर, बड़ा गांव घोसी, काशी,

सूचना ।

"पण्डित बालकृष्ण भट्ट रजत पदक"

"हिन्दी साहित्य सम्मेलन" की ओर से इस साल जो प्रथमा परीक्षा होने वाली है उस में परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों में प्रथम उत्तीर्ण विद्यार्थी को पूज्यपाद पं० बालकृष्ण भट्ट रजत पदक नाम का एक रजत पदक दिया जायगा।

जनार्दन भट्ट
पहियापुर—इलाहाबाद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विजय

नया साप्ताहिक नया

सम्पादक--श्रीयुत हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

विजयदशमी से निकलेगा

शीघ्र ग्राहक बनिये

क्योंकि इसके संपादक के ओजस्वी लेख और चटकीली टिप्पणियां प्रसिद्ध हैं।

क्योंकि इसमें प्रति सप्ताह हिन्दी साहित्य की समीक्षा रहा करेगी।

क्योंकि इसमें महात्मा मुंशीराम, प्रो० बालकृष्ण एम. ए., प्रो० महेशचरणसिंह एम. एससी. (अमरीका) ब्र० इन्द्र वेदालंकार, पं० विनायक गणेश साठे एम० ए० श्रीयुत जगन्नाथ खन्ना बी० एससी० (अमरीका) आदि प्रसिद्ध विद्वानों के लेख प्रकाशित होंगे।

क्योंकि इस द्वारा देश के सभी भाषाओं के मुख्य पत्रों की सम्मतियां आपको जानने को मिलेंगी।

क्योंकि इसमें देश और विदेश के सभी मनोरँजक समाचारों का सँग्रह छपा करेगा।

और क्योंकि

इसमें पँच और कारटून देने का प्रबन्ध किया जायगा।

शीघ्र ग्राहक बनिये

मूल्य २॥)

मैनेजर, "विजय" देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द वाच

मूल्य केवल

५॥)

रूपया

गारन्टी ५ साल

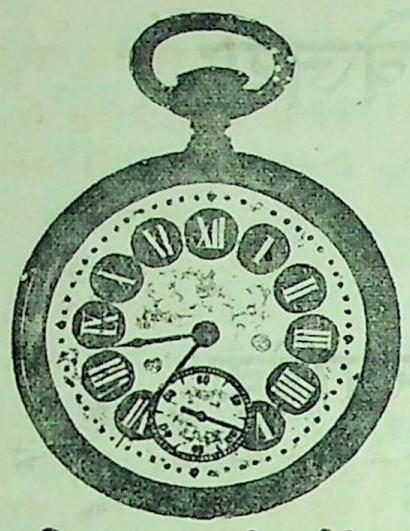

श्री महात्मा मुन्शीराम धर्मवीर पंडित लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का सदर्शन हमने उक्त नाम की घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिस में मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय, हर घड़ी के साथ एक काँच और एक फनर मुफ्त जल्दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वतु को पछताना पड़ेगा।

इसके अलावे हमारे यहां हर तरह की घड़ियां बहुत सस्ते दामों पर मिलती हैं सिस्टम रासकोप मूल्य ३) रुपये रेलवे-रैग्यूलेटर मूल्य ४) रुपये, बाजा बजाने व ली टायम पीस मूल्य ४॥) रुये।

मगाने का पता—दीस्वोज़रलैंड वाच कम्पनी हाथरस नं० ४ (२४५)

हाथरस के नये फैशन के कमानीदार पक्के चाकू व लोवर ताले

एजेंटों की आवश्यकता

यह स्वदेशी चाकू बिलायती चाकुओं से सुन्दर ओर सस्ते हैं।

चन्दन की मूठ कमानीदार ॥=) ।≡) ।=) ।) लकड़ी मूठ कमानी दार जर्मन फैशन चन्दन ।=) लकड़ी ।) स्याह मूठ ।=) ।) चन्दनमूठसादा ।=) ≡) =) ¯)॥=) लकड़ीमूठ सादा ¯)॥) ≡) ¯) ॥=))॥। हांथीदांत कमानीदार ॥=) ॥) ≡) =) दोफला ॥।) चन्दन दोफला ॥=) ॥) शिकारी छुरी १) ॥।) पीतल मूठ चाकू ॥)।=) नये फैशन लोहे व पीतल के सरौते ॥।) ॥=) ॥) ।=) पवित्र सुगन्धित बढ़िया हींग १०) ८) ६) रुपये सेर देशी सूत के रंगीन धारी गमदे ।=) ।) ≡) =)

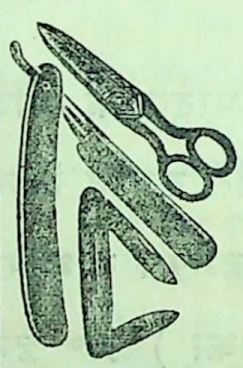

दूसरी चाबी से न खुलने वाली लीवर दार लोहेके ताले मूल्य

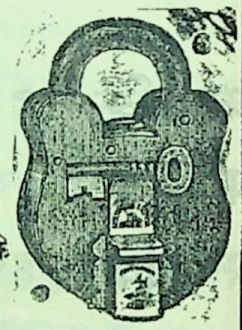

॥)॥)=) इञ्चहाका ।=) ।) इञ्च पीतल लीवरदार १) ॥) ॥) इंचसादा ।=) सादा ।=)) ≡) इंच विलायती फैशन के देशी उस्तारे ।) ।=) ।) बाल काटने की कैंची १) ॥।) कपड़ा काटने की मज़बूत कैंची ॥।)=)॥)

अद्भुत ताक़त की दवा

यह उन्हीं लोगों के लिये बनाई गई है जो सब प्रकार से निराश हो बैठे हो शरीर की निर्बलता सर दुखना आखों में अन्धेरा आना जवानी में बुढ़ापे की दशा का होना लड़कपन कुक्रियाओं से उत्पन्न अनेक रोगों की यह अव्यर्थ दवा है। इस के सेवन करने से शरीर निरोग और सुदृढ़ होकर चहरेपर रौनक आती है यह अद्भुत दवा जादू का सा काम करके दिखलाती है। मूल्य ४० गोलियों की डिब्बी का २) डाक व्यय माफ

प्रदर हर गोलियाँ

बेचारी स्त्रियां इस रोग को चुपचाप सहन करके शरीर को गलो लेती हैं उन का गुलाब जैसा रङ्ग बात की बात में पीला पड़ जाता शरीरमें दर्द पैदा होजाता है मासिक धर्म ठीक समय पर नहीं होता एवम् कपृतु होता है ऐसी दुखिया अबला के हेतु ही "प्रदरहर" तयार की गई है इस के सेवन से उपरोक्त सब रोग नष्ट होते हैं और शरीर सब प्रकार के सुख भोगने योग्य बन जाता है मूल्य ४०गोलियोंका २॥) डाकव्ययमाफ

दाद की दवा

प्रशंसा करना व्यर्थ है एक वार रंगा कर नये पुराने चाहे जैसे दाद को जड़ से खोदो मूल्य फी डिब्बी ।=)

खाज की दवा

इस दुखदाई रोग से छुटी पाना है तो इस दवा को बिना बिलम्ब सेवन करो

हिंग्वाष्टक चूर्ण

पेट के अनेक रोगों को शान्त करता हैं भूख बढ़ाता है एंवम पाचन करता है। मूल्य ॥)

तीनों का डाक व्यय अलग

मिलने का पता—स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १ (२४५ (

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्यो पान्त इतिहास सरल भाषा और मनो-रंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषा नुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहकीक धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
सङ्गीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहिये पतासाफहो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाजार
बाजाजा शहर मेरठ

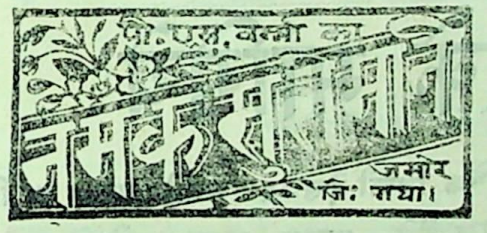

यह नाम का ही नहीं बल्कि असली सुलेमानी नमक है इससे बदहजमी पेट का अफरा खट्टी या घूएं की डकार का आना पेट का दर्द पतले दस्त आना हैजा संग्रहणी, अतिसार, आदीका दर्द तथा शोर, कब्ज, और भूख की कमी में लाभ पहुंचता है, खांसी दमा गठिया और अधिक पेशाब के लिये भी लाभ दायक है, बिच्छू, भिड़ आदि के काटने में उपकारी है, स्त्रियों के मासिक धर्म का विकार दूर होता है। कीमत फ़ी शीशी १) एक बड़ी बोतल जिस में ७ शीशी नमक सुलेमानी रहता है, कीमत ५)

मिलने का पता:—

पंचमसिंह वर्म्मा
कारखाना नमक सुलेमानी
जामोर जिला गया

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग२ साफ२ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द आला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग
चौथा भाग
गीता हमें क्या सिखलाती है
वेद उपदेश पहला भाग
दूसरा भाग
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति
उपदेश मञ्जरी
प्रार्थना पुस्तक
ओंकार की उपासना

२००) रुपये इनाम

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य के लीम प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में स

सविस्तर भाष्य समेत ३) दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पा गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट मंडन मिश्र का जीवन चरित्र
वेद और रामायण के उपदेश
वेद और महाभारत के उपदेश
वेद, मनु और गीता के उपदेश
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के श्लो समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पाद राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कलकत्ते के नोमी डाक्तर एस, के बर्म्मन की बनाई प्रेसिद्ध—

दाद की मलहम
लगाने में जलन नहीं होती।

दाद की मलहम
दो-तीन वार लगाने से जड़से छुट जाती

दाद की मलहम
खुशबूदार है, इस में चर्बी नहीं है।

दाद की मलहम
जब सब दवा आजमाकर थकगये हों तो

दाद की मलहम
एक वार लगानेसे खुजली मिटती है

दाद की मलहम
इस की भी एक वार जांच करें।

मोल—।) चार आने डिब्बी। डाः मः १ से ६ तक।-):

डाः एस. के. बर्म्मन ५ [illegible] कलकत्ता।

एजन्ट, बाबूराम जैनी एन्ड कंपनी बड़ा दरीबा दिल्ली

ी प्रो० बालकृष्ण एम०ए०

की रचित

अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये

ी पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखाने वालों से ¼ कीमत ली ावेगी।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है) ।)
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की ाज प्रणाली छप रही है। ॥)

ुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

उस्तरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे कर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

ेजर हिमालय कम्पनी कंखल U.P.

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक विक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट 'का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, सूजी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, विक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

❀ हारमोनियम शिक्षक ❀

दोनोँ भाग- बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाला टीचर

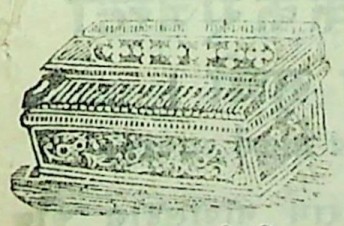

इस पुस्तक में कई प्रकार की गज़ल क़व्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजने को सुगम रीति बतलाई गई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।-) रक्खा है डाक ख़र्च -) ऐसी पुस्तक इतने मूल्य पर दूसरी जगह मिलना मुशकिल है। बडा सूचीपत्र मुफ़्त मंगा कर देखो। इङ्गलिशटीचर तीन मास में इँग्रेजी सिखाने वाली पुस्तक मूल्य १) दो महीने तक केवल ॥) डा० -)

पता—बाबू जसवन्त सिंह

बुकसेलर, अलीगढ, यू० पी०

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का कलम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहते हैं तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठक एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ।) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (च)

चाम्ह--जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

[illegible] की गारन्टी।

अमूलय रत्न है॥ **ब्राह्मी बूंटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये- डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं- महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकुष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलवबाधिनी॥

अर्थ— ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है सन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमजोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ॥) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिख। अनुपान पथ्य-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

पीतल के बिरूच

आर्य्य श्रीमानों की टोपियों में लगाने योग्य।

ओ३म् व नमस्ते दाम प्रति दर्जन॥।) और प्रति सैंकड़ा ५) रु० आपके नाम व पते की मुहर २) डा० अलग—मुहर बन वाने वालों को एक रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

पता:—भारत हितैषी—कम्पनी, अलीगढ़ सिटी

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री अलीगढ़ सिटी. यू. पो.

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उड़ाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ९ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No. L. 807

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | ११ कुआर स० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० २६ सितम्बर १९१४ | स ख्या २४ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)

प्रचारक के ग्राहकों से १।)

सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास ले[illegible] हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी[illegible] नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लि[illegible] है । उसके बंगाली में कई संस्करण [illegible] चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना [illegible] उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े [illegible] जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र० •

तीन मास " " " " =) "

" " " " " -)॥ "

[illegible]र " " " " -) "

[illegible]धिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र [illegible]र प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

[illegible] पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता—प्रबन्धकर्ता सद्धर्मप्रचारक पत्र—देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवश्यकता ।

(१) व्याकरण और साहित्य पढ़ाने के लिये छ. योग्य पंडितों की आवश्यकता है जो शास्त्री हों या शास्त्री के बराबर योग्यता रखते हों। वेतन २५) से ३०) मासिक होगा।

२) एक ग्रेजुएट सीनियर ट्रेन्ड अंग्रेज़ी में अधिक योग्यता हो वेतन ७०) मासिक ।

(३) एक जूनियर ट्रेन्ड टीचर वेतन ३०) से ४०) तक सब निरामिशभोजी हों और आयु में तीस वर्ष से कम नहों कम से कम डेढ वर्ष तक काम करना होगा । आर्य्य समाजियों की ओर विशेष ध्यान दिया जायगा । सब प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों सहित निम्न पते पर आने चाहिये।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी
पो० श्यामपुर काँगड़ी
जि० बिजनौर

जयाजी प्रताप ।

हिन्दी भाषा में एक ऐसे पत्र की बहुत बड़ी जरूरत थी जिसमें कृषि, विज्ञान और कला कौशल सम्बन्धी विषयों पर उपयोगी सर्व साधारण के समझने योग्य, सुन्दर सुन्दर लेख प्रकाशित हों। अलावा इसके साधारण लोगों के मनोरंजक योग्य कविता, जीवनचरित्र शिक्षा प्रद कहानियाँ और देश देशान्तर के समाचार भी प्रकाशित हुआ करें। स्त्री शिक्षा की उन्नति के लिये भी समय समय पर अच्छे लेख छपा करें। इस अभाव को जयाजी प्रताप ने पूरा किया है। २ वर्ष से बराबर इसी नियम पर यह पत्र निकल रहा है। हिन्दी के सारे समाचार पत्रों ने इस पत्र की सम्पादन शैली और लेखों की प्रशंसा की है। जयाजी प्रताप के हर अंकमें १२ पृष्ठ हिन्दी और ५ पेज अंग्रजी के पढ़ने योग्य लेख होते हैं। जो लोग अंग्रेजी समाचारपत्र तो पढ़ना चाहते हैं परन्तु अधिक मूल्य होने के कारण उन्हें खरीद नहीं सकते वे केवल ३) साल भर डाक महसूल देकर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का लाभ उठा सकते हैं। हर अंकमें एक दो सुन्दर हाफटोन चित्र भी रहते हैं। इतने कम दामों में ऐसा सुन्दर कोई पत्र हिन्दी भाषा में नहीं निकलता ।

मैनेजर
जयाजी प्रताप
ग्वालियर

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली ।

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

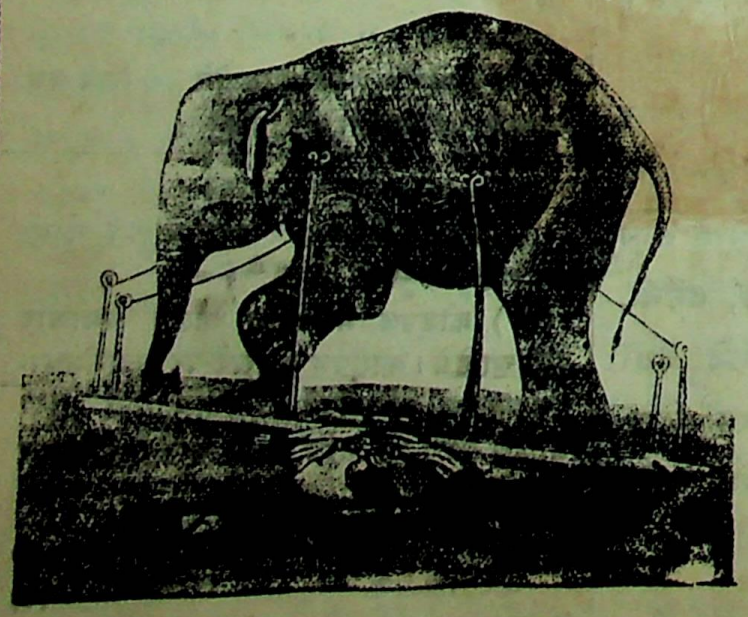

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ॥) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएँ ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां) वैदिक विवादर्श १) तांतिया भील =) चतुरंग १) फुटबाल -)॥ पाकरा ॥ ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति

युद्ध की गति

युद्ध की गति ऐसी नहीं है, जिससे शीघ्र ही शान्ति की आस बंधे। अमरीका के प्रेसीडेण्ट विल्सन ने शान्ति के लिये बात चीत की थी, किन्तु उन्हें कृतकार्यता नहीं हुई। उन्हें पता लग गया कि इलाज न चाहने वाले रोगी का इलाज करना बहुत कठिन है। अब उन्हों ने कह दिया है कि जब तक लड़ने वाले दलों में से ही कोई शन्ति के लिये शब्द न उठायगा, तब तक वे भी चुप रहेंगे। ज्यों ज्यों लहू लगता जाता है, त्यों त्यों लड़ाकुओं का जोश बढ़ता जाता है। यह मनुष्य की अशान्त प्रकृति का प्रबलतम प्रादुर्भाव है। जर्मनी पहले जीतता आता था, और आगे बढ़ता आता था। पेरिस के पास हार खाकर वह पीछे हटने लगा। अब फिर उसने एन नदी पर आसन जमाया है अन्त क्या होगा, यह नहीं कह सकते किन्तु अभी शीघ्र ही युद्ध की समाप्ति के लक्षण नहीं दीखते! "हम फ्रांस को तबाह करके छोड़ेंगे" यह नाद जर्मनी से उठ रहा है। "हम जर्मनी के कैसर को—इस नये नैपोलियन को—सेण्ट हेलना में कैद करके दिखायंगे। हम जर्मनी की शान को कुचल डालेंगे" यह ध्वनि दूसरी ओर से आरही है। क्या अफ्रीका के जङ्गलों में रमण करनेवाले जङ्गली पशु इससे अधिक खूंखार होते हैं। संसार के गुरु और संसार के रक्षक होने का दावा भरने वाले लोगों के पत्रों में ऐसे शब्द पढ़कर किसे दुख और क्लेश न होगा? सभ्यताभिमानी नहीं जानते कि सभ्यता कितनी दूर है? युद्ध तो तब से हो रहे हैं जब से मनुष्य ने पृथ्वी पर अवतार लिया है, किन्तु उनमें से शायद ही कोई ऐसा युद्ध हुआ हो जिसने मनुष्यों के हृदयंगत कठोर भावों को इतना उकसाया हो।

आर्य कुमार सम्मेलन

जिस समय प्रचारक ग्राहकों के हाथ में पहुंचेगा, अजमेर आर्य्य कुमार सम्मेलन का अधिवेशन हो रहा होगा। सम्मेलन के सभापति इस वर्ष श्री. प्रो. रामदेव जी होंगे आपकी योग्यता और विद्वत्ता से यह सम्मेलन अवश्य सम्मानित होगा अजमेर निवासियों के उत्साह से इस सम्मेलन को निर्विघ्न कृत कार्यता होगी यह हमें पूर्ण आशा है।

दक्षिण अफ्रीका में प्रचार

स्वामी मङ्गलानन्द पुरी जी दक्षिण आफ्रीका में खूब वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। अन्यत्र हम आपके कार्य के विषय में एक लेख प्रकाशित करते हैं उस से आपके प्रयत्नों का परिज्ञान होता है। वहां के पत्रों के जो कटिंग हमें मिले हैं, उनसे भी ज्ञात होता है कि आपके व्याख्यानों का अच्छा प्रभाव हो रहा है। स्वामी जी का विशेष बल नाम मात्र की नीच जातियों को उठाने में है। हमारी इच्छा है कि स्वामी जी अपने कार्य में सफल यत्न हों।

श्री स्वामी अच्युतानन्द जी का प्रचार।

श्री स्वामी अच्युतानन्द जी फीरोज़पुर के उत्सव से होते हुए सोलन पधारे यहां कई दिनों तक खूब प्रचार होता रहा। वहां से आप शिमला आर्य समाज के उत्सव पर गये। आपकी वेद विषयक कथा का लोगों पर बड़ा प्रभाव हुआ।

सरस्वती की समालोचकता

जब सरस्वती के सम्पादक श्री पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने भाषा की अनस्थिरता वाले लेख लिखे थे और 'आत्मराम' ने भारतमित्रमेंआप पर बाण वर्षा की थी, तब सद्धर्म प्रचारक का सम्पादक अभी विद्यालय में पढ़ता था उस समय उसकी दृष्टि में द्विवेदी जी का गौरव बहुत बड़ा हुआ था। वह आप को आदर्श साहित्य सेवी के समान समझता था। आत्माराम के लेखों को पढ़ कर उसे दुःख प्रतीत होता था, जैसा किसी स्वजन को गाली मिलने पर होता है। द्विवेदी जी ने पहले पण्डितोचित गाम्भीर्य धारण करके आत्माराम का उत्तर दिया, तब वह आदरभाव और बढ़ गया। उस समय आपका भाषा की अनस्थिरता पर दूसरा लेख निकला, जिसने उसके हृदय पर चोट पहुंचाई, क्योंकि उस लेख में आपने आत्माराम की गालियों का उत्तर गालियों में दिया भेद केवल इतना था कि जहां आपके प्रति द्वन्द्वी की गालियों में मज़ाक अधिक था, और तीखापन कम, वहां आप के लेख में तीखापन ग़ज़ब का था, और मज़ाक के लिये जो यत्न किया गया था वह सफल नहीं हुआ था। पीछे आपके कुछ लेख बङ्गवासी में निकले। द्विवेदी जी ने पण्डिताईके हथियारों से आत्माराम को कुचलना चाहा, किन्तु संसार ने देखा कि द्विवेदी जी उस बल में चारों कोने चित गिरे। तब से उस विद्यार्थी के दिल में द्विवेदी जी की महिमा पर, और उनकी निष्पक्षपातता पर सन्देह होनेलगा। समय और अनुभव ने हमारे विचारों को पलट दिया है और उसके लिये हम दुखी हैं। समालोचक का पहला कर्तव्य यह है कि वह उदार दृष्टि से हर एक बात पर विचार करे। व्यक्तिगत झगड़ों को साहित्य में न आने दे, और न उनका प्रभाव ही साहित्य सेवा पर पड़ने दे। किन्तु द्विवेदी जी जो अपनी समालोचना की मैकाले के साथ तुलना किया करते हैं, पक्षपात और अनुदार विचारों के कितने आधीन हैं, यह उन्हीं को ज्ञात है, जो सरस्वती की साहित्य समीक्षा का नियम पूर्वक अनुशीलन करते हैं। मित्र की भेजी हुई रद्दी काग़ज़ों की पुड़ियों को राम चरित मानस का स्थान देने और जिसे आप अपना विरोधी समझें उसकी भेजी हुई उत्तम पुस्तक को भी कूड़ा-करकट करार देने में आपका कौशल अपार है। जिससे आपकी कोई धरेटू शिकायत हो, उसकी सब बातों को कोसने में आप सिद्ध हस्त हैं। जिस सभ्यता की डुगडुगी आप स्थान स्थान पर बजाते रहते हैं, ज़रासा रोष आजाने पर उसे तिलाञ्जलि देदेना तो आप के स्वभाव में मिलगया है। पिछली बातों को छोड़ कर एक नया दृष्टान्त दीजिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वामी विरजानन्द जी पर 'सरस्वती'

स्वामी दयानन्दजी के गुरु स्वामी विरजानन्दजी व्याकरण के अपूर्व पंडित थे। धर्मवीर पं० लेखरामजी ने उनका जीवन चरित उर्दू में लिखा था, जिसका गुजराती अनुवाद मुरादाबाद से निकला है। उस अनुवाद की समालोचना करने में सारी शिष्टता और सभ्यता का तिरस्कार करते हुए द्विवेदी जी ने जो शब्द लिखे हैं, उनके लिये अगर सरस्वती के सम्पादक लज्जित नहीं होते तो ग्राहक और पाठक तो अवश्य ही लज्जित होंगे। धर्मवीर लेखराम पर जो कीचड़ उछाले आक्षेप किये हैं, उन्हें कोई भी हिन्दू क्षतव्य नहीं समझ सकता। फिर स्वामी विरजानन्द पर तो गालियों की बौछाड़ ही करदी है। उससे भी सन्तुष्ट न होकर आपने काशी के पण्डितों को सलाह दी है कि वे अपने घरों में स्वामी विरजानन्द की एक २ मूर्ति रखें, और विद्यार्थियों से रोज़ उसपर जूते लगवाया करें। ऐसा करने का कारण आप यह बतलाते हैं कि स्वामी बिरजानन्दजी सिद्धान्त कौमुदी के विषय में ऐसा कहते थे। हम पूछते हैं कि यदि जो कोई दूसरे पर जूते लगाने का उपदेश करे, उसपर जूते लगने चाहियें तो क्या द्विवेदी जी इस न्याय को अपने तक पहुंचाने के लिये तय्यार हैं? आर्यसमाज यह दीर्घ काल से देखरहा है कि सरस्वती का वर्तमान सम्पादक उसकी समय समय में निन्दा करने से नहीं टलता हमें आश्चर्य है कि फिर भी क्यों आर्य समाजी लोग अपनी पुस्तकें उस के पास समालोचनार्थ भेजते हैं। यदि सरस्वती में पुस्तक का नाम निकलना आवश्यक समझें तो गालियां खाने और एक अनुदार विचारों वाले लेखक की चोभें सहने से अच्छा है कि पैसे खर्च कर सरस्वती के स्तम्भों में विज्ञापन छपा दिया करें।

ऋषि नम्बर

हमें सूचना मिली है कि प्रकाश और भारत के ऋषि नम्बर दीवाली पर निमम पूर्वक निकलेंगे। हमें पूरी आशा है कि आर्यसमाजी उनका पूर्ववत् स्वागत करेंगे।

गुरुकुल में प्रवेश

गुरुकुल कांगड़ी में नये ब्रह्मचारियों के प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल के पास १४ दिसंबर तक पहुंच जाने चाहियें। जो प्रार्थना पत्र इस तारीख के पश्चात् प्राप्त होंगे उनपर ध्यान नहीं दिया जायगा। दाखले के फार्म और नियमावलियां गुरुकुल के कार्य्यालय से मिलेंगे।

आर्य व्याख्यान माला।

सर्व धर्मानुरागी सज्जनों से निवेदन है कि शरद ऋतु में अमरावती आर्य समाज मन्दिर में निम्न लिखित महाशयों के व्याख्यान प्रति रविवार प्रातःकाल ८ बजे क्रमानुसार होंगे आशा है निश्चित समय पर पधार कर सज्जन गण धर्म लाभ प्राप्त करेंगे.

तारीख	विषय	वक्ता
६-९-१४	आनंद व दुःख	श्रीयुत बी. जी. बोधनकर वकील
१३-९-१४	स्त्री शिक्षण	,, एन. व्ही. दाँडेकर भूतपूर्व संपादक कर्तव्य
२०-९-१४	स्वामी दयानंद सरस्वती	,, जी. एन काणे वकील
२७-९ १४	आर्य्यसमाज क्या है	,, एन्. एस्. भांगले संपादक 'भारत,
४-१०-१४	धार्मिक शिक्षण	,, टी.एल. शेवडे बी. ए. एल. एल बी.
११-१०-१४	पतितोद्धार	,, एन. आर. वामणगाँवकर संपादक कर्तव्य
१८-१० १४	माया	,, बी. जी. खापर्डे बी. ए. एल. एल. बी.
२५-१०-१४	शुद्धी	,, पं. बालमुकुंद शर्मा प्रधान आर्य समाज

निवेदक सेक्रेटरी
आर्य्यसमाज

उत्तम संकल्प

श्रीमन्महोदयजी, सादर नमस्ते।

आर्य्यसमाजकी आज जैसी शोचनीय दशा हो रही है वह आप के समान अनुभवी विचार शील विज्ञ पुरुषों से छिपी नहीं है। ऋषि दयानन्द जी ने आर्य समाज के द्वारा ही अपने महान् व्यापक उद्देश्य की पूर्ती की आशा की थी, परन्तु इस की वर्त्तमान गति को देखते हुए बड़ा खेद होता है। परन्तु वे कौन से उपाय हैं, वे कौन से साधन हैं कि जिन के द्वारा आर्य्यसमाज का सुधार हो और यह अपने उद्देश्य में सफल हो, इस बात का सन्तोषदायक उत्तर आप के हीसमान विज्ञ और आर्य्यसमाज के सच्चे शुभचिन्तकों से मिल सक्ता है।

मान्यवर, इस अबोध बालक की अभिलाषा है कि आर्य्यसमाज की वर्त्तमान गति और उस के सुधार के उपायों पर एक ट्रेक्ट सिरीज़ निकाली जाय। इन ट्रेक्टों को पढकर आर्य्यजनता आवश्यही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचार में प्रवृत्ति होगी और आर्य्यसमाज का सुधार होगा। अतएव आपसे सविनय, सानुरोध और साग्रह प्रार्थना है कि आप इस अत्यन्त आवश्यक धर्म्मकार्यके लिए थोड़ा सा कष्ट सहन करके आर्य्य समाजके कान्स्टीट्यूशन, आर्य्यसमाजके सिद्धान्त क्या हैं, आर्य्यसमाजमें स्वामी दयानन्द जी का स्थान, क्या ऋषि दयानन्द निर्भ्रान्त थे, परोपकारिणी सभा, वर्त्तमान गुरुकुल पद्धति, पतितोद्धार, शुद्धि आर्य्यकुमार सभा, कन्या गुरुकुल, स्त्री समाज, वेद प्रचार, अनाथरक्षा, साधुदशासुधार, आदि आदि उपर्युक्त और आवश्यक विषयों पर, जिन पर कि वर्षों से आर्य्यसमाज में झगड़े होरहे हैं, अपने विचार, सविस्तर हिन्दी या उर्दू में लिखकर इस सेवक के पास भेज दें। मैं ट्रैक्ट रूप में उन्हें प्रकाशित करदूंगा। कृपया लेख सर्वांगपूर्ण, यथासंभव संक्षिप्त लिखिये; किसी व्यक्ति किसी संस्था अथवा पक्षके विषयों में कोई आक्षेप अवश्य ही आप के लेख में न होगा, इसका मुझे भरोसा है।

आशा है कि आप इस सेवक के इस विनीत निवेदन पर अवश्य ही पूर्ण ध्यान देने की कृपा करेंगे। यदि आर्य्य जन साधारण में आप के विचारों से तनिक भी जागृति उत्पन्न हुई तो आपका और मेरा प्रयत्न अवश्य ही सफल होगा। कृपया पत्रोत्तर शीघ्र ही दीजिये।

विनीत प्रार्थी,
द्वारका प्रसाद सेवक
C/o. डाक्टर ओङ्कार प्रसादजी,
पारसी मुहल्ला इन्दौर. सी० आइ०

(हम इस संकल्प का अनुमोदन करते हैं) सम्पादक।

—

देहली समाचार।

मारवाड़ी एसूसीएशन।

देहली के व्यापार में और स्थानों की भांति मारवाड़ियों का विशेष भाग है। इसी कारण देहली में मारवाड़ियों की बस्ती अधिक है। कुछ दिन हुये कि यहां पर एक मारवाड़ी एसूसीएशन नामक सभा स्थापित हुई है। इस सभा ने अभी अपने मासिक अधिवेशन में सरकार से वर्त्तमान युद्ध सहानुभूति सूचक प्रस्ताव पास किया है और परमात्मा से प्रार्थना की कि हमारी सरकार को विजय प्राप्त हो। उसी विषय का एक तार भी वायसराय महोदय की सेवा में भेजा गया।

हिन्दू कालिज की सहायता।

हमें यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आग़ाहश्र काश्मीरी की इन्डियन शेक्सपियर थियेटिकल कम्पनी जो आजकल रामाथियेटर हाल चांदनी चौक देहली में खेल रही है। इस ने ता० १६ सितम्बर बुधवार को महाभारत का तमाशा किया कई ख़ास नकलें की गई थीं। इस दिन की कुल आमदनी देहली के हिन्दू कालिज तथा गौशाला को दी गई। सुनते हैं आय अच्छी हो गई थी। जातीय संस्थाओं की सहायता का यह अच्छा ढंग है।

देहली में वर्षा।

वर्षा की इस समय विशेष आवश्यकता थी। परमात्मा का धन्यवाद है कि प्रायः सभी स्थानों में वर्षा हो गई गत बुधवार की रात्री से देहली में भी वर्षा अच्छी हुई कई दिन तक बराबर पानी की झड़ी लगी रही। कहते हैं कि इस समय अब वर्षा की आवश्यकता नहीं रही। शनिवार को प्रातः बड़ी वर्षा हुई क़ाज़ी के हौज़ पर इतना पानी भरा हुआ था कि मानों दरिया उमड़ आया है बहुत से मकान गिर गए जिस से बड़ी हानि हुई।

ब्रह्मचर्य्याश्रम हस्तिनापुर।

आर्य्यसमाज के गुरुकुल की भान्ति जैनी भाइयों का ब्रह्मचर्य्याश्रम हस्तिनापुर में ३ वर्ष से खुला हुआ है इस में पचास से ऊपर ब्रह्मचारी हैं। इन दिनों पढ़ाई का अनध्याय होने के कारण ब्रह्मचारी गणयात्रा के लिये बाहर निकले हुये हैं। यह सुनकर कि गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारी भी इस समय देहली पधारे हैं उन से मिलने का भी विचार किया किन्तु गुरुकुल के ब्रह्मचारी उस समय आगरा गये हुये थे इस यात्रा में १४ ब्रह्मचारी थे। हम जैनी भाइयों के इस उद्योग के लिये प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते हैं।

फ्री रीडिंग रूम।

देहली के मोहल्ला हौज़ क़ाज़ी में ईसाइयों का गिरजा घर है कई सप्ताह से उस में फ्री रीडिंग रूम खोला गया है जिस में इंग्रेज़ी, हिन्दी, उर्दू, के कई समाचार पत्र आते हैं। रीडिंग रूम सायं-प्रातः दोनों समय खुला रहता है।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा का डेप्यूटेशन

पाठकों को यह तो विदित ही है कि श्री पं० केशवदेव जी शास्त्री के पास अमरीका में वैदिक धर्म्म प्रचारार्थ श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत की ओर से सत्यार्थप्रकाश भेजने का प्रबन्ध हो रहा है। छः सहस्र रूपया इस कार्य्य के लिये सभा ने स्वीकार किया है जिसमें से सभा के अधिकारियों के उद्योग से तीनसहस्र से ऊपर धन एकत्रित हो चुका है शेष के लिये सभा की ओर से एक डेप्यूटेशन भ्रमण कर रहा है। गत रविवार को यह डेप्यूटेशन देहली पहुंचा। देहली समाज की ओर से २०) पहले ही भेजे जा चुके थे डिपोटेशन के आने पर समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में अपील की गई २१) उसी समय एकत्रित होगये। और समाज के अधिकारियों ने यह वचन दिया कि उन सब रुपये को मिलाकर हम ५० पुस्तकें प्रचारार्थ देंगे जिनका कुल मूल्य लगभग १२५) के होता है। यह सत्यार्थ प्रकाश का वह इंग्रेज़ी अनुवाद है जो श्री मा० चिरंजीव भारद्वाज जी ने किया है। पुस्तक लीडर प्रेस प्रयाग में छप रही है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहली में वैदिक धर्म प्रचार

चांदनी चौक के फव्वारे पर प्रति रविवार तथा बुधवार को वैदिक धर्म्म का प्रचार हुआ करता है। आज कल पं० रामचन्द्र जी योग दर्शन का भावार्थ अपने व्याख्यान में बतलाते हैं। हिन्दू और आर्य भाई अच्छी संख्या में एकत्रित हो जाते हैं सुनने वालों पर प्रभाव अच्छा पड़ता है। आज कल यह प्रचार बड़ी शांति पूर्वक हो रहा है।

देहली की काया पलट

नई देहली का कार्य्य आज कल युद्ध के कारण कुछ सुस्त प्रतीत होता है यदि यह युद्ध न छिड़ता तो विशेष तेज़ी के साथ होता। साथ ही साथ पुरानी देहली बहुत कुछ काया पलट होरही है प्रायः बड़े २ बाजारों की सड़कें ठीक हो रही हैं सड़कों के दोनों और मनुष्यों के लिये पटरियां बनाई जा रही हैं। आज कल चावड़ी बाज़ार की सड़क ठीक हो रही है यह बाज़ार देहली में चांदनी चौक से दूसरे दर्जे का कहा जाता है वेश्याओं का भी यही विशेष अड्डा है। इसमें सन्देह नहीं कि सड़कें इत्यादि ठीक हो जाने से सुन्दरता तो अवश्य आजायगी किन्तु वास्तविक सुंदरता तो उसी समय हमारी सम्मति में आयेगी जब इन वेश्याओं का अड्डा यहां से उठा दिया जायगा। इस बाज़ार से विद्यार्थी तथा गृहस्थ स्त्रियां सभी निकलते हैं परन्तु स्त्रियों का इस बाज़ार से दिन का निकलना अत्यन्त हानि कारक है और यही दशा विद्यार्थियों की है। क्या! अच्छा हो यदि नई सड़क की भांति इस बाज़ार से भी वेश्यायें निकाल दी जायें और इनके लिये शहर के किनारे पर कोई स्थान नियत कर दिया जाय। जैसा कि सुनते हैं कि अन्य कई शहरों में है।

योरप में महाभारत

फ्रेंच आगे बढ़ रहे है।

एक अङ्गरेज़ी क्रूज़र डूबा।

मद्रास पर गोला बारी।

जर्मन जहाज़ पकड़ा गया।

सर्वियन राज कुमार घायल।

तीन अंग्रेज़ी क्रूज़र डूबे।

मद्रास में गोला बारी

गत मंगलवार को जर्मनी क्रूज़र ने मद्रास में बड़ा उत्पात मचाया। रात के साढ़े नौ बजे मद्रास के पास से होकर गुज़र रहा था। गुज़रते हुए आध घंटे तक वह मद्रास पर गोला बरसाता रहा ये गोले एक आयल कंपनी के टैंकों पर बरसाए गए थे जो शहर से डेढ दो मील दूर है। गोलों से दो टैंक जल गए और तीन आदमी मारे गये। ऐसा प्रतीत होता है कि एन्डमन क्रूज़र नगर निवासियों पर गोले नहीं बरसाना चाहता था। आध घंटा तक गोला बारी करके क्रूज़र दक्षिण की ओर चला गया पांडू चरी के पास से गुज़रता हुआ वह क्रूज़र देखा गया था पर क्रूज़र ने वहां गोले नहीं बरसाए।

तीन अंग्रेजी क्रूज़र डूबे

प्रैस बूरो ने समाचार दिया है कि जर्मनी की सुरंगों ने तीन अंग्रेज़ी छोटे जंगी जहाजों को डुबा दिया है। उन के नाम क्रीसे अबोकिर और होग है।

जर्मन जहाज़ पकड़ा गया

सेना विभाग ने समाचार दिया है कि उत्तरीय अटलांटिक में एक अंग्रेजी क्रूजर ने जर्मनी के शस्त्र सज्जित व्यापारी जहाज को पकड़ लिया है। उसमें ६००० टन कोला था।

इटली में क्रोध।

एमस्टर्डम से आया हुआ समाचार कहता है कि जर्मनी के अधिकारियों ने अपने सैनिकों को आज्ञा दी थी कि जहां तक हो सके रीम्स के गिर्जे को मत नष्ट करना। तथापि चेलोम्स के एक तार से मालूम हुआ है कि उस प्रसिद्ध गिर्जे की कुछ दीवालें ही अब बची हैं, और होटल डी वील और अजायबघर आदि सब नष्ट कर दिया गया है। जर्मनों के इन असभ्यता-सूचक कार्यों से इटली में बड़ा क्रोध फैला है।

सर्वियन राजकुमार घायल

सर्विया के प्रिंस जार्ज लड़ाई में बुरी तरह घायल हुए हैं।

१९,००० टन का लाइनर डूबा।

'रायटर' का ब्रोनस आयर्स का संवाददाता सूचित करता है कि ट्रेफलगार के पास 'कारमैनिथा' नाम का लाइनर डूब गया।

राजदूत के पुत्र।

लन्दन स्थित रूसी राजदूत का सबसे छोटा लड़का जर्मन सीमा पर लड़ते लड़ते ओहत हुआ था। खबर आई है कि वह अच्छा हो रहा है।

जर्मन वायु यान की हार।

फ्रेंच वायुयानों ने एक जर्मन वायुयान पर गोलियां चलाईं किन्तु सब व्यर्थ हुआ इस पर प्रसिद्ध मि० वेडरीनो ने जर्मन वायुयान का पीछा किया। ६०००० फीट ऊपर उड़कर उन्हों ने जर्मन वायुयान को ध्वस्त किया। यह इक्कीसवें जर्मन वायुयान का नाश हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रचारक के ग्राहकों से निवेदन

दीपमालाङ्क– यह अङ्क विजया-दशमी के समीप पाठकों के हाथों मेंपहुंचेगा। अगले अङ्क का हरवर्षके नियमानुसार अवकाश होगा । प्रचारक का संपादक भी गुरुकुल की विजया का पूरा आनन्द लेना चाहता है और आशा करता है कि प्रचारक के प्रेमी भी इस उत्सव को पूरे दिल से मनावें-जिसमें न उन्हें अखबार पढ़नेकी इच्छाहोनफुर्सत।

२. प्रचारक का यह अङ्क कुछ देरसे निकला है । उसका कारण पाठकों को अन्यत्र मिलेगा । इस समय में आकर वर्षा ऐसी ज़ोर से हुई, जैसे ज़ोर से सारी वर्षा ऋतु में न हुई थी । गंगा का कलेवर भरना शुरू हुआ और भरता भरता नाक तक भर गया । गङ्गा का वेगवान् जल गुरुकुल भूमि के ऊपरी भाग से टक्करें खाने लगा। तीन दिन गुरुकुल वासियों का सभ्यताभिमानी संसार से कोई सम्बन्ध न रहा। न डाक गई और न आई। प्रचारकके लिये लेखों का आना जाना भी कैसे संभवथा ? इसीलिये यह अङ्क देरी से निकला है ।

३. इस वर्ष प्रचारक अपना दीपमालाङ्क निकालेगा। दोसाल बीच में वह अपने कर्तव्य का पालन न कर सका किन्तु अबके ऐसा न होगा । विशेष अगले अङ्क में लिखा जायगा।

विजया दशमी

विजय के देने वाली, मरे हुओं को जिलाने वाली विजया दशमी आरही है। इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने अत्याचारी रावण का दलन करके संसारमें धर्मराज्यकी स्थापना की थी । हमारे प्राचीन आर्य राजा भी इसीदिन दुष्टों के दलन के लिये भीषण कृपाण की मुट्ठी अपनी म्यानमें से खेंचा करते थे। यह उत्सव जीते हुओं का है, क्षत्रियों का है, मरे हुओं का नहीं । जिनमें उत्साह है, जिनमें साहस है जिनकी नसों में लहू है वेही इस उत्सव को मनाने के अधिकारी हैं, अन्य कोई नहीं । आर्यावर्त के निवासियों के लिये यह दिन संजीवनी बूटी है। ऐ आर्य वीरो यदि आप इस प्राचीन आर्य उत्सवकी महिमा मनाना चाहतेहैं तो इस दिन अपने२ कार्य के लिये कमर कस लो । धर्म प्रचारक आज से धर्मके प्रचार के लिये नया जोश धारण करें देश और राष्ट्र के सेवक विजयादशमी को उत्साह का केन्द्र समझ कर नये आवेश से कार्य्य शुरू करें। विजयादशमी उत्साह और उमङ्गका उत्सव है दार्शनिक विचारों का नहीं । इसलिये हम दार्शनिक विचारों को छोड़ते हुए अपने प्रेमियों को उठाने के लिये पुकार कर कहते हैं—कि—

उत्तिष्ठत जाग्रत–उठो और जागो

सद्धर्मप्रचारक

क्या सार्वदेशिक सभा

अन्यथा सिद्ध सँस्था है ?

जिन संस्थाओं के साथ मेरा किसी प्रकार का भी सम्बन्ध है उनके विषय में सर्व आक्षेपों का उत्तर देने की न तो आवश्यकता ही है और नाहीं मेरे पास समय है । किन्तु कभी २ कुटिल नीति के स्वामियों की ओर से ऐसी छछून्दरें छोड़ दी जाती हैं जिसको यदि न बुझाया जाय तो उक्त संस्थाओं को वास्तविक हानि न पहुंचते हुए भी उन के यथार्थ स्वरूप सर्व साधारण की दृष्टि में बदलजाते हैं । इस लिए कभी २ कुछ लिखने की आवश्यकता होती है ।

दृष्टान्त के लिए अभी की एक घटना लीजिए । १७ सेप्तेम्बर को गुरुकुल में बड़ी बर्षा हुई, १८ से बाढ़ आनी शुरू हुई, १९ की शाम को गङ्गा किनारे से टकराने लगी । ब्रह्मचारियों के बांधे हुए बन्द ने गङ्गा के सारे बल का भली भांति मुकाबिल किया । यद्यपि महाविद्यालय तथा विद्यालय की उच्च श्रेणियों के ब्रह्मचारी यात्रा पर गए हुए थे तथापि छोटे ब्रह्मचारियों ने उन दो तीन स्थानों को भी सुरक्षित करलिया जहां से जल के गुरुकुल भूमी में आने की संभावना थी । बाढ़ के कारण दो दिनों तक तमेड़ आ जा न सकी । बस, बिरोधियों ने शोर मचादिया कि गुरुकुल में पानी घूमरहा है और कोई बचाव की सूरत नहीं । २० सेप्तेम्बर को जब तूम्बे वाले के हाथ कुशल समाचार भेजागया तो पता लगा कि जहां गङ्गा के पंडों ने प्रसिद्ध कर दिया कि गुरुकुल बहगया, वहां ज्वालापुर की आर्याभास पंडित मण्डली दक्ष पर इस जन अपवाद की पुष्टि के लिए आ बैठी ।

जिन पंडित गङ्गादत्त जी ने लाला नन्दलोल के मुकद्दमें के समय ज्वालापुर की दूकानों पर बैठकर गुरुकुल के वासियों को झूंठी गवाही के सूत्र, भाष्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहित, पढ़ाने में योग्यता का परिचय दिया था वेही दक्ष पर इस प्रतीक्षा में आ बैठे कि गुरुकुल के डूबने का पहला समाचार उनको ही मिले । यदि २० सेप्तेम्बर को प्रातः तूम्बे पर तैर कर गुरुकुल का भृत्य ठीक समाचार न पहुंचाता तो न जाने सर्व साधारण कहांतक भ्रम में पड़ जाते ।

यही अवस्था सार्व देशिक सभा की है । यह प्रसिद्ध किया जाता है कि यह अन्यथा सिद्ध संस्था है और इस लिए इस की आवश्यकता नहीं । और यह सब प्रसिद्ध वे लोग करते हैं जो गीध की नांई इसके मरने पर इसकी हड्डी बोटियों को संभालने की चिन्ता में निमग्न हैं । पहली बात यह प्रसिद्ध की गई थी कि सार्व देशिक सभा की रजिस्टरी नहीं हुई इस लिए इसको दिया हुआ धन सुरक्षित नहीं समझना चाहिए। मैं प्रचारक के गताङ्क में यह समाचार दे चुका हूं कि आर्य्यवर्तीय सार्व देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की रजिस्टरी राज नियमानुसार होगई है । फिर कहाजाता है कि अबतक इस सभा ने देशान्तर प्रचार का कुछ प्रबन्ध क्यों नहीं किया ? और आक्षेप करने वाले कौन हैं ? जिन की प्रतिनिधि सभाए नियमानुसार अपनी आय का पंचमाँश भी सभा को नहीं देतीं, पंजाब और संयुक्त प्रान्त को छोड़ कर कोई आर्य प्रतिनिधि सभा नहीं जिसने अपनी आमदनी का पंचमांश सभा को दिया हो । पजाब ने ८००) और संयुक्त प्रान्त ने ४००) अपनी प्रतिनिधि सभाओं द्वारा देशान्तर प्रचार के लिए देना स्वीकार किया था । उस में से अब तक एक कौड़ी नहीं मिली । फिर उपदेशक कहां से आता ? कुम्भ प्रचार के लिए मैं ने धनकी अपील की है । आर्य पुरुषों ने उसे सुनाभी है और धन आना आरम्भ हो गया है । यदि कुम्भ प्रचार के लिए पूरी सहायता मिल गई तो फिर सभा कुछ काम भी दिखला सकेगी । कोई भी संस्था नहीं चल सक्ती यदि उस के अङ्गही उसे डबोने का प्रयत्न करते रहें । कुम्भ प्रचारके लिऐ सभाने १००००) जमा करके प्रचार करने का प्रस्ताव स्वीकार किया । जिस अंतरंग सभाने यह प्रस्तावस्वीकारकिया उसके सभासद पण्डित तुलसी राम स्वामी भी हैं । फिर जो उपसभा उक्तप्रचार के प्रबन्धके लिए बनी आप उस के भी सभासद नियत किए गए । पण्डित तुलसी राम स्वामी जी महाराज का कर्तव्य था कि सभा को इस काम में सहायता देते । उन्हों ने सहायता के स्थान में सोई हुई विद्वत् सभा को जगाया और उस की ओर से २०००) की अपील कर दी । सार्वदेशिक सभा के सब सभा सद ५०) से १००) तक धन सभा की सहायता में भेज रहे हैं । श्री पण्डित तुलसी राम स्वामी जी पर परमेश्वर की कृपा है । वे श्रीमान भी हैं । मुझे आशा है कि वे १००) नहीं तो ५०) अवश्य भेज देंगे । यदि जो कुछ विद्वत् सभा की प्रशंसा में पण्डित जी ने लिखा है वह ठीक है, और उक्त सभाकी स्थापना आर्यसमाज की प्रबन्ध करने वाली सभाओं की सहायतार्थ है तो पण्डित जी क्यों विद्वानों को प्रबन्ध के काम का कष्ट देते हैं । अपने सर्व विद्वानों को सभा के स्थान में ही ले आवें और वहीं से सारा धर्म प्रचार हो । पण्डितों से सफ़ाई स्थान और भोजन भन्डार और छप्पर बनवाने का काम लेना शक्तियों का यथार्थ प्रयोग नहीं कहला सक्ता ।

सार्वदेशिक सभा को जो लोग निर्जीव बतलाते हैं वे भूल जाते हैं कि प्रान्तिक सभाओं, आर्य समाजों और विद्वत् सभाओं में जान डालने वाले भी तो सारेके सारे सभासद नहीं होते । वहां भी एक दो व्यक्तियों पर ही उन्नति वा अवनति का निर्भर होता है । किन्तु भेद केवल यह होता है कि जहां कोई संस्था किसी नियम पर चलती है वहां कार्य में स्थिरता तथा नियमबद्धता का निश्चय होता है ।, जहां सब कुछ व्यक्तियों के हाथ में होता है वहां कोई स्थिरता नहीं । वहां किसी प्रकार का अंकुश नहीं जो काम को सीधे धड़े पर चला सके ।

जितनी आवश्यकता आर्य सभाओं को वर्तमान रूप में रखने की है, जितनी आवश्यकता आर्य प्रतिनिधि सभाओं को जीवित रखने की है, उन से बढ़कर आवश्यकता सार्वदेशिक सभा को जीती जागती शक्ति बनाने की है, इसलिए

आगामी कुम्भ प्रचार

के लिए १००००) की अपील का सन्तोषजनक उत्तर मिलना चाहिए । उक्त सभा के जिन सभासदों ने अब तक मेरे पत्रों पर ध्यान नहीं दिया वे अब शीघ्र अपना कर्तव्य पालन करें । भारतवर्ष तथा भारत विभिन्न सर्व प्रान्तों के आर्यसमाजों के नाम मैंने छपे हुए पत्र भेजे हैं । यथाशक्ति प्रत्येक आर्यसमाज को धन भेजना चाहिए । सम्भव है कि बहुत से आर्यसमाजों क नाम पत्र भेजना भूलगया हूं । उनमें से जिस २ समाज के मन्त्री की दृष्टि इस लेख पर पड़े वे तत्काल ही कम से कम २५) और अधिक से अधिक जितना धन होसके मेरे नाम गुरुकुल विश्वविद्यालय(पो० आ० शामपुर ज़िला बिजनौर) के पते से भेजदें ।

मैंने पहले भी निवेदन किया था कि जिन आर्य्य पुरुषों को सामर्थ्य हो वे अकेले ही ५०) वा १००) भेजकर सहायता करें ।

सार्व देशिक सभा के विरोधियों की दृष्टि में एक ऐतिहासिक घटना की ओर फेरना चाहताहूं । जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को रजिस्टर्ड वाडी बनाने का प्रश्न उठाया था तो कुछ कम प्रयत्न उस के रोक में विरोधियों की ओर से नहीं हुआ था, किन्तु आज पंजाब की आ० प्र० सभा की तुलना की दूसरी सभा भारतवर्ष में नहीं है । जब गुरुकुल काङ्गड़ी निर्जन जङ्गल में खोला गया तो इस की इतिश्री करने में अन्दर और बाहर के विरोधियों ने कोई कसर नहीं उठा रक्खी थी किन्तु आज गु० कु० विश्व विद्यालय भूमण्डल के सभ्य विद्वानों का ध्यान अपनी ओर खींच रहा है। इसी प्रकार सार्व देशिक आर्य प्रतिनिधि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धि सभा का निर्माण भी निरस्वार्थ भाव से वैदिक धर्म की रक्षा के लिए किया गया है। यह संस्था तो स्थिर होगी और दिनों दिन उन्नति करेगी; फिर इसका विरोध करके सदैव के लिए आर्य जनता में कलंकित होना बुद्धि मत्ता का काम नहीं।

(मुन्शीराम)

पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

गत २३ अगस्त १९१४ रविवार को सायंकाल के ५॥ बजे का० का० समिति की बैठक खत्री पाठशाला के पुराने भवन में हुई। सभापति का आसन पं० गणेश बिहारी मिश्र ने ग्रहण किया और निम्न लिखित सज्जन उपस्थित थे।

१—पं० रामनाथ शास्त्री। २ बा० गोपाललाल ३ पं० महेशनाथ शर्म्मा। ४ पं० बालमुकुन्द वाजपेयी। पं० क्षमापति बाजपेयी राज वैद्य। ६ डा० पुरुषोत्तमदास वकड़। ७ बा० हरिनारायण टन्डन। ८ बा० बदरीनाथ जी कपूर। बा० विश्वनाथ वर्म्मा। १० बा० पुत्तनलाल विद्यार्थी ११ पं० बिहारीलाल गुजराती।

(१) आय व्यय परीक्षक की रिपोर्ट पढ़ीगई और निश्चय हुआ कि त्रुटियां सुधारी जांय और एक स्टाक रजिस्टर बनाया जावे।

(१) प्रतिनिधयों के ठहरने के स्थान विषयपर विचार हुआ और निश्चय किया गयाकि आगामी अधिवेशन में पुनः इस पर विचार हो।

(३) निश्चय हुआ कि का० का० स० के सदस्यों के जो स्थान खाली हुये हैं उन में निम्न लिखित सज्जन निर्वाचित हों।

१ बा० सरयूप्रसाद
२–पं० रामधीन द्विवेदी।
३–पं० लक्ष्मीनारायण नेत्र वैद्य।
४–पं० लक्ष्मीधर शुक्ल

(४) निश्चय हुआ कि राजाराम बालसिंह सी० आई० ई० सभापति स्था० का० स० के युक्त प्रदेश की लेजिसलेटिव काउन्सिल में निर्वाचित होने के उपलक्ष में उन की सेवा में एक प्रसन्नता सूचक पत्र भेजा जाय।

(५) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गोपाललाल
मंत्री सम्मेलन का० का० समिति
लखनऊ

— —

कुछ आप बीती कुछ जग बीती

(४८)

उपदेशक क्लास का झगड़ा।

जब स्वामी रामानन्द जी अपने नए शिष्य पूर्णा नन्द जी को ले कर जालन्धर में आए थे उन्हीं दिनों वहां "द्वाबा उपदेशक मण्डली" खोलने का विचार पक चुका था। इस मण्डली के दो विभाग सोचे गए थे। एक सङ्गीत मण्डली और दूसरी उपदेश मंडली। यह विचार हो ही रहे थे कि स्वामी रामानन्द जी दो मई सं० १८८९ ई० को पूर्णानन्द को साथ लिए जालन्धर पहुंचे। २७ मई को स्वामी रामानन्द ने बाल सन्यासी टीकमानन्द के पूर्णानन्द बनने का हाल सुनाया और पूर्णानन्द जी ने भी कुछ कहा। स्वामी रामानन्द जी ने काशी में उपदेशक पाठशाला खोलने का विचार प्रकट करके मुझ से सहायता मांगी। मैं ने उन्हें कहा कि काशी में तो पौराणिक गढ़ है, उपदेशक पाठशाला का चलना कठिन है, क्यों न लाहौर में प्रयत्न किया जाय जहां दयानन्द कालिज से भी अच्छी सहायता मिल सक्ती है। स्वामी रामानन्द जी को मेरी सम्मति पसंद आई और वह लाहौर चले गए। वहाँ पण्डित गुरु दत्त जी तथा उन के सहायकों ने भी सहमति दी और उपदेशक क्लास की अपील पर अपने हस्ताक्षर कर दिए। तब स्वामी रामानन्द जी पूर्णानन्द जी को साथ ले कर १९ जून के दो पहर की रेलमें मेरे पास लौट आए। स्वामी रामानन्द जी तो चन्दा जमा करने चल दिए किन्तु पूर्णानन्द जी को सन्तोष न हुआ। वे एक दिन भी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहते थे। उसी समय पता लगा कि स्वामी पूर्णानन्द के पुराने परिचित एक दर्शनों के विद्वान् पण्डित कपूर्थले में पढ़ाया करते हैं। स्वामी पूर्णा नन्द जी पठनार्थ उन्हीं के पास जाने को तय्यार हो गए। इस सम्बन्ध में १७ आषाढ़ १९४६ के सद्धर्म प्रचारक में जालन्धर का निम्न समाचार निकला था:— "स्वामी रामानन्द जी हुशयारपुर, २१ जून को प्रातः उपदेशक क्लास के आन्दोलन के लिए गए थे; वहाँ से लौट कर २५ (जून) को लाहौर चले गए। अब तक ३०) मासिक चन्दा लिखा चुके हैं। ईश्वर कृत कार्य करें! साधु पूर्णानंद जी जालन्धर समाज की ओर से दर्शनों की शिक्षाप्राप्त करने के लिए कपूर्थले भेजे गए।"

पाठक कषाय वस्त्र धारियों में स्वामी और साधु का भेद देखकर कुछ विस्मित से होंगे परन्तु उस समय, न जाने क्यों, जहां पुराने प्रविष्ट भगवे गेशों को आर्य्य समाज में स्वामी की उपाधि मिलती थी, वहाँ नयों को साधु ही कहा जाता था। साधु पूर्णानंद जी भी जब सान पर चढ़कर ईसपात सिद्ध हुए तो उन्हें भी श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती ही कहा जाने लगा।

जिनके टेढ़े प्रश्न पर उपदेशक क्लास का आन्दोलन आरम्भ हुआ वह तो विद्याध्ययन के लिए अलग जा बैठे और सारा बखेड़ा मेरे गले पड़ गया। उन दिनों श्री पण्डित गुरुदत्त जी लाहौर की सामाजिक व्यवस्था से अप्रसन्न थे। एक ओर तो उनकी यह शिकायत थी कि दयानन्द कालिज के बोर्डिंगहाउस में मांस के 'बावरची खाने' हैं और दूसरी ओर राय मूलराज से वेदों और वेद कर्त्ता परमात्मा तक को जवाब देने वाले आर्यसमाज के अगुआ बने हुए हैं। उन दिनों राय नारायणदास एम. ए., बहादुर (जो अब सारे झगड़ों की जड़ पण्डित गुरुदत्त जी को बतलाते हैं) पण्डित गुरुदत्त के अनन्य भक्त थे। उन्हीं की चेष्टा पर भक्त ईश्वर दास एम० ए. के स्थान में एक सम्मेलन हुआ जिसमें पंडित गुरुदत्त जी ने स्पष्ट शब्दों में उपरोक्त विषयों पर अपनी सम्मति प्रकट की। विस्तार पूर्वक उस सम्मेलन का वर्णन उचित स्थान पर होगा; यहाँ यह जतलाने से तात्पर्य है कि पं० गुरुदत्त से राय मूलराज के सब अनुयायी उपरोक्त कारण से रुष्ट हो चुके थ। इसीलिए जब उपदेशक क्लास के आन्दोलन को दयानन्द

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कालिज के अधिकारियों ने टाला, और मैंने अपनी स्वतन्त्र सम्मति से प्रचारक में लिख दिया कि जब तक दयानन्द कालिज कमेटी उदेशक क्लास को अपने आधीन खोलना स्वीकार न करे तब तक उक्त कार्य्य के लिए धन श्री पंडित गुरुदत्त के नाम पर भेजा जाया करे, तब राय मूल राज और उनके अनुयायी गुरुदत्त के पीछे हाथ धोकर पड़ गए। कभी गुरुडम की बुनियाद डालने का दोष उन पर लगाया, कभी कालिज की "प्रिन्सिपलशिप" का अभिलाषी उन्हें बतलाया। जितने मुँह उतनी ही नई नई बातें पं० गुरुदत्त के सम्बन्ध में घड़ी गईं।

पण्डित गुरुदत्त तो अपनी प्रकृति के अनुसार इन सर्वलांछनों का उत्तर मौन साधकर देते थे, किन्तु मुझे उचित उत्तर देने के लिये बाधित होना पड़ा। तीन वर्षों तक यह झगड़ा खूब चला, जिसका वृत्तान्त प्रचारक के १, २, ३ भागों में बड़ा ही शिक्षा प्रद है। आर्य्य समाज में घरू युद्ध का यह झगड़ा प्रस्ताव मात्र था और इसलिये जब कभी आर्य समाज का इतिहास लिखा जाय उस समय प्रचारक के प्रथम तीनों वर्षों के फाइल उसइतिहासकी पूर्ति में बड़ी सहायतादेंगे।

यहाँ पर स्वामी रामानन्द जी के विषय में इतना ही लिखकर समाप्त करता हूं कि उपदेशक क्लास के लिए बहुत साधन एकत्र करा तथा पर्याप्त मासिक लिखाने के पश्चात् उक्त स्वामी जी बीमार होगए थे। उनकी अवस्था ऐसी बिगड़ गई थी कि सिविल सर्जन ने भी रोग असाध्य कह कर इलाज छोड़ दिया। तब मेरे मित्र राजकुमार जन्मेजयके पुराने हकीम शेर अली के इलाज से स्वामी जी उठ बैठे। इसी इलाज के कारण मैंने पूर्ण श्रद्धा से हकीम शेर अली को भी पण्डित गुरुदत्त जी के इलाज के लिए भेजा था जिसका आश्चर्य मय वर्णन आगे आवेगा। स्वामी रामानन्द जी बीमारी की खटिया से उठकर जो सम्वत १९४६ के अन्त में गए तो फिर मुझे उनके दर्शन न हुए। (मुन्शीराम)

जर्मनी तथा अमरीका की परीक्षा प्रणाली

जो लोग इंग्लैंड की शिक्षा प्रणाली के पुत्र हैं, या उसके दास हैं, वे गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली को देखकर प्रायः नाक भौं चढ़ाया करते हैं। विशेषतया जब वे गुरुकुल में देखते हैं कि यहां विद्यार्थियों को जो प्रोफेसर पढ़ाते हैं, वे ही उनकी परीक्षा लेते हैं और महाविद्यालय के चार सालों में से रगड़ने वाली परीक्षाओं के स्थान में आठ सत्र परीक्षायें करदी गई हैं तब तो उनके मुख से यही शब्द निकलता है कि यह तो नई सभ्यता से विद्रोह है। भला कहीं पढ़ाने वाले भी परीक्षक हुए हैं। जिस परीक्षा ने परीक्षा देने वाले को अस्थिपञ्जर न बना दिया, क्षय रोग या हृदयरोग न कर दिया, या आंखें न छीन लीं परीक्षा ही कैसी? वह तो खेलतमाशा हुआ। उन लोगों के ज्ञानार्थ यह बता देना अनावश्यक न होगा कि अमरीका और जर्मनी की बड़ी बड़ी यूनिवर्सिटियां उस रीति से परीक्षा नहीं लेतीं, जिससे इंग्लैंड की यूनिवर्सिटियां लेती हैं। भारतवर्ष तो किसी गिनती में नहीं। योरप के एक अच्छे विश्वविद्यालय में जिन रीतियों को सड़ी हुई समझकर निकाल दिया जाय, वे सब इकट्ठी करके यहां लाई जाती हैं। काली देवी के सामने बलिहोता हुआ बकरा उतना भय नहीं करता, जितना कि परीक्षा भवन में जाता हुआ भारतवर्ष का एक विद्यार्थी। कारण यही है कि यहां की परीक्षायें भयानक बनादी गई हैं।

परीक्षा लेने वाले सज्जन नहीं जानते कि वे जिन विद्यार्थियों की परीक्षा ले रहे हैं, उन्हें शिक्षणालय में क्या क्या सिखाया गया है। जब वे परीक्षा पत्र बनाने बैठते हैं तो सरस्वती उनकी लेखनी पर आ विराजती है। प्रायः उस समय उन्हें यह विचार नहीं होता कि उनके सामने परीक्षा पत्रों का उत्तर देने के लिये बेचारे उम्मेदवार विद्यार्थी बैठे हैं, जिनमें से कइयों ने, अपनी सेहत को परीक्षा पर वार दिया है। बल्कि सामने वह पंडित मण्डली आती है जो उनके पत्रों को देखकर सिर हिलायगी और उनके पांडित्य की प्रशंसा करेगी। परीक्षा पत्र ऐसे कठिन बनाये जाते हैं, कि बेचारे विद्यार्थी कठिनतासे उत्तीर्ण हो सकते हैं। जो परीक्षक कम उम्मेदवारों को पास करे, वे विश्वविद्यालय के बड़े प्रिय हो जाते हैं,। फिर पत्र देखने वाले सज्जन तीसरे होते हैं, और उन्हें न विद्यार्थियों का पता, और न परीक्षा पत्र बनाने वालों का। ऐसी परीक्षाओं से यदि विद्यार्थियों के दम खुश्क हों तो इस में आश्चर्य क्या है?

जर्मनी और अमेरिका की परीक्षा का फल विद्यार्थियों को भयभीत करना नहीं, प्रत्युत उत्साहित करना समझा जाता है। विद्यार्थियों की हर एक विषय में साप्ताहिक परीक्षा होती हैं— तीन या चार महीने के सत्र में जितनी साप्ताहिक या कहीं २ दैनिक परीक्षाएं हुई हों, उनके अंक जोड़ लिये जाते हैं। बस, वही उस सत्र की परीक्षा समझी जाती है। ऐसी सत्र परीक्षाओं की निश्चित गणना पास कर लेने पर विद्यार्थी ग्रेजुवेट कर दिया जाता है। यहां परीक्षक वही होते हैं जो पढ़ाने वाले हैं। जो लोग विद्यार्थी को जानते हैं, जो उसे पढ़ाते और अभ्यास कराते हैं, वे ही यह भी कह सकते हैं कि विद्यार्थी स्नातक बनने के योग्य हुआ वा नहीं। कैसे सहल रीति है। साल भर काम भी निरंतर होता है, और परीक्षा भी डरावनी नहीं होती।

अमेरिका में केवल साप्ताहिक या दैनिक परीक्षाओं पर भी विद्यार्थी को पास या फेल कर दिया जाता है। इस रीति में एक दोष भी है। वह यह है कि विद्यार्थियों को सब विषयों की खण्ड खण्ड परीक्षा ही देनी पड़ती है। कोई विषय पूरा उपस्थित हो जाय, इसके लिये कोई साधन नहीं किया इससे अमरीका के ग्रेजुएट बहुत गम्भीर ज्ञान वाले नहीं समझे जाते। पूरा विषय सामने उपस्थित हुए बिना ज्ञान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का गहरापन नहीं रहता। अतः इस दोष का निवारण करने के लिये आवश्यक है। कि इतने समय के अन्तरों पर भी परीक्षा ली जाय, जिससे विषय का सम्पूर्ण ज्ञान उपस्थित हो सके। यह आवश्यक नहीं कि चारों या दो सालों की पढ़ाई की एक समय ही परीक्षा ली जायगी, क्योंकि यह तभी हो सकता है यदि हम विद्यार्थियों के दिमाग़ और शरीर को फौलाद का बना हुआ मान लें। इसलिये यह समय इतना होना चाहिये, जिसमें कोई विषय भी सामने आसके और बहुत लम्बा भी न हो।

इसी विचार से गुरुकुल में दोनों रीतियों को मिला दिया गया है। परीक्षा की आवश्यकता कम हो जाय, और विद्यार्थी साल भर काम करते जांय, इसके लिये हर एक विषय के प्रोफेसर को अधिकार दिया गया है कि वह अपने विषय की उप समिति की सलाह से घर के काम के जितने अंक चाहें रख सकता है, वे सब की परीक्षा में जोड़ लिये जायंगे। विषय के पूरे ज्ञान के लिये एक सब के पीछे परीक्षा रखी गई है। इस प्रकार महाविद्यालय के चार वर्ष आठ भागों में बाँट दिये जाते हैं। चार सालों में ही परीक्षायें होती हैं। उनसे विद्यार्थियों का भार बहुत ही बंट जाता है, परीक्षायें लेने वाले उपाध्याय ही हैं।

जो लोग पश्चिमपाताल की मुहर देखकर ही किसी रीति को प्रामाणिक या असली समझते हैं, वे ऊपर के लेख से समझ गये होंगे कि गुरुकुल में चली प्रथा सभ्य संसार के विरुद्ध नहीं है। और जो लोग प्राचीन आर्य्य सभ्यता के पक्षपाती हैं. उनसे कुछ कहना निष्प्रयोजन होगा क्योंकि वे स्वयं ही जानते हैं कि प्राचीन ऋषियों के आश्रमों में छात्रों का परीक्षा लेने दूसरे आश्रमों से विद्वान् नहीं आते थे, बल्कि कुलपति ही उसे योग्य समझकर स्नातक बना देता था। यह उसी का अधिकार था।

प्राप्त

गुरुकुलों द्वारा आर्य्य पब्लिका (जनता) के धन का अपव्यय

इस थोड़ी सी आर्य्य जनता द्वारा १६ गुरुकुल विख्यात स्थापित हुये देखकर हर्ष तथा खेद दोनों ही होते हैं। चूंकि इन उपर्युक्त विद्यालयों द्वारा देश और जाति का कल्याण होने की सम्भावना की जाती है, और यह निश्चित विषय भी है कि विद्योपार्जन तथा ब्रह्मचर्य्य आदि की रक्षा के निमित्त संसार में गुरुकुल से अधिक उपयोगी संस्था कदापि नहीं हो सकती। और ऐसी ही संस्थाओं द्वारा ब्रह्मचर्य्य की रक्षा करते हुए विद्योपार्जन कर, देश में अनेक आदर्श ऋषि व महात्मा हो चुके हैं, जिनके द्वारा देश व जाती का कल्याण हुवा। केवल इतना ही नहीं वरन संसार भर के छिलकर वैदिक मर्य्यादा को स्थिर करने वाले ऋषि और महात्माओं ने ऐसे ही गुरुकुलों में विद्या प्राप्त की थी! वैदिक मेगज़ीन, तथा प्रचारक आदि सदाचार पत्रों के पाठकों कोभली भांति विदित होगा कि गुरुकुल प्रणाली द्वारा शिक्षा की उपयोगिता को अनेक विदेशी पाश्चात्य विद्वान मुक्त कंठ से स्वीकार कर चुके हैं, अतः ऐसे उपयोगी विद्यालय का होना ही हमारे हर्ष का कारण है।

परन्तु जब हम आवश्यक्ता से अधिक गुरुकुल विद्यालयों की स्थापन करने में आर्य्य जनता के धन का अपव्यय होता देखते हैं। जैसा कि कतिपय विद्यालयों में न तो काफी तादाद पढ़ने वाले ब्रह्मचारियों की हो है, न उनमें पढ़ानेयोग्य अध्यापक ही हैं, न किसी संस्था विशेष के आधीन होने से उन विद्यालयों का प्रबन्ध और आर्थिक दशा ही सन्तोष दायक है अतः वे लाभ दायक होने के स्थान में उल्टे हानि कारक प्रतीत होते हैं। तो चित्त को बड़ा ही खेद होता है और यह मसल याद आती है कि उतने पैर पसारिये जेती लाम्बी सौर!

अतएव सर्व आर्य्य भ्राताओं के प्रति और विशेष कर आर्य्य लीडरान, तथा सभासदान श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं की सेवा में बड़ी नम्रता तथा विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि यदि मुझ सेवक के प्रस्ताव आर्य्य समाज के लिये हितकारी तथा उपयोगी समझे जावें तो अवश्य ही श्री मती आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं के आगामी अधिवेशनों पर निम्न लिखित प्रस्ताव विचारार्थ रक्खे जावें और मुझे पूर्ण आशा है कि मेरी प्रार्थना आर्य्य संसार में मरुभूमि में बीज बोने के समान निष्फल न होगी।

प्रस्ताव

(१) इस समय प्रत्येक प्रान्त की श्री मती आर्य्य प्रतिनिधि सभा के आधीन उस प्रान्त के निवासी ब्रह्मचारियों के लिये एक २ गुरुकुल विद्यालय (कि जिसमें केवल १० श्रेणी High School Classes तक होवें) होना चाहिये।

(२) प्रत्येक प्रान्त में अधिक आवश्यकता होने पर "शाखा गुरुकुल" नियत कर दिये जावें!

(३) कोई गुरुकुल विद्यालय श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा से अलग न होना चाहिये, और जो गुरुकुल इस समय अलग हैं वे सब उसी प्रान्त के गुरुकुल में मिला लेने चाहिये (अर्थात उनके अध्यापक, ब्रह्मचारी, कोष व सर्व प्रकार का सामान आदि जो उसके सम्बन्ध में हो उसी प्रान्त के गुरुकुल में ले लेने चाहिये चूंकि ऐसा करने से जो धन स्थान २ में गुरुकुल के निमित्त इमारत बनाने में अध्यापक व अन्य सेवकों की वेतनादि में व्यय होता है बच जावेगा, और प्रत्येक विद्यालय की आर्थिक दशा थोड़े ही समय में सन्तोष जनक हो जावेगी, उस के अतिरिक्त कोष न रहने पर श्री मती आर्य्य प्रतिनिधि सभा के आधीन होने से समय पड़ने पर सभा अपने कोष में से सहायता कर सकेगी।

(४) चूंकि इस समय थोड़ी सी आर्य्य पब्लिक की ही सहायता से अनेक उपयोगी कार्य्य चलाये जा रहे हैं, और उन सब कार्य्यों की आर्थिक दशा भी संतोषजनक नहीं हो पाई है! अतः आर्य्य पब्लिक का धन प्रत्येक प्रान्त में गुरुकुल विद्यालय के सम्बन्ध में महाविद्यालय कक्षा यानी College Classes के लिये इमारत आदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कालिज के अधिकारियों ने टाला, और मैंने अपनी स्वतन्त्र सम्मति से प्रचारक में लिख दिया कि जब तक दयानन्द कालिज कमेटी उदेशक क्लास को अपने आधीन खोलना स्वीकार न करे तब तक उक्त कार्य्य के लिए धन श्री पंडित गुरुदत्त के नाम पर भेजा जाया करे, तब राय मूल राज और उनके अनुयायी गुरुदत्त के पीछे हाथ धोकर पड़ गए। कभी गुरुडम की बुनियाद डालने का दोष उन पर लगाया, कभी कालिज की "प्रिन्सिपलशिप" का अभिलाषी उन्हें बतलाया। जितने मुँह उतनी ही नई नई बातें पं० गुरुदत्त के सम्बन्ध में घड़ी गईं।

पण्डित गुरुदत्त तो अपनी प्रकृति के अनुसार इन सर्वलांछनों का उत्तर मौन साधकर देते थे, किन्तु मुझे उचित उत्तर देने के लिये बाधित होना पड़ा। तीन वर्षों तक यह झगड़ा खूब चला, जिसका वृत्तान्त प्रचारक के १, २, ३ भागों में बड़ा ही शिक्षा प्रद है। आर्य्य समाज में घरू युद्ध का यह झगड़ा प्रस्ताव मात्र था और इसलिये जब कभी आर्य समाज का इतिहास लिखा जाय उस समय प्रचारक के प्रथम तीनों वर्षों के फाइल उसइतिहासकी पूर्ति में बड़ी सहायतादेंगे।

यहां पर स्वामी रामानन्द जी के विषय में इतना ही लिखकर समाप्त करता हूं कि उपदेशक क्लास के लिए बहुत साधन एकत्र करा तथा पर्याप्त मासिक लिखाने के पश्चात् उक्त स्वामी जी बीमार होगए थे। उनकी अवस्था ऐसी बिगड़ गई थी कि सिविल सर्जन ने भी रोग असाध्य कह कर इलाज छोड़ दिया। तब मेरे मित्र राजकुमार जन्मेजयके पुराने हकीम शेर अली के इलाज से स्वामी जी उठ बैठे। इसी इलाज के कारण मैंने पूर्ण श्रद्धा से हकीम शेर अली को भी पण्डित गुरुदत्त जी के इलाज के लिए भेजा था जिसका आश्चर्य मय वर्णन आगे आवेगा। स्वामी रामानन्द जी बीमारी की खटिया से उठकर जो सम्वत १९४६ के अन्त में गए तो फिर मुझे उनके दर्शन न हुए। (मुन्शीराम)

जर्मनी तथा अमरीका की परीक्षा प्रणाली

जो लोग इंग्लैंड की शिक्षा प्रणाली के पुत्र हैं, या उसके दास हैं, वे गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली को देखकर प्रायः नाक भौं चढ़ाया करते हैं। विशेषतया जब वे गुरुकुल में देखते हैं कि यहां विद्यार्थियों को जो प्रोफेसर पढ़ाते हैं, वे ही उनकी परीक्षा लेते हैं और महाविद्यालय के चार सालों में से रगड़ने वाली परीक्षाओं के स्थान में आठ सत्र परीक्षायें करदी गई हैं तब तो उनके मुख से यही शब्द निकलता है कि यह तो नई सभ्यता से विद्रोह है। भला कहीं पढ़ाने वाले भी परीक्षक हुए हैं। जिस परीक्षा ने परीक्षा देने वाले को अस्थिपञ्जर न बना दिया, क्षय रोग या हृदयरोग न कर दिया, या आंखें न छीन लीं परीक्षा ही कैसी? वह तो खेलतमाशा हुआ। उन लोगों के ज्ञानार्थ यह बता देना अनावश्यक न होगा कि अमरीका और जर्मनी की बड़ी बड़ी यूनिवर्सिटियां उस रीति से परीक्षा नहीं लेतीं, जिससे इंग्लैंड की यूनिवर्सिटियां लेती हैं। भारतवर्ष तो किसी गिनती में नहीं। योरप के एक अच्छे विश्वविद्यालय में जिन रीतियों को सड़ी हुई समझकर निकाल दिया जाय, वे सब इकट्ठी करके यहां लाई जाती हैं। काली देवी के सामने बलिहोता हुआ बकरा उतना भय नहीं करता, जितना कि परीक्षा भवन में जाता हुआ भारतवर्ष का एक विद्यार्थी। कारण यही है कि यहां की परीक्षायें भयानक बनादी गई हैं।

परीक्षा लेने वाले सज्जन नहीं जानते कि वे जिन विद्यार्थियों की परीक्षा ले रहे हैं, उन्हें शिक्षणालय में क्या क्या सिखाया गया है। जब वे परीक्षा पत्र बनाने बैठते हैं तो सरस्वती उनकी लेखनी पर आ विराजती है। प्रायः उस समय उन्हें यह विचार नहीं होता कि उन के सामने परीक्षा पत्रों का उत्तर देने के लिये बेचारे उम्मेदवार विद्यार्थी बैठे हैं, जिनमें से कइयों ने, अपनी सेहत को परीक्षा पर वार दिया है। बल्कि सामने वह पंडित मण्डली आती है जो उनके पत्रों को देखकर सिर हिलायगी और उनके पांडित्य की प्रशंसा करेगी। परीक्षा पत्र ऐसे कठिन बनाये जाते हैं, कि बेचारे विद्यार्थी कठिनतासे उत्तीर्ण हो सकते हैं। जो परीक्षक कम उम्मेदवारों को पास करे, वे विश्वविद्यालय के बड़े प्रिय हो जाते हैं,। फिर पत्र देखने वाले सज्जन तीसरे होते हैं, और उन्हें न विद्यार्थियों का पता, और न परीक्षा पत्र बनाने वालों का। ऐसी परीक्षाओं से यदि विद्यार्थियों के दम खुश्क हों तो इस में आश्चर्य क्या है?

जर्मनी और अमेरिका की परीक्षा का फल विद्यार्थियों को भयभीत करना नहीं, प्रत्युत उत्साहित करना समझा जाता है। विद्यार्थियों की हर एक विषय में साप्ताहिक परीक्षा होती हैं— तीन या चार महीने के सत्र में जितनी साप्ताहिक या कहीं २ दैनिक परीक्षाएं हुई हों, उनके अंक जोड़ लिये जाते हैं। बस, वही उस सत्र की परीक्षा समझी जाती है। ऐसी सत्र परीक्षाओं की निश्चित गणना पास कर लेने पर विद्यार्थी ग्रेजुवेट कर दिया जाता है। यहां परीक्षक वही होते हैं जो पढ़ाने वाले हैं। जो लोग विद्यार्थी को जानते हैं, जो उसे पढ़ाते और अभ्यास कराते हैं, वे ही यह भी कह सकते हैं कि विद्यार्थी स्नातक बनने के योग्य हुआ वा नहीं। कैसे सहल रीति है। साल भर काम भी निरंतर होता है, और परीक्षा भी डरावनी नहीं होती।

अमेरिका में केवल साप्ताहिक या दैनिक परीक्षाओं पर भी विद्यार्थी को पास या फेल कर दिया जाता है। इस रीति में एक दोष भी है। वह यह है कि विद्यार्थियों को सब विषयों की खण्ड खण्ड परीक्षा ही देनी पड़ती है। कोई विषय पूरा उपस्थित हो जाय, इसके लिये कोई साधन नहीं किया इससे अमरीका के ग्रेजुएट बहुत गम्भीर ज्ञान वाले नहीं समझे जाते। पूरा विषय सामने उपस्थित हुए बिना ज्ञान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का गहरापन नहीं रहता। अतः इस दोष का निवारण करने के लिये आवश्यक है। कि इतने समय के अन्तरों पर भी परीक्षा ली जाय, जिससे विषय का सम्पूर्ण ज्ञान उपस्थित हो सके। यह आवश्यक नहीं कि चारों या दो सालों की पढ़ाई की एक समय ही परीक्षा ली जायगी, क्योंकि यह तभी हो सकता है यदि हम विद्यार्थियों के दिमाग़ और शरीर को फौलाद का बना हुआ मान लें। इसलिये यह समय इतना होना चाहिये, जिसमें कोई विषय भी सामने आसके और बहुत लम्बा भी न हो।

इसी विचार से गुरुकुल में दोनों रीतियों को मिला दिया गया है। परीक्षा की आवश्यकता कम हो जाय, और विद्यार्थी साल भर काम करते जांय, इसके लिये हर एक विषय के प्रोफेसर को अधिकार दिया गया है कि वह अपने विषय की उप समिति की सलाह से घर के काम के जितने अंक चाहें रख सकता है, वे अंक की परीक्षा में जोड़ लिये जायंगे। विषय के पूरे ज्ञान के लिये एक सत्र के पीछे परीक्षा रखी गई है। इस प्रकार महाविद्यालय के चार वर्ष आठ भागों में बाँट दिये जाते हैं। चार सालों में ही परीक्षायें होती हैं। उनसे विद्यार्थियों का भार बहुत ही बंट जाता है, परीक्षायें लेने वाले उपाध्याय ही हैं।

जो लोग पश्चिमपाताल की मुहर देखकर ही किसी रीति को प्रामाणिक या असली समझते हैं, वे ऊपर के लेख से समझ गये होंगे कि गुरुकुल में चली प्रथा सभ्य संसार के विरुद्ध नहीं है। और जो लोग प्राचीन आर्य्य सभ्यता के पक्षपाती हैं, उनसे कुछ कहना निष्प्रयोजन होगा क्योंकि वे स्वयं ही जानते हैं कि प्राचीन ऋषियों के आश्रमों में छात्रों का परीक्षा लेने दूसरे आश्रमों से विद्वान् नहीं आते थे, बल्कि कुलपति ही उसे योग्य समझकर स्नातक बना देता था। यह उसी का अधिकार था।

प्राप्त

गुरुकुलों द्वारा आर्य्य पब्लिका (जनता) के धन का अपव्यय

इस थोड़ी सी आर्य्य जनता द्वारा १६ गुरुकुल विख्यात स्थापित हुये देखकर हर्ष तथा खेद दोनों ही होते हैं। चूंकि इन उपर्युक्त विद्यालयों द्वारा देश और जाति का कल्याण होने की सम्भावना की जाती है, और यह निश्चित विषय भी है कि विद्योपार्जन तथा ब्रह्मचर्य्य आदि की रक्षा के निमित्त संसार में गुरुकुल से अधिक उपयोगी संस्था कदापि नहीं हो सकती। और ऐसी ही संस्थाओं द्वारा ब्रह्मचर्य्य की रक्षा करते हुए विद्योपार्जन कर, देश में अनेक आदर्श ऋषि व महात्मा हो चुके हैं, जिनके द्वारा देश व जाती का कल्याण हुवा। केवल इतना ही नहीं वरन संसार भर के हितकर वैदिक मर्य्यादा को स्थिर करने वाले ऋषि और महात्माओं ने ऐसे ही गुरुकुलों में विद्या प्राप्त की थी। वेदिक मेगज़ीन, तथा प्रचारक आदि समाचार पत्रों के पाठकों कोभली भांति विदित होगा कि गुरुकुल प्रणाली द्वारा शिक्षा की उपयोगिता को अनेक विदेशी पाश्चात्य विद्वान मुक्त कंठ से स्वीकार कर चुके हैं, अतः ऐसे उपयोगी विद्यालय का होना ही हमारे हर्ष का कारण है।

परन्तु जब हम आवश्यक्ता से अधिक गुरुकुल विद्यालयों की स्थापन करने में आर्य्य जनता के धन का अपव्यय होता देखते हैं। जैसा कि कतिपय विद्यालयों में न तो काफी तादाद पढ़ने वाले ब्रह्मचारियों की ही है, न उनमें पढ़ाने योग्य अध्यापक ही हैं, न किसी संस्था विशेष के आधीन होने से उन विद्यालयों का प्रबन्ध और आर्थिक दशा ही सन्तोष दायक है अतः वे लाभ दायक होने के स्थान में उल्टे हानि कारक प्रतीत होते हैं। तो चित्त को बड़ा ही खेद होता है और यह मसल याद आती है कि उतने पैर पसारिये जेती लाम्बी सौर!

अतएव सर्व आर्य्य भ्राताओं के प्रति और विशेष कर आर्य्य लीडरान, तथा सभासदान श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं की सेवा में बड़ी नम्रता तथा विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि यदि मुझ सेवक के प्रस्ताव आर्य्य समाज के लिये हितकारी तथा उपयोगी समझे जावें तो अवश्य ही श्री मती आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं के आगामी अधिवेशनों पर निम्न लिखित प्रस्ताव विचारार्थ रक्खे जावें और मुझे पूर्ण आशा है कि मेरी प्रार्थना आर्य्य संसार में मरुभूमि में बीज बोने के समान निष्फल न होगी।

प्रस्ताव

(१) इस समय प्रत्येक प्रान्त की श्री मती आर्य्य प्रतिनिधि सभा के आधीन उस प्रान्त के निवासी ब्रह्मचारियों के लिये एक २ गुरुकुल विद्यालय (कि जिसमें केवल १० श्रेणी High School Classes तक होवें) होना चाहिये।

(२) प्रत्येक प्रान्त में अधिक आवश्यकता होने पर "शाखा गुरुकुल" नियत कर दिये जावें।

(३) कोई गुरुकुल विद्यालय श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा से अलग न होना चाहिये, और जो गुरुकुल इस समय अलग हैं वे सब उसी प्रान्त के गुरुकुल में मिला लेने चाहिये (अर्थात उनके अध्यापक, ब्रह्मचारी, कोष व सर्व प्रकार का सामान आदि जो उसके सम्बन्ध में हो उसी प्रान्त के गुरुकुल में ले लेने चाहिये चूंकि ऐसा करने से जो धन स्थान २ में गुरुकुल के निमित्त इमारत बनाने में अध्यापक व अन्य सेवकों की वेतनादि में व्यय होता है बच जावेगा, और प्रत्येक विद्यालय की आर्थिक दशा थोड़े ही समय में सन्तोष जनक हो जावेगी, उस के अतिरिक्त कोष न रहने पर श्री मती आर्य्य प्रतिनिधि सभा के आधीन होने से समय पड़ने पर सभा अपने कोष में से सहायता कर सकेगी।

(४) चूंकि इस समय थोड़ी सी आर्य्य पब्लिक की ही सहायता से अनेक उपयोगी कार्य्य चलाये जा रहे हैं, और उन सब कार्य्यों की आर्थिक दशा भी संतोषजनक नहीं हो पाई है! अतः आर्य्य पब्लिक का धन प्रत्येक प्रान्त में गुरुकुल विद्यालय के सम्बन्ध में महाविद्यालय कक्षा यानी College Classes के लिये इमारत आदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न बनाकर महाविद्यालय कांगड़ी ही में रहना चाहिये, जहां सब प्रान्तों के ब्रह्मचारी अपने प्रान्त के गुरुकुलों में पढ़ने के पश्चात् महाविद्यालय कक्षा यानी College Classes की पढ़ाई के निमित्त कांगड़ी भेज दिये जाया करें और जहां कि उपर्युक्त कार्य्य के लिये सन्तोष जनक इमारत व सामान मौजूद भी हैं। ऐसा करने से निम्न लिखित लाभ होंगे।

लाभ

(अ) प्रत्येक गुरुकुल के निमित्त पर्य्याप्त स्थान तथा इमारत आदि में न्यून सोठ सत्तर सहस्र मुद्रा का वृथा व्यय होता है वह बच सकेगा।

(ब) प्रत्येक गुरुकुल के निमित्त अध्यापक तथा सेवकों के वेतनादि में भी न्यून न्यून ३००) मासिक व्यय होता है वह बच सकेगा।

(स) प्रत्येक गुरुकुल अपने २ उत्सव पृथक २ मनाता है उस समय आर्य्य दर्शकों के मार्ग व्यय यथा गुरुकुल विद्यालय के विशेष प्रबन्ध आदि में न्यून से न्यून १०००) रुपये वार्षिक व्यय हो जाता है वह बच सकेगा।

(द) प्रत्येक गुरुकुल विद्यालय के प्रबन्ध तथा धनादि इकट्ठा करने के लिये जो डैप्यूटेशन घूमते हैं, उनके भी मार्ग व्यय आदि में अनुमान से २००) रुपये वार्षिक व्यय होते ही होंगे। और साथ ही जिन महानुभावों ने अपने बहुमूल्य शरीर तथा समय को धर्मार्थ अर्पण किया है उनसे यथोचित कार्य्य न लेकर उनकी महान शक्तियों का दुरुपयोग किया जाता है वह बच सकेगा और जो अनेक आर्य्य संस्थाओं के कार्य्यार्थ योग्य आर्य्य पुरुषों की आवश्यकता रहती है वह भी पूर्ण हो जावेगी।

(च) प्रत्येक प्रान्त में महाविद्यालय श्रेणी यानी College Classes के निमित्त इमारत बनाने में जो धन लगाना पड़ेगा और जो अनुमान से ५००००) में तैय्यार हो सकेगी वह बच सकेगा।

(छ) प्रत्येक प्रान्त में महाविद्यालय क्लास यानी College Classes के विद्यार्थियों के निमित्त विज्ञान विद्या सम्बन्धी शास्त्र (Lavorotary) रखना आवश्यक है जिसकी क़ीमत अनुमान से २००००) रुपये होती है वह धन भी बच सकेगा।

(ज) प्रत्येक प्रान्त में महाविद्यालय क्लास College Class के विद्यार्थियों की शिक्षा के निमित्त अधिक वेतन वाले अध्यापक व प्रोफैसर रखने पड़ेंगे जिस का व्यय भी न्यून से न्यून ४००) रुपये मासिक होगा वह भी बच सकेगा

(झ) प्रत्येक प्रान्त के ब्रह्मचारी जो अपने प्रान्तिक गुरुकुल विद्यालय में पढ़ने के पश्चात महाविद्यालय कांगड़ी में पढ़ने आया करेंगे वह प्रत्येक प्रान्त के ब्रह्मचारियों से मिलकर प्रत्येक प्रान्त की भाषा तथा व्यवहारादि सीखने में भी समर्थ होंगे।

अतः प्रार्थी हूं कि उपरोक्त लाभों पर विचार कर काँगड़ी, वृन्दावन, हुंशंगावाद, देवलाली, ज्वालापुर, सिकदरावाद, वदायूं पोठहार, कुरुक्षेत्र, जोधपुर, छावनीमहू चोहाभुक्तान, सकौट, रोड़ तथा विरालसी आदि गुरुकुलों के स्थानों में केवल युक्त प्रान्त का वृन्दावन, पंजाब का कुरुक्षेत्र बंबई का देवलाली, मध्य प्रदेश का हुंशगाबाद रक्खे जावें और इन सब के लिये महाविद्यालय कक्षा College Classes केवल काँगड़ी में रहें, जिसके व्यय की पूर्त्ति सब प्रान्तों की आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं के कोष से जो उन के यहां गुरुकुल सम्बन्धी हो की जावे अथवा सर्व प्रान्तों के आर्य्य पुरुषों से उसकी सहायतार्थ एक स्थिर कोष एकत्रित कर लिया जावे कि जिसकी सूद से उसके व्यय की पूर्ति हो सके! ऐसा करने से थोड़े ही समय में गुरुकुलों की आर्थिक दशा सन्तोष जनक होकर दृढ़ हो जावेगी और उस समय बिला कुछ धन दिये ही ब्रह्मचारी गण विद्या लाभ कर सकेंगे और ऋषि की आज्ञा पूर्ण हो जावेगी अन्यथा कदापि नहीं! इति

मानपाल गुप्त
स० मंत्री, आर्य्य समाज कासगंज

दक्षिण अफ्रीका में अन्त्यज और इन में धर्म प्रचारक।

—०—

इन दिनों नेटाल देश के मुख्य नगर दखन में श्री स्वामी मंगला नन्द पुरी जी. के आगमन के कारण वेद धर्म का डंका बज रहा है। हमारी जाति वालों से सब हिन्दू भाई घृणा करते हैं यद्यपि हम लोग ऐसा कोई खराब काम नहीं करते जो अन्यान्य ब्राह्मण आदि कहलाने वाले लोग न करते हों हम गुजराती लोग तो अहिंसा धर्म भी कुछ न कुछ पालते हैं परन्तु इस देश में बसने वाले मन्द्रासी और कलकतिया ब्राह्मण तक मांस खाते मदिरा पीते और अपने घरों में मुरग़ा पालते हैं इत्यादि।

हम ने उक्त स्वामी जी का एक व्याख्यान सुना तो इच्छा हुई कि उन का दर्शन करके कुछ उपदेश ग्रहण करें इस निमित्त हम लोगों ने एक ऊंचे जाति वाले महाशय गाँदा भाई से स्वामी जी के पास संदेसा भेजा कि हमारी जाति के लोग बड़ी घृणा रखते हैं सो हम आप का दरशन किस प्रकार कहां पर कर सक्तेहैं। इस का उत्तर हमें यह मिला कि तुम लोग बेशक बेखटके हमारे स्थान पर चले आओ और जिस बेंच पर अन्य सभी लोग बैठते हैं उसी पर तुम हमारे पास बैठ कर हम से मिल सक्ते हो हमारे धर्म में मनुष्य मात्र से समान प्रेम करना लिखा है"—निदान हम लोग दश बारह आदमी मिलकर स्वामी जी की सेवा में हाजिर हुये और हम ने उन से यही पूछा कि हम लोगों को शिवाला मन्दिर में नहीं घुसने देते तो हम कैसे परमेश्वर की भक्ति करें--इस प्रश्न के उत्तर में स्वामी जी महाराज ने हम सभों को बहुत ठीक बात समझाकर बतला दिया कि उन शिवाले आदि के पुजारीयों की भूल है और हमें वेद धर्म में दाखिल हो जाने को उपदेश किया कि वैदिक धर्मी बन कर मूर्ति पूजा ही को त्याग दो और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने हृदय रूपीमन्दिर के अन्दर विराज मान घर २ व्यापी पर ब्रह्म परमात्मा की ही पूजा बन्दना करो—

हम सब ने स्वामी जी की आज्ञा से अपनी मयावट सभा (Mayawat association) की ओर से गत रविवार ता० २ अगस्त १४ को विकटोरीया स्ट्रीट यूनियनबायो हाल मेंएक मीटिंग कराया था सो वहां प्रथम पं० रेवाशङ्कर जी ने स्वामी जी के कथनानुसार संस्कार विधि से होम किया फिर संध्या और आरती हुई पीछे हमारी सभा के प्रधान वीरा मेसुर ने सब सज्जनों का जो सौ से ऊपर थे आकर हमारे साथ शरीक होने के लिए धन्यवाद दिया पीछे मिस्टर सी० वी० पिल्ले, मिस्टर एम० वी० नामक तथा दूसरे कई सज्जनों ने हम लोगों के साथ अच्छा सलूक करने पर जोर देते हुये संक्षेप में भाषण किया पश्चात् हमारी सभा की ओर से श्री स्वामी जी को पुष्पमाला पहिनाया गया और मानपत्रिका (अड्रेस) जिसे छपवाकर लकड़ी के फ्रेम में आयना सहित तैयार कराया गया था भेंट किया गया।

पश्चात् स्वामी जी का व्याख्यान आरम्भ हुआ स्वामी जो ने हम लोगों से कहा कि:—

प्रथम हमइसी तुम्हारे मानपत्रिका के बारे में कुछ कहना चाहते हैं। यह रसम एक बार हो चुकी थी अब बार २ इसे करना कुछ दरकार नहीं है और अगर तुम को यह देना ही था तो केवल काग़ज़ मात्र दे देते, यह फ्रेम जो बनवाया है इस में पैसा नाहक खराब किया एक तो हम संन्यासी इसे साथ लिए २ कहां फिरेंगे दूसरे इस पर एक या डेढ़ पाउंड तुम ने खर्च कर डाला वह अगर भारतके दुर्भिक्ष पीड़ितों के अन्न निमित्त भेज देते तो हमें उस प्रकार के मान पत्र से अवश्य खुशी होती। क्या तुम लोगों को मालूम नहीं है कि यद्यपि यहाँ पर तुम्हारे लिये एक दो पउंड खर्च कर डालना सहज है पर तुम्हारे भारतीय भ्राता गण बड़ी ही मुसीबत के दिन काट रहे हैं वहां तीस क्रोड़ में से दश क्रोड़ बेचारे दो बार रूखी सूखी रोटी भी नहीं प्राप्त कर सक्के, कितने तो एक समय भी भर पेट नहीं खा पाते। खैर जो बीत गया उस को छोड़कर आगे के लिये ख्याल रक्खो कि ऐसे कामों में धन खराब मत किया करो।

इस के पश्चात् स्वामी जी महाराज ने विषय के ऊपर भाषण किया औरकहा कि जो ब्राह्मण आदि तुम्हें नहीं छूते न मन्दिर में जाने देते हैं न वेदादि का श्रवण करने का अधिकार देते हैं वे भारी भूल में हैं हम आर्य लोग ऐसा नहीं करते, तुम देख रहे हो कि अभी वेद मंत्रों से हवन किया गया है और संध्या तथा गायत्री भीखुले तौर पर पाठ की गई है—अब क्या परहेज रह गया, हम औरों की भाँति अपने वेदों को तुम से या किसी से भी छिपा कर नहीं रखते, यहां खुली परवानगी है जिस की मरज़ी हो वेदों को पढे और लाभ उठावे वेद भी ऐसा कहते हैं देखो लिखा है (यथेमां वाचँ०) फिर स्वामी जी ने कहा कि हम वेदों को परमात्मा से मिला हुआ ज्ञान मान्ते हैं सो परमात्मा की दी हुई अन्य वस्तुयें जैसे सब को एक समान हैं वैसे हीवेद पर भी सब का समान साफ़ा है जो पढ़े उसी का है जो नपढे उस का नहीं चाहे ब्राह्मण हो या शूद्र। देखो सूर्य के घाम में जो चाहे जा कर बैठ जाय और अपना शरीर तपा लेवे वह नहीं कहता कि मैं तो ब्राह्मण को ही गरमी पहुंचाऊँगा शूद्र को नहीं, फिर वर्षा सब के घरों में समान होती है कभी न सुना गया कि ब्राह्मण के घर में तो वर्षा हुई हो पर शूद्र के घर न हुई हो इसी प्रकार वेदों की धर्म शिक्षा रूपी अमृतवर्षा सब के घरों में समान हो रही है जिस की मरज़ी हो उस से अपनी धार्मिक प्यास बुझाता हुआ परम पिता परमात्मा का प्यारा पुत्र बन जावे।

हां देखो ये वेदमन्त्र और खास कर यह गायत्री जो अभी तुमने सुना है वह अन्त्यज तो दूर रहे ऊंचे जाति वालों को भी ये सनातनी ब्राह्मण लोग नहीं सुनने देते। वे सनातन धर्मी नहीं हैं सनातन याने प्राचीन (पुराने से पुराना) तो वेद हैं सो वेदों को मानने और उन पर अमल करने के कारण असली सनातन धर्मी तो हम आर्य लोग हैं तुम लोग आर्य बन जाव और वेदों के शरण में आजाव बस फिर सारा कल्याण ही कल्याण होगा।

हां यह बात सब पर प्रगट है कि ईसाई लोग तुम्हें अपने अन्दर मिलाने के लिये बड़े २ जाल बिछा रहे हैं और जब कोई तुम्हारे जाति वाला क्रस्चिन बन जाता है तो फिर इन ऊंची जाति बनने वाले हिन्दुओं की एक भी दाल नहीं गलती फिर तो उस नये जेन्टिलमैन से हाथ मिला कर उसे कुर्सी पर बिठाते ही बनता है परन्तु जो अछूत लोग इस प्रकार ईसाई बनते होंगे वे चाहे हिन्दू जात पांत के असह्य अत्याचार से बच जाते हों लेकिन सत्यसनातन वेद धर्म से दूर होने से भारी घाटा सहेंगे पर तुम हमारे साथी बन कर जहां एक ओर सामाजिक दुर्दशाओं से बच सक्के हो वहां धर्म की भी रक्षा होकर परमार्थ सुधरेगा। हाँ अगर ईसाई होने का यह लाभ मिलजावे जैसा वे ईसाई भाई शोर मचाते हैं कि बपतिस्मा लिया नहीं कि सारे पाप छूमन्तर सदृश दूर भागते ही बनेंगे तब तो अलबत्ता क्रस्चन बनजाना अच्छा है परन्तु यह उनकी बातें सरासर अकिल से बिरुद्ध है हमारे पास ऐसी झूठी लालच देकर किसी को फुसलाने का आडम्बर नहीं है यहां तो यह सिद्धान्त है कि—अपनी करनी पार उतरनी जैसा करो वैसा भरो—वेदों में तो कहा ही है पर तुलसी रामायण में भी जिसका इस देष में बहुत प्रचार है कहा गया है कि:—

जो जस करे सो तस फल चाखा,
कर्म प्रधान विश्व कर राखा—

सो भाइयों! हमारे वेद तो यही सिखाते हैं कि न ईसा तुम्हारे पाप की गठरी अपने ऊपर लाद सक्के हैं न मुहम्मद की सिफारिश वहां चल सक्ती हैं किन्तु वहां तो तुम को केवल तुम्हारे कर्म ही बचायेंगे। और वहां क्या, यहां इसी संसार में देखलो कर्म ही का मान है, यह जो आज कल ऊंच नीच जात

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बनगये और नीचों को ऊंचा बनने वाले घृणित मानते हैं सो यह अनर्थ भी तभी से हुआ जब से कर्म की प्रणाली को लोगों ने भुलादिया और जन्म को प्रधान मान लिया। सो हमारा वैदिक धर्म यह बतलाता है कि अगर ब्राह्मण का लड़का वेद पाठ इत्यादि अपने ब्राह्मणत्व के कर्तव्य कर्म न करै तो वह शूद्र तक बनजाता है मनु आदि में ऐसा ही निर्णय है और देखो पूर्व काल में ऐसा न था जैसा अनर्थ ये लोग आज कल कर रहे हैं।

स्वामी जी ने आगे चलकर बालमीक जी का चाण्डाल से ऋषि बनजाना, नारदजी का शूद्र से मुनि बनजाना और व्यासजी का मल्लाहिन के पुत्र हो कर १८ पुराणों के कर्त्ता माने जाना तथा उनका वेदान्त जैसा अपूर्व दर्शन रचते हुये ब्राह्मणों के शिर ताज बन जाने के दृष्टान्तों को भली प्रकार समझा कर हम लोगों की शंका निवारण किया समय बीत जाने से स्वामी जी ने और बातें न कह कर व्याख्यान समाप्त कर दिया।

इस प्रकार सभा होजाने पर हम लोगों का यह निश्चय होगया कि हम लोग वेद धर्म की शरण पकड़ें। हम बंम्बै समाज को इसी वक्त मनीआर्डर भेजते हैं कि हमें गुजराती भाषा में सत्यार्थप्रकाश तथा जो २ कुछ समाज की पुस्तकैं होवें सब थोड़ी २ भेज देवैं। हमारी जाति का नाम मेयावट है (यह उत्तर भारत के अछूत जातियों सदृश है) और यहां हमारी सभा Meyawat association में लगभग ४० मेम्बर हैं सो आशा है कि गुजराती पुस्तकैं समाज की पढ़ लेने पर सब भाई आर्य समाज में प्रविष्ट हो जायंगे इति।

निवेदक
आर्य भाइयों का सेवक
जे० वी० डीगासिया
आनरेरी सेक्रटरी मेयावट
असोसियेशन

——

भिवानी वैश्य सभा का उत्सव

तारीख २९–३०-- ३१ अगस्त को वैश्य सभा का चतुर्थ वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम से हुआ सभा का पिण्डाल लाला नन्द राम जी के कटरे में सजाया गया वह धजा पताका द्वारा वस्त्रालंकृत सुसज्जित हुआ दर्शनीय था जिस सुशोभित दृश्य को अवलोकन कर के प्रत्येक दर्शकों का चित्त प्रफुल्लित होता था स्थान २ पर नीति वाक्य और वेद मन्त्र लगाये हुवे थे अस्तु।

सभापति का आसन प्रथम दिन लाला नरसिंहदासजी वैद्य ने ग्रहण किया

दूसरे दिन

लाला केदारनाथजीडिस्ट्रिक्टजज—

और तृतीय रोज

रायसाहिब ताराचन्द जी रईस

इन तीनों सभापतियों के अध्यक्षता में पं० बालचन्द्र शास्त्री रामगढ़निवासी और पं० कृपाराम शास्त्री उपदेशक वैश्य महा सभा मेरठ पं० श्रीभानु जी पं० राम प्रसाद जी तथा बाबा भगवान्दास प्रधान गो सेवक भजनोपदेशक बाबा मंगल सेन आदि वक्ताओं ने सामाजिक सुधार और देशहित के विषयों का वर्णन कर के सर्व साधारण का चित्त आकर्षित किया जिन की सुललित सार गर्भित वाणीको श्रवणकरके श्रोता अपना प्रेम स्वयं दिखलाने लगे क्रम पूर्वक जन संख्याबढ़तीगई

प्रथम पं० कृपाराम जी ने प्रेम वृद्धि वर्णन करते हुए प्रेम संचार में लाभ दिखलाया तदनन्तर पं० बाल चन्द्र जी शास्त्री ने विद्या प्रचार करने के लिए ज़ोर के साथ कहा वैश्य विद्यालय भिवानी की उपयोगिता देखकर हम अत्यन्त हर्षित हुए हैं इस में वैश्य बालक अर्थात् महाजनी विद्या पढ़ने वालों के लिये अच्छा ढंग है सदाचार तथा राज भाषा भी—पढाई जाती है ला० नौरंग राय जीने कहा कि वैश्य विद्यालय के होने से देव नागरी का शहर में संतोष जनक प्रचार हो रहा है और बालकों के मुख द्वारा रामायण का पाठ सुन कर हृदय उमङ्ग आता है

लाला ताराचन्दजीसाहबने लड़कों के लिये लड्डू बांटे और लाला लक्ष्मी नारायण दुकानदार लाला गोवर्द्धन दास राम गोपाल दिल्ली वाले ने ३००) रुपये एक मुश्त विद्यालय को प्रदान किये जो सभा इस अमृतमयदान को स्वीकार कर आपका धन्यवाद करती है।

तत्पश्चात् ला० केदारनाथ जी जज ने कुरीतियों को दिखाते हुए कहा— हमारे भाई हानि कारक रिवाजों को जानकर भी नहीं छोड़ते यह हमारी बिरादरी समुदाय का ही दोष है जोकि संशोधनीय विषय पर ध्यान नहीं देते इस ओर इन को अवश्य ध्यान देना चाहिये क्या बाल विवाह प्रथा हानि कारक नहीं है? जिस कुप्रथा से देश में कितनी निर्बलता और रोगोत्पत्ति होगई है और बच्चों की मृत्यु संख्या प्रति वर्ष बढ़ती जारही है इसके अवरोध के लिये अधिक न कर सकें तो इतनी प्रतिज्ञा तो हमारे भाई अवश्य करें कि १३ वर्ष की लड़की और १६ वर्ष का लड़का जब तक न हो जाय तब तक शादी न करें इस से कम उम्र वाले की शादी करने से मनुष्य जीवन बिगड़ जाता है इन बालकों को हम दीर्घ जीवी होने की आशा नहीं कर सकते श्रीमान् माननीयराय केदारनाथ साहिब की आज्ञा स्वीकार करके—

ला० शिवरामदास जी वकील ला० रामचन्द्र जी बी० ए० ला० बलदेवदास जी खेम का ला० मेलाराम जी ला० सामलराम जी ला० कन्हैयालाल जी आदि ने प्रतिज्ञा की कि हम अपनी संतानों का विवाह ला० केदारनाथ साहिब के कथनानुसार करेंगे।

दूसरे दिन पं० बालचन्द्र शास्त्री ने गृहस्थाश्रम पर व्याख्यान दिया आपने अपनी वक्तृता में यह दिखाया कि यह घर सुख के अर्थ बनाया गया था अब वह दुखदायी क्यों है अब इसका कारण यही है सदाचार और विद्या का अभाव है।

फिर तीसरे दिन बाबा मंगलसेन के भजन हुए अपने भजनों में गो माता का दुःख रोकर श्रोताओं का दिल हिला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिया पश्चात् बाबा भगवानदास ने कहा कि "गो रक्षा कैसे हो सकती है,, इस विषय को अच्छी प्रकार दर्शाया और जो आजतक अन्य सज्जनों ने गौ रक्षा के उपाय सोचे हैं वह यह हैं:—

(१) गौशालाओं का स्थापन करना।

(२) दुष्टों के हाथ गौ न बेचना।

(३) प्रत्येक हिन्दू अपने २ घर में एक गौ अवश्य रक्खे।

(४) दुग्धवाली गो कम्पनी द्वारा संग्रह करके पवित्र दूध बेचने का गोरस कम्पनी प्रबन्ध करे।

इन सब उपाय सोचने पर भी गोरक्षा यथेष्ट न हुई इस लिये हमारी समझ में सब से उत्तम उपाय एक गो रक्षा का गौचर भूमि हो है वह भूमि शहर के बाहर धर्म्मादे खाते जंगल में छोड़ी जाय उस गोचर भूमि में क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी भाइयों की गौवें चराई जावें किन्तु उनके साथ यह प्रतिज्ञा कराली जाय कि गोचर भूमि में चराने वाली गौवें मैं किसी के हाथ न बेचूंगा।

शहर वालों के यह उपाय गोचर भूमि का समझमें आगया फिर स्वयं वह भूमिदान करने का वचन करने लगे कोई ३०० बीघे ज़मीन बात की बात में होगई ईश्वर चाहे तो और भी भूमि दान मिलेगी उचित भूमि मिलने से गोचर भूमि का काम आरम्भ किया जायगा।

ला० ताराचन्द जी रईस ने सभा के उद्देश्यानुसार राजभक्ति को बड़े प्रेम से वर्णन किया महाराज पंचम जार्ज के साथ हमारा प्रेम क्यों न हो जो कि महाराज पंचम जार्ज स्वयं आनकर हम को दर्शन देगये क्या यह प्रेम का परिचय नहीं है हम इस प्रेम को कभी नहीं भूल सकते हम जीवेंगे तब तक ईश्वर से यही प्रार्थना करेंगे हमारे महाराज की जय हो और जैसा बन सकेगा वैसा हम और हमारे भाई द्रव्य रूप में सेवा करेंगे।

बस अब सभा उनका धन्यवाद करती है जिन्होंनें इस जलसे में शरीक होकर हमारा उत्साह बढ़ाया है। संक्षेप में थोड़े से नाम भी लिख देता हूं।

पं० चोखराज जी पं० कालूराम जी पं० पूर्णानन्दजी ला० गणपतरायजी ला० रघुनाथ राय जी ला० राम प्रताप जी ला० मोहरूलाल जी ला० गुलाबराय जी चौधरी ला० रामेश्वरदास जी पं० रामेश्वर जी वैद्य ला० देवीसहाय जी वैद्य ला० मोहनकृष्ण जी वकील ला० दीनानाथ जी ला० विशननाथ जी डाक्टर ला० नैनसुखदास जी ला० सरदारीमल जी रामचन्द्र भगनका द्वारकादास आदि का धन्यवाद करके सभा विसर्जन की जाती है। ओ३म् शान्तिः

निवेदक
मेलाराम वैश्य
भिवानी

वैद्य भूषण

आयुर्वेद बिज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

आर्यसमाजों को सूचना

म० तेजूमल जी 'म' कनल प्रबन्धकर्त्ता देश सेवा यज्ञ, पो० तलोद अहमदाबाद सूचना देते हैं कि वह प्रचारक की ग्राहक आर्य्य समाजों को एक कापी राष्ट्रों की उन्नति, लेखक श्री ब्रह्मचारी इन्द्र जी वेदालंकार मुफ्त देंगे। समाजों को अपनी ग्राहक संख्या लिखकर उक्त महाशय से पुस्तक मंगा लेनी चाहिये।

प्रबन्धकर्त्ता।

बिदारी कन्द—खावो।

और लाल बन जाओ इसी महीने पहाड़ से इस की खुदाई होती है-इस कारण शीघ्रता करो कीमत १) रु० सेर।

पता. पं० काशीनाथ नागर
ज्वालापुर जि० सहारनपुर

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार के प्रोफैसर साठे जी M. A. कृत

सचित्र।

विकासवाद (डार्विन की थियोरी) की पुस्तक हिन्दी भाषा में छपकर तैयार है।

भाषा अत्यन्त सरल और मधुर पृष्ठ संख्या २०×२७१ साईज़ बड़ा चित्र २९

मूल्य केवल २)

श्रीयुत **प्रो० विनयकुमार सरकार एम. ए.** लिखते हैं:—**बी. ए. और एफ ए. के विद्यार्थियों को यह पुस्तक टेक्स्ट बुक (Text Book) के तौर पर पढ़ना चाहिये** पुस्तक की लेखन शैली बहुत अच्छी है और—सायन्स से परिचित मनुष्य भी इसे बड़े प्रेम से पढ़ते हैं।

श्री **साहित्याचार्य पं० रामावतार पांडये एम० ए०** लिखते हैं:—इस पुस्तक से हिंदी भाषा की आदरणीय वृद्धि हुई है। हिन्दी के प्रत्येक अभिमानी को इससे सन्तोष होगा। पुस्तक की कीमत बहुत नहीं है।"

मैनेजर, सद्धर्म्म प्रचारक पत्र, देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द वाच

मूल्य केवल

५॥)

रूपया

गारन्टी ५ साल

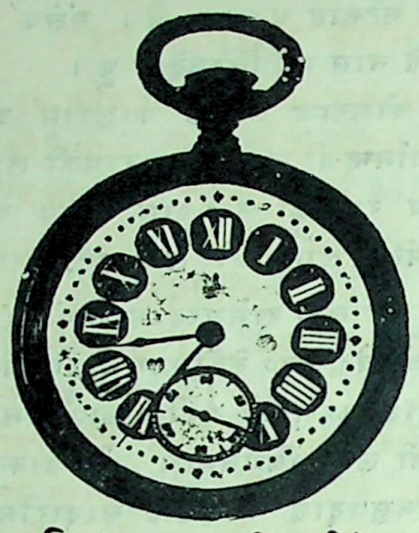

श्री महात्मा मुन्शीराम धर्मवीर पंडित लेखराम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का सदर्शन हमने उक्त नाम की घड़ी आर्य भाइयों के मनोरञ्जनार्थ खास तौर से विलायत से बनवाकर मंगाई है जिस में मिनट २ में उक्त चारों महात्माओं के दर्शन और समय का निर्णय, हर घड़ी के साथ एक काँच और एक फनर मुफ्त लगा दी कीजिये नहीं तो ऐसी अलभ्य वस्तु को पछताना पड़ेगा।

इसके अलावे हमारे यहाँ हर तरह की घड़ियां बहुत सस्ते दामों पर मिलती हैं सिस्टम रासकोप मूल्य ३) रुपये रेलवे-रैग्यूलेटर मूल्य ४) रुपये, बाजा बजाने वली टायम पीस मूल्य ४॥) रुये।

मंगाने का पता—दीस्वोज़रलैंड वाच कम्पनी हाथरस नं० ४ (२४५)

हाथरस के नये फैशन के कमानीदार पक्के चाकू व लोवर ताले

एजेंटों की आवश्यकता

यह स्वदेशी चाकू बिलायती चाकुओं से सुन्दर ओर सस्ते हैं।

चन्दन की मूठ कमानीदार ॥-) ।≡) ।=) ।)

लकड़ी मूठ कमानी दार ॥) -)।)≡)

जर्मन फैशन चन्दन ।=) लकड़ी ।) स्याह मूठ ।=) ।) चन्दनमूठसादा ।=)≡)=)-)॥-)लकड़ीमूठ सादा -)॥) ≡) =) -)॥ -) हांथीदांत कमानीदार ॥=) ॥) ≡) =) दोफला ॥) चन्दन दोफला ॥=) ॥) शिकारी छुरी १) ॥) पीतल मूठ चाकू ॥) ।=) नये फैशन लोहे व पीतल के सरौते ॥) ॥=) ॥) ।=) पवित्र सुगन्धित बढ़िया हींग १०) ८) ६) रुपये सेर देशी सूत के रंगीन धारीदारगमछे ।=) ।) ≡) =) पता:—स्वदेशी वस्तु कार्य्यालय हाथरस नं० १८

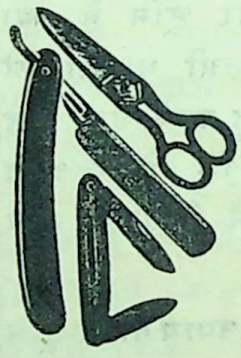

दूसरी चाबी से न खुलने वाली लीबर दार लोहेके ताले मूल्य

।॥)॥। =) इञ्चहाका ।-) ।) इञ्च पीतल लीबरदार१)।॥) ॥) इंच=) पीतलसादा ।=)) ≡) इंचविलायती फैशनके देशी उस्तारे॥=) ॥) ।=) ।) बाल काटने की कैंची १) ॥।) कपड़ा काटने की मज़बूत कैंची ॥।)॥=)॥)

अद्भुत ताक़त की दवा

यह उन्हीं लोगों के लिये बनाई गई है जो सब प्रकार से निराश हेा बैठे हों शरीर की निर्बलता सर दुखना आखों में अन्धेरा आना जवानी में बुढ़ापे की दशा का होना लड़कपन कुक्रियाओं से उत्पन्न अनेक रोगों की यह अव्यर्थ दवा है। इस के सेवन करने से शरीर निरोग और सुदृढ़ होकर चेहरेपर रौनक आती है यह अद्भुत दवा जादू का सा काम करके दिखलाती है। मूल्य ४० गोलियों की डिठ्बी का २) डाक व्यय माफ

प्रदर हर गोलियाँ

बेचारी स्त्रियां इस रोग को चुपचाप सहन करके शरीर को गलो लेती हैं उन का गुलाब जैसा रङ्ग बात की बात में पीला पड़ जाता शरीरमें दर्द पैदा होजाता है मासिक धर्म ठीक समय पर नहीं होता एवम् कपृतु होता है ऐसी दुखिया अबला के हेतु ही "प्रदरहर" तयार की गई है इस के सेवन से उपरोक्त सब रोग नष्ट होते हैं और शरीर सब प्रकार के सुख भोगने योग्य बन जाता है मूल्य ४०गोलियोंका २॥) डाकव्ययमाफ

दाद की दवा

प्रशंसा करना व्यर्थ है एक वार मंगा कर नये पुराने चाहे जैसे दाद को जड़ से खोदो मूल्य फी डिठ्बी ।=)

खाज की दवा

इस दुखदाई रोग से छुट्टी पाना है तो इस दवाको बिना बिलम्ब सेवनकरो मूल्य ॥)

हिंग्वाष्टक चूर्ण

पेट के अनेक रोगों को शान्त करता हैं भूख बढ़ाता है एवम पाचन करता है। मूल्य ॥)

तीनों का डाक व्यय अलग

मिलने का पता—स्वदेशी वस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषानुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहिये पतासाफहो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बाज़ार शहर मेरठ

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको
चाँदी का पदक ।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे ।

प्रचारक के प्रेमियो ! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो । अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा ।

इन्द्र—सम्पादक

७००) रुपये इनाम।
बाल्मीकि रामायण पर ।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ़ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द वाला ५॥)

३००) रुपये इनाम ।
श्रीमद्भगवत् गीता पर ।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत ।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ५=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।-)
प्रार्थना पुस्तक -)
ओंकार की उपासना -)

२००) रुपये इनाम ।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश -)
वेद और महाभारत के उपदेश -)
वेद, मनु और गीता के उपदेश -)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द =)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भावो टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि ।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकली बर्म्मन और उनके झूठे विज्ञापन से बचो !

वर्तमान समय अनेक बर्मन नामधारी उपजे हैं और डाक्टर एस, के, बर्मन के नामपर ग्राहकगणोंको धोखा दे रहे हैं ।

इनसे सदा सावधान रहिये !

नं० ७५ डाः एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

एजन्ट, बाबूराम जैनी एन्ड कंपनी बड़ा दरीबा दिल्ली

श्री प्रो० बालकृष्ण एम० ए०

की रचित

अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये

जो पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखाने वालों से $\frac{1}{4}$ कीमत ली जावेगी ।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है) ।)
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं ? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज प्रणाली छप रही है । ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

उस्तरे को विदा करो ।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

प्रेनेजर हिमालय कम्पनी कंखल U.P.

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा मोल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ बर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा ।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

सुधासिन्धु

राज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनियाँ भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, विशेषतः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पताः—

बाबू पंचमसिंह वर्मा

मालिक कारखाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य ननर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठक एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री घवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजो

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ।) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के ५५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (व)

चान्द--जि० जार०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है।। **ब्राह्मी बूँटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगतविख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रकट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये- डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं-महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः स्वादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽशु संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकुष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी ॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

गेहूं की खेती।

हिन्दी उर्दू दोनों भाषाओं में यह एक अपूर्व पुस्तक है। जिसमें बतलाया गया है कि किसान अपनी साधारण भूमि में दुगनी तिगुनी पैदावार कैसे कर सकता है। यु० पी० गवर्नमेन्ट के कृषि विभाग ने इस पुस्तक को बहुत उपयोगी बतलाया है। आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक हिन्दी, या, उर्दू, भाषा में नहीं निकली। मूल्य प्रत्येक भाषा की पुस्तक का १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल माफ।

रामप्रसाद—सब जज उज्जैन

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री
अलीगढ़ सिटी. यू. पो.

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुर

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२५॥ Registered No L. 807

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२५ कुआर स० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० १० अक्टूबर १९१४

संख्या २६ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य १॥)

प्रचारक के ग्राहकों से १।)

सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)— प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्त[illegible]आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक [illegible] आज कल राष्ट्र औ[illegible]र तो बहुत सुनाई [illegible] और उन्नति क्या [illegible]ड़े लोग जानते हैं। इस पुस्त[illegible], जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक	प्रति	पंक्ति	प्रति	अंक	=)	प्र०
तीन मास	"	"	"	"	=)	"
छः "	"	"	"	"	-)॥	"
कालभर	"	"	"	"	-)	"

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सक्ता।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहियें। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक कानाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एकतोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र देहली

Mahatma Mun Governor Gurukul P. O. Dist.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गेहुं की खेती

हिन्दी उर्दु दोनों भाषाओं में यह अपूर्व पुस्तक है जिस से किसान हर एक प्रकार की खेती में सामान्यतः व गेहूं की खेती में विशेषतया दुगनी तिगनी पैदावार कर सक्ता है कृषि सम्बन्धी हर एक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहुत से बिना मूल्य और प्रत्येक स्थान में मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नही निकली यू० पी० गवर्नमेंट के कृषी विभाग ने इस पुस्तक को बहुत उपयोगी बताया है मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रु० १) दो पुस्तक के ग्राहक को डाक महसूल मोफ़। रामप्रसाद सब जज उज्जैन।

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको चाँदी का पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

"ग़रीबों के लिये मुफ़्त"

हैजे की दवादी जाती है।

क्योंकि हैजे का प्रायः प्रत्येक स्थान पर बड़ा ज़ोर हो रहा है और हमारे पास बड़ी अच्छी दवाई है इस लिये सिर्फ़ ।) डाक व्यय आने पर मुफ़्त भेजी जावेगी जो लोग अपने २ ग्रामों या शहरों में बांटना चाहें हमारे एजन्ट बन सक्ते हैं और दवाई रेलगाड़ी द्वारा भेजी जा सक्ती है।

पी० एल० सुनीति कम्पनी
पाचवीं मंज़ल बड़ोचा बिलडिंग
प्रिंसेस सट्रीट बम्बई।

"आवश्यकीय सूचना"

सम्पादिका के नाम सर्व पत्र व्यवहार और बदले का अख़बार आदि सब निम्नलिखित पते पर आने चाहियें।

देबीसुनीति
सम्पादिका भारत महिला
पाचवीं मंजल बड़ोच बिलडिंग
प्रिंसेस सट्रीट बम्बई।

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

बिहारी क़न्द—खावो।

और लाल बन जाओ इसी महीने पहाड़ से इस की खुदाई होती है-इस कारण शीघ्रता करो कीमत १) रु० सेर।

पता. पं० काशीनाथ नागर
ज्वालापुर जि० सहारनपुर

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]

धोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

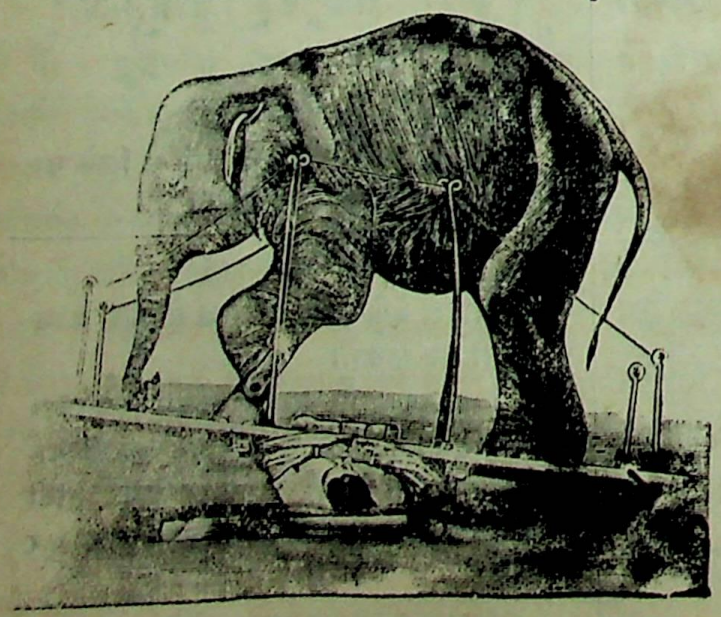

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीर जयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सखी देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां।) वैदिक विवाहादर्श १) तांतिया भील =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धाञ्जलि।

मातेव यद्भरसे पप्रथानो
जभं जभं वायसे चक्षसेच !
वयो वयो जरसे यद्दधानः
परित्वना विपुरूपो जिगाति ।
ऋ । ५ । १५ । ४

हे संसार के स्वामी ! तुम सब जगह व्यापक होते हुए प्राणि मात्र की माता के समान रक्षा करते हो। एक एक व्यक्ति का पालन पोषण करने वाले तुम ही हो। साक्षी रूप से रहते हुए सब के कार्यों का निरीक्षण करने की सामर्थ्य शिवाय तुम्हारे किस में है। दीर्घ आयु वाले को आयु देने वाले, उसके तन को धारण करने वाले तुम हो। हे भगवन् ! तुम अपने विविध सुन्दर गुणों वाले आत्मिक बलसे सबके ऊपर विजयी होकर स्थित हो।

सद्धर्म प्रचारक के विषय में कुछ सलाहें

पत्र के सम्पादक का और पत्र के ग्राहकों का बहुत पास का सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध ऐसा नहीं जिसे केवल शब्दों में छुपाया जा सके। पत्र का सम्पादक एक बैंक चलाने वाले की तरह है जो ग्राहकों के रुपयों का निश्चित व्याज नियत समय पर भेजता रहता है। सम्पादक किसी बात को गुप्त नहीं रख सकता, और उसके अन्दर कोई नया परिवर्तन ग्राहकों की सलाह लिये बिना नहीं हो सकता है। अपनी हर एक मन्त्रणा में ग्राहकों को लेना ही पड़ता है। भारतवर्ष के साधारण पत्रों में और उनके ग्राहकों में कोई गाढ़ सम्बन्ध नहीं होता, तभी तो वहां के पत्रों की वह शक्ति नहीं है, जो अन्य देशों के पत्रों की है। प्रचारक का यह सौभाग्य है कि उसका अपने ग्राहकों से उदासीनता या तटस्थता का सम्बन्ध नहीं। पिता जी ने पत्र को निकालते हुए ही इसके ग्राहकों को 'परिवार' के नाम से लिखना प्रारम्भ कर दिया था। उनके समय में पत्र का और परिवार का अटूट सम्बन्ध बना रहा। प्रचारक के साथ प्रचारक परिवार का बहुत ही नज़दीकी सम्बन्ध हो गया था। प्रचारक के ग्राहक इसे अपना समझते थे—अपनी वस्तु समझते थे।

पिताजी ने प्रचारक की जो रीत चलाई थी, हम उसे स्थिर रख सके हैं या नहीं, यह हम पूरा पूरा नहीं जानते इस बात का ज्ञान प्रचारक के ग्राहकों को ही होगा। इस समय वह सम्बन्ध स्थिर है या नहीं यह प्रश्न इस समय उठाना समयोचित भी शायद न हो किन्तु हां इतना हम कृतज्ञता पूर्वक कह सकते हैं कि प्रचारक के प्रेमियों ने प्रचारकके साथ अपने पुराने सम्बन्ध को नहींभुलाया है, वह सम्बन्ध उन्हें अच्छी तरह स्मरण है। इसी लिये जैसी उत्तम सलाहें समय समय पर हमें अपने प्रेमियों से मिलती हैं, वैसी शायद ही किसी और पत्र के सम्पादकको मिलती हों। वे सलाहें कीमती हैं, क्योंकि उनके कराने वाली सदिच्छा है। प्रचारक अपने ग्राहकों के ममत्व पर जितना विश्वास कर सकता है, उतना शायद और कोई पत्र नहीं कर सकता।

इसी लिये हम आज प्रचारक परिवारसे कुछ निजू बात चीत करना चाहते हैं। गत तीन वर्षों में प्रचारक अनेक अवस्थाओं में से गुज़रा है। उन अवस्थाओं के लिये उत्तर दाता केवल दैव है, क्योंकि परिवर्तन दैव के ही अधीन है। परिवर्तन के समय अनेक प्रकार की प्रिय अप्रिय बातें होती ही रहती हैं। प्रचारक ने जो जो रूप बदले उनमें कोई बात किसी को पसन्द आई कोई नहीं। एक बात सब को पसन्द आ भी नहीं सकती। प्रचारक ने अपना आकार बढ़ाया, लेख शैली में परिवर्तन किया। इसके विषयों को विस्तृत किया गया, कभी कभी पत्रकी नीति में भी भेद दीख पड़ा यह सब कुछ हुआ, और जब तक संसार परिवर्तन शील है, तब तक होता रहेगा। हमारा यत्न होना चाहिये कि जहां तक हो, ऐसे परिवर्तन अधिकता से न हों जिन्हें समय फल हीन सिद्ध करदे। जो वरिवर्तन हों, वे उन्नति की ओर हो, और स्थायी हों। यत्न करना ही मनुष्य के वश में है, और वह हम करते रहेंगे, और यथाशक्ति करते रहे हैं। पहले प्रचारक में जो परिवर्तन होते रहे हैं, वे इसी कामना से थे कि उनसे भलाई हो। आगे भी जो परिवर्तन होंगे वे इसी कामना से होंगे। किन्तु जैसे हमने ऊपर कहा सम्पादक ही पत्र का मालिक नहीं है। ग्राहकों का भी उस पर अधिकार है। इस लिये आशा है कि प्रचारक परिवार अवश्य ही उत्साह पूर्वक हमें सलाह देगा, यदि हम अपने विचार उसके सामने रखदेंगे।

(१) सब से पहला परिवर्तन जो हम प्रचारक में करना चाहते हैं, और शायद जिसे परिवर्तन नाम से पुकारना भी ठीक न हो, यह है कि प्रचारक के कुछ पृष्ठ केवल धार्मिक लेखों से युक्त हुआ करेंगे। वे पृष्ठ निश्चित रीति से धार्मिक विषयों के लिये रखे जायंगे। उन पर और किसी विषय का आक्रमण न हो सकेगा। सम्भवतः प्रचारकके तीसरे और चौथे पृष्ठ को यह सौभाग्य दिया जायगा। इन दो पृष्ठों में हम केवल धार्मिक लेख दिया करेंगे। आरम्भ में धार्मिक उपदेश होगा। हमारी हार्दिक इच्छा है कि यह उपदेश श्री महात्मा जी के हाथों का लिखा हुआ हो। उपदेश देने का अधिकारी वही व्यक्ति हो सकता है, जिसका ज्ञान केवल पुस्तकी न हो। जो स्वयं आत्मिक शक्ति से सम्पन्न है, और जिसे संसार का अनुभव प्राप्त है, उसी को उपदेश के शब्द मुंह से निकालने चाहिये। अन्य को नहीं। इस लिये हम प्रचारक परिवार के साथ मिल कर महात्माजी से विनीत प्रार्थना करते हैं कि वे हर सप्ताह थोड़ा सा कष्ट उठा कर हमें आत्मिक उपदेश द्वारा अनुगृहीत किया करें। जब किसी सप्ताह महात्माजी कार्यवश उपदेश न दे सकेंगे, तब प्रचारक का सम्पादक ही वैदिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म के साहित्य भण्डार में से कुछ एक रत्न निकाल कर ग्राहकों के सामने रखने का यत्न किया करेगा । दूसरा पृष्ठ भी किसी धार्मिक लेख या धार्मिक नोटों के अर्पण होगा । हमारा विचार है कि इस पृष्ठ में वैदिक सिद्धान्तोंपर प्रश्नोत्तर हुआ करें। जो लोग सिद्धान्तों पर किसी प्रकार की शङ्का भेजा करेंगे उनको उत्तर देने का यत्न किया जायगा । इस प्रकार इन दो पृष्ठों को धार्मिक लेखों के अर्पण किया जायगा ।

(२) इसके आगे सदा की भांति मुख्य लेख, संसार की गति, और आप बीती जग बीती का क्रम रहेगा । संसार की गतिमें हम यत्न करेंगे कि सप्ताहभरकी भारत की मुख्य २ घटनाओं पर निर्भय दृष्टि से सम्मति प्रदान करके दिखलायें कि सत्य और राजनीति में विरोध नहीं बल्कि मेल है । राष्ट्रीयता में परस्पर जो भेद दिखता है वह कृत्रिम और गौण है उस भेद में सार नहीं ।

(३) एक बहुत आवश्यक अङ्ग जो फिर से प्रचारक में लाया जायगा वह 'साहित्य संसार' है । प्रचारक बहुत दिनों से आर्य भाषा साहित्य को भुला सा बैठा है । अब आगे ऐसा न होगा । विशेषतया साहित्य संवाद देने तथा साहित्यिक प्रेम उत्पन्न करने के लिये हमारा विचार है कि प्रति मास प्रचारक के साथ एक साहित्य परिशिष्ट निकाला जाया करे, जिसमें महीने भर की साहित्य समीक्षा खूब अच्छी तरह से करदी जाया करे । हम यह भी यत्न करेंगे कि आर्य भाषा साहित्य के बड़े बड़े लेखकों के साहित्य विषयक लेख भी उस परिशिष्ट में प्रकाशित हुआ करें यह तो साहित्य की विशेष सेवाहोगी । साधारणतया सदा ही हम साहित्य को प्रचारक का विशेष क्षेत्र बनाना चाहते हैं । आगे से इस में शिथिलता न होगी । आज कल युद्ध के दिन हैं । सारा बाज़ार महंगा हो रहा है । सब चीज़ों के साथ २ काग़ज़ भी महंगे हो रहे हैं । क्या देश और क्या विदेश के सभी समाचार पत्रों पर काग़ज़ की महंगी का असर पड़रहा है । जो दैनिक समाचार पत्र पहले १२ या १६ पृष्ठों पर प्रकाशित होते थे अब आठ पृष्ठ देकर ही ग्राहकों को सन्तुष्ट करते हैं । इस महंगी का असर प्रचारक पर भी पड़ेगा हमें शायद प्रचारक के भी २० के स्थान में १६ पृष्ठ करने पड़ेंगे । इन पृष्ठों की न्यूनता के होने पर भी धर्म विषयक पृष्ठों और मासिक साहित्य परिशिष्ट के देने में शिथिलता न आयगी । यदि प्रचारकके पृष्ठ कम किये गये तो लेखों में कमी न आने पायगी, विज्ञापनों के पृष्ठ ही न्यून कर दिये जायंगे ।

(४) विज्ञापनों का प्रचारक का किसी दिन मच्छर वायु का सा विरोध था । किन्तु दिल्लीके रहनेने हमें बाधित करके विज्ञापन दिलवादिये हैं, जिसके लिये हम से अधिक शोक और किसी को नहीं है । अब इस रोग को प्रचारक से दूर करने का एक ही उपाय है । वह उपाय यह है कि प्रचारक की आर्थिक अवस्था बहुत सन्तोष जनक हो जाय ग्राहकों के अनुरोध से वार्षिक मूल्य ३॥) के स्थान में ३) करने में हमें जो घाटा हुआ है वह भी भुलाया नहीं जा सकता । क्या प्रचारक परिवार अपना कर्तव्य नहीं समझता कि प्रचारक को विज्ञापनों के जञ्जाल से छुड़वाये ? उसके लिये प्रचारक केवल दो हज़ार और ग्राहक चाहता है । प्रचारक का एक एक ग्राहक एक एक और ग्राहक बनादे तो दीवाली से पहले प्रचारक के ५ सहस्र ग्राहक हो सकते हैं और दयानन्दाब्दके प्रारम्भके साथ ही हम प्रचारक के पृष्ठों पर से विज्ञापनों का कलंक धो सकते हैं ? क्या प्रचारक परिवार इस विषय में हमारी सहायता न करेगा ? प्रचारक का सम्पादक प्रचारक से किसी बड़े आर्थिक लाभ की इच्छा नहीं रखता । वह केवल चाहता है प्रचारक अपना पूरा पूरा ख़र्च निकाल सके और उसका स्टाफ़ अच्छा होसके। इसके लिये विज्ञापनों की सहायता लेनी पड़े-यह दुःख की बात है । क्या प्रचारक परिवार इस दुःख को दूर करने में हमारी सहायता न देगा ? हमें पूरी आशा है कि हमारी अपील व्यर्थ न जायगी और प्रचारक के प्रेमी शीघ्र ही अपना कर्तव्य पालन करते हुए एक एक दो दो नये ग्राहक बनाने में यत्नवान् होंगे ।

यहां हम एक अन्तिम निवेदन और करना चाहते हैं । प्रचारक अपने ग्राहकों की सम्पत्ति है । उस पर उन्हीं की आज्ञा चल सकती है । हम चाहते हैं कि प्रचारक के ग्राहक हमें सलाह दें कि हम क्या क्या उन्नतियां करें ? वे हमें बतलावें कि प्रचारक से वे और क्या क्या आशायें रखते हैं ? कौन २ सी नई बातें हैं जिन्हें प्रचारकमें लानेसे प्रचारक परिवार प्रसन्न होगा ? आप लोग खुले तौर पर अपने २ विचार पत्रों द्वारा सम्पादक के पास लिख भेजिये । वह आपका कृतज्ञ होगा, और जिन बातों को बहु सम्मत पायगा, उनके अनुसार कार्य करनेमें आगा पीछा न करेगा। एक बात और है । आजकल आर्य्य-भाषा में दैनिक पत्रों की उत्पत्ति हो गई है । दैनिक पत्रो ने साप्ताहिक पत्रों के समाचारों को पुराना कर दिया है । साप्ताहिक पत्र कितनेही नये समाचार दें, वे पुराने ही जँचते हैं । इसलिये अब साप्ताहिक पत्र समाचारों पर बल नहीं देते । प्रचारक भी समाचारों पर उतना बल न देगा, जितना सम्मतियों पर । साप्ताहिक पत्रों का उद्देश्य है समझाना और दैनिक पत्रों का उद्देश्य है समाचार देना । साप्ताहिक पत्र समाचार देने का यत्न करने पर भी कृत कार्य नहीं हो सकते । हम प्रचारक में समाचारों का सार दिया करेंगे और उन्हें समझानेका यत्न करेंगे । सप्ताहके सभी मुख्य २ समाचार संक्षेपमें आजाया करेंगे।

सम्पादक के साथ जितना भी पत्र व्यवहार करना हो, वह गुरुकुलकांगड़ी के पते से करना चाहिये और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यवहार दिल्ली के पते से ।

आपका सेवक
सम्पादक
सद्धर्म प्रचारक
गुरुकुल कांगड़ी.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक

ईश्वरभक्ति और राष्ट्रभक्ति

क्या ईश्वर भक्ति और राष्ट्र भक्ति में कोई सम्बन्ध है? दूसरे शब्दों में क्या धर्म और राजनीति में कोई सम्बन्ध है? यह प्रश्न है, जो बहुत देर से विचारकों के विचार सागर में हल चल पैदा करता आया है। क्या इन दोनों भक्तियों में परस्पर विरोध है? क्या एक ईश्वर भक्त राष्ट्र भक्त होसकता है? क्या एक धर्म का उपदेशक जाति का सेवक हो सकता है? इत्यादि अनेक रूपों में उठता हुआ यह प्रश्न शताब्दियों से सभ्य संसार का ध्यान अपनी ओर खेंच रहा है। यह प्रश्न भारतवर्ष में भी उठा है और इसके उत्तर अनेक प्रकार से दिये गये हैं।

जो प्रश्न हमने उठाया है, उस पर यदि मोटी दृष्टि से बिचार करें, और केवल लौकिक अर्थ वादों से कार्य लें तो दोनों पक्षों के पक्ष विपक्ष में बहुत सी अत्युक्तियां की जा सकती हैं। ईश्वर भक्ति एक पवित्र भाव है, वह बड़ा उच्च आशय है और राष्ट्र भक्ति एक तुच्छ भावना है। इससे मनुष्य की दृष्टि बहुत छोटी रहजाती है। ईश्वर भक्ति के पक्षपाती इस प्रकार की युक्ति का प्रयोग कर सकते हैं। दूसरी ओर राष्ट्र भक्ति के पक्षपाती कह सकते हैं कि अजी ईश्वर भक्ति तो केवल एक मन में रहने वाली बात है; एक कल्पना मात्र है। सांसारिक कार्य्यों में व्यवहार के लिये तो राष्ट्र भक्ति को ही सामने रखना चाहिये। राष्ट्र भक्ति व्यवहार का धर्म है, ईश्वर भक्ति तो केवल दिली बहिश्त बनाने वालों की घड़न्त है। इस प्रकार दोनों ओर से अत्युक्तियां की जासकती हैं। किन्तु हम उन अत्युक्तियों पर ध्यान न देते हुए परखने विचारसे देखना चाहते हैं, कि क्या इन दोनों भक्तियों में कोई सम्बन्ध है?

ईश्वर भक्ति किसे कहते हैं? केवल ईश्वर को महान् समझना, या उस के निर्लेप रूप से प्रार्थना करने का नाम ईश्वर भक्ति नहीं है। ईश्वर भक्ति कहते हैं, ईश्वर और उसके बनाये हुए जीवन्त संसार को प्रेम और श्रद्धा की दृष्टि से देखना और उनके साथ वैसाही व्यवहार करना। जो मनुष्य अपने आप को कहे तो ईश्वर भक्त और वैसे साल में ३६५ प्राण धारियों की हत्या से अपना पेट भरे या ईश्वर का नाम पुकार २ कर रण क्षेत्र में हज़ारों ईश्वर पुत्रों के गले काटे, वह ईश्वर भक्त नहीं कहा सकता। ईश्वर भक्त वह है जो ईश्वर की और उसके संसार की पवित्रता को, और पूज्यता को मानता है। किन्तु केवल मानने से काम नहीं चल सकता साथ व्यवहार भी वैसा ही होना चाहिये। ईश्वर भक्ति कहने को छोटा वाक्य है, किन्तु वस्तुतः यह अधिक से अधिक फैला हुआ व्यावहारिक धर्म है। इससे बढ़कर परोपकारी धर्म नहीं हो सकता। सारे संसारके प्राणियोंको अपना श्रद्धेय समझनेसे बढ़कर व्यापी धर्म कौनसा हो सकता है? अब हम राष्ट्र भक्तिको लेते हैं।

मनुष्य की भक्ति या प्रेम का प्रारंभ अपने आपसे होता है। स्वार्थ सबसे प्रथम मानसिक भावना है। परोपकार या परार्थ का प्रारम्भ स्वार्थ से ही होता है। इसीलिये उपनिषद् में कहा है कि "आत्मनो वा अरे कामाय सर्वं प्रियं भवति" अन्य सब वस्तुयें अपने लिये ही प्रिय होती हैं अन्य किसी के लिये नहीं। धीरे धीरे वह स्वार्थ केवल अपने आप से फैलता हुआ परिवार तक, परिवार से फैल कर वंश तक और वंश से फैल कर जाति तक पहुंच जाता है। मनुष्य यह जानता है कि उसकी भलाई इसी में है कि वह जाति से भक्ति करे—जाति की रक्षा में तत्पर हो। जो लोग और भी अधिक विचार करते हैं, या जिनकी सामाजिक दशा और अधिक बढ़ गई है वे जाति भक्ति से आगे राष्ट्र भक्ति के अनुयायी हो जाते हैं। किन्तु यह भक्ति की पराकाष्ठा नहीं। सारी महानुभावता की यह परा कोटि नहीं। स्वार्थ का अधिक तम विस्तार यहीं समाप्त हो जाता वह और भी आगे चलता है।

जिनका आत्मा राष्ट्रभक्तिकी पराकाष्ठा पर पहुंचकर और भी आगे देख सकता है, उन्हें सर्व भक्ति या ईश्वर भक्तिकी झलक दिखाई पड़ती है। ईश्वर की प्राणि सृष्टि एक राष्ट्र से कहीं अधिक विस्तृत है। जब मनुष्य ईश्वर भक्त हो जाय, जब उसके मनमें प्राणिमात्र के लिये वही भाव हो जाय, जो अपने लिये है, तब वह ईश्वर भक्त कहाता है, और भक्ति का विस्तार आगे नहीं चल सकता। वह भक्ति के फैलाव की पराकाष्ठा है।

इस प्रकार हमने देखा कि ईश्वर भक्ति से अपेक्षा राष्ट्र भक्ति कहीं छोटी चीज है, किन्तु साथ ही हमने यह भी जान लिया कि जो राष्ट्र भक्त नहीं हुआ, वह ईश्वरभक्त भी नहीं हो सकता। राष्ट्रभक्ति ईश्वर भक्ति के लिये एक सीढ़ी है। कोई मनुष्य आप भक्ति से सीधा ईश्वर भक्ति तक नहीं पहुंच सकता। रास्ते में कई सीढ़ियां आवश्यक हैं। राष्ट्र भक्ति उनमें से अन्तिम-किन्तु सबसे अधिक आवश्यक सीढ़ी है। इसे छोड़कर ऊपर नहीं जा सके।

किन्तु साथ ही इसे समझना एक सीढ़ी ही चाहिये। इसे उद्देश्य न समझ लेना चाहिये। राष्ट्र भक्ति अच्छी है पर किसी और उद्देश्य की सिद्धि के लिये। राष्ट्र भक्ति के मद में मस्त होकर अगले उद्देश्य को न भुला देना चाहिये। जो मनुष्य लोटे को पानी समझ कर पीना चाहता है, वह निराश होता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति राष्ट्र भक्ति को उद्देश्य समझ लेता है वह दुःख पाता है, और संसार को दुःख देने का कारण होता है। आज कल की पश्चिम की जातियां राष्ट्र भक्ति को ही अपना उद्देश्य बनाये बैठी हैं। तभी तो एक दूसरी पर हथियार बरसाते हुए उन्हें संकोच नहीं होता। उन्होंने भुला दिया है कि अपने राष्ट्र की सेवा करने का अभिप्राय यह नहीं कि शेष सारी जातियों को पांव तले कुचला जाय।

ऐ भारतवर्ष के नवयुवको! तुम्हारी जाति भी धीरे धीरे राष्ट्र में परिणत हो रही है। देखना, कहीं तुम्हारी राष्ट्रीयता भी वैसी ही न हो, जैसी कि [illegible] पोलैण्ड और कोरिया वालों को और भी अधिक [illegible] चाहिये, जिस में अ- [illegible] रखना कि तुम्हारी [illegible] वे। जो नहीं होना [illegible] भक्तिसे विपरीत न हो गया। अब ध्यान [illegible] चिरस्थायिनी हो सके कोई काम अधो- [illegible] संसारके लिये प्रसन्नता [illegible] अपराधी हैं उन्हें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म के साहित्य भण्डार में से कुछ एक रत्न निकाल कर ग्राहकों के सामने रखने का यत्न किया करेगा। दूसरा पृष्ठ भी किसी धार्मिक लेख या धार्मिक नोटों के अर्पण होगा। हमारा विचार है कि इस पृष्ठ में वैदिक सिद्धान्तोंपर प्रश्नोत्तर हुआ करें। जो लोग सिद्धान्तों पर किसी प्रकार की शङ्का भेजा करेंगे उनको उत्तर देने का यत्न किया जायगा। इस प्रकार इन दो पृष्ठों को धार्मिक लेखों के अर्पण किया जायगा।

(२) इसके आगे सदा की भांति मुख्य लेख, संसार की गति, और आप बीती जग बीती का क्रम रहेगा। संसार की गतिमें हम यत्न करेंगे कि सप्ताहभरकी भारत की मुख्य २ घटनाओं पर निर्भय दृष्टि से सम्मति प्रदान करके दिखलायें कि सत्य और राजनीति में विरोध नहीं बल्कि मेल है। राष्ट्रीयता में परस्पर जो भेद दिखता है वह कृत्रिम और गौण है उस भेद में सार नहीं।

(३) एक बहुत आवश्यक अङ्ग जो फिर से प्रचारक में लाया जायगा वह 'साहित्य संसार' है। प्रचारक बहुत दिनों से आर्य भाषा साहित्य को भुला सा बैठा है। अब आगे ऐसा न होगा। विशेषतया साहित्य संवाद देने तथा साहित्यिक प्रेम उत्पन्न करने के लिये हमारा विचार है कि प्रति मास प्रचारक के साथ एक साहित्य परिशिष्ट निकाला जाया करे, जिसमें महीने भर की साहित्य समीक्षा खूब अच्छी तरह से करदी जाया करे। हम यह भी यत्न करेंगे कि आर्य भाषा साहित्य के बड़े बड़े लेखकों के साहित्य विषयक लेख भी उस परिशिष्ट में प्रकाशित हुआ करें यह तो साहित्य की विशेष सेवाहोगी। साधारणतया सदा ही हम साहित्य को प्रचारक का विशेष क्षेत्र बनाना चाहते हैं। आगे से इस में शिथिलता न होगी। आज कल युद्ध के दिन हैं। सारा बाज़ार महंगा हो रहा है। सब चीज़ों के साथ २ काग़ज़ भी महंगे हो रहे हैं। क्या देश और क्या विदेश के सभी समाचार पत्रों पर काग़ज़ की महंगी का असर पड़रहा है। जो दैनिक समाचार पत्र पहले १२ या १६ पृष्ठों पर प्रकाशित होते थे अब आठ पृष्ठ देकर ही ग्राहकों को सन्तुष्ट करते हैं। इस महंगी का असर प्रचारक पर भी पड़ेगा हमें शायद प्रचारक के भी २० के स्थान में १६ पृष्ठ करने पड़ेंगे। इन पृष्ठों की न्यूनता के होने पर भी धर्म विषयक पृष्ठों और मासिक साहित्य परिशिष्ट के देने में शिथिलता न आयगी। यदि प्रचारकके पृष्ठ कम किये गये तो लेखों में कमी न आने पायगी, विज्ञापनों के पृष्ठ ही न्यून कर दिये जायंगे।

(४) विज्ञापनों का प्रचारक का किसी दिन मच्छर वायु का सा विरोध था। किन्तु दिल्लीके रहनेने हमें बाधित करके विज्ञापन दिलवादिये हैं, जिसके लिये हम से अधिक शोक और किसी को नहीं है। अब इस रोग को प्रचारक से दूर करने का एक ही उपाय है। वह उपाय यह है कि प्रचारक की आर्थिक अवस्था बहुत सन्तोष जनक हो जाय ग्राहकों के अनुरोध से वार्षिक मूल्य ३॥) के स्थान में ३) करने में हमें जो घाटा हुआ है वह भी भुलाया नहीं जा सकता। क्या प्रचारक परिवार अपना कर्तव्य नहीं समझता कि प्रचारक को विज्ञापनो के जञ्जाल से छुड़वाये? उसके लिये प्रचारक केवल दो हज़ार और ग्राहक चाहता है। प्रचारक का एक एक ग्राहक एक एक और ग्राहक बनादे तो दीवाली से पहले प्रचारक के ५ सहस्र ग्राहक हो सकते हैं और दयानन्दाब्दके प्रारम्भके साथ ही हम प्रचारक के पृष्ठों पर से विज्ञापनों का कलंक धो सकते हैं? क्या प्रचारक परिवार इस विषय में हमारी सहायता न करेगा? प्रचारक का सम्पादक प्रचारक से किसी बड़े आर्थिक लाभ की इच्छा नहीं रखता। वह केवल चाहता है प्रचारक अपना पूरा पूरा ख़र्च निकाल सके और उसका स्टाफ़ अच्छा होसके। इसके लिये विज्ञापनों की सहायता लेनी पड़े-यह दुःख की बात है। क्या प्रचारक परिवार इस दुःख को दूर करने में हमारी सहायता न देगा? हमें पूरी आशा है कि हमारी अपील व्यर्थ न जायगी और प्रचारक के प्रेमी शीघ्र ही अपना कर्तव्य पालन करते हुए एक एक दो दो नये ग्राहक बनाने में यत्नवान् होंगे।

यहां हम एक अन्तिम निवेदन और करना चाहते हैं। प्रचारक अपने ग्राहकों की सम्पत्ति है। उस पर उन्हीं की आज्ञा चल सकती है। हम चाहते हैं कि प्रचारक के ग्राहक हमें सलाह दें कि हम क्या क्या उन्नतियां करें? वे हमें बतलावें कि प्रचारक से वे और क्या क्या आशायें रखते हैं? कौन २ सी नई बातें हैं जिन्हें प्रचारकमें लानेसे प्रचारक परिवार प्रसन्न होगा? आप लोग खुले तौर पर अपने २ विचार पत्रों द्वारा सम्पादक के पास लिख भेजिये। वह आपका कृतज्ञ होगा, और जिन बातों को बहु सम्मत पायगा, उनके अनुसार कार्य करनेमें आगा पीछा न करेगा। एक बात और है। आजकल आर्य्य-भाषा में दैनिक पत्रों की उत्पत्ति हो गई है। दैनिक पत्रो ने साप्ताहिक पत्रों के समाचारों को पुराना कर दिया है। साप्ताहिक पत्र कितनेही नये समाचार दें, वे पुराने ही जँचते हैं। इसलिये अब साप्ताहिक पत्र समाचारों पर बल नहीं देते। प्रचारक भी समाचारों पर उतना बल न देगा, जितना सम्मतियों पर। साप्ताहिक पत्रों का उद्देश्य है समझाना और दैनिक पत्रों का उद्देश्य है समाचार देना। साप्ताहिक पत्र समाचार देने का यत्न करने पर भी कृत कार्य नहीं हो सकते। हम प्रचारक में समाचारों का सार दिया करेंगे और उन्हें समझानेका यत्न करेंगे। सप्ताहके सभी मुख्य २ समाचार संक्षेपमें आजाया करेंगे।

सम्पादक के साथ जितना भी पत्र व्यवहार करना हो, वह गुरुकुलकांगड़ी के पते से करना चाहिये और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यवहार दिल्ली के पते से।

आपका सेवक
सम्पादक
सद्धर्म प्रचारक
गुरुकुल कांगड़ी.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक

ईश्वरभक्ति और राष्ट्रभक्ति

क्या ईश्वर भक्ति और राष्ट्र भक्ति में कोई सम्बन्ध है? दूसरे शब्दों में क्या धर्म और राजनीति में कोई सम्बन्ध है? यह प्रश्न है, जो बहुत देर से विचारकों के विचार सागर में हल चल पैदा करता आया है। क्या इन दोनों भक्तियों में परस्पर विरोध है? क्या एक ईश्वर भक्त राष्ट्र भक्त होसकता है? क्या एक धर्म का उपदेशक जाति का सेवक हो सकता है? इत्यादि अनेक रूपों में उठता हुआ यह प्रश्न शताब्दियों से सभ्य संसार का ध्यान अपनी ओर खेंच रहा है। यह प्रश्न भारतवर्ष में भी उठा है और इसके उत्तर अनेक प्रकार से दिये गये हैं।

जो प्रश्न हमने उठाया है, उस पर यदि मोटी दृष्टि से विचार करें, और केवल लौकिक अर्थ वादों से कार्य लें तो दोनों पक्षों के पक्ष विपक्ष में बहुत सी अत्युक्तियां की जा सकती हैं। ईश्वर भक्ति एक पवित्र भाव है, वह बड़ा उच्च आशय है और राष्ट्र भक्ति एक तुच्छ भावना है। इससे मनुष्य की दृष्टि बहुत छोटी रहजाती है। ईश्वर भक्ति के पक्षपाती इस प्रकार की युक्ति का प्रयोग कर सकते हैं। दूसरी ओर राष्ट्र भक्ति के पक्षपाती कह सकते हैं कि अजी ईश्वर भक्ति तो केवल एक मन में रहने वाली बात है; एक कल्पना मात्र है। सांसारिक कार्य्यों में व्यवहार के लिये तो राष्ट्र भक्ति को ही सामने रखना चाहिये। राष्ट्र भक्ति व्यवहार का धर्म है, ईश्वर भक्ति तो केवल दिली बहिश्त बनाने वालों की घड़न्त है। इस प्रकार दोनों ओर से अत्युक्तियां की जासकती हैं। किन्तु हम उन अत्युक्तियों पर ध्यान न देते हुए परखने विचारसे देखना चाहते हैं, कि क्या इन दोनों भक्तियों में कोई सम्बन्ध है?

ईश्वर भक्ति किसे कहते हैं? केवल ईश्वर को महान् समझना, या उस के निर्लेप रूप से प्रार्थना करने का नाम ईश्वर भक्ति नहीं है। ईश्वर भक्ति कहते हैं, ईश्वर और उसके बनाये हुए जीवन्त संसार को प्रेम और श्रद्धा की दृष्टि से देखना और उनके साथ वैसाही व्यवहार करना। जो मनुष्य अपने आप को कहे तो ईश्वर भक्त और वैसे साल में ३६५ प्राण धारियों की हत्या से अपना पेट भरे या ईश्वर का नाम पुकार २ कर रण क्षेत्र में हज़ारों ईश्वर पुत्रों के गले काटे, वह ईश्वर भक्त नहीं कहा सकता। ईश्वर भक्त वह है जो ईश्वर की और उसके संसार की पवित्रता को, और पूज्यता को मानता है। किन्तु केवल मानने से काम नहीं चल सकता साथ व्यवहार भी वैसा ही होना चाहिये। ईश्वर भक्ति कहने को छोटा वाक्य है, किन्तु वस्तुतः यह अधिक से अधिक फैला हुआ व्यावहारिक धर्म है। इससे बढ़कर परोपकारी धर्म नहीं हो सकता। सारे संसारके प्राणियोंको अपना श्रद्धेय समझनेसे बढ़कर व्यापी धर्म कौनसा हो सकता है? अब हम राष्ट्र भक्तिको लेते हैं।

मनुष्य की भक्ति या प्रेम का प्रारंभ अपने आपसे होता है। स्वार्थ सबसे प्रथम मानसिक भावना है। परोपकार या परार्थ का प्रारम्भ स्वार्थ से ही होता है। इसीलिये उपनिषद् में कहा है कि "आत्मनो वा अरे कामाय सर्वं प्रियं भवति" अन्य सब वस्तुयें अपने लिये ही प्रिय होती हैं-अन्य किसी के लिये नहीं। धीरे धीरे वह स्वार्थ केवल अपने आप से फैलता हुआ परिवार तक, परिवार से फैल कर वंश तक और वंश से फैल कर जाति तक पहुंच जाता है। मनुष्य यह जानता है कि उसकी भलाई इसी में है कि वह जाति में भक्ति करे—जाति की रक्षा में तत्पर हो। जो लोग और भी अधिक विचार करते हैं, या जिनकी सामाजिक दशा और अधिक बढ़ गई है वे जाति भक्ति से आगे राष्ट्र भक्ति के अनुयायी हो जाते हैं। किन्तु यह भक्ति की पराकाष्ठा नहीं। सारी महानुभावता की यह परा सीमा नहीं। स्वार्थ का अधिक तम विस्तार यहीं समाप्त हो जाता वह और भी आगे चलता है।

जिसका आत्मा राष्ट्रभक्तिकी पराकाष्ठा पर पहुंचकर और भी आगे देख सकता है, उन्हें सर्व भक्ति या ईश्वर भक्तिकी झलक दिखाई पड़ती है। ईश्वर की प्राणि सृष्टि एक राष्ट्र से कहीं अधिक विस्तृत है। जब मनुष्य ईश्वर भक्त हो जाय, जब उसके मनमें प्राणिमात्र के लिये वही भाव हो जाय, जो अपने लिये है, तब वह ईश्वर भक्त कहाता है, और भक्ति का विस्तार आगे नहीं चल सकता। वह भक्ति के फैलाव की पराकाष्ठा है।

इस प्रकार हमने देखा कि ईश्वर भक्ति से अपेक्षा राष्ट्र भक्ति कहीं छोटी चीज है, किन्तु साथ ही हमने यह भी जान लिया कि जो राष्ट्र भक्त नहीं हुआ, वह ईश्वरभक्त भी नहीं हो सकता। राष्ट्रभक्ति ईश्वर भक्ति के लिये एक सीढ़ी है। कोई मनुष्य आप भक्ति से सीधा ईश्वर भक्ति तक नहीं पहुंच सकता। रास्ते में कई सीढ़ियां आवश्यक हैं। राष्ट्र भक्ति उनमें से अन्तिम-किन्तु सबसे अधिक आवश्यक सीढ़ी है। इसे छोड़कर ऊपर नहीं जा सके।

किन्तु साथ ही इसे समझना एक सीढ़ी ही चाहिये। इसे उद्देश्य न समझ लेना चाहिये। राष्ट्र भक्ति अच्छी है पर किसी और उद्देश्य की सिद्धि के लिये। राष्ट्र भक्ति के बद में मस्त होकर अगले उद्देश्य को न भुला देना चाहिये। जो मनुष्य लोटे को पानी समझ कर पीना चाहता है, वह निराश होता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति राष्ट्र भक्ति को उद्देश्य समझ लेता है वह दुःख पाता है, और संसार को दुःख देने का कारण होता है। आज कल की पश्चिम की जातियां राष्ट्र भक्ति को ही अपना उद्देश्य बनाये बैठी हैं। तभी तो एक दूसरी पर हथियार बरसाते हुए उन्हें संकोच नहीं होता। उन्होंने भुला दिया है कि अपने राष्ट्र की सेवा करने का अभिप्राय यह नहीं कि शेष सारी जातियों को पांव तले कुचला जाय।

ऐ भारतवर्ष के नवयुवको! तुम्हारी जाति भी धीरे धीरे राष्ट्र में परिणत हो रही है। देखना, कहीं तुम्हारी राष्ट्रीयता भी वैसी ही न हो, जैसी वैल्जियम पोलैण्ड और कोरिया पर अधिकार रखने वाली जातियों की राष्ट्रीयता है। ध्यान रखना कि तुम्हारी राष्ट्र भक्ति ईश्वर भक्तिसे विपरीत न होने पावे। तभी वह चिरस्थायिनी हो सकेगी और तभी वह संसारके लिये प्रसन्नता दायक होसकेगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति

युद्ध ज्वाला जल रही है।

युद्ध क्षेत्र का कोई नया समाचार नहीं है। कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। बस, सारांश इतना ही है कि युद्ध की ज्वाला यथा पूर्व जल रही है। दोनों पक्ष मरने मारने पर तुले हुए हैं। दोनों ही पक्ष जी तोड़ कर लड़ रहे हैं। फ्रांस की भूमि में जर्मनी इस समय एन नदी की रक्षा में डेरा डाले बैठा है। समाचारों का सारांश यही निकलता है कि जर्मनी और मित्र दलका द्वन्द्व युद्ध समान-तया चल रहा है। कभी जर्मनी एक कदम आगे होजाता है, और कभी दो कदम पीछे हटजाता है। आगे और पीछे-बस इसी प्रकार लड़ाई का क्रम चलरहा है। एक कड़ी चोट कब लगेगी और कहाँ लगेगी, यह निश्चय करना कठिन है। अब आवश्यकता यही है कि किसी एक स्थान पर ऐसी चोट लगे जिसमें टिकी हुई सेना का प्रवाह चलदे। दूसरी ओर जर्मनी और रूस का बहुत घोर युद्ध हुआ चाहता है, कैसर फ्रांस की सेनाओं को लड़ाई जारी रखने का उपदेश देकर रूस की ओर चला गया है और रूस का ज़ोर भी अपनी सेनाओंको उत्साहित करने के लिये राजधानी छोड़ कर युद्ध स्थान की ओर को चल-दिया है। योरप के दो सत्ताशाली नरेशों की यह मुठ भेड़ बड़ी भयानक होगी। रूस की सेना आस्ट्रिया में इतना आगे बढ़गई है, कि अब बिना विशेष यत्न किये जर्मनी आस्ट्रिया के अधः पात को नहीं रोक सकता। फिर भी रोक सकेगा या नहीं इस में सन्देह है। जो जाति इतनी शिथिल होजाय, जितनी शिथिल आस्ट्रियन सिद्ध हुई है वह दूसरे के सहारे पर खड़ी नहीं हो सकती। वह आज नहीं तो कल अवश्य ही गिरेगी।

बेल्जियम के भाग्य।

वीर बेल्जियम इस भयानक युद्ध नाटक का असली नायक है। युद्ध का प्रारम्भ उसी की भूमि में हुआ, युद्ध के प्रारम्भ में बिल्कुल निर्दोष और निर्लेप यदि कोई था तो वह बेल्जियम था, युद्ध के लिये उसकी कोई भी उत्तर दात्तृता नहीं है। यदि किसी के साथ स्पष्ट अत्याचार हुआ है तो वह इसी अभागे-देश के साथ हुआ है। फिर जो वीरता मुट्ठी भर बेल्जियमों ने दिखाई है और अब भी दिखारहे हैं, उसकी उपमा कहीं नहीं मिल सकती। जर्मनी के विशाल शरीर के सामने बेल्जियम एक वामन है किन्तु जिस हिम्मत से उसने शत्रु की भयानक सेनाओं को रोका, उसे देख कर संसार चकित होरहा है। सारे युद्ध सामान के साथ आज तक भीजर्मनी एंट वर्प को नहीं ले सका। एंटवर्प सप्ताह दो सप्ताह में पराजित हो जायगा, यह भी नहीं कहा जा सकता। जर्मनोकी हिम्मत नहीं पड़ती कि उस पर आक्रमण करे। जो देश बेल्जियम से बीसों गुणे हैं, जिनकी आबादी बेल्जियम से बीसों गुणी हैं, उन देशों को आंखें खोल कर देखना चाहिये कि वीरता किसे कहते हैं? देश पर आक्रमण करने वाले शत्रु का सामना कैसे किया जाता है? और सच्ची देश भक्ति कैसी तपस्या है? फूलों के सेज पर सोना और देश भक्ति के राग गाना, समय पड़े पर झट फिसल जाना—देश भक्ति नहीं कहाता, देशके लिये लहू बहानादेश भक्तिकहाता है। देश भक्ति टके सेर मिलने वाला सौदा नहीं है, उस का पाना अमूल्य साधना से ही सम्भव है। हमें विश्वास है जर्मनी को यदि और कुछ नहीं तो वीर बेलजियमों का रुधिर ही इस युद्ध में परास्त करायगा और उन्हीं के शाप की मार से उस का मान भंग होगा। अत्याचार से पीड़ित किसी निरपराधी जाति का शाप व्यर्थ नहीं जाता यह हमारा विश्वास है।

एम्डन की दौड़ धूप।

इस महाभारत का सब से बड़ा मख़ौल-एम्डन की दौड़ धूप है। यह मख़ौल है क्योंकि एक तीसरे दर्जे के क्रूज़र का इंग्लैंण्ड के भारत साम्राज्य के रास्ते रोक देना और बर्माको सारे संसारसे जुदाकर देना मख़ौल से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता एम्डन अबतक लगभग दस छोटेबड़े जहाज़ों को डुबा चुका है। मद्रास पर जाकर गोलाबारी करआया है और पारसीचरी को आंखें दिखा गया है। इतना करने पर भी वह न जाने कहाँ समुद्र में दनदनाता रहा है। एम्डन के आजाने से भारत की सामुद्रिक रक्षा की जो दशा होरही है, उससे कई प्रकार की कल्पनायें उठती हैं। यदि कहीं जर्मनी काउचाऊ की रक्षा की परवा न करता हुआ अपने सब जहाज़ों को भारत वर्ष की ओर भेज देता तो यहां क्या होता? उस समय भारत की रक्षा कैसे की जाती? साथ ही यह विचार भी उठता है, कि जर्मनीका व्यापार रोकने के लिये इंग्लैंण्डको अपनी सारी सामुद्रिक शक्ति उत्तरीय समुद्र में रखनी पड़ती है, किन्तुभारत के सारे व्यापार को एक एम्डन रोक सक्ता है। एम्डन आखिर पकड़ा जायगा और डुबोया जायगा किन्तु जो शिक्षायें उस ने हमें दी हैं, उन्हें भुलाना न चाहिये। भारतवर्ष की कोई अपनी सामुद्रिक शक्ति हो, यह प्रस्ताव कई एंग्लोइंडियन पत्रों ने उठाया है। हमारी राय में वह ठीक नहीं है। सामुद्रिक शक्तिका जो भार होगा उसे भारत उठा नहीं सकता। भारत की रक्षा के लिये सामुद्रिक शक्ति होनी चाहिये, किन्तु वह साम्राज्यकी रक्षा करनी वाली शक्ति का ही भाग हो। चाहे किसी प्रकार हो, किन्तु इंलैण्ड का सामुद्रिक दबदबा चाहता है कि भारत की सामुद्रिक सीमाओं की भी अच्छी तरह रक्षा की जाय।

युद्ध में अत्याचार।

सुनते सुनते हमारे कान थक गये थे कि सभ्यता ने मनुष्य जाति को मनुष्यता सिखाई है, और उस के ऊपर से जङ्गली क्रूरता दूर कर दी है। इस युद्ध ने ऐसी सब कल्पनाओंका धूआं उड़ा दिया है। अन्य जातियाँ क्याकर रही हैं, उन्हों ने शत्रुओं तथा उदासीनों के साथ क्या व्यवहार किया है, यह देखने का अभी समय नहीं है। रूस आस्ट्रिया में क्या कर रहा है, यह हमें ज्ञात ही नहीं होता! यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जानने के साधन भी अभी नहीं । फ्रांस या बैलजियम की सेनायें, अभी कहीं शत्रु की भूमि पर नहीं पहुंची इस लिये उनका जीते हुए शत्रु देशसे क्या व्यवहार होगा, यह अभी तक नहीं कह सकते । अभी जर्मनी ही शत्रु के देश में घुसा है, और उसने जैसी क्रूरतायें दिखाई हैं, वे नई सभ्यता के मुंहपर कालख पोतने के लिये पर्याप्त हैं । जो समाचार हम तक पहुंचते हैं, उनसे प्रतीत होता है कि जर्मनी के सिपाही मनुष्य नहीं पिशाच हैं ! पुराणों में पिशाचों के जो स्वभाव लिखे हैं, जर्मनी लोगों में वे ही बताये जाते हैं । जिन लोगों ने नैपोलियन बोनापार्ट का तथा उसके समय का इतिहास पढ़ा है, वे जानते हैं कि उस समय सारा इंग्लैंण्ड और योरप भी यही विश्वास करता था और समाचार पत्र विश्वास कराते थे, कि नैपोलियन लहूका प्यासा जानवर है और फ्रांसी लोग पिशाच हैं । आज हमें बतलाया जाता है कि फ्रांसी लोग तो बहुत सभ्य हो गये हैं, किन्तु सारा पिशाचत्व जर्मन लोगों में आगया है । संसार परिवर्तन शील है । परिवर्तन होते ही रहते हैं । तथापि इतना भारी भेद एक शताब्दि में हो यह बुद्धि में नहीं आता । इस लिये हमारी सम्मति में जैसे हम अब जान गये हैं कि नैपोलियन के सिपाही वैसे पिशाच न थे, जैसे उन्हें चित्रित किया जाता है, वैसे ही हमें अब भी यह समझ रखना चाहिये कि जर्मन लोग पिशाच नहीं हैं, वे भी मनुष्य हैं । वे भी वैसे ही मनुष्य हैं, जैसे फ्रांस या बेलजियम के रहने वाले हैं । जर्मनी के मनुष्यों का दोष नहीं है, कि वे ऐसी ऐसी क्रूरतायें करते हैं, यह उस शिक्षा का दोष है जो आज सारे संसार को उत्पात कर रही है । 'जो ज़बरदस्त होगा, वही की रक्षा होगी' निर्बलों का संसार में रहने का अधिकार नहीं है । शत्रु को काबू करके कुचल देना ही नीति है नई सभ्यता के येही सब सिद्धान्त हैं, जिनके अर्थों का अनर्थ करके जर्मनी क्रूरतायें कर रहा है । कठोरताओं या अनियमों का निपटारा इस समय असम्भव है । फ्रांस कहता है, जर्मन सिपाही दम दम की गोलियां चलाते हैं, जर्मन कैसर कहता है यह अनियम फ्रांसी सिपाहियों का है । लोवेन को जर्मन सिपाहियों ने जला दिया था, किन्तु जलाने के लिये उत्तर दाता सेनापति को पदच्युत किया गया है, इस से प्रतीत होता है आगे से जर्मनी के कान हो गये हैं । देखें, इस एक दृष्टान्त से युद्ध के भावी कार्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ।

सम्मेलन के सभापति ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति का निर्वाचन हो गया । सभापति की माला जिस गले में पड़नी चाहिये थी, वहीं पड़ी है । पं० श्रीधर पाठक जैसा भाषा का प्रतिष्ठित सेवक और कौन मिलेगा ? आर्यभाषा में तुक बन्दी करने वाले बहुत हैं, केवल शब्दों के अनुप्रास से कविवर का दावा भरने वाले भी अनेक हैं, किन्तु खड़ी बोली में कविता करने में इस समय के जीवित व्यक्तियों में पहला नम्बर पं०श्रीधर पाठक का, और दूसरा पं० मैथिली शरण गुप्त का है । पं० श्रीधर पाठक की खड़ी बोली की कविता में जो रस और नवीनता है, वह और स्थान में मिलनी कठिन है । हमने इनके एकान्त वासी जोगी को कई बार पढ़ा और हर बार उस में नया ही नया आनन्द पाया पाठक जो केवल लिखने पढ़ने के कारण ही प्रतिष्ठा योग्य नहीं हैं, आप उन लोगों में से एक हैं, जिन्होंने अपने हाथों से अपने भाग्यों को बनाया है । आपने सरकारी नौकरी ३०) मासिक से से प्रारम्भ की थी । और आज आप ३००) मासिक पर सरकारी दफ्तर के निरीक्षक हैं । आपको सभापति पाकर सम्मेलन अवश्यमेव सफल होगा ।

बज बज की दुर्घटना ।

जिस समय ब्रिटिश साम्राज्य एक भयंकर संग्राम में फंसा हुआ है, उस समय इस दुर्घटना के सुनने के लिये कोई तय्यार न था । कामागाटा मारू वह जहाज है, जिस में कई सिखभाई साम्राज्य वासी होने के अधिकारों की रक्षा के लिये कनाडा गये थे । वहां पर उन्हें अन्दर जाने की आज्ञा न मिली । इस पर वे लौट आये । इतना व्यय करके कनाडा जाने पर उन सब के साथ जो व्यवहार हुआ, वह उन्हें खिजाने के लिये पर्याप्त था। कामागाटा मारू विगत शनिवार को हुगली के समीप पहुंचा । जहाज़के यात्री चाहते थे कि वे वहां से सीधे कलकत्ते जांय । बंगाल और पंजाब की पुलिस चाहती थी कि उन्हें स्पेशल ट्रेनों द्वारा सीधा पंजाब भेजा जाय । ६० मुसाफरों से भर कर एक ट्रेन रवाना भी हो गई । किन्तु शेष यात्रियों को यह समझ में न आया कि वे क्यों कलकत्ते न जांय ? उन्हें समझाया गया, किन्तु वे कलकत्ते को चल ही दिये । रास्ते में से फौजने फिर उन्हें लौटाया स्टेशन पर आने पर उन्हें समझाया गया । उसी समझाने में सिखों को जोश आगया और उन्होंने रिवालवरों तलवारों तथा बन्दूकों से पुलिस पर धावा किया । जो झगड़ा चला। उसमें कई पुलिस अफसरों का और अन्य दर्शकों का रुधिर बहा, और उनसे भी अधिक रुधिर सोलह पंजाबियों का था, जो वहीं पर मारे गये । इसे ऐंग्लो इण्डियन पत्रों ने पंजाबियों का सिखों का उत्पात पुकारा है । हम भी नाम पर झगड़ना नहीं चाहते, केवल इतना चाहते हैं कि जब तक इस घटना की पूरी पूरी निष्पक्षपात खोज न होजाय और झगड़ा कैसे उठा और क्यों उठा यह न पता लग जाय तब तक शीर्षक का विश्चय करना कठिन है । इस समय पर ऐसा झगड़ा उठने पर सभी देश हितैषी दुःखित होंगे, किन्तु इतना कहे बिना हम नहीं रह सकते यदि इस समय प्रजा को सावधान रहना चाहिये जिस में कोई उत्पात न उठे, तो साथ ही सरकार के कर्मचारियों को और भी अधिक सावधान रहना चाहिये, जिस में अशान्ति न फैलने पावे । जो नहीं होना चाहिये था वह हो गया । अब ध्यान यह रखना चाहिये कि कोई काम अधीरता में न हो । जो अपराधी हैं उन्हें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूरा पूरा दण्ड मिलना चाहिये किन्तु पहले अपराध अपराध की पूरी खोज हो जानी चाहिये। हमें पूरी आशा है कि लार्ड हार्डिंज की सरकार कोई कार्य अधीरता में न होने देगी।

फ्रांस में हिन्दुस्तानी सिपाही।

भारत से भेजे हुए सिपाही फ्रांस में पहुंच गये।

उनका सब ओर से बड़ा बढ़िया स्वागत हुआ। इंग्लैण्ड के पत्र जोश के मारे फूले नहीं समाते। वे पत्र भी जो भारत वासियों के लिये थोड़ी सी भी राजनीतिक स्वाधीनता मिलने को इंग्लैण्ड घातिनी नीति का अंग समझते थे आज पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि भारतवासी अधिकारों के योग्य हैं, युद्ध के पीछे उन्हें अधिकार मिलने चाहियें। हमें तो निश्चय है कि भारत वर्ष के जो सिपाही फ्रांस में लड़ने गये हैं; वे टाइम्स जैसे पत्रों की शाबाशी लूटने नहीं गये और भारतवर्ष के सिखों ने यदि युद्ध की सहायता में धन दिया है तो वह इसलिये नहीं दिया कि इंग्लैण्डमैन उन्हें शाबाशी दे। इन पत्रों के लेखों को भारतवासी जिस दिन सम्मान की दृष्टि से देखने लगेंगे, उस दिन हम भारत वर्ष के भविष्यत् के विषय में सर्वथा निराश हो जायंगे। भारतवर्ष के धन देने वाले राजे, और लड़ने वाले सिपाही उन्हीं की सन्तान हैं, जो उस दिन से अंग्रेजों के लिये लड़ते आये हैं, जब से थोड़े से गोरे व्यापारियों ने कलकत्ते के पास अपनी छावनी डाली थी। तब हिन्दुस्तानी राजा नीतिक अधिकारों को न जानते थे, तब टाइम्स और इंगलिशमैन के लेख उन्हें न सुनाये जाते थे, फिर भी वे अंग्रेजों के लिये लड़ते रहे। सिपाही विद्रोह हुआ और सिखों और बहुत से राजाओं ने सरकार की सहायता की। क्या उस समय टाइम्स और डेली न्यूज़ की झनक उनके कानों में पड़ रही थी? क्या वह कोई उच्च कारण है, जिस से प्रेरित होकर यह सब कुछ होता रहा है और हो रहा है, यह आज का विषय नहीं है। हम तो केवल इतना ही जतलाना चाहते हैं कि इंगलिश और एंग्लो इंडियन पत्रों के लेखों को हम कुछ भी कीमतदार नहीं समझते। जो एंग्लो इंडियन पत्र आज फ्रांस में गई हुई फौज के कारण सिखों की राज भक्ति के गीत अलापते नहीं थकते, उन्हीं के भाई बन्द कल यह सलाह देते नहीं लजाते कि बज बज से उतरे हुए सिखों को बिना किसी खोज खाज के काले पानी रवाना कर देना चाहिये या शूली पर चढ़ा देना चाहिये।

आर्य कुमार सम्मेलन

जहां तक समाचारों से ज्ञात हुआ है अजमेर का आर्य कुमार सम्मेलन बड़ी सफलता से समाप्त हुआ है। सभापति की वक्तृता से प्रारम्भ करके समाप्ति तक सारी कार्यवाही बहुत ही मनोरंजक रही। शारीरिक खेलों ने विशेषतया दर्शकों को आनन्दित किया। अगले वर्ष सम्मेलन अमृतसर में होगा। यह पहली बार है कि नियमादि द्वारा संगठित होने के पीछे सम्मेलन पंजाब में आया है, देखें पंजाब सम्मेलन का कैसा स्वागत करता है?

सरस्वती की मर्यादा

सरस्वती के सम्पादक ने सभ्यता और शिष्टता की तिलांजलि देते हुए पुस्तक समीक्षा के नामपर जो अपने अन्तर्हृदय का उद्गार किया था, उसके विषय में बहुत से लेख हमें प्राप्त हुए हैं, जिनमें सरस्वती की संकुचित नीति को खूब दरशाया गया है। उनमें से कई लेख बहुत सख्त हैं। उनके छापने में हम अशक्त हैं। सभ्यता और शिष्टता का उल्लंघन न करके जो लेख इस विषय में लिखा जायगा, उसे हम प्रचारक में प्रसन्नता से प्रकाशित करेंगे। आर्य समाज सरस्वती के इस व्यवहार से बहुत दुःखित हुआ है, और उसका दुःख यथार्थ भी है। आर्य समाज नहीं चाहता कि आर्य भाषा की प्रधान पत्रिका के साथ उसकी ओर से कोई बुरा सलूक हो। किन्तु सरस्वती का आरंवार का व्यवहार उसे ऐसे सलूक के लिये बाधित कर रहा है। हमारी यह दृढ़ सम्मति है कि वर्तमान सम्पादक के नीचे रहते हुए सरस्वती की नीति नहीं बदल सकती। जब तक सरस्वती के स्वामी आर्य समाज को इस बारे में सन्तोष नहीं दे देते, तब तक किसी भी आर्य ग्रन्थकर्ता को सरस्वती में जाने की लालसा न रखनी चाहिये। प्रयाग से ही दूसरी पत्रिका मर्यादा निकलती है, उससे भी वही काम चल सकता है जो सरस्वती से चलता है। आर्य समाजी ग्रंथ कर्ताओं को नियम रखना चाहिये कि वे अपनी पुस्तकें सरस्वती में समालोचनार्थ न भेजा करें। हां, यदि द्विवेदी जी मूल्य से ख़रीद कर किसी पुस्तक की समालोचना करना चाहें तो कोई भय नहीं। पत्र छपते हुए हमें ज्ञात हुआ कि संयुक्त प्रान्तकी आर्यप्रतिनिधि सभा ने भी ऐसा प्रस्ताव समाजों के पास भेजा है। उस पर हम अगले सप्ताह लिखेंगे।

दिल्ली में ५ अक्तूबर

५ अक्तूबर को दिल्ली षड़यन्त्र के मुकद्दमेका फैसला सुनाया जाने को था। न जाने क्यों, उस दिन सरकार बड़ी घबराहट में थी। दिल्ली जैसे कोतवाल नगर की सड़कों पर पुलीस का पहरा था। कालिजों के दरवाजों पर पुलिस के मोरचे थे। चांदनी चौक के अन्दर किर्चधारी जवान घूम रहे थे। जहां तहां घुड़ सवारों की टाप सुनाई पड़ती थी। ऐसे प्रबन्ध के अन्दर मिस्टर हैरिसन ने अपना फैसला सुनाया, फैसला क्या था एकआपत्ति का बादल था, जो अभियुक्तों के सिर पर आपड़ा। वे लोग, जो पहले तो पाप करते रहे, किन्तु पीछे से पुलिस के भय से सरकारी गवाह बन गये, दोष मुक्त कर दिये गये। यह इनाम तो मिलना ही था, शेष भी चार अभियुक्त छोड़ दिये गये। ला. अमीर चन्द

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ला. अवध बिहारी और ला० बालमुकन्द को मृत्यु का दण्ड दिया गया। ला. बलराज, बसन्त कुमार और ला. हनुमन्त सहाय को बीस साल के लिये काला पानी दिया गया। यह दण्ड किस तरह ठीक है, यह हम लोगों की छोटी बुद्धियों में नहीं आ सकता। इसे वे लोग ही समझ सकते हैं, जिनके हाथ में राज दण्ड है। हमें तो केवल इतना कहना है कि यह दण्ड एक साधारण द्रष्टा की दृष्टि में बहुत कठोर और अनावश्यक रीति से कठोर है। अभी चीफकोर्ट में इसकी अपील होगी। देखें वहाँ क्या निश्चय होता है। हम नहीं जानते कि उपयुक्त दण्डित अभियुक्तों के सम्बन्धियों को किन शब्दों में धैर्य दें। हमारी यही प्रार्थना है कि परमात्मा उनका सहायक हो।

गुरुकुल समाचार

विजय दशमी

विजय दशमी २९ सितम्बर को थी, किन्तु ब्रह्मचारियों की खेलें २५ सायंकाल से ही प्रारम्भ होगई थीं। नीचे से लेकर ऊपर तक के सब ब्रह्मचारियों की खेलें खूब उत्साह के साथ होती रहीं। ब्रह्मचारी अभी दो दिन पूर्व ही सरस्वती यात्रा से लौटे थे, इस लिये थकावट शेष थी। इसी कारण खेलों में पहले सालों का सा उत्साह उत्पन्न न हो सका। लंका विजय को इस बार एक रात और एक दिन दिया गया था। पहले कई दिनों की खेलों से थके हुए होने पर भी ब्रह्मचारियों ने लगभग १५ घंटे तक यह खेल उत्साह के साथ की। २९ सायंकाल को विजया दशमी की सभा हुई। ब्र० बुद्धदेव, ० जयदेव प्रो० सुधाकर एम० ए० तथा पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार के भाषणों के अनन्तर श्री० महात्मा जी ने ब्रह्मचारियों को ब्रह्मचर्य तथा अन्य व्रतों के पालन का उपदेश दिया। रात्रि के समय सब गुरुकुल वासियों ने मिलकर सहभोज किया। इस प्रकार यह उत्सव सफलता के साथ मनाया गया।

गुरुकुल में जैन भिक्षु

पिछले दिनों गुरुकुल में जैन धर्म के प्रसिद्ध प्रचारक अनागारिक धर्मपाल आये थे, और कई व्याख्यान देगये थे। आपकी ही प्रेरणा से अब एक और महात्मा गुरुकुल में पधारे हैं। आप संस्कृत तथा पाली भाषा के बड़े पंडित हैं। लङ्का के एक कालेज के पाली विभाग के वाईस प्रिंसिपल हैं। आपका गुरुकुल में तब तक रहने का विचार है, जब तक आप अपने कुछ शिष्यों को पाली के पंडित बना दें। पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार, जो स्नातकोत्तर परीक्षा की तय्यारी कर रहे हैं, आप से पाली की विशेष शिक्षा लेंगे। उपदेशक महाविद्यालय के जिन ब्रह्मचारियों ने पाली भाषा ली है वे भी आप से लाभ उठायेंगे आप भिक्षु हैं और गुरुकुल में केवल विद्या प्रेम से खिंच कर आये हैं। और किसी प्रकार का लाभ आप गुरुकुल से नहीं चाहते। गुरुकुल आपका अनुगृहीत है।

स्वास्थ्य

लड़कों का स्वास्थ्य उत्तम है। पिछले दिनों में जो मलेरिया की लहर चली थी, वह अब निबट गई है। ऋतु में बड़ा परिवर्तन आगया है। धूप वैसी असह्य नहीं रही, रात को कम्बल लेकर कमरे के अन्दर सोना पड़ता है। गङ्गा की धारा अभी चलरही है।

महात्मा मुंशीराम जी

महात्मा मुन्शीरामजी आजकल गुरुकुलमें ही हैं और धर्मवीर पं० लेखरामजी की जीवनी लिखने में लगे हुए हैं। यह जीवनी आर्य्यसमाज के बड़े काम की है। दीवाली तक महात्माजी गुरुकुल में रहेंगे और उसके पीछे दिल्ली आजायेंगे।

दीर्घावकाश

गुरुकुल के दीर्घावकाश समाप्त होने को हैं। अध्यापक तथा उपाध्याय गण घरों के आनन्द लूट कर धीरे धीरे शायद उदास मनों से गुरुकुल में इकट्ठे होरहे हैं। दीवाली समाप्त होते ही पढ़ाई नियम पूर्वक आरम्भ होजायगी और सब हृदयों की उदासी कार्य के आते ही भाग निकलेगी।

प्रेरित

सरस्वती का आशीर्वाद

यह आशीर्व्वाद लक्ष्मी मैया के उपास
कों को नहीं सरस्वती ही के उपासको
को मिलता है। लक्ष्मी के उपासकों क
तो सरस्वती के उपासक चेले चांटे ठह
अतएव उन्हें न तो इस आशीर्व्वाद क
प्यास ही है और न इसे स्वीकार कर
की इच्छा ही रखते हैं। सरस्वती क
यों तो कोटि २ प्राणी उपासक हैं, प
हम एक अनन्य उपासक की बात कह
हैं। वे सरस्वती मैया के अन्तरंग उपास
हैं, भारत में उनका नाम छिपा नहीं है
सरस्वती के जीवित रहने छिपने क
सम्भावना भी नहीं है। हम अधिक भ्र
में न डाल कर कहेही देते हैं। आपक
नाम पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी
हमने इन्हें अन्तरंग इसलिये कहा है
सरस्वती आप ही के हृदय में वास क
के आप ही के मुख से आशीर्व्वाद
की झड़ी लगा देती है। इन आशीर्व्वा
में बड़ा मज़ा होता है। ये दुरंगे ति
रंगबिरंगे होते हैं। सरस्वती सधवा
न? इस लिये उसने अपने वेश भूषण
तरह अपने आशीर्व्वाद को भी रंग
रंगा रंग लिया है। अभी इस रंग
एक फुहार छूटी थी। फुहार ऐसी वै
नहीं थी। ऐरा गैरा तो उसमें डूब जा
पर भाग्य से जिन्हें लक्ष्य बनाया ग
अर्थात् पं० मैथिली शरण गुप्त कच्ची
नी के नहीं हैं कि बह जाते। वे
हैं अवश्य पर उनकी नम्रता मौन
है कि जिसपर इन फुहारों का उ
ही प्रभाव पड़े। अतएव स्थिर रहे।
होते तो घुल घुलाकर मोरी में जापड़े
होनहार की बात? उधर पाटली
का पैर जा पड़ा, पड़ते ही फिसल ग
अब क्या था, उसने सुना ही तो डा
हैं तो ये भी सरस्वती के उपासक
नये सांचे में ढले—पुजारियों की
टन २ टाल बजाकर दाँत निकाल
गिड़ गिड़ा कर औंधे सीधे पड़कर
बन कर उपासना के पक्षपाती न
मन से उपासना करते हैं आरम्भ
गिड़ाहट से घृणा है—मन में भ
समुद्र लहरा रहा है—आप की
है मीठी गुड़सी बातों में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चिपकाना भांड और खुशामदी पुराने नवाबों उमरावों का काम था—अब तो मन में भक्ति प्रेम रक्खो—निश्छल व्यवहार करो-आपकी समझ में उपासना का यही उत्कृष्ट मार्ग है। खैर उसे आने भी दीजिये, अबकी बार और एक आशीर्व्वाद का पचड़ा निकला है—पर भाई! इस का तेज़ रंग हमारी—आखों से सहा नहीं गया। अबकी बार भाग्य खुले हैं, स्वामी विरजानन्द के चरित्र रचयिता———की। कहना नहीं होगा कि वे सुनकर प्रसन्नही हो गये होंगे। सरस्वती पर उनकी श्रद्धा शत सहस्र गुणी बढ़ गई होगी—सरस्वती वास्तव में है भी इसी योग्य। भक्त जन—नहीं उपासक गण अपनी २ फूलों की माला गुँथ कर माता के चरणों में रखते हैं—माता सरस्वती उन्हें ग्रहण कर इस प्रकार के आशीर्व्वाद से भक्तों को कृत कृत्य कर देती है। जो हो, है तो माता ही—माता की तो गालियों में भी गुलाब की गन्ध आती है इलवे का मज़ा रहता है। बरफ़ सी ठण्डक रहती है। फिर आशीर्व्वाद का तो कहना ही क्या? वे लोग जो इस प्रतिष्ठा के भाजन हुये हैं, धन्य हैं—उनका जीव सफल है—हम उन्हें इस सौभाग्य पर बँधाई देते हैं—क्या कहें हमारा हृदय कुछ ऐसा संकीर्ण सा है कि उसमें सरस्वती की प्रतिष्ठा बताती ही नहीं—नहीं तो हमारे घर में कनेर का एक पेड़ है उसके लाल २ बड़े ही अच्छे फूल आते हैं, उसकी एक माला बड़ी प्रसन्नता से माता के चरणों—नहीं २ कण्ठ में डाल ही देते—फिर देखते रंग में रंग मिल जाता।

श्री चतुरसेन वैद्य।

——

वैदिक धर्म प्रचार का सहज उपाय।

(चलती गाड़ी में रोड़ा)

दक्षिण अफ्रिका की चिट्ठी.

हमें देश में भी और आजकल विदेश (समुद्र पार) में अपना और परायों से भी धार्मिक वार्तालाप कथा व्याख्यान बहस मुबाहिसा करने का काम पड़ा करता है इसलिये चिरकाल के अनुभवों से जो निर्णय किया गया है वह इस समय चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाया जाता देखकर प्रगट कर देना हम आवश्यक ही नहीं अत्यंत जरूरी जानते हैं।

इस समय अमेरिका में सत्यार्थ प्रकाश भेजने न भेजने पर विवाद हो रहा है अस्तु हमें उससे तो सरोकार नहीं है पर हम अपने इस दक्षिणी अफ्रिका के भारतीय लोगों तथा ऐसे ही दूसरे प्रांतों (ट्रिनिडाड आदि) वालों की दशा के आधार पर कुछ कहना चाहते हैं। यूरोप अमेरिका के कृश्चियन गोरे लोग आर्य (वैदिक धर्मी) बन जायँ यह एक बात है और हजारों नहीं वरन् लाखों वर्ष से वंश परम्परा द्वारा आर्य बने बनाये हमारे हिंदू नाम धारी भ्राता गण जिन्हें ईसाइयों ने जाल में फँसाने के हजारों फंदे लगा छोड़े हैं उन्हें जैसे तैसे बचाकर अपने वैदिक धर्म में स्थायी बनाये रखना दूसरी बात है। हम यह पाठकों से पूंछते हैं कि इनमें से प्रथम कौन सा काम हमें करना उचित है अवश्य ही इस का उत्तर यही होगा कि प्राप्त की रक्षा प्रथम करना चाहिये और अप्राप्त की प्राप्ति पर ध्यान पीछे देना ठीक होगा।

अच्छा सुनिये कि ईसाई लोग यहां हमारे हिंदू भाइयों को भड़का रहे हैं कि तुम्हारा धर्म पत्थर पूजा इत्यादि कौड़ी काम का भी नहीं है। हिन्दू बिचारे चुप दम भी नहीं मारते पर आखिर यह चुप्पी के दिन,। ये पुराने फैशन वाले चाहे यह कह कर मन समझौता करलें कि हमारे पुरखाओं से जो चला आता है वह अच्छा हो या बुरा वह हमें भला ही है। अभी यहां की नई सन्तानें स्कूल में हैं और वहां बायबिल तो पढ़ ही लेते हैं। चाहे हिंदू धर्म, हिंदी अक्षर और हिंदी बोली का एक शब्द भी न जानते हों, सो क्या यह आश्चर्य होगा अगर थोड़े ही वर्षों में वे ईसाई हो जांय। अच्छा फिर इन्हें बचाने का क्या उपाय है? हमें कहते शोक और भय होता है कि यह वही रोड़ा है जो हमारी चलती गाड़ी में अटका दिया गया है!

उपाय कुछ असम्भव नहीं है। अगर हम अपनी ओर से छोटी २ पुस्तकें जो थोड़े दामों बिक सकें या प्रायः मुफ्त भी बांटी जा सकें तय्यार करा २ कर यहां हिन्दू घर २ में छितरा दें जिन में क्रिश्चियनों के मत का ख़ूब खाका उड़ाया गया हो और अपने धर्म का तत्व प्रगट करके सिद्ध किया गया हो कि पत्थर पूजा आदि हमारा असली धर्म नहीं है किन्तु वह जो सत्य सनातन वेद धर्म है वह अकाट्य है इत्यादि तो इन हिन्दू भाइयों को फिर बड़ा साहस और बल प्राप्त हो जावे (जैसा कि अब होने लगा है) और फिर वे ईसाइयों के जाल में फंसना तो दूर रहा उसे तोड़ ताड़ बराबर कर देने लायक बन सकेंगे। पर वह तो तब हो कि पुस्तकें सस्ती कर दी जायं। सत्यार्थ प्रकाश के १५ समुल्लास २ पृथक् २ चौदह भागों में विभाजित हो जाँय (और वह पूरा भी बना रहे) और ईसाइयों वाला भाग यहां दो चार हज़ार भेज दिया जाय तो जहां उसे मोल लेने वाले को केवल दो तीन आना दाम देने से सहज होजायगा और कोई भी ले सकेगा यहां हम आर्य लोगों से यह अपील भी कर सकेंगे कि सौ पचास प्रतियां मोल लेकर मुफ्त बांट देवें। लेकिन जिन लोगों का यह पक्ष है कि पूरा सत्यार्थ प्रकाश ऐसे का ऐसा ही रहना उचित है वे इतना नहीं सोचते कि दो चार आना तो सहज में कोई भी ख़र्च सकता है पर दो रुपया या अधिक मूल्य सिवाय उच्च दरजे के श्रद्धालुओं के दूसरे नहीं दे सकते जबकि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारी भारतीय प्रजा धन हीन दुःखी दरिद्र होती जा रही है।

निदान हमारा यह कथन है कि जो लोग सत्यार्थ प्रकाश को खण्ड २ पृथक् भी छपाने में बाधक हैं उन्होंने ही निश्चय हमारी इस वैदिक धर्म प्रचार की चलती गाड़ी में रोड़ा अटका दिया है अगर वे ऐसा न करते या अब भी अगर परमात्मा उन्हें सुबुद्धि दे और वे अपने व्यर्थ के हठ को त्याग दें तो निस्सन्देह इस रोड़ा के निकल जाने पर हमारी गाड़ी आशा है कि रेल से भी अधिक तेज दौड़ने लगेगी अर्थात् ये जो लाखों हिन्दू सन्तानें हमारे देखते २ ईसाई होते चले जारहे हैं और हम रुधिर के घूंट पी कर ही तमाशा सा देख रहे हैं फिर क्या मजाल कि ऐसा होने पावे।

अधिक क्या कहें हमें अपने इस दक्षिणी अफ्रिका प्रान्त की फिक्र पड़ी है इसलिये हमारी प्रार्थना सारी प्रतिनिधि सभाओं और परोपकारिणी तथा वैदिक यन्त्रालय से यह है कि यहां की आवश्यकता के विचार से सत्यार्थ प्रकाश का एक भाग ईसाईयों वाला (तेरहवां समुल्लास) पृथक् छपवा कर यहां प्रचार निमित्त भेज देवैं। उचित तो यह है कि बहुत २ संख्या मुफ्त बांटने के लिये भेजी जांय परन्तु अभी हम केवल इतना ही चाहते हैं कि जो लागत छपाई मात्र होगी वह यहां से भेजने को तैयार हैं अतः १००० एक२ हजार हिन्दी और १००० अंगरेजी दोनों छपाया जावै। हम समझते हैं कि आकार के अनुसार लेखा लगाने से उस उतने भाग की पुस्तिका का विक्रयार्थ मूल्य ≡) तीन आना पड़ सक्ता है (हमने श्रीमान् मास्टर दुरगा प्रसादजी के अंगरेजी सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ संख्या अनुसार यह लेखा लगाया है) और हिन्दी का इससे भी कम होगा। १००० का आर्डर होने से लागत अवश्य ही कम हो जायगी।

हम आशा करते हैं कि हमारा उक्त लेख ही इस विषय में प्रार्थना पत्र माना जायगा और एक हजार हिंदी तथा एक सहस्र अंगरेजी ईसाई मत सम्बंधी भाग सत्यार्थ प्रकाश के छपाई का यही हमारा आर्डर भी माना जायगा सो यदि उत्तर में हमें कहीं से ऐसी स्वीकृति मिलेगी और धन मांगा जायगा तो हम यहां से भेजने का प्रबंध (चन्दा कराकर) करेंगे।

हम यह परम आवश्यक प्रार्थना करते तो हैं और यहां एक सहस्र तो क्या दश पांच सहस्र भी थोड़ा है (मुफ्त बांटने के लिये) परन्तु हमें खूब मालूम है कि हमारी गाड़ी के मार्ग में रोड़ा अटकाने वाले महात्मागण अपने भरसक कभी भी हमारी दाल नहीं गलने देंगे क्योंकि यह हमारा प्रस्ताव आज का नया नहीं है। हमारे दूसरे भाइयों ने ऐसी आवश्यकतायें अनेक बार अनुभव की हैं और बीसों मरतबे यह प्रश्न कभी कहीं से और कभी कहीं से उठाया गया पर उन रोड़ा अटकाने वालों के सामने किसी की पेश न गई।

वे क्यों रोड़ा अटकाते हैं? यह बात भी हमसे छिपी नहीं है, और हम शास्त्रीय वाक्य में कह देना चाहते हैं कि

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ॥ यजु० ४० १७ ॥

अर्थात् सचाई (धर्म प्रचार) के मार्ग में एक रोड़ा अटकाया गया है वह क्या है? यही टका पन्थ—जहां हाय पैसा! हाय टका! की पड़ जाती है वहां फिर सचाई, धर्म प्रचार और वेदों का मान प्रतिष्ठा इत्यादि भला कहां रह सक्ते हैं।

हां हां हमने भारी आक्षेप कियाहै, पर हमें भय नहीं है क्योंकि बात सच्ची है यह बिलकुल ५२ तोला पाव रत्ती ही है। क्या यह आश्चर्य नहीं है कि ईसाई लोग तो अपने धर्म ग्रंथ बाइबिल को खण्ड२ करके एक२ पैसे तक पर बिकने लायक बना रहे हैं और वे प्रायः ऐसा भी करते हैं कि जिस पुस्तक पर चार आना लागत आई होतीहै उसे दो आने पर बेंच देते और सैकड़ों हज़ारों मुफ्त भी बाँट देते हैं परन्तु आर्य समाज ने आजतक कभी पुस्तकों को सस्ती करने का ध्यान तक नहीं किया नहीं यही किया कि मुनाफा छोड़कर केवल लागत मात्र पर बेंच दिया हो।

सत्यार्थ प्रकाश को खण्ड २ करने से उसके प्रचार का दशगुणा और सौगुणा अधिक बढ़जाना सम्भव भी है पर तो भी अधिकारियों ने बार२ प्रस्ताव होने पर भी कभी ऐसा नहीं किया गया कारण यही है कि वहाँ धर्म की वृद्धि से धन की वृद्धि करने की ज्यादा फिक्र लग रही है।

हमारे सामने बड़ा भारी लम्बा चौड़ा लेख इस समय यू० पी० की प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री जी महाशय हरिशंकर शर्म्मा का विद्यमान है। हमने इसे तीन बार पढ़ा है पर शोक से कहना पड़ता है कि इसमें निज कटाक्ष आदि तथा ऐसी बात है जिन पर कुछ न कहना ही भला है। अलबत्ता उन महाशय जी से केवल इतना मात्र हमारा निवेदन है कि "महाशय जी! अगर सत्यार्थ प्रकाश पूरा भी आप छपा लेवैं और खास २ अध्याय (११ और १३) पृथक २ भी छप जाय तो हरज क्या है? जो पूरे विषयों को जानना चाहैं और पूरा दाम भी दे सक्ते होंगे वे पूरी पुस्तक मोल ले लेवैंगे और जिन गरीब बेचारों के घर में पैसा नहीं वे निर्धन लोग एक २ समुल्लास लेकर धर्म का कुछ न कुछ ज्ञान तो पायँगे इसमें हरज ही क्या है। अगर सभा या वैदिक प्रेस को पैसे कमाने (मुनाफा प्राप्त करने) की ही फिक्र न पड़ी हो तो कृपा निधान! आप अपना यह रोड़ा हटा लीजिये कि हमारी गाड़ी जो चलते २ अटक गई है फिर अपने अभीष्ट स्थान को दौड़ती चली जावे। इतिशम्।

निवेदक:

१ मङ्गलानन्द पुरी
स्थान दरबन.

२ भवानी दयाल
जर्मिस्टन-ट्रांसवाल।
दक्षिण अफ्रिका.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवश्यक बात

मान्यवर ! नमस्ते

दीपावली समीप आ रही है । कृपया उससे पूर्व ही संयुक्त प्रान्तिक समाजों का ध्यान सभा के उस सरक्युलर की ओर आकर्षित कीजिये जो गत बोधोत्सव के समय निकाला गया था तथा जिसमें प्रार्थना की गई थी कि बोधोत्सव व दिवाली पर प्रत्येक आर्य्य सभासद को एक एक आना तथा उसके कुटुम्बों को एक एक पैसा अपने समाज द्वारा सभास्थ वेद प्रचार निधि के लिये भेजना चाहिये । जिससे वेद प्रचार निधि को सहायता मिले । आशा है कि आप इस विषय का आन्दोलन अपने अमूल्य पत्र द्वारा अभी से करना आरम्भ करदें गे ।

सेवक
Harishanker
उपमन्त्री सभा

वेदरत्न विद्यालय मुस्तफापुर

इस विद्यालय के प्रबन्ध कारिणी सभा का अधिवेशन ता० २३-८-१४ को हुआ था, जिसमें यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है कि आगामी नवीन ब्रह्मचारियों के वार्षिक चुनाव में गत वर्षानुसार इस बार भी २५ ब्रह्मचारी प्रविष्ट किये जांय । और यह वार्षिक चुनाव ता० ३०,१,१४ को होगा । अनेक महोदयों का ही आवेदन पत्र (ब्रह्मचारी प्रविष्टार्थ) आ चुका है और आ रहा है । समय भी अत्यन्त निकट आगया है; क्यों कि विद्यालय के कार्यालय में आवेदन पत्र ता० ३१-१२-१४ तक आजाना चाहिए, अन्यथा इसके पश्चात भेजने पर हानि की सम्भावना है, अर्थात् संरक्षकों को इसके लिये १ वर्ष की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । अतः आवेदन पत्र भेजने में शीघ्रता करनी चाहिये ।

निवेदक
हरिनारायण शर्म्मा
मन्त्री

नोटिस

लखीमपुर-खीरी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव आगामी अक्तूबर २९ से १ नवम्बर तक होना निश्चित हुआ है । इस अवसर पर हम श्री० स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री स्वामी अनुभवानन्दजी को आमंत्रित करना चाहते हैं । पता ठीक नहीं मालूम है । अतएव कृपा कर के, जो महाशय प्रशंसित सन्यासियों का ठीक पता जानते हों, इस समाज को सूचित करें, यदि यह नोटिस उक्त सन्यासियों के दृष्टिगोचर हो तो वे स्वयं इस समाज को सुशोभित करें और अपनी स्वीकारी से अनुग्रहीत करें ।

भवदीय सेवक
शिवनारायण शुक्ल
बी० ए० एल. एल. बी.
मंत्री

निवेदन

"नवजीवन" के ग्राहक और प्रेमी महाशयों की सेवा में आवश्यक निवेदन

महोदय ! आपको ज्ञात है कि "नवजीवन" को प्रकाशित होते यह छठा वर्ष व्यतीत होरहा है । बहुत कम प्रेमियों को ज्ञात होगा कि ६००) रु० वार्षिक घाटे पर इतने दिन तक वह चलता रहा है । शास्त्री जी के इन डेढ़ दो वर्षों में कई प्रबन्ध हुए और बदले कई प्रकार की असाधारण असुविधायें देख कर उसे सर्वथा बन्द कर देना ही निश्चय कर लिया गया था । किन्तु विश्व सहायक ईश्वर के भरोसे से और आपके उदार भावों पर विश्वास करके "नवजीवन" को जीवित रखने का ही नहीं किन्तु उसे एक उच्च कोटि का अद्वितीय मासिक पत्र बना देने का दृढ़ निश्चय कर लिया गया है। ग्राहक और प्रेमी धैर्य रखें। "नवजीवन" प्रकाशित होगा और अवश्य प्रकाशित होगा। जब तक स्थायी सुप्रबन्ध न कर लिया जाय तब तक इस का बन्द रखना आवश्यक ही है। जितनी शीघ्र संभव हो सके अधिक से अधिक जनवरी या चैत्र तक-प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है । आशा है आप हमारा पूरा २ हाथ बटाकर उसे चिरस्थाई करने में सहायक होंगे ।

भविष्य में "नवजीवन" के संबंध में सब पत्र व्योहार निम्न पते पर कीजिए ।

विनीत
द्वारकाप्रसाद सेवक
S/o डाक्टर ओङ्कारप्रसाद जी
पारसी मुहल्ला इन्दौर C/I

इन्दौर
२६ सितम्बर १४

आर्य समाजिक जगत् ।

भावी उत्सव

लखीमपुर-खीरी आर्य समाज २९ अक्तूबर से १ नवम्बर
मोगा आर्य समाज ३० अक्तूबर से प्रारम्भ होगा
मुरादाबाद आर्य समाज १८, १९, २० अक्तूबर
वैदिक पाठशाला अलीगढ़ ३०, ३१, अक्तूबर तथा १ नवम्बर
मुज़फ्फ़र नगर आर्य समाज २९, ३०, ३१ अक्तूबर
फ़ाज़िल्का आर्यसमाज २४, २५, २६ नवम्बर
वैदिक कन्या पाठशाला नगीना (बिजनौर) २२ से २४ अक्तूबर
फतेहपुर सिटी आर्यसमाज २९, ३०, ३१, अक्तूबर तथा १ नवम्बर
दायरादीन पनाह आर्यसमाज ज़िला मुज़फ्फरगढ़ आर्यसमाज ६, ७, ८ नवम्बर

नये समाज

(१) सुसेनर (जिला शामपुर) में नये आर्यसमाज की स्थापना हुई । मुं० श्यामस्वरूप जी वकील प्रधान और बा० मदन मुरारीलाल जी मुख्तार मन्त्री निश्चित हुए । बड़ी प्रसन्नता की बात है ।

(२) दो बलाहन (जि० रोहक) में पं० विश्वम्भरदत्त उपदेशक और स० देवीचन्द भजनीक के उपयोग से नये समाज की स्थापना हुई । कई महाशयों के यज्ञोपवीत हुए ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्यो पान्त इतिहास सरल भाषा और मनो-रंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषा नुवाद २)

धर्म निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पतासाफ़हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बाज़ाज़ा शहर मेरठ

आर्यसमाजों को सूचना

म० तेजूमल जी 'म' कनल प्रबन्धकर्त्ता देश सेवा यज्ञ, पो० तलोद अहमदाबाद सूचना देते हैं कि वह प्रचारक की ग्राहक आर्य्य समाजों को एक कापी राष्ट्रों की उन्नति, लेखक श्री ब्रह्मचारी इन्द्र जी वेदालंकार मुफ्त दें गे। समाजों को अपनी ग्राहक संख्या लिखकर उक्त महाशय से पुस्तक मंगा लेनी चाहिये।

प्रबन्धकर्त्ता।

७००) रुपये इनाम।

वाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री वाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उस के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ़ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द आला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेंन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।=)
प्रार्थना पुस्तक =)
ओंकार की उपासना =)

२००) रुपये इनाम।

आठ व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)
वेद और रामायण के उपदेश =)
वेद और महाभारत के उपदेश =)
वेद, मनु और गीता के उपदेश =)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ॥)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका आचार्य पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल बिलकुल छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२।३ मौताज हो में बुखार बन्द होता है।

डाक्टर बर्मन को बनाई—

फसली बुखार वो तिल्ली की दवा।

देखिये। इस दवा से यह हड्डी का टाटर कैसा पुष्ट हो गया है।

जूड़ी बुखार वो तिल्ली की दवा।

मोल—बड़ी शीशी ॥|=) छोटी शीशी ॥) डा०म०।=) और।-)

दवा सब जगह बिकती हैं।नकली दवा से सावधान।

दवा खाने के पहिले

दवा खानेके बाद

डाः एस.के. बर्मन [illegible] नँ० ७६

एजन्ट—बाबूराम जैन एन्ड कम्पनी बड़ा बरीवा दिल्ली

श्री प्रो० बालकृष्ण एम०ए०

की रचित

अनुपम पुस्तकें शीघ्र लीजिये

जो पुस्तकें अब तक नहीं छपीं- उनके लिये नाम लिखाने वालों से ¼ कीमत ली जावेगी।

अर्थ शास्त्र १॥)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास १)
अग्नि होत्र व्याख्या ।)
आर्य्य सन्ध्या (तय्यार हो रही है) ।)
क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं ? ।=)
आत्म—सुधार ,, ।=)
वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज प्रणाली छप रही है। ॥)

पुस्तक भंडार गुरुकुल हरिद्वार॥

उस्तरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल U.P.

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त के करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि जिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, विशेषतः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पता:—

बाबू पंचमसिंह वर्मा

मालिक कारखाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारसछिटी

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (ड)

चान्द--जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रू० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूल्य रत्न है॥ **ब्राह्मी बटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी बटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रू० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि बटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वेदिक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी बटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रगट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णवर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी बटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रशंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी बटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्राह्मी बूंटी बाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

बटिका बुद्धिबलिःस्वो यः स्वादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽऽशु संस्मरेत्
वर्षां स्मृतिप्रदाकुष्ठपांडुमेहास्तक सजित, विषशोथज्वर हरी मैधायुबलवर्धिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी बटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी बटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंडा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रू० डाक व्यय ।) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट फ्रिज। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त—पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री
अलीगढ़ सिटी. यू. पी.

केशरञ्जनतैल

बाल उड़ाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी क़रांश, ख़ाना गली समोसान देहली

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No L. 857

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषासमीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक---मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | १ कार्त्तिक सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३१] ता० १७ अक्टूबर १९१४ | संख्या २७ भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक--इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)

प्रचारक के ग्राहकों से १।)

सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग ।

लेखक--इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों को पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)-- प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य॥)

राष्ट्रों की उन्नति

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त [illegible] ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । [illegible] राष्ट्र और उन्नति की पुकार [illegible] देती है पर राष्ट्र और [illegible], यह बहुत थोड़े लोग जानते [illegible] क में फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र० ·

तीन मास " " " " =) "

छः " " " " " -)॥ "

सालभर " " " " -) "

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये प[illegible] व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रो[illegible] पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाच[illegible] होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्र[illegible]रक कानाम और बंटने की तिथि छपी हो[illegible] चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ [illegible] कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक [illegible]

एकतोले तक [illegible]

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता--प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र--देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गेहुं की खेती

हिन्दी उर्दू दोनों भाषाओं में यह अपूर्व पुस्तक है जिस में किसान हर एक प्रकार की खेती में सामान्यतः व गेहूं की खेती में विशेषतया दुगनी तिगनी पैदावार कर सक्ता है कृषि सम्बन्धी हर एक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहुत से बिना मूल्य और प्रत्येक स्थान में मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा बिचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली यू० पी० गवर्नमेंट के कृषी विभाग ने इस पुस्तक को बहुत उपयोगी बताया है मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रु० १) दो पुस्तकों के ग्राहक को डाक महसूल माफ़। रामप्रसाद सब जज उज्जैन।

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालों को चाँदी का पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के जवाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

"ग़रीबों के लिये मुफ़्त"

हैजे की दवादी जाती है।

क्योंकि हैजे का प्रायः प्रत्येक स्थान पर बड़ा ज़ोर हो रहा है और हमारे पास बड़ी अच्छी दवाई है इस लिये सिर्फ़ ।) डाक व्यय आने पर मुफ़्त भेजी जावेगी जो लोग अपने २ ग्रामों या नगरों में बांटना चाहें हमारे एजन्ट बन सक्ते हैं और दवाई रेलगाड़ी द्वारा भेजी जा सक्ती है।

पी० एल० सुनीति कम्पनी
पाचवीं मंज़ल बड़ोचा बिलडिंग
प्रिंसेस स्ट्रीट बम्बई।

"आवश्यकीय सूचना

सम्पादिका के नाम सर्व पत्र व्यवहार और बदले का अख़बार आदि सब निम्नलिखित पते पर आने चाहियें।

देवीसुनीति
सम्पादिका भारत महिला
पाचवीं मंजल बड़ोचा बिलडिंग
प्रिंसेस स्ट्रीट बम्बई।

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

बिहारी क़न्द—खावो।

और लाल बन जाओ इसी महीने पहाड़ से इस की खुदाई होती है-इस कारण शीघ्रता करो कीमत १) रु० सेर।

पता. पं० काशीनाथ नागर
ज्वालापुर जि० सहारनपुर

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]
धोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

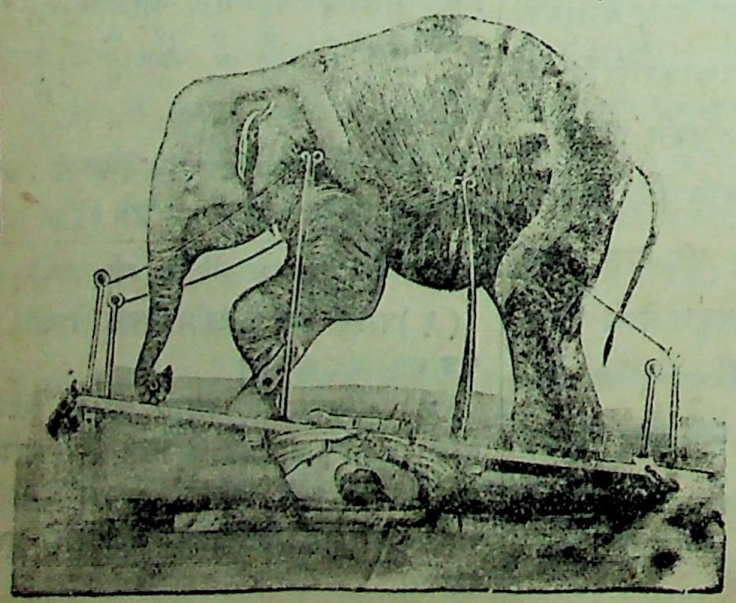

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलोअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएं ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां।) वैदिक विवाहादर्श १) तांतिया भील =)
ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(पूर्व) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धाञ्जलि।

सं मा तपन्त्यभितः सपत्नी रिव पर्शवः।
मूषो न शिश्नाव्यदन्ति माध्यः स्तोतारन्ते शतक्रतो! वित्तम्मे अस्यरोदसी। ऋग्वेद।

अपनी सहस्रों शक्तियों से संसार की रचना करने वाले जगदीश्वर! मुझ रूपी के चारों ओर दुःख की कीलें चुभ रही हैं। अनेक पत्नियों वाले पति की पत्नियाँ जैसे एक दूसरीको तंग करती हैं, ये दुःख रूपी कीलें इसी प्रकार मुझे क्लेश दे रही हैं। जैसे एक धागे को, जिस में मीठा या कोई खाने योग्य पदार्थ सना हो, चूहे कुतरते रहते हैं, इसी प्रकार मानसिक पीड़ायें मुझे खा रही हैं, भगवन्! मैं आप का स्मरण करता हूं। परमात्मन्! ये पृथिवी और अन्तरिक्ष मेरे हार्दिक भाव के साक्षी हों।

आत्मिकदृश्य।

युवा रामचन्द्र पिता की प्रतिज्ञा पालन करने के लिये वन को चले गये हैं। पुत्र शोक की व्यथा से दशरथ महाराज का देहान्त होजाता है। मन्त्री लोग नाना के घर गये हुए भरत को बुलवा भेजते हैं। आशंकाओं से भरा हुआ और अनिष्ट की संभावनायें करता हुआ भरत अयोध्या में आता है वहाँ सब वृत्तांत जान कर वह बेहोश होजाता है। शोक, क्रोध, घृणा और लज्जा उस के चित को डाँवाडोल कर देती हैं। वह भरत जिस के लिये उस की माता ने इतने धोखे किये, इतनी क्रूरता की, वह राज्य को ठुड्डा मार कर दूर भगा देता है। वह राज्यकी इतनी भी परवाह नहीं करता, जितनी फटे पुराने कपड़े की की जाती है। उसे राज्य पाट की चिन्ता नहीं, उसे चिन्ता है तो अपने पिता की, उसे चिन्ता है तो भाई की। माताके दिये हुए यशस्वी राज्य पाट को धूल की तरह झाड़ कर धर्म—प्रिय भरत अपने वनवासी भाई के पास जाकर राज्य सहित अपनी देह की भेंट उस के चरणों में रख देने का संकल्प करता है।

गङ्गा का तट है। राम और लक्ष्मण सीता देवी के दायें बाँये बैठे हुए हैं। सामने अयोध्या की सारी ऋषिमण्डली विराजमान है। एक ओर परलोक वासी महाराज दशरथ की तीनों स्त्रियाँ बैठी हुई साक्षात शोक की देवियाँ प्रतीत होती हैं। त्यागी भरत राम के चरणों को पकड़ कर अयोध्या को लौट चलने की प्रार्थना कर रहा है। रामचन्द्र सत्य की साक्षी देकर उसे समझा रहे हैं कि—

त्वं राजा भरत भव स्वयं नराणा,
वन्यानामहमपि राजराएमृगानाम्।
गच्छत्वम्पुरवर मद्य संप्रहृष्टः
संदृष्टस्वहमपि दण्डकाम्प्रवेक्ष्ये।

हे भरत! तुम जाकर प्रजा के राजा बनो और मैं वन के पशुओं का राजाधिराज बनता हूं। तुम प्रसन्नता पूर्वक अयोध्या को जाओ, और मैं दण्डकारण्य का रास्ता लूंगा।

भरत ने कई प्रकार से निवेदन किया किन्तु रामचन्द्र मानते ही नहीं, वे अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ हैं। तब भरत की सभा के एक जाबालि नामके विद्वान् शास्त्रीय युक्तियों से रामचन्द्रको समझाने का यत्न करने लगे। आपने कहा,

साधु राघव माभूत्ते बुद्धिरेव निरर्थिका
प्राकृतस्य नरस्येव क्लार्य बुद्धेस्तपस्विनः।

हे राघव। तुम श्रेष्ठ बुद्धि वाले हो तुम तपस्वी हो। तुम साधारण पुरुषों जैसी बातें मत करो, उन जैसी व्यर्थ बुद्धि तुम्हें नहीं। क्यों कि—

कः कस्य पुरुषो बन्धुः किमाप्यं कस्य केनचित्
एको हि जायते जन्तु रेक एव विनश्यति।

मनुष्य अकेला ही उत्पन्न होता है और अकेला ही मरजाता है। कौन किस का सम्बन्धी है? और किस से किस का लेन देन है? अर्थात् सब अपने लिये हैं, कोई किसी का कुछ नहीं लगता।

तस्मान्माता पिता चेति राम सज्जेत यो नरः
उन्मत्त इव स ज्ञानो नास्तिकश्चिदि कस्यचित्।

इसलिये हे राम! कोई किसी का माता पिता नहीं। फिर किस में फंसना चाहिये। जो इनको अपना समझता है वह पागल की भाँति अज्ञ है। इसलिये-

पित्र्यं राज्यं समुत्सृज्य सनार्दसि नरोत्तम
आस्थातुं कापथं दुःखं विषमं बहु कण्टकम्।

हे राम! पिता के विशाल साम्राज्य को छोड़कर दुःख दायी, कठिन और काँटों से भरेहुए वन मार्ग में घूमना तुम्हें किसी प्रकार भी उचित नहीं है। क्यों कि

नते कश्चिद्दशरथस्त्वं च तस्य न कश्चवन
अन्योराजात्वमन्यस्तु तस्मात्कुरु यदुच्यते।

तुम्हारा दशरथ कुछ नहीं है और तुम दशरथ के कुछ नहीं हो। फिर उस की प्रतिज्ञा के लिये कष्ट भोगना बुद्धिमत्ता नहीं। इस लिये हे राम तुम्हें जैसा कहा जाता है, वैसा ही करो।

क्या अच्छी फिलॉसफी और क्या भला परिणाम है। फिलॉसफी वेदान्त की, और इनाम इतना बड़ा। राजा क्या, हम में से कोई भाई का लाल छाती पर हाथ रख कर कह सकता है, कि ऐसी फिलॉसफी और ऐसे इनाम के सामने आने पर वह तथा सुन कह उठता? किंतु रामचंद्र! प्रलोभन में पड़ कर धर्म से च्युत होने वाले नहीं थे। उनका उत्तर सुनिये।

भवान्मे प्रिय कामार्थं वचनं यदिहीम्भावान्।
अकार्यं कार्यसंकाशमपथ्यं पथ्य सन्निभम्।

हे विद्वन्! आपने मेरी भलाई के लिये जो वचन कहे हैं, वे यद्यपि कार्य प्रतीत होते हैं, किन्तु वस्तुतः अकार्य हैं वे यद्यपि ऊपरसे हितकारी जँचते, परंतु वस्तुतः अहितकारी हैं क्यों कि

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुष मानिनम्॥

चाहे कोई पुरुष बड़े कुल का हो, चाहे छोटे कुल का चाहे कोई कितना ही वीर और अभिमानी हो, उसकी शुद्धता या अशुद्धता का पता उसके चरित्र से ही चलता है। कुल या वीरता के कारण कोई पुरुष बड़ा नहीं हो सकता, बड़ाई देने वाली वस्तु चरित्र है। चरित्र ही मनुष्य का असली वेष है, जिससे उसके गुण अवगुण प्रकाशित होते हैं।

कस्य यास्याम्यहं वृत्तं केन वा स्वर्गं माप्नुयाम्।
अतसा वर्तमानोऽहं वृत्या हीनप्रतिज्ञाया॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आप के कहने के अनुसार प्रतिज्ञा को तोड़ कर नीच वृत्ति से रहता हुआ मैं किस तरह से उत्तम चरित्र को पा सकता हूं? या किस प्रकार मुझे सुख मिल सकता है? इस लिये—

सो हं पितुर्निर्देशं तु किमर्थं नानुपालये
सत्य प्रतिश्चवः सत्यं सत्येन समयी कृतम्।

मैं सत्यव्रत का पालन करता हुआ पिता की आज्ञा का पालन क्यों न करूं? सत्य का निदेश मैं क्यों न मानू?

क्या चरित्र और सत्य के लिये आज तक किसी व्यक्ति ने इतने सुख इतने वैभव और ऐश्वर्य को लात मारी है? यदि किसी और ने भी ऐसा दृष्टान्त दिखाया होता तो उसे भी मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि क्यों न मिलती? यदि अनेक राम होते तो दीपमालायें भी अनेक होतीं। दीपमाला एक है क्योंकि राम एक हैं। सत्य पर सांसारिक साम्राज्य को कुर्बान कर देने वाला राम एक ही हुआ है--उसकी और उपमा इतिहास में नहीं मिलती।

सामाजिक टिप्पणियाँ

सर्दियां शुरू होते ही आर्यसमाज और आर्य कुमार सभाएं अपने उत्सवों की तय्यारियों में लग जाती हैं। ये उत्सवों की ऋतु होती हैं। एकही तिथियों में दस दस उत्सव इकट्ठे आ जाते हैं। इस कारण उपदेशकों और व्याख्यानतादाओं के लियेखूब दौड़ धूप रहती है। अभी तो किसी प्रकार निभ जाती है, किन्तु थोड़े ही दिनों में समाजों और आर्यकुमार सभाओं की संख्या ज़रा और बढ़ने पर निभना कठिन हो जायगा। इसके लिये अभी से कोई उपाय सोचना चाहिये। यदि आर्यमित्र सभाएं और आर्यकुमार सभाएं भी अपने नगर की आर्यसमाज के साथ ही उत्सव कर लिया करें तो आधी कठिनाई दूर होजाय। एक ओर दुगुना व्यय न हो, और दूसरी ओर उपदेशकों का टोटा न रहे। इस विषय में प्रांतिक प्रतिनिधि सभाओं को कोई नियम कर देना चाहिये, क्योंकि उपदेशकों के न दे सकने से नाराज़गी उन्हीं को सहनी पड़ती है।

संयुक्त प्रान्त प्रतिनिधि सभा के मंत्री महाशय ने हमारे पास एक घोषणापत्र भेजा है, जो हम नीचे अविकल प्रकाशित करते हैं:—

"आर्य्य ग्रन्थकारों से सविनय निवेदन है कि वे अपनी लिखी पुस्तकों को सरस्वती सम्पादक पंडित महावीर प्रसाद जी द्विवेदी के पास समालोचनार्थ कदापि न भेजा करें। पक्षपात को बिना न्याय पूर्वक पुस्तक के गुण दोष वर्णन करना प्रत्येक समालोचक का प्रधान कर्त्तव्य होना चाहिये। परन्तु खेद है कि द्विवेदी जी इस बात को कभी कभी बिलकुल भूल जाते हैं। आर्य्य समाज के ऊपर तो उनके क्रोध की मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। अभी हाल में आपने एक पुस्तक की समालोचना करते हुये श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के गुरु महर्षि विरजानन्द जी प्रज्ञाचक्षु के ऊपर गन्दे शब्दों की बौछाड़ करके अपनी महावीरता का प्रचण्ड परिचय दे डाला है। ऐसी दशा में हमारी सम्मति है कि, कोई आर्य्य ग्रन्थकार अपनी पुस्तकों को वहाँ न भेजें।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रांत बुलंदशहर ६—१०—१४

विनीत—
मदनमोहन सेठ,
M. A. L. L. B.
मंत्री सभा.

हमने सरस्वती के नोट पर टिप्पणी देते हुए जो कुछ लिखा था, उसका सत्यपरिणाम हुआ, और आर्य्य पुरुषों ने अपना कर्त्तव्य समझ लिया है, इसका हमें सन्तोष है। कई सज्जन हमारे तथा सभा के ऐसे प्रस्ताव से असन्तुष्ट हैं। उनसे हमारा निवेदन है कि हमारे ऐसे प्रस्ताव में केवल आत्म रक्षा का भाव काम करता है, और कोई भाव नहीं है। हम जानते हैं कि यदि आर्यसमाजी अपनी पुस्तकें सरस्वती में समालोचनार्थ न भेजेंगे तो इससे द्विवेदीजी का या सरस्वती का कुछ नहीं बिगड़ता। इसमें केवल आर्य ग्रंथकारों का गालियों से बचाव होता है, इसमें और किसी की कोई हानि नहीं है।

आर्यमित्र सभा आगरा का वार्षिक उत्सव ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर को होगा, और आर्यकुमार सभा मुलतान छावनी का उत्सव ६, ७, तथा ८ नवम्बर को होगा।

गुरुकुल कांगड़ी से संस्कृत की उषा मासिक पत्रिका के प्रबन्धकर्त्ता सूचित करते हैं कि गत महीने की उषा इसलिये नहीं निकली क्योंकि इस मासकी पत्रिका दोनों महीनों की इकट्ठी होगी, और उसमें ऋषिदयानन्द और मर्य्यादा-पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के विषय में लेख और कवितायें होंगी।

लाहौर आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव २७, २८, और २९ नवम्बर को होगा। अभीतक सुना तो कुछ नहीं गया, किंतु हमें पूर्ण आशा है कि लाहौर के पुरुषार्थी भाई उत्सव की तय्यारियों में लगे हुए होंगे।

राष्ट्रीयता का मूल मंत्र।

तय्यार होगई।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिसकी पहिली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है। इसके लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं। एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है। इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिये क्या गुण आवश्यक हैं। जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये।

मूल्य ≡)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

अयोध्या की दीपमाला।

घर घर दीपकों की माला चुनी हुई है। आज अयोध्या नगरी की सजावट का वारापार नहीं जो प्यारे राम इतने दिनों तक बन में थे, आज लौटकर आये हैं। उन बूढ़ों को, जिन्होंने बन में जाते हुए राम को विदाई दी थी, आज प्रतीत होरहा है, मानो उनका बेटा जङ्गल से लौट कर आया है। वे युवा जो चौदह वर्ष पहिले बालक थे, और 'हमारा राम' 'हमारा राम' पुकारते हुए रथ के पीछे अयोध्या के [illegible]र तक भागते गये थे, आज उसी 'राम' को लौटते हुए सुन कर हर्ष के आंसू बरसा रहे हैं। जो अभी बालक हैं, उन्होंने अपनी माता से पितृभक्त सत्यवादी मर्यादा पुरुषोत्तम की कहानियाँ सुन रखी हैं। अब तक वे उसे अदृश्य देव की तरह पूजते थे, आज उनके नेत्र सफल होंगे। उनकी उत्सुकता पूरी होगी रावण का दमन करने वाले बाँके वीर और देवी सीता के प्रोसमय पति को देखने के लिये अयोध्या के सारे नर नारी प्रसन्नता के मारे आपे से बाहिर होरहे हैं।

अयोध्या वासी क्यों प्रसन्न थे? उन [illegible] कौन आया था? उन्हें क्या मिला था? आज भारतवासी इन प्रश्नों का उत्तर नहीं समझ सकते। उन के अन्दर वह शांति नहीं रही, उन के पास वह सामान नहीं रहा। अयोध्यावासी आनन्दित थे क्योंकि राम उनका प्यारा था। राम उनका था, वे राम के थे। आज हमारा कौन है, और हम किस के हैं? अयोध्यावासी अपने राम के आने से घर दिये जलाते थे; हमारा कौन है जिस के आने पर हम दिये जलाएं। शायद इस विस्मृत भूमि पर कोई ऐसी अभागी जाति है जिसका कोई राम नहीं, तो वह हमारी है। तब फिर हम अयोध्यावासियों के हर्ष को क्या समझ सकते हैं।

राम रावण को जीतकर आया था। वह रावण जिसके अदम्य पराक्रम के सामने तीनों लोक कांपते थे, वह रावण जिसकी जिधर आँख उठ जाती थी, उधर ही राजाओं के मुकुट झुकजाते थे, आज नहीं है। उस सभ्यता और धर्म के शत्रु को अयोध्या वासियों के राम ने ही मार गिराया है। फिर अयोध्यावासियों के चित्त गद्गद क्यों न हों। उन्हीं अयोध्या वासियों की संतान आज नहीं जानती कि धर्म के लिये शस्त्र उठाना किसे कहते हैं? उन्हें तो यह भी नहीं ज्ञात कि तलवार और तमंचा किस चिड़िया का नाम है। ऐसे भारतवासी रावण के वध की बात क्या समझेंगे? जो यह नहीं जानते कि घर में चोरी करने वाले चोर को देख कर सिवा चिल्लाने के और क्या होसकता है, अयोध्यावासियों के भावों को क्या पा सकेंगे? उनके भाग्य में उन भावों को पाना तो क्या समझना भी नहीं लिखा है। आज रावण बहुत हैं, उनकी कमी नहीं है। अधर्म की लंकाएं अनगिनत हैं। किन्तु 'हमारा राम' नहीं है। परमात्मन्! क्या फिर भी भारतवासियों को कभी अपने राम के विजय के उपलक्ष में दीपमाला करने का अवसर प्राप्त होगा।

आज हम दीपमाला करते अवश्य हैं, किन्तु हमारी दीपमाल तेल और बत्ती की दीपमाला है, हृदय की दीपमाला नहीं है। यह हमारी मृतावस्था का चिन्ह है। जिसदिन इंग्लैण्ड के सेनापति वैलिंग्टन ने वाटर्लू में महावीर नैपोलियन का मान भंग किया था, वह दिन आजतक इंग्लैंड में मनाया जाता है। नैलसन ने फ्रांस के बेड़े को जिसदिन ट्राफलगर में नष्ट किया था, वह दिन भी इंग्लैंड में मनाया जाता है। अमरीका ने जिसदिन स्वाधीनता प्राप्त की उसदिन सारे देश में उत्सव और आनन्द का राज्य होता है। ये सब उत्सव जीवित जातियों के हैं—और जिस आवेश के साथ ये मनाये जाते हैं, वह उनकी जीवितावस्था का चिह्न है। इंग्लैंड के वासी वाटर्लू और ट्राफलगर के दिनों को अनुभव कर सकते हैं, क्योंकि उनमें आज भी वाटर्लू और ट्राफलगर के से विजय कर डालने की शक्ति है। जो विजय कर सकता है, वही विजय का उत्सव मना सकता है। हमारी दीपमाला कैसी मनाई जातीहै। शराब पीना जूआ खेलना ये भी दीवाली के अंग हैं? अपना और अपने घर का सत्यानाश करना ये भी विजय की खुशी के कार्य हैं। यह सब क्यों है? केवल इसलिये कि हमारे अंदर विजय करने की शक्ति नहीं रही, और न विजय के अनुभव करने की शक्ति रही है। हमारी दीपमाला झूठी है, बनावटी है। दीपमाला पर हमारे पात्रों के लेख और हमारी सभाओं में राम पर व्याख्यान केवल गिलट चढ़ी हुई कृत्रिमता है। कभी पराजित और पराधीन जाति भी क्या दीपमाला मना सकती है।

किन्तु हाँ एक प्रकार से हम भी इस उत्सव को मनासकते हैं। सदा हमें राम के विजय का आनन्द अनुभव नहीं हो सकता। यह ठीक है, किन्तु फिर भी यह दीपमाला हमें अपनी अशक्त दशा को स्मरण करा सकती है। राम की सत्यता लक्ष्मण का संयम और सीता का पति व्रत यदि किसी उत्सव पर आंखों के सामने आता है, तो दीपमाला के ही दिन विजया दशमी हमें केवल वीरता का स्मरण कराती है, किन्तु दीपमाला सारी रामायण का चित्र हमारे सामने खींच देती है। हमारे लिये दीपमाला इसी प्रकार के उद्देश का साधन रह गई है। उसका जो असली तत्व है, वह अयोध्यावासियों की जिस मानसिक दशा को सूचित करता है उस के अनुभव का सामर्थ्य हमारे अन्दर बिलकुल नहीं है। इस लिये पाठक! आओ हम सब मिलकर रामायण से उपदेश लेने का यत्न करें और साथ ही भगवान से प्रार्थना करें, और स्वयं यत्न करें, कि वह दिन शीघ्र आवे जब हमारा भी कोई राम हो, हम भी अयोध्यावासियों की भाँति विजय के भाव को समझ सकेंगे, तभी हमारी दीपमाला सच्ची और पूरी दीपमाला होगी, अन्यथा नहीं।

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुम्भ प्रचार निधि को शीघ्र पूर्ति करो।

४ आश्विन के प्रचारक में छप चुका है कि गुरुकुल में उस लेख के लिखे जाने तक ४१२) रुपया गुरुकुल में प्राप्त हो चुका है। उससे पहले ५०) श्री पण्डित बंशीधर एम० ए० ने अजमेर से भेजे थे इस प्रकार उस समय तक की आय का कुल जोड़ ४६२) था। उसके पश्चात् २५ आश्विन १९७१ तक निम्न लिखित धन प्राप्त हुआ है:-

१०) म. दौलतरामजी, एबटाबाद।
२०) सेठ रणछोड़दासजी सभासद परोपकारिणी सभा, मुम्बई
१००) म. मलखीराम जी वकील शकरगढ़ (जिला गुरुदासपुर)
१००) डाक्टर मथुरा दास जी, मोगा (फिरोज़पुर)
१०) म. हरवक्ष लाल जी डिपुटी मजिस्ट्रेट नहर मथुरा
२५) महाशय मन्त्री, आ० स० जामपुर (डेरा गाज़ीख़ां)
३) म० मन्त्री, आ० स० मकुन्दपुरा
५) म० मन्त्री आर्य्यसमाज नागपुर
२५) म० मन्त्री आर्य्य समाज जालंधर छावनी
२०) म० मन्त्री आर्य्यसमाज मोगा
२५) महाशय लाजपति राय ने जोधपुर से जमा किया
५) म० मन्त्री आर्य्यसमाज तीतरूं (सहारनपुर)
५) म० मन्त्री आर्य्यसमाज खतावाँ (जि० मुज़फ्फरगढ़)
५) म० मन्त्री आ०स० खुबरोपुर(पटना)
२५) म० मन्त्री आ०स० हलदौर(बिजनोर)

---

३७०) योग
४६२) पहले प्राप्त
८३२) सर्व योग

इन रक़मों के अतिरिक्त बहुत से आर्य्यमहाशयों ने तथा आर्य्य समाजों ने प्रतिज्ञाएँ की हैं किन्तु जब तक प्रतिज्ञा का परिवर्तन प्राप्त में न होले तब तक उन के मुद्रित करने से कुछ लाभ नहीं।

जिन महाशयों तथा आर्य्य समाजों ने अपने कर्तव्य को समझ कर अपना कर्तव्य पालन करने में शीघ्रता की है उन को धन्यवाद देते हुए मेरी प्रार्थना यह है जो काम आप सबको करना ही है उस में देर क्यों कर रहे हैं। जितना धन पहुंच जायगा उसी के अनुसार कार्य्य भी आरम्भ होगा। इतने बड़े प्रचार के लिये लघु पुस्तकें सहस्रों की संख्या में छपवानी पड़ेंगी यदि समीप पहुंच कर धन आया भी तो एक प्रकार साधन पूर्ण रीति से काम में न लाया जा सकेगा। आगे के लिये केवल प्राप्त धन की सूची ही प्रचारक में दी जायगी।

कुम्भ प्रचार—के प्रबन्ध पर सोचने के लिये उपसभा का अधिवेशन दिल्ली नगर के चावड़ी बाज़ारस्थ आर्य्य मन्दिर में आदित्यवार कार्तिक शुक्ला सप्तमी (२५ अक्टूबर) को होगा। उपसभा के सभासदों से निवेदन है कि उस दिन प्रातःकाल ही दिल्ली पहुंच जावें। उसी दिन सार्वदेशिक सभाकी अन्तरङ्ग कमेटी का भी अधिवेशन होगा जिस में सभा के वार्षिक अधिवेशन की तिथि नियत की जायगी प्रान्तिक आर्य्य प्रतिनिधि-सभाओं को शीघ्र अपने प्रतिनिधियों का नया निर्वाचन करना चाहिए और ऐसे सभासद भेजने चाहिएँ जो प्रत्येक अधिवेशन में सम्मलित हो सकें। यह समय ही संघात की प्रबलता का है। यदि आर्य्य समाज का सङ्गठन ढीला ही रहा तो जो लाभ देश तथा धर्म को इस से संभावित हैं उन का दशांश भी प्राप्त न होगा। जो लोग अपनी थोड़ी सी मनमानी में सफलता न देख कर स्वार्थवश यह कहने लगजाते हैं कि सभा निर्जीव है, यदि वे सभा के विरुद्ध अपनी शक्तियें को प्रयोग में लाने के स्थान में सभा को ही अपनी शक्तियों का केन्द्र बनावें, और इसी में अपने अभीष्ट की सिद्धि को ढूँढ़े तो स्वार्थ सिद्धि के साथ वे परमार्थ सिद्धि में भी कृतकार्य होंगे, क्योंकि मनुष्य समाज की सामूहिक सेवा से बढ़ कर और कोई धर्म नहीं है।

मुंशीराम प्रधान
सार्वदेशिक आ० प्र० सभा।

संसार की गति।

युद्ध और शान्ति

युद्ध अच्छा है या शान्ति? यह प्रश्न है जिसके उत्तर में ऐकमत्य का होन कठिन दीखता है। युद्धके प्रेमी कहते हैं कि संसार में सभ्यता की उन्नति करने वाला युद्धही है। युद्ध प्रबल जातियों को जिता कर पृथ्वीको निर्बल जातियों से रहित करदेता है। दूसरी ओर शान्ति प्रेमी हैं जो कहते हैं कि सभ्यता धन सम्पत्ति और विद्या की उन्नति शान्ति से ही होसकती है। युद्ध तो इन सब चीज़ों का नाश कर देने वाला है। दोनों पक्षों में कुछ कुछ सचाई है, किन्तु साथ ही दोनों पक्षों में थोड़ी अत्युक्ति भी है। युद्ध और युद्ध में भेद है। कई युद्धों के उद्देश्य शुभ होते हैं, उनका फल अच्छा होता है। शिवाजी औरंगज़ेब से युद्ध करते थ। उसके लड़ने का प्रयोजन था, देश और जातिको अत्याचारों से बचाना; उनका लड़ना उचित था। राणा प्रताप ने बरसों तक अकबर की महासेना का सामना किया उन्होंने भी लड़ाई की? किन्तु उनपर कोई दोष नहीं देसकता। उनक युद्ध धर्म युद्ध थे वे धर्म की रक्षा के लिये किये गये थे। इटली के प्रसिद्ध योद्धा गैरीबाल्डी के युद्धों पर क्या कोई इतिहासज्ञ दोष देसकता है? कभी नहीं। किन्तु महा भारत युद्ध पर हम आज तक क्यों रोते हैं? नैपोलियन के युद्धों को इतिहास लेखक क्यों कोसते हैं? कारण यही है कि इन युद्धों की तह में कोई ऊंचा उद्देश्य नहीं था। केवल राज्य पाना कोई पवित्र उद्देश्य नहीं है। जो युद्ध केवल शान्ति बढ़ाने के लिये किया जाता है, उसका कोई समर्थन नहीं कर सकता। इस समय योरप में जो भयङ्कर संग्राम हो रहाहै, उसके मूल में ही अनर्थ है। विजय की चाहना, भूमि की इच्छा, शत्रु को कुचलने की अभिलाषा इस युद्धके भी सब मूलभूत हैं। इसीलिये हमारी सम्मति में यह युद्ध धर्म युद्ध नहीं है। भगवान इस भयानक युद्ध का शीघ्र अन्त करे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एण्टवर्प का पतन

अभागे बेल्जियमके पास एक अंतिम आशा थी, वह भी जाती रही। दस अक्तूबर के तार ने चारों दिशाओं में एण्टवर्प के पतन का समाचार फैलादिया। जैसा हम पहले अंकमें बता चुके हैं, एंटवर्प एक आदर्श दुर्ग था। चारों ओर से वह बहुत ही सुरक्षित था। और बैल्जियम चाहते थे, कि वे एंटवर्प को तब तक न छोड़ें जब तक मित्र सेना लिली के रास्ते उनकी सहायता को न आजाय। जर्मनी के घुड़सवारों ने जहां लिली के पास से बढ़ते हुए मित्रसैन्य को रोके रखा, वहां उसकी बड़ी जङ्गी तोपों ने दो दिनमें ही सुरक्षित एंटवर्प को अग्निमय करदिया। जब सारा नगर ही जल उठा, तब वहां बैल्जियम की फौजें कैसे रह सकती थीं। जर्मन सेनाओं ने शहर का पानी भी रोक दिया था। बैल्जियम नरेश अपनी तथा थोड़ी सी अंग्रेज़ी सेनाओं को लेकर एंटवर्प से बाहिर चला गये और अब उनकी स्थिति आस्टंड में है। एंटवर्प के अधः पतन ने जर्मनी की स्थितिको बैल्जियम में बहुत दृढ़ करदिया है। किन्तु बैल्जियम के युद्ध इस महायुद्ध के अंशमात्र हैं। युद्ध का निश्चय बैल्जियम में नहीं होगा, वह तो यिस्ला और एन नदी के किनारों पर होगा।

जर्मनी की बड़ी तोपें।

जब जर्मनी पहले पहिल लीज के क़िले पर पड़ा था, समझाया गया था कि उसका रास्ता रुकगया। फिर वह नामूर पर फँसा तो समझा गया कि वह नामूर और एण्टवर्प के बीच में ही फँस जायगा। तीसरी बारी एण्टवर्प की आई। यह समझा जाता था कि एण्टवर्प जर्मनी को थका देगा। किन्तु तीनों स्थानों में जर्मनी की बड़ी तोपें ने मित्रों की आशाओं को तोड़ दिया यह देख कर स्वभावतः उन बड़ी तोपों की ओर ध्यान खिंच जाता है, जिन्हें जर्मनीं ने सर्वथा गुप्त रीति से तय्यार किया था, और जिन के बल से उसे तीन कठिनाइयों से छुटकारा मिला, ये तोपें युद्ध विद्या—या घातक विद्या के नवीनतम अविष्कार हैं। जर्मनी अपने आप को विद्या का घर समझता हैं। किन्तु उस की विद्या किस काम लगी है। आकाश से गोले फेंकने वाले हवाई जहाज़ों पर या नगरों को अग्निमय करदेने वाली तोपों पर। क्या जर्मनी की गर्वित विद्या का यही फल संसार के सामने रखकर उस के राजनीतिज्ञ संसार को अपनी ओर करना चाहते हैं? अकेला जर्मनी ही क्या, सारे सभ्य देश अपने विज्ञान का आधा भाग इसी प्रकार के घातक साधनों की तयारी में ख़र्च करते हैं। शायद वर्तमान युद्ध के भयंकर दृश्य और परिणाम सभ्य संसार की आखें खोल दें और वे बुद्ध भगवान के इस वचन की सचाई को समझ जायँ कि—

"प्रेम का विजय ही सत्य विजय है"

रूस की ओर लड़ाई

रूस और गलीसिया में किस प्रकार का युद्ध होरहा है, कौन जीत रहा है, कौन हार रहा है, यह निश्चय पूर्वक बताने की शक्ति हम समझ ते हैं कि न रायटर के पास है, और न किसी संवाददाता के पास। जितने समाचार हम तक पहुंचते हैं, वेरूस की राजधानी से ही आते हैं। उन सब का निचोड़ यह निकलता है, कि रूस जीत रहा है, और उसकी जीत को रोकने वाला कोई नहीं। यदि गलीशिया में उस की स्थिति देखें तो इस से इन्कार ही नहीं होसकता कि उसने आस्ट्रिया के दाँत खट्टे किये हैं और बहुत बुरी तरह से किये हैं। किन्तु प्रशिया की सीमाओं पर कौन जीत रहा है रूसी पोलैंड में रूस का पलड़ा भारी है, या जर्मनी का, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। एक के युद्ध के जो समाचार फ्राँस से आते हैं वे अपने पक्ष को बतलाते हैं सही किन्तु उनके अन्दर अपनी हार को यदि कहीं हो जाय—तो छुपाया नहीं जाता। रूस से आये हुए समाचार इतने एक पक्ष वाले होते हैं, कि उन्हें मानें या न मानें, यह सन्देह ही बना रहता है। कभी कभी वे समाचार अपने पाठकों से बहुत अधिक आकांक्षा करते हैं। ख़ैर अब क्राकौ का युद्ध गलीशिया के भाग्यों का निश्चय करदेगा। देखें वहाँ क्या होता है? वहाँ जर्मनी और आस्ट्रिया के ८ लाख सिपाही सुने जाते हैं। रूस के पास सारी तय्यार सेना ८० लाख है, वह उस में से २० लाख भी क्राकौ पर ले आवे तो असम्भव नहीं। फिर देखें क्या होता है?

हिन्दू कानफ्रैन्स।

हिन्दू कॉफ्रैंस की बैठक इस साल फीरोज़पुर में होगी। उसके सभा पति राय मुर्लीधर होंगे। हिन्दू कान्फ्रैंस के प्रधान बनने का यदि कोई सच्चा अधिकारी है तो वह इस साल का सभापति है। राय साहिब जहां एक ओर पंजाब के बूढे कान्फ्रैंस मैन हैं, वहां सदा से वे पञ्जाब हिन्दुओं के लिये मित्र और सेवक का कार्य करते रहे हैं। सेवा करते करते बुड्ढे होकर भी सेवा करने की चाह यदि किसी हृदय में जाग रही है तो वह राय साहिब मुर्लीधर का हृदय है हिन्दू कान्फरैंस को योग्य सभापति मिलने पर हम बधाई देते हैं।

कांग्रेस के सभापति।

कांग्रेस का अधिवेशन होने में इस समय लगभग अढाई महीने हैं। अब-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तक सभापति का चुनाव हो चुकना चाहिये था, किन्तु एक झगड़े ने उसे विलम्बित कर दिया है। सब प्रान्तिक कांफ्रैंस कमेटियों से सभापति के चुनाव के लिये राय मांगी गई। आई हुई सम्मतियों का बहु पक्ष लाला लाजपतराय जी को सभापति चाहता था किन्तु सार्वदेशिक कांन्फ्रैंस कमेटी को उन सम्मतियों में कुछ गड़बड़ प्रतीत हुई जिससे उन्होंने सब प्रान्तिक कमेटियों को फिर से राय देने के लिये कहा है। इस पर प्रयाग का लीडर बहुत नाराज़ है। उसकी राय है कि कांफ्रैंस का काम चलाने वालों में कुछ लोग लाला लाजपतराय को कांफ्रैंस का सभापति नहीं बनाना चहते, इसलिये कई तरह की अड़चल उठाकर बा० भूपेन्द्रनाथ वसु को वह पद देना चाहते हैं। अभीतक कॉन्फ्रैंसकमेटी ने पहली सम्मतियों को अपर्याप्त समझ कर दूसरी सम्मतियों को माँगी है इस का कारण प्रकाशित नहीं किया, किन्तु कामन वील के कथन के अनुसार काँग्रेस की संख्या का अभिप्राय समझने का अधिकार सब से अधिक वकीलों को है, और वकीलों की सम्मति है कि इस अवस्था में प्रान्तिक काँग्रेस कमेटियों की राय फिर से लेनी चाहिये। सत्य क्या है, यह कहने का किसी को साहस न करना चाहिये, जब तक कि दोनों पक्षों की युक्तियाँ हमारे सामने नहीं। हाँ, यदि लीडर की लिखी बात में कुछ भी सचाई हो, और इस चुनाव पर कहीं काँग्रेस के कार्यकर्ताओं की व्यक्ति गत सम्मतियाँ असर डाल रही हों तो बड़े शोक की बात है। काँग्रेस का सभापति बनाया जाना जातीय सेवा का फल है जिस व्यक्ति ने जातीय सेवा की है। यदि उसमें इस प्रतिष्ठित पद को पूरा करने की योग्यता हो तो उसे और किसी विचार से इस अधिकार से वंचित न रखना चाहिये। यदि दूसरी बार राय लेने का कारण यह हो कि काँग्रेस के नियमों द्वारा ऐसा होना चाहिये तो हम कुछ नहीं कहते। काँग्रेस कमेटी के संचालक इस विषय में सर्व साधारण से अधिक समझ सकते हैं किन्तु यह उनका कर्तव्य है कि वे इस विचित्र कार्यवाही के कारणों को स्पष्ट रीति से जनता के सामने रखदें।

——

सरस्वती और प्रचारक।

'अभ्युदय' का उपदेश।

सरस्वती के आर्य समाज पर अनुचित आक्षेपों का वर्णन करके हमने द्विवेदी जी के विषय में जो कुछ सम्मति दी थी, उस से बहुत नाराज़ हो कर प्रयाग के सहयोगी अभ्युदय में वामन महाशय ने हमें एक लम्बा चौड़ा उपदेश दे डाला है। वामन महाशय ने उस लेख में अपने आपको दोनों पक्षों से ऊँचा समझ कर सरस्वती और प्रचारक दोनों को शिक्षा दी है, प्रचारक पर आपका विशेष रोष है। शायद उसका कारण यह है कि प्रचारक को आप कृपा की दृष्टि से देखते हैं, इस लिये उसमें वे अपने मनके विरुद्ध भावों को सहन नहीं कर सकते। हम उन शिक्षाओं के लिये 'वामन' जी के बड़े कृतज्ञ हैं। हमारी 'गई बीती' समालोचना से जो दुःख हुआ है, उसके लिये हमें शोक है। आपने जो उपदेश हमें दिया है, उसका हमपर और भी अधिक असर होता यदि वामन महाशय उस उपदेश का थोड़ासा भाग अपने पास भी रख लेते। एक सभ्यता का उपदेश देने वाले के लेख में निम्न लिखित वाक्य ज़रा खटकते हैं। आर्यसमाजियों के बारे में आप कहते हैं—

"अधिकतर तो बकते (अहा, क्या प्रिय शब्द है, इसे तो समाजियोंके हृदय खिल उठेंगे) हैं ऋषिकृत ग्रन्थों के विषय में, पर पढ़ते हैं आदमियों की लिखी हुई किताबों को"

ऋषि दयानन्द के विषय में आपकी सम्मति क्या है, सो भी सुनिये।

"इस जूते बाज़ी की आवो हवा में पले हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में जूता चलाने में अपना अपूर्व कौशल दिखाया है"

अभ्युदय के सभ्यतोपदेशक की सभ्य-भाषा के ये शब्द एक ऐसे व्यक्तिके विषय में हैं। जिसे आर्य समाज अपना आचार्य मानता है, और भारतवर्ष का शिक्षित मंडल जिसे हिन्दू जाति के रक्षकों में से एक मानता है। वामन महाशय के ये शब्द आर्य्य पुरुषों को कैसे प्रिय लगेंगे? हमें प्रसन्नता है कि वामन महाशय के ये उपदेश हमतक सरस्वती पर नोट लिखने से पहले नहीं पहुँचे, नहीं तो न जाने हम उनमें क्या लिख बैठते?

आगे आप लिखते हैं—

"इसी लिये तो बहुत से पढ़े लिखे लोग आर्यसमाज को अधपढ़े लट्ठ बाज़ों अनपढ़ जाटों का मज़मा कहते हैं"

हम अपने पाठकों को यह शुभ समाचार सुनाना चाहतेहैं कि वामन महाशय भी 'बहुत से पढ़े लिखों' में से ही हैं। आपकी इस पुष्प वर्षा को आर्य्य समाज शिर पर धारण करेगा। वामन महाशय प्रचारक की तर्क प्रथा को बाज़ारू कहते हैं, इस सभ्यता के प्रिय शब्द को हम अभ्युदय का उपहार समझ कर स्वीकार करते हैं। वामन महाशय ने प्रचारक को यह भी स्मरण दिलाया है कि साम्प्रदायिक विद्वेष बहुत बुरी चीज़ है। हमें शोक है कि वामन महाशय को इस प्रसंग में साम्प्रदायिक विद्वेष का विचार आया। आजतक हमें यह ज्ञात नहीं था कि भट्टोजी दीक्षित भी किसी धर्म के मुखिया थे, या उनपर आक्षेप करना भी किसी साम्प्रदाय पर कटाक्ष करना है। हम अब तक तो यही समझते थे कि भट्टोजी दीक्षित व्याकरण के एक बड़े पंडित थे, उन्होंने संस्कृत व्याकरण की प्रक्रिया की रीति से पढ़ाई को सुगम करने के लिये सिद्धान्त कौमुदी ग्रन्थ बनाया। सिद्धान्त कौमुदी की जिस उद्देश्य से रचना की गई थी वह पूरा भी हुआ संस्कृत व्याकरण की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य संसार ।

भारत भारती ।

गत दो महीनों से बाबू मैथिलीशरण गुप्त की भारत भारती की चहल पहल है। समाचार पत्रों में इस पुस्तक का जैसा स्वागत हुआ है, उस से हमारा अनुमान है कि इस का पहला संस्करण हाथों हाथ बिक जायगा। गुप्तजी की कविताओं को सरस्वती आदि मासिक पत्रिकाओं में पढ़ कर आर्य्यभाषाभगत भारत भारती के लिये तय्यार बैठा था। इस काव्य में गुप्त जी ने भारतवर्ष की प्राचीन महिमा का वर्णन करके वर्तमान दशा पर रोना रोया है। पुस्तक भारतवासी मात्र के हृदय पर प्रभाव पैदा करने वाली है। जिन्हें अपने पुरुषाओं का गौरव मानते हुए विशेष कष्ट होता है, उन्हें भी इस काव्य का प्रथम भाग कुछ देर के लिये अवश्य वशीभूत कर लेगा। 'जादू वह है जो सिर पर चढ़ के बोले, गुप्त जी की कविता में सब से बड़ा मार्का यह है कि उसे पढ़ कर सरस्वती के बृहस्पति हम सम्पादक को भी प्राचीन आर्य्यों की प्रशंसा में दो शब्द लिखने ही पड़े। काव्य में देशभक्ति कूट कूट कर भरी हुई है एक देशप्रेमी के हृदय के परिष्कृत उद्गार को पढ़ कर भारत पुत्र के हृदय पर जो प्रभाव होना चाहिये, उस के उत्पन्न करने की शक्ति इस कविता में है।

कविता में छन्द या भाषा का दोष ढूंढने पर भी शायद ही मिले। पर नहीं हैं ऐसा हम न कहेंगे, क्योंकि दोषदर्शी तो शुद्ध सोने में भी मिट्टी सूंघ लेते हैं, किन्तु साधारणतया काव्य को पढ़ कर सब से बड़ी बात जो दिल पर असर करती है वह भाषानुवाद छन्दका परिष्कार है। उस परिष्कार में जब देशभक्ति का रस सींच दिया जाय तब फिर क्या कहना है? तब तो सोने में सुगन्ध हो जाती है इस काव्य में रस देश भक्तिका है और सौन्दर्य भाषा और छन्द के परिमार्जन का है। इसीलिये प्रत्येक भारतवासी के पुस्तक संग्रह में इस की एक प्रति का होना आवश्यक है।

काव्य के साथ कवि का और कवि की कवित्वशक्ति का प्रसंग आजाना स्वाभाविक है। 'पाटलिपुत्र' में इस काव्य की समालोचना करते हुए उस के सम्पादक महाशय ने कवि की कवित्वशक्ति पर भी कुछ लिखा है। इस पर कई सहयोगी बहुत नाराज़ हुए हैं। भाषा के एकमात्र कवि की कविता में आशङ्का कैसी? ऐसे तो कोई आदमी कविता ही न करेगा? एक पत्रकी की हुई समालोचना पर उपदेश देना दूसरे पत्र के लिये कैसे उचित हो सकता है? इस प्रकार के आश्चर्य्य सूचक वाक्य हैं जो इस समय कई स्थानों से सुनाई देरहे हैं। हमारी राय में किसी काव्य की समालोचना पूरी नहीं हो सकती, जबतक उसके कवि की, और उसकी कवित्व शक्ति की पूरी समालोचना न की जाय। कोई भी साहित्यसेवी यह नहीं चाहेगा कि हमारा साहित्य क्षेत्र ऐसा सुरक्षित रहे कि कोई भी परख्या उसके बीच में न रहने पावे। हरएक पौदे के अवगुण जानने वाले, असली और नकली उपज में भेद करने वाले जानकार की खेत को आवश्यकता रहती ही है। इसीलिये साहित्य और समालोचना का गाढ़ा सम्बन्ध है। साहित्य में समालोचना का प्रवेश खूब होना चाहिये, केवल इतना ध्यान रखना चाहिये कि बीच में व्यक्तिगत द्वेष या पक्षपात का प्रवेश न होने पावे। अस्तु।

इस प्रासंगिक बात को छोड़कर अब हम गुप्तजी की कवित्व शक्तिपर दो एक शब्द कहेंगे। गुप्तजी कवि हैं—इसमें सदेह नहीं। आपके छन्दों को हम काव्य कह सकते हैं। काव्य साधारणतया उस गद्य या पद्य को समझा जाता है जिसमें कल्पना शक्ति का बहुत व्यापार हो। गुप्तजी की छन्द रचना में कल्पना शक्ति पर्याप्त व्यापार रहता है। फिर आपके छन्दों की सुन्दर रचना और भाषा की स्वच्छन्दता उसे और भी मनोहर बनादेती है। यहांतक तो किसी को भी विवाद नहीं। विवाद तब उठता है, जब काव्य शब्द ज़रा ऊंचे अर्थ लिये जाते हैं। काव्य वह रचना है, जिसमें रस हो। वह रस किसी न किसी प्रकार से न आया हो किन्तु कोई हो, उसमें कवि की कल्पना शक्ति, उसका शब्द प्रयोग रसको उत्पन्न करदे, वह उत्तम काव्य या वास्तविक काव्य समझा जाता है। क्या गुप्तजी की कविता में इस प्रकार का रस रहता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए हम वैसे विश्वास से नहीं बोल सकते, जैसे विश्वास से प्रथम प्रकार की कविता का लक्षण सामने रखते हुए बोल सकते थे। इस विषय में सम्मति भेद हो सकता है हमारी राय है कि गुप्तजी की कविता के अधिक भाग में विषय को रस देना पड़ता है, काव्य के अंदर से नहीं उठता। भारतभारती का रस देशभक्ति का दिया हुआ है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि गुप्त जी की कविता आन्तरिक रस से हीन होती है। उस में आन्तरिक रस भी रहता है—किन्तु उसको पूरे उद्भव के लिये बाह्य सहायता की अपेक्षा होती है। गुप्त जी की कविता उस रस का स्वाभाविक प्रादुर्भाव कम होता है जिसका मुख्य सम्बन्ध भाव तथा विचार की नवीनता स्वमूलकता के साथ है। इन अर्थों में पाटलिपुत्र का लेख यथार्थ ही प्रतीत होता है।

लण्डन रहस्य

अंग्रेज़ी में मिस्ट्रीज़ आफ दि कोर्ट लण्डन नाम का प्रसिद्ध उपन्यास है जिस के लेखक रेनाल्ड़ का नाम भी कम प्रसिद्ध नहीं है। इन उपन्यासों में इंग्लैण्ड के राजा तीसरे जार्ज के समय में लन्दन और राजपरिवार के आचरणों की क्या दशा थी यह अच्छी तरह दिखाया गया है। रेनाल्ड़की अंग्रेज़ी की यह तारीफ़ है कि वह बहुत ही सुघड़ और सरल होती है लेखक की वर्णन शक्ति भी अपूर्व है। इन सब गुणों से युक्त होते हुए भी रेनाल्ड़ के उपन्यास प्रतिष्ठित लोगों में सम्मान नहीं पाते। मनुष्य जीवन और मनुष्य जाति के नीच भाग का जैसा वर्णन उपन्यासों में है वैसा शायद ही कहीं मिले? बीच बीच में जो उपदेश भरे वाक्य हैं वे [illegible] होते हुए भी बेढब नहीं पड़ते हैं [illegible] उपन्यासों के कोई कोई स्थान तो अश्लीलता की सीमा तक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation and eGangotri

पहुँचे हुए हैं। विलायत में किसी विद्यार्थी की मेज़पर रेनाल्ड़ के उपन्यासों का होना विद्यार्थी के लिये बहुत लज्जा जनक समझा जाता है। कलकत्ते की आर. एल वर्मन एण्ड को ने इसी उपन्यास का आर्य भाषा में अनुवाद खण्डशः छापना प्रारम्भ किया है। भाषा सरल और उपन्यासोचित है। काग़ज़ छपाई आदि उत्तम हैं। बीच२ में तसवीरें भी अच्छी दी गई हैं। बस इतना ही कुछ है, जो हमारी ओर से इस अनुवाद के पक्ष में कहा जा सकता है। इसके आगे हम जो कुछ कह सकते हैं, वह इस उपन्यास का अनुवाद होने के विरुद्ध होगा। जो उपन्यास अंग्रेज़ी में बहुत सम्मानित नहीं है, जिसने आचरणों पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ सकता, विद्यार्थी के हाथ में जिसका होना सर्वथा आशङ्कनीय है, ऐसे उपन्यास का भाषा में अनुवाद प्रकाशित करना केवल एक ही उद्देश्य से सम्भव है कि पैसे कमाये जाँय। ऐसी पुस्तकों की वृद्धि से हमारा साहित्य भण्डार भरता नहीं, मन्दा होता है। हम तो प्रचारक के किसी भी ग्राहक को यह सलाह नहीं दे सकते कि वह लण्डन रहस्य की कोई कापी ख़रीदे

सहयोगी मण्डल

आज कल हमारे सहयोगियों में खूब उन्नति हो रही है। बिल्कुल नये निकले हुए समाचार पत्रों में से प्रभात, कलकत्ता समाचार, और विजय हैं। पहल प्रभात ने की, और उर्दू की राजधानी लाहौर में अपना अरुण झण्डा खड़ा किया। कलकता समाचार ने लोगों को युद्ध समाचारों को जानने की प्रबल अभिलाषा का उपयोग लेकर ही जन्म लिया है। यह कलकत्ते के धनी मारवाड़ियों का पत्र है, इसी लिये अबतक (४१ वीं संख्या तक) दो पैसे के टिकट के सहारे ही आता है। इसकी नीति भी अमीर आदमियों वाली पोपली है। विजय इसी सप्ताहसे दिल्ली से निकलने लगा है। प्रभात और विजय इनदो नये सहयोगियों को पाकर प्रचारक उर्दू के घर पंजाब को सर कर लेगा, इसमें अब हमें सन्देह नहीं रहा।

भारत मित्र—इस समय के दैनिकों में सब से पुराना है। भारत मित्र की फाइल देखकर यह कहने का साहस किसी को नहीं हो सकता कि आर्य्यभाषा में दैनिक के सम्पादकों का अभाव है। भारतमित्र आर्यभाषा के सामयिक साहित्य के लिये प्रतिष्ठा का कारण है। मित्र के मुख्य लेख और नोट लेखक की विज्ञता और योग्यता का परिचय देते हैं। सहयोगी अभ्युदय ने भी दैनिक होकर अपने आपको स्थिर करलिया है। हमारी सम्मति तो पहले से यही थी कि अभ्युदय को दैनिक कर देना चाहिये। आजकल इस दैनिक का सम्पादन बहुत योग्यता और परिश्रम से होता है। परमात्मा इसे स्थायी होने की सामर्थ्य दें। चौथा दैनिक हिन्दी विहारी हैं, जिनके बहुरूपियेपनने हमें बहुत चक्कर में डाल रखा है। इस समय हिन्दी भी पांच दैनिकों का अभिमान कर सकती है, क्योंकि बंबई के वृद्ध वेंकटेश्वर समाचार ने भी दैनिक रूप धारण किया है। आकार में और लेखों की राशि में वेंकटेश्वर का स्थान सब दैनिकों से चढ़कर है। शेष रहा सम्पादन-उसके विषय में इतना ही लिखदेना पर्याप्त है कि कोई कोई लेख बड़े मार्के का होता है और किसी किसी के समझने में इसीलिये देर हो जाती है क्योंकि दैनिक के काम में लगे रहने के कारण लेखके लेखक महाशय समझाने नहीं आसकते। साप्ताहिकों में प्रताप ने गत दिनों में खूब उन्नति की है। उसका विजय दशमी अंक तो विशेषतया उत्तम हुआ है मासिक पत्र यथा पूर्व चलरहे हैं जो कुछ पहले था, वही कुछ अब है।

——

साहित्य।

अक्षर विज्ञान—ग्रन्थ का उद्देश्य ग्रन्थकर्त्ता की प्रस्तावना से ही प्रतीत हो जाता है। जिससे पता लगता है ग्रन्थकर्त्ता ने प्राचीन आर्य विचार के गौरव को बड़ा अनुभव किया है। ग्रन्थकर्त्ता का नाम रघुनन्दन शर्मा है। आपने प्राचीन वैदिक साहित्य को महत्व पूर्ण तथा अक्षरशः सारपूर्ण सिद्ध करने के बड़े जोश से विकास वाद का खंडन किया है। प्रथम प्रकरण में आपने स्वाभाविक युक्तियों और प्राकृतिक आलोचनाओं के आधार पर विकासवाद का खंडन किया है। दूसरे प्रकरण में संस्कृत भाषा की उत्कृष्टता बताते हुए इसकी प्राचीनता और वैदिक भाषा की उससे भी उत्कृष्टता को दिखाने का प्रयत्न किया है तीसरे प्रकरण में आपने एक२ अक्षरों के उच्चारण के स्थान और प्रयत्न के अनुसार जो स्वाभाविक अर्थ मनमें भासित होसकता है उसके दिखाने का साहित्य के अनुसार सप्रमाण बताने का प्रयत्न किया है। और इसी प्रकार उसके लिपि की बीजाकृतियें भी सचित्र दिखाई हैं। इस पुस्तक के पढ़नेसे ग्रंथकर्त्ता की विचार गम्भीरता का अच्छा परिचय मिलता है। साथ ही साथ हमें कतिपय निवेदन भी ग्रंथकर्त्ता से करने हैं। प्रथम विकासवाद का नितान्त खंडन तथा संस्कृत भाषा और वैदिक भाषा की उत्कृष्टता का प्रतिपादन दो प्रकरणों में सविस्तर करना पुस्तक के वास्तविक उद्देश्य की मुख्यता को कम करता है यदि ये दोनो और भी विस्तार से स्वतन्त्र पुस्तक रूप में लिखे जाते तो अच्छा था। दूसरे स्थान२ पर ग्रन्थकर्त्ता ने खंडन के जोश में बड़ी असभ्यता के शब्द प्रयोग किये हैं। उदाहरणार्थ एक बतादेना पर्याप्त होगा। जैसे (पृ० ६९) "इसका इज़ार दो हज़ार वर्ष के भीतर अन्दाज़ा लगाना भंगेड़ीपनाहै।" तीसरी बात यह है कि इस पुस्तक में उद्धरण देते हुए विदेशीय विद्वानों की ही नामावली से पुस्तक भरदी है जिससे प्रतीत होता है कि अभीतक भी स्वतन्त्र लेखक विचारों की दासता को नहीं छोड़ सकते। हमें ऐसे गूढ़ विचारक से ऐसी आशा न थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहाँ इतना कहदेना आवश्यक है कि विदेशीय विद्वान् हमारे साहित्य को इस मर्मज्ञता से नहीं जान सकते जैसा कि हमारे पूर्वीय विद्वान् लोग। इसलिये हमें अपने विद्वानों को प्रथम स्थान देना चाहिये। ये पुस्तक वैदिक धर्मावलम्बियों तथा प्राचीन ऋषि पथानुगामियों के बड़े काम की है।

मिलने का पता—
शूरजी वल्लभ दास एण्ड कम्पनी
बड़गादी मुम्बई।

वेणी संहार नाटक—महावीर प्रसाद द्विवेदी जी हिन्दी लेखकों में अलौकिक तथा प्रसिद्ध हैं आपके हाथ की लिखीं कई एक स्वाधीता जैसी पुस्तकें पाठक लोग पहले ही से जानते हैं। आपही ने अपने हाथों से वेणी सँहार नाटक को आख्यायिका रूपमें लिखकर थोड़ी हिन्दी जानने वालों को भी ओजस्विनी भाषा में उपयोग पर्व के आगे की सारी घटनाएँ संक्षेप में दर्शाई हैं। इस पुस्तक से पढ़ने वाले ज्यों त्यों रस चाखही लेंगे परन्तु जो भूलें इसमें रहगई हैं वे ऐसे धुरन्धर से न होनी चाहिये। उदाहाणार्थ एक आध बतादेनो पर्याप्त होगी "वे और अधिक युद्ध न करसके और शरों ही की शैय्या पर सदा के लिए सो गये" यहां शैय्या शब्द पता नहीं किस कोश और व्याकरण से शुद्ध है। शायद कवियों की निरंकुशता के साथही धुरन्धरों की निरंकुशता भी माफ होजाती है।

शेष सारी पुस्तक में बहुत सी झलक अक्षर अक्षर अनुवाद की प्रतीत होती है। इसी कारण कई स्थानों पर लेखक ने संस्कृत के शब्दों की झड़ी लगादी है। वैसे पुस्तक अच्छी है।

मिलने का पता—
मैनेजर कमरशल प्रेस—जुही कानपुर.

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति स्थान The arigin of the Hindi Langvage सत्तराम के वकील ठाकुर नन्दकुमार सिंह जी ने अंग्रेज़ी में यह छोटीसी पुस्तक लिख कर बनारस से प्रकाशित कराई है। इस पुस्तिका में हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के बारे में बहुत सी काम की बातें बतलाई हैं। गाथा पाली और हिन्दी का परस्पर क्या सम्बन्ध है, इस पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। प्रत्रिका इस योग्य है कि इस का भाषा में अनुवाद प्रकाशित हो जाय है मूल्य ।=)

हिन्दी भाषा महाभारत—बनारस के रामभेजा धवन ने चालीस पृष्टों के भागों में महा भारत का भाषानुवाद छापना शुरू किया है वार्षिक मूल्य २) एक खण्ड का मूल्य ।) शायद इस साल में सारा महा भारत पूरा निकल जायगा इस से कम में सम्भव नहीं है।

तृतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की रपोर्ट—कलकत्ते के हिन्दी साहित्य सम्मेलन की रिपोर्ट दो भागों में प्रकाशित हो गई है पहले भाग में सभापति का भाषण, सम्मेलन की कवितायें, प्रस्ताव तथा भाषण खूब अच्छी तरह दिये गये हैं। यह साहित्य की गति का वृत्तान्त हर एक साहित्य प्रेमी को अपने रखना चाहिये। यह आज सामयिक साहित्य का भाग है, और कल इतिहास हो जायगा दूसरे भाग में सम्मेलन में पढ़े गये लेख हैं। नीचे हम अच्छे अच्छे लेखों की एक सूचि देते हैं।

विषय	लेखक
प्राचीन हिंदी में गद्य	मिश्र बन्धु
तुलसी दास की विशेषता	पं० प्यारेलाल मिश्र
समालोचना से साहित्य को लाभ	पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी
हिंदी में विश्वकोश की अपेक्षा	पं० रामावतार एम. ए.
हिंदी साहित्य प्रचारक	प्रो. विनयकुमार सरकार

अन्य भी सब लेख उपयोगी हैं। यह भाग तो भाषा जानने वालों के लिये अवश्य ही संग्राह्य है। सम्मेलन के अधिकारी प्रति बर्ष उत्तम लेखों का संग्रह छाप कर समाज का बड़ा उपकार करते हैं। संग्रह का छपना तो आवश्यक है किन्तु एक निवेदन हम अवश्य करेंगे। जो लेख बहुत नवीनता लिये हुए हैं, और जिन का प्रचार विशेषतया अभीष्ट हो उन्हें यदि अलग टेकटाकार भी दिया जाया करे तो लोगों को लेने में सुभीता है। सब लोग दोनों भागों को या एक भाग कोभी ख़रीदने की हिम्मत नहीं कर सकते।

भूर्ताथ दर्शन—योगसूत्रों का भाषार्थ श्री शिवकर बापू जी तलपदेन्द्र की द्वारा लिखित और श्री वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित मूल्य १)

योगसूत्रों की अच्छी व्याख्या दी गई है। यदि कई जगह अप्रासङ्गिक बातें न बढ़ा दी जातीं, तो पुस्तक का आकार शायद इतना बड़ा न होता।

साहित्य परिषद के प्रकाशित लेख।

गुरुकुल विश्वविद्यालय (कांगड़ी) की साहित्य परिषद होली के दिनों में प्रतिवर्ष अपना वार्षिकोत्सव किया करती है। उस का नाम सरस्वती सम्मेलन है इस सम्मेलन की कृतकार्य्यता प्रतिवर्ष बढ़ती जाती है। जो निबन्ध इस में पढ़े जाते हैं, वे प्रायः छप जाते हैं। अब तक जो निबन्ध सम्मेलन में पढ़े जाकर छप चुके हैं उन में कई स्थायी क़ीमत के हैं संस्कृत साहित्य और आर्य्यभाषा साहित्य को उन से पुष्टि मिलने की सम्भावना है। परिषद के मन्त्री जो उनमें से कुछ निबन्ध हमारे पास समालोचनार्थ भेजे हैं। हम बड़ी प्रसन्नता से पाठकों तक उन की सूचना पहुँचाते हैं साथ ही देरी के लिये क्षमाप्रार्थी हैं।

मांस मीमांसा—ब्रह्मत्त विद्यालंकार द्वारा लिखित। मूल्य ।)

इस निबन्ध में प्रमाणों तथा युक्तियों से सिद्ध किया गया है कि मांस भक्षण मनुष्यों के लिये पाप है जो लोग इस पक्ष को दूषित समझते हैं, वे इस निबन्ध के पाठ से यदि अपनी सम्मति को पलट न लेंगे, तो भी सन्देह में तो अवश्य पड़ जायगे। आर्य्यों के बड़े काम की पुस्तक है।

भारत शिक्षादर्श—लेखक श्री घ श्याम सिंह बी. एस सी. एल. एल मूल्य ≡)॥

यह निबन्ध अपने ढँग का एक है। जो लोग समझते हैं कि भारत सन्तान अंग्रज़ी का पूर्ण पारिडत्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिना उन्नति नहीं कर सकती, उन के मस्तक को यह निबन्ध बहुत कुछ साफ कर सकता है। निबन्ध लेखक की एक सम्मति यह है कि शिक्षा में साहित्य पर अधिक बल न देना चाहिये, विज्ञान पर देना चाहिये। इस कथन में इतनी सचाई अवश्य है कि साहित्य की बहुत अधिकता मनुष्य के मन को अवास्तविक सा बना देती है, किन्तु संसार के चलाने में कल्पना का और भावों का जो बल है, उसे भुला देना भी भूल है लेखक की राय है कि प्रणाली की दृष्टि से देखें तो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, कालेज शिक्षा प्रणाली की अपेक्षा बहुत ही उत्तम है इसी से भारत की भावी आशाएँ पूरी हो सकती है प्रत्येक भारत हितैषी को इस निबन्ध का अनुशीलन करना चाहिये।

वैदिक देवताओं का स्वरूप—(१) लेखक श्री पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी।

लेखक महाशय ने अपने इस निबन्ध में बड़ी योग्यता से निम्नलिखित स्थापनाओं को सिद्ध किया है।

(१) वेदार्थ समझने के लिये देवता का ज्ञान का होना आवश्यक है।

(२) यद्यपि देवता के योगी कार्य से अग्नि सूर्यादि प्रदीप्त पदार्थों का नाम भी देवता है, तथापि परिभाषा रूप से मन्त्रों में वर्णित विषय का नाम भी देवता है।

(३) वेदों में इन्द्रादि देवों के हस्त पादादी का जो वर्णन है, वह रूपक तथा अर्थवाद मात्र है।

(४) देवताओं की स्तुति से तात्पर्य उनके गुणों का कथन करना है।

निबन्ध में इन्ही स्थापनाओं का प्रतिपादन मूल वेद तथा व्याख्या ग्रन्थों से किया गया है। निबन्ध विद्वान् लोगों के पढ़ने योग्य है।

वेदों में रोग जन्तु शास्त्र—यह निबन्ध भी उपर्युक्त पण्डित जी का ही लिखा हुआ है। इस निबन्ध में लेखक ने वेदों के मन्त्रदेव कर दिखाया है कि उनमें रोग जन्तुओं की कल्पना विद्यमान है। निबन्ध वेद विषय पर विचार करने वालों के लिये बड़ा मनोरंजक है।

वेदों से आयुर्वेद का क्रम विकाश—लेखक, भिषगाचार्य श्री पं निवारणचन्द्र महाचार्य।

यह निबन्ध गुरुकुल के सुयोग्य वैद्य-जी का लिखा हुआ है। वैद्य जी ने इस में यह दिखाने का यत्न किया है कि वेदों में आयुर्वेद के मन्त्र मुख्य २ मूल तत्व विद्यमान हैं, और हम आयुर्वेद के नये ग्रन्थों की भूलों का सुधार भी वेदों से ही कर सकते हैं। मूल वेदों से जो प्रमाण उद्धृत हुए हैं, उनके अर्थों के बल पर ही यह कल्पना की गई है। वेद विषय पर विचार करने वाले लोग इस विषय पर विचार करें तो अच्छे २ परिणाम निकल सकते हैं।

वेदों का अनादित्य—लेखक, पं० गोवर्धन बी. ए. यह निबन्ध अपने ढङ्ग का नया है। इसमें वैज्ञानिक प्रमाणों से और वैज्ञानिक युक्तियों से सिद्ध करने का यत्न किया गया है कि वेद अनादि हैं और एक अनादि ज्ञान की आवश्यकता है। निबन्ध की रचना इतनी अधिक युक्ति पूर्ण है कि वह दूसरों को मना सकेगी या नहीं इस में सन्देह है हाँ जो कोई पाठक निबन्ध को साधन पढ़ कर विचारने का कष्ट उठायगा, उस के लिये वह गुरु का काम देगा।

आभि भाषणम्- सरस्वती सम्मेलन के विगत अधिवेशन में श्री. प्रो. सत्येन्द्र नाथ सेन एम. ए. विद्यावागीश ने सभा पति का आसन अलंकृत किया था। आपका वह प्रारम्भिक भाषण है। संस्कृत साहित्य के इतिहास की साधारण आलोचना, परिमार्जित संस्कृत में पढनी हो तो इस निबन्ध को पढ़िये।

सब निबन्ध, मन्त्री साहित्य परिषद् गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित हैं।

स्त्री उपयोगी पुस्तकें।

नारी पुष्पावली—(प्रथम भाग) श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरी लिखित। सुदर्शन प्रेस प्रयाग में छपी है।

इस पुस्तक की लेखिका से पञ्जाब तथा युक्त प्रांत की पढ़ी लिखी महिलायें अब अपरिचित नहीं रही। आप प्रायः उत्तम साहित्य उत्पन्न करती रहती हैं। इस पुस्तक में कई देवियों के संक्षिप्त जीवन चरित्र हैं। चुनाव लेखिका महोदया की अपनी इच्छा पर ही हुआ है। ऐतिहासिक लेखों का अवलम्बन करना आपने उचित नहीं समझा। सब से पहले महारानी विक्टोरिया का जीवन चरित्र है तो दूसरा "गोपा" का चौथी मेडमकुटी का जीवन है और दसवां राम की माता कौशल्या का। यह क्रम हमें किसी प्रकार भी समझ में नहीं आया। पुस्तक की भाषा सरल और रोचक है। यह संग्रह स्त्रियों के लिये अवश्य उपयोगी होगा।

स्त्री शिक्षा—इस छोटी सी बेनी प्रसाद डालमिया (चिड़ावा) द्वारा लिखी हुई पुस्तक में स्त्री शिक्षा विषयक प्रश्नों पर को अच्छे मनोहर ढङ्ग से विचार किया है। वेंकटेश्वरप्रेस बम्बई में छपी है।

स्त्री उपदेश भजनावली—यह झिलोर निवासी श्री बा. मोती राम जी की धर्म पत्नी माई इन्द्रकुमारी जी के बनाये हुए भजनों का संग्रह है। भजन कुछ तो मिलते हुए गद्य से हैं, और कुछ छापे ऐसे ढंग से हैं, कि गद्य ही प्रतीत होते हैं। कोई कोई भजन अच्छा है। स्त्रियों को परमात्मा ने स्वाभाविक कविता शक्ति दी है, वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक रसपूर्ण कविता कर सकती हैं। यह अभी प्रारम्भ है। परमात्मा वह दिन शीघ्र दिखावे जब स्त्रियों की शिक्षा अधिक स्त्री जनोचित हो और भारत वर्ष आर्य भाषा की कविता करने वाली आर्य देवियों से पूर्ण हो जाय। गुरुकुल प्रचारक प्रेस दिल्ली में छपी है, शायद वहीं से मिल भी सकती है। मूल्य ।-)

अबला रक्षक—लेखक श्री श्याम जी शर्मा काव्यतीर्थ। मूल्य =)

इस छोटी सी पुस्तिका में काव्यतीर्थ महाशय ने स्मृतियों के प्रमाणों से सिद्ध करके दिखाया है कि विधवा विवाह शास्त्रानुकूल है। लिखने की रीति मनोरंजक है। श्री व्येंकटेश्वर समाचार के सम्पादक महाशय इसका पाठ करेंगे, तो उन्हें लाभ होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पढ़ाई सरल होगई। किन्तु इस सरलता का एक और भी परिणाम हुआ। मूल अष्टाध्यायी का लोप होने लगा। इस में पढ़ने वालों का आलस्य दोषी था। भट्टोजी दोषी नहीं। जिन्हों ने संस्कृत व्याकरण को पूरी तरह पढ़ा है, वे जानते हैं कि केवल प्राक्रियांश पढ़ने से व्याकरण का पूरा ज्ञान नहीं होता। अष्टाध्यायी के क्रम से सूत्रों का पौर्वापर्य भी ज्ञात होना चाहिये। नहीं तो 'विप्रतिषेधे परं कार्यम्' और 'पूर्वत्रासिद्धम्' इन दोनों सूत्रों की सार्थकता नहीं रहती। अष्टाध्यायी का सूत्र क्रम से लोप होजाने से व्याकरण का पाण्डित्य अवश्य अधूरा रह जाता। यही बात स्वामी विरजानन्द जी को बुरी लगी। द्विवेदीजी वामन महाशय स्वामीजी का जीवन चरित्र पढ़ते हुए यह बात भूल गये कि पं० लेखरामजी ने यह भी लिखा है कि स्वामी विरजानन्दजी में क्रोध अधिक था। भट्टोजीदीक्षित पर उपजे हुए क्रोध को प्रकाश करने का जो ढंग था, वह वैसे ही क्षन्तव्य था, जैसे वामन जी की राय में द्विवेदी जी के कटु वाक्य क्षन्तव्य हैं भट्टोजिदीक्षित पुराणों के अनुयायी थे, इसलिये उनके ग्रन्थ में पौराणिक दृष्टान्त होना स्वाभाविक है। स्वामी जी पुराणों से घृणा करते थे, इसलिये भी वे कौमुदी की पढ़ाई को ठीक न समझते थे। यह सब कुछ तो हम जानते थे और अब भी जानते और मानते हैं। किन्तु भट्टोजिदीक्षित किसी साम्प्रदाय का गुरु था, उस पर आक्षेप साम्प्रदायिक विद्वेष को फैलायेगा। यह हमें आज वामन महाशय से ही पता लगा। द्विवेदी जी, जो पुराणों के भी उतने ही अनुगामी हैं जितने वेदों के और जिन की मूर्तियों पर उतनी ही श्रद्धा है जितनी समाजियों के हवन पर, उन पर कुछ लिखना साम्प्रदायिक विद्वेष का कारण होगा, यह भी हमें वामन महाशय के उपदेशों से ही ज्ञात हुआ। इन नई बातों को जानने के लिये वामन जी को धन्यवाद।

अन्त में एक बात लिखे बिना हम नहीं रह सकते। सरस्वती सम्पादक आर्य समाज या ऋषिदयानन्द को जो कुछ समझते हैं, समझें। समझने का उन्हें अधिकार है। किसीकी सम्पत्ति पर कोई रोक नहीं लग सकती। किन्तु सरस्वती कहती है कि उसका किसी धर्म से विशेष सम्बन्ध नहीं। इसी आश्रय पर आर्य समाजी उसे अपनाते हैं। ऐसी अवस्था में प्रतिज्ञा के विरुद्ध कार्य देख कर, विशेषतया नाम ले लेकर आर्यसमाज का कोसना पढ़कर किस आर्य को शोक न होगा। आज सरस्वती यह घोषणा दे कि उसकी नीति आर्यसमाज की हँसी उड़ाना है, हम उसे कभी कोई दोष न देंगे, हम उसे भी उसी श्रेणी में रख देंगे जहाँ आर्यसमाज के विरोधी पत्र रख दिये जाते हैं। सरस्वती घोषणा के अनुसार कार्य करेगी तो हमें शिकायत न होगी।

इधर अभ्युदय से भी हमें एक निवेदन करना है। अभ्युदय का एक ऐसे महापुरुष के साथ सम्बन्ध है जिन्हें सारा देश प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखता है। अभ्युदय के सम्पादकीय विभाग में जो व्यक्ति हैं, हम उन्हें आदर और विश्वास की दृष्टि से देखते हैं। अभ्युदय अपनी जो सम्मति रखता है रखे, हमें कोई वक्तव्य नहीं। यदि वह हमारी समालोचना को अनुचित समझता है, तो अपनी सम्मति को प्रकाशित करने का उसे पूरा अधिकार है। हम उसके कथन की रोशनी में अपनी सम्मतियों पर पुनर्विचार करने को उद्यत होंगे! किन्तु अभ्युदय के स्तम्भों में कभी आर्यसमाज को लट्ठ बाजों का गिरोह और ऋषिदयानन्द को जूते बाज़ कहा जायगा, यह हमें कभी सम्भावना न थी और अब भी हम निराश नहीं हुए। हम बल पूर्वक कहते हैं कि इस विवाद को सबसे पहले साम्प्रदायिक रंग देने का सौभाग्य अभ्युदय के वामनजी को ही है।

तामिल में वैदिक प्रचार—हमारे पास महाशय मूलचंद जी ने तामिल भाषा में छपे हुए १० नियम भेजे हैं। एक दूसरे पर्चे में उन्हीं का अनुवाद अंग्रेजी में है। इस प्रकार का अवैतनिक वैदिक धर्म का प्रचार महाशय, एम. जी. शर्मा मंत्री आर्य समाज विल्लौर कर रहे हैं। आप उत्साही और भले युवक हैं।

आर्य कुमार सभा—जालंधर के मंत्री जी द्वारा सूचना मिली है कि वहां आर्य्य कुमार सभा का वार्षिकोत्सव ता० १३,१४ १५ नवम्बर १९१४ ई० को होगा। उत्सव में योग्य संन्यासी, महात्मा और उपदेशकों के बुलाने का प्रबन्ध किया गया है।

वेलूर आरकाट से महाशय मूलचंद जी सूचित करते हैं कि किरतपुर ज़िला बिजनौर वाले पं० मुरारी दत्त जी शर्मा पूर्व में आनरेरी सनातन धर्म के उपदेशक थे। ये पंडितजी युक्त प्रदेश, पंजाब, सिन्ध, काठियावाड़, गुजरात, मध्य प्रदेश, बरार और महाराष्ट्र की सनातन धर्म सभाओं में अपना व्याख्यान सुना चुके हैं अन्त में पोप लीलामें कुछ सार न जान वैदिक धर्म की शरणमें आगये। आप इस समय आर्य समाज के अवैतनिक उपदेशक हैं। जो सभा या समाज आपको बुलाना चाहे वह रेलवे खर्च देकर आपको बुला सकती है। आपका पता है-c/o सेक्रेटरी, आर्य समाज, कमसरी बाज़ार, वेलूर, ना. आरकाट।

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योरप में महाभारत

ऐंटवर्प ले लिया गया

रूस में जर्मनी को धक्का

टर्की में जर्मन तोपें

पेरिस पर बम्ब

८ अक्टूबर

"दोनों पार्श्वों को छोड़, जहां जर्मनों के हमले हटा दिये, युद्धक्षेत्र में प्रायः पूर्ण शान्ति है। जर्मन घुड़सवारों को हम लोगों ने लिली से उत्तर की ओर भगा दिया था वे अब तक वहीं रुके हुए हैं। चोलनीज और रोम के बीच की पहले खोई हुई जगह हम लोगों के हाथ फिर आगई और हम लोग मध्यभाग के कई स्थानों पर आगे बढ़ गये हैं दहिने भाग में कोई मार्के की घटना नहीं हुई. यह सरकारी तौर से कहा गया है कि पश्चिमी जर्मन सेना में लैंडवेहर और लैंस्वरडम डिविजनों को छोड़ २३ लड़ने-वाली पल्टनें और १८ रिजर्व कोरें हैं।

नौ सेना विभाग का कथन है कि एक सबमेरीन जहाज़ एम्स नदी के निकट, एक जर्मन नाशकबोट को डुबो कर सकुशल लौट आया।

एक जर्मन न्यूज़-एजेन्सी कहती है जापानियों ने कैरोनल द्वीपों के याप टापू को ले लिया।

जर्मन नोर्थ नदी को पार कर रहे हैं।

बड़ी बड़ी तोपों की सहायता से नीथ नदी पार कर चुके। इस से पहले शेल्ट नदी पार करने का यत्न व्यर्थ हुआ और उन्हें बड़ी हानि उठानी पड़ी थी।

बेल्जियनों का भीषण युद्ध।

लन्दन ७वीं अक्टूबर—ऐंटवर्प के बाहिरी भाग की लड़ाई के वर्णनसूचक संवादों से पता लगता है कि शहर के पश्चिम की ओर जर्मनों ने ज़ोर के साथ कई बार हमले किये परन्तु बेलजियनों ने उनको बड़ी हानि के साथ हटा दिया। बेलजियनों को अपने पहले के सुरक्षित स्थानों को छोड़ने के लिये बाध्य होना पड़ा, परन्तु उन में ज़रा भी घबराहट न था। सेना का एक भाग निरन्तर गोलों की वर्षा सहता रहा जिसमें हटने वालों को कुछ असुविधा नहीं। बेलजियन वाले ५०० गज पीछे वाले अपने दूसरे सुरक्षित स्थान पर हट गये।

रूसियों की बड़ी बड़ी तोपें ब्रेज़्मिस्ल पर निरन्तर गोले बरसा रही हैं और धीरे धीरे क़िलों तथा नगर को नष्ट कर रही हैं। नगर के बहुत से घर जल रहे हैं। शहर को सहायता पहुंचाने की आष्ट्रियनों की समस्त चेष्टाएं व्यर्थ कर दी गयीं। आष्ट्रियनों को इस में बड़ी हानि हुई।

९ अक्तूबर—ऐण्टवर्प से भागे हुये लोग जो रोसेनडाल पहुंचे हैं, कहते हैं कि जर्मनों ने ऐण्टवर्प नगर को भारी २ तोपों से उड़ाना प्रारम्भ कर दिया है। पहले गोले नगर के दक्षिण भाग में बरसाये गये। नागरिक जन प्रायः सबके सब भाग पड़े हैं। तोपों से गोले बरस रहे थे और ऊपर आकाशयान से बम भी दुर्ग पर गिराये जाते थे। हाजकेन नामक तैल भण्डार में आग लग गई और बात की बात में भस्म हो गया। फिर जर्मनी ने नगर के उत्तर पूर्वी भागों को उड़ाया। बेल्जेम के आस पास भी बड़ी भारी हानि हुई होगी।

आष्ट्रिया और ब्रिटेन के मध्य आपस में यह कौल करार हुआ है कि औरतें बच्चे तथा ऐसे पुरुष जिनकी अवस्था युद्ध करने योग्य न हो, तथा चिकित्सक और पादरी लोग, अपने २ देश में लौटा दिये जायँ।

"निउज क्रानलडेज" नामक समाचार पत्र कहता है कि बेलजियन नरेश एण्टवर्प से चल कर सेलज़टी ग्राम में पहुंचे हैं यह ग्राम डच सीमापर है।

नगर गोलों से उड़ाया जा रहा है नगर में जर्मन बम भी गिरा रहे हैं। नगर का दक्खिन भाग जल कर भस्म हो गया। यह अफ़वाह उड़ रही है कि नत्थी नदी के तट पर जर्मन हटाये गये हैं।

'डेली एक्सप्रेस' को पैरिस से संवाद मिला है कि मित्र सेनाओं की बाँई बाजू पर जो जर्मन अश्वारोही सेना लड़ रही थी उसकी सहायता के लिये आष्ट्रियन घुड़सवार सेना पहुंच गई हैं। अंग्रेज़ी सेना ने इस सेना का बहुत विध्वंस किया था। अब लिल्ली युद्ध का मध्य स्थल बन रहा है

'पायोनीयर' का एक तार कहता है रूसी सेनाओं का सैन्य संचालन गत सप्ताह समाप्त हो गया। रिजर्व सेनाओं को संग मिलाकर सब रूसी योद्धाओं की संख्या अस्सी लाख तक पहुंचती है जिन में से कूता गया है कि पचास लाख सैनिक युद्ध स्थल में पहुंचे हुए हैं।

गत ७ अक्तूबर को रूसियों ने रात में पूर्व प्रशिया में धावा किया और अकसर जैनी के पास एक गांव अधिकार में करलिया। वहाँ कई तोपें उन्हें हाथ लग गईं बिआला नगर पर रूसियों ने दखल कर लिया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक जर्म्मन वायुयान ने सेण्ट डेनिस नगर पर दो बम गिराये हैं। पहले बम से तो कुछ हानि नहीं हुई परन्तु दूसरे बम से तीन मनुष्य घायल हुए

सब मेरिन "ई० ९" हारविच लौट कर आगया है। मालूम पड़ता है कि एक बार यह जर्म्मन नाशक जहाज़ के निकट पहुंच गया था केवल सौ गज का ही फ़ासला था उसकी पहली टारपीडो नौका चुक गई परन्तु दूसरी नौका ने जा कर जर्म्मन नाशक जहाज़ को डुबा दिया मांझी कहते हैं कि तीन ही मिनट के भीतर सब काम किया गया

जर्मन पीछे हटे

लंडन १५ अक्तूबर के तार से मालूम हुआ कि जर्मन अपनी समूची शक्ति लगाके कैले की ओर बढ़े थे–किन्तु उन्हें वहां से लौटना पड़ा और उसी दशा में लीज़ से पार हुए। कैले और लिली में रेल का जाना आना शुरू हो गया है।

मन्त्रि पुत्र।

इंग्लैंड के मन्त्रि मंडल के मुखिया मि० आसक़िथ के पुत्र एण्टवर्प के युद्ध में अपनी सेना के साथ थे। अब समाचार आया है कि वे सकुशल हैं।

टर्की का जहाज़ी बेड़ा।

कान्स्ट्रीयोनोपिल से तार समाचार आया है कि गोबेन का कप्तान टर्की जहज़ी बेड़े का अध्यक्ष बना दिया गया है और टर्की का बेड़ा रूसी बेड़े पर हमला करना चाहते हैं। वहां से यह भी मालुम हुआ है कि टर्की के बेड़े पर अधिकाँश जर्मन आफीसर हैं और वे जर्मन सैनिक वेष में ही हैं।

सामाजिक उत्सव।

इंग्लिश स्कूल टकवा बाज़ार १, २ नवम्बर

गोपाल गोशाला हरदोई २६, २७, २८ अक्तूबर।

वेदरत्न विद्यालय–दानापुर

(विहार प्रान्त)

यह विद्यालय आज ३–४ वर्षों से स्थापित है और श्रेणियें भी ४ हैं तथा ब्रह्मचारी अनुमान ५५ हैं। यह विद्यालय श्री पं० हरिनारायण जी शर्म्मा के पुरुषार्थ का फल है यथार्थ में इसके चलाने वाले इन्हीं को कहना चाहिये। आदि से अबतक आप ही मन्त्री का काम करते हैं आप बड़े पुरुषार्थी हैं अपना अन्य कार्य्य छोड़कर सारा समय विद्यालय के प्रबन्ध में ही व्यतीत करते हैं। इस विद्यालय की जो नियमावली छपी है उसमें इसे भावी गुरुकुल के नाम से लिखा गया है तथा यह भी है कि उचित प्रबन्ध करके प्रतिनिधि सभा बिहार बंगाल इसे अपने हाथ में ले सकती है इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि सभा को अपने हाथ में लेने तथा गुरुकुल नाम रखने में वर्तमान अधिकारियों को कोई इन्कार नहीं, स्थान परिवर्तन के सम्बंध में भी यही बातहै उक्त पं० जी इस बात के लिये हृदय से सहमत हैं तथा कार्य्य करनेके लिये सन्नद्ध हैं। परन्तु बड़े आश्चर्य्य की बात है कि जिसके लिये लोगों की आशा विशेष हो तथा ज़िम्मेवारी का काम हो (मेरे विचार में नियमावली के अनुसार अब भी सभा ज़िम्मेवार कही जा सक्ती है) उसे प्रतिनिधि सभा चुपचाप देखती रहे और कुछ न करे। आर्य्य जनता को पूछना चाहिये कि वह टुक टुक दीदम टुक न कसीदम' की कहावत क्यों चारितार्थ कर रही है। यदि इसमें कुछ गूढ़ रहस्य हो तो सर्व साधारण पर प्रगट करदेना चाहिये ताकि लोग सावधान होजावें।

सुना है कि सभा में यह विषय दो तीन वार प्रविष्ट हुआ परंतु आगामी अवसर के लिये सरकाय दिया जाता है मालूम नहीं सभा में कुछ है वा नहीं?

इस सम्बन्ध में कुछ ऐसे भी चिन्तक हैं जो यह सलाह देते हैं सभा इस विद्यालय को तोड़कर या न लेकर एक नवीन गुरुकुल खोल सभा को ऐसे हानिकारक और ठ सलाह पर कभी ध्यान न देना चाहि यह लोग वही हैं जो दूसरे की की को देखना नहीं चाहते।

जहाँ तक मुझे मालूम है कि पं० हरिनारायण जी की यह इच्छा कि विहार बङ्गाल के भिन्न हिस्से एक २ कार्यकर्ता नियत हो जावें कि का यह काम होगा कि अपने अवक शानुसार समय गुरुकुल के लिये एकत्रित करें जिस से सहज में ही गु कुल का कार्य निर्विघ्न चल सके विचार तो उत्तम है इस में कुछ सन्दे नहीं परन्तु प्रतिनिधि सभा यदि ऐ पूर्णतः प्रबन्ध न कर सके तो उक्त जी को इस के लिये सर्वथा कटिब रहना चाहिये, गुरुकुल कांगड़ी उदाहरण सदा अपने सामने रख चाहिये।

विहार में दो अनाथालय हैं एक भागलपुर में और दूसरा दानापु में, परन्तु प्रबन्ध दोनो का ख़राब अतः दोनों को मिलाकर एक स्थान रखना अधिक हितकर होगा। वर्तमा विद्यालय भूमि (विद्यालय उठने पर अनाथालय के लिये विशेष उपयु होगी। मेरे विचार में पं० हरिनाराय जी इस बात से अवश्य सहमत होंगे आशा है कि बिहार बंगाल के उदा चेता तथा शुभचिंतक (भावी गुरुकु के) शुभ कार्यमें शीघ्र ही यत्नवान हो जिस से उक्त गुरुकुल शीघ्र ही उन्न को प्राप्त हो।

अब विद्यालय के वर्तमान अधिक रियों से निवेदन है कि विद्यालय मुख्याधिष्ठाता एक ऐसे संस्कृतज्ञ परि त को रक्खें जो आर्य्य सिद्धांतो को जा हों तथा ब्रह्मचारियों को धर्मोप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by 53 Foundation USA

सकें, और जहाँ तक हो सके स्टाफ
काम रखनेका प्रबन्धकरें। जिससे किसीको
बली दिखानेका अवसर न मिल सके।
कुछ दिन हुए सद्धर्मप्रचारक में जो चि-
ट्ठियें प्रकाशित हुई थीं उस से जान
पड़ता है कि स्टाफ में कमी अवश्य है
विद्यालय में जब तक अध्यापकों के
आने जाने का रोग लगा रहता है तब
कि विद्यालय की बुरी दशा बनी रहती
और ब्रह्मचारियों पर इस का हानि-
कारक प्रभाव पड़ता है। अधिकारियों
को प्रेम से काम लेना चाहिये, प्रेम से
सौन्दर्य्य दूना होता है इसे सदा स्मरण
लेखें॥

इतिशम्

भवानी प्रसाद

(विहार वेतिया निवासी)

शाखा गु० कु० मुलतान

दशहरे के दिनों में हथियारों की
जा होती है। और पशु बलिदान किया
जाता है। यह प्रायः सभी रजवाड़ों में
विद्यमान है। हम यह नहीं कहना चा-
हते कि विजय दशमी ऐसे पवित्र त्यो-
हार को पशु बलिदान इत्यादि घृणित
कर्म से क्यों अपवित्र किया जाता है।
किन्तु यह अवश्य कहेंगे कि जो लोग
इस महानन्द के समय पर भी दीन प-
शुओं को मारने से नहीं चूकते। वे बड़े
निर्दई हैं हमें यह जान कर बड़ी प्रस-
न्नता हुई है कि श्रीमान मैहरनरेश श्री
जगन्नाथसिंह जी महोदय ने इस कुप्रथा
को सर्वथा त्याग दिया है। दीन प-
शुओं पर आपकी यह दयादृष्टि निस्स-
न्देह अत्यंत सराहनीय तथा अनुकरणीय
है। आप की इस दयाभाव की समस्त
राज्य में प्रशंसा हो रही है दीन
और उपकारी पशुओं का मारना धर्म
नहीं है किन्तु उन की रक्षा करना ही
धर्म है। यह वाक्य थे जिन को कह
कर आपने वेदी पर आये हुये बकरे को
वापिस कर दिया।

बलदेव

विजय

निकल गया निकल गया

जिस समय की ओर लोग चातक की भांति टिकटिकी लगाए बैठे थे और उसके पढ़ने के लिये उलावले हो रहे थे, उसका पहला अंक निकल गया।

पहिले अंक के लेख

विशेष लेख——अमरीका का धार्मिक जीवन। यह लेख बाबू जगन्नाथ खन्ना बी. एससी. का लिखा हुआ है जो स्वयं कई वर्षों तक अमरीका में रह चुके हैं।

कविता——विजय

मुख्य लेख——राष्ट्रीयता का संदेसा या विजय नीति

टिप्पणियां——(१) बज बज का दंगा (२) क्या सिक्खों को बङ्गाल से निकालना ज़रूरी था (३) एंटवर्प का निपात (४) सम्मेलन का हिन्दी प्रचार (५) प्रताप का विजयांक (६) कांग्रस में नया गर्म दल (७) क्या कांग्रस जीना चाहती है (८) "ज़मींदार" की शिकायत।

युद्ध-चर्चा——युद्ध की केवल ख़बरें पढ़ लेने से बहुत कम लोग युद्ध की स्थिति कोष समझ सक्ते हैं। युद्ध चर्चा में सप्ताह भर की युद्ध स्थिति समझाने का यत्न किया गया है।

योरप का महाभारत==इस शीर्षक के नीचे युद्ध के बिलकुल ताज़े समाचार दिए गए हैं। १५ ता० के पर्चे में १४ के सायंकाल तक की खबरें आगई हैं।

देहली समाचार——अब देहली भारत की राजधानी है। उसके समाचार जानने के लिये लोग बड़े उत्सुक रहते हैं। विजय ने देहली के समाचार देकर इस उत्सुकता को पूरा कर दिया है।

पत्रों की सैर——इस सैर में मराठा "केसरी" के नोटों का अनुवाद किया गया है।

प्रयाग की चिट्ठी——कलकत्ता, प्रयाग, लाहौर, कानपुर आदि बड़े बड़े शहरों से विजय ने निज संवाददाताओं से चिट्ठी मंगवाने का प्रबन्ध किया है। "प्रयाग की चिट्ठी" पढ़कर आप जान सकते हैं कि वह प्रबन्ध कैसा होगा।

प्राप्त——(१) संयुक्त प्रान्त के जेलखाने (२) विधवा को भगाने का मुकद्दमा। छपाई और काग़ज़ बहुत बढ़िया है यदि आप एक नमूना मंगवा कर देख लेंगे तो अवश्य ही ग्राहक बन जावेंगे।

प्रबन्धकर्त्ता—विजय, देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्यो पान्त इतिहास सरल भाषा और मनो-रंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसा की है१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषा नुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पतासाफ़हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बज़ाज़ा शहर मेरठ

आर्यसमाजों को सूचना

म० तेजूमल जी 'म' कनल प्रबन्धकर्त्ता देश सेवा यज्ञ, पो० तलोद अहमदाबाद सूचना देते हैं कि वह प्रचारक की ग्राहक आर्य्य समाजों को एक कापी राष्ट्रों की उन्नति, लेखक श्री ब्रह्मचारी इन्द्र जी वेदालंकार मुफ्त देंगे। समाजों को अपनी ग्राहक संख्या लिखकर उक्त महाशय से पुस्तक मंगा लेनी चाहिये।

प्रबन्धकर्त्ता।

७००) रुपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग२ साफ़२ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को सद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द बाला ५॥)

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवत् गीता पर।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर भी प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।=)
ऐतरेय =) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वतर ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ॥)
उपनिषदों की शिक्षा =)

दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश मञ्जरी ।-)
प्रार्थना पुस्तक -)
ओंकार की उपासना -)

२००) रुपये इनाम।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)

वेद और रामायण के उपदेश -)
वेद और महाभारत के उपदेश -)
वेद, मनु और गीता के उपदेश -)।
सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ■)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ वेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर ए० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता – मैनेजर
आर्ष ग्रन्थावली
लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२।३ मौताज ही में बुखार बन्द होता है।

डाक्टर बर्मन की बनाई—

दवा खाने के पहिले

फसली बुखार वो तिल्ली की दवा।

देखिये। इस दवा से यह हड्डी का टाटर कैसा पुष्ट हो गया है।

जूड़ी बुखार वो तिल्ली की दवा।

मोल—बड़ी शीशी ॥।=) छोटी शीशी ॥) डा०म०।=) और।-)

दवा सब जगह बिकती हैं। नकली दवा से सावधान।

दवा खानेके बाद

डा: एस. के. बर्मन ५, ६, नारायण दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नँ० ७६

एजन्ट—बाबूराम जैन एन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा दिल्ली

विधवा की आवश्यकता

कुछ समय हुआ मेरी पहली स्त्री का देहान्त होगया है। अब मैं एक विधवा के साथ विवाह करना चाहता हूं। विधवा की आयु २०, से २५ तक होनी चाहिये। विधवा कुछ पढ़ी लिखी होनी चाहिये। शेष पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते सेकीजिये।

बा. धन्नाराम स्टेशनमास्टर

बिलासपुर

सरगोधा लाइन

उस्तरे को बिदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

हिमालय कम्पनी कंखल U.

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा मोल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही जिद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट 'का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

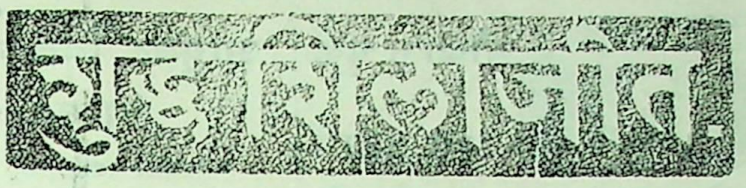

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पताः-

बा के ंचमसिंह वर्मा

म यो ारख़ाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीच इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ≡) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (व)

चान्द--जि० जारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है।। **ब्राह्मी बूंटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सन्दयाफ्ता पंजाब यूनिर्विसिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रगट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्सिफ कृष्णउर्फ भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्राह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिवर्द्धिन्यो यः स्वादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽश संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्टपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अक्ल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, बहम, दिल का धड़कना, हलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ≡) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय माफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पताः—

पं० नन्दकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचन्द्र वैद्य शास्त्री अलीगढ़ सिटी. यू. पी.

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौ बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एज सहारनपुर

(४) म० सूर्य्य नारायण वम भागलपुर

(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानद जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान दे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

... के ... रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

* ओ३म् *

Registered No. L.807

ऋष्यंक

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्त—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

८ कार्त्तिक सं १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० २४ अक्टूबर १९१४

संख्या २८

भाग २६

विषय								पृष्ठ
१–ऋषिस्तव ...	...	...	...	...	...	...	...	२
२–जागहु भाई ...	...	...	...	...	...	...	...	२
३–धर्म्म सेवक ...	...	...	...	...	...	...	...	२
४–ऋषि के जीवन का उद्देश मार्ग ...	...	...	...	...	...			३
५–ऋषि दयानन्द और स्वदेश गौरव ...	...	...	...	...	...			६
६–ऋषि की आज्ञा हम क्यों मानें ? ...	...	...	...	...	...			१०
७–यदि आज ऋषि दयानन्द जीवित होते ? ...	...	...	...	...				८
८– आर्य समाज में ऋषि दयानन्द का स्थान ...	...	...	...	...				११
९–ऋषि का कार्य्य ...	...	...	...	...	...			१४
१०–आर्य प्रतिनिधि सभा के सभासदों से निवेदन ...	...	...	...	...				१६
११–कुंभप्रचार सम्बन्धी ..	...	...	...	..				१६

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि स्तव

(मू० ऋग्वेद कृत)

गहनगिरिगुहान्तः ध्वान्त पूर्णाटवीषु
दिवसविहित मुक्तासु शान्तसुप्तं जडीषु
विधु शिखरि मालाः लालित कूलान्त कान्तम्
कमपि विदितसारं नौमि वाचं विशालम् । १ ।

हिम धवलितदग्ध कूटकैः क्लान्त देहम्
ध्वनत रुचिर धारा लिप्त मध्युद्ध वन्तम्
तुहिनगिरि शिलम्बे तेजसा सासमानम्
तरुण रवि समानं नौमि कञ्चिद्युवानम् । २ ।

जड दव शवतायाः शुभ्रधासाज्वलन्तम्
उदय जय दुगन्ता नार्त लोके चरन्तम्
दुरित वन दहाना ध्यावदन्तौ वैराजम्
नमत कमपि शान्ति ज्योतिषोः दक्षमन्तम् । ३ ।

रुचिर परिधताभाङ्गारा लोकिनी माम्
दिवस गमन शङ्कं बोध्य कल्पाहतानाम्
गत शरण गवाना स्वान्त्वनं स्नेह सान्द्रम्
शमत कमपि गोत्रं दुर्जनावज्ञाकोपम् । ४ ।

नयन जल कपोल क्षालिनीना मजस्रं
विशरण विधवानां नेत्र नीर प्रपूरे
करुण मविरहन्तीं शान्त्वयन्नात्म भूमिम्
परमकरुणन्वो व्यायताक्षो ऽपि वीरः । ५ ।

नयन पथ सुनीलैर्जीवनै रक्तलालै
विरत सकल शकोन्मानवाक्षीवयन्तम्
प्रशम सुखमयन्तं दुः खहेतावपि जाग्रा
प्रणत शिरसा तं ज्योतिषांकञ्चिदग्रम्

जागहु भाई

जागहु अब भारत के नर और भई नारी
मन्द पवन सुन्दर बहत, रवनी सबन चलन चहत
जन जन मन रहत, देखहु उठि भाई ॥ १ ॥

२. काहिला को बहत दिवा, दुखदी यह विरत निशा
देखि देखि दयानन्द, दिनकर मुसिराई ॥ २ ॥

३. ब्रह्म चन्द्र दयानन्द, तेजसाह है सुखकन्द,
हीरक हिमिते अनन्द चन्दो दयदाई ॥ ३ ॥

४. पापतुल्य अरह अरह, अर नट दिनी जनह,
घरघरों की अरहवरह, पूजा कुदुखाई ॥ ४ ॥

५. गाते जिसको चारों वेद इतना जो कि सुरत वेद
उसकी हो केवल एक मति बतलाई ॥ ५ ॥

६. दम्भ दल दलन किनो विद्याकर वचन दिये ।
सत्यधर्ममण्डन किनो विद्याबल पाई ॥

धर्म सेवक ऋषि ।

(मू० सत्यव्रत कृत)

१. क्यों पिता की मूल शंकर ने किये बेचैन थे
हा ! अश्रु धारा-पूर्ण माता ने किये क्यों नैन थे
क्यों तजी उस नवयुवक ने लोग की अब चंदा
क्यों ग्रहण की त्याग-वृत्ती साधुजन को कन्दा ।

२. कंटकाकृत झाड़ियों में क्यों अभी सरता रहा ?
वेद विद्या के लिए तप क्यों कड़ा करता रहा ?
विश्व-गुरु के वह सदा सन्देश क्यों करता रहा ?
भोज्य की अप्राप्ति में वह मूल फल खाता रहा ?

३. क्यों ऋषी ने इस हिमालय पर चरण रक्खे कभी ?
नर्मदा के तीर पर ने आश्रम डाले क्यों सभी ?
क्यों ऋषी गङ्गा किनारे घूमतेथे सोचते ?
और क्या वे इस किनारों पर कहीं थे खोजते ?

४. इन सभी उपरोक्त कथनों को ऋषी ने क्यों किया ?
ऊर्ध्व रेता ब्रह्मचारी ने यही उत्तर दिया—
"धर्म का मैं था पिपासू" धर्म सदा ध्येय था,
धर्म का था जागना, औ धर्म बुझको प्रेय था;

५. "इस लिये मैं था भटकता—धर्म सच्चे के लिये
अब ठिकाने जो लगा हूं, धर्म सच्चे को लिये
चाहते सन्देश जो हो तुम पिता का जानना
धर्म वैदिक को हृदय में परम प्यारा मानना । "

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि के जीवन का उद्दिष्ट मार्ग।

(लेखक—ब्र० विनायक राव)

मैं जिस विषय को आपके सामने प्रतिपादन करूंगा उसका शीर्षक है 'स्वामी दयानन्द और मनुष्य जीवन का मार्ग' मुझे यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि मनुष्य को क्यों चाहिये कि वह अपने एक उद्दिष्ट मार्ग को स्थिर रखें? क्यों कि यह बात बिलकुल स्पष्ट है।

मनुष्य उपरोक्त बात को समझता हुआ भी स्वार्थ और अभिमान आदि कई अन्य प्रकार के भावों की आती हुई आँधी का सामना नहीं कर सकता। और आगे के मार्ग को भली प्रकार न जानने के कारण मार्ग भ्रष्ट हो कर इधर उधर घूमने लगता है। ऐसी अवस्था में आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य जीवन के उद्दिष्ट मार्ग के इतिहास को जानता हो। क्योंकि इस प्रकार से वह मार्ग की कठिनाइयों को पहिले से समझ सकेगा और उनको दूर करने का यत्न कर सकेगा यह इतिहास उन्हीं के जीवनों में मिल सकता है जो कि यहाँ तेज तलवार की धारा पर चले हों और अपने जीवन में कृतकृत्य हुए हों, यही कारण है कि मैं स्वामी जी के जीवन में इस मार्ग का अन्वेषण करने लगा हूं।

आज स्वामी जी के जीवन को संसार में सार्थक हुआ कि नहीं बतलाना केवल निरर्थक या पुनरुक्त ही नहीं किन्तु एक टेढ़ी की बात होगी। वह कौन है, जो सूर्य को प्रकाशित करने की सामर्थ्य रखता हो वह स्वयं प्रकाशित है और अपने आपको आप प्रकट करता है, यह ग़लत बात है कि वनों में पशुओं से कोई कहता फिरे कि यहाँ सिंह आया हुआ है तुम यहाँ से चले जाओ सिंह का आना आपसे आप प्रकट होता है और सब पशु दूर २ भाग जाते हैं। तेज और कीर्ति को फैलाने वाला दूसरा कोई नहीं होता वे अपने आप फैलते चले जाते हैं इसी से आज स्वामी जी के जीवन की सार्थकता जो स्वतः प्रकट है उस को बताने की ज़रूरत नहीं। एक महात्मा का वचन है 'मेरी सम्मति में उसी मनुष्य ने यथार्थ में सफलता प्राप्त की है जिस ने अनगिनत बाधा विपत्ति और विघ्न दुर्दैवों का सामना किया है चाहे वह जगत् में प्रसिद्ध न हो, उसका नाम सर्वत्र जाहिर न हो उसका भविष्य में कोई भी स्मारक न हो, तो भी वह कृतकार्य हुआ क्योंकि उसने दुःख के साथ लड़ाई की और वह निराशा के भय ही को अपना सर्वोत्तम सहायक समझकर कठोर कर्मक्षेत्र में उतरा। यही मेरी समझ में मनुष्यत्व की कसौटी है और सफलता मापने का फीता है। इन वाक्यों के होते हुए कौन कह सकता है कि स्वामी जी अपने जीवन में सफल नहीं हुए। सारांश यह है कि स्वामी जी के जीवन में वह मार्ग ढूंढ कर निकाला जा सकता है जिसकी प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकता है, जिसपर चलता हुआ मनुष्य दुख का अभिलाषी हो सकता है क्योंकि संसार में उन का भी जीवन सार्थक हुआ है।

अब हमें मार्ग देखने के लिये सबसे पूर्व यह जान लेना बहुत आवश्यक है कि हमें वह मार्ग कहां ले जाता है अर्थात् हमारे जीवन का फल क्या है। फल के देखे बिना ही अपने जीवन मार्ग का निर्णय कर लेना अथवा किसी भी कार्य का प्रारम्भ कर देना बड़ी मूर्खता की बात है। इस प्रकार अन्धा धुन्ध काम में प्रवृत्त हो जाने वालों का मार्ग कठिन और दुर्गम होता चला जावेगा और निराशा ही निराशा में उनका जीवन समाप्त हो जावेगा। लोग कहते हैं कि "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" किन्तु यह एक ना समझी की ही बात है। स्वामी जी के जीवन में हमें यह शिक्षा नहीं मिलती। उन्होंने अपने वास्तविक जीवन का श्रीगणेश ही इन बातों के समझ से किया था उनका उद्देश्य था कि वे महादेव की मूर्ति की पूजा करते रहते किन्तु फल प्राप्ति की सम्भावना ने ही उन्हें इस कार्य से हटाया। जब उन्हें पता लग गया कि हमारा उद्दिष्ट फल यहां नहीं प्राप्त होना तब "कर्मण्येवाधिकारस्ते" की कौन सुनता था उन्हें फल की परवाह थी। वास्तविक बात यह है कि मनुष्य में इच्छा शक्ति तथा विचारशक्ति विद्यमान हैं और इन दोनों के कहने वाले इनका नाश कर देना चाहते हैं। किन्तु यह नहीं हो सकता। शक्तियों का नाश कर देना मनुष्य तथा परमात्मा के भी अधिकार में नहीं है। मैं इस बात पर पहिले अधिक बल दे रहा हूं कि जीवन के उद्दिष्ट मार्ग पर चलने वालों के लिये स्वामी जी के जीवन में ग्रहण करने योग्य वह प्रथम और मुख्य शिक्षा है। किन्तु वर्तमान स्वदेशीय समाज में इस के विरुद्ध प्रकट रूप से कार्य हो रहा है। लोग अपनी इच्छाशक्ति का नाश करके (जो कि वस्तुतः नहीं हो सकता) वीतरागी और वैरागी हो जाना ही अपना उद्देश्य बनाते हैं और इस प्रकार की केवल काल्पनिक बातों का जो कुछ भी परिणाम हो सकता है वह हो ही रहा है। यदि यह कल्पना की जावे कि अग्नि हमारे शरीर को जला नहीं सकती और इसी ही पर हम अग्नि में कूद पड़ें तो इस का परिणाम निःसन्देह कल्पना के विरुद्ध ही होगा और इस उपरोक्त काल्पनिक बातों का भी ठीक यही परिणाम देख रहे हैं। ऐसी अवस्था में मनुष्य समाज को चाहिए कि वह इच्छाशक्ति और विचारशक्ति से पूरी तौर से काम लें। अधिक क्या आकांक्षा और सफलता ही मनुष्यजीवन की शक्ति का मूल हो सकती है।

अब हमें देखना है कि मनुष्यों की इच्छाशक्ति ने अपने जाने को कौन सा ढूंढ रक्खा है। हम यदि प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा शक्ति के साथ २ घूमने लगें तो हम ज़रूर ही भाग्यवाद होंगे इसके लिये हमें थोड़ी दो बात देखनी चाहिए। वह यह कि संसार एक शक्ति है उस से मित्र भी मारा जा सकता है और शत्रु भी किन्तु तलवार का फल इन दोनों में से एक को नहीं है तलवार का फल है तो केवल काटना। इसी प्रकार से हम यह भी समझ सकते हैं कि इच्छाशक्ति का फल हो केवल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्य के सुख के लिये प्राप्ति और यह समझिये कि इस प्राप्ति पर या तो आर्यत्व दशमलव का बिन्दु लगा हुआ है या इस का अन्त यहां ही है जहां प्रकृति और परमात्मा का अन्त होजाता है। सारांश यह है कि मनुष्य के सामने फल अनन्त सुख की प्राप्ति है।

अपने इस फल की प्राप्ति के लिये प्रत्येक व्यक्ति भिन्न २ प्रकार प्रयत्न करता है। कोई धन की प्राप्ति को, और कोई भोग और विलासों ही की प्राप्ति को अपने २ सुख का मार्ग समझे बैठे हैं। और इन की प्राप्ति के लिये विशेषतया प्रयत्न करते रहते हैं। देखने में ये लोग सुखी भी मालूम देते हैं। और निःसन्देह किसी सीमा तक ये सुखी भी होते हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या इन्होंने अनन्त सुख की प्राप्ति की? उत्तर यही मिलेगा कि नहीं। इनका सारा सुख मरणान्त तक ही है। मृत्युकाल में ये लोग प्रसन्न चित्त मृत्यु का स्वागत नहीं कर सके। किन्तु जो लोग जीवन के उद्दिष्ट मार्ग पर चले हैं उन्हें मृत्यु के बाद सब कुछ अन्धकार मय नहीं दिखता क्योंकि धन के सुख का अभीतक अन्त नहीं हुआ है इसलिये उनको सबकुछ प्रकाशमय मालूम देता है और वे मृत्यु काल में भी प्रसन्न चित्त रहते हैं। सारांश यह है कि धन मान और विलास सब शान्त बातें हैं इन में अनन्त सुख की प्राप्ति नहीं होसकती। अनन्त की प्राप्ति अनन्तता ही में होगी।

अब इस प्रकार के साधारण जन समाज को छोड़ कर हम कुछ आगे चलते हैं। इन की शक्तियां बहुत हैं और ये संसार में महापुरुष कहलाते हैं। ये लोग अपनी बलवती शक्तियों के कारण से बहुत सी सांसारिक शक्तियों को अपने काबू करलेते हैं और समझते हैं कि इस प्रकार से हम सुखी होजावेंगे। अभिप्राय यह है कि ये लोग अनन्त प्रकृति में अनन्त सुख को प्राप्त करना चाहते हैं। किन्तु यह सब कुछ उनकी भूल है। इतिहास इस के विरुद्ध साक्षी देता है और यह इसे अनहोनी बात बतलाता है। अगर नैपोलियन को अद्वितीय शक्ति मिली थी तो वाटर्लू का विशाल मैदान भी उसके लिये मौजूद था। अल्लाउद्दीन के लिये चित्तौड़ के गढ़ और औरङ्गज़ेब के लिये महाराष्ट्र की पहाड़ियां उन की शक्तियों का सर्वस्व समाप्त करने के लिये पर्य्याप्त थीं। और विजेता सिकन्दर की आशाओं के सामने सतलज की आड़ बहुत दिन पूर्व से ही बांधदी गई थी। सारांश यह है कि जीवन का उद्दिष्ट मार्ग इन कार्यों में से होकर नहीं जाता है। तो अब आओ धन, मान, विकास, और उपरोक्त वीर चरित्रों को एकदम छोड़ देने वाले सन्यासी से पूंछे कि उस ने यह क्यों और क्या समझ के किया और कौनसा जीवन का उद्दिष्टमार्ग ढूंढ निकाला है।

वह हमें अपने उच्च जीवन से हमारे प्रश्नों का उत्तर देता है कि प्रकृति के सब पदार्थ जड़ तथा तमोगुण प्रधान हैं इस से प्रेम करने वाले को तामस सुख की प्राप्ति होसकती है। किन्तु सात्विक शान्ति या अनन्त सुख की प्राप्ति के लिये सतोगुण प्रधान अनन्त से ही प्रेम करना होगा, और उसी की प्राप्ति करनी होगी"।

अभीतक प्रश्न वैसा ही गहन बना हुआ है जैसा कि आदि में था किन्तु बहुत कुछ सहज हो चुका है। परमात्मा कैसे प्राप्त हों इसका उत्तर भी हम उसी महर्षि के ही जीवन से पूछेंगे।

हम देखते हैं कि स्वामी जी के जीवन का बहुत सा भाग इसी बात में व्यतीत हुआ है कि मनुष्य जाति की उन्नति की जाय और प्राणिमात्र पर दया दिखाई जाय। उन्होंने वैदिकधर्म का प्रचार किया तो इसीलिये उन्होंने पाठशालायें और अनाथालय खोले तो इसीलिये उन्होंने गोशालाएं और गो रक्षिणी सभाएं बनाईं तो इसीलिये और अन्त में उन्होंने विपत्ती खाया तो इसीलिये उनका मन मनुष्य जाति के लिये प्रेम से भरा हुआ था और वे जीते भी थे तो केवल इसी लिये कि वे संसार में किसी प्रकार का उपकार कर सकें। उन्होंने हरिद्वार में बहुत से पंडितों के उत्तर में लिखा था जिस में यह भाव [illegible] कता था। उन्होंने लिखा था कि "अब जहां यह सभा हुई है वहां आने से मुझे प्राणों का भय है। यद्यपि इस में मुझे शोक नहीं कि मेरे शरीर का पात हो जावे परन्तु इस बात का बड़ा शोक है कि जिस परोपकारक अर्थ इस शरीर की रक्षा करता हूं वह रह न जावे।"

उन्होंने जिस समय आर्यसमाज की संस्था की स्थापना की थी तो इन वाक्यों के साथ प्रारम्भ की थी कि "आर्यसमाज सब मनुष्य के हितार्थ अवश्य होना चाहिए" इसके अतिरिक्त उनके बनाए हुए आर्यसमाज के वर्तमान १० नियमों में से अन्तिम ५ नियमों का आशय सिवाय इसके कुछ भी नहीं है प्राणी मात्र से प्रेम किया जाय और संसार का उपकार तथा उन्नति की जाय नियम निम्नलिखित हैं।

जो हो इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि उनके हृदय स्रोत से प्रेम की पवित्र नदी बहा करती थी। उन्होंने अपनी जीवन की सार्थकता को इसी में समझा था कि दुःख सागर में डूबती हुई मनुष्य जाति को कुछ थोड़ा सा सहार देदिया जावे, अविद्या के घनघोर अन्धकार में पड़े हुओं को कुछ प्रकाश दिखला दिया जाय, अनाचार की कंटीली झाड़ियों में फँसे हुओं को रास्ता दिखा दिया जाय, अत्याचार के दृढ़ दुर्ग में घिरे हुओं को खुली हवा खिलाई जाय, और कई प्रकार के अन्य बन्धनों से बंधे हुओं को क़ैद से मुक्त किया जाय,। अनेक बार उनको कठिन से कठिन आपत्तियों का सामान करना पड़ा कितनी ही बार उनको अपने हत्यारों के सुख देखने पड़े और लोगों के दुर्वचन सहने पड़े किन्तु उन्होंने अपने व्रत को नहीं छोड़ा। वे जोधपुर जाते हुए कहा करते थे कि "यदि वहाँ के लोग मेरी उंगलियों के बत्तियां बनाकर भी जलावेंगे तो भी मैं वहां वैदिक धर्म का प्रचार न छोड़ूंगा,,। इस प्रकार उन के जीवन से परोपकारमय जीवन ही आदर्श जीवन दीखता है जिसको उन्होंने अपनी पुस्तक गोकरुणानिधि की भूमिका में यों प्रकट किया है कि "मुझसे जब वे हैं कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो अपनी हानि होती हो तो भी सब के हित के करने में अपना तन मन धन लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रह कर सब के सुखों का नाश करते हैं। ये हैं आदर्श जीवन और सांसारिक मनुष्य जीवन का उद्दिष्ट मार्ग। अब हमें देखना है कि इसमें कितनी सत्यता है। क्या इस प्रकार से हम अनन्त सुख के अभिलाषी हो सकते हैं? और क्या सचमुच यह मार्ग हमें अपने फल तक पहुंचा देगा? इत्यादि।

परमात्मा ने मनुष्य को अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली रखा है और इस की शक्तियों का विकास भी शीघ्र और अधिक हो सकता है। मनुष्य अपनी शक्तियों की महानता और सजगता के कारण अन्य प्राणियों का स्वामी है और प्रत्येक सबल मनुष्य अपने से निर्बल मनुष्य पर उपरोक्त कारण से ही कुछ न कुछ अधिकार रखता है परन्तु ये मानसीय शक्तियां और इन के कारण से अधिकार निर्भरक हैं यदि इन से किसी प्रकार को न लिया जावे। अतः आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य संसार में इन शक्तियों और अधिकारों के होते हुए उदासीन न बैठा रहे। परमात्मा ने यह शक्तियाँ और अधिकार उसे निरर्थक खोने के लिये नहीं दिए। उसे चाहिए कि वह इन्हें काम में लावे ही। अब हम देखते हैं कि इन शक्तियों से काम लेने के दो ही मार्ग हैं एक तो परमात्मा के कार्य को पुष्ट किया जावे, और दूसरा परमात्मा के कार्य को नष्ट किया जावे। इन दोनों में से मनुष्य को चाहिये कि उसी मार्ग का आश्रय करे जिस से कि अनन्त चेतन अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति हो परमात्मा उसी को प्राप्त हो सकते हैं जिस से वे प्रसन्न हों कोई भी अपने कार्य को नाश करने वाले से प्रसन्न नहीं होता। इसलिये मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी शक्तियों को परमात्मा के कार्य अर्थात् सारे जगत् की पुष्टि में ही लगावे। जिसका स्पष्ट आशय यह है कि वह प्राणि मात्र की उन्नति और सुख सम्पत्ति की अभिलाषा करता रहे और उस के पूर्ण करने में सदा तत्पर रहे इस प्रकार से हम देखते हैं कि स्वामीजी का बतलाया हुआ मार्ग यथार्थ में सत्य है और उस पर चलते हुए पुरुष को ही अनन्त सुख की प्राप्ति हो सकती है।

इतना कहने के पश्चात भी ये सब बातें अधूरी रहेंगी यदि इस मार्ग पर चलने वाले के लिये महर्षि के जीवन से प्राप्त एक विशेष बात बता न दी जाए। स्वार्थ त्यागी होना क्षमाशील ईर्ष्यालू तथा हिंसक न होना इत्यादि ये सब भाव तो जीवन का उद्दिष्ट मार्ग परोपकारमय जीवन इतने में ही आजाते हैं। किन्तु वह विशेष बात यह है कि "कर्तव्य मार्ग को विचार कर निश्चित करो और उस पर चलते हुए निराश कभी मत होओ। इस बात के पहिले मार्ग के विषय पर मैं पहिले ही बहुत कुछ कहचुका हूं यहां उसकी कोई बहुत आवश्यकता नहीं है। यदि कर्तव्य मार्ग बिना विचारे स्थिर किया जायगा तो निःसन्देह उस पर चलने वालों के लिये बहुत से दुःख झेलने पड़ेंगे। यही कारण है कि हम "कर्तव्य पालन" विषयक प्रत्येक निबन्ध में देखते हैं कि कर्तव्य की तेज धारा पर चलना बड़ा कठिन है। परन्तु यदि कुछ भी विचार किया जावे तो मालूम पड़ जायगा कि विचार कर कर्तव्य मार्ग को स्थिर कर लेने पर उस पर चलने वाले के लिये वे बातें कुछ भी नहीं रहती अथवा सुख समान होजाती हैं जिनको साधारण मनुष्य अत्यन्त अधिक दुःखदायी समझते हैं। यह बात एक साधारण से उदाहरण से समझ में आजायगी कि एक वैज्ञानिक विद्यार्थी जिसने कि किसी खास वैज्ञानिक प्रश्न के हल करने का निश्चय करलिया है कितने ही घंटे बैठे २ गुजारदेता है और उसको अपने खान पान की भी सुध नहीं रहती। और कभी २ तो ऐसी दशा हो जाती है कि यदि उसे किसी प्रकार का आघात भी लगाया जाय तो उसको इस का कुछ भी पता नहीं चलता। ऐसी अवस्थाओं से साफ़ विदित होजाता है कि दुःख तो केवल मन की विकल्पित गतियों का नाम है। किन्तु जब विचार से कर्तव्य मार्ग को स्थिर करने वालों के मनों की ऐसी गतियां ही नहीं हो सकतीं तो उनको दुःख कहाँ से होगा।

आगे ऊपर बताई गई बात के दूसरे भाग की शिक्षा स्वामी जी के जीवन के उस भाग से मिलती है जिसमें कि उन्होंने योग प्राप्ति को अपना मुख्य कर्तव्य समझा था। योग की प्राप्ति के लिये उन्होंने घर बार त्याग दिया इस सम्पत्ति को लात मारी विवाह के कोमल बन्धनों को निकृष्ट समझा और वे नर्मदा की कंटीली झाड़ियों हिमालय की बर्फीली चोटियों और विन्ध्याचल के गहन कान्तारों में घूमते रहे। इसी प्रकार से घूमते २ वे हमें अलखनन्दा की ऊंची २ और ठण्डी घाटियों से बेहोश पड़े हुए मिलते हैं सारा शरीर बूत से लथपथ है चलने की सामर्थ्य नहीं और खड़े होने का साहस नहीं मुख पर पुराने उत्साह जोश और कान्ति का कोई भी चिन्ह नहीं अब उन्हें संसार की असारता और जीवन की निरर्थकता भासने लगती है सब दुःखों से छूटने का उपाय एक मात्र आत्मघात ही दीखने लगता है। किन्तु न जाने किस ज्योति का प्रकाश हुआ कि ये सारे के सारे तामसी भाव एकदम से दूर होगए और स्वामी जी फिर से सोचने लगे कि इस प्रकार के कार्य से मैं उस मार्ग को न पासकूंगा जिसके लिये मैंने ये सब कष्ट सहे हैं।

श्रोतृ वृन्द! कितनी ही बार इस प्रकार के भावों ने आप को भी आ २ कर घेरा होगा। अज्ञान की अंधियारी रात्री में आप बड़े ही डरावने मालूम पड़ते हैं। किन्तु याद रखना चाहिए कि ये सब बातें ऊपर ही ऊपर से पटकीबी हैं। संसार असार है और जीवन दुःखमय है ये केवल निरर्थक और मन बहलावे की बातें हैं। संसार और जीवन अनन्त फल की प्राप्ति के लिये साधन है इन्हें किसी को भी व्यर्थ न गंवाना चाहिए। इस लिये जीवन के उच्चि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मार्ग पर चलनेवालों के जीवन को उपकारमय बनाने के लिये विचार पूर्वक किसी कर्तव्यपथ को सामने रखो और उस पर चलते हुए कभी निराश मत हो आशा रखो विश्वास करो और निश्चय जानो कि तुम अपने रास्ते को फिर से प्राप्त करोगे किया हुआ कर्म नष्ट नहीं होता वह अपना फल दिखलावेगा फिर प्रकाश होगा और अधियारी रात्री में भी रास्ता दीख पड़ेगा। यही सुखमय जीवन बनाने के लिये महर्षि के जीवन की शिक्षा है।

———

ऋषि दयानन्द और स्वदेश गौरव।

लेखक—मुखराम बी० ए०

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
खं स्वं चरित्रम् शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥

एक समय था कि आर्य्यावर्त्त का सार्वभौम चक्रवर्ती सर्वोपरि एकमात्र राज्य समस्त भूमंडल पर था। यह भारत की पुण्य भूमि सर्व विद्या रूपी रत्नों की खान थी। यही देश सब देशों का मूल था— संसार भर के मनुष्य इसी आर्य्यवर्त के ब्राह्मणों से शिक्षा प्राप्त करने के लिये उनके चरणों में अपना सीस निवाते थे। परन्तु काल की विचित्र गति है जो देश किसी समय गुरू था। वह समयान्तर में अन्य देशों का शिष्य ही नहीं प्रत्युत अपने पूर्व पुरुषाओं की सर्व विद्या को भुला कर और नाना प्रकार की अविद्या में ग्रस्त होकर उन का दास बन गया—व्यक्तियों के जीवनों में कई ऐसी घटनायें और परिवर्त्तन आते हैं कि वे अपने जीवन की बारी को विस्तृत कर देते हैं ऐसे ही जातियों तथा देशों की भी अवस्था होती है। ऐसे अद्भुत विस्तृत और विप्लव उनमें आते हैं कि वे अपने देश के पूर्व इतिहास तथा जातीय परम्पराको भुला देते हैं। और पुनः स्थान का प्राप्त करना उन देशों तथा जातियों के लिये बड़ा कठिन और कभी २ असंभव भी हो जाता है। शोक है उन भाग्यहीन जातियों पर जो अपने उज्वल भूत को न पाकर इधर उधर भटक कर नष्ट भ्रष्ट हो गई और होरही हैं। भारत वर्ष में भी बहुत से ऐसे विप्लव आये। जिन्हों ने इसे नीचे की ओर ही धक्का दिया और यह गिरता ही चला गया। सहस्रों वर्ष इसकी यह गिरावट जारी रही। नाना अविर्भावों में फस धर्म्म तथा राज्य बलहीन होकर विदेशियों का पादाक्रांत हो गया। यवनों के आधीन हो कर भूतसे पूर्व आने वाली मूर्छित अवस्था को प्राप्त हो गया—स्वासकी गति ढीली पड़ गई और मृत्यु भी घड़ी में निकट आगई। परन्तु ईश्वर की कृपा से एक दो व्यक्तियों की मूर्छा दूर हुई और उनकी सहायता से सैकड़ों वर्षों से देश ढांया हुआ मृत्यु का बादल फटा—आकाश कुछ सादा सा हो गया और भारत अपने पूर्व बल और पराक्रम को स्मरण करके उसकी ओर पग उठाने लगा। परन्तु कुछ ही समय पश्चात् एक ऐसे प्रकाश का उद्गम हुआ—जिसने भारतवासियों की निर्बल दृष्टि को चकाचौंध कर दिया और इस चकाचौंध में उन्हों ने अपना पुराना सहस्रों वर्षों गुम हुआ मार्ग जो प्राप्त किया था, खो दिया—और वे अपने कल्याण के मार्ग से पृथक होकर इस प्रकाश और यद्यपि इसकी चकाचौंद से उनकी आंखे भी मुंदी जाती थीं, परन्तु बेतरह दौड़े—इनकी यह दौड़ परवाने की ओर दौड़ के समान थी। जैसे परवाने को यह ज्ञान नहीं होता कि शिक्षा से समर्थ होते ही प्राण हवा होजायेंगे। प्रत्युत वह समझता है कि शिक्षा से मिल कर एक मात्र पूर्णानन्द प्राप्त करना था। वैसे ही भारत वासी भी इस प्रकाश पर मोहित हो गये। अपना सर्वस्व इस पर वार दिया और इसकी प्राप्ति को ही अपने सर्व क्लेशों तथा दुःखों की इति भी समझा। यह प्रकाश पाश्चात्य शिक्षा तथा सभ्यता थी। जो योरोप में विशेषतः अंग्रेज द्वारा भारत वर्ष में आई और जो राज्य का साया पाकर शनैः २ अपने पूरे यौवन में अदा से चमकने लगी। भारत वासी इस पर लट्टू हो गये। और एक स्वर से सारे देश में ध्वनि गूंजने लगी कि सभ्यता भारतवर्ष को भी उन्नति बड़ी शिखिर पर पहुंचायेगी और इसके द्वारा संसार के सुख और शान्ति पूरी होगी। देखो उस सभ्यता के संचालक कैसा स्वर्ग भोग रहे हैं। कोई भी व्यक्ति उस समय भारतवर्ष ऐसा न था जो इस सभ्यता के भयानक परिणामों को जो इस समय संसार के सामने उपस्थित हैं, दीर्घ दृष्टि से देख सकता। हर जगह यही पुकार मची हुई थी कि अङ्गरेज़ी भाषा, अङ्गरेज़ी धर्म्म, अङ्गरेजी पहराव, अङ्गरेजी आदर व्यवहार, अङ्गरेजी संगत, अङ्गरेजी रङ्ग, ढंग ग्रहण करो यदि संसार की जीवित जातियों में काम करना चाहते हो। छोड़ो भारतवर्ष की असभ्य गंवारी भाषाओं, रीत रिवाज़ों को और संस्कृत जैसी मृत प्रायः भाषा को—इन से भारत अब नहीं उठ सकता इन का समय हो चुका। यह नई रोशनी का समय है। पुराने विचार, पुराने धर्म्म का अब कोई मूल नहीं। यह अब जीर्ण हो चुके नये जीवन के लिये नये विचारों की आवश्यकता है।

उस समय जन साधारणो की भी यह अवस्था नहीं थी। वरन उस समय के बड़े २ विद्वान, पंडित और धर्म्म प्रचारक भी इसी लहर पर सवार थे। इसी रङ्ग में सिर से पांव तक रङ्गे हुए थे। शोक से कहना पड़ता है कि राजा राम मोहनराय जैसे विद्वान् और धर्म्म प्रचारक जिन्हों ने इस देश में ब्रह्मसमाज की नीव रखी और जो किसी उपमां में भारत के पुराने विचारों के प्रचारक थे। इस लहर में बह निकले। लार्ड विलियम वेंटिंग के शासन काल में शिक्षा के आंदोलनार्थ एक सभा नियत हुई थी इंग्लैंड का प्रसिद्ध लेखक मकाले इस सभा का प्रधान था। वह इस देश में आङ्गल भाषा तथा शिक्षा का प्रवेश करना चाहता था और उसने कर भी ऐसा ही दिया। भारतीय धर्म्म, शिक्षा, भाषा सभ्यता के विषय में लार्ड मकाले की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्मति बहुत बुरी थी वह कहता था कि भारतवर्ष का सारा साहित्य भण्डार का इतना मूल्य भी नहीं रखता जितना कि एक अंगरेज़ी पुस्तकालय की एक अलमारी का एक ख़ाना रखता है। वह भारतीय धर्म्म, भाषा, दर्शन, साहित्य सब को ही निकम्मा, बतलाता था। इस में बेचारे मकालें का कुछ भी दोष नहीं था क्यों वह भारतीय भाषा साहित्यादि से इतना भी जानकार न था जितना उरद पर सफ़ेदी। वह इस विषय में निराक्षर भट्टाचार्य था। और उसने स्वयं भी इस बात को स्वीकार किया है कि वह संस्कृत की भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ था। राजा राममोहनराय ने उस समय मकाले का पक्ष लिया। और भारत में आंगल भाषा शिक्षा और सभ्यता के प्रचार में अपनी अनुमति दी। मेरे उपरोक्त लेख की पुष्टि अक्टूबर मास के मार्डनरिव्यू (Modern Review) से भी होती है। मार्डनरिव्यू के इस अङ्क में हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रवर्तक श्री विदुशेखर जी का एक लेख छपा है जिस में लिखते हैं Once the Great Ram mohan Rai wanted to anghcize his Country in varions respect and we have reason to believe that it was essential to the welfare of it in his time. But. the time is now past. आंगल के उदाहरण से कुछ ऐसा आशय निकलता प्रतीत होता है कि राजा साहब ने जान बूझ कर ही मकाले का समर्थन किया और वह शायद अपनी भारतीय भाषा, तथा शिक्षा को अच्छा समझता था। परन्तु मेरी सम्मति में ऐसा नहीं है। ब्रह्मसमाज ने राजा साहिब के पश्चात् कभी भी देशभाषा तथा सभ्यता का प्रचार नहीं किया। अङ्गरेज़ी ही का प्रचार करते थे मुसलमानों के सुप्रसिद्ध धर्म संशोधक सर सय्यद अहमदखां भी पाश्चात्य सभ्यता के परिपोषक थे। उन्होंने एक स्थल पर लिखा है कि काश हम भारतीय भाषाओं को सर्वथा भूल जांय और योरप की भाषाओं में से कोई एक भाषा अर्थात् ग्रीक, अङ्गरेज़ी अथवा जर्मन हमारी हर समझ के व्यवहार की भाषा बन जाय, जब कि विचारकों तथा धर्मसंशोधकों की यह अवस्था थी। तो उनके पीछे चलने वाले साधारण जनों की तो कथा ही क्या कहनी है यह लहर जो प्रत्येक भारत की बात के विरुद्ध चलती थी। भारत के कोने २ में पहुंच गई थी। यह भारत में सर्वव्यापी लहर थी नगरों के नर नारियों पर तो उसका पूरा अधिकार था। परन्तु ग्रामीण भी इससे प्रभावित होगये थे। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि १८८० सन् के लगभग जब मैं स्कूल में पढ़ता था। तो हमारे ज़िले (रोहतक) में कई बड़े बड़े ग्रामों में ५ श्रेणियों तक ऐसी पाठशालाएं थीं। जिनमें प्रत्येक विषय गणित, इतिहास, भूगोलादि आर्य्यभाषा की ही पुस्तकों द्वारा पढ़ाया जाता था जब यह विद्यार्थी गण ग्राम की ५ श्रेणी में उत्तीर्ण होकर नगर के समीपवर्ती स्कूल की फर्ष्ट श्रेणी में प्रवेश करते थे तो इन्हें बड़ी कठिनाई में फंसना पड़ता था। क्योंकि एक तो वहां उर्दू और अंगरेज़ी ही का राज्य होता था। यह विद्यार्थी अपने उत्तर देवनागरी लिपी में लिखते थे। अध्यापक महाशय उन्हें पढ़ा न सकते थे अतः विद्यार्थियों को योंही रहना पड़ता था। उस समय स्कूल के अध्यापक क्या छात्र आर्य्यभाषा के अक्षरों को धूल की दृष्टि से देखते थे वे विद्यार्थी भी अपने मन में लज्जित होते थे! विद्यार्थियों के संरक्षक भी मन मारे से रहते थे कि उनकी सन्तान उर्दू से वंचित रहती थी। परिणाम यह हुआ कि ग्रामीण लोगों ने प्रार्थनापत्र सरकार की सेवा में भेज कर इन पाठशालाओं को बन्द करवा दिया और इनके स्थान में उर्दू की पाठशालाएं जारी होगईं। कई ग्रामों में पटवारी के सब रजिस्टर देवनागरी में भरे जाते थे। वे भी बन्द होगये।

परन्तु सभ्यगण! इस समय वह अवस्था जिस का चित्र मैंने कुछ युगान्तर से ऊपर सींचा है अब नहीं है। आज तो युग ही बदला हुआ है। सारा देश स्वदेशीय की ध्वनि से गूंज रहा है। स्वदेशीय तथा स्वजातीय धर्म, भाषा, शिक्षा की पुकार ही कर्णगोचर होती है। हिन्दुओं को छोड़ दीजिये और तो और भारतीय ईसाई भी जो पाश्चात्य सभ्यता के नाम पर उधार खाये थे और रात दिन इस की प्रशंसा और भारतीय सभ्यता धर्म तथा भाषा की निन्दा करते न थकते थे। आज मुक्तकण्ठ से कह रहे हैं कि युरोपीय सभ्यता से भारत का सुधार नहीं हो सकता। भारत के उठने के लिये भारत की सभ्यता तथा शिक्षा की आवश्यकता है। बुद्धिमान् और उदार हृदय मनुष्य भी इसी बात को स्वीकार करते हैं। वे अभी तक जिन्होंने १८८० में देवनागरी की पाठशालाएं सरकार से प्रार्थना करके बन्द करवाई थीं। आज उर्दू के साथ साथ आर्यभाषा को स्कूल की पाठविधि में शामिल करने की प्रार्थनाएं कर रहे हैं। सिख, मुसलमान जो किसी समय आंगल भाषा के गीत अलापते थे आज स्वदेश भाषा के प्रचार में लगे हुये हैं। देश में हिन्दू, मुसलमान विश्वविद्यालय जारी करने का आरम्भ होता है। लोग दिल खोल कर दान देते हैं। जब सरकार की ओर से इन विश्वविद्यालयों को अंगरेज़ी ढंग पर चलाने की सलाह संचालकों को दी जाती है, तो एक दम लहर उठती है हमें ऐसे विश्वविद्यालय नहीं चाहियें जिनका नाम मात्र हिन्दू विश्वविद्यालय हो और शिक्षा पाश्चात्य हो। हमें सच्चे अर्थ में हिन्दू विश्वविद्यालय चाहियें जिसमें प्राचीन हिन्दू सभ्यता की शिक्षा दी जाय। जब लोगों को अपनी आशा में निराशा की रेखा देख पड़ती है तो तत्काल अपना दान लौटाने के लिये संचालकों को लिखते हैं।

अहो कैसा आश्चर्यजनक परिवर्तन है। कालगीति ने कैसा पलटा खाया असम्भव संभव हो गया। समय रूपी घड़ी की सूईयें पीछे हट कर पुराने स्थान पर चली गई। काल ने यह पलटा कैसे खाया? सभ्यगण! काल को पलटा देने वाला, असंभव को संभव कर देने वाला ऋषि दयानन्द ही था। मैंने जो ऊपर एक स्थान में मार्डनरिव्यू से जो उदाहरण दिया है उसका अन्तिम वाक्य है (But the time is now past) जिसका अर्थ है कि अब वह समय हो चक-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परन्तु प्रत्येक इतिहास जानने वाले से यह बात छिपी नहीं है कि समय स्वयं नहीं बदला करता। समय को पलटा देने वाले पुरुष विशेष हुआ करते हैं। ऋषि दयानन्द ही इस समय पाश्चात्य सभ्यता की लहर को पलटने वाला था। उसी ने भारतवासियों की आंखों की चकाचौंध को दूर करके पाश्चात्य सभ्यता का असली रूप प्रकट किया—और बड़े गम्भीर नाद के साथ लोगों को खबरदार किया कि अन्धे होकर इस प्रकाश के पीछे मत दौड़ो इस प्रकाश पर मोहित मत हो। यह दुःखों का आगार है "हिरण्मयेन पात्रेण सत्यतापिहितं मुखम्' वाली बात है। और इस में कौन सन्देह कर सकता है कि वर्त्तमान योरप युद्ध इसी सभ्यता का परिणाम है। ऋषि ने ही देव वाणी संस्कृत भाषा की ओर लोगों की रुचि उत्पन्न की। उसी दया की मूर्ति ने स्वदेश हित, मातृभूमि तथा आर्य भाषा भाषी के साथ इस देश निवासियों का प्रेम कराया भारतवर्ष के प्राचीन गौरवान्वित इतिहास को खोल कर देशवासियों के सन्मुख रखा और अन्य देश वासियों के सन्मुख रखा और अन्य देशों से उसकी तुलना करके उस की उत्तमता को सिद्ध किया। उस ने अपने अमूल्य ग्रन्थों में भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता का प्रमाण और युक्ति से उच्चतम सिद्ध कर दिखाया है। ऋषि एक जातीय और देशीय धर्म सभ्यता प्रचारक न था। वह सार्वभौम धर्म का प्रचारक था परन्तु भारतवर्ष के साथ ऋषि को जो प्रेम था वह सत्यार्थप्रकाश के पढ़ने से भी विदित हो सकता है जैसे अनाभ्यास लिखने वाले कभी लेखनी में वह शक्ति कहां जो प्रेम का वर्णन कर सके। ऋषि एक सच्चा देश भक्त था जिस देश भक्ति के बिना सारे मनुष्य मात्र का प्रेम होना असम्भव है जो मनुष्य मात्र के प्रेम का दान करे और स्वदेश स्वजाति प्रेम न रखता हो तो ऐसा होना मानवी प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल है।

ऋषि की देश भक्ति ऐसी न थी जो Patriatism के नाम से योरोप के निर्तिज्ञ दिमाग में समाई हुई है जिसके विषय में अनुभवी महात्मा टालस्टॉय कहता है कि योरूप की देश भक्ति (Patriatism) ही सर्व दुःखों का मूल है और यही सर्व नाश का कारण सिद्ध होगी। यह ऋषि की प्रकट की हुई प्राचीन वैदिक आर्य्यसभ्यता का ही फल है कि अब सभ्य जगत् शान्ति के लिये भारतवर्ष की ओर ही देख रहा है। शब्द आने लगा है कि भारत के धार्म्मिक केन्द्र से शांति का स्रोत बहेगा—ज्यों ज्यों ऋषि के सिद्धान्तों का अधिक २ आन्दोलन हो यह शब्द निश्चितरूपसे बलवान होता जायगा। और यदि भारतवासी ऋषि के बतलाये वैदिक मार्ग को दृढ़ता से ग्रहण करेंगे। नहीं २ अपना तन मन धन यहां तक कि प्राण भी देकर इस मार्ग का अवलम्बन करेंगे। तो निःसन्देह भारत फिर वही पुराना आर्य्यवर्त मनु महाराज के कथनानुसार सारे जगत का पथदर्शक तथा गुरू होगा। और इतिहास अपने आपको दुराता (History repeats itself) का सिद्धान्त सत्य सिद्ध होगा।

ओ३म शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

ऋषि की आज्ञा को हम क्यों मानें?

लेखक—ब्र० सत्यव्रत।

प्रत्येक चीज़ भिन्न २ अवस्थाओं में से होती हुई एक ऐसी दशा में आपहुंचती है, जो भूत पूर्व कठिनाइयों का सुपरिमाण होती है। आप एक लकड़ी काटुकड़ा—जो किसी समय अनावश्यक प्रतीत होता था, कारखाने में देदें। पहले पहल उसे कांट छाँट कर सुडौल बनाया जायगा, उस पर परिश्रम ख़र्च होगा, धीरे २ उस से एक ऐसी वस्तु बन जायगी जिस के बिना एक कल का चलना सर्वथा असम्भव होगा—वह निकम्मी होगी बस, अब उसी लकड़ी का मूल्य बढ़ गया, अनावश्यक से आवश्यक होगई! हाँ, उसके अनावश्यकपन को आवश्यकपन में बदलने के लिये मिहनत ज़रूर ख़र्च करनी पड़ी।

इसी प्रकार जब तक आर्यजाति अपना कर्त्तव्य पालन न करती रही, उसे अपने कर्त्तव्य मालूम न थे, तब तक यह अनावश्यक बनी रही, सब इस से अनभिज्ञ रहे। किन्तु आज आर्य्य जाति का पुराना हाल नहीं है—यह अनावश्यक नहीं है।

दयानन्द ने जङ्गलों में काँटों से छिद छिद कर, बहते हुए रुधिर की ओर ध्यान न देकर, विकट जंगलों में भटक कर योगियों को ढूंढ निकाला, ब्रह्म का सत्य ज्ञान करने के लिये, आत्मा का अमृत पान कराने के लिये उस ने विद्याभ्यास किया, योगाभ्यास सीखा, गुरुओं के डण्डे सहन किये, पुरातन सनातन धर्म की खोज की—सत्य मार्ग ढूंढा और आर्य्य जाति के सन्मुख रख दिया।

आप सोच सकते हैं, जिस ईश्वरीय आज्ञा को ढूंढने के लिये इतने यत्न तथा साधन किये गये हों, प्राण को हथेली पर रख कर फिरा था उस में कहाँतक सत्यांश विद्यमान होगा?

सत्यता क्यों न हो? जब कि स्वामी जी महाराज विज्ञापन देते हैं सब को विदित हो कि जो २ बातें वेदों की ओर उन के लिये अनुकूल हैं, उन को मैं मानता हूं वेद विरुद्ध बातों को नहीं, यदि वेद असत्य है, मिथ्या है, तो स्वामी जी का कथन भी असत्य है, यदि वेद सनातन नहीं है तो स्वामी जी का कथन भी मनगढ़न्त है, परन्तु किस की हिम्मत है कि वेदों पर तनिक भी हमला वा आक्षेप करसके? फिर क्यों न स्वामी जी की बातों पर विश्वास किया जाय, क्यों न आर्य्य धर्म की पवित्रता फेर स्वीकार किया जाय?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषियों का कथन है कि मनुष्यपूजा का सर्वथा त्याग करो क्योंकि वह हद्द वाली है। इसलिये ऐसे की भक्ति करनी चाहिये जो अनन्त गुण वाला हो। जीवात्मा चेतन है किन्तु परमात्मा महान चेतन है, वही अनन्त है, उसका यदि ध्यान लगाया जाय तो जैसे शून्य का ध्यान करने से मनुष्य सुषुप्ति अवस्था को प्राप्त होता है वैसे ही परमात्मा का ध्यान करने से मनुष्य मुक्ति को प्राप्त हो सकता है। कई लोग अपने शिष्यों को अपनी मूर्त्ति दे दिया करते हैं जिस से उन पर उनके बुरे कामों का भी प्रभाव पड़ता है। अतः दोषादि शून्य का ही ध्यान धरना चाहिए। यदि कोई अपने को धर्माचार्य्य कह कर अपनी पूजा करवाता है तो वह अनजान दुनिया को धोखे में डालता तथा दोष का भागी बनता है।

कई बार स्वामी जी के सन्मुख समाज के गुरु या आचार्य की पदवी धारण करने के प्रस्ताव रक्खे गये; किन्तु क्या हुआ? क्या स्वामी जी आचार्य बन बैठे? क्या स्वामी जी ने अपनी पूजा करवानी शुरू करदी? नहीं स्वामी जी को अन्य लोगों की भांति धर्माचार्य बनने की लालसा नहीं थी, दयानन्द को परम कृपालु, सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने आचार्य्य बन कर लोगों को ठगने के लिये न भेजा था, उसे केवल आर्य्य जाति को सत्य मारग दिखाने के लिये भेजा था, उस का काम रामचन्द्र जैसे पूर्वजों का दम भरने वालों को सत्य मारग दिखाना था। ऋषि ने अपने कर्त्तव्य का पालन किया, निःस्वार्थ भाव दिखाया, फिर निःस्वार्थभाव के व्यक्ति की बात क्यों न मानी जाय और क्यों अपने को पुजवाने की इच्छा रखने वालों के सामने माथे झुकाए जायँ।

स्वामी जी का उद्देश्य 'नयापन्थ' चलाना न था उनका उद्देश्य केवल एक था और वह सोये हुए सत्यधर्म आर्यधर्म को गालियाँ झेलते हुए भी सबके सन्मुख रखदेना था। स्वामी दयानन्द का अपने शब्दों में कथन है 'मैं सत्य को हाथ से नहीं छोड़ सकता, मुझे किसी के सहायक न होने से प्रयोजन नहीं, मेरा काम वेदों की आज्ञा पर स्वयं चलना और दूसरों को चलने के लिये प्रेरित करना है

हिन्दू लोग-"हम वेदों के अनुसार सब काम करते हैं, वेद हमारे धर्म ग्रन्थ हैं, इत्यादि चिल्ला २ कर एक दूसरे को ठग रहे थे, स्वामी जी ने सीधे वेद को जा पकड़ा। तुम्हारी बातें सुनने की कोई ज़रूरत नहीं, बताओ, वेद में मूर्तिपूजा कहां है, बताओ वेद में, जो२ कुछ तुम कहते हो वा करते हो कहाँ लिखा है? बस सब दुबक गये; वे नखरे तो सब पेट के लिये ही थे, पेट पूजा ने ही इनसे अनर्थ मचवा रक्खा था एक दूसरे को लूटते तथा परस्पर मिथ्यावाद करते थे। महाशयो! स्वामी जी का कथन अपना कथन नहीं, उनका कथन वेदों का कथन है; वेद ईश्वरीय आदेश है; उसका अनादर स्वामी दयानन्द का अनादर नहीं किन्तु वेदों का निरादर है, ईश्वर का निरादर होने से भारी नास्तिकता है! स्वामी दयानन्द अपने को एक सामान्य व्यक्ति समझता था, वह अपमान को अमृत मानता था किन्तु उसके कथन की वैयक्तिक द्वेष में आकर उसका समझ हंसी उड़ाना भूल है, यदि कोई ऐसा काम करता है तो वह अपने हिन्दूपन पर, अपने आर्यत्व पर बट्टा लगाता है!

निःस्सन्देह स्वामी जी की सब बातें विश्वसनीय हैं, इतना होते हुए उनका योगी होना उनके कथन स्वीकार में एक अन्य हेतु आ पड़ता है।

योगी हो, भीतर निःस्वार्थ भाव की लहर थपोड़े मार रही हो, उसपर निःस्वार्थ भाव का काम जारी हो, तब क्यों न ऋषि की बातों पर विश्वास किया जाय! क्यों न उसकी बातों का आदर किया जाय?

भ्रातृ वर्ग! आदर्श पूर्ण ऋषि हमारे सन्मुख विद्यमान है, आदित्य ब्रह्मचारी बनने का उपदेश दे रहा है; हमें आदित्य बनना चाहिये, हमारा व्यवहार आदित्य के समान नीचे ऊंचे से एक संमान सद्व्यवहार होना चाहिये, हमारा काम आदित्य के समान संसार से गन्दगी को दूर करना होना चाहिये। आदित्य हमरा लक्ष्य भूत होना चाहिये।

वर्तमान भारत की दशा का चित्र खेंचना मेरा काम नहीं, यह काम कवि करें किन्तु हाय! भारत की दशा देख आज रोना आता है, शरीर कांपता है हाय! क्या इस की सेवा करनी होगी जिसके दुःखदाई व्रणस्वयमेव आंखें मूंदने को प्रेरित करते हैं; क्या इसी दुःखी के व्रणों पर रातदिन पिलना पड़ेगा हाय! ऐसा तो सुनते ही दिल दहलता है; यही रोना रोकर ही तो दयानन्द हिमालय गलने को जा रहा था, भारत की पतित दशा देख कर ही तो वह निराश होगया था।

देखना भाई देखना कहीं निराश न हो जाना, यद्यपि भारत की वर्तमान दशा निराशता ही निराशता का सञ्चार कर रही है तथापि देखना कहीं निराश न हो जाना! सावधान! देश में काम करना! निराशाओं के धक्के सहना! दिल को पक्का बनाना! वे स्वयं दूर हो जायंगी, छिन्न भिन्न तथा तितर बितर हो जायंगी पिछले काम करने वालों के लिये मार्ग साफ हो जायगा।

दयानन्द को भी सावधानी की आवाज़ आई थी, आत्मा को अमर चाहने वाला क्या निराशाओं से दब सकता है, नहीं-कभी नहीं, दयानन्द ने निराशता को जीता, उसे सब सहल ही सहल दीख पड़ा, उस ने निराशा को जीत कर कुछ काम कर लिया अपनी आत्मा को सफल बना लिया।

देखिये, उसी का तो फल है कि आज ऋषि इतना आत्म-विश्वासी हो गया कि चाहे उस की मांस ग्रन्थियों को टुकड़े टुकड़े कर जला दिया जाय किन्तु ईश्वरीय आज्ञा सुनाने से वह नहीं टल सकता, वह ईश्वरीय शक्ति होने से माननीय शक्तियों से नहीं घबरा सकता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सब है, जब लोग दयानन्द की जान तक लेने के प्यासे थे, रात दिन छल के पीछे घूमते रहते थे तब भी ईश्वरीय आदेश को सब तक पहुंचा कर ही परम पिता की गोद में बैठना इस बात का मुंह बोलती है कि ईश्वरीय हाथ दयानन्द के ऊपर था, ईश्वरीय कृपा सच्चे दयानन्द के साथ थी; दयानन्द का कथन ही ईश्वरीय आदेश था। दयानन्द सच्चा था।

जब ईश्वरीयशक्ति दयानन्द के साथ है, तब दयानन्द का कथन मिथ्या कथन क्यों कर हो सकता है? बताइये दयानन्द के कथनों पर फिर क्यों न विश्वास किया जाय?

दयानन्द, अभिमान रहित, कर्त्तव्य पालक, निःस्वार्थ भावयुक्त, आत्म विश्वासी, सब का हितचिन्तक तथा निर्भीक था; वह माननीय शक्तियों को ईश्वरीय शक्तियों के सन्मुख तुच्छ समझता था, उस का कथन ईश्वरीय सन्देश था। यदि बालक को एक अनुभवी वृद्ध का कथन शिरोधार्य समझना चाहिये तो क्यों कर संसार सागर में भटक २ कर यथार्थानुभवी दयानन्द का कथन सिर हिला कर टाल दिया जाय?

आर्य्यसमाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द का काम किसी को बंधन में डालना नहीं सब को बंधन से मुक्त कराना था, यही उस का कथन है 'मैं लोगों को कैद करवाने के लिये नहीं किन्तु कैद से छुड़ाने के लिये आया हूं' ऋषि सब को बंधन से छुड़ाना चाहता था, प्यारे भाइयो! हमारा कर्त्तव्य भी देश भाइयों को बंधन से छुड़ाना अविद्यान्धकार से निकालना है। उस का यही कथन है आओ उस के कथन का पालन करें।

आज आर्य्यजाति में ऋषि दयानन्द की आत्मा अवश्य काम कर रही है, उस के अनुभव आर्य्यजाति को अवश्य सत्य पथ पर चलाये देखा रहे हैं, किन्तु क्या वह आत्मा बाह्यदृष्टा देखी जा सकती है, ? नहीं। अब बताइये, स्वामी दयानन्द का काम पूर्वापेक्षया कम हुआ या नहीं, यदि हुआ तो उसे पूर्ण करने का भार किस के सिर है।

प्यारे भाइयो! आज के दिन से स्वामी दयानंद अपना काम हम पर छोड़ गये हैं, उन के काम को आगे बढ़ा दे कर चलाना हमारा काम है आज का शुभ दिन हमें अपना कर्त्तव्य स्मरण करा रहा है। सब जानिये ऋषि का आदेश आडम्बरों को दूर कर मन को चङ्गा बनाना है, यही उस के व्यवहार से काम से तथा पगपगी चेष्टा से टपक रहा है; ये वाह्याडम्बर मनुष्यों को अपने उद्देश्यों से गिराने वाले हैं, उन के जाल में उलझे हुए मनुष्य का निकलना मैं नहीं कह सकता कभी सम्भव भी है या नहीं भाइयो! हमारा सेनापति दयानन्द ब्रह्मचर्य्य का झण्डा लिये हुए ईंट पत्थर आदि तोपों के गोलों से व्याप्त रूपी कार्य क्षेत्र में भागा चला जा रहा है, क्या हमने उस की आवाज सुनी, हमारा सेनापति कह रहा है 'अपने सेनापति के पीछे चलो' भाई आओ, आओ उस के पीछे चलें, आर्य्य जनता के उत्सुक नयन तृप्त करें।

ओ३म् शांतिः शाँतिः शांतिः

यदि आज ऋषि दयानन्द

जीवित होते ?

आज तीन चौथाई सभ्य संसार युद्ध की भयानक आंधी से घिरा हुआ है। थोड़े से लोग पूर्व और पश्चिम में ऐसे पाये जाते हैं जो 'शान्ति, शान्ति' का शोर मचाते हैं। और लोगों को लड़ने के पक्षपाती के बल 'विक्षिप्त' समझ कर हँस देते हैं। इस समय शान्ति का शब्द उठाना महा पाप है, और राजनीतिज्ञों की दृष्टि में 'पोलीटिकल जुर्म' है। मनुष्य जाति के प्रति जुर्म इस समय जुर्म नहीं रहा, राजनीति के प्रति जुर्म ही जुर्म समझा जाता। लाखों सदायें बिखर रही हैं। किन्तु राजनीतज्ञों की दृष्टि में यह एक 'पोलीटिकल आवश्यकता' है लाखों निरपराधियों के खेत लुट रहे हैं, किन्तु आज की राजनीति समझती है कि यह सभ्यता का मूल्य है। इस अनर्थ के बिना सभ्यता खरीदी नहीं जा सकती।

जो लोग 'शान्ति' 'शान्ति' के बेसुरे राग को अलापने वाले हैं, उन में कोई तो कार्ल्स की याद करता है, कोई सोशालिज्म की शरण ढूंढता है, कोई बुखार का इलाज मृत्यु को समझता हुआ अराजकता वाद का गीत गाता है, किन्तु दयानन्द का एक शिष्य ऐसे समय यही सोच कर मन को सन्तोष देता है, यदि ऋषि दयानंद इस समय जीवित होते तो क्या कहते? इस युद्ध पर उन की क्या राय होती?

इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिये हम ऋषि दयानंद के ग्रंथों की ओर जाते हैं। उन ग्रंथों से ऋषि दयानंद की सम्मति प्रतीत होती है? सब से प्रथम हम यह देखते हैं कि युद्ध के विषय में साधारणतया उन की क्या सम्मति थी सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में मनु का श्लोक देते हुए ऋषि ने लिखा है।

"जो धार्मिक राजा हो, उस से विरोध कभी न करे, किन्तु उस से सदा मेल रखे और जो दुष्ट प्रबल हो उसी के जीतने के लिये ये पूर्वोक्त प्रयोग करना उचित है'

इस उद्धरण से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ऋषि की सम्मति में युद्ध के केवल दो उद्देश्य हो सकते हैं। (१) पहला किसी दुष्ट राजा को दुष्टता का दण्ड देना या (२) जो राजा अति प्रबल होने के कारण अन्य समीप के देशों की स्थिति को संदेह में डाल रहा हो, उसे दबाना युद्ध के यह दो ही उद्देश्य हो सकते हैं, इन से भिन्न नहीं। केवल विजय के लिये, या केवल अपनी भूमि बढ़ाने के लिये जो देश युद्ध में प्रवृत्त होता है वह अन्यायी है, उस के युद्ध के लिये कोई हेतु नहीं। जितने देश इस समय युद्ध में प्रवृत्त हैं। उन में से कौन २ से सहेतुक युद्ध कर रहे हैं, और कौन २ से निहेतुक यह परखने का अभी समय नहीं, इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का समय अभी आयगा। किन्तु हां, हमारे पाठक इसी कसौटी पर कस कर घटनाओं को परख लें।

सब देशों के उद्देश्यों की परख इस सम्भव नहीं, किन्तु दृष्टान्त के लिये एक देश को हम बिना किसी प्रकार की आशंका के ले सकते हैं। वह देश बैल्जियम है। बैल्जियम पर जर्मनी का आक्रमण सर्वथा न्याय विरुद्ध है, क्योंकि उपर्युक्त दोनों कारणों में से कोई भी उस के पास नहीं है। हां बैल्जियम के पास लड़ने के लिये दोनों हेतु हैं? ऋषि दयानन्द की यही सम्मति होती। अब प्रश्न यह है कि ऋषि ऐसे अनर्थाचरणों का क्या इलाज बताते? ऐसे अन्याय पूर्वक आचरण फिर न होने पावें, इस का ऋषि क्या उपाय संसार के सामने रखते? इस प्रश्न के उत्तर के लिये भी ऋषि के सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ही पलटने चाहिये, वहीं से हमें उत्तर मिल जायगा। उसी समुल्लास में दूसरी जगह ऋषि मनु के श्लोक का अर्थ करते हुए लिखते हैं।

"क्योंकि विशेष सहाय के बिना जो सुगम कर्म है, वह भी" "एक के करने में कठिन हो जाता है। जब ऐसा है तो महान्" "राज्य कर्म कैसे हो सकता है? इसलिये एक को सजा" "और एक की बुद्धि पर राज्य के कार्य का निर्भर रखना" "बहुत ही बुरा काम है।"

अर्थात् जिस देश में एक ही व्यक्ति की सत्ता सब से ऊपर है, जहां प्रजा की कोई बात सुनी नहीं जा सकती, वहां न्याय तथा अन्याय में विवेक नहीं हो सकता? इसलिये क्या करना चाहिये?

"स्वराज्य स्वदेश में उत्पन्न हुए, वेदादि शास्त्रों के जानने वाले" शूरवीर, अच्छे प्रकार सुपरीक्षित, सात व आठ अच्छे 'धार्मिक चतुर 'सचिवान्' अर्थात् मन्त्री करे"

एक ही बुद्धि पर सारा शासन कार्य न चले, इसलिये राष्ट्र राजा के कार्यों पर प्रतिबन्ध डालने के लिये शास्त्रज्ञ वीर और न्यायशील मन्त्रियों को नियुक्त करे। दूसरी जगह ऋषि के लिखने से और इतिहास के देखने से भी प्रतीत होता है कि ऐसे सम्भो गुणकर्म से ब्राह्मण होते थे, जो सब कार्यों में राजा को सम्मति देते थे। राजा को उन की सम्मति के आगे झुकना ही पड़ता था। केवल यही एक रक्षा का उपाय है। संसार में न्याय की रक्षा हो, निर्बलों को कष्ट न मिले इस का यही साधन है। ऋषि दयानन्द यदि इस समय राय दे सकें तो उन का यही उपदेश होता है कि

(१) किसी देश में एक ही इच्छा का राज्यमत होने दो। एक ही कार्य्य की कैसर या ज़ार की मौज पर लाखों के प्राण मत छोड़ दो। उस पर प्रतिबन्ध डालो।

(२) उस प्रतिबन्ध के डालने वाले भी लड़ाकू सिपाही या पैसा कमाने टकाभक्त ही न हों, बल्कि लार्ड मोर्ले जैसे सच्चे ब्राह्मण हो। महाराजा दशरथ के मन्त्री महर्षि वसिष्ट थे, आज भी ऐसे ही ब्राह्मण मन्त्रियों की आवश्यकता है, जो न राजा की झूठी प्रसन्नता के अभिलाषी हों, और न प्रजा के क्षणिक जोश से डरने वाले हों। जो नदी के प्रवाह में बह न जाय, प्रत्युत अपनी प्रबल भुजायें फैला कर नदी के प्रवाह को ठीक रास्ते पर डाल दें। दूसरे शब्दों में ऋषि दयानंद इस समय यही

वर्ण व्यवस्था

का संसार को उपदेश दे कर बतलाते कि वर्तमान अन्याय से छूटने का यह एक ही उपाय है।

आर्य समाज में ऋषि दयानन्द का स्थान।

लेखक—देवराज

'यदा यदाहि धर्मस्य' भगवान श्रीकृष्ण के इस कथनानुसार संसार में जब २ धर्म के किसी वा किन्हीं आवश्यक अंगों का लोप हुआ तब २ किसी महान् आत्मा ने धर्म के उस लुप्त अंग को पुनरुज्जीवित करने के लिये जन्म ग्रहण किया। यदि बुद्ध ने जन्म ग्रहण किया तो अहिंसा प्रचार और समाज में के अनुचित ऊंच नीच के भेदों को दूर करने को, उन्होंने व बहु बहुत देव के स्थान एक ईश्वर पूजा को स्थान दिया, जिस प्रकार बिगड़े हुए वैदिक धर्म का जरदश्त ने संशोधन किया उसी प्रकार क्राइस्ट ने बिगड़े हुए यहूदी धर्म का संशोधन किया, जब ईसाई धर्म भी मूर्ति पूजा और कट्टर पने में परिणत हुआ तो तो मुहम्मद ने एकेश्वर पूजा की शिक्षा दी। इसी प्रकार अन्य कबीर नानक पहुंचे सब ने अपने २ समय के पौराणिक धर्म में संशोधन किये।

पर यह धर्म सामयिक एक देशी थे और केवल कुछ एक सिद्धान्तों का प्रचार करने का उद्भूत हुए थे और उन समयों और देशों में उन्होंने सुधार भी किया पर जब से उन धर्मों को सार्वदेशिक और सार्व कालिक बनाने का यत्न किया गया तो वे लाभ के स्थान में हानिकारक सिद्ध हुए, अनुपयुक्त स्थान और काल में वे एक पृथक् मत के रूप में परिवर्तित हो गये। और उन धर्मों में जो देश विदेश में लाभकारी सिद्ध हुए थे और स्थानों में मनुष्य पूजा का प्रचार किया।

यही कारण है कि संसार के प्रायः सब धर्मों में उस धर्म के प्रचारक का भी विशेष स्थान है। उदाहरणार्थ बौद्ध धर्म को लीजिये बौद्धों की त्रिमूर्ति बुद्ध धर्म और संघ में बुद्ध का पहला स्थान है और बुद्ध शरण गच्छामि नयो बुद्धाय आदि बौद्ध धर्म के धार्मिक माना है। और यह बात प्रसिद्ध है और ऐतिहासिक सचाई भी है कि मूर्ति पूजा के प्रचारक बौद्ध हुए हैं। ईसाई पिता बुद्ध और पवित्रात्मा में विश्वास रखते हैं उनका कहना है कि ईसा पर विश्वास लाने से सब पाप धुल जाते हैं क्योंकि वह लोगों के पाप लेकर सूली पर चढ़ गया था। मुसलमान भी अपने कलमे ला इला इल्लाह मुहम्मद रसूल इल्लाह में एक परमात्मा को मानते हुए भी मुहम्मद को धर्म में विशेष स्थान दे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इनका कहना है कि मुहम्मद पर ईमान लाये बिना निजात या मुक्ति मिल ही नहीं सकती।

अतएव सिवाय मुसलमानों के सब काफिर मारे जाने योग्य हैं और नरक में गिरेंगे। इसी प्रकार छोटे २ नानक दादू कबीरादिकों के पंथों में भी व्यक्तियों का विशेष स्थान है।

अब ज़रा वैदिकधर्म या उस धर्म को जिसका कि दयानंद ने पुनरुद्धार किया है निहारिये, ऋषि दयानंद ने अपने ग्रंथोंमें स्थल २ पर मनुष्य पूजा का खंडन करते हुए लिखा है तथा अपने व्याख्यानों में कई स्थानों पर कहाहै कि धर्म का कोई व्यक्ति ठेकेदार नहीं वापितु धर्म का पूर्णतया प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों से सम्बंध है अच्छे कर्मों से अच्छा आदमी बुरे से बुरा आदमी बनता है।

पर ऋषि दयानंद आरम्भ से ही इन भावों के विरुद्ध था वह जानता था कि भविष्यत में ऐसी बातें बुरा परिणाम लाती हैं ऋषि दयानंद धन का कभी न था नाही वह प्रशंसा का प्यासा था — जब कभी ऋषि दयानंद ने भरजानंद जी से पढ़ना भी न शुरू किया था उस समय एक बार लुंगनाथ वहां के मठाधीश ने उनसे अपने पद बनने और वहां की गद्दी के अधिकारी बनने को कहा था पर ऋषि दयानंद ने कहा था कि मैं धन का लोभी नहीं हूं धन तो मुझे घर घर में मिल सकता था पर जिस इच्छा से इन लोगों को लताड़ा है वह इन को नहीं मिल सकते।

यह तो भाव उस समय के थे जब दयानंद अपने वास्तविक रूप में आ आया था। पर प्रचारक रूप में र और संसार में प्रसिद्धि पाकर भी दयानंद अपने को भूला नहीं वह आपको अल्प शक्ति वाला मनुष्य ता रहा। यह देखा जाता है जब विद्वान् और लब्ध प्रतिष्ठ हो जाते वे अपने आपको बड़ा समझनेलगते जब यही बात किसी सुधारक में पाई जाय, जैसा कि प्रायः होता रहा तो वह अपने आपको पैगम्बर समझने लगता और अपने आपको धर्म में अविनाशसमझने लगते हैं जिसका कि भविष्यतमें बुरा परिणाम होता है। इसलिये ऋषि दयानंद प्रतिष्ठा से सदा दूररहते और अपने वैयक्तिक अधिकारों की सीमा को कभी उल्लंघन नहीं करते थे—उदाहरणार्थः—

१९७७ के कैसरी दर्बार में जब ऋषि दयानन्द दिल्ली नगर में बाबू केशवचन्द्र सेन से मिले तो उन्होंने स्वामीजी से कहा कि 'यदि आप पूरी २ सफलता चाहते हैं तो यह प्रसिद्ध कीजिये कि जो कुछ मैं कहता हूं वह मुझ से परमेश्वर कहलवाता है"। स्वामी जी ने उत्तर में कहा "परमेश्वर अन्तर्यामी व सर्व-व्यापक है। क्या वह किसी के कान में कहने आता है ऐसी झूठी बात मैं कभी मुंह से नहीं निकाल सकता"

और सुनिये—लाहौर की बात है कि एक समय समाज के कई श्रद्धालु पुरुषों ने स्वामी जी से कहा कि आप समाज के गुरु या आचार्य की पदवी धारण करें। स्वामी जी ने कहा कि इस प्रस्ताव से 'गुरुपन' की गन्ध आती है, क्या आप यह चाहते हैं कि मैं भी गुरु बन कर एक नया पन्थ चलाऊं? मेरा उद्देश्य तो गुरुपन की जड़ काटना है, इसके विरुद्ध आप मुझ से ही उसके स्वीकार करने की प्रार्थना करते हैं। जिस के नाम से मुझे घृणा (नफ़रत) है। यह सुन कर सब चुप हो गये पर एक महाशय ने भक्ति के आवेश में कह दिया कि अच्छा और नहीं तो हम आपको समाज का परम सहायक तो अवश्य कहेंगे। इस पर स्वामी जी ने कहा यदि मुझे समाज का परम सहायक कहोगे तो परमेश्वर को क्या कहोगे?। पर समाज के लोग हतोत्साह न होजाएं अतः उन्होंने कहा अच्छा मेरा नाम समाज के सहायकों में लिख लो।

ऋषि दयानंद समाज के संस्थापक होते हुए सदा अपने व्यक्ति को सब से बचाते रहते थे—एक बार लाहौर आर्यसमाज की अन्तरङ्ग सभा की बैठक थी जिस में आर्यसमाज के उपनियमों पर विचार होता था स्वामी जी से भी बीच में दखल देने को कहा गया इस पर उन्होंने कहा कि मैं आपकी सभा का सभासद् नहीं हूं अतः मेरा अधिकार नहीं कि सम्मति दूं।

स्वामी जी को भय था कि लोग उन के मरने के पश्चात् उनके शरीर की अस्थादि की पूजा में लग जायेंगे या सभा।

स्वामी जी मरे हुओं को समाधि बनवाने के अत्यन्त विरुद्ध थे क्योंकि यही मूर्तिपूजा की जड़ है जैसा कि बौद्धधर्म में बुद्ध की शरीर भस्म पर बड़े महल चिने गये और उनकी पूजा चल गई इसलिये उन्होंने महा महोपाध्याय कविराज श्यामलदास जी से जो कि अपनी संगमरमर की मूर्ति बना कर अपनी स्मृति क़ायम रखना चाहते थे उदयपुर में कहा था कि मेरे मरने पश्चात् मेरी अस्थियों को किसी खेत में डाल देना, कोई समाधि या चिन्ह कदापि न बनवाना।

सब अन्य सुधारकों और स्वामी दयानन्द में एक बड़ा भेद यह था कि स्वामी जी ऋषि श्रेणी के थे, जिनका कि एक मात्र उद्देश्य संसार का उपकार और ईश्वरभक्ति था जो कि सांसारिक भोगों तथा प्रतिष्ठादि से कोसों दूर भागते थे यही कारण है कि उपनिषदादि के कर्तादि का कुछ पता नहीं लगता जङ्गल में बैठे ऋषियों के पास अध्यात्म विद्या के जिज्ञासु लोग जाते थे और ऋषि लोग पात्र देख कर उन्हें शिक्षा देते थे।

यही बात ऋषि दयानन्द में थी उन का एक मात्र उपास्य देव परमात्मा था पैगम्बरादि बनने का उनका तनिक भी उद्देश्य न था वे स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में लिखते हैं:—

"अब जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्य्यन्त के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको मैं भी मानता हूं सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य हो। मेरा कोई नवीन कल्पना का मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किंतु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का अगुआ ही होता किंतु जो जो आर्यावर्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग न करता और न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।"

इन सब उद्धरणों से हम इस परिणाम तक पहुंच चुके हैं कि ऋषि दयानंद पुरुषम के सर्वथा विरुद्ध था धर्म में व्यक्ति को स्थान देना पाप समझता था क्योंकि व्यक्ति को धर्म में स्थान देना भविष्यत् में अनुयायियों को अपने उद्देश्य से गिरा मनुष्यपूजा और कट्टरपन सिखा देता है।

अब ज़रा इस बात पर भी लगे हाथ विचार करते हैं कि क्या आर्य्यसमाज अति प्राचीन समय के वैदिक धर्म तथा सिद्धांतों की अनुयायिनी है? और ऋषि दयानंद को आर्य्यसमाज किस रूप में देखे?

पहले हम दूसरे प्रश्न पर विचार करते हैं:—

संसार के धार्मिक इतिहास में देखा जाता है कि इसमें सब के नाम के साथ कोई न कोई आश्चर्य जनक धर्म सुधार को घटना या Miracle जोड़कर उनको बड़ा दिखा कर उनमें भक्ति भाव उत्पन्न करने का यत्न किया गया है उन घटनाओं द्वारा यह दर्शाया गया है कि हमारे सुधारक प्राकृतिक और ईश्वरीय नियमों में बद्ध नहीं वे जब चाहें किसी को भी तोड़दें।

यथा बुद्ध का स्वर्ग में जा अपने सम्बंधियों को बौद्ध धर्म का उपदेश कर लौटना, ईसा के आत्मा का कुमारी मरियम के पेट में कबूतर के रूप में आकर घुसना अन्धों को कथन मात्र से आंखें देदेना, लोगों के पापों को अपने पर विश्वास लाने मात्र से दूर करदेना आदि। मुहम्मद का कथन कि सूर्य पश्चिम से उदय होगा, सूर्य का ऊपर से उतर के केवल कुछ गज़ की दूरी पर रह कर पापियों को तपानादि देना और तो और कबीर नानकादि के विषय में भी ऐसी बातें कही सुनी जाती हैं कबीर का फूलों से उत्पन्न हो उसी में लीन होजाना नानक का रीठे के वृक्ष को मीठा बना देना आदि २ इसी प्रकार सभी सुधारकों को नाम के साथ असम्भव ईश्वरीय नियम विरुद्ध घटना जोड़ कर उन्हें एक असाधारण पुरुष दिखाया गया है और अतएव अनुयायी बनने को उभारा गया है। पर 'हाथ कंगन को आरसी क्या' जहां ऋषि दयानन्द ने इस प्रकार की घटना अपने नाम के साथ उठा कर अपनी प्रसिद्धि नहीं चाही वहाँ पर उसने इन बातों का सख्त विरोध भी किया है।

वे पादरी लोगों से जो हिन्दुओं के भागवतादि का नाम ले कहते थे कि इनमें असम्भव अविश्वसनीय बातें हैं, कहा करते थे कि तुम लोग कुमारी के पेट से ईसा का पैदा होना कैसे मानने को उद्यत होजाते हो।

उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में कई स्थल पर लिखा है कि किसी में भी ईश्वरीय नियम लौटाने की शक्ति नहीं कोई भी प्राकृतिक नियम विरुद्ध घटना सत्य नहीं हो सकती, जहाँ २ सूर्य चन्द्रादि स्थित हैं वहीं २ अपने नियमानुसार चला करते हैं। और तो और ईश्वर भी अपने बनाये नियमों को नहीं तोड़ सकता क्योंकि उनमें किसी प्रकार की कमी नहीं।

ईश्वर के सर्व दर्शी होने से यही कारण था कि ऋषि दयानन्द योग विद्या में निपुण होता हुआ भी कभी दयानन्द दिग्विजय जैसी आश्चर्य की घटना नहीं दिखाता था। ऋषि दयानन्द विजयाक १८ घन्टे तक समाधि लगाता था पर ऋषि दयानन्द ने कहा था कि आप लोग "निरस्त पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते" उक्ति के अनुसार ऋषि दयानन्दादि के अभाव में मुझे ऋषि कहते हैं जिन के समय में विद्वानों में भी मेरी गणना होनी कठिन थी।

आज कल योरोप में Spiritwalists नामी लोग जो कि हठयोग की केवल कतिपय बातें जानते हैं लोगों को कहते हैं कि हम अपनी विद्या के बल से मरी आत्माओं से बातचीत करते हैं। यह बात भारत में लोक प्रसिद्ध है कि योगी लोग सृष्टि नियम विरुद्ध बाले कर सकते हैं पर ऋषि दयानन्द इन बातों का स्पष्ट शब्दों में विरोध करते थे वे सृष्टि-नियम को अलग समझते थे।

ऋषि दयानन्द जानते थे कि संसार में तमाशा देखने वाले बहुत हैं और योग विद्या के तत्वों को कोई समझता है अतएव वे कभी किसी को कौतुक रूप से योग सिद्ध न दिखाते थे मांसी अप-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रल को जैसे कि रुड़की में एक आंगल महाशय को-योग विद्या सिखाते थे।

इसी प्रकार एक बार सेन साहब ने उनसे योग सिद्धयें दिखाने को कहा था जिसको उन्होंने अस्वीकार किया था जैसे कि निम्न पत्र के उद्धरण से ज्ञात होता है:-

"मैं इन इन्द्रजाल की बातों को दिखाना उचित नहीं समझता, चाहे वे हाथ की चालाकी से हों चाहे योग की रीति से। क्योंकि योग का अभ्यास किये बिना किसी को भी उसका महत्व वा उसका सच्चा प्रेम कभी नहीं होसकता वरन् सन्देह और आश्चर्य में पड़ कर उस आडम्बरी की परीक्षा और सब सुधार की बातों को छोड़ कर कौतुक देखने को सब चाहे हैं और उसका साधन करना स्वीकार नहीं करते यही कारण है कि मैंने सेन साहब को न दिखाया क्योंकि सब लोग मेरे पीछे लगजाते और मेरे बदन के साथ भी मैडेम वला वस्ट की सी बातें लगजाती। हां योग की रीति नियमानुकूल दिखा सकता हूं जिस के अनुष्ठान से स्वयं सिद्धि में प्राप्त होती हैं। ऋषि जानते थे कि जैसे और विद्यायें हैं इसी प्रकार योग भी आत्मिक विद्या है अतः कभी वे उसे अपात्र में डालते थे।

इन सब बातों को देख हमें सहसा प्राचीन ऋषियों योगियों के वृत्तान्त याद आजाते हैं जो प्रतिष्ठादि से दूर रहते योगको आत्मिक विद्या परमात्मा की प्राप्ति में साधन जान कर कभी भूल के उस का दुरुपयोग न करते थे।

बस लो हम दयानंद को ऋषियों की श्रेणी में रखते हैं जिस प्रकार अन्य गौतम कणाद प्रभृति संसारोपकारी ऋषि हुए उसी प्रकार ऋषिदयानंद भी;। अतएव आर्यसमाज उसे एक ऋषि के रूप में देखे जो जिस प्रकार की वह अन्यों को देखती है आर्यसमाज ऋषि दयानंद को पूज्य ऋषि वा देखे क्योंकि वह इसके योग्य है पर कभी एक ऐन्द्रजालिक सृष्टि नियम को तोड़ने वाला नहो हमारा एकमात्र उपास्य देव परमात्मा ही रहेगा।

ऋषि का कार्य।

लेखक-ब्र. भूदेव।

सृष्टि के प्रारम्भ में आर्य्यजाति के पुरुषाओं ने आत्मज्ञान के तमतमाते सूर्य्य के नीचे खड़े होकर जिस वैदिक धर्म का निरूपण किया था समय पाकर उसमें द्वैविध्या उत्पन्न हो गया। एक तरफ ज्ञान काण्ड दूसरी तरफ कर्मकाण्ड अपनी पृथक २ स्थिति तथा सत्ता दिखाने लगे। इस हल चल में ज्ञान काण्ड का आश्रय लेने वाले जैसे तैसे संसार सागर को तरने लगे परन्तु अज्ञान की शरण पड़कर कर्मकाण्डी लोग अन्धकार के महागर्त में पग पग पर फिसलने तथा ठोकरें खाने लगे, विषय विष आस्वाद में सब सुध बुध खो बैठे। अपने पराये का उन्हें ज्ञान न रहा कर्तव्य विवेक शून्य होकर महा अनर्थ और उपद्रव करने लगे।

ऐसे समय पर जनों के उद्धार के लिये एक बालभास्कर उदयाद्रि पर दीख पड़ा शंकर स्वामी तथा कुमारिल भट्ट दोनों युक्ति के धनी थे ही, वेद तथा उपनिषदों का यथा साध्य सहारा ले इन्हों ने जैनों तथा बौद्धों के जत्थे को तोड़कर छिन्न भिन्न कर दिया। परन्तु इस प्रबल विरोध में इन विद्वानों ने वास्तविकता को छोड़कर एक नया वेदान्त मत चला दिया, जिस से आलस्य का दिगन्तव्यापी प्रभाव फैलने लगा। सर्वत्र सहस्रों ब्रह्म के धन्धा सेठ दिखाई देने लगे।

जगत के अटल नियमानुसार शंकर स्वामी के दिवंगत होते ही; आर्य्यावर्त का आकाश मण्डल घनघोर घटाओं से घिर गया। क्या जैन क्या बौद्ध, जैन, शाक्त, तथा वाम मार्गी सभीने मन्दिरों का आश्रय लिया। घृणित से घृणित मूर्तियां बनाने में एक दूसरे के कान कतरने लगे। पुराणों की टकसालें खुलगई नये से नया इतिहास तैय्यार होने लगा। छूत छात तथा जात पांत के झगड़ों ने इस में बढ़ बढ़ कर हाथ मारा, स्वार्थी ब्राह्मणों ने अपना उल्लू सीधा किया बिचारी स्त्री जाती तथा शूद्रों को पशुवत भोग्य पदार्थ बताकर शिक्षा का मार्ग सर्वथा इनके लिये बन्द कर दिया। इन नये व्यास मुनियों ने अवतारों तथा स्नानों की महिमा का यथा साध्य प्रचार किया।

इस विकट समय में नये २ मत बर्साती नालों की तरह बढ़ने लगे रामानुजादिक महात्माओं ने अपने विशिष्टाद्वैत आदि नये मत को खड़े कर दिये। इस समय इतना अन्धेर मचा हुआ था कि मूर्ति पूजा के खण्डन करने वालों की स्वयं पूजा परलोक गत होते ही प्रारम्भ होने लगी। बाल विवाह का भूत सबके सिरों पर चढ़ रहा था विधवाओं का सिवाय अग्नि देव के कोई शरण न था। संक्षेपतः वैदिक धर्म के आधार भूत प्रेम न्याय, सत्य तथा सदाचार का कहीं पता तक भी नहीं लगता था। सभ्यगण! इन आपत्तियों तथा ब्राह्मणों के अत्याचारों से प्रजा विकल हो उठी। परस्पर अविश्वास तथा अपने नेताओं पर अवशिष्ट होने के कारण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लाखों पुरुषों के जीवन रक्षकों को सहज सफल चौबीस घंटे निरुपाय हो अज्ञान वश अपने हाथ अपना पाँव काटने पर उ-द्यत हुए थे। इस समय इस जाति की रक्षा के लिये ऐसे अपौधार की आ-वश्यकता थी जो ऊँचर में भी चिल्लाने वाला हो, पानी का भेद भलीभांति जानता हो ऋतु के अनुसार काम करने वाला हो, स्वयं निर्भय तथा दूसरों को डाढस बँधाने की शक्ति रखता हो, निः-स्वार्थ हो सब से बड़ी बात यह कि उस का बेड़ा सुदृढ़ हो। और वह उद्देश्य अर्थात् प्राप्तिस्थल से पूर्ण परिचित हो। प्रकृति ने जगत में प्राणीमात्र को पार लगाने के लिये सन्यासी को ही सच्चा कर्णधार बताया है।

इस में सन्देह नहीं कि समय २ पर बड़े २ महापुरुषों ने अपने आगमन से इस भूमि को पवित्र करते रहे परन्तु जिस आंशिक वैदिक धर्म का उन्होंने सहारा लिया वह किसी सीमा तक ही जातीय रक्षा कर सका उसके बाहर उसकी शक्ति न थी स्वामी दयानंद यदि सच्चा सन्या-सी था तो इसीलिये कि उस ने सच्चे सार्वभौम पूर्णवैदिक धर्म के प्रचार का प्र-बन्ध किया।

स्वामी जी ने बाल्य काल ही से मनु-ष्य जीवन के उद्देश्य को तथा जनता के दुःख को समझ लिया था और उसकी प्राप्ति के लिये प्रथम उस ने अपने आप को तैयार किया। ब्रह्मचर्य्य काल में विद्याध्ययन तथा तपस्या से अपने मन शरीर तथा आत्मा को इस योग्य बना लिया जिस से वह स्वयं अपनी कामना सिद्ध कर उद्देश्य को प्राप्त कर सकता परन्तु जब उस ने अपनी दृष्टि ऊपर को ओर उठाई तो पता लगा कि यह बिलबिला-ती जनता किस के सहारे बचेगी तब तो उठा ने घरबार और सारे सांसारिक

[illegible] देवताओं को डाल मार आदित्य ब्रह्म-चारी रहने की ठानी। इस बड़े भारी काम के लिये छोटी मोटी शक्ति का शक्ति कदापि पूर्ण नहीं कर सकता था। स्वा-मी ने अपने प्रथक रथ से ग्राम २ भ्रमण करने का काम किया। उन का शरीर जहां कहीं जाने रहने को तैय्यार था वहां दूसरों पर बोझ न होता हुआ उन को सहारा देने के लिये भी उद्यत था।

उन की खण्डाओं पर शाणित बुद्धि जहां बड़े २ पाप पुञ्जों का समूल नाश कर सकती थी वहां सत्यमार्ग की रक्षा भी कर सकती थी। उन की अधर्म के ख-एडन में वज्र से भी कठोर वाणी भ्रान्ति तुषारा का पात प्रवाही पातकों को कादम्बिनी की तरह कराती थी।

वे सिद्ध मार्ग का उपदेश करते थे स्वयं उस का उदाहरण बनकर दिखातेथे जिन पापों में दूसरों को डालते थे वहां आप प्रथम उतरा करते थे।

उन्हों ने संसार सागरों के बीच तड़पते मनुष्यों के अन्धन मूर्ति पूजा आदि के काट २ कर उन का उद्धार किया और साथ ही सत्यमार्ग का आदेश भी किया उदाहार का प्रचार मन, वाणी तथा कर्म से उन्हों ने रात दिन किया। बड़ों से बड़ी सभा में बड़े २ राजे महाराजों के सामने सिंह निर्भयता का उन्हों ने परिचय दिया क्या यह कम बात है? यदि उदाहरण उन का सहायक न होता सत्यप्रियताउन में न होती सभ्य समाज में उन की यह निर्भयता कहीं ढूँढे भी न मिलती और न वे दूसरों का उद्धार ही कर सकते।

न्याय तथा प्रेम की तो वह मूर्ति ही थी उन का हृदय तो यही विचार रहता था कि मनुष्यों की बेड़ियां मुझे काटनी हैं कभी उन्होंने किसी का अनिष्टचिंतनहीं किया प्राणीमात्र पर दया का उन्हीं का उपदेश दिया उन्होंने पुनः स्त्री तथा शूद्रों को उन्नति करने का अधिकार दिया।

आर्य सज्जनो! स्वामी ने अपनी तरफ से पाठकजीवन क्या बीच क्या लेखनी क्या आचरण किसी से देश तथा संसार के उद्धार में कुछ कसर उठा नहीं रखी। जीवन काल में जहां सत्यधर्मका प्रचार करते वहां साथ ही वेद भाष्य भी होता अपने निज के ग्रंथ भी लि-खे जाते थे।

वह आज कल के साधुओं की तरह चा-हते तो लक्षपतियों में अपना नाम लिख जाते परंतु उन्हों ने कभी इसका विचार भी नहीं किया एक सच्चे संन्यासी के क-र्तव्य सब सम्पत्ति वैदिक धर्म के प्रचा-रार्थ अपना शिक्षणालयों और गोशा-लाओं के निमित्त लगाते थे। मनुष्य के खरे खोटे होने की परीक्षा अंतकाल में ही हुआ करती है। आप जानते ही हैं उस समय भी स्वामी जी ने अपने कर्तव्य को भुला नहीं दिया उसी एक मात्र वैदिक धर्म का उपदेश सच्चे ईश्वर निष्ठता का उपदेश वे करते रहे।

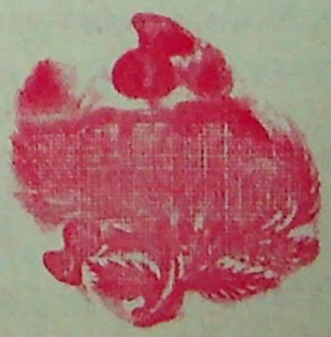

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य्य प्रतिनिधि सभा के सभासदों की सेवा में निवेदन।

(१) गुरुकुल के प्रबन्ध के लिए एक जुदी, परन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आधीन, प्रबन्ध कारिणी सभा बनाने का प्रस्ताव मैं ने ७ वर्ष हुए जब किया था। तीन वर्षों के पश्चात् एक बार कोरम भी उपस्थित हुआ परन्तु कई कारणों से विवाद में ही सारा समय नष्ट हो गया और जब दूसरे दिन सम्मति लेने का समय आया तो कोरम ही पूरा न हुआ।

(२) उस के पश्चात् गुरुकुल महाविद्यालय ने बढ़ते बढ़ते विश्वविद्यालय का रूप धारण किया और तब मैंने नियमों का पुनः संशोधन करके प्रस्तावित कार्यकारिणी का नाम "गुरुकुल विश्वविद्यालय नियन्त्रण परिषद्,, रक्खा और सभा के गताधिवेशन में इस परिवर्तन के हेतु छपवाकर सर्वसभासदों में बाँटे। मेरी उस निवेदन पत्रिका को आप लोग फिर से पढ़ जायँगे।

(३) मेरा यह प्रस्ताव सभा के उसी बृहदाधिवेशन में पेश हो सक्ता है जिस में सभासदों की योग संख्या का ⅓ भाग उपस्थित हो। जहां तक मुझे पता लगा है इस सभा में १०० सभासद स्वीकार हो चुके हैं। यदि इन में से ६७ सभासद उपस्थित होजायं तो मेरा प्रस्ताव पेश हो सक्ता है।

(४) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का एक असाधारण अधिवेशन लाहौर आर्यसमाज के आगामी वार्षिकोत्सव के समय २८ नवम्बर, १९१४ की रात के लिये बुलाना निश्चित हुआ है। यदि उस तिथि पर लाहौर पहुंचने का सर्व सभासद वर्ग निश्चय कर लें और उत्सव मण्डप से ६ बजे ही चले जाकर नित्य कर्मों से निवृत होकर भोजन के पश्चात ठीक आठ बजे अधिवेशन में सम्मिलित हों तो मेरे प्रस्ताव पेश हो सक्ते हैं। यदि एकबार आप ने दो व्याख्यान न सुने तो कुछ हर्ज नहीं परन्तु जिस प्रस्ताव पर, मेरी सम्मति, मैं गुरुकुल की भावी उन्नति का सारा भार निर्भर है उस को बराबर टालकर आप काम करने वालों के रास्ते में बड़ी रुकावटें डाल रहे हैं।

(५) जिन आर्यसमाजों का आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ सम्बन्ध है उन से विनय पूर्वक निवेदन है कि अपने प्रतिनिधियों को इस आगामी अधिवेशन में, २८ नवम्बर सं० १९१४ की रात को सम्मिलित होने के लिए बल पूर्वक आज्ञा दें।

मुन्शीराम जिज्ञासु।

कुम्भ प्रचार सम्बन्धी।

(१) मैं ३ कार्तिक १९७१ (१९ अक्तूबर, १९१४) को दिल्ली पहुंच गया हूं और २६ नवम्बर, १९१४ तक दिल्ली में ही स्थित रहूंगा। केवल २६ अक्तूबर से १ नोम्बर तक अम्बाला छावनी रहना होगा। इस लिये कुम्भ प्रचार के सम्बन्ध में सारा पत्र व्यवहार दिल्ली सद्धर्म प्रचारक के पते से होना चाहिये।

(२) कुम्भ प्रचार के लिए सब धन पूर्ववत् गुरुकुल के पते से मेरे नाम भेजा जावे अब तक मनीआर्डर कूपनों पर मैं हस्ताक्षर करता रहा आगे गुरुकुल के कार्यालयाध्यक्ष हस्ताक्षर किया करेंगे। कुम्भप्रचार सम्बन्धी शेष साधारण पत्र व्यवहार गुरुकुल भूमी से उपाध्याय इन्द्र वेदालंकार करेंगे।

(३) बहुत से आर्यसमाजों तथा आर्य सज्जनों ने प्रतिज्ञाएं लिख भेजी हैं जो लिखी गई हैं। यह धन शीघ्र ही आजावे तो कार्य में बाधा न पड़ेगी।

(४) छप्पर आदि बनवाने तथा स्थान बनाकर प्रचार मण्डप के बनवाने का काम भी लाला नन्दलाल जी सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल ने अपने ज़िम्मे लिया है। बस उस कार्य के ठीक प्रचार होने में कुछ सन्देह ही नहीं हैं।

(५) ट्रक्टों और विज्ञापनों की छपाई का कार्य आरम्भ हो गया है। जिन आर्य सज्जनों की दृष्टि में कोई समयानुकूल ट्रक्ट पहले आये हों उनकी प्रतियां मेरे पास दिल्ली के पते से भेज दें। मैं उन में से छांटकर सहस्रों की संख्या में छपवा दूंगा। ट्रेक्ट आर्यभाषा उर्दू तथा अंग्रेज़ी—तीनों भाषाओं में हों। जो यानी मुम्बई, मद्रासादि प्रान्तों से आवेंगे वे केवल इङ्गलिश भाषा ही समझ सकेंगे।

(६) विचार यह भी है कि आर्यसमाज के मन्तव्यों की सरल व्याख्या प्रमाण युक्ति सहित तथा उस के बड़े कामों का संक्षिप्त वृत्तान्त संस्कृत भाषा में छपकर संस्कृतज्ञ सन्यासी, साधु तथा पण्डित मण्डल में बाँटा जाय। पुस्तक इतना बड़ा हो कि सत्यार्थप्रकाश की नाप के १६ से २४ पृष्ठों तक में आजावें। आर्य समाज के संस्कृत विद्वानों से प्रार्थना है कि ऐसी पुस्तक बनाकर मास दिसम्बर १९१४ के अन्त तक मेरे पास दिल्ली के पते से भेज दें। इन पुस्तकों में से जो लेख सब से उत्तम समझा जायगा, उस के लेखक को सार्वदेशिक सभा की ओर से एक स्वर्णपदक कुम्भप्रचार के समय पर ही भेंट किया जायगा और वही पुस्तक छपवा कर संस्कृतज्ञों में बाँटी जायगी।

—०—

गताङ्क में कुम्भप्रचार निधि की आय का सर्व योग ८३२) छप चुका है; उसके पश्चात निम्न लिखित आय और हुई है:—

२००) बाबू शिवप्रसाद गुप्त काशीवाले

५०) श्री रामकृष्ण जी जालन्धर सभासद सार्व देशिक सभा।

५०) श्रीराय रोशनलाल जी, लाहौर, सभासद सार्वदेशिक सभा।

५०) मन्त्री आर्यसमाज, बोहड़ दर्वाजा मुल्तान शहर।

३५०) योग

८३२) पूर्व प्राप्त

११८२) सर्व योग

मुन्शीराम, प्रधान
सार्वदेशिक आ० प्र० सभा।

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* ओ३म् *

Registered No. L.807

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्त—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

१५ कार्त्तिक सं १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० ३१ अक्टूबर १९१४

संख्या २९
भाग २६

SHIA
1115
BIJNOR

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य	१।।)
प्रचारक के ग्राहकों से	१।)
सजिल्द का मूल्य	१।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अड ग्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये। आज कल राष्ट्र और उ[illegible] तो बहुत सुनाई देती है [illegible] उन्नति क्या चीज़ है, यह [illegible] जानते हैं। इस पुस्तक में [illegible] अमरीका, इंग्लैड, महाराष्ट्र [illegible] के इतिहास की आलोचना क[illegible] लाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

Mahatma M
Governor G
P

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक	।)
तीन मास " " " "	॥)
छः " " " "	-)॥
सालभर " " " "	-)

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सका।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गेहुं की खेती

हिन्दी उर्दू दोनों भाषाओं में यह अपूर्व पुस्तक है जिस से किसान हर एक प्रकार की खेती में सामान्यतः व गेहूं की खेतीमें विशेषतया दुगनी तिगनी पैदावार कर सक्ता है.कृषि सम्बन्धी हर एक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहुत से बिना मूल्य और प्रत्येक स्थान में मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा बिचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली यू० पी० गवर्नमेंट के कृषी विभाग ने इस पुस्तक को बहुत उपयोगी बताया है मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रु० १) दो पुस्तकों के ग्राहक को डाक महसूल माफ़। रामप्रसाद सब जज उज्जैन।

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको चाँदी का पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र तय्यार हो गई।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिसकी पहिली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है इसके लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं। एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है। इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिये क्या गुण आवश्यक हैं। जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

बिहारी क़न्द—खावो।

और लाल बन जाओ इसी महीने पहाड़ से इस की खुदाई होती है-इस कारण शीघ्रता करो कीमत १) रु० सेर।

पता. पं० काशीनाथ नागर
ज्वालापुर जि० सहारनपुर

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]
थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

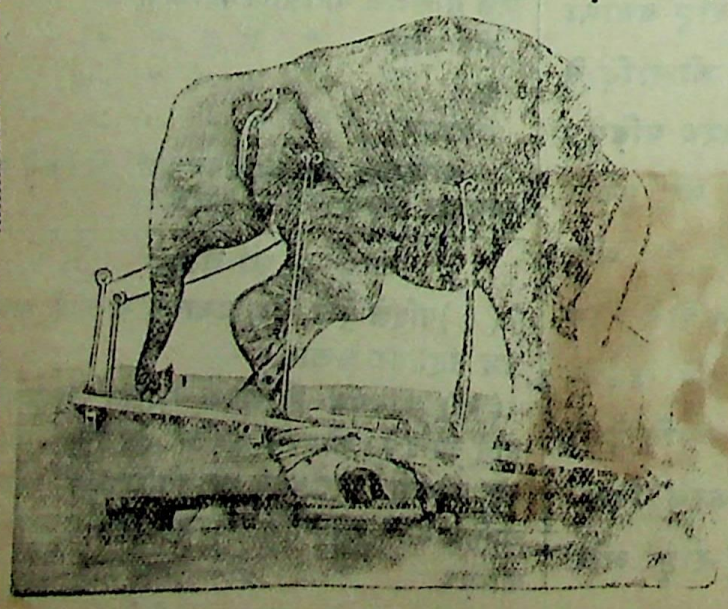

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलोअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) खांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएँ ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां।) वैदिक विवाहादर्श १) तांतिया भील =)
ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(प्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धाञ्जलि

गायन्ति त्वा गायत्रिणः।
अर्चन्त्यर्कं मर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत
उद्वंश मिव येमिरे। ऋग्वेद

हे सैंकड़ों प्रकार की कार्य शक्तियों से युक्त परमात्मन्! वीणाकी स्वर से स्वर मिलाकर मीठा आलाप करने वाले कवि तेरा ही गान करते हैं। मनरूपी भेंट लेकर उपस्थित होने वाले पूजक लोग तुम्हारी ही चरण पूजना करते हैं। जैसे ऊंचे वंश अर्थात् कुल के चारों ओर प्रजायें इकट्ठी होजाती हैं इसी प्रकार तुम्हारे चारों ओर ब्राह्मण लोग घिर आते हैं। ब्राह्मणों के हृदयरूपी भ्रमर आपकी ही सुगन्ध के चारों ओर डोलते रहते हैं।

भगवन्! संसार अपनी अनूठी रचना से तुम्हारे ही गुणों को गाता है। पक्षी प्रातः काल सोये हुए वृक्ष की डालियों को किस गीत से जगाते हैं? तेरेही गुण गीत से। यह सदा बहने वाली गङ्गा पत्थरों से टक्कर खाकर रातदिन किसका नाम लेती है? हे सर्वात्मन्! तेरा ही, हम अज्ञानी पुरुष चाहे क्षणभर के लिये तुम्हें भूल जांय, किन्तु जब कोई भयानक आपत्ति आक्रमण करती है तो तुम्हारी ही याद आती है।

आत्मिक दृश्य

मागृधः कस्य स्विद्धनम्।

ईसा से लगभग ८०० वर्ष पहले की घटना है। इटली के एक स्थान में अमूलस नाम का राजा राज्य करता था। लोग कहते थे कि इसने अपने बड़े भाई को बलात्कार से पृथक् करके राज्य पर कब्ज़ा किया है। असली राज्याधिकारी वह बड़ा भाई ही था। अत्याचारी ने केवल भाई को बाहिर निकाल कर ही सन्तोष न किया था, उसके पुत्रको भी मरवा डाला था। ताकि अत्या चार से लिये हुए राज्य को कोई छीनने वाला न रहे। बड़े भाई की एक कन्या भी थी। उसे मरवाने में अमूलस ने कोई लाभ न देखा। किन्तु उसे आराम से बैठना न मिला। उसे ज्ञात हुआ कि उसकी भतीजी के पेट मेंसे दो बच्चे इकट्ठे पैदा हुए हैं। अत्याचारी को आराम कहां था? जो दुष्ट दूसरे की वस्तु को बलात्कार या छल से हर लेता है, उसे क़दम क़दम पर सन्देह रहता है। उसे पत्रों और पत्थरों में पराये का भ्रम होता है। अमूलस ने अपने आदमियों को आज्ञा दी कि उन दोनों बच्चों को टाइबर नदी में फेंक दिया जावे। राजा का आदमी गया और बच्चों को नदी में फेंक आया। किन्तु 'अरक्षितन्तिष्ठति दैवरक्षितम्' "जिसको राखे राम, उसे बिगाड़े, कौन नर?" दोनों बच्चे जलमें नहीं दल दल में पड़े। दैवने ही बच्चों की रक्षा की कथा कहती है कि एक भेड़ियन बच्चों को पालती रही। बच्चे बड़े हुए तो उन्हें एक चरवाहे ने देख पाया, और उन्हें घर लेगया।

दोनों बच्चे चरवाहे के घर में पलकर बड़े हुए। और बालकों के साथ वे खेलने कूदने लगे। लोग उन्हें देख देखकर कहने लगे कि वे साधारण बालक नहीं हैं क्यों कि इनकी चालढाल, और प्रकृति आकृति राजकुमारों जैसी है। जिसदैवने बालकों की नदी से रक्षा की थी, उसीदैवने उन्हें उनके पिता सहनूमिटर के पास पहुंचा दिया। वहाँ वे दोनों पहिचाने गये। सारी कथा सुनते ही दोनों युवाओं का जोश उमड़ आया। अपने पितामह को राज्यछीनने वाले दुष्ट सम्बन्धी को मारने के लिये दोनों भाई चलदिये। उनमें से बड़े का नाम रोमुलसथा, यही वीर इटली की राजधानी रोम का संस्थापक कहाजाता है। छोटे का नाम रेमस था। दोनों अमूलस के पास पहुँचे और महल में ही उसका काम तमाम किया। देश का राज्य, उसपद के असली अधिकारी न्यामिटर को प्राप्तहो गया।

कहानी में कितना सत्य और कितना झूठ है, यह कहना कठिन है किन्तु यह कथा संसारमें काम करने वाले एक व्यापी नियम को दरशाती है, इस में सन्देह नहीं। इस संसार में न जाने कितने व्यक्ति हैं, जो अपने लाभ करने के लिये दूसरे के अधिकारों को पांव तले कुचल देते हैं। व्यक्तियों का जो हाल है वही जातियों का है। कितनी जातियां ऐसी हो चुकी हैं, या हैं जो 'मागृधः कस्यस्विद्धनम्' के सिद्धान्त को सर्वथा भुला कर दूसरी जातियों के प्रियतम अधिकारों को रौंददेती हैं। उन व्यक्तियों और जातियों के लिये मनुभगवान् कहते हैं।

अधर्मैरौधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति
ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति।

जो पापी है, वह पहले अपने पाप के बलसे बढ़ता जाता है। तब उसे सब ओर हरा ही हरा दीखने लगता है धीरे धीरे ऐसा प्रतीत होता है, मानो उसका पराक्रम, उसका बल अखण्डनीय है। सब शत्रु उसके सामने सिर झुका देते हैं। वह पापी उस समय समझता है कि मैं पापके बलसे विजय हुआहूं। संसार भी उस समय अधीर होकर चिल्ला उठता है कि?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'भूतीर्नीच गृहेषु वि प्रसंदने
दारिद्रय कोलाहलः'

नीच आदमियों के घरमें सम्पति और सज्जनों के घरमें दरिद्रता का निवास है। किन्तु परमात्मा के नियम अटल हैं। उनका भंग नहीं होसकता। पापी का पाप उसे इतना ऊपर इसलिये उठाता है, कि जब वह पापी गिरे तो उसकी हड्डियों का चूरा होजाय—उसका अस्थिपंजर भी देखने को नरहे। यह समझना हम लोगों की भूल है कि पाप के रेतीले आधारपर खड़ा कियाहुआ मकान स्थायी होसकता है। मकान में चाहे कैसा पक्का पत्थर लगाहो, यदि आधार में रेत है तो पत्थरों के कारण मकान पक्का नहोगा, प्रत्युत और भी शीघ्र गिरेगा। क्या आपके पास किसी ग़रीब ज़मीन्दार की कुर्की कराकर पाया हुआ धन है? यदि है, तो लौटा दीजिये, क्योंकि वह आप की और भी सारी सम्पत्ति को लेजायगा।

क्या आपके पास किसी ऐसी विधवा का धनहै, जो आपके भरोसे अपना सबकुछ बैंकमें जमाकर करगई थी? अब वह भूखी फिर रही है और आप बैंक का दिवाला निकाल कर रेशमी गद्दी पर बैठे हैं। यदि है तो रेशमी गद्दी बेचकर भी उस विधवा का रुपया लौटा दीजिये क्योंकि वह आपका समूल नाश करने की शक्ति रखता है।

क्या आप राजा हैं। और क्या आपने किसी दूसरी निर्बल अथवा असहाय जाति पर आक्रमण करके उसके अधिकार छीन लिये हैं और क्या आप अब उसे पराधीनता की बेड़ियों में बांधना चाहते हैं? यदि ऐसा है तो आप वेद का उपदेश स्मरण करते हुए मानुषीय अधिकारों की रक्षा कीजिये, नहीं तो कुचले हुए अधिकार आपको कुचलने की सामर्थ्य रखते हैं।

और सब से अन्त में क्या आप अपने पुत्रों अपनी स्त्री, या अपने और बन्धुओं के अधिकारों की परवा न करके उनसे अनुचित व्यवहार करते हैं तो आज से ऐसा न करने की प्रतिज्ञा कीजिये क्योंकि जो व्यक्ति दूसरे के अधिकारों की रक्षा करने को शक्ति रखता हुआ उन्हें कुचलता है, उस का इस लोक और पर लोक में ठिकाना नहीं।

ऋष्यङ्क।

आर्य सामाजिक पत्रों के ऋष्यंक निकल गये। ऋष्यंकों में सब से पहला नम्बर सदा की भांति प्रकाश का ही रहा, जिस के लिये हम उसके सम्पादक महाशय को धन्यवाद देते हैं। हाँ पत्र की तथा पत्र के साथ जो चित्र दिया गया है उसके लिये धन्यवाद देने में हमें संकोच होता है। प्रारम्भिक चित्र में ऋषि दयानन्द का बनारस के पण्डितों से शास्त्रार्थ दिखाया गया है। यह चित्र बहुत अस्वाभाविक है। ऋषि दयानन्दको देखकर ऋषि समझना कठिन है। हम चित्रों की पहिचान रखने का दावा नहीं करते, किन्तु एक साधारण दर्शक की दृष्टि से देखकर यह कह सक्ते हैं कि चित्र के देखने से ऋषि के प्रति गौरव भाव उदित नहीं होता लेखों की दृष्टि से यदि यह पिछली बार से बढ़िया नहीं, तो घटिया भी नहीं, आर्य समाज के माननीय नेताओं और अन्य विद्वानों के लेखों के अतिरिक्त बाहिर के हितैषियों के भी कई लेख हैं। राजा महेन्द्रप्रताप, मौलवी ज़फ़रअली आदि सज्जनों के लेख आर्य पुरुषों को उत्तेज या उत्साह भी दे सकते हैं।

जालन्धर के भारत ने ऋषि नम्बर निकालने में बहुत उन्नति की है। अब के अंक के लेख तथा छपाई दोनों ही प्रशंसनीय हैं। रूप तथा छपाई में तो उर्दू के ऋष्यङ्कों में इसका पहला ही नम्बर समझना चाहिये। लेख भी बहु अच्छे अच्छे हैं। राय ठाकुरदत्त, दीवान चन्द्र एम०ए० भाई परमानन्द एम०ए० प्रो० बालकृष्ण एम० ए० इत्यादि महानुभावों के लेख ऋषि जीवन के भिन्न भिन्न भागों पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। आर्य्य गजट ने अंक का नाम ऋष्यङ्क न रख कर भी ऋष्यङ्क ही निकाला है। मेरठ के भास्कर ने भी विशेषाङ्क निकाला है। आर्य्यभाषा में एक इसी पत्र ने सूचना के साथ ऋष्यङ्क निकाला है, हम समझते हैं कि अगले वर्ष सहयोगी ऋष्यंक और भी उत्तम निकाल सकेगा। आर्य्य मित्रने भी विशेष रंगीन अंक निकाला है, जिस में महात्मा लूथर और ऋषि दयानन्द की तुलना पर एक अच्छा सम्पादकीय निबन्ध है। अन्य सामाजिक पत्रों ने ऋषि के स्मरण में अपना एक २ अंक समर्पित किया है।

मिस्टर एस. सिन्हा की आर्य्य समाज पर राय।

मिस्टर सच्चिदानन्द सिंह कांग्रेस के उन कार्यकर्ताओं में से समझे जाते हैं, जिनकी राय में आर्य्यसमाज का कार्य क्षेत्र बहुत संकुचित है, और कार्यक्रम कई अंशों में पीछे ले जाने वाला है। दीपमाला के दिन लाहौर आर्य्यसमाज की ओर से जो विशेष सभा हुआ करती है, उसमें ऋषि जीवन के उपलक्ष में आपने भी कुछ भाषण किया। उस भाषण ने लोगों के दिलों से आपके विषय में ऊपर कहे हुए विचार धो दिये। आपने आर्य्यसमाजके पुरुषार्थकी बहुत सराहना करते हुए कहा कि हिन्दू जाति को जगाने वाली जो शक्तियाँ हैं, उनमें से सब से ज़बर्दस्त आर्यसमाज है। आर्य समाज पर लड़ाकूपन का जो दोष दिया जाता है, उसके उत्तर में आपने कहा कि जो नई और जोशीली संस्था है, उसे यदि विद्यमान दोषों के ऊपर क्रोध न हो, तो वह सुधारके काम में बल पूर्वक नहीं लग सकता। इस लिये आर्य्यसमाज की सख्ती उचित ही थी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

क्या आर्य समाज का धर्म युद्ध बन्द होगा?

ऐसे समय आजाते हैं जब नौ जवान से नौ जवान के दिल में भी वैराग्य की लहर चलने लगती है-बड़े से बड़ा हँस मुख भी उदासी के बादलों से घिर जाता है। आर्य समाज अभी जवान संस्था है अभी इसके जोश और प्रसन्नता के दिन हैं। किन्तु कभी शत्रुओं की बातें सुनकर, कभी अपनी कमजोरियां देख कर और कभी केवल सहज भारतीय स्वभाव के अनुसार ही वैराग्य की लहर में डूबे हुए आर्य समाजी कह उठते हैं कि आर्य समाज एक मुर्दा संस्था होती जाती है-अब इस में कुछ नहीं रहा दूसरे ढंग के लोग इस बात को दूसरे ढंग पर बतलाते हुए कहते हैं कि "अजी, अब समाजका काम हो चुका।" आर्यसमाज के जो उद्देश्य थे, वे अब और सोसाइटियों ने ले लिये। इसलिये आर्यसमाज अब अन्यथा सिद्ध संस्था है" मानो कि आर्यसमाज की संस्था का केवल एक यही उद्देश्य था कि देश के हज़ार दो हज़ार शिक्षितों को जगा कर सो जाता।

इस प्रकार के शब्द हैं जो कभी कभी बूढ़े आर्यसमाज की ओर से उठकर जवान आर्य समाज को भी निराशा करा देते हैं। आर्यसमाज में नये रुधिर की भर्ती क्यों कम है? क्योंकि आर्य समाज के पुराने सेवक ही प्रायः आर्य समाज के भविष्यत् पर उदासी प्रकट करने लगते हैं। जब बूढ़ों में निराशा है तो नयी उपज कहां से हो। आर्यसमाज के पुराने योद्धाओं की उदासीनता, नये रंगरूटों के दिल तोड़ देती हैं, तभी तो नौ जवान आर्य समाज भी कभी कभी वैराग्य के प्रवाह में बहकर निराश हो उठता है।

आर्य समाज को जो लोग मरी हुई या मरने वाली संस्था समझते हैं, वे भूल करते हैं। आर्यसमाज धर्म युद्ध करने के लिये पैदा हुआ है। जब तक संसार में वे शक्तियां विद्यमान हैं, जो धर्म का विरोध करती हैं, तब तक धर्म युद्ध की आवश्यकता है। आर्य समाज का कार्य कभी समाप्त होने वाला नहीं है। मनुष्य में जबतक एक भी बुरी प्रवृत्ति रहेगी तब तक उसके सुधार की आवश्यकता रहेगी और जब तक सुधार अपेक्षित है, तब तक आर्यसमाज के लिये काम है।

यह तो हुआ इस प्रश्न पर जरा दार्शनिक सा विचार। जब हम क्रियात्मक संसार में आते हैं, तब हमें और भी दृढ़ निश्चय हो जाता है कि आर्यसमाज कभी अन्यथा सिद्ध नहीं हो सकता।

आर्य समाज की सामान्यतया सब को, और विशेषतया भारतवर्ष को बड़ी आवश्यकता है। इस देश में आर्यसमाज का वह काम है, जो और किसी सभा या सोसाइटी से नहीं चल सकता जो लोग कहते हैं कि आर्यसमाज के सब काम अब और संस्थाओं ने संभाल लिये हैं उनकी प्रकृतियां कुछ इस प्रकार की हैं। वे कहते हैं कि आर्यसमाज का कुछ काम नहीं रहा। आर्यसमाज संशोधन करता था, उसके लिये कांग्रेस पैदा होगई है। आर्यसमाज शिक्षा प्रणाली में सुधार करने का झण्डा खड़ा करता था, अब सारा देश ही इस बात को मानता है कि भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली दूषित हैं, उसे सुधारना आवश्यक है। आर्य समाज नीच जातियों को उठाना चाहता था, आज स्थान स्थान पर उनके सुधार के लिये सभायें बनी हुई हैं।

इस प्रकार की युक्तियाँ देने वालों के लिये हमारा पहला उत्तर यह है कि वे सब कार्य जुदा जुदा स्थानोंपर थोड़े बहुत हो रहे हैं सही- किन्तु एक है। आर्य समाज इन सब कार्यों को करना चाहता है और करता है। उसके रहते हुए अन्य संस्थाएं उत्पन्न हो गईं और उन्हों ने उसके कार्य को बांटना शुरू हुआ। आर्य समाज के होते हुए ये नई संस्थाएँ तो अन्यथा सिद्ध नहीं हुईं, और इनके कारण पहला आर्यसमाज अन्यथा सिद्ध हो गया यह कौन सा न्याय है? सच तो यह है कि कोई भी संस्था, जो सुधार करना चाहती हैं अन्यथा सिद्ध नहीं हो सकती, क्यों कि केवल भारत में ही सुधार के लिये अतुल क्षेत्र है। यहां तो जितनी भी छोटी कर्म करने वाली संस्थायें हो जायँ, वे सब एक दूसरे की सहायता ही कर सकती हैं, उनकी स्थानपूर्ती नहीं। समाज सुधार, शिक्षा, और सब से बढ़कर आर्यसाहित्य का पुनरुद्धार यह कार्य इतना बड़ा है कि सहस्रों सभायें, सहस्रों विद्यालय और सहस्रो ही प्रचारक यदि कार्य में लग जावें तब भी कार्य की कमी न होगी, कार्य साधनों की ही कमी रहेगी।

एक और बात है जिस के कारण आर्य समाज के कार्य को अन्य कोई नहीं संभाल सकता। और जो संस्थायें बनी हैं, वे एक २ उद्देश्य को ले कर चली हैं। वे चलें और अपने कार्य को पूरा करें। वे सारे कार्य वृक्ष की शाखाओं को लेकर प्रवृत हुई हैं। आर्य समाज उन सब का समूह है। समाज सुधार के लिये सोशलकांफ्रेंस है, लोगों को सच्चे राजनैतिक अधिकार बताने के लिये कांग्रेस है, प्राचीन संस्कृत विद्या के पुनरुद्धार के लिये पाणिनि आफिस जैसी मण्डलियाँ काम कर रही हैं, शिक्षा के काम को सम्प्रदायानुयायी संभाल रहे हैं-यह सब कुछ है किन्तु इन सबके कार्यों को सम्पादित करने वाला, इन सब भिन्न २ यत्नों को एक शृङ्खला में बांधकर देश की उन्नति को सर्वाङ्गीय बनाने वाला आर्य समाज ही है। जो लोग इसे केवल सम्प्रदाय समझे बैठे हैं वे भूलकर रहे हैं। यह भूल केवल समाज से बाहिर के लोग ही नहीं करते, इस के अन्दर रहने वाले लोग भी करते हैं। आचार सुधार, समाज सुधार अच्छी राजनीति, अच्छा साहित्य, अच्छी शिक्षा-- इसमें से कोई भी कार्य नहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो समाज के बीच से बाहिर हो। तब फिर उपयुक्त सब दलों को मिलाने वाला आर्यसमाज अन्यथा सिद्ध कैसे होसकता है। क्या कभी नाक कान हाथ और मुंह के होने के कारण उस हृदय का तिरिस्कार किया जासकता है जो सब अङ्गों की पालना के लिये ताज़ा लहू भेजता है। भारतवर्षकी सुधार सम्बन्धिनी संस्थाओं के लिये आर्य समाज हृदय के समान है। वह उन सब की पालना के लिये लहू देता है। उन के कारण वह कभी अन्यथा सिद्ध नहीं होसकता। जो लोग आर्यसमाज का कार्यक्षेत्र संकुचित बनाकर उसे दूषित किया करते हैं, दोषी वे ही हैं, क्योंकि उस के संस्थापक ने उसका कार्य क्षेत्र बहुत विस्तृत रक्खा है क्या ऐसे विस्तृत उद्देश्यों और कार्यों से संस्था कभी निष्फल होसकती है?

जो नवयुवक केवल यह समझ कर आर्य समाज से उदासीन रहते हैं, कि वह अन्यथा सिद्ध है, उन्हें उपर्युक्त बातों पर विचार करना चाहिये। जो लोग उसके कार्य क्षेत्र को संकुचित समझकर उससे पृथक् रहते हैं, उन्हें भी समझना चाहिये कि ऐसा समझना उनकी भूल है। आर्य समाज के स्थापक ने उसका कार्य क्षेत्र संकुचित नहीं बनाया था। क्या कोई भी मनुष्य जीवन सम्बन्धी विषय है, जिस का विवेचन सत्यार्थ प्रकाश में न किया गया हो। फिर हम तो वेद को धर्म पुस्तक मानते हैं। क्या कोई ऐसा विषय है जिसे वेद में खोजें और निष्फल प्रयत्न हों। यदि आर्यसमाज के कुछ सभासदों ने उनके कार्य क्षेत्र को भूल से संकुचित बना रक्खाहै, तो उनकी भी भूल हमारे नौ जवान भाइयों को न करनी चाहिये उन्हें चाहिये कि वे आर्यसमाज को छोड़कर ऋषि दयानन्द के समाज को ही अपना उद्देश्य और आदर्श रक्खें। तब हम लोगों को यह ज्ञात हो जायगा कि कि जोकार्य आर्य समाज को करना था वह समाप्त नहीं हुआ। जिन शत्रुओं से समाज को लड़ना था, उसके दल में अभी तो वह घुसा ही है। जिस ओ३म् की ध्वजा को संसार में गाड़ना था, वह तो अभी समाज मन्दिरों के अन्दर ही गड़ा हुआ है। इसलिये निराश न होकर आर्यसमाज के नवयुवकों को समाज के कार्य में लगजाना चाहिये। परमात्मा उनके अवश्य सहायक होंगे।

संसार की गति।

बेल्जियम को क्या करना चाहिये था?

आज बेल्जियम की दशा को देख कर लोगों को तरस आरहा है, किंतु साथ ही साथ उनके लिये आदरभाव भी बढ़रहे हैं। जब कभी आदरभाव की अपेक्षा तरस का भाव प्रबल होजाता है तब लोग कह उठते हैं कि "बेल्जियम व्यर्थ ही जर्मनी से लड़ा, वह मान क्यों न गया कि जर्मनी सेनायें उसमें से गुज़र जाँय" बेल्जियम ऐसा क्यों करता अपनी भलाई बुराई पर विचार करके बेल्जियम ने शर्त कीथी, उसके लिये उसके सिवाय और कोई ठीक निश्चय नहीं होसकताथा। बेल्जियम को जर्मनी का कहा न मानना मंहगा पड़ा है सही, परंतु फ्राँस या इंग्लैंड का कहा न मानना उसके लिये और भी मँहगा पड़ता। स्थल में फ्राँस और जल में इंग्लैंड मिलाकर बेल्जियम के प्राण लेने के लिये पर्याप्त थे। यह सब कुछ सोच विचार कर बेल्जियम ने जर्मनी सेनाओं को रास्ता देने से इन्कार करदिया। इस पर जर्मनी की सेनायें उसके अन्दर घुसआईं। उस समय बेल्जियम को जो करना चाहिये था उसने वही किया। वेद का मंत्र है—

इन्द्रो जयति न पराजयाता अधिराजो-राजसु राजयातै। चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चो पस्द्यो नमस्य भवे हो। अथर्व।

जो राजा शत्रु को जीतता है, किंतु उससे पराजित नहीं होता, वह देश के सब श्रीमानों और शक्तिशालियों सेअधिक शक्तिशाली है, वही क्रिया शील राजा पूजनीय बन्दनीय और पास जाकर नमस्कार योग्य होता है।

जर्मनी केवल धमकी या सेना से डरकर यदि बेल्जियम का वीरराजा एलबर्ट डर जाता तो हार जाता और वेद की आज्ञानुसार नमस्कार योग्य राजा न होता। बेल्जियमवासियों ने अपने राजा के शब्द में अपनी ध्वनि मिलाकर स्वतन्त्रतादेवी का जयजयकारा बोल दिया। बेल्जियम को जो करना चाहिये था, उसने वही किया है। वह जर्मनीके कथनसे अपनी विचार स्वतन्त्रता को छोड़ देता, यह बात उन्हीं लोगों के मुंह से निकल सकती है, जो सदियों की दासता से अपनी जातीय स्वतन्त्रता की इच्छाओं को भुला चुके हैं।

कैसर और जर्मनी को गालियां

इंग्लैंड के सभ्यताभिमानी सामुद्रिक सचिव व्याख्यान देते हैं और जर्मनी के कैसर को एक गाली देदेते हैं। वहीं के अर्थ सचिव भाषण करते हुए उसे दूसरी ही गाली देते हैं। लार्डकर्जन जो अपनी भाषण शक्ति के कारण विख्यात हैं, एक छोटी सी गाली जर्मन सम्राट को सुनादेते हैं। जब नेताओं का यह हाल है तो अनुयायियों का क्या कहना है। विलायत का अच्छेसे अच्छा पत्र निकालिये उसमें आप को कैसर के भद्दे भद्दे कारटून मिलेंगे, जो साधारण समय के रद्दी से रद्दी पत्रों के समझे जाते हैं। लीडर के दैनिक पत्रों के मुख्य लेख पढ़िये, खूब पेटभर गालियां पाइयेगा इधर हमें एक अंग्रेज़ औरत की बातें सुनने का मौक़ा मिला। जर्मन जाति के लोगों को जितनी गालियां उसने दीं, पहिले और समय दीजातीं तो शायद असभ्यता समझी जाती।

जब इंगलिश पत्रों और नेताओं का यह हाल है तब मानसिक हालत से दबे हुए भारतीय पत्रों का कहना क्या है। मानसिक दासताने भारतीय समाचार पत्रों के सभ्यों पर पूरा प्रभाव आगे ही जमा रखा है। जो कसर थी, वह प्रेस एक्ट ने पूरी कर दी। किन्तु देवको इतने पर भी संतोष कहां। जो बची बचायी कुछ थोड़ी बहुत झूठी स्वतंत्रता थी, वह प्रेस बूरी ने उड़ादी। अब हिन्दुस्तानी पत्रों को उठाइये। यदि टाइम्स पत्र में कैसर को एक गाली दी जाय, तो भारत के आगुआ पत्रों में सौ गालियां अवश्य होनी चाहिये, नहीं तो राज भक्ति कैसी?

ये गालियां वर्तमान सभ्यता का पर्दा फाड़कर भीतरी रूप दिखा रही है। एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सभ्य जाति के राजा को सूअर और पागल कुत्ते से उपमा दी जाय और वह भी एक दूसरे सभ्यदेश के राज सचिवों द्वारा। यह सभ्यता की पराकाष्ठा है। इन्हीं नेताओं के जो पिछलग्गू पत्र जर्मन जाति और कैसर को गालियाँ दे रहे हैं। वे अपने दिमाग़ की धीरता पर स्वयसेव टिप्पणी कर रहे हैं। इन गालियों से क्या बनेगा? यह मानी हुई बात है, कि जर्मन जाति भी वैसी ही सभ्य है जैसी योरप की अन्य जातियां हैं। यह कहना अत्युक्ति नहीं कि योरप की वर्तमान सभ्यता को आधे से अधिक भाग जर्मन सभ्यता का है योरप जर्मन विद्वानों और तत्व नेताओं का बहुत आभारी है! विज्ञान और तत्वज्ञान के प्रवाह का गत शताब्दि से जर्मनी ही अगुआ है।

शेष रहा कैसर। जो लोग जर्मन सम्राट के साथ सम्बन्ध रख चुके हैं, उन के लेखों से प्रतीत होता है कि वह भी एक देश भक्त जोशीला परिश्रमी और असाधारणतया क्रियाशील है, यदि वह ज़रा अधिक बोलने वाला है तो उसे सूअर या पागल कुत्ता कहना बोलने वाले की जिठहा के बारे में भी अच्छी राय नहीं बनवा सकता। अभी तो यह भी निश्चित नहीं है कि यह युद्ध जर्मनी के युद्ध सचिव की युद्धेच्छा का फल है या कैसर की। हमारी सम्मति में जर्मन जाति या कैसर को गालियां देना व्यर्थ ही नहीं हानिकारक है। लड़ाई समाप्त हो जायगी, किन्तु ये भाषण और ये लेख, जिनमें जर्मनों और जर्मन सम्राट को गालियां हैं, पुस्तकालयों में पड़े रह जायंगे! क्या वे सदा के लिये दो जातियों के चित्रों में परस्पर कटुता न पैदा कर जायंगे। गाली निर्बलों का हथियार है, जो लड़ रहे हैं और अपनी विजय पर भरोसा रखते हैं वे गालियां नहीं दिया करते।

बिना वेतन की डिटेक्टिवी

जो वेतन भोजी डिटेक्टिव रहते हैं, उनसे अधिक भय नहीं होता, क्योंकि उन्हें भय होता है कि यदि हमारी खबर सच्ची न निकली, या सरासर बनावटी सिद्ध हो गई, तो वेतन पर और ओहदे पर बुरा असर पड़ सकता है। किन्तु जो बिना वेतन के डिटेक्टिवी करता है उससे डरना चाहिये। उसकी रिपोर्ट झूठी होतो भी उसे कोई हानि नहीं। आर्थिक हानि का डर नहीं, शेष रही उसकी इज्जत सो उसे बिना वेतन के डिटेक्टिव पहले ही बेच खाते हैं। कोई पुरुष हमारे साथ धार्मिक विषय पर झगड़ता है। उसे नाराज़गी हुई, और नाराज़गी को उसने पुलिस इन्सपेक्टर या डिपटी कमिश्नर के पास यह कर छोड़ा कि हम राजद्रोही हैं, हमारे आफिस में राजद्रोह की बातें होती हैं। या यह कहदिया कि सद्धर्म प्रचारक में राजद्रोह पूर्ण लेख होते हैं। क्या इससे बढ़ कर कोई नीचता हो सकती है? जो वेतन भोजी डिटेक्टिव हैं, वे अपने पेट पर हाथ धर कह सकते हैं कि हम से यह काम करवाता है, पर बिना वेतन के डिटेक्टिवों के अपराध को बहाना नहीं, और इसीलिये उनके पाप का प्रायश्चित नहीं।

भारतमित्र' के विरुद्ध अफवाह

भारतमित्र के विरुद्ध कई लोगों ने गप्प उडादी कि उसे डिपटीकमिश्नर की ओर से डाट बताई गई है, या उससे ५०००) ज़मानत लीगई है। भारतमित्र में यह पढ़ कर आनन्द हुआ कि यह अफवाह सर्वथा निर्मूल है। भारतमित्र का कथन है कि कलकत्ते के एक हिन्दी पत्र के साथ सम्बन्ध रखने वाले कुछ लोग उसके विरुद्ध बिना वेतन की डिटेक्टिवी कर रहे हैं यदि यह ठीक है, तो शोक है। परमात्मा इन लोगों के चित्तों में बिना वेतन डिटेक्टिवी की नीचता प्रकाशित करदे, यही हमारी उससे प्रार्थना है।

फिर एमडन।

गत सप्ताह समाचार आया कि जर्मन क्रूजर एमडन ने पांच और जहाज़ डुबोदिये। हमारी नौ सेना में अतुल पराक्रमी सरकार का वह पोत समूह कहां

दिये जाते हैं। न तो विद्यार्थियों को परीक्षा में प्रवेश करने की दी देनी पड़ती है और न परीक्षक ही पी देखने के लिये रुपये पाते हैं।

अमरीका में भी शिक्षक ही परीक्षक ते हैं। अमरीकन लोग कहते हैं "जो क शिक्षक तुम्हें घंटों पढ़ावेगा वह तुम्हारे विषय में अधिक जान सकेगा। भला क्षाह परीक्षक तुम्हारी योग्यता की बाबत या जान सकता है जिसने कि तुम्हें भी देखा भी नहीं! जो शिक्षक किसी ा को पढ़ाने की योग्यता रखता है करत उस कक्षा के परीक्षक होने के सर्वपुंज योग्य है" लेकिन खेद है कि हमारे योरप के विश्वविद्यालयों के सञ्चालकों पापो समझ में यह बात आती ही नहीं। कोई रे यहाँ परीक्षक सात समुद्र पार के कहते य होते हैं जोकि हमारे विचारों ार से बिल्कुल अपरिचित होते हैं। उत्तीर्ण का बे के लिये हमारे यहां ३३ फी सदी र्थना ६० फी सदी नम्बरों की आवश्यरूरी होती है लेकिन इस पर भी बहुत वेचेगी लड़के पास होते हैं। क्या आप

फ्रांस यह अभिप्राय निकाल सकते हैं मारे भारतीय छात्र मन्दबुद्धि फ्रांस में? हमारी समझ में ऐसा कहना उनके युद्ध भ्रममूलक है इस गिरी हुई करते हैं भी हमारे छात्र किसी अन्य शत्रु के छात्रों से बुद्धि में कम नहीं हैं नाता हुआ आफत तो यह है कि उनकी होते, यदि शक्ति का दुरुपयोग किया यही कि वे, जहाँ जापानी और अमरीकन क्यों नहीं सुगमता के साथ अपनी आगे बढ़ने में शिक्षा पाते हैं वहां विप्रसन्न हैं। के रटते रटते हमारा दिमाग जो बचपन आ जाता है।

वीर कहानि तिरिक्त हमारे विश्वविद्यालय पूर्व पुरुषाअं पेल करने की मशीन बनासिद्ध न कर हैं। यदि आप अनुतीर्ण पाकर क्यों प्र को संख्या को देखेंगे तो

सम्मेलन आश्चर्य्य हुए बिना नहीं रहेलखनऊ में १९१२ की शिक्षा सम्बन्धी की तय्यारियां सरकार की ओर से प्रसाथ ही कई प्र मिस्टर आरेञ्ज साहब

शेष पृष्ठ १०२) "सब से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि जितने लड़के मेट्रिक की परीक्षा देते हैं उनमें बहुत कम ग्रेजुएट हो पाते हैं। मेट्रिक के २५००० विद्यार्थियों में केवल ११००० पास होते हैं, एफ० ए० के ७००० विद्यार्थियों में २८०० और बी० ए० के ४७५० छात्रों में केवल १९०० पास होते हैं; इस प्रकार यदि १०० विद्यार्थी मेट्रिक की परीक्षा दें तो आगे चलकर उनमें से केवल ८ विद्यार्थी ग्रेजुएट होंगे,, शेष ९२ जो रहगये उनकी दशा का चित्र खींचकर पाठकों का जी दुखाना हमारा अभिप्राय नहीं है। अभी बहुत दिन नहीं हुए जब कि हमारे देश के एक नेता ने इसी विषय पर अंग्रेजी में व्याख्यान देते हुए कहा था "हमारे विश्वविद्यालयों की परीक्षायें महाभारत के महाप्रयाण के समान हैं। कुछ लड़के तो नकुल सहदेव प्रवेशिका परीक्षा में ही लुढ़कजाते हैं, कुछ अर्जुन की तरह हिम्मत करके एम० ए० तक बढ़ते हैं लेकिन दुर्भाग्य बशात् एफ० ए० के समुद्र में गोता खाजाते हैं। थोड़े से मरते गिरते बी० ए० तक पहुंचते हैं पर बी० ए० में जाकर उनकी बधिया बैठजाती है। एक आधा बी० ए० पास करके तहसीलदार होजाता है अथवा यों कहिये कि युधिष्ठिर की तरह स्वर्ग को प्राप्त होजाता है"। वास्तव में यह बात सर्वथा सत्य है।

हमारे यहाँ परीक्षाओं में प्रश्नों की संख्या बहुत अधिक होती है। परीक्षक लोग इसी में अपनी शान समझते हैं कि कोई लड़का पूरे सवाल हल न करसके। ये लोग शायद यह भी ख्याल करते हैं कि 'यदि पर्चे देने में ही हमने अपनी लियाकत नहीं छाँटी तो इससे बढ़कर सुयोग हमारे हाथ कब आवेगा; सवाल को इस तरह से घुमा कर पूँछना चाहिये कि यदि लड़के को याद भी होतो भी वह उत्तर न देसके,।

जापान में तो परीक्षा में प्रवेश करने के लिये कुछ भी फीस नहीं देनी पड़ती लेकिन हमारे यहां परीक्षाओं में प्रवेश करने के लिये बड़ी बड़ी फीसें देनी पड़ती हैं। एफ० ए० की परीक्षा के लिये २०) से २५) तक बी० ए० के लिये २०) से ३५) तक बी० एस० सी के लिये २०) से ४०) तक एम० ए० और एम० एस० सी० के लिये ३०) से ५०) तक, डाक्टरी की परीक्षाओं के लिये १०) से १०० तक और कानून की परीक्षाओं के लिये १५) से २००) तक इसके अतिरिक्त मदरास में फाइनल आनर की परीक्षा में प्रवेश करने के लिये ५०) की फीस और देनी पड़ती है। जब परीक्षा में नाम भेजे जाते हैं तो कितने ही बिचारे गरीब लड़के इधर से उधर भागे फिरते हैं कि कहीं से रुपये लाकर इन फीसों को अदा करें। कितने ही लड़के पेट काट कर इन फीसों के लिये रुपये जोड़ते रहते हैं।

जापान में जहां परीक्षकों को थोड़ी थोड़ी कापियां देखने को होती हैं वहां हमारे यहां एक एक परीक्षक को कई २ सौ कापियों देखनी पड़ती हैं। जापान में लड़के ८० व ९० फी सदी नम्बर पाते हैं लेकिन हमारे यहां लड़कों को नम्बर देते समय परीक्षकों के घर का देवाला निकल जाता है। जो विदेशी परीक्षक बीसों वर्ष भारतवर्ष में रहकर भी तुमको 'टुम' और घंटा बजता है, को' घंटा बजती है, कहा करते हैं वेही इडियामेटिक (वा महावरा) अंग्रेजी न लिख सकने के कारण हमें १०० में १३, १७, १९ इस तरह के नम्बर देते हैं।

प्रायः विदेशी हम पर ताना मारा करते हैं कि भारतीय छात्रों में कल्पना शक्ति का अभाव है और नई नई बातों के आविष्कार करने की ओर उनकी प्रकृति होती ही नहीं। हमारी समझ में यह भारतीय छात्रों का दोष नहीं है बल्कि यह हमारी शिक्षा पद्धति और परीक्षा पद्धति का दोष है। हम ऊपर कह आये हैं कि जापान में ग्रेजुएट होने के लिये अनुसंधान करके एक प्रबंध लिखने की आवश्यकता होती है लेकिन हमारे यहाँ के विश्व विद्यालय वाले जानते ही नहीं कि अनुसंधान किस चिड़िया का नाम है। हमारे यहां इतनी अधिक पुस्तकें पढ़ने के लिये रखदी गई हैं कि यदि उन सब को एक साथ लेकर कोई चलना चाहे तो एक गधे का बोझ होजावे। रटते रटते नाक में दम होजाती है पर कुछ भी नतीजा नहीं। आज आप को रटा रटाया सब याद है कल आप परीक्षा देंगे परसों सब किया कराया बालू की दीवार की तरह ढेर होजावेगा। रटने की इतनी अधिक आवश्यकता होती है कि यदि परीक्षा को हम वैतरणी की उपमा दें, तो रटने को गाय की पूछ कहना पड़ेगा ऐसी दशा में यदि कोई कहे कि भारतवासियों के मस्तिष्क अपूर्वरचना शक्ति अनुसंधान के लिये नहीं बने तो उस पर हँसी और क्रोध आये बिना नहीं रहसकते यह तो वैसी ही बात हुई जैसी कि आप किसी आदमी से कहें कि वे तत्व ही नहीं हैं जिनसे तुम्हें तैरना आवे तुम में तैरने का माद्दा ही नहीं है, और पानी में उसे घुसने न दें।

यदि आप भारतवर्ष की शिक्षा पद्धति या परीक्षा पद्धति की तुलना किसी अन्य सभ्यदेश की शिक्षा पद्धति से करेंगे तो आप ज़मीन आसमान का फ़र्क़ पावेंगे। यदि हमारे विश्वविद्यालयों के संचालक चाहें तो बीसियों शिक्षा दूसरे देशों की शिक्षा प्रणाली से लेसकते हैं लेकिन उन्हें इसकी क्या पड़ी है। बड़े २ वेतन पाना, गर्मियों में शिमला नैनीताल घूम आना और चैन की वंशी बजाना बस यही उनका काम है। ५० वर्ष पहिले जबकि हमारे विश्व विद्यालयों की स्थापना हुई थी जो शिक्षा पद्धति थी, वही अब भी ज्यों की त्यों बनी है। चाहे दो चार नियमों में भले ही परिवर्तन होगया हो या किताबें ही दो एक बदलदी गई हों लेकिन प्रणाली में कुछ भी फ़र्क़ नहीं हुआ। तरक्की न करने की हमारे विश्वविद्यालयों ने क़सम खाली। वही रफ़्तार बेढङ्गी जो पहिले थी सो अब भी है।

कुछ अक्ल के दुश्मन ऐसे हैं जो कहते हैं "भारतीय विश्वविद्यालयों ने गत ५० वर्ष में बड़ी उन्नति की है" हम कहते हैं कि तेली के बैल ने बहुत पर्य्यटन किया है। यदि उनका कहना ठीक है तो हमारा कथन भी अक्षरशः सत्य है।

बनारसीदास चौबे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुम्भ-प्रचार सम्बन्धी

कुम्भ के समय काम करने के लिए स्वयम् सेवकों के पत्र अभी से आ रहे हैं। प्रार्थी प्रायः यह पूछते हैं कि उन्हें क्या काम करना होगा तथा यह भी जानना चाहते हैं कि उनको भोजन आदिका क्या सुभीता मिलेगा। प्रत्येक महाशय को जुदा जुदा उत्तर देने के कष्ट से बचने के लिये एक बार प्रचारक द्वारा आवश्यक सूचना देता हूं।

स्वयम् सेवकों से मेले में घूम कर लघु पुस्तक बांटने, विज्ञापन लगाने तथा वितरण करने, बीमारों को चिकित्सालय में लाने तथा उनकी सेवा करने, भोजन खिलाने में सहायता देने के अतिरिक्त और भी कार्य जो आवश्यक होंगे लिएजांयगे। एक जुदा छप्पर लम्बा स्वयम् सेवकों के रहने लिये बनाया होगा जिसमें वे सब निवास करेंगे; भोजन का प्रबन्ध कुम्भ प्रचार निधि की ओर से होगा। परन्तु मार्गव्यय आने जाने का स्वयम् सेवक महाशयों को स्वयम् देना होगा।

प्रार्थना पत्र १५ जनवरी तक आजाने चाहिये जो अंकित होते रहेंगे। २० जनवरी १९१५ तक सब को सूचना पहुंच जावेगी कि उन की किस तिथि से आवश्यकता है। तब वे अपने आने का प्रबन्ध करलें।

मुन्शीराम जिज्ञासु

पूने में राजद्रोह—गत मास सितम्बर की २२वीं तारीख़ को बुधवारपेठ पूना में कुछ घरों की तलाशियां ली गई थीं और खीताराम तुकाराम सुर्वे और हरि रामचन्द्र देसाई पकड़े गये थे। इन्होंने "स्वतन्त्रता" नामक राजद्रोह पूर्ण पर्चा छाप के उस का प्रचार किया था। इन पर भारतीय दण्ड धारा १२४ लागू की गई थी। बहुत से कम्पोज भी मिले "For mother country" तथा "Freedom and Bande mataram part 4" और युगान्तर का अनुवाद, स्वतन्त्रता का विचार, बन्दूकें और दारू तथा बहुत से विज्ञप्ति और मदनलाल धींगरे आदि के चित्र मिले थे। पीछे से एक दो पर यह आरोप करके और गिरफ्तारी हुई। गत सप्ताह मुक़दमा शुरू होगया है।

योरप में महाभारत

मित्र दल की बढ़ती

वारसा के निकट युद्ध

न्यूपोर्ट पर गोले और रूलर्स में लूटमार

तुर्की की उदासीनता

तुर्की का विचार

मित्रों की सैनिक अवस्था बराबर दृढ़ होते रहने और रूसियों की बराबर जीत होने के कारण, जर्म्मनी बराबर तुर्की को अपने पक्ष में लाने का दबाव डाल रहा है। परन्तु यहां के "पोरटो" [तुर्की सरकार] त्रय मित्रों के राजदूतों को विश्वास दिलाते हैं कि तुर्की अपनी उदासीनता नहीं त्यागेगी।

एक फ्रेञ्चलाइनर डूबा

एक फ्रेञ्च लाइनर (जहाज) बोलोन से हेमर की ओर आ रहा था मार्ग में एक जगह सुरंग से टक्कर खाकर डूब गया। जहाज पर केवल बीस मनुष्य डूब गये और २५०० बेलजियन भगोड़े एक दूसरी नौका पर चढाये जानें से बच गये और वे फाकस्टोन लाये गये।

फ्रेञ्च सरकार पेरिस लौटेगी

"सिविल ऐण्ड मिलिटरी गजट" का एक संवाददाता लन्दन से ता: २६ अक्तूबर को तार देता है कि यह अफवाह उड़ रही है कि फ्रेञ्च सरकार शीघ्र ही लौट कर अब पैरिस आजायगी।

वारसा में युद्ध

जर्म्मन रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि वारसा की दीवारोंके भीतर घनघोर युद्ध होरहा है। ऊपर से वायुयान और हवाई जहाज नगर पर गोले बरसा रहे हैं कहा गया है कि नगर निवासी भाग रहे हैं।

न्यूपोर्ट पर गोले।

कल आधीरात में प्रकाशित हुई सरकारी विज्ञप्ति कहती है कि न्यूपोर्ट पर भयकर रूप से गोले बरस रहे हैं। जर्मनी ने न्यूपोर्ट से लेकर डिक्समूड तक बराबर उद्योग कर रहे हैं परन्तु अभी तक उन्हें कुछ लाभ नहीं हुआ। लाबस्सी और साम्मी नदी के मध्य रात में उन के बड़े भयंकर आक्रमण हुये हैं। परन्तु वे हटाये गये। और युद्ध स्थलों में कोई नूतन बात नहीं हुई है।

करनल मारीज़ की हार

करनल मारीज़ पूरी तौर से हार गये हैं। करनल साहब स्वयं भी घायल हुये हैं और भागकर जर्मन उपनिवेश में चले गये हैं।

बेलजियम में स्थिति।

एक सरकारी कम्यूनिक प्रगट करता है कि कल न्यूपोर्ट और डिक्समूड के बीच हमारी सेनाओं की स्थिति अच्छी रही। वाइसर पार करने वाले जर्मन भी कुछ बढ़ नहीं सके हैं। हमारी लाइन अब वाइपर्स और रूलर्स के मध्य तथा आरमेण्टियर्स और लिली के बीच तथा लाबसी और लेन्स से पच्छिम और अर्रास से पूरब और दक्खिन में है। इधर जो युद्ध हुये हैं उसमें शत्रुओं को बड़ी भारी क्षति हुई है।

मित्र सेनाओं की स्थिति संतोष जनक है।

समाचार समिति प्रकट करती है कि मित्र सेनाओं की स्थिति संतोष जनक है। युद्ध बड़ा भीषण और लगातार हो रहा है परन्तु हम लोगों को स्थान मिले हैं। अनेक जर्मन क़ैद कर लिये गये हैं। हमारी एक पलटन ने दो तोपें शत्रुओं की छीनली हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लूवीज़ पर पुनः अधिकार

रूसियों ने लूवीज नगर पर पुनः अपना अधिकार कर लिया है इस से निश्चय होता है कि वारखा के अस्सी मील पच्छिम रूसियों ने अपने देश को अपने हाथ में लेलिया है।

वलोना में इटली कीसेना

इटालियन रणपोतों ने वलोना में एक सेना उतारी है। नगर निवासियों की सहायता के अर्थ यहसेना वहां उतरी है जो एपीरोट के आक्रमणों से दुःखित हो रहे थे। तीन रणपोत समुद्र तट पर पहरा दे रहे हैं ताकि आलवेनिया के बलवाई तोप बन्दूक न लेजा सकें।

आयर्लैंड के सिरे पर सुरंग

आयर्लैंड के किनारे पर सैंचेसगोर्डिन "नामी जहाज़ एक सुरंग से टकराया है। इस से पता लगता है कि आयर्लैंड के किनारे पर भी जर्मनी ने सुरंगें बिछादी हैं। जहाज़ का एक कप्तान और १३ आदमी नष्ट होगये।

जर्मन पीछे हटरहे हैं

"ईवनिंग न्यूज़" को ख़बर मिली है कि उत्तरीय फ्रांस में जर्मन लोग लावासी से समुद्र की ओर पीछे हटरहे हैं।

कियाचाओ में युद्ध

जर्मनी जहाज़ों ने जितने आक्रमण किये थे उन सब को चिटीसोक्रूज़र ने रोकदिया है। अब जर्मनी के जहाज़ कियाचाओ बंदर में जाखड़े हैं।

आंधियों के कारण सिंगराडू पर आक्रमण में देरी होरही है। समुद्र में तूफ़ान के कारण सुरंगें अपने स्थान से टूट गई हैं और जहाज़ों का आना जाना संकटमय होगया है। अधिक गोलाबारी शुरू होगई है।

बैल्जियम और फ्रांस का युद्ध

पैरिस में सरकारी सूचना से पता लगता है कि २८ ता० को जर्मनी ने डकसम्यूड पर दो हमले रात के समय किए। न्यूपोर्ट से डकसम्यूड तक जर्मनी ने प्रयत्न करना छोड़ दिया है। ईप्रस के उत्तर में हम आक्रमण कर रहे हैं। लाबासी और लैन्स में हम कुछ आगे बढ़े हैं किसी और जगह कोई विशेष बात नहीं हुई।

औस्टंड की हालत।

औस्टंड से आने वाले यात्रियों का कथन है कि यहां तोपों का गर्जन बराबर चलरहा है। वहां से सब नगर वासी भागगए हैं। लड़ाई पर जाने वाले और वहां से थक कर आने वाली जर्मन फ़ौजों से औस्टंड भरा हुआ है। जर्मनी ने अपने लड़ाई जहाज़ों के लिये ऐसा छप्पर बना लिया है जो जल न सके।

पटियाले के महाराज युद्ध से लौट आए।

२८ ता० को शिमले से तार आया है कि पटियाला महाराज बीमार होकर युद्ध से वापिस आगए हैं। महाराजा साहिब अभी युद्ध स्थल पर पहुंचने भी न पाए थे कि आप का स्वास्थ्य बिगड़ गया। और इसी आकस्मिक आपत्ति के कारण आपको देश लौट आनापड़ा।

———

विजय

सम्पादक-श्रीयुतहरिश्चन्द्र विद्यालंकार

विजय का तीसरा अङ्कमनोरंजक लेखों, चटकीली टिप्पणियों और ताज़े समाचारों से परिपूर्ण निकला है।

अमरीका में समभाव का संचार-ले० श्रीयुत जगन्नाथ खन्ना बी. एस. सी. इसमें लेखक ने कई घटनायें लिखकर बतलाया है कि अमरीका में किस प्रकार ऊँच नीच का भाव उड़ाकर समभाव का सञ्चार किया गया है।

२-मुख्यलेख—

सुख चैन की घाटी

'विजय' का स्वागत

जेलख़ानों का सुधार

३-हिन्दुस्तानी कुली और साहब लोगों के बूट-बम्बई के तिल्ली फटने के मुकदमे पर 'धनुर्धर' की टिप्पणियां।

४-इधर उधर की-बड़े मनोरञ्जक नोटों का संग्रह।

५-विविध समाचार

६-देहली समाचार

७-एकांतवासी की 'डायरी'

८-सेना [कहानी]

९-योरप का महाभारत

(ताज़े समाचार)

ग्राहक बनिये

मूल्य २॥)

प्रबन्धकर्त्ता-विजय

देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषानुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा)	॥=)
आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)	
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग	॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग	॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द	॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग	॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पतासाफ़हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार

बज़ाज़ा शहर मेरठ

आर्यसमाजों को सूचना

म० तेजूमल जी 'म' कनल प्रबन्धकर्त्ता देश सेवा यज्ञ, पो० तलोद अहमदाबाद सूचना देते हैं कि वह प्रचारक की ग्राहक आर्य्य समाजों को एक कापी राष्ट्रों की उन्नति, लेखक श्री ब्रह्मचारी इन्द्र जी वेदालंकार मुफ्त देंगे। समाजों को अपनी ग्राहक संख्या लिखकर उक्त महाशय से पुस्तक मंगा लेनी चाहिये ।

प्रबन्धकर्त्ता ।

७००) रूपये इनाम।

बाल्मीकि रामायण पर ।

श्री पं० राजारामजी प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवर्मेंट पञ्जाब ने २००) रु० और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रु० का इनाम उस के लिये रखा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। टीका की शैली यह है। (१) ऊपर मूल श्लोक नीचे उन के श्लोक के भाव अर्थ दे दिये गये हैं। जिस से हर एक श्लोक का अर्थ अलग २ साफ २ प्रतीत हो जाता है। (२) अच्छे २ उपदेश देने वाले (कंठ करने योग्य) श्लोकों पर निशान दे दिये हैं। (३) भाषा बड़ी सरल और मधुर है। यह ग्रन्थ हर एक गृहस्थ के घर में रहने योग्य है। क्योंकि यह गृहस्थ को खद् गृहस्थ बना देता है मूल्य ५।) रु० सजिल्द सुनहरी जिल्द बारा ५॥।)

३००) रूपये इनाम ।

श्रीमद्भगवत् गीता पर ।

भगवद्गीता के हिन्दी भाष्य पर श्री प्रसन्न होकर उक्त पं० जी को गवर्मेन्ट पञ्जाब ने ३००) रु० इनाम दिया है। यह धर्म ग्रन्थ भी प्रत्येक मनुष्य के पास होना चाहिये। मूल्य २) रु०

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत ।

ईश	=)	केन	=)
कठ	।=)	प्रश्न	।)
मुंडक और मांडूक्य	।=)	तैत्तिरीय	।=)
ऐतरेय	=)	छान्दोग्य	२)
बृहदारण्यक	२)	श्वेताश्वतर	।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।=)

उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)

दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)

चौथा भाग ॥=)

गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥

वेद उपदेश पहला भाग ॥)

दूसरा भाग ॥)

आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥

उपदेश मञ्जरी ।=)

प्रार्थना पुस्तक =)

ओंकार की उपासना =)

२००) रूपये इनाम ।

बाल व्याकरण-संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण ॥) साँख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=) इन दोनों पर पं० जी को गवर्मेंट से २००) रुपये इनाम मिला है। वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण

सविस्तर भाष्य समेत ३) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र ॥)

वेद और रामायण के उपदेश =)

वेद और महाभारत के उपदेश =)

वेद, मनु और गीता के उपदेश =)।

सामाजिक स्तुति प्रार्थना सजिल्द ≡)

मनुस्मृति का सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

आर्ष ग्रंथावलि ।

आर्ष ग्रन्थावलि में आज कल निरुक्त छप रहा है, जो वेदार्थ के लिये बहुत बड़ा उपयोगी है। सम्पादक पं० राजारामजी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर वार्षिक मूल्य ३)

पता—मैनेजर

आर्ष ग्रन्थावली

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२।३ मौताज ही में बुखार बन्द होता है।

डाक्टर बर्मन की बनाई—

फसली बुखार वो तिल्ली की दवा।

देखिये। इस दवा से यह हड्डी का टाटर कैसा पुष्ट हो गया है।

जूड़ी बुखार वो तिल्ली की दवा।

मोल—बड़ी शीशी ॥।=) छोटी शीशी ॥) डा०म०।=) और।-)

दवा सब जगह बिकती हैं। नकली दवा से सावधान।

दवा खाने के पहिले

दवा खानेके बाद

डाः एस. के. बर्मन ५, ६ [illegible] दत्त ष्ट्रीट कलकत्ता।

नँ० ७६

एजन्ट—बाबूराम जैन ए ड कम्पनी बड़ा दरीबा दिल्ली

विधवा की आवश्यकता

कुछ समय हुआ मेरी पहली स्त्री का देहान्त होगया है। अब मैं एक विधवा के साथ विवाह करना चाहता हूं। विधवा की आयु २०, से २५ तक होनी चाहिये। विधवा कुछ पढ़ी लिखी होनी चाहिये। शेष पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते सेकीजिये।

बा. धन्नाराम स्टेशनमास्टर

बिलासपुर

सरगोधा लाइन

उस्तरे को बिदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही ज़िद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट 'का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है. कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, विक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पता:—

बाबू पंचमसिंह वर्मा

मालिक, कारख़ाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं। ।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

महाशयजी

यदि—हमारी बताई हुई सेवन विधि द्वारा हमारे श्वासान्तक चूर्ण से ८ वर्ष तक का दमा और खांसी शर्तिया जड़ से दूर नहो तो खर्च सहित मूल्य वापिस मू० १२ तोला चूर्ण का सिर्फ़ २) डा० खर्च ।) आने।

आर्य्य, औषधालय, रुस्तमगढ़

(एटा यू० पी०)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (व)

चान्द--जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गरमी जाड़ा बरसात सब ऋतुओं में सेवन कर सकते हैं।

२५) रु० इनाम सत्यता की गारन्टी।

अमूलय रत्न है।। **ब्राह्मी बूटी वटिका** मौका न चूकें लाभ उठायें

मेरी बनाई हुई ब्राह्मी वटिका को विधि पूर्वक सेवन करने से गुण न हो तो सरकारी सेविङ्ग बैंक में जमा किये २५) रु० दे दुंगा अपूर्व आश्चर्य जनक अतीव गुण दायक जादू की तरह प्रभाव दिखाने वाली औषध है जिस का यश आज भी जगत् में विख्यात हो रहा है।

देखियेगा—ब्राह्मि वटिका के लिये मुख्याध्यापक श्रीमान् कविवर पं० प्रभुदयालजी वैद्यवाचस्पति तथा वैद्य शास्त्री सनदयाफ्ता पंजाब यूनिवर्सिटी आयुर्वैद्यक क्लास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के क्या कहते हैं श्रीमान् पन्डित नन्दकिशोर शर्माजी आप की जगत्विख्यात जगत् प्रसिद्ध महौषधि ब्राह्मी वटिका पहिले मैंने खुद सेवन करी और अब अपने शिष्य वर्गों को भी कराई जिस से हम को बड़ा ही लाभ हुआ है जिस का मैं अपनी व्याख्या द्वारा गुण वर्णन करना बुद्धि से बाहिर समझता हूं तो भी इतना मैं जरूर कहूंगा कि जिन २ पुरुषों ने एक चालीस दिन भी इस को सेवन कर लिया है उन की बुद्धि बृहस्पति के तुल्य होने में कोई भी सन्देह नहीं है विशेष करके भुला हुआ पाठ फिर याद आ जाता है। और बुद्धि का नया चमत्कार दिखाई देने लगता है इस लिये ज्यादा मैं क्या कहूं आप को धन्यवाद करता हूं कि इस गुप्त रत्न को प्रगट करके हम सब को बहुत लाभ पहुंचाया है।

महाशय जी और देखिये—डठोली से श्रीमान् मुन्शिफ कृष्णउर्फ, भुजवीर यादव क्या लिखते हैं—महोदयजी कोटिशः धन्यवाद है पहिले मैंने दो तीन दफा ब्राह्मी वटिका मंगवाई जिस को मैंने खुद भी और औरों को खिलाई हम सब को बहुत ही फायदा किया है कृपया ३ डिब्बी और भेजियेगा। महाशयजी! हमारे पास सैंकड़ों नये नये प्रसंशा के पत्र हैं। इस ब्राह्मी वटिका को पहिले श्रीमहान् कवि कालिदास श्री तुलसीदास और महात्मा श्री शंकराचार्य्य तथा श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हमेशा सेवन करते थे और जो मनुष्य उन से सात्विक बुद्धिवर्द्धक औषधि सेवन करने की राय लेते थे उनको वह ब्रह्मी बूंटी वाटिका का ही प्रयोग बतलाते थे इसके गुण देखिये—

वटिका बुद्धिबर्द्धिन्यो यः खादेच्छुचेतसः। धारितं विस्मरेन्नैव, विस्मृतं चाऽशु संस्मरेत्
वर्यां स्मृतिप्रदाकष्ठपांडुमेहास्तक सजितविषशोथज्वर हरी मैधायुबलववाधिनी॥

अर्थ—ब्राह्मी बूंटी वटिका स्वर को मधुर करती है, तथा स्मरण शक्ति बढ़ाती है। कुष्ठपांडु बवासीर खाँसी, विष सूजन, ज्वर, इन को नष्ट करती है। इस ब्राह्मी बूटी वटिका के सेवन से बुद्धि (अकल) स्मृति (Memory) याददास्त की ताक़त बढ़ती है उन्माद अथवा पागलपन चित्त की चंचलता गर्मी, वहम, दिल का धड़कना, इलकापन दिल की कमज़ोरी नष्ट होती है। और शरीर चुस्त चालाक बलवान् और दिल दिमाग़ ठंढा रहता है। इसको वकील मुख्तार मास्टर और गायन विद्या के प्रेमियों और स्मरण शक्ति (याददास्त) की ताक़त हीन विद्यार्थियों के लिये परम हितकारी है।

और मूल्य एक डिब्बी १॥) रु० डाक व्यय ।) और तीन डिब्बी लेने पर डाक व्यय साफ छः डिब्बी लेने से एक डिब्बी मुफ्त और १२ डिब्बी, लेने से केवल १२) पोष्ट भिन्न। अनुपान पथ्या-पथ्य सेवन विधि साथ भेजेंगे।

दवा मिलने का पता:—

पं० नदकिशोर शर्मा सन्त-पुस्तकालय हरद्वार यू० पी०

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥

पता—रामचद्र वैद्य शास्त्री अलीगढ़ सिटी. यू. पी.

सच्ची बात है

बाल उड़ाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ९ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर

(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी शर्राफ़, ख़ाना गली समोसान देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से बैठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

Registered No. L.807

धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ।

प्रबन्धक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२२ कार्त्तिक सं १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० ७ नवम्बर १९१४

संख्या ३०
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

वादी का मूल्य	१।।)
प्रचारक के ग्राहकों से	१।)
अजिल्द का मूल्य	१।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अनन्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

रत वर्ष को राष्ट्र बनाना
इस पुस्तक कोआदि से
पूर्वक अवश्य पढ़िये।
और उन्नति की पुकार
तो देती है पर राष्ट्र और
, यह बहुत थोड़े लोग
जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक	प्रति पंक्ति	प्रति अंक	।) प्र०
तीन मास	"	"	=) "
छः "	"	"	-)॥ "
सालभर	"	"	-) "

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़पत्र नहीं बंट सका।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सबसे प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पता—प्रबन्धकर्त्ता धर्म प्रचारक पत्र—देहली

निर्बल सेवक।

अपने उद्देश्य का एक मात्र साप्ताहिक पत्र।

आठ पृष्ट और मूल्य केवल १॥) वार्षिक।

अवश्य मंगाइए!!! क्योंकि:-

१—इसमें केवल निर्बलों की सेवार्थ जन्म लिया है।

२—आपस के झगड़े मिटा एकता करना इसका धर्म्म है।

३—यह पत्र आर्थिक लाभ के विचार से नहीं निकाला गया। पत्र के लिए बिना हिसाब व्यय होता है।

मैनेजर निर्बल सेवक "धर्म"

देहरादून

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको चाँदी का पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ावेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र तय्यार हो गई।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिसकी पहिली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है। इसके लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं। एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है। इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिये क्या गुण आवश्यक हैं। जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक

देरली

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

बिदारी क़न्द-खावो।

और लाल बन जाओ इसी महीने पहाड़ से इस की खुदाई होती है-इस कारण शीघ्रता करो कीमत १) रु० सेर।

पता. पं० काशीनाथ नागर

ज्वालापुर जि० सहारनपुर

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० छाप =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

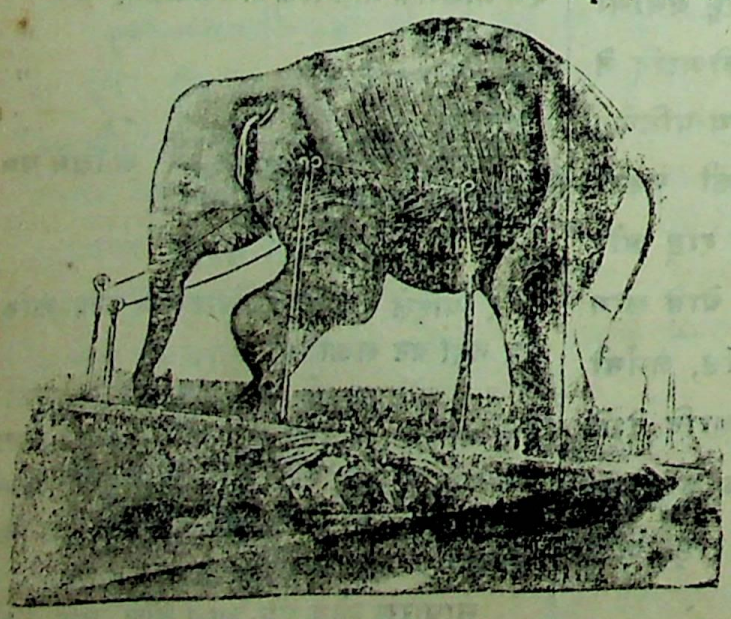

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ॥) रानीपद्मा =) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर =) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएँ ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) मोक्षपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) इकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां।) वैदिक विवाहादर्श १) तांतिया भील =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(पू) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धाञ्जलि।

शतं ते राजन्भिषजः सहस्र
मुर्वी गभीरा सुमतिष्टे अस्तु।
बाधस्व दूरे निर्ऋतिं पराचैः
कृतंचिदेनः प्रमुमुग्ध्यस्मत्। ऋग्वेद।१।२४।

हे परमात्मन्! हम इस संसार में नाना प्रकार की व्याधियों और कष्टों से दुखित रहते हैं और नाना प्रकार की सामाजिक तथा व्यावहारिक आपत्तियां भी हम को रात और दिन खिन्न करती हैं। अतः आप से हम विनय पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे हृदयों और शरीरों तक के राजा हैं हमारा सर्वस्व आप के राज्य में निर्बाध रहता है। हमारे आश्रय स्वरूप भी आप हैं। आप अपने नाना प्रकार के विद्वान् वैद्यों और रसवेत्ताओं से हमारी आधि-व्याधियों को दूर करें और आप की हमारे ऊपर बड़ी भारी कृपा और दया की साया रहे। हमारे कष्टों को दूर से ही निवारण करें और हमें शक्ति दीजिये कि हम अपने किये पापों को शमन कर सकें। हे परमात्मन्! आप उसी के सहायक हैं जो अपने आप कार्य में प्रवृत्त होवे। हमें आप बल दीजिये कि सब कष्ट दूर हो जांय।

आत्मिक दृश्य।

"त्रिर्ह वै पुरुषो जायते"

एतन्नु एव मातुश्चाधि पितुश्चाप्रजायते। अथ यं यज्ञ उपनमति स यद्यद यजते तद्द्वितीयं जायते। अथ यत्र प्रियेत यत्रैन मग्नौ अभ्यादधति स,यत्ततः सम्भवति तृतीयं जायते तस्मात्त्रि पुरुषोऽजायत। इत्याहुः।

जीवन का रास्ता निकालना वास्तव में बड़ा कठिन है और साथ ही जीवन का तत्व ढूंढ निकालना भी सहल नहीं है। मनुष्य सांसारिक काम धंधों में फंसा हुआ अपने भूत भविष्यत् को तिलमात्र भी नहीं सोच सकता। कभी भविष्यत् कार्यों में भी भूत की बातें सोच कर निराश हो जाता है। जगत् में उसे पद पद पर कठिनाइयां प्रतीत होती हैं और जीवन बहुधा दूभर सा लगता है। शोक से देखना पड़ता है कि भारत में अभी जवानी भी ढलने नहीं पाती कि वृद्धावस्था की सोच पड़ जाती है, और एक प्रकार की अकर्मण्यता छा जाती है। नवयुवक अपने बाल्य जीवन के संतोषप्रद न होने पर ही बहुधा निराश हो जाते हैं। परन्तु ये सब बातें सांसारिक दृष्टि में लिप्त जनों को हुआ करती हैं। जीव या आत्मा यदि अपनी सत्ता को न भूले तो निराशता कभी नहीं होती क्योंकि भविष्यत् का बनाना भी उसी आत्मा के आधीन है। इस आत्मा की निरन्तर सत्ता मनुष्य को बड़े बड़े समयों में भीबड़ा ढाढस बंधा देती है। मनुष्य को निश्चय हो जाय कि मरण कोई वस्तु नहीं है। बस, फिर कष्टों और बाधाओं से डर नहीं लगता। इस मृत्यु के तत्व को खोजते २ ऋषि हमको बतलाते हैं कि आत्मा पुरुष स्वयं तीन बार पैदा होता है। जब कि माता के गर्भ से पैदा होता है और पिता की गोद में पलता है तो वह उसका पहला जन्म है। इस जन्म में आत्मा बाल होता है, सांसारिक कार्यों की सत्यासत्यता का ज्ञान नहीं होता। परन्तु ज्यों २ वह और बड़ा होता जाता है त्यों २ वह ज्ञान और कर्म के क्षेत्र में बढ़ता जाता है और बाद को इस योग्य हो जाता है कि वह अपने कर्त्तव्यों को समझ उसे क्रिया क्षेत्र में उतरना पड़ता है। अपने भावी कष्टों का उसे उत्तरदाता होना पड़ता है और इस जीवन यज्ञ में उसे नाना प्रकार के कर्म करने पड़ते हैं और हरेक प्रकार के यज्ञ की दीक्षा उसे लेनी पड़ती है। जो काम भी अच्छा और भला किया जाता है वह यज्ञ है। इसी लिये शास्त्रकारों ने भूतयज्ञ (सर्व प्राणियों पर दया करके उनका पालन करना) ब्रह्मयज्ञ (परमात्मा की स्तुति प्रार्थना उपासना करना) देवयज्ञ, सुगन्धित द्रव्यों से होम करके सर्व दिव्य गुण वाले महात्माओं को तुष्ट करना तथा अपना भी लाभ करना; अतिथि यज्ञ-सब विद्वज्जन साधु संन्यासियों की सेवा करना और पितृयज्ञ, अपने पालन करने वाले सब पूज्य आत्माओं को [illegible] प्रकार ५ प्रकार के यज्ञ बताये हैं जिन पर आचरण करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। इन सब प्रकार के यज्ञों से दीक्षित होना ही इस पुरुष का द्वितीय जन्म है। इसी प्रकार जब मनुष्य इस शरीर को छोड़ कर देह के भस्मीभूत होने पर जन्मांतर में जाता है तो वह इसका तीसरा जन्म है। यह तीनों जन्म क्रमशः एक दूसरे के उपकारक हैं और सिलसिलेवार सदा होते रहते हैं। इन्हीं जन्मों को मन में रख कर मनुष्यों को अपने कष्ट निवारण करने चाहियें। निराशता को छोड़ कर अगले जन्म के लिये साथ होना चाहिये। संसार यज्ञ में बड़ी वीरता तथा धीरता से कार्य करना चाहिये। पापों को छोड़ श्रेय काम करना चाहिये जिससे अगला जन्म पाप युक्त न हो क्योंकि परमात्मा तो कर्मफल देंगे ही। यदि संसार-यज्ञ में अच्छे दीक्षित होंगे तब तृतीय जन्म जो मरणोत्तर है बड़ा शुभ और सुखमय होगा। हम सब को उसी जन्म को शुभ करने का प्रयत्न करना चाहिये, संसार-यज्ञ में पूर्ण दीक्षित होकर अपना जीवन सफल करना चाहिये और निराशा को सदा दूर रखना चाहिये। क्योंकि ये निराशा पिशाचिनी ही सदा यज्ञ में बाधा किया करती है। देव लोगों ने यज्ञ से ही सामाजिक राष्ट्रीय तथा वैय्यक्तिक निराशा को छिन्न भिन्न कर दिया था। जिस प्रकार व्यक्ति के तीन जन्म होते हैं। ठीक उसी प्रकार राष्ट्र तथा समाज के भी तीन जन्म होते हैं। उसी प्रकार राष्ट्र या समाज को भी अपनी बाल्यावस्था गुज़ार कर कार्य यज्ञ में दीक्षित होना पड़ता है। इस सामाजिक तथा राष्ट्रीय यज्ञ में भी नाना प्रकार की बाधायें आजाती हैं और सार्वजनिक निराशता के बादलों को पैदा कर देती है। समाज अपनी सत्ता को भूलजाती है। राष्ट्र अपनी शक्तियों को भूल जाते है। ऐसी अवस्था में समझ लेना चाहिये कि राष्ट्र समाज के कार्ययज्ञ का विध्वंस होरहा है। उस समय भी कर्तव्य यही है कि अपने आपको न भूल जाय प्रत्युत अपने जातीय राष्ट्रीय तथा सामाजिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

आत्मा के जन्मान्तर में कृत कृत्य होने के लिये सदा यत्नवान रहे। यही आत्मीय ज्ञान है; यही आत्मीय स्वतंत्रता है और यही आत्मीय राज्य है। अपने को भूलजाना ही पराधीनता है, अपने को भूलजाना ही दुःख है अपने को भूलजाना ही मर मिटना कहलाता है न कि जन्म। अपने को विस्मरण करना अमर बनने के स्थान में सदा मृतवत बनना है। व्यक्ति व्यक्ति का जीवन मिलकर सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन बनाया करता है, इसी प्रकार व्यक्ति २ का अपने को भूलजाना ही सामाजिक राष्ट्रीय आत्मा की सांसारिक पराधीनता का कारण होजाता है। और यही कारण है कि एकसी अवस्थाओं में सार्वजनिक निराशता देशभर में फैलजाती है। आर्य भाईयो! जागो, हम सब उसी आत्मा के बने हुवे हैं, उसी अमृत मय पिता के पुत्र हैं, उसी नित्य आत्मा के बल पर हम सम्पूर्ण सांसारिक नीचता तथा दासताओं को एक पल में छिन्न भिन्न करके और सार्वजनिक निराशता तथा अकर्मण्यता पिशाचिनी का समूल नाश कर धीरता तथा साहस से ऋषि मुनियों से गाये गये स्वराट् पद का सेवन करें तथा अपनी व्यक्ति और समाज और राष्ट्र को भावी कष्टों से मुक्त करके इस कार्य यज्ञ में दीक्षित हों।

ओ३म् शम्।

जय २ दयानन्द।

जय जय दयानन्द मुनिराज
सब पाखण्ड-मिटाने वाले!
लुप्त हुए थे चारों वेद
तममय फैल गए मत भेद
पर वे हर कर सारे खेद
आये ज्योति दिखाने वाले॥

अपनी अपनी माया जोड़
पाखन्डी उठ गये करोड़
स्वामी सब का भांडा फोड़
प्रगटे पाप मिटाने वाले॥
करके वैदिक धर्म प्रचार
कीना जग में सुख संचार
नाश कर गये सब अनाचार
सत्या सत्य बताने वाले॥
विधवाओं की सुनी पुकार
दुखिया चेनुको लिया निहार।
सब के दुःख हर लिये अपार
सारे कष्ट हटाने वाले॥
रच करके सत्यार्थ प्रकाश
जग में फैला गये प्रकाश।
पापी वञ्चक किये उदास
धर्म का मर्म सिखाने वाले॥

आर्यसमाजों के मन्त्री महाशयों से

आवश्यक निवेदन

श्री पूज्य महात्मा मुन्शीराम जी ने १॥ वर्ष तक डेपुटेशन द्वारा, गुरुकुल की सेवा करने के लिये गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पद से अवकाश लिया है। श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने अपने वार्षिकाधिवेशन में १॥ वर्ष के लिये मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य्य का कार्य करने की आज्ञा मुझे प्रदान की है। मेरे लिये इस कार्य का बोझ बहुत ही अधिक है और उत्तरदायित्व भी बहुत अधिक। इस के अतिरिक्त मुझे लगभग ५ अन्तर प्रति दिन उपदेशक महा विद्यालय में पढ़ाना पड़ता है, वैदिक मेगज़ीन का सम्पादन भी मुझे करना पड़ता है। मेरे अनुपस्थित होने से न केवल इन सारे कामों में हानि ही होती है किन्तु मेरे लिये लौट कर अविशिष्ट कार्य को समाप्त करना असम्भव हो जाता है इस लिये गुरुकुल के महोत्सव तक लाहौर आर्य समाज के उत्सव के अतिरिक्त और किसी आर्यसमाज के व आर्य कुमार सभा आदि उत्सव में सम्मलित न हो सकूंगा। आर्य समाजी तथा आर्य कुमार सभाओं के अधिकारियों की सेवा में सविनय निवेदन है कि वे मुझे निमन्त्रण भेजने का कष्ट न उठावें। मैं उन की सेवा तो कर ही न सकूंगा, वृथा डाक व्यय होगा और पत्र व्यवहार में जो समय जाता है वह भी वृथा ही जावेगा। गुरुकुल के अन्य उपाध्यायगण भी फाल्गुण मास तक नहीं आसकते, इन के जाने से भी पढ़ाई में बड़ा हर्ज होता है, इस लिये उनको बुलवाने के विषय में भी फाल्गुण तक मेरे साथ पत्र व्यवहार करने का कोई महाशय कष्ट न उठावें।

रामदेव
स्थानापन्न मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी
हरद्वार

प्रवेशार्थ प्रार्थनापत्र।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में नये ब्रह्मचारियों के प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र १५ जनवरी तक निम्न लिखित पते पर पहुंच जाने चाहिये। प्रार्थना पत्र (दाखले के फ र्म) शाखा गुरुकुल कार्यालय से मिलेंगे।

आपका—गोपीनाथ
प्रबंधकर्त्ता—
शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र
पो० थानेसर ज़ि० करनाल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाजों के शास्त्रार्थ।

जन्म से ही आर्य समाज को शास्त्रार्थ करने की आवश्यकता रही है। जब कि बेढब पहाड़ी पर मकान बनाना हो, तब कुदाला चलाना ही पड़ता है। उसी यत्न में कई बार पत्थरों से टक्करें खाकर कावला रुक जाता है। तब और भी अधिक परिश्रम करके, कई अन्य साधनों से उस पत्थर को उखाड़ना पड़ता है। जब तक मकान के लिये नीचे की भूमि तय्यार न हो जाय, तब तक नींव खोदने का प्रश्न नहीं उठता भूमि साफ़ हो जाने पर नींव का खुदना प्रारम्भ होता है। नींव खोदने में भी बीसियों पत्थरों का सामना पड़ता है! उनसे भी लड़ाई करनी पड़ती है। जब नींव खुद गई, तब दीवारें उठाई जाती हैं।

जिस समय ऋषि दयानन्द ने भारत-भूमि पर श्रेष्ठ आर्य धर्म का प्रचार प्रारम्भ किया, उस समय यहां की अवस्था एक बेढब पथरीली पहाड़ी जैसी ही थी। सत्य और जातीय गौरव का भवन तय्यार करने के लिये भूमि का साफ़ करना और नींव का खोदना आवश्यक था। ऋषि दयानन्द ने यह कार्य किया। कार्य शीघ्रता से समाप्ति की ओर जा रहा था, जब दैव ने ऋषि का हरण कर लिया। उस समय भगवान ने आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं के मनों में प्रेरणा करके उन्हें उसी खोदने के काम पर लगा दिया। २० बरस तक यही कार्य चला, और खूब ज़ोर से चला। आर्य समाज के विद्वानों ने धार्मिक क्षेत्र में ऐसे ऐसे मार्के मारे कि संसार उसका कायल हो गया। काम धीरे २ हुआ, किन्तु फिर भी नींव खुद गई। ऋषि दयानन्द भविष्य दर्शी थे। वे जानते थे कि किसी दिन नींव का खोदना समाप्त हो जायगा, तब नींव का भरना और दीवारों का खड़ा करना आवश्यक होगा। अपने अनुयायियों को बिना नींव भरने और दीवार खड़ा करने की शिक्षा दिये वे अपने कार्य्य को अपूर्ण समझते थे। इस लिये जिस थोड़े से भाग में नींव खुद जाती थी, वहीं उसे भरना शुरू कर देते थे। उन्हों ने अपने सामने ही कई आर्य्य समाज स्थापित कर दिये। ऋषि के पीछे जिन महानुभावों ने नींव खोदने का काम अपने ज़िम्मे लिया, उन्होंने उसके भरने का काम भुलाया नहीं, प्रत्युत खूब ज़ोर से चलाया।

आज क्या अवस्था है। नींव लगभग खुद चुकी है, इस से शायद ही किसी को इन्कार हो। भारत में कई भाग ऐसे हैं जो अभी नहीं खोदे गये, किन्तु अधिक भागों में नींव खुद गई है। अब हमारे सामने काम क्या है? काम है नींव भरने का, और दीवार खड़ा करने का। अब हमारा मुख्यकार्य आर्य समाजें स्थापित करके नींव का भरना और फिर उस नींव पर वैदिक धर्म का भवन खड़ा करना है। आर्य समाज नींव होगी, और संसार की आर्य जनता का भवन उसके ऊपर खड़ा होगा। अब हमारे सामने यही काम है। इस समय आवश्यक है कि आर्य समाओं की संख्या बढ़े, आर्य पुरुषों की संख्या भी खूब बढ़े, और साथ ही साथ आधार पर दीवारें भी खड़ी की जाँय। आर्य समाज की सीमाओं के बाहिर भी वैदिक धर्म का शब्द पहुंचे।

क्या वह करीगर कभी बुद्धिमान हो सकता है, जो नींवें खोदने के साथ २ सारी पहाड़ी को खोद देता है? क्या नींव के आस पास की जगहों पर भी कावले को पटकते जाना कोई बुद्धिमत्ता का काम है? नींव खुद जाने पर पहाड़ी को दूसरे स्थान से खोदिये, पत्थर निकालिये और उन्हें घड़कर दीवारों में चुनने लायक बनाइये, किन्तु सारी पहाड़ी को न खोदते जाइये, क्योंकि उस के खुद जाने पर न नींव बाकी रहेगी, न दीवार। आर्य समाज के लिये नींव खुद चुकी है। अब भी यदि हम पहाड़ी को खोदते ही जायँ तो हमें बुद्धिमान कौन कहेगा। खण्डन करते हमें आधी शताब्दी होने को आई। किन्तु अभी हमारी यह वासना नहीं मिटी। हमारी राय है, और आर्य समाज के अच्छे अच्छे प्रतिष्ठित विचारकों की राय है कि आर्य समाज को अब अधिक शास्त्रार्थों की आवश्यकता नहीं रही। केवल खण्डन और शास्त्रार्थ नींव खोदने के लिये थे, वह कार्य लगभग हो चुका। अब उस कार्य में अधिक समय बिताना ठीक नहीं है। अब आवश्यकता है मण्डनात्मक कार्य करने की। समाज की शक्तियों को बढ़ाना, आर्य पुरुषों को सच्चे अर्थों में आर्य पुरुष बनाना, ये सब कार्य हैं तो अब आर्य्य समाज के लिये करने आवश्यक हैं।

हमारा विचार है कि आर्य्य समाज ने इस बात को कुछ समझा हुआ है। शास्त्रार्थों को अब वह गौरव नहीं दिया जाता, जो पहले दिया जाता था। किन्तु फिर भी कई कारणों से एक पुरानी रीति के अवशेष चले आते हैं। कई समाजें अपने उत्सव में रौनक करने के लिये शास्त्रार्थ कराती है, कई व्यक्ति अपनी आजीविका सम्पादन करने के लिये अन्य धार्मियों से भिड़ते फिरते हैं और बहुत से सज्जन ऐसे भी हैं जो अपनी इस दिलीराय के अनुसार खंडन का कार्य करते हैं कि आर्यसमाज को खण्डन की आवश्यकता है। हमारी सम्मति में उनकी भूल है। आर्यसमाज को इस समय खण्डन की नहीं, मण्डन की आवश्यकता है। आर्य्यसमाज अब दूसरे सम्प्रदाय वालों से शास्त्रार्थ नहीं चाहता, अपने अन्दर ही शास्त्रों के अर्थ चाहता था।

हम इस विषय की ओर आर्यसमाजों का विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। इस लेख में हमने केवल एक साधारण समीक्षण किया है। अगले अङ्कों में इस विषय को विस्तार पूर्वक लिखते हुए हम बतायेंगे कि इस समय आर्य समाज को अन्य मत वालों से क्या सम्बन्ध रखना चाहिये और क्यों?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जर्मनी का सम्राट्

कैसा है ?

(एक अमरीकन की राय में)

प्रस्तावना ।

[जर्मनी, आस्ट्रिया हँगरी, और टर्की ये तीन शक्तियां इस समय प्रत्यक्षतया संसार से लड़रही हैं। आस्ट्रियाहँगरी युद्ध का प्रारम्भ करने वाला है, इसलिये युद्ध के प्रारम्भ की उत्तरदातृता उसी की है, किन्तु उसने पराजय पर पराजय खाकर अपने आप को धन की जगह ऋण कर दिया है । टर्की ने लड़ाई प्रारम्भ की है, तो जर्मनी के कंधों पर। इसलिये वस्तुतः जर्मनी अकेला दुनियां से लड़ रहा है, चकित जनता पूछती है कि यातो जर्मनी पागल है या उसके अन्दर असाधारण शक्ति होनी चाहिये। जर्मनी ने किस आधार पर युद्ध किया है ? ये सब प्रश्न उठते ही जर्मन सम्राट् की ओर निर्देश उंगली उठ जाती है। वह सामने जर्मनी सम्राट् खड़ा है। उसकी राजपूती पूंछे मरोड़कर ऊपर को चढ़ाई हुई हैं, मानों जर्मनी के 'सूर्य के अन्दर स्थान' की ओर निर्देश कर रही है। चेहरा यौवन मद से दमक रहा है, माथे पर निरन्तर स्थायिनी त्योरियां असन्तुष्टमन का परिचय दे रही हैं। भवें तनी हुई हैं, ठोड़ी यद्यपि छोटी है, तो भी मानों पत्थर की घड़ी हुई है । लड़ने वाली दुनियां ने इस उग्रमूर्ति का नाम "युद्ध का देव" रखा है। लाखों व्यक्ति मर रहे हैं, किस लिये ? अंग्रेज़ी पत्र उत्तर देते हैं, "युद्ध के देव" की रुधिर प्यास बुझाने के लिये। सारा संसार जानने का उत्सुक है कि वह 'युद्ध का देव' कैसा है ? उसका स्वभाव उसका कार्य, उसकी नीति क्या है ? आज हम अपने पाठकों की ऐसी जिज्ञासा पूर्ति करने के लिये कैसर के विषय में एक अमरीकन यात्री की राय देते हैं। उससे पता लगेगा कि उस अमरीकन की राय में कैसर न देव है न राक्षस है—वह एक मनुष्य है, जिसमें कई गुण और कई अवगुण हैं। इन सब के होते हुए भी वह एक विशेष व्यक्ति है। हमारे पाठक इन लेखों में कैसर का बड़ा मनोरंजक और बड़ा वास्तविक चित्र पायंगे। साथ २ वे जर्मनी की कई समस्याएँ जान कर युद्ध की घटनाओं को भी समझ सकेंगे।

अमरीकन लेखक, जिनकी राय का हम इस अंक से अनुवाद शुरू करते हैं, बड़े प्रसिद्ध यात्री हैं। लगभग सारे भूमण्डल में आप चक्कर लगा चुके हैं। एशिया और योरप के संबन्धों पर आपकी पुस्तक प्रसिद्ध है। इङ्गलैंड के गुण दोष पर भी आपने एक प्रामाणिक पुस्तक लिखी है। "जर्मनी और जर्मन लोग" इस नाम की जो पुस्तक आपने १९१३ में लिखी थी उसके एक परिच्छेद का शीर्षक है 'अविवेकी'। इसी शीर्षक के नीचे जर्मन सम्राट् के गुण दोषों का आपने विवेचन किया है। उसी का भावानुवाद हम अपने पाठकों की भेंट करते हैं।

सम्पादक]

व्यापी सम्राट्

जब कोई यात्री इंग्लैंड पर लिखता है, तो उसे खेलों की चर्चा करनी पड़ती है, जब वह भारतवर्ष में पहुंचता है तो ज़ातपांत को नहीं भुला सकता, और जब वह अमरीका में पहुंचता है तो राजनीति पर बल दिये बिना नहीं रह सकता। इसी प्रकार, जर्मनी में जाकर वह किसी ओर को देखे; चाहे वह सेना पर दृष्टि डाले, चाहे जलीय शक्ति का इतिहास देखे, चाहे वह राज्यसंगठन की परख करे और चाहे वर्त्तमान राजनीति के रहस्यों का अनुशीलन करे, उसके सामने जर्मन सम्राट् आ पहुंचता है। वह व्यापार और शिल्प सम्बन्धी व्यौरों को देखने लगता है, या सामाजिक शासन पर दृष्टिडालता है, तो सम्राट की मूर्ति सामने आजाती है। वह कील बन्दरगाह में जर्मन लोगों की समुद्र क्रीड़ा, अथवा थ्रेंकफोर्ट में उनके नौका चलाने के सान्मुख्यों को देखने जाता है, तो आगे जर्मन सम्राट् को खड़े पाता है।

एक विद्यार्थी बर्लिन पोस्टडम या एहलम शूह की यात्रा करता है, या पहुंच कर हम्बर्ग, ब्रीमन या कील के बन्दरगाह पर पहुंचता है; अथवा आकाश में आंख उठाकर २५० मील यात्रा करके लन्दन आते हुए एक हवाज़ को देखता है—जर्मन सम्राट् वहां भी विद्यमान है। क्या यह झाड़ियों से घिरा हुआ महल है। ये राजधानी के शुद्ध और घोड़े बाग़ या आभूषण हैं? क्या यह घरेलू या विदेशी राजनीति का कोई प्रश्न है ? देखो तो आप यहां सम्राट् का हाथ पायंगे। सम्राट् की राय और प्रभाव, उसने जो कहा है, और जो नहीं कहा है, उसका असर जर्मनी के जीवन की अस्थिमज्जा में समाया हुआ है। हम जर्मन सम्राट् को पसन्द करें या पसन्द न करें, एक सत्ता के शासन को उत्तम समझें या घृणा की दृष्टि से देखें, नियन्त्रण के भावको अच्छा समझें या उस फौलादी ढांचे पर शोक प्रकाशित करें जिस में जर्मन जीवन घिरा हुआ है, किन्तु थोड़ी देर के लिये यह प्रश्न दूर रख दीजिये। हमारे सामने एक व्यक्ति है, जो २५ वर्ष में स्थलीय योरप में सब से अधिक शक्तिशालिनी और संसार की तीन प्रबलतम जातियों में से एक जाति के जीवन में ऐसा परोया गया है कि जब आप उस जाति को कहीं छूते हैं तो उस व्यक्ति को छूते हैं, और जब आप उस जाति पर किसी ओर से विचार करें, या उनका किसी तरह वर्णन करें, आप देखते हैं कि सम्राट् बीच में आ गया है।

मुझ से पूछिये तो मैं इस परिच्छेद को अनलिखा ही छोड़ देता। जीते हुए व्यक्तियों के विषय में उधेड़ बुन करने का मुझे शौक नहीं है, फिर वे चाहे जर्मन सम्राट् के समान बड़ी ऐतिहासिक और सामाजिक महत्ता रखते हों। किन्तु सम्राट् के विषयमें लिखे बिना जर्मनी के विषय में कुछ लिखना अपनी छाया से भागने के समान है। जब जर्मनी के किसी भाग के पीछे सूर्य्य आता है, तो जो छाया पड़ती है, वह जर्मन सम्राट की ही होती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह मैं इस लिये नहीं लिखता कि कोई इससे प्रसन्न होगा, क्योंकि इस प्रकार एक व्यक्ति के जाति भर में फैल जाने से जर्मनी और उसके बाहिर के भी अनेक लोग असन्तुष्ट से हैं, और मैं अमरीकन हूं, मैं स्वाधीनता का पक्षपाती हूं, इसलिये इस अवस्था को कभी सन्तोष से नहीं देख सकता। किन्तु बात यह है कि जर्मन सम्राट दूसरे विलियम को छोड़ कर जर्मनी के विषय में कुछ लिखना वहाँ के हर एक प्रश्न, हर एक संस्था, और हरएक समस्या की असली चाबी को भुला देने के समान है।

(क्रमशः)

संसार की गति

टर्की युद्ध में आगया

टर्की भी युद्ध में आगया। कहते हैं बिना सूचना के उसने रूस के जहाज़ों पर आक्रमण कर दिया। भारत के वायसराय ने एक घोषणापत्र निकाल कर बतलाया है कि टर्की के अनुचित व्यवहार ने ब्रिटिश सरकार को बाधित कर दिया है कि वह भी अब उसे अपना मित्र न समझे। इस में कई कारण भी दिये गए हैं। रूस जर्मनी और आस्ट्रिया से भिड़ा हुआ, सार्विया अपनी रक्षा में लग रहा है, ऐसी दशा में टर्की से लड़ने का प्रधान भार अंग्रेज़ी सरकार पर ही आपड़ता है। यह चिन्ताजनक बात है। इस बात का सभी को दुःख हैं कि ब्रिटिश सरकार इस दुर्घटना को न रोक सकी, इस युद्ध से टर्की को क्या हानियाँ होंगी, यह समय बतलायगा, किन्तु ब्रिटिश सरकार के लिये यह चिन्ता का समय है। दक्षिण अफ्रीका में विद्रोह और ईजिप्ट पर टर्की से युद्ध ये दो बड़े भारी पेच आ पड़े हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के मुसलमान निवासियों के विचारों की भी देख रेख रखनी होगी। इस समय इंग्लैण्ड अपने राजनीतिज्ञों के दिमाग़ों पर ही भरोसा रखता है। आशा रखनी चाहिये कि इन सब आपत्तियों में सत्य और न्याय का ही अन्तिम विजय होगा।

इन्दौर से सर चन्दावर कर की विदाई।

जब सर चन्दावरकर इन्दौर में दीवान बनकर गये थे, लोगों ने आप से बड़ी आशायें की थीं, आप से कई लोगों ने वे ही आशायें की थीं, जो बड़ोदे में रमेशचन्द्रदत्त ने पूरी की थीं। इतनी जल्दी आपकी वहां से विदाई सुनकर किसे शोक न होगा। हमें सर चन्दावरकर की कई सम्मतियों से कितना ही मतभेद हो परन्तु हम यह अवश्य कहेंगे कि आपके अन्दर वह विस्तृत शिक्षा है, जो किसी व्यक्ति को उदारशासक बना सकती है। आपके इन्दौर से चले आने का मुख्य कारण इन्दौर नरेश का विवाह ही था। जिस के सलाह कार सर चन्दावरकर हों, वह इस प्रकार का विवाह करे, यह अवश्य दुःख की बात थी। सर चन्दावर कर ने भी उसे अनुभव किया। तब से शायद आपकी नरेश से नहीं बनी। अन्त यह हुआ कि आप को त्याग पत्र देनापड़ा। इस से किसे शोक न होगा। कई लोग इसी में सनातन धर्म का विजय समझ कर बग़लें बजा रहे हैं, किन्तु वे यह नहीं सोचते कि रयासतों के हितैषी और उदार शिक्षा वाले दीवान मिलते कहाँ हैं? जो मिलते हैं यदि वे भी केवल सामाजिक कुरीतियों के वशीभूत होकर निकाल दिये जांय तो इस में बुरा किसका है? रियासतों का? या उन व्यक्तियों का?

पटियाले के महाराज क्यों लौट रहे हैं?

पटियाला नरेश बड़ी शान के साथ युद्ध के लिये फ्रांस को गयेथे। वहां गोली चलाना पड़ेगा, इस लिये आपने मोटरकार पर चढ़े चढ़े गधों पर गोली चलाने का अभ्यास यहीं से प्रारम्भ कर दिया था। अब आप बीमार हो कर लौट रहे हैं। यह ज्ञात नहीं हुआ कि कहां जाकर आप अधिक बीमार होगये? पटियाला नरेश वीरजाति में से हैं, उन केपितावीरथे, वे स्वयं कई बहादुरीके खेल दिखा चुके हैं। आप अवश्य ही युद्ध में जाना पसंद करते। पर क्या किया जाय। बीमारी ने उन्हें आ घेरा। और लोग बीमारी का कुछ ही कारण समझें, पर हमारी सम्मति में तो आप की बीमारी का विशेष कारण यह था कि आपको आपकी रियासत की बड़ी चिन्ता रहती है। ज्यों २ आप रियासत से दूर जाने लगे, चिन्ता से तबीयत ख़राब होने लगी। विशेषतया ऐसे समय में जब कि रियासत में द्रोहियों के विरुद्ध एक भयङ्कर मुकद्दमा चल रहा हो, रियासत को छोड़ कर चला जाना चिन्ता जनक है। किन्तु हम उन्हें संतोष दिलाते हैं कि मुक़द्दसा अच्छी तरह चल रहा है। कठोरताओं का प्याला अभी कुछ ख़ाली था, उसे पूरा करने की सिर तोड़ कोशिश हो रही है। २७ गवाहों की जिरह के लिये म० विश्वभरदास के वकीलों को केवल तीन दिन दिये गये हैं। क्या इस से बढ़ कर भी सख़्ती किसी के साथ हो सकती है। आर्यअभियुक्तों के वकील गवाहों से पूछते हैं कि क्या सिक्ख गुरु वेदों के अनुयायी थे। अदालत कहती है कि यह प्रश्न नहीं पूछा जा सकता। इस पर चीफ़ कोर्ट में अपील की गई है। इन सब बातों के होते हुए पटियाला नरेश को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। काम ठीक रीति परचलरहा है।

ईसाई और स्वदेश भक्ति

किसी दिन योरुप के देशों में ईसाई धर्म प्रधान था और देश भक्ति गौण। उस समय धर्म ही किसी व्यक्ती की देश भक्तिका निश्चायक होताथा। यदि प्रोटैस्टैण्ट राजा है तो रोमन कैथोलिक राज द्रोही है, यदि रोमन कौथलिक राजा है, तो प्रोटस्टैण्ट उसके भक्त नहीं। इस प्रकार धर्म का देश भक्ति पर राज्य था आज अवस्था सर्वथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उलट गई है। देशभक्ति ने धर्म पर काबू पा लिया है। जिधर देश उधर ही धर्म। यही सिद्धान्त ईसाई धर्म में काम करता है। युद्ध हो रहा है। जर्मनी के बड़े २ सब धर्माचार्यों ने मिल कर घोषणा पत्र निकाला है। उस द्वारा उन्होंने संसार को विश्वास दिलाना चाहा है कि इस युद्ध के लिये जर्मनी उत्तर दाता नहीं है। उनकी सम्मति है कि युद्ध का असली मूल रूस और इंग्लैंण्ड में ढूंढना चाहिये, जर्मनी में नहीं। उधर इंग्लैंण्ड के पादरी उस से बिलकुल उलटा कह रहे हैं। वस्तुतः यह दोनों अवस्थायें शोचनीय हैं। वह धर्म धर्म नहीं, जो स्वदेश भक्ति पर आघात करे और वह स्वदेश भक्ति मिथ्या अस मात्र है, जो धर्म के विरुद्ध चलती है। संसार में ये दोनों दशायें शोचनीय हैं। शान्ति तब होगी, जब धर्म और स्वदेश भक्ति एक हो जायगी। उस दिन न धर्म स्वदेशभक्ति का विरोधी होगा, और न स्वदेश भक्ति से धर्म की हत्या होगी। यही एक शान्ति का मार्ग है। जो शान्ति के पक्षपाती हैं, उन्हें इसी के लिये यत्न करना चाहिये।

उषा

१० मास से गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित हो रही है, और क्रमशः उन्नति ही कर रही है। अब हमारे पास उषा संस्कृत पत्रिका का दो मास का इकट्ठा एक अंक दुगने से भी अधिक, लगभग तिगुने के, आ पहुंचा है। यही पत्रिका का ऋष्यंक तथा दीपमालांक भी है। इसे बीच के एक मास में न निकलने का यही कारण प्रतीत होता है। खैर। अबकी बार सब की कसर निकल गई। विषय लेख भी रोचक तथा सरल और मनोहर संस्कृत में है। कविता तथा गीतियों की तो झड़ी लगगई है। संस्कृत के भक्तों के प्रेमी जनों के यह बड़े उपयोग का अंक है। उषा का यह अंक ऊपरकी सजा बट में भी किसी से कम नहीं। कई रंगों में छापने से इस की रोचकता कहीं बढ़ कर है। श्री० स्वामी दयानन्द तथा मातृ भूमि को लक्ष्य करके रचित, बड़ी ललित तथा उज्ज्वल कविताओं और गीतियों ने पत्रिका का भाग बढ़ा दिया है। अब उषा यदि इसी उत्साह और नीति से प्रकाशित होती रहेगी तो अन्य संस्कृत पत्रिकाओं में सम्भव है आगे जायगी। इस की एक प्रति प्रत्येक आर्य के पास होनी आवश्यक है जिस से संस्कृत गौरव और श्रद्धा का एक चिन्ह घर २ बन के। मूल्य भी केवल इस का घटा कर ।) आने कर दिया है।

पता:— मैनेजर उषा
गुरुकुल कांगड़ी
पो० शामपुर

विजय

विजय पत्र दिनों दिन उन्नति कर रहा है। लेख रोचक तथा ज्ञान वृद्धि कराने वाले हैं। राजनैतिक तथा देशोन्नति विषयक लेख भी बड़ी योग्यता से सम्पादित हो रहे हैं। तीसरा अंक भी अब निकल चुका है। बड़े २ योग्य लेखकों के लेखों से पत्र सुशोभित रहता है। जब से यह पत्र देहली से निकलना प्रारम्भ हुआ है तब से पंजाब में हिंदी की शान ही बढ़ गई है। अमेरीका आदि प्रदेशों की राजनैतिक समस्याओं की सरल व्याख्या और वर्तमान देश की नैतिक सामाजिक समस्याओं में रुचि रखने वालों को चाहिये कि सब पत्र की प्रति मंगाया करें।

गुरुकुल समाचार

ऋतु—गुरुकुल में शरद् ऋतु की अनुपम छटा है। एक ओर पर्वतों की श्याम माला और दूसरी ओर भागीरथी की शुद्ध तथा निर्मल जल वाली, मनोहर कलकल से सब को आनन्द देती हुई तरंगें। किनारे के पास के फूलों ने तो शोभा का ठेका ले लिया है। यद्यपि कई एक दिनों बीच में मेघ भी आजाते थे और यथा तथा वर्षा कर जाते थे और ठण्डी हवा का भी कई बार ज़ोर रहा। पर फिर भी ऋतु मनोहर तथा स्वास्थ्य प्रद ही सिद्ध हो रही है।

स्वास्थ्य—शरद् ऋतु की मनोहरता और अनुकूलता के कारण स्वास्थ्य दिनों दिन वृद्धि पर है। मलेरिया का प्रकोप सर्वथा हट रहा है। रोगियों की संख्या भी नाम शेष मात्र है।

अतिथि—पंद्रह दिनों से दक्षिण अफ्रीका के फीनिक्स स्कूल के १८ विद्यार्थी गुरुकुल में आये हुए हैं, और इसी भ्रातृ प्रेम से घर की न्याईं निवास करते हैं जिस प्रेम से कि उनके लिये गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने उनके प्रागनुभूत कष्ट में सहानुभूति दिखाई और अब भी भ्रातृ स्नेह से परस्पर मिलके रहते हैं। इन १८ व्यक्तियों में श्रीमान पूज्य देश भक्त मिस्टर गांधी जी के पुत्र श्री मणिलाल, श्री रामदास तथा देवीदास जी भी विद्यमान हैं। इन सब भाईयों का रहन सहन भी बहुत कुछ गुरुकुल से मिलता जुलता है। इनका उद्देश्य भी स्पर्टल लोगों की न्याईं कड़ा जीवन बिताना ही है। अब ये यहां से जाने वाले हैं। यहां से शान्ति निकेतन बोलपुर जायंगे।

कुछ दिनों से यहां ईसाई धर्म की प्रचारिका श्रीमती मिस स्टैनर्ड भी गुरुकुल में आई हुई हैं।

किश्ती—गुरुकुल से प्रेम करने वालों को हम यह हर्ष समाचार सुनाना चाहते हैं कि गुरुकुल में श्री लाला नन्दलाल जी ने एक किश्ती बनवाई है जो अब बन कर तय्यार हो गई है यह गुरुकुल धारा में तैरती रहती है। अब आशा रखनी चाहिये कि आगामि वर्षों में यात्रियों को गंगा के पार करने आदि के भी कष्ट दूर होजायंगे। और अन्य सुगमताएं होजायंगी।

श्रीमहात्मा जी

का स्वास्थ्य दिल्ली में भी कुछ अच्छा नहीं हुआ। फिर भी महात्माजी ने कार्य करना प्रारम्भ करदिया है। अभी विश्राम की और भी आवश्यकता प्रतीत होती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अम्बाले का आर्य्य समाज का उत्सव हुवा वहां श्रीमहात्माजी का व्याख्यान हुवा। यद्यपि युद्धादिके कारण धनकी ऐसी आशा न थी तथापि लगभग ३००० की प्रतिज्ञा लिखी जाचुकी है। हमें आशा है कि आर्य्यजन और भी उत्साह दिखाएंगे। स्वास्थ्य ठीक न रहने से अब वे गुरुकुल लौट आए हैं।

साहित्य---गुरुकुल की उषा मासिक पत्रिका अबके ऋष्यंक तथा दीपमालांक के रूप में दुगने से भी अधिक निकलगयी है, और कई रँगों में छपी है

गुरुकुल के दैनिक पत्र तथा साप्ताहिक पत्रोंने ऋष्यंकों को चित्रों से सजाकर बड़ी सज धज से निकाला।

पाठक्रम---विद्यालय तथा महाविद्यालय वार्षिक अवकाश के समाप्त होनेपर फिर से नियम पूर्वक लगते हैं। श्रीमान् मास्टर गोवर्धनजी ने मुख्याध्यापक के पद को त्याग दिया है, उन के स्थान पर श्री सुखराम जी मुख्याध्यापक के कार्य्य पर नियुक्त हुवे हैं आप गुरुकुल के स्थिर सेवक हैं। गुरुकुल से जो आप का प्रेम है उसे वे ही जानते हैं जिन का आप से सम्बंध हो। हमें आप की मुख्याध्यापकी से विद्यालय के लिये बड़ी बड़ी आशाएं हैं। विद्यालय का अध्यापक विभाग तथा महाविद्यालय महोपाध्याय विभाग ठीक हो गया है। कई एक शास्त्री विद्यालय के लिये भी आने वाले हैं।

पाली की शिक्षा---पाली की शिक्षा प्रारम्भ होगई है। पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार ने स्नातकोत्तर पाठविधि के अनुसार पढ़ना प्रारम्भ किया है। उसके लिये वे पाली का अध्ययन करना चाहते थे। उपदेशक महाविद्यालय में भी बौद्धधर्म का तत्व जानने के लिये पाली की शिक्षा रखी गई है। इस बड़ी आवश्यकता को पूरा करने के लिये गुरुकुल में श्रीस्वामी कल्याण तिष्यथेरा लंका से पधारे हैं। लंका में एक बौद्ध भिक्षुओं का परमानन्द कालेज है उसके पाली विभाग के आप वाइस प्रिन्सिपल हैं। गुरुकुल से आप कुछ नहीं लेते, केवल भोजनादि पर विद्यादान करने के लिये गुरुकुल पधारे हैं। आप के शील स्वभाव पर गुरुकुल वाले बड़े मोहित हैं। आपका विचार गुरुकुल में तब तक रहने का है जब तक कि गुरुकुल का कोई ब्रह्मचारी आप से पाली की पूरी शिक्षा लेले।

संस्कृत के पंडित---स्वर्गवासी पं० गोविन्द शास्त्री जी के देहान्त ने गुरुकुल से एक विद्या का केन्द्र उठादिया है। उसके अभाव की पूर्ति के लिये दो पंडितों का प्रबंध किया गया है। एक तो काशी के पं० लक्ष्मण त्रिपाठी शास्त्री हैं, जो आचुके हैं। दूसरे एक बङ्गाली पण्डित आनेवाले हैं, जो तीन चार दर्शनों के तीर्थ होने के अतिरिक्त बङ्गाल में पाण्डित्य के लिये प्रतिष्ठा रखते हैं। इस प्रकार हमारे महाविद्यालय में इस समय चार पण्डित संस्कृत के पढ़ाने के लिये हैं और शीघ्र ही पांच होनेवाले हैं

विज्ञापन।

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख! नयी टिप्पणियाँ! आप संस्कृत में भी पढ़सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करनेवाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये।

पता---उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर

ऋष्यङ्क! दीपमालाङ्क!! उषा

कई रंगों में छपकर तय्यार है। लेख रोचक तथा सरल। कवितायें गीतियें मनोहर। ऋषि के और मातृभूमि के विषय में नाना प्रकार की कवितायें तथा गीतियें मज़े में घर बैठे २ पढ़िये और गाइये और बाजोंपर बजाइये। अनायास संस्कृत से घर गूंज उठेगा। शीघ्रता कीजिये नहीं तो बाद प्रतियें समाप्त होजाने पर पछताना पड़ेगा मूल्य सिर्फ ।) है।

पता---उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर

प्राचीन नौका विज्ञान
तथा
सामुद्रिक व्यापार

प्राचीन भारत की अवस्था नवीन भारत से सर्वथा भिन्न थी। वर्त्तमान काल का प्राचीन काल से किसी अंश में भी मिलान करना भारी भूल है। आजकल की अवस्था से प्राचीन काल का अनुमान लगाना अपनी आंखों पर चमड़े की ऐनक लगा लेना है। क्योंकि वर्त्तमान अवस्था प्राचीन अवस्था का कोई उन्नत रूप नहीं है। अन्य देशों में यह बात न भी हो। परन्तु भारत में ऐसी ही बात है। भारत में बड़ी २ क्रान्तियें हुवीं। साहित्य और सभ्यता के सर्वापहारी लोप करने वाले भी परिवर्त्तन भारत में उपस्थित हुवे। इस में प्राज्ञ लोगों को भी मानने में कोई संकोच नहीं। दूर जाने की आवश्यकता नहीं। वर्त्तमान ही में भारत की सभ्यता किस तीव्रता और बल के साथ पलटा खा रही है। पुराना सारे का सारा छिन २ में बदलता जा रहा है। क्या साहित्य संबन्धी और क्या विज्ञान कौशल संबन्धी, सभी प्रकार की उन्नति का रूप दृष्टिगोचर हो रहा है। और देशों का मुझे पता नहीं परन्तु भारत की जनता का यह स्वभाव है कि वह नवीन परिवर्त्तन को अपनाने में और अपने देश वेश भाषा आचार विचार को छोड़ने में बहुत जल्दी हाथ बढ़ाता है। और जिस चीज़ पर हाथ धरता है पूरा करके छोड़ता है। इन स्वभावों के होते हुवे भारत में ऐतिहासिक क्रम से नाना परिवर्त्तन हुवे और परिवर्त्तनों का प्रभाव भी शीघ्र ही कार्य में परिणत हुवा। इस भारत की आयु भी कोई एक या दो युग की नहीं पर कई मन्वन्तरों और कल्पों की प्रतीत होती है। जिनकी शेषावशेष साक्षियें पौराणिक तथा वैदिक साहित्य में स्थान २ पर गाथा रूपों में मिलती हैं। मेरी वैयक्तिक सम्मति में वर्त्तमान प्राचीन साहित्य भी किसी निरन्तर प्रवृत्त मानुषीय जीवन का मूल द्रव्य प्रती—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं होता परन्तु कई वार सन्तति और विच्छेद का क्रम लगा है और उनसे बचता बचाता शिष्ट भाग सम्प्रति प्राप्त है।

अस्तु कुछ भी हो उसी सम्प्राप्त साहित्य को गवेषणा करना हमारे प्रकृत विषय के लिये अत्यंत उपयोगी है।

प्राचीन साहित्य पर दृष्टि डालते हुए हमें दो प्रकार का ध्यान रखना चाहिये।

(१) प्रथम कि किसी पुस्तक का लेख उसके सम काल की अवस्था को अवश्य बतलाता है।

(२) उसके प्रमाण तात्कालिक तथा तद्विषयक उन्नति में कोई परमर्यादा या उन्नति की पराकाष्ठा नहीं बतासकते। अर्थात् उन्नति की सीमा उतनी ही नहो कर उससे अधिक भी हो सकती है।

साथ ही साथ यह तीसरी बात भी स्मरण रखनी चाहिये कि कवियों का वर्णन या एतिहासिकों का वर्णन उनके पूरे विज्ञान या शिल्प के न जानने से अथवा लेख स्थानाभाव से अपूर्ण भी रहसकता है। फलतः उन्नति का पूर्ण चित्र नहीं खींचा जासकता।

प्रकृत विषय पर आन्दोलन करने के लिये हमारे पास कई प्रकार के आधारहैं।

(१) प्रथम प्राचीन साहित्य जिसमें वैदिक ग्रन्थ लौकिक सहित्य ग्रन्थ और बौद्ध साहित्य तथा अन्य मतावलम्बी साहित्य प्राप्त होते हैं। (२) द्वितीय प्राकृतिक वस्तुएं जैसे मन्दिर देवालय, मूर्तियां चित्रादि जिस में बौद्ध मन्दिर तथा चैत्यादि भी परिगणित हैं। (३) तृतीय वैदेशिक यात्रियों के प्रमाण तथा व्यापरियों की चर्चा और वैदेशिक प्राचीन और अर्वाचीन ग्रन्थकारों के नवीन तथा पुरातन ग्रन्थ।

सुगमता के लिये हम एक २ की ओर बढ़ते हैं और देखते है कि किस अंश तक हम साध्य सिद्ध करसकते हैं।

सब से प्राचीन वेद का ग्रन्थ मानव जाति को मिला इसके विषय में मानवीय कृतिकी दृष्टि से, भी यह ग्रंथ कर्त्ता की कृति नहीं कही जासकती। सयह प्रकार से भी कोई क्रम बद्ध नहीं कहा जासकता अतः पूर्वोक्त दृष्टि से यदि वेदों को कतिपय युगों की साहित्य सम्पत्ति कही जाय तो बुरा न होगा।

अपौरुषेय दृष्टि से तो इसका आदि ही कोई नहीं अतः इस का प्रमाण बड़ी पुरानी सभ्यता का परिचय कराता है। प्रथम दृष्टि से तो सभ्यता इतिहास के सूचन करने में कोई बाधा ही नहीं परन्तु दूसरी दृष्टि से भी ये बाधक होने के विपरीत साधक ही हैं।

क्योंकि यदि मन्त्र प्रोक्त कई पात्र भुज्यु या तुग्रके पर नाम पर नौ विद्या का मान न लगे तो न सही परंतु अत्यन्त प्राचीन काल में भी इन मन्त्रों के जानने वाले और क्रिया रूप में परिणत करने वालों को अवश्य ही नौ विद्या से पूर्ण परिचय होगा।

उदाहरण के लिये निम्न लिखित एक दो प्रमाण ही मेरी सम्मति में पर्याप्त होंगे।

(१) "देवीं नावंस्वरित्रामनागस मस्रवन्तीमारुहेमस्वस्तये" इस में भली चंगी अच्छे २ चप्पू वाली नाव का वर्णन है जिस में कोई आपत्ति आने का भय नहीं और न चूती है। प्रत्युत इसके ये दिव्यशक्ति से युक्त है।

(२) "अनारम्भणे तदवीर ये था मनास्थाने अग्रमणे समुद्रे"।

यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमध्यारु हेम। यहां भी अश्वियों की सौ चप्पू वाली नौका की महत्ता पाठक स्वयं विचारेंगे।

"तुग्रोहभुज्युमश्विनोदमेघेरयिं न कश्चिन्ममृवो अवाहाः तमूहथु नौभिः आत्मन्वन्ती रिन्तरिक्ष प्रुद्भिरपोदकाभिः,,

"त्रिरुक्षःक्षपास्त्रिरहा त्रिरद्भि नासत्या भुज्यु मूहथु। पतद्भिः समुद्रस्य धन्वन्नद्रेरयपारे त्रिभिःरथै शतपद्भिः षडश्वैः"

ऋ० मं० १ ८ व० म २७४

इन मन्त्रों का व्याख्यान करते हुवे यदि भुज्यु अदिनामों से किन्हीं विदेश के यात्री तथा सामुद्रिक विजेता सिद्ध करना चाहे तो भी हमारी इष्ट सिद्धि है यदि इस मन्त्र से प्रति वादन किसी एक प्रकार की नौका का वर्णन लेना है तो भी बड़ी उच्चकला कौशल का परिचय होता है। यहाँ ध्यान देने योग्य शब्द शतपद्भिः और षडश्वैः हैं। नौका में घोड़े लगाने और साथ ही पैर जोड़देना साधारण दृष्टि से कोई अर्थ नहीं रखता। परन्तु एक ही महा नौकामें ६ इंजिन लगाकर उन द्वारा सौपतवार चलाना कितना उपयुक्त प्रतीत होता है।

इसी प्रकार वैदिक रत्नतण्डुलों की डेग में से एक आध दाना दिखाकर ही हम उसे अर्वाचीन साहित्य की ओर धरते हैं कभी सुअवसर पर पाठकों को वैदिक साहित्य में से अन्य भी प्रमाण निकाल के दिखायेंगे परंतु अब समयाभाव से नौस्थान भाव को हम यहां ही छोड़ देते हैं।

वेदों के अनन्तर के साहित्य में यदि किसी ग्रन्थ की बारी आती है तो ब्राह्मण ग्रंथों की। साधारणतः इस विषय में इतना ही कहा जासकता है कि कहीं कहीं नाव का नाम आया है परन्तु पूर्वोक्त प्रमाण से अधिक चित्ता कर्षक तथा विस्मायक का होने से हम जैसा का तैसा ही छोड़ के आगे पैर रखते हैं। वैदिक साहित्य को छोड़कर अब हमारी दृष्टि सीधी लौकिक साहित्य पर पड़ती है जिस में से रामायण और महाभारत दोनों ऐतिहासिक पुस्तकें बड़े काम की हैं। इन की हम अगलीबार समालोचना करेंगे।

सरस्वती सम्पादक की समालोचना का नमूना।

सितम्बर की सरस्वती में श्रीमान् द्विवेदीजी ने समालोचना करते हुये स्वर्गवासी स्वामी विरजानन्दजी पर जो पुष्प बरसाये हैं उनके लिखने की कुछ जरूरत नहीं है, क्योंकि समाचारपत्रों के पाठक भले प्रकार जानते ही हैं।

अगस्त की "सरस्वती" में एक समाचार पत्र की समालोचना करते हुये द्विवेदीजी फरमाते हैं कि आर्यसमाज में जिन लोगों ने नाम लिखाये हैं-उनमें बहु संख्यक मनुष्य हिन्दी भाषा, देव-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नागरी अक्षर पढ़ना नहीं जानते फिर लिखना तो दूर की बात है अस्तु।
आर्य समाजी नहीं जानते और अनार्य समाजी जानते हैं इस की सबूत में आपके पास कौनसे प्रमाण हैं, यदि आपके उपरोक्त कथन में कुछ सत्य का अंश हो, तो सप्रमाण सिद्ध कीजिये। आपकी उपरोक्त कपोल कल्पना के विरुद्ध आर्य समाजियों में हिन्दी भाषा और देवनागरी जानने के निम्न कारण हैं जिनको ध्यान देकर पढ़िये। और शान्त चित्त होकर विचारिये।

(१) आर्यसमाज के उप नियमों में यह भी एक नियम है कि "इस समाज के सभ्यों का देवनागरी अक्षर हिन्दी भाषा का जानना मुख्य कर्त्तव्य है। इस नियम ने धर्म वीर पं० लेखराम सरीखे अरबी के आला विद्वानों को फिर से हिन्दी का विद्यार्थी बनाया था। यदि इसके पूर्व किसी हिन्दी के ठेकेदारों ने इस प्रकार के नियम बनाकर प्रचलित किये हों तो कृपा करके बतलाइये। उर्दू के केन्द्र पंजाब में इस समय आर्यों की ओर से ६ पत्र निकलते हैं बहु संख्यक पठित होने की डींग मारने वालों की तरफ से कितने निकलते हैं कृपा करके बतलाइये। आर्य के अनुमान २०० दो सौ कन्या पाठशालाएं हैं उनमें प्राथमिक शिक्षा हिन्दी में ही दी जाती हैं।

डी० ए० वी० कालेज में उर्दू को धत्ता बतलाकर स्कूल विभाग में प्राथमिक शिक्षा हिन्दी मुफ्त दी जाती है। आप ही बहुसंख्यक हिन्दुओं की तरफ से हिन्दी प्रचार के लिये क्या उद्योग हो रहा है सो कृपा करके बतलाइये।

यू० पी० में आर्यों के जितने गुरुकुल हैं उनमें शिक्षा का माध्यम राष्ट्रीय भाषा हिन्दी ही रखा गया है। वास्तव में हमारी मातृभाषा हिन्दी को सब से प्रथम गुरुकुल कांगड़ी ने उच्चासन पर बिठलाकर हिन्दी भाषा भाषियों का मुख उज्वल कर दिया है।

आर्य समाजों के पत्रों में आज तक कोई सनातनी सम्पादक नहीं रहा किन्तु बैंकटेश्वर बङ्गवासी हितवार्ता, भारतमित्र विहारबन्धू आदि पत्रों में कितने ही बार आर्य समाजी सम्पादक पद पर रह चुके हैं। यदि सनातनियों में सम्पादकों की बहु संख्या होती तो आर्यों को कभी भी नहीं रखते सम्पादक का रखना बहुत बड़ी बात है सरस्वती में पं० पद्मसिंह की समालोचना सतसही संहार छपने लगा तब धर्म के ठेकेदारों ने बड़ा कोलाहल मचाया था कि सरस्वती बड़ा अन्याय करती है जो कि आर्य्यसमाजी का लेख छाप रही है परन्तु उस वक्त के निष्पक्ष सम्पादक ने साफ़ जवाब दिया कि सरस्वती की सीमा आगे ही बहुत संकुचित है। अर्थात् राजनीति और धर्म के विषय में कुछ लिखती ही नहीं। यदि साहित्य में भी लिखने में सङ्कीर्णता दिखलाने लगे तो शेष कुछ भी न रहेगा।

यदि उपरोक्त प्रमाणों से आपके तसल्ली न हुई हो कृपा कर १९०१ की मनुष्य गणना की रिपोर्ट पढ़ लीजिये हमारा तो अनुमान है आपने अवश्य पढ़ी होगी। उस में लिखे पढ़ों की संख्या यों हैं।

प्रत्येक दश हज़ार पीछे हिन्दुओं में १५ स्त्री और ५६० पुरुष तथा आर्यों में ६७४ स्त्री और ३८४१ पुरुष उपरोक्त रिपोर्ट से तो पता लगता है कि हिन्दुओं की अपेक्षा आर्यों में पुरुषों में सातगुणी और स्त्रियों में ४५ गुणी शिक्षा मात्र की है।

अब आप ही बतलाइये कि सरकारी रिपोर्ट को ठीक माने या आपकी कपोल कल्पना को? हमारा जहांतक अनुमान है निष्पक्ष बुद्धिमान संसार सरकारी रिपोर्ट के अगाड़ी आप की कपोल कल्पना का मूल्य बहुत ही कम समझते हैं।

अब हम आर्य पर खड्गहस्त होने वाले द्विवेदी जी के भक्तों से पूछना चाहते हैं कि एक समान पत्र की समालोचना करते हुये पहिले तो लेखक की समालोचना करना फिर उसके गुरु फिर शिष्य की शेष में निर्मूल लेखों के सहारे सारे सामाजिकों अपठित सिद्ध करने का घृणित उद्योग करना क्या इसी का नाम निष्पक्ष समालोचना है?

शिवप्रसाद सर्राफ

कलकत्ता

दोष दर्शन।

श्री सम्पादकजी

कृपया पत्र में स्थान दे कृतार्थ करेंगे

हमें शोक है कि आर्यसमाज के मासी पत्र भी एक दूसरे से बदला लेने से नहीं चूकते वेद प्रकाश के सम्पादक तो शायद उप सम्पादक से शास्त्रार्थ छेड़ना चाहते हैं और फिर पता नहीं कि एक मात्रा के लिये कितना जोश दिखायें गे। हम समझते हैं कि ऐसे पत्र यदि इन झगड़ों को छोड़कर अपना काम किया करें तो अधिक लाभ हो। अब क्या लाभ है सिवाय इसके कि आपस में झगड़ा छिड़े या लोगों को मालूम होजाय कि स्वामी तुलसीराम वेदभाष्यकार ने अबतक नौ मास की उषा के बहुत से अपकार गिनलिये और कूड़े की टोकरी में फैकने लायक पत्र की मात्रा को पकड़ कर उस सम्पादक को अखबारी द्वेष में घसीटने का प्रयत्न किया है हम समझते हैं वृन्दावन गुरुकुल के आचार्य और वेद के भाष्यकर्त्ता यदि इस स्थान पर धर्म पिपासिकों के लिये एक वेद की ऋचा का भाष्य करते या दोषेक्षण के स्थान में गुणेक्षण का उपदेश देते तो अच्छा था। हमें खेद यह है कि हमारे लीडरों में दोष हैं। सच है

परगुण परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं।
निज हृदिविकसन्तः सन्तिसन्तः कियन्तः॥

कुशाग्रः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युद्ध-समाचार।

टर्की भी लड़ाई की आग में कूद पड़ा।

हिन्दुस्तानी फ़ौजों की बीरता।

ऐमडन का उपद्रव।

बाल्कन रियासतों में भी छिड़ेगी।

जिस बात की इतने दिनों से आशंका थी वह होगई। जर्मनी ने अपने स्वार्थ के लिये टर्की को युद्ध की आग में झोंक दिया। टर्की से मित्र दल के राजदूत चल दिए हैं। टर्की राजदूत भी इंग्लैंड छोड़कर स्वदेश को रवाना हो गया है। वायसराय ने एक लम्बी सूचना प्रकाशित की है जिस में उन कारणों का वर्णन किया है जिनसे बाधित होकर ग्रेटब्रिटन को टर्की के साथ युद्ध की घोषणा करानी पड़ी है। उनमें से मुख्य पांच हैं:— (जर्मन के दो लंगी जहाज़ों को अपने बंदरगाह में आश्रय देना और मित्र दल के कहने पर भी न तो उन पर से जर्मन अफसरों को हटाया और ना हीं उन्हें अपने बंदर से बाहिर भेजना, (२) सीरिया ईजिप्ट पर आक्रमण करने की तय्यारी करना। (३) डार्डनल्स में सुरंगे बिछा कर ब्रिटिश व्यापार में बाधा डालना और तरह तरह के बहानों से ब्रिटिश जहाज़ों को रोकना। यह काम उदासीन देश की नीति के सर्वथा प्रतिकूल है। (४) ईजिप्ट की सीमा पर बसने वाले अरबियों को भड़काना। (५) अपने जासूस भेज कर हिन्दुस्तानी और ईजिप्ट के मुसलमानों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये प्रेरित करना (६) बगदाद और मेसिपोटामियां में ब्रिटिश प्रजा के साथ बुरा व्यवहार करना। सब से अन्त में टर्की के कुछ जहाज़ों ने रूसी बंदरगाह पर आक्रमण करके रूस के क्रूजर को डुबो दिया। और फ्राँस के जहाजों को नाकार कर दिया। बार बार पूछने पर भी टर्की इन शिकायतों का कोई जवाब न दे सका। मित्र दल के पूछने पर टर्की ने जो जवाब दिया है वह असंतोष जनक है। जर्मनी के महान मंत्री ने कहा है कि रूसी बंदरगाह पर आक्रमण हमारे जाने बिना किया है। और क्षमा भी मांगी है। पर टर्की का सारा बर्ताव असंतोष जनक है। इसलिये मित्र दल ने उसके साथ लड़ाई की आघोषणा दे दी है।

टर्की के लड़ाई में सम्मिलित हो जाने से बाल्कन रियासतों का उदासीन रहना कठिन है। समझा जाता है कि बल्गेरिया टर्की के साथ होगा और रूमानिया तथा ग्रीस रूस के सहायक हेांगे।

द० अफ्रीका का विद्रोह

द० अफ्रीका में जनरल बेयर के साथियों को दबाने का पूरा यत्न किया जा रहा है। जनरल बोथा ने ख़बर दी है कि बेयर और मारिज़ की फोजें तितर बितर हो गई हैं। पश्चिमी ट्रांसवाल में कुछ और लोग हैं विद्रोह खड़ा करने की तय्यारी कर रहे हैं! पर प्रजा का अधिक भाग राजभक्त है।

टर्की ने अंग्रेज़ों को रोक लिया।

प्रेस ब्यूरो का कथन है कि उस राह में ब्रिटिश कौन्सिल और अंग्रेज़ व्यापारियों को रोक लिया है।

सर्विया का टर्की से सम्बन्ध टूट गया।

जर्मनी की ख़बर है कि सर्विया ने टर्की के साथ अपना राजनैतिक सम्बन्ध तोड़ लिया है।

रूस और जर्मनो।

पैट्रोग्रेड से ख़बर आई है कि जर्मन पूर्वीय प्रशिया में हर तरफ़ रक्षात्मक युद्ध कर रहे हैं। रूसी कई प्रदेशों में आगे बढ़ गये हैं और उन्होंने कोनों में और कई क़ैदी पकड़ लिये हैं। वे बिलुला आगे पिलिरजा के उत्तर पश्चिम में बिना किसी बाधा के बढ़ रहे हैं। रिपेशनकीएस की तरफ शत्रु पीछे हट रहे हैं। अस्ट्रिया के कील्स के दक्षिण की ओर हमला किया था पर उन्हें पराजित होना पड़ा। तीन तोपें १५०० कैदी पकड़े गए। निचलसैन की तरफ रूसी बढ़ रहे हैं। निज़की के आस पास लड़ाई हो रही है।

ऐमडन का उपद्रव

"ऐमडन" ने पेनांग के समुद्र तट से कुछ दूर एक रूसी क्रूजर जहाज़ और एक फरासीसी नाशक बोट को डुबो दिया है।

बङ्गोयसागर में अफ़वाह।

इस बात ने कि, कल कुछ गये हुए जहाज़ फिर सागर दीप लौट आये और वहां लङ्गर डालकर पड़े रहे, कल कलकत्ते में कुछ घबड़ाहट पैदा कर दी थी। अफवाहें उड़ीं कि, खाड़ी में कुछ गोलमाल हुआ है और दो जर्मन क्रूजर "ऐमडन," के साथ घूम रहे हैं। इन अफवाहों की सरकारी तौर पर कुछ भी पुष्टि नहीं की जा सकी है और जहाँ तक पूंछताछ करने से मालूम हुआहै जहाज़ों का आना जाना बन्द करने का कोई हुक्म नहीं निकला है। कुछ जहाजों ने रवाने होने में देरी की, इस का अफवाहों को छोड़ कर कुछ सन्तोषदायक हाल नहीं मिल सका है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषानुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्दमार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ब्रज भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पतासाफ़हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बजाज़ा शहर मेरठ

गेहूं की खेती ।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषी विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिंदी उर्दू दोनों भाषा से बनाई गई है इसमें बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और और गेहूं की खेती में बिशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषी सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े बिस्तार से लिखा गया है बहुत बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कोही टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ ।

रामप्रसाद सबजज उज्जैन

विद्यार्थी ।

गत चैत्र मास से प्रतिमास निकलने वाला । हर महीने सुन्दर चित्र। प्रसिद्ध विद्वानों के शिक्षाप्रद लेख। मनोहरिणी कवितायें । प्रायः समस्त हिन्दी-पत्र संपादकों में प्रशंसित । विद्यार्थियों के लिये परम लाभकारी । सदाचार का बीज बोने वाला । देश भक्ति की ऊंची लहरें उठाने वाला । अपने पूर्वजों और प्राचीन भारत के गौरव को याद दिलाने वाला मातृभाषा—हिन्दी—का भक्त बनाने वाला । नवयुवक विद्यार्थियों में जीवन डालने वाला । उच्च अभिलाष और जागृति पैदा करने काला। भारत के भावुकों के हृदयों में भारतीय भव्य भाव करने वाला । अचेतों को सचेत करने के लिये चटकीली चेतावनी देने वाला । हिन्दी—संसार में एक अनोखा और अद्भुत पत्र जलद २) भेज कर "विद्यार्थी" पत्र के ग्राहक बन जाइये और साल भर तक पढ़ कर लाभ उठाइयेगा ।

४ ग्राहक बनाने वाले को साल भर 'विद्यार्थी' मुफ्त ।

मिलने का पता—
मैनेजर, हिन्दी प्रेस प्रयाग

उपदेश-मंजरी ।

यह पुस्तक सभी के लिये बड़ी उपयोगी है । इस पुस्तक को सदाचारशिक्षा की खान कहना चाहिये । लड़कों को इनाम देने के लिये यह पुस्तक बड़ी अच्छी है । जो लोग अपने लड़कों को सदाचारी और सुशील बनाना चाहते हैं उन्हें यह पुस्तक अवश्य लेनी चाहिये मूल्य जिल्द वाली का ॥) सादी का ।=)

कविता विनोद ।

बीसियों कविताओं का संग्रह । बड़ी मनोहारिणी और शिक्षादायिनी कवितायें हैं । प्रत्येक हिन्दी-भाषी को इसे पढ़ना चाहिए । मूल्य ॥)

ब्राह्मण-महत्वादर्श काव्य ।

यह हिन्दी-भाषा टीक सहित है। ब्राह्मणों में जागृति पैदा करने वाला है। वैसे तो यह सभी के काम का है, पर, पढ़े लिखे ब्राह्मणों को तो इसे ज़रूर ही पढ़ना चाहिए। मूल्य ॥)
मिलने का पता—
मैनेजर, हिन्दी प्रेस, प्रयाग ।

॥ ओ३ ॥

हिन्दी चित्रमय जगत

दिसम्बर का अंक ।

क्या आपको यह मालूम है कि युरुप में युद्ध क्यों छिड़ा ?

क्या आपको समर विजयी ब्रिटिश के परा क्रम देखने की इच्छा है ।

फ्रांस पर आक्रमण, जर्मनी का पराभाव ब्रिटिश के साहस युक्त कर्म युद्ध का संपूर्ण रोचक वर्णनादि सुनने की तथा चित्रों के देखने की इच्छा हो तो दिसम्बर का अंक देखने को मत भूलिये।

कई आवश्यकीय व युद्ध का वर्णन सुनकर आपका चित्त रंजन करेगा ।
मूल्य साधारण कागज़ी की प्रति का ॥)
॥।)
"आर्टपेपर"

पूना सिटी { मैनेजर
हिन्दी चित्रमय जगत

आवश्यकता ।

एक योग्य आर्य सदाचारी पढ़ा लिखा आमद ७५) मास आयुः बीस वर्ष गौत्र गर्ग अग्रवाल वैश्य के लिये एक योग्य कन्या की आवश्यकता है कन्या की आयुः १४ या १६ वर्ष के करीब हो विशेष पत्र व्यवहार के लिये ।

पता—मोहर सिंह दास
रामेश्वर दास
नई सड़क देहल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डाक्तर एस, के, बर्म्मन के ग्राहकगणों को विशेष सूचना

पांच कोन कृष्ण सितारा राजष्ट्री किया ट्रेड मार्क।

हमारी बनाई दवाएं पेटेन्ट शीशी वा डिबियामें रहती हैं: शीशीयोंके कांचपर "डाक्टर एस के बर्मन कलकत्ता" लिखा रहता है। विलायती चौपोल कागज़ के खोलियों पर हमारा राजिष्ट्री किया पांच कोनकृष्ण सितारा छपा रहता है।

S.K.B.

डाः एस,के बर्म्मन।
५,ताराचंददत्त ष्ट्रीट।
कलकत्ता।

दवा खरीदते समय देखलेना कारण हमारे ट्रेड मार्क के मिलते हुए नकली ट्रेड मार्क अनेक बने हैं। सब गाँव वो शहर में हमारे एजण्ट हैं, वहां भी दवा खरीद सकते हैं; परन्तु वहाँ भी दूसरे दुकानदार नकली दवा को डाक्टर बर्मन की दवा कहकर सिधे साधे ग्राहकों को धोखा देते हैं—इससे सावधान।

डाः एस,के,बर्मन ५, इ, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नँ०११

एजन्ट—बाबूराम जैन एन्ड कम्पनी बड़ा हरीबा दिल्ली

विधवा की आवश्यकता

कुछ समय हुआ मेरी पहली स्त्री का देहान्त होगया है। अब मैं एक विधवा के साथ विवाह करना चाहता हूं। विधवा की आयु २०, से २५ तक होनी चाहिये। विधवा कुछ पढ़ी लिखी होनी चाहिये। शेष पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते सेकीजिये।

बा. धन्नाराम स्टेशनमास्टर
बिलासपुर
सरगोधा लाइन

उस्तरे को बिदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल U.P.

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा मोल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही ज़िद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट 'का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

शुद्ध शिलाजीत

राज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, सृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खाँसी, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खाँसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पताः-

बाबू पंचमसिंह वर्मा

मालिक, कारख़ाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बा में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रा

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

ADVERTIZEMENT.

Required at once the services of competent Collage—trained Surveyors with several years, practical experience of canal construcction. None need apply who have not had considerable practical experience and do not hold first class recommendation.

Apply to:—

The Executive Engineer,
Tandula Lower Division.
DRUG.
(Central Provinces.)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (व)

बाबू--जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नई पुस्तक! अपूर्व पुस्तक।

महर्षि पतजलि और तत्कालीन भारत।

लेखक—प्रतिष्ठित स्नातक चन्द्रमणि विद्यालंकार।

यदि आप महर्षि पतंजलि के विषय में कुछ जानना चाहते हैं, यदि आप पतंजलि के समय का वास्तविक भारत इतिहास जानने के उत्सुक हैं, यदि आप महाभाष्य जैसे बड़े भारी ग्रन्थ का इतिहासिक निचोड़ बिना किसी परिश्रम के देखना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। मूल्य केवल ।=) है

पुस्तक भण्डार गुरुकुल
कांगड़ी हरिद्वार

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०
मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रांत

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र, तत्र, कोई एक दर्जन आर्यविद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है। शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा
हैड क्लर्क, प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)
नमूना बिना मूल्य।
पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

बिना मूल्य! दो चीजें

"मनुष्य जन्म का सुख" इसनाम की प्रबन्ध पुस्तक और सन् १९१४ की. पूरी जन्त्री शीघ्र मुफ्त मंगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं॥
पता—रामचद्र वैद्य शास्त्री
अलीगढ़ सिटी. यू. पो.

बाल नहीं बांटते है

बाल उड़ाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ९ मिनट में उड़ाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिस्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-
शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा
(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि
(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर
(४) म० सूर्य्य नारायण वर्म्मा भागलपुर
(५) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी शरीफ़, ख़ाना गली समोसान देहली

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से वेद राजोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No. L.[illegible]

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२९ कार्त्तिक सं १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० १४ नवम्बर १९१४

संख्या ३१
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १॥)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १॥।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अल[illegible]भ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिस[illegible] ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बा[illegible] पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ [illegible] महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हु[illegible] एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)

प्रचारक के ग्राहकों से

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र औ[illegible]ति की पुकार तो बहुत [illegible] राष्ट्र और उन्नति क्या [illegible]ड़े लोग जानते हैं । इस [illegible]र्मनी अमरीका, इंग्लैंड, [illegible]ों के इतिहास की आल[illegible] कर[illegible] दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूलय ।)

Mahatma M[illegible]
Governo[illegible]

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ॥) प्र०
तीन मास " " " " =)
छः " " " " " -)॥
सालभर " " " " -)

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई [illegible] पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समा[illegible] होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्र[illegible]रक कानाम और बंटने की तिथि छपी [illegible] चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ[illegible] कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निर्बल सेवक।

अपने उद्देश्य का एक मात्र साप्ता-हिक पत्र।

आठ पृष्ठ और मूल्य केवल १॥) वार्षिक।

अवश्य मंगाइए!!! क्योंकि:-

१—इसने केवल निर्बलों की सेवार्थ जन्म लिया है।

२—आपस के झगड़े मिटा एकता करना इसका धर्म्म है।

३—यह पत्र आर्थिक लाभ के विचार से नहीं निकाला गया। पत्र के लिए बिना हिसाब व्यय होता है।

मैनेजर निर्बल सेवक "धर्म"

देहरादून

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको चाँदी का पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

राष्ट्रीयता का मूल मंत्र तय्यार हो गई।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिसकी पहिली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है। इसके लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं। एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है। इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिये क्या गुण आवश्यक हैं। जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक

देहली

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

बिदारी क़न्द—खावो।

और लाल बन जाओ इसी महीने पहाड़ से इस की खुदाई होती है-इस कारण शीघ्रता करो कीमत १) रु० सेर।

पता. पं० काशीनाथ नागर

ज्वालापुर जि० सहारनपुर

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]

कमीशन लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

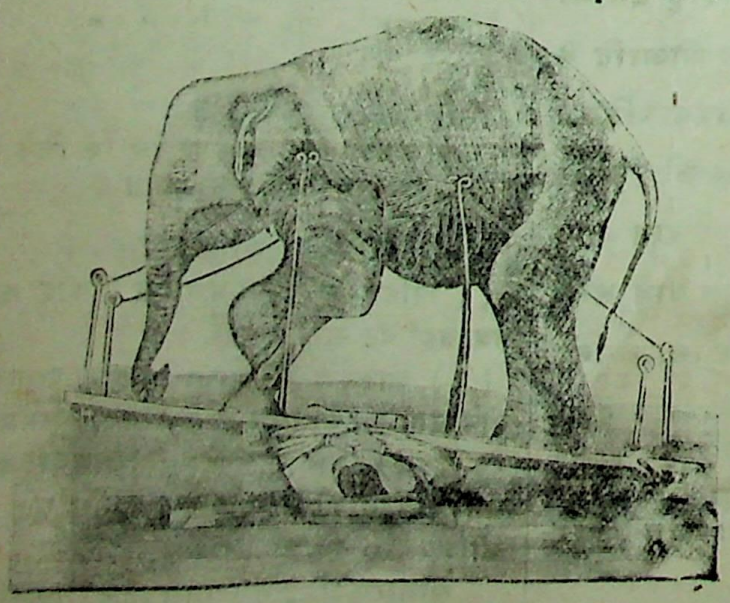

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) घोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माताएँ ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां।) वैदिक विवाहादर्श १) तांतिया भील =)
ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय

(मू) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धाञ्जलि

शुनः शेपोह्यह्व दृगृभीत, स्त्रिष्वादित्यदनु पदेषुबद्धः । अवैनं राजा वरुणः ससृज्या, द्विबद्बाँ अदब्धो विमुमोक्तुपाशान्

ऋ । १ । २५

जो मनुष्य आंखें रखता हुआ नहीं देखता, और कान रखता हुआ नहीं सुनता, वह मनुष्ययोनि के योग्य नहीं समझा जाता । वह पतित है । उसे शास्त्रकार कुत्ते की योनि का बतलाते हैं ! आत्म ज्ञान से रहित ऐसे मनुष्य के चित्त में जब खेद और प्रायश्चित्त पैदा है तब यह प्रार्थना करता है कि:—

" हे सब सुखों के देने वाले परमात्मन् ! प्रकृति के सत्वरज और तम नामक तीन फन्दों में बंधा हुआ कुत्ते के समान रखने वाला मैं पापी आपकी शरण आता हूं, आपका द्वार खट खटाता हूं । हे राजन् ! आप इन बन्धनों से मुझे छुड़ाइये । आप सर्वज्ञ हैं । मेरी दशा को भी आप जानते हैं । आपकी गति कहीं खण्डित नहीं होती । परमदया करके आप मुझे इन प्रकृति के झूठे बन्धनों से छुड़ाइये, यही बारंबार प्रार्थना है । "

परमात्मा ऐसी प्रार्थना करने वाली आत्मा के बन्धनों को अवश्य खोल देते हैं ।

आत्मिक दृश्य

छान्दोग्योपनिषद में उद्गीथ की व्याख्या करते हुए, उपनिषद्कार लिखते हैं: —

"देवा वै मृत्यो विभ्यंत स्त्रयीं विद्याम्प्रविशन्"

मृत्यु से भय खाकर विद्वान् लोग त्रयी विद्या की शरण आने लगे । त्रयी विद्या वेद विद्या का नाम है, क्योंकि वेदों में दिया हुआ सारा ज्ञान ज्ञान, कर्म और उपासना-इन तीन भागों में विभक्त हो सकता है । मृत्यु के भय से विज्ञ लोग त्रयी विद्या का आश्रय लेने लगे ।

"ते छन्दोभिरच्छादय न्यदेभिरच्छादयं स्तच्छसाँ छन्दस्त्वम्"

विद्वानों ने त्रयी विद्या की शरण आकर वेदों के छन्दों से अपने आप को ढक लिया । वेद पढ़ने लगे तो वेद मन्त्रों के छन्दों को प्रधान मान कर उन्हीं का पाठ करने लगे । उपनिषद् कहते हैं कि छन्द वेद जिज्ञासुओं के आच्छादन के काम आये, इसी लिये उनका नाम छन्द पड़ा ।

"तानु तत्र मृत्युर्यथा मत्स्यमुदके परिपश्ये देवं पार्यपश्य दृचि साम्नि यजुषि "

वेदके छन्दों में छुपेहुए उन देवोंको मृत्यु ने ऐसे देख लिया, जैसे जल में मछली दिखाई पड़ जाती है । छन्दों का छादन ऐसा निर्बल था, कि वह उनके रूप को न छुपा सका । ऋक अर्थात् स्तुति, यजुष अर्थात् कर्म और साम अर्थात् उपासना इन तीनों विषयों के वेद मन्त्रों के छन्दों ने उन्हें न छुपाया मृत्यु ने उनका पीछा न छोड़ा ।

"तेनु वित्वो र्ध्वाऋचः साम्वो यजुषः स्वरमेव प्राविशन् "

तब छन्दों के आश्रय से निराश होकर देव लोक वेद की स्वर में घुसे, उसके तात्पर्य में घुस गये । तब क्या हुआ ?

"यदा वा ऋचमाप्नोत्योमिति, एवातिस्वर ति । एवं सामैवं यजुरेष उस्वरो यदेतदक्षर मेतदमृतममृत मभयं तत्प्रविश्यदेवा अमृता अभयन्"

वेद मन्त्रों के स्वर में देवों ने घुसकर क्या देखा कि ऋग्वेद की स्तुति में है, तो ओ३म् है यजुर्वेदके कर्मविधान में यदि कुछ रमा हुआ है तो ओ३म् । इसी प्रकार सामवेद में भी ओ३म् को ही पाया उस अन्यःसार को पाकर देवलोक अमृत होगये और उनका भय जाता रहा । इसलिये उपनिषत्कार उपदेश देते हैं कि:

" स य एतदेवं विद्वानक्षरं प्रणौत्यैत्येदवाक्षरं स्वर ममृतमभयं प्रविशति । तत्प्रविश्य यद मृता देवास्तदमृतो भवति" ।

जो मनुष्य इस प्रकार सब कुछ जानता हुआ छन्दों को छोड़ कर अविनाशी अर्थ को पकड़ता है, वही सुख पाता है, अन्य नहीं । जो वेद के या अन्य किसी भी विद्या के ऊपर के छिलके में छुपना चाहता है, अज्ञान और मृत्यु उस का पीछा नहीं छोड़ते । शब्दों को ही सब कुछ मानने वाले लोग सदा ठोकरें खाते हैं । सब चीज़ों की दीवार के भीतर घुस कर ही जो आराम चाहते हैं, उन की इच्छा पूरी नहीं होती । आराम लेने के लिये घर के भीतर जाना पड़ता है । इसी प्रकार मृत्यु से निर्भय होने के लिये खोल के भीतर भाव में घुसना चाहिये । केवल शब्दों के पीछे भागने से कुछ नहीं होता ।

उपदेश का तात्पर्य क्या है ! हम लोग ऊपरी रूप पर अधिक ध्यान देते हैं, और असली सार भूत बातपर कम प्रत्येक पुरुष को सन्ध्या करनी चाहिये सन्ध्या में हम आसन पर बैठने और आंखें बन्द करने पर अधिक ध्यान दे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं, और मानसिक विचार कम। आर्य-समाज में जाना प्रत्येक आर्यपुरुष का कर्तव्य है—यह ठीक है कि हम यह तो खूब देखते हैं कि कोई पुरुष आर्यसमाज में आता है या नहीं, इस पर ध्यान नहीं देते कि वह वहां आकर ऊंघता ही रहता है या कुछ सुनता भी है। हर एक सम्प्रदाय के कुछ सिद्धान्त होते हैं, उन्हें उस सम्प्रदाय वाले मानते हैं। परन्तु उन सिद्धान्तों का मानना किस उद्देश्य से है यदि वह आचरणों पर असर न डाले? यदि कोई पंडित वेदी पर खड़ा होकर मूर्तिपूजा श्राद्ध का खण्डन करदे, हम वाह वाह करते हैं, किन्तु यह नहीं देखते कि उसी पण्डित के घर में टेवा पुजता है या नहीं? एकादशी का व्रत रक्खा जाता है या नहीं? यदि किसी ने भगवा पहिन लिया हम उस के पैर पूजने लगते हैं, किन्तु यह नहीं देखते कि सन्यास भँगवे 'कपड़ों' में नहीं शान्त और त्यागयुक्त मन में है। साराँश यह कि हम हर एक वस्तु के छिलके पर ध्यान देते हैं भाव पर नहीं। शब्द पर मरते हैं अर्थ पर नहीं।

उपनिषत्कार हमें इस कथानक द्वारा उपदेश देते हैं कि भाव को मुख्य समझना ही मनुष्य का कर्तव्य है। उसे सच्चा आर्य समझो, जिस के आचरण शुद्ध हैं, जो कर्मों से आर्य है, सिद्धान्तों की पुष्टि में केवल व्याख्यान फटकारने वाला पुरुष आर्य नहीं कहाता, कपड़ों पर मत भूलो, अन्दर के गुणों पर ध्यान दो। सिद्धान्त की ओझल में पेट पूजा करने वालों और वेदों के नाम पर व्यापार खड़ा करने वालों को मान मत दो मान के योग्य वे हैं जिन्हों ने लोक हित के लिये त्याग किया है, और जो सच्चे त्यागी हैं। इतिशम्

योरप की देवी का दुःख गीत।

१

पूर्व दिशा से आते हो जिनको विश्राम स्थान दिया
विविध अन्न और फल आदिक से जिनको प्राण प्रदान किया।
मेरे लालन पालन का उन पुत्रों ने क्या मान किया
निर्दय हो मेरी छाती पर रुधिर पयोनिधि तान दिया॥

२

संघ शक्ति और साहस को मैं जिनके पाकर सुखी हुई
भूमि खण्ड पर आदर पाया विजय छत्र से जटित हुई।
उसी हन्त! सन्तान की देखो मति और गति विपरीत हुई
बहीं लहू लोहे की नदियां सारी उलटी रीत हुई।

३

राजधानियां हुई राख पर सेना के बढ़ आने से
ढेर हुए घर और अटारी निर्बल के पिस जाने से।
धर्म हुआ भय भीत मन्दिरों पर गोले बरसाने से
हाय हिया मम टूक टूक होरहा वेदना पाने से॥

४

जिस छाती से दूधपिया बरसों तक मोद विहार किया
उस पर आग लहू बरसाते कँपा तुम्हारा नहीं हिया
हे पुत्रों! जिस गोदी में तुमने सानन्द निवास किया
उसे काट और घायल करके अच्छा प्रीत उपहार दिया॥

५

धर्म विरोधी अक्खड़ कोई सभ्यनाम का हत्यारा
चढ़ आता मुझ पर अति निर्दय मान शान हरने वाला।
तब तो अच्छा शस्त्र तुमको, होता रक्षण देनेवाला
चला मुझीपर उसे सपूतो! माता का क्या ऋण पाला?

६

हे भगवान्! मेरी नय्या बहु घोर भँवर में डोलरही
सर्वनाश की निर्दय दूती निज सन्देसा बोल रही।
तुम्हें नाथ! हा! निर्बल रक्षक! मैं टकटक हूं देख रही
रक्षा करो सुमति दो इनको करो नाथ अब भूलसही॥

७

गले गले में हाथ डाल सब पुत्र दुलारे मिलजावें
रहे सहे अब रोषको, प्रेम कुण्ड में पिघलावें।
ध्वजा सभ्यता की लेकर फिर दिशा दिशा में फिर आवें
नाम करें मेरा अति उज्ज्वल साधु पुत्र सब कहलावें॥

"रसिक"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

आर्यसमाजों के शास्त्रार्थ

(२)

सनातनधर्मी

आर्यसमाज के सौ सभासदों में से ९० ऐसे हैं जो सनातनधर्मीकुल को छोड़कर आर्यसमाजी हुए। जिन नवयुवकों के माता पिता भी आर्यसमाजी थे, उन के अन्य बहुत सम्बन्धी अभी तक सनातनधर्मी हैं। माताओं और देवियों में अब तक मूर्तीपूजा व्रत और श्राद्ध का राज्य है। ऐसी अवस्था में यह प्रश्न अधिक आवश्यक हो जाता है कि आर्यसमाजियों का सनातनधर्म के अनुयायियों के साथ क्या सम्बन्ध होना चाहिये।

आर्यसमाज का सनातनधर्म से सम्बन्ध बहुत ही अनिश्चित है। एक स्थान में समाज की सनातनधर्मसभा से बनी हुई है वहां सब काम इकट्ठे होजाते हैं और होजाने स्वभाविक हैं, क्योंकि आर्यसमाजी युवा का पिता पौराणिक हो सकता है, और एक पौराणिक के दो और भाई आर्यसमाजी होसकते हैं। दूसरे स्थान में जाइये तो आप आर्यसमाज और सनातनधर्म में भयानक संग्राम पायेंगे। कभी २ मामला बढ़जाता है और कचहरी की शरण लेनी पड़ती है। गाली गलौज की तो सभ्यता में ही गिनती होजाती है। खूब विज्ञापन निकलते हैं, एक दूसरे को मूर्ख और अनपढ़ बतलाया जाता है। एक कुल के लोग लड़ते हैं और बाहिर वाले तमाशा देखते हैं।

इसलिये यह अत्यावश्यक है कि आर्यसमाज का सनातनधर्म से क्या सलूक होना चाहिये ? हम अपने पहले लेख में दिखा आये हैं कि अब आर्यसमाज का नींव खोदने का काम प्रायः समाप्त होचुका है। जिस चट्टान पर मकान खड़ा करना है, उसे खोदते ही जाना बुद्धिमत्ता में शामिल नहीं। नींव का भरना भी प्रारम्भ करना चाहिये। नींव भरने का काम समाप्त होने पर दीवारेंभी चुननी चाहियें, ऐसी अवस्था में यदि आर्यसमाज पहाड़ी को खोदता ही चला जाय तो उसे कोई बुद्धिमान् न कहेगा इसलिये हमारी सम्मति में अब आर्यसमाजों को अपनी नीति में परिवर्तन करना चाहिये। शास्त्रार्थ या खंडन की वह रीति जो अब तक आर्यसमाज ने रक्खी है, छोड़नी चाहिये. अब दूसरा ही मार्गलेना चाहिये समय के बदल जाने पर भी जो लोग हथियारों को नहीं बदलते जो नये से नया माल तय्यार नहीं करसकते, आर्यसमाज को चाहिये कि जहां तक होसके सनातनधर्म के साथ वृथा झंझटों को मिटावें और उनके जीतने के लिये दूसरे मार्ग का अवलम्बन करें।

शास्त्रार्थों से अब साधारणतया कोई लाभ नहीं रहा। शास्त्रार्थों में आजकल होता क्या है ? पहले तो शहर में इश्तिहारबाज़ी होती है, जिस में दिखाया जाता है कि विज्ञापन लगाने वाले सच्चे और दूसरे झूठे हैं। विज्ञापनबाज़ी होचुकने पर नियम तय होने प्रारम्भ होते हैं नियम तय करने में भी दोनों दल यह यत्न करते हैं कि किसी प्रकार नियम का झगड़ा दूसरे के पक्ष पर टूट जाय। शास्त्रार्थ प्रारम्भ होता है, एक ओर आर्यसमाजी बैठे हुए हैं, जो इस बात पर तुले हुए हैं कि अपने पण्डित को जिताना है दूसरी ओर सनातनधर्मियों का दल बैठा है, जो घर से ही निश्चय करके आया है कि मौक़ा पाते ही 'सनातनधर्म की जय' बोल कर उठ आना है।

शास्त्रार्थ शुरू हुआ। दोनों वक्ता और दोनों दल सावधान हैं। यदि पुराने और प्रतिष्ठित वक्ता आए हैं तो सभ्यता की चोटें होंगी, नहीं तो 'तू मूर्ख है' 'कुछ और पढ़ आ' इत्यादि शब्दों का प्रसाद दोनों ओर से मिलने लगता है। जिसने पहले मौक़ा पा कर चिल्लादिया कि 'हमें पता लगगया कि आर्यसमाज (या सनातन धर्मी की पोल क्या है) उसी के पक्ष वाले खड़े हो कर जय जयकारा करके चलदेते हैं। अगले दिन शास्त्रार्थ के समाचार पत्रों में भेजे जाते हैं। दोनों पक्ष कहते हैं 'विजय हमारी हुआ' दोनों वक्ता और सारे श्रोता शास्त्रार्थ में जैसे गये थे, वैसे ही उठ आते हैं। न कोई श्रोता यह निश्चय करने गया कि सत्य क्या है और असत्य क्या है ? और न कोई ऐसा विचार लेकर ही लौटा। सब अपने २ पक्ष को जिताने गये थे और अपने दिल में जिता भी आये।

प्रायः आज कल के शास्त्रार्थों की यही दशा है। इन शास्त्रार्थों से क्या लाभ होता है ? इन शास्त्रार्थों से पहले सभा में कई लोग आर्य धर्म की शरण में आते थे क्यों कि सनातन धर्मानुयायी भी सब खुले दिल से सत्यासत्य का निर्णय करके आते थे। अब वहदशानहीं है। अतः सत्यासत्य का निर्णय तो शास्त्रार्थों का फल है नहीं। रहा पंडिताई दिखाना सो आज कल शास्त्रार्थों में पंडिताई का काम नहीं रहा। जो ज़ोर से बोल सके, विपक्षी की हँसी उड़ासके और भूल होजाने पर भी चुप न हो वही विजयी होजाता है।

ऐसे शास्त्रार्थों से लाभ की अपेक्षा अधिक हानि होती है। शास्त्रार्थों के दिन गए। अब दूसरे ही साधनों से लोगों की सम्मतियों में परिवर्तन करना चाहिये। आप अपने पक्ष की पुष्टि कीजिये, अपने सिद्धान्तों के अनुसार कार्य्य कीजिये, गुरुकुल विद्यालय, अनाथालय चलाइये, संसार आपकी ओर खिंचेगा। आज भारतवर्ष के सब समझदार हिन्दुओं की आर्यसमाज के साथ सहानुभूति होरही है। इसका कारण आर्यसमाज के शास्त्रार्थ नहीं है। आर्यसमाज का समाज सुधार, उसकी शिक्षा का कार्य और अनाथ पतितों को उठाने का यत्न ही इस सहानुभूति में कारण है। शास्त्रार्थ अपने आप में कोई अच्छी या बुरी वस्तु नहीं किन्तु देखना यह है कि जिस अभिप्राय से शास्त्रार्थ किये जाते हैं वह पूरा भी होता है या नहीं ? हमारी सम्मति में वह पूरा नहीं होता। फिर उससे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्या लाभ है ? उस में शक्ति का व्यर्थ व्यय क्यों किया जाय ? जो कार्य्य मरहम से होसकता है, वहां चाकू का प्रयोग करने से क्या लाभ है ? हम खण्डन के विरुद्ध नहीं हैं, न हम झगड़े को या साम्मुख्य को भयानक ही समझते हैं किन्तु परख यह होनी चाहिये कि जो कार्य किया जाता है, उस से कोई लाभ भी होता है या नहीं ? शास्त्रार्थों से अब विशेष लाभ नहीं होता इसलिये उनमें शक्ति का व्यय न करके अपने मन्डन और रचना के कार्य में बल लगा देना आर्यसमाजके लिये उपयोगी होगा।

संसार की गति

कोई नियम नहीं रहा
जिसकी लाठी उसकी भैंस

युद्ध का प्रारम्भ बड़ी बुरी घड़ी में हुआ था। प्रारम्भ में ही कई सार्वजनिक नियमों का भङ्ग होगया। पहले एक राज पुत्र का मरना ही अनिष्ट हुआ फिर आष्ट्रिया की धमकी और भी बुरी थी। जर्मनी ने आवश्यकता की दुहाई देकर बैल्जियम में सेना भेज दी उसने तो मानो अनियमता के बन्द किये हुए दरिया का बन्दा तोड़ दिया। चारों ओर अनियमता का घातक पानी बह निकला। दम दम गोलियाँ चलीं सब एक दूसरे पर दोष देते हैं, पर निर्णय कौन करे। जो नियम बनाने वाले थे, वे ही लड़ रहे हैं, तब निर्णय कराने कौन आवे। जब घर का मालिक ही दीवार में से ईंटें निकालने लगे तो रोकने वाला कौन हो सकता है ? शहर जलाये गये, पुस्तकालयों की जगह राख रह गई, विश्वविद्यालयों की ईंट से ईंट बज गई, धर्म मन्दिरों पर तोप के गोले गिरने लगे—तब शेष क्या रह गया। कोई किसी को कुछ कहने लायक़ नहीं रहा। कहे भी तो मानता कौन है ? सब ओर आफत मची हुई देखकर कुरूप को शौक़ हुआ कि हम पीछे क्यों रहे ? हमें भी कुछ मिल जाय तो क्या हानि है ? जर्मनी ने उकसाना शुरू किया। सार्वदेशिक नियमों के फन्दे तो पहले ही कट चुके थे, टर्की भी लड़ाईमें कूद पड़ा। रूस कहता है टर्की ने बिना सूचना दिये काले समुद्र में रूसी जहाज़ों पर मार धाड़ शुरू कर दी, टर्की कहता है पहले रूस ने की। पूरा सत्य किधर है, वह तो इतिहास में ही स्पष्ट होगा, किन्तु इस में सन्देह नहीं कि बिना युद्ध की घोषणा के युद्ध आरम्भ हो गया था। नियम की दुहाई कितनी ही दी जाय कोई नहीं सुनता। अब तो जो कुछ जिसके हाथ में आवे, वह ले ले। महाभारत की कहानी पढ़ कर इस युद्ध के समाचारों को पढ़ें तो यह उसकी पुनरावृत्ति सी प्रतीत होती है। वहां लड़ाई पास के सम्बन्धियों में थी, यहाँ भी हमारे सम्राट् और जर्मन सम्राट् पास के सम्बन्धी हैं। रूस के ज़ार भी बहुत दूर से सम्बन्धी नहीं। वहां सारे एशिया खण्डही नहीं, बाहिर के भी राजा लड़ने आये थे, इस युद्ध का नाद भी जापान से इंग्लैण्ड तक गूंज रहा है। उस युद्ध में भीष्म का वध धोखे से किया गया, द्रोण को झूठे उपाय से मारा गया, और दुर्योधन का उरु भङ्ग नियम विरुद्ध हुआ इस युद्ध में उससे कम नियम और सत्य के भङ्ग नहीं हुए। अभी आगे क्या क्या होगा, यह ईश्वर ही जानता है। न जाने इस भयंकर महाभारत का परिणाम क्या होगा ? महाभारत के परिणामों को सोचकर रोमांच हो आता है। क्या इस युद्ध के भी वैसे ही परिणाम होंगे ? यह मनुष्यों का युद्ध नहीं, जाति का युद्ध है। मनुष्यों के युद्ध इस भूतल पर से मनुष्यों को उठा ले जाते हैं, किन्तु जातियों के युद्ध जातियों की सत्ता को सन्देह में डालते हैं। भगवन्! संसार को ऐसी आपत्तियों से बचाओ।

असन्तुष्ट दल

इंग्लैण्ड में एक ऐसा दल है, जो समझता है कि इंग्लैण्ड यदि इस महायुद्ध में न कूदता तो अच्छा होता। मि. रैम्समेकडानल्ड, मिस्टर केयरहार्डी, मि. नार्मन एंजल और मि. ट्रविल्जयन आदि अनेक महानुभाव इस दल के मुखिया हैं। इस दल के लोग कहते हैं कि इंग्लैण्ड यदि युद्ध में न कूदता तो उसकी शक्ति बढ़ जाती, कम न होती। इस दल को इस समय इंग्लैण्ड के विजय में भी भय प्रतीत होता है। यदि मित्रों का जय हो तो सब से अधिक लाभ में रूस रहेगा। फ्रांस को युद्ध से कोई बड़ा लाभ नहीं हो सकता, बैल्जियम का सत्यानाश हो ही रहा है, इंग्लैण्ड कहता है कि उस की इस युद्ध में कोई बड़ी विजय कामना नहीं है। इस समय इंग्लैण्ड ने साइप्रस ले लिया है, पर इतने से क्या हो सकता है ? लाभ में रहेगा रूस। दूसरे उसदल की सम्मति है कि इंग्लैण्ड को रूस से अधिक भय होगा। बढ़ा हुआ रूस इंग्लैण्ड के लिये जर्मनी की अपेक्षा अधिक भयानक हो सकता है। इसलिये इंग्लैण्ड के लड़ने से उसकी कठिनाइयाँ बढ़ेंगी, घटेंगी नहीं। इनमें से एक लेखक लिखता है 'इसमें कौन सी बुद्धिमत्ता है कि इंग्लैण्ड लाखों मनुष्यों का, धनका, और कितनी ही सामुद्रिक शक्ति केवल इस लिये कम करे कि उसका शत्रु रूस जीत जाय और इंग्लैण्ड को फिर एक बार रूस से लड़ने के लिये जीते हुए जर्मनी की सहायता लेनी पड़े ?'

इसका उत्तर

इस दल की युक्तियों का उत्तर देने वाले कहते हैं कि यद्यपि रूस अधिक असभ्य है, तथापि संसार को जर्मनी से अधिक भय है क्योंकि जर्मनी की युद्ध प्रियता सभ्यता के और सायंस की सहायता लेकर अधिक हानि कारक हो सकती है। उनका यह भी कथन है कि रूस अब पहले सा असभ्य नहीं रहा अब उस में सभ्यता का अधिक संचार हो गया है। उत्तर देने वालों में पहला नम्बर मि. वैल्स का है। इस युद्ध से पूर्व आप युद्ध के विरुद्ध कई उपन्यास तथा ग्रन्थ लिख चुके हैं। किन्तु शुरू से ही आप इस युद्ध के पक्ष में हैं। आपकी राय है कि इस युद्ध में इंग्लैण्ड को पूरी तरह सहयोग देकर जर्मनी की शक्ति को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चकना चूर कर देना चाहिये। आप यह भी खलफते हैं कि जर्मनी को कुचल देने से फिर आगे युद्ध की सम्भावना न रहेगी युद्ध से असन्तुष्ट दल के नेता मि. रेम्से मेकडानल्ड हैं। आपकी राय है कि युद्ध में अन्तिम विजय तो मित्र दल की ही होगी, किन्तु जर्मनी को कुचलने के विचार उठाना बुद्धिमत्ता के सर्वथा विरुद्ध है। आपकी राय है कि किसी देश को कुचल देनेसे कभी स्थायी शान्ति नहीं हो सकती। कुचली हुई जाति के मन में अपमान की कील घुस जाती है, और वह जल्दी या देर में फिर युद्धाग्नि को भड़का कर ही रहती है। यह दल किसी भी जाति के कुचले जाने के विरुद्ध है।

जाति पर जाति का अधिकार

इस दल ने एक घोषणापत्र निकाला है, जिस में उन सिद्धान्तों का वर्णन किया है, जो युद्ध के पीछे सन्धि करते हुए ध्यान में रखने चाहियें। उनमें से एक सिद्धान्त यह है कि किसी एक देश के भाग को यथा सम्भव दूसरे में न मिलाया जाय। यदि मिलाया जाय तो सिद्धान्त सामने रक्खा जाय। जो देश या प्रान्त एक देश से निकाल कर दूसरे देश में मिलाया जाता हो, उसके निवासियों की सम्मति ली-जाय। सारी प्रजा बहुसम्मति से जिस देश के साथ जाना चाहे, वहीकीजाय। यह सिद्धान्त बड़ा उत्तम है सब से प्रथम तो इस सिद्धान्त के अनुसार जर्मनी को बेल्जियम से बोरिया बंदना उठाकर जाना पड़ेगा। एल्सेस और लौरेन में से लोरेन फ्रांसके साथ मिल-जायगा, इस में सन्देह ही नहीं रहा पोलैंड से अगर सम्मतियां लीगईं, तो पोलैंड के तीनों भाग मिलकर पृथक् हो जाना चाहेंगे। हमारी सम्मति में इससे अच्छा पोलैंड के प्रश्न का हल नहीं हो सकता। रूस जर्मनी और आस्ट्रिया के झगड़े का निबटारा इसी प्रकार हो-सकताहै कि पोलैंड किसी के हाथ में न रहे, और तीनों भागों को मिलाकर एक पोलिश रिपब्लिक बनादी जाय। इससे रूस को जर्मनी से लड़ने में जहां एक ओर कोई स्वार्थ न रहेगा, वहां साथ ही इन देशों के बीच में एक नई शक्ति आपड़ने से परस्पर लड़ाइयां कम हो-जायंगी। हरएक देश का स्वार्थ होगा कि वह पोलैंड की स्वाधीनता की रक्षा करे ताकि कोई दूसरा उसपर अधिकार न जमालें। इस युद्ध रूपी पङ्कसे कमलोदय होसकता है यदि पोलैंड के तीनों भागों को एक करके स्वाधीन करदिया जाय।

भारत के वीरो ! स्वाधीन करादो।

फ्रांस की भूमि में लड़नेवाले भारत वीरो! बेचारे निर्बल बैल्जियम को जर्मनी के सैनिकों से ख़ाली करादो। जर्मनी ने बैलजियम पर जो लोहे की जंज़ीर लगाई है, उसे अपनी प्रबल भुजाओं से तोड़ डालो। तुम पैसों के लिये नहीं। एक सिद्धान्त के लिये लड़रहे हो। बैलजियम पर किसी उत्तेजना से जर्मनी ने अधिकार जमालिया है, उसे अपनी बहादुरी से उड़ादो। जबतक तुम ऐसे पवित्र उद्देश्य से लड़ोगे; परमात्मा तुम्हारे शस्त्र को बरकत देगा।

कन्या महाविद्यालय में छोटेलाट

इस समाचार को सारे आर्यसमाज ने बड़ी प्रसन्नता से सुना है कि पंजाब के छोटेलाट सरमाइकेल ओड्वायर ने दूसरी बार कन्यामहाविद्यालय का कार्य्य देखा। प्रबन्ध कारिणी सभा के सभ्यों ने आप का द्वार पर स्वागत किया। विद्यालय के कार्य्य को देखकर लाटसाहिब बड़े प्रसन्न हुए। श्रीमती सावित्रीदेवी जी आचार्या के कार्य की आपने बड़ी प्रशंसा की, और अपनी प्रसन्नता प्रकट करने के लिये १००) सहायतार्थ दिये। शिक्षा के साथ आपका प्रेम प्रशंसनीय और सारी प्रजा को उत्साह देनेवाला है

दो महोत्सव

नवम्बर के अन्त में दो महोत्सव होनेवाले हैं। दोनों महोत्सवों में आर्य जाति की मनोरंजकता है। नवम्बर की २६, २७, और २८ को लाहौर में लाहौर आर्य्यसमाज का उत्सव होगा और उन्हीं दिनों लखनऊ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन होगा। दोनों की तय्यारियां जोश से होरहीं हैं। जिन लोगों को इन उत्सवों में जाना है, उन्हें यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि मुइरिम के कारण १९ नवम्बर से २९ नवम्बर तक नार्थवैस्ट-र्नरेलवे और अवधरुहेलखण्डरेलवे में रियायती टिकट मिलेंगे। पहले और दूसरे दर्जे में जानेवालों को एक ओर का किराया ख़र्च के आना और आना मिलेगा, और जो तीसरे दरजे का टि-कट लेंगे, वे इयोढ़े में जासकेंगे। आर्य पुरुषों को चाहिये कि अपने दोनों महोत्सवों की रौनक़ बढ़ायें। जो सम्मे-लन जाना चाहें। उन्हें२६ की सुबह से पूर्व-ही लखनऊ पहुंच जाना चाहिये ताकि वे सभापति महोदय के भाषण में भाग ले सकें। २७ दिसम्बर की रात को प्रयागकी हिन्दी साहित्य समिति और सरस्वती संगीत मण्डल मिलकर सत्य-हरिश्चन्द्र का नाटक दिखायेंगे।

वेद प्रकाश की तीव्र दृष्टि

मेरठ के सहयोगी वेद प्रकाश की कुछ महीनों से गुरुकुल कांगड़ी पर और उस से सम्बन्ध रखने वाली सब चीज़ों पर बड़ी तीव्र दृष्टि है। वेद प्रकाश पण्डित तुलसीराम जी का पत्र है। पं० तुलसीराम जी वृन्दावन गुरुकुल के आचार्य हैं, आर्य सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग के सभासद् हैं, और सामवेद भाष्यकार हैं। आपकी आयु की भी हम प्रतिष्ठा करते हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हम आप के कटाक्षों के उत्तर देने में संकोच करते रहे हैं और जब तक पण्डित जी अपने आप को इन आदरों के सर्वथा अयोग्य सिद्ध न करेंगे, हमें संकोच रहेगा। तो भी इतना कह देने में हानि नहीं कि पिछले कुछ महीनों के व्यवहार से आप ने उस आदर को बहुत कम करदिया है, जो आप के लिये आर्य समाज की युवक मण्डली में या विशेषतया आपके भाई कु ला० बाबू बुलाये बिन बुलाये लोगों के गले पड़ते फिरते हैं, और जन्म के ब्राह्मणों के लिये लोगों के दिलों में रही सही इज़्ज़त को भी मिट्टी में मिलाते फिरते हैं। पण्डित तुलसीराम जी को विशेष अभिमा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने सिद्धान्ती पन का है क्योंकि आप हरसमय गुरुकुल के स्नातकों के शिथिल सिद्धान्तों की हँसी उड़ाया करतेहैं। हमें और पं०हरिश्चन्द्र जी को पं० तुलसीराम जी के साथ एकान्त में बातें करने का अवसर प्राप्त होचुका है। हम नहीं चाहते कि जो कुछ पं० जी ने वृन्दावन गुरुकुल के रास्ते में हम से कहा था उस का उल्लेख करके पण्डित जी को किसी कठिनाई में डालें क्योंकि वे बातें प्राइवेट थीं। किंतु इतना पण्डितजी को भी याद रखना चाहिये कि आराम में वह आदमी रहता है जो अन्दर और बाहिर एकसा रहे। जो अंदर कुछ रखे और बाहिर कुछ कहे, उसे संसार नहीं तो अपना आत्मा अवश्य ही धिक्कारता है।

उषा और वेदप्रकाश

गुरुकुल कांगड़ी से ऊषा नाम की एक संस्कृत की मासिक पत्रिका निकलती है प्रूफ़ देखने में असावधानी होजाने से उस के टाइटिल पेज पर कोई भूल रहती थी जो सुधारदी गई। इस पर वेदप्रकाश से टिप्पणी चढ़ाये बिना न रहा गया। अस्तु! टिप्पणी चढ़ानी थी सो चढ़ादी किन्तु परमात्मा का भी न्याय विचित्र है। जैसे को तैसा मिलता है। श्री पं० तुलसीरामजी के जी में आया कि संस्कृत भाषा में एक लेख लिखा जाय। आपने भेज दिया "संस्कृतरत्नाकर" के सम्पादक के पास। यह पत्र जयपुर से निकलता है और सनातनधर्म के विचार रखता है किन्तु विद्याप्रसङ्ग में सम्प्रदाय का भेद भाव रखना तुच्छता में शामिल है। और उषा यद्यपि आर्यसामाजिक है परन्तु निकलती गुरुकुल काँगड़ी से है। पण्डित जी उस में लेख कैसे भेजते। परन्तु दैव की गति देखिये, रत्नाकर के सम्पादक को क्या सूझी कि सामवेद भाष्य कार श्री पं० तुलसीराम स्वामी के लेखों में से कई अशुद्धियाँ निकालदीं, और टिप्पणी में उनका उल्लेख भी कर दिया। यदि टाइटिल पेज में एक अशुद्धि होने और एक धुरन्धर लेखक के लिखे लेख में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri USA

जी को हाथों हाथ करनी का व्याज सहित फल मिल गया। यदि हम से पूछें तो हमारी सम्मति में वेदप्रकाश के लेखक का उषा के टाइटिल की अशुद्धियां निकालना यदि अनुदारता का चिन्ह था तो रत्नाकर सम्पादक का। एक अपने पत्र में लिखने वाले की अशुद्धियों को ठीक न करके, उस पर टिप्पणी चढ़ाना सम्पादकीय दृष्टि से अशिष्टता के समान है। वेदप्रकाश को चाहिये कि दूसरे के घर पर पत्थर फेंकने से प्रथम अपने मकान की खिड़कियों में शीशे की जगह लोहे के दर्वाजे लगा लिया करें।

श्री पं० तुलसीरामजी और वेदप्रकाश के विषय में इतने शब्द लिखते हुए भी हमें बड़ा दुःख हुआ, किन्तु सचेत करना अपना कर्तव्य है। आशा है कि आगे हमें ऐसा लिखने के लिये बाधित न होना पड़ेगा।

विविध

—मुलतानछावनी के आर्यसमाज का उत्सव २०, २१ और २२ नवम्बर को होगा स्वामी सत्यानन्दजी और पं० ब्रह्मदत्त विद्यालङ्कार पधारेंगे।

—आर्यसमाज रेल बाज़ार, कानपुर के मन्त्री महाशय सूचित करते हैं कि उन्होंने एक पतितोद्धार विद्यालय खोला है, जिस में पतित जातियों के बालकों के भरण पोषण का प्रबन्ध किया जाता है।

—प्रभात के सम्पादक श्री पं० यज्ञदत्त विद्यालंकार इस वर्ष लाहौर की आर्य कुमारसभा के प्रधान नियत हुए हैं। हम अपने भाई को इस कार्यक्षेत्र में उतरने पर बधाई देते हैं और हर प्रकार के अभ्युदय की आशा रखते हैं।

—गुरुकुल धारा पर किश्तियों का पुल बनने की तय्यारियाँ होरही हैं, शीघ्र ही गुरुकुल को सीधा रास्ता चलने लगेगा।

—श्रीमहात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल में ही आगये हैं। उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया था। खांसी जुकाम और ज्वर ने उन्हें कार्य के लिये सर्वथा अशक्त कर दिया था। अभी [illegible] वहीं रहेंगे।

—आगरा समाज का वार्षिकोत्सव गत सप्ताह बड़ी धूमधाम से हुआ। श्री पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार और प्रो० महेशचरणसिंह के व्याख्यान हुए। श्री म० रत्नलालजी की अपील हुई।

——

आर्य्य वीरों से प्रार्थना

बहुत दिनों से, आर्य्य भ्राता अपने अपने विचार, आर्य्य बिरादरी के पक्ष में प्रकाश कर चुके हैं, मगर कई कारणों से इस काम के चलाने में सफलता प्राप्त नहीं हुई, बहुत से आर्य्य भ्राता चिन्तित हैं, कि जब तक पुरानी बिरादरियों का जाति बन्धन यथा शक्ति तोड़कर, गुण कर्म्म स्वभाव अनुकूल अपनी सन्तानों के विवाह न करेंगे, और वर्ण व्यवस्थापक सभा न बनावेंगे तब तक आर्य्य जाति का उद्धार नहीं हो सकेगा, मेरे १४ वर्ष के अनुभव और आर्य्य समाज की सेवा ने निश्चय करादिया है जब तक सच्चे आर्य्य भ्राता परस्पर एक दूसरे की सेवा सहायता प्रेम पूर्वक और सम्बन्ध आदि नहीं करते और दुःख सुख में सम्मिलित नहीं होते, तब तक आर्य्य समाज की रक्षा होनी कठिन है और पुरानी बिरादरियों के बन्धन से आर्य्य जाति का छुटकारा होना असंभव है, सैकड़ों दृढ आर्य्य और पुराने आर्य्य भाइयों की गिरावट का कारण उनकी पुरानी बिरादरी ही हो चुकी है, जिससे आर्य्य समाज को अकथनीय हानि पहुंच चुकी है और पहुंच रही है इस लिये मैंने, निश्चय कर लिया है, कि इस पवित्र काम को अपने हाथ में लेकर आर्य्य भ्राताओं की सेवा करके अपना जन्म सुफल करूं, मुझे आशा है कि सब आर्य्य भ्राता इस पवित्र कार्य्य के चलाने में मुझ निर्बल की सहायता करेंगे जिससे मेरा उत्साह बढ़े, आर्य्य समाज के लीडरों और उपदेशकों पंडितों एडीटरों, और हितैषियों से सविनय प्रार्थना है, कि कृपा पूर्वक अपनी अपनी सम्मति लिख कर कृतार्थ करें जिस से इस पवित्र कार्य्य के चलाने में सफलता प्राप्त होवे जो आर्य्य भ्राता अपने पुत्र व पुत्रियों व निकट सम्बधियों आदि के विवाह आदि गुण कर्म्म स्वभाव अनुकूल

पुराना जाति बन्धन तोड़कर पूर्ण वैदिक रीति से करने को तय्यार हैं। वे कृपा करके अपने अपने परिवार की सूची भेजें, जिससे इस काम के चलाने की चेष्टा की जाय—प्रार्थना है कि सब आर्य्य समाचार पत्र कृपा करके अपने अपने पत्र में इस लेख को छाप दें, जिस से सर्व साधारण को लाभ पहुंच सके ॥

दः टेकचद आर्य्य
२१४ सूता पट्टी बड़ा बाज़ार
कलकत्ता

प्राचीन नौका विज्ञान

(रामायण काल)

वैदिक काल को छोड़कर हम सहसा रामयण महाभारत काल पर आजांय, इस से पहले मैं आपको थोड़ा ब्राह्मण काल का भी हलका सा दृश्य दिखाना चाहता हूं इस भाग की छोटी बड़ी बातों को न लेता हुआ मैं सुगमता के लिये केवल एक बात बता देना आवश्यक समझता हूं। वह यह है, कि ब्राह्मण ग्रन्थों में पूषाका वर्णन पढ़ने योग्य है (पूषा देवता के हाथ में ही सारे संसार भर के रास्ते हैं और सामुद्रिक यात्रा का प्रबन्ध भी इस पूषा के हाथ में ही समझाजाता है। इस पूषा की सामुद्रिक शक्ति की पुष्टि में ऋग्वेद में एक मन्त्र आया है।

यास्ते पूषन्नावः अन्तः समुद्रेहिरण्मयीरन्तरिक्षे चरन्ति

इत्यादि.

पूषा आदि देवता का सम्पूर्ण कार्य विशेषतया व्याख्या सहित पाठकों को कभी फिर भेंट करेंगे।

अब हम इस सब कार्य को छोड़कर सीधे रामायण के समय में आजाते हैं और समस्त समुद्र के बन्दरगाहों और बड़ी नदियों के मुहानों में चक्कर लगाते हैं और उस समय की सारी जहाज़ी पर ताल करते हैं। भगवान् वाल्मीकी की बनाई हुई रामायण नाम की पुस्तक शायद इस समय के सम्पूर्ण रहस्य खोलने में पर्याप्त है। हम देखते हैं, कि रामायण हमें कोई स्पष्ट प्रमाण बताता, हाँ अनुमानिक प्रमाण तारा सिर मूंडते हैं

भरत अपना सारा लश्कर लेकर सूनी अयोध्या को छोड़कर राम से मिलने जाते हैं। बीच में बड़ी भारी नदियाँ सरयू तथा गंगा पार करनी पड़ती हैं। उस समय के वर्णन के लिये भगवान् वाल्मीकि लिखते हैं कि:-

" नावां शतानां पञ्चानां कैवर्त्तानां शतम् शतम्
सन्नाद्धानां तथा यूनां तिष्ठन्त्वित्यभ्यचो दयत "

इस श्लोक के सिवाय सारी रामायण भर में अन्य कोई श्लोक नहीं मिलता जिस से उस समय की नौ विज्ञान की उन्नति पाई जाय। न कोई व्यवहारिक वर्णन है जिस में कि कोई महानौका या जहाज़ का वर्णन हो। इतने बड़े महा काव्य में भी इसके न मिलने का हमको कोई कारण नहीं प्रतीत होता इस को हम आगे स्पष्ट करेंगे।

वैदिक काल की अश्वादि नाना यन्त्र सज्जित नौकाओं से इनके बलवाली नाओं में कितना आकाश पाताल का अन्तर है। कहाँ एक और यन्त्र से चलने वाली समुद्र तरण करने वाली महा नौकाएं तथा दूसरी ओर निषाद या गुह या कैवटथा मत्स्य जीवियों द्वारा चलाई जाने वाली नौकाएँ। सभ्यता का एकदम परिवर्तन होगया। और इस सभ्यता को पलटने वाले काल की भी कितनी मात्रा अपेक्षित है।

यदि मान भी लिया जाय कि नदी आदि की चर्चा छोड़ कर समुद्र की चर्चा में हम रामायण में जहाज़ पा लेंगे। तिस पर भी अन्वेषण करनेवाली आंखें सारे रामायण समुद्र में तैर जाती हैं पर कहीं जहाज़ का नाम मात्र भी दृष्टि गोचर नहीं होता। प्रश्न होता है, कि यदि सामुद्रिक प्लव थे और व्यापार था, और सर्वसाधन थे, तो सुग्रीव जैसे बड़े भारी राजा का एक भी जहाज़ न था? या वह किसी अन्य राजा से भी संधि के तौर पर कोई जहाज़ भाड़ा न कर सकता था? कि उसके प्रधान मन्त्री को तैर कर या अपने जीव को संशय में डाल कर जाने की ही नौबत आन पहुंची। यदि सामुद्रिक सेना होती या नौ क्रिया क्रिया रूप में होती, तो बड़े समस्या पूर्ण समय पर भगवान् वा लमीकि पूर्ववत् लिखने से कभी न चूकते

इतने पर भी एक बात बड़ी आकर्ष है, जिसको बिना स्पर्श किये आगे चल ना असम्भव है दैवात साधारण व लमिकि रामायण के विद्यार्थी को भ एक वार आश्चर्यान्वित कर ही देत होगी। वह यह कि सुग्रीव सीतान्वेष णार्थ जब अपने दूत तथा खोजक तथ सेना दलों को भेजरहा है; तो नाना द्वीपों का नाम लेता है और कहता कि:—

समुद्र मनणाढांश्च पर्वतान् पत्तनानिच
मन्दरस्य चयेकोटिं संश्रिताः केचिदालुयाः ॥
कर्ण प्रावरणाश्चैव तथाचा प्योष्टकर्णकाः
घोर लोहमुखाश्चैवय जपनाश्चैक पादकाः
अक्षया बल वन्तश्च तथैव पुरुषादकाः
किराता ! स्तीक्ष्ण चूडाश्च हेमाभाः प्रिय दर्शन
आममीनाशना श्चैव किराता द्वीपवासिनः
अन्तर्जल चरा घोराः नर व्याघ्रा इतिस्मृताः
एते षामाश्चयाः सर्वे विचेयाः काननौकसः
गिरिभिर्यैचगम्यन्ते प्लवनेनप्लवेनच ॥

"ऐ वीर वानरो तुमलोग! समुद्र के फैले हुवे पर्वतों और नगरों में औ मन्दर पर्वत की चोटी पर बने हुवे स्था नों में जाकर खूब खोज लगाओ। बहु सी जातियें नाना द्वीपों में वास करत हैं किनियों के कान इतने लम्बे होते कि वे सब शरीरों को उन से ढाप ले हैं। कइयों के होठ और कान भी इतने ब होते हैं किन्हीं के मूंह लोहे के से बने हुवे भयावने हैं। कोई एक टांग वाले औ बहुत तेज दोड़ने वाले हैं। कोई मनुष भक्षक बड़ी आयु वाले और बलवा होते हैं और किन्हीं किरातों के लम्बोत सिर हैं और कोई द्वीप निवासी गौ वर्ण के और सुवर्ण जैसी आभावाले ब सुन्दर होते हैं। और कोई कच्ची मछ खाने वाले द्वीप निवासी किरात पान के बीचों बीच चलने वाले नर वाघ व हलाते हैं इन्हीं सब लोगों के जंगल में छिपे स्थानों कों खूब ढूंढना। स्थानों का रास्ता पहाड़ों में से भी कई स्थानों पर कूद के जा हैं और कई स्थानों पर जहाज द्वा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह प्रकरण आगे भी चलता है और सुग्रीव एक२ द्वीप का नाम गिनाता जिसका, मैं समझता हूं, कि केवल लोक देदेना ही व्याख्या से अच्छा होगा।

यत्नवन्तो यवद्वीपः सप्तराज्योपशोभितः
सुवर्ण रूप्यक द्वीपं सुवर्ण करमण्डितम
यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वतः
ततोरक्तजलं प्राप्य शोणाख्यं शीघ्रवाहिनम्
गत्वा पारं समुद्रस्य सिद्ध चारण सेवितम् ।
पर्वतप्रभवाः नद्यः सुभीम बहु निष्कुटाः ।
ततःसमुद्रद्वीपांश्च सुभीमा न्दुष्टु मर्हथ ।

इसी प्रकार दूसरे व्याख्यान पर—

तत्काल मेघ प्रतिमं महोरगनिषेवितम्
अभिगम्य महानादं तीर्थेनैव महोदधिम्
ततोरक्तजलं भीमे लोहितं नाम सागरं
तत्रशैलनिभा भीमा मन्देहा नाम राक्षसः ।
शैलशृंगेयुलम्बन्ते ।
ततःपाण्डुरमेघाभं क्षीरोदंनाम सागरम्
तस्य मध्येमहान्श्वेतो ऋषभोनाम पर्वतः
क्षीरोदंसमतिक्रम्य तदा द्रक्ष्यथ वानराः
जलोदं सागरं शीघ्रमइत्यादि

वर्णन हम पाते हैं। हम इस लम्बे चौड़े वर्णन से वास्तव में कुछ नहीं समझ सक्ते सिवाय इसके कि इसको सुनकर हम एक नये भूगोल की रचना कहलें। फिर भी इसमें लोहितसागर या रक्तसागर का वर्णन हमें विशेष ध्यान देने योग्य प्रतीति होता है और पूर्व वर्णन में श्वेत द्वीपवासी गौराङ्गों का वर्णन आश्चर्य जनक है।

ख़ैर इन द्वीप और द्वीप वासियों के वर्णन से पाठक सज्जन कुछ भी परिणाम निकालें पर मैं इन परिणामों पर पहुंचता हूं (१) या तो ये भाग यदि सम्पूर्णतः नहीं तो बहुधा अंश पीछे से मिलाया गया है क्योंकि इस से भी अगला वर्णन और भी पौराणिक कल्पनाओं तथा वैसे ही वर्णनों से मिलता है। सम्भवतः वह अंश पीछे मिलाया गया हो जो पढ़ने से साफ़ प्रतीत होता है।

(२) इसके विपरीत यदि इस वर्णन को वास्तविक ग्रन्थकार का माना जाय तो इन सब द्वीप, द्वीपांतरों की यथाकथंचित् संगति लगाकर येही अनुसन्धान करना पड़ता है कि रामायण के काल में भी सामुद्रिक संस्थानों के ज्ञान के साथ साथ पूर्वोक्त रीति से नावों या नवनौं से बड़े २ गम्भीर समुद्रों को पार करके महाद्वीपों की यात्रा कीजाया करती होगी। वर्णानुकूल २ या तीन मास में सर्व संसार की यात्रा भी तभी सम्भव है अन्यथा सुग्रीव की आज्ञा इतनी शीघ्र कार्य रूप में परिणत नहीं हो सकती। इस प्रकार रामायण काल की समालोचना करते हुवे रामायण काल के शेष ऊहापोह को पाठकों पर ही छोड़ते हैं और आशा करते हैं कि पाठक हमें बतायेंगे कि रामायण इस विषय में हमें और क्या बता सकता है आगे हम इसी दृष्टि से महाभारत की समालोचना करेंगे।

——

निखिल-भारतवर्षीय षष्ठ वैद्य सम्मेलन तथा आयुर्वेदीय प्रदर्शिनी।

कलकत्ता।

मान्यवर

श्रीमान्

सविनय निवेदन है कि इस वर्ष यहां पर षष्ठ वैद्यसम्मेलन के साथ आयुर्वेदीय प्रदर्शन होगा। आप इस देश-हितकारी कार्य्य के लाभ और महत्त्व को भले प्रकार जानते हैं, इस प्रकार प्रदर्शन से उन्नतिकारी परिवर्तन और सुफल सम्भावना का मर्म भी अवश्य समझते हैं। अतएव प्रार्थना है कि आप इसे सर्वाङ्ग पूर्ण बनाने का प्रयत्न करें और पृष्ठलिखित वस्तुओं में से जो २ आप भेज सकें उनकी एक सूची शीघ्र लिख भेजने की कृपा करें। आप की सूची में लिखी वस्तुओं में से जो यहां पसन्द कीजायंगी, उन के नाम शीघ्र आपकी सेवा में भेज कर प्रार्थना की जायगी और आशा है कि आप भी शीघ्र ही भेजने की कृपा करेंगे।

चीजें भेजने का पता—नं० १८।
लोवरचीतपुर रोड कलकत्ता।

वशंवद—

३० अक्टोबर, १९१४। } श्रीहरिनाथ शर्म्मा, श्रीभूरालाल मिश्र, श्रीज्ञानेन्द्रनाथ सेन, सम्पादकगण।

तालिका

—○०○—

१। हरे या सूखे वनस्पति कंदमूल फल पुष्पादि।
२। उत्तम रासायनिक सिद्धौषधि और पार्थिव भेषज(यथा कंकुष्ठ,खर्परआदि)
३। आन्तब भेषज (यथा कस्तूरी, गोरोचनादि)
४। शारीर अस्थिपंजर तथा अङ्ग प्रत्यङ्गों के चित्रादि।
५। प्राचीन तथा नूतन यन्त्र शस्त्रादि।
६। मुद्रित अमुद्रित वैद्यक ग्रन्थ।
७। अनुभूत प्रयोगानुसार आयुर्वेदोक्त दवाइयाँ।

नोट—सब चीज़ें १० दिसम्बर १९१४, तक आजानी चाहिये।

——

लाहौर की चिट्ठी

श्री. म. संपादक-सद्धर्म प्रचारक,

नमस्ते! आज कल यहाँ मौसिम अच्छा होने लगा है. अगस्त की गर्मी कम हो गई तथा सितंबर का अतिथि माहशय मलेरिया भी अपना बिस्तरा बांध कर जाने लगा है।

इन दिनों में अच्छी सर्दी होनी चाहिये थी पर साल यह दिन अच्छे सर्दी के होते हैं परन्तु न जाने क्यों इस वर्ष इस समय सर्दी बहुत ही कम प्रतीत होती है. शायद जंग की तोपों की उष्णता से सर्दी न्यून हो गयी हो!

योरप के जंग के सबब से बैंक टूट गये, व्यापार डूब गया, काम धंदे बैठ गये, दारिद्र्य खड़ा हुआ, चिंता बढ़ गई ऐसी सैकड़ों अच्छी और बुरी बातें हो गई हैं; जिनमें से एक यह है, कि आर्य समाज का अंदरूनी जंग बिलकुल शांत हो गया है, और आर्य समाज अब अपने सच्चे धार्मिक मिशन में ज़ोर से लग गया है. कभी कभी विष से भी अमृत की उत्पत्ति होती है यह बात इस से सच्ची प्रतीत होती है.

जंग के सबब से यहां सब चीज़ें दुष्प्राप्य हो गईं कई पदार्थ तो मिलने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ही नहीं और जो मिलते हैं उनका मूल्य बहुत ही बढ़ गया है. जंग के सबब से अगर कुछ पदार्थ अधिक दुर्लभ हो गया हो तो हिंदू मुसलमानों की आपस की प्रीति ही है मुसलमान लोग केवल हिन्दुओं को चिढ़ाने के लिये गोवध का नगर कीर्तन आगामी ईद के दिन करने वाले हैं ऐसी यहां अफ़वाह फैल गयी है न जानें हमारे शिख भाईयों के दिलों में क्या भावना आती होगी। जब वे किसी समय सोचते हैं उस समय उन के दिलों में ऐसी ही विचित्र बात आती है धन्य है इन मोह-मदायों की जो कि ऐसे नाजुक समय में भी झगड़े की बातें सोचते रहते हैं।

आर्य कन्या पाठशाला—लाहोर आर्य समाज के द्वारा कई सालों से आर्य कन्या पाठशाला चलाई हुयी है इस पाठशाला का वार्षिकोत्सव गत आदित्यवार के दिन प्रातःकाल आर्य समाज-बिच्छोवाली-में हो गया इस समय सभापति का आसन डा० हीरालाल जी ने सुशोभित किया था प्रथमतः कई कन्याओं ने उत्तम स्वर में वेद मंत्रों का उच्च स्वर में गायन किया। तत्पश्चात् 'दयानंद देश उपकारी' यह भजन अत्यंत मनोहर अलापों में गाया गया। पश्चात् पं० देवदत्त जी ने वार्षिक इतिवृत्त (Report) सुनाया. तदनंतर पं०निरुक्तरत्न जी का अत्यंत बोध प्रद तथा उपदेश मुकुर मनोहर व्याख्यान "स्त्री शिक्षा" पर होगया, जिसमें उन्होंने सैकड़ों प्राचीन तथा अर्वाचीन आधार देकर सिद्ध किया कि शिक्षा के बिना स्त्रियों की उन्नति नहीं हो सकती है। इसलिये स्त्रियों को भी पढ़ाना चाहिये।

इस मनोहर तथा प्रभावशाली उपदेशके पश्चात् डा० हीरालालजी के द्वारा उत्तीर्ण कन्याओं को परिक्षाणिक दान करने पर सभापति डाक्टर साहेब की अश्रुत पूर्व सार गर्भान्वित समयानुकूल उत्कृष्ट वक्तृता हुयी जिसमें आपने कहा कि पाठशाला चलाने वालों को विद्यार्थियों के शारिरिक स्वास्थ्य की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये। पाठशाला गलियों में रहनी नहीं चाहिये स्वच्छ हवामें हवादार मकान चाहिये हरएक कमरे में बहुत विद्यार्थीयों को बिठलाना नहीं चाहिये विद्यार्थियों के खाने पीने का इंतजाम अच्छा रहना चाहिये, नहीं तो ५ घंटे पाठशाला में कार्य करने के पश्चात् भी अगर विद्यार्थी आधा भूखा रहा तो उसकी शारिरिक हालत क्यों कर अच्छी हो सकती है। हमारे देश में विद्यार्थी दशा की अच्छी हिफाजत नहीं होती है इस कारण छोटी उमर के लड़के अधिक मरते हैं। सब पाठशाला संचालकों को इनबातों की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये ऐसा कह कर सभापति जीकी वक्तृता समाप्त हुयी।

इस प्रकार अत्यंत रमणीयता से इस परितोषिकोत्सव की समाप्ती हुयी इस उत्सव में अगर कुछ न्यूनता थी तो यह थी कि परितोषिक के पदार्थ प्रायः सब विदेशी ही थे। प्रायः सब कपड़े विदेशी, थे दवातें बिदेशी थीं, फीते विदेशी थे स्लेट पेंसिलें सब विदेशी थीं।

जर्मनी में छपी हुयी आर्य भाषा की तथा तुलसी रामायणादि पुस्तकें विदेशी न मिलने के कारण यह स्वदेशी पुस्तकें परितोषिक पदार्थ समूह में दी गयी थी!! ऐसा हमारा ख्याल है !!! अगर यह पुस्तकें विदेशी मिलती तो स्वदेशी कभी खरीदी न जाती ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है निमंत्रण पत्रिका भी विदेशी नोट पेपर पर छप कर विदेशी लिफ़ाफे में स्वदेशी चपरासी के हाथ भेजी थी।

यह सब इसलिये ठीक है कि आर्य समाज सार्वभौमिक होने के कारण "स्वदेशी" बनने को संकुचित ख्याल को छोड़ कर, सार्वभौमिक जीवन को अमल में लाने का यत्न कर रहा है!!! अब देखने का मौका आजायगा कि "वसुधैव कुटुम्बक,, का तत्व अमल में लाने वाले आर्य समाज को कानड़ा में किनी भूमी मिलती है।

बार्ताहर

आर्यसमाज लाहौर के वार्षिकोत्सवसम्बन्धी कतिपय आवश्यक सूचनाएँ

(१) यह महान् यज्ञ जो प्रतिवर्ष नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में हुआ करता है न केवल पंच प्रदेश (पंजाब) प्रत्युत समस्त भारतवर्ष की आर्य्यसमाजों का धार्मिक मेला बन चुका है इस वर्ष २७ नवम्बर १४ (१२ मार्गशीर्ष सं १९७१ वि.) शुक्रवार से आरम्भ होगा प्रथम दिन सायंकाल नगरकीर्तन होगा आर्य्य-भजन मण्डलियां तथा भजनीक जितने यहां सम्मिलित होते हैं अन्यत्र नहीं अतः नगरकीर्तन की शोभा विचित्र होगी आशा है कि सर्व सामाजिक पुरुष जो भजनीक वा भजन मंडलियां उचित समझें यहां भिजवादें वा शीघ्र ही सूचना दें।

(२) २८, २९ नवम्बर १४ (१३, १४ मार्गशीर्ष सं० १९७१ वि.) को लंगे मंडी के खुले मैदान वाले सुसज्जित पिंडाल में श्रीमान् स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी अच्युतानन्दजी, स्वामी सर्वदानन्दजी, महात्मा मुन्शीरामजी, प्रो० रामदेवजी प्रो० बालकृष्णजी प्रो० महेशचरण सिन्हा जी ब० ब्रह्मदत्तजी कुमारी कौशल्यादेवी जी तथा अन्य विख्यात आर्य्य विद्वानों के मनोहर प्रभावशाली उपदेश व्याख्यान होंगे।

(३) १३ मार्गशीर्ष (२८ नवम्बर) शनीवार मध्यान्होत्र समय इसी पिंडाल में "आर्य कान्फ्रेन्स" होगी जिसमें आर्यसमाज की संस्था की दृढ़ता के उपाय इस विषय पर आर्य्य विद्वान् अपने अमूल्य विचार प्रगट करेंगे आशा है कि इस कान्फ्रैन्स के सभापतित्व को श्री० महात्मा मुन्शीरामजी स्वीकार करेंगे।

(४) स्त्री आर्य्यसमाज का उत्सव आर्यसमाज मन्दिर बच्छोवाली में १५, १६ मार्गशीर्ष (३० नवम्बर १ दिसम्बर) को प्रति दिन १० बजे सायँ तक होगा।

(५) धार्मिक कान्फ्रेन्स की बैठक तीन दिन होगी प्रार्थना १५, १६, १७ मार्गशीर्ष सोमवार मंगलवार तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बुधवार सात बजे से १० बजे साय तक पहले दिन खुला शास्त्रार्थ होगा सब धर्म्मों तथा पंथों के विद्वानों की सेवा में निवेदन है कि २७ नवम्बर (५ मार्गशीर्ष) तक आर्य्य समाज के जिस सिद्धान्त पर वह विचार करना चाहें उसकी सूचना मंत्री को देदें ताकि समय का सुप्रकार प्रबंध होसके, दूसरे दिन "विविध धर्मों में स्त्री जाति की स्थिति वा अधिकार" इस विषय पर वक्तृताएं होगी वा लेख पढ़े जावेंगे तत्पश्चात् शंकाएं तथा उनके प्रत्युत्तर होंगे तीसरे दिवस ईश्वरोपासना की अत्युत्तमविधि इस विषय पर दूसरेदिन की नांई विचार होगा।

प्रिय भ्रातृगण !

यह उत्सव सारे आर्य्य समाज का धार्मिक मेलाहै इसकी सफलता का प्रभाव सारे देश पर पड़ता है आप अपने शुभागमन से कृतार्थ कीजिये तथा नगरकीर्तन पिंडाल उतारे अथवा उत्सव के किसी अन्य विभाग सम्बन्धी जो जो उन्नति कारक सम्मति आप देसकें तदर्थ मंत्री आर्य्यसमाज आप का कृतज्ञ होगा।

नोट (१) बाहर से सम्मिलत होने वाले महाशयों के वास्ते निवास स्थान का प्रबन्ध इस समाज की ओर से किया जावेगा।

(२) आर्य्य कान्फ्रेंसमें केवल आर्य्यसभासद ही सम्मिलत होसकेंगे तदर्थ टिकट विना मूल्य मिलसकते हैं।

(३) धार्मिक कान्फ्रेंस भी टिकिट द्वारा ही जाना होगा जो उत्सव के दिनों में पिंडालसे बिना मूल्य मिलसकते हैं

(४) आर्य समाजों के मन्त्री महोदय कृपया अन्तर कान्फ्रेंस में बोलने के वास्ते अपने प्रतिनिधियों को तय्यार करके भेजेंगे कुछ और पूछना हो तो निम्न लिखे पते से पत्र व्यवहार करें।

निवेदनः—

मन्त्री आर्यसमाज वच्छोवाली

लाहौर

समुद्रों की लड़ाई।

दो अङ्गरेजी जहाज डूब गये।

दक्षिण अमेरिका के चिली प्रजातंत्र राज्य के किनारे जर्मन और अंगरेजी जहाजों में लड़ाई हुई। एक तरफ ५ जर्मन क्रूजर थे और दूसरी ओर दो अंगरेजी क्रूजर थे। अङ्गरेजों के 'गुडहोप' और 'मानमाउथ' नामक जहाजों में आग लग गई मगर वे लड़ते रहे। अन्त में 'गुडहोप' पर एक धड़ाका हुआ और वह डूब गया। 'मानमाउथ' पर इतने गोले बरसे कि वह भी चलनी होकर डूब गया। अरेङ्गजों का तीसरा जहाज 'ग्लासगो' बचकर भाग गया परन्तु उसको भी हानि पहुंची है।

फाओ पर अङ्गरेजों का अधिकार

ईरान की खाड़ी में शटेलअरब के मुहाने पर फाओ नामक एक नगर है। इस नगर पर अङ्गरेजों ने अधिकार कर लियाहै। भारत से एक पैदल सेना और कुछ जहाजी योद्धाओं ने वहां एक घण्टे तक युद्ध किया फिर नगर पर अङ्गरेजों का अधिकार होगया। हमारी तरफ का कोई आहत न हुआ।

केसर बड़े भाग्य से बचे।

लन्दन, शनिवार

"टाइम्स" का एक संवाददाता संवाद देता है कि जर्मन सम्राट् केसर गत रविवार को बड़े भाग्य से बचे। वायुयान से एक अंगरेज ने उनके निवास भवन में छः बम गिराये जिन से उनके दो ए० डी० सी० मर गये आप बच गये क्योंकि बम गिरने से बीस मिनट पहले ही आप उस भवन को छोड़ चुके थे।

रूसियों की जीत।

पेट्रोग्राड की एक विज्ञप्ति कहती है कि रोमिटिन जङ्गलों और लिक में रूसी सफलता पूर्वक धावा कर रहे हैं। जर्मनों की सेना के पिछले भाग की बहुत हानि हुई है। विस्टुला के उस पार दुश्मन हटते जाते हैं। वार्टा के समीप छोटी छोटी मुठभेड़ें हुई हैं। गेलेशिया में पीछे लौटती हुई आस्ट्रियन सेना राह में बहुत से हैजे से पीड़ित मनुष्य छोड़गई है।

जर्मन सेना पीछे हटी

बेलजियन की एक सरकारी विज्ञप्ति कहती है: "पोलंड में जर्मनों की बराबर हार होने के कारण ऐसा मालूम होता है कि उन्हों ने बेलजियम से अपनी कुछ सेना हटा ली है।"

रूसियों को लाभ

पेट्रोग्राड: २३ अक्टूबर से ४ नव० तक रूसियों को क्रेको से या तक की सीमा पर ३ "हाविटज़" तोपें ४० मैदानी तोपें, ३८ छोटी तोपें और बहुत सा युद्ध का सामान मिला। उन्होंने २७४अफसर और १८,५०० मनुष्य भी गिरफ्तार किये।

पेट्रोग्राड जनरल स्टाफ पोलैंड और गेलीशिया की लड़ाइयों की आलोचना करते हुए कहता है कि अक्टूबर के शुरू में हमारी लड़ाई वारसो, कोसनिस, प्रिजमिस्ल, जरनाविस की लैन में ५०० वर्स्ट (एक रूसी मील जो ३५०० फ्रोड़ लम्बाई में होता है) चौड़े मैदान में होती रही २७ अक्टूबर को वारसा के समीप विस्टुला के वाम तट पर हमने जर्मनों को निश्चत रूप से हराया।

काओ चाओ का पतन।

जल सेनाके उप मंत्री वेरन सुजुकीने कहा है कि युद्धके समय में जापानसिङ्गटाऊ पर शासन करेगा और बादमेंचीन से इसके सम्बन्ध में लिखा पढ़ी करेगा

सिङ्गटाऊ के प्रधान किलाको लेने के बाद जापानियाँ ने आगे बढ़कर चेन्सिन पर भी, जो जर्मनों का दाहिना अड्डा था अधिकार कर लिया। दूसरे जापानी दलों ने संगीन की मदद से पहिली कतार के किलों और बचाव के भयानक मोर्चों पर कब्जा कर लिया और इसके बाद वे बीच के क़िलों की कतारकी ओर बढ़े। अचानक आत्म समर्पण का सफेद झंडा फहराया गया।

टर्की में लड़ाई

विरोधी दल के प्रिन्स सुबाह-उद दीन ने सुल्तान को तार दिया है कि जर्मनी का पक्ष ग्रहण करके आपने अपने देश का आत्मघात और जाति के हित और इच्छा के विरुद्ध काम किया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषानुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पतासाफ़हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार

बजाज़ा शहर मेरठ

गेहूं की खेती ।

यू० पी० गकर्नमेंट के कृषी विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिंदी उर्दू दोनों भाषा से बनाई गई है इसमें बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषी सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहुत बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कोडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ ।

रामप्रसाद सबजज उज्जैन

विद्यार्थी ।

गत चैत्र मास से प्रतिमास निकलने वाला । हर महीने सुन्दर चित्र । प्रसिद्ध विद्वानों के शिक्षाप्रद लेख । मनोहरिणी कवितायें । प्रायः समस्त हिन्दी-पत्र सम्पादकों में प्रशंसित । विद्यार्थियों के लिये परम लाभकारी । सदाचार का बीज बोने वाला । देश भक्ति की ऊंची लहरें उठाने वाला । अपने पूर्वजों और प्राचीन भारत के गौरव को याद दिलाने वाला मातृभाषा—हिन्दी—का भक्त बनाने वाला । नवयुवक विद्यार्थियों में जीवन डालने वाला । उच्च अभिलाष और जागृति पैदा करने वाला । भारत के भावुकों के हृदयों में भारतीय भव्य भाव करने वाला । अचेतों को सचेत करने के लिये चटकीली चेतावनी देने वाला । हिन्दी—संसार में एक अनोखा और अद्भुत पत्र जल्द २) भेज कर "विद्यार्थी" पत्र के ग्राहक बन जाइये और साल भर तक पढ़ कर लाभ उठाइयेगा ।

४ ग्राहक बनाने वाले को साल भर 'विद्यार्थी' मुफ्त ।

मिलने का पता—

मैनेजर, हिन्दी प्रेस प्रयाग

उपदेश-मंजरी ।

यह पुस्तक सभी के लिये बड़ी उपयोगी है । इस पुस्तक को सदाचारशिक्षा की खान कहना चाहिये । लड़कों को इनाम देने के लिये यह पुस्तक बड़ी अच्छी है । जो लोग अपने लड़कों को सदाचारी और सुशील बनाना चाहते हैं उन्हें यह पुस्तक अवश्य लेनी चाहिये

मूल्य जिल्द वाली का ॥) सादी का ।=)

कविता विनोद ।

बीसियों कविताओं का संग्रह । बड़ी मनोहारिणी और शिक्षादायिनी कवितायें हैं । प्रत्येक हिन्दी-भाषी को इसे पढ़ना चाहिए । मूल्य ॥)

ब्राह्मण-महत्वादर्श काव्य ।

यह हिन्दी-भाषा टीक सहित है। ब्राह्मणों में जागृति पैदा करने वाला है। वैसे तो यह सभी के काम का है, पर, पढ़े लिखे ब्राह्मणों को तो इसे ज़रूर ही पढ़ना चाहिए । मूल्य ॥)

मिलने का पता—

मैनेजर, हिन्दी प्रेस, प्रयाग ।

॥ ओ३म् ॥

हिन्दी चित्रमय जगत

दिसम्बर का अंक ।

क्या आपको यह मालूम है कि युरुप में युद्ध क्यों छिड़ा ?

क्या आपको समर विजयी ब्रिटिश के परा क्रम देखने की इच्छा है ।

फ्रांस पर आक्रमण, जर्मनी का पराभाव ब्रिटिश के साहस युक्त कर्म युद्ध का संपूर्ण रोचक वर्णनादि सुनने की तथा चित्रों के देखने की इच्छा हो तो दिसम्बर का अंक देखने को मत भूलिये।

कई आवश्यकीय व युद्ध का वर्णन सुनकर आपका चित्त रंजन करेगा ।

मूल्य साधारण कागज़ी की प्रति का ॥)

"आर्टपैपर" ॥।)

पूना सिटी { मैनेजर हिन्दी चित्रमय जगत

आवश्यकता ।

एक योग्य आर्य सदाचारी पढ़ा लिखा आमद ७५) मास आयुः बीस वर्ष गौत्र गर्ग अग्रवाल वैश्य के लिये एक योग्य कन्या की आवश्यकता है कन्या की आयुः १४ या १६ वर्ष के करीब हो विशेष पत्र व्यवहार के लिये ।

पता—मोहर सिँह दास

रामेश्वर दास

नई सड़क देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्क पूदीना अर्क पूदीना

गृहस्थ मात्र को घर में रखना चाहिये।

अर्कपूदीना विलायती पूदीने की हरी पत्तियो से यह अर्क बना है इसका रंग पत्ती के रंगके ऐसा हरा है। और खुशबु भी ताजी पत्तियां की ऐसी है— यह अर्क डाक्टर बर्म्मनकी सम्मति से विलायत तक प्रसिद्ध दवा फरोशने ने बनाया है। बादी के लिये यह विशेष लाभकारी दवा है। पेट फुलना, डाकार आना पेट में दर्द अजीर्ण जी मिचली भूख कम होना आदि बादी के लक्षण इससे शीघ्र ही मिटते हैं। बच्चों के लिये ऐसी दूसरी दवा नहीं है। गोदी के बच्चे के लिये १ से २ बूंद जरासे पानी या दूध में मिलाके पिलाना चाहिये।

अर्कपूदीना बड़ोके लिये १० से ३० बूंद आधे छटांक पानी में मिला के देना। मोल॥) शीशी डाःमः ।-) आने।

दवा सब जगह हमरा एजैण्ट और दवा फरोशों के पास बिकती हैं।

डाः एस, के, बर्मन ५, हे तोरामंद दत्त श्रीट, कालकत्ता। नँ०७७

एजन्ट—बाबूराम जैन एन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा दिल्ली

विधवा की आवश्यकता

कुछ समय हुआ मेरी पहली स्त्री का देहान्त होगया है। अब मैं एक विधवा के साथ विवाह करना चाहता हूं। विधवा की आयु २०, से २५ तक होनी चाहिये। विधवा कुछ पढ़ी लिखी होनी चाहिये। शेष पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते सेकीजिये।

बा. धन्नाराम स्टेशनमास्टर

सरगोधा लाइन

उस्तरे को बिदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल U.P

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही ज़िद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफ्त मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डब्बा २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

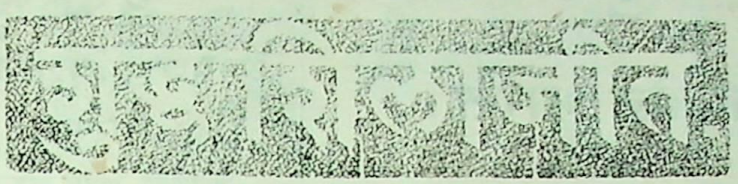
शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, बिक्षिप्तता: रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पता:—

बाबू पंचमसिंह वर्मा

मालिक, कारख़ाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul ६ हार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

ADVERTIZEMENT.

Required at once the services of competent Collage—trained Surveyors with several years, practical experience of canal construcction. None need apply who have not had considerable practical experience and do not hold first class recommendation.

Apply to:—
The Executive Engineer,
Tandula Lower Division.
DRUG.
(Central Provinces.)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)
चान्द--जि० आरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नई पुस्तक! अपूर्व पुस्तक।

महर्षि पतंजलि और तत्कालीन भारत।

लेखक—प्रतिष्ठित स्नातक चन्द्रमणि विद्यालंकार।

यदि आप महर्षि पतंजलि के विषय में कुछ जानना चाहते हैं, यदि आप पतंजलि के समय का वास्तविक भारत इतिहास जानने के उत्सुक हैं, यदि आप महाभाष्य जैसे बड़े भारी ग्रन्थ का इतिहासिक निचोड़ विना किसी परिश्रम के देखना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। मूल्य केवल ।=) है

पुस्तक भण्डार गुरुकुल
कांगड़ी, हरिद्वार

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रांत

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र, तत्र, कोई एक दर्जन आर्यविद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है। शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा
हैड क्लर्क, प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपू[illegible]
मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से नि[illegible]लना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षि[illegible] १।) विद्यार्थियों से १)
नमूना बिना मूल्य। ५
पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौ[illegible]

वर की आवश्यकता।

एक कन्यकुब्जद्विज (पांडेय-खोरि[illegible]त्वर) की कन्या जिसकी आयु १६ [illegible] है सब अंग हृष्ट पुष्ट हैं गुण कार्य[illegible] निपुण तथा सुशिक्षित है और बेल[illegible] का काम भली भाँति जानती है उ[illegible] निमित एक योग्य वर (षट—कुल [illegible] आवश्यकता है। निम्न लिखित पते[illegible] पत्र व्यौहार शीघ्र करें।

पं० मूलचंद जी शर्म्मा
इम्पीरियल कैपीटल
वर्क[illegible]
अजमेरी दर्वाज़ा-दे[illegible]

[illegible] नहीं बाटते हैं

बाल उडाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ९ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने [illegible] पता-
शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुर

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा
(२) सीताराम गोपालदास [illegible] बनारस सिटि
(३) शंकर लाल न्युजपेपर एज[illegible] सहारनपुर
(४) म० हीरालाल c/o म० भगवानदा[illegible] जी शर्राफ़, ख़ाना गली समोसान देह[illegible]
(५) भारत सेवक एन्जसी देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

* ओ३म् *

Registered No. L.807

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

६ मार्ग शीर्षसं १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० २१ नवम्बर १९१४

संख्या ३२
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

राष्ट्रीयता का मूल मंत्र

तय्यार हो गई।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिसकी पहिली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है । इसके लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं । एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है । इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिये क्या गुण आवश्यक हैं । जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये ।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक
देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निर्बल सेवक ।

अपने उद्देश्य का एक मात्र साप्ताहिक पत्र ।

आठ पृष्ठ और मूल्य केवल १।।) वार्षिक ।

अवश्य मंगाइए ! !! क्योंकि:-

१—इसने केवल निर्बलों की सेवार्थ जन्म लिया है ।

२—आपस के झगड़े मिटा एकता करना इसका धर्म्म है ।

३—यह पत्र आर्थिक लाभ के विचार से नहीं निकाला गया । पत्र के लिए बिना हिसाब व्यय होता है ।

मैनेजर निर्बल सेवक "धर्म"

देहरादून

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको

चाँदी का पदक ।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे ।

प्रचारक के प्रेमियो ! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो । अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा ।

इन्द्र—सम्पादक

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक	=)	प्र०
तीन मास " " " "	=)	"
छः " " " " "	-)॥	"
सालभर " " " "	-)	"

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय ।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक कानाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानोचे लिखे पते से मंगाइये ।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली ।

बिदारी क़न्द-खावो ।

और ...ल बन जाओ इसी महीने पहाड़ से इस की खुदाई होती है-इस कारण शीघ्रता करो कीमत १) रु० सेर ।

पता. पं० काशीनाथ नागर

ज्वालापुर जि० सहारनपुर

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]

थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

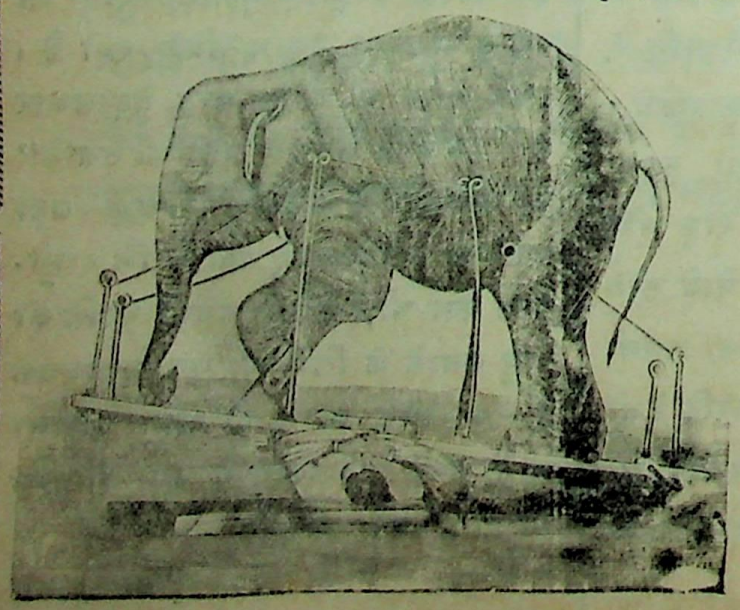

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपन्ना ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर =) राजपूतों की बहादुरी ।।।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां ।) वैदिक बिवाहादर्श १) तांतिया भील =) ऋतुचर्या १) फुटवाल -)॥ पाकराज ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— ...णक कार्यालय

(स्र) बनारस सिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धाञ्जलि

गर्भोदेवानां पितामतीनां पतिःप्रजानां । संदेवो देवेन सवित्रागत सथ्स सूर्योण रोचते ।

हे देव परमात्मन् आप सारे देवों को अपने गर्भ में धारण करते हैं विद्वान् लोगों की सम्पूर्ण बुद्धियों के पिता और पालक हैं सारी जल स्थल तथा आकाश में वास करने वाली जीवधारिणी प्रजा के आप पिता बन कर रक्षा करते हैं। आप दिव्यस्वरूप ज्ञानके भण्डार नाना दिव्यगुण वाले और सर्व सुखोंको पैदा करनेवाले अलौकिक शुक्रतेज से युक्त हैं। समस्त जगत् में आप के तेज का प्रकाश होता है इसलिये आपही विद्वानों के हृदय में भी विराजमान हुए उनके हृदय में आप महती दिव्यकान्ति से प्रकाशित होते हैं। आप की महिमा अपरम्पार है पिता हमको पालन करो, हमको भी दिव्यशक्तियों का दान दो हमारी मतियों की रक्षा करो हम दीन प्रजा को भी दुःखमय अवस्था से बचाकर अपनी स्वतन्त्रतामय गोद में पालो। हे देव ! हम आपकी कृपा से विद्वान् देश उन्नति करनेवाले नवोत्पादक कविता के साथ आप की आज्ञा का पालन करें और आदित्य ब्रह्मनिष्ठ विद्वानों के साथ, हे तेजोमय ! आपके दिये वेद ज्ञान के सूर्य से हम ज्ञानमय होकर आपके दिव्यगुणों को जानें ।

आत्मिक दृश्य

"देवाश्च वा असुराश्च' । उभये प्राजापत्याः पस्पर्द्धिरे । ततोऽसुराअति मानेमैव कस्मिन्नु वयं जुहुयाम इति, स्वेषु आस्येषु जुह्वत श्चेरुः । ते अतिमाने नैव पराबभूवुः । तस्मात् न अतिमन्येत । पराभवस्य हि एतन्मुखं यदतिमानः । अथदेवाः अन्योन्यस्मिन्नेव जुह्वतश्चेरुः । तेभ्य प्रजापति रात्मानं प्रददौ । यज्ञोह एवामास यज्ञोहिदेवानामन्नम् ।"

शतपथ ब्राह्मण के पाँचवें काण्ड के आदि में ही यह अर्थवाद आया है कि "देवलोग और असुर लोगों में जो दोनों प्रजापति की सन्तान थे आपस में बड़ा विरोध हुआ और बड़ी स्पर्द्धा होने लगी । तब असुरों ने संशय किया कि हम किस में हवन करें ? वे न समझ कर के अपने ही पेट में सब कुछ डाल लेते थे और जीवन बिताते थे । वे गर्व में आ- और हारगये इसलिये अधिक गर्व न करो । क्योंकि हारने के पहले गर्व आजाता है । और फिर देवलोक आपस में एक दूसरे से हवन करते थे (अर्थात् परस्पर बाँटकर खाते थे) उनके लिये प्रजापति ने अपने को समर्पण करदिया वह यज्ञरूप होगया यज्ञही देवताओं का जीवनाधार अन्न है ।"

ये उपाख्यान कितना रोचक और सरल तथा शिक्षाप्रद है । इसमें भरी सारगर्भित शिक्षा से शिक्षित प्राचीनता का वैभव अब कहाँ दिखलाई देता है । "Pride comes before a fall" यह कहावत क्या सम्पूर्णतया "पराभवस्य एतन्मुखं यदतिमानः" इसका अनुवाद नहीं है ? इसमें सन्देह नहीं । इस बात को प्रत्येक जाति तथा राष्ट्र या समाज ने स्थान २ पर अनुभव किया है न केवल मानसिक संकल्प विकल्पों से किन्तु क्रिया रूप से भी । प्राचीन जातियां जो समय २ पर अपने नाम से भूमण्डल को गुंजार देती थीं वेही बाद में अब मटियामेट हो गईं। उनका नाम निशान भी नरहा । क्या कारण ? । कारण कुछ भी नहीं पर अतिमान । हम यदि अब भी गिरे हैं तो अपने अतिमान के कारण और आगे भी यदि उठके गिरेंगे तो भी अतिमान से । इस अतिमान की जड़ कट जाने से उन्नति स्थिर रह सकती है और जहाँ अतिमान का पादप्रसार हुआ चट से अधःपतन भी उस के अनुपात में होने लग जाता है। अतिमान कीजड़ खोदने के लिये अभिमान की जड़ खोदनी चाहिये नहीं तो इसका नाश होना कठिन है । अतिमान वास्तव में एक बड़ा पाप है। जिसके आजाने से बड़ी जातियों की सहस्रों आत्मा गिरजाती हैं और गिरकर नाना प्रकार की पराधीनताओं से जकड़े हुए दासता के नरकों में घनघोर कष्ट के भागी होते हैं बड़ी २ पवित्र आत्माएँ इस अतिमान से चूर होजाती हैं और पुण्य के स्थान में पाप का संचय करलेती हैं । यह अतिमान जिस जाति में या जिस व्यक्ति में या जिस राष्ट्र में आजाता है उनको असुर बना देता है जो इस अतिमान से दूर रहते हैं वे देव विद्वान् गिनेजाते हैं । ब्राह्मण ग्रन्थ बताते हैं कि ये अतिमान स्वार्थ के कारण आता है। असुर लोग सब कुछ अपने मुख में स्वाहा कर डालते थे इसलेही अभिमान उनका बढ़गया और वे नाश को प्राप्त होगये । मैं, मेरा ये स्वार्थ ही अतिमान की जड़ है। जब व्यक्ति स्वार्थ के वश होजाता है तो वह लोभ काम और विषय वासनाओं से अपने आत्मा को अन्धा बना लेता है। और अपनी दूसरे की भलाई को तनिक भी नहीं देख सकता। प्रत्युत इस से वह नित गर्वीला हठीला बनकर अपने को पारस्परिक सहायता से वंचितकर लेता है और अन्त में सहसा मानसिक शारीरिक तथा सामाजिक विपत्तियों से घिर कर नि.सहाय अनाथ की नाईं तड़प २ कर मरजाता है । ऐसी हीन आत्मा के स्वार्थवश किये पाप उसे दबा लेते हैं सज्जनचित्त ऐसे पापों और पातकियों की उपेक्षा ही करते हैं। इसीप्रकार समाज में भी यदि सब अपना स्वार्थ खोजा करें तो कितना विरोध उठ खड़ा हो। एक दूसरे के दोषों पर गीधों और कौवों की नाईं पड़ते हैं। परस्पर निन्दा और आत्मश्लाघा के पुल बन जाते हैं। जो शक्ति समाज की दृढ़ता और रक्षा में लगनी होती है वह पारस्परिक विनाश में लगजाती हैं। पारस्परिक लड़ाई झगड़ों से वहाँ समाज का प्रेममय आत्मा कलुषित होजाता है साथ ही साथ वैयक्तिक आत्मा भी द्वेष अहंकार अतिमान् और स्वार्थ के जाल में फँसकर नीच वृत्तियों में ढलआता है । इसको ठीक जाँचने के लिये दूरजाने की ज़रूरत नहीं अपनी २ संस्थाओं को देखलें कि कितनी अवनति समाज में वैयक्तिक स्वार्थ से होरही है और कितनी उन्नति रुकी पड़ी है । इसी प्रकार वही आत्मस्वार्थ देशकी आत्म-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को भी स्वच्छ नहीं होने देता। साथ ही सामाजिक स्वार्थ जिस में पारस्परिक पन्था पन्थी के कलह गुँथे हुए होते हैं वहाँ भी असुर रूप में आपड़ते हैं और देश में पारस्परिक सहायता की नींव को खोद डालते हैं। पड़ोस २ में लड़ाई महल्ले महल्ले में लड़ाई और मतवादियों में लड़ाई देशभक्तों में फूट का घोर दृश्य दीखने लगता है। यही कारण है कि भारत में अब भी एकता नहीं होती। इसी से अनाचार की मात्रा भी बड़ी प्रबलता से बढ़ रही है इस अभिमान की जड़ स्वार्थ ने हमारे जातीय राष्ट्रीय तथा देशीय आत्माओं को सर्वथा नष्ट भ्रष्ट कर दिया है। हमारी वैयक्तिक आत्मा को सर्वथा कमीनी वासनाओं ने दुःखित कर दिया है दिव्यगुण जिन से कि हम देव बन सकते थे हम से कोसों दूर हैं। एक दूसरे की चुगली करना दोष निकालना दूसरे की उन्नति न करने देना और आप भी नाना व्यसनों में फँसे रहना ये स्वार्थ के बड़े भयंकर परिणाम हैं। इस स्वार्थ को मारने के लिये हमारे ऋषि बताते हैं कि देवताओं का मार्ग अनुसरण करो देव लोगों ने आपस में एक दूसरे को सहायता दी अपने वैयक्तिक स्वार्थ दूसरे के लिये बलि कर दिये सामाजिक आत्मा को पुष्ट करने के लिये उन्होंने अपनी आत्मिक सम्पत्तियां लगादीं और सर्वतोभद्र बल प्राप्त करके आत्मिक शत्रु मानसिक असुरों को दबा दिया हरा दिया और समूल उखाड़ दिया बस से देव लोग विद्वान् लोग असुरों पर विजयी हुए। इसी तरह से हम आर्य्य-सन्तान को भी वैयक्तिक स्वार्थ को छोड़ कर आंतरिक सहायता में लगना चाहिये अपनी शक्ति मान धन सब कुछ दूसरे के उपकार में लगा देना चाहिये। प्रेम की दृष्टि दूसरे के गुणों को देखा करती है। और की दृष्टि मधुमक्खी की न्याईं सदा फूल के मधु को चूंसा करती है और जखम की मक्खी सदा फोड़े की पीप पिया करती है इसीलिये हमें मधु-मक्खी की न्याईं पारस्परिक प्रेम की दृष्टि से गुणों का ग्रहण करना चाहिए न कि दोषों का इस तरह के पारस्परिक गुण ग्रहण से प्रति एक व्यक्ति की आत्मा शुद्ध होजायगी जीवन पवित्र हो जायगा समाज आदर्श होजायगा देश-देवभूमि होजायगा राष्ट्र स्वर्ग राज्य के समान होगा और चारों ओर अमृतसुख की वर्षा होगी।

——

आर्यकुमारसभाओं के उत्सव

श्रीमान सम्पादक जी!

कार्तिक के प्रचारक में "सामाजिक टिप्पणियाँ" शीर्षक के नीचे आपने आर्य कुमारसभाओं को सलाह दी है कि वे अपना जलसा आर्यसमाज के जलसे के साथ ही कर लिया करें--परन्तु मेरी सम्मति में इस से तो केवल जलसा दिखलाने का ही होगा असली उद्देश जो प्रचार का है वह पूर्ण नहीं होसकेगा। मेरी सम्मति में तो जितने अधिक अवसरों पर प्रचार का काम हो उतना ही लाभकारी है। हाँ यदि केवल धन का ही प्रश्न है तो इस टालमटोल से जलसा न करना ही अच्छा होगा। आशा है कि आप पुनः इस विषय पर विचार प्रगट करेंगे।

दास--दीनानाथ दीवान उपमन्त्री
आर्यकुमार सभा लाहौर

टिप्पणी

हमारी सम्मति में प्रचार का कार्य उत्सव में व्यय की अपेक्षा, उसी धन से स्थायी उपदेशक रखने से अधिक हो सकता है। उत्सव का एक उद्देश्य प्रचार है तो साथ दो और भी उद्देश्य हैं। आर्यसमाज संस्था के लिये धनप्राप्ति के साथ २ समाज की सेवा करने वालों का आवेश बढ़ता है। अनेक उत्सव हो जाने से कभी २ ईर्ष्या होजाने से यह उद्देश्य नष्ट होजाता है। जहाँ समाज में एक ही शक्ति होनी चाहिये थी, वहाँ कई होजाती हैं। सम्पादक

——

गुरुकुल-वृन्दावन (मथुरा) का दशम-महोत्सव

पौष शुक्ल ९ से पौष शुक्ल १२ संवत् १९७१ वि० तदनुसार २५, २६, २७ तथा २८ दिसम्बर तक बड़ी धूमधाम से होगा

प्रोग्राम यह है।

तारीख २५ तथा २६ दिसम्बर १९१४

प्रातःकाल

प्रत्येक दिन प्रातःकाल ७ से ८ तक हवन तथा ८ बजे से ११ बजे तक विद्या-परिषद्-ब्रह्मचारियों तथा अन्य विद्वानों के निबन्ध तथा व्याख्यान संस्कृत और आर्य्यभाषा में।

मध्याह्नकाल के पश्चात्

प्रत्येक दिन एक बजे से तीन बजे तक व्याख्यान व भजन तत्पश्चात् ३॥ से ५ बजे तक ब्रह्मचारियों के भिन्न २ व्यायाम सम्बन्धी खेल।

तारीख २७ दिसम्बर १९१४

७ से ८ तक हवन तथा ८ से ११ बजे तक व्याख्यान व भजन।

१ बजे से ६ बजे तक व्याख्यान भजन तथा गुरुकुल के लिये अपील।

तारीख २८ दिसम्बर १९१४
नवीन ब्रह्मचारियों के वेदारम्भ संस्कार ८ से ११ तक

नोट—प्रत्येक दिन रात्रि में ८ से १० बजे तक व्याख्यान व भजन हुआ करेंगे बड़े २ विद्वान् उत्सव में सम्मिलित होंगे सर्वसाधारण को आदरपूर्वक निमन्त्रण दिया जाता है।

विज्ञापक
नारायणप्रसाद मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल वृन्दावन
(मथुरा)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

आर्यसमाज की निर्बलता को दूर कीजिये।

निर्बलता महापाप है। इस संसार में यात्रा करता हुआ जो मनुष्य अपने आप को इस योग्य नहीं रखता कि शत्रुओं से अपनी रक्षा कर सके वह मारा जाता है। कवि का कथन है—

वनानि दहतो वन्हेः सखा भवति मारुतः
स एव दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम्।

वनों को जलाकर राख कर देनेवाली आग का सब से बड़ा सहायक वायु है। वही अग्नि को एक जंगल से दूसरे जगल तक पहुंचाता है। किन्तु वही वायु जंगल से होता हुआ एक निर्धन आदमी के घर में घुस जाता है। अन्दर एक छोटा सा दिया टिमटिमा रहा है। वायु का झोंका लगते ही वह बुझ जाता है। प्रचण्ड आग का जो मित्र था, निर्बल आग का वही शत्रु होगया। इसी प्रकार संसार की दशा है। शक्तिशाली के सब मित्र हैं और निर्बल का साथी कोई नहीं। गिरे हुए महारथी के सिर को गीध भी नोच लेते हैं, किन्तु वही जब यौवन में था, तब किसी की हिम्मत नहीं थी कि उस की ओर आंख उठाकर देखे।

संसार दया और प्रेम का लाभ लेता है, किन्तु संग्राम उसका सदा से स्वभाव चला आया है। जो निर्बल है वह समय पाकर अवश्य कुचला जाता है। ऐसे निर्बल के साथ संसार में किसी की सहानुभूति नहीं होती। उस पर कोई उदार आदमी दया कर सकता है, परन्तु प्रेम नहीं करसकता। हरएक आदमी की इज्ज़त अपने हाथों में है। जो उस की रक्षा नहीं कर सकता, उस के साथ परमात्मा की भी सहानुभूति नहीं होती।

आर्यसमाज के जितने शत्रु हैं, उतने शायद किसी जीवित संस्था के न होंगे। आर्यसमाज के जीवित होने का चिन्ह है। आर्यसमाज के साथ औरों का विरोध होने के कई कारण हैं। सब से प्रथम बात यह है कि आर्यसमाज मनुष्य समाज की वर्तमान दशा के दोषों को जतलाने का कार्य करता है। वह केवल विधानात्मक नहीं, वह प्रतिषेध रूप भी है। ऋषिदयानन्द ने इसे एक बालक समाज में नहीं फैलाया था, कि उन्हें जैसा चाहते मोड़ माड़ कर बना लेते। इस का प्रचार पहले से बने हुए और पके हुए संसार में किया गया था, जहां आकार को बदलने के लिये घड़नेकी आवश्यकता होती है। किन्तु आर्यसमाज के केवल धार्मिक कारणों से ही शत्रु नहीं हैं। अन्य कई भी कारण हैं जिस से उस के बहुत से विरोधी बन जाते हैं। आर्यसमाज के विरोधी जिन २ कारणों से होते हैं, उसकी एक सूची हम यहाँ देते हैं।

(१) आर्यसमाज के वैदिक सिद्धांतों के प्रचार से जिन लोगों की आजीविका में भेद आता है, वे आर्य्यसमाज के शत्रु होजाते हैं।

(२) समाज का प्रचार जिन लोगों के धार्मिक विचारों का खण्डन करता है, उन में से कट्टर लोग उस से विरोध करने लगते हैं।

(३) आर्य्यसमाज सदाचार पर अधिक बल देता है। जो धनी मानी लोग सदाचार को एक मख़ौल समझते हैं, वे उस से बहुत जलते हैं।

(४) आर्य्यसमाज मनुष्य को आत्मसम्मान सिखाता है जो सरकारी नौकर प्रजा को 'जी हुजूर' बनाना चाहते हैं, आर्य्यसमाजियों का आत्मसम्मान उन्हें बहुत खटकता है।

(५) ऊपर कहे हुए चारों प्रकार के समाज के द्वेषी अपना मतलब गांठने के लिये बड़े सरकारी अफ़सरों के कान भर देते हैं, जिस से वे लोग भी आर्य्यसमाज पर आंख रखने लगते हैं।

सरकारी अफ़सरों के सन्देह का एक और भी कारण है। आर्य्यसमाज वैदिकधर्म का प्रचार करता है। वैदिकधर्म एक सम्पूर्ण धर्म है। केवल पूजा पाठ का धर्म नहीं। वह हमें राजनीतिक आदर्श भी सिखाता है और सामाजिक आदर्श भी। राजनीति और समाज हमारे धर्म के अंदर आजाते हैं। जैसे आर्य्यसमाज नित्यकर्मों का, शिक्षा का, सामाजिक रीतियों का और स्त्रीसुधार का अपना आदर्श रखता है, इसी प्रकार वह अपना राजनीतिक आदर्श भी रखता है। जैसे वह अपने अन्य सब विषयों के विचारों को डंके की चोट कहता है, ऐसे ही राजनीतिक विचारों को भी साफ़ २ लोगों के सामने रखता है! यह कौन नहीं मानता कि भारतवर्ष की इस समय की राजनीतिक दशा अस्वाभाविक है, सब आदर्श राजनीति की दृष्टि में वह अवश्यमेव सुधारणीय है। इतनी बात को आर्य्यसमाज के द्वेषी चाहे कुछ बना डालें, और बना डालने में कसर भी कौन छोड़ता है। आर्य्यसमाज यह नहीं कहता कि ब्रिटिश सरकार को भारत से उड़ा डालो, क्योंकि इस समय भारतवर्ष में ऐसी क्रान्ति और ऐसा परिवर्तन करना मूर्खता है। इस बातसे जो लोग आर्यसमाज को ब्रिटिश सरकार का विरोधी समझते हैं वे भूल करते हैं। आदर्श को सामने रखना राजद्रोह नहीं, उसको छिपाना धर्मद्रोह है।

ये सब बातें आर्यसमाज की अवस्थिति को स्पष्ट कर देती हैं, किन्तु साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिये कि जब तक आर्यसमाज के शत्रु रहेंगे-और वे तब तक रहेंगे जब तक समाज में जीवन रहेगा। तब तक सरकार को उस के विरुद्ध अवश्य भड़काया जाता रहेगा। हमें यत्न करना चाहिये कि कोई अशुद्धि किसी के दिल में न रहनेपावे, किन्तु केवल किसी को मनाने के लिये हम अपने मार्ग से च्युत नहीं होसकते। दूसरे को प्रसन्न रखना ठीक है, किन्तु अपने सिद्धान्तों का छोड़ना उसकी बहुत अधिक क़ीमत है। तब आर्यसमाज को हर समय अपने विरोधियों से सावधान रहना चाहिये, और अपने अन्दर इतनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

शक्ति रखनी चाहिये कि ये सारी शक्तियां मिलाकर भी उसे कुचल न सकें ।

वे कौन से साधन हैं, जो आर्य्य-समाज की रक्षा करसकते हैं ? हमारी समझ में दो साधन हैं जो उसे रक्षित रख सकते हैं ।

(१) आर्य्यसमाज की रक्षा का प्रथम साधन आर्य्यपुरुषों की अपनी दृढ़ता है। उनके आचरण दृढ़ हों, उनके मन दृढ़ हों । सांसारिक प्रलोभन या राजनीतिक भय उन्हें अपने मार्ग से न डिगासकें, यह समाज की रक्षा का प्रथम और मुख्य साधन है । किंतु यह साधन केवल व्यक्तियों को ही बाह्यचोरों से बचा सकता है, सारे समाज की रक्षाके लिये उस (२) संगठनको दृढ़ करना चाहिये जिसकी नींव ऋषि दयानन्द ने अपने हाथों से रखी थी, और जिसने अभीतक समाज की शक्ती को बचाया हुआ है । संगठन ही है जो किसी समाज की रक्षा करसकता है सारे राजपूत नरेश मिलकर जिस मुग़ल साम्राज्य को धक्का न पहुंचा सके, एक शिवाजी ने उसको जड़ से हिलादिया । कारण क्या था ? राजपूतों में बहादुरी ग़ज़ब की थी, परंतु मिलकर काम करने की शक्ति नष्ट होगई थी । शिवाजी के बहादुर चाहे राजपूतों जितने वीर न थे, परन्तु उनके अन्दर संगठन था, मिलकर काम करने की शक्ति थी । ऋषि दयानन्द इसीलिये आर्य्य-पुरुषों को संगठन में गांठना चाहते थे ।

क्या इस से किसी को इन्कार हो-सकता है, कि आर्य्य समाज का संगठन धीरे २ शिथिल होता जारहा है । उस-की दृढ़ता नष्ट प्राय सी होरही है। हमारे पुराने भारतीय संस्कारों ने बीच में पड़ कर हमें परस्पर फाड़दिया है। इतने शत्रु, और हमारी इस प्रकारकी शिथिल दशा। क्या यह विचार का स्थान नहीं है । हम आंखें बन्द करके अपने ख़तरे को भुला नहीं सकते । हमारे विरोधी हैं, और रहेंगे । मुंह फेरलेने से वे वार करना न छोड़ेंगे । इसलिये हमें अपने आपको उनकी चोटें सहने के लिये सदा तय्यार रखना चाहिये ।

आर्य्य भाइयो ! आर्य्य समाज का संगठन कैसे दृढ़ होसकता है, इस विषय पर लाहौर के वार्षिकोत्सव के समय विचार होनेवाला है । एक आर्य प्रतिनिधि सभा की कान्फ्रेंस होगी । लाहौर समाज ने उसके सभापतित्व के लिये महात्मा मुन्शीराम जी को चुना है । महात्माजी का सामाजिक जीवन संगठन के दृढ़ करने में व्यतीत हुआ है इस लिये सम्मेलन का उनसे अच्छा सभापति न होसकता था । चलो, और इस अवसर पर अपने विचारों से आर्य समाज के संगठन की पुष्टि में सहायता दो । संग-ठन परही आर्य्यसमाज की रक्षा और भविष्य आशा अवलम्बित है ।

संसार की गति

क्या रूस-साम्राज्य का अन्तहोगा?

रूस युद्ध में आगया है । पहले से ही ऐसी आशंका होरहीथी । जर्मनी के साथ रूस की जो दोस्ती थी, उसका अन्त होही क्या सकता था ? रूस को इस समय दो शक्तियों के साथ युद्ध करना होगा । उसके एक ओर रूस की तोपें गर्ज रही हैं, और दूसरी ओर बृटिश जहाज़ गोलाबारी कररहे हैं । क्या रूस में इन दो शक्तियों का सामना करने की सामर्थ्य है ? इंग्लैंड उत्तरीय सागर में फंसा होने के कारण अपनी पूरी सामु-द्रिक शक्ती डार्डनलस पर नहीं लासकता और रूस जर्मनी और आस्ट्रिया से भिड़ जाने के कारण रूसपर धावा करने के पूरे सामान नहीं करसकता । ये दोनों कठिनाइयां सोचकर ही शायद रूस का लड़ाकू दल इस समय युद्ध में कूदा है । किन्तु रूस की आन्तरिक दशा बहुत असन्तोषदायक सुनी जाती है, इस से वह दोनों महाशक्तियों का सामना करने का सामर्थ्य यदि रखे भीतो काम लासकेगा--यह सम्भावना नहीं है । इस में सन्देह नहीं कि इस समय रूस के भाग्यों का निश्चय होना है । क्या वह जीवित शक्ति भी रहेगी या नहीं ? या उसके भी पोलैण्ड की भांती टुकड़े २ हो जायंगे ? ये प्रश्न हैं जिनका उत्तर केवल भविष्य के पर्दे में है ।

मि० एस्क्विथ और रूस

इंग्लैण्ड के महामन्त्री एस्क्विथ बड़े विचार शील व्यक्ति हैं । उनके मुंह से कोई अविचारित बात नहीं निकलती । रूस के युद्ध में आजाने का वृत्तान्त सुनाते हुए आपने अपनी गिल्डहाल की वक्तृता में कहा—

'तुर्क लोगों ने नहीं, पर तुर्की गवर्मेण्ट ने तलवार खेंची है और मैं इस बात की भविष्य वाणि करने में संकोच नहीं करताकि टर्की की तलवार प्रधान गवर्मेण्ट नष्ट हो जायगी । तुर्की गवर्मेण्ट ने यूरोप ही नहीं एशिया के भी मुसलमानी राज्यों की मृत्यु की घण्टी बजा दी है । इस बात का हमपर दोष नहीं। मैं आशा करता हूं कि रूस के नाश होने के साथ वह तूफ़ान भी, जिसने पीढ़ियों से कई अत्यन्त सुन्दर देशों को सुरक्षा दिया है, नष्ट हो जायगा ।"

इन शब्दों के क्या अर्थ हैं ? क्या रूसी साम्राज्य की स्वाधीन सत्ता ख़तरे में है ? मि. एस्क्विथ के भाषण का स्पष्ट अर्थ यही है कि यदि इंग्लैण्ड तथा रूस जीते तो रूसी साम्राज्य सुल्तान के शासन में न रहकर अंग्रेज़ी या रूसी सरकार के नीचे रहेगा । हमें इस में कुछ कहना नहीं है । जो जीते, वह इस संसार में स्वामी होता है किन्तु हमारी अपनी सम्मति यह है कि मि. एस्क्विथ ने यह भाषण रूस के साथ बंटवारे में जो कठिनाई होगी, उसे बिना सोचे कर दिया है। पायोनियर के शब्दों में "इंग्लैण्ड चिरकाल से कुस्तुन्तुनिया की रूस से रक्षा करता आया, और अब भी उसे करनी चाहिये, उसकी भलाई इसी में है। "भगवान् नकरे कि मामला रूसकी स्वा-धीनता छिन जाने तक पहुंचे । जाति की छिनी हुई स्वाधीनता फिर पानी कठिन होती है। हम चाहतेहैं कि मि. आस्क्विथ के भाषण का केवल यह तात्पर्य हो कि रूस को अपनी करनी का फल पाना पड़ेगा । यदि यह अर्थ हो तो हमें कुछ वक्तव्य नहीं ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूस से जर्मनी की हार

जर्मनी दो बार बिना सोचे विचारे आगे बढ़ा और बहुत बुरी तरह हारकर पीछे हटा। पहली बार पेरिस से और अब के बादस्म से। रूस से जर्मनी को जो हार मिली है, वह बहुत स्थायी प्रभाव पैदा करने वाली होगी। उधर पश्चिम में जर्मनी ने डिक्समूडो ले लिया है। जर्मनी अपनी सेना से खूब काम ले रहा है पर 'कब तक'?

वीर एमडन चलबसा

जिस एमडन ने शत्रुओं से भी वाह वाही लूटी थी, और जिसकी शिष्टता ने विरोधियों के दिलों पर भी स्थान पा लिया था वह चल बसा। इस समाचार को सुनकर भारत वर्ष भर से एक सन्तोष भरीआह निकली है। क्योंकि व्यापारके रुके हुए रास्ते खुल गये हैं। किन्तु वीर चाहे शत्रु हो उसके लिये आदर हो ही जाता है। एमडन का कप्तान और एक जर्मनी के राजवंश के कुमार जीवित बच गये हैं। उनकी तलवारें नहीं छीनी गईं। जर्मनी के अखबारों ने एमडन के डूबने और कुनिगबर्ग के निकम्मे होने का समाचार देते हुए इन दुर्घटनाओं के दिन को 'जर्मनी के लिये काले दिन' के नाम से पुकारा है।

पं० लेखराम की जीवनी

धर्मवीर पण्डित लेखराम जी की जीवनी लगभग छप चुकी है। गत पन्द्रह दिनों से महात्मा जी का शरीर बराबर अस्वस्थ रहा है, तथापि प्रतिज्ञा पूरी करने की दृष्टि से वे पुस्तक लिखने और छपवाने में बराबर लगे रहे हैं। यह जीवनी कैसी मनोरंजक है, यह हमारे पाठक आज दूसरी जगह दिये हुए कुछ उद्धरणों से पता लगा सकेंगे। पुस्तक कैसी है। इस का पता इस से लग सकता है कि महात्मा जी का धर्मवीर जी से बरसों तक साथ रहा है। दोनों एक ही नौका के खेवय्या थे। लाहौर के जलसे पर इस अत्यावश्यक पुस्तक को आर्य लोग ले सकेंगे।

कुम्भ प्रचार के लिये धन

कुम्भप्रचार के लिये धन की आमद ढीली पड़ रही है। यह काम ऐसा नहीं जिसमें थोड़ी भी ढील की जाय। जो सज्जन केवल थोड़े बहुत आलस्यके कारण चन्दा नहीं भेज सके, वे लाहौर के उत्सव पर महात्मा जी के पास दे सकते हैं। इस से अधिक सुगम उपाय नहीं हो सकता।

प्रतिनिधि सभा का उत्सव

लाहौर के उत्सव के साथ २८ नवम्बर को रात को आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन रखा गया है। इस अधिवेशन में विशेषतया विचारणीय विषय "गुरुकुल प्रबन्ध कर्त्ता सभा' का है। यह विषय बड़ा आवश्यक है, और सालों से पड़ा हुआ है। इसका निश्चय होना गुरुकुल के प्रबन्ध का सुधार होने के लिये अत्यावश्यक है। इसके लिये कारण बहुत बार दिये जा चुके हैं। सभा के ⅔ प्रतिनिधियों की उपस्थिति आवश्यक है। वह पूरी न होने से विषय हरबार रह जाता है। इसबार आर्य प्रतिनिधियों को चाहिये इस विषय का इधर या उधर फैसला करदें। लाहौर का उत्सव देखना और फिर ऐसे विषय पर विचार में सहायता देना दोनों आवश्यक कार्यों को कौन छोड़ सकता है!

हिन्दू सभा

आजकल हिन्दू सभा की उपयोगिता अनुपयोगितापर खूब ज़ोरसे विचार होरहा है। ऐसा विचार सभा का वार्षिक अधिवेशन समीप आने पर हर साल ही हुआ करता है। हिन्दू सभा का प्रयोजन सब हिन्दुओं को एक वेदी पर लाना कहा जाता है। उसके समालोचक कहते हैं कि हिन्दू सभा कुछ काम नहीं करती, कांग्रेस की भांती खाली रेजूलेशन बाजी करती है जो सभा काम कुछ न करे, उस की ओर विचार शील मनुष्य झुकते भी कम ही हैं। अकर्मण्यता से बदनाम होकर सभा गम्भीरता हिन्दुओं को अपनी ओर खींचभी नहीं रही है। हिन्दू सभा को इस समय अपनी उपयोगिता सिद्ध करके दिखानी चाहिये नहीं तो उसका होना न होने के समान है। इस क्रियाशील संसार में क्रिया शील संस्था ही जी सकती है, निकम्मी संस्था नहीं।

विविध

—हिन्दीसाहित्य सम्मेलन की स्वागतकारिणी के मन्त्री महाशय लखनऊ से सूचना देते हैं कि सम्मेलन की सहायतार्थ प्राप्त हुए धन की राशि ३९१३) से ४२६०) होगई है। पूरी सूची इस बार स्थानाभाव से प्रकाशित नहीं होसकी, उस के लिये हम माननीय महोदय से क्षमा मांगते हैं।

—जांगल की आर्यकुमार सभा का वार्षिकोत्सव गत पूर्णिमा के दिनों में हुआ। बड़ा अच्छा प्रचार हुआ। गुरुकुल से भी एक उपदेशक महाशय भेजे गये थे। उन्होंने प्रचार का हाल हमें भेजा है उस से ज्ञात होता है कि प्रचार खूब हुआ। सनातनियों तथा आर्यों में अच्छी बनी रही। विस्तृत वृत्तांत स्थान हुआ तो अगली बार देंगे।

—भागलपुर से म० ब्रह्मानन्द शर्मा सूचना देते हैं कि वे वहाँ से एक 'कर्मवीर' नाम का पत्र निकालेंगे, जिसका उद्देश्य मातृभाषा का प्रचार होगा। पत्र का वार्षिक मूल्य २॥) होगा पत्र की पालिसी अपार होगी। आप लिखते हैं 'सहयोगी के लेख सर्वदा प्रोसपेक्ट के अनुसार लिखे जाया करेंगे, न जाने इस का क्या अर्थ है?

—कस्बा करहल [मैनपुरी] में चतुर्वेदी दौलतराम जी रईस [प्रधान-आर्यसमाज] की धर्मपत्नी श्रीमती जीवन देवी के नाम से एक विधवाश्रम खुला है। इस में निराश्रिता विधवाओं को भोजन वस्त्र दिये जाते हैं और सदाचार धर्म की शिक्षा दीजाती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्मवीर लेखराम के
जीवन की
मनोरँजक घटनाएँ ।

महात्मामुंशीरामजी द्वारा लिखित जीवनी से उद्धृत

निर्भयता ।

इन दिनों की एक घटना पंडित जी के स्वभाव को दो अंशों में बड़ी विस्पष्टता से प्रगट करती है । बूंदी राज में जाकर ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी तथा स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी ने शास्त्रार्थ की धूम मचादी थी । आर्य्य पुरुषों को जब यह पता लगा तो उन्होंने दोनों सन्यासी महात्माओं की सहायता के लिये आर्य पथिक को भेजा । कुछ लोगों ने डराया भी कि रियासत का मामला है, कहीं कष्ट न मिले; परन्तु धर्मयुद्ध का नरसिंहा जब बज गया तो लेखराम को रोकनेवाली कोई भी शक्ति नहीं थी । अकेले सिंह की न्याईं सीधे बूंदी में पहुंचे । वहां जाकर पता लगा कि महाराजा साहेब के विशेष शास्त्रार्थ से इंकार कर देने पर दोनों सन्यासी महात्मा लौट गए हैं । पंडित लेखराम भी जहाज़पुर में लौट आए, जहां सायंकाल को पहुंचते ही इन के व्याख्यान का विज्ञापन जहाज़पुर के हाकिम ने [जो आर्यसामाजिक थे] घुमा दिया । रात को व्याख्यान में सर्वसाधारण के साथ फौज के सिपाही और अफसर भी आए उन में से पैदल का सूबेदार मुसलमान था । आर्यपथिक ने अन्य विषयों के साथ महम्मदी मत का भी कुछ कड़ा खण्डन किया । इस पर मुसलमान सूबेदार ने दिल्लगी में कहा—" ऐसे ही तीस मारखां थे तो बूंदी से क्यों भाग आए ! " हाजिर जवाब लेखराम को सोचने की ज़रूरत न थी; उत्तर दिया " विपक्षी शास्त्रार्थ से भाग गया और हम लौट आए; कुछ आँ हज़रत (अर्थात महम्मद साहेब) की तरह हिजरत कर के (भाग कर) तो नहीं आए । " इस पर मुसलमान सूबेदार की आँखें लाल होगईं और उस ने तलवार के कब्जे पर हाथ रक्खा । वीर लेखराम ने गरजते हुए कहा—" मुझे तलवार की धमकी दिखाता है, अगर है पठान का तो तलवार निकाल कर मज़ा देख । " हाकिम ने मुसलमान सूबेदार को अलग बैठा दिया और फिर किसी ने चूं तक न की " ।

कल्पना शक्ति

पेशावर की इस बार की यात्रा मुझे केवल इसी लिये स्मरणीय नहीं है कि मैं पहिले पहल अटक के पार चला था प्रत्युत इसलिये भी कि पण्डित लेखराम के कई पक्के विचार मुझे इसी यात्रामें मालूम हुए । पण्डित लेखराम पलान्डु [पियाज़] के बड़े पक्षपाती थे और समझते थे कि इस के सेवन से आर्य्य गृहस्थों को वञ्चित रखना अपनी जाति की शारीरिक अवस्था के साथ शत्रुता करना है । मुझ से पहिले इस विषय पर बात चीत हुई । मेरे मनु का प्रमाण देने पर आपने कहा—"प्रथम तो पलान्डु के अर्थ पियाज़ हैं ही नहीं; और यदि मान भी लो तो यह श्लोक ही प्रक्षिप्त है । "

फिर ब्रह्मावर्त की सीमा पर बात चीत छिड़ी । पण्डित लेखराम जी ने पौराणिकों की मानी हुई सरस्वती का खण्डन करके बतलाया कि सरस्वती से तात्पर्य्य "ब्रह्म पुत्रा" नदी का है जो भारत की पूर्वीय सीमा पर होती हुई समुद्र में जा मिलती है । आपने कहा—"सरस्वती ब्रह्मा की पुत्री कही जाती है पुत्रका स्त्रीलिंग हुआ पुत्रा; पस "ब्रह्म पुत्रा" और सरस्वती पर्यायवाची शब्द हैं । सरस्वती कोई ऐसी नदी न थी जो मध्य भारत में कहीं छिपगई हो ।" इसके पश्चात आप ने दृषद्वती से अटक महा नदी का तात्पर्य्य लिया यहां यह याद रखना चाहिए कि यदि सरस्वती पौराणिक कल्पना के अनुसार मानी जावे और "दृषद्वती" से ब्रह्मपुत्र नदी समझें तो पण्डित जी का निवासस्थान कहूटा ब्रह्मावर्त में सिद्ध नहीं होता । अब दूसरी प्रभात की घटना समझ में आजायगी ।

बात चीत करते २ हम दोनों सो प्रातः उठकर मैं अपने विचार में निमग्न था कि रेल अटक के पुल के पास पहुंची और पंडित लेखराम ने मेरी बांह पकड़ कर कहा—"लाला जी ! उठिये, उठिये देखिये क्या इस से बढ़कर कोई पत्थरों वाली नदी हो सकती है ? " दृश्य बड़ा गम्भीर तथा उच्च था । मैं इस अपूर्व चित्तोत्कर्षक दृश्य की ओर टिक टिकी लगाए खड़ा था कि आर्य्य-पथिक के शब्दों ने झटका देकर जगा दिया---"लाला जी देखिये---यह पत्थरों वाली दृषद्वती नदी है, सरस्वती ब्रह्मापुत्रा है और इन दोनों देव नदों के मध्य का स्थान ब्रह्मावर्त है ।" मैं ने उत्तर में कहा "पण्डित जी ! मैं ने आज मान लिया कि "कहटा" ग्राम ब्रह्मावर्त का ही एक भाग है । ,, पण्डित जी के मुँह पर विशाल मुसकराहट के चिन्ह दिखाई देने लगे और हँसते हुए बोले—ईश्वर जानता है, आप मज़ाक में बात उड़ा देते हैं । मेरा मतलब तो इसी तहक़ीक़ात से था ।,,

तर्क शक्ति

व्याख्यानादि तो वार्षिकोत्सवमें हुए ही परन्तु धर्म-चर्चा के समय बड़ा आनन्द आया । यह बात प्रसिद्ध थी कि पण्डित लेखराम वृक्षों में जीवात्मा की विद्यमानता नहीं मानते थे । एक मांस प्रचारक महाशय ने यह प्रश्न उठा कर कि वृक्षों में जीवात्मा है वा नहीं--उत्तर पंडित लेखराम से माँगा; तात्पर्य्य इस प्रश्न से यह था कि यदि वृक्षों में जीव विषय में मत भेद रखता हुआ एक पुरुष आर्य्यसमाजी रह सक्ता है तो मांस-भक्षण का प्रचार करने पर किसी को क्यों आर्य्य-समाज से अलग किया जावे । मैं यह कह कर कि, प्रश्न आर्य्य समाज पर होना चाहिये न कि विशेष व्यक्ति पर, उत्तर के लिए उठा ही था कि पंडित लेखराम स्वयम् उत्तर देने के लिए खड़े होगए और निम्न लिखित मनोरञ्जक प्रश्नोत्तर हुए—

प्रश्नकर्त्ता—"क्या आप वृक्षों में जीव मानते हैं ? "

CC-0. Gurukul Kangri

उत्तर—"क्या एक जीव ? एक वृक्ष में एक क्या अनेक जीव पाए जाते हैं और ऐसा ही मैं भी मानता हूं।"

प्रश्न—"मैंने तो सुना था कि आप वृक्षों में जीव नहीं मानते।"

उत्तर—"तुम अजीब भोले आदमी हो। अब तो मैं तुम्हारे सामने हूं। सुनी सुनाई बात पर बुद्धिमान पुरुष विश्वास नहीं करते। कल्पना करो कि वृक्ष को जीव-धारी ही मानलें तो ऐसी अवस्था में यह मानना पड़ेगा कि वृक्ष में जीव सुषुप्तावस्था में है। तब तुम्हारा बकरे आदि का मांस खाना क्या वृक्ष के फल खाने के समान होगा ? भोले भाई ! पशु पक्षी का माँस बिना हिंसा के उपलब्ध नहीं होता, और वृक्ष को तुम्हारे फल तोड़ लेने से कुछ कष्ट ही नहीं प्रतीत होता।"

श्रोतागण को पता लग गया कि प्रश्न कुटिल भाव से किया गया है और प्रश्न कर्त्ता लज्जित होकर बैठ गया !

पंडित लेखराम की हाज़िर जवाबी उन्हें बहुधा अनावश्यक वाद विवाद से बचा दिया करती थी। एक बार रेलकी यात्रा में एक उदासी साधु का साथ हुआ बात चीत चलने पर उसने स्वामी दयानन्द को साधु निन्दक सिद्ध करने के लिए कहा—"दयानन्द ने गुरु-नानक जी को दम्भी लिखा है और उनकी निन्दा की है। यह सन्यासियों का काम नहीं।" पंडित लेखराम उदासी जी को बड़े प्रेम से समझाने लगे और कहा—"देखो बाबा नानक जी के आशय की तो स्वामी जी ने प्रशंसा ही की है। हां, वेदों की कहीं कहीं निन्दा उनसे सहन न हुई और संस्कृत न जानते हुए भी उसमें पग अड़ाते देख कर यह लिखा है कि दम्भ ने किया होगा....." पंडित लेखराम ने बहुत कुछ समझाना चाहा परन्तु उस उदासी बाबा ने शोर मचा दिया और उनकी एक न सुनी। मेरे शिर में कुछ पीड़ा थी इसलिए मैं स्टेशन आने पर दूसरे कमरे में चला गया। अगले स्टेशन के रास्ते में भी उदासी बाबा बहुत गरम रहे, किंतु जब अगले स्टेशन पर रेल धीमी हुई तो अब उदासी जी दबे हुए से प्रतीत पड़े और पंडित लेखराम तेज़ सुनाई दिए। मैं भी फिर उसी कमरे में चला गया तो विचित्र दृश्य देखा। उदासी जी तो कुछ शान्ति की याचना कर रहे हैं और पंडित लेखराम उनको दबा रहे हैं। मालूम हुआ कि जब समझाने पर उदासी दबाए ही चला गया तो पंडित लेखराम ने कड़क कर कहा—

"अच्छा अगर बाबा नानक खुद कहदें कि मुझ में दम्भ है तो ?" उदासी कुछ अधैर्य्यित सा होकर बोला "यह क्या ?" पंडित लेखराम ने सिक्खों के ग्रन्थ से एक वाक्य पढ़ा जिस में दो तीन साधारण निर्बलताओं के साथ दम्भी शब्द भी था। अब तो उदासी बाबा कुछ ढीले हुए और जब मैं पहुंचा तो कहरहे थे---"यह तो कसरनफ़सी है। इसका यह मतलब थोड़े ही है कि श्री गुरु महाराज दम्भी थे।" हाज़िरजवाब लेखराम ने उत्तर में दस घृणित पापों के नाम ले ले कर कहा---"यह सब पाप अपने में क्योंकर बतलाए ? तुम बाबा नानक को मक्कार समझते हो, हम तो उन्हें ईश्वर के सच्चे भक्त समझते हैं। उन्होंने मेरे कहे हुए दुराचारों का नाम इसलिए नहीं लिया कि उनमें वह ऐब न थे। दो तीन कमजोरियाँ ही ग़रीब में थीं और उनसे बचने की प्रार्थना अपने मालिक से की। तुम चाहे अपने गुरु को मक्कार समझो हम तो बाबा नानकदेव जी को सच्चा ईश्वर भक्त समझते हैं।"

उदासी जी फिर कुछ गुन गुनाना चाहते थे परंतु आर्य्यपथिक ने यह कह कर बात चीत की समाप्ति करदी--"बस साहब ! मैं तुम से बात करना भी पाप समझता हूं। तुम गुरुनिंदक हो" और उदासीजी की वाणी पर ताला लगगया।

प्राचीन नौका विज्ञान

(३)

महाभारत काल.

"महाभारत" रामायण के समय में पाठक महाशयों ने दूर दूर के द्वीपों की सैर की और बड़े बड़े समुद्र लांघ लिये और नाना प्रकार की जातियों से मेल मिलाप भी कर लिया। साथ ही साथ हनुमान के साथ आपने लंका का समुद्र बिना जहाज़ या किश्ती के भी तय कर लिया पर अब जमाना पलट जाता है। जहां पहले एक भारतीय वीर विदेशी राज्य को जीतता है दूसरी ओर घर के राजा लड़ते हैं। और नया ज़माना पलटा दीखता है रामायण काल से हमारी दृष्टि चलकर यदि कहीं ठहरती है तो सीधी महाभारत काल पर। बीच पर कोई स्टेशन नहीं है।

इस समय का प्रतिनिधि भूत केवल एक ऐतिहासिक कवि है। व्यास मुनि महाभारत का निर्माण करते हैं और उस समय के सारे इतिहास प्रमाणिक ठेका लेते हैं। अब हम पाठकों का कर्त्तव्य है कि महाभारत के समय के समुद्र की और नदियों की सैर करें और उस समय के वीरों जलसेना और जहाज़ी बेड़ों का पता लगायें कि कहाँ कहाँ छिपे हुए थे। इसके पहले इतना कहना आवश्यक समझता हूं कि महाभारत ग्रन्थ से समय का निर्णय पाना या मर्यादा स्थिर करना असम्भव है। क्योंकि पता नहीं कि कितनीवार इस ग्रंथ का संग्रह और संक्षेप हुआ है। इसलिये इस ग्रन्थ के वर्त्तमान आधार पर काल निर्णय करना कोई युक्ति संगत नहीं। हां इतना कहा जा सकता है कि प्रमाण यदि उपाख्यान भाग के न हों तो, पर्याप्त प्राचीन काल की साक्षी मानी जा सकती है।

ख़ैर ! बन्दरगाह और बेड़ों का तो इस काल में बहुत पता नहीं लगता। परन्तु राजा युधिष्ठिर की राजसभा और राजसूय यज्ञ में हमें बहुत सा सामान मिलता है। इस राजसूययज्ञ में नाना द्वीप निवासी अपनी अमूल्य भेंट राजा के आगे झुक २ कर धर रहे हैं। इनका वर्णन भी बड़ा विचित्र है और पढ़ने के योग्य है। जिस प्रकार रामायण में नाना द्वीप निवासियों की अपनी अपनी विशेषता है उसी प्रकार यहां भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जातियों की विशेषता है। जैसे सभा पर्व में—

सागरद्वीप वासांश्च
नृपतीन् म्लेछ योनिजान्।
निषादान् पुरुषादांश्च
कर्ण प्रावरणानपि
द्वीपं ताम्राह्वयंचैव (सनपं)
वशे कृत्वा महामतिः

नाना प्रकार के उद्धरण निकाले जा सकते हैं।

इसी प्रकार द्रोण पर्व—

भिन्न नौका यथाराजन्
द्वीपमासाद्य निर्वृताः
भवन्ति पुरुष व्याघ्र
नाविकाः कालपर्यये

और

विश्वगिवाहता रुग्णा
नौरिवासीन्महार्णवे

इसी प्रकार कर्ण पर्व में—

निमज्जतस्तानथकर्ण सागरे
विपन्ननावो वणिजो यथार्णवात्
उद्धरिरे नौभिरिवार्णवादुधैः
सुकल्पितैः द्रौपदीजाः स्वमातुलान्

इसी प्रकार शान्तिपर्व में—

वणिग्यथा समुद्राद्वै यथार्थं लभते धनम्
तथामर्त्यार्णवे जन्तोः कर्मविज्ञानतोगतिः

इसी प्रकार आदि पर्व में—

ततः प्रवासितोविद्वान् विदुरेणनरस्तदा
पार्थानां दर्शयामास मनोमारुतगामिनीम्
सर्ववातसहांनावं यन्त्रयुक्तांपताकिनीम्
शिवेभागीरथीतीरे नरैर्विश्रम्भिःभिकृताम्

इस प्रकार के उद्धरण महाभारत से एक नहीं पर सैकड़ों निकाले जा सकते हैं। यहाँ इतना ध्यान खींचना आवश्यक समझता हूं कि महाभारत के काल में समुद्र में व्यापार धनकी वृद्धि के लिये बड़े २ व्यापारी व्यापार करते थे और इस व्यापार के लिये बड़े जहाज़ होते थे। इस आदि पर्व के वर्णन से तो पता लगता है कि उस समय शीघ्र चलने वाली नावें यन्त्रोंसे भी चलाई जाती थीं। अब इसका पता नहीं कि किस तरह के यन्त्र थे और किस रीति से चलाई जाती थीं। इन्हीं शब्दों से जो कुछ चाहें पाठक निकाल लें।

"पुराण" इस महाभारत की समालोचना के साथ ही साथ हम पुराणों को भी इतना कह देना उपयुक्त समझ कर गुजर जायँगे कि पुराणों में इतस्ततः केकतिपय कथाकथानक "समुद्रयात्रियों के भी आते हैं। और पूर्वोक्त प्रकार का भूमिवर्णन भी प्रत्येक पुराण में मिलता है।

स्मृतिग्रन्थ—इसी कोटि के स्मृति ग्रन्थों को भी हम सरसरी नज़र से देख सकते हैं। स्मृति ग्रन्थभारत, के प्राचीन राजनियम मालायें कहीं जा सकती हैं। इन ग्रन्थों में भी स्थान २ पर सामुद्रिक व्यापारी तथा नौ व्यापारियों के लिये कर तथा दण्डादि विषयक नाना नियम बने हुए थे। जैसे मनु में—

यत्राचि किञ्चिद्दाशानां विशीर्येतापराधतः।
तद्दाशै रेवदातव्यम् समागम्य स्वतोऽशतः॥

अर्थात् मल्लाहों की भूल चूक से यदि किसी की कोई चीज नाव में से खोगई है तो इस का टोटा मल्लाहों को ही अपनी गांठ से भरना होगा।

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य में—

"येसमुद्रगा वृद्ध्यार्थनं गृहीत्वाऽधिक लाभार्थं प्राणधनविनाशशंकास्थानं समुद्रं गच्छन्ति तेविंशशतकमासदद्युः"

अर्थात जो समुद्रों में जाने वाले धन को बढ़ाने की इच्छा से समुद्र में जहां उन का माल और जान ख़तरे में है जाते हैं वे भी २० प्रति सैकड़ा कर देवें।"

इस से भी आपने देख लिया है कि स्मृतिकारों की प्रजा में भी ऐसे समुद्र यात्री तथा व्यापारी थे जिन के लिये राजनियम पास किये जाते थे और राजप्रबन्ध भली प्रकार किया जाता था।

वृहत्संहिता में लिखा है कि सामुद्रिक व्यापारी तथा साहसि के स्वास्थ्य पर चन्द्रादि ग्रहों का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार हम अब इस समालोचना से महाभारत से चल कर स्मृतियों तक आपहुंचे हैं। हम इस के साथ ही साथ संस्कृत साहित्य को समाप्त करना चाहते हैं।

साहित्य संस्कृत साहित्य में भी नानास्थलों का उल्लेख दिया जा सकता है जिस में नौ यात्रा तथा नौ व्यापार की साक्षियां मिल जायं।

जैसे कालिदास की शकुन्तल में चीनांशुक (चीन का बना कपड़ा) अर्थात रेशम, दण्डि के दशकुमार में रत्नोद्भव की कथा, रत्नावली नाटिका में सिंहल द्वीप या लंका की राजपुत्री सागरिका तथा माघ का द्वारका वर्णन और वृहत्कथामंजरी और कथा सरित्सागर के सामुद्रिक व्यापारियों की कथाएँ और पंच तंत्रादि नीति शिक्षा की पुस्तकों में से छोटे मोटे उद्धरण भी साहित्य पक्ष की साक्षियाँ देते हैं।

इन सब ग्रन्थों के प्रमाणों को सरसरी नज़र से देख जाने पर भी हमारी दृष्टि विराम नहीं पाती। इतिहास क्षेत्र में अभी ज़माने के ज़माने ऐसे पड़े हैं जहां दृष्टि पड़ते ही आश्चर्य के मारे आंखें फैल के रह जायँगी सुन के कान सन्न से रह जायंगे। मन उत्कम्पित हो जायगा जीभ हैं! क्या! कह कर हक्की बक्की रह जायगी ज़माना पलटसा जायगा। नया सा युग आरम्भ होता पता लगेगा। भारतवर्ष आज का योरोप सा लगेगा और क्या कहें पाठकों को प्राचीन गौरव अपनाने के लिये अहंकार पैदा होगा। अभिमान तरंगें मारेगा। ये काल बौद्धकाल है जो हम आगामी परिच्छेद पाठकों के भेट करेंगे।

आर्यवर्त में पं० अखिलानन्द।

भाद्र मास के आर्यावर्त मासिक पत्र में पं० अखिलानन्द कविरत्न का 'वेद और ब्राह्मण' विषयक एक लेख छपा है। इस लेख में आर्य समाज और ऋषि दयानन्द दोनों के ऊपर छिपे २ खूब फटकार बतायी गयी है। आज मैं इस लेख के उस अंक का अक्षरशः खंडन करूंगा जो आर्य सिद्धान्त के विरुद्ध है। पंडित जी के लेख का सारांश यह है:--

(१) अथर्व वेद में ज्योतिष का फल उल्कादि दोष निवारण मन्त्र प्रयोग, शकुनाऽशकुन विचार, कृत्य प्रयोग, भूत निवारण, मणि बन्धन फल इत्यादि विषयों को वर्णन है। (२) वेदों के पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मणों ही के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिये है अन्यों के लिये नहीं। (३) 'यथेमां वाचम्' इस मन्त्र में जो वेद श्रवण करने का सब को अधिकार है वह गौण है मुख्य नहीं, (४) गुरुकुल में भी गये हुए शूद्र-बालक का यज्ञोपवीत नहीं होना चाहिये और न उसे वेद पढ़ाना चाहिये। (५) द्विजों के बालकों के लिये आचार्य्यकुल है और शूद्रों के बालकों के लिये गुरुकुल है। अर्थात् गुरुकुल उस का नाम है जिस में शूद्र बालक पढ़ते हैं' और आचार्य्यकुल उसका नाम है जिस में द्विजों के बालक पढ़ते हैं। (६) आचार्य्य और गुरु अलग २ दो वस्तु हैं। जो लोग आचार्य्य और गुरु को एक मानते हैं वह ठीक नहीं। आप के लेख में ये छः बातें हैं। इन का क्रमशः प्रत्याख्यान किया जाता है।

(१) मैं पंडित जी से पूछता हूं कि स्वामी जी ने अथर्व वेद को पढ़ा था या नहीं? यदि पढ़ा था तो उन्होंने उस के विरुद्ध ज्योतिष फल, शकुनाशकुन विचार और भूत निवारणादि मन्त्रों का क्यों खण्डन किया? यदि नहीं पढ़ा था तो आपका यह लिखना व्यर्थ होता है कि स्वामी जी वेदाचार्य थे। और आप ने अथर्व पढ़ा हैं या नहीं। यदि पढ़ा है तो क्यों नहीं उसका नया भाष्य करके स्वामी जी के मूल सिद्धान्तों पर कुठार प्रहार क्यों नहीं करते? छिप छिप कर बातें बनानी ब्राह्मणब्रुवों का काम है।

(२) यदि वेद पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मणों ही के लिये है तो मैं आप से पूछता हूं कि:—

" योऽनधीत्य द्विजो वेद मन्यत्र कुरुतेश्रमम्।
सजीवन्नेवशूद्रत्व माशु गच्छति सान्वयः॥ "

इस मनु के श्लोक में आए हुए 'द्विज' शब्द का क्या अर्थ है। केवल ब्राह्मण या ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य? यदि केवल ब्राह्मण तो इस में प्रमाण क्या है? यदि तीनों वर्णों का ग्रहण है तो स्पष्ट है कि ब्राह्मण से इतर वर्णों को भी वेदों के पढ़ने का अधिकार है।

(३) ऋषि दयानन्द ने बड़े बल के साथ जिस मन्त्र को मनुष्यमात्र को वेद पढ़ने के प्रमाण में उपस्थित किया है उसे आप गौण अप्रधान बनाकर क्या आप ऋषि पर साक्षात् प्रहार नहीं करते हैं? आप क्या युक्ति रखते हैं कि जिस से इस मंत्र का प्रतिपाद्य विषय गौण माना जावे। क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यदि वेद पढ़ लेवें तो संसार में क्या अनर्थ होजायगा? जब तक कोई आदमी विषपान के दोष को प्रकट नहीं करेगा कोई विषपान से रुक नहीं सकता। अतः यदि ब्राह्मणेतर वर्णों के लिये वेद विष है तो यह आपको बताना होगा कि वेदों का गुण क्षत्रियादि के लिये क्यों विषैला है?

(४) आप कहते हैं कि गुरुकुल में गये हुए शूद्र बालक का भी यज्ञोपवीत नहीं होना चाहिये। मैं कहता हूं कि आप के मत में तो न केवल शूद्रों का ही बल्कि क्षत्रिय और वैश्यों का भी उपनयन नहीं होना चाहिये। क्योंकि उपनयन तो केवल वेद पढ़ने के लिये किया जाता है। सब शास्त्र तो बिना यज्ञोपवीत के भी पढ़ सकते हैं परन्तु वेद का पठन उसके बिना नहीं होसकता। जो वेद का अधिकारी जब केवल ब्राह्मण है तो अन्यों को जनेऊ की क्या आवश्यकता है। अस्तु आप ने शूद्रों के यज्ञोपवीत निषेध में स्वामी जी का सत्यार्थ प्रकाशस्थ लेख (पृ० २९ पं० १३, १४) उपस्थित किया है। मेरे विचार में आपने स्वामीजी के लेख को समझा ही नहीं है। इस का तात्पर्य यह है कि उसका उपनयन स्वगृह में न हो किन्तु गुरुकुल-आचार्य्यकुल में तो हो ही। यदि ऐसा नहीं मानेंगे तो इस लेख का पृ० ३३ पं० २२ के साथ विरोध होगा। स्वामीजी के मत में तो शूद्र क्या, बल्कि शूद्रतर और शूद्रतम के बालक भी वेद के अधिकारी हैं। यदि वे वेदों के विषय को ग्रहण कर सकते हैं तो क्या कारण है कि उनको यज्ञोपवीत वेद पढ़ने के लिये न दिया जावे। उन के यज्ञोपवीत में गृह्यसूत्र का भी प्रमाण है:-

कुलगुणसम्पन्नानां शूद्राणा मुपनयनम्।

आप ने सं० प्र० पृ० ३९ में दिये हुए सुश्रुत वाक्य के अनुवाद से शूद्रों को वेदानधिकार सिद्ध करने की जो चेष्टा की है वह भी व्यर्थ है। वहां तो 'अध्यापयेदित्ये' इस वाक्य का अनुवाद स्पष्ट पड़ा हुआ है कि यह मत किन्हीं आचार्य्यों का है। स्वामी जी का सिद्धांत तो वही है जो उन्हों ने 'यथेमां वाचम्०' के अर्थ में प्रकाशित किया है अब आप प्रश्न कर सकते हैं कि इस सुश्रुत को यहाँ देने की क्या आवश्यकता थी। तो इसका उत्तर यह है कि जो लोग शूद्रों के बालकों को कुछ भी पढ़ने का अधिकार नहीं देते उन के मुख में चपेट मारने के लिये यह यहां लिखा है।

(५) आप कहते हैं कि जहाँ द्विजों के बालक पढ़ें उसका नाम आचार्य्यकुल और जहां शूद्रों के बालक पढ़ें उसका नाम गुरुकुल है। आप के इस विचार के लिये बधाई है। आप ने यह लिखते समय पूर्वा पर का कुछ भी विचार नहीं किया। जहां आप ऋषि दयानन्द को अपना आचार्य मानते हैं वहां उन्हें अपने कमलचरण की धूल भी नहीं समझते। मालूम होता है कि आपने अभी सत्यार्थ प्रकाश भी ठीक से नहीं पढ़ा है। नहीं तो ऐसा ऊटपटांग लेख कभी भी न लिखते। स० प्र० में गुरुकुल, आचार्यकुल और पाठशाला ये तीनों पर्य्यायवाचक शब्द हैं। प्रमाण के लिये देखियेः स. प्र. पृ. ३३ पं. २२, पृ. ३९ पं. २७ पृ० ४७ पं० १७ यहां पर न केवल ऋषि दयानन्द की ही साक्षी है बल्कि मनु का श्लोक भी है जिस से यह स्पष्ट है कि ब्राह्मणादि की पाठशालाओं का नाम भी गुरुकुल है।

अनेन क्रम योगेन संस्कृतात्मा द्विजःशनैः।
गुरोवसन् सञ्चिनुयाद् ब्रह्माधिगमिकं तपः॥

पुनः पृ० ७६ पं० १७ पृ० ७७ १५। यहां पर भी मनु का प्रमाण है---

गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि।
उद्वहेत द्विजो भार्य्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्॥

यदि आप के मत से द्विजों के अध्यापकों की संज्ञा आचार्य्य ही होती तो इन दोनों श्लोकों में 'गुरोः' और 'गुरु' के स्थान में 'आचार्य्यों और आचार्य्येण, होना चाहिये था! पुनः पृ० ११ पं० २५, पृ० १५४ पं० --

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवृत्तानां गुरुकुलाद विप्राणां पूजको भवेत् ॥

यहां पर तो आपके सिद्धान्त की धज्जियां उड़जाती हैं। देखिये मनु स्पष्ट कहते हैं कि गुरुकुल से लौटे हुए ब्राह्मणों की पूजा करे। देखिये महाभारत शिल्प पर्व अ० ४०--

पुराकृतयुगे राजन्नार्ष्टिषेणो द्विजोत्तमः।
वसन्गुरुकुले नित्यं नित्यमध्ययने रतः॥

यहां पर भी द्विजोत्तम=ब्राह्मण ब्रह्मचारी का गुरुकुल में वास करना लिखा है।

उपनीतो गुरुकुले वसन्। व्यास--

यहां पर उपनीत शब्द से आप के मत में शूद्र तो गृहीत होही नहीं सकता अतः परिशेषात् द्विजों का ही ग्रहण किया जावेगा तो कहिये आप का सिद्धान्त कहां रहा।

(६) आप कहते हैं कि आचार्य्य और गुरु को जो एक मानते हैं वह ठीक नहीं। पण्डित जी! स्वामी दयानन्द ने ही इन दोनों शब्दों को पर्य्यायवाचक माना है। देखिये--उणादि कोष १ पाद, सू० २४ 'गृणात्युप दिशति वेदशस्त्र विद्या माचारं च स गुरुः। सर्वेषांगुरुत्वादीश्वर आचार्य्यः पितावेति।' कहिये स्वामीजी ने आपके मतमें ठीक किया कि वे ठीक?

भवदेव ब्रह्मचारी

लाहौर का वार्षिकोत्सव समय विभाग

नगर कीर्तन शुक्रवार २७ नवम्बर १९१४ पांचबजे सायं स्माथानडी से चलकर शहर के बड़े बड़े बाज़ारों में होकर लोहारी-मंडी में समाप्त होगा।

शनिवार २८ नवम्बर १९१४

७॥ से ८ बजे तक स्वस्तिवाचन, शान्ति पाठ, हवन

८ — ८॥ तक भजन

८॥—९। उपदेश श्रीमान् स्वामी अच्युतानन्दजी

९।—९॥ भजन

९॥—१०॥ व्याख्यान पं० पूर्णानन्द जी महोपदेशक आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विषय वेद अपौरुषेय हैं।"

१०।—११ व्याख्यान प्रोफ़ैसर महेशचरण सिंह जी विषय "आर्य्य समाज और हिंदू"

१--३ आर्य्य कान्फरैंस--सिर्फ़ आर्य्यों के लिये विषय--"आर्य्यसमाज की संस्थाको दृढ़ करने के उपाय"-प्रधान श्रीमान् महात्मा मुन्शीराम जी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल काङ्गड़ी

३--३। भजन

३।--४ व्याख्यान श्रीमती कुमारी कौशल्यादेवी जी, प्रोफ़ैसर कन्या-महाविद्यालय जालंधर

४---४। भजन

४।—५। व्याख्यान स्वामी सर्वदानन्दजी विषय—"वैदिक शिक्षा"

७—८॥ रात--व्याख्यान महाशय रामदेव जी बी. ए. प्रोफ़ैसर गुरुकुल-काङ्गड़ी विषय--आर्य्यसमाज और वर्तमान पश्चिमी दार्शनिक विचार

रविवार २९ नवम्बर १९१४

७॥—८ तक प्रातः स्वस्तिवाचन शान्ति पाठ हवन

८—८। भजन

८।-९। उपदेश श्रीमान् स्वामी सत्यानंदजी

९।—९॥ भजन

९॥--११॥ व्याख्यान श्रीमान् प्रोफ़ैसर बालकृष्णजी एम०ए० गुरुकुलकाङ्गड़ी विषय-"आर्य फिलासफ़ीका महत्त्व और वेद प्रचार के लिये अपील"

१॥--२ बजे तक भजन

--३ व्याख्वान पं० जगन्नाथजी निरुक्तरत्न

३-३। भजन

३।-४। व्याख्यान ब्र० ब्रह्मदत्तजीस्नातक गुरुकुलकांगड़ी "विषय-वैदिक आज्ञा का पालन करो"

४।--४॥ भजन

४॥-५॥ व्याख्यान पं० महाराणीशंकरजी बम्बई वाले विषय-'गुरुभारत'

७--८ रात व्याख्यान श्रीमान् महात्मा मुन्शीरामजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी

८८-८॥ प्रधान समाज की तरफ़ से धन्यवाद आदि

धर्मचर्चा -३० नवम्बरसे २ दिसम्बर १९१४ तक रात के ७ से १० समाज मन्दिर बछोवाली में

सोमवार—खुला शास्त्रार्थ

मंगलवार-विषय-"विविध धर्मों में स्त्री जाति का अधिकार"

बुधवार ईश्वर उपासना की सर्वोत्तमविधि स्त्री समाज का उत्सव समाज मन्दिर में सोमवार और मंगवलार १० से ५ बजे तक हुआ करेगा केवल स्त्रियों की आज्ञा होगी --

नोट--आर्य्य कान्फरैंस और धर्म-चर्चा आदि के लिये टिकट पंडाल के बाहर इनक्वारी आफिससे मुफ्त मिल सकेंगे-

नोट दूसरा--स्वागत के लिये आर्य्य-कुमार सभा के वालंटीयरज़ रेलवेस्टेशन पर मंगलवार से रविवार तक उपस्थित रहेंगे।

नोट--३ उतरने का इन्तज़ाम भी अच्छा होगा। उपदेशक महाशय पं० ठाकुरदत्त जी अमृतधारा के मकान पर कृपया उतरा करें।

निवेदक--धर्मचन्द बी. ए. वकील चीफ-कोर्ट मन्त्री आर्य्यसमाज लाहौर बच्छोवाली १७ १०-१४

कुंभप्रचार को दान

निम्न लिखित धन कुम्भप्रचार के लिये प्राप्त हुआ है अतः कृपया अपने पत्र में छाप दें।

गत प्राप्त धन

११८२)

५०) आर्यसमाज कमालिया से

५) आर्यसमाज गढीकुंडल ज़ि० रोहतक

५) आर्यसमाज सीतापुर

३) आर्यसमाज अमरोहा

२ महा० दयाराम जी सूद प्रागपुर ——ज़िला कांगड़ा

१२४७) सर्वयोग

आपका

मुन्शीराम

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्यो पान्त इतिहास सरल भाषा और मनो-रंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकी है१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seie nce. का भाषा नुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्दमार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पतासाफ़लिखो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार

बजाज़ा शहर मेरठ

गेहूं की खेती ।

यू० पी० गवर्नमेंट के कृषी विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिंदी उर्दू दोनों भाषा से बनाई गई है इसमें बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यत: दुगनी तिगनी और और गेहूं की खेती में विशेषत: केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषी सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहुत बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कोडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ ।

रामप्रसाद यजमान उज्जैन

विद्यार्थी ।

गत चैत्र मास से प्रतिमास निकलने वाला । हर महीने सुन्दर चित्र। प्रसिद्ध विद्वानों के शिक्षाप्रद लेख । मनोहरिणी कवितायें । प्राय: समस्त हिन्दी-पत्र सम्पादकों में प्रशंसित । विद्यार्थियों के लिये परम लाभकारी । सदाचार का बीज बोने वाला । देश भक्ति की ऊंची लहरें उठाने वाला । अपने पूर्वजों और प्राचीन भारत के गौरव को याद दिलाने वाला मातृभाषा—हिन्दी—का भक्त बनाने वाला । नवयुवक विद्यार्थियों में जीवन डालने वाला । उच्च अभिलाष और जागृति पैदा करने काला । भारत के भावुकों के हृदयों में भारतीय भव्य भाव करने वाला । अचेतों को सचेत करने के लिये चटकीली चेतावनी देने वाला । हिन्दी—संसार में एक अनोखा और अद्भुत पत्र जल्द २) भेज कर "विद्यार्थी" पत्र के ग्राहक बन जाइये और साल भर तक पढ़ कर लाभ उठा-इयेगा ।

४ ग्राहक बनाने वाले को साल भर 'विद्यार्थी' मुफ्त ।

मिलने का पता—

मैनेजर, हिन्दी प्रेस प्रयाग

उपदेश-मंजरी ।

यह पुस्तक सभी के लिये बड़ी उप-योगी है । इस पुस्तक को सदाचारशिक्षा की खान कहना चाहिये । लड़कों को इनाम देने के लिये यह पुस्तक बड़ी अच्छी है । जो लोग अपने लड़कों को सदाचारी और सुशील बनाना चाहते हैं उन्हें यह पुस्तक अवश्य लेनी चाहिये

मूल्य जिल्द वाली का ॥) सादी का ।=)

कविता विनोद ।

बीसियों कविताओं का संग्रह । बड़ी मनोहारिणी और शिक्षादायिनी कवि-तायें हैं । प्रत्येक हिन्दी-भाषी को इसे पढ़ना चाहिए । मूल्य ॥)

ब्राह्मण-महत्वादर्श काव्य ।

यह हिन्दी-भाषा-टीक सहित है। ब्राह्मणों में जागृति पैदा करने वाला है। वैसे तो यह सभी के काम का है, पर, पढ़े लिखे ब्राह्मणों को तो इसे ज़रूर ही पढ़ना चाहिए । मूल्य ॥)

मिलने का पता—

मैनेजर, हिन्दी प्रेस, प्रयाग ।

॥ ओ३म् ॥

हिन्दी चित्रमय जगत

दिसम्बर का अंक ।

क्या आपको यह मालूम है कि युरुप में युद्ध क्यों छिड़ा ?

क्या आपको समर विजयी ब्रिटिश के परा क्रम देखने की इच्छा है ।

फ्रांस पर आक्रमण, जर्मनी का परा-भाव ब्रिटिश के साहस युक्त कर्म युद्ध का संपूर्ण रोचक वर्णनादि सुनने को तथा चित्रों के देखने की इच्छा हो तो दिसम्बर का अंक देखने को मत भूलिये।

कई आवश्यकीय व युद्ध का वर्णन सुनकर आपका चित्त रंजन करेगा ।

मूल्य साधारण कागज़ की प्रति का ॥)

"आर्टपेपर" ॥)

पूना सिटी

मैनेजर
हिन्दी चित्रमय जगत

आवश्यकता ।

एक योग्य आर्य सदाचारी पढ़ा लिखा आमदनी ७५) मास आयु: बीस वर्ष गोत्र गर्ग अग्रवाल वैश्य के लिये एक योग्य कन्या की आवश्यकता है कन्या की आयु: १४ या १६ वर्ष के करीब हो विशेष पत्र व्यवहार के लिये ।

पता:—मोहर सिंह दास

रामेश्वर दास

नई सड़क देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पांचकोना कृष्ण सितारा।

"जोना काहे जो एक दूसरे की जानको आराम न दे सके।"

इसी मूल मन्त्र पर डाक्टर बर्म्मन की दवाएं बनी हैं और इनके अमूल्य गुण के हिसाब से बहुत ही सस्ती बिकती हैं, यही कारण हैं कि इन दवाओं के किये हुये लोकोपकार के साथ इनका प्रचार दिन पर दिन बढ़ता जाता है। सब यह बात सुनकर अ —

लोभियो को समा कहां ?

रजिष्ट्री किया ट्रेडमार्क।

डाक्टर बर्म्मन तथा उनकी दवाओं का नाम वो रूप की नकल के कलकत्ता बनारस, दिल्ली, वो बम्बई, में ऐसे कई एक दवाई बेचने वाले----

नक्काल उपजे हैं।

सर्व साधारण को इन से सावधान रहना चाहिये

तार ठिकाना कैम्पर कलकत्ता ! } डाक्टर एस, के बर्म्मन। कलकत्ता।

(आगामी संख्या के विज्ञापन को देखिये)

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६ तारा चंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता। नँ०११

एजन्ट—बाबूराम जैन एन्ड कम्पनी बड़ा बरीवा दिल्ली

विधवा की आवश्यकता

कुछ समय हुआ मेरी पहली स्त्री का देहान्त होगया है। अब मैं एक विधवा के साथ विवाह करना चाहता हूं। विधवा की आयु २०, से २५ तक होनी चाहिये। विधवा कुछ पढ़ी लिखी होनी चाहिये। शेष पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते से कीजिये—

धन्नाराम स्टेशनमास्टर

विलसनपुर

सरगोधा लाइन

उस्तरे को बिदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

नेजर हिमालय कम्पनी कंखल U.P

ज़िद करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा मोल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही ज़िद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफत मिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

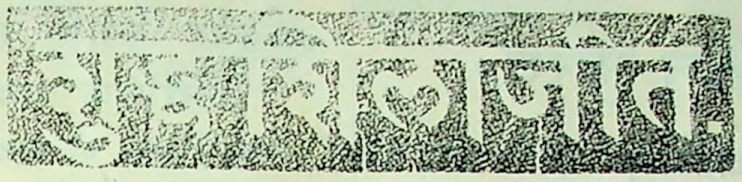

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, क्षयी, पीला पड़जाना, श्वास, खांसी, बिक्षिप्तताः रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ विना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पताः—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पताः—

बाबू पंचमसिंह वर्मा

मालिक, कारख़ाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul ई इण्डिया प्राप्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं। ।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

डाहौरी टोला-बनारससिटी

ADVERTISEMENT.

Required at once the services of competent College—trained Surveyors with several year's practical experience of canal construction. None need apply who have not had considerable practical experience and do not hold first class recommendation.

Apply to:—

The Executive Engineer,
Tandula Lower Division.
DRUG.
(Central Provinces.)

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (ब)

बाद--जि० जार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नई पुस्तक! अपूर्व पुस्तक।

महर्षि पतंजलि और तत्कालीन भारत।

लेखक—(प्रतिष्ठित) स्नातक चन्द्रम विद्यालंकार।

यदि आप महर्षि पतंजलि के विषय में कुछ जानना चाहते हैं, यदि आप पतंजलि के समय का वास्तविक भारत इतिहास जानने के उत्सुक हैं, यदि आप महाभाष्य जैसे बड़े भारी ग्रन्थ का ऐतिहासिक निचोड़ विना किसी परिश्रम के देखना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। मूल्य केवल ।=) है

पुस्तक भण्डार गुरुकुल
कांगड़ी, हरिद्वार

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रांत

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र, तत्र, कोई दो दर्जन आर्यविद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है। शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा
हैड क्लर्क, प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

वर की आवश्यकता।

एक कन्यकुब्जद्विज (पांडेय-खोरिकत्वर) की कन्या जिसकी आयु १६ वर्ष है सब अंग हृष्ट पुष्ट हैं गुण कार्य में निपुण तथा सुशिक्षित है और बेल बूटे का काम भली भाँति जानती है उसके निमित एक योग्य वर (षट—कुल) की आवश्यकता है। निम्न लिखित पते पर पत्र व्यौहार शीघ्र करें।

पं० मूलचंद जी शर्म्मा
इम्पीरियल कैपीटल
वर्कस
अजमेरी दर्वाज़ा—देहली

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ९ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का प[illegible]

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूचीं।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि

(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली

(५) भारत सेवक एन्जसी देहडी

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* ओ३म् *

Registered No. L.[illegible]

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ।

प्रवर्त्तक — मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

१३ मार्ग शीर्षसं १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० २८नवम्बर १९१४

संख्या ३३
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्रवेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

सादी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
सजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सार गर्भित भूमिका है ।

मूल्य ।=)
प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षा दायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षा दायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारत वर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस, जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

राष्ट्रीयता का मूल मंत्र तय्यार हो गई ।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिसकी पहिली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है । इसके लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं । एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है । इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिये क्या गुण आवश्यक हैं । जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये ।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक
देहली

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निर्बल सेवक ।

अपने उद्देश्य का एक मात्र साप्ताहिक पत्र ।

आठ पृष्ट और मूल्य केवल १॥) वार्षिक ।

अवश्य मंगाइए ! !! क्योंकि:-

१—इसने केवल निर्बलों की सेवार्थ जन्म लिया है ।

२—आपस के झगड़े मिटा एकता करना इसका धर्म्म है ।

३—यह पत्र आर्थिक लाभ के विचार से नहीं निकाला गया । पत्र के लिए बिना हिसाब व्यय होता है ।

मैनेजर निर्बल सेवक "धर्म"

देहरादून

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको चाँदी का पदक ।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे ।

प्रचारक के प्रेमियो ! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो । अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा ।

इन्द्र—सम्पादक

प्रचारक का वार्षिक मूल्य ।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई ।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक	=)	प्र०
तीन मास " " " "	=)	"
छः " " " " "	-)॥	
सालभर " " " "	-)	"

अधिकदेर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये ।

क्रोड़पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सक्ता ।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये । क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्ता से पूछ कर कीजिये

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १८)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है यानीचे लिखे पते से मंगाइये ।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली ।

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६॥ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं ।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० दाम =)]
थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

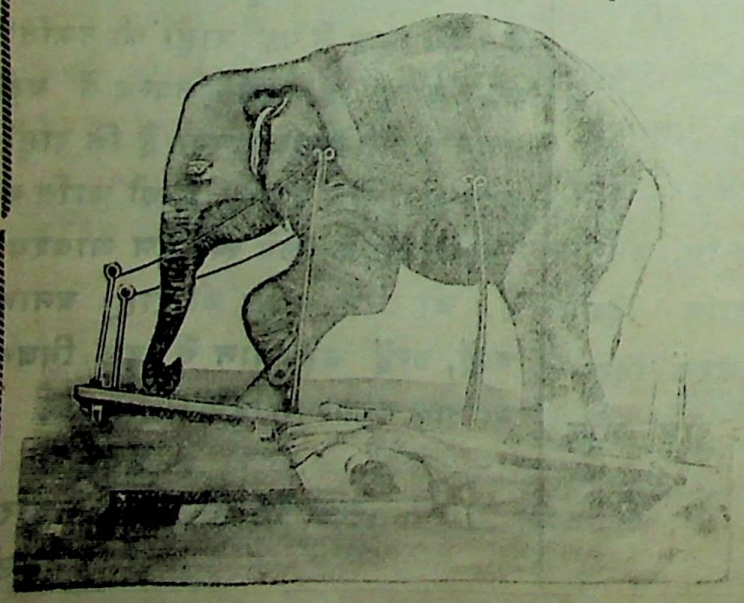

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपन्ना ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशल किशोर १) चोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर =) राजपूतों की बहादुरी ।।।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी माता यें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिखों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां ।) वैदिक विवाहादर्श १) तांतिया भील =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकरा ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— [illegible]णक कार्यालय
(सूबनारस सिटी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धाञ्जलि।

प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान्।
यै समामे वध्यते यै व्यामे-
अधा जीवेम शरदं शतानि,
त्वया राजन् गुपिता रक्षमाणाः॥ अथर्व०

हे सर्व जगत को आवरण करके धारण करने वाले और सब बुद्धिमानों से वरे जाने योग्य परम परमात्मन् वरुणस्वरूप हमारे मन शरीर और आत्मा को बांधने वाले नाना प्रकार के जटिल फांसे डले हुए हैं कृपा करके इन सब फाँसों से हमको मुक्त कीजिये, हम आपकी उपासना करने वाले सौवर्ष कासुखमय जीवन व्यतीतकरें हे सर्व प्रकाशक राजन् परमात्मन् आप सब राजाओं के भी राजा हैं आप हमारी सदा रक्षा कीजिये आपकी रक्षा का हाथ हमारे ऊपर सदा रहे और हम सब भी परस्पर एक दूसरे से प्रेम करते हुवे और परस्पर रक्षा करते हुए सुखमय जीवन का लाभ करें। हे परमात्मन् आप उन्हीं की रक्षा करते हैं जो स्वयं अपनी रक्षा करने में समर्थ हों। देवेश हमें बलदें कि हम भी आप के कृपा पात्र हो सकें। हम भी संसार में दासता के कड़े बन्धनों को धर्म्म पूर्वक छिन्न भिन्न करके स्वतन्त्र आत्मा का सुख अनुभव करें। हमारे मन शरीर तथा समाज के सर्व प्रकार दारुण बन्धन हमारे जीवन पथ में सर्वथा बाधक न हों। हे परमात्मन् आप से यही प्रार्थना है।

ओ३म्

आत्मिकदृश्य

"प्रजा पतिर्वै प्रजाः सृजमानो रिरिधान इवामन्य, तस्मा त्पराच्य प्रजाः आसु। नास्य प्रजा श्रिये अन्नाद्याय तस्थिरे। सऐक्ष अरिक्ष्यहम्। अस्मा कामाय अस्रक्षि नमे स काम समार्धि। पराङ्यो मत्प्रजा अभूवन्। नमे प्रजाश्रिये अन्नाद्याय आस्थियत। सऐक्षत प्रजा पतिः कथंनु पुनरात्मान माप्याययेय उपमा प्रजाः समावर्त्तेरन्। तिष्ठेरन् मे प्रजा श्रिये अन्नाद्याय। सएतामेकादशिनीमपश्यत्। ....एवमस्य प्रजाश्रिये अन्नद्याया तिष्ठन्त। इति शत पथ। का०३।

ये गाथा शतपथ में आयी है। कि—"प्रजा पति ने प्रजा को बनाया और अपने को खाली होता हुआ पाया और सोचा कि मेरी प्रजा पराये के अधीन हो गई है मेरी प्रजा धन सम्पत्ति तथा अन्न पैदा नहीं करती। उसने देखा कि मैं तो खाली होगया हूं। और मैंने जिस इच्छा से प्रजा को पैदा किया था वह पूरा नहीं फला। और प्रजा दूसरे के भरोसे रहती है। मेरी प्रजा धनसम्पत्ति और अन्न के लिये नहीं परिश्रम करती है। प्रजा पति ने सोचा, कि किस प्रकार मैं फिर अपने को भरलूं और प्रजा को फिर दूसरे के पञ्जे से छुड़ा कर अपने पास ले आऊं और मेरी प्रजा धनसम्पत्ति तथा अन्नादि समृद्धि के लिये लग जाय। उसने ग्यारह उपाय देखे। और उन उपायों को वर्त्तने से उसकी प्रजा फिर धनसम्पत्ति मान तथा अन्न समृद्धि मान हो गई।"

अब वह कौन से ११ उपाय प्रजापति ने प्रजा को धन धान्य युक्त बनाने के किये सो हम कभी आगे अगले अंक में बतायेंगे। पर अब तो इतना ही विचारना है कि प्रजापति का प्रजा उत्पन्न करने का क्या उद्देश्य था। प्रजापति का उद्देश्य प्रजा बनाने का ये था कि वे श्री से युक्त हों और अन्नादि से पुष्ट हों। प्रजापति परमात्मा की पवित्र सृष्टिमें, प्रत्येक प्राणी उस परमात्मा की प्रजा हैं प्रत्येक जन्तु सुन्दरता का लोभी है और सौन्दर्य मय गुणों को अपने अन्दर धारण करने की शतशः चेष्टा करता है। इसी प्रकार मनुष्य की भी प्रकृति ऐसी बनी है। कि मणिरत्न सुवर्णादि, अन्य प्राकृति पदार्थों की अपेक्षा उसे अधिक भाते हैं। कितनी घोर हत्याएं भी केवल इसी सौन्दर्य की लालसा से इतिहास में हम देखते हैं। फलतः श्री को प्राप्त करना भी एक स्वाभाविक इच्छा है। इस स्वाभाविक इच्छा से प्रेरा हुवा मनुष्य बहुत बार कुपथ में भी चला जाता है। अकार्य भी कर बैठता है। अपनी इन्द्रियों का भी दास हो जाता है। धन की प्राप्तिके लिये जहां पाप कमाता है वहां ही वह दूसरे के हाथों कोड़ी के दामों में अपने को बेच से भी नहीं टलता और अपनी स्वतन्त्रता का घात कर बैठता है। येसब उद्देश्य को न समझने से होते हैं। जैसे यदि किसी को कहा जाय कि तेरा घर लाहौर में है। तो वह उत्सुकता से घर जाना चाहता है अब उस उद्देश्य को ठीक न समझकर यदि अण्डबण्ड रास्तेपर चल पड़े तो, अकारण ही वह इधर उधर भटक २ कर नाना कष्टों से पीड़ित होगा। और अपने को अन्धा बना कर और उचक्के के बहकाने में फंसा लेगा। इसी प्रकार प्रजापति के कहे श्री उद्देश्य को पाने के लिये मनुष्य ठीक उपाय को न समझा तो नाना अकार्य भी करने में प्रवृत होगया। और अन्धा बनकर लोभ में आकर अपनी आत्मिक स्वतन्त्रता को भी खो बैठा। इसी प्रकार अन्न दूसरा उद्देश्य है मनुष्य मात्र का अन्न जीवन का आधार है। अन्न प्राणियों का प्राण है। इसका संग्रह करना संसार भर पर उपकार करना है। अन्न के लिये भी कितना पाप का पहाड़ खड़ा होजाता है। पेट के लिये नौकरी पेट के लिये दासता की कड़ी जंजीरें पतित देश में किस के शरीर और मन पर नहीं बंधी? इस अन्न के लिये पराधीन होकर जीना भी प्रजापति के दुख का कारण हुवा। अन्न के लिये पराधीन होना जीवन भर की कड़ी दासता में मरना है। टुकड़े के लिये मुंह ताकना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कितनी नीचता है। कुल बंश और राज्य की महत्ता इस अन्न की अवस्था से पहिचानी जा सकती है। जिस देश में नौकरी का पेशा होगा मंगतों की भरमार होगी बस समझ लेना चाहिये कि प्रजा की अवस्था बहुत गिरी हुई है। इस तरह से अन्न का संग्रह भी स्वतन्त्र आत्मा हो के करना उत्तम प्रजा का लक्षण है। इसी अन्न और श्री की समृद्धि के लिये चतुर्वर्ण स्थापना होती थी। प्राचीन काल में इस वर्ण विभाग से स्वतः कार्य विभाग होजाता था और सब अपने उद्देश्य में स्वतन्त्र और प्रजा पति के उद्देश्य में एक दबे हुवे देश को स्वर्ग धाम बना देते थे। इस प्राचीन ऋषियों के मार्ग पर हम भारतियों को सदा के लिये चलना चाहिये। अब हमारी अवस्था हीन है। श्री अर्थात् धनसम्पत्ति तथा शोभा का राज्य हमारे हाथ में नहीं है। द्रव्य उपार्जन के निमित्त भूत कला कौशल हमारे देश में कहाँ हैं? जातीय शोभा के मूल पर जातीय सम्पत्ति की जड़ पर यही प्रथम कुठारा घात है। जब तक अन्यत्र बनाई हुई छोटी २ चीजों पर हमारे जातीय आडंबर होंगे जब तक हमारे क्षण २ के कार्य भी दूसरों के पैदा किये पदार्थों पर निर्भर होंगे तब तक हम जातीय दासता से मुक्त नहीं हो सकते। भरोसा करते हैं। अपनी कलम नहीं घड़ लेते। यही विस्तृत पराधीनता प्रत्येक व्यक्ति में बढ़ी हुई है। प्रत्येक व्यक्तिका आत्मा स्वतन्त्रताके स्वपने भी नहीं लेता।

वाह्याडम्बर को शोभा समझता है अन्तरात्मा की शोभा का ध्यान नहीं। जब व्यक्ति व्यक्तिमें आत्मीय शोभा का ध्यान नहींतो जातीय शोभा या, राष्ट्रीय शोभा भी किस प्रकार से रह सकती है।

व्यक्ति व्यक्ति मिलकर समाज बनता है और व्यक्ति व्यक्ति ही मिलकर महान् राष्ट्र बनाते हैं इन व्यक्तियों की स्वतन्त्र आत्मा में ही जाति और समाज तथा राष्ट्र में स्वतन्त्रता का जीवन फूंका करती है।

प्रत्येक गृहपति वेद की आज्ञा से गृहपति है वही प्रजापति है वही अपने गृह रूपी राष्ट्र का राष्ट्रपति है उस का कर्त्तव्य है कि वह अपनी प्रजा अपनी सन्तति को आत्मिक दासता के कड़े पञ्जे से छुड़ावें। आत्मिक पराधीनता का नाश करने का उपदेश दे। स्वतन्त्रतया श्री और अन्न के उपार्जन करने का पाठ पढ़ाये। जिससे बाद में कुल पति का कुल दरिद्र तथा नीच न होजाय। श्री और समृद्धि और अन्नादि की प्राप्ति धर्म से करे न कि स्वार्थ से! यही प्राचीन महर्षियों का उपदेशहै। यही आदर्श है। यही शिक्षा है इसी के प्रभाव से प्रभावित प्राचीन आर्यों की आत्मा कभी अनुदार कृपण तथा मलीन नहीं हुई। कभी आत्मिक पराधीनता की दासता तथा नीचता का जीवन नहीं बिताया। प्रत्युत वीर स्वतन्त्र सुन्दर तथा हृष्ट पृष्ट आत्मायें इस आर्य्यावर्त्त को स्वर्ग धाम बनाती थीं और प्रजापति के नाभ को कुल के नाम को देश के नाम को तथा राष्ट्र के नाम को उज्वल करती थीं। ———

शाखा गु०कु० कुरुक्षेत्रके समाचार

[१] स्वास्थ्य—सब ब्रह्मचारियों का अच्छा है केवल तीन ब्रह्मचारियों को कुछ खांसी होने के कारण रोगीगृह में पृथक् किया हुआ है।

[२] तोल—इस मास का दो ब्रह्मचारियों को छोड़ प्रायः सबका अच्छा बढ़ा है।

[३] उत्सव—इस वर्ष गत वर्षों की अपेक्षा १५ दिवस पूर्व अर्थात् २९-३०-३१ जनवरी सन् १९१५ को होना निश्चित हुआ है-अतः नवीन ब्रह्मचारियों के प्रार्थनापत्र १५ जनवरी तक आजावेंगे।

[४] ब्रह्मचारियों के लिये—निम्नलिखित तीन प्रकार के वस्त्रों की आवश्यकता है ५३ ब्रह्मचारियों के लिये देशी कपड़े के ५३ गर्म कुरते, और ५३ बिछौने (तोशक) रुई पड़े हुए-तथा २५ रजाई—आशा है कोई दानी महाशय शीघ्र ही इस आवश्यकता को पूरी करदेंगे क्योंकि सर्दी अधिक बढ़ रही है। (५) गोशाला में इस समय ५५ गौएं हैं तथापि दूध केवल नाममात्र का है शेष सब दूध मोल लेना पड़ता है कारण स्पष्ट है कि उत्तम गौएं न आती हैं में नहीं। आशा है कि आगे को दाता महाशय दूध देने वाली ही गौएं देंगे करेंगे, केवल संख्या बढ़ाने वाली नहीं

विष्णुमित्र

सामाजिक समाचार

शाहपुर छावनी अम्बाला से श्री रलाराम जी गुप्त ने सूचित किया है वहां की आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षि कोत्सव २९,३०, ३१ दिसम्बर १९१४ ई० निश्चित हो चुका है। सभा लिए बस्ती के बीच में एक स्थान ५ में क्रय कर लिया गया है, उसमें किन्हीं भद्र पुरुषों से शिलालेख भी लगवाया जायगा। उपदेशकों और भजन-मंडलियों को जाना चाहिये।

———

मुज़फ़्फ़रगढ़ आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव ता० १४, १५, १६ को सानन्द समाप्त हुआ। कई एक प्रतिष्ठित पुरुषों ने आने का वचन दिया था किंतु वे न पधारे, फिर भी उत्सव में किसी प्रकार की कमी न रही। पं० लोकनाथ जी, स्वामी विवेकानन्द जी, पं० भूमित्र, जी प० रलाराम जी शास्त्री, मास्टर चोथराम जी बी० ए०, आदि महाशय पधारे थे। पं० लोकनाथ जी की अपील पर ८२८) रु आये। नगरकीर्तन आदि आनन्द के साथ हुआ।

———

पुनहना गुड़गांवा से समाचार आया है कि वहां की नष्टप्राय समाज की पुनः प्रतिष्ठा हुई है; इस में पं० सुरेन्द्र जी ने बहुत परिश्रम किया बताया। नवीन समाज के पदाधिकारी इस प्रकार चुने गये हैं-प्रधान श्रीमान् चौधरी रामचन्द्र जी, उपप्रधान भक्त देवकरण जी, मन्त्री लाला श्यामलाल जी, उपमन्त्री लाला रामचन्द्र जी, कोषाध्यक्ष लाला छज्जूमल जी, उप कोषाध्यक्ष करकलीमल जी सभासद् कोई ३० के करीब बने हैं। आसपास के समाजी भाइयों को इस में सम्मिलित होना चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

आर्य समाज में जन्म के ब्राह्मण

ऋषि दयानन्द ब्राह्मण थे। पं० लेखराम जी के ब्राह्मणत्व में किसी को सन्देह ही नहीं।

आर्य समाज ब्राह्मण सन्तान है, क्योंकि ऋषि दयानन्द उसके धर्म पिता थे। जो लोग कहते हैं कि आर्य समाज ब्राह्मण द्वेषी है, वे भूल करते हैं। पं० गुरुदत्त ब्राह्मण थे, क्या आर्य समाज ने उनका मान नहीं किया, म० हंसराज जी ब्राह्मण हैं, क्या समाजी उनको अपना मुखिया नहीं मानते? जब तक स्वार्थ ने उन्हें आनहीं दबाया था, तब तक पं० भीमसेन और पं० तुलसी राम जी की क्या आर्य समाजों कम प्रतिष्ठा करते थे? आर्य समाज ब्राह्मणों का भक्त है, किन्तु उसकी ब्राह्मण की व्याख्या शास्त्रीय है। वह ब्राह्मण शब्द से उस व्यक्ति का ग्रहण नहीं करता जिस की दस पीढ़ियां बनियों के घर में रोटी पकाने का काम करती आयी हैं। वह ब्राह्मण उसे कहता है जो मनु, भगवान के कथनानुसार 'पढ़ना पढ़ाना, यज्ञ करना कराना, और दान करना और आवश्यकतानुसार लेना। इन ब्राह्मणों के कामों को सम्पादित करता है। ऋषि दयानन्द अपने स्वमन्तव्या मन्तव्य प्रकाश में लिखते हैं:—

"वर्णाश्रम गुण कर्मों की योग्यता से मानता हूं।"

ऋषि दयानन्द गुण कर्मों की योग्यता से ही वर्ण व्यवस्था को मानते थे। इस समय आर्य समाज में एक ऐसा दल पैदा हो गया है, जो अपने किसी उद्देश्यों को सिद्ध करने के लिये ऋषि के इस सिद्धान्त को आर्य समाज से उड़ा देना चाहते हैं और स्वभाव शब्द के अर्थों का, अनर्थ करके अपना मतलब गांठना चाहते हैं ऋषि दयानन्द ने अपने मन्तव्यों में गुण और कर्म के साथ स्वभाव शब्द नहीं लगाया। इस का कारण यह है कि स्वभाव वस्तुतः गुणों और कर्मों का ही परिणाम है। जो मनुष्य जैसी विद्या पढ़ेगा, और जैसे कर्म करेगा, उसका वैसा ही स्वभाव हो जायगा। अवस्थायें मनुष्य के बनाने वाली होती है। जिस मनुष्य के गुण कर्म ब्राह्मणत्व के योग्य हैं, उसका स्वभाव इस योग्य नहीं है। यह समझना बड़ी भारी भूल है।

स्वभाव गुण कर्म से बनता है, साथ ही स्वभाव उनका कारण भी है। स्वभाव से गुण कर्म और गुण कर्म से स्वभाव उत्पन्न होते हैं। इन के बीज वृक्ष का सा सम्बन्ध है। एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ता जाता है। बाहिर के कारण जो प्रभाव उत्पन्न करते हैं, उस से थोड़ा बहुत भेद होता जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जो लोग स्वभाव २ का शोर मचा कर गुण कर्म की महिमा को घटाना चाहते हैं वे ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का गला घोटना चाहते हैं। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में ऋषि के लिखे हुए शब्द ऐसे स्पष्ट हैं कि उन में किसी प्रकार का सन्देह नहीं डाला जा सकता है। 'स्वभाव' शब्द की आड़ में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था मानने वाले ऋषि दयानन्द के शब्दों को तोड़ मरोड़ कर अपने प्रयोजन सिद्ध करना सचाई के अन्दर नहीं गिना जा सकता।

जो लोग गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था के नाम से घबराते हैं, और देखते हैं कि उनकी निर्गुण गुरुताई के टूटने के दिन आ रहे हैं, उनका तर्क समझ में नहीं आता। वे कहते हैं कि स्वभाव गुण कर्म का कारण है। अच्छे माता पिता के पुत्र अवश्य अच्छे होंगे। मान लीजिये, यह ठीक है। ब्राह्मण माता पिता के पुत्र में भी ब्राह्मण के गुण होंगे। यदि गुण कर्म से वर्ण व्यवस्था हो, और ब्राह्मण पिता के पुत्र में ब्राह्मणत्व का आना स्वाभाविक है तो स्पष्ट है कि गुण कर्म सम्पन्न ब्राह्मण का पुत्र भी गुण कर्म सम्पन्न ब्राह्मण होगा। यह जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था मानने वालों के सिद्धान्तों का स्पष्ट परिणाम होना चाहिये। यही हमारे सिद्धान्त में भी ठीक है।

बड़े शोक की बात है कि आर्य समाज गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की स्थापना नहीं कर सका। अपनी जातियों और उप जातियों की दुम पीछे लगाने में हमें संकोच प्रतीत नहीं होता। इतना ही नहीं; हमारे अंदर ऐसे सज्जन विद्यमान हैं जो जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था को स्वीकार करते हैं और गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था को अशास्त्रीय समझते हैं। ऋषि दयानन्द जन्म से ब्राह्मण थे किंतु इस आधार पर उन्होंने कभी अपना गौरव नहीं प्रकाशित किया, शोक है कि उनके अनुयायी होने का दम भरने वाले बीसियों आर्य समाजी पंडित ऐसे हैं जो स्थान २ पर मौरूसी ब्राह्मणताई की डुग डुगी पीटते फिरते हैं। ऋषि ने हमें 'ब्रह्मवाक्य जनार्दनः' के पंजे से छुड़ा पाया था, किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि हम फिर उसी में पकड़े जारहे हैं। जन्म के ब्राह्मणों के जिस कारागार में से दयानन्द ने हमें निकाला था, हमें फिर उसी में धकेला जारहा है। हमें ऐसा उदाहरण पाता है जिनमें जन्म के समाजी ब्राह्मण ने किसी वेदीपर व्याख्यान देने से इन्कार करदिया क्योंकि कोई गुण कर्मानुसार ब्राह्मण वहाँ व्याख्यान दिया था। क्या आर्य्य समाज के लिये यह चिन्ताकी बात नहीं है। चिंता बढ़ जाती है जब हम देखते हैं कि आर्य्य समाज कई जन्म के ब्राह्मणों के इन उलटी चालों को सहता जाता है आर्य्यवर्त्त के किसी पिछले अङ्क में अखिलानन्द ने इस विषय पर जो लेख लिखा है उसका सारांश यह है कि ऋषि दयानन्द ने गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का जो सिद्धान्त स्थापि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया है वह वेद विरुद्ध है और आर्य्य समाज को फिर अपने 'जन्म के ब्राह्मण' रसोइयों को महाराज महाराज कर पूजना चाहिये। ऐसे सिद्धांत रखनेवाला व्यक्ति अपने आपको समाजी कहसकता है यह विचित्र है। पं० अखिलानंद ने बड़ा अच्छा किया जो यह लेख लिख दिया और आर्य्य समाजियों के दिलों में संदेह शेष नहीं रखा। उन्होंने जान लिया है कि आर्यपुरुष आर्यसमाज के इन मौरूसी गुरुओं से किस प्रकार की रक्षा की आशा कर सकते हैं। इसी दल का एक ठिकाना ज्वालापुर का महाविद्यालय है। यह विद्यालय संस्कृत के प्रचार का अच्छा कार्य्य कर रहा है देश में इतना अज्ञान है कि उस की निवृत्ति के जितने भी साधन हों थोड़े हैं किंतु इस की उपयोगिता पर पानी फिरता दीखता है, जब हम इस के संचालकों के संकुचित विचारों पर दृष्टि डालते हैं। गुरुकुल कांगड़ी को गालियाँ देना इनका परमधर्म है यह तो पुरानी बात है। नई बात यह है कि इस संस्था के संचालक वर्णव्यवस्था को जन्म से ही मानते हैं और ऋषिदयानंद के गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था के सिद्धांत को अस्वीकार्य समझते हैं। गत दो महीने से इस संस्था का मुखपत्र भारतोदय यही सिद्ध करने का यत्न कर रहा है।

आर्यसमाज को इस समय सावधान होजाना चाहिये। हमारे सामने इस समय प्रश्न यह है कि क्या हम ऋषि दयानन्द के बताये हुए गुण कर्म के प्राधान्य को मानें, या उसी पुराने जन्म के ढोंग में फंस जायं। इस नई लहर के बढ़ने से आर्य्यसमाज की भविष्यत उन्नति के रुक जाने का भय है। अभी तक जन्म के ब्राह्मण आर्य्यसमाज की दृढ़ता से भय खाते हुए चुप थे। किंतु न जाने किस बात से उत्साह पाकर अब वे खुला खेले हैं। आर्य्यसमाज की रक्षा के लिये आवश्यक है कि इस भयानक लहर को यथासम्भव शीघ्र ही रोका जाय जिससे रोग असाध्य न होने पावे।

संसार की गति

युद्ध का यौवन

योरुप का महाभारत अपने पूर्ण यौवन पर पहुंच गया है। लड़नेवाले पुरुषों की संख्या दो करोड़ से ऊपर होगी कोई देश न अत्यधिक जीता हुआ है और न अति अधिक हारा हुआ। तोपें अपने पूर्ण बल से गर्ज रही हैं। जर्मनी उत्तरीय भारत और दक्षिण पश्चिमीय बेलजियम में डटा हुआ है पर आगे नहीं बढ़ सकता। रूस जर्मनी और आस्ट्रिया से भिड़ा हुआ है। रूस में अभी काम शुरू ही हुआ है उधर इंगलैंड में कई लाख सेना तय्यार होरही है। सारांश यह कि चण्डी देवी का त्रिशूल पूरे वेग से घूम रहा है, भगवान रक्षा करे।

जर्मनी की झूठी गप्पें

युद्ध बड़ा भारी पातक है। इस में हिंसा क्रोध और न जाने अन्य कितने पाप आवश्यक हैं। अत्यंत प्रबल आवश्यकता ही इस का समर्थन कर सकती है। इस सब के साथ २ असत्य भी आता है और समरभूमि में अपना अधिकार जमाता है। कोई भी देश अपनी लड़ने वाली सेना के सामने पूरा सच नहीं बोल सकता। यदि सेना को पीछे लौटाना है तो बताना यह होगा कि किसी जगह के जीतने के लिये पीछे जा रहे हैं। यदि आगे नहीं बढ़ सकते तो समझाना यह पड़ता है कि शत्रु की राजधानी का घेरा होचुका है, इसलिये आगे बढ़ने की ज़रूरत ही नहीं रही। साथ ही साथ अपने देशवासियों को भी डर से बचाने के लिये कई समाचार छिपाने पड़ते हैं और कई झूठे समाचार घड़ने पड़ते हैं। इस समय समाचारपत्रों में समाचार पढ़कर केवल इतना ही संतोष होता है कि कुछ जान लिया, बाकी सच्चे समाचारों की प्यास नहीं मिटती; समाचारों पर किसी को विश्वास ही नहीं, कहते हैं जर्मनी भी ऐसी खबरें उड़ाया करता है। उन खबरों [illegible] अपनी प्रजा को झूठी हिम्मत देना और दूसरे की प्रजा में अश्रद्धा तथा डर फैलाना है। जिस युद्ध में ये असत्य घड़ने पड़ें, क्या वह महापाप नहीं है।

जन्म के ब्राह्मणों पर सनातनधर्मी

आर्यसमाज में जन्म से वर्णव्यवस्था माननेवाले दल के विषय में एक सनातनधर्मी ने कलकत्ते के एक दैनिक में जो सम्मति दी है वह हमने अन्यत्र उद्धृत की है। हमारे पाठक उसे पढ़ कर समझ सकेंगे कि आर्यसमाज के सिर पर कैसे बादल डोल रहे हैं। इस भयानक आपत्ति से सावधान रहना चाहिये। नहीं तो हमारी भी वही गति होगी जो भारतवर्ष के अन्य छोटे २ सम्प्रदायों की होती रही है।

भारत की शिक्षा

भारतवर्ष में शिक्षा की इस समय विचित्र दशा है। जो दूषित शिक्षाप्रणाली इस समय प्रचलित है उस का संक्षिप्त नाम 'मनुष्यता नाशकयंत्र' है। यह शिक्षा भारतवासियों को मनुष्य नहीं रहने देती। मनुष्यता के दो बड़े भारी चिन्ह हैं। एक स्वाधीन विचार और दूसरा स्वाधीन भाषण। आजकल अङ्गरेज़ी भाषा की दासता ने हमें ऐसा घेरा है कि न हमारे पास स्वाधीन विचार हैं और न स्वाधीन भाषण। हमारे विचार अङ्गरेजी भाषा में होते हैं और अङ्गरेजी भाषा हमारे लिये सदा पराई रहेगी। बरसों तक रगड़ सकने पर भी विदेशी भाषा कभी हमारे रुधिर में नहीं बस सकती। यह आजकल शिक्षा में पहली भूल है। देश के सारे विचारक अनुभव कर रहे हैं कि शिक्षा में कोई न कोई कसर ज़रूर है। प्रश्न यह है कि वह कसर कैसे पूरी हो। आजकल प्रायः यह प्रस्ताव बहुत ऊंची २ जगह से किया जाता है कि इसका इलाज स्कूलों में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का बढ़ा देना है। पेटदर्द का इलाज है अधिक खिला देना क्या खूब!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीन नौका विज्ञान ।

(४)

बौद्ध काल ।

हम, पाठक गण ! प्राचीन सामुद्रिक शक्तियों को खोज करते अब बड़े विशाल समय में आन पहुंचे हैं । बड़े २ राजा महाराजा अपने राजकीय जोष में सारी भारत भूमि पर एक दण्ड शासन करते हैं देश की कला कौशल एक सभ्यता का उच्च जमाना बताने में कोई कसर नहीं छोड़ती । भारत का नाम दुनिया के दूसरे कोने में गूंज रहा है । भारत के राजा का नाम सुनते ही विदेशी राजों के कान सन्न हो जाते हैं समुद्र का महा व्यवधान भारत महाराजाधिराज की शासन शालीनता में तिल मात्र भी फर्क नहीं आने देता । मानो सारा समुद्र भी भारत के राज दण्ड से शासित था । ये सोवर्णीय समय बौद्ध काल है । भगवान् बुद्ध के उच्च उपदेश भारती प्रजा के कान में झनक रहे हैं और भारतीय वीर सच्चा धर्म सिखाने के जोस में द्वीप द्वीपांतरों यथेच्छ गमन करते हैं । खैर ! पाठक आइये बौद्ध काल के भी सामुद्रिक साहसों की पड़ताल करें । और पता लगाके छोड़ें कि साहित्य कहां २ सामुद्रिक व्यापार तथा यात्राओं का हिसाब दिखाता है ।

बौद्ध साहित्य हमें बहुत विभागों में बंटा हुआ मिलता है । कई ग्रन्थ पिटक हैं कोई पत्तिकाएं हैं कोई समुत्त्वय हैं कोई सूत्र हैं कोई अवदान हैं और कोई आसक हैं और कई देशनाएं हैं । भाषा भेद से भी कोई ग्रन्थ संस्कृत में और कोई पाली भाषा में हमें अद्यावधि प्राप्त हैं ।

हमें बहुत भव्य सभ्यता का चित्र प्रायः जातकों में खूब मिलता है । यथा सम्भव हम जातकों की ही आलोचना कर डालते हैं ।

महा वंश जातक में विजय नाम के राजपुत्र की द्वीपान्तर यात्रा बड़ी चित्ताकर्षक है । राजवल्लीय के अनुसार विजय राजपुत्र अपने ७०० अनुगामी शूर वीरों के साथ बङ्ग देश के राजा सिंहबाहुक ने कठोर आज्ञा से देश से निकाल दिये । क्योंकि विजय राजपुत्र घमण्ड में आकर प्रजा पर अत्याचार करता था । राजा की तीव्र आज्ञा के सामने समुद्र की भी क्या मजाल कि अत्याचारी को देश से निकालने से रोके । खैर पाठक लोग आजकल भी माननीय लाजपत तथा माननीय तिलक का देश निकाला समुद्र द्वारा किया हुआ भूल नहीं सकते और वर्त्तमान सभ्यता का जमाना भी आंखों से ओझल नहीं हो सकता ।

खैर ! राजकुमार विजय के साथ ७०० वीर अनुगामी साथ ही साथ स्त्री बच्चे नौकर नौकरानियां आदि सब अनुचर वर्ग साथ के जहाजों पर चढ़कर समुद्र का रास्ता तहकर सुपारा स्थान पर जा अटके । जो स्थान कि डाग्वर्गेस के अनुसार भारत का दक्षिणीय पश्चिमीय किनारा है । ये भी आन्दोलन से प्रतीत होता है कि वही विजय कुमार लंका में जा उतरा वहां एक महावंश का स्थापक बना वहाँ से विजय राज पुत्रने पाण्डय राजा के पास बहु मूल्य रत्न भेट रूप में भेजे जिस भेट के बदले पाण्डय नरेश ने अपनी राजपुत्री एक जहाज के रास्ते से विजय के पास विवाह के निमित्त भेजी । महावंश जातक के अनुसार वह जहाज़ परिमाण में बहुत बड़ा था । इस में १८ अक्षर ७५ दास और बहुत सी राज कन्या की निज की दासियां तथा ७०० निज की सहेलियां उस में भली चंगी स्थान पा सकतीं थीं । विजय के देश निर्वासन के बाद उस का भतीजा ३२ अमात्यों के साथ सांगल (शाकल) स्थान से समुद्र की यात्रा प्रारम्भ करके लंका में जा पहुंचा । और विजय के राज्य पर दाया भाग का हक जमाया, और इसी बात को पुष्ट करने के लिये हम आगे भी किसी मूर्त्तिमान प्रमाण का पाठकों से परिचय करायेंगे ।

उस के भतीजे के बाद उस के ६ पुत्रों ने भी ऐसी ही दाय भाग की चाह से समुद्रयात्रायें कीं । महावंश जातक के अनुसार ये यात्रायें कुल बारह दिन की ही थीं ।

विजय की कथा के साथ ही सुपारक देश के प्रसिद्ध व्यापारी पुण्य की कथा भी अनुशील व्यसनियों के आँखों से ओझल नहीं हो सकती ।

ये प्रसिद्ध पुण्य व्यापारी अपने ३०० कम्पनी वाले साथियों के साथ बौद्ध धर्म से प्रेरित होकर एक विहार बनाने के लिये सम्पूर्ण काष्ट मय सामग्री जहाज पर लादकर समुद्र के रास्ते अपने घर लौट गया । साथ ही एक और कथा दो भाइयों की भी ऐसी ही मिलती है। और सीलोन के यात्री दन्त कुमार भी यात्रा वाचक लोगों को न भुलानी चाहिये ।

पिटक ग्रंथों में से एक विनय पिटक ग्रन्थ है । इस में एक हिन्दू व्यापारी पूर्ण नाम की कथा का उद्धरण है । जो बौद्ध नागरिक के साथ ही साथ श्रावस्ती से चलकर सातवीं समुद्र यात्रा करने के लिये कमर कस लेता है । इसी प्रकार सूत्रों और पिटकों के अतिरिक्त संयुक्त निकाय और आंगुतर निकाय आदि ग्रंथों में भी ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिनसे पता लगता है कि कई लोग ६, ६ मास की समुद्र यात्राएं करते थे ।

दीर्घ निकाय में लिखा है कि लोग अदृश्य स्थानों की ओर यात्रा किया करते थे । और दूर के भूखराठों की दिशा का ज्ञान पक्षियों द्वारा किया करते थे ।

जातक ग्रन्थों में आलोचना करते २ हमें बड़ा आश्चर्य होजाता है । कि क्या हम धर्म ग्रन्थ पढ़ते हैं या कोई ऐतिहासिक गवेषणायें पढ़ रहे हैं । इन सब जातकों में ववेरु जातक बड़े ध्यान देने योग्य है ।

श्री मेनियाफ़ महाशय कहते हैं कि इस ववेरु जातक में अशोक से पूर्व विद्यमान व्यापार का पूर्ण परिचय मिलता है । ववेरु देश में सामुद्रिक मार्ग से मयूर भारत से लेजाये जाते थे और पक्षियों का बड़ा व्यापार होता था उपरोक्त ऐतिहासिक गवेषक ने सिद्ध क

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिया है कि ववेरु नाम निश्चय से बैबिलोनिया का ही है। ? इन सब कथाओं से प्रतीत होता है कि पश्चिमी तीर के बनिये पर्शिया के किनारे जाया करते थे। और कभी कभी सामुद्रिक वीरयात्री बड़े २ साहस किया करते थे। एक तरखान ठेकेदार ने अपने ठेके का वायदा पूरा किया। बस कड़े राजदण्ड के भयसे चुप चाप एक जहाज़ बनाकर वह अपने कलत्र पुत्रादि लेकर दूरदेश में जा निकला।

सुपारक जातक में ७०० व्यापारियों की एक कम्पनी का जहाज़ भरू कुच्छ या भरोच से चला परन्तु कैवट मतवार था। इसलिये इसका कुछ पता न चला।

इसी प्रकार महाजनक जातक और रीख जातक में और शुशोन्दी जातक में हमें सुवर्ण द्वीप या सुवर्ण भूमि का परिचय मिलता है। इस सुवर्ण भूमि का हम सुनते बहुत हैं पर जानते कुछ नहीं कभी लंका को ही सुवर्ण भूमि कहतेही हम संतोष कर लेते हैं और कभी ब्रह्मदेश को परन्तु यहांके वर्णन से ये स्वर्ण भूमि इन दोनों देशों में से कोई तीसरी ही है।

अछूतों की छूत

जन्म के ब्राह्मणों पर एक सनातन धर्मी की राय

आज कल कतिपय देशोद्धारक कहलाने वाले महाशय, हमारे देशके अछूत "चूड़े चमार भङ्गी डोम" जाति के लोगों को जनेऊ पहिनाकर उनके साथ रोटी बेटी का सम्बन्ध करने के लिये शिर तोड़ परिश्रम कर रहे हैं, इसी का नाम श्रम समझे हुए हैं। यही भारत वर्ष को सभ्य और उन्नत करने का उनकी राय में एक मात्र उपाय है। यही नहीं, भारतवासियों की इस समय जो कुछ उच्च अभिलाषा है, राजनैतिक अधिकार तक अन्त्यजों की शुद्धि के द्वारा प्राप्त होंगे! धर्मावतार राजनीति विशारद देशोद्धारक, बाबू सम्प्रदाय के बुद्धि सागर अपनी विराट् बुद्धि के बल से यही तत्व समझे हैं। भारत वर्ष की प्राचीन आर्य जाति का भले ही ध्वंस होजाय ऋषियों के गोत्र प्रवर चाहे अभी नष्ट होजांय, आचार विचार हमारे सब भ्रष्ट हो जाँय, हम चाहे हम न रहैं दूसरे हो जाँय पर एक जाति (नेशन) अवश्य बने। वर्णाश्रम धर्म का मैदान साफहो। यही हमारी देशोद्धारक रिफार्मर पार्टी का गूढ़तत्व है। अहर्निश देशोद्धार की चिन्ता करते हुए, भारत के उद्धार का यही उपाय ढूंढ निकाला है। ब्राह्मण चाहे पानी पांड़े बनें, या भय्यागिरी अथवा दुर्भाग्यवश कोई अभागा जूते की दुकान वा भङ्गी का काम तक करने लगे, इस की कोई चिन्ता नहीं, पर मेहतर का लड़का हरगिज मेहतर का काम न करे। जनेऊ डाल कर चाहे फांके पड़े, रोजगार न मिले इस बात की परवाह नहीं, यही हमारे प्रेम के अवतारों का अछूतों पर प्रेम है। लाखों वर्ष से अपनी अपनी जातियों पर इन अछूतों का प्रेम था, अपनी परिपाटी के अनुसार शुद्ध चित्त की निर्मलशांति उपभोग करते थे। उच्चवर्ण के हिन्दू उनको नहीं छूते, पर वह लोग इस में अपनी कुछ भी अप्रतिष्ठा नहीं समझते थे। पर जब से प्रेम के अवतार देशोद्धारक लोग ठौर ठौर का चक्कर लगा कर दौरा करने लगे, बड़े बड़े लीडर और प्लीडर एडीटर और प्रोफेसर अपनी सिंह गर्जन वक्तृता द्वारा अन्त्यजों के हृदय में असम्भव लालसा की गुदगुदी उत्पन्न करने लगे। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य बनाने का लोभ दिखाकर अपनी अपनी जाति बिरादरी से उन भोले भाले लोगों को घृणा उत्पन्न करादी। तब से भाई भाई को, सास जमाई को, बेटा बापको नीच समझने लगा है। जनेऊधारी चमार भंगी शुद्धि के अभिमानी होकर अपने अन्य कुटुम्बियों को नीच चाण्डाल कहकर हंसी उड़ाने लगे। चिढ़ाने के कारण उन हीन जातियों में परस्पर कभी २ दंडेबाजी तक की नौबत आने लगती है। इधर उच्च जातियों से यह शुद्ध किए हुए रंगरूट घोर शत्रुता करने लगते हैं। शर्मा वर्मा की मनमानी पदवी लगा लेने से ब्राह्मण क्षत्रियों के साथ पालागन, राम राम, सलाम, बन्दगी का व्यवहार छोड़कर उल्टा उनके द्वारा अपने लिये प्रणाम कराना चाहते हैं। यही क्यों खानपान में भी ब्राह्मणों के साथ शामिल होने की असम्भव लालसा उन शुद्ध किये हुए चूहड़े और चर्मकारों को बेचैन किये देती है। जब कि उन को शुद्ध करनेवाले आर्य्यसमाज के अब्राह्मण लीडर गुरूकुलों के "स्नातक" होने पर भी स्वयं ब्राह्मण न हो सके, ब्राह्मण बनने की प्रबल अभिलाषा रहते हुए हजार चेष्टा करने पर भी आर्य्य समाजी ब्राह्मण पण्डितों तक ने अपने साथ उन को नहीं मिलाया। तब भला इन भङ्गी चमार और डोमों को शुद्धि की मशीन में पिस जाने पर भी द्विजों में कौन सम्मिलित करेगा। नीचों की शुद्धि और गुण कर्म की वर्णव्यवस्था ही के पीछे आज, आर्य्यसमाज में ब्राह्मण और बाबू दो पार्टी जर्मनी और फ्रांस हो रहे हैं, आर्य्यसमाज, चाहे मियां धर्मपाल और रणजीत अछूत को श्रेष्ट मान ले, पर ब्राह्मणों से मेहतर चाण्डाल ही कहकर तृप्त हो रहा है, इस विवाद को विशेष देखना हो, तो वेद प्रकाश एवं भारतोदय की पिछली संख्या देखिये। आर्यसमाज ही के पत्र क्या लिख रहे हैं, यह घरेलू विवाद कहां तक बढ़ गया है, वैशाख शुदी ३ सं० १९७१ के हमारे "वीरभारत" में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् कविरत्न पण्डित अखिलानंद शर्मा "द्वेष कौन फैलाता है" शीर्षक, लेख में क्या लिखते हैं, उस का कुछ अँश यहां पर उद्धृत किया जाताहै।

"बाबू सम्प्रदाय ब्राह्मणों को जैसा बुरा मानता है, वैसा ही उन के साथ बर्ताव भी करता है। उदाहरणार्थ विद्या वयोवृद्ध श्री पं० तुलसीराम जी स्वामी का वहां पर जो अपमान किया है, वह किस को विदित नहीं। मेरठ के बाबू सम्प्रदायी जिस कमरे में बैठे हुए थे, ब्राह्मणों को उस में छिः मेहतर चाण्डाल कह कर पुकारते रहे, और वर्त्तमान प्रधान बाबू घासीराम जी उन शब्दों को सुनकर प्रसन्न होते थे, मेरी अनुमति में बाबू सम्प्रदाय का ब्राह्मणों के प्रति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदि यही वर्त्ताव रहा, तो वह दिन शीघ्र आने वाला है जिस में कि आर्य-समाज का सर्वनाश में नाश होगा इत्यादि...

यह पं० अखिलानन्दजी की पंक्ति ज्यों की त्यों लिखी गयी है। जिन आर्यसमाज के पण्डितों ने समाज के पीछे अपना जीवन व्यतीत किया, अपने इष्ट मित्र बान्धवों से मोह तोड़कर समाज से नाता जोड़ा। शास्त्रों के अर्थ का अनर्थ करके समाजी मन्तव्य के अनुकूल भाष्य रचे, सनातनधर्म के विद्वानों से सभाओं में परास्त होते रहते हुए भी अपनी हठ पर दृढ़ रहे; हृदय से मानते और जानते हुए भी मूर्तिपूजा, श्राद्धादि की निंदा में जीवन खोते रहे, समाज का साधन छोड़ा, आज उन्हीं सामाजिक ब्राह्मण उपदेशक सम्पादक और पंडितों को भङ्गी चाँडालादि की गाली की दक्षिणा मिल रही है, इतने पर भी हमारे समाजी ब्राह्मण अभी तक पंडित भीमसेनजी की सड़क पर नहीं आये! समाज ही के "मान न मान मैं तेरा मेहमान" बने हुए हैं! जब कि आर्यसमाज तक के ब्राह्मणों को यह सत्कार किया जारहा है, तब भला हमारे सनातनी ब्राह्मणों के विषय में क्या ठीक है:—

"जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं,
कहहु तूल केहि लेखे माहीं।"

प्रेम के अवतारों का यह प्रेम द्वेषाग्नि फैलाते हुए, शुद्धि के रोग का प्रचार बढ़ाता जा रहा है। दुनिया भरमें झगड़ा बढ़े, द्वेष और अशान्ति फैले, अछूतों से प्रेम की आड़ में उदार और देशोद्धारक कहलाने की बीमारी असाध्य होकर फैल गयी है। कभी कभी तो सनातनधर्म के प्रसिद्ध नेता कहलानेवालों के मुख पत्रों के सम्पादकों तक को इस रोग का दौरा होजाता है। प्लेग की भाँति देश व्यापी होकर यह बीमारी उत्तराखंड तक पहुंच गई है। अब बदरीकाश्रम में पहुंचने वाली है। गत वर्ष आर्यसमाज के एक सर्वश्रेष्ठ लीडर-पंजाब के एक नामी प्लीडर ने कुमाऊं के नैनीताल जिले में कुछ अन्त्यजों (डोमों) की शुद्धि का यज्ञोपवीत देकर जनेऊधारी बनाया, तब से गांव गांव में फूट विरोध-द्वेष बढ़ रहा है। अभी तक शान्ति नहीं। इधर हाल में बदरीकाश्रम के पवित्र गढ़वाल प्रान्त में भी एक ऐसी ही सभा का समाचार मिला है यह भी सुना गया है कि, गढ़वाल के नामी एक नेता इस सभा के सभापति हुए। शूद्रों से प्रेमभाव बढ़ाने के उद्देश्य से यहां एक स्थायी सभा स्थापित की गई है। जिस बदरीनाथ की भूमि में जँच नीच का विचार त्याग कर भातृवैरूय एक साथ ही भोजन पहले से करते आये हैं, उस प्रान्त में यह सभा शूद्रों पर और क्या कृपा करेगी; यह प्रेमवृद्धि समझ में नहीं आई। हमारी समझ में तो शूद्रों की आड़ में अछूतों पर ही यह सभा हाथ साफ करेगी। डोमों को जनेऊ देकर सरीला (ब्राह्मण) बनाना ही यदि सभा का उद्देश्य है, तो गढवाल के मासिकपत्रों को अपनी सम्मति सहित सभा का पूरा विवरण लिखना चाहिये।

एक सनातनधर्मी।
(कलकत्ता समाचार)

द्विवेदीजी का महाकोप।

नवम्बर की सरस्वती में 'आर्यसमाज का कोप' शीर्षक देकर एक लेख द्विवेदी जी ने (पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी जी सम्पादक सरस्वती,) लिखा है प्रारम्भ में उस लेख की ६१ सतरों के पश्चात्

४

संयुक्त प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री महोदय का सरकुलर नकल कर दिया है (यह वही सरकुलर है जो किसी पिछले 'प्रचारक' के अंक में निकल चुका है) द्विवेदी जी का विशेष लक्ष्य इसी सरकुलर पर है या यों समझिये कि यह सरकुलर ही द्विवेदीजी के 'आर्यसमाज का कोप, लिखने का प्रधान कारण हुआ।

उपरोक्त सरकुलर द्विवेदीजी के एक मित्र उन्हें दे गये अन्यथा द्विवेदीजी यह जानते भी नहीं कि कहाँ सरकुलर निकला खैर मित्र महोदय को धन्यवाद है जिन्होंने सरस्वती, में आर्यसमाज के लिये ४ शब्द तो लिखवा दिये!

द्विवेदीजी सरकुलर के नीचे लिखते हैं समालोचना करने के लिये सरस्वती नियम बद्ध नहीं। समालोचना से साहित्य को लाभ पहुंच सकता है, इसी से उस का रिवाज हो गया है। इसी लिये हम भी समालोचना कर दिया करते हैं परन्तु समालोचना-कार्य से सरस्वती को रत्ती भर भी लाभ नहीं। इस काम में हमारा बहुत सा समय लग जाता है।

समझे पाठक समालोचना के लिये सरस्वती नियमबद्ध नहीं, जब नियम बद्ध नहीं है तब तो दो २ पैसे की पुस्तकों की समालोचना दो कालम में सरस्वती करती है यदि कहीं नियम बद्ध होती तो शायद आदि से अंत तक 'समालोचना' में सराबोर होती। 'समालोचना से साहित्य को लाभ पहुंच सकता है, बेशक पर समालोचक जब चाहे तब ना 'इसी से उसका रिवाज हो गया है' जो नहीं रिवाज इस लिये हो गया है कि समालोचना से साहित्य को लाभ पहुंचता है (पहुंच सकता नहीं) 'परन्तु इस समालोचना कार्य्य से सरस्वती को रत्ती भर भी लाभ नहीं, आप ठीक कहते हैं सरस्वती को रत्ती क्या अणु मात्र भी लाभ नहीं पर आप को तो पूरा चालीस सेर लाभ है सैंकड़ों रु० की पुस्तकें मुफ्त मिलजाय करती हैं, आगे द्विवेदी जी फरमाते हैं

उन लोगों को जिनकी पुस्तकों की कुकापियाँ सरस्वती के समालोचनात्म विज्ञापन से बिक जाती हैं।

वाह द्विवेदीजी खूब कही, जब अ का विचार समालोचना से विज्ञापन है तो यही सोचकर आप समालो भी करने बैठते होंगे—देखा हि साहित्य संसार के लोगो !!! हिन्दी भ का एक अत्युत्कृष्ट लेखक समालोचन सुलावरयमयी गाड़ी को विज्ञापन कैसे गहरे दलदल में लिये जात द्विवेदीजी क्षमा करो यदि आर्य्य को कुछ कहना हुआ करे तो कह लिया करो किन्तु समालो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्थ विज्ञापन तो न कर कर डाला करो। शायद इसी लिये तो आपने नहीं लिखा कि 'समालोचना से साहित्य को लाभ पहुंच सकता है।

आगे आप लिखते हैं:—

यदि यह सरकुलर मंत्री महाशय ही की उपज है तो सर्वथा उपेक्षा का विषय है। यदि प्रतिनिधि-सभा की आज्ञा से यह जारी किया गया है तो उपेक्षणीय नहीं।

क्यों क्यों उपेक्षणीय क्यों नहीं जब काम आर्य समाज का है तो चाहे एक व्यक्ति का हो चाहे सभा का द्विवेदी जी की राय शरीफ में तो उपेक्षणीय ही होना चाहिये। पाठको! एक विद्वान् कहे कि प्रातः उठना अच्छा है तो उपेक्षा का विषय है यदि समुदाय कहे तो उपेक्षणीय नहीं, भला सो क्यों अजी सुना नहीं द्विवेदी जी की ऐसी ही आज्ञा है यहां क़ीलोक़ाल की ज़रूरत नहीं।

आगे श्रीमान् द्विवेदी जी महाराज लिखते हैं कि आज से हम किसी आर्य समाजी लेखक, प्रिंटर, पब्लिशर और बुकसेलर की भेजी हुई पुस्तक की आलोचना न करेंगे।

चाहे पुस्तक सनातन धर्म-जैन मुसलमान और ईसाई आदि मत से संबंध रखती हो क्या तब भी समालोचना नहीं कीजियेगा। प्रायः आर्य्य बुकसेलर स्कूली तथा अन्य साहित्य संबंधी पुस्तकें भी रखते हैं परन्तु यदि न द्विवेदी जी के पास सोना सुगंध, घास कूड़ा, अनाप शनाप कोई पुस्तक भेजेंगे, (वह चाहे जिस धर्म की हो) द्विवेदी जी समालोचना हर गेज न करेंगे यदि धोखे से लिख जावेंगे तो निकाल डालेंगे। यदि कम्पोज हो जावेगी तो डिस्ट्रीब्यूट करा देंगे। महाराज! खफा मत हूजिये बेचारा आर्य समाज इस कोप को कैसे सह सकेगा।

अन्य प्रान्त के सामाजिकों के लिये आप लिखते हैं—कि जब तक यह न लिख भेजेंगे कि मंत्री जी का प्रस्ताव हमें विदित नहीं तब तक हम उनकी पुस्तकों की भी समालोचना न करेंगे।

भला द्विवेदी जी फिर किताब का क्या कीजियेगा सुफ्त में ही हजम। तब तो खूब रही।

लगे हाथों द्विवेदी जी ने तीन चार आर्य्य समाज के पत्रों से सरस्वती के परिवर्तन की बात भी कह डाली। युद्ध में जब योद्धा शत्रु से नहीं जीतते तब अंत में पानी की नहर या नदी जिसे पहिले से रोक रखते हैं, काट देते हैं यह अंतिम उपाय है द्विवेदी जी भी जब 'भारत मित्र, के 'आत्मा राम और 'मनसा राम, से खीझ जाते हैं तब दोचार समाचार पत्रों से परिवर्तन बन्द कर देते हैं सत्यदेव से नाता तोड़कर 'मर्यादा, तथा 'अभ्युदय, से भी श्री महाराज ने यही आर्डर जारी किया था।

आप स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी पर की गई समालोचना की आनुमानिक अथवा शर्तिया शब्दों की बौछाड़ ही की गई मानते हैं। स्वामी जी की बौछाड़ को आप प्रत्यक्ष मानते हैं क्या द्विवेदी जी ने यह नहीं सुना कि प्रत्यक्ष से अनुमान का फल अधिक निकल आता है किसी ने कहा भी है।

छुरीका तीरका तलवारका घाव तो भरा लगा जो जख्म ज़बां का रहा हमेशा हरा।

ऐसा ज्ञात होता है कि द्विवेदीजी मन्त्री महोदय के सरक्यूलर से खटपटा गये इसी लिये सफाई भी जल्द पेश करने लगे। अब कहते हैं हमने एक दृष्टान्त समुच्चय २ छत्रपति शिवाजी ३ अर्थशास्त्र की समालोचना तो अच्छी करदी इस से सिद्ध होता है कि हम आर्य्यसमाज के शत्रु अथवा द्वेषी नहीं हैं। कृपानिधान! आप ने उपरोक्त पुस्तकों की समालोचना अच्छी नहीं लिखी बल्कि:—

आप से जाता नहीं हरबार मैं मजबूर हूं
दिल खिचा जाता है मेरा कूचे जाना की तरफ

यह बात थी जिस ने आप से अच्छा लिखा लिया जिन लोगों ने उपरोक्त पुस्तकें देखी हैं उन से कुछ कहना न होगा कि ये पुस्तकें समालोचना से भी कहीं बढ़ कर हैं। इसी सफाई में आप कहते हैं हमने मित्र पं० माधवराव सप्रे पं० भीमसेन शर्मा की पुस्तकों की भी तो अच्छी समालोचना नहीं की मेरी तुच्छ बुद्धि में यह बात इस बात को सिद्ध नहीं करती कि आप आर्य-समाज के द्वेषी हैं बल्कि इस बात को बतलाती है कि आप आर्य्यसमाज क्या किसी के भी प्यारे नहीं, सनातन धर्म के महोपदेशक पं० ज्वालाप्रसाद की सत-सई की टीका की समालोचना (सतसई-संहार) जो सरस्वती में निकली वह श्रीमान के समय में नहीं उस समय आप बीमार थे इस के अतिरिक्त उस के लेखक भी प्रसिद्ध आर्य्यसमाजिक पं० पद्मसिंह जी शर्मा हैं उस में आप ने क्या किया जो उसे सफाई में पेश करदिया। हाँ मानहु विधि तन अच्छ घवि..... .....वाले दोहे पर आप महाशय की तर्क का उत्तर आप के सामने अवश्य छपा था पर आप तो आधे को छोड़ पूरा पकड़ते हैं जो आप के बस का नहीं। आगे आप लिखते हैं कि हम को नहीं मालूम था कि आर्यसमाज में आत्मिकबल साहस और सजीवता की इतनी कमी है।

हमें भी नहीं मालूम था कि द्विवेदीजीमें सहृदयता समालोचकता तथा सहनशीलता की इतनी कमी है।

इन सब के पश्चात द्विवेदी जी ने बाबू चांद करण शारदा बी० ए० ऐल० एल० बी० के पत्र को उद्धृत कर शारदा जी के बी० ए० ऐल० ऐल० बी की उपाधि पर अप्रसन्नता प्रकट कर रामबिलास शारदा की ओर उँगली का संकेत करते हैं।

किसी बी० सिंह महाशय ने आगरा से एक पत्र द्विवेदी जी को उर्दू में इस विषय पर लिखा है कि हम यदि अंगरेजी राज न होता तो तुम्हें मारडालते इस विषय में हमें खेद है कि आर्यसमाज सा सहन शील ऐसे शब्द लिखे परन्तु हमें विश्वास नहीं होता कि यह पत्र किसी सामाजिक भाई का ही लिखा होगा।

अंत में हमारी द्विवेदी जी से करबद्ध प्रार्थना है कि आप हिन्दी साहित्य के एक समुज्वल रत्न हैं, आर्य्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समाज भी आर्य्य भाषा (हिन्दी) का एक लघु सेवक है इसवास्ते आप इस पर यदि दया दृष्टि रखेंगे तो यह मातृ भाषा की सेवा और भी अधिक कर सकेगा। आपका साम्मुख्य करने वाले गुप्त जी नहीं हैं। बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए० भी मातृ भाषा की सेवा करते हैं। ऐसे समय में आप अखबार में क्यों आर्य समाज को ललकारते हैं। हां यदि सरस्वती प्रचार के साधनों में एक यह भी साधन हो तो हम सेवा के लिये कलम हाथ में लेकर तैयार हैं।

'नम्र निवेदक'

दुर्घटना।

ता० २ नौवम्बर सं० १९१४ ई० के रात्री ८॥ बजे मौजे निसारा सुगाडला के थाना बेगुसराय जिला मुंगेर में एक बनिया जिसका नाम अजोध्या साहू है घर डाका पड़ा डाकू करीब १०० के थे उन्होंने मकान का सारा सम्पत लूट लिया अजोध्या साहू और उनके बड़े पुत्र रामधनी साहू की बहुत बुरे तौर से मार पीट कर घायल किया। रामधनी साहू के धर्म पत्नी और उनकी बहिन जिसकी उमर करीब १२, १३ के है बहुत बुरे तौर से वे विचार किया और अलावा इसके दुकान में आग लगा कर चल दिया, एक लड़का जो बच निकला, भागा २ खगड़िआ स्टेशन जो दुर्घटना स्थान से १४ माइल के दूरी पर है ता० ३ को सुबह ६ बजे पहुंच कर बेगुसराय के मजिस्ट्रेट और मुंगेर के पुलिस सुपरिनटेन्डेन्ट को तार दिया। बेगुसराय थाने के सब इन्सपेकटर ता० ४ के रात्री में घटना स्थान पर पहुंचे और ता० ५ को सुबह से तहकीकात प्रारंभ किया। शोक है कि पुलिस कर्मचारिओं के इतनी देरी से तहकीकात प्रारंभ पर।

सार्वदेशिकसभा

अन्तरङ्गसभा स्थान दिल्ली

ति० २५ १०/१४ समय १२ बजे

उपस्थिति

१–महात्मा मुन्शीराम प्रधान
२–बाबू द्वारिकादास
३–मास्टर भागीरथ लाल
४–नारायणप्रसाद

[१] मन्त्री ने सूचना दी कि सभा को रजिस्टरी एक्ट २१ सन् १८६० के अनुसार होगई

[२] महाशय मंगलानन्दपुरी का प्रार्थनापत्र कि उनको प्रमाणपत्र समाजों में प्रचार करने के अर्थ देदिया जावे पेश होकर निश्चय हुआ कि उपर्युक्त महाशय को लिखा जावे कि जब वे इस देश में वापिस आवें तब प्रार्थनापत्र भेजें उस समय विचार किया जावेगा और यह भी निश्चय हुआ कि यह विषय कि इस प्रकार सभा की ओर से प्रमाणपत्र दिया जाया करे या नहीं यदि दिये जावें तो किस प्रकार आगामी वार्षिक साधारण सभा में पेश किया जावे।

[३] सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि आगामी वार्षिक साधारण सभा कुंभ के मेले के दिनों में कीजावे तिथि श्री प्रधान सभा तथा मंत्री नियत कर लेवें।

[४] यह विषय उपस्थित किया गया कि रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजावे निम्न महाशयों के स्थान रिक्त हैं—

(क) बाबू ब्रजनाथ उपमन्त्री

(ख) मास्टर भागीरथलाल कोषाध्यक्ष

(ग) स्वामी नित्यानन्द तथा ठाकुर गोविंदसिंह अंतरङ्ग सभासद

निश्चय हुआ कि महाशय भागीरथलाल के स्थान में पं० निहालचन्द्र कोषाध्यक्ष नियत किये जावें—

लाला गंगाराम जी बाबू ब्रजनाथ के स्थान में उपमंत्री नियत किये जावें महाशय घनश्यामसिंह तथा बाबू श्रीराम अंतरङ्ग सभासद नियत किये जावें।

नारायणप्रसाद मन्त्री — मुन्शीराम प्रधानसभा

कुम्भ प्रचारोपसभा २५-१० १४ समय १।। बजे दिन स्थान दिल्ली

उपस्थिति

(१) महात्मा मुंशीराम प्रधान
(२) पं०वाशीश्वर शर्मा M. A. LL. B.
(३) ला० द्वारिकादास
[४] नारायणप्रसाद

[१] मन्त्री ने प्रकट किया कि इस उपसभा के सभासदों में से बा० ब्रजनाथ का स्थान रिक्त है -निश्चय हुआ कि पं० निहालचन्द्र उस स्थान पर नियत किये जावें--

[२] महात्मा मुंशीराम ने मेले सम्बन्धी जो प्रबंध किया या उस की सूचनायें दीं।

नारायणप्रसाद मंत्री — मुंशीराम प्रधान

मृत्यु

गत तिथि मार्गशिर कृष्णा ६ सोमवार ता० ९-११-१४ को आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार दिल्ली के भूतपूर्व उपप्रधान श्रीमान् मास्टर बक्तावरसिंह जी की शोक जनक मृत्यु होगई जिससे आर्य्यजनों में शोक छागया है। आपके मृतक शरीर के साथ श्मशान भूमि तक बहुत से प्रतिष्ठित आर्य्य सज्जन गये थे। आपका अन्त्येष्टि कर्म वैदिक रीति के अनुसार हुआ। आप समाज के पुराने सेवकों में से थे। आप की शोकजनक मृत्यु पर गत रविवार को समाज मन्दिर में साप्ताहिक अधिवेशन में शोक मनाया गया। आपके सम्बन्धियों से सहानुभूति प्रकट करने के लिये प्रस्ताव स्वीकार हुआ। श्रीमान् मास्टर जी १०१) समाज को दान भी करगये हैं।

केदारनाथ गोयनका
सहायक उपमन्त्री
आर्य्य समाज चावड़ीबाज़ार
दिल्ली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(पृष्ठ ४ से आगे)

लिपि का महत्व और सौन्दर्य सुवचता ही से प्रतिष्ठित होता है। देवनागरी में यह दोनों गुण विद्यमान रहते हुए भी जिस प्रकार अन्य लिपियाँ अलंकृत की गई हैं उस भांति बेचारी देवनागरी लिपि अब तक नहीं हुई। इसी कारण से लोगों को यह भी भ्रम सा होगया कि देवनागरी लिपि अलंकृत होही नहीं सकती और इसीलिये प्रशँसित लिपियाँ के सामने यह बहुत नीचे गिरी हुई रसातल को जारही है। किंतु संसार की उन्नति के समय में, कला कौशल के मनोहर स्वर्ण दिनों में और प्रकाशमान बृटिश राज्य के चमत्कृत उदयकाल में देवनागरी लिपि अलङ्कारहीन कैसे रह सकती थी? समय पाकर यह भी कुछ उदार सहायकों की कृपा से विशेष २ नियमों से परिमित होकर प्रचलित लिपि, शङ्करलिपि, सुडौललिपि और सरललिपि के रूप में आकर विविध प्रकार से अलंकृत और सुशोभित हुई है। अब इस के सम्पूर्ण सहायकों, सेवकों तथा हितैषियोँ का परम कर्तव्य यह है कि यथाशक्ति इस की रक्षा में सहायता देकर इसकी उन्नति का उचित प्रबंध करने में त्रुटि न करें।

जीवन की स्थिरता नहीं है, समय पर अधिकार नहीं है, कल्पनाएं और मन के भाव मन ही में गलते चले जाते हैं इसलिये मैं अपनी देवनागरी-लिपि-सम्बंधी सम्पूर्ण रचना को ऐसे सांचों में ढाल देना चाहता हूँ कि यह मेरे न रहने पर भी सदा सर्वदा संसार में स्थिर रह कर देवनागरीलिपि की सेवा कर सकें। भारतवर्ष की मुख्य मुख्य संस्थाओं और मध्यप्रदेश तथा पंजाब गवर्नमेण्ट ने कृपा कर उदारता पूर्वक मेरी रचना को आश्रय दिया है और उस का आदर किया है इसलिये मुझे पूर्ण विश्वास है कि समय पाकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में, जहां कहीं देवनागरी लिपि का प्रचार है, वहां इसी रचना का सब से अधिक आदर होगा। अस्तु, जो हो, अब यह अभीष्ट है कि यथा सम्भव शीघ्र ही मैं अपनी रचना के ब्लाक (सांचे) बनवा कर या टाइप ढलवाकर रख दूं, जिस से मेरे न रहने पर भी लिपिसम्बन्धी प्रकाशित पुस्तकों के प्रकाशन में कोई कठिनता या विघ्नबाधा उपस्थित होने का संदेह न रहजाय।

अनुमान किया गया है कि लगभग २५००)रु की लागत से सम्पूर्ण रचना के ब्लाक बनकर तयार होजायंगे और सदैव देवनागरीलिपि का सेवा सुश्रूषा करते रहेंगे। इसलिये मैं अपने देवनागरी के सच्चे हितैषियों, नागरीप्रचारिणी सभाओं, आर्यसमाजों, धर्मसभाओं, देशी संस्थाओं और पत्र सम्पादकों से विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूं कि आपने जिस प्रकार अपनी उदारता पूर्ण रुचि के अनुसार अनेक लोकोपकारी बड़े २ काम किये हैं, अथवा उन में सहायक बने हैं वैसे ही देवनागरीलिपि के इस महत्वपूर्ण कार्य में यथासाध्य सामयिक सहायता देकर मुझे भी उपकृत और कृतार्थ कीजिये।

प्रार्थी—गौरीशङ्कर भट्ट
गुरुकुलकांगड़ी पो० श्यामपुर जि० बिजनौर

—:o:—

सामाजिक समाचार।

आर्यसमाज जालन्धर का वार्षिकोत्सव आगामी २३, २४, और २५ दिसम्बर को आनन्द से मनाया जायगा। अनेक उपदेशकों और व्याख्यानदाताओं के बुलाने का प्रबन्ध किया गया है। उत्सव में सम्मिलित होने वालों को तैयार होना चाहिये।

—:o:—

आर्यसमाज फतहपुर का द्वितीय वार्षिकोत्सव २८ अक्टूबर से १ नवम्बर तक बड़े आनन्द से समाप्त हुआ। उत्सव में स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वा० मुनीश्वरानंद जी, स्वा० अनुभवानन्द जी, स्वा० परमानन्द जी, म० रामचंद्र जी, म० लक्ष्मीदत्त जी, म० धर्मवीर जी, म० शिवशर्मा जी, ठाकुर नत्थासिंह जी, चौधरी तेजसिंह जी, म० गङ्गासिंह जी आदि के उपदेशों और भजनों से समाज का विशेष प्रभाव हुआ। मुसलमान मौलवी साहब से शास्त्रार्थ हुआ और उन्हों ने निरुत्तर होकर समाज को सिर झुकाया। ईसाइयों को भी बुलाया गया था पर वे नहीं आये। पं० गुरुसेवक जी उपाध्याय बी० ए० डिप्टी कलेक्टर ने सनातनधर्मी होते हुए भी सभापति का आसन सुशोभित किया और ऋषि दयानंद के कार्यों की प्रशंसा करी। आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी इस प्रकार चुने गये—श्रीराम जी वर्मा प्रधान; अम्बिकाप्रसाद जी उपप्रधान; मथुराप्रसाद जी शिवहरे मंत्री; कामताप्रसाद जी उपमंत्री; मेड़ीलाल जी कोषाध्यक्ष दीनदयाल जी कोषाध्यक्ष; सीताराम

स्पर्ण इष्ट मित्रों सुपरिचित स्नेही सज्जनों जी आडीटर।

मुरादाबाद के अग्रवाल वैश्यों में एक और बालविधवा विवाह

ता० १२-११-१४ को श्री ला० दुर्गादास जी मोदी अग्रवाल वैश्य रियासत रामपुर निवासी की कन्या का १८ वर्ष की अवस्था में श्री लाला सुंदरलाल जी अग्रवाल वैश्य मुरादाबाद निवासी के पुत्र श्री लाला रामशरणदास जी के साथ उत्तमता से हुआ जिनकी आयु इस समय ३० वर्ष की है। बारात में साहू रामस्वरूप जी की कोठी से अग्रवाल वैश्यों के कई प्रतिष्ठित खांदानों के १०० से अधिक मनुष्य पं० शङ्करदत्त जी के गृह पर जीवनवार तक सम्मिलित रहे। खान पान का सत्कार लड़की के चचा श्री लाला ललिताप्रसाद जी की ओर से २ दिन तक रहा। इस अक्षत योनि कला का पूर्व विवाह जो १० वर्ष की अवस्था में हुआ था, कुछ समय के पश्चात् ही पूर्व पति का देहांत होगया बढ़ार के दिन बा० जगन्नाथप्रसाद जी टण्डन मैनेजर इलाहाबाद बैंक के सभापतित्व में मुः भगवतीप्रसाद जी तथा पं० शिवशर्मा जी के व्याख्यानों द्वारा शास्त्रीय प्रमाणों से खचाखच भरे स्थान में लगभग ५०० स्त्री पुरुषों के बीच बालविधवा विवाह सिद्ध किया तत्पश्चात् अपनी गवर्नमैंट तथा श्रीमान् कलैक्टर साहब बहादुर का धन्यवाद प्रकट कर बिरादरी के आये हुए पुरुषों ने सम्मिलित होकर इष्टमित्रों सहित बढ़ार का प्रीतिभोजन किया।

निवेदक—
श्यामलाल माथुर मन्त्री सभा

आवश्यकता।

एक ऐसे मुख्याध्यापक (हेडमास्टर) की आवश्यकता है। जो बी० ए० उपाधिधारी हो, तथा इंगलिश के अतिरिक्त इतिहास, मेथेमेटिक्स, तथा संस्कृत के ज्ञाता हों। वैदिक धर्मावलम्बी महोदयों के आवेदन पत्र पर विशेष ध्यान दिया जायगा। वेतन योग्यतानुसार ५०) से ८०) तक।

हरिनारायण शर्मा
मन्त्री, वेदरत्न विद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्यो पान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषनुवाद २)

धर्म निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्दमार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पतासाफ़हो

पता:—लाo केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बजाज़ा शहर मेरठ

गेहूं की खेती ।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषी विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिंदी उर्दू दोनों भाषा से बनाई गई है इसमें बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और और गेहूं की खेती में बिशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषी सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े बिस्तार से लिखा गया है बहुत बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कोडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ ।

रामप्रसाद सबजज उज्जैन

आवश्यकता ।

श्री राजपूताना अनाथालय फतहपुर (जयपुर) के लिये एक योग्य उपदेशक की आवश्यकता है जो व्याख्यान देने और भजन गाने में कुशल हों वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा । निवेदन पत्र निम्न पते पर शीघ्र जाना चाहिये ।

मैनेजर
श्री राजपूताना अनाथालय
फतहपुर (जयपुर)

॥ ओ३म् ॥

हिन्दी चित्रमय जगत्

दिसम्बर का अंक ।

क्या आपको यह मालूम है कि युरुप में युद्ध क्यों छिड़ा ?

क्या आपको समर विजयी ब्रिटिश के परा क्रम देखनेकी इच्छा है ।

फ्रांस पर आक्रमण, जर्मनी का परा-भाव ब्रिटिश के साहस युक्त कर्म युद्ध का संपूर्ण रोचक वर्णनादि सुनने की तथा चित्रों के देखने की इच्छा हो तो दिसम्बर का अंक देखने को मत भूलिये।

कई आवश्यकीय व युद्ध का वर्णन सुनकर आपका चित्त रंजन करेगा ।

मूल्य साधारण कागजी की प्रति का ॥)
"आर्टपेपर" ॥।)

पूना सिटी { मैनेजर हिन्दी चित्रमय जगत

आवश्यकता ।

एक योग्य आर्य सदाचारी पढ़ा लिखा आमदनी ७५) मास आयुः बीस वर्ष गोत्र गर्ग अग्रवाल वैश्य के लिये एक योग्य कन्या की आवश्यकता है कन्या की आयुः १४ या १६ वर्ष के करीब हो विशेष पत्र व्यवहार के लिये ।

पता—मोहर सिंह दास
रामेश्वर दास
नईसड़क देहली

विद्यार्थी ।

गत चैत्र मास से प्रति मास निकलने वाला । हर महीने सुन्दर चित्र । प्रसिद्ध विद्वानों के शिक्षाप्रद लेख । मनोहारिणी कवितायें । प्रायः समस्त हिन्दी पत्र-सम्पादकों में प्रकाशित । सदाचार का बीज बोने वाला । देशभक्त की ऊंची लहरें उठाने वाला । अपने पूर्वजों और प्राचीन भारत के गौरव को याद दिलाने वाला । मातृभाषा—हिन्दी—का भक्त बनाने वाला । नवयुवक विद्यार्थियों में नव जीवन डालने वाला । उच्च अभिलाष और जागृति पैदा करने वाला । भारत में भावुकों के हृदयों में भारतीय भव्य भाव करने वाला । अचेतों को सचेत करने के लिये चटकीली और चेतावनी देने वाला । हिन्दी--संसार में एक अनोखा और अद्भुत पत्र, जलद २) भेज कर "विद्यार्थी" पत्रके ग्राहक बन जाइये और साल भर तक पढ़ पढ़ कर लाभ उठाइये नमूने की कॉपी ≡) में मिलती है ।

४ ग्राहक बनाने वाले को साल भर भर विद्यार्थी मुफ्त ।

मिलने का पता—
मैनेजर, हिन्दी प्रेस प्रयाग ।

उपदेश-मंजरी ।

यह पुस्तक सभी के लिये बड़ी उपयोगी है । इस पुस्तक को सदाचार शिक्षाकी खान कहना चाहिये । लड़कों को इनाम देने के लिये यह पुस्तक बड़ी अच्छी है । जो लोग अपने लड़कों को सदाचारी और सुशील बनाना चाहते हैं उन्हें यह पुस्तक अवश्य लेनी चाहिये ।

मूल्य जिल्द वाली का ॥) सादी का।=)

कविता-विनोद

बीसियों कविताओं का संग्रह । बड़ी मनोहारिणी और शिक्षादाहिनी कवितायें हैं । प्रत्येक हिन्दी-भाषी को इसे पढ़ना चाहिये । मूल्य ॥)

मिलने का पता—
मैनेजर, हिन्दी प्रेस, प्रयाग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाव का मलहम।

यह मलहम सब तरह के घाव में फायदा करता है। घावके कीड़े इस से मर जाते हैं, बदबू मिटती है, घाव साफ होकर जल्द अकूर भरता है और नया चमड़ा पैदा होकर घाव आराम हो जाता है सामान्य से लेकर बड़े गले घाव तक में यह समान गुण दिखाता है।

मोल एक औंस डिबिया ।-) पांच आने घाव धोने की टिकिया =) दो आने डाः म व पः १ से ३ तक ।-) पांच आने।

क्लोरोडिन।

यह अङ्गरेज़ों की प्रसिद्ध घरेलू दवा है। वाई दर्द शूल चाहे किसी कारण से हो इस दवा से सेहत होती है। दस्त, आंव के दस्त, पेचिश, मरोड़ पेट दर्द वा ऐंठन के लिये क्लोरोडिन अति गुणकारी है डाक्टर बर्म्मन ने इङ्गलेन्ड के एक नामी औषधाय से बनवाई है; जो कि पेटेंट वा अधिक मूल्य के क्लोरोडिन के सम्मपूर्ण समान है और दाम में सस्ती है। इसलिये ग्राहकगण व्यर्थ अधिक मूल्य में पेटेण्ट क्लोरोडिन न लेकर इसे खरीदें।

मोल ।=) छः आने शीशी दर्जन ४) रुपया डाः मः अलग लिया जायगा

एजैन्ट—बाबूराम जैन ऐन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली।

विधवा की आवश्यकता

कुछ समय हुआ मेरी पहली स्त्री का देहान्त होगया है। अब मैं एक विधवा के साथ विवाह करना चाहता हूं। विधवा की आयु २०, से २५ तक होनी चाहिये। विधवा कुछ पढ़ी लिखी होनी चाहिये। शेष पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते से कीजिये—

धन्नाराम स्टेशनमास्टर

विलखनपुर

सरगोधा लाइन

उस्तरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजरहिमालय कम्पनी कंखल

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे, परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधाबिंदु ही ज़िद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधाबिंदु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना बालकों के हरे पीले दस्त, के करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफ्तमिलेगा।

दद्रु गज केसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है

कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

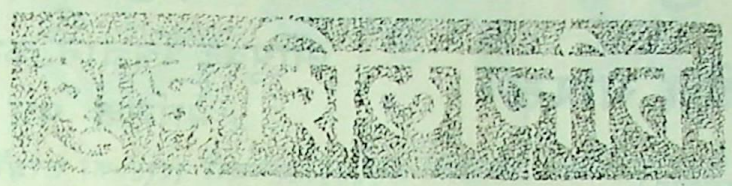
शुद्ध शिलाजीत

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना, श्वास, खई, विक्षिप्तता: रक्तविकार, सूजन कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पता:—

बाबू पंचमसिंह वर्मा

माकि, कारख़ाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूची पत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul ई हार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

॥ ओ३म् ॥

१५ अप्रेल सन् १५ में बंटेगा

सत्येनास्तिभयं क्वचित्

१००००) रुपया इनाम।

कमज़ोरी दिमाग़ के लिये (अमृतप्रवाह) व अपूर्व शक्ति वर्द्धक (धातु पुष्टि चूर्ण) के ४०००० ग्राहकों में सब कार्य सभा के द्वारा होगा हरेक ग्राहक भी मेम्बर हो सकेंगे अधिक हाल जानने के लिये नियमावली हमारे यहां से मुफ्त मंगाइये।

पता—सूर्य्य औषधालय

सेनेटरीरोड-लखनऊ

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

चान्द--जि० आर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नई पुस्तक! अपूर्व पुस्तक।

महर्षि पतंजलि और तत्कालीन भारत।

लेखक—(प्रतिष्ठित) स्नातक चन्द्रमणि विद्यालंकार।

यदि आप महर्षि पतंजलि के विषय में कुछ जानना चाहते हैं, यदि आप पतंजलि के समय का वास्तविक भारत इतिहास जानने के उत्सुक हैं, यदि आप महाभाष्य जैसे बड़े भारी ग्रन्थ का ऐतिहासिक निचोड़ विना किसी परिश्रम के देखना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। मूल्य केवल ।=) है

पुस्तक भण्डार गुरुकुल
कांगड़ी, हरिद्वार

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहनजी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रांत

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत के गत २५ वर्षों का इतिहास दिय गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है। शीघ्रता कीजिये।

श्रीरम शर्मा

हैड क्लर्क, प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

वर की आवश्यकता।

एक कान्यकुब्जद्विज (पांडेय-खोरिकत्वर) की कन्या जिसकी आयु १६ वर्ष है सब अंग हृष्ट पुष्ट हैं गुण कार्य में निपुण तथा सुशिक्षित है और बेल बूटे का काम भली भाँति जानती है उसके निमित एक योग्य वर (षट—कुल) की आवश्यकता है। निम्न लिखित पते पर पत्र व्यौहार शीघ्र करें।

पं० मूलचंद जी शर्म्मा
इम्पीरियल कैपीटल
वर्कस
अजमेरी दर्वाज़ा—देहली

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ५ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा
(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटि
(३) शंकर लाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर
(४) म० हीरालाल c/o म० भगवानदास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली
(५) भारत सेवक एजन्सी देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

... के ... रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

* ओ३म् *

Registered No. L.807

Mah... Gore...

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है

२० मार्गशीर्ष सं १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० ५ दिसम्बर १९१४

संख्या ३४
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्र वेदालङ्कार

वीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा । चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है ।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये ।

आदी का मूल्य १।।)
प्रचारक के ग्राहकों से १।)
अजिल्द का मूल्य १।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है । यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं । पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सारगर्भित भूमिका है

मूल्य ।-)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरीहुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहतेहैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यानपूर्वक अवश्य पढ़िये । आज कल राष्ट्र और [illegible] तो बहुत सुनाई देती [illegible] उन्नति क्या चीज़ है, [illegible] जानते हैं । इस पु[illegible] अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

राष्ट्रीयता का मूल मंत्र तय्यार होगई ।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिसकी पहिली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है । इसके लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं । एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है । इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिये क्या गुण आवश्यक हैं । जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये ।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक

देहली

Ram ji Kangri PUR Bijnore

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निर्बल सेवक।

अपने उद्देश्य का एक मात्र साप्ताहिक पत्र।

आठ पृष्ठ और मूल्य केवल १।) वार्षिक।

अवश्य मंगाइए!!! क्योंकि:-

१—इसने केवल निर्बलों की सेवार्थ जन्म लिया है।

२—आपस के झगड़े मिटा एकता करना इसका धर्म्म है।

३—यह पत्र आर्थिक लाभ के विचार से नहीं निकाला गया। पत्र के लिए बिना हिसाब व्यय होता है।

मैनेजर निर्बल सेवक "धर्म"

देहरादून

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको चाँदी का पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ॥) प्र०
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " -)॥ "
सालभर " " " " -) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़पत्र की छंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सक्ता।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये।

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता--- जल्दी हज़म होने वाला-
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६॥ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता---मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० छाप =)]
बोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

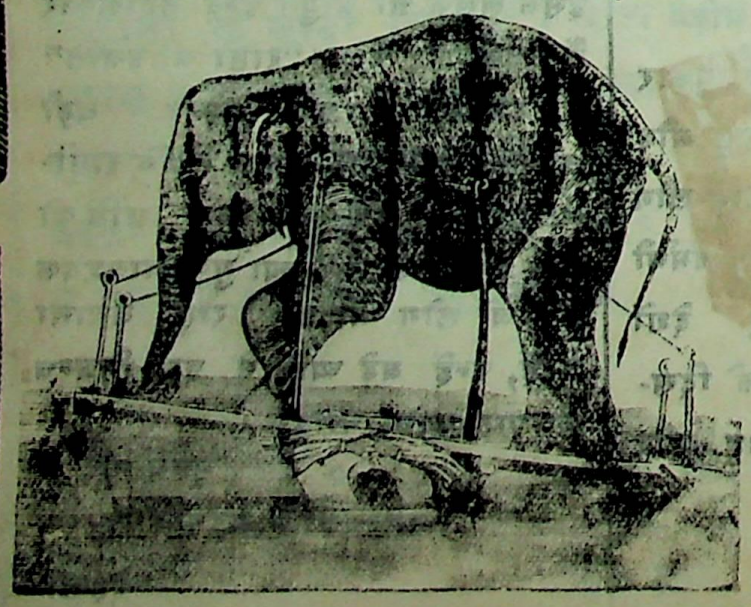

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलौअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानीपद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशलकिशोर १) वीर सुलतान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर=) राजपूतों की बहादुरी ॥।) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीरजयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) राणाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ सच्ची देवियां ।=) हमारी मातायें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिक्खों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां।) वैदिक विवाहादर्श १) तांतिया भील =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकरा ॥ ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता- मासिक कार्यालय
(बनारस सिटी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिंदी साहित्य सम्मेलन

परमेश्वर की अपार दया से हिंदी साहित्यसम्मेलन का पंचम वार्षिक सम्मेलन लखनऊ में बड़ी कृतकार्यता के साथ हुआ। लखनऊ उर्दू का गढ़ है। सम्भावना नहीं थी कि लखनऊ में हिंदीसाहित्यसम्मेलन का अधिवेशन भली प्रकार हो सकेगा। किंतु असम्भावित ही सदा हो जाता है। हम २५ तारीख़ को दिल्ली से चलकर २६ की प्रातःकाल लखनऊ पहुंचे। स्टेशन पर ही स्वयं सेवक महाशय से पूछने पर प्रतीत हुआ कि उस समय तक लगभग साढ़े चारसौ डेलिगेट आ-चुके थे। यह संख्या सम्मेलन के जीवन में अपूर्व थी। पहले किसी वर्ष इतने डेलिगेट सम्मेलन में नहीं पधारे। किंतु केवल संख्या ही कृतकार्यता की सूचिका नहीं है। संख्या तो केवल ऊपर का चिन्ह है। असली कृतकार्यता का सूचक तो जोश है। हम अपने अनुभव से कह सकते हैं कि इस वर्ष जोश की कमी नहीं थी। पहले वर्षों का तो हमें अनुभव नहीं; किंतु इस वर्ष का जोश हिंदीसाहित्य की भाविनी उन्नति के लिये बड़ी २ आशा-यें दिलाता है। हर एक साहित्यसेवी के चित्त में यह विचार लहरें मार रहा था कि किसी तरह सम्मेलन कृतकार्य हो और उर्दू की राजधानी लखनऊ में हिंदी का डंका बजे।

* * * *

हम लखनऊ की स्वागतकारिणी के सभ्यों को हार्दिक बधाई देते हैं। इतने अतिथियों के आराम की देख भाल में छोटी मोटी त्रुटि रह सकती है, किंतु इस से किसी को शिकायत न होनी चाहिये। स्वयं सेवकों की संख्या बहुत पर्याप्त थी। उन में से अधिक संख्या स्कूल के विद्यार्थियों की थी। विद्यार्थी ही आगे जाकर सब कामों के संभालने वाले बनेंगे। उन्हें सेवा का कार्य सिखाना चाहिये। उन में जोश भी बहुत होता है। इन सेवकों ने डेलिगेटों के आराम के लिये खूब यत्न किया। जहाँ तक सम्भव था, आवश्यकतायें पूरी की जाती थीं। यदि कहीं त्रुटि रह जाती थी तो उस का कारण आशा से अधिक लोगों का आजाना ही था। स्वागतकारिणी के सभ्यों ने अपनी ओर से सेवा में कोई कमी नहीं की।

* * * * * *

२५ तारीख़ को सम्मेलन के सभापति पं० श्रीधर पाठक जी लखनऊ पहुंचे। धूम धाम से उनका स्वागत हुआ। कई महीनों से आपका स्वास्थ्य ख़राब था। दमे के ज़ोर ने उन्हें बहुत निर्बल कर दिया था तो भी साहित्यप्रेमियों के आग्रह का तिरस्कार करना आपने उचित न समझा। २६ को १२ बजे के लगभग सभापति जी मण्डप में पधारे। मण्डप कालीचरण हाईस्कूल के घेरे में बनाया गया था। उसे अनेक साध-नों से खूब सजाया गया था। गुंजायश भी बहुत थी। लगभग पांच छः हज़ार दर्शक बड़े आराम से बैठ सकते थे। सभापति जी के आने के समय मण्डप लगभग पुर हो चुका था। सब उपस्थित सभ्यों ने खड़े होकर करतालिध्वनि द्वारा आपका स्वागत किया।

* * * * *

प्रारम्भ में स्वागतकारिणी के सभापति राजा रामपाल सिंह ने अपना भाषण पढ़ा। यह भाषण बड़ा आम था। कई बड़े मार्के की बातें उस में कही गईं थीं। उन में से कुछ एक हमने अन्यत्र उद्धृत की हैं। हमारे देश के धनी मानी भाषा से प्रेम करने लगें इस से बढ़कर प्रसन्नता की बात नहीं हो सकती। वह प्रेम इस भाषण से व्यक्त था। किन्तु एक बात हम अवश्य लिखेंगे। इस भाषण का एक बड़ा भाग लखनऊका विज्ञापन ही प्रतीत होता था। लखनऊ के छोटे से छोटे लेखकों की भारतेन्दु और तुकबन्द को गोस्वामी तुलसीदास के साथ समानता दी गई थी। इतने लम्बे चौड़े इश्तिहार की आवश्यकता हमें समझ में नहीं आई। सिवा राजा साहिब की स्वाभाविक उदा-रता के इसमें और क्या हेतु बतलाया जा सकता है? हां एक ही और कारण हो सकता है। अवधवासियों का आत्म-सम्मान स्थापित करने के लिये वहां के निवासियों के कारनामे बतलाना आव-श्यक था। सर्वतोभावेन भाषण आम और प्रशंसा योग्य था।

* * *

स्वागतकारिणी सभा के सभापति के भाषण के पीछे सम्मेलन के सभापति का भाषण पढ़ा गया। पढ़ा इस लिये गया क्योंकि पं० श्रीधर जी बहुत बीमार थे। आपकी निर्बलता को देखकर सब सा-हित्यसेवी बहुत चिन्तित हो रहे थे। चिन्ता की बात भी है। आपकी कविता करने की शक्ति एकान्तवासी योगी और जजड़गांव से प्रकाशित हो चुकी है। किन्तु अभी तक उस शक्ति को अपना पूरा चमत्कार दिखाने का अवसर नहीं मिला। नौकरी में फँसे रहने के कारण आप को समय ही नहीं प्राप्त होता था। अब आप ज़ंजीरों से छूट गये हैं। हिंदी-साहित्य आप से बड़ी बड़ी आशायें रखता है। इस समय आप के स्वास्थ्य का बिगड़ना बहुत चिंता का हेतु हो रहा है। परमात्मा आप को शीघ्र ही नीरोग करे।

* * *

आपका भाषण बड़ा आम था। साहित्य के मर्म की कई बातें आपने बड़ी योग्यता से प्रतिपादित कीं। आप के भाषण के भी कई उदाहरण हमने अन्यत्र दिये हैं। विशेषतया आप का आर्य्यभाषा के एक झण्डे नीचे हिंदू मुसल्मानों को लाने का यत्न करना और व्रजभाषा तथा खड़ी बोली को भी समान स्थान देना ध्यान देने योग्य है। इस विचारशृंखला को पुष्ट करना चा-हिये। विशेषतया खड़ी बोली और व्रजभाषाओं को मिलाकर काव्योद्यान का सुभूषित करना यह पं० श्रीधर पाठक जी द्वारा ही हो सकता है। आपके भाषण के एक भाग के विषय में हमें कुछ कहना है। आपने आर्य्यभाषा तथा हिंदी इन नामों के झगड़े पर दो चार पंक्तियाँ लिखनी आवश्यक समझीं, हमारी राय में यह अनावश्यक था। जो लोग आर्यभाषा शब्द को हिंदी शब्द की अपेक्षा अधिक गौरवयुक्त समझते हैं वे हिंदीशब्दका सर्वथा बहिष्कार नहींकरना चाहते वे केवल आर्यभाषा शब्दको मुख्य ता देना चाहतेहैं। अब तक हिन्दीसाहित्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्मेलन के पांच अधिवेशन हो चुके हैं। उन में तीन सभापतियोँ ने हिंदी शब्द का समर्थन किया है। गत वर्ष के सभापति आर्यसामाजिक थे। उन पर दबाव डाला गया कि वे इस विषय पर अपनी सम्मति न दें। इस वर्ष के सभापति जी को तंग किया गया कि वे हिंदी शब्द की पुष्टि में कुछ शब्द कहें। साथ ही आर्यभाषा शब्द के विषय में भी दो चार बातें ऐसी कही गई हैं जिन से हम सहमत नहीं हो सकते। हमारी राय है कि सम्मेलन को हिन्दी, आर्यभाषा और मातृभाषा इन नामों में से किसी को विशेषतया न अपनाना चाहिये। आर्यसमाजी सम्मेलन का साथ देते हैं और अपना समझ कर साथ देते हैं। केवल नाम के झगड़े में पड़ कर उन्हें बार २ प्रेरित करना कि वे भी अपनी सम्मति को बलपूर्वक प्रकट करें और सम्मेलन में भी अपनी राय को प्रधानता देने का प्रयत्न करें, भूल है। इस नाम के झगड़े को छोड़ देना ही अच्छा है। जो जिस नाम को पसंद करे, करने दो। इस में किसी का क्या बिगड़ता है। किसी नाम पर सरकारी ठप्पा लगाने का यत्न हानिकारक होगा, क्योंकि ऐसा करने से दोनों पक्ष तेज़ हो जायंगे और हिंदी-साहित्यसम्मेलन के शान्त क्षेत्र में अशान्ति का सञ्चार हो जायगा। हम हिन्दी शब्द के पक्षपातियोँ को इस विषय में सचेत कर देना चाहते हैं।

× × × + + +

कई उपयोगी प्रस्ताव पेश हुए। प्रस्तावों के उपस्थित करने के लिये सज्जनों के भाषण हुए। कई भाषण बड़े उत्साहजनक थे। किन्तु एक शिकायत हमें अवश्य करनी है। प्रस्ताव और प्रस्तावक में गहरा सम्बंध है। प्रस्ताव पर भाषण करने वाले में अपने विषय की योग्यता होनी चाहिये। इस पर विषयनिर्वाचनसमिति कम ध्यान देती है। शिक्षा के विषय पर भाषण करने के लिये एक वकील महाशय रख दिये जाते हैं, और सरकारी कार्यवाही की आलोचना करने के लिये एक ऐसे महाशय से भाषण कराया जाता है जो उस विषय में सर्वथा अनभिज्ञ है। इसका परिणाम यह होता है कि वक्ताओं के भाषण अधिक लाभदायक नहीं होते। समाचार पत्रों में प्रसिद्ध साधारण युक्तियों और कहावतों से अधिक प्रबल युक्ति उपस्थित नहीं होती। यह दशा सुधारणीय है। वक्ता लोग पहले से भाषण तैयार रक्खें और बोलने के लिये वही अधिक समझा जाय, जिसने तय्यारी कर ली हो। उस अवस्था में सम्मेलन के अधिक लाभ उठा सकेंगे।

\+ + + +

सम्मेलन के आरम्भ में श्रीयुत मैथिलीशरण गुप्त की निम्नलिखित कविता पढ़ी गई थी—

स्वागत।

(१)

स्वागत सुधीगण, आप का करते हुए सम्प्रति यहां—
निज प्रेम प्रकटित कर सकूं, वह शक्ति मुझ में है कहां।
पर आप ज्ञाता हैं हृदय के है मुझे निश्चय यही;
सब जानिए है आप का मुख्यासनस्थल भी वही॥

(२)

साहित्य-सेवा का महाव्रत आप का विख्यात है,
उस की महत्ता भी भली विध आप सब को ज्ञात है।
इस आप के शुभ सम्मिलन से वह प्रगति-पथ में चले,
सब ओर उन्नति की अमर बल्ली बढ़े, फूले फले॥

(३)

एकत्र हम सब को यहां पूजार्थ प्रस्तुत देख के—
सुख पा रही है मातृभाषा भाग्य अपना लेख के।
करिए कृतार्थ उसे सभी विध बोध की वर वृद्धि से,
हो जाय शीघ्र समर्थ वह साहित्य-सिद्धि-समृद्धि से॥

(४)

करना पड़े निज हीनता पर सिर न नीचा अब उसे,
संस्कृत सदृश जानें जगत में 'एक भाषा' सब उसे।
पढ़ कर निराशा में न उस को अब भटकना हो अहो!
उस से न हो जो ज्ञात ऐसी बात कोई भी न हो॥

(५)

होकर अमर कविवृन्दकृत मुरली-सुधा-रस-पान से—
करती चमत्कृत है हमें वह आज भी निज गान से।
उस की विजय का शङ्ख अब हम को बजाना चाहिए।
सब साज बाजों से उसे सत्वर सजाना चाहिए॥

(६)

क्या चाहती है मातृभाषा आप से, सुन लीजिए।
जो आत्मगत हो आप उस को करगत भी कीजिए।
यश लीजिए इस के लिए भी, चाहिए अब क्या भला?
कर्त्तव्य में भी यों अमृत-फल आप के हित है फला॥

(७)

सद्भाव सौ सौ श्रेणियों में स्वर्ग से हैं आ रहे।
सर्वेश का सुख-शान्तिमय संदेश हैं जो ला रहे।
निज मातृभाषा के भवन का द्वार मिलकर खोल दो,
लेकर उन्हें सम्मान से निज देश की जय बोल दो॥

(८)

प्राची-प्रभा के साथ ही पावन पवन के योग से—
गूंजे गगन में अब यही ध्वनि कोटि कण्ठोद्योग से—
"है भव्य भारत ही हमारी मातृ-भूमि हरी भरी।
हिंदी हमारी राष्ट्र-भाषा और लिपि है नागरी"॥

मैथिलीशरण गुप्त।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

लाहौर का धर्ममेला

लाहौर का धर्ममेला नवम्बर की २७ २८, तथा २९ तारीखों में सफलतापूर्वक हो गया। यह कहा जा सकता है कि उत्सव निर्विघ्न समाप्त हुआ, समयविभाग में किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई। यह बड़ी बात है। ऐसे उत्सव थोड़े ही होते हैं। निर्विघ्नता और कृतकार्यता में भेद है। यह उत्सव सर्वथा निर्विघ्न था। सफलता में भी पिछले सालों से कम न था। नक़द १२ हज़ार के लगभग चन्दा सफलता का ऊपरी चिन्ह है। आर्यपुरुषों का बाहिर से उत्सव देखने के लिये आना और लाहौरवासियों के जोश में अपने जोश का पैबन्द लगाना सफलता का कुछ कम सूचक नहीं है। सफलता का 'अथ श्री' नगरकीर्तन से होता है। इस वर्ष का नगरकीर्तन केवल शान्दार ही नहीं, साथ ही स्मरणीय भी रहेगा।

नगरकीर्तन

२७ की शाम को महात्मापार्टी का नगरकीर्तन होता है और २८ की शाम को कालिजपार्टी का। २८ की शाम को मुसलमानों की ओर से मुहर्रम की मण्डलियां निकलने वाली थीं; इस लिये विचार किया गया था कि कालिजपार्टी का नगरकीर्तन भी २७ को ही हो जाय। पहले विचार था कि दोनों पार्टियों का का नगरकीर्तन एक साथ ही हो। किन्तु कई कारणों से ऐसा प्रबन्ध न हुआ। दोनों पार्टियों की भजनमण्डलियों में कुछ अन्तर रक्खा गया था। हमारी सम्मति है कि यदि दोनों पार्टियां मिलाकर उत्सव करतीं, तो यह वर्ष भी और भी अधिक स्मरणीय होता किन्तु हमारे दौर्भाग्य ने इस प्रसन्नता से हमें वञ्चित रक्खा। नगरकीर्तन में बड़ी रौनक थी। जहां से भजनीक महाशय अपना संगीत करते हुए गुज़रते थे, वह बाज़ार आदमियों से खचाखच भर जाता था। 'कन्धे से कन्धे का छिलना' अगर कहीं यथार्थ कहा जा सकता है तो वह लाहौर के नगरकीर्तन में ही। एक एक भजनमण्डली के साथ सहस्रों श्रोताओं की भीड़ रहती थी। इस नगरकीर्तन को देखकर ख्याल आता है कि वह दिन शीघ्र ही आने वाला है जब या तो लाहौर में नगरकीर्तन बन्द करना पड़ेगा, या म्युनिसिपलिटी को बाज़ार चौड़े करवाने पड़ेंगे।

एक आनन्ददायक घटना

नगरकीर्तन की मण्डलियां शाह आलमीदरवाज़े के पास पहुंचीं, वहां से आगे मण्डलियों का रास्ता मती के चौक में से होकर जाता था। वहाँ मुसलमानों की बस्ती अधिक थी। विचार किया गया कि उस स्थान पर नगरकीर्तन ले जाने से शायद मुसलमान भाइयों को कष्ट हो, क्योंकि मुहर्रम उन के लिये शोक का समय है। उस समय वे हर्षसंगीत को पसन्द न करेंगे। मण्डलियों को आज्ञा दे दी गई कि वे शाहआलमी में ही अन्तिम संगीत करदें। उसी समय कीर्तन के प्रबन्धकर्ताओं को सूचना मिली कि कुछ मुसलमान महाशय उनसे मिलना चाहते हैं। मुसलमान महाशयों ने मिलने पर प्रबन्धकर्ताओं से पूछा कि आप अपनी मण्डलियां आगे क्यों नहीं ले जाते, उन्हें बतलाया गया कि 'मुसलमानों के धार्मिक अनुभवों का ख्याल करके अगले स्थान में मण्डलियां ले जाना उचित नहीं समझा गया'। उस समय मुसलमान सज्जनों ने जो उत्तर दिया उस से आर्य लोगों के आंखों में प्रेम के आँसू भर आये। उन्होंने कहा कि "जनाब, आप हमें क्या समझते हैं। आप लोग खुदा की इबादत के भजन गाते हैं, इस में हमें बुरा क्यों लगेगा। आप ज़रूर आइये। हमने तो आप के स्वागत की तय्यारी कर रखी है" ये शब्द न थे, किन्तु भावार्थ यही था। भजनमण्डलियाँ आगे बढ़ीं और उसी बाज़ार में जहाँ जाने में भी उन्हें संकोच था, फूलों की वर्षा द्वारा उनका सत्कार किया गया।

यह घटना हमें क्या बतलाती है, समय आते हैं, जब युद्ध की अपेक्षा प्रेम विजय का उत्तम साधन होता है। किसी एक ही को सर्वथा विजयप्राप्ति का एक मात्र साधन कहना भारी भूल है। यदि आर्यसमाज मुसलमानों के धार्मिक विचारों का आदर करके अपने नगरकीर्तन का दिन न बदल लेता, तो उसे मुसलमान भाइयों से निमन्त्रण पाकर फूलों द्वारा सत्कार पाने का अवसर न मिलता। एक ही साधन सर्वदा काम नहीं आता।

२७ नवम्बर

प्रातः काल अग्निहोत्र तथा भजनों के पश्चात्

श्री स्वामी अच्युतानन्द जी

की कथा थी। श्री स्वामी जी की कथा प्राय वेदों के गौरव की सूचिका होती है। इस बार भी आपने बड़े मनोहर ढङ्ग से आर्यों को बतलाया कि वेदों का पढ़ना उनका परम कर्तव्य है। कई वेदमन्त्रों का अभिप्राय भी आपने वर्णन किया। कथा के पश्चात् श्री. प्रो. महेशचरणसिंह एम. एस. सी. का व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का विषय था 'आर्यसमाज तथा हिन्दू जाति'। व्याख्यान में बतलाया गया कि आर्यसमाज हिन्दू जाति के ऊपर क्या क्या उपकार करती है। व्याख्याता महाशय ने बतलाया कि हिन्दुओं का एक बड़ाभारी भाग जो नीच या अन्त्यज के नाम से पुकारा जाता है, उसका उद्धार करने वाला आर्यसमाज ही है। यद्यपि पहले दिन का प्रभात था, तो भी सारा पण्डाल श्रोताओं से भरा हुआ था। कोई ख़ाली स्थान गैलरी पर भी प्रतीत न होता था। प्रोफेसर साहिब के व्याख्यान को श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया।

मध्याह्नोत्तर की कार्यवाही आर्यसम्मेलन से शुरू हुई जिस के सभापति महात्मा मुंशीरामजी थे। इस सम्मेलन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में इस विषय पर विचार था कि आर्य-समाज की संख्या कैसे दृढ़ हो सकती है? विषय का आरम्भ करते हुए म० गंगाराम उपप्रधान आर्यसमाज शिमला ने बतलाया कि आर्यसमाज की संख्या में कई प्रकार की निर्बलतायें आगई हैं-जिन का हटाना आवश्यक है। आप के पीछे श्रीस्वामी अच्युतानन्द जी, श्रीस्वामी सर्वदानंदजी, पं० रामभजदत्त चौधरी, महता जैमिनी, पं० हंसराज आदि अनेक महानुभावों ने अपने अपने भाव प्रकाशित किये। सब का सारांश यह था कि (१) आर्यमात्र को समाज के संगठन का सत्कार करना चाहिये (२) आर्यपुरुषों को अपने जीवनों का सुधार करके आदर्श वैदिक जीवन के दृष्टांत स्थापित करने चाहियें। और (३) समाज के कार्यों में धार्मिक भाव को दृढ़ करना चाहिये। अन्त में महात्माजी ने सारे भाषणों का सारांश बताते हुए कहा कि ऐसे सम्मेलनों को व्यर्थ न समझना चाहिये। इस से लोकमत बनता है, जो भविष्यत् में सुधार के उपाय सोचने के लिये सहायक होता है।

सम्मेलन के पीछे

श्रीमती कौशल्यादेवी जी

का भाषण था। भाषण का सारांश यह था कि शांति का स्रोत वेद है। प्रारंभ में श्रीमती जी ने संसार की अशांत दशा का वर्णन किया, और उस के पश्चात् शांतिदायक उपदेशों के कुछ दृष्टांत दिखाये। आपने कई वेदमंत्रों के अर्थ करके दिखाया कि वेदों में मनुष्यजीवनोपयोगी शिक्षायें भरी पड़ी हैं। दृष्टांत के लिये आपने यजुर्वेद के प्रथम मंत्र के कुछ भाग के अर्थ दिखाये जिन में मनुष्य को खुली वायु में रहने का उपदेश था। व्याख्यान उत्तम उत्तम बातों से भरपूर था।

तत्पश्चात्

श्रीस्वामी सर्वदानन्द जी

का 'वैदिक शिक्षा' विषय पर व्याख्यान हुआ। व्याख्यान क्या था आर्यमात्र के लिये उत्साह का संदेश था। हम अपने अनुभव से कह सकते हैं कि स्वामी जी के उपदेश सुस्त हृदयों में भी जोश फूंकने वाले होते हैं। स्वामी जी का व्याख्यान शोर गुल में शुरू हुआ था। थोड़ीसी देर में आपने सारे श्रोताओं को अपने काबू में कर लिया और जब घंटा भर होचुका तो श्रोताओं में से कोई न चाहता था कि स्वामी जी अपने व्याख्यान को समाप्त करें। स्वामी जी ने बतलाया कि आर्यसमाज की गति इस समय बन्द है। वह उन्नति नहीं कर रहा। जब आर्यसमाज उन्नति नहीं कर रहा और हिन्दूजनता आर्य समाज की बातों को मानने लगी है तो फिर हमारे अंदर विशेषता क्या है? जब विशेषता नहीं तो लोग आर्यसमाज में क्यों आयें? भर्ती बन्द क्यों न हो? अन्त में आर्यों को प्रति दिन उन्नति करने का उपदेश देकर आपने अपने उत्साहजनक भाषण को समाप्त किया।

रात्रि के समय

श्री प्रो. रामदेव जी

का व्याख्यान हुआ। जब हम पण्डाल में पहुंचे व्याख्यान हो रहा था। सारा स्थान खचाखच भरा हुआ था। वेदी पर वक्ता महाशय अपने सादा वेष में खड़े थे। सामने मेज़ पर किताबों का ढेर लगा हुआ था, जिनकी संख्या तीस से कम क्या होगी? वक्ता महाशय पांच पांच मिनट पीछे एक एक किताब उठा कर उद्धरण पढ़ते जाते थे और श्रोताओं को अपने सिद्धान्त की सत्यता पर विश्वास दिलाते जाते थे। लाहौर की आर्य पब्लिक अब इन लम्बे ज्ञान पूर्ण पुस्तकी व्याख्यानों से ऐसी अभ्यस्त हो गई है कि इनके बिना उत्सव फीका सा होने की सम्भावना हो जाती है। व्याख्यान में आज कल के पाश्चात्य विद्वानों की पुस्तकों से उद्धरण सुना सुना कर यह सिद्ध करने का यत्न किया गया था नये विचारों की लहर परमात्मा, जीवात्मा और उनके परस्पर सम्बन्धों को वैसे ही मानती है, जैसे वेदों में उनका विधान है। व्याख्यान कई बड़े ठिकाने के उद्धरण थे जो वक्ता के अभिप्राय को कई अंशों में सिद्ध करते थे।

दूसरा दिन

दूसरे दिन प्रातःकाल हवन के पश्चात्

श्री स्वामी सत्यानन्द जी

का मनोहारी उपदेश हुआ। हमें शोक है कि हम इस अमृतपूर्ण उपदेश को न सुन सके। कारण यह था कि हमें पण्डाल तक पहुंचने में विलम्ब होगया। जहांतक हमें ज्ञात हुआ है उपदेश भक्तिपूर्ण था और श्रोताओं को बहुत उत्साहित करने वाला था। तदनन्तर

श्री. प्रो. बालकृष्ण एम. ए.

की अपील थी। प्रोफेसर महाशय ने व्याख्यान में मुख्यतया यह दिखाने का यत्न किया कि हमारे पुराने ग्रन्थों में सायंस की कई बहुत बड़ी २ सचाइयां पाई जाती हैं। चुम्बक, विद्युत् और अन्य कई वैज्ञानिक शक्तियों का वर्णन संस्कृत साहित्य में खूब पाया जाता है। विशेषतया अयस्कान्तमणि का वर्णन चरक सुश्रुत में बहुत उत्तम है, और चीरफाड़ में उसका प्रयोग और भी गौरवजनक है।

यद्यपि व्याख्यान के पूर्वभाग का अन्तिम अपील से बहुत सीधा सम्बन्ध व्याख्याता महाशय स्थापित न कर सके तथापि सारा व्याख्यान बड़ा प्रभावजनक रहा। अपील के अंत में लगभग १० हज़ार रुपया सुनाया गया। रुपया पीछे से भी आता रहा और उत्सव की समाप्ति तक लगभग १२ हज़ार के हो चुका था।

मध्याह्नोत्तर की कार्यवाही नियत समय पर शुरू हुई।

पहला व्याख्यान

श्री पं० जगन्नाथनिरुक्तरत्न

का था जिस में कई प्रमाणों से सिद्ध किया गया था कि भारतवर्ष संसार का ज्ञानदाता है। आपने बतलाया कि ज्योतिषवेत्ताओं ने भी बहुत कुछ भारतवर्ष से ही सीखा था।

दूसरा व्याख्यान

श्री पं० ब्रह्मदत्त विद्यालङ्कार

का था जिस का सारांश यह था कि वेदों का उपदेश हमें बतलाता है कि संसार में मनुष्यमात्र समान हैं। मनुष्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मात्र कैसे समान हो सकते हैं जब तक उन में समानधन और समानशिक्षा न हो। भारतवर्ष के दृष्टांत देकर आपने दिखलाया कि यहां पर कितनी निर्धनता और कितना अज्ञान है। अंत में आपने स्पष्टतया कहा कि संसार के दुःख वेद के उपदेशों के अनुसार चलने से ही हट सकते हैं।

इस समय का अन्तिम व्याख्यान
श्री पं० महाराणी शङ्कर

का था। व्याख्याता ने अपने सुरीले शब्दों में आर्य्यसमाज को यह बतलाने का यत्न किया कि भारत जगद्गुरु रहा है, और अब भी होगा। इस समय की हमारी नींद जब हटेगी, तब हम अपने असली स्वरूप को जान सकेंगे।

साढ़े पांच बजे यह कार्य्यवाही समाप्त हुई। ७ बजे से फिर

महात्मा मुंशीरामजी

का व्याख्यान शुरू होने वाला था। डेढ़ घण्टे का अवकाश था किन्तु इस अवकाश से बहुत थोड़े आदमियों ने उपयोग लिया। स्थान न मिलने के भय से प्रायः लोग अपने स्थानों पर ही जमे रहे। ७ बजे से पूर्व सारा पण्डाल खचाखच भर गया, रास्ते भी भर गये थे। उस समय लोगों को चुप कराने के लिये एक भजनीक महाशय खड़े किये गये, जो गला थक जाने से शीघ्र ही बैठ गये। तब दूसरे भजनीक महाशय खड़े हुए और श्रोताओं के शोर ने उन्हें बिठा दिया। पौने सात बजे ही सब ओर से 'महात्माजी को खड़ा कीजिये' का शोर मच गया। चुप कराने का कोई उपाय न देख कर नियत समय से पूर्व ही महात्माजी खड़े होगये। व्याख्यान का विषय था "आर्य्यसमाज का अन्य धर्मों से सम्बन्ध"। श्रोताओं में सभी धर्मों के लोग थे। जनता इस आवश्यक विषय पर अपने नेता की सम्मति सुनने को उत्सुक थी। महात्मा पिछले कई महीनों से निरन्तर रोगी रहते थे। उधर बोलने के समय हरनिया के उतर जाने का भी बहुत भय था। किन्तु इन सब बातों के होते हुए भी व्याख्यान असाधारण सफलता के साथ समाप्त हुआ। पूरा व्याख्यान देने का तो हम अगले सप्ताह यत्न करेंगे, इस बार इतना लिख देना ही पर्याप्त है कि महात्माजी ने आर्यसमाज की सहनशीलता के लाभ बता कर शास्त्रार्थमार्ग से हटाने की प्रेरणा की और अन्यधर्मावलम्बियों को बतलाया कि वे क्षणभर के लिये भी न समझें कि आर्यपुरुषों को जेल में डाल कर वे सत्य का नाश कर सकेंगे।

इस व्याख्यान के पीछे धन्यवादादि के अनन्तर यह महोत्सव समाप्त हुआ।

स्वागत-कारिणी-सभा के

प्रधान का

भाषण

हिन्दी के इतिहास में अवध का स्थान बड़े ही महत्त्व का है। मातृभाषा की सेवा करने में यदि अवध की समता कोई अञ्चल कर सकता है तो वह व्रजमण्डल है। आज भले ही हम अपना कर्तव्य पूर्णरूप से न पालन कर रहे हों परन्तु अवध के सपूतों की पूर्वकृति सर्वथा गौरवास्पद है। प्रातःस्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास, नरहरि, गिरिधर कविराय, वेणी प्रवीण, द्विजदेव, बाबा रघुनाथदास, ललितकिशोरी, ओध, सेवक, सुप्रसिद्ध देशभक्त प्रतापनारायण मिश्र आदि अनेक प्रसिद्ध कवियों की अवध ही जन्मभूमि है। पूर्वकाल में हमारे मुसलमान भाई भी हिन्दी से पूर्ण प्रेम करते थे और पद्मावतकार प्रसिद्ध मलिक मुहम्मद जायसी, रसलीन, नेबाज, मुबारक आदि अवधवासी मुसलमान कवियों ने हिन्दी की अपूर्व सेवा की है। केवल कवियों के शिरमौर महात्मा तुलसीदास का ही नामोल्लेख यथेष्ट था, परन्तु संख्या में भी अवध में प्रसिद्ध सत्कवि थोड़े नहीं हुए हैं।

महात्मा तुलसीदास तो कवियों के मुकुटमणि हैं। तुलसीदासकृत रामायण का सा प्रचार संसार में विरली ही किसी अन्य पुस्तक का होगा। जितने मनुष्य नित्य इस ग्रन्थ को पढ़ते हैं दूसरी किसी पुस्तक के इतने पढ़ने वाले मिलना कठिन हैं। विदेशियों विद्वेषियों और विधर्मियों तक को मुक्तकण्ठ से रामायण की प्रशंसा करनी पड़ती है। करोड़ों हिन्दी पाठकों के लिये तो रामायण धर्मग्रन्थ नीतिग्रन्थ इतिहासग्रन्थ आदिसबकुछ है, वास्तव में रामायण हिन्दीका सर्वस्व और साहित्य संसार का परमादरणीय रत्न है। धन्य है राजापुर की पुण्यभूमि, जहां इस अमर कविते जन्म लिया और शतशः धन्य है उन माता पिता को जिन्होंने इस पुरुषपुङ्गव को उत्पन्न कर भारत का मुख उज्वल किया।

उक्त महाकवि को अवधवासी अन्यायपूर्वक अपनाना नहीं चाहते। मैं अयोध्या के पौराणिक विस्तार की चर्चा चला कर कतिपय शिक्षाभिमानी बन्धुओं को रुष्ट करना नहीं चाहता। बौद्ध कालीन ऐतिहासिक श्रावस्ती की सीमा के निराकरण के झगड़े में भी पड़ना अनुचित प्रतीत होता है। अतएव इतना ही निवेदन करना पर्याप्त होगा कि कविकुलशिरोमणि तुलसीदास के जन्म मरण के बहुत दिनों पश्चात् तक भी बांदा-अञ्चल अवध के अन्तर्गत रहा इस में कुछ भी सन्देह नहीं। यदि आप इस अधिकार को सन्तोषजनक स्वीकार करने के लिये प्रस्तुत नहीं हैं तो भी हिन्दी का यह महाकवि अवध के ही भाग में पड़ेगा। रामचरितमानस के प्रारम्भ में ही "नौमी भौमवार मधुमासा। अवधपुरी यह चरित प्रकासा॥" लिख कर गोस्वामी जी महाराज ने स्वयं अपन सम्पत्ति का उत्तराधिकार अवधवासिय को देदिया है। अधिक कहने का अप्रयोजन नहीं। मैं उस दिन को प्रत्याशा कर रहा हूं जिस दिन भारत के कोने कोने से प्रतिवर्ष तुलसीजयन्ती के उपलक्ष्य में राजापुर में लाखों भारतवासी एकत्रित हो हिन्दी के सर्वस्व कविकुलसम्राट् रामचरितमानस के रचयिता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट किया करेंगे।

प्रायः ३७ वर्ष पूर्व अवध ने एक ऐतिहा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ हिंदी-संसार को समर्पित किया। जिस के रचयिता का नाम यथास्थान लिखने को मैं भूल गया हूं। इस ग्रंथ द्वारा हिंदी के लुप्त इतिहास का बहुत कुछ उद्धार हुआ और इसी ग्रन्थ के आधार पर डाक्टर ग्रियर्सन के Linguistic survey of India का हिन्दी सम्बन्धी अध्याय लिखा गया और हिंदी-ग्रन्थों के अनुसन्धानों को धूम मच गई। उन्नाव अंचल के निवासी ठाकुर शिवसिंह सेंगर और "शिवसिंह सरोज" को हिंदीभाषी सदैव पूज्यभाव से स्मरण करेंगे। श्रद्धेय ठाकुर महोदय जिस सरकारी विभाग की*सेवा कर अपनी विमल कीर्ति-ध्वजा फहरा गये उनकी आत्मा आज उसी विभाग के अधिकांश हिंदीभाषियों का विपरीताचार, मातृभाषाविद्वेषिता, स्वार्थपरता आदि सद्गुणों को देखकर आठ २ आंसुओं रो रही होगी, परन्तु मैं शिवसिंह महोदय की हिंदी सेवा का स्मरण कर इस समारम्भ में अवश्यमेव उपस्थित उक्त विभाग के गुणग्राहक महानुभावों के लम्बे कर्णों द्वारा, समस्त विभाग के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हुआ उक्त विभाग के हिन्दीभाषी समुदाय से मातृभाषा को किसी भी अवस्था में न भूलने का अनुरोध करता हूं।

इन दिनों हिंदी-कविता का सूर्य अस्ताचल का अतिक्रमण करने के लिये अग्रसर होरहा है और गद्य की तूती बोल रही है। इस नवीन युग में भी पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी, मिश्रबन्धु, पं० शिवनाथ शर्मा, पं० रूपनारायण पाँडेय, पं० सोमेश्वरदत्त शुक्ल पं० शिवविहारीलाल वाजपेयी आदि अनेक अवधवासी मातृभाषा की प्रशंसनीय सेवा कर रहे हैं। द्विवेदी जी महाराज की प्रशंसा करना तो सूर्य को दीपक दिखाना है। 'सरस्वती' पत्रिका हिन्दी संसार की साक्षात् सरस्वती है। इस पत्रिका का सम्पादन जिस योग्यता से होता है, वह सर्वथा श्लाघ्य और अनुकरणीय है। हिंदी के मासिक साहित्य का यह अनुपम रत्न है। द्विवेदी जी महाराज और भी अनेक प्रकार से हिंदी की पुष्टि कर रहे हैं। भगवान् आपको दीर्घजीवी करे, यही हमारी आन्तरिक प्रार्थना है। मिश्रबन्धुओं द्वारा भी मातृभाषा-भण्डार की अच्छी पूर्ति हो रही है। हाल ही में प्रकाशित आप लोगों का "मिश्रबन्धुविनोद" नामक ग्रन्थ देखने ही योग्य है। यह ग्रन्थ बड़े ही परिश्रम और अनुसन्धान से लिखा गया है। यदि हमारे शिक्षित युवक पं० श्यामविहारी मिश्र एम० ए० और पं० सुखदेव विहारी मिश्र बी० ए० के प्रदर्शित पथ का अनुसरण करें तो बहुत ही शीघ्र विविध ग्रन्थरत्नों से मातृभाषा-भण्डार परिपूर्ण हो सकता है। पं० शिवनाथ शर्मा जी भी हिंदीसाहित्य के अंगविशेष की प्रशंसनीय पुष्टि कर रहे हैं। परन्तु खेद का विषय है कि हिंदीसंसार ने आपकी सेवा का अभी तक समुचित आदर नहीं किया है। आज जिस भाषा के साहित्य के दो चार ग्रन्थ पढ़ कर हम अपने को "कार्लाइल" और "मेकाले" का अवतार समझने लगते हैं, मातृभाषा को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगते हैं उसी भाषा में अनेकविद्वान् सामाजिक तथा राजनीतिक दोषोंको लक्ष्य कर व्यंगपूर्ण और चटकीली रचनाओं द्वारा समाज का प्रभूत हित साधन कर यश के भागी हो चुके हैं। बंगीय साहित्यसम्राट् स्वर्गवासी बङ्किमचन्द्र चटरजी-कृत "कमलाकान्तेर दफ्तर" आदि ग्रन्थ हमारे बङ्गाली भाई बड़े चाव से पढ़ते हैं। परन्तु हम तो दूसरी धुन में ही मस्त हैं। आंखों में उंगली डाली जाने पर तो हम देखते, समझते ही नहीं, सङ्कतों को हृदयङ्गम कर सतर्क हो जाना और इङ्गितकर्ता का उचित आदर करना तो बहुत दूर की बात है।

अवध के साहित्य सेवियों में इस नगर के बाबू भगवानूदास वर्मा का नाम भी उल्लेख योग्य है। आप हिन्दी के पुराने लेखक हैं। पश्चिमोत्तर देश का भूगोल, ब्रेडला स्वागत, योगवाशिष्ठ आदि पुस्तकें आपकी लेखनी से निकलीं, परन्तु इन दिनों आप पहिले की भांति इस ओर ध्यान नहीं देते। आप के अनुज बाबू रामदास वर्मा ने भी मातृभाषा-सेवा की ओर ध्यान दिया था, परन्तु शोक है कि आप अल्पायु होगये। उन्नाव जिलानिवासी पं० नन्दकिशोर शुक्ल वाणीभूषण जी ने भी हिन्दी में कई पुस्तकें लिखी हैं और धार्मिक व्याख्यानों द्वारा भी हिन्दीप्रचार में सहायता कर रहे हैं।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है हिन्दी के पद्य-काव्य की अवस्था आजकल शोचनीय होरही है। विधिवत् गुरु से पढ़ साहित्यसमुद्र मन्थन कर काव्य करने की रीति ही उठ गई है। जिसके जी में आया वही तुकबन्दी करने लगा। काव्यशास्त्र के ज्ञाता अच्छे कवियों की आज भी कमी नहीं है, परन्तु खेद का विषय है कि सामयिक पत्रों में कविता प्रकाशित करने वाले हमारे अधिकांश कवि हिंदी को अलङ्कृत कर रहे हैं और यदि यही क्रम रहा तो हिन्दी-साहित्य को बड़ी हानि पहुंचने की सम्भावना है। काव्य के विशेषज्ञों को चुपचाप यह अनर्थ न देखना चाहिये। बाबू मैथिलीशरण गुप्त आदि की भांति यदि लोकप्रिय विषयों पर कविता करना आरम्भ करदें तो बहुतेरे स्वयंसिद्ध कवि कपूर होजांय और कविता करने की इच्छा करने वालों को काव्य शास्त्र पढ़ना ही पड़े।

इस दशा में भी, अवध की भूमि सुकवियों से शून्य नहीं है। पण्डित युगल किशोर मिश्र, उन्नाव द्विजराज का नाम बहुतेरे सज्जनों ने न सुना होगा; परन्तु इस खड़ी बोली के "ज़माने" में, तुकबन्दी के युग में, हिन्दीकाव्य का ऐसा धुरन्धर ज्ञाता दूसरा कठिनतासे मिलेगा। आप ग्राम गंधौली, जिला सीतापुर के निवासी हैं। "मिश्रबन्धु विनोद" तथा "हिन्दीकोविदरत्नमाला" से आप का पूर्ण परिचय प्राप्त हो सकता है। आप के भतीजे पं० कृष्णविहारी मिश्र बी. ए. ने छात्रावस्था से ही साहित्यसेवा प्रारम्भ

* पुलिस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर दी है और हिन्दी-संसार को आप से बहुत कुछ आशा है। अवध में और भी अनेक सुकवि वर्तमान हैं। परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि लोक-रुचि तथा वर्तमान सामाजिक आवश्यकताओं और अभियोगों की ओर उन का ध्यान न होने के कारण, शिक्षित समाज से उनका परिचय नहीं है।

समाचारपत्रों द्वारा इस काल में समाज का असामान्य हितसाधन होरहा है, किंतु इस कला की ओर अवधवासियों का ध्यान अभी तक नहीं गया—यह कहते मुझे कुछ भी सङ्कोच नहीं होता। अवध से एक भी प्रभावशाली समाचार-पत्र नहीं प्रकाशित होता, यह कम लज्जा की बात नहीं है। यों तो अवध की राजधानी लखनऊ से "दिनकरप्रकाश" "रसिकपञ्च" "भारतभानु" "गोपाल-पत्रिका" "वसुन्धरा" आदि अनेक पत्र निकले परन्तु बाल्य काल व्यतीत करने का किसी को भी न प्राप्त हुआ। इन पत्रों में से आज एक भी जीवित नहीं है। लखनऊ के हिंदीइतिहास में अपनी स्मृति छोड़कर सबके सब कालकवलित हो गये।

स्वर्गीय बाबू गङ्गाप्रसाद वर्मा के "हिंदुस्थानी" में भी प्रारम्भ में हिंदी लेख रहा करते थे। परंतु यह क्रम अधिक दिनों तक न चला और उक्त पत्र केवल उर्दू में निकलने लगा और अबतक उसी भाषा में निकलता है। मुंशी नवलकिशोर के प्रेस से "अवधसमाचार" हिंदी में निकला, परंतु स्वर्गीय बालमुकुन्द गुप्त के शब्दों में वह "ग्राहकों के अभावकी शिकायत कर परलोक को चला गया"। यद्यपि इसी प्रेस से निकलने वाले "अवध अख़बार" को भी अनेकवार घाटे की "शिकायत" करनी पड़ी, परंतु उर्दू के सौभाग्य से १८५९ ईसवी से वह आजतक चल रहा है।

अवध के पत्रों में कालाकांकर का दैनिक 'हिन्दोस्थान" विशेष उल्लेखयोग्य है। १८८५ से इस का निकलना प्रारम्भ हुआ और कुछ वर्षों तक इस ने देश की अच्छी सेवा की। पं० मदनमोहन मालवीय, स्वर्गीय पं० प्रतापनारायण मिश्र आदि हिंदी के मर्मज्ञ लेखकों ने समय २ पर इस का सम्पादन किया और यह पत्र बहुत दिनों तक हिंदी का एकमात्र दैनिक रहा। इस के अध्यक्ष कालाकाँकर के राजा रामपालसिंह के शरीर के साथ यह भी अस्त हो गया। उक्त राजा महोदय की शोचनीय मृत्यु के बाद वहीं से "सम्राट्" नामक दैनिक पत्र निकला, परंतु दैवदुर्विपाक से पत्र के स्वामी की अकाल मृत्यु के कारण यह पत्र भी वर्ष ही दो वर्ष की अवस्था में चल बसा।

इस स्वागतसमिति के मंत्री बाबू गोपाललाल ने "नागरीप्रचारक" मासिकपत्र कई वर्ष पूर्व निकाला था। निकलने के कुछ दिनों बाद वह हिंदी के भक्त और लेखक बाबू श्यामाचरण बनर्जी के प्रेस से निकलने लगा। उक्त महाशय हानि उठा कर भी इसे कई वर्ष तक चलाते रहे, परंतु इस वर्ष यह भी बंद होगया। पत्र अच्छा निकलता था। शोक है कि हिंदीप्रेमियों से इसे उचित आश्रय नहीं मिला।

इधर ८।९ वर्षों से इस नगर से "आनन्द" नामक साप्ताहिक पत्र निकलता है, परंतु यह कहते हमारे आनन्द का ह्रास हो जाता है कि यह अभी तक हिंदी के प्रभावशाली पत्रों में अपनी गणना नहीं करा सका। 'हिंदी बंगवासी" "श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार" आदि कई प्रतिष्ठित पत्रों के भूतपूर्व सम्पादक पं० शिवविहारीलाल वाजपेयी ने इधर कई महीनों से इसी नगर से "अवधवासी" नामक साप्ताहिक पत्र निकालना आरम्भ किया है। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" के सिद्धांत को चरितार्थ करने में तो अभी तक यह कृतकार्य्य नहीं हुआ, परंतु वाजपेयीजी का उद्योग और उत्साह सराहनीय है। अवध से एक प्रभावशाली हिंदीपत्र के निकलने की बड़ी ही आवश्यकता है, परन्तु अवधवासियों का ध्यान न जाने इस अभाव की ओर क्यों नहीं जाता, क्या मैं आशा कर सकता हूं कि अवधवासी हिंदीभक्त शीघ्र ही इस कलंक से मुक्त होने की चेष्टा करेंगे।

नागरीप्रचारिणी सभाओं के स्थापन करने का भी अवध ने कोई उद्योग नहीं किया। आशा है, लखनऊ की हिंदी-साहित्य सभा के द्वारा अवध का बहुत कुछ हितसाधन होगा। इस सभा ने जन्मते ही अपनी कार्य्यकारिता का बड़ा ही उत्साहजनक परिचय दिया है, जिस का परिणाम यह समारोह है।

सम्मेलन की स्थायी समिति ने हिन्दी की परीक्षाओं का प्रबन्ध किया है, यह हिन्दीप्रेमियों से छिपा नहीं है। इस प्रथम वर्ष की प्रथमा परीक्षा में लखनऊ के पं० लक्ष्मीधर शुक्ल प्रथम हुए हैं। यह भी हमारे लिये गौरव की बात है।

मनुष्यगणना के गत विवरण से पता चलता है कि अवध के १२०५१८०० अधिवासियों की भाषा हिंदी, ४८४६१९ की उर्दू है। शेष २१५८५ अवधवासी अन्य आर्य्य एवं अनार्य भाषाएं बोलते हैं। हिंदीभाषियों की संख्या अपेक्षाकृत अत्यधिक होते हुए भी अंग्रेजी राज्य काल में ४३। ४४ वर्ष तक अदालतों में उर्दू का ही रंग जमा रहा और हिंदी बहिष्कृत रही, यह जानकर अवध के भावी निवासियों को चकित होना पड़ेगा। सरकारी कर्मचारियों ने बहुत दिनों तक तो युक्तप्रान्त के दूरदर्शी हिंदीभाषियों की पुकार नहीं सुनी, परन्तु अन्त में मेरे मित्र माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीय आदि सज्जनों के सदुद्योग और युक्तप्रांत के तत्कालीन छोटे लाट सर एण्टनी मैकडानेल्ड की कृपा से ईसवी १९०० में नागराक्षरों को भी युक्तप्रान्त की अदालतों में प्रवेशाधिकार प्राप्त हुआ, किन्तु घोर लज्जा का विषय है कि अवध वासियों ने भी युक्तप्रांत के अन्य स्थानों के हिंदीभाषी निवासियों की भांति इस आज्ञा से कोई लाभ नहीं उठाया। सम्मेलन की स्थायी समिति तथा दो एक नगरों की स्थानीय नागरीप्रचारिणी सभाओं के उद्योग से अब कुछ ज़िलों में कुछ २ अदालती कार्य्य नागराक्षरों में भी होने लगे हैं। परन्तु हम अवध-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri and S3 Foundation USA

वासियेाँ के कानेाँ पर अभी तक जूं नहीं रेंगी। मेरे वकील मित्रगण मुझे क्षमा करें, यदि मातृभाषा के प्रति, जननी जन्मभूमि के प्रति अपना दायित्व समझ कर वे कटिबद्ध हो अपना कर्त्तव्य पालन करते तो बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो सकती थी। भविष्य में भी हिंदीभाषी वकील गण अपने कर्त्तव्य की इसी प्रकार अवहेलना करते रहेंगे, यह आशा नहीं है।

अवध में १२५५८०४ मनुष्यों का निवास है। इन में केवल ३६२५२१ मनुष्यों की पढ़े लिखों में गिनती है। इनमें २०३०४५ व्यक्ति केवल हिंदी पढ़े हैं और ८०६०५ केवल उर्दू जानने वाले हैं। इन अङ्कों से स्पष्ट है कि, हिंदीभाषियों की संख्या अपेक्षाकृत जितनी अधिक है, हिंदी पढ़ों की संख्या उतनी ही अधिक नहीं है। उर्दू और हिंदी दोनों भाषाओं के जानने वालों की संख्या ४१४७५ है। इनमें १३१७६ को तो उर्दू की अपेक्षा हिंदी का अभ्यास अधिक है और २८२९९ को उर्दू का अभ्यास अधिक है। इन अङ्कों से भी यही सिद्ध होता है कि हिंदीभाषियों की रुचि उर्दू की ओर अधिक है। इस रुचि-विकार के कारण भी विशेष हैं। उन कारणों के वर्त्तमान रहते, हिंदी-भाषियेाँ को उर्दू की ओर झुकना ही पड़ेगा।

मुख्य कारण है, उर्दू का अदालतों में अखण्ड साम्राज्य। इस विषय में युक्त प्रादेशिक गत मनुष्यगणना-विवरण के विद्वान् सम्पादक की उक्ति उद्धृत करने का लोभ मैं नहीं सम्वरण कर सकता। In practice, the Persian is still the court--script and undoubtedly this makes a difference, causing it to be the more popular.

अर्थात्--वास्तव में, अदालतों में अभी तक फ़ारसी अक्षरों का ही साम्राज्य है और इसी कारण जनता इन अक्षरों का अधिक आदर करती है।

दूसरा प्रबल कारण है, हमारे कुछ भाइयों की उर्दू से पुरानी मित्रता। जब वे मातृभाषा को भूलकर उर्दू के रंग में ऐसे रंगे कि अब मातृभाषा की याद दिलाते ही चिढ़ जाते हैं तो एक दिन उर्दू को भी भूल अवश्य जायंगे, इस में संदेह नहीं। आशा है अवध के हिंदी-प्रेमी इन कारणों के दूर करने का विलम्ब दृढ़ प्रयत्न करेंगे।

गत पूर्व वर्ष युक्तप्रदेश की administration report से ज्ञात होता है कि उस वर्ष सहसा ११-१२ की अपेक्षा ४५९ पुस्तकें कम प्रकाशित हुईं। परन्तु यह लिखते आनन्द होता है कि हिन्दी को अन्य भाषाओं की अपेक्षा कम हानि उठानी पड़ी। साहित्यिक दृष्टि से, १९१२-१३ में युक्तप्रान्त से निकलने वाले मासिक पत्रों में, पाँच पत्रों की प्रथम श्रेणी में गणना की गई। इन में हिन्दीभाषियों की आदर की सामग्री "सरस्वती" को भी स्थान मिला है, यह कम हर्ष का समाचार नहीं है। सम्पादकप्रवर पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी हिन्दीभाषियों के अवश्य धन्यवादभाजन हैं।

हिन्दीभाषियों की संख्या अत्यधिक होते हुए भी १९१२-१३ में हिन्दी पत्र ५९ निकलते थे और उर्दू पत्र ९१। हिन्दी-भाषियों की शोचनीय निर्बलता इससे सूचित होती है। केवल युक्तप्रान्त में ही नहीं सर्वत्र हिन्दीपत्रों की यही दशा है। फिर भी पत्रों की संख्या बढ़ती जारही है यह हर्ष का विषय है। इस वर्ष हिन्दीसंसार में एक नवीन स्थायी दैनिक ने भी कलकत्ते वालों की कृपा से दर्शन दिये हैं। ईश्वर करे यह चिरजीवी होकर हिन्दीभाषी समुदाय की सेवा करने में दृढ़ रहे। यद्यपि धीरे २ हम अग्रसर हो रहे हैं तथापि उर्दू पत्रों के प्रचार की तुलना में हिन्दी-पत्रों का प्रचार नगण्य है। हिन्दी ही क्यों, बङ्गला, मराठी आदि अत्युन्नत देशीय भाषाएं भी इस विषय में उर्दू का सामना नहीं कर सकतीं। जहां तक मुझे विदित है ४-५ मास पूर्व बंगाल की राजधानी कलकत्ते से केवल दो दैनिक पत्र निकलते थे। परन्तु लाहौर से दर्जनों उर्दू दैनिक निकलते हैं; जिनका प्रचार भी बहुत अच्छा है।

अनेक विषयों में सन्तोषजनक उन्नति न होने पर भी हिन्दी प्रेमियों के उद्योग से हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है। परिव्राजक सत्यदेवजी आदि मातृभक्तों के उद्योग से नगर नगर में नागरीप्रचारिणी सभाएं स्थापित हो रही हैं। कुछ ही वर्ष पूर्व हिन्दी-भाषी बी. ए. एम.ए. युवक मातृभाषा को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। परन्तु सन्तोष का विषय है कि अब उनका भी ध्यान इस ओर आकर्षित होने लगा है। उपयोगी पुस्तकों की वृद्धि की ओर भी दिन २ अधिक ध्यान दिया जा रहा है, यह गत कई वर्षों में प्रकाशित "हिन्दी पुस्तकों की सूची" से स्पष्ट हो जाता है। काशी की नागरीप्रचारिणी सभा ने इस वर्ष में मनोरञ्जन ग्रन्थमाला प्रकाशित करने का सङ्कल्प कर अपने निरन्तर उद्योग का नवीन परिचय दिया है। इस ग्रंथमाला के कई पुष्प खिल कर हिन्दीरसिकभ्रमरों को आमोदित भी कर रहे हैं। इसका श्रेय बाबू श्यामसुन्दरदास को प्राप्त है।

चारों ओर से उत्साहजनक लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं। परन्तु इस वर्ष हिन्दी आकाश के भट्ट-भास्कर के अस्त हो जाने से हिन्दीसंसार में अन्धकार छा गया है। स्वर्गीय भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के सहयोगी, हिन्दी के मर्मज्ञ लेखक और प्रचारक पं० बालकृष्ण भट्ट इस वर्ष इस असार संसार को त्याग देवलोक को पधार गये। पं० बालकृष्ण भट्ट ने जैसी मातृभाषा की निःस्वार्थ सेवा की, उसका साङ्गोपाङ्ग वर्णन करना बड़ा ही कठिन है। स्वर्गीय भट्टजी महाराज सद्गुणों का समूह थे। मातृभाषा-भक्ति, देशभक्ति, धीरता, सत्यता, स्पष्टवादिता, दृढ़ता आदि सद्गुण उक्त महात्मा की नस नस में भरे हुए थे। भट्ट जी के स्थान की पूर्त्ति होना सहज नहीं है। भट्ट जी ने तो आजन्म मातृभाषा की, जन्मभूमि की सेवा कर अपना जीवन सार्थक किया; और "शोचनीय कहीं कोशल राऊ। भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ" के अनुसार भट्ट जी के लिये कोई शोच नहीं है। शोच इस बात का है कि, हिन्दीसंसार भट्ट जी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन न करसका और वे चल बसे। परन्तु अब पश्चात्ताप व्यर्थ है। उनके प्रदर्शित मार्ग पर चल कर हम लोग उनके प्रति अपनी इच्छा प्रकट कर सकते हैं। आशा है, हिन्दी संसार इस महानुभाव की स्मृति जागरूक रखने का कोई विशेष प्रयत्न अवश्य करेगा।

अब मैं आप लोगों का अधिक समय नष्ट करना नहीं चाहता। उपसंहार में केवल यही निवेदन है कि, अभी हम लोगों ने चतुर्थांश मार्ग भी नहीं नाप पाया है। गन्तव्य स्थान अभी दूर है। जननी जन्मभूमि और मातृभाषा का स्मरण कर हम लोगों को बिना उद्दिष्ट स्थान पर पहुंचे क्षण भर के लिये भी उद्योग शिथिल न करना चाहिये। "कार्य्यं साधयेयं वा शरीरं पातयेयं" महामन्त्र हम लोगों का सिद्धान्त होना उचित है। दृढ़ता और अध्यवसाय से कार्य्य में एक दिन सफलता होना अवश्यम्भावी है।

"श्रेयांसि बहुविघ्नानि" के अनुसार हमें पद २ पर कठिनाइयों का, दारुण विपत्तियों का सामना अवश्य करना पड़ेगा परन्तु "मनस्वी कार्य्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्" बार २ कार्य्य में विफलता होना भी सम्भव है परन्तु कार्लाइल के अनुसार failures are the pillars of success विफलताएं सफलता के स्तम्भ हैं यही हमें समझना पड़ेगा। मातृभाषा का प्रचार करना, हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का उद्योग करना हम लोगों का परम कर्त्तव्य है, यह भाव हम लोगों के चित्त से एक क्षण के लिये भी न हटना चाहिये।

नवयुवको! यह दायित्व तुम्हारा है। हिंदीभाषियों के आशा स्थल तुम्हीं हो। बिना विलम्ब इस पवित्र कार्य में अपने बड़ों का हाथ बटाओ। यही तुम्हारा परम धर्म है। ईश्वर तुम्हें शक्ति और सफलता देगा।

समागत सज्जनो! यद्यपि आप लोग पहले ही पं० श्रीधर जी पाठक को सभापति निर्वाचित कर चुके हैं, परन्तु मैं नियमानुसार आप लोगों का पुनः हार्दिक स्वागत करता हुआ यह प्रस्ताव करता हूं कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि पण्डित श्रीधर जी पाठक सभापति का आसन ग्रहण कर हम लोगों को कृतार्थ करें।

रामपालसिंह सी. आई. ई.
(कुर्री सुदौली)
सभापति—
पञ्चम-हिन्दी साहित्य सम्मेलन—लखनऊ.

पञ्चम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

सभापति के वक्तव्यके

आवश्यक उदाहरण

अहो विबुधवर वृन्द सुजन श्रीमन्त पूज्य प्रिय, भारत सरसुति सुभग भुअन जस भनित अद्वितिय, आरज गौरव रूप आर्य जीवन अनूपधन, आर्यवंश अनुरूप अखिल कृतकार्य आर्यगन, सब विधि सुघर सुजान विविध विज्ञान ज्ञान निधि, हिन्दी गर्व गुमान प्रान सर्वस्व सर्व विधि, निज भाषा हित विहित सतत व्रत अमित प्रेम अब, सम्मेलन संगठित सुहृद संगत हृदयंगम, कवि कोविद वर सबहि सूर हरिचन्द चंद सम, करि सदय स्वीकार बंधुगन अभिवन्दन मम।

यह सम्मेलन हिंदी-साहित्य के प्रेमियों का है जो कि उस साहित्य की समुन्नति और प्रचारक विषय विचार के लिए हर साल संगठित होता है। इससे पहिले ४ सम्मेलन हो चुके हैं, यह ५ वाँ है। हिंदी भाषा और उसके साहित्य के निरूपण में, पूर्व सम्मेलनों में, बहुत कुछ कहा जा चुका है जो कि सामान्यतः कुतूहल शांति के लिये पर्याप्त है। अतः वर्तमान सम्मेलन में उस पर सविशेष कथोपकथन अनपेक्षणीय प्रतीत होता है।

हिंदी भाषा का देवाणी संस्कृत से प्राकृत द्वारा उत्पन्न होना सर्व-विदित और हिंदी शब्द का पंजाब के प्रसिद्ध नद 'सिंधु' से सम्बद्ध होना प्रायः सर्वसम्मत है—संस्कृत 'सिंधु' का बिगड़ा हुआ फ़ारसी 'हिंद' और "हिन्द" से बने हुए 'हिन्दसा', 'हिन्दू', 'हिन्दवी' 'हिन्दुस्तान' 'हिन्दी' 'हिंदुस्तानी'—ये शब्द भारतवर्ष के इतिहास में प्रतिष्ठा पाये हुए हैं। 'हिंद' शब्द की 'भारत' वाचकता को प्रमाण अनपेक्षित है, तथा 'हिंदी' भाषा को भारतीय-भाषा की बोधकता स्वतः प्राप्त है।

'हिंदी' हमारी भाषा का प्रकृत वा "जनस का" नाम है जिसका प्रयोग हमारे साहित्य में बाहुल्य के साथ हो चुका है और होता है। अतः वर्तमान के अनेकों संशोधक जो इस नाम के व्यवहार को त्याज्य सिद्ध करने के लिये भांति भांति की युक्तियां देते हुए उसके बहिष्कार में तत्पर हैं, केवल अपनी शक्ति और समय के अपव्यय में प्रवृत्त हैं। 'हिंदू' शब्द का, कि जिससे 'हिंदी' शब्द सम्बद्ध है, किसी दूसरी भाषा में अर्थ चाहे जो हो, चाहे वह अवमानना-सूचक हो, चाहे घृणाव्यंजक हो; और वही अर्थ उसका चाहे संस्कृत में भी घुस पड़ा हो; (संस्कृत में उणादि से क्या २ नहीं हो सकता) हमारी इस भाषा में उसका वह अर्थ नहीं है।

हम अपने को "हिंदू" बड़े अभिमान के साथ कहते हैं और बहुत काल से कहते आये हैं। क्या एक यही बात 'हिंदू' और 'हिन्दी' शब्दों को हमारे निकट समादरणीय सिद्ध करने के लिये पुष्ट प्रमाण नहीं है? संशोधक-समुदाय 'हिंदी' के स्थान में "आर्यभाषा" का प्रयोग करते हैं। कुछ क्षति नहीं, करें, "आर्य्यभाषा" ही नहीं बल्कि "नागरी-भाषा" या 'भारतभाषा' और भी कोई हिन्दी के पर्यायवाची शब्द यदि मिलसकें तो कभी २ उपयुक्त रीति से उन्हें भी चाहें व्यवहार में लावें, परन्तु 'हिंदी" शब्द के बहिष्कार में प्रवृत्त न हों, क्योंकि इस की कोई युक्तिसंगत आवश्यकता दिखाई नहीं देती। और यदि यह शब्द सर्वथा हमारी हीनता का द्योतक है और नीच है तो क्या हम इसकी शुद्धि करके अपनी भाषा में नहीं मिला सकते?

भाषा की उत्पत्ति और नाम की व्युत्पत्ति के अतिरिक्त दो एक और बातें हैं जो कि कभी २ हिंदी के प्रेमियों के चित्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेघचंचलता का संचार करदिया करती हैं। उनमें से एक यह है कि जहां तहां विरोधियों की ओर से प्रायः प्रश्न उठा करते हैं कि हिंदी क्या सचमुच कोई भाषा वा स्वतन्त्र भाषा है? क्या इसका भी संसार की भाषाओं में कोई स्थान है? ये सचमुच बड़े अनोखे प्रश्न हैं; विशेषकर जब कि इनके करने वाले उन्हीं लोगों में से हैं कि हिंदी जिनकी मातृ-भाषा या "मादरी ज़बान" है। इन प्रश्नों का पूरा परितोषप्रद उत्तर दिया जा चुका है, यद्यपि उत्तर देने का कष्ट करने की कोई आवश्यकता न थी। क्या सूर्य की प्रकाशवत्ता अथवा विश्व की महत्ता को साबित करने के लिये सबूत देने की ज़रूरत हुआ करती है? ऐसी बातों से क्षोभ उत्पन्न होता है, इस लिये उनकी चर्चा को छोड़ देनाही श्रेय है। हमारी भाषा को हम जानते हैं और यदि हमारी कार्यपरता में त्रुटि न हुई तो थोड़े ही समय में वे भी जान जायँगे जो उस से अभी अनजान हैं या जानकर भी अनजान बनते हैं।

सहृदयवृन्द, हमारा साहित्य हमारी जातीय सम्पत्ति है, हमारी जातीय प्रतिमूर्ति वा जातीय स्थिति का दर्पण है। साहित्य और जातीयत्व का सर्वत्र सचमुच ऐसा ही अन्योन्याश्रय शाश्वत सम्बंध है, यह कभी न भूलना चाहिये। प्रत्येक देश के सामयिक साहित्य की स्थिति से उसकी उस समय की जातीय स्थिति अनुमेय होती है। साहित्य की उन्नति, अवनति और देश का उत्थान, पतन एक ही बात है। अन्यत्र न जाकर अपने ही यहां इस का उदाहरण देख लीजिए। चन्द्र के समय से हरिश्चन्द्र के समय तक जो जो पलटे भारतीय जीवन ने खाये क्या वे उस समय के स्वरूप साहित्य में बहुत कुछ प्रतिबिम्बित नहीं हैं? उस युग में जातीयता विशेष कर धार्मिक स्थिति में संनिहित थी। अकेला भारत ही नहीं, लगभग सभी सभ्य जगत् उस काल में मत मतान्तरों के जगड्वाल में जकड़ा हुआ था। तब जातीयता बहुधा धर्म वा धर्म सम्बन्धी विश्वास से निर्द्धारित होती थी। सम्पूर्ण जातीय बल सर्वत्रैव उसी में एकत्रित था। अब भी संसार के कई भागों में लगभग ऐसी ही स्थिति है। परन्तु कई भागों में भारी परिवर्तन हो चला है, जहां जातीयता का सम्बंध धार्मिक बंधनों को तोड़ कर मनुज-समाज की सामान्य बन्धुता से जुड़ता जाता है।

आप इस बात से अनभिज्ञ नहीं हैं कि यह अपूर्व परिवर्तन-चक्र भारत में भी प्रविष्ट हो गया है। इस के चिह्न सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इस नूतन जातीयता का वितानतंतु यहां भी आश्चर्यजनक शीघ्रता से विस्तृत होरहा है और ईश्वर-कृपा से कोई दिनों में अवश्य पूर्णता प्राप्त करेगा।

यह हमारा जातीयता-वितान जिन तंतुओं से बुना जारहा है उनके निर्माता मुख्य करके हमीहैं। तंतु-निर्माण का भार यदि सारा नहीं तो बहुत हमारे साहित्यकारों ही के सिर पर है। अतः उनकादायित्व बहुत बड़ाहै। साहित्य निर्माण को जातीयता का निर्माण ही समझना चाहिये। जातीयता का परिरक्षण, जातीयता का परिवर्तन जातीयता का संस्थापन, जातीयता का संयापन, तथैव उसकी उन्नति, अवनति, वृद्धि, ह्रास, प्रवृत्ति, निवृत्ति सब साहित्य से संलग्न हैं। इसके महत्व का दूसरा कोई पार्थिव विषय नहीं है, अतः इस से कर्त्तृत्व सम्बन्ध स्थपना करने के पहले बड़ा आगा पीछा सोच लेना आवश्यक है। लोकवृत्ति को किसी सुदृष्ट सत्पथ पर लेजाकर उन्नति की लीक में अग्रसर रखना बड़ी क्षमता का काम है। जो व्यक्ति इस क्षमता से विरहित है उसे साहित्य के कर्मक्षेत्र में पैर न रखना चाहिये।

साहित्य को सर्वांगपूर्ण और सर्वाङ्ग सुंदर बनाने और रखने तथा उसके अंग भंग की संभावना रोकने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसके सब अंगों और प्रत्येक अंग पर कड़ी और युगपत् दृष्टि रक्खी जाय। जब तक किसी उद्यान का प्रत्येक वीरुध, प्रत्येक पौधा, प्रत्येक गुल्म, प्रत्येक लता, प्रत्येक रौस, प्रत्येक क्यारी, प्रत्येक फल, प्रत्येक फूल सुचतुर माली के निरंतर निरीक्षण में रहता है तब तक उस की स्थिति रमणीय रहती है; निरीक्षण में शिथिलता आते ही दशा बिगड़ जाती है।

संसार में सुख के संचार और दुःख के परिहार के अर्थ जिन जिन साधनों की आवश्यकता जब २ और ज्यों २ पड़ती जाय, साहित्य में उनका तुरन्त प्रवेश होना उचित है। अतः संसार के यावद्व्यवहार, व्यवसाय और अध्यवसाय से साहित्यक्षेत्र सदा विभूषित रहना चाहिये। इस बात पर पूरी दृष्टि रखना सम्मेलन का मुख्य कर्त्तव्य प्रतीत होता है। यदि एक विशाल विषयावली बना ली जाय कि जिस में विश्व के यावत् हितकर विषय जो विचार में आ सकें या जिन में किसी दूसरे देश की प्रवृत्ति सुनने में आई हो, समय समय पर सन्निविष्ट कर दिये जाया करें तो साहित्य की वृद्धि में अपरिमेय साहाय्य मिलने की सुगमता हो जाय। उस से अवसर और आवश्यकता अनुसार उपयुक्त ग्रंथों की रचना में बहुत सुभीता मिल सकता है और इसी रीति के अनुसरण से साहित्य के सभी अङ्ग, उपांग क्रमशः पूर्ण हो सकते हैं। क्या ऐसी विषयावली का निर्माण असम्भव या बड़ा कठिन काम है? सम्मेलन-सम्बन्धी सभी संस्थाओं में इस लिस्ट का खुला रहना बड़ा लाभकारी समझ में आता है।

हमें चाहिये कि प्रत्येक वर्ण, प्रत्येक जाति, प्रत्येक पेशे के लिये साहित्य-रत्न संपादित कर उन्हें भारतीयता के सामान्यसूत्र में गूंथ भारतमाता को शीघ्र ही एक विशाल साहित्य-हार अर्पित करने के प्रयत्न में प्रवृत्त हों।

अपने इतिहास पुराणों का मथन कर के जो जो हमारे जातीय बलबर्द्धक उपयुक्त प्रसङ्ग मिलें उन के आधार पर उत्कृष्ट काव्य प्रस्तुत करने से क्या हमारी वर्तमान स्थिति के सुधार और उन्नति में विपुल साहाय्य मिलने की सम्भावना नहीं है? इसी प्रकार का साहाय्य दूसरे सभ्य देशों के साहित्य से अनुवाद द्वारा मिल सकता है।

अपूर्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषानुवाद २)

धर्म-निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पता साफ़हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार

बजाज़ा शहर मेरठ

गेहूं की खेती ।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिंदी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इसमें बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े बिस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कोड़ी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ ।

रामप्रसाद सबजज उज्जैन

आवश्यकता ।

श्री राजपूताना अनाथालय फतहपुर (जयपुर) के लिये एक योग्य उपदेशक की आवश्यकता है जो व्याख्यान देने और भजन गाने में कुशल हों वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा । निवेदन पत्र निम्न पते पर शीघ्र जाना चाहिये ।

मैनेजर

श्री राजपूताना अनाथालय

फतहपुर (जयपुर)

॥ ओ३म् ॥

हिन्दी चित्रमय जगत्

दिसम्बर का अंक ।

क्या आपको यह मालूम है कि युरुप में युद्ध क्यों छिड़ा ?

क्या आपको समर विजयी ब्रिटिश के पराक्रम देखने की इच्छा है ।

फ्रांस पर आक्रमण, जर्मनी का पराभाव ब्रिटिश के साहसयुक्त कर्म युद्ध का संपूर्ण रोचक वर्णनादि सुनने की तथा चित्रों के देखने की इच्छा हो तो दिसम्बर का अंक देखने को मत भूलिये।

कई आवश्यकीय व युद्ध का वर्णन सुनकर आपका चित्त रंजन करेगा ।

मूल्य साधारण कागजी की प्रति का ॥)

"आर्टपेपर" ॥।)

पूना सिटी { मैनेजर हिन्दी चित्रमय जगत्

आवश्यकता ।

एक योग्य आर्य सदाचारी पढ़ा लिखा आमदनी ७५) मास आयुः बीस वर्ष गोत्र गर्ग अग्रवाल वैश्य के लिये एक योग्य कन्या की आवश्यकता है कन्या की आयुः १४ या १६ वर्ष के करीब हो विशेष पत्र व्यवहार के लिये ।

पता—मोहर सिँह दास

रामेश्वरदास

नईमण्डी देहरी

विद्यार्थी ।

गत चैत्र मास से प्रति मास निकलने वाला । हर महीने सुन्दर चित्र । प्रसिद्ध विद्वानों के शिक्षाप्रद लेख । मनोहारिणी कवितायें । प्रायः समस्त हिन्दीपत्र-सम्पादकों में प्रकाशित । सदाचार का बीज बोने वाला । देशभक्त की ऊंची लहरें उठाने वाला । अपने पूर्वजों और प्राचीन भारत के गौरव को याद दिलाने वाला । मातृभाषा—हिन्दी—का भक्त बनाने वाला । नवयुवक विद्यार्थियों में नव जीवन डालने वाला । उच्च अभिलाष और जागृति पैदा करने वाला । भारत में भावुकों के हृदयों में भारतीय भव्य भाव करने वाला । अचेतों को सचेत करने के लिये चटकीली और चेतावनी देने वाला । हिन्दी--संसार में एक अनोखा और अद्भुत पत्र, जल्द २) भेज कर "विद्यार्थी" पत्रके ग्राहक बन जाइये और साल भर तक पढ़ पढ़ कर लाभ उठाइये । नमूने की कॉपी ≡) में मिलती है ।

४ ग्राहक बनाने वाले को साल भर विद्यार्थी मुफ्त ।

मिलने का पता—

मैनेजर, हिन्दी प्रेस प्रयाग ।

उपदेश-मंजरी ।

यह पुस्तक सभी के लिये बड़ी उपयोगी है । इस पुस्तक को सदाचार शिक्षाकी खान कहना चाहिये । लड़कों को इनाम देने के लिये यह पुस्तक बड़ी अच्छी है । जो लोग अपने लड़कों को सदाचारी और सुशील बनाना चाहते हैं उन्हें यह पुस्तक अवश्य लेनी चाहिये ।

मूल्य जिल्द वाली का ।) सादी का ।=)

कविता-विनोद

बीसियों कविताओं का संग्रह । बड़ी मनोहारिणी और शिक्षादायिनी कवितायें हैं । प्रत्येक हिन्दी-भाषी को इसे पढ़ना चाहिये । मूल्य ॥)

मिलने का पता—

मैनेजर, हिन्दी प्रेस, प्रयाग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय आगया है

धातु पुष्टि की गोलियाँ

इस शीत काल के प्रारम्भ में अधिकांश लोग पुष्टिकारक चीज़ों का सेवन करते हैं—समय भी ठीक है, परन्तु यह बात याद रखना चाहिये कि ऐसी चीज़ों का सेवन न करें जिस से गुण के बदले हानि हो।

डाक्तर वर्म्मन की धातु पुष्ट की गोलियां प्रथम दिन से अपना गुण दिखाती हैं डाक्तरी में ताकत देने वाली प्रसिद्ध दवाइयाँ फासफरम ष्ट्रिकनिया और डामियेना मिलाकर ये गोलियाँ बनी हैं। मगज रीढ़ रग मांस और खून को ये ताकत देती हैं इस लिये कमजोरी से पैदा हुए रोग जैसे—अजीर्ण, नाताकती, हवल दिल, याद भूलना, धातु क्षीणता, हाथ पैर का कांपना, नामर्दी, लकवा इत्यादि इन गोलियों से आराम होता है।

दो सप्ताह की खुराक ३० गोली की शीशी १) एक रुपया डाक महसूल १ से ४ शीशी तक ।-)

डाः एस. के. वर्म्मन ५, ६ तीराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नं० ४

एजैन्ट—बाबूराम जैन ऐन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली।

विधवा की आवश्यकता

कुछ समय हुआ मेरी पहली स्त्री का देहान्त होगया है। अब मैं एक विधवा के साथ विवाह करना चाहता हूं। विधवा की आयु २०, से २५ तक होनी चाहिये। विधवा कुछ पढ़ी लिखी होनी चाहिये। शेष पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते से कीजिये—

धन्नाराम स्टेशनमास्टर

विलसनपुर

सरगोधा लाइन

उस्तरे को बिदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजरहिमालय कम्पनी कंखल

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही ज़िद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना, बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफतमिलेगा।

दद्रुगजकेसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

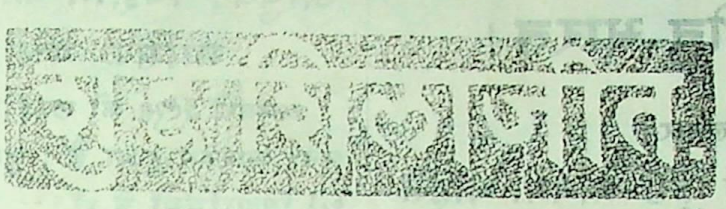

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना बुखार, खाँसी, विक्षिप्तता, रक्तविकार, सूजन, कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।=)
१०	४।)	।=)
२०	८)	।=)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥=)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पता:—

बाबू पंचमसिंह वर्मा

माली, कारख़ाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आमलीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं। ।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

॥ ओ३म् ॥

१५ अप्रैल सन् १५ में बंटेगा

सत्ये नास्ति भयं क्वचित्

१००००) रूपया इनाम।

कमज़ोरी दिमाग़ के लिये (अमृतप्रवाह) व अपूर्व शक्ति वर्द्धक (धातु पुष्टि चूर्ण) के ४०००० ग्राहकों में सब कार्य सभा के द्वारा होगा हरेक ग्राहक भी मेम्बर हो सकेंगे अधिक हाल जानने के लिये नियमावली हमारे यहां से मुफ्त मंगाइये।

पता—सूर्य्य औषधालय

सेनेटरीरोड-लखनऊ

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ्त मिलेगा मंगा देखिये। एच० एच० शर्म्मा (व)

बरियापुर

जि० बनारस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नई पुस्तक! अपूर्व पुस्तक।

महर्षि पतंजलि और तत्कालीन भारत।

लेखक—(प्रतिष्ठित) स्नातक चन्द्रमणि विद्यालंकार।

यदि आप महर्षि पतंजलि के विषय में कुछ जानना चाहते हैं, यदि आप पतंजलि के समय का वास्तविक भारत इतिहास जानने के उत्सुक हैं यदि आप महाभाष्य जैसे बड़े भारी ग्रन्थ का ऐतिहासिक निचोड़ विना किसी परिश्रम के देखना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। मूल्य केवल ।=) है।

पुस्तक भण्डार गुरुकुल
कांगड़ी, हरिद्वार

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहनजी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रांत

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है। शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क, प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

वर की आवश्यकता।

एक कान्यकुब्ज द्विज भारद्वाज गोत्र(पांडेय खोरकित्वर) की कन्या जिस की आयु १६ वर्ष है सब अंग हृष्ट पुष्ट हैं गुण कार्यमें निपुण तथा सुशिक्षित है और बेल बूटे का काम भली भाँति जानती है उसके निमित एक योग्य वर (षट्—कुल) की आवश्यकता है। निम्न लिखित पते पर पत्र व्यौहार शीघ्र करें।

पं० मूलचंद जी शर्म्मा
इम्पीरियल कैपीटल
वर्कस
अजमेरी दर्वाज़ा—देहली

बेचते नहीं बांटते हैं

बाल उडाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ९ मिनट में उडाकर साफ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घडी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता-

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप ब्रादर्स आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटी

(३) शंकरलाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० हीरालाल c/o म० भगवान्दास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली

(५) भारत सेवक एजन्सी देहली

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Registered No. L.807

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है

२७ मार्गशीर्ष सं १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० १२ दिसम्बर १९१४

संख्या ३५
भाग २६

सचित्र

नैपोलियन बोनापार्ट ।

लेखक—इन्द्र वेदालङ्कार

बीरवर नैपोलियन का नाम किसने न सुना होगा और उसका चरित कौन न पढ़ना चाहेगा। चरित क्या है, हृदय को उत्साहित करनेवाला सच्चा उपन्यास है।

लीजिये

चरित और उपन्यास इकट्ठा पढ़िये, और भयानक लड़ाइयों के अद्भुत चित्र भी साथ ही देखिये।

सादी का मूल्य	१।।)
प्रचारक के ग्राहकों से	१।)
अजिल्द का मूल्य	१।।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गए हैं।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

ऋषि दयानन्द

का

पत्र व्यवहार

इस पुस्तक में ऋषिदयानन्द के अलभ्य पत्रों का संग्रह किया गया है, जिससे ऋषि के जीवन के विषय में कई नई बातें पता लगती हैं। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई एक सारगर्भित भूमिका है।

मूल्य ।-)

प्रचारक के ग्राहकों से ।)

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकुर झी" नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिये। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरीहुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहिनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिये। वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहतेहैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक अवश्य पढ़िये। आज कल र[illegible] पुकार तो बहुत सु[illegible] राष्ट्र और उन्नति क्या [illegible] थोड़े लोग जानते हैं [illegible] फ्रांस, जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्रजादि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

राष्ट्रीयता का मूल मंत्र तय्यार होगई।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिसकी पहिली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है। इसके लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं। एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है। इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिये क्या गुण आवश्यक हैं। जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक

देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निर्बल सेवक।

अपने उद्देश्य का एक मात्र साप्ताहिक पत्र।

आठ पृष्ठ और मूल्य केवल १॥) वार्षिक।

अवश्य मंगाइए!!! क्योंकि:-

१—इसने केवल निर्बलों की सेवार्थ जन्म लिया है।

२—आपस के झगड़े मिटा एकता करना इसका धर्म्म है।

३—यह पत्र आर्थिक लाभ के विचार से नहीं निकाला गया। पत्र के लिए बिना हिसाब व्यय होता है।

मैनेजर निर्बल सेवक "धर्म"

देहरादून

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने वालोंको

चाँदी का पदक।

शर्मा प्रेम वर्धनी लाइब्रेरी के ज्वाइंट सेक्रेटरी महाशय रामस्वरूप शर्मा लिखते हैं कि जो सज्जन १५ दिसम्बर १९१४ तक सद्धर्म प्रचारक के सब से अधिक ग्राहक बढ़ायेंगे उन्हें वे एक चांदी का पदक प्रदान करेंगे।

प्रचारक के प्रेमियो! जागो, और प्रचारक के साथ अपने प्रेम का प्रमाण दो। अब प्रचारक आपके प्रेम का पात्र बना रहेगा।

इन्द्र—सम्पादक

प्रचारक का वार्षिक मूल्य
सर्वसाधारण से ...
विद्यार्थियों से ...
भारत विभिन्न देशों से ...

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ...)
तीन मास " " " " ...)
छः " " " " " ...)
कालभर " " " " ...)

अधिक देर तक विज्ञापन देने के व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहिले देखे बिना प्रचारक में कोई पत्र नहीं बंट सका।

(२) क्रोड़पत्र में आधा कालम सम होने चाहिये। क्रोड़पत्र के सिरे पर सम्पादक का नाम और बंटने की तिथि छपी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्तासे पूछ कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता— जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटेरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६॥ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शह

प्रो० राममूर्ति का व्यायाम

दूसरी बार २००० छाप =)]
थोकमाल लेनेवालों को अच्छा कमीशन दिया जायगा

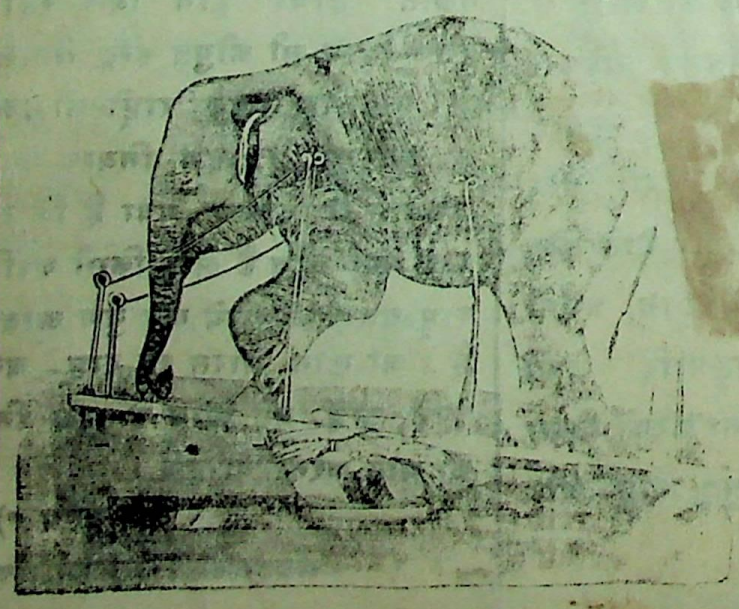

प्रचारक के ग्राहकों को एक मास तक महसूल नहीं देना पड़ेगा

बिकट बदलोअल ।) घटनाघटाटोप १।।।) परिमल ।।।) भारतकी प्राचीन झलक १) वीरवीरांगना ।=) नूरजहां ।) कलावती ≡) रानी पद्मा ।=) भोजपुर की ठगी ॥) नीलवसना सुन्दरी १।) कौशलकिशोर ।) घोर सुल्तान १) वीर नारी जया ॥) शिवाजी ।) सांगा और बाबर ।) राजपूतों की बहादुरी ॥) वीर हम्मीर =) झांसी की रानी ।।) वीर जयमल ।=) नवाब नन्दिनी १।) रानाप्रतापकी वीरता =) महाराष्ट्रोदय -)॥ रत्नी देवियां ।=) हमारी मातायें ॥=) वीर विदुषी स्त्रियां ॥) भीष्मपितामह =) सिक्खों का साहस =) मेवाड़ का उद्धार कर्त्ता =) सिक्खों के दस गुरु ॥) हकीकतराय धर्मी -)॥ दस महारानियां ॥) वैदिक विवाहादर्श १) तांतिया भील =) ऋतुचर्या १) फुटबाल -)॥ पाकरा ।=) राममूर्ति का व्यायाम =)

पता— माणिक कार्यालय
(बनारस सिटी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल स्थिर कोष की पूर्ति के लिये अब मेरी प्रतीक्षा मत करो।

मैंने प्रतिज्ञा की थी कि नगर नगर, ग्राम ग्राम में भ्रमण करके मैं गुरुकुल स्थिरकोष के लिए धन एकत्र करूंगा। मेरी इसी प्रतिज्ञा पर गुरुकुल की स्वामिनी सभा ने मुझे दो वर्ष का अवकाश भी दिया था। इसी अन्तर में मुझे स्वास्थ्य ठीक करने की आज्ञा थी, परन्तु कराची, क्वेटा जैसे दूर स्थानों में जाने से भी अभीष्ट सिद्ध न हुआ। आबा जाई में ही सारे आराम की कसर निकल गई। फिर गुरुकुल लौटकर "आर्य्यपथिक लेखराम' की जीवनी लिखने में प्रवृत्त हुआ। बीच में दिल्ली और अम्बाला से धनलाने का विचार हुआ। पुस्तक को अधूरी छोड़कर दिल्ली गया। वहां तय्यारी के लिए अभी तीन व्याख्यान दिए थे कि शिरपीड़ा आरम्भ हुई। इसी अवस्था में प्रतिज्ञानुसार अम्बाला छावनी गया। वहाँ नगर में एक तथा छावनी में दो व्याख्यान दिए, धन भी ३४००) लिखा गया, परन्तु गला, शिर तथा सब कुछ गंवा और १०६ दर्जे का ज्वर साथ लेकर दिल्ली लौटना पड़ा। जब वहां निर्बलता बढ़ी तो गुरुकुल चला आया जहां पहुंचते ही विचित्र अनुकूल जलवायु ने मुझे ठीक करदिया।

आर्यपथिक लेखराम के 'जीवन चरित्र' का भी मुझ पर एक ऋण था। अभी निर्बल ही था कि मैंने उसे समाप्त करने की ठानली और वहां १० दिनों में मैंने शेष १३२ पृष्ठ के लिये लेख समाप्त किया वहां गुरुकुल यन्त्रालय के कर्मचारियों ने १२ दिनों में १५२ पृष्ठ छापकर पुस्तक ही तय्यार करदी। यह मेरा शायद बीसवां अनुभव है कि निकम्मापन आराम नहीं प्रत्युत सब से बढ़कर विश्राम आत्मप्रियकार्य में लगन से जुट जाना है। मैंने अपना कर्त्तव्य पालन कर दिया, अब जो चाहे आर्यपथिक का जीवनचरित्र पढ़ सकता है।

धन एकत्र करने बाहर जाना अब मेरे लिए कठिन है। इस लिए अब गुरुकुल में ही निवास करूंगा परन्तु

धन बिन भी काम नहीं चलेगा।

इस लिये मेरी प्रतीक्षा छोड़कर गुरुकुल के सर्व प्रेमियों को धन एकत्र करने के काम में लगजाना चाहिये। उसकी कई विधियां हैं और भिन्न २ कार्य करने वाले अनुकूल विधि से काम कर सकते हैं।

धन एकत्र करने के प्रकार

अनेक हैं जिन में से कुछ का वर्णन यहां कर देता हूं :—

(१) गुरुकुल के स्नातकों ने एक २ सहस्र प्रतिवर्ष एकत्र करके देने की प्रतिज्ञा की है। उन्हें अभी से हिलना चाहिये।

(२) इसमें संदेहनहीं कि आर्य्यसमाज के बाहर से जब तक सहायता न मिलेगी तब तक १५ लाख जमा होने की कम संभावना है, परंतु जब घरवाले चुप हों तो बाहर से कौन देगा। मैं पहले ही यह प्रस्ताव प्रस्तुत करचुका हूं कि यदि प्रत्येक नहीं तो प्रत्येक देश में एक आर्य्य पुरुष भी अपनी सारी जायदाद का दशवां भाग रोक में परिवर्त्तित करके गुरुकुल स्थिर-कोष में देदे तो १५ लाख का बड़ा भाग इसी प्रकार जमा हो सक्ता है। हम देखते हैं कि यदि कोई सम्बन्धी विपत्ति में फंस जाय वा कुल अन्य कष्ट हो तो जायदाद का अर्ध भाग तक भेंट करदिया जाता है गुरुकुल भी तो सम्बन्धी ही है, इसकी विपत्तिमें क्या सहायता न होनी चाहिये। इस अंश में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के संरक्षकों का बड़ा भारी कर्त्तव्य है यह बात स्पष्ट है कि जो महाशय इस समय स्थिरकोष को ५०००) वा १०००) वा ५००) देकर सहायता करेंगे उनसे फिर गुरुकुल के लिए कुछ न मांगा जायगा। अपनी प्रसन्नता से चाहें वे कितना ही धन फिर देते रहें परन्तु इधर से कोई याचना न होगी।

(३) जो स्वयम् नहीं देसक्ते वे दूसरों को प्रेरित करें और भिक्षा करके ५००) वा १०००) वा ५०००) की रक़म देवें। आर्य पुरुष भूले नहीं हैंगे कि लुधियाने के श्री लछमूराम नय्यड़जी ने ५०००) से अधिक जमा करके सदा के लिए एक विद्यार्थी के विद्योपार्जन का प्रबन्ध करदिया है।

कहां तक लिखा जावे अपनी अपनी रुचि तथा अपनी अपनी शक्ति के अनुसार सभी काम करसक्ते हैं।

इस प्रकार जो भी धन आवेगा वा प्रतिज्ञाएं होंगी उनकी सूचि मैं प्रचारक के १६ पौष, १९७१ के पश्चात् के अङ्क से देना आरम्भ करदूंगा जिससे सर्व साधारण को पता लगता रहेगा कि कितना काम करना बाक़ी है।

मुन्शीराम जिज्ञासु।

—०—

(समालोचना)

हमारी टेबल पर कई पुस्तकें समालोचनार्थ आई हुई हैं। जिन पर भारतीय जनता को ध्यान देना आवश्यक है।

दया स्वीकार—मांसतिरस्कार—पुस्तक की छपाई साफ़ १०२ सफ़ों में समाप्त है। ये पुस्तकें सर्वसाधारण में दयाधर्म का तत्त्व फैलाने हेतु बनाई हैं ऐसी पुस्तकें प्रचारक लोगों को मुफ़्त मिल सकती हैं। इस पुस्तक में शास्त्रीय दृष्टि तथा वैज्ञानिक दृष्टि से मांस का त्याग तथा पशुरक्षण का समर्थन किया है पुस्तक पढ़ने के योग्य है। प्रत्येक दयाशील को यह पुस्तक देखनी चाहिये निम्नलिखित पते से अन्य ऐसीही पुस्तकें भी मिल सकती हैं।

पता—दयाचन्द्र जैन बी. ए.
मन्त्री जीवदयाविभाग
भारतजैनमहामंडल
वैरूनीखंदक लखनऊ

मारवाड़ी-सहायक-समिति—प्रथम वार्षिक विवरण तथा नियमावली आदि सब छपकर तय्यार है जिस देश सेवी को आवश्यकता होवे मंगा पढ़ सकता है और जान सकता है मारवाड़ी लोग भी किस प्रेम से देश सेवा कररहे हैं। इस समिति ने सब व्यापारिक सेठ साहूकारों के लिये एक उदाहरण अनुकूल करने के योग्य रख दि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। जिसके देखा देखी वे भी नयी शदे-सेवी समितियां बनाकर अपने द्रव्य का सदुपयोग करें।

पता—दुर्गाप्रसाद गुप्त
बी. एल. प्रेस
१। २ मछुआ बाज़ारस्ट्रीट कलकत्ता।

फक्किका लेखन-प्रणाली निदर्शकम्—नाम का लघु व्याकरण पुस्तक व्याकरण के छात्रों को शंका समाधान मार्ग सहायता देने में बड़ा उपयोगी है। फक्किकायें सुगमता से बनानी आजाती हैं। पता—मुन्शी बाबूलाल
श्रीराघवेन्द्र प्रेस, इलाहाबाद

हिन्दीभाषा महाभारत सचित्र—बड़ा अच्छा प्रयत्न है कि हिंदी के लेखक जहाँ अन्य प्रकार की नवीन पुस्तकें निकालते हैं दूसरी तरफ़ प्राचीन पुस्तकों का भी प्रकाशन सर्वसाधारण के हितार्थ होता जाता है। यह महाभारत मातृभाषा के प्रचार भक्तजनों के हितार्थ धर्मशिक्षा के प्रचारार्थ प्रकाश की जारही है। सर्वसाधारण पर धनव्यय का भार न पड़जाय अतः यह ग्रन्थ खण्ड २ में छप रहा है, प्रतिमास एक खण्ड प्रकाशित हो जाता है। २) रुपया भेज देने से साल भर में ४८० पृष्ठों का एक पुस्तक बड़े आकार में घर पहुंच जायगा। प्रति खण्ड का मूल्य ।) निर्धनों तथा विद्यार्थियों से विशेष सूचना पर केवल १॥) लिया जाता है।

पता—रामभेजा वर्मा
महाभारत कार्यालय
लाहोरी टोला बनारस
सिटी।

धर्मवीर—साप्ताहिक पत्र के रूप में हिंदी का नया सहयोगी हाल ही में कानपुर से जन्म लिया है। इस के सम्पादक महोदय का नाम हमें पता नहीं परन्तु फिर भी पत्र ने सर्वप्रिय बनने का विशेष परामर्श दिया है। पहला अङ्क तो रंगीन काग़ज़ों पर बड़ी शान से निकला है। आगे का भगवान् जाने क्योंकि आज कल पत्रों पर सदा शनिश्चर की छाया ही रहती है। मूल्य वार्षिक २)। पता--मैनेजर धर्मवीर-कार्यालय, कानपुर

कृष्ण चरित्र—१ म भाग एक जिल्द में तथा द्वितीय से सप्तमखण्ड तक द्वितीय जिल्द में पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ने स्वर्गीय राय बंकिम बाबू चट्टोपाध्याय के बंगला कृष्णचरित्र का हिन्दी भाषान्तर किया है। पुस्तक बड़ी रोचक तथा शिक्षाप्रद है। श्री कृष्ण के मिथ्याकलंकों तथा मन घड़न्त गपोड़ों का समूल उच्छेद करने का बड़ा उत्तम प्रयत्न किया है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह ग्रन्थ बड़ा मानास्पद है। प्रत्येक भारतीय को यह पुस्तक मंगा कर पढ़ने योग्य है। इससे कृष्ण के विषय में सब प्रकार के उलटे पुलटे विचार दूर हो जाते हैं। मध्यकालीन पौराणिक सोपाधिक भक्तों ने व्यास के नाम पर और काम पर कैसा हाथ साफ़ किया है और कैसा ढोल का पोल चढ़ाकर रखा है यह सब कलई इस पुस्तक के पठन मात्र से खुल जाती है। प्रशंसा करना व्यर्थ है। भाषा ही इतनी रोचक कि पढ़ते ही बनता है। सो पाठकों का भाषालालित्य का भी रसास्वाद साथ ही होता जायगा। मूल्य १)

पता—जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी
९, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

धनुर्धर-अर्जुन—एक नयी पुस्तक नये ढंग पर लिखी गई है। इसके लेखक श्री व्रजमोहन झा हैं। आप पाठकों को नये ढंग पर महाभारत की सैर कराना चाहते हैं और अर्जुन की वीरता का साक्षाद् दृश्य दिखाना चाहते हैं। आप अपने पाठकों को अपना मित्र समझते हैं और महाभारती सैर कराने के लिये किसी न किसी व्याज से आप जब चाहते हैं तभी पाठकों को उठा ले जाते हैं। कभी सबेरे सात बजे और कभी सबेरे ९ बजे, कभी रात के ११ बजे भी नींद खोलकर उठा लेते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आपके पाठक मित्र बड़े आलसी हैं क्योंकि लेखक महाशय मित्रों को उठाते समय उनकी नींदों को बहुत कोसते हैं। ख़ैर कुछ भी हो आप अपने मन भाया दृश्य ज्यों त्यों करके दिखाई देते हैं और चन्द एक नसीहतें भी देते जाते हैं। साधारण समालोचना को इतना ही पर्याप्त समझ कर हम पाठकों का विशेष समालोचना की ओर ध्यान खेंचते हैं। साथ ही मित्र झा जी को भी ध्यान की प्रार्थना करते हैं। लेखक महाशय ने कई स्थानों पर उचित भाव नहीं दिया जिससे पाठक लोगों पर सम्भवतः अनुपयुक्त प्रभाव पड़े। उदाहरणार्थ एक आध ही पर्याप्त है। जैसे (पृ० ९० पर धृष्टद्युम्न अपनी बहन के स्वयंवर की आघोषणा देते समय बोलते हैं।

"हे महापराक्रमी नरव्याघ्रो! यह शरासन..... ये पाँच बाण.....आकाश में स्थित मछली की आंखों को वेधिये। जो इस लक्ष्य को वेध सकेगा उस की सेवामें यह कुमारी अर्पण की जायगी।

पिछले शब्दों पर ध्यान देने से प्रतीत होता है कि ये स्वयंवर नहीं पर बाज़ीका खेल है। इससे स्वयंवर के उच्च आदर्श पर कुठाराघात है। ऐसे शब्द लिखना स्त्री जाति के अधिकार और मान पर अत्याचार है। स्त्रियें दासीरूप या पारितोषिक नहीं हैं और न थीं। परन्तु मनुष्य के गुणों की बुद्धिमति परीक्षिकाऐं हैं। और लक्ष्य वेध करना कोई बाज़ी नहीं, परन्तु एक गुणपरिचायक परीक्षा मात्र है। पूर्वोक्त शब्दों के स्थान पर ये शब्द चाहियें थे:—

"जो इस लक्ष्य को वेध सकेगा मेरी भगिनी उस को योग्य पति जानकर स्वयं वरेगी,,।

हम लेखक से अनुरोध करते हैं कि इस अशुद्धि को पुस्तक से दूर करदें या इस भूलसंशोधन का एक चिट अलग छपवा कर अब से बिकने वाली पुस्तकों में वह चिट धर दिया जाय या चेप दिया जाय। इतना अनुरोध इस लिये है कि ये पुस्तक बच्चे युवक नर नारी सब ही के हाथों में जायगी। आजकल समाजसंशोधक और साहित्यशिक्षकों को ऐसी बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिये। यदि झा महाशय कहेंगे तो हम ऐसे ही अन्य कई स्थलों पर भी ध्यान दिलाएंगे।

छपाई अच्छी है। मूल्य ।)

पता—मर्चन्ट प्रेस, कानपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

दिल्ली से विदाई

दैव सद्धर्मप्रचारक को दिल्ली में खेंच लाया और वहीं उसे ले जारहा है। सद्धर्म-प्रचारक के भाग्यों में दिल्ली की सैर लिखी थी। माथे का लिखा नहीं टल सकता। प्रचारक ने दिल्ली में दो वर्ष बिताये हैं। अब वह फिर विदाई चाहता है।

सद्धर्मप्रचारक गुरुकुल में बड़ी उत्तमता से चल रहा था। उसकी दिनों दिन उन्नति हो रही थी। उसी समय दैवी विपत्ति आई। गुरुकुल--प्रेस में आग लग गई। अग्निदेव ने जहां गुरुकुल के लगभग आठ दस हज़ार रुपये स्वाहा कर दिये, वहां सद्धर्मप्रचारकपत्र का जीवन ही सन्देह में डाल दिया। आर्थिक दशा को दृष्टि में रखकर गुरुकुल के अधिकारियों ने अपना प्रेस दिल्ली पहुंचा दिया और फिर एक कम्पनी को बेच दिया। हमारे लिये कोई चारा न रहा। सद्धर्मप्रचारक भी दिल्ली में आया और बड़ी शान से आया। सारे पत्रमण्डल ने उसका राजधानी में स्वागत किया। हमने भी समझा कि पड़े हुए भार को प्रसन्नता से ही उठाना चाहिये। एक ओर दिल्ली के बढ़े हुए ख़र्च हमें डरा रहे थे, और दूसरी ओर गुरुकुल की स्वर्गभूमि का वियोग हृदय में खेद उत्पन्न कर रहा था। हमने सब विघ्नबाधाओं को हंस कर उड़ा दिया। आते ही दिल्ली के डिप्टीकमिश्नर साहिब ने प्रचारक से ५००) की ज़मानत मांग ली। इस स्वागत ने भी हमारे उत्साह को कुछ बढ़ाया नहीं। तो भी प्रचारक ने कारणवश दिल्ली में पहुंचकर उत्पन्न हुई नई अवस्थाओं से लाभ लेने विचार लिया।

दिल्ली राजधानी बनी है यह उत्साह ही हमें न खेंच लाया था। जिस प्रेस में प्रचारक छपता था, वह भी स्थानपरिवर्तन में कारण हुआ। परन्तु दिल्ली ने थोड़े ही दिनों में हमें पछताने के लिये बाधित किया। दिल्ली में सामाजिक जीवन नहीं था, और दिल्ली के शासक वहां सामाजिक जीवन पैदा भी नहीं होने देना चाहते थे। किन २ प्रकारों से प्रचारक के सम्पादकों के सामाजिक जीवन में कांटे बिछाये गये, यह वर्णन आज सम्भव नहीं। जिस प्रेस में आज कल प्रचारक छपता है, उसके प्रबन्धकर्त्ता ने हमें लिख भेजा है कि-"उस तिथि तक (प्रचारक के) जो अंक प्रकाशित होंगे उनमें राजनैतिक लेख या टिप्पणी कोई न होनी चाहिये। वरना वह टिप्पणी आदि पृथक् कर दी जावेंगी, पश्चात कोई आपत्ति नहीं।" जिस व्यक्ति के प्रेस में हमने इतने दिनों तक पत्र छपाया है, उस से ये शब्द हम कभी न सुन सकते, किन्तु दया का भाव हमें शान्त कर रहा है। शायद हमारे एक नोट या एक शब्द पर उस बेचारे के प्रेस की सत्ता अवलम्बित है। भारत की राजधानी की यही दशा है।

संक्षेप से यह समझ लीजिये कि मुसलमान पुलिस ने प्रचारक के सम्पादकों का खूब पीछा किया। एक मुसलमान मौलवी ने ऋषि दयानन्द को गालियां दीं। इस पर प्रचारक को दिल्ली की पुलिस के विरुद्ध दो चार शब्द लिखने पड़े। यह घाव पर नमक हुआ प्रचारक कार्यालय पर मुसलमान पुलिस की अनवरत छाया पड़ने लगी। विस्तार से इस कहानी का लिखना सम्भव नहीं है। सारांश यह कि हमें यह समझा दिया गया कि भारतराजधानी में सामाजिक जीवन की आवश्यकता नहीं है और क्योंकि प्रचारक इस भयानक कार्य को करना चाहता है इसलिये उसे शीघ्र ही बोरिया बिस्तर उठालेना चाहिये।

इतने में पं० हरिश्चन्द्रजी ने विजय नाम का नया पत्र निकालना आरम्भ किया। इससे प्रचारक के सम्पादन का भार फिर हम पर ही पड़ा। गुरुकुल में रहते हुए ही हमें प्रचारक का सम्पादन करना पड़ता था। यह हमारे लिये कोई कम अवचन की बात न थी। हम चिरकाल से विचार करहे थे कि किसी प्रकार प्रचारक को दिल्लीसे उठाकर गुरुकुल लेजायें किन्तु कोई ऐसा धक्का न मिला था जो हमारे इस विचार को कार्य के रूप में परिणत करदे। इतनी देर की प्रतीक्षा के बाद वह समय आगया है।

सद्धर्म्मप्रचारक और विजय दोनों पत्र एक ही प्रेस में छपते थे। पहला वज्र विजय पर टूटा। दिल्ली के डिप्टीकमिश्नर मेजर बोडल ने प्रेस के प्रबन्धकर्त्ता को बुलाकर समझाया और कहा कि विजय में छपी हुई "प्रतापप्रतिज्ञा" शीर्षक वाली कविता बहुत 'गन्दी' थी। आगे से ऐसा न होने पाये। प्रबन्धकर्त्ता जी ने घर आकर विजय के सम्पादक को सूचना देदी कि आगे से विजय में सरकार के विरुद्ध कोई बात न छप सकेगी। विजय के सम्पादक बेचारे क्या करते, हाथ पर हाथ धरकर बैठगये।

अब प्रचारक की बारी आई। प्रचारक में पटियाले के महाराज का एक नोट निकला। सरकार ने उसे भी बहुत 'गन्दा' समझा। प्रबन्धकर्त्ता जी बुलाये गये, और फिर से उन्हें ज़बर्दस्त चेतावनी दीगई। विजय का तो फैसला ही होचुका था, प्रबन्धकर्त्ता जी ने प्रचारक के नाम भी काल ख़लीता भेजदिया। हमें यह फ़ैसला सुना दिया गया कि राजनीति के विषय में कोई नोट प्रचारक में न छप सकेगा। बहुत अच्छा, आपका प्रेस बचारहे, हम इसी में प्रसन्न हैं। हमारे पास धन नहीं है कि हम नया प्रेस खड़ा करसकें। हमारा अपना प्रेस होता तो आज का दिन देखना न पड़ता। किन्तु जो नहीं है उसके लिये रोना व्यर्थ है।

अब प्रचारक के सामने दिल्ली छोड़ने का प्रश्न उपस्थित होगया है। हमें इस में कोई शोक नहीं। गुरुकुल की पवित्र भूमि में निवास। गङ्गा के साथ हिलोरें लेनेवाली पवन से स्नान और ऋषि मुनियों की आवासभूमि, हिमाचल के दर्शन। इससे बढ़कर प्रचारक का क्या सौभाग्य होगा? सद्धर्मप्रचारक दिल्ली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल में आजायगा, इस से सम्पादक का लाभ, प्रचारक का लाभ और प्रचारक परिवार का भी लाभही होगा। जिस कार्य में किसी की हानि नहीं, और सब का लाभ है, वह जितना शीघ्र हो सके, अच्छा है दिल्ली से निकलने वाला यह अन्तिम अङ्क है। अगला अङ्क जो ग्राहकों के हाथ में पहुंचेगा गुरुकुलभूमि के प्रभावों से प्रभावित होकर आयगा।

दिल्ली से हम विदा होते हैं। विदाई चाहे किसी से हो दुःख देने वाली होती है। दिल्ली में प्रचारक ने दो वर्ष और हमने एक वर्ष सानन्द बिताया है। यदि हमें कोई क्लेश हुए-यदि हमारे मार्ग में कांटे बिछाये गये, तो इस में कोई हुई दिल्ली का कोई दोष नहीं है। कहा जाता है कि सज्जनों की मैत्री सात पग साथ चलने पर ही अटूट हो जाती है। जिस स्थान से दो साल तक सम्बन्ध रहा हो, क्या उससे विदा ई दुःख के आंसू बहाने वाली नहीं होती? हम अकृतज्ञ और हृदयरहित होंगे, यदि दिल्ली से प्रयाण करते हुए दो शब्द दुःख के न कह जांय

हे भारत की राजधानि अभागी नगरी! आज तुझ में खण्डहरों के सिवा कोई दर्शनीय चीज़ नहीं है, किन्तु कोई दिन था जब तेरे द्वार पर चीन और कन्धार के राजा हाथ बांधे खड़े होते थे तब तू जागती थी, आज सोई हुई है सब तू रत्नों की खान थी आज तुझ में पत्थरों के ढेर पड़े हैं। ब्रिटिश सरकार तुझे फिर से रत्नों से जटित करना चाहती है। यह सम्भव भी है। प्रचारक ने तेरे आँचल में दो साल तक निवास किया है। विदाई के समय वह परमात्मा से तेरे लिए यही वर मांगता है कि वह तुझे नींद से उठाये और अपने ही डाले हुए बन्धनों से मुक्त करे।

दिल्ली में जिन भाइयों से हमारा सामाजिक या व्यक्तिगत सम्बन्ध था, उन सब से भी हम कृतज्ञता पूर्वक छुट्टा लेते हैं और आशापूर्वक प्रचारक के जीवन में एक नये अध्याय का प्रारम्भ करते हैं।

सम्पादक

प्रचारक परिवार को सूचना

दिल्ली से निकलने वाला यह अन्तिम अङ्क है। इस से अगला अङ्क गुरुकुल से निकलेगा। गुरुकुल से पत्र प्रकाशित होने का अभी पूरा प्रबन्ध नहीं हुआ है, किन्तु शीघ्र ही हो जायगा। प्रेस के प्रबन्धकर्ता महाशय की शाही फर्मानों ने हमें दिल्ली से पत्र का छपाना एक दम बन्द करना पड़ा है। प्रचारक जब तक निकलेगा जीवित रूप में निकलेगा मर कर निकलने से राख हो जाना अच्छा है। इस लिए एक दो या इस से भी अधिक सप्ताहों का यदि विलम्ब हो जाय तो पाठक घबराँय नहीं। जितनी कसर रहेगी, हम उस सारी को पीछे से पूरा कर देंगे।

भवदीय—
सम्पादक

सम्पादकीय टिप्पणियां

लाहौर आर्यसमाज के उत्सव का वृत्तान्त लिखते हुए हम एक आवश्यक व्याख्यान के विषय में लिखना भूल गये। वह व्याख्यान श्री पं० पूर्णानन्द जी का था। व्याख्यान का विषय 'वेद' था। यह व्याख्यान २८ तारीख को प्रातःकाल ही हुआ था। योग्य पण्डितजी ने बड़ी योग्यता से वेद को अपौरुषेय सिद्ध किया और उन दोषोंका परिहार किया जो वेदों पर किये जाते हैं। पण्डित जी का यह विशेष व्याख्यान था, जिससे श्रोताओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का पिछले सप्ताह में, जो वृत्तान्त दिया था, वह कई अंशों में अधूरा था। कारण यह था कि हम सारा सम्मेलन न देख सके और घूमते रहने से दैनिक पत्रों में भी सम्मेलन का शेष भाग न पढ़ सके। हमने आधा सम्मेलन देख कर जो परिणाम निकाला, अब सारे सम्मेलन का वर्णन पढ़ कर वह पुष्ट हो रहा है। सब समाचारपत्रों ने एकमत होकर सम्मति दी है कि सम्मेलन अपूर्व सफलता के साथ हुआ। इस सफलता में हिन्दी हितैषियों का यत्न प्रधान कारण था, और स्थानीय कारणों में से स्वागतकारिणी के सभ्यों का प्रयत्न ही मुख्य था। सभा के मन्त्रीजी का उत्साह प्रशंसा के शब्दों से परे था। विशेषतया इस सफलता के लिये हम बा० श्यामसुन्दर दास बी. ए. को बधाई देते हैं क्योंकि उनकी ही आत्मा इस सम्मेलन की पुर्जों को हिला रही थी।

भारतीय-नौका-विज्ञान

(५)

बौद्धकाल (२)

हम बौद्धकाल की महत्ता की आलोचना करते अब पर्याप्त दूर आगये हैं। हम बौद्धसाहित्य का मूल्य निर्णय करना चाहते हैं। भारतीय इतिहास में यदि कोई काल है तो बौद्धकाल ही है। जिस पर पाश्चात्यों की दृष्टि बड़ी ज़ोर से जम जाती है। जिस को देख कर पाश्चात्य विद्वानों के दिमाग़ खुल जाते हैं और मारे आश्चर्य के दांत भी उंगलियां चबाने लग जाते हैं। यही बौद्धकाल अब भी पाश्चात्यवेषकों को बड़े वेग से तक्षशिला आदि अन्यान्य स्थानों को अनथक परिश्रमों से खुदवा रहा है। यह बौद्धकाल ही अब लण्डन के अद्भुतालयों को सजायेगा। भारत अपनी शान खो चुका जिस को वास्तव में ये सब पहले प्रकट और अब तक गुप्त रूप में अद्भुतालय बना रहे थे अब विदेशों की बारी है कि वे अद्भुतालय बनें।

ख़ैर, जो भी कुछ हो हमें बौद्धकाल में किसी प्रकार से भी सरसरी नज़र से न गुजारना चाहिये।

इस तरह के विशेष ध्यान देने योग्य बौद्धकाल के साहित्य का ऐतिहासिक मान भी जांचना आवश्यक है। जातक तथा पिटक ग्रन्थों का क्या मूल्य है? क्या ये सब शेखचिल्ली की मनघड़न्त हैं या कुछ सत्य भी हैं।

उपरोक्त सब जातकों में से ध्यान देने योग्य सबसे जातक है जिस को देखते ही पाश्चात्य विद्वानों की अकलें हैरान हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मि० कैनडी कहते हैं कि जातकों का काल स्वतः ४०० ई० पू० पहुंचता है परन्तु तदन्तर्गत दन्तकथाएं और भी पुरानी प्रतीत होती हैं।

इस प्रकार अधिक अनुशीलन से इस परिणाम पर पहुंचे बिना नहीं रहा जा सकता कि ये जातकसाहित्य न्यून से न्यून ५वीं या छटी शताब्दि के व्यापार तथा सामुद्रिक उन्नति का हमें पूरा परिचय कराते हैं।

बबेरू जातक से स्पष्ट प्रतीत होता है कि भारत का बेबिलन देश के साथ मयूरादि नाना पक्षी तथा चंदनादि नाना काष्ठ द्रव्यों का बड़ा भारी व्यापार था।

जातकों के आधार के बिना भी कई अन्य विद्वानों की सम्मति है कि भारत में असीरिया तथा बेबिलोनिया तथा मिश्रादि पाश्चात्य देशों से भी बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध बहुत प्राचीनकाल से है।

डाक्टर खायेस कहते हैं कि भारत का सामुद्रिक व्यापार बेबिलोनादि देशों के साथ ३००० वर्ष पूर्व भी अवश्य था। पाठकगण ध्यान देने योग्य सम्मति है। इसी बात को सिद्ध करने के लिये हम कभी अन्य किसी लेख में महाभारत के श्लोकों से ऐतिहासिक प्रमाण देंगे।

यूनाइटिड बेबिलोन अर्थात् संयुक्त बेबिलोनिया के प्रथम राजा उरबगास के राज्यकाल में बने एक मन्दिर में लगी भारतीय लकड़ी को देखकर डा० हिल्प्रेट भारत के अत्यन्त प्राचीन व्यापार मानने में ज़रा भी संकोच नहीं करते।

डा० खायेस बेबिलोनिया की व्यापारिक सूचियों में या खातों में से सिंधु शब्द को मलमल का पर्यायवाची देख कर इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि बेबिलोनिया का पूर्व व्यापार ऐसे देश से था जहां संस्कृतभाषा का खूब प्रचार था॥ इन्हीं परिणामों को प्रायः अन्य विद्वान् भी बड़े मान्यभाव से देखते हैं।

मि० राईसडेविड से विद्वान् की भी यह सम्मति है कि पाश्चात्य देशों से द्राविड़ देशों का बड़ा भारी व्यापार चला आ रहा था, परन्तु आर्यों से नहीं। सैर, कुछ भी हो बौद्धसाहित्य में इस से पूरा सहमत नहीं होने देता।

इधर के साहित्य के अतिरिक्त पाश्चात्य प्राचीन साहित्य भी हमें यह निश्चय करा देता है कि भारतीय समुद्र तट से पाश्चात्य देशों का व्यापार अवश्य था। क्या बायबिल और क्या अन्य ग्रन्थ सभी में बहुत से व्यापारिक शब्द करनाटक या तामील या द्राविडी भाषा के अपभ्रंश हैं।

हेरोडोटस और वर्निंग आदि यूनानी कवि लोग पाश्चात्य ऐतिहासिकों के बड़े पुराने दादागुरु हैं। इनके बनाये ग्रन्थों में भी इस भारतीय समुद्र व्यापार ने बलपूर्वक ठप्पा जमाया हुआ था। यही दादा गुरु लोग भारत की उपजी कपास को वृक्षों की ऊन कह कर खुशी हुआ करते थे ऐसी सैकड़ों बातें स्थान २ पर मिलती हैं। जिन की साक्षी देने के लिये सारे देशी विदेशी प्राचीन तथा अर्वाचीन सब कोई मुक्तकण्ठ से चिल्ला रहे हैं। ऐसे सत्य को छिपाने के लिये औपाधिक काल का भी सामर्थ्य नहीं, वैयक्तिक स्वार्थ तो क्या ही छिपायेगा।

—०—

(६)

(सिकन्दर का काल)

अभी तक के समयनिर्णय में ऐतिहासिक अन्वेषकों की नानाप्रकार की उलटी सीधी सम्मति ये हैं। कोई निश्चित समय सुनने में नहीं आता। पर अब हम सब पाठकगण! निर्विवाद समय में पैर धरते हैं।

भारत का किसी को कुछ पता नहीं। भारत का देश मजे से नाना प्रांतिक राज्यों में बटा हुआ अपनी क्षत्र सामग्री का उपभोग कर रहा है। राजा लोग सन्धियें कर २ के आनन्द से शासन करते हैं। स्थान २ पर किलाबन्दी करके रियासतें भी अपनी अटल अजेयता के भरोसे ऊंघने की बाट में हैं। इधर यूनान में नया ही रंग है, फिलिप का लड़का सिकन्दर अरस्तू की राजनीतियां सीख सीख कर दिग्विजय करने के जोश में है। सारे उत्तर पश्चिमीय पहाड़ी तथा उजाड़ देशों को लांघता हुआ भारत में प्रवेश करता है। और बड़ी वीरता से बढ़ता हुआ सारी भारत की क्षात्रपरीक्षा लेता आता है। पंजाब के राजा पौरुष से टाकरा पड़ा कि जंगी जवान भारतीय वीरों के दैत्यकल्पबाणों से बुरी तरह से पिटकर सिकन्दर भी उलटे पैरों सिवाय लौटने के और कुछ न कर सका। अगर सिकंदर में दम था तो आगे क्यों न बढ़ा? अगर दम था तो जमुना गंगा की घाटियों को देख लेता पर बेचारे को बड़ा बड़ा सामना पड़ा, सतलज का पानी पीकर ही पलटा खा गया। ये क्षात्र उन्नति का अलौकिक काल भारत को कब न भूलना चाहिये। ये काल ऐतिहासिक खाते में ३२७ ई० पू० निश्चित है।

सिकन्दर लौटने के समय अपने आप सतलुज में बेड़ा बना कर सिंध के रास्ते होता हुआ समुद्र द्वारा यूनान लौटना चाहता है। इस का सारा मार्ग देखिये प्रलमय है। सिंध से इतनी बड़ी सेना के साथ पार उतरना इस का एक नमूना है। परन्तु अब सन्देह नहीं जब वही सिकन्दर फारिस खाड़ी से होता हुआ सारी सेना के साथ सामुद्रिक जहाजों से यूनान पहुंच जाता है।

भिन्न २ ऐतिहासिक दृष्टियों से सिकन्दर ८०० या १००० या २००० जहाजों का बेड़ा लेकर चला था। जिस में ८००० पैदल पलटन और कई रिसाले घुड़सवार सब जहाजों में ही बैठ कर गये थे। इस में यह विशेषता थी कि यह भारतीय काष्ठों से बना भारतीय हाथों से तैयार किया गया, और भारतीय शिल्पकला से सजाया गया था।

डाक्टर विन्सन् कहते हैं कि आईन अकबरी में भी हमें ४०००० जहाज़ केवल व्यापार में लगा दीखता है और ऐसी ही समृद्ध भारतीय सामुद्रिक नौका शक्ति की बदौलत सिकन्दर अपने १२४००० सेना को लौटा लेगया था और इस में कोई आश्चर्य नहीं जब कि वह कहता है कि सिकन्दर के पास लौटते समय कुल ८०० जहाज़ थे जिन में ४० जंगी जहाज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी थे। इसी प्रकार रोबर्टसन साहब भी कहता है कि पंजाब की नदियां जलीय व्यापार के योग्य हैं अतः यहां सामुद्रिक जहाज़ी उन्नति भी खूब थी। महमूद ग़ज़नवी के समय सुनते हैं कि जहाज़ों के एक दल ने जहाज़ों के दूसरे दल पर आक्रमण किया था। आईन अकबरी से पता लगता है कि कम से कम ४००० जहाज़ भिन्न २ प्रकार के केवल सिंध में ही थे।

साहित्य-मित्र-विनोद

आज हमारे नये एक मित्र का आदुर्भाव हुवा है ये हमें धनुधर अर्जुन के जीवन भर के तमाशों में जहां तहां लिये फिरते हैं और बड़ा तंग करते हैं। आपका नाम श्री.....महाशय है। ओफ़ ओ हमें तो याद ही नहीं रहा पहले ही दिन सवेरे ७ बजे उठाने आये। और लगे हमें आलसियों और कुम्भकर्णों का भैय्या बनाने। ख़ैर, मित्र हैं! वे भी विनोद करते हैं हम भी विनोद करेंगे।

हमारे मित्र कम्पोज़िटरों पर बड़े रुष्ट हैं क्योंकि बेचारे रात दिन परिश्रम करते हुवे भी भूल से कई एक अशुद्धियां छोड़ गये। (भूमिका)

हमारे मित्र नये ढंग के हैं। वे हमें ऋषियों की कुटियों की तरफ सैर ही नहीं कराते। क्योंकि बूट खोलने का डरावा देते हैं। हम समझते हैं कि अच्छा हो कि हमें वे घर से ही खड़ाऊं पहना के ले चलें तो भला है। (पृ० १)

हमारे मित्र शरीर छोड़ना बड़े आनन्द का समझते हैं। क्योंकि आप कहते हैं कि "माद्रीने तत्काल शरीर छोड़ दिया और उनका जीव बड़े आनन्द से देह से निकल कर आकाश को उड़ गया" जीव क्या था घुच्घी थी जो आकाश ही को उड़ी या आज कल का-ऐरोप्लेन होगा। (पृ० १०)

हमारे मित्र नई बहार के बड़े प्यारे हैं। वे एक बार सामयी आदि यज्ञ साधन से लदे ऋषियों के छकड़ों को देख कर कह उठे, कि "हम होते तो सिगरेटों के बंडल और ह्विस्की की बोतलें लदवाते।" (पृ० १५)

हमारे मित्र के मुर्ग़ीखानें में पढ़ी लिखी मुर्ग़ियां और मुर्ग़े होते हैं क्योंकि आप कहते हैं कि प्रातः काल हो गया और कुक्कुटने हरि ओ३म् तत्सत् कह के चिल्लाना शुरू किया। ऐसा दीखता है कि कहीं पुराने जमाने को वेद-विद्यार्थी ही ने जन्मान्तर ले लिया है। (पृ० १६)

हमारे मित्र अपने देवों के बड़े भगत हैं कि बिना पूजा किये घर से बाहर पैर नहीं धरते और आपके इष्ट देव बूट हैं। आप कहते हैं कि आठ बजे उठेंगे इसके पश्चात् बूट देव की उपासना करेंगे तब कहीं घर से बाहर निकलेंगे। (पृ० १६)

हमारे मित्र अनोखी बातों पर बड़ा विश्वास करते हैं। आप कहते हैं कि बाबा हंस पड़े और एक तिनके की सहायता से उन्होंने एक क्षिपल में गेंद को कूए से बाहर कर दिया। गेंद थी कि सिखाई हुई बिल्ली थी। तिनका था कि जादू की छड़ी थी।

(पृ० १७)

हमारे मित्र बड़े शयालु हैं एक बार सात आठ बजे प्रातः कुक्कुट बोल उठा बस आपकी कहीं नींद खुल गई बस मारे गुस्से के भाड़ में चने से भुन गये और कहने लगे अच्छा तो आज इसका सफ़ाया ही कर डालें अन्यथा यह अपनी दुष्टता कदापि न छोड़ेगा।

(पृ० २३)

—०—

हमारे मित्र महाशय के मित्रमण्डल होने में आप के भी गुरु हैं क्योंकि एक बार आप दस बजे जगाने आये तब भी मित्र बिस्तरे पर पड़े सोते मिले।

(पृ० ४०)

हमारे मित्र या तो सोना ही जानते हैं यदि उस से कोई संसार को लाभ न हो तो कहते हैं कि अन्यथा नदी ही में नहीं नहीं चुल्लू भर पानी में डूब मरें। मेरा ख्याल है कि परमात्मा करे फिर भी तर ही जायें तो भला है। (पृ० ५०)

—०—

हमारे मित्र का जब बश नहीं चलता तो छाती फट जाती है और कुछ लिखा नहीं जाता यहां तक कि कलम भी टूट जाती है। पाँडु के मरने पर हमारे मित्र का यही हाल हुआ था। (पृ० ६६)

—०—

हमारे मित्र समझते हैं कि आश्चर्य के समय दांतों के नीचे अंगुली दाबना कोई फैशन है क्योंकि द्रौपदीस्वयं वर के अनन्तर झगड़े में भीमने आक्रमण करते हुए लोगों को डराने के लिये एक वृक्ष उखाड़ा था कि सब आक्रामक बली लोगों ने आश्चर्य से झट से दांतों के नीचे उँगली दबाना शुरू किया।

(पृ० ९३)

हमारे मित्र जहां फैशन में नये ढर्रे के हैं वहां ज्ञानसागर में पुरानों से भी बढ़ कर हैं। आप कहते हैं कि अर्जुन के लिये बड़ा कठिन अवसर आ उपस्थित हुआ। कदाचित् "अग्नेरापः" वाले सिद्धांत के अनुसार गर्मी व्याप्त होजाने से जल बरसने लगा। (पृ० १२२)

—०—

हमारे मित्र शस्त्रास्त्र की प्राचीन विद्या खूब जानते हैं क्योंकि आप कहते हैं अयःकवय (लोहे के गोले फेंकने का यन्त्र (तोप) और चक्राश्म पत्थर के गोले फेंकने का यंत्र इत्यादि से गन्धर्व राक्षसादि अर्जुन को मारने दौड़े। क्या एक आदमी पर इतने आक्रामकों की तोपें दगीं। (पृ० १२३)

—०—

और मज़ा यह कि इन तोपों की गोलाबारी अर्जुन के बाणों के आगे कुछ न चली (पृ० १२३)

—०—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारे मित्र आप बीती कथा सुनाया करते हैं कि हमारे घर में एक चुहिया निकली। उसे मारने के लिये घर भर के दर्जन भर हृष्ट पुष्ट मारने दौड़े पर फिर भी उसे न मार सके। वाह मित्र वाह! ख़ैर सोते की झंपक से चुहिया डर के भाग गई होगी सो हाथ न आई तो मरती कैसे। (पृ० १२४)

—०—

हमारे मित्र को निश्चय है कि राजसूय के समय महारानी द्रौपदी के हाथ में भोजन का प्रबन्ध था और भगवान् श्रीकृष्ण सब के पैर धोते थे। श्रीकृष्ण थे कि कहार? हमारे मित्र अगर प्रबंध देते तो अच्छा था। (पृ० १३८)

—०—

हमारे मित्र वास्तव में बड़े आलसी हैं। वे कहते हैं कि सुनिये हमारा उद्देश्यः-

दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा।
मरजाना पर उठके कहीं जाना नहीं अच्छा॥
मिलजाय हिंद ख़ाकमें हम काहिलों को क्या।
अय मीरे फर्श रंज उठाना नहीं अच्छा॥

जब हमारे मित्र इस उद्देश्य से लजाये तो बोले पृथ्वी तू फट जा, क्या कोई जादू है? (पृ० १६०--१६१)

—०—

हमारे मित्र बड़े मौजी हैं हमें सैर कराने के लिये आठ या १० बजे तो जगा ही लेते हैं पर ख़ैर इतना तो अच्छा है कि कन्सैशन बड़ा रहता है। आप हमें इन्द्रपुरी में भी ले गये "इन्द्रपुरी पर पहुंचने पर इन्द्र ने इनका बड़ा सत्कार किया नित्य नये उत्सव होने लगे घृताची मेनका रम्भा आदि बीसों अप्सराएं नृत्य करने लगीं"। बस इन्द्रपुरी पहुंच कर आपका उर्वशी के शृंगार से ही सारस्वत उमड़ पड़ा। (पृ० १६०)

—०—

हमारे मित्र के अर्जुन वस्तुतः धन्यवाद के पात्र हैं पूज्य हैं और प्रातः स्मरणीय हैं। क्यों न हों अब धन का बाज़ार भी इन्हीं की बदौलत गरम होगा।

—०—

हमारे मित्र के नायक के हथियार लम्बी सी गठड़ी में थे (पृ० १८१)

—०—

१८८ पृष्ठ लिख करके हमारे मित्र को अनुभव हुआ कि हम लोगों में विचार शक्ति तो अब रही ही नहीं। ठीक है, रहे भी कहां जहां आठ दस बजे तक सोने से फुरसत न हो। उठते ही इष्ट देव बूट बने बस विचारशक्ति आप ही किनारा कर जायगी।

—०—

हमारे मित्र के पेट में बड़ा दर्द होता होगा क्योंकि वे कहते हैं कि समय ने भी वर्षा के समय में धूप और धूप के समय में वर्षा करके हमारे पेट पर लात मारी। हम मित्र से पूछते हैं कि क्यों मित्र! कहीं हिंदुस्तानी होने के कारण तिल्ली पर आघात तो नहीं पहुंचा? (पृ० १८९)

———

हमारे मित्र भीष्म की आयु कम से कम १०० वर्ष की समझते हैं। अच्छा होता कि जहां अन्य आश्चर्य बखाने हैं वहां भीष्म जी भी ३०० या ४०० वर्ष के होते तो सुहाता। (पृ० २०३)

———

हमारे मित्र कुछ प्राचीन सायन्स से अधिक वास्ता रखते हैं। क्योंकि नये फ़ैसन की बेड़ियां बूट तो पैर में रहते हैं पर दिमाग़ अभी प्राचीन जटा ही हैं। आप कहते हैं कि शिशिर ऋतु के अन्त में प्रचण्ड मार्त्तण्ड अपनी किरणों से सम्पूर्ण पदार्थों के तेज़ को ग्रहण करता है। अभी तक तो सूर्य गरम करता ही सुना था। नये आविष्कार और पुरानी गवेषणा का पता नहीं है। (पृ०२११)

— —

हमारे मित्र नये मुहाविरों के शौकीन हैं आप कहा करते हैं धनञ्जय ने ..... बाण को .... पार्जन्य अस्त्र से युक्त करके पितामह की दाहिनी ओर पृथ्वी को विद्धा दिया (पृ० १७)

हमारे मित्रों को अनोखी बातें कभी बड़े मौक़े पर सूझा करती हैं युद्ध के बारे में आपको वायु से बातें करनेवाले घोड़े ही मिल गये। अजब घोड़े, जिनको युद्ध में भी बातों का चस्का। (पृ० २३३)

———

हमारे मित्र बड़े रोचक हैं आप कहते हैं कि 'हे अर्जुन! आप की उस माताको भी धन्य है जिसने आपसा नरशार्दूल अपनी कोख से निकालकर भारत माता को दान देदिया। कोख क्या थी जादूगर का थैला था जिसमें बिल्ले या शेर भी दान के हित रखे रहते थे।

———

हम पहले ही कहचुके हैं कि भयंकर समय में हमारे मित्र की छाती फटती है और क़लम अकसर टूट जाती है लीजिये २७५ पृष्ट लिखने पर पांचवीं पंक्ति में फिर क़लम टूट गई।

———

हर्षका विषय है कि पुस्तक भी समाप्त होगयी। हम मित्र को हर्षका समाचार सुनाते हैं कि अब जहां तोप तलवार और बंदूक़ें लोहे की बनती हैं वहां क़लमें भी लोहे और ताम्बे की बनती हैं और सस्ती ही मिलजाती हैं अब न टूटेंगी।

हमारे मित्र की सारी पुस्तक में दोबार क़लम टूटी फिर जो टूटी क़लम से लिखा गया उसपर मित्र महाशय कृपया पढ़ने का अनुरोध करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि अभी और वे पुस्तकें लिखेंगे और भारतग्रन्थमाला रचेंगे। मित्र! करेंगे भी क्या जहां रात और दिन जब चाहो तुम हमें घुमाते फिरते हो और चैन नहीं पहुंचने देते, वहाँ विनोद ही मनको बहलाने की अच्छी रीति है।

———

हम आशा करते हैं कि हम विनोद और सैर के साथियों को कभी मित्र झा महाशय न भूलेंगे और सदा और भी विनोद का मौक़ा देंगे। अच्छा सोलें फिर कुक्कुट जगाही देगा। मित्र घर प आयेंगे हैं। सैर सपट्टा करवै करेंगे

ओ३म् शम्।

हमारा नाम विनोदी

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ञ्चम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

सभापति के वक्तव्य के आवश्यक उदाहरण

[गतांक से आगे]

ा में भी हमें सोद्योग होना चाहिये। ान हितकर लोकोत्तर विचारों से ारा भविष्योत्थान सम्भव है वे भी द्वारा लोकचित्त पर खचित किये जा ते हैं। इस कोटि का एक काव्य ारतभारती' नामक श्रीयुत मैथिली-ण गुप्त की लेखनी से हाल ही में द्भूत हुआ है। यह अनेकगुणसपन्न परन्तु ऐसे अनेक काव्यों की आव-कता है।

ास के अनन्तर नाटक (दृश्य काव्य) ओर दृष्टि कीजिये। हिंदी में गिनती ; नाटक हैं जिन पर वह अपने स्वत्व अभिमान कर सकती है? ऐसा बोध ा है कि साहित्य के इस अङ्ग की ोगिता को हिंदी-भाषी समझते ही । आप बंगाल, महाराष्ट्र, मद्रास, ात जाकर देखिये तो नित नये , नाटिका, प्रहसन जन्म पाते और ला में रंग जमाते नज़र आते हैं। कर बंगाल में तो नवीन नाटक र्माण और अभिनय एक सामान्य है। ये अभिनय मानव-आ रणों नित श्रद्धेय सिद्धांतों के स्थिरी-द्वारा जगत् का जो हितसाधन ते हैं वह अननुमेय है। कितनी इन से चरित्र-संगठन और समाज-ा और कुत्सित प्रथाओं का संमा-सकता है सहृदय जन विना ा के समझ सकते हैं। जो काम से शताब्दियों में नहीं होते े उत्तम नाटक के एक अभिनय ा हैं। सार्वजनिक उन्नति के ऐसे ाधन पर इतनी उपेक्षा हमारी लता का साक्ष्य दे रही है। ा हमारे साहित्य का शीघ्र ही होना चाहिये।

रह चौदह बरस हुए मुझे सर-न्ध में दक्षिण के दूरवर्ती कई एक सभ्य नगरों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। इन नगरों में कोई २ तो हमारे प्रयाग, कानपुर, आगरे से जन-संख्या में कहीं छोटे थे। तथापि प्रत्येक नगर में एक से अधिक नाट्य-शाला देखने में आईं जिन में बारहों महीने अभिनय होते रहते हैं।

भारत की राष्ट्रभाषा होने का गर्व और गौरव रखनेवाली हिंदी के आदिम स्थान संयुक्तप्रांत में बताइये कितने नाट्यगृह हैं कि जहां उस भाषा के उत्तमोत्तम नाटक अभिनीत होते हों। क्या इस प्रान्त के मुख्य मुख्य नगरों में नाट्य-शालाओं का न होना हमारी हीनता का पूरा प्रमाण नहीं है और खेलने लायक उत्तम नाटकों का अभाव उस हीनता को स्थिर रखने का हेतु नहीं है? इस प्रसङ्ग में प्रत्येक देश-हितैषी हिंदी-भाषी की सचेष्टता अपेक्षित है।

उत्तम अभिनयों द्वारा धनिकों की साहित्य-रुचि परिवर्तित कर इस महान् लोकोपकारी कार्य में हमें शीघ्र ही प्रवृत्त होना उचित है। इस की सिद्धि के लिये हमें प्रण कर लेना चाहिये कि कम से कम एक नवीन उत्तम नाटक और एक उत्तम प्रहसन प्रतिवर्ष प्रकाशित और अभिनीत किया जाय; और नये नाटकों की रचना में इस बात पर सदा दृष्टि रहनी चाहिये कि वे इस क्रम से बनाये जायं कि उन से हिन्दू, मुसलमान, क्रिस्तान सभों में परस्पर प्रीति का संचार हो, जिस से कि देश के प्रत्येक व्यक्ति में भारतीयता उत्पन्न हो और उत्पन्न होकर नित्य नित्य प्रबल पुष्टि पाती जाय।

नूतन उपन्यासों में भी इस बात पर पूरा ध्यान आवश्यक है। उपन्यासों का महत्व काव्य के दूसरे अङ्गों से कम नहीं है। यह बात बड़े दुःख के साथ उल्लेखनीय है कि हमारी भाषा में जब कि नाटकों का इतना शोचनीय अभाव है, हीन श्रेणी के उपन्यासों की भरमार होरही है। बहुत से इन में अधम कक्षा के विदेशीय उपन्यासों के अनुवाद हैं। जिन रेनल्डज के नॉविलों को इंगलैंड के प्रतिष्ठित लोग अपने घरों में प्रवेश तक नहीं करने देते उन के भाषान्तर हिंदी में सम्मान का स्थान पा रहे हैं! सुनते हैं, भारत की इतर भाषाएं उत्तम श्रेणी के उपन्यासों से विभूषित हैं। हिंदी में ऐसे उपन्यासों के भाषान्तर अवश्य होने चाहियें और साथ ही प्रतिभाशाली लेखकों को नूतन मौलिक उपन्यास लिखने में सयत्न होना उचित है।

समाज का सब प्रकार का हित उपन्यासों से साध्य है। जो उपन्यास लिखे जा रहे हैं उन में कभी कभी अच्छे कथानक भी देखनेमें आते हैं जिनसे पाठक और पाठिकाओं के चित्त पर हितकर प्रभाव पड़ता है। परन्तु ऐसे कम होते हैं। उपन्यासों के अतिरिक्त हिंदी में छोटे २ दृष्टांतों के संग्रह करने का बड़ा अभाव है। उत्तम पौराणिक अपने श्रोताओं के चित्त पर अनेक गूढ़ प्रबन्धों का तात्पर्य्य सुगमता से बैठाने के अर्थ विविध दृष्टाँतों का व्यवहार किया करते हैं। और उन्हें एक परम रोचक रीति से समझाते हैं। ये दृष्टाँत मानव-जीवन के प्रायः सभी व्यवहारों से सम्बन्ध रखते हैं और ऐहिक आमुत्रिक सभी विषयों को बोधगम्य बनाने की चेष्टा करते हैं। इन का संग्रह अवश्य परमरोचक और लाभदायक होगा।

कोई पच्चीस बरस से ऊपर हुए मैंने "दृष्टांतहारावली" नामक एक उत्तम दृष्टांतों का संग्रह प्रकाशित करना विचारा था, परन्तु अनेक अनिवार्य्य कारणों से वह विचार ही में रह गया।

दृष्टान्तों के संग्रह के अतिरिक्त एक दूसरे प्रकार का संकलन भी अति उपयोगी प्रतीत होता है। उस में प्रत्येक सभ्य देश की सब अच्छी अच्छी बातें सन्निविष्ट की जावें और "विश्वगुणादर्श" या "विश्वगुणदर्पण" नाम रक्खा जावे। निन्द्य बात एक भी न आने पावे और यत्र तत्र चित्र भी दिये जावें और सब प्रकार से पूरी रोचकता पर ध्यान रक्खा जाय तो सम्भव नहीं कि वह अति कहितकर और लोकप्रिय न हो।

स्मरण रखना चाहिये कि हमें समस्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवासियों में जातीयता का भाव उत्पन्न करना है अर्थात् इस देश की भिन्न २ जातियों भिन्न २ धर्म और सम्प्रदायों के अनुयायियों को देशभक्ति और परस्पर प्रीति के सामान्यसूत्र में ग्रथित करना है। यह तभी सम्भव है जबकि भारतवर्ष मात्र का एक साहित्य हो। यह विचारने की बात है कि हमारे मुसलमान भाइयों में अधिकतम वे हैं जिनके पुरखे और हिन्दुओं के पुरखे एक थे। क्या ऐसे मुसलमानों की संख्या लाखों करोड़ों में नहीं है? जिन के पूर्वज यहीं के निवासी हिन्दुओं के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णों में थे, जो भृगु, वसिष्ट, पराशर आदि ऋषिवर्य्य अथवा राम, लक्ष्मण, भीम, अर्जुन आदि क्षत्रिय योधाओं को बड़े अभिमान के साथ अपने पुरखे मानते थे? क्या मत बदलने से उन के पुरखे बदले जासकते हैं अथवा उनका रुधिर और का और हो सकता है? यही बात ईसाइयों के समाज पर घटित होती है। आर्यों के पूर्वज कि जिन का योरोप वालों सबको क्या समस्त संसार को अभिमान है, अपने ही वंशज मुसलमानों के निकट केवल मतपरिवर्तन के कारण घृणास्पद नहीं होसकते। अतः हमारा प्राचीन साहित्य हिंदू, मुसलमान, क्रिस्तान सभी के प्रेम का तुल्य मात्रा में अधिकारी है। सब जातियों में सत्पुरुष होते हैं और हो गये हैं जिनके जीवन की अनेकों घटनायें श्रद्धेय और अनुकरणीय होती हैं। अतः हमें उचित है कि मतभेद का विचार छोड़ कर सभी जातियों और सम्प्रदायों में से सामान्य हितकारक सार वस्तुओं का संग्रह कर अपने साहित्य को सर्वोपयोगी बनावें। भारतवर्ष की प्रत्येक प्रान्तिक भाषा (बंगाली, मराठी आदि) और हिंदी की बहन उर्दू से भी उत्तम ग्रन्थों के अनुवाद होने चाहियें। वस्तुतः तो प्रायः सिर्फ वर्णान्तर करने ही की आवश्यकता होगी, क्योंकि अनेक उर्दू ग्रन्थ ऐसे भी हैं जिन में क्लिष्ट अरबी और फ़ारसी शब्दों और पदों की अधिकता नहीं है।

काव्य, नाटक, उपन्यास के अतिरिक्त और विषयोंमें भी हिन्दी अग्रसर हो चली है और थोड़ी२ चेष्टा उसकी लगभग सभी ओर देखने में आती है। ज्यों २ लोकरुचि औ प्रवृत्ति बढ़ती है कार्यभूमि विस्तृत होती जाती है। ये भी शुभ लक्षण ही हैं परन्तु इस सम्बन्ध में यह विचारणीय है कि जो कुछ हो रहा है सब ठीक हो रहा है अथवा उसमें सुधार या परिवर्त्तन अपेक्षित है? किन्तु इस का जानना कुछ दुरूह सा प्रतीत होता है। परन्तु एक रीति से वह दुरूहता कम होसकती है। वह कि जैसे सुवर्ण के व्यापार में उसी सुवर्ण की सर्वाधिक प्रामाणिकता मानी जाती है जिस पर "हौल-मार्क" अर्थात् प्रामाणिकता का चिह्न लगा हुआ होता है उसी प्रकार साहित्य-सम्बन्धी वही कृतियां ग्राह्य मानी जांय जिन पर किसी कृतविद्य विद्वत्समूह का "हौलमार्क" हो, क्या कोई युक्ति साहित्य के सुवर्ण और रत्नों को ऐसा "हौल-मार्क" देने की नहीं निकाली जा सकती? साहित्य सम्मेलन जो एक मासिकपत्रिका निकालता है उस में प्रत्येक नवोद्भूत पुस्तक की निष्पक्ष उचित समालोचना द्वारा क्या वांछित फल नहीं प्राप्त हो सकता? समालोचना का भार यदि सब साहित्य सभाएँ आपस में बाटलें तो इस कार्य में बहुत सौकर्य्य हो सकता है।

उत्तम विषयों के विषय में अभी निवेदन किया जा चुका है। हमारे साहित्यसुधासागर के नविधों से पूर्ण आशा है कि वे उस में दुर्विषयों के विषम वातसंघात से विषमय विप्लव उत्पन्न न होने देंगे।

साथ ही उनका ध्यान लेखशैली की ओर आना भी बहुत आवश्यक है। कई एक दूषण जिस से कि गद्य और पद्य दोनों को बड़ी सावधानतापूर्वक बचाना चाहिये यहां पर स्थूल रीति से सल्लिखित किये जाते हैं— अर्थात् शब्दाडम्बर, निरर्थक पुनरुक्ति, ग्राम्यता, असभ्य पदप्रयोग, अशुद्ध वाक्यप्रयोग, ग्रथनशैथिल्य, उत्कर्षप्रतिबन्ध, भावदारिद्र्य, कूटता, क्लिष्टता, अस्पष्टता, जड़ता, अनर्गलता अश्लीलता। यह दूषणश्रेणी पूर्ण नहीं है केवल निदर्शन की दृष्टि से दीगई है और भी अनेक दूषण लेखों में आसकते हैं परन्तु सहृदय लेखक अपने लेखों में उन्हें नहीं आने देते। उनकी प्रतिभा और सद्रुचि उनकी सहाय होती है।

वर्तमान काल के बहुत से गद्य और पद्य दोनों ही इन दोषों से अच्छी तरह परिपूर्ण हैं, यदि उनका संग्रह किया जाय तो एक खासी मोटी जिल्द बन सकती है। अच्छा हो यदि एक ऐसा संग्रह भी प्रस्तुत किया जाय। उस के प्रकाशन से साहित्य की कम सेवा न होगी। मैं इन दूषणों के उदाहरण इस स्थल पर देना अनावश्यक समझता हूं, परन्तु एक ग्रंथ ऐसा आज कल विद्यमान है जिस में अनेक ऐसे उदाहरण एकत्र मिल सकते हैं यह अनुपम संग्रह 'रामकहानी' नाम से विख्यात है और इस से इलाहाबाद-यूनिवर्सिटी के छात्रों को बोल चाल की हिन्दी सिखाने की उत्तम सेवा ली जा रही है। इस के सम्बन्ध में मुझे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है, यह अपनी रामकहानी आप ही कहता दृष्टि आता है। मेरा केवल इतना ही नम्र निवेदन है कि हिन्दी-साहित्य सम्मेलन यदि कोई हिन्दी-सम्बन्धिनी वास्तविक और सजीव संस्था है तो उसे उचित है कि विना एक क्षण के विलम्ब के इस लोकोत्तर साहित्यरत्न को चौहरों का समस्त संसार के सामने निस्संकोच प्रदर्शन कर अपनी सार्थकता और प्रयोजनीयता सिद्ध करने को तत्पर हो।

अब दो चार स्थूल बातें कि जिन कारण हिन्दी भाषा की लेखप्रणाली में वैचित्र्य की विपुलता दिखाई देती झुका देने की आवश्यकता प्रतीत होती है। ये बातें मुख्य करके लिंग और कारक के प्रयोगभेद से सम्बन्ध रखती हैं। हिन्दीभाषी देश इतना विस्तृत कि ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्व उसके वर्त्ती भिन्न भागों के लोगों का समयात्रा के आधुनिक सुलभ साधनों अभाव के कारण उतना अधिक सम्भव था जितना अब है इससे एक कोण की भाषा दूसरे कोण को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से कई स्थूल बातों में विभिन्नता से रहित न रह सकी। परिणाम यह हुआ कि इस भाषा के अनेक रूप होगये। यथा, खड़ी बोली ब्रजभाषा अवधी, बुन्देलखण्डी बैसवाड़ी बघेलखण्डी, भोजपुरी आदि. खड़ी बोली, जो कि सम्भवतः आर्य्यवाणी का वह रूप है जो उस ने पञ्जाबी से ब्रजभाषा में परिवर्तित होने की प्रवृत्ति में पाया है। जब मुसलमानी राज्य में सरहिन्द से पटने तक मुसलमानों के संसर्ग वाले पठित समाज में प्रविष्ट हुई तो उस में कई स्थानिक बोल चाल की विशेषतायें भिन्न २ स्थानोंकी सम्मिलित होगईं बड़ी विशेषतायें लिङ्गभेद और कारक प्रयोग वैचित्र्य का हेतु प्रतीत होती हैं। आगरे में गेहूं स्त्रीलिङ्ग है, कानपुर, प्रयाग में पुलिंग है। पिछले स्थान में हाथी स्त्रीलिङ्ग है और पहले में पुलिंग। राजा शिवप्रसाद ने अपने गुटका में 'हठ' और 'चलन' का स्त्रीलिंग में प्रयोग किया है और 'पाठशाला' को पुल्लिङ्ग में रक्खा है। भारतेन्दु जी के ग्रन्थों में 'सब सेना नाश करदिया' 'इच्छा पूरी नहीं किया' 'राजा से प्रतिज्ञा किया' आदि क्रिया लिंग विपर्यय दिखाई देता है। पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय जी के 'प्रिय प्रवास" की भूमिका में एक वाक्य पाया जाता है—'मैंने जो अतुकांत कविता देखी उसको बहुत ही भद्दी पाई।' पंजाब वाले प्रायः कर्तृ सूचक 'को' के स्थान में 'ने' का प्रयोग करते हैं, जैसा "जिसने कोई बात उनसे पूछनी हो लिख भेजें"। यहाँ की विशेषता का दूसरा उदाहरण 'और न' के स्थान में 'नाहीं' का प्रयोग है न देखने से हमारी मुलाकात हुई और न उसका कोई पत्र मिला, सदृश वाक्यों में 'और न' के स्थान में पंजाबी हिन्दीलेखक 'नाहीं' लिखते देखे जाते हैं। काशी, प्रयाग में बहुधा पढ़े लिखे हिन्दी और उर्दूदांओं को बोलते सुना है—'हमने अभी नहाया भी नहीं है' इस प्रकार के प्रयोग युक्त प्राँत के पश्चिमी जिलों में अशुद्ध समझे जाते हैं। अब यह विचारणीय है कि ये सचमुच अशुद्ध हैं अथवा जहां व्यवहार ने हैं वहां की विशेषताओं में गण्य होने के कारण शुद्ध समझे जा सकते हैं

संज्ञा और विशेषणों के लिङ्गभेदों के कई कारण प्रतीत होते हैं। प्रायः अधिक व्यवहृत शब्द का लिंग उस के पर्यायवाची भिन्नलिंग शब्द के लिये ले लिया जाता है-जैसा 'शक्ति' स्त्रीलिंग है, उस के पर्याय पुल्लिङ्ग "सामर्थ्य" का भी स्त्रीलिंग प्रयोग किया जाता। विदेशी शब्दों के प्रचलित लिंग के अनुसार उन के हिन्दी या संस्कृत पर्यायों के लिङ्ग माने जाते हैं—यथा 'किताब' 'क़िस्मत' 'दुआ' के पर्याय 'पुस्तक' 'प्रारब्ध' 'असीस' स्त्रीलिङ्ग में व्यवहृत होते हैं। हमारी भाषा में क्रिया में भी लिंग होता है। यदि ध्यानपूर्वक अनुसन्धान किया जाय तो जान पड़ेगा कि यह क्रिया-लिंग सम्बन्ध संस्कृत से हिन्दी में आया है, यद्यपि संस्कृत क्रियाओं के तिङन्तरूपों में लिङ्गभेद नहीं होता। संस्कृत "स आगतः" से पुल्लिङ्ग और "सा आगता" से स्त्रीलिङ्ग का बोध होता है, उसी तरह "समागतवान्", "समागतवती", "स आयातः" "सा आयाता" आदि हैं। इनका हिन्दी में भाषान्तर करने में बड़ी कठिनता हो यदि क्रियावाचक शब्दों में लिङ्गभेद न किया जाय। हिन्दी के अतिरिक्त कश्मीरी, पंजाबी, सिंधी, गुजराती, मराठी, गढ़वाली, कमाऊनी, नैपाली, में भी ऐसा लिङ्गभेद माना जाता है। सब से अधिक यह भेद पंजाबी, खड़ी हिन्दी और ब्रजभाषा में देखा जाता है। युक्त प्रांत के पूर्वीय प्रदेश में जो जन साधारण में हिन्दी बोली जाती है उसमें इस भेद के मिटाने की चेष्टा पाई जाती है वहाँ 'जावें', 'जावो' 'जइहै' 'जाइत है, 'गइलीं', 'गइल', 'गइन', दोनों लिंगों में आते हैं। पश्चिमीय हिन्दी और पंजाबी के 'गया', 'गयी', 'जायगा', 'जायगी', 'जाऊंगा', 'जाऊंगी' की भाँति वहां लिंगभेद नहीं है। लिंग भेद मिटाने की चेष्टा पूर्वी जिलों में इतनी जबरदस्त है कि काशी, प्रयाग की शिष्ट महिलाएँ अपने लिये 'हम लोग' का प्रयोग करती हैं और यह शुद्ध समझा जाता है। पटना और पूर्व की ओर बढ़िये तो क्रिया लिंग का अत्यन्ताभाव ही पाइयेगा। यही कारण है कि बंगालवासी बिना अभ्यास के शुद्ध हिन्दी नहीं बोल सकते।

कोई कोई साहित्य-रसिक हिन्दी क्रियाओं को 'एकदम' लिङ्ग-बन्धन से विमुक्त करने का प्रस्ताव करते सुने गये हैं: परन्तु यह प्रस्ताव स्तुत्य प्रतीत नहीं होता; इस से हिन्दी की शोचनीय स्वरूप हानि होने का भय है।

लिंग-व्यवहार-सम्बन्ध में इस स्थान पर यह उल्लेख करना आवश्यक है कि वर्तमान के लेखक २०, २५ बरस पहले की अपेक्षा शुद्ध और मुहाविरे की हिन्दी लिखते हैं और कुछ समय में इस विषय में पूर्ण उन्नति होने की सम्भावना दीखती है।

साहित्य-वृद्धि के संग संग भाषा एक प्रकार का विकार प्राप्त करती है जिसे 'विकास' कह सकते हैं, जो कि लेखकों की प्रतिभा से उद्भूत नवीन उन्मेषों, तथा वैज्ञानिक नव आविष्कारों और विदेशीय भाषाओं के संसर्ग से उत्पन्न होता है। यह भाषा-विकास साहित्य की उन्नति का बहुत बड़ा साधक होता है, यदि उस से भाषा की प्रकृति शैली वा शील को क्षति न पहुंचे। क्योंकि प्रत्येक भाषा का शील ही उस का प्राण है। उसके भङ्ग होने से भाषा अपने उन सहज गुणों को खो बैठती है जो उसके स्वाभाविक सौन्दर्य्य के सम्पादक हैं। हिन्दी के इन गुणों का समावेश लल्लूलाल, राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं० बालकृष्ण भट्ट, लाला श्री निवासदास, पं० प्रतापनारायण मिश्र, बाबू बालमुकुन्द गुप्त तक के गद्य और पद्य दोनों में पर्याप्त रूप से पाया जाता है। इसी कारण उनकी कृतियां विशेष रोचक हैं और भाषा में एक प्रकार से आदर्श मानी जाती हैं। उनके अनन्तर भाषा ने यद्यपि विकास प्राप्त किया है, परन्तु अपने प्रकृतशील-संरक्षण में वह कुछ शिथिल और असमर्थ सी हो गयी दीखती है। आशा है, सुलेखकगण इस पृष्ठांग में भविष्य में कोई न्यूनता न होने देंगे। समालोचकों द्वारा तीव्र निरीक्षण इस सम्बन्ध में बड़ा काम देगा।

अपूर्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रोंने इसकी प्रशंसाकीहै१॥)

धर्म और विज्ञान ।

अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict between religion and seience. का भाषानुवाद २)

धर्म-निर्णय ।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्या॥)
संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पाँच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)
ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वालेको २) पत्रके साथ भेजने चाहियें पता साफ़हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बजाज़ा शहर मेरठ

गेहूं की खेती ।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिंदी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इसमें बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल ९० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कोड़ी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ़ ।

रामप्रसाद सबजज उज्जैन

आवश्यकता ।

श्री राजपूताना अनाथालय फतहपुर (जयपुर) के लिये एक योग्य उपदेशक की आवश्यकता है जो व्याख्यान देने और भजन गाने में कुशल हों वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा । निवेदन पत्र निम्न पते पर शीघ्र जाना चाहिये ।

मैनेजर
श्री राजपूताना अनाथालय
फतहपुर (जयपुर)

॥ ओ३म् ॥

हिन्दी चित्रमय जगत्

दिसम्बर का अंक ।

क्या आपको यह मालूम है कि युरुप में युद्ध क्यों छिड़ा ?

क्या आपको समर विजयी ब्रिटिश के पराक्रम देखने की इच्छा है ।

फ्रांस पर आक्रमण, जर्मनी का पराभाव ब्रिटिश के साहसयुक्त कर्म युद्ध का संपूर्ण रोचक वर्णनादि सुनने की तथा चित्रों के देखने की इच्छा हो तो दिसम्बर का अंक देखने को मत भूलिये।

कई आवश्यकीय व युद्ध का वर्णन सुनकर आपका चित्त रंजन करेगा ।

मूल्य साधारण कागजी की प्रति का ॥)
"आर्टपेपर" ॥।)

पूना सिटी { मैनेजर हिन्दी चित्रमय जगत्

आवश्यकता ।

एक योग्य आर्य सदाचारी पढ़ा लिखा आमदनी ७५) मास आयुः बीस वर्ष गोत्र गर्ग अग्रवाल वैश्य के लिये एक योग्य कन्या की आवश्यकता है कन्या की आयुः १५ या १६ वर्ष के करीब हो विशेष पत्र व्यवहार के लिये ।

पता—मोहर सिँह दास
रामेश्वरदास
नईसड़क देहली

विद्यार्थी ।

गत चैत्र मास से प्रति मास निकलने वाला । हर महीने सुन्दर चित्र । प्रसिद्ध विद्वानों के शिक्षाप्रद लेख । मनोहारिणी कवितायें । प्रायः समस्त हिन्दीपत्र-सम्पादकों में प्रकाशित । सदाचार का बीज बोने वाला । देशभक्त की ऊंची लहरें उठाने वाला । अपने पूर्वजों और प्राचीन भारत के गौरव को याद दिलाने वाला । मातृभाषा—हिन्दी—का भक्त बनाने वाला । नवयुवक विद्यार्थियों में नव जीवन डालने वाला । उच्च अभिलाष और जागृति पैदा करने वाला । भारत में भावुकों के हृदयों में भारतीय भव्य भाव करने वाला । अचेतों को सचेत करने के लिये चटकीली और चेतावनी देने वाला । हिन्दी--संसार में एक अनोखा और अद्भुत पत्र, जल्द २) भेज कर "विद्यार्थी" पत्रके ग्राहक बन जाइये और साल भर तक पढ़ पढ़ कर लाभ उठाइये । नमूने की कॉपी ≡) में मिलती है ।

४ ग्राहक बनाने वाले को साल भर विद्यार्थी मुफ्त ।

मिलने का पता—
मैनेजर, हिन्दी प्रेस प्रयाग ।

उपदेश-मंजरी ।

यह पुस्तक सभी के लिये बड़ी उपयोगी है । इस पुस्तक को सदाचार शिक्षाकी खान कहना चाहिये । लड़कों को इनाम देने के लिये यह पुस्तक बड़ी अच्छी है । जो लोग अपने लड़कों को सदाचारी और सुशील बनाना चाहते है उन्हें यह पुस्तक अवश्य लेनी चाहिये ।

मूल्य जिल्द वाली का ।) सादी का ।=

कविता-विनोद

बीसियों कविताओं का संग्रह । बड़ी मनोहारिणी और शिक्षादायिनी कवितायें है । प्रत्येक हिन्दी-भाषी को इसे पढ़ना चाहिये । मूल्य ॥)

मिलने का पता—
मैनेजर, हिन्दी प्रेस, प्रयाग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय आगया है

धातु पुष्टि की गोलियाँ

इस शीत काल के प्रारम्भ में अधिकांश लोग पुष्टिकारक चीज़ों का सेवन करते हैं—समय भी ठीक है, परन्तु यह बात याद रखना चाहिये कि ऐसी चीज़ों का सेवन न करें जिस से गुण के बदले हानि हो।

डाक्तर वर्म्मन की धातु पुष्ट की गोलियां प्रथम दिन से अपना गुण दिखाती हैं डाक्तरी में ताकत देने वाली प्रसिद्ध दवाइयाँ फासफरम ष्ट्रिकनिया और डामियेना मिलाकर ये गोलियाँ बनी हैं। मगज रीढ़ रग मांस और खून को ये ताकत देती हैं इस लिये कमजोरी से पैदा हुए रोग जैसे—अजीर्ण, नाताकती, हवल दिल, याद भूलना, धातु क्षीणता, हाथ पैर का कांपना, नामर्दी, लकवा इत्यादि इन गोलियों से आराम होता है।

दो सप्ताह की खुराक ३० गोली की शीशी १) एक रुपया डाक महसूल १ से ४ शीशी तक ।-)

डाः एस. के. बर्मन ५, ६, नारायण दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नं० ४

एजैन्ट—बाबूराम जैन ऐन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली।

विधवा की आवश्यकता

कुछ समय हुआ मेरी पहली स्त्री का देहान्त होगया है। अब मैं एक विधवा के साथ विवाह करना चाहता हूं। विधवा की आयु २०, से २५ तक होनी चाहिये। विधवा कुछ पढ़ी लिखी होनी चाहिये। शेष पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते से कीजिये—

धन्नाराम स्टेशनमास्टर

विलसनपुर

सरगोधा लाइन

उस्तरे को बिदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगानेसे फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल

ज़िद्द करके मांगिये

बहुत से लोग हमारी दवा की अधिक बिक्री देखकर हमारी दवाका सा मिलता जुलता नाम रखकर आप को दूसरा माल देंगे. परन्तु आप खरीदते समय सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया असली सुधासिंधु ही ज़िद्द करके माँगिये दूसरी नकली दवा कभी न खरीदिये यही २४ वर्ष का आजमाया सरकार से रजिष्ट्री किया हुआ है सुधासिंधु कफ, खाँसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, जी मचलाना, कमर का दर्द, रात्रि को नींद न आना, बालकों के हरे पीले दस्त, कै करना और दूध पटक देनेकी स्वादिष्ट सुगंधित दवा है. कीमत फी. शीशी ॥) आ. सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है पूरा हाल जानने का सूचीपत्र मुफ्त मिलेगा।

दद्रुगजकेसरी

बिना किसी तरह की तकलीफ या जलन के दाद को जड़से खोने वाली दवा है कीमत ।) डजन २।) रु०

मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय पर्वत की शुद्ध शिलाजीत

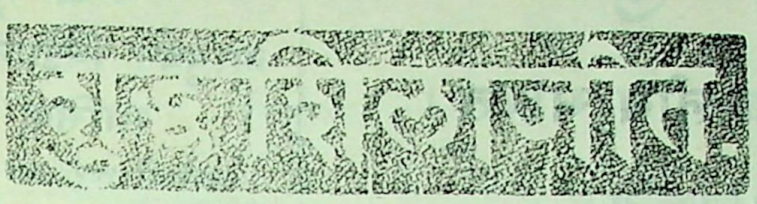

वैद्यराज, डाक्टर, हकीम सबने एक सम्मति होकर यह मुक्त कण्ठ से कहा है कि दुनिया भर में शुद्ध शिलाजीत से बढ़ कर निर्बलता नाशक और धातु पुष्टकारक दूसरी दवा नहीं है। हमारे कार्यालय से हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों के अतिरिक्त चीन, जापान, अमरीका, अफरीका, योरप, अरब, अफगानिस्तान में भी शुद्ध शिलाजीत जाता है जिस के प्रशंसा पत्र उपस्थित हैं।

सर्व प्रकार की दुर्बलता, गठिया, बवासीर कुष्ट, मृगी, पीला पड़जाना श्वास, खाँसी, विक्षिप्तता:, रक्तविकार, सूजन, कफ विकार, खांसी इत्यादि रोगों के ऊपर इसका सेवन किया जाता है जिसके विशेष विवरण का पुस्तक तथा सेवन विधि का पत्र शुद्ध शिलाजीत के साथ बिना मूल्य देते हैं।

तोले	मूल्य	डाकव्यय
५	२।)	।-)
१०	४।)	।-)
२०	८)	।-)
४०	१५॥)	॥)
८०	३०)	॥।)

मिलने का पता:—

पं० हरिशङ्कर शिवशङ्कर हिमालय डिपो हरिद्वार

अब तो सब के मुंह एक बात।

❀ असली सुधासिन्धु ❀

सुनिये! भारतसरकार में सच्चे की जीत और झूठे की हार होती है। सरकार की बड़ी २ अदालतों में हमारी ही जीत हुई है **असली सुधासिन्धु** हमारा ही कफ, खांसी, क़ै, दस्त, शूल, संग्रहणी, दम, अतिसार, पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त आदि सैंकड़ों रोगों की असली दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ॥) दरजन ४॥) एजेंटों के लिये तो पूरा २ सुभीता रखा गया है मंगाने का पता:—

बाबू पंचमसिंह वर्मा

माली, कारख़ाना नमक सुलेमानी।

जामोर (गया)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड) अपने बाग में लगाना चाहतेहों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्य न नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul विहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशि होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास ४० पृष्ठका एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खण्ड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्री धवन

लाहौरी टोला-बनारससिटी

॥ ओ३म् ॥

१५ अप्रैल सन् १५ में बंटेग

सत्ये नास्ति भयं क्वचित्

१००००) रूपया इनाम।

कमज़ोरी दिमाग़ के लिये (अमृतप्र बाह) व अपूर्व शक्ति वर्द्धक (धातु पु चूर्ण) के ४०००० ग्राहकों में सब का सभा के द्वारा होगा हरेक ग्राह भी मेम्बर हो सकेंगे अधिक हाल जान के लिये नियमावली हमारे यहां से मुप मंगाइये।

पता—सूर्य्य औषधालय

सेनेटरीरोड-लखनऊ

एजन्ट चाहियें।

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य २५ दशा का चित्र मुफ्त मिले मंगा देखिये। एच० एच० शर्म्मा (बरियापुर

जि० बना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नई पुस्तक! अपूर्व पुस्तक।

महर्षि पतंजलि और तत्कालीन भारत।

लेखक—(प्रतिष्ठित) स्नातक चन्द्रमणि विद्यालंकार।

यदि आप महर्षि पतंजलि के विषय में कुछ जानना चाहते हैं, यदि आप पतंजलि के समय का वास्तविक भारत इतिहास जानने के उत्सुक हैं, यदि आप महाभाष्य जैसे बड़े भारी ग्रन्थ का ऐतिहासिक निचोड़ विना किसी परिश्रम के देखना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। मूल्य केवल ।=) है।

पुस्तक भण्डार गुरुकुल
कांगड़ी, हरिद्वार

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहनजी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रांत

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है। शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क, प्रतिनिधि सभा

बुलन्दशहर

वैद्य भूषण

आयुर्वेद विज्ञान का अपूर्व मासिक पत्र।

जनवरी १९१४ को लाहौर से निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य वार्षिक १।) विद्यार्थियों से १)

नमूना बिना मूल्य।

पता—वैद्यराज धर्म्मदेव
कविभूषण वैद्यरत्न लाहौर

वर की आवश्यकता।

एक कान्यकुब्ज द्विज भारद्वाज गोत्र(पांडेय खोरकिस्वर) की कन्या जिस की आयु १६ वर्ष है सब अंग हृष्ट पुष्ट हैं गुण कार्यमें निपुण तथा सुशिक्षित है और बेल बूटे का काम भली भाँति जानती है उसके निमित एक योग्य वर (षट्—कुल)की आवश्यकता है। निम्न लिखित पते पर पत्र व्यौहार शीघ्र करें।

पं० मूलचंद जी शर्म्मा
इम्पीरियल कैपीटल
वर्कस
अजमेरी दर्वाज़ा—देहली

बाल नहीं बाटते हैं

बाल उड़ाने का साबुन बिना किसी तरह के कष्ट के बालों को ९ मिनट में उड़ाकर साफ़ कर देता है कीमत फी बक्स ।) आने। १२ बक्स एक साथ लेने से १ रास्कोप सिष्टम लीवर घड़ी साथ में मुफ्त भेजेंगे मंगाने का पता—

शर्मन ऐंड कं. सतघडा मथुरा

प्रचारक के एजन्टों की सूची।

(१) कश्यप आदर्श आगरा

(२) सीताराम गोपालदास चौक बनारस सिटी

(३) शंकरलाल न्युजपेपर एजन्ट सहारनपुर

(४) म० हीरालाल c/o म० भगवान्दास जी फ़र्राश, ख़ाना गली समोसान देहली

(५) भारत सेवक एजन्सी देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सेठ रामगोपाल पं० अनन्तराम के सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय देहली में मुद्रित व प्रकाशित

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

अश्विनिवार को प्रकाशित होता है

१८ माघ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० ३० जनवरी सन् १९१५ ई०

संख्या ४२
भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि ।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है । इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है । महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है ।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंवे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा ।

सान्वती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या [illegible]

मूल्य ।)

3697. Editor Usha Gurukul P. O.

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित । विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है । उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है । मूल्य २)

अर्थशास्त्र—प्रो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित । इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं । पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है । मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित । इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है । निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है । मूल्य ।=)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व [illegible] लग जायगा । भारत के नव-युवकों [illegible] का पढ़ना अत्यावश्यक है ।

मूल्य=)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीयता का मूल।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिस की पहली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है। इस के लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं। एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है। इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिए क्या गुण आवश्यक हैं। जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक
गुरुकुल काङ्गड़ा (हरिद्वार)

तिब्बत व नेपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नक़ली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला शेर की चरबी १) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला
अलमोड़ा यू. पी.
(हिमालया)

बटर फ़िङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

असली हारमोनियम

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता
G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

१०,०००) रुपया इनाम,

यह इनाम उन लोगों को मिलेगा जो हमारे यहां से नीचे लिखी हुई दवा मंगावेंगे। मकज़ोरी दिमाग़ को दूर करने वाली (अमृत प्रवाह) १) सैकड़ों बार का आजमाया हुआ धातु पुष्टि चूर्ण २)। इनाम बड़े २ डाक्टर, वकील वैद्य रईसों के सामने बांटा जायगा। हमारे ग्राहक भी इनाम बांटने में शरीक हो सकते हैं उन को आने जाने का खर्च भी दिया जायगा। जानने के लिये नियमावली)॥ का टिकट भेजने पर मुफ़्त मंगाइये

पता:—सूर्य्य, औषधालय,
सनेटरी रोड़—लखनऊ

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ४॥=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास " " " " =)
छः " " " " " ।)॥
सालभर " " " " -)

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २९½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

देखना यह अवसर हाथ से न जाये

आर्य्य समाज लाहौर के वार्षिकोत्सव के स्वागत में १ नवम्बर सन् १४ से ३१ जनवरी सन् १५ तक निम्न लिखित पुस्तकों का मूल्य घटा दिया गया है।

शुद्ध रामायण—जिस की प्रशंसा बड़े बड़े योग्य और प्रसिद्ध विद्वानों और समाचार पत्रों ने मुक्त कंठ से की है २) से १॥)

महाभारत—१८ पर्व सरल हिन्दी भाषा में जिस के प्रकाशक को सरकार से ३००) रुपया पारितोषक मिल चुका ८) से ७)

अन्य हर प्रकार की हिन्दी संस्कृत पुस्तकें स्कूलों के कोर्स हमारे यहां से रिआयत से मिलते हैं।

पता: प्रबन्धकर्त्ता, नागरी, प्रचारणी, कम्पनी लिमिटेड, (Ld.)लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म दर्शनम् ।

ओ३म्

कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति । **श्रद्धा** हिते मघवान् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ साम० प्र० ३ । अर्द्ध० २-१०-८ ॥

"हे, सब के निवास स्थान, सब के स्वामी परमात्मन् ! उस तुझ को कौन मरणधर्मा (मनुष्य) ग्रहण कर सक्ता है ? हे, सर्व पूज्य ! तेरा ज्ञानी पुरुष ही (ऊपर उठ कर) द्यु लोक में स्थित **श्रद्धा** द्वारा ज्ञान में जीवन डालता है।

यह और **वह**-दोनों का ही मेल नैत्तिक जीवन में अनुभव होता है । संसार को स्वप्नवत् समझने वाले मन-माने ब्रह्म ज्ञानी को भी शारीरिक तथा मानासिक क्लेश, झटका देकर, जगा देते हैं । तब पता लगता है कि **यह** और है और **वह** और । यह शरीर परिवर्त्तन शील, नाश मान और वह एक रस, अनादि और अनन्त; आकाश और पाताल का अन्तर है । परन्तु **वह** इन आंखों से दिखाई नहीं देता, इन कानों से सुनाई नहीं देता, इन इन्द्रियों का ग्राह्य नहीं—और ग्राह्य हो भी कैसे सक्ता है ? जो इन्द्रियों का विषय न हो, जो मन के वश में न आने वाला हो, जो बुद्धि से भी परे हो, जो सूक्ष्म वस्तुओं से भी अधिकतः सूक्ष्म हो; उसे कौन मरण धर्मा प्राणी अपनी परिमित बुद्धि की सीमा में बांध सक्ता है !

तब विवश हुआ, तपहीन गिरा हुआ मनुष्य और भी नीचे गिर जाता है । अपनी निर्बलताओं का एक ओर ज्ञान और दूसरी ओर आश्रय का अभाव सा देखकर उसे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार प्रतीत होता है । हाय प्रकाश ! हाय प्रकाश ! यह आर्तनाद आकाश में गूंजने लगता है । हा ! इस समय कोटियों ऐसे आर्तनादों से अन्तरिक्ष लोक भरपूर है । ऐसी अवस्था में कोई विरला ही तपस्वी हो जिसका शिर न घूमने लग जाय । एक ओर अन्तः करण में अपनी निर्बलता, अपनी निस्सहाय अवस्था का प्रत्यक्ष ज्ञान और और दूसरी ओर उस निर्बलता को दूर करने वाले की आवश्यकता का अनुभव परन्तु प्रत्यक्षे में उसका अभाव सा; आंखें चौंधिया जाती हैं, कान बहरे हो जाते हैं, बुद्धि भी चक्कर में आजाती है । तब व्याकुल जीवात्मा उस आशा के प्रकाश की रेखा को भी भुलाने का प्रयत्न करता है जो प्रकाश की रेखा कि उस को किसी ज्योतिः स्तम्भ का पता दे रही है । उतना प्रकाश भी आंखों को चौंधिया रहा है—तब व्याकुल जीवात्मा बलात्कार से आंखें बंद कर लेता है ।

मूंदौ आंख कतहूं कोऊ नाहीं।

परन्तु अविद्या में ग्रस्त भूल जाता है कि चूहे के आंख मूंदने से क्या कहीं बिल्ली से छुटकारा हो सक्ता है । आंखें मूंद कर मृत्यु के मुंह में घुसा चला जाता है । भोले मूर्ख ! संसार को भले ही धोखा देले, परन्तु **सत्य** को कौन धोखे में डाल सक्ता है । ? आंखें बन्द हुई भी खुलने लगती हैं । मौत समीप आती है और आंखें बड़े प्रयत्न से भी नहीं मूंदी जा सक्तीं । यदि मर जाय तब भी तो सम्बन्धी जड़ अवस्था में बल से आंखें बन्द कर देवें, परन्तु यहां तो अभी सिसिकता पड़ा है । आंखों की पुतलियां घूमती हुई, निराशता का स्वरूप, डरावनी मालूम होती हैं ।

यह भयानक अवस्था संसार को डांवांडोल कर देती है । एक का विलाप सैंकड़ों की शान्ति का नाश करने के लिए पर्याप्त है तो क्या कोटियों का मानसिक रोदन पशु पक्षी तथा वनस्पति तक के हृदयों को न दहलाता होगा ?

यही हीन दीन दशा संसार की देखकर **उस** का ज्ञान रखने वाले, **उसी** का नित्य दर्शन करने वाले तथा **उसी** में अपने आप को स्थित समझने वाले ज्ञानियों के हृदय करुणा रस की मूर्त्ति बन जाते हैं । तब वे अपने गिरे हुए भाइयों को उठाने के लिए ज्ञान की बाहु पसार देते हैं । भाइयों को उठाने की प्रबल इच्छा भी है, उस के लिए प्रयत्न भी है; परन्तु केवल ज्ञान रूपि बाहु अशक्त सिद्ध होती है । उठने के स्थान में वे गिरे हुए आत्मा, उस ज्ञान रूपी बाहु को भी नीचे खींचने लगते हैं । उस समय देवी सरस्वति का विकाश होता है और उस की प्रदान की हुई **श्रद्धा** रूपी अमृतधारा का श्रोत खुल जाता है। मरते हुओं के अन्दर जीवन आजाता है और वे अपने उठाने का प्रयत्न करने वाले **ज्ञानी बड़े भाई** को स्वयम् अपने उठने में सहायता देते हैं। और तब भाई, भाई के हाथ में हाथ दिए जीवन से भर पूर एक स्वर होकर कहते हैं—

श्रुतिमात्र रसाः सूक्ष्माः, प्रधान पुरुषेश्वरः ।
श्रद्धा मात्रेण गृह्यन्ते न करेण न चक्षुषा ॥
श्रद्धाविधि समायुक्तं कर्म यत् क्रियते नृभिः ।
सविशुद्धेन भावेन तदानन्त्याय कल्पते ॥

शमित्योऽम् ।

(श्रद्धानन्दः)

प्रचारक परिवार से क्षमा प्रार्थना

विलम्ब का कारण

इतने सप्ताह तक प्रचारक प्रकाशित नहीं हो सका, इस के लिये हम जितनी क्षमायें मांगें कम हैं । इस अनुपस्थिति का हमें बड़ा दुःख है। किन्तु इस में हमारा अपराध नहीं । जिस सप्ताह दिल्ली से प्रचारक का निकलना बन्द हुआ, उस के अन्त में गुरुकुल से प्रचारक का डिक्लरेशन भेज दिया गया था । जहां तक हमारा कर्तव्य था, पूरा हो गया । अब मामला सरकारी हाथों में पहुंच गया । बीच में बड़े दिनों की छुट्टियां आ गईं, और सरकारी दफ्तरों में, पत्रों के डिक्लरेशनों पर विचार करने जैसे अत्यन्त अनावश्यक काम रुके रहे। धीरे २ मशीन के पुर्जे, हिले और लग भग एक मास पीछे हमें सूचना मिल गई कि प्रचारक का डिक्लरेशन विना ज़मानत के स्वीकृत हो गया । प्रचारक के गले में ज़मानत का फन्दा न डालने के लिये बिजनौर के कलेक्टर मि० स्टब्स का हम धन्यवाद करते हैं । साथ ही हम सरकार का भी धन्यवाद करते हैं जो बिजनौर के ज़िले में प्रायः ऐसे कलेक्टर भेजती है, जो सहानुभूति को अपना पथदर्शक बनाते हैं ।

एक महीना डिक्लरेशन में लगा, एक सप्ताह से कम में पोस्ट आफिस में रजिस्टर्ड हो जाने की आशा रखना व्यर्थ है । इस प्रकार सवा महीना यों ही बीत गया । इस विलम्ब ने हमारे पाठकों को तो दुःख दिया ही होगा, हम स्वयं इस के लिये बहुत चिन्तित रहे । ये ही दिन हैं, जिन में प्रचारक को अपना कर्त्तव्य विशेष रूप से पालन करना होता है । गुरुकुल का वार्षिकोत्सव निकट आ रहा है, और साथ ही कुम्भ प्रचार के दिन भी दूर नहीं रहे । ऐसे समय हम प्रचारक प्रेमियों से बात चीत न कर सकें, यह बड़े दुःख की बात होती है ।

न्यूनता की पूर्ति

इतने दिनों तक प्रचारक नहीं निकला, इस से हमारे ग्राहकों को केवल मानसिक चिन्ता ही नहीं रही, साथ आर्थिक हानि भी हुई । उन के इतने अंक मारे गये । हम अपने पाठकों को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उन का एक भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अंक मारा नहीं जायगा। प्रचारक छपने का प्रबन्ध ठीक हो जाय, और हमारा प्रेस इस योग्य हो सके। और अधिक छपाई कर सके, तो हम पिछली सारी कसर पूरी कर देंगे। कसर दो प्रकार से पूरी की जा सकती है। एक तो प्रचारक के साथ अधिक पत्र लगा कर, और दूसरे इकट्ठी एक ही पुस्तिका ग्राहकों की भेंट कर के पुस्तिका में ग्राहकों को लाभ रहेगा। कई विषयों के उत्तमोत्तम निबन्ध छपवा कर ग्राहकों की सेवा में भेजने से उन्हें स्थायी साहित्य मिल सकेगा। हम सोचेंगे कि इन दोनों रीतियों में से कौनसी सुलभ है, और तब तक कृपया हमारे पाठक हमें अपनी इच्छा से सूचित करें।

भावी कार्य प्रणाली

प्रचारक वैसा ही हो जायगा, जैसा दिल्ली जाने से पूर्व था। धर्म, समाज, गुरुकुल, साहित्य और नीति आदि सब विषयों का यथोचित समावेश रहा करेगा। हम प्रचारक के लिये यत्न कर सकेंगे, वह गौण होगा; सब से बड़ा लाभ यह होगा कि महात्मा जी के लेख ग्राहकों को लेख अधिकता से पढ़ने मिलेंगे। यहीं प्रचारक रहने से वे उस पर अपनी विशेष कृपा रख सकेंगे। गुरुकुल के योग्य उपाध्यायों के लेखों से भी प्रचारक को सुशोभित करने का यत्न किया जायगा। सारांश यह कि प्रचारक आगे से और भी अधिक उपयोगी हो जायगा। अधिक कहना व्यर्थ है, प्रचारक के प्रेमीपाठक स्वयं सब कुछ देख लेंगे।

धन्यवाद

इस अनुपस्थिति के समय में प्रचारक परिवार ने जो प्रेम और धैर्य दिखाया है, उस के लिये हम जितने धन्यवाद करें, थोड़े हैं। ग्राहकों के जितने पत्र हमारे पास आये, उन में यही पूछा गया था कि 'प्रचारक कब निकलेगा?' न कोई शिकायत थी, और न कोई अधीरता। पूर्ण विश्वास का भाव प्रकाशित किया गया था। विश्वास ऐसा पदार्थ है जो विश्वासी को चैन देता है और विश्वास पात्र को विश्वास के योग्य बनाता है। प्रचारक अपने ग्राहकों का सदा विश्वास पात्र रहा है, और वे भी उस पर विश्वास करते रहे हैं। परमात्मा करें, यह विश्वास सदा स्थिर रहे।

विश्वासे परमं सुखम्।

विजय के विषय में

निवेदन

(१) विजय पत्र के बन्द होने का समाचार उस पत्र के ग्राहकों को मिल चुका है। विचार था कि उसे किसी और स्थान से निकालने का यत्न किया जाय, किन्तु सफलता न हुई उन्ही दिनों में प्रेम महाविद्यालय के संस्थापक कुँवर महेन्द्रप्रताप विलायत जा रहे थे। उन्होंने पं० हरिश्चन्द्र जी को भी प्रेरणा की, और २० दिसम्बर को दोनों ही बम्बई से इंग्लैण्ड के लिये चल दिये। पं० हरिश्चन्द्र जी का विचार था कि विजय का पुनरुद्धार किया जाय। वे सम्भवतः महीनों में ही लौट आयंगे। ऐसी दशा में उन के पीछे हम विजय का अन्त्येष्टि तो नहीं करेंगे, और न विजय के ग्राहक ही ऐसा चाहेंगे। इस लिये ग्राहकों को उन के आने की प्रतीक्षा करनी चाहिये। हां, एक बात निश्चय है। जिस दिन यह निश्चय हो जायगा कि विजय अब सर्वथा नहीं निकलेगा, उसी दिन उस के ग्राहकों के शेष चन्दे की कौड़ी २ लौटा देना हमारा कर्त्तव्य होगा। ग्राहक महाशय चिन्ता न करें।

(२) इतनी देर के लिये भी जिन ग्राहकों को धैर्य न हो, वे अपना चन्दा या तो सद्धर्म-प्रचारक में योग करा दें, या उन से हमारे यहां की पुस्तकें मंगवालें। इन दोनों दशाओं में हमें और उन्हें दोनों को लाभ रहेगा।

(३) जिन लोगों के विज्ञापन विजय में छपते थे, वे अपना भेजा हुआ रुपया या तो प्रचारक के हिसाब में डलवा कर उस में अपना विज्ञापन छपादें अथवा हमें लिखदें ताकि हम महसूल काट कर शेष रुपया उन्हें भेजदें। प्रचारक में विज्ञापन की छपाई का मूल्य विजय से अधिक होता है, तथापि हम उतने दिनों तक विज्ञापन छाप देंगे। एजंसी वालों का हिसाब साफ़ किया जा रहा है।

इन्द्र

उषा ! उषा !! उषा !!!

संस्कृत मासिक पत्रिका

सर्वथा नये ढंग पर सरल तथा मनोहर संस्कृत में प्रति मास प्रकाशित होती है।

इस में धार्मिक ऐतिहासिक सामाजिक तथा अन्य शिक्षाप्रद लेख और टिप्पणियें और नयी २ कविताएं और गीतियें प्रति मास घर बैठे पढ़िये और गाइये और आनन्द उठाइये।

देवभाषा के प्रेमी जनों को और संस्कृत में अनुरक्त छात्रों को इस समय न चूकना चाहिये। नमूने का अङ्क =) का टिकट भेजने पर अवश्य भेजा जायगा। मूल्य केवल १॥) वार्षिक।

पता—

प्रबन्धकर्त्ता उषा

गुरुकुल कांगड़ी

नोट—लेख आदि के विषय में सम्पादक ही से पत्र व्यवहार होना चाहिये।

आर्य समाजिक समाचार

भावी उत्सव—

(१) मेरी सारदा सदन सहारनपुर का वार्षिकोत्सव २९ से ३१ जनवरी तक होगा।

(२) आर्य-समाज ठंडी सड़क कानपुर का वार्षिकोत्सव १२, १३, तथा १४ फरवरी को होगा। महात्मा मुन्शीराम जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, प्रो० दीवानचन्द्र जी आदि विद्वान् महात्मा पधारेंगे।

(३) आर्य-समाज चौक कानपुर का वार्षिकोत्सव ३०, ३१ दिसम्बर तथा १, २ जनवरी को होगा। श्री स्वामी मुनीश्वरानन्दादि उपदेशकों के व्याख्यान होंगे।

(४) आर्य-समाज आरा का वार्षिकोत्सव ३१ जनवरी से ४ फरवरी तक होगा।

(५) आर्य-समाज पटियाला का वार्षिकोत्सव १३, १४, १५ मार्च को होगा।

(६) आय-समाज बीवां का वार्षिकोत्सव २०, २१, २२ फरवरी को होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

गुरुकुल का अधिकार

आर्य जाति पर

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव समीप आ रहा है। २० चैत्र (२ अप्रैल) से ही सरस्वती सम्मेलन की बैठक आरम्भ हो जायगी। उस समय स्वदेश के सर्व प्रकार के मुखिया गुरुकुल भूमि में एकत्र होंगे। कुम्भ के कारण और भी अधिक भीड़ होगी।

लोग कहते हैं कि अन्य प्रकार से तो गुरुकुल का उत्सव कृतकार्य होगा, परन्तु रुपया इस वर्ष बहुत कम आवेगा। क्या इस जनश्रुति के फैलाने वालों का विजय होगा? इस प्रश्न का उत्तर आर्य जाति मात्र ने देना है। घर घर अलख जगा कर भिक्षा करने का मेरा विचार सर्वथा शिथिल हो गया है। शरीर में निरन्तर यात्रा कर के व्याख्यान देने की शक्ति नहीं रही और इधर गुरुकुल के वायु मण्डल को उचित अवस्था में रखने का प्रश्न है। इस लिए अब धन एकत्र करने के लिए तो मेरा बाहर जाना असम्भव है। यहां बैठ कर मैं केवल प्रचारक द्वारा ही अपना निवेदन जन साधारण को सुना सक्ता हूं।

प्रचारक जब से बन्द हुआ तब से गुरुकुल का सन्देश ही बाहर जाना बन्द हो गया। आर्य समाज के अन्य पत्र अपनी २ संस्था तथा अपने अपने व्यसन के लिए काम करना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं; और वे हैं भी सच्चे। समय का प्रभाव ही ऐसा है—जागे सो पावे, सोवे सो खोवे। एक समय मेरा विचार हो गया था कि सद्धर्मप्रचारक को बन्द कर दिया जावे, यदि ऐसा हो जाता तो कैसी हानि गुरुकुल तथा आर्य समाज की अन्य सार्वदेशिक संस्थाओं को पहुंचती इस का अनुभव मैंने गत डेढ़ मास में किया है।

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव समीप पहुंचा और आर्य पुरुष हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। यह मैं जानता हूं कि आप लोग सहस्रों की संख्या में चल कर गुरुकुल भूमि के शान्तिदायक दृश्यों का आनन्द लूटने की तय्यारी कर रहे हैं, परन्तु यदि आप यहां से गुरुकुल का कोष भर कर न लौटे तो गुरुकुल के प्रबन्धकर्त्ताओं को चिन्ता में फंसे हुए छोड़ जायंगे। यह रङ्ग में भङ्ग ही होगा। मैं विशेष प्रकार गुरुकुल कोष को भरने का बतला चुका हूं। यदि ५०००) देने का सामर्थ्य है तो आप की ओर से बिना शुल्क एक बालक सदा के लिए ब्रह्मचर्य्य व्रत पूर्ण करता रहेगा। यदि इतना नहीं दे सक्ते तो १०००) वा ५००) देकर अपना नाम बड़े पत्थर पर खुदवा लीजिए जिस से इस गुरुकुल के जीवित रहने तक आपका नाम सज्जनों के दृष्टि गोचर होता रहे। परन्तु इस के अतिरिक्त गुरुकुल को सहायता देने का और भी ढङ्ग है।

उपदेशक महाविद्यालय खुल चुका है। जो महाशय ७२०) रुपया एक दम देदें उन की ओर से एक "आर्य्य धर्मोपदेशक" तय्यार हो कर वैदिक धर्म का प्रचार कर सकेगा। कृषि विद्यालय खोलने की तय्यारी हो रही है। उस के लिए एक कूप तो कलकत्ते के सेठ ताराचन्द्र घनश्यामदास जी की ओर से लग रहा है। दो कूप और लगने चाहिएं जो फलों के वृक्षों तथा खेती को पानी दे सकें। प्रत्येक कूप पर १२५०) लगेगा; दो दानी यदि साढ़े बारह बारह सौ दे दें तो यह कार्य सिद्ध हो जाय। फिर कृषि महाविद्यालय के लिए—जिस में लोहारी तरखानी इत्यादि कारख़ाना भी होगा—कम से कम चार ऐसे कमरे चाहिएं जिन में शिक्षा के सब सामान रहेंगे और काम होगा। इन में से प्रत्येक कमरे पर एक २ हज़ार व्यय होगा। एक बड़ा कमरा कारख़ाने का होगा जिस के लिए २५००) चाहिए। आगामी वर्ष फिर से (Work.shop) कारख़ाने को भली प्रकार चलाने का प्रबन्ध करना है। आयुर्वेद की शिक्षा को भी बढ़ाने का विचार हो रहा है। जिन महाशयों ने उसके लिए प्रतिज्ञाएं की थीं उनको अपनी प्रतिज्ञाएं पूरी करने का प्रयत्न करना चाहिए। जो महाशय इस विद्या के साथ विशेष प्रेम रखते हैं उनको इसी के लिए विशेष दान भेजना चाहिए।

यह सबतो विशेष दान होंगे, परन्तु गुरुकुल अबतक साधारण धनहीन पुरुषों की सहायता से ही चलता रहा है। उन से ही अधिक आशा रहती है। यदि वेलोग अब सेही धन संग्रह करना आरम्भ करदेंगे तो दो मास में बहुत कुछ इकट्ठा हो सक्ता है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय का गौरव समझ समझ कर भी उस से उदासीनता एक विचित्र घटना है जिसे देख कर कई वार विदेशियों को आश्चर्य हुआ करता है। एक अमेरिकन सभ्य ने मुझे कहा था कि यदि गुरुकुल की संस्था कोसा विचित्र विचार कहीं अमेरिकन जनता के सामने रक्खा जावे तो उस की आवश्यकता से दश गुना धन एक दम एकत्र हो जावे। परन्तु हमारे देश में अभी तक अपने हानि लाभ को समझने की योग्यता बहुत कम है। जब मेरी शारीरिक दशा ने बाहर अधिक से अधिक बिगड़ कर यह सिद्ध कर दिया है कि अब यात्रा का कष्ट मैं सहन नहीं कर सक्ता तब भी आर्य्य समाज के बहुत से शिरोमणि नेता मुझे यही कहते हैं कि धन के लिए मैं ही बाहर जाऊं क्योंकि मेरे बाहर गए बिना धन नहीं मिलेगा। परन्तु मेरा विश्वास इस से विपरीत है। मेरा निश्चय यह है कि यदि भारत निवासी ब्रह्मचर्य्याश्रम के पुनरुद्धार की आवश्यकता समझते हैं तो बिना मांगे भी गुरुकुल के कोष को भर देंगे और कुछ विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता न होगी; परन्तु यदि आर्य्य जाति को ही इस आश्रम की आवश्यकता में श्रद्धा नहीं है तो फिर यथा तथा धन मांग कर इस काम को चलाने से भी कुछ लाभ नहीं।

मुझे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की शक्तियों पर विश्वास है। मैं समझता हूं कि केवल भारतवर्ष का ही नहीं प्रत्युत संसार भर की सभ्यता का उद्धार इसी से होगा। इस लिए मैं तो यहां ही जम कर बैठूंगा। यदि गुरुकुल को चलाने के लिए सब समान मिलते गए तो यह संस्था चलती ही रहेगी, परन्तु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदि आर्य जाति की उदासीनता और असावधानी के कारण इस आश्रम को बन्द करना पड़ा तो मुझे यह सन्तोष तो रह जायगा कि आदर्श की ओर चलते हुए हमारे प्रयत्न की समाप्ति हुई है।

एक बात और स्मरण में रखने योग्य है। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के नाम पर अपील करने से ही इस समय छोटी बड़ी संस्थाओं के लिए धन आता है और कुछ काम भी हो रहा है। यदि सर्व ऐसी संस्थाओं को जन्म देने वाले कुल को कुछ हानि पहुंची तो उन का भी चिन्ह शेष न रहेगा। इस लिए आर्य जाति मात्र को गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी की सहायता के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

(मुन्शीराम)

गत दो महीने

घटनाचक्र

लगभग दो महीने बीत गये। इतने दिनों तक हमें संसार के समाचारों पर सम्मति देने का अवसर नहीं मिला। ये दो महीने घटनाओं से हीन नहीं थे। आज कल तो एक एक दिन मनुष्य जाति की दशा में भेद कर देने वाला है। हम इतनी दूर बैठे नहीं जानते कि योरप के भाग्यों में क्या परिवर्तन आरहा है। गत बीस सदियों के इतिहास में ऐसा कोई भी समय नहीं गुज़रा, जिसने इतना भयानक संग्राम देखा हो। अभी तक तो केवल मरते हुए मनुष्यों की संख्या ही भयावनी प्रतीत होती है, किन्तु थोड़े दिनों में नष्ट होते हुए साम्राज्यों की दशा का दृश्य उपस्थित होगा। यह युद्ध साम्राज्यों के रूपों में परिवर्तन किये बिना न रहेगा। गत दो महीनों में इस युद्ध के रूप में बहुत कुछ परिवर्तन आ गया है। जर्मनी का आक्रमण रुक गया है। अब वह आक्रमण नहीं कर रहा, रक्षा कर रहा है। लड़ाई का ज़ोर पश्चिमीय युद्ध भूमि से हट कर पूर्वीय युद्धक्षेत्र में चला गया है। टर्की का युद्ध में आना मिसर के लिये भय दायक नहीं हुआ। कम से कम अभी तक तो कोई ख़तरा प्रतीत नहीं होता। उधर टर्की और रूस के युद्ध में टर्की की सेनायें बहुत मरी हैं, किन्तु अभी कुछ निश्चय नहीं कि किस का हाथ ऊंचा रहेगा।

जातीय सप्ताह

इन्हीं दो महीनों में जातीय सप्ताह भी गुज़र गया। दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह मद्रास को भारत के उत्तम उत्तम वक्ताओं के व्याख्यान सुना गया। कांग्रेस के नेता एकत्र हुए और व्याख्यान दे देकर पृथक् होगये। साल भर का भरा हुआ गुब्बार निकल गया और इस क्रिया का नाम हमारे राजनीतिक नेताओं ने "एजीटेशन" रखा है। कांग्रेस रूपी महा प्रहसन के साथ और भी छोटे २ कई प्रहसन हुआ करते हैं। वे भी कृत कार्यता (?) के साथ 'समाप्त' हुए। कांग्रेस के पक्षपाती, प्रहसन शब्द के प्रयोग के लिए हमें क्षमा करें। कांग्रेस प्रहसन नाम से ही कहायगी, जब तक इसके कार्य को स्थायी रूप नहीं मिलेगा। जिन देशों में प्राण होते हैं, उनकी जातीय महा सभायें इतनी शब्दप्रधान नहीं हुआ करतीं। ऊपर के शब्द सुनकर जब कोई विदेशी कांग्रेस में घुसता है, तो थोड़े ही समय में उसे ज्ञात हो जाता है कि "यावच्चर्म च दारु च" यहां तो लकड़ी और चाम के सिवा कुछ भी नहीं।

धार्मिक उत्सव

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में दो धार्मिक उत्सव भी बड़ी शान से हुए। उनका वर्णन हम ने अन्त में इसलिये नहीं किया कि वे अनावश्यक थे, प्रत्युत इस लिये किया है कि हमारी दृष्टि में सारे जातीय महोत्सवों की अपेक्षा एक साधारण सी पाठशाला का उत्सव भी अधिक आवश्यक है। उस उत्सव में कुछ कार्य तो होता है। पाठशाला के सहायक पैदा होते हैं और विद्यादान के कार्य में लोगों का धन व्यय होता है। ये दोनों उत्सव वृन्दावन और सूरत में हुए। वृन्दावन में गुरुकुल वृन्दावन का महोत्सव था। इस से किसी को भी इन्कार नहीं है कि उत्सव को बहुत भारी सफलता प्राप्त हुई। इतनी सफलता की आशा नहीं थी। उपदेश, जन संख्या और धन की सहायता--सभी प्रकार से उत्सव पहले सालों की अपेक्षा अधिक शान्दार हुआ। आर्य समाज के बड़े २ उपदेशकों और विद्वानों के व्याख्यान हुए। अपील पर लग भग १६ हज़ार रुपया भी एकत्र हुआ। यह राशि पहले साल की अपेक्षा अधिक है। दूसरा धार्मिक महोत्सव सूरत में हुआ। बम्बई प्रान्त की आर्य्य समाजें हर साल एक बड़ी आर्य्य धर्म परिषद् किया करती हैं। इस परिषद् में आर्य्यसमाज के सब प्रान्तों के विद्वान् जाकर व्याख्यान देते हैं। इस वर्ष इस परिषद् का अधिवेशन सूरत में था। जो लोग वहां उपस्थित थे, उनका कथन है कि उत्सव को पूरी सफलता प्राप्त हुई।

एक नया विरोध

इन दो महीनों का एक शोक जनक समाचार भी है। इस समाचार को सुनाते हुए हमें बड़ा दुःख होता है। वह समाचार यह है कि युक्त प्रान्त के आर्य्य समाजों में जन्म या कर्म से वर्णव्यवस्था के झगड़े को लेकर कई लोगों ने विरोध की अग्नि प्रज्वलित करनी आरम्भ करदी है। आर्य्यसमाज में आगे ही पर्याप्त घरू झगड़े हैं। झगड़ा या विरोध बुरा है, यदि वह व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए उठाया जाय। सिद्धान्तों के लिए झगड़ना केवल अच्छा ही नहीं, आवश्यक भी है। सिद्धान्तों पर यदि मत भेद हो तो दोनों पक्षों की युक्ति प्रत्युक्ति द्वारा उस का तय हो जाना अच्छा होता है। किन्तु जहां सिद्धान्तों का भेद प्रतीत न हो, और फिर भी भेद करने का यत्न किया जाय तो सिवा इस के और क्या कहें कि भेद करने वाले लोग "ते के न जानीमहे"। वे कौन हैं यह हम नहीं जानते।

विरोध का पूर्व रूप

गत वर्ष गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव पर श्री पं० तुलसीराम जी के स्थान पर युक्त प्रान्त प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री० पं०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

घासीराम जी बनाये गये। यह एक साधारण घटना थी। जहां चुनाव से अधिकारी नियत किये जाते हैं, वहां अधिकारियों में भेद आता ही रहता है। उस भेद के लिए लोक मत की अस्थिरता के अतिरिक्त अन्य कोई बढ़िया कारण बतलाना कठिन है। इस चुनाव में भी कोई विशेषता नहीं थी। दैव वश इसी उत्सव के किसी अधिवेशन में किसी पण्डित ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के सन्मुख वर्ण व्यवस्था के विषय में ऐसे विचार प्रकट किये, जो वेदों के तथा ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त के विरुद्ध थे। पं० घासीराम जी को उन का प्रतिवाद करना पड़ा। इसी प्रकार उसी अवसर पर एक कान्फरेंस में प्रो० रामदेव जी को वैदिक वर्ण व्यवस्थामत खंडन कर के सच्चे और झूठे ब्राह्मणत्व में भेद दिखाना पड़ा। इस पर कई लोग भड़क गये और उन्हों ने पं० घासीराम जी के प्रधान चुने जाने और वैदिक वर्ण व्यवस्था को परस्पर को मिला कर प्रसिद्ध कर दिया कि बाबू मण्डली चाहती है कि ब्राह्मण मण्डली आर्य-समाज से निकल जाय। ऐसी २ बातों के प्रसिद्ध होने पर भयानक विरोध का भड़क उठना सर्वथा सम्भव हो जाता है।

विरोध का फूट पड़ना

गुरुकुल वृन्दावन के इस उत्सव पर यह परस्पर विरोध फूट पडा। सन्यासिवृन्द ने वैदिक वर्ण व्यवस्था का बल पूर्वक मण्डन करते हुए उन्होंने कई "कड़वे सत्य" कह दिये. जिन से किसी को नाराज़ होने की आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि वे थे तो आखिर सत्य ही। हम सन्यासी महाशयों के वाक्यों की कटुता का मण्डन नहीं करते। हमारी सम्मति है कि यदि वह कटुता न आती तो बहुत अच्छा होता वैदिक वर्ण व्यवस्था का मण्डन कटु शब्दों के प्रयोग के बिना भी हो सकता था। हम ने सुना है कि श्री स्वामी अच्युतानन्द जी ने तथा श्री स्वामी सर्वदानन्द जी ने भी वैदिक वर्ण व्यवस्था का मण्डन किया था, किन्तु उन के व्याख्यानों में कडवापन नहीं आने पाया। यदि अन्य महोदय भी इसी पथ का अनुसरण करते तो कोई विशेष हानि नहीं होती। इस बार के चुनाव में फिर पं० तुलसीराम जी प्रधान नहीं बन सके। इस घटना को स्वार्थी लोगों ने वर्ण व्यवस्था विषयक व्याख्यान के साथ मिला कर उपजे हुए विरोध को खूब भड़काना प्रारम्भ किया है।

हमारा कर्त्तव्य

यह घोर विरोध इन दो महीनों की उपज है। प्रत्येक आर्य पुरुष का कर्तव्य है है कि वह शान्ति पूर्वक विचार करे और आर्य समाज में इस नई विरोधाग्नि को न भड़कने दे। सिद्धान्त पर यदि कोई मत भेद हो तो विचार होता रहे, किन्तु विना किसी सिद्धान्त विरोध के झगड़ा उठाना बहुत अनुचित है। विरोध राक्षस ने आर्य-समाज को पहले ही बहुत निर्बल कर रखा है। अब इस हत्यारे के लिए समाज के पेट में स्थान नहीं है। प्रतीत होता है कि सिद्धान्तों में कोई भेद नहीं है, यदि है तो कम से कम कोई मानना नहीं चाहता। हम ने अपने किसी गत अंक में लिखा था कि महाविद्यालय ज्वालापुर के अधिकारी जन्म से वर्ण व्यवस्था मानते हैं। महाविद्यालय का मुख पत्र भारतोदय हमें विश्वास दिलाता है कि हमारा विचार अशुद्ध है। हम अपने विचार का अशुद्ध होना सुन कर बहुत खुश हुए हैं। भारतोदय के लेख में हमें यह विश्वास दिलाने का यत्न किया गया है कि महाविद्यालय के कार्य कर्ता ऋषि दयानन्द के लेख के अनुसार ही वैदिक वर्ण व्यवस्था मानते हैं. हमें शोक है कि महाविद्यालय के "सब" मुख्य कार्य कर्ताओं के विषय में हम यह नहीं मान सकते, क्योंकि जो कुछ हम अपने कानों सुन चुके हैं और आंखों देख चुके हैं, उस का निषेध कैसे मान लें? तथापि सहयोगी के लेख से यह जान कर हमें प्रसन्नता हुई कि महाविद्यालय के कार्य कर्त्ता अधिकारी रूप से वैदिक वर्ण व्यवस्था को मानते हैं। हमें पूरी आशा है कि इसी मत पर दृढ़ करते हुए महाविद्यालय के कर्मचारी आगे से किसी अजन्म ब्राह्मण को यह शिकायत करने का अवसर नहीं देंगे कि कोई उक्त ब्राह्मणेतर व्यक्ति महाविद्यालय के कर्मचारी वर्ग में या विद्वत् सभा में उच्च पद नहीं पा सकता।

शेष रह गया पं० अखिलानन्द का प्रश्न। पं० अखिलानन्द ने कलकत्ता समाचार और वीर भारत में जो लेख लिखे हैं, उन्हों ने उन की धर्म-दुहाई को सर्वथा झूठा दिया है। उन लेखों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि पं० अखिलानन्द किस ओर को बह रहे हैं। अब भी यदि आर्य समाजी लोग इस व्यक्ति के वास्तविक रूप को न समझें तो फिर उन के लिये निराश हो जाना चाहिए। इस समय तक यह सिद्ध हो चुका है पं अखिलानन्द जी को आर्य-समाज से कोई विशेष प्रेम नहीं है। वर्तमान विरोध को भड़काने वाले भी पं० अखिलानन्द ही हैं। हमें पूरी आशा है कि आर्य-समाजें इस विरोध की असली दशा को समझ जायंगी और बढ़ने न देंगी। अगले सप्ताहों में हम विशेष रूप से यत्न करेंगे कि यह उठता हुआ नया विरोध रूपी तूफ़ान बढ़कर आर्य-समाज को चकनाचूर न करने पावे।

प्राचीन नौका विज्ञान

(६)

(मौर्य चन्द्रगुप्त)

दिग्विजेता सिकन्दर का लौटना पाठक महाशय सुन चुके। उस के बड़े २ बेड़ों की यात्राएं सुन चुके। अब आगे चलिये। देखिये! भारत भर में एक राज्य की ध्वनि फिर सुनाई देने लगी शान्ति का राज्य आन पहुंचा। नन्द से दुर्दान्त राजे अपने घमण्ड से चूर हो कर ब्राह्मण कोप से राख हो गये। भारत की भाग्य वैजयन्ती पटना में फिर से लहराने लगी। जय जय कार का नाद घर २ सुनाई देने लगा। समझे पाठक क्या हो रहा है? ये महाराज चन्द्रगुप्त की सवारियां निकल रही हैं। अब चन्द्र-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रगुप्त का राज्य काल आ गया महामात्य चाणक्य की बनाई नियमावली का स्थान २ पर आदर हो रहा है। तत्प्रयुक्त दण्डनीति का सर्वत्र विधान है। देश २ में शिक्षा के लिये बड़ी २ संस्थाएं खुल गई हैं प्रजा अत्यन्त नियम से शासित है। सरहदों पर म्लेच्छों का आक्रमण सर्वथा रोकने के लिये भारत के नर रत्न चन्द्रगुप्त ने बड़ी मोर्चाबन्दी से किलों पर कड़ा प्रबन्ध किया है। सामुद्रिक लुटेरों तथा धोखेबाज़ म्लेच्छ जातियों के कुटिलता पूर्ण व्यापारीय अत्याचार और छलों और आक्रमणों से बचाने के लिये और नये २ स्थान ढूंढनिकालने के लिये बड़े बन्दरगाहों पर जहाजों के बेड़े रखे गये हैं। इस काल में प्राचीन भारत की सामुद्रिक उन्नति का सूर्य नये सिरे से चढ़ गया है। लढ़ाकू जहाज़ व्यापारी जहाज़ क्या सब कुछ तय्यार है। भारतवर्ष का व्यापार, भारतवर्ष का राज्य, भारतवर्ष का सात समुद्रों पार तक के द्वीपों पर कड़ा दबदबा सा छाया प्रतीत होता है

अब इस समय के वाक़यात भी सुनिये। डाक्टर स्मिथ कहते हैं कि गम्भीर समुद्रों में जाते हुवे टेमोवेन नामक मल्लाह तारों का ध्यान नहीं रखते थे इस लिये वे दिशाओं को जानने के लिये पक्षियों से काम लेते थे।

चन्द्रगुप्त के समय में जहाजी उन्नति अपनी युवावस्था पर दीखती है सामुद्रिक युद्ध विभाग ही अलग दीखता है। यदि इस समय भारत के पास एक ड्रेडनाट भी नहीं तो न सही, परन्तु उस समय हजारों होंगे। इस बात को सिद्ध करने के लिये हम को कोई आवश्तकता नहीं कि हम किसी यात्री मेगस्थनीज़ या स्ट्रेबो की शरण लेते फिरें। इस बात के लिये हमें और ही कुछ कहना चाहिये। चन्द्रगुप्त हमारा अपना राजा है। मन्त्री ब्राह्मण चाणक्य है, चलो चाणक्य के घर। महामात्य से ही सब कुछ इस विभाग का पूछ ताछ लेंगे। कौटिल्य महाराज का बनाया अर्थशास्त्र ही हमारे इस कार्य में बड़ा सहायक है। ये अर्थशास्त्र सारे संस्कृत साहित्य में एक अनुपम कृति है। इस को देख कर वर्त्तमान ऐतिहासिक विद्वानों की आँखें खुल गई हैं।

इस के अनुशीलन से प्रतीत होता है कि मौर्य जैसे सच्चे राजा से भारत भूमि किस प्रकार शासित थी। आइये अपने राजा के राज्य के युद्ध विभाग के गुप्त रहस्य जानने के लिये महामात्य चाणक्य से पूंछ लें।

आप बतलाते हैं कि बड़े सामुद्रिक विभाग के बड़े २ अफ़सर भी निश्चित थे जिन का कार्य जहां तहां नौ विभाग पर पूरी तौर पर देख देख रखना था।

"नावध्यक्षः समुद्र संगमान्
नदीमुखतर प्रचारांश्च।
देवसरो विसरो नदीतरांश्च
स्थानीयादिष्ववेक्षेत।"

सामुद्रिक कर के विषय में कहते हैं कि—

"तद्वेलाकुल ग्रामाःक्षसंदद्युः।
मत्स्यबन्धकाः नौका हाटकं षड्भागं दद्युः।
पतनानुवृत्तं शुल्कभागं वणिजा दद्युः।
यात्रावेतनं राजनौभिः संपतन्तः।
शंखमुक्ताग्राहिणो नौकाहाटकंदद्युः।
स्वनौभिर्वा तरेयुः।"

इस प्रकार आपने देख लिया कि कहां २ अध्यक्षता थी और मछली का व्यापार करने वालों पर किस प्रकार कर लगता था। शंख मोती आदि समुद्र से निकाल कर बेचने वालों पर कर लगता था। और लोगों के अपने जहाज़ भी होते थे।

आगे बताते हैं कि जो समुद्र में भटके हुवे प्रबल प्रचण्ड वायु के और आंधियों के झकोरों से थपेड़े खाये हुवे किनारे पर आजांय तो उन का नावध्यक्ष क्या प्रबन्ध करे?।

"मूढवाताहतानां पितेवाऽनु गृह्णीयात्

ऐसे आदमियों पर वह पिता की न्याईं अनुग्रह=कृपा करे।

"उदक प्राप्तं पण्यंशुल्कमार्धशुल्कं वा कुर्यात्"

उन के माल पर टैक्स न लगाए या लगाना हो तो आधा ही लगाये। आज कल सा नहीं, कि लंगोटी भी नीलाम करदी और कौड़ी झाड़ ली जाय।

"निर्दिष्टाश्चैता पण्य वत्ता न् यात्रा कालेषु
प्रेषयेत्।"

जैसे के तैसे स्थान पर जहां भी वे जाना चाहते हों व्यापारी स्थानों के रास्ते खुल जानें पर उन को यथा स्थान पहुंचा दे।

"पुरुषोपकरण हीनायाम् असत्कृतायां

वा नाविविपन्नायां नावध्यक्षः नष्टं विनष्टं वा
अभ्याभावयेत्।"

या जिस जहाज़ के आदमी मर जांय या सामग्री नष्ट हो जाय या कोई आपत्ति आ जाय तो नावाध्यक्ष का काम है कि वह उन के नष्ट हुवे माल को पूरा करदे।

"शासक नियमन दात्र रश्मि ग्राहक सेचकाधिष्ठिताश्च महानावो महानदीषु प्रयोजयेत्।

ऐसी बड़ी २ नावों और जहाज़ों को बड़ी २ नदियों में चलाये जिस में शासक या कैप्टिन हो एक नियामक प्रबन्धकर्त्ता हो एक दाल लंगर उठाने वाला हो एक रस्सियें पकड़ने वाला एक पानी निकालने वाला इस प्रकार नाना अधिष्ठातों से अधिष्ठित हों।

इत्यादि नाना प्रबन्धों से विदित होता है कि सामुद्रिक विभाग भी था जिस का खूब सुप्रबन्ध था।

शत्रुओं के जहाजों का क्या करना चाहिये सो महामात्य कहते हैं।

हिंस्र का निर्घातयेत् अमित्रविषयातिगाः

पण्य पत्तन चारित्रोपमातिकाश्च इत्यादि

इस प्रकार और भी आन्दोलन से और भी पता लगाया जा सक्ता है इस को मैं यहां ही छोड़ता हूं और आशा करता हूं विद्वान लोग इसे स्वयं पूरा कर लेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादकीय टिप्पणियां

यह समाचार सुन कर सभी आर्य जन प्रसन्न होंगे कि ब्रजभूमि में शिकार खेलना रोकने के विषय में ब्रजवासियों की ओर से जो प्रार्थना की गई थी, वह सरजेम्स मेस्टन ने स्वीकार कर ली है। शीघ्र ही इस अभिप्राय का नियम प्रकाशित होने वाला है। शिकार का खेलना या पशुहिंसा करना आर्य धर्म के उच्च आदर्शों से गिरा हुआ है। भारत के जिस जिस भाग में इस अस्वाभाविक जीव हिंसा का प्रतिरोध किया जाय, वह वह भाग धन्य होगा।

———

योरप का महाभारत भी एक अद्भुत पेचदार खेल है। इस के तत्वों का समझ लेना सहज नहीं है। किस स्थान पर क्या हो रहा है, यह ठीक प्रकार से समझ लेना कठिन है। पोलैंड की ही बात लीजिये। वहां जर्मनी विश्चला नदी के दक्षिणी भाग में बहुत दूर तक बढ़ गया है, उस का अग्र भाग वारसा से केवल तीस मील दूर है। किन्तु वहीं पर दूसरी जगह रूस की सेना बढ़ती जा रही है, और थार्न के किले से केवल २५ मील की दूरी पर है। दोनों में से कौन जीत रहा है, यह कहना कठिन है।

——

मुसल्मानों के जातीय कवि ख्वाजा हाली का मृत्युवृत्तान्त सुन कर किसे शोक न होगा? ख्वाजा हाली मुसल्मानों की वर्त्तमान कवि सन्तति के गुरु थे। वे पहले उर्दू कवि थे, जिन्होंने उर्दू कविता को शृंगार रस के फन्दे से छुड़ा कर जातीय भावों की ओर झुकाया। आप के मुसद्दस उर्दू विज्ञ के घर घर घर में दिखाई देते हैं। आप की मृत्यु से एक उदाराला मुसल्मान भारतवर्ष से उठ गया।

—

मि० गान्धी अपनी धर्म पत्नी सहित भारत में पधार गये हैं। बम्बई में आपका उचित स्वागत हुआ। पुलिस द्वारा अनुत्साहित किये जाने पर भी जनता ने अपने हृदय मन्दिर में बसे हुए नायक का उचित अभिनन्दन किया। भारतवासी सहर्ष नयनों से मि० गान्धि के भावी जीवन की ओर निहार रहे हैं। इस समय मि० गान्धी का विचार मि० गोखले की प्रणाली का अनुसरण करते हुए देश सेवा करने का है। आगे जैसा उन को जंचेगा वैसा ही वे करेंगे। मि० गान्धी भारतवासियों के हृदयों में विशेष स्थान रखते हैं। सारे राजनीतिक दल उन का आदर करते हैं। इस समय भारत के राजनीतियों के सामने मुख्यतया दो समस्यायें हैं, जिन का हल करना आवश्यक है। एक तो यह कि भारत के राजनीतिक कार्य में जान डाली जाय, और दूसरे कांग्रेस के फूटे हुए दलों को एक किया जाय। भारतवासी आशा करते हैं कि मि० गान्धी इस कार्य में सफल यत्न हो सकेंगे।

——

हमें गुरुकुल कार्यालय से निम्न लिखित सूचना प्राप्त हुई है।

"गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी का तेरहवां वार्षिकोत्सव ईस्टर की छुट्टियों में २ से ५ अप्रैल १९१५ तदनुसार २० से २३ चैत्र सम्वत् १९७१, शुक्र शनैश्चर, आदित्य तथा सोमवार को होना निश्चय हुआ है। विस्तार पूर्वक समय विभाग छापने के लिये फिर भेजा जावेगा। होलियों की छुट्टियों में शीत अधिक होगा परन्तु ईस्टर की छुट्टियों में रेल के किराये में कमी भी होगी और ऋतु आनन्द दायक। इस लिये तिथियों में इस वर्ष परिवर्त्तन कर दिया गया है।"

आपका
सुन्शीराम
मुख्याधिष्ठाता

———

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रबन्धकर्ता जी सूचना देते हैं कि वहां का उत्सव २९,३०, तथा ३१ जनवरी १९१५ को होगा। शाखा में जो सज्जन अपने पुत्रों को प्रविष्ट कराना चाहें वे बालकों को उत्सव के समय ले आवें। शाखाओं की शोभा में ही वृक्ष की शोभा है। गुरुकुल हितैषियों का कर्तव्य है कि वे शाखाओं को भली प्रकार से सहायता पहुंचावें और उन्हें गुरुकुल के ही अवयव समझें। आशा करते हैं कम से कम कुरुक्षेत्र के आस पास के स्थानों के आर्य पुरुष उत्सव पर अवश्य जायंगे, और शाखा के कार्य कर्त्ताओं का उत्साह बढ़ायेंगे।

———

खड्गविलास प्रेस बांकीपुर के प्रबन्धकर्ताओं ने हरिश्चन्द्र कला के पुनरुद्धार का उत्तम विचार किया है। बहुत दिन हुए इस पत्र की सूचना हमें प्राप्त हुई थी। इस के सम्पादक श्री नरेन्द्रनारायण सिंह जी निश्चित हुए हैं। पत्र में उत्तम उत्तम लेख और चित्र भी प्रकाशित हुआ करेंगे। वार्षिक मूल्य ३) होगा।

——

लाहौर सहयोगी आर्य गज़ट शिवरात्रि पर ऋषिबोधाङ्क नाम का एक विशेष अंक निकाला करता है। इस वर्ष भी उस ने विशेष अंक की सूचना दी है। उस के लेखों से प्रतीत होता है कि अभी लोगों का ध्यान उस अंक की ओर नहीं हुआ। हम अपने ग्राहकों को प्रेरणा करगे कि वे अर्य समाजिक पत्रों के विशेष अंकों को विशेषतया प्रोत्साहित किया करें।

——

कभी कभी संसार में पुराने खण्डरात के खुदने से अनूठी सचाइयां ज्ञात होती हैं। खंडरात का खोजना एक मनोरञ्जक कार्य है। निम्न लिखित पत्र ने हमें तक्षशिला की भूमि के नीचे दबी हुई इमारतें याद आ गइ। यह पत्र हमें गत दिसम्बर मास में प्राप्त हुआ था।

"माननीय महाशय जी!

मैनेजर सत्यवादी जी से बिनै बाचियेगा। निवेदन यह है कि मैं आपके यहां से सत्यवादी समाचार मंगाना चाहता हूं। कृपा कर के आप भेजते जाइयेगा। अवश्य ही आप सत्यवादी अख़बार भेजते जांय। एक साल की कीमत डाक से मनीआर्डर कर दूंगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज़ियादा हाल क्या लिखूं।" २३।१२।१४॥

लेखक महाशय एक वैद्यराज हैं। आपने हमें सत्यवादी का हाल लिख भेजा है, इस से ज़ियादा हाल हमें और क्या चाहिये। सत्यवादी समाचार पत्र लग भग दस वर्ष पूर्व निकल कर बन्द हो चुका है।

गत रविवार की सांझ को लार्ड हार्डिज और बम्बई के गवर्नर भारत के भीष्म पितामह दादा भाई नवरोज़ी से भेंट करने, उन के मकान पर गये। चाय पान के अनन्तर लग भग आधे घन्टे तक बात चीत होती रहीं। घर में भारत वासियों को बुला कर भी जो छोटे अंग्रेज़ अफ़सर कभी कभी कुर्सी तक देना भूल जाते हैं, वे जब इस समाचार को सुनेंगे तो सहसा बोल उठेंगे, कि यह भारत में ब्रिटिश राज्य के 'अन्त का आरम्भ है।

अमरीका में केशवदेव शास्त्री को अपूर्व सफलता प्राप्त हो रही है। सान फ्रांसिस्को के एक कालिज में धर्मों के सापेक्ष अनुशीलन पर व्याख्यान देने के लिये आप से प्रार्थना की गई है। शिकागो में आप के पुरुषार्थ से एक आर्य्य समाज भी स्थापित हो गया है। हम पं० केशवदेव जी को इस सफलता पर बधाई देते हैं।

साहित्य सम्बन्धी

चिट्ठियां

विज्ञान-परिषद पत्रिका।

(३ वार्षिक (सचित्र)

यह हिन्दी में अपने ढंग की एक ही पत्रिका होगी। जन- वरी १९१५ से प्रतिमास विज्ञानपरिषद प्रयागकी ओरसे प्रकाशित होगी। इसकी प्रति संख्या में ताज़े २ वैज्ञानिक आवि- ष्कारों और खोजोंके समाचार होंगे। इनके सिवा विज्ञानके सभी विषय आरम्भिक तत्त्वों से ले कर भारी विषय तक बड़ी रोचक और सरल तथा सुबोध भाषा में समझाये जायँगे। लेखमाला सचित्र होगी और इस तरह पर निकलेगी कि प्रथम संख्या से प्रारम्भ करनेवाले को क्रम क्रमसे सभी विषयोंमें पूरी अभिज्ञता होती जायगी।

ग्राहक होना चहें तो नाम अभीसे लिखा लीजिए, क्योंकि पत्रिका सम्भवत: उतनी ही संख्या में छपेगी जितने उसके ग्राहक हो चुके रहेंगे। यदि आप पीछे ग्राहक होंगे तो सम्भव है कि गत संख्याओं के अभाव से आपकी फ़ैल अपूर्ण रह जाय। कहने की आवश्यकता नहीं कि समस्त हिन्दी भाषा भाषियों के लिए इस के विषय बड़े महत्वके होंगे, तथा एक बार पढ़कर अन्य पत्रों की नाईं यह पत्रिका बेकार न हो जायगी। परिषदके सभ्यों को विना मूल्य और परिसभ्यों को रिआयत के साथ दी जायगी।

३०० ग्राहकों के नाम मिलजाने पर पत्रिका प्रकाशित होने लगेगी। १५० नाम मिलचुके हैं। हिन्दी प्रेमियों से प्रार्थना है कि शेष १५० की संख्या पूर्ण करके प्रकाशन संभव कर दें।

पत्रव्यवहार—

रामदास गौड़

संची विज्ञानपरिषद् प्रयागसे कीजिए।

विश्वविद्या प्रचारक

श्रीयुत महाशय

निवेदन यह है कि विश्वविद्या प्रचारक पत्रिका नाम का मासिक पत्र मार्च १९१५ से निकालने का विचार है। इस में विद्या, धर्म, वाणिज्य, कृषि, शिल्पकला, समाजिक उन्नति राजनीति वग़ैरह विषय में लेख रहा करेंगे।

आशा है आप भी इस में लेख देने की कृपा करेंगे।

(१) इस सभा का मुख्य उद्देश धर्म, वाणिज्य, कृषि,-शिल्पकला का प्रचार करना।

(२) उपयोगी पुस्तकें लिखा कर गत मात्र मूल्य में विकवाना।

(३) स्वदेशी वस्तुओं को बनवा कर उन का प्रचार करना।

(४) साधु व अनाथ लड़के व जो सज्जन अपना कुल जीवन-देश सेवा में लगावें उन को शिक्षा दिवा कर प्रचार करना आप से ही विद्या प्रेमियों के सहारे से देश का भला हो सकता है।

इस लिए प्रार्थना है कि आप अपने लेख देकर इस पत्र की सहायता कीजिये।

लेख जनवरी मास तक भेजने की कृपा कीजिए। हरेक मास में आप अपने लेख भेज कर सहायता देंगे। पत्र का उत्तर दीजिए। विशेष कृपा दृष्टी रखिये। अपने मित्रों से देश सेवा करने का अनुरोध कीजिये व इस पत्र का प्रचार करा देय।

भवदीय

रामस्वरूप शर्मा

प्रबन्धकर्ता

"नवजीवन"

हिन्दी भाषा का सर्वोपयोगी प्रसिद्ध सचित्र मासिक पत्र।

कई मास बन्द रह कर अब पुनः जनवरी १९१५ ई० से प्रकाशित होगा।

नवीन सम्पादक ! नवीन लेखक !!

नवीन उत्साह !!!

नया आकार ! नई छपाई !!

अमेरिका प्रवासी श्री पं० केशवदेव जी शास्त्री के सचित्र लेख निरंतर प्रकाशित होंगे।

आर्य-समाज के, हिन्दी संसार के और कई मराठी तथा गुजराती साहित्य के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रसिद्ध विद्वान् लेखक महाशयों ने निरन्तर लेख देने के वचन दिए हैं।

"नवजीवन"

वैदिक धर्म्म की सेवा-प्रचार-करता हुआ और आर्य कुमार तथा कुमारियों में

आर्य जीवन की मर्यादा स्थापित करता हुआ

देश की राष्ट्रीय सेवा करेगा।

ष्ट्रीयता का रहस्य लोगों को समझावेगा।

नवयुवकों के हृदय में नवजीवन, नवोत्साह, नवीन ओज का संचार करता हुआ उन्हें अपने कर्तव्यों का ज्ञान करावेगा।

वर्ष में कई विशेषांक प्रकाशित करेगा।

उदार विचारों के साथ-साम्प्रदायिक पक्षपात से दूर रहकर प्रत्येक विषय पर

अपनी निष्पक्ष सम्मति निर्भीकता के साथ देगा।

आर्य-समाज के सुधारार्थ आवश्यक आन्दोलन करेगा।

समाज की किसी भी पार्टी से उस का कोई सम्बन्ध नहीं होगा।

बिना संकोच शीघ्र ग्राहक बनिए।

मूल्य वही ३) वार्षिक। नमूने की प्रति के लिए ।।।) के टिकट भेजिए।

पुराने ग्राहक अपना वर्तमान पता और ग्राहक नं० शीघ्र लिखें।

विज्ञापन दाता शीघ्र पत्र व्यवहार करें। "नवजीवन" में विज्ञापन देने से बहुत लाभ होगा।

"सेवक"—व्यवस्थापक

"नवजीवन" कार्यालय,

सरस्वती सदन, इन्दौर (C. I.)

एक हज़ार नाम एक हज़ार नाम

"प्रह्लाद" का जन्म

१. तभी हो सकता है जब कि उस के लिए एक हज़ार ग्राहक अपने हस्ताक्षरों के द्वारा उस की ग्राहकता का स्वीकृति तथा अपने ठीक ठीक पते से दफ्तर 'प्रह्लाद' में सूचना दे देंगे।

२. "प्रह्लाद" नागरी में प्रति सप्ताह देहली से महाशय गोवर्धन जी भूतपूर्व प्रोफ़ेसर गुरुकुल कांगड़ी के सम्पादन में निकला करेगा।

३. "प्रह्लाद" में धर्म, समाज, नगर, नीति, और विज्ञान सम्बन्ध में लेख हुआ करेंगे।

४. 'प्रह्लाद' में वेद और ऋषि कृत ग्रन्थों के अनुवाद और उन के विषय में अनेक प्रकार के विचार होंगे।

५. "प्रह्लाद" के द्वारा संस्कृत के छिपे रत्नों को प्रकाश में लाया जावेगा।

६. किन्तु इन गम्भीर विषयों के साथ साथ जनता के दैनिक आचारों, व्यवहारों तथा समाचारों को भी काफ़ी स्थान मिलेगा।

७. प्रत्येक ग्राहक से तीन रु० प्रति वर्ष सहायता चाहिये; विद्यार्थियों से १।।) रु० काफ़ी है। किन्तु उन को समझा अर्द्ध ग्राहक जावेगा।

८. स्वीकार पत्र मैनेजर "प्रह्लाद" सद्धर्म्म प्रचारक प्रेस देहली के नाम जाने चाहियें।

तरुण भारत ग्रन्थावली।

(सम्पादक पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी)

आनन्द की बात है कि इस समय राष्ट्र-भाषा हिन्दी को सर्वांगपूर्ण करने का प्रयत्न चारों ओर से हो रहा है; तथापि आवश्यकता है कि ऐसा आदर्श लेकर ग्रन्थप्रकाशन प्रारम्भ किया जाय जो विशेष कर भारत के तरुणों को योग्य मार्ग दिखला सके और उनको अपने देश की सेवा करने के योग्य विचारों में प्रवृत्त करे। इसी उद्देश्य से प्रेरित हो कर, हम ने, अपने कई तरुण मित्रों की उत्तेजना, सम्मति तथा सहायता से, इस रूप में अपने नौनिहालों की सेवा करना निश्चय किया है।

इस ग्रन्थावली में, विशेष कर, ऐतिहासिक, चरित्रसम्बन्धी और नीति के तात्त्विक ग्रन्थ प्रकाशित होंगे। इन तीनों प्रकार के ग्रन्थों में से पहले "महात्मा रानडे" "फ्रांस की राज्यक्रान्ति" और "अपना सुधार" (ब्लैकी के सेल्फ़-कल्चर के आधार पर) नामक ग्रन्थ निकलेंगे। प्रायः किसी संख्या का मूल्य आठ आने से अधिक न होगा और वह भी चार आने प्रति-शत पृष्ट से अधिक न होगा। ग्रन्थ अपने पर क्रमशः वी० पी० से पहुंचते रहेंगे। पहले ग्रन्थ के साथ आठ आना प्रवेश फ़ीस के लिये जायँगे; यह धन, किसी के ग्राहक न रहने पर, उसे वापस कर दिया जायगा। कृपया आप स्वयं इस ग्रन्थावली के ग्राहक बन कर तथा अन्य नवयुवकों को बना कर इस आवश्यक और पवित्र कार्य में हमारा हाथ बँटाइये। अपनी सम्मति और ग्राहक होने का पत्र इस पते पर लिखिये।

रघुवर शर्मा,

व्यवस्थापक, तरुणभारत-ग्रन्थावली ७२५ बाग़ मुज़फ्फ़रखां आगरा।

कुम्भ प्रचार

(१) अब तक १९९०।।) रुपया रोक आया है। दानियों के नाम इस लेख के अन्त में दिये जाते हैं।

(२) आर्य्य-प्रतिनिधि सभा पञ्जाब ने १००) की लघु पुस्तकें बांटने के लिए देने की आज्ञा की थी। सूची भेजे दो महीने हो चुके; अब तक कुछ उत्तर नहीं आया।

(३) आर्य्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मान्य न २००) की पुस्तक देने की आज्ञा की है। अब तक वह पुस्तकें भी नहीं आई।

(४) अहमदाबाद के महा० तेजूमल जी तथा लुधियाने के श्री लब्भूराम नय्यड़ जी ने बहुत सी पुस्तकें बिना मूल्य वितीर्ण करने को भेजी हैं।

(५) लाहौर के लाला ठाकुरदास कपूर १५,००० प्रति आर्य्य भाषा की पंच महायज्ञ विधि की छपवा कर भेजने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं।

(६) एक ट्रैक्ट की २०० प्रति छपवा कर श्री सेठ रामगोपाल जी कानपुर से भेजेंगे!

हमें १०,०००) रुपया चाहिये और अब तक

आया १९९०।॥) है

आर्य पुरुषों तथा आर्य समाजों को शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिए। कई आर्य-समाजों में शायद मंत्री ही मेरे दोनों पत्र फैंक बैठे हों। उन का कर्त्तव्य है कि एक बार अन्तरंग सभा के सामने रख दें फिर वहां से जो निश्चय हो उस से मुझे सूचित करें।

आय का ब्योरा

प्रचारक के भाग अंक तक प्राप्त १४२७)

श्री मंत्री, आर्य-समाज सहारनपुर १०)

महा० विश्वामित्र जी मुहर्रिर जुडीशल गुड़गांव २॥)

महा० ठाकुरदास जी मंत्री आर्य-समाज क्वेटा २५)

,, गोकुल सहाय जी मंत्री आर्य-समाज फ़िरोज़पुर छावनी २५)

,, विष्णुलाल जी सब जज बरेली ५०)

योग पुरोनीत १३५६॥)

योगानीत १३५६)

महा० शोपरसाद जी औरंगाबाद १०)

श्री मंत्री आर्य समाज नार नौल ५)

,, ,, ,, श्रीनगर १०)

महा० गुलजारी लाल जी बिज भारंग १०)

श्री मन्त्री आर्य समाज महरोली ५)

श्री गोवर्धन जी प्रधान आ० स० थाना भवन १२)

,, सरदार रखा जी थारोड़ गुजरात ५)

,, नन्हा जो आर्य समाज मांडोथी १।)

,, मंत्री आ० समाज अम्बाला छावनी २५)

,, ,, ,, महूं १५)

,, ,, ,, साल्वोन १०)

,, माधोराम जी द्वारा मंत्री आ० स० पटियाला ५)

योगा प्रोनीत १४७२॥)

योगानीत १४७२॥)

महा० बलीराम जी प्रागपुर ५)

,, हरिप्रसाद सिंह जी वकील हाई कोर्ट बांदा ४०)

पं० निहालचन्द जी प्रधान आ० स० चावड़ी बाज़ार दिल्ली ५०)

श्री० वृन्दावन जी मंत्री आ० स० जालंधर ५०)

बाबू श्रीराम जी आ० स० हींग मन्डी आगरा १५)

श्री मंत्री आर्य समाज खजराबाद अम्बाला १)

,, ,, मंत्री जी देश सेवा यज्ञ तालोद (अहमदाबाद) १५)

,, ,, आर्य समाज अम्बाला शहर ५)

,, बाबू घासीराम जी वकील मेरठ ५०)

,, गंगाराम जी असिस्टेंट रेवेन्यू डिपार्टमेन्ट दिल्ली ५०)

श्रीमती हरिदेवी जी लाहौर २५)

महा० महाराज जी ओवरसिअर आइम (वर्मा) २०)

,, मंगलसैन जी मंत्री आ० स० बदायूं १०)

आर्यसमाज लुधियाना ५०)

महा० रामगोपाल जी कानपुर २५)

ठाकुर गोविन्द सिंह जी पातूर ५०)

महा० राजाराम जी लायलपुर द्वारा महा० सन्तराम-महा० जीवनमल महा० राजाराम १) १) ५) ७)

१९४०॥)

योग आनीत १९४०॥)

हहा० ज्वाला प्रसाद जी मंत्री आ०स० कानपुर २५)

,, रामचन्द्र जी ,, ,, मुजफ्फरगढ़ २५)

सर्व योग=१९९०॥)

सुन्शीराम

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रचारक के ग्राहकों से निवेदन

प्रचारक कई दैनिक घटनाओं के कारण देहली से फिर गुरुकुल आगया है इस की सूचना प्रचारक के गत अंक में दी जा चुकी है। देहली से आकर जिला बिजनौर में प्रचारक का(Declaration) दिया गया इस के स्वीकार हो कर आने में देर हो गई इस कारण प्रचारक को दो मास के लगभग बन्द रखना पड़ा। जो कार्य हमारी शक्ति से बाहर था उस में हमारा कोई दोष नहीं। किन्तु फिर भी प्रचारक के कई प्रेमियों को असन्तुष्ट होना पड़ा है और उन्हों ने हमें कई प्रकार की शिक्षाप्रद धमकियां दे डाली हैं किन्तु इस का हमें कोई रोष नहीं। जहां बहुत से प्रचारक के प्रेमियों ने सूचना को पढ़ कर भी उस पर ध्यान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं किया वहां हमें बड़ा हर्ष है कि प्रचारक के अधिक प्रेमियों ने प्रचारक के साथ इस आपत्ति में सहानुभूति प्रकट की है और अपना प्रेम प्रचारक के साथ दर्शाया है। कोटा से एक प्रेमी लिखते हैं।

"श्रीमान् महाशय जी! नमस्ते। आज पांच सप्ताह से सद्धर्म प्रचारक के दर्शन नहीं हुए। अत्यन्त शोच रहता है मैं अपनी हार्दिक सहानुभूति व प्रीति प्रकट करता कहता हूं कि जिस पत्र का मैं पहिले ग्राहक नहीं था और इसे एक आर्यसमाजी ऋषि समझ घृणा किया करता आज उस पत्र ने मेरे मन को इतना जीत लिया है कि और पत्र जो कई यहां आते हैं मेरे मन को शान्ति नहीं दे सकते। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह शीघ्र ही इस पत्र के दर्शन कराये।"

हमें आशा है कि जिन ग्राहक महाशयों ने प्रचारक के न पहुंचने की शिकायत की है वह नोट कर लेंगे कि प्रचारक १२ दिसम्बर सन् १४ के पश्चात् अब निकलना आरम्भ हुआ है।

जिन सज्जनों का वार्षिक मूल्य समाप्त हो गया है इस अंक के पश्चात् वी. पी. उन की सेवा में भेजा जायगा आशा है कि वी. पी. को ग्रहण कर कृतार्थ करेंगे। यदि किसी महाशय को किसी कारण से वी. पी. लेना अस्वीकार हो तो कृपया पत्र द्वारा पहिले ही सूचना देदें जिस से व्यर्थ हानि न उठानी पड़े। ग्राहक संख्या निम्न प्रकार हैं।

संख्या १८६८ से २२१० तक
संख्या २६६७ से २६०० तक
संख्या ३४८७ से ३५६६ तक

विद्यादत्त
उप प्रबन्धकर्त्ता

आवश्यक्ता

आर्य्य कन्या पाठशाला-चावडी बाजार-देहली में कई सुयोग्य आर्य्य विषयों की अध्यापिकाओं की जरूरत है जो प्राईमरी में अच्छी प्रकार शिक्षा देसकें वेतन योग्यता अनुसार दिया जावेगा जो २०) २५) मासिक तक होगा

निवेदन पत्र-प्रमाण पत्र सहित इन पत्ते पर आने चाहियें

देवेन्द्र
मंत्री-आर्य्य कन्या पाठशाला देहली

आर्य-समाज के त्योहार

श्री० पं० पूर्णानन्द जी से प्रश्न

आप के पत्र में एक लेख माला निकली है जिस के लेखक पण्डित पूर्णानन्द जी मुख्य उपदेशक आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हैं जिस का शीर्षक "आर्य्य समाज की वेदी" था। मैंने वह सारे लेख तो नहीं पढ़े हैं क्योंकि कई कारणों से मुझे सारे अंक ही नहीं मिले परंतु जिस के विषय में मैं कुछ लिखना चाहता हूं वह २८ भाद्रपद तदनुसार १२ सितम्बर १९१४ का अंक है जिस में पण्डित जी ने पृष्ठ १० पर एक त्योहारों की सूची दी है। यह सत्य है कि उस अंक को निकले अधिक समय हो गया है उसका प्रतिवाद अब से बहुत पूर्व हो जाना चाहिए था परन्तु मुझे वह अंक ३० नवम्बर को मिला है इस में भी हेतुओं के साथ एक युद्ध भी सम्मिलित है। कोई दो मास भारत से कोई भी पोत नहीं आया इस लिये भारत के पत्रादि भी मार्ग में ही डेरे डाले पड़े रहे।

पंडित जी ने त्योहारों की सूची दी है उस में कई तो नाम ही दिए हैं कई त्योहारों का कुछ विवरण भी किया है मैं आज अन्य को छोड़ कर केवल एक पर ही पंडित जी से कुछ पूछना चाहता हूं आशा करता हूं कि आप उसे अपने पत्र में छाप देंगे।

पंडित जी एक त्योहार श्रावणी नाम से देते हैं और उस के विवरण में यज्ञोपवीत परिवर्तन लिखते हैं अब प्रश्न यह है कि श्री० स्वामी जी ने संस्कार विधि में जहां सब संस्कार लिखे हैं उस स्थान पर तो यह है ही नहीं, इस लिए संस्कार विधि को तो पूर्व से ही पृथक् रख देना चाहिए अब शेष गृह्य सूत्र रह जाते हैं उन सूत्रों में से भी स्वामी जी पारस्कर आश्वलायन गोभलीय शौनक का नाम देते हैं इन में से पूर्व के तीन में तो यज्ञोपवीत परिवर्तन नामक कोई संस्कार नहीं है शौनक मेरे पास नहीं है इस लिये उस के विषय में मैं कुछ कह नहीं सकता हूं।

इन सूत्रों में श्रावण कर्म लिखा है। पारस्कर में कांड २ काण्डिका १४ में वर्णन है "अथातः श्रवणा कर्म ॥ १ ॥ श्रवणया पौर्णमास्याम् ॥ २ ॥ स्थालीपाकं श्रपयित्वाऽज्ञत धानाश्चैककपालं पुरोडाशं धानानां भूयसीः पिष्ट्वाआज्यभागावि ष्ट्वाआज्याहुतीर्जुहोति ॥ ३ ॥ जिस से पता लगता है श्रावण की पूर्ण मासी में स्थाली पाकादि की आहुतियें दी जाती हैं आगे जिन मंत्रों का विनियोग है वह भी दिये हैं परंतु इस सारी कण्डिका में यज्ञोपवीत का नाम नहीं है इसी भांति गोभिलीय गृह्य सूत्र प्रपाठक ४ खंडिका ८ में लिखा है।

श्रवणाअग्रहायणीकर्मणीरक्तताञ्छिष्ट्वा ॥१॥ प्राङ् वोदङ् वा ग्रामान्निष्क्रम्य चतुष्पथेऽग्निमुपसमाधाय हयेएक इत्येकैकयाऽञ्जलिना जुहुयात् ॥ २ ॥ इस में भी सारी खंडिका पढ़ जाओ यज्ञोपवीत परिवर्तन नहीं मिलेगा और आश्वलायन गृह्य सूत्र अध्याय २ कंडिका १ मे सत्तू आदि से कर्म करना लिखा है।

और आर्य-समाजों में भी यह कर्म उस दिन किया जाता है जिसे साधारण लोग "सलोनों" कहते हैं। जब ब्राह्मण देवता रंगा हुआ धागा लेकर लोगों के हाथों पर बांधते हैं और अन्न या पैसे लोगों से लेते हैं किन्तु सूत्रों में उस का नाम तक नहीं है जिस दिन यह क्रिया होती है उस का नाम सूत्रों में उपा कर्म है। पंडित राजाराम पारस्कार गृह्य सब की टीका के पृष्ठ १४५ की टिप्पणी में लिखते हैं "आज कल उपा कर्म की जगह रक्षा बन्धन कर्म होता है सूत्रों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में इस का वर्णन नहीं" इस लिए अनुमान होता है, कि पंडित जी ने भी इसी कर्म को रक्षा बन्धन से बदल कर यज्ञोपवीत का परिवर्तन करना बनाया है।

इस पर भी मैं पहले सूत्र ही उद्धृत करना उचित समझता हूं। पारस्कर काण्ड २ कांडिका १० अथातोऽध्यायोपा कर्म ॥१॥ ओषधीनां प्रादुर्भावे श्रावणेन श्रावराया पौर्ण मास्यं श्रावणस्य पंचमीं हस्तेन वा ॥ २ ॥ आज्यभागाविष्ट्वाऽज्याहतीर्जुहोति ॥ ३ ॥ पृथिव्या इत्यग्वेदे ॥ ४ ॥ अन्तरिक्षाय वायवें इति यजुर्वेदे। "दिवे सूर्याय इति सामवेदे ॥ ६ ॥ दिगभ्यश्चन्द्रमसे' इत्यथर्ववेदे ॥ ७ ॥ ब्राह्मणे छन्दोभ्यश्च इति सर्वत्र ॥ ८ ॥ इन सूत्रों के पाठ से पता लगता है कि जिस दिन पाठ आरम्भ हों उस दिन यह क्रिया की जावे जब विद्यालय बन्द हो कर फिर खुलें उदाहरण के लिये कह सकते हैं जैसे अब ग्रीष्म ऋतु में सर्व विद्यालय बन्द होते हैं और शीत ऋतु में खुलते हैं इसी भांति पूर्व समय में विद्यालय श्रावण में खुला करते थे अन्य सूत्र ग्रन्थों में भी इस का वर्णन है। आश्वलायन गृह्य सूत्र अध्याय ३ कडिका ५ में वर्णन है और गोभिलीय गृह्य सूत्र प्रपाठ ३ खंडिका ३ में तो इस से भी साफ है "प्रष्ठौपदी हस्तेनोपाकरणम् ॥ १ ॥ ज्याहृतिभिहूत्वा शिष्याणां सावित्र्यनुवचनं यथोपनयने ॥२॥ सामसावित्रीं च ॥ ३ ॥ सोम राजनं वरुणमिति ॥ ४ ॥ आदितश्छन्दसोऽधीत्य यथार्थम् ॥ ५ ॥ जिस में पूर्व हवन पश्चात् आदि छन्द पढ़ा कर ही समाप्त करना लिखा है और आदि छन्द पढ़ा कर प्रथम दिवस पाठ बन्द करने की रीति तो आज तक पाठशालाओं और मंडलियों में पाई जाती है इतने लेख के पश्चात् मैं पंडित जी की सेवा में प्रार्थी हूं कि कृपा कर के वह इस का उत्तर दें और साथ ही प्रमाण भी दें मुझे तो यह भय है कि जैसे पौराणिकों ने अपने पुस्तकों को छोड़ कर अपने मन माने त्योहार और स्वकपोलकल्पित विधियें बनाली हैं कहीं वैही आर्य्य-समाज में न हो जावे दृष्यंत के लिए मैं इसे ही रख सकता हूं और कई समाजों में मैंने देखा भी है जो कि उपा कर्म के दिन यज्ञोपवीत बदलते हैं और व्याख्यानों में भी यत्न करते हैं कि इस दिन यज्ञोपवीत बदलना चाहिए और पंडित जी से यह भी निवेदन है कि उत्तर सद्धर्म्म प्रचारक में ही दें।

स्वतन्त्रानन्द

मारीशस

दक्षिण अफ्रिका की चिट्ठियां

श्रीमान सम्पादक जी नमस्ते

गत मार्च मास में हिन्दी फुटबाल क्लब जर्मिस्टन नगर में स्थापित किया गया था। इस क्लब के अधिकांश अधिकारी और खिलाड़ी निष्क्रिय प्रतिरोधी हैं। गत अगस्त मास में हिन्दी फुटबाल क्लब ने बेनोनी थसिल क्लब से सेमीफायनल मेच में जीत लिया था। ता० ११ अक्टूबर को फायनल-कप मेच था। जर्मिस्टन का फुटबाल ग्राउन्ड लग भग ५०० दर्शकों से भर गया था। मि० थम्बीनायडू आदि प्रसिद्ध नेता भी पधारे थे। करतल ध्वनि के साथ हिन्दी के खिलाड़ी मैदान में घुसे और खेल आरम्भ हुआ। मि० जे० क्लार्क मध्यस्थ थे। देखते देखते हिन्दी के प्रसिद्ध खेलाड़ी बी० महाराज ने एक गोल डाल दिया। आनन्द ध्वनि से मैदान गूंज उठा। थोड़ी देर में हिन्दी का दूसरा खेलाड़ी आर० मोरगन ने दूसरा गोल डाल दिया। आनन्द से दर्शक गण उछल पड़े और ताली बजाने लगे। इस के बाद बोक्सबर्ग यूनीटी क्लब—जो सेमीफायनल मेच में हिन्दू यूनायटेड क्लब को जीत लिया था—ने हिन्दी क्लब के साथ बड़ा जोरदार खेल करने लगा। थोड़ी देर में आर० धर्म्मन ने बोक्सबर्ग यूनिटी की ओर से एक गोल मार दिया। अब बोक्सबर्ग यूनिटी में थोड़ी जान आगई और वे बड़े जोरशोर से खेलने लगे। पर निश्चित समय समाप्त होने पर मध्यस्थ ने सिट्टी बजा दी। खेल समाप्त हुआ और फ्रांसीस चैलेंज कप हिन्दी के हाथ लगा। इस के बाद एक सभा हुई जिस में कई एक सज्जनों का भाषण हुए। अन्ततः उस कप में दूध डाल कर खेलाड़ियों ने पिया। वास्तव में इस्टरेन्ड का यह कप जीतने से हिन्दी का नाम उजागर हुआ है।

दीवाली के उत्सव पर श्रीयुत लाला बहादुर सिंह ने हिन्दी रात्रि पाठशाला के विद्यार्थियों को इनाम बांटा। बालकों को पेनसिल, मिठाई, पटाखा और दीवाली कार्ड दिया गया। इस के बाद श्रीयुत सिंह ने और अवैतनिक मुख्याध्यापक ने विद्यर्थियों को सम्बोधन कर दीवाली के महत्व पर सुन्दर वक्तृताएं दी। हिन्दी रात्रि पाठशाला के ४ विद्यार्थी प्रथम परिक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं उन को पारितोषिक रूप में पुस्तक और प्रमाणपत्र दिया गया। पाठशाला खूब उन्नति कर रही है। इस के द्वारा यहां के विद्यार्थियों में हिन्दी का अच्छा प्राचार हो रहा है।

स्थानीय हिन्दी प्रचारिणी सभा की दशा सन्तोष प्रद है। अब तक ५० सदस्य हुए हैं। सभा के कार्य्यालय में भारत से अनेक हिन्दी पत्र आते हैं [illegible] भरपूर लाभ उठा रही है।

दक्खन के महाशय सी० बी० पील्ले के सरस्वती विलास प्रेस से 'विवेकभानु' नामक एक हिन्दी का समाचार पत्र निकलने वाला है। पत्र का विज्ञापन भी निकल आया ३०० ग्राहक हो जाने पर पत्र निकलने लगेगा। आशा है कि हिन्दी प्रेमी इस के ग्राहक बन कर अपने साहित्य प्रेम का परिचय देंगे।

दक्षिण अफ्रिका में भी युद्ध की काली घटा छाई हुई है। केपटोन के निकट जरमन वेस्ट सौथ आफ्रिका है। बृटिश सरकार ने जर्मन के उस राज्य को ले लेने का निश्चय कर लिया है। इस कार्य का भार जनरल बेअर को सौंपा गया था। पर उस ने जर्मनों से लड़ना इनकार कर दिया और अपने काम से इस्तिफा दे दिया। इस के बाद जनरल बोथा इधर उधर घूमकर अपनी सेना इकट्ठी करने लगा। एक व्याख्यान में उस ने यहां तक कह डाला कि यदि बोर लोग जर्मनों से लड़ने से इनकार करेंगे तो बृटिश सरकार ५०००० कुलियों को भेज कर जर्मन का वह राज्य ले लेगी और कुलियों (भारतीयों) को वहां का सारा अधिकार मिल जायगा। दक्षिण अफ्रिका के प्रधान मन्त्री के मुख से कुली शब्द निकलते देख कर यहां का भारतीय लोकमत सन्तप्त और क्षुभित हो गया है।

जनरल बेअर के इस्तीफा देने पर जनरल मेरीत्स को सेनापति बना कर जर्मनों से लड़ने के लिये भेजा गया पर यह महापुरुष अपने सैन्य के साथ जर्मन से मिल गये और बृटिश सरकार के विरुद्ध तलावार उठा लिये। इधर फ्रीस्टेट में जरनल बेअर और जनरल डीवेट ने दक्षिण अफ्रिका में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने के लिये बलवा शुरु किया है और इधर से जनरल बोथा अपनी सेना लेकर बलवाईयों का सामना कर रहा है। यदि यहां पर प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया और बागियों को सफलता हुई तो फिर भारतीयों का कुशल नहीं। वे यहां से बलात् निकल कर बाहर किये जांयगे। परमात्मा न करे कि वह दिन आवे।

स्वामी मंगलानन्द जी ने 'ट्रांसवालयात्रा' नामक एक पुस्तक लिखी है। इस में निष्क्रीय प्रतिरोध की लड़ाई का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। कई एक उत्तमोत्तम चित्र भी दिये गये हैं। हिन्दी प्रेमियों को इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिये

मिलने का पता

मैनेजर प्रताप, कानपुर

जर्मिस्टन— ट्रांसवाल } भवदीय
ता. ३ नवम्बर १९१४ ई० } भवानी दयालु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री रोग की दवा — स्त्री रोग की दवा

स्त्री रोगों में विशेष गुणकारी मारकीन देश की प्रसिद्ध दवाएं भाइबरनम आदिक और वैद्यक की प्राचीन काल से प्रसिद्ध दवाएं असोक और कई एक चीजों के संयोग से यह दवा बनी है और यथा रीति इस की परीक्षा भी होती आई है।

यह सब प्रकार के स्त्री रोग की दवा है। दुर्बल गर्भाशय को शुद्ध व पुष्ट करती है; इस लिए गर्भ-स्थान के सब रोगों में काम देती है। मासिक धर्म वा ऋतु के विकार से अधिक वा कम दिनों में महीना होना, कमर पेढ़ू जांग में दर्द होना, सिर दर्द जी मिचली आदि मिटते हैं।

प्रदर दोष जिस से सफेद वा लाल पानी (मवाद) जाता है, खून पतला वा जमा हुआ ज्यादा या कम जाना साथ दर्द आदिक क्लेश होना इस दवा से मिटते हैं।

गर्भ के शिथिल पड़ जाने से गर्भ अकाल में नष्ट हो जाता है, हमल के तीसरे चौथे महीने गिर जाता है। इस हालत में इस दवा के कुछ दिन सेवन से गर्भ पुष्ट होकर ठहर जाता है। यह दवा गर्भ के दोषों को मिटा के दुर्बल शरीर को पुष्ट करती है। नं० २३

एजेन्ट—बाबूराम ऐन्ड कम्पनी, ड्रग्गिस्ट, हरीवाहली।

मोल १) रुपया शीशी (१६ खुराक) पैकिङ्ग व डाक महसूल ।=) आने।

दवा पर रुम्मति।

एसिष्टेण्ट आफ दी फीमेल हास्पिटल ग्र० रायपुरसे—आपने जो दो शीशी स्त्री रोग की दवा भेजी इस से हम को बहुत आराम हुआ इस लिये कृपा कर के ३ शीशी स्त्री रोग की दवा और भेज दीजिये।

डाः एस,के वर्म्मन।
५,ताराचंददत्त ष्ट्रीट।
कलकत्ता।

आदित्य ग्रन्थमाला
की
छपरहीं है

नई पुस्तक — नईपुस्तक

प्रिन्सविस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना अथवा
इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महाबीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े२ को कैसे पद दलित किया, और फिर किन २ शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की, इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तारपूर्वक वर्णन है। दूसरे भागमें साहसकी मूर्ति, देशभक्ति के पुतले, नीती के गुरू, और जर्मनीके जन्म दाता प्रिन्सविस्मार्क का आश्चर्य्यकारी चरित विचित्र किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्होंने पढ़ा है उनके लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वालों को रियायती मूल्य पर पुस्तक मिलेगी।
पताः प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म्मप्रचारक प्रत्र गुरुकुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर

संगमरमर कार्य्यालय

१ शिला लेख (छोटे व बड़े) संस्कृत नागरी, अंग्रेज़ी, अन्य भाषाओं के भी सुन्दर सुडौल और सस्ते बनाये जाते हैं लेखों के फ़ोटो और निर्ख मंगा देखें।

२ पेपरवेट—सुनहली, भड़कीले व रंगदार अक्षरों में सुन्दर बना कर भेजते हैं।

३ विज्ञापन—साइनबोर्ड घरों व दुकानों में लटकाने और सफ़र में साथ रखने की एकमात्र नई चीज़ है। नये चित्रों के ग्राहक बनें।

पता: चतुरलाल आर्टिस्ट
(Artist)
नसीराबाद—(राजपूताना)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठ का एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खंड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्रीधवन

लाहौरी-टोला बनारस सिटी

बाल-हितैषी

यह पत्र हिन्दी में चार वर्ष से प्रति मास निकल रहा है। नवीन वर्ष जनवरी १९१५ से इसमें फूल स्कोप साइज़ (८×६ ईञ्च) आकार के ४० पृष्ठ रहेंगे। प्रति अंक में रंगीन टाईटल के अतिरिक्त एक रंगीन व कई हाफटोन चित्र दिये जायेंगे। कविता, इतिहास, जीवन-चरित्र, भूगोल, खगोल, विज्ञान, स्वास्थ्य, धर्म-नीति, किस्सा कहानी, पाक-विधि, पहेली इत्यादि कितने ही विषयों पर मनोरञ्जक लेख रहा करेंगे जो कि केवल बालकों के लिये ही नहीं, बल्कि स्त्रियां, नवयुवक तथा वृद्धों के लिये भी लाभकारी होंगे। इतना होने पर भी वार्षिक मूल्य वही १॥) रहेगा।

अभी से ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा लीजिए, क्योंकि गिनी गिनायी प्रतियां छपेंगी, बिलम्ब करने से पूरी फाईल मिल नहीं सकती।

पता—"बालहितैषी" कार्य्यालय सदानन्द बाज़ार बनारस सिटी

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

बरियापुर

(बनारस स्टेट)

नया संदेशा ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी बसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें, इत्यादि विषयों पर महत्व पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता

"सत्ययुग"

हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय

मुज़फ़्फ़रपुर

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जो सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रो ने प्रशंशा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा

बुलन्दशहर

१६००० हज़ार एजेंटों का होना

भारतवर्ष में बनी औषधि के

सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं कह सकता कि सुख संचारक कंपनी मथुरा का बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कय, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, के दस्त, सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, रोना, के करना, कूदों की अनिद्रा और नजला, जवानों की थकावट या बेचैनी, दवा स्वादिष्टसुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कीमत फी शीशी आठ आना डाक खर्च १ से ६ शीशी तक ॥) आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डाक से मंगाने का पता:—

सुख संचारककंपनी

मथुरा

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

RegisteredNo.

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है

२५ माघ सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० ६ फरवरी सन् १९१५ ई०

संख्या ४३
भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि ।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है । इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है । महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है ।

आर्य-मात्र को यह पस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा ।

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित । विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है । उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है । मूल्य २)

अर्थशास्त्र—मो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित । इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं । पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है। मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित । इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है । निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है । मूल्य ।=)

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगाला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस जर्ननी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा । भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है ।

मूल्य=)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीयता का मूल।

यह उसी ग्रंथमाला की दूसरी पुस्तक है जिस की पहली पुस्तक "राष्ट्रों की उन्नति" हाथों हाथ बिक रही है। इस के लेखक भी श्रीयुत इन्द्र वेदालंकार हैं। एक तरह से यह "राष्ट्रों की उन्नति" का उत्तरार्द्ध है। इस निबन्ध में बड़ी उत्तमता से दिखाया गया है कि राष्ट्रीयता क्या चीज़ है और किसी जाति को राष्ट्र बनाने के लिए क्या गुण आवश्यक हैं। जो लोग भारत को राष्ट्र बनाना चाहें, उन्हें बड़े ध्यान से इस निबन्ध का पाठ करना चाहिये।

मूल्य =)

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म प्रचारक
गुरुकुल काङ्गड़ा (हरिद्वार)

तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला **शेर** की चरबी १।) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला
अलमोड़ा यू. पी.
(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

असली हारमोनियम

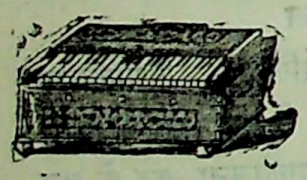

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता
G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

१०,०००) रूपया इनाम,

यह इनाम उन लोगों को मिलेगा जो हमारे यहां से नीचे लिखी हुई दवा मंगावेंगे। मकज़ोरी दिमाग़ को दूर करने वाली (अमृत प्रवाह) १) सैकड़ों बार का आज़माया हुआ धातु पुष्टि चूर्ण २)। इनाम बड़े २ डाक्टर, वकील वैद्य रईसों के सामने बांटा जायगा। हमारे ग्राहक भी इनाम बांटने में शरीक हो सकते हैं उन को आने जाने का खर्च भी दिया जायगा। जानने के लिये नियमावली)॥ का टिकट भेजने पर मुफ़्त मंगाइये

पता:—सूर्य्य, औषधालय,
सनेटरी रोड़—लखनऊ

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०.
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " ।)॥ "
सालभर " " " ") "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचाक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ का कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।
मूल्य ४) **विद्यार्थियों से ३)**
पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

देखना यह अवसर हाथ से न जाये

आर्य्य समाज लाहौर के वार्षिकोत्सव के स्वागत में १ नवम्बर सन् १४ से ३१ जनवरी सन् १५ तक निम्न लिखित पुस्तकों का मूल्य घटा दिया गया है।

शुद्ध रामायण—जिस की प्रशंसा बड़े बड़े योग्य और प्रसिद्ध विद्वानों और समाचार पत्रों ने मुक्त कंठ से की है २) से १॥)

महाभारत—१८ पर्व सरल हिन्दी भाषा में जिस के प्रकाशक को सरकार से ३००) रुपया पारितोषक मिल चुका ८) से ७)

अन्य हर प्रकार की हिन्दी संस्कृत पुस्तकें स्कूलों के कोर्स हमारे यहां से रिआयत से मिलते हैं।

पता: प्रबन्धकर्त्ता, नागरी, प्रचारणी, कम्पनी लिमिटेड, (Ld.) लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म दर्शनम् ।

समित्पाणि गुरु के पास जाओ ।

गुरु परम्परा वैदिक धर्म का एक मुख्य सिद्धान्त है । जब ज्ञान की प्राप्ति, मनुष्यों को, सृष्टि के आदि काल में भी, परम गुरु द्वारा ही हुई तो उस से पहले, क्या सन्देह है कि, वह ज्ञान सदैव उसी परम पुरुष के अन्दर सुरक्षित रहता है । तब ज्ञान की प्राप्ति का साधन गुरु ही हो सक्ता है । "गुरु बिन ज्ञान न पाए भोला चेला" यह लोकोक्ति, बहुत कुछ भाव के बदल जाने पर भी, सत्य ही है । इस में सन्देह नहीं कि कभी कभी इस संसार में कुछ विचित्र घटनाएं ऐसी दिखाई देती हैं जिन से भ्रम होता है कि बिना गुरु धारण किए भी ज्ञान की प्राप्ति हो सक्ती है, परन्तु जब भली प्रकार अनुसन्धान किया जाय तो पता लगता है कि जो ज्ञान गुरु के बिना प्राप्त किया गया वह मनुष्यों को सुखदाई होने के बदले उल्टा हानिकारक होता रहा है । निगुरा ज्ञान, अभिमान में डूबा हुआ, यदि संसार में कुछ काम करता है तो भी उलटा । इस लिए ज्ञान (विशेषतः ब्रह्म ज्ञान) की प्राप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक गुरु धारण करना चाहिए ।

सत्य ज्ञान का प्रकाश सूर्यवत् है । जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश के सामने शिर उठा कर अभिमान से चलने वाले की आंखें चौंधिया जाती हैं, किन्तु आदित्य भगवान् के तेज के आगे शिर झुका देने वाले की दृष्टि न केवल सब कुछ देख ही लेती प्रत्युत पहले से भी अधिक पुष्ट होजाती है; इसी प्रकार ज्ञान रूपी प्रकाश के सामने अभिमान से अकड़े हुए घमन्डी के हृदय नेत्र चौंधिया जाते हैं और वह सांसारिक घटनाओं के भी वास्तविक स्वरूप को नहीं समझसक्ता। परन्तु यदि श्रद्धाञ्जलि में नम्र भावों को लेकर ज्ञानप्रदाता गुरु के सामने शिर झुकाए पहुंचा जाय तो उन की कृपा से हृदय के कपाट खुल जाते हैं और मनुष्य जीवन का उद्देश्य आप से आप स्पष्ट होने लगता है । मनुष्य जीवन का उद्देश्य परम् ब्रह्म की प्राप्ति है; और उस के लिए साधन ब्रह्मपरायणता तथा ब्रह्म निष्ठा है । जब तक हृदय की स्वच्छता के पश्चात् श्रद्धा का भाव अन्दर नहीं आता तब तक गुरु के समीप जाने के योग्य नहीं होता । परन्तु गुरु भी आदर्श होने चाहिएं । जिस प्रकार शिष्य के अन्दर ब्रह्म के अन्वेषण का उत्कट भाव होना चाहिए, इसी प्रकार गुरु भी ब्रह्म लोक के अन्दर रमण करने वाला होना आवश्यक है । ऐसे गुरु को न धन की इच्छा है और न ऐश्वर्य की—उन्हें तो शुद्ध भाव की कामना है । और कामना भी क्यों ? उन्हें किसी प्रकार की कामना नहीं, वहां तो केवल मंगल इच्छा है; यदि शिष्य का हृदय शुद्ध है तो बेड़ा पार है नहीं तो वहां न हर्ष है और न शोक । उपरोक्त प्रकार के गुरु के समीप हाथ में समिधा लेकर प्राचीन काल के शिष्य जाया करते थे ।

प्रश्नोपनिषत् ॥

सुकेशा च भारद्वाजः शैव्यश्च सत्यकामः सौर्य्यायणी च गार्ग्यः कौशल्यश्चाश्वलायनो भार्गवो वैदर्भिः कबन्धी कात्यायनस्ते हैते ब्रह्मपरा ब्रह्मनिष्ठाः परं ब्रह्मान्वेषमाणा एष ह वै तत्सर्वं वक्ष्यतीति तेह समित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः॥१॥

"भरद्वाज का (१) सुकेशा, शिविका का (२) सत्यकाम, सौर्यायणी का (३) गार्ग्य, अश्वालायन का (४) कौशल्य, भृगु का (५) वैदर्भि, कत्य का (६) कबन्धी; ये सब इतने (छओं) सब ब्रह्मपरायण, ब्रह्म की प्राप्ति में उत्कन्ठा रखने वाले, इन्द्रियादि तथा बुद्धि से भी परे सर्व व्यापक आत्मतत्त्व का खोज करते हुए, यह समझ और विश्वास कर के कि यह प्रसिद्ध आचार्य उस सब (ब्रह्म के तत्व स्वरूप) को हमारे लिए कहेगा, हाथों में समिधा लिए, पूज्य गुरु पिप्पलाद के पास प्रार्थी होकर गए ।"

इस रूपक में कैसा रहस्य भरा है ! वृक्षराज की छाया में जिस प्रकार बैशाख ज्येष्ठ की धूप का सताया व्याकुल यात्री थकावट को दूर करके विश्राम पाता है उसी प्रकार श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी पिप्पलाद की छतर छाया में पहुंच कर ऋषि पुत्र शान्ति लाभ करने का यत्न कर रहे हैं । धन्य है वह समय जब ऐसे निष्काम भाव सम्पन्न गुरु श्रद्धा सम्पन्न शिष्यों को उपदेश देने को तय्यार रहते हैं ।

शमित्योश्म् ।

बीरोत्सव के विषय में

आवश्यक सूचना

आर्य्य जाति के सब त्योहार नियत तिथियों पर आते हैं । कई तो अपने गौरव के विचार से चन्द्रमास में और कई प्रविष्टा सम्वत के विचार से नियत तिथियों पर मनाये जाते हैं । जैसे दीवाली, दशहरा, बसन्त, होली इत्यादि तो चन्द्र मास के अनुसार आते हैं किन्तु लोहड़ी वैशाखी प्रविष्टा के अनुसार । आर्य्य समाज के जो त्योहार नियत हुए हैं वह प्रायः चन्द्रमास के हिसाब से है । जैसे ऋषि उत्सव, कार्त्तिक बदी अमावस्य अर्थात् दीवाली के दिन आता है । ऋषि बोधोत्सव शिवरात्री अर्थात् फाल्गुण बदी त्रयोदशी को आता है । परन्तु पं० लेखराम जी के बलिदान के साथ ६ मार्च का दिन कुछ ऐसा बंध गया है कि वीरोत्सव बराबर ६ मार्च को मनाया जा रहा है । परन्तु इस त्योहार को भी अपने अन्य त्योहारों की भान्ति देशी तिथियों के अनुसार मनाया जावे । पं० लेखराम जी का बलिदान फाल्गुण सुदी ३ को हुआ इस लिये प्रतिवर्ष यह त्योहार ६ मार्च के स्थान में फागुण सुदी ३ को मनाया जाना चाहिये । इस वर्ष फाल्गुण सुदी ३ ता० १७ फरवरी सन् १५ को होगी । इस लिये सब समाजों से निवेदन है कि ६ मार्च के स्थान में फाल्गुण सुदी ३ अर्थात् १७ फरवरी सन् १५ को बीरोत्सव मनावें । और उस धर्मबीर के आदेश को पूर्ण करने के लिये धन एकत्र करने का भी ध्यान रक्खें ।

आपका

कृष्ण बी. ए., मन्त्री

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब

विशेष सूचना—भारत वर्ष के सर्व प्रान्तों के आर्य्यसमाजों के मन्त्री महाशयों तथा अन्य आर्य्यभद्रपुरुषों से प्रार्थना है कि वे पूर्ववत् आर्य्यसमाज सम्बंधा समाचार भेजना आरम्भ करदें । प्रचारक में ठीक समाचार देने का प्रबंध हो गया है ।

सम्पादक ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहयोगि-सभीक्षण

वैंकटेश्वर की चिन्ता

हमारे सहयोगी वैंकटेश्वर समाचार को इस बात की चिन्ता व्यग्रकर रही है कि कहीं भारतवर्ष से पुरानी चालें न मिट जाय। पिछले महीने में उसने जाति-बन्धन की रक्षा के लिये कई लेख लिख कर अपनी व्यग्रता का प्रकाश किया है। स्त्रियों के सुशिक्षित होने से भी सहयोगी बहुत भयभीत प्रतीत होता है। उसे यह बात किसी प्रकार भी सम्भव प्रतीत नहीं होती कि कोई नारी अधिक विद्यासम्पन्न हो कर और पाठशालाओं की पूरी शिक्षा पाकर भी देवी रह सकती है। भारत से बाहिर समुद्र यात्रा करने के विषय में भी सहयोगी की विचित्र ही सम्मति है। न जाने समुद्र यात्राद्वारा धर्म भ्रष्ट करने वाले उनभारतीय सिपाहियों के विषय में उस की क्या राय होगी, जो फ्राँस और बैल्जियम में साम्राज्य के लिये लड़ मर रहे हैं। देखें, वैंकटेश्वर समाचार अपनी इस सनातन पद्धति को कबतक स्थिर रखता है।

हिन्दी समाचार का नयारूप

दिल्ली से अब भी एक आर्य्य भाषाका पत्र निकलता है, जिस का नाम हिन्दी समाचार' है। इसी सहयोगी ने, लगभग दो महीने के व्यतीत हुए हमें सलाहदी थी कि हम शीघ्र ही अपने व्यवहार से भारतीय सरकार के कर्मचारियों को प्रसन्न कर लें। प्रसन्न करने के कार्य में सहयोगी बहुत प्रवीण है। दिल्ली के डिपुटी कमिश्नर को तो हिन्दी समाचार से अब कोई शिकायत ही नहीं है, कि उन्हें प्रसन्न करना पड़े। इसलिये सहयोगी ने अपनी कला का प्रयोग दूसरी ही जगह किया है। दर्भंगानरेश हिन्दी समाचार के संरक्षक हुए है। जनवरी की १ तारीख़ को दर्भंगा नरेश के पुत्रों का उपनयन संस्कार हुआ था, जिस में आपस्वयं बालकों के आचार्य बने थे। संस्कार में बड़े २ नरेश और पंडित पधारे थे। हिन्दी समाचार के मालिक और सम्पादक भी निमान्तीत थे। समाचार के नये अंक में निम्नलिखित समाचार छपा है।

हिन्दी पत्र सम्पादक का शुभागमन 'आज प्रातः काल की ट्रेन से हिन्दी समाचार पत्र दिल्ली के प्रधान सम्पादक श्रीयुत पं० कात्यायनी दत्त जी त्रिवेदी महोदय पधारे। राज्य की ओर से स्टेशन पर आप के सुस्वागत का बहुत अच्छा प्रबन्ध था, हम भी सम्पादक जी को इस स्वागत पर बधाई देते हैं।

भास्कर की उन्नती

मेरठ का भास्कर नाम का मासिक पत्र आर्य्य पुरुषों को अविदित नहीं हैं। इस के सम्पादक स. रघुवीर शरण दुबलिस हैं। आर्य समाज के जितने आर्य्य भाषा के मासिक पत्र हैं उनमें एक यही नाम लेने योग्य है। अन्य पत्रों का जीवन ही बहुत है। वेद प्रकाश में वेदान्त-भाष्य के ८ पृष्ठ न रहें तो उस के शेष लेख किसी दैनिक के पिछले कालमों के भी योग्य नहीं होते। अन्य पत्रों में अभी उन्नति की बहुत गुंजायश है। भास्कर की दिनों दिन बढ़ती देख कर प्रसन्नता होती है। मूल्य १॥) बहुत कम है। विशेष अंकों के लिये इस पत्र की प्रसिद्धि हो रही है।

दैनिक पत्र

योरप के महायुद्ध के कारण आर्य्य भाषा में इन चार नये दैनिकों की उपज हुई है। अभ्युदय, कलकत्ता समाचार, वैंकटेश्वर समाचार और विहारी। इन चार पत्रों में से पहले तीन को हम स्थायी रूप से दैनिक समझते हैं।

अभ्युदय का मुख्य लेख और टिप्पणियाँ जिस योग्यता से लिखी जाती हैं, उनसे आशा पड़ती है कि वह हिन्दी भाषियों से पर्याप्त सहायता पासकेगा। कलकत्ता समाचार का धनकोष उसके जीने की आशा दिलाता है। कोई आश्चर्य नहीं कि सहयोगी थोड़े दिनो में दिनमें दोवार निकलने लगे। वैंकटेश्वर समाचार का सम्पादन बड़ी योग्यता से होती है। पं. अमृत लाल चक्रवर्ती की लेख शैली में जो बलहै, वह उनके वाक्यों की जटिलता और शब्दों की कठिनता से भी नहीं घटने पाता। यह भी निश्चित रीति से माना जा सकता है कि बम्बई का एक मात्र हिन्दी दैनिक स्थायी रूपधारण करेगा। शेष रहा विहारी। विहार में एक दैनिक की गुंजायश तो है किन्तु विहारी का रंग ढंग देख कर निराशासी हो जाती है। विहारी के सम्पादन में और अधिक परिश्रम होने की आवश्यकता है। भारत मित्र, तो पहले से ही स्थायी है, वैंकटेश्वर समाचार के अतिरिक्त और किसी दैनिक का ऐसा उत्तम सम्पादन भी नहीं होता, जैसा भारत मित्र का होता है। मर्यादा का मर्यादोल्लंघन मर्यादा के बहुत दिनों से दर्शन नहीं हुए, दैनिक अभ्युदय ही संसार में मर्यादा के उल्लंघन का हेतु हुआ करता है। यहाँ भी ऐसा प्रतीत होता है। सम्पादक जी को उचित है कि वे इन दोनों परस्पर विरुद्ध बातों को मिला दिखायं।

दैनिक बुलटिन

लाहौर से बुलटिन नाम का एक अंग्रेज़ी पत्र दिन में दोवार निकलता है, जिसका उद्देश्य लोगों तक युद्ध समाचार पहुंचाना है। अभी तक यह केवल युद्ध सम्बन्धी बातों से ही भरा होता है, अब मालिकों ने सदा के लिये उसे दैनिक रूप में निकालना निश्चित किया है। लाहौर को बधाई।

बंगला बंगाली

बंगाल के प्रसिद्ध नेता श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने अपना बंगाली पत्र बंगले में भी निकालना प्रारम्भ किया है। युद्ध समय का यह उपहार बंगाल को हर्षदायक होगा। किन्तु चारों ओर विचित्र ढंग की बातें उड़ रही हैं। समाचार पत्र लिख रहे हैं, कि बाबूसुरेन्द्र नाथ को इस दैनिक के निकालने के लिये सरकार से आर्थिक सहायता मिली है। हम नहीं कह सकते कि यह समाचार कहां तक सत्य है, किन्तु यदि सच हो तो कौन भारत वासी दुःखित न होगा। अभी बनर्जीमहाशय की ओर से इस समाचार का पक्ष वा विपक्ष में कोई उत्तर नहीं निकला इस लिये सन्देह होता है। हमारा तो मानने को जी नहीं चाहता, आगे भगवान जाने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल की सेवा में

प्रचारक की भेंट

प्रचारक के प्रेमियो ! गत वर्षों में प्रचारक गुरुकुल की सेवा में कुछ न कुछ वार्षिक भेंट किया करता था। इस वार भी हम कुछ भेंट करना चाहते हैं। जिन जिन साधनों से गुरुकुल की स्थापना हुई थी, प्रचारक भी उन में से एक है। प्रचारक को गुरुकुल की बड़ी ममता है। क्या छोटी सी

२०००)

की भेंट देना प्रचारक परिवार के लिये कुछ कठिन है। ये दो हज़ार रुपये हम ने दो रुपये के एक सहस्र हिस्सों में बांट दिये हैं। क्या प्रचारक के १००० ग्राहक

२)

की राशि नहीं भेज सकते? भेज सकते हैं, और पूरा विश्वास है कि इस अंक के पहुंचते ही भेज देंगे। कृपया शीघ्र ही अपने हिस्से के दो रुपये भेज दीजिये। अब विलम्ब का समय नहीं है। यह आवश्यक नहीं कि आप दो रुपये का एक ही हिस्सा भेजें, यदि अधिक हिस्से भेज देंगे तो गुरुकुल का लाभ होगा, और प्रचारक परिवार गुरुकुल की अधिक सेवा का अभिमान कर सकेगा।

प्रेमियो ! देखना हमें
निराश होना न पड़े।

धन गुरुकुल के कार्यालय में भेजिये और साथ लिख दीजिये कि आप का धन प्रचारक की ओर से समझा जाय। प्रति सप्ताह भेजने वाले सज्जनों की सूचि प्रकाशित हो जाया करेगी।

सम्पादक

गुरुकुल आर्य्य-समाज में प्रत्येक शनिवार को साधारण अधिवेशन होते हैं, जिन में बाहर से आए विद्वान् भी व्याख्यान दे जाते हैं। गत सप्ताह रावलपिण्डी के पं० सीताराम शास्त्री परिवार सहित आए थे। उन्हों ने व्याख्यान दिया। इस आ० स० के मन्त्री तथा उपाध्यायों के पुरुषार्थ से ग्राम कांगड़ी तथा ग्राम सजनपुरा में दो पाठशालाएं चल रही हैं जिन में ६० से अधिक छात्र साधारण शिक्षा पाते हैं। सजनपुरा के अध्यापक तथा ३ छात्र गुरुकुल में नित्य संस्कृत पढ़ने के लिए आते हैं। यदि यह ग्रामीण कृषिक संस्कृत के पण्डित बन गये तो न जाने पं० अखिलानन्द की घबराहट उन्हें किस की शरण में ले जायगी।

सद्धर्म्मप्रचारक

क्या निराश हो जायं ?

चारों ओर से लोग जिज्ञासा २ कर हमें कहते हैं कि निराश हो जाओ, किन्तु निराश होने को जी नहीं चाहता। चित्त आशा पर तुला हुआ है, फिर निराशा पिशाची समीप कैसे आ सकती है। एक ओर युद्ध है, दूसरी ओर अकाल का डर है। व्यापार मन्दा पड़ा हुआ है, और बैंकों के दिवाले बोल गये हैं। जिस से पूछते हैं वह यही कहता है कि इस वर्ष गुरुकुल के लिये प्रर्याप्त धन एकत्र न होगा। लोग तो उत्सव में आजायंगे, किन्तु गांठ खोलने को तय्यार कोई न होगा। यह सब कुछ होते हुए भी हमारे कान में आकर कोई दैवी आवाज़ कहती है कि गुरुकुल का इस वर्ष का उत्सव सभी प्रकार से सफल होगा। लोगों की धर्म पिपासा नहीं मर सकती, वेद और ब्रह्मचर्य में उन की श्रद्धा नहीं लुप्त हो सकती—तब फिर निराश क्यों हों ? क्या धर्म, वेद और ब्रह्मचर्य के प्रेमियों के रहते गुरुकुल की कोई भी आवश्यकता अपूर्ण रह सकती है ? कभी नहीं।

गुरुकुल का उत्सव बहुत समीप आ रहा है कि हम उसे आ पहुंचा कह सकते हैं। इस समय आर्य्य पुरुषों को जगाने की ओर उत्साहित करने की आवश्यकता होती है। वर्ष भर वे गुरुकुल का नाम सुनते हैं, उस के समाचार पढ़ते हैं, किन्तु उसे सहायता देने की वारी अन्त में ही आती है। यही दो महीने होते हैं जिन में परिश्रम कर के आर्य्य पुरुष गुरुकुल का साल भर का भोजन इकट्ठा कर लेते हैं। अभी तक किसी यत्न का वृत्तान्त नहीं सुनाई दिया। सम्भव है, आर्य्य-समाजों में प्रयत्न हो रहा हो। तो आर्य्य-समाजों के मन्त्रियों को चाहिये कि वे छुपा कर न रक्खें। गुप्त गुहा में परोपकार करने से और लोगों पर उस का उपयोगी प्रभाव नहीं पड़ता। जिन समाजों में गुरुकुल के लिए धन एकत्र किया जा रहा हो, उन के मन्त्री महोदयों को चाहिये कि वे सामाजिक पत्रों में उस की चर्चा करते रहें, ताकि अन्य स्थानों में भी जोश फैले, और प्रयत्न का विस्तार हो।

जिन समाजों ने अभी तक प्रयत्न शुरू नहीं किया उन्हें अब देर नहीं लगानी चाहिये। गुरुकुल के मित्र और शत्रु क्रमशः उदासी और विरोध के भाव से प्रेरित हो कर कभी कभी आर्य्य जनता में अनेक विध भ्रम फैला देते हैं। उन भ्रमों का उसी समय समूलोच्छेद कर देना उचित होता है। सदा से ही गुरुकुल को मिथ्यादोषों का शिकार रहना पड़ा है। जब अभी लोगों के सन्मुख गुरुकुल का कोई फल नहीं आया था, वे कहते थे, गुरुकुल के स्नातक बुद्धू होंगे, वे संसार में कोई काम नहीं कर सकेंगे। उस समय उस प्रकार के भ्रम ज्ञानों को तोड़ने की आवश्यकता थी, इस समय दूसरे प्रकार के आक्षेपों का उत्तर देने की आवश्यकता हो रही है।

इस समय प्रायः शंका उठाई जाती है कि "क्यों साहिब ! गुरुकुल के स्नातकों ने क्या काम किया है ? हम तो समझते थे, वे बड़े २ मार्के मारेंगे, किन्तु उन्हों ने तो कुछ भी नहीं किया ? संसार तो जैसा का तैसा ही चल रहा है—कोई भूचाल नहीं आया" ऐसे सज्जनों के प्रश्नों के उत्तर में हमारा निवेदन है कि यदि आप किसी समय पर समझते थे कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी गुरुकुल से निकलते ही किसी प्रकार का अनुभव प्राप्त किये बिना संसार का उद्धार कर डालेंगे, तो आप की भूल थी। हम उन आर्य्य पुरुषों से जो प्रायः कहा करते हैं कि गुरुकुल ने आर्य्य पुरुषों को कोई सेवक नहीं दिये, पूछते हैं कि क्या आप आर्य्य समाज के लिये विद्वान् और अनुभवी सेवक चाहते हैं, या केवल अधकचरे विद्वान्। केवल विद्या और अभ्यास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से कोई मनुष्य संसार के भयानक संग्राम में भाग लेने योग्य नहीं हो जाता। जब तक अनुभव न हो, मनुष्य अधकचरा ही रहता है। गुरुकुल ने स्नातकों को विद्या दी है, और आचरण दिये हैं। संसार उन्हें अनुभव देगा, और तब हमारा विश्वास है कि आर्य्य जनता को गुरुकुल से सेवक न मिलने की शिकायत नहीं रहेगी। इस अथाह संसार का अनुभव पांच साल से कम समय में नहीं हो सकता और इतने में भी केवल काम लायक ही होता है। हमारी सम्मति में गुरुकुल के प्रत्येक स्नातक के अनुभव के पीछे ही उत्तरदातृत्व वाले क्रियात्मक जीवन में घुसना चाहिये, उस से पूर्व केवल विनीत सिपाही बने रहना चाहिए। क्या आर्य्य पुरुष स्नातकों को अनुभव के लिए पाँच साल की मोहलत भी नहीं देना चाहते। हमारा दृढ़ विश्वास है कि अनुभव के लिये इतना समय छोड़ कर गुरुकुल के स्नातक आर्य्य-जाति के सामाजिक धार्मिक और सार्वजनिक जीवन में बहुत बड़ा भाग लेंगे और तब आर्य्य जनता को शिकायतका एक भी शब्द कहने की गुंजायश नहीं रहेगी।

अनुभव की आवश्यकता दिखाने से हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि हम गुरुकुल के शत्रुओं के लगाए हुए दोषों में कुछ भी सत्यता समझते हैं। गुरुकुल के शत्रुओं का सारा क्रोध आज कल स्नातकों पर निकल रहा है और उस का कारण यह है कि ये स्नातकों की मोम की नाक की भांति निर्बल समझ कर कई वार फांसने का यत्न करते रहे और उन्हें सफलता नहीं हुई। ऐसे भद्र पुरुष कहने लगे हैं कि गुरुकुल के स्नातक समाज सेवा से विमुख प्रतीत होते हैं—और अपने अपने कार्य में लग गये हैं। ऐसे लोगों को जानना चाहिये कि इस समय तक जो स्नातक निकले हैं उन का बड़ा भाग या अभी शिक्षा प्राप्ति में लगा हुआ है, और या समाज सेवा में। कोई भी स्नातक अपने निजूलाभके कार्य्यमें नहीं लगा हुआ। हरिश्चन्द्र जी विदेश रुपया कमाने नहीं गये, प्रत्युत संसार की वास्तविक दशा का अनुशीलन करने, और अपने सामाजिक ज्ञान को पूरा करने के लिए गए हैं। स्नातक इन्द्र और स्नातक विश्वनाथ गुरुकुल विश्वविद्यालय में पढ़ाने का कार्य करते हैं। धार्मिक पत्र का सम्पादन तथा पुस्तकों का लिखना अभी तक भारतवर्ष में रोज़ी कमाने का साधन नहीं हुआ। हम अपने अनुभव से यह जानते हैं, इस लिये प्रचारक का सम्पादन और किताबें लिखना भी समाज सेवा का अंग ही समझना चाहिये। स्नातक ब्रह्मदत्त गत १० महीनों में दो दर्जन के लगभग आर्य्य समाजों के उत्सवों तथा अधिवेशनों में व्याख्यान दे चुके हैं, और आज कल भी आर्य्य-समाज की सेवार्थ भ्रमण कर रहे हैं। यदि यह समाज सेवा नहीं तो वह किस चिड़िया का नाम है। क्या उत्सवों पर जाने में भी निजू व्यापार ही लक्ष्य होता है? शायद गुरुकुल पर आक्षेप करने वालों में से कई सज्जन "आत्मवत् सर्व भूतेषु" के मानने वाले हैं। स्नातक यज्ञदत्त "प्रभात" का सम्पादन कर रहे हैं। हमें अच्छी प्रकार से ज्ञात है कि इस पत्रसे हमारे भाईको गुज़ारे से अधिक आमदनी नहीं है। पत्र का उद्देश्य पंजाब में आर्य्य भाषा और आर्य्य सभ्यता का उद्दीपन करना ही है। क्या यह समाज सेवा नही है?

स्नातक भारद्वाज कलकत्ते में डाक्टरी और वैद्यक का अनुशीलन कर रहे हैं, क्या शिक्षा पाना भी समाज सेवा का विरोधी है? कल को शायद हमें यह भी कहा जायगा कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी समाज की सेवा नहीं करते, क्योंकि वे गुरुकुल में रह कर पढ़ते हैं, और किरायेदार उपदेशकों की भांती रोज़ाना फ़ीस लेकर उत्सवों पर नहीं जाते। कौन कह सकता है कि स्नातक भारद्वाज वैद्यक में प्रवीण हो कर आर्य्य समाज की सेवा के अधिक योग्य नहीं हो जायंगे, और गुरुकुल विश्वविद्यालय अपने मैडिकल विभाग पर अभिमान नहीं कर सकेगा? स्नातक चन्द्रमणी अपनी गुरुकुल शिक्षा को पूर्ण करने के लिये पाली पढ़ रहे हैं। दो साल और शिक्षा पाने पर वे गुरुकुल विश्वविद्यालय की ओर से विद्या वाचस्पति की उपाधि से विभूषित होंगे?

गुरुकुल के विरोधी इसी प्रकार के थोथे हथियारों से उस एक मात्र धार्मिक और जातीय विश्वविद्यालय को बदनाम करने का यत्न किया करते हैं। किन्तु आर्य्य पुरुषों के श्रद्धा विश्वास और धर्म की कवचों से सुरक्षित चित्तों पर उन का कोई असर नहीं होता। न आज तक गुरुकुल के विरोधी अपने भद्दे यत्नों में सफल हुए हैं और न होंगे। सहस्रों विरोधियों के होते हुये, और लाखों दुष्ट चेष्टाओं का सामना रहने पर भी गुरुकुल प्रति दिन वृद्धि करता ही जायगा। कोई सांसारिक या राजनैतिक शक्ति उस का दलन नहीं कर सकती, यह हमारा दृढ़ विश्वास है, और आर्य मात्र के हृदय हमारे साथ सहमत होंगे।

आर्य्य पुरुषों! उत्सव समीप आ रहा है, सावधान और सोत्साह हो कर गुरुकुल के लिये चन्दा करना प्रारम्भ कर दो। यदि समय और अवस्थाएं हमारे विरुद्ध हैं तो हमारा प्रयत्न आगे से सौ गुना हो जाना चाहिये। विशेषतया हम

दिल्ली के आर्य्य पुरुषों

को स्मरण कराना चाहते हैं कि उन्होंने गत वर्ष प्रतिज्ञा की थी कि वे इस उत्सव पर कम से कम

५०००)

एकत्र करके लायंगे। यद्यपि पं० हरिश्चन्द्र जी दिल्ली में नहीं हैं, तथापि म० निहालचन्द्र जी, बा० द्वारिकादास जी और ला० भगीरथलाल जी और सब से बढ़ कर म० गंगाराम जी के वहाँ होते हुए भी क्या किसी वस्तु की न्यूनता हो सकती है? समाज के मन्त्री मा० सुन्दरसिंह जी से हमारा विशेष निवेदन है कि वे दिल्ली समाज की प्रतिज्ञा को पूर्ण कराने का यत्न करें। दिल्ली में कुछ भी असम्भव नहीं है।

बरेली के डाक्टर श्यामस्वरूप जी भी ५०००) एकत्र करने की प्रतिज्ञा कर गए थे। अन्त में और भी गुरुकुल के सब प्रेमियों से हम निवेदन करते हैं कि 'उत्तिष्ठत जाग्रत' उठो, जागो और कमर कस कर कर्त्तव्य पूर्ति के लिये तय्यार हो जाओ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति

राजनीति और समाज संशोधन

सहयोगी प्रताप और आर्य्यमित्र में आज कल एक बहुत उपयोगी विवाद चल रहा है। इस प्रकार के विवाद हमारे पत्रों में बहुत कम चलते हैं। किसी विषय पर विचार प्रारम्भ होते ही व्यक्तिगत आक्रमण होने लग जाते हैं, और काम की बात पर धूल पड़ जाती है। विवाद इस विषय पर प्रारम्भ हुआ है कि भारतवर्ष को राजनीतिक कार्यों की अधिक आवश्यकता है या सामाजिक और धार्मिक संशोधन की। सहयोगी प्रताप राजनीति को उच्च पद देता प्रतीत होता है और आर्यमित्र दूसरे दो प्रकार के कामों को। यदि यह विचार अच्छी रीति पर किया जाय तो बहुत लाभदायक हो सकता है। इस समय उत्तरीय भारत में इसी प्रकार के दो पक्ष हो गये हैं। एक वह पक्ष जो राजनीतिक काम को ही देश का सर्वस्व मानता है और दूसरा उस कार्य्य में विश्वास नहीं करता। दोनों पक्षों वाले एक दूसरे के कार्य को अश्रद्धा और अविश्वास की दृष्टि से देखते हैं, और हमारी राय है कि एक दूसरे के गुणों को भी दोष की दृष्टि से परखते हैं। सहयोगी प्रताप को ही लीजिये। उस के लेखों से प्रतीत होता है कि जब उसे गम्भीरता पूर्वक विचार करने का अवसर मिले तो वह सामाजिक और धार्मिक संशोधन के कार्य्य की आवश्यकता को मानता है। किन्तु साधारणतया अपनी स्वाभाविक उपहास प्रियता में आकर वह प्रत्येक वस्तु को तुच्छ बनाने का यत्न करता है, और अन्य सब प्रकार के कार्यों को हेच समझता है। दूसरी ओर हिन्दू सभा के इस वर्ष के सभापति जी हैं, जिन की राय में राजनीतिक कार्य सर्वथा निर्मूल जंचता है। हम समझते हैं, कि ये दोनों पक्ष अत्युक्ति और एक तरफा ज्ञान पर अवलम्बित है। दोनों प्रकार के कार्यों की आवश्यकता है, और उन में भी सामाजिक सुधार सब से आवश्यक है। सामाजिक सुधार राजनीतिक सुधार का मूल है। वह जाति, जिस पर भयानक जाति बन्धन की जंजीरें कसी हुई हों, जिस के करोड़ों व्यक्ति पशुओं से बदतर हैसियत के समझे जाते हों, जिस में जाति की माताओं को अशिक्षित और असूर्य्यम्पश्य, रक्खा जाय, जिस में एक ईश्वर के स्थान में लोग जड़ोपासना से ही सन्तुष्ट हैं—हम पूछते हैं कि क्या ऐसा देश आत्मशासन का अधिकारी हो सकता है? क्या वह मनुष्य, जो अपने साधारण से पुरोहित के सामने चूं करने की हैसीयत नहीं रखता, कभी शक्ति शालिनी गवर्मेन्ट के सामने शब्द उठाने की ताक़त रखता है? सामाजिक संशोधन राजनीतिक संशोधन की नींव है। साथ ही राजनीतिक संशोधन को क्षण भर के लिये भुला देना भी आत्महत्या के समान है। भारतवर्ष में समाज का आधार धर्म है—इस बात को भुलाना नहीं चाहिये। धर्म का संशोधन किये विना समाज संशोधन असम्भव है, और समाज संशोधन पर राजनीतिक सुधार अवलम्बित है। ये तीनों प्रकार के सुधार कार्य कारण भाव रखते हुए भी एक दूसरे के साथ ही चलते हैं, और एक दूसरे के सहायक हैं।

विरोध का असली रूप

समझिये

संयुक्त प्रान्त में वर्णव्यवस्था के प्रश्न को लेकर जो विरोध उठाया गया है, उस के विषय में हम गत सप्ताह कुछ लिख चुके हैं। विरोध के मूल में सिद्धान्त का झगड़ा नहीं था, किन्तु इस में सन्देह नहीं कि कई एक जन्म के ब्राह्मणों ने अन्य लोगों को गुण कर्म से ब्राह्मण बनते देख कर पहले से ही अपनी गद्दी को टटोलना शुरू किया और उस का परिणाम यह विरोध है। श्री पं० तुलसीराम जी के प्रतिनिधि सभा के प्रधान बनने को केवल एक हथियार बनाया जा रहा है। श्री पं० तुलसीराम जी के विषय में हम कभी सपने में भी यह विचार नहीं कर सकते कि वे अपने प्रधान न बनने को कोई सिद्धान्तों का झगड़ा समझते हैं। प्रजातन्त्र प्रबन्ध में ऐसे परिवर्तन होते ही रहते हैं, इस में बुरा मानने की कोई बात नहीं होती। श्री पं० तुलसीराम जी के कई साथी जिन में से पं० अखिलानन्द मुख्य हैं, और जो अपने मतलब की सिद्धि के लिये पंडित जी को साधन मात्र बनाना चाहते हैं, इस झगड़े को बढ़ा कर समाज की हंसी उड़वाना चाहते हैं और कलकत्ता समाचार और वीर भारत जैसे आर्यसमाज के प्रतिकूल पत्रों में आर्य्यसमाज के नाम को बदनाम कर रहे हैं। हमारी पंडित जी से और समस्त आर्य्य पुरुषों से यह प्रार्थना है कि वे पं० अखिलानन्द जैसे स्वार्थी व्यक्ति के वास्तविक रूप को समझें और उन के प्रयत्नों को सफल न होने दें। यह सुन कर हमें आश्चर्य्य हुआ है कि पं० तुलसीराम जी ने प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग से और उपप्रधानी से त्यागपत्र दे दिया है। हमारी राय में यह त्यागपत्र स्वीकृत नहीं होना चाहिये, और श्री पं० जी से हमारी प्रार्थना है कि वे अन्य स्वार्थी लोगों के कहे सुने से आर्य्य समाज की संस्था से सम्बन्ध न तोड़ें। हम संयुक्तप्रान्तीय आर्य्य समाजों के कर्णधारों से आशा करते हैं कि वे इस सारे मामले को बुद्धिमत्ता और धैर्य्य से निपटायंगे और दो एक सिद्धान्त हीन पुरुषों की बुरी अभिलाषाओं को पूर्ण न होने देंगे।

हमारी समझ में नहीं आता कि पूज्यवर श्री पण्डित तुलसीराम जी के विचार पं० अखिलानन्द के साथ कैसे मिल सक्ते हैं। हमें ज्ञात है कि श्री पण्डित तुलसीराम जी ने एक कन्या के लिए वर तलाश करने का भार गुरुकुल के पूज्य आचार्य्य को सौंपते हुए लिखा था कि उक्त कुमारी का पिता जाति बन्धन तोड़ कर विवाह करना चाहता है, इस लिए महात्मा जी को सहायता करनी चाहिए। कहां श्री पं० तुलसीराम जी जाति बन्धन के विरुद्ध गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था मानने वाले और कहाँ पं० अखिलानन्द सन्ध्यावन्दनादि पर भी मख़ौल उड़ा कर चौके की मुहारनी उचारने वाले। परन्तु पं० अखिलानन्द तो "मान न मान मैं तेरा मेहमान" वाले गले पड़ने वाले आसामी हैं, इस लिए उन की करतूत के कारण श्री पण्डित तुलसीराम जी का विरोध करना बुद्धिमत्ता का काम नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(४६)

पंडित गुरुदत्त के अन्तिम दिवस।

(प्रचारक भाग २६, संख्या २४ से मिला हुआ)

सम्वत् १६४६ का बड़ा भाग मैं ने पण्डित गुरुदत्त जी के सत्सङ्ग तथा दूर से उन की सेवा में ही बिताया। मैं लिख चुका हूं कि श्रद्धालु भक्तों ने श्रद्धा सम्पन्न गुरुदत्त को दिन रात घेर कर उन के स्वास्थ को बिगाड़ दिया था। मैं शोक से देखता हूं कि आज प्रत्येक युवक जो गुरुदत्त के विरोधियों के दल में पला है गुरुदत्त की इस निर्बलता को सर्वसाधारण के सामने ला ला कर उस महात्मा के गौरव को घटाने का प्रयत्न करता है, परन्तु ऐसे युवकों को याद रखना चाहिए कि गुरुदत्त को रुग्नावस्था में लाने का प्रयत्न उसके दल के मुखिया गुरु ने भी कुछ कम नहीं किया था। मांस का झगड़ा छेड़ कर उस समय अहिंसक गुरुदत्त को बड़ा कष्ट देने का यत्न किया गया। परन्तु वहां सब कुछ सहन करने की तैयारी थी।

इस संबंध में एक कहानी बड़ी मनोरंजक है जिस से गुरुदत्त की अपूर्व वाक्चतुरता का पता लगता है। एक बार एक एम० ए० महाशय, जो एक बड़े सरकारी पदाधिकारी थे और साथ ही प्रेमचन्द राय चन्द्र स्कालर Premchand Roychand Scholar भी, पण्डित गुरुदत्त के पास आकर बोले—"पण्डित जी! आयुर्वेद का क्या बनाओगे। सुश्रुत में तो मांसभक्षण की खुली आज्ञा है।" उत्तर मिला—"कुछ है तो, परन्तु क्या आप सुश्रुत के उपदेशानुसार आचरण करोगे?" एम० ए० महाशय चकित होकर पूछने लगे—"क्या आप मांस भक्षण को ठीक मानने लग गए?" उत्तर मिला—"मैं तो ठीक मानने लग गया वा नहीं, इस से कुछ प्रयोजन नहीं है। परंतु यदि मांस खाना हो तो उत्तम ही खाना चाहिये। सो सब से बढ़ कर उत्तम और अनुकूल तो मनुष्य का मांस है। मनुष्यों में से भी यदि एम० ए० का हो तो अत्युत्तम, और फिर यदि प्रेमचन्द्र रामचन्द्र स्कालर का मांस कहीं मिल जाय तो, सोने पर सुहागा, अतीव उत्तम भोजन होगा" एम० ए० महाशय नमस्ते कह कर रफूचक्कर होगए।

उन दिनों एक ओर तो पण्डित गुरुदत्त को चाय-रोग का प्रारम्भ था और दूसरी ओर उन के विरुद्ध विचित्र प्रकार के प्रवाद फैलाए जाते थे। कभी कहा जाता कि वह दयानन्द कालिज के प्रिन्सिपल पद के अभिलाषी हैं, कभी कहा जाता कि भगवे धारण कर लिए हैं और गुरु बनना चाहते हैं, कभी यह गप्प उड़ाई जाती कि वह सारे उपदेशकों को वश में कर के मनमानी चलाना चाहते हैं। बड़ी बात यह थी कि जिन लाला साईं दास जी ने बड़े यत्न से गुरुदत्त को आर्य्य-समाज का रत्न बनाया था, जिन का सचमुच गुरुदत्त के साथ पिता पुत्र का सम्बन्ध था, उन को लोग बराबर भड़काते थे। एक बार शायद ज्येष्ठ, १६४६ के अन्त में लाहौर पहुंच कर मैंने यह सब बातें सुनीं। मैं पंडित गुरुदत्त जी के पास गया और अपनी प्रकृति के अनुसार उन से सीधे प्रश्न पूछे। मुझे वे प्रश्नोत्तर अभी तक याद हैं:—

मैं—"पंडित जी यह आप के विरुद्ध क्या जन श्रुतियां फैल रही हैं? लोग कहते हैं कि आप दयानन्द कालिज के प्रिन्सिपल पद के अभिलाषी हैं और मुझे कालिज कमेटी के एक अधिकारी ने बतलाया है कि आप ने कालिज के प्रोफ़ेसर पद को इस लिए स्वीकार नहीं किया कि आप प्रिन्सिपल बनना चाहते हैं।"

पं० जी—"मेरी तो कोई अभिलाषा प्रिन्सिपल बनने की नहीं। जिस कालिज के लिए मैंने स्वयम् धन दिया और भिक्षा मांगी उस से वेतन कैसे लूं? मुझे निकम्मा समझ कृपा कर के अधिकारियों ने साईंस का प्रोफ़ेसर बनाना चाहा था। मैंने उत्तर दिया कि वेतन लेकर तो काम करूंगा नहीं—हां, दो तीन घन्टे वैसे ही पढ़ा दूंगा; परन्तु साइन्स नहीं प्रत्युत वेद। उन्हों ने मुझ से वेद पढ़वाना माना नहीं और बात समाप्त हो गई।" उसी समय मास्टर दुर्गा प्रसाद जी आ गए जिन्हों ने बतलाया कि पंडित गुरुदत्त को पता नहीं है परन्तु उन्हों (मास्टर दुर्गाप्रसाद जी) ने लाला लालचन्द्र जी प्रधान से कहा था कि वैदिक कालिज का प्रिन्सपल पद का जानने वाला ही होना चाहिए। फिर मैंने पूछा—"क्या आप ने सन्यासियों का वेशधारण कर लिया है?" उत्तर मिला—"अब धन तो पास है ही नहीं और गर्मियों के दिन हैं; धोबी को बहुत पैसे क्यों दूं। मैंने घर पहिरने का कुड़ता रंग लिया है जिसे नित्य धो लेता हूं।" मैंने फिर पूछा—"यह बहुत से भगवे पोष चेले क्यों मूंडे हैं?" इस पर पंडित जी कुछ दुखी हुए और बोले—"मुन्शीराम जी! यह सन्यासी महात्मा सब मेरे गुरु हैं। इन के विषय में ऐसा प्रवाद सुन कर मुझे खेद होता है।"

गुरुदत्त जी के पास होकर मैं लाला साईं दास जी की सेवा में गया और उन को सब कुछ कह सुनाया। फिर मैंने कहा—"लाला जी गुरुदत्त आप के पुत्र वत् हैं। पिता पुत्र में लोग तो द्वेष फैलाने का प्रयत्न करते हैं, आप क्यों नहीं स्वयम गुरुदत्त से स्पष्ट बात चीत करते।" श्री लाला साईंदास जी को मेरी बात प्रसन्द आई और वे मेरे साथ पंडित गुरुदत्त के मकान को चल दिए। यदि उस दिन पं० गुरुदत्त घर होते तो शायद आर्यसमाज का इतिहास ही बदल जाता; परन्तु वह बाहर भ्रमण को चले गये थे। मैं जालन्धर को चला आया और जब दूसरी बार लाहौर गया तो रोगी गुरुदत्त मित्रों के अनुरोध पर मरीपर्वत पर सर्दार उमरावसिंह मजीठिया के अतिथि बन कर चले गए थे।

(मुंशीराम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीननौका विज्ञान

(आन्ध-कुशनकाल)

मौर्य चन्द्रगुप्त के विषय में आप पाठकों ने एक २ बात करके अमात्य चाणक्य से पूछ ही ली है। खैर, उस भव्यदिव्य ज़माने का हाल तो, जो बड़ा शान वाला था, था ही। पर अभी हमारे भारतीय सामुद्रिक वीरों की पराकाष्ठा नहीं होगई। अशोक कनिष्क आदि भी नाना राजा हमें मिले हैं जिनका राज्य समस्त भारत में था। और व्यापार का नाद रोम और योरोप में भी गूंज गया था। अब हम सब कुछ छोड़ छाड़ कर व्यापार ही पर यदि ध्यान देंतो व्यापारका पारवारही नहीं पता लगता।

महाराजा अशोक राजसिंहासन पर आरूढ़ हैं। चन्द्र गुप्त की अपेक्षा व्यापार क्षेत्र और भी विस्तृत होगया भारत के बहु मूल्य और अनुपम व्यापार हेलिवंशियों के वसे एक सत्तात्मक राज्य सीरिया इजिप्ट सीसेन और मासीडोनिया तक व्यापार फैला हुवा था।

डाक्टर वी. एं स्मथ आदि पाश्चात्य विद्वान चाहे कितना ही मुक्तकंठ होकर इस विषय में कितनी ही अच्छी सम्मति दें परन्तु वे सब सम्मतियें हमारे अपने देशीय ग्रन्थकार की प्रबल सम्मति के आगे सब तुच्छ है। प्रसिद्ध संस्कृतकवि क्षेमेन्द्र अपनी बोधिसत्व कल्पलता में यों लिखते हैं

"राजा श्रीमान् अशोको ऽभूत्पुरे पाट लिपुत्रके ॥

तं कदाचित् सभासीनं वणिजो द्वीपवासिनः ।

सर्वस्वनाशशोकार्ताः सनिश्वासाः व्यजिज्ञपुः ॥

अस्माकं तु प्रवहणं भङ्क्त्वा रत्नधनं हृतम् ।

केवलं भाग्य दौर्बल्यान्नागै सागरवासिभिः ॥

वयमन्यत्रजीवाम स्तदुपेक्षा तु ते विभो ।
समुद्रयात्राविच्छेदात् कोषशेषविधायिनी ॥

इति तेषां वचः श्रुत्वा राजा संक्रान्ततद्व्यथः ।

समुद्रान्तर्गतान् नागान् विचिन्त्य स्तिमितोऽभवत् ॥

तंदृष्ट्वानिष्प्रतीकारकोप व्याकुल मानसम्

इन्द्रो नामाऽब्रवीद् भिक्षुः स्वप्रतापाग्निसूचकः

ताम्रपत्रार्पितो लेखः प्रेष्यतां पृथिवीपते ।

इति भिक्षुवचः श्रुत्वा लेखंराजा विसृष्टवान् ।

क्षिप्तमेव तमम्बुधौ नागास्तीरे निचिक्षिपुः ॥

अथ राज्ञा पुनर्लेखे प्रहिते नाग पुंगवाः।
स्कन्धार्पिताऽखिल वणिक् रत्नभाराः समाययुः

तदशेषं नरपति र्वितीर्य वणिजां धनम् ।

विसज्यनागा नभवद्व जिनशासनसादराः ॥

अशोक महाराज पाटलि पुत्र (पटना) में राज्य करते थे। एक वार वे सभा में बैठे थे कि दूरद्वीपों में जाने वाले व्यापारी अपने सर्वस्व के लुटने की दुहाई मचाते हुवे हांफते २ वहां उपस्थित हुवे और कहने लगे महाराज, हमारा जहाज़ तोड़ दिया। हमारे भाग बड़े खोटे थे कि सागर निवासीनाग जाति वालों ने हमारा सारा धन लूटलिया अब हमारा ज्यूं त्यूं करके जीवन गुज़रता है। तेरी उपेक्षा से हमारी समुद्र यात्रा बन्द हो गई और इसलिये हमारे खज़ाने भी खाली हो गये। ऐसी बाणि व्यापारियोंकि सुनकर राजा को बड़ा खेद हुवा। और समुद्र में छिपे नागों को सोच कर राजा उदास सा होगया। इस प्रकार दुःखित तथा निरुपाय कुपित राजाको देख कर इन्द्र नाम के भिक्षु ने कहा महाराज हीरे जवाहिरातों के लुटेरे नागों को ताम्बे के फट्टेपर आज्ञा भेजिये। इस प्रकार उस भिखु की बात सुन राजा ने एक आज्ञा भेजी पर नागों ने उसे किनारे पर फेंकदिया। राजा ने फिर लेख भेजा बस दूसरी बार आज्ञा की देर थी कि सारे नाग चोर अपने कन्धों पर बणियों का मनों भार लादेहुवे सभा में हाज़िर हुवे इस प्रकार राजाने बनियों का अपना २ धन लौटादिया" देखा श्रीमानों कि प्राचीन राजों का कितना प्रभाव समुद्र भर में था मज़ाल क्या थी कि कोई चूं भी करजाता। इस इसको कहते हैं राज्य राजा की अज्ञा पाते ही देशी विदेशी सबके कन्धे झुकजांय

पहले ऐसा न था कि "घर का कुत्ता न घर का न घाट का"

अबहम २५०ई.पूः में पहुंचगये हैं अब अन्धकुशनकाल आगया है। रोमग्रीस ईजिप्त सीरिया चीन पच्छिमी एशिया आदि दूर दूर तक क भूखण्डों पर भारत का व्यापार रंग जमा रहा है। कुशन के कालमें भारत का रोम के साथ बड़ा घनिष्ठ व्यापार था। जब कि भारत को छोड़ सारे दुनिया के राजा महाराजा रोम के गरुड के नीचे होने में अपनी शान समझता थे परन्तु भारत में कनिष्क राजा राज्य करते थे। उस समय रोम का सारा स्वर्णप्रवाह भारत की ओर बह रहा था। रेशम मणि हीरे जवाहरात आदि सब बहुमूल्य पदार्थ हिन्दमहासागर से चल कर रोम के महासिंहासन और मुकुट तक को उज्ज्वल करते थे। इस व्यापार का परिणाम यह हुवा कि भारत में शिल्प की कम्पनियां खड़ी हो गई थी। सिक्का दोनों तरफ का खूब चला करता था। इस में कोई कहते हैं कि भारत में पहले सिक्के का प्रचार न था परन्तु रोमसे भारतने सीखा परन्तु ये ऐतिहासिकों की सरासर भूल है। क्योंकि मुद्रा या सिक्का और नोट या हुण्डियों की भांग दौड़ भारत में बड़े पुराने जमाने से ही चली आरही है। वह काल आज कल के ऐतिहासिकों के दादागुरुओं की अकल में भी कठिनता से बैठता है।

वाद की गवेषणा करने वालों ने यह भी एक घटना बताई है कि इस व्यापार से व्यावहारिकभाषा के शब्दों में भी बड़ा लेन देन होगया था। व्यापारीय द्रव्यों के नामों के नाम तामिलभाषा से चलकर यूनानकी आम भाषा में खूब प्रयुक्त होने लगे यहां तक कि यवन शब्दका अपभ्रंश आयोनियन और उनके देश का नाम आयानिया और यूनान ऐसा पड़गया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समाचार तथा विचार

संयुक्त प्रान्त अमेरीका में एक प्रतिनिधि सभा बैठी जिस में देश और जाति के लिये शराब के विरुद्ध प्रस्ताव पेश हुवा। यद्यपि इस आवश्यक विचारणीय प्रस्ताव पर दो तिहाई भी उपस्थित न थे फिर भी प्रस्ताव के पक्ष में सम्मतियें १९७ तथा विरोध में १८९ ही आईं। इस के अनुकूल कार्य करना किसी कारण वशात् अभी रुका रहेगा।

हम लोगों का ऐसी बातों पर कभी ध्यान भी नहीं आता। गांव गांव तक शराब की दुकानें फैलती जा रहीं हैं। लोगों के पेट में खाने के लिये दाना पहुंचे या न पहुंचे परन्तु शराब की बोतलें अवश्य पहुंच जांय ऐसी फिकिर ही बहुत से हिन्दुस्तान वासियों को रहा करती है। क्या इन शराब खानों के विरुद्ध कभी आवाज़ न उठेगी? क्यों नहीं!! कर्मवीरों को यही कार्य्य हाथ में लेना चाहिये।

मूर्त्ति पर गुस्सा

बैलज़ियम से एक अखबार का संवाददाता कहता है कि गोलर्स से खाइयें बहुत समीप हैं। वहां से मारे जर्मनों के गोलों से सारा देश तबाह हुवा जाता है। लोग भाग रहे हैं वाडेगेम में एक अलबर्ट की मूर्त्ति है। जर्मन लोग उस के नाक कान काटने में बड़े खुश हुवे और उस की आखों में मेखें भी घसोड़ दी हैं। वाह! क्या ही अच्छा गुस्सा निकाला। बिचारी मूर्त्ति बची रहती तो किसी बनाने वाले की कारीगरी बचती और बची बचाई बाद किसी ऐतिहासिक के काम आती।। अब इस अन्धाधुन्ध में इस की कौन पूछे? अकल तो कौड़ियों के भाव पहले ही बिक चुकती है। तिस पर भी अकल में पत्थर सस्ते ही पड़ जाते हैं।

युद्ध और बनिये

सुनते हैं कि अमरीका इस युद्ध में भागे हुवे जहाजों को खरीद लेने का कानून बनाने की सोच रहा है। खूब! व्यापार की खोज में युद्ध शुरु हुवा और अन्त में फिर युद्ध के, वही बनियों की मण्डी गरम है।

भला आपत्तियों से कौन बचे!

भूकम्प—योरोप पर आगे कम आफतें आ रही थीं कि जो भूकम्प की मार उसे और सहनी पड़ी। खैर! बिचारी इटली के आदमियों को ये भी भुगतना पड़ गया। इस महायुद्ध में उस ने किसी भी ओर से लड़ने से इन्कारी की हुई है। परन्तु परमात्मा के राज्य में एक घर में सब के दुःखी होने पर कोई एक सुख से कैसे सो सकता है। वैसे नहीं तो ऐसे सही। भूकम्प से घर बैठे२ हजारों घायल हो गये यदि इटली इस समय इतने ही वीर सच्चे पक्ष की ओर से खेतमे काम आने देता तो क्या इस युद्ध यज्ञ से पैदा होने वाले स्वर्ग में उस का हिस्सा न होता? हम कहते हैं कि इटली अब भी सोचले।

अन्य उदासीन देशों को भी सम्भल कर रहना चाहिये कहीं उन पर भी दैव का कोप न हो जाय।

जायदाद की हद

हालेण्डआदि दिनों दिन चींखते हैं, कि हमारे आकाश में से जर्मन जहाज उड़ गए हम पर से ज़ैप्लिन की छाया गुज़र गई। वाह क्या मजे की शिकायते हैं। अभी तक भूमियें जायदाद में बटां करती थीं। फिर समुद्र भी बंट गये। और अब असमान भी बंट गया। हमें डर है कि सूरज चान्द तारे भी कहीं न बट जांय। नहींतो ज्योतिषियों में बड़ा झगड़ा होगा।

गरीब पर हर कोई

सुना जाता है कि मिस्र में जर्मन जासूस मिस्र वालों को मित्रयी के विरुद्ध भड़का रहे हैं। दूत कहते हैं कि सिलातीन पाशा का मिस्र से रवाना होना यही बात बताता है कि मिस्री लोग जर्मन के पक्ष में हैं। हाय! आधीन भेड़ों को हरकोई बहकाने को दौड़ता है। वे बिचारी भोली भाली क्या करें। गडरिये के विरुद्ध द्रोह तो क्या करेंगी? क्योंकि सींग ही नहीं। हां! बहकजाने से ये अपना कहीं नाश न कर डालें?

जर्मनों की बली

२८ जन०—पैरिस की विज्ञाप्ति बताती है कि मंगल को ये प्रेस लावासी, क्राओन आरन्गोन वोवर वास्जेस आदि समराक्रान्त स्थलों पर लाशों के देखने से अनुमान होता है कि २०००० जर्मन हताहत हो गये। अभी क्या है?। अभी तो रण चण्डी और बली खायगी। ये रण चण्डी दोनों की ओर मुंह खोले खड़ी है। जो पड़ जाय सो गड़प्प!!

जर्मन युवराज की बात चीत

आज कल जर्मन के विषय में सच खोजने का बड़ा प्रयत्न किया जा रहा है। प्रिय पाठकों को कुछ जर्मन युवराज और अमेरीका के एक समाचार पत्र के संवाददाता के परस्पर वार्तालाप के कुछ अंश मनोरञ्जन के लिये उद्धरण करते हैं।

आपने कहा कि—हां हम यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि इस समय सारा संसार हमारा विरोधी है इसका कारण यह है कि इंग्लैण्ड ने अपना प्रभाव अधिक तर अखबारों पर जमा लिया है।

इसी प्रकार बातें होते हुवे युवराज ने संवाददाता महाशय से कहाकि मैं यह जानता हूं कि अंगरेजी अखबार हमारे बहुत विरुद्ध कहते हैं। उन का कथन है कि जर्मन चोरी करता है। क्या अमेरीका भी इस पर विश्वास करता है। क्याउन्हें निश्चय है कि हमने फ्रान्स के गावों को लूटने की आज्ञा दी?। अंग्रेजी अखबार जो ऐसी धक्के की बात कहते हैं वह झूठी हैं। उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। मेरे बारे में उन्होंने यह अफवाह उड़ा दी थी कि युवराज युद्ध में हारने के कारण आत्महत्या करने पर उतारू हो गये हैं। अभी हाल में अखबारों ने ये प्रगट किया कि मैं रूसी सरहद पर हार गया हूं। ऐसी २ बातों पर लोगों को संशय में न पड़ना ही अच्छा है।

युवराज ने फिर कहा—लोग कहते हैं कि जर्मनी में युद्ध का विरोधी भी कोई दल है ही। परन्तु ये सत्य नाम को भी नहीं।

सब जर्मन एक सम्मति में बद्ध हैं—लोग हमें युद्ध प्रिय बताते हैं। और अन्धा खूंखार भी कहते हैं, पर यह भी असत्य ही है। ऐसा कथन कह कर इंगलैण्ड हमारे विरुद्ध लोगों को उभाड़ना चाहता है। यह सुन सुन कर संवाददाता महाशय ने कहा कि—एक बार ऐसी खबर भी मिली थी कि रूसियों ने जर्मन सम्राट को वार्सा के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समीप लग भग पकड़ ही लिया है। यह सुन कर युवराज खिल खिला कर हंस पड़े, और कहा कि यह समाचार पिता से कहेंगे, वे भी खूब हंसेंगे।'

पाठक आप ऐसे उद्धरण से समझ गये कि योरोप की रण भूमी से बात चल कर क्या की क्या बन जाया करती है।

युक्ति

अमेरिका के भूतपूर्व मन्त्री मि० रूटने युद्ध में परिवर्त्तित-ध्वज जहाज़ों को खरीदने के बारे में बड़ा विरोध किया है। उन की प्रधान युक्ति ये हैं कि जो भीरु जहाज़ शत्रु से डर कर हमारा झण्डा लेलें हमारा उन पर क्या अधिकार है कि हम उन्हें खरीद। और शत्रु को उस पर शिकार करने से रोकें। वाह युक्ति खूब है! क्या शरणागत को शरण देने में भी जालिम के अधिकारों को गिना जाता है। क्या गौ को बचाने के लिये भी कसाई के खूंखारी व्यसन की पूर्त्ति में रियायत करनी चाहिये।

चित्र—परिष्कार

हमारे कई एक पत्र सम्पादक भी बहुत ही मौजी हैं। वे जहां नये २ समाचार नयी नयी टिप्पणियें नये नये लेख पाठकों को देने में कसर नहीं छोड़ते वहां चित्रों के देने में भी कभी नहीं हिचके। इन चित्रों से दो लाभ हो जाते हैं कि प्रथम तो पत्र चित्रमय हो जाता है इस से पाठक कोरा पत्र पढ़ने के बजाय सचित्र पत्र पढ़ने में मानअनुभव करते हैं; दूसरा चित्र पत्रमय हो जाता है इस से उस स्थान को भरने के लिये सम्पादकों को अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता। तीसरा चित्र और पत्र दोनों में कुछ गम्भीरता आ जाने से चित्र का भाव भी छिप जाता है पत्र तो खैर जैसा है वैसा ही है। चित्र परिचय या चित्र शीर्षक देख कर चित्र को देखा जाता है और शीर्षक वर्णन के अनुसार चित्र पर कल्पना चित्र बना लेने से चित्र में अंकित भावों की घुण्डी खुल जायी है।

व्यापारी प्रदर्शनी

कानपुर में गोरे व्यापारियों ने इस अवसर पर गत सोमवार से विदेशी चीज़ों के सम्मिलान के लिए व्यापारी वस्तुओं की प्रदर्शनी खोल कर खूब अवसर निभाया है। यह प्रदर्शनी १० फरवरी तक खुलेगी ४ फरवरी को लार्ड मेस्टन अपनी पत्नी सहित भी पधारेंगे। इस के अतिरिक्त इस में विशेषता है यह कि इस में गोरे व्यापारियों ने भारतीय कला कौशल की वस्तुओं को भी प्रदर्शनी में थोड़ा हिस्सा दिया है। हम को पता नहीं कि श्री वैंकटेश्वर जैसे पत्र भी डंके की चोट से इस प्रदर्शनी को क्यों तीर्थ यात्रा के समान प्रसिद्ध कर रहे हैं। और कानपुर के सारे पत्रों से तीर्थ बना देने का बड़ा अनुरोध कर रहे हैं। हमारी सम्मति में तीर्थ सदृश प्रदर्शिनी वह होगी जिस में भारतीय व्यापारी ही अपनी अपूर्व कला कौशल का स्वयं साहस से परिचय देंगे।

डाके की बहार

आज कल पता नहीं क्यों भारत में डाका इतना ज़ोर पकड़ रहा है। इधर बंगाल के डाके दिनों दिन समाचार पत्रों के स्तम्भों को नहीं छोड़ते। दूसरी तरफ पंजाब में भी, डाका फूट पड़ा। लुधियाने में डाका पड़ा ३१००) का माल डाकुओं की बांट पड़ा। इसी प्रकार जालन्धर में डाका पड़ा। २५ के करीब डाकू भाला लाठी लिए घर लूटने लगे। उसमें कैसो रुपये का माल डाकुओं के ही हाथ कारहा. पता नहीं क्यों प्रजाको सीधी सादी समझ कर डाकुओ ने घात लगाना शुरू किया है। क्या इन को उदार सरकार से डर नहीं लगता?। शायद उन डाकुओं की तभी तक हिम्मत है जब तक उदार सरकार हम प्रजाओं को शस्त्रों की आज्ञा देने की उदारता नहीं करती। शस्त्रों का नाम सुनते ही डाकू लोग दुम दबा कर भागने में कसर न छोड़ेंगे।

विद्यालंकार लंका में

श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार जी गुरुकुल भूमि से लंका की तरफ पाली भाषा में विशेष स्वाध्याय करने गये हैं। वे सकुशल लंका पहुंच गये। हैं श्री रामनाथन जी के पास ही वह ठहरे हैं। उनको वहां गुरुकुल के भूत-पूर्व पाली प्रोफ़ेसर श्री कल्याण तिष्य जी बड़े हर्ष से मिले। अब वे बड़े प्रेम से पाली पठन पाठन में लग गये हैं। हमें आशा है कि शीघ्र ही उनका कार्य सिद्ध होगा। अब श्री चन्द्रमणि जी द्वारा पाठकों को लंका के भी समाचार अनायास घर बैठे मिलेंगे। विद्यालंकार महाशय से भी हमें यही निश्चय है कि वे पाठकों का मनोरंजन अवश्य करेंगे।

उषा का द्वितीय वर्ष

उषा का द्वितीय वर्ष प्रारम्भ हो गया। प्रथम अंक समालोचनार्थ आया है। द्वितीय वर्ष प्रारम्भ होते ही इस पत्रिका ने रंग ढंग बदल दिया। हमें तो ऋष्यङ्ग से ही बहुत आशा हो गई थी कि ये उन्नति करेगी। अब वास्तव में बड़ा रूप बदला है ऐसा प्रतीत होता है कि उषा ने ग्राहकों को प्रति बार कतिपय गीति कवितायें देने का निश्चय कर लिया है। साथ ही साथ ऐतिहासिक और वैज्ञानिक तथा धार्मिक लेख भी देने में कटिबद्ध है। प्रथमाङ्क में "भारत पातालयोः सम्बन्धः लेख पढ़ने योग्य है। दूसरा ऐतिहासिक लेख चन्द्रगुप्तस्य शासने मार्गप्रबंध' यह है। इस में कौटिल्य अर्थशास्त्र के आधार पर सब मार्ग विषयक प्रबंध समझाया है। संस्कृत में ऐसे ऐतिहासिक लेखों के पढ़ने की उत्सुकता वालों को ये पत्र अवश्य संगा कर देखना चाहिये।

पता:—गुरुकुल कांगड़ी

प्लेग के शिकार

१६ जनवरी को समाप्त होने वाले सप्ताह भर में ४७४० आदमी भारत भर में प्लेग के ग्रास बने। इन में भिन्न २ प्रान्तों का यों व्योरा है।

३८२ बम्बई में, ७६ मद्रास में, ३८१ बिहार में, ८५० युक्त प्रदेश में, २२६८ पंजाब में, १६६ बर्मा में, ३५३ मध्य प्रदेश में, १३७ मैसूर में, १८ हैदराबाद में, २५ मध्य भारत में, १ राजपूताना में, १६ कश्मीर में।

अहा हा! क्या मरने की रिपोर्ट है। योरोप में युद्ध रोग ने पैर फैलाया है और यहां प्लग हैजा दुर्भिक्ष आदि सब रोगो ने मित्रता में गंठ कर षडयन्त्र की गोली खेली है। इस से तो युद्ध में मरते भले। यहां चींखते कराहते मरने से युद्ध में मर कर स्वर्ग जाना भी कहीं बढ़ कर है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य चर्चा

समालोचना महात्म्य

हम नहीं जानते कि ग्रन्थ कार किन भावों से प्रेरित हो कर अपने ग्रन्थों को पत्र सम्पादकों के पास भेजना चाहते हैं। परन्तु फिर भी आज कल ये फैशन समझा जाता है कि पुस्तक लिखी जाय तो सम्पादकों के पास भी एक प्रति भेजदी जाय और समालोचना भी होजाय। इस से कई एक लाभ सम्पादकों को हैं और कई एक लाभ लेखक को हैं और कई एक लाभ समालोचनापाठकों को भी है। हम क्रम से एक एक के लाभ देखते हैं।

पहले लाभ सम्पादक को हैं कि—

(१) घर बैठे पुस्तक विनामूल्य आ जाती है और, और नहीं, तो लायब्रेरी ही भरेगी।

(२) नयी नयी पुस्तकों का पता रहता है और जिस साहित्य की पुस्तकें आती हैं उसकी सीमा का मान सम्पादक को ज्ञात रहता है।

(३) सम्पादक अच्छी और हक में समालोचना कर के ग्रन्थाकर्ताओं के प्रेम को खेंच लेता है।

शेष रहा लेखक को लाभ—

समालोचना चाहे कैसी हो परन्तु लेखक का दिल अपनी कृति की प्रशंसा की ही आशा करता है। परन्तु यदि कुछ प्रतिकूल भी हो जाये तो ग्रन्थ कार महाशय कुछ दिल में खट्टे से होजाते हैं। परन्तु समालोचना का तात्पर्य किसी का दिल खट्टा करने से नहीं होता, परन्तु साहित्य सेवियों को आलोचना पूर्वक उचित मान बतलाना ही होता है।

एक लेखक को यह लाभ है कि कम से कम एक वार का विज्ञापन अनायास ही निकल जाता है और ग्राहकों की माँग आने लग जाती है।

दूसरा लाभ यह है कि समालोचना से रही सही भूल को और रही सही न्यूनताओं का अनुभव होने लग जाता है और बाद को पूरा करने का अवसर मिलता है।

तीसरा यह कि चाहे समालोचना अच्छी हो या बुरी अनुकूल या प्रतिकूल परन्तु समालोचना से तो सर्वसाधारण के दिमाग़ हिल ही जाते हैं और पुस्तक मंगाने वाले दोनों तरह ही कुछ २ कुतूहल जान पुस्तक अवश्य मंगा ही लेते हैं।

चौथा लाभ यह है कि इनका नाम काफी दूर तक फैल जाता है।

शेष रहे पाठकों को लाभ

(१) अनायास घरबैठे २ नयी पुस्तकों की सूची पहुंच जाती है और रुचि कर पुस्तक मंगाने में सुभीता रहता है।

(२) पुस्तक के गुण भी पता लग जाते हैं तो ग्राहकों को निष्पक्षपात सम्मति से विचारने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

(३) क्योंकि सम्पादक लोगों का उद्देश्य और विषय एक समाज या जनता से अधिक सम्बन्ध रखता है इसलिये उनकी समालोचना से सामाजिक आवश्यकता और मानसिक आवश्यकता की ठीक जाँच होजाती है।

इस से समालोचना पाठकों के पुस्तक को ठीक समझने में वही उपयोगी है। समालोचना से समालोचनीय साहित्य का सब से बड़ा उपकार यह है कि इस समालोचना से उचित भावयुक्त साहित्य पूरा हो सकेगा।

इन सब लोगों की अपेक्षा से ही सम्पादकों को पुस्तक की खूब सम्भाल कर निष्पक्षपात दृष्टि से समालोचना करनी चाहिये। और नवीन पुस्तक की वर्तमान समाज की आवश्यकता के अनुसार ही युक्तायुक्त विचारणा अवश्य करनी चाहिये। पाठकों को भी समालोचना से कभी घबराना न चाहिये क्योंकि वास्तविक समालोचना का अच्छा और लाभकारी प्रभाव पाठकों पर ही पड़ता है साथ ही लेखक को भी अनायास ही सौहार्द से स्खलितों पर ध्यान दिलाने वाला निष्पक्षपात मित्र वचन का उपदेश है।

इसी प्रकार हमारी सम्मति में न केवल समालोचना ही होनी चाहिए परन्तु ग्रन्थकारों में विनोद भी होना चाहिए जिस से लेखक की पुस्तक पढ़ कर पाठक पुस्तकें लिख कर स्वयं लेखक बन जायं। मित्रों की समालोचना दोषों को सुधारती है और मित्रों का विनोद मन के साहस को बढ़ाता और पुष्ट करता है।

आपका सुहृद्

साहित्य चर्चा

हमारे पास साहित्य सेवी ग्रन्थकर्त्ताओं ने निम्न पुस्तकें समालोचनार्थ भेजी हैं।

नाट्य शास्त्र—सरस्वती सम्पादक वृद्ध साहित्य सेवि महावीर प्रसाद द्विवेदि जी ने देशी विदेशीय नाटक कारों की सम्मतियों तथा क्रमों के आधारों पर इस का निर्माण किया है। पढ़ने से साधारण नाटक की सम्पूर्ण समस्याएं हल हो जाती हैं। बाद को आपने साहित्यदर्पण के आधार पर नाट्य शास्त्र की सब परिभाषाओं को सरल भी किया है।

पता इण्डियन प्रेस प्रयाग

नवनीत—नाटक मासिक का युद्धाङ्क बड़ीरोचक भाषा में युद्ध का आदि से कारणादि के परिचय सहित विवरण को पाठकों के अर्पण करता है।

पता नवनीत

काशी।

गुरुकुल में मूसलाधार वर्षा—ऐसी पहले वर्षा ऋतु में ही हुआ करती थी। बादल दीखने तो मङ्गलवार (२१ माघ) से ही आरम्भ हो गए थे परन्तु बुधवार को खूब घिरे और सायं काल से वर्षा भी हुई। रात को भी कुछ वर्षा होती रही। प्रातः काल से तो खूब झड़ी लगी। ९ बजे के पश्चात् (बृहस्पतिवार को) मूसलाधार पड़ने लगी। फिर कुछ ठहर कर २½ बजे ओले पड़े और फिर बादलों की गरज और बिजुली की कड़क के साथ मूसलाधार ही पड़ती रही। ऐसा प्रतीत होता था कि आकाश में किसी समुद्र का बन्द फट पड़ा है। शुक्रवार के अन्त तक का यही हाल है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैज्ञानिक खेती—तीनभागों में। श्रीमती हेमन्तकुमारी ने सर्वसाधारण हिन्दी पाठकों के हितार्थ उपयुक्त सरल तथा आज बोलचाल की भाषा में कृषि शास्त्र का क्रियात्मक मर्म खोला है भारत के नवयुवकों के लिये क्रियात्मक क्षेत्र को खोलने वाला यह माता की ओर से प्रेमसय उपहार समझना चाहिये। भारतीय कृषकों को ये मातृ शिक्षा की व्यायीं आदर से ग्रहण करनी चाहिये।

हिन्दी साहित्य में ऐसे उपयोगी ग्रन्थों का बहुत्सा अभाव है। हमें ऐसी पुस्तक के न होने से यातो मूक रहकर लंगड़े लूले की नाईं बैठना पड़ता है। या परायों का मुंह ताकना पड़ता है। प्रत्येक माता इस पुस्तक को संगाकर बच्चों को अन्न का मान सिखायेगी। और प्रत्येक किसान इस पुस्तक को संगाकर अपने कुलभर को कृषि विद्या का पाठ देगा। मूल्य ≥) प्रति भाग

पता:—रत्नलाल वाजपेयी

प्रिंटिङ्ग प्रेस लखनऊ

चाणः—एक छोटी सी वीररस पूर्ण कविता। रचयिता कवि श्रीवर हैं। मूल्य≈)

पता—इंडियन प्रेस प्रयाग

मनोविनोद २ भाग—पं० श्रीधर पाठक की मनोरंजक कविताओं का एक संग्रह; मूल्य ।)

उपरोक्तदोनों पुस्तकें हमारी सम्मति में वर्त्तमान हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों के लिये पाठविधि की पुस्तकें होने के योग्य हैं।

योरोपीय महाभारतः—युद्ध के विषय में नया छोटा सा पुस्तक। इसमें संक्षेपतः सारा युद्धका हाल मिल जाता है। मुल्य ।≈)

पताः राम प्रसाद and Brothers

हिन्दी साहित्य ग्रन्थमाला

कार्यालय आगरा

श्रीभट्टि महाकाव्यः—व्याकरण मध्यम-परीक्षोपकारिणी टीका सहित।

धनुर्धर शर्मा प्रणीत। इसमें ग्रन्थकार ने पदच्छेद अन्वय व्युत्पत्ति समास व्याख्या वाक्य परिवर्तन भाषार्थ तक सब पृथक् २ प्रत्येक श्लोक का दिया है। ये चतुर्थ सर्ग पर्यन्त ही हैं। जिस से विद्यार्थियों को परिश्रम अधिक करने की आवश्यकता नहीं होगी।

मूल्य—१।) रु

पताः—ईश्वर प्रसाद लाल वर्मा

मु. पो' जहानाबाद

जिला. गया

गुरुकुल समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा है। इस उत्तम ऋतु में सबका ही तौल बढ़ रहा है। यदि बीमार हैं तो कन्दुकक्रीड़ा इत्यादि में चोट खाए हुए, जिस से उन के शरीर और भी दृढ़ हों।

हाकी hokey के सान्मुख्य अभी समाप्त नहीं हुए थे यद्यपि परीक्षा के दिन बहुत समीप आरहे हैं। दयालसिंह लाहौर कालिज के कुछ छात्र अपने क्रीड़ाध्यक्ष श्री प्रोफ़ेसर **गोडबोले** के साथ देहरादून भ्रमणार्थ गये थे, उन्हों ने ३६ घन्टों का नोटिस दिया और लौटते हुए गुरुकुल में हाकी के सान्मुख्य के लिये आदित्यवार की शाम को पहुंच गए। पहली शाम को वे आध घन्टे में ६ Goal बाजी हारे। दूसरे दिन प्रातः १ घन्टे में फिर उन पर दश गोल हुए। गुरुकुल दल ने अपनी ओर एक भी गोल न होने दिया। ज्ञात हुआ कि वह उक्त कालिज का मुख्य दल न था. श्री प्रो. गोडबोले ने आशा दिलाई है कि अपने मुख्य दल को लेकर वह खेलने के लिये फिर आवेंगे।

गुरुकुल की सर्व सभाओं के अधिवेशन परिक्षा समीप आने के कारण बन्द होगए हैं। केवल सेवक मण्डली के अधिवेशन होते हैं जिस के चालक उपदेशक महाविद्यालय के छात्र हैं। इस सभा में श्री पूर्णानन्द जी का व्याख्यान नवीन वेदान्त के खंडन विषय पर हुआ तथा श्री डाक्टर सङ्गत राम जी के दो व्याख्यान वेद व्याख्या पूर्ण हुए जिन से ब्रह्मचारियों को बहुत लाभ पहुंचा।

डाक्टर सङ्गतराम जी अब गुरुकुल के मुख्य चिकित्सक हैं। आयुर्वेद तथा युरोपीय चिकित्सा दोनों प्रणाली पर इलाज करते हैं। वैद्य निवारणचन्द्र जी दो वर्षों की अवैतनिक छुट्टी ले कर युरोपीयन चिकित्सा प्रणाली सीखने कलकत्ते चले गये हैं। डाक्टर हरिश्चन्द्र जी का (जो बड़े प्रेम से गुरुकुल की अवैतनिक सेवा कर रहे थे) हृदय रोग के कारण देहान्त होगया।

डाक्टर हरिश्चन्द्र जी के वियोग का सारे गुरुकुल को बड़ा दुःख हुआ। ब्रह्मादेश से पेन्शन लेकर इसी लिये आए कि उन्हें हृदय रोग था। यहां रोग फिर बढ़ते देख कर वे लाहौर डाक्टर सदरलैण्ड को दिखाने गये और उन्हीं का इलाज करते थे। अचानक वर्षा के कारण बहुत सर्दी हो जाने पर उन पर अर्द्धाङ्ग का आक्रमण हुआ और तीन डाक्टरों के सम्मिलित इलाज होने पर भी गुरुकुल के अत्यन्त प्रेमी डाक्टर हरिश्चन्द्र जी हम सब से वसन्त पन्चमी की दोपहर को सदा के लिये बिछुड़ गए। सारा गुरुकुल वसन्त मनाने मैदान में क्रीडा कर रहा था। लौटते ही अपने बिछड़े भाई के मृतक शरीर का अन्त्येष्टि संस्कार किया। परमेश्वर से शान्ति की प्रार्थना कर के श्मसान भूमी से लौट आए।

नए ब्रह्मचारियों का चुनाव हो गया है। २० ब्रह्मचारी, शुल्क पर लिये गए तथा चार पद्रह पन्द्रह सौ देने वाले चुनाव में लिए जा सके। १५००) एक बार देने वाले ६ और लिये जासक्ते हैं।

परीक्षाओं का आरम्भ ६ फाल्गुन (२० फ़ब्रवरी) से हो जायेगा परिणाम २५ फालगुन तक निकल आवेगा। ब्रह्मचारी गण इस समय पढ़ाई में निमग्न हैं।

वार्षिकोत्सव की तय्यारीयां हो रही हैं। विज्ञापनादी तय्यार हो रहे हैं जो शीघ्र वितीर्ण किए जायंगे।

गुरुकुलाश्रम के पास की कुछ भूमी में सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री नन्दलाल जी के उद्योग से गेहूं और जौ की हरी भरी खेती खड़ी है। आगामी वर्ष के लिए और भूमी उपजाऊ बनाई जा रही है।

मुख्याधिष्ठाता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अमूल्य पुस्तकें ! अत्यन्त उपयोगी पुस्तकें !! अपूर्व पुस्तकें !!!

(इतने सस्ते दामों में ऐसी उपयोगी पुस्तकें फिर मिलनी दुर्लभ हैं)

ऋषि दयानन्द का पत्र व्योवहार

महा पुरुषों के पत्र बड़े शिक्षा दायक होते हैं। विलायत के लोग तो अपने महा पुरुषों के पत्र हजारों रुपया व्यय कर के खरीदते हैं। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द के अलभ्य पत्र छापे गये हैं उन पत्रों से ऋषि के जीवन की कई नवीन घटनाओं का पता लगता है। पुस्तक के आरम्भ में श्री महात्मा मुन्शीराम जी की लिखी हुई सार गर्भित भूमिका है। प्रत्येक आर्य-समाजी पुरुष के पास इस पुस्तक का होना आवश्यक है। हमने इस का सारा स्टाक ले लिया है। इस समय केवल १५० प्रतियां शेष रह गई हैं। लगभग ५०० पृष्ठों की पुस्तक है। लिखाई छपाई भी उत्तम है। पहिले इस का मूल्य १॥) था। अब हम ने सर्वसाधारण लाभार्थ केवल ।≡) प्रति पुस्तक का मूल्य कर दिया है। यह अमूल्य अवसर न चूकें लाभ उठावें। दूसरा संस्करण न जाने कब छपे।

आर्य्य समाज और उसके शत्रु

The Arya SamaJ and it's Detrectors

इस अङ्गरेज़ी भाषा की अपूर्व पुस्तक में आर्य्य-समाज के विरोधियो का मुंह बन्द करने का बहुत कुछ मसाला भरा पड़ा है। समय पड़ने पर सरकारी कर्मचारियों को दिखलाने योग्य है। यह पुस्तक इतनी आवश्यक है कि प्रत्येक समाज में इस की एक प्रति तो अवश्य रहनी चाहिये। यह वही अमूल्य पुस्तक है जिसे श्री महात्मा मुंशीराम जी ने उस समय निर्माण किया था जब पटियाला राज्य में आर्य्यों पर आपत्ति आई थी। बड़े साइज की पुस्तक लिखाई छपाई उत्तम। पहिले इस का मूल्य ५) था। अब सर्वसाधारण के लाभार्थ लागत से भी कम केवल ३) कर दिया है थोड़ी प्रतियां रह गईं हैं शीघ्र मंगा लें।

पता:—इन्द्र प्रस्थार्य एजन्सी, देहली

आवश्यक्ता

श्री राजपूताना अनाथालय फतहपुर (जयपुर) के लिये एक योग्य उपदेशक की आवश्यकता है जो व्याख्यान देने और भजन गाने में कुशल हो वेतन योग्य तानुसार दिया जावेगा। निवेदन पत्र निम्न पते पर शीघ्र जाना चाहिये।

मैनेजर

श्री राजपूताना अनाथालय

फतहपुर (जयपुर)

धर्म और विज्ञान।

अंग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Conflict betw een religon and seience का भाषानुवाद २)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास।

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरंजक ढंग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इसकी प्रशंसाकी है १॥)

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषा नुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्म विषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

ज्ञान भजनावलि चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५)रु० कीं पुस्तक मंगाने वाले को २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ़ हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोपाईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार

बजाज़ा शहर मेरठ

उस्तरे को बिदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगाने से फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मू० १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कान बहने की दवा।

कान बहना यानि कान पक कर कान के भीतर से पीप बहना नया अथवा पुराने के लिए यह दवा विशेष उपकारी है। इन चिकित्सा में कान को भीतर से धोकर उस में दवा डालनी पड़ती है; इस लिए पिचकारी की भी दरकार रहती है। मोल ।) चार आने शीशी। पिचकारी कांच की ।) चार आने। पैः वो डाः माः ।-) पांच आने २ शीशी तक ।=) छः आने।

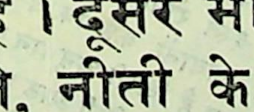

दांत दर्द की दवा।

लगाते ही दर्द मिटाती है। रोने से हंसती है॥

एक महीन वो मज़बूत तिनका व सींक पर जरा रुई लपेट कर इस दवा में डुबा के ठीक दर्द की जगह लगाना। दांत को संध में दर्द होवे तो जरा सा रूई इस दवा में डुबा के सींक की नोक पर रख कर उस में भर देना, झट दर्द बन्द हो जायगा। सावधान! घबड़ा के व्यर्थ जहां तहां होट व मसूड़ों न लगाना क्योंकि यह तेज दवा है। मोल ।) चार आने शीशी। डा० म० १ से ४ शीशी तक तक ।-) पांच आने ८ शीशी तक ।=) छः आने।

डाः एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता। नं० ३६

एजन्ट बाबू रामजैन एंड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली।

आदित्य ग्रन्थमाला
की
छपरहीं है

नई पुस्तक नईपुस्तक

सचित्रप्रिन्सविस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना अथवा

इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े२ को कैसे पद दलित किया, और फिर किन २ शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की, इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तारपूर्वक वर्णन है। दूसरे भागमें साहसकी मूर्ति, देशभक्ति के पुतले, नीती के गुरू, और जर्मनीके जन्म दाता प्रिन्सविस्मार्क का आश्चर्य्यकारी चरित विचित्र किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्होंने पढ़ा है उनके लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वालों को रियायती मूल्य पर पुस्तक मिलेगी।

पताः प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म्मप्रचारक प्रेस गुरुकुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंएट के कृषि विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बडे विस्तार से लिखा गया हैं बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक विना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद सबजज उज्जैन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठ का एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खंड एक वर्ष में पहुंचते हैं ।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्रीधवन

लाहौरी-टोला बनारस सिटी

बाल-हितैषी

यह पत्र हिन्दी में चार वर्ष से प्रति मास निकल रहा है। नवीन वर्ष जनवरी १९१५ से इसमें फूल स्कोप चैापेजी (८×६ ईञ्च) आकार के ४० पृष्ठ रहेंगे। प्रति अंक में रंगीन टाईटल के अतिरिक्त एक रंगीन व कई हाफटोन चित्र दिये जायेंगे। कविता, इतिहास, जीवन-चरित्र, भूगोल, खगोल, विज्ञान, स्वास्थ्य, धर्म-नीति, किस्सा कहानी, पाक-विधि, पहेली इत्यादि कितने ही विषयों पर मनोरञ्जक लेख रहा करेंगे जो कि केवल बालकों के लिये ही नहीं, बल्कि स्त्रियां, नवयुवक तथा वृद्धों के लिये भी लाभकारी होंगे। इतना होने पर भी वार्षिक मूल्य वही १॥) रहेगा।

अभी से ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा लीजिए, क्योंकि गिनी गिनायी प्रतियां छपेंगी, विलम्ब करने से पूरी फाईल मिल नहीं सकती।

पता—"बालहितैषी" कार्य्यालय सदानन्द बाज़ार बनारस सिटी

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

बरियापुर

(बनारस स्टेट)

नया संदेशा ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी बसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें, इत्यादि विषयों पर महत्व पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता

"सत्ययुग"

हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय

मुज़फ़्फ़रपुर

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रो ने प्रशंशा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा

बुलन्दशहर

१६००० हज़ार

एजेंटों का होना

भारतवर्ष में बनी औषधि के

सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं बता सकता कि सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कफ, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, के दस्त, सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, रोना, कै करना, बूढ़ों की अनिद्रा और नजला, जवानों की थकावट या बेचैनी, दवा स्वादिष्टसुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कीमत फी शीशी आठ आना डाक खर्च १ से ६ शीशी तक ≡) आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डाक से मंगाने का पता:—

सुख संचारककंपनी

मथुरा

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

RegisteredNo. A.434

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुः

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २ फाल्गुन सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० १३ फरवरी सन् १९१५ ई० { संख्या ४४ भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है। इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है। महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा।

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य ।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।=)

राष्ट्रों की उन्नति।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र

क्या आप भारतवर्ष [illegible] हते हैं ? तब इस पुस्तक का आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए। आज कल राष्ट्र और उन्नति का [illegible] बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित। विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है। उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है। मूल्य २)

अर्थशास्त्र—प्रो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित। इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं। पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है। मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित। इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है। निबन्ध [illegible] उत्तम बातों से भरा हुआ है।

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा। भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है।

मूल्य=)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विज्ञापन।

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये।

पता—उषा कार्यालय
गुरुकुल कांगड़ी
पो० शामपुर कांगड़ी
(जि० बिजनौर)

तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला शेर की चरबी १।) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला
अलमोड़ा यू. पी.
(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

स़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—
नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते
ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी
दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड
दिल्ली।

असली हारमोनियम

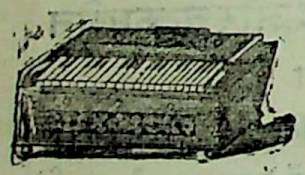

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता
G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

१०,०००) रुपया इनाम,

यह इनाम उन लोगों को मिलेगा जो हमारे यहां से नीचे लिखी हुई दवा मंगावेंगे। मकज़ोरी दिमाग़ को दूर करने वाली (अमृत प्रवाह) १) सैकड़ों बार का आजमाया हुआ धातु पुष्टि चूर्ण २)। इनाम बड़े २ डाक्टर, वकील वैद्य रईसों के सामने बांटा जायगा। हमारे ग्राहक भी इनाम बांटने में शरीक हो सकते हैं उन को आने जाने का खर्च भी दिया जायगा। जानने के लिये नियमावली)॥ का टिकट भेजने पर मुफ़्त मंगाइये

पता:—सूर्य्य, औषधालय,
सनेटरी रोड़—लखनऊ

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।
सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥
भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०.
तीन मास " " " " =) "
छः " " " " " ।)॥ "
सालभर " " " " ~) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचाक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।
मूल्य ४) **विद्यार्थियों से ३)**

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

देखना यह अवसर हाथ से न जाये

आर्य्य समाज लाहौर के वार्षिकोत्सव के स्वागत में १ नवम्बर सन् १४ से ३१ जनवरी सन् १५ तक निम्न लिखित पुस्तकों का मूल्य घटा दिया गया है।

शुद्ध रामायण—जिस की प्रशंसा बड़े बड़े योग्य और प्रसिद्ध विद्वानों और समाचार पत्रों ने मुक्त कंठ से की है २) से १॥)

महाभारत—१८ पर्व सरल हिन्दी भाषा में जिस के प्रकाशक को सरकार से ३००) रुपया पारितोषक मिल चुका ८) से ७)

अन्य हर प्रकार की हिन्दी संस्कृत पुस्तकें स्कूलों के कोर्स हमारे यहां से रिआयत से मिलते हैं।

पता: प्रबन्धकर्त्ता, नागरी, प्रचारणी, कम्पनी लिमिटेड, (Ld.) लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्मदर्शनम् ।

हाथ में समिधा, [श्रद्धा का चिन्ह] ले कर जब ऋषि पुत्र सामने हुए तो क्या भगवान पिप्पलाद ने उन को बैठा कर व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया ? मानसी निर्बलताओं से मुक्त ऋषिवर खुशामद के दास बन कर अपने कर्तव्य को कब भूल सक्ते थे ! उन्हों ने क्या उत्तर दिया ?

तान् ह स ऋषिरुवाच ; भूय एव तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ यथा कामं प्रश्नान् पृच्छाय,यदि विज्ञास्यामः सर्वं ह वो वक्ष्याम इति ॥ २ ॥

" इन (छओं ऋषिपुत्रों] से वह प्रसिद्ध [ज्ञानी] ऋषि बोले—तुम फिर भी तप, श्रद्धा और ब्रह्मचर्य पूर्वक एक वर्ष भर मेरे समीप निवास करो, [उस से पीछे] अपनी २ इच्छानुसार प्रश्न पूछो; यदि मैं जानता हूंगा, तो तुम्हारे प्रति सभी का उपदेश करूंगा ।" यों तो किसी प्रकार का भी दान बिना देश काल और पात्र के बिचारे नहीं करना चाहिये, परन्तु ब्रह्म [अर्थात् वेद, वेदान्त] का दान तो देश, काल और पात्र का निश्चन किए बिना करना ही न चाहियें । अल्प मनुष्य के साथ सम्बन्ध उत्पन्न करने के लिए भी एक वर्ष की पारस्परिक परीक्षा, इस समय के सभ्य देशों में, आवश्यक समझी जाती है, फिर अनन्त परमात्मा के साथ टूटा हुआ सम्बन्ध फिर से जोड़ने के लिये एक साल की परीक्षा क्या कुछ अधिक है ? भगवान् पिप्पलाद ने एक वर्ष तक अपने आश्रम में तथा, श्रद्धा और ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने की फिर से आज्ञा दी । क्या तुम सच मुच तपस्वी हो, क्या तुम्हारे अन्दर कहीं चरसिया वैराग ही तो काम नहीं कर रहा वा तुम ने स्थिर रूप से श्रद्धा को धारण किया है, क्या तुम अपने ब्रह्मचर्य की वास्तव में रक्षा कर सक्ते हो ? ऋषि यह निश्चय पूर्वक जानना चाहते हैं, इस लिए एक वर्ष अपने आश्रम में निवास की आज्ञा दी । आज कल कोई इस परीक्षा के लिए तय्यार हो सक्ता है ? इस घुड़दौड़ ही नहीं प्रत्युत एक्स प्रेस की चाल के समय में किसे अवकाश है कि इतना कठिन तप करे । यदि किसी को ब्रह्म का स्वरूप जानने की अभिलाषा है तो एक पोस्टकार्ड में पूछता है—"शीघ्र लिखिए कि जीवका स्वरूप क्या है । ब्रह्म का स्वरूप क्या है जीव ब्रह्म का क्या सम्बन्ध क्या है और मुक्ति कैसे प्राप्त होती है ? उत्तर संक्षिप्त हो क्योंकि मैं काम का आदमी हूं, एक पल भी व्यर्थ नहीं गंवा सक्ता ।" ऐसे शीघ्रकारि की पहुंच भगवान् पिप्पलाद के पास कैसे हो सक्ती है ।

एक वर्ष नियम पूर्वक आश्रम में निवास की ही शर्त कुछ कम कड़ी न थी । आजकल के जन्टिलमैन अविश्वास का भाव सहन कब कर सक्ते हैं । क्या जन्टिलमैन के कथन पर विश्वास नहीं । जब हम कहते हैं, कि हम तपस्वी हैं, श्रद्धालु है, ब्रह्मचारी हैं तब किसी अन्य परीक्षा की शर्त हमारी मान हानि है । परन्तु जो ऋषि पुत्र भगवान पिप्पलाद की शरण में आए थे वे जैन्टिलमैन न थे, वे सच्चे जिज्ञासु थे; उन्होंने ऋषि की आज्ञा पाते ही सिर झुका दिया ।

परन्तु अभी तक उन की और परीक्षा बाकी है । एक वर्ष का कठिन तप और साधो श्रद्धा में एक पल भी त्रुटि न आने दो और अन्तरीय भावों को भी जान लेने वाले ऋषि के आश्रम में अपने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करो;

फिर भी निश्चय नहीं कि अभीष्ट सिद्ध होगा वा नहीं । प्रतिज्ञा यह है कि यदि तुम्हारे प्रश्न का उत्तर जानता हूंगा तो उपदेश कर दूंगा । कैसा निरुत्साहित करने वाला उत्तर है । ऋषि पिप्पलाद यहां कसर–नफ़सी से काम नहीं लेरहे हैं । वह एक शब्द भी असत्य मुंह से निकालना नहीं चाहते क्या आज के शास्त्रार्थी प्रचारक यह मानने के लिये तय्यार होंगे कि संसार में कोई ऐसे भी प्रश्न हैं जिनका उत्तर वे नहीं दे सक्ते । जब ऐसे गुरु हैं तो चेलों का भगवान ही रक्षक है । परीक्षा बड़ी कठिन है, ऋषि पुत्रों के हृदय भी शायद डावांडोल होने लगे हों, ऐसी शंका आजकल के अविश्वासी हृदयों में अवश्य उठेगी । परन्तु नहीं, छओं ऋषिपुत्र ऋषि राज के आगे फिर सिर झुका देते हैं ।

तब हर्षपूर्वक ऋषि प्रतिज्ञा करते हैं ! तुम्हारे प्रष्टव्य विषय में जो कुछ भी जानता हूंगा सभी कह दूंगा । कैसी उज्ज्वल प्रतिज्ञा है । कुछ भी रख नहीं लूंगा, तुम्हारे लिये सब कुछ स्पष्ट कर दूंगा । आप्त का यही लक्षण है । जैसा ज्ञान अपने हृदय में हो, निष्कपट हो कर वैसा ही शिष्य के लिए उपदेश कर देना । परन्तु आजकल के प्रवाह-प्रधान समय में इस नियम पर चल कर कौन आत्मघात करे ! आजकल का विचित्र न्याय है । यदि बिल्ली अन्य सब दाव पेंच सिह को सिखलाती हुई उसे वृक्ष पर चढ़ने की विद्या भी सिखा देती तो उस क्रूर हिंसक पशु से अपनी रक्षा कैसे करती । आज एक ऐसा किसी विद्या का भी गुरु नहीं दिखाई देता जो अपने शिष्यों को शिक्षा देता हुआ किसी एक पेंच की कसर न रख छोड़ता हो । परन्तु भगवान पिप्लाद तो शिष्य को पुत्र ही समझते थे । पहला पिता शरीर का जन्म देने वाला है परन्तु आत्मा को सावित्री माता के गर्भ में सुरक्षित रख के दूसरा आत्मिक जन्म देने वाला गुरु ही है । फिर शिष्य को अपने आत्मा का आत्मा समझते हुए उस से दुराव कैसे हो सक्ता है ।

आज ऋषिराज की कैसी आवश्यकता है, इस को जिज्ञासुओं के दग्ध हृदय ही अनुभव करते हैं । जब गुरु ही नहीं तो योग्य, अधिकारी शिष्य कैसे मिल सक्ते हैं । मत कहो कि योग्य शिष्य नहीं इस लिए गुरु भी अपने अन्तः कारण को शुद्ध नहीं कर सक्ते । यदि ज्ञानी नम्र परन्तु स्वच्छ हृदय से शिष्यों का हित चाहने वाले गुरु होंगे तो उन के प्रभाव से तपस्वी श्रद्धालु, ब्रह्मचारी शिष्य स्वयम् उत्पन्न होंगे ।

ऋषिपुत्रों ने ऋषि राज के आगे श्रद्धा पूर्वक शिर झुकाया और एक वर्ष के लिए तप श्रद्धा और ब्रह्मचर्य का व्रत फिर धारण किया ।

शमित्योऽम्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२०००) की भेंट

प्रचारक परिवार की ओर से २०००) गुरुकुल की भेंट किया जायगा, यह हम गत सप्ताह सूचना दे चुके हैं। हमें पूरी आशा है कि हमारी प्रतीक्षा पूर्ण होगी। प्रचारक परिवार इस से बड़े २ कार्य कर चुका है। स्मरण रखना चाहिये कि

समय थोड़ा है

केवल डेढ़ मास शेष है। इतने समय के अन्दर यह धन पूरा हो जाना चाहिये। कृपया इस सूचना को देखते ही अपने हिस्से के रुपये—

रवाना कर दें

२) का एक ही हिस्सा भेजने पर सन्तोषन करें। जितने हिस्से भेज सकें अच्छा है। मङ्गलाचरण बहुत अच्छा है। प्रचारक और गुरुकुल के एक पुराने प्रेमी ने दो २ रुपये के

बीस हिस्से

भेजे हैं। यह पहली राशि हमें प्राप्त हुई है। इस से पूरीं २ आशा बंधती है कि हमारा संकल्प पूरा होगा। विलम्ब कीजिए।

कृपया शीघ्र ही अपना भाग भेज कर कर्तव्य पालन करना चाहिए।

सम्पादक

गुरुकुल जन्मोत्सव

गुरुकुल के वार्षिक जीवन का सब से अधिक हर्षदायक भाग गत ९ तारीख़ को बीत गया! उस रोज़ गुरुकुल का जन्मोत्सव था। महीनों से इस दिन की प्रतीक्षा हो रही थी। चातक बादल की प्रतीक्षा अधिक उत्सुकता से नहीं करता। हर एक हृदय उमङ्ग से भरा हुआ था, और अपने कुल के जन्मोत्सव को मनाने के लिये उत्सुक हो रहा था। जन्मोत्सव से दो दिन पूर्व अकस्मात् सारा आकाश मेघों से आच्छन्न हो गया, और बड़े वेग से वर्षा होने लगी। रात दिन बराबर झड़ी लगी रही। जन्मोत्सव से पहली रात आई। प्रातःकाल के समय बादल छटने की पूरी आशा न थी किन्तु आकाश की ओर देखते ही देखते उत्सव का समय आ गया। अंधेरा होने के कारण नियमानुसार साढ़े छः बजे सभा आरम्भ न हो सकी। लग भग ८ बजे सभा का मङ्गलाचरण गीत गाया जाने लगा! उस समय जिस स्थान में, और जैसे बन्द समय में सभा का कार्य हो रहा था, उसे देख कर उत्साह का कोई चिन्ह नहीं प्रतीत होता था। वर्षा हटने वा हटने का अनिश्चय होने के कारण सभा स्थान में एक भन्त्र भी नहीं लगाया गया था, ऊपर की जरासी भी शोभा नहीं थी। एक कुल के अंगभूत सज्जन ने इस दृश्य को देख कर यहाँ तक कह दिया कि इस साल उत्सव में पर्याप्त जोश नहीं है।

मङ्गलाचरण के पीछे कुल की वन्दना के संगीत प्रारम्भ हुए। संगीतों में उच्च आशय भरे पड़े थे। सभा के शीत शरीर में जान पड़ने लगी। ब्र० भूदेव ने अपने निबन्ध के साथ सभा को गम्भीर कार्यवाही प्रारम्भ की। भावों की स्वच्छता और भाषा की मधुरता ने श्रोताओं का एक चित्र कर दिया, और समर में रूह पड़ने लगी। दूसरा निबन्ध नवम श्रेणी के ब्र० राजेन्द्र बल का था। ब्र० राजेन्द्र बल की ललित भाषा में कहे हुए उच्च और हृदय वेधक भावों से सभा के एक २ सभासद् के हृदय में रस और आंखों में पानी का सञ्चार कर दिया था। छोटे ब्रह्मचारी का स्नातकों के नाम सन्देश हृदय वेधी था। स्नातकों के चित्रों पर उस सन्देसे ने जो प्रभाव किया, वह उन्हीं को विदित है। इस निबन्ध से जो रस उत्पन्न हुआ था, दशम श्रेणी के ब्र० सत्यव्रत के सुदीर्घ और विचारपूर्ण निबन्ध ने उसे और भी गम्भीर बना दिया। ब्र० विद्यासागर, ब्र० बुद्धदेव, ब्र० युधिष्ठिर और ब्र० ब्रह्मानन्द के भाषण गुरुकुल प्रेम, धार्मिक भाव और उन्नत विचारों से भरे हुए थे। विशेषतया ब्रह्मचारियों ने आचार्य जी के प्रति जो प्रेम भाव प्रकाशित किये, वे जिसने सुने, उसे कभी नहीं भूल सकते। तीन स्नातक उपस्थित थे, उन के भाषणों के अतिरिक्त दो स्नातकों के बाहिर से आये हुए पत्र और तार पढ़े गये जिन में जन्मोत्सव के प्रति मङ्गल विचारों के साथ प्रेम सन्देसा भी भेजा गया था। प्रो० रामदेव जी ने अपने भाषण में अपने से पहले बोले हुए सब वक्ताओं की अयुक्तियों का तर्क द्वारा निरोश किया और अन्त में श्री आचार्य जी ने अपने पुत्रों को उचित उपदेश और प्रेम का सन्देसा सुनाया। अगले सप्ताह इस जन्मोत्सव के कुछ निबन्धों और कविताओं को प्रचारक में प्रकाशित करेंगे।

जो दृश्य था, वह अजूब था। उसे याद कर २ के अब भी हृदय भर आता है और आँखें आँसुओं से तर हो जाती हैं। उस दृश्य को जिन्हों ने देखा, और उन प्रेम पगे शब्दों को जिन्हों ने सुना, उन के हृदय के किसी कोने में यदि निरोशा का कोई टुकड़ा विद्यमान था, वह भाग गया। उन्हें प्रतीत हो गया कि जब तक इस कुल में यह भाव काम करता है, तब तक कोई शत्रु और कोई विरोधी इस का बिगाड़ नहीं कर सकता। पवित्र गुरुकुल आज अपने पुत्रों की भक्ति पर अभिमान कर सकता है और उत्साह पूर्वक सारे संसार को ललकार कह सकता है।

अभीदमेकमे कोऽहमस्मि
निघ्नाडभीह्वा किमुत्रयः करन्ति।

संसार में एक दो और तीन शत्रुओं को मैं क्या समझता हूं उन की पृथक २ और मिली हुई शक्तियों का भी मैं सहन कर सकता है।

दोपहर के समय फुटबाल की एक मनोरंजक खेल हुई, और रात्रि के समय ब्र० भूदेव और देशबन्धु ने धनुष बाण की चमत्कार कारिणी खेलें दिखाईं।

श्रीमानों से प्रार्थना

भारत की राजधानी दिल्ली में
चान्दनी आर्य्यसमाज का महोत्सव

तिथि फाल्गुन शुक्ला १२। १३। १४। शुक्र शनि और रविवार। सं० १९७१। ता० २६,२७,२८ फरवरी। सं० १९१५ को होना निश्चय हुआ है। इस बार उत्सव को सप्तारोह के साथ करने के लिये विशेष यत्न किया गया है इस प्रार्थना पत्र के द्वारा संन्यासी, महात्मा और उपदेशकों से विशेष प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर अवश्य पधार के अमृत वर्षा करें।

हमें विश्वास है कि हमारे हृदयों की उमड़ती हुई उमंगों की तरह आप सब आर्य-वीर उस त्यागी ब्रह्मचारी की स्वर्गीय आत्मा के प्रति गद्गद होकर एक हृदय एक मन, एक ध्वनि से कृतज्ञता प्रगट करने के लिये बन्धु बान्धव और पुत्र कलत्रों सहित पधार कर हमारी हमारे घरों की और हमारी गरिमामयी दिल्ली की प्रतिष्ठा तथा शोभा को बढ़ावेंगे। और अवश्य बढ़ावेंगे। और किसी सन्मान को श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी एवं श्री स्वामी सर्वदानन्द जी का पता मालूम हो तो प्रकट करने की पूर्ण कृपा करें।

विनीत केदारनाथ गोएनकास० उपमन्त्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक

गुरुकुल का तेरहवां

वार्षिकोत्सव।

(१) गुरुकुल विश्वविद्यालय का मेला इस वर्ष २० मे २३ चैत्र, १९७१ (तदनुसार २ से ५ अप्रेल सं० १९१५) तक मनाया जावेगा। गत १२ वर्षों में केवल तीन वार ही, विशेष कारणों से इस उत्सव की तिथियां बदलती रहीं, नहीं तो निश्चित तिथियां होलियों की छुट्टी ही रही है। इस वर्ष भी कुम्भ के कारण तिथियां बदली गई और इस लिए ईस्टर के दिनों रेल भाड़ में जो रियायत हुआ करती है उस से गुरुकुल के यात्री भी लाभ उठा सकेंगे। जो भाई कुम्भ प्रचार में सहायता देने के लिये स्वयम्-सेवक बन कर आने वाले हैं उन को गुरुकुल की सेवा का भी अवसर मिलेगा।

(२) गुरुकुल के मेले में सम्मिलित होने के अभिलाषी यात्री यदि मार्च के आरम्भ तक यह सूचनादे दें कि उन की कितनी संख्या आवेगी तो यहां से लखनऊ और लाहौर के रेलवे प्रबन्धकर्त्ताओं को सूचना दी जा सकती है। गत वर्षों की तरह, इस से, उन को विशेष ट्रेनें छोड़ने के लिए आधार मिल जायगा और यात्रियों को सुगमता होगी।

(३) जो सज्जन अपने डेरे वा छोलदारियां, अपने आराम के लिए, भेजना चाहें वे हरद्वार के लिए मार्च के आरम्भ में ही माल गाड़ी द्वारा बुक करा दें, क्योंकि अन्यथा, कुम्भ के मेले के कारण, उन के पहुंचने में ही कठिनाई हो सकती है। जो महाशय अपने लिए कोई विशेष प्रबन्ध कराना चाहें वे भी उसी तिथि तक सूचना दें, नहीं तो प्रबन्ध होना असम्भव सा ही हो जायगा।

(४) पुस्तकों तथा हलवाई और भोजन की दुकानें लाने वालों के प्रार्थना पत्र १० मार्च से पहले पहुंच जाने चाहिएं। अन्य व्यापार के वास्ते गुरुकुल भूमि उचित स्थान नहीं, इस लिए अन्य व्यापार सम्बन्धी वस्तुओं की बिक्री की आज्ञा नहीं दी जायगी। इस संबंध में किसी पत्र का उत्तर देना भी आवश्यक नहीं है।

(५) हरद्वार तथा लक्सर के स्टेशनों पर गुरुकुल के स्वयं-सेवक मिलेंगे; उन के अतिरिक्त गुरुकुलोत्सव सम्बन्धी समाचार और किसी से न पूछिये क्योंकि ज्वालापुर, कनखल और हरद्वार में गुरुकुल के कुछ ऐसे विरोधी हैं जो नाना रूप धारण कर के गुरुकुल को हानि पहुंचाने के यत्न में लगे रहते हैं।

(६) जो नए ब्रह्मचारी प्रविष्ट हुए हैं उन का यज्ञोपवीत संस्कार (३१ मार्च) १८ चैत्र, १९७१ के दिन होगा, इस लिए सर्व नए ब्रह्मचारियों के संरक्षक, जो उस संस्कार में शामिल होना चाहें उन को १७ चैत्र (३० मार्च) को ही गुरुकुल भूमि में पहुंच जाना चाहिए। उन सब महाशयों को डाक द्वारा भी सूचना दी जा चुकी है। इतना अधिक, उन्हें भी, बतलाना है कि इस वर्ष वेदारम्भ संस्कार उत्सव के आरम्भ के दिन (२० चैत्र को) ही प्रातः काल होगा। इस लिए १७ चैत्र को पहुंच कर वे दोनों संस्कारों में सम्मिलित हो सकेंगे।

(७) अब १८ या २० चैत्र के बीच में एक दिन खाली रह जाता है। उस दिन एक निराला कार्य होगा। गुरुकुल की सहायता से काङ्गड़ी ग्राम में एक पाठशाला खुली हुई है जिस का प्रबन्ध गुरुकुलीय आर्य-समाज को सौंपा गया है। और उक्त समाज ने एक पाठशाला सज्जनपुरा ग्राम में स्वयम् खोली है। इन दोनों पाठशालाओं का सम्मिलित वार्षिकोत्सव १९ चैत्र को सजनपुरा ग्राम में होगा। जो सज्जन पहले पहुंचेंगे उन्हें एक नया दृश्य देखने को मिलेगा।

(८) १५०) एक बार दान दे कर अपने पुत्रों को पढ़ाने का अधिकार छ और संरक्षक ले सकते हैं। उन में से तीन प्रार्थना पत्र आए भी हुए हैं। उन सब महाशयों को-तथा अन्य सज्जन जो इस नियम से लाभ उठाना चाहें उन्हें भी आवश्यक है कि १६ चैत्र (३९ मार्च) तक गुरुकुल भूमी में पहुंच कर अपने पुत्रों के प्रवेश का प्रबन्ध कर लें नहीं तो पीछे कठिनाई होगी।

(९) कार्य-क्रम का साधारण समय विभाग इस वर्ष इस प्रकार रक्खा है कि चारों रातों को चार सन्यासियों के ही विविध वैदिक सिद्धान्त विषयों पर व्याख्यान होंगे। प्रथम दिवस प्रातःकाल नए प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार होगा। सायंकाल को सरस्वती सम्मेलन की पहली बैठक होगी जिस में ब्रह्मचारी विद्यासागर "पुराणों की उपयोगिता" पर संस्कृत भाषा में निबंध पढ़ेंगे जिस पर विवाद होगा। इस बैठक के सभापति एक प्रसिद्ध जाति-सेवक विद्वान् होंगे जिन की स्वीकृति आने पर उन का नाम प्रकाशित किया जायगा।

दूसरे दिन (२१ चैत्र को) प्रातः सरस्वती सम्मेलन की दूसरी बैठक होगी जिस में विविध विद्वान् वेद सम्बन्धी विषयों पर विविध निबन्ध आर्य भाषा में पढ़ेंगे। प्रातः काल की कार्य-वाही एक व्याख्यान के साथ समाप्त होगी। इसी दिन मध्यान्होत्तर की कार्य-वाही गुरुकुल के दर्शनोपाध्याय श्री पं० योगेन्द्रनाथ शर्मा जी के संस्कृत व्याख्यान से आरम्भ होगी जिस में वह छओं दर्शनों का अविरोध सिद्ध करेंगे और पीछे आर्य-भाषा सम्मेलन की बैठक होगी।

तीसरे दिन प्रात दीक्षान्त संस्कार होगा। इस की कार्य-वाही का समय विभाग २१ चैत्र को ही बंट जायगा। यह संस्कार इस वर्ष कुछ स्थिर रूप धारण करेगा। मध्यान्होत्तर दो व्याख्यान होंगे। दूसरे व्याख्यान के पीछे उस समय तक आया हुआ दान सुनाया जायगा तथा विशेष धन संग्रह किया जायगा।

चौथे, अन्तिम, दिवस प्रातःकाल आर्य-भाषा में ब्रह्मचारी बुद्धदेव "मनु और हिंसा" पर एक निबन्ध पढ़ेंगे जिस पर विवाद होगा अधिवेशन के सभापति श्री पण्डित धर्मी राम एम० ए० प्रधान संयुक्त प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा होंगे। पश्चात् एक व्याख्यान होगा। इसी दिन मध्यान्होत्तर के समय अम्बाले की हनुमान जिम्नास्टिक क्लब के व्यायाम दिखाए जायंगे। इस क्लब के सभासद् धनाढ्य सभ्य पुरुष हैं, जो सारे खेल अपने ही व्यय से करते हैं। इन्हीं महाशयों ने गत वर्ष जहां बैन्ड बाजे की धूम मचा दी थी वहां रात का पहरा भी दिया था। मैंने इन के व्यायाम देखे हैं जो बड़े ही प्रशंसनीय हैं। रात को अन्तिम भजनों के पश्चात् मुख्याधिष्ठाता की अन्तिम वक्तृता होकर सभा समाप्त होगी।

इसी स्थान में गुरुकुल सम्बन्धी कुछ भ्रम दूर करने आवश्यक

है कोई भी उत्तम से उत्तम संस्था का कार्य ऐसा नहीं जिस के विरोधी न हों। गुरुकुल विश्वविद्यालय जितना ही ऊंचा है उतने ही उस के शत्रु अधिक हैं। कोई तो अयोग्यता के कारण से निकाले जाने पर अप्रसन्न है, कोई अपनी संस्था की आर्थिक हानि का कारण इसी कुल को समझ कर इस का विरोध करता है, किसी को भ्रम से यहां का कोई कर्मचारी ही अपना शत्रु प्रतीत होता है और सब से बढ़ कर उन जन्म के ब्राह्मणों में से थोड़े से जो अब तक वक्र वृत्ति धारण किये हुए आर्यसमाज को ठगते रहे, उन को इस का स्वरूप बड़ा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भयानक इस लिए दिखाई देता है क्योंकि उन्हें भ्रम है कि यहां के चारों वर्णों में उत्पन्न हुए स्नातक उन की आजिविका छीनने की तय्यारी कर रहे हैं। ऐसे विरोधियों के फैलाए अपवादों की यहां कुछ परवा नहीं की जाती। परन्तु जब गुरुकुल के हितैषियों की लेखनी से कुछ निकलता है, जिस से कुछ हानिकारक भ्रम फैलने की संभावना हो, तो उसे तत्काल ही दूर करना तथा नम्रता और प्रेमपूर्वक उत्तर देना आवश्यक हो जाता है।

प्रकाश के गत दो अङ्कों में

ही गुरुकुल के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। १९ माघ के अंक में भय प्रकट किया गया था कि कहीं गुरुकुल वेद की पढ़ाई को अप्रधान बना कर, लुहारों तरखानों के काम में ही न लग जावे। ऐसा होने से गुरुकुल की क्या दशा हो जायगी इस का भयानक चित्र महाशय कृष्ण जी ने खींचा था। उस लेख से यह टपकता था कि इस समय गुरुकुल अपने उद्देश्य से गिर रहा है जिस कारण सम्पादक जी के लिए आर्य जनता को सचेत करने की आवश्यकता हुई। यह मेरा ही विचार न था; इसकी पुष्टि मेरे पास आए पत्रों ने भी की। मुझे आश्चर्य था कि यदि महाशय कृष्ण जी को गुरुकुल की वर्तमान गति में कुछ सन्देह है तो, स्वामिनी सभा के मन्त्री होते हुए, उन्होंने उस सभा द्वारा संशोधन कराने के स्थान में समाचार पत्र की शरण क्यों ली। परन्तु मेरा वह भ्रम प्रकाश के दूसरे (२६ माघ के) अंक से दूर हो गया, जब उन्होंने स्वयम् अपनी लेखनी से न केवल गुरुकुल के वर्तमान चालकों पर ही विश्वास प्रकट किया है प्रत्युत गुरुकुल से निकले स्नातकों के काम की भी प्रशंसा की है। मैं महाशय कृष्ण तथा आर्य्य जनता को निश्चय दिलाता हूं कि यदि वैदिक धर्म के पुनर्जीवन का काम मेरी दृष्टि में गौण बन जायगा तो मैं इस गुरुकुल में एक पल भी ठहरना पाप समझूंगा। परन्तु इस विषय में मत भेद रह सक्ता है कि वैदिक धर्म का पुनर्जीवन तथा वेद का प्रधान्य किसे कहते हैं। पहली अपील के साथ जो पाठविधि मुद्रित की गई थी उस में आयुर्वेद, कृषि तथा व्यापार की पढ़ाई का प्रबन्ध करना इस संस्था का उद्देश्य रक्खा गया था। अब कोई भी कृषि की पाठ पद्धति ऐसी नहीं बन सक्ती जिस में "लुहारा तरखाना" काम उपेक्षा की दृष्टि से देखा जा सके। प्रत्येक कृषि महाविद्यालय के साथ "लुहारा तरखाना" लगा ही रहेगा, क्योंकि हलादि के बिना कृषि का काम नहीं हो सक्ता। और मेरी सम्मति में वेदों का विद्वान कृषि कर्म करता हुआ भी अपने आचरणों से वैदिक धर्म की बड़ी सेवा कर सक्ता है।

तो अवस्था यह है। पहली पाठविधि के अनुसार, जिस का कोई प्रमाणिक खण्डन सभा ने, मेरे ज्ञान में, नहीं किया, कृषि महाविद्यालय खोलना भी गुरुकुल का कर्तव्य है। मैं दो वर्षों से उस के लिए विशेष परामर्श करता रहा हूं और अब समय आया है कि कृषि का काम आगामी वर्ष के आरम्भ से शुरू किया जावे। उस के साथ (Workshop) अर्थात "लुहारा तरखाना" कारख़ाना भी खोला जायगा जिस का कुछ सामान तीन वर्षों से आया पड़ा है। यदि इस में मन्त्री जी वा अन्य किन्हीं सभासदों को गुरुकुल अपने उद्देश्य से गिरता दिखाई दे तो सभा में इस प्रश्न को रख कर पहले ही इस का निश्चय करालें। परन्तु मुझे विश्वास है कि मन्त्री जी मेरे ऊपर लिखे विचारों के साथ सहमत होंगे और इस लिए सभा में इस प्रश्न को लेजाने की आवश्यकता न होगी।

इसी २६ माघ के अङ्क में गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव के लिए कुछ सम्मतिएं भी प्रकाश के सम्पादक जी ने दी हैं। उन पर भी अपने विचार यहां प्रकट कर देता हूं जिस से अन्य भद्र पुरुष भी बहुत से अनावश्यक पत्र व्यवहार से बच जायंगे।

(क) पहली सम्मति यह है कि वेदारम्भ संस्कार से ही उत्सव की कार्यवाही का आरम्भ हो। यह परिवर्तन उन्हीं की सम्मति पढ़ कर, कर दिया गया है।

(ख) दीक्षान्त संस्कार को अन्तिम दिवस पर न बदलने के लिए दो युक्तिएं हैं। प्रथम यह कि दीक्षान्त संस्कार से पहले धन एकत्र करने का आरम्भ दूसरे दिन भी धन द्वारा विघ्न डलवाएगा। द्वितीय यह कि बहुत महाशय धन देते ही इस लिए चल देते हैं कि उन को अपनी नौकरियों पर दूर जाना होता है जिस के लिए अन्तिम दिवस चलने से समय पर पहुंचना कठिन हो जाता है।

(ग) उत्सव मण्डप के विषय में जो पुरानी शिकायत संस्कार के न दीखने की है उस को दूर करने का पहले से ही प्रयत्न हो गया है। ज़मीन खोद कर मध्य भाग को नीचा कर, गेलरीनुमा क्षेत्र निकाल लिया गया है। इस को शनैः २ उत्सव के बजट में से ही साथ, आठ वर्षों में छत लिया जायगा: किसी विशेष अपील की आवश्यकता नहीं। दान का धन तो सारा महानिधि में ही आना चाहिए।

(घ) इस वर्ष गुरुकुल के आचार्य की ओर से जो भी वक्तृता वा निवेदन होगा वह दीक्षान्त संस्कार के समय ही होगा। धन संग्रह करने के लिए कोई अन्य महाशय अपील करेंगे। गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता अन्तिम रात्रि को केवल धन्यवादों के उचित स्थानों में पहुंचाने का ही काम करेगा।

(ङ) अन्तिम सम्मति यह है कि "स्नातकों की ओर से कोई न कोई दक्षिणा आचार्य के सामने पेश होनी चाहिए" मैं नहीं जानता कि वर्तमान समय में ऐसा क्यों कर हो सक्ता है। ब्रह्मचारियों और आचार्य--सब की स्वामिनी आ० प्र० सभा पंजाब है। उस के आगे गुरु दक्षिणा रखने के अर्थ क्या होंगे? और इस स्वतन्त्रता और प्रबन्ध के ज़माने में समाचार पत्रों को पढ़ने के पश्चात्, क्या किसी ब्रह्मचारी का कोई सभा का प्रस्ताव भी बाधित कर सक्ता है कि वह आचार्य द्वारा सभा के आगे रख सके। और यदि अपने पिता माता से कुछ लेकर स्नातक आचार्य्य के आगे ही कुछ भेंट रक्खे तो क्या आचार्य पर रिश्वत लेने का दोष न लगाया जावेगा?

मैं समझता हूं कि गुरु दक्षिणा का आडम्बर बलात्कार से नहीं रचा जा सक्ता; गुरु दक्षिणा का स्वाभाविक चित्र उस समय हमारे सामने आयगा, जब गुरुकुल में स्वाभाविक जीवन की चिरस्थाई लहर चलेगी।

मुन्शीराम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती

(५०)

पण्डित गुरुदत्त की अकाल मृत्यु।

मरी पर्वत से, हितैषियों के मना करते भी, पण्डित गुरुदत्त अपने प्रिय समाजों में से एक (अर्थात पेशावर आर्य्य समाज) के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुए। ऐसे कर्मवीर के लिए विश्राम के कुछ अर्थ ही न थे। पेशावर से अधिक बिमार हो कर लाहौर में लौटे। तब मुझे पण्डित गुरुदत्त के दर्शन लाहौर में उस वर्ष के उत्सव पर ही हुए। उन्हीं दिनों दयानन्द कालिज कमेटी का भी अधिवेशन हुआ करता था। और किसी कार्य में तो पण्डितजी सम्मिलित न हो सके; केवल कालिज कमेटी के उत्सव पर वह पहुंचे। अभी अधिवेशन के आरम्भ होने में देर थी; पण्डित गुरुदत्त निर्बलता के कारण एक बेंच पर लेट गये। उसी वर्ष से दयानन्द कालिज में आर्य ग्रन्थों की शिक्षापर बल दिया जाने लगा था।

यह पहला वर्ष था जब कि आर्य्य समाज लाहौर के उत्सव की वेदवेदज्ञ गुरुदत्त की विद्यमानता से वञ्चित रही। पण्डित गुरुदत्त का स्थान लाला लाजपतराय ने लिया और व्याख्यानोंका क्रम ही बदल गया। इसके पश्चात् पण्डित गुरुदत्तका रोग बढ़ता गया। पं० जी उस समय के, पूर्ण भक्त रायनारायणदास जी के, गुजरांवाले में डिप्टी थे। डाक्टर फतेहचन्द्र वहां के सिविलसर्जन बड़े योग्य वैद्य समझे जाते थे। उन्हीं की कोठी में पं० गुरुदत्त की चिकित्सा शुरु हुई। डाक्टर फतेहचन्द्र ने बड़ी सेवा की, भोजन तक अपने हाथ से बना कर खिलाया। परन्तु रोग का पता न लगा। तब लाहौर मेडिकल कालिज के प्रसिद्ध डाक्टर मलरोनी जी को बुलाया गया। पण्डित गुरुदत्त ने पहले उन्हीं की परीक्षा लेनी आरम्भ करदी और जब उन की योग्यता का विश्वास हो गया तो विश्वास पूर्वक उन से शरीर परीक्षा कराई। डाक्टर मलरोजी की सम्मति में रोग Pthysis (क्षय) न था। परन्तु उन्होंने यह कहा "गुरुदत्त का मस्तिष्क दिनरात काम करता है ऐसा उद्योगी मस्तिष्क मैंने देखा नहीं। यदि इस को स्वस्थ करना है तो किसी ऐसे वायुमण्डल में इन्हें लेजाओ जहां मस्तिष्क काम करना ही छोड़दे।" आर्य्य पुरुष यह सुन कर तो प्रसन्न वदन हो गए कि क्षयरोग नहीं परन्तु जो चेतावनी डाक्टर मलरोनी ने दी उस पर किसी ने भी ध्यान न दिया।

सम्वत् १९४६ के अन्त तक मैं पं. गुरुदत्त की शारीरिक अवस्था के कारण कोई और काम न कर सका। लाहौर में पहुंचते ही जालन्धर से हकीम शेरअली को इलाज के लिए भेजा गया था। उन की ओषध का अद्भुत् चमत्कार, पण्डित गुरुदत्त की जालन्धर के लिए तय्यारी, कुपथ्य के कारण फिर बीमार होना, फिर पं० जनार्दन की चिकित्सा, और उससे निराश होकर फिर अंगरेज़ी इलाज, ये ऐसी घटनाएं हैं जिनका विस्तृत वर्णन समाचार पत्रों में हो चुका है। फिर रोगका भयानक रूप धारण करना और "शान्ति सरोवर में स्नान" की उत्कण्ठा पूर्वक विद्या तथा बुद्धि के अवतार गुरुदत्त का प्राण त्याग करना, ऐसी घटनाएं है जिनका वर्णन इस स्थान में हो नहीं सक्ता। यद्यपि पं० गुरुदत्त का जीवनचरित्र लिखा जा चुका है परन्तु उनके पवित्र जीवन से जो शिक्षा ली जासक्ती है उसका अन्तरीयसार अब तक सर्व साधारण के सामने नहीं आया। किन्तु वह सार भी सर्वसाधारण के सामने रक्खा हुआ निस्सार ही सिद्ध होगा, क्योंकि ऐसे महान् आत्मा के साथ जुड़े बिना उसके जीवन का वास्तविक रहस्य प्रकट नहीं होता।

पण्डि गुरुदत्त को तीन आर्य्यसमाजों से बहुत प्रेम था—पेशावर, कटा और जालन्धर; तीनों से प्रेम का प्रेरक कारण एक ही था। तीनों आर्य्य समाजों में सभासदों के सदाचार पर बड़ा बलदिया जाता था। पण्डित गुरुदत्त की मृत्यु १९ मार्च, १८९० के दिन हुई; १५ मार्च १८९० के प्रचारक में छपा है—"कटा आर्य्यसमाज की योग्य अन्तरङ्ग सभा ने निश्चय किया है कि आगे के लिए मद्य मांस का सेवन करने वालों को समाज की सभासदों में न लिया जाय और वर्तमान सभासदों को नोटिस दिया गया है कि १ जुलाई तक इन नियम विरुद्ध आचरणों से शुद्धि लाभ करें। कटा समाज की यह स्पिरिट सराहनीय है; अन्य आर्य्य समाजों को भी इस का अनुकरण करना चाहिए"

पेशावर आर्य्य समाज में सदाचार पर इतना बल था कि यदि कोई सभासद् निर्बलता के कारण किसी आचार में शिथिल हो जाता तो आजकल की तरह कुछ लुंगाड़े साथ मिलाकर भलेमानसों की पगड़िएं उतारनी शुरु न करदेता, प्रत्युत प्रार्थना पत्र पेश कर देता कि जब तक वह नियम पालन में दृढ़ न होजाय उसका नाम चन्दा देने वाले सहायकों में लिखा जाय। और जालन्धर आर्य्य समाज में तो नए प्रविष्ट आर्य्य के जीवन की १० महीनोंतक परिक्षा कर के उसे आर्य्य सभासद् बनाया जाता था।

कुछ दिन हुए समाचार पत्रों से ज्ञात होकर मुझे प्रसन्नता हुई थी कि लाहौर आर्य्य समाज ने सदाचार की पवित्रता स्थिर रखने के लिये ऐसा ही प्रस्ताव स्वीकर किया है, परन्तु अब यह जान कर शोक हुआ कि पंडित गुरुदत्त के दर्शन मात्र से आर्य्य बनने की घटना स्वीकार करने वाले रायठाकुरदत्त जी ने लाहौर आर्य्य समाज के प्रधान पद पर सुशोभित होते ही उस नियम का, अपनी अन्तरङ्ग सभा से, खन्डन करा दिया है। आज धर्म के स्थान में वोट का शासन है और इसलिए यह लोकोक्ति चरितार्थ हो रही है कि—"सय्यांभकुतवाल अब डर काहेका?" मैं अभी तक उसी पुरानी राम कहानी का दोहरारहा हूं, और जिन्हें बुढ़ापे में राज मिला वे नई जवानी के जोश में इसे मान-धाता के समय का पुराना मूढ़ विश्वास समझ रहे हैं।

(मुन्शीराम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीन नौका विज्ञान

(८)

शिल्प-कला-प्रमाण

हम अब तक आपको प्राचीन नौका विज्ञान के विषय में बहुत कालों में से गुज़ारते हुए और बहुत से ग्रन्थकारों की सम्मतियाँ पूछते पाछते बहुत कुछ पता लगाते गए। अब इस विषय की ओर पाठकों का ध्यान खींचना है, कि क्या भारतीय ग्रन्थों की किस्सा कहानियाँ ही केवल सामुद्रिक जहाज़ों को स्थान देती हैं, या कोई वैज्ञानिक पुस्तक भी है, जिस पर विश्वास करने में सर्व साधारण को हिचक न हो। इस पर हम आप को बड़े मान और गर्व की दृष्टि से कहेंगे कि इस विषय में प्राचीन विद्वानों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। इस विद्या के प्रमाण न केवल ऐतिहासिक किस्सा कहानियें हैं; परन्तु अद्यापि वर्त्तमान नाना स्थानों पर के बड़े बड़े सांचीकेस्तूपादि मूर्तिमान ज्वलन्त कीर्त्ति मन्दिरों पर खुदे हुए हैं जिस को नाश करने का साहस अभीतक विधाता को भी नहीं हुआ। ये प्रमाण, मूर्त्तिमय प्रमाण प्राचीन शिल्पकला के पक्ष में देशी, विदेशी सब को मारे आश्चर्य्य के मुंह में अंगुली दाबने को वाधित करते हैं। वहां जड़ की तरह गड़े हुए भी डके की चोट से सारी दुनियां में प्राचीन नौका विज्ञान का समर्थन करते हैं। इसी प्रकार उस प्राचीन कला को विज्ञान स्वरूप में रखने वाले भी ग्रन्थ हमें उपलब्ध होते हैं। जिनका हम शिल्पकला को छूने के पहले ही कुछ आन्दोलन करेंगे।

राजा भोज--

राजाभोज बड़े प्रसिद्ध भारत के राजाओं में एक हैं इस के विषय में कहानियें भी बड़ी प्रसिद्ध हैं। कालिदास के नाम के साथ इस का नाम भी अमर है। चम्पूरामायणादि कतिपय साहित्य के ग्रन्थों को रचकर ये भी साहित्य विद्वतों के दिलों का मान्य हो चुका है। ये वास्तव में बड़ा विद्या व्यसनी तथा प्रसिद्ध ग्रन्थकार हो गया है। इसी धाराधीश भोज का बनाया युक्ति कल्पतरु नामक अनुपम वैज्ञानिक ग्रन्थ देखने लायक है। इस के पढ़ते ही नौका विज्ञान के बहिद्वार और अन्तर्द्वार खुल जाते हैं। आज हम पाठकों का परिचय इस के बनाए इस ग्रन्थ से ही करायेंगे।

भोज के अनुसार वृक्षों में भी वर्ण व्यवस्था थी। तदनुसार ही उन के गुण आदि भी निर्णीत हैं। उनहीं से विशेष लकड़ी के नाव जाहाज़ आदि बनने चाहिएं। वर्ण व्यवस्था इस प्रकार है:--

"लघु यत् कोमलं काष्ठम् सुघटं ब्रह्मजातितत्।
दृढ़ाङ्ग लघु यत्काष्ठं सुघटं क्षत्रजाति तत्॥
कोमलं गुरु यत्काष्ठं वैश्य जाति तदुच्यते।
दृढ़ांगं गुरु यत्काष्ठं शूद्र-जाति तदुच्यते॥
लक्षणद्वययोगेन द्विजातिः काष्ठसंग्रहः"।

अर्थात् जो लकड़ी हलकी और कोमल जो सुगमता से घड़ी जासके। वह ब्राह्मण होती है। जो मज़बूत पक्की और हलकी हो घड़ी भी न जा सके वह क्षत्रिय जात है। जो भारी हो और कोमल हो वह वैश्य है और जो पक्की हो भारी हो वह शूद्र है दो गुणों के होने से ये सब द्विज काष्ट हैं।

"क्षत्रियकाष्ठैर्घटिता भोजमते सुखसम्पदे नौका।"

राजा भोज के मत में उपरोक्त वर्णों में से क्षत्रय वर्ण की लकड़ी की बनाई हुवी किश्ती में सुख रहता है धन की भी प्राप्ति होती है।

"अन्यैर्लघुभिः सुदृढै र्विदधति जलदुष्पदे नौकाम्।"

और अन्य भी पक्के, और हलके काष्ठों से भी बड़े ही समुद्र आदि दुर्गम तथा कठिन स्थानों पर जाने के लिए नावें या जहाज़ तय्यार किए जाते हैं।

"विभिन्नजातिद्वय काष्ठ जाता
न श्रेय सेनापि सुखाय नौका
नैषाचिरं तिष्ठति पच्यते च
विभिद्यते सरिति मज्जतेच"।

दो भिन्न प्रकार की लकड़ी का बनाया जहाज़ कोई लाभ नहीं देता। ना सुख ही होता है। देर तक भी नहीं ठैरता जल दी भुर जाता है और टूट जाता है और डूब जाता है। इस लिये ऐसा न करना चाहिये।

"न सिन्धुगाभ्यर्हति लौहबन्धं
तल्लोहकान्तै ह्रियते हि लोहम्।
विपद्यते तेम जलेषु नौका
गुणेन बन्धं निजगाद भोजः॥"

इस में कहा है कि जहाज़ों में लोह के जोड़ न होने चाहिए नहीं तो समुद्र में जहाज़ को चुम्बक खेंच ले जाता है। वे पुराने ज़माने का विश्वास था कि कहीं जहाज़ चुम्बक पहाड़ों से खिंच जाते हैं परन्तु आज कल ऐसा कहीं भी नहीं देखा जाता।

इतना ज्ञान तो साधारण ही है अब विशेष विज्ञान की ओर पाठकों को अवश्य ध्यान देना चाहिए।

इस में भोजराज नौका के परिमाणों का निर्णय करते हैं।

राजहस्तमितायामा तत्पादपरिणाहिनी
तावदेवोन्नतानौका क्षुद्रेति कथिताबुधैः॥

इसी प्रकार सब नौकाओं का परिमाण कहा है जिस का ब्योरा निम्न सारिका से स्पष्ट हो जाता है।

साधारण नौकाएं:--

नाम	लम्बाई हाथ	चौड़ाई हाथ	ऊंचाई हाथ
१ क्षुद्रा	१६	४	४
२ मध्यमा	२४	१२	८
३ भीमा	४०	२०	२०
४ चपला	४८	२४	२४
५ पटला	६४	३२	३२
६ भया	७२	३६	३६
७ दीर्घा	८८	४४	४४
८ पत्रपुटा	९६	४८	४८
९ गर्भरा	११२	५६	५६
१० मन्थरा	१२०	६०	६०

(अपूर्ण)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पश्चिमीय समर भूमि

पश्चिमीय रणक्षेत्र

बाईप्रेस के पास छोटी मोटी लड़ाई याँ होती हैं। और कुछ भी बड़ा परिणाम नहीं निकलता। जर्मन्स ने कतिपय छोटे २ हमले किए पर, 'टाँय टाँय फिस्स्' ! जर्मनो का उत्तरी फ्राँन्स में गत-कतिपय दिनों में बड़ा खर्च हुआ है।

कैसर

फिर बर्लिन में लोट आये हैं। शायद युद्ध के बीच में राजधानी की फिकर पड़ गई है। कोई कहते हैं कि कैसर गले में क्षत हैं।

तुर्क मिश्र पर

तुर्कलोग मिश्र पर चढ़ाई कीसोच रहें हैं वेस्वेज़ केपासके स्थान पर करीब २५ मील उत्तर में कटिया नामक स्थान तक आ-चढ़े हैं। और मोर्चाबन्दी करते करते कोई १२ मील पास पहुंच गए है! परन्तु दो आक्रमणों में अभी कुछ आदमी कटवा कर उन्हें पीछे हटना पड़ा है।

पूर्वीय रणक्षेत्र।

१ फेब्रुवरी को पीट्रोग्रेड् की विज्ञप्तियों से ज्ञात होता है कि रशिया बढ़ रहा है। विस्चुला के वाईं ओर शनिवार को बहुत जोर का घमासान हुआ था। रशियनें ने जर्मनों को संगीनों के जोर पर रात ही रात पीछे धकेल दिया। कारपीथियन में लड़ाईयाँ जारी है।

२ फेब्रुवरी शोखेगज़ो और वोलिनोफ़ आदि स्थानों पर कई वार जर्मनों ने कड़ा धावा मारा। हमें २ मुर्चे की खाई में पीछे हटना पड़ा परन्तु वहाँ के कैदी बताते हैं कि २३—३१ जनवरी तक जर्मनों के ६००० आदमी खेत रहे।

कारपीथिया में ५८ जर्मन अफसर और ४०६५ जर्मन पैदल हमारे हाथ में कैदी पड़े। बद को हमने बोलिमाफ का मुर्चा भी ले लिया। वहाँ के आस-पास के गावों पर जर्मनों का कड़ा घात हैं। गोलों का बड़ा जोर है। हम भी उन्हें रोकते हटाते ही जाते हैं।

टेब्रिज को लेने में पर्शिया और रशिया दोनों की मिश्रित सेनायें कामयाब हुई।

इटली ?

कई एक बर्शियों को इटली जर्मनोंका साथी बनता दीखता है। कईयों को त्रित्रयी का। हमारी सम्मति में इसे अपने घर का प्रबन्ध करना चाहिए। इतना भूकम्प में नाश हुआ इस का क्या इस को कुछ ध्यान नहीं ?।

भोजन का टोटा

जर्मनी में खाने का टोटा ही पड़ रहा है। कालोन की मुनिसपैलिटि ने निर्णय किया है कि कमजोर लोगों को ही कनक का आटा मिल सकेगा। जर्मन भर में भी आटे की किफ़ायती पर जोर लग रहा है।

रशियन का टेब्रिज में घुसना

शनि को दुपहर रशियन लोग टेब्रिज में घुस गये। वहां के लोग मारे डर के घण्टापथ के गरुड़ हो गये।

जर्मनों का दिल

जर्मनों का लोहे का दिल बना हुवा है। टोकामारू जहाज़ जो वैल्जियनों की रक्षा और सहायता के लिये था तारपीडो से डुबा दिया गया। मुहावरा बना कर कहें तो तारपीडाया गया।

विचारे व्यापारी बनियों के जहाज़ों को तारपीडो से डुबा देने पर नौ विभाग के मन्त्रि ने ये उद्घोषणा की है कि जर्मन जहाजों ने सब सहजातीय बन्धनों को तोड़ने पर कमर कसली है। जर्मनी सी सभ्य जाति की इस पत्थर दिली बेरहमी को सुनते ही कान खड़े हो जाते हैं।

व्यापार का नाश

डबलिन् से समाचार आया है—लीनसर जहाज़ ने होलिहेड्स्थान को छोड़ा नहीं कि जर्मन मग्नपनडुब्बी उस के पीछे हो ली।

अकसर जर्मन पन डुब्बीयों का यही शिकार बन्ध गया है। कि मौका ताक कर व्यापारी जहाजों का पेंदा फाड़ा जाय।

जर्मन पत्रों की आशा

ये बात वायसराय को स्टेट सचिव ने तार द्वारा सूचित की है कि जर्मन प्रेस ये आशा बान्धे बैठे हैं कि पनडुब्बियों के द्वारा शिकार कर २ के इंगलैण्ड का सारा व्यापार बन्द कर देंगे।

बुड्ढे युद्ध में

डेलीमेल के संवाददाता लिखते हैं कि जर्मनी से बहुत ठाढ़े बुड्ढे लोग भी युद्ध क्षेत्र को भेजे जा रहे हैं। अच्छा है घर बैठे बान तोड़ने से रण होली करना भला है। खास कर तब, जब अन्न की किकिर हो।

भिखमङ्गों की वृद्धि

एक नयी बात ये बड़ी अचम्भे की है कि जर्मनी में दिनों दिन भिखमङ्गे बढ़ रहे हैं। युद्धों का परिणाम भी ऐसा ही होता है। ये एक युद्ध हीका परिणाम थोड़े ही होता है ?। भारत में बिना युद्धों के लाखों भिखमङ्गे हैं। शायद कोई गाँव या खेड़ा मुश्किल से मिलेगा जहाँ भिखमङ्गे न हों काँग्रेस से ले कर गांव की पञ्चायत तक भीख मांगने की आदत जमानों से पड़ती आ रही है। इतना आश्चर्य अवश्य है कि सभ्य देश में भी भिखमङ्गे बढ़ रहे हैं! हमारी तो कोई बात नहीं। हम तो सभ्यताभिमानियों के सामने अर्ध सभ्य हैं। और शायद उस से भी नीचे के!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विविध-प्रसङ्ग

ज़प्ती:—सरकार ने कास्मोपोलिटन नामक अङ्ग्रेज़ी के पत्र के १३ दिसम्बर की ज़प्ती का हुक्म दिया है। इसी के साथ कास्मोपोलिटन का जमानत सहित देहान्त हो गया समझिए।

सहयोगी भारतमित्र में को चीन के नये राजा राजाराम वर्मा का गद्दी पर बैठने का समाचार पढ़ा। वह लिखता है, कि राजा के चचेरे भाई श्रीराम राजा वर्मा ने वानप्रस्थाश्रम लिया। उसी दिन ह-थुवा में श्रीगुरु महादेवाश्रम प्रसाद का अभिषेक हुवा। काशी के पं० प्रभुदत्त अग्नि होत्री के पुत्र विद्याधर मिश्र ने चारों वेदों के ब्राह्मणों के अनुसार यथा विधि अभिषेक कराया। बाहर से भी राजा बाबू आये, नृत्य गीत और हरि कीर्त्तन हुवा।" ये कलियुग और सत्य-युग का मिला अभिषेक है, जिस में वै-दिक प्रक्रिया के साथ नृत्य गीत भी जुड़ा रहता है। प्रजा पर इस का क्या प्रभाव होगा?।

इटली पर दैवी आक्रमण

भूकम्प की ख़बर सब लोगों को पता है। इस में इटली ने वास्तव में बड़ी हानि उठाई है। बाद को हाल ही में इस भूकम्प के विषयक अन्य भी बड़े आश्चर्य कारक समाचार सुनाई दे रहे हैं। जिन का सारांश हम यहां देते हैं।

इस भूकम्प का प्रभाव—उत्तर में स्वि-ट्ज़रलैण्ड से ले कर दक्षिण के दूर २ तक के जिलों तक भी हुवा है। फ्यूसिनो झील के आस पास के १८ छोटे मोटे नगर तो सब उजड़ गये। अवेज्जनो न-गर की बड़ी बुरी दुर्दशा हुई। और भी बीस एक नगरों में हानि की मात्रा कम नहीं हुई। करीबन २०००० बीस हज़ा-र आदमी अपनी देह से मुक्त हुवे। ४०००० घायल हुवे। ये समझ लीजिये कि इस दैवी आक्रमण में उपरोक्त जन संख्या काम आई। उपरोक्त अवेज्जनो नगर में कुल एक मकान खड़ा रह गया। वलवर नामक ज्वालामुखी अब तो शान्त है पर उस के ओरे धोरे के गावों में एक की ख़ैर नहीं।

फ्यूसिनो झील के किनारे चलती २ रेलगाड़ी पटरी से उतर गई। यात्री लोग घायल हुवे। भूकम्प के ज़ोर में समुद्र की तरङ्गें उमड़ आईं, और तट वासियों की बड़ी हानि हुई।

अवज्जनो की कुल आबादी २००० में से मुशकिल से कोइ १०० बचे होंगे। अनुमान कर लें कि सारा नगर मसान बन गया। एक ढये हुये कालेज के नीचे एक लड़की की चींख सुनाई देती थी जिस से पता चला कि उस मकान के नीचे कोई डेढ़ सौ लड़कियां दबरहीं थी। इन को खोदने खादने से शायद कोई बची मिली हो। मारे भूकम्प के, सालजो के पास के पहाड़ की ३०० फुट चौड़ी चट्टान टूट के नीचे गिर पड़ी। नीचे ग्राम दब कर चकना चूर हो गये। मनुष्य पशुओं का तो पता ही नहीं। सब होटलों का खात्मा हो गया। शुकर है कि कोई इन में यात्री न टिका था।

समाचारों से प्रतीत हुआ है कि केवल अब्रुज्जी स्थान में ३०००० आदमी मरे १४००० अवेज्जनो के पास मरे।

ख़ैर! बाद को वहाँ, जहां तक हो सका, जान बचाने का यत्न किया है। स्थान स्थान पर से रोने चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं परन्तु थोड़े दिनों में सब शान्त हो गयीं। दो लड़कियें पियानो बाजे के नीचे चिल्लाती रहीं पर अन्त में धूल से दम घुट जाने से मर गईं।

कास्टिलरी स्थान में एक अन्त्येष्टि के लिए सौ एक आदमी जमा थे सो चिता के साथ ही स्वयम् भी दब गये।

अवेज्जनो में एक रईस के स्त्री पुत्रादि दब गये थे, पर उन को निश्चय था कि, वे मरे न होंगे। वे बहुत दिन तक खोदते रहे जिस पर परमात्मा की दया से वे सब्बन्धी उस के जीवित ही निकले। ये देख लीजिए कि दैवी आक्रमण भी कितना भयंकर होता है। यदि इतनी हानि परस्पर जाति व्युत्क्रम से होती तो देखते कि कितना आपस में फूट बैर फै-लता। पर ये तो विधाता का ही महान् कोप है। अब कोई चूं नहीं करता।

शिक्षा तथा ब्रह्मचर्य

लाहौर के डी० ए० वी० स्कूल ने ये प्रस्ताव पास किया है कि मिडिल स्कूल में आगे से वे विद्यार्थी न लिये जायेंगे जो विवाहित होंगे। परन्तु जिन का विवाह हो चुका है और वे उस वि-भाग में है, उन को वैसे ही रखा जायगा परन्तु जो अविवाहित है उन में से यदि बाद किसी का विवाह होगा, तो वह निकाल भी दिया जा सकता है।

बाल विवाह भारत के बाहुबल और बुद्धि बल दोनों की जड़ में कुठाराघात है। इस के संहारक कारणों से बचने के लिए ऐसे ही नियम नहीं, बल्कि, इस से भी कठोर नियम बनने चाहियें। अन्य स्कूल कालिजों को भी इस के विषय में बड़ा विचार करना चाहिये। अन्ततः वह गुरुकुल ही सब का आदर्श है।

प्लेग की कड़ी मार

संयुक्त प्रान्त में २३ जनवरी तक के सप्ताह में ६६० प्लेग से मरे। तोबाह! इतनी मृत्युएं! अभी तो कुछ नहीं, अब कुम्भ आने वाला है, फिर देखना कि कितनी बलियें विचारे हिन्दुओं की प्लेग और हैज़े जैसे सांक्रामक राक्षसी रोगों के आगे चढ़ती हैं।

"जले पर नमक"

रोगों से तो पीछा छूटता नहीं ये डाकू और गले मढ़े गये। स्थान स्थान पर पंजा-ब में डाकू फूट पड़े हैं। भारत में अन्न और दुर्लभ हो रहा है। जितना बचा है इस की रक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस लिये सिवाय इस के कि उस पर डाकुओं का मन चल जाय और क्या हो सकता है ?।

तम्बाकू की लत

हिन्दुस्तान भर में तम्बाकू की मांग है। दिन में ३ पैसे कमाने वाला भी २ पैसे का तम्बाकू दिन में पी ही डालता है। साथ ही नई सभ्यता के जोर से सिगरट चुरुट की मलियाँ मुंह में ठोक कर सारे हिन्दुस्तानी बाबू बूट कोट पहने एंजनों की नाई बदबू दार धुआं फूंकते हुए और भी बढ़ गये हैं। इस में झूठी शान तो चाहे बढ़ जाती है। पर इस से अपना सब कुछ लुट जाता है। पैसे भी गये और शरीर भी गया और पैसों की खरीदी सिगरेट में भी सिवाय नार्कुटीन जहर और गले सड़े गोभी के पत्तों के और कुछ नहीं होता है। हैदराबाद के निजाम सर्कार ने एक विज्ञप्ति राज्य भर के लिये निकाली है कि कोई नवयुवक १६ वर्ष से न्यून अवस्था का तम्बाकू न पीवे नहीं तो दण्ड होगा।

हमारी सम्मति में अन्य हिन्दु राजों को तो सर्वथा ही इस हुक्के चिलम की बस्ती की जड़ ही उखाड़ देनी चाहिये। इस के स्थान पर लोगों को घी दूध आदि खाना सिखाना चाहिये।

संशय का उपाय

अंग्रेज़ी के लीडर पत्र को हम्बर्ग के एक समाचार पत्र में से एक ये बड़ी मनोरञ्जक खबर मिली है कि जर्मन लोगों ने अब दाढ़ियां बढ़ानी शुरू कर दी हैं। इस भय से कि कहीं उन पर भी कुछ मुंडे होने से अङ्गरेज़ होने का अपमान जनक संशय न कर लिया जाय। क्या जर्मनों को अपने घर में रहते इतना भरोसा भी नहीं कि जिस से उन्हें भी दाढ़ी की शरण लेनी पड़ी ?।

समाज संशोधन

कामन वील एक अंग्रेजी पत्र में सुब्रह्मण्य एय्यर के० सी० आई० ई० महाशय भारतवर्ष को शीघ्र उन्नत करने के थोड़े से उपाय बताते हैं जिन पर हम भी पाठकों को ध्यान देने का अनुरोध करते हैं।

आप का कथन है कि हिन्दुओं की सनातन धर्म पुस्तकों को फटक कर इस का व्यर्थ भाग निकाल कर सदाचार सम्बन्धी पवित्र भाग को स्पष्ट रूप में तथा परिमित रूप में संस्कृत में ही छपवाना चाहिये। और उस का अनुवाद साधारण अंग्रेजी में भी उस के सार्वदेशिक होने के कारण होना चाहिये। हम को पता नहीं कि एय्यर जी ने कब और भारत में किस स्थान पर अंग्रेजी को सार्वदैशिक बनते देखा है? जब कि ३२ करोड़ में से ३१½ करोड़ से भी अधिक जन संख्या अंग्रेजी का नाम ही नहीं जा-जानती। खैर दूसरा आप कहते हैं कि वर्णाश्रम धर्म में वर्णों का झगड़ा बिलकुल उड़ा दिया जाय। और आश्रम के विभागों को जीवन के चार विभाग समझ कर उस का स्थिर रूप से पालन कराया जाय। तीसरा एक विवाह को स्थिर कर के दूर २ के सम्बन्धों की सर्वथा उपेक्षा करके दाया भाग के निर्णय के लिये समीप के सम्बन्धों को ही लेना तथा ध्यान रखना चाहिये। चौथा कि पिता लोग अपने बच्चों को एक ब्रह्मोपासना और कर्म सिद्धान्तों का उपदेश करें। इस प्रकार इन के अनुकूल आचरण से देश की अवश्य उन्नति होगी।

एक एंगलो इण्डियन की शरारत

सब इन को धूर्त्त पहले ही कहते आये हैं अब यदि देश द्रोही और राजद्रोही कहें तो भी न्यून है। बर्मा में कई डाकुओं ने एंगलों इण्डियनों से बन्दूकें और कार्तूसें मांग लीं थीं। पुलिस ताकमें थी अभी हाल में एक डाके के मुजरिम ने कहा कि उस ने डा० विलयम नाम के एंग्लो इण्डियन से एक बन्दूक और कार्तुस और एक कटार मांग ली थी इस पर डाक्टर ने कहा कि यह एक बन्दूक मेरी ही है पर मैंने डाकूओं को नहीं दी। पर झूठ बनाने से क्या बनता है। आखिर मेजिस्ट्रेट ने ५ वर्ष की कड़ी सज़ा ठोंक ही दी। हमें इसी न्याय की आशा ही थी। ये राजा द्रोह नहीं तो क्या है ?। हम मैजिस्ट्रेट की बुद्धिमता की प्रशंसा करते हैं।

युद्ध समाचार

हम पाठकों को युद्ध समाचार सुनाने के ईरादे से बैठते हैं और सारे पत्र कोई करीब २० पत्र दैनिक साप्ताहिक और मासिकों से इकट्ठा करने बैठते हैं। परन्तु मिलता उतना ही है जितना एक में होता है। सात दिनों की खबरों में भी प्रायः कोई मुष्किल से भेद आता है। हां इतना अवश्य हो जाता है कि लवमात्र भी घटना सम्पादकों को एक बड़ा शीर्षक देने पर उतारू कर देती है। हमें ये नहीं पता लगता कि ऐसे छोटे छोटे तुच्छ समाचारों से पाठकों की क्या ज्ञान वृद्धि होती है। और ख़ास कर जब छोडे से बड़े पत्र तक एक ही समाचारों को दें तो न तो ज्ञान ही बढ़ता है और न पत्रों को ही रोचकता रहती है। हमारी सम्मति में पत्रों को कार्य बांट लेना चाहिये। जैसे दैनिक, समाचार देवें। साप्ताहिक रोचक तथा विविध टिप्पणियें देवें। और तत्वों को खोल कर दिखावें और मासिक स्थिर साहित्य पैदा करने का प्रयत्न करें इस प्रकार भाषा की उन्नति हो सकती है। इस पर अवश्य पत्र सम्पादक ध्यान देंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेरित

आवश्यक सूचना | सद्धर्म्म प्रचारक का सम्पादक पत्र प्रेरकों के मन का उत्तर दाता नहीं न प्रत्येक समाचार की सचाई का ही ज़िम्मेवार है।

स्वामी मङ्गलानन्द पुरी | के विषय में जो कुछ लिखा गया है उस के विषय में सम्पादक को निज का कुछ ज्ञान नहीं। पूर्वीय वृटिश अफ्रीका के जो भाई उक्त स्वामी पर १०,०००) निज के लिए इकट्ठा कर ले जाने का दोषारोपण करते हैं उस से वहीं के आर्य्य-समाजिस्थ भाई परिचित होंगे। उक्त स्वामी जी के मित्र महाशय भवानी दयालु जी ने उन की बड़ी प्रशंसा की है और उन का अंग्रेज़ी व्याख्यान छपवाने को भेजा है। उस व्याख्यान की भाषा इतनी अशुद्ध है कि कोई धनवान पुरुष भी उसे न छपा सकेगा, फिर प्रचारक का निर्धन सम्पादक तो क्या साहस कर सकता है। यदि आर्य-समाज में काम करना है तो स्वामी मङ्गलानन्द जी को पूरी वा चोरी का विचार छोड़ कर किसी आर्य्य सामाजिक संस्था के आधीन रह कर काम करना चाहिए।

प्रेरित

क्षीरोदन और मांसौदन

प्राचीन वैदिक अर्थ।

वेद और ब्राह्मण में हम आर्य जनों को जहां पर भी यज्ञादि प्रकरण में कहीं मांस का शब्द या पशुमय हवि का शब्द आजाता है तो हम बड़ी असुविधा समझा करते हैं और प्रयत्न किया करते हैं कि या तो कोशादि की सहायता से कोई नया अर्थ निकालने का यत्न किया जाय या प्रक्षिप्त सिद्ध किया जाय। पर मेरा विचार है कि सर्वत्र ऐसा प्रयत्न करना कुछ अश्रद्धा जनक है। अतः अनुशीलन की मात्रा का बढ़ाना ही उचित है।

'श्राणा मांसौदनाष्टिठन्, आदि व्याकरण के सूत्रों में और अन्यत्र भी बहुत से स्थलों पर मांस आदि शब्द बड़े भ्रम जनक हैं। हमारी सम्मति में ब्राह्मण ग्रन्थ अपने इन भ्रम जनक शब्दों का स्वयं ही उत्तर दाता है। हमारे ऊपर उस की उत्तरदायिता का लव मात्र भी नहीं। आज मैं ये दिखाने का ही प्रयत्न करता हूं कि ब्राह्मण इस भ्रम का क्या उत्तर देकर अपना पीछा छुड़ाना चाहते हैं।

ब्राह्मणकार के मन में मांस और ओदन का अभिप्राय प्राकृतिक मांस और ओदन से नहीं है परन्तु ये कुछ और ही हैं।

शतपथ में १ काण्ड के ४ प्रपाठक १ म ब्राह्मण में यह बात स्पष्ट कर दी है। जिस से शास्त्रीय चक्षु को भ्रम नहीं हो सकता।

स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुवे ब्राह्मण कहते हैं—

"मधु ह वा ऋचः। घृतं ह सामानि अमृतं यजूंषि यद्ह वा अयं वाकोवाक्यमधीते क्षीरौदन मांसौ दनौ हि तौ।

मधुना ह वा एष देवां स्तर्पयति य एवं विद्वान् ऋचोऽहरहः स्वाध्यायमधीते इत्यादि। घृतेन ह एष देवां स्तर्पयति य एषविद्वान् सामानि अहरहः स्वाध्यायमधीते। अमृतेन एष देवां स्तर्पयति यएव विद्वान् यजूंषि अहरहः स्वाध्यायमधीते। क्षीरौदन मांसौदनाभ्याम् वा एष देवां स्तर्पयति य एवं विद्वान् वाकोवाक्यमितिहासपुराणमित्यहरहः स्वाध्याय मधीते तएवं तृप्तास्तर्पयन्ति"

अब स्पष्ट होगया कि घृत से साम और अमृत से यजुः और वाकोवाक्यविद्या इतिहास और पुराण विद्या का क्षीरौदन और मांसौदन से ग्रहण है।

न्यून से न्यून पूर्वोक्त भ्रम तो सर्वथा दूर हो जाता है। एक स्थान में उपनिषद् बृहदारण्यक में चतुर्वेद विज्ञ पुत्र को पैदा करने के लिए घृत से मिला कर मांसौदन पकाने का विधान है। उस स्थान पर इस का सम्बन्ध करने से यह परिणाम निकलता है कि गर्भिणी यदि नित्य सामगान करे और वाकोवाक्यविद्या का और पुराण और इतिहास वेद का अध्ययन करे तो उस का पुत्र निःसन्देह महाविद्वान् और चतुर्वेद पारयायी निकलेगा। इन सब विद्या विषक आचारों का संस्कार गर्भस्थ बाल पर होना सर्व विद्वानों के सम्मत है। मेरी तुच्छ बुद्धि में यही आता है। यथावसर मैं अन्य इस प्रकार की सन्तानों के विषय में भी प्रतिपादन करूंगा। मेरा आर्य भाइयों से इतना निवेदन है कि वे ऐसी बातों का संग्रह किये जाय और अनुशीलन किये जाय उन की सम्पूर्ण शंकाए आप से आप निवृत्त हो जायंगी। शेष रहा इतिहास पुराण का यहां क्या तात्पर्य है। क्या रामायण और महाभारत का पाठ और भागवतादि पुराणों का पाठ ब्राह्मण के सम्मत है। हमारी तुच्छ बुद्धि में न ये रामायणादि इतिहास हैं और नये आधुनिक पुराण हैं परन्तु इन दोनों शब्दों का तात्पर्य ही और है। जिस के विषय में पाठकों की रुचि को देख कर कभी प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

(अ)

गुरुकुल गीत

ब्र० इन्द्र वेदालंकार कृत

यह गुरुकुल विषयक कविताओं का संग्रह गुरुकुल प्रेमी मात्र के कार्य का है। इस में गुरुकुल विषयक छोटी २ कवितायें हैं, समय समय पर गाई जा सकती हैं। ये कवितायें गुरुकुल जन्मोत्सव के अवसर पर बनाई गई थी। छपाई तथा कागज़ बढ़िया है। चार पैसे का टिकट भेज देने वालों को यह संग्रह महसूल रहित भेज दिया जायगा।

प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्मप्रचारक पत्र

धर्मवीर पं० लेखराम जी
का जीवन चरित्र

आर्य्य मात्र को जिस पुस्तक की बड़ी भारी लालसा लग रही थी, वह छप गई है, धर्मवीर की जीवनी, और महात्मा जी की लिखी हुई—फिर आर्य लोगों को और क्या चाहिये। शीघ्र मंगवाइये।

मूल्य १)

प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्मप्रचारक पत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य चर्चा

भारतगीताञ्जलिः—इमें इतने दिन हो गये निहारते कि भारतीय हिन्दी साहित्य में कोई ऐसी पुस्तक बने कि जिस को सब भारतवासी मात्र अपने हृदय से अपना सकें पर अभी तक किसी कवि ने ऐसा लोकोत्तर कार्य न कर के दिखाया। अब हमारे आखों के आगे वह कार्य हुवा हुवा रखा दीखता है। कवि **माधव शुक्ल की प्रतिभा स्वरूप भारतगीताञ्जलि** ने हमारी सम्पूर्ण आशा को पूर्ण करने का पक्का निश्चय दिलाया है। कविता की दृष्टि से किसी अंश में न्यूनता नहीं, देशभक्ति पद पद पर और मात्रा मात्रा में कूट कूट कर भरी है। हम प्रशंसा की आवश्यकता नहीं समझते। एक नमूना दिखाना पर्याप्त है।

३४ (कजली)

"काली छाय रही अंधियारी,
घर में घुसी फूट वन चोर।
"बरसे मेह, दामिनी दमकै,
चढ़ी घटा घन घोर।
"बरबस ? हाय ! हमारी सम्पति
नाशत सबै बटोर।
"बोल न सकत, बाँधि राख्यौ
मोहि, चलत न एकौ जोर।
"पपीहा बोल जगावत जो कहुं,
डारत पंख मरोर।
"हाय करौं का, घर के प्रानी
सोवत तीस करोर।
"माधव" उठ, देखहु घर आपन,
होन लग्यो अब भोर।"

हमें यह कहने की आवश्यकता नहीं कि ये प्रत्येक भारत के पुत्र को पढ़नी चाहिये क्योंकि यह गीताञ्जलि ही—

"बंधी हुवी मुट्ठी को जिनने,
अब तक नहीं पसारा है।
"जिन को हाथों से पैरों का,
अधिक अंगूठा प्यारा है।
"भावी भारत गौरव गढ़ की,
सुदृढ़ नींव के जो पत्थर।
"आर्य्य देश की अटल इमारत,
का बनना जिन पर निर्भर।
"उन्हीं अनूठे कानों में ये मेरी,
स्वरमय आत्म पुकार।
"पहुंचे आशलता की जड़ में,
जिस में होय शक्ति संचार।"

इस लिये बनी है। हम भी कहते हैं एक स्वर से कि, हे भारत की बाल आत्म देवते ! तू इस कवि वाणी का स्वागत कर और इस का स्वर भारत के बच्चे २ के कानों में गुञ्जा दे। और प्रेम का अमृत साथ ही गान के बरसादे। उपदेशकों को चाहिये कि गांव २ में जा कर इस सरस्वती देवी का भारतीय गान किसानों तक में गुञ्जा दें।

अभी ये माधवीलता का प्रथम गुच्छ है। अभी और देखते हैं कि कैसे २ कुसुम खिलते हैं। ऐसी पुस्तक का मूल्य तो पूछना ही न चाहिये सैकड़ों रुपया हो तो भी कम है परन्तु उदार कवि ने सब के लाभार्थ केवल कागज़ पत्रे स्याही के खयाल से शायद केवल चार आने) रख दिया है।

पता—माधव शुक्ल
कूचा श्यामदास प्रयाग

ठोंक पीट कर वैद्यराज—एक छोटा सा रोचक नाटक जिस में गृहस्थ की कई एक भयंकर अवस्थाओं का दर्शन कराया है भाषा मुहावरेदार। पृ० सं० ६२। मूल्य ।)

पता—
श्री हिन्दी प्रसारक मण्डली
प्रयाग बरबाँडवा।

देशभक्त होरेशस—अंङ्गरेजी के Lays of Ancient Rome की एक वीर रस पूर्ण कथा का अनुवाद। इस में व्रजभाषा या पड़ी बोली में श्री सत्यनारायण ने वीर होरेशस की वीरता का परिचय कराया है। स्थान पर खूब वर्णन किया है जैसे होरेशस की तेग का प्रहार सुनिये।

"बड़े वेग सों तेग दई ताके सिर जाई।
झिलमलटोप को भेदि दसनलों जाइ समाई
धमकि धसीं सो तेग लगी अस्टर के पाछे।
निकरीएक बिलस्त नोक तिह मस्तक पाछे

इत्यादि

इस कविता में एक दूषण है, वह यह कि इस में विदेशी नामों की भरमार होने से मज़ा कुछ न्यून हो जाता है।

चम्पा उपन्यास—एक रोचक सती साध्वी चम्पा महिला का वर्णन उपन्यास रूप में है पढ़ते ही बनता है। श्री० पं० शिवनारायण द्विवेदी विरचित पृ० सं० ७१। मूल्य पता नहीं।

पता—श्री वैंकटेश्वर यन्त्रालय
खेतवाड़ी बम्बई

लोक रहस्य—प्रहसनमाला कहना चाहिये। प्रत्येक को यह बंकिमचन्द्र चटर जी के दिमाग की उपज का भोग करना चाहिये। आपने प्रहसनों के रूप में लोकरहस्य नामक छोटा सा पुस्तक पाश्चात्य सभ्यता का देसी पुरानी सभ्यता पर कैसा भयंकर प्रभाव हुवा है ये बात समझाने के लिये ही बनाई है। भाषा रोचक ढंग बहुत ही मनोरंजक है। ये इस का हिन्दी में अनुवाद साहित्य सवर्धिनी समिति की ओर से हुआ है।

मूल्य =)
पता—साहित्य सम्वर्धिनी
कलकत्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अमूल्य पुतकें ! अत्यन्त उपयोगी पुस्तकें !! अपूर्व पुस्तकें !!!

(इतने सस्ते दामों में ऐसी उपयोगी पुस्तकें फिर मिलनी दुर्लभ हैं)

ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार

महा पुरुषों के पत्र बड़े शिक्षा दायक होते हैं। विलायत के लोग तो अपने महा पुरुषों के पत्र हजारों रुपया व्यय कर के खरीदते हैं। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द के अलभ्य पत्र छापे गये हैं उन पत्रों से ऋषिके जीवन की कई नवीन घटनाओं का पता लगता है। पहिले इस का मूल्य १॥) था। अब हम ने सर्वसाधारण लाभार्थ केवल ।≡) मूल्य कर दिया है।

आर्य्य समाज और उसके शत्रु

The Arya SamaJ and it's Detrectors

इस अङ्गरेज़ी भाषा की अपूर्व पुस्तक में आर्य्य-समाज के विरोधियोका मुंह बन्द करने का बहुत कुछ मसाला भरा पड़ा है। समय पड़ने पर सरकारी कर्मचोरियों को दिखलाने योग्य है। यह पुस्तक इतनी आवश्यक है कि प्रत्येक समाज में इस की एक पति तो अवश्य रहनी चाहिये। पहिले इस का मूल्य ५) था। अब सर्वसाधारण के लाभार्थ लागत से भी कम केवल ३) कर दिया है थोड़ी प्रतियां रह गईं हैं शीघ्र मंगा लें।

पता:—इन्द्र प्रस्थार्य एजन्सी, देहली

धर्म और विज्ञान

अंग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Confict betwaen religon and seience का भाषानुवाद २)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥≡)

आनन्द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥≡)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वाले का २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ हो

पता:—ला० केदारनाथ प्रोपाईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बजाज़ा शहर मेरठ

उस्तरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगाने से फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मूल्य १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल

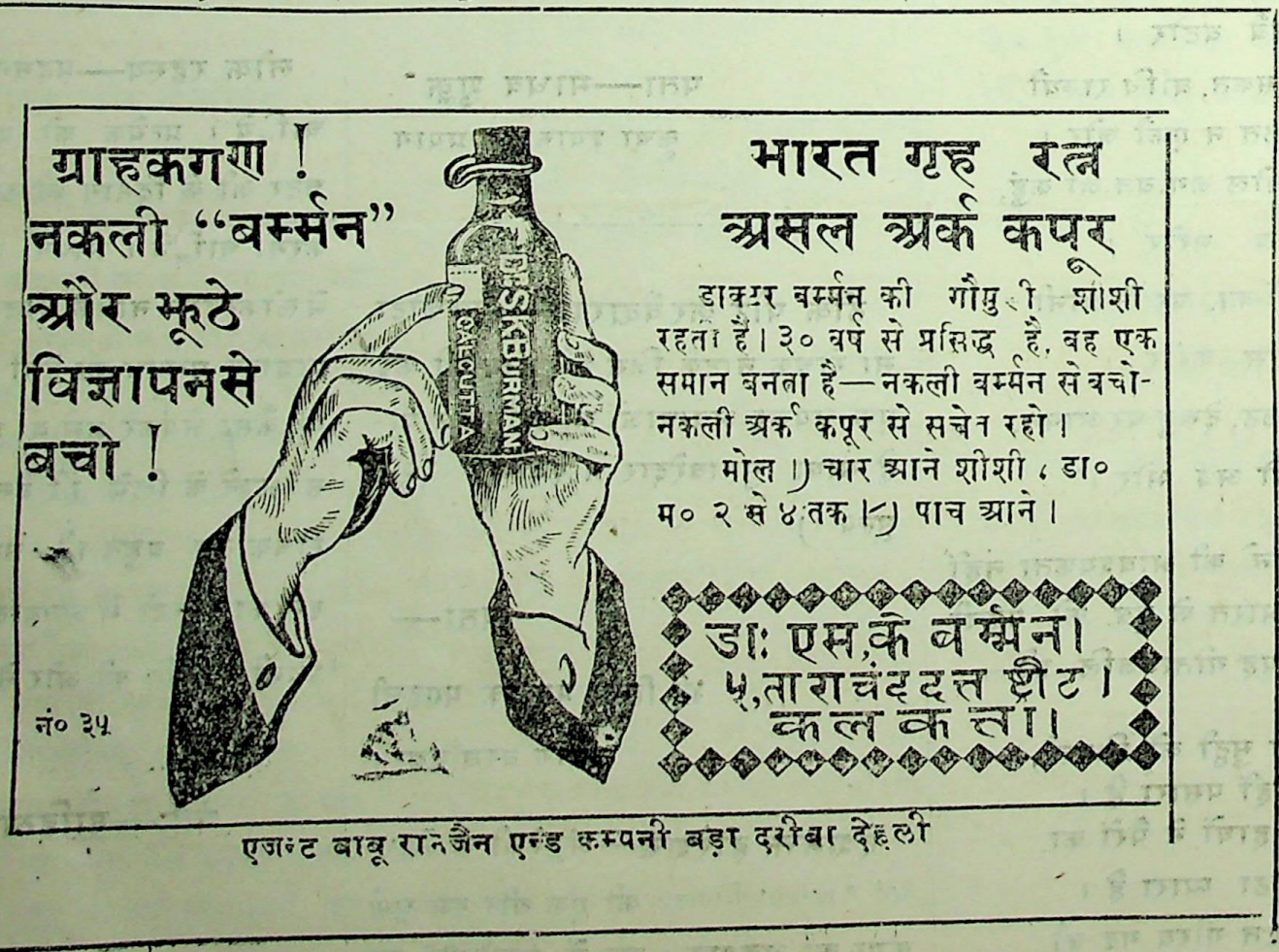

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्मेलन के कार्य विवरण और लेख माला

यदि आप की इच्छा, इतिहास, साहित्य खोज तथा कविता सम्बन्धी लेख तथा खड़ी बोली और व्रज भाषा की सुन्दर हृदयग्राही कविता और हिन्दी के नामी नामी वक्ताओं की वक्तृताओं के पढ़ने की हो तो सम्मेलन के कार्य्य विवरण और लेख माला पढ़िये।

प्रथम वर्ष का कार्य्य विवरण		।)
द्वितीय वर्ष का	,,	।)
तृतीय वर्ष का	,,	।=)
प्रथम वर्ष लेख माला		।।।)
द्वितीय वर्ष	,,	१)
चतुर्थ वर्ष	,,	।।।)

सम्मेलन पत्रिका के ग्राहकों को चौथाई मूल्य कम पर मिलेगी।

निवेदक
मन्त्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

कन्या-मनोरञ्जन

एक अनोखा सचित्र मासिक पत्र

यदि अपनी छोटी तथा बड़ी कन्याओं और बहुओं का गृह प्रबन्ध में चतुर, स्वभाव में नम्र; विनीता तथा सुशीला, बोल चाल में मधुर भाषिणी, नीमी में कुशल, शरीर में निरोग तथा बलवती, सब प्रकार के भोजन बनाने में प्रवीण, सीने पिरोने में दक्ष, रहन सहन में स्वच्छ और पवित्र, भूगोल और इतिहास आदि को जानने वाली, पठन पाठन में विदुषी बनाना चाहते हैं तो कन्या—मनोरञ्जन को अवश्य पढ़ाइये। इस में नाना प्रकार की पहेलियां और छोटे २ किस्से भी रहते हैं जिन को पढ़ कर कन्यायें बड़ी प्रसन्न होती हैं और उत्तम उपदेश पाती हैं जो कन्यायें पहेलियां बूझती हैं उन में पहिली तीन कन्याओं को इनाम भी दिया जाता है इस में अच्छे २ चित्र भी दिये जाते हैं जिन को देख कर तबियत खुश हो जाती है। हिन्दी संसार में कन्याओं के लिये सब से सस्ता पत्र है मूल्य केवल १।) सवा रुपया सालाना नमूने की कापी =) के टिकट भेजने पर भेजी जाती है। इस पत्र की तारीफ़ भारत के सभी प्रसिद्ध समाचार पत्रों ने की है यदि उन की सम्मतियां यहां देने लगूं तो विज्ञापन बहुत बढ़ जायगा। आज ही अपनी कन्या के लिये एक पत्र नीचे के पते पर लिख कर मंगाइये।

मैनेजर कन्या--मनोरञ्जन
प्रयाग।

आदित्य ग्रन्थमाला
की
नई पुस्तक छपरहीं है नईपुस्तक

सचित्रप्रिन्सविस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना
इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े२ को कैसे पद दलित किया, और फिर किन २ शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की, इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तारपूर्वक वर्णन है। दूसरे भागमें साहसकी मूर्ति, देशभक्ति के पुतले, नीती के गुरू, और जर्मनीके जन्म दाता प्रिन्सविस्मार्क का आश्चर्य्यकारी चरित विचित्र किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्होंने पढ़ा है उनके लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वालों को रियायती मूल्य पर पुस्तक मिलेगी।
पताः प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म्मप्रचारक पत्र गुरुकुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बडे विस्तार से लिखा गया हैं बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद सबजज उज्जैन

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठ का एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खंड एक वर्ष में पहुंचते हैं ।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्रीधवन

लाहौरी-टोला बनारस सिटी

बाल-हितैषी

यह पत्र हिन्दी में चार वर्ष से प्रति मास निकल रहा है। नवीन वर्ष जनवरी १९१५ से इसमें फ़ूल स्कोप चौपेजी (८×६ ईञ्च) आकार के ४० पृष्ठ रहेंगे। प्रति अंक में रंगीन टाईटल के अतिरिक्त एक रंगीन व कई हाफटोन चित्र दिये जायंगे। कविता, इतिहास, जीवन-चरित्र, भूगोल, खगोल, विज्ञान, स्वास्थ्य, धर्म-नीति, किस्सा कहानी, पाक-विधि, पहेली इत्यादि कितने ही विषयों पर मनोरञ्जक लेख रहा करेंगे जो कि केवल बालकों के लिये ही नहीं, बल्कि स्त्रियां, नवयुवक तथा वृद्धों के लिये भी लाभकारी होंगे। इतना होने पर भी वार्षिक मूल्य वही १॥) रहेगा।

अभी से ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा लीजिए, क्योंकि गिनी गिनायी प्रतियां छपेंगी, विलम्ब करने से पूरी फाईल मिल नहीं सकती।

पता—"बालहितैषी" कार्य्यालय सदानन्द बाज़ार बनारस सिटी

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

बरियारपुर

(बनारस स्टेट)

नया संदेश ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी वसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू ध, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें, इत्यादि विषयों पर महत्व पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता

"सत्ययुग"

हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय

मुज़फ़्फ़रपुर

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री वा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रो ने प्रशंशा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा

बुलन्दशहर

१६००० हज़ार

एजेंटों का होना

भारतवर्ष में बनी औषधि के सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं बता सकता कि सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कफ, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, कै दस्त, सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, ब के हरे पीले दस्त, रोना, कै करना, बूढ़ों की अनि और नजला, जवानों की थकावट या बेचैनी, दवा स्वादिष्टसुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कमत फी शीशी आठ आना डांक खर्च १ से ६ शीशी तक ≡) आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डांक से मंगाने का पता:—

सुख संचारककंपनी

मथुरा

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ९ फाल्गुन सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० २० फरवरी सन् १९१५ ई० { संख्या ४५ भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि ।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है । इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है । महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है ।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा ।

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए । वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी ।

मूल्य ।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।=)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित । विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है । उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है । मूल्य २)

अर्थशास्त्र—पो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित । इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं । पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है । मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित । इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है । निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है । मूल्य ।=)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा । भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है ।

मूल्य=)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विज्ञापन।

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये। वा०मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर कांगड़ी

(जि० बिजनौर)

तिब्बत व नेपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला शेर की चरबी १।) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू. पी.

(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

असली हारमोनियम

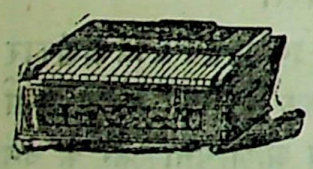

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता

G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

१०,०००) रुपया इनाम,

यह इनाम उन लोगों को मिलेगा जो हमारे यहां से नीचे लिखी हुई दवा मंगावेंगे। मकज़ोरी दिमाग़ को दूर करने वाली (अमृत प्रवाह) १) सैकड़ों बार का आजमाया हुआ धातु पुष्टि चूर्ण २)। इनाम बड़े २ डाक्टर, वकील वैद्य रईसों के सामने बांटा जायगा। हमारे ग्राहक भी इनाम बांटने में शरीक हो सकते हैं उन को आने जाने का खर्च भी दिया जायगा। जानने के लिये नियमावली)॥ का टिकट भेजने पर मुफ़्त मंगाइये

पता:—सूर्य्य, औषधालय,

सनेटरी रोड़—लखनऊ

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥

भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०.

तीन मास " " " " =) "

छः " " " " " ।)॥ "

सालभर " " " " -) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २९½ सहस शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

देखना यह अवसर हाथ से न जाये

आर्य्य समाज लाहौर के वार्षिकोत्सव के स्वागत में १ नवम्बर सन् १४ से ३१ जनवरी सन् १५ तक निम्न लिखित पुस्तकों का मूल्य घटा दिया गया है।

शुद्ध रामायण—जिस की प्रशंसा बड़े बड़े योग्य और प्रसिद्ध विद्वानों और समाचार पत्रों ने मुक्त कंठ से की है २) से १॥)

महाभारत—१८ पर्व सरल हिन्दी भाषा में जिस के प्रकाशक को सरकार से ३००) रुपया पारितोषक मिल चुका ८) से ७)

अन्य हर प्रकार की हिन्दी संस्कृत पुस्तकें स्कूलों के कोर्स हमारे यहां से रिआयत से मिलते हैं।

पता: प्रबन्धकर्त्ता, नागरी, प्रचारणी, कम्पनी लिमिटेड, (Ld.) लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म-दर्शनम् ।

परीक्षा का संवत्सर समाप्त हुआ । तप, श्रद्धा तथा ब्रह्मचर्य पूर्वक ऋषि पुत्रों ने आश्रम में निवास कर, ऋषि राज को प्रणाम किया । जब पहले ऋषि के चरणों में शिर रक्खा था तो ज्येष्ठ जिज्ञासु ने सब से पहले प्रणाम किया था और पीछे क्रमशः छोटों ने । अब सब से छोटे शिष्य को प्रश्न पूछने की पहले आज्ञा हुई ।

अथ कबन्धी कात्यायन उपेत्य पप्रच्छ ।

भगवन् ! कुतो ह वा इमाः प्रजाःप्रजायन्त

इति ॥ ३ ॥

कत्य के अपत्य *कबन्धी* ने समीप जाकर पूछा-हे पूजनीय गुरो ! योगदृष्टि से देख कर कहिए कि यह [प्रत्यक्ष] प्रजा किस से उत्पन्न हुई । अनात्मीय प्राकृतिक जीवन से थोड़ा ऊंचा उठने पर ही मनुष्य के हृदय में पहला प्रश्न यह उठता है कि मुझे और मेरे जैसे कोटियों, अर्बों खर्बों को किसने बनाया ? शरीर, इन्द्रिय तथा मन—इन में से एक का भी तो सर्जनहार मैं नहीं हूं । मुझे तो इन की बनावट और सम्बन्ध का भी ज्ञान नहीं, फिर मैं इन का बनाने वाला कैसे हो सक्ता हूं । तब क्या जड़ के अन्दर स्वयम् बनने की शक्ति है ? मन कैसे यह मान सक्ता है । जब जगत में बिना चेतन बनाने वाले के कोई भी वस्तु बनती नहीं दीखती तो प्रश्न होता है कि क्या इस जगत का बनाने वाला कोई है ? परन्तु बिना जीवधारी वनस्पति, पशु और पुरुष के कोई और चेतन दीखता भी तो नहीं । फिर प्रत्यक्ष देखे बिना कैसे विश्वास हो !

इस प्रकार मन की व्याकुल दशा में ब्रह्म-ज्ञानी गुरु के बिना और कोई आश्रय नहीं दीखता ।

तस्मै स होवाच; प्रजाकामो वै प्रजापतिः स तपोऽतप्यत स तपस्तप्त्वा स मिथुन मुत्पादयते रयिं च प्राणं चेत्येतौ मे बहुधा प्रजाः करिष्यतः

इति ॥ ४ ॥

"उस [शिष्य] से वे [गुरु] प्रगट बोले कि जब *प्रजापति* प्रजा रचन की कामना से युक्त होता है तब वह स्वप्रकाश से ध्यान करने के लिये दोनों मेरी सृष्टि में बहुत प्रकार की प्रजा को बढ़ावेंगे, (*मिथुनम्*) जोड़ा रचता है । [वह-जोड़ा] रयि (*भोग्य*) और प्राण (*भोक्ता*) है ।"

गुरु का उपदेश बड़ा सारगर्भित, किन्तु कैसा सरल है ! हे शिष्य ! जिस अदृश्य, अनिर्वचनीय परम पुरुष द्वारा इस प्रजा का पालन होता है, वही इस का रचने वाला है । फिर तुम उस को रचना करते हुए देख क्यों नहीं सक्ते ? तुम्हारी शक्तिएं अल्प हैं और तुम परिमित हो, जिन वस्तुओं को तुम घड़ते उन से तुम स्वयम् अलग हो । इस लिए ही हम सब तुम्हें काम करते हुए देख सक्ते हैं, और इसी लिए उत्कट इच्छा रखते हुए भी परिणाम सदा तुम्हारी इच्छा के अनुकूल नहीं निकलता । परन्तु वह परम पुरुष सर्व शक्तिमान, असीम सर्वव्यापक है । उस के लिए कोई वस्तु, कोई अवस्था अप्राप्त नहीं क्योंकि वह पहले से ही सब में पूर्ण हो रहा है । तब उस में इच्छा घट ही नहीं सक्ती । वह स्वयम् तप-स्वरूप है इस लिए अपनी ईक्षण शक्ति को प्रत्येक कल्प के आदि में जब हिलाता है तब "यथापूर्वमऽकल्पयत्" पूर्व सृष्टि का सारा चित्र उस के स्वप्रकाश में उस के सामने हो जाता है ।

हे शिष्य ! जिस सृष्टि को तप स्वरूप परमात्मा ने तप के प्रकाश द्वारा ही निर्माण किया उस सृष्टि को समझने के लिए तप की ही आवश्यकता है । इसी लिए तो मैंने तुम प्यारे शिष्यों को एक वर्ष के लिए तपका पुनः व्रत धारण कराया था । ब्रह्मचर्य का व्रत भी इसी लिए दिया था कि उस के बिना तप सिद्ध नहीं होता। देखो वेद भगवान भी यही उपदेश देते हैं ।

"तेजोऽसि तेजो मयि धेहि" परमेश्वर तेज (तप) स्वरूप हैं । इस लिए उन से तप की याचना है; परन्तु वह तेज (तप) प्राप्त कैसे होता है ? वीर्यमसि वीर्यम् मयि धेहि" तू वीर्य स्वरूप है, तुझ में भोग की इच्छा ही नहीं इस लिए तू स्वरूप से ब्रह्मचारी है; हम को ब्रह्मचारी बना । बिना ब्रह्मचारी बने वह तेज प्राप्त नहीं हो सक्ता जो सृष्टि के तत्त्व को मनुष्य के लिए प्रकाशित कर सके । परन्तु उस ब्रह्मचर्य व्रत की दृढ़ता के लिए श्रद्धा की आवश्यकता है । ब्रह्मचर्य को नष्ट करने के लिए अनगिनत प्रलोभन मुंह फैलाए खड़े हैं । यदि एक भी ब्रह्मचारी अपने व्रत में अडोल रह-जाय तो सांसारिक विषयों की स्वार्थ सिद्धि में विघ्न पड़ता है । स्वार्थी का लक्षण ही यह है कि वह पराई उन्नति को देख कर कुढ़ता है; इसी प्रकार सर्व विषयों की अवस्था है । श्रद्धा का ही ऐसा कवच है जिस से सुरक्षित ब्रह्मचारी अपने व्रत का पालन कर सक्ता है । हे प्यारे पुत्र (शिष्य) ! इसी लिए तुम्हें अपने आत्मज बनाने के लिए मैंने तुम्हें प्रकाश के धारण कराने वाले ब्रह्मचर्य व्रत का उपदेश देते हुए श्रद्धा सम्पन्न बनने का आदेश किया था ।

तप से ही प्रजा का सर्जन हुआ, तप से ही उस का पालन होता है, इस लिए तप के प्रकाश से ही सृष्टि का निज रूप देखा जा सकता है । हे पुत्र ! जैसे हम अल्पजीव नियमों को उत्पन्न नहीं कर सक्ते प्रत्युत एक एक वस्तु को जुदा २ बनाते हैं उस प्रकार उस सर्व नियन्ता को नहीं करना पड़ता । जो असीम है वह व्यापी नियमों का निर्माण कर सक्ता—नहीं, नहीं, करता—और उन से काम लेता है । उसने यह मनुष्य और वह मनुष्य, यह जाति और वह जाति, यह पशु और वह पशु, पक्षी और मकौड़े, यह वृक्ष और वह वृक्ष—इस प्रकार की रचना नहीं की, क्योंकि उस को ऐसा करने की आवश्यकता न थी । उस ने एक जोड़ा उत्पन्न कर दिया जिस से सारी सृष्टि की वृद्धि होगई । वनस्पति में एक ही स्थान में (*मिथुन*) है, पशु पक्षी तथा मनुष्य में भोक्ता और भोग्य शक्तियां जुदी जुदी हैं । परन्तु सारी सृष्टि का काम इस मिथुन से ही चल रहा है; चेतनों की वृद्धि मिथुन से ही हो रही है ।

तब मैथुन कैसी पवित्र क्रिया है जिसे मनुष्यों की अनृत बुद्धि ने उस के उच्चासन से गिरा दिया है । जिस मिथुन द्वारा ही उत्तम मनुष्य रूपी रत्न लाभ हो सक्ते हैं उस को विषय सेवा का साधन बना कर सुखधाम संसार को दुःख के कुण्ड में परिवर्तित कर दिया है ।

हे शिष्य ! मिथुन अर्थात रयि और प्राण का यथावत् ज्ञान ही तेरे प्रश्न का उत्तर होगा, इस लिए उस की व्याख्या आगे करेंगे ।

शमित्योऽम् ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(५१)

गुरुदत्त की सत्य-प्रियता।

पण्डित गुरुदत्त की सत्य प्रियता तथा सरलता के यों तो बहुत उदाहरण हैं, परन्तु ऋषि दयानन्द के अनुकरण में अपनी भूल मानने का एक उदाहरण बड़ा ही अपूर्व है। ऋषि दयानन्द ने एक बालक के अंगुली पकड़ने पर जैसे अपनी भूल स्वीकार कर ली थी, उसी प्रकार ब्राह्म समाज मन्दिर में विवाद होते हुए पण्डित गुरुदत्त ने अपनी निर्बलता को मान लिया। विपक्षी ने विवादास्पद विषय पर एक वेदमन्त्र, अपनी पुष्टि में पेश किया। पण्डित गुरुदत्त में सामर्थ्य तो था कि विपक्षी को उलझन में डाल दें परन्तु उन्होंने कहा—"मैंने इस पर विचार नहीं किया, मुझे विचार का अवसर दीजिए।"

गुरुदत्त के शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हैं। लाहौर में उन की योग्यता का लोहा बड़ों बड़ों ने माना था। जो जिस भाषा में शंका करता उसे उसी भाषा में उत्तर मिलता था। पण्डित गुरुदत्त के मित्रों में से जिन पर उन का आत्मिक प्रभाव पड़ा उन्होंने शास्त्रार्थ में कभी धोखे से काम नहीं लिया। आज कल मेरे विरुद्ध शोर मचाया जाता है कि मैं शास्त्रार्थों का विरोध कर के आर्य्य समाज की उन्नति में बाधक हो रहा हूं। मैं सुनता था कि लोक में यह प्रसिद्ध किया जाता है कि यतः मुझ में स्वयम् शास्त्रार्थ की योग्यता नहीं इस लिए अपनी निर्बलता को छिपाने के लिए औरों को भी शास्त्रार्थ से रोकता हूं। मैं यह सब गप्प ही समझता था, परन्तु जालन्धर आर्य्य समाज के गत वार्षिकोत्सव में पता लगा कि यह गप्प नहीं प्रत्युत सचमुच ऐसा किया जाता है। जालन्धर में मुझे राय ठाकुरदत्त धवन जी मिले। मेरे पहुंचने से एक दिन पहले वह सज्जन दे चुके थे। मैंने उन से हंसते हुए कहा—"राय साहेब! सुना है आप के चेले मेरे लाहौर वाले व्याख्यान को तोड़ मरोड़ के मुझे आड़े हाथों ले रहे हैं।" राय साहेब ने उत्तर दिया "मैंने भी अपने सज्जन में आप के विचार की खूब ख़बर ली है।" मैंने कहा—"राय साहेब! तब आप भी बिना जाने अनर्थ कर रहे हैं क्योंकि मैं धर्मपूर्वक शास्त्रार्थों के कभी विरुद्ध नहीं हुआ। मैं तो आज कल के हठ पूर्वक वितण्डावाद के विरुद्ध हूं जो विधर्मियों के अनुकरण में आर्यों ने भी आरम्भ कर दिया है, और जिस से सचाई और धर्म को हानि पहुंचती है।" श्री राय साहेब ने उत्तर दिया—"भाई! तुम शास्त्रार्थ की ज़रूरत को क्यों समझो। तुम ने न कभी शास्त्रार्थ किया और न उस के लोभ को समझ सकते हो!" मैंने कुछ कड़ा उत्तर दिया जिस के लिए अब क्षमा माँगता हूं। मैंने कहा—"यदि आप की यही समाज विद्या है तो मालूम होता है कि आप ने अभी आर्य्य समाज में जन्म लिया है। अभी आप पर नई जवानी चढ़ी है, इस लिए खूब शास्त्रार्थ कीजिए।" श्री रामकृष्ण जी ने कहा—"राय साहेब! क्या ग़ज़ब करते हो। मुंशीराम जी ने कभी शास्त्रार्थ नहीं किया! आप कहां रहते थे? इस पर राय साहेब ने लाला लज्जूराम का पता पूछा और नमस्ते कह कर चल दिए।

गुरुदत्त के जीवन से प्रभावित उन के मित्रों के शास्त्रार्थ आज कल के शास्त्रार्थ वीरों को सादे सूखों के प्रतीत होते हैं। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि जब शायद १९०८ वा १९०९ ई० के नवम्बर में मैंने मौलवी सनउल्ला के साथ मुअहिसा किया था तो नीचे से बड़े बड़े वर्तमान सिद्धान्त वादियों के मुंह से यह शब्द निकलते थे—"कैसे भोले हैं। भला इस चालाक के साथ ऐसी सादगी से काम चलेगा?" सरलता से कुछ काम चला वा नहीं इस की साक्षी उस समय के उपस्थित सज्जनों से ही मिल सकती है।

मैं फिर दोहराता हूं कि जिस प्रकार के शास्त्रार्थ अयोग्य आर्यसन्यासी प्रचारक पेट के लालच से आज कल करते हैं उसे से लाभ के स्थान में बहुत बड़ी हानि पहुंच रही है।

पण्डित गुरुदत्त के कार्यों का वर्णन इस लेख माला में आगे भी कहीं कहीं आवेगा परन्तु उन की एक योग्यता का वर्णन यहां आवश्यक है। अपनी मृत्यु के एक वर्ष पहले तक पं० गुरुदत्त ही दयानन्द कालिज के लिए धन एकत्र करने के अद्वितीय साधन थे और इस कालिज की उन्नति का बड़ा आधार उन पर था परन्तु आज उस संस्था में उन का नाम लेवा भी कोई नहीं, सच्चे शास्त्रार्थों के वह भीष्म थे परन्तु आज इस को कोई जानता भी नहीं। किन्तु एक काम है जिस पर से गुरुदत्त का नाम मिटाने की शक्ति किसी व्यक्ति में भी नहीं है, वह वैदिक मैगज़ीन के तीन अंकों के लेख हैं जिन्होंने फ्रान्स और इंगलैण्ड तक में हल चल मचा दी थी। जब जीवात्मा विषयक, इन का पहला लेख निकला था तब जालन्धर के बड़े योग्य अंग्रेज़ीदानों को भी उस के समझने के लिए चार बार उस लेख की आवृत्ति करनी पड़ी थी और अब तक योरप और अमेरिका में आर्य्यसमाज के उच्च विचार पहुंचाने का, गुरुदत्त के लेखों के अतिरिक्त अन्य, कोई साधन नहीं है। जो उपनिषत् व्याख्या का कम पण्डित गुरुदत्त ने अंग्रेजी में आरम्भ किया था उस को भी आगे ले चलने वाला कोई उत्पन्न न हुआ! वैदिक मैगज़ीन का नाम मात्र पुनर्जीवन किया गया, परन्तु उसे सच मुच वेदों का प्रचारक बनाने में अभी बड़ी मंजिलें पड़ी हैं, जिस में बड़ी उत्तरदायिता मेरी ही है।

(मुन्शीराम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीन नौका विज्ञान

क्षुद्रायमध्यसाभीमा चपला पटलाऽभया
दीर्घापत्रपुटा चैव गर्भरा मन्थरा तथा
नौकादशकमित्युक्तं राजहस्तैरनुक्रमम् ।

ये तो साधारण नौका ये हैं जिन में से मन्थरा बड़ी ज़बर होती है। जो समुद्रों में ही चला करती थीं।

मन्थराऽभरतोयास्तु तासामेवाम्बु

विशेष नौकाएं:— यौगतिः

नाम	लम्बाई हाथ,	चौड़ाई हाथ,	ऊंचाई हाथ,
१ दीर्घिका	३२	४	३½
२ तारणी	४८	६	४½
३ लोला	६४	८	६½
४ गत्वरा	८०	१०	८
५ गामिनी	९६	१२	९½
६ तरा	११२	१४	११½
७ जंघाला	१२८	१६	१२½
८ प्लाविनी	१४४	१८	१४½
९ धारिणी	१६०	२०	१६
१० वेगिनी	१७६	२२	१७½

इसी प्रकार है उन्नताः—

इस जाति में ५ हैं। उनका परिमाण—

१ ऊर्ध्वा	३२	१६	१६
२ अनूर्वा	४२	२४	२५
३ स्वर्णमुखी	६४	३२	३२
४ गर्भिणी	८०	४०	४०
५ मन्थरा	९६	४८	४८

इसी प्रकार बहुत सा प्रकार प्रपञ्च है।

इसी प्रकार एक ऐसी भी नावें होती थीं जिन में घर बने रहते थे। वे तीन प्रकार की होती थीं

(१) सर्वमन्दिरा (२) मध्यमन्दिरा
(३) अग्रमन्दिरा

"समृद्धा त्रिविधा प्रोक्ता सर्वमध्याग्र-
मन्दिरा"

इस प्रकार इस भोज के युक्तिकल्पतरु की संक्षेपतः समालोचना कर चुके। अब हम पुस्तकों के सारे रगड़े झगड़े को भी समाप्त कर चुके। अब हम आप को पत्थरों के बने प्रत्यक्ष प्रमाणों से परिचय करायेंगे और बतायेंगे कि प्राचीन लोग नौका विज्ञानकी किस उन्नति पर पहुंचकर समुद्रों में विहार करते थे फिर उस के बाद सिंहावलोकन पूर्वक हम इस प्रयत्न को समाप्त करेंगे।

(९)

शिल्प कला

पाठक गण, आप ने पुस्तकों के प्रमाण और यात्राओं के प्रमाण भी खूब विचार लिये और व्यापार विस्तार में भी भारत में कितना ओज फैलाया हुआ था इस का भी परिचय आप ने पर्याप्त कर लिया। अब आपकोभारतीय शिल्पकला का ज्वलन्त प्रमाण दिखानाचाहते हैं।

यह भारतीय शिल्प कला मूर्ति निर्माण कला है जिस में प्राचीन नौका विज्ञान स्थिर रूप से अंकित है। लोग देख कर हैरान हो जाते हैं और नाना प्रकार के संकल्प विकल्प उठा कर स्तब्ध रह जाते हैं।

एजेन्टा के मन्दिरों में नाना प्रकार के सामुद्रिक भीषण दृश्यों के चित्र खींचे और खुदे हुए मिलते हैं। जिन में से मैं प्रत्येक का वर्णन न कर के सामान्यतः यह कह देना आवश्यक समझता हूं कि इन चित्रों से मल्लाहों की चतुरता और साहस का अपूर्व परिचय प्रत्यक्ष भासता है। एक ऐसी मूर्ति है जिस में कि हाथी घोड़ों की पल्टनों की पल्टनें कतारों में खड़ी हैं और इन के दायें बायें और नीचे पदाति सेनाओं के दस्तों के दस्ते खड़े हैं, और ये सब एक जहाज़ पर सवार हैं। वो जहाज़ किसी द्वीप के किनारे लगाया गया है। द्वीप निवासी भयंकर जंगली लोग भीषण रूप से युद्ध करने पर डटे हुए हैं। बड़ा भारी संग्राम उपस्थित हो गया है। वीर भारतीय योद्धा पराक्रम से जान तोड़ कर लड़ रहे हैं और द्वीपान्तर का विजय कर रहे हैं।

मन्दिरों के पुजारी लोग कहते हैं कि यह स्मारक उसी विजय राज पुत्र का है-जो लंका में राजाज्ञापूर्वक देशनिर्वासित कर दिया था। जिस का वर्णन पाठक पढ़ चुके हैं। इस चित्र में उस विजय ने लंका को सैनिक बल से किस प्रकार विजय किया था यही अंकित है। अब आप देख सकते हैं कि उस काल में नाविक उन्नति किस पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी थी कि इतना बड़ा सब हाथी घोड़ों का सैन्य लेकर प्राचीन परदेशका विजय करते थे और विदेशीय शत्रु राज्यों को अपने अधिकार में कर लेते थे। उन्हीं द्वीपान्तर विजयी वीरों का अवशेष यह भारत है जो अब लड़ाई के नाम से, मरने कटने के नाम से और विजय के नाम से काँपता है।

(१०)

सिंहावलोकन

भारत के प्राचीन व्यापारको ऐतिहासिक लोग रोम और यूनान के प्राचीन व्यापार के साथ साथ वर्णन करते २ गाया करते हैं। वही व्यापारीय यौवन काल रोम राज्य की पूर्व सत्ता का स्मारक है।

रोम के चतुर्दिगन्त विजय ने उस को विषयविलासी बना दिया भोग बिलास का सब प्रकार का सामान भारत के प्रसिद्ध व्यापारी दिया करते थे। मुख्य व्यापार द्रव्य गरम मसाले अत्तर फुलेल सुगन्धित द्रव्य मूल्य वान् पत्थर मणि मुक्तादि रेशम मलमल रूई आदि थे। यह वही रूई है जिस को देख हेरोडोटसादि यूनानी लोग कहा करते थे कि भारत में पेड़ों पर भी ऊन लगती है। सुगन्धित द्रव्यों का खर्चा तो रोम में इतना होता था कि सीला की कबर पर २०० तौल गन्ध द्रव्य फैंका गया था। इस सम्बन्ध की मर्यादा केवल व्यापार योग्य द्रव्य पर ही नहीं थी परन्तु मानुष व्यापार पर भी इस का बड़ा प्रभाव पड़ा। विल्सन् स्मिथ कहते हैं कि तामील राजों के देहरक्षक यवन म्लेच्छ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युद्ध के अस्त्र शस्त्रों से विभूषित होते थे। पाण्ड्य राजों की सेनाएं रोम के निवासियों की बना करती थीं। रोमन सिपाही पाण्ड्य राजा के द्वार की रक्षा करते थे।

उस समय का एक कवि भी वर्णन करता है—कि पाण्ड्य देश की सेना बड़ी भयंकर है तम्बू लगे हुये हैं जिन के दरवाजों पर यवन सेना का कड़ा पहरा है।

इस को न केवल विदेशी लोग ही एक सुर से स्वीकारकरते है परन्तु अपने प्रामाणिकलोग भी ऐसा ही कहते हैं। प्राचीन साहित्य ग्रन्थों में राजाओं की या रानियों की सहेलियों तथा वीर परिचारिकाओं को यवनी नाम से पुकारा जाता था। इन के हाथ में धनुषबाण और कमर में तलवार हुवा करती थी। और इसी वीर वेश में ये स्त्रियें राजा के साथ जंगलों जंगल घूमा करतीं थी। इस के अतिरिक्त महाभारत में लिखा है कि राजा युधिष्ठिर के दर्बार मेंरोमक देश वासियों का भी आगमन होता था।

"औष्ट्रीकानन् वासांश्च रोमकान् पुरुषादकान्।" सभापर्व

इसी प्रकार पैतामह वसिष्ठसे में भी आया है कि

"समकोटि पुरी लंका रोमकाः सिद्विदाःक्रमात्"।

इस से पता लगता है कि वहाँ भी हिन्दुओं का कोई तीर्थ था।

रोमक सिद्धान्त ग्रन्थ में (५०५ ई० पू०) वराहमिहिर लिखता है कि:—

उदयो यो लंकायां रोमकविषयेऽर्ध रात्र.सः"

अर्थात् जब लंका में सूर्योदय होता है तो रोम देश (इटली) में आधी रात होती है।

"गिरिसलिलदुर्गकोशउभरुकच्छ समुद्र रोमक तुखाराः।" इत्यादि नाम गिनाये हैं

इसी प्रकार बौद्ध साहित्य में रोमक जातक इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है। इस को और भी पुष्ट करने के लिए हमें वैदेशिक ऐतिहासिकों की प्राचीन सम्मतियें मिलती है।

सिकन्द्रिया के पुस्तकालय के अध्यक्ष अगथरसिड़ीस का नाम ऐतिहासिक प्लिनी डायोडोरस या स्ट्रैबो आदिकों ने बड़े आदर से लिया है। वह कहता है कि मैंने भारत के जहाज़ों को अपने आंखों से देखा है।

इसी सम्बन्ध में बड़ा भारी मुख्यप्रमाण Periplus of Erythracaan See अर्थात् लाल सागर की यात्रा नामक ग्रन्थ है। इस पुस्तक से सारी पर्शियन समुद्र की सामुद्रिक स्थिति का सब भेद खुल जाता है। ये एक प्राचीन व्यापारी का अपनी यात्रा का हाल है। इस यात्रा में पूर्वोक्त सुपारा कल्याण सिन्डिस मुजारिस आदि नाना सामुद्रिक व्यापार के केन्द्रों का भूरि भूरि वर्णन है। टालमी का भूगोल वर्णन इन सब बातों को स्पष्ट कर देता है। इस प्रकार यदि अन्ध कुशन काल के आगे आने वाले गुप्त काल की भी आलोचना करें तो और भी स्पष्ट प्रमाण हमें प्राप्त होते हैं।

इसके लिए सारा तामिल भाषा साहित्य प्रमाण है।

कावेरीपट्टनम्, मणिपल्लवम् आदि बहुत से ग्रन्थ नाना द्रव्य व्यापारों का वर्णन करते हैं।

इसी के साथ एक साहस का कार्य और भी दृष्टि गोचर होता है वह यह जावा सुमात्रा बाली आदि आस्ट्रलेशिया के द्वीपों को बसाना है। इस कार्य में सब से बड़ा हाथ कलिङ्ग देश का है। शायद इसी से महाभाष्य कार कहते हैं कि कलिङ्गः साहसिकः"।

अभी तक जावा बाली आदि द्वीपों की भाषा संस्कृत प्राय ही है। वहां प्राप्त कथाएं रामायण महाभारत के कुछ परिवर्त्तित रूप ही हैं और अभी तक भारतीय वीरों की कीर्त्तिपताका का याद दिलाती हैं।

इसी प्रकार से संक्षेपतः वंग साहित्य ततोऽर्वो चीन काल के व्यापार का उद्भावक प्रमाण है। अब ये कहना साधारण बात है कि चीन से भी हमारा बड़ा सम्बन्ध था। चीन जापान के सब देश हर लोगों के धर्म के अनुयायी थे। बुद्ध महाराज के बचन इन को पीने को मिले थे।

ह्वेनसांग और फाहाईन चीनी यात्री इसी का अन्वेषण करते हुवे नहीं थकते। उस समय के विषय में प्रसिद्ध है कि चीन से आया माल यहां के ब्राह्मण बेचा करते थे क्यों कि उन पर विश्वास लोगों का बहुत ही था।

हम यहां तक कहने को तय्यार हैं कि चीन की धर्म मातृ भूमि भारत ही थी।

प्राचीन साहित्य में चीनां शुक ही रेशम का नाम पढ़ जाना और उस का इतना अधिक प्रयोग आना व्यापार का कितना ज्वलन्त प्रमाण है?। इस प्रकार से भारत की प्राचीन नौका विज्ञान की साधारण आलोचना करते हुवे अन्त में आन पहुंचे हैं। सारे के विषय में ये कहना कि कौन सा काल उन्नत तथा और कौन सा अवनत था बड़ा कठिन है। परन्तु इतना अवश्य कहूंगा कि सारे इतिहास भर में भारत का सब से अवनत काल वर्त्तमान काल है। और सब मध्य काल को अतिक्रमण कर के उन्नत काल भारत का प्राचीन वैदिक काल है। क्यों कि आज कल भारत का न कोई जहाज़ है न कोई बेड़ा है यदि है तो छोटी मोटी डोंगिया हैं सो भी शायद ही भारत के निवासियों की अपनी होंगी। इस लिए अब के काल पर भारतीय जनता किसी मुंह से भी स्वत्व नहीं जमा सकती। मध्य काल में पतवार तथा पालके सहारे चलने वाले जहाज़ों की भरमार थी। इस से भी पूर्व काल में यन्त्रयुक्त नौकाएं मिलती हैं। वैदिक काल में १०० पतवार और ६ एंजिनों वाले जहाज़ और विदेश का विजय करने वाले साहसिकभी मिलते हैं। इस से हमारी अपनी तुच्छ बुद्धि में प्राचीन काल ही सर्वोन्नत भारतीय सामुद्रिक उन्नति का काल मिलता है।

आगे अनुशीलन करना और विचार करना तथा सम्मतियें घड़ना पाठकों के अपने विवेक पर निर्भर है। हम अपनी राम कहानी यहाँ ही समाप्त करते हैं और पाठकों को प्रणाम करते हुवे मौन वृत्ति धारण करते हैं।

इतिशम्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्नातकों के प्रति सन्देश

(ब्र० राजेन्द्रबल ८ अ० लिखित)

श्री० पूज्यपाद आचार्य जी !
श्री शिक्षक वर्ग ! प्रिय भ्राताओ !
तथा मान्य स्नातको !

आज का दिन जन्मोत्सव का है, इस से अधिक और क्या खुशी होगी कि आज इस कुल के जन्मोत्सव के दिन श्री० कुल पति आचार्य्य तथा अन्य सहयोगी उपाध्यायगण अपने अपने कर्त्तव्यों को ठीक रूप में समझते तथा दिल से अनुभव करते हुए जन्मोत्सव मानने के लिए एकत्रित हुए हैं इस से पूर्व भी ३ जन्मोत्सव देखते २ व्यतीत हो गए जिन में कि हम सब मिल कर अपने कर्त्तव्यों के स्मरण में कटिबद्ध होते थे जिस का परिणाम कुछ अंशों में हो कर बहुत एक अंशों में नहीं भी होता था। इस वर्ष बड़े सौभाग्य की बात यह है कि श्री० आचार्य्य जी ने हमें प्रति दिन अपने सुधामय उपदेशों से हमारे हृदयों को अपने हृदय से मिला कर हमारे संतप्त और निराश्रित हृदयों को सालम्ब बनाने का क्रिया रूप से आदर्श रखा है। हमें भी हृदय से अनुभव होता है कि अब हमें कभी भी प्रेम मय सम्बन्ध के भूलने का अवसर भूल कर भी प्राप्त न होगा। श्री आचार्य जी अब आगे के लिए भी हमें इन्हीं प्रेममय उपदेशों से पितृसम शिक्षा देते हुए इस आदर्श कुल के पिता पुत्र सम्बन्ध को स्थिर रक्खेंगे और हमें अपने कर्त्तव्य से कभी भी च्युत न होने देंगे। इस परम कृपा के लिए हम श्री पूज्यपाद जी के प्रति अत्यन्त विनय से कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं।

इस के अतिरिक्त प्रिय भाइयो! आजके दिन हमारा और भी कर्त्तव्य है। हमें विश्वास है कि यह पवित्र तथा आदर्श कुल इस प्रकार के कर्मयोगी कार्य कर्त्ताओं को पैदा कर रहा है और देश के उस पुण्यमय कार्य भार को करने में सफल होगा जो कि हमारे प्रत्येक छोटे तथा बड़े भाई के हृदय में समय २ पर बड़े प्रबल वेग से जाग उठते हैं। देश का हमारे ऊपर ऋण है, मातृ भाषा का हमारे ऊपर ऋण है, कुल माता का हमारे ऊपर ऋण है। इन सब का पूरा करना हम सब का परम कर्त्तव्य है, इसे अच्छा प्रकार जानते हैं कि आज भारत के कोने २ में अविद्या का राज्य है। देश के पुत्र नाना प्रकार के कष्टों से पीड़ित हैं, इन कष्टों को दूर करना प्रत्येक देश भाई का कर्तव्य है। हमें यह विश्वास है कि इस कुल का प्रत्येक पुत्र इन परम कर्त्तव्यों में कभी भी पीछे न रहेगा। इन्हीं आदर्श उद्देश्यों को मन में रख कर हम कुल वासियों का प्रेम सन्देश मैं स्नातकों को सुनाना चाहता हूं। स्नातक भी हमारे इन सन्देशों को छोटे भाई का प्रेम सन्देश समझ कर ही अथवा हमारे प्रेमानुरोध के कारण ही ध्यान दें।

हमारे मान्य स्नातक, हमारे भाई स्नातक, जहां भी रहेंगे देश के जिस स्थान पर भी विद्यमान होंगे, वहां ही इस कुल माता के ऋण को ध्यान में रख कर कार्य करेंगे। ग्राम२ नगर२ में एक छोटा सा स्वतन्त्र शिक्षणालय अवश्य खोल कर देश के निर्धन, गरीब, निस्सहाय, अनाथ, अशिक्षित बच्चों को सरस्वती माता का उपदेश देंगे। उन को विद्यासम्पन्न करेंगे, उन्हें दुःखों के जाल से छुड़ाएंगे और नाना प्रकार के दारुण भयङ्कर तथा घातक पञ्जों से उन की रक्षा करेंगे।

देश में फूट का बीज घर २ में बोया हुआ है, जाति२ से लड़ती है, भाई भाई से लड़ता है, इस प्रकार का अत्यन्त विभीषण कांड सम्पूर्ण देश में फैला हुआ है। स्नातकों के प्रति हमारा यह दूसरा प्रेम सन्देश है कि वे जहां भी जायंगे, जहां भी रहेंगे, और जहां भी खायेंगे, जहां भी उठेंगे, और जहां भी बैठेंगे, वहां इन सब प्रकार के द्वेषों को शान्त करने में कभी भूल कर भी भूल चूक न करेंगे। पतित जातियों को जो कि हमारे देश की हमारे धर्म की जनता का बड़ा भाग हैं और जो चिरकाल से हम से बिछुड़ा हुआ था, को प्रेम से अपने हृदय से लगाएंगे और सम्पूर्ण देश में गरीब से धनाढ्य तक मूर्ख से विद्वान् तक समस्त देश निवासियों को जातीयता के सूत्र में बांधने का यत्न करेंगे।

तीसरा सन्देश हमारे प्रिय स्नातकों के लिए यह धर्म का सन्देश है, जिस सच्चे सनातन तथा वैदिक धर्म की दीक्षा को इस पवित्र कुल माता के घर से, कुलपति के हाथों से लेकर चले हैं, उस परम पवित्र सनातन धर्म के अमृत को वे देश२ के घर२ के कोने २ में पिलायेंगे और यथेच्छ पिलायेंगे। उन दीन धर्म हीन दयनीय भाइयों को प्रेम से, नहीं २, हार्दिक प्रेम से अपना सच्चा भाई जान कर फिर से धर्मामृत पिला कर उन का पुनरुद्धार करेंगे और उन को पराए हाथों में पड़ कर पराया बन जाने से सर्वदा और सर्वथा बचाएंगे। ऐसे पवित्र कार्य्य में जान जाय तो जाय, प्राण पखेरू हों तो हों, परन्तु अपना सनातन धर्म न जाय, अपना धर्म भाई न जाय, स्वयं प्रेम से उन पर न्योछावर हो जायें और हमारे लिये, नहीं २ सम्पूर्ण संसार के लिये आदर्श बन कर दिखायें।

चौथा सन्देश मान्य स्नातको ! हमारा यह है कि अभी तक १४ या १३ साल रह कर इस कुल में जो पवित्रदीक्षा सदाचार की आपने पाई है उस आचार्यकृत आचार शिक्षा का सच्चा आदर दिल से अनुभव करते हुए कहीं भी इस कुल के यश को कलङ्कित न होने दें; प्रत्युत समस्त संसार में आप जहां भी रहें आप देश भाईयों को 'येन केन प्रकारेण' सदाचार सन्देश सुनाते ही रहें हमारा उद्देश्य इतना विस्तृत है कि जब तक ग्राम २ में कुलपति आचार्यों की पुण्यमय कुटीरों न बनेंगी, प्रत्येक देश का बालक सच्चे गुरु के नीचे रह कर सदाचार की दीक्षा न लेगा, स्थान २ पर गुरुकुल शिक्षा से निकले पवित्र जीवनमय विद्यार्थी देश भर में न फैल जायंगे; तब तक उद्देश्य पूर्ण न होगा। इस लिए हमारे इस सन्देश को भी आप अपने पवित्र हृदय-कमलों में स्थान दें।

प्यारे भाइयो ! इस को बालक वचन कह कर टालने का प्रयत्न न कीजिए। यह हमारे प्रेम भरे सन्देश हैं। इन्हीं से आप हमें दूर स्थित भी समीप जानिए। हमें कभी न भूलिए, हम सदा आप की मंगल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कामना करते हैं।

संपूर्ण सभ्य संसार की आंखें हम पर ही लगी हुई हैं परमात्मा बल दें कि हम अशान्त संसार में शान्ति फैलाने के उत्तम साधन हों। यद्यपि इस कार्य में बड़ी २ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा परन्तु घबराने की बात नहीं:—

अति धीरता के साथ अपने
कार्य में तत्पर रहो—

आपत्तियों के वार सारे
वीरवर बन कर सहो।

सब विघ्न भय मिट जांयगे
होगी सफलता अन्त में—

फिर कीर्ति फैलेगी पुरानी
एक बार दिगन्त में।

परन्तु हमारे साथ ही अब तक आप का कर्त्तव्य अधिक है चूंकि आप ही अनुभवी हो कर हमारे लिए बाद को पथ दर्शक का का काम देंगे। हमारे यही प्रेममय वाक्य हैं। वह दिन शुभ होगा जब कि एक समय आयगा कि सम्पूर्ण स्नातक भावी और भूत हमारे, नहीं नहीं अपने ही उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करते हुए इसी माता की गोद में प्रम पूर्ण हृदयों से गले से गले मिलेंगे।

यही दिन भावी हर्षोत्सवों की नींव है।

प्रिय भ्राताओ! दो, एक शब्द मुझे आप को भी कहने ही हैं कि हम जिन महान् उद्देश्यों को मन में रख कर जिन प्रेम सन्देशों को बड़े उत्साह से उनके पल्ले बांध रहे हैं वही उद्देश्य कुछ ही वर्षों बाद हमें भी पूर्ण करने हैं। हम को उन के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। यद्यपि हम अपने उद्देश्यों से समय २ पर विचलित हो जाते हैं परन्तु फिर भी कोई चिन्ता की बात नहीं क्यों कि हमारी यह पुण्य भावनाएं हमें उत्साह देंगी। हमारे कर्म शील स्नातक हमारे हृदयों में साहस का संचार करेंगे। हमारे शिक्षक अध्यापक, उपाध्याय वर्ग हमारे हृदयों को दिन दुगना रात चौगना प्रोत्साहित करेंगे। हमारे प्रेममय पितृ समाचार्य अवश्य मेव भावी कष्टों के सहने और भावी दुस्साध्य कर्त्तव्यों को पालन करने के लिए हमें अवश्य योग्य बनावेंगे। हमारी सब प्रकार की मानसिक और हार्दिक व्यथाओं को सर्वथा दूर कर के हमारे अन्दर पुण्य, हर्ष और प्रेम का प्रवाह बहाएंगे। परम पिता परमात्मा इन सब उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए हमें बल देंगे हमारी कुल माता ही आशा भूमि हमारे नवीन हृदयों का एक मात्र तीर्थ होगी हमारी परम पावनी वीर प्रसविनी देशमाता कार्य क्षेत्र में आधार होगी। वैदिक धर्म हमारा आत्मा होगा। अब बताइये शेष रहा ही क्या! अन्त में हम जगदीश्वर परम पिता से हार्दिक प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे स्नातकों को इन सन्देशों के पूर्ण करने में सहायता दें, हमारे शिक्षकों को सब प्रकार का बल दें हमारे आचार्य को बल दें और अन्त में हमें भी बल दें कि सब अपने २ उच्च उद्देश्यों को पूर्ण करने में कृतकार्य हों।

———

अत्यन्त आवश्यक

सूचना

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के मुख्याधिष्ठाता जी की तरफ़ से सूचना आई है कि १८ माघ के प्रचारक में उत्सव की तिथियें २९-३०-३१ जनवरी प्रकाशित हुई थीं। परन्तु अब तिथियें बदल दी गई हैं। शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र का उत्सव अब २८ फरवरी से २ मार्च तक होगा।

———

गुरुकुल जन्मोत्सव

में

(पठित कविताएं)

कुलवन्दना

(१)

प्राणों के देने वाली गुरुकुल तू मेरी माता,
अमृत पिलाने वाली गुरुकुल तू मेरी माता।

(२)

जगपावनी है गंगा तनको निल्हाने वाली
तेरा प्रवाह मनको अठखेलियां खिलाता।

(३)

तेरी विजयपताका उस ओम् की ध्वजा को
मन मेरा देख माता फूला नहीं समाता।

(४)

गोदी में तेरी आकर, विद्या का दूध पीकर,
इस दोषि देह को भी मैं धन्य हूं मनाता।

(५)

भारत के पादसेवी, तेरे सुपूत होंगे,
बूढ़ा सुनो हिमाचल हंसकर यही सुनाता।

(६)

निजदेश और तेरी सेवा में मातु अपने,
रख देंगे वे सुभागे कर खण्ड खण्ड गाता।

(७)

बादल उमड़ने को है, छाने को है अन्धेरा,
बत्ती बने जलेंगे, तेरे सुपूत माता।

(८)

भारत की एक आशे पुत्रों की पापनाशे
यह सीस है तुम्हारे चरणों में आज गाता।

———

फूल और भौंरे

गुरुकुल—जन्मोत्सवार्थ।

कभी देश भारत हरा था भरा था।
बड़े फूल फल पत्र सब से सजा था॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यही ढंग ससार का तब बना था।
जगत् के सभी भौंरों से ये गुंजा था ॥

बची किन्तु अब एक ही फूल क्यारी।
बुला भौंरों को कह रही है पिकारी
॥ १ ॥

सुनो भौंरों तुम्हो रसों को हमारे।
हैं ये फूल, ये दिल हैं कोमल हमारे ॥

रसों से भरे देह हैं ये हमारे।
भरो पेट इन से दुलारो हमारे ॥

न मौसम वसन्ती कहीं बीत जावे।
तुमें भूख रस के बिना ना सतावे ॥ २॥

कभी फूल को भूल हो तुम जो जाते।
वृथा शक पर जाय हो दुःख पाते ॥

यहां पर हैं काँटे तुम्हें जो सताते।
इसें दोषी फिर तुम वृथा ही बनाते ॥

सुनो नोक भी काटों की काट देंगे।
सभी कांटों को फूलों से ढ़ांक लेंगे ॥ ३ ॥

न अब आते आते तुम्हें वे चुभेंगे।
सभी औरही फूल तुम को मिलेंगे ॥

मगर तुम भी मानो कि रस ही पियेंगे।
न फूलों को हम भूल,भटका करेंगे ॥

चलो भूल जाओ गई बीती बातें।
नया साल है, हों नई सारी बातें ॥ ४ ॥

ये देखो है बस द्वार रस का खुलाहो।
चलो प्यारो हम फूलोंपर तुम सदाही ॥

चलो अन्त में यहां से रज को उठा ही।
इसे दूर के भौंरों को दो खिला ही॥

भटकते फिरा रे जो हैं झाड़ियों में।
फसे जो तड़पते हैं उन झाड़ियों में
॥ ५ ॥

वहां काटे केवल ही तुम को मिलेंगे।
परीक्षा तुम्हारी वहाँ सब करेंगे ॥

करो इस लिये प्रण कि ऊपर उठेंगे।
कि मन और तन को बली हम करेंगे ॥

तुम बालभौंरो वो बल देश देगा।
सदा दुःख में बस वही साथ देगा॥ ६॥

ये मौसम वसन्ती हमें है खिलाती।
तुम्हें प्रेमगङ्गा में जो आ बहाती ॥

मगर साल में एक ही बार आती।
पकड़लो इसे जो कि है भाग जाती ॥

करो तुम सभी फिर कि "हम हैं तुम्हारे"
सुनो हम भी तो हैं तुम्हारे तुम्हारे
॥ ७ ॥

गुरुकुल जन्मदिन

ये आज का दिन सभी दिलों में
नया हि जीवन दिखारहा है ॥

खिलीं हैं आशा खिले हैं मुखड़े,
नया ही रंग कोई छारहा है ॥ १ ॥

वो कौनसा दिल है जिसमें प्यारो,
न आज आनन्द उमड़ रहा हो॥

नई ही आभा से यह हमारा,
प्रसून बन लह लहा रहा है ॥ २ ॥

नया ही व्रत का ये दिन है भाई,
नया ही अब काम करना होगा ॥

हमारे जीवन की मालिका में,
इक और मोती ये आरहा है ॥ ३ ॥

हरेक शाखी को प्रेम पुष्पों से
अब माता का भरना होगा ॥

इसी की पूजा का ये समय,
ये याद हम को दिला रहा है ॥ ४ ॥

प्रकाश कुल माता आज तुझको,
हैं मिलके सब करके प्यारे भाई ॥

हरेक खिल खिल के फूल बिखरो,
अपार लीला को गा रहा है ॥ ५ ॥

कुल भूमि—सन्देश,

इस कुल भूमि का ये इक सन्देश है आज सुनाना।
साज सजे सब आज बसन्ती,
शीतल सुरभि समीर।

फिर भी ध्यान एक धर किञ्चित्,
होता चित्त अधीर ॥ १ ॥

जड़ चेतन सब मोद झूमते,
समय चित्त अनुकूल।

मेरी पर इस हरी गोद के
पाँच खिलुड़ते फूल ॥ २ ॥

वर्ष चतुर्दश सीस तुम्हारे,
फेरा कोमल हाथ।

इन्हीं फूलों में खिले औ खेलें,
आज खिलुड़ता साथ ॥३.

कर किसलय से देवनदी यह,
नित करती थी प्यार।

वृद्ध पितामय हिमगिरि हंसता,
वत्सल नैन निहार ॥ ४ ॥

गुरु जन की कर्कशता भूलो,
करो न कुछ परवाह।

किसी हृदय में चल कर देखो,
बढ़ता प्रेम अथाह ॥ ५ ॥

नए रंग में नए लोक में,
रखते हो अब पांव।

अपने रंग औरों को रंगना,
यही जननि का भाव ॥ ६ ॥

माता भगिनी कुल बन्धुओं पर,
हो यदि अत्याचार।

तेज़ तुम्हारा दमक उठे तब,
हो खलदल संहार ॥ ७ ॥

सींच रही आँसू से मुखड़े,
जनन भूमि यह आज।

सकल यत्न भर हित साधन उसका,
यही तुम्हारा काज ॥ ८ ॥

कुल-व्रत

(सत्यव्रत १० अ० लिखित)

भारत संसार का आदर्श रहा—किन्तु कब तक ? जब तक कि माया ने भारत को लपेट न लिया, जब तक भारत-वासियों का जीवन भोगों के लिए नहीं किन्तु भोग जीवन के लिए बने रहे। महाभारत का समय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था जब कि भोग विलास ने भारत को घर बनाना प्रारम्भ किया था, तब से भारत में ही नहीं संसार भर में भोगों की प्रधानता हुई और आज तक निरन्तर उस की वृद्धि होती रही।

समय था, जब कि राम ने रावण को राज्य-वृद्धि के लिये नहीं, भोग वृद्धि के लिए नहीं, किन्तु दीन हीन प्रजा के दुःख मिटाने के लिए पराजित किया था। उस समय जर्मनी कीसी तोपें, इंग्लेंड के से जहाज़ तथा गोला बारूद न थे—इस का कारण यह नहीं कि वे असभ्य थे किन्तु इस का कारण उन का सभ्य होना ही था वे इन्द्रियों के दास न थे।

क्या वर्तमान कलाएं सभ्यता की उन्नति को चिताती हैं? क्या बड़े २ चिकित्सालय संसार के सुधार के साक्षी हैं? नहीं, कभी भी नहीं,—यदि इन्द्रियों की दासता मनुष्य का मनुष्यत्व नष्ट करती हैं तो क्या कलाओं का अधिक होना, चिकित्सालयों की ग्राम २ में भरमार इन्द्रियों की दासता का सूचन नहीं करते? ये चीजें आज कल युग को इन्द्रियों की दासता के काल का नाम दे रही हैं। आवश्यकताएं बढ़ाना केवल इन्द्रियों की दासता का साम्राज्य फैलाना है। आज कल का संसार दास बना हुआ है; इन्द्रियों के पीछे आंख मूंद भागा चला जा रहा है; अपने को सभ्य कहता हुआ भी असभ्य है, सुखी कहता हुआ दुःखी नितान्त मूर्खतान्धकार में निमग्न है।

आज राम से शरीर कहां हैं? लक्ष्मण तथा भरत से भाई कहां हैं? निःस्वार्थता कहां है? पितृ-आज्ञा पालन करने की रीति कहां है? सहन शक्ति कहां है?—कहीं नहीं, ये सब आधुनिक सभ्यता के पेट में है। सब आनन्द प्रिय बने हुए हैं, विषयों में आसक्त हैं—कलाएं इनका सब काम करती हैं फिर बताइये उन्हें शारीरिक बल की क्या ज़रूरत? उन्हें भ्रातृ भाव से क्या लेना? उन्हें यातनाएं क्यों सहनी? उन्हें आज्ञा क्यों पालन करना?—उन में आधुनिक सभ्यता ने "स्वार्थ" कूट २ कर भर रक्खा है। इस भयानक राक्षसी ने सब को वश कर रक्खा है। लोगों की आवश्यकताएं बढ़ रही हैं और एक अद्भुत विज्ञान का अविष्कार हो रहा है।

ऊपर कहा जा चुका है कि **जीवन भोग के लिये है** इस मन्त्र ने ही भारत का सत्यानाश किया। आज युरोप का उद्देश्य उस का मन्तव्य यही है। उस का भी नाश होगा यदि वह इस ओर से सावधान न हुआ।

आज हम सुन्दरता के लिये, इन्द्रियाराम के लिये, दूसरों को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिये आंखों पर शीशा चढ़ाते हैं—समय आगया जहां हमें प्रकृति से दूर होना चाहिये था, वे हमारे जीवन के आवश्यक भाग बन जांयगे। 'भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः' की कहावत यथावत् चरितार्थ होगी। पाश्चात्य सभ्यता ने भारत में घर किया हुआ है किन्तु शोक से कहना पड़ता है हमारे कुल में भी कभी २ उस के छोटे २ छुन छुने बजते सुनाई देते हैं। क्या इन छुन छुनों की मीठी--किन्तु मूल से कड़वी-आवाज़ हमें अपनी तरफ़ खींच लेगी? ये बच्चों के लिये हैं। बुद्धिमान् पुरुष इन की तरफ़ ध्यान नहीं दिया करते। ये चीजें ऊपर से मनभावनी हैं। मूढ़ को मुग्ध करने वाली हैं किन्तु कौन जानता है कि इन का परिणाम क्या होगा? देखना, परिणाम इतिहास बता चुका है। जीवन को भोगों के लिये समझने वाली अनेक जातियां संसार में उत्पन्न हुईं किन्तु उन का अस्तित्व मिट गया, उन्हें भोगों ने दबा लिया और सत्यानाश हो गया।

मनुष्य भोगों को अपना हितकर समझता हुआ उन से प्रेम करता है किन्तु भोगों का प्रेम सांप का प्रेम है। भोग जिस से प्रेम करने लगते हैं उसे जीवित नहीं रहने देते।

कल्पना कीजिए आप के चलने के लिए एक ऐसी कला बन गई जिस में आप को पांव उठाने की ज़रूरत नहीं दूसरी ने हाथ की ज़रूरत को मार लिया तो फिर क्या होगा? होगा वही जो ख़ाली आदमी किया करता है—विषय वासना—इन्द्रिय दासता। मैं नहीं कहता कि यह विज्ञान की उन्नति नहीं—उन्नति है, किन्तु कैसी—जो, जहां हमें एक तरफ उन्नत करती है वहां दूसरी ओर कुछ एक को छोड़ इतना अवनत करती है कि अधिकांश विषयी तथा विलासी बन जाता है

मैं कलाओं का प्रतिद्वन्दी नहीं, विज्ञान का प्रतिपक्षी नहीं, न आधुनिक विज्ञान को बहुत उन्नत समझता हूं—आधुनिक विज्ञान बहुत उन्नत है किन्तु संसार की अवस्था हमें बताती है कि विज्ञान इस समय ससार को उन्नति की तरफ़ नहीं ले जा रहा-संसार का इस से भला नहीं। क्योंकि विज्ञान को भोगों का सहायक बनाया जा रहा है।

यह विज्ञान उसी तरह का है जैसे विद्वान् चोर का विज्ञान, अर्थात् जेसे एक विद्वान् चोर उसी विद्या को चोरी में लगा सकता है जिस से दूसरा अपना सुधार कर सके, उसी भांति आधुनिक विज्ञान आधुनिक सभ्यता से मिल कर हमें मार्ग भ्रष्ट कर रहा है। प्राचीन काल में लोग विज्ञानी थे-विज्ञान यही था—उन का विज्ञान आधुनिक विज्ञान से किसी तरह कम न था किन्तु वह विज्ञान तात्कालिक सभ्यता से मिल कर मनुष्य की आत्मा को उन्नत करता था। उसे वह विज्ञान पुरुष को क्रिया शील बना कर उसे उन्नति का मार्ग दिखाता था, वह विज्ञान मनुष्य को क्रिया शीलता सिखा कर प्रकृति में लिप्त न करा कर ब्रह्म परमात्मा में लीन करता था। उसे शारीरिक बंधन से मुक्त कराता था।

अब युक्ति देने की अधिक आवश्यकता नहीं रही। बात साफ हो गई। कलाओं का बढ़ना अथवा आवश्यकताओं का अधिक होना केवल इन्द्रियों की दासता है। क्या पाश्चात्य सभ्यता हमें यही सिखाती है? यह बुरी मौत मरना है, देखना इस से सदा बचे रहना!

मेरे कथन का तात्पर्य्य यही है कि संसार मदमत्त की तरह "भोगों" को ही जी-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वन का चरम लक्ष्य समझता हुआ उस की तरफ एक सांस भागा चला जा रहा है, इस समय उस की पूंछ का पुछल्ला हो रहने की आवश्यकता नहीं किन्तु आवश्यकता उस के प्रवाह को सर्वथा रोकने की है।

"मैं तो यहीं पर जम कर बैठूंगा। यदि गुरुकुल को चलाने के लिये सब सामान मिलते गये तो यह संस्था चलती ही रहेगी परन्तु यदि आर्य्यजाति की उदासीनता तथा असावधानी के कारण इस आश्रम को बन्द करना पड़ा तो मुझे यह संतोष तो हो जायगा कि आदर्श को चलते हुए हमारे प्रयत्न की समाप्ती हुई"। ये आचार्य्य के शब्द हैं।

अब आसुरी भावों का नाशक आचार्य्य ज्ञानरूपी सूर्य्य सदा चमकता रहेगा। निर्बलता के घनघोर बादल कभी भी उस का मुंह न छिपा सकेंगे, विषैले विचारों वा कर्मों के कीटाणु अपनी सन्तति न बढ़ा सकेंगे। हमारे आचरणों की छोटी २ त्रुटियों की ताक में बैठने वालों के जी ठण्डे होंगे। हम अपना कर्तव्य पहिचानेंगे। लोगों के आक्षेप बन्द होंगे। भाइयो! इतना लाभ सोच कर क्या हम आचार्य्य को-पिता को विश्वास दिला सकते हैं कि किसी सहायता की आवश्यकता नहीं। हम अपने कुल के हेतु दुःख भोग सकते है, कष्ट उठा सकते हैं किन्तु इस की सत्ता में परिवर्तन नहीं आ सकता।

मुझे बड़ा आश्चर्य होता है जब मैं अपने भाइयों को इस बात पर विवाद करते सुनता हूं कि 'इस चीज़ के बिना हमारा गुज़ारा कैसे हो सकता है?'

क्या इसी देव भूमि में हम से ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य व्रत का साधन नहीं करते रहे? क्या इसी जल वायु में कौपीन धारी ब्रह्मचारी नहीं फिरते रहे? फिर क्या कारण है कि हमारी आवश्यकताएं कम नहीं हो सकतीं! हो सकती हैं, यदि इन्द्रियों के पीछे दौड़ना छोड़ कर उन्हें अपने पीछे चलाया जाय, उन का दास न बन कर उन्हें अपना दास बनाया जाय, पाश्चात्य सभ्यता को असभ्यता मान वास्तविक सभ्यता को आदर्श बनाया जाय!

भाइयो! हमें आर्य्य-जाति आवश्यकताएं कम करने के लिए नहीं कहती, आचार्य्य नहीं कहते किन्तु यह आवाज़ हमारे व्रत की है। ब्रह्मचर्य्य व्रत, पवित्र व्रत हम से सादा जीवन व्यतीत करवाना चाहता है, यही हम से उत्तर चाहता है कि हमारा जीवन कैसा है?

आचार्य्य ने अब हमारे पास रहने का प्रण किया है—वे बाहर धन के लिए नहीं जायंगे आर्य्य-जाति धन नहीं देगी फिर क्या हमारा कुल टूट जायगा? नहीं २ वही सौभाग्य का समय होगा जब कि हमें आवश्यकताएं घटाने का सुअवसर प्राप्त होगा। सम्भवतः इस ज़माने में मैं भूल कर रहा हूं किन्तु मैं समझता हूं कि गुरुकुल का उच्च उद्देश्य उसी दिन पूर्ण होगा जिस दिन हमें भिक्षा से पेट भरना पड़ेगा।

प्यारे भाइयो! जब विश्व कोष से असम्भव शब्द को निकाला जा सकता है तब क्या सादा रहना कोई बड़ी बात है? क्या कपड़े कम पहरना कोई कठिनता है? जिन के आदर्श दयानन्द ने जाड़ों को अंगीठे में बिताया हो, कई दिन क्षुधा को सहन किया हो; जिन के आचार्य्य ने अतुल सम्पत्ति को कोना दिखाया हो क्या वे बिना मिठाई खाये नहीं रह सकते? क्या उन के भी जीवन सादे नहीं हो सकते? यदि हो सकते हैं तो क्या अभी उस समय की प्रतीक्षा हो रही है जब कि आर्य्य-जाति का कोरा जवाब आ जायगा?

'हमें अमुक चीज़' चाहिये, नहीं तो हमें आनन्द कैसे होगा' बस, यही दासता के भाव हैं। यदि दासता से छुटकारा पाना है—यदि स्वतन्त्र होना है तो इसी स्वतन्त्रता प्राप्त करने की आवश्यकता है। यही वास्तविक स्वतन्त्रता है। जब आदमी इन 'आवश्यकताओं से स्वतन्त्र है तो उसे कोई भी बन्धन नहीं जकड़ सकता। यही 'आवश्यकताएं' मनुष्य में स्वार्थ का भाव लाती हैं, इन्हीं से मनुष्य में एक दूसरे का खून चूस लेने की पैशाचिक प्रवृत्ति उठती है। जितना आवश्यकताओं को बढ़ाया जायगा उतना ही वास्तविक उद्देश्य को पकड़ने में अन्तर होता चला जायगा।

मेरा प्रतिवाद आधुनिक आवश्यकताओं में 'आवश्यकता' बुद्धि रख कर प्रवृत्त है। वास्तव में ये आवश्यकताएं आवश्यकताएं नहीं हैं. आवश्यकता 'परमात्म प्राप्ति' की है। जितना पाश्चात्य सभ्यता पांव पसारेगी, उतना ही देश में पाप बढ़ता चलेगा। मेरा कथन नहीं कि आज कल की कर्मण्यता नष्ट हो जानी चाहिए मनुष्य को कर्म न करना चाहिए; कर्म, करना चाहिए किन्तु चोरी करना भी तो एक कर्म है। "कर्म करने" का संसार तात्पर्य भूल गया है। आत्मा की उन्नति के लिए कर्म करना है, न कि माया में फंस कर भोग योनियों का आनन्द लूटने के लिए।

भाइयो! वह दिन चिरस्मरणीय होगा, जिस दिन हम आराम को सर्वथा त्याग देंगे—वह आराम जो झूठा आराम है—उस से कतई दूर हो जायेंगे, थोड़े से थोड़ा काम—आवश्यकताओं को कम कर—अपने आप करने लगेंगे।

आज का दिन 'कुल-स्थापन का दिन है। इसी प्रकार के दिन, चार पांच हम पहले बिता चुके हैं किन्तु क्या वे हम में कुछ परिवर्तन कर गये? यदि नहीं तो क्या क्षणिक आनन्द के लिए ही हम यहां एकत्रित होते रहे हैं? क्या आज का दिन भी उन्हीं दिनों की तरह बीत जायगा? ये प्रश्न हैं जिन की मीमांसा करना हम में से प्रत्येक भाई का कर्तव्य है। आज के चिन्तविचारों को हमें कार्य्य रूप में परिणत करना चाहिये। हमारा रास्ता साफ होता है हम अपने आप उस में कांटे ला बिखेरते है, हमारा उद्देश्य महान् है हम उसकी ओर न देख कर उसे छोटा समझ बैठते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परन्तु हम में सब शक्तियें विद्यमान् हैं हम अपने आप अज्ञानवश शक्ति हीन बन बैठते हैं।

यदि इस बात में कुछ भी सत्यता है कि आज के दिन ब्रह्मचारियों की आत्माएं बोला करती हैं, यदि यह बात सत्य है कि हम सब भाई २ हैं और यदि यह बात भी सत्य है कि हम में से प्रत्येक की आत्मा 'कुल' से सम्बद्ध है तो मेरे दो चार शब्द अवश्य फल लायंगे और फल लायंगे। हमारी अत्युत्कट इच्छाएं दब जायंगी, प्रलोभन छिन्न भिन्न हो जायंगे तथा हमारे अधिष्ठाता अध्यापक हमारे सन्मुख कोई ऐसा प्रलोभन न आने देंगे जिस के आने की उन से सम्भावना की जा सके।

पूज्य बुजुर्गो! हम आप लोगों की प्रतिकृतियें हैं, प्रतिकृति की सुन्दरता के लिये मूलवस्तु का सुन्दर होना अत्यावश्यक है।

कुलगीत

जगदीश बस अमर हो जगमें ये कुल-हमारा।
विनती यही है तुझ से फूले ये कुल-हमारा॥
(१)
निज गोद में बिठाकर पाला है हम को जिसने।
प्राणों से प्यारा कुल वो फूले फले हमारा॥
(२)
चरणों में जिस के सादर लेती हिलोरे गंगा।
धरती है सीस अपना फूले वह कुल हमारा॥
(३)
जिसको निहार निशिदिन हिमशैलकी शिखायें।
पाती हैं मान जग में फूले यह कुल हमारा॥
(४)
महिमा बखानते हैं, खिल खिल के फूल जिस की।
गाती है जिसको कोकिल फूले वह कुल-हमारा॥
(५)
निज देश निज धरम पर प्राणों की आहुती को।
देना सिखाया जिसने फूले वह कुल-हमारा॥
(६)
मन्दिर है कुल-हमारा निज मातृ-भूमि का ये।
हम हैं पुजारी इस के फूले यह कुल-हमारा॥
(७)
ब्रह्मर्षी रूपी अमृत फिरसे पिला के जिसने।
जीवन नया है फूंका फूले वह कुल-हमारा॥
(८)
भारत का भाग्य भानु जिससे उदय हुआ है।
ज्योति दिखाने हारा फूले वह कुल हमारा॥
(९)
सींचा है इक ऋषि के बहते रुधिरने जिसको।
प्राणों से प्यारा कुल वो फूले फले हमारा॥
(१०)

साहित्य चर्चा

सामान्य नीति माला काव्य—सुवर्ण माला लेखक हरदीन त्रिपाठी। १०८ कुण्डलियों का छोटा सा पुस्तक है। इस के कर्त्ता आर्य आदि शब्दों की उपेक्षा कर के हिन्दु आदि अपभ्रष्ट शब्दों से बड़ा प्रेम करते हैं।

मूल्य =)

पता—ग्रन्थ प्रकाशक समिति बनारस

जाति अन्वेषण—बड़ी गवेषणा पूर्ण पुस्तक है। इस में प्रायः सब हिन्दु जातियों का ऐतिहासिक अन्वेषण पूर्वक उपयुक्त वर्णन दिया है। यह पुस्तक उपदेशक ऐतिहासिक आदि लोगों को बड़ा काम दे सकती है। इस के अभी अन्य भी बहुत से भाग निकलेंगे। बाद को यह एक बड़ा जाति कोष सा बन जायगा। मूल्य एक भाग का १॥)

पता—श्रीशम्भुदत्त शर्मा
मैनेजर श्रीप्रिय पुस्तकालय फुलेरा
जयपुर

विदूषकः—नाम ही से रोचक प्रतीत होती है। इस के कर्त्ता शर्मा हैं। पुस्तक में सामाजिक चित्र खींच २ कर मनोरंजकतया देशदशा का वर्णन किया है। इस में टामस का भारतवर्ष का वर्णन बड़ा मनोरंजक है। पर शोक इतना है कि हिन्दी पढ़ने वालों को इस में कुछ मजा नहीं है इस का मजा इंग्लिश वालों के बांट में है। क्यों? शर्मा जी! हमें अब हंसने फूलने में पराई भाषा के दास बनाना चाहते हो? यदि आप कुछ हिन्दी में ऐसी जुकत लड़ा दिखाते और हंसाते तो कुछ पण्डिताई होती। खैर!

मूल्यः—=)

कुमार सम्भव सारः—सरस्वती के सम्पादक बृहत्साहित्य सेवी महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का बनाया हुवा है। आप ने बड़े लच्छेदार शब्दों में कुमार सम्भव के ५ सर्गों का भाव ले कर अनुवाद किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम कुमार सम्भव को नहीं पढ़ रहे परन्तु कोई स्वतन्त्र नयी कविता बांचते हैं। ठीक है, असली नकली में बड़ा फरक होता है। कालीदास के पदानुगमन कर के द्विवेदी जी ने स्वतन्त्र कविता रच कर पाठकों को ऐसी असुविधा में डाल दिया, कि बिचारे पाठक कालिदास का नाम सुन कर दाम तो खो ही बैठे, साथ ही कालिदास की कविता का रस भी खो बैठे। खैर, वैसे स्वतन्त्र कविता की दृष्टि से आप का पद बन्धन अपने ढंग का अच्छा है। पद कोमल तथा सरस चुने हुवे हैं। भाषा में भी समासों की लड़ियाँ लटकाई हैं। जहां कालिदास ने छोटा छन्द रखा है वहां आपने अपने शब्द कोष के बल पर लम्बा छन्द चुन कर निभाया है। पर फिर भी इन गुणों के होते हुवे, कई ऐसे दोष हैं कि कालिदास की निम्नाङ्कितोक्ति के अनुसार भी छिप नहीं सकते।

"एकोहिदोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।"

सो इन्हीं दोषों पर आलोचक को ध्यान देना चाहिए। स्वतन्त्र विन्यास करते हुवे द्विवेदी जी छन्द के अनुरोध से, या कवि की स्वभाव सिद्ध निरङ्कुशता से, या किसी अज्ञात कारण से, भाव को दिखाने के लिए ऐसे पद भी ठोंक गये हैं, जो उस भाव को कहने में सर्वथा अनुपयुक्त हैं। हम दोष अभी बहुत प्रकार के दिखाने हैं इसलिए एक २ प्रकार का एक २ दोष दिखाना ही डेगची के चावल की न्याईं उपयुक्त होगा।

(अपूर्ण)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) इनाम।

श्री बाल्मीकी रामायण पर।

श्री पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवनमेंट पञ्जाब ने २००) रुपये और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रुपयों का इनाम उस के लिये रक्खा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। यह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। यह इस बात का पूरा प्रमाण है कि यह टीका बहुत उत्तम बनी है, मूल्य बिना जिल्द ५।) सुनहरी अक्षरों की जिल्द वाली ५॥)

२००) इनाम बाल व्याकरण पर

यह हिन्दी में सस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण है, इस पर भी गवनमेंट ने २००) रुपया इनाम दिया है, और पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने इसे मिडल के कोर्स में नियत किया है। मूल्य ।=)॥

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवद्गीता पर

पदार्थ अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य सहित, इस पर भी पं० जी को ३००) इनाम मिला है,

मूल्य २)

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=) ऐतरेय =) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वत्र ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।)॥
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।=)
सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ इस पर भी २००) इनाम मिला है।

मूल्य ॥=)

वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३।) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है। ॥)

निरुक्त निघंटु पाठ सहित, निरुक्त हिन्दी भाष्य भी छप गया है। मन्त्रों के पते दिये गए हैं, और कई प्रकार के सूची पत्र दे कर ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी बना दिया गया है, विद्वानों ने इस की बहुत बड़ी प्रशंसा की है, मूल्य ४)

१००) इनाम मनुस्मृति पर

मनुस्मृति की सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

सटीक महा-भारत

छपना आरम्भ हो गया है, टीका और फुटनोट ऐसी छान-बीन के साथ लिखे गए हैं, कि इस से प्राचीन आर्यावर्त का सच्चा इतिहास साफ साफ खुल जाता है, वार्षिक मूल्य ३) है।

पताः—

मैनेजर आर्य्य ग्रन्थावली
लाहौर

सूचना।

मारवड़ी ऐसोसिएशन दिल्ली का वार्षिक उत्सव चैत्र शुक्ला १। मंगलवार। सम्वत १९७२। ता० १६। मार्च। १९१५ को दिन के ठीक एक बजे स्थान मारवाड़ी एसोसिएशन बड़े दरीबे में होगा समस्त सभासदों से प्रार्थना है कि ठीक नियत तिथि स्व समय पर पधारने की कृपा करें।

जाति का सेवक
केदार नाथ गोएन का
मन्त्री

वर की आवश्यकता

एक आर्य्य कुलीन कन्या के लिए जिस की आयु १४ वर्ष की है। एक वर की आवश्यकता है। कन्या ने कन्या महाविद्यालय जालंधर में शिक्षा प्राप्त की है स्वास्थ उत्तम है। माता पिता समाज में अच्छा स्थान रखते हैं। जाती बन्धन का कोई ध्यान न होगा। गुण कर्म का विचार कर के सम्बन्ध किया जायगा।

पत्रव्यवहार का पता—

डी० द्वारा। प्रबन्ध कर्ता
सद्धर्मप्रचारक पत्र
श्यामपुर कांगड़ी
(बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बेरोज़गारियों को रोज़गार।

यदि आप महीनों से हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और रहस्य के पालन की चिन्ता आप को सता रही है तो आज ही एक कार्ड डाल कर पं० रामचन्द्र वैद्यशास्त्री रचित "गुप्तव्यापारशिक्षक" पुस्तक मंगाइयेगा। इस की चार हज़ार प्रतियाँ हाथों हाथ बिक चुकीहैं अब पाँचवी बार छपा है। पुस्तक के पहले खंड में महासुगन्धित तैल, लवेन्डर, ताम्बूल विहार, बनारस की सी तम्बाकू की गोलियां, अंजन, मंजन, केशनाशक साबुन, बाल उग्र भर न जमने की दवा, गोरे और खूबसूरत होने की दवा, अर्क कपूर, केसर, कस्तूरी, खमीरा, पचास रोगों की एक दवा, इत्यादि तरीके लिखे हुए है दूसरे खंड में बवासीर आदि मुखदाई रोगों की रामबाण औषधियों के नुसखे, पारे का कटोरा गायब गिलास, आगरे की दाल का मसाला, मेस्मेरिज़िम की अंगूठी आदि अनेक गुप्त चीजों के बनाने की विधि समझाई गई है। तीसरा खंड विलायत विषय जैसे बटन, दियासलाई, साबुन, रबर की मुहर, बर्फ, सोडा, वाटर, हुलास, काग़ज़, पेंसिल ब्लूब्लैक स्याही, जेबी प्रेस, घड़ी चेन पर, गिलट करना आदि अनेक विषयों से पूर्ण है, कहां तक लिखें। इस पुस्तक में लिखे अनेक रोज़गारों में एक को ही ग्रहण कीजिये और खूब धन कमा कर सुख से जीवन व्यतीत कीजिये। मूल्य केवल ॥) डाक महसूल ≈)

मैनेजर उपयोगी वस्तुप्रचारक कार्य्यालय, १ मानगंज अलीगढ़ सिटी

आदर्श ग्रन्थमाला की छपरह है

नई पुस्तक नईपुस्तक

सचित्रप्रिन्सविस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना

इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़ेर को कैसे पद दलित किया, और फिर किन २ शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की, इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तारपूर्वक वर्णन है। दूसरे भागमें साहसकी मूर्ति, देशभक्ति के पुतले, नीती के गुरु, और जर्मनीके जन्म दाता प्रिन्सविस्मार्क का आश्चर्य्यकारी चरित चित्रित किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्होंने पढ़ा है उनके लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बननेवालों को रियायती मूल्य पर पुस्तक मिलेगी।

पताः— प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म्मप्रचारक प्रेस गुरुकुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बनाई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बडे विस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद सबजज उज्जैन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अमूल्य पुतकें ! अत्यन्त उपयोगी पुस्तकें !! अपूर्व पुस्तकें !!!

(इतने सस्ते दामों में ऐसी उपयोगी पुस्तकें फिर मिलनी दुर्लभ हैं)

ऋषि दयानन्द का पत्र व्योवहार

महा पुरुषों के पत्र बड़े शिक्षा दायक होते हैं। विलायत के लोग तो अपने महा पुरुषों के पत्र हज़ारों रुपया व्यय कर के ख़रीदते हैं। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द के अलभ्य पत्र छापे गये हैं उन पत्रों से ऋषिके जीवन की कई नवीन घटनाओं का पता लगता है। पहिले इस का मूल्य १।) था। अब हम ने सर्वसाधारणके लाभार्थ केवल ।=) मूल्य कर दिया है।

आर्य्य समाज और उसके शत्रु

The Arya SamaJ and it's Detractors

इस अङ्गरेज़ी भाषा की अपूर्व पुस्तक में आर्य्य-समाज के विरोधियोका मुंह बन्द करने का बहुत कुछ मसाल. भरा पड़ा है। समय पड़ने पर सरकारी कर्मचारियों को दिखलाने योग्य है। यह पुस्तक इतनी आवश्यक है कि प्रत्येक समाज में इस की एक पति तो अवश्य रहनी चाहिये। पहिले इस का मूल्य ५) था। अब सर्वसाधारण के लाभार्थ लागत से भी कम केवल ३) कर दिया है थोड़ी प्रतियां रह गईं हैं शीघ्र मंगा लें।

पताः—इन्द्र प्रस्थार्य एजन्सी, देहली

धर्म और विज्ञान

अंग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Confict betw aen religon and science का भाषानुवाद २)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वाले का २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ हो

पताः—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बजाज़ा शहर मेरठ

उसतरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगाने से फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मूल्य १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी कंखल

ग्राहकगण !
नकली "बर्म्मन"
और झूठे
विज्ञापनसे
बचो !

नं० ३५

भारत गृह रत्न
असल अर्क कपूर

डाक्टर बर्म्मन की गौमुखी शाशी रहता है। ३० वर्ष से प्रसिद्ध है, वह एक समान बनता है—नकली बर्म्मन से बचो-नकली अर्क कपूर से सचेत रहो।

मोल ।) चार आने शीशी। डा० म० २ से ४ तक ।-) पाच आने।

डाः एस,के बर्म्मन।
५,ताराचंददत्त ष्ट्रीट।
कलकत्ता।

एजन्ट बाबूरामजैन एन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

हिंदी भाषा महाभारत सचित्र।

पुस्तक श्रावण सं० १९७१ से प्रकाशित होरही है वार्षिक मूल्य २) हर मास में ४० पृष्ठ का एक खण्ड ग्राहकों के पास पहुंचता है ऐसे ही १२ खंड एक वर्ष में पहुंचते हैं।) का टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा देखिये।

पता—रामभेजा खत्रीधवन

लाहौरी-टोला बनारस सिटी

बाल-हितैषी

यह पत्र हिन्दी में चार वर्ष से प्रति मास निकल रहा है। नवीन वर्ष जनवरी १९१५ से इसमें फूल स्कोप चैलेंजी (८×६ ईञ्च) आकार के ४० पृष्ठ रहेंगे। प्रति अंक में रंगीन टाईटल के अतिरिक्त एक रंगीन व कई हाफटोन चित्र दिये जायंगे। कविता, इतिहास, जीवन-चरित्र, भूगोल, खगोल, विज्ञान, स्वास्थ्य, धर्म-नीति, किस्सा कहानी, पाक-विधि, पहेली इत्यादि कितने ही विषयों पर मनोरञ्जक लेख रहा करेंगे जो कि केवल बालकों के लिये ही नहीं, बल्कि स्त्रियां, नवयुवक तथा वृद्धों के लिये भी लाभकारी होंगे। इतना होने पर भी वार्षिक मूल्य वही १॥) रहेगा।

अभी से ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा लीजिए, क्योंकि गिनी गिनायी प्रतियां छपेंगी, विलम्ब करने से पूरी फाईल मिल नहीं सकती।

पता—"बालहितैषी" कार्य्यालय सदानन्द बाज़ार बनारस सिटी

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

बरियारपुर

(बनारस स्टेट)

नया संदेशा ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी वसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें इत्यादि विषयों पर महत्व पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता

"सत्ययुग"

हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय

मुज़फ़्फ़रपुर

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा

बुलन्दशहर

१६००० हज़ार

एजेंटों का होना

भारतवर्ष में बनी औषधि के सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं बता सकता कि सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कफ, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, कै दस्त, सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, ब के हरे पीले दस्त, रोना, कै करना, बूढ़ों की अनि और नजला, जवानों की थकावट या बेचैनी, दवा खादिष्टसुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कमत फी शीशी आठ आना डांक खर्च १ से ६ शीशी तक ≡) आना सब बडे २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डांक से मंगाने का पता:—

सुख संचारककंपनी

मथुरा

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे। यजु॰

प्रवर्त्तक—मुन्शी जिज्ञासु सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | १६ फाल्गुन सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० २७ फरवरी सन् १९१५ ई० | संख्या ४६ भाग २६

Maharishi Dayanand Saraswati Jyotirmaya Shodh Sansthan Government of India

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है। इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है। महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिच गया है।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा।

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकर झी" नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य ।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है. परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

राष्ट्रों की उन्नति।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या [illegible] है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैण्ड आदि देशों के इतिहास का [illegible] करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित। विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है। उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है। मूल्य २)

अर्थशास्त्र—पो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित। इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं। पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है। मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित। इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है। निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है। मूल्य ।=)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा। भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है।

मूल्य=)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये। वा० मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर कांगड़ी

(जि० बिजनौर)

तिब्बत व नेपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला शेर की चरबी १) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला —

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू. पी.

(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

असली हारमोनियम

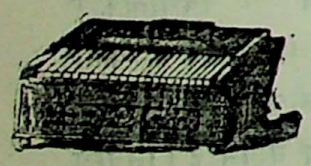

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता

G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

१०,०००) रुपया इनाम,

यह इनाम उन लोगों को मिलेगा जो हमारे यहां से नीचे लिखी हुई दवा मंगावेंगे। मकज़ोरी दिमाग़ को दूर करने वाली (अमृत प्रवाह) १) सैकड़ों बार का आजमाया हुआ धातु पुष्टि चूर्ण २)। इनाम बड़े २ डाक्टर, वकील वैद्य रईसों के सामने बांटा जायगा। हमारे ग्राहक भी इनाम बांटने में शरीक हो सकते हैं उन को आने जाने का खर्च भी दिया जायगा। जानने के लिये नियमावली)॥ का टिकट भेजने पर मुफ़्त मंगाइये

पता:—सूर्य्य, औषधालय,

सनेटरी रोड़—लखनऊ

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥

भारत विभिन्न देशों से ... ४)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०.

तीन मास " " " " =) "

छः " " " " " ।)॥ "

सालभर " " " " -) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

पुस्तक विक्रियताओं के लिये सुनहरी अवसर

भारत लिट्रेचर कम्पनी लिमिटेड लाहौर कालेक्योडेशन हो जाने के कारण पुस्तकों का एक भारी स्टाक पं० आर्य मुनी जी कृत तथा म० शिवव्रतलाल वर्म्मन, स्वामी दर्शनानन्द जी, ला० लाजपतराय जी, आदि पुस्तक रचयिताओं की विक्रियार्थ उपस्थित है। जिन पुस्तक विक्रियताओं को मोल लेना स्वीकार हो लेकोडेटर से पत्र व्योवहार करें। ५००) का इकट्ठा माल मोल लेने वाले को आधे मूल्य पर दिया जायगा।

एस. के. मुकरजी

सीडर तथा लेकोडेटर भारत

लेट्रेचर कम्पनी

नीला गुम्बद लाहौर

२६ पर से २६ तक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म-दर्शनम् ।

आदित्यो हवै प्राणो रयि रेव चन्द्रमाः । रयि र्वा एतत्सर्वं यन्मूर्तं चा मूर्तं च तस्मान्मूर्तिरेव रयिः ॥ ५ ॥

"निश्चय कर के सूर्य ही प्राण है, और चन्द्रमा ही रयि है । यह सब जो मूर्त्तिमान (दृश्य) तथा अमूर्त्ति मान (अदृश्य) जगत् है वह भोग्य ही है इस कारण सर्व भोग्य स्थूल ही है ।"

आदित्य (सूर्य) ही सर्व सांसारिक वस्तुओं में प्राणों का संचार करने वाला है । इस जगत में दो ही प्रकार के लोक हैं—एक वे जो स्वयम् प्रकाशित और दूसरे लोकों को भी प्रकाश देने वाले और दूसरे वे जो दूसरे प्रकाशकों से प्रकाश धारण करते हैं । सूर्य स्वयम् प्रकाशक है परन्तु चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश प्राप्त करता है, इस लिए सूर्य प्राण शक्ति का डालने वाला और चन्द्र उस से प्राणों का ग्रहण करने वाला है । सूर्य से ही जड़ चेतन सब भौतिक प्रकाश प्राप्त करते हैं और प्रकाश की किरणों द्वारा ही प्राणों का संचार होता है । जब काले मेघ बरस कर स्थल को जल मय बना देते हैं और तीक्षण हृदय वेधक वायु का वेग चलता है तब सारा वनस्पति जगत शिथिल हो, गिर कर भूमी पर दीनता का शिर झुका देता है, सर्व वृक्ष तथा फल फूलों के पौदे मुरझाए हुए जीवन-रहित से प्रतीत होने लगते हैं । उस समय यदि सूर्य भगवान् का उदय हो जाय तो एक दम लहलहाते हुए, पेड़ और पौदे आनन्द में मग्न उठ खड़े होते और प्राणों को अपने अन्दर धारण कर के प्रफुल्लता का मनोहर जीवनमय दृश्य दिखाते हैं। उस समय प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है कि सूर्य प्राण शक्ति का भन्डार है ।

परन्तु सूर्य भी स्वतन्त्र प्राण शक्ति का आधार नहीं । वही अन्तिम भोक्ता नहीं । वह भी कहीं अन्य स्थान से प्राण धारण करता है । विद्युत सूर्य से भी सूक्ष्म है और प्रकाश उस से भी सूक्ष्म । भोक्ता भोग्य पदार्थ की अपेक्षा उत्तरोत्तर सूक्ष्म है इस लिए सारा प्राकृतिक जगत भोक्ता होते हुए भी अन्त को भोग्य ठहराता है । तब मूर्त्तिमान, आंखों से दिखाई देने वाले, सब पदार्थ भोग्य ही हैं ।

परन्तु सूर्य भी तो मूर्त्तिमान पदार्थ है, फिर उस का विशेष वर्णन ब्रह्मर्षि क्यों करते हैं ? इस लिए कि जीवात्मा के मुक्ति मार्ग में सूर्य भी एक साधन हैं । तभी तो वेद ने कहा है—**"यो ऽसावा दित्ये पुरुषः सो ऽसावहम्।"** सूर्य की रश्मियों में खिचा हुआ ही ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मधाम को प्राप्त होता है जहां प्रान्त काल तक परमानन्द में मग्न रह कर वह फिर देव योनि को धारण कर के संसार में लौटता है । ब्राह्मण जिस प्रकार सूर्य लोक के द्वार से ही ब्रह्मधाम को प्राप्त होता है, उसी प्रकार इतिहास में वर्णित अलंकार के अनुसार क्षत्रिय सूर्य लोक पर लात मार कर स्वर्ग का मार्ग प्राप्त करता है । फ्रांस के प्रसिद्ध तत्व वेत्ता "लूइस फिर्यर" नें इसी उपनिषत् को समझने के लिए ही हाथ पैर मारे हैं जब उस ने यह लिखा कि मृत्यु पर जीवात्मा सूर्य की ओर खिचता है और यह जो सूर्य की रश्मिएं दीखती हैं वे सब जीवात्मा ही चमक रहे हैं । ऋषि राज बतलाते हैं कि महाप्राण का ही चमत्कार सारे जगत को चला रहा है; उसी से प्राण धारण कर के सूर्य सब स्थूल वस्तुओं में प्राणों का संचार कर के उन को जीवन प्रदान करता है ।

"अथादित्य उदयन्यत्प्राचीं दिशं प्रविशति तेन प्राच्यात् प्राणान् रश्मि षुसन्निधते । यदूदक्षिणां प्रत्यतीचीं यदुदीचीं यदधो यदूर्ध्वं यदन्तरा दिशो यत्सर्वं प्रकाशयति तेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषुसन्निधत्ते ॥ ६ ॥

"जब सूर्य उदय होता हुआ, जिस लिए, पूर्व दिशामे प्रवेश करता (अर्थात् अपनी किरणों को फैलाता) है, इस लिए पूर्व दिशा में स्थित भोक्तृ शक्तियों को अपनी प्रकाशमय किरणों में संयुक्त करता है । जिस लिए दक्षिण दिशा, जिस से पश्चिम दिशा, जिस से उत्तर दिशा, जिस से नीचे जिस लिए ऊपर और बीच की दिशाओं में प्रवेश करता है और जिस कारण अन्य सब वस्तुओं को प्रकाशित करता है; इस लिए सब भोक्तृ शक्तियों को अपनी किरणों में संयुक्त करता है।"

जिस प्रकार ज्ञान का भन्डार परमात्मा सारे संसार के आत्म जीवन का वास्तविक हेतु है उसी प्रकार उस से प्रकाश को प्राप्त कर के सारे जगत को प्रकाशित कर, उस के प्राकृतिक जीवन का हेतु सूर्य है । किसी स्वच्छ निर्मल रात्रीं में आकाश मण्डल की ओर दृष्टि डालो, कैसी अपूर्व रचना दिखाई देती है । लोकान्तर बन और बिगड़ रहे हैं । कहीं सूर्य मण्डल के गिर्द गृह और उपग्रह घूमते हुए उस की शोभा को बढ़ा रहे, कहीं आकाश गङ्गा में कई सूर्य मण्डल तयार हो रहे; पृथ्वियां सूर्य लोकों से टूट टूट कर शिशुमार चक्र में स्थित हो कर अपने प्राण दाता के गिर्द चक्कर लगा रहीं । उस समय प्रतीत होता है कि एक ही श्रङ्खला में सारा ब्रह्माण्ड बन्धा हुआ है । और तब पता लगता है कि सारे संसार में प्राणशक्ति डालने वाले एक हीं महाप्राण हैं । इस अद्भुत कौतुक को देख कर सोया हुआ प्राणी शुषुप्तावस्था से उठ कर जब सूर्य के प्रकाश में नैन उघारता है तब उसे प्रतीत होता है कि सूर्य के अतिरिक्त और कोई भी शक्ति प्राणादायनी नहीं ।

स एष वैश्वानरो विश्वरूपः प्राणोऽग्निरुदयते । तदेतदृचाभ्युक्तम् ॥ ७ ॥

वह यह प्रत्यक्ष उदय हो कर, प्रकाशदे, सब प्राणियों को अपने अपने कर्मों में प्रेरित करने वाला, अपने तेज से सर्व भोक्तृ शक्ति रूप बना (अन्नादि पदार्थ उत्पन्न कर के) जीवन का हेतु, दाह शक्ति वाला सूर्य उदय होता है । इस तथा पहले तात्पर्य पर (ऋ चा) वेद ने कहा है:—"

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपन्तम् । सहस्ररश्मिः शतधा वर्त्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥८॥

"जो असंख्य किरणों वाला, असंख्य प्रकारों से भोक्तृ शक्तियों में अपने तेज कर के व्याप्त, उत्पन्न हुए प्राणियों के जीवन का हेतु यह प्रत्यक्ष सूर्य उदय को प्राप्त होता है उस, सर्व भोगने वाली शक्ति स्वरूप, किरण वाले, शोभा, युक्त प्राणियों की स्थिति का सर्वोत्तम आश्रय, तप स्वरूप, एक ज्योतिः को विद्वान् लोग ही जानते हैं ।

शान्तिर्यो३म्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२०००) की भेंट

क्या २०००) की हमारी अपील व्यर्थ जायगी ?

न जाने क्यों प्रचारक परिवार ने अभी तक इस ओर ध्यान नहीं दिया ? २) क्या बड़ी बात है। आप के दो रुपये भेज देने से प्रचारक अपना कर्तव्य पालन कर सकेगा। अभी तक बहुत कम राशि प्राप्त हुई है। कृपया गुरुकुल कार्यालय के नाम अपने हिस्से के दो रुपये शीघ्र ही भेज दीजिए।

हम ये दो सहस्र रुपये अवश्य भेंट करना चाहते है यदि प्रचारक परिवार ने हमें निराश कर दिया, जिस की हमें आशा नहीं, तो हमें किसी और तरह इकट्ठे करने पड़ेंगे, किन्तु प्रचारक परिवार की उदार कीर्ति में न्यूनता आजायगी।

प्रेमियों ! चेतो, और शीघ्र ही अपने हिस्से के दो रुपये

शीघ्र भेज दो।

सम्पादक

प्रचारक के एक प्रेमी को
विशेष पदक

चन्दौसी के म० रामस्वरूप जी ने एक रजत पदक उस महाशय को देना किया था, जो सद्धर्म-प्रचारक के इस वर्ष के अन्त तक सब से अधिक ग्राहक बनाए। वर्ष समाप्त हो चुका, और सब से अधिक ग्राहक बनाने वाले हमारे पुराने प्रेमी

म० लब्भूराम जी नय्यड़

ही निकले। गुरुकुल के इस वार्षिकोत्सव के समय किसी अवसर पर हम म० लब्भूराम जी की भेंट वह पदक कर सकेंगे। हम सारे प्रचारक परिवार की ओर से नय्यड़ जी को धन्यवाद देते हैं, और साथ ही आशा करते हैं कि प्रचारक को सदा म० रामस्वरूप जी और म० लब्भूराम जी जैसे प्रेमी मिलते रहेंगे।

सम्पादक

गुरुकुल वृन्दावन में
एक महीना

मनुष्य के जीवन का सब से अधिक प्रसन्नता-दायक समय वह होता है, जबवह किसी चिरकाल से चाही हुई वस्तु को प्राप्त कर सके। हमारी यह चिरकाल से अभिलाषा थी कि हम वृन्दावन के गुरुकुल को अपनी आंखों से देख कर उस के विषय में अपनी सम्मति बना सकें। वह चाहा हुआ अवसर हमें अनायास ही प्राप्त होगया। हमें कुछ सेवा सौंपी गई, जिस के सम्पादन करने के लिए हमें गुरुकुल वृन्दावन में एक मास तक रहने का अवसर मिल गया। वह सेवा अध्यापन सम्बन्धिनी थी। उस सेवा को सम्पादित करते हुए हम गुरुकुल वृन्दावन के भली प्रकार देखने का अवसर प्राप्त कर सके। जो कुछ हमने देखा अपने पाठकों तक उस का पहुंचाना हम अपना कतव्य समझते हैं, ताकि उन में जो सज्जन अभी तक इस गुरुकुल से पूर्णतया परिचित नहीं है, उन्हें परिचय प्राप्त हो जाय।

जिस प्रकार गुरुकुल कांगड़ी पंजाब प्रतिनिधि सभा के अधीन है, उसी प्रकार गुरुकुल वृन्दावन संयुक्त प्रान्त की प्रतिनिधि सभा के अधीन है। एक संस्था के साथ सम्बन्ध रखने वाले शिक्षणालय में जैसी व्यवस्था और नियम पूर्वकता होनी चाहिये गुरुकुल वृन्दावन में वह विद्यमान है। इसी लिए कई विरोधियों ने गुरुकुल कांगड़ी के साथ इस कुल को भी अब "वर्ण संकर" श्रेणि में रख दिया है। निःसन्देह गुरुकुल वृन्दावन का कार्य्य बड़ी नियम पूर्वकता और योग्यता से सम्पादित हो रहा है। पठन पाठन का क्रम सर्वथा उत्तम है, और दिनों दिन उत्तम हो रहा है। सब से बड़ी बात यह है कि ब्रह्मचारियों को प्रतिदिन वेद पाठ कराया जाता है और वेदमन्त्र कण्ठस्थ कराये जाते हैं।

गुरुकुल को वृन्दावन के प्रसिद्ध दानी कुंवर महेन्द्र प्रताप की कृपा से यमुना तट पर मनोहर स्थान मिला हुआ है, गुरुकुलांगण में लगी हुई छोटी सी वाटीका ने स्थान की शोभा को कई गुणा बढ़ा दिया है। जब वाटिका में मयूर गण स्वच्छन्द विहार करते हैं तो विचित्र मधुर दृश्य उपस्थित होता है। इन दृश्यों के उत्तम प्रभाव ब्रह्मचारियों पर अवश्य पड़ते हैं। स्थान की वायु के लिहाज़ से अस्वास्थ्यकारी नहीं है। ब्रह्मचारियों की सेहत वर्ष के अधिक भाग में बहुत उत्तम रहती है। उन की शारीरिक दशा का उत्तम होना एक बार ब्रह्मचारियों में घूम जाने से ही ज्ञात हो जाता है।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि संयुक्त प्रान्तीय आर्य पुरुष अपने गुरुकुल को खूब सहायता देते हैं; किन्तु आश्चर्य यह है कि ऐसे उत्तम प्रबन्ध से युक्त और संस्था से सम्बन्ध रखने वाले गुरुकुल के होते हुए भी प्रान्त में अन्य गुरुकुलाभासों की अलहिदा आवश्यकता समझी जाती है। हमारी राय में अच्छा हो यदि वे सब शिक्षणालय गुरुकुल वृन्दावन की ही शाखायें बना दी जांय। ऐसा होने से संयुक्तप्रान्त भी शीघ्र ही एक महान् गुरुकुल विश्वविद्यालय पर अभिमान कर सकेगा। हमें उन लोगों पर आश्चर्य होता है जो एक ओर तो गुरुकुल वृन्दावन में महाविद्यालय श्रेणियां खोलने और उसे जुदा विश्वविद्यालय बनाने के विशेष हामी बनने का दम भरते हैं, और दूसरी ओर संस्था से असम्बद्ध अन्य शिक्षणालयों की पीठ ठोंकते हैं। संयुक्तप्रान्त के आर्य मात्र का कर्तव्य है कि वे अन्य सब अड़चनें मिटा कर इस गुरुकुल की उन्नति में दत्तचित्त हो जावें।

एक बात लिख कर हम समाप्त करते हैं। गुरुकुल वृन्दावन में इस समय जो उन्नति और स्थिरता दिखाई पड़ती है, उस में सब से मुख्य कारण वहां के वर्तमान मुख्याधिष्ठाता म० नारायण प्रसाद जी हैं, जिन के पवित्र आचरण और शुद्ध विचारों का प्रभाव सारे गुरुकुलीय जल वायु में रमा हुआ है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक

ब्राह्मण की शिक्षाप्रद मृत्यु।

तार चारों ओर खड़क गया। "आनरेबल गोपाल कृष्ण गोखले, सी० आई० इ० भारत को सूना छोड़ कर परलोक सिधार गए।" इस समय सारे भारतवर्ष में शोक सभाएं हो रही हैं; घर घर में ऐसी उदासीनता छाई है मानो अपना प्यारा से प्यारा जुदा हो गया। समुद्र पार से भी सहस्रों तार आवेंगे। वहां भी सैकड़ों शोक सभाएं होंगी।

भारत निवासी इस लिए शोक प्रकट करते हैं कि जननी जन्म भूमी का यश अपने मस्तिष्क के महत्व से बढ़ाने वाला राजनैतिक अगुआ ऐसा इस समय ढूंढे नहीं मिलता, ब्रिटिशगवर्नमेन्ट के अग्रणी इस लिए हमारे साथ सहःदुखता में सम्मिलित होते हैं कि उन के चक्रवर्ती राज्य को भारत में दृढ़ करने वाला एक उच्च स्तम्भ गिर गया और एङ्गलो इन्डियनपायोनियरादि अखबार, हमारे घाव पर इस समय भी नमक छिड़कने से न रुकते हुए और हमारे मृत भाई की देशभक्ति को कृत्रिम बतलाते हुए, भी यह मनाने के लिए बाधित हैं कि ब्रिटिश राज का एक अद्वितीय रक्षक उठ गया। जब ऐसी अवस्था है तो मेरी दुःख की तो सीमा ही नहीं जिस का त्याग सम्पन्न गोखले के साथ कुछ अनूठा ही व्यक्तिक सम्बन्ध था। मैं उस समूह में से एक हूं जो गोखले की धीरता, सच्ची वीरता और धर्म परायणता पर मोहित रहे हैं। अपने शिष्यों, अपने पुत्रों के सामने मैं यही एक वर्तमान समय का आदर्श जीवन रखता रहा हूं जिस की पूर्ति मैंने महात्मा गांधी के "महाव्रत" में अनुभव की थी। इस लिए मुझे तो शोक सागर में डूब जाना चाहिए था—और ऐसा पहले दिन, समाचार पाते ही, हुआ भी था। परन्तु इस समय मैं शान्ति सरोवर में सन्तोष से बैठा हूं। इस का कारण क्या है?

जिस दृष्टि से लोग गोखले को देखते थे उस का मुझ पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता था। विस्तृत विद्वत्ता अपूर्व राजनैतिक बुद्धि, अद्वितीय तर्कनाशक्ति—यह गुण वर्तमान सभ्यता के दासों को मोहित कर सक्ते हैं; मुझ से आदर्श-वादी इन के फन्दे में नहीं फंसते। जिस प्रकार स्वामी राम की मृत्यु पर मैंने इस लिए शोक प्रकट किया था कि सन्यास को वर्तमान समय में फिर से त्याग उस ने सिखाना चाहा था, इसी प्रकार गोखले की मृत्यु ने भारत निवासियों के आगे सच्चे ब्राह्मण का आदर्श उपस्थित कर दिया। जहां भारतवर्ष में इस समय राजनीति भी एक पेशा बन रहा है और देश सेवा के नाम से लोग माला माल हो रहे हैं, वहां सकाम भाव को लात मार कर सच्चे ब्राह्मण का जीवन व्यतीत करते हुए एक गोखले ने ही प्राण दिए हैं। परन्तु फिर भी तो दारुण दुख को अवसर है कि ब्राह्मणत्व का आदर्श लोप हो गया। परन्तु मैं इस घटना को इस बाह्य दृष्टि से नहीं देखता।

•

यद्यपि कुछ काल से सर्वप्रिय गोखले की शारीरिक दशा बहुत बिगड़ रही थी, यद्यपि उस के हृदय पर विरोधियों के अनुचित कटाक्षों के घाव पर घाव लग चुके थे, तथापि क्या कारण है कि प्राण पयान करने से रुके रहे। प्रश्न होता है कि क्यों महात्मा गांधी के आश्रम में प्रवेश करने के पश्चात् ही राजर्षि ने यात्रा की तय्यारी करली। मेरे लिए उत्तर स्पष्ट है। क्या इस में सन्देह है कि गोखले का महान् आत्मा उत्तरा-धिकारी की प्रतीक्षा में बैठा था और उस के प्रवेश करते ही सांसारिक कष्टों से निवृत्त हो गया।

सन्यासी का आसन जहां सन्यासी को मिलना चाहिए, वहां ब्राह्मण का चोला ब्राह्मण को ही शोभा देता है। भारत पुत्रों को गोखले के वियोग में दुःख मान कर उस के महानात्मा को भी दुखित नहीं करना चाहिए। उन्हें उस के उत्तराधि-कारी महात्मा गांधी का शासन स्वीकार कर के सच्चे ब्राह्मण बनने का प्रयत्न करना चाहिए। जब संसार भर एक युद्धक्षेत्र बन रहा है, जब गोलों का भीषणनाद शान्ति और धर्म्म के सन्देश को दबाए हुए है, वह समय एक ब्राह्मण की जीवनी पर विचार का, शयद, नहीं है। परन्तु समय आयेगा जब भारत-वर्ष में राज क्रान्ति का इतिहास लिखा जायगा और उस समय जब शान्त चित्त हो कर इतिहास लेखक विचार करेगा तो उसे मानना पड़ेगा कि जिन महान आत्माओं ने भारत निवासियों को आत्म विश्वास का पाठ पढ़ाया उन में गोखले का भी बहुत उच्चासन है।

पण्डित गोपाल कृष्ण गोखले की अकाल मृत्यु से एक और शिक्षा भारत संतान को मिलती है। कई विचारशीलों का ख्याल है कि जो विवाद महाशय तिलक के साथ इस समय चल रहा था उस में गोखले को न्याय के समीप पहुंचाने में सहायता दी। मैं जानता हूं कि गोखले बात को बहुत मानने वाले थे और इस लिए संभव है कि महाशय तिलक के अनुचित कटाक्ष उन्हें बहुत चुभे हों। क्या हमारे देश के समालोचक अब भी कुछ चेतेंगे? क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि उन के अनुचित कटाक्षों से कई देश तथा धर्म के सेवकों के दिल छलनी हो जाते हैं और इस प्रकार कई योग्य पुत्रों की सेवा से भारत माता वंचित रह जाती है। परमेश्वर भारत निवासियों के हृदयों को प्रेरित करें जिस से वे अपने सच्चे सेवकों की निरादर करने के स्थान में आदर सम्मान करने में कुछ कार्य हो सकें।

(शु० शीराम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्मवीरों की परीक्षा।

बरनाला (राज पटियाला) में आठ मास से दो आर्य्य-वीर हवालात में हैं। मानों शेर पिंजरे में बन्द किए गए हैं। धर्म्मवीर रौनकराम पर जब अभियोग चला तभी मैंने दो सुधारक दलों में इस अनुचित विवाद को देख कर भविष्य के लिए उस के निवटाने का प्रयत्न किया था, परन्तु तत्खालसा दल में भी वैसे ही स्वार्थी घुसे हुए हैं जैसे अन्य मतों में—उन्हों ने बात न बनने दी। जिस ने भी शान्ति का नाम लिया उसी को तत्खालसा-वीरों ने गालियों के गोलों से चुप करा दिया। जब केशधारियों तक की पेश नहीं जाती थी तो बेचारे दीवान नरेन्द्रनाथ, एम० ए०, किस लेख में थे। अस्तु।

मुकद्दमा चला। तत् खालसों ने समझा था कि आर्य्यों का मुंह बन्द कर के उन के भाइयों के लम्बे जेल में धकेल सुख की नींद सोयंगे, परन्तु परिणाम उलटा निकला। एक के स्थान में सिक्खी साहित्य से अनेक अपवाद निकल रहे हैं। सिक्ख वकील और बैरिस्टर ऐसे बौन्द लिया गए हैं कि बाजारियों की तरह न्यायालयों में गन्द और गालियों की बौछाड़ झाड़ते रहते हैं। परन्तु अब घबराते क्यों हैं। यह बला उन की ही बुलाई हुई है। यदि जज को धमकवाकर पूरा दो बरस का भी जेल दिलवा दिया तो वह सिक्खी इतिहास जो इस अभियोग में तय्यार हुआ है, क्या धुल-जायगा। यद्यपि आर्य्यसमाज में बहुधा लोग इस इतिहास को बनते देख प्रसन्न हो रहे हैं, तथापि मैं इस इ-सहित को बनते देख कर दुखी होता हूं। हामारे लिए अपने भाइयों के सुधार का ही काम कुछ कम नहीं है कि हम दूसरों की मैल धोने में लगे रहें।

परिणाम चाहे कुछ ही हो रौनकराम विश्वम्भरदत्त के नाम चिरस्थाई हो गये। मैं आशा करता हूं कि मेरे दोनों भाई जेल से ऐसे उच्च भाव लेकर निकलेंगे कि वे अपने अनिष्ट चिन्तन करने वालों के लिये सब से बढ़ कर लाभ दायक हो सकें।

कुरुकुल समाचार

लोकप्रिय गोखले महोदय की मृत्यु का समाचार गत आदित्यवार को प्रातः काल मिला। उसी समय कुरुकुल महाविद्यालय तथा विद्यालय दोनों बन्द कर दिये गये और शोकसभा बुला कर खड़े हो, दिल के भाव प्रकट किए गए।

ऋतु अत्युत्तम है। स्वास्थ सब के ठीक हैं। व्यायाम और खेलें नियम पूर्वक खूब होती हैं।

अधिकारी परीक्षा २० फेब्ररी से शुरू है। २४ से महाविद्यालय की परीक्षाएं भी आरम्भ हो गईं। इस समय परीक्षाओं के अतिरिक्त और कोई चर्चा नहीं।

वेदार्ष व्याख्या।

जब से कलकत्ते के प्रसिद्ध सेठ जयनारायण-रामचन्द्र जी ने ऋषि-दयानन्द कृत वेद भाष्य की पूर्ति के लिए उदारता से दान दिया था, तब से ही गुरुकुल की ओर से इस का प्रयत्न किया जा रहा है। गुरुकुल के वेदोपाध्याय को इस काम पर लगाया गया जिन्हों ने अन्य विद्वानों से पत्र व्यवहार कर के अब ऋषि दयानन्द की बतलाई आर्ष-प्रणाली पर भाष्य का कार्य आरम्भ कर दिया है। इस भाष्य की पूर्त्ति के लिए प्रतीक्षा करते हुए यदि छपाई का कार्य रोक दिया जाय तो हानि होगी।

इस लिये निश्चय किया गया है कि इस आर्ष-भाष्य को अङ्कों में छपवाना आरम्भ कर दिया जाय। प्रत्येक अङ्क में २४ पृष्ठ उत्तम काग़ज़ पर तो भाष्य रहेगा और टाइटिल के चार पृष्ठों पर वेदभाष्य सम्बन्धी ही अन्य सूचनाएं दी जाया करेंगी। वर्ष में १२ अङ्क प्रत्येक ग्राहक को पूरे कर दिए जायंगे, चाहें वे एक दूसरे से कैसे ही अनिश्चित अन्तर के साथ निकलें। वार्षिक आग्रिम मूल्य २) लिया जायगा, और नमूने की प्रत्येक प्रति के लिये।) भेजने होंगे। प्रथम अंक की केवल ५०० प्रतियें ही छपवाने का विचार था, परन्तु इश्वरीय कल्याणी वाणी को अधिक विचार शील जनता तक पहुंचाने के लिए यह निश्चय किया गया है कि १५ चैत्र, १९७१ की सांप्रि (२८ मार्च, १९१५) तक जितने ग्राहक वार्षिक आग्रिम मुल्य २) भेज दें उतनी ही अधिक प्रतिएं इस भाष्य की छपवानी शुरू कर दी जायं।

ग्राहक बनने के लिए पत्र तथा धन निम्न-लिखित पते से भेजिए:

मुख्याधिष्ठाता,

गुरुकुल विश्वविद्यालय,

शामपुर-कांगड़ी ज़िला बिजनौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(५२)

मेरी एक वर्ष की परीक्षा।

पण्डित गुरुदत्त की मृत्यु से पहले ही मेरी धार्मिक परीक्षा आरम्भ हो गई थी। स्त्री शिक्षा के भक्त महाशय देवराज के बड़े भाई श्री बालकराम जी मेरे बड़े मित्र थे। उन का ज़िक्र इस लेख-माला में कई बार आ चुका है। इस का कारण शायद यह भी था कि मेरी धर्मपत्नी को उन के सब भाइयों में से यही अधिक प्यार करते थे। जिन तक निर्बलताओं में बालकराम जी के साथ मैं सहकारी रह चुका था, उन से स्वयम् मुक्त होने पर मैं उन को भी उन से मुक्त कराना चाहता था। इस लिए उन से बड़ा गाढ़ा सम्बन्ध था। सम्वत् १९४६ का श्रावण मास मेरे लिए बड़ा कष्ट-दायक सिद्ध हुआ। एक ओर तो प्रस्तावित उपदेशक श्रेणी के झगड़े को सामने रख कर पं० गुरुदत्त के विरोधी उन पर कटाक्ष करते थे जिस का अज्ञात साधन वे मुझे बना लेते थे। मैंने कहीं लिख दिया कि जब तक उपदेशक श्रेणी का खोलना दयानन्द कालिज कमेटी वा आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब नियम पूर्वक स्वीकार न करले तब तक उक्त श्रेणी के लिए धन पण्डित गुरुदत्त के पास भेजा जाय; फिर क्या था, रौला मचा कर आकाश और पाताल एक कर दिए गए। मनुष्य पूजा की बुनियाद पड़ रही है, गुरुदत्त की आधार-शिला रक्खी जा रही है इत्यादि-और यह कोलाहल वे लोग मचाते थे जो सर्व संस्थाओं को अपने स्वार्थ का साधक बनाने का प्रयत्न कर रहे थे और जिन्होंने अन्त को संगठन के सर्व नियमों को पांव तले रौंद डाला।

दूसरी ओर उस मास में अनावृष्ट के कारण गर्मी बहुत पड़ी। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि उस श्रावण की तीन चार रातें ऐसी भयानक व्यतीत हुईं कि नगर की घनी बस्ती से व्याकुल होकर मेरे कई मित्र मेरे खुले आहते में आते और रात को दो दो बार मेरे ठन्ढे पानी के कूप पर स्नान करने के लिए डोल को खट खटाते रहते।

ऐसी अवस्था में साथ ही प्रचारक का सम्पादन तथा आर्य्य समाज का अन्य कार्य और इस पर इमारत के ज़ोर के कारण धन कमाने की आवश्यकता कचहरी को घसीट रही, और सब से बढ़ कर हैज़े (Cholera) का आक्रमण-विचित्र दशा बन रही थी। यह अवस्था थी जब श्रावण के अन्तिम दिवस, १४ अगस्त, १८८९ ई० की रात को लाला बालकराम का देहान्त हो गया। आर्य समाज जालन्धर ने अनावृष्टि के चिह्न देखते ही बड़े हवनों पर बल दिया था। बज़ाज़े वाले बड़े चौक में जिस दिन हवन हुआ, उस दिन पूर्ण आहुति पड़ते ही मूसलाधार वर्षा होने लग गई। हम लोगों ने उठ कर शामियाने के बीच में बांस की चोब लगा कर हवन कुण्ड की रक्षा की और दो घन्टों तक हरिकीर्तन से बाज़ार को गुञ्जा दिया। हवन की तय्यारी के समय जो दुकानदार द्वेष कर रहे थे वे हम लोगों की धर्म प्रेम की नुमाइश को देख कर आप से आप खिंच आए और हमारा साथ देने लगे। सारे शहर में धूम मच गई कि आर्यों के हवन ने अनावृष्टि को दूर कर दिया और १५ स्थानों से हवन के लिए वहीं निमन्त्रण मिल गया।

वर्षा तो हुई परन्तु हैज़ा साथ ही फूट निकला, और बालकराम की अकाल मृत्यु ने शहर में भौंचाल डाल दी। वकील और रईस बाहर को भागने लग गए, परन्तु आर्य्य पुरुष अपने कर्त्तव्य को समझते हुए बीमारों की सेवा में लगे रहे।

बालकराम जी के देहान्त पर मेरे सारे परिवार को बड़ा कष्ट हुआ। मेरी धर्मपत्नी बड़ा लज्जावती थीं और इस लिए उन में दिखलावे का लेशमात्र भी न था। दुख को प्रकट करने से, रो पीट कर, कुछ काल में शान्ति सी आ जाती है, परन्तु हृदय की गहराई में कष्ट को अनुभव करने वाले की सहन शक्ति का कुछ पारावार ही नहीं। सौभाग्यवति शिवदेवी को जो दुख हुआ उसे घर का कोई भी व्यक्ति, उन की माता वा मेरे अतिरिक्त न समझ सका।

जिस समय बालकराम जी की मृत्यु हुई उन के पिता घर न थे और सब से छोटे भाई पिता के साथ गए हुए थे। भक्तराम जी उस समय इंगलैन्ड में बैठे बैरिस्टरी की तय्यारी कर रहे थे। घर में केवल देवराज जी ही थे, जिन का कोमल हृदय व्याकुल हो जाता यदि मैं पास न होता। दिन रात मुझे उन के पास रहना पड़ा। इसी समय मुझे छूटा हुआ हुक्के का रोग फिर से आ-लगा। पृथ्वी पर सोने का कभी अभ्यास न था। श्री देवराज जी की बिरादरी के सब लोग आकर ज़मीन पर सोते थे; मुझे भी भूमि शय्या पर ही लेटना पड़ा। तीसरी रात को पेट में असह्य पीड़ा होने लगी। बहुत यत्न किए, जो औषधियां प्राप्त थीं उन से काम लिया; ज़ीरे का तेज़ अर्क मिला उस का भी सेवन किया. परन्तु पीड़ा न दूर हुई। तब उपस्थित वैद्य ने चिलम में कुछ रख कर दम लगवाया, जिस से पीड़ा दूर हो गई। सम्भव है कि पीड़ा निवृत्ति अन्य औषधियों का ही परिणाम हो, परन्तु मुझे स्वयम् हुक्का पीने वाले डाक्टर जी ने निश्चय दिलाया कि जिस व्यक्ति ने वर्षों हुक्के की गुलामी की हो उसे अपनी पाचक शक्ति की सहायता के लिए हुक्के की शरण फिर से लेनी चाहिए। दूसरे दिन से ही हुक्के बाज़ी का आरम्भ हो गया, परन्तु दूसरी बार दो वर्षों के पश्चात् इस व्यसन को तिलांजलि दी तो आज तक यही नहीं कि इस एक व्यसन का नाम नहीं लिया, प्रत्युत इस की बदौलत बहुत से और व्यसनों से भी मुक्ति लाभ की।

इस मौक़े पर भी आर्य्य-समाज के सभासदों ने विचित्र शान्त अवस्था का दृश्य दिखाया। बालकराम जी म्युनिसिपल कमिश्नर थे, आनरेरी मजिस्ट्रेट थे, सब राष्ट्रीय सभाओं के उत्तेजक थे; इस लिए उन की मौत पर जहां एक दिन मण्डी बंद रही, म्युनिसिपल बोर्ड स्कूल बन्द रहा, यहां तक कि सनातन धर्म सभा ने भी इसी शोक में अपनी सभा का साप्ताहिक अधिवेशन बन्द कर दिया, वहां आर्य्य-समाज का साप्ताहिक अधिवेशन बराबर हुआ और प्रधान समाज ने ईश्वर प्रार्थना कर के पूर्ववत् ही उपदेश दिया। जालन्धर आर्य्य समाज में उन दिनों कुछ विचित्र ही भाव काम करते थे जिन का अब प्रायः आर्य्य-समाजों में अभाव सा हो रहा है।

(मुन्शीराम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य चर्चा

निम्नोक्त कालिदास की उक्ति को मन में रख कर कहते हैं द्विवेदी जी !

"एको हि दोषो गुण सन्निपाते। निमज्जतीन्दोः किरणेस्विनाङ्कः"

"चन्द्र निम्ब के जैसे नहीं कलंक दिखाता है।

तैसे ही गुण गण समुद्र में एक दोष छिप जाता है।"

वास्तविक भाव कथनीय ये है कि:— "एक दोष गुण समूह में उसी प्रकार छिप जाता है जैसे किरणों में चान्द का काला धब्बा छिप जाता है"। परन्तु कहते हैं "चन्द्रविम्ब के भीतर जैसे नही कलंक दिखाता है।"। एक दम प्रश्न होता है "किस को नहीं दिखाता है ?" क्या "नहीं" कोई चीज़ है जो कलंक को दिखाती है?"

शायद ऐसा होता तो अच्छा था:— "चन्द्र निम्ब की किरणों में जिमि नहीं कलङ्क लख पड़ता है।"

"दीखता है" के स्थान पर "दिखाता है" कहना सर्वथा प्रमाद है।

(२) निम्न लिखित में च पद्यार्थ असम्बद्ध है:—

"कुसुम कली के कुण्डल पहले भूर्ज की कोमल छाल, बैठे शिला तलों पर नन्दी भृङ्गी आदिक प्रमथ विशाल। वर्फ खोदते हुए खुरों से वृषभराज ने वारम्वार। असहनीय सिंह ध्वनि सुन कर किया भयंकर शब्द अपार॥" ३३॥

इस उत्तरार्ध में कही बात असम्बद्ध है। कहां ? यह प्रश्न होता है। पूर्वार्ध में नन्दी आदि बैठे थे उत्तरार्द्ध में नन्दी ने खुरों से वर्फ उखाड़ी और भयंकर शब्द किया। इन दोनों को, परस्पर सम्बन्ध न होने पर भी, खैंचा तानी से इकट्ठा कर दिया है। और लीजिये:—

(३) आप संस्कृत और भाषा की कलम लगाते हैं, लिखते हैं—

"इस से उस के लिए पिता ने की न और वर की अभिलाषा अग्नि विहाय नहीं पाते हैं शुद्ध हवा को अन्य प्रकाश॥" ३०॥

पिछले पद में देखिए कैसा पञ्चामृत बनाया है। विहाय की लाग लगाने पर भी अर्थ नहीं पता लगता है। आश्रम भूत भाव है:—

"ऋते कृशानोर्नहिमन्त्र पूतमर्हन्तितेजांस्यपराणिहव्यम्।"

"अर्थात् विना अग्नि के और कोई सूर्य चन्द्रादिक तेज मन्त्र पूत हव्य को लेने के योग्य नहीं है"॥ अच्छे कवि हैं जिन की टीका लिये भी इतनी मगज़ पिच्ची करनी पड़े। मूल पढ़ें तो अनुवाद का भावार्थ जान पड़े। ऐसे अनुवाद से क्या लेना है जिस में संस्कृत से बचने के लिए हिन्दी भाषी हिन्दी पढ़ें; और हिन्दी में फिर संस्कृत।

(४) अब समास की वारी है। द्विवेदी जी की कविता में समास बड़े हैं। कोई संस्कृत व्याकरण पढ़े तो हिन्दी का समास समझ में आवे।

जैसे छोटे पद्य में:—"निज-कुच-नितम्ब वोझा "निजानां कुचयो र्नितम्बस्यच वोझा इति निज कुच नितम्ब वोझा" देखिये कैसा बांका समास है। और कीजिए

"तत्सुत बन सेना धीश वलिष्ठ तुम्हारा खो लेगा वन्दी-देव वधू-कच-भारा"

"वन्द्यो या देवानाँ वध्व स्तासां कचानां भारास्ते सान्" ये लम्बा समास है।

शेष रही भाष्य पदाव ली। हम तो कहते हैं कि द्विवेदी जी के कुमार सम्भव सार को समझने के लिए साधारण भाषा भाषी तो टक्कर मारने से रहे यदि कोई अच्छा संस्कृत का विद्वान् और हिन्दी का विज्ञ पढ़े तो कहीं समझ आवे। और फिर भी पूर्वोक्त अर्थानर्थ अटकने से कुछ दुविधा ही होगी।

(५) अब संक्षेप से भाव विन्यास लीजिए। दूसरे सर्ग में चतुर्मुख की स्तुतियों की है—

"तुम अपने को लो केश आप ही जानो। रच अपने ही से आत्म रूप सुख मानो।"

क्या चतुर्मुख पहली श्रेणी के बच्चे थे जो इस प्रकार आज्ञा या उपदेश रूप से जानो मानो कहा जा रहा है। कालिदास कहते हैं—

"आत्मा नमात्मनावेत्सि सृजस्यात्मानमात्मना" यहां उपदेश की झलक नहीं है परस्तुति की झलक है।

पहले जीवन में द्विवेदी जी ने हिन्दी कालिदासादी की मुंह तोड़ समालोचना कर के अब कालिदास की सब उत्कृष्टताओं की कांट छांट करना निर्णय किया है। कालिदास के आपने एक वार दोष भी बीने थे; सो अब उस की कमी पूरी की जा रही है क्या ?।

यदि ऐसा भी करना था तो ऐसे लोकोत्तर अनुवाद कर के कालिदास विचारे पर क्यों मढ़ा जाय।

(६) अब विज्ञान विन्यास लीजिये। द्विवेदी जी कहते हैं:—

"जब सोते हो तुम नाथ प्रलय होती है;
जगते हो जब तब सृष्टि वीज बोती है। २।५।

भावाश्रय:—

"स्वकालपरिमाणेन व्यस्तरात्रिंदिवस्यते।
यौतु स्वप्नाव बौधौतौभूतानां प्रलयोदयौ"

अपने काल के परिमाण से हे ब्रह्मन् तुमने दिन रात का विभाग किया है। तुम्हारा ही सोना जागना प्राणियों की प्रलय और उदय हैं।"

आप द्विवेदी जी ने हट से कहा "ज-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गते हो जब, तब सृष्टि बीज बोती है" वाह ! जब बीज बोया जाय और उगे तब तो सृष्टि पैदा हो । फिर सृष्टि को अवकाश मिले कि वह बीज बोवे ? (अभी सृष्टि पैदा नहीं हुई बीजपता नहीं कैसे सृष्टि ने बोया । सृष्टि ने महाराज ! बीज नहीं बोना परन्तु उन के जागने पर सृष्टि ने पैदा होना है। जिसने पैदा होना हो वह बीज नहीं बोया करता परन्तु जिस ने पैदा करना हो वह बीज बोया करता है। खेत के जौ स्वयं बीज नहीं बोते पर किसान जौ को बीजा करता है । आप की सायन्स आप जानें या खुदा जाने ! । कालिदास तो ब्रह्मा को ७वें श्लोक में पिता कहते हैं ।

ऐसी अर्थानर्थ कारक अनुवाद कविता यदि हमारे धुरन्धर मानी विद्वानों की उत्पत्ति तथा हिन्दी साहित्य की सम्पत्ति बनी तो बस ! हिन्दी का कम से कम बेड़ा पार है । प्राचीन कवियों की तो रही सही क्या बचेगी । आगे आने वालों की भी ऐसे अनुवदाकों के अनुवाद देख आगे के लिए रुक जायगी। विधाता भी सृष्टि को अपना बीज आप बोते देख विगत प्रभुताई का अफ़सोस करेंगे ।

(७) शब्द विकार देखिये; आप लिखते हैं:—

.....बातें सुखकारी
.....पति त्रिपुरारी

संस्कृत के त्रिपुरारि शब्द को भी तुक्तों की मार सहनी पड़ी ।

इसी प्रकार के दूषण भूषणों से आप द्विवेदी जी की पञ्चमगर्जितक कविता पर भरी पड़ी देखेंगे । हमने तो देग से चावल सा निकाल कर इस लिये दिखा दिया कि आप वही ग्रन्थकार हैं जो कालिदास की निरङ्कुशता को देख बिमारी के कारण विश्राम लेते हुए भी चैन से बैठ न सके थे परन्तु चट से कालिदास पर धर के कलम घसीटदी थी । और सब दोष २ निकाल कर गुणों को आंख की पलक में छिपा गये थे । और गुणों को दिखाने के समय आपने अब कालिदास के गुणों को कागज़ की ओट में छिपा कर समस्त अपने दूषणों से पांच सर्ग भर दिए हैं । कहां तक कहें पाठक स्वयं पढ़ के देखलें।

मूल्य) पता इंडियन प्रेस प्रयाग ।

प्रेरित

प्रतिनिधि सभा इस ओर ध्यान दे!

आर्य्यसमाज का मुख्य कर्तव्य है कि वेदों की शिक्षा को मनुष्य मात्र तक पहुंचावे, प्रत्येक नर नारी के मनों में वेदों की प्रतिष्ठा और प्रेम उत्पन्न करे और सर्व को इस योग्य बनावे कि वह अपने उद्देश पर चलता हुवा दूसरों के कल्याण का उपाय सोचे और संसार भर में वेदों का डंका बजावे । यह बात तो मैं भली प्रकार जानती हूं । अब तक आर्य्यसमाज ने बहुत से कार्य्य किये हैं और ऐसे बीर उत्पन्न किये हैं कि जो धर्म पर बलीदान हो गये हैं, यदि मैं इनका वर्णन करूं तो यह लेख लम्बा होजायेगा; परन्तु मैं थोड़े ही शब्दों में अपने भाव प्रकट कर देना चाहती हूं । अब तक आर्य्यसमाज ने वेद प्रचार का जितना भी कार्य्य किया है वह सब पुरुषों ही के उद्धारार्थ किया है और स्त्रियों के लिये कुछ भी कार्य्य नहीं किया । यह बात तो सत्य है कि अब स्थान २ पर कन्या पाठशालायें स्थापित हो गई हैं और कुछ हो भी रही हैं परन्तु स्त्रीसमाजों की दशा बड़ी शोचनीय है और जब तक आर्य्यसमाज स्त्रीसमाजों में प्रचार कर स्त्रियों के मनों में पूर्ण रूप से वेदों का महत्व नहीं जमाती तब तक पुरुषों की उन्नति भी अधूरी ही है और पुरुष अपनी उन्नति में कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि यदि कोई मनुष्य यह इच्छा करता है कि मेरे गृह में वैदिक रीत्यानुसार बच्चों के संस्कार हों तो उस में विघ्न डालने वाली स्त्रियां ही होती हैं । यदि स्त्रियों को संस्कारों के लाभ और उनका महत्व ज्ञात हो और उनका दृढ़ निश्चय हो कि संस्कार अवश्य ही होने चाहियें तो कोई ऐसी शक्ति नहीं जो स्त्रियों के कर्तव्य में बाधा डाल सके कोई ऐसा बल नहीं जो उन्हें अपने धर्म से च्युत कर सके । परन्तु जब स्त्रियों को इस बात का ज्ञान ही नहीं कि संस्कार किस चिड़िया का नाम है; तब उन से यह आशा करनी कि स्त्रियें स्वयमेव प्रसन्नता पूर्वक बच्चों के वैदिक रीति से संस्कार करें निष्फल ही नहीं प्रत्युत बड़ी भारी भूल है । बहुत सी स्त्रियें ऐसी हैं कि जिन के मनों में समाज के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है । परन्तु उत्तम स्त्रियों का संग वा उत्तम शिक्षा के न मिलने से उनका समाज से प्रेम जाता रहता है और वह रंग जो उनके मन में चढ़ने लगता है उतर जाता है क्योंकि स्त्री समाज में जाने ही से स्त्रियों के मनों में समाज से प्रेम उत्पन्न होता है । परन्तु जब स्त्री समाजों की दशाही शोचनीय है तो कौन उनके मन में समाज से प्रेम उत्पन्न करा सकता है और कौन उनके मन में वैदिक धर्म की श्रेष्टता को जमा सकता है । दूसरे बहुत से पुरुषों की समाजें ऐसी हैं कि जहां स्त्रियों के बैठने का भी प्रबन्ध नहीं होता । उन्हें जूतियों में बिठाया जाता है । कितनी ही समाजों में स्त्रियों के बैठने को तो स्थान होता है परन्तु वहां बिकें तान दी जाती हैं और स्त्रियों को भली प्रकार व्याख्यान भी सुनाई नहीं देते । ऐसी अवस्था में प्रत्येक जन विचार सकता है कि किस प्रकार मनुष्यों की उन्नति हो सकती है । तथा मातायें कैसे अपने बच्चों को विद्वान और उत्तम बना सकती हैं जब कि स्त्रियों में वैदिकधर्म के प्रचार का कुछ प्रबन्ध ही नहीं । इसकी ओर प्रतिनिधि सभा को ध्यान देना चाहिये क्योंकि न तो स्त्रीसमाजों के वार्षिकोत्सवों का प्रबन्ध प्रतिनिधि सभा कुछ करती है और ना ही स्त्रियों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मनों में समाज से इतना प्रेम और आत्मिक बल है कि वे सारे कार्य्य स्वमेव कर सकें। पुरुष समाज के वार्षिकोत्सवों पर प्रतिनिधि सभा की ओर से उपदेशक और भजनीक भेजे जाते हैं परन्तु स्त्रीसमाज की उन्नति के लिये प्रतिनिधि सभा कुछ प्रबन्ध नहीं करती; अतः प्रतिनिधि सभापंजाब को यह उचित है कि इसका यथोचित प्रबन्ध करे और मेरी नम्रता पूर्वक प्रतिनिधि सभा से यह प्रार्थना है कि वह ऐसी स्त्रियें वेतन देकर रक्खे कि जो स्त्रीसमाजों के वार्षिकोत्सवों पर जा कर वैदिक धर्म का प्रचार कर उत्सव की शोभा को बढ़ावें स्त्रियों के उत्साह को बढ़ावें जिस से प्रत्येक स्त्री के मन में कार्य्य करने की इच्छा उत्पन्न हो और उनका वैदिकधर्म पर दृढ़ निश्चय हो। प्रत्येक स्त्रीसमाज की सेवा में मेरी यह प्रार्थना है कि वह स्त्रियों से चन्दा इकट्ठा कर के प्रतिनिधि सभा की सेवा में भेजे; जिस से प्रतिनिधि सभा उत्तम और विदुषी स्त्रियें उपदेशिका रक्खे और स्त्रीसमाजों में प्रचार करा के स्त्रियों के संकल्पों को शुद्ध और पवित्र बनावे कि जिस से पुरुषों की विशेष उन्नति हो और स्त्रियें अपनी सन्तान को सुशिक्षित और परोपकारी बनाने में समर्थ हों ॥

विद्यावती

लुधयाना

समुद्रपार विद्यालंकार

का

प्रेमपत्र

शोककुटी, कोलम्बो ८-२-१५

मंत्री स्वागतकारिणी सभा

कुलजन्मोत्सव

भाई धर्मदत्त!

नमस्ते

आप का पत्र ५ की रात्रि को मुझे मिला। नीचे हस्ताक्षर यद्यपि तुम्हारे हैं परन्तु लेख भाई प्रियव्रत का है। मैं १५ जनवरी की रात को आप भाइयों से विदेशगमन के लिये विदा हुआ था। १७ को कलकत्ता पहुंच कर उसी दिन रात्रि को भारद्वाज से विदा मांगी। तब से लेकर ५ फरवरी की रात तक मुझे अपने भाइयों से सर्वथा विछुड़ाव था। मेरा मन बड़ा ही दुःखित रहता था। ऐसी अवस्था में एक विदेश गये हुए आदमी को घर से पत्र आने पर जो निःसीम खुशी होती है उसे शायद आप अनुभव नहीं कर सकते। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं उसे बता सकूं। जो ऐसी अवस्था में रह चुका हो वह ही इसे अनुभव कर सकता है। मैं यहां किस प्रकार दिन गुजारता हूं उसे मैं ही जानता हूं। मेरा सदा यही प्रयत्न रहता है कि विना कार्य के एक क्षण भी खाली न बैठूं क्योंकि यहां खाली बैठा कि कुल भाई याद आने लगते हैं और फिर मन को संभालना बड़ा कठिन हो जाता है। कल आपके हृदय खुशी और प्रेम के समुद्र में स्नान करेंगे परन्त शोक है कि मेरे सौभाग्य में यह स्नान नहीं था मुझे तो यहां खारे जल का समुद्र ही देखने को मिलेगा और प्रतिदिन उसे ही देखता हूं। तो भी यद्यपि कल मेरा शरीर आप भाइयों के मध्य नहीं होगा तो भी हृदय वहीं होगा। मैंने ३१ जनवरी को आप भाइयों के नाम एक पत्र भेजा था। कल उसी के द्वारा आप के गले लगूंगा। यदि मैं इस समय आप के पास किसी तरह आना भी चाहूं तो भी अब मेरे लिये असम्भव है। यदि कोई ऐसा यान हो जो एक दिन में ही आप के पास पहुंचादे तभी आ सकता हूं

मैंने कल के लिये विचारा था कि एक सभा बुला कर उस में यहाँ के निवासियों तक गुरुकुल का संदेश पहुंचाता। यद्यपि यह कार्य कल एक शोकमय घटना के साथ कुछ पूरा होगया है तथापि अब वह सभा भी नहीं की जा सकती। क्योंकि ४ फरवरी की सायं एक बड़े भारी बौद्ध सन्यासी की मृत्यु हो होगई है अतः सारा जन समुदाय शोक ग्रस्त है। इन्हीं के परमानन्द कालेज में मैं पढ़ता हूं। ५ और ६ फरवरी के ३ बजे के पश्चात् श्मशान भूमि की ओर चले। कालेज से श्मशान भूमि ५ मील की दूरी पर है। ५ मील तक सारा बाज़ार झण्डियों और वन्दनावरों से सजा हुआ था। शव के आगे २ विविध प्रकार के चित्रों वाले लग भग ५० झण्डे मनुष्य उठाये लेजा रहे थे और अंग्रेज़ी बाजा बजता जाता था। पाव मील तक नरनारियों के सिवाय और कुछ नहीं दीख पड़ता था। बाज़ार में ट्राम और मोटर कार सब रुक गई थीं। सारे रास्ते में इतरादि सुगन्धित द्रव छिड़के जाते रहे और लाजवर्षा तथा पुष्पवृष्टि होती रही सज धज में प्रोसेशन राजकीय लाट से कम न था। इस शोक की सवारी में भेद केवल यही था कि नरनारियों के मुख मुरझाये हुए थे। श्मशान में पहुंच कर बौद्धों की सब से बड़ी धर्म महासङ्घ सभा हुई। उस में केवल चार मुख्य २ बौद्ध आचार्यों को शोक प्रकाशनार्थ बोलने को समय मिला परन्तु क्योंकि मैं बहुत दूर देश से इन के पास पाली पढ़ने आया था और उन का मेरे साथ प्रेम भी बहुत था अतः पांचवें मुझ को बोलने का समय दिया गया। यद्यपि ऐसे समय बौद्ध आचार्यों के सिवाय अन्य कोई नहीं बोल सकता तथापि मुझे शोक प्रकाशन के लिये अधिकार दिया गया। भिक्षु जी ने पहले मुझे इस अवसर के लिये कविता करने के लिये कहा था। उसी की उन्होंने सिंहल लिपि में उसी दिन २ सहस्र प्रति छपवा लीं और मेरे बोलने के समय बांट दीं। मेरे बोलने पर सब भिक्षु तथा अन्य जन बड़े ही आश्चर्यित हुए और कहने लगे कि हमने १०० वर्ष पूर्व तक यहां ऐसा पण्डित कोई नहीं देखा। और जो मिले यही कहने लगे कि आप के भाषण से सब भिक्षु बड़े प्रसन्न हैं। और आशीर्वाद देने लगे। अब बहुत से जन हरिद्वार को जान गये हैं और गुरुकुल विश्वविद्यालय के विषय में इधर उधर बातें करते हैं। यह सब हमारे कुल की ही कीर्ति है और उसी का प्रचार होता है। मेरा मन जहाँ तक हो सके बिलकुल खाली न रहे इस के लिये अब यह निश्चय किया है कि कल यहां का बड़ा प्रसिद्ध अद्भुतालय देखने जाऊंगा। जिस से कुल जन्म के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिवस पर अपने भाइयों में अपनी अनुपस्थिति देख कर मेरा मन बहुत दुखित न हो। सब भाग्य से मेरा वाइसराय के एक मन्त्री के साथ परिचय हो गया है वही कल दिल्ली ले जावेंगे।

भाई प्रियव्रत को स्मरण दिला दें कि यदि कुल जन्म के उत्सव का वृत्तान्त अभी न भेजा हो तो शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

कुल में परमात्मा की कृपा से सब कुशल होगा। अन्त में सब भाइयों को सप्रेम बार बार नमस्ते करता हुआ इस पत्र को समाप्त करता हूं।

तुम्हारा
भाई
चन्द्रमणि

आर्य त्यौहारों की तिथियां

भाग्यवर जयस्ते

सेवा में सविनय निवेदन है कि "प्रचारक" २५ माघ में महाशय कृष्ण जी मन्त्री सभा के पं० लेखराम जी की जयन्ति सम्बन्धी सूचना के अनुसार यहां की समाज में फाल्गुण सुदी ३ को पण्डित जी की जयन्ती मनाई गई।

श्रीमान पण्डित गुरुदत्त जी की जयन्ती तिथि अथवा तारीख ज्ञात न होने के कारण आज तक नहीं मनाई गई किन्तु इस वर्ष पण्डित जी की भी जयन्ती मनाने का विचार है। पण्डित जी की मृत्यु की तारीख तो २ फाल्गुन के प्रचारक में "कुछ आप बीती कुछ जग बीती" से विदित हो गई अर्थात् ता० १६ मार्च सन १८९० को उक्त पण्डित जी की मृत्यु हुई थी, किन्तु महाशय कृष्ण जी की सूचनानुसार सब त्योहार देशी तिथियों से मनाना चाहिये, इस लिये आप से सविनय निवेदन है कि यदि आप देशी तिथि की सूचना भी प्रचारक द्वारा दे देवें तो बड़ा उपकार होगा और पण्डित गुरुदत्त जी की भी जयन्ती अन्य जयन्तियों की तरह अवश्य मनानी चाहिए इस की भी यदि घोषणा या निवेदन सब आर्य समाजों के लिये प्रचारक में कर देव तो अत्युत्तम होगा।

आपका सेवक
गोविन्दराम

नोट—१६ मार्च, १८९० के दिन तिथि ८ चैत्र, १९४६ थी इस वर्ष वह दिन २१ मार्च को पड़ेगा।

(सम्पादक)

सामाजिक समाचार

—स्वामी सदानन्द जी सूचित करते हैं। कि शशाना और घड़ी जिला रोहतक के बीच में जो जंगल है वहां पर फाल्गुण सुदी दशमी एकादशी को दयानन्द गुरु दीक्षा नाम से एक मेला प्रति वर्ष हुआ करेगा। मेले में आने वाले यात्रियों को सांपला स्टेशन पर उतर कर वहां से सिवोहने तक पक्की सड़क है रोहने से रटीड़ू तथा मेला का स्थान निकट ही है। इस वर्ष मेले के प्रबन्ध में रटीड़ू के आर्य्य पुरुष तत्पर हो गये हैं। रोहतक, करनाल देहली हिसार के जिलों के आर्य्य पुरुषों से विशेषतया निवेदन है कि वह इस धर्म्म मेले में अवश्य पधार कर कृतार्थ करें।

—म० क्षेत्रपाल जी मन्त्री आर्य्यसमाज राजपूरा सूचित करते हैं कि ता० ६-१२-१४ को यहांपर नवीण आर्य्यसमाज स्थापित होगया। जिस के अधिकारी निम्न प्रकार चुने गये हैं। ला० राधाकृष्ण जी प्रधान। ल० ठाकुरदास उप प्रधान। क्षेत्रपाल जी मंत्री। ला० रामरक्षपाल उप मंत्री। ब० रल्लूराम जी कोषाध्यक्ष। आर्य्यप्रतिनिधि सभा से प्रार्थना है कि वह अपने उपदेशकों को इस समाज में भी भेजने की अवश्य कृपा करे क्यों कि यह समाज अभी बिल्कुल नया है।

—म० बलरामसिंह जी सूचित करते हैं कि स्थान आसन्तोल बिहार में गत जुलाई मास में रेलवे धर्म्मचारियों के उद्योग से आर्य्यसमाज स्थापित होगया है म० किशोरीलाल जी तथा म० चमरुलाल जी इत्यादि का पुरुषार्थ इस विषय में सराहनीय है।

—म० कौमीलालदेव जी मसौढी प्रान्त पटना निवासी श्रीमान ब्रह्मचारी मुनीश्वरानन्द जी का पता पूंछते हैं जिन महाशयों को स्वामी जी का पता ज्ञात हो उक्तमहाशय को सूचित करदें।

—बाबा भगवान दास जी रोपड़ से लिखते हैं कि खालसासमाचार तथा पन्थ सेवकन जो आर्य्यों की पुस्तकों की सूची प्रकाशित की है उसमें कई पुस्तकें ऐसी लिखी हैं कि जो आर्य्य समाजियों की बनाई हुई नहीं इस प्रकार सर्व साधारण को धोखा दिया गया है।

—ता० ७ जनवरी से १५ को रायसाहेब सेठ शम्भूनाथ जी मैनेजर रियासत कपूरथला के आत्मज कुंवर कैलाशनाथ के पुत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीति से बड़े समारोह से हुआ। इस संस्कार में सनातनी पंडित भी सम्मलित हुये थे। बालक का नाम विश्वनाथ रक्खा गया। तत्पश्चात म० श्यामबिहारीलाल जी के मनोहर भजन तथा श्रीमती रामप्यारी देवी अध्यापका कन्या पाठशाला का मनोरञ्जक व्याख्यान हुआ। अन्य कई महाशयों के भी व्याख्यान हुये। श्रीमान रायसाहेब ने निम्नप्रकार आर्य्य संस्थाओं को दान दिया। आर्य्य समाज मन्दिर बहरायच (जो नवीण बनने वाला है) २५) आर्य्यकन्य पाठशाला २१) संस्कृत पाठशाला ११) इस के अतिरिक्त राय साहेब के भतीजे श्री म० गोविन्दप्रसाद जी सेठ प्रधान आर्य्यसमाज बहराइच ने १००) आर्य्यसमाज मन्दिर के लिये दान दिया इस समस्त दान केलिये आर्य्य समाज रायसाहेब को धन्यवाद देती है।

मन्त्री आर्य्यसमाज
बहराइच

—मन्त्री जी आर्य्यसमाज खंडवा लिखते हैं कि वहां पर समाज का अपना मन्दिर नहीं था जिस के कारण वैदिक धर्म्मप्रचार में बड़ी रुकावट पड़ती थी अब वहां के कतिपय उद्योगी पुरषों के परिश्रम से ६००) की लागत से समाज मन्दिर के लिये भूमि मोल लेली गई है। किन्तु मन्दिर की बनवाई इत्यादि के लिये धन की अत्यन्त न्यूनता है अतः आर्य्य पुरुषों से निवेदन है कि यथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शक्ति इस धर्म्म कार्य्य में खंडवा आर्य्य समाज को हाथ बटा कर कृतार्थ करें। धन मन्त्री आर्य्य समाज खंडवा के पते पर आना चाहिये।

— —

—ता० ३ जनवरी सं० १५ को श्रीमान मिस्टन साहेब की कोठी पर श्रीमान जज साहेब के सभापतित्व में हिन्दी का उद्-सम्मेलन (जो कि १५ नवम्बर सं० १४ को विक्टोरियापर्क बदायूं में हुआ था) उस के पारितोषिक वितीर्ण करने के लिये एक वृहद सभा शहर के सभोपतिष्ठित रईसों और राज कर्मचारियों की उपस्थिती बड़े समारोह से हुई। प्रथम मङ्गलाचरण होने के पश्चात नूतन कवितादि पढी गई तदन्तर सभापति महोदय ने अपने हाथ से पारतोषिक बांटा हमारे वैद्य पंडित अशरफ़ीलाल जी अध्यापक गुरुकुल सूर्य्य कुन्ड बदायूं को रौप्य पदक उत्तम समस्यापूर्ति करने के कारण मिला और इनामात बांटेगये। यह श्रीमानन्मान्य पं० राधेलालजी चतुर्वेदी डिपुटीकलेक्टर बदायूं के उद्योग का ही फल था धन्यवाद के पश्चात् सभा विसर्जन हुई।

———

देश सेवा यज्ञ

अपने—३२ क्रोड़ भाइयों के देश सेवा के लिये आओ और इस देश सेवा यज्ञ की मदद करो!! मौरमददलोभी!!! कम से कम देश सेवा वार्ताएँ खरीदो विज्ञापन पत्र और नियमाली मंगा के देखो। इस पत्र के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या भेजने पर नीचे बतलाये पुस्तक मुफ़्त भेजे जायेंगे (१) हमारी प्राचीन उन्नति (२) मनुष्य के योग्य कुदरती खुराक।

मैनेजर देश सेवा यज्ञ पो. तालोद
अहमदाबाद

———

——म० जागेश्वरप्रसाद जी जिलाग़ाज़ीपूर से सूचित करते हैं कि यहां पर म० सत्यदेव जी के कई प्रभाव शाली व्याख्यान हुये जिनका प्रभाव लोगोंपर बहुत अच्छा पड़ा और देवाश्रम पाठशाला काशी के लिये लग भग ७) के चन्दा भी एकत्रित हुआ। आर्योपदेशकों से प्रार्थना है कि वह जब इस प्रान्त में आया करें तो दिल दार नगर समाज से होते हुए जमानियां स्थान पर भी अवश्य पधारने की कृपा किया करें।

———

——आर्य्यकुमार सभा सहारनपुर के उप प्रधान बा० द्वारकाप्रसाद जी के भाई का विवाह संस्कार २० जनवरी सं० १५ को वैदिक रीति से हुआ। समाजिक फन्डो में दान देने के अतरिक्त आप ने आर्य्यपुरुषों का प्रीती भोजन से सत्कार किया। परमात्मा जोड़े को चिरञ्जीव रक्खे।

———

—२१ जनवरी सं १५ को आर्य्यसमाज सहारनपूर के प्रधान बा० बनवारीलाल जी की दोहोती का विवाह ला० काशीराम जी के साथ वैदिक रीति से हुआ। वर और वधू दोनों पक्ष की ओर से ५१) विविध आर्य्यसमाजिक संस्थाओं को दान दियागया। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह वर वधू दोनों को दीर्घायु करें।

———

—आर्य्यसमाज सहारनपुर का वार्षिकोत्सव ता० १६, १७, १८ अप्रैल सं० १५ को बड़ी धूम धाम से होगा बड़े २ योग्य सन्यासी और अन्यभद्रपुरुषों के पधारने की पूरी आशा है।

———

मैनपुरी प्रान्तान्तरगत शकरनपुर आर्य्य समाज का वार्षिकोत्सव चैत्र वदी ५, ६ और ७ सं० १९७२ वि० तदनुसार ६, ७ और ८ मार्च १९१५ ई० को होना निश्चित हुआ है सर्व साधारण को विदित किया जाता है कि जो महाशय कृपा पूर्वक श्री स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती और श्री अनुभवानन्द सरस्वती और श्री आनन्दमुनि ब्रह्मचारी के पते से सूचित करेंगे उनका यह समाज विशेष कृतज्ञ होगा।

———

—आर्य्य समाज बटाला गुरुदास पुर का वार्षिकोत्सव ता० २३ २४ २५ अप्रेल सं० १५ को होगा।

—आर्य्य समाज चौसुहां प्रान्त मथुरा का वार्षिकोत्सव ता० १३ १४ १५ मार्च सं० १५ को होना निश्चित हुआ है।

—आर्य्यसमाजरुड़की के पुराने सभासद् तथा प्रधान ब० नत्थूराम जी का देहान्त होगया। आपने १ सहस्र से ऊपर आर्य्यसमाज की विविध संस्थाओं को दान दिया। परमात्मा दिवंगतात्मा को सद्गति दें।

———

—श्री मा० आत्माराम जी बड़ोदा से सूचित करते हैं कि लाहौर के "उषा" मासिक पत्र में किसी महाशय का लेख छपा है जिसके अन्त में "आत्मा" लिखा हुआ है। अतः इस लेख को कोई महाशय भ्रम में पड़ कर मेरा न समझें।

—आर्य्य कुमार सभा प्रयाग के वार्षिक अधिवेशन में प० नन्दकुमार देव शर्मादि कई महाशयों के व्याख्यान हुये।

—आर्य्य समाज पटियाला में ऋषिबोधोत्सव मनाया गया कई महाशयों के ऋषि के जीवन पर व्याख्यान हुये। वेद प्रचार फण्ड के लिये अपील पर ११=) एकत्रित हुये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

—आर्य्य समाज जम्मू का तृतीय वार्षिकोत्सव ता० १३, १४, १५ मार्च को होना निश्चित हुआ है। मन्त्री महाशय सर्व सज्जनों से उत्सव पर पधारने की प्रार्थना करते हैं।

—आर्य्य समाज लायलपुर का वार्षिकोत्सव ता० २३ २४,२५,२६, अप्रैल को होना निश्चित हुआ है।

—शोक है कि बिहार के पुरुषार्थी आर्य्य डा० लक्ष्मी पति जी का स्वर्गवास हो गया। डाक्टर जी आर्य्यसमाज के अनन्यभक्त थे। आप की अवस्था अभी ४० वर्ष की भी न थी। आप बिहार में गुरुकुल खोलने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। हम डाक्टर जी के परिवार से इस असह्य दुःख में सम्मलित होते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि मृतात्मा को सदगती तथा उस के परिवार को धैर्य्य प्रदान करें।

———

एक जन्म के मुसलमान की शुद्धि

मंत्री जी आर्य्य-समाज सहारनपुर सूचित करते हैं:—

आर्य्य-समाज मन्दिर सहारनपुर में २४-१-१५ को डाक्टर अज़ीज़ अहमद भूत पूर्व विद्यार्थी अलीगढ़ कालिज (जो अफरीका में सरकारी डाक्टर हैं और इस समय छुट्टी पर यहां आये हुए हैं) उन की शुद्धि कई स्त्री पुरुषों की उपस्थिति में हुई। श्री पं० कालीचरण जी "मौलवी फ़ाज़िल" तथा म० ठाकुरदास जी ने शुद्धि संस्कार कराया और डाक्टर जी का नाम "धर्मदेव" रक्खा गया। शुद्धि के पश्चात् पं० कालीचरण जी ने एक अति प्रभावशाली व्याख्यान वैदिक धर्म की महानता पर दिया। आप के व्याख्यान का सारांश यह था कि वेदों को [illegible] के लिए [illegible] वैदिक धर्म कुलदेशों के लिए है। किन्तु कुरान की शिक्षा केवल मक्के और उस के आस पास के लिए है और कुरान धर्म्म केवल अरबिस्तान के लिए बनाया गया था। इत्यादि।

———

पं० जी के पश्चात् म० धर्म्मदेव जी ने एक छोटी सी वक्तृता में बतलाया कि मैंने किन कारणों से वैदिक-धर्म्म को ग्रहण किया है। आपने कहा कि मैं चिर काल से निरामिश भोजी हूं और वैदिक सिद्धान्तों पर विश्वास रखता हूं वैदिक सिद्धान्त मुझे अति पवित्र ज्ञात होते हैं। मुझे मेरे महम्मदी भाई प्रायः इस बात के लिए विवश किया करते थे कि मैं आर्य्यसमाजिक विचार छोड़ दूं इसी कारण इस बन्धन से मुक्त होने को शुद्धि के लिए मैंने और भी शीघ्रता की जिस से फिर किसी प्रकार का दवाओ न डाला जा सके इत्यादि।

———

आर्य्यसमाज दूसरे मतों की भांति अन्य मतावलम्बियों को धोखा दे कर या एक स्थान से दूसरे स्थान पर भगा ले जा कर वैदिक धर्म्म में प्रवेश नहीं करता किन्तु डंके की चोट पर कनता है। इस लिए डाक्टर जी के शुद्ध होने का समाचार इन के पिता जी को जो मेरठ में हैं और वह भी डाक्टर हैं शुद्धि से पूर्व ही मिल गया और उन्हो ने डाक्टर जी के छोटे भाई तथा एक और मनुष्य को इस लिए भेजा कि वह डाक्टर जी को समझा बुझा कर वैदिकधर्म ग्रहण करने से रोकें परन्तु डाक्टर जी ने युक्तियों द्वारा उन्हें सर्वथा निरुत्तर कर दिया अन्त को जिस समय शुद्धि हुई तो यह दोनों मनुष्य भी आर्य्य समाज मन्दिर में उपस्थित थे। शुद्धि के पश्चात् डाक्टर जी ने २५) सामाजिक संस्थाओं को दान दिया। यह शुद्धि [illegible] स्टेशन [illegible] के पुरुषार्थ का फल है जो अफरीका में उन के साथ रहते थे। कृत्य समाप्त होने के पश्चात् श्रोतागणों का मिष्टान से सत्कार किया गया। और सायं समय समाज के योग्य प्रधान श्री म० बनवारी लाल जी के यहां डाक्टर जी को कई आर्य्यपुरुषों सहित प्रीति भोजन भी दिया गया।

आर्य्यसमाज (गुरुकुल पार्टी)

रावलपिण्डी का वार्षिकोत्सव तिथि १३, १४, १५ चैत्र सम्वत १९७२ तदानुसार २६ २७ २८ मार्च स० १५ दिन शुक्रवार, शनिवार, तथा रविवार को होना निश्चित हुआ है। आर्य्यसमाज के हितैषी पूजनीय सन्यासी तथा पंडित गण अवश्य पधार कर अपने अमृत रूपी व्याख्यानों से इस धर्मयज्ञ की शोभा को बढ़ावें।

प्रचारक के ग्राहकों से निवेदन

प्रचारक के जिन ग्राहकों का वार्षिक मूल्य समाप्त हो चुका है उनकी सेवा में वी० पी० भेजे जारहे हैं। आशा है कि वी० पी० स्वीकार कर हमें कृतार्थ करेंगे।

प्रचारक की अगली संख्या ४७ निम्न लिखित ग्राहक महाशयों की सेवा में वी. पी. द्वारा भेजी जायगी। आशा है कि स्वीकार कर के प्रचारक की सहायता करेंगे। जिन महाशयों को किसी कारण वश वी. पी. लेना स्वीकार न हो तो कृपा कर के कार्य्यालय में सूचना देदें जिस से कार्य्यलय को व्यर्थ हानि न उठानी पड़े।

सं० ३६०१ से ३८०० तक

(प्रबन्धकर्ता)

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) इनाम।

श्री बालमीकी रामायण पर।

श्री पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर ने जो श्री वाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न हो कर गवनमेंट पञ्जाब ने २००) रुपये और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रुपयों का इनाम उस के लिये रक्खा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। यह इस बात का पूरा प्रमाण है कि यह टीका बहुत उत्तम बनी है, मूल्य बिना जिल्द ५।) सुनहरी अक्षरों की जिल्द वाली ५।।)

२००) इनाम बाल व्याकरण पर

यह हिन्दी में संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण है, इस पर भी गवनमेंट ने २००) रुपया इनाम दिया है, और पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने इसे मिडल के कोर्स में नियत किया है। मूल्य ।=)॥

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवद्गीता पर

पदार्थ अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य सहित, इस पर भी पं० जी को ३००) इनाम मिला है,

मूल्य २)

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=) ऐतरेय =) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वत्र ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।)॥
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥)
दूसरा भाग ॥)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।=)
सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ इस पर भी २००) इनाम मिला है।

मूल्य ॥=)

वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३॥) योग दर्शन ॥) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है। ॥)

निरुक्त निघंटु पाठ सहित, निरुक्त हिन्दी भाष्य भी छप गया है। मन्त्रों के पते दिये गए हैं, और कई प्रकार के सूची पत्र दे कर ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी बना दिया गया है, विद्वानों ने इस की बहुत बड़ी प्रशंसा की है, मूल्य ४)

१००) इनाम मनुस्मृति पर

मनुस्मृति की सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

सटीक महा-भारत

छपना आरम्भ हो गया है, टीका और फुटनोट ऐसी छान बीन के साथ लिखे गए हैं, कि इस से प्राचीन आर्यावर्त का सच्चा इतिहास साफ साफ खुल जाता है, वार्षिक मल्य ३) है।

पता:—

मैनेजर आर्यग्रन्थावली
लाहौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बनाई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौड़ी के मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद मजिस्ट्रेट जावद
जिला मान्डसोर
ग्वालियर स्टेट

वर की आवश्यकता

एक आर्य्य कुलीन कन्या के लिए जिस की आयु १४ वर्ष की है। एक वर की आवश्यकता है। कन्या ने कन्या महाविद्यालय जालंधर में शिक्षा प्राप्त की है स्वास्थ उत्तम है। माता पिता समाज में अच्छा स्थान रखते हैं। जाती बन्धन का कोई ध्यान न होगा। गुण कर्म का विचार कर के सम्बन्ध किया जायगा।

पत्रव्यवहार का पता—

डी० द्वारा। प्रबन्ध कर्ता
सद्धर्मप्रचारक पत्र
श्यामपुर कांगड़ी
(बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म और विज्ञान

अंग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तक Confict betw aen religon and seience का भाषानुवाद २)

सामवेद भाषा भाष्य श्री पं० तुलसीराम कृत सम्पूर्ण मूल्य ४) मात्र सजिल्द ४॥)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार

बजाजा शहर मेरठ

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वाले को २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ हो।

उसतरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगाने से फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मूल्य १)

मैनेजर हिमालय कम्पनी देहरादून

आदित्य ग्रन्थमाला

की

नई पुस्तक छप रही है नई पुस्तक

सचित्र प्रिन्स बिस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना

इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े २ को कैसे पद दलित किया, और फिर किन किन शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की; इस का इस पुस्तक सेपहिले भाग में विस्तार पूर्वक वर्णन है। दूसरे भाग में साहस की मूर्ति, देश-भक्ति के पुतले, नीती के गुरु, और जर्मनी के-जन्म दाता प्रिन्सबिस्मार्क का आश्चर्यकारी च रित चित्रित किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्होंने पढ़ा है उन के लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वालों को रियायती मूल्य पर पुस्तक मिलेगी।

पता:—प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म प्रकारक पं० गुरु कुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर।

एजन्ट बाबूरामजैन एन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यज नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

अमूल्य पुस्तकें ! अत्यन्त उपयोगी पुस्तकें !!
अपूर्व पुस्तकें !!!
(इतने सस्ते दामों में ऐसी उपयोगी पुस्तकें फिर मिलनी दुर्लभ हैं)

ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार

महा पुरुषों के पत्र बड़े शिक्षा दायक होते हैं। विलायत के लोग तो अपने महा पुरुषों के पत्र हज़ारों रुपया व्यय कर के खरीदते हैं। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द के अलभ्य पत्र छापे गये हैं उन पत्रों से ऋषि के जीवन की कई नवीन घटनाओं का पता लगता है। पहिले इस का मूल्य १।) था। अब हम ने सर्वसाधारण के लाभार्थ केवल ।=) मूल्य कर दिया है।

आर्य्य समाज और उस के शत्रु
The Arya Samaj and it's Detractors.

इस अङ्गरेज़ी भाषा की अपूर्व पुस्तक में आर्य्य-समाज के विरोधियों का मुंह बन्द करने का बहुत कुछ मसाला भरा पड़ा है। समय पड़ने पर सरकारी कर्मचारियों को दिखलाने योग्य है। यह पुस्तक इतनी आवश्यक है कि प्रत्येक समाज में इस की एक प्रति तो अवश्य रहनी चाहिये। पहिले इस का मूल्य ५) था। अब सर्वसाधारण के लाभार्थ लागत से भी कम केवल ३) कर दिया है थोड़ी प्रतियां रह गई हैं शीघ्र मंगा लें।

पता:—इन्द्र प्रस्थार्य एजन्सी, देहली

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)
बरियारपुर
(बनारस स्टेट)

नया संदेशा ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी बसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विज्ञान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें इत्यादि विषयों पर महत्व पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता
"सत्ययुग"
हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय
मुज़फ़्फ़रपुर

१६००० हज़ार
एजेंटों का होना
भारतवर्ष में बनी औषधि के
सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं बता सकता कि सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कफ, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, कै दस्त, सर्दी का, बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, ब के हरे पीले दस्त, रोना, कै करना, बूढ़ों को अनि और नजला, जवानों की थकावट या बेचैनी, दवा स्वादिष्टसुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कमत फी शीशी आठ आना डांक खर्च १ से ६ शीशी तक ≡) आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डांक से मंगाने का पता:—
सुख संचारककंपनी
मथुरा

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा
हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है

२३ फाल्गुन सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० ६ मार्च सन १९१५ ई०

संख्या ४७
भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि ।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है । इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है । महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है ।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा ।

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित । विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है । उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है । मूल्य २)

अर्थशास्त्र—पो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित । इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं । पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है । मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित । इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है । निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है । मूल्य ।=)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा । भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है ।

मूल्य=)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये। वा०मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर कांगड़ी

(जि० बिजनौर)

तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला शेर की चरबी १) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू. पी.

(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

असली हारमोनियम

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता

G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

१०,०००) रुपया इनाम,

यह इनाम उन लोगों को मिलेगा जो हमारे यहां से नीचे लिखी हुई दवा मंगावेंगे। मकज़ोरी दिमाग़ को दूर करने वाली (अमृत प्रवाह) १) सैकड़ों बार का आजमाया हुआ धातु पुष्टि चूर्ण २)। इनाम बड़े २ डाक्टर, वकील वैद्य रईसों के सामने बांटा जायगा। हमारे ग्राहक भी इनाम बांटने में शरीक हो सकते हैं उन को आने जाने का खर्च भी दिया जायगा। जानने के लिये नियमावली)॥ का टिकट भेजने पर मुफ़्त मंगाइये

पता:—सूर्य्य, औषधालय,

सनेटरी रोड़—लखनऊ

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥
भारत विभिन्न देशों से ...	४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक	≡)	प्र०.
तीन मास ,, ,, ,, ,,	=)	,,
छः ,, ,, ,, ,, ,,	।)॥	,,
सालभर ,, ,, ,, ,,	-)	,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

पुस्तक विक्रियताओं के लिये सुनहरी अवसर

भारत लिट्रेचर कम्पनी लिमिटेड लाहौर कालेक्योडेशन हो जाने के कारण पुस्तकों का एक भारी स्टाक पं० आर्य मुनी जी कृत तथा म० शिवव्रतलाल वर्म्मन, स्वामी दर्शनानन्द जी, ला० लाजपतराय जी, आदि पुस्तक रचयिताओं की विक्रियार्थ उपस्थित हैं। जिन पुस्तक विक्रियताओं को मोल लेना स्वीकार हो लेकोडेटर से पत्र व्योवहार करें। ५००) का इकट्ठा माल मोल लेने वाले को आधे मूल्य पर दिया जायगा।

एस. के. मुकरजी

प्लीडर तथा लेकोडेटर भारत

लेट्रेचर कम्पनी

नीला गुम्बद लाहौर

२६/४६ से २६/४८ तक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म-दर्शनम् ।

भोक्तृ और भोग्य, प्राण और रयि—इन के समान मेल से ही सृष्टि उत्पन्न होती है। कहीं जुदे और कहीं मिले हुए—यही दोनों नियम जगत् के सञ्जनहार है। इसी लिए इन को प्रजापति कहा गया है। सूर्य यतः प्रजाओं में प्राण-शक्ति डाल कर उत्पत्ति का हेतु है इसी लिए उसे भी प्रजापति नाम से वर्णन किया है। परन्तु सूर्य को भी नियम में रखने वाला काल है, इस लिए काल पहला प्रजापति है। उस के दो भेद हैं। सूर्य अपनी परिधि पर चल कर अपने ग्रहों को अपने गिर्द घुमाता हुआ समय को संवत्सर (वर्ष) रूप में उत्पन्न करता है। ऋतुओं के दो बड़े—सर्दी गर्मी—भेदों के कारण उन में दो प्रकार की शक्तियां काम करती हैं। उन का प्रभाव क्या है इसे ऋषि राज अपने अनुभव से बतलाते हैं—

संवत्सरो वै प्रजापतिस्तस्यायने दक्षिणञ्चोत्तरञ्च तद्येमह वै तदिष्टापूर्त्तकृत मित्युपासते, ते चान्द्रमसमेव लोकमभिजयन्ते। तएव पुनरावर्त्तन्ते तस्मादेते ऋषयः प्रजाकामा दक्षिणं प्रतिपद्यन्ते एष ह वै रयिर्यः पितृयाणः ॥ ९ ॥

"निश्चय संवत्सर ही प्रजापति है" (क्योंकि सूर्य और चन्द्र, भोक्ता और भोग्य के उचित मेल का ही परिणाम प्रजा की उत्पत्ति है)—इस की, उत्तरायण तथा दक्षिणायण, दो गतियां हैं। अर्थात् दो मार्ग हैं (जिन में छः छः महीने चलने से दो प्रकार के फल मिलते हैं)। इस लिए जो इष्ट की पूर्त्ति अर्थात किसी कामना की सिद्धि (सकाम भाव से) कर्मोपासना करते हैं वे चान्द्र लोक [अर्थात भोग्य की अवस्था] को प्राप्त होते हैं [और जब मनोवांछित फल को पाकर तृप्त होते हैं तब] वे फिर लौट आते हैं। इस लिए वे ऋषि गण जो प्रजा (पुत्र कलत्र, सांसारिक सुख विशेष) की कामना वाले हैं वे दक्षिणायन को प्राप्त होते हैं। [दक्षिणायन सूर्य होते हुए ही शरत् ऋतु में सर्व भोगों का ठीक काल है इस लिए] निश्चय कर के जो भोग्य है वही पितृयाण अर्थात प्रजा प्राप्ति का साधन है।"

सकामभाव से उपासना द्वारा प्राप्त किया फल सान्त ही हो सक्ता है। जिस समय पूर्ण फल प्राप्त हो गया उसी समय उपासना से प्राप्त किया बल भी समाप्त हो जाता है, परन्तु निष्काम भाव से की हुई उपासना का फल कभी समाप्त हो नहीं होता। जिन्हों ने कामनाओं को सर्वथा जीत लिया है वे उत्तरअयन (मार्ग) का सहारा लेते हैं—

अथोत्तरेण तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्ययात्मानमन्विष्यादित्यमभिजयन्ते। एतद्वै प्राणानामायतनमेतदमृतमभयमेतत् परायणमेतस्मान्न पुनरावर्त्तन्त इत्येष निरोधः ॥ १० ॥

"परन्तु जो (१) तप (२) ब्रह्मचर्य (३) श्रद्धा और (४) विद्या से अपने स्वरूप को जान लेते हैं, वे उत्तर मार्ग से आदित्य (प्रकाश) को सर्वथा विजय करते हैं। यही प्राणों का आयतन है (अर्थात् रयि, भोग्य, सांसारिक कामना से ऊपर उठ कर प्राणावस्था को प्राप्त होना) यह अमृत अर्थात् अक्षय है, इसी से अभय पद प्राप्त होता है यही परम मार्ग है। इस (अवस्था) से नहीं लौटता, क्योंकि यहां (चित्त की वृत्तियों का) अत्यन्त निरोध हो जाता है।"

मुण्डकोपनिषत् में कहा है कि उस सत्य स्वरूप की प्राप्ति में पहली मंज़िल तप है, क्योंकि तप के बिना सत्य पर मनुष्य आरूढ़ नहीं होता तप स्वयम् ही सर्व प्रकार के विषय भोग की अभिलाषा को मन से दूर कर देता है। तब उस का फल ब्रह्मचर्य प्राप्त होता है जिस के बल से ही उपासक सारी इन्द्रियों को वश में कर सक्ता है। उस ब्रह्मचर्य से श्रद्धा की उत्पत्ति होती है जिस के बिना बुद्धि सन्मार्ग में स्थिर नहीं हो सक्ती और तब अन्त में अविद्या का नाश हो कर विद्या का प्रकाश होता है। उस समय मनुष्य अपने स्वरूप को पहचानते हैं। सर्व प्रकार की कामनाएं (सकामभाव) उसी समय तक सताती हैं जब तक कि अविद्या का राज्य रहता है क्योंकि मनुष्य के अपने स्वरूप को न पहिचानने में अविद्या ही कारण है। परन्तु जब विद्या का प्रकाश हुआ तब भूले हुए प्राणी ने समझा कि जिसे यह प्राण समझा था वह तो छलावा ही था। मैं क्या हूं? यह उस समय समझ में आता है। मैं शरीर नहीं, मैं इन्द्रिय समूह नहीं, मैं प्राकृतिक वस्तु नहीं, मैं तो इन सब से ऊंचा हूं। जब इस प्रकार ज्ञान से अपने आत्म-तत्त्व को साक्षात् कर लिया तब फिर गिरने की सम्भावना ही नहीं रहती।

तदेषश्लोकः—इस पर श्लोक है

पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्द्धेपुरीषिणम। अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितमिति ॥ ११ ॥

वह सूर्य जो काल चक्र के चलने का भी प्रेरक है, जिस भौतिक प्राण के स्रोत से ही प्रजा की उत्पत्ति तथा पालन में सहायता मिलती है उस का स्वरूप जानने की आवश्यकता है, क्योंकि जब तक किसी द्रव्य के ठीक गुणों का ज्ञान न हो तब तक उस से पूरा लाभ उठाना कठिन है। तब आदित्य का स्वरूप क्या है—

"पांच ऋतुएं ही जिस के पग हैं, (ऋतुओं की गति ही सूर्य के चक्र का पता देकर संवत्सर का ज्ञान प्रदान करती है) १२-महीने ही उस की आकृति का पता देते अर्थात् वही उसको पूर्णाङ्ग बताते, जल का जो आश्रय है-(सूर्य के आश्रय ही जल ऊपर चढ़ कर बरसता, उसी के आश्रय समुद्रादिक के जलस्थित हैं)-अन्तरिक्ष से भी ऊपर द्युलोक के पहले अर्द्ध भाग में स्थित, (अपने चक्र में चलने वाले गृहों और उप गृहों का) पालक उसे विद्वान् लोग कहते हैं। और अन्य विद्वान् लोग जिन्हें ऋतुओं के अरारूप से संयुक्त और सप्त लोकों (भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्) का आधार और उन से भी परेस्थित बतलाते हैं—(उस सूर्य लोक का ज्ञान आत्मतत्त्व के जिज्ञासुओं को प्राप्त करना चाहिये)

शमित्योऽम् ।

मुन्शीराम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुम्भप्रचार का समय समीप आगया।

प्रचारक का आगामी अंक जब आर्य्य पुरुषों के हाथों में पहुंचेगा उस समय मायापुर की गुरुकुल वाटिका में वैदिक धर्म्म के प्रचार का काम आरम्भ हो चुका होगा; इस लिए प्रचार को सफल बनाने के लिए जिन बातों की आवश्यकता है, उन्हें एक बार फिर गिन देता हूं। उन आवश्यकताओं को पूरा करने में जितनी सहायता आर्य पुरुष देंगे उतनी ही अधिक सफलता होगी, जैसे जितना गुड़ डालो उतना ही मीठा होगा।

(१) धन की आवश्यकता की ओर आर्य्य समाजों ने बहुत कम ध्यान दिया है। जिन आर्य्य समाजों तथा आर्य्य पुरुषों ने उदारता से सहायता दी है उन का हार्दिक धन्यवाद करके अन्य आर्य्यसमाजों से प्रार्थना है कि शीघ्र शक्ति भर बल लगा कर इस प्रचार के लिए धन भेजें। चाहिएं थे दश सहस्र और अब तक अढ़ाई हज़ार भी पूरे नहीं हुए। लाहौर आ०स० के पास सुना है कि २००) के लग भग धन जमा हुआ। पिछले कोषाध्यक्ष ८०) दे गए थे, वर्तमान अधिकारियों ने कई पत्र जाने पर भी उत्तर तक नहीं दिया। यदि दानी बल दें तो उक्त आर्य्यसमाज के मन्त्री महाशय को शेष धन शीघ्र भेजना पड़े। यदि रुपया अधिक न आया तो पुस्तक बांटने तथा चिकित्सा का प्रबन्ध हमारी इच्छानुसार न होगा।

(२) सन्यासी महात्मा तथा अन्य धर्मोपदेशक १५ मार्च को ही पहुंचें क्योंकि उसी दिन से भोजनादि का प्रबन्ध होगा। सब उपदेशकों का मार्ग व्यय सार्वदेशिक सभा की ओर से दिया जायगा। स्वयम् सेवक भी (डाक्टर हों वा अन्य) १५ मार्च को ही पहुंचें। उन को मार्ग व्यय पूर्व लिखे अनुसार स्वयम् देना होगा, किन्तु उन के उतारे तथा भोजन की शुश्रूषा सभा की ओर से होगी।

(३) जिन २ महाशयों ने ट्रेक्ट विना मूल्य देने की प्रतिज्ञाएं की हैं वे भी अपने २ प्रतिज्ञा किए हुए ट्रेक्ट १५ मार्च तक भेज दें। ट्रेक्ट तथा विज्ञापन बाँटने का काम जिन स्वयम् सेवकों ने लेना विचारा है उन को दिन भर चलने फिरने का कष्ट सहन करने की तय्यारी कर के आना चाहिए।

(४) हमारे पास बहुत से दर्शकों के उतरने का प्रबन्ध कुम्भ प्रचार मण्डप के पास नहीं है, परन्तु फिर भी ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि परिवार रहित अकेले आने वालों को ५० की संख्या तक टिकाया जासके। इन महाशयों से कुछ नहीं मांगा जायगा परन्तु वही जो उचित समझेंगे सार्वदेशिक सभा को दान दे जायगे। यदि इस समय सभा के पास १०००) भी आगे के प्रचार के लिए जमा हो जाय तो एक बड़े विद्वान को उन प्रान्तों में वैदिक धर्म्म का सन्देश ले जाने के लिए नियत किया जा सकता है जहाँ प्रान्तिक आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं की पहुंच नहीं है।

(५) अपने उपदेशकों, स्वयं सेवकों तथा दर्शकों तक से निवेदन है कि मेले में अन्य मतालम्बियों के साथ भी प्रेम तथा पवित्रता का वर्ताव रक्खें और जहां तक हो सके प्रिय सत्य बोलते हुए ही अपने धर्म्म का प्रचार करें क्योंकि यदि उन के अप्रिय भाषण वा आचरण से एक भी मनुष्य को वैदिक धर्म्म से घृणा हुई तो वे बड़े पाप के भागी बनेंगे।

सेवक, मुन्शीराम जिज्ञासु, प्रधान,
सार्वदेशिक आ०प्रतिनिधिसभा।

कुछ आवश्यक सूचनाएं

(१) बहुत से महाशय मुझे धनाढ्य समझ कर मुझ से धन की याचना अब तक करते रहते हैं। उन सब को पत्र व्यवहार के कष्ट से बचाने के लिए सूचना देना आवश्यक है कि मेरे पास अब कुछ नहीं जिस से उन की सहायता कर सकूं।

(२) दो तीन महाशयों को जब उपरोक्त उत्तर दिया गया तो उन्होंने प्रत्युत्तर में लिखा—"हम जानते हैं आपने २०,००० का मकान भी गुरुकुल की भेंट कर दिया, परन्तु आर्य पथिक लेखराम की जीवनी छाप कर तो आपने हज़ार डेढ़ हज़ार कमाया ही होगा" यह और भी भ्रम है। इस पुस्तक की छपाई आदि पर ६००) व्यय हुआ, परन्तु अब तक बिक्री केवल इतनी हुई है कि छपाई के बिल में से भी अनुमान ३००) देना बाकी है। यदि मेरे पुत्रों के पास कुछ धन होता तो वे ही दे देते, परन्तु उन दोनों को भी विजय के बन्द होने तथा प्रचारक स्थान परिवर्तन के कारण सहस्रों का ऋणी हो जाना पड़ा है। इस लिए भी मुझ से धन की याचना कर के मुझे लज्जित नहीं करना चाहिए जब कि लग भग १० मास से मैं भोजन भी गुरुकुल भण्डार में विना मूल्य दिए खाने के लिए बाधित हुआ हूं।

(३) बहुत से पत्र आते हैं कि "जिज्ञासु उपहरण माला" की दूसरी मणि कब छपेगी। उन का उत्तर यह है कि वैश्यवृत्तिवैश्य ही कर सक्ते हैं। मैंने "आर्य पथिक, लेखराम" नामी पुस्तक की बचत से यह ग्रन्थमाला निकालने का विचार किया था, परन्तु अब कोई विचार इस लेखमाला को आगे चलाने का नहीं (यद्यपि दो पुस्तकें तय्यार पड़ी हैं)। आगे के लिए लेख भी गुरुकुल के लिए नई आवश्यक पाठ्य पुस्तकें तय्यार करने में लगेंगे।

(४) मेरा अन्तिम दौरा आज समाप्त होता है। दिल्ली, कुरुक्षेत्र, नरवाना, झझर प्रचार कर के आज, शिथिल शारीरिक अवस्था लेकर, लौटा हूं; आगे के लिए गुरुकुल में ही इतना काम है कि कहीं बाहर नहीं जा सकूंगा। अनावश्यक पत्र व्यवहार से बचने के लिए यह सब कुछ लिख दिया है।

मुन्शीराम जिज्ञासु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

आर्य-जातीय-महासभा

चिरकाल से--जब से कि "आल इन्डिया मुस्लिम लीग" की बुनियाद पड़ी--हिन्दू राजनैतिक नेताओं का विचार एक "आल इन्डिया हिन्दू सभा" स्थापन करने का हो रहा है। कुछ मुसलमानों ने "इन्डियन नैशनल कांग्रेस" में सम्मिलित हो कर पहले पहल काम किया, परन्तु उन के तत्कालीन सामयिक अग्रणी, श्री सरसय्यद अहमद महाशय, ने सारी जाति में अपनी जाति के पुरुषार्थ के लुप्त हो जाने के भय से तीन चार वर्षों के ही पीछे अपने मतावलम्बियों को उस सार्वजनिक संस्था से अलग करने का प्रयत्न किया। यद्यपि फिर भी कुछ उदार मुसलमान जाति का साथ देते रहे परन्तु उस के पीछे चिरकाल तक मुसलमान-समाज, ने यह समझ कर कि कांग्रेस से अलग रहने से वे राज के पक्षीदार बन गए हैं, सामयिक-राजनैतिक आन्दोलन में कुछ भी भाग न लिया। किन्तु "सब दिन जात न एक समान"—समय में परिवर्तन हुआ और उस के साथ ही हमारे मुसलमान भाइयों को अपनी नीति बदलनी पड़ी। उन्होंने देखा कि राजनैतिक कार्यों से सर्वथा अलग रहते हुए उन्हें कई प्रकार की हानियां पहुंचती हैं जिन्हें दूर करने के लिए वे पूर्व-प्रतिज्ञानुसार, अपने शासकों से निवेदन तक नहीं कर सक्के। तब अलीगढ़ की, शिक्षा सम्बन्धी संस्था से अलग उन्हें एक राजनैतिक दल बनाना पड़ा। देश का भला तो इस में था कि वे कांग्रेस में ही फिर से सम्मिलित होते, परन्तु पिछले किए की लज्जा तथा भविष्य में फिर कुछ अधिक टुकड़े प्राप्त करने की आशा ने उन्हें ऐसा करने न दिया। इस नई संस्था को स्थापन कर के मुसलमान पढ़े लिखों ने केवल अपनी ही जाति की स्वार्थ सिद्धि के विचार से ,,मुस्लिम युनिवर्सिटी" स्थापन करने का प्रस्ताव हिलाया। उस प्रस्ताव ने मुसलमानों में नया जीवन डाल दिया और लाखों रुपया एक इशारे से जमा होगया।

उस समय हिन्दुओं की भी आंखें खुलीं। उन्होंने देखा कि जहां मुसलमान अपनी ,लीग" द्वारा, हिन्दुओं के हिता हित की परवा न करते हुए, अपनी बिखरी हुई शक्तियों को एकत्र कर रहे हैं, वहां हिन्दू बेचारे "नौकनौजिया और तेरह चूल्हे" की लोकोक्ति को सिद्ध करने की धुन में ही लगे हुए हैं। फिर क्या था? पंजाब हिन्दू सभा स्थापित होगई; परन्तु पांच बस के निरन्तर प्रयत्न से फल यह हुआ कि स्वप्नावस्था में जो जाति थी वह सुषुप्तावस्था को प्राप्त हुई। ऐसी अवस्था में भी आर्य्य (हिन्दू) जाति के टुकड़े बढ़ते ही गए।

तीन वर्षों से यहां भी "आल इन्डिया हिन्दू लीग,, स्थापन करने का विचार हो रहा है।। गये वर्ष आर्य्य जाति के कुछ भूषणों का निजुसम्मेलन मैंने भी दिल्ली नगर में देखा था, जिससे मुझे निश्चय होगया कि मुसलमानों के अनुकरण में यदि आर्य्य जाति ने भी ,,राज नैतिक लीग" ही बनाई तो कुछ भी लाभ न होगा। हिन्दू जैसे उदार पहले रहे हैं, राजनैतिक विषयों में उन्हें वैसे ही उदार रह कर अब भी इन्डियन कांग्रेस" द्वारा ही काम करना चाहिए। तब क्या 'आलइन्डिया हिन्दू सभा" की आवश्यकता नहीं? और क्या आन केवल बाबू सुखबीरसिंह बी. ए. के पुरुषार्थ की अग्नि को मैं मन्दकरना चाहता हूं? कदापि नहीं परन्तु मैं इस प्रस्तावित संस्था का सङ्गठन और उसके उद्देश्य ऐसे चाहताहूं जिन से जाति की वास्तविक आवश्यकताएं पूरी हों और साथ ही यह संस्था भी चिरस्थायिनी हो।

मेरी सम्मति में राजनैतिक कार्यों में सीधा कोई भाग इस सभा को नहीं लेना चाहिये और न मतसम्बन्धी झगड़ों में इसे पड़ना चाहिए। इसका उद्देश्य इन सब बातों से अलग रह कर आर्य सभ्यता के पुनरुद्धार का प्रयत्न होना चाहिए। यही कारण है कि सब से पहले मैं इस सभा का नामकरण संस्कार फिर से कराना चाहताहूं। जैन, बौद्धादि का साहित्य आर्य्य शब्द से भरा पड़ा है। हिन्दू नाम के अन्तर्गत, इस समय, इन सब मतों के अनुयायी नहीं समझे जायंगे। और आर्य्य नाम का आर्य्य समाज भी ठेका नहीं ले सक्ती। उस समाज के प्रवर्त्तक श्री स्वामी दयानन्द जी ने आर्य्य शब्द से उन लोगों का ग्रहण किया है जो सदा से आर्यावर्त्त में बसते रहे हैं और सभ्यता के सेवक हैं। तब यदि कुम्भ के समय "आर्य्य जातीय महा सभा" की स्थापना की जाय तो अत्युत्तम होगा।

इस का सङ्गठन ऐसा होना चाहिए कि आर्य जाति के सर्व विभागों के प्रतिनिधि इस में सम्मिलित हो सकें। ग्रामों और नगरों के प्रतिनिधियों की प्रान्तीय सभाएं और प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों की महा सभा बने और दोनों का परस्पर गाढ़ा सम्बन्ध हो।

प्रश्न बड़ा भारी यह है कि इस प्रस्तावित महासभा के उद्देश्य क्या हों! आर्य सभ्यता का उद्धार किसे कहते हैं? इसे जानने के लिए आय सभ्यता के चिन्हों को जानने की आवश्यकता है। संसार में इस समय तीन ही बड़ी सभ्यताएं हैं---(१) लातीनोवा कृश्चियन सभ्यता, (२) सासानी वा मुसलमानी सभ्यता तथा (३) प्राचीन आर्य्य सभ्यता। आर्य्य सभ्यता का पहला भेद अन्य सभ्यताओं से उस में अहिंसा धर्म का प्रधानत्व है। गोरक्षा भी इसी के अन्तर्गत है। यदि आर्य्य लोग स्वयम् गो मांस के अतिरिक्त अन्य सब मांसों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भक्षण से घृणा न करेंगे तो लातीनी तथा सासानी सभ्यता के मानने वालों को गो-हिंसा रूपी पाप से भी कैसे बचा सकेंगे ? इस लिए सब से पहला काम इस महा सभा का यह होना चाहिए कि भोजन का सुधार और अहिंसा धर्म का प्रचार करे। आर्य्यजाति के दुःखों का चतुर्थ भाग भोजन विधि के बिगड़ने का परिणाम है, और भोजन विधि के बिगड़ने का कारण हिंसा का राज्य है। हिंसा प्रधान "युरप" ने जो दृश्य वर्तमान विश्व व्यापी युद्ध में दिखाया है उसका आर्य्यजाति के गिरे हुए (महाभारत के) समय से तुलना कर के भी निश्चय हो जायगा कि यदि आर्य्यजाति फिर से अपना गौरव स्थापन करेगी तो उस के साधनों में अच्छा भाग अहिंसाधर्म का होगा।

आर्य्य सभ्यता का दूसरा भेद, अन्य सभ्यताओं से, स्त्री सम्बन्धी है। आर्य्य-सभ्यता में देवियों को बड़ा उच्चासन दिया गया है। स्त्री पुरुष के सम्बन्ध का प्रेरक जहां आर्य्यजाति ने पितृऋण को ही समझा था और सन्तानोत्पत्ति से बढ़ कर उनका कोई उद्देश्य न था वहां अन्य सभ्यताओं में स्त्री पुरुष का सम्बन्ध काम चेष्टा को पूरा करने के लिए ही समझा जाता है। और उन सभ्यताओं का आर्य्य जाति पर भी ऐसा प्रभाव पड़ा है कि अब स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा के विषय में पुराने उच्चभाव उड़ते जाते हैं। और स्त्रियां भी निस्सहाय हो कर पशुभाव से प्रेरित हो अन्य जातिस्थ विषयी तथा व्यभिचारी पुरुषों के क़ाबू चढ़ कर ख़राब होती हैं यदि शिमला काङ्गड़ा और अल्मोड़ा, तीन पहाड़ी प्रान्तों की कुछ कहानियाँ सुनाने लगूं तो लन्डन और पेरिस की पुरानी "मिस्टरीज़" मात हो जायं। मैं ने चार पांच वर्ष पीछे आन्दोलन किया था तो पता लगा कि प्रत्येक वर्ष शिमला तथा काङ्गड़े के इलाक़ों से कम से कम, चार सौ सुन्दरी, युवती, भद्र आर्य्य हिन्दू स्त्रियां मुसलमान बहरो, ख़ानसामों और अन्य मुसलमान व्यक्तियों के साथ निकल जाती हैं। आर्य्य (हिन्दू) जाति की संख्या कम होने के कारणों में से यह भी क्या एक कारण नहीं ? और फिर यह भी नहीं कि यह स्त्रियां उन मुसलमानों की गृहणियां बन कर रह सकें। जब दो तीन वर्षों में दुष्टों की काम चेष्टा तृप्त हो गई तो इन बेचारियों का कोई रोटी देने वाला नहीं रहता। यह क्योंकर होता है एक उदाहरण देता हूं। कसौली पर्वत की एक पर्वतिया नामिनी भजवा की विधवा थी। उस को एक मुसलमान ने क़ाबू कर लिया। उसे कहा कि हमारा निकाह सरकार में लिखा जायगा। पर्वतिया साथ कचहरी गई। मुसलमान ने अर्ज़ी नवीस ने अर्ज़ी लिखी और मुसलमान सरिश्तेदार ने साहेब के हस्ताक्षर करा लिए और भोली पर्वतिया को कहा कि "तेरा व्याह हो गया।" सात महीनों के पीछे जब बेचारी पर्वतिया निकाली गई और जाइन्ट मजिस्ट्रेट साहेब आश्चर्य में हुए--"हैं, हमने कब व्याह कराया ?' मिसल निकाली गई तो जो व्याह वाली अर्ज़ी समझी गई थी वह निम्न लिखित थी, जिस की नियम पूर्वक सरकारी नक़ल मेरे पास है:--"नक़ल सवाल मश्मूला मिशल नं० ३, मुतफ़रूक़ात फ़ौजदारी मरकुआ ४[illegible] बाकए कसौली। जनाब आली फ़िदवी चल नहीं सक्ती ताकि मेहनत मज़दूरी कर के अपना गुज़ारा करे और मेरी बिरादरी ने मुझ से बाद मरने मेरे खाविन्द के सब कुछ ले लिया। कोई सूरत गुज़ारे की नहीं है। अब फ़िदविया मुसलमान होना चाहती है; भीख मांग कर गुज़ारा करूंगी। इस लिए दरख़ास्त है कि फ़िदविया को मुसलमान होने की इजाज़त दी जावे। बाजवन् अर्ज़ है। फ़िदविया पर्वतिया....." इस पर आज्ञा लिखी थी "कोई रोक नहीं दाख़िल दफ़्तर हो,"

क्या आर्य जाति के अगुओं की आंखें कभी खुलेंगी ? ईसाइयों की मुक्ति फ़ौज हमारे सहस्रों भाइयों और सहस्रों देवियों को अपने प्राचीन धर्म से विमुख कर रही है। सरकार ने कह तो रक्खा है कि "जरायम पेशा अक़्वाम" में जो पन्थ काम करना चाहे उसे अवसर देंगे परन्तु जुदे जुदे पन्थाइयों के सामने इतनी कठिनाइयें पड़ती हैं कि वे हौसला नहीं कर सक्ते। परन्तु यदि सारी जाति एक सङ्गठन कर के, एक स्वर हो, गवर्नमेंट से बल पूर्वक निवेदन करे कि सर्व हिन्दू इस प्रकार के स्त्री पुरुष उन के सपुर्द किए जायं तो कोई भी वाइसराय वा नायब सूबा इनकार नहीं कर सकेगा। परन्तु इन गिरे हुए स्त्री पुरुषों को राष्ट्र के लाभ दायक अङ्ग बनाने का काम कौन करेगा ?

आज इस से आगे मैं कुछ नहीं लिखना चाहता, और न लिखने की आवश्यकता है। लिखने और शोर मचाने से ही तो सब काम बिगड़ते हैं। हम यदि शुद्धि करेंगे तो डंके की चोट; यदि जन्म के मुसलमान को मिलाने का विचार होगा तो दो सौ की शुद्धि का नोटिस देंगे जिस से वे दो भी पखेरा हो जायं—कहां तक लिखें हम दिखलावे के दास हो रहे हैं। आर्य जातीय सभा के लिए बीसियों ऐसे काम निकल सकते हैं जो और कोई सभा न कर रही और न कर सकती है। परन्तु जब जाति के अग्रणी गम्भीर भाव तथा सच्चे दिल से कभी विचार करने बैठेंग उस समय ही अपने विचार उन के चरणों में अर्पण करूंगा।

(मुन्शीराम जिज्ञासु)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल के प्रेमियो !

और प्रचारक के अनुग्राहको ! क्या आप अब तक अपने हिस्से के दो रुपये नहीं भेज चुके ? यदि नहीं भेज चुके तो

शीघ्र भेजिये

विलम्ब क्यों है ? क्या हमारी प्रार्थना व्यर्थ ही जायगी ।

मत समझिए कि दो रुपयों से गुरुकुल का क्या होगा ? बूंद २ पानी बरसने से तालाब अपने किनारे को लांघ जाते हैं, और एक २ रुपया एकत्र हो जाने से ही गुरुकुल का लाख भर का वार्षिक बजट पूरा हो जाता है । यह भी मत समझिए कि आप के दो रुपये न आने से चन्दे में क्या कमी आजायगी, क्यों कि सम्भव है सभी ग्राहक ऐसा सोचते रहें, और हमारे दो हज़ार में एक भी रुपया न आय । इस लिये अपने हिस्से के दो रुपये शीघ्र ही भेजिए। विलम्ब न कीजिए । नहीं तो प्रचारक परिवार को लज्जा उठानी पड़ेगी ।

प्रार्थी

इन्द्र

वेद के पक्ष पातियो !

सावधान हो जाओ ।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना वैदिक धर्म को उज्जीवित करने के लिए हुई थी । आज भी वह इसी उद्देश्य को लेकर चल रहा है । वैदिक धर्म व्यापी है। संसार की कोई विद्या नहीं, कोई सदाचार नहीं, और कोई विचार नहीं, जो उस धर्म के अन्दर नहीं आजाता, जिसे वैदिक के नाम से पुकारा जाता है । इसी वैदिक धर्म को एक क्रियात्मक सचाई बनाने के लिए—ऐसे मनुष्य उत्पन्न करने के लिए जो उस उदार और व्यापक वैदिक धर्म को अपने जीवन में ढालें, और फिर अन्य लोगों तक उस की ज्योति का प्रसार करें—गुरुकुल की स्थापना हुई थी । कौन कह सकता है कि गुरुकुल आज इस मार्ग से च्युत हो गया है ? गुरुकुल के शत्रुओं को जाने दो, वे उन लोगों में से हैं जो देखते हुए भी नहीं देखते और इसी लिये उन की आंखें खोलना कठिन है । जो भाई उदासीन हैं, यदि वे कभी गुरुकुल के विषय में निराशा के शब्द कह दें, तो भी कोई आश्चर्य नहीं, क्यों कि विरोधियों की बेसुरी आवाज़ उन के कानों तक पहुंचती रहती है, और हम लोगों की असावधानता से वे सचाई नहीं जानने पाते । आश्चर्य उन लोगों पर है जो गुरुकुल के मित्र होते हुए समय समय पर भूल के शिकार हो जाते हैं । गुरुकुल की सञ्चालिका सभा के एक कार्यकर्ता सभासद् का ऐसे गुरुकुलोत्सव के पास आकर गुरुकुल के चाल को विषय में सन्देह से शब्द लिख बैठना किस गुरुकुल प्रेमी को आश्चर्य सागर में डुबाने वाला नहीं हुआ था ? क्या यह हमारी हृदय की अति सरलता का प्रमाण नहीं है कि जिस बात को हम एक पक्की सचाई मानते हैं, विचार तरंग में पड़ कर उसे भुला बैठते हैं ।

गुरुकुल का उद्देश्य वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करना है । वह दो प्रकार से हो सकता है । विस्तृत और व्यापक वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर जीवन ढालने वाले पुरुष पैदा कर के और वैदिक धर्म के त्यागी प्रचारक उत्पन्न करके । जिस वैदिकधर्म का गुरुकुल प्रचार करने वाला है, वह व्यापक है, वह मतमात्र नहीं, बल्कि सार्वजनिक और सार्व देशिक है, देश और जाति उस में रुकावट नहीं डाल सकतीं, वह जहां जायगा वहां "अदीनाः स्यामशरदः शतम्" के अनुसार शारीरिक सामाजिक मानसिक और आत्मिक दीनता का नाश होगा; मनुष्य और और मनुष्य में मनुष्य और पशु में और जाति और जाति में उचित सम्बन्ध स्थापित होंगे, लोगों के जीवन तुच्छ उद्देश्यों को छोड़ कर उच्च उद्देश्यों की ओर झुकेंगे । ऐसा व्यापक वैदिक धर्म है, जिस का गुरुकुल दो प्रकार से प्रचार करना चाहता है ।

जो गुरुकुल प्रेमी निराशा की लहर में बह कर कभी २ सन्देह करने लगते हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे गुरुकुल में कार्य्य करने वालों को बिल्कुल ही उद्देश्यहीन कार्य्य करने वाले न समझें । क्या महात्मा मुंशीराम जी ने केवल एक शिक्षणालय बनाने के लिये ही सर्वमेध यज्ञ किया है ? क्या प्रतिभा के पुतले प्रो० रामदेव जी ने वैदिकआदर्शरहित विद्यालय के लिये ही त्याग वृत्ति धारण की है ? क्या प्रो० बालकृष्ण और प्रो० महेशचरण सिंह जैसे देश प्रसिद्ध योग्यताओं के पुरुष केवल तुच्छ उद्देश्यों वाली पाठशाला की सेवा करने ही जंगल में बैठे सादा जीवन व्यतीत कर रहे हैं ? और जितने कार्य्यकर्ताओं ने गुरुकुल के लिए अपने घर बार छोड़ कर सेवाव्रत धारण किया है, वे चक्षुविहीन नहीं हैं ? तब दूर बैठे हुए आर्य्यपुरुष क्यों निराश हो जाते हैं ? हमें कहा जायगा कि हम निराश तो नहीं होते परन्तु अब करें क्या ? अपनी आशा या अपने उत्साह को कैसे प्रकाशित करें ? हमारा उत्तर यही है कि इस समय दो प्रकार से अपने गुरुकुल प्रेम का सुबूत दीजिये ।

(१) एक तो अपने पड़ोसियों के दिलों में से गुरुकुल विषयक झूठे सन्देहों का निवारण करके

(२) और दूसरे आगामी वार्षिकोत्सव के अवसर पर गुरुकुल कोष में जमा कराने के लिये चन्दा एकत्र करके ।

देखें आप क्या उत्तर देते हैं ।

दिल्ली के आर्य्य भाइयो ! अपनी प्रतिज्ञा याद करो ।

अलीपुर समाज के प्रधान महाशय सूचित करते हैं कि वहां के आस पास गुरुकुल के लिये धन एकत्र करने का खूब यत्न हो रहा है । और समाजें भी उद्यत हों

गया से पं० माधो तिवारी ने एक बहुत उत्तम प्रस्ताव ब्रह्मचारियों के संरक्षकों के लिये भेजा है जो स्थानाभाव से आज नहीं छपा, अगली बार छापा जायगा ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती ।

(५३)

श्री बालकराम जी की अकाल मृत्यु ने मेरी धर्म-पत्नी को बहुत उदास कर दिया था; इस लिए सितम्बर की छुट्टियों में उन्हें दोनों पुत्रियों तथा पुत्र हरिश्चन्द्र को साथ लेकर मैं हरिद्वार पहुंचा। हरिद्वार में कुछ वर्षों पहले मैं केवल एक दिन रह कर ऋषि केश देखने गया था। यह उन दिनों सच-मुच तपो भूमि थी, अब मालूम हुआ है कि ख़ासा शहर बसा हुआ है। १३ वर्ष गुरुकु-ल में रहते हुए मैं अब एक बार भी ऋषि केश नहीं गया। १८८६ ई० के सितम्बर को मेंह बरसते में हम सब हरिद्वार पहुंचे। रिश्चन्द्र की आयु उस समय २ वर्ष की ी। हम कपूर्थले की हवेली में उतरे थे ीर हमारे आङ्गन के आगे ही गङ्गा बहती ो। हरिश्चन्द्र ने कुंजियों का गुच्छा खेलते लते ज़ोर से गङ्गा में फेंक दिया। जब ड पड़ी तो आकर गङ्गा की ओर बेपर-ई से हाथ बढ़ा कर बोला--"बह गईं, जियां बह गईं।" हम सब हंस पड़े और र लौट कर शायद सब ताले तुड़वाने े थे। हरिश्चन्द्र की निरपेक्षता बहुत ानी है। मेरे आर्य समाज के नामरूपी (प्रहार पर भी पंडा जी ने आही घेरा। ारा पंडा था भला मानस; बोला--"मैंने सेवा करनी है चाहे कुछ देना वा न ा।" पण्डे यात्रियों को चारपाई पर ने से मने किया करते हैं। हमारे पण्डा ने चारपाइयां लादीं। नित्य घर से बांस अचार तथा दही लाकर देने लगे। दिन इतना सुख पहुंचाया जो २०) करने पर भी न मिल सक्ता। मैंने च-समय ५) भेंट किए जो उन्हों ने प्रसन्न-से स्वीकार किए। मैंने तो समझा था पण्डा जी घाटे में रहे परन्तु पण्डानी ने मेरी धर्म-पत्नी के पास पहुंच कर ५) वसूल किए।

अब तो पण्डा जी का हौसला बड़ा बढ़ । उन्हों ने खोल कर बही सामने रख ौर बोले--"यजमान ! आप आर्य समाजी हैं तो हम भी आप से मूर्ति पूजा के लिए नहीं कहते, परन्तु यह तो लिख दीजिए कि इस यात्रा में मैंने आप की सेवा की थी।" मैंने लेखनी भगी और लिख दिया--"हरिद्वार में सैर के लिए आया यदि यहां पण्डे और बन्दर न हों तो स्था-न बड़ा रमणीय निवास के योग्य है।" उस समय पण्डाजी ने बड़ी प्रसन्नता से स मझा कि मैदान मार लिया है, परन्तु जब पीछे किसी से पढ़वाया होगा (क्यों कि प्रायः पण्डों के लिए काला अक्षर भैंस बराबर होता है) तो मुझे खूब सुनाई होंगी।

मैं अपने एक वृद्ध सम्बन्धी को साथ लाया था जिन्हें परिवार को अपने ग्राम तल-वन पहुंचाने भेज दिया और मैंने मेरठ की ओर प्रस्थान किया। डाक्टर रामचन्द्र जी मेरे पुराने परिचित तथा सम्बन्धी भी थे, उन के यहां मैंने डेरा किया। इसी स-मय "रामचन्द्र वैश्य. लाला का बाज़ार मेरठ" से मिला। इन का नाम लाला का बाज़ार से अलग समझ में ही नहीं आ सक्ता था। शोक कि यह महाशय अब मर चुके हैं। उस समय वह देवसमाजी गुरु अग्नि होत्री के बड़े चेले थे। डाक्टर जी उन्हें अग्नि होत्री कह कर पुकारा करते थे। मुझ से मिल कर वह आर्य्य-समाज की ओर झुक गए और उस के पश्चात् दूसरे वर्ष ही अपनी धर्म-पत्नी सहित पंजाब में दौ-रे के लिए निकले थे। मेरठ में पहुंच कर मैंने ८ सितम्बर (आदित्य वार) को स्थानीय समाज मन्दिर में "अमर जीवन" विषय पर उपदेश दिया। बड़ा चबूतरा था जिस पर दरियां बिछ गईं। रोशनी भी गिर्द ले-म्पों की हो गई। उपस्थिति २५ की थी, एक एक की लाइन बन गई। स्थान ४०० तक को समेट सके और श्रोता केवल २५ बैठे। अन्य प्रकाश तो बड़ा उत्तम परन्तु उपदेशक की चौकी पर एक बड़ी मैली लालटैन थी जिस के शीशों पर मट्टी चढ़ी हुई और अन्दर धुंधला सा दिया जल रहा। जब लैम्प लाने का कहा गया तो उत्तर मिला कि यह श्री स्वामी दयानन्द जी के समय की लालटैन है, यह न बदलेगी। अस्तु ! एक नए प-ण्डित नौकरी के लिए बुलाये गये थे, उन की परीक्षा होनी थी। वह ईश्वरोपा-सना के लिए बैठाए गए। उन्होंने परीक्षा देनी थी इस लिए एक शब्द व्याकरण की रीति से सिद्ध करते२ उन्होंने बहुत समय ले लिया तत्पश्चात् मैंने अपना कहना कह डाला। भजनों का कोई प्रबन्ध ही न था। अन्त में एक वेदमन्त्र बोल कर अधिवेशन समाप्त हुआ करता था, परन्तु उस समय नए पण्डित जी किसी कार्य के लिए चले गए थे। सब एक दूसरे का मुंह ताकने लगे; तब एक भद्रपुरुष ने कहा--'चन्द्रभान जी? आप भी तो ब्राह्मण हैं, मन्त्र बोल दीजिए।" तब पता लगा कि सभा विसर्जन का मन्त्र ब्राह्मण कुलोत्पन्न को ही बोलना चाहिए। इस से पांच मास पश्चात् यही लीला मैंने राजा मन्डी के यहां दे ी जो सायंकाल की सन्ध्या के लिए उस समय तक नहीं उठा करते थे, जब तक पण्डित विद्यासागर जी एक विशेष श्लोक चेतावनी का न बोल लेते थे।

मेरा उपदेश सुन कर युवकों ने आग्रह किया कि मैं व्याख्यान दूं, परन्तु कठिनाई यह हुई कि बिना अन्तरंग सभा की आज्ञा के मेज़ कुर्सी लगा कर व्याख्यान नहीं हो सक्ता था। इस लिए यह ठहरी कि मैं अ-पने भाई साहेब से, जो बहादुरगढ़ में थाने दार थे, मिलने चला जाऊं और लौटते हुए व्याख्यान दूं तब तक अन्तरङ्ग सभा का जलसा हो चुकेगा।

बहादुर गढ़ में १३ और १४ सितम्बर को व्याख्यान दे कर मैं फिर मेरठ लौटा और १५ को फिर उपदेश दिया। मैंने चाहा कि भजनकीर्तन की प्रथा यहां चला दूं, इस लिए एक युवक को हारमोनियम बजाने पर राज़ी भी कर लिया। परन्तु समय पर उस को इतने ताने मिले कि उस ने बजाने में लज्जा प्रकट की। डाक्टर राम-चन्द्र जी को साथ ले मैंने वैसे ही भजन गाया तब कुछ और भाई सम्मिलित हुए। जब इससे तीन चार साल पीछे मास्टर तेगप्रसादादि ने यहां के उत्सव पर नगर कीर्तन कराया था उस समय भी मेरठ के बाज़ारियों ने खूब फबतियां उड़ाई थीं।

अब की बार तो मेज़ कुर्सी भी लग गई और अढ़ाई तीन सौ की उपस्थिति में मैं दो व्याख्यान दे कर जालन्धर लौट आया।

कार्तिक में अमृतसर आर्य्यसमाज के जलसे पर मैंने दो व्याख्यान दिए थे, परन्तु उसी समय से पण्डित गुरुदत्त का रोग बढ़ने लगा और मुझे हर सप्ताह लाहौर जाना एक अवश्य कर्तव्य हो गया।

यद्यपि पं० गुरुदत्त जी की बीमारी की चिन्ता अधिक थी, परन्तु इस से धर्म के कार्य्यों में कुछ शिथिलता नहीं आती थी। इन्हीं दिनों वैदिक धर्मका संदेश सर्व सा-धारण तक पहुंचाने का मैंने दृढ़ व्रत धारण किया था।

मुन्शीराम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य चर्चा।

हिन्दी व्याकरण शिक्षा—पुस्तक नये ंग की है। इस में संस्कृत भाषा अंग्रेजी दू फारसी सभी का एक पंचमेल त- यार किया गया है। जिस से सब कोई ल्ल न कुछ समझ ले। पर वास्तव में दस्तत का चिन्ह है। लिखने वाले को ी क्या हिन्दी भाषी को कर्ता शब्द स- झने या समझाने के लिए व्यय (Nominative) कोष्ठ लिखना होगा?! हमारी सम्मति में ीं। अत. वैसा करना हिन्दी साहित्य ी न्यूनता बढ़ाना है क्या कभी किसी ंग्रेज ने इंग्लैण्ड में रह कर वहां वालों ीए कोष्ठ में हिन्दी के शब्द लिखे ? यदि नहीं, तो हमें क्यों अपने ्ता यों के लिये लिखना चाहिये। यदि याकार ने अज्ञानता ही दिखानी थी चरण टिप्पणी में या पीछे एक कोष लगा कर उस में दे देते तो अच्छा ॥ यहां यह भी नहीं कि हमारे पास ाकरण का ज्ञान नहीं जो विदेशी षा का ही आश्रय लेना पड़े। ग्रन्थकार ाशय यदि शुद्ध हिन्दी व्याकरण बनाते र अङ्गरेज़ी और फारसी की तुह न ल- ते तो अच्छा था।

इस पुस्तक में कई एक असावधानी हो हैं। जै से २०६ पृ० पर विभक्तियां लि- ने २ कर्त्ता की केवल 'ने' ये विभक्ति ही ाई है। हम पूछते हैं कि उसी पृष्ठ के ्नलिखित उदाहरणों में:—

"आप नदी नहैवे को गई"
"आज सौं तुम मेरे मित्र भयो"
"वह लरिवे को आयो है"

त्यादि में "आपने," "मित्र ने" "उसने" ि नहीं बना। क्या पूर्वोक्त उदाहरणों में प" मित्र, वह, ये कर्त्ता नहीं हैं। जब हैं ने लगना चाहिये। नहीं लगता है इस ये विभक्ति प्रतिपादन में असावधानी आशा है कि दूसरी आवृत्ति में ऐसी सब अशुद्धियां दूर हो जावेंगी। ग्रन्थ कारका नाम चतुर्वेदी श्री द्वारकाप्रसाद शर्मा है।

मूल्य ॥)

पता—नेशनल पेस प्रयाग।

बनाउक:—४ पृष्ठ का पुस्तक श्रीधर जो की कविता का एक अच्छा नमूना है।

मूल्य ~)

पता—श्री गिरिधर पाठक
पञ्जोकोर लूकरगंज प्रयाग

कलयुग की कुलदेवी:—ट्रैक्ट है जिस में वेश्यादि दुर्व्यसनों से बचने का सर्व-साधारण को उपदेश है। मुफ़्त मिलता है।

पता—मूलचन्द्र किसनदास का पड़िया
आ० सम्पादक दिगंबरजैन सुरत

संक्षिप्त जीवन चरित—स्वामी राम-तीर्थ का जीवन चरित है। बहुत संक्षेप में लिख दिया है। प्रत्येक भारतीय को इन का जीवन पढ़ने योग्य है। इस पुस्तक में २ चित्र हैं और बहुत से स्वामी जी के व्याख्यान भी शिक्षा के लिये जोड़ दिये हैं। पुस्तकों के लेखक पं० हरिभजन प्रसाद चतुर्वेदी हैं अभी ये प्रथम भाग है। त्रुटि केवल इतनी है कि व्याख्यानों की भाषा बहुत फारसी के जंजाल से भरी है यदि सरल हिन्दी होती तो बड़े लाभ होते।

मूल्य १)

पता:—हरिभजन प्रसाद चतुर्वेदी
हेडक्लार्क कलेक्टर्स आफिस
कानपुर

धर्मव्याख्यो—मुरादाबाद निवासी सारस्वताष्टवंश संड सांख्याचार्य हरिहरनाथ शास्त्री हेड पण्डित चन्दौसी ने ये ग्रन्थ बनाया है। इस में धर्म के धृत्यादि प्रत्येक अङ्ग को लेकर महाभारत गीता आदि प्राचीन स्मृतियों के प्रमाण सहित एक २ निबन्ध लिखा है। धर्म जिज्ञासुओं के ये बड़े उपयोग की है। मूल्य ।=)

देवासुरसंग्राम—छोटा सा कुल २० पृष्ठ का पुस्तक। इस में बोअरों का पैशाचिक अत्याचार दिखाया है। भारतवासियों पर अफ्रिका में कैसा कठोर अत्याचार किया गया है यह खूब बताया है। प्रत्येक देश-भक्त को यह पुस्तक मंगाकर पढ़ना चाहिये।

प्रकाशक लाला नारायणदास खन्ना
हरिसन रोड कलकत्ता
मूल्य—चार आंसू।

हमारी सम्मति में 'देश प्रेम के चार आंसू' मूल्य समझना चाहिये।

श्रमण नारद:—ये बौद्ध धर्म की किसी पाली में लिखित पुस्तक का अनुवाद मात्र है। इस में बड़ी रोचक तथा धार्मिक शिक्षा प्रद कथा है। पढ़ने से ही इस का लाभ लिया जा सकता है। लेखक नाथूराम प्रेमी सम्पादक जैन हितैषी।

पता—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय
हीरा बाग मुम्बई
मूल्य:—लोक सेवा।

श्री परमभक्त सुदामा जी की कथा:—इस ४० पृष्ठों की पुस्तक को महादेव कवि ने भजनों की रंगत में बनाया है। भजनों की परख किसी गवैये से नवा कर करनी चाहिये और फिर कथा का रस लेना चाहिये। भाषा में बड़ी खींच खांच की है।

मूल्य ।=)

पता—ठाकुर बिहारीलाल
हिसार पञ्जाब

टि० ग्रन्थकार पुस्तकों की समालोचना के लिये अधीर हैं अतः अब इकट्ठी ही सब समालोचनाएं दे देने का हमने प्रयत्न किया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाषा श्रुत बोधः—कर्ता मांगीलाल कवि किंकर। इस ८,१० पत्रे की पुस्तक में कर्ता ने श्रुतबोध के कुछ पद्यों को भाषा में समपद्य अनुवाद किया है कुछ एक वृत्तों के लक्षण किये हैं और शेषों के नाम के साथ उदाहरण मात्र दिये हैं। मूल्य)॥

पता—खोड़ाकरवास
सोजत मारवाड़

हमिओपेथी या जैसे का तैसा इलाज

डा० के. एच. हितेषी एम. ई. एच. में छोटी सी मटी रियामेड़िका का भाग जोड़ कर एक ट्रैक्ट सा निकला है। इस में कर्त्ता ने उदाहरणार्थ दो तीन उदाहरणों से ये दिखाया है कि होमियोपेथी के सिद्धान्त भारत की चिकित्सा में भी बड़ा क्रियात्मक भाग लेते थे। और आज कल भी उपयुक्त होते हैं। ये दिखा कर कर्त्ता ने होमियोपेथी का मोटा सिद्धान्त साधारण आंग्लभाषा में स्पष्टतः वर्णन किया है। मूल्य ।)

इस पुस्तक के बारे में इतना अवश्य कहेंगे कि कर्त्ता को चाहिये कि ऐसे विचार हिन्दी भाषा में निकाले जिस से सर्वसाधारण को लाभ हो परन्तु यदि विज्ञापन रूप है तो और बात है।

रसायनसारः—श्यामसुन्दर आचार्य्य वैश्य काशी निवासी ने बनाया। इस में नाना प्रकार के रस सिद्ध करने की विधियें स्वयं कृत कारिकाओं में वर्णन की है सर्वसाधारण के उपयोग के लिये सरल भाषा में भी बड़ी स्पष्टता में भस्मादि बनाने का प्रकार समझाया है। ऐसा पुस्तक एक न एक घर पर अवश्य होना चाहिये। इस पुस्तक में एक विशेषता यह है कि आदि में रसायन शाला और उस के उपकरणों के चित्र भी बड़ी स्पष्टता से दिये हैं। इतनी मूल्यवान और उपयोगी पुस्तक मूल्य केवल ५) और डा० ॥) रखा है। इस की प्रशंसा हम अपने मुख से नहीं करना चाहते। मंगा कर लाभ उठाने वाले स्वयं प्रशंसा करने में भाग लेंगे।

पताः—रसायन शाला
काशी।

हमारी टेबल पर बड़ी रोचक पुस्तकें पड़ी हैं पाठकों को इन की ओर ध्यान दे कर भी लाभ उठाना चाहिये।

हर्ष चरित भाषाः—हमारे प्राचीन प्रसिद्ध गद्य कवि काल के हर्ष चरित नामक गद्य काव्य हिन्दी का मर्मानुवाद बड़ी रोचक भाषा में श्री प्यारे लाल दीक्षित ने किया है।

हमारी सम्मति में ऐसी पुस्तकें अभी और बहुत सी बननी चाहियें क्यों कि इन पुस्तकों से प्राचीन कवियों का मर्म खुलता है। ये पुस्तक पढ़ते पढ़ते वास्तविक उपन्यास लगता है। भाषा रोचक है कथा मनोरञ्जक है।

पताः—सम्पादक मनोरम कार्यालय
मण्डी धनौरा
(यू० पी०)

व्यापार तत्व—अर्थात् व्यापार शिक्षक व्यापारियों के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक इस में वर्त्तमान व्यापार के लिए कितना साधारण ज्ञान आवश्यक है और कितनी सावधानी आवश्यक है सब संक्षेप से और बड़ी उपयोगिता से दिया है। व्यापार कौतुकी विद्यार्थियों के लिए ये पुस्तक बड़े काम का है। प्रायः विद्यार्थी कालिज की पढ़ाई समाप्त कर के नौकरी ढूंढा करते हैं परन्तु यह पुस्तक उन्हें स्वतन्त्र व्यापार की शिक्षा देती है। प्रत्येक नवयुवक इस पुस्तक को पढ़े और स्वतन्त्रता का मार्ग खोज कर लाभ उठाये। लेखक इस के मेवालाल चौधरी हैं। अभी प्रथम भाग ही प्रकाशित हुवा है अच्छा है कि शीघ्र ही अन्य भाग भी प्रकाशित होवें। मूल्य कुल ।=)

पताः—मेवालाल चौधरी
कहल गांव जिला भागपुर

पञ्चम हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्यक्रम का दूसरा भाग भी छप कर तय्यार है इस में प्रसिद्ध साहित्य सेवियों के शिक्षा प्रद और विचार पूर्ण लेख जो हिन्दी और देव नागरी के विषय में हैं प्रकाशित हैं।

मिलने का पताः—
मैनेजर श्री दामोदर प्रेस
लखनऊ

प्रमाण सहस्रीः—यह ग्रन्थ गुजराती में पहले पहल यादवजीटाकरसी ने सर्व शास्त्रप्रेमी सज्जनों के उपकारार्थ प्रकाशित किया था ये ग्रन्थ वहां के लोगों को बहुत पसन्द आया था। यह वास्तव में व्याख्यात या उपदेशकों के बड़े कार्य का है। वैसे तो सारे ही शास्त्रीय प्रमाणों के इच्छुकों के यह कार्य का है पर उपदेशक और व्याख्याताओं के तो हस्त पुस्तक होने के योग्य है।

उसी पुस्तक का अनुवाद श्री शुकदेव प्रसाद वेद पाठी ने बड़ी सरल भाषा में किया है। पहले जहां केवल गुजराती भाषा के विज्ञ ही लाभ उठा सकते थे अब हिन्दी के पाठक भी अनायास लाभ उठा सकेंगे। मूल्य १॥) सजिल्द १॥॥)

पताः—शुकदेव प्रसाद शर्मा वेदपाठी
जसपुर (नैनीताल)

जर्मन जासूस—जर्मन साम्राज्य के गुप्त चर विभाग को लक्ष्य में रख कर ये एक नयी पुस्तक का आविष्कार हुआ है। आज कल के घोर संग्राम की तय्यारी किस प्रकार जर्मन ने कर ली इस का रहस्य इस पुस्तक से खुल जाता है। जर्मन साम्राज्य ने किस बेतहाशा तौर से गुप्त चरों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्वारा भेद जानने में रुपया बहाया है और उस से कितना देश विदेश में जाल फैलाया है इस पुस्तक से सहज ही में समझ आ जाता है। पुस्तक बड़ी रोचक तथा थोड़े में ही सार रूप है। नये जासूसी विभाग या गुप्त चर विभाग का पूरा दृश्य देखना इसी पुस्तक से सुगमता से ही मिल जाता है। और ये भी पता लगता है कि ये गुप्त चर विभाग कैसे पाप के जीवन में जीता है। ग्रन्थकार लिखते हैं कि योरोप में जासूसी सृष्टि बनाने वाला सीवर नामक जर्मन बैरिस्टर था इस का समस्त जीवन निर्दयता अत्याचार अन्याय और नीच से नीच अपराधों के करने में बीता इसी प्रकार इस विभाग में जर्मन ने "सरकारी पुलिस के" चतुर कर्मचारी, कट्टर बदमाश, बेढ़ब चोर, बड़ी सजा काट कर लौटे हुवे कैदी, ऐसे पाजी आदमी जिन को उन के घर के लोगों ने दिक् कर के निकाला हो विवेक शून्य स्त्रियें और मनुष्य अत्यन्त लज्जास्पद और अत्यन्त घृणास्पद कर्मों से संकोच नहीं करते हैं। ऐसे इन सब को इस में नौकर रखा जाता था। फलतः जो जासूस जितनी ऊंची मात्रा का होता है उस में उतनी ही दुराचरण की मात्रा अधिक होती है।

इसी प्रकार इस पुस्तक के पढने से ये ज्ञात होगा कि जासूसी विभाग और गुप्तचरी का महकमा कितना नीच और गन्दा होता है। ऐसी नीचता के आधार पर ही नयी सभ्यता की उन्नति धड़ा धड़ हो रही है। जिस में अभी जर्मन फूला नहीं समाया। खैर पुस्तक बड़ी नयी है। मूल्य कुल ।)

लेखक सोमेश्वरदत्त शुक्ल बी० ए०
पताः—अभ्युदय प्रेस प्रयाग।

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारतः—ऐतिहासिक अन्वेषणा की एक नयी पुस्तक। लेखक श्री चन्द्रमणि प्रतिष्ठित स्नातक विद्यालंकार। पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी गई है। पतञ्जलि के विषय में काल निर्णय बड़े प्रमाणों से किया गया है। ऋषि पतञ्जलि के आचार विचार भी खूब दिखाये गये हैं और इसी प्रकार भिन्न २ निश्वासों में तत्कालीन भारत की सोमाजिक धार्मिक तथा नैतिक अवस्था का भी अच्छा वर्णन दिया है। ऐतिहासिक लोगों को ये पुस्तक अवश्य देखना चाहिए। सर्व साधारण लोगों को महर्षि पतञ्जलि के विषय में विशेष जानने के लिए इस पुस्तक को लेना चाहिए। हम आशा करते हैं कि लेखक महाशय ऐसी ही अन्य प्राचीन ऋषियों के विषय में नवीन गवेषणाएं ढूंढ निकालेंगे। जिस से हिन्दी साहित्य को वृद्धि होगी।

मूल्य केवल ।=)

प्राप्ति स्थान श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार
गुरुकुल कांगड़ी।
P. O. शामपुर

सनातन रहस्य तथा स्वाधीन विचारः—कतिपय आर्य्य सिद्धान्तों पर थोड़े ही में विचार किया गया है। मूल्य एक पैसा भी नहीं। लेखक महाशय खूबचन्द्र मसौरी।

पताः—पं० सदनू प्रसाद तिवारी
सिटी बुर्नेकंग क्लार्क उज्जैन मालवा
)॥ का पोस्टेजस्टाम्प आना चाहिये

ग्वालियर का इतिहासः—बच्चों के लिये ठाकुर सूर्य वर्मा जी ने ये इतिहास सरल तथा ऐतिहासिक भाषा में छोटी सी पुस्तक रची है। ऐसी पुस्तकों से ही बच्चों को इतिहास तथा भूगोल सिखाना ज्यादा लाभ देता है। इस पुस्तक में साथ ही उस रियासत के कतिपय राजों के चित्र भी हैं। मूल्य केवल ।=)

पताः—श्री गोपाल कृष्ण मंडली
लश्कर ग्वालियर

शिवाजी और मराठी जातिः—लेखक ब्रजनन्दन प्रसाद मिश्र तथा वैद्य रघुनन्दन प्रसाद मिश्र

अपनी जाति के वीर आदर्शों का इतिहास जितनी वार जितने ढंग से पढ़ा जाय उतना थोड़ा है। इस विषय में जितना आन्दोलन किया जाय उतना ही लाभकारी है। अतः हम पाठकों से इस के पढ़ने का भी अनुरोध करें तो क्या आश्चर्य है।

मूल्य ।=)
पताः—मैनेजर ब्रह्म प्रेस इटावा

कादम्बरी—बाण कृत महाकादम्बरी को संक्षेप से रोचक उपन्यास की न्याईं पढ़ने का आनन्द उठाने वालों के लिये ये किसी अंश में कम नहीं है। इस के कर्त्ता गदाधर सिंह हैं।

मूल्य ॥) पता—इण्डियन प्रेस
प्रयाग

शिवाजी का आत्मदमनः—नये प्रकाश में नये विचारों से लिखे शिवाजी के जीवन का एक विभाग। ये एक मराठी उपन्यास 'सुभे कल्याण' का अनुवाद है। इस में शिवाजी और रोशन आरा के विषय की ऐतिहासिक घटना को औपन्यासिक का लिबास दिया गया है।

मूल्य =)॥ पताः—मैनेजर
के० वी प्रेस
फर्रुखाबाद।

आदर्श महिलाएंः—इस १०२ पृ० की पुस्तक में म० द्वारका प्रसाद शर्मा चतुर्वेदी ने बहुत सी आदर्श महिलाओं का संक्षेप से जीवन लिखा है। इस में आपने तीन प्रकार की महिलाओं का वर्णन दिया है। एक विदेशी फिर देशी पुराण प्रसङ्गागत फिर देशी इतिहास प्रसंगागत। इस प्रकार ३२ आदर्श ललनाओं के जीवन संग्रह किये हैं। इस में प्रथम स्थान विदेशीय महिलाओं को क्यों दिया गया है इस का हम को कारण प्रतीत नहीं हुवा। क्या उन से आदर्श महिलायें भारत में नहीं पैदा हुवीं थीं।

सब से प्रथम पद विक्टोरिया को मिला। क्या सीता देवी को प्रथम आने का सौ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाग्य नहीं था। खैर ग्रन्थकार ने तो सीता का नाम ग्रन्थ भर में नहीं लिया।

इसी प्रकार ग्रन्थकार ने सिवाय विक्टोरिया के और किसी का चित्र भी नहीं दिया।

हमारा अपना विचार ऐसा है कि यदि विदेशियों को हम अपने साहित्य में मुख्यता न दें तो साहित्य हमारी सन्तति के बड़े उपयोगका हो जाय। हम तो नहीं समझते कि भारत की भावी माताएं तथा नव सुकुमार सती कन्याएं विक्टोरिया पुलचेडिया आदि की कहानियों से कुछ अधिक सीख जावेंगी यदि इन के स्थान में सीता मदालसा गार्गी आदि की कथाएं संग्रह की जातीं, तो अधिक लाभ होता। ग्रन्थकारों को अपने देशीय गौरव के मूल्य समझने में चेतना चाहिये। मूल्य ॥)

पता:—रामदयाल आराखाल
कटरा प्रयाग

— —

नागरी:—इस छोटी सी २३ पृष्ठ की पुस्तक में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने ५ कविताएं नागरी को ध्यान धर के बनवाई हैं। कविता सरस तथा भाव पूर्ण हैं।

पता—विद्या प्रचारणी सभा
चौक चाकसु जयपुर

———

शिशु शिक्षा:—इस छोटी सी २२ पृ० की पुस्तक में प० नारायण प्रसाद अरोड़ा बी० ए० ने बड़ी विचार पूर्ण रीति से बच्चों की शिक्षा पर विचार किया है।
मूल्य ⁄)

पता:—नारायण प्रसाद अरोड़ा
पुस्तक भण्डार
पटकापुर कानपुर

— — —

विद्यार्थी जीवन—लेखक रामसहाय शर्मा अवस्थी ने लिखा। ये विद्यार्थियों के प्रति उन के कर्त्तव्य बताने के प्रयोजन से एक व्याख्यान के रूप में लिखवाया है। मूल्य)॥

पता:—एस० एस० जैन प्रिंटिंग प्रेस
अजमेर।

———

वेदोक्त राज्य—अपने ढंग की अनूठी पुस्तक श्री० प्रो० बालकृष्ण गुरुकुल कांगड़ी के हाथों से निकली है। हमें बड़ा हर्ष होता है जब हम अपने साहित्य को इस प्रकार उन्नत होता हुआ देखते हैं। आप ने इस पुस्तक में एक सतात्मक राज्य की खूब हानियें बतलाई हैं और प्रजा सतात्मक राज्य के बहुत से लाभ बताये हैं। वर्त्तमान पाश्चात्य विचारकों के राज्य सम्बन्धी विचारों को सामने रख कर प्राचीन ग्रन्थों में से भी वैसे ही विचार अनायास निकाल कर धर दिये हैं। वैदिक काल के आदर्श राज्य का चित्र भी आप ने पर्याप्त विस्तार से वैदिक मन्त्रों के साथ वर्णन किया है। प्रशंसा करना इस का व्यर्थ है। क्योंकि ऐसी पुस्तक हिन्दी में अभी तक हमारे आंखों के सामने नहीं आई है। यही अपूर्वता इस में है। इस पुस्तक के विषय में हमें ग्रन्थकार से कुछ बात कहनी है कि:—जहाँ अन्य सब शासनों के प्रकार तथा नाम प्राचीन जमाने में आप ने दिखाये, वहां राज प्रतिनिधि सत्तात्मक या ब्यूरोक्रेसी का वर्णन भी आप दे दे तो अच्छा था। इस में एक जाति दूसरी जाति पर शासन करती हो और शासक राजा की ओर से प्रतिनिधि रूप में आता हो जैसे सम्राट् के प्रतिनिधि, भूत गवर्नर हार्डिंग भारत का शासन करते हैं। क्या ये प्रथा भी पुराने जमाने में थी? थी तो किस रूप में? नहीं थी तो इस प्रथा के विषय में प्राचीन पुस्तकों के क्या मत हैं? इस बात पर भी आप अवश्य दृष्टि डालते तो और अच्छा था।

इस पुस्तक के विषय में हम इतना और अवश्य कहेंगे कि राजादि धर्म शास्त्रों की बहुत कुछ इतिहास के ओर पर व्याख्या की गई है। वैसे पुस्तक प्रत्येक देश के प्राचीन गौरव के अभिमानी को अवश्य पढ़ना चाहिये। और देखना चाहिये कि प्राचीन वैदिक सत्य विचार किस उच्चता पर पहुंचे हुवे थे। मूल्य ॥)

पता:—पुस्तकभंडार
गुरुकुल कांगड़ी

———

सत्य वादी—नामक हिन्दी भाषा की जैन धर्म का पत्र श्री महाराष्ट्र खण्डेलवाल दिगम्बर जैन पंच महा सभा की ओर से प्रति मास प्रकाशित होता है। जिस में लेख प्रायः धार्मिक तथा शिक्षाप्रद निकलते हैं इस का वार्षिक मूल्य १) मात्र है जैन मत में कुछ भी भक्ति रखने वालों को यह पत्र अवश्य मंगाना चाहिये। नमूना मुफ्त मंगा के देख लीजिए।

पता:—मैनेजर सत्य वादी
गिरगांव मुम्बई।

——

बनवासिनी

सूत्र शिल्प—गृहस्थियों तथा गृहिणीयों के बड़े काम की पुस्तक।

इस में जुराब बनयान गुलूबन्द पायजामा टोपा आदि सब उपयुक्त कार्य सिखाया गया है। सब कार्य वर्णन के बाद चित्रों से समझा दिया गया है। बात चीत करते २ सारा शिल्प हस्तगत हो जाता है। प्रत्येक भगिनी को ये कार्य सीखना चाहिये तथा प्रत्येक माता को ये शिल्प अपने बच्चों को सिखाना चाहिए। इसी शिल्प के आधार पर ह-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सारा प्राचीन इतिहास स्वतन्त्र उन्नति का था। अब इसी की हानि से हम बुनयानादि तक के लिए विदेशियों का मुंह ताकते हैं। लोहे की कल के दास बनते हैं। ऐसा करने से घर २ का उपयोगि कल कर पराये की जेब भारी करना है पुस्तक बड़े ही उपयोग की है हमारी सम्मति में स्वतन्त्र पाठशाला में तो अवश्य बालक बालिका सब को यह शिल्प सिखाना चाहिए। जिस से भविष्य में लाभ हो। बालोद्यान का ये एक भाग होना चाहिये। इस में कोई शर्म नहीं करनी चाहिये कि बालोद्यान का पाठ प्रथम श्रेणी से ले कर ग्रेजुएट बनने तक सिखाया जाय। ऐसा करने से ही उन्नति अवश्य होगी। कभी कोई भूखा या दास होकर नहीं मरेगा।

अभी ये प्रथम भाग है लेखक विपिन विहारी लाल बी० ए०

भारत बन्धु यन्त्रालय अलीगढ़

———

सूर्य शिल्पः—ये भी एक उसी प्रकार के बालोद्यान का एक पाठ है।

इस में सीना, कुर्त्ता बनाना, अन्य कपड़े बनाना, सारा का सारा सूट तय्यार करना आ जाता है। ये सब कार्य सहल में ही एक सूई से हो जाते हैं।

घर के मालिक तथा मालकिनियों को ये शिल्प घर के बच्चों भगनियों को नित्य सिखाना चाहिये। इस पुस्तक की कर्त्ता श्री मती मेरी ए० सि० सुराट्।

मूल्य पते का पता नहीं।

रंग में भंगः—मैथिलीशण की सरस कविता का मान प्रायः सरस्वती के पाठक सब जानते हैं उन्हीं के हाथों का लिखा वीर रस भरा यह पुराना कुम्भ का किस्सा भी पढ़ने योग्य है। मूल्य ।)

पताः—रामकिशोर गुप्त चिरगाँव (झांसी)

———

काश्मीर सुखमा—श्रीधर पाठक जी की कविता का क्या ठिकाना।

इन की कविता इन की कविता ही से बरनी जाय तो भला है।

"प्रकृति यहां एकान्त बैठ निज रूप संवारति।

पल पल रति भेस छनिक छवि छिन छिन धारति।

विमल अम्बुसर मुकरन मंह मुख बिम्ब निहारति

अपनी छवि पै मोहि आप ही तन मन वारति

सजति सजावति सरसति हरसति दरसति प्यारी।

बहुरि सराहति भाग पाय सुठि चित्त रसारी

.....

ललकति तिलकति पुलकति निरखति थिरकति बनठति!

मधुर मञ्जु छवि पुंज छटा छिरकति बनकंजन।

चितवति रिझवति हसति लसति मुसक्याति हरति मन।"

मानहु मनिमय मौलिमाल आकृति अलबेली।

बाँधी विधि अनमोल गोय भारत सिरसेली।"

इत्यादि सम्पूर्ण रस ही से भरी है। खड़ी पड़ी देनों बोलियों का ऐसा रसीला अमृत बनाया है कि पीते ही बनता है।

भान नहीं रहता कि संस्कृत पढ़ते हैं कि भाषा। यह पुस्तक भाषा? की पाठ विधि में रखने योग्य है।

पताः—मैनेजर इण्डियन प्रेस प्रयाग

———

पद्य प्रबन्धः—मैथिली शरण गुप्त जी के बारे में बहुत क्या कहें बस उनी का बनाया यह पद्य प्रबन्ध है। इस में नाना विषयक कविताएं हैं जो रस पान करना चाहे 'रामकिशोर गुप्त चिरगाँव झांसी) के पते से मंगा कर पढ़ ले।

———

नारी सुधारः—बाबू मुरलीधर वर्मा लिखित मूल्य ॥।≡)

इस में ५ प्रस्ताव है प्रथम ऋतु काल पर द्वितीय गर्भावस्था पर तृतीय प्रसव पर चतुर्थ प्रसूतावस्था पर पञ्चम बाल्यावस्था पर यही पांचो शरीर की ऐसी अवस्था हैं जिन में मनुष्य की जान खतरे में होती हैं अतः इन का जानना प्रत्येक के लिये आवश्यक है।

गृहस्थ कार्य में यही कष्ट मय अवस्थाएं सामने आपड़ती हैं। इन के समझने के लिए ऐसी ज्ञान प्रद पुस्तकें प्रत्येक गृहस्थ के पास होनी चाहियें।

पताः—नागरी प्रचारणी सभा काशी।

———

भ्रम संशोधन

गतांक में हमारी कारण वशात् सहसा असावधानी से प्रचारक में कई स्थानों पर बड़ी अशुद्धि रह गई। पाठक उन को ठीक कर लें ताकि भ्रम दूर हो जाय। साहित्य चर्चा में। निम्ब के स्थान पर बिम्ब चाहिये।

किरणे ष्विवाङ्कः भूल से किरणे स्विनाङ्कः छप गया है।

(३) में 'शुद्ध हवा' के स्थान में "शुद्ध हव्य' चाहिये।

"आश्रम भूत भाव' के स्थान पर 'आश्रय भूत भाव चाहिए।

(४) में 'और कीजिए' को 'और लीजिए' पढ़ना चाहिए।

'ते सान्' के स्थान 'पर ते तान्' चाहिए।

"भाष्य पदावली" के स्थान में भाषा पदावली चाहिए।

(५) में 'कालिदासादी की' के स्थान पर "कालिदास की" ऐसा चाहिए।

(७) में 'तुक्कों की मार' 'तुक्कों की मार' चाहिये। ऐसी भूल से ही गुरुकुल के स्थान पर कुरुकुल भी छप गया था।

भवदीय
स० स०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) इनाम।

श्री वाल्मीकी रामायण पर।

श्री पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर ने जो श्री वाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवनमेंट पञ्जाब ने २००) रुपये और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रुपयों का इनाम उस के लिये रक्खा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। यह इस बात का पूरा प्रमाण है कि यह टीका बहुत उत्तम बनी है, मूल्य बिना जिल्द ५।) सुनहरी अक्षरों की जिल्द वाली ५॥)

२००) इनाम वाल व्याकरण पर

यह हिन्दी में संस्कृत भाषा को बड़ा सरल व्याकरण है, इस पर भी गवनमेंट ने २००) रुपया इनाम दिया है, और पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने इसे मिडल के कोर्स में नियत किया है। मूल्य ।=)॥

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवद्गीता पर

पदार्थ अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य सहित, इस पर भी पं० जी को ३००) इनाम मिला है,

मूल्य २)

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=) ऐतरेय =) छान्दोग्य २) बृहदारंण्यक २) श्वेताश्वत्र ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।)॥
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश संग्रह ।=)
सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ इस पर भी २००) इनाम मिला है।

मूल्य ॥=)

वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३॥) योग दर्शन ॥।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है। ॥)

निरुक्त निघंटु पाठ सहित, निरुक्त हिन्दी भाष्य भी छप गया है। मन्त्रों के पते दिये गए हैं, और कई प्रकार के सूची पत्र दे कर ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी बना दिया गया है, विद्वानों ने इस की बहुत बड़ी प्रशंसा की है, मूल्य ४)

१००) इनाम मनुस्मृति पर

मनुस्मृति की सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

सटीक महा-भारत

छपना आरम्भ हो गया है, टीका और फुटनोट ऐसी छान बीन के साथ लिखे गए हैं, कि इस से प्राचीन आर्यावर्त का सच्चा इतिहास साफ साफ खुल जाता है, वार्षिक मल्य ३) है।

पताः—

मैनेजर आर्षग्रन्थावली
लाहौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बनाई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद मजिस्ट्रेट जावद
जिला मान्डसोर
ग्वालियर स्टेट

वर की आवश्यकता

एक आर्य्य कुलीन कन्या के लिए जिस की आयु १४ वर्ष की है। एक वर की आवश्यकता है। कन्या ने कन्या महाविद्यालय जालंधर में शिक्षा प्राप्त की है स्वास्थ उत्तम है। माता पिता समाज में अच्छा स्थान रखते हैं। जाती बन्धन का कोई ध्यान न होगा। गुण कर्म का विचार कर के सम्बन्ध किया जायगा।

पत्रव्यवहार का पता—

डी० द्वारा। प्रबन्ध कर्ता
सद्धर्मप्रचारक पत्र
श्यामपुर कांगड़ी
(बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वाले को २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ हो।

सामवेद भाषा भाष्य श्री पं० तुलसीराम कृत सम्पूर्ण मूल्य ४) मात्र सजिल्द ४॥)

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बाजाज़ा शहर मेरठ

उस्तरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगाने से फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मूल्य १)

सैनेजर हिमालय कंपनी कंखल

आदित्य ग्रन्थमाला
की
नई पुस्तक छप रही है नई पुस्तक

सचित्र प्रिन्स बिस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना
इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े २ को कैसे पद दलित किया, और फिर किन किन शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की: इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तार पूर्वक वर्णन है। दूसरे भाग में साहस की मूर्ति, देश-भक्ति के पुतले, नीती के गुरु, और जर्मनी के-जन्म दाता प्रिन्सबिस्मार्क का आश्चर्यकारी चरित चित्रित किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल आजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्होंने पढ़ा है उन के लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वालों को रियायती मूल्य पर पुस्तक मिलेगी।

पता:—प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म प्रचारक पत्र गुरु कुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर।

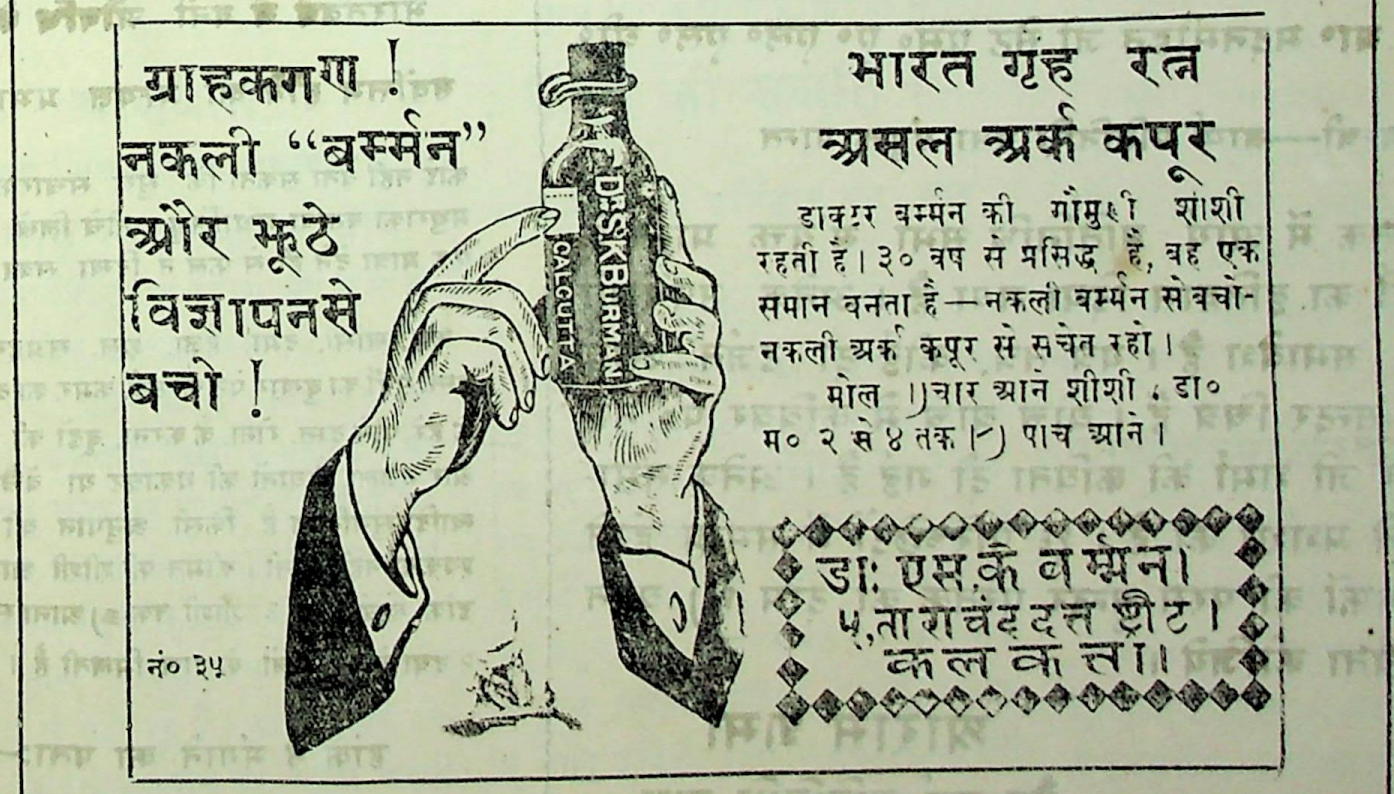

एजन्ट बाबूरामजैन एन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य्य समाज और उस के शत्रु
The Arya Samaj and it's Detractors.

इस अङ्गरेज़ी भाषा की अपूर्व पुस्तक में आर्य्य-समाज के विरोधियों का मुंह बन्द करने का बहुत कुछ मसाला भरा पड़ा है। समय पड़ने पर सरकारी कर्मचारियों को दिखलाने योग्य है। यह पुस्तक इतनी आवश्यक है कि प्रत्येक समाज में इस की एक प्रति तो अवश्य रहनी चाहिये। पहिले इस का मूल्य ५) था। अब सर्वसाधारण के लाभार्थ लागत से भी कम केवल ३) कर दिया है थोड़ी प्रतियां रह गई हैं शीघ्र मंगा लें।

ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार

महा पुरुषों के पत्र बड़े शिक्षा दायक होते हैं। विलायत के लोग तो अपने महा पुरुषों के पत्र हज़ारों रुपया व्यय कर के खरीदते हैं। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द के अलभ्य पत्र छापे गये हैं उन पत्रों से ऋषि के जीवन की कई नवीन घटनाओं का पता लगता है। पहिले इस का मूल्य १।) था। अब हम ने सर्वसाधारण के लाभार्थ केवल ।=) मूल्य कर दिया है।

पता:—इन्द्र प्रस्थार्य एजन्सी, देहली

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

बरियारपुर

(बनारस स्टेट)

नया संदेशा ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग ।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी वसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें इत्यादि विषयों पर महत्व पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता

"सत्ययुग"

हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय

मुज़फ़्फ़रपुर

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा

बुलन्दशहर

१६००० हज़ार

एजेंटों का होना

भारतवर्ष में बनी औषधि के सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं बता सकता कि सुख संचारक कंपनी मथुराका बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कफ, खांसी, दमा. हैजा, शूल. संग्रहणी, कै दस्त, सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, बच्चे के हरे पीले दस्त, रोना, कै करना, बूढों की अनिद्रा और नजला, जवानों की थकावट या बेचैनी, दवा स्वादिष्टसुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कीमत फी शीशी आठ आना डांक खर्च १ से ६ शीशी तक ≡) आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डांक से मंगाने का पता:—

सुख संचारककंपनी

मथुरा

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म

Registered No. A.434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ३० फाल्गुन सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० १३ मार्च सन् १९१५ ई० { संख्या ४८ भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि ।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है। इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है। महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा।

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में " ठाकर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं। उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है। इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए। पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए। वे इसे समाप्त किए विना न उठेंगी।

मूल्य ।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

राष्ट्रों की उन्नति।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए। आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित। विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है। उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है। मूल्य २)

अर्थशास्त्र—पो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित। इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं। पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है। मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित। इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है। निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है। मूल्य ।=)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा। भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है।

मूल्य=)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये। वा०मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर कांगड़ी

(नि० बिजनौर)

तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला **शेर** की चरबी १।) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू. पी.

(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

असली हारमोनियम

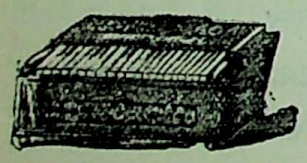

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता

G. M. Sharma Co. Post Book no. 283, Calcutta,

१०,०००) रूपया इनाम,

यह इनाम उन लोगों को मिलेगा जो हमारे यहां से नीचे लिखी हुई दवा मंगावेंगे। मकज़ोरी दिमाग़ को दूर करने वाली (अमृत प्रवाह) १) सैकड़ों बार का आजमाया हुआ धातु पुष्टि चूर्ण २)। इनाम बड़े २ डाक्टर, वकील वैद्य रईसों के सामने बांटा जायगा। हमारे ग्राहक भी इनाम बांटने में शरीक हो सकते हैं उन को आने जाने का खर्च भी दिया जायगा। जानने के लिये नियमावली)॥ का टिकट भेजने पर मुफ़्त मगाइये

पता:—सूर्य्य, औषधालय,

सनेटरी रोड़—लखनऊ

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥

भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०.

तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,,

छः ,, ,, ,, ,, ,, ।)॥ ,,

सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) **विद्यार्थियों से ३)**

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

पुस्तक विक्रियताओं के लिये

सुनहरी अवसर

भारत लिट्रेचर कम्पनी लिमिटेड लाहौर कालेक्योडेशन हो जाने के कारण पुस्तकों का एक भारी स्टाक पं० आर्य मुनी जी कृत तथा म० शिवव्रतलाल वर्म्मन, स्वामी दर्शनानन्द जी, ला० लाजपतराय जी, आदि पुस्तक रचयिताओं की विक्रियार्थ उपस्थित हैं। जिन पुस्तक विक्रियताओं को मोल लेना स्वीकार हो लेकोडेटर से पत्र व्योवहार करें। ५००) का इकट्ठा माल मोल लेने वाले को आधे मूल्य पर दिया जायगा।

एस. के. मुकरजी

लीडर तथा लेकोडेटर भारत

लेट्रेचर कम्पनी

नीला गुम्बद लाहौर

२६/४६ से २६/७८ तक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुम्भप्रचार की ओर

अन्तिमध्यान

परसों से वैदिक-धर्म का प्र ार, गुरुकुल की मायापुर वाटिका में, होने लग जायगा । संयासी और गृहस्थ, सभी प्रकार के धर्म प्रचारक वैदिक धर्म का शुभ सन्देश आर्य्य जनता तक पहुंचा ने में निमग्न होंगे । मुझे केवल इसी का ध्यान होगा; उतारे के लिये, चिकित्सालय के लिये, पुस्तक प्रचार के लिए, उपदेशकों तथा भजनीकों के मार्ग व्यय के लिए धन कहां से आवेगा, इसका तनिक भी विचार न रहेगा । वैश्य वृत्ति की गिनती दूर हो जायगी, केवल ब्राह्मणत्व की सेवा के लिए क्षात्र धर्म का भाव ही काम करेगा ।

आज के अंक में और कहीं कुम्भप्रचार की आय दी गई है। उसका जोड़ २४६१८) है । उस के पश्चात् निम्न रकमें और वसूल हुई हैं:—

१२८) म. ठाकुरदास जी, बन्नूं

१) म. श्यामसुन्दरलाल, नामकमता ।

५) म. तुलसी राम, पिन्डी भट्टियां ।

५०) आर्य्य समाज अमृतसर ।

२६।।।=) म. डी. पी. वर्मा, पंजाब नैशनल बैङ्क, करांची ।

१५) आर्य्य समाज नगीना ।

२६०५८) सर्वयोग

अभी पत्र आया है कि म. रामरक्खा जी पुस्तकाध्यक्ष आर्य्य समाज स्यालकोट ने स्वयम् परिश्रम कर के ७५) एकत्र किए हैं ।

मैं इस समय जिस प्रकार बजट बांट चुका हूं उस के विचार से वह वृहत् यज्ञ ६०००) के व्यय से कम में पूरा होता नहीं दीखता । और ६०००) जमा होना कुछ कठिन भी नहीं यदि सर्व आर्य्यसमाज अपने कर्त्तव्य को समझें । यदि रावलपिन्डी आर्य्यसमाज १००) भेज सक्ता है तो पेशावर, डेरा इस्माइलखां, आगरा, लखनऊ, अजमेर इत्यादि के आर्य्यसमाज भी वही रक़म क्यों नहीं भेजसक्ते । अभी तक सार्वदेशिक सभा के आधे से अधिक सभासदों ने कुछ नहीं भेजा । संयुक्तप्रान्त में ४०० से अधिक आर्य्य समाज कहे जाते हैं । शायद बीस पचीस ने ही मेरे विनय को सुना है । यदि इन में २०० आर्य्यसमाज भी बीस बीस रुपए भेजदें तो ४०००) बात की बात में होजाता है ।

परन्तु यहां तो यह अवस्था है कि जिन आर्य्यसमाजों के पास जमा किया हुआ धन पड़ा है उन्होंने भी अब तक नहीं भेजा ।

परन्तु क्या धन न आने से काम पड़ा रहेगा ? मैंने निश्चय कर लिया है काम चलाने का इस लिए आय से जितना अधिक व्यय होगा उस ऋण को उतारने के लिए भी कोई मज़दूरी कर ही लंगा ।

उपदेशक महाशयों से विशेष निवेदन

यह है कि ऐसा अवसर धर्मप्रचार का १२ वर्षों के पश्चात् आवेगा । भजनोपदेशकों को भी ऐसा समय फिर हाथ नहीं लगने का । स्थानीय कामों का ध्यान न करते हुए सब योग्य उपदेशकों को यहीं पहुंचना चाहिए । पञ्जाब आर्य प्रतिनिधि सभा का मैं कृतज्ञ हूं कि वह मेरी प्रार्थनाओं को यथाशक्ति मान रही है। सन्यस्तमण्डल को कहां तक धन्यवाद दूं जिन्होंने दृढ़ प्रतिज्ञा यहां पहुंचने की करली है । अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओं--विशेषतः संयुक्तप्रान्तीय सभा—से निवेदन है कि अपने योग्य उपदेशकों को आज्ञा देवें कि उन के पुरुषार्थ से प्रचार का काम आनन्द-पूर्वक समाप्त हो ।

ठहरने आदि का प्रबन्ध

इस प्रकार है कि उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों को अलग स्थान दिया जायगा तथा उनके लिए भोजन का भी पूरा प्रबन्ध रहेगा । जिस स्थान से कोई उपदेशक आवें वहांतक का किराया पहुंचते ही भेंट कियाजायगा तथा जहां लौटेंगे वहां का किराया चलते हुए भेंट किया जायगा । स्वयम् सेवकों के रहने तथा भोजन का सर्व प्रबन्ध सभाकी ओर से होगा । अपने आने जाने का किराया वे स्वयम् देंगे ।

इन के अतिरिक्त पचास अकेले सभ्यपुरुषों को उतरने के लिए स्थान दिया जा सक्ता है । एक हलवाई की और दूसरी रोटी की दुकानें अपने ही स्थान में रहेंगी, वहां से भोजनादि मोल ले सकेंगे ।

यह भी प्रबन्ध किया गया है कि वाचनालय भी खोल दिया जाय जिस में सर्वप्रकारों के समाचार पत्र विशेष समय पर पढ़ने को मिल सकेंगे ।

अन्त में सर्व उपदेशक महोदयों तथा आर्य भ्राताओं की सेवामें सविनय निवेदन है कि विरुधियों के कटुवचनों, कटाक्षों आदि की कुछ परवा न करते हुए शान्ति और सहन शीलता से अपने धर्म का प्रचार करें और यह स्मरण रक्खें कि

धर्म अपनी आप ही रक्षा करता है

हम तुच्छ जीव उसकी क्या रक्षा करेंगे । ओंशम् ।

मुन्शीराम जिज्ञासु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिक्षा संबन्धी टिप्पणियां

प्रान्तों में शिक्षा।

भारतवर्ष का अशिक्षित होना एक मुहाविरा सा हो गया है। यदि शिक्षितों की संख्या किसी देश की अवस्था की सूचक हो, तो भारतवर्ष की दशा को सर्वथा अवनत कह देने के लिये शिक्षाक्रम की तालिका पर दृष्टि डाल देना ही पर्याप्त है। जैसे यह तालिका भारतवर्ष की दशा को दरसा देती है, उसी प्रकार यदि प्रान्तों की शिक्षित संख्या पर दृष्टि डाली जाय तो उन की दशा का पहिचान लेना भी कठिन नहीं होगा। प्रान्तों की सापेक्षक शिक्षित गणना उन की आन्तरिक दशा को बोधित कराने वाली है। हम नीचे वह सूचि देते हैं।

प्रान्त	१०० में से लगभग शिक्षित संख्या
मद्रास	१०.७
बम्बई	१०.५
बङ्गाल	१०
मध्यप्रदेश	६.४
बिहार	५.६
पंजाब	५.४
संयुक्तप्रदेश	५

यह संख्या केवल साक्षरों की है। भारतवर्ष के प्रान्तों में साक्षरों का यह हिसाब है।

सूचि से क्या झलकता है ?

यह सूचि क्या स्पष्ट कह रही है। प्रत्यक्ष रीति से दृष्टि गोचर होता है, कि मद्रास बम्बई और बङ्गाल शिक्षा में एक दूसरे के ऐन साथ ही साथ हैं। ये तीनों भारत के शिक्षित प्रान्त कहा सकते हैं। बर्मा को हम इस समय मुख्य भारत में नहीं गिनते। इन प्रान्तों की अधिक शिक्षित संख्या संसार की और जातियों की शिक्षित संख्याओं के सामने तो केवल उपहास-मात्र है, किन्तु भारतवर्ष में वह ही बहुत हैं। इस का मुख्य कारण यही है कि अंग्रेज़ों का राज्य इन प्रान्तों में प्रथम स्थापित हुआ। इन में शिक्षा का प्रचार पहले ही शुरू हो गया था, मध्यप्रदेश और बिहार का मध्यम स्थान है। आश्चर्य तब होता है, जब हम पंजाब और संयुक्तप्रान्त को शिक्षा की दौड़ में सब से पीछे पड़ा हुआ पाते हैं। विशेषतया पंजाब को अपने शिक्षानिमित्तक प्रयत्न पर विशेष अभिमान है। यह तालिका बताती है कि अभी पंजाब में क्या कुछ करना शेष है? अभी प्रांत का केवल बीसवां हिस्सा साक्षर हुआ है। यह तालिका भारत के जीवन में प्रान्तों ने जो भाग लिया है, या ले सकते हैं उसे सूचित करती है। मद्रास शिक्षा और ज्ञान का सदा से केन्द्र रहा है। दार्शनिक बुद्धि मद्रास की ही बांट में आई है। बम्बई ने भारत-नैतिक-क्षेत्र में अगुवाई का ठेका ले छोड़ा है और बंगाल अबसे पूर्व उत्पन्न हुए कवियों की दृष्टि से, किसी प्रान्त से पीछे नहीं है। शेष रहे मध्य-प्रदेश और बिहार। इन में से मध्य प्रदेश सदा मध्यम रहा है, और बिहार कई सदियों से अपने प्राचीन गौरव को छोड़ कर सम-अवस्था को ही पहुंच चुका है।

पंजाब ने विद्या या मानसिक उन्नति सम्बन्धी विषयों में कभी बहुत उच्च पद नहीं पाया। भारतीय इतिहास के अतिप्राचीन इतिहास में तो पंजाब की महिमा पर्याप्त है, किन्तु प्राचीन मध्यम और नवीन समयों में पंजाब ने कभी मानसिक शक्ति का चमत्कार विशेषतया नहीं दिखलाया। राजनीति में भी वह भारतवर्ष का सन्धि स्थान ही रहा है—भारत के राज्य भवन में बाह्य लुटेरों के घुसने का स्थान यही रहा है। इसी रगड़ारगड़ी में वह अपने मानसिक जीवन को अधिक स्थिर नहीं रख सका। यह तो हुई पुरानी बात। अब पंजाब अन्य प्रान्तों से इसी कारण पीछे प्रतीत होता है क्योंकि यहां शिक्षा का प्रबन्ध पीछे से शुरू हुआ है। अब आगे इस न्यूनता के रहने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता। क्यों पंजाब के उत्साही निवासियों के उत्साह से इन दस सालों में, एक और प्रान्तमे भी कूद कर आगे निकल जाय। मध्य प्रदेश और बिहार को लांघ जाना कठिननहीं है। पंजाब को अपनी धीमा गति पर लज्जित होना चाहिये।

अन्तिम स्थान है संयुक्तप्रान्त का यह एक निश्चित बात है कि संयुक्तप्रान्त के पास इतना पीछे रहने के लिये कोई बहाना नहीं हो सकता। संयुक्तप्रान्त वह प्रान्त है, जिस में, काशी, मथुरा जैसे प्राचीन शिक्षा के केन्द्र विद्यमान हैं। भारत के मध्य कालीन विद्वानों की बहुत बड़ी संख्या इसी प्रान्त के नाम को उज्ज्वल कर चुकी है। पञ्जाब से राजनीतिक दृष्टि से भी एक तरह यह प्रान्त आगे है। पञ्जाब में अभीचीफ़कोर्ट है। संयुक्तप्रान्त को एक्सिक्यूटिव कमिटी मिलने वाली है। इन सब बातों के होते संयुक्तप्रान्त का शिक्षा की दौड़ में पीछे रह जाना आश्चर्यान्वित करने वाला है। शायद इसी कलंक को धोने के लिये माननीय मालवीय जी बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना किया चाहते हैं। प्रयाग में भारत सेवक समिति के उत्साह से प्रारम्भिक शिक्षणालयों का स्थापित होना भी सुना जाता है। इन सब साधनों के होने पर आशा है वह प्रान्त भी इतना पीछे नहीं रहेगा।

यह तो हुई प्रान्तों की परस्पर तुलना। अब आप ज़रा भारत के अधिक से अधिक शिक्षित व्यक्तियों वाले प्रान्त की अन्य देशों से तुलना करें। मद्रास में भी सौ में से लगभग ग्यारह व्यक्ति साक्षर हैं। सभ्य जातियों में इस अगुए प्रान्त का घुसना भी विशेष प्रवेश टिकट के बिना कुछ असम्भव सा प्रतीत होता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२०००) की भेंट

(१) प्रचारक की ओर से इस वर्ष हम २०००) की जो भेंट गुरुकुल के कोष में किया चाहते हैं, उसकी पूर्ति में इतना विलम्ब देख कर हमें लज्जा आरही है। आगे हम अभी तक प्राप्त धन के दाताओं सहित सूचि देंगे। वह सूचि बहुत दिल तोड़ने वाली है। क्या इतनी शिथिल गति देख कर इस छोटी सी राशि की पूर्ति में भी सन्देह नहीं होने लगता। इस राशि को पूरा तो करना ही होगा। हम स्वयं बहुत बड़े धनी होते तो यही भरोसा रखते की गांठ से देकर पूरा कर देंगे, पर यह सम्भव नहीं है। तब प्रचारक परिवार के भरोसे ही हमने इस छोटी सी भेंट की प्रतिज्ञा की है। हमेपूर्ण आशा है कि अब भी प्रचारक के प्रेमी जागेंगे, और अपने कर्तव्य पालन की ओर दत्त चित्त होंगे।

अब तो हमारी यही प्रार्थना है कि कृपा करके अपने हिस्से के दो रुपये यदि न भेजे हों तो इस लेख के देखते ही भेजदें। गुरुकुल के कोष में प्रचारक कईवार ऐसा विशेष चन्दा करके दे चुका है। उपदेशक महाविद्यालय के लिए हमारी अपील पर प्रचारक परिवार ने झटपट ही ३०००) के लगभग राशि एकत्र करदी थी। उस का फल आज प्रत्यक्ष है। गुरुकुल में उपदेशक विभाग स्थापित हो गया है। हमें आशा है कि अब भी राशि शीघ्र ही पूरी हो जायगी। यह राशि गुरुकुल के किस विशेष कार्य के लिये दी जाय, यह परिवार को हम पर ही छोड़ देना चाहिये।

आर्यो
सम्पादक

सद्धर्म्म प्रचारक

वेदार्थ की चाबी

वैदिक देवता

एक नई पुस्तक

हमारे यहां यह प्रश्न चिरकाल से चला आया है कि वेदों के अर्थ करने के मुख्य साधन कौन से हैं? वेद आर्यसमाज के प्राण हैं। वे आर्यसमाज के आधारभूत हैं। आर्यसमाज के लिये उन के अर्थों का स्पष्ट करना—और स्पष्ट करने के साधन बतलाना आवश्यक कर्तव्य सा है। ऋषिदयानन्द ने जिस मार्ग की ओर सकेत-कर दिया है, उसे दृष्टि में रखते हुए वेद विषयक जटिल प्रश्नों को हल करना आर्यसमाज का अत्यावश्यक उदेश्य है।

ऋषिदयानन्द ने वेदों का तात्पर्य हम लोगों के सामने रखने के लिये अनेक यत्न किये। उन्होंने अपने जीवन का बड़ा भाग वेदों पर विचार करने और भासित अर्थों के प्रकाशित करने में ही अर्पण किया। इसी परिश्रम—इसी एकाग्रतासे—ऋषि के लिये 'वेदों के पीछे पागल, ये शब्द एक विदेशी के मुंह से निकलवा दिये। ऋषि का विचार था कि वेदों का सम्पूर्ण अर्थ वह जनता के सम्मुख रख जाय। किन्तु एक ओर वेदों का इतना भारी आकार, और दूसरी ओर ऋषि के ज़िम्मे इतने काम। देशदेशान्तर में घूमते हुए अपने छोटे से जीवन में ऋषि ने जितना वेदभाष्य किया, वह भी आश्चर्यान्वित करने वाला है इतना समय भी इन्हें कैसे मिल सका? इतना कार्य भी वे कैसे कर सके? ये प्रश्न हैं जिन के उत्तर साधारण मस्तिष्क में नहीं आसके।

ऋषि की अकालमृत्यु ने उन के जीवन कार्य को बीच में से काट दिया। वह अधूरा ही रह गया। मुनिवर गुरुदत्त ने वेदों पर ऋषि के दिखाये हुए मार्ग से विचार प्रारम्भ किया, किन्तु मृत्यु के बली हाथने उनका भी शीघ्र ही संहार कर लिया। आर्यसमाज के पण्डित तब से अबतक कुछ न कुछ यत्न वेदों के विषय में करते रहे हैं। ऋषिदयानन्द के सामने वेद के सम्बन्ध में तीन समस्यायें उपस्थित थीं। एक समस्या यह कि वेद क्या है और उनकी उत्पत्ति आदि कैसे हुई? दूसरी समस्या यह थी कि वेदों का अर्थ जानने के कौन २ से उपाय हमारे सामने उपस्थित हैं, और उन के अशुद्ध अर्थ होने में निमित्त क्या हैं? तीसरी समस्या यह थी कि वेदों के अर्थ क्या हैं? उन्हों के इन तीनों में से पहली दो के उत्तर में ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का निर्माण किया, और तीसरी को हल करने के लिये वेद भाष्य प्रारम्भ किया। हमारे दुर्भाग्य से जहां वेद भाष्य अधूरा रह गया, वहां ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के सिवा पहली दोसमस्याओं के हल करने में और कोई पुस्तक ऋषि की लेखनी से न निकल सकी? क्योंकि वे दोनों समस्यायें बहुत व्यापिनी हैं। उन के हल करने के लिये ऋषि की लेखनी से कई भूमिकायें निकलने की आवश्यकता थी। उन समस्याओं का हल होना वेदार्थ जानने का आधार है। समस्याभाव से ऋषिदयानन्द उन विषयों में प्रतिपक्षियों की समस्त शक्तियों पर विचार न कर सके। तो भी जो दिग्दर्शन उन्हों ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करा दिया है वह पर्याप्त है।

ऋषिदयानन्द के पीछे उनके सच्चे शिष्य मुनि गुरुदत्त ने ऋषि के दिखाये ढंग से ही वेदों पर विचार प्रारभ किया। उन्हों ने मूल समस्याओं को पहले पकड़ा। पहले ड्योढ़ी और फिर मकान होना चाहिये। पहले रास्ता साफ़ होने पर ही उद्देश्य पर पहुंच सकते हैं। पं० गुरुदत्त ने एकदम वेद भाष्य पर हाथ नहीं मारा। पहले वैदिक शब्दों के यौगिक अयौगिक विचार से प्रारम्भ किया। वेदार्थ विचार करने का यही सीधा ढंग है, जो साधारण वेद-विचारकों द्वारा अनुसृत किया जा सकता है।

वेद के विषय में हमसे भिन्न सम्मति रखने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है, उन के परिश्रम अनथक हैं। पौराणिक विचारों के रखने वाले अपने सिद्धान्तों के अनुसार किया हुआ चारों वेदों का भाष्य दिखा सकते हैं, जो हम नहीं दिखा सकते। पाश्चात्य संसार वेद के एक २ विभाग पर लिखी हुई कई २ पुस्तकें सामने धर कर हमें चैलेंज कर रहा है, किन्तु हमारे पास उनके उत्तर में रखने के लिये अभी क्या है? योरूपियन विद्वानों ने वेदों के जो अर्थ कर दिये हैं, वे हमारे लिये अधिक भयावने नहीं किन्तु उन्हों ने पहली दो समस्याओं के हल करने के लिये जो पुस्तकें लिखी हैं, वे हमारे सिद्धान्तों की जड़ में कुठाराघात करती हैं। ऋषि के वेदभाष्य के सन्मुख इन का वेदभाष्य रख देने मात्र से उन का कोई अभिप्रेत सिद्ध नहीं हो सकता। किन्तु जब वे वेदार्थ के साधनों पर, वैदिक शब्दों की घटना पर और वेदों की उत्पत्ति पर अपनी सम्मति को युक्ति सिद्ध करके दिखलाते हैं तब वे ऋषि के वेद भाष्य पर और हमारी वेदविषयक श्रद्धा पर कुठाराघात करते हैं। इस लिये जब तक आर्यसमाज में उस प्रत्यक्ष दशा का अभाव है, जो बिना बाह्य साधनों के वेदों पर विचार करसके, तब तक हमें पहले दो प्रश्नों पर विशेष विचार करना चाहिये। हम से भिन्न सम्मतियां रखने वालों के अनथक परिश्रम हमारे कर्तव्य को और भी बढ़ाते जाते हैं।

मुनि गुरुदत्त के पीछे श्री पं० तुलसीराम जी और श्री पं० शिवशङ्कर जी काव्यतीर्थ ने वेदों के विषय में बहुत सा प्रयत्न किया है। पं तुलसीराम जी ने खोज की अन्तिम सीढ़ी पर पहुंच कर वेद भाष्य किया है, और पं० शिवशङ्कर जी ने इतिहासार्थ निर्णय लिख कर वेद के विद्यार्थियों की अनुपम सहायता की है। ये बड़े काम हैं और पूर्ण पाण्डित्य चाहते हैं। किन्तु इन के साथ२ एक और काम होना चाहिये, और वह पहली दो समस्याओं पर विचार है।

वेद क्या हैं? उन के शब्द कैसे हैं! उन के अर्थ करने के क्या २ उपयोगी साधन हैं? और उन साधनों का परस्पर क्या सम्बन्ध है? वेदार्थ की चाबी क्या है? इन सब प्रश्नों का उत्तर मिलना अत्यावश्यक है। उत्तर भी ऐसा होना चाहिये जिस में योरप के विद्वानों की समालोचना की आलोचना भी की गई हो। नये रंगरूटों के सामने यही आवश्यक काप है—जिसे करने का वे यत्न कर सकते हैं। यह मूल है—वेदार्थ इस का फल है। इस फल को जनता के सामने रखना बड़े २ धुर धर पण्डितों का कार्य हैं। जो अभी अपने आपको विद्यार्थी समझें, जो रंगरूट हों, उन्हें आरम्भ में इन्हीं दोसमस्याओं पर अपना दिमाग़ लड़ाना चाहिये।

इन्हीं बातों पर विचार करके इस लेख के लेखकने वेद के विषय में अपनी तुच्छ बुद्धि से विचार किया तो उसे वैदिक देवताओं का विषय सब से आवश्यक प्रतीत हुआ। वेदों में जो अग्नि इन्द्रादि शब्द आते हैं, उनके क्या अर्थ हैं! ऋषिदयानन्द ने उन के कई प्रकार के अर्थ क्यों किये हैं? पश्चिम के विद्वान् जो उन में से जड़ पूजा या अनेक देवता पूजा निकालते हैं उस में क्या सार है? उन के अर्थों का निश्चय कैसे हो? ये सब प्रश्न हैं, जिन पर अवश्य विचार करना चाहिये और वेद के विद्यार्थी के लिये असम्भव भी नहीं है। उस अंकिञ्चन परिश्रम का जो फल है, लेखक उसे शीघ्र ही आर्य जनता के सन्मुख रखेगा। पुस्तक का नाम

वेदार्थ की चाबी (वैदिक देवता)

होगा। पुस्तक की विषय-सूचि तथा विषय विस्तार हम शीघ्र ही प्रकाशित कर देंगे। पुस्तक का आकार बड़ा होगा और पृष्ठ कम से कम २०० के लग भग होंगे। पुस्तक का मूल्य १॥) से अधिक नहीं होगा।

निवेदक

इन्द्र

वरकी आवश्यकता

एक कान्यकुब्जद्विज भारद्वाज गोत्र पा डे—खोरिकन्धार—) की षोडशाब्द कन्या जो सब गृह कार्य्य में निपुण तथा सुशिक्षित है। और बेलबूटा का काम भली भांति जानती है। उसके निमित्त एक योग्यवर दरकार है। निम्नलिखित पते पर पत्र विवहार शीघ्र होना चाहिये।

पता: दीक्षित प्रभूलाल
C/O श्री कृष्ण एन्ड संस
घडीसाज मुलतान छावनी (पंजाब)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परलोकवासी मि० गोखले
का
सच्चा स्मारक

परलोक-वासी देश-पूज्य मान्य स्मरणीय गोखले के वियोग का सारे देश ने जिस हार्दिक क्लेश के साथ अनुभव किया है, वह इस बात को स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त है कि भारतवर्ष में अब अपने हित अनहित का थोड़ा बहुत विवेक आ गया है। दिल्ली की शोकसूचक सभा में व्याख्यान देते हुए पंडित मदनमोहन मालवीय ने सभा में एकत्रित जनसमूह को देख कर कहा था कि अब निराशा के दिन जारहे हैं- क्योंकि भारत वासी अपने सेवकों का मूल्य पहिचानने लगे हैं। मि० गोखले उन व्यक्तियों में से नहीं थे जो अपने आप को देश से अलग रक्खें। मातृ-भूमि की सत्ता में उन्होंने अपनी सत्ता को मानों घुला दिया था। एक बार मिसेज् एनीबेसेन्ट ने लिखा था कि मि० गोखले समाजसेवा के कार्य्य में अपने व्यक्तित्व को बहुत पीछे रखते हैं। जहां उन्हें आज्ञा देनी चाहिये वहां वे पीछे चलते हैं। यही मि० गोखले की विशेषता थी। वेदेश सेवा के कार्य्य में अपने आप को भुला देते थे। जब अपने आप को भुला ही दिया तो फिर आज्ञा देना कैसा? ऐसे स्वार्थत्यागी और महान् आत्मा वाले पुरुष के वियोग से भी यदि सारा देश एक दम न कांप उठता तो प्रतीत हो जाता कि इस देश में अब चेतनता शेष नहीं है। किन्तु देश ने अपनी चेतनता का सबूत दिया है, और वियोग दुःख का उचित प्रकाश किया है।

सच्चे अगुआ के वियोग से देश को जो वेदना हुई है, उस की तीव्रता में कोई सन्देह नहीं। सन्देह है उस की घनता में। क्या यह वेदना स्थिर रहेगी? कहीं यह भाव क्षणस्थायी ही तो सिद्ध न होगा? कहीं भारतवासी स्वार्थत्याग की मूर्ति, और सच्चे राजनीतिज्ञ गोखले को आंसुओं के सूखने के साथ ही तो न भुला देंगे? यही भय है, जिस से प्रेरित होकर अनेक स्थानों पर यह प्रश्न उठाया गया है कि मि० गोखले का स्मारक कौनसा बनाया जाय। मि० गोखले के कई प्रकार के स्मारकों का प्रस्ताव किया गया है। किसी ने कांग्रेस भवन का प्रस्ताव किया है, तो किसी ने सर्वेंट्स आवइण्डिया का स्थायी कोश कर देने को ही उचित स्मारक समझा है ये सभी कार्य्य मि० गोखले का स्मरण करा सकते हैं। जिस कांग्रेस की स्थिरता के लिये गोखले इतना यत्न करता रहा, उस का स्थायी भवन कुछ न कुछ स्मरण करा ही दिया करेगा, किन्तु प्रश्न यह है कि क्या इतनी महान् आत्मा का स्मारक एक ईंटपत्थरों का ढेर होना उचित है? उत्तर मिलता है कि नहीं

दूसरा प्रस्ताव है कि सर्वेंट्स आव इन्डिया सोसाइटी का स्थिर कोष एकत्र किया जाय। इस विषय मे हमारी राय है कि गोखले का स्मारक ऐसा स्थापित होना चाहिए, जिस में सारे देश का ऐकमत्य हो। स्मारक सारे देश की ओर से होगा इस लिये उस में कोई ऐसी बात न आनी चाहिये, जिस में मत-भेद हो सके। भारत-सेवक समाज की उपयोगिता में किसी को सन्देह नहीं, किन्तु उसकी रचना, तथा उसकी कार्य्य प्रणाली तीव्रता देश में ऐकमत्य नहीं है। उसकी एक सत्ता को प्रधान बनाने वाली रचना, कांग्रेस के विषय में उसकी नीति, शायद सब को सम्मत न होगी। इस लिये यह समाज गोखले का सार्वदेशिक स्मारक नहीं बन सकता।

तो उसका कौन सा स्मारक हो। हमारी सम्मति में मि० गोखले के जीवन का एक ऐसा कार्य्य, जिस में किसी को भी मत भेद नहीं हो सकता, प्रारम्भिक शिक्षा के लिये प्रयत्न था। प्रारम्भिक शिक्षा की उपयोगिता को यदि मि० गोखले न देख लेते तो आज हम उन्हें सच्चे राजनीतिज्ञ न कहते। कौंसिल में उनका सब से मुख्य प्रस्ताव प्रारम्भिक शिक्षा सम्बन्धी ही था।

हमारी सम्मति में यदि मि० गोखले का सच्चा और सार्वदेशिक स्मारक बनाना हो तो सारे देश के लिये एक प्रारम्भिक-शिक्षा-प्रचारक महा मण्डल स्थापित करना चाहिये, और स्थायी कोष कम से कम इतना होना चाहिये जिस से देश के मुख्य २ प्रांतों में इस प्रकार की पाठशालाओं के चलाने तथा निरीक्षण आदि का प्रबन्ध किया जा सके। जो सज्जन मि० गोखले का स्मारक अवश्य बनाना चाहते हैं, वे यदि उसके समान स्वार्थत्याग कर के इस प्रारम्भिक शिक्षा के कार्य्य को सम्भाल लें, और सरकार की सहायता के बिना ही देश भर में प्रारम्भिक शिक्षणालयों का फैलाव फैला सकें, तो मि० गोखले के परलोकगत आत्मा को भी सुख होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(५४)

जालन्धर प्रान्त में शास्त्रार्थों की धूम।

मैं लिख चुका हूं कि स्वामी रामानन्द युवक सन्यासी पूर्णानन्द को वैदिक धर्म की शरण में लाए थे। वह स्वामी पूर्णानन्द जी कपूर्थले अपने पुराने परिचित पं० हरिकृष्ण के पास छःदर्शनों की पुरानी वृत्ति करने गए थे। उक्त पण्डित जी ने हमारे सन्यासी को पुराणों के हेर फेर में ही फंसा रक्खा। जब वह पाठ भी समाप्त कर के दर्शनों की पढ़ाई पर बल दिया तो कपूर्थले के आर्थिक दीवान मिश्र अछरूमल जी ने उन्हें तङ्ग करना शुरू किया। तब स्वामी पूर्णानन्द जी ने विज्ञापन दे कर १, २ तथा ३ नवम्बर को प्रातः खब व्याख्यान दिए और पौराणिक मत की पोल खोली। मुझे भी स्वामी जी ने सूचना भेज दी थी। एक ओर तो स्वामी जी की ओर से यह सूचना आई और दूसरी ओर से मिश्र अछरूमल जी का खुला चैलेञ्ज था कि यदि मैं कपूर्थले में प्रचार के लिए जाऊंगा तो वह मुझे गिरफ्तार करा लेंगे। मैंने २ नवम्बर को ही दीवान अछरूमल जो को सूचना भेज दी और ३ नवम्बर को व्याख्यान के लिए पहुंच गया। मिश्र अछरूमल कट्टर सनातनी थे, इस लिए आर्य्य-समाज के सभासद उन्हें दूर से छोड़ा करते थे। एक आर्य्य लड़का मेरे व्याख्यान का विज्ञापन मिश्र जी के मकान की दीवार पर लगा आया। उन्हों ने उसे पढ़ते ही फड़वा कर पांच छः कलशों से दीवार को धुलवा डाला मेरे व्याख्यान में एक महाशय बोले, मैंने उन से ही प्रश्नोत्तर आरम्भ कर दिए। मिश्र जी के कहने पर कोई मजिस्ट्रेट तो मेरे नाम वारन्ट गिरफ्तारी देने को तय्यार न हुआ, परन्तु कुछ दङ्गई लुच्चे अवश्य व्याख्यान गृह की छत पर आ बैठे और उन में से एक साबत ईंट मेरी खोपड़ी को ताक कर फेंकी। सच कहते हैं मारने वाले से बचाने वाला प्रबल है। जब ईंट ताक कर चलाई गई तो मेरा शिर उस के निशाने में था, परन्तु मैं दूसरी मुंह कर के उधर सम्बोधन कर जा खड़ा हुआ और ईंट ज़ोर से मेज पर पड़ी। ८००) के लग भग श्रोतागण थे जो प्रायः हमारी ओर हो चुके थे, कुछ ने उन लुच्चों को पकड़ लिया और उन का मुंह बन्द किए ले जा कर उन्हें बाहर छोड़ आए। कपूर्थले पर इस के पश्चात् कई धावे हुए, परन्तु दीवान अछरूमल जी की केवल धमकी ही धमकी रही।

इस समय एक ओर तो स्वामी लक्ष्मणानन्द जी कुछ दिन प्राणायाम की शिक्षा कुछ आर्य्य सभासदों को देते रहे और दूसरी ओर स्वामी पूर्णानन्द जी ने संस्कृत की पढ़ाई आरम्भ कर दी। उन दिनों मैंने भी कुछ दिनों फिर से स्वामी जी के आगे पत्ते रक्खे थे और लाला रामकृष्ण जी प्रधान तथा कुछ अन्य सभासद भी पढ़ने लगे थे जिन में सुकेत के राजकुमार जनमेजय मुख्य थे।

इन्हीं दिनों अमृतसर निवासी लाला धनपतराय ने (जो कटक में दुकान करते थे) अपनी पुत्री कुमारी भगवानदेवी के स्वयम्बर विवाह का नोटिस दिया था। इस पर मैंने कई मुख्य लेख लिखे जिन की ब दौलत आर्य्य समाज के संकुचित विचारों वाले दल ने मुझे बहुत कुछ कष्ट पहुंचाने का यत्न किया था।

जालन्धर आर्य्य-समाज के वार्षिकोत्सव से लग भग २२ दिन पहले मन्त्री के राजा विजयसेन जो ने जालन्धर आ कर यह इच्छा प्रकट की कि आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के मन्तव्य दोनों के प्रसिद्ध व्याख्याताओं द्वारा सुनें। १६ मागशीर्ष १९४६ के दिन यह प्रसिद्ध धर्म-चर्चा आरम्भ हुई। उस दिन श्री राजा साहेब आर्य-समाज के सिद्धान्तों से परिचित रहे। राजा साहेब पौराणिक थे इस लिए प्रसिद्ध पटियाले के वर्तमान राज पण्डित श्री कृष्ण शास्त्री राजा साहेब को सहायता देते रहे और प्रश्नों के उत्तर मैं, स्वामी पूर्णानन्द तथा श्री देवराज जी देते रहे। राजा साहेब ने बहुत विषयों में आर्यसमाज के मन्तव्यों से सन्तोष प्रकट किया परन्तु भोलेपन से कहा—"आप की सब बातें हम मान लेंगे पर मूर्ति-पूजा मनावेंगे।" इधर से उत्तर मिला—"महाराज! देखिए कौन किस को मना लेता है।" दूसरे दिन पण्डित आर्य्य मुनि तथा पण्डित श्री कृष्ण शास्त्री का इस विषय पर शास्त्रार्थ हुआ कि वेद में साकार पूजा की विधि है वा निराकार पूजा की। इस विचार का बड़ा प्रभाव पड़ा और नगर में धूम मच गई। इस का सविस्तर वृत्तान्त उन्हीं दिनों सद्धर्म्म प्रचारक में छपचुका है।

दिसम्बर १८८९ के अन्त में जालन्धर और लुधियाना आर्य-समाजों के जलसों में सम्मिलित, होकर उन्हीं के काम में फंसा रहा। ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्द ने भी इन्हीं दिनों स्वामी पूर्णानन्द जी से विद्याध्यन करना आरम्भ किया। द्वावा उपदेशक मण्डली ने भी इन्हीं दिनों कार्यारम्भ किया; जालन्धर आर्य समाज की ओर आर्य जनता की विशेष दृष्टि पड़ने लगी। यह व्यवस्था थी जब शिकार पुरी पण्डित प्रीतम देव शर्मा जालन्धर में पधारे। उदासी केशवानन्द जी के अनुकरण में इन्हों ने भी आर्य समाज को गालियां देकर ही, सनातनियों में अपना उल्लू सीधा करना शुरू किया। प्रीतम देव कुछ मन्तव्यों में आर्य-समाज के साथ सहमत भी था, परंतु जब दयानंद को गाली देता तो सनातनधर्म की जय बोल कर धर्म सभा के साथ सारा मत भेद भूल जाता। जालन्धर आर्य-समाज ने लाहौरियों के तानों से तङ्ग आ कर इस समय स्वयम् ही इस व्यक्ति का मुकाबिला किया। अपने सभासदों द्वारा ही उस के व्याख्यानों का खन्डन कराया और शास्त्रार्थ के लिए भी तय्यार हो गए। परन्तु धर्मसभा ने उस की जिम्मेवारी से इनकार कर दिया। इस हल चल में भी आर्य्य-समाज को कुछ नए सभासद मिले। प्रीतम शर्मा के भड़काने से एक युवक आर्य दौलतराम को उस के पिता ने घर से निकाल दिया। दौलतराम ने बड़ी दृढ़ता दिखाई और आर्य्य समाज मन्दिर में निवास आरम्भ कर दिया। समाज ने इस युवक की शिक्षा का भार अपने ऊपर लिया, फिर ठीक आयु होने पर उस का विवाह एक आर्य्य की कन्या से करा दिया और उसे धन कमा कर परिवार पालन के योग्य कर दिया।

प्रीतम शर्मा का हम लोगों ने न केवल जालन्धर छावनी तक ही पीछा किया प्रत्युत होशियारपुर में भी स्वामी पूर्णानन्द तथा ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्द को भेजने के अतिरिक्त मैंने भी उस के खन्डन में व्याख्यान दिए और जो शंकाएं वह सत्यार्थ प्रकाश में दिए प्रमाणों पर उठाता था उन का समाधान पुराणों द्वारा उस के स्थान तक पहुंचाया।

सुदर्शन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीन सेल्ट जाति

की

सभ्यता तथा धर्म

(१)

ऐतिहासिक लोगों ने प्रायः सारे देशों की खोज लगाने का प्रयत्न किया है और भरपूर कोशिश की है कि किसी तरह से भिन्न २ स्थान की प्राचीन जातियों का पता लगे।

आज हम पाठकों को सेल्ट जाति का यथा तथा परिचय कराना चाहते हैं।

सेल्ट जाति ऐतिहासिकों के अनुसार सभ्यता में बहुत से दर्जे नीचे थीं। यह जाति गाल और आयरलैण्ड और इंग्लैण्ड देश की पूर्व निवासिनी थी। इस जाति का नाम धार्मिक विचारों के कारण प्रायः ऐतिहासिकों से खूब परिचित है। इस के धार्मिक आचार्य गुरु इस लोगों को देख २ कर बहुत से नव कल्पक विचित्र २ उद्भावनाएं किया करते हैं। उन्हीं के आचार विचारों के आधार पर हम पाठकों को कुछ आश्चर्य जनक बातें सुनाना चाहते हैं।

इस जाति के बारे में पाश्चात्य विचारक कहते हैं कि यह जाति मानव उन्नति का पूर्व रूप थी। अभी पत्थरों के हथियारों का जमाना था। व्यापार भी पूर्व रूप में ही था। कृषि भी बहुत न्यून थी उस जाति का गुजारा शिकार और रुछियों पर चलता था। गाय बैल भेड़ सूर बकरी आदि पशु उस के पालतू घरेलू जानवर थे। कुत्ते इस के घर के रखवाले थे। गेहूं जौ आदि उपज थी।

ताने बाने से कपड़े बुनने का सौभाग्य शिल्प कला ने दिया हुआ था। पत्थरों को काट कर रगड़ कर और तराश कर हथियार बना लेते थे। भट्टी शक्लों के भाण्डे भी मट्टी आदि से तय्यार कर लेते थे।

इन के रहने के मकान झोपड़ियां और जमीन के अन्दर बनाए गढ़े ही थे जिन पर कि पत्ते और डालियों की छतें बना ली जाती थी। ये लोग अपने मुर्दों को तीन शिलाओं का तहखाना सा बना कर उस में रखते थे ये क्रोमेल्श कहाते थे ये पश्चिमी योरोप और अफ्रीका के उत्तरी भाग में बहुत पाये जाते हैं। ये तो उन का साधारण दृश्य है जिस से उन की सभ्यता का पता चलता है। इतने से ही आज कल के ऐतिहासिक सेल्ट जाति को नीची सभ्यता का बताते हैं। हमें अभी यह पता नहीं कि नवीन सभ्यता ने इस से और अधिक क्या पैदा कर दिखाया है।

यहां यह कहना भी कठिन है कि यह सभ्यता का पूर्व रूप है या सभ्यता का अवशिष्ट रूप है। इस विषय पर बहुत से विचारकों का मत भेद है। जो अप्रासंगिक होने से हम यहाँ नहीं छेड़ते।

इस सभ्यता का काल पाश्चात्य विद्वान् २००० ई० पू० ठहराते हैं। कहते हैं कि इतने काल पहले ये जाति योरोप में रहती थी वहां से ये इंग्लैण्ड में आयी। १५०० या १४०० ई० पू० में पीतल आदि का भी व्यवहार शुरू हो गया था। इस काल में ऐतिहासिक लोग कहते हैं कि आर्य्य जाति ही सैल्ट जाति की भाषा बोलती थी और वह ही १००० ई० पू० में इंग्लैण्ड में अपने पीतलादिक अविष्कारों को में ले गयी थी। इससे भी पूर्व वह अवश्य राईन आदि नदियों के किनारे पहले से ही आई हुई होगी।

(२)

धार्मिक विचार—सेल्ट जाति की प्राचीन दन्त कथाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि परलोक या स्वर्ग को वे एक ऐसा ही अतिरिक्त स्थान मानते थे। उन के परलोक से तात्पर्य कोई अज्ञात द्वीप या कोई समुद्र के नीचे की भूमि या नदी या झील में छिपी जगह या कोई अज्ञात और अप्राप्य स्थान होता था जो किसी बिल या गह्वर में से जा कर पाया जा सकता हो।

इस जाति का शिकारी प्रायः हरेक स्थान का अच्छा परिचित होता था। और सम्पूर्ण परिस्थिति के बारे में एक एक बात कर के उस को पता होता था। जो जो स्थान पहाड़ की चोटियां या तराइयों में दुर्गम होते थे उन में ऐसा निश्चित समझा जाता था कि कोई भूत राक्षस आदि अवश्य निवास करते हैं।

उन का विश्वास था कि मनुष्य के इर्द गिर्द दृश्य भूत और अदृश्य भूत दोनों ही रहते हैं। मनुष्य की जान पर सदा का खतरा रहता है। आस पास की सब चीजों को उसे अपने वैसी ही जीवित समझना चाहिए। उस समय के विचारकों ने इस सिद्धान्त का बड़ा प्रचार किया। इस के प्रभाव ने तात्कालिक सारे संसार में एक आत्मिक सम्बन्ध पैदा कर रक्खा था।

स्वप्न ज्ञान से उस समय के लोगों का यह विश्वास हो गया था कि इस संसार जैसा ही कोई और संसार भी है जो इसी जैसा है। इस संसार को छोड़ने में मनुष्य स्वाधीन है। जब चाहे वह इस संसार से नाता तोड़ कर इसी जैसे दूसरे संसार में भाग ले सकता है।

संसार में बहुत सी अदृश्य आत्मायें घूमती रहती हैं जिन में कुछ नित्रात्माएं होती हैं। इन की सहायता से ही मनुष्य अपने जीवन को ढाल सकता है।

पहले जमाने के सेल्ट जाति में पूजा के लिये देवता बहुत थे जिन में प्रायः मातृ देवता ही प्रधान थी यह वही मातृ देवता हैं जिन का वर्तमान रूप भारत में जगदम्बा माता की पूजा रूप में सर्वत्र पाया जाता है। इसी माता की पूजा आर्य्य लोग वहाँ भी ले गए थे।

इस के बाद के काल में और भी नाना प्रकार के देवता पैदा हो गए थे।

पता नहीं ये बाद के देवता क्या इनों के अपने थे या बाद के जंगली आक्रान्ताओं द्वारा इन के गले मढ़े गये थे।

कतिपय देवता ईसस टियूटेटस ग्रेनोस, बोरासनस सितावीस अपने भिन्न गुणों के अनुसार भिन्न भिन्न २ नाम के थे।

हमारी सम्मति में ये देवता ईश देवता गणेश और ब्रह्मणस्पति आदि के ही अपभ्रंश लगते हैं।

इसी प्रकार हम आगे भी समालोचना करते हुए आप को अन्य बहुत सी समानताएं दिखायेंगे।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार की गति

गुरुकुलोत्सव

गुरुकुलोत्सव प्रति दिन समीप ही समीप आ रहा है। अब आधे मास से अधिक समय नहीं रहा। गुरुकुल में उत्सव की तय्यारियां खूब ज़ोर शोर से हो रही हैं। आशा है आर्य पुरुष भी उस की तय्यारियां कर रहे होंगे। इस समय आकर वे लोग जो गुरुकुल को किसी कारण अपने लिये हानिकारक समझते हैं, जनता में गुरुकुल के विरुद्ध बहुत कुछ फैलाने का यत्न किया करते हैं। किन्तु

सर्पाणां च खलानां च
पर द्रव्यापहारिणां।
अभिप्राया न सिध्यन्ति
तेनेदं वर्तते जगत्।

जो लोग भलाई का विरोध करते हैं उन का अभीष्ट सिद्ध नहीं होता, तभी तो संसार चल रहा है। हम ऐसे विरोधियों की भी हितकामना ही करते हैं। लाहौर का एक उर्दू मय गज़ट अपार कृपा से गुरुकुल को एफ निकम्मा रिपेटर और कुरुकुल के स्नातक को शायद अनाड़ी नट आदि शब्दों से विशेषित कर के अपनी असीम सभ्यता का परिचय दे रहा है। अस्तु। परमात्मा हमारे सहयोगी को सुमति दे ताकि वह कुछ अधिक सभ्य भाषा का प्रयोग सीखे और अन्य समाज हितकारी कामों का भी सहन कर सके। इस प्रकार के विरोध होते ही रहते हैं, किन्तु आर्य पुरुष अपने एक लक्ष्य को सामने रखते हुए कदम जमाये चले ही जाते हैं। आर्य पुरुष इस आगामी गुरुकुल महोत्सव की तय्यारियों में पूरी तरह से लगे होंगे, यह हमें पूर्ण आशा है।

भारत में मि० गान्धी

महात्मा गान्धी को भारत वर्ष में आये कई महीने हो गये। उन के आने से पूर्व सुना था कि वे परलोकवासी मि० गोखले की भारत सेवक मण्डली में कार्य करेंगे! उस समय जो लोग मि० गान्धी के विचारों का चिरकाल से अनुशीलन करते रहे थे, उन्हें आश्चर्य्य हुआ था। म० गान्धी के विचार भारतीय शैली के हैं। वे अंग्रेज़ी में बात चीत तक करना पसन्द नहीं करते। ऐसे महा पुरुष भारत की वर्तमान राजनीति में पच सकेंगे यह समझ में नहीं आता था। लोगों को आशा थी—और इच्छा भी थी—कि मि० गान्धी चलती हुई पटरी पर अपनी जीवन गाड़ी न छोड़ कर नया ही मार्ग अवलम्बित करें और राजनीति में एक नई लहर उत्पन्न करने वाले हों। वह जनवाद अक्षुण्ण सिद्ध हुआ। म० गान्धी मंडली में नहीं सम्मिलित हुए। किन्तु उन्होंने किया क्या? जो कुछ उन्होंने किया वह भारत के प्रत्येक नव युवक को हृदय पट पर अंकित कर लेना चाहिये। उन्होंने हम लोगों के सामने एक जीता जागता दृष्टान्त स्थापित कर दिया है। यदि कोई साधारण आदमी होता तो वह क्या करता? म० गान्धी की भारत में आज जो प्रतिष्ठा है, वह और दो एक भारत वासियों की ही होगी। सारे देश के हृदय में गान्धी का नाम सम्मान की लेखनी से लिखा हुआ है। म० गान्धी भारत में आते हैं, सारा देश उन के स्वागत के लिये भुजायें फैला देता है। यदि गान्धी साधारण व्यक्ति होते, तो निःसन्देह अपने आप को आकाश मंडल में घूमता हुआ समझने लगते किन्तु ऐसा नहीं हुआ वे भारत के राजनीतिक क्षेत्र में एक दम कूद नहीं पड़े, प्रत्युत उन्होंने संकल्प किया कि वर्ष भर अभी वे भारत की वर्तमान दशा के समझने में लगायेंगे। आंखों से सब कुछ देखे बिना वे कार्य क्षेत्र में नहीं पड़ेंगे। क्या ही उच्च दृष्टान्त है। एक ओर म० गान्धी हैं, जिन का भूमि प्रसिद्ध नाम भी उन्हें विवेक से च्युत नहीं कर सकता, वहां दूसरी ओर हम साधारण लोग हैं जो आज महाविद्यालय से उत्तीर्ण हुए और कल आर्य समाज के नेता बनने का विचार करने लगते हैं।

ब्रह्मचारियों के संरक्षक ध्यान दें।

गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों की संरक्षक सभा के मन्त्री पं० माधोप्रसाद तिवारी लिखते हैं—

"माननीय संरक्षक महाशयो!

जब श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल की स्थापना की थी, तब दूध घी आटा आदि सब वस्तुयें सस्ती थीं। आज सब वस्तुओं के दूने दाम हो गये हैं। इस तेज़ी का कारण महायुद्ध है। ऐसे समय स्वयं ब्रह्मचारियों के संरक्षक महोदय उदासीन रहेंगे तो श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा कहां तक भार उठाएगी। मेरा सब भाइयों से निवेदन है कि कम से कम प्रति ब्रह्मचारी २४) साल अर्थात् २) महीने के हिसाब से प्रत्येक संरक्षक अधिक दें। देना तो हिसाब से ५) माहवार—अर्थात् ६०) वार्षिक चाहिये था, किन्तु कम ही सही। सब भाई विचार कर के कुल को सहायता करें, समय थोड़ा है।"

निवेदक
माधोप्रसाद तिवारी

इस पत्र पर टिप्पणी की आवश्यकता नहीं। कर्तव्य संरक्षकों का अपना है। यदि यह प्रस्ताव स्वीकार न हुआ, तो गुरुकुल के कार्य में जो विघ्न पड़ सकता है, और सभा को जिस कठिनाई का सामना करना पड़ेगा, वह स्पष्ट है। गुरुकुल के उत्सव पर सब संरक्षकों को मिल कर इस प्रस्ताव को कार्य रूप में परिणत कर ही देना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गोली को गुरु दक्षिणा

क्या भारत को पाश्चात्य सभ्यता के ये फल खाने ही पड़ेंगे? जब तक बीमारी नीच दर्जे के मनुष्यों तक ही थी, कम भय था, परन्तु अब दशा ही और हो गई है। कालिजों और स्कूलों के विद्यार्थी विद्याभ्यास छोड़ कर हड़तालें करते फिरते हैं, और अपने देशवासियों के कलेजों में छुरियां भोंकते फिरते हैं। यहीं तक बस नहीं। अब तो सीमा का उल्लंघन हो गया। इस भारत भूमि में जहां गुरु द्रोणाचार्य के गुरु दक्षिणा मांगने पर एक निषाद ने अंगूठा काट कर चरणों में रख दिया था, आज समाचार आया है कि एक स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने हेड मास्टर को गोली से घायल कर दिया। भारत भूमि के इतिहास में धृष्टद्युम्न के पीछे एक बार फिर गुरु हत्यारे के चरणस्पर्श से कलंकित होना भी लिखा था। हा दैव! क्या इस भारत भूमि के पुनरुद्धार की भी अभी आशा हो सकती है जहां विद्यार्थी अपने गुरुओं के अंगों में गोलियां चलाने लगे। यह हमें नई शिक्षा और नई शिक्षा प्रणाली ने ही सिखाया है। क्या पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के अनुयायियों की आंखें अब भी खुलेंगी? आज सारी भारत भूमि इस हृदय विदारक समाचार को सुन कर कांप रही है, मनुष्य हत्या से नहीं, क्योंकि हत्यायें तो अनेक हुई हैं किन्तु गुरु हत्या से।

अधिक उत्तीर्ण होने से भय

कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रबन्ध कर्त्री सभा के एक गत अधिवेशन में विचित्र प्रस्ताव हुआ। एक अंग्रेज महाशय ने प्रस्ताव किया कि "यह सभा बड़ी चिन्ता के साथ देख रही है कि कुछ सालों से विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जाती है। इस का कोई प्रबन्ध होना चाहिये" अधिक विद्यार्थियों के उत्तीर्ण होने से किसी विश्वविद्यालय के प्रबन्ध कर्त्ताओं को चिन्ता होने लगी! बगीची में फूल खिलते देख कर माली का ही जी दुखने लगा!! यह भारत की ही विशेषता है। यहां की अस्वाभाविक दशा की यही विचित्रता है। और इतनी ही है कि प्रस्ताव एक अंग्रेज महाशय की ओर से है देशी महाशय की ओर से नहीं।

समाज संशोधन और नि० गोखले

नि० गोखले अपने गुरु रानडे के इस सिद्धान्त को मानने वाले थे कि 'जब तुम राजनीतिक दृष्टि से नीच दशा में पड़े हुए हो तब यह आशा करना व्यर्थ है कि तुम्हारी सामाजिक दशा उच्च हो, और तुम राजनीतिक अधिकारों का वर्तमान नहीं जान सकते, जबतक तुम्हारी सामाजिक दशा हेतु और न्याय पर स्थित नहो" स्वाधीनता कोई आकस्मिक घटना नहीं है कि अकेली आसके। वह जब आती है, अपने सारे संसार के साथ आती है। जो लोग सोचते हैं कि एक नाक की रक्षा करें और शेष सब अंगों को काट दें वे भूल करते हैं। यदि उन्नति सम्भव है, तो शरीर के सब अंगों की इकट्ठी। पृथक पृथक् या एकाकी उन्नति असम्भव है। नि. गोखले भी समाज सुधार के बड़े पक्षपाती थे। महाराष्ट्र में जब सुधारक और सनातनी—ये दो दल हो गये थे, तब नि० गोखले सुधारक दल के एक स्तम्भ समझे जाते थे। महा पुरुष वही होते हैं जो प्रकाश के एक केन्द्र की भांति चारों ओर प्रकाश की किरणें फैलाने वाले हों। एक ही ओर लगा रहने वाला व्यक्ति महान् नहीं हो सकता। शिक्षा, समाज सुधार, राजनीति ये सब एक ही रथ के पहिये हैं, किन के सहारे पर जाति की गति स्थिर रह सकती है। जो जातिसेवक इन सब को चलाता है, वही सच्चा सेवक कहाता है, वही जाति में मान पाता है और अपना नाम अमर कर जाता है।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव होली के दिनों में बहुत अच्छी प्रकार हो गया। आस पास के स्थानों से बहुत से आर्य्य गण पधारे थे। श्री महात्मा मुन्शीराम जी तथा पं० विद्यानन्द जी आदि के व्याख्यानों की धूम रही। अपील पर लग भग अढ़ाई सहस्र रुपया एकत्र हुआ। ब्रह्मचारियों की पढ़ाई तथा सेवा की अवस्था असाधारण रीति से उत्तम थी।

एक अनूठा नियम

मद्रास विश्वविद्यालय ने एक प्रस्ताव स्वीकार किया है कि कोई भी विद्यार्थी किसी एक परीक्षा में तीन से अधिक बार न बैठ सकेगा। अर्थात् यदि वह तीन बार अनुत्तीर्ण हो जाय, तो फिर वह उस परीक्षा में बैठने से भी वंचित रहा जायगा। क्या ही विलक्षण नियम है। हम विद्यार्थियों को शिक्षा तो देते हैं धैर्य की जो बेचारा कम बुद्धि हो, उसके लिये शिक्षा के द्वार बिल्कुल बन्द कर देने में कौन सी बुद्धिमत्ता है? इस प्रकार के नियम वहीं पर स्वीकार किये जासकते हैं, जहां शिक्षा प्रजा के लिये नहो, बल्कि सरकारी कार्यालयों में लेखक पैदा करने के लिये हो। जो शिक्षा की एक शाखा में न चल सके, उसे दूसरी शाखा में भेजदेना तो सर्वथा युक्ति सिद्ध है, किन्तु उसे शिक्षा के पवित्र मन्दिर से बहिष्कृत करदेना कहां की बुद्धिमत्ता है?

इस आग को बुझाओ

पंजाब के आर्यसमाजिक क्षेत्र में फिर से परस्पर विरोध की आग भड़का चाहती है। कालिज और गुरुकुल दोनों की तुलना करना और फिर एक दूसरे को कोसना—यह सब कहां तक सार्थक है इस के परीक्षण बार २ करने की आवश्यकता नहीं रही। कई बार यह परीक्षण हो चुका है, फिर भी दोनों संस्थायें चल रही हैं। अब इस परीक्षण को छोड़ देना चाहिये। क्या हिन्दू मुसलमान ईसाई सब के सब भारत में परस्पर शान्ति पूर्वक रह सकते हैं, और आर्य समाज रूपी माता के पुत्र आपस में एक दूसरे का सिर फोड़े बिना नहीं रह सकते? भाइयो! सभलो, और इस सुलगती हुई आग को अभी बुझाने का यत्न करो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

छपगया तय्यार होगया छपगया

सचित्र

प्रिन्स बिस्मार्क

अथवा

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना

लेखक—**इन्द्र वेदालंकार**

जिस पुस्तक की महीनों से आशा लग रही थी, वह निकल गई। वर्तमान जर्मनसाम्राज्य के संस्थापक प्रिन्स बिस्मार्क का जीवनचरित एक मनोहर उपन्यास से भी अधिक मनोरंजक और एक नीतिग्रन्थ से भी अधिक शिक्षा प्रद है। इस समय योरुप में जो महायुद्ध होरहा है, उस के कारण समझने हों तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये।

नैपोलियन बोनापार्ट का जीवनचरित पढ़ने वालों के लिये यह बतलाना व्यर्थ है कि पुस्तक बड़ी ओजस्विनी भाषा में लिखी गई है।

चार अतिसुन्दर चित्रों ने पुस्तक की शोभा और उपयोगिता को बहुत बढ़ा दिया है।

छपाई और बनाव का क्या कहना है? नैपोलियन बोनापार्ट के जीवनचरीत से बढ़ चढ़ कर हैं-

पुस्तक में जर्मनी का लग भग सवासौ सालका इतिहास आ गया है। जर्मनी की पहले निर्बल दशा, फ्रेडटिक दि ग्रेट के चमत्कारक विजय, फिर जर्मनी की शक्ति का बिखर जाना, नैपोलियन का जर्मनी विजय, जर्मनी में राष्ट्रीयता का अभ्युदय, राज्य क्रान्ति, बिस्मार्क का जन्म शैशव और यौवन, साम्राज्य के लिये प्रयत्न, और साम्राज्य स्थापना—इन सब इतिहास प्रसिद्ध घटनाओं के मनोरंजक वर्णन के साथ २ चरित नामक के जीवन की अनूठी घटनाओं का पूरा २ वर्णन देखना होतो इस पुस्तक को अवश्य मंगवाइये।

पृष्ठ लग भग दोसौ के। मूल्य केवल १॥)

शीघ्र मंगवाइये।

प्रबन्धकर्त्ता

सद्धर्मप्रचारक पत्र गुरुकुल

पोस्ट शामपुर—कांगड़ी जि० बिजनौर

कुम्भ प्रचार

१९९०॥) ——————— गतप्राप्तधन

२) महाशय ठाकुरदास जी अकाऊन्टेंट फैमिली रिलीफ फंड लाहौर

५) महा. खुशीराम जी मनोहरलाल कोट निक्का

८०) आर्य्य समाज बच्छोवाली लाहौर

४) मंत्री आर्य्य समाज पलवल

५) महा० लहनासिंह जी मंत्री आर्य्य समाज अम्बाला शहर

५) महा० रहतूमल जी प्रधान आर्य्य समाज गंगोह

४०) आर्य्य समाज पटियाला

५) महा० दीवानचन्द जी प्रधान आर्य्य समाज नाहन

२) महा० गंगाराम जी खतौली नसीराबाद

२) म० ज्ञानचन्द्र जी सभासद् आ० स० अवटाबाद

२०॥) म० गोविन्दराम जी आ० स० कन्या पाठशाला रोपड़

२५) म० देवीदयाल जी प्रधान आ० स० स्यालकोट

५=) मंत्री आर्य समाज पिंड़दादनखां

२५) आर्य्य समाज कांगड़ी

२१) मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर

५) महा० जस्सामल आ०स० ईसाखेल

१५) ,, रहतूमल जी आ० स० शाहजहांपुर

१२) ,, गुरामल गोपाल जी कलकत्ता

१०) ,, हज़ारीलाल जी मंत्री आ० समाज हाफिज़ाबाद जि० हज़ारा

५०) महा० गौरीशंकर जी ठेकेदार शीशम घाट

१००) महा० जगन्नाथ जी खजानची आ० स० सदर बाज़ार रावलपिंडी

५) महा० केशोकुमार जी गुजरांवाला

१०) चौधरी हाकिमसिंह जी खजानची आ० स० मुजफ्फरनगर

५०) महा० बैसाखासिंह जी ठेकेदार खानकी

२४९५=) योग

मुन्शीराम
प्रधान सार्वदेशिक
आर्य्य-प्रतिनिधि सभा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य चर्चा

कुसुमदूतः—नाटक—

नाटक नये ढंग पर लिखा गया है। उपयुक्त भाव जहां से भी मिल सका है वहां से रोचकता के लिये उठा ही लिया गया है। प्रायः अधिक स्थानों पर जगन्नारायण भट्ट के बनाये वेणीसंहार नाटक के कतिपय दृश्य और भावों की छाया ली है। इस से जिन लोगों को संस्कृत पढ़ने का सौभाग्य नहीं मिला, उन का भी इस से काम स्वयं सिद्ध है। स्थान पर हास्य जनक रोचक चुटकले भी जुड़े हुये हैं भाषा मुहाविरे दार पद्य भाग सरल खड़ी हिन्दी के हैं; जिस से पाठकों को व्रज भाषा की भी उलझन नहीं सतायगी। हमें साद्यन्त गुण ही गुण दीखते हैं नाटककार बदरीनाथ भट्ट बी. ए. का यह बड़ा अच्छा प्रयत्न है। आशा है कि अन्य नाटक भी इसी ढंग के प्राचीन वैभव को जतलाने वाले नये ढंग से लिख कर हिन्दी भाषा का उपकार करेंगे। परन्तु हमें उन से एक निवेदन यह है कि हिन्दी का उपकार दासता से नहीं होता परन्तु स्वतन्त्र गति से होता है। फिर पता नहीं क्या सोच कर प्रत्येक दृश्य के सिर पर अंग्रेजी का सीन Scene और अंक के सिर पर एक्ट Act का दाग छोड़ दिया गया है। हम आशा करते हैं इस भाषामय दासता से हिन्दी का शीघ्र ही मोचन होगा। संस्कृत का आश्रय तो माता के आश्रय के तुल्य है परन्तु परभाषा की शरण गहना दासता के विषपान के तुल्य है इस से हिन्दी मूर्छित हो कर जातीयता का अंश छोड़ देती है। यदि हिन्दी में शब्द न हों तो और बात है; पर होने पर न प्रयुक्त करना सिवाय भाषा नाश के हठ के और क्या हो सकता है। आशा करते हैं कि ग्रन्थकार महाशय आगामी संस्करण में इसे दूर करेंगे और अन्य नाटकों में भी इस दूषण को सर्वथा त्याग देंगे।

पृ० सं० १३२ मूल्य ॥)

रामभूषण प्रेस आगरा

शिक्षादान—हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक बालकृष्ण भट्ट विरचित। यह एक प्रहसन है जिस की शिक्षा जैसा काम वैसा परिणाम है। इस में पराई स्त्री का अपमान करने से कितनी बाधाएं और कलंक लगा करते हैं यह सहज में ही पता लगता है। भाषा रोचक लेख शैली उत्तम है। मूल्य ≡)

पताः—महादेव भट्ट अहियापुर प्रयाग

महाराज पञ्चमजार्ज—का जीवन चरित कर्ता ठाकुर शिवकुमार सिंह सब-डिप्टी इन्सपैक्टर शिक्षा विभाग हैं। आप ने महाराज का जीवन खूब उपक्रम से लिखा है एक चित्र भी है।

मूल्य ⁄)

पता—भारत प्रेस काशी

मनोविलास—निरंजनसिंह कृत आगरा में मुद्रित—२८ पृष्ठ छोटे आकार का मूल्य प्रति पुस्तक डेढ़ आना। ईश्वर की स्तुति से लेकर विधवा सहायता तक के लिए दुहाई मचाई हुई है। कुल १८ भजन हैं।

विधवा-विपत्ति-प्रकाश—मुन्शी द्वारिकाप्रसाद कृत आर्य्यभाषा गद्य पद्य पूरित—इण्डियन प्रेस कानपुर में मुद्रित मूल्य ≡) इस को (बाल विधवा विपत्ति-प्रकाश) कहना ठीक होता क्योंकि उन्हीं की दीन अवस्था का वर्णन करते हुए, उन के उद्धार के लिए पौराणिक भाइयों तक से अपील है। प्रमाण और युक्ति के अतिरिक्त इतिहास से भी काम लिया गया है। समाज संशोधकों तथा धर्म प्रचारकों के भी मतलब की पुस्तक है।

दृश्य समालोचना।

मैंने पं० देवीदत्त शर्मा किंडर गार्टन कार्य्यालय पो० भुवाली ज़िला नैनीताल के भेजे हुये बक्स नं० १—८—११ को ध्यानपूर्वक देखा है।

बक्स नं० १—इस में पीतल के भिन्न आकार के २४ टुकड़े हैं। उन को उलट पुलट कर जोड़ने से आर्य्यभाषा उर्दू अंग्रेजी की वर्णमाला के सब अक्षर और १० तक अंक और कई वस्तुओं की शक्लें बन सकती हैं। यह विद्यार्थियों को खेल ही खेल में अक्षर और अंक सिखाने के लिये बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा। इस के अतिरिक्त टूटने फूटने का भी भय नहीं है। किंडर गार्टन सिस्टम के अनुसार आर्य्यभाषा के अक्षर सिखाने के लिये यह बक्स विचित्र प्रकार का है।

बक्स नं० ८—इस में १० लकड़ी के घन हैं। जिन की प्रत्येक ओर एक ऐसे विशेष क्रम से १ से ६ तक के अंक और ० लिखे हुये हैं। कि प्रत्येक अंक ६, ६ बार आ गया है। इन के मिलाने से १० लाख तक की सब राशियां और कोई कोई अरब तक की भी बन सकती हैं। और छोटे २ जोड़ और बाकी के प्रश्न भी समझाये जा सकते हैं। यह बक्स गिनती सिखाने के लिये लाभदायक है। और फ्रोबल के गिफ्ट नं० ३ का काम भी भली प्रकार दे सकता है।

बक्स नं० ११ इस में १० लकड़ी के घन हैं, जिन की प्रत्येक ओर आर्य्यभाषा वर्णमाला का एक एक अक्षर क्रम से लिखा हुआ है। इस से अक्षरों और मात्राओं की पहिचान और छोटे २ ऐसे शब्द भी जिन के अक्षर वर्णमाला में ६ अक्षर छोड़ कर आते हों। सिखाये जा सकते हैं। यह बक्स अक्षर सीखने वाले बच्चों के लिये लाभदायक है।

बक्स नं० ८ और ११ के घन लाल रंग के हैं। यदि ६ ओर लाल रंग के स्थान में एक एक ओर लाल-पीला नीला नारंजी-हरा-जामनी रंग कर के उन पर अक्षर लिखे जाते। तो छोटे बच्चों के लिये बहुत ही रोचक होते। यह बक्स भी फ्रोबल साहिब के गिफ्ट नं० ३ का काम भली प्रकार दे सकता है।

उत्तमचन्द्र ड्राइंगमास्टर

गुरुकुल काङ्गड़ी

शेखचिल्ली की कहानियां—इस में ११ कहानियां नयी और नये ढंग पर लिखी गई हैं। पाठकों का मनोरञ्जन मात्र एक प्रयोजन है। कहानियां वास्तव में रोचक हैं परन्तु ऐसी पुस्तकें वह पढ़ें जिन को कोई काम न हो। या तब पढ़ें जब कोई काम न हो। मूल्य ॥)

पता—इण्डियन प्रेस प्रयाग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य्य समाज और उस के शत्रु
The Arya Samaj and it's Detractors.

इस अङ्गरेज़ी भाषा की अपूर्व पुस्तक में आर्य्य-समाज के विरोधियों का मुंह बन्द करने का बहुत कुछ मसाला भरा पड़ा है। समय पड़ने पर सरकारी कर्मचारियों को दिखलाने योग्य है। यह पुस्तक इतनी आवश्यक है कि प्रत्येक समाज में इस की एक प्रति तो अवश्य रहनी चाहिये। पहिले इस का मूल्य ५) था। अब सर्वसाधारण के लाभार्थ लागत से भी कम केवल ३) कर दिया है थोड़ी प्रतियां रह गई हैं शीघ्र मंगा लें।

ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार

महा पुरुषों के पत्र बड़े शिक्षा दायक होते हैं। विलायत के लोग तो अपने महा पुरुषों के पत्र हज़ारोंरुपया व्यय कर के ख़रीदते हैं। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द के अलभ्य पत्र छापे गये हैं उन पत्रों से ऋषि के जीवन की कई नवीन घटनाओं का पता लगता है। पहिले इस का मूल्य १।) था। अब हम ने सर्वसाधारण के लाभार्थ केवल ।=) मूल्य कर दिया है।

पता:—इन्द्र प्रस्थार्य एजन्सी, देहली

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़ मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

बरियारपुर

(बनारस स्टेट)

नया संदेशा ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग ।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी वसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें इत्यादि विषयों पर महत्व पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता

"सत्ययुग"

हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय

मुज़फ़्फ़रपुर

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जो सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रो ने प्रशंशा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा

बुलन्दशहर

१६००० हज़ार

एजेंटों का होना

भारतवर्ष में बनी औषधि के

सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं बता सकता कि सुख संचारक कंपनी मथुरा का बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कफ, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, कै दस्त, सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, रोना, कै करना, बूढ़ों की अनिद्रा और नज़ला, जवानों की थकावट या बेचैनी दवा स्वादिष्ट सुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कीमत फी शीशी आठ आना डांक खर्च १ से ६ शीशी तक =) आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डांक से मंगाने का पता:—

सुख संचारक कंपनी

मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५) रु० की पुस्तक मंगाने वाले को २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ हो।

सामवेद भाषा भाष्य श्री पं० तुलसीराम कृत सम्पूर्ण मूल्य ४) मात्र सजिल्द ४॥)

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बाजाज़ा शहर मेरठ

उसतरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगाने से फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मूल्य १)

मैनेजर हिमालय कंपनी कंखल

आदित्य ग्रन्थमाला
की
नई पुस्तक छप रही है नई पुस्तक

सचित्र प्रिन्स विस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना
इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े २ को कैसे पद दलित किया, और फिर किन किन शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की; इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तार पूर्वक वर्णन है। दूसरे भाग में साहस की मूर्ति, देश-भक्ति के पुतले, नीती के गुरु, और जर्मनी के-जन्म दाता प्रिन्सविस्मार्क का आश्चर्यकारी चरित चित्रित किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित जिन्होंने पढ़ा है उन के लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहिले ग्राहक बनने वालों को रियायती मूल्य पर पुस्तक मिलेगी।

पता:—प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म प्रकारक पत्र गुरु कुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर।

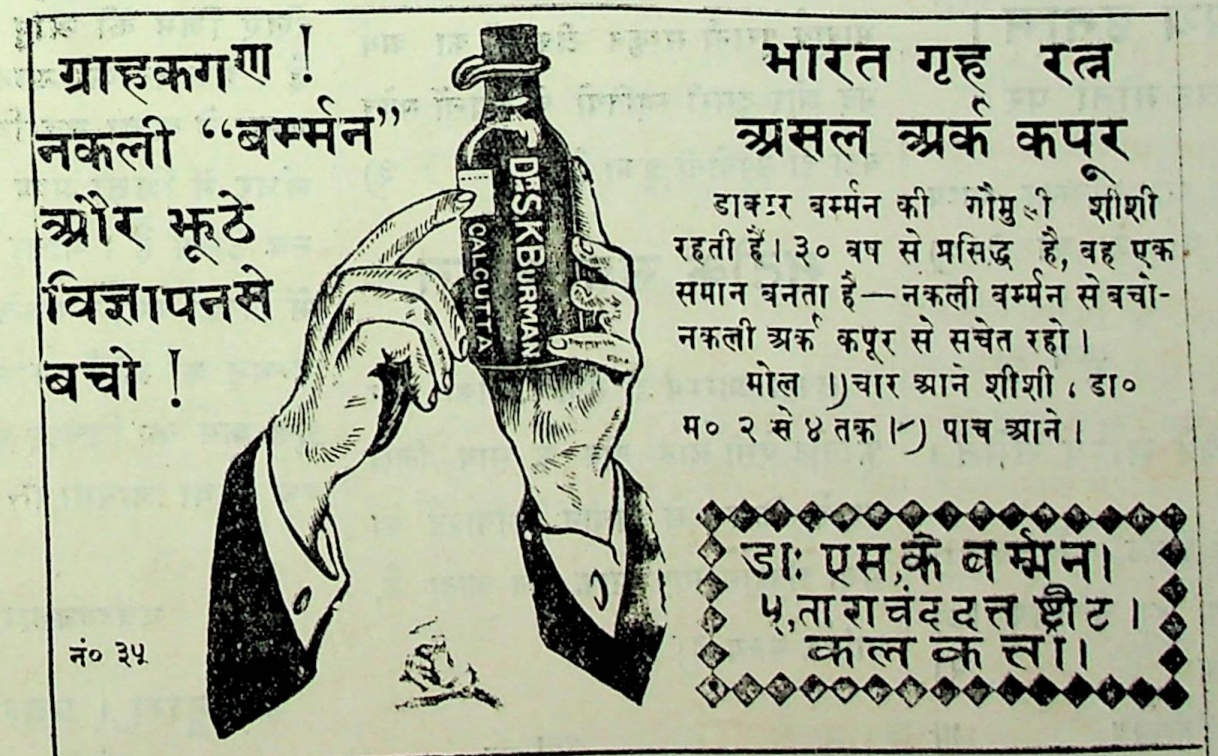

एजन्ट बाबूरामजैन एन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) इनाम।

श्री वाल्मीकी रामायण पर।

श्री पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर ने जो श्री वाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न हो कर गवनमेंट पञ्जाब ने २००) रुपये और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रुपयों का इनाम उस के लिये रक्खा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। यह इस बात का पूरा प्रमाण है कि यह टीका बहुत उत्तम बनी है, मूल्य बिना जिल्द ५।) सुनहरी अक्षरों की जिल्द वाली ५॥।)

२००) इनाम बाल व्याकरण पर

यह हिन्दी में संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण है, इस पर भी गवनमेंट ने २००) रुपया इनाम दिया है, और पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने इसे मिडल के कोर्स में नियत किया है। मूल्य ।=)॥

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवद्गीता पर

पदार्थ अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य सहित, इस पर भी पं० जी को ३००) इनाम मिला है,

मूल्य २)

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=) ऐतरेय =) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वत्र ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।)॥
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।=)
सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ इस पर भी २००) इनाम मिला है।

मूल्य ॥=)

वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३॥) योग दर्शन ॥।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है। ॥)

निरुक्त निघंटु पाठ सहित, निरुक्त हिन्दी भाष्य भी छप गया है। मन्त्रों के पते दिये गए हैं, और कई प्रकार के सूची पत्र दे कर ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी बना दिया गया है, विद्वानों ने इस की बहुत बड़ी प्रशंसा की है, मूल्य ४)

१००) इनाम मनुस्मृति पर

मनुस्मृति की सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

सटीक महा-भारत

छपना आरम्भ हो गया है, टीका और फुटनोट ऐसी छान बीन के साथ लिखे गए हैं, कि इस से प्राचीन आर्यावर्त का सच्चा इतिहास साफ़ साफ़ खुल जाता है, वार्षिक मूल्य ३) है।

पताः—

मैनेजर आर्षग्रन्थावली
लाहौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंएट के कृषि विभाग की उपयोगी बनाई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौड़ी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद मजिस्ट्रेट जावद
जिला मान्डसोर
ग्वालियर स्टेट

वर की आवश्यकता

एक आर्य्य कुलीन कन्या के लिए जिस की आयु १४ वर्ष की है। एक वर की आवश्यकता है। कन्या ने कन्या महाविद्यालय जालंधर में शिक्षा प्राप्त की है स्वास्थ उत्तम है। माता पिता समाज में अच्छा स्थान रखते हैं। जाती बन्धन का कोई ध्यान न होगा। गुण कर्म का विचार कर के सम्बन्ध किया जायगा।

पत्रव्यवहार का पता—

डी० द्वारा। प्रबन्ध कर्ता
सद्धर्मप्रचारक पत्र
श्यामपुर कांगड़ी
(विजनौर)

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

No. .....

Registered No. A.434

सद्ध... ...रक

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

...न्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ६...

...५ ई० { संख्या ४९ भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है। इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है। महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा।

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं। उन्होंने बंगला में "ठाकर झी" नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है। उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं ... न्यास का यह हिन्दी अनुवाद ... न्यास नहीं, शिक्षा की खान ... पुस्तक आदि से अन्त तक मन... पवित्रता से भरी हुई है। आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए। वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी।

मूल्य ॥)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है। उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है। उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

राष्ट्रों की उन्नति।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त ... जानते हैं। इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित। विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है। उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है। मूल्य २)

अर्थशास्त्र—प्रो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित। इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं। पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है। मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित। इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है। निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है। मूल्य ।=)

...ीयता का मूल मन्त्र

...ाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा। भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है।

मूल्य ≡)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

RS.THREE.a.oneonly

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये। वा०मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर कांगड़ी

(जि० बिजनौर)

तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला शेर की चरबी १।) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू. पी.

(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

असली हारमोनियम

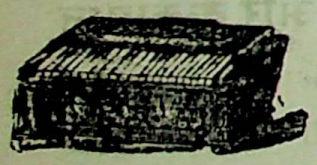

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता

G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

१०,०००) रुपया इनाम,

यह इनाम उन लोगों को मिलेगा जो हमारे यहां से नीचे लिखी हुई दवा मंगावेंगे। कमज़ोरी दिमाग़ को दूर करने वाली (अमृत प्रवाह) १) सैकड़ों बार का आजमाया हुआ धातु पुष्टि चूर्ण २)। इनाम बड़े २ डाक्टर, वकील वैद्य रईसों के सामने बांटा जायगा। हमारे ग्राहक भी इनाम बांटने में शरीक हो सकते हैं उन को आने जाने का खर्च भी दिया जायगा। जानने के लिये नियमावली)॥ का टिकट भेजने पर मुफ़्त मगाइये

पता:—सूर्य्य, औषधालय,

सप्रेटरी रोड—लखनऊ

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥

भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०.

तीन मास " " " " =) "

छः " " " " " ।)॥ "

सालभर " " " " -) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

नई बात ! ताजी ख़बर!!

काशी से एक नवीन मासिक-पत्रिका निकलने वाली है। इस का नाम मात्र "तरङ्गिणी" होगा रूप-रंग आकार प्रकार कागज़ छपाई चित्र आदि सब "सरस्वती" के समान। वार्षिक मूल्य ३) रखा गया है। जो लोग ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तक आर्डर भेज कर ग्राहकों में नाम लिखा देंगे उन से इस वर्ष केवल २॥) रु० मात्र लिया जायगा। आज ही कार्ड लिखिये। देर न कीजिए। नहीं पछताइयेगा।

२६ ३०
४८ २

आपका

मैनेजर "तरङ्गिणी"

काशी,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म-दर्शनम् ।

प्रजा के पालन तथा रक्षण का हेतु प्राण और रयि की सम्मिलित शक्ति है। सूर्यप्राण का प्रतिनिधि तथा चन्द्ररयि का है। उस चन्द्र के दिखाई देने का समय रात भी दो प्रकार की होती है—आधा मास शुक्लपक्ष और आधा कृष्णपक्ष चलता है; इन में शुक्ल प्राण तथा कृष्ण रयि है। चांदनी रात में प्राणों की जैसी तरल गति होती है उसे अनुभवशील मनुष्य ही जानते हैं। इसी लिए (तत्त्ववेत्ता अर्थात् मन्त्रद्रष्टा) महात्मा शुक्लपक्ष में ही योग यज्ञ का अनुष्ठान करते और शुक्लपक्ष में ही प्राणों के त्यागने के इच्छुक रहते हैं। जिन श्रद्धा सम्पन्न पुरुषों ने भीष्म पितामह का अन्तिम जीवन पढ़ा है और जिन्होंने दयानन्द के मृत्यु विषय पर विचार किया है उन्हें ज्ञात है कि ईश्वर-भक्त सदैव शुक्लपक्ष में प्राणत्याग करने का प्रयत्न करते हैं। तभी तो भगवान् पिप्पलाद कहते हैं—

मासो वै प्रजापतिस्तस्य कृष्णपक्षश्च रयिः शुक्लः प्राणस्तस्मादेते ऋषयः शुक्लइष्टिं कुर्वन्तीतर इतरस्मिन् ॥ १२ ॥

"महीने का विभाग भी प्रजा की उत्पत्ति और स्थिति का कारण है। उस (महीने) का कृष्णपक्ष ही रयि अर्थात् अन्धकाररूप भोग्यशक्ति का बढ़ाने वाला है; और शुक्लपक्ष जीवन के हेतु प्रकाशस्वरूप भोक्तृशक्ति का बढ़ानेवाला है। उस (भोक्तृशक्ति की वृद्धि के विचार) से, ये ऋषिगण शुक्लपक्ष में ही यज्ञादि सत्कर्मों का अनुष्ठान करते हैं और (उन ऋषियों से) भिन्न पुरुष दूसरे इधर वाले कृष्णपक्ष में (यज्ञों का विधान) करते हैं।"

भगवान् कृष्णने गीता में कहा है—**यानिशासर्वभूतानां तस्मिन्जागर्त्ति संयमी** और यह सच है कि जो समय ऋषि आत्माओं के अनुष्ठान का है वह इतर जीवों का नहीं हो सकता। जिस शुक्लपक्ष में साधारण पुरुष सन्तानोत्पत्ति की क्रिया में लगते हैं, वही योगियों के लिए समाधि का समय होता है।

जिस प्रकार एक मास में शुक्ल तथा कृष्णपक्ष प्राण तथा रयि के स्थानापन्न होकर प्रजा की सम्मिलित रक्षा करते हैं, इसी प्रकार दिन रूपी प्राण रात्रीरूपी रयि के साथ मिलकर प्रजा का उत्पादक तथा पालक बनता है—

अहोरात्रो वै प्रजापतिस्तस्याहरेव प्राणो रात्रिरेव रयिः। प्राणंबाहते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुजन्ते। ब्रह्मचर्यमेव तद्यद्रात्रौरत्या संयुज्यन्ते ॥ १३ ॥

"दिन-रात भी प्रजापति है। उस में से दिन ही प्राण अर्थात् भोक्तृ शक्ति है, रात ही भोग्य है; (इस लिए) जो लोग दिन में कामातुर हुए संयोग करते हैं वे निश्चय कर अपने प्राणों को सुखाने का उपाय करते हैं। और जो रात्रि में रत संयोग करते हैं वह ब्रह्मचारी ही हैं।"

रात्रि को रयि, भोग्य कहा है। सन्तानोत्पत्ति की क्रिया में स्त्री भोग्य तथा पुरुष भोक्तृ प्राणशक्ति है। सूर्य प्राणों का संचार करनेवाला है, इस लिए दिन पुरुष के लिए प्राणशक्ति की प्राप्तिका समय है। उस समय के संयोग से पुरुष उस प्राण शक्ति को नष्ट करता है जिस पर ही उत्तम प्रजा की उत्पत्ति का निर्भर है। और फिर भोग्य (माता) की उत्पन्न करने की शक्ति भोग्य, रात्रि में ही ठीक काम करती है। पुरुष सन्तानोत्पत्ति में एक साधन है, परन्तु मुख्य साधन नहीं। सन्तान माता के रुधिर का रुधिर और माता के ही मांस का मांस होता है तभी तो मनु भगवान् ने कहा है:—**याद्दशं भजते हि स्त्री सुतं सूते तथाविधम्**—सन्तान कैसी हो, यह माता की प्रबल इच्छापर निर्भर है। माता के बल तथा उस की निर्बलताएं सन्तान में प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होती हैं। यह माता की शक्तिमें ही है कि बालक उत्पन्न हो वा बालिका। आधुनिक युरोपियन आयुर्वेद का भी यही सिद्धान्त है। प्रसूत की चिकित्सा में निपुण लण्डन के प्रसिद्ध डाक्टर "ई० रमली डासन" अपनी पुस्तक The Causation of sex में लिखते हैं:—

क्या पिता आने वाले सन्तान की जाति का निर्णायक है? यह जान कर पुरुष के अभिमान को बड़ा धक्का लगेगा कि इस प्रश्न का उत्तर ना में देना पड़ता है। पुरुष अर्थात् पुल्लिङ्ग का उत्पन्न होने वाले बच्चे के लिङ्ग से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।

फिर यही प्रसिद्ध चिकित्सक बहुत से दृष्टान्तों तथा उपस्थेन्द्रियों की बनावट पर विचार करके अन्तिम निश्चय यह प्रकट करते हैं—**यह कि पुल्लिङ्ग का सन्तान की जाति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, पशुओं में आन्दोलन करने से भी सिद्ध होता है।**

ऋतुगामी स्त्री और पुरुष मिलकर अत्युत्तम सन्तान उत्पन्न करते हैं और वही पितृऋण से आनन्दपूर्वक उऋण होते हैं। शुक्लपक्ष रात्रि का समय ही गर्भाधान का है। दिन को पशुवत् क्रिया केवल कामी मनुष्य ही करते हैं इसी लिये दुराचारी पुरुष को लोकोक्तिमें "दुपहरिया का यार" कहते हैं।

इसमें सन्देह नहीं माता ही सन्तान को बनाती है, परन्तु शुद्ध वीर्य के विना भी फल उत्तम नहीं हो सक्ता, इसी लिए ऋषिराज कहते हैं—

अन्नं वै प्रजापतिस्ततो हवै तद्रेतस्तस्मादिमाः प्रजाः प्रजायन्त इति ॥ १४ ॥

"निस्सन्देह अन्न भी प्रजापति है। उस अन्न से ही, उत्पत्ति का कारण, वीर्य होता है और (गर्भ में स्थित) उस (वीर्य) से यह (प्रत्यक्ष दिखाई देती) प्रजा उत्पन्न होती है।"

अन्नं वै प्राणिनः प्राण—इसी लिए कहा है। अन्नपर ही जन्मदाता पिता और माता के जीवन का निर्भर है।

तद्य इह प्रजापतिव्रतं चरन्तिते मिथुनमुत्पादयन्ते। तेषामेवैष ब्रह्मलोको येषां तपो ब्रह्मचर्यं येषु सत्यं प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥

"जो उस (पूर्वोक्त) प्रजापति व्रत का सेवन करते हैं वे दोनो प्रकार की (लड़का और लड़की) सन्तान उत्पन्न करते हैं। जिन (के मन, वाणी और शरीर) में ब्रह्मचर्य्य धारणपूर्वक तप करना ही सर्वोत्तम कर्त्तव्य है, जिन में सत्य प्रतिष्ठित है: उन्हीं के लिए यह (प्रत्यक्ष वर्त्तमान योनि में ही) ब्रह्म का दर्शन है।"

मनु भगवान ने कहा है कि ऋतुगामी पुरुष जो केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए विवाह करता है, वह भी ब्रह्मचारी ही है। ऐसा नियमपूर्वक जीवन व्यतीत करनेवाला तपस्वी ब्रह्मचारी जीवन मुक्त होकर, हर्ष शोक से परे, ब्रह्मधाम के आनन्द में मग्न होता है।

तेषामसौ विरजो ब्रह्मलोको नयेषु जिह्ममनृतं न मायाचेति ॥ १६ ॥

जिन पुरुषों में कुटिलता और झूट (उल्टे मार्ग में चलना) नहीं है और अन्तःकरण से विरुद्ध, जो, आचरण भी नहीं करते, उनके लिए इस (शरीर छूटने) के पश्चात् भी ब्रह्म का ज्ञान और दर्शन होता है। प्रथम प्रश्न समाप्त हुआ। शमित्योॐम् ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

समीप पहुंच गया, और उस के लिए जो तय्यारी कुल की ओर से होनी थी उस का बहुत भाग पूर्ण हो चुका है। सनातक परीक्षा समाप्त हुई और गुरुकुल महाविद्यालय की अन्तिम कक्षा में ५ विद्यार्थी होते हुए भी ६ नए स्नातक निकलेंगे। इस का कारण यह है कि एक महाविद्यालय की तृतीय वर्षीय कक्षा के विद्यार्थी ने इस वर्ष में ही चार सत्रों की परीक्षा दी और न केवल उत्तीर्ण हुआ प्रत्युत उत्तीर्ण ब्रह्मचारियों में उस का स्थान द्वितीय रहा। दीक्षान्त संस्कार इस लिए ६ ब्रह्मचारियों का होगा।

विद्यालय की दशम श्रेणी में २५ छात्र थे जो सब अधिकारी परीक्षा में बैठे थे। उन में से एक ब्रह्मचारी तो दूसरे दिन ही बीमार हो गया और इस लिए उस की परीक्षा फिर हो रही है। २१ सर्वथा उत्तीर्ण हुए और एक ब्रह्मचारी केवल एक विषय में अनुत्तीर्ण है जिस की परीक्षा वह पुनः देगा। दो ब्रह्मचारी ऐसे हैं जो दो दो विषयों में अनुत्तीर्ण हैं। वे तीन मास तक विद्यालय में ही रह कर उन विषयों में पुनः परीक्षा देंगे; यदि उत्तीर्ण होंगे तो उन्नत हो कर महाविद्यालय में जायंगे, नहीं तो उसी श्रेणी में रहेंगे।

शेष विद्यालेय की श्रेणियों में से १ से ५ तक का परीक्षा परिणाम निकल चुका है जो अत्युत्तम है और शेष की परीक्षा भी हो चुकी है। स्वास्थ्य भी ब्रह्मचारियों का उत्तम है और वे आर्य जनता का स्वागत करने को भी भली प्रकार उद्यत हैं। स्नातक इन्द्र वेदालंकार चार नए स्नातकों को साथ ले कर दिल्ली में गुरुकुल के लिए भिक्षा करने गए हैं। नए स्नातकों में से तीन तो दिल्ली से अपने घरों मिलने चले जायंगे और एक स्वतन्त्र भिक्षा करने जायगा। स्नातक यज्ञदत्त, ब्रह्मदत्त और विश्वनाथ भी भिक्षार्थ भ्रमण कर रहे हैं। तीन पुराने स्नातक नवीन विद्याध्ययन में विविध दूरस्थ स्थानों में लगे हुए हैं। इस लिए कुल ने तय्यारी में कुछ भी उठा नहीं रक्खा क्योंकि वार्षिकोत्सव में सेवा का काम प्रायः कुल के आदमी ही अपने ज़िम्मे लेंगे। अब यदि आर्य जनता की ओर से सहायता में कसर रही तो उस का उत्तरदाता कुल नहीं हो सक्ता। गुरुकुल के गत वार्षिकोत्सव की रिपोर्ट के साथ मैंने स्थिर कोष के लिए एक अपील भेजी थी और दोनों की एक एक प्रति सर्व आर्य्यसमाजोंके मन्त्रियों तथा ब्रह्मचारियों के संरक्षकों के पास भेजी थी। मैंने समझा था कि मेरी अपील का कुछ सन्तोष जनक उत्तर मिलेगा परन्तु

संरक्षकों में से दो का ही उत्तर

आया। एक महाशय ने तो यह लिखा कि वह ५०००) वा १०००) वा ५००) एक दम देने की सामर्थ नहीं रखते और दूसरे (डाक्टर भद्रसेन बटाला निवासी) ने लिखा कि पांच क़िस्तों में वह ५००) पूरा कर देंगे। मैं जानता हूं कि डाक्टर भद्रसेन साधारण सम्पत्ति के स्वामी हैं और इस लिए उन की यह हिम्मत सराहनीय है। शेष संरक्षकों की चुप के मैंने यह अर्थ किए हैं कि वे स्थिर कोष के लिए बहुत कुछ रोक अपने साथ लावेंगे।

इस वर्ष के उत्सव में आने वाले प्रसिद्ध सज्जनों के नाम मैंने जान बूझ कर विज्ञापनों में नहीं दिए क्योंकि गत दो तीन वर्षों से "श्री पण्डित मदनमोहन मालवीय" जी का नाम, उन की प्रतिज्ञानुसार, दे कर बदनाम होना पड़ा है। आर्य्य जनता को उत्सव में सम्मिलित होने के लिए, मैं समझता हूं कि, अब किसी प्रलोभन की आवश्यकता नहीं रही।

वार्षिकोत्सव का साधारण समय विभाग तय्यार करके निमन्त्रण पत्र छप चुके हैं और वे भेजे जा रहे हैं। यदि किन्हीं सज्जनों के नाम भूल से निमन्त्रण पत्र न जा सके वा डाक के अप्रबन्ध के कारण न पहुंच सके तो वे अपमान न समझें प्रत्युत गुरुकुल का

खुला निमन्त्रण जनमात्रके लिए

समझ कर उस में अवश्य सम्मिलित हों।

(मुं० शीराम)

कुछ विशेष सूचनाएं।

(१) पण्डित हरिश्चन्द्र विद्यालंकार के विषय में बहुत से भद्र पुरुष पूछा करते हैं। उन की सूचना के लिए लिखा जाता है कि हमें भी पांच ही दिन हुए जब उन का ठीक हाल मालूम हुआ है, क्योंकि राजकीय (Censor) ने दो मास में भेजे हुए सब पत्र खोल कर इकट्ठे ही हमारे पास आने दिए हैं। पिता, भाई, धर्मपत्नी सब के नाम के पत्र खोल कर पढ़लेना यह विचित्र राजनीति है, परन्तु इस समय विनीत निवेदन भी पाप है, इस लिए युद्ध की समाप्ति के समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। पं० हरिश्चन्द्र इस समय जेनेवा (Geneva, Switzerland) में हैं। एक ओर तो एक स्कूल में फ्रेञ्च (French) भाषा पढ़ रहे हैं, और दूसरी ओर जेनेवा विश्वविद्यालय में सम्मिलित हैं। आशा है कि ठीक पाठ जमा कर प्रचारक के लिए भी कुछ लेख भेजा करेंगे। उक्त पण्डित जी का विचार एक वर्ष उधर लगाने का है जिस से वह बहुत सफलता की आशा रखते हैं।

(२) श्री गुरुकुलाचार्य (म० मुन्शीराम जी) ने पिछले दौरे में ११ रातें बिना पूरी नींद के काट दीं। इस समय उन्हें गुरुकुल तथा कुम्भ प्रचार का कार्य बहुत है और हम देखते हैं कि सिवाय ६ घन्टे नींद लेने के वह शेष दिन रात काम ही करते रहते हैं। आचार्य के कुल में बैठने से ब्रह्मचारियों का सन्तोष बहुत बढ़ जाता है, इस लिए हमारा निवेदन है कि आचार्य जी को गुरुकुल से बाहर बुलाने का प्रयत्न कोई भी महाशय न किया करें।

सम्पादक

शाखा गुरुकुल मुलतान

के सम्बन्ध में एक भ्रम दूर करना आवश्यक है। यह अब शाखा नहीं है। मुलतानी महाशयों के निवेदन पर आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने इसे स्वतन्त्र कर दिया है। इस का नाम अब "शाखा" नहीं प्रत्युत सीधा गुरुकुल है। अध्यापक नियत वा पृथक करने तथा आय व्यय का बजट बनाने आदि का सर्व अधिकार मुलतान कुमेटी को है। मेरा उस गुरुकुल के साथ आचार्य्य वा मुख्याधिष्ठाता पद के अधिकार से कोई सम्बन्ध नहीं। वर्ष में दो बार निरीक्षण करना वा कराना मेरा कर्तव्य है और अपनी आय का दशांस सभा के गुरुकुल विश्वविद्यालय के कोष में देना मुलतानी कुमेटी का कर्तव्य है। यदि दो रिपोर्टें यह जतलायं कि गुरुकुल प्रणाली पर सन्तोषजनक प्रबन्ध नहीं रहा तो आ० प्र० सभा वहां के छात्रों को गुरुकुल विश्वविद्यालय में लेने से इनकार कर सक्ती है।

मेरा उक्त गुरुकुल के प्रबन्ध के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, इस लिए ब्रह्मचारियों के संरक्षक मेरे साथ पत्रव्यवहार का कष्ट न उठाया करें।

(मुन्शीराम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

ऋषि आत्म के महत्त्व

का

एक नया प्रमाण।

निम्न लिखित पत्र हमारे पास "राजकोट" से आया है:—

"मुम्बई से एक पण्डित अपने किसी काम के लिए यहां आया। वह मेरा सम्बन्धी भी है। उस के साथ कई धार्मिक विषयों पर बात चीत हुई। इन में से एक ऐसी बात है जिसे आप जानने की बड़ी अभिलाषा रक्खेंगे—वह यह है कि यह महाशय उस जगन्नाथ पाचक से मिले हैं जिस ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को विष दिया था। पन्द्रह वर्षों तक तो वह नैपाल के राज में रहा और कई वर्षों तक नाम तथा वेश बदल कर भारतवर्ष में इधर उधर घूमा। प्रायः ब्राह्मण भिक्षु बन कर आजीविका करता रहा। मेरे सम्बन्धी से मुम्बई में मिल कर उस ने अपनी सारी व्यवस्था सुनाई। उस ने अपने आप को हत्यारा तथा देश और धर्म का शत्रु कह कर बड़ा रुदन किया। उस ने कहा कि उस के विष देते ही श्री स्वामी जी महाराज ने जान लिया था कि जगन्नाथने विष दिया है। उन्होंने केवल इतना कहा "मेरे इस समय मरने से मेरा काम अधूरा रह गया"—और जगन्नाथ को कुछ धन दे कर उसे नैपाल राज में चले जाने की प्रेरणा की, जिस से वह सरकारी अभियोग से बच जाय

यह पत्र स्वयं ही अपना अभिप्राय प्रकट कर रहा है। ऋषि दयानन्द के जीवन की एक एक घटना उपदेशों की खान है। क्या कमाल का स्वार्थ त्याग—और कैसी उदारता है। एक ओर ज़हर खिलाने वाले अपराधी पर अभियोग चलाने के इच्छुक थानेदार को ऋषि दयानन्द ने कहा था कि 'मैं संसार में बन्धन तोड़ने आया हूं लोगों को ज़ञ्जीरों में बांधने नहीं आया' इस घटना में भी इसी महत्व के भाव का प्रकाश हो रहा है। अभी तक ऋषि दयानन्द को विष देने वाले हत्यारे का पता न लगने से कई बातें सन्दिग्ध सी रह जाती थीं। ऋषि का हत्यारा क्यों न पकड़ा गया? वह कहां गया? ऐसे २ प्रश्न उत्तर के बिना ही रह जाते थे। उन का उत्तर भी मिल गया और ऋषि के जीवन पर एक अद्भुत प्रकाश भी पड़ गया। अपने को विष देने वाले व्यक्ति की प्राण रक्षा की चिन्ता करने वाले विरले ही होते हैं ऋषि दयानन्द भी उन में से एक थे।

आर्य जातीय महासभा

के विषय में जो लेख श्री महात्मा जी का निकल चुका है उसे पढ़ कर बहुत से सज्जनों ने पत्र व्यवहार आरम्भ कर दिया है। कुछ जैन और हिन्दू भाइयों ने लिखा है कि यदि महात्मा जी इस काम को अपने हाथ में लें तो वे लोग इस की कृतकार्यता की आशा रख सक्ते हैं। एक ख़ालसा सिंह महाशय ने भी सहानुभूति प्रकट की है। हम महात्मा जी के पास रहते हुए जानते हैं कि उन की शक्तियों के निरन्तर गुरुकुल में ही लगने की बड़ी भारी आवश्यकता है। गुरुकुल के सर्व उपाध्याय तथा अध्यापक उन के उपस्थित रहने से उत्साहित तथा निश्चिन्त रहते हैं और ब्रह्मचारियों के सन्तोष का तो वर्णन ही क्या है। इस लिए उन को तो इस कार्य के लिए हिलाना अनुचित है परन्तु हां, यदि आर्य-जाति के शिरोमणि महानुभाव उन के अनुभव से कुछ लाभ उठाना चाहेंगे तो महात्मा जी की प्रतिज्ञानुसार, उन से काम लिया ही जा सक्ता है।

हमारी सम्मति में "आर्य जातीय महासभा" का काम संभालने के लिए योग्य पुरुषों की कुछ कमी नहीं है। आर्य जाति त्यागी भूषणों से सम्पन्न है परन्तु कसर यह है कि, प्रथम तो निष्काम भाव से काम करने वालों का ही अभाव है और यदि कोई सज्जन खड़ा भी हो जाय तो आपस का राग-द्वेष राष्ट्र के कामों में भी हस्तक्षेप कर के उत्तम से उत्तम संगठन का नाश कर देता है। परन्तु फिर भी हमारी आंखें कुम्भ के अवसर पर होने वाले "हिन्दू सम्मेलन" पर लगी हुई हैं।

लोकमान्य गोखले के स्मारक

का प्रश्न इस समय चारों ओर से उठ रहा है। हम अपनी सम्मति गत सप्ताह वह दे चुके हैं कि गोखले का सच्चा स्मारक शिक्षा-प्रचारक मण्डली ही हो सक्ता है। जिन कामों की बुनियाद म० गोखले डाल गए हैं वे तो चलेंगे ही और उन की सहायता होगी भी; और मूर्त्ति खड़ी करना तो कोई बहुत उचित स्मारक नहीं। कांग्रेस हाल का प्रस्ताव भी गौण स्मारक अच्छा होगा, परन्तु उसे तो दो तीन धनाढ्य कांग्रेस मैन खड़ा कर सक्ते हैं; हां, १४ मार्च के लाहौर ट्रीब्यून में जो प्रस्ताव किसी केन्द्र स्थान में "गोखले भवन" बनाने का है वह ठीक प्रतीत होता है। उस के लिए दिल्ली से बढ़ कर कोई स्थान नहीं हो सक्ता। गोखले प्रारम्भक शिक्षा-समिति की आधार शिला जहां दिल्ली में रक्खी जाय वहां उसी स्थान में एक बड़ा भवन बनाया जावे, जिस में सर्व मतावलम्बी भारत माता के सेवक पुत्र इकट्ठे हो कर राष्ट्र की उन्नति पर विचार कर सका करें। इस के साथ ही शिक्षा समिति का कार्यालय भी उसी भवन के अन्दर स्थापित किया जाय।

गोखले-भवन हमारे स्वर्गवासी नेता के गौरव तथा हमारी आवश्यकताओं पर ध्यान रख कर बनाना चाहिए। उस पर एक लाख रुपये से कम न लगेगा। और प्रारम्भक शिक्षा-मण्डल का काम स्थिरता से चलाने के लिए चार लाख और आवश्यक होंगे। पांच लाख के लिए अपील की जाय परन्तु १००) से अधिक चन्दा किसी से भी वसूल न किया जाय, चाहें वह राजा महाराजा ही क्यों न हों। ऐसा करने से यह लोकव्यापी काम इन्द्रियाराम रईसों के हाथ पड़ कर सड़ेगा नहीं। कम से कम १) प्रति व्यक्ति यदि देने लगें तब भी शीघ्र धन एकत्र हो सक्ता है। यदि इस पवित्र देश हित के कार्य को आरम्भ करने के लिए कोई समिति खड़ी होगी तो हम भी यथा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(५५)

१६ मार्च १८९० को पण्डित गुरुदत्त का देहान्त हुआ। शोक सभा में सम्मिलित होने के पश्चात् चिरकाल तक मैंने लाहौर के दर्शन न किये। पण्डित गुरुदत्त के जीवन से दैवज्ञान उपलब्ध करने जाया करता था; श्रीलाला साईंदास के अनुभव से शिक्षा लेने पहुंचा करता था। परन्तु पण्डित गुरुदत्त के बिछोड़े का दुःख अभी ठण्डा नहीं पड़ा था कि १३ जून १८९० ई. को लाला साईंदास भी गुरुदत्त से द्विगुणी (५१ साल की) आयु में इस भौतिक शरीर को त्याग गए। अब लाहौर के साथ कोई विशेष लगाव बाक़ी न रहा। मुझे शोक ने यहां तक घेरा कि सद्धर्म्म प्रचारक का सम्पादन भी मुझे दूभर हो गया। प्रचारक के पुराने ग्राहक जानते हैं कि मेरी लेखशैली श्री देवराज जी की शैली से कुछ विलक्षण ही थी। मैं शीर्षक देता था "एडियोरियलनोटस", उसके स्थान में देवराज जी लिखते थे "सम्पादकीय प्रस्ताव"। मेरे नोट वर्तमान विषयों पर होते थे और मर्तलोक की ख़बर लाते थे, श्री देवराज जी के नोट आकाश में उड़ा करते थे। सम्वत् १९४७ के आरम्भ से ही प्रचारक में "सम्पादकीय प्रस्ताव" निकलने लग गए।

लाहौर से उदासीन होकर मुझे जालन्धर में ही पर्याप्त कार्य मिल गया। जिन रायज़ादा भक्तराम को मैं इङ्गलैण्ड की यात्रा के लिये मुम्बई जहाज़ में सवार कराने गया था वह बैरिस्टर बन कर घर लौट आए। उन पर मेरी बड़ी आशाएं थीं। आर्यसमाज के सम्बन्ध में तो पीछे से उन आशाओं को निराशा में बदलना पड़ा परन्तु उन दिनों निराशा का कोई चिन्ह भी न था। इन के समुद्र यात्रा से लौटने की कहानी भी बड़ी मनोरंजक है, क्योंकि पंजाब में प्रायश्चित् का विमर्शण पहले इसी अवसर पर हुआ था।

भक्तराम जी २२ मार्च को जालन्धर पहुंचे। उस से पहले ही उन्होंने अदन से तार दिया कि अमुक तिथि को वह मुम्बई पहुंचेंगे। पिताजी (रायशालिग्राम) ने देवराज से कहा—"बम्बई जाकर भक्तराम को लेआओ; रस्ते में एक दिन हरद्वार ठहर जाना जिससे कोई विघ्न न पड़े।" देवराजजी वहां तो चुप रहे परन्तु मेरे पास आकर सम्मति पूछी; मैंने अपनी लिखित सम्मति उनको पढ़ सुनाई जो एक पत्र में भक्तराम को लिख चुका था। भक्तराम जी ने संशय प्रकट किया था कि यदि पिता जी ने प्रायश्चित् के लिये बाधित किया तो उन्हें मक्कारी करनी पड़ेगी अर्थात् जिन भद्र पुरुषों को श्रेष्ठ समझ कर उन के साथ खानपान व्यवहार किया है, अपनी क्रिया से उन्हें दस्यु प्रकट करना पड़ेगा। मैंने उत्तर दिया था—"यदि ऐसा करने का तुमने विचार भी किया तो मैं तुम्हें अपना भाई न समझूंगा। तुमने कोई भी प्रायश्चित का काम नहीं किया इसलिये तुम्हें एक निर्दोष पुरुष की तरह आना चाहिए।" दूसरे ही दिन देवराज जी ने पिता जी को कहा—"मेरे धार्मिक सिद्धान्त मुझे आज्ञा नहीं देते कि मैं गङ्गास्नान से मन की शुद्धी मानूं। दिल्ली तक मैं लेआउंगा, हरद्वार से उसे आप ले आइएगा।" रायसाहेब कुछ खिसियाने होकर बोले—"मैंने तुझे कब कहा है कि उसे गोते लगवा कर ही लाना। मैं देखने थोड़ा ही चला हूं कि तुम नहाते भी हो वा नहीं। मेरा मतलब तो यह है कि कुत्ती ज़ात का मुंहबन्द कर दिया जाय" देवराज ने सन्तोष जनक उत्तर न दिया और पिताजी बाहर चले गए।

बाज़ार में रायसाहेब पण्डित मुकन्दराम जी के चौबारे के पास से निकले। पण्डित मुकन्द राम जी ऋषिदयानन्द के पुराने शिष्य थे, परन्तु काम धर्म सभा के साथ करते थे। दिल में उनकी सहानुभूति आर्यसमाज के साथ रहती, और यह उन्हीं की उपस्थिति थी जो कट्टर सनातनियों को आर्यसमाज के विरोध से रोकती थी। पण्डित जी ने आवाज़ दी—"लाला जी सुना है कि चिरञ्जीव भक्तराम आ रहा है।" लाला जी के हाँ में उत्तर देने पर पण्डित जी ने कहा—"लालाजी! हमारी कुत्ती ज़ात है। देखना कहीं प्रायश्चित् वायश्चित् की बात न करना, नहीं तो आप को ये दम न लेने देंगे। शान्ति से अपने बच्चे को घर ले आओ।"

जब पिता जी लौटे तो देवराजजी समझा कि अब झाड़ पड़ेगी परन्तु रायसाहेब ने कहा—"देवराज! तय्यार कर ले। अभी जाना होगा।" देवराज जी फिर हौसला करके बोलने लगे थे कि रोके गए—"तुझे अब कौन कहता है कि हरद्वार जा; भक्तराम की लेकर सीधा घर को चला आ।"

२२ मार्च को सारी हिन्दू बिरादरियों के रत्न रेल पर पहुंच गए। यतः भारत धर्म महामण्डल के प्रधान श्री दीवानराज, सी० एस० आई, पहुंचे हुए थे इसलिये पौराणिक सभा के भी सब सभासद् पहुंच गये। दीवान साहेब धर्मसभावालों से कहते—"देखो महाराज चिरञ्जीव ब्रह्मचर्य का व्रत पालन कर के आ रहा है। शास्त्र में लिखा है कि ब्रह्मचारी की अगवाई सब को करनी चाहिए।" धर्म सभा के सभासद् हाल मस्त हो गए और मेरी हंसी न रुकती थी। एक स्त्री के मरने पर दूसरा विवाह कर के जिस ने एक सन्तान भी उत्पन्न कर दी, वह ब्रह्मचारी! परन्तु दीवान साहब का अपना मतलब था। उनका पोता, दौलतराम, भी छ महीनों के पश्चात् यही करदूत (समुद्र यात्रा) कर के लौटने वाला था। दीवान जी उसके मार्ग से कांटे हटा रहे थे।

ट्रेन आई। भक्तराम ने बुद्धी से काम लिया था, पगड़ी पहनी हुई थी। रायबहादुर पण्डित कन्हैयालाल ने सब की ओर से एक बहुमूल्य लुङ्गी बांधने को दी और स्वागत किया। घर पर आते ही २५० महाशयों ने कुछ मिठाई खा कर चायपी; मिठाई भक्तराम ने बाँटी। फिर बिरादरियों में से ६० के लगभग शिरोमणि भक्तराम के साथ भोजन के लिए बैठ गए, और एक सप्ताह तक भक्तरामजी बड़े बड़े सनातनियों के चौके पवित्र करते रहे। दो सप्ताह के पश्चात् सनातनियों की आंखें खुलीं, कुछ शोर मचाया। परन्तु कोई खत्री और ब्राह्मण बिरादरी न थी जिस के शिरोमणि भक्तराम के साथ न खा चुके हों। दो एक हरद्वार गङ्गा स्नान को गए, परन्तु शेष सब पी गए, क्योंकि उन्होंने ठीक समझा कि "अब पछताए का बनै जब चिड़ियां चुग गईं खेत।"

(मुन्शीराम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हाय मिस्टर गोखले !

आज सब को किस लिये-
आपत्ति-शोक-महान् है ।
क्यों भला प्रत्येक प्रेमी
देश का अब म्लान है ॥
आज क्यों वे भी दुःखित हैं-
हर्ष जिन की बान है ।
किस लिये दुख शोक पूरित-
सर्व-हिन्दुस्तान है ॥
शोक है जग से सिधारा-
आनरेबुल गोखले ।
कर गया हम से किनारा-
आनरेबुल गोखले ॥
ले विदा दे अश्रुधारा-
आनरेबुल गोखले ।
कहँ गया भारत का प्यारा-
आनरेबुल गोखले ॥
हाय ! अब हम पथच्युतों को-
कौन पथ दिखलायगा ।
कौन है, हम को हमारे-
स्वत्व जो बतलायगा ॥
कौन अब अनिवार्य शिक्षा-
देश में करवायगा ।
कौन भारत के लिये-
आपत्ति इतनी उठायगा ॥
कौन जाकर कौन्सिलों में-
दुःख गाथा गायगा ।
लड़-झगड़ कर शस्त्र बिन-
अब कौन बाज़ी लायगा ॥
किस की अद्भुत युक्तियों से-
शत्रु-दल थहरायगा ।
कौन रह कर देश प्रेमी-
राज्य प्रिय कहलायगा ॥
दुख सुनाने सात सागर-
पार जावे कौन अब ।
उपनिवेशों में हमारे दुख-
नशावे कौन अब ॥
किस सहारे के सहारे-
हाय ! धारें धीर अब ।
देश की हालत सुधारे-
कौन ऐसा वीर अब ॥
इन गुणों से तो विभूषित-
मातृ-प्यारा था वही ।
इस महातमकाल में-
उज्वल सितारा था वही ॥
देश की भावी सुगति का-
भी सहारा था वही ।
सार-भारत के दुखों का
बस किनारा था वही ॥
देखिये इस रिक्त थल की-
पूर्ति करता कौन है ।
अम्बु के दुख शोक गण का-
मूल हरता कौन है ॥

इस कठिन-तर कर्म में-
लखिये उतरता कौन है ।
देश में धन, बल समृद्धी-मान भरता कौन है॥

लेखकः—हल्दौरवासी युगछात्र

विविध प्रसंग ।

हमारे पास लोक मान्य गोखले की दुःखदायकमत्यु पर बहुत से शोक सूचक प्रस्ताव आ रहे हैं, हम उन सब के छापने में असमर्थ हैं। साप्ताहिक पत्र में इतना स्थान मिलना कठिन होता है। पत्र प्रेरक लोग हमें क्षमा करें। उन प्रस्तावों का सारांश यह है कि सारा देश राजनीतिक सन्यासी की असामयिक मृत्यु से शोकमय हो रहा है।

व्याख्यान वाचस्पति पं० दीनदयालु शर्मा इस आगामी कुम्भ पर एक सनातन-धर्म महा-सम्मेलन करने वाले हैं। उस द्वारा वे सनातन धर्म सभाओं को आप संगठित करना चाहते हैं। पहले इसी उद्देश्य से आपने भारत-धर्म-महा-मण्डल स्थापित किया था। अब सम्मेलनों के युग में आप महा-सम्मेलन बनाने लगे हैं। आपका उद्देश्य अच्छा है, परन्तु फलसिद्धि सम्भव है या नहीं यह और बात है।

बनारस से तरङ्गिणी नाम्न की एक और मासिक पत्रिका निकलने वाली है। आकार सरस्वती का सा होगा।

दक्षिण अफ्रिका के कुछ पुरुषार्थी भाई वहां से 'हिन्दी' नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकालना चाहते हैं। उस का विज्ञापन अन्यत्र दिया गया है। विचार अतिश्रेष्ठ है। हम पत्र की सर्वथा उन्नति चाहते हैं।

अन्यत्र हम पं० जनमेजय का एक लेख प्रकाशित करते हैं। उस में गुरुकुल सिकन्दराबाद के उत्सव की विचित्र लीला का वर्णन है। हम नहीं कह सकते यह कहां तक ठीक है। यदि यह सत्य है तो हमें आश्चर्य और दुःख है।

सिकन्दराबाद में

जन्म-ब्राह्मण-लीला ।

सेवामें निवेदन है कि गुरुकुल-सिकन्दराबाद का उत्सव तिथि १४-१५ तथा १६ फरवरी १९१५ को बड़ी विचित्र घटनाओं से पूर्ण समाप्त हुआ यत्किञ्चित वृत्तान्त आप पाठकों के ज्ञानार्थ यहां अङ्कित करता हूं।

प्रथम दिवस १४ को प्रातःकाल जो पण्डित मण्डली वहां इकट्ठी हुई थी वर्ण-व्यवस्था विषय पर विचार करने लगी। सभापति के आसन को पं० भीमसेन अध्यापक महाविद्यालय ज्वालापुर ने ग्रहण किया था।

वक्ताओं में से सब से प्रथम पं० अखिलानन्द जी उठे इन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश को उठा सभा के सदस्यों को ललकार के कहा मैं दावे के साथ हर्ष-पूर्वक कहता हूं कि स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ-प्रकाश में ९९ वार गुण-कर्म स्वभाव से वर्ण व्यवस्था को माना है व मानना चाहिए। मेरे लेखों को आपलोग अन्यत्र समाचार पत्रों में देखेंगे जो कि प्रकाशित हो चुके हैं वा होंगे इस आर्य्य-समाज के अन्दर ऐसे पुरुष आ घुसे हैं जो कि गुण कर्मों से वर्ण व्यवस्था मान कर ब्राह्मण बनना चाहते हैं ब्राह्मणत्व का अधिकार करना चाहते हैं, परन्तु यह हो नहीं सकता असम्भव है आदि २ कथन कर बैठ गये ?

इन के पश्चात् पं० जनमेजय उठे और कहा कि सत्यार्थ प्रकाश के स्वमन्तव्यामन्तव्य सं० १६ को देखिए वहां श्री स्वामी जी लिखते हैं "वर्णाश्रम को गुण-कर्मों की योग्यता से मानता हूं।" यह सब को मानना योग्य है इत्यादि इस पर पं० दिलीपदत्त जी उपाध्याय ज्वालापुर ने कहा—

यदि सत्यार्थ प्रकाश में ९९ वें वार भी वर्ण-निर्णय गुण कर्म स्वभावानुसार लिखा हुवा हो और स्वतन्तव्यामन्तव्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकाश में गुण कर्म की योग्यता से वर्ण-निर्णय एक वार ही लिखा है तो भी स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश का लेख अधिकतर माननीय है इत्यादि। फिर पं० अखिलानन्द जी ने कहा कि जो स्वमन्तव्यामन्तव्य में गुण कर्म के साथ स्वभाव शब्द युक्त नहीं किया उस का कारण प्रेस की भूल व स्वामी जी का भूल जाना है इसी पर पं० बुद्धनलाल स्वामी मेरठ ने कहा प्रेस की भूल है यदि प्रेस की भूल हो तो भी गुण-कर्मों की योग्यता इस से पद समूह में कर्म शब्द बहु वचनान्त होने से स्वभाव का बोधक हो जाता हैं?

अब पं० प्रयागदत्त जी अवस्थी ने स्वभाव की आलोचना की उन्हों ने कहा स्वभाव माता पिता से आता है इस लिए स्वभाव गुण कर्म के साथ अवश्य होना चाहिए इस पर एक पण्डित ने कहा (देखो आर्योद्देश्य रत्नमाला सं०) वहां स्वभाव का लक्षण स्वामी जी क्या लिखते हैं "स्वस्यभावः": स्वभावः। जो अपना भाव हो। यथा अग्नि का जलना दाह करना। फिर एक महाशय ने कहा स्वभाव अदलता बदलता रहता है स्वभाव दो प्रकार का होता है एक नैमित्तिक है दूसरा स्वाभाविक है, अतः माता पिता के रजवीर्य्य पर स्वभाव निर्भर नहीं हो सकता क्योंकि स्वभाव बदलता रहता है इत्यादि।

इस के पश्चात् पं० नन्दकिशोर जी उपदेशक उठे और कुछ कहा।

सब से पीछे पं० भीमसेन जी ज्वालापुर वाले सभापति उठे और कहा कि बहुत विवाद हो चुका है इस वर्णव्यवस्था पर आप विद्वान् पंडितों ने बहुत कुछ कहा परन्तु मेरी निश्चित रूप से यह सम्मति है कि जो जिस २ वर्ण में है वह उस वर्ण में रहे। क्या आवश्यकता है कि वह अन्य वर्ण में जावे हां शूद्रादि विद्या पढें विद्या पढ़ने से उन लोगों को यश हो सकता है जब शूद्र पढ़ लिख जायगा तो उस का स्वतः यश होगा। शूद्र शब्द से क्यों घृणा की जाय। क्या शूद्र शब्द से शूद्र वर्णस्थों का अपमान हो सकता है? नहीं। अतः अपने २ वर्ण में सब कोई रहें अपने वर्ण को छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है इत्यादि सभा समाप्त होते ही अनेक पुरुष कोलाहल करने लगे और पूछने लगे कि क्या निश्चय हुआ?

दूसरे दिन १५-२-१५ को फिर सभा आरम्भ हुई।

आज ये तीन (१) विषय शूद्रों को यज्ञोपवीत का अधिकार है कि नहीं (२) कौन २ वर्ण किस २ वर्ण का पवीत करवावें (३) किस २ वर्णस्थ के हाथ का खानपानादि करना चाहिए?

आज सभापति के आसन को पं० नन्दकिशोर जी उपदेशक ने ग्रहण किया था वक्ताओं में से सब से प्रथम पं० अखिलानन्द जी उठे और कहा कि स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में अनेक आचार्यों का मत दर्शाते हुए लिखा है कि

शूद्रों को उपनयन किए विना संहिता भाग छोड़ कर अन्य विद्या पढ़ना चाहिए इत्यादि।

इन के पश्चात् पं० जनमेजयः ने सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास में से "यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः" इस वेदमंत्र को भाषार्थ सहित पढ़ कर सुनाया और कहा कि यह वेद मंत्र अन्य प्रमाणों की अपेक्षा स्वतः ईश्वरोक्त प्रमाण होने से माननीय है इस के सन्मुख अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं। इस वेद मंत्र से स्पष्ट सिद्ध होता है शूद्रों को भी वेदों के पढ़ने का अधिकार है फिर पं० अखिलानन्द जी उठे और कहा कि स्वामी जी कृत यजूर्वेद भाष्य के अन्य मही-धरादि भाष्यों को मिलाना चाहिए क्योंकि स्वामी जी का कृत भाष्य इस वेद मंत्र का अशुद्ध है। अर्थ व्याकरण की रीत्यनुसार होना चाहिए अपना पाण्डित्य जिताते हुए अखिलानन्द ने स्पष्ट रीति से महर्षि कृत अर्थ का अपमान किया। सभापति ने मर्यादा से उल्लंघन करते देख इन्हें बैठा दिया।

इन के पीछे पं० बालमुकुन्द जी उपदेशक करनाल मंडल उठे और कहा कि जो लोग ऋषि का अपमान करते हैं वह स्वार्थी हैं मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है परमात्मा ने सूर्य्य चन्द वायु आकाश जल पृथिवी सब के लिए समान की है ऐसे ही परमात्मा का ज्ञान। वेद मनुष्यमात्र के लिये है यदि द्विजों के लिये होता तो परमात्मा पक्षपाती हो जाते इत्यादि। तदन्तर एक व्यक्ति ने कहा आर्य्यसमाज नियम सं० ३ में वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना आर्यों का परम-धर्म बतलाया है इस में सुनना शूद्रों का है और पढ़ना पढ़ाना द्विजों के लिए है। पुनः पं० बालमुकुन्द जी व पं० त्रिलोकनाथ जी अध्यापक सिकन्दराबाद ने सत्यार्थ-प्रकाश में से मनुष्य मात्र को वेदों के पढ़ने का अधिकार है सिद्ध कर दिखलाया। पीछे पं० नरसिंह शर्मा उपदेशक राजस्थान ने ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका में वेदों के पढ़ने का अधिकार सब के लिए सिद्ध किया तदनन्तर पं० सन्तराम जी भोगा वाले उठे और कहा तुम लोग विषयान्तर में हो।

"शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार" तो है परन्तु उपनयन का नहीं क्योंकि संस्कार विधि में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य का उपनयन लिखते हैं शूद्रों का नहीं इत्यादि।

इन के पश्चात् जनमेजय जी उठे और कहा शूद्र किस अवस्था में और कब होता है। सत्यार्थप्रकाश में व अन्य शास्त्रों में लिखा है ब्राह्मण १६ वें क्षत्रिय २२ वें और वैश्य २४ वें वर्ष में उपनयन हुवे विना शूद्र हो जाता है?

अतः सिद्ध होता है कि विद्या पढ़ने की योग्यता न होते तथा उपनयन न कराने पर ब्राह्मणादि से शूद्र होता है उपरोक्त नियमानुसार पुरुष चाहे किसी कुल में भी उत्पन्न क्यों न हुवा हो शूद्र हो जात अतः मनुष्यमात्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेदों के पढ़ने का अधिकार है और उपनयन का भी अधिकार है इत्यादि। तदनन्तर—

पं० भीमसेन जी अध्यापक ज्वालापुर उठे हैं और बोले तुम लोग बार २ सत्यार्थ-प्रकाश आदि स्वामी जी कृत ग्रन्थों को उठाते हो तुम किस दावे से कह सकते हो ये पुस्तकें ठीक हैं क्या स्वामी दयानन्द निर्भ्रान्त थे अन्य ऋषि-मुनि भ्रान्ति युक्त थे? स्वामी दयानन्द मनुष्य थे भ्रान्ति युक्त भी थे क्या जो कुछ उन्हों ने लिखा सत्य लिखा अन्य ऋषि मुनियों ने मिथ्या लिखा है? अतः इस को जानना चाहिए कि स्वामी दयानन्द जी भी भूल कर सकते हैं?

शूद्रों को वेद का पढ़ाना तो दूर रहा सुनाना भी नहीं चाहिए और ब्राह्मणादि को चाहिए कि यदि शूद्र यज्ञशाला के समीप व वेद पढ़ते समय आजाए तो सब कृत्य बन्द कर दें और शूद्र को मार न फटकावें। हम ने अब तक अपनी आत्मा का खून किया और अपने पाण्डित्य का नाश किया अब न करेंगे इत्यादि।

खान पान भी उत्तम वर्णव्यवस्था का करना चाहिए।

शूद्रों के हाथ से नहीं। अन्त में सभापति पं० नन्दकिशोर जी ने कहा अब अनेक प्रकार के वाद विवाद हो चुके निश्चित कुछ भी नहीं हुवा। कोई कुछ भी क्यों न कहें महर्षि दयानन्द के लेखानुसार मानना चाहिये। सभापति के भाषण के अनन्तर सभा समाप्त हुई।

सभा समाप्त होते ही श्रोतागण परस्पर कहने लगे शोक है फिर आर्य्यसमाज के अन्दर स्वार्थी पाखण्डी नास्तिक लोग आगे लगे हैं जिस से वैदिकधर्म को हानि पहुंचेगी। अच्छा हो कि ये नास्तिक पुरुष समाज से बहिष्कृत हों और धर्म को हानि न पहुंचे।

धर्म का सेवक—

जनमेजय

प्रेरित।

हर्ष समाचार।

श्री ताराचन्द जी का नाम का प्रायः सामाजिक पुरुषों को पता है वह कई दिन गुरुकुल में उपाध्याय रह चुके हैं और अपने लेखों और वक्तृता द्वारा समाज की सेवा करते रहे हैं सिन्धुप्रान्त में समाज के बड़े उत्साह से काम करने वाले हैं उन्हों ने आंगल-भाषा में एक अति मनोरञ्जक ग्रन्थ श्री स्वामी जीके जीवनचरित्र पर लिखा है इस ग्रन्थ में स्वामी जीके जीवनी के सिवाय श्रीस्वामी विरजानन्द जी का जीवन भी दिया है और एक लेख वेदों के ईश्वरीय-ज्ञान होने में लिखा है यह भी सिद्ध किया है कि अग्निहोत्र के सिद्धान्त पाश्चात्य ज्ञान के अनुकूल है। स्वामी जी के सारे ग्रन्थ के ऊपर भी समालोचना की है तथा स्वामी जी की शिक्षा-प्रणाली और संस्कारों के गूढ़ आशय पर विचार किया गया है अतएव ग्रन्थ देखने योग्य है इतना परिश्रम करते भी लेखक ने यह निश्चय किया है कि ग्रन्थ के आय से वे कुछ भी नहीं लेंगे जो कि आय होगा उस में से कुछ हिस्सा तो शिकारपुर के समाज के मन्दिर के बनाने में व्यय किया जायगा और बाकी सिन्धी भाषा में धर्म सम्बन्धी ग्रन्थ छपाने तथा एक विद्यार्थियों के साथ साथ सम्बन्ध रखने वाले पुस्कालय के लिए धर्म-ग्रन्थ खरीदने में लगाया जायगा आशा है कि धर्म के प्रेमी इस ग्रन्थ को खरीदेंगे और उपाध्याय जी का उत्साह बढ़ावेंगे॥

पुस्तक मिलने का पता—

सरस्वती मण्डली

शिकारपुर सिन्ध

———

आर्यसमाज बांकीपुर

आर्य्यसमाज बांकीपुर आज ५-३-१५ ई० के अपने विशेष अधिवेशन में अपने सुयोग्य उपप्रधान श्रीमान् डाक्टर लक्ष्मीपती जी L.A.C.O.P. के आकस्मिक स्वर्गवास के लिये अत्यन्त शोक प्रकट करता है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि स्वर्गवासी आत्मा को सद्गति तथा इन के दुःखित परिवार को शान्ति प्राप्त हो।

यह भी प्रस्ताव पास करता है कि इन के परिवार के पास इसकी एक प्रतिलिपि भेजी जावे।

ज्ञानचन्द्र मेहता

मन्त्री आ०स० बांकीपुर

———

आर्यसमाज जहानाबाद प्रान्त

फतेहपुर पर विपत्ति।

आजकल बहुधा स्थानों में आर्य्यसमाजों पर एक न एक व्याधि लगरही है। परन्तु इस समाजपर जो विपत्ति आपड़ी है वह बिल्कुल विचित्र है। समाज का मन्दिर लगभग एक बीघा ज़मीन पर है और उसकी सारी इमारत पुख्ता है। जिस की लागत लगभग एक हज़ार रुपये की है। सरकारने इस जगह पर ट्रेनिङ्ग स्कूल बनाने का विचार कर के समाज के अधिकारियों से इसको माँगा उन्होंने उसी स्थान पर विद्यालय बनते देखकर सरकार को इस शर्त पर देना स्वीकार किया कि ईंट और चुनाई का मूल्य और उतनी ही ज़मीन किसी और मौके पर मिल जाने पर मन्दिर दिया जा सकता है। एक बात और लिखने योग्य है कि उसी के समीप एक दूसरी ज़मीन (जोकि बहुत अर्से से खराब और गन्दी है) पड़ी हुई है जिसको कि बाबू घनश्यामदास साहब बहादुर सेक्रेटरी डिस्टरिक्टबोर्ड फ़तेपुर ने पसन्द करके यह राय जाहिर की कि आर्य्यमन्दिर को न लेकर यह ज़मीन लेना उत्तम होगा। परन्तु जब ज़मीदार ने उस का देना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वीकार न किया तो जनाब सिक्रेटरी साहबबहादुर ने आर्य्यों को धमकाना आरम्भ किया। और कहा कि यदि तुम यों कहने पर न दोगे जो बाक़ायदा लेली जावेगी। नहीं मालूम कि जनाब सिक्रेटरी साहब बहादुर के इस बाकायदा लेने से क्या अभिप्राय है। आज सारे धर्मावलम्बियों को अपने २ मन्दिरों की रक्षा का पूर्ण रीति से अधिकार है। और स्वातन्त्रतापूर्वक हर एक धर्मावलम्बी अपने मन्दिरों में ईश्वरोपासना और प्रार्थना करते हैं। तब फिर बेचारे आर्यों को ही इस अधिकार से क्यों वंचित रखते हैं। जनाब सिक्रेटरी साहब बहादुर को उचित है कि जिस प्रकार वह आर्य्यों को धमका रहे हैं उसी प्रकार उस ज़मीदार को समुझा बुझाकर उस ज़मीन को जिसे एक दफा पसन्द किया था लेलेवें और बेचारे आर्य्यों को उनका धर्म-मन्दिर लेकर न दुखावें।

निवेदक

रामप्रसाद मंत्री आर्य्यसमाज

जहानाबाद प्रान्त फ़तेहपुर।

दक्षिण आफ्रिका प्रवासी हिन्दियोंका मुखपत्र।

यह बड़े शोककी बात है कि दक्षिण अफ्रिकामें हिन्दी भाषाका एक भी पत्र नहीं निकलता है। जहां अंगरेजोंके असंख्य, नेटिवोंके अनेक और अन्य जातियोंके अनगणित पत्र निकलते हों, जिस देश में गुजरातियोंके तीन और टामिल बोलनेवालोंका दो पत्र निकलता हो वहां हिन्दी भाईयोंका एक भी पत्र न निकले। क्या यह थोड़े शर्मकी बात है? इस अभावको दूर करनेके लिये जेरिस्टन के हिन्दी प्रचारिणी सभानें यह निश्चय किया है कि दरबानके निकट थोड़ासा जमीन लेकर एक हिन्दी—आश्रम बनाया जायऔरउस आश्रममें एक हिन्दी प्रेस खोला जाय और उस प्रेससे एक "हिन्दी" नामक साप्ताहिक पत्र (हफ्तावारी अख़बार) प्रकाशित किया जाय। इस काममें धनकी बड़ी जरूरत है। धन इकट्ठा करनेके लिये श्रीयुत भावानीदयालजी फरवरी के आरम्भमें यहांसे निकल पड़ेंगे। आप पहिले ट्रांसवालमे घूमकर फिर नेटालमें जाकर धन इकट्ठा करेंगे। श्री भवानी दयालजी हिन्दी प्रेसका प्रबन्ध और हिन्दी पत्रका सम्पादन तथा प्रकाशनका भार अपने उठा लिये है। आप कई हिन्दीपत्रोंका सम्पादक (एडीटर) रह चुके है।

इस पुण्य काममें सब हिन्दी भाइयों से अपील है कि आप लोग इस उत्तम काममें धनकी सहायता देकर यशका भागी बने। यदि आपके शरीरमें कुछ भी राम और कृष्णका खून मौजूद है, यदि आपको अपने देश और भाषाका कुछ भी अभिमान है तो अपनी गहरी नींद को त्यागो। हिन्दी माताके उद्धारके लिये कमर कसकर तय्यार हो जावो और हिन्दी पत्र निकालनेके लिये शक्तिके अनुसार मदद करो। यदि आप इस काम में आलस करेंगे तो फिर बतलावो कि संसार आपको क्या कहेगा। आलसी या पुरुषार्थी किस नामसे आपको पुकारेगा। इसका विचार अप खुद करो।

भारतके धनियों, दानियों और प्रेसके मालिकोंसे हमारा खास निवदन है कि आपलोग छापने का यन्त्र और हिन्दी टायपसे शीघ्र सहायता दें आशा है किसब हिन्दीभाई मेरे इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे॥

यह कह देना जरूरी है कि इस पत्र में राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक सब तरह के लेख प्रकाशित होंगें पर किसी खास मत से इस पत्र का कुछ भी सम्बन्ध न रहेगा॥

द: लाल बहादुरसिंह.

सभापति हिन्दी प्रचारिणी सभा,

जर्मीस्टन—ट्रांसवाल

समाज सेवा

(ले० श्रीयुत नारायण प्रसाद अरोड़ बी. ए.)

सारे समझदार आदमी समाज सेवा को जीवन का मुख्य अंग मानते हैं। किन्तु ज्यादा तर यह देखा गया है कि लोग समाज सेवा के सिद्धान्तों ही पर वाद विवाद किया करते हैं। बहुधा ऐसा भी होता है कि लोग इस विषय पर बात चीत करने के पश्चात् इस की उपयोगिता को भी मान लेते हैं। परन्तु इसे कार्य रूप में लाते हुए बहुत कम लोग देखे जाते हैं। इस का कारण यह नहीं है कि लोगों में समाज सेवा करने की इच्छा ही नहीं है। किन्तु इस के विपरीत लोगों का समाज सेवा से उदासीन रहने का कारण यह होता है कि लोगों को समाज सेवा करने का ढंग नहीं मालूम होता। वे यह नहीं मानते कि उन्हें क्या करना चाहिए उन्हें इस बात का पता नहीं होता कि वे किस तरह अपने भाइयों की सेवा करें? ढंग न मानने ही के कारण वे चुप चाप बैठ रहते हैं। बेचारे क्या करें? उन का कोई दोष नहीं। समाज की सेवा करने की अच्छा रहते हुए भी वे किसी खास काम को नहीं कर सकते। क्यो कि वे यह नहीं जानते की अमुक काम हमारे देश के लिए हितकर है अथवा नहीं। इस लिए हमारे नेताओं को चाहिए कि वे हमें बतलाये कि वर्तमान समय में हमारे देश में अमुक अमुक कार्य करने की आवश्यकता है। और उस के करने का यह ढंग है। उस समय जिन लोगों के मन में देश की सेवा करने की इच्छा है वे अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार समाज की सेवा करने में जुट जायेंगे। और लोगों में जो वर्तमान उदासीनता छाई हुई है। वह दूर हो जायगी। केवल सिद्धान्तों पर वाद विवाद करने से काम नहीं चलेगा। हमें तो उन रास्तों के जानने की आवश्यकता है जिन से काम करने वाले अपने देश भाइयों को कुछ सहायता पहुंचा सकें। ये रास्ते जीवन के प्रत्येक भाग में होने चाहिये। क्यों कि लोगों की प्रकृतियां भिन्न भिन्न होती और इसी लिये सब इच्छुक एक ही तरह से समाज सेवा नहीं कर सकते। समाज सेवा की ज्ञान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्ति और ढंग मालूम कर के लोगों को चाहिये कि मिल जुल कर काम करने लगें। और देश में एक उच्च समाज पैदा कर दें। और समाज को उच्च बनाना ही समाज सेवा का उद्देश है।

मेरे खयाल से भारत वर्ष में समाज सेवा करने के बहुत से रास्ते है। पर तु सब से पहली ज़रूरत हमारे देश को शिक्षा की है। जब तक समाज की शिक्षा न होगी, तब तक समाज की दशा किसी प्रकार उच्च नहीं हो सकती। इस लिये इस में से अधिक लोगों को शिक्षा का प्रचार करने में जुट जाना चाहिये। एक विद्यार्थी गर्मी की छुट्टी में अपने शहर जाता है और अपने शहर या ग्राम में पहुंच कर वहां के कुछ लड़कों को पढ़ना लिखना सिखाना आरम्भ कर देता है, सच मुच वह कई व्याख्यानों से अधिक अच्छा काम कर डालता है। अकेले शिक्षा ही के प्रश्न को पूरी तरह से हल करने के लिए अनेकों साहसी और परोपकारी कार्य्य-कर्ताओं की आवश्यकता है। 'शिक्षा' विषय को लेकर काम करने के कुछ व्यवहारिक रास्ते ये हैं

(१) घरेलू-शिक्षा—लोगों के घर पर जाकर उन्हें पढ़ने का शौक दिलाना और उन्हें पढ़ने का ढंग सिखाना

(२) ग्राम-शिक्षा—गावों में जाकर स्कूल खुलवाना और स्थापित स्कूलों को जाकर देखना और उन में आधुनिक शिक्षा प्रणाली के ढंग बतलाना।

(३) नाइट स्कूलों का खोलना और वर्तमान स्कूलों में यथाशक्ति सहायता देना

(४) अपढ़ लोगों को अच्छी २ पुस्तकें पढ़ कर सुनाना और उनकी ज्ञान वृद्धि करना।

(५) पुस्तकें उधार देने वाले छोटे २ पुस्तकालय कायम करना ताकि लोगों को अच्छी २ पुस्तकें पढ़ने का मौका मिले।

(६) मेजिक लेन्टर्न के साथ लोगों को उत्तम २ व्याख्यान सुनाना। इत्यादि बहुत से काम हो सकते हैं। उदाहरणार्थ एक विद्यार्थी को लेलीजिये। जिस समय यह विद्यार्थी किसी लम्बी छुट्टी में अपने घर जाता है, उस समय वह ५० हिन्दी कि पहली पुस्तकें अपने साथ लिए जाता है और अपने शहर में पहुंच कर अपने मकान के अड़ोस पड़ोस की स्त्रियों को वे ५० पुस्तकें इस आशा से बांट देता है कि उनके पास पुस्तकें होंगी तो वे किसी की सहायता से उन्हें पढ़ ही लेंगी।

इस के बाद वह अपने एक रिश्तेदार को उत्साह दिला कर वहां पर एक सभा कराता है और उस में स्त्री शिक्षा की उपयोग्यता पर व्याख्यान कराता है। इन सब बातों का परिणाम यह होता है कि वहां एक कन्या पाठशाला खुल जाता है और एक विधवा अध्यापिका का काम करने के लिये भी तय्यार हो जाती है। क्या यह सच्ची समाज सेवा नहीं है? मेरी समझ में तो यह काम बड़ी २ कांग्रेसों और मजलिसों से लाख दर्जे अच्छा है। यदि इसी तरह की लगन कुछ लोगों में लग जाये और उन में हर एक अपने ग्राम या शहर में एक कन्या या स्त्री पाठशाला खुलवायें तो स्त्री शिक्षा का प्रश्न बहुत कुछ हल होजाय।

शहर के रहने वाले विद्यार्थियों को चाहिए कि गर्मी की छुट्टी में इर्द गिर्द के गावों में जाकर रहा करें और वहां के लड़कों को इकट्ठा कर के पढ़ाया करें। इस से उनका स्वास्थ भी अच्छा रहा करेगा और गांव के लड़के साक्षर भी होजायंगे। परन्तु यह बात याद रखनी चाहिये कि गांव के चंचल लड़कों को इकट्ठा करना और उन्हें पढ़ाना सहज काम नहीं है। लेकिन साथ ही यह भी है कि जब तक हम अपना फुरसत का वक्त ऐसे कामों में खर्च न करेंगे तब तक हम अपनी समाज को कैसे आगे बढ़ा सकेंगे।

समाज सेवा का दूसरा रास्त जो हमें ग्रहण करना चाहिये वह स्वास्थ रक्षा है। क्योंकि जब तक स्वास्थ ही न ठीक हो तब तक पढ़ना लिखना कुछ भी नहीं चल सकता। समाज सेवा के इस विभाग में भी काम करने की बड़ी गुंजाइश है और बहुत से काम करने वालों की जरूरत है इसका विशेष विवरण फिर कभी आप के सामने उपस्थित करूंगा।

नारायण अरोड़ा

कुम्भ प्रचार

२६०५) गत प्राप्त धन

१०) आर्य्य समाज कुलवल महता ज्ञान चन्द जी द्वारा।

७५) महा० रामरखामल जी गुप्त स्यालकोट द्वारा एकत्रित

१५००) महा० ठाकुरदास जी सूत्र मंडी लाहौर द्वारा श्रीमती आर्य्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब।

१००) महा० केशवराव जी वकील हैदराबाद।

१०) महा० भूराराम जी मंत्री आ० स० बीकानेर

५) मंत्री आर्य्य समाज रसूल गुजरात।

२५) आर्य्य समाज बच्छोवाली लाहौर।

२९८०) योग

सुंशीराम
प्रधान सार्वदेशिक सभा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर की आवश्यकता

एक कान्यकुब्जद्विज भारद्वाज गोत्र पान्डे खोरिकन्धार—) की षोडशाब्द कन्या जो सब गृह कार्य्य में निपुण तथा सुशिक्षित है। और बेलबूटा का काम भली भांति जानती है। उस के निमित्त एक योग्यवर दरकार है। निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार शीघ्र होना चाहिये।

पता: दीक्षित प्रभूलाल
C/O श्री कृष्ण एन्ड संस
घड़ीसाज मुलतान छावनी (पंजाब)

हवन यज्ञ सम्बन्धी वस्तुयें !!!

(२० वर्ष से अधिक समय से जारी है)

लाहौर के प्रसिद्ध कारखाना हवन सामग्री आदि की वस्तुयें निम्न पते से मूल्य बिकती हैं थोक लेने वालों को कमीशन मिलता है। ऋतु अनुकूल सामग्री २) १) ॥=) ॥) ।=) सेर सुगंधित महालेदार धूप दर १) सेर उत्तम खुशबूदार अगर बत्ती दर १) ॥=) ॥) ॥=) ॥) प्रतिसैकड़ा सब प्रकार के लोहे तथा तांबे के हवन कुन्ड तथा हवन पात्र हिमालय पर्वत की ब्रह्मी बूटी ॥=) पौंड

पता: सीताराम आर्य्य लोहारी दरवाज़े के बाहर निकट ब्रह्म समाज मन्दिर
२६/४६ से २६/७० लाहौर

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)
बरियारपुर
(बनारस स्टेट)

नया संदेश ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी वसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें इत्यादि विषयों पर सहल पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता

"सत्ययुग"
हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय
मुज़फ़्फ़रपुर

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री वा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफ़ों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा
हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

१६००० हज़ार एजेंटों का होना

भारतवर्ष में बनी औषधि के सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं बता सकता कि सुख संचारक कंपनी मथुरा का बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कफ, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, कै दस्त, सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, बच्चों के हरे पे लेद त, रोना, के करना, बूढ़ों की अनिद्रा और नजला, जवानों की थकावट या देवैनी दवा स्वादिष्टसुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कीमत फी शीशी आठ आना डांक खर्च १ से ६ शीशा तक =) आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डांक से मंगाने का पता:—
सुख संचारककंपनी
मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५)रु० की पुस्तक मंगाने वाले को २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ हो।

सामवेद भाषा भाष्य श्री पं० तुलसीराम कृत सम्पूर्ण मूल्य ४) मात्र सजिल्द ४॥)

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बाजाज़ा शहर मेरठ

उसतरे को विदा करो।

क्योंकि हमारी इस दवा के लगाने से फिर बाल पैदा नहीं होते हैं मूल्य १)

मैनेजर हिमालय कंपनी कंखल

आदित्य ग्रन्थमाला
की
नई पुस्तक छप गई है नई पुस्तक

सचित्र प्रिन्स विस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना
इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े २ को कैसे पद दलित किया, और फिर किन किन शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की: इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तार पूर्वक वर्णन है। दूसरे भाग में साहस की मूर्ति, देश-भक्ति के पुतले, नीती के गुरु, और जर्मनी के-जन्म दाता प्रिन्सविस्मार्क का आश्चर्यकारी चरित चित्रित किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित्र जिन्होंने पढ़ा है उन के लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

मूल्य १॥)

पता:—प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म प्रचारक पत्र गुरु-कुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर।

ग्राहकगण !
नकली "बर्म्मन"
और झूठे
विज्ञापनसे
बचो !

नं० ३५

भारत गृह रत्न
असल अर्क कपूर

डाक्टर बर्म्मन की गौमुखी शीशी रहती है। ३० वर्ष से प्रसिद्ध है, वह एक समान बनता है—नकली बर्म्मन से बचो-नकली अर्क कपूर से सचेत रहो।

मोल ।)चार आने शीशी, डा० म० २ से ४ तक ।=) पाच आने।

डा: एस,के बर्म्मन।
५,ताराचंददत्त स्ट्रीट।
कलकत्ता।

एजन्ट बाबूरामजैन एन्ड कम्पनी बड़ा दरीबा देहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) इनाम।

श्री बालमीकी रामायण पर।

श्री पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न हो कर गवनमेंट पञ्जाब ने २००) रुपये और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रुपयों का इनाम उस के लिये रक्खा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। यह इस बात का पूरा प्रमाण है कि यह टीका बहुत उत्तम बनी है, मूल्य बिना जिल्द ५।) सुनहरी अक्षरों की जिल्द वाली ५॥)

२००) इनाम बाल व्याकरण पर

यह हिन्दी में संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण है, इस पर भी गवनमेंट ने २००) रुपया इनाम दिया है. और पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने इसे मिडल के कोर्स में नियत किया है। मूल्य ।=)॥

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवद्गीता पर

पदार्थ अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य सहित, इस पर भी पं० जी को ३००) इनाम मिला है,

मूल्य २)

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन =) कठ ।=) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।=) तैत्तिरीय ।=) ऐतरेय =) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वत्र ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।)॥
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।=)
सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ इस पर भी २००) इनाम मिला है।

मूल्य ॥=)

वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३॥) योग दर्शन ॥।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)

शंकराचार्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है। ॥)

निरुक्त निघंटु पाठ सहित, निरुक्त हिन्दी भाष्य भी छप गया है। मन्त्रों के पते दिये गए हैं, और कई प्रकार के सूची पत्र दे कर ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी बना दिया गया है, विद्वानों ने इस की बहुत बड़ी प्रशंसा की है, मूल्य ४)

१००) इनाम मनुस्मृति पर

मनुस्मृति की सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

सटीक महा-भारत

छपना आरम्भ हो गया है, टीका और फुटनोट ऐसी छान बीन के साथ लिखे गए हैं, कि इस से प्राचीन आर्यावर्त का सच्चा इतिहास साफ साफ खुल जाता है, वार्षिक मल्य ३) है।

पता:—

मैनेजर आर्षग्रन्थावली
लाहौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बनाई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौड़ी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) ३ पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद मजिस्ट्रेट जावद
जिला मान्डसोर
ग्वालियर स्टेट

उत्तम—पुस्तकें

यदि आप को अपनी और अपने देश की आर्थिक तथा राष्ट्रीय व्यवस्था सुधारना है तो इन पुस्तकों को भली प्रकार पढ़िए और पढ़ाइये। अर्थ शास्त्र, प्रो० बालकृष्ण कृत १॥) नवीन भारत १॥) स्वाधीन विचार ।) पद्य पुष्पाजंली ।=) जर्मनी के विधाता या कैसर के साथी ।) युद्ध गल्पाजंली ।) विकाशवाद २) हिन्दी से महाराष्ट्रीय शिक्षक ।)। इन के अतिरिक्त हिन्दी की अन्य अच्छी पुस्तकें भी हमारे यहां मिलती हैं।

२९/४८ से २०/८ पता:—कृपानारायण कलियुगी पुस्तकालय
कुली बाज़ार—कानपुर

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

Registered No. A.434

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } १४ चैत्र सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० २७ मार्च सन् १९१५ ई० { संख्या ५० भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनी ।

श्री महात्मा सुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है । इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है । महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है ।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा ।

मालवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित । विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है । उस पर हिन्दी में यह एक उत्तम पुस्तक है । मूल्य २)

अर्थशास्त्र—प्रो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित । इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं । पुस्तक में आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है । मूल्य १।)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित । इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है । निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है । मूल्य ।=)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा । भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है ।

मूल्य ।)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये गौरव के लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये। वा० मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर कांगड़ी

(जि० बिजनौर)

तिब्बत व नेपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला घोड़े की चरबी १) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला —

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू. पी.

(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

असली हारमोनियम

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एस, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता

G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta.

हवन यज्ञ सम्बन्धी वस्तुयें !!!

(२० वर्ष से अधिक समय से जारी हैं) लाहौर के प्रसिद्ध कारखाना हवन सामग्री आदि की वस्तुयें निम्न पते से मूल्य बिकती हैं थोक लेने वालों को कमीशन मिलता है। ऋतु अनुकूल सामग्री २) १) ॥=) ॥) =) सेर सुगंधित मसालेदार धूप दर १) सेर उत्तम खुशबूदार अगर बत्ती दर १) ॥=) ॥) ॥=) ॥) प्रति सैकड़ा सब प्रकार के लोहे तथा तांबे के हवन कुन्ड तथा हवन पात्र हिमालयपर्वत की ब्रह्मी बूटी ॥=) पौंड

पता: सीताराम आर्य्य लोहारी दरवाज़े के बाहर निकट ब्रह्म समाजमन्दिर

$\frac{२१}{८८}$ से $\frac{२१}{१०}$ लाहौरी

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥

भारत विभिन्न देशों से ... ४=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०.

तीन मास " " " " =) "

छः " " " " ।)॥ "

सालभर " " " " -) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना बाक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

नई बात ! ताजी ख़बर!!

काशी से एक नवीन मासिक-पत्रिका निकलने वाली है। इस का नाम मात्र "तरङ्गिणी" होगा रूप-रंग आकार प्रकार काग़ज़ छपाई चित्र आदि सब "सरस्वती" के समान। वार्षिक मूल्य ३) रखा गया है। जो लोग ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तक आर्डर भेज कर ग्राहकों में नाम लिखा देंगे उन से इस वर्ष केवल २॥) रु० मात्र लिया जायगा। आज ही कार्ड लिखिये। देर न कीजिए। नहीं पछताइयेगा।

$\frac{२१}{१८}$ $\frac{२}{२}$

आपका

मैनेजर "तरङ्गिणी"

काशी,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म-दर्शनम् ।

प्रजा की उत्पत्ति कैसे (किस से) हुई यह पहला प्रश्न है जो जिज्ञासु को डांवाडोल करता है। जहां से उत्पत्ति हो समाप्ति भी वहीं हुआ करती है। जल की उत्पत्ति कैसे होती है ? जब सूर्य की तरुण तीक्ष्ण किरणें समुद्र का मन्थन करती हैं तब उस का जल भाप रूप हो कर आकाश में उठता है; वे सब भापें मिल कर मेघ बनता है, तब वर्षा होती है। वर्षा के जल से नदी नाले बह कर फिर समुद्र में मिल जाते हैं। और उसी ऊपर उठे जल के जमने से हिमालय का कोष पूर्ण रहता है जो वर्ष भर नदियों को भरे रखता है। इसी प्रकार जिस तप स्वरूप परमात्मा से प्रजा उत्पत्ति के साधन रूप प्राण और रयि का विकाश होता है उसी में प्रजा की स्थिति भी होती है। परन्तु उस स्थिति के लिए भी साधन हैं। वे कौन से साधन हैं उन का वर्णन दूसरे प्रश्न के उत्तर में आया है—

अथ हैनं भार्गवोवैदर्भिः पप्रच्छ, भगवन् कत्येव देवाः प्रजां विधारयन्ते कतर एतत्प्रकाशयन्ते कः पुनरेषां वरिष्ठ इति ॥ १ ॥

"इस (पहले प्रश्न) के पश्चात् भृगु के वैदर्भि ने इन्हीं (ऋषिराज पिप्पलाद) से पूछा—हे ज्ञानरूपी ऐश्वर्य के मालिक ! कितने ही देव (उत्पन्न की हुई शरीर रूपी) सृष्टि को विशेष प्रकार से धारण करते हैं, किस में इस प्रकार प्रकाश होता है और इन (देवों) में कौन सर्वोत्तम है—यह मेरा प्रश्न है।"

यद्यपि प्रजा का उत्पन्न करने वाला परमेश्वर ही उस का धारण करता है परन्तु इन प्रत्यक्ष शरीरों की कला चलाने के भौतिक साधन इन्द्रियां ही हैं। इन में श्रेष्ठ सब का आधार कौन है ? यह पता लगाना आवश्यक है; क्योंकि जिस एक पर सारी कला का निर्भर है उसी की रक्षा से सब की रक्षा हो सकती है। तब उत्तर में ऋषिराज बोले—

तस्मै सहोवाचाकाशो ह वा एषदेवो वायुरग्निरापः पृथिवी वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च; ते प्रकाश्या भिवदन्ति, वयमेतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामः ॥२॥

"उस (वैदर्भि) के लिए वह (ऋषि) बोले कि निश्चय पूर्वक ये प्रसिद्ध (१) आकाश, (२) वायु, (३) अग्नि, (४) जल, (५) पृथिवी, (के कार्य रूप) वाणी आदि (पांच कर्म इन्द्रियां) मनादि (अन्तः करणचतुष्टय) आंख, कानादि (पांच ज्ञानेन्द्रिएं) ये सब ही—चेतन मनुष्य की बनावट को—विशेषता से धारण करने वाले (सर्व व्यवहारों में चलाने वाले) कहाते हैं। ये सर्व इन्द्रियादि (ईर्षा में फंस कर) बोले कि हम ही इस डांवाडोल (शरीर) को (आश्रय दे कर) विशेषता से धारण करते हैं।"

क्या सच मुच मनुष्य रूपी महल की बुनियाद कर्मेन्द्रिय, ज्ञान्द्रिय तथा मन के ऊपर है ? क्या बनावट रूपी छप्पर को इन्हीं थूनियों ने थामा हुआ है ? ये प्रश्न मनुष्य की बुद्धि को चक्कर में घुमाने लगते हैं। इन्द्रियों की इन प्रसिद्ध युक्तियों से प्रभावित हुआ मनुष्य इन्हों को अपनी स्थिति का कारण समझ लेता है; तभी तो एक एक इन्द्रिय उस को अपना दास बनाए रखती है। आंख जिस रूप में चाहे घसीटती फिरे, कान जिस शब्द का चाहें दास बना दें, घ्राण, रसना और त्वगेन्द्रियां जिस गढ़े में चाहें धकेलदें, कर्मेन्द्रियां जिस कूप में चाहें गिरादें और मन जो नाच चाहे नचावे. चेतन प्रजा चूं नहीं करती क्योंकि इन सब ने उसे निश्चय दिला दिया है कि उन्हीं के आश्रय से मनुष्य शरीर का सारा व्यापार चलता है। अभिमान में उन्मत्त कर्म ज्ञानेन्द्रिय तथा मन ललकारते हैं कि उन के बिना चेतन प्रजा की स्थिति नहीं। तब इन सब का वास्तविक स्वरूप दिखलाने के लिए प्राण आगे बढ़ता है—

तान्वरिष्ठः प्राण उवाच। मा मोहमापद्याहमेवैनत् पञ्चधात्मानं विभज्यैतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामीति ॥ ३ ॥

"अतिश्रेष्ठ, सर्वोत्तम प्राण इन (कर्मज्ञानेन्द्रिय तथा मन) से ऐसे बोला कि तुम अज्ञानान्धकार को मत प्राप्त हो। मैं ही, अपने स्वरूप को पांच भागों में विभक्त कर के (सर्व-अव्ययों में स्थित हुआ) इस (देखने में) निराधार शरीर को गिरने से रोक कर यथावत धारण करता हूं।"

प्राण के बिना कोई भी इन्द्रिय काम नहीं कर सकती। प्राण को किसी की अपेक्षा नहीं, उस की सब को आवश्यकता है। आंख न देखे तो मनुष्य मरता नहीं, कान न काम करे तब भी शरीर स्थित रहता है। सब इन्द्रियां अपना काम छोड़ दें तब भी मनुष्य काम करता रहता है : परन्तु प्राणों का वियोग क्या उस से एक पल सहारा जाता है। प्राण ही मनुष्य-जीवन का हेतु है। यदि मनुष्य अन्न न खावे तो जल पर ही जीवन कर सका है, यदि जल भी न मिले तब कुछ दिनों तक नहीं मरता—परन्तु प्राणों की गति पांच मिनिट भी बन्द हो तो जीवन असम्भव हो जाता है। इसलिए मनुष्य का कर्त्तव्य है कि प्राणशक्ति की रक्षा दृढ़े जिस एक की प्राप्ति से सब की स्थिति रहती है—

तेऽश्रद्दधाना बभूवुः सोऽभिमानादूर्ध्वमुत्क्रमत इव तस्मिन्नुत्क्रामत्यथेतरे सर्व एवोत्क्रामन्ते तस्मिंश्च प्रतिष्ठमाने सर्व्व एव प्रातिष्ठन्ते यद्यथा मक्षिका मधुकरराजानमुत्क्रामन्त सर्वा एवोत्क्रामन्ते तस्मिंश्च प्रतिष्ठमाने सर्वा एव प्रातिष्ठन्त एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रञ्चते प्रीताः प्राणं स्तुन्वन्ति ॥ ४ ॥

"वे (कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय तथा मन) इस प्रकार प्राण की महिमा को सुन कर (ईर्षायुक्त) श्रद्धा रहित शिथिल हो गए—(तब भी शरीर न गिरा और प्राण की सत्ता से जीवित रहा। परन्तु इन्द्रियादि देव फिर भी निराभिमान न हुए तब) वह (प्राण) आत्म गौरव से प्रेरित देह से निकलने के समान शिथिल हो गया। उस के निकलते समय सब (इन्द्रिय) निकल जाते और उस के बने रहने से सब (इन्द्रिय) ठहर जाते हैं। जैसे कि मधु मक्खियों में राजा के उड़ने पर अन्य सब मक्खियां उड़ जाती हैं, और उस के कहीं बैठ जाने पर सभी मक्खियां बैठ जाती हैं; इसी प्रकार वाणी, मन, नेत्र और कान आदि इन्द्रिय (प्राण को अपना राजा मान कर) प्रसन्न हुए और प्राण की इस प्रकार स्तुति करने लगे।"

शमित्योऽम्

वैदिकमेगज़ीन का विशेषाङ्क

वैदिकमेगज़ीन का विशेषाङ्क गुरुकुल के उत्सव पर निकलेगा। २०० पृष्ठ होंगे। डा० सर्वाधिकारी वाइस चांसलर कलकत्ता विश्वविद्यालय मि० सारदाचरण मित्र, सरसुब्रह्मण्यम् अय्यर आदि विद्वानों के लेख होंगे। १) मूल्य। उत्सव पर बिकेगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भ्रम सशोधन ।

वैसे तो मेरे तथा गुरुकुल के विषय में बहुत कुछ झूठा अपवाद लिखा तथा फैलाया जाता है जिस का नोटिस लेना भी मैं उचित नहीं समझता ; परन्तु कुछ झूठ ऐसे हैं जिन का समय पर खण्डन न करने से लोकहित के कार्यों को हानि पहुंचने की सम्भावना होती है । इसलिए इस विषय में कभी कभी लिखना ही पड़ता है—

(क) इस समय ६ विविध स्थानों से मुझे समाचार मिल चुका है कि मेरे कोई कृपालु यह प्रसिद्ध कर रहे हैं कि—"खालसा पंथ की हक़ीक़त" पञ्जाब गवर्नमेण्ट ने मेरी सम्मति से ज़ब्त की है । कहानी इस प्रकार फैलाई जाती हैं कि रायज़ादा भक्तराम बैरिस्टर ने जब "सर माइकल ओड्वायर" से पटियाला केस के विषय में शिकायत की तो लाट महोदय ने उत्तर दिया कि—"हमने मुंशीराम की सम्मति से यह पुस्तक ज़ब्त की है ।" मुझे आश्चर्य है कि पञ्जाब के लाटसाहेब ऐसा क्यों कर कह सक्ते हैं जब कि मैं उन्हें सितम्बर १९१३ के पश्चात् कभी मिला ही नहीं और न कभी इस पुस्तक के विषय में उन के साथ मेरी बातचीत हुई और न ही किसी प्रकार का पत्र व्यवहार । केवल यही नहीं प्रत्युत २३ नवम्बर को मैंने एक पत्र संयुक्तप्रान्त के लाटसाहेब को लिखा था जिस से ज्ञात होगा कि मैंने इस विषय में क्या किया तथा यह कि मेरी सम्मति क्या थी और है—"श्रीमान ! आज मैं, उस प्रतिज्ञानुसार जो श्रीमानों से पिछले मेल के समय की थी, एक रजिस्टर्ड पैकेट श्रीमानों के प्रयाग के पते से भेजता हूं जिस में निम्नलिखित (वस्तुएं) हैं"—

(१) एक प्रतिपुस्तक "खालसा पथ की हक़ीकत" जिस का प्रकाशन पञ्जाब गवनमेण्ट, संयुक्तप्रान्त गवनमेण्ट तथा गवनमेण्ट आफ़ इण्डिया ने बन्द कर दिया है ।

(२) नियोग के अध्याय का अंग्रेज़ी में अनुवाद, जिस पर सिक्खों ने आक्षेप किया है ।

(३) आर्यसमाज डिफेन्स कमेटी का प्रार्थना पत्र श्रीमान् लाट साहब पञ्जाब के नाम सहित सूची खालसा लेखों के जो आर्यसमाज के विरुद्ध प्रकाशित किए गए तथा उन में से कुछ उद्धृत लेख अंग्रेज़ी में अनुवादित ।

मेरा यह मतलब नहीं कि खालसों के गन्दे और कटु आक्रमणों के उत्तर में आर्य सामाजिक लेखकों के सभ्य लेखों को भी निर्दोष समझा जाय परन्तु जब साधारण पुरुषों का मामला हो तो मानवी सहनशक्ति की एक सीमा हो जाती है इसके अतिरिक्त मेरा यह कहने का तात्पर्य नहीं कि पुस्तक का मुद्रण बन्द कराने में गवर्नमेण्ट ने भूल की है, क्योंकि उसे तो सिक्ख सेना को सन्तुष्ट करना है जिसे लड़ाई पर भेजा गया है । परन्तु क्या गवर्नमेण्ट को यह ज्ञात नहीं कि जो सब असिस्टेण्ट सर्जन युद्ध में सम्मिलित हैं उन में $\frac{3}{4}$ आर्य हैं और राजपूतों और जाटों की पल्टनों के अतिरिक्त कुछ डोगरे और गढ़वाली भी आर्य्यसामाजिक हैं । फिर प्रसिद्ध पुराने योद्धा महाराजा मेजर-जनरल सर प्रतापसिंह G. C. S. I., K. C. B. जो आगे लड़ रहे हैं आर्य हैं.....परन्तु आर्य्यों को डींग हांकने का अभ्यास नहीं और न वे अपनी सेवा का बदला तत्काल मांगा करते हैं ।

श्रीमान् "सर माइकल ओड्वायर" को यह प्राथनापत्र भेजे एक मास से अधिक हो गया परन्तु अबतक इस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया.....इत्यादि ।"

अब आर्यसज्जन स्वयं विचार लें कि जो अपवाद फैलाया गया है, उस में कितना सार है ।

(ख) पण्डित तुलसीराम स्वामी ने केवल अपने मासिक में लिखने पर ही बस नहीं की प्रत्युत नगर नगर घूमकर यह प्रचार आरम्भ किया है कि गुरुकुल के स्नातक वेदों पर विश्वास रखने वाले नहीं हैं । यह सर्वथा झूठ है । वृन्दावन गुरुकुल के पं० तुलसीराम गत दिसम्बर मास तक आचार्य थे । जब सामवेद भाष्यकार ने आचार्य होते हुए अपने कर्त्तव्य को पालन न किया और दो वर्षों तक वहां के छात्रों की निरुक्त की पढ़ाई में सहायता न दी तब मुन्शी नारायणप्रसाद जी मुख्याधिष्ठाता की प्रेरणा पर मैंने स्नातक इन्द्र को निरुक्त पढ़ाने भेजा । स्नातक इन्द्र ने केवल वही लिखा था कि जिन वेदमन्त्रों से स्पष्ट आध्यात्मिक अर्थ निकलते हों उन से खींचतान कर साइंस निकालने का प्रयत्न व्यर्थ है । होनी तो चाहिए थी उस की प्रशंसा कि वह वेद में ब्रह्मविद्या की प्रधानता को मानता है परन्तु गुरुकुल के विरोधियों ने सब साधारण को धोखा देकर अपना ही मतलब सिद्ध करना चाहा ।

यह बात छिपी हुई नहीं हैं कि पण्डित तुलसीराम स्वामी कईवार सायण भाष्य को ऋषि दयानन्द के भाष्य से श्रेष्ठ बतला चुके है, न केवल यही प्रत्युत दयानन्द के भाष्य को असङ्गत भी कह चुके हैं । अभी पं० भीमसेन ज्वालापुरी सिकन्दराबाद में कह आए हैं कि ऋषि दयानन्द ने यजुर्वेद के २६ अध्याय के दूसरे मन्त्र का अर्थ अशुद्ध किया है और उसी भीमसेन मण्डली की पीठ ठोकने के लिए पण्डित तुलसीराम स्वामी ज्वालापुर में विद्यमान हैं । मैं, इस लिए कहता हूं कि गुरुकुल के स्नातक पं० तुलसीराम की अपेक्षा वेद और सत्य और वैदिकधर्म का अधिक मान करने वाले हैं ।

(३) एक और भ्रम फैलाया जा रहा है । कहा जाता है कि कुम्भ पर संयुक्त प्रान्त की आर्यप्रतिनिधि की ओर से प्रचार होगा, सार्वदेशिक सभा कुछ नहीं कर रही । मुझे स्वयम् ज्ञात है कि ज्वालापुर-वालों का तो २४ मार्च तक तौड़ सफेद पड़ा था और लाहौरी कालिज वालों का बङ्गला ही फूस बन्दी में लगा हुआ था, प्रचार तो छ आयप्रतिनिधिसभाओं की केन्द्र सार्वदेशिक सभा की ओर से १५ मार्च १९१५ से जारी है । संयुक्तप्रान्तीय सभादि ने कोई जुदा प्रचार का प्रबन्ध नहीं किया ।

मुंशीराम जिज्ञासु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

पधारिये और देखिए

जब यह लेख पाठकों के दृष्टि गोचर होगा, गुरुकुल यात्रा के लिए उन की तय्यारियां प्रारम्भ हो चुकी होंगी। वे सच्चे तीर्थ की यात्रा के लिए सन्नद्ध हो रहे होंगे। जो सज्जन गुरुकुल आने की तय्यारियां कर चुके हैं, या जो नहीं कर चुके, उन सब के प्रति हमारा खुला निमन्त्रण है कि यहां "पधारिये और देखिये" वर्ष भर में आप ने गुरुकुल के विषय में न जाने कितनी सम्मतियां सुनीं, और उस की कितनी आलोचनाएं देखीं। न जाने आप के चित्त में उस के विषय में क्या २ भाव उठे। उन सब का अन्त इस गुरुकुल यात्रा से कीजिये। यहां आइए, आंखों से देखिए और फिर अपनी सम्मति बनाइए।

सम्भवतः आप को इस साल के किसी भाग में बताया गया होगा कि गुरुकुल बीमारी का घर है। वहाँ स्वास्थ्य रह ही नहीं सकता ब्रह्मचारी सदा रोगी रहते हैं। आइये, और ब्रह्मचारियों को अपनी आंखों से देखिए, फिर निश्चय कीजिये कि उन का स्वास्थ्य किसी योग्य है या नहीं? तब आप को पता लगेगा कि ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य कैसा मज़बूत है?

आप को वर्ष के किसी भाग में बतलाया गया होगा कि गुरुकुल में संस्कृत की पढ़ाई बिल्कुल गिरती जाती है। अंग्रेज़ी ही अङ्गरेज़ी की पढ़ाई मुख्य हो रही है और संस्कृत के विषयों को कोई नहीं पूछता। दूसरी ओर किसी न किसी ने आप को यह भी अवश्य सुनाया होगा कि गुरुकुल तो दुनिया को पीछे की ओर ले जा रहा है। वह भारत वर्ष को सभ्य संसार में से उठा कर अर्ध सभ्य युग में ले जाना चाहता है। ये दोनों परस्पर विरुद्ध बातें असल में तो एक दूसरे का स्वयं ही खंडन कर देती हैं। जो सज्जन पाश्चात्य सभ्यता से ही संसार का मोक्ष समझते हैं, वे कहते हैं कि गुरुकुल में संस्कृत ही संस्कृत है—उसी की मुख्यता है—और जो लोग केवल संस्कृत ग्रन्थ भण्डार को स्वयं पर्याप्त समझते हैं और उस की सहायता के लिए नए दर्शन विज्ञान या साहित्य का जानना ज़रूरी नहीं समझते हैं, वे गुरुकुल पर अंग्रेज़ी का दास होने का दोष लगाते हैं। दोनों प्रकार के आलोचकों की युक्तियां एक दूसरी को काट कर सिद्ध कर देती हैं कि गुरुकुल के विषय में उपर्युक्त दोनों दोष निर्मूल हैं। गुरुकुलोत्सव पर आकर अपनी आंखों से देखिए और कानों से सुनिए कि गुरुकुल में वैदिक और आर्य शिक्षा को प्रधान रखते हुए पूर्व और पश्चिम को कैसे मिला दिया गया है।

गुरुकुल पधार कर ब्रह्मचारियों के पढ़े हुए निबन्ध सुनिये, उनके भाषणों का श्रवण कीजिए, तब आप उनकी योग्यता, शिक्षा और शक्ति का परिचय पा सकेंगे। इन सब कारणों से आप स्वयं आइये और देवियों को भी साथ लाइए।

गुरुकुल के गौरव को गृह देवियां खूब समझती हैं। उनकी स्वाभाविक विवेक शक्ति भी पुरुषों की अपेक्षा शीघ्र ही सच्चे और झूठे में विवेक कर लेती है। गुरुकुलोत्सव और गुरुकुल से आर्य्य-देवियों का जो प्रेम है, पुरुषों का उसकी अपेक्षा आधा भी नहीं है। माताएं ही समझ सकती हैं, कि पुत्रों का पालना कितना कठिन है। इस कारण वे ही गुरुकुल के कार्य्य-कर्ताओं के कार्य्यभार को पहिचान सकती हैं। पिता तो कड़ी समालोचना कर सकते हैं किन्तु माता जानती है कि सेज पर पलते हुए पुत्र का संभालना भी कितना दुष्कर है। तीन-सौ पुत्रों के पालने की कठिनाई को वे अनुभव कर सकती हैं और इसी लिए गुरुकुल के कार्य्यकर्ताओं के साथ उनकी पूरी सहानुभूति हो सकती है देवियों का गुरुकुल से अगाध प्रेम है। आलोचना के झकोरे उन के प्रेमवृक्ष को गिरा नहीं सकते। उनका आना गुरुकुल के लिए आशीर्वाद के समान है। देवियों को भी गुरुकुलोत्सव पर अवश्य लाइए।

आते हुए साथ

दक्षिणा भी लेते आइये

गुरुकुल का वार्षिक खर्च उसी दक्षिणा से चलता है जो आप उसे वार्षिकोत्सव पर दे जाते हैं। इस के सिवाय और कोई बड़ा आमदनी का साधन नहीं है। इस वर्ष योरप के भयानक संग्राम ने हमारे देश के धन को भी लज्जाशील बना दिया है। धन गांठ से बाहिर नहीं होना चाहता। इस लिए सम्भावना हो रही है कि शायद गुरुकुल के लिए धन की पर्याप्त राशि न आ सके। आप अपने व्यवहार से सिद्ध कर दिखावें कि गुरुकुल के लिए आप का धन लज्जाशील और संकोची नहीं होता जितना गुरुकुल का व्यय है, वह तो पूरा होना ही चाहिए, इस साल यदि स्थिर-कोष के लिए कम धन आय तो युद्ध आदि बहाने दिए जा सकते हैं परन्तु वार्षिक व्यय के लिए नहीं।

इस प्रकार सद्भाव और दक्षिणा से सज्जित हो कर परिवार सहित गुरुकुल पधारिए—गुरुकुल आप के स्वागत के लिए सुसज्जित है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मातृभाषा की आह !!!

वायसराय की कौंसिल के १७ तारीख़ के अधिवेशन में, भारत माता के सुपुत्रों ने मातृभाषा द्वारा शिक्षा दिये जाने के विषय में अपनी जो सम्मतियां प्रकाशित कीं, निःसन्देह उन से मातृभाषा दुःख भरी आह भर २ कर रोती होगी। यह अभागा भारतवर्ष ही है, जहां देश भाषा द्वारा शिक्षा दिये जाने को सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है। जिस भाषा को पुत्र ने माता के दूध के साथ पिया है, जिस भाषा में उस ने तोतली जिह्वा से माता पिता के कानों में अमृत की धारा बहाई है, और जिस भाषा द्वारा वह अपने स्वाभाविक भावों का प्रकाश करता रहा है वह उसे शिक्षा देने के काम में नहीं लाई जा सकती—शिक्षा देने के लिये एक सप्तसागर पारवासिनी भाषा को लाना आवश्यक है—यह तर्क भी अभागे भारत के सिवा और कहीं न मिलेगा। फिर ऐसा तर्क करने वाले भी कौन ? अन्य देशवासी नहीं, निज देशवासी ही। क्या फिर भी भारतवर्ष में मातृभाषा को दुःखभरी आह भरने का अवसर नहीं है !

मद्रास के म० रामरायनिंगर ने वायसराय की कौंसिल के १७ मार्च के अधिवेशन में प्रस्ताव पेश किया कि भारतवर्ष में स्कूल की उच्च शिक्षा देशी भाषाओं द्वारा ही दी जाया करे। प्रस्ताव जहां एक ओर देश के लिये अत्यन्त उपयोगी था, वहां दूसरी ओर प्रस्तावकर्त्ता की विवेक-शक्ति का सूचक था। प्रस्ताव में देशी भाषा को एक दम सारी शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रश्न नहीं उठाया गया, केवल स्कूल की उच्चशिक्षा का माध्यम बनाने तक ही सन्तोष किया गया था। जो लोग मातृभाषाओं द्वारा शिक्षा के पक्षपाती हैं वे शायद इस प्रस्ताव को अपूर्ण कहने के लिये भी तय्यार होजायं क्योंकि उन की राय में सम्पूर्ण शिक्षा का माध्यम देशी भाषा को ही समझना चाहिये। म० रायनिंगर ने अपने प्रस्ताव को इतना व्यापक नहीं बनाया। अंग्रेज़ी भाषा के पक्षपातियों के भावी विरोध का ही ध्यान करते हुए उन्होंने उसे संकुचित कर दिया। किन्तु हमारे देश की शोचनीय दशा का इस से बड़ा और क्या प्रमाण हो सकता है कि इस उपयोगी प्रस्ताव का विरोध भारतवासी देश-भक्तों द्वारा ही किया गया। केवल दो भारतीय सदस्यों ने ही प्रस्ताव का समर्थन किया—एक पण्डित मदनमोहन मालवीय, और दूसरे राजा कुशलपालसिंह। शेष सब भारतीय सदस्यों ने प्रस्ताव का विरोध किया। विरोध करने वालों में मि० दादाभाई, मि० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि हिन्दू सदस्यों के अतिरिक्त मि० गज़नवी, महमूदाबाद के राजा, सर-करीमभाई और सर रहीमतुल्ला आदि मुसल्मानों के नाम मुख्य हैं। मि० दादाभाई का नाम देखकर तो कोई आश्चर्य नहीं होता क्योंकि जो भारत के लिये आवश्यक प्रारम्भिक शिक्षा का विरोध कर सकता है वह क्या नहीं कर सकता। हां, मि० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का नाम प्रस्ताव के विरोधियों में देखकर अवश्य दुःख होता है।

जिन युक्तियों के आधार पर इस सर्व प्रिय प्रस्ताव का विरोध किया गया है, ज़रा उन का भी दिग्दर्शन कर लीजिये। मि० दादाभाई, जिन्होंने सब से पहले देशोपकारक प्रस्ताव के विपक्ष में विद्रोहभाषण किया, लोक-मत से पूरा परिचय देते हुए फ़र्माते हैं—"इस प्रस्ताव का पोषक लोकमत नहीं है, और जनता बड़ी दृढ़ता से चाहती है कि स्कूलों की उच्चशिक्षा की वर्तमान रीति में कोई परिवर्तन न किया जाय यदि आजतक कोई स्थापना सत्य की ज़रा भी परवा न करके की गई है, तो यह है। न जाने दादाभाई महाशय को यह विचित्र लोकमत कहां से पता लगा। उन की जनता शायद उन के ड्राइंगरूम के दोस्त हैं। न जाने वह कौनसी जनता है जो देशी भाषा माध्यम नहीं बनाया चाहती। जो लोग अंग्रेज़ी द्वारा ही उच्चशिक्षा प्राप्त किये हैं, जिन का उसी से जीवन और उसी से मान है, वे यदि देशी भाषाओं को तुच्छ समझें तो कोई बात नहीं—देशी भाषाओं की योग्यता उन के दिमाग़ में घुस ही नहीं सकती। किन्तु दस बीस की राय को लोक-मत कहना कहां की सत्यता है।

मि० बनर्जी का कथन अधिक सार-युक्त था। आप की दो युक्तियां थीं एक तो यह कि इस विषय में प्रान्तों की राय लेनी चाहिये क्योंकि प्रान्त प्रान्त की दशा में भेद हो सकता है और दूसरे यह कि सारी भाषायें भी एक ही स्थान पर नहीं समझी जा सकतीं। भारत की पूरी तीन सौ भाषायें ही शिक्षा का माध्यम होने के योग्य नहीं हो सकतीं। ये दोनों विचार प्रस्ताव के रूप में परिवर्तन ला सकते थे, उस के विरोधक नहीं हो सकते थे। मि० बनर्जी को चाहिये था कि इन दोनों बातों को दृष्टि में रख कर प्रस्ताव का संशोधन पेश करते, न कि उस का विरोध ही कर देते। मुसल्मान सदस्यों को अपनी उर्दू की ही फ़िक्र तङ्ग कर रही थी। महमूदाबाद के राजा ने तो यहांतक कह डाला कि अलीगढ़ में यह परीक्षण काम में लाया जाकर अकृत कार्य हो चुका है। हमें निःसन्देह अलीगढ़ कालिज पर दया आती है, जहां शिक्षा का एक मात्र सच्चा सिद्धान्त काम में लाया जाने पर सफल न हो सका।

अन्य सभासदों ने वही सैकड़ों बार पिटी हुई युक्तियां दीं। एक ने कहा, देशी भाषाओं में साहित्य नहीं है—मानों कभी सर्दी लगे बिना भी भारी कपड़े पहिने और बनाये जाते हैं। जिस चीज़ की मांग नहीं उत्पन्न की जाती, वह तय्यार कैसे हो ? जब देशी भाषा द्वारा शिक्षा ही नहीं दी जाती तो उस में पुस्तकें लिखकर क़र्ज़दार कौन बनता फिरे ?

हमारे इन नाम के देशभक्तों की अपेक्षा, सरकारी शिक्षासदस्य सर हार्कर्ट बटलर के भाषण में देशी भाषाओं के विषय में अधिक सच्ची बातें कही गई थीं—आपने कहा कि—"देशी भाषा द्वारा उच्च शिक्षा का प्रश्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिक्षा की नीति का प्रश्न नहीं, शिक्षा की सस्ती उपलब्धि का प्रश्न है, और एक ऐसा प्रश्न है जिस के हल करने में कई चित्तों को लगना चाहिए। मैं अपने और कई अन्य शिक्षा के विशेषज्ञों के अनुभव से कह सकता हूं कि उन विद्यार्थियों की समझने की शक्ति, जिन्हों ने स्कूल की सारी शिक्षा देशी भाषा द्वारा पाई है, उन विद्यार्थियों की अपेक्षा विशेषतया उत्तम होती है, जिन की शिक्षा अंग्रेजी द्वारा होती है"

इस से बढ़ कर सचाई शिक्षा के विषय में और कौन सी होगी? किन्तु हमारे भारतवासी देश भक्तों के दिमाग में इस सरल सिद्धान्त का घुसना भी कठिन है। उन्हें अंग्रेजी भाषा में ही भारतवर्ष का मोक्ष दीखता है। पं० मालवीय जी का यह कथन भी उन पर कोई असर नहीं डाल सकता कि "वे लोग जो इस प्रस्ताव का विरोध करते हैं, क्या कभी यह भी सोचते हैं कि अंग्रेजी द्वारा भारत की जनता को शिक्षित करने में कितना समय लगेगा?" क्या कांग्रेस में व्याख्यान देने वाले बीस वक्ता ही भारतवर्ष हैं? क्या ग्रामवासी भारतवर्ष नहीं हैं? क्या अङ्गरेजी द्वारा ही भारतवर्ष को शिक्षित किया जा सकता है? हम तो इसे सर्वथा असंभव समझते हैं।

भारतवर्ष की शिक्षा सम्बन्धी समस्या का एक यही हल है कि शिक्षा का माध्यम देसी भाषा को बनाया जाय, इस के बिना न भारत की जनता शिक्षित हो सकती है, और न शिक्षित लोगों के दिमाग़ मानसिक दासता से मुक्त हो सकते हैं। जो देश भक्त इस सत्य सिद्धान्त को नहीं मानते वे भूलते हैं-और मातृ भूमि के सच्चे रोगों को नहीं पहिचानते। क्या उन देश सेवकों को देख कर मातृ भाषा का दुःख-भरी आह निकालना उचित नहीं है।

संसार की गति

हिन्दू यूनिवर्सिटी

हिन्दू यूनिवर्सिटी का बिल वायसराय की कौंसिल में पेश होगया। पेश करने के लिए डा० सुन्दरलाल को कौंसिल का विशेष सभासद् निश्चय किया गया है। वे यूनिवर्सिटी वालों के विचारों को कौंसिल के सामने रखेंगे। यूनिवर्सिटी से हमारी जो आशायें थीं, वे सारी अभी अभी पूर्ण नहीं होंगी। इसी लिए हम अभी तक हिन्दू यूनिवर्सिटी का पूरा २ पक्ष समर्थन नहीं कर सके। हमें ऐसा विश्वविद्यालय नहीं चाहिए, जो सरकारी विश्वविद्यालयों की न्याईं १६ आने सरकारी विश्वविद्यालय हो, अभी तक हमें निश्चय पूर्वक नहीं बतलाया गया कि हिन्दूविश्वविद्यालय किस बात में कम सरकारी होगा। क्या प्रबन्ध में, और क्या शिक्षा में सरकार की ज़बरदस्त मुट्ठी हमारे ऊपर रहेगी। इस लिये अभीतक तो पूरा अब हम खुले दिल से डाक्टर सुन्दरलाल के प्रति 'शुभास्ते पन्थानः' नहीं कह सकते—आगे की भगवान् जाने।

दूभर जीवन।

मार्च की १८ तारीख़ की शाम को दिल्ली में हम से एक मित्र मिले और उन्हों ने ठंडी सांस भर के कहा कि—'आज सायंकाल से भारतवासियों का जीवन दूभर हो गया' पूछने पर उन्हों ने उस नये राजनियम की ओर संकेत किया जिस द्वारा भारत सरकार ने प्रबन्ध की सहूलियत के लिये संक्षिप्त न्याय के अधिकार ले लिये हैं। राजनीतिक मामलों में अब सरकार को लम्बे मुक़द्दमे न करने पड़ेंगे, विशेष न्यायालय में ही मामला पेश होकर तय हो जाया करेगा। विशेष न्यायाधीशों को फाँसी तक का अधिकार होगा। जो लोग इस युद्ध से भारत के राजनीतिक लाभों पर विचार करते रहते हैं, और जो लोग गर्मागर्म राजनितिक हलचल किया करते हैं, उन सब को इस समय सावधान हो जाना चाहिये। जो अपना कार्य करने वाली शान्त प्रजा थी, वह जैसे पहले रहती थी, वैसे ही अब रहेगी।

भारत-सेवक-समिति।

हरिद्वार के कुम्भ पर प्रयाग की भारत सेवक समिति के स्वयं सेवक सेवा का काम किया चाहते हैं। इस कार्य के लिये समिति ६०००) इकट्ठा कर रही हैं। २०००) हो चुका है ४०००) की अभी कमी है। इस कार्य में विशेष उत्साह पं० व्यंकटेशनारायणजी तिवारी और पं० कृष्णकान्त मालवीय जी का है। यह समिति जो कार्य करेगी, उस में आर्य्यमात्र को सहायता देनी चाहिये। हरिद्वार के कुम्भ पर तो दश हज़ार स्वयं सेवकों की संख्या भी कम है। इस मेले पर जितनी बड़ी संख्या नारियों की होती है, उतनी और किसी उत्सव पर नहीं होती। और भी लाखों व्यक्ति ऐसे इकट्ठे होते हैं, जिन्हें कई प्रकार की सहायता दी जा सकती है। सेवा समिति के कार्य का हम हृदय से अनुमोदन करते हैं।

कुम्भ की धूमधाम।

कुम्भ मेले की धूमधाम अभी से है। सहस्रों साधु और लाखों नरनारी एकत्र हो रहे हैं। वैदिकधर्म का प्रचार भी खूब हो रहा है। परमात्मा करे, यह मेला आनन्द से बीत जाय।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सेवा-समिति ।

हरिद्वार में कुम्भ का मेला ।

धन और जन के लिए अपील ।

जैसा कि आपको मालूम होगा आगामी १४ अप्रेल या वैशाख अमावस को हरिद्वार में कुम्भ का पर्व पड़ेगा । यह पर्व ऐसा पवित्र समझा जाता है कि कई लाख यात्री एकत्र होते हैं और हरि की पैड़ी पर श्री गंगा जी में स्नान करते हैं इस अवसर पर नासिक के कुम्भ और प्रयाग के माघ मेले से भी अधिक जन - समूह भारत के भिन्न २ भागों से आकर उपस्थित होता है । ऐसे समय में जबकि प्रान्त प्रान्त से भिन्न २ भाषाएं बोलने - वाले बहुसंख्यक लोग हरिद्वार सरीखे एक सुंदर स्थान में एकत्र होते हैं, यह स्वाभाविक ही है कि बहुतसी स्त्रियाँ और बालकों का संग अपने साथियों से छूट जाय, हज़ारों को बड़ी २ कठिनाइयाँ झेलनी पड़ें, और बहुत से लोग धोखेबाज़ी और गिरहकटों द्वारा ठगे जायँ । इसके अतिरिक्त ऐसे मेलों में कभी २ हैज़ा आदिक संक्रामक रोगों का भी प्रकोप हो जाता है । साथ ही यह किसे नहीं मालूम है कि रेलवे स्टेशनों पर गाड़ी पर चढ़ने, उतरने और टिकटों के खरीदने में कैसे २ कष्ट यात्रियों को उठाने पड़ते हैं । यात्रियों के आराम के लिए गवर्नमेंट से जहाँ तक हो सकता है वह उचित प्रबन्ध करती है परन्तु कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत है कि श्रद्धावान् और अनुभव -प्राप्त समाज - सेवकों के रूप में गैर-सरकारी कार्यकर्त्ताओं के सहयोग की बड़ी आवश्यकता है और अधिकारियों और यात्रियों दोनों ही को यह अभीष्ट है ।

सेवा समिति ।

हरिद्वार में इस विशाल जन समूह को साधारण तथा चिकित्सा - सम्बन्धी सहायता देने के उद्देश्य से प्रयागस्थ सेवा - समिति ने ऐसे स्वयं सेवकों का एक दल संगठित करने का विचार किया है जिस में सम्मिलित होनेवाले स्त्री पुरुष समाजसेवा करने के लिए उत्सुक हों ये स्वयं - सेवक (अ) हरिद्वार तथा पास के अन्य स्टेशनों में टिकट आदि खरीदने में यात्रियों की सहायता करेंगे ; (आ) स्नान के घाट पर सुव्यवस्था रखने में मदद देंगे । (इ) बीमारों को चिकित्सा सम्बन्धी सहायता देने के लिए एक निःशुल्क औषधालय खोलेंगे जिसमें २ डाक्टर, शिक्षित दवाइयां, कम्पाउंडर और 'सोशल सर्विस लीग' के सदस्य रहेंगे; (ई) मेले की भीड़ में जो स्त्रियाँ या बालक खो जायेंगे उन्हें उनके सम्बन्धियों तक पहुंचावेंगे । पिछले कार्यके महत्व का कुछ पता इस बात से लग सकता है कि प्रयाग के गत माघ मेले में जिन स्वयंसेवकों ने काम किया था उन्हों ने ३०० स्त्रियों और बच्चों को, जो अपने सम्बन्धियों से छूट गये थे और जिन्हें वे नहीं पा सके थे, ठिकाने पहुंचा दिया ।

स्वयंसेवकों की आवश्यकता ।

इस कार्य के लिए हमें ऐसे २५० स्वयं सेवकों की आवश्यकता है जिनका समाज - सेवा के लिए उत्साह हो और जो शारीरिक कष्ट की परवाह न करके काम करने के लिए तैयार हों । यात्रियों के वृहत् समूह का विचार करते हुए स्वयंसेवकों की उपर्युक्त संख्या अधिक नहीं है । स्थानीय मेलों में जब कि लोग केवल सहस्रों की संख्या में एकत्र होतेहैं, सेवा - समिति ने २०० से अधिक स्वयंसेवकों के साथ कार्य किया है । हमें इस बात में कोई सन्देह नहीं है कुलहिन्दुस्तान में युवक लोग हमारे इस निवेदन पर उत्साहपूर्वक ध्यान देंगे विशेषतः जबकि कितनें ही अनुभवी कार्य - कर्ता पहिले ही सेवा करने का वचन दे चुके है । कार्य ६ अप्रेल को आरम्भ होकर १८ अप्रेल १९१५ को समाप्त होगा ।

चंदे की अपील ।

सर्वसाधारण उदारतापूर्वक जो आर्थिक सहायता देंगे उसीपर हमारे कार्य की सफलता निर्भरहै। अनुमान किया गयाहै कि इस सम्बन्धमें ६०००) का व्यय होगा । इसलिए हम अपने उदार हृदय वासियों से अपील करते हैं कि जिनसे जो कुछ थोड़ा बहुत बन पड़े वे कुम्भमेला सहायक फंड में चन्दा दें जिससे कि दुःखियों की सहायता और रोगग्रस्तों की चिकित्सा की जा सके । हरिद्वार में अपने देश वासियों की सेवा करने का यह बड़ा सुअवसर प्राप्त हुआ है और इस की आवश्यकता भी बड़ी भारी है । यह अपील करते हुए हमें पूरा विश्वास है कि लोग उदारता पूर्वक एवं शीघ्रता के साथ आर्थिक सहायता देने और सेवा करने के लिए कटिबद्ध होंगे ।

निवेदक,

रमाकान्त मालवीय ।

मूलचन्द मालवीय ।

नारायणदास अगरवाल ।

मोहनलाल नेहरू ।

ए० सी० सरकार ।

के० एन० लघाटे ।

वेङ्कटेशनारायण तिवारी ।

हृदयनाथ कुंजरू ।

[नोट—कुल चिट्ठी पत्री और चन्दा पं० वेंकटेशनारायण तिवारी एम० ए० भारत सेवक समिति, प्रयाग, के पास भेजा जाना चाहिए ।]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुम्भप्रचार

समाचार पत्रों की सूचना नुसार रायपुर वाले गुरुकुल के उद्यान में वैदिक धर्म्मप्रचार का कार्य्य ३ चैत्र से आरंभ कर दिया गया, सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान प्रधान श्री लाला मुन्शीराम जी का सुप्रबन्ध उद्यानों को उद्यानों में परिवर्तित करने के लिये प्रसिद्ध है, इस प्रसिद्धि का एक नवपुष्ट प्रमाण यह यज्ञ है जिस की सुगन्ध रायपुर कनखल हरद्वार ज्वालापुर में दूर २ देशों से आये हुए ऋषियों की नासिकारन्ध्रों को आनन्दित करेगा, इस विशेष प्रचार को प्रधान कार्य आर्य्य समाज के आचार्य्य ऋषि दयानन्द का पवित्र बन्धु है इस लिये कुछ भी आश्चर्य नहीं यदि इसके कार्यों में आर्य्य पुरुषों ने उत्साह दिलाया हो और परिणामतः सफलता यदि हो। यदि विस्मय है तो उन आर्य्य-पुरुषों और आर्य्यसमाजों के सम्बन्ध में जिन्होंने अभी तक अपने कर्तव्य को नहीं समझा, ३ चैत्र को श्री पं० कन्हैया लाल जी शास्त्री अध्यापक गुरुकुल कांगड़ी ने अकेले ही कार्य्य निभाया, ४ को प्रातः को आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के योग्य और आदिम उपदेशक श्री पं० पूर्णानन्द जी, परमानन्द, बी ए. ठाकुर प्रवीणसिंह जी पहुंच गए, उधर से श्री स्वामी सर्वदानन्द जी हमारे सौभाग्य से आगये, बस फिर क्या था अमृत की वर्षा होती रही, ५ को प्रातः को श्री स्वामी सर्वदानन्द जी तो चूहड़पुर के उत्सव को सुशोभित करने के लिये चले गये परन्तु पं० विद्यानन्द जी म० श्यामलाल जी भजनीक, म० मथुरा प्रसाद जी भजनीक आगये, इस प्रकार आनन्द मङ्गल हो रहा है, गुरुकुल के महोपाध्याय गण भी इस यज्ञ में आहुतियां डालते हैं श्री महात्मा जी स्वयं भी अपने शरीर की सुध भुला कर अनथक रीति से काम करते हैं, नित्य प्रति गुरुकुल से यहां आते हैं और उपदेश भी देते हैं, गुरुकुल महाविद्यालय विभाग के कुछ ब्रह्मचारी स्वयंसेवक का काम करते हैं। उनकी देखा देखी महोपाध्याय सुधाकर जी एम० ए० के छोटे भाई को स्वयं सेवक बनाकर साधु महात्माओं की बड़ी दूर से स्वागत करते हुए देख कर किस सहृदय का मन हर्ष से आप्लावित नहीं होता होगा, प्रातः काल वृहत् हवन होता है, तत्पश्चात् श्री पं० पूर्णानन्द जी गीता में से कथा सुनाते हैं, चिकित्सालय भी खुल गया है। इस के अध्यक्ष डाक्टर सुन्दरदास जी हैं जो किसी समय आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक पद को भी सुशोभित कर चुके हैं और जिन्हें देहार्थ करने में विशेष रुचि है। कुल वालन्टियर महाशय आ गये हैं। और की आवश्यकता है। श्री जैन अखबार के अध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी के पेटेण्ट अखबारी म० शालिग्राम जी हैं जो अपने प्रबन्ध के लिये प्रसिद्ध हैं, उपस्थिति खाली हो जाती है। किसी २ समय तो बड़ी समाजों के वार्षिकोत्सव स्मरण आजाते हैं गुरुकुल के गायनाध्यापक भी अच्छी सहायता देते हैं धन्य है ऋषि का चण्डी बन में तप। वास्तव में दयानन्दी ध्वजा अब भी फहरा रही है।

निज संवाद-दाता

३ चैत्र को भी उसी समारोह से प्रचार हुआ, आज श्री पं० पूर्णानन्द जी ने आरम्भ किया, उन के पीछे परमानन्द पण्डित विद्यानन्द जी, पं० विश्वनाथ जी विद्यालंकार महोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी तथा महोपाध्याय रामदेव जी ने सारगर्भित और प्रभावशाली भाषण किए, बीच २ में म० मथुराप्रसाद जी तथा म० श्यामलाल जी अपने मनोहर और रसीले भजनों से श्रोतृवृन्द को आनन्दित करते रहे। ६ चैत्र को यथापूर्व प्रातःकाल हवन तथा श्री भगवद्गीता में से क्रम प्राप्त स्थल की श्री पं० पूर्णानन्द जी ने कथा की और उपर्युक्त दो सज्जनों के मधुर भजन हुए, दोपहर पीछे १ बजे के लगभग सभा जम गई, ठाकुर प्रवीणसिंह जी, म० मथुराप्रसाद जी तथा म० श्यामलाल जी ने भजनों द्वारा कार्यवाही आरम्भ की। इस के पश्चात् श्रीमान् पं० पूर्णानन्द जी, श्री स्वामी हितानन्द जी, श्री पं० विद्यानन्द जी के मनोहर भाषण हुए, अन्त में श्री महात्मा जी का अपना व्याख्या[illegible] आप ने यमों की और विशेष कर के अहिंसा [illegible] की जिस उत्तमता से व्याख्या की वह आप ही का हिस्सा है। आज रात्री को भी भजन कीर्त्तन होता रहा। स्वामी जी के काशी—शास्त्रार्थ का दृश्य भजनों द्वारा पेश किया गया।

७ चैत्र को फिर प्रातः हवन के पश्चात् श्री पं० पूर्णानन्द जी ने भगवद्गीता में से कथा बांची, और भजन हुए, मध्यान्ह को भजनों के पश्चात् श्री पं० विद्यानन्द जी ने व्याख्यान दिया, इन के पीछे श्री महात्मा जी ने यमों के साथ नियमों की विस्तृत व्याख्या की, फिर स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी की वक्तृता हुई। रात्रि को नियमानुकूल फिर भजन कीर्त्तन होता रहा।

८ चैत्र को भी प्रातः हवन के पश्चात् श्री पं० विद्यानन्द जी ने कथा की और भजन हुए। मध्यान्ह को भजनों के पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, उपाध्यायों तथा अन्य सज्जनों की बड़ी और स्थिर उपस्थिति में श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी, और परमानन्द के भाषण हुए। तत्पश्चात् श्री महात्मा जी ने बड़े उत्साह से 'आर्य्य-समाज विधर्मियों की दृष्टि में' इस विषय पर बड़ा महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया, ठाकुर प्रवीणसिंह जी के मनोहर भजन के साथ आज मध्यान्ह की कार्य्यवाही समाप्त हुई, रात्रि को फिर भजन कीर्त्तन होता रहा।

आज की कार्य्यवाही में दो बातें वर्णनीय हैं, एक तो यह कि आज श्रोतृगण को ऐसा रस आया कि वह उठने का नाम नहीं लेते थे। यद्यपि उन के विचारों की भली प्रकार पड़ताल की गई। दूसरा विशेष वक्तव्य श्री स्वामी शंकराचार्य जगन्नाथ—मठ के सम्बन्ध में है जिन के पास सायंकाल उपदेशक-मण्डल पहुंचा। वह विरोध और लठबाजी तो कहां रहे जिन की विधर्मियों के हाथों आर्य्यसमाज को आज तक शिकायत रही थी। आज बड़े सत्कार से उपदेशक मंडल को भारतवर्ष के एकमात्र वर्णाश्रमियों के विद्वान् सदाचारी गुरु के साथ बड़े प्रेम भरे शब्दों में वार्त्तालाप का अवसर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अ... करने को मिला। वर्णव्यवस्था के ऊपर जो विचार परिवर्तन हुआ उसने हमें बतला दिया कि दुनिया का प्रवाह किस ओर है।

९ चैत्र की प्रातः यथाविधि अग्निहोत्र के पीछे भजन और कथा हुई। मध्यान्ह को ब्र० बुद्धदेव, श्री पण्डित विद्यानन्द जी तथा श्री पण्डित पूर्णानन्द जी के शिक्षाप्रद सम्भाषण हुए, भजनों का भी म० रामचन्द्र पुणेकर तथा पञ्जाब आर्य्य-प्रतिनिधिसभा के भजनीकों की उपस्थिति के कारण खूब आनन्द रहा। रात्रि को भी भजनकीर्त्तन हुआ।

१० चैत्र की प्रातःकाल अग्निहोत्र के पीछे भजन हुए और फिर यथा नियम कथा हुई। मध्यान्ह को परमानन्द, श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी, तथा श्री महात्मा जी की वक्तृताएं हुईं।

संवाददाता

गुरुकुल को दान

श्रीमान् जी,

मैंने बुढ़िया स्थान में से गुरुकुल के लिए १०) चन्दा इकट्ठा किया था। १०) रुपयों का यों व्यौरा है।

१) श्री रामनारायणदास हकीम मीठा कुआं वाले

१) श्री मंगलराम बलदेवदास रामशरण दास

१) श्री सुखदीलाल भगीरथराम कम्बो
१) श्री नन्दलाल हलवाई
१) श्री काशीराम ऋषिराम हलवाई

५) श्री पं० हरदत्त जी ज्योतिषी

ये दानी सज्जन बूढ़िया स्थान के निवासी ही हैं कृपया इस दान सूची को अन्यों के प्रोत्साहनार्थ सद्धर्म पत्र में प्रकाशित करें।

भवदीय
जयदेव

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र
का
तृतीय वार्षिकोत्सव।

इस शुभ उत्सव पर श्रीपूज्यपाद स्वामी सर्वदानन्द जी महात्मा मुन्शीराम जी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल काङ्गड़ी पं० विद्यानन्द जी, पं० बुद्धदेव जी पं० बालमुकन्द जी के अतिरिक्त बहुत से भजनीक भी पधारे थे।

(१) २७ फरवरी को ३ बजे मध्याह्नोत्तर शहर में बड़ी धूम से नगरकीर्तन आरम्भ हुआ भजनीक महाशय बड़े बाजार व गलियों से सुन्दर और मीठे भजनों द्वारा उपदेशामृतवर्षा करते हुए और शहर के नरनारियों तक वैदिकधर्म का संदेशा पहुंचाते हुये ८ बजे स्थान पर पहुंचे।

(२) २८ की प्रातः को हवनयज्ञ के पश्चात् पं० बुद्धदेव जी ने उपनिषद् की कथा सुनाई और परमात्मा को सर्वव्यापक और कर्मों का फलदाता जतलाते हुये श्रोतागणों की दृष्टि शुभकर्मों की ओर दिलाई तत्पश्चात् स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का व्याख्यान 'अभ्यास' विषय पर हुआ उन्होंने बतलाया कि किसी शुभ कार्य्य में सफलता हो नहीं सकती जबतक कि निरन्तर उस का अभ्यास न किया जाय शास्त्र के प्रमाणों और दृष्टान्तों से भले प्रकार सिद्ध किया कि मनुष्य को उच्च बनने के लिये अभ्यास ही एक बड़ा साधन है इस के पश्चात् पं० बालमुकन्द और पं० विद्यानन्द के व्याख्यान भी धर्म और सदाचार विषय पर बड़े उत्तम हुये जिन का श्रोतागणों पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

(३) प्रथम मार्च को मध्याह्नोत्तर श्री महात्मा जी का व्याख्यान गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की उत्तमता और आवश्यकता पर हुआ जो एक प्रकार की अपील थी उस पर २०००) रुपये के लगभग नकद धन एकत्र हुआ।

(४) दूसरी मार्च को प्रातः नवीन ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ-संस्कार हुआ उत्सव निर्विघ्न आनन्द पूर्वक समाप्त हुआ।

गोपीनाथ
प्रबन्धकर्त्ता, शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सामाजिक समाचार।

आवश्यकीय सूचना—बांदा आर्य्यसमाज ने इस विचार से कि बुन्देलखण्ड प्रान्त में एक संगठन द्वारा प्रचार किया जावे और दूसरी अड़चनों पर भी जो बुन्देलखण्ड प्रान्त में वैदिक-धर्म्म प्रचार में बाधक हैं विचार किया जावे—एक आर्य्य-सम्मेलन ता० १४ व १५ मार्च सं० १५ ई० को मध्यान्ह समय आर्य्यसमाज मन्दिर में अपने वार्षिकोत्सव पर जो १२ से १५ मार्च सन् १९१५ को होआ—करना निश्चय किया। सर्व बुन्देलखण्ड निवासी आर्य्य-सज्जनों से उनका सविनय निवेदन है कि कृपा कर इस शुभ अवसर पर पधार कर अपने धर्म्म उत्साह का परिचय दें।

कुंवर हरप्रसादसिंह वकील

आर्य्यसमाज अमृतसर का वार्षिकोत्सव ता० २३ से २५ अप्रैल तदनुसार ११ से १३ वैशाख को बड़ी धूमधाम से होगा। नगरकीर्तन २३ अप्रैल तथा स्त्री समाज का उत्सव २६—२७ अप्रैल को होगा।

आर्य्यसमाज पटियाला में वीरोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। व्याख्यान तथा कविता इत्यादि पढ़ने के पश्चात् लेखराम मेमोरियल फण्ड के लिये धन एकत्रित किया गया।

शाखा आर्य्यसमाज कलकत्ता का वार्षिकोत्सव २७—२८ फरवरी स० १५ को पं० सत्याचरण शास्त्री जी की अध्यक्षता में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। ज्वालापुर महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदपाठ होता रहा। पं० नरदेव जी शास्त्री आदि विद्वानों के व्याख्यान तथा पं० वासुदेव शर्मा के मनोहर भजन हुये।

आर्य्यसमाज बीवां (फीरोजपुर) का वार्षिकोत्सव ता० २०, २१, २२ फरवरी को बड़ी धूमधाम से मनाया गया वेदप्रचार के लिये अपील पर ५४) एकत्रित हुये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ विज्ञप्ति ॥

सर्व सज्जन धर्मानुरागी महाशयों को विदित हो कि मध्य भारतीय गुरुकुल विद्यालय होशंगाबाद का तृतीय वार्षिक-महोत्सव मि० द्वि० वैशाख शुक्ल १, २, ३ संवत् १९७२ तदनुसार तारीख १५, १६, १७ मई, वार शनि, रवि, सोम को नर्मदा तट पर बड़े समारोह के साथ होगा। जिस में भारत के प्रसिद्ध २ पण्डितों तथा संन्यासियों के उत्तमोत्तम व्याख्यान होंगे अभी से उत्सव के लिये तयारी हो रही हैं अतः सर्व-साधारण से सविनय प्रार्थना है कि उत्सव में अवश्य पधारें।

इस वर्ष दश नवीन ब्रह्मचारी प्रविष्ट किये जायंगे। जिन सज्जनों को अपने बालक प्रविष्ट कराना हो वे प्रार्थना पत्र शीघ्र भेजें। प्रवेश पत्र तथा नियमावली कार्यालय से प्राप्त होगी।

भवदीयः—
सूर्यदत्त शर्म्मा-मुख्याधिष्ठाता
बिहारीलाल मन्त्री-सभा

———

एक सदाचारी योग्य विद्वान् शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण, व्याकरण, साहित्य, गायन, विद्या में निपुण प्रज्ञाचक्षु ब्राह्मण किसी सामाजिक संस्था में वैतनिक कार्य्य करने को उद्यत हैं जिन्हें आवश्यकता हो म० बलराम शर्मा हेडमास्टर आर्य्यसमाज अनाथालय फीरोजपुर से पत्रव्योहार करें।

हमारे पास हिन्दूरक्षिणी सभा कलकत्ता द्वारा एक "अबला की पुकार" शीर्षक लेख छपने के लिये आया है। हम इसे स्थानाभाव से प्रकाशित नहीं कर सकते। इस में अर्जुनलाल जी सेठी (जो इस समय जयपुर की कारागार में हैं) की धर्मपत्नी श्रीमती गुलाब बाई ने धर्म्मात्मा पुरुषों से सहायता के लिये अपील की है। ऐसी दुःख की मारी अबला की सहायता के लिये अपील की है। ऐसी दुःख की मारी अबला की सहायता करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है।

श्रीमान् बम्बई निवासियों को ध्यान देना चाहिये—मोकाम घास बाजार से कौलेश्वरसिंह द्वारा ५५) मोकाम नारायण वाड़ी बम्बई से पण्डित रामसुमेरु उर्फ रामानुजदास के द्वारा दो दफे में पहिली बार २१॥।=) दूसरी बार १०) जुमिला ३१॥।=) आया है। कार्तिक से आज तक और कोई सहायता बम्बई से नहीं आइ।

सूचना—जो बम्बई निवासी महाशय महावीर विजेथुआ जिला सुलतानपुर के पाठशाला के लिये किसी पुरुष को द्रव्य दान दिये हों वे शीघ्र पाठशाले के नाम चिट्ठी भेज कर लिखें कि इतना रुपया मैंने दिया और अपना पता भी साथ ही लिखा करें जिस में रुपया लेने वालों से सभा हिसाब लेने का प्रबन्ध करें। और चिट्ठी भेजने का पता :—

सनातन धर्म वेदविद्यालय महावीर विजेथुआ राजापुर, डाकखाना कादीपुर, जिला सुल्तानपुर पास रामसन्मुख शुक्ल मंत्री सभा।

निवेदक—
मुं० देवीप्रसाद मुख्तार

———

हिन्दू-युवक-सभा देहली में ता० २१-२-१५ को श्रीमान् गोखले की शोकजनक मृत्यु पर प्रस्ताव पास किया गया—जो भारत सेवक-समिति को तथा पत्रों में छपने को भेजा गया।

गुरुकुल विरालसी ज़िला मुजफ्फ़रनगर का दशवां वार्षिकोत्सव वैशाख वदी २, ३, ४ सं० १९७२ तदनुसार १, २, ३, मई से १५ को निश्चित हुआ है।

मोगा के प्रसिद्ध दानी राय-साहब डा० मथुरादास जी इस से पूर्व ५००) आर्य्यसमाज हाफिजाबाद को दान कर चुके हैं। आर्य्य-पुरुष यह सुनकर प्रसन्न होंगे कि अब उन्हों ने दो सहस्र रुपया पुत्री पाठशाला खोलने के लिये दान दिया हैं। और १०) मासिक भी देना स्वीकार किया है।

"आर्य्यसमाज अजमेर का ३२ वां वार्षिकोत्सव प्रथम वैशाख शुक्ला १०, ११, १२ शनि, रवि तथा सोमवार तदनुसार तारीख २४, २५ व २६ अप्रैल सन् १९१५ को बड़ी धूमधाम से होगा, इन्हीं तिथियों में श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधिसभा राजस्थान व मालवा, स्त्री-समाज, दयानन्द अनाथालय अजमेर के भी उत्सव बड़े समारोह से होंगे—अतः सर्व साधु संन्यासी उपदेशक तथा आर्य्य भ्राताओं से प्रार्थना है कि वे उक्त अवसर पर अवश्य पधारने की कृपा करें और अपने आगमन की तिथि से मन्त्री को सूचित करें।"

नोट—"जिस आर्य्यभ्राता को स्वामी मुनीश्वरानन्द जी तथा स्वामी सत्यानन्द जी का पता मालूम हो वह कृपया शीघ्र सूचना दें।"

भवदीयः—
सूर्यकरण शारदा
एम० ए० एल० एल० बी० वकील
मन्त्री आर्य्यसमाज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

छपगया तय्यार होगया छपगया

सचित्र

प्रिन्स बिस्मार्क

अथवा

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

जिस पुस्तक की महीनों से आशा लग रही थी, वह निकल गई। वर्त्तमान जर्मनसाम्राज्य के संस्थापक प्रिंस बिस्मार्क का जीवनचरित एक मनोहर उपन्यास से भी अधिक मनोरंजक और एक नीतिग्रन्थ से भी अधिक शिक्षा प्रद है। इस समय योरुप में जो महायुद्ध होरहा है, उस के कारण समझने होंतो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये।

नैपोलियन बोनापार्ट का जीवनचरित पढ़ने वालों के लिये यह बतलाना व्यर्थ है कि पुस्तक बड़ी ओजस्विनी भाषा में लिखी गई है। चारअतिसुंदर चित्रों ने पुस्तकी शोभा और उपयोगिता को बहुत बढ़ादिया है।

छपाई और बनाव का क्या कहना है? नैपोलियन बोनापार्ट के जीवनचरीत से बढ़ चढ़ कर हैं।

पुस्तक में जर्मनी का लग भग सवासौ साल का इतिहास आगया है। जर्मनी की पहले निर्बल दशा, फ्रेडटिक दिग्रेट के चमत्काक विजय, जर्मनी में, राष्ट्रीयता का अभ्युदय, राज्य क्रान्ति, बिस्मार्क का जन्म शैशव और यौवन, साम्राज्य स्थापना—इन सब इतिहास प्रसिद्ध घटनाओं के मनोरंजक वर्णन के साथ २ चरित नायक के जीवन की अनूठी घटनाओं का पूरा २ वर्णन देखना होतो इस पुस्तक को अवश्य मंगवाइये।

पृष्ठ लग भग दोसौ के। मूल्य केवल १॥)

शीघ्र मङ्गवाइये।

प्रबन्धकर्त्ता

सद्धर्मप्रचारक पत्र गुरुकुल

पोष्ट शामपुर—कांगड़ी जि० बिजनौर

गुरुकुल वृन्दावन पर सम्मति।

कुम्भ के मेले के कारण गुरुकुल में बहुत महन्त पण्डित आदि यात्री खूब आये, पाठकों के अवलोकनार्थ रामानुज सम्प्रदाय के सर्वोच्च गुरु श्री तोताद्रि स्वामी के प्राइवेट सेक्रेटरी तथा सीताराम राजु महाराज के प्रधानाध्यापक श्री प० कृष्णाचार्य शास्त्री की सम्मति जो उन्हों ने गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की परीक्षा ले व गुरुकुल का निरीक्षण कर सम्मति पुस्तक में (संस्कृत में) लिखी है दी जाती है।

सम्मति।

चैत्र कृष्ण ३ सं० १९७१ वि० को हम श्री परम पवित्र वृन्दावन धाम में विद्यमान गुरुकुल विद्यालय को देखने आये। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों की परीक्षा लेकर व इन के व्युत्पत्ति पूर्वक प्रश्नों के उत्तर देने की शैली को देख कर बड़े प्रसन्न हुए। अध्यापकों के विषय-युक्त पाण्डित्य को अनुभव कर पढ़ाने की निपुणता को जान, विद्यार्थियों की प्रीति की परीक्षा कर हम मुक्त कण्ठ से कहते हैं कि यह पाठशाला भारतवर्ष के होने वाले कल्याण की परम साधिका है।

श्रीकृष्णाचार्य

भवदीय—

(उत्तम) हरिदेव शास्त्री

१५-३-१४ गुरुकुल वृन्दावन

वार्षिकोत्सव—आर्य्यसमाज नरवाना (पटियाला राज्य) २-३-४ मार्च को हुआ जिस में उपसभा करनाल की भजनमण्डली तथा उपदेशक और सभा के उपदेशक सम्मिलित हुए और श्री म० मुन्शीराम जी तथा श्री० कृष्ण जी भी सभा पधारे।

नगर की ओर से श्री महात्मा जी का स्वागत बड़ी शान से हुआ और उन्हों ने एक उत्तम व्याख्यान भी दिया और उपदेशकों के भी उत्तम २ व्याख्यान हुए श्री० मंत्री जी की अपील पर ८२०) चन्दा हुआ जिस का बड़ा भाग ६००) ला० धनराम जी ने दिया इस में से २६६) वेद प्रचार के तथा ११७) गुरुकुल के लिये थे श्री मंत्री जी ने पाठशाला की कन्याओं को पारितोषिक वितीर्ण किया और ४ मार्च की रात्रि को भी एक उत्तम व्याख्यान दिया इस के पश्चात् धन्यवाद दिया जाकर और शान्तिपाठ होकर सभा विसर्जन हुई। भवदीय

रामशरण अध्यापक गु०कु०

सभा सद् नरवाना सभा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५)रु० की पुस्तक मंगाने वाले को २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ हो।

सामवेद भाषा भाष्य श्री पं० तुलसीराम कृत सम्पूर्ण मूल्य ४) मात्र सजिल्द ४॥)

पता:—लाला केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बाजाज़ा शहर मेरठ

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)
बरियारपुर
(बनारस स्टेट)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतौल Kamtaul बिहार प्रान्त

आदित्य ग्रन्थमाला
की
नई पुस्तक छप गई है नई पुस्तक

सचित्र प्रिन्स विस्मार्क

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना
इन्द्र वेदालंकार लिखित

विशाल जर्मन साम्राज्य का नाश-कैसे हुआ, महावीर नैपोलियन ने जर्मनी के टुकड़े २ को कैसे पद दलित किया, और फिर किन किन शक्तियों ने उस देश में जागृति उत्पन्न की; इस का इस पुस्तक के पहिले भाग में विस्तार पूर्वक वर्णन है। दूसरे भाग में साहस की मूर्ति, देश-भक्ति के पुतले, नीति के गुरु, और जर्मनी के-जन्म दाता प्रिन्सविस्मार्क का आश्चर्यकारी चरित चित्रित किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल ओजस्विनी है। नैपोलियन का चरित्र जिन्होंने पढ़ा है उन के लिये इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है।

मूल्य १॥)

पता:—प्रबन्धकर्ता, सद्धर्म प्रचारक पत्र गुरु-कुल काङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जिला बिजनौर।

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०
मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रों ने प्रशंसा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० रुफों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा
हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

नया संदेशा! अद्भुत विचार!!

सत्ययुग।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी वसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें इत्यादि विषय पर महत्व पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता
"सत्ययुग"
हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय
मुज़फ़्फ़रपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) इनाम।

श्री बालमीकी रामायण पर।

श्री पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर ने जो श्री बाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवनमेंट पञ्जाब ने २००) रुपये और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रुपयों का इनाम उस के लिये रक्खा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। यह इस बात का पूरा प्रमाण हैं कि यह टीका बहुत उत्तम बनी है, मूल्य बिना जिल्द ५।) सुनहरी अक्षरों की जिल्द वाली ५।।।)

२००) इनाम बाल व्याकरण पर

यह हिन्दी में संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण हैं, इस पर भी गवनमैंट ने २००) रुपया इनाम दिया है, और पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने इसे मिडल के कोर्स में नियत किया है। मूल्य ।=)।।

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवद्गीता पर

पदार्थ अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य सहित, इस पर भी पं० जी को ३००) इनाम मिला है,

मूल्य २)

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन ≡) कठ ।-) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡) ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वत्र ।)।।

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५।।)

उपनिषदों की भूमिका ।)।।
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ।।=)
दूसरा भाग ।।) तीसरा भाग ।।)
चौथा भाग ।।=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)।।
वेद उपदेश पहला भाग ।।।)
दूसरा भाग ।।।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)।।
उपदेश सप्तक ।-)
सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ इस पर भी २००) इनाम मिला है।

मूल्य ।।=)

वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३।।) योग दर्शन ।।।) नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १।)

शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है। ।।)

निरुक्त निघंटु पाठ सहित, निरुक्त हिन्दी भाष्य भी छप गया है। मन्त्रों के पते दिये गए हैं, और कई प्रकार के सूची पत्र दे कर ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी बना दिया गया है, विद्वानों ने इस की बहुत बड़ी प्रशंसा की है, मूल्य ४)

१००) इनाम मनुस्मृति पर

मनुस्मृति की सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

सटीक महा-भारत

छपना आरम्भ हो गया है, टीका और फुटनोट ऐसी छान बीन के साथ लिखे गए हैं, कि इस से प्राचीन आर्यावर्त का सच्चा इतिहास साफ साफ खुल जाता है, वार्षिक मूल्य ३) है।

पताः—

मैनेजर आर्षग्रन्थावली
लाहौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बनाई हुई यह पुस्तक हिन्दी और दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया हैं बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौड़ी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद मजिस्ट्रेट जावद
जिला मान्डसोर
ग्वालियर स्टेट

उत्तम-पुस्तकें

यदि आप को अपनी और अपने देश की आर्थिक तथा राष्ट्रीय व्यवस्था सुधारना है तो इन पुस्तकों को भली प्रकार पढ़िए और पढ़ाइये। अर्थ शास्त्र, प्रो० बालकृष्ण कृत १।।) नवीन भारत १।।) स्वाधीन विचार ।) पद्य मुष्पाजंली ।=) जर्मनी के विधाता या कैसर के साथी ।) युद्ध गल्पाजंली विकाशवाद २) हिन्दी से महाराष्ट्रीय शिक्षक ।)। इन के अतिरिक्त हिन्दी की अन्य अच्छी पुस्तकें भी हमारे यहां मिलती हैं।

$\frac{२९}{४९}$ से $\frac{२०}{८}$ पताः—कृपानारायण कलियुगी पुस्तकालय
कुली बाज़ार—कानपुर

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है

२१ चैत्र सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० ३ अप्रैल सन् १९१५ ई०

संख्या ५१
भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनि ।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है । इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है । महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है ।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा ।

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकुर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ॥)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है. परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।-)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक-इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित । विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है । उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है । मूल्य २)

अर्थशास्त्र—गो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित । इस ग्रन्थ में धन के कमाने और खर्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं । पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है । मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित । इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है । निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है । मूल्य ।=)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा । भारत के नव-युवकों के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है ।

मूल्य =)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये। वा०मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर कांगड़ी

(जि० बिजनौर)

तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला शेर की चरबी १।) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू. पी.

(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

असली हारमोनियम

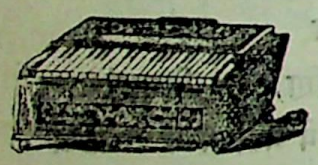

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता

G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

प्रो० सिन्हा गुरुकुल कांगड़ी रचित

वनस्पति शास्त्र	१॥)
रसायन शास्त्र	३॥)
विद्युत शास्त्र	१॥।)

पता:—प्रो० महेशचरणसिन्हा

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥

भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०.

तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,,

छः ,, ,, ,, ,, ,, ।)॥ ,,

सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) **विद्यार्थियों से ३)**

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

नई बात ! ताजी ख़बर!!

काशी से एक नवीन मासिक-पत्रिका निकलने वाली है। इस का नाम मात्र "तरङ्गिणी" होगा रूप-रंग आकार प्रकार काग़ज़ छपाई चित्र आदि सब "सरस्वती" के समान। वार्षिक मूल्य ३) रखा गया है। जो लोग ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तक आर्डर भेज कर ग्राहकों में नाम लिखा देंगे उन से इस वर्ष केवल २॥) रु० मात्र लिया जायगा। आज ही कार्ड लिखिये। देर न कीजिए। नहीं पछताइयेगा।

२६ २०
४८ २

आपका

मैनेजर "तरङ्गिणी"

काशी,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्म-दर्शनम् ।

प्राण के विना सर्व शक्तियां अशक्त हैं। प्राण के चलाने से सब कुछ चलता और प्राण के रुकने से सब कुछ रुकजाता है। और फिर सारे संसार की स्थिति भी महा प्राण पर ही है: इस प्रकार सत्य का अनुभव कर के मानो सर्व इन्द्रिय प्राण की स्तुति करती हैं—

एषो ऽग्नि स्तपत्येष सूर्य एषपर्ज-न्योमघवानेष वायुरेषपृथिवी रयि र्देवः सदसच्चा मृतंचयत् ॥ ५ ॥

"यही (प्राण) तेजस होकर तपता है। (यद्यपि रूप अग्नि का गुण है ओ इस लिए वही तपता है परन्तु यदि प्राण की प्रेरणा न हो तो वह कुछ भी न कर सके) यह प्राण (ही) सूर्य रूप है, यही मेघ रूप हो (बरसता है,) यहा ऐश्वर्यवान है, यही वायु (रूप से वस्तुओं के मिलाने अर्थात् सङ्गति करण का हेतु) है, (अपनी धारण शक्ति से) यह पृथिवी (रूप) है। आनन्द दायक चन्द्रमा के तुल्य स्थूल और सूक्ष्म (सारे जगत में) कारण रूप से विनाश-रहित यह (प्राण) है।"

अराइव रथना औप्राणे सर्व प्रतिष्ठितम् । ऋचोयजूंषि सामानि यज्ञ क्षत्रं ब्रह्मच ॥ ६ ॥

"जिस प्रकार पहिए की हाल में आरा लगे होते हैं, उसी प्रकार यह सारा संसार प्राण में ही स्थित है अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, यज्ञ, क्रिया और ज्ञान भी सब प्राण में ही प्रतिष्ठित हैं।"

त्रयीविद्या अर्थात् ज्ञान, (ऋग्वेद) कर्म (यजुर्वेद) उपासना (सामवेद) प्राण पर ही प्रतिष्ठित हैं। विज्ञान काण्ड को तीनों काण्डों का सार मान कर वेदत्रयी ही कहना बनता है। इन का आधार एक मात्र प्राण ही है। जब जब सृष्टि होती है तब तब वेदों को प्रकाश तथा जब सृष्टिलय हो जाती है अर्थात् प्रलय होता है उस समय वेदों की स्थिति उस महाप्राण (परमात्मा) में ही रहती है। सारे यज्ञों का निर्भर वेद पर है और वह वेद महाप्राण से प्रादुर्भूत हुए, इस लिए यज्ञ का भी आधार वही है। प्रकृति में हो रहे अनन्त यज्ञों के अतिरिक्त जिन यज्ञों का विधान जीवात्मा करता है उनका निर्भर भी प्राण पर ही है। ब्रह्मयज्ञ का तो विशेष अङ्ग प्राण-विद्या ही है। न केवल यही परन्तु संसार में जितना ज्ञान और जितनी भी क्रिया है उन सब की स्थिति भी प्राण पर निर्भर है।

सारांश यह कि सारी सृष्टि का रक्षक प्राण ही है। माता के गर्भ में जब कि बहार से कोई भी वस्तु अन्दर पहुंच नहीं सक्ती, जब अन्न का प्रवेश नहीं हो सक्ता उस समय प्राण ही गर्भ में स्थित वस्तु की रक्षा करता है। फिर जिस समय पूर्व-जन्म के शुभाशुभ कर्मों को स्मरण कर के जीवात्मा अनुताप की अग्नि में जलता हुआ क्षमा मांगता है, और गर्भ की पीड़ा से छुटकारा पाने की याचना करता है, उस समय भी प्राण ही उसे धक्का देकर बाहर निकालते हैं। जिस प्राण से इस प्रकार की रक्षा प्राणधारी मात्र प्राप्त करते हैं उसी की रक्षा के लिए फिर वे खाते, पीते, चलते, फिरते, तथा सर्व प्रकार की क्रियाएं करते हैं, क्योंकि उसी के प्रतिष्ठित रहने से प्राणी की प्रतिष्ठा है—

प्रजा पति श्चरसिगर्भे त्वमेव प्रति जायसे । तुभ्यं प्राण ! प्रजास्त्विमा वलिंहरन्तिय: प्राणै: प्रतिष्ठसि ॥ ७ ॥

"हे प्राण ! तूही उत्पन्न हुई सृष्टि का रक्षक बना, माता के गर्भ में स्थित बालक में विचरता, पुनः उस से उत्पन्न होता है। यह सारी प्रजा तेरी ही रक्षा के लिए अन्न खाती है जिस से तू प्रतिष्ठित रहे।"

देवानामसि वन्हितम: पितृणा प्रथमा स्वधा । ऋषीणं चरितं सत्यम-थर्वाङ्गिरसामसि ॥ ८ ॥

देवों में तू 'वन्हितम" है, पित्रियों में तू प्रथम "स्वधा" है, विज्ञानी मन्त्रद्रष्टा ऋषियों में सत्याचरण तूही है।,,

व्यवहार के देवता हों वा परमार्थ के, पंचभूत और उन के कार्य हों वा आत्मा और उन में भी देव, इन सब को ठीक प्रकार से जीवन प्रदान करने वाले प्राण ही हैं। प्राण के विना किसी भी देव की गति नहीं हो सक्ती। इन सब देवों के व्यवहार प्राण द्वारा ही सिद्ध होते हैं। अग्नि को देवों में वन्हि कहा है क्योंकि सब व्यवहार के देवता जल, पृथिवी, सूर्यादि को उन की जीवन क्रिया का भाग वह पहुंचाता, परन्तु प्राण उससे भी बढ़कर सर्व देवों का आधार है। अग्नि द्वारा तो देवों की वृद्धी होती है परन्तु प्राण के विना वे जीवित ही नहीं रह सके; इस लिए प्राण का सर्वोत्तम नाम वन्हितम है।

फिर पितृयों अर्थात पालकों में "स्वधा" स्वधर्म प्राण ही है। पालक किसी प्रकार के भी हों उन का स्वधर्म प्राण ही है; और वह साधारण स्वधर्म नहीं अत्युत प्रथम, सब से बढ़कर स्वधर्म प्राण ही है। जिसके प्राण वश में नहीं उस में स्वात्मालम्ब भी नहीं। पिता माता, आचार्य कोई भी सन्तानों का यथावत पालन तथा रक्षण नहीं कर सक्ते जब तक कि वे स्वधर्म में स्थित न हों। जो स्वधर्म में स्वयं स्थित नहीं वह दूसरों की स्थिति का साधन नहीं हो सक्ता।

संसार सदाचार पर ही अवलम्बत है। सदाचार एक धुरा है जिस पर संसार चक्रचल रहा है। क्या जड़ क्या चेतन, सब ही जगत में आचार संगठन मुख्य है। परन्तु उस सदाचार की स्थिरता के लिए उस के भी रक्षकों की अवश्यकता है। संसार में ज्ञानी कर्मकाण्डी उपासक-सब की ही आवश्यकता है; और इन तीनों परीक्षाओं में से सब को ही गुज़रना पड़ता है। परन्तु विना विज्ञान की मार्ग दर्शकता के संसार चक्र से मनुष्य की मुक्ति नहीं होती। इस लिए विज्ञानी तत्व दर्शी ऋषियों पर ही सांसारिक धर्मों की स्थिति निर्भर है। परन्तु उन तत्वदर्शी विज्ञानी ऋषियों का आधार भी तो प्राण ही है। वे अथर्वाङ्गिरस विज्ञानी महात्मा भीतो प्राण को वश में कर के ही निर्बीज समाधि द्वारा कैवल्य को प्राप्त होते हैं। तब प्राणसे बढ़कर और कौनसी शक्ति हो सकी है। हे प्राण! इस लिए, हम सर्व देव तुम्हें बारम्बार नमस्कार करते हैं

शमित्योऽम् ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुलोद्यान में स्वागत

१

स्वागत हो सज्जन गण! सब का, मन में प्रेम अनोखा हो।
धर्मलता फैले चहुं दिशमें, शान्तरूपी फल चोखा हो॥
गुरुकुल गंगा के शुभ तट पर, वैरानल सब बुझ जावे।
मन्द पवन का शीतल झोंका, चित के दुख को बिनसावे॥

२

आओ भाई! घूम घाम कर ज़रा दृश्य इन दिखलावें
गुरुकुलरूपी नन्दनवन में घड़ी एक दो सुख पावें।
उत्सव का शुभ लगा ठाठ, चहुं ओर बसेरे छाये हैं
देखनहारे नन्दनवन के देश देश से आये हैं।

३

सुन्दर विद्यालय की क्यारी प्यारी क्या मन मोहनि है?
नयनों को हरसाने हारी लोकदुलारी सोहनि है।
अध्यापकमाली मतिशाली अतुल यत्नमय जल डालें
कुलरूपी द्रुमनाला को वे तन मन धन से नित पालें।

४

ब्रह्मचारिगण पीला बाना पहिन दिसा विकसाते हैं
शुभ वसन्त के सरस फूल से नन्दन में लहराते हैं।
दूर दूर से भरतुल्य जनता एकतान यहां आई
धर्मवायु ने दिल में से सब दुःख वेदना बिनसाई।

५

अहो! यहां यह उत्सवमण्डप पुष्पगेह सा छाया है
सुनो किसी गायकशकुन्त ने राग रसीला गाया है
अहो! अहो! यह भला किसी ने सुधासार बरसाया है
यतिवर पण्डित कोकिल गण ने शुभ उपदेश सुनाया है।

६

प्रेम सना स्वागत यह भाई गुरुकुल का मत बिसराओ
भेद खेद को दूर नसाओ, एक चित्त सब हो जाओ
विद्यामधु का पान करो नित, नयन युगल को सफलाओ
नन्दनवन की सुरभिवात का जीवनदायी फल पाओ।

रसिक

———

मेले के हेडथ अफसरों से प्रार्थना

मैंने कई जगह देखा है कि बड़े २ मेलों में

(१) (अ) पेखाने पेशाब घर अलहदा २ नहीं होते, (आ) इन की भंगी लोग इस कारण साफ नहीं रखते कि जो कोई इस में जावेगा—उस से पैसा लेकर एक जगह साफ कर देंगे या पैसा नहीं मिलेगा तो वैसे ही पड़ा रहने देंगे इस लिए अधिकारी या कुछ स्वयं सेवकों का कर्तव्य है कि दिन में प्रत्येक की कई बेर कानिडक्टिल वा सफाई के मेट से या स्वयं साफ रहने की जांच कर लिया करें—(३) प्रायः सबही पेखानों में भी सिर्फ चारों तरफ ओट कर के गड्ढा खोद दिया जाता है एक पेखाने से दूसरे पेखाने के बीच में कोई आड़ (ओट) नहीं रहती इस से बड़ी लज्जा वो तकलीफ होती है इस का भी प्रबन्ध होना चाहिए (ई) जहां तक हो सके मैले के ढेर जला कर गहरे गड्ढा दिए जावें।

(२) ऐसा प्रबन्ध हो कि अव्वल तो रास्तों में या ऐसी जगह जहां सफाई का प्रबन्ध न हो लोग खराब न कर सकें खराब करने से पहले रास्ते का पहरेदार उन को मना कर दे यह नहीं कि पहले तो मना न करे और देखता रहे किन्तु बाद में पकड़ ले—और जो आदमी इस जुर्म में पकड़ जायं उन का फैसला निकट ही की किसी मेले की अदालत में उसी दिन या जितना जल्दी सम्भव हो कर दिया जावे—"फैसला २-३ दिन में होगा तब तक ठहरे रहना पड़ेगा हमारा हरज होगा परदेश से आवेंगे तो किराये में खर्च होगा काम लुटेगा इस से" पकड़ने वाले को कुछ दे कर राजी कर लें यह तरीका बहुत दुःखदायी है—इस से झूठे अपराधी भी लाचवश बनाये जाते हैं—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३) सफाई व आरोग्यता सम्बन्धी तथा मेले के प्रबन्ध सम्बन्धी विज्ञापन बांटे जायं या लागत मात्र मूल्य पर बेचे जायं—इस के वितीर्ण का प्रबन्ध जहां मेला हो कर लिया जावे वहां ही रहना चाहिए।

(४) कुओं की निगरानी रहे कि उस में कोई काला बर्तन न फांसे मेले से पहले दवा डाल कर सब की सफाई तल का कीचड़ निकलवा कर स्याही करदी जावे।

(५) भोजन की सामग्री आटा, घी तेल पकवान वगैरः स्वच्छ वो साफ रहें—प्रायः आटा सड़े गले गेहूं का व घी में चरबी, तेल में केडका तेल मिला रहता है इन पदार्थों की अच्छी तरह जांच होती रहे—ख़राब बेचने वाले को दण्ड दिया जावे।

(६) उपरोक्त शिकायतों में से किसी की भी मामूली शिकायत चिट्ठी द्वारा आप से एन मुतअल्लिक़ से की जावे—और एक आदमी की चन्द शिकायत आने पर जांच की जावे और किसी की शिकायत यानी शिकायत करने वाले को साबित न हो तो उसे कुछ दंड न दिया जावे—क्योंकि मेलों में मामूली तौर से १० आदमियों को शिकायत का मौका मिलने पर १ आदमी शिकायत करता है।

(७) दुकानदारों के लिए नियम होना चाहिए कि जो दुकानदार घी का सौदा बेचें वह तेल का न बेचें, और जो तेल का बेचें वह घी का न बेचें यानी घी वा तेल दोनों से बना हुआ पकवान न बेचें—इस से उस उस को झूंठ बोलने का कम मौका होगा—दोयम ऐसे पकवान बेचने वालों को चाहिए कि प्रत्येक अपनी दूकान पर-१-१ साइन बोर्ड रक्खे जिस से ज्ञात हो कि वह घी का वा तेल का या कैडके तेल का सौदा बेचता है।

(८) प्रत्येक दुकान पर ग्राहकों को दीखता हुआ दूकान का नम्बर होना चाहिए जिस से शिकायत करने में आसानी हो:—

प्रायः बीमारी फैलाने का मुख्य कारण भोजय सामग्री का मेल जोल होता है—

निवेदक—

बन्शीधर बुलन्दशहर

सद्धर्म प्रचारक

ऋषियों का गम्भीर नाद

अन्धकार ही अन्धकार है। निराशा का भयानक विस्तार है। थोड़ी सी आशा की रेखा दीखती है—वह अन्धकार को और भयानक किए देती है। देश की इस भयावनी दशा में—जाति की इस गहरी विपत्ति में—भारतवासी चारों ओर भुजायें फैलाते हैं, और किंकर्तव्यता विमूढ़ हो कर बचाव के साधन ढूंढ रहे हैं। कई प्रकार की बत्तियां जलाई जाती हैं। कोई कांग्रेस की बत्ती रोशन कर रहा है, तो कोई व्यापार के दिए जलाने का यत्न कर रहा है। परन्तु वायु का सवेग झोंका आता है, और बत्तियों को बुझा कर चला जाता है। कोई अग्नि-शिखा रहने नहीं पाती। यत्न होते हैं, फिर भी अंधेरा ही अंधेरा रहता है। जितनी भी ज्योतियां उपजाई जाती हैं, वायु का वेग उतना ही बढ़ता जाता है। वह वायु अविद्या है।

अविद्या भारतवर्ष का रोग है। वही इस देश का घातक विष है। इटली के एक राजनीतिक नेता ने देश सेवा में अपने जीवन का उत्तम भाग व्यय किया फिर भी उसे सफलता न हुई। तब उस ने कहा था कि जाति की शिक्षा के बिना उसे उठाने का यत्न करना पत्थर के साथ सिर फोड़ने के समान है। यह बड़ी गहरी सचाई है। तभी तो हमारे शास्त्रों में विद्या को मोक्ष का साधन कहा है। आध्यात्मिक, आधि-दैवत और आधि-भौतिक क्लेशों से बचने का एक मात्र उपाय अविद्या है। 'विद्या-विहीन पशुः' जो विद्या से रहित है, वह पशु के समान है।

भारत की दशा पर दृष्टि डालिए यह सिद्धान्त और भी स्पष्ट हो जाएगा। बेचारे धर्म प्रचारकों के गले व्याख्यान देते देते थक जाते हैं, राजनीतिक कार्य-कर्ता अतिश्रम से घिस कर अकाल मृत्यु की गाल में चले जाते हैं, व्यापार के जगने की इच्छा रखने वाले दिवाले निकाल निकाल कर बेघर बार हो रहे हैं—सारांश यह कि जो भी मनुष्य देश का कोई बड़ा कार्य आरम्भ करता है—वही निष्फल यत्न और निराश हो कर बैठ जाता है। इतने स्वार्थ त्याग—इतने पवित्र जीवन—आते हैं किन्तु अपना नाम मात्र छोड़ कर चले जाते हैं। मृत्यु शय्या पर उन्हें कोई अधिक सन्तोष नहीं होता कि उन्हों ने देश का परिणामी उपकार किया है।

हमारे देश सेवकों की दशा वही होरही है जो ऊसर भूमि में खेती करने वालों की होती है। वे बेचारे कड़ी धूपों में हल चलाते हैं, दिन रात थकते हैं, लहू और पसीने को एक कर देते हैं, थोड़ा खा कर अधिक काम करते हैं, तो भी अंकुर नहीं उपजता, उपज भी जाय तो पत्ते नहीं फूटते, पत्ते भी फूट पड़ें तो शीघ्र ही झुलस जाते हैं। हमारे देश सेवकों की यही दशा है।

इस दशा का कारण क्या है? कारण यही है कि इस भूमि में उपजाने का गुण अन्तर्हित होगया है। गुण का सर्वथा अभाव कहना अशुद्ध कथन होगा। उपजाने की शक्ति भारतवर्ष में विद्यमान है किन्तु तिरोहित दशा में। वह उपजाने की शक्ति कैसे आवे? सारे विचारक एक स्वर हो कर कहते हैं कि "शिक्षा द्वारा"। हमारी सभायें खिलवाड़ मात्र हैं, हमारे व्याख्यान केवल शान के लिए हैं, हमारे चन्दे केवल व्यर्थ के फन्दे हैं, जब तक देश को "विद्या" और "शिक्षा" द्वारा उपजाऊ नहीं किया जाता। विद्या का अभाव ही देश की उन्नति का बाधक है। सर्व-साधारण के सुशिक्षित न होने से ही देश सेवकों के सारे यत्न व्यर्थ जाते हैं।

हरएक व्यक्ति चार आश्रमों में से गुज़रती है। बाल्य, यौवन, प्रौढ़ता और वृद्धता। इन्हीं अवस्थाओं को शास्त्रकारों ने कर्त्तव्य की दृष्टि से ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वान प्रस्थ और सन्यास इन नामों से पुकारा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यक्ति की भांती जातियों के भी चार ही आश्रम होते हैं। चार आश्रमों का क्रम ठीक होने पर ही जातियां पूरे यौवन को पहुंच कर सृष्टि नियम के अनुसार वृद्धता को प्राप्त हो जाती है। आर्य्य-जाति का इस समय पुनर्जन्म है। एक बार सन्यास और मृत प्राय हो कर वह अब जागी है। इस दूसरे शैशव में आवश्यक है कि वह पूरा ब्रह्मचर्य रक्खे। देश भर में शिक्षा प्रचार और आचार-सुधार का कार्य्य इतने ज़ोर शोर से किया जाय कि भावी-गृहस्थ की तय्यारी ठीक प्रकार से हो सके। स्वाधीन शासन और पूर्ण सम्पत्ति का समय जातियों के लिए गृहस्थ के समान है। जिस जाति ने ब्रह्मचर्य की अवस्था ठीक तरह नहीं रक्खी, उस का गृहस्थ सुख-युक्त नहीं हो सकता। इस समय हमारे देश में धार्मिक सामाजिक और राजनीतिक सब प्रकार की उन्नति के लिए आवश्यक है कि पहले शिक्षा और विद्या का प्रचार किया जाय। विद्या और शिक्षा की शक्ति ऐसी अनूठी शक्ति है कि संसार का कोई विघ्न उस के वेग के साम्हने नहीं ठहर सकता। जो लोग शिक्षित हैं, उन की आंखें बलात्कार से बन्द नहीं की जा सकतीं। शिक्षा मनुष्य के ज्ञान नयनों को उघार ही देता है इस लिए **शिक्षा की मांग देश की सब से बड़ी मांग है।**

शिक्षा चाहिये पर वह कैसी हो? सोए हुए को जगाने के लिए दवा अवश्य देना चाहिए, किन्तु ऐसी मद वाली दवा आवश्यकता नहीं जो एक बार आंखें तो खोलदे, पर साथ ही पीने वाले को मस्ती भी चढ़ा दे। शिक्षा ठीक ढंग की होनी चाहिए। उस का असर जगाने वाला हो न कि मद चढ़ाने वाला। जब हमारे देश में पहले शिक्षा के लिए जागृति उत्पन्न हुई तो देश वासियों के सन्मुख मद चढ़ाने वाले औषध की ही बोतल रखी गई। पहले पहल अङ्गरेज़ी शिक्षा ही सामने आई। सरकार ने स्वार्थ बुद्धि से और प्रजा ने अज्ञान बुद्धि से अङ्गरेज़ी शिक्षा के प्रचार में सिर तोड़ परिश्रम कर दिया। शिक्षा फैलने लगी—और साथ ही इस शिक्षा से जागी हुई भारतीय प्रजा मद से मस्त होने लगी। औषध जहां एक नींद का प्रतीकार करने लगी वहां साथ ही साथ जातीय अभिमान, आत्मविश्वास और आत्मीयता के प्राण भी चूसने लगी। जो अमृत समझा गया था, वह छुपा हुआ मद्य निकला। जो आखों वाले थे, वे इस दृश्य को देख कर घबरा उठे और लगे असल औषध को ढूंढने। उस भयंकर उत्सुकता के समय में हिमालय की गम्भीर कन्दराओं में से प्राचीन

ऋषियों का एक नाद

सुनाई दिया, जिसने भूले भटके भारत-वासियों की आंखें खोल दीं। ऋषियों का नाद क्या था, जाति के लिये अमृत की वर्षा थी। उस नाद ने उन्हें यही बताया कि—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः
स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

इस पवित्र भारत-भूमि में उत्पन्न हुए ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों से पृथिवी भर के सब मनुष्य अपना अपना चरित्र सीखें।

इस नाद के सुनते ही देश के विचारकों की आखें खुलीं। हमें दुनिया के शिष्य नहीं गुरु हैं। हमें सब कुछ लेना ही नहीं हमारे पास भी कुछ है। हम असभ्य नहीं, हमारे यहां भी सभ्यता के चिन्ह हैं। उन्हें पता लगा कि हम इतने तुच्छ नहीं जितना तुच्छ हम अपने आप को समझे हुए हैं। यही ऋषियों का नाद था, जिस ने देश को आत्म-ज्ञान का अमृत पिला दिया। शिक्षा और आत्म-ज्ञान—ये दो ही साधन हैं जो भारतवर्ष को इस गिरी हुई दशा से निकाल सकते हैं। जो शिक्षा आत्मज्ञान नहीं कराती और आत्माभिमान नहीं सिखाती वह मादक औषध के समान है। देश का सब से अधिक उपकारक वह व्यक्ति है जो आत्मज्ञान कराने वाली, और आत्माभिमान पैदा करने वाली शिक्षा का देश में प्रचार करता है, भारत के लिये सब से बड़ी हितकारिणी संस्था वह है जो इस सच्चे अमृत का पान कराने वाला हो।

क्या हमें यह अधिक विस्तार से बताने की आवश्यकता है कि वह संस्था—वह अमृत पिलाने वाली संस्था—

गुरुकुल है।

गुरुकुल शिक्षा देता है--परन्तु कैसी? जो आत्म-ज्ञान कराती है, जो भारत पुत्रों के साम्हने भारत के अनूठे रत्नों का भण्डार खोल कर रख देती है, जो वेद का ज्ञान करा कर सच्चा आत्मबोध करा देती है, जो अन्य देशों की पुस्तकों द्वारा हमारे गले में डाली हुई मानसिक दासता के फन्दों को काट डालती है और फिर शिक्षा भी है। दर्शन, साहित्य, विज्ञान, विदेशी भाषा आदि जो साधारण शिक्षा के आवश्यक अंग हैं वे भी छूटने नहीं पाते। तभी हमारा कथन है कि गुरुकुल की संस्था भारतवर्ष के लिये सब से अधिक उपयोगिनी संस्था है। शायद इस बात को सुन कर कई लोग कह देंगे कि यह हमारा संकुचित विचार है, और कई लोग कह देंगे यह आत्मप्रशंसा है। परन्तु हमारा जो विश्वास है, वह यही है, चाहे कहने वाले कुछ ही कहें।

क्या देश निर्धन है

नगर में एक पाठशाला खुलने वाली है। साल भर चन्दे मांग २ कर थके हुए आर्य समाज के मन्त्री महाशय कर्तव्य वश फिर एक बार झोली हाथ में पकड़ कर मांगने के लिये चल देते हैं। एक सेठ जी के दरवाज़े पर पहुंचते हैं--और पाठशाला की बात करते हैं। सूना सा मुंह बना कर सेठ जी फ़रमाते हैं----"लाला जी! क्या करूं, इस साल व्यापार बड़ा मन्दा है। घर में रुपया नहीं आता है। आप का काम तो अच्छा है, पर क्या करूं।" इतनी भूमिका के पीछे अंटी में से निकाल कर दो रुपये मेज़ पर धर देते हैं।

थोड़े दिन के पीछे गुरुकुल का डेपुटेशन पहुंचा। मन्त्री जी को फिर साथ चलना पड़ा। उन्हीं सेठ जी का दरवाज़ा खटखटाया गया। सेठ जी के आदमी ने उन्हें जा कर डेपुटेशन की सूचना दी। सेठ जी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुनते ही झटपट आन्तःपुर में चले गये। नौकर ने बाहिर आकर कह दिया कि 'सेठ जी कहीं बाहिर गये हुए हैं, थोड़ी देर में आयंगे' डेपुटेशन वाले भी आर्य्यसमाजी ठहरे, धैर्य छोड़ना जानते ही नहीं वहीं पर डट गये। सेठ जी बार बार पूछने लगे कि अभी वे लोग गये या नहीं। नौकर बेचारा नहीं नहीं कहता थक गया। आखिर सेठ जी भी पूछते पूछते थक गये। बाहिर आये, दस बीस बहाने किये और ५) देकर डेपुटेशन को टरका दिया।

दो दिन पीछे समाज के मन्त्री जी गुरुकुल के उत्सव के लिये चल दिए। उत्सव में एक दिन का विलम्ब था, इस लिये हरिद्वार ठहर गये और इधर घूमते घामते एक महन्त जी के अखाड़े पर पहुंचे। अन्दर गये तो देखते क्या हैं कि वे ही सेठ जी वहां भी विराजमान हैं, और गुरु जी के सामने भेंट रख रहे हैं। एक थाल में कुछ मिठाई है, और मिठाई पर चमकती हुई मोहरें धरी हुई हैं। महन्त जी ने थाल में से मोहरें उठा उठा कर अपने सन्दूक में डालनी प्रारम्भ कीं। मन्त्री जी गिनते गये संख्या पूरी सौ तक पहुंची। मन्त्री आश्चर्यित हुआ—वह व्यापार की मन्दी कहां गई? ये मोहरें कहां से आगई? सेठ जी उठ कर आगे चले—मन्त्री जी भी कौतूहल वश पीछे २ चले। सेठ जी दूसरे महन्त के यहां पहुंचे, उतनी ही मोहरों का थाल भेंट किया। उस दिन सेठ जी पांच अखाड़ों में गये और सब स्थानों पर इतनी २ भेंट की। बेचारा मन्त्री आश्चर्यित हुआ।

यह दृश्य झूठा नहीं—बिल्कुल सच्चा है। केवल नामों का उल्लेख नहीं किया गया। क्या फिर भी कोई भारत वासी कह सकता है, कि देश में धन नहीं है। जो लोग कहते हैं कि देश में धन नहीं है वे हरिद्वार आयें और देखें कि यहां पहले ही निर्धन भारतवर्ष किस प्रकार लुट रहा है? गाढ़े पसीने की कमाई किस प्रकार अनुत्पादक भूमि में बखेरी जा रही है? स्वर्ण भूमि का स्वर्ण कैसे गन्दे गढ़ों में डाला जा रहा है। कम से कम एक विदेशी कुम्भ के मेले पर आकर कभी न कहेगा कि भारतवर्ष निर्धन है जो वैभव राजाओं को नसीब नहीं, वह यहां फकीरों के पास है। ऐसे बहुत से नांगे महात्मा दृष्टि गोचर होते हैं जिन की लंगोटियों कीतड़ागियां सोने की बनी हुई हैं। एक एक महन्त पर दस दस हाथी हैं, जिन पर चांदी के हौदे और रेशमी झालरें शोभा पा रही हैं। फिर उन महन्तों के पेट भरने वाले सेठों का तो कहना ही क्या है। हरिद्वार में आकर उन की अंटी से तो मानो लक्ष्मी उछले पड़ती है?

क्या देश की दुर्दशा का कहीं ठिकाना है?

संसार की गति

बर्नाला आर्य्यसमाज का उत्सव

आज बर्नाला का नाम आर्य्यमात्र की जिह्वा पर है। यह वही ग्राम है जिस में म० रौनकराम और म० विश्वम्भरदत्त पर मुकद्दमा चलाया जा रहा है। आर्य्यसमाज इस मुकद्दमे के कारण कई प्रकार से पटियाला रियासत का अनुगृहीत है। रियासत ने आर्य्य-पुरुषों को अपना धर्म प्रेम और धैर्य दिखाने का अवसर दिया है, यह कुछ कम उपकार नहीं है। एक दूसरा उपकार भी हम नहीं भुला सकते। इस मुकद्दमे से पूर्व बर्नाला नगर में वैदिकधर्म का सन्देश बहुत अच्छी तरह नहीं पहुंच सका था। अब क्या कहना है? मुकद्दमे का होना स्वयं ही आर्य्यसमाज का विज्ञापन था, फिर म० वज़ीरचन्द्र जी का वहां रहते हुए धर्मोपदेश में सदा तत्पर रहना इस अभियोग के बिना कैसे सम्भव था। इन सारे उपकारों का स्मरण हो आता है, जब हम बर्नाला आर्य्यसमाज के वार्षिकोत्सव का समाचार पढ़ते हैं। वार्षिकोत्सव २०, २१, २२ मार्च को हुआ। उत्सव से पहले वहां की पुलिस ने सिर तोड़ कोशिश की कि किसी प्रकार उसे रुका दिया जाय। वहां के पुलिस इन्स्पेक्टर सरदार इन्द्रसिंह ने जो जो म० रौनकराम आदि के विरुद्ध गवाही भी दे चुके हैं, नाजिमसाहिब से कहा कि उत्सव से शान्ति भङ्ग होजाने का भय है इस लिए उसे रोक दिया जाय, या प्रधान और मन्त्री की ज़मानत ली जाय। आज्ञा भी निकल गई कि प्रधान और मन्त्री पांच २ सौ की ज़मानतें दाखिल करें। तब समाज के प्रधान म० पृथ्वीचन्द्र जी स्वयं नाज़िम साहिब से मिले, और मामला तय किया। किसी प्रकार की ज़मानत नहीं ली गई, प्रत्युत पुलिस के इस व्यवहार से सामाजिक पुरुषों का उत्साह और भी बढ़ गया। उत्सव बड़ी शान से हुआ, पण्डित जगन्नाथ जी निरुक्त रत्न, पं० हरदयालु, और पं धनीराम जी आदि के व्याख्यानों का बड़ा प्रभाव हुआ। सब के अन्त में बर्नाला के धर्म महारथी म० वज़ीरचन्द्र का मधुरभाषण हुआ, जिस से श्रोताओं की आंखें और कलेजे इकट्ठे ही भीग गए। सारांश यह कि बर्नाले में वैदिक धर्म की पताका बल पूर्वक फहरा गई और इस कृत-कार्य्यता के लिए धन्यवाद किसे का करें? सब से पहले परमपिता जगदीश्वर का और उन से नीचे पटियाला रियासत की पुलिस का।

दिल्ली की पुलिस

दिल्ली की पुलिस का घबराना बजा है। भारत के वायसराय पर कोई नासमझ धूर्त बम् फेंकता है, भारत साम्राज्य का पुर्ज़ा २ हिल जाता है, पर दिल्ली की पुलिस बम् फेंकने वाले का पता नहीं लगा सकती। फिर दो साल पीछे किसी प्रकार दिल्ली में बम् गिरता है, और पुलिस असली अपराधी पर अंगुली नहीं रख सकती। इस पर भी दिल्ली की पुलिस न घबराये तो क्या करे? अभ्युदय में म० सुन्दरलाल ने एक अद्भुत घटना लिखी है। म० रासबिहारी शुक्ल दिल्ली आकर ठहरे वहां की पुलिस ने समझ लिया कि आप म० रासबिहारी बोस है। थानेदार और पुलिस ने थोड़ी ही देर में आप को आ दबोचा। खैर तो यह हुई कि शीघ्र ही पुलिस का संतोष हो गया नहीं तो शायद सन्देह में ही शुक्ल जी को दो चार दिन बड़ा घर देखना पड़ता। दिल्ली की पुलिस का हमें स्वयं भी कुछ अनुभव है। हम जब भी किसी काम पर दिल्ली जाकर लौट आते हैं, उस के दो तीन दिन पीछे सद्धर्मप्रचारक प्रेस में पहुंच कर कोई न कोई छड़ीदार सफ़ेद पोश आकर पूछते हैं 'क्यों जी आज क्या पण्डत इन्दर चन्दर का व्याख्यान होगा' क्या खबरदारी है?

हमारी छुट्टी बन्द

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्म्मप्रचारक एक सप्ताह की छुट्टी लिया करता था। इस बार छुट्टियां खा खा कर प्रचारक को अजीर्ण होगया है, इस लिये किसी अंक का अवकाश न होगा।

सम्पादक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ आप बीती कुछ जग बीती।

(५७)

रत जगा कर के मैं पधियाने पहुंचा था, इस लिए भोजन करके लेट गया। केवल कोपीन धारण किये एक नंगा जाट भादों की धूप में घास काट कर लाया था घास का गट्ठर उतार कर विश्राम के लिये ब्रह्मचारी जी के पास बैठ गया। ब्रह्मचारी जी का पहले परिचित मालूम होता था। ब्रह्मचारी जी उसे परमेश्वर का अस्तित्व समझाने लगे। उसने कुछ बे ढब सा उत्तर दिया; ब्रह्मचारी जी बोले—"क्या प्राचीन शास्त्रकार ऋषि महात्मा सब मूर्ख थे? वे सब ईश्वरवादी थे।" जाट मुस्किरा कर बोला "मेरी गल्ल सुन लओ। रात नूं गली विच विड़क होई। कुत्ता भौंकन लग्गा। सारे पिन्डदे कुत्तेयां ने चक्क लिया। विड़क सूनन वाले कुत्ते ने सिर चक्क के देखया तां कुछ ना दिस्या। ओह तांसौं गया पर पिन्ड दे कुत्ते रात भरभौंकदे ही रहे।" ज्यों २ जाट की अकाट्य युक्ति को मैं सुनता त्यों २ हंसी विवश होकर बाहर आती थी। मतलब उस का यह था कि जब एक ने भ्रम से ईश्वर कहदिया तो लाखों उसके चेले "ईश्वर" "ईश्वर" ही कहने लगे। पहले का तो भ्रम दूर हो गया परन्तु उस के चेले उसी धुन में राग अलापते रहे। इस लिए मूर्खों की साक्षी कोई युक्ति नहीं है। मुझे ब्रह्मचारी जी की फ़सादट पर दया आई और मैंने बहुपक्ष की दलील को छोड़ कर उसके साथ उसी गंवारी भाषा में उसी प्रकार का विवाद आरम्भ कर दिया। फिर वह बड़े प्रेम से मेरे व्याख्यानों में सभ्यता के वस्त्र पहिन कर आया और अन्त को हमारा सहायक बन गया।

इसी वर्ष पहले भादों में और फिर आश्विन के अन्त में राहों और नवा शहर नामी उपनगरों में बड़ा धड़ल्ले का धर्मप्रचार हुआ। पहले मैं बहुत से भाइयों सहित राहोंमें अपने आर्य्य भाई तेलूराम जी के भतीजे का यज्ञोपवीत संस्कार करने गया। रास्ते में नवा शहर है। वहां पहले ठहर गया। कपूर्थले के दीवान मिश्र अछरूमल यहीं के निवासी थे। मैं पहले बतला चुका हूं कि वह बड़े कट्टर पौराणिक थे, इसी लिए नवा शहर का नाम लोगों ने आवे की काशी रक्खा हुआ था। मिश्र अछरूमल यहां पर वारन्ट की धमकी तो मुझे दे नहीं सके थे, इस लिये सब हिन्दू अग्रणियों को बुला कर समझाया कि मेरे व्याख्यानों में कोई न जाय। उन लोगों ने कहा कि आर्य्यों की बात अवश्य सुननी चाहिये। दूसरे दिन मेरे व्याख्यान में आधा नवा शहर इकट्ठा हो गया। व्याख्यान दो घंटों तक हुआ। प्रश्नोत्तर की सब को आज्ञा थी। यदि कोई उत्तर में व्याख्यान देना चाहे तो उसे भी आज्ञा थी। एक ही पंडित १५ मिनिट कुछ बोला जिसका उत्तर मैंने तत्काल दे दिया। शास्त्रार्थ के लिए मिश्र अछरूमल जी को विज्ञापन भी भेजा गया परन्तु कोई उत्तर न मिला।

नवा शहर से राहों गए। वहां पौराणिक पंडित शास्त्रार्थ में फंस गए। तीन हज़ार की जन उपस्थि में शास्त्रार्थ हुआ जिसकी सारे इलाके में धूम मच गई। फिर लौटते हुए नवा शहर में शाम को श्राद्ध के खंडन पर मैंने व्याख्यान दिया। कनागतें शुरू ही होने वाली थीं। खत्री साहूकारों ने ब्राह्मनों का पेट भरने के स्थान में दयानन्द कालिज के विद्यार्थियों को भोजन कराया, जो छुट्टियों में घर गएहुए थे। रात को ही इक्कों पर फगवाड़े को लौटे। जिस इक्के पर मैं चढ़ा वह एक ब्राह्मण बड़ी श्रद्धा से लाया था। दूसरे मील पर इक्के का पहिया निकलने लगा हमारे मना करते २ भी इक्के वाला दौड़ा गया और पहिया गिरते ही मैं नीचे आ गया। धुरा तो मेरी कमर में लगा और माथा सड़क के रोड़ों पर रगड़ा गया, जिसका स्मारक चिन्ह अब तक मेरे माथे पर है।

पौराणिक दल में खल-बली मच गई, इस लिए मिश्र अछरूमल जी ने महामण्डल के महोपदेशकों को बुलाया। गोसाईं रघुवरदयालु ने आर्य्यों की अनुपस्थिति में शोर मचा दिया और संस्कृत का धाराप्रवाह चला कर आर्य्य समाज का पराजय सिद्ध कर दिया। जब हम लोगों को खबर मिली कि सनातनी पंडित जीत का डंका बजा कर लौटना चाहते हैं तो पं० आर्य्य मुनि जी को साथ लेकर रातों-रात पैदल, इक्के की सवारी आदि पर चलते मैं प्रातःकाल नवा शहर पहुंचा। वहां सुना कि पंडित रघुवर दयालु जी राहों में हैं और यदि हम शीघ्र वहां न पहुंचते तो वह विजय का डंका बजा कर लौट आवेंगे। बैल गाड़ी में जाना व्यर्थ था क्योंकि इतने में मिश्र अछरूमल जी का सवार राहों पहुंच कर पंडित को लौटने के लिए सचेत कर सका था। हमने इक्का मांगा। शहर में २० इक्के थे परन्तु मिश्र जी ने सब को आठ २ आने साई के देकर सब इक्के अपने कर लिए। इस पर सारा गट्ठर पुस्तकों का बैल गाड़ी के लिए छोड़ कुछ आवश्यक पुस्तकें साथों मे ले मैं, पं० आर्य्य-मुनी, राजकुमार जम्बेजय और मेरे मुन्शी काशीराम राहों तक पांच मील की दौड़ लगाने के लिए तय्यार हो चल दिए। हम अभी सड़क पर पहुंचे ही थे कि एक इक्का, जिसकी घोड़ी हवा से बातें कर रही थी, पास आ पहुंचा। इक्के वान ने कहा—"झट बैठ जाइये नहीं तो भूत पहुंच जायगा।" हमारी कुछ समझ में आया, परन्तु हम चारों इक्के पर चढ़ गए। रास हिलाते ही घोड़ी वायु वेग से चलने लगी। मैंने कहा धीरे चलाओ इक्केवान ने हाथ के इशारे से सवार दिखाया जो नवा शहर से निकल रहा था, और कहा—"इक्के के डंडे ज़ोर से पकड़ लीजिए।" जीवन और मृत्यु का प्रश्न था। इक्केवान एक आर्य्य का सम्बन्धी था। उसे पं० रघुवरदयालु के व्याख्यान में बोलने के कारण दीवान अछरूमल ने डांटा और गालियां दी थीं—इस लिए हमें सवारी मिल गई। हमने जब राहों पहुंच कर पं० रघुवरदयालु को शास्त्रार्थका नोटिस दे उन के हस्ताक्षर करा लिए, तब मिश्र जी का सन्देश पहुंचा। राहों और नवा शहर दोनों स्थानों में शास्त्रार्थ हुए। सनातनियों ने इस पर बल दिया कि प्रश्न आर्य्य करें और वे उत्तर देंगे। हमने भी कहा ऐसे ही सही। आध घंटे में पं० आर्य्य मुनी जी ने १०० प्रश्न कर दिए और सब के लिए प्रमाण मांगे। पंडित रघुवरदयालु के मुख से एक समय यह निकल गया कि इनके लिए वेद का प्रमाण मांगना ऐसा है जैसे आक के पेड़ से आम का फल चाहना। लोगों ने कहा कि आर्य्यों का विजय हुआ, परन्तु वास्तव में विजय किस का हुआ यह भगवान ही जानते हैं। विजय सत्य का ही होना चाहिये, जिधर भी वह हो।

मुन्शीराम।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दयानन्द परिचय

मैहर नरेश श्री ब्रजनाथसिंह जी का विवाह धौलरियासत काठियावाड़ प्रान्त की राज कुमारी के साथ गत फरवरी में हुआ है। रानी साहेब के साथ धौल के दीवान साहेब महोदय श्रीमान् पंडित मूलशंकर दयाराम दुबे जी बी. ए. भी मैहर पधारे हुए हैं। आप की आयु ६० वर्ष की है। आपने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को कई बार देखा, उन से बातचीत की, और उन के व्याख्यानों को श्रवण किया है। जा कर मैंने २७ फरवरी को आप से भेंट की स्वामी जी के सम्बन्ध में जो कुछ मुझे आपने बतलाने की कृपा की है वह मैं पाठकों की सेवामें भेंट करता हूं:—

स्वामी दयानन्द सरस्वती

एक महान् पुरुष था। मैं स्वामी जी के विषय में अपने विचार प्रकट करने के पहिले यह बता देना चाहता हूं कि मैं एक Orthordox (प्राचीन, रीति-रक्षक) हिन्दू हूं। लेकिन मैं यह कहने से कभी नहीं रुकता। कि स्वामी जी ने हिन्दूजाति पर बड़े उपकार किये हैं और एक हिन्दू-जाति ही को नहीं वरन भारतवर्ष के समस्त धर्मावलम्बियों को उन के महान् उपकारों के लिये कृतज्ञ रहना पड़ेगा। स्वामी जी का उद्देश महान् था किसी देश या जाति विशेष तक उनका प्रेम परिमित नहीं था वह प्राणी मात्र के सच्चे हितेच्छु थे। वेदों के पूर्ण विद्वान् थे और वेदों की शिक्षाओं को संसार मात्र के लिए उपयोगी तथा आवश्यकीय समझते थे, स्वामी जी ने वेदों का भाष्य किया है। हिन्दू-जाति यदि उन के और समस्त उपकारों को भुला भी दे तो भी दयानन्द का यह अकेला काम हिन्दू-जाति में सदैव आदर की दृष्टि से देखा जायगा॥

शंकरभाष्य में 'प्रतिमा' शब्द का अर्थ Equality (समता या बराबरी) के किये गये हैं स्वामी दयानन्दप्रतिमा का अर्थ image अर्थात् मूर्ति के लेते हैं। और यही मत-भेद का कारण बनगया है। यदि यह भेद उड़ा दिया जाय तो हमें यह कहने में किसी प्रकार का भय न होगा कि शंकर स्वामी भी दयानन्द की भांति आर्य्यसमाज का एक अद्वितीय प्रचारक तथा प्रवर्तक था।

स्वामी जी को दिनरात सोते जागते उठते बैठते यदि कोईधुन थी तो वेदप्रचार की। उनको वेदों से अगाध प्रेम था और वह उनकी पवित्र शिक्षाओं को समस्त भूमंडल में प्रसार करने का दृढ़ संकल्प रखते थे।"

हिन्दू मुसलमान ईसाई कोई भी हो उन के समीप सब एक सरीखे थे। वह किसी से द्वेष भाव व घृणा नहीं रखते थे और न द्वेष या विरोध फैलाना उनका मन्तव्य था। वह बड़े earnest (साफ और सच्चे) थे जिस चीज को जैसी समझते थे वैसी ही उसको मानते और लोगों पर प्रकाशित करते थे। छल कपट से उन्होंने कभी भी काम नहीं लिया।

बम्बई में एक संन्यासी महात्मा के साथ स्वामी जी का शास्त्रार्थ हुआ। विषय, मूर्ति-पूजा था। इस शास्त्रार्थ में संन्यासी का पक्ष प्रबल था परन्तु स्वामी जी ने यह कह कर उसे चुप कर दिया कि मैं जैसा कहता हूं, तदनुकूल आचरण करता हूं, तुम मूर्ति पूजा सिद्ध करते हो तो क्यों नहीं मूर्ति पूजते। इस से स्वामी जी का यह आशय नहीं था कि सन्यासियों को प्रतिमा पूजन करना चाहिए बल्कि उन का तात्पर्य यह था कि तुम मानते हो करते नहीं। स्वामी जी के-मन में और, वाणी में और, कर्त्तव्य में एका था-यह उन का कुटिल से कुटिल विरोधी भी निषेध करने का साहस न कर सकेगा और यही बड़ी विशेषता थी। कि उन्हें कभी भी अपने विपक्षियों के सन्मुख नहीं दबना पड़ा। स्वामी जी का साहस, समता, और शीलता प्रशंसनीय थी। लोगों के चित्त को अपने ओर खींच लेने में बड़ी विलक्षण-शक्ति थी। करुणा, परोपकार, और देश हितैषिता उन के रोम रोम में भरी थी। वह ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय और योगी थे। उन में लोभ नाम-मात्र को भी न था, वह स्वतन्त्र-विचार निडर थे। विपक्षियों के क्रोध से तनिक-भी उन के मन में हल चल नहीं होती थी, और ऐसे शान्त चित्त मालूम होते थे कि मानो एक सफेद संगमर मर की मूर्ति बैठी हुई है। पुरानी कुरीतियों के खडन तथा अपने पक्ष के मंडन करने में बड़ी योग्यता और--निर्भयता से काम लेते थे। वर्ण-व्यवस्था गुण कर्मानुसार-मानते थे और परस्पर आदर पूर्वक समता के व्यवहारों के बड़े हामी थे। स्त्रियों की अवस्था को उन्नत करने की अत्यन्त आवश्यक समझते थे। स्त्री-शिक्षा-और पुरुष और स्त्री के समान अधिकार के प्रचारक थे उन का कहना था कि स्त्रियों को पढ़ा लिखा कर अवश्य शिक्षित बनाना चाहिए। यदि भावी लड़कियां धीरे धीरे २ शिक्षित कर दी जाय तो लोगों को स्त्रियों के शिक्षित बनाने में जैसी अनिच्छा है कालान्तर में वैसी ही अनिच्छा उन के अशिक्षित रखने में हो जायगी॥

हिन्दू समाज की यह एक विचित्र गति है कि जो चाल एक दफा चल जाय फिर उसे छोड़ना कोई पसन्द नहीं करता। एक बार स्त्री शिक्षा की चाल निकल जाने पर फिर उस में कोई रुका-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वट नहीं रहैगी .....

स्वामी जी अपने व्याख्यानों के प्रारम्भ में बहुधा यह दो मन्त्र कहते हुए सुने जाते थे -.....

(१) सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्य्यं करवावहै ।

तेजस्विनावधीतमस्तुमा विद्विषा वहै ॥

(२) भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।

(३) स्थिरैरंगै स्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

इन मन्त्रों का भाव इन के हृदय में कूट २ कर भरा हुआ था और यही उनके शिक्षा और उपदेश का निचोड़ था। वह सत्य-प्रिय, स्पष्टवादी, निर्भय स्वतन्त्र विचारी थे आत्म त्याग और धार्मिक बल के मानों वे आदर्श थे। इनके व्यवहार सच्चे थे । हृदयता अधिक थी। सहन-शीलता में अद्वितीय थे। सार्वजनिक प्रेम से भरे थे । और स्वावलम्बन के साक्षात् मूर्ति ही थे। इन का स्वभाव वज्र से भी कठोर और कुसुम से भी कोमल था। अत्यन्त कड़े पर अत्यन्त दयालु भी थे। गम्भीर विद्या के साथ व्यवहार में भी निपुण थे। बुद्धि जितनी तीक्ष्ण थी। हृदय उतना ही उच्च था।

दीवान साहेब ने उपर्युक्त दोनों मन्त्रों का अर्थ अंग्रेज़ी भाषा में बड़ी उत्तमता के साथ समझाया था आप की मातृ-भाषा गुजराती होने के कारण आर्य्य-भाषा में वह आनन्द नहीं प्राप्त हो सकता था अतएव हम लोगों ने अंग्रेज़ी भाषा ही में वार्तालाप करना उचित समझा था

अपने देश वासियों की भलाई तथा संसार केउपकार के जो काम वह कर गये हैं उस के कारण इन का नाम सदा अमर रहेगा वह सदैव देश वासियों के हृदय में विराजमान रहेंगे। भावी भारत सन्तान इन के नाम को गौरव के साथ स्मरण करेगी। स्वामी जी को अन्य प्रान्तों की अपेक्षा काठियावाड़ देश में अपने सिद्धान्तों के प्रचार करने में क्यों कर सफलता प्राप्त हुई! इस का कारण मुख्यता यह है कि यह प्रान्त शैव मत और मूर्तिपूजा का केन्द्र है। लोगों की (Orthodoxy) उन्हें किसी नवीन विचारों के स्वीकार तथा ग्रहण करने में बहुत कम सहायता देती है।

स्वामी जी का नाम मूल शंकर था और वह औदीच्य ब्राह्मण थे। इनका जन्मस्थान Tankara (टंकारा) ग्राम है। जो मोरवी रियासत के आधीन धोल से २४ मील और मोरवी से १२ मील के फासले पर है। स्वामी जी की माता खास धोल की थी। स्वामी जी के जीवन चरित्र सम्बन्धी बातें दरयाफ्त करने के लिये बहुधा मनुष्य मेरे पास आते हैं। अभी गत जनवरी में एक बंगाली महाशय आये हुये थे। मुझे स्वामी जी के सम्बन्ध में वार्ता करते हुए प्रसन्नता होती है। और इसका मुझे गर्व है।

काठियावाड़ प्रान्त की शिवरात्री प्रसिद्ध थी ही। बालक मूलशंकर ने इस के और चार चांद लगा दिये इसी रात्री को इस धार्मिक सृष्टि के परिवर्तन की नींव डाली गई जिसने इस देश में ही नहीं वरन् सारे सुशिक्षित समाज में हल-चल मचा दिया।

काठियावाड़ प्रान्त को दयानन्द के उत्पन्न करने तथा काठियावाड़ निवासियों को दयानन्द पर गर्व होना चाहिये। शंकर स्वामी पश्चात् यह सौभाग्य इसी प्रान्त को प्राप्त हुआ है।

मैं आर्य्य समाज और उस के सर्वोपकारी कामों की प्रशंसा करता हूं। आर्य्य-समाज का सबसे बड़ा काम गुरुकुलों' की स्थापना है। मैं गुरुकुल कांगड़ी को देखा है और उस के Inspection Boolk में अपनी सम्मति भी लिख आया हूं। गुरुकुल निस्सन्देह एक आदर्श विद्यालय है। और उस से संसार का बड़ा उपकार होगा। यह मेरा विश्वास है। मैं गुरुकुल से बहुत ही उत्तम भाव और उच्च आशाएं लेकर आया हूं। और जब कभी उसकी उन्नति के शुभ समाचार मिलते हैं मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।

आज से चार वर्ष पहिले मैं वृन्दावन भी गया था परन्तु मुझे यह न बतलाया गया और पहिले से मुझे यह मालूम होता कि यहां भी गुरुकुल है। नहीं तो मैं ज़रूर इस गुरुकुल को भी देखता।

मैंने सत्यार्थप्रकाश देखी है बड़ी उत्तम पुस्तक है स्वामी जी ने वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्य्यों का परम कर्तव्य बतलाया है। संसार-मात्र के कल्याण का रहस्य इसी में है।

दीवान साहेब महोदय शैव हैं। आप अंग्रेज़ी भाषा के अतिरिक्त संस्कृत के भी आप बड़े विद्वान् हैं जिस प्रसन्नता के साथ आप ने दो घंटे तक मुझे अपने सद्विचारों के श्रवण से आनन्द लाभ उठाने का सौभाग्य प्रदान किया है इसके लिये मैं आप का कृतज्ञ हूं और कोटिशः धन्यवाद देता हूं।

बलदेव स्टेशन मास्टर
मैहर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादकीय विचार

प्रान्तीय हिन्दी कान्फ्रेंस के सभापति रायदेवीप्रसाद बी. ए. एल. एल. बी. चुने गये हैं। इस से बढ़िया चुनाव नहीं किया जा सकता था।

हमारे पास लखनऊ के क० रामदास गौर का भेजा हुआ एक अंग्रेजी पत्र पहुंचा, जो उस समिति के विषय में है, जिस की रचना परीक्षा ऋण निर्णय के लिये लखनऊ के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के समय की गई थी। पत्र अंग्रेजी में है। कारण हमें समझ नहीं आया। क्या इस समिति के सभासद् आर्यभाषा नहीं जानते? या लखनऊ में हिन्दी का कोई प्रेस नहीं? अथवा सम्मेलन होने के पीछे लखनऊ में हिन्दी का जोश घट गया है?

कुछ सप्ताह हुए प्रचारक में पं० गौरीशंकर भट्ट जी का एक 'विनीत निवेदन' प्रकाशित हुआ था। उस में भट्ट जी ने आर्य-जनता से अपने अक्षरों के ब्लाक बनवाने के लिये २५००) की अभ्यर्थना की थी। भट्ट जी का उद्देश्य बहुत उच्च है। उस की पूर्ति में सहायता देना आर्यमात्र का कर्तव्य है। आप गुरुकुल कांगड़ी में सुलेखाध्यापक हैं, और हिन्दी में आप के पाये के सुलेखक कम मिलेंगे। जो सज्जन आप को वैसे आर्थिक सहायता न दे सकें, वे आपकी पुस्तकें ही मंगवा लें।

दानापुर आर्य समाज के मन्त्री सूचित करते हैं कि स्वामी मुनीश्वरानन्द जी अति अस्वस्थ हैं और दानापुर से बाहिर नहीं जा सकते। कोई आर्य सज्जन अभी उन्हें न बुलावें।

अन्यत्र हमने आर्य्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री पं० पूर्णानन्द जी का 'निर्गम प्रवेश' विषयक लेख दिया है। हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे उसे अवश्य पढ़ें, और उस पर विचार करें। विषय बड़ा आवश्यक और विचारणीय है।

हिन्दी चित्रमय जगत् का नवीन अंक बड़ा उत्तम हुआ है। यह वर्षारम्भ का अंक प्रतीत होता है। लेखादि में उत्तमता की दृष्टि से कोई न्यूनता नहीं है।

इसी अंक में लोकमान्य पं० बालगंगाधर तिलक का 'आर्य-धर्म का स्वरूप' इस विषय पर एक लेख निकला है। विषय गम्भीर है, और लेखक का नाम उसकी विवेचना को और भी गौरव युक्त बना देता है। लेख के शीर्षक में हिन्दू के स्थान में आर्य शब्द का प्रयोग अवश्य उत्साह जनक है। लेख में आपने धर्म का निम्न लिखित लक्षण किया है।

"जिस में वेदों पर विश्वास, ईश्वर प्राप्ति के अनेक साधन, तथा उपास्य देवता अमुक ही होना चाहिये इस विषय में कोई नियम प्रतिपादित न किया गया हो, वह धर्म है।"

हिन्दू का आपने निम्न लिखित लक्षण किया है—

'इस उपर्युक्त धर्म का अवलम्ब लेकर श्रुतिस्मृति पुराणोक्तया रीति से चले आये विधि पूर्व जिस के संस्कार हुए हों जो श्रद्धा युक्त हो, और जिस के आचार शास्त्रानुसार हों, वह हिन्दु है।"

लक्षण बड़ा व्यापक है। आप की राय है कि हिन्दु का नाम ही आर्य है। लेख में कई ऐसी बातें भी हैं, जिन्हें हम स्वीकार नहीं कर सकते।

भारत गीतांजलि का दूसरा संस्करण निकल गया। हिन्दी के राष्ट्र कोकिल पं० माधव शुक्ल की यह अनोखी रचना है। गीतांजलि की कवितायें जानदार हैं—इसी लिये देश ने उन का आदर किया है। हमारी सम्मति है कि इस गीतांजलि की कवितायें भारत के बालक बालकों को कण्ठस्थ होनी चाहियें। पुस्तक का मूल्य ।) पं० रामचन्द्र शुक्ल वैद्य कूचा प्यारदास प्रयाग से प्राप्य।

दूसरी नीतियों की पुस्तक जो हमें चिरकाल से प्राप्त होचुकी है, और जिस की समालोचना न कर सकने के लिए हम क्षमा मांगते हैं, वह पं० नाथूराम शंकर का अनुराग रत्न है। अनुरागरत्न को हमने स्वयं कई वार पढ़ा और उस के गीत कई गायकों के कण्ठ से सुने—हमें जो आनन्द इन भजनों में आया, वह कम आर्यसामाजिक भजनों में आया है। भजनों की शब्द रचना अनूठी और मौलिक है। उस के पद पद में एक नवीनता है जो हृदय को खींचे लेती है। आर्य समाजी भजनीकों के लिये यह अनुराग रत्न अनुपम भजन संग्रह है।

विविध प्रसंग

गुरुकुल बदायूं

यह गुरुकुल आर्य्यसमाज की संघ शक्ति के आधार पर स्थित नहीं हुआ है न उसके संचालक किसी आर्य मेजेरिटी अर्थात् संघात के अधीन हैं। इसलिये आर्य्यसमाज बदायूं से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। जिसके विषय में पहिले ही विज्ञापन दिये जाचुके हैं। परन्तु इस पर भी सर्व साधारण उसके प्रबन्ध और शिक्षा नियमादि के विषय में आर्य्यसमाज बदायूं और उसके सभासदों से पूछा करते हैं अतः सब को सचेत करने के लिये उसकी वास्तविक दशा प्रकट की जाती हैं॥

दसवारह वर्ष हुये इस को स्वामीदर्शनानन्द जी ने समाज की संगठन शक्ति के विरुद्ध गुरुकुल के नाम से स्थापन किया था जबतक वह यहां रहे कुछ काम चलता रहा॥ जब से वह चले गये तबसे उसकी दशा दिन व दिन शोचनीय होती रही। अब यहां कोई सुप्रबन्ध नहीं न नियमानुसार कमेटी है व नियम पूर्वक अन्तरंग सभायें होती हैं। व किसी नियमों का पालन किया जाता है। यहांतक कि अधिष्ठाता भी स्वयम् नियत होजाते हैं। शिक्षा का तो कहना ही क्या भोजन वस्त्र का भी ठीक प्रबन्ध नहीं॥ बहुधा बालकों को भूखा रहना पड़ता है जिन लोगों के हाथ में यह गुरुकुल है वह लम्बे चौड़े विज्ञापन देकर सर्व साधारण को व्यर्थ भ्रम में डालते रहते हैं। वास्तव में यह नाम मात्र की संस्था है॥ आर्य्यसमाजबदायूं ने इस लेख को प्रकाशित कर अपना कर्तव्य पालन किया आगे लोगों को अधिकार है। स्वयम् आकर निश्चय करलें॥ मंगलसेन मन्त्री

आर्य्यसमाजबदायूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सार्वदेशिक आर्य्य कैम्प मायापुर

गुरुकुल वाटिका

में श्री देवपाद सन्यासी तथा माननीय पण्डित विद्वान दिनों दिन पधारते जाते हैं। और उत्तमोत्तम भजनोपदेशक भी हरि प्रेम में मग्न होकर प्रेम से आते जाते हैं और अपने भजनों से श्रोतागणों को आल्हादित करते रहते हैं। अभी तक जो सन्यासी तथा पंडित आये हैंवे ये हैं।

श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द सरस्वती। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द स० श्री स्वामी ब्रह्मानन्द स० श्री स्वामी ब्रह्मानन्द स० द्वितीय श्री स्वामी वितयनानन्द स० श्री स्वामी सच्चिदानन्द स० द्वितीय श्री स्वामी विवेकानन्द स० श्री साधु महेश्वरानन्द जी और श्री स्वामी सत्यानन्द जी भी आ गये हैं।

पं० विद्यानन्द। पं० पूर्णानन्द जी ब्रह्मचारी बुद्धदेव जी आदि महानुभाव आ चुके हैं।

२४ मार्च के प्रातःकाल श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने यजुर्वेद की कथा की तथा महाशय प्रवीणसिंह जी और महाशय रामचन्द्र जी और पं० श्यामलाल जी तथा पं० मथुराप्रसाद जी के उत्तम भजन हुए। एवं मध्यान्होत्तर व्याख्यान ब्र० बुद्धदेव जी का तथा पं० विद्यानन्द जी और पं० पूर्णानन्द जी के हुए। पं० मथुराप्रसाद तथा प्रवीणसिंह और महाशय श्यामलाल जी साधु महेश्वरानन्द जी के भजन हुए। इस प्रकार रात्रि को ८ से १० तक आर्य्य गायकों के गायन हुआ।

२५ मार्च को को प्रातः ८ से १० तक हवन और भजन उपरोक्त महाशयों के हुए। मध्यान्होत्तर श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी पं० विद्यानन्द जी श्री पूज्यपाद महात्मा मुन्शीराम आचार्य्य गुरुकुल कांगड़ी के व्याख्यान और पं० मथुराप्रसाद जी तथा प्रवीणसिंह जी व साधु महेश्वरानन्द के भजन और रात्रि को ८ से १० तक इन्हीं महाशयों के भजन हुए।

२६ मार्च को व्याख्यान ब्र० बुद्धिदेव जी श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी पं० विद्यानन्द जी श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी व श्री स्वामी विवेकानन्द जी के व्याख्यान हुए और भजनीक महाशयों के भजन हुए। और रात्रि को २ घंटे नियत समय पर भजन होते हैं। ता० २७ मार्च को नियमानुसार ८ से १० तक हवन और कथा हुई मध्यान के बाद श्री स्वामी विवेकानन्द जी श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी और पं० पूर्णानन्द जी के व्याख्यान हुए। और रात्रि को नियमानुसार भजन होते हैं। और २८ को प्रातः हवन भजन और कथा वेद की मध्यान् के बाद श्री स्वामी विवेकानन्द जी श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वितीय श्री स्वामी स्वेच्छानन्द श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी पं० विद्यानन्द जी के व्याख्यान और भजनीक महाशयों के भजन हुए और रात्रि को भी नियमानुसार भजन हुए और श्री स्वामी कृष्णानन्द जी आ गये हैं और स्वामी आनन्दानन्द श्री स्वामी विलक्षणानन्द जी आदि

२९ को प्रातः हवन और भजन और कथा हुई और मध्यान्ह के बाद श्री स्वामी कृष्णानन्द जी श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी पं० विद्यानन्द जी के व्याख्यान तथा पं० मथुराप्रसाद तथा मुन्शी केदारलाल महाशय दुर्गाप्रसाद महाशय श्यामलाल जी के भजन हुए

और रात्रि को इसी प्रकार इन भजनीकों के भजन होते हैं—

दर्शक

———

शोक ! शोक ! शोक !

आर्य्यसमाज झबरे के वार्षिकोत्सव से लौटते हुये हमारे साथ जो भजनीक आरहे थे उन में से सांपला स्टेशनपर मुसलाल भजनोपदेशक रेल से कटकर मृत्यु का ग्रास हुआ क्योंकि उस दिवस भीड़ भाड़ बहुत थी अतः अकस्मात् मृत्यु का होना दुःख हुआ। परमात्मा उनके परिवार व सार्वी कार्य कर्ताओं को शान्ति दें।

इन महाशय ने रोहतक गुड़गांव-दिल्ली प्रान्तों में खी जाति में आर्य गीत व भजनों द्वारा बड़ा प्रचार किया जो कि सहारनीय है।

निवेदक

जनमेजय

मैंने जो लेख सिकन्दराबाद में जन्म से ब्राह्मण लीला लेख भेजा था वह आपने प्रकाशित किया मैं आप का बड़ा कृतज्ञ हूं?

वह लेख बिलकुल सत्य है मुझे भी इस लीला पर बड़ा दुःख हुआ और यही लीला अम्बाला पुर उत्सव पर होगी क्योंकि यह प्रस्ताव सिकन्दराबाद में पास हुआ था अतः देखिए स्वार्थी क्या करते हैं हमें बार २ शोक होता है?

निवेदक

जनमेजय

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य्य समाज में निर्गम प्रवेश

प्रचारक के पुनर्ज्जन्म के साथ हमें एक आवश्यक और सामयिक कर्त्तव्य के पालन के लिये फिर लेखनी उठानी पड़ी है, इसे सहृदय पाठक हमारी पिछली लेखमाला का जिसे उस समय के सम्पादक महोदय की विशाल और प्रत्युत्पन्न बुद्धि ने अधूरा ही छापना उचित समझा अवशेष ही समझिये, पिछले लेखों ने हमें शोक है वह काम नहीं किया जो वह कर सकते थे, इस का कारण कदाचित् लेखों की लज्जायमानता हो अतः इस निवेदन को हम नोट ही रहेंगे, मासिक पत्रों या पुस्तकों वाला लेख नहीं बनने देंगे और न हम अपने सहृदय पाठकों के समय वा सन्तोष पर कड़ा कर लगाएंगे।

हमारा विचार है जैसा कि हम इस से पूर्व संकेत भी कर चुके हैं कि यदि बितण्डावाद को थोड़ी देर के लिये छोड़ कर धर्म और मत अर्थात् सूक्ष्म विचारों से मुंह मोड़ अन्तिम सत्यताओं की ओर ठण्डे दिल से जाएं तो जिस धर्म्म को हम मानते हैं उस का इस सोसाइटी के साथ वैसा ही सम्बन्ध है जैसा वेदों का उन ऋषियों के साथ जिन के नाम सूक्तों के सम्बन्ध में मिलते हैं वेद की संहिताओं में ऋषियों का नाम विस्मृत हो जाने पर भी कोई झगड़ा खड़ा नहीं आ जाता इसी प्रकार हम समझते हैं कि एक मनुष्य उन बिरादरियों से तो निकाला जा सकता है जिन के किसी विशेष समय तक बने हुए नियम इसे बाहर रख सकते हों परन्तु धर्म से निकास यह हमारी समझ में नहीं आता और नहीं धर्मों का सापेक्षक इतिहास इस "विकासवाद" की हमें पुष्टि करते दृष्टि गोचर होता है, धर्म और ईश्वर विश्वास जहां एक ओर स्वतः उद्देश्य है वहां हम इन्हें मनुष्य की सर्वाङ्गीण उन्नति का सदातन मुख्य और अमोघ साधन भी समझते हैं इस विचार में हमें महर्षि कणाद का धर्म का लक्षण पुष्ट करता है, धर्म वह कुछ है जो मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के अन्दर शक्ति और शीतलता का सञ्चार करता है, किसी भी मनुष्य को धर्म वृक्ष की ठण्डी छाया से वंचित रखने के यत्न को हम ज़बरदस्ती या कुफ्र से कम नहीं समझते, क्या कोई सच्चा आस्तिक छाती पर हाथ रख कर कह सकता है कि चोर, जार, मद्यप को उस के दण्ड के समय ईश्वर छोड़ देते हैं, और क्या अन्य मतावलम्बी उन्हें अपने २ धर्म ग्रन्थों की कथा नहीं सुनाते हैं? सच तो यह है कि वही समय होता है जब कि पापी की आत्मा आर्द्र हो जाती है जिस आर्द्रता को ऋषि दयानन्द ने प्रार्थना का स्वादु फल बताया है उस के आचुकने पर धर्म्म के प्रचारक का कार्य्य सुगम हो जाता है और अब तो जब सांसरिक राज्य शक्तियां अपने प्रबन्ध को ईश्वरीय प्रबन्ध के अत्यन्त सदृश बनाने केलिये न्याय कुर्सी पर दया-शर्करा का आवरण चढ़ाने में यत्नशील हो और स्थान २ पर सुधार-कारागृहों के परीक्षण हो रहे हों तब किसी पापी को उन्नति के अवसरों अथवा सामान से वञ्चित रखना हमारी समझ में परमात्मा के साथ विद्रोह है। पाप से घृणा और पापी पर अनुकम्पा यह सिद्धान्त होना चाहिये, ईसायिओं की सी निरन्तर की नरक-यातना यह कहां का न्याय है, धर्म्म के द्वार को सदैव खुला रहने को कहा है परन्तु वास्तव में यह शब्द भी लोग भाषा से लिये गये हैं परमार्थतः इन का प्रयोग भी ठीक नहीं ऋषि दयानन्द ने जब परोपकारीणी सभा की नींव डाली थी तब कौन नहीं जानता कि रानडे और गोपाल मूलराज जैसे उसके सभासद् बनाए गये।

हम अपने अभिप्राय को स्पष्ट करदेते हैं, हमारा निवेदन यह है कि धर्म्म या उसके किसी विशेष अवस्था तक चर्चन बने होने की अवस्था में समाज के किन्हीं व्यक्तियों को व्यक्तिगत झगड़ों के आधार पर नतो त्यागपत्र देना उचित है और न अधिकार हाथ आजाने पर दूसरों को निकालते जाना योग्य है। दशनियमों और ५१ सिद्धान्तों को मानने वाला व्यक्ति सदा धर्म्म के अन्दर रह सकता है, हां अधिकार देते समय प्रचारक का विचार आवश्यक है।

पूर्णानन्द उपदेशक

सावधान।

(१) एक सन्यासी आर्य्यसमाज जरगांव पो० बिठारी (मुरादाबाद) में ११ फरवरी को आया उसने अपना नाम श्री स्वामी परमानन्द जी सरस्वती बतलाया और कहा कि मैं अपके गुरुकुल बदायूं का अधिष्ठाता था परन्तु मैंने अब वहां असे स्तीफा दे दिया है मेरे पास एक बाजा हारमोनियम, सामानकोट, एक बाजा फोनोग्राफ, लभ ७५ पुस्तकें आर्य्यसमाजी चंदौसी में रक्खी हुई हैं क्योंकि अभी आपकी समाज में सामान की अत्यन्तावश्यकता है मैं आपको यह सब सामान देदूंगा और तन, मन, धन से समाज की सेवा को उद्यत हूं और हम से एक तांगा इसने सामान मंगाने के लिए मांग कर चंदौसी भेजा और गाड़ीवान को एक रुक्का लिख कर दिया कि इन के द्वारा तुम को सब सामान मिल जायगा तांगा भिजवाने के थोड़ी देर बाद कह बिना किसी से कहे छिप कर कहीं चला गया बाद में मालूम हुआ कि उसने समाज को शहर भी एकान्तावसर पाकर हाथ साफ कर दिया चंदौसी से भी तांगा खाली लौट आया उधार मिला कि यहां किसी सन्यासी का कुछ सामान नहीं है अतः सब समाजी भाईयों से प्रार्थना है कि वह इस धूर्त से सावधान रहें हुलिया निम्न प्रकार है डील छोटा रंग गेहुंआं चेहरा गोल सिर थोड़ा उमर ३० या ३२ साल बातचीत के समय कुछ हकलाता है हिन्दी और कुछ अंग्रेजी जानता है परन्तु अधिक को एफ. ए. पासकहता। रामचन्द्र शर्मा अ० य०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

छपगया तय्यार होगया छपगया

सचित्र

प्रिन्स बिस्मार्क

अथवा

जर्मन साम्राज्य की पुनः स्थापना

लेखक—**इन्द्र वेदालंकार**

जिस पुस्तक की महीनों से आशा लग रही थी, वह निकल गई। वर्त्तमान जर्मनसाम्राज्य के संस्थापक प्रिंस बिस्मार्क का जीवन चरित एक मनोहर उपन्यास से भी अधिक मनोरंजक और एक नीतिग्रन्थ से भी अधिक शिक्षा प्रद है। इस समय योरुप में जो महायुद्ध होरहा है, उस के कारण समझने होंतो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये।

नैपोलियन बोनापार्ट का जीवनचरित पढ़ने वालों के लिये यह बतलाना व्यर्थ है कि पुस्तक बड़ी ओजस्विनी भाषा में लिखी गई है। चार अति सुंदर चित्रों ने पुस्तक की शोभा और उपयोगिता को बहुत बढ़ा दिया है।

छपाई और बनाव का क्या कहना है? नैपोलियन बोनापार्ट के जीवनचरीत से बढ़ चढ़ कर हैं।

पुस्तक में जर्मनी का लग भग सवासौ साल का इतिहास आगया है। जर्मनी की पहले निर्बल दशा, फ्रेंडटिक दिग्रेट के चमत्कार विजय, जर्मनी में, राष्ट्रीयता का अभ्युदय, राज्य क्रान्ति, बिस्मार्क का जन्म शैशव और यौवन, साम्राज्य स्थापना—इन सब इतिहास प्रसिद्ध घटनाओं के मनोरंजक वर्णन के साथ २ चरित नायक के जीवन की अनूठी घटनाओं का पूरा २ वर्णन देखना होतो इस पुस्तक को अवश्य मंगवाइये।

पृष्ठ लग भग दोसौ के। मूल्य केवल १॥)

शीघ्र मङ्गवाइये।

प्रबन्धकर्त्ता

सद्धर्म्मप्रचारक पत्र गुरुकुल

पोष्ट शामपुर—कांगड़ी जि० बिजनौर

२९००=) गत प्राप्त धन

२) महा० मोतीसिंह जी से सद्धर्म्म कार्य्यालय द्वारा प्राप्त

५) महा० धन्नूराम जी साहुकार नवा शहर पोस्ट मुल्तान

७॥) महा० लभ्भूराम जी नय्यड़

५०) महा० बालमुकन्दजी मंत्री आ० स. लायलपुर

१६) महा० निरंजनदास जी रंगून

२५) महा० खन्तारामजी ओराई

१०) डाक्टर के बी. पटेल कराची

१।) महा० ब्रह्मानन्दजी एस. वी. प्रेस नृसिंहपुर

१०) मंत्री आर्य्यसमाज बरेली

१५) महा० साधुरामजी आ.स. कैथल

१००) आर्य्यसमाज डेराइसमाइलखां द्वारा महा. गोधाराम

३२२१॥।=)

१५) महा. शिवराम भूषण जी उप मंत्री आ. स. जलालपुर

१०) महा. ज्योति प्रसाद जी गुप्त उप मंत्री आ. स. मेरठ

५०) आर्य्यसमाज बच्छोवाली लाहौर

३२८९॥=)

आवश्यक सूचना

आप के प्रचारक में देवासुरसंग्राम की रीविपू छपा है जिस के कारण बहुत से भाई देवा सुर संग्राम की कापीयां मंगवा रहे हैं, कृपायः प्रचारक में सर्वसाधारण की सूचनार्थ छाप दें कि देवासुरसंग्राम की कापीयां ख़तम हो चुकी हैं कोई भाई देवासुरसंग्राम मंगाने के लिये पत्र न लिखें प्रो, महेशचरणसिंह व महात्मा जी से मेरी नमस्ते कहदें

आपका

नारायणदास खत्री

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म-निर्णय।

उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का भाषानुवाद १)

जीवन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)

आनन्द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)

संगीत रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)

और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त इतिहास सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)

ज्ञान भजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)

हारमोनियम गाईड दोनों भाग ॥)

नोट—५)रु० की पुस्तक मंगाने वाले को २) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता साफ हो।

सामवेद भाषा भाष्य श्री पं० तुलसीराम कृत सम्पूर्ण मूल्य ४) मात्र सजिल्द ४॥)

पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर

आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार

बाजाज़ा शहर मेरठ

१६००० हज़ार एजेंटों का होना भारतवर्ष में बनी औषधि के सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

कोई नहीं बता सकता कि सुख संचारक कम्पनी मथुरा का बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे रोगों में एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

कफ, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, कै दस्त, सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, रोना, के करना, बूढ़ों की अनिद्रा और नजला जवानों की थकावट या बेचैनी दवा स्वादिष्ट सुगन्धित है किसी अनुपान की आवश्यकता नहीं होती। कीमत फी शीशी आठ आना डाक खर्च १ से ६ शीशी तक ≡) आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास मिलती है।

डाक से मंगाने का पता:—

सुख संचारक कंपनी

मथुरा

एजन्ट चाहियें

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५ दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।

एच० एच० शर्म्मा (स)

बरियारपुर

(बनारस स्टेट)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी

डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी०

मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के गत २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी विषयों का समावेश है। यत्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं। बीच बीच में कविवर पं० नाथूराम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समाचार पत्रो ने प्रशंशा को है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने वाली २४० सफों की परम सुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत नहीं है शीघ्रता कीजिये।

श्रीराम शर्मा

हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा

बुलन्दशहर

नया संदेशा ! अद्भुत विचार !!

सत्ययुग।

सचित्र, नवीन मासिक पत्र वार्षिक मूल्य ३) आगामी वसन्त पञ्चमी से प्रकाशित।

उपहार

सत्य ग्रन्थमाला की पुस्तक—पौन मूल्य पर यदि आप राष्ट्र भाषा हिन्दी में अच्छे २ विद्वानों का राजनीति, विद्वान, हिन्दू धर्म, समाजशास्त्र, शिक्षा विज्ञान, शिक्षाजनक कथायें, आधुनिक कवितायें, इत्यादि विषय पर मदत पूर्ण विचार पढ़ना चाहते हैं और अपनी सन्तानों को सुधारना चाहते हैं तो एक पोस्टकार्ड भेज कर शीघ्र ग्राहक हो जाइये।

विनीत—प्रबन्धकर्त्ता

"सत्ययुग"

हिन्दी साहित्य रत्नाकर कार्य्यालय

मुज़फ़्फ़रपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) इनाम।

श्री वाल्मीकी रामायण पर।

श्री पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर ने जो श्री वाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न हो कर गवर्नमेंट पञ्जाब ने २००) रुपये और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रुपयों का इनाम उस के लिये रक्खा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। यह इस बात का पूरा प्रमाण है कि यह टीका बहुत उत्तम बनी है, मूल्य बिना जिल्द ५।) सुनहरी अक्षरों की जिल्द वाली ५॥।)

२००) इनाम बाल व्याकरण पर

यह हिन्दी में संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण है, इस पर भी गवर्नमेंट ने २००) रुपया इनाम दिया है, और पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने इसे मिडल के कोर्स में नियत किया है। मूल्य ।=)॥

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवद्गीता पर

पदार्थ अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य सहित, इस पर भी पं० जी को ३००) इनाम मिला है,

मूल्य २)

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन ≡) कठ ।-) प्रश्न ।)
मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡)
ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २)
बृहदारण्यक २) श्वेताश्वत्र ।)॥

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५॥)

उपनिषदों की भूमिका ।)॥
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ॥=)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥)
चौथा भाग ॥=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)॥
वेद उपदेश पहला भाग ॥।)
दूसरा भाग ॥।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)॥
उपदेश सप्तक ।-)
सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ इस पर भी २००) इनाम मिला है।

मूल्य ॥-)

वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण सविस्तर भाष्य समेत ३॥) योग दर्शन ॥।)
नवदर्शन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १॥)
शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है। ॥)

निरुक्त निघंटु पाठ सहित, निरुक्त हिन्दी भाष्य भी छप गया है। मन्त्रों के पते दिये गए हैं, और कई प्रकार के सूची पत्र दे कर ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी बना दिया गया है, विद्वानों ने इस की बहुत बड़ी प्रशंसा की है, मूल्य ४)

१००) इनाम मनुस्मृति पर

मनुस्मृति की सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

सटीक महा-भारत

छपना आरम्भ हो गया है, टीका और फुटनोट ऐसी छान बीन के साथ लिखे गए हैं, कि इस से प्राचीन आर्यावर्त का सच्चा इतिहास साफ साफ खुल जाता है, वार्षिक मूल्य ३) है।

पताः—

मैनेजर आर्षग्रन्थावली
लाहौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बनाई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद मजिस्ट्रेट जावद
जिला मान्डसोर
ग्वालियर स्टेट

उत्तम-पुस्तकें

यदि आप को अपनी और अपने देश की आर्थिक तथा राष्ट्रीय व्यवस्था सुधारना है तो इन पुस्तकों को भली प्रकार पढ़िए और पढ़ाइये। अर्थ शास्त्र, प्रो० बालकृष्ण कृत १॥) नवीन भारत १॥) स्वाधीन विचार ।) पद्य मुष्पाजंली ।=) जर्मनी के विधाता या कैसर के साथी ।) युद्ध गल्पाज। विकाशवाद २) हिन्दी से महाराष्ट्रीय शिक्षक ।)। इन के अतिरिक्त हिन्दी की अन्य अच्छी पुस्तकें भी हमारे यहां मिलती हैं।

२६/४९ से २०/८ पताः—कृपानारायण कलियुगी पुस्तकालय
कुली बाज़ार—कानपुर

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र वेदालंकार.

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २८ चैत्र सं० १९७१ वि० [दयानन्दाब्द ३२] ता० १० अप्रैल सन १९१५ ई० { संख्या ५२ भाग २६

धर्म-वीर

पं० लेखराम जी

की जीवनी ।

श्री महात्मा मुंशीराम जी लिखित

पं० लेखराम जी का यह पहिला पूरा पूरा जीवन-चरित है । इस के लिखने में महात्मा जी ने पण्डित जी के अध्यापकों तथा सम्बन्धियों से बहुत मसाला इकट्ठा किया है । महात्मा जी का धर्म-वीर के साथ सालों तक गहरा परिचय रहा था, इस लिए जीवन-चरित में धर्म-वीर का सच्चा २ खाका खिंच गया है ।

आर्य-मात्र को यह पुस्तक मंगानी चाहिये। धर्म-वीर का चरित और महात्मा जी का लिखा हुआ, फिर आप क्यों न लेंगे ?

मूल्य एक प्रति १)

इकट्ठा लेने वालों को उचित कमीशन मिलेगा ।

मानवती

(एक शिक्षादायक उपन्यास)

ले० बाबू गिरजाकुमार घोष

श्रीयुत योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय बंगाली के बड़े प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं । उन्होंने बंगला में " ठाकर झी " नामक एक शिक्षादायक उपन्यास लिखा है । उसके बंगाली में कई संस्करण हो चुके हैं । उसी उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद है । इसे उपन्यास नहीं, शिक्षा की खान कहना चाहिए । पुस्तक आदि से अन्त तक मनोरञ्जकता और पवित्रता से भरी हुई है । आप हमारे विश्वास पर इस उपन्यास को अपनी बहनों और लड़कियों के हाथ में दे दीजिए । वे इसे समाप्त किए बिना न उठेंगी ।

मूल्य ।।)

उपनिषदों की भूमिका

प्रथम भाग

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

यह पुस्तक वर्षों के गहरे अनुशीलन का फल है । उपनिषदों का समझना बड़ा कठिन है, परन्तु इस पुस्तक ने उन्हें सरल कर दिया है । उपनिषदों के पढ़ने से पहिले इस पुस्तक का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। यह विद्वानों के भी बड़े काम की चीज़ है क्योंकि इस में कई नए गम्भीर विचार उपस्थित किए गये हैं ।

मूल्य ।=)—प्रचारक के ग्राहकों से ।=)

राष्ट्रों की उन्नति ।

सारे संसार के इतिहास का सार

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

क्या आप भारतवर्ष को राष्ट्र बनाना चाहते हैं ? तब इस पुस्तक को आदि से अन्त तक ध्यान पूर्वक अवश्य पढ़िए । आज कल राष्ट्र और उन्नति की पुकार तो बहुत सुनाई देती है पर राष्ट्र और उन्नति क्या चीज़ है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं । इस पुस्तक में फ्रांस जर्मनी अमरीका, इंग्लैंड, महाराष्ट्र आदि देशों के इतिहास की आलोचना करके दिखलाया गया है कि वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रीय उन्नति क्या है ।

मूल्य ।)

उपयोगी पुस्तकें

विकासवाद—श्री पं० विनायक गणेश साठे एम. ए. लिखित । विकासवाद योरप की विद्याओं का मूल मन्त्र बन रहा है । उस पर हिन्दी में यही एक उत्तम पुस्तक है । मूल्य २)

अर्थशास्त्र—प्रो० बालकृष्ण एम. ए. लिखित । इस ग्रन्थ में धन के कमाने और ख़र्च करने के सिद्धान्त लिखे हैं । पुस्तक से आप को पता लगेगा कि भारत क्यों निर्धन है और कैसे धनवान् हो सकता है । मूल्य १॥)

महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार लिखित । इस पुस्तक में महाभाष्य के कर्ता महर्षि पतञ्जलि की आलोचना कर के उन के समय की सभ्यता का वर्णन है । निबन्ध बड़ी उत्तम उत्तम बातों से भरा हुआ है । मूल्य ।=)

राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र

समाज शास्त्र का रहस्य

लेखक—इन्द्र वेदालंकार

'हमारा राष्ट्र' 'हमारा राष्ट्र' पुकारते सब हैं, किन्तु राष्ट्र क्या है यह कितनों को ज्ञात है ? इस निबन्ध से आप को राष्ट्र का तत्व पता लग जायगा । भारत के नव-युवक के लिये इस का पढ़ना अत्यावश्यक है ।

मूल्य =)

पता—प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक पत्र—गुरुकुलकाङ्गड़ी पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (बिजनौर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है नयी २ गीतियें नये रोचक लेख ! नयी टिप्पणियां ! आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्य जाति के नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिये। वा०मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय

गुरुकुल कांगड़ी

पो० शामपुर कांगड़ी

(जि० बिजनौर)

तिब्बत व नैपाल की

कस्तूरी—शुद्ध व असली २८) रु० तोला

शिलाजीत—सूर्य्य की गरमी में जड़ी बूटियों के प्रयोग से विधिवत शुद्ध किया हुआ २) रु० तोला

(सावधान नकली सस्ती व अशुद्ध शिलाजीत से हानि होती है)

केशर—असली काश्मीर की १॥) रु० तोला शेर की चरबी १।) रु० तोला। भालू की चरबी ॥) तोला—

(नोट) यदि हमारी ऊपर लिखी वस्तुओं में लेशमात्र भी अशुद्धता कोई साबित करदे तो २५) जुर्माना ले लेवे।

पता:—प्रेमलाल शाह गंगोला

अलमोड़ा यू. पी.

(हिमालया)

बटर फिङ्गर बिस्कुट

ख़स्ता—जल्दी हज़म होने वाला—

नन्हे नन्हे बालकों के वास्ते

ख़ालिस मक्खन और सूजी का बना हुआ हर शहर में दुकानदारों से मिल सक्ता है या नीचे लिखे पते से मंगाइये।

सेक्रेटरी

दिल्ली बिस्कुट कम्पनी लिमिटेड

दिल्ली।

असली हारमोनियम

सुन्दरता में, मज़बूती में, सजावट में बनावट में, प्राणमोहनी, सुरीली आवाज़ में अद्वितीय होने की गारन्टी देंगे। छोटा साइज़ १३) सिंगल रीड ३ स्टाप १६) १८) २०) २२) डबल रीड ५ स्टाप ३०) ३५) ४०) ५०) स्टेशन का नाम व ५) पेशगी भेजियेगा।

पता:— जी. एम, शर्मा, कम्पनी पो० बक्स नं० २८८ कलकत्ता

G. M. Sharma Co. Post Book no. 288, Calcutta,

प्रो० सिन्हा गुरुकुल कांगड़ी रचित

वनस्पति शास्त्र	१॥)
रसायन शास्त्र	१॥)
विद्युत शास्त्र	१॥।)

पता:—प्रो० महेशचरणसिन्हा

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

प्रचारक का वार्षिक मूल्य।

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥

भारत विभिन्न देशों से ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई।

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०.

तीन मास " " " " =) "

छः " " " " " ।)॥ "

सालभर " " " " -) "

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होने चाहिये। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्ध कर्त्ता से पूछ कर कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

संस्कृत-हिन्दी कोष

जिस में २६½ सहस्र शब्दों के अर्थ हैं।

मूल्य ४) विद्यार्थियों से ३)

पता—मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

नई बात ! ताजी ख़बर!!

काशी से एक नवीन मासिक-पत्रिका निकलने वाली है। इस का नाम मात्र "तरङ्गिणी" होगा रूप-रंग आकार प्रकार कागज़ छपाई चित्र आदि सब "सरस्वती" के समान। वार्षिक मूल्य ३) रखा गया है। जो लोग ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तक आर्डर भेज कर ग्राहकों में नाम लिखा देंगे उन से इस वर्ष केवल २॥) रु० मात्र लिया जायगा। आज ही कार्ड लिखिये। देर न कीजिए। नहीं पछताइयेगा।

२६ २७ / ४६ २

आपका

मैनेजर "तरङ्गिणी"

काशी,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गीति

ज्ञान सरोवर न्हाइये

भारत के प्यारो!
शीतल निर्मल वेद स्रोत में,
मज्जन का सुख पाइये ॥
षड्दर्शन की स्वच्छ शाण पै,
निज मति नित्य चढ़ाइये ॥
रामायण का राम कथामृत,
रस पाय अमर होजाइये ॥
काव्य पुराणन में भी भाइयो!
खोज खरा रस पाइये ॥
अन्य गिरा से तज कर नाता,
संस्कृत को अपनाइये ॥
माता के निज पूत कहा कर,
भारत पै बलि जाइये ॥

———

उदित हुआ नूतन कर मालो
दूर हुआ तम पूरब दिशि में।
छाई छबीली लाली ॥
लखो मौरवी उदय गिरि पर,
उसकी छटा निराली ॥
सुरभि समीर हृदय रसरावत,
रुचिर शीतिमाशाली ॥
जग मराल सब हुलस रहे हैं,
खिली नई जल जाली ॥
नवजीवन विलसै नित इस वन,
छाइ रही हरियाली ॥
झुकि झुकि नाथ! कुसुम मुसुकावनि,
विनय करत सब डाली ॥
उदित हुआ नूतन कर माली ॥

सद्धर्म्म प्रचारक

गुरुकुल-महोत्सव

का

वृतान्त।

गुरुकुलोत्सव आया और चला गया। वह कैसा हुआ, इस बात को वे लोग अच्छी प्रकार से जानते हैं, जो उस उत्सव में सम्मिलित थे। यदि हम कह दें कि वह उत्सव बड़ा सफलता के साथ समाप्त हुआ तो यह प्रति वर्ष के मुहाविरे का केवल दुहराना समझा जायगा। इस लिए हम इन शब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे। हम उत्सव की विशेषताओं का वर्णन कर देंगे, उस से पाठक-गण अनुमान करलें कि उत्सव सफलता पूर्वक हुआ या नहीं।

(१) उत्सव की सब से प्रथम विशेषता असाधारण उपस्थिति थी। पहले दिन से ही विस्तृत पण्डाल भरने लग गया था। आर्य्यभाषा सम्मेलन दीक्षांत संस्कार और अपील के समय उपस्थिति पन्द्रह हज़ार से किसी तरह कम नहीं थी। अन्तिम दिन की सायंकाल तक लगभग ७००० की उपस्थिति रही। इस में सब से विचित्र बात यह थी कि

(२) स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कम नहीं, बल्कि अधिक ही प्रतीत होती थी। मंडप में पुरुषों के स्थान की अपेक्षा स्त्रियों का स्थान जल्दी भरता था। प्रातःकाल सायंकाल वा रात्रि—कोई समय हो, स्त्रियों के बैठने का स्थान भरा रहता था। उस के साथ ही जो

(३) अद्भुत शान्ति इस बार स्त्रियों में रही, वह अचम्भे में डालने वाली थी। गुरुकुलोत्सव की शोभा माताओं के प्रेम से है, किन्तु अब तक यह समझा जाता है कि व्याख्यानदाताओं के व्याख्यानों के गले पर छुरा भी माताओं की ओर से ही फिरता था। इस साल ऐसा न हुआ। गम्भीर से गम्भीर संस्कृत निबन्धों में पुरुष उठ जाते थे, शोर मचाते थे—किन्तु स्त्रियां स्थिरता और शान्ति से बैठी रहती थीं। यही समझना चाहिये कि धीरे २ देवियां अपनी सभाविरोधिता का समूलो-न्मूलन करती जाती हैं।

(४) एक और असाधारण बात इस वर्ष रही। प्रबन्ध से लोग प्रायः सन्तुष्ट रहे असन्तुष्टि के चिन्ह कहीं नहीं दिखाई दिये। पंडाल का प्रबन्ध ब्रह्मचारियों के हाथ में था— इस लिये प्रायः शिकायत को स्थान नहीं मिला।

(५) एक और बड़ी भारी विशेषता रही। आज तक कोई उत्सव ऐसा नहीं बीता जिस में लोग कालरा या निमोनिया से कोई न कोई मृत्यु न हुई हो। इस वर्ष गुरुकुल के चिकित्सक का रजिस्टर प्रायः खाली रहा। रोगियों के लिये जो विशेष स्थान बनाया गया था, वह खाली ही रहा। कुम्भ की भीड़ के कारण जहां रोग से बहुत डर रहे थे, वहां ईश्वर की कृपा से पहले वर्ष की अपेक्षा कहीं अच्छा उत्सव हुआ। हमारे पाठकों को आश्चर्य होगा कि इस वर्ष की गुरुकुल की आर्थिक आय भी असाधारणतया उत्तम रही। यों तो धन पिछले साल से दो तीन हज़ार कम ही राशि हुई है, किन्तु योरप के महायुद्ध ने जो अनर्थ मचाया हुआ है, उसकी दृष्टि से आशा से बढ़ कर राशि प्राप्त हुई है। लगभग ४३ हज़ार धन आया है जो कि सारी अवस्थाओं को देखते हुए कम नहीं कहा जा सकता

ये सब विशेषताएं थीं, जिन से भरा हुआ यह उत्सव था। इन विशेषताओं से युक्त उत्सव को सफल कहें या न कहें, यह पाठक लोग स्वयं ही जान सकेंगे।

इन विशेषताओं के साथ २ दो एक न्यूनतायें भी थीं, जिनकी ओर निर्देश कर देना बुरा न होगा। इस वर्ष अच्छे संगीत की न्यूनता को उपस्थित जनता ने विशेषतया अनुभव किया। जिन भजनीकों के भजन आर्य्यसमाजियों के कर्ण-गोचर साल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भर होते रहते हैं, उन में नवीनता न होने के कारण ही शायद लोगों ने ऐसा अनुभव किया हो। भजनीक जगत् की कई मूर्तियों का इस वार अभाव था।

एक न्यूनता यह भी कही जा सकती है कि इस वार उत्सव के समय किसी देश के बड़े नेता के दर्शन नहीं हुए, परन्तु हम इसे कोई बड़ी बात नहीं समझते। आवश्यक यह है कि गुरुकुलोत्सव यह आर्य्य-समाज के मुख्य २ कार्य-कर्ता एकत्र हो जाया करें, सो इस वार उत्सव पर पञ्जाव तथा युक्तप्रान्त के आर्य्यसमाजी नेताओं का एकत्र शुभसम्मेलन किस के लिए हर्ष-दायक नहीं हुआ।

३१ मार्च

यज्ञोपवीत संस्कार

उत्सव का प्रारम्भ यज्ञोपवीत संस्कार के साथ हुआ। नये प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत यज्ञशाला में किया गया, बहुत से सज्जन उपस्थित थे, और नवे ब्रह्मचारियों के संरक्षक तो प्रायः सभी थे।

१ अप्रैल

ग्रामीण पाठशालाओं का उत्सव

उत्सव के विज्ञापन में सूचना दी जा चुकी थी कि आज के दिन सज्जनपुर की पाठशाला का पारितोषिक वितरण होगा। यह पाठशाला आर्य समाज गुरुकुल कङ्गड़ी की ओर से खुली हुई है। एक दूसरी पाठशाला कांगड़ी में भी है, जिस में आर्यसमाज को गुरुकुल से बहुत सहायता मिलती है। ये दोनों पाठशालायें लग भग १० महीनों से चल रही हैं। यह इन का पहला ही वार्षिकोत्सव था। प्रातःकाल ८ बजे से हवन प्रारम्भ हुआ। ठाकुर प्रवीणसिंह जी आदि के भजन हुए। प्रो. सिन्हा जी के प्रस्ताव पर श्री महात्मा मुन्शीराम जी सभापति चुने गये। कार्यवाही प्रारम्भ हुई। ग्रामीण पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने सन्ध्या के मन्त्र सुनाये, ईश्वर भक्ति, ऋषि दयानन्द भारतवर्ष आदि की स्तुति प्रार्थना के संगीत गाये, और छोटे २ विषयों पर भाषण किये। सभा में गुरुकुल के बहुत से यात्री, गुरुकुल के कुछ बड़े ब्रह्मचारी और ग्रामों के प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे। सब ने विद्यार्थियों की ८ महीनों की शिक्षा की प्रशंसा की। अन्त में श्री महात्मा जी ने ग्रामीयों के उत्तम विद्यार्थियों को पारितोषिक दिये और अन्य सब छात्रों को भी यज्ञोपवीत यज्ञों की विधियां सार्वदेशिक सभा की ओर से और ऋषि दयानन्द के चित्र समाज की ओर से दिये गए। श्री महात्मा जी ने अन्तिम व्याख्यान में सब लोगों को एक शुभ सूचना सुनाई। आपने कहा कि अगले साल पौष मास में आर्य समाज कांगड़ी की पाठशालाओं में पढ़ने वाले सब छात्रों की परीक्षा होगी। जो ८ वर्ष से कम आयु का बालक सब से उत्तम रहेगा उसे गुरुकुल में बिना शुल्क के ले लिया जायगा। इस समाचार ने ग्राम वासियों में बड़ा जोश उत्पन्न कर दिया। धन के लिये कोई विशेष अभ्यर्थना नहीं की, तोभी धन आना शुरू हो गया। विशेषतया गाँव वालों ने ही धन दिया। लग भग ८०) जमा हो गए, जो एक ग्राम की दृष्टि से बहुत कुछ थे और गांव वालों की नई जागृति के सूचक थे।

इन पाठशालाओं की विशेषता यह है कि इन में ब्राह्मण राजपूत बनिये चमार और मुसलमान बालक भी सब इकट्ठे ही पढ़ते हैं। बालकों के साथ बालिकायें भी पढ़ती हैं।

यह छोटा सा उत्सव बड़ी सफलता के साथ हुआ। प्रचारक के सम्पादक को आर्य समाज कांगड़ी के मन्त्री होने का भी सौभाग्य प्राप्त है, इस लिये वह श्री महात्मा जी का, ब्रह्मचारियों का, गुरुकुल के यात्रियों का और उपदेशक महोदयों का विशेष धन्यवाद करता है, जिन्होंने गुरुकुल से चार मील दूर जाकर इस उत्सव को सफलता प्रदान की।

२ अप्रैल

प्रातःकाल

आज प्रातःकाल नये प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार होने को था। उत्सव के पहले दिन का ध्यान करते हुए सम्भावना थी कि उपस्थिति कम होगी किन्तु धीरे २ उत्सव का विशाल पण्डाल भरने लगा। पण्डाल भी इस वार पहले वर्षों से बहुत बड़ा था। पण्डाल के लम्बा होने से जहां एक ओर बैठने की गुंजाइश बढ़ गई थी, वहां दूसरी ओर देखने वालों को देखने और सुनने की सुविधा भी बहुत हो गयी थी। अधिक से अधिक जन संख्या में भी किसी को कठिनाई नहीं होती थी। सब काम शान्ति पूर्वक होता रहा। इस नये ढंग के शेड फार्म के लिये उसके बनवाने वाले ला० नन्दलाल जी का अवश्यमेव धन्यवाद देना चाहिए।

धीरे २ पण्डाल भर गया। ईश्वर प्रार्थना के साथ कार्यवाही प्रारम्भ हुई। नये प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार हुआ जो चारों ओर से उपस्थित सज्जनों के दृष्टिगोचर होता रहा।

मध्याह्न

मध्याह्न के समय की कार्यवाही संगीत के साथ प्रारम्भ हुई लग भग २-३० बजे तक

श्री स्वामी सत्यानन्द जी

का मधुर और उत्साह जनक भाषण उपदेश प्रारम्भ हुआ। श्री स्वामी जी ने आत्मा के तत्व का वर्णन करते हुए और उस की नित्यता को शास्त्र द्वारा प्रतिपादन करते हुए बतलाया कि मनुष्य की आत्मा के अन्दर अनन्तशक्तियों का समूह विद्यमान है। लोग अपनी शक्तियों को भूले रहते हैं। हमारी जाति के अन्दर आत्माभिमान का त्याग कर देने का ही रोग है। महाभारत संग्राम में कर्ण और अर्जुन ये दो ही महावीर थे। जब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

। दोनों का द्वन्द्व युद्ध प्रारम्भ हुआ, और सा युद्ध बन्द हो गये। कर्ण अस्त्र विद्या में अर्जुन की अपेक्षा अधिक प्रवीण था। लोग देख रहे थे कि विजय किस का होता है। कर्ण को पूरा विश्वास था कि वह अर्जुन को मार गिरायगा और अर्जुन को पूरा भरोसा था कि वह कर्ण को समाप्त कर देगा। उसी समय कर्ण के सारथि शल्य ने उस का सम्बोधन करना और उसे 'राधा सुत' और 'सारथि' सुत आदि शब्दों से पुकारना प्रारम्भ किया। इन शब्दों ने कर्ण के बढ़े हुए दिल को तोड़ दिया, राधासुत यह शब्द उसके कानों में गूंजने लगा। कर्ण हार गया—वही क्षण उस की मृत्यु का कारण हुआ। हम लोगों के बिच में भी राधासुत होने के भाव घर कर गये हैं। जब तक हम अपने गौरव को नहीं समझते तब तक उठने की आशा व्यर्थ है।

स्वामी जी का व्याख्यान विद्युत की एक धारा थी, जिस ने श्रोताओं के अन्दर रूह फूंक दी।

इस उपदेश के पश्चात् सरस्वती सम्मेलन की प्रथम बैठक प्रारम्भ हुई।

सरस्वती सम्मेलन।

प्रारम्भ में भारतीयसाहित्य की प्रशंसा में एक भजन हुआ, जो अन्यत्र दिया गया है। उस के पीछे श्री आचार्य जी ने साहित्य-परिषद् और सरस्वती-सम्मेलन के उद्देश्यों का वर्णन करते हुए उस समय के सभापतित्व के लिये श्री० पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी का प्रस्ताव किया। सभापति के आसन ग्रहण करने पर ब्र० विद्यासागर ने 'पुराणों की उपयोगिता' इस विषय पर एक निबन्ध संस्कृत-भाषा में पढ़ा। हम इस निबन्ध का सार सद्धर्म-प्रचारक में मुद्रित करने का विचार रखते हैं। निबन्ध का उद्देश्य यह दिखाना था कि पुराणों की शिक्षा परस्पर विरोधिनी है। एक स्थान पर पुराणों की संख्या अट्ठारह है तो दूसरे स्थान पर एक ही पुराण कहा गया है। एक स्थान पर पुराणों के कर्ता व्यासमुनि बतलाये गये हैं तो दूसरी जगह व्यास शिष्य लोमहर्षण। एक स्थान पर जल स्थल तीर्थों का विधान है तो दूसरी जगह इन तीर्थों की निष्फलता दिखाकर मानस तीर्थों की प्रशंसा की गई है। एक स्थान पर जन्म से वर्ण-व्यवस्था का विधान प्रतीत होता है तो दूसरे स्थान पर स्पष्ट शब्दों में गुण-कर्म से ही वर्णव्यवस्था का विधान पाया जाता है। इस प्रकार के अनेक परस्पर विरोधों को दिखला कर आपने बतलाया कि पुराणों के वे सिद्धान्त ही सनातनधर्मियों को क्यों माननीय है, जो वेद विपरीत है, और वेदानुकूल माननीय क्यों नहीं? क्योंकि पुराण स्वयं भी तो यही कहते हैं कि वेदानुकूल पुराण माननीय हो सकता है।

निबन्ध पढ़ जाने पर उस की आलोचना हुई। वस्तुतः विपरीत आलोचना कोई हुई ही नहीं। डा० संगतराम जी ने पुराणों की गाथाओं का यौगिक अर्थ दिखलाने का यत्न किया।

अन्त में सभापति जी ने दो एक पौराणिक शब्दों की सयुक्ति व निरुक्ति दिखला कर इस समय की कार्यवाही को समाप्त किया।

रात्रि।

रात्रि के समय भजनों के पश्चात् श्री० स्वामी अच्युतानन्द जी का व्याख्यान होने वाला था किन्तु आप कारणवश नहीं आ सके थे, इस लिये उन के स्थान में श्री० स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी का भाषण हुआ। अपने भाषण में वेद-मन्त्रों का प्रमाण देते हुए आपने तीन बातें स्पष्ट करके बतलाईं।

(१) हम आर्यों का धर्म सत्यधर्म के नाम से वेद में कहा गया है।

(२) आर्य पुरुषों का नाम सभ्य और उन की सभा का नाम 'सभा' है।

(३) ईश्वर का सब से मुख्य नाम 'ओंकार' है।

व्याख्यान बड़ा ज्ञानपूर्ण था।

आप के व्याख्यान के पश्चात् श्री० स्वामी सर्वदानन्द जी का व्याख्यान हुआ। आप के व्याख्यान का जादू प्रसिद्ध है। व्याख्यान लगभग ९—३० पर प्रारम्भ हुआ और ११—३० पर समाप्त हुआ। इतने समय तक जनता चित्रवद्ध सी जमी रही। व्याख्यान का विषय 'आत्मिक शक्ति' था। व्याख्याता ने बड़े सरल और सुन्दर दृष्टान्तों द्वारा उपस्थित जनता के हृदयों में अङ्कित कर दिया कि आत्मिक शक्ति है उस का उपार्जन ही सब से प्रधान कार्य है।

३ अप्रैल।

प्रातःकाल हवन के पश्चात् सरस्वती सम्मेलन की दूसरी बैठक प्रारम्भ हुई वेद-विषयक निबन्ध पढ़े जाने वाले थे। वेद-विषयक निबन्धों के लिये किसी चतुर्वेदविद् पण्डित को सभापति बनाना ही शोभा देता था—ऐसे कोई विद्वान् नहीं मिल सके, इसलिये निबन्ध पढ़ने वालों के हृदयों पर नियम का भाव अङ्कित करने के लिये चारों मूल वेद रख दिये गये और निबन्धकर्ताओं ने उन्हीं को सभापति मानते हुए निबन्ध पढ़े। यह बड़ा अच्छा विचार था। वस्तुतः एक वेदज्ञ की अपेक्षा स्वयं वेद अधिक आदर के योग्य हैं।

पहला निबन्ध स्नातक ब्रह्मानन्द विद्यालङ्कार का था, जिस में दिखाया गया था कि वेद कौन २ से राजनैतिक सिद्धान्तों का विधान है।

दूसरा निबन्ध उपाध्याय इन्द्र वेदालंकार का था, जिस में वेदाङ्गों की सहायता से वैदिक शब्दों के अर्थ निश्चय की विधि दिखलाई गई थी।

तीसरा निबन्ध पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी का था, जिस में दिखाया गया था कि वेद में उत्कृष्ट कारीगरी और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भौतिक उन्नति के चिन्ह पाये जाते हैं, जिस से सिद्ध होता है कि वेद जङ्गलियों के आविष्कार नहीं हैं, प्रत्युत विद्याओं के भण्डार हैं।

हम समझते हैं कि ये तीनों निबन्ध जुदा जुदा प्रकाशित हो जायंगे।

निबन्धों के पढ़े जाने पर एक नई बात हुई। लखनऊ के हकीम महम्मद-सलीमाउल्ला गुरुकुल में केवल इस लिये पधारे थे कि वे गोरक्षा पर एक कविता सुनावें। आपने अपनी कविता सुनाई। सुनाने से पूर्व आपने बतलाया कि एक हकीम की हैसियत में रोगियों को देखने से आपने अनुभव किया है कि गोमांस खानेवाले लोगों को बहुत से वे रोग बहुतायत से होते हैं जो दूसरों को नहीं होते। आपने यह भी कहा कि गोहत्या में केवल वे लोग दोषी नहीं है जो गउओं को काटते हैं, उन का भी दोष है जो बूढ़ी गउओं को कसाइयों के हाथ बेच डालते हैं।

उस के पीछे आप ने

गोरक्षा

पर कविता पढ़ी। कविता बहुत ही मर्मवेधनी थी। सारा श्रोतृमण्डल एक चित्त हो रहा था और सारा नयनसमूह जल से भीगा हुआ था। कविता के कोई कोई पद तो बहुत ही प्रभावजनक थे। यह कविता शीघ्र ही छपकर प्रकाशित होगी। हकीम जी जैसे गोभक्त यदि मुसल्मानों में कईएक पैदा हो जायं तो भारत के उन्नति के मार्ग में पड़े हुए कांटों में से मुख्य कांटा निकल जाय।

हकीमजी की कविता के पीछे पं० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार का गुरुकुल के उद्देश्यों पर एक प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। व्याख्यान में बतलाया गया था कि भारतवर्ष शिक्षा की दौड़ में सब देशों से पीछे पड़ा हुआ है। गुरुकुल देश के लिए सच्ची और उपयोगिनी शिक्षा का प्रचार करना चाहता है। गुरुकुल ऐसे विद्वान् व्यक्ति उत्पन्न करना चाहता है, जो केवल वाणी द्वारा ही नहीं कर्मद्वारा भी वैदिक धर्म के प्रचारक हों। गुरुकुल केवल शब्दोपदेशकों की संख्या बढ़ा कर ही कृतकार्य्य नहीं हो सकता, उसे क्रियात्मक जीवन उत्पन्न करने वाले व्यक्तियों की संख्या में भी वृद्धि करनी चाहिए।

मध्यान्ह

मध्यान्ह के समय की कार्यवाही श्री पं० योगेन्द्रनाथ शर्मा के 'षड्दर्शनों की एक वाक्यता' विषयक संस्कृत निबन्ध के साथ प्रारम्भ हुई। निबन्ध बड़ी योग्यता से लिखा गया था। श्री स्नातक ब्रह्मानन्द जी ने उसनिबन्ध का भाषा में सार सुना दिया।

निबन्ध के अनन्तर

आर्य्यभाषा

सम्मेलन का प्रारम्भ हुआ। श्री० आचार्य जी ने सामयिक सभापतित्व के लिए श्री० पं० घासीराम एम० ए० प्रधान प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त का प्रस्ताव किया। सभापति जी ने अपनी प्रारम्भिक वक्तृता में आर्य्यभाषा के बढ़ते हुये प्रचार पर प्रसन्नता प्रकट करते हुये कार्यवाही को प्रारम्भ किया।

पहला प्रस्ताव

"इस सम्मेलन की सम्मति है कि भारत में एकता उत्पन्न करने के लिए एक भाषा का होना अत्यन्त आवश्यक है, और वह एक भाषा आर्य्यभाषा ही हो सकती है।"

इस प्रस्ताव को सभा के सन्मुख **श्री. स्वामी सत्यानन्द जी** ने उपस्थित किया आप के भाषण का सार यह था कि देश में एकता उत्पन्न करने के साधनों में से मुख्य साधन भाषा की एकता है। भाषा की एकता के विना विचारों का फैलाना सर्वथा असम्भव सा है। अनेक भाषाओं के होने से प्रान्त एक दूसरे से कटे से रहते हैं। वह भाषा जो सारे देश की एक भाषा हो सकती है, आर्य्यभाषा ही है, क्योंकि वही बहु गुण सम्पन्न और अधिक विस्तृत है।

आप का अनुमोदन **प० श्री. पाद दामोदर सातवलेकर जी** ने किया। आप महाराष्ट्र देशोद्भव है तथापि आप मानते हैं कि देश की यदि कोई एक भाषा हो सकती है तो आर्य्यभाषा ही है। आप ने कहा कि 'जिस प्रस्ताव को एक निष्पक्षपात सन्यासी ने पेश किया हो उस के अनुमोदन की आवश्यकता नहीं तो भी मैं हां में हां मिलाता ही हूं'। आप ने अनेक भाषाओं के वाक्यों का उद्धरण देकर बतलाया कि एक भाषा हुए विना हम सब एक दूसरे के लिये विदेशी से हो रहे हैं।

समर्थन करते हुए **पं. ब्रह्मदत्त विद्यालंकार** ने भी उत्तम रीति से आर्य्य भाषा की उपादेयता को बतलाया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

दूसरा प्रस्ताव

'इस सम्मेलन को आश्चर्य है कि माननीय पं० मदनमोहन मालवीय जी का प्रधान भाग होते हुए भी प्रस्तावित हिन्दू-विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम आर्य्य-भाषा को नहीं बनाया गया। और आशा करता है कि उक्त विश्वविद्याय के संचालक जनता के मन का ध्यान करते हुए इस भूल को शुद्ध करेंगे।"

इस प्रस्ताव को **स्वामी सत्यदेव परिव्राजक** ने पेश किया। पेश करते हुए आप ने एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया जिस में बतलाया कि शिक्षा का उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब वह मातृभाषा द्वारा दी जाय। हिन्दू विश्वविद्यालय के संचालक यह नहीं सोचते कि जिस विश्व-विद्यालय के साथ हिन्दू शब्द लगा हुआ है, जो हमारा है, जिसे हम लोगों ने अपने लोहू से सींचा है, उस में हिंदी में प्रवेश न करना कितनी भारी भूल है।

अनुमोदन करते हुये **स्नातक जयदेव** ने भी एक छोटा सा भाषण किया।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समर्थन करते हुए ब्र. बुद्धदेव ने कहा कि 'यह आविष्कारों का युग है। आज कल बे तार की तारबर्की चली है, बे तार का टेलीफोन चला है—और हमारे देशवासियों ने बे हिंदी का हिंदू विश्वविद्यालय निकाला है। बिना हिंदी के हिंदू विश्वविद्यालय की कल्पना भी सम्भव नहीं।' आप ने बतलाया कि हरएक नवयुवक अपनी स्वतन्त्र रीति पर आर्य्यभाषा का प्रचार कर सकता है और समाप्ति में आप ने कहा कि 'यदि प्रार्थना से भी कोई लाभ हो सकता है, तो हिन्दू विश्वविद्यालय वाले हमारी बात पर कान देंगे।'

इसका समर्थन करने के लिए अन्तिम वक्तृता भक्त ईश्वरदास एम० ए० की हुई, जिस में आपने अपने कई अनुभवों का वर्णन करते हुए संस्कृत और आर्य्यशास्त्रों की प्रशंसा सुनाई। आपने यह भी घोषणा की कि जो महाशय 'आर्य्यभाषा के प्रचार में रुकावटें' इस विषय पर सर्वोत्तम निबन्ध लिखेगा उस के निबन्ध के आदि-भूमिका लिख देने का भी अनुग्रह करेंगे, और एक पारितोषिक भी प्रदान करेंगे।

प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

तीसरा प्रस्ताव

"यह सम्मेलन वायसराय की कौंसिल में देशी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने सम्बन्धी प्रस्ताव के कर्ता मि० गणेशदत्त और उन के अनुमोदक पं० मदनमोहन मालवीय जी और सभा कुशलपालसिंह जी को धन्यवाद करती है और सभा के अन्य प्रतीय सभासदों के व्यवहार पर अत्यन्त प्रकट करते हैं।"

यह प्रस्ताव श्रीयुत बा० ब्रजनाथ बी० ए० एल० एल० बी० ने पेश किया। उपस्थित करते हुए आप ने कहा कि उक्त तीन महोदयों का धन्यवाद कर, वह ठीक ही है। अपने आर्य्यत्व का प्रण देकर इन्होंने आर्य्यजाति का प्रेम कमाया है। हमें खेद है इन लोगों पर, जिन्हें आर्य्यजाति में जन्म लेकर, गङ्गा का जल पीकर और इस सुजला सुफला से प्राण धारण कर के भी देशी भाषाओं का विरोध किया। टेम्स नदी के तटपर जन्म लिये हुए या अरबस्तान वासी वंश के अंकुर द्वारा यदि इस प्रस्ताव का विरोध होता तो कोई वचनीयता न थी किन्तु बाबू सुरेन्द्रनाथ जैसों द्वारा प्रस्ताव का विरोध होना अवश्य खेदप्रद है।'

आपका अनुमोदन प्रो. रामदेव जी ने किया। सब से पहले आपने स. रासायनगर के साथ मिस्टर शब्द के प्रयोग को अनुचित बताया और कहा कि देशी भाषाओं का पक्ष लेने वाला पुरुष मिस्टर नहीं होना चाहिये। सारी सभा ने करतालिध्वनि से इन का अनुमोदन किया। आगे आपने देशी भाषाओं की उत्तमता और शिक्षा में उपयोगिता का खूब प्रतिपादन किया था।

आपका समर्थन करते हुए प्रो. महेशचरणसिंह जी ने वायसरिकल कौंसिल की देशी भाषा विषयक सारी कार्यवाही का एक संक्षिप्त विवरण सुनाया जिस में से श्रोताओं को बहुत लाभ हुआ। अन्त में आपने लोगों से पूछा कि जो लोग देशी भाषा का विरोध करते हैं क्या उन्हें भी नेता कहा सकते है?

यह प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। अन्त में सभापति जी ने बड़ा उत्तम उपसंहार कर के इस अति कृतकार्य्य अधिवेशन को विसर्जित किया।

रात्रि

के समय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का व्याख्यान था। व्याख्यान बड़ा शिक्षादायक और रोचक था। आत्मा की शक्तियों और योग्यताओं का वर्णन कर के श्री स्वामी जी ने जिस क्षमता से कर्तव्य परायणता का उपदेश किया, वह उन्हीं का कार्य्य है। आपके उपदेश के सुनने में जो आनन्द है, वह लेखबद्ध नहीं हो सकता। कौनसा पंजाब का आर्य्यसमाजी है, जिसने कभी न कभी आपके उपदेशामृत का पान किया हो। हम लेखबद्ध करके उस आनन्द नहीं उड़ाना चाहते हैं। उपदेश का अर्थ प्रभाव स्वर में और शब्द रचना में निवास करता है, लेख में वे लुप्त हो जाते हैं।

४ अप्रेल

आजका दिन उत्सव का सब से आवश्यक दिन था। प्रातःकाल नये स्नातकों का दीक्षान्त संस्कार होने वाला था। चौदह साल के परिश्रम का फल आज मिलने वाला था। प्रातःकाल से ही पण्डाल भरने लगा था। ठीक पौने सात बजे गुरुकुल के पुराने स्नातक नये स्नातक और सारे ब्रह्मचारी पंक्ती बनाकर आचार्य जी के कुटीर से उत्सवमण्डप की ओर को चले। आगे २ अम्बाले की हनुमान व्यायाम समिति का बैंड बजता जाता था। लगभग सात बजे मण्डप में ब्रह्मचारी तथा अन्य सब सज्जन बैठ गये, समय पर दीक्षान्तसंस्कार की कार्यवाही आरम्भ हुई जो अन्यत्र दीगई है। आचार्य जी का व्याख्यान बड़ा सारगर्भित था, और गुरुकुल के उच्च उद्देश को दर्शाने वाला था। उस व्याख्यान का अनुवाद भी अन्यत्र दिया गया है। पुराने स्नातकों की ओर से स्नातक इन्द्र वेदालंकार ने नये स्नातकों का स्वागत किया। अन्त में श्री प्रधान रामकृष्ण जी ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देकर संस्कार को समाप्त किया।

संस्कार के समय उपस्थित जनता में जो गम्भीरता रही, वह सूचित कर रही थी कि लोग इस संस्कार के गौरव को समझते हैं। सारे उत्सव में जितना प्रभावशाली यह संस्कार हुआ, अन्य कोई कार्यवाही नहीं हुई। जिस प्रकार ब्रह्मचारी मण्डप में आये थे, उसी प्रकार नियम पूर्वक वे लौट आये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मध्यान्ह

के समय भजनों के पश्चात् श्री प्रो. रामदेव जी का व्याख्यान प्रारम्भ हुआ व्याख्यान का विषय था—'पश्चिम के विचार का वैदिक सिद्धान्तों से सम्बन्ध' आपने आत्मा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त को लेकर कई प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिया कि पश्चिम के विद्वान् वेद के सिद्धान्तों की ओर ही आरहे हैं। व्याख्यान योग्यता से भरा हुआ था। जनता पर उसका खूब असर हुआ। आपके व्याख्यान के पीछे

श्री महात्मा जी

ने अपना भाषण प्रारम्भ किया। भाषण में आपने श्रद्धा और विश्वास की अपूर्व महिमा का वर्णन करते हुए बतलाया कि गुरुकुल परमात्मा पर श्रद्धा रखने से ही चलेगा, अन्यथा नहीं। विश्वास ही सब कृतकार्यता का मूल है। आपने कहा "लोग कहते हैं—गुरुकुल के लिये धन कहाँ से आयगा, और धन के बिना गुरुकुल कैसे चलेगा? किन्तु मुझे परमात्मा पर पूरा विश्वास है मैं समझता हूं कि धन भी आयगा और कुल भी चलेगा। इस में शङ्का करना वृथा है।" व्याख्यान के पीछे धन एकत्र होने लगा।

रात्रि

के समय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का दूसरा व्याख्यान हुआ व्याख्यान का विषय था मोक्ष छोटे छोटे दृष्टान्तों द्वारा गूढ़ से गूढ़ तत्वों को समझाने की आपकी जो प्रणाली है, वह ऐसी मनोरंजक है कि दो तीन घण्टे तक श्रोता आपका व्याख्यान सुनकर भी थकावट नहीं होती और आगे ही आगे सुनने को जी चाहता है। ऐसे जन प्रिय बोलने वाले आर्य्यसमाज में बहुत थोड़े हैं। आप जैसे सन्यस्त महात्मा ही आर्य्यसमाज के प्राण हैं।

५ अप्रैल

प्रातः काल।

आज प्रातः काल सरस्वती सम्मेलन की अन्तिम बैठक हुई। प्र० बुद्धदेव ने 'मनु और मांस पर' आर्य्यभाषा में एक उत्तम निबन्ध पढ़ा, जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया। निबन्ध का सारांश अन्यत्र दिया गया है। आज के सभापति श्री पं. घासीराम जी एम. ए. की अन्तिम वक्तृता भी लोगों के लिये बहुत लाभदायक थी।

मध्यान्ह

मध्यान्ह के समय कुछ देर तक अनेक भजनीकों के भजन हुए और फिर ४ बजे से अम्बाले की

हनुमान व्यायाम समिति

की खेलें हुईं, जिन्होंने उत्सव के अन्तिम परिच्छेद को बहुत मनोरंजक बना दिया। खेलों का पूरा २ वृत्तान्त अन्यत्र दिया गया है। इन खेलों का लोगों पर अत्युत्तम प्रभाव पड़ा। इस समिति के सज्जन अपना गुरुस्थधर्म का पालन करते हुए भी व्यायाम में इतना समय देसकते हैं, यह देख कर आर्य्यजनता पर बड़ा उत्तम असर पड़ा।

रात्रि

के समय श्री स्वामी सर्वदानन्दजी का तीसरा व्याख्यान भी उसी कृतकार्यता के साथ हुआ और साथ ही उत्सव भी सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

॥ ओम् शम् ॥

गुरुकुल विश्वविद्यालय

दीक्षान्त संस्कार

संवत् १९७१

संस्कार-विधि

(१) नियत समय पर प्रस्तोता प्रधान की आज्ञा लेकर निम्नलिखित शब्दों में संस्कार आरम्भ की घोषणा देगा

(२)" श्री प्रधान की आज्ञा से दीक्षान्त-संस्कार के आरम्भ होने की सूचना मैं यहां एकत्रित सर्व सज्जनों को देता हूं"

(३) घोषणा दे चुकने पर नव-स्नातक, (जो पहिले स्नान कर चुके होंगे) आचार्य्य और प्रस्तोता के साथ अग्निकुण्ड के समीप जायंगे। स्नातकों को श्वेत धोती और श्वेत कुर्ते के ऊपर यज्ञोपवीत पहिन कर आना चाहिये और अग्नि के चारों ओर बैठ कर ऋषि दयानन्द कृत संस्कार-विधि (समाप्त संस्करण) के पृष्ठ २३ से २९ तक की विधि को करें। तदनन्तर आचार्य्य के सन्मुख खड़े हो कर जल स्पर्श करते हुए,

मेधयोभूत्वा व्रतमुपायानीति

यह वाक्य पढ़ें, तब प्रस्तोता विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय का वेष दे। वे उसे लेकर और

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तन्मे के यम् तच्छेऽराध्यतामिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।

यह मन्त्र पढ़ कर उसे धारण करें, और आचार्य्य के साथ वेदी पर आजावें।

[४] तत्पश्चात् आचार्य्य प्रधान और मुख्याधिष्ठाता को सम्बोधन कर के कहेंगे, "महाशयो"!

"गुरुकुल विश्वविद्यालय के नियमों अनुसार विद्या स्नातक के लिये जिन प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रीक्षाओं में उत्तीर्ण होना आवश्यक था, उन परिक्षाओं में.....का पुत्र ब्रह्मचारी.....उत्तीर्ण हो चुका है। इस ने.....वर्षों तक महाविद्यालय में सदाचार पूर्वक निवास किया है। और अब स्नातकों के लिये विश्वविद्यालय का नियत वेष पहिन कर, और व्रत-धारण करने के लिये उद्यत हो कर, आप के सन्मुख खड़ा है। यदि आप की अनुमति हो तो इस को व्रत धारण कराया जावे और हम सब की ओर से प्रमाणपत्र दे दिया जावे"।

(५) उत्तर में प्रधान जी के कहने पर कि

"व्रत धारण करवाइये"

आचार्य्य नये स्नातकों को सम्बोधन कर के कहेंगे:—

(१) क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि इस विश्वविद्यालय में जो सत्यविद्या तुम ने प्राप्त की है उस का यथा शक्ति मन, वचन और कर्म द्वारा प्रचार करने के लिये तुम तत्पर रहोगे ? उत्तर में स्नातकों को सिर झुकाना चाहिये।

(२) क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि अपने जीवन में तुम कोई ऐसा कार्य्य न करोगे जो इस विश्वविद्यालय के पवित्र नाम को कलङ्कित करे ?

उत्तर में स्नातकों को सिर झुकाना चाहिये।

(३) क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि विद्या प्रचार, मनुष्य समाज की सेवा और प्राणी मात्र की रक्षा में यथ शक्ति तत्पर रहोगे और संसार के किसी कार्य को करते हुए भी और किसी प्रलोभन के सन्मुख आने पर भी इस प्रतिज्ञा को नहीं भूलोगे ?

उत्तर में स्नातकों को सिर झुकाना चाहिये।

"आज तुम इन उपस्थित सज्जनों और देवियों के सन्मुख इन प्रतिज्ञाओं को करते हो और हमें विश्वास है कि तुम इन प्रतिज्ञाओं का पालन करोगे। अतएव उन अधिकारों के कारण जो मुझे उक्त विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार प्राप्त हैं; मैं, प्रधान तथा मुख्याधिष्ठाता की अनुमति से तुम को विश्वविद्यालय की मुद्रा से अङ्कित यह प्रमाणपत्र देता हूं और अपने नाम के पीछे विद्यालङ्कार की उपाधि लगाने; विश्वविद्यालय वेदालङ्कार के वेष को पहिने; गुरुकुल आर्य्यप्रतिनिधि सभा (पञ्जाब व बिलोचिस्तान) तथा अन्य संस्थाओं के नियमों के अनुसार जो अधिकार स्नातकों को प्राप्त हैं या कभी प्राप्त होंगे, उन्हें उपयोग में लाने का अधिकार देता हूं। यह पद और ये अधिकार तुम्हें तभी तक प्राप्त रहेंगे जब तक तुम सदाचार पूर्वक उन प्रतिज्ञाओं का पालन करते रहोगे, जो तुम ने इस देवसभा में की हैं। यदि आर्य्यप्रतिनिधि सभा (पञ्जाब व बिलोचिस्तान) की सम्मति में कभी तुम ने इन में से किसी प्रतिज्ञा को तोड़ा तो यह प्रमाणपत्र लौटाया भी जा सकता है।

(५) प्रमाणपत्र दिये जा चुकने पर, आचार्य्य उपनिषद् को पढ़ कर व्याख्यान देंगे:—

(६) व्याख्यान दे चुकने पर यज्ञ-कुण्ड में पूर्णाहुति डाली जायगी।

(७) तत्पश्चात् निम्न लिखित शान्ति मन्त्रों का उच्चारण श्री प्रधान के साथ सारी सभा करेगी:—

शं वातः शꣳहितं घृणिः शं-
लै भवन्तु वृष्टयः।
शंनै भवन्त्वप्तयः पार्थिवासो मा त्वा
ऽभि शूशुचन् ॥

ऋग्वेद अ० ३५ म० ८।

(तेरे लिये वायु सुखकारी हो, किरणयुक्त सूर्य्य सुखकारी हो, वेदी में चयन की हुई ईंटें तेरे लिये सुखदायिनी हों पृथिवि पर प्रसिद्ध विद्युत् आदि अग्नि तेरे लिये कल्याणकारी होवें, ये सब तुझ को सब ओर से शीघ्र शोककारी न हों।

कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्यमापः
शिवतमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः ।
अन्तरिक्षꣳ शिवं तुभ्यं कल्पन्तां ते
दिशः सर्वाः ॥ ऋग्वेद अ० ३५ म० ८।

(तेरे लिये पूर्व आदि दिशा अत्यन्त सुखकारिणी समर्थ हों—तेरे लिये जल अति सुखकारी हो, तेरे लिए नदियां और समुद्र अति सुखकारी होवें। तेरे लिय आकाश कल्याण-कारी हो और तेरे लिये सब ईशान आदि विदिशा अत्यन्त कल्याणकारिणी समर्थ होवें।)

शान्ति मन्त्रों के पश्चात्, श्री. प्रधान जी अन्तिम भाषण करेंगे।

(८) तदनन्तर स्नातक, सभा तथा वेदी पर बैठे हुए सज्जनों को नमस्कार कर के वेदी पर से उतर जायंगे। और प्रस्तोता, प्रधान की आज्ञा से संस्कार के समाप्त होने की सूचना सर्वसज्जनों को देदेंगे।

महेशचरण सिंह

प्रस्तोता

सरस्वती सम्मेलन

का

विवरण

साहित्य परिषद् की ओर से प्रति-वर्ष उत्सव के समय विद्वानों का सम्मेलन हुवा करता है जो सरस्वती सम्मेलन के नाम से प्रसिद्ध है। यह सम्मेलन इस वर्ष भी बड़ी रोचकता से पूर्ण हुआ प्रथम अधिवेशन में ब्र० विद्यासागर चतुर्वेश ने श्री वादामोदर सातवलेकर जी की सभापतिता में "पुराणविमर्शः" निबन्ध पढ़ा जिस में सम्पूर्ण पुराणों पर विचारपूर्ण दृष्टि डाल कर पुराणों की सत्यता का मूल्य बताया। निबन्ध कर्ता का अभिप्राय संक्षेपतः यह था। पुराण तो आज कल छोटे मोटे बहुत मिलते हैं परन्तु व्यास के नाम पर मढ़े हुए १८ ही हैं। परन्तु ये ठीक नहीं क्योंकि आलोचना से प्रतीत होता है कि व्यास ने केवल एक पुराण बनाया था और बाद के सूत आदिकों ने बहुत से बनाये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुराणों में परस्पर की निन्दा और कलह होने से भी व्यास सब के कर्ता मानना ठीक नहीं।

पुराणों के लाभ हानि का विचार करते हुये निबन्धकर्ता महाशय कहते हैं कि प्राचीन विद्वानों ने पुराणों को विद्याओं का महाकोश बना दिया है। पुराणग्रन्थों की ऐतिहासिक दृष्टि से भी बड़ी कदर हो सकती है। क्योंकि पुराणों में ही प्राचीन इतिहास का यत्र तत्रोल्लेख मिलता है। वैज्ञानिक बातें भी अनायास में पुराणों से जानी जा सकती हैं।

बहुत से स्थलों पर प्राचीन साहित्य के मर्म को पुराण खोल देते हैं। वैदिक तत्वों को ही पुराण विस्तार से अलंकार रूपेण वर्णन कर देते हैं। इसी प्रकार हानियें भी बहुत सी हैं। विद्वान लोग पढ़ें तो कोई हानि नहीं परन्तु बालकों के लिए सर्वथा अनुपयोगी ही है। प्रथम बहुत से स्थलों पर अश्लील है।

पुराणों का निर्माण उन के लिये है जिनके लिये त्रिवेद का निषेध है। पुराण स्वयं अपना प्रामाण्य परतः स्वीकार करता है। वह भी अपने को गौण मान कर वेद को ही स्वतः मुख्य प्रमाण मानता है।

पुराणों में वर्त्तमान सनातन धर्मियों की हठवादिता की कहीं भी घोषणा नहीं है। जाति से वर्णों का मानना पुराण विरुद्ध है ब्रह्मपुराण में स्पष्टतया गुण कर्म स्वभाव से वर्ण विभाग माना गया है (देखो, २२३ अ०) (देखो देवी भागवत ३ स्कन्ध १० अ०) (देवी. ९ स्क०) (देखो भविष्य. २४ अ०)

इसी प्रकार तीर्थ के विषय में पुराण ग्रन्थ हरिद्वारादि नाम मात्र तीर्थों का खण्डन करते हैं (देखो प. पु. दिलीप वसिष्ट संवाद.) सिद्धान्त में पुराण सत्य-क्षमा ब्रह्मचर्य्यादि शुभ शील को ही तीर्थ कहते हैं। इसी प्रकार देवी भागवत और ब्रह्म पुराण भी ऐसा ही मानते हैं।

यज्ञ में पशु हिंसा के बारे में भी पुराण मुक्तकंठ से हिंसा का विरोध करते हैं। (देखो भागवत ५ स्कन्ध ७ स्कन्ध) पुराण सात्विकअन्न से ही यज्ञ विधान करता है। वायुपुराण और अग्नि पुराण भी पुष्टि करते हैं।

स्त्री शिक्षा का पौराणिक विरोध करते हैं। परन्तु पुराण ग्रन्थ इसका पोषण ही करते हैं। (देखो देवीभागवत ९ स्क. इसी प्रकार मार्कण्डेय में भी (२६ अ० मदालसा का ज्वलन्त प्रमाण है।

इसी प्रकार समुद्र यात्रा के विषय में पुराण ने बहुत से वर्णन दिए हैं। इस प्रकार पुराणालोचन से हमें बहुत सा पौराणिकों का दृष्टिभ्रम खंडित होता प्रतीत होता है।

इस निबंध को सुन कर लोग अचम्भे में रह गए इस निबंध का भाषानुवाद शीघ्र प्रकाशित होने वाला है उस में सब कोई लाभ उठा सकता है। इस निबंध पर बड़ा रोचक विवाद हुवा और विचारकों ने भिन्न २ प्रकार के विचार रक्खे। जिन से निबंध-कर्ता की पुष्टि ही पुष्टि होती गई।

सरस्वती सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन में वेदों पर कतिपय निबंध लेखकों ने भिन्न २ विचारों को दिखाने के लिए निबंध पढ़े श्री ब्र० ब्रह्मानंद जी स्नातक ने अपना "वेदों में अदृश राज्य" निबंध सुनाया जिस में निबंधकर्ता ने ये दिखाया कि प्राचीन काल में आर्य्यलोग जातीय संगठन करते थे और सार्व-भौम राज्य स्थापित करते थे। राजा को प्रजा में से चुना जाता था। राजा और प्रजा के कर्तव्य निर्धारित होते थे। राजे से सम्पूर्ण प्रतिज्ञाएं राज्याभिषेक के समय कराली जाती थीं और फिर शासक बनाया जाता था। साथ ही साथ प्रकरणवश निबन्ध कर्ता ने आधुनिक राज्यों के दोष और प्राचीन वैदिक आदर्श के गुणों को भी खोल कर दिखाया। इन के बाद श्री इन्द्र महोपाध्याय का निबन्ध वेदार्थप्रकार विषय पर हुआ।

तदनन्तर श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी का निबंध हुआ जिस में श्रीमान् ने वैदिक शब्दों के आधार पर वेदों की उच्च सभ्यता का निर्णय किया और बड़ी रोचकता से प्राचीन सभ्यता के ज्वलन्त प्रमाण दिखाए हम इन निबंधों की क्या प्रशंसा करें ये शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं इन को आप अभी से साहित्य परिषद् के मन्त्री से मांगना शुरू कीजिए।

सरस्वती सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन उत्सव के तृतीय दिवस हुवा। इस में निबंध श्री महोपाध्याय पं० योगेन्द्रनाथ जी का दर्शनों के अविरोध विषय पर संस्कृत में हुवा। विषय विचार बड़ा गम्भीर था और सात्विक दृष्टि से दर्शनों का अविरोध ही दिखाना इस का मुख्य उद्देश्य था।

चतुर्थ सम्मेलन उत्सव के अन्त के दिवस हुवा इस में श्री ब्र० बुद्धदेव जी का मनु और मांस विषय पर बड़ा रोचक निबंध हुवा। जिसका सारांश यह है।

मनु का सिद्धान्त मांस के सर्वथा प्रतिकूल है। जितने मांस विषयक वाक्य हैं वे वास्तव में प्रक्षिप्त हैं। जिन के लिए संक्षेप से निम्न युक्तिएं हैं।

मांस विधायक वाक्य ३ प्रकार से रह सकते हैं (१) उत्सर्गापवाद भाव से (२) परिसंख्या से (३) विकल्प से। मनु में केवल ४ स्थान पर मांस प्रकरण का निवेश है। एक भक्ष्याभक्ष्य प्रकरण दूसरा श्राद्ध प्रकरण तीसरा यज्ञ प्रकरण चौथा प्रायश्चित्त-विधान।

भक्ष्याभक्ष्य में परस्पर विरोध है और [illegible] विहितों के लिए भी प्रायश्चित प्रकरण में दण्डविधान है अतः मनु में मांस [illegible] नहीं हो सकता। [illegible] और [illegible] कहेंगे,

इसी प्रकार श्राद्ध प्रकरण में भी [illegible] प्रकरण सर्वथा बुद्धिसंगत नहीं क्योंकि [illegible] नियमों नन्त काल तक पितरों की तृप्ति कराने [illegible] जिन [illegible] मनु को आर्यसिद्धान्त से अनभिज्ञता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हो सकती। पितर लोग अनन्तकाल तक पितर नहीं रह सकते।

यज्ञपुराण में भी मांस प्रकरण सर्वथा अयुक्त है क्योंकि मनु स्वयं मांस के त्याग को अश्वमेधादि याग से परमोत्कृष्ट बताता है। इस अवस्था में मनु स्वयं ही यज्ञ में मांस को न खाने वाले को निन्दा नहीं कर सकता जैसा कि ५अ० के ३४ श्लोक में का है। इस से भी वह सर्वथा भी असंगत है।

अब रही आलम्भन शब्द की बात, सो आलम्भन शब्द का अर्थ स्पर्श है क्योंकि आलम्भन शब्द पर एक ही टीकाकार कूलूकभट्ट का परस्पर विरोध है। शेष रहा क्षात्र युद्ध वह भी अधम से प्रवृत्त न होता था परन्तु धर्म से अतः इस में भी कोई शंका न होनी चाहिए।

इस प्रकार इस निबन्ध का विषय समाप्त होता है। इस निबन्ध को विस्तार से प्रत्येक सनातन-धर्माभिमानी को पढ़ना चाहिए। यह भी निबन्ध शीघ्र छपने वाला है।

इस निबन्ध पर बड़ा रोचक विवाद हुआ। अन्त में निबन्धकर्ता के पक्ष की पुष्टि हुई। अधिवेशन समाप्त हुआ।

मध्यान्होत्तर २ बजे से हनुमान क्लब की व्यायाम सम्बन्धी विचित्र खेलें आरम्भ हुई।

व्यायाम-क्रीड़ाएं।

गुरुकुल क्रीड़ा भूमि के मध्य में रस्सियों से चारोंतरफ का घेरा बना कर दर्शकों तथा क्रीड़कों का खूब अच्छा प्रबन्ध किया हुआ था

ठीक समय पर खेलें आरम्भ हो गईं हनूमान क्लब का अपना बैण्ड बजना आरम्भ हुआ और इधर दो तीन मजबूत गठीले युवक समानान्तर दंड पर बल की विचित्र २ व्यायामें करने लगे। समानान्तरदंड के बाद दूसरे प्रकार की खेल आरम्भ हुई। दो [illegible] की कचीयों से एक तार आकाश में कसी [illegible] उस पर एक नवयुवक अपनी चुस्त पोशाक पहन कर एक हाथ में छतरी लिए [illegible] तार पर निरालम्ब घूमने लगा कभी [illegible] पैर पर खड़ा होता था, कभी चक्कर खा [illegible]ता था, कभी बैठ जाता था कभी गोड़ों के [illegible] खड़ा हो जाता था, कभी हाथ का रुमाल पैर से और पैर का हाथ में लेलेता था इसी प्रकार एक और व्यक्ति के तार पर बैठने पर भी उस को पार किया जाता था इस प्रकार छतरी का खेल भी बड़ा विचित्र हुआ। तार पर चलते हुए व्यक्ति ने छतरी छोड़ दी हाथ में लिये एक चक्कर चक्कर में अपना सारा शरीर गुजार के दिखाया ये भी बड़ी ही सावधानी का खेल था।

इस के बाद एक बिस्तरा बिछाया गया उस पर एक दृढ़ पुरुष अपनी टांगें ऊपर उठा कर लेट गया एक अष्टचक्र अष्टभुज रक्खा गया उस चक्र को बड़ी युक्ति से उस पुरुष ने आकाश में पैरों के बल से घुमाया।

फिर उसी स्थिर अष्टभुज पर एक बालक अपने वेश में आकर चढ़ा और चढ़कर ऊपर की भुजा पर लेट गया। दर्शकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। इस प्रकार का खेल चौखाने चौखट से भी किया गया।

सब से आश्चर्यकारक खेल झूलने का था। लोहे के दण्डों को गाड़ कर ऊपर एक छोटा सा झूला बनाया जिस में आधार मात्र केवल एक डण्डी थी। उस लटकती डण्डी पर अनीखे अनीखे खेल हुवे।

उस डण्डी पर एक पट्टा रख कर दो पुरुषों ने तोला और उस पट्टे पर नाना प्रकार की बैठकें दिखाई।

इसी प्रकार दो व्यक्तियों ने उस लटकती डण्डी पर बिना किसी आश्रय के परस्पर स्वयं तुल कर दिखाया।

उसी डण्डी पर एक पुरुष ने पौड़ी रखकर उस पर निरालम्ब चढ़ के दिखाया।

उसी डण्डी पर एक पुरुष और ५ बच्चे चढ़े। एक बैंच सा उस डण्डी पर टिकाया गया एक बच्चा उस पुरुष के पैरों पर लेट गया। दो बैंचों पर बैठा गया और दो कन्धे पर चढ़ गये। इसी प्रकार निराधार खेलों को देख कर दर्शक लोग बड़े आश्चर्य में रह गये।

इस खेल के बाद लम्बे झूले की खेल आई। इधर दो बल्लियों के सहारे लटके एक छोटे झूले में एक व्यक्ति पैरों से लटक जाता था। दूसरी ओर से एक सीढ़ी गड़ी होती थी उस पर एक दूसरा व्यक्ति बड़े झूले के डण्डे के सहारे झूलता था और झूलकर छोटे झूले में उलटा लटके हुवे पुरुष की छाती से छाती जफ्फी मारकर आ लिपटता था और फिर नीचे उतर आता था।

इस प्रकार की ५ या ६ खेलें क्रीड़कों ने करके दिखाईं। जिनका वर्णन करना शब्दों से अत्यन्त कठिन है।

बाद को एक बड़ी रोचक तथा आश्चर्यकार खेल हुआ। २ व्यक्तियें दो तख्तों पर बिछे बिस्तरों पर ऊपर को टांगें उठाए हुवे लेट गये और एक बच्चे को पैरों पर खूब विचित्र २ रीतियों से उछालते थे। परस्पर उस बच्चे के एक दूसरे की ओर पैरों के सहारे फेंकते थे और बोचते थे। ये खेलें बहुत ही विचित्र थीं। इस को देखकर दर्शक खूब खुश हुवे।

अन्त में खेल बड़ी धूमधाम से समाप्त हुवा। श्री महात्माजी ने हनुमान क्लब को उन की इस उदारता के लिये बड़े धन्यवाद दिये।

हम इस उदार क्लब की हर प्रकार से मङ्गल कामना करते हुवे धन्यवाद करते हैं।

वास्तव में ऐसे शारीरिक विद्वानों ने अभीतक प्राचीन आर्यों के गौरव की रक्षा की हुई है।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विश्व विद्या प्रचारक महा मण्डल

श्रीयुत महाशय !

निवेदन यह है कि आज कल भारतवर्ष की जैसी दशा है वह आप लोगों से छिपी नहीं हैं, भारतवासियों को भर पेट रोटी तक नहीं मिलती इस का मुख्य कारण क्या है ? अविद्या व आपस की फूट, एक समय वह था जब कि भारत से करोड़ों रुपयों का माल विदेश जाता था, आज वह दिन हैं कि करोड़ों रुपयों का माल विदेश से आता है, कहां भारत वासी शिल्पकला व कृषी में सब देशों में निपुण थे, वही आज कुछ नहीं जानते,

भारतवर्ष के ऋषि व मुनियों को हर एक मनुष्य याद करते हैं इस का कारण क्या हैं? विचार कर देखा जाय तब यही मालूम होगा कि वह देश भर में विद्या व धर्म का प्रचार करते थे, यहां तक कि विदेशी लोग भी भारतवर्ष में आकर विद्या पढ़ते थे, इसी भारतवर्ष की दुर्दशा हो रही है, हम लोगों ने ऊपर लिखे नाम की संस्था इस तात्पर्य से कायम की है कि

१. विद्या, धर्म, वाणिज्य, कृषि शिल्पकला का देश भर में प्रचार कराना,

२. साधु व अनाथ लड़के व जो सज्जन अपना कुल जीवन देश सेवा में लगावें उन को शिक्षा दिलाकर मुफ्त शिक्षा देने वाले विद्यालय तथा पुस्तकालय प्रचार कर के खुलवाना,

३. उपयोगी पुस्तकें लिखवा कर लागत मात्र मूल्य में बिकवाना,

४ स्वदेशी वस्तु बनवा कर उन का प्रचार करना,

५ इस सभा की तरफ से सरस्वती के आकार का एक सचित्र पत्र विश्वविद्या प्रचारक नाम से जुलाई १९१५ से निकाला जायगा वह पत्र फायदे की गरज से नहीं निकाला जायगा, बल्कि देश सेवा करने की गरज से निकाला जायगा, सिर्फ कागज़ व छपाई का मूल्य वार्षिक २) रु० मात्र रखा है, आप इस पत्र के ग्राहक बन कर देश की उन्नति में सहायता कीजिएगा ग्राहक होने के लिए पत्रद्वारा सूचना दीजिए

जहां आप के हजारों रुपये खर्च होतेहैं वहां आप इस सभा को भी सहायता दीजिए, इस सभा का हर एक मनुष्य मेम्बर बन सकता है किसी प्रकार का चंदा वगैरह नहीं लिया जाता इस से सर्वसाधारण को बराबर है, सिर्फ नियम पालन करने प ते हैं. विशेष समाचार जानने को नियम मंगा कर देखियेगा,

देश सेवक,

राम स्वरूप शर्म्मा.

पता;—जनरल मैनेजर.

विश्व विद्याप्रचारक महामंडल चंदौसी.
यू. पी.

(गुरुकुल में महात्मा गान्धी)

६ अप्रैल को प्रातःकाल ५ बजे महात्मा गान्धी जी बिना सूचना दिए ही गुरुकुल भूमि में आ पहुचे। आप के दर्शन कर के गुरुकुल वासी बड़े आनन्दित हुए किन्तु कार्य्यवश उसी समय महात्मा मुन्शीराम जी के साथ हरद्वार चले गए। फिर ८ अप्रैल को सायं काल ५ बजे गुरुकुल की मायापुर वाटिका में ब्रह्मचारियों की तरफ से आप को एक अभिनन्दन पत्र दिया गया। पण्डाल खचाखच भरा हुआ था दर्शक इतने अधिक थे कि पण्डाल के बाहर भी दर्शकों को खड़ा होना पड़ा। ब्रह्मचारियों ने पण्डाल को इतना उत्तम सजा रक्खा था कि दर्शक गण उस की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके। अभिनन्दन पत्र के उत्तर में महात्मा गान्धी जी ने कहा कि अफ्रीका से आने के समय मेरे ३ उद्देश्य थे जिन में से कि मैंने महात्मा मुंशीराम जी तथा उन के कार्य को देख कर अपना मुख्य उद्देश्य पूरा किया—

ब्रह्मचारियों का मुझ से और मेरे पुत्रों से जो प्रेम है उस के लिए मैं सदा उनका ऋणी रहूंगा और ब्रह्मचारियों ने अफ्रीका में हम सब के कैद होने के समय हमारे लिय जो नाना प्रकार के कष्ट सह कर सहायता दी है उस से भारत माता का मुख अत्यन्त उज्वल हो गया है। और मैंने भी अब विचार किया है कि भारत में रहते हुए ही भारत-माता की सेवा करूं।

और महात्मा जी से मेरा यह निवेदन है कि आपने मुझे पत्र में भ्राता शब्द से सम्बोधित किया था। अतः आप मुझे अपने छोटे भाई होने का पद अवश्य प्रदान करें।

इस के पश्चात् महात्मा मुंशीराम जी ने महा० गान्धी जी के महत्त्व को दर्शाते हुए उन की सफलता का मुख्य कारण उन की पूज्य धर्मपत्नी जी को बतलाया:—

और अन्त में इस दिव्य जोड़ी की दीर्घायु के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हुए अपना कथन समाप्त किया। फिर और कई महाशयों के मनोहर व्याख्यान और भजन हुए।

अन्त में ब्रह्मचारियों ने इस दिव्य जोड़ी के उपलक्ष्य में एक गीत गाया और कुल गीत गाकर शान्ति पाठ के साथ ही कार्यवाही समाप्त की और लग भग १½ सहस्र रुपया गुरुकुल के लिये चन्दा भी इस बीच एकत्रित होगया। आगामी अंक में हम सारा विवरण विस्तार से पाठकों की भेट करेंगे।

प्रचारक के ग्राहकों को

आवश्यक सूचना।

प्रचारक का नवीन वर्ष १७ अप्रैल सन् १९१५ से आरम्भ होगा अतः जिन महानुभावों का वार्षिक मूल्य प्रचारक की संख्या ५२ पर समाप्त होता है उनकी सेवा में १७ अप्रैल का प्रचारक वी० पी० द्वारा भेजा जावेगा। आशा है कि ग्राहक के प्रेमी इसे स्वीकार कर कृतार्थ करेंगे। जिन महाशयों को किसी कारण वश इस वर्ष ग्राहक रहना स्वीकार न हो वह कृपया पहिले सूचित करें जिससे वी० पी० भेजे जाने पर प्रचारक को हानि न उठानी पड़े।

(ग्राहक सं० १ से १२४३ तक

प्रबन्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

छपगया तय्यार होगया छपगया

सचित्र

प्रिंस विस्मार्क

अथव

जर्मन साम्राज्य कीपुनः स्थापना

लेखक—इन्द्रदालंकार

जिस लक की महीनों से आा लग रही थी, वह निकल गई। वर्त्तमान जर्मनसाम्राज्य के संस्थापकप्रिंस विस्मार्क का जीवन चरित एक मनोहर उपन्यास से भी अधिक मनोरंजक और एक नीतिग्रन्थ से भी अधिक शिक्षप्रद है। इस समय यूंप में जो महायुद्ध होरहा है, उस के कारण सभ्ने होंतो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये।

नैपोलियन बोनापार्ट का जीवनचरत पढ़ने वालों के लिये यह बतलाना व्यर्थ है कि पुस्तक बड़ी ओजस्वनी भाषा में लिखी गई है। चार अतिसुंदर चित्रों ने पुस्तक की शोभा और उपयोगिता को बहुत बढ़ा दिया।

छपाईऔर बनावट का क्या कहना है? नैपोलियन बोनापार्ट के जीवनचरित बढ़ चढ़ कर हैं।

पुस्तकमें जर्मनी का लगभग सवासौ साल का इतिहास आगया है। जर्मनी की हले निर्बल दशा फ्रेडरिक दिग्रेट के चमत्कार विजय, जर्मनी में,रोयता का अभ्युथ, राज्य क्रान्ति, बिस्मार्क का जन्म शैशव और यौवन, साम्राज्य स्थपना—इन सब इतिहास प्रसिद्ध घटनाओं के मनोरंजकवर्णन के साथ चरित नामक के जीवन की अनूठी घटनाओं का रा२ वर्णन देखना होतो इस पुस्तक को अवश्य मंगवाइये।

पृष्ठलग भग दोसौ के। मूल्य केलव १॥)

शीघ्र मंगवाइये।

प्रबन्धकर्त्ता

सद्धर्मप्रचारक पत्र गुरुकुल

पोस्ट शमपुर—कांगड़ी जि०बिजनौर

कुम्भ प्रचार

ता० ३० मार्च को प्रातः हवन और भजनों के बाद स्वामी विवेकानन्द जी ने कथा कही।

मध्यान्ह के बाद स्वामी ब्रह्मानन्द जी स्वामी सत्यानन्द जी तथा स्वामी कृष्णानन्द जी के व्याख्यान हुए।

रात्रि को गायक महाशयों के भजन हुए।

ता० ३१ को प्रातः हवन और भजनों के बाद स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने कथा कही।

मध्यान्ह के बाद पं० विद्यानन्द जी श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी श्रीमान् स्वामी सत्यानन्द जी श्री स्वामी परमानन्द जी के व्याख्यान हुए तथा पं० सोमदेव जी का व्याख्यान हुआ।

रात्रि को इसी प्रकार गायकों के भजनहुए

ता० १ को प्रातः हवन, हवन के बाद भजनों के पश्चात् श्री मान्य पं० पूर्णानन्द जी महोपदेशक आर्य्य-प्रतिनिधि पजाब ने कथा कही और भजनीकों ने भजन कहे।

मध्यान्ह के बाद श्री मान्य पं० विद्यानन्द व पं० निरंजनदेव जी उपदेशक आर्य-प्रतिनिधि सभा का व्याख्यान और महाशय छेदालाल पं० मथुरा प्रसाद जी के भजनों के बाद स्वामी विवेकानन्द जी तथा महाशय मदन मोहन जी के बाद पं० पूर्णानन्द जी का व्याख्यान हुआ और रात्रि को ८ से १० तक भजन हुए

ता० २ को प्रातः हवन और भजनों के बाद पं० पूर्णानन्द जी ने कथा कही।

मध्यान्ह के बाद पं० देवीदत्त जी व पं० निरजन देव जी व स्वामी परमानन्द जी तथा पं० सोमदेव जी का व्याख्यान हुआ।

दर्शक

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुमारी

(सामाजिक उपन्यास)

प्रत्येक शब्द, वाक्य और भाव में नवीनता भरी है। इस सुख दुःखमय संसार में शान्ति कहां है और केवल उस की शान्ति में पड़कर कितनों ने अपना नाश कर डाला है,—इसका सजीव चित्र इस उपन्यास में है।

स्त्रियों और कन्याओं को भेंट में देने योग्य पुस्तक है। सरल भाषा और भावों से धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक बातों की बड़ी मनमोहनी आलोचना है। प्रत्येक युवा और वृद्ध को अपने घर में रखनी चाहिए। मूल्य ॥=) दश आने।

अमरदत्त

विचित्र स्त्री चरित्र का अजूबी उपन्यास है। बकुर में डाल देने वाली घातें, दिलचस्प किस्सा और इस दुनिया का सच्चा कोटू है। यदि इस भौंचे भारी र झलती संसार का सच्चा नाटक देखना है तो अमरदत्त अवश्य पढ़िए। जेल और पुलिस की चालें, खूनी और द माशों के जाल, सर्द आहें दिलाने की घटना और अनोखी सचाई इस उपन्यास में है। पृष्ठ संख्या साढ़े तीन सौ। मूल्य ॥) बारह आने।

युद्ध की झलक

(लड़ाई की किताब)

धुआँधार लड़ाइयों से योरप की क्या दशा होगई है मजदूर, कृषकवृन्द और कारखानों की क्या किस हालत में हैं। आज वहां की बाजार दर और भोजन के पदार्थों की क्या खबर हो गई है। यही इस पुस्तक में है। र रहे है।

अतिज्ञा

प्रतिज्ञा रानी के हृदय का उज्ज्वल स्वार्थत्याग है। भावों की रक्षता, भाषा की सुगमता और घटनाओं की चमत्कारिता पढ़ने वालों के दिलों को मुग्ध कर लेती है। कन्या, युवा, वृद्ध सभी इसे पढ़ कर सन्तुष्ट होते हैं। कर्तव्य पालन का उज्ज्वल उदाहरण है। आर्यभाषा भाषियों के लिये रत्न से भी अधिक उपयोगी है।

कर्तव्य

यह इंग्लैंड के प्रसिद्धिप्राप्त बालक स्काउट्स की प्रसिद्ध पुस्तक की (Duty) का अनुवाद है। इस पुस्तक ने बीते हुए वीरत्व को जगाकर कर्तव्य में लगा दिया, जिस की प्रशंसा करना व्यर्थ है,—वह आर्य भाषा में तैयार है। छप रहा है।

मैनेजर—नागरी प्रचारक कार्यालय, गली पहाड़, धपुरा, (देहली)

हाथरस के नये कैटलाग के कमानीदार पक्के चाकू लोवरहार वाले

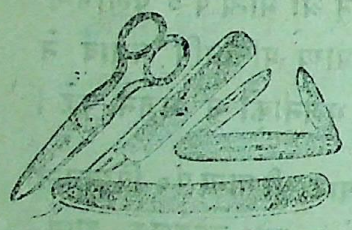

पसन्द न आवें तो वापिस ये स्वदेशी चाकू विलायती चाकुओं से सुन्दर सस्ते और मज़बूत हैं चन्दन मूठ कमानी दार ॥=) ।=) ।=)) कड़ी मूठ कमानीदार ॥) ।=)) =) चन्दन मूठ सादा ।=)) =) =)) दाँती मूठ सादा ।=)) =) =) ॥)) हाथी दांत कमानी दार ।=) ॥) =) दो फल ॥) ॥=) शिकारी छुरा १॥) १) ॥) पीतल मूठ चाकू ॥) ।=) खूबसूरत बटे १) ॥) ।=) ॥=) लाल लोहे के ॥) ॥) ।=) बंच पीतल के ॥) ।=)) ।=) बंच फैंसी रंगीन के देशी उस्तरे १) ॥) ॥) ।=)) कैंची बाल काटने की १) ॥) ॥) कपड़े काटने की ॥) ।=) ॥) देशी सूत के रंगीन गले ।=)) =) =) ॥ =) पवित्र सुगन्धित बढ़िया होंग १०) ८) ६) सभी सेर—देशी बस्तु कार्यालय हाथरस नं० १८

हमारे यहां हर तरह की घड़ियां बहुत खूबसूरत और मजबूत पुरानी सभी दामों पर मिलती हैं रेलवे रेगुलेटर मूल्य ४) सिटवन रा स्कोप मूल्य ३) हर तरह का बाजा बनाने व गाने वाली ४॥)—

स्वीजर्ल ड वाच कम्पनी नं० ४

हाथरस

प्रदर हर गोलियाँ

बेचारी स्त्रियाँ इस रोग की चुपचाप सहन करके अपने शरीर को गला देती हैं रज का पुलबजेसा रंग बात की बात में पीला पड़ जाता शरीर में दर्द पैदा हो जाता है मासिक धर्म भी ठीक समय पर नहीं होता एकदम कई बे होना ही ऐसी दुखिया अबलाओं के हेतु ही "प्रदर हर" तयार की गई है इस के सेवन से एकदम सब रोग नष्ट होते हैं और शरीर सब प्रकार के सुख भोगने योग्य हो जाता है मूल्य ४० गोली का २॥) रुपये

दर्द नाशक

अंसर करना जबड़ी एक बार अंसर करे पुराने चाहे वे दर्द को खो मूल्य फी शिशी ।)

खाज कंदवा

शरीर पर कहीं रोग बुरी खाज है तो इस मल्म को बिना विलम्ब सेवन करो मूल्य फी शिशी ॥)

स्वदेशीवस्तु कार्यालय हाथरस नं० १

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म-निर्णय।

र्दू की प्रसिद्ध पुस्तक तहक़ीक़ धर्म का
भानुवाद १)
जन (जीवन पर उच्च शिक्षा) ॥=)
द मार्ग (६७धर्मविषयों पर व्याख्यान॥)
रत्न प्रकाश पूर्वार्द्ध पांच भाग ॥=)
और उत्तरार्द्ध २ भाग ॥)

भरतवर्ष का सच्चा इतिहास

इस पुस्तक में भारतवर्ष का आद्योपान्त
तहस सरल भाषा और मनोरञ्जक ढङ्ग
से वर्णन किया गया है। बहुत से समाचार
पत्रों ने इस की प्रशंसा की है १॥)
ज्ञानभजनावली चारों भाग सजिल्द ॥)
हारमनियम गाईड दोनों भाग ॥)
नोट—५)रु० की पुस्तक मंगाने वाले को
२) पत्र के साथ भेजने चाहियें पता
आप हो।
सामवेद भाषा भाष्य श्री पं० तुलसीराम कृत
सम्पूर्ण मूल्य ४) मात्र सजिल्द ४॥)
पता:—ला० केदारनाथ प्रोप्राईटर
आर्य्य पुस्तकालय बाज़ार
बाजाज़ा शहर मेरठ

१६००० हज़ार एजेंटों का होना

भारतवर्ष में बनी औषधि के सर्वोत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है

नहीं बता सकता कि सुख संचारक
कम मथुरा का बनाया सुधासिंधु नीचे लिखे
रोगों एक मात्रा देने ही से फल न दिखा सका।

फ, खांसी, दमा, हैजा, शूल, संग्रहणी, कै
दर सर्दी का बुखार पेट का दर्द, कमर का
दर बच्चों के हरे पीले दस्त, रोना, कै करना,
की अनिद्रा और नजला, जवानों की थका-
वा बेचैनी दवा स्वादिष्ट सुगन्धित है किसी
पा की आवश्यकता नहीं होती। क़ीमत फी
ो आठ आना डांक खर्च १ से ६ शीशी तक
आना सब बड़े २ दवा बेचने वालों के पास
लती है।

डांक से मंगाने का पता:—
सुख संचारक कंपनी
मथुरा

एजन्ट चाहिये

नियम और सूचीपत्र तथा मनुष्य के २५
दशा का चित्र मुफ़्त मिलेगा मंगा देखिये।
एच० एच० शर्म्मा (स)
बरियारपुर
(बनारस स्टेट)

महाशय जी

यदि आप मशहूर २ आम लीची इत्यादि का क़लम (पेड़) अपने बाग में लगाना चाहते हों तो आज ही एक कार्ड लिख कर सूचीपत्र मंगालें।

पता—आर्य्यन नर्सरी
डा० कमतोल Kamtaul बिहार प्रान्त

उत्तम दान

ता० २८ फ० १९१५ ई० आर्य्य-समाज एवाजाब को श्रीमान् ओंकारमल जी मारवाड़ी ९०॥=) दान दिया हर्ष सह समाज मेम्बर बने दान स्वीकार कर समाज निम्न-स्थानों को महा दान विभाजिए किया स्थान संख्या प्रत्येक = =

गुरुकुल कांगड़ा ५१।-) गुरुगुल वृन्द्रावन ११।) ज्वालापुर कन्या महाविद्यालय १०) अनाथालय अजमेर ५) असय बरेली ५) अ० लय फीरोज पुर ५) आर्य्य-समाज आगरा २) दाता को धन्य दिया गया चिरंजीवार्थ प्रार्थना की गई है पं० रघुनन्दन शर्मा आ० स० ऐनाजाक यहां की समाज का कार्य्य अच्छा चला जाता है लोग समाज सेवा में उत्सुक रहते हैं।

कृपया अनुगृहीत करें
एनाजाब आर्य्य-समाज
जिला मगोही उप ब्रह्मा

वैदिक वैजयन्ती

परिशिष्ट भाग सहित

लेखक—श्री बा० मदनमोहन सेठ एम० ए० एल० एल० बी०
मन्त्री—आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

इस पुस्तक में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के
त २५ वर्षों का इतिहास दिया गया है। अनेक उपयोगी
विषयों का समावेश है। त्र तत्र, कोई दो दर्जन आर्य
विद्वानों के सुन्दर चित्र हैं बीच बीच में कविवर पं० ना-
राम शङ्कर जी शर्मा की कविता दी गई है। अनेक समा-
चार पत्रों ने प्रशंशा की है। १६ परिच्छेदों में समाप्त होने
वाली २४० सफ़ों की परमसुन्दर पुस्तक का दाम १।) बहुत
नहीं है शीघ्रत कीजिये

श्रीराम शर्मा
हैड क्लर्क प्रतिनिधि सभा
बुलन्दशहर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७००) इनाम।

श्री वाल्मीकी रामायण पर।

श्री पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी कालेज लाहौर ने जो श्री वाल्मीकि रामायण पर सरल हिन्दी टीका लिखी है, उस पर प्रसन्न होकर गवनमेंट पञ्जाब ने २००) रुपये और यूनीवर्सिटी पञ्जाब ने ५००) इनाम दिया है। यूनिवर्सिटी पञ्जाब ने १९११ में ५००) रुपयों का इनाम उस के लिये रक्खा था जिस की टीका सब से बढ़ कर होगी। वह इनाम पं० जी ने मुकाबिले में जीत कर लिया है। यह इस बात का पूरा प्रमाण है कि यह टीका बहुत उत्तम बनी है, मूल्य बिना जिल्द ५।) सुनहरी अक्षरों की जिल्द वाली ५।।।)

२००) इनाम बाल व्याकरण पर

यह हिन्दी में संस्कृत भाषा का बड़ा सरल व्याकरण है, इस पर भी गवनमेंट ने २००) रुपया इनाम दिया है, और पञ्जाब यूनिवर्सिटी ने इसे मिडल के कोर्स में नियत किया है। मूल्य ।=)।।

३००) रुपये इनाम।

श्रीमद्भगवद्गीता पर

पदार्थ अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य सहित, इस पर भी पं० जी को ३००) इनाम मिला है,

मूल्य २)

ग्यारह उपनिषदें भाष्य समेत।

ईश =) केन ≡) कठ ।-) प्रश्न ।) मुंडक और मांडूक्य ।-) तैत्तिरीय ।≡) ऐतरेय ≡) छान्दोग्य २) बृहदारण्यक २) श्वेताश्वत्र ।)।।

ग्यारह इकट्ठी लेने में ५।।)

उपनिषदों की भूमिका ।)।।
उपनिषदों की शिक्षा पहला भाग ।।=)
दूसरा भाग ।।) तीसरा भाग ।।)
चौथा भाग ।।=)
गीता हमें क्या सिखलाती है ।)।।
वेद उपदेश पहला भाग ।।।)
दूसरा भाग ।।।)
आर्य्य पंचमहायज्ञ पद्धति ।)।।
उपदेश सप्तक ।-)
सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ इस पर भी २००) इनाम मिला है।

मूल्य ।।=)

वेदान्त दर्शन दो भागों में सम्पूर्ण विस्तर भाष्य समेत ३।।) योग दर्शन नवदशन संग्रह १) पारस्कर गृह्यसूत्र १) शंकराचार्य्य-कुमारिल भट्ट और मंडन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है।

निरुक्त निघंटु पाठ सहित, निरुक्त हिन्दी भाष्य भी छप गया है। मन्त्रों के पत्र दिये गए हैं, और कई प्रकार के सूची पत्र दे कर ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी बना दिया गया है, विद्वानों ने इस की बहुत बड़ी प्रशंसा की है, मूल्य ४)

१००) इनाम मनुस्मृति पर

मनुस्मृति की सम्पूर्ण सरल भाषा टीका भावार्थ पुरानी संस्कृत टीकाओं का अर्थ भेद और दूसरी स्मृतियों के हवालों समेत बड़ा ही उपयोगी हुआ है। ३)

सटीक महा-भारत

छपना आरम्भ हो गया है, टीका और फुटनोट ऐसी छान बीन के साथ लिखे गए हैं, कि इस से प्राचीन आर्यावर्त का सच्चा इतिहास साफ साफ खुल जाता है, वार्षिक मूल्य ३) है।

पताः—

मैनेजर आर्षग्रन्थावली
लाहौर

गेहूं की खेती।

यू० पी० गवर्नमेंण्ट के कृषि विभाग की उपयोगी बताई हुई यह पुस्तक हिन्दी उर्दू दोनों भाषा में बनाई गई है इस में बताया गया है कि प्रत्येक प्रकार की खेती में सामान्यतः दुगनी तिगनी और गेहूं की खेती में विशेषतः केवल १० बीघे में एक हज़ार रुपये की वार्षिक पैदावार कैसे की जा सकती है कृषि सम्बन्धी प्रत्येक विषय बड़े विस्तार से लिखा गया है बहु मूल्य और प्रत्येक स्थान से बिना कौडी टके मिलने वाले खादों का वर्णन बड़ा विचित्र है आज तक इस देश में ऐसी पुस्तक नहीं निकली मूल्य प्रत्येक भाषा की सजिल्द पुस्तक का रुपया १) दो पुस्तक के ग्राहक को एक पुस्तक बिना मूल्य और डाक महसूल भी माफ।

रामप्रसाद मजिस्ट्रेट जावद
जिला मान्दसौर
ग्वालियर स्टेट

उत्तम—पुस्तकें

यदि आप को अपनी और अपने की आर्थिक तथा राष्ट्रीय व्यवस्था सुधारना है तो इन पुस्तकों को भली प्रकार पढ़ें और पढ़ाइये। अर्थ शास्त्र, प्रो० बालकृष्ण ...त १।।) नवीन भारत १।।) स्वाधीन वि... पद्य मुष्पाजंली ।=) जर्मनी के विध... कैसर के साथी ।) युद्ध गल्पाज। ...शवाद २) हिन्दी से महाराष्ट्रीय ...क्त ।)। इन के अतिरिक्त हिन्दी की ... अच्छी पुस्तकें भी हमारे यहां मिलती हैं।

...से ... पता—कृपानारायण ...
युगी पुस्तकालय
कुली बाज़ार—का...

श्री० लाला नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

151133

ARCHIVES DATA BASE

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA